



## भूमिका

यद्यपि हिन्दी साहित्य में सब से पहिले गणना मात्र के लिये इनेगिने एक दो कोश थे, जिनमें हिन्दी के कतिपय शब्दों का अर्थ मिल जाता था, तथापि हिन्दीशब्दार्थ पारिजात जैसा एक भी कोश नहीं था। इससे यह आशा करना अनुचित नहीं है कि इस कोश द्वारा हिन्दी साहित्य के अंग की पुष्टि अवश्य ही होगी। इस कोश में हिन्दी साहित्य में व्यवहृत तथा हिन्दी के वर्तमान समाचार पत्रों में प्रचलित शब्दों के अर्थ संगृहीत कर दिये गये हैं।

हिन्दी जैसे वर्द्धमान साहित्य के इस कोश को सर्वाङ्गपूर्ण पतलाना तो धृष्टता है, तथा इतना अवश्य कहा जा सकता है कि संप्रहर्कर्त्ता ने इस कोश में यथा सम्भव इस बात का पूर्ण अग्रश्रय किया है कि हिन्दी के प्रायः सद्यः लिख्य एवं अप्रचलित संस्कृत के शब्दों के अर्थ ज्ञातिय। नवार्ङ्ग-सुन्दर कोश बनाने के कार्य में समय और धन दोनों ही की आवश्यकता होती है, पर कोश अथवा कोई भी पुस्तक क्यों न हो- जिसके बनाने या बनवाने का मुख्य उद्देश्य मूल्य की सुलभता ही है, वह ग्रन्थ कदा तक सर्वाङ्ग-पूर्ण हो सकता है इसे हमारे पाठक स्वयं विचारें। फिर भी इस संस्करण में हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के हिन्दी में व्यवहृत शब्दों का सन्निवेश किया गया है। अथ यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह कितना उपादेय हो गया है। इसे पाठक स्वयं अवलोकन कर देखें।

अन्त में हम इस ग्रन्थ के पाठकों को यह पतला देना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझते हैं कि इस कोश के शब्द-संग्रह-कार्य में हमें परिश्रम चन्द्रशेखर आमा से बहुत कुछ साहाय्य मिला है।

वाराणसी, प्रयाग

१०-४-१४

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा

## संकेताक्षरों का विवरण

---

अ०	=	अव्यय
अप०	=	अपभ्रंश
उप०	=	उपसर्ग
क्रि०	=	क्रिया
क्रि० वि०	=	क्रिया विशेषण
गु०	=	गुणवाचक
गुज०	=	गुजराती भाषा
तत्०	=	तत्सम
तद्०	=	तद्भव
देश०	=	देश विशेष में प्रचलित शब्द
पु०	=	पुलिङ्ग
प्र०	=	प्रत्यय
प्रा०	=	प्राकृत
मुहा०	=	मुहाविरा
लो० इ०	=	लोकौक्ति (कहावत)
वा०	=	वाग्धारा या Idiom
वि०	=	विशेषण
सर्व	=	सर्वनाम
स्त्री०	=	स्त्रीलिङ्ग
सं० अ०	=	संयोजक अव्यय

---

# हिन्दी शब्दार्थ-पारिजात

००

अ

अ

अंश

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है। कण्ठस्थान से उच्चारित होने के कारण यह कण्ठ्य कहा जाता है। व्यंजनों का उच्चारण इसकी सहायता के बिना, स्वतन्त्र रीत्या हो नहीं सकता, इसीसे वर्णमाला में क ख ग यदि वर्ण अ संयुक्त लिखे तथा बोले जाते हैं। जिस शब्द के पूर्व यह अक्षर जोड़ा जाता है, वह शब्द विपरीत अर्थवाचक हो जाता है। यथा अनाचार, अर्थात् आचार रहित, अकर्मण्य अर्थात् जो कर्म के युक्त न हो। स्वारादि शब्द के पूर्व अ होने से अन् हो जाता है। यथा अनधिकार अर्थात् अधिकार का अभाव।

अ (पुं) विष्णु, निषेध, अल्प, अभाव, अनुकम्पा, सादर्य (यथा अमाहाण), भेद (यथा अपद), अप्राशस्त्य (यथा अकाल), अक्षता (यथा अनुदार) गणित में अ. १ संख्यावाची है।

अउ दे० (सं० अ०) और, तथा।

अवधू दे० (श्रीपद) (पुं) भारत वर्ष का एक वपासक पंथ। इसके प्रवर्तक ब्रह्मगिरि थे।

अउर दे० (सं० अ०) और, तथा।

अऊत तद्० } (पुं) [अ=नहीं, ऊत=पुत्र]  
अपुत्र तद्० } पुत्र हीन; जिसके सन्तान न हो,  
निर्वंश, भारा, मूर्ख, जाहिल।

अऊलना (क्रि०) जलना, गरमी पड़ना, चुभना, छिपना, छिलना।

अऊण (वि०) अण्यमुक्त जो कर्जदार न हो।

अऊणिन्—(सं०) [न अण्य + इन्] अण्यमुक्त जो किसी का देनदार न हो।

अंश तत्० (पुं) भाग, घाट, पृथक्, स्कन्ध, दिन, भूपरिधि का ३६० वाँ भाग, पितृघन का भाग।—  
क तत्० [अंश + क] (पुं) घाटनेवाला, साक्षी, भाग, दिन —श तत्० (पुं) [अंश + अंश] भाग का भाग।—ी तत्० [अंश + ई] (पुं) बटाक, घाटने वाला, बटवैया, भागी।—ल (पुं) चाणक्य मुनि।—सुता (स्त्री०) यमुना।

अंशु तत्० (पुं) [अंश + उ] किरन, रश्मि, तेज, मयूख, आभा, दीप्ति, ज्योति।—जाल तत्० (पुं) [अंशु + जाल] रश्मि समुदाय।—धर तत्० (पुं) [अंशु + धर] रश्मिधारी अर्थात् सूर्य, अग्नि चन्द्रमा, दीप, देवता, मन्त्रा, प्रतापी।—मान तत्० (पुं) [अंशु + मान] सूर्य, चन्द्रमा। एक राजा का नाम। अंशुमान सूर्यवंश में एक राजा हो गये हैं। वे राजा सगर के पौत्र और राजा असमन्वजस के पुत्र थे। जब राजा सगर के साठ हजार पुत्र यज्ञीय अश्व को खोजते हुए पाताल में जा महर्षि कपिल के क्रोध से भस्म हो गये, तब राजा सगर ने अपने पुत्रों के आने में विलम्ब देख अपने पौत्र अंशुमान को भेजा। ये जाकर मुनि को सन्तुष्ट कर यज्ञीय अश्व ले आये और पितामह का यज्ञ पूरा कराया। साथ ही अपने पितृव्यों के उद्धार का उपाय भी गरुड़ जी से अवगत किया [हरिवंश-वनपर्व देखो]।—मात्नी तत्० (पुं) [अंशु + मात्नी] जो अंशुओं की माला धारण किये हुए हैं, अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप आदि।



अंशुक तद् ( पु० ) [ अंशु + क ] वस्त्र, रेशमी वस्त्र,  
टसर, रश्मि समुदाय ।  
अंशल तद् ( पु० ) बाँटनेवाला, भाग करने वाला ।  
अंसल तद् ( वि० ) बलवान ।  
अंह ( पु० ) पाप, वाधा, विघ्न ।  
अंहति या अंहती तत् ( स्त्री० ) [ अंह + ति ] दान,  
त्याग, पीड़ा ।  
अंहस तत् ( पु० ) [ अंह + अस ] पाप, स्वधर्म त्याग,  
अपराध, पातक, दुष्कृत, कर्मप, अध ।  
अंहुडी ( स्त्री० ) एक प्रकार की लता, धाकड़ा ।  
अक तत् ( पु० ) पाप, दुःख ।  
अकउष्मा तद् ( पु० ) अर्क, मदार, अकवन ।  
अकच तत् ( वि० ) बिना बालों का, ( पु० ) केतुग्रह ।  
अकच्छ तद् ( पु० ) [ अ + कच्छ ] नका, मेहरा, घुमि-  
चारी, लम्पट । जैन सम्प्रदाय के साधु, विशेषतः  
ये निर्ग्रन्थ मो. कहे जाते हैं ।  
अकड़ तद् ( स्त्री० ) टेढ़ापन, फुलाहट, पैँठ, बाँकापन,  
शेखी, नटखटी, जैसे —  
“घड़ी भर में सब अकड़ निकाल दूँगा ।”  
—वाज़ दे ( पु० ) अकड़त, छैबा, बाँका, छैल,  
चिकनियाँ—वाज़ ( वि० ) अभिमानी, घमंड़ी ।—  
मकड़ दे ( स्त्री० ) पैँठ कर चलने की  
चाल, घमण्ड, अभिमान ।—ना ( कि० )  
( आकुक्षुन ) पैँठना, टेढ़ा होना, दुखना, पीड़ा  
करना, कड़ा पकड़ना ।—त दे ( पु० ) बाँका,  
छैबा, अभिमानी ।—वाई दे ( स्त्री० ) अंगप्रह,  
धातुरोग । नशों का जकड़ना ।  
अकड़ा ( पु० ) रोग विशेष ।—अ ( पु० ) खिचाव, तनाव,  
पैँठन ।  
अकण्टक तत् ( पु० ) [ अ + कण्टक ] काँटा रहित,  
अविरोधी, शत्रुहीन, निरुपाधि, चैन से ।  
अकत ( वि० ) पूर्ण, सम्पूजा, सारा ।  
अकथ तत् ( पु० ) [ अ + कथ ] न कहने योग्य,  
कहने की शक्ति के बाहिर ।—नीय या  
अकथ्य तत् ( पु० ) जो कहने योग्य न हो ।  
—यितव्य तत् ( पु० ) अवकथ्य ।—१ तत्  
( स्त्री० ) कुकथा, मन्दकथा, अपभाषा ।

अकृद्—( पु० ) प्रतिज्ञा वचन, वादा ।—वंदी ( स्त्री० )  
इकरार नामा, प्रतिज्ञापत्र ।  
अकनी तद् ( वि० ) ( आकर्षण का अप० ) सुनकर ।  
अकम्पन तद् ( पु० ) ( अ + कम्पन ), हड़, कठोर,  
मजबूत । अकम्पन रावण के एक सेनापति का  
नाम भी था । हनुमान ने उसे मारा था । यह  
रावण का मामा सुमाली का बेटा था और  
इसकी माता का नाम केतुमालिनी था । रावण  
की माता कैकसी इसकी बहिन थी । इसकी  
दूसरी बहिन का नाम कुम्भीनती था ।  
अकपट तत् ( पु० ) [ अ + कपट ] कपटहीन, सरल,  
सीधा, छुलारहित ।—ता तद् ( स्त्री० ) बदरता,  
सरलता ।  
अकवक दे ( पु० ) अनापशानाप वकवक, मलाप ।  
अकवाल ( पु० ) प्रताप ।  
अकरन तद् ( पु० ) [ अ + करन ] निष्कारण, हेतु-  
शून्य, कारण रहित, न करने योग्य ।  
अकरणीय तत् ( वि० ) न करने योग्य ।  
अकरा तद् ( अनर्थ तत् ( पु० ) मंहगा, बहुमूल्य,  
बढ़िया ।  
अकरास दे ( पु० ) अंगड़ाई, देह हटाना ।  
अकरण तत् ( पु० ) [ अ + कर्ण ] कर्ण रहित,  
निर्दय, निष्ठुर ।  
अकर्ण तत् ( पु० ) [ अ + कर्ण ] कर्ण रहित, बहरा,  
बूबा । ( पु० ) सप ।  
अकर्णी तद् ( पु० ) असह्य, अनुचित, अकर्तव्य ।  
अकर्म तत् ( पु० ) [ अ + कर्म ] कुकर्म, अपराध, पाप,  
बुरा काम, अधर्म, बुराई ।—१ तत् ( पु० )  
कामहीन बेकार बैठा ।—२ तत् ( पु० ) निगोड़ा  
चण्डाल, अपराधी ।  
अकर्मक तत् ( पु० ) [ अ + कर्मक ] वह क्रिया  
जिसमें कर्म न हो, जैसे—“आना, रहना,”  
कर्म रहित ।  
अकर्मण्य तत् ( पु० ) आलसी, कार्याश्रम, काम करने  
के अयोग्य ।  
अकल तत् ( पु० ) [ अ + कल ] अज्ञहीन, अवयव-  
रहित, निराकार, परमात्मा । सिख सम्प्रदाय के  
परमात्मा का नाम ।

अकल्पन तत् (गु०) [अ+कल्पन] सचाहट, प्रकृत,  
सत्य, यथार्थ, वास्तविक ।  
अकल्पित तत् (गु०) सचा, कल्पना-रहित ।  
अकल्याण तत् (गु०) [अ+कल्याण] अमङ्गल,  
अशकुन, अशुभ, मन्द, घुरा ।  
अकवार तद् (पु०) कुच, काँल, गोदी, दोनों हाथों  
के बीच का स्थान ।  
अकस दे० (पु०) चैर, द्वेप ।  
अकसर तद् (गु०) अकेला, एकाकी, बहुधा ( यह  
अकसर का अपभ्रंश है ) ।  
अकसीर दे० ( स्त्री० ) रसाइन, कीमिया ( वि० )  
अप्यर्थ, अत्यन्त गुणकारी ।  
अकस्मात् तत् ( अ० ) हठात्, भलात्, दैवात्,  
अचानक, अचानक, सहसा ।  
अकह तद् ( वि० ) न कहने योग्य, अवर्णनीय ।  
अकहुवा दे० ( वि० ) अकथनीय ।  
अका तद् ( गु० ) निर्बोध, जड़, मूढ़, पागल ।  
अकाण्ड तत् ( गु० ) अकस्मात्, हठात् ।—तोण्डव  
तत् ( पु० ) व्यर्थ की बँडल कूद ।—पात् तत्  
( वि० ) होते ही मर जाने वाला ।  
अकाज तद् ( पु० ) बिगाड़, हिंसा, व्यर्थ ।—नी ( वि० )  
बाधक, कार्य बिगाड़ने वाला ।  
अकाट्य तत् ( वि० ) न काटने योग्य, असहनीय ।  
अकाम तत् ( गु० ) अकाथ, व्यर्थ, निष्फल ।—निर्जरा  
( स्त्री० ) जैनियों के मतानुसार कर्मनाश का भेद  
विशेष ।  
अकार तद् ( पु० ) स्वरूप, आकृति, सूरत, “अ”  
अक्षर ।  
अकारज तद् ( पु० ) हानि, नुकसान, अकार्य, घुरा काम ।  
अकारण तत् ( अ० ) कारण रहित, अनर्थक, व्यर्थ ।  
अकारण दे० ( वि० ) व्यर्थ, निष्फल ।  
अकारन दे० ( वि० ) अकारण ।  
अकाल तत् ( पु० ) दुर्भिक्ष, असमय ।—कुसुम ( पु० )  
अनश्वर का फूल ।—पुरुष तत् ( पु० ) सिखों  
के ग्रन्थों में ईश्वर का नाम है ।—पुण्य तत्  
( पु० ) अनश्वर का फूल ।—जलद् तत् ( पु० )  
असमय के मेघ ।—मृत्यु तत् ( संस्कृत में यह

ईछिन्न है, पर हिन्दी में यह खीछिन्न है ) कुसमय  
की मृत्यु, अपक मृत्यु ।—वृष्टि तत् ( स्त्री० ) कुसमय  
की वर्षा । [ मौका  
अकालिक तत् ( वि० ) बिना समय का, असामयिक, बे  
अकाली तद् ( पु० ) सिख विशेष ।  
अकाव दे० ( पु० ) आक, मदार ।  
अकास तद् ( पु० ) आकाश, शून्य, आसमान, गगन,  
नभ, पोल, अन्तरिक्ष ।—दिया ( पु० ) यह दीपक  
जो कार्तिक मास में वरुणी में बांध कर ऊपर  
लटकाया जाता है ।—वानी दे० ( स्त्री० ) आकाश-  
वाणी, देववाणी ।  
अकिञ्चन तत् ( गु० ) दरिद्र, कङ्काल, दीन, दुखी ।  
—ता, —त तत् ( स्त्री० ) दरिद्रता ।—कर  
तत् ( वि० ) गुच्छ, असमर्थ ।  
अकिंज दे० ( स्त्री० ) अक्र, बुद्धि ।  
अकीरति तद् ( स्त्री० ) अकीरति, अपकीरति, अयरा,  
अकीरति तत् ( अ० ) अमतिष्ठा, दुर्नाम, कलङ्क ।—कर  
तत् ( गु० ) दुर्नाम करने वाला, अयशस्कर ।  
अकुराट } तत् ( वि० ) तीक्ष्ण, चोला ।  
अकुराट्य }  
अकुताना दे० ( कि० ) ऊदना, घबड़ाना ।  
अकुताही दे० ( कि० ) ऊँ, घबड़ाव ।  
अकुतोभय तद् ( गु० ) निडर, निःशङ्क, निर्भय,  
साहसी ।  
अकुल तत् ( गु० ) [ अ + कुल ] कुलरहित, गीच,  
निगोड़ा ।  
अकुलाना दे० ( कि० ) व्याकुल होना, घबड़ाना ।  
अकुलीन तत् ( गु० ) कुलहीन, सङ्गर, कुनाति ।  
अकुशल तत् ( गु० ) अमङ्गल, अशुभ, घुरा ।  
अकूत दे० ( वि० ) जो कूता न जा सके ।  
अकूपार तत् ( पु० ) समुद्र, सागर, कछुआ, पत्थर,  
चटान ।  
अकृतज्ञ तत् ( वि० ) कृतज्ञ, किये हुए उपकार को न  
मानने वाला ।  
अकृत्रिम तत् ( वि० ) यैवनावटी, प्राकृतिक ।  
अकेल } तद् ( वि० ) इकला, एक ही, दुःखी ।  
अकेला }  
अकीर तद् ( स्त्री० ) घूस, मुहमरी, तोफा ।

अक्रोसना दे० (कि०) बुरा भला कहना, गालियाँ देना, शाप देना ।

अक्रौवा, अक्रौआ दे० (पु०) मदार, अर्क ।

अर्क तत्त्वं (पु०) मदार, अकवन अकउथा ।

अकखड़ दे० (वि०) बण्ड, बजड़ ।

अकखर दे० (पु०) अचर ।

अकखोमखो दे० (पु०) दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर घालक के मुँह पर फेरना । [ स्वभाव ।

अक्रूर तत्त्वं (पु०) दयालु, सरल, अक्रौधी, कोसल श्रीकृष्ण के चाचा थे । ये रवफल्क के पुत्र थे । माता का नाम गान्धिनी था । इनकी ही सम्मति से सायमामा के पिता शतघन्वा ने सम्राजित को मार कर उसकी श्वमन्तकमणि ले ली थी । जब कृष्ण ने उसे डराया, तब वह श्वमन्तकमणि अक्रूर को दे कर भागा, किन्तु पकड़ कर मार डाला गया ।

अक्रत तत्त्वं (पु०) भीगा, गीला, बिपा, सींचा हुआ ।

अक्ष तत्त्वं (पु०) पहिया, धुरी या कील, चौसर का पाँसा, गाड़ी का जुआ, गाड़ी, रथ, आँख, रुद्राक्ष, सोने की तोल का एक घाट विशेष, आत्मा, ज्ञान, मण्डल, सर्प । वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतर होती हुई उसके चार पार गई है और जिस पर पृथ्वी घूमती जान पड़ती है ।—कुमार तत्त्वं (पु०) देखो अक्षयकुमार ।—कूट तत्त्वं (पु०) आँख की पुतली ।—क्रीड़ा तत्त्वं (पु०) पैसे का खेल ।—पाद तत्त्वं (पु०) एक विषयात् हिन्दू दार्शनिक श्रुति । इनका दूसरा नाम गौतम है । इन्होंने न्यायदर्शन प्रणयन किया है । इसीसे न्याय का दूसरा नाम अचपाद दर्शन भी है । इनका होना ख्रीष्टान्द से ६०० वर्ष पूर्व से २०० वर्ष पूर्व के भीतर माना जाता है । इनके बनाये दर्शन में १२२ सूत्र हैं । इन्होंने न्याय में ईश्वर और परलोक को माना है । दुःख से अत्यन्त निवृत्ति को यह मुक्ति मानते हैं । न्याय का दूसरा नाम आन्वीचिकी विद्या भी है, जिसका अर्थ है सुन कर अन्वेषण करना ।

अक्षत तत्त्वं } [ अ + क्षत ] (पु०) बिना टूटे चाँदल  
अक्षत तत्त्वं } जो पूजा के काम में आते हैं । (पु०)  
बिना टूटा, साजा ।—योनि तत्त्वं (स्त्री०) वह स्त्री जिसे पति-सम्बन्ध न हुआ हो ।

अक्षत तत्त्वं (गु०) [ अ + क्षम ] क्षमता रहित, अशक्त ।

अक्षय तत्त्वं [ अ + क्षय ] (गु०) अविनाशी, जिसका कमी नाश न हो, अमर, चिरजीवी, स्थिर ।—कुमार तत्त्वं (पु०) राघव के उस पुत्र का नाम जो हनुमान द्वारा मारा गया । यह मन्दाद्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । इसको लोग अक्षयकुमार भी कहते हैं ।—तृतीया तत्त्वं (स्त्री०) आलासीज, वैशाख शुक्ला ३ ।—नवमी तत्त्वं (स्त्री०) कार्तिक शुक्ला ३ ।—चट तत्त्वं (पु०) बरगढ़ का पूज्य वृक्ष, इसको अक्षयवट भी कहते हैं । यह प्रयागराज के किनारे में वर्तमान था ।

अक्षर तत्त्वं [ प्रा० अक्षर ] (पु०) अक्षरादि वर्ण, विष्णु, ब्रह्मा, ब्रह्म, शिव, मोक्ष, गगन, धर्म तपस्या, अपामार्ग (चिचैरी) जल । (गु०) नाश-रहित, निर्विकार, सत्य ।—माला तत्त्वं (स्त्री०) वर्णमाला, अक्षर श्रेणी ।—विन्यास तत्त्वं (पु०) लेख, लिपि ।—शः तत्त्वं (कि० वि०) अक्षर २ ।

अक्षरौटी दे० (स्त्री०) बरतनी, वर्णमाला, स्वर का मेल ।

अक्षवार तत्त्वं (पु०) जुआखाना ।

अक्षांश तत्त्वं (पु०) [ अक्ष + अंश ] कल्पित भूगोल की ऊपर की रेखा विशेष, पृथ्वी की धुरी पृथ्वी के उत्तर वा दक्षिण केन्द्र तक ९० (नब्बे अंश) पर के रेखा (Latitude) ।

अक्षि तत्त्वं (पु०) } आँख, नेत्र, नयन ।—गत तत्त्वं  
अक्षि तत्त्वं (स्त्री०) } (वि०) आँख पर चढ़ा हुआ (शत्रु) ।—विभ्रम तत्त्वं (कि०) आँख धुमाना ।  
—विक्षेप तत्त्वं (पु०) कटाक्षपात ।

अक्षुण्ण तत्त्वं (गु०) अपूर्णित, मनस्ताप-रहित ।  
अक्षुत, समस्त, अविच्छिन्न ।

अक्षौहिणी तत्त्वं (स्त्री०) एक बड़ी सेना जिसमें २१२०० रथ, २१२०० हाथी, ६२६१० घोड़े और १०६६२० पैदल होते हैं ।

अक्स (पु०) परछाई, छाया ।

अभखड तद् (गुं) गँवार, जहली, अशासित, अन-  
सिखा, अनगढ़, असाढ़ा ।

अभखड तद् (गुं) सम्पूर्ण, समस्त, सब, खपड-

रहित ।—नीय तद् (गुं) जो खण्डन न हो सके ।

अभखण्डित तद् (गुं) जिसके टुकड़े न हो सकें ।

अभखतीज दे० (छी०) अद्य तृतीया ।

अभखरना तद् (छी०) अनुचित मालूम होना ।

अभखरोट तद् (पुं) वृक्ष पत्र फल विशेष ।

अभखाड़ा तद् (पुं) मलयुद्ध स्थान, आक्रमण, साधु या  
गुसाइयों का दल । रामायण में अखारा का  
प्रयोग अभखाड़े के स्थान में हुआ है ।

अभखाद्य तद् (गुं) खाने के अयोग्य, असह्य ।

अभखानी—(छी०) पक्षी, एक प्रकार की टेढ़ी लकड़ी ।

अभखिल तद् (गुं) समस्त, सारा, सब ।

अभखीर दे० (पुं) अन्त, समाप्ति, छोर ।

अभखुट दे० (गुं) अखण्ड, जो न कटे । [ शिकारी ।

अभखेट दे० (पुं) आखेट, शिकार ।—क दे० (पुं)

अभखोह तद् (पुं) उमड़ खावड़ भूमि, ऊँची नीची ज़मीन ।

अभख्याति तद् (छी०) अकीर्ति, अपश, दुर्नाम ।

अभख्यायिका दे० (छी०) आख्यायिका ।

अभग तद् (पुं) अचल, पर्वत, वृक्ष आदि ।

अभगडधस्ता दे० (वि०) लम्बा तट्टा, ऊँचा ।

अभगडवगड तद् (गुं) पचमेल, घालमेल, असेलन  
वाक्य । [ अभगिनती ।

अभगणित तद् (गुं) बहुत, असंख्यात, अपार,

अभगण्य तद् (गुं) गिनने योग्य नहीं, असाह, गुच्छ ।

अभगति तद् (छी०) नरक, अकालमृत्यु, (गुं) गति-

हीन, आश्रयहीन ।—क-गति तद् (छी०)

अतन्त्र उपाय होकर स्वीकार करना ।

अभगत्या तद् (क्रि० वि०) आगे से, भविष्य, अक-  
स्मात्, विवश हो । [ सुस्थ ।

अभगद् तद् (पुं) दवाई (गुं) निरोग, अरोग्य,

अभगन् (छी०) या अभगनेत तद् (पुं) अश्रिणकोण ।

अभगम तद् (गुं) अभगम्य, दुर्गम, अपहुँच, अचिह्न,

विश्व, गहरा, अघाह । [ (पुं) नेता, अग्रग्राह ।

अभगमानी दे० (छी०) अभगानी, आगे जाकर स्वागत,

अभगम्य तद् (वि०) न जाने योग्य, अनघट, गहन,

कठिन ।—तद् (छी०) न गमन करने योग्य ।

अभगर तद् (पुं) सुगन्धित काष्ठ विशेष ।—वस्ती  
(छी०) धूपवस्ती ।—वाला दे० (पुं) वैश्य वर्ण के

अन्तर्गत एक शाखा, जो अपने को अग्रोहा ग्राम  
(यह दिल्ली के पश्चिम की ओर है) के रहने

वाले होने के कारण अभगवाल कहते हैं ।

अभगरई तद् (वि०) सावधान ब्रिये संदली रक्ष ।

अभगलवगल दे० (क्रि० वि०) इधर उधर, दोनों ओर,

आसपास ।

अभगला तद् (गुं) पहला, पूर्व, प्रधान ।

अभगवा तद् (पुं) दूत, अभगानी ।—ई (छी०)

अभगानी, अभ्यर्थना ।

अभगवाड़ा तद् (पुं) आगा, अग्र भाग ।

अभगवानी दे० (छी०) देखो अभगमानी ।

अभगवार दे० (पुं) अन्न का वह भाग जो हलवाहे  
आदि खेती का काम करने वालों को दिया

जाता है ।

अभगवाही तद् (छी०) अभिदाह ।

अभगस्ति तद् (पुं) वृक्ष विशेष, तारा । यह तारा

अभगस्य तद् (भाद्र मास के अन्त में उदय होता है ।

१ अभगस्य तारा के उदय होते ही जल निर्मल  
हो जाता है । इसके उदय होने पर ही राजागण

विजय यात्रा करते थे और पितृतर्पण आदि

आरम्भ किया जाता है । २ अभगस्य एक ऋषि का

नाम है जो मित्रावरुण के पुत्र थे । इनका पहला

नाम मान है । पीछे से विन्ध्य पर्वत का गर्व

खुद करने के कारण इनका नाम अभगस्य पड़ा ।

इनका दूसरा नाम कुम्भज भी है । इनका नामो-

क्लेश वेद में भी पाया जाता है और इनके नाम

की अभगस्तसंहिता भी प्रचलित है ।—कूट तद्

(पुं) दक्षिण के एक पर्वत का नाम जिससे ताग्र-

पर्वी नदी निकली है ।

अभगहण या अभगहन तद् (पुं) मार्गरीप मास ।

अभगहण्य तद् (यह मास बड़ा पवित्र

माना गया है । हिन्दुओं का यह नवौं मास है ।

प्रायः लोग इसे मगसिर भी कहते हैं ।

अभगहनिया, या अभगहनी (वि०) अभगहन में होने

वाला अन्न । [ की ओर, सामने ।

अभगहुड तद् (गुं) पहिले पहल, अभगला, आगे

अगाऊ तद् (गु०) अगाड़ी, आगे, पहले ।  
 अगाड़ी तद् (क्रि० वि०) आगे, सामने । (खी०)  
 घोड़े के बांधने की आगे की रस्सी ।—मारना  
 मोहरा मारना, बैरी की अगली सेना को हटाना ।  
 अगाध तद् (गु०) अथाह, जिसकी थाह न मिले,  
 बहुत गहरा ।  
 अगासी तद् (खी०) पगड़ी, वरान्दा ।  
 अगिनि तद् } (गु०) आग, आँच, बन्धि  
 अग्नि तद् }  
 अगुण तद् (गु०) निगुण, जिसमें गुण न हो,  
 गुणहीन ।  
 अगुवा तद् (गु०) एक पक्षी या कीड़ा विशेष, देवता  
 विशेष, मार्ग दिखाने वाला । [ हिमालय ।  
 अगेन्द्र तद् (गु०) पहाड़ों का राजा, सुमेरु,  
 अगेचर तद् (गु०) इन्द्रियों की गति के अदृश्य ।  
 अगेरना तद् (क्रि०) रखना, चौकी देना ।  
 अगेरा तद् (गु०) देखने वाला, रखवाला ।  
 अगेनी तद् (खी०) भेंट के लिये आगे जाना ।  
 अग्नि तद् (गु०) आग, बन्धि, चित्रक, वृक्ष ।—देव  
 तद् (गु०) वैदिक देवता, अग्निकोष्ठाधिपति ।  
 —कोण तद् (गु०) पूर्व-दक्षिण का कोना ।—  
 संस्कार या क्रिया तद् (खी०) मुर्दा जलाना ।  
 —कुण्ड तद् (गु०) अग्नि जलाने के लिये गड़ा ।  
 —कुमार तद् (गु०) बुधायर्द्धक औषध विशेष ।  
 —कौड़ा तद् (खी०) आतिशबाज़ी ।—होत्री  
 तद् (गु०) जो अग्नि में निलय नियमित रूप से  
 हवन करता हो ।—ज्याला—तद् (खी०) अग्नि-  
 शिखा, अग्निके का पेड़ ।—परीक्षा तद् (खी०)  
 अग्नि के हाथ पर रख कर कूट सच की परीक्षा  
 लेना । यह विमान साधियों से शपथ लेने का  
 स्मृतियों में निरूपण किया गया है ।—पुराण  
 तद् (गु०) अठारह पुराणों में से एक ।—वाण  
 तद् (गु०) अग्न्यास्त्र अर्थात् जिसे चलाने से  
 आग बरसे ।—मान्य तद् (गु०) अजीर्ण, भूख  
 न लगना या भूख की कमी ।—यन्त्र तद् (गु०)  
 यन्त्र, तोप, वमन ।—ष्टोम तद् (गु०) यज्ञ  
 विशेष, अग्नि-सम्बन्धी वेदोक्त, अग्निलक्ष्म ।—  
 ध्यात् तद् (गु०) पितृ विशेष मारीच पुत्र,

देवताओं के पूर्वज ।—अग्न्याधान तद् (गु०)  
 श्रुति विहित अग्निसंस्कार, अग्निरक्षण, अग्निहोत्र ।  
 —उत्पात तद् (गु०) आग लगना, आकाश  
 से अग्नि बरसना, धूमकेतु दर्शन, बलकापात ।  
 अग्यारी दे० (खी०) अग्नि से धूप देना ।  
 अग्र तद् (गु०) आगे, पहले, किसी काम का  
 मुखिया, अगुवा, आदि, प्रथम, मुख्य, ऊपर  
 का भाग, शिर, शिखर, एक राजा का नाम ।  
 (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, अधिक ।—गर्भ  
 तद् (वि०) नेता अगुवा, प्रधान ।—गामी  
 तद् (गु०) आगे चलने वाला, अगुवा, बत्साही ।  
 —सर तद् (गु०) अगुवा, सन्देशी, दूत ।—ज  
 तद् (गु०) जेष्ठ, बड़ा भाई ।—जन्मा तद्  
 (गु०) ब्राह्मण, पुरोहित, जेठा भाई, देवताओं  
 में सर्व प्रथम उत्पन्न अर्थात् ब्रह्मा ।—पश्चात्  
 तद् (अ०) आगे पीछे, आगा पीछा ।—शी  
 तद् (गु०) आगे चलने वाला, समाज का  
 मुखिया, अगुवा, ।—भाग तद् (गु०) पहला  
 भाग, पहला हिस्सा ।  
 अग्रहण तद् (गु०) अग्रहण मास [देखो अग्रहण] ।  
 अग्रहार तद् (गु०) देवत्व, ब्रह्मत्व, देवताओं को अर्पित  
 सम्पत्ति, धान्यपूर्ण खेत ।  
 अग्राहा तद् (गु०) ग्रहण करने योग्य नहीं, तुच्छ,  
 निस्सार, शिवनिर्माद्य ।  
 अग्रिम तद् (वि०) अगाऊ, पेशगी ।  
 अग्र तद् (गु०) पाप, अधर्म, अपराध, दोष ।—  
 असुर-अघासुर तद् (गु०) कंस के सेनापति  
 का नाम है, वक्रासुर इसका उपेष्ट भाई था, और  
 पूतना इसकी जेठी बहिन थी, भगवान् श्रीकृष्ण-  
 चन्द्र जी को मारने के लिये इसी का कंस ने  
 वृन्दावन में भेजा था ।—नाशक तद् (गु०)  
 पाप दूर करने वाले प्रयोग, मन्त्र जप करना  
 आदि । [ अधर्मा ।  
 अघखानि तद् (गु०) पापों का समुदाय, पापी,  
 अघदित तद् (गु०) घटना-रहित, असम्भव, अन-  
 होनी, अयोग्य ।  
 अधमर्षण तद् (गु०) सब पापों का नाशक, पाप

हटाने वाले वैदिक मन्त्र, एक प्रयोग जो सन्धो-  
पासन में किया जाता है।

अघाई तद् (स्त्री०) छकाई, अफराई, पेटभराव, वृत्ति।  
अघाना तद् (क्रि०) पेट भरना, अफराना, वृत्त होना,  
छकना, भरपूर होना।

अघोर तद् (पुं०) महादेव का दूसरा नाम, सत्य से  
भयङ्कर, उपासना विशेष।—पन्थ (पुं०) शैव  
सम्प्रदाय की एक शाखा का नाम है। इस सम्प्रदाय  
के लोग अपने को अघोरी या अघोर-पन्थी कहते  
हैं। ये बहुत ही मलीन होते हैं, घृणा का ये  
नाम तक नहीं जानते हैं, इनके लिये कोई भी  
पदार्थ अभक्ष्य है ही नहीं। सर्वतोभाव से घृणा  
को जीत लेना ही इनके धर्म का मूल है।

अघोरी तत् (पुं०) अघोर-पन्थी।

अङ्क तत् (पुं०) आँक, चिन्ह, संकेत, दाग, रेखा,  
संख्या, लेख, अक्षर, लिखावट। यथा "मेटत  
कठिन कु-अङ्क भाळ के।"—तुलसी। एक से नौ  
तक की संख्या। नाटक का एक परिच्छेद, अंश।  
अङ्क, देह, वार, वृक्षा, स्थान, अपराध, पर्वत, पाप,  
दुःख, पेश, समीप,।—मुँहा दे० (क्रि०) देना वा  
लगाना, गले लगाना।—गणित तद् (पुं०)  
(पुं०) संख्याओं का हिसाब।—विद्या तत् (स्त्री०)  
अङ्कगणित।

अङ्कना तत् (क्रि०) लिखना, छापना, संकेत करना,  
चिन्ह करना, मोक्ष भाव करना।

अङ्कई तद् (स्त्री०) अँक, कूत, अटकल।

अङ्कवार तद् (पुं०) काँख, कोख, गोदी।

अङ्काना तद् (क्रि०) परखना, जाँचना, मोल ठहराना।

अङ्कास तद् (पुं०) निरख, भाव, मोल, ठहराना।

अङ्कित तत् (पुं०) चिन्ह किया हुआ, मुद्रित,  
चिह्नित, परखा हुआ, जाँच किया हुआ, छपा  
हुआ।

अङ्कुर तत् (पुं०) अंकुर, फुनगी, नया उगा हुआ वृक्ष  
आदि, बीज से उत्पन्न कौवल, गाँधी।

अङ्कुरित तत् (पुं०) अङ्कुरयुक्त, जिसमें अङ्कुर उत्पन्न  
हुए हों,।—यौवन तत् (पुं०) यौवन का आरम्भ,  
युवा अवस्था की पहली दशा।

अङ्कुश तत् (पुं०) आँकड़ी, लोहे का एक हथियार  
जिससे हाथी चलाये जाते हैं। मुड़ा हुआ कांटा।

—अङ्क तत् (पुं०) आँकुश की पकड़, महावत,  
हस्तिपक, हाथी चलाने वाला।—धारी तत् (पुं०)  
हस्तिपक, पीलवान। [लेना।

अङ्कोरना तद् (क्रि०) भूँजना, गाम करना, घुँस  
अङ्किया तद् (स्त्री०) लोहे की कुलम जिससे बरतन  
पर हथोड़ी के सहारे नकाशी की जाती है, आँख।

अङ्कुवा तद् (पुं०) अँकुर या बीज से फूट कर  
निकली हुई नोक जिसमें से प्रथम पत्ते निकलते हैं।

अङ्ग तत् (पुं०) शरीर का एक हिस्सा, अवयव,  
शरीर, मित्र का सम्बोधन, शास्त्र विशेष, वेदाङ्ग,  
जैन शास्त्र विशेष। बलि राजा का चेतन पुत्र।

[इस राजा के शासित देश का भी नाम अङ्ग देश  
है। जन्मान्ध महर्षि दीर्घसमा से बलि राजा की  
पत्नी सुरेष्णा के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी।]

गङ्गा और सरयू के सङ्गम के मध्य देश को अङ्ग  
देश कहते हैं।—जन्मा तत् (पुं०) सन्तान,  
केश, काम, पीड़ा, मद, मोह।—राज तत् (पुं०)

कर्ण का नाम है। राजा दुर्वोधन ने अर्जुन  
की प्रतिवोगिता करने के लिये कर्ण को अङ्ग  
देश का अधिपति बनाया था। कर्ण का पहला  
नाम बहुपैय या।—अङ्ग तत् (पुं०) अङ्कड़ाई,  
बात रोग।

अङ्गङ्खङ्ग दे० (वि०) बचाखुचा, गिरा पड़ा, ह्वर  
वधर का टूटा फूटा।

अङ्गड़ाई तद् (स्त्री०) जम्हाई, शरीर मरोड़ना।

अङ्गद तत् (पुं०) केहुँटा, बाजूबन्द, कपिराज बालि  
का पुत्र।

अङ्गन तद् (पुं०) आँगनाई, आँगन, चौक, मकान के  
बीच की भूमि।

अङ्गना तत् (स्त्री०) सुन्दरी, कामिनी; स्त्री, लुगाई।  
दे० (पुं०) आँगन, सहन।

अङ्गन्यास तत् (पुं०) वैदिक या तान्त्रिक उपासनाओं  
में मंत्रों के द्वारा अङ्गस्पर्श करना। [कपड़ा।

अङ्गराखा तद् (पुं०) पदिनने का सिला हुआ लंबा  
अङ्गराग तत् (पुं०) शरीर को सुन्दर और

घनाने वाला लेप, चन्दन लगाना, सुगन्धित पदार्थों से शरीर पर घेल कूटे निकालना ।

अङ्गुरी तत्त्वं (स्त्री०) युद्ध के समय पहना जाने वाला परिच्छद, कवच, चूल्हा ।

अङ्गुरा दे० (पु०) अंगरखा अंगरखी ।

अङ्गुराकडी दे० (स्त्री०) कोयलों पर सेकी हुई छोटी मोटी रोटी, चाटी, मफूकी ।

अङ्गुरा तत्त्वं (पु०) जलता हुआ कोयला ।—क तत्त्वं (पु०) मंगल ग्रह ।—मणि तत्त्वं (पु०) मूंगा ।—मती तत्त्वं (स्त्री०) कर्ण की स्त्री ।

अङ्गुरा तत्त्वं (पु०) कोयला, जली लकड़ी ।

अङ्गुरी तत्त्वं (स्त्री०) अंगीठी, गोरसी या बरोली, माग रखने का यंत्र, दहकते हुए कोयले का छोटा टुकड़ा ।

अङ्गुरिया तत्त्वं (स्त्री०) चोली, कांचुली, फंचुली, तीसरा कपड़ा, शिग्रुओं के पहिरने का कुरता ।

अङ्गुरिस् तत्त्वं (पु०) एक प्राचीन ऋषि, दस प्रजापतियों में से एक, अथर्ववेद के प्रादुर्भाव-कर्ता होने से वह अथर्वा भी कहे जाते हैं । बृहस्पति का नाम, छठवा संवत्सर का नाम, कत्तीरा ।

अङ्गुरा तत्त्वं (पु०) तारा, प्रज्ञा का मानसपुत्र, ये धर्मशास्त्र-प्रवर्तक ऋषियों में से हैं, इनके यनाये हुए ग्रन्थ का नाम अंगिरा-संहिता है । देव गुरु बृहस्पति इन्हींके पुत्र हैं ।

अङ्गो तत्त्वं (पु०) शरीर वाला, शरीर भारी, प्रधान, किसी समुदाय का मुखिया ।

अङ्गीकार तत्त्वं (पु०) स्वीकार, मानना सहना, अंगेजना, प्रतिज्ञा, सम्मति । [ हुआ ।

अङ्गीकृत तत्त्वं (वि०) स्वीकृत, माना हुआ, अपनाया अङ्गीठी तत्त्वं (स्त्री०) आग रखने का पात्र, बरोली ।

अङ्गुल तत्त्वं (पु०) आठ जौ के बराबर परिमाण, एक गिरह का तीसरा हिस्सा ।

अङ्गुली तत्त्वं (स्त्री०) अंगुरी, हाथ का या पैर का अंग ।—आण तत्त्वं (पु०) अंगुरियों की रक्षा करने वाला, यह युद्ध में अश्व शस्त्रों से अंगुलियों की रक्षा करने के लिये बनाया जाता था, दस्ताना अङ्गुल्यानिर्देश तत्त्वं (पु०) कलंक, लांछन ।

अङ्गुष्ठ तत्त्वं (पु०) अंगुठा ।

अङ्गुला तत्त्वं (पु०) अंगुष्ठ, मोटी अंगुरी ।

अङ्गुली तत्त्वं (स्त्री०) मुंदरी, छपला, अंगुलीय, अंगुलियों में पहिने का गहना ।

अङ्गूर तत्त्वं (पु०) दाख, माषा, फल विरोप, मेवा ।

अङ्गेजना दे० (कि०) सहना, परदाप्त करना ।

अङ्गेट (स्त्री०) अंगोट, डील, आकार, आकृति ।

अङ्गेठी तत्त्वं (स्त्री०) देसी अङ्गीठी ।

अङ्गेठना दे० (कि०) शरीर को तौलिया से पोंछना ।

अङ्गेठा तत्त्वं (पु०) शरीर पोंछने का पत्र, अंगयथा, गमछा, अंगपुछा, तौलिया ।

अङ्गारा तत्त्वं (पु०) मण्डार, मराक, मसा, डाँत ।

अङ्गि तत्त्वं (पु०) चाख, चौथा हिस्सा, घूँघों की जड़ ।—प तत्त्वं (पु०) घृष । [ करना ।

अचू तत्त्वं (पु०) स्पर्श, संज्ञा विरोप, टिपाकर

अचक तत्त्वं (घ०) अचानक, अचानक, हठात्, अकरमात्, बिना जाने यूँके ।

अचक्रा दे० (वि०) अपरिचित, अनजान ।

अचकरी तत्त्वं (स्त्री०) लपटता, सिलापन, अनुचित काम, धीमा धीमी, अस्वाचार ।

अचंड तत्त्वं (पु०) धीर, शाम्भ, सुगीक, सुदु, सरल, स्वाभाव वाला ।

अचम्मा तत्त्वं (पु०) चमारकार, विस्मय ।—करना दे० (कि०) विस्मित होना, आश्चर्यित होना ।

अचञ्चल तत्त्वं (पु०) स्थिर, बिना घबड़ाया हुआ, दृढ़ मन वाला ।

अचर तत्त्वं (पु०) जड़ पदार्थ, जो चल न सके, अचल, अटल, स्थावर, दृढ़ ।

अचरा दे० (पु०) साढ़ी का वह छोर जो छाती पर रहता है, पल्ला, अक्ष ।

अचरज तत्त्वं (पु०) अचम्भा आश्चर्य ।

अचल, तत्त्वं (पु०) अटल, स्थिर, धीर, पर्वत, घृष, जो चलायमान न हो, जैनिमें का पहला तीर्थङ्कर ।

अचला तत्त्वं (स्त्री०) धूमिबी, धरती, धरणी ।—सप्तमी तत्त्वं (स्त्री०) माघ शुक्लसप्तमी, इस दिन के किसे शुभकर्म अवल होते हैं, इसीसे इस सप्तमी को अचला कहते हैं ।

अचयन दे० (पु०) ब्रह्मा करने की क्रिया ।  
 अचानक तद्० (अ०) अकस्मात्, दृढान्, एकाएक,  
 एकाएकी, बिना कारण, दैवयोग से ।  
 अचाना, अचवाना (क्रि०) सुँह घेरना, कुल्ला करना,  
 खाने के पीछे सुँह साफ करना, आचमन करना ।  
 अचानचक दे० (क्रि० वि०) अचानक ।  
 अचार तद्० (पु०) आचार, व्यवहार, चालचलन,  
 शास्त्र कथित, नित्य करने योग्य क्रिया, जो  
 व्यवहार धर्म-सेवा का सहायक हो । आम या  
 भीष्म आदि कथों में मसाले मिला कर बनाया  
 हुआ खाद्य-पदार्थ विशेष ।  
 अचारज दे० (पु०) आचार्य ।  
 अचारी दे० (वि०) आचार रखने वाला, (पु०) आचार  
 विचार से रहने वाला प्राण्य, (स्त्री०) आम का अचार  
 विशेष । [ निरुध, चिन्तहीन ।  
 अचिन्त तद्० (गु०) जिसको चिन्ता न हो, बेसुध,  
 अचिर तद्० (अ०) देर नहीं, शीघ्र, तुरन्त, वेग ।  
 अचूक तद्० (गु०) बिना चूका हुआ, ठीक ।  
 अचेत तद्० (गु०) अज्ञान, मूर्च्छित, इन्द्रियों के ज्ञान  
 का नष्ट हो जाना । [ भूखंटा ।  
 अचैतन्य तद्० (गु०) अज्ञानता, निर्जीव, जड़पदार्थ,  
 अचैन तद्० (गु०) चैन न रहना, दुःखी, व्याकुल,  
 असुख, अरम्य ।  
 अचोना (पु०) आचमन करने का प्रयोग करना ।  
 अच्युत तद्० (वि०) जीते रहना, वर्तमान रहना, स्थिति  
 होता रहना, जैसे—  
 “तुम्हें अच्युत अस हाल हमारा ” —रामायण ।  
 अच्युत तद्० } (पु०) वर्ष, अचर ।  
 अच्युता तद्० }  
 अच्युता तद्० (वि०) भला, उत्तम, सुन्दर, मनोहर, चंगा,  
 (स्वीकारार्थक अभ्यय) ।  
 अच्युत दे० (स्त्री०) सुघराई सुघरता उत्तमता ।  
 अच्युत तद्० (पु०) जो कि कभी च्युत न हो जिसका  
 कभी नाश न हो, स्थिर, अमर, सर्वदा वर्तमान  
 रहने वाला, ठहरा हुआ, अचल, विष्णु का एक  
 नाम ।— निन्द (पु०) ईश्वर ।  
 अच्युत दे० (वि०) जीवित रहना, वपस्थित रहना ।

अच्युताना-पच्युताना तद्० (वि०) पश्चात्ताप करना, किये  
 हुए घरे कर्मों में दुःखी होना । [ असहाय ।  
 अच्युत तद्० (पु०) जिसके छत्र नहीं, राज्य छोड़्युत,  
 अच्युता तद्० (स्त्री०) इसका बहुवचन, अच्युत होता  
 है यथा—  
 “मोहहि सब अच्युत के रूप”—पद्मावत ।  
 देवांगना, स्वर्ग की वेश्या, अप्सरा का यह  
 अपभ्रंश है ।  
 अच्युती दे० (स्त्री०) वर्षामाला ।  
 अच्युतानी तद्० (स्त्री०) बत्ती, यानी, प्रसूता स्त्री के  
 सोहर में खाने की औपच ।  
 अच्युत दे० (वि०) अस्पृष्ट, नया, कोरा, न छुआ हुआ ।  
 अच्युता तद्० (वि०) नहीं छुआ हुआ, जड़ा नहीं,  
 नवीन, पवित्र ।  
 अच्युत तद्० (गु०) बहुत अधिक, यथा—  
 ‘घरे रूप गुन को गरव फिर अच्युत उड़ाह,’  
 —बिहारी सप्तसई ।  
 अच्युत (वि०) स्थिर, शान्त, शम्भीर, चोमहीन ।  
 अज तद्० (पु०) आज, वर्तमान दिन ।  
 अज तद्० (पु०) नहीं उपपन्न होने वाला, विष्णु से  
 उपपन्न, प्रसाद, शिव ।—[सूर्यवंशीय अमोघ्या का  
 राजा, जिसके पुत्र महाराज दशरथ थे । अज राजा  
 बड़े वीर थे, गन्धर्वराज के पुत्र से सम्मोहनास्त्र  
 उनको मिला था ।] बकरा, मेघ राशि,—  
 तद्० (स्त्री०) बकरी, माया, अविद्या, प्रकृति ।  
 अजगर तद्० (पु०) बकरे को निगलने वाला बहुत  
 मोटा साँप, आलसी, निकम्मा ।  
 अजगव तद्० (पु०) शिव का धनुष । [ वस्तु ।  
 अजगुत तद्० (पु०) अदभुत, आश्चर्य, बिना देखी मुनी  
 अजगैव तद्० (पु०) अदृष्ट स्थान ।  
 अजदहा (पु०) अजगर, बड़ा मोटा साँप ।  
 अजनवी (वि०) अशरित्त, अज्ञान, बिना ज्ञान  
 पहिचान का ।  
 अजपा (वि०) जिसका उच्चारण न हो (पु०) गड़रिया ।  
 अजव (वि०) विलक्षण, अनूठा, अनोखा ।  
 अजवाइन (स्त्री०) एक मसाले का नाम ।  
 अजमोद (पु०) बवाई का नाम ।



अजय तत् (गुं) जिसकी जीत नहीं हुई हो, जो अजेय हो, जिसे कोई नहीं जीत सके। वीरभूमि जिले की एक नदी का नाम।

अजर तत् (वि०) जवान, यौवन, युवा, अमर, जो कभी बूढ़ा न हो।

अजस (गुं) बदनामी, अपकीर्ति।

अजसी तद् (गुं) निन्दित, बरारहित।

अजहूँ तद् (अ०) आज भी, अभी, अभी, अब तक आज तक। [प्रतिश्रुति।]

अजर तत् (अ०) निरन्तर, नित्य, सर्वदा,

अजहस्त्वार्था तत् (स्त्री०) अलङ्कार शास्त्र का एक लक्षण जिसमें अपने बोधक अर्थ का न त्याग कर लक्षण मिल अर्थ बतलाता है। [माया, दुर्गा।]

अजा तत् (स्त्री०) जिसका जन्म न हो। बकरी, अजाचक (गुं) जिसको मांगने की जरूरत न हो।

(वि०) अवाची, सम्पन्न। [भरापूरा।]

अजाची (गुं) सम्पन्न मनुष्य, न मांगने वाला (वि०)

अजाड़ तद् (गुं) सनिया टाट।

अजातशत्रु तत् (गुं) १—राजा युधिष्ठिर का दूसरा नाम। युधिष्ठिर किसी को अपना शत्रु नहीं समझते थे, इसी कारण उनका यह नाम पड़ा।

२—इस नाम के एक राजा का वर्णन उपनिषदों में भी आता है। यह राजा महाशूनी था। महर्षि गार्ग्य इसके यहाँ गये और राजा से कुछ विषयों में उपदेश लेकर लौट आये थे। ३—मगध के एक प्राचीन राजा का भी नाम अजातशत्रु था। उसके पिता का नाम विभिषसार था। ४—स्त्रीष्टान्द के पूर्व यह मगध का राज करता था। तत् (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो।

अजाति तद् (गुं) बिना जाति का, विटाल हुआ विजाति, लाश। [अविश्वेकी।]

अज्ञान तद् (गुं) अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध,

अज्ञामिल तद् (गुं) एक ब्राह्मण का नाम, यह ब्राह्मण प्रथम अवस्था में सच्चरित्र था, परन्तु पीढ़े से कुसंग में पड़ कर अचार अष्ट हुआ, दासी के गर्भ से उत्पन्न इसके दस पुत्र थे, जिसमें से एक का नाम नारायण था, मरने के समय

अज्ञामिल ने अपने नारायण पुत्र को पुकारा, इसी कारण विष्णुदूत इसके विष्णुलोक में ले गये। —श्रीमद्भागवत।

अजायव (गुं) अद्भुत वस्तु, विचित्र पदार्थ।—

खाना,—घर (गुं) अद्भुत वस्तु का संग्रहालय।

अजिअौरा (गुं) आजी या पितामही का घर।

अजित तद् (गुं) नहीं जीता हुआ, ऐसा बखी जो सब को जीत ले।

अजिन तद् (गुं) मृगालाला, हरिण की खाल जिस पर ब्रह्मचारी, संन्यासी आदि धार्मिक व्यक्ति बैठ कर व्रतारण करते हैं।

अजिर तद् (गुं) आगन, अंगना, चौक, चबूतरा।

अजी तद् (अ०) आज तक, अब तक, अब ही तक।

अजीगर्त तद् (गुं) एक ब्रह्मण जो श्मशाने का पिता था।

अजीरन तद् (गुं) देखो अजीर्ण। [अजीर्ण होना।]

अजीर्ण तद् (वि०) पुराना नहीं, अपच, नहीं पचना

अजीव तद् (गुं) बिना जीव का, अचेतन, मरा हुआ, मृत, जड़ पदार्थ। [व्रपाती कार्य।]

अजुगत तद् (स्त्री०) अचरे, इत्यात, अपाचार।

अजो } (वि०) आज तक, अभी तक, अब तक।  
अजो }

अज्ञ तद् (गुं) [अ + ज्ञ] नहीं जाननेवाला, मूर्ख, वे समझ, अचूक, अनजान, असमझ, अनसमझ, अयोध।—ता, तद् (स्त्री०) मूर्खता, जड़ता, नादानी।

अज्ञात तद् (गुं) [अ + ज्ञात] नहीं जाना हुआ, अनजान।—नामा तद् (वि०) जिसके नाम का पता न हो।—वास तद् (गुं) छिपकर रहना।—यौवना (स्त्री०) सुस्था नायिका का एक भेद।

अज्ञान तद् (गुं) [अ + ज्ञान] मूर्ख, निर्बुद्धि, अज्ञ, बुद्धिहीन—तः (अ०) अज्ञान से, बेसमझी से, अनजाने।—ती तद् (वि०) शाश्वत, मूर्ख, जड़।

अज्ञेय तद् (गुं) नहीं जानने योग्य, कष्ट से जानने योग्य, दुरुद्ध। [किनारा, दिक्प्रदेश।]

अञ्जल तद् (गुं) अञ्जना, कपड़े का शेष भाग,

अञ्जन तत्त्वं ( पु० ) सुरमा, काजल, आँख में लगाने का द्रव्य, अञ्जना, शोभना, काजल लगाना, धान्य विशेष। अञ्जना या अञ्जनी तत्त्वं ( स्त्री० ) दिग्गज की इयिनी, वानरी विशेष, हनुमान की माता का नाम, अञ्जनी नामी वानरी के गर्भ से महावीर हनुमान की उत्पत्ति हुई थी।  
— अद्रि तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विशेष, ।— [नन्दन तत्त्वं ( पु० ) हनुमान जी । [का जोड़

अञ्जर-पञ्जर दे० ( स्त्री० ) देह का बन्ध, शरीर अञ्जलि, अञ्जली तत्त्वं ( स्त्री० ) हाथ जोड़े, हाथ का सम्पुट, अञ्जुरि, दोनों हाथों को ऐसा जोड़ना जिससे बीच में अवकाश रहे। परिमाण विशेष ।—कर्म सुशीलता, प्रणाम, नमस्कार, विनय करना ।—सन्धन ( तत्त्वं ) हाथ जोड़ना, कसम्पुट नमस्कार, नम्रता प्रदर्शित करने की मुद्रा ।

अञ्जसा तत्त्वं ( प्र० ) शीघ्रता, शीघ्रता से, वेगी ।

अञ्जही दे० ( स्त्री० ) अन्न की मण्डी । ( वि० ) नाज वाली ।

अञ्जुरी दे० ( स्त्री० ) अँजलि । [ विशेष, प्रियाणु ।

अञ्जौर तत्त्वं ( पु० ) अञ्जौर नामक वृक्ष का फल अञ्जौर दे० ( पु० ) उज्जला, प्रकाश, रोशनी, चाँदनी ।

अञ्ज्मा तत्त्वं ( पु० ) अंनप्याय, छुड़ी, अवकाश ।

अटक तत्त्वं ( स्त्री० ) रोक, धारण, रुकावट डालना, अटकना । भारतवर्ष की पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के एक नगर का नाम सिन्धु नदी का दूसरा नाम है । कहते हैं कि सिन्धु नदी के प्रवल वेग के कारण उसका अटक नाम पड़ा, क्योंकि वहाँ जाकर लोग अटक जाते हैं ।—[त दे० ( स्त्री० ) अनुमान, विचार ।—[ना दे० ( कि० ) रोकना, छेकना, धारण करना, किसी कार्य में विघ्न डालना ।—[व दे० ( पु० ) रुकावट, प्रतिबन्ध ।—[लेपन्चू विना प्रमाण, विना ठौर ठिकाने, अनिश्चित ।

अटकर या अटकल दे० ( स्त्री० ) अन्दाज़ ।

अटका तत्त्वं ( पु० ) मिट्टी का पात्र विशेष; श्री जगन्नाथ जी का प्रसाद । [प्रतिबंध ।

अटकाव तत्त्वं ( पु० ) विघ्न, बाधा, रोक रुकावट,

अटखेल तत्त्वं ( पु० ) बहुत खेलने वाला, खिलाड़ी, चंचल ।—[नी ( स्त्री० ) चंचलता, खिलाड़न, ढिंढाई, चंचलत्व ।

अट्ट तत्त्वं ( पु० ) मोटा, पोड़ा, दूढ़ । [यात्रा ।

अटन तत्त्वं ( पु० ) फिरना, चञ्चना, घूमना, भ्रमण, अटना तत्त्वं ( कि० ) समाना, भर जाना, घूमना, फिरना ।

अटपट तत्त्वं ( पु० ) अनियमित टेढ़ा, बाँका, टरा ।

—[नी ( स्त्री० ) तिरछी, एड़ी टेढ़ी, बेहंगी, कठिन ।

अटव्वर दे० ( पु० ) आडम्बर, खानदान, परिवार ।

अटम तत्त्वं ( पु० ) राशि, ढेर, बटारा ।

अटल तत्त्वं ( पु० ) दृढ़, पोढ़ा, अचल, नहीं टलने वाला । गुणाइयों के एक अखाड़े का नाम ।

अटवी तत्त्वं ( स्त्री० ) वन, जंगल, गहन, कानन, मयानक जंगल, हिंस्र जन्तुओं का वास स्थान ।

अटा तत्त्वं ( स्त्री० ) कोठा, ऊपर की कोठरी, सय से ऊपर का कमरा ।

अटाट्ट दे० ( वि० ) सितान्त, बिलकुल ।

अटारी ( स्त्री० ) देखो अटा ।

अटाल दे० ( पु० ) डुर्ज, धरहरा । [असबाबे ।

अटाला तत्त्वं ( पु० ) खटला, ढेर, सामग्री, सामान,

अटिया तत्त्वं ( स्त्री० ) छोटी मईया, कोपड़ी, छोटा मकान, पर्णकुटी ।

अट्ट तत्त्वं ( पु० ) बहुत पोढ़ा, नहीं टूटने वाला, नहीं घटने वाला, सम्पूर्ण, पूरा, कुल ।

अट्टेक तत्त्वं ( पु० ) टेक नहीं, निराश्रय, उद्देश्यहीन,

अष्ट प्रतिश ।

अट्टेर तत्त्वं ( पु० ) एक ग्राम का नाम ।—न दे० ( पु० ) फेटी, चरली ।—नी दे० ( कि० ) फेंटा बनाना, गोलाकार बनाना, मोड़ना । [बनाना ।

अट्टेरना ( कि० ) मोड़ना, अट्टेरन से सूत की फेटी

अट्टोज तत्त्वं ( पु० ) अचिकन, असम्भ, अनाड़ी, जंगली, बर्बर ।

अट्टहास तत्त्वं ( पु० ) बहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना कहकहा मारना ।

अट्टालिका तत्त्वं ( स्त्री० ) अट्टाल, अटारी, रात्रगृह, प्रसाद, घबलागा, बड़ा मकान, हर्म्य ।

अट्टा ( पु० ) तास का एक पत्ता ।

अट्टाईस (खी०) चीस और आठ, २८ ।  
 अट्टानवे (पु०) नव्वे और आठ, १८ ।  
 अट्टावन (पु०) पचास और आठ, १८ ।  
 अठकौशल (पु०) पंचायत, सलाह, गोष्ठी ।  
 अठक्री दे० (खी०) घेली, आधा रुपया, आठ आने ।  
 अठमासा (पु०) खेत जो आठ मास तक जेता भाय ।  
 अठल तद् (पु०) संस्कार विशेष ।  
 अठलाना दे० (क्रि० वि० अ०) पेठ दिखलाना, हतराना, गर्व जगाना, ठसक दिखाना ।  
 अठवारा तद् (पु०) अठवा दिन, सप्ताह, आठ दिन का समुदाय ।  
 अठवांस (पु०) अठपहल, अठपहली वस्त्र ।  
 अठवांसा (वि) आठ महीने का, आठ महीने में उत्पन्न होने वाला गर्भ ।  
 अठहत्तर (पु०) सत्तर और आठ ७८ ।  
 अठान दे० (क्रि०) सताना, पीड़ित करना ।  
 अठारह (पु०) दस और आठ, १८ ।  
 अठासी (वि) अस्सी और आठ, ८८ ।  
 अठिजाना दे० (क्रि०) अठबाना ।  
 अठेल तद् (पु०) जो लेला न जाय, अविचलनीय, अपरिहार्य, जो हट न सके, यथेष्ट, प्रचुर, दृढ़, स्थिर ।  
 अठोठ दे० (पु०) ठाठ, आडम्बर, पाखण्ड ।  
 अठोतरसौ (वि०) एक सौ आठ, १०८ ।  
 अठोतरी (खी०) १०८ गुरिया की माला ।  
 अड तद् (खी०) झगड़ा, विरोध, हठ, गमन, चेष्टा ।  
 अडङ्ग तद् (पु०) मण्डी, हाट बजार विदेशीय या प्रान्तीय वस्तुओं के उतारने की जगह, उतार, बिल, रुकावट । — (पु०) रोकना, रुकावट, प्रतिबन्ध ।  
 अडगोड़ा (पु०) एक लकड़ी जो नटसट गौश्रों के गले में लटकया जाता है जो भागते समय उनके पैर में लगती है, ठेकुर, डँगना ।  
 अडचन (खी०) रुकावट, बाधा, विघ्न आपत्ति ।  
 अडड़पोपी (पु०) धूल, हाथ देखने के बहाने लोगों को ठगने वाला ।  
 अडतल तद् (पु०) थोट, शरण, हीला ।  
 अडतला तद् (पु०) शरण, आश्रय आड़, बचाने वाला, रक्षा करने वाला । [वालीस ।  
 अडतालीस तद् (पु०) संख्या-विशेष, आठ और

अडतीस तद् (पु०) सख्या विशेष, आठ और तीस ।  
 अडना तद् (क्रि०) धमना, रुकना, द्विविधा करना, निश्चय से च्युत होना ।  
 अडवंग तद् (पु०) ऊचा नीचा, दुर्गम ।  
 अडवंगा तद् (पु०) बाँका तिर्था, असमान, येदंगा ।  
 अडवड तद् (पु०) प्रलाप, निरर्थक बहना, गाली देना, ऊँचा नीचा ।  
 अडवन्ध तद् (पु०) कटिबन्ध, कोपीन ।  
 अडवल तद् (पु०) अडजाने वाला, रुकने वाला, अडवा, हठी, मगर ।  
 अडसठ (पु०) साठ और आठ, ९८ ।  
 अडाड़ा तद् (पु०) ढोंग ।  
 अडाना (क्रि०) टिकाना, रोकना, उलझाना, ठरकाना, अडानी तद् (खी०) छाता, रोकने वाला, यदा पंखा । [वाला, सुस्त ।  
 अडियल दे० (वि०) रुकजाने वाला, अडकर, बन्नने ।  
 अडिया दे० (खी०) रुठे के आकार की एक लकड़ी, जिसे टेक कर फूँकीर बैठते हैं । लंचे आकार की कच्चे सूत की पिण्डी, फेंटी ।  
 अड्री (वि०) घामही, हठी ।  
 अडूसा तद् (पु०) एक वृक्ष का नाम, रुनामसा, खाँसी में इसका प्रयोग होता है ।  
 अडैयाना तद् (क्रि०) आश्रय देना, रक्षा करना, धरवासित करना ।  
 अडैच तद् (खी०) वैरभाव, शत्रुता, द्वेष ।  
 अडोज तद् (पु०) नहीं होबने वाला, स्थिर, अचल, अटल, दृढ़, नहीं हिलने वाला । [प्रतिषेधा ।  
 अडोस-पडोस तद् (पु०) पड़ोस, पाम पास, अड्डा तद् (पु०) ठहरने की जगह, सेना रहने का स्थान, छावनी ।  
 अडतिया दे० (पु०) आड़त करने वाला ।  
 अडाई तद् (पु०) संख्या विशेष, दो और आधा ।  
 — गुना दो और आधे से अधिक, एक, एक हिस्से में और अडाई हिस्सा बढ़ना ।  
 अडिया (खी०) काठ या पत्थर का चर्तन, चूना या गड़ा होने का काठ या लोहे का चर्तन ।  
 अट्टुकि तद् (अ०) बढ़क कर, सहारा लेकर ।

अद्वैता तद्० (छो०) दाईं सेर की तोल, माप, बटखरा ।

अण्णद् दे० (पु०) आनन्द ।

अणि तत्० (छी०) अण्णद् कीलक, पहिये के अग्रभाग का काँटा, तोखीधार, नोक, पाढ़, धार, सीमा ।

अणिमा तद्० (पु०) या अनिमा तद्० (छी०) (हिन्दी में छी०) आठ सिधियों में की एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति ।

अणीय (वि०) अतिसूक्ष्म, यारीक ।

अणु तत्० (पु०) कणिका, अत्यन्त सूक्ष्म, धान्य विशेष, सूक्ष्म वस्तु, सब से छोटा हिस्सा । छप्पर के छेद से घर में आये हुए सूयं के प्रकार में उड़ते हुए जो छोटे कण दीख पड़ते हैं उनमें से एक कण के साठवें भाग को अणु या परमाणु कहते हैं । यह नैयायिकों का प्रधान तत्व है । नैयायिक इसीके द्वारा सांसारिक पदार्थों की उत्पत्ति मानते हैं । यह शक्तिमान है । मिलने और बिछुड़ने की शक्ति इसमें वर्तमान है ।—मात्र (गु०) छोटा सा ।

—चाद (पु०) सिद्धान्त विशेष अणुवाद में जीव और आत्मा अणु माना है । यह शीवल्लभाचार्य का सिद्धान्त है ।—चादी (पु०) अणुवाद को मानने वाला ।—चीक्षण (पु०) छोटे छोटे पदार्थों को देखने के लिये काँच का बना हुआ एक प्रकार का यन्त्र, दूरबीन ।

अण्टा तद्० (पु०) गेंद, गोली एक प्रकार का खेल ।

—गुड़गुड़ (वि०) बेलाग चित्त पड़ा हुआ ।—घर (पु०) गोली खेलने का कमरा ।—चित्त तद्० (पु०) उतान पड़ा हुआ, बेलाग गिरा हुआ ।

—बन्धु (पु०) जुआ खेलने की कौड़ी । [गरी । असिट्या (स्त्री०) घास का पूरा या पूला, छोटी अण्टी (स्त्री०) धोती का वह भाग जो कमर पर मोड़ कर बाँधा जाता है श्रृंगुलियों के बीच का भाग । अण्टलाना तद्० (क्रि०) धकँती करना, छँटना, रोंकापन दिखाना, अभिमान करना, धंगों को स्वयं मरोड़ना ।

अण्ड तद्० (पु०) परंठवृक्ष, अण्डा, बीज, पेशीकोप, अण्डकोप, कस्तूरी ।— (पु०) पक्षी आदि के उत्पन्न होने का स्थान, गोलाकार ।—फटाई तद्०

(पु०) जगत्, विश्व, संसार, गोल ।—कोप तद्० (पु०) मुरक, यैली, थांड ।—ज तत्० (पु०) अण्डे से पैदा होने वाले जन्तु, यथा पक्षी-साँप-मछली-मोह-गिरगिट बिसखपरा ।

अण्डवण्ड (स्त्री०) मलाप, ये सिर पैर की घात, बकबक ।

अण्डस (स्त्री०) असुविधा, कठिनाई, संकट ।

अण्डी तत्० (स्त्री०) आसाम का बना हुआ रेशमी वस्त्र विशेष, ज्यादातर यह ओढ़ने के काम में आता है । आसाम की चण्डी बहुत अच्छी होती है ।

अण्डुआ तद्० (पु०) बिना बधिपा किया हुआ जानवर — बैल (पु०) साँड़, घालसी मनुष्य ।

अण्डेल तद्० (वि०) अण्डावाली ।

अतः तद्० (अ०) इससे, इस कारण, इस हेतु, इसलिये ।

अतएव तद्० (अ०) इसी कारण, इसी हेतु, इसलिये ।

अतथ्य (वि०) असत्य, झूठ ।

अतदगुण (पु०) अलंकार विशेष,

अतनु तत्० (पु०) या अतन तद्० (पु०) बंद रहित, बिना शरीर का कामदेव [कामदेव का शरीर महादेव के क्रोध से भस्म हो गया था, इन्द्र ने इसे महादेव पर विजय पाने की आशा से भेजा था, परन्तु अभाग्यवश वह महादेव के क्रोधाग्नि से दग्ध हो गया । पुनः पार्वती की प्रार्थना से महादेव ने इसको उज्जीवित किया । अतएव कामदेव का नाम अतनु है ।]

अतन्द्रित तद्० (गु०) घालस्य रहित, धमंड, चरल, घालाक, जाग्रत । [ रखने का पात्र ।

अतर दे० (पु०) पुष्पसार, इत्र ।—दान (पु०) अतर अतरंग (पु०) वह क्रिया जिससे लंगर जमीन से बलाड़ कर रखा जाता है ।

अतरस्तो (पु०) बीते और आने वाले परसों का पूर्ण अगला दिन, वर्तमान दिन से बीता हुआ या आने वाला तीसरा दिन ।

अतर्कित तद्० (वि०) बिना विचारा, आकस्मिक ।

अतर्क्य तद्० (वि०) अचिन्त्य । अनिर्वचनीय ।

अतल तद्० (गु०) बिना तल का, बिना पंख का, बर्तल, गोल, सात पातालों में पहिला पाताल ।

—स्पर्श तत् (गु०) अगाध, अतिगंभीर, जिसके तल का स्पर्श न हो सके ।

अतवार दे० (तत्) रविवार ।

अतसी तत् (स्त्री०) तीसी, धलसी, पाट, सन ।

अताई तत् (पु०) गवैया, जम्बी बजाने वाला, बगवैया ।

अति तत् (गु०) जिन शब्दों के पहले अति शब्द आता है वे शब्द अपने से अधिक बर्णों के वाचक हो जाते हैं । अधिक, बहुत, विस्तर, अत्यन्त, बड़ा, सीता हुआ, हो चुका, उर्जायना, पार ।

—उक्ति तत् (स्त्री०) आयुक्ति, असम्भव प्रशंसा ।

—काय तत् (पु०) बड़ा शरीर, भयानक शरीर

वाला । रावण का एक पुत्र, इसने तपस्या के द्वारा ब्रह्मा को समुष्ट करके एक अशेष कवच पाया था, जिसमें यह अशेष हो उठा था । लहसण के साथ युद्ध में यह मारा गया ।—काज (पु०) अघोर, विलम्ब, देरी ।—क्रम (पु०) घाघना, पार होना, अपरा, अपमान करना, अभ्यधापण, अभमङ्ग करना ।

—क्रान्त (पु०) पार गया हुआ ।—हृन्द तत् (पु०) प्रत विशेष, पाप दूर करने के लिये यह प्रत किया जाता है, यह प्रत प्राजापय प्रत का भेद है, उसने इसमें विशेषता बड़ी है कि जितने दिन भोजन करने का नियम है उतने दिन अति-रूप में खाहिन हाथ में जितना भन्न खाये उतना ही आहार करना चाहिये ।

अतिथि तत् (पु०) साधु, यात्री, पाहुन, जिनके आने की तीथि नियत न हो । श्रीरामचन्द्र जी के पौत्र एवं कुरु के पुत्र का नाम ।—भक्त (पु०) अनिधियों की सेवा करने वाला, अतिवि-पूजक ।

अतिपन्था तत् (पु०) बड़ा मार्ग, राजपथ, सड़क ।

अतिपर तत् (पु०) अति शत्रु, महा बैरी, उदासीन असम्बन्ध ।

अतिपराक्रम तत् (पु०) बड़ा प्रताप, बड़ा तेज ।

अतिपात तत् (पु०) अन्धाय, उत्पात, उपद्रव ।

अतिपातक तत् (पु०) भारी पाप, नव प्रकार के पापों में सब से बड़े तीन पाप । माता, कन्या और पुत्र की स्त्री का संसर्ग करना, पुरुषों के लिये

अतिपातक है । ऐसे ही पुत्र, पिता तथा स्वमुर का संसर्ग करना, स्त्रियों के लिये अतिपातक है ।

अतिपान तत् (पु०) बहुत पीना, मत्ता, पीने का व्यवसाय । [बहुत ही पाय, दूर नहीं ।

अतिपार्श्व तत् (पु०) मछिष्ट, समीर, अति निष्ठ, अतिप्रसंग तत् (पु०) आयना मेळ, पुनरुक्ति, अति विचार, व्यवहार, क्रम का नाश करना ।

अतिवर्त्य (पु०) एक प्रकार का घुन्द जिसके प्रथम मृतीय चरणों में १२ और दूसरे तथा चौथे चरणों में ७ भाग्य होती हैं । साथ ही इसके विषम पदों के आरम्भ में जगण नहीं आता और अन्त का चरण छपु होता है ।

अतिवज्र तत् (वि०) अत्यन्त चाली, प्रचल, प्रचण्ड ।

अतिवन्ता तत् (स्त्री०) कृचविशेष पीतपला, परीपारी का वेद ।

अतियोग तत् (पु०) एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ नियत परिमाण से अत्यधिक मिश्रण ।

अतिरथी तत् [ अति + रथिन् ] (पु०) अतिशय बोदा, रणकुशल, महाबोदा, बहुत मनुष्यों को एक साथ लड़ाने वाला ।

अतिरिक्त तत् [ अति + रिप् + क्त ] (पु०) मित्र, छोड़ कर, परिमाण से अधिक ।

अतिरंजक तत् [ अति + रंज + क्त ] (गु०) आधिपद, लक्ष्मी, अतिशय, बहुत ही । [एक महाभाषि ।

अतिरोग तत् [ अति + रोग + क्त ] (पु०) चररोग,

अतिवाहिक तत् (पु०) पाताल-निपामी, बिहारी ।

अतिविषा तत् स्त्री० अतीस ।

अतिवेज तत् (वि०) वेदक, असीम । [ दोष ।

अतिव्याप्ति तत् (स्त्री०) व्याप शस्त्र का एक लक्ष्य

अतिशय तत् [ अति + शी + भञ्ज ] (पु०) अत्यन्त, विन्तार, परा, बाहुक्य ।—पान (पु०) अत्यन्त मद्यपान ।—ती श्रेष्ठ, अधिक, अत्यन्त ।—उक्ति (स्त्री०) अतिशयोक्ति, अत्यन्त चतुर्दाह, सम्मानित करने के लिये असम्भव प्रशंसा । काव्य का यत्नकार विशेष । [ पात ।

अतिसन्धान तत् (पु०) अतिक्रमण, घोषा, विरवास-

अतिसार वा अतीसार तत् [ अति—स + घञ् ]

संप्रदोषी रोग, जठर की व्याधि, पेट की पीड़ा ।

अतिहसित तत्त्वं (पु०) हास्य का एक भेद विशेष, इस प्रकार के हास्य में हँसने वाला, हँसते समय ताली बजाता है, बीच बीच में अवोध वचन बोलता जाता है। हँसते हँसते उसका शरीर पारने लगता है और आँखों से आँसू निकलने लगते हैं।

अतिन्द्रिय तत्त्वं (वि०) इन्द्रियों द्वारा जानने के अयोग्य, अप्रत्यक्ष, अगोचर।

अतीत तत्त्वं [ अति + ई + क ] (पु०) भूत, गत, अतिक्रान्त, बीता हुआ, संगीत शास्त्रानुसार परिनाय विशेष।—काक तत्त्वं (पु०) बीता हुआ समय। [ बहुत अधिक।

अतीव तत्त्वं [ अति + ॥ ] अतिशय, अत्यन्त, यथेष्ट, अतीस तत्त्वं (पु०) औपमि विशेष।

अतुराना दे० (कि०) अकुलाना, घबड़ाना।

अतुल तत्त्वं [ अ + तुल ] (पु०) अतुल्य, अनुपम असदृश, तुलना रहित।—नीय तत्त्वं (वि०)।  
—त (वि०) अनुपम, असमाननीय, उपमा-रहित, सर्व श्रेष्ठ, अपार, अपरमित।

अत्यू दे० (वि०) विचित्र, अपूर्व।

अतेज तत्त्वं (वि०) शीघ्रता, हतध्री, हतप्रभ।

अतौल तत्त्वं या अतौल, अप्रमाण, ह्यत्ता रहित, तोलने का नहीं।

अत्ता, अत्तिका तत्त्वं (स्त्री०) माता, ज्येष्ठा बहिन, बड़ी मौसी, सास। इसका प्रयोग पुराने नाटकों में आता है। नाटकों में जेठी बहिन के सम्बोधन में अत्तिका आता है।

अत्तार दे० (पु०) यूनानी दवा बेचने वाला।

अत्यन्त तत्त्वं [ अति + अन्त ] (पु०) अतीव, अतिशय, अत्यधिक।—फोपन (पु०) चण्ड, अतिशय क्रोधी।—गामी (वि०) शीघ्रगामी, अधिक चलने वाला।—वासी, बहुत रहने वाला, नैष्ठिक ब्रह्मचारी।—अभाव (पु०) अत्यन्ताभाव, न्यायमत से सब प्रकार से अभाव, त्रिकाळ में जिसकी स्थिति न हो, अभाव पदार्थ।

अत्यय तत्त्वं [ अति + ई + अल ] (पु०) विनाश, अतिक्रम, स्राव, क्षोभ, राजाज्ञा का वसर्जन, अपराध।

अत्यर्थ तत्त्वं (पु०) विस्तार, अतिशय, अधिक।

अत्यष्टि तत्त्वं (पु०) छन्दोविशेष, वह छन्द जिसमें अष्टादश वर्ण और चार-पाद होते हैं।

अत्याचार तत्त्वं (पु०) कुव्यवहार, अन्याय, दौरास्य निषिद्धाचरण।—ती तत्त्वं (पु०) दुष्कर्मी, दुरात्मा, कुकर्मी। [आवश्यक।

अत्यावश्यक तत्त्वं (पु०) अति प्रयोजनीय, बहुत अत्युक्ति तत्त्वं (स्त्री०) असम्भव कथन, आरोपित कथन, काव्य का अलङ्कार विशेष।

अत्युक्था तत्त्वं (स्त्री०) छन्दोविशेष, चार पद और पारह अक्षर वाला।

अत्युत्कट तत्त्वं (पु०) अतिशय कठिन, अति तीव्र।

अत्युत्कृष्टा तत्त्वं (स्त्री०) अतिशय मनस्ताप, अत्यन्त शिन्ता।

अत्युत्कृष्ट तत्त्वं (पु०) अत्युत्तम, बहुत अच्छा।

अत्युत्तम तत्त्वं (पु०) अति रमणीय, अतिशय उत्कृष्ट, बहुत अच्छा। [विरचय काना, पारचाय।

अत्युत्तर तत्त्वं (पु०) सिद्धान्त, सीमांसा निर्धारण, अत्र तत्त्वं (अ०) यहाँ, यहाँ, इस ठौर।—त्य (अ०) यहाँ का, इसी स्थान का, इस ठौर का।

अत्रप तत्त्वं (पु०) निर्लेख्य लक्षणहीन, बेरामा, बेहवा।

अत्रप्रयान् तत्त्वं (पु०) पूज्य, श्लाघ्य माननीय। नाटकों में इस शब्द का प्रायः व्यवहार होता है।

अत्रस्थ तत्त्वं (पु०) इसी स्थान का वासी, यहाँ रहने वाला।

अत्रि तत्त्वं (पु०) सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम [ यह ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, कर्दम प्रजापति की कन्या अनसूया इन्हें व्याही थी। इनके पुत्रों का नाम महर्षि दुर्वाशा, दत्तात्रय और चन्द्र है। मनु संहिता में लिखा है, कि मनु के दस प्रजापतिपुत्रों में से एक अत्रि भी थे। ]—जात तत्त्वं (पु०) चन्द्र, दिग्माज, नेत्रज, नेत्रप्रसूत, नेत्रधू, निशाकर, सुषांशु, चन्द्रमा।

अथ तत्त्वं (अ०) अनन्तर, मन्त्र अरम्भार्थ, प्रश्न, अधिकार, संशय, अक्षय, समुच्चय, तदनन्तर, तदुपरि, पश्चात्।—य वाक्य योजनार्थ अन्वय

शब्द, श्रौं ।—वा, पदान्तर, या, वा, प्रकार-  
न्तर, किम्बा । [ पूर्व का जाती है ।

अथय दे० ( पु० ) जैनियों की ध्यात् जो सूर्यास्त से  
अथय तद् ( वि० ) अथकित, अश्रान्त, अकलान्त ।

अथयय तद् ( गु० ) हूव गया, वृद्ध गया, अस्त हो  
गया, अस्तमित । रामायण में इस शब्द का प्रयोग  
किया गया है, संस्कृत के अस्तमित शब्द से यह  
निकला है ।

अथरा दे० ( पु० ) मिट्टी की नाद जिसमें रंगरेज कपड़ा  
रंगते हैं और जुलाई सूत भिगाते हैं । ( स्त्री० )  
वही जमाने का मिट्टी का कड़ा ।

अथर्व तत् ( पु० ) ( अथर्वन ), अतिवृद्ध, चतुर्वेद ।  
यह वेद ब्रह्मा के उत्तर वाले मुख से निकला है ।  
इसमें नौ शाखा पाँच कल्प हैं और बीस काण्डों  
में समाप्त होता है । इसका प्रधान ब्राह्मण गोपथ  
है । इससे सम्बन्ध रखने वाली उपनिषदों की  
संख्या कोई २८ और कोई ३१ बताते हैं । इसमें  
अधिकता सं अभिचार प्रयोग पाये जाते हैं ।—  
या ( पु० ) शिव, महादेव ।—णी ( पु० ) अथर्व  
वेदज्ञ ब्राह्मण, पुरोहित ।—शिख ( पु० ) उपनिषद  
भेद ।—शिखामणि ( पु० ) उपनिषदभेद ।—शिरः  
( पु० ) अथर्ववेद की सातवीं उपनिषद ।—तत् ( पु० )  
( पु० ) ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जिसे ब्रह्मा ने  
ब्रह्मविद्या सिखलायी थी, और इसी ने सर्व प्रथम  
अग्नि को प्रकट कर आर्य जाति में यह क्रिया का  
प्रचार किया । [ को जोतने धोने का दी जाती है ।

अथल दे० ( पु० ) वह भूमि जो लगान लेकर दूसरे  
अथवना ( कि० ) अस्त होता, हूबना । [ अथय है ।  
अथवा तत् ( अथय ) या, वा, किंवा, यह विभेदक  
अथाई तद् ( स्त्री० ) मित्रों के एकट्ठे होने का स्थान,  
सभा, चौपार, बैठक ।

अथान या अथाना, तद् ( पु० ) अचार, खटाई,  
( गु० ) बिना स्थान, बैठकाने । [ गहरा, वेधाह ।

अथाह तद् ( गु० ) गहिरा, गम्भीर, अगाध, बहुत  
अथोर दे० ( वि० ) बहुत, थोड़ा नहीं, पूरा ।

अदकचां तद् ( पु० ) बैठन, जपेटन, वेठन, जपेटने  
का वच । [ हुआ, कचा ।

अदग्ध तत् ( गु० ) अद्वलित, अपक्व, नहीं जला

अदग्धनीय तत् ( गु० ) या अदग्ध्य तत् ( गु० )  
दण्ड के अनुपयुक्त, अदण्ड है, जिसको दण्ड न  
दिया जा सके, जो, दण्डित न हो सके, स्वधर्म-  
निष्ठ, सदाचारी, महात्मा ।

अदत्त तत् ( गु० ) अदान, नहीं दिया, घसमर्पित,  
अप्रतिपादित ।—तत् ( स्त्री० ) अविवाहिता,  
कुमारी, अनूठा ।

अदद् दे० ( पु० ) जितना, संख्या का चिह्न, संख्या ।

अद्वन तत् ( पु० ) भक्षण, भोजन, जेवनार, अहार,  
खाना ।—नीय तत् ( गु० ) भक्षणीय, खाद्य वस्तु  
भोजन, भोजन योग्य ।

अदना दे० ( वि० ) तुच्छ, सामान्य, नीच ।

अद्व दे० ( पु० ) शिष्टाचार, बड़ों के प्रतिसम्मान ।

अदयकार दे० ( कि० वि० ) हठ कर के, टेक बांध कर,  
अवश्य ।

अदम्न तत् ( गु० ) यथेष्ट, प्रचुर अधिक, पूरा, ठेर का  
सम्पूर्ण । ( पु० ) ग्लेश्चोत्यादक पुरुष । [ अनोखा ।

अदभुत तत् ( गु० ) विलक्षण, आश्चर्यजनक, विचित्र,

अदमपैरवी दे० ( स्त्री० ) मुकदमें में आवश्यक  
कारवाही का न करना । [ न होना ।

अदमसवृत दे० ( पु० ) प्रमाण का अभाव, सवृत का  
अदमहाजिरी दे० ( स्त्री० ) गैरहाजिरी अनुपस्थिति ।

अदम्य तत् ( गु० ) दमन करने के अयोग्य, दुर्वान्त,  
जो नहीं दबाया जा सके ।

अदरक दे० ( पु० ) आर्द्रक, हरी सोंठ ।

अदरसा दे० ( पु० ) अनरसा, मिठाई विशेष ।

अदरा ( पु० ) आद्रा नक्षत्र ।

अदराना ( कि० ) फूलना, हतराना, नटखटी करना ।

अदर्शन तत् ( गु० ) छिपा, उका, लुका, गुप्त ।—नीय  
तत् ( अथय, नहीं देखने योग्य ।

अदल दे० ( पु० ) न्याय, ईसाफ ।

अदलवदल दे० ( अ० ) परिवर्तन ।

अदवायन दे० ( स्त्री० ) खाट की रस्ती ।

अदहन तद् ( पु० ) भात बनाने के लिये गर्म पानी ।

अदा दे० ( वि० ) चुकता, ( स्त्री० ) हावभाव, नखरा ।

अदाता तद् ( पु० ) आदानी, सूम, कृपण, लीचद,  
दान-शक्तिहीन । [ निष्ठुरता ।

अदाया तत् ( स्त्री० ) दया-शून्यता, कठोरता, निर्दयता,

अदालत दे० (स्त्री०) न्यायालय, कचेरी ।  
 अदालत दे० (स्त्री०) बैर, विशेष, शयुता ।  
 अद्विती तत्त्वं (स्त्री०) देवमाता, देवताओं की मां,  
 महर्षि कश्यप की स्त्री, दश प्रजापति की कन्या ।  
 वामनावतार में भगवान् विष्णु इन्हींके गर्भ से  
 उत्पन्न हुए थे । १२ देवताओं की ये माता थीं ।  
 नरकासुर को मारने पर भगवान् कृष्ण जी को जो  
 दो कुण्डल मिले थे, वे कुण्डल इन्हींके समर्पित  
 हुए थे ।—तन्दन तत्त्वं (पुं०) देवता, सुर ।

अदिन तत्त्वं (पुं०) अभागा दिन, कुदिन, बुरी दशा,  
 छोटा मह दशा ।

अदिष्ट तत्त्वं (पुं०) भाग्य, प्रारब्ध, विपत्ति ।

अदीठ दे० (वि०) गुप्त, अलक्ष्य, अगोखा ।

अदीर दे० (वि०) स्वाम, महीन, छोटा ।

अदूर तत्त्वं (किं० वि०) पास, समीप ।—दर्शी वि०)  
 नासमक, अधिवारी । [दृष्टा, जो न देख पड़े ।

अदृश्य तत्त्वं (गुं०) अगोचर, अलक्षित, गुप्त, विषा

अदृष्ट तत्त्वं (गुं०) अगोचर, अलक्ष्य, अगोचर, भाग्य,

दुर्भाग्य, प्राकृतिक, प्रकृत से उत्पन्न, अग्नि,

ज्वादि, प्रातःभय ।—पुरुष तत्त्वं (पुं०) किसी

कार्य में स्वयं हृद पड़ने वाला, बिना बनाये

बनने वाला ।—पूर्व तत्त्वं (गुं०) पहले का नहीं

देखा, बिना जाना हुआ । नैयतिक मत से

धर्मधर्म की संज्ञा, नैयतिक और वैशेषिक के मत

से अदृष्ट आत्मा का धर्म है । सांख्य और पातञ्जल

अदृष्ट को बुद्धिधर्म कहते हैं ।—फल, तत्त्वं (पुं०)

पर्यक्रमों के फल, सुख दुःख ।—चाद तत्त्वं (पुं०)

एक प्रकार का सिद्धान्त जिसमें परलोकविद अदृष्ट

बातों पर बिना तर्कवितर्क किये शास्त्रानुसार

विश्वास किया जाता है ।

अदेय तत्त्वं (गुं०) दान के योग्य नहीं, असमर्पणीय,

किसी का न्यास चाहे उसे स्वामी, नेत्राला हो

या स्वयं मंगवाया हो, पुत्र, स्त्रा और सन्तान

के रहते अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आदि अदेय वस्तु

हैं ।—दान तत्त्वं (पुं०) अयोग्य को दान, अयोग्य

को दान ।

अदोखित दे० (वि०) निष्कलङ्क, निर्दोष ।

अदीरी तद् (श्रा०) बड़ी, मथौरा, उदं की दाल की  
 गिरी की सुखाई हुई यरी, कुहंडीरी ।

अद्वी तद् (स्त्री०) आघा, चगार भाग, आधी दमड़ी  
 महीन सूती कपड़ा, तनजेय ।

अदभुत तत्त्वं (वि०) अनीला, विचित्र ।—पमा तत्त्वं  
 (स्त्री०) अपमा अलंकार विशेष ।

अद्वार तत्त्वं (गुं०) पेटार्थी, लोमी, छाकची, पेट ।

अद्य तत्त्वं (अ०) आज, अब, अभी, वर्तमान दिन ।

—तन तत्त्वं (गुं०) अद्यतन, आज का उपहार,  
 काल विशेष ।—पि तत्त्वं (पुं०) अद्य पर्यन्त,  
 आज तक ।—अधि तत्त्वं (अ०) अद्यावत्,  
 आज से लेकर । (समय परिवर्तितार्थक अव्यय) ।

अद्रक तद् (स्त्री०) आद्रक, आदी, बड़ी सीढ़ ।

अद्रि तत्त्वं (पुं०) पर्यंत, पहाड़, अचल, दृढ़, शैल,

सूर्य, परिणाम विशेष ।—कीला तत्त्वं (स्त्री०)

भूमि, पृथ्वी ।—ज तत्त्वं (पुं०) शिलाजीत, मेरु,

पर्यंतजात वस्तु ।—जा तत्त्वं (स्त्री०) अद्रितनया,

पार्यंती, सीढ़ी, दृढ़, पहाड़ पर उत्पन्न होने वाली

जता ।—तनया तत्त्वं (स्त्री०) पार्यंती, दुर्गा,

अद्रिनिहन्ती ।—पति तत्त्वं (पुं०) पर्यंतराज,

हिमालय पर्यंत ।—वर्ति तत्त्वं (स्त्री०) पर्यंत से

उत्पन्न अग्नि ।—भिद् तत्त्वं (पुं०) पर्यंत भेदक,

यज्ञ, हृद् ।—राज तत्त्वं (पुं०) हिमालय पर्यंत

प्रधान पर्यंत ।—शृङ्ग तत्त्वं (पुं०) पर्यंत के ऊपर

का भाग, पर्यंत शिखर ।

अद्वितीय तत्त्वं (गुं०) अनुपम, अतुल्य, एकही, अतुल्य,  
 द्वितीय रहित ।

अद्वैत तत्त्वं (गुं०) द्वैतरहित, एक, भेद रहित, जिसके

समान दूसरा नहीं, शङ्कराचार्य का मत जिसमें

उन्होंने जीव और ईश्वर को एक माना है, जगद्

को मिथ्या सिद्ध किया है ।—चाद तत्त्वं (पुं०)

एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें प्रलयम अवगत माना

जाता है ।—चादी तत्त्वं (पुं०) जो बंधन एक ही

ईश्वर परार्थमानते हैं ।—दंशवापादी, अद्रुप वादी,

शौद्र विशेष ।

अध तत्त्वं (अ०) नीचा, तल, सीढ़ा, चापा ।—स्

तत्त्वं (अ०) नीचे, निम्न, तल, पाताल ।—



कृत तत् (गुं) नीच किया हुआ, अधवपण ।  
 —पात तत् (पुं) नीचे पतन, ध्वंस, नष्ट,  
 नरक-पात, सौभाग्य सम्पत्ति से वञ्चित होना ।—  
 प्रस्तरण तत् (पुं) कुशासन, तृणशय्या ।—  
 शिरा तत् (पुं) अधोमुख, सूर्यवंशीय त्रिशंकु  
 राजा । त्रिशंकु शब्द से विस्तार से देखो ।  
 —क्षिप्त तत् (पुं) अधस्त्यक्त, निन्दित,  
 ययातिराजा, त्रिशंकु ।

अधकच्चा दे० (गुं) अधकच्चा, अधपक्का ।  
 अधकङ्कार दे० (पुं) पहाड़ी हरीभरी और उपजाऊ  
 भूमि । [ पीड़ा, रोग विशेष, सूर्यावर्त ।  
 अधकपाली तत् (पुं) अधासीता, आधे सिर की  
 अधखिला दे० (वि०) आधाखिला हुआ ।  
 अधगो तत् (स्त्री०) नीच की इन्द्रियाँ, गुदा आदि ।  
 अधन तत् (पुं) कंगाल, दरिद्र, घनहीन, दीन ।  
 अधर्ष दे० (स्त्री०) आध पाव, वो छटाक ।  
 अधन्ना दे० (पुं) दो पैसे का एक सिक्का ।  
 अधवर, दे० (गुं) आधी दूर, नीच में, मध्य में ।  
 अधबुध दे० (वि०) अर्द्ध विचित्र ।  
 अधम तत् (गुं) नीच, निकृष्ट, अपकृष्ट, निन्दित ।  
 (पुं) जार, उपपत्ति, भेद ।—भूतक (पुं) छोटा  
 भूय, नीच भूय, पहरवाला, मोटिया, कुली ।  
 —ऋण तत् (अधमर्ग) ऋणी, धर्ता, लघुक,  
 देनदार ।—तरा (स्त्री०) स्वीया आदि नायि-  
 कायों में से एक नायिका ।—अङ्ग तत् (गुं)  
 पद, बाण, निकृष्ट अवयव ।—अधम तत् (गुं)  
 अति नीच, अति निकृष्ट, नीचाति नीच ।  
 अधमता तत् (स्त्री०) दुष्टता, नीचता ।  
 अधमरा दे० (वि०) मृतभय, अद्धमृत । [अधमता ।  
 अधमाई तत् (स्त्री०) पापिष्ठता, नीचता, दुष्टता,  
 अधमुआ (वि०) दे० अधमरा ।  
 अधर तत् (पुं) नीचे का होंठ, मध्य, शून्य, मुख का  
 अवयव विशेष, अपकृष्ट, नीच, अधःतल, स्मरा-  
 गार, योनि ।—बुद्धि तत् (वि०) अयुक्त,  
 ना समक ।—मधु तत् (पुं)  
 अधरामृत, अधररस ।—आमृत तत्  
 होंठों का मिठास, अधर रस ।—तत् (अ)  
 अधोदिक, नीचा, अधीर ।—कृत तत् (अ)

अपवाहित, पराहत, तिरस्कृत, निन्दित ।—भीत  
 (गुं) विप्रकृत, अधरीकृत ।  
 अधर्म तत् [अ + धर्म] (पुं) पाप, अन्धेरा, अन्याय,  
 शनीति, धर्म नहीं, विधर्म, धर्म विरोधी । [अधर्म  
 की उत्पत्ति के विषय में पौराणिक कथा यह है  
 कि ब्रह्मा के पृष्ठ देश से इसकी उत्पत्ति हुई है,  
 इसके घाम भाग से अलक्ष्मी (दरिद्रता) उत्पन्न  
 हुई जो अधर्म से व्याही गई ।]—आमा तत्  
 (पुं) पापिष्ठ, अन्यायी ।—आचारी तत् (पुं)  
 नीच आचार वाला ।—अति तत् (पुं) अतिदुरा-  
 चारी ।—ती तत् (पुं) पापी, दुराचारी, दोषी ।  
 अधवन दे० (गुं) आधा, अर्द्ध, बराबर का हिस्सा ।  
 अधवाङ्ग दे० (स्त्री०) आध पान, अधाई, आधे घर के  
 लोग ।  
 अधसेरा दे० (पुं) आधासेर = छटाक ।  
 अधाधुन्ध दे० (क्रि० वि०) अन्धाधुन्ध ।  
 अधान तत् (पुं) तेल आदि ।  
 अधार तत् (पुं) (आधार) आश्रय, अवलम्ब, आहार,  
 सहारा, कलेवा, खाना । [अन्यायी ।  
 अधार्मिक तत् [अ + धर्म + इक] (पुं) धर्महीन,  
 अधि तत् (अ०) आधिक्य बोधक, प्रधान्य बोधक,  
 अधिक, ऊपर का भाग, ईश्वर, उपसर्ग, सामने,  
 वश में ।  
 अधिक तत् (गुं) अतिरिक्त, बहुत, विस्तर, बहुत  
 देर, विशेष ।—तर तत् (गुं) दूसरे की अपेक्षा  
 अधिक ।—ता तत् (स्त्री०) आधिक्य,  
 अतिरिक्ता, बहुतायत, बढ़ती ।—न्तु तत् (अ०)  
 और दूसरा, अपर, विशेषतः ।—अधिक तत्  
 (पुं) बढ़ती से बढ़ती ।—अङ्ग तत् (गुं) बीस  
 शैलगुलियों से अधिक शैगुली वाला, या और  
 किसी से युक्त ।  
 अधिकारण अधिकार ।  
 अधिकारी अधिकार ।  
 अधिकारि अधिकार ।

में रहने वाला; जमींदारी में बसने वाला ।  
तत् (पु०) प्रभु, स्वामी, अधिपति, अधिकार-  
विशिष्ट, स्वत्ववान्, पुजारी, पण्डा, स्थान या  
मठधीरों के उत्तराधिकारी ।

अधिकृत तत् (पु०) देखवैया, जाँचहार, लगाया  
गया, नियोजित, कार्य में लगा हुआ, चापव्यय  
देखने वाला, अभ्यक्ष ।

अधिक्रम तत् (पु०) चढ़ाव, चढ़ाई, आरोहण ।

अधिगत तत् [अधि + गत + क्त] (गु०) अवगत,  
ज्ञात, प्राप्त, पठित, ज्ञानकार, ऊपर गये हुए,  
स्वर्गीय, मुक्त ।

अधिज्य तत् (गु०) धनुष पर ज्या चढ़ाये हुए,  
धनुषण नियोजित, धनुष चढ़ाये हुए, युद्धार्थी,  
धीर ।

अधित्यका तत् (स्त्री०) पर्वत के ऊपर का स्थान,  
अथवा भूमि, समस्थल, टीला, तराई, कोइ,  
टेकुलजैड । [अधिष्ठात्री देवता, ।

अधिदेव या अधिदेवता तत् (पु०) इष्टदेव,  
अधिदैवत तत् (पु०) मुख्य देवता, सूर्य मण्डलस्थ,  
चिन्ता करने योग्य पुरुष, महाविद्या, दैवबल ।

अधिप तत् (पु०) राजा, प्रभु, स्वामी ।

अधिपति तत् (पु०) देखो अधिप ।

अधिमास तत् (पु०) साल में का कोई । युक्तमास ।

अधिमास तत् (पु०) लौढ़, मलमास, दो अमास्या

अधियाना तत् (कि०) आधा करना, यगण हिन्सा  
करना । [का स्वामी ।

अधियारी दे० (स्त्री०) आधे का अधिकारी, आधे  
अधिरथ तत् (गु०) सारथि, रथ हाँकने वाला,  
कर्ण का पिता ।

अधिराज तत् (पु०) नरपति, महाराज ।

अधिवास तत् (पु०) श्रुम की पहली किया, वास-  
स्थान, निवास, निवृत्ता, सुगन्धि द्रव्य, प्रतिवासी ।

अधिवेदन तत् (पु०) संस्कार विशेष, विवाह ।

अधिवेशन तत् (पु०) बैठक, विचारार्थ किसी  
स्थान पर जमाव, सभा का अधिवेशन ।

अधिष्ठाता तत् [अधि + स्था + त] रचक, पालने  
वाला, अभ्यक्ष, प्रधान । (स्त्री०)—अधिष्ठात्री

तत् अधिदेवता, स्थितिकारिणी ।

अधिष्ठान तत् [अधि + स्था + भनट] (पु०) ठाँव  
वाला व्यवहार चक्र, प्रभाव चक्र, अभ्ययान, अभ-  
स्थान, स्थायी ।

अधिष्ठित तत् (गु०) स्थापित, निष्कृत ।

अधीत तत् (पु०) पढ़ा हुआ, पठित, शिक्षित ।—  
तित् अभ्ययन, पठन ।—ती तत् अभ्ययन-  
विशिष्ट, कृताभ्ययन । तत् (पु०) छात्र,  
विद्यार्थी ।

अधीन तत् (गु०) वशीभूत, आज्ञाकारी, सेवक,  
आधित, वरतापक्ष ।—ता (गु०) दासत्व, पार-  
तन्त्र्य, वशीभूत, अधीनत्व

अधीर तत् (पु०) चञ्चल, कातर, अस्थिर, अपण्डित,  
उतावला, हृदयङ्गिया ।—ती तत् (स्त्री०)  
विद्युन्, चञ्चला, मध्य भाषिका का एक भेद ।

रोहा "वक्तुक्ति पति सों कहे मध्या धीरा नारि ।  
मध्या देह धराहनो वचन अधोरा गादि ॥"

चञ्चल स्त्री ।—ता तत् (स्त्री०) घबराहट  
चञ्चलाहट, उतावली, हृदयङ्गी, चटपटी । [चंचलता ।

अधीरज तत् (पु०) घबराहट, अधीरता, अधैर्य,  
अधीश तत् (पु०) या अधीश तत् स्वामी, प्रभु,  
मालिक, ईश्वर ।—धर तत् मण्डलेश्वर,  
चक्रवर्ती । [अध्यक्ष ।

अधीश्वर तत् (पु०) अधिपति, राजा, स्वामी पति,  
अधुना तत् (अ०) इस धेर, अथ अभी, इदानीं,  
सम्प्रति ।—तन (गु०) इदानीन्तन, साम्प्रतिक,  
वर्तमान समय में रहने वाला ।

अधूरा दे० (गु०) अधवना, अपूर्ण, असम्मत असमाप्त ।

अधो दे० (गु०) अधवैया, अधचढ़ा, इसका प्रयोग  
प्रायः अधिकता से शिष्यों के लिये ही होता है ।

अधेन दे० (पु०) (अध्ययन का अध०) पढ़ना, अभ्यास ।

अधेला दे० (पु०) आधा पैसा, अधपाई, पैसे का  
आधा ।

अधेली दे० (स्त्री०) आधा रुपया, अठसी, आठ आना ।

अधैर्य तत् (पु०) उतावला, अस्थिर, प्याडुल ।—  
चान् तत् (वि०) चानुर, व्यग्र, उतावला ।

अधो तत् (पु०) नीचे, तल्ले, नरक ।—गामी तत्  
(वि०) अधनति की ओर जाने वाला ।

अधोगत तत्त्वं (स्त्री०) अवतत, नीचगामी ।—तत्त्वं

अधोगमन, नरक प्राप्ति, अधोपतन । [ कण्ठ ।

अधोनीर दे० (स्त्री०) वस्त्र विशेष, एक प्रकार का

अधोभ्रम तत्त्वं (पुं०) अति नीच, पाजी, नीच से नीच ।

अधोमुख तत्त्वं (पुं०) अवतत मुख, नीचे मुख, औंधा मुख । [ पाद ।

अधोवायु तत्त्वं (पुं०) अग्नवायु, मरुत्क्रिया, पञ्च-

अधोभुवन तत्त्वं (पुं०) पाताल, यति के रहने का स्थान । [ का नाम, नीचा शिर ।

अधोमस्तक तत्त्वं (पुं०) सूर्यवंश का त्रिशंकु राजा

अधोतज्ञ तत्त्वं (पुं०) श्रोकृष्ण, नारायण, इन्द्रिय-जन्य, ज्ञान को दश करने वाला, योगीश्वर, वासुदेव । [ ता (स्त्री०) कर्तृत्व, तावावधारकता ।

अध्यक्ष तत्त्वं (पुं०) स्वामी, प्रभु, मुख्य, प्रधान

अध्ययन तत्त्वं (पुं०) पाठ, पठन, पढ़ना ।

अध्यक्षर तत्त्वं (पुं०) प्रणय, ओं, ओंकार ।

अध्ययसाय तत्त्वं (पुं०) मत्तज, उद्यम, जगतात्, उपाय, यत्न, आस्था, उत्साह, कर्म, उत्तम काम करने की शक्यता । कर्मदृष्टा ।—नी तत्त्वं (वि०) उत्साही, काम को उत्तमता पूर्वक करने की शक्तिकता ।

अध्ययन तत्त्वं (पुं०) भोजन करने के बाद ही फिर भोजन करना, अधिक परिणाम में खाना ।

अध्यात्म तत्त्वं (पुं०) आत्मज्ञान, आत्म-संयन्त्री,

आत्म-विषयक ।—दृष्ट तत्त्वं (पुं०) ऋषि, मुनि,

आत्म-दर्शक ।—विद्या तत्त्वं (स्त्री०) ब्रह्मविद्या,

आत्मतत्त्व विषयक शास्त्र ।—रति तत्त्वं (स्त्री०)

जो सर्वदा भगवान् की अर्चना करते हैं ।—

तत्त्वं (पुं०) अध्यात्मनिष्ठा, पारमार्थिकता,

जीवार्त्ता, परमात्मा ।

अध्यापक तत्त्वं (पुं०) पाठक, गुरु, उपाध्याय, शिक्षक,

वेद शास्त्र पढ़ाने वाला ।—नी दे० (स्त्री०) पढ़ाई

सुदर्शनी । [ सिलाना, शिक्षा देना ।

अध्यापन तत्त्वं (पुं०) पाठ पढ़ाना, विद्यादान,

अध्यापय तत्त्वं (पुं०) प्रकरण, पर्व, पाठ, सर्ग, परिच्छेद,

पुस्तक के भाग । [ अधिष्ठेय, आच-

अध्यारोप तत्त्वं (पुं०) मिथ्या आग्रह, मिथ्या

अध्यारोहण तत्त्वं (पुं०) आरोहण, चढ़ना ।

अध्यारोही तत्त्वं (पुं०) आरोहण-कर्त्ता, चढ़ने वाला ।

अध्यास तत्त्वं आरोप, अम, मूल, एक वस्तु में

दूसरी वस्तु की कल्पना, निवास ।—नी—ति

—ति तत्त्वं (पुं०) कृत-निवास ।—नीन तत्त्वं

आसनस्थ, कृताधिवेशन, उपविष्ट, बैठा हुआ ।

अध्याहरण तत्त्वं (पुं०) कल्पना करना, वितर्क काना ।

अध्याहार तत्त्वं (पुं०) आर्क्षा, पूर्ति के लिये शब्द

छेड़ना, वाक्य का अर्थ पूरा करने के लिये लुप्त

शब्द का अनुमर्धान करने अर्थ सुगम करना ।

वाक्य पूर्ति के लिये पदोपेतना काना ।

अध्ययित तत्त्वं (पुं०) रसा हुआ, रहता हुआ ।

अध्ययूदा तत्त्वं (स्त्री०) विवाहिता स्त्री, परिणीता ।

अध्येता तत्त्वं (पुं०) छात्र, शिष्य, पाठक ।

अध्येषणा तत्त्वं (स्त्री०) वाचना, मार्गना, आदर

पूर्वक प्रार्थना, प्रण ।

अध्यय तत्त्वं (पुं०) अनिश्चित, अशुभभङ्गुर ।

अध्या तत्त्वं (पुं०) बाट, मार्ग, पन्थ ।—ग तत्त्वं

(पुं०) पथिक, पन्थ, घटोही, उष्ट्र, सूर्य खेवर,

वृक्ष विशेष ।—गा तत्त्वं (स्त्री०) भागीरथी, गङ्गा,

जान्हवी ।—गामी तत्त्वं (पुं०) पथिक, पन्थ,

—जा तत्त्वं (स्त्री०) वृक्ष विशेष ।—नीन तत्त्वं

(पुं०) पथिक, पर्यटन, भ्रमणकर्त्ता ।—न्य तत्त्वं

(पुं०) पथिक ।

अध्वर तत्त्वं (पुं०) वाग, यज्ञ, वसुभेद, सावधान ।

अध्वर्यु तत्त्वं (पुं०) यजुर्वेदज्ञ, होमकर्त्ता विशेष ।

अध्वर्यु का कार्य यह है कि यज्ञमण्डप में भूमि

को नाप कर कुँद बनावे, यज्ञीय पात्र तैयार

करे, जा का समिध और पानी लावे, अग्नि प्रदीप्त

करे, और यज्ञशु को ला कर उसको दलि दे

और उस समय यज्ञशु के कल्याणार्थ यजुर्वेद के

मन्त्र पढ़ता ॥

अन अहिवात दे० (पु०) वैषव्य, रँडगा, विघापन,  
सौभाग्य-हित । [ प्रयोजन ।

अनइच्छा तद्० (स्त्री०) विना चाह, चाह नहीं, विना  
अनइच्छित तद्० (पु०) विना चाह का, विना प्रयोजन  
का, अमिष्ट नहीं ।

अनइस तद्० (पु०) डूगा, निकम्मा, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।

अनक दे० (पु०) नगाडा, मुद्ग, नीच, छोटो ।

अनकरीव दे० (क्रि० वि०) प्रायः, लगभग ।

अनकहा दे० (वि०) अकथित, जो कहा हुआ न हो ।

अनख दे० (पु०) ईर्ष्या, राह, अकस, जबाब, कुड़न,  
क्रोध, वैरा, द्वेष, द्रोह । [ गाली ।

अनख गार दे० (पु०) क्रोधयुक्त गाली, क्रोध की  
अनखाना (क्रिया०) क्रोध करना, चिढ़ना ।

अनगढ़ दे० (पु०) अनगना, अग्रज, अशिष्टिन,  
प्राकृतिक, बिना बनाया हुआ ।— (पु०) देहा,  
बाँहा, अनसीखा ।— (स्त्री०) चेडेकाने,  
सेमेल, बे-सिर-पैर का, बेदहा, जैसे अनगढ़ी घात ।

अनगणित तद्० (पु०) बहुत, असंख्यात, अपार ।—  
अनगणित तद्० या अनगिनतो दे० (पु०)  
अधिक संख्यक ।

अनगार तद्० (पु०) आगारगृह्य, गृहहित, अग्नि,  
मुनि, तपस्वी, वनवासी ।

अनगिनत दे० (वि०) अपार, असंख्य ।

अनगिना दे० (वि०) असंख्य, विना गिना हुआ ।

अनगि तद्० (पु०) अग्नि स्मृति विहित अग्निहोत्र-  
कर्महीन, निगि, अग्नि का अभाव, अग्नि चयन  
रहित यज्ञ ।

अनघ तद्० [अन + घ] (पु०) निष्पाप, निर्मल,  
पाप रहित, सुकृती, पुण्यवान्, पवित्र, शुद्ध ।—  
तद्० (स्त्री०) सुन्दर, अच्छा, गान का एक  
परिणाम ।

अनङ्ग तद्० (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ । यज्ञा के  
आदेश से तारकासुर पर विजय प्राप्त करने के  
लिये महादेव के पुत्र का सेनापति होना आवश्यक  
था, परन्तु योगीश्वर महादेव का विवाह तो  
हुआ ही नहीं था और वे विवाह करना भी  
नहीं चाहते थे, अतएव कामदेव पर यह भार  
सौंपा गया, उसने अपना काम प्रारम्भ कर दिया ।

जब महादेव को यह बात मालूम हुई, तब उन्होंने  
अपने शेष से कामदेव को जला डाला, तभी से  
कामदेव का नाम अनङ्ग पड़ा । कामदेव दूसरे  
जन्म में भगवान् कृष्ण का पुत्र हुआ, नाम था  
प्रद्युम्न, और इसकी स्त्री मायावती हुई । (पु०)  
शरीर रहित, अङ्गहीन । (पु०) आकार, मन ।  
—मीम (पु०) उदीना का अत्यन्त प्रसिद्ध राजा,  
[कहते हैं जगन्नाथ जी का मन्दिर इसी राजा ने  
बनवाया था । ११७४ ख्रिष्टाब्द में यह वहाँ राज्य  
करता था । यह अत्यन्त पुण्यारामा तथा  
भगवती था ।]

अनचाहित दे० (पु०) नहीं चाहा हुआ, इच्छाहित,  
अनिच्छित । [ ह्मात्, दैवात् ।

अनचित दे० (पु०) अचानक, एकाएक, अचोत, अक-

अनचीन्हा दे० (वि०) अपरिचित, बेजान वहचान का ।

अनक्कीला तद्० (पु०) या अनक्कीला तद्० (पु०)  
बिना छोला हुआ, खिलका समेत, अनाड़ी ।

अनज्ञान दे० (पु०) अनवद्विधान, अन-नीरडा, अपरि-  
चित, अज्ञातकृश्री, निमुद्दि ।— (क्रि० वि०)  
अन जाने, बिना जाने बूझे, बिना जाने, नहीं  
जान के । [ उपति-शक्ति-रहित ।

अनजामा तद्० (पु०) मरु, बालू, अफजा, बिना उगा,  
अनजीवत तद्० (पु०) प्रायः रहित, मृतक, सुर्दा, शव ।

रामायण में इसका प्रयोग आया है । यथा—  
“अनजीवत सम औद शणी ।”

अनट दे० (स्त्री०) गड, गिरह, पेंड, विरुद्धाचरण,  
विपरीत आचरण ।

अनडवान तद्० (पु०) बैल, हाँड, घलद, घृ ।

अनत तद्० (अनघ का घ) (पु०) अन्यत्र, और ठाँव,  
दूसरी और, अन्यस्थान, सीमा । [ अल्ल, गुप्त ।

अनदेखा तद्० (पु०) अट्ट, नहीं देखा हुआ, अट्टय,

अनघन दे० (पु०) घन धान्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य ।

अनन्त तद्० (पु०) विष्णु, बलदेव, शेषनाग, अनन्त-  
जित् नामक जैनाचार्य, यासुकि, सिन्धुवार वृक्ष,  
आकाश, अन्न, अन्नख, (पु०) अन्न रहित,  
अनवधि, अशेष, असीम, अपरिमित, अपार । (पु०)  
काश्मीर का राजा, [यह राजा संप्रमराज का  
पुत्र था, चाव्यवस्था ही से इसकी वीरता स्फुटित

होने लग गई थी। अनेक युद्धों में इसने विजय प्राप्त किया था। शन्त में वह स्त्री के प्रेम से राजकार्य से उदासीन हो गया था। यद्यपि सुचतुर मंत्री राज्य की उत्तम व्यवस्था करते थे, तथापि स्त्री के कहने से इसने अपने पुत्र कलश को काशमीर का राजा बनाया, राज्य पाकर वह उच्छ्वस्त हो गया, और पिता के साथ अनुचित व्यवहार करने लगा। मंत्रियों को यह बात खटकने लगी। अतएव पुनः उन लोगों ने कौशल से वृद्ध अनन्त से राज पाट अपने हाथ में लेने को कहा। राजा ने वैसा ही किया।—गौर तत् (पु०) सहित शास्त्र, स्वर भेद।—चतुर्दशी तत् (स्त्री०) भाद्र मास की शुक्ल चतुर्दशी, अनन्त देव का प्रत विशेष।—विजय (पु०) राजा युधिष्ठिर का शब्द।—धीर्य (पु०) अपरिशीम पराक्रम।—व्रत (पु०) भाद्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन जो उपवास किया जाता है, अनन्त देव का प्रत।—मूल (पु०) मूल विशेष, स्वनामधेयता लता, शीघ्र-विशेष।

अनन्तर तत् (पु०) अनन्तरि, अश्वयहित, अनवकाश अत्यन्त समीप, पास। (पु०) पीछे, पास, पश्चात्।—ज तत् (पु०) क्षत्रिया के गर्भ में ब्राह्मण से वृष्य, अथवा क्षत्रिय के वीर्य से वेदया स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनधिकार तत् (पु०) अधिकार का न होना, प्रभुत्व का शमाव, विवशता। (वि०) अधिकार रहित, अयोग्य।—तत् (वि०) जिसे अधिकार न हो।

अनध्याय-तत् (पु०) वह दिन जिसमें शाखानुसार पढ़ने पढ़ाने की मनाई हो। यथा १, ३०, ८, १४, १६ तिथियाँ अनाध्याय की हैं।

अनन्य तत् (पु०) एक ही, जिसको दूसरे का भरोसा नहीं, अभिन्न, अन्य नहीं।—गति तत् (पु०) अनन्य गतिक, गत्यन्तर-शून्य, एकाग्र्य।—चेता तत् (पु०) एकनिष्ठ, अनन्यमना, एकचित्त, एकतान।—ता तत् (स्त्री) एकनिष्ठा।

अनपच दे० (पु०) अजीर्ण, अपात।

तत् (पु०) मूर्ख, अज्ञ, विद्या हीन, अविचित।

अनपत्य तत् (पु०) निःसन्तान, निर्धर, पुत्रहीन, अपुत्र।

अनपत्रप तत् (पु०) निर्लज्ज, फूहड़, लज्जाहीन।  
अनपराध तत् (पु०) निर्दोष, निरपराध, दोषशून्य, शुद्ध, सधरित्र।

अनपाय तत् (पु०) अनश्वर, अक्षय, अनारय, विर-  
स्वार्ह (पु०) अलङ्कृत।—तत् (पु०) स्थिर, निश्चय, अविनश्वर, अपाय रहित।—नि-  
तत् (स्त्री०) नाशरहित, अपक्ष, रूढ़, नित्य।

अनपेक्ष तत् (पु०) स्वाधीन, निरपेक्ष।—रिति तत् (पु०) अननुरक्त, अमान्य-कृत, वर्जित, अनि-  
च्छित।

अनवन दे० (स्त्री०) विगाह, विरोध, फूट। [पूँछी।  
अनवनाव तत् (पु०) अनश्वर, विगाह, फूट, पेंडा-  
अनविधा दे० (वि०) विगाह छेद किया हुआ।

अनवृत्त तत् (पु०) असमस्त, अनजान, बुद्धिहीन,  
निर्वोच।

अनवेधा तत् (पु०) अनवेदा, अवेधा, अद्विधित।  
अनवोल तत् (पु०) बुधचाप, अवाक, अमोल, अन-  
बोला, चुपका, गूंगा, साफ नहीं बोलने वाला,  
अस्पष्टवादी, पशु।—ना (वि०) गूंगा।

अनव्याह्रा दे० (पु०) अविवाहित, विनक्याहा, बचारा।  
अनमल तत् (पु०) बुराई, छुटाई, डुगा, खोटा,  
अमङ्गल।—है तत् (स्त्री) बुराई। [मैं गमन।

अनभिगमन तत् (पु०) अस्थान गमन, भयङ्कर श्यान  
अनभिन्न तत् (पु०) अनजान, अज्ञान, मूर्ख, निर्वोच।  
—ता तत् (स्त्री०) अनजानपना, अनादीपन।

अनभिप्रेत तत् (वि०) अभिप्राय विरुद्ध, अनभिमत।  
अनभिमत तत् (पु०) असम्मत, मतविरुद्ध, अनिष्ट।  
अनभिच्यक्त तत् (पु०) अस्पष्ट, अव्यक्त, अप्रकाश।

अनभ्यस्त तत् (पु०) अनभ्यासित, अपठित, अन-  
धीत। [हार, येमहाधरा।

अनभ्यास तत् (पु०) अशिष्टा, अनभ्ययन, अव्ययव-  
अनमना तत् (पु०) सुरू, उदास, चाबरा, सोची।

अनघ तत् (पु०) अविनत, अविनयी, उदण्ड।

अनमिल दे० (पु०) बेमेल, बेजोड़, टूटे-फूटे, अटपट।

अनमोल तत् (पु०) अमोल, उत्तम, अमूल्य, बढ़िया।

अनय तत्त्वं ( पु० ) व्यसन, विषय, भाग्य, अशुभ, दुर्नैति, पाप । [ विगाड़, ऐंठा ऐंठी ।

अनरस तद् ( पु० ) विरस मिश्रों में अनश्नाव, फूट, अनरसा दे० ( वि० ) बीमार, अनमना, रोगी । कुंठिति । अनरोति तद् ( स्त्री० ) कुचाल, कुडक, अष्टरीति, अनर्गल तद् ( पु० ) निर्गल, अबाध, अप्रतिहत, प्रतिबन्धक रहित, ओटक, स्वेच्छक, योगेक, अडबंढ ।

अनर्घ्य तद् ( पु० ) अमूल्य, अक्रय, अस्युकृष्ट । अनर्जित तद् ( पु० ) अनुपाजित, बिना परिश्रम-लब्ध, बिना कमाया हुआ ।

अनर्थ तद् ( पु० ) वृथा, निष्फल, अर्थहीन, अनुचित । —क तद् ( पु० ) वृथा, निष्फल, अप्रयोजन, निरर्थक । —कारी ( वि० ) हानि करने वाला ।

अनर्ह तद् ( पु० ) अनुपयुक्त, अवैय्य, कुगत्र ।

अनल तद् ( पु० ) पूर्णता रहित, अग्नि, आग, असुमेद, भेला, पित्त । —पक्ष तद् ( पु० ) पक्ष विशेष, यह पक्षी सर्वदा आकाश ही में उड़ा करता है, जमीन पर कभी नहीं रहता, अपने अंडे को वह आकाश से गिरा देता है । भैंसा पृथ्वी पर पहुँचने से पहले ही फूट जाता है, और उसमें से बच्चा निकल आता है, जो उसी समय से बढ़ने लग जाता है । यथाः—

दोहा

“अनलपक्ष का चेदुआ, गिरेउ धरणि अराव ।  
बहु अलीन यह लीन है, भिषयो तासु के धाय ॥”

—विचारमाळा ।

—प्रसा तद् ( स्त्री० ) ज्योतिष्मती नामक लता विशेष, अग्नि की शिखा, दीप्ति । —प्रिया तद् ( स्त्री० ) अग्नि-भार्या, स्वाहा । [ अग्नी, उद्योगी ।

अनलस तद् ( पु० ) आलस्य-विहीन, उद्युक्त, परि-

अनल्प तद् ( पु० ) अधिक, बहुविहार ।

अनलेख तद् ( वि० ) अगोचर, अदृश्य ।

अनवकाश तद् ( पु० ) अवकाश रहित, निरवसर ।

अनवद्य तद् ( पु० ) अनिन्दित, सुन्दर, स्वच्छ, मान्य-मान, संप्राम्त । —अङ्ग तद् ( पु० ) सुन्दर अङ्ग, सुडौल, शरीर । [ मृण्य विशेष ।

अनवट दे० ( पु० ) छत्ता, छिड़ीया, छियों के पैर का

अनवधान तद् ( पु० ) अमनोयोग, चित्त की एकाग्रता का अभाव, अप्रवधान, चित्त का अनावेश, अमनो-योगी, अनाविष्ट । —ता तद् ( पु० ) मनोयोग शून्यता, प्रमाद, अनवद्विधता, असावधानता ।

अनवरत तद् ( पु० ) निरन्तर, अजस्र, सर्वदा, अविरत, नित्य, लगातार, प्रतिदिन ।

अनवसर तद् ( पु० ) कुसमय, असमय, अनयकारा ।

अनवस्था तद् ( स्त्री० ) दुर्दशा, अवाधा, अवस्था-रहित, स्थित्यभाव, दरिद्रता, अस्थिर, दुरवस्था, तर्क विशेष । नैयायिकों के मत से एक प्रकार का दोष, यथा—मनुष्य किससे उत्पन्न हुए, इस प्रश्न का उत्तर दिया गया कि मनु से, मनु कहाँ से उत्पन्न हुए, ब्रह्मा से, प्रज्ञा कहाँ से उत्पन्न हुए, विष्णु से, इसी प्रकार लगातार प्रश्न करते जाने से कुछ निरर्थक नहीं हो सकता । निरर्थक होना तो दूर रहा, रनों का उत्तर देना ही कठिन हो जायगा । इसीको अनवस्था दोष कहते हैं ।

—न तद् ( पु० ) वायु, अस्थायित्व, कुस्या-यित्वा, कुप्यवहार, अवस्थिति-शून्य, अस्थिर ।

—स्थित तद् ( पु० ) अस्थिर, चञ्चल । —स्थित तद् ( स्त्री० ) वासरहित, अवस्थानाभाव, अस्थि-रता । —स्थितचित्त तद् ( पु० ) इन्माद, पागल, चाञ्चल्य, अनभिनिविष्ट ।

अनशन तद् ( पु० ) अनाहार, उपवास, अमोजन । —व्रत तद् ( पु० ) उपवास करते करते शरीर छोड़ देना ।

अनश्वर तद् ( पु० ) अविनाशी, नित्य, सनातन ।

अनसखरी दे० ( स्त्री० ) पक्षीसेई निखरी ।

अनसिखा दे० ( पु० ) अनपढ़ा, मूर्ख, अज्ञान, अशिक्षित ।

अनसुन तद् ( पु० ) आनाकानी, अमानित, न सुना हुआ । —नी ( स्त्री० ) न सुनी हुई ।

अनसूया तद् ( स्त्री० ) असूया रहित, कलङ्क, एक अपि कन्या । महर्षि अग्नि से यह स्याही गई थी, दक्ष प्रजापति की कन्या थी और इसकी माता का नाम प्रसूति था । महाकवि कालिदास हून राजकुमार नाटक में भी एक अनसूया का नाम आता है, जो

होने लग गई थी। अनेक युद्धों में हसने विजय प्राप्त किया था। शन्त में वह स्त्री के प्रेम से राजकार्य से उदासीन हो गया था। यद्यपि सुचतुर मंत्री राज्य की उत्तम व्यवस्था करते थे, तथापि स्त्री के कहने से हसने अपने पुत्र दशरथ के काशमीर का राजा बनाया, राज्य पाकर वह उत्कृष्ट हो गया, और पिता के साथ अनुचित व्यवहार करने लगा। मंत्रियों को यह बात खटकने लगी। अतएव पुनः उन लोगों ने कौशल से युद्ध अनन्त से राज पाट अपने हाथ में लेने को कहा। राजा ने वैसा ही किया।—गौर तत् (पु०) सगीत राघव, स्वर भेद।—चतुर्दशी तत् (श्री०) भाद्र भास की शुक्ल चतुर्दशी, अनन्त देव का व्रत विशेष।—विजय (पु०) राजा युधिष्ठिर का शत्रु।—घोर्य (पु०) अपरितीम पराक्रम।—व्रत (पु०) भाद्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन जो उपवास किया जाता है, अनन्त देव का व्रत।—मूल (पु०) मूल विशेष, स्वनामस्थान लता, औषध विशेष।

अनन्तर तत् (गु०) अनन्तरि, अत्यवहित, अनवकाश अवस्थत समीप, पास। (पु०) पीछे, पास, पश्चात्।—ज तत् (पु०) क्षत्रिया के गर्भ में प्राज्ञाय से उत्पन्न, अथवा क्षत्रिय के वीर्य से पैदा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनधिकार तत् (पु०) अधिकार का न होना, प्रभुत्व का अभाव, विवशता। (वि०) अधिकार रहित, अयोग्य।—नी तत् (वि०) जिसे अधिकार न हो।

अनध्याय तत् (पु०) यह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने की सनाई हो। यथा १, २०, ८, १४, १५ तिथियाँ अनाध्याय की हैं।

अनन्य तत् (गु०) एक ही, जिसको दूसरे का भरोसा नहीं, अभिन्न, अन्य नहीं।—गति तत् (गु०) अनन्य गतिक, गत्यन्तर-शून्य, एकाग्र।—चेता तत् (पु०) एकनिष्ठ, अनन्यमना, एकचित्त, एकतान।—ता तत् (श्री) एकनिष्ठ।

अनपच दे० (पु०) अजीर्ण, अपात।

अनपच तत् (गु०) मूर्ख, अज्ञ, विद्याहीन, अशिक्षित।

अनपत्य तत् (गु०) निःसन्तान, निर्वंश, पुत्रहीन, अपुत्र।

अनपन्नप तत् (गु०) निर्लज्ज, फूहड़, लज्जहीन।

अनपराध तत् (गु०) निर्दोष, निरपराध, दोषशून्य, शुद्ध, सत्प्रिय।

अनपाय तत् (गु०) अनरवर, अपय, अनाशय, चिरस्थाय (पु०) अलक्ष्य।—नी तत् (पु०) स्थिर, निश्चय, अविनश्वर, अपाय रहित।—निनी तत् (श्री०) नागरहित, अपच, दूरे, गत्य।

अनपेक्ष तत् (गु०) स्वाधीन, निरपेक्ष।—रिति तत् (गु०) अननुबद्ध, अमान्य-कृत, वर्जित, अनिच्छित।

अनवन दे० (श्री०) बिगाड़, विरोध, कूट। [पुं०]।

अनवनाव तत् (पु०) अनरम, बिगाड़, कूट, वैज्ञानविद्या दे० (वि०) बिना छेद किया हुआ।

अनवृत्त तत् (गु०) असमक, अनजान, पुद्बिहीन, निर्दोष।

अनवेधा तत् (पु०) समवेद, अवेधा, पद्धिद्वित।

अनशोल तत् (पु०) पुश्चाद, अवाक, अवोक्ष, अनशाला, बुगका, गुंगा, साफ नहीं शोलेने वाला, अस्पृष्टादी, पशु।—ना (वि०) गुंगा।

अनव्याहा दे० (पु०) अविवाहित, विनव्याहा, क्वारा।

अनभल तत् (पु०) बुराई, बुटाई, गुण, खोटा, समझल।—ई तत् (श्री) बुराई। [मैं गमन।

अनभिगमन तत् (पु०) अस्थान गमन, अगम्य स्थान

अनभिज्ञ तत् (गु०) अनजान, अज्ञान, मूर्ख, निर्दोष।

—ता तत् (श्री०) अनजानपना, अनाड़ीपन।

अनभिप्रेत तत् (वि०) अभिप्राय विरुद्ध, अनभिमत।

अनभिमत तत् (गु०) असमन, मतविरुद्ध, अनिष्ट।

अनमिष्यक तत् (गु०) अस्पृष्ट, अम्यक्त, अप्रकाश।

अनभ्यस्त तत् (गु०) अनभ्यासित, अपठित, अनधीत। [हार, येमदापरा।

अनभ्यास तत् (पु०) अशिष्टा, अनभ्ययन, अभ्ययव-

अनमना तत् (गु०) सुप्त, उदास, धांधरा, सोची।

अनम्र तत् (गु०) अविनत, अविनयी, उदण्ड।

अनमिल दे० (गु०) येमेल, बेजोड़, टूटे-फूटे, अटपट।

अनमोल तत् (गु०) अमोल, उत्तम, अमूल्य, बढ़िया।

अनय तत् ( पु० ) व्यसन, विषय, भाग्य, अशुभ,  
दुर्नाति, पाप । [ विगाड़, पेठा पेठी ।

अनरस तत् ( पु० ) विरस मिश्रों में अनयनाव, फूट,  
अनरसा दे० ( वि० ) भीमार, अनमना, रोगी । [ कुरीति ।

अनरोति तत् ( स्त्री० ) कुचाल, कुडक, अष्टरीति,  
अनर्गत तत् ( पु० ) निर्गल, अवाध, अप्रतिहत,  
प्रतिबन्धक रहित, ओटक, स्वेच्छक, बेगीक,  
अडपंड ।

अनर्थ तत् ( पु० ) अमृत्य, अक्रिय, अयुक्तकृत ।

अनर्जित तत् ( पु० ) अनुपाजित, बिना परिश्रम-  
लब्ध, बिना कमाया हुआ ।

अनर्थ तत् ( पु० ) दृष्टा, निष्फल, अर्थहीन, अनुचित ।  
—क तत् ( पु० ) दृष्टा, निष्फल, अप्रयोजन,  
निर्धनक :—कारी ( वि० ) हानि करने वाला ।

अनर्ह तत् ( पु० ) अनुपयुक्त, अवैय्य, कुगत्र ।

अनल तत् ( पु० ) पर्यता रहित, अग्नि, आग, असुप्तेद,  
भेला, वित्त ।—पत्त तत् ( पु० ) पक्षि विशेष,  
यह पक्षी सर्वदा आकाश ही में उड़ा करता है,  
जमीन पर कभी नहीं रहता, अपने अंडे को वह  
आकाश से गिरा देता है । अंडा पृथ्वी पर  
पहुँचने से पहले ही फूट जाता है, और उसमें से  
बच्चा निकल आता है, जो उसी समय से उड़ने  
लग जाता है । यथाः—

दोहा

“अनलपत्त का चेदुष्मा, गिरेउ धरणि अराय ।  
यहु अलीन यह लीन है, मिकयो तासु को धाय ॥”

—विचारमाळा ।

—प्रभा तत् ( स्त्री० ) ज्योतिष्मती नामक लता  
विशेष, अग्नि की शिक्षा, दीप्ति ।—प्रिया तत् ( स्त्री० ) अग्नि-भार्या, स्वाहा । [ अग्नी, उद्योगी ।

अनलस तत् ( पु० ) आलस्य-विहीन, वृत्त, परि-

अनलप तत् ( पु० ) अधिक, बहुविस्तर ।

अनलेख तत् ( वि० ) अगोचर, अदृश्य ।

अनवकाश तत् ( पु० ) अवकाश रहित, निरवसर ।

अनवद्य तत् ( पु० ) अनिन्दित, सुन्दर, स्वच्छ, मान्य-  
मान, सत्प्रान्त ।—अङ्ग तत् ( पु० ) सुन्दर अङ्ग,  
सुडौल, शरीर । [ भूषण विशेष ।

अनवट दे० ( पु० ) छद्म, विछीया, स्त्रियों के पैर का

अनवधान तत् ( पु० ) अनवधान, चित्त की एकाग्रता  
का अभाव, अप्रतिधान, चित्त का अनावेश, अमनो-  
योगी, अनाविष्ट ।—ता तत् ( पु० ) मनोमोह  
शून्यता, प्रमाद, अनवहितता, असावधानता ।

अनवरत तत् ( पु० ) निरन्तर, अजल, सर्वदा,  
अविरत, नित्य, लगातार, प्रतिदिन ।

अनवसर तत् ( पु० ) कुसमय, असमय, अनवकाश ।

अनवस्था तत् ( स्त्री० ) दुर्दशा, अवाधा, अवस्था-  
रहित, स्थिरभाव, दरिद्रता, अस्थिर, दुःखस्था,  
तर्क विशेष । नैयायिकों के मत से एक प्रकार का  
दोष, यथा—मनुष्य किससे उपद्रव हुए, इस  
प्रश्न का उत्तर दिया गया कि मनु से, मनु कहाँ  
से उपद्रव हुए, मत्स्या से, मत्स्या कहाँ से उपद्रव  
हुए, विष्णु से, इसी प्रकार लगातार प्रश्न करते  
जाने से कुछ निर्णय नहीं हो सकता । निर्णय  
होना तो दूर रहा, रनों का उत्तर देना ही कठिन  
हो जायगा । इसीको अनवस्था दोष कहते हैं ।

—न तत् ( पु० ) वायु, अस्थायित्व, कुस्था-  
यित्वा, कुप्यवहार, अपस्थिति-शून्य, अस्थिर ।

—स्थित तत् ( पु० ) अस्थिर, चञ्चल ।—स्थित  
तत् ( स्त्री० ) वासरहित, अवस्थानाभाव, अस्थि-  
रता ।—स्थितचित्त तत् ( पु० ) वन्माद, पागल,  
वाचक्य, अनमिनिविष्ट ।

अनशन तत् ( पु० ) अनाहार, उपवास, अमोजन ।—  
मृत तत् ( पु० ) उपवास करते करते शरीर  
छोड़ देना ।

अनश्वर तत् ( पु० ) अविनारी, निरय, सनातन ।

अनसखरी दे० ( स्त्री० ) पक्षीसोई निलरी ।

अनसिखा दे० ( पु० ) अनपढ़ा, मूर्ख, अज्ञान,  
अशिक्षित ।

अनसुन तत् ( पु० ) आनाकानी, अमानित, न  
सुना हुआ ।—नी ( स्त्री० ) न सुनी हुई ।

अनसूया तत् ( स्त्री० ) असूया रहित, कलह, एक  
अपि कन्या । महर्षि अग्नि से यह स्थायी गई थी,  
दस प्रजापति की कन्या थी और इसकी माता का  
नाम प्रमृति था । महाकवि काशिकायन कृत शकुन्तला  
नाटक में भी एक अनसूया का नाम आता है, जो



होने लग गई थी। अनेक युद्धों में इसने विजय प्राप्त किया था। शान्त में वह स्त्री के प्रेम से राजकार्य से उदासीन हो गया था। यद्यपि सुचतुर मंत्री राज्य की उत्तम व्यवस्था करते थे, तथापि स्त्री के कहने से इसने अपने पुत्र कछश के काशमीर का राजा बनाया, राज्य बाँट वह उलूखल हो गया, और पिता के साथ अनुचित व्यवहार करने लगा। मंत्रियों को यह बात खटकने लगी। अतएव पुनः उन लोगों ने कौशल से वृद्ध अनन्त से राज पाट अपने हाथ में लेने को कहा। राजा ने वैसा ही किया।—गौर तत् (पु०) सङ्कोच शास्त्र, स्वर भेद।—चतुर्दशी तत् (स्त्री०) भाद्र मास की शुक्ल चतुर्दशी, अनन्त देव का प्रत विशेष।—विजय (पु०) राजा युधिष्ठिर का शङ्ख।—वीर्य (पु०) अपरिशील पराक्रम।—व्रत (पु०) भाद्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन जो उपवास किया जाता है, अनन्त देव का प्रत।—भूल (पु०) भूल विशेष, स्वनामधेयता लता, औषध विशेष।

अनन्तर तत् (पु०) अनन्तरि, अव्यवहित, अनवकाश अव्यस्त समीप, पास। (पु०) पीछे, पास, परचाव।—ज तत् (पु०) क्षत्रिया के गर्भ में ब्राह्मण से शरण, अथवा क्षत्रिय के वीर्य से वेश्या स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनधिकार तत् (पु०) अधिकार का न होना, प्रभुत्व का अभाव, विवशता। (वि०) अधिकार रहित, अयोग्य।—नी तत् (वि०) जिस अधिकार न हो।

अनध्याय तत् (पु०) वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने की मनाई हो। यथा १, २०, २१, १४, १५ तिथियाँ अनध्याय की हैं।

अनन्य तत् (पु०) एक ही, जिसको दूसरे का भरोसा नहीं, अमिश्र, अन्य नहीं।—गति तत् (पु०) अनन्य गतिक, गत्यन्तर-शून्य, एकाग्र।—चेता तत् (पु०) एकनिष्ठ, अनन्यमना, एकचित्त, एकतान।—ता तत् (स्त्री) एकनिष्ठा।

अनपच दे० (पु०) अजीर्ण, अफरा।

तत् (पु०) मूल, अन्न, विद्या हीन, अशिक्षित।

अनपत्य तत् (पु०) निःसन्तान, निर्वैश, पुत्रहीन, अपुत्र।

अनपत्रप तत् (पु०) निर्लज्ज, फूहड़, लज्जाहीन।

अनपराध तत् (पु०) निर्दोष, निरपराध, दोषशून्य, शुद्ध, सधर्म।

अनपाय तत् (पु०) अनरवर, अक्षय, अनारय, विर-स्थार्थ (पु०) अलङ्कृत।—नी तत् (पु०) स्थिर, निश्चय, अविनश्वर, अपाय रहित।—नी तत् (स्त्री०) नाशरहित, अचञ्च, दृढ़, गिर्य।

अनपेक्ष तत् (पु०) स्वाधीन, निरपेक्ष।—रिति तत् (पु०) अननुद्वेग, अमान्य-कृत, वर्जित, अनि-च्छित।

अनवन दे० (स्त्री०) बिगार, शिरोध, फूट। [पूँछी।

अनवनाव तत् (पु०) अनरस, बिगाड़, फूट, पूँछा-

अनविधा दे० (वि०) बिना छेद किया हुआ।

अनवृक्ष तत् (पु०) असमक, अनजान, बुद्धिहीन, निर्वोध।

अनवेधा तत् (पु०) अवहेदा, अवेधा, अद्विजित।

अनवोल तत् (पु०) सुवचाप, अवाक, अवोल, अन-बोला, सुपका, गूँगा, साफ नहीं बोलने वाला, अस्पष्टवादी, पशु।—ना (वि०) गूँगा।

अनव्याहा दे० (पु०) अविवाहित, विनव्याहा, क्वारा।

अनभल तत् (पु०) बुराई, चुटाई, बुग, खोटा, अमङ्गल।—है तत् (स्त्री) बुराई। [मैं गमन।

अनभिगमन तत् (पु०) अस्थान गमन, मयङ्कर स्थान अनभिज्ञ तत् (पु०) अनजान, अज्ञान, मूल, निर्वोध।

—ता तत् (स्त्री०) अनजानपना, अनादीपन।

अनभिमत तत् (वि०) अभिप्राय विरुद्ध, अनभिमत।

अनभिमत तत् (पु०) असम्मत, मतविरुद्ध, अनिष्ट।

अनभिपत्यक तत् (पु०) अस्पष्ट, अव्यक्त, अप्रकाश।

अनभ्यस्त तत् (पु०) अनभ्यासित, अपठित, अन-धीत। [हार, येमहाधारा।

अनभ्यास्त तत् (पु०) अशिक्षा, अनध्ययन, अन्ययव-

अनमना तत् (पु०) सुख, उदास, चाबरा, सोची।

अनघ्न तत् (पु०) अविनत, अविनयी, उदण्ड।

अनमिल दे० (पु०) बेमेल, बेजोड़, टूटे फूटे, अटपट।

अनमोल तत् (पु०) अमोल, अमूल्य, अमूल्य, यद्विद्या।

अनय तत्त्वं (पुं) व्यसन, विषय, भाग्य, अशुभ, दुर्निति, पाप । [विगाह, ऐंठा ऐंठी ।

अनरस तत्त्वं (पुं) चिरस मित्रों में अनवभाव, फूट, अनरसा दे० (वि०) भीमार, अनमना, रोगी । [कुरीति । अनरोति तत्त्वं (स्त्री०) कुचाल, कुडक, अष्टरीति, अनर्गल तत्त्वं (गुं०) निर्गल, अबाध, अप्रतिहत, प्रतिबन्धक रहित, ओटक, स्वेच्छक, योगिक, अडपेंड ।

अनर्थ तत्त्वं (गुं०) अमृत्य, अक्रोध, आयुःकृष्ट । अनर्जित तत्त्वं (गुं०) अनुपार्जित, विना परिश्रम-लभ्य, विना कमाया हुआ ।

अनर्थ तत्त्वं (गुं०) वृथा, निष्फल, अर्थहीन, अनुचित । —क तत्त्वं (गुं०) वृथा, निष्फल, अप्रयोजन, निरर्थक । —कारी (वि०) हानि करने वाला ।

अनर्ह तत्त्वं (गुं०) अनुपयुक्त, अयोग्य, कुग्राह्य ।

अनल तत्त्वं (पुं०) पूर्णता रहित, अग्नि, आग, बसुन्नेद, भेला, विस्त । —पक्ष तत्त्वं (पुं०) पक्ष विशेष, यह पक्षी सर्वदा आकाश ही में उड़ा करता है, जमीन पर कभी नहीं रहता, अपने छोटे को वह आकाश से गिरा देता है । बोंडा पृथ्वी पर पहुँचने से पहले ही फूट जाता है, और उसमें से बचा निकल आता है, जो उसी समय से उड़ने लग जाता है । यथाः—

बोहा

“अनलपक्ष का चेदुआ, गिरेड धरणि अरराव । बहु अलीन तह लीन है, मिययो तासु के धाय ॥”

—विचारभाव ।

—प्रभा तत्त्वं (स्त्री०) ज्योतिष्मती नामक लता विशेष, अग्नि की शिखा, क्षीति । —प्रिया तत्त्वं (स्त्री०) अग्नि-भार्या, स्वाहा । [अग्नि, उद्योगी ।

अनलस तत्त्वं (गुं०) आलस्य-विहीन, उद्युक्त, परि-

अनल्प तत्त्वं (गुं०) अधिक, बहुविकार ।

अनलेख तत्त्वं (वि०) अगोचर, अदृश्य ।

अनवकाश तत्त्वं (गुं०) अवकाश रहित, निरवसर ।

अनवध तत्त्वं (गुं०) अनिन्दित, सुन्दर, स्वच्छ, भाग्य-मान, सभ्रान्त । —अङ्ग तत्त्वं (पुं०) सुन्दर अङ्ग, सुडौल, शरीर । [मृग्य विशेष ।

अनघट दे० (पुं०) छद्मा, विज्ञीया, स्त्रियों के पैर का

अनवधान तत्त्वं (पुं) अमनोयोग, चित्त की एकाग्रता का अभाव, अप्रणिधान, चित्त का अनावेश, अमनो-योगी, अनाविष्ट । —ता तत्त्वं (पुं०) मनायोग शून्यता, प्रमाद, अनवहितता, असावधानता ।

अनवरत तत्त्वं (गुं०) निरन्तर, अजल, सर्वदा, अविरत, निर्य, लगातार, प्रतिदिन ।

अनवसर तत्त्वं (पुं०) कुसमय, असमय, अनवकाश ।

अनवस्था तत्त्वं (स्त्री०) दुर्दशा, अवाधा, अस्थायी रहित, स्थायिभाव, दृढता, अस्थिर, दुरवस्था, तर्क विशेष नैयायिकों के मत से एक प्रकार का दोष, यथा—मनुष्य किससे उत्पन्न हुए, इस प्रश्न का उत्तर दिया गया कि मनु से, मनु कहाँ से उत्पन्न हुए, प्रश्ना से, प्रश्ना कहाँ से उत्पन्न हुए, विष्णु से, इसी प्रकार लगातार प्रश्न करते जाने से कुछ निर्यय नहीं हो सकता । निर्यय होता तो दूर रहा, शर्तों का उत्तर देना ही कठिन हो जायगा । इसीको अनवस्था दोष कहते हैं ।

—न तत्त्वं (पुं०) वायु, अस्थायित्व, कुस्था-यित्वा, कुव्यवहार, अवस्थिति-शून्य, अस्थिर ।

—स्थित तत्त्वं (गुं०) अस्थिर, चञ्चल । —स्थित तत्त्वं (स्त्री०) वासरहित, अवस्थानाभाव, अस्थि-रता । —स्थितचित्त तत्त्वं (गुं०) वन्माद, पागल, चाञ्चल्य, अनभिनिविष्ट ।

अनशन तत्त्वं (पुं०) अनाहार, अवास, अमोजन । —

अत तत्त्वं (गुं०) उपवास करते करते शरीर छोड़ देना ।

अनश्वर तत्त्वं (गुं०) अविनाशी, निर्य, सनातन ।

अनसखरी दे० (स्त्री०) पक्षीमोई निलरी ।

अनसिखा दे० (गुं०) अनपढ़ा, मूर्ख, अज्ञान, अशिक्षित ।

अनसुन तत्त्वं (गुं०) अनाकानी, अमानित, न सुना हुआ । —नी (स्त्री०) न सुनी हुई ।

अनसूया तत्त्वं (स्त्री०) असूया रहित, कलह, एक अधिक कन्या । महर्षि अग्नि से यह ब्याही गई थी, दस प्रजापति की कन्या थी और इसकी माता का नाम प्रसूति या । महाकवि कालिदास कृत शकुन्तला नाटक में भी एक अनसूया का नाम आता है, जो

उसी नाटक की नायिका शकुन्तला की सखी का नाम है ।

अनहद नाद तत्त्वं ( पु० ) योग का एक साधन । वह शब्द जो कान घेंच करने पर भी भीतर सुनाई पड़ता है ।

अनहित तद् ( पु० ) स्नेहहित, बैरी, द्वेषी, शत्रु, घृणा करने वाला, दुरा, दुराई ।

अनहोना दे० ( क्रि० ) असम्भव, अपरज, अनहोनी, सम्भव पर नहीं ।

अनहोनी दे० ( स्त्री० ) असम्भावित, अलौकिक ।

अन्धावाप ( क्रि० ) नष्टाव, हाना कराय, नष्टाव, हाना ।

अन्होरी दे० ( स्त्री० ) गरमी प्रवृत्ति कुम्हियाँ, अमहौर ।

अनाकारण तद् ( पु० ) स्वर्ध, मोहो, निष्कारण, कारणभाव, निनिमित्त ।

अनागत तत्त्वं ( गु० ) अनुस्थित, अनायात, अज्ञात, भविष्यत्, आगे होने वाला ।

अनाघ्रात तत्त्वं ( गु० ) पिना मूत्रा, आघ्राण नहीं किया, अक्षुप्त, अभिनव, बेरा, नया ।

अनाचार तत्त्वं ( पु० ) कुचाल, कुरीति, अशुचि, कदाचार, शूद्राचार-हीन, श्रुति-मृति विरुद्ध कर्माचार ।—तत्त्वं ( पु० ) कदाचारी, अशुद्धाचारी ।

अनाज तद् ( पु० ) धान्य, मस्य, नाज, गन्ना ।

अनाड़ी दे० ( गु० ) मूर्ख, अचेतन, निर्बोध ।—पन तद् ( पु० ) मूर्खता निर्दुहि, अनभिज्ञता ।

अनाद्य तत्त्वं ( गु० ) दरिद्र, दुःखी ।

अनातप तत्त्वं ( पु० ) क्षाया, घर्मानाव, ताप रहित ।—त्र तत्त्वं ( गु० ) दुर्गरहित ।

अनारामवान् तत्त्वं ( गु० ) अवशीमृतमना, जो अपने मन को वश नहीं कर सकता ।

अनारम्य तत्त्वं ( गु० ) आरम-भिन्न, पर ।

अनार्य तत्त्वं ( गु० ) स्वामी-हीन, दीन, दुःखी, अस्वामिक, सहायहीन ।—( स्त्री० ) पतिहीना, विधवा, असहाया, रक्षक रहित ।—( स्त्री० ) तत्त्वं ( स्त्री० ) अनाश्रिता, विधवा, पतिहीना, दुःखिनी ।

अनायालय तत्त्वं ( पु० ) यतीमखाना अनार्यों के रहने का स्थान मुहताज खाना ।

अनादर तत्त्वं ( पु० ) अस्मान्, असम्मान, अवज्ञा, अवहेलन ।—रणीय ( वि० ) निच, अमाननीय ।

अनादि तत्त्वं ( गु० ) आदि-रहित, अप्रति-हीन, स्वयम्भू, नित्य प्रद्य, बहुत दिनों से जो शिष्ट-परम्परा से चला आता हो, बहुत दिनों से सज्जनों में जिसका परस्पर व्यवहार होता चला आता हो ।

अनादिष्ट तत्त्वं ( गु० ) अनुज्ञान, विना आज्ञा का ।

अनादृत तत्त्वं ( गु० ) अपमानित ।

अनाद्यन्त, [ अन + आदि + अन्त ] तत्त्वं ( गु० ) नित्य, अनन्त, सनातन, सर्वकालीन, शाश्वत, प्रद्य, अनादि । [ विशेष ]

अनआप्त तत्त्वं ( पु० ) अनायास, अनारस, फल अनाप्त तत्त्वं ( गु० ) अप्रियुष, अपारक, अविश्वामी ।

अनामक तत्त्वं ( पु० ) रोगविशेष, अशरोग, अवाहीर ।

अनामय तत्त्वं ( पु० ) आरोग्य, नीरोग्य, पुष्ट, अरोग, स्वस्थता ।

अनामा तत्त्वं ( पु० ) कनिष्ठा धीगुत्री के ऊपर वाली अंगुली, अनामिकागुलि, अनामिका ।

अनार्यक तत्त्वं ( गु० ) स्वामि-रहित, रक्षाहीन ।

अनार्यत तत्त्वं ( गु० ) अविस्तृत, अप्रशस्त ।

अनार्यत तत्त्वं ( गु० ) अनधीन, अवशीमृत, अक्षुण्ण ।

अनार्यास तत्त्वं ( पु० ) अव्य परिधर्म, अवलेरा, अवय, सहज, सौकर्य, सुकार्य ।

अनार तत्त्वं ( पु० ) वृष विशेष, अनारक, दाहिम ।

अनारम्भ तत्त्वं ( पु० ) आरम्भाभाव, विना आरम्भ किया हुआ ।

अनारोग्य तत्त्वं ( पु० ) मस्यस्थता, रुग्णावस्था ।

अनार्य तत्त्वं ( गु० ) अश्रेष्ठ, अप्रधान, अनाड़ी, नीच, जातिविशेष । आर्यजाति के अतिरिक्त अमान्य अनार्य जातियाँ अनार्य या आर्यतर शब्द से विख्यात हैं । आर्यों से जिनका आचार व्यवहार नीति धर्म आदि में विरोध था, वे अनार्य कहे जाते थे । अथर्ववेद आदि मान्यतम ग्रन्थों में दस्यु या दास शब्द अनार्य के पर्याय में आते हैं ।—कर्मा तत्त्वं ( पु० ) आर्यों से विरुद्ध कर्म करने वाले, निन्दित-आचार, गर्हित ।—अनुष्ट तत्त्वं ( गु० )—अनार्यों के कर्म, अनार्य-सेवित किया ।—देश

तत् (पुं०) अनाथों का वास-स्थान, जहाँ चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था न हो ।  
 अनावश्यक तत् (वि०) अप्रयोजनीय, बेकाम का ।  
 —ता (स्त्री) अप्रयोजनीयता ।  
 अनाविल तत् (गुं०) निमल, परिष्कार, स्वच्छ, साफ, सुपरा, आविलता यानी मैल रहित । [स्त्रा ।  
 अनावृष्टि तत् (स्त्री०) अवर्षण, वर्षाभाय, जल कष्ट, अनाहार तत् (पुं०) भूखा, उपवास, लंघन ।—  
 तत् (पुं०) अशुभ, उपवासी, अमोगन ।  
 अनाहृत तत् (गुं०) अनिमग्नित, अकृताह्वान, नहीं बुलाया हुआ ।  
 अनिकेता तत् (गुं०) अनिकेतन, निरालय, गृह-  
 शून्य, निर्वास, बिना घर का ।  
 अनिगीर्ण तत् (पुं०) अनुक्त, अकथित ।  
 अनित्य तत् (गुं०) विनाशी, झूठा, उष्णिक, अस्थायी, नश्वर, ध्वंसशाली ।—ता तत् (स्त्री०) अचिरस्थायिता, उष्णविषंतिता ।—  
 तावादी तत् (पुं०) जो किसी पदार्थ को चिर-  
 स्थायी नहीं मानते, बौद्ध विरोध ।—सम तत् (पुं०) व्याचरोत्तर कथित तर्क न करके केवल  
 अक्षरार्थ द्वारा तर्क करना ।  
 अनिन्दित तत् (गुं०) अगर्हित, उत्तम ।  
 अनिन्दनीय या अनिन्द्य तत् (गुं०) अनिन्दित ।  
 अनिमित्तक तत् (गुं०) निष्कारण, अहेतुक, बिना  
 कारण ।  
 अनिमिष तत् (पुं०) देवता, मत्स्य । (गुं०) निमिष-  
 शून्य ।—आचार्य तत् (पुं०) देवगुरु बृहस्पति ।  
 अनियत तत् (गुं०) अस्थायी, अनिल, अचिरस्थायी ।  
 अनियन्त्रित तत् (गुं०) अनिवारित, अशोसत,  
 स्वेच्छाचारी ।  
 अनियम तत् (पुं०) नियमानाव, अनिश्चय ।—न्ति  
 तत् (गुं०) अनिवारित, अनियमयद् ।  
 अनिरुद्ध तत् (वि०) बेरोक, बाधा रहित । (पुं०) श्री  
 कृष्ण के पौर का नाम ।  
 अनिर्यय तत् (पुं०) द्विविधा, सन्देह, संशय, दो  
 बातों में से किसी का ठीक नहीं होना, अनिश्चय,  
 अनवधारण ।  
 अनिर्णीत तत् (गुं०) अनिवारित, अनिश्चित ।

अनिर्दिष्ट तत् (गुं०) अनिश्चित, अनुद्देशित ।  
 अनिर्देश्य तत् (वि०) जिसके बारे में कुछ ठीक  
 ठीक बतलाया न जा सके ।  
 अनिलोचित तत् (पुं०) अपरिपक्व बुद्धि, अनालोचित,  
 अविवेचित, अविचारित, ऊहापोह, ज्ञानशून्य ।  
 अनिर्वचनीय तत् (गुं०) अवर्णनीय, अवाध्य, वचन  
 के अगम्य, वर्णनरहित, असाध्य वर्णन, उत्तम,  
 अत्युत्तम ।  
 अनिल तत् (पुं०) (१) वायु, पवन, वसुविरोध,  
 यतास, देवता विरोध । यह यदिति के गर्भ से  
 उत्पन्न हुए हैं, इन्द्र के छोटे भाई हैं, इनके पिता  
 का नाम कश्यप है, भीम और हनुमान इनके  
 पुत्रों का नाम है । (२) वायु ४१ इनकास हैं,  
 इनका रथ १०० सौ और कभी कभी हजार  
 घोड़ों से खींचा जाता है । अन्यान्य देवताओं के  
 समान वायु को भी यज्ञ में भाग दिया जाता है ।  
 वसुपन्ती के सतीत्य का साक्ष्य इन्होंने दिया था ।  
 त्वष्टा के ये जमाता हैं । (३) शरीर में पाँच  
 वायु होते हैं जिनके नाम दे हैं, प्राण, अपान,  
 समान, वदान और न्यान ।—अक्ष तत् (पुं०)  
 विभीतक बृष, बड़ेदे का घुस ।—सख तत् (पुं०)  
 (पुं०) अग्नि, अमल, भाग ।—तमज तत् (पुं०)  
 (पुं०) वायुपुत्र, हनुमान, भीमसेन ।—तमय तत् (पुं०)  
 (पुं०) वातरोग, अजीर्ण ।—तशी तत् (पुं०)  
 वायु भक्षण, के द्वारा जीवन धारण करने वाला,  
 तपस्वी, सर्प, मत्त विरोध ।  
 अनिवारित तत् (गुं०) अमतिवेधित, अवारित,  
 बाधा-रहित, वारण-शून्य ।  
 अनिवार्य तत् (गुं०) अवारणीय, दुरत्यय, वारण  
 करने के अयोग्य, अवाध्य, कठिन, दुर्जय ।  
 अनिश तत् (अ०) निरन्तर, सतत, सर्वदा । (गुं०)  
 रात्रि का अभाव ।  
 अनिश्चित तत् (वि०) जिसका निश्चय न हो, अनियत ।  
 अनिष्ट तत् (गुं०) अनिमलपित, अवशिष्ट,  
 हानि, अपकार, डरा ।—कर (गुं०) अपकारक,  
 अहितकर ।  
 अनिष्टुर तत् (गुं०) अनिर्देश्य, सलचित ।

अनिष्ठात तत् (५०) अग्रवीण, अकृती, अपकार ।  
 अनी तत् (५०) तीखा, पैना, नोक, तीक्ष्णधार, अशी ।  
 अनीक (छा०) सेना, भीड़, कटक, सैन्य, योद्धा,  
 युद्ध ।—स्थ तत् (५०) सेनारक्षक, हस्तिपक,  
 राजरक्षक, चिन्ह ।

अनीकितो तत् (छी०) अघोहिणो सेना का दर्शाश,  
 पक्षिनी । [ अस्वाचार ।

अनीति तत् (छी०) कुचाल, अन्याय, दुर्नीति,  
 अनोदृश तत् (गु०) अनुषय, असमान, बराबर नहीं,  
 बेजोड़ ।

अनीश तत् (गु०) या अनीस तत् (गु०) अनधिकार,  
 अस्वामी, ईश्वर नहीं, जीव, स्वामी-रहित, जो  
 किसी को भी ईश्वर न माने ।

अनीश्वर तत् (गु०) ईश्वर भिन्न, नास्तिक ।—चाद्  
 तत् (५०) नास्तिक, जिस मत में ईश्वर न माना  
 गया हो, चावोक ।—चादी तत् (५०) देव-  
 निन्दक, नास्तिक, अभक्त ।

अनीह तत् (गु०) आलसी, डीला, बोदा, निश्चेष्ट,  
 निर्लोभ ।—अ (स्त्री०) अनिष्ठा, उदासीनता ।

अनु तत् (उपसर्ग) पीछे, परचाप, सह, सादर्य,  
 लक्ष्य, वीप्सा, इत्यम्भाव, भाग, हीन, आवास,  
 समीप, अपरिपाटी, अनुसार, अधीन, कणा,  
 अत्यन्त छोटा, महीन, लघुतम, कम, योड़ा ।—  
 कथन तत् (५०) कहने के बाद कथन, परचाप  
 कथन, बारम्बार कथन, आपस की बात चीत,  
 किसी के अनुसार वा अनुकूल कहना, कही हुई  
 बात को फिर से कहना ।—कम्पा तत् (छी०)  
 दया, कृपा, करुणा, स्नेह, अनुग्रह ।—कम्पित  
 तत् (गु०) अनुग्राह्य, कारुणिक, वेगवान् ।—  
 कम्प्य तत् (गु०) अनुमाल्य, कृपापात्र ।—  
 करण तत् (५०) अनुरूप, उतारा, सदृश-  
 करण, प्रतिरूप-करण, नकल ।

अनुकरण (५०) नकल, अनुरूप ।—यीय (वि०) नकल  
 करने योग्य ।

अनुकर्षण तत् (५०) खींच, टान, घसीट, आकर्षण ।

अनुकूल तत् (गु०) सहाय, सहकारी, अनुग्राहक,  
 हितकर, प्रसन्न । (५०) पतिभेद, काम्य के  
 मायकों में से एक मायक । यथा—

दोहा

“निज नारी सन्मुख सदा विमुख विरानी वाम ।  
 नायक सो अनुकूल है ज्यों सीता को राम ॥”  
 —कविदेव ।

—ता तत् (छी०) सहाय, अनुकूल्य ।

अनुक्त तत् (५०) अकथित, उदात्त । [ अनुपूर्वी ।  
 अनुक्रम तत् (५०) परिपाटी, रीतिभक्ति, यथाक्रम,  
 अनुक्रमणिका तत् (छी०) क्रमानुसार, प्रबन्ध,  
 सूचीपत्र, निघण्टु, भूमिका, ग्रन्थों का मुखप्रबन्ध,  
 आभास ।

अनुकोश तत् (५०) कृपा, दया, अनुकम्पा, स्नेह ।  
 अनुक्षण तत् (५०) सर्वदा, सदा, निर्य, सर्वक्षण,  
 सदा समय, सब घड़ी ।

अनुखाल तत् (५०) खाई, खाड़ी, नाला ।

अनुग तत् (५०) परचाद्गामि, सेवक, दास, भूय,  
 अनुचर, पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी, अनुसार  
 चलने वाला । [ हारा ।

अनुगत तत् (५०) आश्रित, शरणागत, पीछे चलने-  
 अनुगतार्थ तत् (वि०) प्रायः समान अर्थ वाला ।

अनुगमन तत् (५०) पीछे जाना, परचाद्गमन,  
 सहगमन ।

अनुगामी तत् (५०) साथी, अनुययी, सहचर, सेवक ।  
 अनुगुण तत् (५०) एक प्रकार का काव्यालङ्कार  
 जिसमें किसी वस्तु का गुण किसी वस्तु के युग  
 से बना कर दिखाया जाय ।

अनुगृहीत तत् (गु०) उपकृत, प्रतिपालित, आरवासित ।

अनुग्रह तत् (५०) प्रसन्नता, दया, करुणा, दुःख दूर  
 करने की इच्छा ।

अनुग्राहक तत् (गु०) दयावान्, करुणाश्रित ।

अनुचर तत् (५०) सक्ती, दास, सहचर, साथी ।

अनुचित तत् (गु०) अयोग्य, अनुपयुक्ति, अनरीत ।

अनुच्छिन्न तत् (गु०) उन्नति रहित, बहुत ऊँचा नहीं ।

अनुज तत् (५०) कनिष्ठ, लहुरा भाई, छोटा भाई,  
 लघुभ्राता ।

अनुजीवी तत् (गु०) पराधीन, आश्रित, परतन्त्र  
 (५०) दास, सेवक । [ हुथा ।

अनुष्मिन्त तत् (गु०) अविचत, अत्यक्त, नहीं छोड़ा

अनुज्ञा तत् (स्त्री०) आज्ञा, आदेश, अनुमति, चितावनी ।

अनुज्ञात तत् (पुं०) आज्ञा प्राप्त । [ पड़ताने वाला ।

अनुगत तत् (गुं०) अनुसोची, पश्चात्ताप विशिष्ट,

अनुताप तत् (पुं०) खेद, परवात्ताप, अनुसोचन ।

—ति तत् (पुं०) दुःखित, अनुसोचक ।

अनुनारा तत् (स्त्री०) उपग्रह, उपनारा ।

अनुत्कृष्टा तत् (स्त्री०) निरद्वेग, उकण्ठा रहित ।

अनुत्तर तत् (गुं०) प्रत्युत्तरहीन, उत्तर नहीं, मौनी,

बुरा, श्रेष्ठ, स्थिर, अधः दक्षिण दिशा स्वामी ।

अनुद्य तत् (पुं०) उद्य के पूर्वकाल, उद्य रहित,

मोर, मवेशी, बिहान । [ नहीं, अनुदार ।

अनुदात्त तत् (पुं०) स्वर विरोध, नीच स्वर, उन्नत

अनुदार तत् (पुं०) अतिशय, दाता नहीं, अदाता,

कृपण, अमहात्, स्त्री के वरावर्ती ।

अनुदिन तत् (अ०) प्रतिदिन, प्रत्यह, नित्य, दिन

दिन, सदा । [ पन, क'आरपन ।

अनुद्वाह तत् (पुं०) अविवाह, अनुद्वाहना, कुमार-

अनुद्घिन तत् (गुं०) निश्चिन्त, उद्देग-रहित, स्वस्थ,

स्थिर । [ निश्चिन्त ।

अनुद्देग तत् (गुं०) उद्देग-रहित, व्याकुल नहीं,

अनुधमी तत् (गुं०) आलसी, सुप्त ।

अनुनय तत् (पुं०) नम्र, कोमल, विनय, स्तव, स्तुति ।

अनुनाद तत् (पुं०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ।

अनुनासिक तत् (गुं०) नासिका सेवन्धी । (पुं०)

सानुनासिक, अनुनासिक वर्ण, यथा—कू

ण नू न् ।

अनुप तत् (गुं०) अनुपम, अतुल्य, अपूर्व ।

अनुपकारी तत् (पुं०) अहितकारी, अनुपकारक ।

अनुपम तत् (गुं०) अनुप, उत्तम, उन्मा रहित ।

अनुपमेय तत् (गुं०) असदृश, असम, विषम ।

अनुपयुक्त तत् (पुं०) अयुक्त, अयोग्य, अनुचित,

अन्याय ।

अनुपयोग तत् (पुं०) व्यवहार का अभाव, काम में

न लाना, दुर्ग्यवहार ।—नी (पुं०) बेकाम, व्यर्थ ।

अनुपल तत् (पुं०) पल का साठवाँ हिस्सा, काष्ठ

निशेष, मेकेण्ड ।

अनुपलब्ध तत् (गुं०) अप्राप्त ।

अनुपस्थित तत् (गुं०) उपस्थिति-रहित, उपस्थित नहीं, गैरहाजिरी ।—ति तत् (स्त्री०) गैरहाजिरी, अविद्यमानता ।

अनुपात तत् (पुं०) सम, समान भाव, समान रूप से मिरना, त्रैशक्तिक, बराबर सम्बन्ध ।

अनुपातक तत् (पुं०) महापातक के समान पाप, प्रह्लादा आदि बड़े पापों के समान पाप ।

अनुपान तत् (पुं०) पथ्य, औषध का सेवम, औषध के माप सेवन करने योग्य पदार्थ ।

अनुपाय तत् (गुं०) उपायहीन, निरावलम्ब, निराश्रय । [ होना, देना ।

अनुप्राशन तत् (पुं०) खाना । (क्रि०) भक्षण करना,

अनुप्रास तत् (पुं०) यमक पद-विन्यास, काव्य का

अनङ्कार विशेष, समान वर्ण-विन्यास, मिश्राक्षर

योजना । केवल वर्णों की सदृशता होने से अनुप्रास

अलङ्कार माना जाता है । यह शब्दालङ्कार है ।

इसके पाँच भेद हैं, ऐकानुप्रास, ध्रुव्यानुप्रास,

ध्रुव्यानुप्रास, आदानुप्रास, और अस्वानुप्रास ।

विषय की कोमलता तथा कठोरता के अनुरोध से

तत्सम वर्णों के प्रयोग होने के कारण इस अलङ्कार

का नाम अनुप्रास पड़ा है ।

अनुपगन्ध तत् (पुं०) मित्र, सुहृद, सम्बन्ध, विनय, यश,

मुख्यानुयायी, शिशु प्रकृति का अनुवर्तन, गन्ध,

आरम्भ, शेष ।

अनुभव तत् (पुं०) ज्ञान, बोध, अनुमान, यथार्थ ज्ञान,

विचार, सोचना, समझना, उपलब्धि ।—नी तत् (वि०)

अनुभव रखने वाला ।

अनुभाव तत् (पुं०) दृढ़, अनुमान, निश्चय, महिमा,

बड़ाई, भाव का सूचक, प्रभाव, सज्जन के ज्ञान का

निश्चय ।

अनुभूत तत् (गुं०) बीती, मन से जाना गया, अनु-

भव केवल दृष्टा, विचार किया हुआ, प्रतीति किया

हुआ, निश्चित । [ सहमत, एक मत ।

अनुमत तत् (गुं०) सम्मत, स्वीकृत, अङ्गीकृत, भाग्य,

अनुमति तत् (स्त्री०) अनुज्ञा, अनुमति, कृपाहीन

चन्द्रयुक्त पूर्णिमा ।

अनुमती तत् (स्त्री०) सहमता, अनुगामिनी ।

अनुमरण तत्त्वं (पु०) एक सङ्गमरण, सहमरण, पश्चात्  
मरण, सती । [निर्याय करना, नर्क, अनुभव, बोध ।  
अनुमान तत्त्वं (पु०) अटकल, विचार, हेतु के द्वारा  
अनुमापक तत्त्वं (पु०) निर्णायक, अनुमान का हेतु,  
निश्चय का कारण ।

अनुमेय तत्त्वं (पु०) अनुमान करने योग्य ।  
अनुमोदन तत्त्वं (पु०) आमोद करण, सन्तोष प्रकाश,  
दूसरे के सुख से सुख, आनन्द युक्त सम्मति,  
प्रवृत्ति, प्रदान, प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार । [ न्दित ।  
अनुमोदित तत्त्वं (पु०) अनुमत, आह्लादित, आन-  
अनुयायी तत्त्वं (पु०) सहाय, अनुवर्ती, अनुगामी,  
परचादगामी, अनुसारी ।

अनुयोग तत्त्वं (पु०) ताड़ना, धमकी, धुड़की, तिर-  
स्कार, आक्षेप, प्रश्न, जिज्ञासा, निन्दा, शिष्टा,  
वपदेश, प्रबोध, प्रज्ञासन ।—कारी तत्त्वं (पु०)  
तिरस्कार, आक्षेपक, प्रश्न कारक ।—ी तत्त्वं  
(पु०) निम्नित, तिरस्कृत ।

अनुयोजक तत्त्वं (पु०) अनुयोगकारी, उपदेशक ।  
अनुयोजन तत्त्वं (पु०) प्रश्न, जिज्ञासा, पूछ पाछ ।  
अनुयोज्य तत्त्वं (पु०) अनुयोगार्ह, आज्ञाप्य, निन्दा-  
योग्य ।

अनुरक्त तत्त्वं (पु०) प्रेमी, आश्रित लीन, आसक्त, रत ।  
अनुरत दे० (पु०) आसक्त लीन ।

अनुराग तत्त्वं (पु०) प्रीति, स्नेह, ममता, आसक्ति,  
रति, प्रसांसा, घोड़ी लाली ।—ी तत्त्वं (पु०)  
अनुरागयुक्त, अनुरक्त ।

अनुसंधान तत्त्वं (पु०) नक्षत्र विशेष, यह सत्तरहवाँ  
नक्षत्र, है, इसकी तीस ताराएँ हैं, इसका स्थान  
धृतिचक्रादि का मुख है ।

अनुरूप तत्त्वं (पु०) सदृश, तुल्य, एकसा, अनुहार ।  
अनुरोध तत्त्वं (पु०) अपेक्षा, अपरोध, अनुवर्तन,  
पक्षपात, माफिक ।

अनुलाप तत्त्वं (पु०) पुनः पुनः कथन, सुझः ।

अनुलित तत्त्वं (पु०) अभिपिक, लिप्त विष्ट ।

लोभ, जाति विशेष ।—ज तत्त्वं (पु०) ब्राह्मण के  
श्रीस और क्षत्रिय के गर्भ से उत्पन्न सन्तान ।

अनुलोमन तत्त्वं (पु०) दस्त लाने वाली वह दवा जो  
पेट में बड़ी गोठों को गिरा दे । कम्पित दूर  
करने वाली दवा ।

अनुवर्तन तत्त्वं (पु०) अनुसार चलन ।

अनुवर्त्ती तत्त्वं (वि०) अनुयायी ।

अनुवृत्ति तत्त्वं (स्त्री०) उपजीविका, सेवा मार्ग ।

अनुवाक तत्त्वं (पु०) ग्रन्थविभाग, ग्रन्थावयव ।

अनुवाद तत्त्वं (पु०) भाषान्तर करना, निन्दा, अप-  
वाद, धार धार कहना ।—क तत्त्वं (पु०) भाषा-  
न्तर करने वाला ।—तिं तत्त्वं (वि०) अनुवादित,  
अनुवाद किया हुआ ।

अनुवेदना तत्त्वं (स्त्री०) सहानुभूति, समवेदना ।

अनुशय तत्त्वं (पु०) परचात्ताप, अनुताप, जिर्वासा,  
द्वेष ।—ी तत्त्वं (पु०) परचात्तापी, रोगविशेष, बैरी ।

अनुशासक तत्त्वं (पु०) शासन करने वाला ।

अनुशासन तत्त्वं (पु०) आदेश, आज्ञा, महाभारत  
का एक पर्व ।

अनुशास्ता तत्त्वं (पु०) शिक्षक, उपदेष्टा, अनुशासक ।

अनुशीलन तत्त्वं (पु०) आन्दोलन, पुनः पुनः  
अभ्यास, मनन ।

अनुशोक तत्त्वं (पु०) पश्चात्ताप, खेद ।

अनुशोचन तत्त्वं (पु०) पश्चात्ताप करना ।

अनुपङ्ग तत्त्वं (पु०) मिलन, दया, सम्बन्ध, प्रणय ।

अनुपट्ट [अन् + पट्] तत्त्वं (पु०) छन्द विशेष, चार  
पाद का यह छन्द होता है । एक पाद में = आठ  
अक्षर होते हैं । सस्वती ।

अनुष्ठान [अनु + स्था + णट्] तत्त्वं (पु०) आरम्भ,  
उपक्रम, सूचना, कार्य, आचरण ।—शरीर तत्त्वं  
(पु०) लिङ्ग देह, आधदेह । [ आचरित ।

अनुष्ठित [अ + स्था + क्] तत्त्वं (पु०) आरम्भ

अनुष्ठेय [अनु + स्था + य] तत्त्वं (पु०) उपक्रान्त,

अनुसरण [ अनु + र + अन् ] तत् ( पु० ) अनु-  
वर्तन, पश्चाद्गमन, अनुहार ।

अनुसरना ( क्रि० ) संग चलना, पीछे जाना ।

अनुसरहि ( क्रि० ) अनुगमन करते हैं, पीछे चलते हैं,  
अनुसार चलते हैं । [ अनुवर्तन ।

अनुसार [ अनु + स + घञ् ] तत् ( पु० ) अनुरूप,  
अनुसूचन [ अनु + सूच + अन् ] तत् ( पु० ) विचार,  
ध्यान । — तत् ( स्त्री० ) आन्दोलन, सुचिन्ता,  
अनुष्ठान । [ वर्थ ।

अनुस्वार [ अनु + स् + घञ् ] तत् ( पु० ) एक बिन्दु  
अनुहार [ अनु + ह + घञ् ] तत् ( पु० ) सादरय  
अनुकरण । [ आश्च ।

अनुहार्य [ अनु + ह + घञ् ] तत् ( पु० ) मासिक  
अनूठा तत् ( पु० ) अपूर्व, नया, निराशा । — पन ( पु० )  
अनीलापन, विचित्रता ।

अनूढ़ा [ अनु + ऊढ् ] तत् ( स्त्री० ) कुंवारी, अवि-  
वाहिता । — गामी तत् ( पु० ) व्यवसायी,  
गणिका सेवी, लम्पट ।

अनूप तत् ( पु० ) जलप्लावित देश, सजल देश,  
उपमारहित । — ज तत् ( पु० ) आर्द्रक, आर्द्र,  
अश्वरक । — म तत् ( पु० ) उपमारहित, अनीला ।

अनृत तत् ( पु० ) झूठा, मिथ्या, अमल्य, वितथ ।  
— वादी तत् ( पु० ) मिथ्यावादी ।

अनेके [ न + एक ] ( पु० ) अधिक, विस्तर, बहु, भूरि,  
वेर । — ज तत् ( पु० ) द्विज, पंथी, बहुजात ।

— ता तत् ( स्त्री० ) भेद, विरोध, आधिक्य ।  
— धा तत् ( पु० ) योग्यता । — शः ( अ० ) अनेक  
प्रकार, बहु प्रकार ।

अनैक्य [ न + ऐक्य ] तत् ( पु० ) परस्पर असम्मिलन,  
एकता का अभाव, विरोध, असंयोग, प्रकारहित ।

अनैस ( पु० ) अहित, गुराह ।

अनैसे तत् ( क्रि० वि० ) कुछि से ।

अनीला तत् ( पु० ) अपूर्व, अद्भुत, दुर्लभ । — पन  
( पु० ) विचित्रता, अनूठापन ।

अनीना तत् ( पु० ) अलोना, अनोदित । [ युक्ता ।

अनौचित्य तत् ( पु० ) वचित का अभाव, अनुप-  
पन्न तत् ( पु० ) नाश स्वरूप, प्रान्त, शेष, समाप्ति,  
सीमा, निश्चय, अवध । ( पु० ) समीप, निकट,

अतिमनोहर । — करण तत् ( पु० ) हृदय,  
मन, चित्त, स्वान्त । — पाती तत् ( पु० )

अन्तर्गत, बीचबाला, मध्यवर्ती, अनुभूत ।

पुर तत् ( पु० ) अवरोध, रन्ध्रास, कोठरी ।

शय्या तत् ( स्त्री० ) भूमिशय्या । — शरीर तत्  
( पु० ) आत्मा, चित्तात्मा, सचिदेव । — संज्ञा तत्

( स्त्री० ) अनुभव, चेतना, चैतन्य । — सत्त्वा तत्

( स्त्री० ) गर्भवती । — सलिल तत् ( पु० ) अन्त-

र्जल, पृथिवीस्थजल, सरस्वती नदी । — श्वेत

तत् ( पु० ) हाथी ।

अन्तक तत् ( पु० ) नाशकर्ता, यम, काल ।

अन्तकर तत् ( पु० ) नाशकर, विनाशक ।

अन्तकाल तत् ( पु० ) मरने का समय ।

अन्तक्रिया तत् ( स्त्री० ) अन्तर्देष्टि कर्म, मृतक क्रिया ।

अन्तज तत् ( पु० ) अन्त्यज तत् ( पु० ) शूद्र, शूद्र से

भी नीच । द्विजाति जो सरकार विहीन होते हैं

उनकी “ अन्त्यज ” संज्ञा मानी गई है ।

अन्तङ्गी तत् ( स्त्री० ) अतही, भाँते, नाड़ी ।

अन्ततः तत् ( अ० ) शेषतः, निरुद्धपक्ष ।

अन्तर तत् ( अ० ) भीतर, अन्तर, मध्य, माँक,

प्रान्त, स्थीकार । ( पु० ) मध्यवर्ती स्थान, सीमा,

अवसर, परिधान अन्तर्धान, विभिन्न, सहाय,

क्षिप्र, स्वीय, आरसीय, भेद विना, वहि, अन्त-

रात्मा, सुयोग, अवकाश, सुख, अनुरूप, अग्न्य,

बृंहता ।

अन्तरङ्ग [ अन्तर + गङ्ग ] तत् ( पु० ) आत्मीय,

स्वजन, स्वसम्पर्क, सुहृद । — ता ( स्त्री० )

आत्मीयता, सौहार्द । [ ईश्वर, परमात्मा ।

अन्तरजामी तत् ( पु० ) मन का हाल जानने वाला

अन्तरङ्ग तत् ( पु० ) देखो अन्तरजामी ।

अन्तरस्थ तत् ( पु० ) भीतर वाला, भीतरी ।

अन्तरा तत् ( पु० ) चरण, मध्य का पद, निकट,

मध्य, बीच, बिना ।

अन्तरातप तत् ( स्त्री० ) अन्तरिया, तिजारी ।

अन्तरात्मा तत् ( पु० ) जीवात्मा, प्राण । [ द्विजीवा ।

अन्तरापत्न्या तत् ( पु० ) गर्भवती, गर्भिणी, गुर्विणी,

अन्तराय तत् ( पु० ) बाधा, बिध्न, रुकावट ।



अन्तराल तत् ( पु० ) फाँक, अन्तर, भेद, मध्य,  
बीच, चिरा हुआ स्थान, मण्डल ।  
अन्तरिक्ष } तद् ( पु० ) आकाश, गगन ।  
अन्तरिक्ष }  
अन्तरित तत् ( पु० ) भीतरी, आन्तरिक ।  
अन्तरीप तत् ( पु० ) भूमि भाग जो समुद्र में दूर तक  
चला गया हो ।  
अन्तरीक्ष तत् ( पु० ) आकाश, गगन, शून्य, नभ ।  
अन्तरीय [अन्तर + ईय] तत् ( पु० ) भीतर का,  
बिचला, मध्य का, परिधान वस्त्र ।  
अन्तरीया तत् ( स्त्री० ) तिजारी, तीसरे दिन घाने  
वाला उबर, अंतरा उबर । [पहिनने का वस्त्र ।  
अन्तरौटा दे० ( पु० ) महीन साड़ी या लहंगा के भीतर  
अन्तर्गत तत् ( स्त्री० ) मन की बात, पैदा मध्यस्थ ।  
अन्तर्गति तत् ( स्त्री० ) मन के सरङ्ग, विस्मरण ।  
अन्तर्दृशा तत् ( स्त्री० ) कल्पित उपातिप में एकग्रह के  
अन्तर्गत दूसरे ग्रह की दृशा । [ उवाचा ।  
अन्तर्दाह तत् ( पु० ) छाती की जलन, शरीर की  
अन्तर्धान तत् ( पु० ) अदर्शन, लुकाव, छिप जाना ।  
अन्तर्धान तत् ( पु० ) मानसिक ध्यान, मनःसमग्रधी  
ज्ञान ।  
अन्तर्पट ( पु० ) ओढ़, भाड़, टट्टी, पर्दा ।  
अन्तर्भूत तत् ( पु० ) मध्य में स्थापित, मध्यस्थ ।  
अन्तर्मनस तत् ( पु० ) उदास, चराया, व्याकुल ।  
अन्तर्यामी तत् ( पु० ) अन्तर्यामी तत् ( पु० ) मन की बात  
बुझने हारा ।  
अन्तर्लोपिका तत् ( स्त्री० ) यह पहेंली जिसका उत्तर  
वसी पहेंली के अक्षरों में हो ।  
अन्तर्घनी तत् ( स्त्री० ) गर्भिणी, द्विजीवा ।  
अन्तर्वेद तत् ( पु० ) गङ्गा यमुना के बीच का देश,  
प्रद्वारवर्त । [ अन्तर्धान ।  
अन्तर्हित तत् ( पु० ) छिपाव लुकाव, अदरप,  
अन्तिक तत् ( पु० ) समीप, पास, निकट, सन्निधान ।  
अन्तिम [अन्त + इम्] तत् ( पु० ) शेप, चरम, अव-  
सान, अन्त वात्ता । —यात्रा तत् ( स्त्री० )  
मृत्यु, मरण, महाप्रस्थान, महायात्रा ।  
अन्तेवासी [अन्ते + वस + णच्] तत् ( पु० )  
विद्यार्थी, मद्रपारी, प्रान्तस्थाधी ।

अन्त्य तत् ( पु० ) शेप का, , नीव, अन्तम जाति,  
अन्तिम, शेपोरपन्न, जन्म । —कर्म तत् ( पु० )  
प्रेत कर्म, शवदाहादि कर्म । —ज तत् ( पु० )  
शूद्र, रजकादि सप्त जाति, यथा— रजक,  
चर्मकार, चमार, बपुद, कैवर्त, भेद, भील, ( पु० )  
जघन्यज जाति, अवरज । —जन्मा तत् ( पु० )  
शूद्र, अवरज, जघन्यजाति । —स्थ तत् ( पु० )  
य र ल व ये वर्ण ।

अन्त्याक्षरी तत् ( स्त्री० ) किसी श्लोक के अन्तिम  
अक्षर से आरम्भ होने वाले श्लोक का कहना ।  
उद् फाँसी की येनवाड़ी की तरह ।

अन्त्येष्टि [अन्त्य + इष्टि] तत् ( पु० ) प्रेत कर्म  
शवदाहादि कर्म, मृत देह का अन्तिम संस्कार ।  
—क्रिया तत् ( स्त्री० ) शवदाह ।

अन्त्य तत् ( स्त्री० ) आत, आतङ्गी, नाड़ी । —वृद्धि  
तत् ( स्त्री० ) कोश वृद्धि रोग ।

अन्तर दे० अभ्यन्तर, भीतर ।

अन्तर्दृष्टी दे० ( पु० ) भीतरी ।

अन्दाज दे० ( पु० ) अटकल, अनुमान ।

अन्दाजन दे० अनुमान से, लगभग ।

अन्वेश दे० सन्देश, संशय ।

अन्ध तत् ( पु० ) ( १ ) नेत्रहीन, अक्षु, अन्धा,  
सुरदास, मुनि विशेष । छत्राष्ट, ये जन्मान्ध थे ।  
( २ ) वैश्य जातीय एक मुनि । यह अयोध्या में  
सरयू के तीर पर रहते थे । एक शूद्रा कन्या के  
साथ इन्होंने अपना व्याह किया था, और आश्रम में  
रहते थे । अयोध्याधिपति राजा दशरथ ने हाथी के  
अम से अन्ध मुनि के पुत्र को शस्त्रयेधी बाण से  
निहत किया । बाणविद्ध पुत्र का पिता-माता ने देख  
के अपने प्राण छोड़ दिये और राजा को शाप दिया  
कि तुम भी पुत्रवियोग ही में मरोगे ।

अन्धक तत् ( पु० ) देश विशेष, मुनि विशेष, असुर  
विशेष । यह दैत्य कश्यप के औरम और दिति के  
गर्भ से उत्पन्न हुआ था । देवताओं के द्वारा मरा

चरण थे। यह संसार का अति उत्पीड़न करता था। अन्त में महादेव के द्वारा निहृत हुआ।

अन्धकार तत्त्वं (पु०) अन्धेरा, अंधियारा, प्रकाश-भाव, ध्वान्त, तिमिर। [कूप, अन्ध कुंवा।

अन्धकूप तत्त्वं (पु०) अन्धकार मय कूप, जलरहित अन्धगोलाङ्गूल तत्त्वं (पु०) अन्धे द्वारा गौ की पूँछ पकड़ कर चलन की क्रिया। जो दूरा अन्धे का सहा। अन्धे द्वारा पकड़े जाने पर होती है, अर्थात् शोभा गड़ड़े में गिर पड़ते हैं, वही दूरा अन्धगोलाङ्गूल की भी है।

अन्धइ तत्त्वं (पु०) अंधी, अड़, पतास, प्रचण्ड वात। अन्धतमस तत्त्वं (पु०) अत्यन्त अन्धकार, निविड़ अन्धकार, नरक विशेष। [नरक विशेष।

अन्धतामिस्र तत्त्वं (पु०) निविड़ान्धकार-युक्त अन्धपरम्पराप्रस्त तत्त्वं (पु०) अन्धों की परम्परा में प्रस्त, यज्ञानियों के अनुयायी। [का, काना।

अन्धजा तत्त्वं (पु०) अचक्षु, नयन-हीन, दिन आँस अन्धस तत्त्वं (पु०) भात, रींथे हुए चावल।

अन्धाधुन्ध तत्त्वं (पु०) अधिक करना, अनियम, अन्धों के समान करना। [आदि।

अन्धसुत तत्त्वं (पु०) अन्धे का पुत्र, राजा दुर्योधन अन्धार दे० (पु०) अन्धेरा, तम।

अन्धारी दे० (स्त्री०) अंधी। [अन्धकार।

अन्धियर या अन्धियारा तत्त्वं (पु०) अंधेरा,

अन्धिसन्धितत्त्वं (पु०) छिद्र, छेद, भौका, गढ़ा।

अन्धु दे० (पु०) हँचा।

अन्धेर तत्त्वं (पु०) अन्धाय, उपद्रव, उत्पात, अन्धाधुन्ध, अन्धाय।—खाता दे० (पु०) अन्धेण्ड हिसाब किताब, व्यक्ति क्रम, अन्धाय, क्रमबन्ध, व्यवहार।

अन्धेरा तत्त्वं (पु०) अंधियारा, ध्वान्त।

अन्धेरिया दे० (स्त्री०) अन्धकारमयी रात, अंधेतापान्न, ऊस की पहिली गोदई।

अन्धेरी दे० घोड़ों की आँस मूदने की डपनी। [डपनी।

अन्धेरी दे० (स्त्री०) घोड़े या बैल के आँखों की

अन्धार दे० (पु०) तम, अन्धकार।

अन्धारी दे० (स्त्री०) अन्धकारमयी।

अन्ध तत्त्वं (पु०) बहेलिया, चिड़ीमार, शिकारी।

दक्षिण देस का एक प्रान्त विशेष। एक राजवंश।

अन्न तत्त्वं (पु०) ओदन, भात, अनाज, सूर्य।—कट

तत्त्वं (पु०) दुर्भिक्ष।—कूट तत्त्वं (पु०) पर्व

विशेष, दिवाली के दूसरे दिन भात का पर्वत के

समान ढेर लगाया जाता है।—क्षेत्र तत्त्वं (पु०)

वह जगह जहाँ भूखों के अन्न मिलता हो।—जल

तत्त्वं (पु०) अन्न पानी, राना पीना, दाना पानी।

—दान तत्त्वं (पु०) आहार दान, अन्नभक्ष्य।—

दास तत्त्वं (पु०) पेट के लिये दास बनने वाले,

पेटू।—दाता तत्त्वं (पु०) पालनेद्वारा, रक्षक,

अन्न का दान करने वाला—पानी तत्त्वं भोजन

और जल।—पूर्णा तत्त्वं (स्त्री०) अन्नाधिष्ठात्री,

देवी, काशीरवरी, विरवेश्वरी।—प्राशन तत्त्वं

(पु०) संस्कार विशेष, बालक भालिकाओं को

प्रथम अन्न खिलाता। छठवें महीने यह संस्कार

किया जाता है।—विकार तत्त्वं (पु०) शुक,

धीर्य, विद्या, मख।—ब्राह्म तत्त्वं (पु०) अन्नस्वरूप

मख।—भाजन तत्त्वं (पु०) भोजन करने का

पात्र।—भिक्षा तत्त्वं (स्त्री०) अन्न के लिये

प्रार्थना।—भोका तत्त्वं (पु०) अन्न खाने वाला,

जिसके साथ खान पान है।—मय तत्त्वं (पु०)

अन्नस्वरूप, अन्न द्वारा वर्द्धित।—रस तत्त्वं (पु०)

अन्न का सारभाग, माँड, अन्न से पेट में रस उत्पन्न

होता है।—लिप्ता तत्त्वं (स्त्री०) बुघा, वुमुघा।

—वस्त्र (पु०) प्रासाच्छादन।—क्षेत्र तत्त्वं (पु०)

अधिक अन्न, बहुत मनुष्यों का भोजन।—माव

तत्त्वं (पु०) अन्न की अवस्थिति, दुर्भिक्ष, अकाल,

महँगी।—आर्या तत्त्वं (पु०) भोजन के लिये अन्न

मँगने कला।—हारी तत्त्वं (पु०) अन्नभोका,

अन्न-भक्षक, अन्न खाने द्वारा।

अन्ना दे० (स्त्री०) उपमाता, चाय, चात्री।

अन्नी तत्त्वं (स्त्री०) दाई, चायी, चात्री, उपमाता,

एक अन्ने का निकल धातु का सिका।

अन्मोल तत्त्वं (पु०) अमूल्य, अति उत्तम।

अन्य तत्त्वं (पु०) मित्र, प्रपक्, और, अपर, पर।

—कृत तत्त्वं (पु०) (१) अन्य द्वारा अनुष्ठित,

अन्य द्वारा किया हुआ, मित्र सम्पादित।—गामी

अन्तराल तत् ( पु० ) फाँक, अन्तर, भेद, मध्य,  
बीच, घिरा हुआ स्थान, मण्डल ।

अन्तरिक्ष } तद् ( पु० ) आकाश, गगन ।  
अन्तरिक्ष

अन्तरित तत् ( पु० ) भीतरी, अन्तरिक ।

अन्तरीप तत् ( पु० ) भूमि भाग जो समुद्र में दूर तक  
बिछा गया हो ।

अन्तरीक्ष तत् ( पु० ) आकाश, गगन, शून्य, नभ ।

अन्तरीय [अन्तर + ईय] तत् ( पु० ) भीतर का,  
बिचला, मध्य का, परिधान वस्त्र ।

अन्तरीया तत् ( स्त्री० ) तिजारी, तीसरे दिन धाने  
वाला ज्वर, अंतरा ज्वर । [पहिनने का वस्त्र ।

अन्तरौटा दे० ( पु० ) महीन साड़ी या लहंगा के भीतर

अन्तर्गत तत् ( स्त्री० ) मन की बात, पैठा मध्यस्थ ।

अन्तर्गति तत् ( स्त्री० ) मन के तरङ्ग, विस्मरण ।

अन्तर्दशा तत् ( स्त्री० ) फलित ज्योतिष में एकग्रह के  
अन्तर्गत दूसरे ग्रह की दशा । [ उवाचा ।

अन्तर्दाह तत् ( पु० ) छाती की जलन, शरीर की

अन्तर्दान तत् ( पु० ) अदर्शन, लुकाव, छिप जाना ।

अन्तर्धान तत् ( पु० ) मानसिक ध्यान, मनःसम्बन्धी  
ज्ञान ।

अन्तर्पट ( पु० ) छोट, झट्ट, टट्टी, पर्दा ।

अन्तर्भूत तत् ( पु० ) मध्य में स्थापित, मध्यस्थ ।

अन्तर्मनस तत् ( पु० ) उदास, चराया, व्याकुल ।

अन्तर्यामी तत् अन्तर्यामी तद् ( पु० ) मन की बात  
बूझने हार ।

अन्तर्लोपिका तत् ( स्त्री० ) वह पहेली जिसका उत्तर  
उसी पहेली के अक्षरों में हो ।

अन्तर्वनी तत् ( स्त्री० ) गर्भिणी, द्विजीवा ।

अन्तर्वेद तत् ( पु० ) गङ्गा यमुना के बीच का देश,  
प्रज्ञावर्त । [ अन्तर्दान ।

अन्तर्हित तत् ( पु० ) छिपाव, लुकाव, अदृश्य,

अन्तिक तत् ( पु० ) समीप, पास, निकट, सन्निधान ।

अन्तिम [अन्त + इम्] तत् ( पु० ) शेष, चरम, अव-  
सान, अन्त वाला । —यात्रा तत् ( स्त्री० )

मृत्यु, मरण, महाप्रस्थान, महायात्रा ।

अन्तेवासी [अन्ते + वस + णच्] तत् ( पु० )  
विषाघों, प्रसूचारी, प्रान्तस्थायी ।

अन्त्य तत् ( पु० ) शेष का, नीच, अग्रिम जाति,  
अन्तिम, शेषोत्पन्न, जवम्प । —कर्म तत् ( पु० )  
प्रेत कर्म, शवदाहादि कर्म । —ज तत् ( पु० )  
शूद्र, रजकादि सप्त जाति, यथा— रजक,  
भस्मकार, चमार, बपुद्र, कैवर्त, मेद, भीन, ( पु० )  
जघन्यज जाति, अवरज । —जन्मा तत् ( पु० )  
शूद्र, अवर्ण्य, जघन्य जाति । —स्य तत् ( पु० )  
य र ल व वे वर्ण ।

अन्त्याक्षरी तत् ( स्त्री० ) किसी श्लोक के अन्तिम  
अक्षर से आरम्भ होने वाले श्लोक का कहना ।

उर्द्ध फाँसी की घेतवाड़ी की तरह ।

अन्त्येष्टि [अन्त्य + इष्टि] तत् ( पु० ) प्रेत कर्म  
शवदाहादि कर्म, मृत देह का अन्तिम संस्कार ।

—क्रिया तत् ( स्त्री० ) शवदाह ।

अन्त्र तत् ( स्त्री० ) अति, अतिड़ी, नाड़ी, —वृद्धि  
तत् ( स्त्री० ) कोश वृद्धि रोग ।

अन्त्र दे० अन्धन्तर, भीतर ।

अन्त्रकनो दे० ( पु० ) भीतरी ।

अन्त्राज दे० ( पु० ) अटकल, अनुमान ।

अन्त्राजन दे० अनुमान से, लगभग ।

अन्वेश दे० सन्वेद, संशय ।

अन्ध तत् ( पु० ) (१) नेत्रहीन, अन्ध, अन्धा,  
सूरदास, मुनि विशेष । धृतराष्ट्र, ये जन्मान्ध थे ।

(२) वैश्य जातीय एक मुनि । यह अयोध्या में  
सरयू के तीर पर रहते थे । एक शूद्रा कन्या के  
साथ इन्होंने अपना व्याह किया था, और आश्रम में  
रहते थे । अयोध्याधिपति राजा दशरथ ने हाथी के  
भ्रम से अन्ध मुनि के पुत्र को शवदेखी बाण से  
निहत किया । बाणविद्ध पुत्र का पिता-माता ने देख  
के अपने प्राण छोड़ दिये और राजा को शाप दिया  
कि तुम भी पुत्रवियोग ही में मरोगे ।

अन्धक तत् ( पु० ) देश विरोध, मुनि विरोध, असुर  
विशेष । यह दैत्य कश्यप के औरस और दिति के  
गर्भ से उत्पन्न हुआ था । देवताओं के द्वारा जब  
सब दैत्य मारे गये, तब दिति ने कश्यप से घर माँगा  
कि मेरे पुत्र को अवध्य बनाइये । कश्यप ने कहा  
'तयागु' । वही पुत्र अन्धक था । इसके हज़ार  
बाहु, हज़ार मस्तक, दो हज़ार नेत्र, और दो हज़ार,

सुग करने वाला, अनिष्टकारी ।—कोर्त्ति तत्त्वं (स्त्री०) अयशः, अरुण्यति, दुर्नाम, अकीर्ति ।  
 —कृत तत्त्वं (गु०) अपकार प्राप्त ।—कृति तत्त्वं (स्त्री०) अपकार, अनुपकार ।—कृष्ट तत्त्वं (गु०) अधम, न्यून, नीचा, सुग, निरुष्ट ।—कृष्टता तत्त्वं (स्त्री०) जघन्यता, निरुष्टत्व, नीचता ।  
 —क्रम तत्त्वं (गु०) भागना, कृटना, क्रमविपर्यय, पलायन ।—क्रोश तत्त्वं (गु०) निन्दन, मत्सर ।  
 —गत तत्त्वं (गु०) दूर गया, सुया, मरा, मृत, दूरीभूत ।—घात तत्त्वं (गु०) हत्या, वध, मारना ।—घार तत्त्वं (गु०) टोटा, घाटा, च्छति, क्षीयता ।—चय तत्त्वं (गु०) उवाक, अजीर्ण ।  
 —झाया तत्त्वं (स्त्री०) प्रेत, उपदेवता ।

अपघ्न तत्त्वं (गु०) कष्टा, अनभ्यस्त ।

अपगत तत्त्वं (गु०) चला गया हुआ, भागा हुआ, गत, मृत, नष्ट, मरा हुआ ।

अपगा तत्त्वं (स्त्री०) नदी ।

अपघात तत्त्वं (गु०) चोखा, हत्या, धिरवासघात, हिंसा ।—क्र (गु०) विश्वासघाती, घातक ।

अपघ्न तत्त्वं (गु०) अजीर्ण ।

अपघ्नीकृत तत्त्वं (गु०) सूक्ष्मभूत, आकाश आदि पाँच भूतों के पृथक् पृथक् भाव ।

अपघ्नरा तत्त्वं (स्त्री०) अन्तरा ।

अपजय तत्त्वं (स्त्री०) हार, पराजय ।

अपजस तत्त्वं (गु०) बदनामी, अयशः ।

अपष्टक (गु०) अर्द्धाङ्गी, पक्षघाती ।

अपटी तत्त्वं (स्त्री०) बख्शमावस्था, कृताव, तम्बू ।

अपटु तत्त्वं (गु०) अचतुर, निर्बुद्धि, अकुशल, अनिपुण, व्याधित, रोगी ।

अपठ तत्त्वं (गु०) अनभ्यास, अनपढ़ा, मूर्ख ।

अपठित तत्त्वं (गु०) अशिक्षित, अध्ययन-रहित ।

अपठ दे० (गु०) स्थायी, चटल, पोढ़ा, हड़ ।

अपठर तत्त्वं (गु०) मिथ्या भय, निष्कारण डर ।

अपठ दे० (गु०) अनाड़ी, मूर्ख, अनपढ़ा हुआ ।

अपत तत्त्वं (गु०) पापी, अप्रतिष्ठित ।

अपति तत्त्वं (स्त्री०) अनादर, अपमान ।

अपतिथारा दे० (गु०) विश्वासघातक, कपटी ।

अपत्य तत्त्वं (गु०) सन्तान, बेटा, लड़का, जिसकी स्थिति से पितर गिनाने न पावें, पुत्र, कन्या ।  
 —शत्रु तत्त्वं (गु०) कर्कट, कैकड़ा ।—स्नेह तत्त्वं (गु०) पुत्र और कन्या के प्रति स्वाभाविक मोह । [ बाला ।

अपत्रप तत्त्वं (गु०) ब्रह्माहीन, निर्लेज्ज, नहीं लजाने अपत्य तत्त्वं (गु०) कुमार्ग, मार्ग-रहित ।

अपत्य तत्त्वं (गु०) अहितकारक भोजन, रोग बढ़ाने वाले पदार्थ ।—शी तत्त्वं (गु०) कुपम्प भोजन, कुपम्पमिलापी ।

अपद् तत्त्वं (गु०) पदरहित, पंगु, कर्मच्युत, (गु०) सर्प, कृमि ।—स्थ तत्त्वं (गु०) स्थान अष्ट, कर्मच्युत, पदच्युत, अपने पद से हटाया गया ।

अपदार्थ तत्त्वं (गु०) अयोग्य वस्तु, अवस्तु, पदार्थ भिन्न, अनुपम पदार्थ । [ देवता ।

अपदेवता तत्त्वं (गु०) प्रेत, पिशाच आदि, निरुष्ट

अपदेश तत्त्वं (गु०) छल, कपट, बहाना ।

अपध्वंसक तत्त्वं (गु०) चितोना, क्षयजनकारी ।

अपध्वस्त तत्त्वं (गु०) अपमानित, परास्त ।

अपनयन तत्त्वं (गु०) [अप + नी + अनङ्] अपनय, क्षयजन, दूरीकरण, मरण, निष्कृति ।

अपना तत्त्वं (सर्पे०) स्वकीय, निजका, स्व ।—पन दे० (गु०) स्वजनता, आत्मीयता । [ जोढ़ना ।

अपनाना (क्रि० प्र०) अपनावना, अपना सबन्ध अपनायत तत्त्वं (स्त्री०) नाता, गोता, घराना, सम्बन्ध, भाईचारा ।

अपनीत तत्त्वं (गु०) हटाया गया, दूरीकृत, अपसारित ।

अपचक्ष तत्त्वं (गु०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, अपने बश में । अपमय तत्त्वं (गु०) भय, डर, अपना डर, निर्भय, विगत भय । [ प्रतापुशब्द ।

अपमाया तत्त्वं (स्त्री०) गँवारी धोबी, कुवाय, अपमंश तत्त्वं (गु०) अपशब्द, प्राकृत, व्याकरण विरुद्ध शब्द, अशुद्ध शब्द, ग्राम्य भाषा ।

अपमान तत्त्वं (गु०) अमर्यादा, तिरस्कार, अनादर, असम्मान ।—न्ति तत्त्वं (गु०) अपमान प्राप्त, मानहीन, बेहज्जुत किया हुआ ।

तत्त्वं (पु०) व्यभिचारी खण्डन, परिवर्तन, बदला किया हुआ, पारदारिक, परस्त्रीगामी, लम्पट ।—वाली तत्त्वं (पु०) स्वधर्मत्यागी, कुपयगामी ।—ज तत्त्वं (पु०) कुयोनि, हीन-जाति ।—तः तत्त्वं (अ०) अन्यत्र, स्थानान्तर ।—त्र (अ०) और कहीं, दूसरा ठाँव ।—था तत्त्वं (अ०) विपरीत, प्रतिहृल, विरुद्ध, अन्य प्रकार, विपर्यय परार्थ, मिथ्या, दुष्ट, वित्तय, और प्रकार, वलदा । ( २ )—ख्याति तत्त्वं (स्त्री०) अप्याति, दुष्कीर्ति, दुर्नाम । दर्शनों में इस शब्द का प्रयोग आत्मविपर्यय मिथ्याज्ञान के अर्थ में होता है । आत्मा का अयथाार्थ ज्ञान ।—चरण तत्त्वं (पु०) उलटा चलन विपरीत व्यवहार, विरुद्ध आचरण, विपर्ययकरण ।—सिद्धि तत्त्वं (पु०) अभावनीय कर्मों की वृत्ति, एक प्रकार का हेतुभास तर्क विशेष, जिसमें असत्य युक्तियों के द्वारा कोई विषय सिद्ध किया गया हो ।

अन्यदेशी या अन्यदेशीय तत्त्वं (पु०) दूसरे देश के वासी, निज देशी ।

अन्यपुरुष तत्त्वं (पु०) दूसरा आदमी, व्याकरण में सीसरा पुरुष वह, कोई ।

अन्यपुष्ट तत्त्वं (पु०) कोकिल, कोइल, पिक, पर पालित, दूसरे के द्वारा पालित ।

अन्यपूर्वा तत्त्वं (स्त्री०) परपूर्वा, जिस कन्या का एक बार विवाह हो जाने के अनन्तर पति के मरने पर पुनर्बार विवाह होता है, द्विरुद्ध, दो बार ब्याही हुई ।

अन्यभूत तत्त्वं (पु०) कंक, कौआ, कोइल, पिक ।

अन्यादृश तत्त्वं (पु०) अन्य प्रकार, भिन्नरूप, विसदृश ।

अन्यमनस या अन्यमनस्क तत्त्वं (पु०) अन्यचिन्तक, चपल, अन्धचित्त, अन्यमना ।

अन्यमनस्कता तत्त्वं (स्त्री०) अन्यमनस्क होना, दूसरी ओर मन लगाना, प्रस्तुत बात पर असावधानी ।

अन्यान्य तत्त्वं (पु०) अपरापर, भिन्न भिन्न, दूसरे दूसरे, और और ।

अन्याय तत्त्वं (पु०) उपद्रव, अविचार, न्याय वहीर्तुत अनुचित ।—नी तत्त्वं (पु०) अन्यायकारी, अत्या-

चारी, दुर्बुद्ध, अधर्मी, न्यायशून्य, न्याय-रहित, दुष्ट ।

अन्योक्ति तत्त्वं (स्त्री०) कथन विशेष जिसमें अन्य के विषय में कथन करते हुए वह कथन अन्य पर घटाया जाय ।

अन्योन्य तत्त्वं (पु०) परस्पर, उभयतः मिलाप ।—भेद तत्त्वं (पु०) परस्पर का भेद, आपस का भेद, निरोध ।—अथय तत्त्वं (पु०) एक वस्तु के ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान, परस्पर ज्ञान, सापेक्ष, ज्ञानाश्रय, अपने ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान और उस वस्तु के ज्ञान से अपना ज्ञान ।

अन्यय तत्त्वं (पु०) वंश, कुल, पदच्छेद सन्तति ।—ह तत्त्वं (पु०) वंशावलि जानने वाला, वन्दी, भाद ।—नी तत्त्वं (पु०) संवन्ध विशिष्ट, सम्पर्क, परचाहर्त्ता ।

अन्यह तत्त्वं (पु०) नित्य, प्रत्यह, प्रतिदिन ।

अन्वाचय तत्त्वं (पु०) संयोजित, संयुक्त, द्वन्द्व समास का एक भेद ।

अन्वित तत्त्वं (पु०) युक्त, संबन्धित, पूरा, मिला हुआ । [ अनुसन्धान ।

अन्वीक्षण तत्त्वं (पु०) इदृशता, पता लगाना, अन्वेषण तत्त्वं (पु०) खोजना, पता लगाना, अनुसन्धान करना ।

अन्वहाना तत्त्वं (कि०) स्नान कराना, धुलाना ।

अन्वहान तत्त्वं (पु०) स्नान, धोवन ।

अन्वोना तत्त्वं (पु०) असाध्य, असम्भव, जो न हो सके ।

अप् तत्त्वं (पु०) जल, पानी । (उपसर्ग) नीच, अधम, गुरा, अंस, असम्पूर्णता, विकृत, त्याग, वञ्चनार्थ, अपकृष्टार्थ, वियोग, विपर्यय, धीर्यनिर्देश, हर्ष, यज्ञकर्म, अनिर्देश्य प्रज्ञा ।—कर्म तत्त्वं (पु०) दुष्कर्म, अनिष्टकर्म, कुकर्म, कुचलन ।—कर्म तत्त्वं (पु०) जघन्यता, छुटाई, मुख्य काल के रहते अमुख्य काल में कर्म करना ।—कर्मण तत्त्वं (पु०) खींचना, टानना ।—कलङ्क तत्त्वं (पु०) अपयश, कलङ्क, मिथ्यापवाद, दुर्नाम ।—काजी दे० (पु०) स्वाधी, मतलबी ।—कार तत्त्वं (पु०) अनिष्ट, हानि, पति, अनुपकार ।—कारक-कारी तत्त्वं (पु०)

बुग करने वाला, अनिष्टकारी ।—कोर्त्ति तत्० (स्त्री०) अवश, अव्याप्ति, दुर्नाम, अकीर्ति ।  
 —कृत तत्० (गु०) अपकार प्राप्त ।—कृति तत्० (स्त्री०) अपकार, अनुपकार ।—कृष्ट तत्० (गु०) अधम, न्यून, नीचा, बुग, निरुष्ट ।—कृष्टता तत्० (स्त्री०) जघन्यता, निरुष्टत्व, नीचता ।  
 —क्रम तत्० (गु०) भागना, कृटना, क्रमविपर्यय, पलायन ।—क्रोश तत्० (गु०) निन्दन, भर्त्सन ।  
 —गत तत्० (गु०) दूर गया, मुखा, मरा, मृत, दूरीभूत ।—घात तत्० (गु०) हत्या, वध, मारना ।—घात तत्० (गु०) टोटा, घाटा, छति, क्षीणता ।—चय तत्० (गु०) उवाक, अजीर्ण ।  
 —ज्ञाया तत्० (स्त्री०) प्रेत, उपदेवता ।

अपक तत्० (गु०) कच्चा, अनम्यता ।  
 अपगत तत्० (गु०) चला गया हुआ, भागा हुआ, गत, मृत, नष्ट, मरा हुआ ।

अपगा तत्० (स्त्री०) नदी ।  
 अपघात तत्० (गु०) धोखा, हत्या, विश्वासघात, हिंसा ।—क (गु०) विश्वासघाती, घातक ।  
 अपच तत्० (गु०) अजीर्ण ।  
 अपञ्जीकृत तत्० (गु०) सूक्ष्मभूत, आकाश आदि पाँच भूतों के पृथक् पृथक् भाव ।

अपङ्गुरा तत्० (स्त्री०) अस्तरा ।  
 अपजय तत्० (स्त्री०) हार, पराजय ।  
 अपजस तत्० (गु०) बदनामी, अवश ।  
 अपटक (गु०) अर्द्धाङ्गी, पञ्चभाती ।  
 अपटी तत्० (स्त्री०) वस्त्रप्रवरण, कुनात, तम्बू ।  
 अपटु तत्० (गु०) अचतुर, निर्बुद्धि, अकुशल, अनियुक्त, व्याधित, रोगी ।

अपठ तत्० (गु०) अनभ्यास, अनपढ़ा, मूर्ख ।  
 अपठित तत्० (गु०) अशिक्षित, अध्ययन-रहित ।  
 अपट्ट दे० (गु०) रथायी, अटल, पोढ़ा, डढ़ ।  
 अपडर तत्० (गु०) मिथ्या भय, निष्कारण डर, ।  
 अपट्ट दे० (गु०) अनाड़ी, मूर्ख, अनपढ़ा हुआ ।  
 अपत तत्० (गु०) पापी, अप्रतिष्ठित ।  
 अपति तत्० (स्त्री०) अनादर, अपमान ।  
 अपतिथारा दे० (गु०) विश्वासघातक, कपटी ।

अपत्य तत्० (गु०) सन्तान, बेटा, लड़का, जिसकी स्थिति से पितर गिनाने न पावें, पुत्र, कन्या ।  
 —शत्रु तत्० (गु०) कर्कट, कैकड़ा ।—स्नेह तत्० (गु०) पुत्र और कन्या के प्रति स्वाभाविक मोह । [ वाला ।

अपत्रप तत्० (गु०) वज्राहीन, निर्लज्ज, नहीं लजाने  
 अपथ तत्० (गु०) कुमार्ग, मार्ग-रहित ।

अपथ्य तत्० (गु०) अहितकारक भोजन, रोग बढ़ाने वाले पदार्थ ।—आशी तत्० (गु०) कुपथ्य भोक्ता, कुपथ्यप्रमिलायी ।

अपद तत्० (गु०) पदरहित, धनु, कर्मच्युत, (गु०) सर्प, कृमि ।—स्थ तत्० (गु०) स्थान अष्ट, कर्मच्युत, पदच्युत, अपने पद से हटाया गया ।

अपदार्थ तत्० (गु०) अयोग्य वस्तु, अवस्तु, पदार्थ भिन्न, अनुपम पदार्थ । [ देवता ।

अपदेवता तत्० (गु०) प्रेत, पिशाच आदि, निरुष्ट  
 अपदेश तत्० (गु०) छल, कपट, बहाना ।

अपध्वंसक तत्० (गु०) विनोद, खण्डनकारी ।  
 अपध्वस्त तत्० (गु०) अपमानित, परास्त ।  
 अपनयन तत्० (गु०) [अप + नी + घनट्] अपनय, खण्डन, दूरीकरण, मरण, निष्कृति ।

अपना तत्० (सर्व०) स्वकीय, निजका, स्व ।—पन दे० (गु०) स्वजनता, आत्मीयता । [ जोड़ना ।

अपनाना (कि० सं०) अपनावना, अपना सम्बन्ध  
 अपनायत तत्० (स्त्री०) माता, गोता, घराना, सम्बन्ध, भाईचारा ।

अपनीत तत्० (गु०) हटाया गया, दूरीकृत, अपसारित ।

अपवश तत्० (गु०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, अपने बरा में ।  
 अपमय तत्० (गु०) मय, डर, अपना डर, निभेय, विगत भय । [ मत्तापुशब्द ।

अपमापा तत्० (स्त्री०) गैबारी थोड़ी, कुवाण्य,  
 अपमंश तत्० (गु०) अपशब्द, प्राकृत, व्याकरण विरुद्ध शब्द, अशुद्ध शब्द, ग्राम्य भाषा ।

अपमान तत्० (गु०) अपमानादा, तिरस्कार, अनादर, असम्मान ।—न्ति तत्० (गु०) अपमान प्राप्त, मानहीन, बेहज्जत किया हुआ ।

अपमृत्यु तत्त्वं (पु० स्त्री०) रोग के बिना मरण, अप-  
घात मरण, अस्वाभाविका कारणों से मृत्यु,  
अकाल मृत्यु ।  
अपयश तत्त्वं अपयश तत्त्वं (पु०) अपकीर्ति,  
दुर्नाम, अख्याति ।  
अपर तत्त्वं (गु०) इतर, अन्य, पर, भिन्न, दूसरा ।  
अपरञ्च तत्त्वं (अ०) और भी, फिर भी ।  
अपरग तत्त्वं (पु०) प्रत्यमाणी, अन्यगामी, व्यवहारी ।  
अपरना तत्त्वं अपर्या तत्त्वं (स्त्री०) बिना पत्ने वाली,  
वमा, पार्वती, भवानी । [अशेष ।  
अपरस्पर तत्त्वं (पु०) अपार, अनन्त, असीम,  
अपरस् तत्त्वं (गु०) अमृश्य, न छूने योग्य ।  
अपरा तत्त्वं (स्त्री०) लौकिक विद्या, पदार्थ विद्या,  
पश्चिम दिशा । एकादशी विशेष का नाम, (वि०)  
दूसरी । [ पराभव-हीनता ।  
अपराजय तत्त्वं (पु०) अपराभव, अजीत, जीत,  
अपराजित तत्त्वं (गु०) जो जीता न जाय, अजेय,  
अनिर्जित । (पु०) विष्णु, अपविशेष, शिव,  
— तत्त्वं (स्त्री०) दुर्गा, जयन्ती, वृष, अश्वि-  
पत्नी, स्वल्पकला, विष्णुकान्ता, शोफाली, शमी  
भेद, शङ्खिनी, स्वनामख्यात लता विशेष ।  
अपराध तत्त्वं (पु०) दोष, अधर्म, पाप, अन्याय,  
— तत्त्वं (पु०) पापी, दोषी, अन्यायी ।  
अपराधीन तत्त्वं (गु०) स्वाधीन, जो परतन्त्र  
नहीं है । [ पर ।  
अपराह तत्त्वं (पु०) दिन का शेष भाग, तीसरा  
अपरिगृहीता तत्त्वं (स्त्री०) कुलस्त्री, विवाहिता स्त्री,  
जो परिगृहीत न हो ।  
अपरिग्रह तत्त्वं (पु०) अमतिग्रह, अस्वीकार ।  
अपरिचय तत्त्वं (गु०) अज्ञात, अज्ञान ।  
अपरिचित तत्त्वं (गु०) अज्ञात, अदृष्ट, जिसके साथ  
सम्भाषण न हुआ हो, जिससे ज्ञान पहिचान न हो ।  
अपरिच्छद तत्त्वं (गु०) हीनवस्त्र, मलिन वस्त्र,  
अनुपयुक्त वेश ।  
अपरिच्छिन्न तत्त्वं (वि०) सुखा, अनदका, मिला हुआ ।  
अपरिणत तत्त्वं (वि०) अपरिणत कथा, ज्यों  
का सों ।

अपरिणीत तत्त्वं (पु०) अविवाहित, कुमार, बबारा,  
— तत्त्वं (स्त्री०) अविवाहिता, कन्या, अनृदा । [रहित ।  
अपरितुष्ट तत्त्वं (गु०) असन्तुष्ट, निरानन्द, वृत्ति-  
अपरिपक्व तत्त्वं (गु०) अपक्व, परिणकहीन, अपट्ट ।  
अपरिपाटी तत्त्वं (स्त्री०) अनरीति, कुदृष्ट ।  
अपरिमित तत्त्वं (गु०) परिमाणहीन, अधिक, प्रचुर ।  
अपरिमेष तत्त्वं (वि०) जिसका नाप या तौल न हो  
सके, अकृता ।  
अपरिस्नान तत्त्वं (गु०) स्नानरहित, खिला हुआ ।  
अपरिस्कार तत्त्वं (पु०) मलीन, मैला कुचैला,  
अनिर्मल, अशुद्ध, अस्पष्ट ।  
अपरिसर तत्त्वं (गु०) सङ्कीर्ण, सङ्कोचित ।  
अपरीक्षित तत्त्वं (गु०) अनर्जाचा हुआ, जिसकी  
जांच न हुई हो ।  
अपरुद्ध तत्त्वं (गु०) खेदी, पड़ताऊ, परचात्तापी,  
चुपचा, अग्रन्तुत । [ रूप ।  
अपरूप तत्त्वं (गु०) आरच्य रूप, अदभुत रूप, विरुद्ध  
अपराज्य तत्त्वं (गु०) प्रत्यक्ष, समक्ष, आँखों के सामने ।  
अपर्या तत्त्वं (स्त्री०) अपरणा) पायंती ।  
अपर्याप्त तत्त्वं (गु०) स्वरूप, थोड़ा, न्यून ।  
अपलज्ज तत्त्वं (पु०) बेहया, निर्लज्ज, नकचड़ा ।  
अपलक्ष्य तत्त्वं (पु०) कुलक्षय, अपराकुन ।  
अपलाप तत्त्वं (पु०) असत्य, असत्य कहना, झगाना,  
ऊटपटांग बकना । [अपयश, दुर्गति ।  
अपलोक तत्त्वं (पु०) अपना लोक, निज का लोक,  
अपवर्ग तत्त्वं (गु०) मोक्ष, परमगति, मुक्ति, क्रिया  
प्राप्ति, या क्रिया की समाप्ति, निर्जन ।  
अपवर्तन तत्त्वं (पु०) अपवर्त, संक्षेप करण, अक्ष  
करण, लेन देन, श्रक काटना ।  
अपवाद तत्त्वं (पु०) निन्दा, दोष, कुत्सा, कलङ्क ।  
— तत्त्वं (गु०) निन्दक । — तत्त्वं (गु०)  
दुर्नामग्रस्त, परिवाद शुक्त । — तत्त्वं (पु०)  
निन्दक । [ कर्म, श्रोट ।  
अपवारण तत्त्वं (पु०) रोक, हटाने या दूर करने का  
अपवाहन तत्त्वं (पु०) दृष्ट वाहन, कुसला के लाना,  
भगा देना, एक राज्य से भाग कर दूसरे राज्य में  
यसाना ।

अपवित्र तत् (गु०) अशुद्ध, पवित्रतारहित, तुल्यहार।

—ता तत् (स्त्री०) अशुद्धता।

अपविद्ध [अप + विध् + क्त] तत् (गु०) प्रत्या-  
ख्यात, निराकृत, चूर्णित, त्यक्त।—पुत्र तत्  
(पु०) बारह प्रकार के गौण पुत्रों में से एक पुत्र  
विशेष, मातृ पितृ-रहित पुत्र, पिता माता से छोड़ा  
हुआ पुत्र।

अपव्यय तत् (पु०) वृथा व्यय, कुकर्म में धन  
फँसना।—नी तत् (गु०) निरर्थक, अर्थनाशक,  
बहुत खर्च करने वाला। [चिन्ह।

अपशकुन तत् (पु०) अमङ्गल लक्षण, अशुभ-सूचक

अपशब्द तत् (पु०) अपसद, नीच। यह शब्द जिस शब्द  
के अन्त में आता है उस शब्द का नीच अर्थ कर  
देता है। यथा:—धृतराष्ट्रशब्द = नीच धृतराष्ट्र,  
प्राज्ञपाशब्द = नीच प्राज्ञ।

अपशब्द तत् (पु०) अशुद्ध शब्द, गाली, निन्दासूचक  
शब्द, अगान वायु, दूसरी भाषाओं के शब्द,  
निन्दित शब्द।

अपसंगुन दे० (पु०) (देखो अपशकुन)

अपसना दे० (क्रि०) सरकना, खसकना, भाग जाना।

अपसर तत् (क्रि०) सरकना खसकना दे० (पु०)

मनमाना, अपने मन का।

अपसरण तत् (पु०) प्रस्थान, चला जाना।

अपसङ्ग तत् (गु०) शरीर का दाहिना हिस्सा, बाय  
हस्त, बाया हाथ। [हरकार।

अपसर्प तत् (पु०) चर, प्रणिवि, गुड़ पुरुष,

अपस्मार तत् (पु०) मृगीरोग, मूच्छा, वायु रोग  
विशेष।

अपस्मार्यी तत् (वि०) लुदगर, स्वार्थी, मतलबी।

अपहनन तत् (पु०) हरण, चय, घात।

अपहरई तत् (क्रि०) चुराता है, नाश करता है, चुरा  
ले, छीन ले, नाश करे।

अपहरण तत् (पु०) छेना, लूटना, चोरी, चौर्य।

अपहर्ता [अप + ह + क्त] तत् (पु०) तरकर  
अपहारक, चोटा, लुटेरा। [गया।

अपहरित तत् (गु०) छीन लिया गया, हर लिया

अपहा तत् (गु०) [अप + हन + क्त] हन्ता, हत्या-  
कारी, हिंसक, अधिक।

अपहार तत् (पु०) [अप + ह + क्त] अपचय,

हानि, धन का निष्कारण व्यय।—नी तत् (पु०)

अपहारक।—क तत् (गु०) अपहरण कर्ता।

(पु०) तरकर, चोर।

अपहास दे० (पु०) उपहास, मज़ाक, दिक्कली।

अपन्हव तत् (पु०) कनार, कपट, क्षिणव, गोपन,  
अपलाप।

अपन्हुति तत् (स्त्री०) अपलाप, अपन्हव काव्य का  
अर्थालङ्कार विशेष। यथा—“आरोपितं तु  
धन, (धर्म) दूर आदि कवि शुद्धापन्हुति  
कहत ताही”।

अपह्नन तत् (गु०) छीना हुआ, चुराया हुआ।

अपानिधि तत् (पु०) समूह, सागर।

अपाक तत् (गु०) अपचार, अजीर्णता, (पु०) बदरा-  
मय, अपक्व, आम, अस्निग्ध।

अपाकरण तत् (पु०) प्रयत्न करना, अलगाना,  
हटाना, दूर करना, तुल्य करना।

अपाङ्ग तत् (पु०) नेत्र का अन्त भाग, नेत्रकोण,  
कटाच।—दर्शन (पु०) देखा देखना, कटाच  
अवलोकन।

अपाटव तत् (पु०) अपटुता, अनिपुणता, अचतुर्दाई,  
बोधापन, मूर्खता। [निरर्थ, जातिभ्रष्ट करना।

अपात्र तत् (गु०) कुप्राय, अयोग्य, अनारी  
असत्पात्र, अयोग्य।—ीकरण तत् (पु०) नव-  
विधि पात्रों में से एक पात्र विशेष, अथवा  
निरर्थ, जाति भ्रष्ट करना।

अपादान तत् (पु०) ग्रहण, कारक विशेष, स्थाना-  
न्तरी करण।

अपान तत् (पु०) पाद, मलद्वारस्थवायु, अपान  
देशीय पवन, अपान वायु, गुधस्थान।—वायु  
तत् (पु०) पाँच प्रकार के वायु में से एक गुदास्थ  
वायु।

अपाप तत् (गु०) निर्दोष, धर्म, निष्पाप। [कटजरी।

अपामार्ग तत् (पु०) चिचड़ा, चिचड़ी, अजाकारा,

अपाय तत् (पु०) नाश, चय, हानि, विरलेप,  
अरचय, आनष्ट पलायन,।—नी तत् (गु०) मृत,  
अहित, पलायित।



अपार तत्त्वं (गु०) पारावार-हीन, असीम, कृत्ररहित,  
अनन्त । —क तत्त्वं (गु०) अक्षम, अमता-शून्य ।  
अपार्यक्त्य तत्त्वं (गु०) अविघ्नता, प्रभेद, पृथक्ता-  
शून्य, एकत्व ।  
अपावन तत्त्वं (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, अशुचि ।  
अपाश्रय तत्त्वं (गु०) अनाथ, दीन, निराश्रय, आश्रय-  
रहित ।  
अपाश्रित तत्त्वं (गु०) त्यागी, एकान्तसेवी । [आलसी ।  
अपाहिज या अपाहज दे० (गु०) लूटा, लँगड़ा,  
अपि तत्त्वं (उपसर्ग) निश्चयार्थक । —च तत्त्वं (अ०)  
आर, वाक्यान्तरद्योतक । —तु तत्त्वं (अ०)  
किन्तु ।  
अपिधान तत्त्वं (गु०) ढकना, आवरण ।  
अपीन तत्त्वं (गु०) हलका, शीघ्र, कृश ।  
अपीनस तत्त्वं (गु०) नाक का रोग विशेष, पीनस ।  
अपील दे० (स्त्री०) पुनर्विचार के लिये निवेदन, किसी  
एक निम्न न्यायालय के किये हुए न्याय के पुनर्वि-  
चार के लिये उच्च न्यायालय में प्रार्थना । —अन्त  
अपील करने वाला ।  
अपुत्र तत्त्वं (गु०) निर्वास, पुत्रहीन, सम्मानरहित ।  
अपुनयो दे० (गु०) अपनावन, अपोती, अपनाहृत ।  
अपूप तत्त्वं (गु०) वशीय हविष्यान्न विशेष, पुश्ता ।  
अपूर्णा तत्त्वं (वि०) जो पूरा या भरा न हो, अधूरा,  
असमाप्त । —भूत तत्त्वं (गु०) क्रियाका वह भूत  
काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय ।  
अपूर्व तत्त्वं (गु०) आश्चर्य, उत्तम, अनुपम । तद्  
(गु०) अप्रत । —ता तत्त्वं (स्त्री०) विलक्षणता,  
अनौत्पादन ।  
अपेक्ष तत्त्वं (गु०) अदृश्य, अलक्ष्य, अदृष्ट ।  
अपेय तद् (गु०) पीने के योग्य नहीं, पान निषिद्ध ।  
अपेल तद् (गु०) अचल, न टालने योग्य, न हटाने  
योग्य, मानने योग्य ।  
अपेक्षा तद् (स्त्री०) अन्य सम्बन्ध, अनुरोध,  
आकांक्षा, आशा । —रुत तत्त्वं (गु०) अन्य के  
द्वारा तुलित, अन्य से विवेचित । —बुद्धि तत्त्वं  
(स्त्री०) अनेक विषयों को एक करने वाली बुद्धि ।  
अपेक्षित तत्त्वं (गु०) प्रतीक्षित, चाहा हुआ ।

अपोहन तत्त्वं (गु०) तर्क के द्वारा बुद्धि को परिमा-  
जित करना । [ हीन, नपुंसक ।  
अपौरुष तत्त्वं (गु०) कापुरुषत्व, असाहस, पुरुषार्थ-  
अप्रकाश तत्त्वं (गु०) अप्रगट, अप्रसिद्ध, गुप्त, छिपा ।  
अप्रकाश्य तत्त्वं (गु०) गोपनीय, न प्रकाश करने योग्य ।  
अप्रकृत तत्त्वं (वि०) बनावटी, अस्वाभाविक, कुद्रिप्त ।  
अप्रगल्भ तत्त्वं (वि०) अप्रीढ़, कष्ट, निरुसाहित ।  
अप्रचलित तत्त्वं (गु०) अप्रयुक्त, जिसका चलन न हो ।  
अप्रणय तत्त्वं (गु०) प्रीतिच्छेद, विपाद भेद, अमीत,  
प्रकरण भिन्न, अप्रेम, अप्रीति ।  
अप्रताप तत्त्वं (गु०) तेजहीन, अप्रबल, अप्रबल ।  
अप्रतिम तत्त्वं (गु०) असादृश्य, अनुपम, निरुपम,  
अनुपमेय, असमान, बेजोड़ । [ अपमान ।  
अप्रतिष्ठा तत्त्वं (स्त्री०) येद्वज्जती, अनादर,  
अप्रतिष्ठित तत्त्वं (गु०) अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत ।  
अप्रतिरथ तत्त्वं (गु०) यात्रा गमन, सैनिक गमन,  
सामवेद, अमङ्गल, योद्धा, योद्धारहित ।  
अप्रतिह तत्त्वं (गु०) अनाघात, अवक्षित, अव्यति-  
क्रम । —त तत्त्वं (वि०) जो प्रतिहत न हो,  
अपराजित । [ अश्वत्थेय ।  
अप्रतीति तत्त्वं (गु०) विश्वास के अयोग्य, अज्ञान,  
अप्रतुल तत्त्वं (गु०) अभाव, असंगति ।  
अप्रत्यक्ष तत्त्वं (गु०) प्रत्यक्ष का अगोचर, अदृष्ट,  
परोक्ष, अलक्षित, नहीं देखा ।  
अप्रत्यय तत्त्वं (गु०) अविश्वास, सन्देह ।  
अप्रथा तत्त्वं (स्त्री०) अव्यवहार, छिपाव ।  
अप्रधान तत्त्वं (गु०) शीघ्र, कनिष्ठ, जघन्य, बुद्ध ।  
अप्रमाण तत्त्वं (गु०) अनिदर्शन, अदृष्टान्त, अशास्त्र ।  
अप्रसन्न तत्त्वं (गु०) असन्तुष्ट, दुःखी, मर्लन, गन्दला,  
मैला ।  
अप्रसाद तत्त्वं (गु०) निग्रह, असम्मत । [ ख्यात ।  
अप्रसिद्ध तत्त्वं (गु०) गोप्य, अप्रगट, गुप्त, अवि-  
अप्रस्तुत तत्त्वं (वि०) अनुपस्थित, गैरहाज़िर । —  
प्रशंसा तत्त्वं (गु०) एक अपालङ्कार जिसमें अप-  
स्तुत के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाता है ।  
अप्राकृत तत्त्वं (गु०) अस्वाभाविक, असाधारण ।  
अप्राप्त तत्त्वं (गु०) दुर्लभ, अनागत, अलभ्य ।

अप्राप्य तत् (गु०) अलभ्य, न मिलने लायक ।  
 अप्रामाणिक तत् (गु०) विश्वास न करने योग्य,  
 प्रमाणशून्य ।  
 अप्रासङ्गिक तत् (वि०) प्रसङ्ग-विरुद्ध ।  
 अप्रिय तत् (गु०) अहित, अनचाहा, अनभीष्ट, (पु०)  
 शत्रु ।—वचन तत् (पु०) निष्ठुर वाक्य, कुवा-  
 क्य ।—चक्रा तत् (पु०) निष्ठुरभाषी, उग्रवाक्य ।  
 अप्रोति तत् (स्त्री०) अप्रिय, असद्भाव, अप्रेम,  
 अरुचि, घैर ।—कर तत् (पु०) अरुचिकर,  
 निष्ठुर, कठोर ।  
 अप्रैल दे० (पु०) अंगरेज़ी चौथे मास का नाम ।  
 अप्सरा तत् (स्त्री०) स्वर्ग की नर्तक, स्वर्गचर्या,  
 तिलोत्तमा, उताची, रम्भा आदि । तद् अप्सरा ।  
 अपरा दे० (पु०) कूलना, पेटकूलना, अजीर्ण या वायु  
 से वेदकूलने का रोग ।  
 अपराई तद् (स्त्री०) अघाना, अफर्ना, परितृप्ति ।  
 अपराना तद् (धी०) अघाना, तृप्ति करना ।  
 अपफल तत् (गु०) वृथा, निष्फल, फलरहित,  
 बन्ध्या, स्नायू का वृक्ष ।—तत् (स्त्री०) घामबकी  
 वृक्ष, घृतकुमारी, धीकुवार ।  
 अपवाह दे० (स्त्री०) अनश्रुति, उड़ती खबर, किंवदन्ती ।  
 अपसर दे० (पु०) हाकिम, प्रधान ।  
 अपसास दे० (पु०) पश्चात्ताप, शोक ।  
 अप्पेडिबिट दे० (गु०) हलफनामा, शपथपूर्वक दिया  
 हुआ लिखित बयान ।  
 अपफीम दे० (स्त्री०) आकू, औपध विशेष, अडिकेन ।  
 अप्पुल्ल तत् (गु०) उदास, पुष्पारहित, बिना फूल,  
 कली ।  
 अप्पेडा तद् (पु०) मनमौजी, अपमानी, अहङ्कारी ।  
 अप्पेन तत् (गु०) फेन रहित, फाम रहित, बिना  
 फेन, कफ रहित ।  
 अप्पेलावट तद् (पु०) सङ्कीर्ण, विस्तार नहीं ।  
 अप दे० (क्रि० वि०) इस समय, अबही, अभी ।  
 —तई दे० (अ०) अथलग, अवतक, अग्रजो ।—  
 तक दे० (अ०) गुरन्त, अभी, मृतप्राय ।—तै दे०  
 (अ०) अभीतै, आजतै, अम् ।—तोड़ी या तोली  
 दे० (अ०) इस घड़ी तक, इस समय तक ।  
 अवकर्तन तत् (पु०) सूख यन्त्र, चरता ।

अवहन दे० (पु०) उपटन, वेद साफ करने के लिये  
 सरसो चिरीजी आदि का जेप ।  
 अवधू तद् (गु०) मूर्ख, अनाड़ी, अज्ञानी ।  
 अवधूत तत् (पु०) योगी, सन्यासी, पाप रहित,  
 जीवमुक्त, महात्मा ।  
 अवध्य तत् (गु०) मारने के योग्य नहीं, अपराधी  
 होने पर भी जिसे प्राणदण्ड नहीं दिया जा सके ।  
 ब्राह्मण, गुरु, स्नातक आदि अवध्य हैं ।  
 अवनी तत् (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, धरती ।  
 अवन्धित तत् (गु०) बन्धन रहित, स्वच्छन्द  
 स्वेच्छाचारी ।  
 अवरक दे० (पु०) धातु विशेष ।  
 अवरल दे० (पु०) अवरक ।  
 अवरन तद् (गु०) अवर्णनीय, अकथनीय ।  
 अवरा दे० (पु०) बरल। ऊपर का ।  
 अवरी दे० (स्त्री०) (१) युक्तकों की जिल्द के पुट्टों पर  
 लगाये जानेवाला कागज (२) पीले रंग का परवर  
 विशेष । (३) एक प्रकार की लाह की रंगाई ।  
 अवल तद् (पु०) निर्वल, हुयला, कृग, बल रहित ।  
 —तत् (स्त्री०) बलहीना, नारी, धी ।  
 अवलख दे० (वि०) कवरा, दोरंगा ।—(स्त्री०)  
 पञ्चीविशेष ।  
 अवला तत् (स्त्री०) नारी, धी ।  
 अववल दे० (पु०) वह अतिरिक्त कर जो सरकार की  
 ओर से माख गुजारी (भूमिकर) पर लगाया  
 जात है ।  
 अवलोकन तत् (पु०) निरीक्षण, देखना ।  
 अवार दे० (स्त्री०) शिलम्ब, देर ।  
 अवोर दे० (पु०) लाल रंग की चुकनी जो होली में  
 लोग एक दूसरे के मुख पर मजते हैं ।  
 अवुद्धि तत् (धी०) बुद्धिहीन, निर्बोध, असमक ।  
 अवुध तत् (गु०) अवृक्त, मूर्ख, असमक ।  
 अवृक्त तद् (गु०) मूर्ख, असमक, अनसमक, अज्ञानी ।  
 अवैर तद् (स्त्री०) शिलम्ब, देरी, देर, कुसमय,  
 असमय ।  
 अवोथ तत् (पु०) अज्ञान, मूर्ख ।  
 अवोल तद् (गु०) उपचाप, अवाक, मीन ।

अञ्ज तत्त्वं (पु०) कलम, पद्म, गङ्गा, चक्र, धन्वतरी  
वैद्य, कपूर, अरब सल्या । — १ तत्त्वं (स्त्री०)  
लक्ष्मी ।

अब्द तद् (पु०) वर्ष, साल, सेवसर ।

अब्धि तत्त्वं (पु०) समुद्र, सागर, अर्णव, सिन्धु । —  
नगरी (स्त्री०) द्वारकापुरी ।

अब्रह्मण्य तत्त्वं (पु०) अब्राह्मण्योचित कर्म ।

अभक्त तत्त्वं (पु०) शठ, भक्तिहीन ।

अभक्त या अभक्त्य तत्त्वं (पु०) न खाने योग्य, अयोग्य ।

अभङ्ग तत्त्वं (पु०) अखण्ड, समूचा नाशरहित । — पद  
तत्त्वं (पु०) श्लेषालङ्कार विशेष ।

अभय तत्त्वं (पु०) निर्भय, निडर, आस रहित । — १  
तत्त्वं (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, हरं या हरित की  
विशेष । — दान तत्त्वं (पु०) दुःख से उद्धार, शरण  
ग्रन्थ, " मा भैः " कह कर अपना ना ।

अभरण, अभरन तद् (पु०) आभूषण, अलङ्कार, गहना ।

अभरम तद् (पु०) पतरी, अभयाँदा ।

अभाग तद् (पु०) विपत्ति, दुर्दशा, विपद ।

अभागा तद् (पु०) मन्दभागी, भाग्यहीन ।

अभाग्य तद् (पु०) दुष्टभाग्य, दुर्दृष्ट, मन्दभाग्य ।

अभाजन तद् पात्ररहित, कुपात्र, अविरवासी,  
अपात्र, अयोग्य ।

अभार तद् (पु०) हलका, लघु, अगुरु ।

अभाव तद् (पु०) अविद्यमान, नास्ति, असत्ता,  
ध्वंस । — नीय तद् (पु०) अचिन्तनीय,  
अतर्क्य ।

अभि तद् (उपसर्ग) चौकेरा, आगे, समन्तात्,  
इमपार्थ, वीप्सा, इष्टभाव, धर्षण, अभिलाष,  
आमिमुख्य, चिन्ह, श्रौतसुख्य ।

अभिक तद् (पु०) कामुक, लम्पट, लुच्चा ।

अभिख्या तद् (स्त्री०) नाम, शोभा, उपाधि ।

अभिगमन तद् (पु०) निकटगमन, सहवासकरण ।

अभिग्रह तद् (पु०) अभिक्रमण, अभियोग, आक्रम,  
गौरव, सुकीर्ति, अपहार, लुण्ठन, चोरी, लड़ाई के  
लिये आह्वान, उत्साह बढ़ाने वाला, योद्धाओं का  
परस्पर कथन ।

अभिवात तद् (पु०) डंडा आदि के द्वारा मारना,  
आघात, दौत से काटना ।

अभिचार तद् (पु०) मारण, मन्त्र विशेष, हिंसा,  
कर्म, मारण उच्चाटन आदि उपपातक विशेष ।

— क तद् (पु०) यन्त्र मन्त्रद्वारा मारण उच्चाटन  
आदि कर्म करने वाला । — १ (पु०) हिंसाजनक-  
कर्म-कर्त्ता, अनिष्टकारक ।

अभिजन तद् (पु०) वंश, गोष्ठी, परिवार, पाकक,  
पोषी, रचक, पूर्वजों का निवासस्थान । [स्वभाव ।

अभिजात तद् (पु०) मर्दराजात, कुलीन, सुन्दर,

अभिजित तद् (पु०) मुहुर्त विशेष, दिवस का अंश  
मुहुर्त, नक्षत्र विशेष, इसमें चलने वाले तीन  
नक्षत्र होते हैं ।

अभिज्ञ तद् (पु०) ज्ञाता, विज्ञ, पण्डित । — ता  
तद् (स्त्री०) विज्ञता, पाण्डित्य, नैपुण्य । — १  
तत्त्वं (पु०) सम्यक् स्मरणार्थ चिन्ह विशेष ।

अभिधा तद् (स्त्री०) नाम, संज्ञा शब्द की शक्ति  
विशेष, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द  
अपने ठीक ठीक अर्थों का बोधन करते हैं ।

अभिधान तद् (पु०) नाम, संज्ञा शब्दों के अर्थ  
बतलाने वाले ग्रन्थ, देश ।

अभिधेय तद् (पु०) अभिधान, नाम । (पु०)  
अभिधागम्य, प्रतिपाद्य, अर्थ ।

अभिनन्दन तद् (पु०) बुद्धविशेष । (पु०) आनन्दन,  
हर्षण । — नीय तद् (वि०) बन्धनीय, प्रशंसा के  
योग्य । — पत्र तद् (पु०) सम्मानसूचक पत्र,  
पत्रिका ।

अभिनय तद् (पु०) शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय  
का भाव प्रकाशित करना, नाट्यक्रिया, नर्तन,  
भांड, स्कांग, नाटक का खेल ।

अभिनव तद् (पु०) नूतन, नवीन, नव्य । — गुप्त  
तद् (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध चरित्रारवेष्टा,  
इनका धार्मिक मत शैव था, इनके वनाये संस्कृत  
के ८ ग्रन्थ हैं । वे ११३ ई० से १०१४ ई० के  
बीच में हुए थे । [आविष्ट, अधिक लग जाना ।

अभिनिविष्ट तद् (पु०) मनोयोगी, प्रणिहित,  
अभिनिवेश तद् (पु०) मनोयोगी, मनोनिवेश, प्रणि-  
धान, प्रवेश, पैठना, विचार । [मिश्रित, मिला ।

अभिन्न तद् (पु०) अपृथक्, संयुक्त, मिश्रित,  
अभिप्राय तद् (पु०) आशय, मनोरथ, तात्पर्य ।

अभिप्रेत तत्त्वं (गु०) अभिप्राय का विषय, धारित्व, अभीष्ट, ईप्सित । [दिशाना ।  
 अभिभव तत्त्वं (पु०) पराजय, हार, पराभव, नीचे  
 अभिभावक तत्त्वं (पु०) तत्वावधारक, रक्षक, सहायक, आश्रय ।—ता या त्व तत्त्वं (स्त्री०) तत्वावधारकता, सहायता । [भूत, पराजित ।  
 अभिभूत तत्त्वं (गु०) अज्ञान, अचेतन्य, विह्वल, परा-  
 अभिमत तत्त्वं (गु०) सम्मत, इष्ट, अनुमत, मनीनीत ।  
 अभिमंत्रित तत्त्वं (गु०) मंत्र पढ़ कर पवित्र किया हुआ । आवाहन किया हुआ ।  
 अभिमन्यु तत्त्वं (पु०) (१) अर्जुन का पुत्र और श्रीकृष्ण का भाजा । सुभद्रा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था । जब कुरुक्षेत्र के युद्ध में कौरव सेना के सभी प्रधान प्रधान धीरे धीरे पोज़िशनीय थी बालक के पराक्रम से निरस्त हो चुके थे, तब कौरवदल के सात महारथियों ने अन्याय से इसका यथ किया था । इसकी स्त्री का नाम उत्तरा था, विराटराज की यह कन्या थी । इसी अभिमन्यु-पत्नी उत्तरा के पुत्र महाराज परीक्षित थे । वीर अभिमन्यु के साथ पैराचिक दारुण अन्याय किया था । इस अत्याचार के कारण ही कौरव सेना का नाम निमूलें हुआ है ।  
 (२) कारमीर के राजा, यह राजा खूटाब्द के दो हजार वर्ष पहिले कारमीर का अधिपति था, इसके समय में कारमीर राज्य में बौद्धधर्म की अत्यन्त प्रचलता थी । कारमीर राज्य में अभिमन्युपुर नामक एक नगर इस राजा ने अपने नाम से बसाया था ।—(महाभारत) ।  
 अभिमर्षण तत्त्वं (पु०) मनन, चिन्तन, पर-स्त्रीगमन ।  
 अभिमान तत्त्वं (पु०) अहंकार, मद, गर्व, आश्वेप ।  
 —ी तत्त्वं (पु०) घमण्डी, अकड़वाज, अहंकारी, अभिमानयुक्त, आश्वेपान्वित, अनादर से लिख ।  
 —जनक (गु०) अहंकारयुक्त, गर्वजनक ।  
 अभिमुख तत्त्वं (गु०) सम्मुख, समक्ष, आगे, सामने ।  
 अभियुक्त तत्त्वं (वि०) जिस पर मुकुटमा लगाया गया हो, अपराधी, मुलजिम, प्रतिवादी ।  
 अभियोक्ता तत्त्वं (गु०) अभियोगकर्ता, बादी, अर्थी, मुद्दई, फरियादी ।

अभियोग तत्त्वं (पु०) अपराधादि योजना, आवेदन, किसी का अपराध धर्माधिकरण में उपस्थित करना ।—ी (पु०) फरियादी ।  
 अभिराम तत्त्वं (गु०) सुन्दर, प्यारा, मनोहर, रमणीय । [अभिलाप, रसज्ञान, आरवाद ।  
 अभिरुचि तत्त्वं (स्त्री०) तुष्टि, भलाई, चाह, मन का अभिरूप तत्त्वं (गु०) योग्य, उपयुक्त । (गु०) विद्वान्, कामदेव, चन्द्रमा, शिव, विष्णु, सदाश । [सुन्दर ।  
 अभिलषणीय तत्त्वं (गु०) वाञ्छनीय, मनोहर, अभिलषित तत्त्वं (गु०) इष्ट, वाञ्छित, इच्छित ।  
 अभिलाख या अभिलाप तत्त्वं (पु०) आर्षाज्ञा, स्तुति, कामना, आशा ।—ी तत्त्वं (पु०) अभिलापयुक्त, सस्पृह, इच्छुक, वाञ्छाभिस्त ।  
 अभिलापुक तत्त्वं (गु०) इच्छाविन्त, सस्पृह ।  
 अभिलास तत्त्वं (स्त्री०) देखो अभिलाप ।  
 अभिवाद तत्त्वं (पु०) दुर्बचन, गाली ।  
 अभिवादन तत्त्वं (पु०) नमस्कार, वन्दना, पादप्रदण-पूर्वक प्रणाम ।—ीय तत्त्वं (गु०) प्रणम्य, प्रणाम के योग्य ।  
 अभिव्यक्त तत्त्वं (गु०) प्रकाशित, विज्ञापित ।—ि तत्त्वं (स्त्री०) विज्ञापन, प्रकाश, व्यक्तकरण, घोषणा । [वाक्य, क्रोध, अनिष्ट-प्रार्थना ।  
 अभिशाप तत्त्वं (पु०) शाप, बुरा मानना, दूषण  
 अभिपङ्क्त तत्त्वं (पु०) आलिङ्गन, सख प्रकार से सह, आक्रोश, पराभव । [स्वाद द्रव्य, सोमलतापान ।  
 अभिपव तत्त्वं (पु०) यज्ञस्नान, चिरस्थापित मद्यो-  
 अभिपिक्त तत्त्वं (पु०) कृताभिपेक, दम में नियुक्ति, पदस्थ, जिसका अभिपेक हुआ ।  
 अभिपेक तत्त्वं (पु०) मंत्रपूर्वक स्नान, कर्म में नियोग करना, पदस्थ करण, शान्ति स्नान, सिद्धन ।  
 अभिसम्पात तत्त्वं (पु०) अभिशाप, सम्प्राप्त, क्रोध, मन्त्र, रिस । [सहाय, मित्र ।  
 अभिसर तत्त्वं (पु०) साथी, संगी, सहचर, अनुचर,  
 अभिसार तत्त्वं (पु०) नायक अथवा नायिका का सङ्केत (पूर्वक निदिष्ट) स्थान में गमन, चल, युद्ध, सहाय ।

अभिसारिका तत् (छो०) नायिका विशेष, नायक के सहायार्थ सङ्केत किये हुए स्थान में जाने वाली नायिका यथा:—

देहा

“जो घेरी मद मदन करि, आगहि पति पहुँ जाइ ।  
वेप अह अभिसारिका, सजै समान घनाइ ॥”

—कवि देवजी ।

अभिसारिका दो प्रकार की होती हैं । एक कृष्णाभिसारिका और दूसरी शुक्लाभिसारिका । इनके ये भेद वेप के अनुसार हैं पर्याप्त काले वस्त्रवाली कृष्णा और हल्के वस्त्रवाली शुक्ला । कृष्णपत्र में अभिसार करने वाली कृष्णाभिसारिका और शुक्लपत्र में अभिसार करने वाली शुक्लाभिसारिका के नाम से परिचित होती हैं ।

अभिशेख तत् (पु०) देखो अभिषेक । [ प्रकाशित ।  
अभिहित तत् (गु०) उक्त, कथित, व्यक्त,  
अभी (अ०) इसी समय, शीघ्र, वेगी ।  
अभीत तत् (गु०) निडर, निर्भय, साहसी ।  
अभीक्ष्ण तत् (पु०) पुनः पुनः, बार बार, भूयोभूयः ।  
अभीप्सित तत् (गु०) अभीष्ट, वाञ्छित, प्रिय,  
मनोमिलित । [अर्थ, शतावधि ।

अभीष्ट तत् (गु०) निर्दोष, निर्भय । (पु०) महादेव,  
अभीष्ट तत् (गु०) इच्छित, वाञ्छित, अभिलषित ।  
अभुञ्जाना दे० (क्रि०) जोर से हाथ पैर और सिर हिलाना ।  
जिससे यह मालूम हो कि उसके शरीर में किसी  
देवी देवता का आवेश हुआ हो ।

अभुक्त तत् (वि०) न खाया हुआ, न लीला हुआ ।  
अभू तत् (अ०) अभी, अब, अबही, आज ।  
अभुवन तत् (पु०) आभूषण, गहना ।  
अभूतपूर्व तत् (पु०) अद्भुत, विलक्षण, आश्चर्य,  
जैसा कि पहले न हुआ हो, अनेका, अपूर्व ।  
अभूतरिपु तत् (पु०) अज्ञातशत्रु, शत्रु-हीन, रिपुहीन  
जिसका कोई दुश्मन न हो ।

अभेद तत् (गु०) भेद रहित, अविशेष, ऐक्य, अभेद,  
परस्पर ।—नीय तत् (गु०) जिसका छेदन या  
भेदन न हो सके, (पु०) हीरा ।—वादी तत्  
(वि०) जीव और मद्य में भेद न मानने वाला  
सम्प्रदाय, अद्वैतवादी ।

अभेद्य तत् (गु०) जो छेदा न जा सके, जिसका भेद न  
हो सके, अखण्डनीय । [अनशन ।

अभोजन तत् (पु०) भोजनाभाव, अनाहार, उपवास  
अभोजी तत् (पु०) अन्नादक, अभोगी ।

अभ्यङ्ग तत् (पु०) आपाद-मस्तक-तैल-लेपन, तैल-  
मर्दन ।

अभ्यङ्गजन तत् (पु०) तैललेपन, तैल, उबटन ।

अभ्यन्तर तत् (पु०) अन्तराल, मध्य, बीच, अन्तः,  
भीतर ।—वर्ती तत् (पु०) मध्यवासी ।

अभ्यर्चना तत् (छो०) आदर, सम्मान, सम्भाषण ।

अभ्यागत तत् (पु०) पाहुन, अतिथि ।

अभ्यास तत् (पु०) साधन, चिन्तन, शिक्षा, आधुति  
से उत्पन्न संस्कार ।

अभ्युत्थान तत् (पु०) उठना, किसी आये हुए  
पुरुष के सम्मानार्थ उठ खड़े होना ।

अभ्युदय तत् (पु०) ऐश्वर्य, वृद्धि

अभ्युदयिक तत् (वि०) अभ्युदय सम्बन्धी, उन्नत,  
वृद्धि सम्बन्धी ।—आद् तत् (पु०) नान्दीमुख  
आद् ।

अग्र तत् (पु०) आकाश, मेघ, बादल । [ भोहर ।

अग्रक तत् (पु०) अवरक, धातु विशेष, भौंडक,  
अग्रान्त तत् (वि०) अग्र रहित ।—अग्रान्ति तत्  
(छो०) आन्ति का न होना, स्थिरता ।

अग्र तत् (अ०) शीघ्रता, अक्षय । (पु०) अर्च,  
रोग विशेष ।

अग्रका ढमका (दे० वा०) फलाना, अमुक, अज्ञात,  
अथवा गोपनीय नाम के पुरुष का बोधक ।

अग्रङ्गल तत् (पु०) अशुभ, अकल्याण, दुर्लक्षण ।  
—जनक (गु०) अशुभ-जनक, दुर्लक्षण-युक्त ।

अग्रङ्ग्य तत् (गु०) अशुभ-जनक, अनिष्ट-प्रचक ।

अग्रचूर तत् (पु०) आम की फकिदा, आम का  
चूर्ण, लटाई ।

अग्रडा दे० (पु०) अंगारी, फल और घृष्ट विशेष

अग्रत तत् (गु०) असम्पत्त, अनभिप्रेत । (गु०)  
रोग, मृत्यु, काल ।

अग्रत्सर तत् (पु०) द्वेषाभाव, मत्सर-रहित ।

अग्रन दे० (पु०) शान्ति, चैन, आराम ।

अमनस्क तत्त्वं (वि०) मन या इच्छा से रहित, उदासीन, अनमन ।

अमनिया तत्त्वं (वि०) शुद्ध, पवित्र, अद्वैत । (स्त्री०) सीधा, कच्चा रसोई का सामान ।—करना तत्त्वं (कि०) शाक को छीलना-बनाना, अनाज को चीन फटक कर साफ करना ।

अमनैक दे० (पु०) हकदार, अधिकारी । अवध सूचे के एक किस्म के काश्तकार जिनको पुश्तैनी लगान के बारे में कुछ खास अधिकार प्राप्त हैं ।

अमनोयोग तत्त्वं (पु०) अनवधानता ।

अमनोज्ञ तत्त्वं (गु०) असुन्दर, कुरूप, विग्रीन ।

अमर तत्त्वं (पु०) देवता, निल, चिरस्थायी, मरखरहित कुलिश वृक्ष, अस्थि-संहारक वृक्ष ।—ज तत्त्वं (गु०) देवमात, देव से उत्पन्न, देवभाव ।—त्व तत्त्वं (पु०) देवभाव, देवत्व, देव-सायुज्य ।

—दातृ तत्त्वं (पु०) वृक्ष विशेष, देवदाह ।—

द्विज तत्त्वं (पु०) देवल ब्राह्मण, पुजारी ।—पति

तत्त्वं (पु०) इन्द्र, देवों का राजा ।—पुर तत्त्वं

(पु०) देवों का नगर ।—वेल तत्त्वं (स्त्री०)

आकाश वेल, वृक्षों के ऊपर जो एक जटा लगी होती है ।—लोक तत्त्वं (पु०) स्वर्ग, देवलोक ।—सिंह

तत्त्वं (पु०) (१) उज्जयिनी-पति । (पु०) विक्रमा-

दित्य की समा के नीरलों में से एक रत्न, अमर-

कोप नामक संस्कृत कोप इन्होंने बनाया था ।

यही एक ग्रन्थ इनकी कीर्ति का अमर । खने के

लिये यथेष्ट साधन है । (२) प्रसिद्ध गोरखा सेना-

पति, १८१४-१२ ख्रिष्टाब्द में नेपाल के युद्ध में

अंग्रेज़ सेनापति आक्टरलोनी को इन्होंने खूब

छेकाया था । जब विलासपुर के राजा ने अंग्रेज़

सेनापति की सहायता की, तब अमरसिंह नेपाल

की राजधानी काठमांडू चले गये और युद्ध का

अन्त हुआ । (३) राजपूताना के अन्तर्गत मेवाड़

के राजपूत-कुल-गौरव प्रतापसिंह का पुत्र । यह

वाल्म्यकाल ही से अपने पिता के समीप रहने के

कारण उनके महनीय चरित्रों के अनुकरण करने

में समर्थ हो सका था । यह अपनी युवावस्था में

मेवाड़ का राजा हुआ । यह अपने पिता के समान

तेजस्वी तथा न्यायी था, पोंडे ही समय में यह एक आदर्श राजा हो गया ।

अमरस दे० (पु०) आम के रस को जमा कर जो सुखा लिया जाता है उसे अमरस या अमावद कहते हैं ।

अमरा तत्त्वं (स्त्री०) दूध, गुच्छ, सेहुड़ा, धूहर, नीली कोयल, फिहो जो गर्भ के बालक के वदन में लपटी रहती है ।

अमराई तद् (स्त्री०) आम का वन, बाग । [ का नाम ।

अमरावती तत्त्वं (स्त्री०) इन्द्रपुरी, स्वर्ग, एक नगरी

अमर तत्त्वं (पु०) एक राजा और कवि का नाम ।

कहते हैं मण्डन मिश्र की स्त्री के प्ररनों का उत्तर

देने के लिये शङ्कराचार्य जी इसी राजा के मृत

शरीर में प्रविष्ट हुए थे, और " अमरुतक, "

नाम का एक शृङ्गार रस का काव्य बनाया था ।

अमरुत् तत्त्वं (गु०) सुस्थिर, शान्त, अचञ्चल, निर्विकल ।

(पु०) फल विशेष ।

अमरु दे० (पु०) काशी का एक रेगमी वस्त्र विशेष ।

अमरुद् दे० (पु०) सफरी, बिही, फल विशेष ।

अमरेश या अमरेश्वर तत्त्वं (पु०) देवताओं का

राजा, इन्द्र ।

अमरैया दे० (स्त्री०) देखो अमराई ।

अमर्यादा तत्त्वं (स्त्री०) अनीति, असम्मान, मान-

हानि ।—तद् (स्त्री०) अमर्याद ।

अमर्य तत्त्वं (पु०) क्रोध, कोप, रिस, अक्षमा ।

अमर्यण तत्त्वं (गु०) क्रोधी, रोगी, कोपान्वित ।

अमल तत्त्वं (पु०) निर्मल, राज्य, काम, प्रयोग,

मादक वस्तु ।

अमलतास तद् (पु०) औषध विशेष ।

अमलदायी दे० (स्त्री०) अधिकार, शासन ।

अमलपट्टा दे० (पु०) अधिकार पत्र ।

अमलवेत दे० (पु०) लता विशेष ।

अमला तत्त्वं (स्त्री०) लक्ष्मी, सातला वृक्ष, पाताल

आवला, (पु०) आवला ।

अमली दे० (वि०) व्यवहारिक, काम में आने वाला,

नरोवाड़, (स्त्री०) हमली ।

अमहर दे० (स्त्री०) आम कि खटाई, अमचूर । [मन्त्री ।

अमात्य तत्त्वं (पु०) प्रधान मन्त्री, दीवान, राज-

अमान तत्त्वं (गु०) मान रहित, निरहङ्कारी ।

अमानित दे० (स्त्री०) धरोहर, याती ।—दार (पु०)  
याती रखने वाला ।

अमाना तद्० (क्रि०) समान भरना, खपना ।

अमानुष तत्० (पु०) जो मनुष्य से न हो सके, मनुष्य  
की शक्ति से बाहर । [अस्वीकार ।

अमान्य तत्० (पु०) मान रहित, खान्य, अनायुत,  
अमाय तत्० (पु०) कपट-रहित, वास्तव, यथार्थ,  
माया-रहित ।

अमाषट दे० (स्त्री०) आम का सुखाया हुआ रस ।

अमावस तद्० (स्त्री०) तिथि विशेष, जिस तिथि में  
चन्द्रमा सूर्य एक ही राशि पर वर्तमान हो ।  
चान्द्र मास का अन्तिम दिन ।

अमावस्या तद्० } (दोनों अमावस)  
अमावस्या तद्० }

अमिउ तद्० (पु०) अमृत, सुधा,

“कीन्हेंसि अमिउ जीये जेहि पाई” — (पद्मावत)

अमिउ तद्० (पु०) निलय, इष्ट, अटल ।

अमित तद्० (पु०) बहुत, अधिक, प्रचुर, असंख्यात ।

अमितीजा तद्० (पु०) सर्वशक्तिमान् ।

अमित्र तद्० (पु०) शत्रु, बैरी, अरि ।—भूत (पु०)  
विपक्ष, बैरी, अहितकारी ।

अमिय तद्० (पु०) अमृत, सुधा, पियूष ।—मूरि  
(स्त्री०) संजीवनी घड़ी ।

अमिरती दे० (स्त्री०) इमरती, मिठाई, एक प्रकार  
का जल पीने का घातु का गिलास ।

अमिश्रराशि (स्त्री०) एकाई से, लेकर नौ तक के  
थक, वह राशि जो इकाई से प्रकट की जाय ।

अमी तद्० (स्त्री०) अमृत, सुधा, आसव । तद्०  
(पु०) [अम् + इन्] रोगी, रोगार्त, पीड़ित ।

अमीत तद्० (पु०) धैरी, शत्रु । [चारी ।

अमीन दे० (पु०) अदालती एक अहलकार या कर्म-  
चमीर दे० (पु०) धनवान, अफगाणिस्तान के राजा की  
उपाधि ।

अमुक तद्० (पु०) वह, कोई, अमका दमका, बुद्धि  
स्थम्भक, सम्मुखगत ।

अमुत्र तद्० (अ०) परकाल, परलोक ।

अमूर्त तद्० (पु०) निराकार मूर्तिहीन ।—नि (पु०)  
मूर्तिहीन, आकृति रहित ।

अमूल तद्० (पु०) मूलरहित, निर्मल, जड़ शून्य ।

अमूलक तत्० (पु०) मूलरहित, निर्मूल, अशामाणिक,  
मिथ्या ।

अमूल्य तद्० (पु०) वस्त्र, बढ़िया, श्रेष्ठ ।

अमृत तद्० (पु०) समुद्रोत्पन्न द्रव्य विशेष, पियूष,  
सुधा, जल, घृत, मुक्ति, दूध, यौषधि, विष, यज्ञरोष  
द्रव्य, अयाचित वस्तु, कस्तनाभ, भक्षणीय द्रव्य,  
सुखाद द्रव्य, पारद, अन्नधन, स्वर्ण, हृद्य ।  
(पु०) मरण रहित (पु०) धन्वन्तरि, वाराही कन्द,  
यनमृग, देवता, सुन्दर ।—कर तद्० (पु०)  
चन्द्रमा, निशाकर ।—कुण्ड तद्० (पु०) अमृत  
का पात्र ।—जटा तद्० (स्त्री०) जटामांसी ।—

तरङ्गिणी तद्० (स्त्री०) ज्योत्स्ना, प्रकाशमयी  
राशि ।—दोधिति तद्० (पु०) चन्द्रमा, राशार्क,  
शशधर ।—धारा तद्० (स्त्री०) वर्षा विशेष  
जिसके पहले चरण में २० दूसरे में १२ तीसरे  
में १६ और चौथे में ८ अक्षर होते हैं ।—ध्वनि  
(स्त्री०) यौगिक ध्वन विशेष, जिसमें २५ मात्राएं  
होती हैं । इसके आदि में एक दोहा होता है ।  
दोहे को मिला कर इसमें ६ चरण होते हैं और  
हरके चरण में द्वित्व समेत तीन यमक होते हैं ।

—फल तद्० (पु०) पदोल, परवर ।—फला तद्०  
(स्त्री०) दाख, शंगूर, आमलकी ।—घल्ली  
(स्त्री०) गुड़बी-जता ।—चान (पु०) आचार आदि  
रखने का मिट्टी का एक बर्तन जिसमें खास पुती  
होती है ।—विन्दु तद्० (पु०) एक वपनिषद् का  
नाम ।—रस तद्० (पु०) सुधा, अमृत ।—जता  
तद्० (स्त्री०) गिलोय, गुर्च, —सार तद्० (स्त्री०)  
शंगूर ।—सम्भवा तद्० (स्त्री०) गुड़ची ।  
—सार (पु०) घी, मक्खन, नवनीत ।—स्त्रवा  
तद्० (स्त्री०) कदली घृष्ट, जता विशेष ।

अमृतांशु तद्० (पु०) चन्द्रमा ।

अमृता तद्० (पु०) मंदिरा,  
आमलक

अमृती

अमृत्य तद्०

तद्०

अमेध्य तत् (गु०) अपवित्र, अशुद्ध, दुष्ट ।

अमेघ तत् (गु०) अव्यर्थ, सफल ।—त्रीर्णं तत् (पु०) अव्यर्थ वीर्य, असंख्य तेज, अव्यर्थ प्रताप ।

अमेर दे० (स्त्री०) आम के टिकोरे, अंबिया ।

अमोल (गु०) अमूल्य ।

अमौआ दे० (पु०) रंगा कपड़ा । यह कई प्रकार के रंग का होता है ।

अम्बक (पु०) चबु, नेत्र, ताँबा, पिता ।

अम्बल तत् (पु०) खड़ा, अम्बल, चूक, खटाई ।

अम्बर तत् (पु०) आकाश, घन, कर्पास, स्वनाम-ख्यात सुगन्धद्रव्य विशेष ।

अम्बरीप तत् (पु०) शुद्ध, विष्णु, शिव, शारङ्ग, भास्कर सूर्य वंशीय राजा विशेष । अयोध्यानगरी इनकी राजधानी थी, इनके पिता का नाम नामाग था, इस अंतिम पल्लवाकी राजा ने दस लाख राजाओं के साथ एक समय युद्ध किया था, सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करके पयाविधि कई सौ यज्ञ इन्होंने सम्पादित किये थे, इसीके प्रताप से इन्होंने दुर्लभ स्वर्ग प्राप्त किया था । नरक भेद-आघातक वृष, घनु-ताप, परचाप्ताप ।

अम्बल तत् (स्त्री०) मादक वस्तु, खटारस ।

अम्बल तत् (पु०) [अम्ब + स्थान + ड] जाति विशेष, निशाद पिता के औरस से शुद्धा स्त्री के गर्भ में उत्पन्न, इस जाति को ब्रह्मल में वैद्य जाति कहते हैं । मुनि विशेष, देश विशेष, इस्तिपक, महावत ।

अम्बा तत् (स्त्री०) [अम्ब + आ] माता, जननी, दुर्गा, काशिराज की जेठाकन्या, इसीने दूसरे जन्म में शिल्लण्डी का रूप धारण करके भीष्म पितामह को मारा था ।

अम्बारी तत् (स्त्री०) हौश, चन्द्रवा ।

अम्बालिका तत् (स्त्री०) [अम्बाला + इक + आ] मा, माता, जननी, काशिराज की छोटी लड़की, प्रसिद्ध राजा पाण्डु के मरने के अनन्तर यह अपनी सात सत्यवती के साथ वन को चली गई थी ।

अम्बिका तत् (स्त्री०) [अम्बा + इक + आ] दुर्गा, भगवती, माता, काशिराज की मध्यमा कन्या, यह विचित्र वीर्य से व्याही गई थी, इसके पुत्र का नाम छतराष्ट था, वह पाण्डु के मरने के बाद सत्यवती के साथ वन चली गई थी, और वहीं उसने तपस्या के द्वारा इस शरीर को छोड़ा ।

अम्बिया तत् (पु०) टिकोरा, छोटा आम ।

अम्बु तत् (पु०) [अम्ब + ड] जल, सलिल, पानी, नीर ।—कण तत् (पु०) ओस, शीत, तुषार ।—ज तत् (पु०) कमल, पद्म, वज्र ।—जन्म तत् (पु०) पद्म, कमल, पङ्कज ।—द (पु०) मेघ, घटा, वर्षा, बारिद ।—धर तत् (पु०) बारिद, मेघ, बारिधर ।—धि तत् (पु०) समुद्र, सागर, सिन्धु, जलधि ।—निधि तत् (पु०) जलधि, समुद्र ।—वाह तत् (पु०) मेघ, बारिद, पादल ।

अम्बस् तत् (पु०) अम्बु, जल, पानी ।—जेज तत् (पु०) [अम्बस् + जान + ड] पद्म, कमल, अम्बुज, चन्द्र, सारसपक्षी ।—दे तत् (पु०) जलद, अन्न, मेघ ।—धर तत् (पु०) जलधर, मेघ समुद्र ।—धि तत् (पु०) समुद्र, सागर ।—निधि तत् (पु०) समुद्र, सागर, जलधि ।

अम्मा तत् (स्त्री०) माता, मा, महतारी ।

अम्मारी दे० (स्त्री०) अम्बारी, हाथी का हौश ।

अम्बल तत् (स्त्री०) खड़ा, चूक, अम्बल ।

अम्बलपित्त तत् (पु०) रोग विशेष ।

अम्बलवेत दे० (पु०) अम्बलवेत ।

अम्बलान तत् (गु०) स्थान रहित, हृष्ट, ताड़ा ।—ता तत् (स्त्री०) हृष्टभाव, प्रसन्नता ।

अम्बली तत् (स्त्री०) अमिली, तिलिङ्गी, हमली ।

अम्बली दे० (स्त्री०) अम्बली, यदन पर की छोटी छोटी कुंसिरिया को गर्म की आत में निकल आती हैं ।

अयःपिण्ड तत् (पु०) [अयस् + पिण्ड] शीतपिण्ड लोहे का गोला ।

अयक्ष तत् (पु०) शीतस्थ, अयतन, अक्षकार ।

अयथार्थ तत् (पु०) मिथ्या, अन्याय, अन्धे ।

अयन तत् (पु०) वर्ष का आधा भाग, सूर्य का गमन



और दक्षिण दिशा का गमन, गमन, आश्रय, मार्ग ।—श तत्० (पु०) सूर्य की गति विशेष के काल का भाग, अयनभाग ।

अथश तत्० (पु०) अकीर्ति, कलङ्क निन्दा, अश्लाति ।

—कर तत्० (गु०) [अ + अयस् + कृ + अल्] दुर्नामजनक अश्लातिकर ।—तत्० (वि०) [अ + यस् + विन्] बदनाम, अश्लातियुक्त, प्रतिष्ठा रहित ।

अयस् तत्० (पु०) लोहा ।

अयस्कान्त तत्० (पु०) [अयस् + कान्त] । प्रवि विशेष, शुभक परावर ।

अयाचक तत्० (गु०) याचका रहित, अभिभूत ।

अयाचित तत्० (गु०) याचका बिना प्राप्त, अप्रार्थित ।

—प्रत तत्० (गु०) बिना मार्ग प्राप्त हुए पदार्थों से जीविका निर्वाह करने वाला ।

अयं तत्० (पु०) यह, ऐसा, इसका प्रयोग रामायण में आया है ।

अयान तत्० (गु०) लड़काई, मूर्खता, अनजानपन ।

—प तत्० (गु०) लड़कपन, मूर्खता, बेसमझी ।

अयाना तत्० (गु०) भोला, अवक, मूर्ख ।

अयाल दे० (पु०) शेर अथवा घोड़े की गर्दन के बाल ।

अयुक्त तत्० (गु०) अमिश्रित, अनुचित, असङ्गत ।

अयुत् तत्० (गु०) अयुक्त, अमिश्रित, अमिश्रित ।

(पु०) दश सहस्र सख्या, दश हजार ।

अयुध तत्० (पु०) आयुध, अस्त्रशस्त्र, हथियार ।

अये तत्० (अ०) सम्बोधनार्थ, विषादार्थ, स्मरणार्थ, कोपार्थ ।

अयोग्य तत्० (पु०) विरजेष, विच्छेद, अनैक्य ।

अयोग्यतत्० (पु०) शूद्र के औरस से वैश्य कन्या के गर्भ से जात सन्तान, जाति विशेष । [अपात्र ।

अयोग्य तत्० (वि०) अनुपयुक्त, अकुशल, बेकाम,

अयोग्यन तत्० (पु०) [अयस् + वन] एकत्रीभूत लोह पुत्र, निहाजी, ह्योड़ा, निहाई ।

अयोध्या तत्० (खी०) [अ + युष्य + धा] कोशला,

अवधपुरी, सूर्यवंशी राजाओं की राजधानि ।

—नाथ (पु०) (१) अयोध्याधिपति । (२) पण्डित केदारनाथ के पुत्र, ये कार्मसीरी ब्राह्मण थे, इनके

पिता एक धनाढ्य व्यवसायी थे । १८४० ख्रिष्टाब्द में पण्डित अयोध्यानाथ का आगरे में जन्म हुआ था । फारसी, अरबी और अंग्रेजी के यह विद्वान् थे । आगरे में उनकी बकालत खूब चली थी, जय सदर अदालत आगरे से इलाहाबाद आयी तभी पं० अयोध्यानाथ जी इलाहाबाद आये । बहुत से लोकोपकारी कार्य इन्होंने किये थे । इन्होंने द्रव्योपाजन भी खूब किया और उसका सदुपयोग भी, युक्तप्रदेश के सभी लोकोपकारी कार्यों में यह शामिल होते थे, अतएव वे यहाँ के नेता समझे जाते थे । “इण्डियन हेरल्ड” नामक दैनिक पत्र का कुछ दिन तक वे सम्पादन करते रहे । पुनः उसके बन्द होने पर “इण्डियन यूनियन” नाम का पत्र निकालते थे । इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के कमिशनर और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फेलो थे । युक्तप्रदेशवासी हिन्दुस्तानियों में सर्व प्रथम छोटे जाट के काँसिल में वे ही बैठे थे ।

अयोनि तत्० (गु०) योनिभिन्न, अनुत्पन्न ।—ज तत्० (पु०) जीव विशेष, योनीजात भिन्न, वृक्ष आदि ।

अरई तत्० (पु०) मयानी, मई । [खींचातानि करना ।

अरकना बरकना दे० (अ०) हथर बरकर करना ।

अरगजा तत्० (पु०) अर्गजा, एक सुगन्धित द्रव्य विशेष, प्रसीद ।

अरगनी दे० (खी०) बांस, लकड़ी या रस्ती जो किसी घर में कपड़े आदि रखने के लिये लटकाई जाय ।

अरघ तत्० (पु०) अर्घ्य, पोड़शोपचार में से पूजन का एक उपचार ।—तत्० (पु०) अरघ देने का पात्र ।

अरचन तत्० (पु०) पूजन, सम्मान ।

अरचना तत्० (क्रि०) पूजन करना ।

अरज दे० (खी०) विनय, प्रार्थना । १ (खी०) प्रार्थना पत्र ।

अरक्तता तत्० (क्रि०) उलक्तता, फैसना, बक्तता ।

अरणा तत्० (खी०) जङ्गली भैंस ।

अरणि तत्० (खी०) काष्ठ विशेष, जिससे घिस कर आग निकालते हैं । अग्निधारक काष्ठ विशेष ।

अरखड तत्० (पु०) रेंडी, अण्डी वृक्ष ।

अरुण तत्त्वं (पु०) वन, कानन, विपिन, जङ्गल ।

—वासि तत्त्वं (पु०) वनस्थ, वनवासी, तपस्वी, मुनि ।—रोदन तत्त्वं (पु०) निष्कल रोना ।

अरुणदा दे० (पु०) भेंट सहित निवेदन, शुभकर्म में देवता के लिये कुछ भेंट । नानक पंथियों का यह विशेष व्यवहार का शब्द है ।

अरुण दे० (पु०) सौ करोड़, घोड़ा ।

अरुणराना तत्त्वं (कि०) हड़बड़ाना, घबड़ाना ।

अरुणा दे० (पु०) बिना उबाले हुए धान से निकाला हुआ चावल ।

अरुणविन्द तत्त्वं (पु०) कमल, उत्पल, पङ्कज ।

अरुणी तत्त्वं (स्त्री०) युद्धार्थ, कच्चा, बंडा ।

अरुणसद्मा तत्त्वं (पु०) आकाश, निरख, परख ।

अरुणसन परसन दे० (पु०) एक प्रकार का लड़कों का खेल, आँसू मिचीनी ।

अरुणा दे० (पु०) विलम्ब, देर ।

अरुणान्न तत्त्वं (पु०) वृत्त विशेष जिसमें २४ अक्षर ७ भगण और १ राग्य होता है ।

अरुणसिक् तत्त्वं (पु०) अरुणसिक्, अविदग्ध ।

अरुणी दे० (स्त्री०) अरुणी, तीली ।

अरुणोद्गा दे० (पु०) आकाश से पुण्य ।

अरुणहट तत्त्वं (पु०) अरुणहट, रेहटा, पानी का चरखा, पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र ।

अरुणहर तत्त्वं (स्त्री०) अरुण विशेष, तू ।

अरुणजक तत्त्वं (पु०) [अ + राज + क] राजशून्य देश ।—ता (स्त्री०) राज का अभाव ।

अरुण, आशान्ति ।

अरुणाति तत्त्वं (पु०) शत्रु, रिपु, वैरी । [जपना ।

अरुणाधना तत्त्वं (कि०) पूजना, सेवा करना, मन्त्र

अरुणारा तत्त्वं (पु०) दशोराहा, दशरा ।

अरि तत्त्वं (पु०) शत्रु, वैरी, रिपु ।—मण्डल तत्त्वं

(पु०) शत्रु-समूह, शत्रु राज्य ।—पडवर्ग तत्त्वं

(पु०) छः शत्रुओं का समुदाय, छः शत्रु थे हैं—

काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ।

अरुण्दम तत्त्वं (पु०) [अरि + दम + द] शत्रुजयी,

योधा, शही, शत्रुओं को दमन करने वाला ।

अरुणाना (कि०) तिरस्कार करना ।

अरुण तत्त्वं (पु०) सुस्तिगाह, तक, विवाह, दुःख, मरण चिन्ह, उत्पात, उपद्रव, वृषभासुर । इसी असुर को कंस ने श्रीकृष्णचन्द्र जी को मारने के लिये वन में भेजा था । इसका विशाल शरीर तथा भयङ्कर शब्द सुन कर वनवासी भयभीत हो गये । भगवान् कृष्ण ने इसका अन्तिम संस्कार किया ।—नेम तत्त्वं (पु०) कायप प्रजापति का एक नाम । राना सगर के ससुर का नाम, सोल-हवा प्रजापति ।

अरुणी तत्त्वं (स्त्री०) स्त्रियों के लिये सम्बोधन ।

अरुणी दे० (पु०) रीठा ।

अरु तत्त्वं (अ०) फिर, पुनः और, ओ ।

अरुण तत्त्वं (स्त्री०) अरुणी, गर्भवती स्त्री का चिन्ह, उसकी अरुचि ।

अरुण तत्त्वं (स्त्री०) रोग विशेष, भोजन के प्रति अभिलाषाभाव, अनिच्छा, विवृण्णा, अश्रद्धा, जी मचलाना ।

अरुणाना तत्त्वं (कि०) कासना, फगाना, उल्लसना ।

अरुण तत्त्वं (पु०) अरुण, वृक्ष, सूर्य, अत्यन्त राग, ईषत्वंक वर्ण, सम्पन्ना राग, शब्द रहित, कुष्टभेद । सूर्य के सारथि का नाम । पड़ गहड़ के उद्ग्रेष्ठ भाग था । महर्षि कश्यप के औरस तथा विनता के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई थी । इनके पैर नहीं हैं, क्योंकि जब इनका शरीर गठित नहीं हुआ था, तभी इनकी माता विनता ने छंदे फोड़ दिये । इनकी स्त्री का नाम श्येनी था, सम्पत्ति और जटायु इनके दो पुत्र थे ।—ोद्य तत्त्वं (पु०) प्रातःकाल, विहान, प्रभात ।—कमल तत्त्वं (पु०) रक्त कमल ।—लोचन तत्त्वं (पु०) लाल नेत्र, कपोत, कबूतर, कोकिल ।—सारथि तत्त्वं (पु०) सूर्य, मातु, दिवाकर ।—गिला (पु०) मुर्गा ।

अरुणार्द्र तत्त्वं (स्त्री०) मोर, नाल रक्त ।

अरुणतुद तत्त्वं (पु०) [अरु + तुद + खे] मर्मस्पर्क, मर्मस्पर्क, पीडाकारी, नाशक, अपथ्य ।

अरुणधति या अरुणधती तत्त्वं (स्त्री०) परिष्ट मुनि की पत्नी, धति सूत्र, नक्षत्र विशेष, कर्म, धर्म की

कन्या, वशिष्ठ के समान इनको भी नचयमण्डल में स्थान मिला है। कहते हैं मरने के छः महीने पहिले यह तारा नहीं दीखता।

अरूप तत्त्वं (गु०) फुरूप, कुरित रूप, कुश्री।

अरे तत्त्वं (घ०) नीच सम्बोधन, सक्रोध आह्वान।

अरेव तत्त्वं (गु०) पाप, अपराध, दोष।

अरोग तत्त्वं (गु०) रोगरहित, मत्ता, चक्षा।—ना दे० (कि०) (मेवाही भाषा में) भोजन करना।

अरौचक तत्त्वं (गु०) रोग विशेष, अरुचि रोग।

अरौडा दे० (गु०) स्त्रियों की एक जाति जो पंजाब में विशेष संख्या में पायी जाती है।

अर्क तत्त्वं (गु०) सूर्य, आदित्य, इन्द्र, ताम्र, स्फटिक, पण्डित, ज्येष्ठ भ्राता, रविचार, आक वृत्।—  
तनय तत्त्वं (गु०) कर्णरात्र, सावर्णि, मनु, शनि, यम।—  
व्रत तत्त्वं (गु०) आरोग्य, ससमी का व्रत, सूर्य के जलग्रहण के समान राजाओं का व्रता के निकट कर ग्रहण।

अर्कट तत्त्वं (स्त्री०) सतर्कता, सावधानता।

अर्गति तत्त्वं (गु०) देखो अरगती।

अर्गजा तत्त्वं (देखो अरगता)।

अर्गल तत्त्वं (गु०) खोल, आगल, हुडका, किबाद बन्द करने की लकड़ी।—  
१ तत्त्वं (स्त्री०) स्त्री, हुडका, दुर्गा सप्तशती के पाठ के पहले पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र।—  
२ (स्त्री०) भेड़ की एक जाति जो मिर, स्वाम आदि देशों में पायी जाती है।

अर्घ तत्त्वं (गु०) पूजा का द्रव्य, पूजा का उपहार, पूजा में जल देना, मोल।

अर्घा तत्त्वं (स्त्री०) अर्घ देने का वात्र, तर्पण का वात्र विशेष, जबहरी जिसमें शिवजिह्व रहता है।

अर्घ्य तत्त्वं (गु०) दर्शनी, भेट, उपहार, वस्त्र, गृह में आये हुए को नम्रादि देना।

अर्चक तत्त्वं (गु०) पूजक, या याचक, अर्चनाकारी।

अर्चा या अर्चना तत्त्वं (स्त्री०) पूजा, सेवा, आराधना, प्रतिमा, देवमूर्ति। [उचोति।]

अर्चिः तत्त्वं (स्त्री०) अग्निशिखा, चमक, आँच, अर्चित तत्त्वं (गु०) पूजित, अराधित।

अर्चिराजमार्ग तत्त्वं (गु०) देवयान, उत्तरमार्ग, वह मार्ग जिससे मुक्त जीव भगवान के पास जाते हैं।

अर्चिमान् तत्त्वं (गु०) [अर्चिंस + मत] अग्नि, सूर्य, (गु०) दीप्तिमान, देदीप्यमान।

अर्च्य तत्त्वं (गु०) पूजनीय, पूज्य।

अर्ज दे० (गु०) प्रार्थना, वितती।—दाशत (स्त्री०) प्रार्थना पत्र। [वाला।]

अर्जक तत्त्वं (गु०) उपाजर्जनकर्त्ता, अर्जपिता, कमल

अर्जन तत्त्वं (गु०) उपाजन, कमाई, प्राप्ति, लाभ, प्रतिपत्ति, सञ्चय करण, लाभ करण। [लब्ध।]

अर्जित तत्त्वं (गु०) अर्जित किया हुआ, सञ्चित,

अर्जी दे० (स्त्री०) विनयपत्र।—दावा (गु०) प्रार्थना पत्र विशेष जो दीवानी अदालत में पेश किया जाता है।

अर्जुन तत्त्वं (गु०) वृक्ष विशेष। तीसरा पाण्डव। देवराज इन्द्र के घोरस तथा कुन्ती के गर्भ से इनका जन्म हुआ था, यह पाण्डु के चैत्रज पुत्र थे। उन दिनों इनके समान धनुर्विद्या-विशारद दूसरा नहीं था। साक्षात् भगवान् इनके सारथी थे। महादेव की आराधन करने से इन्हें पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था। अश्वविद्या सीखने के लिये यह स्वर्ग में इन्द्र के निकट गये थे, अपना मनोरथ भङ्ग होने के कारण उर्वशी ने इन्हें नपुंसक हो जाने का शाप दिया था, जिसका उपयोग अज्ञातवास के समय विशाट राजधानी में इन्होंने किया, अर्जुन की तीन स्त्रियाँ थीं—द्रौपदी, सुभद्रा, और चित्राङ्गदा, इनके अतिरिक्त कौरव्य नाग की कन्या वलूषी को भी इन्होंने व्याहा था।

अर्घ्य तत्त्वं (गु०) समुद्र, सागर, अग्नि।—पौत

तत्त्वं (गु०) जहाज वृद्ध नौका, समुद्रयान।—

यान तत्त्वं (गु०) जहाज।

अर्थ तत्त्वं (गु०) अभिप्राय, तात्पर्य, माने, धन।—कर

तत्त्वं (वि०) लाभकारी, जिससे धन पैदा हो।—

गौरव तत्त्वं (गु०) अर्थ की गम्भीरता।—ज तत्त्वं

(गु०) माय मर्मज्ञ।—ज्ञान तत्त्वं (गु०) तात्पर्य,

—तः तत्त्वं (घ०) फलतः अर्थात्, वस्तुतः।

—दृष्ट तत्त्वं (गु०) सुमाना, धन का दृष्ट।

—दृष्या तत्त्वं (पु०) अपरिमितं व्ययम् ।—नाश तत्त्वं (पु०) घननाश, निराश ।—पति तत्त्वं (पु०) राजा कुबेर, अति घनी ।—पर तत्त्वं (पु०) कृपण, व्यय, शङ्कित ।—पिशाच तत्त्वं (वि०) घनलोलुप, घन के सामने कर्तव्याकर्तव्य पर ध्यान न देने वाला ।—प्रयोग तत्त्वं (पु०) वृद्धि, निमित्त, घन दान ।—प्राप्ति तत्त्वं (स्त्री०) घनलाभ, कर्म्य ।—चरत् तत्त्वं (पु०) प्रयोजना-हंता, प्रयोजनीयता ।—चाद तत्त्वं (पु०) कल्प-निष्ठ, कलधुनि, स्तुति, प्रशंसा, प्ररोचक वाक्य ।—विज्ञान तत्त्वं (पु०) शब्दार्थज्ञान ।—वृद्धि तत्त्वं (स्त्री०) घनवर्द्धन ।—शाली तत्त्वं (पु०) घनशाली, घनवान् ।—शाल्य तत्त्वं (पु०) नीतिशास्त्र, दण्ड नीति, घन उपाजक शास्त्र ।

अर्थात् तत्त्वं (अ०) वस्तुतः, अर्थतः फलतः ।

अर्थान्तर तत्त्वं (पु०) अन्यार्थ, दूसरा अर्थ ।—न्यास (पु०) अर्थोद्धार विशेष, यथा—

“इदं सामान्यते विशेषे होय,

भूयः अर्थान्तरं न्यास सोय” —भूषण ।

अर्थोपपत्ति तत्त्वं (पु०) प्रमाण विशेष जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात की सिद्धि अपने आप हो जाय ।

अर्थोलङ्कार तत्त्वं (पु०) अलङ्कार विशेष जिसमें अर्थ का वक्षकार पदार्थित किया जाय । [रथी ।

अर्थी तत्त्वं (पु०) घनी, याचक, वादी, मुर्दे की खाद, अर्द्धांश तत्त्वं (पु०) मोटा आटा, दक्षिण ।

अर्द्धित तत्त्वं (पु०) [अर्द्ध + क] वीक्षित, यन्त्रणायुक्त, हिंसित, याचित, गत ।

अर्द्ध तत्त्वं (पु०) मुख्य विभाग, सम विभाग, आधा, मध्य ।—चन्द्र तत्त्वं (पु०) चन्द्रखण्ड, अर्द्धेन्दु, नखचत, गलहस्त, मयूः पुच्छस्थ, चन्द्रमा ।—

नारीश तत्त्वं (पु०) शिव, महादेव, हरगौरि, मूर्ति विशेष ।—निमेष तत्त्वं (पु०) आधा क्षण ।—मांगधी तत्त्वं (स्त्री०) प्राकृत का एक भेद विशेष । मधुरा तथा पटना के बीच देश में बोली जाने वाली एक प्राचीन कालीन भाषा ।—रथ

तत्त्वं (पु०) एक रथी से च्यून योद्धा, अर्द्धरथी ।

—रथ तत्त्वं (पु०) महानिशा, रात्रि का अर्द्ध-भाग, आधीरात ।—वृत्ति तत्त्वं (पु०) वृत्त का आधा भाग ।—समवृत्त तत्त्वं (पु०) वृत्त विशेष जिसमें पहिला तो तीसरे के और दूसरा, चौथे चरण के बराबर हो ।—श तत्त्वं (पु०) अर्द्धभाग ।—इ तत्त्वं (पु०) शीताम्न, रोग विशेष, पक्षाघात ।—इत्नी, इत्नी तत्त्वं (स्त्री०) स्त्री, पत्नी ।

अर्पण तत्त्वं (पु०) दान, समर्पण, भेंट ।

अर्ध तत्त्वं (पु०) दशकोटि, संख्या विशेष ।—खर्ष तत्त्वं असंख्यात् ।—दर्ब वे० (पु०) घन, सम्पत्ति । अर्वाक तत्त्वं (पु०) प्राक्, पूर्व, आदि, अग्र, अवर, निम्न, परचात् ।

अर्बुद तत्त्वं (पु०) दश करोड़ संख्या विशेष, रोग विशेष, पर्वत विशेष, आवृ पर्वत ।

अर्मक तत्त्वं (पु०) बालक, शिशु, शवक, मूर्ख, कृप, कुशकृष्ण, स्वधर, सदा । [पितर विशेष ।

अर्यमा तत्त्वं (पु०) आदित्य, सूर्य, अर्कवृक्ष, नित्य, अरारा तत्त्वं (पु०) एक ही समय गिरना, अकस्माद गिरना ।

अररिना तत्त्वं (क्रि०) एक बेर आ पड़ना ।

अर्याचीन तत्त्वं (पु०) नूतन, अज्ञान, विरुद्ध ।

अर्श तत्त्वं (पु०) पीड़ा, बवासीर, रोग विशेष ।

अर्शपर्श तत्त्वं (पु०) हुवाकृत, अशुद्ध ।

अर्ह तत्त्वं (पु०) योग्य, उन्नत पात्र, श्रेष्ठ, उपयुक्त ।

अर्हन्त तत्त्वं (पु०) जैन विशेष, जैनियों के एक तीर्थ-हूर का नाम । [शक्ति, निरर्थक ।

अल तत्त्वं (अ०) भूषण, पर्याप्ति, धारण, वृथा,

अलक तत्त्वं (पु०) धुं गुट, चुटिया, केश, धुंघराले बाल ।

अलकतरा दे० (पु०) परपर के कोयले से निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ, धूना, कोजतरा ।

अलका तत्त्वं (स्त्री०) कुबेरपुरी ।—धिप तत्त्वं (पु०) कुबेर, घनेश्वर ।

अलकावली तत्त्वं (स्त्री०) बेसी, धुंघराले बाल ।

अलक्षण तत्त्वं (पु०) डरे चिन्ह, कुलक्षण ।

अलख तत्त्वं (पु०) अगोचर, अनदेखा ।

अलग तद् (अ०) भिन्न, न्याय, पृथक् ।  
 अलगनी तद् (स्त्री०) (देखो अरगनी)  
 अलङ्कार तद् (पु०) भूषण, आभरण ।—हीन तद्  
 (गु०) भूषण रहित, अशोभित ।  
 अलङ्कृत तद् (गु०) भूषित, शोभित, सजाया ।  
 अलङ्ग तद् (पु०) पार, ओर, छोर, एक तरफ ।  
 अलङ्कलङ तद् (स्त्री०) जड़, बकबक, निबुद्धि,  
 अव्यवस्थित ।  
 अलतनी तद् (स्त्री०) हाथी का चागाडोर ।  
 अलता तद् (पु०) आलता, लाल का रंग, महावर ।  
 अलवेला तद् (पु०) छैला, गुंवा, छैल छबीला ।  
 अलम् तद् (अ०) पूर्णता, सामर्थ्य, निषेध, निर-  
 र्थक, बहुत, बल, समृद्ध, भीड़ ।  
 अलस तद् (पु०) आलसी, मन्द, ढीला, आलस्य-  
 युक्त, कर्मों में अनुरसाही ।—ता तद् (स्त्री०)  
 आलस्य, शैथिल्य ।  
 अलसाना (कि०) ऊँघना, झुमना, हिलना ।  
 अलसी तद् (स्त्री०) सीसी, मसीना ।  
 अलसेट तद् (पु०) ढिलाई, व्यर्थ की ढेर, झुलाया,  
 ढालमटोल, बाधा, धक्कन ।—श्या दे० (वि०)  
 ढिलाई करने वाला ।  
 अलहदा दे० (गु०) अलग, पृथक् । [ रस्सी, सिकड़ ।  
 अलान तद् (पु०) हस्तबन्धन, हाथी बांधने की  
 अलाप तद् (पु०) आलाप, स्वर, राग ।  
 अलाव तद् (पु०) आग का ढेर ।  
 अलाव तद् (पु०) धुनी, जखीरा ।  
 अलि तद् (पु०) भँवरा, अमर, मदिरा, सखी ।  
 —नि (स्त्री०) अमरी ।  
 अलीक तद् (गु०) झूठ, मिथ्या, असार ।  
 अलीन तद् (गु०) अयोग्य, अमनोयोगी ।  
 अलील दे० (गु०) बीमार, रोगी ।  
 अलेख तद् (पु०) लिखने के अयोग्य, दुर्बोध, अज्ञेय ।  
 अलैकपलवा (पु०) अलीक प्रलाप, झूठ बोलना,  
 मनमाना, बकवाद ।  
 अलैया-चलैया तद् (स्त्री०) विहावर, खेलें ।  
 अलोकन तद् (पु०) गुप्त होना, अदृश्यता, चम्पत  
 होना ।

अलौना या अलोणी तद् (गु०) अलुना, बिना नोन,  
 स्वाद-रहित ।  
 अलोप तद् (गु०) छिपा, घिगाड़, प्रकट ।  
 अलोल तद् (स्त्री०) चञ्चल नहीं, अटल, खेल्छुद ।  
 अलौकिक तद् (गु०) लोकोत्तर, अनोखा, अद्भुत,  
 सर्वसुन्दर, सर्वश्रेष्ठ ।  
 अल्प तद् (गु०) थोड़ा, कुछ, छोटा, किछिच,  
 लघु ।—बुद्धि तद् (पु०) मन्द बुद्धि, असमक ।  
 —अयु तद् (गु०) अल्पजीवी, शीघ्र मरने  
 वाला ।—आहार तद् (पु०) थोड़ा खाना,  
 अल्प अहार ।  
 अल्पप्राण तद् (पु०) जिन वशों के उच्चारण में  
 प्राणवायु का उपयोग थोड़ा किया जाय, व्यञ्जन ।  
 अल्पमगल्लम दे० (पु०) प्रलाप, अटसेट, बकवाद ।  
 अल्हण तद् (गु०) अनादी, अनसिला, अनुभव-  
 रहित ।  
 अव तद् (उप०) विशेष, निरचय, अनादर, आल-  
 स्य, विज्ञान, व्यापन, शुद्धि, अल्प, परिभव,  
 नियोग, पालन । यह जिस शब्द के पहले आता  
 है उस शब्द का अर्थ प्रकरण के अनुसार, भेद,  
 व्यापकता, अभाव और अनादर होता है ।  
 अवकथन तद् (पु०) [ अव + कथ् + अनट् ] स्तुति,  
 उपासना, प्रसादकवाक्य ।  
 अवकर्तन तद् (पु०) [ अव + कृप् + अनट् ] स्त  
 बनाने का यन्त्र, चरखा ।  
 अवकर्षण तद् (पु०) [ अव + कृप् + अनट् ] इद्धार,  
 निष्कर्षण, बाहर खींचना ।  
 अवकाश तद् (गु०) [ अव + काश + अल् ] अवसर,  
 समय, विश्रामकाल, सुमीता, हुदी का समय ।  
 अवकीर्ण तद् (गु०) [ अव + कृ + क् ] विखित,  
 अनादित, इधर उधर फैलाया हुआ, बिखेरा  
 गया ।  
 अवकीर्णी तद् (गु०) [ अव + कृ + क् + इत् ] उत-  
 प्रत, नियमभ्रष्ट मत, निषिद्ध वस्तुओं के संसारों से  
 जिसका मत भ्रष्ट हो गया हो, अयोग्य वस्तु सेवी  
 मनुष्य ।  
 अवकुञ्जन तद् (पु०) [ अव + कुञ्ज् + अनट् ] बक्री-  
 करण, टेंटा करना, मोड़ना ।

अवकुण्ठन तत् (५०) [ अव + कुठ + अन्ट ] साहस  
परित्याग, भीरु होना, असाहसी होना ।

अवकुण्ठित तत् (गु०) [ अव + कुठ + इत् ] असा-  
हसी, भीरु । [ कथन के अयोग्य ।

अवकथ्य तत् (गु०) [ अव + क् + तप्थ ] अकथ्य,  
अवकेशी तत् (गु०) बाँफ, बन्ध्या, निष्पुत्र, पुत्र-  
हीन, सन्तान रहित ।

अवक्रन्दन तत् (गु०) [ अव + क्रन्द + अन्ट ] खूब  
झोर से क्रन्दन, बिस्ला बिस्ला कर रोना ।

अवक्रुष्ट तत् (गु०) [ अव + क्रुश + क ] भस्मित,  
निन्दित, मन्दच्युत, कुशल युक्त, गाली दिया  
हुआ ।

अवखण्डन तत् (गु०) [ अव + खंड + अगट ] खनन,  
खोदना । [ चित्त, विदित ।

अवगत तत् (गु०) [ अव + गम् + क ] ज्ञात, परि-  
अवगति तत् (गु०) [ अव + गम् + क्ति ] ज्ञान,  
बोध, विज्ञात, गमन ।

अवगाह तत् (गु०) [ अव + गाह + क ] निमज्जित,  
कृतस्नान, धुसा, प्रविष्ट, छिपा ।

अवगाहन तत् (गु०) [ अव + गाह + अन्ट ] स्नान  
करण, निमज्जन, धुवकी, गोता, अगाह, अति  
गहवा, जितका नीचे का तल मालूम न हो सके,  
अनन्त ।

अवगीत तत् (गु०) निन्दा, दोषदुष्ट, अति निन्दित,  
विशेष लक्षित ।

अवगुण तत् (गु०) अवगुण, दोष, खोट, बौगुण,  
निन्दित गुण, दुर्गुण, दोष ।

अवगृह्ण तत् (गु०) [ अव + गृह् + अन्ट ] आलि-  
ङ्गन, आरम्भ, प्रेम से परस्पर अङ्ग संस्पर्श ।

अवग्रह तत् (गु०) अनावृष्टि, बहुकाल, अवर्षण,  
ग्रहण, अपहरण, प्रतिबन्धक, हाथी का मस्तक,  
हाथियों का झुण्ड, स्वभाव, ज्ञानविशेष, शाव ।

अवघट तत् औचट (गु०) कुघाट, अङ्घ्रि, जूँचा  
खाला, टूटा फूटा ।

अवमात तत् (गु०) [ अव + मत् + धञ् ] अपघात,  
अपसृष्ट ।

अवचट दे० (गु०) औचक, अचानक, संकट, कठिनाई ।

अवचर तत् औचर (गु०) एक दृष्टि, औचक,  
अचानक, एकवारगी ।

अवचेष्टा तत् (स्त्री०) [ अव + चेष्टा ] मन्दचेष्टा,  
थनाड़ीपना ।

अवच्छिन्न तत् (गु०) सीमाबद्ध, अवधि सहित,  
युक्त, अलग किया हुआ, विशेषण युक्त ।

अवज्ञा तत् (स्त्री०) अनादर, अपमान, अपेक्षा,  
अमान्यकरण, अवहेला ।

अवज्ञात तत् (गु०) अपेक्षित, अनादृत, अपमानित ।

अवष्ट तत् औवट (अ०) ओंटा कर, खौलाकर, गतं  
गदर, क्षिप्त, नटयुक्ति से जीवन काटने वाला ।

अवहेरि तत् (अ०) बहकाव, ओला देकर यथा  
“पशु कहे शिव सती विवाही ।

पुनि अवहेरि मराहनि ताही ” ॥—रामायण ।

अवह्वर तत् (गु०) नीच पर भी डहने वा दया करने  
वाला, बिना विचारे दया करने वाला ।

अवतंस तत् (गु०) कर्णभूषण, कर्णालङ्कार, शिरोभूषण,  
सीरपेच, माथे का गहना, चूड़ामणि, मुकुट, माला ।

अवतरण तत् (गु०) [ अव + तृ + अन्ट ] नमना,  
अवरोहण, अवतार, उतरना, भावान्तर, अनुवाद-  
करना । (स्त्री०) अवतरणिका, आभास, भूमिका,  
वक्तव्य विषय की सूचना । [ पाना ।

अवतरना (कि०) नीचे उतरना, प्रकट होना, प्रकाश

अवतार तत् (गु०) [ अव + तृ + धञ् ] देवान्तर  
धारण, मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना ।  
भगवान का लीलाय प्रकट्य । भगवान के चौबीस  
अवतार हैं, जिनमें प्रधान दस गिने जाते हैं ।  
दस अवतार ये हैं—मत्स्य, कच्छप, पराङ्ग, वर-  
सिंह, धामन, परशुराम, श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण,  
बुद्ध और कल्की ।

अवतीर्ण तत् (गु०) [ अव + तृ + क ] अवमूढ,  
आविर्भूत, उपस्थित, उत्तीर्ण, जन्मा हुआ,  
उत्पन्न, अवतार लिया हुआ, अवतीर्ण । [ स्पष्ट ।

अवदात तत् [ अव + दा + क ] शुद्ध, स्वैन, गौर,  
अवदान तत् (गु०) [ अव + दा + अन्ट ] त्याग,  
उत्सर्ग, निवेदन, कुतित दान, दान, मात-डाँटना,  
पराक्रम, उपलब्धन ।

अवदीच तत् ( पु० ) गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा विशेष, उत्तर भारत के रहने वाले ब्राह्मण जो गुजरात में रहने लगे वे औदीच्य या अवदीच कहे जाते हैं ।

अवद्ध तत् ( गु० ) [ अ + वध + क ] बन्धन शून्य, अनियन्त्रित ।—मुख ( गु० ) अभिव्यवादी, दुसुंख, मुखर ।

अवद्य तत् ( गु० ) [ अ + वद + य ] अधम, निन्दनीय, अकथ्य, अनिष्ट ।

अवद्योत तत् ( गु० ) [ अव + ध्रुत् + घञ् ] इंधुज्वल, किश्विहीन, अल्प प्रकाश, ( पु० ) संस्कृत व्याकरण का एक ग्रन्थ विशेष । [ पुरी, अवध प्रदेश ।

अवध तत् ( स्त्री० ) वधन, सीमा, सीव, समय, अयोध्या-अवधान तत् ( पु० ) [ अव + धा + अनट् ] मनेयोग, मनःसंयोजन, चौकसाई, सावधानी ।

अवधारण तत् ( पु० ) [ अव + धृ + शिच् + अनट् ] निरचय, निर्णय, स्थिरीकरण । [ सोचा गया ।

अवधारी तत् ( किं० वि० ) निरचय किया गया, अवधि तत् [ अव + धी + कि ] पर्यन्त, सीमा, से, तक, लों ।

अवधीर्य तत् ( अ० ) [ अव + धृ + रयप् ] विचार कर, सोच कर, अपमानित कर ।

अवधूत तत् [ अव + धृ + क ] कम्पित, कन्धायमान, परिवर्जित, परिष्कृत । ( पु० ) उदासीन, योगी, संन्यासी, गुह दत्तात्रेय के समान साधु विशेष, वर्ष और आश्रमोचित धर्मों को छोड़ कर केवल आत्मा को देखने वाले योगी अवधूत कहे जाते हैं । ( स्त्री० ) अवधूतनी ।

अवध्य तत् ( पु० ) [ अ + वध् + य ] वध के अयोग्य, जिसको प्रायदण्ड नहीं दिया जा सके ।

अवन्त तत् ( गु० ) [ अव + नी + क ] नम्र, विनीत, अधःपतित, दुर्दशाग्रस्त ।

अवनति तत् ( स्त्री० ) [ अव + नी + ति, ] विनय, नम्रता, अधःपात, दुर्दशा ।

अवनि तत् ( स्त्री० ) पृथिवी, रचण, पालन ।—भू तत् ( पु० ) [ अवनि + भू + क्विप् ] मङ्गलप्रद, जीम ।

अवनिप तत् ( पु० ) राजा, नृप, नरेश ।

अवनी तत् ( स्त्री० ) पृथिवी, मेदिनी, भूमि ।

—कुमारी तत् ( स्त्री० ) सीता, मिथिलेश राजा जनक यज्ञ करने के अर्थ हल से पृथ्वी जोतते थे । वहाँ एक घड़ा निकला, उसी घड़े में जानकी जी उत्पन्न हुई हैं ।—पति तत् ( पु० ) सूपति, राजा ।—परवनी तत् ( स्त्री० ) रानी, राजा की पत्नी, राजा की स्त्री ।

अवनेजन तत् ( पु० ) धौनकरण, मार्जन ।

अवन्ति तत् ( स्त्री० ) देश विशेष का नाम, यह नर्मदा की उत्तर ओर बसा हुआ है, इसका राजधानी उज्जयिनी थी । जिसे अवन्तीपुरी भी कहते थे, इसका दूसरा नाम विशाला है, यह सिमा नदी के तीर पर है । यह देश मालवा का पश्चिमी हिस्सा है । महाभारत के समय यह देश दक्षिण की ओर नर्मदा तक, और पश्चिम की ओर माही नदी तक विस्तृत था । यही प्रसिद्ध महाराज विक्रमादित्य की राजधानी थी । [ अयोग्य ।

अवन्ध तत् ( पु० ) अप्रज्य, अवन्दनीय, प्रणाम के अवन्ध तत् ( गु० ) सफल, फलवात् ।

अवभास तत् ( पु० ) [ अव + भास + भल् ] प्रकाश-करण, प्रकाशन, माया, प्रपञ्च ।

अवभृथ तत् ( पु० ) वत, यज्ञ आदि की समाप्ति का स्नान, यज्ञ शेष, औषधि आदि से लिप्त होकर कुटुम्ब परिजन सहित स्नान को अवभृथ स्नान कहते हैं ।

अवम तत् ( पु० ) तिथि का चय, नीच, तीन तिथि जिस दिन में हो । [ अपमानित, तिरस्कृत ।

अवमत तत् ( गु० ) [ अव + मन् + क ] अवज्ञात, अवमर्पण तत् ( पु० ) [ अव + मृप् + अनट् ] अवमर्प अवचय, परिचय, लोप ।

अवमान तत् ( पु० ) [ अव + मा + अनट् ] अपमान, अपमाना, अपयश, दुर्नाम ।

अवमानना तत् ( स्त्री० ) अनादर, अपमान ।

अवमानित तत् ( गु० ) [ अव + मन् + इत् ] अपमान ग्रस्त, असम्मानित । [ मस्तक ।

अवमूर्द्ध तत् ( पु० ) [ अव + मूर्द्धन् ] अधःशिर, अधो-अवयव तत् ( पु० ) [ अव + यू + भल् ] अंश, अङ्ग, देह, शरीर, हस्त पाद आदि भाग एक देश ।—

तत् (गु०) [अवयव + ईत्] अङ्गी, अङ्ग सहित,  
हस्तपद-विशिष्ट, समस्त ।

अवतर तत् (गु०) कनिष्ठ, अश्रेष्ठ, मन्द, चुद्र, चरम ।

—ज तत् (गु०) कनिष्ठ आता, अनुज, युद्ध ।

—जा तत् (स्त्री०) कनिष्ठा, भगिनी, छोटी  
बहिन ।

अवतराश्रक तत् (गु०) उपाश्रक, मेवक, प्यानी, सेवा  
करने वाला, दास ।

अवतराश्रना तत् (कि०) मेवना, सेवा, सेवा करना ।

अवतराश्रे तत् (कि०) सेवा की, उपासना की, आराधना

की, सेवा किये, उपासना किये । [ रोका हुआ ।

अवतरुद्ध तत् (गु०) [अव + रुध् + क्त] अटकाया गया,

अवतरेख तत् (स्त्री०) खेल, लकीर, प्रतिज्ञा ।—ना

(कि०) लिखना, चित्रित करना ।

अवरोध तत् (गु०) रोक, अटक, रणधास, अन्तःपुर,

राजद्वीगृह, राजगृह, राजद्वारा ।

अवर्ण्य तत् (गु०) य अचर, अकार, निन्दा, परिवाद ।

अवर्त तत् (गु०) पानी का चक्र, भँवर ।

अवर्तमान् तत् (गु०) अभाव, अनुपस्थित, मृत ।

अवलम्ब तत् (गु०) [अव + लम्ब् + अल] आश्रय,

शरण, आसरा, आधार ।

अवलम्बन तत् (गु०) [अव + लम्ब् + अनट्] आश्रय,

हैन ।—नीय तत् (गु०) आश्रयणीय, अवलम्बन

करने के योग्य ।

[ निर्मा ।

अवलम्बित तत् (गु०) आश्रित, लटकता हुआ,

अवली तत् (स्त्री०) पति, पंक्ति, लकीर ।

अवलेह तत् (गु०) चटनी, चाटने वाली कोई चीज,

चाटने वाली कोई ओपधि, भोज्य विशेष ।—न

तत् (गु०) त्रिहा से आस्थापन, वीखना, चाटना,

चटनी । [ देना ।

अवलोकन तत् (गु०) दर्शन, दृष्टि, देखना, दृष्टि

अवलोक्य तत् (कि०) देख, देखे, देखिये, दृष्टि

कीजिये, यह शब्द यद्यपि संस्कृत की क्रिया है

तथापि इसका बहुतायत प्रयोग रामायण में

मिलता है ।

अवश तत् (गु०) अवाध्य, अनागत, अनवीन परा-

धीन, बलहीन, शेषार्थ ।

अवशिष्ट तत् (गु०) अवशेष, लेप, बद्रत, बाकी  
अच्छिष्ट ।

अवशेष तत् (गु०) अन्त, शेष, बाकी ।—त्ति तत्

(गु०) बाकी, यवा हुआ, जो बच रहा ।

अवश्य तत् (अ०) निश्चय करके, निस्सन्देह, निश्चित,

उचित, कर्तव्य, सर्वथा कर्तव्य, नितान्त निश्चित ।

—स्मात् तत् (गु०) [ अवश्यं + भू + शिनि ]

निस्सन्देह, होने के योग्य, एकान्त भावी, भटल ।

—मेव तत् (कि० वि०) निस्सन्देही,

जुझर ही, निश्चय ही । [ होना, अनावृष्टि ।

अवर्षण तत् (गु०) वृष्टि का अभाव, वर्षा का न

अवसर तत् (गु०) अवकाश, समय, विराम, विश्राम,

प्रस्ताव, मन्त्रविशेष, वर्षण, वस्त्र, वृण ।

अवसन्न तत् (गु०) श्रान्त, श्रान्त, जड़ीभूत, गिरा

हुआ, चका हुआ, वदास । [ सीमा ।

अवसान तत् (गु०) अन्त, शेष, समाप्ति, मृत्यु,

अवसि तत् (अ०) (देखो अवश्य )

“ अवसि देखिये, देखन योग्य ।”

अवसेरि तत् (गु०) देर, विलम्ब, चाह, माशा ।

अवस्था तत् (स्त्री०) [अव + स्था + अ] दशा, गति,

समय, दुर्दशा ।—त्रय (गु०) जाग्रत, स्वप्न और

सुषुप्ति ये तीन अवस्था हैं ।

अवस्थाता तत् (गु०) अवस्थानकारी, अधिष्ठाता ।

अवस्थान तत् (गु०) [ अवस्था + अनट् ] स्थिति,

वास । [ अवस्था, अन्य दशा ।

अवस्थान्तर तत् (गु०) [अवस्था + अन्तर] दूसरी

अवस्थापन तत् (गु०) [अव + स्था + शिच् + अनट्]

स्थापित करना । [ कृत्यावस्थान ।

अवस्थित तत् (गु०) [अव + स्था + क्त] स्थिरीभूत,

अवहित तत् (गु०) [अव + धा + क्त] विश्रान्त, अव-

धान, गत ।

अवहित्या तत् (स्त्री०) [अ + वहिर + स्था + क्तिप्]

अवधेय, चालाकी से अपने को छिपाना ।

अवही तत् (गु०) एक प्रकार का वृक्ष ।

अवहेला तत् (स्त्री०) अनादर, अश्रद्धा, अवज्ञा ।

अवाहै तत् (स्त्री०) आगमन, गहरी, गुताहै ।

अवाक् तत् (गु०) [अ + वच् + शिच्] स्तब्ध,

गम्यरहित ।



अवाङ्मुख तत्त्वं (गु०) [अवाक् + मुख] अधोमुख,  
नत, लज्जित । [ के श्रयोग्य ।

अवाच्य तत्त्वं (गु०) अकथ्य, मौनी, गुपचुप, कहने  
अवाची तत्त्वं [अवाच् + ई] वचिष्य दिशा ।

अवाध्य तत्त्वं (गु०) अतर्क्य, बिना विधा ( देखो  
अवाधी ) । [ सुखदाई ।

अवाधी तत्त्वं (गु०) बाधाहीन, दुःखरहित, सुखरूप,  
अर्वा तत्त्वं (पु०) आँवा, पञ्जाबा जिसमें कुम्हार मिट्टी  
के वर्तन पकाते हैं ।

अर्वा तत्त्वं (स्त्री०) विलम्ब, अत्याचार ।

अर्वास् तत्त्वं (पु०) वास, धा, निवासस्थान ।

अर्वाचीन तत्त्वं (वि०) प्राचीन का उल्टा, नवीन ।

अविकल तत्त्वं (गु०) ज्यों का त्यों, वैसाही, समस्त,  
ब्रुद्धिरहित, यथार्थ ।

अविकल्प तत्त्वं (पु०) असंशय, निस्सन्देह ।—न्ति  
तत्त्वं (गु०) सन्देहरहित, असंशय ।

अविकार तत्त्वं (गु०) विकृतिशून्य, अविकल, जन्म  
मरणादि विकार शून्य, अज, अविनाशी, ईश्वर,  
अविकारी ।

अविचल तत्त्वं (गु०) अचल, स्थावर, स्थिर, भय-  
शून्य, निष्कम्प, निडर ।—न्ति तत्त्वं (गु०)  
स्थिर, दृढ़, निश्चित ।

अविचार तत्त्वं (पु०) अत्याचार, अन्याय, भूल,  
अधर्म ।—न्ति तत्त्वं (गु०) अविचेचित, अकृत-  
विचार ।—नी तत्त्वं (गु०) विचार-रहित, अन्याय-  
कारक, अविचक्षण ।

अविच्छिन्न तत्त्वं (गु०) अभिन्न, सलग्न, युक्त, भेद-  
रहित । [ अनेपुण्य, अश्रवीयता श्रयोष ।

अविज्ञ तत्त्वं (गु०) अश्रवीय, अनभिज्ञ ।—ता (स्त्री०)  
अधितर्कित तत्त्वं (गु०) निश्चित, निस्सन्देह ।

अवितत तत्त्वं (गु०) विस्तार-रहित, अविस्तृत,  
सङ्कुचित । [ यथार्थ, विशिष्ट ।

अवितय तत्त्वं (पु०) सत्य, यथार्थ (गु०) सत्यवान्,

अविदग्ध तत्त्वं (गु०) [अ + वि + दग् + क] अपा-  
ण्डित्य अचतुर, अनभिज्ञ ।—ता (स्त्री०) अपा-  
ण्डित्य, अनिपुणता ।

अविदित तत्त्वं (गु०) अज्ञात, अनवगत, बेमालूम ।  
अविद्य तत्त्वं (गु०) [अ + विद्य] मूर्ख, अनभिज्ञ,  
विचाररहित ।

अविद्यमान तत्त्वं (गु०) अवर्तमान, अभाव, असत्ता ।

अविद्या तत्त्वं (स्त्री०) अज्ञान, माया, अज्ञानता,  
मूर्खता, मोह ।

अविनय तत्त्वं (पु०) नम्रता-रहित, घृष्टता, ठिडकाई ।

अविनश्वर तत्त्वं (गु०) नष्ट न होने वाला, स्थायी ।

अविनासी या अविनाशी तत्त्वं (पु०) नित्य, सर्वदा रहने  
वाला, जिसका कमी नाश न हो, नाशरहित,  
परमात्मा, तत्त्वं अविनाशी । [ झूल, बड़प्पन, दुष्ट ।

अविनीत तत्त्वं (गु०) अन्यायी, डीठ, अचल, अक्षु-  
अविमुक्त तत्त्वं (गु०) अव्यक्त, सुसुप्त, मुक्त ।—क्षेत्र

तत्त्वं (पु०) काशी ।

अविरत तत्त्वं (वि०) विरामशून्य, निरन्तर, लगा  
हुआ । ( किं० वि० ) निरन्तर । (पु०) विराम  
का अभाव । [ घना ।

अविरल तत्त्वं (गु०) निरन्तर, सघन, अविच्छिन्न,

अविरोध तत्त्वं (पु०) सुख, चैन, मिलाप, प्रीति, द्वेष  
का अभाव, एकता ।—नी तत्त्वं (पु०) मिलापी,  
धीर, शान्त ।—नीनी तत्त्वं (स्त्री०) धीरज  
या शान्ति रखनेवाली स्त्री ।

अविलम्ब तत्त्वं (पु०) शीघ्र, तुरन्त, कटपट ।

अविवादी तत्त्वं (गु०) मेली, सहज स्वभाव का,  
शान्त, झगडा न करने वाला ।

अविवेक तत्त्वं (पु०) विचारहीनता, मूर्खपन, विवेक,  
शून्यता ।—नी तत्त्वं (पु०) अज्ञानी, मूर्ख, गर्दी  
विचारनेवाला । [ रहित ।

अविशेष तत्त्वं (पु०) सामान्य, तुल्य, सदृश, विशेषता  
अविश्वास तत्त्वं (गु०) विरश्वास-शून्य, अप्रतीति,  
प्रतीति-हीन । [ समय ।

अवेर तत्त्वं (स्त्री०) विलम्ब, अवेर, देरी, अधिक  
अवैतनिक तत्त्वं (वि०) बिना वेतन के काम करने  
वाला, आनेरी ।

अव्यक्त तत्त्वं (गु०) [अवि + अज्ञ + क] अस्फुट,  
अप्रकाशित । (पु०) विष्णु, शिव, कन्दर्प, मूर्ख,  
प्रकृति, आत्मा महदादि, परमात्मा, क्रियारहित ।

—राग तत् ( पु० ) हैषत् लोहित वर्ण, हलका लाल, गौर, श्वेत ।

अव्यय तत् ( पु० ) घयहाहट-रहित, अनाकुल ।

अव्यय तत् ( पु० ) शब्द विशेष, जो सबदा एक समान रहते हैं यथा—और, अथवा, फिर, पुनः, आदि, विष्णु, परमेश्वर । ( पु० ) नाशरहित, कृपण । —  
भाव तत् ( पु० ) समास का एक भेद । इसमें अव्यय के साथ समस्त उत्तरपद होता है, जैसे प्रतिरूप, अतिशाल ।

अव्यय तत् ( वि० ) अचूक, सार्थक, अमोघ ।

अव्ययवस्था तत् ( स्त्री० ) असम्मति, अनरीति, अविधि, शास्त्र-विरुद्ध व्यवस्था ।

अव्ययस्थित तत् ( पु० ) नीति आदि शास्त्रों की व्यवस्था से अनभिज्ञ, अस्थिर-चित्त, सिद्धान्त-रहित, चञ्चल ।

अव्ययहार्य तत् ( पु० ) व्यवहार के अयोग्य, जाति-अष्ट । [ सन्निकट, अत्यन्त समीप ।

अव्ययवहित तत् ( पु० ) व्यवधान-रहित, संस्कृत, अभ्यासित तत् ( स्त्री० ) अप्राप्ति, न फैलना । न्याय के मत से लक्षण सम्बन्धी एक प्रकार का दोष । लक्ष्य के एक देश में लक्षण का नहीं जाना अभ्यासि है ।

यथा—शिक्षासूत्र विशिष्ट ब्राह्मण है । शिक्षा सूत्र का रहना ब्राह्मण का लक्षण है । संन्यासी ब्राह्मण है, परन्तु वह शिक्षा सूत्र रहित है, अतएव पूर्वोक्त ब्राह्मण का लक्षण संन्यासी में अभ्यास हुआ । अथवा अग्नि का लक्षण किया गया कि ऋष्यशर्ष-धान् धूम विशिष्ट अग्नि है । जोड़े के गोले में अग्नि है, परन्तु उसमें धूम नहीं है । अतएव पूर्वोक्त अग्नि का लक्षण अभ्यास हुआ, वही का अभ्यासि कहते हैं ।

अव्याहत तत् ( पु० ) बेरोक, अवरोध-रहित ।

अव्वल दे० ( पु० ) प्रथम, पहिला ।

अशकुन तत् ( पु० ) बुरे सगुन, अपसगुन, अशगुन, भावी के लिये बुरे चिन्ह ।

अशक या असक तत् ( पु० ) शक्ति-रहित, असमर्थ निर्बल । —ता तत् ( स्त्री० ) [ अशक + ता ] अक्षमता, अपारगता, शक्ति-हीनता । — ( स्त्री० ) शक्ति-हीनता, क्षीयता ।

अशक्य तत् ( पु० ) असाध्य, शक्ति के अगम्य, शक्यरहित, असम्भव । —ता तत् ( स्त्री० ) असाध्य, साध्यातिरिक्त ।

अशङ्क तत् ( पु० ) शङ्का-रहित, निश्चिन्त, निर्भय, निडर, निर्विघ्न ।

अशन तत् ( पु० ) [ अश् + अनट् ] भोजन, भक्षण । —च्छादन तत् ( पु० ) [ अशन + आच्छादन ] अन्न वस्त्र, रोटी कपड़ा ।

अशानं तत् ( पु० ) [ अशन + ईं ] विघ्न, वज्र, हृन्त का शस्त्र ।

अशम तत् ( पु० ) लुब्ध, विह्वल, अशान्ति ।

अशम्बल तत् ( पु० ) अर्थहीन, मार्ग-व्यय-शून्य, पायेय-हीन । [ विश्रामाभाव ।

अशम्य तत् ( पु० ) विराम-योग्य, अविधान्ति, अशरणा तत् ( पु० ) निराश्रय, रक्षाहीन, निरालम्ब ।

अशरणी दे० ( स्त्री० ) सुवर्णसुदा, मोहर ।

अशराफ दे० ( पु० ) मद्रुप, भला आदमी ।

अशरीर तत् ( पु० ) कल्प, काम, मदन, ( पु० ) शरीर-रहित ।

अशान्त तत् ( पु० ) अशिष्ट, दुरन्त, अधीर, अस-न्नुष्ट, भावित । —ता तत् ( स्त्री० ) अशिष्टता, क्षौरात्म्य, चढाहट । — ( स्त्री० ) वस्त्र, क्षौरात्म्य, असुखी, हलचल, खलचली, चोम, विशेष असन्तोष ।

अशालीन तत् ( वि० ) छट, डीठ ।

अशासित तत् ( पु० ) अकृत शासन, शासनरहित ।

अशावरी या अस्तावरी तत् ( स्त्री० ) रागिनी विशेष ।

अशास्त्र तत् ( पु० ) शास्त्र विरुद्ध, अवैध, विधिहीन । —य तत् ( पु० ) वेद-विरुद्ध, अवैध ।

अशिक्षित तत् ( पु० ) अनसीता, मूल, शिक्षावर्जित, असम्य, अप्राप्त शिक्षा, अपण्डित, अनभिज्ञ ।

अशित तत् ( अश् + क् ) सुक्त, खादित ।

अशिर तत् ( पु० ) [ अश् + इर् ] क्षौरक, क्षौर, ( पु० ) अग्नि, राक्षस, सूर्य ।

अशिरस्क तत् ( पु० ) मस्तक-हीन, कण्ठ, घट ।

अशिव तत् ( पु० ) अमङ्गल अशुभ ।

अशिशिर तत् ( पु० ) अशीतल, ओष्म, वृष्य ।

अशिशिवका तत्० (स्त्री०) [अशिशु + इक् + आ] अनपत्या, पुनः-कन्या हीना स्त्री ।  
 अशिष्ट तत्० (गुं०) दुरन्त, प्रगल्भ, असम्य, उजड़, मूर्ख ।—ता तत्० (स्त्री०) दुरन्तता, असम्यता, असाधुता, दिडाई ।  
 अशुचि तत्० (गुं०) अशुद्ध, अपवित्र, अशौच ।  
 अशुद्ध तत्० (गुं०) ठीक नहीं, अपवित्र, अकृत-शोधन अपरिष्कृत, अशुचि, झुटि-सहित, अशौचयुक्त, बेठीक, गुलत ।—ति तत्० (स्त्री०) अशुद्ध, अशोधन, भूक, अशौच ।  
 अशुभ तत्० (गुं०) [अ + शुभ] अमङ्गल, पाप, बुरा ।  
 —चिन्ता (स्त्री०) अशिष्ट सोचना, बुरा चिन्तन ।  
 —दर्शन (पुं०) अमङ्गल दर्शन, मन्द लक्षण ।  
 अशुभ्यशयनघ्नत तत्० (पुं०) घ्नत विशेष, आवण कृष्ण द्वितीया को यह घ्नत किया जाता है ।  
 अशेष तत्० (पुं०) शेषहीन, निःशेष, समग्र, समूचा, तमाम ।—ज्ञ तत्० (गुं०) [अशेष + ज्ञा + इ] सर्वज्ञ, सर्वविद्, सब जानने वाला ।—तः तत्० (घञ्) [अशेष + तत्] सब प्रकार से, अनेक रूप से ।—विशेष तत्० (गुं०) अनेक प्रकार, बहुत तरह ।  
 अशोक तत्० (गुं०) [अ + शोक] शोक रहित, पुष्प वृक्ष विशेष, राम विशेष, विष्णुत मौर्य सम्राट् बिन्दुसार के पुत्र तथा चन्द्रगुप्त के यौत्र का नाम । महाराजा अशोक अपने शत्रुओं को परास्त करके २६ वर्ष की अवस्था में सिंहासनावृद्ध हुए थे । प्राचीन शिलालेखों से इनका दूसरा नाम मिय-दरशी या मियदर्शी भी जाना जाता है । अपने अभिषेक के ८ वें वर्ष में इन्होंने कब्रिस्तान देश का जीता था । राज्याभिषेक के समय महाराजा अशोक हिन्दू सनातन धर्म के अनुयायी थे । समय समय पर इन्होंने बौद्धों के विरुद्धाचरण भी किया था । बुद्धगया के " बोधिद्रुम " को इन्होंने कटवा दिया था । कपिलवस्तु के निकट बुद्ध भगवान् के स्मारक स्तूपों में से ८ को तोड़ देने के लिये इन्होंने आज्ञा प्रचारित की थी । अशोक २६० वर्षाब्द के पूर्व राज्यासन पर आसीन हुए थे ।

राजा होने के ७ वें वर्ष अर्थात् २६४ वर्षाब्द के पूर्व बौद्धधर्म में दीक्षित हुए । राज्य पाने के १४ चौदह वर्ष के मध्य में भारत के आधे से अधिक भाग पर अपना अधिकार इन्होंने स्थापित किया था । यह बौद्धधर्म के प्रचार करने के लिये अत्यन्त सचेष्ट थे । इन्हीं के समय में बौद्ध महा-सभा का दूसरा अधिवेशन हुआ था । ख्रि० २३३ में इन्होंने राज्य किया था (देखो आदर्शमहात्मा) ।  
 अशोच तत्० (पुं०) शान्ति, अविचार, अपवित्रता, अशुद्धता ।  
 अशोच्य तत्० (गुं०) अशोचनीय, शोक के अयोग्य ।  
 अशोभन तत्० (गुं०) मन्द, कुदरय । दुर्दर्शन, अश्री ।  
 —नीय (गुं०) कुत्सित आकार, बुरा ।  
 अशोभा तत्० (पुं०) अनगढ़, कुत्स्य, बुरा ।  
 अशौच तत्० (पुं०) शुचित्वामात्र, अशुद्धि ।—अन्त (पुं०) [अशौच + अन्त] अशौच का अन्तिम दिन, वैशुद्धि का अवसान दिन ।  
 अशौच्य तत्० (पुं०) भीरुता, अविक्रम, अशरत्त्व ।  
 अश्म तत्० (पुं०) [अश् + मन्] परधर, पर्यत, मेघ ।  
 —ज तत्० (पुं०) [अश्म + जन् + इ] शिला-जीत, लोह, परधर से उत्पन्न वस्तु ।—दारण तत्० (पुं०) अश्मन् + दारण] परधर काटने वाला अस्त्र ।  
 अश्मरो तत्० (स्त्री०) [अश्मर + इ] मूत्रकृच्छ्र रोग, पथरी रोग । [घिन ।  
 अश्रद्धा तत्० (स्त्री०) अशक्ति, घृणा, अविश्वास, अश्रद्धेय तत्० (गुं०) घृण्य, घृणा के योग्य, अना-दरणीय ।  
 अश्रय तत्० (पुं०) [अश्र + पा + इ] राक्षस, निशाचर ।  
 अश्रद्ध तत्० (गुं०) प्रेतकर्म रहित ।  
 अश्रान्त तत्० (पुं०) अनवरत, विश्राम रहित, अश्रान्तिहीन ।—नि (स्त्री०) अविश्राम, अनवरत ।  
 अश्रान्त्य तत्० (गुं०) सुनने के अयोग्य, अश्रोतव्य ।  
 अश्रि तत्० (स्त्री०) [अ + श्रि + क्तिप्] धार, पैना, तीला, तीक्ष्ण ।  
 अश्रु तत्० (पुं०) [अ + श्रु + क्तिप्] आंसू, नेत्रजल, नयनान्त्रु ।—पात तत्० (पुं०) आंसू गिराना ।

अश्रुत तत् (गु०) नहीं सुना, अनाकर्णित ।—पूर्व  
तत् (गु०) पहले का नहीं सुना गया, अद्विष्ट,  
विलक्षण ।

अश्रेयस् तत् (गु०) निर्गुण, अधम, अमङ्गल ।

अश्रेष्ठ तत् (गु०) दुरा, साधारण, श्रम नहीं ।

अश्लोल तत् (गु०) नीच, अधम, आम्यभाषा,  
फूँदर, (गु०) घृणा अथवा लज्जासूचक वात,  
काव्यगत दोष । काव्य में ऐसे शब्दों का प्रयोग  
करना जो श्रवणान्तर घृणा लज्जा अथवा  
अमङ्गलसूचक हों, यह शब्ददोष है घृणाध्यक्षक,  
लज्जाव्यञ्जक और अमङ्गलव्यञ्जक, इसके मोद हैं ।

अश्लेष तत् (गु०) श्लेषरहित, अप्रणय, असंख्य,  
अमीति, श्लेष मित्र, अपरिहास ।

अश्लेषा तत् (स्त्री०) नर्था नचत्र, इस नचत्र में छः  
तारे हैं—मघ तत् (गु०) केंतुमह ।

अश्व तत् (गु०) [अश + व] घोटक, तुरङ्ग, घोड़ा ।

—गन्धा तत् (स्त्री०) [अश्वगन्ध + आ]

औपध विशेष, असगन्ध ।—तर तत् (गु०)

[अश्व + तर] गर्दभी के गर्भ और अश्व के औरस

से उत्पन्न पशु, खच्चर, नागराजविशेष, अश्व

विशेष । (स्त्री०) अश्वतरी ।—पति तत् (गु०)

घोड़े का स्वामी ।—मैध तत् (गु०) यज्ञ विशेष,

जिसमें घोड़े का हवन किया जाता है । इस यज्ञ

में विशेष लक्षणयुक्त अश्व को घोकर उसके सिर

में जयपत्र बांधकर स्वेच्छा से घूमने के लिये

छोड़ देते थे, पुनः एक वर्ष बाद वह घोड़ा

घूम कर जय आता था, तब उसका बलिदान

और हवन किया जाता था ।—वार तत् (गु०)

अश्वारोही, घुड़सवार, ।—शाला तत् (स्त्री०)

अश्वगृह, अस्तबल, घुड़सान्, ।—वैद्य तत् (गु०)

अश्वचिकित्सक ।—शिक्षक तत् (गु०)

आयुक्त सवार ।—सेवक तत् (गु०) सार्वस ।

—रुद्ध (गु०) [अश्व + आरुद्ध] असवार,

घुड़चढ़ा ।—रौही तत् (गु०) घुड़सवार, घोड़े

पर चढ़ा हुआ

अश्वत्थ तत् (गु०) [अश्व + स्था + व] वृक्षविशेष,  
चलद्रुम, पीपल ।

अश्वत्थामा तत् (गु०) [अश्व + स्था + सत्] (१)  
द्रोणाचार्य का पुत्र । भूमि में पतित होते ही  
उच्चैःश्रवा घोड़े के समान शब्द किया था, उसके  
बाद ही आकाशवाणी हुई “कि इस पुत्र ने जन्म के  
समकाल ही मैं गम्भीर ध्वनि के द्वारा दिगन्त को  
प्रतिध्वनित किया है, अतएव इसका नाम अश्व-  
त्थामा होगा” । (२) पाण्डव पक्षीय मालवराज  
इन्द्रवर्मा का हाथी । [सनत्कुमार

अश्वसेन तत् (गु०) तक्षक का पुत्र, नाग विशेष,

अश्विनी तत् (स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में का पहला

नक्षत्र, इसमें तीन तारे रहते हैं और मेघराशि के

सिर पर इसका स्थान है । दक्षप्रजापति की कन्या

और चन्द्रमा की स्त्री, इस नक्षत्र का आकार घोड़े

के मुँह के समान है ।—कुमार तत् (गु०) स्वर्ग

का वैद्य, देवता विशेष, अश्वरूपी सूर्य के औरस

तथा अश्वरूप धारिणी संज्ञा के गर्भ से इस युगज

देववैद्य की उत्पत्ति हुई थी ।—(हरिवंश या अमर-  
वेद द्रष्टव्य) ।

अश्ली या अस्ली तत् (गु०) संध्या विशेष, द० ।

अपाद तत् (गु०) अण्ड मास, प्रतपजाराण्ड,

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र, इस महीने की पूर्वार्द्धा को

होता है और उस दिन चन्द्रमा भी उसीके साथ

रहता है ।

अष्ट तत् (गु०) संध्या विशेष, आठ ।—क तत् (गु०)

(गु०) [अष्ट + क] अष्ट संध्या, आठ की पूर्ति ।

।—कार्य तत् (गु०) प्रहारा, प्रभा-पति, विधि ।

—का तत् (स्त्री०) अष्टमी, अष्टम । पून

मास तथा कापुन मासों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी

तिथि । इन तिथियों में विष्णु आष्ट करने से पितरों

की विशेष तृप्ति होती है ।—धातु तत् (गु०)

सुवर्ण, रूपा, जस्ता, पारा, ताँबा, शंका, शीशा,

लोहा ।—धाती तत् (गु०) अष्टधातु का बना

हुआ ।—प्रहर (गु०) आठ पहर, आठ घण्टा ।—वासु

तत् (गु०) देश विशेष, आप, भूच, सोम, धव,

अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभास, —मी तत् (स्त्री०)

[अष्टम + ई] तिथि विशेष, जिस दिन चन्द्रमा

की आठवीं कला की क्रिया हो ।—मूर्ति तत् (गु०)

(गु०) शिव की अष्टविध मूर्ति विशेष, यथा

चित्तिमूर्ति, शर्व, जलमूर्ति मव, अग्निमूर्ति रुद्र, वायुमूर्ति उग्र, आकाशमूर्ति भीम, यज्ञमानमूर्ति पशुपति, चन्द्रमूर्ति महादेव, सूर्यमूर्ति ईशान ।  
—मिद्धि तत्त्वं (स्त्री०) योग की आठ सिद्धियाँ यथा—अग्निमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाश्य, ईशिरव, वशिरव ।

अष्टाङ्ग तत्त्वं (पु०) [अष्ट + अङ्ग] आठ अङ्ग, आठ अवयव ।—अष्ट तत्त्वं (पु०) [अष्ट + अङ्ग + अर्थ] आठ द्रव्यों से संयुक्त पूजा की सामग्री विशेष ।—प्रणाम तत्त्वं (पु०) [अष्ट + अङ्ग + प्रणाम] आठ अंगों से प्रणाम करना ।

अष्टादश तत्त्वं (पु०) संख्या विशेष, अठारह—[अष्टादश (पु०) [अष्टादश + अंग] अठारह श्लोपधियों के मिलने से बनी हुई पाचन की गोलियाँ ।—ओपचार तत्त्वं (पु०) [अष्टादश + उपचार] पूजा की अठारह सामग्री, यथा—आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, पख, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न, तर्पण, अनुलेपन, नमस्कार, विसर्जन ।—ओपपुराण तत्त्वं (पु०) [अष्टादश + उपपुराण] पुराण विशेष, गीण पुराण, यथा—(१) सनत्कुमार (२) नारसिंह (३) नारदीय (४) शिव (५) दुर्वासा (६) कपिल (७) मानव (८) औशनस (९) वरुण (१०) कालिक (११) शांभ (१२) नन्दा (१३) सौर (१४) पराशर (१५) आदित्य (१६) माहेश्वर (१७) मार्गव (१८) वासिष्ठ ये अष्टादश उपपुराण हैं—धान्य तत्त्वं (पु०) अठारह प्रकार के अन्न, यथा—यव, गोधूम, धान्य, तिल, रांगु, कुजिरय, माष, मृद्ग, मधुर, निष्पाव, श्याम, सर्पप, गवेयुक, नीवार, अरहर, तीना, चना, चीनी, ।—पुराण तत्त्वं (पु०) अठारह पुराण, यथा—महा, पाद्म, विष्णु, शैव, भागवत नारदीय, मार्कण्डेय, आग्नेय, अविष्य, महावैवर्त, लिङ्ग, चाराह, स्कन्द, वामन, कौर्म, मात्स्य गारुड और प्रह्लाण्ड ।—विद्या तत्त्वं (स्त्री०) अठारह विद्या । यथा—छः अह, चार वेद, भीमांस, न्याय, पुराण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व, और अर्थशास्त्र ये अष्टादश

विद्या हैं ।—स्मृतिकार तत्त्वं (पु०) अष्टादश स्मृतियों के बनाने वाले ग्रामों के धर्मशास्त्रकार, यथा—विष्णु, पराशर, दक्ष, संवर्त, व्यास, हरीत, शातातप, वशिष्ठ, यम, आपस्तम्ब, गौतम, देवब, शङ्ख, लिखित, भारद्वाज, वशना, अत्रि, याज्ञवल्क्य, ये अष्टादश स्मृतिकार हैं ।

अष्टास्त्रि तत्त्वं (पु०) अठकोश

अष्टि तत्त्वं (स्त्री०) गुडली, बीज, अटली ।

असंख्य तत्त्वं (पु०) अनगिनती, बहुत, अगणनीय, संख्यारहित, अपरिमित । [मित ।

असंख्यात तत्त्वं (पु०) असंख्या, अगणित, अपरि-  
असंख्येय तत्त्वं (पु०) अगणनीय, जिसकी संख्या न गिनी जा सके ।

असङ्गत तत्त्वं (पु०) अनुचित, अयोग्य, मिथ्या ।

असङ्ग्रह तत्त्वं (पु०) संक्षय हीन, एकत्रित नहीं ।

असंयुक्त तत्त्वं (पु०) [अस + युज् + क] असंलग्न, अमिलित, पृथक् ।

असंयोग तत्त्वं (पु०) अनमेल, भिन्न ।

असंलग्न तत्त्वं (पु०) अमिल, असङ्गत ।

असंशय तत्त्वं (पु०) निश्चय, निःसन्देह, संशय-  
रहित । [हस चाल का ।

अस तत्त्वं ऐसा, ऐसी, इस प्रकार के, इस प्रकार का, असकत हैं (स्त्री०) आलस्य, उर्वास, - १ (पु०) आलसी, डीबरला, सिधिल ।

असकृत तत्त्वं (अ०) पुनः पुनः बारबार ।

असगन्ध (पु०) अश्वगन्ध, ओषधि विशेष । [द्वेयी ।

असज्जन तत्त्वं (पु०) [असत् + जन] कुपात्र, दुष्ट,

असत् तत्त्वं [अ + सत्] अमाधु, अन्यायी, अधर्मी ।

असती (स्त्री०) कुलटा, दुराचारीणी स्त्री

असत्य तत्त्वं (पु०) झूठ, मिथ्या, अन्याय । [रहित ।

असन्तुष्ट तत्त्वं (पु०) अपसन्न, अतृप्त, सग्नक तुष्टि

असन्तोष तत्त्वं (पु०) अनाह्लाद, अपरितोष ।

असम्मान तत्त्वं (पु०) अपमान, अस्वकार ।

असम्य तत्त्वं (पु०) अपाय, सभा के योग्य नहीं, असामाजिक, असम्य, खल, नीच ।—ता (स्त्री०)

[असम्य + ता] असम्यता, मूर्खत्व, वज्रदुपन ।

असम तत्त्वं (पु०) विषम, अतुल्य ।

असमग्र तत्त्वं अपूर्ण, अनिश्चित, अल्प, अधूरा ।

असमञ्जस तत् (गु०) असङ्गत, अनुपयुक्त, अतुल्य,  
असरार।

असमय तत् (गु०) अकाल, विपत्ति, दुर्निष्ठ, कुमेला।

असमर्थ तत् (गु०) असक्त, दुर्बल, चीथ।

असमवायि-कारण (गु०) (१) न्यायदर्शन के मतानुसार यह कारण जो द्रव्य न हो, गुण व कर्म हो।

जैसे (१) घट के प्रति दो कपालों का संयोग।

(२) वैशेषिक मतानुसार यह कारण जिसका कर्म से जिस सम्बन्ध न हो और आकस्मिक सम्बन्ध हो।

असमसाहस तत् (गु०) दुःसाहस, असमान साहस, अतुल्य उत्साह, सामर्थ्य से बाहर उत्साह।

असमस्त तत् (गु०) पराच, अगोचर।

असमाधि तत् (स्त्री०) अधिन्ता, अधिवेचन, अधिमर्ष। [विषम, अतुल्य, विभिन्न।

असमान तत् (गु०) छोटा बड़ा, समान नहीं, असमायिकक्रिया तत् (स्त्री०) जिस क्रिया से वाक्य पूर्ण न हो, सकल कृदन्त क्रिया, काल-बोधक कृदन्त। [रहित।

असमाप्त तत् (गु०) अधवना, अधूरा, अपूर्ण, समाप्ति असम्बद्ध तत् (गु०) अनमोल, अमर्थ, अन्याय।

असम्भव तत् (गु०) अनहोना, अचरज।

असम्मत तत् (गु०) अमेल, अस्वीकार, अनभिमत, सम्मति रहित।

असयाना तत् (गु०) भोला, सीधा, सादा।

असर दे० (गु०) असाव, दबाव।

असल दे० (गु०) खरा, सचा, शुद्ध।

असली दे० (गु०) सचा, खरा।

असवार दे० (गु०) घुड़सवार।

असहन तत् (गु०) [अ + सह + अनट्] शत्रु, बैरी, असह्य, अधीर, उग्र, भयङ्कर।—शील (गु०) असहिष्णु।

असहिष्णु तत् (गु०) जो सहन न कर सके। असहनशील।—ता तत् (स्त्री०) असहनशीलता, चिड़चिड़ापन। [के अद्येय।

असह्य तत् (गु०) असहनीय, कठिन, सहन करने असाढ़ तत् (गु०) अषाढ़मास, वर्ष का चौथा महीना।

असाधारण तत् (वि०) गैरसामान्य, असामान्य।

असाधु तत् (गु०) अधर्मी, पापी, असज्जन।

असाध्य तत् (गु०) कठिन, अगम्य, दुःशाय्य।

असमर्थ तत् (गु०) अपारग, सामर्थ्य हीन।

असामयिक (गु०) वैसमय का, समय पर न होने वाला।

असार तत् (गु०) टूटा, पोटा, सूखा, बोदता, सार रहित।

असावधान-तत् (गु०) लापरवाही अनिश्चित, अचेत, बेवैकुल।—ती (गु०) लापरवाही, बेखबरी।

असावरी (स्त्री०) एक रागिनी का नाम।

असि या असी तत् (गु०) खड्ग, तलवार, खाँड़।

असिद्ध तत् (गु०) अधवना, अधूरा, अपूर्ण।

असीम तत् (स्त्री०) अपार, अनन्त, बहुत सीमा-रहित, निरवधि।

असील दे० (गु०) असक्त, खरा, सचा।

असु तत् (गु०) [अस् + ड] प्राण्य, जीवन।

असुर तत् (गु०) सुर विरोधी, दैत्य, दानव।

असूक्त दे० (गु०) अदृश्य, भूख।

असुख्य तत् (गु०) सुखस्थिति रहित, रोगी।—ता (स्त्री०) अस्वास्थ्य, अस्वच्छन्दता।

असूया तत् (स्त्री०) निन्दा, द्वेष, गुणों में दोषारोपण करना, परिवाद, क्रोध।

असूर्यम्भया तत् (स्त्री०) जिसको सूर्य भी न देले, पर्व में रहने वाली, पर्व नशीन।

असेसर दे० (गु०) प्रजा के वे पुरुष जो कौजवारी मामलों के फैसले में शपथ देने को बुने जाते हैं।

असूक् तत् (स्त्री०) रक्त, हृषिर, कोह।

असौ तत् (गु०) यह साल, यह वर्ष, वर्तमान संवत्सर। [निर्मोही, प्रमादी, सुस्थिर।

असौच तत् (गु०) अचेत, अधिचारित।—ती (गु०)

असोज तत् (गु०) आश्विन, कुवार का महीना।

अस्त तत् (गु०) [अस् + क्त] अस्ताचल, पश्चिमाचल। (गु०) चिन्त, अवसान, अन्तर्धान, प्राप्ति, निश्चित, प्रेरित, एक (गु०) सृष्टि।—गत तत् (गु०) अस्तप्राप्त, अन्तर्हित।—गिरि तत् (गु०) अस्ताचल, चाम पर्वत।—व्यस्त तत् (गु०) सङ्कीर्ण, विविध, आकुल।—चल तत् (गु०)

(पु०) पर्वत विशेष, जहाँ सूर्य अस्त होते हैं।

अस्तर दे० (पु०) दोहरे वस्त्रों में नीचला वस्त्र, नीचे का पहला।

अस्तरकारी दे० (स्त्री०) चूने से सफेद कराई, बिप-  
वाह, पनस्तर,

अस्त्र तत्त्वं (पु०) [अस् + त्र] आयुध, प्रहरण, शस्त्र,  
खड्ग, हथियार, धनुष।—चिकित्सक (पु०)  
[अस्त्र + कित् + तत् + क] शस्त्रवैद्य, अस्त्र के  
द्वारा रोग दूर करनेवाला, जराह।—विद्या तत्त्वं  
(स्त्री०) अस्त्र चलाने की विद्या, धनुर्वेद।

अस्थायी तत्त्वं (पु०) [अ + स्था + य] अस्थायी,  
स्थिति रहित, अगाध, अतलस्थल। [प्रातु विशेष।  
अस्थि तत्त्वं (पु०) हाड, शरीर का पंजर, शरीरस्थ,  
अस्थिर तत्त्वं (पु०) चञ्चल प्रकृति, अस्थायी, अनि-  
श्चित।—ता तत्त्वं (स्त्री०) अस्थैर्य, अनीरचय।  
—मनाः तत्त्वं (पु०) अस्थिरताभाव, अस्थिरान्तः  
करण, चंचल चित्त वाला। [रता, चञ्चलता।

अस्थैर्य तत्त्वं (पु०) अनिरचय, स्थिरताभाव, अधी,  
अस्मरण तत्त्वं (पु०) भूल, विस्मृति। [वास्।

अस्त तत्त्वं (पु०) कोण, एक देश, नोक, कधिर, जल,  
अस्त तत्त्वं (पु०) निर्धन, कलत्र, दत्तिका।

अस्तव्य तत्त्वं (वि०) रोगी, बीमार।

अस्वर तत्त्वं (पु०) हल व्यञ्जन, कुस्वर, निम्बित  
शब्द, वे स्वर। [कृत्रिम।

अस्वाभाविक तत्त्वं (वि०) प्रकृति विरुद्ध, बनावटी,  
अस्वास्थ्य तत्त्वं (पु०) बीमारी, रोग।

अस्वीकार तत्त्वं (पु०) इन्कार, नामंजरी, नाहीं।

अस्वीकृत तत्त्वं (वि०) नामंजूर किया हुआ।

अस्ती दे० (वि०) ८०, संख्या विशेष।

अहङ्कार तत्त्वं (पु०) अभिमान, दम्भ, अहंकृति।—  
(पु०) धमंडी, अभिमानी, गर्वोळा।

अहद दे० (पु०) वादा, प्रतिज्ञा।—नामा दे० (पु०) सन्धि-  
पत्र, प्रतिज्ञापत्र।—नी (पु०) आबली, अकर्मण्य।

अहमक दे० (पु०) नादान, मूर्ख।

अहम्मति तत्त्वं (स्त्री०) मनमौजी, गर्वी। [गड्ढा।

अहर तत्त्वं (पु०) डोवा, पोखरा, चहरा, पानी का

अहरह तत्त्वं (पु०) प्रतिदिन, दिन दिन। [अष्ट प्रहर।

अहर्निश तत्त्वं (अ०) [अहः + निशि] दिवा रात्रि,

अहर्मुखतत्त्वं (पु०) प्रातःकाल, सबेरा, मोर, प्रसूय।

अहर्पति तत्त्वं (पु०) अप्रसन्न, मलिन।

अहल्या तत्त्वं (स्त्री०) गौतम मुनि की स्त्री, अप्सरा  
विशेष, जोती भूमि।

अहह तत्त्वं (अ०) अद्भुत या खेद प्रकाशक शब्द।

अहहिं (क्रि०) अस्ति, है, विद्यमान है।

अहा (अव्य) खेद, दुःख, आश्चर्य प्रकट करने के लिये  
इस शब्द का प्रयोग होता है।

अहार तत्त्वं (पु०) आहार, भोजन, खाना, लेई, मांछी।

अहिंसक तत्त्वं (पु०) अहिंस, अहिंसाकारक।

अहिंसा तत्त्वं (स्त्री०) अनिष्ट करने की अनिवृत्ता,  
प्रणिवध न करने की अभिलाषा।

अहि तत्त्वं (पु०) साँप, सर्प, नाग।—गति तत्त्वं  
(स्त्री०) साँप की चाल, टेढ़ी चाल।—गाह

(पु०) शोपनाग।—पति (पु०) सर्पराज।—

फेन (पु०) अफीम।—भुक् (पु०) मोर, मयूर।

अहिहार तत्त्वं (पु०) साँप का विष।

अहित तत्त्वं (पु०) शत्रु, वैरी, विरुद्ध, अवध्य, अनुप-  
कार, अमङ्गल।—कारी तत्त्वं (पु०) अभिय  
करने वाला, शत्रु, दुरा चेतने वाला।

अहिनी तत्त्वं (स्त्री०) सपिंशी, साँप की स्त्री, साँपिन।

अहितुगिडक तत्त्वं (पु०) सपेरा, ब्यालप्राही, कंजर।

अहिनकुलता तत्त्वं (पु०) स्वाभाविक शत्रुता।

अहिवात तत्त्वं (पु०) सुहाग, सौभाग्य, सचवा होने  
का चिन्ह।—नी (स्त्री०) सुहागिन स्त्री।

अहीर तत्त्वं (पु०) ग्वाल, अमोर, गोपाल। अहीरिनी  
या अहीरिन (स्त्री०) ग्वालिन।

अहीराश तत्त्वं (पु०) सर्पराज, शोपनाग, शोपावतार,  
लक्ष्मण, बलराम, रामानुजादि।

अहे तत्त्वं (अ०) संबोधन द्योतक, अहो!

अहेतुक तत्त्वं (पु०) अकारण, अनर्थक।

अहेर तत्त्वं (स्त्री०) आखेट, मृगया, शिकार।—नी  
(पु०) शिकारी।

अहेरिया तत्त्वं (पु०) बहेलिया, व्याधा, शिकारी।

अहो तत्त्वं (अ०) आश्चर्य, अचम्भा, शोक, कष्ट,  
विपाद बोधक संबोधन, प्रशंसा, विस्मय, अयश  
आश्चर्य प्रकाशक शब्द।

अहोरात्र तत् ( गु० ) [ यह्न + रात्रि + ए ] दिन  
और रात ।

अहोरा बहोरा ( दे० ) ( पु० ) विवाह की रीति विशेष ।  
हेराफेरी । ( कि० वि० ) बार बार ।

## आ

आ तत् आकार, दूसरा स्वरवर्ण है, शब्दों के आदि में  
इसका योग होने से यह अवधि का वाचक होता है,  
न्यून अथवा विपरीत भी इसका अर्थ होता है ।

आ तत् ( पु० ) पितामह, वाक्य, मदेश्वर । ( अ० ) सृष्टि,  
ईपदर्थ, अभिव्यक्ति, सीमा, पर्यन्त, तक, वाक्य,  
अनुकम्पा, समुच्चय, निषिद्ध, सन्धिवर्ण, स्वीकार,  
कोप, पीड़ा, स्पर्द्धा, तर्ज्जण ।

आः तत् ( अ० ) कण्टवृक्ष शब्द, खेरोकि ।

आइन्दा दे० ( पु० ) आगामी, ( पु० ) भविष्य काल,  
आगे । [ अवस्था ।

आई तद् ( कि० ) आकर, आनकर, ( स्त्री० ) आयु, वय,  
आईन दे० ( स्त्री० ) कानून, विधि, व्यवस्था ।

आईना दे० ( पु० ) दर्पण, मुँह देखने का शीशा ।

आँक तद् ( पु० ) अर्क, मदार, अकौवा, अकथन, अङ्क,  
चिन्ह, संख्या, ( कि० ) अङ्कित करना, निरचय  
करना, जाँच कर ।

आँकड़ी तद् ( स्त्री० ) आँकुरी, कौंटा, जंजीर ।

आँकना तद् ( कि० ) निरखना, परखना, परीक्षा करना ।

आँकरी तद् ( स्त्री० ) बाण का कण, अङ्कुरा ।

आँकुवे दे० ( कि० ) अङ्कुरित हुए, उत्पन्न हुए, जन्मा,  
उगे, पैदा हुए ।

आँकुस या आँकुश तद् ( पु० ) अङ्गुय, अङ्गुरी ।

आँख तद् ( स्त्री० ) नेत्र, नयन, चक्षु ( बहुवचन  
आँखें, आँखियाँ ) ।—चढ़ाना तद् ( कि० ) क्रोध  
करना, कुपित होना ।—चुभना ( कि० )—पसन्द  
आना निगाह में बुरा ठहरना ।—चुराना ( कि० )  
लजित होना ( छिपाना ) ।—छँदी करना ( कि० ) इष्ट  
मित्रों के मिलने से चित्त की प्रसन्नता—तरेरना  
कुपित होकर देखना ।—दिखाना ( कि० ) धम  
काना, कुपित होना ( वा० ) ।—पर परदा पड़ना  
अम में पड़ना ।—फूटी, पीरगयी” किसी विवाद-  
प्रस्त पदार्थ को विनष्ट होने पर यह श्लोकांकि कही  
जाती है ।—फेरना ( कि० ) मित्रताभङ्ग, प्रेम

तोड़ना ।—फैलाना ( क्रि० ) दूर तक देखना ।—  
फोड़ा ( पु० ) एक प्रकार का पतंगा ।—मूँदना  
( कि० ) मृत्तु, मतवाली, मस्ती ।—बचाना ( कि० )  
छिपना, अपने दुष्कर्मों से लजित होना ।—बन्द हो  
जाना भर जाना ।—बन्दल जाना पूर्वत व्यवहार  
का न रह जाना ।—भारना ( कि० ) आँख मटकाना,  
सैन करना, इधारे से बात करना, इकित करना ।—  
बिछाना प्रेम पूर्वक स्वागत करना ।—भरजाना  
रोना ।—मौंटेदी करना क्रुद्ध होना ।—मिलजाना  
( कि० ) प्रेम करना, मित्रता करना ।—रखना ( कि० )  
अनुसन्धान करना, निरीक्षण करना, खोज परताज  
करना ।—लगना चीद आना प्रीति का होना ।—  
लगाना दे० ( कि० ) किसी की प्रीति में कँतना ।—  
लालकरना क्रुद्ध होना ।—से गिरना मन से  
बतरना ।

आँखफोड़ा ( पु० ) पतङ्गा विशेष ।

आँखमिचौनी ( स्त्री० ) बालकों का एक खेल ।

आँग तद् ( पु० ) अङ्ग, देह, शरीर ।

आँगन तद् ( पु० ) चौक, अँगनाई, प्राङ्गण ।

आँगिरस्त तद् ( पु० ) शूद्रवस्त्र ।

आँच तद् ( स्त्री० ) अग्नि, आग, ताप, ज्वाला ।

आँचल तद् ( पु० ) अंचला, किनारा, कपड़े का हिस्सा ।

आँजि ( कि० ) अंजन लगा कर, काजल लगा कर ।

आँकू दे० ( पु० ) आँसु, पशु ।

आँट, तद् ( स्त्री० ) गाँठ, विरोध, धाड़ी ।

आँटना तद् ( कि० ) सामना, मारना, पैटना ।

आँटसाँट तद् ( स्त्री० ) सामना, हिस्सेदारी ।

आँटी तद् ( स्त्री० ) गुठली ।

आँत तद् ( स्त्री० ) अंतरी । ( मुंदा० )—कुलकुलाना बड़ी  
मूखका लगना ।—का बल खुजना—भोजन द्वारा  
रुस होना ।—सूखना—मूख से विकल होना ।—  
गले में पड़ना—तड़ होना, झगड़े, में पड़ना ।

आधी या आँधर दे० ( स्त्री० ) तेज हवा, झकड़, मूसल ।



आय वीय दे० (पु०) प्रलाप, अनाप शनाप ।  
 आय तद् (पु०) आत्रफळ, आम, रसाल ।  
 आयवर्त दे० (पु०) धोती का छोर, किनारा ।  
 आयवरा दे० (पु०) आयला, धात्री फल ।  
 आयवला सारगन्धक दे० (पु०) साफ गन्धक ।  
 आयवा दे० (पु०) कुम्हार की मही ।  
 आयस दे० (पु०) सूत, रेशा ।  
 आयसु दे० (पु०) अशु, नेत्र जल । (मुहा०)—पीकर  
 आयसु रह जाना भीतर ही भीतर कुदना ।—  
 गिरना—रोना ।—से मुँह धोना—बहुत रोना ।  
 आयस्पन तद् (पु०) [आ + कम्प + अनट्] काँपना ।  
 घरघराहट, हँसकम्पन । [वात ।  
 आयवाक दे० (पु०) अकषक, अक्षयल वात, ऊट-पटांग  
 आयकर तद् (पु०) [आ + कृ + अल्] घातु और  
 रत्नों का अपत्ति स्थान, खानि आदि मूल, समृद्ध,  
 श्रेष्ठ । जिस स्थान से जो वस्तु बहुतायत से निकले  
 वह स्थान उस वस्तु की आकर है ।  
 आयर्ण तद् (पु०) कर्णमूलावधि, कान तक ।—चक्षु  
 तद् (पु०) कर्ण पर्यन्त विस्तृत चक्षु, दीर्घ नयन,  
 विशाल नेत्र ।  
 आयर्ण तद् (पु०) खींच, टान रोक, पाशक, पाशा,  
 अक्षमीड़ा, चौपड़ खेला, आकर्षणी, आँकुरी ।—  
 क तद् (पु०) [आ + कृ + अल्] शिलाविशेष,  
 सुग्मक परावर, आकर्षणकर्ता ।—य तद् (पु०)  
 [आ + कृ + अनट्] बलप्रयोगपूर्वक खींचना,  
 टानना ।—शक्ति तद् (खी०) खींचने की शक्ति ।  
 आयकलन तद् (पु०) [आ + कल् + अनट्] एकत्र-  
 करण, संव्याकरण, बन्धन, बेटारना, अनुष्ठान,  
 सम्पादन, जाँच, अनुसन्धान ।  
 आयकलित तद् (पु०) [आ + कल् + इत्] बद्ध, परि-  
 संव्यात, पकड़ा हुआ, अनुष्ठित, कृत ।  
 आयकला तद् (पु०) खटखटिया, चतावला, उच्छृङ्खल ।  
 आयकली दे० (खी०) बेचैनी, व्याकुलता ।  
 आयकस्मिक तद् (वि०) अचानक, सहसा होने वाला ।  
 आयकाला तद् (खी०) इच्छा, चाहना, अभिलाष,  
 वांछा ।  
 आयकार तद् (पु०) स्वरूप, हील ढोल, मूर्ति, आकृति,  
 चेहरा, सङ्केत, इन्द्रित ।—शुक्ति तद् (खी०) मय

हर्ष आदि से उत्पन्न अन्न विकार को छिपाना ।—  
 गोपन तद् (पु०) मय हर्ष आदि सूचक चिन्हों  
 को छिपाना ।  
 आयकारतः तद् (अ०) [आकार + तस्] स्वरूपतः,  
 सदृश मूर्तितः, आकृति से । [आपगा, निम्नगा ।  
 आयकारान्त (पु०) वे शब्द जिनके अन्त में दीर्घ अ हों जैसे  
 आयकारादि तद् (पु०) [आकार + आदि] जिस शब्द  
 का आद्यपर आकार हो ।  
 आयकाल तद् (पु०) सकाल, दुर्मिच्छ, दुःसमय, महँगी ।  
 —कि (पु०) [आ + काल + इक्] अकाल-सम्भव,  
 असामयिक, अकाल-निमित्त, असमय में उत्पन्न ।  
 आयकाश तद् (पु०) गगन, शून्य, अन्धर, पद्मभूतों में  
 से एक भूत विशेष, ध्योम, अन्तरिक्ष ।—ग तद्  
 (पु०) आकाशगामी, आकाशचर ।—गङ्गा तद्  
 (खी०) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा, तृण पत्र विशेष ।—  
 गामी तद् (पु०) [आकाश + गम् + गिनी]   
 खेचर, आकाशचर, आकाश में चलने वाला ।—  
 दीप तद् (पु०) याँस के सहारे दाँगा हुआ दीपक,  
 अन्तरीक्षरूप प्रदीप, कांतिक मास में जो दीपदान  
 होता है ।—वेला तद् (खी०) लता विशेष ।—  
 चाणी तद् (खी०) अशरीरिणी वाक्, देववाणी ।  
 —विद्या तद् (खी०) वायु निरूपण करने की  
 विद्या ।—वृत्ति तद् (खी०) निराश्रय, अनिय-  
 मित वृत्ति, दरिद्रता । [अचनता ।  
 आयकिञ्चन तद् (पु०) दरिद्रता, प्रयास, यत्न, अकि-  
 आयकीर्ण तद् (पु०) व्यास, विस्तारित, प्लुत, सङ्कीर्ण,  
 सङ्कुल, समाकुल, भरा हुआ ।  
 आयकुञ्चन तद् (पु०) [आ + कुञ्च + अनट्] सङ्कोच,  
 वक्रता, व्यायमन के पञ्च प्रकार के कर्मों में से एक  
 कर्म ।  
 आयकुञ्चित तद् (पु०) तिरछा, टेढ़ा, बाँका ।  
 आयकुण्ठित (पु०) लज्जित, शवाक् ।  
 आयकुल तद् (पु०) [आ + कुल + अल्] व्याकुलित,  
 व्यस्त, कातर, आवे, उद्भिन्न, पूर्ण, आकीर्ण, घब-  
 राया ।—ति तद् (पु०) [आ + कुल + क्ति]   
 व्याकुल, कातर व्यस्तचित्त ।  
 आयकृत तद् (पु०) अभिप्राय, मतवय ।  
 आयकृति तद् (खी०) (१) मनु की तीन कन्याओं में

से एक, जो रुचि नामक प्रज्ञापति को व्याही गई थी । (२) उत्साह, सदाचार ।

आकृति तत् ( स्त्री० ) [ आ + कृ + क्ति ] रूप, मूर्ति, शरीर, आकार, अवयव, डील डौल, शरीर का ढाँचा । [ आकर्षण ।

आकृष्ट तत् ( गु० ) आकर्षित, खींचा गया, कृत आक्रान्द तत् ( पु० ) [ आ + क्रान्द्र + अल् ] रोदन, आह्वान, मयङ्कर युद्ध ।

आक्रान्द तत् ( पु० ) रोना, चिल्लाना ।

आक्रम तत् ( पु० ) [ आ + क्रम + अल् ] पराक्रम, आक्रमण, चढ़ाई, अतिक्रम, क्रान्ति ।—या ( पु० ) [ आ + क्रम् + अनट् ] आक्रम, बलात्कार, चढ़ाई करना, ऊपर गिरना, व्यापना, फैलना ।

आक्रान्त तत् ( गु० ) [ आ + क्रम् + क् ] चलवान् के द्वारा गृहीत, कृत आक्रमण, जिसके ऊपर आक्रमण किया जाय, प्रस्त, घेरा हुआ ।

आक्रोड तत् ( पु० ) राजा का उपवन, राजमहल के समीप का बाग़ राजाओं का साधारण वन ।—न ( पु० ) [ आ + क्रीड + अनट् ] मृगया, शिकार, आखेट ।

आक्रोश तत् ( पु० ) [ आ + क्रुश् + अल् ] क्रोधवश कर्तव्याकर्तव्य विचार का भूल जाना, आक्षेप, शाय, राग, कोप, क्रोध ।—न ( पु० ) [ आ + क्रुश् + अनट् ] अभिशाप, कट्टाक, अस्त्रेना, अभिसम्प्राप्त ।

आक्रान्त तत् ( गु० ) [ आ + क्रम् + क् ] शान्त अतिशय ह्रान्तियुक्त, अवसन्न, खिन्न, शान्तियुक्त । आक्षेप तत् ( पु० ) फेंकना, गिराना, दोष लगाना, ब्यक्त, ताना ।

आखण्ड तत् ( गु० ) समुदय, खण्डरहित, सम्पूर्ण । आखण्डज तत् ( पु० ) [ आ + खण्ड + जल् ] इन्द्र, सहस्राक्ष, शचीपति, देवराज ।

आखत ( पु० ) घटत, नेग विरोध जो कमीने या नेगियों को दिया जाता है ।

आखता दे० ( वि० ) पुँसत्वहीन, बभिया किया हुआ ।

आखा तद् ( पु० ) चलनी, बोरा, गठिया ।

आखात—तद् ( पु० ) [ आ + खन् + क् ] देवछात, देवनिर्मित जलाशय, झील ।

आखातीज तद् ( स्त्री० ) अक्षय तृतीया, वैशाखशुक्ल ३ ।

आखिर ( घ० ) अन्तिम, पिछला, समाप्त ।

आखिरकार ( गु० ) अन्त में ।

आखिरी ( वि० ) अन्तिम ।

आखु तत् ( पु० ) [ आ + खन् + ह् ] सूँसा, घेर ।

आखेट तत् ( पु० ) मृगया, अडैर, शिकार ।—क ( पु० ) व्याघ्र, बहेदिया, ( गु० ) घन्वेपित, भयानक ।

आख्या तत् ( स्त्री० ) नाम, संज्ञा, अभिधान ।—त ( गु० ) कथित, उक्त, प्रसिद्ध, व्याकरण का धातु प्रकरण ।—नक ( पु० ) नाम, संज्ञा, इतिहास, उपन्यास, कथन ।—नक ( पु० ) बर्णन, वृत्तान्त ।

आख्यायिका तद् ( स्त्री० ) [ आ + ख्या + इक् + आ ] उपलब्धार्थ कथा, इतिहास, उपन्यास, उपकथा, कहानी ।

आग तद् ( स्त्री० ) अग्नि, धनल, आगी । ( सुधा० )—उठाना झगडा करना ।—का पुतला महाकौपी ।—खाना, अंगार हंगना जैसी करनी बैसी भरनी ।—देना ( कि० ) शय का अग्नि संस्कार करना ।—पानी का चैर स्वाभाविक शत्रुता ।—फाँकना—झूठी डींगें हाँकना ।—धुल्ला होना—अथर्व कुपित होना ।—बरसना बड़ी गर्मी पड़ना ।—में पानी डालना—झगडा निपटाना ।—जगाकर तमाशा देखना—दूसरों को लड़वा कर स्वयं प्रसन्न होना ।—को आग भूल ।—होना तद् ( कि० ) गरमाना, क्रुद्ध होना ।

आगत तद् ( गु० ) [ आ + गम् + क् ] पहुँचा, उपस्थित, सम्मुख, आयात, आया हुआ ।—स्वागत ( पु० ) आदर संस्कार ।

आगन्तुक तत् ( गु० ) अनित्य स्थायी, अघातक आया हुआ, अतिथि ।—ज्वर ( पु० ) पीड़ा विरोध, आकस्मिक ज्वर, धातु प्रकोप के बिना ज्वर ।

आगम तद् ( पु० ) [ आ + गम् + अल् ] आगमन, व्याकरण के मत से प्रकृति प्रत्यय के मध्य में होने वाले कार्य, तन्त्रशास्त्र, वेद, तन्त्र, भविष्यत् । कहते हैं कि ऋषि, दुर्गा और विष्णु के द्वारा प्रस्तुत शास्त्र आगम कहे जाते हैं ।—श तद् ( गु० ) वेदश, तन्त्रवेत्ता ।—न ( पु० ) [ आ + गम् + अनट् ] पहुँचना, उपस्थित होना, आना ।

—लोक तत्त्वं (गु०) [ आग्रह + उक्त ] तन्त्रशास्त्र  
विहित कर्म, तान्त्रिक उपासना, शास्त्रोक्त ।—  
यक्ता तत्त्वं (गु०) आग्रहज्ञानी ।—आधना तत्त्वं  
(क्रि०) भावी को श्रेष्ठ करना, भावी के लिये  
सोचना, आग्रह कहना, भावी कहना ।—सोची  
(गु०) अग्रसोची, दूरदर्शी ।  
आगलान्त तत्त्वं (गु०) गले तक, कण्ठपर्यन्त ।—  
आगा तत्त्वं (गु०) अग्र, सामना, अग्रवाङ्मा ।—“पीछा  
करना” (क्रि०) तद् संशयित होना, दुविधा में  
पड़ना, हिचकना ।  
आगा दे० (गु०) काबुलिया ।  
आगामी तत्त्वं (गु०) [ आ + गम् + ई ] आने वाला,  
आगे आनेवाला, भावी ।  
आगाड़ी तत्त्वं (खी०) घोड़े की गरदन की रस्ती ।  
आगर तत्त्वं (गु०) चतुर, जानकार, जानने वाला,  
नागर, सयाना, पूर्ण । (खी०) आगारी ।  
आगार तत्त्वं (गु०) घर, गृह, मकान ।  
आगिल तत्त्वं (गु०) अगिला, होनहार, भविष्यत्,  
अग्रसर, अग्रगामी ।  
आगी तत्त्वं (देखो आग ) [दिहना तक ।  
आगुल्ल तत्त्वं (गु०) [ आ + गुल्फ ] गुल्फ पर्यन्त,  
आगू तत्त्वं (क्रि० वि०) सामने, सम्मुख, आगे,  
आगाज ।  
आगे (क्रि० वि०) पहिले, सामने, सम्मुख, तब, फिर,  
यद कर ।—पीछे अग्रपश्चात्, आगे, पीछे, पूर्वापर,  
एक आगे एक पीछे, क्रमशः । (सुहा०)—करना  
—अगुआ बनना ।—आगे—घोड़े दिनें पीछे ।—  
का कदम पीछे पड़ना—अवनति होना, पीछे  
हटना ।—रखना—भेंट करना ।—से भविष्य में ।  
आशीघ्र तत्त्वं (गु०) [ आशि + इन्ध + र ] यज्ञ, अग्नि  
रखने का स्थान, होता का गृह, घन के द्वारा  
वरण किया जाने वाला ऋत्विक् ।  
आश्रेय तत्त्वं (गु०) स्वर्ग, दिक् विशेष, रक्त, धृत,  
अग्रस्य मुनि, पाचक, अग्नि संवन्धीय, अग्नि तुल्य ।  
—आर तत्त्वं (गु०) [ आश्रेय + अर ] अग्निशाय,  
अग्न्यार, बन्दूक ।—(खी०) अग्निशोक, अग्नि  
की स्त्री स्वाहा ।—गिरि तत्त्वं (गु०) धधकने  
वाले पर्वत, ज्वालामुखी ।

आग्रह तत्त्वं (गु०) [ आ + ग्रह + अल ] अतिशय यत्न,  
प्रयास, अनुग्रह, आसक्ति, आक्रमण, ग्रहण, उप-  
कार, साहस ।—(वि०) हठी ।  
आग्रहायण तत्त्वं (गु०) [ आ + ग्रह + अय + अनट् ]  
मार्गशीर्षमास, अग्रहन मास, किसी के मत में  
वर्ष का पहला मास ।—(खी०) [आग्रहायण  
+ इष्टि] नवाग्र भक्षण, नूतन अन्न का प्रारम्भ ।  
आघात तत्त्वं (गु०) [ आ + हन् शिच् + क ] हनन,  
बध, चोट, कोप, अपचय, प्रहार, बधस्थान ।  
आघार तत्त्वं (गु०) धूप, घृत, छिड़काव, हवि, मंत्र  
विशेष से किसी देव विशेष को घृत प्रदान ।  
आघूर्णन तत्त्वं (गु०) [ आ + घूर्ण + अनट् ] चक्र के  
समान घूमना, फिरना, चक्कर खाना ।  
आघूर्णित तत्त्वं (गु०) [ आ + घूर्ण + क ] घूमता  
हुआ, घुमाया हुआ ।  
आघोषण तत्त्वं (गु०) [ आ + घुप् + अनट् ] प्रचारण,  
प्रकाश करण, घोषणा करना, सुनादी करना ।  
आघ्राण तत्त्वं (गु०) [ आ + घ्रा + अनट् ] गन्धग्रहण,  
सूँघना, वृत्ति ।—(ह्रि०) [ आघ्राण + अर्ह ]  
गन्ध ग्रहण के योग्य, सुगन्ध लेने के उपयुक्त ।  
आघ्रात तत्त्वं (गु०) [ आ + घ्रा + क ] सूँघा हुआ ।  
आघ्रेय तत्त्वं (गु०) [ आ + घ्रा + य ] सूँघने के  
योग्य, सूँघने के लिये उपयोगी ।  
आङ्गिक तत्त्वं (गु०) अङ्ग निष्पन्न भाव, बाह्य  
विशेष, अङ्गों के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित  
करना, शारीरिक, शरीरसम्बन्धी ।  
आचका तत्त्वं अग्रहित, अकस्मात्, हठात् ।  
आचातुर्य तत्त्वं (गु०) अनाडीपना, अनियुक्ता ।  
आचमन (गु०) नित्य किये जाने वाले कर्मों के पहले  
जल द्वारा थोड़ा जल हथेली पर रख कर पीना ।  
—(खी०) चमचिया । [अकस्मात्, दैवात् ।  
आचमिन्त तत्त्वं (गु०) हठात्, अद्भुत, अचरज,  
आचरज दे० (गु०) आश्चर्य, अचम्भा ।  
आचरण तत्त्वं (गु०) चलन, व्यवहार, रीति, चाल,  
आचार, लौकिक कर्म—(खी०) तत्त्वं (गु०) [ आ +  
चर + अनिय ] अचार के योग्य, व्यवहार्य ।  
आचरित तत्त्वं (गु०) [ आ + + क ]  
कृतारण्य, व्यवहृत ।

आचर्य तत् ( गु० ) [ आ + चर + या ] आचरणीय,  
कर्तव्य, करणीय ।  
आचार तत् ( पु० ) [ आ + चर + घञ् ] व्यवहार,  
चरित्र, वृत्त, शील, रीति, स्नान, आचमन आदि ।  
—चर्जित तत् ( गु० ) आचाररहित, अनाचारी ।  
—विरुद्ध तत् ( गु० ) व्यवहार विरुद्ध, कुरीति ।  
आचारी तत् ( पु० ) शास्त्रीय, आचार रखने वाला,  
शास्त्र के अनुसार चलने वाला, साम्प्रदायिक पुरुष  
विशेष, आचार विशिष्ट पुरुष, आचाराश्रित पुरुष ।  
आचार्य तत् ( पु० ) [ आ + चर + ध्या ] वेदा-  
भ्यासक, वेदोपदेष्टा, शिक्षादाता, पाठगुरु, शिक्षा-  
आचार और धर्म की शिक्षा देने वाला ।—मिश्र  
तत् ( गु० ) भार्य, पूजनीय, गुरु :—( स्त्री० )  
मन्त्रों की व्याख्या करने वाली, उपदेशदात्री ।  
—आशी तत् ( स्त्री० ) आचार्य स्त्री, गुरुपत्नी ।  
आचोट तत् ( स्त्री० ) आघात, छत, विद्युत, घाव,  
अनाकृष्ट, बिना जोड़ी भूमि ।  
आच्छाद तत् ( पु० ) [ आ + छद् + क ] आच्छादित  
आवृत, व्याप्त, वेष्टित, रक्षित, विषाघ, ढका ।  
आच्छा तत् ( प्र० ) स्वीकारार्थक, उत्तम, अङ्गीकार,  
अच्छा ।  
आच्छादक तत् ( पु० ) [ आ + छद् + क्त ] आवरण-  
कर्ता, गोपनकारी, ढकने वाला ।  
आच्छादन तत् ( पु० ) घट्ट, परिधान, आवरण, ढकना,  
आच्छादित तत् ( गु० ) कृताच्छादन, आवृत, ढका  
हुआ ।  
आच्छाद्य तत् ( पु० ) [ आ + छद् + ध्यञ् ] आच्छा-  
दनीय, आवृत करने के योग्य, ढकने के योग्य ।  
आच्छिन्न तत् ( पु० ) [ आ + छिद् + क ] छेदना,  
काटना, कर्तन ।  
आकृत दे० ( कि० वि० ) होते हुए, रहते हुए ।  
आकृता दे० ( कि० ) रहना, होना । [ नीक्री, भली ।  
आक्री तत् ( स्त्री० ) अच्छी, उत्तमा, सुधर, बढ़िया,  
आज तत् ( प्र० ) अद्य, धन्य, अभी, वर्तमान दिन ।  
—फल तत् ( प्र० ) इन दिनों में, कुछ दिनों—कल  
करना तत् ( कि० ) हूँ, करना, रखमशाल करना ।  
आजन तत् ( पु० ) काजल, सुरमा, अंजन आँख में  
लगाने की दवाई विशेष ।

आजन्म तत् ( पु० ) [ आ + जन्म ] जन्मावधि, जन्म  
से लेकर, जन्म भर, ब्रह्म भर, यावज्जीवन ।  
आजमाइश दे० ( स्त्री० ) परीचा, जाँच, परख ।  
आजमाना दे० ( कि० ) जाँचना, परखना ।  
आजमूदा दे० ( पु० ) परीक्षित ।  
आजला तद् पसर, देा हाथ भर, अग्रजि ।  
आजा तद् ( पु० ) पितामह, दादा, पिता का पिता ।  
आजाद दे० ( पु० ) स्वतंत्र, मुक्त, स्वाधीन ।  
आजाना तद् ( गु० ) अकस्मात् घाना ।  
आजानु तत् लगुना तक, जानुपर्यन्त, जानुअध्वि ।  
—बाहु तत् ( पु० ) जहापर्यन्त लम्बित बाहु,  
विशाल बाहु सामुद्रिक शास्त्र में आजानु बाहु  
होना एक शुभ लक्षण समझा जाता है ।  
आजि तत् ( स्त्री० ) युद्ध, समान भूमि, लड़ाई,  
संग्राम, रथ, आश्वेप, आक्रोश, गमन, गति ।  
आजी तत् ( स्त्री० ) दादी, पितामही, पिता की माता ।  
आजीव तत् ( पु० ) जीविका, जीवनेपाय, वृत्ति,  
बन्धान—कि तत् ( स्त्री० ) वृत्ति, बन्धान,  
रोड़ी ।  
आजीवी तत् ( पु० ) उपजीवी, उपजीवक ।  
आजु दे० ( पु० ) आज, वर्तमान दिवस ।  
आजु तत् ( स्त्री० ) बिना वेतन के काम करने वाला,  
बेगार, अवैतनिक, अवेतन । [ आदेशित, निर्देशित ।  
आहस तत् ( पु० ) [ आ + जप् + क ] अनुमति  
प्राप्त ।  
आहसित तत् ( स्त्री० ) [ आ + जप् + क्ति ] आदेश,  
निर्देश, विधि, आज्ञा ।  
आज्ञा तत् ( स्त्री० ) आदेश, निर्देश, अनुमति, आज्ञा,  
—कारी तत् ( पु० ) आज्ञा के अनुसार काम  
करने वाला, आज्ञाबद्ध, आज्ञानुवर्ती, अनुमति-  
पालक ।—चक्र तत् ( पु० ) पट्टचक्रों में से  
छद्वाँ चक्र ।—तिक्रम तत् ( पु० ) [ आज्ञा +  
अतिक्रम ] आदेशातिक्रम, आज्ञाह्न, हुकुम चङ्क्री ।  
—दायक तत् ( पु० ) अनुमतिकारी, आदेशकर्ता ।  
—नुवर्तन तत् ( पु० ) [ आज्ञा + अनुवर्तन ] आज्ञा  
के अनुसार चलना ।—घ्न तत् ( पु० ) आदेश-  
क्षिपि, निर्देश क्षिप्त, हुकुमनामा ।—प्रतिघात  
तत् ( पु० ) स्वामिदोह, राजशासन त्याग ।

—वर्ती तद् ( गु० ) आज्ञा के वश, आज्ञावह, आज्ञाधीन । [कारक, आज्ञा कर्ता, स्वामी ।

प्राज्ञापक तद् ( गु० ) [ आ + ज्ञा + यिच् ] आदेश-प्राज्ञापन तद् ( पु० ) [ आ + ज्ञा + यिच् + भट् ] अनुमतिकरण, आदेश करना ।

प्राज्य तद् ( पु० ) [ आ + ज्ञ + य ] वी, घत, इवि ।—प ( पु० ) पितृशोक विशेष, घृतमोजी ।

प्राञ्जनेय तद् ( पु० ) अञ्जनी चानरी का पुत्र, हनुमान ।

प्राटा तद् ( स्त्री० ) पिसान, मूजी, चूत । ( मुहा० ) —दाल का भाव मालूम होगा दुनियावी बातों में परिचय होना ।

प्राटोप तद् ( पु० ) [ आ + टुप् + अल् ] दर्प, गर्व, अहङ्कार, वायुजन्म बदर शब्द ।

प्राठ तद् ( गु० ) संख्या विशेष, अष्ट, ८, चार का दूना ।—पहर ( पु० ) आठवाग, दिनरात ।—चाँ अष्टम् । [ लंगोटी ।

प्राड तद् ( स्त्री० ) परदा, रोक, ओठ ।—वँद ( पु० ) प्राडस्वर तद् ( पु० ) खटला, उधोग, पटह, तुर्यश्व

हाथी का शब्द, पक्ष्म, दर्प, हर्ष, समारोह, घटा, अङ्गमार्जन, क्रोध ।—री ( गु० ) काम्भिक, समारोही, घटा वाला, हर्षवाला, अहङ्कारी ।

प्राड़ा तद् ( गु० ) देका, तिरछा, बाँका ।

प्रातायी तद् ( गु० ) धूर्त, शठ, ( पु० ) पक्षि विशेष, चील ।

प्रातायीपन तद् ( पु० ) धूर्तता, खसता, शठता ।

प्रातिथेय तद् ( गु० ) अतिथि-सेवा-कारक, अतिथि-पूजन, अतिथि सेवा की सामग्री, अग्न्यागत का सम्मान करने वाला ।

प्रातिथ्य तद् ( पु० ) अतिथि के भोजन आदि के पदार्थ, अतिथि-सेवा । [ से उपस्थित ।

प्रातिदेशिक तद् ( गु० ) अतिदेश प्राप्त, दूसरे प्रकार प्रातीपाती दे० ( स्त्री० ) झड़कों का एक देशी खेल ।

प्रातिशय्य तद् ( पु० ) आधिक्य, अतिरेक, बहुत ही ।

प्रातुर तद् ( गु० ) रोगी, पीड़ित, गति शक्ति रहित, कातर, व्याकुल, अस्थिर ।—ता तद् ( स्त्री० ) व्याकुलता, घषड़ाहट, बेवैनी ।—ताई तद् ( स्त्री० )

प्यप्रता, अतापलापन ।

प्रातू तद् ( स्त्री० ) गुरुवायन, पण्डितायन ।

प्रातोद्य तद् ( पु० ) [ आ + तुद् + य् ] वाद्य, वीणा, सुरज, वंश का शब्द, चतुर्विध वाद्य ।

प्रात्त तद् ( गु० ) [ आ + दा + क्त ] गृहीत, प्राप्त, पकड़ लिया गया ।—गन्ध तद् ( गु० ) गृहीत गन्ध, इतदर्प, अभिभूत, पराजित ।—गर्व तद् ( गु० ) खण्डित गर्व, अहङ्कार पूर्ण भ्रमदर्प ।

प्रात्म तद् ( पु० ) निज, अपना, स्वीय, जीव ।—

कलह तद् ( पु० ) [ आत्मन् + कलह ] मित्रों के साथ विवाद, गृहकलह ।—कार्य तद् ( पु० ) [ आत्मन् + कार्य ] अपना काम, गोपनीय कार्य ।

—गरिमा तद् ( स्त्री० ) [ आत्मन् + गरिमा ]

आत्मश्लावा, दर्प, अहङ्कार ।—ग्राही तद् ( गु० )

[ आत्मन् + ग्रह + यिन् ] आत्मभरती, स्वार्थ पर,

स्वार्थी ।—घात तद् ( पु० ) [ आत्मन् + घात ]

आत्महत्या, स्वयंमरण, अपने किये वषाय से

मरण ।—ज तद् ( पु० ) [ आत्मन् + जन् + ड ]

पुत्र, सन्तान, बेटा । ( पु० ) स्त्रीपक्ष ।—जन्मा

तद् ( पु० ) [ आत्मन् + जन् + मन् ] पुत्र, तनय,

सन्तान ।—जा तद् ( स्त्री० ) [ आत्मन् + जन् +

ड + आ ] कन्या, पुत्री, दुहिता, बृद्धि ।—ज्ञान

तद् ( पु० ) [ आत्मन् + ज्ञा + ज्ञनट् ] ब्रह्म विषयक

प्राड़ी तद् ( गु० ) रचक, स्वरविशेष ।

प्राडेप्राना तद् ( क्रि० ) बचाव करना, वाधक होना,

वाधा डालना, काम थाना ।

प्राढ दे० ( पु० ) चार सेर की सौल ( स्त्री० ) ओट, परदा ।

प्राढ्य तद् ( गु० ) धनवान्, धनी, धनयुक्त, विशिष्ट,

अम्बित, धनाढ्य, गुणाढ्य, सम्पन्न ।

प्राढक तद् ( पु० ) परिमाण, विशेष, चार सेर ।

प्राढत तद् ( स्त्री० ) अट्टा, माल का चालान, चालान

करने का स्थान ।

प्राढतिया तद् ( पु० ) व्यापारी विशेष, वह व्यापारी

जो दूसरे व्यापारी के बदले कुछ कमीशन लेकर

माल खरीदे या खरिदवा दे ।

प्राणि तद् ( पु० ) [ प्राण् + ई ] कोन, अस्ति, सीमा ।

प्रातङ्क तद् ( पु० ) आतङ्क, आशङ्क, भय, रोग, पीड़ा ।

प्रातत तद् ( गु० ) आरोपित, विस्तारित ।

प्राततायी तद् ( गु० ) [ आतत + अय् + यिन् ]

आहत तत् (गुं) [आ + द + क्त] आदराग्नित,  
सादर सम्मानित, पूजित, अर्चित ।

आदेय तत् (वि०) लेने के योग्य ।

आदेश तत् (पुं) [आ + दिश् + भञ्] आज्ञा, मर्जी,  
हुक्म, अनुमति, व्याकरण में एक वर्ण के स्थान  
दूसरे वर्ण की उत्पत्ति, प्रकृति और प्रत्यय को  
मिलाने वाले कार्य, ज्योतिष-शास्त्र का फल,  
फलादेश ।—तत् (पुं) आज्ञापक, आज्ञाकारक  
गणक, दैवज्ञ ।—प्य तत् (पुं) [आ + दिश् +  
तृण] पुरोहित, आजक, आज्ञाकारक, आदेशकर्ता ।

आदेश तत् (पुं) देखो आदेश ।

आदौ तत् (अ०) प्रथम आगे, यादि ।

आद्य तत् (पुं) प्रथम, अगला, पहिला, मोजनीय  
द्रव्य ।—कवि (पुं) वाल्मीकि मुनि, प्रह्ला ।

आद्यन्त तत् (गुं) [आदि + अन् + क्त] प्रथम और  
अन्त, प्रथम से लेकर शेष पर्यन्त, आद्योपान्त,  
आदि अन्त । [अन्त तत्, समस्त, सम्पूर्ण ।

आद्योपान्त तत् (गुं) [आद्य + उपान्त] प्रारम्भ से  
आद्या तत् (स्त्री०) छठे नक्षत्र का नाम ।

आधा तत् (पुं) आधा, अर्द्ध, अर्ध, बराबर भाग ।  
—कपाली (पुं) शिरोगेग विशेष, अर्द्धसिरो-  
वेदना, अभासीसी ।

आधान तत् (पुं) धारण, समर्पण, स्थापित  
द्रव्य अग्न्याधान, गर्माधान ।—कि तत् (गुं)  
[आ + धान + क्त] गर्माधान संस्कार ।

आधार तत् (पुं) आश्रय, आहार, अधिकरण, पात्र,  
अभ्युधारण, वृक्ष का आलयाल ।

आधासीसी तत् (स्त्री०) अषकपाली, आधे सिर में  
पीड़ा, रोग विशेष ।

आधि तत् (पुं) [अ + ध्व + कि] मनः पीडा,  
स्वप्न, बन्धक, प्रत्याशा, आधार । [अतिशय ।

आधिक्य तत् (पुं) बहुतायत, अधिक, अधिकत्व,  
आधिदैविक तत् (गुं) देवप्रयुक्त, दैवाधीन, बोद्ध-  
पदार्थ, बुद्धिसम्बन्धी । [अधिकार

आधिपत्य तत् (पुं) स्वामित्व, प्रभुत्व, ऐश्वर्य  
आधिभौतिक तत् (गुं) जो मूर्तों या तत्त्वों के  
सम्बन्ध से उत्पन्न हो, व्याप्त सर्वादि जीवों कृत ।

आधिदैविक तत् (गुं) द्वितीय विवाह के लिये,  
प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन ।

आधीन तत् (गुं) आज्ञाकारी, वश, नम्र, स्वाधि-  
कार युक्त, वशवर्ती ।—ता तत् (स्त्री०) वश-  
वर्ती, अधीनार्ह । [समय बीत जाय ।

आधीरात तत् (स्त्री०) वह समय जब रात का आधा  
आधुनिक तत् (गुं) इदानीन्तन, साम्प्रतिक, अधु-  
नातन, नवीन, नव्य, टटका, अभी का, नया ।

आधूत तत् (गुं) [आ + धू + क्त] हैपरकम्पित,  
व्याकुल-कम्पित, चाकित । [का आधा ।

आधेआध तत् (पुं) आधी आध, अर्द्धार्द्ध, आधे  
आधेक तत् (पुं) अर्द्धभाग, तुल्य दो भागों का  
एक भाग । [एक हो ।

आधेय तत् (गुं) [अ + धा + य] जो आधार का  
आधोरण तत् (पुं) [आ + धोर + अनट्] हस्तिक,  
महावत, हाथीवान, हाथी चलाने वाला ।

आध्यात तत् (गुं) [आ + ध्या + क्त] शब्दित,  
दृश्य, अग्नि संयोगान्वित, (पुं) बात रोग  
विशेष, युद्ध, संयत ।

आध्यान् तत् (पुं) [आ + ध्या + अनट्] वायु-  
रोग, वायु से घेटी फूलना । [मनसम्बन्धी ।

आध्यात्मिक तत् (गुं) आत्माभित, आत्मासम्बन्धी,  
आध्यान तत् (पुं) [आ + ध्या + अनट्] ध्यान,  
चिन्ता, स्मरण, दुर्भावना, अनुसोचना, उत्कण्ठा  
पूर्वक स्मरण । [प्राप्त्य, प्रायेय, मार्गव्यय ।

आध्वनीन तत् (पुं) [अध्वन + ईन] पयिक,  
आन तत् (स्त्री०) और, अन्य, प्रतिज्ञा, उल्लास,  
बहिर्मुख आस, मित्र, शपथ, कृतम, सौगंद ।  
(किं) लाकर ।

आनक तत् (पुं) [आन् + यक्] पटह, भेरी,  
सुदह, ढक्क, गरजता हुआ बादल ।

आनक-दुन्दुभि तत् (पुं) [आनक + दुन्दुभि]  
श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव, वृहद् भेरी, बड़ा  
नगाड़ा ।

आनत तत् (गुं) लाता है, ले आता है, लाते हो ।

आनत तत् (गुं) [आ + नम् + क्त] अवपन्न,  
अवपन्न हुआ हुआ, लाता है, ले आता है,  
लाते ही ।

सात करना (क्रि०) हलम कर जाना, हलप जाना ।  
—हत्या तत्० (स्त्री०) [आत्मन् + हन् + क्यप्]  
आत्मघात, स्ववध ।—ह्रा तत्० (पु०) [आत्मन् +  
हन् + क्तिन्] अपने को मारने वाला, आत्मघाती,  
अपने प्रयत्न से मृत ।—हिंसा (स्त्री०)  
आत्महत्या ।

आत्मा तत्० (पु०) [आ + अत् + मन्] यत्, धृति,  
बुद्धि, स्वभाव, ग्रह, देह, मन, पुत्र, जीव, अर्क,  
हुताशन, वायु ।—मिमत् (गु०) [आत्मन् +  
अभिमत्] आत्मसम्मत, अपना मतानुयायी ।  
[नीट संस्कृत में यह शब्द पुलिङ्ग है, किन्तु हिन्दी  
वाले इसका व्यवहार स्त्रीलिङ्ग में करते हैं]

आत्मिक तत्० (गु०) मन का, अपना, प्यारा ।  
आत्मीय तत्० (गु०) [आत्मन् + ईय] स्वकीय, अन्त-  
रङ्ग, स्वजन, आत्मजन ।—ता तत्० (स्त्री०)  
हृषता, बन्धुता, अन्तरङ्गता, सद्भाव, प्रणय ।

आत्मोत्कर्ष तत्० (पु०) [आत्मन् + उत्कर्ष] अपनी  
श्रेष्ठता, अपनी प्रभुता, अपनी यशसाई ।

आत्मोद्धार तत्० (पु०) मोक्ष, अपना उद्धार ।

आत्मोद्भाव तत्० (स्त्री०) [आत्मन् + उद्भाव] कन्या,  
पुत्री, आत्मजा ।

आत्मोन्नति तत्० (स्त्री०) अपनी बढ़ती ।

आत्यन्तिक तत्० (गु०) [अत्यन्त + इक्] अतिशय,  
विस्तार, प्रचुर, अधिक ।

आत्रेय तत्० (पु०) अग्नि मुनि का पुत्र, दुर्वासा,  
पन्द्र, शरीरस्य रस, धातु ।—ी तत्० (स्त्री०)  
नदी विशेष, आपि-पत्नी विशेष । [समूह ।

आयर्वण तत्० (पु०) अथर्व वेदश ब्राह्मण, अथर्व

आदत् दे० (स्त्री०) स्वभाव, देव, धान ।

आदमियत दे० (पु०) मनुष्यत्व ।

आदमी दे० (पु०) आदम का सन्तान, आदम की  
छोटाद, नर, मनुष्य, मानव ।

आद्वान्त तत्० (गु०) आरम्भ से समाप्ति पर्यन्त,  
आदि से अन्त तक ।

आद्वर तत्० (पु०) [आ + इ + अल्] आस्था,  
सम्मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा, खातिर ।—णीय तत्०  
(गु०) सम्मानार्ह, मान्य, माननीय ।—भाव तत्०  
(पु०) प्रतिष्ठा, मान, सम्मान ।

आदर्श तत्० (पु०) [आ + इश् + अल्] दर्पण, सुकुर  
निर्देश, प्रतिपुस्तक, मूल पुस्तक, टीका, चिन्ह,  
नमूना ।

आदा तत्० (पु०) मूल विशेष, अदरख, अद्भुत ।

अदान तत्० (पु०) [आ + दा + अनट्] ग्रहण, लेना,  
स्वीकार, रोगलक्षण ।—प्रदान तत्० (पु०)  
[आदान + प्रदान] लेन देन, त्याग ग्रहण ।

आदि तत्० (पु०) पूर्व, प्रथम, मूल, अग्र, पहिला  
आकार, उत्पत्तिस्थान, यौगैरा ।—क तत्० (अ०)  
पहिले से, इत्यादि, और सब ।—कवि तत्० (पु०)  
वाल्मीकि मुनि, रामायणकर्ता, कहते हैं सर्वप्रथम  
छन्दोबद्ध कविता इन्होंने ही की थी, कौञ्च-युगल  
को देख अकस्मात् इनकी छन्दोमयी वाणी प्रका-  
शित हुई, अतएव यह आदि कवि कहे जाते हैं ।

—कारण तत्० (पु०) पहला कारण, पूर्व निमित्त,

आद्य हेतु, मूल हेतु, निदान ।—देव तत्० (पु०)

नारायण, विष्णु ।—वराह तत्० (पु०) विष्णु का

वराह अवतार ।—राज तत्० (पु०) सर्व प्रथम

राजा, पृथुराज ।—शूर तत्० (पु०) राजा विशेष

बल्लाल के सेनवंशीय राजाओं का पहिला राजा,

इस राजा का नाम वीरसेन था, परन्तु सेनवंश

का यह प्रथम राजा या इसी से इसे आदिशूर भी

कहते हैं । पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिये इसी राजा ने

कन्नौज से पाँच वेदश ब्राह्मण बुलवाये थे, उस

समय बौद्धधर्म की प्रचलता के कारण बल्लाल में

वेदश ब्राह्मणों का अत्यन्त अभाव हो गया था ।

आदित्य तत्० (पु०) देवता, सूर्य, दिवाकर, अर्क पृष्ठ,

मदार या अकौश्रा का पेड़, रवि, भानु ।—चार

तत्० (पु०) सूर्यधार, सूर्य का दिन, सप्ताह का

अन्तिम दिन, इतवार ।—मण्डल तत्० (पु०) सूर्य-

मण्डल सूर्यलोक ।—सुनु तत्० (पु०) सुमीव धानर,

यम, शनैश्चर, सावर्णि मनु, वैवस्वत मनु, कर्ण ।

आदितेय तत्० (गु०) अदिति के पुत्र देवराण ।

आदिम तत्० (गु०) [आदि + मट्] आद्य, प्रथम

वर्षप्रवस्तु, पहिला ।

आदित्य तत्० (पु०) [आ + दिश् + क्] आदेशित,

आज्ञप्त, अनुमत, कथित, मासोपदेश, गृहीत आज्ञा ।

आदी दे० (पु०) अद्भुत (वि०) अश्वस्त ।

आहत तत्० (गु०) [आ + ह + क] आदरावित,  
सादर सम्मानित, पूजित, अर्पित ।

आदेय तत्० (वि०) देने के योग्य ।

आदेश तत्० (प्र०) [आ + दिश् + भल] आज्ञा, मर्जी,  
इश्वर, अनुमति, स्वीकार्य में एक वर्ष के स्थान  
दूसरे वर्ष की शरति, प्रकृति और प्रलय को  
मिलाने वाले कार्य, ज्योतिष-शास्त्र का फल,  
फलादेश । — १ तत्० (प्र०) आज्ञापक, आज्ञाकारक  
गणक, दैवज्ञ । — २ तत्० (प्र०) [आ + दिश् +  
लृ] पुरोहित, आज्ञा, आज्ञाकारक, आदेशकर्ता ।

आदेश तत्० (प्र०) देखो आदेश ।

आदेश तत्० (प्र०) प्रथम आदेश, आदि ।

आद्य तत्० (प्र०) प्रथम, अगला, पहिला, भोजनीय  
द्रव्य । — कवि (प्र०) वाक्कीर्ति मुनि, प्रह्ला ।

आद्यन्त तत्० (गु०) [आदि + अन् + क] प्रथम और  
अन्त, प्रथम से लेकर शेष पर्यन्त, आद्योपान्त,  
आदि अन्त । [ अन्त तक, समस्त, सम्पूर्ण ]

आद्योपान्त तत्० (गु०) [आद्य + उपान्त] प्रारम्भ से  
आन्ता तत्० (स्त्री०) एते नक्षत्र का नाम ।

आघा तत्० (प्र०) आघा, अर्द्धक, अर्द्ध, वरावर भाग ।

— कपाली (प्र०) शिरोगे विरोध, अर्द्धशिर-  
वेदना, अघासीसी ।

आघात तत्० (प्र०) चारण, गर्भधारण, स्थापित  
द्रव्य अग्न्याधान, गर्भाधान । — कि तत्० (प्र०)  
[आ + धान + ह्य] गर्भाधान संस्कार ।

आधार तत्० (प्र०) आश्रय, आधार, अधिकार, पात्र,  
अनुधारण, वृष का आलवाल ।

आधासीसी तत्० (स्त्री०) अषडकपाली, आधे सिर में  
पीड़ा, रोग विरोध ।

आधि तत्० (प्र०) [अ + धी + कि] मनः पीडा,  
व्यसन, वन्धक, प्रत्याशा, आधार । [ अतिशय ।

आधिक्य तत्० (प्र०) बहुतायत, अधिक, अधिकत्व,  
आधिदैविक तत्० (प्र०) देवप्रयुक्त, देवाधीन, बोद्ध-  
पदार्थ, बुद्धिसम्बन्धी । [ अधिकार

आधिपत्य तत्० (प्र०) स्वामित्व, प्रभुत्व, पुरवर्ष  
आधिभौतिक तत्० (प्र०) जो भूतों या तत्वों के  
सम्बन्ध से उत्पन्न हो, व्याप्त सर्वादि जीवों कृत ।

आधिवेदनिक तत्० (गु०) द्वितीय विवाह के लिये,  
प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन ।

आधीन तत्० (गु०) आज्ञाकारी, वरा, नम्र, स्वाधि-  
कार युक्त, वरावर्ती । — ता तत्० (स्त्री०) वरा-  
वर्ती, अधीनार्ह । [ समय भीत जाय ।

आधीरात दे० (स्त्री०) वह समय जब रात का आधा  
आधुनिक तत्० (गु०) इदानीन्तन, साम्प्रतिक, अनु-  
नातन, नवीन, नव्य, नटका, अमी का, नया ।

आधृत तत्० (गु०) [आ + धृ + क] ईषारकम्पित,  
व्याकुल-कम्पित, आक्षिप्त । [ का आधा ।

आधेआध तत्० (प्र०) आधी आध, अर्द्धार्द्ध, आधे  
आधेक तत्० (प्र०) अर्द्धभाग, तुल्य दो भागों का  
एक भाग । [ परक हो ।

आधेय तत्० (गु०) [अ + धा + य] जो आधार का  
आधोरण तत्० (प्र०) [आ + धोर + अनट्] हस्तिपद,  
महावत, हाथीपान, हाथी चलाने वाला ।

आध्मात तत्० (गु०) [आ + ध्मा + क] शब्दित,  
दग्ध, अस्ति सेवोगान्वित, (प्र०) यात रोग  
विशेष, युद्ध, संघत ।

आध्मान तत्० (प्र०) [आ + ध्मा + अनट्] वायु-  
रोग, वायु से घेष्ट कूलना । [ मनलम्बन्धी ।

आध्यात्मिक तत्० (गु०) आरमाभित, आरमासम्बन्धी,  
आध्यान तत्० (प्र०) [आ + ध्या + अनट्] ध्यान,  
चिन्ता, स्मरण, हुमाविना, अनुशोचना, वक्तृपदा  
पूर्वक स्मरण । [ पाण्य, पाथेय, मार्गव्य ।

आध्वनीन तत्० (प्र०) [अध्वन + ईन] पथिक,  
आन तत्० (स्त्री०) और, अन्ध, प्रतिज्ञा, बहुवास,  
वदितुं आस, मित्र, शपथ, कृतम, सौगंद ।  
( कि० ) लाकर ।

आनक तत्० (प्र०) [आन् + क] पटह, भेरी,  
मृदङ्ग, ठका, गरजता हुआ बादल ।

आनक-दुन्दुभि तत्० (प्र०) [आनक + दुन्दुभि]  
श्रीकृष्ण के पिता यमुदेव, वृहद् भेरी, बड़ा  
नगाड़ा ।

आनत तत्० लाता है, ले आता है, लाते हो ।

आनत तत्० (गु०) [आ + नत् + क] अवनत,  
अत्यन्त मुका हुआ, लाता है, ले आता है,  
लाते ही ।



आनन्द तत्त्वं ( पु० ) [ आ + नन्द् + क्त ] चर्मावृत वाद्य, नगाड़ा आदि, कल्पमात्र, वेशरचना आदि, यद्, मिलित, जोड़ा हुआ ।

आनन तत्त्वं ( पु० ) [ अन् + अन् ] मुँह, मुख, आस्य, चदन, चेहरा ।—फानन दे० ( कि० वि० ) फौरन, अति शीघ्र, तुरन्त, [ नैक्य, सन्निकर्ष ।

आनन्तर्य तत्त्वं ( पु० ) पश्चाद्भाव, शेष, अनन्तरार्थ, आनन्त्य तत्त्वं ( पु० ) अपरिसीमता, असंख्यता, अत्यधिकता, बहुत ही ।

आनन्द तत्त्वं ( पु० ) [ आ + नन्द + क्त ] ह्लाद, हर्ष, सुख । ( गु० ) हर्षयुक्त, सुखी ।—कर ( गु० ) आरक्षक, सुखजनक ।—फानन ( पु० ) आनन्द-दायक वन, काशीपुर का नाम ।—चित्त तत्त्वं ( गु० ) हर्ष से प्रकुलचित्त ।—पट ( पु० ) नयी विवाहिता स्त्री का पक्ष, नवोढ़ा का कपड़ा ।

—पूर्ण तत्त्वं ( गु० ) अधिक आनन्द, समस्त आनन्द ।—प्रभव ( पु० ) रेत, वीर्य, शुक्र ।—शय्या ( स्त्री० ) नवोढ़ा शयन ।—आर्णव ( पु० ) [ आनन्द + अर्णव ] आह्लाद सागर, सुख समुद्र ।—वर्द्धन ( पु० ) यह कवि काश्मीरनिवासी और

प्रसिद्ध अलङ्कार शास्त्री थे, अवन्ति वर्मा के राज्य-काल में यह काश्मीर में वर्तमान थे, कान्यालोक, ध्वन्यालोक, सहृदयालोक नाम के ग्रन्थ संस्कृत में इन्होंने बनाये हैं । अवन्तिवर्मा सन् ८२२ मे ८८० के बीच तक रहे, आनन्दवर्द्धन का भी यही समय है ।—गिरि तत्त्वं ( पु० ) प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डित, यह शङ्कराचार्य के शिष्य थे, खूबीय नवम शताब्दी में यह उत्पन्न हुए थे, शङ्कर दिग्विजय नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया था, इसके अतिरिक्त उपनिषद्ओं का भाष्य, और श्रीमद् भगवद्गीता की टीका इन्होंने बनायी थी ।—श्रु तत्त्वं ( पु० ) [ आनन्द + श्रु ] आह्लाद, हर्ष ।—मयकोप तत्त्वं ( पु० ) पञ्चकोप के अन्तर्गत, कोपविशेष, सत्व, प्रधान, ज्ञान, कारण शरीर, सुषुप्ति । [ सुख ।

आनन्दि तत्त्वं ( पु० ) [ आनन्द + इ ] हर्ष, आह्लाद, आनन्दित तत्त्वं ( पु० ) [ आ + नन्द + क्त ] आनन्द युक्त, हर्षान्वित, हट ।

आनवान दे० ( स्त्री० ) सजावट, ठसक, बनावट । आनयन तत्त्वं ( पु० ) [ आ + नी + चन्ट ] स्थानान्तर-नयन, ले आना, लाना ।

आनर्त तत्त्वं ( पु० ) [ आ + नृत् + क्त ] देश विशेष, ह्वाकापुरी, नृत्यस्थान, युद्ध, आनर्त देशवासी मनुष्य ।

आनर्तित तत्त्वं ( गु० ) [ आ + नृत् + क्त ] कम्पित, नृत्यविशिष्ट । [ लेते आइये ।

आनवी तत्त्वं ( कि० ) लाइयो, ले आओ, ले आइये,

आनहु तत्त्वं ( कि० ) लाओ, ले आओ, उपस्थित करो ।

आना तत्त्वं ( पु० ) चार पैसा, आना, पाल आना, लोलह हिस्सा का एक हिस्सा, एक आना ।

आनाकानी तत्त्वं ( स्त्री० ) टालमटोल ।

आनाड़ी तत्त्वं ( कि० ) अनभिज्ञ, निर्बोध, अकर्मण्य,

अनाड़ी ।—पना तत्त्वं मूर्खता, अनभिज्ञता ।

आनाजाना तत्त्वं ( कि० ) आवागमन, यातायत ।

आनि ( कि० ) लाकर, ले आकर ।

आनिहो तत्त्वं ( कि० ) बाजँगा । [ ले आना ।

आनीत तत्त्वं ( गु० ) [ आ + नी + क्त ] आनयन करण,

आनुकूल्य तत्त्वं ( पु० ) अनुकूलता, सहायता ।

आनुपूर्व तत्त्वं ( पु० स्त्री० ) क्रमिक, अनुक्रम, क्रमागत, पर्याय, टब ।—री ( स्त्री० ) परिपाटी, अनुक्रम, क्रमानुगत, क्रमानुसार, एक के बाद दूसरा ।

आनुमानिक तत्त्वं ( गु० ) अनुमानसिद्ध, अनुमान-गम्य, अन्दाजन । [ चले आये हो ।

आनुभविक तत्त्वं ( वि० ) जिसको परम्परा से सुनते

आनुसङ्गिक तत्त्वं ( गु० ) प्रसङ्गाधीन, साथ साथ होने वाला, प्रासङ्गिक ।

आनुशंस्य तत्त्वं ( पु० ) अनिष्टुरता, दया, स्नेह ।

आनेता तत्त्वं ( पु० ) [ आ + नी + क्त ] आनयन, कर्ता, आहरण-कर्ता ।

आन्तरिक तत्त्वं ( गु० ) अन्तःकरण सम्बन्धी, अन्तरस्थ, मनोगत, मानसिक ।

आन्दु तत्त्वं ( पु० ) हाथी बान्धने की जंजीर ।

आन्दोलन तत्त्वं ( पु० ) [ आन्दोल + अनट ] झूलन, अनुशीलन, कम्पन, इधर उधर जाना, चलन, धार धार कथन, ध्यान, पुनः पुनः ।

आन्वीक्षिकी तत् ( स्त्री० ) न्यायशास्त्र ।

आन्न तद् ( कि० ) आनयन करना, ले आना ।

आप तद् स्वयं, सुद, तुम, जल, पानी । आपः तद् ( पु० ) [ आप् + अस् ] अष्ट वस्तुओं में एक, जल । [ दे० ( स्त्री० पु० ) स्वार्थी ।

आपकाज तद् ( गुं० ) आपकाजी, स्वार्थी ।

आपगा तद् ( स्त्री० ) [ आप् + गम् + ड + अ ] नदी, स्रोतस्थिनी ।

आपण तद् ( पु० ) [ आ + पण् + अल ] पण्य, विक्रयशाला, दुकान, डाट, बाज़ार ।—कि ( पु० ) वयिक, व्यवसाई, दुकानदार ।

आपजनक तद् ( गु० ) [ आपद् + जनक ] वीपद्-जनक, अनिष्टकारी । [ वलेश ।

आपत आपत्ति तद् ( स्त्री० ) विपत्ति, दुःख, आपद् या आपदा तद् ( स्त्री० ) विपद्, विपत्ति, दुःख का समय ।—ग्रस्त तद् ( गु० ) विपद्, आपत्ति में कैसा हुआ ।

आपन ( दे० ) अपना, निज ।

आपनिक तद् ( पु० ) पन्नग, पन्ना, मरकत, इन्द्र, नीलमणि, देश विशेष ।

आपन्न तद् ( गु० ) प्राप्त शरण्य, अभागा, आपदग्रस्त, आपदग्रस्त, सङ्कट में पड़ा हुआ ।—सत्त्वा तद् ( स्त्री० ) [ आपन्न + सत्त्व + आ ] गर्भवती ।—नाश तद् ( पु० ) [ आप + नश् + घञ् ] आपद नाश, विपत्ति नाश ।

आपमित्यक तद् ( पु० ) [ अपमित + अक् ] विनिमय प्राप्त, बदला किया हुआ, गृहीत द्रव्य ।

आपरूप तद् ( पु० ) आप, ईश्वर, साधार ।

आपस तद् ( पु० ) परस्पर, आप सय, निज, स्वयं ।

आपसा तद् ( स्त्री० ) आप समान, अपने जैसा ।

आपा तद् ( स्त्री० ) बड़ी बहिन, आपही, अपनी सत्ता, अहङ्कार, सुध दुध ।

आपाक् तद् ( पु० ) अवा, पजावा कुम्हारों के मिट्टी के बर्तन पकाने का स्थान, आधा । [ समान ।

आपाततः तद् ( अ० ) सम्प्रति, इस समय के

आपाद-पर्यन्त तद् ( अ० ) मस्तक

पर्यन्त, पैर से लेकर सिर

आपादमस्तक तद् ( पु० ) चरणावधि सिर पर्यन्त । आपाधापी दे० ( स्त्री० ) अपनी अपनी धुन, लाग डाट, खैचातानी ।

आपान तद् ( पु० ) [ आ + पा + अनट् ] मद्यपानार्थ गोष्ठी, मतवालों का मुण्ड, मद्यप, मतवाला ।

आपामर-साधारण तद् ( अ० ) [ आ + पामर + साधारण ] अन्य मनुष्यों से लेकर सभी मनुष्य, सर्वसाधारण ।

आपिञ्जर तद् ( पु० ) स्वर्ण, हेम, कनक, काश्चन ।

आपीड तद् ( पु० ) शिखास्थित माला, शेर, शिरोमाला, शिरोभूषण, मुकुट, कजरी ।

आपीन तद् ( पु० ) [ आ + पा + क ] गोस्तन, ईषत् स्थूल, गौ का धन, कठोर, मोटा, पड़ा ।

आपु ( सर्व० ) अपना ।

आपुस दे० ( पु० ) आपस, परस्पर ।

आपूर्ति तद् ( स्त्री० ) [ आ + पूर + क्ति ] ईप्स पूरण, सम्यक् पूरण । [ का आचमन ।

आपोशान तद् ( पु० ) कर्म विशेष, भोजन के पूर्व

आपृच्छा तद् ( स्त्री० ) [ आ + पृच्छ + ड + आ ] आभाषण, आलाप, जिज्ञासा, प्रश्न ।

आप्त तद् ( गु० ) [ आप् + क ] विध्वस्त, लब्ध, सत्य, यन्त्र, अत्रान्त, सच्चा, विश्वासित, किसी भी कारण से कभी भूट न धोले वाला ।—काम

तद् ( वि० ) पूर्ण काम, जिसकी समस्त कामनाएँ पूरी हो गयी हैं ।—कारी ( पु० ) [ आप्त + कृ + शिन् ] विश्वासी, विध्वस्त व्यक्ति ।—गर्वा तद् ( गु० ) आत्माहङ्कार, इम्भ विशिष्ट, दाम्भिक ।

—ग्राही तद् ( पु० ) स्थायं पर, आरम्भरि, ज्योती ।—वर्ग तद् ( पु० ) आत्मीय स्वजन, यन्त्रु बान्धव, माननीय मित्र ।—सार ( पु० ) [ आप्त + सृ + घञ् ] सामरस्य, स्वशरीर गोपन, स्वायत्त ।

आप्तोक्ति तद् ( स्त्री० ) [ आप्त + क्ति ] सिद्धान्त-वाक्य, आप्तवचन, विध्वस्त व्यक्ति का कथन ।

आप्यायित तद् ( गु० ) [ आ + प्याय + क ] गृह-प्रीत, सन्तुष्ट, आनन्दित, तर, दड़ा हुआ, रूप में बदला हुआ ।

आप्रच्छन्न तत्त्वं ( पु० ) [ आ + प्रच्छ + अनट् ] आने या जाने के समय मित्रों में परस्पर कुशल प्रश्न जनित आनन्द ।

आप्तव तत्त्वं ( पु० ) [ आ + प्लु + अल ] स्नान, अवगाहन, जलमय, सर्वत्र द्रुष्य । —प्रती तत्त्वं ( पु० ) [ आ + टव + प्रती ] स्नातक द्रौह्य, आप्लुतप्रती ।

आप्लुत तत्त्वं ( पु० ) [ आ + प्लु + क ] स्नान । ( गु० ) कृतस्नान, विहितावगाहन सिद्धि, भीमा । ( पु० ) स्नातक । —प्रती तत्त्वं ( पु० ) [ आ + प्लुत + प्रत + इति ] अक्षरार्थ त्यागान्तर जो गृहस्थ आश्रम अवलम्बन करते हैं, स्नातक ब्राह्मण, समास, वेदाध्ययन, स्नानशील ।

आफत दे० ( स्त्री० ) आपत्ति, बला, कष्ट ।  
आफू तद् ( स्त्री० ) अमल, अफीम अहिकेन ।  
आव दे० ( स्त्री० ) चमक कान्ति, उपकर्ष, महिमा, प्रतिष्ठा, गुण, छवि कारी दे० ( स्त्री० ) कलवरिया, हौली—पाशी ( स्त्री० ) लींचाई ।

आवखोरा ( पु० ) गिलास ।  
आवताय ( स्त्री० ) छवि, कान्ति, छटा ।  
आवदस्त ( पु० ) सीचना, पानी का स्पर्श करना ।  
आवदाना ( पु० ) दाना पानी ।  
आवदार दे० ( वि० ) चमकीला, घुतिमान ।  
आवनूस दे० ( पु० ) एक प्रकार का पेड़ ।  
आबादी दे० ( स्त्री० ) वस्ती, जनस्थान ।  
आवू दे० ( पु० ) आवू नामक पहाड़ ।  
आवृत्त तत्त्वं ( वि० ) वार्षिक, सालाना ।  
आम तत्त्वं ( स्त्री० ) शोभा, कान्ति, पानी ।  
आमरण तत्त्वं ( पु० ) [ आ + मृ + अनट् ] भूषण, अलङ्कार, गहना ।

आमा तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रभा, शोभा, दीप्ति, घुति, ज्योति, आलोक, उज्ज्वलता, चमक, प्रकाश, मङ्क ।  
आभार तत्त्वं ( पु० ) योक्त, गृहप्रबन्ध की देख रेख की जिम्मेदारी, पहचान, उपकार । —ती तत्त्वं ( वि० ) पहचान मानने वाला, उपकृत ।

आमाय तत्त्वं ( पु० ) [ आ + माय् + अल ] भूमिका, अनुष्ठान, उपक्रमणिका, प्रबन्ध, सम्भाष ।  
आमापण तत्त्वं ( पु० ) [ आ + माप् + अनट् ] आलापन, कथन, सम्भाषण ।

आमास तत्त्वं ( पु० ) [ आ + मास् + अल् ] सदश, प्रतिदिन, छाया, कलक, पता, मिथ्याज्ञान, दीप्तिदोष, अभिप्राय, अवतरणिका । [ विशेष ।

आमास्वर तत्त्वं ( पु० ) चौसठ संवत्, गण देवता आभिचारक तत्त्वं ( पु० ) [ अभि + चर + शक ] अभिचारकर्ता, हिंसा कर्म का प्रयोग करने वाला ।

आमिजात्य तत्त्वं ( पु० ) वंशसम्बन्धी, कौलीन्य, कुलीनता, सदश, पाण्डित्य ।

आमिधानिक तत्त्वं ( गु० ) कोशवेत्ता, अभिधानोक, अभिधान में प्रसिद्ध ।

आमिमुख्य तत्त्वं ( पु० ) संशोधन, अभिमुखकरण, संमुखीकरण, सम्मुखता, सामना ।

आभीर तत्त्वं ( पु० ) गोप, अहीर, ग्वाल, भील, ब्राह्मण के शौरस से सम्बन्ध जाति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, छन्द विशेष, देश विशेष । —पल्लि, पल्लो तत्त्वं ( स्त्री० ) गोपप्राम, गोष्ठ-घोष । ( स्त्री० ) आभीरी, ग्वालिन ।

आभूषण तत्त्वं ( पु० ) अलङ्कार, गहना, भूषण ।  
आभ्यान्तर तत्त्वं ( वि० ) भीतरी, अन्दर का । —कि तत्त्वं ( वि० ) अन्तरङ्ग, भीतरी ।

आभ्यासिक तत्त्वं ( गु० ) श्रुतिधर, अभ्यासकर्ता ।  
आभ्युदयिक तत्त्वं ( पु० ) आद विशेष, अभ्युदय सम्पन्न, सौभाग्यवान्, शुभान्वित ।

आम तत्त्वं ( गु० ) [ अम् + घञ् ] पाकरहित, अपक, कच्चा, असिद्ध, ( पु० ) आमाशय रोग, आम्रकल । —गन्धि तत्त्वं ( पु० ) गन्धयुक्त, चित्ता का धूम प्रभृति, कच्चे मांस के गन्धयुक्त पदार्थ, दुर्गन्ध । —चूर तत्त्वं ( पु० ) आम का सूखा चूर्ण, आम की खटाई ।

आमड़ा तत्त्वं ( पु० ) एक खट्टा फल विशेष ।  
आमद् दे० ( स्त्री० ) आमदनी, आय ।  
आमदनी दे० ( स्त्री० ) आय, प्राप्ति, आमद ।  
आमनाथ तत्त्वं ( पु० ) आस्थाप, अभ्यास, परम्परा ।  
आमना सामना ( पु० ) भेंट, मुलाकात ।  
आमने सामने ( पु० ) एक दूसरे के सामने या मुकाबिले पर ।

आमन्त्रण तत् ( पु० ) [ आ + मन्त्र + अन्ट् ]  
सम्बोधन, आह्वान, निमन्त्रण ।

आमन्त्रित तत् ( पु० ) [ आ + मन्त्र + क ]  
निमन्त्रित, आहृत, न्योता दिया हुआ ।

आमय तत् ( पु० ) [ आ + मय् + अल् ] रोग,  
पीड़ा, व्याधि । [ पीड़ित ।

आमयावी तत् ( पु० ) [ आमद + अम् + इन् ] रोगी,  
आमरक्त तत् ( पु० ) उदर रोग विशेष, लाल मल  
निकलने की पीड़ा, अतिसार, उदर रोग ।

आमर्श तत् ( पु० ) [ आ + मृश् + अल् ] परामर्श,  
विवेचन, सुचिन्ता, सलाह । [ रोष, राग ।

आमर्ष तत् ( पु० ) [ आ + मृष् + अल् ] क्रोध,  
आमलक तत् ( पु० ) अमलका ।

आमला तत् ( पु० ) आमलक, फल विशेष, धात्री  
फल, कार्तिक मास में इस वृक्ष की पूजा होती है ।  
आमवात तत् ( पु० ) पित्त से उत्पन्न चर्म रोग ।  
आमशूल तत् ( पु० ) रोग विशेष, अजीर्ण होने के  
कारण उदर कि पीड़ा विशेष, घायुगोष्ठा,  
घायुशूल । [ मन्त्री, पात्र ।

आमात्य तत् ( पु० ) [ आमा + त्यप् ] प्रधान,  
आमाञ्ज तत् ( पु० ) [ आम + अद् + क ] अपकान्त  
तण्डुल, कच्चा अन्न, सीधा, कोरा अन्न ।

आमाशय तत् ( पु० ) [ आम + आ + शि + अल् ]  
अपक्व स्थान, आमस्थली, उदरस्थ एक प्रकार की  
धैली, अतिसार आमरोग ।

आमिष तत् ( पु० ) मांस, मत्स्य आदि भोजन की  
वस्तु, सम्भोग, घृस, रिसवत, लोभ, सख्य,  
लाभ, काम के गुण, रूप, भोजन ।—प्रिय ( पु० )  
कङ्क पक्षी, धान पक्षी । ( पु० ) मत्स्य मांस से  
सन्तुष्ट मनुष्य ।—भुक् तत् ( पु० ) मांस भोक्ता,  
मांसाशी ।—शी ( पु० ) मत्स्यमांस-भोजनशील,  
मांस-भक्षक ।

आमूल तत् ( पु० ) मूल पर्यन्त, करणावधि मूलावधि,  
पहिले से, जड़ तक । [ उच्छेदित, अपमानित ।  
आमृष्ट तत् ( पु० ) [ आ + मृष् + क ] मर्दित,  
आमोद तत् ( पु० ) [ आ + मुद् + अल् ] अति  
दूरगामी गन्ध, सौरभ, हर्ष, आनन्द, दिख बह-

लाव ।—प्रमोद तत् ( पु० ) आनन्द मग्न,  
आराम चैन ।

आमोदित तत् ( पु० ) [ आ + मुद् + क ]  
आनन्दित, प्रसन्न, जी बहला हुआ, सुगन्धित ।

आमोदी तत् ( पु० ) [ आ + मुद् + शिन् ] मुख  
को सुगन्धित करने वाली वस्तु, प्रसन्न रहने वाला ।

आम्नाय तत् ( पु० ) [ आ + न्ना + य ] वेद, निगम,  
उपदेश, प्राचीन परिपाटी, सम्प्रदाय ।

आम्बर तत् ( छी० ) कहरुवा, बनावटी मूसल ।

आम्र तत् ( पु० ) फलविशेष, आम, रसाल, सहकार ।

आम्राई तत् ( स्त्री० ) आम का बाग, धमराई ।

आम्नेडन तत् ( पु० ) एक ही बात को पुनः पुनः  
कथन, पुनरुक्ति, द्विवार वा त्रिवार कथित ।

आय तत् ( पु० ) लाभ, अनागत, उपार्जन, आमदनी ।

आयत तत् ( पु० ) [ आ + यत् + क ] दीर्घ, लम्बा,  
विस्तृत ( छी० ) इज्जील का या कुरान का वाक्य ।

आयतन तत् ( पु० ) [ आ + यत् + अन्ट् ] यज्ञस्थान,  
देवस्थान, घर, ठहरने की जगह, स्थान, मकान ।

ज्ञान के सञ्चार का स्थान ।

आयति तत् ( स्त्री० ) [ आ + यत् + क्ति ] उत्तर-  
काल, भविष्यकाल । [ परवशता ।

आयत्ति तत् ( स्त्री० ) [ आ + यत् + क्ति ] अधीनता,

आयंदा ( वि० ) आगन्तुक, आगामी, भविष्य ।

आयसु तत् ( पु० ) आज्ञा, आदेश, प्रेरणा, यथा  
“पहुनाई कहँ आयसु दीजै” ।—पद्यावत ।

आया तत् ( स्त्री० ) लड़कों की खिलाने वाली, उप-  
काल, धात्री, धाय । ( कि० ) आना का भूत-

काल । ( अ० ) क्या ! यथा आया तुम वहाँ गये  
थे कि नहीं ?

आयात तत् ( पु० ) [ आ + या + क ] आगत,  
उपस्थित, आया । [ वितार, नियमन ।

आयाम तत् ( पु० ) [ आ + यम घञ् ] हँसना,

आयास तत् ( पु० ) [ आ + यस् + घञ् ] श्रान्ति,  
श्रम, क्लेश, परिश्रम, व्यायाम, प्रयास, यत्न ।

आयु तत् ( पु० ) [ आ + अय् + उत् ] वय, जीवन  
काल, जीवन समय, उम्र ।

आयुध तत् ( पु० ) [ आ + युष् + क् ] हथियार, अस्त्र,  
शस्त्र, धनुष आदि ।—गार तत् ( पु० )

[ आयुध + आगार ] अखगृह [घाती ।

आयुधिक तत्० ( गु० ) अखजीवी, शस्त्राजीव, अख-  
आयुधोय तत्० ( गु० ) अखघाती, शस्त्राजीव ।

आयुर्वेद तत्० ( गु० ) [ आयुस् + विद् + अल् ]  
अष्टादश विद्यान्तर्गत धन्वन्तरि प्रणीत विद्याविशेष,  
अथर्ववेद का उपाङ्ग, चिकित्साशास्त्र, वैद्यशास्त्र,  
निदानशास्त्र ।—नी तत्० ( गु० ) आयुर्वेदज्ञ,  
चिकित्सा व्यवसायी, वैद्य ।

आयुष्कर तत्० ( गु० ) [ आयुस् + कृ + अल् ] परमा-  
युजनक, आयु बुद्धिकारक, आयुष्य, आयुवर्द्धक ।

आयुष्काम तत्० ( गु० ) दीर्घजीवी, आयुप्राप्ति ।

आयुष्टोम तत्० ( गु० ) [ आयुस् + स्तोम + अल् ]  
यज्ञ विशेष, आयु बुद्धिकर यज्ञ ।

आयुष्मान् तत्० ( गु० ) [ आयुस् + मन् ] चि-  
जीवी, दीर्घजीवी, दीर्घायु, ( गु० ) ज्योतिष के  
सप्तविंशति योगों में तीसरा योग विशेष ।

आयुष्य तत्० ( गु० ) आयु का हितकारक, आयु-  
वर्द्धक, ( गु० ) आयु, उम्र ।

आयोगव तत्० ( गु० ) यज्ञ के औरस से वैर्यों के  
गर्भ में उत्पन्न जाति विशेष, बड़ई ।

आयोजन तत्० ( गु० ) [ आ + युज् + अनट् ] तैवारी,  
व्यायोग, नियुक्ति । [रण, संग्राम ।

आयोधन तत्० ( गु० ) [ आ + युध् + अनट् ] युद्ध,  
आर तत्० ( गु० ) कांटा, पैना, धंक्रुश, मङ्गल, शनि-  
श्वर, लुहार, चमार, ताँशा, पीतल ।

आरचा तत्० ( स्त्री० ) मूर्ति, प्रतिमा, अर्चा, पूजा ।

आरज तत्० ( गु० ) आर्य, बड़ा, श्रेष्ठ, पूज्य,  
महाराज ।

आरजा दे० ( गु० ) बीमारी, रोग ।

आरत तत्० ( गु० ) आर्त, पीड़ित, दुःखित, व्याकुल,  
अत्यन्त दुःखी, दुःख का दशोचा हुआ, अति  
पीड़ित दुःखान्वित । [ एक रीति विशेष ।

आरता तत्० ( गु० ) दुन्दे की आरती, विवाह की  
आरति तत्० ( स्त्री० ) देवता को दीप दिखाना,  
दीपदर्शान, नीराजन, निवृत्ति ।

आरती तत्० ( स्त्री० ) देव को दीप दिखाना ।

आरन तत्० ( गु० ) अरण्य, वन, कानन, यथा—

" कीन्देसी सावज आरन रहे" —पद्यावत ।

आरपार दे० ( पु० ) इस किनारे से उस किनारे तक,  
पल्लोपार ।

आरुघ तत्० ( गु० ) अपक्रान्त, आरम्भ किया गया ।

आरम्भ तत्० ( पु० ) आरम्भ, उपक्रम ।

आरपो तत्० ( गु० ) शपथ सम्बन्धी, आप ।

आरसी दे० ( स्त्री० ) अंगूठे में सुँदरी की तरह का एक  
आभूषण जिसमें दर्पण लगा होता है और जिसे  
स्त्रियाँ पहनती हैं, आसी, दर्पण ।

आरा तत्० ( पु० ) चर्मभेदक अस्त्र, काष्ठभेदक अस्त्र,  
करांत, दरांत, ककच ।—कस ( कि० ) आरा  
चलाने वाला, लकड़ी चीरने वाला ।

आराजो दे० ( स्त्री० ) खेत, जमीन । [ दुरमन ।

आराती तत्० ( पु० ) शत्रु, विपक्ष, बैरी, अरि, रिपु,  
आरात् तत्० ( भ० ) दूर, निकट, समीप ।

आरात्रिक तत्० ( पु० ) आरति नीराजन, नीराजन  
पात्र, आरति-प्रदीप । [ सेवक, अर्चक, पुजारी ।

आराधक तत्० ( गु० ) [ आ + राध् + क् ] पूजक,  
आराधन तत्० ( पु० ) [ आ + राध् + अनट् ]

साधना, उपासना, सेवा, परिचर्या तोषण ।—  
तत्० ( स्त्री० ) [ आ + राध् + अन् + आ ]  
उपासना, सेवा, परिचर्या, श्रद्धा ।

आराधित तत्० ( गु० ) [ आ + राध् + क्त ] उपासित,  
साधित, पूजित ।

आराध्य तत्० ( गु० ) [ आ + राध् + य ] आराधना के  
योग्य, उपास्य, सेवनीय ।

आराम तत्० ( पु० ) [ आ + रम् + घञ् ] उपवन,  
बाग, विश्राम, आरोग्य, उपशम, पीड़ा की शान्ति,  
सुख ।—गाह दे० ( स्त्री० ) आराम की जगह,  
शयानागार ।—तलव ( गु० ) सुस्त, सुकुमार ।

आरि तत्० ( स्त्री० ) हठ, टेक, जिह ।

आरिया दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की ककड़ी जो चोमासे  
में उत्पन्न होती है ।

आरी तत्० ( स्त्री० ) काराती, तुरपण, काष्ठ भेदक अस्त्र,  
बड़ई का वह औजार जिससे वह लकड़ी चीरता है ।

आरुधना तत्० ( कि० ) गला दबाना, श्वास रोकना ।

आरुह तत्० [ आ + रुह + क्त ] कृत आरोहण, युद्ध  
आदि पर चढ़ा हुआ, असवार, सवार

आरोग्य तद् ( पु० ) नीरोग, आराम, सुखी, सुस्थ, रोग रहित, तंदुल्लक्ष्ण ।

आरोग्यना दे० ( क्रि० ) खाना, भोजन करना ।

शबरी परम भक्ति रघुपति की,

यहुत दिनन की दासी ।

नीके फल आरोग्य रघुपति,

पूरण भक्ति प्रकासी ॥—सूर ।

[ नोट—मेवाड़ में भोजन करने के लिये “आरोग्यना” ही कहा जाता है । ]

आरोग्य तद् ( पु० ) [ आ + रुज् + स्वप् ] रोगहीनता, रोगाभाय, अनामय, आराम, स्वास्थ्य नीरोगता तंदुल्लक्ष्णी ।

आरोग्य तद् ( पु० ) [ आ + रुज् + स्वप् ] मिथ्या रहना, कहपना, बनापट । [ करना ।

आरोग्य तद् ( पु० ) चढ़ाव, स्थापन, चढ़ाना, स्थापन

आरोग्य तद् ( पु० ) [ आ + रुज् + अन्ट् ] चढ़ाव, स्थापन, चढ़ाना ।

आरोग्य तद् ( पु० ) [ आ + रुज् + क ] कृतारोग्य, लगाया हुआ, मड़ा हुआ ।

आरोग्य तद् ( पु० ) [ आ + रुज् + अन्ट् ] अस्थान, चढ़ाव, सीढ़ी, सोपान, नीचे से ऊपर जाना, चढ़ाना, अङ्गुर निकलना ।

आरोग्य तद् ( वि० ) चढ़नेवाला, सवार ।

आरोग्य तद् ( पु० ) [ आ + रुज् + अ ] सारथ्य, सरलता, नम्रता, विनय ।

आरोग्य तद् ( पु० ) पीड़ित, असुस्थ, क्लेशित ।—नाद

तद् ( पु० ) [ आ + नद + धन् ] पीड़ित ध्वनि, क्लेशजन्य चीकार, कानर स्वर ।—स्वर तद् ( पु० ) आर्त्तनाद ।

आरोग्य तद् ( पु० ) स्त्री का रत्न, स्त्रियों का अतुल्य, मासिक पुष्प, श्रुत में अल्प, सामयिक ।

आरोग्य तद् ( पु० ) अस्तिज का कर्म, पौरोहित्य, पुरोहित का कर्म ।

आरोग्य तद् ( पु० ) धनसम्बन्धी, रुपये पैसे का ।

आरोग्य तद् ( पु० ) सजल वस्तु, मीठा, गीला, सरस, सीला ।

आरोग्य तद् ( पु० ) देखो आदा ।

आरोग्य तद् ( स्त्री० ) नक्षत्र विशेष, सत्ताइस नक्षत्रों में

छठवाँ नक्षत्र ।—लुब्धक तद् ( पु० ) केतु ।

—वीर तद् ( पु० ) वाममार्गी ।—शनि तद्

( स्त्री० ) विजली, एक अस्त्र ।

आर्य तद् ( पु० ) साकुलोद्भव, श्रेष्ठ, पूज्य, वृद्ध, मान्य ।—पुत्र ( पु० ) मर्ता, स्वामी, गुरुपुत्र ।

—भट्ट ( पु० ) विख्यात भारतीय ज्योतिर्वेत्ता

विद्वान्, इनके बनाये ग्रन्थ का नाम आर्यसिद्धान्त

है, कुसुमपुर नामक स्थान में ७७५ ई० में यह

उत्पन्न हुए थे । इन्होंने ही भारतवर्ष में सौर-

केन्द्रिक मत का प्रचार किया है । इन्होंने प्रमाणित

किया है कि पृथ्वी तथा अन्त्यान्व ग्रह, सौर जगत्

में अवस्थित होकर सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं ।

इन्होंने एक बीजगणित भी बनाया है ।—मिश्र

( पु० ) गौरवाङ्कित, मान्य, पूज्य ।—क्षेमीश्वर

( पु० ) संस्कृत का एक कवि, चण्डकौशिक नामक

नाटक इन्हीं का बनाया है बल्लभ के पाल वंशीय

राजा महीपाल की आज्ञा से इन्होंने अपना नाटक

लिखा था । इनका समय, १०२६—१०४० के

लगभग समझना चाहिये ।

आर्या तद् ( स्त्री० ) पार्वती, सात, दाढ़ी ।

आर्यावर्त तद् ( पु० ) [ आर्य + आवर्त ] विन्ध्य और

हिमालय पर्वत का मध्यवर्ती देश, पुण्यभूमि,

आर्यों का निवासस्थान ।

आर्य तद् ( वि० ) [ अरि + अ ] अरि-सम्बन्धी, अरि

प्रणीत, वैदिक, अरि-सेवित ।—प्रयोग तद् ( पु० )

प्रचलित व्याकरण के नियमों के विरुद्ध गान्ध

प्रयोग ।—विवाह तद् ( पु० ) अष्टविध विवाह

में एक विवाह । जिस विवाह में वर से एक या दो

गोमिथुन लेकर कन्या दी जाती है वह आर्य है ।

आल तद् ( पु० ) पीतवर्ण, हरिद्रावर्ण, हरताल, वृष

विशेष ।

आलकस दे० ( पु० ) आलस्य, सुस्ती । [ रहित ।

आलन तद् ( पु० ) पाक विरोध, अलौना, लवण-

आलना दे० ( पु० ) घोंसला, सुता, खोता ।

आलवाल तद् ( पु० ) [ आल + वल + धन् ]

कियायी, थाला, धावला, घेरा जो वृषों के नीचे

प्रायः जल ठहरने के लिये बनाया जाता है ।

बलाधार, गमला ।

चेहरा, आनन ।—देश तत् ( पु० ) मुख का स्थान ।

आस्वाद तत् ( पु० ) [ आ + स्वद् + घञ् ] रसानुभाव, स्वाद ग्रहण, रुचि, चस्का, रस, जायका ।

आस्वादन तत् ( पु० ) [ आ + स्वद् + अनट् ] रसानुभव, स्वाद ग्रहण, स्वाद चखना ।

आस्वादक तत् ( पु० ) [ आ + स्वद् + अक् ] स्वाद ग्रहण कर्ता, स्वाद खेने वाला, जायका खेने वाला ।

आस्वादु तत् ( पु० ) सुरल, मिष्ट, स्वादिष्ट, स्वादी, सुस्वादु ।

आह ( अ० ) शोक, हानि, कष्ट, पीड़ा आदि सूचक अव्यय, कहारना ( पु० ) बर, साहस । [ होता है ।

आहृद् दे० ( स्त्री० ) आने का शब्द जो चखने में आहत ( स्त्री० ) जलमी, घायक, पुराना, कभिरत ।

आहर-जाहर दे० ( स्त्री० ) आना जाना ।

आहरण तत् ( पु० ) [ आ + ह + अनट् ] छीनना, लूटना, खसोटना ।

आहर्तव्य ( वि० ) ग्रहणीय, ले आने लायक ।

आहव तत् ( पु० ) [ आ + ह + अल ] रण, युद्ध, यज्ञ, याग ।

आहवनीय तत् ( पु० ) [ अ + ह + अनीय ] यज्ञाग्नि विरोध, कर्मकाण्ड के तीन अग्निषों में से एक ।

आहर्त्तव्य तत् ( पु० ) [ आ + ह + तव्य ] ग्रहण करने के योग्य, ले आने के योग्य, संगृहीतव्य ।

आहर्त्ता तत् ( पु० ) [ आ + ह + त् ] आनेता, आनयन वा उपार्जन कर्ता, ले आने वाला ।

आह्ला तत् ( अ० ) खेद या आघेय बोधक शब्द ।

आहार तत् ( पु० ) [ आ + ह + घञ् ] अशन, भोजन, भक्षण ।—क तत् ( पु० ) आहरणकारी, संग्राहक ।

—विहार रहन सहन, खाना पीना, शारीरिक परिचर्या ।

आहार्य तत् ( पु० ) [ आ + ह + घञ् ] गृहीत, पकड़ा हुआ, भोजन योग्य, बनावटी, कल्पित ।

( पु० ) नेपथ्य, भूषण आदि के द्वारा निर्मित, नाटकेति में व्यञ्जक विशेष, अज्ञ संस्कार ।—

शोभा तत् ( स्त्री० ) कृत्रिम शोभा, चित्र अथवा भूषण आदि के द्वारा बनायी शोभा ।

आहाव तत् ( पु० ) [ आ + ह + घञ् ] बुद्ध जलाशय, चहवचा, युद्ध आह्वान, आमन्त्रण ।

आहि या आही तत् ( कि० ) है ।

आहित तत् ( पु० ) [ आ + धा + क्त ] न्यस्त, अर्पित, स्थापित, रखा हुआ ।—अग्नि ( पु० )

[ आहित + अग्नि ] सामिक, अग्निहोत्री ।

आहितुषिडक तत् ( पु० ) [ अहि + तुण्ड + णिक् ] ब्यालप्राही, सर्प पकड़ने वाला, कालवेलिया ।

आहिस्ता दे० ( कि० वि० ) धीरे धीरे ।

आहुक तत् ( पु० ) राज विरोध, प्राचीन समय में मृत्तिकावत नगरी के राज भोज नाम से प्रसिद्ध थे, उसी भोजवंश में अग्निजित् नामक एक राजा उत्पन्न हुए, वनको युग्म सन्तति हुई, पुत्र का नाम आहुक रखा गया, इनकी स्त्री का नाम कारया था, इसी के गर्भ से महाराजा आहुक को देवक और उग्रसेन नामक दो पुत्र हुए थे, देवक श्री कृष्णचन्द्र के मातामह थे, और उग्रसेन कंस का पिता । [ वैश्य देव ।

आहुत तत् ( पु० ) आतिथ्यसत्कार, भूतपूजा, ध्वजि-आहुति तत् ( स्त्री० ) [ आ + हु + क्त ] शाकण्य,

होम की वस्तु, देवता के इच्छा से अग्नि में हवि देना, देवयज्ञ, होम ।

आहृत तत् ( पु० ) [ आ + ह + क्त ] निमन्त्रित, आमन्त्रित, कृताह्वान, न्योता हुआ, बुलाया हुआ । [ लाया हुआ ।

आहत तत् ( पु० ) [ आ + ह + क्त ] अर्जित, आनीत, आहै ( कि० ) है ।

आहो तत् ( अ० ) विकल्प, प्रश्न, सन्देह, विचार ।

आहो पुरुषिका तत् ( स्त्री० ) अहमिका, आत्म-रक्षा, आत्मगर्विता ।

आहोश्चित् तत् ( अ० ) विकल्प, प्रश्न, जिज्ञासा ।

आहिक तत् ( पु० ) दैनिक, दिन-साध्य, दिन संबन्धी, दिवाकृत्य, ( पु० ) भोजन प्रकरण, समूह, ग्रन्थ भाग, नित्यक्रिया, इष्टदेवता की नित्य आराधना ।

आह्ला तत् ( पु० ) जलार्थव ।

आह्लाद तत् ( पु० ) [ आ + हृद् + घञ् ] आनन्द, हर्ष,

तुष्टि।—जनक (गुं) हर्षजनक, आनन्दवर्द्धक, तुष्टिकर।

आह्लादित तत् (गुं) [आ + ह्ल + णिष् + क] आनन्दित, हर्ष युक्त, प्रसन्न।

आह्वय तत् (पुं) [आ + ह्वे + भल] नाम, संज्ञा।

आह्वान तत् (पुं) [आ + ह्व + अन्ट] सम्बोधन, आवाहन, निमन्त्रण, बुलावा।

इ

इ, स्वर का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान तालु और प्रपल्ल विवृत।

इ तत् (प्र०) भेद, क्रोधित, अपाकरण, अनुकम्पा, खेद, घेप, सन्ताप, दुःख, भावना। (पुं) काम-देव, गणेश।

इक तत् (गुं) एक, एक का दूसरा रूप।—अङ्ग तत् एक ओर का शरीर, आधा अङ्ग, एक शरीर, एक अङ्गा, अर्द्धाङ्ग, शरीर का अर्ध भाग, एक ओर का, एक तरफ का, एक पक्ष।—आक (किं वि०) निश्चय, अस्थिर।—इस संख्या विशेष २।

—इतराज तत् (पुं) एक छत्र राजा, चक्रवर्ती राज्य, समस्त संसार का राज्य, प्रतिद्वन्द्वी-रहित राज्य।—टक तत् (पुं) एक ताक, एकटकी, निस्पन्द नेत्र से देखना।—ट्टा तत् (पुं) एकठौरा, एकठ, जमात।—ठौर-रा तत् (पुं) एकठ्ठा, समूह।—इकतारा (पुं) एक दिन का नामा करके आने वाला जवर।—ताई दे० (स्त्री०) अभेद, एकता।—तारा दे० (पुं) एक प्रकार का सितारनुमा बाजा।—राम दे० (पुं) इनाम पुरस्कार।—रार दे० (पुं) प्रतिज्ञा, डहराव।—सठ दे० (पुं) संख्या विशेष, ६१।—सर दे० (पुं) सद्य, बराबर।—सौता तत् (पुं) एक ही, केवल, एक होने से अधिक गीति पात्र।—सार (गुं) बराबर, सरीखा, समान, सद्य।—सह (गुं) एक साथ।—हरा (गुं) एक पर्व का।

इकौज (स्त्री०) काकवन्ध्या, वह स्त्री जो एक बार प्रसव कर फिर बच्चा न जने।

इकौसी (गुं) अकेला वास, एकान्त वास।

इका तत् (गुं) एकाकी, अकेला, अद्वितीय, अनूठ, अनुपम, उत्तम, (पुं) एक घोड़ा या बैल की गाड़ी, इलाहाबादी इका, पटनावा इका।

इकादुका दे० (वि०) अकेला दुकेला, एक या दो।

इकी दे० (स्त्री०) [एक + ई] तारा का एक बूटी वाला पत्ता, एक बैल की गाड़ी।

इलु तत् (पुं) [यल् + लु] जल, ईल, बेंतारी, गला गाँडा।—कागड तत् (पुं) इल्लुवृक्ष, काँश, मूँज रामशर।—प्रमेह (पुं) मूत्र सम्बन्धी रोग विशेष।—मती (स्त्री०) कुलुवृक्ष के पास बहने वाली एक नदी। रस तत् (पुं) ईल का रस, राव।—रसोद तत् (पुं) इलु रस का समुद्र।—सार तत् (पुं) गुड़, खीर।

इत्वाकु तत् (पुं) वैश्रवत मनु का पुत्र, सूर्य वंश का पहला राजा, इन्होंने सर्वप्रथम अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया, यह रामचन्द्र के पूर्व पुरुष थे, इनके पुत्र का नाम कुचि था। (२) काशी का राजा, इसके पिता का नाम सुवन्धु था, यह इलु-वृक्ष फोड़ कर उत्पन्न हुआ था इसी कारण इत्वाकु इसका नाम पड़ा था। [मूँज, काँश।

इत्वालिका तत् (स्त्री०) नरकट, नरकुल, सरपत, इङ्गने (पुं) सेकेत, इशारा।

इङ्गला (स्त्री०) शरीर की एक नाड़ी का नाम इसका दूसरा नाम ईडा है। यह शरीर के नाम भाग में होती है।

इङ्गलौण्डीय तत् (गुं) इङ्गलैण्ड देश सम्बन्धी।

इङ्गित तत् (पुं) [इङ्ग + क] अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा, संकेत, इशारा, इङ्गित, भाव, पंथा।

इङ्गुदी तत् (स्त्री०) [इङ्गुद + ई] वृक्षविशेष, इसके फल तैलमय होते हैं, इसका दूसरा नाम यन्त्रविरोपण सी है, क्योंकि इसके तेल से यन्त्र बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं। हिंगोट का पेड़, साजकंगनी, ज्योतिष्मती।

इंगुर दे० (०) सिंदूर का एक भेद।



चेहरा, ध्यानन ।—देश तत्० ( पु० ) मुख का स्थान ।

आस्वाद तत्० ( पु० ) [ आ + स्वद् + घञ् ] रसानुभाव, स्वाद ग्रहण, रुचि, चस्का, रस, ज्ञापका ।

आस्वादन तत्० ( पु० ) [ आ + स्वद् + अनट् ] रसानुभव, स्वाद ग्रहण, स्वाद चानना ।

आस्वादक तत्० ( पु० ) [ आ + स्वद् + अक् ] स्वाद ग्रहण कर्त्ता, स्वाद लेने वाला, ज्ञापका लेने वाला ।

आस्वादु तत्० ( गु० ) सुरस, मिष्ठ, स्वादिष्ट, स्वादी, सुस्वादु ।

आह ( अव्य० ) शोक, हानि, कष्ट, पीड़ा आदि सूचक अव्यय, कहारना ( पु० ) बर, साहस । [ होता है ।

आहट दे० ( स्त्री० ) आने का शब्द जो चञ्चने में आहत ( स्त्री० ) जलमी, घायल, पुराना, कश्मिर ।

आहर-जाहर दे० ( स्त्री० ) माना जाना ।

आहरण तत्० ( पु० ) [ आ + ह + अनट् ] छीनना, लूटना, खसोटना ।

आहर्तव्य ( वि० ) ग्रहणीय, ले आने लायक ।

आहव तत्० ( पु० ) [ आ + ह + अल ] रण, युद्ध, यज्ञ, याग ।

आहवनीय तत्० ( पु० ) [ आ + ह + अनीय ] यज्ञाग्नि विशेष, कर्मकाण्ड के तीन अग्नियों में से एक ।

आहर्त्तव्य तत्० ( गु० ) [ आ + ह + तव्य ] ग्रहण करने के योग्य, ले आने के योग्य, संगृहीतव्य ।

आहर्त्ता तत्० ( गु० ) [ आ + ह + त् ] आनेता, आनयन या उपार्जन कर्त्ता, ले आने वाला ।

आहा तत्० ( अ० ) खेद या आश्चर्य बोधक शब्द ।

आहार तत्० ( पु० ) [ आ + ह + घञ् ] भक्षण, भोजन, भक्षण ।—क तत्० ( पु० ) आहरणकारी, संग्राहक ।

—विहार रहन सहन, खाना पीना, शारीरिक परिचर्या ।

आहार्य तत्० ( गु० ) [ आ + ह + घञ् ] गृहीत, पकड़ा हुआ, भोजन योग्य, बनावटी, कल्पित ।

( पु० ) नेपथ्य, मूषण आदि के द्वारा निर्मित, नाटकीय में व्यञ्जक विशेष, अज्ञ संस्कार ।—

शोभा तत्० ( स्त्री० ) कृत्रिम शोभा, चित्र अथवा मूषण आदि के द्वारा बनायी शोभा ।

आहाव तत्० ( पु० ) [ आ + ह + घञ् ] पुत्र जला-शय, चहवचा, युद्ध आह्वान, आमन्त्रण ।

आहि या आही तत्० ( कि० ) है ।

आहित तत्० ( गु० ) [ आ + धा + क् ] न्यस्त, अर्पित, स्थापित, रखा हुआ ।—अग्नि ( पु० ) [ आहित + अग्नि ] सामिक, अग्निहोत्री ।

आहितुण्डिक तत्० ( पु० ) [ अहि + तुण्ड + णिक ] व्यालप्राही, सर्प पकड़ने वाला, कालवेलिया ।

आहिस्ता दे० ( कि० वि० ) धीरे धीरे ।

आहुक तत्० ( पु० ) राज विशेष, प्राचीन समय में सृष्टिकावत नगरी के राज भोज नाम से प्रसिद्ध थे, उसी भोजवंश में अभिजित् नामक एक राजा उत्पन्न हुए, उनको युग्म सन्तति हुई, पुत्र का नाम आहुक रखा गया, इनकी स्त्री का नाम करवा था, इसी के गर्भ से महाराजा आहुक को देवक और उग्रसेन नामक दो पुत्र हुए थे, देवक श्री कृष्णचन्द्र के मातामह थे, और उग्रसेन कंस का पिता । [ वैश्य देव ।

आहुत तत्० ( पु० ) आतिथ्यसत्कार, भूतपूजा, यज्ञि-आहुति तत्० ( स्त्री० ) [ आ + हु + क्ति ] शाकव्य, होम की वस्तु, देवता के उद्देश से अग्नि में हवि देना, देवयज्ञ, होम ।

आहृत तत्० ( गु० ) [ आ + ह + क् ] निमन्त्रित, आमन्त्रित, कृताह्वान, न्योता हुआ, बुलाया हुआ । [ लाया हुआ ।

आहृत तत्० ( गु० ) [ आ + ह + क् ] अर्जित, प्राप्ति, आहूँ ( कि० ) है ।

आहो तत्० ( अ० ) विकल्प, प्रश्न, सन्देह, विचार ।

आहो पुरुषिका तत्० ( स्त्री० ) अहमिका, आत्म-रलाभा, आत्मगर्विता ।

आहोशिवत् तत्० ( अ० ) विकल्प, प्रश्न, जिज्ञासा ।

आहिक तत्० ( गु० ) दैनिक, दिन-साध्य, दिन संबन्धी, दिवाकृत्य, ( पु० ) भोजन प्रकरण, समूह, अन्य भाग, नित्यक्रिया, दृष्टदेवता की नित्य आराधना ।

आह्ला तत्० ( पु० ) जलाणव ।

आह्लाद तत्० ( पु० ) [ आ + ह्ला + घञ् ] आनन्द, हर्ष,

इत्यादि तत्त्वं (अ०) प्रभृति, आदि, इससे लेकर और सब [ पात्र ।

इत्र (पु०) इतर, अतर ।—दान दे० (पु०) इत्र रखने का इदम् तत्त्वं ( पु० ) पुरोवर्ती, सम्मुखस्थ वस्तु, यही । इदमित्यम् तत्त्वं ( अ० ) यह, इतना, इस प्रकार, निश्चय । [अधुना ।

इदानी तत्त्वं (अ०) इस काल में, इस समय में, सम्प्रति, इदानीन्तन तत्त्वं (पु०) आधुनिक, सम्प्रति जात, इस समय का, नवीन ।

इधर दे० (अ०) यहाँ, इस ओर, इस स्थान, इन ओर । इधम् तत्त्वं (पु०) आग सुलगाने की लकड़ी, ईंधन । इन तत्त्वं (पु०) सूर्य, समर्थ, राजा, पति, ईश्वर, प्रभु, हस्त नक्षत्र, १२ की संख्या ।

इनकार ( पु० ) अस्वीकार ।

इनाम ( पु० ) पुरस्कार ।

इनारा या इन्द्रा तत्त्वं ( पु० ) कृत्र, पक्का कुर्मा ।

इनेगिने ( वि० ) कुछ, जुने हुए ।

इन्दिरा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ इन्दिर + आ ] लक्ष्मी, कमला, रत्ना ।—मन्दिर (पु०) नीलोल्लस, नील कमल ।—लय ( पु० ) [ इन्दिरा + आलव ] पद्म, पङ्कज ।—वर (पु०) विष्णु, नारायण ।

इन्दीवर तत्त्वं (पु०) [इन्दी + वर + अल] नीलोल्लस, नील कमल ।

इन्दु तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + व] शशी, चन्द्र, कर्पूर, एक की संख्या ।—कज्जा (स्त्री०) इन्दुलेखा, चन्द्र-लेखा, चन्द्रकला ।—कान्त (पु०) मणि विशेष, चन्द्रकान्तमणि ।—कान्ता तत्त्वं (स्त्री०) रात्रि, निशा, यामिनी ।—व्रत ( पु० ) चान्द्रायण व्रत ।—भृत् (पु०) महादेव, शिव ।—मती (स्त्री०) चन्द्र-युक्ता रात्रि, पौर्णमासी, अयोध्या के राजा अज की स्त्री, इसीके गर्भ से महाराज दुर्गधर उत्पन्न हुए थे, यह विदर्भराज की कन्या थी ।

इन्दुर तत्त्वं (पु०) उन्दुर, मूस, चूहा, मूषिक ।

इन्द्र तत्त्वं (१) वेदोक्त देवता । भारतीय प्राचीन आर्य ऋषिगण जिन देवताओं की आराधना करते थे उनमें एक इन्द्र भी हैं । ऋग्वेद में लिखा है कि इन्द्र की माता ने बहुत वर्षों तक इन्हें अपने गर्भ में धारण कर रक्खा था, उत्पन्न होने के

अनन्तर इन्द्र ने अपने पिता को पैर पकड़ के मार डाला । ( २ ) पौराणिक देवता, अन्यान्य देवता इनके अधीन हैं, अतएव यह देवताज कह जाते हैं । पुत्रोमा दानव की कन्या शची से इनका विवाह हुआ था, इनके पुत्र का नाम जयन्त था ।—कील तत्त्वं (पु०) मन्दार पर्वत, मन्दाराचल ।—कुञ्जर तत्त्वं (पु०) इन्द्र का हाथी, ऐरावत हस्ति ।—गोप तत्त्वं (पु०) रक्त वर्ण कीट विशेष, कछोट, छुगुनू ।—जाल तत्त्वं (पु०) नटविद्या, फरफंद, धोला, मन्त्र तंत्र, योगद्वारा अर्चने की बातें दिखाने का प्रस्थ । मायाकर्म, पुल, कपट, माया ।—जालिक तत्त्वं (पु०) मायावी, मायिक, जाजिगर ।—जित् तत्त्वं (पु०) लंछेस्वर रावण का पुत्र, मेघनाद ।—तुल्य तत्त्वं (पु०) इन्द्र के समान सर्वश्रेष्ठ, अधिपति, सर्वोत्तम ।—त्वं तत्त्वं (पु०) स्वर्ग का असाधारण धर्म, राजस्व प्रधान ।—वृमन (पु०) योग विशेष । वर्षाकृत में गङ्गाजल पीपल के पत्तों को छू लेती है तब वह योग होता है ।—घनुप तत्त्वं (पु०) शक्रघनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो घनुप के आकार का दीप्त पड़ता है ।—नील (पु०) नीलम, नीलमणि ।—नीलक तत्त्वं (पु०) पद्मग, मरकत, पद्मा ।—प्रस्थ तत्त्वं (पु०) राजा युधिष्ठिर का भनाया हुआ नगर विशेष, हरिप्रस्थ, शक्रप्रस्थ, इत्यादि जिनके नाम हैं । इस समय दिखली के नाम से वह प्रसिद्ध है, यद्यपि दिवङ्गी यमुना के बाएँ किनारे पर स्थित है, तथापि इन्द्र-प्रस्थ यमुना के दक्षिण तट पर स्थित था ।—यय तत्त्वं (पु०) औपधि विशेष ।—यधू तत्त्वं (स्त्री०) भृङ्गकीट, धीरबहूटी विशेष ।—घज्जा तत्त्वं (पु०) एक वर्षावृत्त का नाम जिसमें दो ताण्य, एक जगय और दो गुरु होते हैं ।

इन्द्रायी तत्त्वं (स्त्री०) [इन्द्र + आयी] शची, इन्द्र की पत्नी, मातृका विशेष ।

इन्द्रानुज तत्त्वं ( स्त्री० ) [ इन्द्र + अनुज ] विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण । [ नारायण, विष्णु ।

इन्द्रावरज तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + अवर + जन् + रु] इन्द्रायण तत्त्वं (स्त्री०) औपधि विशेष ।

इङ्गन तत्० (पु०) आँख, नेत्र, नयन, दृष्टि, देखना ।  
 इच्छा तत्० (स्त्री०) वांछा, मनोरथ आकाङ्क्षा,  
 स्पृहा, अभिलाष ।—नित तत्० (गु०) इच्छुक  
 सस्पृह, अभिलाषी, स्वेच्छुक, वासना-विशिष्ट ।—  
 घटी (स्त्री०) इच्छा युक्ता स्त्री, अभिलाषिणी,  
 रमणी ।—चारी (पु०) मनमौजी, अपने मन का,  
 मन के अनुसार घूमने या करने वाला, स्वतन्त्र ।  
 —भेदी (स्त्री०) विरेचनघटी ।—भोजन (पु०)  
 मनमाना भोजन । [ बाढा हुआ ।

इच्छित तत्० (गु०) ईप्सित, मनबान्धित के अनुसार,  
 इच्छुक तत्० (पु०) इच्छान्वित, अभिलाषी, आकांषी,  
 चाहने वाला ।

इजराय दे० (पु०) उपयोग करना, जारी करना ।  
 इजलास (पु०) अदालत, न्यायालय, कोर्ट ।  
 इजहार (पु०) गवाही, घमान ।  
 इजाजत (स्त्री०) सम्मति, हुक्मा, आज्ञा ।  
 इजाफा (पु०) वृद्धि ।  
 इजारदार (गु०) ठेकेदार, इजारे पर कोई काम खेने  
 वाला ।

इजारा (पु०) ठीका, किराय, अधिकार ।  
 इज्जत (स्त्री०) मान, सम्मान ।

[ गुरु, शिक्षक, पूज्य ।

इज्य तत्० (गु०) [ यज् + य ] बृहस्पति, देवाचार्य,  
 इज्या तत्० (स्त्री०) [ यज् + य + आ ] दान, याग,  
 यज्ञ, पूजा, अर्चा, अष्टविध धर्म का प्रथम धर्म ।  
 —शील तत्० (पु०) बार बार यज्ञ करने वाला,  
 याज्ञक, यज्ञकारी ।

इठलाना दे० (क्रि०) इतराना, मटकाना, छुकाने के  
 लिये जान घूम कर अनजान बनना ।

इड़ा तत्० (स्त्री०) शरीर के दक्षिण भागस्थित नाड़ी,  
 सरस्वती, गौ, बचन, पृथ्वी, स्वर्ग, आशु गमन,  
 वैवरवत मनु की पुत्री, चन्द्रमा के पुत्र बुध के  
 साथ इसका विवाह हुआ था, इसी के गर्भ से  
 प्रसिद्ध राजा पुरुखा जी उत्पत्ति हुई थी ।

इडुरी दे० (स्त्री०) पेडुरी, गेंडुरी, धीड़ा । [ ठौर ।  
 इत तत्० (अ०) इधर, इस ओर, इस तरफ, यहाँ, इस  
 इतः तत्० (अ०) नियम, पद्धती विभक्ति का अर्थ,

विभाग, यहाँ से, इस हेतु ।—पर (गु०) इसके  
 बाद, इसके अनन्तर, इस पर ।

इतना तत्० (अ०) अधिक का बोधक, इयत्तावाची,  
 परिच्छेदक, एतना ।

इतमीनान (पु०) विश्वास, भरोसा ।

इतर तत्० (अ०) अन्य दूसरा, भिन्न, नीच, सामान्य ।

—विशेष (पु०) अन्य से भिन्न, विभिन्नता,  
 प्रभेद । लोक (पु०) छोटी जाति, दूसरा लोक ।

इतरेतर (गु०) अन्धान्य, परस्पर, आपस में ।

इतराजी (दे०) बिरोध, बिगाड़, नाराज़ी । [ परस्पर ।

इतरेतर तत्० (गु०) [ इतर + इतर ] अन्धान्य,

इतरेद्युः तत्० (अ०) दूसरे दिन, अन्य दिन ।

इतराई दे० (स्त्री०) मचलाई, मचल पड़ी । ( क्रि० )  
 मचल कर । [ मचलाना ।

इतराना दे० (क्रि०) अभिमत करना, मदान्य होना

इतराया दे० (क्रि०) चोंचला दिखाया, उपक दिखायी,  
 मचला ।

इतवार दे० (पु०) रविवार, आदित्य वार ।

इतस्ततः तद् (अ०) इतस् + तद् + तस् अत्र तत्र,  
 इधर, उधर, चारों ओर ।

इति तत्० (अ०) समाप्ति बोधक अव्यय, समाप्ति,  
 इतना, पूरा, सम्पूर्ण ।—कथा (स्त्री०) अर्थ शून्य  
 वाक्य, अनुपयुक्त बात ।—कर्त्तव्य (गु०) कर्म का  
 अङ्ग, उचित कर्त्तव्य ।—वृत्त तत्० (पु०) पुरा-  
 वृत्त, पुरानी कथा या कहानी ।

इतिहास तत्० (पु०) [ इति + ह + आस् ] पूर्व  
 वृत्तान्त, अतीत काल की घटनाओं का विवरण,  
 प्राचीन कथा, पुरावृत्त, उपाख्यान ।

इतेक दे० (अ०) इतनाही, एताही, इतना ।

इती दे० (अ०) इतना नियम, अवधि ।

इतफाक तत्० (पु०) मेल संयोग, अवसर ।

इतफाकन दे० (क्रि०) संयोग से, आकस्मिक ।

इतफाकिया (क्रि० वि०) आकस्मिक ।

इत्तला (स्त्री०) सूचना ।

इत्ता दे० (वि०) इतना ।

इत्ती दे० (वि०) इतना ।

इत्थम् तत्० (अ०) इस प्रकार, इस तरह, ऐसा, यों ।

इत्यादि तत् (अ०) प्रभृति, आदि, इससे लेकर और  
 सब [ पाठ ।  
 इव (पु०) इतर, अतर ।—दान दे० (पु०) इत्र रखने का  
 इदम् तत् ( पु० ) पुरोवर्ती, सम्मुखस्थ वस्तु, यही ।  
 इदमित्यम् तत् ( अ० ) यह, इतना, इस प्रकार,  
 निरचय । [अधुना ।  
 इदानी तत् (अ०) इस काल में, इस समय में, सम्प्रति,  
 इदानीन्तन तत् (पु०) आधुनिक, सम्प्रति जात, इस  
 समय का, नवीन ।  
 इधर दे० (अ०) यहाँ, इस और, इस स्थान, इस ओर ।  
 इमं तद् (पु०) आग सुलगाने की लकड़ी, ईंधन ।  
 इन तद् (पु०) सूर्य, समय, राजा, पति, ईश्वर, प्रभु,  
 हस्त नक्षत्र, १२ की संख्या ।  
 इनकार (पु०) खलीकार ।  
 इनान (पु०) पुरस्कार ।  
 इनारा या इन्दारा तद् (पु०) कृप, पक्का कुर्ग ।  
 इनेगिने (वि०) कुल, जुने हुए ।  
 इन्दिरा तद् (स्त्री०) [ इन्दिर + आ ] लक्ष्मी,  
 कमला, रत्ना ।—मन्दिर (पु०) नीलोत्पल, नील  
 कमल ।—जय (पु०) [ इन्दिरा + आलय ]  
 पद्म, पङ्कज ।—वर (पु०) विष्णु, नारायण ।  
 इन्दिवर तद् (पु०) [ इन्द्री + वर + अल ] नीलोत्पल,  
 नील कमल ।  
 इन्दु तत् (पु०) [ इन्द + उ ] शशी, चन्द्र, कर्पूर, एक  
 की संख्या ।—कला (स्त्री०) इन्दुलेखा, चन्द्र-  
 लेखा, चन्द्रकला ।—कान्त (पु०) मणि विशेष,  
 चन्द्रकान्तमणि ।—कान्ता तत् (स्त्री०) रात्रि,  
 निशा, यामिनी ।—प्रत (पु०) चान्द्रायण प्रत ।  
 —भृत् (पु०) महादेव, शिव ।—प्रती (स्त्री०) चन्द्र-  
 युक्ता रात्रि, वीर्यमासी, अयोध्या के राजा अज  
 की स्त्री, इसीके गर्भ से महाराज दशरथ उत्पन्न  
 हुए थे, यह विद्वंमंराज की कन्या थी ।  
 इन्दुर तत् (पु०) उन्दुर, मूस, चूड़ा, सूषिक ।  
 इन्द्र तत् (१) वेदोक्त देवता । भारतीय प्राचीन ग्रंथों  
 आदिगण जिन देवताओं की आराधना करते थे  
 उनमें एक इन्द्र भी हैं । श्रग्वेद में लिखा है कि  
 इन्द्र की माता ने बहुत बर्षों तक इन्हें अपने  
 गर्भ में धारण कर रक्खा था, उत्पन्न होने के

अनन्तर इन्द्र ने अपने पिता को पैर पकड़ के  
 मार डाला । ( २ ) वीरायिक देवता, अन्यान्य  
 देवता इनके अधीन हैं, अतएव यह देवराज कहे  
 जाते हैं । युलोमा दानव की कन्या शची से  
 इनका विवाह हुआ था, इनके पुत्र का नाम  
 जयन्त था ।—कील तत् (पु०) मन्दर पर्वत,  
 मन्दराचल ।—कुञ्जर तत् (पु०) इन्द्र का हाथी,  
 पुरावत हस्ति ।—गोप तत् (पु०) रक्त वर्ण  
 कीट विशेष, खद्योत, जुगुनू ।—जाल तत् (पु०)  
 नटविद्या, फरफंद, चोला, मन्त्र तंत्र, योगद्वारा  
 अचंभे की बातें दिखाने का प्रत्य । मायाकर्म, छल,  
 कपट, भाषा ।—जालिक तत् (पु०) मायावी,  
 मायिक, चाणिकार ।—जित् तत् (पु०) लोभेश्वर  
 रावण का पुत्र, मेघनाद ।—तुल्य तत् (पु०)  
 इन्द्र के समान सर्वश्रेष्ठ, अधिपति, सर्वोत्तम ।—  
 त्व तत् (पु०) स्वर्ग का असाधारण धर्म, राजत्व  
 प्रधान्य ।—दमन (पु०) योग विशेष । वर्षाऋतु में  
 गङ्गाजल पीपल के पत्तों को छू लेती है तब यह  
 योग होता है ।—धनुष तद् (पु०) शक्रधनु,  
 सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो  
 धनुष के आकार का दीप्ति पड़ता है ।—नील  
 (पु०) नीलम, नीलमणि ।—नीलक तद् (पु०)  
 पद्मग, मरकत, पद्म ।—प्रस्थ तत् (पु०) राजा  
 युधिष्ठिर का बनाया हुआ नगर विशेष, हरिप्रस्थ,  
 शक्रप्रस्थ, इत्यादि जिनके नाम हैं । इस समय  
 दिल्ली के नाम से वह प्रसिद्ध है, यद्यपि दिल्ली  
 यमुना के बाएँ किनारे पर स्थित है, तथापि इन्द्र-  
 प्रस्थ यमुना के दक्षिण तट पर स्थित था ।—यव  
 तत् (पु०) ग्रीष्मि विशेष ।—घटू तत् (स्त्री०)  
 भृङ्गकौट, बोरबहटी विशेष ।—घञ्जा तद् (पु०)  
 एक वर्षावृत्त का नाम जिसमें दो तगण, एक जगण  
 और दो गुरु होते हैं ।

इन्द्रायणी तत् (स्त्री०) [ इन्द्र + आयणी ] शशी, इन्द्र  
 की पत्नी, मातुका विशेष ।

इन्द्रानुज तत् ( स्त्री० ) [ इन्द्र + अनुज ] विष्णु,  
 नारायण, श्रीकृष्ण । [ नारायण, विष्णु ।

इन्द्रावरज तद् (पु०) [ इन्द्र + अवर + अज + रु ]  
 इन्द्रायण तद् (स्त्री०) ग्रीष्मि विशेष ।

इन्द्रायुध तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + आयुध] इन्द्र धनुः, शक्र धनुः । [आसन, ऐरावत इति ।

इन्द्रासन तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + आसन] इन्द्र का इन्द्रिय तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + इन्द्र] इन्द्री, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, अन्तरेन्द्रिय, नेत्र, श्रोत, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन ये छः, ज्ञानसाधन, वाक् पाणि गुदा और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रिय और मन बुद्धि चित्त और अहङ्कार ये अन्तरेन्द्रिय हैं ।—गण (पु०) इन्द्रिय समूह, एकादश इन्द्रिय ।—गोचर (पु०) इन्द्रियों का विषय, ज्ञानगम्य, ज्ञानपथ-वर्ती ।—ग्राह्य (पु०) ज्ञानगम्य विषय, शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध आदि ।—दोष (पु०) कामादि दोष, कामुकता, लम्पटता ।—निग्रह (पु०) कामादि इन्द्रिय हमन, चक्षु आदि इन्द्रियों को अपने वश में करना ।—विषय (पु०) इन्द्रिय-ग्राह्य, इन्द्रिय गोचर, नेत्र आदि के पथस्थित ।—गोचर (पु०) [इन्द्रिय + अगोचर] इन्द्रियों के अगोचर, जो इन्द्रियों से नहीं जाना जाय ।—अर्थ (पु०) इन्द्रिय जन्य ज्ञान का विषय रूप रस गन्ध शब्द स्पर्श ।

इन्द्री तत्त्वं (स्त्री०) देखो इन्द्रिय । [लकड़ी ।  
इन्धन तत्त्वं (पु०) [इध् + अनट्] ईंधन, जलावन,  
इष्टु तत्त्वं (पु०) ईप्सित, इच्छुक, लोभी ।  
इफरात (स्त्री०) अधिकता ।  
इवारत (स्त्री०) लेख ।

इम तत्त्वं (पु०) गगन, कुञ्जर, इति, हाथी, समान, सद्यः, नाई, तरह ।—पालक (पु०) महावत, हाथीवान । [धनी ।

इभ्य तत्त्वं (पु०) [इभ् + य] भनवान्, धनशाली, इमदाद दे० (स्त्री०) मदद, सहायता ।  
इमन दे० स्वर का मिलन, रागिनी विशेष ।—कल्याण रागिनी विशेष ।

इनामदस्ता (पु०) लोहे या पीतल का खल ।  
इमारत (स्त्री०) पक्का मकान, विशाल भवन ।  
इमि तत्त्वं (अ०) ऐसे, इस प्रकार से, यों, इस तरह से ।  
इन्द्रान (पु०) परीक्षा ।

इन्द्रा (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई

इम्ली दे० (पु०) वृक्ष विशेष, फल विशेष, तिन्तिड़ी, कुचिया, अमली ।

इरा तत्त्वं (स्त्री०) बाण्यी, भाषा, भूमि, जल, सर-स्वती, कश्यप पत्नी ।—घान् (पु०) [इरा + घतु] समुद्र, मेघ, राजा, अर्जुनपुत्र, अर्जुन के औरस तथा ऐरावत की विधवा कन्या के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, कुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन पचीस आर्यशत नामक राक्षस के द्वारा यह निहत हुआ ।

इरादा (पु०) विचार, संशय, सङ्कल्प ।

इर्दगिर्द (पु०) चारों ओर ।

इलजाम (पु०) अपराध, आरोप, अभियोग, कलङ्क, दोष ।  
इलविला तत्त्वं (स्त्री०) कुषेर की माता, विरवभवा मुनि की पत्नी ।

इलशा दे० (पु०) हिलसा नामक मत्स्य विशेष ।  
इला तत्त्वं (स्त्री०) वैश्वत मनु की कन्या, यह विष्णु के प्रसाद से यद्यपि पुरुष हो गई थी, तथापि कुमारवन में जाने के कारण पुनः स्त्री हो गई, यह बुध से व्याही गई थी, इसी के गर्भ से पुरुषा उत्पन्न हुए थे ।—वर्त्त तत्त्वं (पु०) अन्वहीष के नव वर्षांस्तर्गत वर्ष विशेष ।

इलाका दे० (पु०) रियासत, संसर्ग ।

इलाज दे० (पु०) चिकित्सा, दवा करना ।

इलायची दे० (स्त्री०) एलायची, एला ।—दाना (पु०) एक प्रकार की मिठाई ।

इल्ला दे० (पु०) मत्सा, मत्स्य-बुद्धि ।

इलवला तत्त्वं (पु०) एक दैत्य विशेष का ग्राम, मछली विशेष ।—तत्त्वं (पु०) मृगशिरा नक्षत्र के सिर पर रहने वाला २ ताराओं का झुंड ।

इव तत्त्वं (अ०) सद्यः, समान, उपमा, सरीखा, जैसे, नाई, तरह ।

इशारा दे० (पु०) संकेत,

इष्ट (पु०) [इष्टः] तीर, धी

इष्ट तत्त्वं ( पु० ) [ इष्ट + क ] यज्ञादि कर्म, कर्त्तव्य, पथेयित, काम, संस्कार, यज्ञस्वामी, इष्टदेव, अधिकार, वरा । ( गु० ) चाहा हुआ, आशंसित, वाञ्छित, पूज्य, प्रिय ।—गन्ध ( गु० ) सीम, सुगन्धित द्रव्य ।—देव ( पु० ) यमीष्ट देवता, उपास्य देवता ।—देवता ( पु० ) उपास्य देवता सब से बड़ा देवता, अपना देवता, अवश्य पूजनीय देवता । [ आपत्ति विशेष ]

इष्टापत्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रतिवादी की दिखाई हुई इष्टापूर्त्त तत्त्वं ( पु० ) यज्ञादि कर्म, लोकोपकारार्थ यज्ञ रूप खनन आदि ।

इष्टालाप तत्त्वं ( पु० ) अमिलवित, कथोपकथन ।

इष्टि तत्त्वं ( स्त्री० ) याग, यज्ञ, अमिलाप, इच्छा ।

इष्ट्य तत्त्वं ( पु० ) वसस्त अस्तु ।

इष्टवास तत्त्वं ( पु० ) धनुष, कामुक, शाराशन ।

इस्त तत्त्वं ( सर्व० ) यह ।

इस्तपात तत्त्वं ( पु० ) एक प्रकार का लोहा ।

इस्तबगोल तत्त्वं ( पु० ) औषधि विशेष ।

इस्तलाम तत्त्वं ( पु० ) मुसलमानी धर्म ।

इसाई तत्त्वं ( वि० ) किरिस्तान, ईसाई ।

इसे तत्त्वं ( सर्व० ) हमको । [ सदा रहने यात्रा ।

इस्मरारी तत्त्वं ( गु० ) अपरिवर्तनशील, परम्परागुत,

इस्तिरो तत्त्वं ( स्त्री० ) घोड़ी का एक यन्त्र विशेष जिससे

घुले हुए कार्यों की सफाई मिटाई जाती है ।

इस्तीफा तत्त्वं ( पु० ) त्याग पत्र ।

इस्तेमाल तत्त्वं ( पु० ) प्रयोग, व्यवहार ।

इस्त्रि या इस्त्री तत्त्वं ( पु० ) कपड़ा चिड़नाने का यन्त्र,

जिससे घोड़ी कपड़े पर कलप आते हैं ।

इस्थिर तत्त्वं ( गु० ) स्थिर, निश्चल, अचञ्चल ।

इस्पात तत्त्वं ( पु० ) पक्का लोहा, खेड़ी, परिष्कृत लौह ।

इस्पर्ज तत्त्वं ( स्त्री० ) सामुद्रो यदार्थ जो पानी में डालने

से फूल जाता और वन में पर पानी गिरा देता है ।

इह तत्त्वं ( य० ) यह सय, इन सब ने, इहंति ।

—लोक तत्त्वं ( पु० ) यहाँ का लोक ।—काल

तत्त्वं ( पु० ) यह काल, यह समय ।

इहवाँ यहाँ, इस स्थान ।

इहाँ तत्त्वं यहाँ, इस स्थान पर, इस जगह ।

इहिं तत्त्वं ( कि० वि० ) यहाँ, इसमें, इस जगह ।

३१

ई दीर्घ ईकार, चौपा स्वर चर्चों है, उच्चारण स्थान तालु ।

ई तत्त्वं ( भा० ) विवाद, अनुकम्पा, क्रोध, दुःख भावन, प्रत्यक्ष, सन्निधि, ( पु० ) कन्दर्प, कामदेव ( स्त्री० ) लक्ष्मी ।

ईकार तत्त्वं ( पु० ) अक्षर विशेष, ईवर्ण ।

ईत तत्त्वं ( स्त्री० ) दर्शन, ईक्षण, देखना ।

ईतक तत्त्वं ( पु० ) [ ईष्ट + अक ] अवलोकनकर्ता, दर्शक, दिलीप । [ सर्व, चक्षुप्रवा ।

ईक्षण तत्त्वं ( पु० ) दृष्टि, दर्शन, चक्षु ।—अवा ( पु० )

ईतित तत्त्वं ( गु० ) [ ईष्ट + क ] दृष्ट, अवलोकित,

देखा हुआ ।

ईश्वर तत्त्वं ( पु० ) सिन्दूर का मेद ।

ईल तत्त्वं ( पु० ) ऊल, गन्ना ।

ईचना ( कि० ) खींचना ।

ईट या ईटा ( पु० ) ईटा, इष्टका ।

ईत तत्त्वं ( गु० ) दृष्ट, वाञ्छित, चाहा हुआ देव ।

ईठा तत्त्वं ( स्त्री० ) स्तुति, स्वयं, प्रशंसा, नाड़ी विशेष,

गुण कथन, प्रतिष्ठा । [ खेलने का दंड ।

ईठी ( स्त्री० ) भाला, बरखा ।—दाड़ू ( पु० ) पैमान

ईडा तत्त्वं ( स्त्री० ) स्तुति, प्रशंसा । [ कृतस्व ।

ईदित तत्त्वं ( गु० ) [ ईष्ट + क ] स्तुत, प्रशंसित,

ईद ( स्त्री० ) दंड, छिद्र ।

ईद तत्त्वं ( स्त्री० ) मुसलमानों का एक त्यहार ।

ईदूरी तत्त्वं ( स्त्री० ) इदूरी, सिर पर भार रखने की जो

सन या कपड़े की बनती है ।

ईदूवा तत्त्वं ( पु० ) उठकना, टेकना ।

ईति तत्त्वं ( स्त्री० ) श्रद्धा, प्रयास, बरद्व, चापदा, दुः

प्रकार की ईति—( प्रतिवृद्धि, भ्रान्ति, टिप्पणी

पड़ना, मूर्खों से खेती का नाश, पवित्रों ने खेती

का नाश, राज-विद्रोह से श्रेया ) । [ इस प्रकार ।

ईष्टक तत्त्वं ( गु० ) ईष्ट, एतद् सत्त्व, हमको समान,

इन्द्रायुध तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + आयुध] इन्द्र धनु,  
शक्र धनु । [आसन, ऐरावत इति ।

इन्द्रासन तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + आसन] इन्द्र का  
इन्द्रिय तत्त्वं (पु०) [इन्द्र + इय] इन्द्री, ज्ञानेन्द्रिय,  
कर्मेन्द्रिय, अन्तरेन्द्रिय, नेत्र, श्रोत, घ्राण, जिह्वा,  
त्वक् और मन ये छः, ज्ञानसाधन, वाक् पाणि  
गुदा और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रिय और मन बुद्धि  
चित्त और अहङ्कार ये अन्तरेन्द्रिय हैं ।—गण  
(पु०) इन्द्रिय समूह, एकादश इन्द्रिय ।—गोचर  
(पु०) इन्द्रियों का विषय, ज्ञानगम्य, ज्ञानपथ-  
वर्ती ।—ग्राह्य (पु०) ज्ञानगम्य विषय, शब्द स्पर्श  
रूप रस गन्ध आदि ।—दोष (पु०) कामादि  
दोष, कामुकता, लम्पटता ।—निग्रह (पु०)  
कामादि इन्द्रिय दमन, चक्षु आदि इन्द्रियों को  
अपने वश में करना ।—विषय (पु०) इन्द्रिय-  
ग्राह्य, इन्द्रिय गोचर, नेत्र आदि के पथस्थित ।  
—गोचर (पु०) [इन्द्रिय + अगोचर] इन्द्रियों  
के अगोचर, जो इन्द्रियों से नहीं जाना जाय ।  
—आर्य (पु०) इन्द्रिय जन्य ज्ञान का विषय रूप  
रस गन्ध शब्द स्पर्श ।

इन्द्री तत्त्वं (स्त्री०) देखो इन्द्रिय । [लकड़ी ।  
इन्धन तत्त्वं (पु०) [इध् + अनट्] ईधन, जलावन,  
इंसु तत्त्वं (पु०) ईप्सित, इंसुक, लोभी ।  
इफरात (स्त्री०) अधिकृता ।  
इवारत (स्त्री०) लेख ।

इभ तत्त्वं (पु०) गज, कुंजर, हस्ति, हाथी, समान,  
सदृश, नाई, तरह ।—पालक (पु०) महावत,  
हाथीवान । [धनी ।

इभ्य तत्त्वं (पु०) [इभ् + य] भनवान्, धनशाली,  
इमदाद दे० (स्त्री०) मदद, सहायता ।  
इमन दे० स्वर का मिलन, रागिनी विशेष ।—कल्याण  
रागिनी विशेष ।

इमामदस्ता (पु०) लोहे या पीतल का खल ।  
इमारत (स्त्री०) पक्का मकान, विशाल भवन ।  
इमि तत्त्वं (अ०) ऐसे, इस प्रकार से, यों, इस तरह से ।  
इम्तहान (पु०) परीचा ।  
इम्रती दे० (स्त्री०) एक प्रकार कि मिठाई ।

इम्ली दे० (पु०) वृक्ष विशेष, फट्ट विशेष, तित्तिरी,  
कुचिया, अमली ।

इरा तत्त्वं (स्त्री०) वाणी, भाषा, भूमि, जल, सर-  
स्वती, कश्यप पत्नी ।—वान् (पु०) [इरा + वतु]  
समुद्र, मेघ, राजा, अर्जुनपुत्र, अर्जुन के श्रीरस  
तथा ऐरावत की विधवा कन्या के गर्भ से यह  
उत्पन्न हुआ था, कुक्षेत्र के युद्ध में दुर्मोघन  
पचीय आर्यशत्रु नामक राक्षस के द्वारा यह  
निहत हुआ ।

इरादा (पु०) विचार, मंशा, सङ्कल्प ।

इर्दगिर्द (पु०) चारों ओर ।

इलजाम (पु०) अपराध, आरोप, अभियोग, कलङ्क, दोष ।  
इलजिला तत्त्वं (स्त्री०) कुवेर की माता, विश्वभवा  
मुनि की पत्नी ।

इलशा दे० (पु०) हिलसा नामक मत्स्य विशेष ।

इला तत्त्वं (स्त्री०) वैवश्वत मनु की कन्या, यह  
विष्णु के प्रसाद से यद्यपि पुरुष हो गई थी,  
तथापि कुमारवन में जाने के कारण पुनः स्त्री  
हो गई, यह बुध से ब्याही गई थी, इसी के गर्भ  
से पुरुषावा उत्पन्न हुए थे ।—वर्त्त तत्त्वं (पु०)  
अम्बुद्वीप के नव वर्षान्तर्गत वर्ष विशेष ।

इलाका दे० (पु०) रियासत, संसर्ग ।

इलाज दे० (पु०) चिकित्सा, दवा करना ।

इलायची दे० (स्त्री०) एलायची, एला ।—दाना  
(पु०) एक प्रकार की मिठाई ।

इल्ला दे० (पु०) मत्सा, माँस-शुद्धि ।

इल्वल तत्त्वं (पु०) एक दैत्य विशेष का नाम, मङ्गली  
विशेष ।—तत्त्वं (पु०) मृगशिरा नक्षत्र के  
सिर पर रहने वाला २ ताराओं का कुंड ।

इव तत्त्वं (अ०) सदृश, समान, उपमा, सरीखा,  
जैसे, नाई, तरह ।

इशारा दे० (पु०) सङ्केत, सैन ।

इशतहार दे० (पु०) विज्ञापन, सूचना ।

इपु तत्त्वं (पु०) [इध् + द] वाण, शर, तीर,  
काण्ड ।—धि या धी (पु०) तृण, बायाधार,  
तरकस ।—मान तत्त्वं (वि०) तीरंदाज, बाय  
चलाने वाला । [कंकड़, पाथर फेंकती है ।

इपुपल तत्त्वं (पु०) दुर्ग के द्वार पर की तोप जो

उ

उ उकार, पञ्चम स्वरवर्ण है, इसका उच्चारण स्थान श्रोष्ठ है ।

उ तत् ( पु० ) शिव, ब्रह्मा, प्रजापति ( ब्र० ) सम्बोधन, रोपोक्ति, अनुकम्पा, नियोग, पादपूरण, प्रश्न, छद्मीकार ।

उ दे० चीणस्वर से उत्तर देना ।

उग्रना ( कि० ) उग्र होना, उग्रना ।

उग्रहि दे० ( कि० ) उगते हैं, उदय होते हैं, निकलते हैं ।

उग्रा दे० ( गु० ) उदित होना, उदय हुआ, यथा—  
“वदि उग्रा अहं दिया अकासु” ( पद्मावन ) ।

उग्र्या ( वि० ) ग्राय से मुक्त । [ प्रकाशित हुए ।

उप दे० ( कि० ) उगे, निकले, उदय हुए, देख गये,

उकटना दे० ( कि० ) गद्दी हुई वस्तु निकालना, उखाड़ना, मेढ़ करना, गुणवान को प्रकाशित करना, बार बार कहना ।

उकठा दे० ( वि० ) सूखा, सूख कर पेंठा हुआ ।

उकठि दे० उठंग कर, सहारा लेकर, उठपटांग, काष्ठ, गठीले वा देढ़े मेढ़े काष्ठ करके, बिगड़ी हुई लकड़ी की, कुष्ठित । [ बैठना ।

उकडू दे० ( पु० ) पाँव भर बैठना, घुटने मोड़कर

उकताना दे० ( कि० ) स्निहाना, उषियाना, चिढ़ाना ।

उकतार दे० ( पु० ) उकसाऊ, प्रवर्तक ।

उकतारना दे० ( कि० ) सम्भारना, पच करना ।

उकलना दे० ( कि० ) उमलना, खलबलाना, ऊपर उठना ।

उकसना दे० ( कि० ) उठना, चढ़ना ।

उकसहि ( कि० ) ऊपर उठते या निकालते हैं, उचकते हैं ।

उकसाना दे० ( कि० ) उसकाना, उठाना, चढ़ाना, आगे बढ़ाना ।

उकसावा दे० ( पु० ) उसाह, बढ़ावा ।

उकालना दे० ( कि० ) उथालना ।

उकैलना दे० ( कि० ) उधेरना, खोलना ।

उक्त तत् ( गु० ) [ वच् + क् ] उचिन, भाषित, उदित, निगदित, उल्लेखित, आख्यात, अभिहित ।

उक्ति तत् ( स्त्री० ) कथन, वचन, उपज, अनौत्पन्न वाक्य ।

उखड़ना दे० ( कि० ) उखड़ना, नाश होना, तितर बितर होना ।

उखड़ा दे० ( स्त्री० ) उखड़ा, नष्ट हुआ ।

उखड़ाना दे० ( कि० ) उखड़वाना, उखड़वाना ।

उखम ( पु० ) गर्मी, तार, उष्ण ।

उखमज दे० ( पु० ) ऊमजजीव, सुमकीट । [ का विधान ।

उखर दे० ( पु० ) ईख से जाने के पाद हल पूजने

उखरना दे० ( कि० ) ठोकर खाना, चूकना ।

उखल, उखली तत् ( पु० स्त्री० ) उखली, घोगली, जिसमें धान आदि कूटते हैं ।

उखा दे० ( स्त्री० ) बटलोई, डेगची ।

उखारी दे० ( स्त्री० ) ईख का खेत ।

उगत तद् ( पु० ) उपजना, उद्भव, जन्म, उत्पत्ति ।

उगना तद् ( कि० ) उरख होना, चढ़ना । [ नाश होना ।

उगते ही जलना ( कि० ) प्रारम्भ समय में ही कार्य का

उगलना तद् ( कि० ) वमन करना, धूकना, इलटी करना, की करना ।

उंगली ( स्त्री० ) अँगुरी ।

उगाल तद् ( पु० ) पाह, सीढ़ी, धूक । [ वसूल काना ।

उगाहना तद् ( कि० ) इकट्ठा करना, एकत्र करना,

उगाही दे० ( स्त्री० ) बसूलवासी, इगिलना ( कि० ) उगलना । [ करवाना ।

उगिलवाना या उगिलाना ( कि० ) कैं कराना, उष्टी

उग्र तत् ( गु० ) उक्कट, रौद्र, तीक्ष्ण, क्रोधी, कठिन, ( पु० )

विष्णु, सूर्य, वत्सनाभ नामक विप, महादेव, शिव की वायु मूर्ति, क्षत्रिय के शीरस तथा शूद्रा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष ।—गन्ध ( पु० )

उक्कट गन्धयुक्त, तीक्ष्ण गन्ध ( पु० ) खहसन, काय-फज, हींग ।—( स्त्री० ) अजवायन, अजमोहा, अच,

नक्षत्रिकनी ।—चण्डा ( स्त्री० ) भगवती की मूर्ति विशेष, इनके शरीरद भुजा हैं । आश्विन कृत्त्या नवमी

के छोटी योगिनी परिवेष्टित शरादशभुजा-समन्वित इसी अवस्था की पूजा होती है ।—ता ( स्त्री० )

कठोरता ।—तारा ( स्त्री० ) भगवती की मूर्ति विशेष, इनका दूसरा नाम मातङ्गिनी है ।—

स्यभाव ( गु० ) कठोर चित्त, कठिन हृदय ।—सेन ( पु० ) यदुवंशी राजा, ब्राह्मण का पुत्र ध्या

कंस का पिता, मधुरा का राजा ।



उभिला (छी०) उवाली हुई ससों जो उबदन के काम में आती हैं ।

उच्छ तत् (गु०) [ उच्छ + अल् ] डेय, क्षुद्र ।—  
वृत्ति (छी०) सामान्य जीविका, मुनि वृत्ति, कटे हुए खेत में गिरे हुए अन्न से वृत्ति निर्वाह —  
शिल (पु०) उपेक्षित अन्न का संग्रह ।

उच्छृणोत तत् (गु०) उच्छृजीवी, अति सामान्य कम से जीविका निर्वाह करने वाले, मुनि अपि ।

उच्छिन्न तत् (गु०) [ उच्छ + क् ] उच्छिष्ट, एक, वर्जित ।

उच्छलित तत् (गु०) छोड़ हुआ, डाला हुआ ।

उट तत् (पु०) वृण, तिनका, ऊर्ध्व, पत्ता ।—ज (पु०)  
पणशाला, पत्रचित गृह, पत्तों से बना घर ।

उटकरलस दे० (गु०) अविशेषक, उतावला ।

उटङ्ग (पु०) वह कपड़ा जो पहिने में छोटा हो ।

उटङ्गुन तत् (पु०) सङ्केत, इङ्कित, प्रसङ्ग, प्रस्ताव ।

उटङ्कित तत् (गु०) संकेतित, चिह्नित, उल्लेखित, उर्यापित ।

उठंगन दे० (पु०) टेक, आधार, आश्रय, आड़ ।

उठना तत् (क्रि०) उगना, चढ़ना, खड़ा होना, ऊँचा होना ।

उठवैठ तत् (छी०) चिलविली, चञ्चल, अमुच, अधिक बलेय, “उठवैठ के मीने रात बिताई” ।

उठवैया (पु०) उठलू, उठानेहारा ।

उठलू तत् (गु०) अस्थिर, चपल, चञ्चल, आचारा ।

उठा दे० (क्रि०) उभरा, खड़ा हुआ, निकला, जमा, ऊँचा हुआ, उरपन्न हुआ । [लपक, ठग, उचक्का ।

उठाईगीर या उठाईगीरा तत् (गु०) चौड़ा, हथ-

उठान तत् (पु०) उदय, उठने की क्रिया ।

उठाना तत् (क्रि०) खड़ा करना, उधार देना, दूरी करना, खर्च करना ।

उठा देना तत् दूर करना, भाड़े पर देना ।

उठौआ (वि०) उठौआ, जिसका कोई स्थान निर्दिष्ट न हो । [मजदूरी, दादनी ।

उठौनी दे० (छी०) उठाने की क्रिया, उठाने की

उड़कुं दे० (गु०) उड़नेवाला, उड़ैया, चलनेफिनेवाला ।

उडगण तत् (पु०) तारे, नक्षत्रगण, नक्षत्रसमूह ।

उड़चलना तत् (क्रि०) अकड़ना, इतराना ।

उड़ती तत् (पु०) अस्थिर, अनिश्चित, अमुचक, ननुधुति ।

उड़नखटोला (पु०) विमान । [आकाशगमन ।

उड़ना तत् (क्रि०) पक्षी का आकाश में चलना,

उड़नी दे० (वि०) फैझनी, जैसे चेषक या हैजे की बीमारी । [नाशरील, अधिक खर्चोला ।

उड़ाऊ तत् (पु०) अपव्ययी, लुटाऊ, घृया धन

उड़ाक या उड़ाकू (पु०) उड़ैया, ले भागने वाला अप-  
हरणकर्ता ।

उड़ान तत् (छी०) कूटना, पक्षियों की चाल ।

उड़ाना तत् (क्रि०) उड़ा देना, भगाना, लुटाना ।

—पुड़ाना लुटाना, गंवाना, अपव्यय करना,  
नारा करना । [करते हैं ।

उड़ावहिं तत् (क्रि०) बढ़ाते हैं, भगाते हैं, नाश

उड़ाहीं तत् (क्रि०) उड़ते हैं, उड़ जाते हैं ।

उड़िया दे० (पु०) उड़ीसा देशवासी ।

उड़ियाना तत् (पु०) एक मासिक छन्द विशेष ।

उड़िस दे० खटमल, खटकीरा ।

उड़ीसा दे० उरकल देश । [आकाश, गगन, नभस्थल ।

उडु तत् (पु०) नक्षत्र, राशि, तारा ।—पथ (पु०)

उडुप तत् (पु०) चन्द्र, नाव, घनई, डोंगी ।

उड़ेलना दे० (क्रि०) एक वर्तन से दूसरे वर्तन में  
डालना ।

उडुस दे० (पु०) खटमल, खटकीरा, उड़िस ।

उड़ीन तत् (पु०) उड़ना, परवाज़ होना ।

उड़ीयमान तत् (पु०) उड़नेवाला, आकाशगामी,  
नभधर ।

उड़कना दे० (क्रि०) उलटाना, झेंधाना, मिड़ाना,  
किसी के सहारे खड़ा करना ।

उड़ना दे० कपड़ा लत्ता । [रखुई, रखैला, उरपली ।

उड़री दे० (छी०) वह छी जो विवाहिता न हो,

उड़ाना दे० आच्छादन करना, ढकना, पहिना ।

उच्छ दे० (वि०) ऊँचा, बुलन्द ।

उड़ेलना दे० (क्रि०) डालना, डकलना ।

उड़ैया दे० (पु०) उड़ानेवाला, ढकनेवाला ।

उत तत् (अ०) उधर, उस ओर, उस तरफ़ ।

उतथ्य तत् (पु०) [उतथ् + य] मुनि विशेष, अक्रिरा

का पुत्र, बृहस्पती का उपेठ. सहोदर ।—नुज

(पु०) [उतथ्य + अनुज] बृहस्पति ।

उतना तद् ( थ० ) उता ही, उतना ही, उता,  
परिमाण्य विशेष ।

उतरन तद् ( थि० ) पहिने हुए पुराने वस्त्र ।—पुतरन  
दे० ( थि० ) पहिने हुए पुराने फटे वस्त्र ।

उतरना तद् ( क्रि० ) नीचे आना, घट जाना, टिकना,  
विश्राम करना, फिनारे पहुँचना, पार होना,  
लौघना, घटना, कम होना, उदास होना, फोका  
पड़ना, यथा “ आजकल उसका रङ्ग उतर  
गया है ” ।

उतरहा दे० ( वि० ) उत्तर दिशा के देश का वासी ।

उतरहिं ( क्रि० ) इतरते हैं, नीचे आते हैं, उतरते हैं,  
ढेरा करते हैं, विश्राम करते हैं ।

उतराई दे० ( थि० ) मछाही, माँकी का नेग, नदी  
के पार जाने का महसूल ।

उतराना ( क्रि० ) पानी के ऊपर तैरना, यात्रा सी  
आना जैसे आजकल असुक बहुत उतराए हैं ।

उतरायल ( गु० ) छोड़ा हुआ, उतारा हुआ, काम  
में लाया हुआ ।

उतराय दे० ( पु० ) उतार, ढाल ।

उतला तद् ( वि० ) उतापला, व्यस्त, व्याकुल, व्यग्र ।

उतान ( गु० ) सीधा, चिस, पीठ के बल ।

उताना दे० ( गु० ) छिड़ला, उलटा, झोंपा, विपरीत ।

उतार तद् ( पु० ) नीचे आना, घटी ।

उतारन तद् ( पु० ) ब्याँझावर, निकट वस्तु ।

उतारना ( क्रि० ) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना,  
नकल कराना, लगी या खपटी वस्तु का अलगाना  
जैसे खाल उताना, उठराना, वारना, यदा करना,  
किसी प्रभाव को दूर करना जैसे नशा उतारना,  
निगलना, घजन में पूरा करना, भोजन की पूरी  
आदि तैयार करना जैसे पूरिया उतार ली ।

उतारा तद् ( पु० ) ढेरा, नदी पार करने की क्रिया ।

उतारि ( क्रि० ) उतार कर, गिरा कर, पदच्युत कर,  
नीचे रख कर ।

उतारु दे० ( वि० ) तैयार, तत्पर ।

उताल दे० ( पु० ) डीठा, ऊँचा ।

उतावला दे० ( थि० ) शीघ्रता, वेग, तुताई, कहीं  
कहीं उतावला भी कहा जाता है ।

उतावला दे० ( वि० ) अडमडिया, जल्दबाज़ ।

उतावली दे० ( गु० ) शीघ्रता, फुरतीलापन ।

उत्क तत् ( गु० ) उन्नता, अन्यमनस्क, उद्विग्न, इच्छुक,  
उत्कण्ठित ।

उत्कट तत् ( गु० ) [ उत् + कट + भल् ] तीव्र, मत्त,  
विषम, सख्त, कठिन, दुःसह, उदाम, कठोर, वम,  
अधिक, दुःसाध्य ।

उत्कण्ठा तत् ( थि० ) अभिलाषा, इष्ट प्राप्ति के लिये  
विलम्ब का असहन, प्रियप्राप्ति के लिए इदासी,  
अन्यमनस्कता, व्याकुलता, व्यस्तता, भावना,  
चिन्ता औत्सुक्य, उद्वेग, विशेष चाह, पूर्णछा,  
बड़ी अभिलाषा ।

उत्कण्ठित तत् ( गु० ) उत्कण्ठायुक्त, उत्सुक, उन्नता,  
उद्विग्न, भावित, चिन्तित — तत् ( थि० ) चिन्ता-  
न्विता, उद्विग्नता, नायिका विशेष, सङ्केत स्थान में  
नायक के न आने से अनुत्सह, इसे उत्का भी कहते हैं ।  
यथा—“ आप जाय सङ्केत में पीव न आये होय,  
साकी मन चिन्ता करे उत्का कहिये सोय ” ।

—मतिराम

उत्कर्ष तत् ( पु० ) [ उत् + कृप् + भल् ] प्रधानत्व,  
श्रेष्ठता, प्रशंसा, बढ़ाई, वप्रता, जोर, उत्तमता,  
श्रेष्ठपन — ता ( थि० ) श्रेष्ठता, उत्तमता ।

उत्कल तत् ( पु० ) देश विशेष, इसका दूसरा नाम  
शोड़ भी था, इस समय उड़ीसा देश के नाम से  
प्रसिद्ध है । साम्राज्यो नदी के दक्षिण किनारे पर  
बसा है और कपिला नदी तक चला गया है ।  
इसके प्रसिद्ध नगर पुरी और कटक हैं । पुरी ही  
में जगन्नाथ जी का मन्दिर है ।

उत्कलिका तत् ( थि० ) उत्कण्ठा, तरंग, फूल की  
कली, बड़े बड़े समारोह वाला गद्य । [ सोदा हुआ ।

उत्कीर्ण तद् ( गु० ) शत, खोदित, वृक्षित, पेवित,

उत्कुण तत् ( पु० ) मत्कुण, खटकीरा, खटमल ।

उत्कृष्ट तत् ( गु० ) [ उत् + कृष्ट + क्त ] उत्कर्ष विशिष्ट,  
अतिशय, प्रकृष्ट, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ — ता ( थि० )  
उत्तमता, बढ़ाई, श्रेष्ठता ।

उत्क्रान्त तत् ( गु० ) [ उत् + क्रम + क्त ] निर्गत,  
ऊपर गया हुआ, उल्लङ्घित ।

उत्क्रान्ति तत् ( थि० ) संयु, मरण, श्रेष्ठता और  
पूर्णता, क्रमशः प्रवृत्ति ।

उत्क्रोश तत् ( पु० ) गच्छि विशेष, कुरारी, टिट्ठिम  
राजपक्षी, ( कि० ) चिह्नाना ।

उत्खात तत् ( गु० ) [ उत् + खत् + क ] उन्मूलित,  
उत्पादित, विदारित, उखाड़ा हुआ ।

उत्तंस तत् ( पु० ) कर्णपूर, कर्णामरण, शोख, शिरो-  
भूषण, कनकूट ।

उत्तप्त तत् ( गु० ) [ उत् + तप् + क ] तप्त, सन्तप्त,  
उष्ण, दग्ध, परिप्लुत, तापित, चिन्तित, भाविन ।

—ता ( स्त्री० ) उष्णता, सन्ताप ।

उत्तम तत् ( गु० ) [ उत् + तम् + अल् ] भद्र,  
उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, सब से अच्छा ( पु० )  
नायक भेद, राजा उत्तानपाद का पुत्र, उत्तानपाद  
की प्रिया सुहृदि के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था,  
अविवाहित अवस्था ही में उत्तम अश्वर खेलने  
किसी वन में गया और वहाँ एक यक्ष ने उसे मार  
डाला ।—ता ( स्त्री० ) उत्कर्ष, सौन्दर्य ।—पद्  
( पु० ) श्रेष्ठपद, उच्चपद ।—पुरुष ( पु० ) सर्वनाम  
विशेष जिससे बोलने वाले का बोध हो ।—र्षा  
( पु० ) [ उत्तम + श्रृणु ] श्रेष्ठदाता, महाजन ।—  
संग्रह ( पु० ) सम्मक् संग्रह, एकान्त में पक्षी के  
साथ परस्पर आलिङ्गन ।—साहस ( पु० ) दण्ड  
विशेष, अस्सी हज़ार पण परिमित दण्ड, अतिशय  
साहस, दुःसाहस ।—ः ( स्त्री० ) उत्कृष्टा नारी,  
श्रेष्ठा ।—ङ्ग ( पु० ) [ उत्तम + धङ्ग ] मस्तक,  
सिर, मुण्ड ।—उत्तम ( गु० ) [ उत्तम + उत्तम ]  
अतिशय उत्कृष्ट, श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ, परमोत्कृष्ट ।  
—तेजा तत् ( वि० ) उत्तम तेज या बल वाला ।  
( पु० ) युधामन्यु का भाई, मनु के दस पुत्रों में  
से एक ।

उत्तर तत् ( पु० ) [ उत् + तृ + अल् ] प्रतिवचन,  
प्रतिवाक्य, बदला, पलटा, समाधान, दिश  
विशेष, ( गु० ) अनन्तर, ( भ० ) पश्चात्, ( पु० )  
विराट-राजपुत्र ।—काल ( पु० ) अविव्यक्त काल,  
आगामी समय ।—काशी ( स्त्री० ) दरिद्राद व  
उत्तर एक स्थान विशेष ।—कुर्व ( पु० ) जम्बुद्वीप  
के नववर्षों के अन्तर्गत एक वर्ष ।—कौशला  
( स्त्री० ) अयोध्या नगरी, सूर्यवंशी राजाश्री की  
प्राचीन राजधानी ।—क्रिया ( स्त्री० ) प्रतिवचनदान,

अन्येष्विक्रिया, सांवरसरिक धातु आदि  
पितृकर्म ।—च्छद ( पु० ) प्रच्छदपट, आच्छादन  
वस्त्र, पर्लंगपोष । दाता ( पु० ) जवाबदेह ।—  
दायित्व ( पु० ) जवाबदेही ।—दायी ( पु० ) उत्तर  
देने वाला, जवाबदेह ।—पक्ष ( पु० ) सिद्धान्त,  
समाधान, विचार विशेष । प्रत्युत्तर ( पु० )  
वादानुवाद, तर्क । [ नक्षत्र ।

उत्तरफाल्गुनी तत् ( स्त्री० ) नक्षत्र विशेष, शारदवाँ  
उत्तरमासपद तत् ( पु० ) छद्मतीर्था नक्षत्र ।

उत्तरमीमांसा ( स्त्री० ) वेदान्त दर्शन ।

उत्तरा ( स्त्री० ) राजा विराट की कन्या का नाम जो  
अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से ब्याही गयी थी, इसीके  
गर्भ से राजा परीक्षित हुआ था ।—उग्रद  
( पु० ) हिमालय के निकटवर्ती देश ।—धिकारी  
( पु० ) वारिस ।

उत्तरायण तत् ( ३० ) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन,  
विपुत्र रेखा के उत्तर भाग में सूर्य का स्थिति-  
काल, माघ से लेकर दश महीना, देवताओं का  
दिन । [ ब्राह्म भाग ।

उत्तरार्द्ध तत् ( पु० ) उत्तर का ब्राह्म हिस्सा, पिछला  
उत्तरापादा तत् ( स्त्री० ) इसीसर्वा नक्षत्र ।

उत्तराहा तत् ( वि० ) उत्तर दिशा का ।

उत्तरीय तत् ( पु० ) उत्तर देशवासी, ऊपर रखने का  
कपड़ा, दुपट्टा, उत्तर दिशा का ।

उत्तरोत्तर तत् ( पु० ) [ उत्तर + उत्तर ] क्रम से, एक  
के अनन्तर एक, आगे आगे ।

उत्तान तत् ( गु० ) [ उत् + तन + धञ ] उन्मुख,  
ऊर्ध्वमुख, चित्त ।—पाद ( पु० ) तावा, रोटी  
संकेत का वर्तन ।—पाद ( पु० ) राजा विशेष,  
स्वायम्भुव मनु का पुत्र और ध्रुव का पिता ।  
—शय ( गु० ) बहुत छोटो लड़का, चित्त सेने  
वाला । [ सन्ताप, उष्णता, कष्ट, वेदना, चोम ।

उत्ताप तत् ( पु० ) [ उत् + तप् + धञ ] तेज, गरमी,  
उत्ताज तत् ( गु० ) उत्कट, महत्, श्रेष्ठ, भयानक,  
स्वरित । [ घट्टमान ।

उत्तिष्ठमानं तत् ( गु० ) उद्यमानशील, यत्नशील,  
उत्तीर्ण तत् ( गु० ) [ उत् + तृ + हि ] पारमास,  
पारङ्गत, मुक्त, उन्नीत ।

उत्पन्न तत्त्वं ( गु० ) उच्च, उर्ध्व, उन्नत, बहुत ऊँचा ।  
 उत्पू दे० ( पु० ) चुनत, कुच्छाव, पत, तह, घरी,  
 झोझार विशेष ।—करना ( कि० ) तह जमाना,  
 चुनना, पत लगाना, मिथिष्ट करना ।  
 उत्पत्त तत्त्वं ( गु० ) वर्जित, परित्यक्त, छोड़ा हुआ ।  
 उत्तेजना तत्त्वं ( पु० ) प्रेरणा, बढ़ावा, वेगों को तीव्र  
 करने की क्रिया ।  
 उत्तेजित तत्त्वं ( गु० ) [ उत् + क ] प्रेरित, पुनः पुनः  
 आदेशित, उत्तेजना से भरा हुआ ।  
 उत्तोलन तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + तुल् + यनट् ] ऊर्ध्व  
 नयन, तोलना, ऊँचा करना, सानना ।  
 उत्थान तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + स्था + यनट् ] उठान,  
 आरम्भ, बढ़ती ।—एकादशी ( स्त्री० ) कार्तिक  
 मास के शुक्लपक्ष की एकादशी, इसी दिन शेषशायी  
 जाग्रत होते हैं, देवउठान एकादशी ।  
 उत्थापन तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + था + णिच् + यनट् ]  
 उठाना, जगाना, हिलाना, डुलाना ।  
 उत्थित तत्त्वं ( गु० ) [ उत् + स्था + क ] उत्पन्न, उठा  
 हुआ ।—उत्तुलि ( स्त्री० ) अँगुली फैलाया हुआ  
 पंजा, धप्पड़ । [ पक्षी का उड़ना, ऊपर उठना ।  
 उत्पत्तन तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + पत् + यनट् ] उर्ध्वगमन,  
 उत्पत्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) देखा उत्पत्ति ।  
 उत्पत्तित ( गु० ) [ उत् + पत् + क ] ऊपर गया हुआ,  
 ऊर्ध्व गमन किया हुआ ।  
 उत्पत्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ उत् + पत् + क्ति ] जनन,  
 जन्म, उद्भव, आदि ।—शाली ( गु० ) अन्न  
 विशिष्ट, जो उत्पन्न होता है ।  
 उत्पद्य तत्त्वं ( पु० ) कुमार्ग, कुमार्गगमन, सर्वपथगुन  
 उत्पन्न तत्त्वं ( गु० ) [ उत् + पद् + क ] उत्पत्ति विशिष्ट,  
 जात, अन्मा हुआ ।  
 उत्पन्ना तत्त्वं ( स्त्री० ) अगहन बड़ी एकादशी का नाम ।  
 उत्पल तत्त्वं ( पु० ) नीलक्रमल, नीलपत्र, पद्मपत्र से  
 उत्पन्न होनेवाले पुष्प मात्र ।—पत्र ( पु० ) पद्मपत्र,  
 धी-नखत ।  
 उत्पाटन तत्त्वं ( पु० ) मूख सहित उखाड़ना, ऊधम,  
 खोराई, सैनानी, बदमाशी, उन्मूलन, उड़ मे  
 खोदना ।  
 उत्पात तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + पत् + यत् ] उपद्रव,

दौराभ्य, दुष्टता, बिगाड़, हानि, अन्धेर ।—ग्रस्त  
 ( गु० ) उपद्रव युक्त ।  
 उत्पाती ( गु० ) उत्पात करने वाला, उपद्रवी ।  
 उत्पादक ( गु० ) [ उत् + पद् + क्क ] जनक,  
 उत्पत्ति कर्ता, पैदा करने वाला ।  
 उत्पादन तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + पद् + णिच् + यनट् ]  
 जनन, उत्पन्न करना, जमाना, उरजाना ।  
 उत्पादिका तत्त्वं ( स्त्री० ) [ उत् + पद् + इक् + णा ]  
 जननी, उत्पादन कारिणी, माता, प्रति पदार्थ में  
 एक प्रकार की शक्ति जिसे उदादिका शक्ति  
 कहते हैं ।  
 उत्पीड़न तत्त्वं ( पु० ) झेरा पहुँचाना, दवाना ।  
 उत्प्रेक्षा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ उत् + प्र + इच् + णा ] धन-  
 वधान, सादर्य धनुमान्, उपेक्षा, अपमा, ठीठ,  
 — अर्थात् अङ्कार विशेष, अतिशय सादर्य होने के कारण  
 उपमान गत गुण किया आदि की उपमेय में सम्भाषण ।  
 उत्सवन तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + पू + यनट् ] कृदना,  
 बाँवना, डोंक मारना ।  
 उत्साल तत्त्वं ( पु० ) बाँवना, कृदना, डोंक मारना ।  
 उत्सृष्ट तत्त्वं ( गु० ) [ उत् + सृ + क् ] प्रकृत, विक-  
 सित, धानन्दित, फूला हुआ ।  
 उत्सृज्य तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + सृ + क् ] मोड़, अन्न,  
 कोला, गोरी, बीच का हिस्सा, ऊपर का भाग,  
 ( वि० ) विरक्त, निर्लस । [ उचित, उत्पत्ति ।  
 उत्सृज्य तत्त्वं ( गु० ) [ उत् + सृ + क् ] हत, गष्ट,  
 उत्सर्ग तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + सृ + क् ] त्याग, दान,  
 वितर्जन ।—पत्र ( पु० ) दान पत्र, कार्य-आगम ।  
 उत्सर्जन तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + सृ + यनट् ] उत्सर्ग,  
 त्याग, छोड़ना, दान, वितरण, वैदिक कर्म विशेष  
 जो वर्ष में दो बार यानी एक बार पून में और  
 दूसरी बार भावण में होता है ।  
 उत्सा तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + सु + यत् ] उत्थ, प्रवृत्तता  
 का प्रकाश, आनन्द, उदाह, पञ्च, पूजा, अर्घ्य  
 आदि ।—जनक ( गु० ) आरक्षक जनक, प्रमोद  
 जनक, आनन्दकारी ।  
 उत्सारक तत्त्वं ( पु० ) दारपाण, पोषण ।  
 उत्सादन तत्त्वं ( पु० ) [ उत् + मद् + णिच् + यनट् ]  
 उपेक्ष करण, विनाश, विद्रि मित्र करना ।

उत्सादित तत् ( गु० ) [ उव् + सद् + शिच् + क ]  
विनाशित, छिन्न भिन्न कृत, निर्मली कृत शरीर ।

उत्साराण तत् ( पु० ) [ उव् + सृ + श्रन्ट् ] दूरी  
करण, दूसरे स्थान में भेजना ।

उत्साह तत् ( पु० ) [ उव् + सह् + घञ् ] अध्ववसाय,  
उद्योग, उद्यम, वीर रस का स्थायी भाव, उमंग  
उत्साह, साहस ।—उद्यन् ( पु० ) उद्यमवृद्धि, उद्य-  
माधिक्य ।—शील ( गु० ) उद्योगी, उद्यम । —  
निमित्त ( गु० ) उत्साह युक्त, उद्यमी ।

उत्साहित तत् ( गु० ) उत्साहशाली, प्रोत्साह ।

उत्साही तत् ( गु० ) [ उव् + सद् + शिच् ] उद्यमयुक्त,  
उद्योगी, हौसिले वाला ।

उत्सुक तत् ( गु० ) [ उव् + सु + कन् ] मनोरथ सिद्धि  
के लिये उत्कण्ठित, अत्यन्त इच्छुक ।—ता तत्  
( स्त्री० ) आकुल इच्छा ।

उत्सूर तत् ( पु० ) सन्ध्या काल, शाम ।

उत्सृष्ट तत् ( वि० ) त्याग हुआ ।

उत्सेध तत् ( वि० ) पड़ती, उन्नति, ऊँचाई, सूजन ।

उत्थलना दे० ( क्रि० ) बल देना, औघना, तले ऊपर  
करना । [ उधर, नीचे ऊपर, क्रमभङ्ग ।

उत्थल पुथल दे० ( पु० ) बलट पुलट, विपरीत, उधर का

उत्थला दे० ( गु० ) झिझका, कम गहरा ।

उद् तत् ( अव्य० ) संस्कृत का उपसर्ग ।

उदक तत् ( पु० ) जल, सलिल, पानी ।—क्रिया  
( स्त्री० ) मृत मनुष्य को लक्ष्य करके जल देना,  
जलवर्षण क्रिया । [( स्त्री० ) उदाचल की धाटी ।

उदघाटी तद् ( क्रि० ) खोली, उघारी, प्रकाश की,

उदधि तत् ( पु० ) समुद्र, जलधि, सागर, घड़ा, मेघ ।

—मेखला ( स्त्री० ) पृथ्वी, भूमि ।—सुत तत्  
( पु० ) चन्द्रमा, अमृत, शङ्ख आदि जो समुद्र से  
उत्पन्न हो ।—सुता तत् ( स्त्री० ) बहमी, सीप ।

उदन्त तत् ( गु० ) विना दाँतों वाला, पोपला, तुण्ड ।

उदन्वान् तत् ( पु० ) समुद्र, पयोधि, चारितिधि ।

उदपान तत् ( पु० ) रूप के समीप का गड्ढा,  
कमण्डलु ।

उदवेग तद् ( पु० ) [ देखो उद्वेग ] ।

उदभव तद् ( पु० ) [ देखो उद्भव ] । [( वि० ) पागल ।

उदमाद तद् ( पु० ) पागलपन, उन्माद ।—ती तद्

उदय तत् ( पु० ) समुद्रति, दीप्ति, मङ्गल, प्राची,  
धनलाम, उत्पत्ति, प्रादुर्भाव, उपज, उन्नति ।—  
काल ( पु० ) प्रभातकाल, सर्प विशेष ।—गिरि  
( पु० ) उदयाचल, पूर्व का एक पर्वत, जिस पर  
प्रथम सूर्य उगते हैं ।

उदयन तत् ( पु० ) प्रकाश होना उदय गमन, अगस्त  
मुनि, कलसराज, शतानीक के पुत्र, इनकी राज-  
धानी प्रयाग के पास कैलाशमी थी, वासवसा  
इनकी रानी का नाम था, कलसराज और उदयन  
दोनों नाम से ये प्रसिद्ध हैं । विख्यात दार्शनिक  
पण्डित उदयनाचार्य द्वादश शताब्दी के मध्यभाग  
में मिथिला में उपज्ज हुए थे । कहते हैं कि बौद्धों  
का नाश करने के लिये भगवान् मिथिला में  
उदयनाचार्य रूप से प्रकट हुए थे । प्रसिद्ध दार्शनिक  
ग्रन्थ कुसुमाञ्जलि इन्होंने बनाया है । इसके  
अतिरिक्त वाचस्पति मिश्र के बनाये न्यायशास्त्र  
के किन्ने ग्रन्थों की टीका भी इन्होंने की है ।  
इनकी कन्या लीलावती, उस समय विख्यात  
पण्डिता थी ।

उदयाचल तत् ( पु० ) उदयगिरि, पूर्वपर्वत, पुराणों के  
मत के अनुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से  
सूर्य भगवान् निकलते हैं ।

उदयातिथि तत् ( स्त्री० ) वह तिथि जो सूर्योदय काल  
में हो । ( शास्त्रानुसार स्नान दान अर्घ्यदानादि कर्म  
उदयातिथि ही में होना उचित है ) ।

उदयाद्रि तत् ( पु० ) उदयाचल, उदयगिरि ।

उदयास्त तत् ( पु० ) प्रभात से सन्ध्या पर्यन्त, उदय  
से अस्त लों, पूर्व से पश्चिम तक ।

उदर तत् ( पु० ) पेट, जठर ।—उवाला ( स्त्री० ) भूख,  
जठराग्नि ।—भङ्ग ( गु० ) अतिसार, पेट की छुटाई ।

—मृरि ( पु० ) पेटार्थी, पेट ।—रस ( पु० ) उदर-  
स्थित पाचक रस ।—रोग ( पु० ) जठरव्याधि विशेष,  
पेट की पीड़ा ।—वृद्धि ( स्त्री० ) जलोदर रोग,

जलधर ।—सर्वस्व ( गु० ) उदरपरायण, पेट ।—  
अग्नि ( गु० ) जठराग्नि, पचाने की शक्ति ।—वर्त

( पु० ) नामी ।—मय ( पु० ) उदररोग, पेट की  
पीड़ा, उदरभङ्ग, अतिसार ।

उदरिणी तद् ( स्त्री० ) गर्भिणी, द्वितीया, दुपथा ।

उदरी तत्त्वं (गु०) उदरिणः, उदरिलः, सेदीला, घोंद  
पाखा ।

उदघत दे० (कि०) निकलना, उगना ।

"उदघत राशि निपाहः, सिन्धु प्रतीची बीच ज्यों ।"  
—गुमान कवि ।

उदयना (कि०) प्रकट होना, उगना, निकलना ।

उदयेग तत्त्वं (पु०) [देखो उद्वेग] ।

उदभय तत्त्वं (पु०) [देखो उद्भय] । [होना ।

उदसन दे० (कि०) संहयेंड होना, उजड़ना, क्रम भङ्ग

उदात्त तत्त्वं (पु०) स्वरविशेष, वेदगान में उच्चस्वर,  
काव्यालङ्कार विशेष, नायक विशेष, (गु०) स्वरित,  
दया त्याग-आदि गुण सम्पन्न, मनोहर, महान्,  
दाता, श्रेष्ठ, योग्य ।

उदाता तत्त्वं (गु०) दाता, दानकारी, उदार ।

उदान तत्त्वं (पु०) कण्ठस्वबायु, प्राणबायु, उदरावतं,  
नाभि सर्पविशेष ।

उदार तत्त्वं (गु०) [उ + आ + क + अय्] दाता,  
महत्, सरल, महात्मा ।—चरित (गु०) शीलशुक्ल,  
ऊँच विचार सम्पन्न ।—ता (स्त्री०) सरलता,  
दानशीलता, पदान्विता ।—त्य (पु०) दान्यव,  
दानशीलता ।—शाय तत्त्वं (गु०) महात्मा,  
उदार आशय वाला ।

उदारना (कि०) चीना, फाड़ना ।

उदास तत्त्वं (पु०) [उ + आस् + अल्] एकान्ती,  
विरक्त, खिन्न चित्त, निरपेक्ष, दुःखी, सर्वस्व त्यागी,  
सुस्त, रंजीत, व्यग्रचित्त ।—ना चित्त न लगना ।

उदासी तत्त्वं (पु०) पैरागी, एकान्तवासी, त्यागी पुरुष,  
एक सम्प्रदाय के साधु ।—बाजा दे० (पु०) एक  
प्रकार का मीरा वाजा ।

उदासीन तत्त्वं (पु०) निरासन्न, शत्रु मित्र को समान  
देखने वाला, तटस्थ, उपेक्षयुक्त, समता रहित,  
पासना शून्य, विरह, संन्यासी, समदर्शी ।—ता  
तत्त्वं (स्त्री०) विरक्ति, त्याग, निरपेक्षता, खिन्नता ।

उदाहर तत्त्वं (स्त्री०) पुंघला रत्न, भूरा ।

उदाहरण तत्त्वं (पु०) दृष्टान्त, निदर्शन, उभय ।

उद्गहृत तत्त्वं (गु०) [उ + ग्रा + ह + क] दृष्टान्त  
दिया हुआ, उपेक्षित, उक्त, कथित ।

उदित तत्त्वं (गु०) [उ + द + क] उदगत, प्रका-

शित, आविर्भूत, प्रकट, प्रफुल्लित, कदा हुआ ।—  
यौवना तत्त्वं (स्त्री०) सुगंध नायिका के सात भेदों  
में से एक । [दिशा ।

उदीची तत्त्वं (स्त्री०) [उ + अच् + ई] उत्तर  
उदीच्य तत्त्वं (पु०) गारावती नदी के पश्चिमोत्तर देश,  
उत्तर दिशा का रहने वाला । [उच्चारण, वाक्य ।

उदीरण तत्त्वं (पु०) [उ + ईर + घनट्] कथन,  
उदीरित तत्त्वं (गु०) उच्चारित, उक्त, कथित ।

उदुम्बर तत्त्वं (पु०) गूलर, हूमा ।

उदुखल तत्त्वं (पु०) उलूखल, शोषणी, गूगल ।

उदुगत तत्त्वं (गु०) ऊर्ध्वगत, उदित, उरित, ध्वस्त ।

उदुगम तत्त्वं (पु०) उदय, आविर्भाव, निकाल ।

उदुगमन तत्त्वं (पु०) ऊर्ध्वगमन, ऊपर जाना ।

उदुगाता तत्त्वं (पु०) सामवेदज्ञ, सामवेदवेत्ता प्राहण्य,  
सामवेद-गायक ।

उदुगाया तत्त्वं (स्त्री०) आर्या वृन्द का एक भेद जिस  
के विषय पादों में १२ और सग में १८ मात्राएँ  
होती हैं और जिसके विषय गणों में जगण नहीं  
होता है ।

उदुगार तत्त्वं (पु०) उकार, धमन, ओकाई, कण्ठ-  
वक्रान्त, गर्जन, बाढ़, घाघराहट, बहुत दिनों  
से मन में रखी किसी के विरुद्ध कोई बात का  
निकालना, किसी की गुप्त बातों का प्रकट करना ।

उदुगीत तत्त्वं (गु०) ऊँचे स्वर से गाया हुआ,  
ध्वन्द्व विशेष । [श्रोद्धार, सामवेद ।

उदुगीय तत्त्वं (पु०) सामवेद का ध्वंश विशेष, प्रणव,  
उदुघाट तत्त्वं (पु०) चौकी जहाँ किसी राज्य की  
घोर से माल को खोल कर उसकी जाँच की  
जाय ।

उदुघाटन तत्त्वं (पु०) उघाड़ना, प्रकाशित करना,  
कुप से जल निकलने के लिये रज्जुसदिन घट ।

उदुघात तत्त्वं (गु०) आरम्भ, उपक्रम, धक्का, ठोकर,  
आघात ।

उदुघट तत्त्वं (गु०) अचल, निडर, उजड़ ।

उदुश तत्त्वं (पु०) मत्ता, मराक, उमि, मच्छर ।

उदुन्त तत्त्वं (गु०) बृहन्नत दंतुला, आगे निकला  
हुमा दल, बढ़दन्ता । [वेकहा ।

उद्गम तत्त्वं (गु०) निरङ्कुश, स्वतंत्र, महान्, गम्भीर,

उद्दालक तत्० ( पु० ) प्राचीन आर्य ऋषि, इनका प्रकृत नाम आरुणि है, इनके गुरु ऋषेदधौम्य ने इनका उद्दालक नाम रक्खा । श्वेतकेतु इन्हीं के पुत्र थे । घृत विशेष ।

उद्दिम तत्० ( पु० ) उद्यम, उद्योग ।

उद्दिष्ट तत्० ( गु० ) कृत उद्देश, लक्षित, दिखनाया हुआ, सम्मत, अभिप्रेत, मनस्थ । [ इने वाला ।

उद्दीपक तत्० ( गु० ) प्रकाशकृत्ता, व्यक्तकारी, उभा-

उद्दीपन तत्० ( पु० ) प्रकाशन, तापन, रसों का विभाव विशेष, उभाड़ना, बढ़ाना ।

उद्देश तत्० ( पु० ) अनुबन्धान, अनुपपन्न, अभिप्राय, नाम निर्देशपूर्वक, वस्तु निरूपण, इष्ट, मतलब, हेतु, कारण, म्याय में प्रतिज्ञा ।

उद्देश्य तत्० ( गु० ) लक्ष्य, इष्ट, प्रयोजन ।

उद्द्योत तत्० ( पु० ) प्रकाश ।

उद्भूत तत्० ( गु० ) घट, अविनीत, दुर्गन्त, कुचाली, अभिमानी, मल ।—पन ( पु० ) उजड़पन, उग्रता ।

उद्धरण तत्० ( पु० ) उद्धार, मुक्ति, त्राण, कैसे हुए को निहालना, ऊपर उठाना, पड़े पाठ को अम्मा साथ पुनः पाठ करना, किसी पुस्तक या लेख के अंग विशेष को दूसरी पुस्तक या लेख में अविकल नकल कर देना ।—( छी० ) आवृत्ति ।

उद्धव तत्० ( पु० ) श्रीकृष्ण का मित्र और भक्त, उत्सव, आयोद, प्रमोद, यज्ञाग्नि । [ मोचन ।

उद्धार तत्० ( पु० ) बचाव, छुटकारा, मुक्ति, रक्षक,

उद्धृत तत्० ( गु० ) उद्धारित, उचित, किसी पुस्तक या लेख के अंग विशेष को दूसरे लेख या पुस्तक में ज्यों का त्यों नकल कर देना ।

उद्धन्धन तत्० ( पु० ) [ उव् + वन्ध + अन्ट ] ऊपर बांधना, गले में रस्सी लगाना, फाँसी देना, दण्डना ।—मृत ( गु० ) गले में रस्सी डाल कर मरा हुआ, फाँसी पाया हुआ ।

उद्वाह तत्० ( पु० ) [ उव् + वह् + घञ् ] विवाह परिणय, दाम्पत्य ।—पयुक्त ( गु० ) विवाह उपयुक्त, परिणय योग्य, वयस्क ।

उद्बोधन तत्० ( पु० ) [ उव् + बुध् + घञ् ] समर्थ, चेत, ज्ञापन, ज्ञान, जगाना ।

उद्भूत तत्० ( पु० ) प्रज्ञात नाम कवि के बनाये हुए

खोह, प्रवल, उदार, महारत्ना, वेजोद, अनुपम वीर । [ प्रादुर्भाव, पैदाइश ।

उद्भव तत्० ( पु० ) [ उव् + भू + भ्रल् ] उत्पत्ति, जन्म, उद्भावन तत्० ( पु० ) [ उव् + भू + भ्रन्ट ] कल्पना, प्रकाश । [ प्रदीप्त, जो प्रकाशित हो, पकट ।

उद्भासित तत्० ( गु० ) [ उव् + भास् + क्त ] उद्दीपित, उद्भिन्न तत्० ( गु० ) वृक्षता आदि, जो भूमि फोड़ कर निकलते हैं ।—ज् ( गु० ) भूमिभेदन, पूर्वक उत्पत्तिशील ।

उद्भिद् तत्० ( गु० ) [ उव् + भिद् + भिक् ] पङ्क्ति या प्रकुलित होना, वृक्षता आदि ।—विद्या ( छी० ) वृक्ष भादि रोपने की विद्या, माली का काम । [ फोड़ा हुआ, उत्पन्न ।

उद्भिन्न तत्० ( गु० ) [ उव् + भिद् + क्त ] भेदित, विद्, उद्भूत तत्० ( गु० ) [ उव् + भू + क्त ] उत्पन्न, निकला हुआ ।—रूप ( पु० ) दृष्टिगोचर होने योग्य रूप ।

उद्भ्रान्त तत्० ( वि० ) भ्रान्तियुक्त, भूला हुआ, भटका हुआ, घूमता हुआ, भौचक्का, चकित ।

उद्यत तत्० ( गु० ) [ उव् + यम् + क्त ] तत्पर, प्रस्तुत, उतारू, मुरतैद ।

उद्यम तत्० ( पु० ) [ उव् + यम् + भ्रल् ] उद्योग, उत्साह, अध्यवसाय, चेष्टा, यत्न, कामधन्धा, रोजगार ।—( गु० ) उद्योगी, उत्साही, सतर्क, उद्यम करने वाला ।

उद्यान तत्० ( पु० ) [ उव् + या + भ्रन्ट ] क्रीडावन, उपवन, बगीचा, आराम ।—पाल ( पु० ) उद्यान रक्षक, माली, गार्डन । [ समापन किया विशेष ।

उद्यापन तत्० ( पु० ) [ उव् + या + णिच् + भ्रन्ट ]

उद्युक्त तत्० ( गु० ) [ उव् + युज् + क्त ] उद्यमयुक्त, उद्योगविशिष्ट, उत्साहान्वित, यत्नवान्, लगा हुआ, परिश्रमी ।

उद्योग तत्० ( पु० ) [ उव् + युज् + घञ् ] यत्न, चेष्टा उत्साह, अध्यवसाय, उद्यम, प्रयास, आयोजन, उपाय ।—( गु० ) उद्योग विशिष्ट, यत्नवान्, उद्युक्त, उत्साही उद्यम करने वाला ।

उद्योत तत्० ( पु० ) प्रकाश, वमक, आलोक, उजियाला ।

उद्ग तत्० ( पु० ) ऊँचि की

उद्भिक तत्त्वं ( गु० ) स्फुट, स्पष्ट, व्यक्तं परिवृद्ध, यदा हुआ । [उत्थान, प्रकाश ।]

उद्भेक तत्त्वं ( पु० ) उपक्रम, आरम्भ, वृद्धि, बढ़नी,

उद्भिन्न तत्त्वं ( गु० ) [ उद् + विज् + क्त ] उद्भेगयुक्त,

घबड़ाया हुआ, व्यग्र ।—ता तत्त्वं ( स्त्री० )

घबड़ाइ, व्यग्रता ।—मना ( गु० ) उद्भिन्न चित्त,

घबड़ाया हुआ ।

उद्भेग तत्त्वं ( पु० ) व्याकुलता, मनोवेग, चिन्ता, घ-

राहट, विरहजन्य दुःख ।—कर ( गु० ) चिन्ता

जनक, व्याकुलता बढ़क ।—नी ( गु० ) उद्भिन्न,

अकण्ठित, भावनायुक्त, चिन्तान्वित, घबड़ाया हुआ ।

उधर तद् ( प्र० ) वही, उस दौब, उस डौर ।

उधरा तद् ( गु० ) खुला, मुक्त, छूटा ।

उधरे दे० ( गु० ) प्रकाशित, कटे, खुले हुए ।

उधार तद् ( पु० ) कर्ज, देना, ऋण ।

उधारना तद् ( क्रि० ) मुक्ति देना, छुटकारा करना,

पार करना, बचाना, तारना ।

उधेड़ना तद् ( क्रि० ) पत्तों को धलगाना, टाँका

खोलना, सिन्नाई खोलना, मुलकाना, खोलना ।

उधेड़युन तद् ( पु० ) ऊढ़ापोह, सोचविचार ।

उन ( सर्व० ) उस का बहुवचन ।

उनईस ( स्त्री० ) संख्या विरोध, १६ ।

उनचास ( पु० ) संख्या विरोध, ४६ ।

उनत्तीस संख्या विरोध, २६ ।

उनसठ संख्या विरोध, २६ ।

उनहत्तर संख्या विरोध, ६६ ।

उनहार दे० ( वि० ) सद्य, समान ।

उनासी संख्या विरोध, ७६ ।

उनीद ( स्त्री० ) कच्ची नींद, अधूरी निद्रा ।

उनीदा दे० ( गु० ) नींद से भा हुआ, जँघना हुआ ।

उन्नत तद् ( गु० ) [ उद् + नम् + क्त ] वर्द्धित,

उच्च, उत्तुङ्ग, ऊँचा, श्रेष्ठ ।—नामि ( गु० ) उच्च

नामियुक्त ।—नत ( गु० ) उच्चनीच स्थान

आदि, ऊमड़सामड़ ।

उन्नति तद् ( स्त्री० ) [ उद् + नम् + क्त ] समृद्धि,

वृद्धि, उन्नता, बढ़ती, उदय, गरुड़ भाग्य ।

उन्नमित तद् ( गु० ) [ उद् + नम् + क्त ] उत्तोलित,

ऊपर उठाया गया, ऊर्ध्वोन्नत ।

उन्नयन तद् ( गु० ) उर्ध्ववायण, उत्तोलन, ऊपर

ले जाना ।

उन्निद्र तद् ( गु० ) प्रकुल, विकसित, प्रकाशित,

निद्रा रहित ।

उन्मत्त तद् ( गु० ) [ उद् + मद् + क्त ] उन्मादयुक्त,

वायु के द्वारा चित्त विभ्रमी, बौराहा, पागल,

मतवाला ।

उन्मद् तद् ( गु० ) [ उद् + मद् + अल् ] उन्माद-

युक्त, प्रमादी, सि।. उन्मत्त ।

उन्मना तद् ( गु० ) [ उद् + मनस् ] अकण्ठित

चित्त, चिन्तित, व्याकुल, चञ्चल ।

उन्माद तद् ( पु० ) पागलपन, चित्तविभ्रम ।—

( गु० ) उन्मादरोगयुक्त, विविध ।—क्षेत्र ( पु० )

वायु प्रस्त, पागल ।

उन्मान तद् ( पु० ) परिमाण, लौक, नाप ।

उन्मिपित तद् ( गु० ) [ उद् + मि + क्त ] प्रकुल,

विकसित, फूला हुआ, खुला हुआ ।

उन्मीलन तद् ( पु० ) उन्मेष, प्रकाश, छाँख खोलना ।

उन्मीलित तद् ( गु० ) प्रफुलित, खुला हुआ ।

उन्मुख तद् ( पु० ) ऊर्ध्वमुख, ऊपर मुँह किये हुए,

अकण्ठित, उत्सुक । [देने वाला ।]

उन्मुलक तद् ( गु० ) उन्मूलनकारी, समूल उखाड़

उन्मूलन तद् ( पु० ) [ उद् + मूलन + क्त ] उखा-

टन उखाड़ना, ऊपर खींचना, मटियामेट करना ।

उन्मेष तद् ( पु० ) नयन उन्मीलन, विकाश, प्रकाश,

ज्ञान, वृद्धि, पलक ।

उन्मोचन तद् ( पु० ) परित्याग करना, मुक्त करण ।

उन्मारा तद् ( पु० ) झीन डौल, रूप ।

उप तद् ( उपसर्ग ) उपसर्ग विरोध । जिसमें यह लगती

है, उनमें समीपता, सामर्थ्य, गौयता, या न्यूनता

बोधक अर्थ का बोध होता है ।—कण्ठ ( गु० )

निकट, समीप, ( पु० ) ग्राम के समीप, अर्था

की गति विरोध ।—कथा ( स्त्री० ) भाषा-

यिका, इतिहास, पुराण, कहानी, कथित कथा ।

—करण ( पु० ) सामग्री, परिच्छेद, सामग्री

का छत्र चामर आदि, भोजन के लिये व्यञ्जन

आदि, नैवेद्य पुष्प फूल आदि पत्र के लिये सामग्री,

अप्रधान द्रव्य, साधक यस्तु, सामग्री ।



उपकार तत् ( पु० ) [ उप + कृ + घञ् ] भलाई, हित, नेकी, सलूक —क ( गु० ) उपकारी, आनुकूल्यकारी, सहाय प्रदाता, कृपावन्त ।

उपकारिका तत् ( वि० ) [ उप + कृ + इक् + आ ] उपकार करने वाली ( स्त्री० ) राजभवन, तंघु ।

उपकारी तद् ( वि० ) उपकार करने वाला । उपकार-विशिष्ट उपकारक, नेकी करने वाला, सहायक, भला करने वाला । [ दाता ।

उपकारेच्छु तत् ( गु० ) उपकार काने का अभिलाषी, उपकार्य तत् ( गु० ) [ उप + कृ + च्छञ् ] उपकारो-चित, जिसका उपकार किया जाय — ( स्त्री० ) राजसदन, राजगृह, अन्न रखने का स्थान, गोला ।

उपकुर्वीण तत् ( पु० ) कुछ दिन के लिये प्रह्वचारी, विद्याध्ययनार्थ प्रह्वचारी, प्रह्वचर्य समाप्त करने के अनन्तर जो गृहस्थ होते हैं ।

उपकूप तत् ( पु० ) कूप के समीप का जलाशय, जो पशुओं के जल पीने के लिये बनाया जाता है ।

उपकूल तत् ( पु० ) नदी तालाब आदि का तीर ।

उपकृत तत् ( गु० ) कृतोपकार, जिसकी सहायता की गई है । [ उद्योग, आद्यकृति, प्रथम आरम्भ ।

उपक्रम तत् ( पु० ) [ उप + क्रम + अल् ] आरम्भ, उपक्रान्त तत् ( गु० ) समारम्भ, अनुष्ठित, कृत-

प्रारम्भ, आरम्भ किया हुआ, प्रस्तुत ।

उपक्रोश तत् ( पु० ) [ उप + क्रुश् + अल् ] निन्दा, कुत्सा, भर्त्सना, गर्हण ।

उपखान तद् ( पु० ) कथा, इतिहास, उपाख्यान ।

उपगत तत् ( गु० ) [ उप + गम् + क ] प्राप्त, अभीकृत, स्वीकृत । [ निरुक्त गमन ।

उपगमन तत् ( पु० ) आगमन, योग, प्रीति, अङ्गीकार,

उपगुरु तत् ( पु० ) छोटा अध्यापक, अप्रधान गुरु, उपदेशक, शिष्यागुरु । [ श्रिकवार, भेंट ।

उपगृहण तत् ( पु० ) [ उप + गृह् + अनट् ] आलिङ्गन,

उपग्रह तत् ( पु० ) वैद्युता, कैदी, ग्रह विशेष, अप्रधान ग्रह । [ आघात ।

उपघात तत् ( पु० ) [ उप + हन् + घञ् ] रोग, पीड़ा,

उपङ्ग तद् ( पु० ) याजा, वाद्यविशेष ।

उपचय तत् ( पु० ) [ उप + चि + अल् ] वृद्धि, उन्नति, आधिक्य, बढ़ती ।

उपचरित तत् ( पु० ) [ उप + चर् + क ] उपासित, सेवित, आराधित, लक्षण से जाना हुआ ।

उपचर्या तत् ( स्त्री० ) [ उप + चर् + क्यप् ] चिकित्सा, रोगों का उपशम, प्रतिकार, शुश्रूषा ।

उपचार तत् ( पु० ) [ उप + चर् + घञ् ] उपाय, सेवा, रोगों की चिकित्सा, उपकरण, शुश्रूषा, उपक्रम, व्यवहार, उत्कोच, धूस । — ( स्त्री० ) उपचार करने वाला, चिकित्सा करने वाला । [ सञ्चित, इकट्ठा ।

उपचित तत् ( गु० ) [ उप + चि + क ] समृद्ध, घञ्जित,

उपज तद् ( पु० ) सूक्त, स्फूर्ति, फुरन, उत्पत्ति, पैदावार ।

उपजत तत् ( पु० ) उपार्जित, घटित, उत्पन्न ।

उपजना तद् ( क्रि० ) उगना, बढ़ना, अङ्कुर होना, उत्पन्न होना ।

उपज्जि ( क्रि० ) उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं, जन्मते हैं ।

उपज्जाऊ तद् ( गु० ) उपजनेद्वारा, उर्वर, ज़रखेज़ ।

उपज्जाना तद् ( क्रि० ) उत्पन्न करना, सिरजना ।

उपजाये ( क्रि० ) पैदा किये, निकाले, उत्पन्न किये ।

उपजित तद् ( गु० ) उत्पन्न हुआ, उपजा ।

उपजिह्वा तद् ( स्त्री० ) क्षुद्रा जिह्वा, छोटी जीभ ।

उपजीविका तत् ( स्त्री० ) जीविका, वृत्ति, जीवने-

पाय, अवलम्ब । [ दूसरे के सहारे रहने वाला ।

उपजीवी तत् ( गु० ) अवलम्बी, आश्रयी, अनुगत,

उपज्ञा तत् ( स्त्री० ) आद्य ज्ञान, प्रथम ज्ञान, उपदेश

के बिना ईश्वरदत्त प्रथम ज्ञान ।

उपटन ( पु० ) उभटन । [ उल्लङ्घना ।

उपटना तद् ( पु० ) आघात, निशान पड़ना,

उपट्टना तद् ( क्रि० ) उल्लङ्घना, उपटना ।

उपटौकन तत् ( पु० ) [ उप + टौक् + अनट् ] पारि-

तोषिक द्रव्य, उपहार, भेंट ।

उपतन्त्र तत् ( पु० ) [ उप + तन्त्र ] यामल आदि

तन्त्रशास्त्र, सूक्ष्म सूत्र । [ दुःखित, खेदित ।

उपतप्त तत् ( गु० ) [ उप + तप् + क ] संतापित,

उपतारा तत् ( स्त्री० ) क्षुद्र नखत्र, नेत्रमोलक ।

उपत्यका तत् ( स्त्री० ) पर्वतों के समीप की भूमि,

तराई । [ शिग, मद्यपान, सर्पदंश ।

उपदंश तत् ( पु० ) गर्मी सुजांक, रोग विशेष, मेद

उपदल तत् ( पु० ) मुकुल, पत्ता, पान, पुष्प दल, फूल की पत्ती ।

उपदर्शक तत् ( पु० ) द्वारपाल, प्रहरी ।

उपदा तत् ( स्त्री० ) उपदौकन, मेट, उपायन, दर्शन ।

उपदिशा तत् ( स्त्री० ) कोण, दो दिशाओं के बीच की दिशा । [कृतोपदेश, ज्ञापित ।

उपदिष्ट तत् ( पु० ) [ उप + दिश् + क् ] उपदेश प्राप्त,

उपदेयता तत् ( पु० ) भूत, प्रेत, छोटे देवता विशेष ।

उपदेश तत् ( पु० ) [ उप + दिश् + अल् ] शिक्षा, मंत्रदान, दीक्षा, हित कथन, सीख, सिखावन, नसीहत ।—फारी ( पु० ) उपदेशकर्ता, उपदेश करनेवाला, उपदेष्टा, शिक्षक । [बाबा ।

उपदेशक तत् ( पु० ) उपदेश देनेवाला, नसीहत देने

उपदेश्य तत् ( पु० ) [ उप + दिश् + य ] उपदेष्टव्य, उपदेश योग्य, उपदेश के अधिकारी ।

उपदेष्टा तत् ( पु० ) [ उप + दिश् + ण् ] उपदेशकर्ता, आचार्य, शिक्षक, शिक्षागुरु ।

उपद्रव तत् ( पु० ) उत्पात, अन्याय, बल्लेड़ा, बगधि, ऊधम, अन्धेर, विद्रोह ।—नी ( पु० ) उपद्रव करने वाला, बल्लेड़िया । [जलमध्यवर्ती स्थान ।

उपद्वीप तत् ( पु० ) छोटा द्वीप, जलज्यक्त स्थान,

उपधर्म तत् ( पु० ) पालण्ड, पाप, नास्तिकता ।

उपधातु ( स्त्री० ) अग्रधान धातु तृतिया, सेना मक्खी, कासा आदि । शरीर के अंदर रस से बने पत्तीना, यर्धी आदि ।

उपधान तत् ( पु० ) [ उप + धा + धनट् ] तकिया, बत्तीसा, सिंहाना ।

उपधायक तत् ( पु० ) [ उप + धा + णक् ] जग्मा-दाता, स्थापनकर्ता ।

उपधि तत् ( पु० ) [ उप + धा + कि ] कपट, छल, जान बूझ कर और का और कहना ।

उपनत तत् ( पु० ) [ उप + नम् + क् ] उपस्थित, प्राप्त, समीप, आनीत ।

उपनय तत् ( पु० ) [ उप + नी + अल् ] समीप ले जाना, अपनयन, मृत्योक्त विधान के अनुसार, वेदान्यास के लिये बालक को गुरु के समीप ले जाना, न्यास का एक पारिभाषिक शब्द, ( प्यासि विशिष्ट हेतु में पचगतधर्मों का प्रतिपादक वाक्य । )

उपनयन तत् ( पु० ) [ उप + नी + धनट् ] श्रवण का यज्ञसूत्र धारण संस्कार, उपनीत संस्कार ।

उपनाम तत् ( पु० ) पदवी, पदति, उपाधि, अल, अटक । [स्थापित द्रव्य ।

उपनिधि तत् ( पु० ) याती, धरोहर, न्यस्त वस्तु,

उपनिवेश तत् ( पु० ) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना, अन्य स्थान से आकर बसने वालों की बस्ती, कालोनी ।

उपनिषद् तत् ( स्त्री० ) [ उप + नि + षद् + णिप् ] धर्म, वेदान्त-शास्त्र, निर्जन स्थान, तप्य ज्ञान, वेद का शिरोभाग, ब्रह्मविद्या, वेदरहस्य ।

उपनिषथ तत् ( स्त्री० ) देखो उपनिषद् ।

उपनीत तत् ( पु० ) कृतोपनयन ( पु० ) निकट प्राप्त, उपस्थित, समीपगत, उपवीती ।

उपनेता तत् ( पु० ) [ उप + नी + ण् ] आनयनकारी, उपस्थापक, लानेवाला, गुरु, आचार्य ।

उपनेत्र तत् ( पु० ) चश्मा, नेत्रों का सहायक ।

उपन्ना दे० ( पु० ) उपरना, ओढ़ने का दुपट्टा ।

उपन्यस्त तत् ( पु० ) निहित, न्यासीकृत, धरोहर रखा हुआ ।

उपन्यास तत् ( पु० ) [ उप + नी + धस् + घञ् ] वाक्योपक्रम, प्रस्तावना, उपकथा, कहानी, गद्य काव्य विशेष ।

उपपति तत् ( पु० ) जार, गुप्तपति, लुगवा, नापक विशेष, यथा—

“जो परनारी के रसिक उपपति ताहि बखान ।”

—रसराज

उपपत्ति तत् ( स्त्री० ) [ उप + पद् + क्ति ] सद्गति, समाधान, घटना, प्राप्ति, सिद्धि, चरितार्थ होना, देव, युक्ति ।

उपपत्नी तत् ( स्त्री० ) चेरया, पारखी, रखनी ।

उपपन्न तत् ( पु० ) [ उप + पद् + क् ] पहुँचा हुआ, प्राप्त, लब्ध, युक्त, सुवासिब ।

उपपातक तत् ( पु० ) छोटा पाप, साधारण पाप (मनुस्मृति में परलोगमन, गुरुसेवा, त्याग, धार्मिक, गोधय आदि को उपपातकों में माना है ।)

उपपादन तत् ( पु० ) [ उप + पद् + णिच् + धनट् ] साधन, सिद्ध करना, टहराना, युक्ति लेकर समाधान करना ।

उपपुराण तत् ( पु० ) छोटे पुराण । ये भी अठारह हैं, इनके नाम ये हैं—सनत्कुमार, नारसिंह, नारदीय, शिव, दुर्वासा, कपिल, मानव, औशनस, वारुण, कालिका, शांव, नन्दा, सैर, पराशर, धादित्य, माहेश्वर, मार्गव, वाशिष्ठ ।

उपवर्ह तत् ( गु० ) तर्किया, वालिश, उपधान ।

उपवर्हण या उपवहन ( देखो उपवर्ह ) ।

उपवीत तत् ( पु० ) जनेज, यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत ग्रन्थ, स्वीकार । [हुआ, भूचित, भोगकृत, यधिकृत ।

उपभुक्त तत् ( गु० ) [ उप + भुज् + क ] भोग किया

उपभोक्ता तत् ( पु० ) [ उप + भुज् + कृण् ] भोग-कारी, सत्वाधिकारी ।

उपभोग तत् ( पु० ) [ उप + भुज् + घञ् ] भोजन-तिरिक्त भोग, निर्देश, विलास, विषयों का सुख आस्वादन ।

उपमा तत् ( स्त्री० ) समानता, बराबरी, सादृश्य, दृष्टान्त, तुल्यता, समानता, अर्थालङ्कार विशेष, जो सादृश्य होने से होता है ।

उपमाता तत् ( स्त्री० ) दूध पिलाने वाली, धाय, धात्री, माता के समान ( गु० ) उपमा करने वाला, चित्रकार ।

उपमान तत् ( पु० ) दृष्टान्त, सादृश्य, तुल्यता, प्रति-मूर्ति, जिस पदार्थ से उपमा दी जावे, ( जैसे चन्द्र-मुख में चन्द्र उपमान है ), प्रमाण विशेष ।

उपमित तत् ( गु० ) उल्लेखित, तुल्यकृत, सम्भावित, जिसकी उपमा दी गयी हो । [उपलब्ध ज्ञान ।

उपमिति तत् ( स्त्री० ) उपमा सादृश्य ज्ञान से उपमेय तत् ( गु० ) समतुल्य, दृष्टान्त योग्य, उपमान के समान गुणयुक्त, वर्णनीय ।

उपयम तत् ( पु० ) विवाह, संयम ।

उपयुक्त तत् ( गु० ) योग्य, उचित, मुनास्त्रि ।

उपयोग तत् ( पु० ) काम, व्यवहार, लाभ, प्रयोजन, आवश्यकता । [आने की योग्यता ।

उपयोगिता तत् ( स्त्री० ) फलसाधनता, काम में

उपयोगी तत् ( गु० ) उपयुक्त, प्रयोजनीय, लाभ-कारी, अनुद्भूत ।

उपर तत् ( गु० ) ऊर्ध्व, ऊँचा । [राहुग्रस्त चन्द्र या सूर्य ।

उपरक्त तत् ( गु० ) विपन्न, पीड़ा मस्त, ( पु० )

उपरत तत् ( पु० ) विरत, शान्त, उदासीन, हटा हुआ, मरा हुआ ।

उपरति तत् ( स्त्री० ) विरति, निवृत्ति, मृत्यु, परि-त्याग, उदासीनता, उदासी । [श्रीकृष्ण का वचन ।

उपरजा तत् ( पु० ) दुपष्टा, उचरीय वध, ऊपर से उपरवार दे ( पु० ) वांगार ज़मीन, नदी के किनारे के ऊपर की ज़मीन ।

उपराग तत् ( पु० ) सूर्य या चन्द्र ग्रहण, राहुग्रहण, परिवार, व्यसन, यंत्रण, निन्दा ।

उपराचढ़ी दे ( स्त्री० ) एक ही चीज़ लेने के लिये कई आदिमियों का प्रयत्न या उद्योग ।

उपराराज तत् ( पु० ) छोटे राजा, युवराज । ( क्रि० ) उगाया, उपजाया, उत्पन्न किया, बनाया, रचा, पैदा किया । [अनन्तर ।

उपरान्त तत् ( अ० ) पीछे, परे, पश्चात्, इसके उपराम तत् ( पु० ) निवृत्ति, विरति, विराम, आराम ।

उपराराज तत् ( पु० ) सहायक, साथी ।

उपरि तत् ( अ० ) ऊर्ध्व, ऊपर ।—दृष्टि ( स्त्री० ) सुष्ठु देवता की दृष्टि, वायु का प्रकोप ।

उपरिष्ठात तत् ( अ० ) ऊपर, ऊर्ध्व ।

उपरिस्थ तत् ( गु० ) ऊर्ध्वस्थित, उपरस्थित, ऊपर का ।

उपरी तत् ( गु० ) ऊपर का, ऊपर सम्बन्धी, जोते, खेत के ऊपर की मिट्टी, भूमि से खंजाड़ी हुई माटी ।

( दे० ) उपला, कंड़ी, छाता ।

उपरुद्ध तत् ( गु० ) रचित, प्रतिकुल ।

उपरोक्त ( गु० ) [ उपरि + क्त ] ऊपरकथित, प्रथम-वक्त, पहले कहा हुआ, उपर्युक्त ।

उपरोध तत् ( पु० ) घटकाव, आड़, दकना ।

उपरोहित तत् ( पु० ) कुलगुरु, पुरोधा, पुरोहित ।

उपर्ना तत् ( पु० ) देखो, उपरना ।

उपर्युक्त ( गु० ) उपरोक्त, प्रथम कहा हुआ ।

उपर्युपरि तत् ( अ० ) ऊर्ध्व ऊर्ध्व, ऊपर ऊपर, ऊपर के ऊपर ।

उपर्ला तत् ( पु० ) ऊपर का, बाहिर का । [बालू ।

उपल तत् ( पु० ) पाषाण, ओला, रत्न, मेघ, चीनी,

उपलक्ष तत् ( पु० ) सङ्केत, चिन्ह, दृष्टि, वक्ष्य ।

उपलक्षण तत् ( पु० ) दृष्टान्त, सङ्केत अन्यार्थ बोधक ।

उपलक्ष्य तत्त्वं ( गु० ) रेखा उपलक्ष्य ।

उपलब्ध तत्त्वं ( गु० ) [ उप + लब् + क्त ] प्राप्त, जाना हुआ । —रूपी ( स्त्री० ) आध्यायिका, उपकथा ।

उपलब्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) [ उप + लब् + क्त ] ज्ञान, अनुभव, मति, प्राप्ति । [ गृह्य ] ।

उपला या उपली तत्त्वं ( पु० ) कंठा, छाना, उपरी, उपला तत्त्वं ( पु० ) ऊपर का, ऊपर वाला भाग ।

उपवन तत्त्वं ( पु० ) उद्यान, आराम, कृत्रिम वन, मकान के निकट का छोटा बाग । [ विन विशेष ] ।

उपवस्य तत्त्वं ( पु० ) ग्राम, निवासस्थल, यज्ञ का उपवास तत्त्वं ( पु० ) [ उप + वस् + घञ् ] लहून, धना-हार, दिनरात भोजनाभाव, कड़ाका, फाका ।

उपवासी तत्त्वं ( पु० ) [ उप + वस् + शिन् ] उपवास युक्त, सहोदर भोजनाभावविशिष्ट, उपोषी, प्रती ।

उपविष्ट तत्त्वं ( पु० ) [ उप + विद् + क्यप् ] नाटक चेतक आदि शिक्षकारादि, शिक्षी । — ( स्त्री० ) शिक्ष आदि विज्ञान शास्त्र । [ कुचला आदि ] ।

उपविप तत्त्वं ( पु० ) कृत्रिम विप, न्यून विप, अफीम,

उपविप्र तत्त्वं ( पु० ) [ उप + विस् + क्त ] आसीन गृहीतासन, कृतोपवेशन, आसनस्थ, बैठा हुआ ।

उपवीत तत्त्वं ( पु० ) यज्ञस्त्र, जनेऊ ।

उपवेद तत्त्वं ( पु० ) प्रधान चार वेदों के अतिरिक्त वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, स्थापत्य वेद, येही चार उपवेद हैं । आयुर्वेद ऋग्वेद से, गान्धर्ववेद सामवेद से, धनुर्वेद यजुर्वेद से, स्थापत्य वेद अथर्ववेद से निकले हैं । आयुर्वेद के आदि आचार्य ब्रह्मा इन्द्र धन्वन्तरि आदि हैं, गान्धर्व वेद के प्रचारक भरत मुनि, विष्णु मित्र ने धनुर्विद्या का उपदेश किया, स्थापत्य वेद का विश्वकर्मा ने प्रचार किया, स्थापत्यवेद बहुत गृह्य था ।

उपवेष्टन तत्त्वं ( पु० ) [ उप + विष् + अनट् ] लपेटना, घसना, घस्ता, जामा ।

उपवेशन तत्त्वं ( पु० ) रिपति, उपविष्ट होना, बैठना ।

उपशम तत्त्वं ( पु० ) [ उप + शम् + क्त ] शान्ति, समताई, समीप, शमता, हृन्मिय निग्रह, बदला, प्रतीकार ।

उपशय तत्त्वं ( पु० ) [ उप + शी + क्त ] निदान पञ्चक के अन्तर्गत रोगज्ञापक अनुमान ।

उपशल्य तत्त्वं ( पु० ) [ उप + शल् + य ] प्रामाण्य, ग्राम की सीमा, भाषा ।

उपश्रुत तत्त्वं ( पु० ) [ उप + श्रु + क्त ] प्रतिधुति, श्रद्धीकृत, स्वीकृत, वाग्दत्त ।

उपसंहार तत्त्वं ( पु० ) [ उप + सं + ह् + घञ् ] शेष, नाश, निष्कर्ष, मीमांसा, आक्रम, संग्रह, संक्षेप, व्यतीत ।

उपस तत्त्वं ( पु० ) दुर्गन्धि ।

उपसत्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ उप + सद् + क्त ] उपासना सेवा, विनय पूर्वक गुरु समीप गमन ।

उपसना तत्त्वं ( स्त्री० ) सङ्गना, पचना ।

उपसर्ग तत्त्वं ( पु० ) [ उप + सर्ज् + घञ् ] रोगभेद, उपद्रव, पीडा, दैवी श्लाघा, अव्यय विशेष, जो शब्द के पूर्व जोड़ने से उस शब्द में अर्थ की विशेषता करता है । [ उपद्रव, गौणवस्तु, त्याग ।

उपसर्जन तत्त्वं ( पु० ) [ उप + सर्ज् + घनट् ] डालना,

उपसर्पण तत्त्वं ( पु० ) [ उप + सर्प् + घनट् ] उपासना, अवगमन, अनुवृत्ति ।

उपसागर ( पु० ) खाड़ी ।

उपस्त्री तत्त्वं ( स्त्री० ) रखेली, उपपत्नी ।

उपस्थ तत्त्वं ( पु० ) [ उप + स्था + ट ] स्त्री एवं पुरुष का चिह्न विशेष, निचला या मध्य शरीर का भाग, पेड़, गोद । — निग्रह ( पु० ) जितेन्द्रियत्व, कामदमन । [ पेड़ ] ।

उपस्थल या उपस्थली तत्त्वं ( पु० ) चूतड़, कूबहा, उपस्थाता तत्त्वं ( पु० ) [ उप + स्था + क्त ] भूय, सेवक ।

उपस्थान तत्त्वं ( पु० ) [ उप + स्था + घनट् ] निकट आना, उपासना, जो खड़े होकर की जाय, पूजा का स्थान, सना, समाज ।

उपस्थापन तत्त्वं ( पु० ) [ उप + स्था + शिच् + घनट् ] उपस्थिति करण, निकट आनयन ।

उपस्थित तत्त्वं ( पु० ) [ उप + स्था + क्त ] समीप, स्थिति, आगत, अनीत, उपनीत, वसतः, वर्तमान, हाज़िर । — धक्का ( पु० ) सङ्घर्ष, बचन पटु । — कवि ( पु० ) शीघ्रकवि, आशु कवि ।

उपस्थिति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ उप + स्था + क्त ] उपस्थान, निकट होना, हाज़िरी, प्राप्ति, मौजूदगी ।

उपहृत तत्त्वं ( गु० ) [ उप + हृन् + क ] नष्ट, उत्पात  
 प्रस्त, आघात प्राप्त, चत, अशुद्धद्रव्य ।  
 उपहसित तत्त्वं ( गु० ) [ उप + हस् + क ] उपहास  
 प्राप्त, विद्वप । [ द्विकन द्रव्य, सौगात ।  
 उपहार तत्त्वं ( पु० ) [ उप + हृ + घञ् ] मेंट, नज़र, उप-  
 उपहास तत्त्वं ( पु० ) [ उप + हस् + घञ् ] परिहास,  
 निन्दार्थ वाक्य, विद्वप, हँसी, ठट्ठा, दिहगी,  
 येहजती ।  
 उपहास्य तत्त्वं ( गु० ) [ उप + हस् + ध्वञ् ] हँसनीय,  
 निन्दनीय ।—ता ( स्त्री० ) निन्दा, गहाँ, कुत्सा,  
 हुक्कीर्ति ।  
 उपहित तत्त्वं ( गु० ) [ उप + भा + क ] स्थापित ।  
 उपहृत तत्त्वं ( गु० ) [ उप + हृ + क ] आनीत, दत्त ।  
 उपाशु तत्त्वं ( पु० ) जपविशेष, निर्जनस्थ, असन्न ।  
 उपाइ दे० ( कि० ) उपजाई, गढ़ी, यनाई, रची ।  
 उपाऊ ( पु० ) उपाय, इलाज, यत्न ।  
 उपाकर्म तत्त्वं ( पु० ) आरम्भ, वर्षाकाल के बाद वेद  
 आरम्भ करने का समय, संस्कार विशेष ।  
 उपाख्यान तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आ + क्था + अनट् ]  
 पूर्व वृत्तान्त कथन, आख्यान, इतिहास, कथा के  
 भीतर की कथा । [ सुद्रभाग, अवयव ।  
 उपाङ्ग तत्त्वं ( पु० ) अधधान भाग, तिलक, टीका,  
 उपाङ्गना तत्त्वं ( कि० ) उखाड़ना, उखलना, नाचना ।  
 उपात तत्त्वं ( गु० ) गृहीत, प्राप्त ।  
 उपादान तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आ + दा + अनट् ]  
 ग्रहण, स्वीकार, ज्ञान, परिचय, बोध, अपने  
 अपने विषयी की ओर इन्द्रियों का जाना,  
 प्रत्याहार, प्रवृत्तिजनक ज्ञान, न्यायमत में सम-  
 वायी करण ।  
 उपादेय तत्त्वं ( गु० ) [ उप + आ + दा + य ] ग्राह्य  
 वत्तम, ग्रहण योग्य, उत्कृष्ट, विधेयकर्म ।—ता  
 ( स्त्री० ) उत्तमता, उत्कर्षता ।  
 उपाध तत्त्वं ( पु० ) उपद्रव, अन्याय, उत्पात ।  
 उपाधि तत्त्वं ( पु० ) छल, पदवी, खिताब, चिह्न,  
 उपनाम, अलङ्कार ।  
 उपाधी तत्त्वं ( गु० ) अन्यायी, उपद्रवी, अधर्मी ।  
 उपाध्याय तत्त्वं ( पु० ) [ उप + अधि + इङ् + घञ् ]  
 अध्यापक, शिक्षक, ग्राह्यों का एक भेद ।

उपाध्यायी तत्त्वं ( स्त्री० ) अध्यापकभार्या, पढ़ाने  
 वाली, अध्यापिका, गुरु पत्नी ।  
 उपानत तत्त्वं ( स्त्री० ) उपानह, पादुका, जूती ।  
 उपानह ( पु० ) पादुका, जूता ।  
 उपाना तत्त्वं ( कि० ) उपार्जन करना, पैदा करना ।  
 उपान्त तत्त्वं ( गु० ) निवृत्त, समीप, अन्तिक, पास ।  
 उपारी ( कि० ) उखाड़ी, नाचली । [ चेष्टा, प्रतीकार ।  
 उपाय तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आ + इ + अल् ] साधन,  
 उपायन तत्त्वं ( पु० ) [ उप + यप् + अनट् ] उपहार,  
 उपहँकन, मेंट, सौगात, नज़राना, मत की प्रतिष्ठा,  
 समीप गमन ।  
 उपाया दे० ( कि० ) देखो उपराग ।  
 उपायी तत्त्वं ( गु० ) उपाय करने वाला, उपार्जक,  
 खोजी, सन्धानी, यत्नी ।  
 उपारना ( कि० ) देखो उपाङ्गना ।  
 उपार्जन तत्त्वं ( पु० ) [ उप + अर्ज्ज + अनट् ] अर्जन,  
 धनवि सञ्चय, धनआहरण, लाभकरण, एकत्रित  
 करण ।  
 उपाजित तत्त्वं ( गु० ) [ उप + अर्ज्ज + क ] सङ्घित,  
 कमाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ ।  
 उपालम्भ तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आ + लभ् + अल् ]  
 उलझना, निन्दा, शिकायत ।  
 उपास तत्त्वं ( पु० ) उपवास, अनाहार, भोजनाभाव ।  
 उपासक तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आस् + यक् ] उपासना-  
 कर्त्ता, आराधक, भक्त ।  
 उपासन तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आस् + अनट् ] शुश्रूषा,  
 सेवा, आनुगम्य, आराधना, धनुर्विद्या ।  
 उपासना तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आस् + यन् + आ ]  
 सेवा, शुश्रूषा, परिचर्या, आराधना, टहल, भक्ति ।  
 उपासित तत्त्वं ( पु० ) [ उप + आस् + क ] आराधित,  
 सेवित, पूजित । [ भक्त, उपासना करने वाला ।  
 उपासी तत्त्वं ( गु० ) उपास, भूखा, उपवासी, सेवक,  
 उपास्य तत्त्वं ( गु० ) [ उप + आस् + य ] आराध्य,  
 सेव्य, पूजने योग्य । [ त्याग, अनादर, तिरस्कार ।  
 उपेक्षा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ उप + ईक्ष् + ड ]  
 उपेक्षित तत्त्वं ( गु० ) [ उप + ईक्ष् + क ]  
 निन्दित, परित्यक्त ।  
 उपेत तत्त्वं ( गु० ) [ उप + ऐ + क ]

उपेन्द्र तद् ( पु० ) वामन, इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो अदिति के गर्भ से हुआ था ।—यज्जा तद् ( स्त्री० ) वृत्त विशेष ।  
 उपोद्घात तद् ( पु० ) [ उप + उव् + हन् + घञ् ] ग्रन्थ के आरम्भ का पक्ष्य, भूमिका, नम्य न्याय की ६ सङ्गतियों में से एक । [ कड़ाका, उपवात ।  
 उपोपण तद् ( पु० ) [ उप + वस् + अणट् ] अनाहार, उपनना दे० ( कि० ) उषखाना, उषलना, उकलाना ।  
 उपान दे० ( पु० ) उवाल, उकाल ।  
 उवकना दे० ( पु० ) घमन करना, थोकना, कै करना, उलटी करना, रह कारना ।  
 उवका दे० ( पु० ) घमन, कै, ( कि० ) घमन की, कै की ।  
 उवकाई दे० ( स्त्री० ) उघाँट, उघाल, मचलाई ।  
 उवटन दे० ( पु० ) उपटन, मञ्जन, घाँटना, अभ्यङ्ग, उपटन ।  
 उवटि ( कि० ) उवटन लगा कर ।  
 उवरण तद् ( पु० ) उवर्तन, घचाव, बाढ़ ।  
 उवर दे० ( कि० ) घचकर, शेष रह कर, बढ़ कर ।  
 उवरा तद् ( वि० ) घचा हुआ, फालतू ।  
 उवलना दे० ( कि० ) सीजना, खलबलाना, पकना, ऊपर की ओर जाना, उकलाना ।  
 उवसना दे० ( कि० ) सड़ना, गलना, पचना । -  
 उवहन ( स्त्री० ) कुप से पानी खींचने की रस्ती ।  
 उवाना तद् ( कि० ) योना, रोपना, लगाना, तंग करना ।  
 ( पु० ) बिना जूतों का, नंगे पैर ।  
 उवारना तद् ( कि० ) छोड़ना, घचाना, राखना ।  
 उवारा ( कि० ) घचा लिया, उदार किया ।  
 उवालना दे० ( कि० ) उसीजना, उतरेना, रांधना ।  
 उवासी दे० ( स्त्री० ) जंमाई ।  
 उभ ( पु० ) ऊर्ध्व, उपर, द्वि, दो ।  
 उभइ तद् ( पु० ) उभय, दोनों ।  
 उभक तद् ( पु० ) रीछ, भालू, भल्लूक । [ पत्थर ।  
 उभय तद् ( पु० ) युगल, युग्म, दो, दोनों, द्वि, उभयतः तद् ( च० ) पार्श्वतः पार्श्वद्वय, दोनों ओर से ।  
 उभयत्र तद् ( च० ) दोनों स्थानों में, दोनों तरफ़ ।  
 उभरना तद् ( कि० ) उठना, बढ़ना, उतरना निकलना, निकल आना ।

उभराई तद् ( पु० ) हुताई, कुलाहट ।  
 उभराना तद् ( कि० ) बहुत भराना, छकाना ।  
 उभाड़ना तद् ( कि० ) उकसाना, उत्तेजित करना ।  
 उभाना तद् ( कि० ) उठाना, खड़ा करना, उधित करना, ऊपर उठाना ।  
 उभार तद् ( पु० ) गूमड़ा, कुलावट, उठाव । [ करना ।  
 उभारना तद् ( कि० ) कुलाना, उकसाना, उत्तेजित उभौ तद् ( पु० ) दो, दोनों, आपस में ।  
 उभगत ( पु० ) प्रसन्न होते हुए । [ न्दाधियय, हृष्टता ।  
 उभङ्ग तद् ( पु० ) ममता, मौज, उल्लास, लहर, घान-उभङ्गना तद् ( कि० ) आनन्द से घागे जाना, बसाह पूर्वक घागे बढ़ना ।  
 उभङ्गी तद् ( पु० ) उचपदाभिलाषी ।  
 उभङ्गना तद् ( कि० ) उभरना, परिवृद्ध होना, उभङ्गना, बढ़ कर रहना, वेग से बढ़ना ।  
 उभर दे० ( स्त्री० ) घायु, वय ।  
 उभरी तद् ( स्त्री० ) वह पैघा जिसे जलाकर सजी खार तैयार किया जाता है । [ छगती है ।  
 उभस तद् ( स्त्री० ) गरमी जो हवा न चलने पर उभहना तद् ( कि० ) उभङ्गना, उभङ्गना, उठना ।  
 उभा तद् ( स्त्री० ) [ उ + भा + घा ] दुर्गा, भक्त्य, कीर्ति, हरिद्रा, कान्ति, शान्ति । भगवती, पार्वती, महादेव की स्त्री पार्वती, यह हिमालय की कन्या थी मैना के गर्भ से इसका जन्म हुआ था, पूर्व जन्म में यह द्रव प्रजापति की कन्या थी, द्रव से महादेव की निन्दा सुन इसने अपना देह त्याग किया, तदनन्तर हिमालय के पहाई उरग हुई । शिव को पति पाने के लिये इसने कठोर तपस्या की, इसकी कठोर तपस्या देख माता ने " उ-मा " तपस्या मत करो, धारण किया, इसी कारण इसका नाम उमा हुआ ।—पति ( पु० ) शिव, महादेव ।  
 —सुत ( पु० ) कान्तिकेय और गणेश ।  
 उमेउन ( स्त्री० ) पेंउन, पेंच, मरोड़ ।  
 उमेश ( पु० ) [ उमा + ईश ] महादेव, शिव ।  
 उम्हा दे० ( पु० ) उचम, बढ़िया, अच्छा ।  
 उम्मी दे० ( स्त्री० ) जो गेहूँ की हरे दाने की बाल ।  
 उम्मेद दे० ( स्त्री० ) आशा, मरोसा ।—घार नौकरी पाने की धारा करने वाला ।—घारी मरोसा, आशा ।



उलटा तद् ( गु० ) चौंघा, पलटा हुआ, विपरीत  
फेरा हुआ ।

उलथाना तद् ( कि० ) लहराना, डुलना ।

उलथा दे० ( पु० ) अनुवाद, भाषान्तर करण, अनु-  
करण, रागिनी विशेष ।

उलरना दे० ( कि० ) लेटना, शयन करना ।

उललना दे० ( कि० ) ढरकना, उतरना ।

उलहना तद् ( पु० ) निन्दा, दोष, उपालम्भ, गिला,  
वगाना ।—देना ( कि० ) उपालम्भ करना, पुका-  
रना, शिकायत करना, निन्दा करना ।

उलार दे० ( वि० ) जिसका भाग भारी हो ।

उलाहना तद् ( पु० ) उबहना, उपालम्भ, शिकायत ।

उलीचना दे० ( कि० ) उंडेलना, जल फेंकना ।

उलीचा दे० ( कि० ) उलचा, थोड़ा थोड़ा करके जल  
निकालना, जलनिस्तारण, उछाड़कर जल निका-  
लना ।

उलूक तद् ( पु० ) उल्लू, पेचक, उलूआ ।

१—कौरव पचीय मोद्धा विशेष, महाभारत  
युद्ध के पहले दुर्योधन का दूत होकर यह युधिष्ठिर  
के पास गया था, शकुनि की अनुमति से दुर्योधन  
ने पाण्डवों को युद्धार्थ आह्वान किया था, युद्ध के  
अठारहवें दिन यह सहदेव के द्वारा मारा गया था ।

२—वैशेषिक दर्शन प्रणेता, इनका दूसरा  
नाम कणाद था, इसी कारण वैशेषिक दर्शन को  
भौलूक्य और कणाद दर्शन कहते हैं । यह ख्रिष्टाब्द  
के २०० वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए थे ।

उल्लूखल तद् ( पु० ) झोखली, उदूखल, झोखरी ।

उल्लूपी तद् ( स्त्री० ) नागकन्या अर्जुन की पत्नी और  
कौरव्य नामक नाग की कन्या । [ परामर्शे ।

उल्लेटा दे० ( पु० ) पराठा, परतदार मोटी पूरी, पलटा,

उल्लेड़ना दे० ( कि० ) ढरकाना, डालना, खाली करना ।

उल्का तद् ( स्त्री० ) लूका, तारे का गिरना, आकाश  
से जो एक प्रकार का अक्षर सा गिरता है, अग्नि-  
पिण्ड ।—पात ( पु० ) तारा छटना, लूका गिरना,  
अशुभसूचक चिन्ह, आश्चर्य ।—मुखी ( स्त्री० )

शृगाली, गीदड़ी, सियारिन ।

उल्लुक तद् ( पु० ) लूका, कोयला, अक्षरा ।

उल्लङ्घन तद् ( पु० ) नाचना, त. मानना ।

उल्लास तद् ( पु० ) [ उल् + लस् + धन् ] आनन्द,  
हुलास, प्रसन्नता, हर्ष ।

उल्लू तद् ( पु० ) देखो उलूक ।—पन ( पु० )  
मूर्खता, गँवारपन, वज्रपन ।

उल्लेख तद् ( पु० ) [ उल् + लिख् + भल् ] लेख,  
वर्णन, चर्चा, कथन, प्रसङ्ग ।

उल्लेखन तद् ( पु० ) [ उल् + लिख् + यन्ट् ] वमन,  
खनन, कथन, वचनार्थ ।

उल्लेखित तद् ( पु० ) [ उल् + लिख् + क् ] प्रस्तावित,  
कथित, उक्त, कहा हुआ । [ चांदनी, उजियारी ।

उल्लोच तद् ( पु० ) [ उल् + लुच् + भल् ] छन्दातप,

उल्लोल तद् ( पु० ) महातरङ्ग, कल्लोल, बड़ी भारी  
लहर, हिलोर । [ का एक पुत्र ।

उल्लवण तद् ( पु० ) गर्भावहेन, जाली, जरायु, वशिष्ठ

उशना तद् ( पु० ) शुक्राचार्य, भागव, वैद्यगुरु ।

उशीनर तद् ( पु० ) देशविशेष, अश्ववंशीय राजा  
विशेष ।

उशीर तद् ( स्त्री० ) लसलस, सुगन्धितृण ।

उपा तद् ( स्त्री० ) चाणराज की कन्या, अनिरुद्ध की  
स्त्री, भोर, वैह, लड़का, प्रभात ।—फाल ( पु० )  
प्रत्युप समय, प्रभात काल ।—पति ( पु० )  
अनिरुद्ध, कामदेव का पुत्र ।

उपित तद् ( पु० ) [ उप् + क् ] पशुपित, दग्ध,  
त्यरित, स्थित, आश्रित ।

उष्ट्र तद् ( पु० ) ऊँट, पशु विशेष ।

उष्ण तद् ( पु० ) तप्त, गरम, भीष्मकाल, निदाघ-  
काल, कुर्तिजा, प्याज, एक नरक का नाम ।—

फटिवन्ध तद् ( पु० ) कर्क और मकर रेखाओं  
के बीच वाला पृथिवी का भाग, जहाँ गर्मी अधिक  
पड़ती है ।—नदी ( पु० ) पैतरी नदी, यम-  
राज के द्वार पर लगी हुई नदी ।—घाण्ड ( पु० )  
स्वेद, पसीना, चाफ़ ।—वीर्य ( पु० ) तीक्ष्ण, तेज  
युक्त द्रव्य, रुच, उम ।—रश्मि ( पु० ) दिवाकर,  
सूर्य, तप्त किरणें ।

उष्णता तद् ( स्त्री० ) गर्मी, उमस ।

उष्णिक तद् ( पु० ) सप्तार छन्दो विशेष ।

उष्णीष तद् ( पु० ) शिरोवेष्टन वस्त्र, पगड़ी, पाग,  
साफ़ा, टोपी, मुकुट ।



उष्मा तत् ( स्त्री० ) ताप, धूप, गरमी, क्रोध ।  
 उस ( सर्व ) सर्वनाम विशेष ।  
 उसकाना ( क्रि० ) उसकाना, उत्तेजित करना ।  
 उस्ता दे० ( पु० ) नार्द, नापित ।  
 उसरना तद् ( क्रि० ) टलना, हटना, उपसरण करना ।  
 उसलपसल दे० ( पु० ) धराराया, हड़बड़ाया ।  
 उसारा दे० ( पु० ) घोसारा, परान्दा, दाजान ।  
 उसास या उसासु तद् ( पु० ) श्वास, साँस, पवन,  
 प्राण वायु, दीर्घ निश्वास, ठण्डी साँस ।  
 उसिनना ( क्रि० ) डबालना, आटा भिगाकर रोटी  
 बनाने योग्य गूँधना ।  
 उसीजना दे० ( क्रि० ) पक जाना, फुलस जाना ।  
 उसीसा दे० ( पु० ) सिरहाना, तकिया ।  
 उसूल दे० ( पु० ) सिद्धान्त ।  
 उसोना ( क्रि० ) डबालना, पसाना ।  
 उसेचना दे० ( क्रि० ) गारना, छानना, पसाना ।  
 उसकाना दे० ( क्रि० ) डकसाना, उमारना ।  
 उस्तुरा दे० सेंतमें, दिन मोल डुरा, अस्तुरा ।

उस्ताद ( पु० ) शिपक, गुरु ।  
 उस्ताना ( क्रि० ) दे० जलाना, सुलगाना ।  
 उस्तुरा दे० ( पु० ) अस्तुरा, डुरा, धुरा, डुर ।  
 उस तत् ( पु० ) वृष, साँद, किरण ।—धन्वा तत्  
 ( पु० ) इन्द्र, देवराज ।  
 उसा तत् ( स्त्री० ) घेनु, गो, गाय ।  
 उहदा ( पु० ) पद, स्थान ।—दूर ( पु० ) पदाधिकारी ।  
 अफसर ।  
 उहरना दे० ( पु० ) बैठना, दबाना, यिाना ।  
 उहवाँ ( शु० ) उस तौर, वहाँ । [गिलाफ़, वकन ।  
 उहार दे० ( पु० ) आच्छादन, बैठन, आहार,  
 उहाँ वहाँ ।  
 उहार दे० ( पु० ) उघार, खोल, पट, परदा ।  
 उहिया दे० कनफटा, योगियों के पहनने का धातु का  
 कड़ा, यथा—“ कर उहिया काँचे मृग छाला ” ।  
 ( पद्ममावत )  
 उही ( सर्व० ) वही ।  
 उहूल तद् ( स्त्री० ) तरंग, जहर, उमंग ।

## ऊ

ऊ नागरी वर्णमाला का छठवाँ अक्षर । इसका उच्चारण  
 स्थान श्रोष्ठ है ।  
 ऊ तत् ( अ० ) वाक्यारम्भ, रक्षा, महादेव, ब्रह्मा,  
 प्रभवाक्य, बन्धन, मोक्ष, प्रधान, चन्द्र ।  
 ऊख तद् ( पु० ) ईख, इक्षुदण्ड, गन्ना, पौंडा ।  
 ऊखली तद् ( स्त्री० ) उलूखन, शोखली ।  
 ऊगर तद् ( पु० ) उदुम्बर, गूलर, ऊमर ।  
 ऊंगना दे० ( पु० ) चतुष्पाद पशुओं का वह रोग  
 जिसमें उनके कान बहते हैं और शरीर ठण्डा  
 पड़ जाता है ।  
 ऊंगा दे० ( पु० ) अज्ञा, म्लार, अपामार्ग, चिचड़ा ।  
 ऊँय दे० ( स्त्री० ) ऊँघाई, नींद, निदास ।  
 ऊँघना दे० ( क्रि० ) झपकी लेना, नींद आना ।  
 ऊँघाई दे० ( स्त्री० ) ऊँघास, नींद, ऊँघ ।  
 ऊँच दे० ( पु० ) ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर की श्रेणी वाला ।  
 ऊँचा तद् ( पु० ) उच्च, उन्नत, बढ़ा, लम्बा ।

ऊँचाई तद् ( स्त्री० ) उचान, उन्नति, बढ़ाई, श्रेष्ठता, गौरव ।  
 ऊँचा बोलने वाला ( पु० ) घमण्डी, अभिमानी,  
 अहङ्कार से बोलने वाला ।  
 ऊँचा सुनना ( क्रि० ) कम सुनना, बहरापन ।  
 ऊँचकानी ( सं० ) बहरापन ।  
 ऊँचे दे० ( क्रि० वि० ) ऊपर की ओर ।  
 ऊँचे बोल का बोल नीचा अहङ्कारियों का अन्तिम  
 पराजय, बुरा परिणाम ।  
 ऊँछ दे० ( पु० ) एक राग का नाम ।  
 ऊँछना ( क्रि० ) कंघी करना, केश मारना ।  
 ऊँट तद् ( पु० ) जन्तु विशेष, उष्ट्र ।  
 ऊँटनी ( स्त्री० ) सँढिली ।  
 ऊँठकटारा दे० ( पु० ) औषधि विशेष, ऊँट का  
 भोजन विशेष, मरमाड़, उटकटाई ।  
 ऊँटवान दे० ( पु० ) ऊँट हाँकनेवाला ।  
 ऊँदर दे० ( पु० ) इन्दूर, चूहा, मूसा ।

ऊँहूँ ( अय्य ) नदी ।

ऊभना ( क्रि० ) उदय होना, उगना ।

ऊक तत् ( गु० ) उक्ता, तारा ।

ऊकना ( क्रि० ) चूकना, खस्य अष्ट होना ।

ऊख तद् ( पु० ) ईख, गन्ना, पोंडड़ा ।

ऊखम ( पु० ) गर्मी, ताप, उष्णता ।

ऊखल तद् ( पु० ) ओखली, उदूखल ।

ऊगरा तद् ( पु० ) कंचल उबला हुआ ।

ऊजड़ दे० ( वि० ) उजड़ा हुआ, ध्वस्त ।

ऊजर  
ऊजरा } दे० ( वि० ) उजला, सफा ।  
ऊजा

ऊटना दे० ( क्रि० ) उमंग में आना ।

ऊटपटाङ्ग दे० ( पु० ) अनपेक्ष, फटोहियात ।

ऊढ़ ( वि० ) विवाहित ।

ऊढ़ा तद् ( स्त्री० ) विवाहिता स्त्री ।

ऊत दे० ( पु० ) मूल, निर्वैरा पुत्राहित, मृत मनुष्य ।

ऊद, ऊदविलाव तद् ( पु० ) जलजन्तु विशेष,

जिसका आकार विछी से कुछ मिलता है ।

ऊदवल्ली ( स्त्री० ) अगरवल्ली, भूपवल्ली ।

ऊंदल ( पु० ) महोवा के एक परमाल राजा के एक प्रधान का नाम, एक वृक्ष विशेष ।

ऊदा दे० ( पु० ) भूरा, पुंखला रंग, खैरा ।

ऊधम दे० ( पु० ) उपास, उपद्रव, बलवा ।

ऊधट दे० ( पु० ) घीघट, विकट रास्ता, घुम रास्ता ।

ऊधी तद् ( पु० ) ( सं० उद्धव ) उद्धव, श्रीकृष्ण का मित्र और भक्त ।

ऊन तद् ( पु० ) ऊणी, भेड़ बकरी आदि का रोना,

म्यून, कम, थोड़ा, उदास, सुस्त ।—नी ( गु० )

ऊन से बनी हुई वस्तु, ऊन रचित ।

ऊनता तद् ( पु० ) कमी, न्यूनता । [ उदास, सुस्त ।

ऊना दे० ( पु० ) ऊन, कम, थोड़ा, ( वि० ) घटा,

ऊपर तद् ( अ० ) ऊर्ध्व, ऊँचे स्थान, अधिक ।

ऊपरी तद् ( पु० ) विदेशी, परबेसी, ऊपर का ।

ऊव ( स्त्री० ) पयड़ाट, उद्वेग ।

ऊवट दे० ( पु० ) घीघट, अगम्य ।

ऊवड़ ग्लाम्बड़ ( गु० ) अटपट, अँचीनीची ।

ऊम दे० ( पु० ) प्रीयता, सुखता ।

ऊमर दे० ( पु० ) उदुम्वर, मूलर ।

ऊयी दे० ( स्त्री० ) चाँकी, चावमीक, कीट ।

ऊरु तत् ( पु० ) अह्रा, नाँव ।

ऊर्ज तत् ( पु० ) [ ऊर्ज + तत् ] दल, शक्ति, एक काष्ठ्याबद्धार, कार्तिकमास ।

ऊर्जस्वल तत् ( गु० ) [ ऊर्जस् + वल् ] अतिशय बलवान्, उग्र, अत्यन्त बली ।

ऊर्जस्वी तत् ( गु० ) [ ऊर्जस् + विन् ] अधिक बलशाली, तेजस्वी, ( पु० ) रसाजझार विशेष ।

ऊर्णा तद् ( पु० ) ऊन, भेड़ या पकरी के रेशे ।

ऊर्णनाम तत् ( पु० ) मकरी, कीट विशेष, रोम का कीड़ा । [ स्त्री का नाम ।

ऊर्णा तत् ( पु० ) भेड़ के रोम, चित्ररथ गन्धर्भ की

ऊर्णायु तत् ( पु० ) कंचल, ऊनी वस्त्र ।

ऊर्ध्व तद् ( पु० ) ऊपर, ऊँचा, उच्च, उन्नत, उच्छिष्ट,

तुलू, लम्बा ।—गामी ( गु० ) ऊर्ध्वगमनकर्ता,

पुण्यामा ।—जानु ( गु० ) उपरिस्थ जहा ।

—तिक ( पु० ) चिरायता ।—देव ( पु० ) विष्णु,

भारायण ।—पाद ( पु० ) जीव विशेष, शरभ ।

—पुण्ड्र ( पु० ) वैष्णवी तिलक ।—बाहु ( पु० )

उन्नत हस्त, व्रतविशेष, साधुविशेष ।—रेखा

( स्त्री० ) हस्तरेखा विशेष, शुभमनुष्य हस्त रेखा ।

—रेता ( पु० ) व्यस्तित वीर्य, कामस्थागी,

आजन्म ब्रह्मचारी, भीष्म, महादेव मुनिविशेष ।

—लोक ( पु० ) स्वर्ग, सुरलोक, देवलोक ।

—श्वास ( पु० ) रोग विशेष, दमा, ऊर्ध्व पायु,

शीघ्र गमन से उच्चश्वास ।—स्थ ( गु० ) उपरि-

स्थित, उच्चस्थ ।

ऊर्वशी तत् ( स्त्री० ) देखो उरवस्ती ।

ऊर्मि तत् ( पु० ) सरह, लहर, वेदना, पीड़ा ।—

माला ( स्त्री० ) तरङ्ग समूह, अधिकतरङ्ग ।—

माली ( पु० ) समुद्र, जलधि ।

ऊनजल्लुल दे० ( वि० ) असम्यक्, अटपट, अनाड़ी ।

ऊलुवा तद् ( पु० ) मूष विशेष ।

ऊपण तद् ( पु० ) कालीमिर्ष ।

ऊपर तद् ( पु० ) पारभूमि, रात्री भूमि, नानी भूमि ।

ऊपा तद् ( स्त्री० ) देवो उपा ।

ऊप्प तत् ( पु० ) गन्धी की शब्द, भाप ।—घर्ष

तत् ( पु० ) श, प, स, ह, ये अक्षर ऊष्म कहलाते हैं ।—तत् ( स्त्री० ) तपन, गर्मी, ग्रीष्मकाल ।

ऊसन दे० ( पु० ) तामिरा, पौधा विशेष, जिससे जलाने का तेल निकाला जाता है, यह सरसों की जाति का है ।

ऊसद दे० ( वि० ) कीड़ा, मीठा ।

ऊसर तद् ( पु० ) बंजरभूमि, चारभूमि, बिना उपज की भूमि ।

ऊह तद् ( पु० ) आह, दुःख या विस्मयसूचक शब्द, दुःख में कराहने का शब्द ।

ऊहापोह तद् ( पु० ) तर्क वितर्क, विचार योग्य ।

## ऋ

ऋ, सातर्वा स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है ।  
ऋ तद् ( स्त्री० ) गह्वर्वाक्ष्य, निन्दावचन, ( स्त्री० ) अविति, देवमाता, परिहास वाक्य, विकार, ( पु० ) सूर्य, गणेश ।

ऋक् तद् ( पु० ) वेद विशेष, ऋग्वेद, मन्त्र विशेष ।  
ऋक्ष तद् ( पु० ) धन, सम्पत्ति, सुवर्ण, पितृधन, हिस्सा ।

ऋत्त तद् ( पु० ) रीढ़, भालू, नक्षत्र, मेघ दृष्य आदि राशि, भिलावा, रैवतक पर्वत का एक अंश । शौनक दृष्ट ।—श ( पु० ) चन्द्र, शशधर ।—जिह्वा तद् ( पु० ) कृष्ट या कोढ़ का एक भेद ।—पति तद् ( पु० ) चन्द्रमा, जाम्बवान ।—घान तद् ( पु० ) पर्वत विशेष जो नर्मदा के किनारे से गुजरात तक है ।

ऋग्वेद तद् ( पु० ) वेद विशेष ।—ी तद् ( वि० ) ऋग्वेद का जानने वाला या परम्परागत जिसके ऋग्वेद का पाठ ही मुख्य हो ।

ऋचा तद् ( स्त्री० ) वेदमन्त्र, वेद, काण्डी, काण्डिका ।  
ऋचीक तद् ( पु० ) जमदग्नि के पिता ।

ऋच्छ दे० ( पु० ) रीढ़ ।—रा ( स्त्री० ) वेरवा ।

ऋजीप तद् ( पु० ) सोमलता की सीडी या कोक, लोहे का तसला ।

ऋजु तद् ( पु० ) अवक्र, सरल, सीधा, सूखा ।—  
काय ( पु० ) करपमुनि, ( पु० ) सीधा शरीर ।  
भुज ( पु० ) सीधी रेखा वा भुजा ।—भुजक्षेत्र ( पु० ) वह क्षेत्र जो कई सीधी रेखाओं से घिरा हो ।—स्वभाव ( पु० ) सरलान्तःकरण, सद्गन्तःकरण विशिष्ट ।

ऋण तद् ( पु० ) उधार देना, कर्ज ।—ग्रहण ( पु० )

उधार लेना, कर्ज करना ।—दाता ( पु० ) महाजन, ऋण देने वाला ।—पत्र ( पु० ) ऋणग्रहण सूचक पत्र, तमस्तुक ।—मत्कुण ( पु० ) जामिन, प्रतिभू ।—मुक्त ( पु० ) ऋण परिशोधित चार-रहित ।—मुक्तिपत्र ( पु० ) ऋण परिशोध सूचक पत्र, फारिगुलती ।—मार ( पु० ) जो कर्ज नहीं चुकाता ।—मार्गण तद् ( पु० ) प्रतिभू, जामिन, जमानतदार ।—पनयन ( पु० ) ऋण शोधन, उधार चुकाना, कर्ज दे देना ।

ऋणार्ण तद् ( पु० ) एक कर्ज अदा करने को जो दूसरा कर्ज काड़ा जाय ।

ऋणिक तद् ( पु० ) कर्जदार ।

ऋणिया तद् ( पु० ) ऋणी, धारता ।

ऋणी तद् ( पु० ) देनदार, कर्जदार, उपकृत ।

ऋत तद् ( पु० ) सत्य, यथार्थ, दृष्टि विशेष, दृष्टि के द्वारा निर्वाह, जल, मोक्ष, ( पु० ) दीप्त, पूजित ।—धामा ( पु० ) विष्णु, नारायण ।

ऋतपर्ण या ऋतुपर्ण तद् ( पु० ) अयोध्या के राजा ।

ऋतदेय तद् ( पु० ) छोटा, यज्ञ विशेष ।

ऋति तद् ( स्त्री० ) निन्दा, स्पर्धा, मार्ग, गति, मन्त्र ।

ऋतु तद् ( पु० ) वसन्त आदि छः प्रकार का काल ।

—मती ( स्त्री० ) श्री-कुसुम, रजोदर्शन, दीप्ति ।

रजस्वला, स्त्री-धर्मिणी, उपपद्यती ।—राज ( पु० )

वसन्तकाल ।—स्नाता ( स्त्री० ) रजोदर्शन के अनन्तर चतुर्थ दिन स्नाता स्त्री ।—स्नान ( पु० ) रजो-

दर्शान्त चतुर्थ दिन का स्नान । [याज्ञक ।

ऋत्विज तद् ( पु० ) यज्ञ कराने वाला पुरोहित,

ऋद्ध तद् ( पु० ) सम्पन्न, धनाढ्य, समृद्ध, शीघ्र ।

ऋद्धि तद् ( स्त्री० ) समृद्धि, धन, सम्पत्ति, विभव,

वृद्धि, एक औपध का नाम, पार्वती, गिरिजा ।—  
सिद्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) समृद्धि और सफरता ।  
ऋनिया या रिनिया ( पु० ) कर्जदार, धरता ।  
ऋनी दे० ( पु० ) देखो, ऋणी ।  
ऋभु तत्त्वं ( पु० ) एक गण देवता ।  
ऋभुत्त तत्त्वं ( पु० ) इन्द्र, स्वर्ग, वज्र ।  
ऋभुत्ता तत्त्वं ( स्त्री० ) इन्द्राणी, शची ।  
ऋभुत तत्त्वं ( पु० ) श्रेष्ठ, ऋषिश्रेष्ठ, वैल, वृष ।—देव  
तत्त्वं ( पु० ) राजा नाभि के पुत्र जिनकी गणना  
विष्णु के चौबीस अवतारों में है ।—ध्वज तत्त्वं  
( पु० ) शिव, महादेव ।  
ऋभुभी तत्त्वं ( स्त्री० ) पुरुष के रंगरूप वाली स्त्री ।  
ऋषि तत्त्वं ( पु० ) मुनि, तपस्वी, तपसी, सापस ।—  
राज ( पु० ) प्रधान ऋषि ।—मित्र ( पु० ) शान्ति  
मित्र, रामचन्द्रिका में विन्वामित्र के लिये इसका  
प्रयोग किया गया है ।  
ऋषिकुल्या तत्त्वं ( स्त्री० ) नदी विशेष ।  
ऋषिक तत्त्वं ( पु० ) वाल्मीकीय रामायण में वर्णित  
दक्षिण का एक देश ।

ऋषीक तत्त्वं ( पु० ) ऋषि का पुत्र ।  
ऋषीश तत्त्वं ( पु० ) ऋषियों में प्रधान, ऋषिश्रेष्ठ ।  
ऋष्टिक ( पु० ) दक्षिण का एक देश । इसका इल्लेल  
वाल्मीकी रामायण में है ।  
ऋष्य तत्त्वं ( पु० ) मृग विशेष, चितकुरा मृग ।  
ऋष्यकेतु तत्त्वं ( पु० ) अनिरुद्ध, ऊषापति ।  
ऋष्यमीका तत्त्वं ( स्त्री० ) सनावर, औषधि ।  
ऋष्यमूक तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विशेष, जो किरिण्धा  
के पास है ।  
ऋष्यशृङ्ग तत्त्वं ( पु० ) नयःप्रभाव सम्पन्न महर्षि,  
लोक पाद राज की कन्या शान्ता इनसे व्याही  
गई थी, इन्हीं के द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ करा कर  
राजा दशरथ ने चार पुत्र प्राप्त किये थे । ये महर्षि  
विभाण्डक के पुत्र थे । स्वर्गीय छत्तरा उर्वशी  
को देखने से विभाण्डक महर्षि का रेतस्सलन  
हुआ । संयोगवश वह जल में गिरा, जिसे एक  
हरिणी ने जल के साथ पी लिया । उसी गर्भ से  
ऋष्यशृङ्ग उत्पन्न हुए थे ।

## ऋ ल-लृ

ऋ तत्त्वं ( स्त्री० ) स्वर का छाठवाँ वर्ण, देवमाता,  
शव, असुर, दिति, भय ।

लृ तत्त्वं स्वर का नवम और दसम वर्ण । इन अपरों का  
प्रयोग वेशों में होता है, भाषा में नहीं ।

## ए

ए नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर जिसका  
उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है ।  
ए तत्त्वं ( स्त्री० ) अनसूया, आमन्त्रण, अनुकम्पा,  
आह्वान, सम्बोधनार्थक, ( पु० ) विष्णु ।  
एँड़ा वेंड़ा ( पु० ) बलटा सीधा ।  
एँड़ी ( स्त्री० ) रेशम का कीड़ा विशेष ।  
एक तत्त्वं ( पु० ) सद्वितीय, प्रथम, मुख्य, अन्य,  
केवल, प्रथम संख्या ।  
एक आध तत्त्वं कुछ थोड़ा, एक या आधा ।  
एकई तत्त्वं अनन्य, वर्धा, यमित्र, तुल्य, समान ।  
एकएक तत्त्वं पृथक् पृथक्, भिन्न भिन्न, प्रत्येक ।

एकक तत्त्वं एकाकी, अकेला, निराज्ञा, असहाय ।  
एक काल तत्त्वं ( पु० ) समान समय, एक समय,  
सुगवत् ।  
एककालीन तत्त्वं ( पु० ) समकाल उत्पन्न, एक समय,  
एक काल, एक ही बार ।  
एक की दस सुनाना दे० ( वा० ) स्वर्गापराध का  
अधिक दण्ड, एक गाड़ी देनेवाले को दाम गाड़ी  
सुनाना ।  
एकगाड़ी ( स्त्री० ) नाव विशेष जो एक खम्भी लकड़ी  
को सुलझा कर बनायी जाती है ।  
एकचक्र तत्त्वं ( पु० ) सूर्य, सूर्य का रथ ।

तत् ( पु० ) श, घ, स, ह, ये अक्षर ऊष्म कइलाते हैं ।—तत् ( स्त्री० ) तपन, गर्मी, ग्रीष्मकाल ।

अस्त्र दे० ( पु० ) तरमिरा, पौधा विशेष, जिससे जलाने का तेल निकाला जाता है, यह तरसों की जाति का है ।

अस्त्र दे० ( वि० ) फीका, मीठा ।

अस्त्र तद् ( पु० ) चंजरभूमि, चारभूमि, विना उपज की भूमि ।

अह तद् ( पु० ) आह, दुःख या विस्मयसूचक शब्द, दुःख में कराहने का शब्द ।

अहोपाह तद् ( पु० ) तर्क वितर्क, विचार योग्य ।

## अ

अ, सातवीं स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है ।  
अ तत् ( अ० ) गार्हपत्य, निन्दावचन, ( स्त्री० )  
अदिति, देवमाता, परिहास वाक्य, विकार, ( पु० )  
सूर्य, गणेश ।

अक् तत् ( पु० ) वेद विशेष, ऋग्वेद, मन्त्र विशेष ।  
अक्य तत् ( पु० ) धन, सम्पत्ति, सुवर्ण, पितृधन,  
हिंसा ।

अक्ष तत् ( पु० ) रीछ, आलू, नक्षत्र, मेघ वृष आदि  
राशि, भिलावर्षा, रैवतक पर्वत का एक अंश । शीतक  
वृक्ष ।—श ( पु० ) चन्द्र, शशधर ।—जिह्वा तत्  
( पु० ) कृष्ट या कोढ़ का एक भेद ।—पति तत्  
( पु० ) चन्द्रमा, जाम्बवान ।—घान तत् ( पु० )  
पर्वत विशेष जो नर्मदा के किनारे से गुजरात  
तक है ।

अग्वेद तत् ( पु० ) वेद विशेष ।—ी तत् ( वि० )  
अग्वेद का जानने वाला या परम्परागत जिसके  
अग्वेद का पाठ ही मुख्य हो ।

अचा तत् ( स्त्री० ) वेदमन्त्र, वेद, काण्ठी, काण्डिका ।  
अचीक तत् ( पु० ) जमदग्नि के पिता ।

अच्छ दे० ( पु० ) रीछ ।—रा ( स्त्री० ) वेश्या ।

अजीप तत् ( पु० ) सोमलता की सीढ़ी या कोक,  
लोहे का तसला ।

अजु तत् ( पु० ) अक्क, सरल, सीधा, सूझा ।—  
काय ( पु० ) करपपुमि, ( पु० ) सीधा शरीर ।  
भुज ( पु० ) सीधी रेखा या भुजा ।—भुजक्षेत्र  
( पु० ) वह क्षेत्र जो कई सीधी रेखाओं से घिरा  
हो ।—स्वभाव ( पु० ) सरलान्तःकरण, सद्गन्तः-  
करण विशिष्ट ।

अण तत् ( पु० ) उधार देना, कर्ज ।—ग्रहण ( पु० )

उधार लेना, कर्ज करना ।—दाता ( पु० ) महाजन,  
अण देने वाला ।—पत्र ( पु० ) अणग्रहण सूचक  
पत्र, तमस्वक ।—मत्कुण ( पु० ) जामिन,  
प्रतिभू ।—मुक्त ( पु० ) अण परितोषित भार-  
रहित ।—मुक्तिपत्र ( पु० ) अण परितोष सूचक  
पत्र, फारिगुप्ती ।—मार ( पु० ) जो कर्ज  
नहीं चुकाता ।—मार्गण तत् ( पु० ) प्रतिभू,  
जामिन, जमानतदार ।—पनयन ( पु० ) अण  
शोधन, उधार चुकाना, कर्ज दे देना ।

अणार्ण तत् ( पु० ) एक कर्ज अदा करने को जो  
दूसरा कर्ज काड़ा जाय ।

अणिक तद् ( पु० ) कर्जदार ।

अणिया तद् ( पु० ) अणी, धारता ।

अणी तत् ( पु० ) देनदार, कर्जदार, उपकृत ।

अत तत् ( पु० ) सत्य, यथार्थ, वृत्ति विशेष, वृत्त  
वृत्ति के द्वारा निर्वाह, जल, मोक्ष, ( पु० ) दीप्त,  
वृजित ।—धामा ( पु० ) विष्णु, नारायण ।

अतपर्य या अतुपर्य तत् ( पु० ) अयोध्या के राजा ।

अतदेय तत् ( पु० ) छोट्टा, यज्ञ विशेष ।

अति तत् ( स्त्री० ) निन्दा, स्पर्धा, मार्ग, गति, महल ।

अतु तत् ( पु० ) वसन्त आदि छः प्रकार का काल ।

—मती ( स्त्री० ) स्त्री-कुसुम, रजोदर्शन, दीप्ति ।  
रजस्वला, स्त्री-चर्मिणी, पुण्यवती ।—राज ( पु० )  
वसन्तकाल ।—स्नाता ( स्त्री० ) रजोदर्शन के अन-  
न्तर चतुर्थ दिन स्नाता स्त्री ।—स्नान ( पु० ) रजो-  
दर्शनान्त चतुर्थ दिन का स्नान । [ याजक ।

अतिवज तत् ( पु० ) यज्ञ कराने वाला पुरोहित,

अद्ध तत् ( पु० ) सम्पन्न, घनाढ्य, समृद्ध, श्रीपन्न ।

अद्धि तत् ( स्त्री० ) समृद्धि, धन, सम्पत्ति, विभव,

बुद्धि, एक औपध का नाम, पार्वती, गिरिजा । —  
 सिद्धि तत्त्वं ( श्री० ) समृद्धि और सफलता ।  
 श्रुनिया या रिनिया ( पु० ) कर्जदार, धरता ।  
 श्रुनी दे० ( पु० ) देखो श्रुणी ।  
 श्रुमु तत्त्वं ( पु० ) एक गण देवता ।  
 श्रुभुज तत्त्वं ( पु० ) इन्द्र, स्वर्ग, बज्र ।  
 श्रुभुजा तत्त्वं ( श्री० ) इन्द्राणी, शची ।  
 श्रुपम तत्त्वं ( पु० ) श्रेष्ठ, अपिश्रेष्ठ, बैल, वृष । — देव  
 तत्त्वं ( पु० ) राजा नाभि के पुत्र जिनकी गणना  
 विष्णु के चौबीस अवतारों में है । — ध्वज तत्त्वं  
 ( पु० ) शिव, महादेव ।  
 श्रुपमी तत्त्वं ( श्री० ) गुरु के रंगरूप वाली स्त्री ।  
 श्रुपि तत्त्वं ( पु० ) मुनि, तपस्वी, तपसी, तापस । —  
 राज ( पु० ) प्रधान ऋषि । — मित्र ( पु० ) शान्ति  
 मित्र, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र के लिये इसका  
 प्रयोग किया गया है ।  
 श्रुपिकुल्या तत्त्वं ( श्री० ) नदी विशेष ।  
 श्रुपिक तत्त्वं ( पु० ) वात्सीकीय रामायण में बर्णित  
 दक्षिण का एक देश ।

श्रुपीक तत्त्वं ( पु० ) ऋषि का पुत्र ।  
 श्रुपीश तत्त्वं ( पु० ) ऋषियों में प्रधान, ऋषिश्रेष्ठ ।  
 श्रुपिक ( पु० ) दक्षिण का एक देश । इसका इक्केस  
 वात्सीकी रामायण में है ।  
 श्रुप्य तत्त्वं ( पु० ) मृग विशेष, चितकया मृग ।  
 श्रुप्यकेतु तत्त्वं ( पु० ) अनिरुद्ध, ऊपापति ।  
 श्रुप्यप्रोक्ता तत्त्वं ( श्री० ) सनावर, औपधि ।  
 श्रुप्यमूक तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विशेष, जो किटकिटाना  
 के पास है ।  
 श्रुप्यशृङ्ग तत्त्वं ( पु० ) तपःप्रभाव सम्पन्न महर्षि,  
 खोम पाद राज की कन्या शास्ता इनसे व्याही  
 गई थी, इन्हीं के द्वारा पुत्रप्रेप्ति पत्र का कर  
 राजा दशरथ ने चार पुत्र प्राप्त किये थे । ये महर्षि  
 विभाण्डक के पुत्र थे । स्वर्गीय अक्षरा उर्वशी  
 को देखने से विभाण्डक महर्षि का रेतस्खलन  
 हुआ । संयोगवश वह जल में गिरा, जिसे एक  
 इरिणी ने जब के साथ पी लिया । वसी गर्भ से  
 श्रुप्यशृङ्ग उत्पन्न हुए थे ।

## श्रु ल-लृ

श्रु तत्त्वं ( श्री० ) स्वर का शाठर्वा वर्ष, देवमाता,  
 शव, असुर, दिति, भय ।

लृ-लृ, स्वर का नवम और दशम वर्ण । इन चरों का  
 प्रयोग येशों में होता है, भाषा में नहीं ।

## ए

ए नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर जिसका  
 उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है ।  
 ए तत्त्वं ( अ० ) अनुसूया, आमन्त्रण, अनुकम्पा,  
 आह्वान, सम्बोधनार्थक, ( पु० ) विष्णु ।  
 ऐँडा ऐँडा ( गु० ) उलटा सीधा ।  
 ऐँड़ी ( श्री० ) रेशम का काड़ा विशेष ।  
 एक तत्त्वं ( गु० ) सद्द्वितीय, प्रथम, मुख्य, अन्य,  
 केवल, प्रथम संख्या ।  
 एक आध तत्त्वं कुछ थोड़ा, एक या आधा ।  
 एकई तत्त्वं अनन्य, वही, अभिन्न, तुल्य, समान ।  
 एकएक तत्त्वं प्रत्यक् प्रत्यक्, मित्र मित्र, प्रत्येक ।

एकक तत्त्वं एकाकी, अकेला, निाला, अलहाय ।  
 एक काल तत्त्वं ( गु० ) समान समय, एक समय,  
 युगवत् ।  
 एककालीन तत्त्वं ( गु० ) समकाल उत्पन्न, एक समय,  
 एक काल, एक ही बार ।  
 एक की दस सुनाना दे० ( वा० ) स्वप्नापराध का  
 अधिक दण्ड, एक माछी बेनेवाले को दाम गाली  
 सुनाना ।  
 एकगाड़ी ( श्री० ) नाव विशेष जो एक बम्पी लकड़ी  
 को खुल्ला कर बनायी जाती है ।  
 एकचक्र तत्त्वं ( पु० ) सूर्य, सूर्य का रथ ।

पेपीक तत् ( पु० ) खटादेव का मन्त्र पढ़कर चलाया जाने वाला शस्त्र विशेष ।

पेसा तद् ( गु० ) इस प्रकार, इसके समान ।

पेसा तैसा तद् कुछ थोड़ी, न मला न बुरा, न बाढ़ बाढ़, न छी छी ।

पेसे ( कि०चि० ) इस प्रकार, इस ढंग से—हि इसी प्रकार से, इसी तरह से ।

पेहिक तत् ( गु० ) इस लोक के भोग, यहाँ होने वाला, यहाँ उपलब्ध, सांसारिक, दुनियावी ।

पेहै दे० ( कि० ) आवेंगे, आवेंगे ।

## ओ

ओ प्रयोदश स्वरवर्ण, इसका उच्चारण ओष्ठ और कण्ठ से होता है, ( अ० ) कल्या इच्छा, सम्बोधन, प्रशंसा, विष्णु, आह, आहा ।

ओ ( आ० ) हाँ, अच्छा, तथास्तु, प्रणव ।

ओइछना ( कि० ) चारना, न्योछावर करना ।

ओठ तद् ( पु० ) ओठ, ओष्ठ, अधर, होठ ।

ओड़ा दे० ( पु० ) गहरा, गम्भीर ।

ओधा तद् ( पु० ) ओंघा, बलटा, तल-उपर ।

ओधा दे० ( पु० ) हाथी फंसाये का गड्ढा ।

ओई दे० ( पु० ) वृत्त विशेष ।

ओक तत् ( पु० ) घर, मकान, गृह, स्थान, आश्रय ।

—ना तद् ( कि० ) कै करना, —पति तत्

( पु० ) सूर्य, चन्द्र ।—ई दे० ( खी० ) वमन, कै ।

ओकारान्त ( वि० ) वे शब्द जिनके अन्त में ओ हो ।

ओखली तद् ( खी० ) ऊलल, बल्लखल ।

ओगरा तद् ( पु० ) खिचड़ी, पथ्यविशेष ।

ओघ तद् ( पु० ) समूह, वेरी, थोक, शशि ।

ओझार तद् ( पु० ) [ ओम् + कार ] प्रणव, आद्य बीजमन्त्र ।

ओझा तद् ( गु० ) छिछोरा, हलका, उतावला, नीच ।

ओज तद् ( पु० ) बल, दीप्ति, तेज, पराक्रम, प्रताप ।

ओजस्वी तद् ( पु० ) प्रतापी, बली, तीक्ष्णचित्त, तेजस्वी ।

ओम् तद् ( पु० ) पेट की थैली, पेट, अर्थात् ।

ओम्फड तद् ( पु० ) मोंक, चक्का, ठोकर, पचौनी, अर्थात् ।

ओम्फल तद् ( खी० ) आड़, ओट, छिपाव, परदा, दही, एकान्त ।—करना ( कि० ) छिपाना, परदा करना ।

( पु० ) ओम्फस, रोमहा, यन्त्री, मान्त्रिक,

वपाप्यय शब्द का ही यह थपभ्रंश

है, इसका प्रकृतरूप उद्यम्कओ है, उद्यम्कओ ही से ओम्फा निकला है । सरयूपारी, मैथिल ब्राह्मणों की एक जाति ।—ई या यत तद् ( खी० ) झाड़ूक ।

ओट तद् ( खी० ) आड़, पच, दही, छिपाव, बचाव ।—करना ( कि० ) छिपाना ।—होना ( कि० ) छिपना । [बिनौला निकालना ।

ओटना तद् ( कि० ) आड़ करना, रेतना, रुई से

ओटनी दे० ( खी० ) कपास ओटने की चरखी ।

ओटा तद् ( पु० ) धाड़, लुकाव, पैठन, परदे की दीवाल ।

ओठ तद् ( पु० ) ओष्ठ, ओठ, होठ, अधर ।

ओठगंता ( कि० ) आराम करना ।

ओड़ग्रहि ( कि० ) रोकेंगे, बचावेंगे । [तलवार ।

ओड़न तद् ( पु० ) डाल, फरी ।—खाई पटेवाड़ डाल,

ओड़ा तद् ( पु० ) खाँचा, ठोकर, दौरा ।

ओढ़न दे० ( पु० ) चादर, चदरा ।

ओढ़ना तद् ( कि० ) पड़ना, पहिरना, ( पु० ) रजाई, ओढ़ने की वस्तु, पड़, जोई ।

ओढ़नी तद् ( पु० ) खियों के ओढ़ने का कपड़ा ।

ओढ़र तद् ( प्राकृ० ) ( पु० ) यहाँना ।

ओत तद् ( पु० ) आराम, आलस्य, हुना हुआ, गुथा हुआ । ( पु० ) जाने का सूत ।

ओतप्रोत तत् ( पु० ) आड़ा टेढ़ा, ताना बाना, लम्बाई में प्रथित, चौड़ाई । ( पु० ) ताना बाना ।

ओता दे० ( वि० ) उतना ।

“मोहि कुशल का सोच न ओता ।”—जायसी

ओतु तद् ( खी० ) चिल्ली, बिलाई ।

ओतुल्लुत तद् ( पु० ) बलटा, चिपरीत ।

ओथल पोथल दे० ऊलटा, चित्त, उलप पलट ।

श्रीद दे० ( पु० ) नमी, तरी, सील ।  
 श्रीदक तद्० ( पु० ) पानी, जब ।  
 श्रीदन तद्० ( पु० ) भात, रींचे हुए चावल, अन्न ।  
 श्रीदनी दे० ( पु० ) बरियारी, बीजघन्य ।  
 श्रीदर दे० ( पु० ) बदर, पेट ।  
 श्रीदा तद्० ( पु० ) गीला, भौंगा, भोजा, आर्द्र ।  
 श्रीधे तद्० ( पु० ) ज़रो हुए, अधिकारी, भीतरिया,  
 बल्लभ तम्पदय में ठाकुर जी की रसोई बनाने वाले  
 को भी कहते हैं । [ पानी का निकास ।  
 श्रीना तद्० ( पु० ) तालाब में पानी निकलने का मार्ग,  
 श्रीनाड़ दे० ( पि० ) ज़ोरवार, बली ।  
 श्रीनामासी तद्० ( स्त्री० ) अक्षरारम्भ ।  
 श्रीप तद्० ( स्त्री० ) सुन्दरता, कमबोयाइट, घेंट, जिल्द ।  
 श्रीपची तद्० ( पु० ) अन्नकारी, किल्लती, पोढ़ा ।  
 श्रीपना तद्० ( कि० ) घोटना, साफ़ करना, जिल्द  
 करना ।  
 श्रीपार तद्० ( पु० ) नदी के उस पार ।  
 श्रीम् तद्० ( अ० ) प्रणव, ओङ्कार । [ छोर, सीमा ।  
 श्रीर तद्० ( स्त्री० ) पार्व, तफ़, दिशा, अलग, पार,  
 श्रीरमा दे० ( पु० ) एकहरी सिलाई ।  
 श्रीरहना ( पु० ) बलहना, शिफायत ।  
 श्रीरी दे० ( पु० ) पक्षपाती, ओछती, ( अन्व० ) क्रियों  
 को सम्बोधन के लिये शब्द ।  
 श्रीरे दे० ( पु० ) ओले, उपल, वर्षा के पक्षर ।  
 श्रीरेहा दे० ( पु० ) निर्माण, सृष्टि, रचना ।  
 श्रील दे० ( पु० ) सूर्य, मनीषी, जमीरुद् ।  
 श्रीलती दे० ( स्त्री० ) श्रीरानी, श्री, दासवे छपर  
 का वह हिस्सा जिससे होकर बरसाती पानी नीचे  
 गिरता है ।  
 श्रीला दे० ( पु० ) शिलावृष्टि, पत्थर, चिनीली, इन्द्रोपल,

मिट्टाई विशेष ।—हो जाना ( कि० ) खूब  
 टंटा होना ।  
 श्रीली दे० ( स्त्री० ) गोद, अंचल, पल्ला ।  
 श्रीलौना तद्० ( पु० ) उदाहरण, तुलना ।  
 श्रीपधि तद्० ( स्त्री० ) वनस्पति, वृक्ष, घास, पौधा ।  
 श्रीपधीश तद्० ( पु० ) चन्द्र, शराधर, चन्द्रमा,  
 कपूर ।  
 श्रीष्ट तद्० ( पु० ) होठ, ओठ, अधर, रदच्छद, दन्त-  
 च्छद ।—रोग ( पु० ) मुखरोग विशेष, ओष्ठमण ।  
 श्रीष्टी तद्० ( स्त्री० ) शिवाफल, कुंदरु ।  
 श्रीष्ट्य तद्० ( पु० ) ओष्ठ द्वारा उच्चारित वर्ण ।  
 उ ऊ ष फ ष म म—ये ओष्ठ्य वर्ण हैं ।  
 श्रीस तद्० ( स्त्री० ) पाखा, शीत, शवनम ।  
 श्रीसर दे० ( स्त्री० ) कलोर, जवान गौ, कलोर गाय  
 या भैंस । [ क्रम से ।  
 श्रीसरा दे० ( पु० ) बारी, पाली, दाँव, पाखा पाली,  
 श्रीसरी दे० ( पु० ) देखो श्रीसरा । [ क्रिया ।  
 श्रीसाई दे० ( स्त्री० ) अन्न को भूसे से अलगाने की  
 श्रीसारा दे० ( पु० ) डालान, बरामदा ।  
 श्रीसीसा दे० ( पु० ) सिरहाना, तकिया ।  
 श्रीह या श्रीहो तद्० ( अ० ) सम्बोधनवाचक, वाह  
 वाह, हाः, आहा ।  
 श्रीहर दे० ( स्त्री० ) ओठ, ओष्ठरु ।  
 “ श्रीहर होहु रे माद भिलारी । ”—जापसी ।  
 श्रीहरना ( कि० ) कम होना, घटना ।  
 श्रीहरी दे० ( स्त्री० ) थकावट, शिथिलता ।  
 श्रीहा तद्० ( पु० ) गाय का धन ।  
 श्रीहार तद्० ( पु० ) रथ या पालकी के ऊपर का  
 ढपट्टे का परदा ।  
 श्रीहि दे० उसको, उसे ।  
 श्रीहो ( अन्व० ) हर्ष या विस्मयसूचक शब्द ।

## श्री

श्री चतुर्दश स्वरवर्ण इसके उच्चारण का स्थान कण्ठ और  
 ओष्ठ है । ( अ० ) आधान, सम्बोधन, विशेष,  
 निर्णय, और ( पु० ) अनन्त, निःस्तन ।  
 श्री तद्० ( अ० ) श्रद्धा का प्रणव ।

श्रीमो दे० ( पु० ) सुप, मौन, गुंगापन ।  
 श्रीमाई ( स्त्री० ) निद्रा, रूपकी ।  
 श्रीघना दे० ( कि० ) अपकी आना ।  
 श्रीजना दे० ( कि० ) अकुलाना, उग्रना



औड़ दे० ( पु० ) बेलदार, मिट्टी खोदने वाला मज़दूर ।  
 औठ दे० ( स्त्री० ) किनारा, छोर ।  
 औड़ा दे० ( पु० ) अयाह, गहिरा, गम्भीर ।  
 औधना दे० ( क्रि० ) उलट जाना, पलट जाना ।  
 औधा तद् ( गु० ) उबड़ा, तलऊरा, पट ।  
 औरा ( पु० ) औबला, धामलकी ।  
 औला तद् ( पु० ) धात्रीफल धामलकी, आँवरा ।—  
 सार ( पु० ) गन्धक विशेष ।  
 औकन दे० ( स्त्री० ) राशि, डेर ।  
 औकांत ( पु० ) हैसियत, समय । [ औकार हो ।  
 औकारान्त तद् ( पु० ) ऐसे शब्द जिनके अन्त में  
 औखद या औखध तद् ( पु० ) औपधि, दूधा ।  
 औखा दे० ( पु० ) गाय का चमड़ा या चरसा ।  
 औगत तद् ( स्त्री० ) दुर्दशा, दुर्गति ।  
 औगाहना तद् ( क्रि० ) अचगाहना ।  
 औगौ दे० ( श्री० ) कशा, कोड़ा, चाबुक ।  
 औगुन या औगुण तद् ( पु० ) अक्कण, दोष, खोट,  
 कलङ्क ।— ( गु० ) गुणहीन, निगुणी, मूर्ख ।  
 औघट तद् ( गु० ) भगम्प, दुर्गम, दुस्तर ।  
 औघड़ दे० ( पु० ) अघोरी, मौजी, अपराधुन ।  
 औचक तद् ( अ० ) औचट, हठाव, अकस्मात्, अचा-  
 नक, सहसा ।  
 औचट दे० ( स्त्री० ) सङ्कट, अँडस, कठिनाई ।  
 औचित्य तद् ( पु० ) उपयुक्तता, उचित का भाव ।  
 औझ तद् ( पु० ) दाढ़ हवरी की जड़ ।  
 औजार ( पु० ) बड़ई, लुहार आदि के इयियार ।  
 औझड़ तद् ( पु० ) डेल, घका, खींच ।  
 औटन तद् ( पु० ) जलाव, उयाव, ताप, छुरी ।  
 औटना तद् ( क्रि० ) जहाना, सुखना, उथालना ।  
 औडुलोमि तद् ( पु० ) वेदान्तवेत्ता वे ऋषि या  
 आचार्य जिनका मत वेदान्तसूत्रों में उदाहृत है ।  
 औदर दे० ( वि० ) मनमौजी, अटपटी ढार, वे समझी  
 की डरन, विना पियार के प्रसन्नता ।  
 औतार तद् ( पु० ) अवतार, प्रकट, जन्म, अवतीर्ण  
 होना ( देखो अवतार ) ।  
 औत्तमि तद् ( पु० ) १४ मनुष्यों में तीसरे मनु ।  
 औत्तानपादी तद् ( पु० ) उत्तानपाद के पुत्र, प्रसिद्ध  
 भक्त भुव, देखो भुव ।

औत्कर्ष्य तद् ( पु० ) श्रेष्ठता, उत्तमता ।  
 औत्सुक्य तद् ( पु० ) उत्सुकता, अभिलाषा, भावना ।  
 औयरा दे० ( वि० ) छिड़ला, कम गहरा ।  
 “ अति अगाध अति औयरी नदी कूप सावाय । ”  
 —विहारी ।  
 औदनिक तद् ( गु० ) सूफकार, पाचक, रन्धनकर्ता,  
 रसोह्या । [ पिटाई, पेड़, उदर सम्बन्धी ।  
 औदरिक तद् ( गु० ) उदामात्र पोषक, पेटपेष्ट,  
 औदात तद् ( गु० ) अवदाता, श्वेत, गौर, शुक्ल,  
 सफेद, धौला ।  
 औदान दे० ( पु० ) धलुवा, सेंत का, सेंत मेंत का ।  
 औदार्य तद् ( गु० ) महत्त्व, श्रेष्ठत्व, सरलता, अका-  
 पत्य, दानुत्त्व, सात्विक नायक का गुण विशेष ।  
 औदास्य तद् ( पु० ) उदासीनता, वैराग्य, अनिच्छा,  
 मनोमालिन्य ।—भाव ( पु० ) वैराग्य भाव,  
 उदासीनता ।  
 औदोच्य तद् ( पु० ) गुजराती भाषणों की एक जाति ।  
 औदुस्वर तद् ( वि० ) गूलर का घना, ताँवे का  
 बना हुआ ।  
 औद्दालिक तद् ( पु० ) शीमक और बिलनी आदि  
 की बाँधी के कीड़ों के बिड़ का चप या मधु, तीर्थ  
 विशेष ।  
 औद्वत्य तद् ( पु० ) परामे गुण को न सह सकने का  
 भाव, छुटता, दौराभ्य, उजड़पन, उग्रता, अकलङ्कपन ।  
 औद्वाहिरु तद् ( गु० ) विवाह सम्बन्धी धन, विवाह  
 में प्राप्त धन ।  
 औने पौने तद् ( गु० ) अपूर्ण, न्यूनाधिक, घटी बड़ी ।  
 औपचारिक तद् ( गु० ) उपचार सम्बन्धी, जो केवल  
 कहने सुनने के लिये हो और यथार्थ न हो ।  
 औपयिक तद् ( पु० ) न्याय्य, उपयुक्त, योग्य ।  
 औवट तद् ( गु० ) अववाट, चुरा या कठिन मार्ग,  
 औभट, औघट, दुर्गम ।  
 और दे० ( अ० ) और, फिर, अधिक, विशेष, वाक्यान्तर-  
 च्छेदक ।—एक, दूसरा, कोई, और कोई ।—  
 ही ; बिल्कुल दूसरा, अत्यन्त भिन्न ।  
 औरत दे० ( स्त्री० ) नारी, महिला, स्त्री ।  
 औरस तद् ( पु० ) पुत्रविशेष, स्वश्रपादित पुत्र,  
 स्त्री के उपपन्न पुत्र, स्वपुत्र ।

श्रीरस्य तत् ( पु० ) श्रीरस पुत्र, स्वपुत्र ।  
 श्रीरुद्रदेहिक तत् ( पु० ) प्रेत क्रिया, वसिसेस्कार,  
 भादि अन्येष्टि क्रिया, आद ।  
 श्रीजाद दे० ( पु० ) सन्तान, सन्तति ।  
 श्रीवल दे० ( पु० ) सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य ।  
 श्रीर्व तत् ( पु० ) बाइवानरु, निमक, पुराणों के  
 मतानुसार भूगोल का दक्षिण भाग जहाँ सब नरक  
 हैं । मुनि विशेष, भृगुवंशीय ऋषि ।  
 श्रीवंशेश तत् ( पु० ) वसिष्ठ, अगस्त्य, उर्वशी का पुत्र

श्रीपद्य तत् ( पु० ) अगद, भेषज, दवा ।—अजय  
 ( पु० ) वैद्यगृह, दवाखाना ।  
 श्रीसना तद् ( कि० ) उषसना, सङ्गना, पचना ।  
 श्रीसर तत् ( पु० ) चक्रसर, अवकास, छुटो ।  
 श्रीसान तद् ( पु० ) चेतना, बोध, साहस, समिति,  
 अवज्ञान ।  
 श्रीसर तद् ( पु० ) चिन्ता, भभार, खटका ।  
 श्रीहत तद् ( श्री० ) अपमृत्यु, कृमि ।  
 श्रीह्वाती दे० ( श्री० ) ऋषिदानी, सुहागिन ।

## क

क व्यञ्जन का प्रथम वर्ण । इसका उच्चारण कण्ठ से  
 होता है ।  
 क तत् ( पु० ) शिर, जल, सुख, केश, अग्नि आत्मा,  
 कामदेव, काम, प्रीति, दृष्ट, धन, प्रकाश, प्रज्ञा,  
 धातु, विष्णु, मयूर, मन, यम, राजा, शब्द,  
 शरीर, सूर्य ।  
 कंस तत् ( पु० ) ताँबा और राँगा मिश्रित धातु विशेष,  
 काँसा, मथुरा का इन्द्रनामध्यात राजा, कंसराज,  
 भोजवंशीय राजा उग्रसेन का छोटा पुत्र, जरासन्ध  
 का दामाद, दानवराज दुर्मिह के औरस और उग्र-  
 सेन की पत्नी के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, भग-  
 वान् श्रीकृष्ण के द्वारा यह मथुरा में मारा गया ।  
 कंसकार तत् ( पु० ) प्रास्य के औरस तथा वेश्या  
 के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, कंसारी, कंसेरा,  
 वर्त्तन घेचने वाला ।  
 कंसताल ( पु० ) एक प्रकार का पात्र ।  
 कहकई कैकयी तद् ( श्री० ) राजा दशरथ की रानी,  
 भरत की माता, ऐक्य देश के राजा की कन्या ।  
 कहै तत् ( श० ) कितेक, कितने, कई एक, कति, कितव ।  
 कएक तद् ( पु० ) कुछ थोड़ा, एकाध, अलर कतिपय ।  
 कहई दे० ( श्री० ) कंधी, कहई । [कहरी ।  
 कहड़ी तद् ( श्री० ) खीरा, एक प्रकार का फल  
 ककना दे० ( पु० ) ककन, खियों का आभूषण ।  
 ककनी तद् ( श्री० ) पहुँची, ककूण, खियों के हाथ में  
 पहिने का गहना ।  
 ककराली तद् ( श्री० ) कंलारी, बगल का फोहा ।

ककया दे० ( पु० ) कंघा ।  
 ककरौजा तद् ( पु० ) बैजनी रङ्ग, बैजनी ।  
 ककरौजा तत् ( पु० ) छोटा श्रीपथि का पैधा विशेष ।  
 ककहरा तद् ( पु० ) क से लेकर ह तक वर्ण, धारा  
 खड़ी, वर्णमाला । [कपास विशेष ।  
 ककही तद् ( श्री० ) कंधो, चौबगला, लाल रङ्ग का  
 ककुत्स्थ तत् ( पु० ) इक्ष्वाकु राजा का पौत्र, इसका  
 दूसरा नाम पुरजय था, देवासुर संग्राम में युद्ध के  
 लिये देवताओं की प्रार्थना इसने स्वीकार की और  
 इन्द्र को बाधन बनाकर, समरचेत्र से अवतीर्थ  
 होना स्थिर किया, इन्द्र ने क्षुद्र रूप धारण किया ।  
 उस पर चढ़ कर पुरजय ने युद्ध किया, तभी मे  
 इसका नाम ककुत्स्थ पड़ा, और इसीसे इसके वंश-  
 धर ककुत्स्थ कहे जाते हैं ।  
 ककुदु तत् ( पु० ) राजचिह्न, पर्यंत विशेष, शिला,  
 बैर के कंधे का कुम्बड़ ।  
 ककुम् तत् ( पु० ) अर्जुन का पेड़, वीणा के ऊपर का  
 मुड़ा हुआ टेढ़ा भाग, एक राग, दिरा, रुद्र विशेष ।  
 ककोरना दे० ( कि० ) खरोचना, खोदना, बसाइना ।  
 ककड़ दे० ( पु० ) सेकी हुई तमाकू की चूर, खजियों की  
 एक अल ।  
 कका दे० ( पु० ) काका, केकय देश, नगाड़ा ।  
 कक ( पु० ) बगल, काल ।  
 कखरी तद् ( पु० ) काल, कोख, बगल ।  
 कखौरी तद् ( श्री० ) काल का फोहा । [निकाल ।  
 कगर तद् ( पु० ) खोर, शोष, किनारा, पार्श्व, निवास,

कगार या कगारा तद् ( स्त्री० ) कगार, टीला ।

कङ्क तद् ( पु० ) [ कङ्क + अच् ] मांसभोजी पक्षी, बक, बगला, यमगज, ब्राह्मण बेपधारी युधिष्ठिर का नाम क्योंकि विराट् के यहाँ युधिष्ठिर ने ब्राह्मण बेप यनाया था, ग्रस्थि ।

कङ्कय तद् ( पु० ) [ क + कण् + अल् ] कँगना, हाथ का आभरण विशेष, बाला, कड़ा, बलय ।

कङ्कुपत्र तद् ( पु० ) बाण विशेष, एक प्रकार का बाण जो उड़ता है । [ टुकड़े

कङ्कुर तद् ( पु० ) कंकर, रोड़ा, पथर के छोटे छोटे

कङ्कालि तद् ( पु० ) [ कङ्क + आल् ] ठठरी, ग्रस्थि पञ्जर ।—माला ( स्त्री० ) हाथों की माला ।—

माली ( पु० ) ग्रस्थिमय माला पहिने वाला, महादेव, भैरव ।

कङ्कालिन तद् ( स्त्री० ) डाकिनी, बायन । [ बधुवा ।

कङ्काली तद् ( पु० ) पयरेला, पयरीला, किरकिरा,

कङ्काल तद् ( पु० ) शीतल चीनी के वृच का एक भेद ।

कङ्कन तद् ( पु० ) स्त्रियों के पहुँचे में पहनने का गहना, कड़ा ।

कङ्कनी तद् ( स्त्री० ) चूड़ी, कङ्कन, कँगना, ककनी, छन्द, कँगनी, श्रद्धाविशेष ।

कङ्करोड़ तद् ( पु० ) रीढ़, पंक्ति विशेष ।

कङ्कार तद् ( पु० ) भार वहन करने वाला ।

कङ्काल तद् ( पु० ) दीन, दरिद्र, दुःखी ।—ली ( स्त्री० ) दृढिद्रता, दीनता ।

कङ्काल बाँका दे० ( पु० ) दृढिद्र और अभिमानी ।

कङ्कुरा दे० ( पु० ) शिखर, उच्चप्रदेश, पर्वत, अथवा ऊँचे प्रकान का ऊपरी भाग ।

कङ्कगुड़ी दे० ( स्त्री० ) कान का निचला भाग ।

कङ्का दे० ( पु० ) कंधा, केशमाजनी ।

कच तद् ( पु० ) केश, बाल, रोम, लोम, मेघ. सूखे फोड़े का खूँट या पपड़ी, कुँड, अँगुरले का पल्ला, सुगन्धवाला, मलविद्या का एक दाँव । उसने या चुमने का शब्द जैसे सुई कच से चुमी, कच का अर्थ विशेष में कच्चे का भी होता है—जैसे कच-लोह । वृहस्पति का पुत्र, यह देवताओं के आदेश से मृतसञ्जीवनी नामक विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के समीप गया था, वहाँ अनेकानेक

यहाँ तक कि तीन-तीन बार प्राण संहार तक का कष्ट उठा कर इसने विद्या सीखी पुनः स्वर्ग में उस विद्या का इसने प्रचार किया ।

कचक दे० ( स्त्री० ) कसकस, किरकिर, कुचलने से जो चोट लगे वह चोट । [ करना ।

कचकच दे० ( स्त्री० ) वायुद, भगड़ा, ध्वर्य कोलाहल कचकना दे० ( कि० ) मुरकना, फिना, दबाना, ठेस लगाना ।

कचकचाना दे० ( स्त्री० ) दाँत पीसना, कचकच शब्द करना, खूब जोर लगाना—जैसे उसने कचकचा कर खा लिया ।

कचकड़ दे० ( पु० ) कलुषा का खोपड़ा ।

कचका दे० ( पु० ) कलुषा का झिलका ।

कचकेला दे० ( पु० ) कचा केला, अपक्व कदली ।

कचकैया दे० ( पु० ) भक्षा, डेकर, ठेस ।

कचनार दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष ।

कचपच दे० ( स्त्री० ) मधामच, सघन, घना, निविड़, गिचपिच ।—दे० ( स्त्री० ) कृतिका नक्षत्र, "तेहि पर ससि जो कचपिच भरा"—जायसी ।

कचपधिया दे० ( पु० ) गुच्छा, समूह, कृतिका नक्षत्र ।

कचपन दे० ( पु० ) कचाइत, कचाई ।

कचवच दे० ( पु० ) बड़के वाले, अधिक सन्तान ।

—दे० ( स्त्री० ) चमकीली कटेरी नुमा यने सितारे जो बिधां भंगार के लिये कनपटी और गाल पर लगाती हैं, चमकी । [ सघन ।

कचमच दे० ( स्त्री० ) बड़बड़ा, थकथक, गुथम गुथ्या,

कचवना दे० ( कि० ) स्वतन्त्रता पूर्वक खाना, निश्चिन्त भाव से भोजन करना ।

कचरकूट दे० ( पु० ) मारकूट ।

कचरना दे० ( पु० ) रौंदना, दबाना, कुचलना ।

"कीच कीच नीच तौ कटुम्ब बाँ कचरिहो ।"—पद्माकर ।

कचरपचर दे० ( पु० ) गिचपिच ।

कचरा दे० ( पु० ) कचा खरबूजा, कड़ा करकट ।

कचरी दे० ( पु० ) शुष्क फल विशेष, फल सहित बने की टहनियाँ ।

कचला दे० ( पु० ) गीली मट्टी, चहला, कीचड़ ।

कचलोदा दे० ( पु० ) लोई, कच्चे आटे का लोदा ।

कचलोन दे० ( पु० ) विट खण, काला नमक ।

कचलोहिया दे० ( स्त्री० ) मटिया लोहा, कच्चा लोहा ।

कचलोह दे० ( पु० ) घाव का पानी ।

कचवांसी दे० ( स्त्री० ) बीघे का आठ हजारवां भाग, २० कचवांसी की १ विसर्वांसी । [जमखड़ा ।

कचहरी दे० ( स्त्री० ) विचारस्थान, समा, समाज,

कचाई दे० ( स्त्री० ) अजीर्ण, अपच, कच्चापन ।

कचाल दे० ( पु० ) झगड़ा, विवाद, कलह ।

कचालू दे० ( पु० ) कच्चा, घण्टा, घुंहरा, मसाला डाल कर एक प्रकार से बनाये हुए आलू, कन्द विशेष ।

कचिया दे० ( पु० ) हंसुवा, दाँती ।

कचियाहट दे० ( स्त्री० ) कच्चापन । [होना ।

कचियाना दे० ( कि० ) हिचकना, सहमना, हठोल्लाह

कचूमर दे० ( पु० ) अचार विशेष, कुचका ।—

निकालना ( कि० ) गट कर देना, झुरकुस कर डालना, खूब मारना ।

कचूर दे० ( पु० ) सुगन्धित कन्द विशेष ।

कचेरा दे० ( पु० ) जाति विशेष । [बेड़ि

कचौड़ी दे० ( स्त्री० ) पीठी या धोई भरी हुई परी,

कच्चा दे० ( पु० ) अपक्व, काचा, कचिया ।—झड़ा तद्०

( पु० ) आँवे पर अन्नपकाया घड़ा ।—चिट्टा तद्०

पूरा और ठीक ज्योरा ।

कच्ची दे० ( स्त्री० ) कच्चा का स्त्रीलिङ्ग ।—रसोई दे० ( स्त्री० ) केवल जल में सिद्ध किया हुआ अन्न, सिद्धान्न ।

कच्चा दे० ( पु० ) घुंहरा, अरुवी, कन्द विशेष ।

कच्छ दे० ( पु० ) देश विशेष जो गुजरात के पास है, कछार, लाँग (घोती की) ।

कच्छप तद्० ( पु० ) कछुआ, कूर्म, कमठ, मदिरा खींचने का एक यंत्र, नयनिधियों में से एक, एक नाग, विष्णुमित्र का एक पुत्र, तुल का वृक्ष । बोटा विशेष, तालू का रोग विशेष ।—नी तद्० ( स्त्री० ) कछुवी, छोटी बीणा ।

कच्छा तद्० ( पु० ) दो पतवार की चपटी यड़ी नाव ।

—नी दे० ( पु० ) कच्छ देशवासी या उत्पन्न ।

कच्छ दे० ( पु० ) कच्छप, नितम्ब, कर्च ।,

कच्छनां दे० ( पु० ) घुटने के ऊपर तक बंधी घोती ।

कच्छनी दे० ( स्त्री० ) दोस्ती कछुना ।

कच्छलम्पट दे० ( पु० ) अजितेन्द्रिय, लुब्धा ।

कच्छवाहा दे० ( पु० ) राजपूतों की जाति विशेष, कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुरा के ये वंशधर हैं ।

कच्छार दे० ( पु० ) खादर, दियारा, नदी या तालाब का तट ।

कच्छारना दे० ( कि० ) छांटना, धोना, धोनासना ।

कच्छ दे० ( पु० ) कुड़, थोड़ा, एकाध, किछिर ।

कच्छुक दे० ( पु० ) कुड़, थोड़ा सा, कुछ एक, इसका प्रयोग शमायण में बहुत आया है ।

कच्छुचा दे० ( पु० ) कूर्म, कच्छप, कमठ ।

कच्छाटी तद्० ( स्त्री० ) लंगोटी, कौपीन, कछनी ।

कज तद्० ( पु० ) कज, कमल, ऐव दोष ।

कजक दे० ( पु० ) हाथी का चक्र ।

कजरा तद्० ( पु० ) काजल, वह पैल जिसके नेत्र काने हों ।—री दे० ( वि० ) काजलवाला, काला ।

कजरी दे० ( स्त्री० ) कजली, वरसाती गीत विशेष ।

कजरीटा दे० ( पु० ) काजल रखने का पात्र ।

कजला तद्० ( पु० ) काला, काजल लगाये, खुरचने की एक जाति जो सानपुर में उत्पन्न होती है ।—नी

दे० ( स्त्री० ) दोस्ती कजरी ।

कजलौटी तद्० ( स्त्री० ) काजल पाने का पात्र ।

कजल तद्० ( पु० ) काजल, अजन, सुरमा ।—गिरि ( पु० ) काला पहाड़, काजल का पर्वत, सुरमे का पहाड़ ।

कजा ( स्त्री० ) माड़, कांजी ।

कजा ( स्त्री० ) मात, मृत्यु । [धनरा ।

कजवन तद्० ( पु० ) सुवर्ण, सोना, जाति विशेष, धन,

कजवनक तद्० ( पु० ) कपनार, मैनफल ।

कजवनी दे० ( स्त्री० ) चेश्या, पतुरिया, नौची, कजुन जाति की स्त्री, सुवर्ण की पुतली । [धोली ।

कज्जु तद्० ( पु० ) पोखी, अंगिया ।—की ( स्त्री० )

कज तद्० ( पु० ) पथ, कमल, यक्षा, अमृत, मिर के धान ।

कज्ज दे० ( पु० ) बोरी येचने वाली जाति ।

कजा दे० ( पु० ) भूरी आँख वाला ।

कजियाँ दे० ( स्त्री० ) आँखों की अजनी ।

कज्जुस दे० ( पु० ) कूर्म, कृष्ण, लालची ।—नी

( स्त्री० ) कृपणता । [नाम की घास, टटी, खम ।

कट तद्० ( पु० ) कटि, कमर, गण्डस्थल, एक तरह का

कटक तद्० ( पु० ) बल्लभ, पर्वत का मध्य भाग,

कगार या कगारा तद् ( स्त्री० ) कगारा, टीला ।

कङ्क तद् ( पुं० ) [ कङ्क + अच् ] मांसभक्षी पक्षी, बक, बगला, यमगाज, ब्राह्मण बेपधारी युधिष्ठिर का नाम क्योंकि विराट् के यहाँ युधिष्ठिर ने ब्राह्मण बेप बनाया था, अत्रिय ।

कङ्कण तद् ( पुं० ) [ कं + कण् + अल् ] कँगना, हाथ का आभरण विशेष, बाला, कड़ा, बलय ।

कङ्कपत्र तद् ( पुं० ) वाद्य विशेष, एक प्रकार का वाद्य जो उड़ता है [ टुकड़े

कङ्कुर तद् ( पुं० ) काँकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे छोटे

कङ्काल तद् ( पुं० ) [ कङ्क + आल् ] ठठरी, अस्थि पञ्जर ।—माला ( स्त्री० ) हाड़ों की माला ।—

माली ( पुं० ) अस्थिमय माला पहिने वाला, महादेव, भैरव ।

कङ्कालिन तद् ( स्त्री० ) डाकिनी, दायन । [ वसुधा ।

कङ्कला तद् ( पुं० ) पयरेला, पथरीला, किरकिरा,

कङ्काल तद् ( पुं० ) शीतल चीनी के बूझ का एक भेद ।

कङ्कन तद् ( पुं० ) कियों के पहुँचे में पहनने का गहना, कड़ा ।

कङ्कनी तद् ( स्त्री० ) बूड़ी, कङ्कन, कँगना, ककनी, छन्द, काँगनी, अक्षविशेष ।

कङ्करोड़ तद् ( पुं० ) रीढ़, पछि विशेष ।

कङ्कार तद् ( पुं० ) भार वहन करने वाला ।

कङ्काल तद् ( पुं० ) दीन, दरिद्र, दुःखी ।—जी ( स्त्री० ) दरिद्रता, दीनता ।

कङ्काल बाँका दे० ( पुं० ) दरिद्र और अभिमानी ।

कङ्कगुरा दे० ( पुं० ) शिखर, उच्चप्रदेश, पर्वत, अथवा ऊँचे मकान का ऊपरी भाग ।

कङ्कगुड़ी दे० ( स्त्री० ) कान का निचला भाग ।

कङ्का दे० ( पुं० ) कंधा, केशमाज्जी ।

कच तद् ( पुं० ) केश, बाल, रोम, लोम, मेघ. सूँसे फोड़े का खूँट या पपड़ी, मुँड, आँगरखे का पल्ल, सुगन्धवाला, मलविद्या का एक दौब । इसने या सुमने का शब्द जैसे सुई कच से सुमी, कच का अर्थ विशेष में कच्चे का भी होता है—जैसे कच-लोह । वृद्धपति का पुत्र, यह देवताओं के आदेश से मृतसज्जीयनी नामक विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के समीप गया था, वहाँ अनेकानेक,

यहाँ तक कि तीन तीन बार प्राण सँहार तक का कष्ट उठा कर इसने विद्या सीखी पुनः स्वर्ग में उस विद्या का इसने प्रचार किया ।

कचक दे० ( स्त्री० ) कसकस, किरकिर, कुचलने से जो चोट लगे वह चोट । [ करना ।

कचकच दे० ( स्त्री० ) वायुद, कगड़ा, व्यर्थ बोलाहल कचकना दे० ( किं० ) मुरकना, फिरना, दधाना, ठेस लगना ।

कचकचाना दे० ( स्त्री० ) दाँत पीसना, कचकच शब्द करना, खूब जोर लगाना—जैसे उसने कचकचा कर खा लिया ।

कचकड़ दे० ( पुं० ) कछुआ का खोपड़ा ।

कचका दे० ( पुं० ) कछुआ का झिलका ।

कचकेला दे० ( पुं० ) कच्चा केला, अपक्व कदली ।

कचकेला दे० ( पुं० ) बक्का, ठोकर, ठेस ।

कचनार दे० ( पुं० ) वृक्ष विशेष ।

कचपच दे० ( स्त्री० ) मधामच, सघन, घना, निविड़, गिचपिच ।—नी दे० ( स्त्री० ) कृतिका नक्षत्र, "तेहि पर ससि जो कचिपचि भरा"—जायसी ।

कचपधिया दे० ( पुं० ) गुच्छा, समूह, कृतिका नक्षत्र ।

कचपन दे० ( पुं० ) कचाइट, कचाई ।

कचवच दे० ( पुं० ) खड़के वाले, अधिक सन्तान ।

—नी दे ( स्त्री० ) चमकीली कटोरी जुमा देने सितारे जो खियाँ भंगार के लिये कनपटी और गाल पर लगाती हैं, चमकी । [ सघन ।

कचमच दे० ( स्त्री० ) बड़बड़ा, बकबक, गुथम गुथ्या,

कचबना दे० ( किं० ) स्वतन्त्रता पूर्वक खाना, निश्चिन्त भाव से भोजन करना ।

कचरकूट दे० ( पुं० ) मारकूट ।

कचरना दे० ( पुं० ) रेंदना, दधाना, कुचलना ।

"कीच कीच नीच तौ कटुम्ब के कचरिहो ।"  
—पद्माकर ।

कचरपचर दे० ( पुं० ) गिचपिच ।

कचरा दे० ( पुं० ) कच्चा खरबूजा, कड़ा करकट ।

कचरी दे० ( पुं० ) शुष्क फल विशेष, फल सहित चने की टहनियाँ ।

कचला दे० ( पुं० ) गीली मटो, चहला, कीचड़ ।

कचलोदा दे० ( पुं० ) लोई, कच्चे आटे का लोदा ।

कचलोन दे० ( पु० ) विट कवण, काला नमक ।  
 कचलोहिया दे० ( स्त्री० ) मदिया लोहा, कच्चा लोहा ।  
 कचलोह दे० ( पु० ) घाव का पानी ।  
 कचवांसी दे० ( स्त्री० ) धीपे का आठ हजारवा भाग,  
 २० कचवांसी की १ विषवांसी । [ जमखड़ा ।  
 कचहरी दे० ( स्त्री० ) विचारस्थान, समा, समाज,  
 कचाई दे० ( स्त्री० ) धमीयें, अपब, कचवापन ।  
 कचाल दे० ( पु० ) भगदा, विवाद, कलह ।  
 कचालू दे० ( पु० ) फरचू, घण्टा, घुंइयाँ, मसाला डाल  
 कर एक प्रकार से बनाये हुए बालू, कन्द विशेष ।  
 कचिया दे० ( पु० ) हंसुवा, दाँती ।  
 कचियाहट दे० ( स्त्री० ) कचापन । [ होना ।  
 कचियाना दे० ( क्रि० ) हिचकना, सहमना, इतोत्साह  
 कचूमर दे० ( पु० ) अचार विशेष, कुचका ।—  
 निफालना ( क्रि० ) नष्ट कर देना, गुरकुस का  
 डालना, तूष मारना ।  
 कचूर दे० ( पु० ) सुगन्धित कन्द विशेष ।  
 कचेरा दे० ( पु० ) जाति विशेष । [ पिड़हि  
 कचौड़ी दे० ( स्त्री० ) पीसी वा घोई भरी हुई पूरी,  
 कचा दे० ( पु० ) अपबन्ध, काथा, कचिया ।—झड़ा तद्०  
 ( पु० ) आँवें पर अन्धकाया घड़ा ।—चिढ़ा तद्०  
 पूरा और ठीक धोरा ।  
 कच्ची दे० ( स्त्री० ) कच्चा का स्त्रीलिङ्ग ।—रसोई  
 दे० ( स्त्री० ) केवल जल में सिद्ध किया हुआ अन्न,  
 सिद्धान्न ।  
 कच्चू दे० ( पु० ) घुंइयाँ, अरवी, कन्द विशेष ।  
 कच्छ दे० ( पु० ) देश विशेष जो गुजरात के पास है,  
 कछार, लॉग ( धोती की ) ।  
 कच्छप तद्० ( पु० ) कलुआ, कूर्म, कमठ, मदिरा  
 खींचने का एक यंत्र, नवनिधियों में से एक,  
 एक नाग, शिवामित्र का एक पुत्र, तुन का  
 वृक्ष । बोंडा विशेष, तालू का रोग विशेष ।—  
 तद्० ( स्त्री० ) कलुची, छोटी बीणा ।  
 कच्छा तद्० ( पु० ) दो पतवार की खपटी बड़ी नाव ।  
 —ी दे० ( पु० ) कच्छ देशवासी या उत्पन्न ।  
 कच्छ दे० ( पु० ) कच्छप, नितम्ब, कर्ण ।  
 कच्छना दे० ( पु० ) घुटने के ऊपर तक बंधी धोती ।  
 कच्छनी दे० ( स्त्री० ) दोली कछना ।

कच्छलस्पट दे० ( पु० ) अजितेन्द्रिय, लुप्ता ।  
 कच्छवाहा दे० ( पु० ) राजपूतों की जाति विशेष, कहते  
 हैं कि श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुरा के ये वंशधर हैं ।  
 कछार दे० ( पु० ) खादर, दियारा, नदी या तालाब  
 का तट ।  
 कछारना दे० ( क्रि० ) झटना, घेरना, धँकासना ।  
 कछु दे० ( पु० ) कुड़, थोड़ा, एकाध, किञ्चित् ।  
 कछुक दे० ( पु० ) कुड़, थोड़ा सा, कुड़ एक, इसका  
 प्रयोग रामायण में बहुत आया है ।  
 कछुवा दे० ( पु० ) कूर्म, कच्छप, कमठ ।  
 कछौटी तद्० ( स्त्री० ) लंगोटी, कैंपीन, कछनी ।  
 कज तद्० ( पु० ) कज, कमल, ऐव दोष ।  
 कजक दे० ( पु० ) हाथी का चक्र ।  
 कजरा तद्० ( पु० ) काजल, वह पैल जिसके नेत्र काज  
 हों ।—री दे० ( वि० ) काजलवाला, काला ।  
 कजरी दे० ( स्त्री० ) कजली, बरसाती गीत विशेष ।  
 कजरीटा दे० ( पु० ) काजल रखने का पात्र ।  
 कजला तद्० ( पु० ) काला, काजल लगाये, खरबूजे  
 की एक जाति जो सैनपुर में उत्पन्न होती है ।—  
 दे० ( स्त्री० ) दोला कजरी ।  
 कजलौटी तद्० ( स्त्री० ) काजल पाने का पात्र ।  
 कजल तद्० ( पु० ) काजल, अजन, सुरमा ।—गिरि  
 ( पु० ) काला पहाड़, काजल का पर्वत, सुरमे का  
 पहाड़ ।  
 कजा ( स्त्री० ) माड़, कर्जी ।  
 कजा ( स्त्री० ) मात, मृत्यु । [ धनुरा ।  
 कञ्चन तद्० ( पु० ) सुवर्ण, सोना, जाति विशेष, धन,  
 कञ्चनक तद्० ( पु० ) कचनार, मैनफल ।  
 कञ्चनी दे० ( स्त्री० ) वेश्या, पटुरिया, नौची, कञ्चन  
 जाति की स्त्री, सुवर्ण की पुतली । [ चोली ।  
 कञ्चु तद्० ( पु० ) बोली, अँगिया ।—की ( स्त्री० )  
 कञ्चु तद्० ( पु० ) पद्म, कमल, वस्त्र, अमृत, सिर के पात्र ।  
 कञ्चु दे० ( पु० ) बेरी बेचने वाली जाति ।  
 कञ्जा दे० ( पु० ) भूरी आँख वाला ।  
 कञ्जियाँ दे० ( स्त्री० ) आँखों की अजनी ।  
 कञ्जूस दे० ( पु० ) मूढ, कृपण, लालची ।—  
 ( स्त्री० ) कृपणता । [ नाम की घास, टट्टी, खस ।  
 कट तद्० ( पु० ) कटि, कमर, गण्डस्थल, एक तरका  
 कटक तद्० ( पु० ) बल्लभ, पर्वत का मध्य भाग,

नितम्ब, मेखला चक्र, सेना के रहने का स्थान, समुद्री निर्मक, पहिया, समूद, हाथी के दातों पर लगे पीतल के बन्द, देश विशेष, पर्वत की समभूमि, दल, सेना, कंकण ।

कटकी तद् ( गु० ) कटक नगर की बनी हुई वस्तु, पर्वत, शैल, पहाड़ ।

कटकना तद् ( क्रि० ) बाँधना, ढाँचा, उपाय ।

कटकाई दे० ( पु० ) दल, सेना, कुण्ड ।

कटकटहिं दे० ( क्रि० ) कटकाते हैं, किचकिचाते हैं, क्रोध का शब्द करते हैं ।

कटखना तद् ( गु० ) कटहा, हकिंया, कटोवा ।

कटघरा तद् ( पु० ) कटहरा, कठरा, लकड़ी का घेरा ।

कटती ( स्त्री० ) चिक्री, खपत ।

कटन दे० ( पु० ) काट, कतरन ।

कटना दे० ( पु० ) कट जाना, बीतना ।

कटनि दे० ( स्त्री० ) काट, भीति, रीकना ।

कटनी दे० ( स्त्री० ) कटाई, लौनाकाल, काटने का हथियार, दराती ।

कटफल दे० ( पु० ) कायफल, कैफ़ल ।

कटरा दे० ( पु० ) चौक, हाट, निकास, शहर का बीच, शहर के मध्यस्थान जहाँ हाट बाजार हो ।

कटहर दे० ( पु० ) कटहल, फल विशेष ।

कटहरा दे० ( पु० ) काट का बड़ा पिंजड़ा, कटघरा ।

कटहल दे० ( पु० ) देवो कटहर ।

कटहा दे० ( पु० ) कटोवा, कटलेना, हकिंया ।

कटा दे० ( पु० ) हल्ला, धध, काटाकाटी । - ई दे० ( स्त्री० ) काटने का काम, काटने की उजरत । -

कटी दे० ( स्त्री० ) मांकाट । [ शांख का सङ्केत ।

कटाक्ष दे० ( पु० ) तिगड़ी चितवन, भावयुक्त दृष्टि,

कटान दे० घट जाना, पैना ।

कटार दे० ( पु० ) कटारी, खजर ।

कटाल दे० ( पु० ) गुधार, समुद्र का चबूना ।

कटाव दे० ( पु० ) नदी का किनारा, नदी के वेग से बहता भूभाग ।

कटाह तद् ( पु० ) कटोही, कड़ा ।

कटि तद् ( पु० ) कमर, शरीर का मध्य भाग । - तट ( पु० ) कटिदेश, नितम्ब । - देश ( पु० ) शरीर का मध्यवर्ध । - चला ( पु० ) घाती ।

कटिवन्ध तद् ( पु० ) कमरबन्द, पृथ्वी का ठण्डा गर्म आदि भाग । [ उद्यत, प्रस्तुत ।

कटिवद्ध तद् ( पु० ) कमर बाँधे हुए, तैयार,

कटिया तद् ( स्त्री० ) सन का बना हुआ वस्त्र विशेष, रसों के मगों को काट छाँट कर सुडौल करने वाला

कारीगर, कुटी, गाय बैल का कटा हुआ चारा ।

कटिसूत्र तद् ( पु० ) कटिभूषण विशेष, कंधनी, कमर का डोरा ।

कटीला दे० ( पु० ) पौधा विशेष, कण्टकयुक्त, काँटे वाला, सावन्त, कण्टार, कतीरा गोद ।

कटु तद् ( पु० ) अम्रिय, दुर्गन्ध, कटुरस युक्त, मत्सर, तीक्ष्ण सुगन्धि, चरपरा, कटुमा ।

कटुआ ( पु० ) सुसलमान, नहरों के बंधे, काले रंग का एक कीट ।

कटुक तद् ( पु० ) कटुभा, तिक्त, तीखा ।

कटुकी तद् ( स्त्री० ) कटुकी, औषधि । [ सेत ।

कटुग्रन्थि तद् ( स्त्री० ) औषध विशेष, पिपरामूल, कटुकट या कटुमद्र तद् ( स्त्री० ) सोडी ।

कटुमी तद् ( स्त्री० ) मालाकागुनी ।

कटुरोहिणी तद् ( स्त्री० ) कटुकी, औषधि ।

कटूसा तद् ( स्त्री० ) कुहड़ाई, मुँवचन ।

कटोहर दे० ( पु० ) खोपा, हल की ठकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है ।

कटैया ( पु० ) काटने वाला, भटकटैया ।

कटैला ( पु० ) एक कोमती पत्थर ।

कटोरदान ( पु० ) दकनादार पात्र विशेष ।

कटोरा दे० ( पु० ) बेल, पान पात्र विशेष ।

कटोरिया दे० ( स्त्री० ) कटोरी ।

कटोरी दे० ( स्त्री० ) बिलिया, छोटा बेल या कटोरा ।

कटोल दे० ( पु० ) चण्डाल, फल विशेष । [ दुरामही ।

कटुर दे० ( पु० ) काटनेवाला, कटोवल, हठी, कटुहा ( पु० ) महाब्राह्मण ।

कटहिं दे० ( क्रि० ) काटते हैं, काट लेते हैं ।

कट्टा दे० ( पु० ) मापने की वस्तु, चितवा, जिससे खेत नापे जाते हैं ।

कठ तद् ( पु० ) [ कठ + अच् ] मुनि विशेष, वेद का कठ नामक शाखा, ( वि० ) जंगली, निकृष्ट जैसे

" कठ बल्लू । " - शाखा ( स्त्री० ) ऋग्वेद का

एक माग ।—पेपनियत् ( स्त्री० ) पुस्तक विशेष,  
वेदान्त शास्त्र, दशोपनिषत् में एक उपनिषत् ।  
कठघरा तद् ( पु० ) कठहरा, घेरा, घेड़ा, काठ की  
यनी हुई घादिवारी । [कठड़ी ।  
कठ दे० ( पु० ) कठरा, कठौवा, कठौती, ( स्त्री० )  
कठन्दर दे० ( पु० ) काष्ठोद्धार, रोगविशेष, पेट का कड़ापन ।  
कठविद्यकी दे० ( स्त्री० ) मेढ़, कलसासाध ।  
कठरा दे० ( पु० ) काठ का बना पात्र विशेष, आहाव,  
होड़ी, चढवशा ( स्त्री० ) कठरी ।  
कठला दे० ( पु० ) देखो 'कठला' ।  
कठलाता दे० ( स्त्री० ) काठ का बर्तन विशेष, कठौता ।  
कठहँसी तद् ( स्त्री० ) शुष्कशस्य, काष्ठशस्य, बिना  
कारण हास्य ।  
कठारी दे० ( पु० ) काठ का बना कमण्डलु ।  
कठिन तद् ( पु० ) [ कठ् + इन् ] कठोर, कठोर,  
गिष्ठुर, कड़ा, दृढ़, स्तब्ध, दुष्कर, दुस्साध्य ।—  
ता ( स्त्री० ) कठोरता, निष्ठुरता, दुरुद्धता ।—त्य  
( पु० ) कड़ापन, कठिनता ।—पृथक् ( पु० ) कर्म,  
कष्टप्र, कष्टमा ।—न्तिकरण ( पु० ) निष्ठुर,  
दृढ़ अन्तिकरण, निर्दय । [कठिनी ।  
कठिनिका तद् ( स्त्री० ) [कठ् + इक् + या] खड़ी,  
कठिनी तद् ( स्त्री० ) खड़ी, मिट्टी, हुई ।  
कठिया दे० ( पु० ) कठौती, फाँदा, जाला, काठ की  
माला, काठ का छोटा पात्र, ( वि० ) कड़ा, कड़े  
छिलके का, जैसे कठिण बादाम ।  
कठिल दे० ( पु० ) करेला, तरकारी । [विशेष ।  
कठुला दे० ( पु० ) गले में पहनने का एक आभूषण  
कठेठा दे० ( स्त्री० ) कड़ी, कठोर, दृढ़ ।  
कठेठी देखो कठेठा ।  
कठेदर तद् ( पु० ) पेट की एक बीमारी ।  
कठोर तद् ( पु० ) कठिन, कठोर, दृढ़, निष्ठुर ।—  
ता या ताई या पन ( स्त्री० ) निष्ठुरता, निष्ठुराई ।  
कठोरा देखो कठोर । [छोटा पात्र ।  
कठोलिया दे० ( स्त्री० ) काष्ठनिर्मित पात्र, काठ का  
कठौत या कठौता ( पु० ) देखो कठवत्ता । [बुझा पात्र ।  
कठौती ( स्त्री० ) काठ की ऊँची ढेर का तसला-  
कड़ दे० ( पु० ) कुसुम या उसका बीज, (हिंगल-  
भाया में) कमर, बरें ।

कड़क दे० ( पु० ) घड़ाका, चटक, गर्जन, कड़कड़ाहट,  
कड़ाका, गाज, बज्र, कसक ।  
कड़कना दे० ( क्रि० ) चटकना, घड़कना, गरजना ।  
कड़क फर दे० गर्जन के साथ, साभिमान ।  
कड़कच दे० ( पु० ) लोग, जनपथ, चार, समुद्र का  
लवण विशेष । [शब्द ।  
कड़का दे० ( पु० ) बिजली, तड़ित, गर्जन, भयङ्कर  
कड़खा दे० ( पु० ) युद्ध में बढ़ावा देना, उत्साहित करना,  
गान विशेष जिसमें शूरवीरों का यरा वर्णित हो ।  
कड़खेत दे० ( पु० ) भाट, बढ़ावा देने वाला, चारण,  
इस जाति के लोग राशुताने में अधिक पाये  
जाते हैं ; वहाँ इनके जागीरें मिली हुई हैं ; ये  
लड़ाई में वीर राजाओं को अपनी योजस्विनी  
कविता से उत्साहित किया करते थे ।  
कड़वी दे० ( स्त्री० ) तीखी, कड़, सुवार बाजरे की डाँडी ।  
कड़ा दे० ( पु० ) कठोर, दृढ़, सदन शकट, ( पु० ) हाथ  
का आभूषण, लवण, कड़ाही का पकड़ने के लिये  
हस्ता, बेंद, एक प्रकार का कस्तर ।—ई तद्  
( स्त्री० ) कठोरता, सख्ती ।  
कड़ाका दे० ( पु० ) उपवास, फनका, निज्जल उप-  
वास, किसी वस्तु के टूटने की आवाज । [कार ।  
कड़ाड़ा दे० ( पु० ) नदी का ऊँचा तीर, किनारा,  
कड़ाह या कड़ाहा तद् ( पु० ) लोहे का पात्र, लोहे  
की बड़ी "कड़ाही" जिसमें दूध धोँटा जाता है ।  
कड़ाही तद् ( स्त्री० ) छोटा कड़ाह ।  
कड़िहार दे० ( पु० ) कर्णधार, मछाह, केवट, मौंसी ।  
कड़ी दे० ( स्त्री० ) छोटी धरन, ज़मीर की लड़ी, छोटा  
छला जो किसी वस्तु को अटकाने के लिये हो, गीत  
का एक डुकड़ा ।—द्वार दे० ( वि० ) छुल्लेदार,  
जिसमें कड़ी हो ।  
कड़ुआ तद् ( पु० ) कड़, तीता, गुरसैल ।  
कड़ दे० ( वि० ) कड़वा ।  
कड़ौर दे० ( पु० ) कड़ोड़, सख्या विशेष, सौ लाख ।  
कड़ना दे० ( क्रि० ) निकालना, उड़ाना, बढ़ जाना ।  
कड़ाई दे० ( स्त्री० ) कड़ाही ।  
कड़ाना, कड़वाना ( क्रि० ) निकल जाना ।  
कड़ान दे० ( पु० ) कसीदे का काम, निघास । [यनी हुई वस्तु ।  
कढ़ी दे० ( स्त्री० ) भोजन विशेष, बेसन और दही से



कदुआ दे० ( गु० ) उधार, श्रृणु निकाला हुआ,  
जातिव्युत् ।

कद्वेरना दे० ( कि० ) घसीटना ।

कद्वैया दे० ( स्त्री० ) कढ़ाई ।

कद्वोरना दे० ( कि० ) घसीटना ।

कण तत्० ( पु० ) [ कण् + अल् ] अतिसूक्ष्म, कण, अणुकणिका, किनका ।—जीरा ( पु० ) खेत जीरा ।—भक्तक या भोजी ( पु० ) कणभोजी, कणामदमुनि, पक्षि विशेष ।

कणा तत्० ( स्त्री० ) पीपल ।

कणाद तत्० ( पु० ) [ कण् + अद् + अच् ] सुवर्णकार, मुनि विशेष, वैशेषिक दर्शनकर्त्ता, यह तण्डुलकणा खाकर अपनी जीविका करते थे, इसी कारण इनका कणाद नाम हुआ है । इनका दूसरा नाम उल्क था, सतएव वैशेषिक दर्शन को औलुक्य दर्शन भी कहते हैं । यह परमाणुवादिषों में थे । इनका बनाया दर्शन पद्धति के अन्तर्गत समझा जाता है ।

कणामात्र तत्० ( पु० ) एक हिन्दु, किष्किमात्र, बहुत घोड़ा ।

कणिका तत्० ( स्त्री० ) [ कणिक + आ ] लोरा, विन्दु, कणा, छोटा भाग, चावल के डुकड़े ।

कणिका ( पु० ) गेहूँ आदि अनाज की बाल । [ डुकड़ा ।

कणी तत्० ( स्त्री० ) छिद्रक, डुकड़ा, भाग, बहुत पतला

कण्टक तत्० ( पु० ) [ कण्ट + अक् ] काँटा, छुद्र शत्रु,

रोमाञ्च, दोष, विष, पाषक, कवच ।—द्रुम ( पु० )

काँटा युक्त वृक्ष, शाखमल्लोवृक्ष ।—प्रावृता ( स्त्री० )

घृतकुमारी, धीकुमारी ।—फल ( पु० ) पनस, कट-

हर, सिंघाड़े ।—भुक् ( पु० ) ऊँट, गड़ ।—मय

( पु० ) कटि से भरा, बहुत कटि वाला ।—लता

( स्त्री० ) खीरा, फल विशेष ।—रि भटकटैया,

सेमल । [ रिका ( स्त्री० ) भटकटैया ।

कण्टार दे० ( गु० ) कटीला, खदरा, कण्टकमय ।

कण्टिया दे० ( स्त्री० ) आँकड़ी, छोटी कील, मछली पकड़ने की बंसी की पैनी कील ।

कण्ठ तत्० ( पु० ) गला, घाँटी, गठई ।—ला ( स्त्री० )

माला, कण्ठी, गण्डा, गले का आभूषण ।—स्थ

( गु० ) सुखस्थ, सुखाम । [ रस्ती ।

कण्ठपाशक तत्० ( पु० ) हाथी के गले में आँधने की

कण्ठभूषा तत्० ( स्त्री० ) कण्ठभरण, ग्रैवेषक, हार ।

कण्ठमाला तत्० ( स्त्री० ) कण्ठ में पहनने की माला, रोग विशेष ।

कण्ठा दे० ( पु० ) कण्ठभूषण विशेष, बड़े दाँते की माला ।—गत ( गु० ) [ कण्ठ + आगत ] शरीर त्याग के उद्योगी, मरणोद्यत ।—प्र ( गु० )

[ कण्ठ + अग्र ] सुखाम, कण्ठस्थ, सुखस्थ । [ वाला ।

कण्ठिधारी तद्० ( पु० ) वैरागी, भगत, कण्ठी पहनने

कण्ठी तत्० ( स्त्री० ) कण्ठभरण, कण्ठमाला, तुलसी

की माला ।

कण्ठीरव तत्० ( पु० ) सिंह, व्याघ्र, शेर ।

कण्ठ्य तत्० ( गु० ) कण्ठ से उच्चारित होने वाले अक्षर,

कण्ठोच्चारित ।

कण्ठा दे० ( पु० ) उपला, उपरी, गोहरी ।

कण्ठी दे० ( स्त्री० ) छोटी उपली ।

कण्डुपुष्पी तत्० ( स्त्री० ) शंखाहुली, औषधि विशेष ।

कण्डू तत्० ( पु० ) रोग विशेष, खुजलाहट, खुजली,

खाज ।—प्र ( पु० ) पर्वार औषधि, कण्डू रोग दूर

करने की औषधि । [ होना ।

कण्डूति तत्० ( स्त्री० ) कण्डूपन, खुजलाहट, खाज

कण्डेरा तद्० ( पु० ) कण्डकार, बाण बनाये वाली

जाति, धुनियाँ । [ पात्र ।

कण्डोज दे० ( पु० ) बाँस का बना ब्रह्म रखने का

कण्ठ तत्० ( पु० ) मुनि विशेष, एक प्राचीन ऋषि का

नाम, यह शकुन्तला के पालक पिता थे, मांजिनी

नदी के तीर पर इनका आश्रम था, कुलपति की

उपाधि इन्हें मिली थी, क्योंकि इनके आश्रम में

अनेक सहस्र बालक शिक्षा पाते थे ।

कत तद्० ( अ० ) कहाँ, क्योंकि, क्या, कैसा, किस

वास्ते, किस लिये । ( पु० ) कलम की नोक का

आड़ी कटन ।

कतक तत्० ( पु० ) रीठा, निर्मेली ।

कतनई तद्० ( स्त्री० ) सूत कातने की मजूरी ।

कतना तद्० ( कि० ) कता जाना । ( अ० ) कितना,

किस परिमाण में ।

कनती ( स्त्री० ) सूत कातने की टिकुरी ।

कतघी दे० ( स्त्री० ) कैंची, कतानी ।

कतर छोट ( स्त्री० ) काट छोट, कतर व्योत ।

कतरन तद्० ( स्त्री० ) काटन, छोटन ।

कतरना (कि०) काटना, छाँट करना, छाँट छूट करना ।  
कतरनी तद्० (स्त्री०) कैंची, काटने का शस्त्र ।  
कतरव्यांत (पु०) कतर छाँट, काट छाँट, हेर फेर,  
उलट फेर । [किया हुआ ।

कतरा तद्० (वि०) भिन्न भिन्न किया हुआ, डकड़ा  
कतराना तद्० (कि०) कटवाना, अलग कराना, पृथक्  
देना, अलग देना ।

कतराई दे० (स्त्री०) कोरह का एक विशेष भाग ।  
जमी हुई मिट्टाई का डकड़ा, एक औजार ।

कतरवाना (कि०) काटने में सहायता देना ।  
कतवार (पु०) झड़ा करकट, घास फूस । [होर भी ।  
कतहूँ दे० (अ०) कहीं भी, किसी जगह भी, किसी  
कतल दे० (पु०) घघ हत्या ।—करना (कि०) मार  
डालना ।—म (पु०) घोर घघ ।

कताई तद्० (स्त्री०) काटने की उन्नत । [क्रमान्वय ।  
कतार दे० (पु०) पंक्ति की पंक्ति, धारी, क्रमिक,  
कति तद्० (पु०) कति, कितने, कितने एक ।—पय  
(पु०) थोड़े, कम, कुछ एक ।

कतिक (वि०) कितना ।  
कतिपय (वि०) अल्प, किन्तु ही, थोड़े ।  
कतीरा दे० (पु०) नियाँस, गोंद विशेष ।  
कनुया दे० (पु०) तल्ला, तल्ला, सूबा ।  
कतेक दे० (पु०) कति, कितने, दो एक ।  
कत्त दे० (अ०) कहाँ, क्योंकर ।  
कत्तल दे० (पु०) कटा हुआ डकड़ा, परवर की गढ़ाई  
में निकले परवर के छोटे डकड़े ।

कत्ता तद्० (पु०) बाँस फोड़ने वाले का एक औजार,  
बाँका बाँस, बाँकी छोटी तलवार ।

कत्ती तद्० (स्त्री०) छुरी, कटारी ।  
कत्तान दे० (पु०) छुरा, कटार, यमधार ।  
कत्त दे० (पु०) छोड़े की स्थायी ।  
कत्तई दे० (वि०) कत्त के रंग का, खैरा रंग ।  
कत्तक तद्० (पु०) गाने बजाने वाली हिन्दू जाति  
विशेष । [जाता है ।

कत्ता दे० (पु०) खैर, खदिर, जो पान के साथ प्याया  
कत्तक तद्० (पु०) [कत् + कत्त] बक्का, पुराण की  
कत्ता बचने वाला, बाँचने वाला, पुराण बक्का ।  
कत्तक तद्० (पु०) बहुत कत्ता करने वाला ।

कत्तञ्ज तद्० (अ०) किस प्रकार ।  
कत्तञ्जित तद्० (अ०) किसी प्रकार, अधिक कट से ।  
कत्तन तद्० (पु०) बोल, कहन, उत्तराण, उक्ति, विव-  
रण करण ।

कत्तनी (स्त्री०) देखो कत्तन ।  
कत्तनीय तद्० (पु०) वर्णनीय, कहने योग्य, वक्तव्य,  
कहने के लायक, निन्दनीय । [सम्भावना ।  
कत्तम् तद्० (अ०) हर्ष, गर्हा, प्रकारार्थ, सम्भ्रम प्रभ,  
कत्तरी तद्० (स्त्री०) गुदड़ी ।  
कत्तहि तद्० (कि०) कहते हैं, वर्णन करते हैं, गान  
करते हैं, बयान करते हैं ।

कत्ता तद्० (स्त्री०) बात, इतिहास, पदार्थ, घृतान्त ।  
—प्रत्यय (पु०) भाष्यायिका, कहानी, किस्सा,  
गल्प ।—प्रसङ्ग (पु०) कथोपकथन, बातचीत,  
संवेष्टा, मदारी, विषय ।—प्राण (पु०) मातृ-  
पंक्ता, कथक ।—मुख (पु०) कथा का प्रारम्भ,  
प्रथम की प्रस्तावना, आप्यायिका ।—पार्ता (स्त्री०)  
कथोपकथन, बातचीत, सम्भाषण, आलाप ।—  
सविष्ट (पु०) सम्मतिशयता, मन्त्री, बात चीत  
करने में सहायक । [सारांश, कहानी ।

कत्तानक तद्० (पु०) बड़ी कथा का संक्षेप या  
कथित तद्० (पु०) [कत् + क] उक्त, कहा हुआ ।  
कथितव्य तद्० (पु०) [कत् + तव्य] वक्तव्य,  
कथनीय, कथनार्थ, कहने के योग्य ।

कथोर तद्० (पु०) राँगा ।  
कथोदघात तद्० (पु०) कथा प्रारम्भ, प्रस्तावना ।  
कथोपकथन तद्० (पु०) [कत् + उप + कथन]  
आलाप, बातचीत । [कथनार्थ ।

कथ्य तद्० (पु०) [कत् + य] वक्तव्य, कथितव्य,  
कद तद्० (अ०) कद, कहिया, किस समय, कदा ।  
कद् दे० (पु०) डोलहोल, ऊँचाई ।  
कदत्तर तद्० (पु०) कुसित वर्ष, खराब अक्षर ।  
कदघ्वा तद्० (अ०) [कद् + अघ्वत्] निन्दित पय,  
कुसित मार्ग, कुपय ।

कदन्न तद्० (पु०) [कद् + अन्न] पाप, गुद,  
मारण, मर्दन, अधिक, नाशक, दुःख ।  
कदन्न तद्० (पु०) [कद् + अन्न + क] कुसित अन्न,  
अपवित्र अन्न—जैसे कोदी, केसारी, मसूर आदि ।

कदम तत् ( पु० ) कदम्ब वृक्ष, वृक्ष विशेष, चरण, पाद ।

कदम्ब तत् ( पु० ) [ कद् + अम्ब ] वृक्ष विशेष, समूह, कदम वृक्ष ।—क ( पु० ) समूह ।—कुसुमाकार ( गु० ) गोलाकार, घुंलाकार ।

कदर ( पु० ) टांकी, सफेद काया, गोखरू, अङ्गुश, आरा । कदराई या कदाई तद् ( स्त्री० ) कादरता, कादरपन, भीरुता, कायरता, डरपोकपना ।

कदर्य तद् ( गु० ) [ कद् + अर्थ ] निरर्थक, बुरा, कुत्सित, ( पु० ) निरुद्धी चीड़, कृष्ण करकट ।—ना तद् ( स्त्री० ) दुर्गति, दुर्दशा ।

कदर्य तद् ( पु० ) कुत्सित, निन्दित, अपकृष्ट, मंद, क्षुद्र, कंजूस, सूम, मन्थलीचूस ।

कदली तद् ( स्त्री० ) कदलक, केले का वृक्ष, काले और लाल रङ्ग का मृग । [ कद्, कभी ।

कदा तद् ( अ० ) [ किम् + दा ] कथ, किस समय, कदाकार तद् ( गु० ) [ कद् + था + कृ + घञ ] कुत्सित आकृति, कुरूप, बदचरित ।

कदाकृति तद् ( स्त्री० ) कुत्सित आकृति, कुरूप ।

कदाख्य तद् ( वि० ) बदनाम । [ समय ।

कदाच तद् ( अ० ) कदाचित्, कदाचन, कभी, किसी कदाचन तद् ( अ० ) किसी समय, कभी ।

कदाचार तद् ( पु० ) बुरा व्यवहार, कुबलन, निन्दित कर्म, असदाचार, बुराचार ।

कदाचित् तद् ( अ० ) क्या जाने, कधी, कभी, कभी, किसी समय, शायद । [ भी, कभूँ ।

कदापि तद् ( अ० ) [ कदा + अपि ] कधी भी, कभी

कदीम दे० ( गु० ) पुराना, प्राचीन ।

कदीमा दे० ( पु० ) शायल, लोहांगी ।

कदू दे० ( पु० ) अलावू, लौका, लौकी, लौई ।

कद्रू तद् ( पु० ) धूम्रवर्ण, ( स्त्री० ) नागसाता का नाम, कश्यप मुनि की स्त्री, दक्ष प्रजापति की कन्या । इन्हींके गर्भ से सर्पों की उत्पत्ति हुई है ।

—पुत्र ( पु० ) सर्प, मुजङ्ग ।—सुत ( पु० ) नाग, सर्प, मुजङ्ग ।

कधी दे० ( अ० ) कध, किसी समय ।

कन तद् ( पु० ) कण, अणु, अनाज का दाना, प्रसाद, वृन्द, चावजे की वृन्द, ही, सन, शरीर सम्बन्धी

शक्ति, यौगिक शब्दों में कान को भी कन ही कहते हैं जैसे कनफटा, कनटोप आदि ।

कनई ( स्त्री० ) नूतन शाख ।

कनअंगुली ( स्त्री० ) अंगुलिया, सब से छोटी अंगुली ।

कनक तद् ( पु० ) स्वर्ण, सुवर्ण, धनूरा, पलाशवृक्ष, नागकेसरवृक्ष, गेहूँ का आटा ( कनक की रोटी ) ।

—कसिपु हिरण्यकशिपु, प्रह्लाद के पिता का नाम ।

—चम्पक ( पु० ) वृक्ष विशेष, कनकचंपा ।—

रस ( पु० ) हरिताल ।—लोचन ( पु० ) हिर-

ण्याच, एक राक्षस का नाम ।—चल ( पु० )

सुमेरु पर्वत, अगस्त गिरि, दान-विशेष ।

कनकक्षार ( पु० ) सुहागा ।

कनकटा दे० ( गु० ) वृषा, कर्णरहित ।

कनकी दे० ( स्त्री० ) किनकी, दूटे चावल ।

कनखजूरा दे० ( पु० ) कनखलाई, गोबर ।

कनखी दे० ( स्त्री० ) सैन, संकेत, इशारा, कटाक्ष ।

कनगुरिया ( स्त्री० ) बिगुनिया, सभसे छोटी हाथ की अंगुली ।

कनछेदन ( पु० ) कर्ण वेध संस्कार, कान छिदाना ।

कनटोप ( पु० ) टोप, कानों को ढकने, ऐसी टोपी विशेष । [ समीप का भाग ।

कनपटी दे० ( स्त्री० ) परपट्टी, गण्डस्थल, कान के

कनफटा दे० ( पु० ) साधू विशेष, नाथसम्प्रदायी साधू ।

कनफूल ( पु० ) कर्णहृन्, कान में पहिने का आभूषण विशेष । [ चीत सुनने का इच्छुक ।

कनरसिया दे० ( पु० ) कर्णरसिक, गीतज्ञ, पात

कनल तद् ( पु० ) मिलावा ।

कनवई } झटाक ।

कनवा } झटाक ।

कनवाई दे० ( स्त्री० ) कर्णवेध, कान छेदना ।

कनसलाई दे० ( स्त्री० ) कनखजूरा, गोबर ।

कनहार दे० ( पु० ) पतवार, कर्ण ।

कनहा दे० ( पु० ) अन्न की जाँच करने वाला ।

कना देखो कन ।

कनागत तद् ( पु० ) पितृपक्ष, अपरपक्ष, कन्यागत ।

कनात दे० ( पु० ) मोटे कपड़े की दीवार जिससे आद

करने के लिये स्थान घेरा जाता है, तम्बू ।

कनिक दे० ( पु० ) गेहूँ का पिसान, आटा ।

कनिया दे० (खी०) गोद, उत्तुङ्ग । [निकल जाना ।  
 कनियाना तद्० (क्रि०) कतराना, आँख बचाकर  
 कनियाहट तद्० (खी०) भड़क, सङ्कोच, खोंच ।  
 कनिष्ठ तद्० (गु०) छोटा, लड्डुरा, अनुज, अति युवा,  
 पश्चात् उत्पन्न, हीन, निकृष्ट ।  
 कनिष्ठा तद्० (खी०) छोटी, सबसे छोटी, नीच, निकृष्ट ।  
 कनिष्ठिका तद्० (खी०) बिगुनी, हाथ की सब से  
 छोटी उँगली ।  
 कनिष्ठा दे० (पु०) गुना, प्रतिहिंसक ।  
 कनी (खी०) करुणा, कणिका, छेद, सिरा, अति  
 सूक्ष्म भाग । [धँसुरी ।  
 कनीनिका तद्० (खी०) आँखों की तारा, छोटी  
 कनीयान् तद्० (गु०) कनिष्ठ, अनुज, दोटा, अति-  
 युवा, अव्यय ।  
 कने दे० (अ०) पाल, समीप, साथ, सङ्ग ।  
 कनेकौ (पु०) कौनका मात्र का भी ।  
 कनेठी दे० (खी०) कान मरोड़ना, घप्पड़ मारना ।  
 कनेर दे० (पु०) कनेल, कर्मीर, हरितवेष्ट्या, पदरो  
 जिसको प्राण दण्ड की राजाज्ञा होती थी, उसे  
 कनेर के फूलों की माला पहनाई जाती थी ।  
 “अंसेन विभ्रत् करवीर मालाम् ।” (मृच्छकटिक)  
 —कनैया तद्० (पु०) कर्णवेधन, कनछेदौनी ।  
 कनौज तद्० (पु०) नगर विशेष, एक नगर का नाम ।  
 कनौजिया तद्० (पु०) कनौज के वासी, ब्राह्मण  
 विशेष, कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।  
 कनौड़ा दे० (गु०) सङ्कोषी, मुखचोर, अपंग, खोंड़ा,  
 कलङ्कित, तुच्छ, दूबैल ।  
 कन्त तद्० (पु०) स्वामी, प्रियतम, भतार, प्रिय,  
 स्वामी, ईश्वर ।  
 कन्धा तद्० (खी०) गुदड़ी, कण्ठी, पुराने बख्त से  
 बना ओढ़ना ।—धारी (पु०) भिक्षुक, संन्यासी,  
 संसारत्यागी, गूढ़ पन्था ।  
 कन्द तद्० (पु०) [कन्द + अल्] गूदेदार और बिना  
 रेशों की जड़ जैसे—जमीकन्द, सूरन, शकरकन्द,  
 विदारी कन्द, सूरण, शोल, गाजर, लहसुन, मूल  
 जड़ ।—चूर्ण (पु०) मूल, शोल ।—मूल (पु०)  
 मुनिभोजन विशेष ।  
 कन्दरा तद्० (खी०) [कन्दरा + आ] खोह, गुफा ।

गुहा, पर्वत की सुरङ्ग ।—न (पु०) पकंटी वृक्ष,  
 अखरोट वृक्ष, पाकर का पेड़ ।  
 कन्दराल (पु०) पाकर, हिंगोट, पकंटी ।  
 कन्दर्प तद्० (पु०) [कं + दप् + अच्] काम, मदन,  
 कामदेव, अनङ्ग, सङ्गीतशास्त्र में ११ प्रतालों में  
 से एक ताल ।  
 कन्दल तद्० (गु०) [कन्द + ला + ड्] उपराग,  
 नवीन श्रङ्खुर, विवाद, कलह, झगड़ा, लड़ाई,  
 सेना, कपाल ।—कन्द (पु०) किमीकन्द, सूरन,  
 मूल विशेष ।  
 कन्दला तद्० (पु०) पाँसा, रैनी, गुल्ली, चाँदी की लम्बी  
 छड़ जिससे तारकश तार तैयार करते हैं । [प्रास ।  
 कन्दलितः तद्० (गु०) प्रक्षुब्ध, अङ्कुरित, अहङ्कुर  
 कन्दसार तद्० (पु०) मृग, हरिण, कुरङ्ग, मन्दन वन ।  
 कन्दासी तद्० (पु०) पुष्प और औषधि विशेष,  
 प्रियवासा । [कड़ा तबिया, साँकिल, कड़ी, पेड़ी ।  
 कन्दु तद्० (पु०) [कन्द + ड] लोहमय पाकपात्र,  
 कन्दुक तद्० (पु०) गोल तकिया, सुपारी, बर्णित  
 विशेष, गेंद ।  
 कन्ध तद्० (पु०) कंधा, कन्धा, डाली, शाखा ।  
 कन्धनी दे० (खी०) कर्धनी, कमर में पहने का अभू-  
 पण, मेराला, किङ्किणी ।  
 कन्धर तद्० (पु०) ग्रीवा, घेंडुका, गाला, गर्दन, मेघ,  
 मोथा, मुस्ता ।  
 कन्धा तद्० (पु०) कन्धा, स्कन्ध ।  
 कन्धार तद्० (पु०) अफगानिस्तान के एक नगर का  
 नाम, कन्दहार, गान्धार, कहार, मखाह ।  
 कन्धि तद्० (पु०) समुद्र, मेघ ।  
 कन्धियाना तद्० (क्रि०) कान्ध पर रखना, कन्धे का  
 बल देना, कन्धे का सहारा देना ।  
 कन्धेली तद्० (खी०) जीन, सोमीर, गद्दी, यह वस्तु  
 जो पैजों की पीठ पर रखी जाती है और उस पर  
 बसिये बैठ जाते हैं ।  
 कन्धैया तद्० (पु०) कन्दैया, श्रीकृष्ण का नाम ।  
 कन्यका तद्० (स्त्री०) अविवाहिता कन्या, पुत्री, दश  
 वर्ष की लकड़ी ।  
 कन्या तद्० (स्त्री०) कुमारी, लड़की, पेटी, दुहितृ  
 बारह राशियों में से छठी राशि, चीन्नावार, पड़ी

धातु विशेष, कमीज़ के बॉह के आगे की मोटी कपड़े की पट्टी जिसमें बटन लगाये जाते हैं, नाल।—**झ** (गुं) कफनाशक, रलेधमानाशक।  
—**घर्द्धक** (गुं) कफ बढ़ाने वाला, तगर वृक्ष।  
—**विरोधी** (पुं) मुरिच।—**रि** (पुं) शुण्ठी, सोंठ।

**कफन** या **कफ़न** दे० (पुं) वह कपड़ा जिससे लपेट कर मुर्दा भस्म किया जाय या गाड़ा जाय।—**ी** दे० (स्त्री०) साधुओं के पहिने का वह कपड़ा जिसे गले में झटका कर पहना करते हैं।

**कफोणी तत्** (पुं) बॉह के बीच की गठि, कोहनी टिहनी।

**कव** दे० (अ०) कदा, कदिया, किस समय।—**तक** (अ०) अवधि वाचक अव्यय, किस समय तक।

—**जों** कितनी देर तक।

**कवहुँ** दे० (अ०) कभी भी, किसी का।

**कवकव** दे० (अ०) किस किस समय।

**कवड्डी** दे० (स्त्री०) भारतीय एक खेल।

**कवन्ध तत्** (पुं) रुंड, मस्तकहीन देह, बिना शिर का धड़, एक राक्षस का नाम, पीपा, बादल, पेड़, जल। [जाते हैं।

**कवर** दे० (स्त्री०) जिसमें सुसलमानों के मुँह गाड़े कवरा तद् (स्त्री०) कर्बुर, चितकवरा, चितला।

**कवहुँ** तद् (अ०) कभी भी, किसी समय भी, कबनिक जून।

**कवाड़** दे० (स्त्री०) अंगद खंगड़, रही चीज़। [सौदागर।

**कवाड़िया** या **कवाड़ी** (पुं) टूटी फूटी वस्तुओं का

**कवारू** दे० (पुं) काम, उद्यम, गुण, भ्रूकट, हुनर।

**कवित्त** दे० (पुं) एक प्रकार के हिन्दी भाषा के छन्द का नाम। [कवीर के मतानुयायी।

**कवीर** दे० (पुं) एक वैरागी का नाम।—**पन्थी** (वि०)

**कवीला** दे० (स्त्री०) स्त्री, जोरू पत्नी।

**कवूतर** दे० (पुं) कपोत, परेवा।

**कवूली** दे० मानी हुई, मंजूर की।

**कव्ज़ा** दे० (पुं) दस्ता, मूठ, लोहे के बने हुए दो टुकड़े जो किवाड़ों या सन्दूक आदि में लगाये जाते हैं।

**कव्ज़ियत** (स्त्री०) मालावरोध, साफ़ दम्त न होना।

**कव्य तत्** (पुं) पितृश्राद्ध, पितृदान।

**कमी** दे० (अ०) कदापि, कभी, कभू।

**कभू** दे० (अ०) कब, कभी, कभू, कदापि।

**कम** (वि०) थोड़ा, न्यून।—**असल** (वि०) दोगला।

**कमची** (स्त्री०) पतली लचीली सांठ या छड़ी।

**कमच्छा** (स्त्री०) गोहाटी की एक देवी का नाम।

**कमज़ोर** (वि०) शक्तिहीन, बज़रहित।

**कमठ तत्** (पुं) कछुवा, दैत्य विशेष, मुनि भाजन, बाँस, सलई का वृक्ष, प्राचीन राजा विशेष।

**कमठा** दे० (पुं) बाँस का धनुष कमान।

**कमठी तत्** (स्त्री०) कच्छपी, कछुई, धनुही।

**कमएल** या **कमगडलु तद्** (पुं) करवा, कठारी, साधुओं का जलपात्र, साधु सम्प्रदायों का मिट्टी या काठ से बनाया जलपात्र, पाकर का पेड़।

**कमड़ा** दे० (पुं) पेड़ा, कुहड़ा, कोहड़ा।

**कमती** (स्त्री०) न्यूनता, कमी। [रम्य।

**कमनीय तत्** (गुं) सुन्दर, सुघरा, सुघड़, मनोहर

**कमनैत** (पुं) तीरकमान चलाने वाला।—**ी** (स्त्री०) तीरकमान चलाने की विद्या।

**कमरं** दे० (स्त्री०) कटि, शरीर का मध्य भाग।

**कमरकस्त** दे० (पुं) दाक का गोंद, चिनिया गोंद।

**कमरख तद्** (पुं) एक प्रकार का खट्टा फल और वस्त्र विशेष।

**कमरट्टा** (वि०) कुञ्जा, कुन्डा। [की डोरि।

**कमरबंद** (पुं) हज़ारबंद, पैनामा या लहंगा बाँधने

**कमरा** (पुं) कोठरी, तसवीर उतारने का यंत्र, बड़ा, कंबल।

**कमरिया** (स्त्री०) छोटा कंबल कमर, हाथी विशेष, एक रोग विशेष, चरखी की छकड़ी विशेष।

**कमल तत्** (पुं) पद्म, जलज, अम्बुज।—**ज** (पुं) ब्रह्मा।—**नाम** (पुं) पद्मनाभ, भगवान् विष्णु।—**वाय** या **वाई** (पुं) कामला

रोग, पांवर, एक रोग विशेष जिसमें शरीर और आँखें पीली हो जाती हैं।—**भव तत्** (पुं)

**ब्रह्मा**।—**मूल तत्** (पुं) मसीझा, सुरार।

—**योनि तत्** (पुं) ब्रह्मा।

**कमलगट्टा** (पुं) कमल का बीज।

**कमला तत्** (स्त्री०) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, धन,

नारंगी फल, तिरहुत की एक नदी, वर्षावृत्त विशेष, ढोला, लट 'कर' ( पु० ) तालाब जिस तालाब में कमल पुष्प अधिकता से पाये जाते हैं ।—कान्त ( पु० ) कमल के समान कान्ति से सम्बन्ध, विष्णु ।—पति ( पु० ) विष्णु भगवान्, नारायण ।—सन ( पु० ) [ कमल + भासन ] मद्धा, भोग का एक आसन ।—सना ( स्त्री० ) लक्ष्मी, सरस्वती ।

कमलाक्ष तत् ( पु० ) कमल नयन, पद्मनेत्र, पद्म-पत्र के समान आँखों वाला, कमलगङ्गा ।

कमलिनी तत् ( स्त्री० ) कुमोदिनी, कमलों का समूह ।

कमली तत् ( पु० ) मद्धा, छोटा कंबल ।

कमाई दे० ( स्त्री० ) उपाजित धन ।

कमाऊ दे० ( पु० ) कमनेवाला, उद्यमी, परिश्रमी, यत्नी, उत्पन्न करने वाला ।

कमान दे० ( पु० ) धनुष, कम्ठा । [ साफ करना ।

कमाना दे० ( क्रि० ) प्राप्ति करना, निर्मल करना,

कमानी ( स्त्री० ) लोहे की लीली ।—दार ( पु० ) कमानी लगा हुआ, कमानी वाला ।

कमाल ( वि० ) परिपूर्णता, नियुक्ता । [ उद्यमी, साहसी ।

कमासुत दे० ( पु० ) कमेरा, श्रमी, कमने वाला,

कमेरा दे० ( पु० ) मजूर, सहायक, कामकर ।

कमेला दे० ( पु० ) कुसाईखाना, वधस्थान ।

कमोदिनी दे० ( स्त्री० ) कुमुदिनी, कमल विशेष, कोई का फूल यह रात को विकसित होता है ।

कमेरी दे० ( स्त्री० ) मटकी, गगरी, बड़ा घड़ा ।

कम्प तत् ( पु० ) कपकपी, धरधराहट, गात्रादि सञ्चालन ।—उत्तर ( पु० ) कम्प सहित उत्तर, उत्तर जिससे शरीर कांपता है, जुड़ी । [ चलन ।

कम्पन तत् ( पु० ) धरधर, डगडग, स्पन्दन, कांपन,

कम्पवायु तत् ( पु० ) रोग विशेष, शरीर की अवस्था ।

कम्पमान् तत् ( पु० ) कम्पन युक्त, सकम्प ।

कम्पित तत् ( पु० ) कम्पायमान, दगमगा ।

कम्बल तत् ( पु० ) कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा दोहाला ।

कम्बु तत् ( पु० ) गङ्गा, घोंघा, हाथी ।—ग्रीव ( पु० ) गङ्गा के समान कण्ठ वाला ।

कपरी दे० ( स्त्री० ) टिहोरा, श्रविया, बहुत छोटा आम ।

कया दे० ( स्त्री० ) काया, देह, शरीर ।

क्यामत दे० ( पु० ) अन्तिम दिवस, प्रलय ।

क्यास दे० ( पु० ) अनुमान, विचार, ध्यान, ब्याल ।

कर तत् ( पु० ) हाथ, राजस्व, महसूल, राजघन, हस्तिशुण्ड, हाथी, की सूँड, घोला, किरण, हस्त-नक्षत्र । 'कर' का अर्थ 'का' भी होता है, जैसे "राम तैं अधिक राम कर दासा" ।—

गुलसी । ( क्रि० ) करके, करना ।

करइ दे० ( क्रि० ) करे, करै, काते हैं ।

करई दे० ( क्रि० ) मोलुछा, मटकैना, चुकड़ा ।

करउ दे० ( क्रि० ) करो, करै, करिये, कीजिये ।

करक दे० ( स्त्री० ) पीड़ा, दर्द, कड़क, रह रह कर उठने वाली पीड़ा, कम्पल्लु, कषा, पलास, मोलसिरी, करील, ठरी, मारिलय का खोपड़ा । अनार, जैसे —"धीधो कनकपाश शुक्र सुन्दर करक बीज गहि चूँ" ।—सूर ।

करकच दे० ( पु० ) समुद्री ज्ञान, लवण, निमक ।

करकट दे० ( पु० ) कड़ा, घेरोरन, कतवार ।

करकचि दे० ( पु० ) किचकिचाहट, हल्ला गुल्ला, अप्रुष्ट, कोमल । [ करकराती है ।

करकना ( क्रि० ) रह रह कर दक का होना । जैसे आँख

करकर ( पु० ) समुद्र से निकलने वाला निमक ।

करकरा दे० ( पु० ) करकरिया पत्ती ( वि० ) खुरखरा ।

करका तत् ( स्त्री० ) शिखा, ओला, पापर पड़ना, शिखावृष्टि ।

करकाना दे० ( क्रि० ) लचकाना, मुरकाना ।

करख तत् ( पु० ) खैव, खिचाव, हठ, अधिक द्रव्य, माप विशेष । [ लाग डाँट, कालिल, कालीज ।

करखा दे० ( पु० ) रुम्ह विशेष, वस्त्रेजना, बड़ाघा,

करखी तत् ( क्रि० ) खींची, आकर्षित की, अपनी ओर खींच ली, ( स्त्री० ) कजली ।

करगत तत् ( पु० ) हस्तगत, हाथ, जगा हुआ, प्राप्त, लब्ध, हाथ में आया हुआ, ( पु० ) हस्तनक्षत्र स्थित चन्द्रमा ।

करगता तत् ( पु० ) करघनी, कटि वन्धन ।

करगही ( स्त्री० ) जड़हन, मोटा धान ।

करग्रह तत् ( पु० ) विशाह, पाणि-ग्रहण, परियय, —तद् कर गहना ।

करङ्क दे० (पु०) पञ्जर, पंखुरी, हड्डी ।  
 करघा (पु०) हाथ से कपड़ा बिनने का यंत्र विशेष ।  
 करद्धा या करद्धी दे० (स्त्री०) कलबूरी ।  
 करछुल } कलबूरी ।  
 करछुली }  
 करज तत्० (पु०) हाथ से उत्पन्न, अंगुलियाँ, नख  
 करंज, कंजा ।  
 करज्जत तत्० (पु०) करिजा, वृक्ष विशेष ।  
 करट तत्० (पु०) छकलास, गिरगिट, काक, कौआ,  
 हाथी का गाल, कुलित जीवी, नास्तिक ।  
 करटी तत्० (पु०) हाथी, रांगा, (स्त्री०) काक  
 पानी, कौआ की स्त्री ।  
 करण तत्० (पु०) [ कृ + अणट् ] साधन, निर्माण,  
 इन्द्रिय, योगियों का आसन भेद । व्याकरण का  
 तीसरा कारक । ज्योतिष में एक प्रकार के समय  
 विभाग को करण कहते हैं, वे करण ११ हैं, इनमें  
 ७ सात चल और ४ स्थिर हैं, दो करण एक चन्द्र  
 दिन के बराबर होता है ।  
 करणी तत्० (स्त्री०) [ कृ + अणट् + ई ] लुपों,  
 राँपों, गणित शास्त्र में वह राशि जिसका मूल  
 निश्चित न हो ।  
 करणीय तत्० (पु०) अवश्य कर्तव्य, कर्तव्य कर्म ।  
 करणेच्छा तत्० (स्त्री०) [ करण + इच्छा ] निर्मा-  
 योच्छा, करने की इच्छा । [ ऐटिका ।  
 करण्ड तत्० (पु०) काक पक्षी, कौआ, डिब्बा, डिविया,  
 करतू या करत (क्रि०) करता है, करते ही ।  
 करतव तद्० (पु०) करामत, काम, करनी, कला,  
 गुण ।—१ (पु०) गुणी, करामती, पुरुषार्थी, निपुण ।  
 करतल तद्० (पु०) हस्ततल, हथेली, हाथ का ताल ।  
 करतार तद्० (पु०) दैवत, विधाता ।  
 करतारी दे० (स्त्री०) हाथ की साली, यपोढ़ी, ताल ।  
 करताल तद्० (पु०) एक बाजे का नाम, कठताल,  
 मारु, मजीरा । [ शब्द, ताली यपोढ़ी ।  
 करताली तद्० (स्त्री०) हाथ बजाना, हाथ बजाने का  
 करतुत दे० (स्त्री०) करनी, कला, गुण ।  
 करतुति या करतुती दे० (स्त्री०) काम, करनी,  
 यथा—“करतुती कहि देत, आप कहिये नहिं साई ” ।

करतोया तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, यह नदी बङ्गाल  
 में है । [ तद्० (पु०) पट्टा, राजस्व सूचक पत्र ।  
 करद् तत्० (वि०) कर देने वाला, अधिनस्थ —पत्र  
 करदा तद्० (पु०) विक्री के माल में मिला हुआ  
 कूड़ा करकट, बट्टा । [ गुज़ार, कर देने वाले ।  
 करदायी तत्० (पु०) [ कर + दा + यिन् ] माल-  
 करधृत तत्० (पु०) करनिहित, हस्तधृत । [ विशेष ।  
 करधनी दे० (स्त्री०) कमर पर पहिने का आभूषण  
 करनधार तद्० (पु०) कर्णाधार, मछाह । [ विशेष ।  
 करनफूल तद्० (पु०) स्त्रियों के कान का आभूषण  
 करनवेध तत्० (पु०) बालक के कान छेदने का  
 संस्कार, कनछेदन ।  
 करन (कर्ण) तद्० (पु०) कान, श्रवण ।  
 करना दे० (क्रि०) बनाना, रचना, सुधारना ।  
 करनाटक पु० दक्षिण भारत का एक प्रान्त विशेष, मैसूर  
 मंगलौर, बंगलौर, आदि करनाटक प्रान्त ही में है ।  
 करनाल (पु०) नरसिंहा, भौपु, एक प्रकार का डोल  
 एक प्रकार की तोप, पंजाब का एक नगर ।  
 करनी दे० (स्त्री०) करतुत, पूर्वकृत कर्म, करने वाली,  
 —या करने के योग्य ।  
 करपत्र तत्० (पु०) करांव, आरा, क्रकच ।  
 करपीड़न तत्० (पु०) पायी प्रहण, विबाह ।  
 करपुट तत्० (पु०) कृताञ्जलि, चक्षाञ्जलि ।  
 करबला (स्त्री०) निजंल निजंन स्थान, ताड़ियों के  
 दफनाने की जगह ।  
 करवाल तत्० (पु०) असि, खड्ग, खांड, तलवार ।  
 करवालिकां तर (स्त्री०) छुरी, कटारी ।  
 करवी दे० (स्त्री०) नारी, डाँडी, जुआर या बाजरे की  
 डाँडी, पशु मक्षप तृण ।  
 करभ तत्० (पु०) कंठ, हाथी का चूचा, करपृष्ठ,  
 कमर, दोहों के एक भेद का नाम ।  
 करभीर तत्० (पु०) सिंह, मृगराज ।  
 करभूषण तत्० (पु०) ककना, कंगन, पहुँची, कड़ा ।  
 करम तत्० (पु०) कर्म, काम धंधा, भाग, भाग्य ।—  
 कल्ला (पु०) गाँठ गोभी बाँधी गोभी ।—नाशा  
 तद्० (स्त्री०) एक नदी का नाम ।  
 करमठ (वि०) कर्म काण्डी, कर्मप्रिय ।  
 करमाला तत्० (स्त्री०) जपमाला, जो करने की

छोटी माला, स्मरणी या डंगलियों के पोरों की माला । (पु०) श्रमलतास ।  
 करमैती (स्त्री०) धोखे की एक भक्ता दादाय कन्या ।  
 कररुह तत्० (पु०) नाखून, नख ।  
 करलमुखा दे० (पु०) स्त्रीवश, स्त्रीजीत ।  
 करवट दे० (स्त्री०) पंखवाड़ा, पंजर, पारव परिवर्तन ।  
 करवरे दे० (पु०) विपदा, अरुह, होनहार ।  
 करवीर तत्० (पु०) कंडीर का फूल या पेड़, कनर का वृक्ष या पुष्प, खड्ग, श्मशान, चेदि देश का एक नगर ।  
 करशाला तत्० (स्त्री०) चुंगीघर, महसूल घर ।  
 करपा दे० (पु०) ईर्ष्या, वैर, क्रोध, रिस, अनख, कालिमा, उल्लेखना, बढ़ावा यथा—  
 “एकहि एक बढ़ावहि” “करपा”  
 —मुलसीकृत रामायण”  
 करपि (क्रि०) खींच कर, घींच कर ।  
 करसम्पुट तत्० (पु०) हाथ जोड़न, चढ़ाजलि ।  
 करप्ती दे० (पु०) जंगलीगोहूडा, गोघरी, कंडों का घूर ।  
 करहा दे० (पु०) कड़वा, कटि, कमर ।  
 करहार तत्० (पु०) शिफाकन्द, मैनफल । [विशेष ।  
 करहाटक तत्० (पु०) शिफाकन्द, मैनफल, ओपधि करई (क्रि०) करते हैं, करें ।  
 करात दे० (पु०) ककच, आरा, करपत्र । [वाला ।  
 करांती दे० (पु०) शारे से चीरने वाला, लकड़ी काटने करा दे० (पु०) कड़ा, कठिन, खोटा, कूडा (स्त्री०) कला, किया ।  
 काराईहि तत्० (क्रि०) कारावेगा, कारावेवा ।  
 काराई दे० (स्त्री०) भूखी, दाल का छिलका ।  
 करात (पु०) ताल विशेष ।  
 कराना (क्रि०) करने में लगाना, करवाना निर्माण कराना ।  
 करामात (स्त्री०) कररमा, चमत्कार ।—ने (वि०) चमत्कार दिखाने वाला ।  
 करार दे० (पु०) कभारा, किनारा, ठहराव, कौल, शते ।  
 करारा दे० (पु०) नदी का ऊंचा तट, टीला, फ़ोर, दण्ड, उम, सेज, खोला, अधिक गहरा, घोर, हटा कटा, बलवान् ।—एन दे० (पु०) कड़ाई, कड़ापन ।  
 कराल तत्० (पु०) भयङ्कर, भयानक, डरावना ।—  
 कृति (स्त्री०) भयङ्कर स्वरूप, डरावनी चरत ।

कराली तत्० (स्त्री०) भयङ्कर, कठिन, अग्नि के सप्त-  
 विद्वाधों के अन्तर्गत जिह्वा विशेष ।  
 करावली तत्० (स्त्री०) किरणों का समूह ।  
 कराह दे० (पु०) बड़ी कड़ाही, दुःख में निकलना हुआ शब्द । [लेना, पीड़ा में ब्राह्मे भरना ।  
 कराहना दे० (क्रि०) साँस भरना, दुःख करना, उसाँस करि तत्० (पु०) हाथी, इस्ति, रामायण में इसका प्रयोग आया है (क्रि०) काके ।—कुम्भ (पु०) गजकुम्भ, हाथी का मस्तक ।—गर्जित (पु०) हाथी का गर्जन, हाथी का शब्द ।—ज (पु०) इस्तिरायक, करम, हाथी का यथा ।—नी (स्त्री०) इयिनी । [कृष्णा ।  
 करिखई दे० (स्त्री०) श्यामता, कालापन, कालिमा, करिखा दे० (पु०) कालींष, कालिल ।  
 करिण तत्० (पु०) हाथी, गुण्डवाला ।  
 करिणी तत्० (स्त्री०) इयिनी, वैष्ण्व पित्त और शुद्ध माता के गर्भ से उत्पन्न लड़की ।  
 करिया दे० (पु०) पतवार, कर्णधार मल्लाह, (पु०) काला, श्याम, साँवर । [विशेष ।  
 करियादः तत्० (पु०) सूस, जलहस्ति, जलजन्तु करिण्य तत्० (पु०) कर्तव्य, करणीय, करणशील ।  
 करिण्यमाणा तत्० (पु०) करिण्यत, उद्यत, यत्नवान् ।  
 करिहाँ या करिहाँव तत्० (पु०) कमर, कटि ।  
 करी तत्० (पु०) हाथी, गज, मातङ्ग (स्त्री०) कड़ी, धरन, कली, छन्द विशेष ।—न्द्र (पु०) [करी + इन्द्र] प्रधान हस्ति, ऐरावत हस्ति ।  
 करीना (पु०) शंकी, किराना, मसाला, बंग, पद्मति ।  
 करीजे दे० (क्रि०) करिये, कीजिये, करें, करना योग्य है, करना ही चाहिये ।  
 करीर तत्० (पु०) बंशशङ्कर, घाँस का कोपड़, रेतीली भूमि में वृक्ष होने वाला वृक्ष विशेष जिसमें ऊँट छाते हैं, टेंटा का पेड़, चट्टा ।  
 करील या करीजा तत्० (पु०) देवो करीर ।  
 करीप तत्० (पु०) सुखा गोमय, बलकंडा, अरुमाकंडा ।  
 करुणई या करुणई दे० (स्त्री०) कटुदापन, तितनाई, तिक्तता ।  
 करुण तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, करुणा, उचित दया, बुद्धिविशेष, रसविशेष ।—विप्रजम्भ (पु०) शृङ्गा



रस का भेद विशेष, नायिका या नायक में से कोई एक लोकान्तर चला जाय, परन्तु पुनः सम्मिलन की आशा हो, ऐसी अवस्था का नाम करुण-विमलम्भ है ।

करुणा या करुना तत् ( स्त्री० ) दया, कृपा, अनुग्रह, अनुकम्पा, रामायण में इस के स्थान में करुना का प्रयोग प्रायः किया गया है ।—कर ( पु० ) दयालु, कृपावान्, दया की राशि ।—निधान ( पु० ) दया-धार, दया का आधार, सानुकम्प, अतिशय दयालु ।—रहित ( पु० ) करुणाशून्य, दयाशून्य ।—मय ( पु० ) दया के रूप, दयामय, दया करने वाला, कृपालु, दयालु ।—यतन ( पु० ) दया के स्थान ।—द्र ( पु० ) करुणानिधान, दयालु, करुणामय ।

करुवा तत् ( पु० ) कमण्डलु, करवा, कठारी, मिट्टी का फोरा घर्तन ।—चौथ दे० ( स्त्री० ) एक पर्व या त्योहार जो कार्तिक वदी चौथ पे होता है ।

करेकर दे० ( स्त्री० ) पृष्ठ, घाघरा, संग संग ।

करेत दे० ( पु० ) सर्प विशेष ।

करैणु तत् ( पु० ) हाथी, गज, कर्णिकार वृक्ष ।

करैरा दे० ( पु० ) हड़, कठोर, कड़ा ।

करैला तत् ( पु० ) तरकारी विशेष ।

करैत तत् ( पु० ) देखो करेत ।

करोड़ दे० ( पु० ) कड़ोड़, कोटि, सौ लाख की एक संख्या, १००००००० ।—पती ( वि० ) एक करोड़ रुपये रखने वाला ।

करोड़ा दे० ( पु० ) उगाहने वाला, प्रधान ।

करांती दे० ( स्त्री० ) खुर्चन, दूध का जलन ।

करोर दे० ( पु० ) करोरी, देखो करोड़ ।

करोरी ( पु० ) रोकड़िया, खजानची, करोड़ का स्वामी ।

करोदना ( क्रि० ) खुरचना, खसोडना ।

करौं दे० ( क्रि० ) करता हूँ, बनाता हूँ, करूँ, रचूँ ।

करौंदा तत् ( पु० ) फरमदक, एक खट्टे फल का नाम ।

कर्क तत् ( पु० ) केकड़ा कर्कराशि, चतुर्थ राशि, यमि,

दरंण, घड़ा, कात्यायनसूत्र के एक भाष्यकार ।

कर्फट तत् ( पु० ) कैंकड़ा, चौथी राशि, नाग विशेष,

करकटिया, लोकी, वृत्त की त्रिज्या, नृत्य विशेष,

कमल मूल, तुम्ही ।—१ तत् ( स्त्री० ) कलुई,

कड़ड़ी, तरौई, काकड़ासींगी ।

कर्कणु तत् ( पु० ) बदरी वृक्ष, वेर का पेड़ ।

कर्कश तत् ( पु० ) कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय,

( पु० ) ऊल, खाँड, ( स्त्री० ) कर्कशा ।—वाक्य

( पु० ) निष्ठुर वचन, परुष वाक्य ।

कच्चूर तत् ( पु० ) वृक्ष विशेष, सुगन्ध द्रव्य का भेद, सुवर्ण, कर्पूर । [ का एक घर्तन ।

कर्कनी दे० ( स्त्री० ) करोचनी, खुर्चन, पाक बनाने

कर्क्या दे० ( पु० ) डबुआ, डबू, कर्कल ।

कर्कल दे० ( स्त्री० ) फुर्ताच, हृद, चौकड़ी ।

कर्कल दे० ( पु० ) कर्कौ, करहुली ।

कर्ज } ( पु० ) ऋण, उधार लिया हुआ धन ।—दार  
कर्जा } ( पु० ) ऋणी ।

कर्ण तत् ( पु० ) कान, श्रवण, पतवार, अङ्गराज, राधेय, युधिष्ठिर का बड़ा भाई, सूर्य के ग्रौरस से कुन्ती के गर्भ में यह उत्पन्न हुआ, अपनी धीरता के कारण यह प्रसिद्ध था, इसने परशुराम से अस्त्र विद्या सीखी थी । त्रिभुज खेत में भुज और कोटि की रेखा के अतिरिक्त तीसरी रेखा का नाम, चतुष्कोण खेत में उस केने का नाम जो सामने के कोनों से खींची हुई होती है ।—कण्ड ( पु० ) कर्ण रोग विशेष, कान की खुजलाहट ।

—कुहर ( पु० ) कान की गोलाई, गोलक ।

—गोचर ( पु० ) श्रवणज्ञान, किसी बात को

सुन लेना ।—धार ( पु० ) माँसी, नाविक, नाव

चलाने वाला, सड़नदार ।—पिशाची ( पु० ) एक

तांत्रिक सिद्धि जिसके द्वारा दूसरे मनुष्य के मन

की बात पतला सकता है ।—फूज ( पु० ) कान

का भूषण विशेष, कर्णालङ्कार, कनफूल ।—मल

( पु० ) कर्णगूथ, कान का मेल ।—वेध ( पु० )

संस्कार विशेष, कान छेदन ।—वेष्टन ( पु० )

कुण्डल, कान में पहनने का गहना ।

कर्णाकर्णी तत् ( स्त्री० ) काना कानी, शोहरत ।

कर्णाट तत् ( पु० ) देशविशेष, स्थानात् प्रसिद्ध देश ।

—क ( पु० ) कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य ।

कर्णाटी तत् ( स्त्री० ) रागिनी विशेष, कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य या वस्तु ।

कर्णानुज तत् ( पु० ) कर्ण का छोटा भाई, राजा युधिष्ठिर ।

कर्णाभरण तत् ( पु० ) कर्णालङ्कार, कर्णशूषण, कर्ण-  
फूल ।  
कर्णिका तत् ( स्त्री० ) कान का एक प्रकार का गहना,  
हाथी के शुण्ड का अतिशय पतला भाग, हाथ  
की मध्यमा अङ्गुली ।  
कर्णिकाञ्जन तत् ( पु० ) सुमेरु पर्वत ।  
कर्णिकार तत् ( पु० ) वृक्ष और पुष्प विशेष ।  
कर्णार्य तत् ( पु० ) क्रीडाार्थ छोटी गाड़ी, स्त्रियों के  
आने जाने के लिये पर्दादार रथ, पूजा ।  
कर्णाजिप तत् ( पु० ) पिशुन, दुर्जन, उग, हृषर की  
बात उधर कहने वाला, चुगुलखोर ।  
कर्णासुत तत् ( पु० ) कंसराज ।  
कर्तन तत् ( पु० ) कतरन, काटन, छाँटन ।  
कर्तनी तत् ( स्त्री० ) कत्तरी, कतरनी, कैंची ।  
कर्त्तव्य तत् ( पु० ) करणीय, करणार्ह, करने योग्य,  
व्ययुक्त, शक्ति ।—ता ( स्त्री० ) व्ययुक्तता,  
व्ययुक्त । [ विशेष, छुरी ।  
कर्त्तरिका तत् ( स्त्री० ) कैंची, काटने के लिये अस्त्र  
कर्त्तरी तत् ( स्त्री० ) काटने का अस्त्र, कैंची ।  
कर्त्ता तत् ( पु० ) प्रभु, स्वामी, ईश्वर, अधिकारी,  
करने वाला, अधिकारि, प्रथम कारक ।  
कर्त्तार तत् ( पु० ) ईश्वर, सृष्टि करने वाला,  
सिंरजनहार । [ कृता हुआ सूत ।  
कर्त्तित तत् ( पु० ) काटा हुआ, छिन्न, खण्डित,  
कर्त्तुक तत् ( पु० ) कारक, साधक, कार्य, साध्य,  
बनाया हुआ ।  
कर्तृ कर्मभाव ( पु० ) कर्त्ता और कर्म का सम्बन्ध ।  
कर्तृत्व ( पु० ) कर्त्ता का धर्म, प्रभुता, स्वामित्व,  
अधिकार ।  
कर्तृप्रधान तत् ( पु० ) जिस वाक्य में कर्त्ता की  
प्रधानता हो, जिस वाक्य में कर्त्ता क्रिया के अनु-  
सार हो । [ वाली क्रिया ।  
कर्तृवाचक या वाची ( पु० ) कर्त्ता कर्मक को कहने  
कर्तृवाच्य तत् ( पु० ) जिस वाक्य से कर्त्ता का बोध  
प्रधान रूप से हो  
कर्दम तत् ( पु० ) कर्दो, कीचड़, चहला, पाँक, पाप,  
छाया, स्वायंभुव मन्वन्तर के एक प्रजापति ।  
कर्धनी दे० ( पु० ) कटिकथ, सूत या चाँदी सोने  
का बना हुआ कमर में पहनने का गहना ।

कर्पास तत् ( पु० ) कपास, रुई, बांग ।  
कर्पासी तत् ( पु० ) कपड़ा, सूत, वस्त्र, सूती कपड़ा ।  
कर्पूर तत् ( पु० ) कपूर, रवेत वर्ण सुगन्ध द्रव्य  
विशेष, चन्द ।  
कर्तुरा तत् ( स्त्री० ) वनतुलसी, कृष्ण तुलसी ।  
कर्म तत् ( पु० ) क्रिया, करनी, भाग्य, दूसरा कारक  
कार्य प्रयोजन, व्यवहार, लक्ष्य से दशार्वा लक्ष्य ।  
— कर ( पु० ) जो मजदूरी लेकर काम करता है,  
भूय, नौकर, समस्त काम करने वाला ।—काण्ड  
( पु० ) संस्कार विशेष, जब पशु होम आदि,  
वेद का एक अङ्ग जिसमें कर्म काने की विधि  
लिखी है ।—कार ( पु० ) जाति विशेष, शूद्रा  
के गर्भ और विज्वकर्मों के औरस से उत्पन्न एक  
जाति, लुहार, बैल, बेगार —कारक ( पु० )  
दूसरा कारक, कर्त्ता के व्यापार से जिसको काम  
पहुँचे ।—धारय ( पु० ) विशेषण, और विशेष्य के  
सदृश अधिकार वाला, वह समास जिसमें दोनों का  
समान अधिकार हो ।—व्युत ( पु० ) काम से  
बाहर किया हुआ, कर्मभट, पदव्युत ।  
कर्मचारी तत् ( पु० ) कार्यकर्त्ता, काम करने वाला ।  
कर्मठ तत् ( पु० ) कार्यपटु, कर्मेनिष्ठ, कर्मकाण्डी ।  
कर्मयुता तत् ( स्त्री० ) कार्यकुशलता, तत्परता ।  
कर्मनाशा तत् ( स्त्री० ) नदी विशेष जो चौसा के  
पास है, कहते हैं कि इसके जलस्पर्श, से मनुष्य के  
धर्म नष्ट हो जाते हैं । [ में निष्ठावान् ।  
कर्मनिष्ठ तत् ( वि० ) क्रियवान्, शास्त्रविहित कर्मों  
कर्म-निपुणाई तत् ( स्त्री० ) कर्मकुशलता, कर्म काने  
की चतुराई । [ अपना इश्वर ।  
कर्मपथ तत् ( पु० ) कर्म मार्ग, वेद की रीति,  
कर्मप्रधान तत् ( पु० ) जहाँ कर्म की प्रधानता  
हो ।—क्रिया ( स्त्री० ) कर्मोच्चाय क्रिया ।  
कर्मफल तत् ( पु० ) कर्मों का फल, कर्मपिपाक,  
सुख दुःख, करनी का फल ।  
कर्मभूमि तत् ( स्त्री० ) आश्रयार्त, भारतवर्ष, जहाँ  
कर्म करने से विशेष फल हो ।  
कर्मभोग तत् ( पु० ) प्रारब्ध का भोग, कर्म से  
उत्पन्न फलों का भोग । [ पहिली अवस्था ।  
कर्ममूल तत् ( पु० ) कर्मों की जड़, कुण्ड, कर्म की

कर्मयुग तत्० ( पु० ) कलियुग, चौथायुग, शेषयुग ।  
 कर्मरङ्ग तत्० ( पु० ) कर्मरत्न, कल विशेष ।  
 कर्मरेख तत्० ( स्त्री० ) प्रारब्ध का लेख, कर्म की रेखा ।  
 कर्मवाच्य या कर्मवाचक क्रिया तत्० ( स्त्री० ) कर्म की प्रधानता सूचक क्रिया विशेष ।  
 कर्मवाद तत्० ( पु० ) कर्मयोग, मीमांसा जिसमें कर्म प्रधान माना गया है ।—१ तत्० ( पु० ) मीमांसक, कर्म के प्रधान मानने वाला ।  
 कर्मविपाक तत्० ( पु० ) कर्म का फल, दुःख सुख, कर्मफल बताने वाले एक ग्रन्थ का नाम ।  
 कर्मशील तत्० ( पु० ) स्वभाव ही से कर्म करने वाला, उत्साही, उद्यमी, परिश्रमी ।  
 कर्मशूर तत्० ( पु० ) कर्मठ, कर्मनिपुण, कर्मदल, उद्योगी । [ मन्त्री, अमात्य, दीवान ।  
 कर्मसचिव तत्० ( पु० ) काम करने के उपयोगी, कर्मसंन्यास तत्० ( पु० ) कर्मों का फल त्याग, निष्काम कर्म ।—१ ( पु० ) कर्म त्यागी ।  
 कर्मसमाधि तत्० ( पु० ) कामों से विरक्ति, किसी काम को नहीं करना ।  
 कर्मसाक्षी तत्० ( पु० ) दुष्कर्म सुकर्म के द्रष्टा, सूर्य चन्द्र, यम, काल, पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश । [ करने का उद्योग ।  
 कर्मसाधन तत्० ( पु० ) कार्य सम्पादन, कर्मसिद्ध कर्मस्थान ( पु० ) ज्योतिष मतानुसार जन्म ज्ञयडली में १० म स्थान ।  
 कर्मोधर्म तत्० ( पु० ) जपतपिया, भाग्यवान्, स्वधर्म-निष्ठ, स्वकर्मनिरत । [ कर्मरत्न, फल विशेष ।  
 कर्मार तत्० ( पु० ) कर्मकार, लौहकार, वंश, बाँस, कर्मिष्ठ तत्० ( पु० ) कर्मप्रवीण, वैदिक कर्म करने वाला, कर्मकाण्डी, क्रियवान् ।  
 कर्मो तत्० ( पु० ) कर्मसम्पत्, कर्म करनेवाला, काम-काज, शुभकर्मयुक्त, भाग्यवान्, कर्मनिष्ठ ।  
 कर्मैन्द्रिय तत्० ( पु० ) कर्मसम्पादन करनेवाली पाँच इन्द्रियाँ, यथा—वाक्, पाणि, वायु, पाद, और उपस्थ । [ विशेष ।  
 कर्म ( वि० ) कड़ा, कठोर, ( पु० ) जुलाहों का यन्त्र कर्म तत्० ( पु० ) सोलह माशे की तैल, अस्सी रत्ती, खींचना, खेती, विरोध, ताव, जोश, यथा—  
 “ बातहि वात कर्म बदि आवा ” ।

कर्मक तत्० ( पु० ) किसान, हरजोता, खेत करने वाला, कृषिजीवी, खींचने वाला ।  
 कर्मण तत्० ( पु० ) [ कृप् + अनट् ] खेंच, टान, जोतना, कृषिकर्म । [ आकर्षणी, लगाम, रास ।  
 कर्मणी तत्० ( स्त्री० ) खिरनी का वृक्ष, श्रृङ्गशी, वंशी, कर्मणीय तत्० ( पु० ) [ कृप् + अनीय ] कर्मण करने योग्य, जोतने योग्य खेत, खींचने योग्य ।  
 कर्मफला तत्० ( स्त्री० ) [ कर्म + फल् + ड् ] भ्राम-लकी वृक्ष, बहेड़ा ।  
 कर्पा दे० ( पु० ) ईर्ष्या, उत्साह, विरोध, क्रोध ।  
 कर्हिचित् तत्० ( घ० ) किसी काल, किसी समय, कदाचित्, अनियमित काल में, अतिर्हिष्ट काल में ।  
 कल तत्० ( पु० ) गम्भीर और मधुर शब्द, अव्यक्त ध्वनि, मिय, सुन्दर, कल, चैन, तुष्टि, । दे० व्यतीत या आगामी दिन, सुखता, आराम, सुलज्जान । शंकर, यन्त्र ।  
 कलई दे० ( स्त्री० ) रांगा, मुलम्मा, भेद ।  
 कलक ( पु० ) रंज, दुःख, चिन्ता, पेकड़ी ।  
 कलकयुत तत्० ( पु० ) हंस, कदुतर, कोकिल, कोइल, मधुरस्वर युक्त ।  
 कलकल तत्० ( पु० ) [ कल + कल + अल् ] अस्फुट शब्द, कोलाहल, रास ।  
 कलकानि ( स्त्री० ) हैरानी, परेशानी, चिन्ता ।  
 कलकी तत्० ( पु० ) भगवान् के अवतारों में से दशवाँ अवतार, भावी भगवान् का अवतार ।  
 कलगी दे० ( पु० ) कलहनी, चूड़ा, शेर, पगड़ी या मुकुट में लगाने का एक आभूषण विशेष ।  
 कलङ्क तत्० ( पु० ) अपवाद, अपयश, दुष्कीर्ति, दाग, चिन्ह, दोष, मिथ्या अपराध । [ कलङ्कित ।  
 कलङ्की तत्० ( पु० ) दोषी, पापी, अपराधी, ( स्त्री० ) कलजहवा दे० ( पु० ) कलटा कलङ्काह ।  
 कलजिन तत्० ( पु० ) द्वेषी, हिंसक, दुर्जन, पापी, पाशराम, कालजिह्वा ।  
 कलज्ज तत्० ( पु० ) [ कल + जन् + ड् ] तमाङ्क का पौधा, हिरण, एक चिड़िया, पक्षी का मांस, १० पल का तौल ।

कलत्र तत्त्वं ( पु० ) [ कल + त्र ] भार्या, स्त्री, नितम्ब, किला, दुर्ग ।—लाभ ( पु० ) पत्नी-लाभ, भार्या-प्राप्ति, विवाह । [ हुआ रूपय ।

कलदार ( वि० ) पेंच लगा हुआ, मैथीन द्वारा बना कलधौत तत्त्वं ( पु० ) सोना, चांदी, सुवर्ण, रजत, मधुर शब्द । [ मधुर शब्द ।

कलध्वनि तत्त्वं ( पु० ) कव्तर, कोहल, अभ्यक्त कलन्दर तत्त्वं ( पु० ) वर्षासङ्कर जाति विशेष, रीछ बन्दर मचाने वाला, मद्दारी ।

कलप तत्त्वं ( पु० ) त्रिज्ञा, कलक, कल्प का अपभ्रंश । अर्थ—ग्रह का दिन, प्रलय, मनोरथ, सामर्थ्य, कहरना, पलट, बदल, ( क्रि० ) बना कर, दुखी हो कर ।—तत्त्वं ( पु० ) कल्पवृक्ष, देववृक्ष ।

कलपना दे० ( क्रि० ) अनुताप करना, पक्षताप करना, दुःखित होना, कुढ़ना ।

कलपाना दे० ( क्रि० ) दुःखित करना, कुढ़ाना ।

कलपित तत्त्वं ( कथित ) मिथ्या, वनावटी, कृत्रिम ।

कलफ दे० ( पु० ) कलप, माँड ।

कलवल दे० ( पु० ) दाँव पेंच, छल, कपट । [ का बच्चा । कलम तत्त्वं ( पु० ) करम, इस्तिरावक, हाथी या ऊँट कलम तत्त्वं ( पु० ) स्वनाम ख्यात लिखने की वस्तु, लेखनी, पेड़ की टाँजी जो अन्वय लगाने या किसी दूसरे वृक्ष में पैँद दे लगाने को काटी जाय, साठी धान ।—फार ( पु० ) चित्रकार, रंग भरने वाला, कलम की दस्तकारी, करने वाला ।—तराश कमल बनाने की छुरी ।—दान मसी और कलम रखने की पेटिका ।

कलमकल दे० ( स्त्री० ) घशाहट, दुःख ।

कलमखं तत्त्वं ( पु० ) पाप, दोष, लांछन दाग ।

कलमलाना दे० ( क्रि० ) छटपटाना, कुलबुलाना, उद्धलता प्रकाश करना ।

कलमी दे० ( स्त्री० ) निखा हुआ, वे फल जो दो वृक्षों के संयोग से उत्पन्न किये जाते हैं । कलम या रवादार । [ हिलेडुले ।

कलमले दे० ( क्रि० ) «झल हुआ, छटपटाये, रेंगे, कलमुँहा ( वि० ) काले मुँह वाला, देगी, लांछित ।

कलरव तत्त्वं ( पु० ) मधुर और अस्फुट शब्द, जन-समूह का शब्द, कोकिल कवृता आदि का शब्द ।

कलल तत्त्वं ( पु० ) गर्म को अच्छादन करने वाला चर्म, जरायु

कलवरिया ( स्त्री० ) शराब की दूकान ।

कलवार दे० ( पु० ) जाति विशेष, मय बनाने वाली जाति, शुण्डी, कटाल; कलार ।

कलविङ्क तत्त्वं ( पु० ) पक्ष विशेष, गौरैया पक्षी ।

कलश तत्त्वं ( पु० ) घट, घड़ा, गगरी, मिट्टी का जल-पात्र, मन्दिर का शिखर, चोटी, सिरा, प्रधान अङ्ग । अकृष्ट व्यक्ति जैसे रघुकुल कलश । [ वाला ।

कलशिरा दे० ( पु० ) कृष्ण मस्तक विशेष, काले सिर कलशी तत्त्वं ( स्त्री० ) छोटा जलपात्र, गगरी ।

कलस तत्त्वं ( पु० ) घट, घड़ा, परिमाण विशेष, मन्दिर आदि का मुकुट ।

कलसा तत्त्वं ( पु० ) शिखर, शृङ्ग, चूड़ा, धातु का बना घड़ा । [ या इसका अनादर पर पीछे पड़तावे ।

कलहंतरित ( स्त्री० ) बह नायिका, जो पति से झगड़ा

कलहंस तत्त्वं ( पु० ) सुन्दर हंस, राक्षस ।

कलह तत्त्वं ( पु० ) [ कल + हन् + ड ] विरोध, विवाद, झगड़ा, द्वन्द्व, तलवार का म्यान, रास्ता ।

—कारी ( पु० ) विवाद करने वाला, झगड़ालू ।

मिय—( पु० ) विवादमिय, विवादस्तोपी, नारद ।

कलहान्तरिता तत्त्वं ( स्त्री० ) [ कलह + अन्तरित + आ ] नायिका विशेष, स्त्री पहले अपने पति का अपमान करती है, और पीछे उसके चले जाने पर दुःखित होती है यथा—

“कहो न माने कंत को, पुनि पीछे पड़ताय ”

कलहान्तरिता नायिका ताहि कहत कविराय ”

—भतिराम

कलहारा तत्त्वं ( पु० ) लड़ाका, झगड़ालू, कलहमिय ।

कलही तत्त्वं ( पु० ) झगड़ालू, विरोध करने वाला, ( स्त्री० ) नखरा करने वाली स्त्री ।

कला तत्त्वं ( स्त्री० ) चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग, अंश, भाग, हिस्सा, राशिचक्र का अत्यन्त सूक्ष्मभाग, एक राशि के तीस भाग होते हैं, उनमें एक भाग का सोलवाँ भाग समग्र का परिमाण । शिवप आदि विद्या, इसके चौमठ भेद होते हैं, वे ये हैं । ( १ ) गीत ( पु० ) गाना, यह चार प्रकार होता है, स्वरंग, पदग, खयग और अवधानग । ( २ ) वाद्य

वाजन, इसके अनेक भेद हैं। (३) नृत्य नाच, प्रधानतः इसके दो भेद हैं। नाट्य और अनाट्य, किसी के कार्यों का अनुकरण करना नाट्य है और केवल भाव बताना तथा रस उत्पन्न करना अनाट्य है। (४) आलेख्य चित्र, तस्वीर, इसके वः भ्रू होते हैं :—रूप भेद, प्रमाण, भाव और सुन्दरता की योजना, जिसका चित्र हो उससे मिलान, लिखने की विशेषता, और रङ्गों का यथास्थान सन्निवेश। यह ग्रन्थ और अपने चित्रविनोद के लिये बसाया जाता है। (५) विशेषकण्ठेय मस्तक में तिलक लगाने के लिये भूर्जपत्र आदि के विविध प्रकार साँचे बनाना। (६) तश्तुल कुसुमवर्जि विकार बिना दूटे हुए चाँवलों से अनेक प्रकार की देवमन्दिर में साँची काढ़ना, और फूलों के सन्निवेशविशेष से विविध यस्तु बनाना। (७) पुष्पास्तरण जो अनेक प्रकार के पुष्पों से वस्तु बनायी जाती है, जिसे पुष्पशय्या भी कहते हैं। (८) दर्शनवसनाङ्गराग दाँत, कपड़े, और शरीर रंगने की विधि। (९) मणिभूमिकार्कर्म भीष्मकाल में सोते रहने के लिये स्थान बनाना। (१०) शयनरचन शय्या विज्ञान, इसमें यह ध्यान रखना पड़ता है कि जिस पर सोने से अन्न पच जाय। (११) उदकवाद्य जल में सृष्टि आदि के समान ध्वनि निकालना, जलतरङ्ग पञ्चाना। (१२) उदकघात हाथ या यन्त्र—कल से जल फेंक कर मारना। (१३) चित्रयोग प्राकृतिक घातों में विशेषता उत्पन्न करना, काले बाल को सफ़ेद, या सफ़ेद बाल काला करना आदि। (१४) माल्यग्रन्थविकल्प माका गूघने के अनेक प्रकार की रीति। (१५) शोखरका-पीडयोजन शिर के आगे की ओर लटकने वाले फूलों से बने हुए एक प्रकार के गहने को शोखरक कहते हैं। चोटी के चारों ओर गोलाकार फूलों की माला को आपीड कहते हैं। इन दोनों को विविध वर्ष के पुष्पों से बनाना, और यथास्थान पहिनना। (१६) नेपथ्यप्रयोग देश काल के अनुसार वस्त्र, आभूषण आदि से अपने शरीर को सजाना। (१७) कर्ण-पत्रभङ्ग हाथीदाँत और शङ्ख आदि के गहने

बनाना। (१८) गन्धयुक्ति सुगन्ध पदार्थ बनाने की रीति। (१९)—अलङ्कारयोग संयोग्य और असंयोग्य दो प्रकार के अलङ्कार होते हैं। जिनका संयोग किया जाय—कण्ठी, कण्ठा, चंपाकली आदि संयोज्य हैं। कड़ा, कुण्डल आदि असंयोज्य है। इनके बनाने की प्रक्रिया। (२०) पेन्द्रजाल इन्द्रजाल आदि शाखों के बनाये हुए कर्म, यद्भुत कर्म दिखाना। (२१) कौचुमारयोग सुन्दर बनने और बनाने की रीति। (२२) हस्तलाघव सभी कामों में शीघ्रता। (२३) विचित्रशकटयूप-भक्ष्यविकारक्रिया अनेक प्रकार के शाक, यूप, पेय भक्ष्य बनाने की प्रक्रिया, आहार बनाना। (२४) पानकरसरानासन्नयोजन विविध प्रकार के शयंत, आसन्न, अर्क, आदि बनाना। (२५) सूत्रीवानकर्म इसके सीवन, जतन और विरचन ये तीन भेद हैं। अंगरक्षा, कोट, कमीज, कुर्ता, आदि का सीना सीवन है। फटे कपड़ों का सीना जतन और कँधड़ी आदि सीना विरचन है। (२६) सूत्रीक्रीड़ा एक ही सूत को अनेक प्रकार बनाकर दिखाना। (२७) वीणाडमरकवाद्य वीणा और डमरु बजाना, यद्यपि ये भी वाद्य हैं, तथापि इनमें अधिक कठिनता होने के कारण ये अलग कहे गये हैं। (२८) प्रहेलिका विनोद के लिये पहेलियाँ, ये प्रसिद्ध हैं। (२९) प्रतिमाला इसे अग्न्याचरिका भी कहते हैं। एक प्रकार का शाखार्थ, क्रम से एक के कड़े हुए श्लोक के अन्तिमाक्षर जिस श्लोक के आदि में हो उसको कहना। (३०) दुर्वाचकयोग उच्चारण और अर्थ में कठिन शब्दों का प्रयोग करना जिसे कूट कहते हैं। (३१) पुस्तकवाचन महाभारत आदि को स्वर लय के साथ गाना। (३२) नाटकाख्यायिकादर्शन नाटक और आख्यायिका का ज्ञान प्राप्त करना। (३३) काव्यसमस्यापूरण सामान्य अभिप्राय ज्ञान कर कविता बनाना या कठिन अभिप्राय समझ कर श्लोक बना देना। त्रिपद समस्या मूक समस्या आदि इनके अनेक भेद हैं। (३४) पट्टिकावानविकल्प पलङ्ग, कुर्सी आदि को चेत या और किसी वस्तु से अनेक प्रकार का बनाना

(३५) तत्तकर्म विगड़ी हुई विज्ञों को सुधारना ।  
 (३६) तत्तत्ता बढ़ई के काम । (३७) वास्तुविद्या  
 गृह बनाने और सजाने की रीति । (३८) रूपरत्न-  
 परीक्षा सेना, चाँदी, हीरा, आदि का परखना ।  
 (३९) धातुवाद मिट्टी, पत्थर, तथा अन्यन्य  
 धातुओं को धुपक करने, शोधन करने और मिलाने  
 आदि की विद्या । (४०) मणिरागाकरज्ञान हीरा,  
 आदि रत्नों को रँगने की विद्या, इन मणियों के उत्प-  
 त्तिस्थान का ज्ञान करना (४१) वृत्तायुर्वेदयोग  
 वृत्तों को रोपना, बढ़ाना, अनेक दोषों को हटाना  
 और कलम आदि करने की विधि । (४२) मेपलाघ  
 ककुपकुटयुद्धविधि मेड़ा, जाबा और कुक्कुट  
 सूर्य के युद्ध की प्रक्रिया, इसे सजीवयुद्ध कहते हैं,  
 यह किसी प्रकार के उद्वाराव से किया जाना है ।  
 (४३) शुक्रसारिकाप्रलापन शुक्र, सारिका को  
 पड़ाना, ये पड़ाने पर मनुष्य भाषा में बोलते हैं ।  
 उत्सादन शरीर दधाना और तेल लगाना । (४४)  
 अक्षरमुष्टिकाकथन गुप्त बात को कहने के लिये  
 संक्षेप में कहना । (४५) श्लेच्छित्तविकल्प शब्द  
 शब्दों में लिखी हुई भी बात को अक्षरों के उलटने  
 पलटने से अर्थ समझना, या साझेतीक शब्दों का  
 अर्थ समझना । (४६) देशभाषाविज्ञान अन्य  
 देशियों के साथ व्यवहार करने के लिये उनकी भाषा  
 जानना । (४७) पुष्पशकटिका पुष्पों से निर्मित छोटी  
 गाड़ी । (४८) निमित्तज्ञान प्राकृतिक लक्षणों से,  
 अथवा पशुओं की चेष्टा बोलने आदि से भावी  
 शुभाशुभ फल का जानना । (४९) यन्त्रमन्त्रिका  
 गमन वृष्टि लड़ाई आदि के लिये सजीव या निर्जीव  
 यन्त्रों के लक्षण बनाने वाला शास्त्र, जिसे विरच-  
 कर्मा ने बनाया है । (५०) धारणमात्रिका पढ़े  
 हुए ग्रन्थों को स्मरण रखने के शास्त्र । (५१)  
 संपाद्य विना सुनी हुई बात को उसके जाननेवाले  
 के साथ पढ़ना । (५२) मानसी मन की बातें  
 जानने की विद्या । (५३) काव्यक्रिया संस्कृत,  
 प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में कविता करना ।  
 (५४) अभिधानकोष शब्दों का अर्थ निरूपण  
 करना । (५५) दर्शनाज्ञान छन्द बताने वाले शास्त्रों  
 का ज्ञान । (५६) क्रियाकल्प काव्य बनाने की विधि ।

(५७) छलित दूसरों को ठगने का उपाय । (५८)  
 वस्त्रगोपन अच्छे प्रकार से वस्त्र पहिनना फटे हुए  
 कपड़े को भी ऐसा पहिनना जिससे उसका फटना  
 मालूम न पड़े, बड़े वस्त्र को भी पहन कर छोटा  
 बना लेना । (५९) द्यूतविशेष निर्जीव द्यूत खेलना  
 (६०) आकर्षकोद्वा पामे का खेल, चौपड़ । (६१)  
 वालक्रीडनक गुड़िया आदि के द्वारा लड़कों को  
 प्रसन्न रखना । (६२) वैजयिकी स्वयं नम्र होना  
 और दूसरे को नम्र होने की शिक्षा देना, छोड़े और  
 हाथियों के चाल सिखाना । (६३) वैजयिकी  
 व्यायामिकी विजय प्राप्त करने और व्यायाम करने  
 की विद्या ।— येही चौसठ कलाएँ हैं ।

कलाई दे० (खी०) पहुँचा, दाल विशेष ।

कलाकन्द दे० (गु०) मिट्टाव विशेष, बरफी ।

कलाकर तत्० (गु०) चन्द्रमा, वृक्ष विशेष ।

कलाधर तत्० (गु०) चन्द्रमा, दण्डकछन्द का भेद  
 विशेष, शिव ।

कलाना दे० (कि०) भूतना, अकोरना ।

कलानाथ (गु०) चन्द्रमा, राधर्च विशेष ।

कलानिधि तत्० (गु०) चन्द्रमा, शशाङ्क ।

कलाप तत्० (गु०) [कल + पर + ड] समूह, देर,  
 राशि । प्रवर्जित संस्कृत व्याकरणों में से एक  
 व्याकरण । मोर की पूँछ, मुट्ठा, पूला, वाण,  
 तरकस, कमरबन्द, करधनी, चन्द्रमा, व्यापार, ग्राम  
 विशेष, वेद शास्त्र, अर्द्धचन्द्रकार अक्ष राशिनी  
 विशेष, भूषण ।—क (गु०) कविताओं के अर्थ  
 करने की रीति, चार श्लोकों का एक साथ अन्वय ।  
 समूह, वृद्धि, हाथी के गन्ने का रस्ता, मयूर ।

कलापट्टी (खी०) नहाजों की पटरियों में की सन्धिपों  
 को मन आदि से बन्द करने की क्रिया ।

कलापिन् (स्त्री०) मोरनी, राशि, नागर मोया ।

कलापी तत्० (गु०) मयूर पर्वी, बरगद का पृष्ठ,  
 \*कोकिल, वैशम्पायन का एक शिष्य ।

कलापूर्ण तत्० (गु०) पूर्णिमा का चन्द्रमा, प्रसिद्ध शिष्यी ।

कलायत्त दे० (गु०) मोना चाँदी का पतला तार जो  
 रेशम के साथ बटा जाय ।

कलायाज (गु०) दे० कला खेलने वाला, नट ।

कलाम (गु०) वाप्य, चसन, डक ।

कलार दे० (पु०) अति विशेष, कलवार, शुण्डी ।  
 कलारिन दे० (स्त्री०) कलवारिन, कलवार की स्त्री ।  
 कलाल दे० (पु०) देलो कलार ।  
 कलाचन्त तद्० (पु०) कथक, गायक, गानेवाला, गीत  
 नृत्य से जीविका करने वाली जाति ।  
 कलि तद्० (पु०) [ कल् + इ ] चौथा युग, कलह  
 पाप, सुरमा, वीर, शिव का नाम ।—कालि (पु०)  
 कलियुग ।—मल (पु०) कलिकाल के कुकर्म ।—  
 मलसरि (स्त्री०) कर्मनासा नदी ।  
 कलिका तद्० (स्त्री०) [ कलिक + आ ] अविकसित  
 पुष्प, कौपल, कलौजी, मुहूर्त, शंख ।  
 कलिङ्ग तद्० (पु०) देश विशेष, यह देश इंडोसा से  
 दक्षिण की ओर गोशवरी नदी के मुहाने पर है ।  
 इस देश की राजधानी का नाम कलिङ्ग नगर है,  
 एक मदीले रंग का पक्षी, कुटज, इन्द्रजौ, सिरस,  
 पाकर, तरबूज, रागविशेष ।  
 कलिङ्गड़ा (पु०) राग विशेष जो रात में गाया जाता है ।  
 (वि०) कलिङ्ग देश का वासी ।  
 कलिङ्गर तद्० (पु०) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत  
 पुराण प्रसिद्ध है, आज भी यह अपने पुराने नाम  
 से विख्यात है, यह शुन्देलखण्ड के अन्तर्गत करवी  
 के पास कलिङ्गर, नाम से प्रसिद्ध है । [ हुआ ।  
 कलित (वि०) सुन्दर, रुधिर, मनोहर, रचित, यनाथा  
 कलिन्द (पु०) सूर्य, यहदा, पर्वत विशेष, जिससे  
 यमुना निकलती है ।—जा (स्त्री०) यमुना ।  
 (पु०) पाप, कलुष, दोष ।  
 कलियाना (क्रि०) कलियों का लगाना, चिड़ियों के नये  
 पंख निकलना पुष्पित होना, फूलना ।  
 कलियुग तद्० (पु०) कर्मयुग, चौथायुग ।—ी (वि०)  
 कलियुग का, दुर्गाचारी, घुरा ।  
 कलिल (दे०) पंक, कीचद, चहल्ला, दलदल ।  
 कली तद्० (स्त्री०) कलिका, शोरी, अर्द्धविकसित पुष्प  
 यथा—  
 “अलि कलीहि पै जगैं आगे कौन हवाल”  
 —विहारी सरसई ।  
 कलीदा दे० (पु०) तरबूज, हिनवाना ।  
 कलुष तद्० (पु०) मैल, मलिनता, दोष, पाप ।  
 कलुषित तद्० (पु०) मलदूषित, पापग्रस्त, मलपूर्ण,  
 पातकी, दुष्कृती ।

कलूटा दे० (पु०) काला, कुरूप, कटाक्ष ।  
 कलेऊ तद्० (पु०) प्रातःकाल का भोजन, कलेवा,  
 जलपान ।  
 कलेजा दे० (पु०) अति विशेष, यकृत, वसाह, साहस,  
 हृदय की दृढता, छाती ।—उलटना अधिक कै  
 करना ।—फटना अधिक दुःख से व्याकुल होना ।  
 —उद्धा करना मनोरथ सिद्धि, अभिलाषा की  
 पूर्ति ।—जलना दुःखी होना, दूसरे की शक्ति  
 न सहना, अनुताप करना ।—कौपना भयभीत  
 होना ।—पर साँप लोटना अनुतप्त होना ।—  
 से लगा रखना अत्यन्त प्रेम काना ।—में डाल  
 रखना बहुत चाहना, किसी बात को छिपा रखना ।  
 कलेवर तद्० (पु०) देह, शरीर, काय, अङ्ग ।  
 कलेया तद्० (पु०) प्रातःकाल का जलपात्र ।  
 कलेस (क्लेश) तद्० (अ०) (पु०) दुःख, कष्ट,  
 आपत्ति, विपद ।  
 कलोर दे० (पु०) नयी गाय, ओसर ।  
 कलोल तद्० (पु०) खेलकूद, क्रीडा, कलोल, विनोद ।  
 कलोलिनी तद्० (स्त्री०) कलोलिनी, प्रवाह से बहने  
 वाली नदी, तरङ्गिणी, खेलने वाली नदी ।  
 कलौंजी दे० औषधि विशेष, कच्चे आमकी भाजी विशेष ।  
 कलक तद्० (पु०) मल, चूर्ण, पीठी, गूदा, पालेड,  
 शठता, कान का मैल, विच्छा, पाप, औषधि की  
 त्रयी बटनी, अवलेह, यहदा ।—फल तद्०  
 (पु०) अनार ।  
 कल्की तद्० (पु०) विष्णु का दसवाँ अवतार, कलियुग  
 में होने वाला, (पु०) पापी, अपराधी ।  
 कल्प तद्० (पु०) [ क्लिप् + अल ] उपाय, अभिप्राय,  
 विधि, प्रलय, ब्रह्मा का दिन, शास्त्र विशेष,  
 कर्मकाण्ड, विभाग, ब्रह्मा का एक दिन ।—क  
 (पु०) काटने वाला, नाई, कल्पना करने वाला ।  
 —तद् (पु०) देववृक्ष, कल्पवृक्ष, दाता ।—द्रुम  
 (पु०) अभिलषित फल देने वाला, सुरद्रुम ।—  
 पादप (पु०) कल्पवृक्ष ।—वास माय अर  
 प्रयाग वास ।—सूत्र (पु०) वैदिक कर्मकाण्ड,  
 सृष्टि के आरम्भ का समय ।—न्त (पु०)  
 [ कल्प + अन्त ] ब्रह्मा का दिवावसान, युगान्त,

प्रलयकाल, संसार काल ।—अन्तस्थायी (गु०)

नित्य स्थायी, अमर ।

कल्पना तत्त्वं (स्त्री०) रचना, बनावट ।

कल्पित तत्त्वं (गु०) [ क्लिप् + क ] रचित, आगोषित,

कृत्रिम, मिथ्या प्रकाशित, कल्पना सम्भूत ।—

उपमा (स्त्री०) उपमा विशेष । [ कृद्वचना ।

कलमलाना दे० (कि०) कलमलाना, कुलबुलाना,

कलमप तत्त्वं (गु०) पाप, अधर्म, अपराध, नरक

विशेष । [ चितकबारा, रत्न चिन्ता ।

कलमाप या कलमाप तत्त्वं (गु०) [ कल् + मप् + यच् ]

कल्प तत्त्वं (गु०) [ कल् + य ] प्राप्तःकाल, आयुष,

आने वाला दिन या व्यतीत दिन ।

कल्याण तत्त्वं (गु०) कुशल, मङ्गल, शुभ ।—मायं

(गु०) यह पुरुष जो बार बार विवाह करे किन्तु

वसकी स्त्री मर मर जाय ।

कल्याणधर्मन् तत्त्वं (गु०) यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी

थे और देवप्रान के रहनेवाले भोजल चरित्र थे

इनका बनाया साराधनी नामक ज्योतिष का ग्रन्थ

विद्यमान है । यह प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्राह्मिहिर के

समकालीन थे, ऐसा विश्वासों का अनुमान है ।

म० म० सुधाकर द्विवेदी जी के मतानुसार इनका

समय सन् ५७८ ई० अनुमान होता है ।

कल्याणी (गु०) आनन्द करने वाली, सुन्दरी ।

कल्ल तत्त्वं (गु०) कपिर, श्वेच्छिद्रिय-रहित, बहस ।

कल्लर दे० (गु०) ऊसर, चारभूमि, खार ।

कल्ला दे० (गु०) घेड़वा, गला, अंजुर, गोंका ।

कल्लाना दे० (कि०) जलन, वहन, जलन पड़ना,

पीड़ा होना ।

कल्लपरवरदे० (गु०) एक प्रकार का भुंजा हुआ चनेना ।

कल्लोज तत्त्वं (गु०) महातरङ्ग, बड़ी लहर, गर्जन,

श्रीङ्गा, अर्थात् हर्ष की हिलोर ।

कल्लोजिनी तत्त्वं (स्त्री०) तल्ल वाली नदी, धारा के

साथ बहने वाली नदी ।

कल्ल तत्त्वं (अ०) कलप, आगामी या अतीत दिन । यह

शब्द अतीत या अगले आने वाले दिन के अर्थ में

प्रयोग किया गया है, यह बात प्रसङ्ग से जानी

जाती है ।

कल्लारना (कि०) भूना, तलना ।

कल्लहण तत्त्वं (गु०) एक संस्कृत कवि का नाम, यह  
काश्मीर निवासी थे, और महाराजा जयसिंह के  
समय में विद्यमान थे, इन्होंने काश्मीर के राजाओं  
का इतिहास लिखा है, जिसका नाम राजतरङ्गिणी  
है । राजतरङ्गिणी से ११४८ ई० कल्लहण का समय  
निश्चित किया जाता है ।

कलच तत्त्वं (गु०) सप्ताह, अक्षर, धर्म, क्रिज्जम ।

कलन दे० कौन ।—कौनसी ।

कल्यो दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष । [ घ, क ।

कल्यो तत्त्वं (गु०) ककारादि पाँच अक्षर, क, ख, ग,

कल्यो तत्त्वं (गु०) प्राप्त, कौल, निवाला, लुक्ता ।

कलजित तत्त्वं (गु०) [ कलज + क ] प्रसित, शुक्ल,

खादित ।

कललीकृत तत्त्वं (गु०) अघोनी कृत, प्रसित, शुक्ल ।

कलप तत्त्वं (गु०) डाल, एक ऋषि का नाम ।

कलायद् दे० (स्त्री०) व्यवस्था, व्याकरण, नियम ।

कवि तत्त्वं (गु०) [ कव् + इन् ] कविता करने वाला,

काम्यकर्षा, प्रह्ला, व्यास, वाल्मीकि आदि, शुका-

चार्य, सूर्य, पंडित, उल्लू ।—क तत्त्वं (गु०)

लगाम ।—ता (स्त्री०) कविता, पद्य, श्लोक, छन्द,

हृदय के भावों को लौकिक पदार्थों के साथ मिलाकर

कर निवर्तित सन्दर्भ में प्रकाशित करना ।

कविता तत्त्वं (स्त्री०) [ कविता + अ ] लगाम, घोड़े

की रास, केवड़ा, कवई मंजली ।

कविताई दे० (स्त्री०) पद्य, पद्य रचना, काव्य ।

कविस्त (गु०) एक छन्द विशेष, काव्य भाद, बंगाली घैष ।

कविनासा तत्त्वं (स्त्री०) कर्मनाशा नदी, इसका

प्रयोग रामायण में किया गया है । [ की भूमि ।

कविमाता तत्त्वं (स्त्री०) शुकाचार्य की माता, काश्मीर

कविराज या कविराय तत्त्वं (गु०) प्रधान कवि, एक

संस्कृत कवि का नाम । बङ्गाल के सेनवंशी राजा

लक्ष्मण सेन की सभा में ये समा-पण्डित थे । अतएव

इनका समय भी लक्ष्मण सेन का समय ही माना

गया है । लक्ष्मण सेन का समय १११९ ई०

निश्चित हुआ है । इनके बनाये ग्रन्थ का नाम

राजवर्णनवीय है । इसमें रामायण और महाभारत

की कथा साथ ही साथ लिखी गई है । भाद,

बंगाली घैषों की उपाधि ।



कविशेखर तत् ( पु० ) महानकवि ।

कव्य तत् ( पु० ) पितरों को दिया जाने वाला अन्न ।—

चाह ( पु० ) अग्नि विशेष जिससे पितृव्य में आहुति दी जाती है । [ असमंजस ।

कशमकश दे० ( स्त्री० ) ऐंछातानी, मीड़भाड़, दुविधा,

कशर दे० ( पु० ) वृष विशेष, कचनार ।

कशा तत् ( स्त्री० ) [ कश + उ ] घोडा आदि को मारने

का चाबुक, कोड़ा, औंठी ।—घात ( पु० ) कशा-

प्रहार, कोड़ा मारना ।—हर् ( गु० ) [ कशा + अर्ह ]

कशाघात योग्य, कोड़ा मारने के उपयुक्त, अपराधी,

क्षोभी । [ कपड़ा ।

कशिपु ( पु० ) तक्षिणा, बिछौना, अख, भास, आसन,

कशेरू तत् ( पु० ) कन्द विशेष, जल में उत्पन्न होने

वाला एक प्रकार का कन्द, तृण कन्द ।

कश्चित तत् ( स्त्री० ) कोई, अनिर्दिष्ट मनुष्य ।

कश्मल तत् ( पु० ) मूच्छा, अचैतन्य, पाप ।

कश्मीर तत् ( पु० ) देश विशेष, काश्मीर ।—ज

( पु० ) केसर ।

कश्मीरि ( वि० ) कश्मीर देश का निवासी ।

कश्य तत् ( गु० ) कोड़ा मारने योग्य, दमन करने

योग्य, घोड़े का तक्क, शराब ।

कश्यप तत् ( पु० ) एक मुनि का नाम, यह महर्षि

मरीचि के पुत्र थे, देवता, दाघन, मनुष्य आदि

इन्हींसे उत्पन्न हुए हैं । अदिति और दिति दो

इनकी स्त्रियाँ थीं ।

कश्यपमेरु तत् ( पु० ) एक पर्वत और एक देश का

नाम, उसी पर्वत पर बसने के कारण काश्मीर को

कश्यपमेरु भी कहते हैं ।

कप तत् ( पु० ) [ कप् + अल् ] सोने चाँदी की परीचा

करने का पत्थर, कसौटी । [ आकर्षण, तर्ज्जन ।

कपय तत् ( पु० ) परखना, परीचार, जाँच, खींचना,

कपा तत् ( स्त्री० ) चाबुक, मेढ़ा ।

कपाय तत् ( पु० ) कपैया, कसाव, क्याय, काड़ा ।

कष्ट तत् ( पु० ) [ कप् + क् ] पीड़ा, क्लेश, क्लृप्,

विषद ।—कर ( गु० ) कष्टदायक, पीड़ा देने

वाला ।—कल्पना ( स्त्री० ) ईश्वरता की कल्पना,

निष्प्रयोजन कल्पना, दुःख की कल्पना करना ।

—साध्य ( गु० ) कष्ट से साधन करने योग्य ।

कष्टित तत् ( गु० ) [ कष्ट + इत् ] दुःखित, पीड़ित,

कष्टयुक्त ।

कष्टी तत् ( स्त्री० ) प्रसववेदना से दुःखी स्त्री ।

कस दे० ( स्त्री० ) कैसे, किस तरह से, क्यों, किस लिये,

काहे को, कैसा, क्या, प्रश्नार्थक अव्यय ।

कसक दे० ( पु० ) पीड़ा, दुःख, धीरे धीरे पीड़ा होना,

फटका, ( क्रि० ) कसकना, दरकना, फटना, पीड़ा

होना । [ स्वाद रहित ।

कसकसा दे० ( गु० ) किरकिरापन, कक्षरीलापन,

कसन दे० ( पु० ) कसने की क्रिया, घोड़े का तंग ।

कसना दे० ( क्रि० ) बांधना, खेंचना, पालना, जाँचना,

परीचा करना ।—री ( स्त्री० ) बांधने की वस्तु, वेढन

चोली, कसौटी, परीचा ।

कसमसात दे० ( क्रि० ) चरवाते हो, व्याकुल होते हैं ।

कसमसाना ( क्रि० ) हिक्किचाना, आगा पीछा

करना, सोचना, विचारना ।

कसवा ( पु० ) बड़ा गाँव ।

कसयाना दे० ( क्रि० ) जोर से बँधवाना, कसाना ।

कसाविन या कसवी ( स्त्री० ) रंडी, बेर्या ।

कसर ( स्त्री० ) कमी, न्यूनता ।

कसरत ( स्त्री० ) व्यायाम, परिश्रम ।

कसा दे० ( गु० ) संकुचित, सङ्कीर्ण, बँधा हुआ ।

कसाई दे० ( स्त्री० ) लैचाव, बाँधन, लैचाइट ( पु० )

घातक की जाति ।

कसार दे० ( पु० ) गेहूँ के आटे को धी में भूँचकर

उसमें चीनी मिलाते से जो मिठाई बनती है उसे

कसा कहते हैं, पजीरी ।

कसाला दे० ( पु० ) कष्ट, तकलीफ ।

कसि ( क्रि० ) कस कर, दया कर, परीचा करके ।

कसी दे० ( स्त्री० ) हलकी कुसी, भूमि नापने की रस्ती

विशेष, आला ।

कसीदा दे० ( पु० ) कपड़े पर सुईकारी ।

कसून ( पु० ) कंजी आँख का कोड़ा ।

कसूर ( पु० ) अपराध, पेच, दोष ।

कसे ( क्रि० ) कसने से, दवाने से, परीचा करने से ।

कसेरा तत् ( पु० ) जाति विशेष, उठेरा, कास्यकार,

भारतीया ।

कसेरू ( पु० ) फल विशेष जो तालाबों में उत्पन्न होता है ।

कसैया दे० (गु०) बंधनेवाला, कसने वाला, परमैया ।  
 कसैया दे० (गु०) कपाच, कसाव ।  
 कसैली (स्त्री०) कसैली वस्तु, सुपारी ।  
 कसोरा दे० (पु०) मिट्टी का प्याला ।  
 कसौटी तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर सेना चांदी आदि परखे जाते हैं ।  
 कसौंदी दे० (स्त्री०) कसौंजा, एक प्रकार का बौधा ।  
 कस्तुरा दे० (स्त्री०) शङ्ख सहित एक प्रकार की मछली ।  
 कस्तूरी तद्० (पु०) सुगन्धि द्रव्य, औषधि विशेष, सृगमद, हरिण के नाभि से उत्पन्न होने वाली सुगन्धित वस्तु । [ काजिक क्रिया ।  
 कह तत्० (क्रि०) कहता है, कहकर, कहै, एवं कहते तद्० (क्रि०) कहते हुए, कहते ही, कहता है ।  
 कहतूती दे० (स्त्री०) कथा, आख्यायिका, कहावत, लोकोक्ति, कहनूत । [ करना ।  
 कहना दे० (क्रि०) बोलना, प्रकाश करना, आज्ञा कहना दे० (क्रि०) जता देना, बता देना, बतला देना, प्रकाशित करना ।  
 कहनावत दे० (स्त्री०) दृष्टान्त, बात, लोकोक्ति, यथा—  
 " राई से पहाड़ होत साँची कहनावत है । "  
 कहनूत (स्त्री०) कहावत, कहनावत, बात ।  
 कहरत दे० (क्रि०) कहता है, कराहता है, पीड़ा सूचक शब्द करता है । [ चिलाना, काँलना, कराहना ।  
 कहरना दे० (क्रि०) आह भरना, चीख मारना, कहलाना दे० (क्रि०) सन्देश भेजना, बुलवाना, जतवाना, जनवाना । [ निर्भीक ।  
 कहवैया दे० (गु०) वीठ, निर्भय, निडर, स्पष्ट-वक्ता, कहूँ (प्रत्यय) के लिये, वास्ते ।  
 " हम कहूँ रथ राज बाजि बनाये । "—तुलसी ।  
 कहा, कहा तो, को ।  
 कहहि दे० (क्रि०) कहता है, कहँ ।  
 कहाँ दे० (अ०) किवर, किस स्थान में, अधिकरण, प्रत्ययवाची अव्यय । [ विलम्ब तक ।  
 कहाँतक दे० (अ०) कथतक, कितनी दूरतक, कितने कहाँ से दे० किस स्थान से, किस ओर से ।  
 कहा दे० (पु०) कथन, वचन, आज्ञा, आदेश ।—सुनी (स्त्री०) वाद विवाद, झगड़ा ।

कहाकही दे० (स्त्री०) कथोपकथन, शक्ति प्रत्युक्ति यातावाती, झगड़ा । [ गद्दी बात ।  
 कहानी दे० (स्त्री०) कथा, किस्सा, कहावत, वर्णन, कहार दे० (पु०) घीवर, पालकी डोने वाला, काम करने वाला, शूद्र वर्ण की एक जाति ।  
 कहावत दे० (स्त्री०) कथा, वार्ता, दृष्टान्त ।  
 कहाव दे० (पु०) कथन, वर्णन, कहावत, कथा वार्ता, ययान ।  
 कहि दे० कहकर, कहँ, कविता में प्रयोग किया जाता है ।—जात कहा जाता है, वर्णन बिया जाता है ।  
 कहौ (क्रि०) कह दो, वर्णन की, ययान की ।  
 कहौं दे० (अ०) कहाँ, किवर, किसी स्थान में, अतिश्रित अधिकरण वाचक अव्यय । [ किसी स्थान पर ।  
 कहौं न कहौं दे० किसी न किसी स्थान पर, जिस कहूँ (अ०) कहौं, किसी और, वहाँ ।  
 कहूँ दे० कहौं, किसी स्थान पर, किसी और पर ।  
 कहउ दे० (क्रि०) कहा, वर्णन किया, कह दिया ।  
 कहउँ दे० (क्रि०) मैंने कहा, मैंने वर्णन किया ।  
 कहैऊ (क्रि०) मैंने कहा, ययान किया ।  
 काँइयाँ (गु०) धूर्त, चालाक, करबी ।  
 काँकर दे० (पु०) बङ्कड़, रोड़ा, पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े ।—ही छोटी कंकाई । [ आकाङ्क्षा ।  
 काँता तद्० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ, चाह, काँख तद्० (स्त्री०) पारव, कच, कोप, पाँजर, चाह, ओर, बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा ।  
 काँखना तद्० (क्रि०) कहना, कूटना, आह भरना, मलाबोध होने पर वस्ते निकालने के लिये पेट की वायु को दवाना ।  
 काँगन तद्० (पु०) बङ्कण, कँगना, दाघ की कलाई में पहनने का शिथों का शूषण विशेष, एक प्रकार का अन्न, जिसे फकुनी भी कहते हैं ।  
 काँगनी तद्० (स्त्री०) देखो काँगन ।  
 काँशी दे० (स्त्री०) धूनी, चोली, बाग रखने का यत्न । [ शीश, दर्पण, रोग विशेष ।  
 काँच दे० (पु०) अपक्व, बिना पका हुआ, कषा, काँचा दे० (गु०) कषा, बिना पका, असिद्ध, बिना सिद्ध हुआ, यह शब्द मत्र भाषा की कविता में प्रायः प्रयोग किया जाता है ।

काँचरी या काँचुली तद्० काँचली, अँगिया, चोली, कन्चुकी, जनानी कुर्ती, साँप की काँचुल ।  
काँजी तत्० ( पु० ) पेयविशेष, माँड़ विशेष, प्रक्रिया से भात का बनाया हुआ जल ।

काँट या काँटा तत्० ( पु० ) कण्टक, शाल, शूल, तौलने के लिये छोटी तराजू, वंशी जिससे मञ्जलियाँ पकड़ी जाती हैं । शरीर में चुभने वाली वस्तु ।—सा निकल जाना दुःखों से छुटकारा पाना, सङ्कट से उबरना, किसी आपत्ति से बचना ।—काँटों पर घसीटना भ्रष्टाचारक वाक्य अपनी प्रशंसा सुनकर भ्रष्टा प्रकट करने के लिये ऐसा कहा जाता है । काँटे घोंना अपने या दूसरों को दुःख पहुँचाने का प्रयत्न करना, आप ही आप दुःख में फँसना, दुःख का सामना करना ।

काँठा तद्० ( पु० ) गला, उपकण्ठ, समीप, पास, यथा—

“ यमुना के काँटे कन्हैया मेरो यार ”

काँड़ना दे० ( कि० ) पीटना, मारना, कुचलना, रौंदना ।  
काँड़ी दे० ( स्त्री० ) उखली, भारी चीजें टकेलने का काठ का डंडा, जहाज़ के लंगर की डाँड़ी, घाँस या लकड़ी की धुनिया जो छप्पर या छत को सहारने को लगाई जाती है । अरहर का सूखा डँठल ।

काँधरी ( स्त्री० ) कंघा, कधरी, गुड़ड़ी ।

काँदव ( पु० ) पङ्क, कीचड़ ।

काँदा दे० ( पु० ) प्याज, पलाण्डु, अरबी, मूल विशेष ।

काँदू तद्० ( पु० ) जाति विशेष, भड़भूजा, हलवाई, चीनी का हाड़ा ।

काँदी दे० ( पु० ) कीचड़, चहला, पङ्क, कादा, कीच ।

काँधना दे० ( कि० ) उपकृत करना, स्वीकार करना, धर्तीकार करना, मानना, भार सहना, उठाना ।

काँध या काँधा तद्० ( पु० ) स्कन्ध, काँध, कंधा, कंध ।—देना सहायता देना, कार्य बटा लेना ।

काँप दे० ( पु० ) दुःख, दयाव, व्याकुलता ।—चाढ़ाना दुःखित करना, व्याकुल करना, दवाना ।

काँपना तद्० ( कि० ) हिलना, धरधराना, डुलना, कम्पित होना, कपना ।

काँवर ( स्त्री० ) गह्वाजल से जाने की वहाँगी विशेष ।

काँवरिया ( पु० ) कामार्थी, काँवर से जाने वाला ।

काँस तद्० ( पु० ) तृण विशेष, धातु विशेष ।

काँसा तद्० ( पु० ) एक प्रकार की धातु जो पीतल और ताँबे के मेल से बनती है । कसकुट ।

काँस्य तद्० ( पु० ) देखो—काँसा ।—कार ( पु० ) कसेरा, कैसारी ।

का प्रत्यय—सम्बन्धसूचक या पट्टी विभक्ति का चिन्ह ।

काई दे० ( स्त्री० ) कीट, जलमैत्र, शैवाल, सिंवाल, तृण विशेष जो जल में उत्पन्न होता है, किसी के ।

काऊ दे० ( कि० वि० ) कमी, कमहूँ, किसी ने, किसी से, कोई ।

काक तद्० ( पु० ) कौवा, काग, वायल, पक्षिविशेष ।

—जङ्घा ( स्त्री० ) औपधि विशेष, चकलेनी, घुँघची, एक प्रकार की मूरी ।—टम्बपुष्पी ( स्त्री० ) औपधि विशेष, महामुण्डी ।—तालीय

अकस्मात् किसी कार्य का होना ।—तिक ( स्त्री० ) काकजङ्घा ।—दन्त ( पु० ) असम्भव, अदभुत बात ।—पच्छ य पक्ष पट्टा, जुरफी, सामने

के बाल बनवाना और कनपटी की ओर छोड़ देना, कौवे के पर ।—पदी औपधि विशेष ।—वन्ध्या ( स्त्री० ) सकृत्प्रसूता स्त्री जिसके एक ही बार

लड़का उत्पन्न हुआ हो ।

काकड़ा दे० ( पु० ) चर्मविशेष, एक प्रकार का चमड़ा ।—सिंघी ( पु० ) औपधि विशेष ।

काकभुशुण्डि या कागभुशुण्ड तद्० ( पु० ) एक मुनि का नाम जिसका मुँह काक के समान था, रामायण का प्रसिद्ध वक्ता ।

काकरी दे० ( स्त्री० ) ककड़ी ।

काकली ( स्त्री० ) मधु, ध्वनि, साठीबान, गुल्लार, संगीत का स्थान विशेष, सँघ लगाने की सधरी ।

काका दे० ( पु० ) पितृव्य, चाचा, पिता का छोटा भाई, मसी, काकोली, कठभूर, घुघची, मकोय ।

—तृष्ठा ( पु० ) पत्नी विशेष ।

काकिणी या काकिननी तद्० ( स्त्री० ) घोस कौड़ी, पाँव गण्डा कौड़ी, छदाम, माशे का चौलाई भाग, घुँघची ।

[ पत्नी, कौए की मादा ।

काकी दे० ( स्त्री० ) काका की स्त्री, चाची, पितृव्य-काकु तद्० ( पु० ) व्यङ्ग्य वचन, पकोकि, टेढ़ी बोली,

स्वर विशेष के द्वारा निपेक्ष वाक्य की विधि और

विधि वाक्य से गये का अर्थ निकालना, ताना ।

—क्ति ( स्त्री० ) [ काकु + क्ति ] कातराक्ति, क्ति कथन । [ राजा ।

फाकुत्स्य ( पु० ) धीरामचन्द्र, ककुत्स्य यशोवन्भव एक फाकोदर तद् ( पु० ) [ का० + उदर ] सुजङ्ग, सर्प, कयी, साँप, कौषा का पेट । [ विपैत्री धातु । फाकोल तद् ( पु० ) नरक विशेष, एक प्रकार की फाकोली तद् ( स्त्री० ) शोषधि विशेष, उग्र-नाराक शोषधि ।

फाकोलूकिका तद् ( स्त्री० ) काक और उल्लू के समान शत्रुता, अधिक शत्रुता ।

फाल तद् ( स्त्री० ) फाल, कच, पारव ।—अलाई ( स्त्री० ) कलौरी, पारवैयण, फाल का घाव ।—सोती फाल से कन्धे तक ।

फाग दे० ( पु० ) काक, कौषा, वृषविशेष, घोटल में खगायी जाने वाली डाँट ।—सुर ( पु० ) एक दैत्य का नाम जिसे श्री कृष्णचन्द्र ने मारा था । फाल की प्रेरणा से काक का रूप धारण करके श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल में गया था, वहाँ इसे श्रीकृष्ण ने मारा ।—पासी ( स्त्री० ) भाग जो प्रातःकाल छानी जाय, मोती विशेष ।

फागद या फागद दे० ( पु० ) फागद, पत्र ।

फाच तद् ( पु० ) स्वच्छमृत्तिष्ठा विशेष, मणि, रफटिक, शीशा, आईना ।—मणि ( पु० ) रफटिक मणि ।

फाचक तद् ( पु० ) पाषाण विशेष, रफटिक, फाच ।

फाचा दे० ( पु० ) कछा, मधुरा, असिद्ध ।

फाचरी ( स्त्री० ) केंचुली, सूखी सेंध, कचरी ।

फाचा ( वि० ) कछा, मोह, कायर ।

फाची ( स्त्री० ) दुर्घंडी, दूध रखने की हाँड़ी ।

फाचो ( वि० ) असार, मिथ्या ।

फाद तद् ( पु० ) निकट, समीप, नदी का किनारा, लॉग, घोती का अन्तिम छोर ।

फाद्वन दे० ( स्त्री० ) काछी की छी, फाद्वन ।

फाद्वना दे० ( कि० ) काछी मारना, बटोरना, बनाना, पहनना ।

फाद्वनी दे० ( स्त्री० ) कसकर और कुछ ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई घोती जिसकी दोनों काछी पीछे खोस ली जाती है ।

फाद्विय दे० काछना चाहिये, पहनना उचित है, पहनो, परिधान करो, काछिये, पहनिये । यथाः—

“ जल फाद्विय तल नाचिय नाचा ” रासायण ।

फाछी दे० ( पु० ) जाति विशेष, तरकारी शोने श्रौं मेघने वाली हिन्दू जाति विशेष का मनुष्य, मुराव ।

फाछे दे० ( कि० ) पहने हुए, बनाने हुए, बनाने से, काछने से, ( कि० वि० ) निकट, पास ।

फाज तद् ( पु० ) काज, कर्म, काम धन्धा, क्रिया, कारज —कर्म, क्रियाकर्म, क्रिया और दूसरे व्यापार । [ सुरमा, आल में लगाने का आजन ।

फाजर या फाजल तद् ( पु० ) कज्जल, अक्षन, फाजलि तद् ( पु० ) हस्त विशेष, मन्त्र विशेष ।

फाजी दे० ( पु० ) उद्योगी परिश्रमी, मुसलमान जाति

के विशारक या व्यवस्थापक, फाजी ।

फाजी दे० ( स्त्री० ) सड़ा हुआ राई का जल ।

फाजू दे० ( पु० ) एक प्रकार की सूखी मेवा ।

फाजे दे० बिये, निमित्त, हेतु ।

फाज्जन तद् ( पु० ) सुवर्ण, स्वर्ण, हेम, सोना, पद्म, केशर, स्वनामस्थान पुष्प, वृषविशेष ।—क ( पु० ) धातुविशेष, हस्ताल । कदली ( पु० ) सुवर्णकदली, चम्पा, कंदा ।—गिरि ( पु० ) सुमेरु पर्वत, सुवर्ण पर्वत ।—चम्र ( पु० ) सुवर्ण पर्वत, सुमेरु ।—गुणिका ( स्त्री० ) मुसली, शोषधिविशेष ।—मय ( पु० ) [ फाज्जन + मयट् ] कनकमय, सुवर्ण का ।—चल ( पु० ) सुवर्ण का पर्वत, सुमेरु पर्वत ।

फाज्जनार तद् ( पु० ) कवतार का वृक्ष ।

फाज्जनी तद् ( स्त्री० ) हरिद्रा, हरी । [ भाग ।

फाज्जि तद् ( पु० ) मेखला, चन्द्रहार, करवनी, मण्य

फाज्जी तद् ( स्त्री० ) [ फज्जि + ई ] मेखला, स्त्रियों के कटि देश में पहनने का गहना । सप्त पुरियों में से एक पुरी, तीर्थ विशेष, इसके दो भाग हैं, एक का नाम विष्णुकाम्बी और दूसरे का नाम शिव-काचची है ।—पद ( पु० ) जघन, नितम्ब ।

फाज्जिक तद् ( पु० ) वासी भात से निकाला हुआ जल, माण्ड, पसाया जल । [ लण्ड खण्ड फण्य ।

फाट दे० ( पु० ) चीरा, कटा हुआ, मैल, मलीनता

काटकूट दे० (स्त्री०) छूटि छूट, कतर ब्योत, छेदन  
भेदन ।—ऊरना कतरना, काटना, काट डालना ।

काटखाना दे० (कि०) काटना, दंशन करना,  
आक्रमण करना ।

काटना दे० (कि०) छेदन करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़े  
करना, कतरना, चीरना, काटखाना, खा जाना,  
खा लेना, कुढ़ाड़ी या थारे आदि से काटना,  
कम करना ।

काटि दे० (पु०) कमर, कटि, मध्यभाग, रामायण में  
कटि का काटि प्रयोग किया गया है ।

काटू दे० (पु०) काटने वाला, छेदक, लकड़हारा या  
लकड़हार, कटहा ।

काट तद् (पु०) काट, लकड़ी, दाढ़, काठी ।—  
कवाड़ (वा०) काट की वस्तु ।—का उल्लू  
(वा०) मूर्ख, नासमझ, भनाड़ी ।—चवाना  
(वा०) दुःख से निर्वाह करना, काल काटना,  
समय बिताना ।—मे पाँव देना स्वयं दुःख  
भोगने के लिये उद्यत होना ।—पुतली (वा०)  
लकड़ी की मूर्ति के समान दूसरों की इच्छा से  
चलने वाला, नितान्त अनभिज्ञ, मूर्ख ।

काट-कौड़ा दे० (स्त्री०) खटमल उड़ीस, खाट का  
कीरा, खटकिरवा । [कौटा ।

काटड़ा दे० (पु०) काट का बना हुआ यर्तन,  
काटमांडू तद् (पु०) नेपाल राज्य की राजधानी ।

काटिग्य तद् (पु०) कठिनता, दृढ़ता, निष्ठुरता,  
कठोरता । [भाग विशेष ।

काटियावाड़ (पु०) देश विशेष, गुजरात का एक  
काठो दे० (स्त्री०) खोल, शरीर का गठन, काट,  
डौल, घोड़े पर रखने की जीन, कटियावाड़ में रहने  
वाले क्षत्रियों की एक जाति ।

काड़ा दे० (पु०) युवा भैंसा ।

काढ़त (कि०) निकालता है, निकालते ही ।

काढ़ना दे० (कि०) निकालना, उधेड़ना, बाहर  
करना, निर्माण करना, बेल बूटे निकालना, घोड़े  
को चाल सिखाना ।

काढ़ा दे० (पु०) वषाण, कपाय, कप । [(स्त्री०) काशी ।  
काणा तद् (पु०) एक थाँल वाला, एकाग्र, करना,  
काण्ड तद् (पु०) खण्ड, प्रकरण, खेल, बाण, शर

व्यापार, दण्ड, वार्ग, परिच्छेद, अवसर, प्रस्ताव ।

—कार (पु०) बाण बनाने वाला ।—ग्रह (पु०)  
प्रकरण ज्ञान ।—पट जवनिका, पर्दा ।—पृष्ठ  
शय से जीने वाला, व्याध ।—रुहा (स्त्री०)  
कटु की वृक्ष । [पक, मुनि विशेष ।

काण्डर्पि तद् (पु०) वेद की एक शाखा का अध्या-  
कातना तद् (कि०) सूत काटना, रुई से सूत बनाना,  
चरखे से सूत बनाना ।

कातर तद् (पु०) भयभीत, व्याकुल, डरपोक, किसी  
वस्तु में आसक्ति के कारण घबराहट, अधीर,  
आतं ।—ता (स्त्री०) व्याकुलता, वृद्धेग ।

काता (पु०) काता हुआ सूत, डोरा ।

कातिक तद् (पु०) आठवाँ महीना, देवताओं के  
उठने का मास, कार्तिक मास ।

कातिकी तद् (स्त्री०) कातिकी की वस्तु, कार्तिक  
पूर्णिमा । [वाला ।

काती दे० (स्त्री०) छोटी तलवार । (पु०) सूत कातने  
कात्यायन तद् (पु०) विख्यात धर्मशास्त्रकार,

(१) विश्वामित्र के कुल में इनका जन्म हुआ  
था, कात्यायन-श्रौतसूत्र और कात्यायन गृह्यसूत्र  
नामक दो ग्रन्थ इनके बनाये सर्वमान्य हैं । (२)  
प्रसिद्ध स्मृतिकर्ता, यह महर्षि गोभिल के पुत्र थे,  
“कर्मप्रदाय” नामक इनका बनाया एक स्मृति  
ग्रन्थ है । (३) प्रसिद्ध वैशाकरण, पाणिनी के  
सूत्रों पर इन्होंने वास्तिक बनाया है । इनके पिता  
का नाम सोमदत्त था, वे वत्सवंशियों की राज-  
धानी कौशाभ्य में रहते थे । इनका दूसरा नाम  
वररुचि था ।

कात्यायनी (स्त्री०) देवी विशेष, स्मृतिविशेष, कात्या-  
यनवंशी भगवती की एक मूर्ति, कात्यायन ने  
सब से पहले इसकी पूजा की थी । इसी कारण  
इसको कात्यायनी कहते हैं । इसकी कथा मार्कण्डेय  
पुराण में विस्तार से लिखी है, भगुवा ब्रह्म पढ़ने-  
वाली श्रुषेड़ विधवा स्त्री, याज्ञवल्क्य की स्त्री का  
नाम ।

कादम्ब तद् (पु०) कलहंम, राजहंस, सुन्दर हंस ।  
कदम्ब का पेड़, हँस, बाण, दक्षिण का एक प्राचीन  
राजवंश ।

कादम्बरी तत् ( स्त्री० ) मदिरा, मद्य, सुरा, सरस्वती, मेवा या ब्याल की बाखी, ग्रन्थ विशेष, बाण-भट्ट के द्वारा निर्मित कादम्बरी नामक ग्रन्थ की नायिका । [ सङ्घ ।

कादम्बिनी तत् ( स्त्री० ) मेवमाला, मेघश्रेणी, मेघ-कादर दे० ( गु० ) कातर, डरपोंक, भीरु, सुल, नामदं, अपीर, घराया हुआ । —ता ( स्त्री० ) मय, डर, व्याकुलता ।

कादराई दे० ( स्त्री० ) मय, व्याकुलता, डर, भीरुताई ।

कादा दे० ( पु० ) कर्दो, कीचड़, पङ्क, बहला ।

कान ( पु० ) कण, श्रवण, श्रवणोद्भूत ( स्त्री० ) ज्ञान, लज्जा, शपथ, कृतम । —पेंठन वा अमेठना कान खींचना, तर्जन करना, भर्त्सन करना । —भरना ( वा० ) विरोध डालना, किसी के विरुद्ध भड़काना ।

—परजू न चलना असाधधानता, प्रमाद ।

—पर रखना ( वा० ) स्मरण रखना, इस्तेमाल करना । —पर हाथ धरना अस्वीकार करना,

नहीं मानना । —पकड़ना ( वा० ) अपनी मूल समझ लेना, अच्छे उपदेश मानना । —फूटना

पहरा होना, किसी की न सुनना, कानों को दुःख पहुँचना । —फोड़ना ( वा० ) बड़ा शब्द, अमानक ध्वनि । —फूंकना अपने अधीन करना, मंत्र देना । —फुंकना ( वा० ) सुनने की अभिलाषा ।

—दना कर चला जाना ( वा० ) भाग जाना, किसी बात का निपटारा बिधे बिना या उत्तर सुने बिना बसे जाना । —धरना ( वा० ) सावधानी से सुनना । —दे सुनना ( वा० ) सावधानी से सुनना ।

—देना सुनने की ओर सावधानी करना । —काटना ( वा० ) पराजित करना, छुड़ाना । —खड़े होना ( वा० ) सावधान होना, सजग हो जाना ।

—खोल देना ( वा० ) सावधान करना, सजग करना । —लगाना ( वा० ) ध्यान देना । —मलना ( वा० ) ताड़ना करना, सजा देना । —में उंगली देकर रहना ( वा० ) उदासीन होना । —में तेल डालना, नहीं सुनना, उपेक्षा करना । —में तेल डालकर सो रहना ( वा० ) विलकुल उदासीनता दिखाना, असावधानी । —न हिलाना कुछ उत्तर न देना, उपेक्षा की दृष्टि से देखना । —फूँसी

मन्त्रणा करना । —कानी करना ( वा० ) चर्चा करना, अफवाह उड़ाना । —कान कदना ( वा० ) अति गुप्त रूप से कहना ।

कानकुञ्ज ( पु० ) कनौजिया ब्राह्मण, कान्यकुञ्ज देशवासी ।

कानड़ा ( वि० ) काना, एक थाल वाला, एक राग विशेष ।

कानन तत् ( पु० ) वन, शरण्य, कान का बहुवचन, दो कान, मल्ला का मुँह ।

काना ( वि० ) एक थाल वाला ।

कानाफूसी ( स्त्री० ) कान के पास धीरे धीरे कहें हुए बात ।

कानि दे० ( पु० ) लज्जा, मान, सङ्कोच, शर्म एक थाल वाली, खानि ।

कानी दे० ( स्त्री० ) एक थाल वाली स्त्री, तथ से छोटी जैसे कानी बंगली, शर्म, लज्जा, सङ्कोच ।

कानीन तत् ( पु० ) कण और व्यास, अविवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र, कन्याजात, अनुदा पुत्र, अविवाहिता गर्भज ।

कानून ( पु० ) विधि, नियम, आर्हान ।

कान्त तत् ( पु० ) [ कम् + क्त ] पति, कुङ्कुम, लौह विशेष, श्रीकृष्णचन्द्र, स्वामी, मित्र, चन्द्रमा, विष्णु, शिव, कार्तिकेय, वसन्त ऋतु । —लौह ( पु० ) अयस्कान्त, शुद्ध लौह, कान्तिसार लौह ।

कान्ता ( स्त्री० ) नारी, सर्वाङ्गसुन्दरी स्त्री ।

कान्तार तत् ( पु० ) महावन, कुपथ, दुर्गम पथ ।

कान्ताहा तत् ( स्त्री० ) औषधि विशेष, मिषङ्गु ।

कान्ति तत् ( स्त्री० ) शोभा, दीप्ति, चन्द्रमा की एक कला । —दायक ( पु० ) शोभादायक दीप्ति

काक । —पापाण ( पु० ) पुण्यक पत्थर ।

कान्दा तत् ( पु० ) मूल विशेष, जल का कन्द, कल कंदरा ।

काँधी दे० ( क्रि० ) कंधे पर उठा कर स्वीकार ।

कान्यकुञ्ज तत् ( पु० ) [ कान्य + कुञ्ज ] देश और ब्राह्मण विशेष, इसका नाम और प्रचलित अपभ्रंश कन्नौज है, यह नगर कुछ दिनों तक भारत की राजधानी रह चुका है ।

कान्हू } दे० ( पु० ) भगवान् श्री कृष्णचन्द्र जी

का एक नाम ।

कान्हडा दे० ( पु० ) एक रागीनी का नाम ।

कापट्य तत्त्वं ( पु० ) कपटता, शठता, धूर्तता, छल, प्रतारण ।  
 कापट्टी ( पु० ) कठियावाड़ प्रान्त में बसने वाली एक जाति । [ रास्ता, बुरा रास्ता ।  
 कापथ तत्त्वं ( पु० ) कुपथ, कुत्सित मार्ग, दुर्गम काँपा. दे० ( कि० ) डरा, धराया ।  
 कापाल तत्त्वं ( पु० ) प्राचीन अस्त्र विशेष, बाणविहंग, एक प्रकार की सुलह या सन्धि । -ी ( पु० ) शिव, वर्ण सङ्कर विशेष ।  
 कापालिक तत्त्वं ( पु० ) वर्णसङ्कर जाति विशेष, वाममार्गी, अघोर सम्प्रदाय के मनुष्य, कोढ़ का एक भेद विशेष, यह बड़ा विषम है और कष्ट-साध्य होता है । [ बेचा, भूरा ।  
 कापिल तत्त्वं ( पु० ) साङ्ख्य शास्त्र, साङ्ख्यशास्त्र, कापुरुष तत्त्वं ( पु० ) कुरित पुरुष, निम्नित पुरुष-कायर, निकम्मा । -त्व ( पु० ) अधमत्व, नीचता ।  
 काफिया दे० ( पु० ) तुक, सन्, अन्तिम अनुप्रास ।  
 काफिर दे० ( वि० ) निर्दयी, कठोर, काफिर देशवासी, नास्तिक, जो मुसलमान न हो ।  
 काफो दे० ( वि० ) पर्याप्त, पूर्ण, बस, पूरा, पर्याप्त, मतलब भर के किया, पर्याप्त ।  
 काफूर ( पु० ) कपूर ।  
 कावा दे० ( पु० ) मुसलमानों के एक तीर्थ का नाम जो धरम में है और जहाँ हज़रत मोहम्मद रहा करते थे ।  
 काविज़ ( वि० ) अधिकार प्राप्त, अधिकार रखने वाला काबुल ( पु० ) नदी विशेष, अफगानिस्तान का एक प्रधान नगर या उसका पुराना नाम ।  
 काबुली ( पु० ) काबुल देशवासी ।  
 काबू ( पु० ) कब्ज़ा, हकित्तार, बल, चारा, शक्ति ।  
 काम तत्त्वं ( पु० ) [ कम् + धञ् ] मदन, कन्दर्प, इच्छा, वासना, अभिलाष, रमणच्छा, कार्य, काम, चार पदार्थों में ( धर्म, यम, काम, मोक्ष ) से एक, यथावा, सुन्दर, विषय, धन्य । -आना ( वा० ) काम में आना, व्यवहार में आना, रथ में हत होना । -पूरा करना ( वा० ) समाप्त करना, समाप्ति । -चलाना किस प्रकार काम निकालना । -में लाना ( वा० ) उपयोग करना । -निकालना ( वा० ) इच्छापूर्ण करना ।

—काज कारोबार, कामधन्वा । —कला ( स्त्री० ) कामदेव-पत्नी, चन्द्रमा की सोलह कला, काम-शास्त्र, मैथुन, रति । —कामी ( पु० ) कामासक्त, सम्भोगी । —कार ( पु० ) कामेच्छु, सम्भोगी । —केलि ( स्त्री० ) सुरत, रमणक्रिया । —चर ( वि० ) इच्छानुसार घूमने फिरने वाला । —चलाऊ ( वि० ) कूड़ कुड़ उपयोगी । —चारी ( पु० ) कामुक, स्वतन्त्र, स्वच्छन्द । —चोर ( वि० ) चालसी । —द ( पु० ) कामदाता, मनोरथपूरक । —तरु ( पु० ) कल्पवृक्ष, सुरतरु । —द गाई ( स्त्री० ) कामधेनु । —दा ( स्त्री० ) कामधेनु, भगवती । —दुधा ( स्त्री० ) कामधेनु, अभिलाषा पूर्ण करनेवाली गौ । —दूती ( स्त्री० ) वसन्त काल कुम्भी । —देव ( पु० ) मदन, कन्दर्प । —धेनु ( स्त्री० ) देवताओं की गौ । —रूप ( पु० ) इच्छा-नुसार रूपधारण करने वाला, देशविशेष जो आसाम में है । —उरु तत्त्वं ( पु० ) कल्पवृक्ष, देववृक्ष, स्वेच्छानुसार चलने वाला, अमरतिहत-मनोरथ । —शास्त्र ( पु० ) मैथुन शास्त्र ।  
 कामदक तत्त्वं ( पु० ) भारतीय एक नैतिक विद्वान् का नाम, इनके बगये ग्रन्थ का नाम कामन्द-कीय नीति है, चाणक्य के पीछे उत्पन्न हुए थे ।  
 कामदानी ( स्त्री० ) कलावत् यथवा सलमासितारे के कटे हुए बटे व बेल । [ मंगौर, चाह, सुराद ।  
 कामना तत्त्वं ( स्त्री ) इच्छा, वासना वाञ्छा, कामपत्नी तत्त्वं ( स्त्री० ) रति, कामदेव की स्त्री ।  
 कामपाल तत्त्वं ( पु० ) पल्लव, वज्राम, महादेव ।  
 कामपीडित तत्त्वं ( पु० ) कामसक्त, काम से दुःखी ।  
 काममत्त तत्त्वं ( पु० ) इच्छानुसार भोजन करनेवाला, अक्षयामक्षय विचाररहित ।  
 कामयाव ( पु० ) सफल, उत्तर्ण ।  
 कामरी दे० ( स्त्री० ) कम्बल, लोई, कमरी ।  
 कामरूप तत्त्वं ( पु० ) इच्छानुसार रूप धरने वाला, स्वेच्छाचारी, सुन्दर, देशविशेष ।  
 कामरूपी तत्त्वं ( पु० ) वियाधर, बहुरूपिया ।  
 कामला तत्त्वं ( स्त्री० ) पाण्डु रोग ।  
 कामलोल तत्त्वं ( पु० ) चञ्चल चलचित ।  
 कामशर तत्त्वं ( पु० ) कन्दर्प बाण ।

कामाद्व्या तत्त्वं ( स्त्री० ) देवी विशेष, इन देवी का स्थान डिब्रूगढ़-आसाम में है ।  
 कामातुर तत्त्वं ( पु० ) कामार्त, काम पीड़ित, कामुक, समागम की इच्छा से व्याकुल ।  
 कामात्मा तत्त्वं ( पु० ) कामुक, लम्पट, व्यभिचारी ।  
 कामाधिकार तत्त्वं ( पु० ) प्रेम की व्यपत्ति, स्वेच्छाधीन, काम का अधिकारी ।  
 कामाधिष्ठि तत्त्वं ( पु० ) कामाभिभूत, कामवशग ।  
 कामान्ध तत्त्वं ( पु० ) [ काम + अन्ध ] काम के वशीभूत, काम के द्वारा हिताहित-ज्ञानशून्य, विवेक शून्य ।  
 कामायुद्ध तत्त्वं ( पु० ) [ काम + आयुद्ध ] कामदेव के पाण्य, कामदेव का आयुद्ध, धाम ।  
 कामारण्य तत्त्वं ( पु० ) [ काम + शरण्य ] मनोहर वन, उत्तम बगीचा । [ शिव, महादेव ।  
 कामारि तत्त्वं ( पु० ) [ काम + अरि ] काम के शत्रु, कामार्त तत्त्वं ( पु० ) [ काम + अर्त ] काम-पीड़ित, कामातुर, काम के वशीभूत ।  
 कामार्थी दे० ( पु० ) कामरिया, गङ्गाजलिया ।  
 कामासक्त तत्त्वं ( पु० ) [ काम + आसक्त ] कामातुर, काम पीड़ित । [ का नाम ।  
 कामिका तत्त्वं ( स्त्री० ) आवण कृष्ण की एकादशी  
 कामिनो तत्त्वं ( स्त्री० ) [ कामिन् + ई ] अतिशय कामयुक्ता स्त्री, मीरु, स्त्री, स्त्री, सर्वसाधारण स्त्री, युवती, मदिरा, दाहदृष्टी, पेड़ों का बाँदा, मालकोप, राग की एक रागिनी, काष्ठविशेष ।  
 कामी तत्त्वं ( पु० ) [ काम + यिन् ] कामातुर, इच्छुक, अभिलाषी, चक्रवाक पक्षी, कवूतर, चिड़ा, सारस, चन्द्रमा, काकडासिंगी, विष्णु का एक नाम । ( स्त्री० ) कामनी, सीली, सोने का टुकड़ा ।  
 कामुक तत्त्वं ( पु० ) [ कम् + उक्थ् ] कामी, कामातुर, लम्पट, कामासक्त, चाहने वाला ।  
 कामोदा तत्त्वं ( स्त्री० ) रागिणी विशेष ।  
 काम्बोज तत्त्वं ( पु० ) देश विशेष, म्लेच्छ जाति विशेष, कम्बोज देश के घोड़े, बङ्ग के दक्षिण पूर्व का देश ।  
 काम्य तत्त्वं ( पु० ) [ कम् + यण् ] कर्माधीन, सुन्दर कामनायुक्त, अभिलाषा का विषय ।—कर्म

( पु० ) इच्छित फलसिद्धि के लिये धर्म कार्य ।—  
 त्व ( पु० ) आकांक्षा, अभिलाषा ।—दान ( पु० ) कामना सहित दान, नैमित्तिक दान, किसी पर्व विशेष में दान ।  
 कायेष्टि तत्त्वं ( स्त्री० ) वह यज्ञ जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय ।  
 काय तत्त्वं ( पु० ) प्रजापत्य तीर्थ, कविष्ठा या अनामिका अँगुली के नीचे का भाग, मूर्ति, देह, शरीर, तनु वपु, नन, डोल ।—स्थित ( पु० ) शरीरस्थ । [ जीव, शारीरिक ।  
 कायक तत्त्वं ( पु० ) शरीर सम्बन्धी, देही, शरीरी, कायक्लेश तत्त्वं ( पु० ) [ काय + क्लेश ] शरीर सम्बन्धी दुःख, देह का कष्ट ।  
 कायय तत्त्वं देवो, कायस्थ ।  
 कायफज दे० ( पु० ) एक औषधि का नाम, यह सुपारी जैसे रूपरङ्ग का होता है ।  
 कायम ( वि० ) स्थिर, उपस्थित ।  
 कायमनोवाक्य तत्त्वं ( पु० ) [ काय + मनस् + वच + थण् ] शरीर मन और वचन ।  
 कायर दे० ( पु० ) कातर, मीरु, डरपोक, आलसी, कादर ।—ता ( स्त्री० ) मीरुवा ।  
 कायल ( वि० ) मानने वाला ।  
 कायस्थ तत्त्वं ( पु० ) जाति विशेष, कायय ज्ञानि, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति ।  
 कायस्था तत्त्वं ( स्त्री० ) हरीतकी, धाम्रोवृक्ष, चाँबला, आमलकी, छोटी बड़ी इलायची, तुलसी, काकोली ।  
 काया दे० ( पु० ) शरीर, देह, तनु, काय ।—कल्प ( पु० ) शरीर का संशोधन करना ।—पलट तत्त्वं ( पु० ) बहुत बड़ा परिवर्तन, भारी बदलावदली, नये रूप की प्राप्ति ।  
 कायिक तत्त्वं ( पु० ) शारीरिक, दैहिक, शरीर सम्बन्धी ।  
 कार्योद्धज तत्त्वं ( पु० ) प्रजापत्य विवाद से उत्पन्न पुत्र ।  
 कार ( पु० ) [ कृ + घञ् ] व्यापार करने वाला, कर्ता, यत्न, काज, व्यापार, उपाय, काम काज ।  
 कारक तत्त्वं ( पु० ) [ कृ + क्त ] कर्ता, हेतु, करने वाला, वैयाकरणों के मत से क्रिया से सम्बन्ध रखने वाले विभक्ति के अर्थ, क्रिया, निमित्त ।—  
 दीपक ( पु० ) अलङ्कार विशेष ।



कारकुन (पु०) कारिन्दा, प्रबन्ध कर्त्ता ।

फारखाना तद् (पु०) दे० (पु०) कार्यालय, कर्मालय, वह जगह जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाती है ।

फारगर (वि०) उपयोगी, फसर करने वाला ।

फारगुजार (वि०) भली भाँति काम करने वाला ।

फारचोवी दे० (पु०) वस्त्र विशेष, चाँदी सेने के तारों द्वारा जिस वस्त्र पर बेल सूटे बनाये हों ।

फारज दे० (पु०) कार्य, कर्म, काम, काज, काम धन्धा, कारबार ।

कारण तद् (पु०) [ कृ +णिच् + घनट् ] जिसके बिना जिस कार्य की सिद्धि नहीं वह उस कार्य का कारण है । हेतु, बीज, निमित्त, प्रयोजन, विधान, वास्ते, लिये ।—फरण (पु०) कारण का कारण, परमेष्वा, संसार की सृष्टि करने वाला ।—गुण (पु०) हेतु के गुण, कारण के धर्म—ता (स्त्री०) हेतुता निमित्तता ।—चादी (पु०) अर्द्धांश करने वाला, निवेदक, अभियोग उपस्थित करने वाला, फरयादी ।—चारि (पु०) सृष्टि उपपन्न करने वाला जल, सृष्टि के प्रथम का जल—विशिष्ट (स्त्री०) युक्ति सिद्ध, उचित ।—माजा (स्त्री०) कारणसमूह, घटना परम्परा ।—शरीर (पु०) सत्वप्रधान, अज्ञान, आनन्दमय कोष, सपुंसि शरीर ।—भूत (पु०) मूल कारण, हेतुभूत ।

कारगडच तद् (पु०) पक्ष विशेष, हंस विशेष ।

कारपरदाज़ (वि०) कारकुन, प्रतिनिधि, कारिन्दा ।

कारबार दे० (पु०) व्यवसाय, वाणिज्य, व्यापार कर्म, काम ।

कारबारी (वि०) काम काजी ।

काररवाई (स्त्री०) कृत्य, काम, विवरण ।

कारवल्ली या कारवेल्ल तद् (स्त्री०) कडुफल, करेला, सरकारी विशेष ।

कारवाई दे० (स्त्री०) काम, कृत्य, प्रयत्न ।

फारखी तद् (स्त्री०) [ कार + ई ] मयूर शिक्षा, खड्गज्ञा, भजमोद, फलौंजि, चौपछि विशेष ।

कारस्तानी (स्त्री०) गुप्त कारवाई ।

फारा तद् (स्त्री०) [ कार + आ ] बन्धन, पीड़ा, स्वाधीनता हारा ।—फार (पु०) [ फारा + आगार ] जेल-

खाना, बन्धनगृह, अवरोधनस्थान ।—गृह (पु०)

बन्धनगृह, कारागार । [ पुत्रों के शासन में या ।

कारापथ तद् (पु०) देश विशेष, जो लक्ष्मण जी के कारावास तद् (पु०) कैद, जेल ।

कारिका तद् (स्त्री०) नटी, किसी सूत्र की श्लोकवद् व्याख्या । [ कलङ्क, दोष ।

कारिख दे० (पु०) करिखा, कालख, स्याही, श्यामता,

कारी तद् (पु०) वृक्षविशेष, कार्य कर्त्ता, करने वाला, (स्त्री०) काली, श्यामा, कालेरंग की, यथार्थ, भरपूर ।

कारीगर दे० (स्त्री०) शिल्पी, शिल्पकार, काम करने वाला ।—दे० (स्त्री०) हुनर, कार्य, शिल्पकारी ।

कार, कारकर तद् (पु०) चित्रकर्म, शिल्पी, शिल्पकार, निर्माता, सुवर्णकार, यवई ।

कारकादि तद् (पु०) कारीगरी, हुनर ।

कारणिक या कारणीक तद् (पु०) दण्ड, कृपाण्ड, कण्ठा पुष्प, कृपावान्, मेहरबान ।

कारण्य तद् (पु०) दया, कृपा ।

कारो (वि०) काला, स्याद ।

कारोवार दे० (पु०) व्यवसाय, व्यापार, काम काज ।

कार्कश्य तद् (पु०) कठोरता, कठिनता, कर्कशता, पक्वता, नीरसता, झूटा ।

कार्तवीर्य तद् (पु०) कृतवीर्य राजा का पुत्र, सहस्रबाहु अर्जुन, ये नर्मदा तीरस्थ हैहयराज्य के अधिपति थे, कार्तवीर्य का दूसरा नाम हैहय भी था, इन्हीं के नामानुसार इनके राज्य का भी नाम पड़ा है । इनकी राजधानी का नाम माहिषमती नगरी है । शिलोकविजयी रावण को भी इनके पराक्रम के सामने नीचा देखना पड़ा था । रावण इनके यहाँ बन्दी हुआ था । परशुराम ने कार्तवीर्य को मारा था । यह राजा तन्त्र शास्त्र का एक राजा समझा जाता है । इसका बनाया कार्तवीर्य तन्त्र का शाक्तों में विशेष आदर है । [विशेष ।

कार्तस्वर तद् (पु०) सुवर्ण, हेम, सोना, पुष्प

कार्तान्तिक तद् (पु०) ज्योतिर्वेत्ता, ज्योतिः

शास्त्रज्ञ, दैवज्ञ ।

कार्तिक तद् (पु०) शरद ऋतु का दूसरा महीना, कार्तिक मास, इस मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र के समीप रहता है ;

कर्तिकेय तत्त्वं ( पु ) पद्मानन, महादेव का ज्येष्ठ पुत्र, चन्द्रमा की स्त्री, कृतिका के दूध से बह पाला गया था, इसी कारण देवताओं ने इसका कर्तिकेय नाम रखा । यह देवताओं का सेनापति था । तारकासुर के घघ के लिये यह उपयुक्त किया गया था । इसने देवसेना का परिचालन किया और तारकासुर को मारा । तारकासुर के मारने के बाद इसका नाम तारकारी पड़ा था, इसकी स्त्री का नाम देवसेना था जो प्रजा की पुत्री थी । देवसेना का दूसरा नाम पत्नीदेवी है । ( प्रह्लादवर्त )

कार्पाण्य तत्त्वं ( पु० ) कृपणता, दीनता, अत्यन्त धनलोभ, कम खर्च करना, अनुकूलत, इस शब्द के प्रयोग के स्थान में, " कार्पाण्यता " का प्रयोग करना अनुचित और अशुद्ध है । [ कपड़े ।

कार्पास तत्त्वं ( पु० ) दशा का पेड़, कपास, रुई, सुती कार्पाण्य तत्त्वं ( पु० ) कर्मदण्ड, कर्मठ, मूलकर्म, औपधि मन्त्र आदि के द्वारा मोहन वशीकाण्ड उच्चाटन आदि कर्म, रात्रुराज्य आदि के लिये मन्त्र तन्त्र का योजना ।

कार्मिक तत्त्वं ( पु० ) विचित्र वस्त्र, जड़ाऊ वस्त्र, कारकोपी के कपड़े, वह वस्त्र जिसकी बुनावट में ही शङ्ख चक्र स्वास्तिक आदि के चिन्ह बनाये गये हों ।

कार्मुक तत्त्वं ( पु० ) धनुष. चाप, कर्मसम्पादन करने वाला ।—भृत् ( पु० ) धनुर्दारी, धानुष्क, वीर, योद्धा ।

कार्य तत्त्वं ( पु० ) [ कृ + ण्य ] कर्म, काम, काम, हेतु, प्रयोजन, फल, श्रम सम्बन्धी विवादादि, जन्मकुण्डली का दूसरा स्थान, आशुमेयता ।

—कर्त्ता तत्त्वं ( पु० ) कर्मचारी, काम करने वाला ।—कार ( पु० ) कर्मचारी, उपकारक, सहायक ।—कारक ( पु० ) कार्य कर्त्ता, कर्म सम्पादन करने वाला ।—कलप ( पु० ) कार्य समूह, अनेक कार्य, कार्याधिक ।—कुराल ( पु० ) कर्मठ, कार्यदण्ड, चतुरता से काम करने वाला ।—तम ( पु० ) कार्य करने के योग्य, कृती, धनमात्र ।—तः ( अ० ) यथायं रूप से, निश्चित रूप से, किया व रूप से ।—दत्त ( पु० ) कर्म में

विपुल, कर्मठ, कर्म कुराल ।—निष्ठ ( पु० ) काम में लगा हुआ, कार्यासक्त कामकाजी ।—पटु ( पु० ) कर्मदण्ड, कर्मकुशल ।—प्रद्वेष ( पु० ) आलस्य, अलसता ।—वाही ( स्त्री० ) काररवाई ।—विवरण्य ( पु० ) कार्यों का वर्णन ।—हन्ता ( पु० ) प्रतिबन्धक, बाधक, कार्यनाशक ।—अध्यक्ष ( पु० ) अफसर ।—अधिकारी ( पु० ) काम करने वाला, प्रतिनिधि, कर्मचारी ।—अधिष्ठाता ( पु० ) श्रेष्ठ, सेन, कार्यासक्त, व्यापारालम्ब ।—अधीश ( पु० ) कार्याध्यक्ष, स्वामी, प्रभु । [ सम्बन्ध ।

कार्य-कारण भाष्य तत्त्वं ( पु० ) कार्य और कारण का कार्यालय तत्त्वं ( पु० ) वक्त्र, कारखाना ।

काररवाई देखो काररवाई ।

कार्य तत्त्वं ( स्त्री० ) चीणता, कुराता, दुर्बलता ।

कार्पाक तत्त्वं ( पु० ) [ कृप् + णक् ] कृषक, किसान, कर्षणक, खेतिहर ।

कार्पाण्य तत्त्वं ( पु० ) सिद्धा विशेष ।

काल तत्त्वं ( पु० ) [ कल् + घञ् ] समय, धन्य, मुहूर्त, धवत्तर, वेला, मृत्यु, मरण, शिथ, शनि, यम, शत्रु, मर्दंगी, दुष्काळ, भकाळ, साँप, सर्प, मृत्यु कारक जन्म या मृत्यु, आगामी या स्पष्टीत दिन, नियत समय ।—काटना ( वा० ) व्यर्थ समय नष्ट करना, निरर्थक बैठे रहना ।—गर्धाना ( वा० ) उचित समय पर काम न करना ।—घिताना ( वा० ) काल काटना ।—कूट ( पु० ) हड्डाहल, विष, जहर ।—क्षेप ( पु० ) समय क्षिताना, दिन काटना, भगवान के गुणानुवाद करके या सुनके समय व्यतीत करना ।

कालक तत्त्वं ( पु० ) तेतीस प्रकार के ऋतुओं में से एक, आँख की पुतली, धीजगणित की दूसरी ग्रन्थक राशि, पानी का साँप, देशविशेष, यकृत ।

कालकोल तत्त्वं ( पु० ) घवड़ाहट, कोलाहल, हड़बड़ी ।

कालकेय तत्त्वं ( पु० ) राक्षस विशेष, इस नाम के राक्षसों का एक समूह जो यन्त्रासुर का भापी था ।

कालकोठरी ( स्त्री० ) अंधेरी छोटी कोठरी ।

कालक्रम तत्त्वं ( पु० ) समयानुसार ।

कालख दे० ( पु० ) लहसन, सिद्ध, मसला ।

कालज्ञ तत् ( पु० ) समय-ज्ञाता, समयानुसार काम करने वाला । [का वृद्धा महन्त ।

कालञ्जर तत् ( पु० ) शिव का एक नाम, वाममार्गियों

कालधर्म तत् ( पु० ) समय के धर्म, मृत्यु, मरण ।

कालनाभ तत् ( पु० ) हिरण्याक्ष का एक पुत्र । [गुग्गुल ।

कालनिर्यास तत् ( पु० ) सुगन्धित द्रव्य विशेष,

कालनिशा तत् ( स्त्री० ) प्रलय की रात्रि, दिवाली की रात, अत्यन्त अँधेरी रात, मरण समय, अंत की रात ।

कालनेमि तत् ( पु० ) दैत्य विशेष, कपटी मुनि ।

( १ ) यह दैत्य देवासुर संग्राम में कुबेर आदि को

जीत कर अन्त में भगवान् के द्वारा मारा गया । ( २ )

राक्षस विशेष, यह विष्णु के तेज से डर कर रावण

के नामा सुमाली के साथ पाताल में भाग गया था ।

( ३ ) रावण का मामा, सजीवनी बूटी लाने के समय

इन्द्रमान् को रोड़ने अथवा मारने के लिये रावण ने

इसी को भेजा था । यह कथा रामायण में है ।

कालपालक तत् ( पु० ) समय की अपेक्षा करने

वाला, गूढ़ नीतिज्ञ । [पाश, मरण उञ्ज ।

कालपाश या कालपास तत् ( पु० ) यमपाश, मृत्यु-

कालम दे० ( पु० ) किसी संवाद पत्र का स्तम्भ ।

कालपुरुष तत् ( पु० ) यमराज के अनुचर, ज्योतिष

शास्त्र, शुभाशुभ जानने के लिये कल्पित, द्वादश

राशियों का प्रहपाकर, यमराज, ये ब्रह्मा के पौत्र

और सूर्य के पुत्र हैं । इनका स्वरूप अत्यन्त भयङ्कर

है । इनके ६ मुख, १६ हाथ, २४ शक्ति, और ६

पैर हैं । इनका रङ्ग काला है और ये लाल भङ्ग के

वस्त्र पहनते हैं ।

कालपर्याय तत् ( स्त्री० ) औपधि विशेष, काला निसोत

कालप्रभात तत् ( पु० ) शरद ऋतु, शरदकाल ।

कालवेला तत् ( स्त्री० ) अयोग्यकाल, किसी काम

करने के लिये निन्दित समय । [विष वैद्य ।

कालवेलिया दे० ( पु० ) सर्प का विष उतारने वाला,

कालमैरव तत् ( पु० ) शिव के श्रेष्ठ से उत्पन्न, उनका

अनुचर, ब्रह्मज्ञान-शून्य, ब्रह्मा का पाचवाँ मन्त्रक

काटने के लिये इनकी उत्पत्ति हुई थी ।

कालमा दे० ( पु० ) संघर्ष, सन्देश, दुविधा, खटका ।

कालमूल तत् ( पु० ) लाल चित्रक, औपधि विशेष ।

कालमेयिका तत् ( स्त्री० ) मजीठ, चाकुची, औपधि विशेष ।

कालमेयी तत् ( स्त्री० ) मजीठ, काला निसोत ।

कालयवन तत् ( पु० ) प्रसिद्ध बली यवनराजा, यह

महर्षि गर्ग के औदार्य से गोपाली नामक किसी

धप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । महर्षि, गर्ग

ने पुत्र पाने के लिये लोह चूर्ण खाकर बारह वर्ष

तक तपस्या की थी, उसी का फलस्वरूप काल-

यवन हुआ । घटनावश कालयवन को पुत्रहीन

यवनराज ने पाला और अपने बाद इसे ही अपना

उत्तराधिकारी भी बनाया । मगधराज जरासन्ध

तथा उसके पक्षियों ने कालयवन को कृष्ण से

लड़ने का भेजा था ।

कालरा दे० ( पु० ) विशुचि का रोग, हैजा ।

कालरात्रि तत् ( स्त्री० ) प्रलय काल की रात, दिवाली

की रात्रि, भगवती का नाम, मृत्यु समय, अँधेरी

रात ।

कालशाक तत् ( पु० ) पटुआ साग, कोरू, सरफोका ।

कालसार तत् ( पु० ) तैलुआ का पेड़ ।

कालसूत्र तत् ( पु० ) नरक विशेष ।

कालसूर्य तत् ( पु० ) प्रलय काल का सूर्य ।

कालस्कन्ध तत् ( पु० ) समाल वृक्ष, तिन्दुक वृक्ष ।

कालस्वरूप तत् ( पु० ) मृत्यु का आकार, मृत्यु के

समान भयङ्कर, घातक, हिंसक ।

काला दे० ( पु० ) काले रङ्ग का, कृष्णवर्ण, कलौटा ।

—गुरु ( पु० ) [काज + अगुरु] सुगन्धि-द्रव्य विशेष

कृष्णवर्ण सुगन्धित काष्ठ ।—मि ( पु० ) प्रलय काल

की आग, कागजनाल, संहारकारक अग्नि ।—चौर

( वा० ) अपरिचित मनुष्य, अनजान, घेजान ।—त्यय

( पु० ) समयनाश, समय का दुरुपयोग ।—न्तक

( पु० ) यमराज, धर्मराज ।—न्तर ( पु० ) समयान्तर,

दूरे समय ।—मुँह करना ( वा० ) भ्रमप्रवृत्ति

करना, अप्रतिष्ठा करना, डाँटना, लजित होना

या करना, मुँह में कारिल लगाना ।

कालाकलूटा ( वि० ) अत्यन्त काले रंग का ।

कालाचौर ( पु० ) भारी चौर, तुच्छ पुरुष ।

कालाप तत् ( पु० ) कलाप व्याकरण जानने वाला ।

कालापानी दे० ( पु० ) देश विशेष, जहाँ का जल

अत्यन्त खराब होता है। एक द्वीप, जिसे पृथ्वीमान टापू कहते हैं। इसके चारों ओर का जल अत्यन्त खारा है और काला है इसी से इसे कालापानी कहते हैं। जिन्हें देश निकाले का दण्ड दिया जाता है, वे वहीं भेजे जाते हैं। [हस्तात लोहा।

कालायस तत् ( पु० ) [काल + आयस] लोः विशेष, कालिक तत् ( पु० ) कालसम्बन्धी, सामयिक, ( पु० ) नाचन मास, काळा चन्दन, क्रीच पत्नी।

कालिका तत् ( स्त्री० ) कालीदेवी, महाकाली देवी, कालिख, रोमराजी, जटारामासी, काकोली, शृगावी, कौवे की मादा, मेघ, सुवर, स्वाही, मदिग, हर विशेष, एक नदी, खाँख की काली पुतली, दूध की एक बेटो, कुहरा, हलकी कडी, चिप्लू, सिर मलने की काली मिट्टी, चार वर्ष की कन्या, रणचण्डी।

कालिकला ( क्रि० वि० ) कदाचित्, कभी, किसी समय।  
“कालिकला कारीनाय कहे निघरत है।”

—हलसी

कालिख ( स्त्री० ) कालीख, स्वाही। [नामक एक वृक्ष। कालिख्या तत् ( स्त्री० ) वृक्ष विशेष, किन्दवाली कालिङ्ग तत् ( पु० ) फलविशेष, तरबूज।

कालिञ्जर ( पु० ) पर्वत विशेष जो बाँदा ज़िले में है।

कालिदास तत् ( पु० ) खगम प्रसिद्ध संस्कृत के महाकवि, विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में के प्रधान रत्न। इनका समय २८८ ई० से पूर्व का बताया जाता है। सीलोन का राजा और महाकवि कुमारदास इनका मित्र हो गया था। कालिदास विक्रमादित्य की सभा छोड़ कर, कुमारदास के पास सीलोन गये थे, और वहीं इनकी समाधि हुई। (२) दूसरे कालिदास को पाश्चात्य लोग महाकवि भवभूति के समय का मानते हैं। इनका समय ७४८ ई० निश्चित हुआ है। (३) तीसरे कालिदास प्रसिद्ध विद्वान् और ग्रन्थकार राजा भोज के समय में थे। इनके विषय में बहुत सी किंवदन्तियाँ भी प्रचलित हैं। राजा भोज ११ वीं शताब्दी में हुए थे, अतएव उनके समकालीन कालिदास का भी वही समय बताया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी कई कालिदास हुए हैं।

कालिन्दी तत् ( स्त्री० ) कालिन्द् पर्वत से उत्पन्न, यमुना, यह सूर्य की कन्या है। यमगाज और शनिश्चर ये दोनों इससे भाई हैं।—मेदन ( पु० ) बलराम।

कालिमा तत् ( स्त्री० ) [ काल + इमन् ] कृष्णता, मलिनता, मालिन्य, कलङ्क, कालापन।

कालियङ्क तत् ( पु० ) मज्ज चन्दन।

कालीय या कालिय तत् ( पु० ) सर्पराज, काली-नाग, गरुड़ के भय से समुद्र में रहना छोड़ भज में यह रहने लगा था, वहाँ कृष्ण के द्वारा पराजित हुआ और उन्हीं के आज्ञानुसार पुनः समुद्र में जा कर रहने लगा।

काली तत् ( स्त्री० ) श्यामवर्ण, काले रङ्ग वाली, आया प्रकृति, शान्तनु राजा की पत्नी, कालिका, भगवती, हिमालय की एक नदी, अग्निदेव की सप्त जिल्लोशों में से प्रथम।

कालोदह तत् ( पु० ) वन के एक सरोवर का नाम, जहाँ कालीनाग रहता था।

कालीन या कालीना तत् ( पु० ) सामयिक, समयगत, निर्दिष्ट समय का, चिरकालिक, बहुत पुराना, अति पुरा।

कालीन दे० ( पु० ) गृहीत। [लेने वाला योगी।

कालेश्वर तत् ( पु० ) महादेव, शिव, सृष्ट्यु को जीत कालौ ( पु० ) काल भी, सृष्ट्यु भी, समय भी, कष्ट भी।

काल्पनिक तत् ( पु० ) कल्पना से उत्पन्न, मनगढ़न्त, कल्पित, मिथ्या, आरोपित, कृत्रिम, अस्वाभाविक। ( पु० ) कल्पना करने वाला।—ता ( स्त्री० ) कृत्रिमता, घनावरी।

कावा दे० ( पु० ) काठियावाड़ में एक लुटेरी जाति जिसने अर्जुन और श्रीकृष्ण की रामियों को लूटा था। [चकर देना, घोड़ा फिराना।

कावा देना दे० ( क्रि० ) घोड़े का घाल सिलाना, कावेरी तत् ( स्त्री० ) नदी विशेष।

काव्य तत् ( पु० ) रम्यकृत वाक्य, जिनमें चित्त चमकृत हो, कविता।—चौर ( पु० ) दूसरे की कविता का नाव या पाद ग्रंथ हरण करने वाले।—त्व ( पु० ) काव्य का धर्म, काव्य का विशेष लक्षण, काव्य का स्वरूप।—लिङ्ग ( पु० ) चन्द्रद्वार निवेश।

फान्या तत् (खी०) पूतना, बुद्धि ।  
 काश तत् ( पु० ) तृण विशेष, खाँसी, खोखी, खाँस का रोग. एक प्रकार का चूहा, मुनिविशेष । तद्० कास ।—झी (खी०) भारंगी औषधि ।  
 काशि तत् ( पु० ) सूर्य, शिव, दिवाकर ।—राज ( पु० ) काशी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरि ।  
 काशिका तत् ( खी० ) वाराणसी क्षेत्र, काशीधाम, व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम ।—प्रिय ( पु० ) विश्वनाथ ।—राज ( पु० ) विश्वनाथ, वाराणसी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरि आदि ।  
 काशी तत् ( खी० ) शिवपुरी, वाराणसी ।—( पु० ) काशरोमी, दीक्षिमान्, तेजोमय ।—नाथ ( पु० ) शिव, चिरवेश्वर ।—राज ( पु० ) काशी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरि ।—फल तत् ( पु० ) बाज कुम्हड़ा, कद्दू ।—करघट ( पु० ) काशी में एक तीर्थ स्थान, जहाँ पर आरे के नीचे लोग अपना शरीर चिरवाया करते थे ।  
 काशीश तद् ( पु० ) उपजात विशेष, कसीस, हीराकस ।  
 काश्मरी तत् ( खी० ) वृष विशेष, गैमास का वृष ।  
 काश्मीर तत् ( पु० ) स्वनामधेयता देश, कश्मीर का रहने वाला, पुष्करमूल, केसर, सुहागा ।—ज ( पु० ) औषधि विशेष, हट, कारमीर में उत्पन्न होने वाला पदार्थ, कुङ्कुम ।—( वि० ) कारमीर वाली । [प्रकार का अंगूर ।  
 काश्मीरा दे० ( पु० ) मोटा ऊनी वस्त्र विशेष, एक काश्यप तत् ( पु० ) कणाद मुनि, मृगविशेष, गोत्र विशेष, कश्यप मुनि का वंश ।  
 काश्यपमेरु तत् ( पु० ) कश्यप मुनि का वासस्थान, पर्वत विशेष जिस पर कश्यप मुनि रहते थे । प्रसिद्ध कारमीर देश । [पृथ्वी, चरित्र, प्रजा ।  
 काश्यपि ( पु० ) अर्घ्य, सूर्य का सारथी ।—ती तत्० काषाय तत् ( पु० ) गेरुआ रंग का कपड़ा ।  
 काष्ठ तत् ( पु० ) इन्धन, दाढ़, लकड़ी, काठ ।—विकीता ( पु० ) लकड़ी बेचने वाला, लकड़हारा ।  
 काष्ठा तत् ( खी० ) हृद, सीमा, अवधि, उत्कर्ष, एक कला का ३० वां भाग, दिशा, स्थिति, दृष्ट की एक कन्या, चन्द्र की एक कला, दौड़ लगाने की सड़क ।  
 काष्ठो तत् ( खी० ) फटकी, फिटकरी ।

कास ( पु० ) काश, खाँस का रोग, सरपत, सरहरी, एक प्रकार की घास ।  
 कासनी ( पु० ) एक पौधा विशेष, रंग विशेष ।  
 कासत्री दे० ( पु० ) ताँती, कपड़ा बिनने वाला, तन्तुवाय, जुलाहा, कोरी ।  
 कासा ( पु० ) प्याला, आहार ।  
 कासार तत् ( पु० ) छोटा सरोवर, छोटा तालाब, वृण्डक वृत्त विशेष, कसार, पंजीरी ।  
 कासो (काशा) ( खी० ) एक पुरी का नाम, भानन्द वन, पवित्रक वंश ।  
 कासु दे० ( सर्व ) किसको, किसका । [ कौन काम ।  
 काह दे० ( पु० ) किसको, किनको, क्या, कौन वस्तु, काहनी दे० ( खी० ) कहानी, अख्यायिका, कथा ।  
 काहण तत् ( पु० ) कार्याण, सोलह पण, मान विशेष ।  
 काहार दे० ( पु० ) मृत्यु, कर्मकर, धोवर, कहार ।  
 काहि ( खी० ) किसको, किस, किससे ।  
 काहिल ( वि० ) सुस्त, आलसी ।—( खी० ) सुस्ती ।  
 काह दे० किपी, कोई, किसीको ।  
 काहे दे० क्या, किस लिये, किस प्रयोजन से ।  
 कि दे० ( अ० ) दो वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध-सूचक अव्यय, क्या, क्यों, किस लिये ।  
 किञ्कर्तव्य-विमूढ़ तत् ( वि० ) हक्का, धक्का, औचक्का, आकुल, ब्याकुल, यह मनुष्य जिसे यह न सुक्त पड़े कि क्या किया जाय ।  
 किञ्चदन्तो तत् ( खी० ) उड़ती खूब, अनिश्चित समाचार, जनश्रुति, अफवाह ।  
 किञ्चा ( अ० ) वा, या, अपवा, यद्वा ।  
 किञ्चु तत् ( पु० ) पलाश वृक्ष, टेसू, ज्विल, डाँक ।  
 किपद् दे० किये से भी, करने से भी ।  
 किंकियाना दे० चिड़ाना, रोना, पुकारना, दुहाई देना, खोर से आवाज़ देना ।  
 किङ्कर तत् ( पु० ) [ किं + कृ + अ ] दास, भूय, नौकर, नफर, सेवक, चाकर ।—रत्न ( पु० ) दासत्व, अधीनता, ( खी० ) कीट्टरी, दासी ।  
 किङ्किणी तत् ( खी० ) टि + आभरण, शुद्ध, घण्टिका, करघनी विशेष ।  
 किञ्चकिच दे० ( पु० ) कच पच; चें चें, व्यर्थ कोलाहल,

अव्यक्त शब्द विशेष. एक पक्षी का शब्द । किच  
किच काना । [ पीसना, अघोर होना ।  
किचकिचाना दे० (क्रि०) क्रोध के वश होना, दौत  
किचड़ाना या किचराना दे० (क्रि०) आँख का रोग  
विशेष, आँख आना ।  
किचपिच दे० (पु०) काँश, किचड़, पाँक, स्पष्ट उत्तर  
न देना, अव्यक्त ध्वनि, धानर आदि का शब्द ।  
किचपिचाना दे० (क्रि०) गड़गड़ाना, किसी प्रकार  
का कर्तव्य स्थिर नहीं करना, दोलायमान चित्त,  
मन की दुविधा ।  
किचिरपिचिर दे० (पु०) गिचपिच, कीचड़ । [घोतक ।  
किञ्च तत् (अ०) और भी, दूसरा भी, बाक्यान्तर  
किञ्चित् तत् (अ०) थोड़ा, इतना, कुछ थोड़ा ।  
किचिन्मात्र तत् (अ०) कुछ, स्वल्प, अव्यय, बहुत  
थोड़ा, यत्किञ्चित् ।  
किञ्जक तत् (पु०) सिफाकन्द, फूल की पंखड़ी, फूल  
का रज, केशर, पराग, कमल के बीज की जश ।  
किटकिट दे० (पु०) वादविवाद, किचकिच ।  
किटि तत् (पु०) शूकर, सूअर, बराह ।  
किटिस तत् (पु०) जूँ, केशकीट, छील ।  
किट्ट तत् (पु०) मल, विद्या, चीट, मैला ।—वर्जित  
(पु०) मल-रहित, शुद्ध, स्वच्छ । [ शब्द ।  
किड़किड़ दे० (पु०) दाँतों की रगड़ से उत्पन्न  
किड़किड़ाना दे० (क्रि०) अतिशय क्रोध युक्त होना,  
क्रोध से अन्धा होना, क्रोध के आवेग से दौत  
पीसना । [ मादकता उत्पन्न होती है ।  
किराव तत् (पु०) मदिरा बीज जिससे मद्य में  
कित तत् (अ०) किनी, कड़ा, किधर, कब, कुत्र ।  
कितई दे० (अ०) जो, तक, तलक, पर्यन्त ।  
कितना दे० (पु०) परियाम विषयक प्रश्नार्थक ।  
—ही (वा०) बहुत अधिक, प्रचुर परियाम ।  
कितव तत् (पु०) धूर्त, वक्त्रक, प्रतारक, छुआ खेलने  
वाला, झुगारी, धतूर, मोरोचन ।  
किता (पु०) सीने के लिये कपड़े की काँट छाँट ।  
किताव (खी०) पुस्तक, ग्रन्थ ।  
कितिक (वि०) कितना, किस प्रकार ।  
कितेक दे० (पु०) बहुत अधिक, प्रचुर, कितना ही ।  
किते दे० (अ०) कड़ा, किधर, किस ओर ।

कितो (वि०) कितना ।  
कित्ता (वि०) कितना ।  
कित्ति तद् (स्त्री०) यश, कीर्ति यथाः—  
“ भल्लण्ड कित्ति जेय, देयमान होछिये ”  
—रामचन्द्रिका ।  
किदारा दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष, यह गायत्री के  
दिनों में आधीरात को गायी जाती है ।  
किधर दे० (अ०) कहाँ, किस ओर ।  
किधौं (अ०) या, यथवा ।  
किन दे० (अ०) किस का बहुवचन, क्यों नहीं, किन्ने,  
कौन, किसको ।  
किनका (पु०) धन का छोटा दाना ।  
किनवैया दे० (पु०) ग्राहक, खरीदने वाला, ग्राहक,  
खेने वाला । [ मोल देना ।  
किनना दे० (क्रि०) मूष्य देखर लेना, खरीद करना,  
किनहा (वि०) जिसमें कीड़े लगाये हों । [ बाधा ।  
किनार (पु०) कोर, किनारी ।—द्वार (वि०) किनारी  
किनारा (पु०) तीर, तट, समीप, पारथं, धोती आदि  
का प्रान्त, कोर ।—छाँचना (वा०) भल्लग होना,  
धोसा देना, विश्वास धात करना ।  
किनारी दे० (स्त्री०) गोटा, गोठ, मगजी, कोर, पार  
का प्रान्त, चान्त ।  
किन्तु तत् (अ०) तो क्या, पहले कही हुई बात के  
विरुद्ध बात, परन्तु, अपयच ।—चादी (पु०)  
दूसरों के कही हुई बात को काटने वाला, धौतों  
की न सुनने वाले ।  
किन्नर तत् (पु०) [ किं + नर ] रचनाप्रवृत्ता देव-  
योनि विशेष, किम्बुदध, जैन विशेष, गन्धर्व देव-  
ताओं के गर्भवा । किन्नर दो तरह के होते हैं, पुरुष  
का शरीर आदमियों का सा, परन्तु मुँह घोड़े के  
समान होता है, दूसरे का मुँह घोड़ानी का सा  
और घड़ घोड़े का सा होता है ।  
किन्नरी तत् (स्त्री०) विद्याधरी, स्वर्गाय-वेरमा,  
अप्सरा ।  
किन्नरेवर तत् (पु०) [ किन्नर + ईश्वर + वाप ]  
कुंजर, पक्षपति, देवताओं का कोपाप्यक्ष ।  
किफायत (स्त्री०) कमरखी । [ प्रकाश ।  
किम् तत् (सर्व०) क्या, क्यों, कैसे, क्योंकर, किस

किमपि तत् (प्र०) कुछ भी, जो कुछ, परिकल्पित ।  
किमर्थ तत् (प्र०) किस लिये, क्यों, काहे को, किस  
निमित्त से, किस प्रयोजन से ।

किमाच दे० (पु०) खजुर्दा, कौच का वृक्ष और फल  
विशेष, किवाच । [ से, किस तरह ।

किमि तद् (सर्व०) क्योंकि, किस भाँति, किस उपाय  
किमुत तद् (अ०) प्रश्न, वितर्क, विकल्प, अतिशय,  
सम्भावना ।

किम्पत् तद् (पु०) अदाता, कृपण, सूँ ।

किम्पुरुष तत् (पु०) किन्नर, विद्याधर, स्वर्गीय  
गायक । (गु०) कुरित्त पुरुष, निन्दित मनुष्य,  
दुराचारी ।

किम्भूत तत् (गु०) [ किं + भू + क ] किस प्रकार  
कंसा, कीटाश — किमाकार (वा०) कुरित्त  
आकृति विशिष्ट, अनभिज्ञता । [ समुच्चय ।

किम्बा तत् (अ०) अथवा, वा, विकल्प, यदि, वा,  
कियत् तत् (गु०) कितना, कितना परिमाण ।

कियारी दे० (स्त्री०) मेंढ, लकीर, धँवला, क्यारी,  
खेत, तण्डता, चमन ।

किपे दे० (क्रि०) करने से, करे । [ लकड़ी, किरकिरी ।

किरकिटी दे० (स्त्री०) आँख में की कणिका, छोटी

किरकिरा दे० (गु०) रेतीली, ककरीला ।

किरकिरी दे० (स्त्री०) किरकिटी, मिट्टी या तिनका जो  
आँख में गिर कर पीड़ा उत्पन्न करता है ।

किरख (स्त्री०) नौकदार टुकड़ा, खड्डविशेष ।

किरण तत् (स्त्री०) दीप्ति, रश्मि, मयूख, सूर्य का  
तेज, प्रकाशमान् पदार्थों का तेज । — माली (पु०)  
सूर्य, चन्द्रमा । — हस्त (पु०) चन्द्रमा, सूर्य ।

किरन (स्त्री०) रश्मि, किरण ।

किरपा (स्त्री०) कृपा, दया ।

किरमिजी (वि०) हिरमिजी ।

किरराना (क्रि०) दाँत पीसना ।

किरयान तद् (पु०) कृपाण, तलवार, खड्ग ।

किरात तत् (पु०) भील, जाति विशेष, निपाद, देश  
विशेष, एक प्रकार की जाति, चिरायता, साईम ।

— तार्जुनीय तत् (पु०) कवि मारविकृत १८  
सर्गों का एक काव्य । — पति तत् (पु०)  
शिव, महादेव ।

किरातक तत् (पु०) चिरायता, श्रौपधि विशेष ।

किरान (वि०) पास, निकट । [ आदि ।

किराना दे० (पु०) वस्तु विशेष, अन्न आदि, मसाला

किरिच दे० (पु०) टुकड़ा, खण्ड, एक प्रकार का शब्द  
विशेष ।

किरिया दे० (स्त्री०) शपथ, बौंह, क्रिया, सौगन्द ।

किरोट तत् (पु०) शिरोभूषण विशेष. मुकुट, राजाओं  
की पगड़ी या टोपी, ताम्र, घर्णवृत्त विशेष ।

किरोटी तत् (पु०) अर्जुन का एक नाम, इन्द्र राता ।

किरोर (पु०) करोड़, कोटि ।

किरौ दे० (पु०) किड़वा दाँत, टूटा दाँत ।

किरौना (पु०) कीड़ा, कीट ।

किर्च दे० (स्त्री०) काँस, किरिच, लकड़, खपाव, अन्न  
विशेष, छोटी तलवार के आकार का एक शस्त्र ।  
राजाओं की पगड़ी या टोपी, घर्णवृत्त विशेष ।

किर्मीर तत् (पु०) राक्षसविशेष, वह नामक राक्षस  
का भाई, घृत में पराजित होकर जब पाण्डव वन  
में गये तब वहाँ इसी राक्षस ने उनका रास्ता रोका  
था । भीम आगे बढ़े और इसके साथ युद्ध करने  
लगे । अन्त में भीम ने इसे मार डाला ।

किल तत् (अ०) निश्चय, दृढ़, स्थिर ।

किलक दे० (स्त्री०) चटक, चमक, प्रभा, दीप्ति, प्रकाश,  
एक प्रकार का नरकुल जिसकी फलम बनाई  
जाती है ।

किलकना (क्रि०) किलकारी मारना, चिल्ला कर हँसना ।

किलकिञ्चित् तत् (पु०) कियों का हाव विशेष,  
शङ्कार की एक क्रिया विशेष, यथा—

“हरप, गरव, अमिलाप श्रम, हाम रोप अरु भीत ।  
होत एक ही संग हैं, किलकिञ्चित् यह रीत ॥”

— मतिराम ।

किलकिला (पु०) किलकार का शब्द, बानरों की एक  
प्रकार की बोली ।

किलकिलाना दे० (क्रि०) किलकिल शब्द करना,  
गर्जन करना गुराँना ।

किलकिलाहट दे० (पु०) बानरों का एक प्रकार का  
शब्द गर्जन का शब्द ।

किलनी दे० (पु०) क्षुद्र जन्तु विशेष, कुत्ते का जुँवा ।

किलविलाना (क्रि०) कुलबुलाना ।

किलवाना (कि०) कील डुकवाना, तंत्र या मंत्र द्वारा किसी भूत प्रेत के शरणाओं को रुकवा देना, जादू या टोना करवाना । [रचना ।

किला दे० (पु०) कोट, गढ़, दुर्ग ।—बंदी (स्त्री०) ब्यूह किलाना दे० (कि०) देखो किलवाना ।

किलकारी दे० (स्त्री०) चीख भाषा, बहुत जोर से गर्जन करना ।—मारना प्रसन्नता के साथ हँसना, प्रसन्नता जनाते की शब्द चोटियाँ ।

किलोल (पु०) कललोल, कलोल ।

किल्ली दे० (स्त्री०) अंग्रेज, कीली, बेंड़ा ।

किलिप तत्० (पु०) पाप, दोष, अपराध, अशुभ, अनिष्ट, रोग ।—ी (पु०) अपराधी, अधर्मी, पापी, गैरी ।

किलाड़ दे० (पु०) कपाट, द्वार बन्द करने के पक्षे ।

किवार दे० (पु०) देखो किलाड़ ।

किशान्य तत्० (पु०) नदीन पत्ते, कोमल पत्ते, फूलों की पंखुडियाँ ।

किशोर तत्० (पु०) अवस्था विशेष, बाल्यावस्था के बाद की अवस्था । १० से १५ वर्ष की अवस्था तक का बालक, बाल और युवा की मध्य की अवस्था । [युवती स्त्री ।

किशोरी तत्० (स्त्री०) कुमारी, अविवाहिता युवती, किष्किन्धा तत्० (पु०) पर्वत विशेष, वानरराज बाबिल की रामधानी का नाम, यह पर्वत दक्षिण भारत में है ।

किसलय तत्० (पु०) देखो किशलय ।

किस दे० (सर्व०) कौन, किसको, किसी को ।

किसनई दे० (स्त्री०) किसान का काम, खेती यारी ।

किसमत (स्त्री०) भाग्य, अदृष्ट, नसीब ।

किसमिलतत्० (पु०) मिश्र विशेष ।—ी (वि०) रंग विशेष ।

किसान दे० (पु०) खेती करने वाला, कृषक ।

किसी दे० (सर्व०) किसको, किसका, किसी को ।

किसू दे० (सर्व०) कविता में किस की जगह किसु-मायः आता है ।

किसे दे० देखो किस ।

किस्ती या किस्त दे० (पु०) भाग, जैमे अथवा चुभने को थोड़ा थोड़ा हथवा देना, हिस्सों में देना ।

किस्ती या किस्ती दे० (स्त्री०) भीड़ा, छोटी सी सुन्दर नाव, पनसुहा ।

किस्म (स्त्री०) जाति, प्रेणी ।

किस्मत (स्त्री०) देखो "किसमत" ।

किस्सा दे० (पु०) कहानी, आख्यायिका ।

किहुनी दे० (स्त्री०) कुहनी, ठिड्नी ।

की दे० (कि०) करी, कर दी, कर डाली, प्रत्यय, पछी विभक्ति का चिन्ह, " का " का स्त्रीलिङ्ग ।

कीक (स्त्री०) चीख, चीकार, चिन्हाइत ।

कीकट तत्० (पु०) देश विशेष, मगध देश, कृष्ण, हरिद, पापी ।

कीकड़ या कीकर दे० (पु०) बसूत, कटीला पेड़ ।

कीकस तत्० (पु०) हाड़, दस्थि, हड्डी ।

कीका (पु०) घोड़ा ।

कीच दे० (पु०) पट्ट, काँदा, चहला ।

कीचक तत्० (पु०) वायु के संयोग से योद्धा वाला बाल, फटा हुआ बाल, केकय राजा का पुत्र, राक्षस विशेष, दैत्य विशेष । मत्स्यदेश के राजा विराट का साला । यह बड़ा पराक्रमी था । इसके भय से उस समय के प्रायः सभी यक्षवान् डरते थे, यहाँ तक कि दुर्योधन भी इसके भय से मत्स्य देश पर चढ़ाई नहीं करता था । यह द्रौपदी को बुरी दृष्टि से देखने लगा, इसका समाचार सुन कर भीम ने इसे मार डाला ।

कीचड़ दे० देखो कीच । [चाहिये, करिये ।

कीजिय वा कीजिये दे० (कि०) करौ, कीजिये, करना कीजें दे० (कि०) करिये, कीजिये, करना उचित है ।

कीट तत्० (पु०) रेंगने व उड़ने वाला कृमि, कीड़ा, कीरा, पतङ्ग, मेल, कीट ।—म (पु०) मध्यक, औपम्य विशेष ।—भङ्ग तत्० (पु०) न्याय विशेष जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब दो व अधिक वस्तुएँ एक रूप की हो जाती हैं ।—मण्डि तत्० (पु०) जुगनु । [डुभा, घुना, फिरहा ।

कीड़हा या फिरहा दे० (पु०) कीटयुक्त, कीड़ा लाया कीड़ा दे० (पु०) कीट, पिलुषा, कीड़े ।—ी (स्त्री०) छोटी कीड़ी । [फँजा हुआ ।

कीण तत्० (पु०) आच्छन्न, विपित, स्वाप्त, प्रसारित, कीतनक तत्० (पु०) सुटहरी, जेरी मनु ।

कीतो (स्त्री०) कीर्ति, यश, प्रशंसा ।

कीटक तत्० (पु०) किस प्रकार का, कैसा, किम्मा ।



कीदृक्त तत् ( पु० ) कैसा, किस प्रकार का ।  
 कीना दे० ( कि० ) किया, पूर्णकिया, ( पु० ) बैर शत्रुता ।  
 कीनिया ( वि० ) कपटी ।  
 कीन्ना या कीनना दे० ( कि० ) किनना, खरीदना, मूल्य देकर लेना ।  
 कीन्ह दे० ( कि० ) किया, बनाया, रचा, सिरना ।  
 कीन्हें दे० ( कि० ) करे, किये, करने से । [ दामों का ।  
 कीमत ( स्त्री० ) मूल्य । — की ( वि० ) मूल्यवान् अधिक कीमिया दे० ( स्त्री० ) रसायन ।  
 कीमियागर ( पु० ) रसायन बनाने वाला ।  
 कीर तत् ( पु० ) शुक, पक्षी, तोता, सुग्गा, मुष्ठा, बहेलिया, काश्मीर देश, काश्मीर देशवासी ।  
 कीरत, कीरती तत् ( स्त्री० ) कीर्ति, यश, पद्माई, प्रशंसा ।  
 कीरा तत् ( पु० ) कीड़ा, सार, सप, कीड़ा, सुग्गा ।  
 कीर्त्तन तत् ( पु० ) कथन, वर्णन, गुणगान, यशो- वर्णन । [ गाने से उपाजन कर जीने वाला ।  
 कीर्त्तनिया तत् ( पु० ) गायक, कथक, गाने वाला, कीर्त्ति तत् ( स्त्री० ) सक्रिया, सकार, स्मरण करने योग्य काम, सुख्याति, यश, मातृका विशेष । — कर ( पु० ) ख्याति करने वाले कर्म, प्रसिद्धि बढ़ाने वाले काम । — पताका ( पु० ) सत्कर्म की प्रसिद्धि, यश का चीन्ह । — प्रिय ( पु० ) यश चाहने वाला, कीर्त्तिकामी । — मान् या चान् ( पु० ) कीर्त्ति विशिष्ट, यशस्वी । — शेष ( पु० ) मरख, यश की समाप्ति, दुष्कर्म के द्वारा सुकर्म का दब जाना ।  
 कीर्त्तित तत् ( पु० ) कथित, ख्याति, शक्त, प्रसिद्ध, कहा हुआ ।  
 कील तत् ( पु० ) खंटा, मेल, काँटा, खंटी, कीला, लोहे का काँटा, परंग, तिलुका, तृण, स्तम्भन मंत्र ।  
 — काँटा ( पु० ) साम समान, औजार प्रभृति ।  
 कीलक तत् ( पु० ) परंग, खंटा, खंटी, कील, मंत्र का मध्य भाग, दूसरे मंत्र के प्रभाव को रोकने वाला मंत्र, ६० वर्षों में से एक वर्ष का नाम, केतुविशेष, रोक, किवाड़ की किछी, स्तोत्र विशेष ।  
 कीलना दे० ( कि० ) मन्त्र फूँकना, बन्द करना, रुकावट डालना ।

कीला दे० ( स्त्री० ) लोहे की खंटी, लंबा खंटा ।  
 कीलाल तत् ( पु० ) जल, रक्त, अमृत, मधु । — धि ( पु० ) समुद्र, सागर ।  
 कीलित तत् ( पु० ) बन्द, रुद्ध, स्तम्भित, घसीकृत ।  
 कीली तत् ( स्त्री० ) चक्र या पहिये के बीचो बीच की वह कील या लकड़ी जिस पर वह घूमे ।  
 कीश तत् ( पु० ) वानर, यन्दर, मर्कट, कपि, लंगूर, सूर्य ( पु० ) नङ्गा, विवश्व । — पर्णी ( स्त्री० ) थपामार्ग, चिरचिरा ।  
 कीस दे० ( पु० ) गर्म की धैली, जरायुज, बन्दर ।  
 कु तत् ( अ० ) पाप, कृत्वा, न्यूनता, अपार्यक, मन्द, कुरित, अधर्म, खोटा, निन्दा या न्यूनता बोधक । जिन शब्दों के पहले यह आता है उनका अर्थ कभी बुरा, कभी न्यून, कभी निन्दित हो जाता है । ( स्त्री० ) पृथ्वी ।  
 कुंभर ( पु० ) लडका, पुत्र, राजपुत्र ।  
 कुम्भा दे० ( पु० ) कूप, इनार, इनार ।  
 कुंवर तत् ( पु० ) राजा का बेटा, राजकुमार, राजपुत्र ।  
 कुंवरि या कुंवारी तत् ( स्त्री० ) राजपुत्री, राज- कन्या ।  
 कुंवारा तत् ( वि० ) बिन ब्याहा ।  
 कुंवारी तत् ( वि० ) बिन ब्याही, अविवाहित कन्या ।  
 कुर्म तत् ( पु० ) [ क + कृ + मत् ] बुरा कर्म, कुत्सित कर्म, दुराचार, अन्याय, पाप, अनुचित, अधर्म । — की ( पु० ) कुत्सित कर्मचारी, पापात्मा, दुरात्मा, दुराचारी ।  
 कुकुर ( पु० ) बाव बचियों की एक जाति । — खासी ( स्त्री० ) सूखी खासी । — दन्ता ( वि० ) देढ़े और आगे निकले हुए दाँतों वाला । — माझी ( स्त्री० ) मक्खी विशेष जो पशुओं के चिपट जाती है । — मुता ( पु० ) कुकुरों का । — की ( स्त्री० ) कुतिया ।  
 कुकुरोंकी ( स्त्री० ) कुकुरमाछी ।  
 कुकुही ( स्त्री० ) वनमुरगी, शुकड़ी, काले दाग जो बाघों की बाली पर लगते हैं ।  
 कुक्कुट, कुकट तत् ( पु० ) ग्रहणशिव, ताम्र- चूड़, मुरगी, कुकड़ा, चिनगारी, लूक, जटाधारी ।  
 — नाड़ी तत् ( स्त्री० ) नली या यंत्र जिससे अरे वरतन का जल रीते वरतन में जाय । — पाद

तत् ( पु० ) पर्यंत जिसे घब कुकिंदार कहते हैं और जो गया से आठ कोस उत्तर पूर्व की ओर है ।  
—मस्तक तत् ( पु० ) चष्य, चाय ।—घत तत् ( पु० ) भाद्रशुक्ल सप्तमी का किया जाने वाला घत विशेष ।—शिला तत् ( पु० ) इसुम का पेड़ या फूल ।

कुकुटक तत् ( पु० ) शूद्रा पिता और निषादी माता से अथवा वर्षासङ्कर जाति विशेष, वनमुर्गी ।

कुक्कुर तत् ( पु० ) कुकर, कुत्ता, ध्वान ( वि० ) गाँवदार । [ रेड़ी मेड़ी लकड़ी ।

कुकाठ तद् ( पु० ) घुरी लकड़ी, सड़ी घुनी लकड़ी, कुक्रिया तत् ( स्त्री० ) बुद्धि, निन्दितकर्म, निन्दितारण्य, विग्रीत क्रिया ।

कुक्त तत् ( पु० ) पेट, उदर ।

कुक्ती तत् ( स्त्री० ) कोख, पेट, गुहा, सन्तति ।

कुख्याति तत् ( स्त्री० ) अपवश, दुर्नाम, निन्दा ।

कुप्रह तत् ( पु० ) मन्दप्रह, छोटे प्रह, दुखदायी प्रह, अशुभ प्रह । [ अधिक नीच लोग रहते हों ।

कुग्राम तत् ( पु० ) निन्दित गाँव, जिस गाँव में

कुघाट हों बेघील, कुरूप ।

कुघात दे० कुसमय में मारना, मर्मस्थान में मारना ।

कुङ्कुद दे० ( पु० ) एक में एक सङ्कुचिन, एकट्टा ।

कुङ्कुदा दे० ( पु० ) वरधान्, सखट मुसण्डा, स्वास्थ्य युक्त, हरकुष्ट ।

कुङ्कुम तत् ( पु० ) केशर, सुगन्ध द्रव्यविशेष, रोरी ।

कुङ्कुमा दे० ( पु० ) गुलाल रखने के लिये लाल का बना हुआ पात्र । [ धरोज, जाती ।

कुञ्ज तत् ( पु० ) [ कुञ्ज + मज्ज ] स्तन, धन, चूँची, कुञ्जकुचया ( पु० ) उखलू । [ धन का मुँह, बीड़ी ।

कुञ्जकुड्मल तत् ( पु० ) स्तन के ऊपर का भाग, कुञ्जन दे० ( पु० ) कुविमाना, तह करना, कुञ्ज का

यहवचन । [ सुगन्धि का चन्दन ।

कुञ्जन्दन तत् ( पु० ) लाल चन्दन, रक्त चन्दन, बिना

कुञ्जर दे० ( पु० ) निन्दक, दोषानुसन्धिक्यु, दोष

हटाने वाला । [ देना, टुकड़े टुकड़े कर देना ।

कुञ्जलना दे० ( कि० ) चूर करना, मसलना पीस

कुञ्जला दे० ( पु० ) औषध विशेष, विष विशेष ।

कुचाग्र तत् ( पु० ) स्तन का अग्रभाग, चूँची का बोंडा, मिटनी, भेटुला । [ वहार ।

कुचाल दे० ( पु० ) कुरीति, बुरा चलन, कुटेव, कुच्य-

कुचाली दे० ( पु० ) उपद्रवी, छोटे चाल चलन वाला ।

कुचाह दे० ( पु० ) अनिच्छा, अशुभ हृच्छा, प्रेम

रहित, कपट स्नेह, अशुभ बात, अमङ्गल ।

कुचि या कुची दे० ( पु० ) बहारी, बहनी, मार्जनी,

शोधनी, भाङ्ग, कूची जिससे दीवार पर सफेदी

पोंती जाती है । [ भाग, छोटी छोटी टिकिया ।

कुचिया दे० ( पु० ) लोलकी, कान के नीचे का कामल

कुचिलना ( कि० ) देखो कुचलना । [ कथाधारी ।

कुचेला तत् ( पु० ) मलीन, मलीन वस्त्रधारी, गूढ़ड़ी,

कुचेष्ट तत् ( पु० ) बुरी चेष्टा वाला । [ बुरा भाव ।

कुचेष्टा तत् ( स्त्री० ) कुप्रवय, बुरी चाल, मुख का

कुचेला दे० ( वि० ) मँले कपड़े वाला, मैला, गंदा ।

कुचोद्य तत् ( पु० ) कुरित प्रश्न, कुतर्क, सुचुर,

वितण्डा ।

कुङ्ग दे० ( पु० ) भरप, थोड़ा, एक आध ।—और

गाना ( वा० ) झूठी बात करना, दूसरे के स्थान

में दूसरी बात ।—के ( वा० ) थोड़ा बहुत,

कुङ्ग कुङ्ग ।—से कुङ्ग होना—का कुङ्ग होना

( वा० ) उलटा पलटी, विपरीतता ।—कुङ्ग

( वा० ) थोड़ा थोड़ा ।—न कुङ्ग ( वा० )

थोड़ा बहुत, वल्लिष्टि ।—नहीं हो ( वा० )

निष्प्रयोजन, व्यर्थ ।—हो ( वा० ) जो कुछ हो,

इसका प्रयोग उस वस्तु के लिये किया जाता है,

जो जानी हुई न हो और उसके जानने की आवश्यकता भी न हो ।

कुञ्ज तत् ( पु० ) मङ्गलप्रद, नरकासुर, महलवार,

वृष, पेड़ ।—ता तत् ( स्त्री० ) सीता, कराय-

यिनी का एक नाम ।

कुञ्जलीवन तत् ( पु० ) कुञ्जरवन, हाथियों का वन,

जिस वन में अधिक हाथी हों ।

कुजाति तत् ( पु० ) नीच जाति, अपम जाति,

जातिच्युत, जाति-अष्ट, दुराचारी, पतित व अपम

पुरुष । [ अशुभ योग ।

कुजोग तद् ( पु० ) अनमेल, संबन्ध, छोटा योग,

कुञ्जकी तद् ( स्त्री० ) चोनी, चँगिया, काचली, फूला ।

कुञ्जि दे० ( पु० ) पसर, अक्षलि ।

कुञ्जिका तत्० ( स्त्री० ) कुञ्जी, ताली ।

कुञ्जित तत्० ( पु० ) घूमा हुआ, टेढ़ा, छुल्लेदार,  
घूँघर वाले ।

कुञ्जी तत्० ( स्त्री० ) ताली, कुंजी ।

कुञ्ज तत्० ( पु० ) लता आदि से ढका हुआ स्थान,  
लता के द्वारा बना हुआ अक्रित्रिम गृह । तत्०  
( स्त्री० ) लताच्छादित, उद्यान का स्थान, तट्टा जगह ।

कुञ्जड़ा दे० ( पु० ) एक सुसलमान जाति जो तरकारी  
फल फूल आदि बेचती है ।

कुञ्जर तत्० ( पु० ) हाथी, बलवान, श्रेष्ठता । यह शब्द  
जिस जाति वाचक शब्द के आगे जोड़ा जाता है,  
उसकी प्रधानता बतलाना है । जैसे—नाकुञ्जर,  
प्रधान मनुष्य । यथा—

“ कपिकुञ्जरहिं षोडि लै आये ”

—रामायण ।

एक नाग का नाम, केश, देश विशेष, पर्वत विशेष,  
हनुमान की माना ध्वजना के पिता का नाम,  
कृष्ण विशेष, पौराणिक वृद्ध, शुक्रपत्नी विशेष  
जिसने महर्षि ब्यवन को उपदेश दिया । हस्त  
नक्षत्र, पीपल, छाठ की संख्या ।

कुञ्जिका तत्० ( स्त्री० ) कुंजी, काला जीरा ।

कुञ्जी दे० तत्० ( स्त्री० ) चाबी, ताली, स्थाह जीरा,  
वह पुस्तक जिसमें किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ  
मालूम हो, ‘की’ ।

कुट तत्० ( पु० ) समुद्र, शिखर, साङ्केतिक शब्द,  
पर्वत तोड़ने वाली हथौड़ी, घर ।

कुटकी दे० ( स्त्री० ) एक औषध का नाम, मसाला ।

कुटज तत्० ( पु० ) कुरैया का नाम, इन्द्रियव, अगस्त्य  
मुनि, श्रेयाचार्य, पुष्प विशेष ।

कुटनई दे० ( स्त्री० ) कुटनापन, कुटना के गुण ।

कुटना दे० ( क्रि० ) कुटना, खण्ड करना, तोड़ना,  
घूर्ण करना ।—( पु० ) भण्ड, मंडवा, कुर्म के  
लिपि बहकाने वाला ।—पन ( पु० ) स्त्री को पर  
पुरुष के पास और पर पुरुष को पर स्त्री के पास  
पहुँचाने का काम ।

कुटनाना दे० ( क्रि० ) कुसलाना, घर में करने व  
आज्ञाकारी बनाने का उपयोग करना ।

कुटनी तत्० ( स्त्री० ) कुटनी, दूती, सन्देश ले जाने  
वाली ।—पना दूती कर्म ।

कुटाई ( स्त्री० ) कुटने का काम ।

कुटिया तत्० ( स्त्री० ) वर्षागृह, वर्ष निर्मित गृह,  
घास फूस का बना घर ।

कुटिल तत्० ( पु० ) [ कुट + इत् ] बक, बाँका,  
टेढ़ा, झुर, दुष्ट, दुर्गन्धवान्, कपटी, छली, छोटा ।

—ता ( स्त्री० ) कुटिलत्व, बकता, शठता, क्रांता ।

—ान्तःकरण ( पु० ) कपटी, खल, घसत अन्तः-  
करण, झुर । [ टेढ़ापन ।

कुटिलाई तत्० ( स्त्री० ) छल, कपट, बकता  
कुटिला तत्० ( वि० ) व्यंग्य से ईंसी बढ़ाने वाला, कूट  
कहने वाला ।

कुटी तत्० ( स्त्री० ) भोपड़ी, मड़ी, छोटा घर ।—चक्र  
( पु० ) पुत्र के अक्ष में जीने वाला, चार प्रकार के  
संन्यासियों में से प्रथम, त्रिङ्गुली संन्यासी ।—चर  
( पु० ) पति विशेष संन्यास की प्रथम अवस्था,  
कुटिल, छत्ती चुगुलखोर ।

कुटीर तत्० ( पु० ) झुग्गुह, कुटी ।

कुटुम्ब तत्० ( पु० ) जाति बन्धव, सन्तान, सन्तति,  
परिजन, परिवार, कुलध, खानदान ।

कुटुमी तत्० ( पु० ) कुटुम्ब मिश्र ।

कुटुम्ब तत्० ( पु० ) देखो कुटुम्ब ।

कुटुम्बी तत्० ( पु० ) कुलधेवाजा, नातेदार ।

कुटौनी ( स्त्री० ) धान कूटने की मजदूरी ।

कुटवे दे० ( पु० ) बुरी आदत, बुरी बात ।

कुटनी तत्० ( स्त्री० ) कुटनी, दूती ।

कुटमित तत्० ( पु० ) [ कुट + मा + क् ] स्त्रियों की  
एक प्रकार की गृहपर चेष्टा । यथा—

“जहाँ सुख अरु दुःख की, प्रगट, करे जो धाम,  
परम ललित यद हाव है, होत कुटमित नाम”

—पद्माज ।

कुठला दे० ( पु० ) नाज रखने की तट्टी या बड़ा  
पात्र, चूने की भट्टी ।

कुठाल, कुठाय दे० ( स्त्री० ) बुरी जगह, कुठाय ।

कुठाट दे० ( पु० ) बुरा साज, बुरा प्रबन्ध ।

कुठार तत्० ( पु० ) फासा, कुहड़ाड़ी, कुहड़ाड़ा ।

कुठारी तत्० ( स्त्री० ) कुहड़ाड़ी, अक्ष रखने का स्थान ।

कुठाहर दे० (स्त्री०) असमय, बेठिकाने, मर्म स्थान, नीच स्थान ।

कुड़कना दे० (क्रि०) कुड़कुड़ करना, धूरना, गुराँना ।  
कुड़मा या कुरमा दे० (पु०) कुड़म्ब, परिवार, कुनवा ।  
कुड़न तत्० (पु०) एक सेर का पाँचवाँ भाग, अनाज नापने का चार अंगुल चौड़ा और चार अंगुल गहरा नाप ।

कुड़ड़ दे० (पु०) अशिष्ट व्यवहार, हानिकारी आचरण ।  
कुड़ना दे० (क्रि०) मन ही मन क्रोध करना, दूसरों की उन्नति देख मन ही मन दुःखित होना, डाह ।

कुदय दे० (पु०) वेदप, कठिन, दुस्तर ।  
कुहन (स्त्री०) विद्वाना, मन ही मन कुपित होना ।  
कुहाना दे० (क्रि०) चिड़ाना, खिन्नाना, जलाना ।  
कुण्डित तत्० ( पु० ) [ कुण्ड + क्त ] भौंधरा, गुठल, मन्द, निष्प्रभा ।

कुण्ड तत्० (पु०) [ कुण्ड + अल् ] परिमाण विशेष, जलाशय, खड्डा, जलाधार विशेष, चौबन्धा । बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रकार का पुत्र । पति के रहते उपपति से वरज सम्पत्ति को कुण्ड कहते हैं । हवन करने का गहड़ा, पत्रगर्भ ।

कुण्डल तत्० ( पु० ) कर्णभूषण विशेष, पहिने के आभार का गोल गहना जो सींग, खकड़ी काँच या गीड़े की छाल या सोने का बना होता है और जिसे गोरखनाथी सधु कानों में पहनते हैं ।

कुण्डलिया दे० (पु०) एक भाषा के छन्द का नाम, इस छन्द में १५४ मात्रा होती हैं, जिस शब्द से प्रारम्भ किया जाय, उसी शब्द से इसे समाप्त करना चाहिये, इस छन्द में एक वाक्य कुण्डलयत् द्वारा पढ़ा जाता है, इसीसे इसका नाम कुण्डलिया है ।

कुण्डली तत्० (स्त्री०) वृक्षविशेष, कचनार, गुड़च, जलेधी, कुण्डलाकार, चक्र विशेष जो किसी के जन्मकाल-स्थित ग्रहों को बतलाने के लिए बनाया जाता है । गेंडुरी, सफ के बैठने का आसन ।—  
कृत (पु०) संपि, वरण. मयूर, चित्तल हिरन, विष्णु, कुण्डलधारी ।

कुण्डिन तत्० ( पु० ) एक मुनि का नाम, नगर विशेष, विदर्भ नगर, बरार प्रदेश के मध्यवर्ती

एक नगर का नाम, इसका दूसरा नाम विदर्भ भी है । बरार नदी के किनारे पर यह बसा हुआ था । यह दो भागों में विभक्त था, उत्तरीय कुण्डिन की राजधानी अमरावती थी, और दक्षिण कुण्डिन की राजधानी प्रतिष्ठाननगर था । [जशूर ।

कुण्डी दे० (स्त्री०) किवाड़ धन्य करने की साँकल, कुतका (पु०) डंडा, सोटा ।

कुतः तत्० (अ०) प्रसार्थक, कहाँ से, क्यों । [यशराज ।  
कुतनु तत्० ( अ० ) कुरिस्त शरीर । ( पु० ) कुयो,  
कुतप तत्० (पु०) दिन का आठवाँ भाग, दिन का आठवाँ मुहूर्त, एकोद्वि नामक आठ आरम्भ करने का समय, मध्याह्न, अतिथि, सूर्य, अग्नि, द्विज, अतिथि, भोज । काल (पु०) गरमी का समय, मध्याह्न समय ।

कुतरना तद् ( क्रि० ) दान वा चीज में छोटे छोटे टुकड़े करना । [यश ।

कुतख तद्० (पु०) काटने वाला, पिछा, कुत्ते का कुतर्क तत्० (पु०) कुरिस्त तर्क, निन्दित तर्क, बुद्धि युक्तियों के सहारे का तर्क, विरुद्ध विचार ।—  
(पु०) कुतर्क करने वाला, झुलती ।

कुतल तद्० (पु०) पृथ्वीतल, मूलतल ।  
कुतवार (पु०) हूतने वाला, अन्दाज़ा करने वाला ।

कुतार दे० (पु०) असुविधा, अँबस ।  
कुतिया दे० (स्त्री०) कुइरी, कुत्ती, कुत्ते की मादा ।  
कुतुबखाना दे० (पु०) पुस्तकालय ।

कुतुबनुमा (पु०) दिशाई बनाने वाला यंत्र विशेष ।  
कुनूदल तत्० ( पु० ) अर्ध वस्तु देखने की लाटमा, आमोद, कैतुक, परिहास, शङ्कता ।—  
१ (पु०) अर्ध, अदभुत, प्रशङ्क, आमोदी, कैतुकी, शङ्की ।

कुण्ड तत्० (पु०) निन्दित नृण, बुरी घास ।  
कुत्ता दे० (पु०) कुकुर, ग्रामभूय (स्त्री०) कुत्ती ।

कुत्र तत्० (अ०) कहाँ, किस स्थान पर ।— [पि (अ०) कहाँ गी, किसी ठिकाने । [रत्नानकरण ।

कुत्सन तत्० (पु०) [ कुत्स + अनट् ] निन्दन, मारतन,  
कुत्सा तत्० ( स्त्री० ) निन्दर, कुत्सा, गद्दा, बुराई,  
अज्ञा, अपमान ।—अनक ( पु० ) निन्दा कराने वाला, रत्नानकर ।

नाम, सिंहलेश्वर शतशृङ्ग की कन्या और भारत-राजा की कन्या । इसका शरीर साधारण स्त्रियों का सा था, परन्तु मुँह बकरी का । इसने अपने प्रयत्न से पुनः मनुष्य का मुख प्राप्त किया । ( स्कन्द पुराण देखो ) ।

**कुमारिल तत्त्वं ( पु० )** विख्यात दार्शनिक पण्डित और वेदों का भाष्यकार । ये आदि शङ्कराचार्य के समय में उत्पन्न हुए थे । इन्होंने मीमांसावार्तिक और तन्त्रवार्तिक नाम के ग्रन्थ लिखे हैं और वेही शबर-भाष्य तथा श्रौत सूत्रों के टीकाकार भी हैं । जिस समय यह उत्पन्न हुए थे, उस समय भारत की स्थिति विचित्र थी । बौद्ध धर्म का बोलबाला था । कुमारिल ने बौद्ध शास्त्र का अध्ययन बौद्ध साधुओं से किया, पुनः उसका खण्डन किया । गुरु-द्रोह के पाप से छुटकाटा जाने के लिये प्रयाग में तुषानल में इन्होंने अपने शरीर को भस्म का डाला । जिस समय वे अग्नि में अपनी शरीर भस्म कर रहे थे उस समय शङ्कराचार्य इनके पास भेंट करने के लिये पहुँचे थे । यह दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे । इनका समय सन् ६५० से ७०० ई० के बीच निश्चित किया गया है ।

**कुमारी तत्त्वं ( स्त्री० )** इस वर्ष की कन्या, चिनव्याही, अविधाहिता, जम्बूद्वीप, धीकुआर, नवमल्लिका, बड़ी हलायची, श्यामा पत्नी, जानकीजी का नाम, पार्वती, दुर्गा, भारतवर्ष का एक अन्तरीप, चमेली, सेवती, भूमि का मध्य भाग । शाकद्वीपी सप्त सरिताओं में से एक, अपराजिता ।—पूजा या पूजन ( स्त्री० ) तन्त्रशास्त्रोक्त आराधना ।

**कुमारी तत्त्वं ( पु० )** कुपय, कुचार, दुराचार्य, दुर्गम पथ, अधर्म ।—गामी ( वि० ) दुर्गचारी, अधर्मी ।  
**कुमारी ( वि० )** देतो कुमारीगामी ।

**कमद या कुमुद तत्त्वं ( पु० )** श्वेत कमल, रक्त कमल, कुमोदिनी, कोई, चाँदी, विष्णु, राम की सेना का एक बन्दर । आठ दिग्गजों में से नैऋत्य कोण का दिग्गज । दैत्य विशेष, द्वीप विशेष, कपूर, नाग विशेष, विष्णुपरिपद विशेष, कैतु तारा, सहीत का एक ताल । ( वि० ) कंजस, लाकड़ी ।—चन्द्र ( पु० ) चन्द्रमा, कुमुद का मित्र ।

**कुमुदिनी या कुमोदिनी तत्त्वं ( स्त्री० )** कुमुदयुक्त सरो-वर, कमलिनी, पद्मिनी, निलोत्तर ।—पति तत्त्वं ( पु० ) चन्द्रमा ।

**कुम्भ तत्त्वं ( पु० )** घड़ा, कलश, घट, हाथी का मस्तक, एक राशि का नाम, मान जो ६४ सेर का होता है । एक पर्व का नाम, गुग्गुलु, वैश्यापति, प्राणायाम के तीन भागों में से एक, एक राजा का नाम, यह मेवाड़ के राजा मुकुल के पुत्र थे । महाराजा मुकुल के छल से मारे जाने पर १४११ ई० में कुम्भ मेवाड़ के महाराजा हुए । यह विख्यात शूर और पण्डित थे । जयदेव के गीतगोविन्द की एक टीका इन्होंने लिखी है । माछवा का राजा महमूद अपनी और गुजरात के राजा की सेना लेकर चित्तौर पर चढ़ आया । कुम्भ ने बड़ी योग्यता के साथ अपनी वीरता प्रदर्शित की । शत्रुसेना को हराकर, महमूद को इन्होंने कैद कर लिया । पुनः उसके साथ राणा कुम्भ का व्यवहार दयापूर्ण ही रहा । महमूद ६ महीने तक चित्तौर में कैद रहा । दिल्ली के बादशाह ने अब चित्तौर पर चढ़ाई की उस समय महमूद ने अपनी जाति के विरुद्ध तलवार उठाई थी ।—क तत्त्वं ( पु० ) प्राणायाम की एक प्रक्रिया जिससे साँस खींच कर वायु को शरीर के भीतर रोक्ते हैं ।—कर्ण ( पु० ) राक्षस विशेष, रावण का छोटा भाई ।—कार ( पु० ) शूद्रा के गर्भ से और विरवर्मा के औरर से उत्पन्न जाति विशेष, कुम्हार, मुर्गा ।—कारी ( स्त्री० ) कुम्हारिन, कुलधी, मैनसिल ।—ज ( पु० ) कुम्भ से उत्पन्न, बलिष्ठ और भगवत् सुनि, द्रोणाचार्य ।—वीर्य ( पु० ) रीझ ।—सम्भव ( पु० ) कुम्भ से उत्पन्न मर्चिं वशिष्ठ, अरहत् सुनि, द्रोणाचार्य । [ वैश्या ।

**कुम्भा तत्त्वं ( पु० )** छोटा घड़ा, एक राजा का नाम, कुम्भिका तत्त्वं ( स्त्री० ) जल का एक प्रकार का वृण, वृष्ट विशेष, वैश्या, कायकज, नेत्ररोग विशेष, पर-वल का पेड़, लिङ्ग का रोग विशेष ।

**कुम्भनी दे० ( स्त्री० )** पृथ्वी, भूमि, जमाल गोदा ।  
**कुम्भी तत्त्वं ( स्त्री० )** वृणविशेष, जो पानी पर जमा हुआ होता है । ( पु० ) हाथी, मगर, गुग्गुलु का

धृव, एक विप्रेला कीट, मङ्गली विशेष, बालकों को फलेश देने वाला राक्षस ।  
 कुम्भीनस तत् ( पु० ) फणधर, सर्प, साँप, रावण ।  
 कुम्भीपाक तत् ( पु० ) नरक विशेष । [ मगर ।  
 कुम्भीर तत् ( पु० ) जलजन्तु विशेष, नक, मकर, कुम्भीरुणा तत् ( धी० ) औषध विशेष, निसीत ।  
 कुम्हड़ा तत् ( पु० ) फल विशेष, पेठा । यह दो प्रकार का होता है । सफेद रंग का और पीले रंग का, पीले रंग के कुम्हड़े को कद्दू या काशीफळ भी कहते हैं ।  
 कुम्हड़ौरी या कुम्हड़ौरी तत् ( स्त्री० ) पेठे की बरी ।  
 कुम्हलाना दे० ( क्रि० ) मुरझाना, सूखना, रक्त घटल जाना ।  
 कुम्हार तत् ( पु० ) कुलाब, कुम्भकार, घड़ा आदि मिट्टी का पतन बनाने वाला । ( स्त्री० ) कुम्हारी, जन्तु विशेष, कुम्हार जाति की स्त्री ।  
 कुयशः तत् ( पु० ) दुर्गम, अपयश, दुष्कीर्ति ।  
 कुयोग तत् ( पु० ) दुष्टयोग, दुःखदायक ग्रह ।  
 कुयोगी तत् ( पु० ) विषयानुरक्त, विषय भोगी ।  
 यथा—  
 “पुरुष कुयोगी ज्यौं उरगारि,  
 मोह विटप महिसकत उपारि”  
 — रामायण ।  
 कुरकुरी, या कुरकुरी दे० ( वि० ) भुरभुरी ।  
 कुरङ्ग तत् ( पु० ) बादामी रक्त का हिरन, मृग, एण ( वि० ) भुरा रक्त ।—नयना या नयनी ( स्त्री० ) मृगनयनी, मृगलोचनी ।—नाभि ( पु० ) कस्तूरी, मृगनाभि ।  
 कुरण्डक तत् ( पु० ) ओषधि विशेष, पियर्वासा ।  
 कुरता दे० ( पु० ) पुरुषों के पहिने का सिन्हा हुआ वस्त्र विशेष ।  
 कुरती दे० ( स्त्री० ) स्त्रियों की कतुही ।  
 कुरवक तत् ( पु० ) ओषधि का नाम, कटसरैया ।  
 कुरमा दे० ( पु० ) कुनवा, घराना ।  
 कुरर तत् ( पु० ) कुरलपपी, उक्रोश, धक, धगन्ना, झोंच ।  
 कुररी तत् ( स्त्री० ) पक्षि विशेष, कुँज, जब के किनारे रहने वाली एक चिड़िया, चीरह, भेड़, मेरी ।  
 कुरसी ( स्त्री० ) काठ की बनी बैठकी विशेष ।—नामा ( पु० ) वंशावली । [ करना, डेर लगाना ।  
 कुराई दे० पाव फँसने योग्य, विलम्ब, उलटना, राखी

कुरान ( पु० ) मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ ।  
 कुराह तत् ( स्त्री० ) कुमार्ग, बुरी राह ।  
 कुरिया दे० ( स्त्री० ) फूस की झोपड़ी ।  
 कुरी तत् ( पु० ) जाति, कुल, घराना, सभ जाति अनेक जाति, बरहर की फली । [ कुल्यवहार, कुचाल ।  
 कुरीति तत् ( स्त्री० ) निषिद्ध आचरण, कदाचार, कुरीर तत् ( पु० ) मठी, मढ़ी, रतिक्रिया, रमण, मैथुन ।  
 कुरु तत् ( पु० ) चन्द्रवंशी राजकुल, देश विशेष, जो उत्तर भारत में है । पृथ्वी के नवखण्ड में से एक खण्ड, कर्वा, भारत ।—केतु ( पु० ) दुर्योधन, युधिष्ठिर, परीक्षित ।—क्षेत्र ( पु० ) दिक्ती के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव पाण्डवों की लड़ाई हुई थी, यहाँ इसी नाम का एक झील भी है जो यानेरवर के दक्षिण की ओर है । यह सरस्वती नदी के दक्षिण, और दण्डवती नदी के उत्तर है ।—जाङ्गल तत् ( पु० ) एक प्राचीन देश जो पाताल देश के पश्चिम था ।—पति-राय ( पु० ) कुस्तान, दुर्योधन, युधिष्ठिर ।—वंश ( पु० ) रामाकुल की सन्तति । [ अजीर्ण ।  
 कुरुचि तत् ( स्त्री० ) नीच घासना, दुरमिलाप, कुरुवक तत् ( पु० ) ओषधि विशेष, कुरवक ।  
 कुरुल दे० ( पु० ) बूँगुर, चिकुर ।  
 कुरुप तत् ( पु० ) क्रूरित आकृति, कदाचार, कुबौल भवैसा, बदस्वर, बेढंगा ।  
 कुरेदना तत् ( क्रि० ) खुरचना, करोदना ।  
 कुरकुट दे० ( पु० ) कड़ा, काढ़न, घुहारन ।  
 कुरकुटी तत् ( पु० ) सेमर वृक्ष ।  
 कुर्राल दे० ( स्त्री० ) कूद, कुलाँच, चौकड़ी ।  
 कुर्या दे० ( पु० ) कुम्भ, कुबड़ । [ काती है ।  
 कुर्मी दे० ( पु० ) एक जाति का नाम जो खेती का काम कुर्मक तत् ( पु० ) सुपारी ।  
 कुर्याल दे० ( स्त्री० ) सुख, धाराम, विनानदित ।—में गुलेल लगाना ( वा० ) निराश होना, सुख के समय दुःख ।  
 कुर्रा दे० ( स्त्री० ) हँगा, पटरा, सुदागा, कुरहरी, छुट्टी ।  
 कुरी तत् ( स्त्री० ) कामल अस्थि, उप-भ्रसिप ।  
 कुल तत् ( पु० ) गोत्र, वंश, जाति यहाँ, स्थनातीय

गण, जन समूह, घर, मकान जैसे अष्टिकुल ।  
 दे० (वि०) समस्त, सध, सारा, पूरा ।—कण्टक  
 (पु०) कुपुत्र ।—कन्या (स्त्री०) कुलीना कन्या ।  
 —कर्म (पु०) परम्परा का व्यवहार, कुलाचार,  
 कुलक्रिया ।—कानि तद् (स्त्री०) कुल की  
 मर्यादा, कुल की लज्जा ।—घाती (पु०) कुल  
 नाशक ।—ज (पु०) कुलीन, सकुलोद्भव,  
 सद्देशीय ।—तारण (पु०) सुपुत्र ।—द्रोही (पु०)  
 कुमारी, वंशदूषक ।—धर्म (पु०) कुल व्यवहार  
 कुलचार ।—नाश (पु०) सन्तानहीनता,  
 कुलभ्रष्टता ।—पूजक (पु०) पुरोहित, कुलदेव ।  
 —वधू (स्त्री०) पतिव्रता, कुलस्त्री ।—घोड़  
 (पु०) कुलनाशक, घरघालू ।

कुलकुला दे० (पु०) कुलका, कुलकुची, गणदूष ।  
 कुलकुलाना (क्रि०) कुलकुल शब्द करना । (वा०)  
 आती का कुलकुलाना, अत्यन्त भूला होना ।  
 कुलकुली दे० (स्त्री०) सुनत्री, सुलझुसी ।  
 कुलचा दे० (पु०) मूल घन, पूँजी । [मूल विशेष ।  
 कुलजनन दे० (पु०) शोषधि विशेष. पान की लड़,  
 कुलक्षण तद् (पु०) कुचाक, घुरा लक्षण ।  
 कुलक्षणी तद् (स्त्री०) दुराचारी, दुराचारिणी ।  
 कुलह तद् (पु०) राय, भाद, कुलाचार्य ।  
 कुलटा तद् (स्त्री०) असती, अपवित्रा ।  
 कुलयी तद् (स्त्री०) अन्नविशेष, कलाई विशेष ।  
 कुलबुलाना दे० (क्रि०) गुललाना, कलमलाना,  
 सुलबुलाना । [बुलाहट ।  
 कुलबुलाहट दे० (स्त्री०) कीड़े का चल फेर, सुल-  
 कुलमा दे० (पु०) ललचा, भोजन विशेष ।  
 कुलवंत तद् (पु०) कुलवान्, कुलीन, भ्रष्ट ।  
 कुलपन्ती तद् (स्त्री०) अन्धे घराने की स्त्री ।  
 पतिव्रता, बड़े घर की बेटी ।  
 कुलवान् तद् (पु०) कुलीन, सद्गज ।  
 कुलह तद् (पु०) टोपी, कुलाह, सिर पर पहनने  
 का एक कपड़ा ।—नी (स्त्री०) टोपी ।  
 कुला तद् (स्त्री०) मनशिल, शोषधि विशेष ।  
 कुलाच दे० (पु०) कदना, फाँदना ।—मारना चौकड़,  
 छलांगना, फाँदना ।  
 कुलाङ्गना तद् (स्त्री०) कुलीन स्त्री ।

कुलाङ्गार तद् (पु०) सत्थानाशी, कुलनाशकारी ।  
 कुलाचार तद् (पु०) वंशधर्म, कुलरीति, तान्त्रिक  
 रीति ।  
 कुलाचार्य तद् (पु०) वंशगुरु, पुरोहित ।  
 कुलाल तद् (पु०) कुम्हार, कुम्भकार ।  
 कुलाह तद् (पु०) देखो कुलह ।  
 कुलाहल तद् (पु०) कोलाहल, कुहल, शोर ।  
 कुलि (अ०) सम्पूर्ण, कुल, सब ।  
 कुल्हिया दे० (स्त्री०) कुलहा, सारा, पुरवा ।—में  
 गुड़ फोड़ना (वा०) गुप्त काम करना ।  
 कुलिश तद् (पु०) हीरा, यज्ञ, श्रीरामकृष्णादि  
 भगवद्व्यक्तियों के पैर का चिह्न ।—धर तद्  
 (पु०) इन्द्र, यज्ञ धरने वाला ।  
 कुलो दे० (पु०) रेल के स्टेशनों पर जो मजदूर घसघास  
 उठाने को रहते हैं, मजदूर, थोक ढोने वाला ।  
 कुलीन तद् (पु०) श्रेष्ठवंशोद्भूत, सद्गजान ।  
 कुलोनाई तद् (स्त्री०) कुलीना, वचन कुल ।  
 कुलुफ दे० (पु०) ताला ।  
 कुलू दे० (पु०) एक प्राचीन देश ।  
 कुलेज (स्त्री०) खेल, क्रीड़ा । [करने की एक क्रिया ।  
 कुला दे० (पु०) मुँह में पानी भर कर मुख को साफ  
 कुलाकुली दे० (पु०) गुलारी, कुलाची, गरारा ।  
 कुल्हड़ दे० (पु०) करई मोलुखा ।  
 कुल्हाड़ी दे० (स्त्री०) कुहार, टाँगी, बट्टा ।  
 कुल्हिया (स्त्री०) छोटा कुल्हड़ ।  
 कुवलय तद् (पु०) खेत, कमल, नीलोत्पल ।—अवे  
 (पु०) एक राजा का नाम, यह महाराजा श्रावस्त  
 का पौत्र और बृहद्भ्य का पुत्र था, इसके पिता-  
 मह श्रावस्त ने श्रावस्ती नामक नगरी बसायी थी ।  
 महाराज कुवलयाम्ब ने वत्स महर्षि की आज्ञा से  
 पुत्र्यु मनाक राक्षस को मार डाला, तब से इनका  
 पुत्र्युमार नाम पड़ा । (२) शत्रुजित् नामक राजा  
 का पुत्र, इनका नाम शत्रुध्वज था । कुवलय  
 नामक एक तेज घोड़ा इनके पास था, इसी कारण  
 इनको कुवलयारव कहते थे । गन्धर्व राज की  
 कन्या मदीलसा इनसे ब्याही गयी थी ।  
 कुवलयपीठ तद् (पु०) [कुवलय + आ + पीठ]  
 हस्ति रूपी एक दैत्य, कंसराज का एक दासी ।

कुवाक्य या कुवाक्य तत् ( पु० ) परप धाक्य,  
फोर यात, गाली ।

कुवादी तत् ( गु० ) दुष्ट, कुचन बका, मुहफट ।

कुवार ( पु० ) कुभार, आश्विन यत्सेज ।

कुवारी ( ली० ) अश्विन में होने वाला धान कुमारी ।

कुविक्रम तत् ( पु० ) आयाचार, उपद्रव, शत्रुता ।

—नी ( गु० ) उपद्रवी, दुर्जन, दुरात्मा, शठ ।

कुविचार तत् ( पु० ) अन्याय विचार, अययार्थ  
विचार, नीच विचार ।

कुविन्द तत् ( पु० ) तन्मुवाय, कपड़ा बनाने वाला,  
शूद्रा के गर्म और दिग्बर्मा के औरस से आति  
विशेष, जुलाहा । [ पुत्र ।

कुविन्दु तत् ( गु० ) नीचवीर्य अधमपुत्र, दुष्ट का

कुविद्वज्ज तत् ( पु० ) अधम पत्नी, बाज पत्नी ।

कुवृत्ति तत् ( पु० ) अधम व्यापार, नीच कर्म,  
निम्नित्त वासना ।

कुवेर तत् ( पु० ) पंचराज, धनेश, किन्नरेश, धन  
का देवता, देवताओं का कोशाध्यक्ष, महर्षि  
पुलस्त्य का पोता, और विश्रवा के ये पुत्र थे ।  
यह नामक भूतयोनि विशेष के ये राजा और चौधे  
लोकपाल हैं । इनकी राजधानी का नाम अलका  
है । इनका नाम वैद्यवर्ण है । पशुतु इनके अतिशय  
कुरूप होने के कारण इनका नाम कुवेर पड़ा ।  
इनके तीस पैर और भाट दाँत हैं, और देखने  
में भी अत्यन्त कुरूप हैं । महर्षि भरद्वाज की कन्या  
देववर्णिनी के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे ।

कुश तत् ( पु० ) [ कुश् + अल् ] स्वानाम प्रसिद्ध वृक्ष  
विशेष, दूर्भ, कुशा, द्वीप विशेष, महाराज श्री  
रामचन्द्र का पुत्र, यह महर्षि वाल्मीकि के  
तपोयल से सीता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे ।  
इनकी राजधानी का नाम कुशावती है, जल,  
सप्तद्वीपों में से एक द्वीप, कुली, काल । —ध्वज  
( पु० ) मिथिला के राजा का नाम, राजा हस्व  
रोमपाद के यह पुत्र थे, सीतादेवी के यह चाचा  
और सीरध्वज जनक के छोटे भाई थे । माण्डवी  
और धृतकीर्ति नाम की इनकी दो कन्याएँ थीं,  
जो यथाक्रम भरत और शत्रुघ्न से ब्याही गईं थीं ।  
—केतु ( पु० ) राजा जनक के भाई का नाम ।

—नाम ( पु० ) महाराज कुश का पुत्र, प्रजापति  
महा का एक पराक्रमी पुत्र का कुश नाम था, उसके  
चार पुत्र थे, उनमें एक का नाम कुशनाभ था ।  
कुशनाभ ने महोदय नाम का एक नगर बसाया था ।

कुशकण्डिका तत् ( ली० ) सय प्रकार के होमों के  
लिये अग्नि का संस्कार करने की विधि, इससे  
हवनकर्त्ता कुशासन पर बैठ दहिने हाथ से कुश  
लेकर और कुश की नोक से वेदी पर रेखा  
खींचता है । [ सुंदरी ।

कुशमुद्रिका तत् ( ली० ) कुश की पैती, कुश की  
कुशल तत् ( पु० ) भलाई, कल्याण, मङ्गल, पुण्य,  
( गु० ) शिचित, निपुण, दक्ष । —ता कुशलचेम,  
कल्याण, निपुण्यता, दक्षता । —क्षेम ( पु० ) मङ्गल,  
कल्याण । [ यता, शौक्सी, दुरस्ती ।

कुशलार्द्र तत् ( ली० ) मङ्गलमय, चतुराई, निपु-  
कुशलता तत् ( ली० ) कुशलचेम, मङ्गल ।

कुशस्थली तत् ( ली० ) द्वारका, श्री कृष्ण की पुरी ।

कुशा तत् ( ली० ) कुश, रस्ती, एक प्रकार का सीढ़ा  
नीच । —ग्र तत् ( वि० ) तीव्र, तेज, तुकीजा ।

—वर्त तत् ( पु० ) हरिद्वार के एक तीर्थ का  
नाम, एक अग्नि का नाम । —श्व तत् ( पु० )  
इक्ष्वाकुवंशी एक राजा ।

कुशासन तत् ( पु० ) कुशनिर्मित आसन, कुसित  
शासन, अत्याचार सहित शासन ।

कुशिक तत् ( पु० ) मुनि विशेष, एक राजा का  
नाम, ये राजा महर्षि विश्वामित्र के पितामह  
और गाधिराजा के पिता थे । [ सिद्धावन ।

कुशिक्षा तत् ( ली० ) असदुपदेश, हानिकारी

कुशी तत् ( पु० ) कुशवाला, वाक्मीकि अग्नि, घात ।

कुशील तत् ( गु० ) दुरात्मा, दुष्ट स्वभाव ।

कुशीलव तत् ( पु० ) नदविशेष, कयक, देश विदेशों  
में कीर्तिमान करने वाले ।

कुशूल धान्यक तत् ( पु० ) गृहस्थ जिसके पास  
तीन वर्ष तक खाने के लिये अन्न का सञ्चय हो ।

कुशूला तत् ( ली० ) देहरी, कुठिड़ी, अन्न रखने के  
लिये मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा भाण्ड ।

कुरोशय तत् ( पु० ) कमळ, पद्म, सारसपक्षी ।

—कर ( पु० ) सूर्य ।



कुशोदक तत्त्वं ( पु० ) [ कुश + उदक ] कुश सहित जल, तर्पण ।  
 कुशती ( स्त्री० ) मरलपुद्ग ।  
 कुपोद तत्त्वं ( पु० ) वृत्ति, जीविका, सूद लेकर अन्न देना, ध्याज्जु लैत्रा, वाहुपिक, ( गु० ) जड़, चेष्टा-रहित, निर्दय ।  
 कुष्ठ तत्त्वं ( पु० ) [ कुश + क ] कोढ़, रोगविशेष, महाव्याधि, इस रोग के अठारह भेद हैं । जिनमें सात महादुःख और कष्ट साध्य अथवा असाध्य हैं । शेष ग्यारह उतने भयङ्कर नहीं हैं सौ भी कष्ट दायी अवश्य हैं । एक प्रकार की लता ।—कृन्तन ( पु० ) पैर ।—नाशिनो ( स्त्री० ) एक प्रकार की बेल जिससे कुष्ठ रोग छूटता है । सोमराजी, सोमराज बल्ली ।—सूक्ष्म ( पु० ) ओषधि विशेष, किरवाली ।  
 कुष्ठी तत्त्वं ( गु० ) कोढ़ो, कुष्ठरोगी । [ भुत्वा ।  
 कम्पाण्ड तत्त्वं ( पु० ) फल विशेष, कौहड़ा, कुम्हड़ा, कुसगुन ( पु० ) असगुन ।  
 कुसङ्ग तत्त्वं ( पु० ) दुर्जन, सहवास ।  
 कुसङ्गत तत्त्वं ( पु० ) बुरा साथ, दुर्जन सङ्ग ।  
 कुसमङ्ग तत्त्वं ( पु० ) अनवसर में भी, बुरे दिनों में भी, आपत्ति का सामान ।  
 कुसमय तत्त्वं ( पु० ) फटिन समय, छोटे दिन ।  
 कुसाश्रित दे० ( पु० ) बुरा सुहृत्, कुसमय ।  
 कुसीद तत्त्वं ( पु० ) सूद, व्याज, व्याज पर दिया हुआ धन ।—कि तत्त्वं ( वि० ) सूद पर रुपये देने वाला, महाजन ।—पथ तत्त्वं ( पु० ) व्याज पर रुपये लगाना ।  
 कुसुम तत्त्वं ( पु० ) पुष्प, फूल, एक प्रकार का लाल फूल, जो कपड़ा रंगने के काम में आता है । छोटे छोटे धाक्यों का गद्य, नेत्ररोग, रजोदर्शन, रज ।—पुर ( पु० ) नगर विशेष, पाटलीपुत्र, पटना ।—वाण ( पु० ) कामदेव ।—शर ( पु० ) कामदेव, मदन ।—स्तवक ( पु० ) पुष्प, गुच्छा, फूलों का गुच्छा ।—कर ( पु० ) शत्रु विशेष, वसन्तशत्रु ।—रज्जलि ( पु० ) पुष्पाञ्जलि, ग्रन्थ विशेष, न्याय शास्त्र का एक ग्रन्थ ।—गुध ( पु० ) कन्दर्प, मदन ।

कुसुमित तत्त्वं ( गु० ) पुष्पित, प्रफुल्लित ।  
 कुसुम्भ तत्त्वं ( पु० ) पुष्पविशेष, कुसुम फूल ।—  
 ( पु० ) रङ्ग विशेष, अफीम और भांग को मिला कर बनाया हुआ एक नशा विशेष । ( स्त्री० ) अपाढ़ शुक्ल छठ ।—ती तत्त्वं ( स्त्री० ) लाल रङ्ग ।  
 कुसूर ( पु० ) अपराध, चूक ।  
 कुस्वप्न तत्त्वं ( पु० ) दुःस्वप्न, अरिष्ट दर्शन ।  
 कुह तत्त्वं ( पु० ) कुवेर ।  
 कुहक तत्त्वं ( पु० ) माया, इन्द्रजाल, जाल, मायावी, कुटिल, फरेबी, छली, मेढ़क, मुर्गे की बाँग ।  
 कुहड़ कुम्हड़ तत्त्वं ( पु० ) कुम्हाण्ड, कौहड़ा ।  
 कुहनी ( स्त्री० ) बाँह का जोड़ ।  
 कुहवर कोहसर दे० ( पु० ) स्थान विशेष, विवाह के अनन्तर घर दुल्हिन के बैठने के लिये सजा हुआ घर । [ का भाग, कण्ठ शब्द ।  
 कुहर तत्त्वं ( पु० ) गह्वर, छिद्र, गुहा, कान के बीच कुहरा दे० ( पु० ) कोहरा, कुहासा ।  
 कुहराम दे० ( पु० ) बिलबिलाना, बिलाप, रोना, रोदन, हलचल, गुलगुहा ।  
 कुहासा दे० ( पु० ) कुहेलिका, कुहरा ।  
 कुही दे० ( पु० ) पक्षीविशेष, बाज पक्षी ।  
 कुहु तत्त्वं ( स्त्री० ) आमावस्या, जिस आमावस्या को चन्द्रमा नहीं दीख पड़ते, कोकिल ध्वनि, कोहल का शब्द ।  
 कुहुक तत्त्वं ( पु० ) कोकिल का शब्द ।  
 कुहुकना दे० ( क्रि० ) पक्षियों का मीठे स्वर में बोलना ।  
 कुहु दे० देखो कुह ।  
 कूया दे० ( पु० ) रूप, इनारा ।  
 कूयार दे० ( पु० ) आश्विन मास, सातवाँ महीना ।  
 कूच दे० ( पु० ) रत्ती, बीज विशेष, जुलाहे का धुआ ।  
 कूची दे० ( स्त्री० ) बुहारी, पुचारा, बड़नी, वूलिका ।  
 कूजड़ी ( स्त्री० ) कुंजड़ा की औरत । ( पु० ) कूजड़ा ।  
 कूतना दे० ( क्रि० ) मोक्ष ठहराना, मूल्यनिर्धारण करना ।  
 कूक दे० ( स्त्री० ) शब्द, ध्वनि, आतं ध्वनि, दुःखित शब्द । [ आह मारना, विलाप करना ।  
 कूकना दे० ( क्रि० ) चिलाना, बोलना, कुहुकुहु करना, कूकर तत्त्वं ( पु० ) कूता, कूकर, स्थान ।—निदिषा ( स्त्री० ) कुत्ते की नौद के समान नौद ।—मुत्ता

(५०) एक परसाती पैघा।—लैंड (५०) कुत्तों का मैथुन, व्यर्थ की भीड़।  
 कूकरी दे० (स्त्री०) सूत की गट्टी, कुतिया।  
 कूक दे० (५०) कूतर का शब्द।  
 कूच (५०) यात्रा, रवानगी, प्रयाण, सेना के प्रस्थान के लिये प्रायः रुच कहते हैं।  
 कूचा दे० (५०) गली, छोटा रास्ता।  
 कूचिका दे० (स्त्री०) तुलिका, तुली, कूची, सजाई।  
 कूचिया (स्त्री०) हुन्ती कानपट्टी।  
 कूनी दे० (स्त्री०) स्थाननिर्मित तुलिका जिससे शीवार में चूना लगाया जाता है।  
 कूजन तत्० (५०) शब्द, स्वर, ध्वनि, पक्षी का शब्द।  
 कूजना तत्० (कि०) शब्द करना, बोलना।  
 कूजित तत्० (५०) पक्षी की ध्वनि, विहङ्गध्वनि।  
 कूजहिं तत्० (कि०) कूजते हैं, गुंजारते हैं।  
 कूट तत्० (५०) पर्वत, पहाड़ की चोटी, गिखर, कपट समूह, राशि, षष्ठ, सड़ा हुआ, धोका, दोमानी बात, (कि०) कुचल का, कूट का, कागज, व्यव्योक्ति, श्लेषयुक्त बात।—कर्म तत्० (५०) दण्ड, कपट, धोखा।—कर्म तत्० (वि०) छली, धोखेबाज।—ता तत्० (स्त्री०) कठिनाई, कुराई, रुख, कपट।—नीति अधर्मातीति, धोखेबाज।—पाश (५०) पक्षी, पकड़ने का फंदा।—जेख (५०) झूठा या धनापट्टी जेख, जाली दस्तावेज।—जेखक (५०) जाली दस्तावेज बनाने वाला।—साक्षी (५०) मिथ्यासाक्षी, झूठागवाह।  
 कूटस्थ (५०) अविनाशी, अटल, अचल, अराम, परमात्मा। सांख्य मतानुसार परियाम रहित आत्मा पुरुष जो नागृत, स्वप्न और सुषुप्त—तीनों दशाओं में समान रहता है। [ मारना।  
 कूटना दे० (कि०) पीसना, काँटना, कुचलना, पीटना, कूटार्थ तत्० (५०) गुडार्थ, क्लीष्टार्थ। [ डाली।  
 कूटी तत्० (स्त्री०) व्यंग्यचन (कि०) कुचली, कुचल कूट (५०) एक प्रकार का पीघा। इसके दाने का भाटा फलाहार के काम में आता है।  
 कूड़ा दे० (५०) मूड़न, सुहारन, कतवार, घास पात, भगड़ बगड़। [ अथरी, झड़ी।  
 कूड़ि तत्० (स्त्री०) कड़ाई में पहिने की जोड़ी की टोपी,

कूड़ दे० (५०) मूख, असमक, अनभिज्ञ।  
 कूत दे० (५०) अटकल, अड्डाव, परछ, अन्दाज़।  
 कूतना दे० अन्दाज़ करना, परछना।  
 कूयना दे० (कि०) कहना।  
 कूद तत्० (स्त्री०) कूदने की क्रिया।  
 कूदना दे० (कि०) उड़कना, काँटना, हस्तचर्य करना, क्रमबद्ध करके एक जगह से दूसरी जगह जा पड़ना, शोली मारना।  
 कूप तत्० (५०) स्वभाव दूयात जलाराध, कुर्षा, इतारा, नदी के मध्यस्थ पर्वत या ध्रुव।—मयहक (५०) कूप का मेढक, अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहिर न गया हो।  
 कूपार तत्० (५०) समुद्र, जलधि।  
 कूवरी दे० (स्त्री०) कंरा की दासी, काठ की या बाँस की मुड़ी हुई लकड़ी।  
 कूर तत्० (५०) कपटी, बहोर देड़ा, दुष्ट, अकर्मण्य।  
 कूरता } (स्त्री०) कूरता, निर्दयीपन।  
 कूरपन }  
 कूरन (५०) दुर्ग, कच्छप, कलुषा।  
 कूर्च तत्० (५०) भीलों के मध्य का स्थान, मयूरपुच्छ, अँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान, मूँठ, पाल्खंड, कूंची, मस्तक।  
 कूनी तत्० (स्त्री०) हस्या, करघी, करलुख।  
 कूर्म तत्० (५०) कच्छप, कलुषा, घाह वायुविशेष, पृथिवी, नाभि चक्र के पास की एक नाड़ी,।—चक्र (५०) रूप सम्बन्धी एक चक्र विशेष, पूजा के लिये यन्त्र विशेष।—पुराण (५०) १८ पुराणों में से एक।—पृष्ठ (५०) कछुवे की पीठ।—राज (५०) कच्छपराज, भगवान् का अथत्तर विशेष।  
 कूज तत्० (५०) तीर, किनारा, सट नदी आदि के जल का समीप वाला साक्ष्य।—क (५०) कृत्रिम पर्वत।—द्रुम (५०) तीरस्थित वृक्ष।  
 कूल्हा दे० (५०) कोख के नीचे कमर में पेड़ के दोनों ओर की निकली हुई हड्डियाँ।  
 कूम्पायड तत्० (५०) गणदेवता विशेष, काँहड़ा, एक अग्नि, शिव के पिशाचगण, बायापुरा का प्रधान-अमात्य।  
 कूम्पायडा तत्० (स्त्री०) देवी विशेष, भगवती।

कृकर या कृकल तत् ( पु० ) मस्तक का वह पवन जिसके वेग से झोंक आती है, शिव, चवैना, पची विशेष, कनेर का वृक्ष । [ कर्तिकेय, पञ्चानन ।

कृकवाक तत् ( पु० ) मयूर, मोर ।—ध्वज ( पु० )

कृकलास तत् ( पु० ) गिरगिट, सरट ।

कृक्ल तत् ( पु० ) तपस्या, कष्ट, पीड़ा पापनिवारणार्थ सन्तापनादि घत, रोग विशेष ।—गत ( पु० ) यन्त्रयायुक्त दुःखी, पापी, शोभी ।

कृक्लतिक्ल तत् ( पु० ) प्रायश्चित्ताङ्ग घत विशेष ।

कृन तत् ( पु० ) किया, बहाया, रचिनः कथित, सृजित,

( पु० ) सतयुग, चार की संख्या, एक प्रकार का

पासा, एक प्रकार का दास ।—क ( पु० )

काष्मिक, कुत्रिम, नकली ।—कर्मा ( पु० )

कार्यक्रम, प्रवीण, शिक्षित, निपुण, दक्ष ।—कार्य

( पु० ) सम्पादित कार्य, चरितार्थ, सफलमनोरथ,

कामियावी ।—काल ( पु० ) अनिश्चित समय ।

—कृत्य, पूर्णकाम, कृतकार्य, प्राप्त मनोरथ ।—झ

( पु० ) उपकार न मानने वाला, नमकहराम ।

—झता ( खी० ) अकृतज्ञता, नमकहरामी ।—

झताई ( खी० ) हिंसा के प्रति अहिताचरण ।

अकृतज्ञता, नमकहरामी —झ ( पु० ) डाकार

मानने वाला ।—ता तत् ( खी० ) निहोरा

मानना, प्रहसानमन्दी ।

कृतकृत्य ( वि० ) सफलमनोरथ, सम्मान प्रदर्शित करने के लिये इसका व्यवहार किया जाता है ।

कृतयुग तत् ( पु० ) सतयुग, उत्पत्ति का समय आदि युग, १७२८००० वर्ष का यह युग होता है ।

कृतवर्मा तत् ( पु० ) यदुवंशी राजा कनक का पुत्र, यह कृतवर्मा महाभारत के युद्ध के कृतवर्मा से भिन्न है ।

कृतविद्य तत् ( पु० ) शास्त्रज्ञ, शास्त्रदक्ष, जानकार ।

कृतवीर्य तत् ( पु० ) नृपविशेष, यदुवंशी एक राजा का नाम ।

कृताञ्जलि ( वि० ) जिसने हाथ जोड़े हो ।

कृतात्मा ( पु० ) ज्ञानी, शुद्धाचारी ।

कृतान्त तत् ( पु० ) अन्त करने वाला, यमराज, मृत्यु, काल, सिद्धान्त, शुभाशुभ, पाप, शनिवार, भरणी नक्षत्र, दो की संख्या ।

कृतार्थ तत् ( पु० ) सम्पादित कार्य, सिद्ध मनोरथ, निहाल, मनोरथ को पाये हुए, कामयाब ।

कृतितत् ( खी० ) कार्य, काम, आचरण, उपकार, करण, करनी, आवाग, इन्द्रजाल, बर्गसंख्या, डाकिनी,

वृन्दविशेष, कटारी, बीस की संख्या । [ भोजपत्र ।

कृति तत् ( खी० ) चक्रे की रस्सी, कृतिका नक्षत्र,

कृतिका तत् ( खी० ) तीसरा नक्षत्र, छकड़ा, गाड़ी ।

कृत्य तत् ( पु० ) कर्त्तव्य, कर्म, वेदविहित कर्त्तव्य

कार्य, करतब । [ भवानक काम कर सकती है ।

कृत्यका तत् ( स्त्री० ) वह स्त्री जो हत्या आदि बड़े

कृत्या तत् ( स्त्री० ) तंत्रानुसार किसी शत्रु को नष्ट

करवाने के लिये मन्त्र द्वारा उपवास की हुई स्त्री

अभिचारिणी, दुष्टा स्त्री ।

कुत्रिम तत् ( वि० ) बनावटी, जाली, धारद प्रकार

के पुत्रों में से एक, ( पु० ) कचिया नोन, रस्तीन ।

कुदन्त तत् ( पु० ) वे शब्द जो धातु में कृत प्रत्यय

के जोड़ने से बनें । [ राजपि ।

कूप तत् ( पु० ) कृपावायं, वैदिक काल के एक

कृपण तत् ( पु० ) कंजूस, नीच, क्षुद्र ।—ता तत्

( स्त्री० ) कंजूसी, मक्खीचूटी ।

कृपनाई तत् ( खी० ) कृपणता, सुमङ्गल ।

कृपया ( वि० वि० ) कृपापूर्वक, दयापूर्वक ।

कृपा तत् ( स्त्री० ) अनुग्रह, दया, चमा ।—चायं

तत् ( पु० ) दोषाचार्य के साले ।—पात्र तत्

( पु० ) कृपा का अधिकार ।

कृपाण तत् ( पु० ) तलवार, अस्ती ।

कृपाणिका ( स्त्री० ) कटारी, छोटी तलवार ।

कृपाल या कृपालु ( वि० ) दयालु ।—ता दयाभाव ।

कृपिण ( वि० ) कृपण, कंजूस ।—ता कंजूसी ।

कृमि तत् ( पु० ) छोटा कीट, कीड़ा, किरवा ।—झ

( पु० ) बायविष्णु ।—जग्धा ( पु० ) काला अग्रह ।

कृमिल तत् ( पु० ) कीड़ों से भरा, कीटयुक्त ।

कृश तत् ( पु० ) दुबैल, दुबला, क्षीण, पतला, सूक्ष्म ।

—ता ( खी० ) दुबैलता, क्षीणता ।—तत् ( पु० )

मन्दरहित । [ क्षीणाक्षी ।

कृशाङ्गी तत् ( खी० ) पतली स्त्री, दुबैलाक्षी,

कृशात्रु या कृसानु तत् ( पु० ) अग्नि, अनल, आग,

बन्धि, चीता ।

कृष्ण (वि०) श्याम, काला, श्रीकृष्ण भगवान्, वेद-  
व्यास, कृष्ण सुन्द का एक भेद, अर्जुन, कोयल,  
कौवा, कृष्ण पत्र, कलियुग, नील, लोहा, सुरमा,  
कौंदा, शूद्र विशेष ।

कृशाश्व तत् (पु०) मुनि विशेष, राजा विशेष ।

कृशोदरी तत् (गु०) पतली कमर वाली ।

कृपक तत् (पु०) किरान, कपक, हल की फाल ।

कृपाण दे० (पु०) किसान, खेतिहर ।

कृपि तत् (खी०) खेती, चाम, वैश्यवृत्ति विशेष ।

—कर्म (पु०) हल चलाना, खेती करना ।

—जीवी (गु०) कृपक, किसान । [कृपिजीवी ।

कृपी तत् (खी०) खेती । — चल (पु०) किसान,

कृष्ण तत् (वि०) काला । (पु०) विष्णु का पूर्ण-

वतार । यह माता देवकी और पिता वसुदेव से

उत्पन्न हुए थे, इन्होंने अनेक प्रजापीडक, राक्षस

प्रकृति, दानवों को मार कर धर्म स्थापित किया

था । — द्वैपायन (पु०) महर्षि पराशर के औरस

और दासराज की पालित कन्या सत्यवती के गर्भ

से यह उत्पन्न हुए थे । इनकी माता ने अपना गर्भ

द्वीप में फेंक दिया था, इस कारण इनका नाम

द्वैपायन पड़ा था । इन्होंने वेदों का विभाग किया

था, इस कारण इनको व्यास नाम से लोगों ने

प्रसिद्ध किया । इन्होंने महर्षि ने अष्टादश पुराण

बनाये हैं । कोई कोई कहते हैं कि व्यास नाम के

अनेक महर्षि हुए हैं । अतएव अष्टादश पुराणों के

कर्त्ता व्यास नामधारी भिन्न भिन्न ऋषि हैं ।

—मिश्र (पु०) प्रबोध-चन्द्रोदय नाटक के कर्त्ता

ये ही कृष्ण मिश्र थे । ये राजा कीर्तिवर्मा के

सभासद थे । यह कीर्तिवर्मा चन्देल राजा था ।

इसने चेदि के राजा कर्णदेव का पराजय किया

था । इसका समय सन् १०२० ई० से १११६ ई०

के बीच में निश्चित होता है, अतः कृष्णमिश्र का

भी यही समय मानना पड़ता है ।

कृष्णकर्मा तत् (पु०) निन्दित कर्मकारी, पापा-

चारयुक्त, पापविशिष्ट, अपराधी, पापी, दुष्कृति ।

कृष्णागन्धा तत् (खी०) शोभाजनवृक्ष, सहजिन

का वृक्ष । [भूतचतुर्दशी ।

कृष्णचतुर्दशी तत् (खी०) कृष्णपत्र की चतुर्दशी,

कृष्णचन्द्र (पु०) देखो कृष्ण ।

कृष्णजीरा तत् (पु०) काला जीरा, कलौजी ।

कृष्णता तत् (खी०) कृष्णवर्ण, कालापन, घुघुची,

स्यामत ।

कृष्णतुलसी तत् (खी०) काली तुलसी ।

कृष्णपत्र तत् (पु०) अंधेरा पाल, बंदी, चन्द्रमा के

हास का काज ।

कृष्णफला तत् (खी०) वाङ्मूची, कौंदा, करमईक ।

कृष्णमट्ठा तत् (स्त्री०) औषध विशेष, कुटकी ।

कृष्णभूमि तत् (स्त्री०) काले वर्ण की भूमिका

युक्त देश ।

कृष्णामय तत् (गु०) कृष्ण में लीन, अधिक कृष्ण ।

कृष्णलोह तत् (पु०) अयस्कान्त मयि, सुम्बक

परपर ।

कृष्णवक्त्र तत् (पु०) काले मुँह वाला वानर, लंगूर ।

कृष्णवर्मा तत् (पु०) ऋषि, हुताशन, चित्रक वृक्ष ।

कृष्णवानर तत् (पु०) काला वानर, कृष्णवर्ण कपि ।

कृष्णवृत्तिका तत् (स्त्री०) कन्मारी औषधि का

नाम ।

[कृष्ण के प्राधित ।

कृष्णाश्रित तत् (गु०) कृष्ण के भक्त, वैष्णव, श्री

कृष्णसख तत् (पु०) कृष्ण का मित्र, अर्जुन ।

कृष्णसर्प तत् (पु०) कालासर्प, करहट साँप ।

कृष्णसार तत् (पु०) हिरन विशेष, यज्ञिय मृग,

काला हिरन ।

कृष्णसारङ्ग तत् (पु०) कृष्णवर्ण मृग, हरिण ।

कृष्णा तत् (स्त्री०) काले रङ्ग की स्त्री, द्रौपदी, यह

जन्म के समय काली थी, इसी कारण इसका नाम

भी कृष्णा पड़ा था । यमुना, नदी का नाम,

यह नदी दक्षिण भारत में इसी नाम से प्रसिद्ध है ।

कासी सरसो ।

[बलराम ।

कृष्णाग्रज तत् (पु०) श्रीकृष्ण का पड़ा माई, बलदेव,

कृष्णागुरु तत् (पु०) काला अग्रह ।

कृष्णाचल तत् (पु०) काला पहाड़, रैपतक पर्यंत,

यह गिरना के नाम से इस समय प्रसिद्ध है,

काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास है ।

कृष्णाजिन तत् (पु०) कृष्णसार मृग का धर्म,

कालासृग धर्म ।

कृष्णाफल तत् (पु०) काजीमिर ।

कृष्णार्पण तत् ( पु० ) निष्काम कर्म, अपने कर्म फल श्रीकृष्ण भगवान् को निवेदन करण, फला-  
काङ्क्षा से रहित कर्म सम्पादन ।

कृष्णाष्टमी ( स्त्री० ) भाद्र कृष्णपक्ष की अष्टमी, श्रीकृष्ण की जन्मतिथि ।

कृष्णापकुल्या तत् ( स्त्री० ) चापघ विशेष, पीपरी ।  
कृष्णाभिस्तारिका ( स्त्री० ) अंधेरी रात में अपने प्रेमी के पास निर्दिष्ट स्थान पर जाने वाली नायिका विशेष ।

कृसर तत् ( पु० ) खीचड़ी । [ ( गु० ) जटाघारी ।  
फल्गु तत् ( गु० ) रचित, स्थिरीकृत, निर्मित । - कैश के दे० ( अ० ) सम्बन्धबोधक, प्रसन्नार्थक, कौन का, छोटा रूप, सम्बन्धक विभक्ति का बहुवचन ।

कैम्रोड़ा दे० ( पु० ) केतकी, पुष्प विशेष ।

कैचुवा दे० ( पु० ) कीट विशेष ।

कैकड़ा दे० ( पु० ) ककट, गोंगाटा ।

के ( प्रत्यय ) सम्बन्ध सूचक "का" का बहुवचना ।

केड ( सर्व ) कोई । [ देश की सीमा पर स्थित है ।

कैकय तत् ( पु० ) राजा विशेष, वह देश जो सिन्धु

कैकयी तत् ( स्त्री० ) अयोध्या के अधिपति महाराजा दशरथ की स्त्री और भरत की माता । कैकय या कैकेय राज्य के राजा की यह कन्या थी । कैकय देश पञ्जाब में विप्लावा शतद्रु के बीच में है, प्राचीन वाहीक प्रदेश के दक्षिण की ओर है ।

कैकर तत् ( गु० ) डरा, भेंगा, बक्र, टेढ़ा ।

कैका तत् ( स्त्री० ) मयूरध्वनि, मोर की बोली ।

कैकी तत् ( पु० ) मोर, मयूर, शिखी, कैकावल ।

केचित् तत् ( अ० ) कोई । [ झोड़ा, कोड़ा, काम, चिन्ह ।

केत, केतन तत् ( पु० ) गृह, ध्वजा, निमन्त्रण,

केतिक दे० ( गु० ) पोढ़े, दो चार, अल्प परिणाम,

कितना, कितना एक, किस कदर ।

केतकी तत् ( स्त्री० ) केवड़ा का वृक्ष, केवड़े के फूल ।

केता दे० ( अ० ) कितना ।

केतु तत् ( पु० ) ज्ञान, दीप्ति, निशान, ध्वजा, पताका, नवमग्रह, राहु का शरीर, पापग्रह, उपात चिन्ह, दानविशेष, [ समुद्र मन्थन के अनन्तर देवतागण पंक्ति से बैठकर अमृत पान करते थे, केतु दानव भी देवरूप धारण कर वहाँ बैठ गया,

चन्द्रमा और सूर्य ने यह बात प्रकाशित कर दी । उसी समय भगवान ने यद्यपि वनका सिर काट डाला, तथापि अमृत पान करने के कारण वे मरे नहीं, किन्तु एक के दो हो गये । मस्तक भाग का नाम राहु और शरीर का नाम केतु हुआ । ये दोनों ग्रह माने जाते हैं । केतु की दशा सात वर्ष तक रहती है । ये दोनों पापग्रह हैं । ]

केतुतारा तत् ( स्त्री० ) धूमकेतु, अशुभ सूचक तारा, दुच्छन्न तारा । [ एक खण्ड ।

केतुमाल तत् ( पु० ) जम्बु दीप के नवखण्डों में से केते दे० ( पु० ) कितने, कै, कतिका ।

कदली तत् ( स्त्री० ) रम्भा, कदली, केला, एक बार फूलने वाला पेड़ ।

केदार तत् ( पु० ) ब्यारी, खेत, क्षेत्र, पर्वतविशेष जो बदरीनारायण के पास है, तीर्थस्थान, शिव, भूमिविशेष, मेघराज का चतुर्थ पुत्र ।—खण्ड ( पु० ) खण्ड विशेष, स्कन्दपुराण के अन्तर्गत एक भाग या खण्ड ।—नाथ ( पु० ) केदार पर्वत के स्वामी, महादेव ।

केन ( सर्व ) किसने ।

केन्द्र तत् ( पु० ) खन, का चौपा, पंचर्चा और दशर्चा स्थान, गोलाकार वस्तु का मध्यस्थान गोला-  
कार वा वृत्तवर्त का वह स्थान जहाँ से परिधि तक खींची गयी रेखाएँ आपस में बराबर हों ।

केन्द्रीभूत तत् ( पु० ) राशिकृत, एकत्रित, संकुचित, सङ्कीर्ण, असम्पूर्ण ।

केन्द्रम तत् ( पु० ) जन्मकाल का ग्रह, योग विशेष, दृष्टियोग । [ यशुरक्षा, बहूँटा ।

केपूर तत् ( पु० ) अलङ्कार विशेष, भ्रमद, बाजूबन्द,

केर तत् ( अ० ) सम्बन्धार्थक, का, की, के ।—[ ( पु० ) केला वृक्ष, सम्बन्ध घोटक का स्त्रीलिङ्ग ।

केरल तत् ( पु० ) देश विशेष, मालावार देश, पश्चिमी घाट नामक पर्वत और समुद्र के बीच का एक भाग जो कावेरी नदी के उत्तर की ओर है । इस देश की मुख्य नदिषा वेन्नवती, शरावती और काली नाम की हैं । सम्भव है इसी काली नदी का पहले मुरला नाम रहा हो । आज केरल कनाडा का एक भाग समझा जाता है ।

केला या केरा तत् ( पु० ) वृक्ष और फल विशेष, कदली ।

केलि तत् ( स्त्री० ) परिहास, खेल, विहार, मीड़ा ।

—कला ( स्त्री० ) रतिक्रिया, सरस्वती की वीणा ।

केलियूह तत् ( पु० ) नाटकराजा, रङ्गशाळा, नाटक खेलने का स्थान [ खेल ।

केलो तत् ( स्त्री० ) सुलक्षण, आनन्द, शुल, मीड़ा,

केवट मत् ( पु० ) पशु पिता और वैश्य माता से उत्पन्न जाति विशेष । केवट, धीमर, मधुवा, मल्लाह । [ का जल ।

केवड़ा दे० ( पु० ) वृक्षविशेष, फूलविशेष, एक प्रकार केवल तत् ( पु० ) मात्र, सहाय, अन्यहीन, एकाकी, एक प्रकार का ज्ञान, निर्वाण, उत्तम ।—व्यतिरेकी ( पु० ) अनुमान विशेष, रोषवत् ।—अन्यो ( पु० ) पूर्ववत् अनुमान विशेष । [ मुक्ति, जन्मपत्री ।

केवली तत् ( पु० ) एकाकी, ग्रन्थविशेष, जैनियों की

केवाड़, केलाड़ा दे० ( पु० ) द्वार, कपाट ।

केवा, केवान दे० ( पु० ) केवल, कमल ( पु० ) आना-कानी, सङ्कोच ।

“केवा जवि किजै, मोरि सेवा लय भति कीजै”

—रघुराजसिंह ।

केश तत् ( पु० ) बाल, रोम, लोम, सिर के बाल,

केश, किरण, प्रकाश की एक शक्ति, यरुण, विश्व, विष्णु, सूर्य ।—कलाप ( पु० ) केशसमूह, छोटी, जड़ा —ग्रह ( पु० ) केशकर्पण, केश पकड़कर खींचना ।—पाश ( पु० ) केशसमूह, बालों की लट ।—विन्यास ( पु० ) छोटी बनाना ।—मा-ज्जनी ( स्त्री० ) कंधी, ककड़ी ।

केशर तत् ( पु० ) नागकेश वृक्ष, फूलों की पंखुड़ियाँ, स्वानाम प्रसिद्ध सुगन्ध द्रव्य विशेष, केसर । सिंह और घोड़ों के गारदन पर के बाल ।

केशरजन तत् ( पु० ) भौंरा, पौधा, वृक्ष विशेष ।

केशरिया, केसरिया तत् ( पु० ) पीतारङ्ग विशेष, केसर का रङ्ग, एक प्रकार का पदनावा जिसे राजपूत युद्ध के समय पहनते थे, यह पदनावा एक प्रकार का शयन सभञ्जा जाता था, अर्थात् केशरिया पहनकर युद्ध से हट नहीं सकते, मर भले ही जाय ।

केशरी तत् ( पु० ) सिंह, मृगराज, एक वानर का नाम, इनुमानजी का पिता ।

केशव तत् ( पु० ) श्रीकृष्ण, विष्णु । भगवान् के केशव नाम पढ़ने का कारण भगवान् ने स्वयं कहा है कि सूर्य चन्द्र का आदि प्रकाशशील पदार्थों को केश कहते हैं, वे हमारे हैं, अतएव हमारा नाम केशव है । यथा

“अथवा ये प्रकाशन्ते मम ते केशसंज्ञिताः ।

अवज्ञाः केशव तस्मान्नाहुर्मा द्विजसत्तमः ॥”

—महाभारत ।

केशकेशी तत् ( पु० ) परस्पर बाल पकड़ के लड़ना, भौंटाखिचौबल, भौंटा भौंटी ।

केशिनी ( स्त्री० ) जटामांसी, अम्पसा, सुन्दर बालों वाली स्त्री, राजा सगर की रानी का नाम, रावण की माता, एक प्राचीन नगरी का नाम, पारवती की सहचरी, दमयन्ती की एक दूती ।

केशि या केशी तत् ( पु० ) उत्तम केश युक्त, ( पु० ) यह राजा कंस का अनुचर था, कंस की आज्ञा से घोड़े का रूप बनाकर वृन्दावन गया और अनेक गोपाल तथा गौशों को हसने मार डाला, पुनः भगवान् कृष्ण ने इसकी शक्ति की और इसे मार डाला । घोड़ा, सिंह, केवाँच ।

केसर तत् ( पु० ) कुंडूम, नागकेसर, घोड़े के गारदन पर के बाल, अयाल ।

केसरी तत् ( पु० ) सिंह, घोड़ा ।

केस तत् ( पु० ) डाक, देव, पञ्जास ।

केहरी तत् ( पु० ) सिंह, एक वानर का नाम ।

केह दे० ( अ० ) कौन मनुष्य, कोई, कोई व्यक्ति, अनिर्दिष्ट व्यक्ति ।

केहा ( पु० ) मयूर, मोर ।

केहि दे० किसे, किसको ।

केहूँ ( वि० ) किसी प्रकार ।

[ किसुली ।

कैचली दे० ( स्त्री० ) सार का खोल, सर्पचर्म, कँजुल,

कैची दे० ( स्त्री० ) कतरनी, अक्ष विशेष ।

कै दे० ( सर्व० ) कितना, कितने, बहुत, कौन ।

कैकयी तत् ( स्त्री० ) देखो कैकयी ।

कैदूर्य तत् ( पु० ) किङ्कराव, मृत्युता, दास्य, नवधा भक्ति का एक अङ्ग ।

कैकसी तत् ( स्त्री० ) लङ्केश्वर रावण और कुम्भकर्ण आदि की माता का नाम, सुमाती रावण की कन्या और विजया मुनि की पत्नी थी ।

कैटभ तत् ( पु० ) एक दैत्य का नाम, शेषनाथो भगवान् के कर्णमूल से इसकी उत्पत्ति बतलायी जाती है, यह बहुत बड़ा चीर या भगवान् ही ने इसे मारा था ।—रि ( पु० ) नारायण, भगवान्, विष्णु ।—भ्वरी ( स्त्री० ) दुर्गा, भगवती । [ ओर, तरफ ।

कैत दे० ( पु० ) फल विशेष, कैया, कैय । ( स्त्री० ) कैतक तत् ( पु० ) केवड़े के फूल, कैतकी पुष्प । कैतल तत् ( पु० ) छल, कपट, जुआ, मूँगा, भूरा ।—साद ( पु० ) छलना, ठगना, प्रवृत्तना, औपध विशेष, चिरायता ।

कैतसापाहुति ( स्त्री० ) अलङ्कार विशेष । कैथ, कैथा दे० ( पु० ) वृक्षविशेष, कैत । कैथी दे० ( स्त्री० ) मुड़िया अक्षर, बिहार के वायस्यों के द्वारा कल्पित एक प्रकार की नागरी लिपि । कैद ( स्त्री० ) बन्धन, कारागार ।—खाना ( पु० ) बन्दीगृह, कारागार ।—ी ( पु० ) बँधुवा, बन्दी । कैथौ ( अव्य० ) अथवा । कैमुतिकन्याय तत् ( पु० ) न्यायविशेष, अनायाससिद्धि, एक की सिद्धि से दूसरे की अनायास सिद्धि । कैयट तत् ( पु० ) व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार, ये काश्मीर के रहने वाले थे, ये अपने समय के व्याकरण के विद्वानों में प्रधान समझे जाते थे । इनका समय ग्यारहवीं सदी विद्वानों के मत से निश्चित है । ( १ ) ये भी काश्मीर निवासी थे । १७७ ई० में इन्होंने धानन्दवर्द्धन के देवीशतक की टीका लिखी है । इनके पिता का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम बल्लभदेव था ।

कैर दे० ( पु० ) करीब । [ कोई । कैरव तत् ( पु० ) सफेद कमल, शम्भु, ज्वारी, कुमुद, कैरवि तत् ( पु० ) चन्द्रमा । कैरवी तत् ( स्त्री० ) चाँदनी, मँत्रो । [ रंग की । कैरी दे० ( स्त्री० ) छोटा आम, कच्चा आम । ( वि० ) भूरे कैल दे० ( पु० ) अंकुर, कोपल, गामा, एक प्रकार का शैलों का रण, मठमैला रङ्ग । कैलास त० ( पु० ) पर्वतविशेष, शिव और कुवेर का वासस्थान ।—निकेतन ( पु० ) महादेव, कुवेर ।—वास तत् ( पु० ) मरण, मृत्यु ।

कैवर्त तत् ( पु०, महलाइ, मधुघा, कर्णधार । कैवल्य तत् ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, परित्राण, परमधाम प्राप्ति । [ बड़े बालों वाला । कैशिक तत् ( स्त्री० ) बालों की लट । ( वि० ) बड़े कैसा दे० ( अ० ) किस प्रकार, किस भाँति ।—ही ( वा० ) किसी प्रकार का ।

कैसे दे० ( अ० ) किस प्रकार से, क्योंकर, किस प्रकार के । कैसों दे० कैसहू, किसी तरह भी । कैहो दे० कहूँगा, कहूँगा । [ का चिन्ह, कौन । को दे० ( अ० ) कर्मवाचक, द्वितीयाविभक्ति, सम्प्रादान कोआ दे० ( पु० ) रेशम के कीड़े का घर, टसर नामक रेशम का कीड़ा, कटहल के पके बीज, महुए का पका फल, कोया ।

कोइरी दे० ( पु० ) एक छोटी जाति । कोइ या कोई दे० ( अ० ) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, कई में से एक, करिब ।—सा ( वा० ) कोई आदमी ।—न कोई ( वा० ) यह अथवा वह ।

कोऊ दे० ( स० ) कोई मनुष्य, अनिश्चित व्यक्ति । कोपरी दे० ( पु० ) जाति विशेष, काछी, खेती करने वाली जाति ।

कोचना दे० ( क्रि० ) बाँधना, गोदना, जुमाना । कोढ़ा दे० ( पु० ) कुम्भाण्ड, कोढ़वा, कुँडा जिसमें साँकल लगायी जाती है ।

कोपल दे० ( पु० ) अंकुर, कल्ला, कनखा ।—

कोक तत् ( पु० ) चक्रवाक पक्षी, चकवा, बघेरा, इस नाम का एक गृह्यकारी कवि जिसका बनाया ग्रन्थ कोकशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है, जल्गी भेड़िया, सङ्गीत का बृहवाँ भेद, विष्णु, मेढक, भेड़िया ।—नद ( पु० ) लाल कमल ।—शास्त्र तत् ( पु० ) कोक कृत रतिशास्त्र । कोका दे० ( पु० ) चक्रवाक, चकई, चकवा, घायमाई, फरिया, कंवल, वस्त्रविशेष । [ आचरवृक्ष ।

कोकिल तत् ( पु० ) कोयल, पिक ।—वास ( पु० ) कोकिला तत् ( स्त्री० ) देखो कोकिल ।

कोकी तत् ( स्त्री० ) चक्रवाकी, चकई ।

कोङ्क्या तत् ( पु० ) राक्षसविशेष, देशविशेष, यह देश दक्षिण भारत में है ।

कोख तत् ( पु० ) कुटि, गर्भ, जठर, पेट, पार्श्व ।—वन्द ( पु० ) बन्ध्या, सन्तानहीन ।

कोचीन (५०) दक्षिण भारत का एक देशी राज्य ।  
कोछा, कोछी दे० (खी०) गोदी, लड़कों की डुबाने की  
कोली । [अंचरा ।

कोछे दे० (५०) कोख, कुच्छि, उत्सङ्ग, गोदी अँबल,  
कोजागर तत्० (५०) आश्विन मास की पूर्णिमा,  
शरद का पर्व, महोत्सव ।

कोट. या कोट्ट तत्० (५०) गढ़, किला, दुर्ग । (दे०)  
एक प्रकार का सिवा वस्त्र जो कमीज के ऊपर पहना  
जाता है ।—चारण (५०) चार दीवारी ।

कोटर तत्० (५०) घृच का खोलना, खोदना, खोदना,  
किले के आसपास का बनावटी बन जो दुर्गरा के  
लिपे लगाया जाय ।

कोट्टी तत्० (खी०) नम्र स्त्री, विवस्त्र नारी । [राज्य ।

कोटा दे० (५०) एक नगर का नाम, राजपूताने का एक

कोटि तत्० (५०) करोड़, सौ लाख, १००००००  
एक शेर का भुज, शस्त्रों का अग्रभाग, पतला  
भाग, धनुष का सिरा, श्रेणी, पूर्वपक्ष, उत्तमता,  
अर्थवन्ध का सिरा, समूह, करोड़ ।—कल्प (५०)  
सर्वदा, सर्वत्र ।—वर्ष (५०) करोड़ वर्ष, वाणा-  
सुर के नगर का नाम ।

कोटिक तत्० (वि०) करोड़, बहुत अधिक, अमित ।

कोटिर तत्० (५०) जटा किरिट, मुकुट ।

कोटिशः तत्० (कि० वि०) बहुत तरह से, अनेकानेक ।

कोटीश तत्० (गु०) कोट रुपये का घनी, महाघनी,  
करोड़पती ।

कोट्याधोश (वि०) करोड़पती ।

कोठर तत्० (५०) देलो कोठर ।

कोठरी तत्० (स्त्री०) छोटा गृह ।

कोठा तत्० (५०) घर, गृह । [ भण्डारी ।

कोठार दे० (५०) भण्डार ।—तत्० (५०)

कोठी तत्० (स्त्री०) महाजनी घर, जहाँ देन लेन  
होता है ।—वाल दे० (५०) साहूकार ।

—याली ( स्त्री० ) साहूकारी ।

कोड़ना दे० (कि०) खोदना, खखोरना, खेत गोड़ना ।

कोड़ा दे० (५०) चादक, कशा ।—करना (व०) यश  
में करना, अधीन करना ।

कोड़ी दे० (स्त्री०) बीस सख्या से परिमित कोई वस्तु ।

कोढ़ दे० (५०) कुट रोग ।—में खाज निकलना

( वा० ) एक दुःख में दूसरा दुःख, दुःख पर दुःख  
पड़ना ।

कोड़ी दे० ( गु० ) कुपसोगी, कुप्री ।

कोष तत्० (५०) गृह का एक कोना, धस्त्रों का अग्र-  
भाग, वीणा आदि बजाने का साधन, कमानी,  
गज, महम्मद, शनिप्रद, दो रेखाओं का  
सन्धिस्थान ।

कोतल दे० (५०) भयभेद, शिना सवारी का राजा  
हुमा घोड़ा, जलूसी घोड़ा, खाली शरव ।

कोतवाल (५०) नगरपाल, पुलिस का नगर में  
यज्ञ अफसर । [ कोतवाल का दफ्तर ।

कोतवाली (स्त्री०) कोतवाल का काम या उसका पद,

कोयमीर दे० (५०) कच्ची धनियाँ, धनियाँ की हरी  
पत्तियाँ ।

कोद दे० ( स्त्री० ) पक्ष, मोर, कोना ।

कोदण्ड तत्० (५०) धनुष, धन्वा, धनुही ।

कोदो तत्० (५०) अन्न विशेष, कोद्व ।

कोद्व तत्० (५०) अन्न विशेष ।

कोद्वय तत्० (५०) दो कोदो ।

कोन, कोना तत्० (५०) खट, कोण ।

कोना, कुथरा दे० (वा०) कोण, किनारा, छोर, गोरा ।

कोनत तत्० (५०) कुन्त, भाला, चर्खा, वल्लभ ।

कोप तत्० (५०) क्रोध, राग, तामस, रिस ।—अंध  
(५०) अत्यन्त क्रुद्ध, क्रोध में पावला ।

कोपना तत्० ( कि० ) क्रोधित होना, कुपित होना,  
कोप करना ।

कोपर या कोपल तत्० (५०) कठोरा, कठोरी, तर्पण  
करने का पात्र, तर्पी, नरमपत्ते, गवीन पल, नागे  
निकले हुए पत्र, कुशों की पल्लियाँ ।

कोपान्वित तत्० ( गु० ) क्रुद्ध, क्रोधित ।

कोपित तत्० (गु०) क्रोधशील, गुस्सा ।

कोपी तत्० (गु०) कोपी, कुपित हुमा, कोई भी ।

कोपीन तत्० (स्त्री०) लंगोठ, लंगोटी ।

कोविद् तत्० (५०) पण्डित, कवि ।

कोवी दे० (स्त्री०) एक तरकारी का नाम, छत्राक, गोमी ।

कोमल तत्० (गु०) नरम, शुद्ध, मुलायम, मुकुमार,  
मनोज्ञ, मनोहर ।—ता (स्त्री०) चूना ।

कोमलताई तत्० (स्त्री०)



कैटभ तत् ( पु० ) एक दैत्य का नाम, शेषशायी भगवान् के कर्णमल से इसकी उत्पत्ति बतलायी जाती है, यह बहुत बड़ा वीर था भगवान् ही ने इसे मारा था ।—रि ( पु० ) नारायण, भगवान्, विष्णु ।—श्वरी ( स्त्री० ) दुर्गा, भगवती । [ और, तरफ ।

कैत दे० ( पु० ) फल विशेष, कैथा, कैथ । ( स्त्री० ) कैतक तत् ( पु० ) केवड़े के फूल, कैतकी पुष्प ।

कैतव तत् ( पु० ) छल, कपट, लुभा, भूगा, धतूरा ।

—घाद ( पु० ) छलना, उगना, प्रवृत्तना, औपध विशेष, चिरायता ।

कैतवापाहुति ( स्त्री० ) अलङ्कार विशेष ।

कैथ, कैथा दे० ( पु० ) वृक्षविशेष, कैत ।

कैथी दे० ( स्त्री० ) सुडिया अक्षर, बिहार के वायस्थों के द्वारा कल्पित एक प्रकार की नागरी लिपि ।

कैद ( स्त्री० ) बन्धन, कारागार ।—खाना ( पु० ) यन्दीगृह, कारागार ।—ी ( पु० ) चँधुवा, बन्दी ।

कैधौ ( अण्य० ) अथवा ।

कैमुतिकन्याय तत् ( पु० ) न्यायविशेष, अनायाससिद्धि, एक की सिद्धि से दूसरे की अनायास सिद्धि ।

कैयट तत् ( पु० ) व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार, ये कारमीर के रहने वाले थे, ये अपने समय के व्याकरण के विद्वानों में प्रधान समझे जाते थे । इनका समय ग्यारहवीं सदी विद्वानों के मत से निश्चित है । ( १ ) ये भी कारमीर निवासी थे । १७७ ई० में इन्होंने आनन्दवर्द्धन के देवीशतक की टीका लिखी है । इनके पिता का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम बलभदेव था ।

कैर दे० ( पु० ) करीब । [ कैई ।

कैरव तत् ( पु० ) सफेद कमल, शशु, ज्वारी, कुमुद, कैरवि तत् ( पु० ) चन्द्रमा ।

कैरवी तत् ( स्त्री० ) चाँदनी, मैत्री । [ रंग की ।

कैरी दे० ( स्त्री० ) छोटा आम, कच्चा आम । ( वि० ) सूरे

कैल दे० ( पु० ) थंजुर, कोपल, गामा, एक प्रकार का पैलों का घर्षण, मठमैला रङ्ग ।

कैलास त० ( पु० ) पर्वतविशेष, शिव और कुबेर का वासस्थान ।—निकेतन ( पु० ) महादेव, कुबेर ।

—वास तत् ( पु० ) मरण, मृत्यु ।

कैवर्त तत् ( पु० ) मंजलाह, मलुआ, कर्णधार ।

कैवल्य तत् ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, परित्राय, परमधाम प्राप्ति । [ बड़े बाजों वाला ।

कैशिक तत् ( स्त्री० ) बाजों की लट । ( वि० ) बड़े

कैसा दे० ( अ० ) किस प्रकार, किस भाँति ।—ही ( वा० ) किसी प्रकार का ।

कैसे दे० ( अ० ) किस प्रकार से, क्योंकि, किस प्रकार के । कैसे दे० कैसेहू, किसी तरह भी ।

कैहो दे० कसंगा, कहूंगा । [ का चिन्ह, कौन ।

कौ दे० ( अ० ) कर्मवाचक, द्वितीयाविभक्ति, सम्प्रदान कोआ दे० ( पु० ) रेशम के कीड़े का घर, दूसर नामक

रेशम का कीड़ा, कटहल के पके बीज, महुए का पका फल, काया ।

कोहरी दे० ( पु० ) एक छोटी जाति ।

कोह या कोई दे० ( अ० ) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, कई में से एक, कश्चित् । सा ( वा० ) कोई आदमी ।

—न कोई ( वा० ) यह अथवा वह ।

कोऊ दे० ( स० ) कोई मनुष्य, अनिश्चित व्यक्ति ।

कोपरी दे० ( पु० ) जाति विशेष, काछी, खेती करने वाली जाति ।

कोचना दे० ( क्रि० ) बीधना, गोदना, बुमाना ।

कोढ़ा दे० ( पु० ) कुम्माण्ड, कोढ़का, कुंडा जिसमें साँकल लगायी जाती है ।

कोपज दे० ( पु० ) अंडुर, ऋणला, कनखा ।—

कोक तत् ( पु० ) चकवाक पक्षी, चकवा, चघेरा, इस नाम का एक श्रृङ्गारी कवि जिसका धनायास ग्रन्थ कोकशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है, जङ्गली भेड़िया, सङ्गीत का छठवाँ भेद, विष्णु, मेढक, भेड़िया ।—नद ( पु० ) डाल कमल ।—शास्त्र तत् ( पु० ) कोक कृत रतियाक्ष ।

कोका दे० ( पु० ) चकवाक, चकई, चकवा, घायभाई, परिया, कंवल, वक्षविशेष । [ आग्रहृष ।

कोकिल तत् ( पु० ) कोयल, पिक ।—वास ( पु० )

कोकिला तत् ( स्त्री० ) देखो कोकिल ।

कोकी तत् ( स्त्री० ) चकवाकी, चकई ।

कोङ्कण तत् ( पु० ) शब्दविशेष, देशविशेष, यह देश दक्षिण भारत में है ।

कोख तत् ( पु० ) कुचि, गर्भ, जठर, पेट, पार्श्व ।—वन्द ( पु० ) वन्द्या, सन्तानहीन ।

कौश्या दे० ( पु० ) काग, काक ।—ना ( कि० )

चकयकाना, सोते में बराना, स्वप्न में बकना ।

कौध दे० ( स्त्री० ) प्रकाश, प्रताप, दीप्ति, चमक ।

कौधना दे० ( कि० ) चमकना, प्रकाशित होना ।

कौधा दे० ( पु० ) बिजली, विद्युत्, चमक ।

कौला दे० ( पु० ) कमला, संतरा, नीचविशेष, नारङ्गी ।

कौटिल्य तत्त्वं ( पु० ) कुटिलता, चालाकी, कपट देहापन ।

कौटुम्बिक तत्त्वं ( पु० ) कुटुम्ब सम्बन्धी ।

कौड़ा दे० ( पु० ) बड़ी कौड़ी, शङ्खविशेष ।

कौड़ियाला दे० ( पु० ) सर्पविशेष, पैमेवाला, धनी, नदी विशेष, सरयूनादी । [धन, कमाई ।

कौड़ी दे० ( स्त्री० ) वरायक, वरादिष्टा, छोटा शङ्ख, कौण्ड्य तत्त्वं ( पु० ) राक्षस, रात में चलने वालों

की एक जाति । [गुप्त, बाणव्य ।

कौण्डिन्य तत्त्वं ( पु० ) कुण्डिन मुनि का पुत्र, विष्णु-

कौतुक तत्त्वं ( पु० ) कुतूहल, उत्सव, हर्ष, परिहास,

अचरमा, दिलगी, तमाशा, खेलहूद ।—नी ( पु० )

हर्षाभिलाषी, परिहास करनेवाला, रसिक ।

कौतुकिया तद् ( पु० ) कौतुक करने वाला, खेल

करने वाला, खिलवाड़ी, नट, विवाह कराने वाला

माई या पण्डित ।

" तौ कौतुकिष्णन्द आलस नाहीं,

घर कन्या अनेक जगमाहीं । "

—रामायण ।

कौतुकी तत्त्वं ( वि० ) विनोद शील ।

कौतूहल तत्त्वं ( पु० ) अपूर्व वस्तु देखने का अभि-

लाप, हर्ष, कौतुक ।

कौथ दे० ( वि० ) कौन सी तिथि ।

कौथा दे० ( वि० ) किस संध्या का, गिनती में किस

संध्या या स्थान का । [किस प्रकार का ।

कौन दे० ( सर्व ) प्रश्नार्थक ।—सा ( वा० ) कैसा,

कौन्ता तद् ( स्त्री० ) कुन्ती, पाण्डव की माता ।

कौन्ती तद् ( स्त्री० ) कुन्तघारी, भाला धारण करने

वाला ।

कौन्तेय तत्त्वं ( पु० ) कुन्ती के पुत्र, पाण्डव, अर्जुन ।

कौप तत्त्वं ( पु० ) कूप सम्बन्धी अन्न, कूपोदक ।

कौपीन तत्त्वं ( पु० ) कोपीन, लँगोटी, शरीर ढूँके वे

अन्न जो कोपीन से ढक जाय, पाप, अनुचितकर्म ।

कौम ( स्त्री० ) वर्ण, जाति, नस्ल ।

कौमार तत्त्वं ( पु० ) कौमारावस्था, जन्म से लेकर

पाँच वर्ष की अवधि तक ।—नी ( स्त्री० ) मातृ

काविशेष, कार्तिक की शक्ति, बाहरी कन्द, प्रथम

विवाह की स्त्री, पार्वती का नाम ।

कौमुदी तत्त्वं ( स्त्री० ) चन्द्रिका, ज्योत्सना, चन्द्रमा,

का प्रकाश, कीर्तिकोत्सव, कार्तिकी पूर्णिमा, आश्विन

की पूर्णिमा, व्याकरण का एक ग्रन्थ ।

कौमोदकी तत्त्वं ( स्त्री० ) विष्णु की गदा का नाम,

श्री कृष्ण की गदा ।

कौर तत्त्वं ( पु० ) कवल, प्रास, गिरास । [रहने वाला ।

कौरघ तत्त्वं ( पु० ) कुहराज का वंश, कुहदेश में

कौरव्य तत्त्वं ( पु० ) कुहराज का वंश, मुनिविशेष,

महामारस में वर्णित एक नगर ।

कौरा दे० ( पु० ) द्वार का वह भाग जिससे दरवाजा

खुले रहने पर किवाड़ चिपटे रहते हैं ।

कौरी दे० ( पु० ) कोना, गोरी, आलिङ्गन ।

कौल तत्त्वं ( पु० ) सखलोद्भव, कुलीन, तान्त्रिकों

के अनुसार कुलाचार नामक वाममार्ग के उपासक,

सद्वंशज, ब्रह्मज्ञानी, कवल । ( पु० ) प्रण, वादा,

कौलव तत्त्वं ( पु० ) एकादश कार्यों में का तीसरा

करण ।

कौलिक तत्त्वं ( पु० ) कुलपरम्पराप्राप्त, कुलपरम्परा-

नुसार कार्यकारी । ( पु० ) शाक मत्तानुयायी,

तन्तुवाय, सती, पाखण्डी ।

कौली दे० ( स्त्री० ) शकवार, गोदी ।

कौलेय तत्त्वं ( पु० ) कुकुर, कुत्ता ।

कौलेली दे० ( पु० ) गन्धक ।

कौवा दे० ( पु० ) काग, कौया, कत्ता ।

कौवाली दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का गान विशेष ।

कौवेर तत्त्वं ( पु० ) कुवेर सम्बन्धी, कुवेर का, कूट

नाम औषधि, उत्तर दिशा ।

कौवेरी तत्त्वं ( स्त्री० ) उत्तरदिशा, कुवेर की शक्ति ।

कौशल तत्त्वं ( पु० ) अथपुत्रवासी, निपुणता,

दक्षता, महत्त्व, चतुराई ।

कौशली तत्त्वं ( स्त्री० ) कुशलात, सुहार, कुशल प्रश्न ।

कौशल्य तत्त्वं ( स्त्री० ) राजा दशरथ की पटरानी,

श्री रामचन्द्र जी की ये माता थीं, ये दक्षिण

कोय (सर्व०) कोई ।

कोयर (पु०) सज्जी, सागरगत ।

कोयल तद् (पु०) कोकिल, कोहल पक्षी ।

कोयला दे० (पु०) झरारा, खीरा, कोला ।

कोया तद् (पु०) आँख का डेला, आँख का कोना ।

कोये दे० (पु०) आँख के डेले, आँखों के बीच का श्वेत डेला या डेंडर ।

कोर दे० (पु०) किनारा, छोर, कगर, प्रान्तभाग ।

कोरक तत् (पु०) कली, मुकुल, अविकसित द्रव्य, नृपाल, शीतलघीमी ।

कोरकसर (स्त्री०) कमी, घुटि ।

कोरझी दे० (स्त्री०) छोटी इलायची ।

कोरा दे० (पु०) नया, नवीन, विनवर्त्ता, बिना उपयोग में आया हुआ, ( इसका प्रयोग वर्त्तन कपड़ा कागज आदि के लिये होता है । ) [ न होना ।

कोरे रहना ( वा० ) निराश होना, मनोरथ सिद्ध

कोरि दे० (अ०) खुरचकर, खोद कर, कोढ़ कर ।

कोरी दे० (स्त्री०) सादी, विनवर्त्ता, हिन्दू जुलाहा, कपड़ा धिने धाली जाति विशेष ।

कोल दे० (पु०) खाली, खाल, सकड़ी गली, पहाड़ियाँ, सूकर, सूधर, एक जङ्गली जाति, गोद, चित्रक, शनिप्रद, बेरफस, कालीमिर्च, कोरा, गोद ।

कोला दे० (पु०) देखो कोल ।

कोलाइल तद् (पु०) रौला, कलराव, शोरगुल, बहुत दूर तक जाने वाला, अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द ।

कोलियाना दे० (कि०) गोद में लेना, कोला लेना ।

कोली दे० (पु०) तन्तुवाय, तांती, कपड़े बनाने वाली एक जाति, छोटी गल्ली, साकड़ गल्ली ।

कोल्ह दे० (पु०) चरखी, तेल निकालने वा ऊँख से रस निकालने की कल ।

कोविद तद् (पु०) पण्डित, बुध, निपुण, ज्ञानी ।

कोश तद् (पु०) कमल का मध्यभाग, तलघार की म्यान, अश्वों का रखने का घर, अण्डकोश, भण्डार, खजाना, शब्दसंग्रह, अतिथान ।

कोशल या कोशला तद् (स्त्री०) अयोध्या नगरी, देश विशेष का नाम, इसका वर्तमान रामायण में आया है । यह सरयूनदी के किनारे है । पहले इसके दो

भाग थे, उत्तरकोशल और दक्षिणकोशल । यह सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी थी ।—पुरी (स्त्री०) अयोध्या ।—आधीश (पु०) श्रीरामचन्द्र, कोशल के राजा ।—वृद्धि (स्त्री०) अण्डवृद्धि का रोग, घन की बढ़ती ।

कोप तद् (पु०) धनागार, खजाना ।

कोपाध्यत तद् (पु०) कोपाधीश, कोपाधिपति, भण्डारी, खजांची ।

कोष्ठ तद् (पु०) गृहमध्य, कोष्ठसम्य, पाकाशय, खाना, खात ।—क तद् (पु०) दीवार, लकीर चिन्ह विशेष, ( ) एक प्रकार का चिन्ह [ ]

—वृद्ध (पु०) मलावरोध, मलकी रुकावट, रोगविशेष ।

कोष्ठागार तद् (पु०) भण्डार, कोप, खजाना ।

कोस तद् (पु०) मार्ग की लम्बाई का परिमाण, प्राचीन काल का कोस आठ हजार या चार हजार हाथ की लम्बाई का होता था । वर्तमान काल का कोस २ मील या ३२० गज या ७०४० हाथ का होता है, दो मील । [ करते रहना ।

कोसना दे० (कि०) शाप देना, यातों से दुःखी कोसा दे० (पु०) खीमी, फली, रोग विशेष ।

कोसिला (स्त्री०) देखो कोशला ।

कोम्पी (स्त्री०) नदी विशेष, कौशिकी ।

कोह तद् (पु०) क्रोध, रोप, कोप, ( इस अर्थ में काहु और कोहू का भी प्रयोग रामायण में किया गया है ।

कोहनी तद् (स्त्री०) बाँह के बीच की गाँठ ।

कोहबर दे० (पु०) कौतुक गृह, देवगृह ।

कोहरा (पु०) कुहासा, कुहरा ।

कोहाना दे० (कि०) कोप करना, क्रोध करना, खिसियाना । [ मान करना, रुस जाना ।

कोहाव दे० (पु०) क्रोध, कोप, रुटना, कोहना, कोही दे० (पु०) क्रोध, कोपी, यथा—

“ कर कुटार में अकरय कोही ”

आगे अपराधी गुरु दोही ।

—रामायण ।

कोहू, कोहू तद् (पु०) देखो कोह ।

को, दे० (अ०) का, को ।

क्रय्याद् तत् ( पु० ) चित्ता की आग, मांस खाने वाला ।  
क्रान्त तत् ( गु० ) आक्रमित, पक्षित, दयदया,  
उका हुआ ।

क्रान्ति तत् ( स्त्री० ) आक्रमण, उपद्रव, अत्याचार  
गति, खगोल के बीच में किञ्चित् चक्र रेखा, सूर्य-  
पथ, वीसि, प्रकाश, फेरफार, हेरफेर, उलटफेर ।  
—वृत्त ( स्त्री० ) सूर्य का मार्ग ।—मण्डल ( पु० )  
राशिचक्र । [ उत्पन्न हो जाते हैं ।

क्रिमि ( पु० ) कीड़ी, पेट का रोग जिसमें पेट में कीड़े  
क्रिय तत् ( पु० ) मेघराशि ।

क्रियमाण तत् ( गु० ) व्यवहारान्वित, प्रातश्चकर्म,  
चार प्रकार के कर्मों का एक मेद ।

क्रिया तत् ( स्त्री० ) व्यवहार, कृष्यः कार्य, कर्म,  
शपथ, व्यापार, धातु, व्याकरण का वह भाग  
जिससे किसी कर्म का होना या किया जाना  
विहित हो, उपाय, विधि ।—न्धित ( गु० )  
कर्मान्वित ।—पटु ( गु० ) चतुर, प्राज्ञ, दक्ष,  
विदग्ध ।—पर ( गु० ) कर्मठ, सुकर्मा, पटु ।  
—पाद ( पु० ) चतुष्पाद, व्यवहार का तीसरा  
पाद, साक्षियों का शपथ करना ।—घसन्त  
( गु० ) पराजित ।—चान् ( गु० ) कर्मोपेत,  
कर्मयोगी, कर्म में नियुक्त । विशेषण ( पु० )  
अव्ययशब्द ।—रूप ( पु० ) घातुरूप आख्यात ।  
—लोप ( पु० ) कर्म में विरक्ति, कर्म निवृत्ति ।

क्रौट ( पु० ) मुकुट, किरिट, सिंह पर धारण किया  
जाने वाला गहना ।

क्रौडनक तत् ( पु० ) खेल, खेलने की वस्तु ।

क्रौडा तत् ( पु० ) खेल, केलि, कौतुक, कर्म,  
परिहास ।—चन ( पु० ) प्रमोदयन, केलिकानन ।  
—मृग ( पु० ) खेल के पशु, यानर आदि ।

क्रौत तत् ( पु० ) मूल्य द्वारा गृहीत, खरीदा हुआ ।  
—पुत्र ( पु० ) बारह प्रकार के पुत्रों में से  
एक पुत्र ।

क्रुद्ध तत् ( गु० ) क्रोधित, कोपान्वित ।

क्रुमुक तत् ( पु० ) सुपारी, पुंगीफल ।

क्रुध्वा तत् ( पु० ) शृगाल, शिपार ।

क्रूर तत् ( स्त्री० ) परद्रोही, निर्दय, नृरंस, कठिन, ( पु० )  
प्रथम, तृतीय, पञ्चम, सप्तम, नवम और एका-

दश राशि, मति, खाल, कनेर, घात पक्षी, सपुद  
चील, रवि, मङ्गल, शनि, राहु, हेतु '—कर्मा  
( गु० ) भयङ्कर कर्म करने वाला, दुरामा, निष्ठुर-  
कर्मकारी, ( पु० ) सूरजमुखी, तितलौकी का पेड़ ।  
—गन्ध ( पु० ) उग्रगन्ध, तीक्ष्ण गन्ध, गन्धक ।  
—ग्रह ( पु० ) रवि, मङ्गल, शनि, राहु, हेतु क्रूर  
ग्रह माने गये हैं, विषम राशि ।—ता ( स्त्री० )  
खलता, निष्ठुरता, निर्दयता ।—लोचन ( पु० )  
शनिग्रह, शनैरवर ।—स्वरा ( पु० ) कर्कश ध्वनि-  
युक्ति, भयङ्कर शब्द ।—आकार ( पु० ) शब्द,  
भयङ्कर, आकार ।—आचार ( गु० ) अपानक,  
नृरंस, निष्ठुर । [ योग्य ।

क्रौटव्य तत् ( गु० ) क्रौं वस्तु, क्रयणीय, खरीदने  
क्रौता तत् ( पु० ) क्रयकर्त्ता, खरीदार ।

क्रौय तत् ( गु० ) क्रयणीय, खरीदने योग्य ।

क्रौड तत् ( पु० ) दोनों बाहु के बीच का भाग, अङ्गु-  
कोला, घचखल ।—पत्र ( पु० ) अतिरिक्त पत्र,  
प्रधान पत्र के साथ दूसरा पत्र ।

क्रोध तत् ( पु० ) कोप, रोष, अग्रय, प्रह्ला के मौंद् से  
उत्पन्न, शरीरधारियों के स्वभाविक दुः शब्दों  
के अन्तर्गत एक शब्द, साठ संवत्सरों में उनसठवाँ  
संवत्सर ।—मूर्च्छित ( पु० ) सुगन्ध द्रव्य विशेष,  
( गु० ) अतिरंगी ।—तुर ( गु० ) क्रोधी ।—  
गन्ध ( गु० ) क्रोध से उत्पन्न ।

क्रोधन तत् ( पु० ) क्रोधी, क्रोधयुक्त, क्रोधान्वित  
( १ ) कौशिक के एक पुत्र का नाम । ( २ ) अयुत के  
पुत्र और देवातिथि के पिता का नाम । ( ३ ) एक  
संवत्सर का नाम ।

क्रोधित तत् ( गु० ) प्रकुपित, क्रोध दीप्त, क्रुद्ध ।

क्रोधी तत् ( गु० ) क्रोचयुक्त, रागी, रितहा ।

क्रोश तत् ( पु० ) चार हजार या आठ हजार हाथ के  
भाग की लम्बाई, कोस ।

क्रोश्या तत् ( पु० ) शृगाल, शिपार, गोदड़ ।

क्रौञ्च तत् ( पु० ) चक्रपक्षी, पर्वतविशेष, जिसके  
जिये परशुराम और कार्तिकेय दोनों छड़े थे ।  
द्वीपमेद, एक राक्षस का नाम जो यमदानव का  
पुत्र था, एक प्रकार का शङ्ख ।—द्वीप ( पु० )  
सात महाद्वीपों के अन्तर्गत एक द्वीप ।

कौशल के राजा की कन्या थी और रामचन्द्र जी के अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने पर इन्होंने परलोक यात्रा की, ( २ ) पुरुराज की स्त्री, ( ३ ) सत्वान् की स्त्री, ( ४ ) पतराष्ट्र की माता, पद्मसुखी भारती ।

कौशाम्बी तत् ( स्त्री० ) कसदेश की राजधानी का नाम, प्रयाग से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है ।

कौशिक तत् ( पु० ) महर्षि विश्वामित्र का दूसरा नाम, ये महाराज कुशिक के वंश में उत्पन्न हुए थे, गांधिराज इनके पिता का नाम है । इन्द्र, शत्रु, नेवला, रेशमीवस्त्र, मञ्जा ।

कौशिकी तत् ( स्त्री० ) एक नदी का नाम जो दक्षिण के पूरव की ओर बहती है, भागलपुर के उत्तरी भाग में और जो पुरनिया के पश्चिम की ओर है । आज कल इसको कुशी कहते हैं । इसी नदी के तीर पर महर्षि ऋष्यशृङ्ग का आश्रम था, चण्डिका, एक रागिनी, काव्य की प्रथम वृत्ति ।

कौशेय तत् ( पु० ) पटवस्त्र, पीताम्बर, रेशमी पोती आदि ।

कौस्तुभ तत् ( पु० ) वनकुसुम, कोमल शाक विशेष ।

कौस्तुभ तत् ( पु० ) विष्णु वक्षस्थित मणि, मुद्रा विशेष ।

क्या दे० ( थ० ) प्रसार्थक, किं, काह ।

क्यारी दे० ( स्त्री० ) धँवरा, मँडू, उपवन, चमन ।

क्यों दे० ( थ० ) किसलिये, काहे को, कैसा ।

क्योंकर दे० ( थ० ) किस प्रकार, कैसा, किस तरह ।

क्योंकि दे० ( थ० ) इसलिये, इस कारण, किन्तु ।

क्रकच तत् ( पु० ) करपत्र, चारा, कराँती, करील का पेड़, नरक विशेष, गणित की एक विशेष क्रिया ।

क्रतक तत् ( पु० ) वासुदेव के एक पुत्र का नाम ।

क्रतु तत् ( पु० ) यज्ञ, थाग, पूजा, वैदिककर्म विशेष, मिश्रय, सङ्कल्प, इच्छा, विवेक, इन्द्रिय, जीव, विष्णु, आपाङ्ग, ब्रह्मा के एक मानस पुत्र विश्वदेवों में से एक, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, पुष्य द्वीप की एक नदी ।—क्षेपी ( पु० ) असुर, दानव, दैत्य, नास्तिक ।—ध्वंसी ( पु० ) शिव, महादेव, इन्होंने दक्षप्रजापति का यज्ञ ध्वंस किया था ।—पुष्य ( पु० ) नारायण, विष्णु ।—भुज ( पु० ) देवता, अमर देव ।—विक्रम ( पु० ) धन लेकर यज्ञ के फल बेचने वाला ।

क्रतुमाली दे० ( स्त्री० ) ओषधि विशेष, किरवाली ।

क्रयन तत् ( पु० ) सफेद चन्दन, ऊँट ।

क्रन्दन तत् ( पु० ) अश्रुपात, रोदन, कान्दना, रोना ।

—कारी ( पु० ) बिठार करनेवाला, रोदन करनेवाला ।

क्रन्दित तत् ( पु० ) अनुशोचित, विजपित, रोदित ।

क्रम तत् ( पु० ) परिपारी, रीति, वैदिक विधान, कल्पविधि, अनुक्रम, भाँति, शक्ति, आक्रमण, चलन, तुलसीदास जी ने क्रम को कर्म का अपभ्रंश बना कर प्रयोग किया है । जिसका अर्थ है, कर्मणा ।

यथा—“मन क्रम चचन चरन रत होई ।”

—क्रम ( पु० ) शनैः शनैः ।—भङ्ग ( पु० )

अनियम, विधिहीनता, साहित्य का एक दोष ।

—योग ( पु० ) विधि नियोग ।—संन्यास ( पु० )

आश्रम क्रम से लिया हुआ संन्यास ।—गत ( पु० )

क्रम प्राप्त, क्रमावध, परस्परगत ।—

नुयायी ( पु० ) विहित, व्यवस्थित, नियमा-

नुकूल ।—नुसार ( थ० ) क्रम क्रम से, नियमा-

नुसार ।—ान्वय ( पु० ) क्रमानुयायी, यथा-

क्रम, क्रमागत, एक के बाद एक ।

क्रमण तत् ( पु० ) पैर, पांव, पारे के जो अक्षरह संस्कार

किये जाते हैं उनमें से एक । [ थोड़ा करके ।

क्रमशः ( वि० ) धीरे धीरे, क्रम से, पीढसिलेवार, थोड़ा

क्रमिक तत् ( वि० ) क्रमशः ।

क्रमुक तत् ( पु० ) सुपारी, कसैली, नागरमोथा,

कपास का फल, पठानी कोष, एक देश का नाम ।

क्रमेल, क्रमेलक तत् ( पु० ) ऊँट, शूद्र ।

क्रय तत् ( पु० ) द्रव्य देकर वस्तु लेना, मूल्य द्वारा

पदार्थ ग्रहण, मोल लेना खरीदना ।—क्रीत

खरीदा हुआ ।—विक्रय ( पु० ) लेन देन,

व्यापार ।

क्रयणीय तत् ( पु० ) क्रेय, क्रेतव्य, मोल लेने योग्य ।

क्रयिक तत् ( पु० ) क्रेता, मोल लेनेवाला, खरीदार ।

क्रयी तत् ( पु० ) कयकर्त्ता, मोल लेने वाला ।

क्रय्य तत् ( पु० ) बेचने के लिये बाज़ार में फैलाई

हुई वस्तु ।

क्रय्य तत् ( पु० ) मांस, गोश ।

तत्रिय तत्त्वं ( पु० ) द्रव्या के बाहु से उत्पन्न वर्ण विशेष, क्षत्री, राजन्य, दूसरा वर्ण ।—रा ( स्त्री० ) त्रिय जाति की स्त्री ।—रात्री ( स्त्री० ) त्रिय स्त्रीजाति, त्रिय पत्नी ।

तत्रयी तत्त्वं ( पु० ) देखो त्रिय ।

तत्रिन दे० ( स्त्री० ) त्रिय जाति की स्त्री ।

तत्ररानी दे० ( स्त्री० ) त्रियानी ।

तत्रपाक तत्त्वं ( वि० ) निर्लम्ब । ( पु० ) बुद्धविशेष, संन्यासी, व्रत, राजा विक्रमादित्य की सभा के सदस्यों का दूसरा रथ । इसका बनाया कोई ग्रन्थ अब तक न देखा गया है और न सुना ही गया है । अभी तक इसका भी पता नहीं लगा है कि किस नाम का ग्रन्थ इसने बनाया था । परन्तु कुटुकल रत्नाकर इसके नाम से पाये जाते हैं । यह विक्रम के समकालीन था, इसका भी समय खुरीय छठी शताब्दी माना जाता है ।

तत्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) रजनी, रात्रि, निशा, हव्दी ।—कर ( पु० ) चन्द्रमा, शशाङ्क, कर ।—नाथ ( पु० ) चन्द्रमा, कर ।

तत्रान्त ( पु० ) प्रातःकाल, तवेरा, भोर ।

तत्र तत्त्वं ( पु० ) योग्य, समर्थ, उपयुक्त ।—ता ( स्त्री० ) सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता । [करना ।

तत्रना तत्त्वं ( कि० ) सटना, समा करना, मुखाक क्रमा तत्त्वं ( स्त्री० ) सहिष्णुता, सहन करने की शक्ति, पृथ्वी, अपराध-मार्जन, दया, रात्रि, दुर्गा, कृपा, अपराधमुक्ति, एक वर्णवृत्ति, राधिका की एक सखी ।—तान् ( पु० ) दयालु, समा करनेवाला, धैर्यशील, सहिष्णु ।—शील ( वि० ) समावन् ।

तत्रापन तत्त्वं ( पु० ) समा करना, अपराध मार्जन करना ।

तत्रिय दे० ( पु० ) समा कीजिये, मुखाक कीजिये ।

तत्रिता तत्त्वं ( पु० ) समाशील, सहिष्णु ।

तत्री तत्त्वं ( पु० ) समाशील, समावन् ।

तत्र्य तत्त्वं ( वि० ) माफ करने योग्य ।

तत्र्य तत्त्वं ( पु० ) रोगविशेष, यक्ष्मरोग, चर्द्द, विनाश, प्रलय, अपचय, घीरे घीरे घटना, साठ संकल्पों में अन्तिम संकल्प, ज्योतिष मतानुसार एक मास विशेष ।—काल ( पु० ) प्रलयकाल ।—कास

( पु० ) यक्ष्माकास, राजरोग ।—धु ( पु० ) छांसी ।

—पत्त ( पु० ) कृष्णपत्र ।—मास, मलमास, अग्रिमास । [ ( पु० ) चन्द्रमा ।

तत्रयी तत्त्वं ( वि० ) गट होने वाला चयन का रोगी ।

तत्रण तत्त्वं ( पु० ) सवण, छाव, चूना, झड़ना, टपकना ।

तत्रन्त तत्त्वं ( पु० ) महनशील, सन्तोषी, धीर, सहिष्णु, समान्वित । [अपकार न करना ।

तत्रान्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) शक्ति रहने पर भी किसी का साधन ( वि० ) त्रिय सम्बन्धी ।

तत्राम तत्त्वं ( पु० ) चीण, दुर्बल, निर्वल ।—कण्ठ ( पु० ) सूखा कण्ठ, मन्दगन्ध ।

तत्रार तत्त्वं ( पु० ) क्षार, भस्म, नाना, पञ्जी, काँच, गुड़, लवणविशेष, समुद्रीलवण ।—पत्र ( पु० ) यथुआ, शाक विशेष ।—भूमि ( स्त्री० ) खारी भूमि, ऊसर खेत ।—मृत्तिका ( स्त्री० ) खारी मिट्टी ।—थ्रेष्ठ ( पु० ) दाकवृक्ष, पलास ।—सिन्धु ( पु० ) लवण समुद्र ।

तत्रालन तत्त्वं ( पु० ) प्रचालन, धोना, स्वच्छ करना ।

तत्रिति तत्त्वं ( स्त्री० ) पृथ्वी, भूमि, मेदिनी, अवनि, धरती, गोरार्चन, चय, प्रलयकाल ।—ज ( पु० ) भौमासुर, मन्त्र प्रज्ञ, धातु उपधातु आदि जो पृथ्वी से निकलते हैं, नाकासुर, केशुप, वृच । मैदान में खड़े होने या और चारों ओर देखने पर चारों ओर दिखलाई पड़ने वाला वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी मिली जान पड़े ।

—नाथ ( पु० ) राजा, शासक, रक्षक ।—पाल ( पु० ) राजा, नृपति ।—मण्डन ( पु० ) द्रव्य, आदर्श पुरुष ।

तत्रितीश तत्त्वं ( पु० ) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल ।

तत्रितीश्वर तत्त्वं ( पु० ) प्रभु, स्वामी, महीश ।

तत्रित तत्त्वं ( पु० ) फैलायी गयी, त्यक्त, अस्मान्निवृत्त, पतित, बात रोग ग्रस्त, पागल ।

तत्रित तत्त्वं ( पु० ) शीघ्र, उतावला, अविलम्ब ।—हस्त ( वि० ) कुर्तौला, कुर्तों से काम करने वाला ।

तत्रिण तत्त्वं ( पु० ) निर्वल, दुर्बल, कुरा, दुबला पतला ।

—ता ( स्त्री० ) कमी, घटी, हानि ।—तङ्ग ( पु० ) दुर्बलङ्ग ।

क्षीर तत्त्वं ( पु० ) दूध, दुग्ध, पय ।—कण्ठ ( पु० )

कौटिल्य तत्त्वं ( पु० ) कृता, निष्ठुरता ।

क्रान्त तत्त्वं ( पु० ) श्रान्त, यका हुमा, यका मर्दा,  
यकित ।—मना ( गु० ) श्रान्तमन, उद्विग्नचित्त,  
विषादयुक्त ।

क्रान्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) श्रान्ति, श्रम, परिश्रम, यकावट ।  
—कर ( गु० ) श्रमजनक, श्रान्तिकर—क्लृद्  
( गु० ) विश्राम, स्वस्थ । [ मैल ।

क्रिन्न तत्त्वं ( गु० ) आर्द्र, भीमा, सजल, गीला, क्लेशयुक्त  
क्रिशित तद् ( गु० ) क्लेशयुक्त, दुःखी, पीडित, क्लिष्ट ।  
क्रिश्यमान तद् ( गु० ) सन्तापित, पीडित ।

क्रिष्ट तत्त्वं ( पु० ) पूर्वापर विरुद्ध वाक्य, दुःखी,  
कठिनाई, आपत्ति ।—कर्मा ( पु० ) नृशंस कर्म  
करने वाला, पीडित ।

क्रोव तत्त्वं ( पु० ) नपुंसक, पुरुषार्थहीन, निर्वल,  
हिमड़ा, कायर, डरपोक । [ गीलापन, मैल ।

फलेद् तद् ( पु० ) आर्द्रता, स्वेद, पसीना, ओदापन  
फलेद् तद् ( पु० ) पसीना लाने की क्रिया, पाँच  
प्रकार के कफ के अन्तर्गत कफ विशेष ।

फलेदित तद् ( गु० ) भीमा हुआ, आर्द्र, स्वेदित ।  
फलेश तद् ( पु० ) दुःख यन्त्रणा, उपात, पीड़ा,  
कष्ट, आपात, भय ।—कर ( गु० ) दुःखदायक,  
कष्टदायक ।—द ( गु० ) दुःखकर, ब्याधा देने-

वाला ।—वान् ( गु० ) आपत्तिप्रस्त, आपन्न,  
दुर्गत ।—पद ( गु० ) क्लेशनाशकारी ।

फलेशित तद् ( गु० ) क्लेश विशिष्ट, दुःखयुक्त, क्लिष्ट ।  
फलैव्य तद् ( पु० ) दुर्बलता, मानसिक निर्वलता,  
अनुत्साह । [ बहुत कम ।

फचित् तत्त्वं ( कि० वि० ) कमी, कुछ नहीं, कोई,  
कण तद् ( पु० ) ध्वनि, चीन्हा आदि का शब्द ।  
फाय तद् ( पु० ) काफ़ा, निरास ।

फार ( पु० ) आश्विनमास, अश्विन महीना ।—पन  
( पु० ) कुमारपन ।

फारा तद् ( वि० ) यिन व्याहा, कुँआरा ।

फई तद् ( स्त्री० ) चपराग, कफ और रक्त का  
निकलना, सूखी खाँसी ।

फण तद् ( पु० ) कालविशेष, तीस कला परिमित  
समय, दशपञ्चपरिमित समय, उत्सव, पर्व, अवसर,

सूक्ष्मकाल, छन, लहमा ।—द तद् ( पु० )  
जल, ज्योतिषी, रत्नाधिया, जिसे रात में न दीखे ।  
—दा ( स्त्री० ) रात्रि, निशा ।—दाकार तद्  
( पु० ) चन्द्रमा ।—दान्ध ( गु० ) रात के अन्धे,  
प्राणिविशेष, उल्लू ।—द्युति ( स्त्री० ) विद्युत्,  
चपला, बिजली ।—ध्वंसी ( गु० ) अतिशय  
अस्थिर, क्षणमात्र ही में नष्ट होने वाला ।—भंगुर  
( गु० ) क्षण ही में नष्ट होने वाला, विनाशी ।

सणक तद् ( पु० ) चण, काल ।

सणप्रति तद् ( अ० ) सतत, अनवरत बराबर ।

सणरुचि तद् ( स्त्री० ) बिजली, चमक, प्रकाश ।

सणिक तद् ( गु० ) क्षणमात्र स्थायी, अल्पकाल  
स्थितिशील ।

सणिका तद् ( स्त्री० ) बिजली, तड़ित ।

सणिनी तद् ( स्त्री० ) रात, निशा ।

सत तद् ( पु० ) घाव, चोट, ग्रथ, फोड़ा । ( वि० ) जिसे  
चोट लगी हो, जिसके घाव लगा हो ।—कास  
( पु० ) कास, रोगविशेष ।—ज ( पु० ) रक्त, शोणित,  
रुधिर, खोहू ।—व्रत ( गु० ) नष्ट व्रत ।—व्रण  
( पु० ) चोट लगे हुए स्थान को चीरन से जो घाव  
होता है, उसे व्रतव्रण कहते हैं ।

सतम्रो तद् ( स्त्री० ) लाव, लाह ।

सतज तद् ( वि० ) चत से अप्रसन्न, डाल, ( पु० ) रुधिर,  
वह प्यास जो शरीर में घाव लगने पर लगती है ।

सतयोनित तद् ( वि० ) वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ  
समागम हो चुका है ।

सतविसत तद् ( वि० ) बहुत चुटीला, लहू लुहान ।

सता ( स्त्री० ) विवाह होने के पूर्व पर पुरुष से भोगी हुई  
कन्या । [ वय ।

सति तद् ( स्त्री० ) अपकार, अनिष्ट, हानि, अपवय,

सत्ता तद् ( पु० ) सारथि, दूरवान, मज्जूजी, शूद्र के  
औरत से चरित्रा के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष,  
दासी पुत्र, नियोग करने वाला पुरुष ।

सन्तथ्य ( वि० ) माफ़ करने योग्य चमा करने योग्य ।

सन्न तद् ( पु० ) बल, राष्ट्र, धन, शरीर, जल ।—कर्म  
( पु० ) चरित्रोपचित कर्म ।—वन्धु ( पु० ) निम्नित  
चरित्र ।—धारी ( पु० ) राजा, भूपाल ।—पति  
( पु० ) नृप, राजा ।—न्तिक ( पु० ) परशुराम ।

तत्रिय तत् ( पु० ) ग्रहा के बाहु से उत्पन्न वर्ण विशेष, चूरी, राजन्ध, दूसरा वर्ण ।—१ ( खी० )  
तत्रिय जाति की स्त्री ।—एणी ( खी० ) तत्रिय स्त्रीजाति, त्रिय पदो ।

तत्री तत् ( पु० ) देखो त्रिय ।

तत्रिन दे० ( खी० ) त्रिय जाति की स्त्री ।

तत्ररानी दे० ( खी० ) त्रियानी ।

तत्पण्यक तत् ( वि० ) निर्लज्ज । ( पु० ) बुद्धविशेष, संन्यासी, व्रमण, राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों का दूसरा रत्न । इसका बनाया कोई ग्रन्थ अब तक न देखा गया है और न सुना ही गया है । ग्रन्थी तक इसका भी पता नहीं लगा है कि किस नाम का ग्रन्थ इसने बनाया था । परन्तु कुटुकल श्लोक इसके नाम से पाये जाते हैं । यह विक्रम के समकालीन था, इसका भी समय ख्रिष्टीय छठी शताब्दी माना जाता है ।

तत्पा तत् ( खी० ) रजनी, रात्रि, निशा, हव्दी ।—कर ( पु० ) चन्द्रमा, शशाङ्क, कपूर ।—नाथ ( पु० ) चन्द्रमा, कपूर ।

तत्पान्त ( पु० ) प्रातःकाल, सवेरा, थोर ।

तत्त तत् ( पु० ) योग्य, समर्थ, उपयुक्त ।—ता ( खी० ) सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता । [ करना ।

तत्तना तत् ( वि० ) सज्जना, समा करना, सुभाष  
तत्ता तत् ( खी० ) सहिष्णुता, सहन करने की शक्ति, पृथ्वी, अपराध-मार्जन, दण, रात्रि, दुर्गा, कृपा, अपराधमुक्ति, एक वर्णवृत्ति, रात्रिका की एक सली ।—यान् ( पु० ) दयालु, क्षमा करनेवाला, धैर्यशील, सहिष्णु ।—शील ( वि० ) समाधान ।

तत्तापन तत् ( पु० ) क्षमा करना, अपराध मार्जन करना ।

तत्तिय दे० ( पु० ) क्षमा कीजिये, सुभाष कीजिये ।

तत्तिला तत् ( पु० ) क्षमाशील, सहिष्णु ।

तत्तो तत् ( पु० ) क्षमाशील, क्षमावान् ।

तत्तय तत् ( वि० ) माफ करने योग्य ।

तत्तय तत् ( पु० ) रोगविशेष, यक्ष्मरोग, चर्द, विनाय, प्रलय, अपचय, धीरे धीरे घटना, साठ संकसरों में अन्तिम संकसर, ज्योतिष मतानुसार एक मास-विशेष ।—काज ( पु० ) प्रलयकाल ।—कास

( पु० ) यक्ष्माकास, राजरोग ।—धु ( पु० ) खांसी ।

—पक्ष ( पु० ) कृष्णपक्ष ।—मास, मलमास, अधिमास । [ ( पु० ) चन्द्रमा ।

तत्तो तत् ( वि० ) नष्ट होने वाला लयरीग का रोगी ।

तत्तय तत् ( पु० ) खवण, साव, चूना, मड़ना, टपकना ।

तत्तन्त तत् ( पु० ) सहनशील, सन्तोषी, धीर, सहिष्णु, समान्वित । [ धपकार न करना ।

तत्तान्ति तत् ( खी० ) शक्ति रहने पर भी किसी का ज्ञान ( वि० ) त्रिय सम्बन्धी ।

तत्ताम तत् ( पु० ) क्षीण, दुर्बल, निर्बल ।—कण्ठ ( पु० ) सूखा कण्ठ, मन्दराब्ध ।

तत्तार तत् ( पु० ) छार, भरम, नेना, पञ्जी, काँच, गुड़, लवणविशेष, समुद्रोलवण ।—पत्र ( पु० ) वयुष्मा, शाक विशेष ।—भूमि ( स्त्री० ) खारी भूमि, ऊसर खेत ।—मृत्तिका ( स्त्री० ) खारी-मिट्टी ।—ध्रेष्ट ( पु० ) डाकघर, पलास ।—सिन्धु ( पु० ) लवण समुद्र ।

तत्तानन तत् ( पु० ) प्रचालन, धोना, स्वच्छ करना ।

तत्ति तत् ( स्त्री० ) पृथ्वी, भूमि, मेदिनी, ध्वनि, भरती, गोरार्चन, चय, प्रलयकाल ।—ज ( पु० ) भौमासुर, महल ग्रह, धातु उपधातु आदि जो पृथ्वी से निकलते हैं, नाकासुर, केसुमा, वृष । मैदान में खड़े होने या और चारों ओर देखने पर चारों ओर दिखलाई पड़ने वाला वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी मिली जान पड़े ।—नाथ ( पु० ) राजा, शासक, रक्षक ।—पाल ( पु० ) राजा, वृत्ति ।—मण्डन ( पु० ) ग्रहा, आदर्श पुरुष ।

तत्तिश तत् ( पु० ) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल ।

तत्तिश्वर तत् ( पु० ) प्रभु, स्वामी, महीरा ।

तत्ति तत् ( पु० ) फैलायी गयी, त्यक्त, श्रान्तान्वित, पतित, वात रोग ग्रस्त, पागल ।

तत्तिप्र तत् ( पु० ) शीघ्र, अताबला, अधिलम्ब ।—हस्त ( वि० ) कुर्तीला, कुर्ती से काम करने वाला ।

तत्तो तत् ( पु० ) निर्बल, दुर्बल, कृश, दुबला पतला ।

—ता ( खी० ) कमी, घटी, हानि ।—तङ्ग ( पु० ) दुर्बलाङ्ग ।

तत्तोर तत् ( पु० ) दूध, दुग्ध, पशु ।—कण्ठ ( पु० )



पद्या, दुग्धमुर्धा बालक।—नीर ( वा० ) अश्वेद-  
भाव, गाढ़ मैत्री।—घृत ( पु० ) भस्मन।—धि  
( पु० ) समुद्र।—समुद्र ( पु० ) दूध का समुद्र।  
श्रीरस्वामी तत्त्वं ( पु० ) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये  
कश्मीर के महाराज जयापीढ़ के राज्यकाल में  
७०० शाके अर्थात् ७७९ ई० से लेकर सन् ८१३  
ई० तक दिया गया है और यह भी लिखा है कि  
श्रीरस्वामी जयापीढ़ के गुरु थे। श्रीरस्वामी ने अमर-  
कोश की टीका लिखी है तथा और भी व्याकरण  
सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं।

श्रीरी तद् ( श्री० ) वृक्ष और फल विशेष, श्रीरं, धन।  
श्रीरौद्र तद् ( पु० ) श्री समुद्र।—तनया ( श्री० )  
लक्ष्मी, रमा, कमला। [चित्त, खेदयुक्त मन।  
क्षुण्ण तद् ( पु० ) चूर्णीकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त  
क्षुत् ( श्री० ) भूल, क्षुधा।  
क्षुत्पिपासा तद् ( श्री० ) भूल प्यास।  
क्षुत् ( पु० ) घोंक।

क्षुद्र तद् ( पु० ) घाबल के छोटे टुकड़े, ( वि० ) अरुण,  
योद्धा, नीच, अधम।—क्षुट्टिका ( श्री० ) कटि-  
भूषण, करधनी।—ता ( श्री० ) अस्पृष्टता, नीचता,  
अधमता।—बुद्धि ( वि० ) नीच बुद्धि।

क्षुद्रा ( श्री० ) नीच स्त्री, बेरवा, रंछी, जटामांसी, बाल-  
वृद्ध, मधुमक्खी विशेष, कीडियाला, दिचकी।

क्षुद्राशय ( वि० ) कमीना, नीच।

क्षुधा तद् ( श्री० ) क्षुधा, पुष्पुषा, खाने की इच्छा,  
भूल।—क्षुर ( पु० ) क्षुधा से स्पर्शकूल क्षुधापी-  
डित।—क्षु ( वि० ) भुक्षलह।—वन्त ( पु० ) भूखा,  
अत्यन्त भूखा।

क्षुधित तद् ( पु० ) क्षुन्विपात, दुःखित, भूखा।

क्षुप ( पु० ) कटीला वृक्ष, रतिबंध, श्रीकृष्ण के एक  
पुत्र का नाम। [क्षुद्र।

क्षुब्ध तद् ( वि० ) चञ्चल, अधीर, विह्वल, अयमीत  
क्षुमित ( वि० ) क्षुब्ध।

क्षुर तद् ( पु० ) अस्तुरा, क्षुरा, खुरा, खुर, मूँज।—  
क ( पु० ) गोखरू, वृक्ष विशेष।—धार ( पु० )  
नरक विशेष, वाण विशेष।

क्षुरप ( पु० ) खुरपा, पैना वाण।

क्षुरिका ( श्री० ) क्षुरी, पालकी का शाक।

क्षुरी ( पु० ) नाई, खुर वाला पशु, क्षुरी।

क्षुल्लक तद् ( पु० ) कौड़ी, नीच, क्षुद्र।

क्षेत्र तद् ( पु० ) खेत, पुण्य भूमि, शरीर, राशि, स्त्री,  
तीर्थ, सिद्धस्थान, द्रव्य, प्रकृति, गुह, नगर।—

गणित तद् ( पु० ) क्षेत्रों के मापने और उनके  
क्षेत्रफल निकालने की विधि विशेष, घतलानेवाली

गणित विद्या विशेष।—ज ( पु० ) अपनी स्त्री से  
दूम्ने के द्वारा उपपादित पुत्र।—ज ( पु० ) आत्मा,

जीव शरीर का देवता।—देवता ( पु० ) लोगों के  
अधिष्ठाता देवता।—फज ( पु० ) खेत की लक्ष्मी

चौड़ाई—पाज ( पु० ) देवता विशेष, खेत का,  
रक्षक, किसान।—वित ( पु० ) कृषिशास्त्र वेत्ता।

—जाज्य ( पु० ) रूपक, कर्पक।—आधिप ( पु० )  
रान के अधिष्ठाता देवता, मेघ आदि, बारह

राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी, जमींदार।  
क्षेत्र तद् ( पु० ) त्याग, कँकना, मोकर, शर निन्दा,

क्षुरी, बिताना।  
क्षेपक तद् ( पु० ) क्षेपकर्ता, त्यागी, क्षेपकारक, ग्रन्थों में

मिला हुआ, उपकथाओं का भाग, ग्रन्थों का अति-  
रिक्त या अशुद्ध शंश, निन्दनीय, भाग।

क्षेपण तद् ( पु० ) प्रेरण, कँकना, गुजारना, अपवाद।

क्षेपणी ( श्री० ) नाव का डंडा और पक्षी।

क्षेम तद् ( श्री० ) कुशल मङ्गल, भलाई, धर्मशासन के  
द्वारा उपपन्न किया पुत्र, प्राप्त वस्तु की रक्षा।—क्षत

( पु० ) कल्याण कारक, मङ्गलकर्ता।—क्षर शुभकर,  
मङ्गलकर।—क्षर्ण ( पु० ) अर्जुन का पुत्र जन्मेजय

का सखा।—क्षुशल ( पु० ) आरोग्य मङ्गल।

क्षेमकरी ( श्री० ) देवी का नाम, कुशल करने वाली।

क्षेमेन्द्र तद् ( पु० ) ये कश्मीर निवासी एक प्रसिद्ध कवि  
हैं, कश्मीर के राजा अनन्तदेव के समय में ये कश्मीर

में वर्तमान थे। इनका समय ११ व्याहर्षी शताब्दी  
निश्चित हुआ है। कम से कम इनके जनमे २६—

३० ग्रन्थ इस समय प्रसिद्ध हैं। इनकी कविता शक्ति  
और लौकिक ज्ञान विलक्षण था। इनके ग्रन्थों में

एक का नाम “अवदान कथपता” है। उसमें वीह  
महात्माओं का हाल दिया गया है।  
क्षोणि तद् ( श्री० ) पृथ्वी, मेदिनी, अवनी, एक

की संपत्ति ।—य ( पु० ) चित्तिग । ( पु० ) मङ्गल ।  
 —य ( पु० ) राजा, नरपति ।—देव ( पु० )  
 आराधन, भूतुर ।  
 सोमो तत् ( स्त्री० ) पृथिवी, भूमि ।—पति ( पु० )  
 नरेश, राजा ।  
 सोद ( पु० ) पुष्प, चूर्ण, चूर्ण करने की क्रिया ।  
 सोम या सोमू तत् ( पु० ) मोक्ष, परवात्ताप, विचलता  
 रंज, होम, मोह, ममता ।  
 सोमित तत् ( वि० ) व्याकुल, चलायमान, रंजोदा ।  
 सोमि, सोमी तत् ( स्त्री० ) देखो सोमो ।

सौद्र ( पु० ) मधु, शहद, जल, पूत, चंचा का पेड़, प  
 वर्णसङ्कर जाति ।—य ( पु० ) मधु से उत्पन्न पदार्थ  
 सौम तत् ( पु० ) अण्डी, पट्टख, घर का अटारी  
 ऊपर का जोड़ा, अट्टा ।  
 सौर तत् ( पु० ) क्षुरकर्म, यात्र बनाना, मुण्डन ।  
 सौरक या सौरिक तत् ( पु० ) क्षुरा, नाई, नापित  
 दमा तत् ( स्त्री० ) धरणी, धरा, पृथिवी, एक  
 संपत्ति ।—तल ( पु० ) धरातल, भूतल, पृथिवी  
 तल ।—भुक् ( पु० ) भूमिभोक्ता, राजा ।—भू  
 ( पु० ) राधा, नृपति, पर्वत, पहाड़ ।

## ख

ख नागरी वर्णमाला में प्रथम कवर्ग का दूसरा अक्षर  
 जिसका उच्चारण कण्ठ से होता है ।  
 ख तत् ( पु० ) आकाश, गगनमण्डल, शून्य, बिन्दु,  
 गृहविद्, देवलोच, इन्द्रिय, सुख, मङ्ग ।  
 खई तत् ( स्त्री० ) मुखर्ष, मैल, जल, तकरार, लड़ाई ।  
 खखारना दे० ( क्रि० ) खसना, कफ निकालना,  
 दूसरे का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने को  
 शब्द विरोध करना ।  
 खखारना दे० ( क्रि० ) कुचन, कोड़ना, खोदना, छिप  
 कर कोई अज्ञात वस्तु तलाश करना ।  
 खग तत् ( पु० ) पक्षी, विडिया, आकाशगामी, वायु  
 ग्रह, खेचर, तारा, बादल, देवता, सूर्य, चन्द्रमा,  
 गन्धर्व ।—केतु ( पु० ) गरुड़ ध्वज, श्रीविष्णु ।—  
 नाय—नायक ( पु० ) सूर्य, चन्द्रमा, गरुड़ ।—नाई  
 ( पु० ) वैजय, गरुड़, पक्षिराज ।—पति ( पु० )  
 गरुड़, सूर्य, चन्द्रमा ।—माला ( स्त्री० ) पक्षि समूह ।  
 —हा ( पु० ) पक्षिघाती, गैड़ा, बाज, व्याघ्र ।

खगेन्द्र तत् ( पु० ) पक्षिराज, गरुड़ ।  
 खगेष्ट तत् ( पु० ) पक्षियों का स्वामी, गरुड़, चन्द्रमा ।  
 खगोल तत् ( पु० ) आकाश-मण्डल ।—विद्या तत् ( स्त्री० )  
 ग्रह आदि की गति का ज्ञान करानेवाली विद्या विशेष ।  
 खग तत् ( स्त्री० ) खड्ग, तलवार, खड़ा ।  
 खङ्गना दे० ( क्रि० ) कम होना, घटना, ( पु० ) न्यूनता,  
 अप्रपत्ता ।

खङ्गर दे० ( पु० ) कामा, लोहे का मैल, लोहचून ।  
 खङ्गार या खकार दे० ( पु० ) धूक, कफ ।  
 खङ्गालना या खगारना दे० ( क्रि० ) धोना, बर्तन साफ  
 करना, अर्वांसना ।  
 खङ्गैल ( पु० ) दैतका, बड़े बड़े दाँत वाला ।  
 खचना दे० ( क्रि० ) सम्मिलन करना, जोड़ना, सटाना  
 रेखा करना ।  
 खचर तत् ( पु० ) आकाशगामी, नमचर, पक्षि, नक्षत्र  
 वायु, सौर, राक्षस, कसीस, साल या रूख विशेष  
 खचरा तत् ( वि० ) दोगला, दुष्ट ।  
 खचर दे० ( पु० ) पक्ष विरोध, गहँभी और घोड़े के  
 संयोग से उत्पन्न पक्ष ।  
 खचा दे० ( पु० ) खचित, जड़ित, जड़ाऊ, जड़ा हुआ  
 खींचा हुआ । [खोचकर]  
 खचाई दे० ( स्त्री० ) बनवाई, निर्मित कराई, खींची  
 खचाखच दे० ( पु० ) उताउल ।  
 खचित तत् ( पु० ) जड़ित, जड़ाऊ, निर्मित, लिखित  
 खचिया ( स्त्री० ) दोकरी कौश्र ।  
 खची दे० ( स्त्री० ) बनी, निर्मित ।  
 खचीना दे० ( स्त्री० ) लकीर, रेखा ।  
 खजरा दे० ( पु० ) मिला हुआ, मिलावटी, भग्रा,  
 बण्डेरी, दूधर के बीच का उठा हुआ भाग ।  
 खजला ( पु० ) खाना ।  
 खजानची ( पु० ) कोपाध्यक्ष, रोकड़िया ।

खजाना (पु०) कोष, धनगार ।

खजुआ, खजुआ दे० ( पु० ) खाजा, मिठाई ।

“ दोनों मेलि धरे हैं खजुआ ”—सूरदास ।

शब्द विशेष, मटनास ।

खजुली (स्त्री०) खाज, खुजली, छोटा खाजा ।

खजूर तद्० (पु०) छुहारे का एक भेद । [विशेष ।

खजुरा दे० (पु०) गोजर, कनगोजर, विपैला कीट

खजूरिया दे० (पु०) खजूर । [आकाश की ज्योति ।

खज्योति तद्० (पु०) खज्योति, आकाश का प्रकाश,

खज्ज तद्० (पु०) कड़ड़ा, लूला, पंगु, विकलगति ।—

ता (स्त्री) चरण का अभाव, पंगुत्व, लूलापन ।

खज्जन तद्० (पु०) खज्जरीट, पक्षी विशेष, खड़ेया,

खड़लीच ।

खज्जर दे० (पु०) कटारी, अस्त्र विशेष, दाव ।

खज्जरी दे० (स्त्री०) घाघ विशेष, खज्जरी ।

खज्जरीट या खज्जरीर तद्० (पु०) खज्जन पक्षी )

खज्जा (स्त्री०) घृत विशेष जिसके सम चरणों में २८

लघु और अन्त में १ लघु होता है, तथा विपम

पदों में ३० लघु और अन्त में १ गुरु होता है ।

खट दे० (स्त्री०) खाट, कफ, अंधा कुर्मा, घुसा,

कुवहाड़ी, पद, छः, खटखट ध्वनि ।

खटक दे० (पु०) खटका, शङ्का, सम्देह, संशय ।

खटकना दे० (क्रि०) बमाना, झगड़ना, लड़ना, सम्देह

हो जाना, शब्द होना, चिन्ता होना ।

खटका तद्० (पु०) सम्देह, भय, चिन्ता, पेश, कील,

कमानी जिसके दाने से किबाड़ या पहला खुजे

मुँदे । [ध्वनि के द्वारा सूचना, चलना, ठुकराना ।

खटकाना दे० (क्रि०) आहट देना, शब्द करना,

खटकीरा (पु०) खटमल ।

खटखट (स्त्री०) झगड़ा, झगड़, यखेड़ा । [ध्वनि करना ।

खटखटाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, ठोकना, खट खट

खटखटपर दे० (पु०) छप्पर खट, खाट का एक भेद,

शय्या ।

खटना दे० (क्रि०) चलना, ठहरना, टिक रहना ।—

खटपट दे० झगड़ा, लड़ाई, विरोध ।

खटपटिया (वि०) झगड़ा, टंटारी, यखेड़िया ।

खटपाटी लेना दे० (स्त्री०) हठ दिखाने को खियों का

काम धन्धा खाना पीना आदि छोड़ना ।

खटधुना दे० (पु०) खाट धुनने वाला, खटधुनवा ।

खटमल दे० (पु०) खटकीरा, मक्कुण ।

खटमिट्टा (वि०) कुछ खटा और कुछ मीठा । [यखेड़ा ।

खटराग दे० (पु०) अन्तर्मेख, विरोध, बेजोड़, झगड़,

खटला दे० (पु०) परिवार, चाड़ा, खियों के कानों के

वे छेद जिसमें वे बालियाँ पहिनती हैं ।

खटवा तद्० (स्त्री०) खाट, खट्वा, पलंग, शय्या ।

खटाई दे० (स्त्री०) खटापन, झगड़ता, अमचूर, हमली ।

खटाका दे० (पु०) मयझूर ध्वनि, घड़ाका, चटाका ।

खटापटी दे० (स्त्री०) अन्तर्मेख, विरोध, घैर, झगड़ा,

झड़ई ।

खटाव दे० (पु०) निर्वाह, नाप बाँधने का खँटा ।

खटास दे० (स्त्री०) खटाई, खटापन, (पु०) चार पैर

का बिछी की जाति का जन्तु विशेष, गन्धबिलास ।

खटाहि दे० (क्रि०) स्थिर रहते हैं, ठहरे रहते हैं, पड़े

रहते हैं, खर्च होते हैं ।

खटिक, खट्रीक दे० (पु०) जाति विशेष, यखेड़िया ।

खटिका तद्० (स्त्री०) लड़कें के लिखने की खड़ी,

लेखखड़ी ।

खटिया दे० (स्त्री०) खाट, शय्या, चापपाई ।

खटोला दे० (पु०) पाजना, संका, छोटी खटिया ।

खट्टा दे० (पु०) अमल, अमृत, तुरसाई, झगड़ता ।

खट्टिक दे० (पु०) खट्रीक, यखेड़िया ।

खट्टु दे० (पु०) बनिहार, मजूर, चाकर ।

खट्वा तद्० (स्त्री०) खाट, पलंग, खटवा ।

खट्वाड़ा तद्० (पु०) सूर्यवंशी एक राजा, चापपाई का

पाया या पाटी, शिव का एक अस्त्र, प्रायश्चित्तारमक

भिन्ना भाँगने का एक पात्र, ताम्रिका सुद्धा

विशेष ।

खड़ दे० (स्त्री०) पयाल, नृण, खर । [स्थान ।

खड़क दे० (पु०) गोखाला, गोष्ठ, गौ के रहने का

खड़कना दे० (क्रि०) झनझनाना, घनाना, अभ्यक्त

ध्वनि ।

[करना ।

खड़खड़ाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, खड़ खड़ ध्वनि

खड़खड़िया दे० (स्त्री०) पालकी, डोली, पीनस ।

खड़वड़ (स्त्री०) खटपट ।

खड़वड़ाना (क्रि०) घबड़ाना, सितर सितर होना ।

खड़वीड़ा (वि०) ऊँचा नीचा ।

खड़वीहड़ (वि०) उमड़लामह ।  
 खड़मण्डल (पु०) गड़मड़ ।  
 खड़लोच तद् (पु०) रण्नीट, खञ्जन ।  
 खड़सान दे० (पु०) शान, पर्यार विशेष, अस्त्र तेज करने का पावर । [दण्डायमान ।  
 खड़ा दे० (गु०) उठा, सीधा, ऊपर को उठा हुआ, खड़ाऊँ दे० (पु०) पादुका ।  
 खड़ाका (पु०) खटका ।  
 खड़िया दे० (स्त्री०) दुधिया मिट्टी, सेलखड़ी, खुर्जी ।  
 खड़ी दे० (स्त्री०) रवेतयण्यं मृत्तिका, ढँडायमान ।  
 खड़ुवा दे० (पु०) घाला, बन्ध, कुड़ा ।  
 खड़े खड़े दे० (या०) गीम, लज्जाम, तुलन्त ।  
 खड़ैचड़ दे० (पु०) पचीविगेव, रण्नीट, खञ्जन ।  
 खड़ तद् (पु०) अस्ति, तलवार, गेंडा, अन्तुविशेष, घोर, तापिक मुद्रा विशेष ।  
 खड़ दे० (पु०) गड़ा, गड़डा । [या चिन्ह ।  
 खड़दा दे० (पु०) गड़ा, अधिक रगड़ से शपथ दाग खराड तत् (पु०) टुकड़ा, लाड़, अण्याय, भाग, हिस्सा, देश, वर्ष, नौ की संख्या, गणित विद्या में समीकरण की एक क्रिया, लाड़, काजा निमक, दिशा । (वि०) अशुरा, लघु, छोटा ।—कथा तत् (स्त्री०) कथा विशेष । इसमें चार प्रकार का चिरह वर्णित रहता है और रसों में वरुण रस की प्रधानता रहती है । इसमें मंत्री अथवा माह्यण नायक रत्ता जाता है और कथा पूरी होने के पक्षों ही इसका ग्रन्थ पूर्ण हो जाता है ।—  
 काव्य तत् (पु०) जिस काव्य में काव्य के लक्ष्य म पाये जाय, जैसे मेघदूत ।—खराड (पु०) टुकड़ा टुकड़ा, भाग का भाग ।  
 खराडन तद् (पु०) दूषण, लोड़ना, छिन्न भिन्न करना, अशुद्ध प्रमाणित करना, काट देना ।  
 खराडना तद् (स्त्री०) दूषण देना, खण्डन करना, काटना । [काटने के लिये ।  
 खराडनार्थ तद् (गु०) खण्डन करने के लिये, खराडपरशु तत् (पु०) शिव, महादेव ।  
 खराडप्रलय तत् (पु०) छोटा प्रलय, वह प्रलय जो महा का एक दिन पूरा होने पर हो, किसी देश या खण्ड का नाश, महाकलह ।

खराडर दे० (पु०) उजाड़, वीरान, गड़हा, गड़ा, कतवार खाना, खण्डहर । [करना, काटना ।  
 खराडरना दे० (कि०) टुकड़े टुकड़े करना, खण्डन खराडशः तत् (अ०) खण्ड खण्ड, टुकड़ा टुकड़ा ।  
 खराडसार दे० (पु०) शकर का कारखाना ।  
 खराडित तद् (गु०) क्षेदित, भिन्न, अपूर्ण काटा गया ।—करना, यात काटना, खण्डन करना ।  
 खराडिता तद् (स्त्री०) नायिका विशेष, पति की अन्धासक्ति के कारण दुःखिता, यथा दोहा—  
 "पति तन और नार के रति के चिन्ह निहार ।  
 दुःखित होय सो खराडिता वरनत मुकवि विचार" ॥

रमराज

खत (पु०) चिट्ठी, हजामत ।  
 खतम (वि०) समाप्त, पूर्ण, इति ।  
 खतरा (पु०) डर, भय, खौफ ।  
 खतरानी दे० (स्त्री०) खत्री जाति की स्त्री ।  
 खता (स्त्री०) अपराध, बुरा, दोष । [हिंसाय ।  
 खतान दे० (स्त्री०) जमाखुर्ची की खतानी, लेखा खतियाना दे० (पु०) दैनिक हिंसाय खिलना ।  
 खतियानी (स्त्री०) यह खता जिसमें व्यक्तिगत वृत्तक वृत्तक हिंसाय है ।  
 खत्ता दे० (पु०) अथ रखने का गड़ा, खत्ती ।  
 खत्तिज दे० (पु०) पोस्त ।  
 खत्ती दे० (पु०) अथ रखने का छोटा खत्ता ।  
 खत्री दे० (पु०) जाति विशेष, पञ्जाब की रहने वाली एक व्यापारी जाति ।  
 खद्वद्वाना । किसी वस्तु को ब्यालने के समय जो खद्वद्वाना शब्द होता है ।  
 खदान (स्त्री०) खान ।  
 खदिर तत् (पु०) खैर, कच्चा ।  
 खदेड़ दे० (पु०) दौड़, अहरे ।  
 खदेड़ना या खदेरना दे० (कि०) दौड़ना, भगाना रंगेदना ।  
 खद्योत तत् (पु०) लघु, पटवीजना ।  
 खन तद् (पु०) खण्ड, भाग, अणु, समय, तुलन्त यथा—  
 "बेरी घाय सुनत खन धाई" ।—जायसी  
 खनक तत् (पु०) खोदने वाला, खूना, चूहा, सेंध

खजाना (पु०) कोष, धनगार ।

खजुआ, खजुआ दे० ( पु० ) खाना, मिठाई ।

“ दोनों मेलि घरे हैं खजुआ ”—सूरदास ।

अत्र विशेष, सदास ।

खजुली (स्त्री०) खज, खुजली, छोटा खाना ।

खजूर तद्० (पु०) जुहारे का एक भेद । [विशेष ।

खजुरा दे० (पु०) गोजर, कनगोजर, विपैला कीट

खजुरिया दे० (पु०) खजूर । [आकाश की ज्योति ।

खज्योति तद्० (पु०) खज्योति, आकाश का प्रकाश,

खज्ज तद्० (पु०) खज्जड़ा, लूला, पंगु, विकलगति ।—

ता (स्त्री) चरण का अभाव, पंगुत्व, लूलापन ।

खज्जन तद्० (पु०) खज्जरीट, पक्षी विशेष, खड़ेचा,

खड़लीच ।

खज्जर दे० (पु०) कटारी, अस्त्र विशेष, दाव ।

खज्जरी दे० (स्त्री०) बाघ विशेष, खजड़ी ।

खज्जरीट या खज्जरीर तद्० (पु०) खज्जन पक्षी )

खज्जा (स्त्री०) वृक्ष विशेष जिसके सम चरणों में २८

लघु और अन्त में १ लघु होता है, तथा विषम

पदों में १० लघु और अन्त में १ गुरु होता है ।

खट दे० (स्त्री०) खाट, कफ, अंधा कुर्पा, घूसा,

कुहाड़ी, पट, छः, खटखट ध्वनि ।

खटक दे० (पु०) खटका, शङ्का, सन्देह, संशय ।

खटकना दे० (क्रि०) बजाना, झगड़ना, लड़ना, सन्देह

होना, शङ्क होना, चिन्ता होना ।

खटका तद्० (पु०) सन्देह, भय, चिन्ता, पेच, कील,

कमानी जिसके दवाने से किड़ा या परला खुले

मुंदे । [ध्वनि के द्वारा सूचना, चलना, डुकराना ।

खटकाना दे० (क्रि०) आहट देना, शब्द करना,

खटकीरा (पु०) खटमल ।

खटखट (स्त्री०) झगड़ा, झंझट, बखेड़ा । [ध्वनि करना ।

खटखटाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, ठोकना, खट खट

खटखटपर दे० (पु०) छप्पर खट, खाट का एक भेद,

शय्या ।

खटना दे० (क्रि०) चलना, उहरना, टिक रहना ।—

खटपट दे० झगड़ा, लड़ाई, विरोध ।

खटपटिया (वि०) झगड़ा, टंटारी, बखेड़िया ।

खटपाटी लेना दे० (स्त्री०) हठ दिखाने को खियों का

काम धन्या खाना पीना आदि छोड़ना ।

खटखुना दे० (पु०) खाट खुनने वाला, खटखुनवा ।

खटमल दे० (पु०) खटकीरा, मच्छुण ।

खटमिद्धा (वि०) कुछ खटा और कुछ मीठा । [बखेड़ा ।

खटराग दे० (पु०) अनमेज, विरोध, बेजोड़, झंझट,

खटला दे० (पु०) परिवार, बाड़ा, खियों के कानों के

वे छेद जिसमें वे बालियाँ पहिनती हैं ।

खटवा तद्० (स्त्री०) खाट, खट्वा, पलङ्ग, शय्या ।

खटाई दे० (स्त्री०) खटावन, झंझट, धमचूर, झमेली ।

खटाका दे० (पु०) अमझूर ध्वनि, धड़ाका, चटाका ।

खटापटी दे० (स्त्री०) अनचन, विरोध, चैर, झगड़ा,

जड़ाई ।

खटाव दे० (पु०) निर्बाह, नाथ बांधने का लूँटा ।

खटास दे० (स्त्री०) खटाई, खटापन, (पु०) चार पैर

का बिल्ली की जाति का जन्तु विशेष, गन्धबिल्लाव ।

खटाहि दे० (क्रि०) स्थिर रहते हैं, ठहरे रहते हैं, पड़े

रहते हैं, खर्च होते हैं ।

खटिक, खटिक दे० (पु०) जाति विशेष, बहेलिया ।

खटिका तद्० (स्त्री०) लड़कों के लिखने की खड़ी,

सेलखड़ी ।

खटिया दे० (स्त्री०) खाट, शय्या, चापाई ।

खटोला दे० (पु०) पालना, मंसा, झोटी खटिया ।

खट्टा दे० (पु०) झंझट, अश्वत, तुरसाई, झंझट ।

खट्टिक दे० (पु०) खटिक, बहेलिया ।

खट्टु दे० (पु०) रनिहार, मजूर, चाकर ।

खट्वा तद्० (स्त्री०) खाट, पलंग, खटवा ।

खट्वाङ्ग तद्० (पु०) सूर्यवंशी एक राजा, चापाई का

पाया या पाटी, शिव का एक अस्त्र, प्रायश्चित्तारमक

भिन्ना मार्गने का एक पात्र, ताम्रिका सुद्रा

विशेष ।

खड़ दे० (स्त्री०) पयाल, मृण, खर । [स्थान ।

खड़क दे० (पु०) गोशाला, गोष्ट, गौ के रहने का

खड़कना दे० (क्रि०) झनझनाना, बजाना, अश्वक

ध्वनि ।

खड़खड़ाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, खड़ खड़ ध्वनि

खड़खड़िया दे० (स्त्री०) पालकी, डोली, पीनस ।

खड़बड़ (स्त्री०) खटपट ।

खड़बड़ाना (क्रि०) घबड़ाना, तितर बितर होना ।

खड़वीड़ा (वि०) ऊँचा नीचा ।

खड़कीहड़ (वि०) बमइलाभइ ।

खड़मगहल (पु०) गड़बड़ ।

खड़लोच तद् (पु०) खण्डीट, खण्डन ।

खड़सान दे० (पु०) शान, पत्थर विशेष, अत्यंत तेज करने का परपर । [दण्डायमान ।

खड़ा दे० (गु०) उठा, सीधा, ऊपर को उठा हुआ,

खड़ाऊँ दे० (पु०) पादुका ।

खड़ाका (पु०) खटका ।

खड़िया दे० (स्त्री०) दुधिया मिट्टी, सेलखड़ी, चुर्नी ।

खड़ी दे० (स्त्री०) रवेतवर्ण मृत्तिका, दंडायमान ।

खड़ुवा दे० (पु०) घाला, बल्य, कूड़ा ।

खड़े खड़े दे० (या०) शोध, सज्जन, तुरन्त ।

खड़ेचड़ दे० (पु०) पक्षिविगेय, खण्डीट, खण्डन ।

खड़ू तद् (पु०) घसि, सज्जन, गेंडा, जन्तुविशेष, घोर, तांत्रिक मुद्रा विशेष ।

खड़ू दे० (पु०) गड़ा, गड़हा । [या चिन्ह ।

खड़ूदा दे० (पु०) गड़ा, अधिक रगड़ से डगल दाग

खराड तद् (पु०) टुकड़ा, खड़ा, अध्याय, भाग, हिस्सा, देश, वर, नौ की सख्या, गणित विद्या में समीकरण की एक क्रिया, खड़ा, काटा निमक, दिया । (वि०) अशुभ, लघु, छोटा ।—कथा तद् (स्त्री०) कथा विशेष । हममें चार प्रकार का विरह वर्णित रहता है और रसों में बरुण रस की प्रधानता रहती है । इसमें मंत्री अथवा माह्वण नायक रखा जाता है और कथा पूरी होने के पक्षों ही इसका ग्रन्थ पूर्ण हो जाता है ।—

काव्य तद् (पु०) जिस काव्य में काव्य के मध लक्षण न पाये जाय, जैसे मेघदूत ।—खराड (पु०) टुकड़ा टुकड़ा, भाग का भाग ।

खराडन तद् (पु०) दूषण, तोड़ना, विग्रह भिन्न करना, अशुद्ध प्रमाणित करना, काट देना ।

खराडना तद् (स्त्री०) दूषण देना, खण्डन करना, काटना । [काटने के लिये ।

खराडनार्थ तद् (गु०) खण्डन करने के लिये,

खराडपरशु तद् (पु०) शिख, महादेव ।

खराडप्रलय तद् (पु०) छोटा प्रलय, वह प्रलय जो प्रह्ला का एक दिन पूरा होने पर हो, किसी देश या खण्ड का नाश, महाकलह ।

खराडर दे० (पु०) बजाड़, घीरान, गड़हा, गड़ा, कतवार खाना, खण्डहर । [करना, काटना ।

खराडरना दे० (क्रि०) टुकड़े टुकड़े करना, खण्डन

खराडगः तद् (अ०) खण्ड खण्ड, टुकड़ा टुकड़ा ।

खराडसार दे० (पु०) शकर का कारखाना ।

खराडित तद् (गु०) जैदित, भिन्न, अपूर्ण काटा गया ।—करना, यात काटना, खण्डन करना ।

खराडिता तद् (स्त्री०) नायिका विशेष, पति की अन्यासक्ति के कारण दुःखिता, यथा दोहा—

"पति सन और नार के रति के चिन्ह निहार ।  
दुःखित होय सो खराडिता वरनत सुकवि विचार ।"

रसरज

खत (पु०) चिट्ठी, हजामत ।

खतम (वि०) समाप्त, पूर्ण, इति ।

खतरा (पु०) डर, भय, खौफ ।

खतरानी दे० (स्त्री०) खत्री जाति की स्त्री ।

खता (स्त्री०) अपराध, कसूर, दोष । [हिसाब ।

खतान दे० (स्त्री०) जमाखर्च की खतानी, लेखा

खतियाना दे० (पु०) दैनिक हिसाब लिखना ।

खतियानी (स्त्री०) वह खाता जिसमें व्यक्तिगत धन्यक धन्यक हिसाब हो ।

खत्ता दे० (पु०) अन्न रखने का गड़ा, खत्ती ।

खत्तिज दे० (पु०) पोख ।

खत्ती दे० (पु०) अन्न रखने का छोटा खत्ता ।

खत्री दे० (पु०) जाति विशेष, पञ्जाब की रक्षक वाली एक व्यापारी जाति ।

खदखदाना । किसी वस्तु को उधालने के समय जो खदखदाना शब्द होता है ।

खदान (स्त्री०) खान ।

खदिर तद् (पु०) खैर, कथा ।

खदेड़ दे० (पु०) दौड़, अहोर ।

खदेड़ना या खदेरना दे० (क्रि०) दौड़ना, भगाना रंगेदना ।

खद्योत तद् (पु०) जुगुन, परयीजना ।

खन तद् (पु०) खण्ड, भाग, धण, समय, मुग्त यथा—

"जेरी घाय सुनत खन घाई" ।—जायमी

खनक तद् (पु०) छोड़ने वाला, भूँसा, चूहा, सँघ

जगाने वाला, भूतत्वविद्या-वेत्ता, सोने आदि की खानि । [खनि, खनखनाना ।  
 खनकना दे० ( कि० ) खनखन शब्द करना, ठनठन खनकाना ( कि० ) खनखन शब्द करना ।  
 खनखनाना ( कि० ) खनकना । [खोदना, गोड़ना ।  
 खनन तत्० ( पु० ) विदारण, खानकरण, गढ़ा खनना तद्० ( कि० ) खोदना, कोड़ना, खनन करना, गोड़ना ।  
 खनहन ( वि० ) हलका, पनला, दुयरा, सुन्दर ।  
 खना तत्० ( स्त्री० ) प्रसिद्ध ज्योतिःशास्त्र-विदुषी स्त्री । यह विक्रमादित्य के नवरत्न सभा के एक रत्न यराहमिहिर की स्त्री थी । यह मिहिर वररुचि के पुत्र नहीं थे किन्तु इनके पिता का नाम यराह था । यराह भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे । खना ने लङ्का में राक्षसों से ज्योतिर्विद्या पढ़ी थी । इस विद्या में वह इतनी चढ़ी बढ़ी थी कि समय समय पर उसके पति और श्वसुर को भी नीचा देखना पड़ता था ।  
 खनि तत्० ( स्त्री० ) धातुओं का उत्पत्ति स्थान, आकर, खानि । ( कि० ) खोद कर, खोद करके ।  
 खनिज ( वि० ) खान से निकला हुआ, खान का ।  
 खनित्र तत्० ( पु० ) अस्त्र विशेष, खोदने का अस्त्र, खन्ती ।  
 खन्ती दे० ( स्त्री० ) मट्टी खोदने का औज़ार, वह गड्ढा जिनमें से मिट्टी निकाली गयी हो ।  
 खपची ( स्त्री० ) कमाची, बाँस की तीली ।  
 खपटा दे० ( पु० ) ठीकरा, खपरा, खपरे के टुकड़े ।  
 खपड़ा ( पु० ) टिकरा, खपरैल । [घर ।  
 खपड़ैल या खपरैल ( स्त्री० ) खपरे से छाया हुआ खपत दे० ( स्त्री० ) विकाश, कटती, विक्री, समाई, गुंजायश ।  
 खपती दे० ( स्त्री० ) देखो खपत ।  
 खपना दे० ( कि० ) विकना, विक्री होना, घटना, कम होना, लगना, निम्नना, चल जाना, नष्ट होना ।  
 यह खेप यदन की है खपनी—नज़ीर  
 खपरा दे० ( पु० ) गृहाच्छादन की सामग्री, खपरा ।  
 खपरिया ( स्त्री० ) एक उप धातु, रसक, दुर्विका, कीट विशेष । [छोटा खपरा ।  
 खपरी दे० ( स्त्री० ) घड़ा आदि का फूटा भाग,

खपरैल दे० ( पु० ) खपरा से बना हुआ, खपरा निर्मित, खपड़ा से छाया हुआ ।  
 खपाँच दे० ( स्त्री० ) चैला, काठ या बाँस का टुकड़ा ।  
 खपाँची दे० ( स्त्री० ) खपाँच, चैती ।  
 खपाना दे० ( कि० ) बेचना, विक्रवाना, समाप्त करना, लगाना, काम में लाना ।  
 खपुआ दे० भगोड़ा, डरोपाक ।  
 खपुर तत्० ( पु० ) सुपारी का पेड़, स्वर्ग, आकाश, भद्रमेधा, वचनस्त्र । [अप्रसिद्ध, मिथ्या ।  
 खपुष्प तत्० ( पु० ) असम्भव काम, आकाश, पुष्प, खप्पर या खड्ड तद्० ( पु० ) साधुओं का, पात्र विशेष, खोपड़ी, कपाल, मुर्दे की खोपड़ी का पात्र ।  
 खफा ( वि० ) रुष्ट, अप्रसन्न, क्रुद्ध ।  
 खफीफ ( वि० ) तुच्छ, हलका, थोड़ा । [घाल ।  
 खवर, खवर दे० ( स्त्री० ) संवाद, समाचार, हाल खवरगीरी ( स्त्री० ) सम्हाल, देखभाल ।  
 खवरदार ( पु० ) सजग, सावधान ।  
 खवरदारी ( स्त्री० ) सावधानी ।  
 खवसा दे० ( पु० ) काँदा, चहला, पङ्क ।  
 खव्सा दे० ( पु० ) बाँयाहरथा, बाँया, डेढ़ हत्था ।  
 खव्त ( पु० ) पागलपन, उन्मत्तता, सनक ।  
 खव्ती ( वि० ) सनकी, पागल ।  
 खभ तत्० ( पु० ) ताल, भुजा, खम्भ —ठोंकना ताल ठोकना, पहलवानों की एक प्रकार की मुद्रा ।  
 खभस दे० ( पु० ) निर्वात, वायुरहित, मीन, ऊँस, ऊँस, अमस ।  
 खभार दे० ( पु० ) चोभ, मोह, हलचल, खड़बड़ । [हठ ।  
 खभारू दे० ( पु० ) पेट की जलन, घबराहट, हड़बड़ा-  
 खमीलन दे० ( पु० ) थकावट, हान्ति, अवसाद, श्रान्ति ।  
 खम्बा तद्० ( पु० ) धम्मा, शुनि, स्तम्भ ।  
 खम्मा तद्० ( पु० ) स्तम्भ, खम्बा, र्थाभा ।  
 खम्माव ( स्त्री० ) रागिनी विशेष जो रात में दूसरे पहर गायी जाती है ।  
 खयानत ( स्त्री० ) बेईमानी, धरोहर हड़प जाना ।  
 खयाल ( पु० ) ध्यान, याद, स्मरण ।  
 खर तत्० ( वि० ) तीक्ष्ण, तेज़, कड़ा, ( पु० ) गुण, धांस, गहँम, खरचर, बग़जा, कौवा, संवत्सरों में

पचीसवाँ, कंक, उत्तम, एक राक्षस का नाम, यह रामायण की प्रसिद्ध सुपनखा का भाई था। सुमाली राक्षस की कन्या विसध्रवाभुनि से व्याही गयी, उसीसे खर उत्पन्न हुआ, चौदह हजार राक्षसों को लेकर यह राक्षस की आज्ञा से जनस्थान की रक्षा करता था। सुपनखा के नाक कान कटने के बाद यह अपनी सेना के साथ रामचन्द्रजी से लड़ने गया। वहाँ अपनी सेना और दूषण आदि वीर सेनापतियों के साथ मारा गया।]

खरक दे० ( पु० ) गोराला, खड़क।

खरकना दे० ( क्रि० ) खसकना, गिरना, स्थलित होना, धसकाना, भगाना।

खरका ( पु० ) दत्ति करोदने का तिनका।

खरखर या खरखरा दे० ( गु० ) खरहरा, दरदरा, शीघ्र, द्रुत।

खरखरा ( पु० ) खटका, भलेड़ा, टंटा।

खरगोश ( पु० ) खरहा।

खरब या खरबा ( पु० ) व्यय, खपत।

खरचना ( क्रि० ) व्यय करना।

खरकुरा दे० ( गु० ) खड़बड़, खड़पड़, दरदरा।

खरजा दे० ( पु० ) पटाव, पट्टा बनाया हुआ, पक्की सड़क, बहुत पकने से जखती हुई ईंट।

खरतल दे० ( वि० ) खरा, स्पष्टवादी, साफ़ दिलवाला।

खरदूषणा तत्० ( पु० ) राक्षस के खर और दूषण नाम के दो भाई जो दण्डकारण्य की चौकी पर नियत थे, धृतरा।

खरपत्र तत्० ( पु० ) सुगन्धित पौधा, भयवा।

खरपा दे० ( पु० ) खराऊँ, खड़ाऊँ, उर्मा, छिर्मा के पहनने का जूता, चौयगला।

खरव ( पु० ) संख्या विशेष।

खरवर दे० ( छि० ) खड़बड़ ध्वनि, खड़बड़।

खरवा ( पु० ) जूती, पैर के तलुवा में साल के फट जाने से जो दरारें हो जाती हैं। [गोल फल।

खरबूझा दे० ( पु० ) ककड़ी की जाति का एक

खरभर दे० ( छि० ) क्षोभ, रोष, अयत्ताव, झलझली, उथल पुथल, शोर, हलचल।

खरमञ्जरी तत्० ( स्त्री० ) ऊंग, छपामार्ग।

खरमिट्टाव ( पु० ) जलपान, खुजलाहट दूर करना।

खरखटिका तत्० ( स्त्री० ) गिरहरी, औपधि विशेष।

खरल दे० ( पु० ) औपध कूटने का पत्थर का पात्र, खल।

खरहरा दे० ( पु० ) घोड़ा आदि को साफ़ करने का ऊँचा, अरहर के डंडलों का झाड़ू।

खरहरी ( स्त्री० ) मेवा विशेष।

खरहा दे० ( पु० ) शमाक, खरगोश।

खरहारना दे० ( क्रि० ) बुरावा, झाड़ना, घटोतना।

खरही दे० ( पु० ) टाल, डेर, राशि, खरगोश की मांस।

खरा दे० ( पु० ) चोखा, श्रेष्ठ, उत्तम, चढ़िया, तेज़, तीखा, पैना, गरम।

खराई दे० ( स्त्री० ) सखता, सचाई, उत्तमता।

खराऊ ( स्त्री० ) पादुका।

खराका दे० ( पु० ) धड़ाका, खड़बड़ाहट।

खराद ( पु० ) लकड़ी चिकनाने का यंत्र विशेष।

खरापन ( पु० ) सखता, निर्भयता।

खराव ( वि० ) बुरा, नीच, हीन, तुच्छ। [श्रीरामचन्द्र।

खरारि या खरारी तत्० ( पु० ) खरदंश के शत्रु,

खरहिन्द दे० ( स्त्री० ) जली घास, दुर्गन्ध।

खरिक दे० ( पु० ) गोराला, सड़क, ऊँच जो खरीफ़ की फ़सल के बाद बोई जाय।

खरिदाग ( पु० ) वह स्थान जहाँ खेत से काट कर अनाज एक किया जाता है। [गर्धा, गर्दी।

खरी दे० ( गु० ) उत्तम, अच्छी, चोखी, भली, ( स्त्री० )

खरीद दे० ( पु० ) क्रय, कीटना।

खरीदा दे० ( गु० ) क्रयक्रिया, मूल्य देकर लिया।

खरीददार दे० ( गु० ) क्रेता, क्रयकर्ता।

खरीफ़ ( स्त्री० ) आषाढ़ से अश्विन भर में काटी जाने वाली फसल।

खरे दे० ( गु० ) उत्तम, अच्छे, चोखे, खड़े।

खरा दे० ( गु० ) चोखा, खरा, उत्तम, तीखा।

खरांचना दे० ( क्रि० ) खुरचना, खसोटना, घटोतना।

खरोट दे० ( स्त्री० ) खरोच, यकौट, खसोट। [घाला।

खर्व ( पु० ) व्यय, खपत।—[खर्वा अधिक व्यय करने

खर्व तत्० ( पु० ) पड़ब, राग उचाप का स्थान विशेष।

खर्जूर तत्० ( पु० ) कशूर, बुझारा।

खर्जूरिका तत्० ( स्त्री० ) पिण्डी खर्जूर, पिण्ड कशूर।

खर्जूरी तत्० ( स्त्री० ) मूसली, औपध विशेष।

खर्पर तत्० ( पु० ) खप्पर, गोपट्टी, मिर, कनाल।



खगाने वाला, भूतत्वविद्या-वेत्ता, सोने आदि की खानि । [खनि, खनखनाना ।

खनकना दे० ( क्रि० ) खनखन शब्द करना, उगठन खनकाना ( क्रि० ) खनखन शब्द करना ।

खनखनाना ( क्रि० ) खनकना । [खोदना, गोड़ना ।

खनन तद् ( पु० ) विदारण, खानकरण, गढ़ा

खनना तद् ( क्रि० ) खोदना, कोड़ना, खनन करना, गोड़ना ।

खनहन ( वि० ) हलका, पतला, दुबला, सुन्दर ।

खना तद् ( स्त्री० ) प्रसिद्ध ज्योतिःशास्त्र-विदुषी स्त्री ।

यह विक्रमादित्य के नवरत्न सभा के एक रत्न यराहमिहिर की स्त्री थी । यह मिहिर वररुचि के पुत्र नहीं थे किन्तु इनके पिता का नाम यराह था । यराह भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे । खना ने लङ्का में राक्षसों से ज्योतिर्विद्या पढ़ी थी । इस विद्या में वह इतनी चढ़ी बढ़ी थी कि समय समय पर उसके पति और श्वसुर को भी नीचा देखना पड़ता था ।

खनि तद् ( स्त्री० ) धातुओं का उत्पत्ति स्थान, आकर, खानि । ( क्रि० ) खोद कर, खोद करके ।

खनिज ( वि० ) खान से निकला हुआ, खान का ।

खनित्र तद् ( पु० ) घट्ट विशेष, खोदने का अस्त्र, खन्ती ।

खन्ती दे० ( स्त्री० ) मट्टी खोदने का औज़ार, यह गड़वा ज़िपमें से मिट्टी निकाली गयी हो ।

खपची ( स्त्री० ) कमाची, बाँस की तीली ।

खपटा दे० ( पु० ) ठीकरा, खपरा, खपरे के टुकड़े ।

खपड़ा ( पु० ) टिकरा, खपरैल । [घर ।

खपड़ैल या खपरैल ( स्त्री० ) खपरे से छाया हुआ

खपत दे० ( स्त्री० ) बिराब, कटती, बिक्री, समाई, गुंजायश ।

खपती दे० ( स्त्री० ) देखो खपत ।

खपना दे० ( क्रि० ) बिकना, बिक्री होना, घटना, कम होना, लगना, निभना, चल जाना, नष्ट होना ।

यह खेर चदन की है खपनी—नज़ीर

खपरा दे० ( पु० ) गृहाच्छादन की सामग्री, खपरा ।

खपरिया ( स्त्री० ) एक रूप धातु, रसक, दुर्विका, कीट विशेष । [छोटा खपरा ।

खपरी दे० ( स्त्री० ) घड़ा आदि का फूटा भाग,

खपरैल दे० ( पु० ) खपरा से घना हुआ, खपरा निर्मित, खपड़ा से छाया हुआ ।

खपाँच दे० ( स्त्री० ) चैला, काठ या बाँस का टुकड़ा ।

खपाँची दे० ( स्त्री० ) खपाँच, चैली ।

खपाना दे० ( क्रि० ) वेचना, बिकवाना, समाप्त करना, लगाना, काम में लाना ।

खपुआ दे० भगोड़ा, डरोपाक ।

खपुर तद् ( पु० ) सुपारी का पेड़, स्वर्ग, आकाश, भद्रमोक्षा, बचनखा । [अप्रसिद्ध, मिथ्या ।

खपुष्प तद् ( पु० ) असम्भव काम, आकाश, पुष्प,

खप्पर या खघड़ तद् ( पु० ) साधुओं का, पात्र विशेष, खोपड़ी, कपाल, मुर्दे की खोपड़ी का पात्र ।

खफा ( वि० ) रुष्ट, अप्रसन्न, क्रुद्ध ।

खफीफ ( वि० ) तुच्छ, हल्का, थोड़ा । [चाख ।

खवर, खवर दे० ( स्त्री० ) संवाद, समाचार, हाल

खवरगीरी ( स्त्री० ) सम्झाल, देखभाल ।

खवरदार ( पु० ) सजग, सावधान ।

खवरदारी ( स्त्री० ) सावधानी ।

खवसा दे० ( पु० ) काँदा, चहला, पट्ट ।

खव्वा दे० ( पु० ) बाँयाहरथा, बाँया, डेढ़ हत्था ।

खन्त ( पु० ) पागलपन, उन्मत्तता, सनक ।

खन्ती ( वि० ) सनकी, पागल ।

खम्ब तद् ( पु० ) ताल, सुजा, खम्ब — ठोंकना

ताल ठोकना, पहलवानों की एक प्रकार की मुद्रा ।

खम्ब दे० ( पु० ) निर्वात, वायुरहित, मीन, जलस,

जम्ब, अमस ।

खमार दे० ( पु० ) बोभ, मोह, हलचल, खड़बड़ । [हठ ।

खमारू दे० ( पु० ) पेट की जलन, घबराहट, हड़बड़ा-

खमीलन दे० ( पु० ) थकावट, क्लान्ति, अवसाद,

आन्ति ।

खम्बा तद् ( पु० ) थम्बा, धुनि, स्तम्भ ।

खम्मा तद् ( पु० ) स्तम्भ, खम्बा, थम्मा ।

खम्मात्र ( स्त्री० ) रागिनी विशेष जो रात में दूसरे

पहर गायी जाती है ।

ख्यानत ( स्त्री० ) बेईमानी, धरोहर हड़प जाना ।

ख्याल ( पु० ) ध्यान, याद, स्मरण ।

खर तद् ( वि० ) तीक्ष्ण, तेज़, कड़ा, ( पु० ) गुण,

घाँस, गहँम, खच्चर, बगचा, कौवा, संवत्सरो में

पचीसवाँ, कंक, उत्तम, एक राघव का नाम, यह रामायण की प्रसिद्ध मूर्पनखा का भाई था। मुमाली राघव की कन्या विसश्रवामुनि से ब्याही गयी, उसीसे खर उपज हुआ, चौदह हजार राघवों को लेकर यह राघव की आज्ञा से जनस्थान की रक्षा करता था। मूर्पनखा के नाक कान बटने के बाद यह अपनी सेना के साथ रामचन्द्रजी से लड़ने गया। वहीं अपनी सेना और दूषण आदि वीर सेनापतियों के साथ मारा गया।]

खरक १० ( पु० ) मोशाला, खड़क।

खरकता दे० ( क्रि० ) खसकना, गिरना, स्थिति होना, धमकाना, भगाना।

खरका ( पु० ) दंत करोड़ने का तिनका।

खरखर या खरखरा दे० ( गु० ) खरहरा, दरदरा, शीघ्र, हुत।

खरखिया ( पु० ) खटका, खेड़ा, टंटा।

खरमोश ( पु० ) खरहा।

खरव या खरवा ( पु० ) व्यय, खपत।

खरचना ( क्रि० ) व्यय करना।

खरहरा दे० ( गु० ) खड़बड़, भड़बड़, दरदरा।

खरझा दे० ( पु० ) पटाव, पका बनाया हुआ, पकी सड़क, बहुत पकने से जलती हुई ईंट।

खरतल दे० ( वि० ) खरा, स्पष्टवारी, माफ़ दिलवाला।

खरदूषण तत्० ( पु० ) रावण के लख और दूषण नाम के दो भाई जो दण्डकारण्य की चौकी पर नियत थे, धनूरा।

खरपत्र तत्० ( पु० ) सुगन्धित पौधा, भदवा।

खरपा दे० ( पु० ) धराऊँ, सड़ाऊँ, उभाँ, छिपों के पहनने का जूता, चौदगला।

खरव ( पु० ) सेव्या विशेष।

खरघर दे० ( की० ) खड़बड़ ध्वनि, भड़बड़।

खरवा ( पु० ) जूनी, पैर के तलुवा में गाल के फट जाने से जो दरारें हो जाती हैं। [गोल फल।

खरबूजा दे० ( पु० ) ककड़ी की जाति का एक

खरभर दे० ( जी० ) घीम, घोम, अथसाद, ललचली,

उपल पुपल, शोर, हलचल।

खरमजरी तत्० ( स्त्री० ) जंग, भयामांग।

खरमिटाव ( पु० ) जलपान, सुजलाहट दूर करना।

खरयष्टिका तत्० ( स्त्री० ) गिरहरी, योगधि विशेष।

खरल दे० ( पु० ) चौपाय बटने का पथर का दाग, गल।

खरहरा दे० ( पु० ) घोड़ा आदि के माफ़ करने का उंचा, खरहर के डंठलों का माफ़।

खरहरी ( स्त्री० ) सेवा विशेष।

खरहा दे० ( पु० ) शरक, खरगोश।

खरहारना दे० ( क्रि० ) बुझाना, मारना, गटोरना।

खरडी दे० ( पु० ) डाल, टेर, राशि, खरगोश की मांस।

खरा दे० ( पु० ) चौपाय, श्रेष्ठ, उत्तम, शक्ति, तेज, तीखा, पैना, गरम।

खराई दे० ( स्त्री० ) सत्यता, सचाई, वचनमता।

खराऊ ( स्त्री० ) पावुछा।

खराका दे० ( पु० ) धड़ाका, गढ़गड़ाहट।

खराद ( पु० ) लकड़ी चिकनाने का घन विशेष।

खरापन ( पु० ) सत्यता, निर्मयता।

खराब ( वि० ) बुरा, नीच, हीन, गुच्छ। [धीरामचन्द्र।

खरारि या खरारी तत्० ( पु० ) गार्दिय के शत्रु,

खरहिन्द दे० ( स्त्री० ) जकी घास, दुर्गन्ध।

खरिक दे० ( पु० ) मोशाला, सड़क, ऊपर जो धरती की फुल के बाद बौद्ध पाय।

खरिहान ( पु० ) यह स्थान जहाँ रीत में फाट कर अनाम एक किया जाता है। [गरी, गार्दी।

खरी दे० ( गु० ) उत्तम, शच्छी, चोरी, भत्री, (श्री०)

खरीद दे० ( पु० ) क्रय, कीटना।

खरीदा दे० ( गु० ) क्रयक्रिया, मुख्य देकर लिया।

खरीददार दे० ( गु० ) क्रेता, क्रयकर्ता।

खरीफ ( स्त्री० ) चापाड़ ने लगहन भर में बाड़ी जाने वाली फसल।

खरे दे० ( गु० ) उत्तम, अच्छे, चोरे, भदे।

खरो दे० ( गु० ) चोरा, गरा, उत्तम, मीरा।

खरोन्तना दे० ( क्रि० ) सुलगना, लगेटना, बढोटना।

खरोट दे० ( स्त्री० ) खोच, खोट, गमेर। [बाटा।

खर्च ( पु० ) व्यय, खपन।—जो अधिक व्यय करने

खर्च तत्० ( पु० ) पड़न, खप खपाव ना स्थान विशेष।

खज्जरे तत्० ( पु० ) गन्ना, गुहारा।

खज्जुरिका तत्० ( स्त्री० ) सिन्धी गन्ना, सिन्धु गन्ना।

खज्जुरी तत्० ( स्त्री० ) मूसरी, चौख विन्दे।

खर्पर तत्० ( पु० ) मयार, गोरगी, मिय, कतर।

खर्व तत्० (पु०) कुंवर का धन विशेष, संख्या विशेष  
 १०००००००००० (गु०) क्षुद्र, वामन, छोटा,  
 हथ, नाटा, बैना । [पर्वत पर बसा हुआ गाँव ।  
 खर्वट (पु०) चार सौ गाँवों के बीच बसा हुआ गाँव,  
 खर्वजा दे० (पु०) देखो खर्वजा । [चिट्ठा, खसरा ।  
 खर्वा दे० (पु०) पाण्डुलिपि, नसबिदा, टट्टर, खरखरा,  
 खर्वाटा दे० (पु०) सेने में घुराँना, गाढ़निंद्रा, सीमता ।  
 खल तत्० (गु०) दुष्ट, नीच, अधम, भूमिस्थान, ढण्टी  
 से अन्न निकालने का स्थान, खलिहान, फूर, दुर्जन,  
 श्रीपक्षि कूटने का पथर का पात्र ।—कथा (स्त्री०)  
 धूर्तों की कथा, चापलूसी बात ।—ता (स्त्री०)  
 हुष्टा, नीचता, पूर्तता, फूता ।  
 खलई (कि०) खलता है ।  
 खलक (पु०) खट्ट, जगत, संसार ।  
 खलकत (स्त्री०) खट्ट, समूह, भीड़ ।  
 खलखल दे० (पु०) खलमल, खड़खड़, नदी के वेग में  
 जल की ध्वनि ।  
 खलझा १० (पु०) उबन, समीप वाग, मनोहरवन ।  
 खलड़ा दे० (पु०) चमड़ा, छाल, गाल । [अधीमता ।  
 खलवल दे० (पु०) डलवल, कुतूहल, उत्सुकता,  
 खलवलाना दे० (कि०) उफुलाना, ऊपर उठना,  
 उबलना ।  
 खलबली दे० (स्त्री) भीत, भय से घबड़ाहट ।  
 खलल (पु०) बाधा, विघेय, रुकावट । [पतुरिया ।  
 खला तत्० (स्त्री०) दुष्टा स्त्री, अधम, बेश्या, पातुर,  
 खलाना दे० (कि०) हावी करना ।  
 खलार दे० (स्त्री०) नीची भूमि, नीचान ।  
 खलारि तत्० (पु०) नारायण, विष्णु, सज्जन ।  
 खलास (वि०) मुक्त, समाप्त, खतम । [पार्य ।  
 खलासी दे० (स्त्री०) मुक्ति, खुदकारा, छुट्टी, कुली,  
 खलास दे० (पु०) निचान, खलार । [स्थान ।  
 खलियान दे० (पु०) खता, खल, अन्न साफ करने का  
 खलियाना दे० (कि०) छीलना, उधेड़ना, रिक करना  
 खाली करना ।  
 खलिहान दे० (पु०) देखो खलियान ।  
 खली तत्० (स्त्री०) खल, नीच अधम, सरसों, तिल  
 आदि का तैल रहित चूर्ण ।—कार (पु०) अपकार  
 अनिष्ट ।

खलीन तत्० (पु०) कविका, लगाम ।  
 खलीता दे० (स्त्री०) थैली, पत्र, बिट्टी पत्री ।  
 खलीफा (पु०) अध्यक्ष, वृद्ध दर्जा ।  
 खलु तत्० (अ०) निरवय, निःसन्देह, संशय रहित ।  
 खलेल दे० (पु०) फुलेल, गढ़ा ।  
 खलै दे० (कि०) अवरना, भारी मालूम होना, (पु०)  
 दुष्टों को, खल्लों को, यह शब्द रामायण में प्रयुक्त हुआ है  
 खलिलय तत्० (गु०) चन्दला, गज्जा, खलशट ।  
 खलवाट तत्० (पु०) जिसके सिर पर शाल नहीं,  
 गधरा, चन्दला ।  
 खवा दे० (पु०) कथा, स्कन्ध, काँध ।  
 खवाना (कि०) खिलाना, भोजन कराना ।  
 खवास (पु०) राजाओं का वह नौकर जो उनके पान  
 खिलाता है, हुक्का पित्राता है और पोशाक पहि-  
 नाता है ।  
 खवैया (पु०) खाने वाला ।  
 खश या खस तत्० (पु०) एक प्रकार का सुगन्धित  
 तृण, उशीर, देश विशेष, यह देश पर्वत प्रधान है  
 और भारतवर्ष के उत्तर की ओर है । यहाँ के  
 अधिवासी को भी खप कहते हैं ।  
 खसकन्त दे० (स्त्री०) चम्पस होना, गुम होना, भाग  
 जाना, भागने को उद्यत ।  
 खसकना दे० (कि०) नीचे आना, गिरना, हटना, एक  
 स्थान से हट जाना, चाहे नीचे या ऊपर सरकना ।  
 खसकाना दे० (कि०) सरकाना, हटाना, बढ़ाना ।  
 खसखस दे० (पु०) पोस्ता का दाना, उशीर, खस ।  
 खसखसा दे० (पु०) गल्ला सूखना, गले की सुरसुराहट ।  
 खसटा दे० (पु०) बही, घाटा, खंडी, खुजली ।  
 खसना दे० (कि०) घसना, गिर पड़ना, नीचे आना ।  
 खसम (पु०) पति, भर्ता, स्वामी ।  
 खसरा (पु०) बरी, खरी, छोटी चेचक, खुजली ।  
 खसाना दे० (कि०) गिरना, परचापद करना ।  
 खसिया (पु०) बधिया, नपुंसक बकरा ।  
 खसी दे० (स्त्री०) गिरी, सरकी, नीचे आयी रामायण  
 में इस शब्द का प्रयोग किया गया है । यथा—  
 “खसी माक्ष मूरति सुसकानी”  
 खसोटना दे० (कि०) निकलना, अन्धाय से किसी का  
 धन लेना, नेचना ।

खस्फटिक दे० ( पु० ) ऊँच, सूर्य मण्डि, आकाश की मण्डि ।

खस्सी ( पु० ) थकरा ।

खांग दे० ( पु० ) बड़ा दाँत, मोकीली वस्तु ।

खांगड़ ( पु० ) शस्त्रधारी, कटीला ।

खांगना ( क्रि० ) घटना, लंग आना ।

खाँच दे० ( पु० ) कीचड़, काँदा ।

खाँचना दे० ( क्रि० ) लिखना, चिन्ह बनाना ।

खाँचा दे० ( पु० ) टोकरा ।

खाँड़ दे० ( पु० ) शकर, चीनी ।

खाँड़ना दे० ( क्रि० ) छाटना, कूटना, आघात के द्वारा भजादि के साफ करना, निस्तुपीकरण ।

खाँडा दे० ( पु० ) लट्ठ विशेष, अस्त्रविशेष, सेगा ।—

खाँडे की धार पर चलना ( वा० ) दुष्कर न्याय, अतिशय कठिन, उचित मार्ग पर चलना ।

खाँसना तद् ( क्रि० ) खोखना, खलारना, खों खों करना, ठों ठों करना ।

खाँसी तद् ( स्त्री० ) रोग विशेष, कासरोग, खोखी ।

खाइ दे० ( क्रि० ) खाकर, भोजन कर ।

खाइय दे० ( क्रि० ) खाइये, भोजन कीजिये ।

खाई दे० ( क्रि० ) खाली, भोजन कर लिया । ( स्त्री० ) किले के या नगर के चारों ओर की नहर, गर्त, गड़हा, खात, नाला । [खा जाने वाला ।

खाऊ दे० ( पु० ) पेहू, पेठार्थी, भोजन खोलुप, भाजसी, खाक ( स्त्री० ) राख, धूल ।

खाका ( पु० ) ढाँचा । [एक फिर्का ।

खाकी ( वि० ) मूरा ( पु० ) मुसलमानी फकीरों का खाग ( पु० ) दे० नँडे की सींग ।

खागा दे० ( पु० ) खाना, तलवार, खाड़ा ।

खाज दे० ( स्त्री० ) खुजलाइट, खुजली, कण्डू ।

खाजा दे० ( पु० ) एक प्रकार की मिठाई ।

खाजा दे० ( पु० ) काठ का बड़ा पात्र ।

खाट तद् ( स्त्री० ) खट्वा, पखल, चारपाई ।

खाड़ ( पु० ) गड़ा, गर्त ।

खागडव तद् ( पु० ) वन विशेष, हन्द्र का वन, जिसे अर्जुन ने जलाया था और उसे जलाकर अग्नि का अजीर्ण रोग दूर किया ।—प्रस्थ ( पु० ) नगर विशेष ।

खात तद् ( पु० ) पोखरा, गढ़ा, गड़हा, खाद, गोबर ।

खातक तद् ( पु० ) ऋणी, धरता, अधमर्ण, कुर्जबन्द ।

खातमा ( पु० ) मृत्यु, अन्त । [लेन देन ।

खाता दे० ( पु० ) एक साथ बँधे हुए पत्र, हिसाब, बही,

खातिर दे० ( पु० ) आदर, कारण, लिये ।—जमा

( स्त्री० ) विन्यास, सन्तोष ।—दारी ( स्त्री० )

आदर, आवभाव ।—ने ( स्त्री० ) आदर सम्मान ।

खातेऊ दे० ( क्रि० ) खा जाता, खाता, खा लेता, मैं

खा लेता, खाते हुए भी, रामायण में इस शब्द का

प्रयोग किया गया है ।

खाती दे० ( स्त्री० ) खंती, भू खेदनेवाली एक जाति ।

( पु० ) जाति विशेष, बड़ई । [आदि, पाँस ।

खाद दे० ( पु० ) गोबर, कतवार, सड़ी वस्तु, मल

खादक तद् ( पु० ) खाने वाला, खवैया, ऋणी, कुर्ज,

अधमर्ण ।

खादन तद् ( पु० ) भोजन, भक्षण ।

खादि दे० ( पु० ) वस्त्र विशेष, हाथ के बने सूत का

वस्त्र विशेष, खहर, खाद्य, कवच, दवायाना ।

खादिम ( पु० ) सेवक, दास ।

खादुक ( पु० ) हिंसक, हिंसालु ।

खाद्य, खादु तद् ( पु० ) भोजनीय वस्तु, भक्षणीय,

खाने योग्य वस्तु, खाने के उपयुक्त पदार्थ ।

खान तद् ( पु० ) भोजन का दह, पया—उनका खान

पान तो देखो ।—पान तद् ( पु० ) खाना पीना,

खाने पीने का आचार, खाने पीने का सम्बन्ध,

पया—हमारा उनका खान पान बंद है ।

खानखर दे० ( पु० ) गर्त, सुरङ्ग, खोह ।

खानखाना ( पु० ) मुगल सरदारों की एक उपाधि,

सरदारों का सरदार ।

खानगी ( वि० ) धरेलू, निजका ( स्त्री० ) रंड़ी, पत्थरिया ।

खानदान ( पु० ) कुल, घर ।—नी ( वि० ) कुलीन,

सद्कुलोद्भव, परम्परागत, पुरतनी । [नाम ।

खानदेश ( पु० ) बम्बई हाते के अन्तर्गत एक प्रदेश का

खानसामा ( पु० ) अंगरेजों का थक्की या

भंडारी ।

खाना दे० ( पु० ) भोजन, भक्षण, आहार ।—तलाशी

( स्त्री० ) घर में किसी चोरी गयी हुई वस्तु के

लिये पुलिस द्वारा खोज ।

खर्व तत् ( पु० ) कुयेर का धन विशेष, संपत्ति विशेष ।  
 १०००००००००० ( गु० ) सुद्र, वामन; छोटा,  
 हल्का, नाटा, घाना । [ पर्वत पर बसा हुआ गाँव ।  
 खर्वट ( पु० ) चार सौ गधियों के बीच बसा हुआ गाँव,  
 खर्वूजा दे० ( पु० ) देखो खर्वूजा । [ चिट्ठा, खसरा ।  
 खर्वी दे० ( पु० ) पाण्डुलिपि, नसबिदा, टट्टर, खखरा,  
 खर्वीटा दे० ( पु० ) सोने में धुराँगा, गाढ़निद्रा, शीघ्रता ।  
 खल तत् ( गु० ) दुष्ट, नीच, अधम, भूमिस्थान, डण्डी  
 से ग्रस्त निकालने का स्थान, खलिहान, क्रूर, दुर्जन,  
 औपधि धूने का पत्थर का पात्र ।—कथा ( स्त्री० )  
 धूर्तों की कथा, चापलूसी बात ।—ता ( स्त्री० )  
 दुष्टता, नीचता, धूर्तता, क्रूरता ।  
 खलई ( कि० ) खलता है ।  
 खलक ( पु० ) सृष्टि, जगत, समार ।  
 खलकत ( श्री० ) सृष्टि, समूह, भीड़ ।  
 खलखलदे० ( पु० ) खलमळ, खड़खड़, नदी के बेग में  
 जल की ध्वनि ।  
 खलझा दे० ( पु० ) उर्वर, रमणीय भाग, मनोहरवन ।  
 खलड़ा दे० ( पु० ) चमड़ा, छाज, छाज । [ अधीरता ।  
 खलवल दे० ( पु० ) हलचल, बुलंद, उल्लुखता,  
 खलवलाना दे० ( कि० ) उफ़नना, ऊपर उठना,  
 बलना ।  
 खलवली दे० ( स्त्री ) भीत, भय से घबड़ाहट ।  
 खलल ( पु० ) बाधा, विघ्न, रुकावट । [ पतुरिया ।  
 खला तत् ( श्री० ) दुष्टा स्त्री, अधम, वेश्या, पातुर,  
 खलाना दे० ( कि० ) ढाली करना ।  
 खलार दे० ( स्त्री० ) नीची भूमि, नीचान ।  
 खलारि तत् ( पु० ) नारायण, विष्णु, सज्जन ।  
 खलास ( वि० ) मुक्त, समाप्त, खतम । [ पिटार ।  
 खलासी दे० ( स्त्री० ) मुक्ति, छुटकारा, छुटी, कुली,  
 खलार दे० ( पु० ) निचान, खलार । [ स्थान ।  
 खलियान दे० ( पु० ) खता, खल, गल साफ़ करने का  
 खलियाना दे० ( कि० ) छीलना, उधेड़ना, रिक़ करना  
 खाली करना ।  
 खलिहान दे० ( पु० ) देखो खलियान ।  
 खली तत् ( स्त्री० ) खल, नीच प्रथम, सरसों, तिख  
 आदि का तैल रहित चूर्ण ।—कार ( पु० ) अपकार  
 शक्ति ।

खलीन तत् ( पु० ) कविका, लगाम ।  
 खलीता दे० ( स्त्री० ) घँटी, पत्र, चिट्ठी पत्री ।  
 खलीफा ( पु० ) अध्यक्ष, वृद्ध दर्जी ।  
 खलु तत् ( श्री० ) निरक्षय, निःसन्देह, संशय रहित  
 खलेल दे० ( पु० ) फुलेल, गढ़ा ।  
 खलै दे० ( कि० ) अखरना, भारी मालूम होना, ( पु० )  
 दुष्टों को, खलै को, यह शब्द रामायण में प्रयुक्त हुआ है ।  
 खलित तत् ( गु० ) खन्दला, गम्जा, खदशट ।  
 खलनाट तत् ( पु० ) जिसके सिर पर बाँध नहीं  
 गज्जा, खन्दला ।  
 खना दे० ( पु० ) कथा, स्कन्ध, कथ ।  
 खवाना ( कि० ) खिलाना, भोजन कराना ।  
 खवास ( पु० ) राजाओं का वह नौकर जो उनके पास  
 खिलता है, हुक्का पिजाता है और पोशाक पहि  
 नाता है ।  
 खवैया ( पु० ) खाने वाला ।  
 खश या खस तत् ( पु० ) एक प्रकार का सुगन्धित  
 तृण, उशीर, देश विशेष, यह देश पर्वत प्रधान है  
 और भारतवर्ष के उत्तर की ओर है । यहाँ के  
 अधिवासी को भी खम कहते हैं ।  
 खसकन्त दे० ( स्त्री० ) चम्पत होना, गुम होना, भाग  
 जाना, भागने को उद्यत ।  
 खसकना दे० ( कि० ) नीचे आना, गिरना, हटना, एक  
 स्थान से हट जाना, चाहे नीचे या ऊपर सरकना ।  
 खसकाना दे० ( कि० ) सरकाना, हटाना, बढ़ाना, ।  
 खसखस दे० ( पु० ) पोता का दाया, उशीर, खस ।  
 खसखसा दे० ( पु० ) गला सूखना, गले की सुरसुराहट ।  
 खसटा दे० ( पु० ) वही, घाटा, खंडी, खुजली ।  
 खसना दे० ( कि० ) घसना, गिर पड़ना, नीचे आना ।  
 खसम ( पु० ) पति, भर्ता, स्वामी ।  
 खसरा ( पु० ) बरी, खरी, छोटी चेचक, खुजली ।  
 खसाना दे० ( कि० ) गिरना, परचापद करना ।  
 खसिया ( पु० ) बधिया, नपुंसक बकरा ।  
 खसो दे० ( स्त्री० ) गिरी, सरकी, नीचे छाया रामायण  
 में इस शब्द का प्रयोग किया गया है । यथा—  
 “खसी मान मूर्ति मुसकानी”  
 खसोटना दे० ( कि० ) निकलना, अन्याय से किसी का  
 धन लेना, नेचना ।

खस्फटिक दे० ( पु० ) काँच, सूर्य मण्डि, आकाश की मण्डि ।  
 खस्सी ( पु० ) बकरा ।  
 खाँग दे० ( पु० ) बड़ा दाँत, मोकीली वस्तु ।  
 खाँगड़ ( पु० ) शस्त्रधारी, कटीला ।  
 खाँगना ( क्रि० ) घटना, खेग जाना ।  
 खाँच दे० ( पु० ) कीचड़, काँदा ।  
 खाँचना दे० ( क्रि० ) लिखना, चिन्ह बनाना ।  
 खाँचा दे० ( पु० ) टोकरा ।  
 खाँड़ दे० ( पु० ) शङ्कर, चीनी ।  
 खाँड़ना दे० ( क्रि० ) छारना, कूटना, आघात के द्वारा भस्मादि को साफ करना, निस्तुपीकरण ।  
 खाँडा दे० ( पु० ) लड्डू विशेष, अस्त्रविशेष, सेना ।—  
 खाँडे की धार पर चलना ( वा० ) हुंकर न्याय, अतिशय कठिन, इच्छित मार्ग पर चलना ।  
 खाँसना तद्० ( क्रि० ) खोखना, खलारना, खों खों करना, ठों ठों करना ।  
 खाँसी तद्० ( स्त्री० ) रोग विशेष, कासरोग, खोखी ।  
 खाइ दे० ( क्रि० ) खाकर, भोजन कर ।  
 खाइय दे० ( क्रि० ) लाइये, भोजन कीजिये ।  
 खाई दे० ( क्रि० ) खाली, भोजन कर लिया । ( स्त्री० )  
 किले के या नगर के चारों ओर की नहर, गर्त, गड़हा, खात, नाला । [ खा जाने वाला ।  
 खाऊ दे० ( पु० ) पेड़, पेदायी, भोजन कोलुप, आबसी, खाक ( स्त्री० ) राख, धूल ।  
 खाका ( पु० ) ढाँचा । [ एक फिर्का ।  
 खाकी ( वि० ) भूरा ( पु० ) मुसलमानी फकीरों का खागा ( पु० ) दे० गँडे की सींग ।  
 खागा दे० ( पु० ) खन्ना, तलवार, लौड़ा ।  
 खाज दे० ( स्त्री० ) खुजलाहट, खुजली, कण्डू ।  
 खाजा दे० ( पु० ) एक प्रकार की मिठाई ।  
 खाजा दे० ( पु० ) काठ का बड़ा पात्र ।  
 खाट तद्० ( स्त्री० ) खट्वा, पलङ्ग, चारपाई ।  
 खाड़ ( पु० ) गढ़ा, गर्त ।  
 खागडव तद्० ( पु० ) वन विशेष, द्रुम का वन, जिसे अर्जुन ने जलाया था और उसे जलाकर अग्नि का सजीव रोग दूर किया ।—ग्रस्थ ( पु० ) नगर विशेष ।

खात तद्० ( पु० ) पोखरा, गढ़ा, गड़हा, खाद, गोबर ।  
 खातक तद्० ( पु० ) ऋषी, घरता, अधमर्ष, कुर्वन्त ।  
 खातमा ( पु० ) मृत्यु, अन्त । [ लेन देन ।  
 खाता दे० ( पु० ) एक साथ बँधे हुए पत्र, हिसाब, बही, खातिर दे० ( पु० ) आदर, कारण, लिये ।—जमा ( स्त्री० ) विन्यास, सन्तोष ।—दारी ( स्त्री० ) आदर, आचमव ।—नी ( स्त्री० ) आदर सम्मान ।  
 खातेऊ दे० ( क्रि० ) खा जाता, खाता, खा लेता, मैं खा लेता, खाते हुए मी, रामायण में इस शब्द का प्रयोग किया गया है ।  
 खाती दे० ( स्त्री० ) खंती, भू खोदनेवाली एक जाति । ( पु० ) जाति विशेष, बड़ई । [ आदि, पाँस ।  
 खाद दे० ( पु० ) गोबर, कतवार, सड़ी वस्तु, मल खादक तद्० ( पु० ) खाने वाला, खवैया, अष्टी, कुर्ई, अधमर्ष ।  
 खादन तद्० ( पु० ) भोजन, भक्षण ।  
 खादि दे० ( पु० ) वस्त्र विशेष, हाथ के बने सूत का वस्त्र विशेष, खहर, खाथ, कवच, दपयाना ।  
 खादिम ( पु० ) सेवक, दास ।  
 खादुक ( पु० ) हिंसक, हिंसाळु ।  
 खाद्य, खादु तद्० ( पु० ) भोजनीय वस्तु, भक्षणीय, खाने योग्य वस्तु, खाने के उपयुक्त पदार्थ ।  
 खान तद्० ( पु० ) भोजन का इन्द्र, यथा—वनका खान पान तो देखो ।—पान तद्० ( पु० ) खाना पीना, खाने पीने का आचार, खाने पीने का सम्बन्ध, यथा—हमारा उनका खान पान भेद है ।  
 खानखर दे० ( पु० ) गर्त, सुरङ्ग, खोह ।  
 खानखाना ( पु० ) मुगल सरदारों की एक उपाधि, सरदारों का सरदार ।  
 खानगी ( वि० ) घरेलू, निजका ( स्त्री० ) रंडी, पतुरिया ।  
 खानदान ( पु० ) कुल, वंश ।—नी ( वि० ) कुलीन, सद्कुलोद्भव, परम्परागत, पुरतनी । [ नाम ।  
 खानदेश ( पु० ) बम्बई इलाके के अन्तर्गत एक प्रदेश का खानसामा ( पु० ) अंगरेजों का भवर्षा या भंडारी ।  
 खाना दे० ( पु० ) भोजन, भक्षण, आहार ।—तलाशी ( स्त्री० ) पर मैं किसी चोरी गयी हुई वस्तु के लिये पुलिस द्वारा खोज ।

खानि तत् ( स्त्री० ) खान, उत्पत्तिस्थान, आकर, तरफ ।

“ फिरता चारो खानि । ”

तरह, दूर “ चारि खानि जग जीव जहाना । ”

—तुलसीदास ।

खानिक तद् ( गु० ) खानि सम्बन्धी, खानि का, आकर का, खदान का ।

खानी तद् ( स्त्री० ) खान, आकर, खोदी ।

खाप दे० ( स्त्री० ) तलवार की खोल, म्यान, कोप ।

खावड़ दे० ( पु० ) जैच नीच, अड़वड़ ।

खार तद् ( पु० ) चार, लोना, सजी मिट्टी ।

खारका दे० ( पु० ) छुहारा ।

खारय दे० ( कि० ) खाली करै, चार निकालै, साफ करै ।

खारा दे० ( पु० ) नेना, चार, तीखा ।

खारी दे० ( स्त्री० ) कड़ुवा निमक, तीखा नेन ।

खाखवा दे० ( पु० ) एक प्रकार का जाल मोटा कपड़ा ।

खाल दे० ( स्त्री० ) चमड़ा, चौकनी, भस्त्रा, चर्म, खाली जगह, गहराई, अवकाश ।—खैचना ( कि० ) शरीर पर का चमड़ा उतार लेना, खलड़ी उधेरना ।

खालसा ( वि० ) सरकारी, जिस पर एक का माल-काना हो ।

खाला ( गु० ) नीचा ।

खाला ( स्त्री० ) माँसी ।

खालिस ( गु० ) शुद्ध, बेमेल ।

खाली दे० ( गु० ) रीता, रिक्त, शून्य ।

खालु दे० ( पु० ) देह का चर्म, खोदना ।

खाले दे० खोदे, पोला करै, नीचे, गड़हे में ।

खाविंद ( पु० ) पति, भर्ता, स्वामी ।

खास ( वि० ) प्रधान, मुख्य, निजी, प्रिय । [ छरार ।

खिचड़ी दे० ( स्त्री० ) खिचरी, मिश्रित भोजन विशेष,

खिचना दे० ( कि० ) तानना, ँचना ।

खिचाय दे० ( कि० ) खिचाकर, तना कर, इस शब्द का प्रयोग व्रजभाषा में होता है ।

खिचाव दे० ( पु० ) तनाव, खैचाव, ँचाव ।

खिचावट दे० ( पु० ) ँचावट, तनाव, तनना, ँटना ।

खिजड़ी दे० ( स्त्री० ) योगी का आसन, योगी की खटिया । [ चिट्ठना ।

खिजलाना दे० ( कि० ) कुपित होना, क्रुद्ध होना,

खिजाना दे० ( कि० ) क्रुद्ध करना, कुपित करना ।

खिजाव ( पु० ) केशकल्प, सफेद बालों को काले करने की दवा ।

खिम्त दे० ( स्त्री० ) क्रोध, कोप, खिसियाहट ।

खिम्ताना या खिम्तलाना दे० ( कि० ) चिढ़ाना, तंग करना, खिजाना ।

खिड़की दे० ( स्त्री० ) झरोखा, गवाछ, गौछ, दरीची ।

खिगडाना दे० ( कि० ) बिथराना, बिखेरना, छितराना ।

खिताव ( पु० ) उपाधि, पदवी । [ सेवा, टहल ।

खिदमत ( स्त्री० ) सेवा ।—गार ( पु० ) सेवक ।—गारी

खिन्न तद् ( गु० ) खेदित, विपाद प्राप्त, वृद्धास, दुःखित, दुःखी, दुःखिया ।

खिरनी दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, खिन्नी ।

खिराज ( पु० ) कर, मालगुजारी ।

खिल दे० ( पु० ) आगल, अगल, धत्री ।

खिलखिलाना दे० ( कि० ) खूब जोर से हँसना, ठट्ठा करना, हँसना । [ हँसित होना ।

खिलजाना दे० ( कि० ) विकसित होना, प्रकुल होना,

खिलना दे० ( कि० ) विकसित होना, फूलना, पुष्पित होना ।

खिलचाड़ ( स्त्री० ) खेल, तमाशा ।

खिलाईवाई दे० ( स्त्री० ) धात्री, धाय, खिलाने पिढाने वाली, प्रतिपालन करने वाली ।

खिलाऊ दे० ( गु० ) खिलाने वाला, फूँकने वाला, अधिकम्ययी, अपन्ययी । [ आभारा, उच्छृङ्खल ।

खिलाड़, खिलाड़ी दे० ( पु० ) चञ्चल, खेलने वाला,

खिलाना दे० ( कि० ) भोजन करना ।

खिलाफ ( वि० ) विरुद्ध, विपरीत ।

खिलौया दे० ( पु० ) खेल करने वाला, खिलाड़ी ।

खिलौना दे० ( पु० ) गुड़िया, पुतली, खेलने की वस्तु ।

खिल्ली दे० ( स्त्री० ) हँसी ठोली, परिहास, ठट्ठा, पान की बीड़ी, खील ।

खिल्लू दे० ( पु० ) खिलाड़, खिलाड़ी, खेलने वाला ।

खिल्लो दे० ( स्त्री० ) अत्यधिक हँसने वाली ।

खिसकना दे० ( कि० ) चम्पत होना, सरकना, चलना, जाना, भागना । [ काना ।

खिसकाना दे० ( कि० ) हटाना, भागाना, सर

खिसना दे० ( कि० ) नम्र होना, नवना, मुकना,

शरणागत होना ।

खिसलना दे० (कि०) सरकना, फिसलना, पिड़लना, गिरना ।  
 खिसलहा दे० (गु०) चिकना, फिसलहा, चिकण ।  
 खिसलाहट दे० (खी०) खीकना, क्रोध, कोप ।  
 खिसाना दे० (कि०) इटना, टालना, अनुस्साहित होना, कुद होना । [करना, टरना ।  
 खिमाय रहना दे० (कि०) अग्रसन्न हो जाना, हिच-  
 खिमियाना दे० (कि०) चिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खिपाना, समाना ।  
 खिसियानि दे० (खी०) लजित होना, लज्जा, लजाई ।  
 खिसियानी (खी०) शर्मायी हुई, लजानी हुई, हारी हुई ।  
 खिसियाहट दे० (खी०) क्रोध, कोप, खीस, खीज ।  
 खीच दे० (खी०) अग्रसन्नता, अग्रधन ।—तान दे० (खी०) हँचातान, किसी शब्द का फिट्ट कवरना के महारे अन्यथा अर्थ करना । [देखो खँचाखँची ।  
 खींचातान, खींचातानी खींचाखींची दे० (खी०) खीज दे० (खी०) क्रोध, कोप, झुंफलाहट ।  
 खीजना दे० (कि०) क्रोधित होना, कुपित होना, खिजलाना ।  
 खीझ दे० (खी०) खीज, क्रोध, झुंफलाहट ।  
 खीन तद् (गु०) चीण, दुर्बल, दुबला, पतला, नाजुक, सुकुमार । [(गु०) बंगाली मिठाई विशेष ।  
 खीर तद् (गु०) खीर, पायस, तसमई ।—मोहन खीरा दे० (गु०) फलविशेष, बीमासे की ककड़ी ।  
 खीरी दे० (खी०) मेवाविशेष, पिस्ता, गी, भैस आदि का पेन । [लावा ।  
 खील, खीला दे० (खी०) धान का लावा, मङ्गलार्थ खीली दे० (खी०) धान की बीड़ी ।  
 खीस दे० (खी०) टोटा, घाटा, न्यूनता, कमी, क्रोध, दाँत का निकास ।  
 खीसना दे० (कि०) क्रोध करना, खीस निकालना ।  
 खीसा दे० (गु०) सलीला, जैव, बैली (कि०) घटा, उतरा, सरका, गिरा ।  
 खीह दे० (खी०) रेह, सज्जी मट्टी । [लने वाला ।  
 खुँटकहया (गु०) कान मैलिया, कान का मैल निकालना ।  
 खुँदजना दे० (कि०) कुचलना, रौंदना, पदाहत करना ।

खुआर (वि०) खराब, अप्रतिष्ठित, आपद्ग्रस्त ।  
 खुआरी (खी०) नाश, खराबी । [भिडक, छुड़ा ।  
 खुख, खुख दे० (गु०) अकिञ्चन, दरिद्र, दीन, कफाल, खुचर या खुचुर (खी०) अर्थ दोष निहालना ।  
 खुजलाना दे० (कि०) लज्जमाना, सुहलाना, सुहराना, चुलचुलाना ।  
 खुजलाहट दे० (खी०) खजली, गुदगुरी, सुगुरी ।  
 खुजली दे० (खी०) खान, कण्ट । [हिस्ता ।  
 खुज्मा (गु०) मैल, तबद्ध, फज्जादि का रोदरार खुम्भराहा दे० (गु०) रूपण, अर्थ पिशाच, लीचड़ ।  
 खुटकना दे० (कि०) सन्देह करना, कुतरना, संशयित होना ।  
 खुटका दे० (गु०) सन्देह, शङ्का, अग्रचिन्ता ।  
 खुटचाल (खी०) नीचता, घुरी चाल, उपद्रव ।  
 खुटाई दे० (खी०) दुष्टता, अधमता, खोटापन, नटखटी, बदमासी ।  
 खुटाना दे० (कि०) बराबर करना, तुल्य करना, समान करना, निरोप होना, लीण होना, नष्ट होना ।  
 खुटानी दे० (कि०) पूरी हुई, निरोप हो गई ।  
 खुट्टी दे० (खी०) पूंजी, रोकड़, मूलधन । [पास, बेटड़ ।  
 खुडला दे० (गु०) पत्तियों के रहने का स्थान, सुगों का खुड्डी दे० (खी०) पायसाने में पैर रखने का पायदान ।  
 खुहल्ला दे० (गु०) कोटर, घुघ का चिद्र, लोहार ।  
 खुथ (गु०) पेद के ऊपर का भाग ।—(खी०) लुटी, धन, दसनी ।  
 खुद स्वयं, आप ।  
 खुदरा दे० (वि०) छोटा, कुटकर । [गुग्गुलु ।  
 खुदधाना दे० (कि०) फोड़ना, भाटी निकलवाना, खुदा (गु०) ईश्वर । [दुकड़ा, तबद्ध ।  
 खुदी, खुदी दे० (खी०) कण्टिहा, कण्ट, आपल का खुदे दे० (खी०) अन्तर, व्यवधान । [अन्तर ।  
 खुनस, खुनुस दे० (गु०) क्रोध, कोप, रोष, जग, खुनसाना दे० (कि०) क्रोध करना, डाढ़ रतना, रिसाना, रिसाना ।  
 खुनसी दे० (गु०) क्रोधी, कोपी, रिमहा ।  
 खुन्दलना दे० (कि०) झुरघना, पैर से दवाना ।  
 खुनिया (वि०) क्षिप्र हुआ, गुप्त । [जमाना ।  
 खुचना दे० (कि०) चुमना, धिपना, पैटना, प्रभाव



खुवाव दे० (गु०) विगड़ा हुआ, नष्ट ।  
 खुमना दे० (क्रि०) खुबना, खुबना, विघना ।  
 खुमी दे० (स्त्री०) कर्णभूषण, कान का गहना, लौंग ।  
 खुमारी दे० (स्त्री०) मद, नशा, नशा उतरने की दशा, जिसमें बदन में थकावट और सुस्ती मालूम होती है । रात भर जागने की थकावट, शरीर की थिलथिला । [घर घर का शब्द ।  
 खुर त० (पु०) गाय के पैर का नख ।—खुर (पु०) खुरखुरा, खरखर (वि०) समतल नहीं, खुरखर ।  
 खुरचन दे० (स्त्री०) दूध को उतार कड़ाही से उसकी जलन खरोच कर और उसमें कन्द डाल कर जो मिठाई मथुरा में बिकती है ।  
 खुरचना दे० (क्रि०) छीनना, उधेड़ना ।  
 खुराड दे० (पु०) खँटी, खुले घास की पपड़ी ।  
 खुरपा दे० (पु०) घास छीनने का अछ, खुरपा, खुरपा ।  
 खुरपी दे० (स्त्री०) छोटा खुरपा ।  
 खुरमा दे० (पु०) खजूर, एक प्रकार की मिठाई ।  
 खुरहर (स्त्री०) खुर का चिन्ह, खुर से बना रास्ता ।  
 खुराक (पु०) भोजन, खाना ।  
 खुराफात (स्त्री०) गालीगलौज, उपद्रव ।  
 खुरांट दे० (गु०) बहुत पुराना, जीर्ण, चालयाज़ ।  
 खुरिया दे० (पु०) घुटने की चकति, घोंट । [रपेटना ।  
 खुरेरना दे० (क्रि०) खदेड़ना, भागना, रगेड़ना, खेदना, खुलना दे० (क्रि०) प्रकट होना, छिपाने या रोख वाली वस्तु का अलग होना, बिखरना, बादलों का छितर छितर होना । [करवाना ।  
 खुलवाना दे० (क्रि०) खुलवा देना, खुलवाना, मुक्त खुला (वि०) स्पष्ट, प्रकट, मुक्त ।—सा (पु०) संक्षेप, सारांश । [कीथली ।  
 खुली दे० (स्त्री०) पैकी, तोड़ा, रुपया रखने की खुलेबन्द दे० (या०) प्रकट रूप से, प्रकाश रूप से, निर्भीकता । [खुले आय, प्रकट रूप से ।  
 खुलमखुला दे० (वा०) प्रकाश भाव से, निर्भीकता से, खुश (वि०) प्रसन्न, मग्न ।—नी (स्त्री०) प्रसन्नता ।  
 खुशामद (स्त्री०) चापलूसी ।  
 खुशकी, खुशानी दे० (गु०) निर्जल मार्ग, सूखा, नीरस, पैदल मार्ग ।  
 खुसुर, फुसुर दे० (पु०) कानाकानी ।

खूँच दे (स्त्री०) नाड़ी विशेष, जानु की नाड़ी ।  
 खूँट दे० (पु०) कोन, कोना, छोर, और, भाग, कान का मैल ।  
 खूँटना दे० (क्रि०) सङ्कुचित करना, सङ्कीर्ण करना, औपध विशेष, उधत होना ।  
 खूँटला दे० (पु०) औपध विशेष ।  
 खूँटा दे० (पु०) यम्मा, मैल, यम्भला, खम्भा, काठ का ठेकना, जिसमें गाय भैस बाँधी जाती हैं ।  
 खूँटी दे० (स्त्री०) छोटा खूँटा, नील, अरहर, डवार के पीधे की वह सूखी डंठल जो फसल काट ली जाने पर खेत में खड़ी रहती है । गुल्ली, बालों के डंठल जो बाल मूँड़ने पर रह जाते हैं ।  
 खूँटना दे० (क्रि०) तोड़ना, खोदना, उखाड़ना, उधेड़ना ।  
 खूँटी दे० (स्त्री०) खुटी, पगड़ी ।  
 खूँड दे० (पु०) रेघारी, अङ्क, खाई, खान ।  
 खूँद या खूँद दे० (पु०) स्वयं, आप, तलछट, खाद ।  
 खूँदराना दे० (क्रि०) दुपकी चलना ।  
 खूँदना दे० (क्रि०) पैरों से रौदना, टाप मारना, खोदना, रौदना, कुचलना ।  
 खून दे० (पु०) लोह, रुधिर । [औपधि विशेष ।  
 खून खराबा या खून खराबी दे० (स्त्री०) मारकाट ।  
 खूब दे० (वि०) अच्छा, भला, उत्तम ।—नी दे० (स्त्री०) भलाई, अच्छाई ।—खुरत (वि०) सुन्दर, सुघड़ ।  
 खूमना दे० (क्रि०) पुराना होना, अजीर्ण होना ।  
 खूँखा (पु०) बक्ल (वि०) मनहूस आसिह, खेकसा दे० (पु०) चिन्ह, पहिचान, लक्षण, परबल के आकार का फल जिस पर कांटे काटे होते हैं ।  
 खेचर त० (पु०) आकाशगामी, शिव, पद्मी, विद्या, धर, सूर्य चन्द्रादि ग्रह, वायु, देवता, विमान, बादल, पारा, कसीस ।  
 खेचरी गुटिका त० (स्त्री०) योग सिद्ध एक गोली जिसको मुँह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है ।—मुद्रा त० (स्त्री०) योग की एक मुद्रा विशेष ।  
 खेजड़ी दे० (स्त्री०) शर्म का पेड़ ।  
 खेट त० (पु०) ग्रह, अहेर, अचन्न, ढाज, कफ, लाठी, चमड़ा, वृष, घोड़ा, खेरा ।  
 खेटक त० (पु०) ग्राम विशेष, छोटा नगर, गढ़ा,

बलराम की गदा, अहेर, अखविशेष, डाल, लाउ, तारा ।

खेटकी तत् ( पु० ) भट्टरी, भडौंवा, शिकारी, बधिक ।

खेटिक तत् ( पु० ) बधिक, ब्याध, बहेलिया ।

खेड़ा दे० ( पु० ) छोटा गाँव, ग्राम, पुरवा ।

खेड़ी दे० ( स्त्री० ) लौहविशेष, कान्तिसार, इस्पात ।

खेदी दे० ( स्त्री० ) गर्भावरण, फिल्ली ।

खेत तद् ( पु० ) क्षेत्रभूमि, पुण्यभूमि, पावनभूमि, समरभूमि, कृषिभूमि, पशुश्रों के उत्पन्न होने का स्थान, योगि ।—झोड़ना युद्ध से भाग जाना ।—रहना लड़ाई में हत होना, मारा जाना ।

खेतज तत् ( पु० ) आकाशमण्डल ।

खेतिहर दे० ( पु० ) किसान, खेती करने वाला ।

खेती तद् ( स्त्री० ) किसान का कर्म, जोताऊ, कृषि, कास्तकारी, किसानी ।—वारी ( वा० ) खेत का काम, किसानी ।

खेद तद् ( पु० ) स्मृताप, दुःख, शोक, परचात्ताप, पछतावा, मनस्ताप, ।—ग्वित ( गु० ) शोकाश्रित खेदयुक्त, दुःखी ।

खेदना दे० ( कि० ) हाँकना, भगाना, सताना ।

खेदा दे० ( पु० ) हाथी पकड़ने का स्थान, शिकार ।

खेदिन तत् ( गु० ) दुःखित, पीड़ित, बलेशित, सताया गया ।

खेना दे० ( कि० ) नाव चलाना, बिताना, काटना ।

खेप दे० ( स्त्री० ) एक बार का भार, योग जो एक बार उठाया जा सके, एक बार में उठाकर कहीं ले जाया जाय, जैसे "तुम कितनी खेपें लाये," "तुम एक दिन में कौं खेप ले सकते हो ?"—

हारना ( वा० ) हानि उठाना ।

खेपा दे० ( गु० ) इन्मत्त, पागल, धातुल, बकवादी ।

खेम दे० ( पु० ) खेम, कुशल । [होती हैं ।

खेमटा दे० ( पु० ) ताल विशेष, जिसमें बाढ़ मात्राएँ

खेमा ( पु० ) खेरा, तंबू, कुनात ।

खेरा दे० ( पु० ) वज्र, गाँव, डोह ।

खेरी दे० ( स्त्री० ) बंगाल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का गेहूँ, एक प्रकार का पत्ती ।

खेरे दे० ( पु० ) गाँव, छोटी बस्ती ।

खेत तद् ( पु० ) झोड़ा, कैतुक, मनेरजन, विनाद ।

—करना या सम्भरना तत्० तुच्छ सम्भरना ।

—खेलना ( वा० ) बहुत संग करना ।—विग-

ड़ना ( वा० ) रंग में मंग होना, काम विगड़ना ।

खेलना दे० ( कि० ) खेल करना, मीड़ा करना ।—

खाना ( वा० ) मजे में दिन बिताना ।

खेलवाड़ दे० ( पु० ) खेल, तमाश, दिहमी ।

खेला दे० ( पु० ) खिलवाड़, खेल ।

खेलाउव दे० ( कि० ) खेलाना, तन काना, सताना ।

खेवक, खेवट तद् ( पु० ) रानी, डांडी, कण्ठधार मछाड़ ।

खेवट दे० ( पु० ) पटवारी का एक कागज़ जिसमें हर एक जमींदार की मालगुजारी आदि का विवरण रहता है ।—दार दे० ( पु० ) हिंसेदार, पटोदार ।

खेवटिया दे० ( पु० ) नाँस चलाने वाला, मछाड़ा खेवट ।

खेवना दे० ( कि० ) डाँड मारना, नाव चबाना ।

खेवा दे० ( पु० ) नौका, नाव का शुरुक, नावकी बतराई का भाड़ा, बार, दफा, नाव से मदी पार करने का काम ।

खेवाई दे० ( स्त्री० ) नाव चलाने की क्रिया, नाव खेने की उजरत, रस्मी जो नाव को डाँड याँघने का काम देती है ।

खेस, खेसड़ा दे० ( पु० ) कपड़ा विशेष ।

खेसारी दे० ( स्त्री० ) अन्न विशेष ।

खेह दे० ( स्त्री० ) धूली, पाक, भस्म ।

खेच दे० ( स्त्री० ) उलाड़ा, पूँच, डान ।

खेचना दे० ( कि० ) पूँचना, कसना, टानना, तानना, चित्र बनाना । [कगड़ा, विहरेप ।

खेँचाखेँच दे० ( वा० ) विरोध, लड़ाई, खेपासानी ।—

खेर दे० ( पु० ) कय, कथा, खदिर, कुशल, मलाई ( वा० ) अपेक्षा सूचक शब्द, अम्मु । [चिन्तकता ।

खेरवाह ( वि० ) शुभ चिन्तकता ।—( स्त्री० ) शुभ

खेरा दे० ( पु० ) मूरा रंग, मझबी विरोध ।

खेरात ( पु० ) दान पुण्य ।

खेरियत ( स्त्री० ) राजी खुशी ।

खैजा दे० ( पु० ) दोहन, घड़ना, नया रंग ।

खोआ दे० ( पु० ) माया विशेष, खोया ।

खोआना दे० ( कि० ) हार जाना, ठगा जाना, मूल जाना, हरा आना ।

खोई दे० (क्रि०) नष्ट कर, खोकर । [कंचल की घोषी ।  
खोई दे० (स्त्री०) झिलका, ऊँच की सीढ़ी, लाई,  
खोऊ दे० (गु०) उड़ाऊ, खर्चाऊ, अप्रत्ययी ।  
खोखना दे० (क्रि०) काखना, खखारना, कफ निकासना, खासना ।

खोखी दे० (पु०) खाँसी, कास, रोग विशेष ।  
खोच दे० (पु०) चीर, खोप, किसी चीज़ से कपड़े का फट जाना, छेद होना ।

खोचना दे० (क्रि०) घुसेड़ना, डेलना, चुभोना ।  
खोचा दे० (पु०) चीरा, भराव, ठेस ।  
खोची दे० (स्त्री०) अन्न, फल, तरकारी आदि से वात थोड़ा सा भाग जो धर्माण में भिखमंगों को और छोटी सेवाओं के लिये इतरजनों को दिया जाय ।

खोडकल दे० (पु०) गड़हा, गढ़ा, कोडर ।  
खोता दे० (पु०) खोधा, घोंसला, नीड, पत्तियों के रहने का स्थान । [गोफे ।

खोप दे० (पु०) सलंगा, सिखाई के दूर दूर टाँकों के  
खोपा दे० (पु०) गाढ़, ताख, जूड़ा, अन्न रखने के लिये कृष्य निर्मित यह विशेष ।

खोसना दे० (क्रि०) ठोसना, भरना, घुसेड़ना ।  
खोखला दे० (पु०) पेला, छुछा, शून्य, रिक्त, घोषा ।  
खोखा दे० (पु०) रुपये चुकी हुई हथडी, बालक, मच्चा ।  
खोज दे० (पु०) टेढ़ा, ढूँढ़ना, अनुसन्धान करना, अवेषण, पल, चिन्ह ।—(पु०) खोजनेवाला ।

खोजा (पु०) जूनखे, यादशाही ज्ञानखाने के नौकर विशेष ।  
खोजाना (क्रि०) हिरा जाना, न मिलना ।  
खोट दे० (स्त्री०) दुर्गुण, अवगुण, भूल, बुराई, ऐव, हानि, बर्ता ।

खोटा दे० (गु०) दुर्गुणी, झूठा, पापी, दुराचारी ।  
खोटी दे० खोटा का स्त्रीलिङ्ग । [दुर्गुण ।  
खोटाई या खोटापन दे० (स्त्री०) अशर्म, दुराचार, खोपड़ला दे० (गु०) पोपला, अदन्त, दाँत रहित ।  
खोडस तद् (गु०) सेलह, सेतरह, संख्या विशेष, ३६ ।  
खोद दे० (पु०) खोच, खुदाव, शोफड़, मोक, फटा हुआ, खोदा हुआ ।

खोदना दे० (क्रि०) खनना, गाड़ना, कोड़ना, गोड़ना ।  
खोदर दे० (गु०) खड़बड़, ऊँचा नीचा, अड़बड़, दपट, दौड़ ।

खोदरा दे० (गु०) दरदरा, अड़बड़ ।  
खोदविनोद खानवीन, पूँख ताँख, छेड़छाड़ ।  
खोदै दे० (क्रि०) खोद डाले, उखाड़े, नष्ट कर डाले, निर्मूल कर डाले । [नाशना ।

खोना दे० (क्रि०) गँवा देना, उड़ा देना, नष्ट करना,  
खोन्चा (पु०) फेरीवालों का पचमेख मिठाई या निमकीन से भरा थाल ।

खोप दे० (पु०) खोंच, छेद, छिद्र, चीर ।  
खोपड़ा (पु०) सिर, कपाल, सिर की हड्डी, गरी ।—  
(स्त्री०) खोपड़ी । [श्रीफत्र, गोला, बड़ा सिर ।

खोपरा दे० (पु०) नारियल की गरी, फल विशेष,  
खोपरी दे० (स्त्री०) सिर की हड्डी, कपाल ।  
खोपा दे० (पु०) मक, मैक, खू ।

खोवार दे० (पु०) सुअरों के रहने का घर ।  
खोया दे० (पु०) नारियल का गोला, जूड़ा, खोमा ।  
(क्रि०) खोने का भूतकाल । [मार्ग ।

खोरि दे० (स्त्री०) ऐव, दोप, दुर्गुण, गली, सङ्कुचित  
खोरिया (स्त्री०) छोटा कटोरा, एक उत्सव जो स्थिर्वा लड़कों के विवाहसमय के अवसर पर करती हैं जिसमें वे तरह तरह के रूप बनाती और गालियाँ गाती हैं ।

खोरे दे० (गु०) दुर्गुणी, दोपी, ऐवी, लहड़ा ।  
खोज, या खोली दे० (स्त्री०) गिलाफ, खोखला, म्यान, रजाई, दोहर, शरीर । [गढ़ा, गर्त ।

खोजडा दे० (पु०) कोटर, खोखला, खोह, गड़हा,  
खोजना दे० (क्रि०) छोड़ देना, मुक्त करना, फैलाना, उधेड़ना । [अस्त्र रखने की वस्तु ।

खोली दे० (स्त्री०) खोख, चोंगी, नलिका, गिलाफ,  
खोवा (पु०) मावा, खोषा । [खो डाले ।  
खोवै दे० (क्रि०) हिरवावे, विनाश करे, नष्ट करे,

खोह दे० (पु०) गुफा, गुहा, कन्दरा ।  
खोड़ दे० (पु०) तिलक, चन्दन करण, खोर ।  
खोफ (पु०) भय, डर ।

खोर दे० (पु०) लहियादार, चन्दन का आड़ा टीका ।  
यथा—“खोर मान तौ सोहत नीके” ।

खोरा दे० (पु०) पशुओं का रोग विशेष, जिससे उनके थाँख गिर जाते हैं ।  
खोलना (क्रि०) खोलना, गरम करना, उष्ण होना ।

ख्यात तत् ( पु० ) ख्यातियुक्त, कीर्तिमान्, प्रसिद्ध, यशस्वी ।—व्य ( गु० ) प्रतिष्ठा योग, प्रशंसा योग्य ।  
ख्याति तत् ( स्त्री० ) प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, नाम, यश, कीर्ति ।—झ ( गु० ) दुर्नाम जनक, अपवादी ।  
—मत्त्व ( पु० ) यशस्विता, विधुति, प्रतिष्ठा ।  
ख्यात्यापन्न तत् ( गु० ) कीर्तिमान्, यशस्वी, प्रतिष्ठित । [ फैलाने वाला ।  
ख्यापक तत् ( पु० ) प्रकाशक, व्यञ्जक, चोतक,

ख्यापन तत् ( पु० ) प्रकाश, विज्ञापन, प्रसिद्धि होना ।  
खाल दे० ( पु० ) कौतुक, स्वाग, खेल, तमाशा, एक प्रकार की लावनी ।—नी ( स्त्री० ) कल्पित, वहनी, सनकी, कौतुकी ।  
खीष्ट दे० ( पु० ) ईसा, काइस्ट ।  
खीष्टियान दे० ( पु० ) ईसाई ।  
खवारी ( स्त्री० ) नाश, बर्बादी, अपमान ।  
खादिश ( स्त्री० ) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

## ग

ग यह कवर्ग का व्यञ्जन तीसरा वर्ण है । इसका उच्चारण कण्ठ से होता है ।

ग तत् ( पु० ) गीता, गणेश, गन्धर्व ।  
गद्या दे० ( स्त्री० ) गाय, गा, घेनु ।  
गई दे० ( कि० ) जानना किश का स्त्रीलिंग रूप, गमन किया, जाती रही, चली गई ।  
गईवहार दे० ( गु० ) गयी हुई को लौटा ले जाने वाला, बिगड़ी बात को बनाने वाला ।  
गँडकटा ( पु० ) चोर, जेवकतरा, स्तेन । [ काने वाला ।  
गँवाळ ( गु० ) बचाने वाला, खोने वाला, नाश गँवाना ( कि० ) खोना, भ्रष्ट करना, विस्मृत होना, भूलना ।

गँवार ( पु० ) गवई का, अनपढ़, मूर्ख, असमझ ।  
गँवी ( स्त्री० ) गाँव, ग्राम, देहात, ग्राम्य ।  
गकार तत् ( पु० ) कवर्ग का तीसरा वर्ण ग अक्षर ।  
गगन तत् ( पु० ) आकाश, व्योम, शून्य, नभ ।—  
कुसुम ( पु० ) खड्गपत्र, घसम्मव, मिथ्या ।—गामी ( गु० ) आकाशगामी, नक्षत्र आदि ।—चारी ( गु० ) आकाशगामी ।—विहारी ( गु० ) चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, पक्षी ।—मण्डन ( पु० ) आकाश मण्डल, खगोल ।—स्पर्शी ( गु० ) आकाश छू लेने वाला, बहुत ऊँचा ।

गगनमेड़ दे० ( पु० ) हडगीला, गिद्ध, गीध ।  
गगरा ( पु० ) पीतल लोहा आदि का घड़ा, कलसा ।  
गगरी ( धी० ) मिट्टी का छोटा घड़ा ।  
गङ्गा तत् ( स्त्री० ) गङ्गा, नदी, देवनदी ।—कवि हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि ।

गङ्गा तत् ( पु० ) जानकी भगीरथी, सुरनदी, स्वनाम प्रसिद्ध नदी ।—जल ( पु० ) गङ्गा का जल, गङ्गादेक ।—जमुनी ( गु० ) दो धातुओं का बना हुआ, तबि ब पीतल का बना हुआ । चाँदी ब सेने का ।—जलिया-जली ( स्त्री० ) सीसा, ताँबा, पीतल अथवा कान की यन्त्री सुराही ( पु० ) गङ्गाजल स्पर्श करके शपथ खाने वाला ।—दास ( पु० ) एक संस्कृत कवि का नाम, इन्होंने दन्द्दोमञ्जरी-नामक छन्दः शास्त्र की एक पुस्तक बनायी है गोपालदास वैद्य के ये पुत्र थे, इनकी माता का नाम सन्तोष था । दन्द्दोमञ्जरी के अतिरिक्त सद्युतचरित्र, कृष्ण-शतक और सूर्यशतक नाम के और भी ग्रन्थ बनाये हैं । ये कवि १२ शताब्दी के इधर ही के मालूम होते हैं यह कवि वैष्णव थे ।—द्वार ( पु० ) हरिद्वार ।—धर ( पु० ) शिव, महादेव, समुद्र, इस नाम का एक संस्कृत कवि, गोविन्दपुर के शिष्य लेख से मालूम होता है कि सन् १३३० ई० में यह कवि वर्तमान था । इसके प्रपितामह का नाम दमोदर, पितामह का नाम चक्रपाणि, पिता का नाम मनोरथ, चचा का नाम दशरथ और भाई का नाम महीधर तथा पुरोहित था । यह नहीं कहा जा सकता कि विरहय के समकालीन कवी गङ्गाधर हैं या दूसरे ।—प्राप्ति ( पु० ) गङ्गाधर सरख, मृत्यु ।—यमुनी ( गु० ) यमुना नदी का मिश्रण, दो वर्णों की धातुओं का मिश्रण यात्रा ( धी० ) गङ्गासप्त उषः के मन्त्र गङ्गा सप्त पर ले जाना ।—द्वार ( पु० )

करण ।—सागर ( पु० ) गङ्गा और सागर का जहाँ  
संगम होता है उस स्थान का नाम गङ्गा सागर  
है ।—स्नान ( पु० ) गङ्गा जी का स्नान ।—  
सुत ( पु० ) भीष्म, कर्णिकेय ।—स्नायी ( पु० )  
गङ्गा स्नान शील ।

गङ्गाभूत तत् ( पु० ) पवित्र, पावन ।

गङ्गादक तत् ( पु० ) गङ्गाजल ।

गञ्ज दे० ( पु० ) पकी छत, स्थूल, मोटा ।

गञ्जमीना दे० ( पु० ) डोंगना, छोटा मोटा ।

गञ्जपच दे० ( स्त्री० ) मीड़भाड़, गोलमाल, घनता,  
बलट पलट ।

गञ्ज तद् ( पु० ) स्थान, बाँझों का स्थान, मठ विशेष  
स्वीकृत, न्यास सम्बन्धक वृक्ष ।

गज तत् ( पु० ) कुंजर, हाथी, देा हाथ का परिमाण,  
वास्तुस्थानभेद, धातु आदि जारने के लिये गढ़ा ।

—कुम्भ ( पु० ) हाथी का सिर ।—गमनी ( स्त्री० )

हाथी के समान धीरे धीरे चलने वाली स्त्री, गज-

गामिनी ।—गाह ( पु० ) हाथी घोड़े का आमुषण ।

—गौनी ( पु० ) गजगामिनी ।—चिर्मटी ( पु० )

इन्द्रवारुणी, इनारुन—छाया ( स्त्री० ) आद का

नियमितकाल, आग्नि मास की मघा नक्षत्र युक्त

प्रयोदशी ।—ता ( स्त्री० ) गज समूह, हाथी का

यूथ ।—दन्त ( पु० ) हस्ति संवन्धी दाँत, हाथी के

दाँत ।—दन्ती ( पु० ) हाथी दाँत का ।—दान

( पु० ) हाथी का मद जल, हाथी के मस्तक से

निकला जल ।—पति ( पु० ) हाथियों के यूथ का

स्वामी, राजा, गजस्वामी ।—पाटल ( पु० ) कज्जल,

काजल, सुरमा ।—पाल ( पु० ) हाथीवान्, महावत,

फीलवान ।—पिप्लो ( स्त्री० ) पीपर विशेष, गज-

पीपर ।—पुङ्गव ( पु० ) मुख्य गज, प्रधान हांथी,

पुट ( पु० ) शीपघ पकाने के लिये एक प्रकार का

गढ़ा ।—भिपक् ( पु० ) साठि ।—मुख ( पु० )

हाथी, गणेश ।—मुक्ता ( स्त्री० ) हाथी के मस्तक

का मण्यस्थ मोती ।—मोती ( स्त्री० ) गजमुक्ता ।

—भूथ ( पु० ) हाथियों की टोली, हाथियों का

समूह, हस्ति समूह ।—राज ( पु० ) बड़ा हाथी

—रि तत् ( पु० ) शेर, बाघ, सिंह, व्याघ्र ।—

चदन ( पु० ) गजमुख, हस्तिमुख, गणेश ।—अखी

( पु० ) बड़ा हाथी, ऐरावत ।—अघ्यत्त ( पु० ) हाथी  
का अधिपति, हस्तिस्वामी ।—अनन ( पु० ) गणेश,  
गजवदन ।—रि ( पु० ) सिंह, मृगराज, वृक्ष

विशेष ।—अशन ( पु० ) पीपल, वृक्ष, पीपुल्ल ।

—अस्य ( पु० ) लम्बोदर, गणेश ।—द्विष ( पु० )

, नगर विशेष, हस्तिनापुर ।—न्द्र ( पु० ) ऐरावत,

दिग्गज ।

गजव ( पु० ) रिस, कोप, आफत, जुलम, अन्जाम ।

गजर तद् ( पु० ) गजर, एक मूल विशेष ।

गजर वजर ( पु० ) बालमेल, गिचपिच ।

गजल ( स्त्री० ) बर्द फारसी की एक प्रकार की कविता

जिसमें शृंगार रस ही प्रायः रहता है ।

गजरा तद् ( पु० ) गजर के पत्ते, मोटी फूलों की माला ।

गजाना दे० ( स्त्री० ) सड़ाना, पचाना, गन्ध देना,

बसाना ।

[विद्, केरा, केला ।

गजनुसा तत् ( पु० ) कदली, कदलीवृक्ष, केले का

गजा दे० ( पु० ) खुर्मा, खजूर, मिष्टान्न विशेष ।

गज्ज दे० ( पु० ) रोग विशेष, एक रोग जो सिर में

होता है, राशि, ढेर, समूह, हाट, बजार, खजाना ।

गज्जना दे० ( कि० ) यातना, वेदना, पीड़ा, दुःख,

ग्लानिसूचक वाक्य ।

गज्जा तत् ( कि० ) जिसके सिर में बाल न हों, रोग

विशेष, गर्ना, मद्यगृह । [लक्षित, पीडित ।

गज्जित दे० ( पु० ) अपमानित, कलङ्कित, दुःखित,

गम्भ दे० ( पु० ) जप में प्राप्त धन, जीता धन ।

गम्भीन दे० ( पु० ) धन, सधन, घना, निविड़ ।

गटई ( स्त्री० ) गर्दन, गला ।

गटकना ( पु० ) निकालना, धाना ।

गटपट दे० ( पु० ) उलट पुलट, एकत्रित करना, खसड़ा ।

गटाग वि० ( पु० ) धड़ाधड़, धरावर, लगातार ।

गटापारचा ( पु० ) एक प्रकार का गोद ।

गटी दे० ( स्त्री० ) समूह, राशि, यूथ, यथा—“सत्र

जाम फटी दुख की दुपटी, फपटी न ठई जहाँ एक

घटी निघटी रुचि, सीच घटी हू घटी जगजीव यतीन

की छटी घटी, अब ओघ की बेरी कटी बिकटी,

निकटी प्रकटी गुण ज्ञान गटी, चहुँ ओरन नाचत

युक्ति नटी, गुण पुन लटी लटि पशुवटी ।”

राजचक्रिका ।

गढ़ ( पु० ) गले से निकला हुआ निगलने का शब्द ।  
 गढ़ा दे० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई, गुल्फ ।  
 गढ़र दे० ( पु० ) गढ़ा, बड़ी गठरी ।  
 गढ़ा दे० ( पु० ) बड़ी गठरी, प्याज का गढ़ा ।  
 गठकटा ( वि० ) बाँट, गिरकट ।  
 गठन तत्त्वं ( पु० ) निर्माण करण, रचन ।  
 गठना तद् ( कि० ) जुड़ना, मिलना, सम्मिलित होना,  
 एकत्रित होना, परस्पर प्रेमी बनना । [को बाँधना ।  
 गठबंधन ( पु० ) गठ जोड़ा, वर यष्ट के बंधनों के छेद  
 गठर दे० ( पु० ) बड़ा गाँठ, गठिला ।  
 गठरी दे० ( स्त्री० ) गाँठ, मोठ, गठ, बोझ, भार ।  
 गठवाना दे० ( क० ) गठाना, गाँठ बाँधना, बंधवाना,  
 जूना गठवाना । [लगवाना ।  
 गठाना दे० ( कि० ) गठवाना, सिलवाना, पैबन्द  
 गठित तत्त्वं ( पु० ) रचित ।  
 गठिया दे० ( स्त्री० ) गठरी, ग्रन्थि, गाँठ, बात रोम  
 विशेष, ग्रन्थियुक्त ।  
 गठियाना ( कि० ) गाँठ में बाँधना ।  
 गठिहा दे० ( पु० ) गाँठें वाला, ग्रन्थियुक्त ।  
 गठीला दे० ( पु० ) सख्त, पुष्ट, दृढ़पुष्ट, दृढकट्टा,  
 सख्तमुसण्ड ।  
 गठुवा दे० ( पु० ) कपड़ों की गाँठ, धूत की ग्रन्थि ।  
 गड़ ( पु० ) ओर, रोक, आड़, चारदीवारी, लोह, गड़ ।  
 गड़त दे० ( पु० ) गण्डा, टोना, एक खेल का नाम ।  
 गड़क दे० ( पु० ) एक प्रकार की मछली ।  
 गड़गड़ाना दे० ( कि० ) गरजना, गर्जन, करना, मेघ  
 या नगरे की ध्वनि । [घावाड़ ।  
 गड़गड़ाहट ( स्त्री० ) कड़क, गर्जन, गुड़गुड़ाने की  
 गड़गड़ी ( स्त्री० ) नगाड़ा ।  
 गड़गुदर दे० ( पु० ) चिपड़ों, फटा पुराना कपड़ा ।  
 गड़न दे० ( पु० ) धमान, दलदल, गड़त, निर्माण,  
 मूर्ति, आकार । [बैठना, आसक्त होना, बिदना ।  
 गड़ना दे० ( कि० ) धसन, घससाना, रहसाना,  
 गड़प ( पु० ) जड़ में किसी वस्तु के खचानक गिरने का  
 शब्द ।—ना ( कि० ) निकलना, किसी वस्तु  
 का पचा जाना ।  
 गड़प्पा ( पु० ) धोखे का स्थान, बड़ा गहरा गढ़ा ।  
 गड़वड़ दे० ( वा० ) गठपट, बलट, पुलट ।

गड़वड़ाहट दे० ( स्त्री० ) खड़बड़ी, भय, डर, भीति,  
 अनियमिति, अनिश्चित ।  
 गड़वड़ी दे० ( पु० ) खलबली, मड़ोरा, मिलाव ।  
 गड़यल दे० ( पु० ) परिहास में इस नाम से पुकारना  
 धनर का दूसरा नाम ।  
 गड़रिया दे० ( पु० ) मेपपाळ, भेड़िहारा, जातिविशेष,  
 भेड़ पालनेवाली जाति ।  
 गड़लवण दे० ( पु० ) सोमर नोन ।  
 गड़हा दे० ( पु० ) गर्त, गढ़ा, ताल ।  
 गड़ही ( स्त्री० ) तलैया, छोटा गढ़ा ।  
 गड़ाना दे० ( कि० ) बिधना, चुमाना, खोसना ।  
 गड़ारी ( स्त्री० ) गोल जकीर, घेरा ।—द्वार ( वि० )  
 घेरादार, ब्यारियाँ । [हथियार ।  
 गड़ासा ( पु० ) करबी आदि की छुटी काटने का  
 गड़ियार दे० ( पु० ) मगरा, मचला, बड़हड़ी, बालसी,  
 भनुयोगी, जड़ ।  
 गड़ी दे० ( कि० ) धसी, हकी, धस गयी, दूध गई ।  
 गड़ुआ दे० ( पु० ) डोयोदार छोटा, दमहर ।  
 गड़ुर तद् ( पु० ) गड़ड़ पक्षिराज, वैनतेय ।  
 गड़ुवा दे० ( पु० ) जलपाय विशेष, कलश, गड़ुआ ।  
 गड़ेरिया दे० ( पु० ) गड़रिया, चरवाहा, मेपपाळ, भेड़  
 यादि पालने वाला ।  
 गड़ोना दे० ( कि० ) घेदना, खोसना, चुमाना, बिधना ।  
 गड़ ( पु० ) तह-पर तह, एक ही वस्तु का तह ऊपर  
 रखा हुआ ढेर, बहुत वस्तुओं का मेख ।  
 गड़ालिका तत्त्वं ( स्त्री० ) देखा देखी कार्य में प्रवृत्ति  
 होना, अविचारित कर्म में प्रवृत्ति, भेड़िया धसान ।  
 गड़ी दे० ( स्त्री० ) आँटी, पुला, दसदस्ते कागज़ ।  
 गड़ दे० ( पु० ) दुर्ग, कोंट, किड़ा, गढ़ी, राजमहल ।  
 गढ़न दे० ( पु० ) बनावट, रचना, निर्माण । [सुधारना ।  
 गढ़ना दे० ( कि० ) निर्माण करना, बनाना, रचना, टोसना,  
 गढ़नि दे० ( स्त्री० ) बनावट, रचना, गढ़ का बहुत बचन ।  
 गढ़न्त ( वि० ) बनावटी, कल्पित ।  
 गढ़वार दे० ( पु० ) मोटा, स्थूल, गाढ़ा ।  
 गढ़वाल दे० ( पु० ) किले का रचक, गड़ रचक, गाढ़ा,  
 साटा, एक नगर का नाम जो उत्तर भारत में है ।  
 गढ़ा दे० ( पु० ) गड़हा, गर्त ।  
 गढ़ाई दे० ( स्त्री० ) गढ़ने की मजूरी, गढ़ने की बनावट,

वनाने का परिश्रम । ( कि० ) गढ़ना, गढ़वाना;  
गढ़ाना ।

गढ़िया दे० ( स्त्री० ) आला, बरछी, बल्लम, कुन्त, प्रास ।  
गढ़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा कोट, गढ़ । [खोदा हुआ गढ़ा ।  
गढ़ेला दे० ( पु० ) गड़वा, खड़हर, गढ़ा, गड़ा हुआ,  
गढ़ैया दे० ( पु० ) छोटा पोखर, तलाह ।

गण तत्० ( पु० ) समूह, थोक, जाति, कुण्ड, यूथ, रुद्र का  
अनुचर, प्रथम रुद्र का गण, सेना, संख्या विशेष,  
२६ रथ, ८१ घोड़े, १३२ सिपाही इस सेना  
में होते हैं । छन्दःशास्त्र के आठ गण, १ भगण,  
२ जगण, ३ सगण, ४ रगण, ५ यगण, ६ तगण,  
७ मगण, ८ नगण, इनका लक्षण ऐसा है "आदि  
मध्य अवसान में म ज स होंहिं गुरु जान, य र त  
होंहिं लघु क्रमहिं सो म न गुरु लघु सब जान ।"

गणक तत्० ( पु० ) गणना करने वाला, ज्योतिषी,  
दैवज्ञ, ज्योतिर्वेत्ता, गणनाकारी ।

गणता तत्० ( स्त्री० ) गण का धर्म समूहत्व, पञ्च-  
पातिता, धूर्तमण्डली । [मिले हुए अनेक देव ।

गणदेवता तत्० ( पु० ) मिलितदेवता, संघदेवता,  
गणन तत्० ( पु० ) संख्या करण ।

गणना तत्० ( स्त्री० ) संख्या, गिनना, पञ्चपात ।

गणनाथ, गणनायक तत्० ( पु० ) गण स्वामी, गणेश ।

गणनाथ ( वि० ) गिनेने योग्य, प्रख्यात । [संस्था के मालिक ।

गणपति तत्० ( पु० ) गणेश, सम्राजपति, सम्मिलित,

गणपाठ ( पु० ) ग्रन्थ विशेष ।

गणराज तत्० ( पु० ) गणराज, गणनाथ ।

गणाधिप तत्० ( पु० ) शिशुपुत्र, गणेश, गजानन ।

गणाध्यक्ष ( पु० ) गणेश, शिव । [वैरिणी, कुलटा ।

गणिका तत्० ( स्त्री० ) घाराङ्गना, वेश्या, पतुरिया, पातुर,

गणित तत्० ( पु० ) भङ्गविद्या, ज्योतिष शास्त्र, संख्यात,

गणना किया हुआ ।—कार ( पु० ) गणक, ज्योति-  
र्वेत्ता, भङ्गवेत्ता ।—ज ( पु० ) ज्योतिषी ।

गणेश तत्० ( पु० ) शिवपुत्र, हेरम्भ; अम्बोदर,

गजानन, ये पार्वती के पुत्र हैं, इनका सम्पूर्ण,

शरीर देवी का सा परन्तु मुख हाथी का है ।

शिवजी की आज्ञा से पार्वती ने पुण्यक यंत्र का

अनुष्ठान कर विष्णु को प्रसन्न किया, विष्णु ने

पुत्र के लिये वरदान दिया, जिसके फल से

गणेश का जन्म हुआ, गणेश जी को देखने के

लिये सभी आये, उनमें शनिश्चर अपनी दृष्टि की

महिमा जानते थे इसी कारण गणेश को देखने की

उनकी इच्छा न थी, परन्तु पार्वती ने अनुरोध

किया, अतएव उन्होंने भी अपनी दृष्टि बटायी,

उनके देखते ही गणेश का मस्तक ऊपर उड़ गया,

देवताओं ने विष्णु की स्तुति की, विष्णु ने हाथी का

माथा जोड़ दिया ।—क्रिया ( स्त्री० ) योगाभ्यास की

एक क्रिया, इसमें क्रिया विशेष द्वारा मलद्वार से

मल साफ किया जाता है ।—चतुर्थी ( स्त्री० )

आदों, माघ, और फागुन शुक्ला चतुर्थी । इन

तिथियों में स्मार्त लोग गणेश जी का धूम धाम से

पूजन करते तथा यंत्र उपास करते हैं ।

गण्ड तत्० ( पु० ) कपोल, गाल, कनपटी, फोड़ा,

चिन्ह, गाँठ, नाटक का वीथी नामक एक अङ्ग,

जिसमें अचानक प्रश्नोत्तर हों, गजकुम्भ ।

गण्डक तत्० ( पु० ) गेंडा, गाँठ, चिन्ह ।

गण्डकी तत्० ( स्त्री० ) स्वनामख्यात नदी, जो बिहार में है

और नैपाल से आई है, जिसमें शालिग्राम निकलते हैं ।

गण्डमाला ( स्त्री० ) कण्डमाला, गले के नीचे का रोग

जिसमें माला की तरह गाँठें गर्दन में बठ आती हैं ।

गण्डमूर्ख तत्० ( वि० ) बड़ा मूर्ख, भारी बेबहुक ।

गण्डशैल तत्० ( पु० ) पर्वत से ढूँडा हुआ बड़ा पत्थर,

छोटा पहाड़ ।

गण्डस्थल ( पु० ) कनपटी, गाल, कपोल ।

गण्डा दे० ( पु० ) संख्या विशेष, चार फोड़ी, चार

पैसा, चार रुपा, चार आम आदि, तन्त्र मन्त्र

किया हुआ सूत्र, हँसली, कण्डा ।—स्त ( पु० )

ज्योतिष मतानुसार योग विशेष । [शस्त्र विशेष ।

गँडासा दे० ( पु० ) कुटी काटने का बड़ा गँडासा

गँडासी दे० ( स्त्री० ) छोटा गँडासा ।

गण्डिका तत्० ( स्त्री० ) नदी विशेष, गण्डकी ।

गण्डि दे० ( पु० ) रोग विशेष, गण्डमाला । [स्थान ।

गण्डी दे० ( स्त्री० ) घेरा, रेखा आदि के द्वारा सीमाबद्ध

गण्डीर तत्० ( पु० ) सेहुँड़ा घृत, राजा, ऊँख ।

गण्डील तत्० ( पु० ) प्रकुल, विकसित ।

गण्डीप तत्० ( स्त्री० ) पानी का कुशला, हाथी के सूँड़

की नाक, हाथ के अङ्गुठे का गढ़ा ।

गह्वरी तद् (स्त्री०) ऊख के डुकड़े, कटे हुए ऊख के गुले ।

[करने योग्य ।

गण्य तद् (गु०) गणनीय, गणनाहर्, माननीय, संख्या गत तद् (गु०) गतीत, ध्यतीत, विश्रुत, इत, नष्ट,

मिश्र, गया, निरुद्ध, मुक्त, क्षीन, प्राप्त । —अङ्क (वि०)

गया, सीता, जिसमें संपुरोधित कोई चिन्ह न हो । —कृम (गु०) विधान्त, अमरहित । —प्रप (गु०) निर्लज्ज, लज्जा रहित । —प्रम (गु०) प्रमा

हीन, निष्प्रम । —वित्त (गु०) गत विभक्त, निर्धन, दरिद्र । —वैर (गु०) निरुपद्रव, शत्रुरहित, अज्ञात-

शत्रु । —व्यथ (गु०) अक्षय, क्लेश रहित, सुखी ।

—यागत (गु०) यातायन, गमनागमन, आना

जाना, पक्षियों की गतिविशेष, आवागमन, जन्म

मरण, आया गया । —धि (गु०) सुखी । —

तुगतिक (गु०) अनुकरण करने वाला, अनुकारी,

पिछलग्नी । —तुः (गु०) ध्यतीत आयु, जीवन

का अवसानकाल, मरणासन्न, सुसुप्त । —र्य (गु०)

अभिप्रायसिद्धि, एक से दूसरे का निष्प्रेषण होना ।

गति तद् (स्त्री०) यात्रा, दशा, चाल, हरकत, पहुँच,

सहारा, विधान, ढंग, रीति, जीव का एक शरीर

छोड़ कर दूसरे शरीर में जाना, मरने के बाद जीव

की दशा, मोक्ष, पैतरा, अर्थों की चाल, सितार

आदि के वादन की क्रिया विशेष । —क्रिया (स्त्री०)

विलम्ब, कालचेप, शिथिलता । —विहीन (गु०)

गतिहीन, गमनशक्ति रहित ।

गता दे० (गु०) दफूली, कुट ।

गय तद् (गु०) पूँजी, माल, मोल, धन, मुँह ।

गद् तद् (गु०) व्याधि, रोग, श्रीकृष्ण के एक भाई का

नाम, श्रीरामचन्द्र की सेना का एक बन्दर, असुर

विशेष ।

गद्का दे० (गु०) पटा, दण्ड विशेष ।

गद्कारी तद् (गु०) रोग उपपन्न करने वाला (पदार्थ) ।

गद्गद् दे० (गु०) मोटा, स्थूल, तुन्दिल, वेदिला ।

गद्गद् (गु०) बलवा, दलचल ।

गद्गद् दे० (वि०) गद्गद्, अधपका ।

गद्गराना (क्रि०) पकने पर होना, अवानी में अंगों का

पूर्णता को प्राप्त होना । [या कीचड़ मिला हुआ ।

गद्गद् दे० (गु०) मैला, धुमीला, मखिन, गद्गद्, मिट्टी

गद्गद् दे० (स्त्री०) मैलापन, धुमीलापन, कालुष्य ।

गद्गद्गद् तद् (गु०) वैध, औपध ।

गद्गद् तद् (गु०) गद्या, खर, गद्गद् । —पच्चीसी दे०

(स्त्री०) १६ से २२ वर्ष तक की अवस्था, जिसमें

इस अवस्था वाले को अनुभव नहीं रहता और

वसकी वृद्धि कधी रहती है । —पन दे० (गु०)

मूर्खता, अनसमझ, बेवकूफ । —पूरना (स्त्री०)

पुनर्नया, वृद्धि, औपधि विशेष । —लोटना (स्त्री०)

वह स्थान जहाँ गद्गद् जोटे हों ।

गद्गद् तद् (गु०) वैध, रोग मिटाने वाला, गंधर्व ।

गद्गद्गद् (स्त्री०) गद्गद् ।

गद्गद् तद् (स्त्री०) लोहे का अक्ष विशेष, लोहे का

सुन्दर या लाली । —धर (गु०) विष्णु, नारायण,

श्रीकृष्ण । —युध (गु०) पटि, लाली, गद्गद् । —

युद्ध (गु०) युद्ध विशेष । —रि (गु०) रोगशत्रु,

रोगनाशक वैद्य । [कां औजार विशेष ।

गद्गद्गद् दे० (गु०) हाथी पर का गद्गद्, मिट्टी खोदने

गद्गद्गद् तद् (गु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, भगवान् ।

गद्गद् तद् (गु०) उक्त, कथित, भाषित, कहा हुआ ।

गद्गद् तद् (गु०) विष्णु नारायण (गु०) गद्गद्

विशिष्ट, रोगयुक्त, रोगी ।

गद्गद्गद् दे० (गु०) शिशु, बच्चा, मा का दूध पीने वाला

बच्चा, कोरे का बच्चा, मोटा बिल्लूना ।

गद्गद्गद् तद् (गु०) पुष्टकित, प्रपन्न ।

गद्गद् दे० (गु०) कोमल स्थान पर किसी वस्तु के गिरने

की आवाज़, अजीर्ण, अवपच ।

गद्गद् दे० (गु०) अर्ध पक, अधपका, गद्गद् ।

गद्गद् दे० (गु०) रुई या धातु आदि से भरा मोटा

बिल्लूना, हाथी के हँदे के नीचे कसा जाने वाला

गद्गद् ।

गद्गद् दे० (स्त्री०) बिल्लूना, मोटा बिल्लूना, सिंहासन,

राजगद्गद् के बैठने का स्थान, अधिकारी का पद,

किसी राजा या आचार्य की शिष्य परम्परा । —

नशीन (वि०) सिंहासनासीन, गद्गद् पर बैठने

वाला, उपराधिकारी ।

गद्गद् तद् (गु०) छन्द रहित वाक्य, प्रबन्ध । —गम्क

तद् (वि०) राय का, गद्यमय, गद्य सम्बन्धी ।

गद्गद् दे० (गु०) गद्गद्, गद्गद्, खर ।



गन तद् ( पु० ) गण, समूह, यूथ, सजीवों का समूह ।  
गमई तद् ( स्त्री० ) गिनता है, गिनती करता है ।  
गनगौर ( स्त्री० ) चैत्रसुदी ३ जिस दिन गजगौरी का  
पूजन होता है । [ का ग्रह योग देखना ।

गनना तद् ( स्त्री० ) गणना, गिनती, विवाह में वरवधू  
गनी ( वि० ) धनवान, शत्रु ।—मत बड़ी धान, धन्यवाद  
देने योग्य बात, मुफ़ का माल ।

गन्तव्य तत् ( पु० ) गमन योग्य, सुगम, जाने का  
स्थान, गमनरतील ।

गन्धना दे० ( पु० ) रुन्द मूल विशेष, लहसुन की गाँठ  
में जौ डाल कर घेने से पैदा होने वाली घास  
विशेष ।

गन्दा दे० ( वि० ) मैला, घिनौना, अशुद्ध ।

गन्ध तत् ( पु० ) नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों  
की वास, महक, अमोद, सौरभ, घ्राण, सम्यन्ध,  
प्रणय ।—गंभ ( पु० ) वेतवृक्ष ।—द्रव्य ( पु० )  
सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य ।—द्विप ( पु० )  
उत्तम हस्ति ।—पुष्प ( पु० ) चन्दन और फूल ।—  
प्रिय ( पु० ) प्राणलुब्ध, गन्धप्राही ।—घणिक  
( पु० ) वर्षसङ्कर, जाति विशेष, अक्षर ।—मादन  
पर्वन विशेष, वानर सेनापति ।—राज ( पु० )  
चन्दन, सुगन्धित फूल ।—वह ( पु० ) धातु, पवन ।  
—घाह ( पु० ) पवन, कस्तुरिया हरिन, नाक,  
नासिका ।—सार ( पु० ) चन्दन, श्रीखण्ड ।

गन्धर्व तत् ( पु० ) स्वर्गांगयक, यक्ष, देवयोगि-विशेष,  
घोड़ा, कस्तूरीमृग, एक गायक जाति की कथाएँ ।  
—विद्या ( स्त्री० ) गीत, वाद्य, नृत्य ।—विवाह  
( पु० ) अष्टविवाह का एक भेद, उत्सवहीन विवाह ।  
—वेद ( पु० ) सङ्गीत-विद्या, गीतशास्त्र ।—नगर  
( पु० ) अलका, गन्धर्वों का वासस्थान, असत्यनगर,  
मिथ्या नगर, कल्पित नगर । ( स्त्री० ) गन्धर्वी ।

गन्धक तद् ( स्त्री० ) एक खनिज पदार्थ ।

गन्धान तद् ( पु० ) सुवर्ण सेना ।

गन्धाना दे० ( कि० ) बसाना, गन्ध देना, मँहकना ।

गन्धाश्रमा तत् ( पु० ) गन्धक, वंषधातु विशेष ।

गन्धार तद् ( पु० ) स्वरो में रागिनी विशेष, देश  
विशेष, कन्धार, तीसरा स्वर, गान्धार ।

गन्धारी तद् ( स्त्री० ) देशो गान्धारी, पार्वती की

एक सखी का नाम, जवासा, गाँजा, चापू नेत्र से  
निकलने वाला श्वास । यथा—

गन्धारी वामघ्र निवासी,  
हयजिह्वा दक्षिण दिग्वासी ”

—ज्ञानतरङ्ग

गन्धि तत् ( स्त्री० ) गन्ध, वास, गन्धक ।

गन्धिका-तत् ( स्त्री० ) आहुवेर, गन्धक । [ लाजवन्ती ।

गन्धकारिणी तत् ( स्त्री० ) लज्जारू, औषधि विशेष,

गन्धिपर्ण तत् ( पु० ) वृक्ष विशेष, जिसके पत्तों में  
गन्ध हो, छतिवन वृक्ष । [ लोलुप ।

गन्धिलुब्ध तत् ( पु० ) सुगन्धामिच्छापी, सुगन्ध-

गन्धी दे० ( पु० ) सुगन्धि वस्तुविक्रेता, अक्षर बेचने  
वाली जाति, एक घास, एक कीड़ा ।

गन्धीजा तद् ( वि० ) मैला, गँदला ।

गन्ध तद् ( पु० ) गिनने के योग्य, गण्य, गिनती में,  
गिनती करने लायक ।

गप दे० ( पु० ) गपराप, हथर उधर की बातें, निरर्थक  
बातें, झूठी बातें, गपेड़ा, कहानी । [ निगल जाना ।

गपकना दे० ( कि० ) खा जाना, क्षीयता से खा जाना,

गपड़ दे० ( पु० ) मिलावट, व्यर्थ, निरर्थक ।—चौथ  
( वां० ) अज्ञात, अनिश्चित, अनियमित ।

गपराप दे० ( वा० ) झूठी सखी बात, मनोरञ्जन की बात ।

गपेड़ ( वि० ) गप्पी, डोंग हाँकनेवाला ।

गपेड़ा ( पु० ) मिथ्या कथन, गपराप ।—घाजी ( स्त्री० )  
निरर्थक बकवाद ।

गप्प दे० ( स्त्री० ) कहानी, उपकथा, झूठी बातें ।

गप्पी दे० ( पु० ) बकवादी, असत्यवादी, बातुल, अवि-  
श्वसनीय वक्ता ।

गप्फा ( पु० ) बड़ा प्राप्त, लाभ ।

गफ्लत ( स्त्री० ) मूल, असावधानी, प्रमाद ।

गवन ( पु० ) ख्यात, धरोहर हड़पना ।

गवरगण्ड ( वि० ) जड़, मूर्ख, अनारी । [ पति, दूसरा ।

गवरू दे० ( वि० ) जवान, युवा, पट्टा, सीधा ( पु० )

गवरून दे० ( वि० ) वस्त्र विशेष, द्वीन ।

गवाशन दे० ( पु० ) चर्मकार, चण्डाल, म्लेच्छ ।

गमस्ति तत् ( पु० ) किरन, रश्मि, प्रकाश, सूर्य, बाँह,  
हाथ । ( स्त्री० ) स्वाहा, अग्नि की स्त्री ।—मत्

( पु० ) सूर्य, पाताल विशेष, तलातल ।

गभीर तत् ( गु० ) गहरा, गम्भीर, अग्राह, अगाध, सुक्ष्म ।—ता ( स्त्री० ) अगाधता, नीचे की ओर का परिमाण ।—त्य ( पु० ) गम्भीरता, निम्नता ।

गभुआरे दे० ( गु० ) गर्भ शिथु, बालकों के जन्म के बाल, कुंगुलिया बाल, कुम्पेदार बाल, कुँहले केश, घूँघरवाले बाल । [ ( गम ) रंभ, दुःख ।

गम तत् ( पु० ) [ गम् + अल ] सहवास, रास्ता, गमक दे० ( पु० ) तथेते या मृदङ्ग की गंभीर ध्वनि, राग का स्वर विशेष, आनेवाला, सूचक ।

गमकीला दे० ( पु० ) गम्पयान, सुगन्धित, सुवास, गमकदार महकने वाला । [ सहनशीलता ।

गमखोर ( वि० ) सहिष्णु, सहनशील ।— ( स्त्री० )

गमत ( वि० ) ( पु० ) मार्ग, रास्ता, व्यवसाय ।

गमन तत् ( पु० ) [ गम् + अमन्ट ] प्रयाण, यात्रा, जामा, चलन, चाल, गति, मित्राई, विसर्जन, प्रस्थान, धूमना, भ्रमण, सम्भोग, मैथुन ।—

गमन ( पु० ) आना जाना, यातायात ।

गमना दे० ( कि० ) जाना, चलना ।

गमला दे० ( पु० ) मही का एक बरतन जिसमें छोटे पेड़ लगाये जाते हैं, ( कमीठ ) अग्रश ।

गमाना ( कि० ) खोना ।

गमार दे० ( पु० ) गंवार, देहाती ।

गमी तत् ( गु० ) [ गम् + ईन् ] गमनकर्ता, जाने वाला, चलनेवाला ।

गमी दे० ( स्त्री० ) सेग, भरनी, मृद्यु ।

गम्भीरी तत् ( स्त्री० ) वृक्ष विशेष, गम्भीर का वृक्ष ।

गम्भीर तत् ( गु० ) गभीर, अगाध, अतलस्पर्श, अग्राह ।—ता ( स्त्री० ) गम्भीर्य, गभीरता ।

—वेदी ( पु० ) [ गम्भीर + विद् + णिन् ] मत्त हस्ति, बुद्धमनीय हाथी, हस्ति विशेष, जो हस्तिषक की शिक्षा न माने ।

गम्मत दे० ( स्त्री० ) विनाद, मौज, बहार, हँसी, दिखलगी ।

गम्य तत् ( गु० ) [ गम् + य ] प्राप्य, गमन करने योग्य, जाने योग्य शक्य, योग्य साध्य, प्रवेश में योग्य ।—मान ( गु० ) अति क्रान्त, गमन क्रिया का वर्तमान आश्रय ।—गम्य ( गु० ) साध्या-साध्य, मुदुकठोर, स्वरूप कठिन, कर्तव्याकर्तव्य ।

गय तत् ( पु० ) घर, आकाश, घन, प्राण, पुत्र, हाथी ।  
“ हय गय वसह ईस मृग जावत ”

सूरदास

( १ ) धर्मपरायण सत्कर्मी एक राजा का नाम, ये अमरतराय के पुत्र थे, इन्होंने १०० वर्ष तक यज्ञ का अन्न खाया था, अग्नि के घर से वेद पाठ का अधिकार इन्हें प्राप्त हुआ था, शत्रुनाश पूर्वक इन्होंने अपना राज्य विस्तार किया था । ये प्रति दिन एक लाख साठ हजार गौ, दस हजार घोड़े और एक लाख निरुक्त ( मुद्रा विशेष ) दान करते थे । इन्होंने एक यज्ञ किया था, जिस की वेदी की लम्बाई ३२ योजन थी, वह वेदी सोने की बनी थी ।

( २ ) एक असुर का नाम इसी असुर के नाम पर हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ गया स्थापित हुआ है । यह असुर होने पर भी विष्णु भक्त था, विष्णु की प्रसन्नता के लिये कोलाहल पर्वत पर इसने कठोर तपस्या की थी, इसके दर्शन मात्र से पापों के छूटने और स्वर्ग जाने का घर विष्णु ने इसको दिया था ।

( ३ ) श्रीराम की वानरी सेना का एक सेनापति वानर ।

गयल ( स्त्री० ) रास्ता, पथ, गली, बीची ।

गयन्त्र तत् ( पु० ) गजेन्द्र, प्रधान हस्ति, बड़ा हाथी ।

गया तत् ( स्त्री० ) [ गय + आ ] गय नामक राजा की पुत्री, तीर्थ विशेष ।—वाल ( पु० ) गया के वासी; गया के पण्डा ।—सुर ( पु० ) असुर विशेष ।

ग्यारस तत् ( स्त्री० ) द्वादशविशेष, एकादशी, एकादशी तिथि ।

ग्यारह तत् ( पु० ) संख्या विशेष, दश और एक, एकादश, ११ ।—वा ( वि० ) ग्यारहवीं संख्या का, ग्यारह स्थान का ।

गर तत् ( पु० ) [ गर + खल ] एकादश करणों में का एक करण. रोग, विष, हलाहल, गरल, घास-नाम नामक विष का भेद, ( तद् ) गला, कण्ड ।

—ग्र ( गु० ) [ गर + हन् + टक् ] विषम, रोग-नाशक ।—द् ( गु० ) विषदाता ।

गरई दे० ( कि० ) गल जाता है, सड़ता है, विनष्ट होता है, भग्न होता है ।

गरगराता दे० ( कि० ) गर्जना, कोलाहल करना, जोर से बोलना ।  
 गरज ( गरजू ) दे० ( पु० ) प्रयोजन, आशय, कार्य ( तत्० ) चिंघाड़, गर्ज, घोरनाद, भयानक शब्द ।  
 गरज या गरजी ( वि० ) इच्छुक, मतलबी, प्रयोजन, आशय, आवश्यकता ।—मंद ( वि० ) इच्छुक, आवश्यकता रखनेवाला । [ या सिंह का नाद ।  
 गरजना दे० ( कि० ) घड़घड़ाना, भयानक ध्वनि, मेघ गरद ( गर्द ) दे० ( स्त्री० ) रज, धूर, गरदा ( गु० ) विप देने वाला ।  
 गरदन दे० ( पु० ) गला, कण्ठ, ग्रीवा ।  
 गरदनियां दे० ( स्त्री० ) घर्मपन्ध, किसी को किसी स्थान से गरदन पकड़ कर निकालना ।  
 गरदा दे० ( स्त्री० ) गरद, रज, धूर, धूलि ।  
 गरव ( पु० ) घमंड, अभिमान ।  
 गरवीला दे० ( वि० ) घमंडी, अभिमानी ।  
 गरभ तद् ( पु० ) गर्भ, कुक्षि, पेट, उदर, अन्तर, भीतर, अहङ्कार, अभिमान ।  
 गरम दे० ( गु० ) उष्ण, तप्त, सन्तप्त, क्रुद्ध, क्रोध, कोप ।  
 गरामई या गरमी दे० ( स्त्री ) उष्णता, ताप, एक रोग विशेष ।  
 गरज तत् ( पु० ) [ गर + ल ] विप, सर्प विप, घात का पूला ।—रि ( गु० ) मरकत मणि, पद्मा ।  
 गरवा दे० ( गु० ) भारी, बोझदार, धीर, प्रतिष्ठित ।—पन ( पु० ) बोझाई, मान्यता ।  
 गरगरी दे० ( स्त्री० ) देवदात्री, देवदारुवृक्ष, देवताद ।  
 गरारी, गराड़ी दे० ( स्त्री० ) रस्सी बटने का यन्त्र, चर्खा, टक्का, कुपूँ से जख निकालने के लिये काष्ठ-निर्मित गोलाकार धातु विशेष, गिरां ।  
 गरिमा तत् ( स्त्री० ) गुरुता, बड़ाई, दम, अहङ्कार, योगी की श्राद्ध प्रकार की सिद्धियों में की एक सिद्धि ।—ग्वित ( गु० ) शम्भिक, अभिमानी ।  
 गरियाना ( कि० ) गाली देना, अपशब्द कहना ।  
 गरिष्ठ तत् ( गु० ) [ गुरु + इष्ठ ] अतिगुरु, भारी, गरवा, अतिप्रतिष्ठायुक्त, अतिशय माननीय । [ गोला ।  
 गरी दे० ( स्त्री० ) नारियल के भीतर का अंश, खोपरा, गरीव दे० ( वि० ) दीन, हीन ।—नेवांज निवाज, निवाज ( वि० ) दीनों पर दया करने वाले ।—

परवर ( वि० ) दीन प्रतिपालक ।—मऊ ( वि० ) भला धुरा, गरीब के योग्य ।  
 गरीयान् तत् ( गु० ) [ गुरु + इयस् ] अतिगुरु, गरिष्ठ, ( स्त्री० ) गरीयसी ।  
 गरुग्र दे० ( गु० ) भारी, बोझा, बोझैला, बोझवाला ।  
 गरुग्राई दे० ( स्त्री० ) भारीपन ।  
 गरुड़ तत् ( पु० ) पक्षिराज, गरुमान्, बैनतेय, विष्णु का वाहन पक्षी, प्रजापति ऋषि करयार के औरस और विनता के गर्भ से इनका जन्म हुआ था । इनके ज्येष्ठ भ्राता अरुण सूर्य के सारथी का काम करते हैं । गरुड़ ने स्वर्ग से अमृत लाकर अपनी माता का दास्य बुझाया था । एक बार उमुचित गरुड़ ने अपने पिता से भोजन के लिये कहा, एक ताबाय में लाइते हुए गरु ग्र और कच्छप को खाने के लिये पिता ने प्रेरणा की, ये गरु कच्छप पहले विभावसु और सुप्रतिष्ठ नामक सहोदर तपस्वी थे, परस्पर के शाप से इस योनि में आये थे, गरुड़ ने अपने बंगुल में उन्हें पकड़ लिया, और एक वरगद के पेड़ पर खाने की इच्छा से बैठे, उनके बैठते ही, उस पेड़ की डाल टूट गयी, गरुड़ चिन्तित हुए क्योंकि वही डाल में समाधिनिर्गत बालखिल्य ऋषि थे, अतएव गरुड़ उस वृक्ष शाखा को छोड़ अपने पिता के पास कर्तव्य स्थिर करने के लिये गये । पिता के अनुमोद से बालखिल्य वहाँ से दूसरी जगह गये, गरुड़ भी एक पर्वत पर जाकर सुख पूर्वक भोजन करने लगे ।—महा भा० आदि प० । ]—खज ( पु० ) विष्णु, नारायण ।—प्रज ( पु० ) अरुण, सूर्य सारथि ।—सन ( पु० ) गरुड़ पर का आसन, विष्णु । [ गरुड़ ।  
 गरुत् तत् ( पु० ) पक्ष, पंख, पर ।—मान् ( पु० ) गरुता तद् ( स्त्री० ) भारीपन, गुरुता, गौरव, बड़ाई ।  
 गरुव ( वि० ) भारी, गुरु, बोझिल ।  
 गरुवाई दे० ( स्त्री० ) भारीपन, गरुग्राई ।  
 गरुर ( पु० ) घमंड, अभिमान, गर्व ।—नी ( वि० ) घमंडी ।  
 गर्ग तत् ( पु० ) सुनि विशेष, ब्रह्मा के पुत्र, विख्यात ज्योतिर्वेत्ता ऋषि थे यदुवंशियों के कुल पुरोहित थे, गर्ग संहिता तथा ज्योतिष के और कई ग्रन्थ

इनके बनाये हैं ; इनके पुत्र का गार्ग्य और कन्या का गार्गी नाम था । बैल, गगोरी, बिच्छू, केचुआ ।

गर्गज दे० ( पु० ) गुमट, शिखर ।

गर्गया ( दे० ) पक्ष विशेष, गौरैया ।

गर्गरी दे० ( स्त्री० ) माठा, दहेड़ी, गतारी, मधानी ।

गर्ज तत्० ( पु० ) [ गर्ज + प्रल ] शब्दध्वनि, नाद, रव ।

गर्जन तत्० ( पु० ) [ गर्ज + जनट् ] शब्द नाद, ठरकट ध्वनि, मस्तर कोप, युद्ध, मेघनाद, सिंहानाद, संप्रध्वनि मुद्द धीर की ध्वनि ।

गर्जना ( कि० ) नाद करना, दहाड़ना ।

गर्जित तत्० ( पु० ) [ गर्ज + क्त ] मेघ शब्द, कुल शब्द, मत्त हरित ।

गर्त तत्० ( पु० ) गड़हा, भूमिरन्ध्र, विवर, घर, रप, जलाशय, एक नरक का नाम, देश विशेष, प्रिगर्त यह देश शतद्रु नदी के पूर्व की ओर था । प्राजकल के पटियाला के उत्तर है, इसे प्राज शतलज के नाम से पुकारते हैं ।

गर्द ( स्त्री० ) धूल, लाक ।—खोर ( वि० ) धूल पड़ने पर भी जो खराब सा न जान पड़े ।

गर्दन ( स्त्री० ) गरदन, गला ।

गर्दम तत्० ( पु० ) पशु विशेष, रासम, खर, गदहा, गधा ।—गी ( स्त्री० ) गधी, जुद्धरोग विशेष, एक क्रीड़ा, सफेद कंद कर्म, अपराजिता खता ।

गर्द तत्० ( पु० ) [ गर्द + प्रल ] लिप्ता, रूढ़ा, पल्ला, पाकर ।

गर्म तत्० ( पु० ) भ्रूण, अन्तर्गर्भ, शिशुकुवि, मध्य, अन्तर, च्दर, पेट ।—रुण्टक ( पु० ) पनसफल, कटहल ।—काल ( पु० ) गर्भ धारण के लिए बबयुक्त समय, भ्रतुकाल ।—गृह ( पु० ) सूतिका गृह, सौर ।—घातिनी ( स्त्री० ) जाह्नलिका वृक्ष, गर्भनाश कारिणी स्त्री । च्युत ( पु० ) गर्भ में पतित, भ्रष्ट गर्भ से उत्पन्न ।—ज ( पु० ) गर्भजात, क्षेत्रज पुत्र विशेष ।—दास ( पु० ) दासी पुत्र, जन्म से ही दास, गर्भ में से ही पराधीन ।—धारिणी ( स्त्री० ) जननी, माता, गर्भवती ।—पात ( पु० ) गर्भनाश, पेट गिरना ।—घती ( स्त्री० ) गर्भधारिणी, गर्विणी, ससत्वा, अन्तर परसहिता, गाम्भिन, दुर्जीवा ।—घाव ( पु० )

गर्भपात, गर्भ गिरना ।—गार तत्० ( पु० ) गृह के मध्य का स्थान, वासगृह, सूतिकागृह, प्रसवगृह ।—गङ्ग ( पु० ) नाटक का शङ्ख विशेष ।—धान ( पु० ) गर्भ धारण करने के लिये संस्कार विशेष, प्रथम संस्कार, निषेक क्रिया ।—शय ( पु० ) जरायु ।—ष्टम ( पु० ) गर्भ होने से आठवां मास या आठवां वर्ष ।

गर्भिणी तत्० ( स्त्री० ) [ गर्भ + इन् + ई ] गर्भवती, गर्विणी, द्विजीवा, दुपस्था ।

गर्भित तत्० ( पु० ) [ गर्भ + क्त ] गर्भस्थित, उद्गम्यस्थ, पूर्ण, भरा हुआ, काव्य का एक दोष ।

गर्ग दे० ( वि० ) लाल के रङ्ग का, सहैलखण्ड की एक नदी ।

गर्व तत्० ( पु० ) [ गर्व + प्रल ] दर्प, अहङ्कार, अभिमान ।—जनक ( पु० ) अहङ्कार जनक, दर्पान्वित ।—निवत ( पु० ) अहङ्कारी, दर्पी दम्भी ।

गर्वित तत्० ( पु० ) [ गर्व + इतच् ] गर्वयुक्त, दर्पी, अहङ्कृत, जातगर्व, गरुडी ।—( स्त्री० ) नायिका जिसे अपने रूप, गुण अथवा प्रेम का धमंड हो ।

गर्वित ( वि० ) अभिमानी, धमंडी ।

गर्वी तत्० ( पु० ) [ गर्व + ईन ] अहंकारी, धमंडी ।

गर्वीजा तत्० ( वि० ) धमंडी, अहङ्कारी ।

गर्हण तत्० ( पु० ) [ गर्ह + जनट् ] कुसम, निन्दन, दोष देना, निन्दा करना ।

गर्हणीय तत्० ( पु० ) [ गर्ह + अनीय ] निन्दनीय, तिरस्करणीय, दुषणीय, दुष्य, निन्दा करने योग्य, बुरा, अपवाद के योग्य । [ निन्दा, दुर्वचन, बुराई, ।

गर्हा तत्० ( स्त्री० ) [ गर्ह + इ ] तिरस्कार, अपवाद, गर्हित तत्० ( पु० ) [ गर्ह + इतच् ] निन्दित, तिरस्कृत, प्राप्तगर्हा, जुगुप्सित ।

गर्हा तत्० ( पु० ) [ गर्ह + य ] अधम, नीच, निन्दनीय, निन्ध ।—घादी ( पु० ) निरुपेक्षा, अपराधी, दुर्वचन वक्ता ।—वृत्ति ( स्त्री० ) अधम जीवन, निन्दित जीविका ।

गल दे० ( पु० ) गला, कण्ठ, राज, गङ्गाङ्ग मछली, प्राचीन वाजा विशेष ( पंजाबी भाषा में यात—यह कैसी गल है ) ।—वर्धिया ( चा० ) परस्पर

कन्धे पर हाथ रख कर चलना, प्रणय का मुद्रा  
विशेष, परस्पर गले में बाह डालना ।  
गलका दे० ( पु० ) कोड़ा, रोग विशेष ।  
गलगण्ड तद्० ( पु० ) गण्डमाला, कण्ठमाला, गले  
में अतिरिक्त मांस लटकना ।  
गलगान दे० ( पु० ) चकोतरा, पच्ची विशेष ।  
गलगजा दे० ( वि० ) भीगा हुआ, तर ।  
गलगुच्छा दे० ( पु० ) गलगुच्छा, गालों तक मोड़ ।  
गलग्रह तद्० ( पु० ) अनन्याय तिथि विशेष, स्वासा-  
बरोध, कंठरोध, आपत्ति जो कठिनाई से टले,  
मछली का कांटा ।  
गलगज्जुड़ा दे० ( पु० ) गलासटी, गले का हार, वह  
जो कभी पिंड न छोड़े, गले में लटकती हुई पट्टी  
जिसमें खुटोला या घायल हाथ रखा जाता है ।  
गलगडा ( पु० ) अहान, डाक, पुकार, गुहार ।  
गलतंस ( स्त्री० ) वह व्यक्ति अथवा इसकी सम्पत्ति,  
जिसे कोई सन्तान न हो ।  
गलत दे० ( वि० ) भ्रष्ट, असत्य । — १ भ्रष्ट, भूल ।  
गलतनी दे० ( स्त्री० ) गलबन्धन, गले का बधना ।  
गलना दे० ( क्रि० ) पिघलना, नरम होना, घुलना, घुल  
जाना, जीर्ण होना, दुबला होना, बेकाम होना,  
पुराना होना, नष्ट होना ।  
गलन्दा ( पु० ) कटुभापी, मुलार, दुर्मुख । [अपनी प्रशंसा ।  
गलफटाकी दे० ( स्त्री० ) बड़ाई, घमण्ड, अपने मुँह  
गलफड़ा दे० ( पु० ) कपोल, गाल, जपड़ा, गालों पर  
का मांस ।  
गलफांसी दे० ( स्त्री० ) गले की फांसी, जंजाब ।  
गलवाह दे० ( स्त्री० ) गोदी, आलिङ्गन ।  
गलमङ्ग दे० ( पु० ) स्वरमङ्ग, बैठा हुआ कण्ठ ।  
गलसुआ दे० ( पु० ) एक रोग जिसमें गालों के नीचे  
के भाग में सूजन आ जाती है । [तकिया, वालिया ।  
गलसुई दे० ( स्त्री० ) तकिया, सिंहाना, छोटा  
गलस्तन तद्० ( पु० ) गलधन, बकरियों के गले के  
नीचे की घन जुमा दो छोटी पतली थैलियाँ ।  
गलस्तनी दे० ( स्त्री० ) बकरी, अजडा ।  
गलहँड दे० ( पु० ) गलगण्ड, घेवा, गलरोग ।  
गलहस्त दे० ( पु० ) गलग्रहण, गला घोटना, गला  
दधाना, गले में हाथ लगाकर निकाब देना ।

गलहरी दे० ( स्त्री० ) नाव के आगे का भाग ।  
गला दे० ( पु० ) गल, गर, कण्ठ, गरदन ।—पड़ना  
( वा० ) भारी शब्द होना, गला घनघनाना ।—  
फांसना ( वा० ) बद्धन करना, फांसी देना ।—  
वैठना ( वा० ) शब्द का भारी होना, गला पड़ना,  
एक प्रकार का रोग ।—घोटना ( व० ) गला दबा  
कर मार डालना, फांसी देना ।  
गलाना दे० ( पु० ) पिघलाना, द्रव करना, धुलाना ।  
गलाव दे० ( पु० ) पिघलना, बहाव, द्रव ।  
गलासी दे० ( पु० ) पशु बांधने की रस्ती, पगहा ।  
गलित तद्० ( गु० ) [ गल + इतच् ] पतित, भ्रष्ट,  
व्युत्, प्रवीभूत, सड़ियल ।—कुष्ठ ( पु० ) असाध्य  
कुष्ठ रोग, महा व्याधि ।  
गलियाना दे० ( क्रि० ) गाळी देना, घुरा कहना, अभि-  
शार देना, भोजन करने पर भोजन कराना, गले  
में हँसना । [गलियारी ।  
गलियारा दे० ( पु० ) छोटी गली, पेंडा, रथ्या । ( स्त्री० )  
गली दे० ( स्त्री० ) छोटा मार्ग ।—गली ( वा० ) एक  
गली से दूसरी गली में, गली गली में, प्रत्येक  
गली में, यथा—“गली गली उत्सव हो रहा है,  
वह गली गली भाग गया” ।  
गलीचा या गलैचा दे० ( पु० ) कालीन, मोटा बुना  
हुआ गुदगुदा बिड़ौन, रेंवेदार बिड़ौना ।  
गलीजू ( वि० ) मँकाकुचैवा ।  
गले दे० ( पु० ) गले में, गर में ।—पड़ना ( वा० )  
खुशामद, बिलैया दुपडवत्, मिथ्या प्रशंसा ।—  
पड़ी बजाये सिद्ध ( वा० ) अनिच्छा पूर्वक किसी  
काम को करना, अरुचि पूर्वक कर्म करण ।—फा  
हार होना ( वा० ) अतिशय मिय, अत्यन्त  
प्यार ।—लगाना आलिङ्गन, अङ्कवार ।  
गलेफ दे० ( स्त्री० ) दोहर, दुहरा ओढ़ने का चादरा ।  
गलौआ दे० ( पु० ) गाल, चन्दरी के गालों के चन्दर  
की थैली । [कहानी, आख्यायिका ।  
गल्प दे० ( स्त्री० ) उपन्यास, कल्पित कथा, उपकथा,  
गला दे० ( पु० ) आंटी, अन्न राशि, हारा ।  
गल्ला दे० ( पु० ) कुल्बी का काढ़ा । [प्रयोजन, औसर ।  
गवं दे० ( पु० ) घात, दाव, अपसार, मौका, गरज  
गवन दे० ( पु० ) गमन, चञ्चल, गति ।

गवना दे० ( पु० ) गौना, वधूवधेश, स्त्री का पति के घर द्वारा आना, द्विरागमन ।

गवनी या गवनी दे० ( स्त्री० ) गमन करने वाली, चलने वाली, गई, चली गयी । [समान पशु ।

गवय तत्० ( पु० ) जङ्गली पशु विशेष, गाय के गवर्नमेयट दे० ( स्त्री० ) राजकीय शासक मण्डली, शासन पद्धति, राज्य ।

गवनी दे० ( कि० ) गई, चली गयी ।

गवहिं दे० ( अ० ) गौं से, प्रयोजन से, अवसर से, मेरे से, मतलब से, चुपके से, ( कि० ) जाते हैं, गमन करते हैं ।

गवाक्ष तत्० ( पु० ) [ गव + अक्ष ] झरोखा, मोखा, खिड़की, एक धानर का नाम ।

गावना दे० ( कि० ) गान कराना ।

गावासा तत्० ( पु० ) गोमयक, कमाई आदि ।

गावाह दे० ( पु० ) साक्षी, साक्षी ।—( स्त्री० ) साक्षी का बयान, साक्ष्य ।

गावेधुका तत्० ( स्त्री० ) तृण, घान्य विशेष, गंगेरुषा ।

गावेपणा तत्० ( स्त्री० ) लोख, छान घीन, अन्वेषण ।

गावैया दे० ( पु० ) गायक, गाने वाला ।

गावैही दे० ( वि० ) ग्रामीण, देहाती, गाँव ।

गाव्य तत्० ( पु० ) गोमयग्रन्थी द्रव्य, दुग्ध, घी गोबर आदि । [कोस, चार मील ।

गाव्यूति तत्० ( स्त्री० ) दो हजार धनुष की दूरी, दो राश ( पु० ) वेदोशी, मूर्छा ।

गाव्रत ( पु० ) दौरा, अमण, धूमना ।

गासना दे० ( कि० ) जकड़ना, गठना, बाँधना, ठसना ।

गास्तान ( स्त्री० ) कुलटा स्त्री, व्यवहारिणी भारी ।

गास्सा दे० ( पु० ) प्राप्त, कौर । [कर, घर, घर कर ।

गह दे० ( पु० ) बेंद, हत्या, हथकड़ा, पकड़ो, पकड़

गहई दे० ( कि० ) स्वीकार करते हैं, धरते हैं, पकड़ते हैं, ग्रहण करते हैं । [(कि०) लपकना, लहकना ।

गहक दे० ( स्त्री० ) मत्तता, अमत्तता, अमल ।—ना

गहगह ( वि० ) गहरी, भारी, घोर ।

गहगह दे० ( पु० ) नगर का घानयु शब्द, सर्वत्र प्रसन्नता, यथा—“इस समय वहाँ गह गह हो रहा है”—

( वि० ) प्रफुल्लित । [बहुत प्रसन्न होना ।

गहगहाना दे० ( कि० ) बहकना, हिलोरना, उमगना

गहगह ( कि० वि० ) बड़े हँस के साथ ।

गहन तत्० ( पु० ) गहराई, थाढ़, कुल, दुःख, जल, ग्रहण, कटफू । ( वि० ) घना, दुर्भय, घन, कान, दुर्गम, गहरा ।

गहनकर दे० ( पु० ) मत्त होना उमगना, धानवित्त होना, पकड़ कर ।

गहना दे० ( कि० ) पकड़ लेना, ग्रहण करना । ( पु० ) मूषण, अलङ्कार, गिरवी, बन्धक, न्यास ।

( य० व० ) गहने ।

गहना दे० ( स्त्री० ) सन, पलास, काही पत्ती ।

गहवर नद० ( पु० ) सघन, शोकयुत, भरा हुआ कण्ड, दुर्गम, व्याकुल, येषुध, प्यानमन ।

गहरवार दे० ( पु० ) चरित्रों में एक जाति विशेष ।

गहरा दे० ( पु० ) गभीर, गम्भीर, अगाध ।

गहर दे० ( पु० ) गील, देर, बिलम्ब, अतिकाल, अरसा ।

गहजौत दे० ( पु० ) चरित्रों की एक जाति जो मेवाड़ में है ।

गहया दे० ( पु० ) चिमटा, सण्डासी, पकड़ने की वस्तु ।

गहवार दे० ( पु० ) चरित्र जाति का एक भेद, गहवार चरित्र, चरित्रों की जाति विशेष ।

गहवारा दे० ( पु० ) डोलन, हिण्डोबा, पालना ।

गहिरा ( वि० ) गम्भीर, अगाध ।—ई ( स्त्री० ) गम्भीरता, गहरापन ।

गहर तत्० ( पु० ) गत, गुहा, घन, कानन, खोह ।

गा दे० ( कि० ) गया, चला गया, जाना रदा गाओ ।

गाई दे० ( स्त्री० ) गौ, गाय, धेनु । [गाऊँ, गान कहूँ ।

गाऊँ दे० ( पु० ) गाँव, ग्राम, नगर, पुर, पुरवा, ( कि० ) गाछना ( कि० ) गुंथना, वितोना ।

गाँजना दे० ( कि० ) पूजी करना, बिलोडना, राशि

करना, एकत्रित करना, घटोरना ।

गाँजा दे० ( पु० ) अन्न की पत्ती, गाँका, सन, भण्ड, सत्रजी, मादक तृण विशेष ।

गाँका दे० ( पु० ) गाँजा देखो ।

गॉट दे० ( पु० ) सन्धि, आँड़, बन्ध, गिरह, गिल्टी, मोटरी ।—उलझना ( वा० ) जोड़ पुल जाना,

हड्डी या नस का बिचटना ।—का पूरा ( वा० )

घनी, घनवन्त घनशाली ।—का खोना ( वा० )

अपनी हानि करना ।—खोलना ( वा० ) गुंथ

करना ।—गठोला (वा०) हटा कटा, खूब बल-  
वान् धार कठोर ब्रह्म वाला मनुष्य ।—पड़ना  
(वा०) किसी के साथ विरोध होना, मनोमालिन्य  
घड़ना । [प्रभुत्व जमाना, अधिकार करना ।

गाठना दे० (क्रि०) बांधना, वश में करना, अपना  
गाड़ (स्त्री०) गुदा, अपान ।— गुदा मैथुन  
करानेवाला ।

गांडर दे० (गु०) गहरा, गहरे का ।

गांडर दे० (पु०) कास, वृण विशेष, सासों का साग ।

गांडा दे० (पु०) ईंख, ईंख, ऊख, गन्ना । [मीत उठाना ।

गांधना दे० (क्रि०) गूथना, घनाना, श्रेणिबद्ध करना,

गांध दे० (पु०) वस्ती, पुरवा, नगर, ग्राम ।

गांस्तना दे० (क्रि०) वरमाना, छिद्र बन्द करना,  
पिरोना, गूँथना । [तीक्ष्णता ।

गांसी दे० (स्त्री०) शखों के आगे का भाग, धीर,

गागर दे० (स्त्री०) घड़ा, गगरी, कलस, कलसी, घट ।

गाङ्गेय तत्त्वं (पु०) गङ्गापुत्र, कार्तिकेय, भीम पितामह,  
सुवर्ण । [बाल मित्र ।

गाङ्ग दे० (पु०) घृच, पेड़, रूख, तरु ।—मिर्च (पु०)

गाज दे० (पु०) गर्जन, शोर, क्काग, केन, विद्युत्,  
विजली । [होना, गरजना ।

गाजना दे० (क्रि०) गर्जना, सिंहनाद करना, हर्षित

गाजर दे० (पु०) गजरा, गज्जन, मूल विशेष, इसका  
खाना धर्मशास्त्र से निन्दित है ।

गाजाबाजा दे० (पु०) बहुविध वाद्य, अनेक शब्द,  
सर्वाङ्ग पूर्ण उत्सव ।

गाड़ दे० (पु०) गड़हा, गढ़ा ।—तोप (स्त्री०) मिट्टी  
देना, कथुर करना, अश्लील या निन्दित बात को  
छिपाना, गाड़ कर छिपाना ।

गाड़ना दे० (क्रि०) तोपना, मिट्टी देना, छिपाना ।

गाड़र दे० (पु०) मेड़, मेप, भेड़ी, सरसों ।

गाड़र तद् (पु०) गारुड़, सर्प का विष फाड़ने का  
मन्त्र, (पु०) सर्प का विष उतारने वाला ।

गाड़हीं दे० (क्रि०) गाड़ते हैं, गढ़े में दबाते हैं ।

गाड़ा दे० (पु०) खाई, दाँव, गाड़ी, छोटी गाड़ी,  
गढ़ा, टोटका का गढ़न्त ।

गाड़ी दे० (स्त्री०) शकट, रथ, इरकड़ा, छुकड़ा ।

गाड़ीवान दे० (पु०) सारथी, यद्बलवान्, रथवाह ।

गाढ़ तत्त्वं (पु०) घन, तरल नहीं, गाढ़ा, भयन्त दृढ़,  
कष्ट, थापद, वेदना, विपत्ति, कठिनाई, अञ्जाल,  
कंकट ।—ता (स्त्री०) घनता, गाढ़ापन ।

गाढ़ा दे० (गु०) जो पतला न हो, कठिन, दृढ़, पाँक  
के समान, मोटा, पोढ़ा, घना, घख विशेष ।

गाढ़ालिङ्गन तत्त्वं (पु०) आलिङ्गन, भक्त्वार, भेंट ।

गाणपत्य तत्त्वं (पु०) गणेश के उपासक, गणेश के  
भक्त स्मार्त, उपासना का एक भेद । [दल, पत्तुरिया ।

गागिका तत्त्वं (पु०) गणिकासमूह, वैश्याओं का

गाण्डीव तत्त्वं (पु०) अर्जुन के धनुष का नाम, यह  
धनुष अर्जुन को यमि की प्रसन्नता से मिला था,

चाप, कार्मुक ।—घर (पु०) अर्जुन, तीसरा

गाण्डव ।—? (पु०) अर्जुन, गाण्डीव नामक  
धनुष का धरण करनेवाला । [बदन ।

गात तद् (स्त्री०) गाय, देह, तन, शरीर, तनु, अङ्ग,

गाता तत्त्वं (गु०) [ गै + तृण ] गायक, गानकर्त्ता,  
गान कारक ।

गाता दे० (पु०) पडा, पिठौता, जिल्द ।

गाती दे० (स्त्री०) चादर ओढ़ने की एक प्रक्रिय,  
जैसा साधु बांधा करते हैं, पेट्ट, ऊर्ध्वध ।

गातु दे० (पु०) गायक, गवैया, गानेवाला, कोकिल,  
भ्रमा, गन्धर्व, गान, पथिक, पृथिवी

गात्र तत्त्वं (पु०) काय, देह, शरीर, वपु, गात,  
अङ्ग ।—कण्डू (स्त्री०) शरीर की खुनलाहट ।

—वेदना (स्त्री०) शरीर की व्यथा, अङ्गपीड़ा ।—  
भङ्गी (पु०) शरीर की विकृति, विकार, अङ्ग की

वनावट ।—लेपनी (स्त्री०) शरीर में लगाने का  
सुगन्धित द्रव्यविशेष, उबटन ।—सवाहन (पु०)

शरीर दवाग, अङ्गों की पीड़ा निकालना ।

गायक तत्त्वं (गु०) [ गै + यक ] गायक, गानकारक  
गवैया, कथक ।

गायना तद् (क्रि०) ग्रन्थन करना, गूँथना, यनाना ।

गाथा तत्त्वं (स्त्री०) [ गै + या ] श्लोक, छन्द, गीत,  
पंवाग, कहानी, गीत, गान, पद्य, छंद ।

गाथें तद् (क्रि०) गुणें, पिरोये, इसका प्रयोग प्रजभाषा  
में किया जाता है और रामायण में भी ।

गाद दे० (पु०) तलछट, मेल, काईट । [ठासना ।

गादना दे० (क्रि०) दृढ़ करना, स्थिर करना, दधाना,

गादर दे० ( पु० ) राशि, थोक, ढेर, ढाल, ( वि० )  
 दरपोक, सुस्त । [ कचरी ।  
 गादा दे० ( पु० ) कचा थल, चना मटर का होराहा,  
 गादी दे० ( स्त्री० ) सिंहासन, राज्यासन, अधिकारासन,  
 गद्दी ।—पति ( पु० ) सम्प्रदाय का एक षड्पा  
 महन्त, संन्यासी ।

गादुर दे० ( पु० ) चमगीदह, चमगादुर ।  
 गाध तद्० ( पु० ) लिप्ता, स्पृहा, अभिलाषा, स्थान,  
 घाट, नदी का बहाव, फूल ।—तद्० ( स्त्री० )  
 गायत्री स्वरूपा महादेवी ।

गाधि तद्० ( पु० ) चन्द्रवंशीय कुशिक राजा के पुत्र,  
 प्रसिद्ध तपस्वी विद्यामित्र के पिता । महाराज  
 कुशिक की रानी पौरदुरती के गर्भ से देवराज  
 गाधिरूप से उत्पन्न हुए थे, गाधि की कन्या  
 सत्यवती का विवाह महर्षि भृगु के साथ हुआ  
 था । इसी सत्यवती के गर्भ से महर्षि जमदग्नि  
 उत्पन्न हुए थे ।—ज ( पु० ) विद्यामित्र मुनि ।  
 —तन्दन ( पु० ) विद्यामित्र मुनि ।—पुर ( पु० )  
 कान्यकुब्ज देग ।—सुवन ( पु० ) विद्यामित्र मुनि,  
 राजा गाधि के पुत्र । [ मुनि ।

गाधेय तद्० ( पु० ) [ गाधि + दक् ] विद्यामित्र  
 गान तद्० ( पु० ) [ गै + शिष्य + अन्ट ] गीत,  
 गाना, बखान, कीर्तन, ध्वनि, सङ्गीत ।

गाना दे० ( क्रि० ) आलापना, राग ।

गान्धर्व तद्० ( पु० ) गन्धर्व सम्प्रदायी ( पु० ) गान,  
 विवाह विरोध, स्त्री पुरुष की इच्छा के अनुसार  
 विवाह ।—विद्या ( स्त्री० ) सङ्गीतशास्त्र ।—  
 विवाह ( पु० ) केवल घर कन्या की इच्छा से  
 विवाह ।

गान्धार तद्० ( पु० ) सिन्दूर, स्त्रा विरोध, जम्बू द्वीप  
 का उत्तरीय भाग जिसकी प्रसिद्धि कान्धार के नाम  
 से है ।—राज ( पु० ) शकुनि, दुर्योधन के मामा ।

गान्धारी तद्० ( पु० ) [ गान्धार + ई ] जैनियों का  
 शासक देवता विरोध, यवासा, मादक द्रव्य विरोध,  
 राजा क्रोष्टु की पत्नी और अनमित्र की माता,  
 मृत्तिकावती नगरी में रहने वाले राजाओं को भोज  
 कहते हैं । इसी भोजवंशीय राजा क्रोष्टु की एक  
 पत्नी का नाम ।

( २ ) राजा छत्रगुप्त की रानी । गान्धार देश के राजा  
 सुवल की कन्या और दुर्योधन की माता । इनके  
 छोटे भाई का नाम शकुनि था । गान्धारी ने  
 तपस्या द्वारा एक सौ पुत्र प्राप्त करने का वर पाया  
 था, भीष्मपितामह ने छत्रगुप्त से गान्धारी का  
 विवाह कर देने के लिये राजा सुवल से अनुरोध  
 किया । सुवल ने इसे स्वीकृत किया, यह बात  
 गान्धारी को भी मालूम हुई । गान्धारी का भावी  
 पति छन्धा या अतएव उन्होंने भी अपनी आँखों  
 में पट्टी बांध ली, ये पतिव्रता थीं, इन्होंने श्रीकृष्ण  
 को शाय दिया था, जो सब निकला । जवासा,  
 गान्धा । [ अन्तरा, कीड़ा ।

गान्धिक तद्० ( पु० ) सुगन्ध द्रव्य व्यवहारी,  
 ग्राफित दे० ( गु० ) जापरवाह, अमनोयोगी, अलस,  
 जड़, अलसी ।

गाम दे० ( पु० ) गर्भ, पैर, डंडा ।

गामा दे० ( पु० ) नवीन पत्र, कोमल पत्र, केले की  
 नयी पत्तियाँ, रखाई से निकली पुरानी रुई, कचा  
 अनाज, हाथ की श्रमशक्तियों की संधि ।

गामिन, गामिनी दे० ( स्त्री० ) गर्भिणी, अन्तरा पत्न,  
 श्रुतिंगी, दुपस्ता ।

गाम तद्० ( पु० ) ग्राम, गाँव ।

गामिनि, गामिनो तद्० ( स्त्री० ) गमनकर्त्री, गमन  
 करनेवाली, जानेवाली, चलनेवाली ।

गामी तद्० ( पु० ) [ गम् + शिन् ] गमनशील, गमन  
 करने वाला, प्रस्थानकारी, चलन वाला, जानेवाला ।

गामुक तद्० ( पु० ) चलने वाला, गमनकर्ता । [ गुरुता ।

गाम्भीर्य तद्० ( पु० ) गम्भीरता, गभीरता, पीरता,

गाय दे० ( पु० ) गी, धेनु गेया, गऊ ।—गोठ तद्०  
 ( पु० ) गोशाला, गौओं के रहने का स्थान, गोष्ठ ।

—गोरु या गोरू ( पु० ) गैया, गोरू, गो समूह,  
 गौशाला, गो गोष्ठ ।

गायक तद्० ( पु० ) गवैया, गाने वाला ।

गायत्री तद्० ( स्त्री० ) वेदमाता, मन्त्रविशेष, छन्दो-  
 विशेष, दुर्गा, भगवती, छः अक्षर के पादवाला  
 छन्द, इसके तीन पाद होते हैं । वेदों में जितना है  
 कि संहस्यति ने एक समय गायत्री का सिर फोड़  
 दिया, परन्तु इससे गायत्री की शृङ्खला नहीं हुई,



किन्तु गायत्री के मन्त्रक त्रयपट्कार नामक देवता की उरचि हुई। यह त्रय त्रय रूपक समकृत हैं, गायत्री हिन्दू धर्म का चीजमन्त्र है। बृहस्पति या चार्वाक नास्तिक मत के प्रचारक थे, हिन्दू धर्म के नाश की इच्छा से बहुत चेष्टा की, परन्तु सफल नहीं हुए। पुराण में लिखा है कि गायत्री ब्रह्मा की स्त्री है। (पु०) खैर का पेड़। [गाने से जीने वाला।

गायन तत् ( पु० ) [ गी + गन् ] गायक, गानकारी, गायक (वि०) गुम, गुल, लापता।

गार दे० ( स्त्री० ) गाली, अभिशाप।

यथा—“जैसे बरनत युद्ध में, ज्यों विवाह में गार”  
—युद्धसत्सई।

गारत (वि०) मरियामेट, बरपाद। [का एक बत्ता।  
गारत (स्त्री०) सिपाहियों की एक टोली, सिपाहियों  
गारना दे० ( क्रि० ) निचाड़ना, दुहना, निशानना।  
गारा दे० ( पु० ) चहला, सानी हुई मिट्टी, हटे जोड़ने  
के लिये गिलावा।

गारि दे० (स्त्री०) देखो गारी। [भापा।

गारी दे० ( स्त्री० ) गाली, कुवाच्य, अपराध, अप-  
गारुड़ तत् ( पु० ) मरकतमणि, पद्मा, एक पुराण का  
नाम, गरुडपुराण, स्वर्ण, विषमन्त्र, विषवैद्य,  
कालधेलिया, सपेरा, सपह।

गारुड़ी तत् (स्त्री०) देखो गारुड़।

गारुमत (पु०) पद्मा, गरुड़ का अक्ष।

गार्हपत्याग्नि तत् ( पु० ) पञ्चीय अग्निविशेष, यज्ञ के  
त्रिविध अग्निमें से एक अग्नि। [गृहस्थ सम्बन्धी।

गार्हस्थ्य त० ( पु० ) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ का धर्म,  
गाल दे० (पु०) कपेळ, गण्डदेश, कपट, छल। -  
वज्राई (स्त्री०) बरुवाद का रं, बात घनाकर, व्यर्थ  
की बहुत सी बातें बकना, झूठजोरी।

गालव तत् ( पु० ) मुनि विशेष, गालव मुनि के पुत्र।

गाला दे० (पु०) रुई की फली, धुनी हुई रुई का मोटा।

गाली तत् ( स्त्री० ) अपमान बोधक शब्द, कुवाच्य।

—गलौज या गुसा (वा०) पुरी गाली।

गालू दे० (पु०) गाल, टेंट।

यथा—“एक संग नहीं होहि, सुथाळू।

इस्य उठाय फुलाव गालू” ॥

—रामायण।

गावधप्पू दे० (पु०) चापलुव, फुसलाऊ, स्वार्थी।

गावदी दे० ( पु० ) उजबक, मोला, मेगला, अज्ञान,  
जड़, मूर्ख, अनसमक।

गावदुम (पु०) चढ़ाव उतार, दलुवा। [हैं, गाते हैं।

गावहि दे० (क्रि०) गाता है, गान करता है, गान करते  
गाह तद् ( पु० ) ग्राह, कुभीर, मगर, नक, जलजन्तु  
विशेष. गहन, दुर्गम।

गाहक तद् (पु०) ग्राहक, खरीदार. फेता, कीनने-  
वाला, चाहनेवाला, लेनेवाला, खरीदार

गाहना दे० (क्रि०) हँड़ना, पकड़ना।

गाहा तद् ( स्त्री० ) गाथा, कथा, कहानी, ग्रन्थ  
करना, लेना। [टिह लगा कर।

गाहिगाहि दे० ( पु० ) हड़ हड़ कर, खोज खोज कर,

गाही दे० (स्त्री०) पाँच की संख्या, पाँच संख्या परिमित।

गिंजाई दे० (स्त्री०) कीट विशेष।

गिचपिच दे० (पु०) कचपच, सीढ़भाड़।

गिचपिचिया दे० ( पु० ) गिचपिच करनेवाला, सीढ़-  
भाड़ करने वाला।

गिटकारी दे० (स्त्री०) गिटगिट्टी, गिट्टी। [के टुकड़े।

गिटकरी दे० ( स्त्री० ) पथरी, पथरनिर्मित, पथर

गिटपिट दे० (स्त्री०) निरर्थक शब्द।

गिट्टी दे० (स्त्री०) पथर के छोटे छोटे टुकड़े, फिरकी।

गिटगिनाना दे० ( क्रि० ) अनुनय करना, विनती  
करना, विचिखाना।

गिनती दे० (स्त्री०) गणित, गनना, संख्या, हिसाब।

गिनना दे० (क्रि०) गणना करना, गिनती करना।

गिनी दे० ( स्त्री० ) गिनी, चका, निष्क।

गिद्ध तद् (पु०) गीध, गधुनि, पशुविशेष।

गिर तद् ( पु० ) पहाड़, शाङ्कर आम्नाय के दस  
प्रकार के गुसाइयों में से एक।—जा तद् (स्त्री०)

पावती।—धारी तत् ( प० ) श्रीकण्ठ।—चर  
तत् ( पु० ) पहाड़, बड़ा पहाड़।

गिरगिट दे० (पु०) शरट, कल्लास, गिरगिटान।

गिरत दे० (क्रि०) गिरते ही, गिरना है।

गिरना दे० (क्रि०) पड़ना, खसना, झड़ना।

गिरपड़ना दे० ( क्रि० ) हूँ पड़ना, झुक पड़ना,  
फिसल जाना, पतित होना। [परिश्रम से।

गिरते पड़ते दे० ( वा० ) बहुत कठिनता से, बहुत

गिरा तद् (स्त्री०) वचन, वाणी, वाक् । (दे०) गिर पड़ा, फिसल गया, खसा ।—ग्राम (पु०) ग्राम भाषा, गर्वार बोली, उजाड़ ग्राम नष्ट ग्राम ।

गिराना दे० (क्रि०) झोधाना, पटकना, झलकाना ।

गिरि तन् (पु०) पर्वत, पहाड़, भूधर, बचल, संन्यासियों की एक जाति ।—कदक (पु०) बज्र, अशनि ।—कदक (पु०) महा नींव, बहुत कड़ी ।—कदली (स्त्री०) कदली विशेष, पहाड़ी कैला ।—ज (पु०) शिलाजीत, पर्वत से उत्पन्न धातु ।—जा (स्त्री०) पार्वती, पर्वत से उत्पन्न पर्वत की कन्या, भवानी ।—ज्ञानन्द (पु०) गणेश, कार्तिकेय ।—धारो (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र, हनुमान् ।—न्दा (पु०) गिरिन्द्र, पर्वतराज, हिमालय, सुमेरु ।—नन्दिनी (स्त्री०) पार्वती, गिरजा, भवानी ।—नाथ (पु०) शिव, महादेव, भव, शङ्कर, हिमालय, पर्वतराज ।—राज (पु०) हिमालय, सुमेरु ।—घर (पु०) पर्वत श्रेष्ठ, सुमेरु, हिमालय, विन्ध्य ।—छट्ट (स्त्री०) गेद, वपधातु विशेष ।—साहूय (पु०) शिलाजीत ।

गिरिर (पु०) लकड़ा, लगड़वध ।

गिरिन्द्र तन् (पु०) गिरि इन्द्र, पर्वतराज, हिमालय गिरिश तन् (पु०) महादेव, शिव, कैलासपति हिमालय, सुमेरु । [जाता है ।

गिलई दे० (क्रि०) गिलज जाय, लीज जाये, लीज गिलटी दे० (स्त्री०) गीठ, ग्रन्थि, सूजन, फुलाव, फोड़ा । [भच्य ।

गिलन तन् (पु०) [ गृ + भवट् ] गिराय, खाना, गिलन या गेलन दे० (पु०) छः घण्टा का परिमाण । गिलहरा दे० (पु०) पान का डब्बा ।

गिलहरी दे० (स्त्री०) हली, चीखुर, एक प्रकार का जानवर, गिल्ली, चिसुरी ।

गिलाफ दे० (पु०) आच्छादन, ढांकन, रोल ।

गिलित तन् (पु०) [ गृ + क ] भुक्त, भचित, खादित । [झोला ।

गिलियर दे० (पु०) घालसी, थामकती, थिथिल, गिलोय दे० (स्त्री०) अमृता, अमृतजला, गुहूच, गुहूची ।

गिलौ दे० (स्त्री०) गिलोय, लता विशेष, गुहूच ।

गिलौरी दे० (स्त्री०) खीदी, खीली, पान की खीली ।

गिल्ली दे० (स्त्री०) मछई की छुड़ड़ी, गिलहरी, गिल्ली ।

गी तन् (स्त्री०) सरस्वती, वाणी, बोलने की शक्ति ।

गीज दे० (स्त्री०) सुसलमानों का भोजन विशेष ।

गीजना दे० (क्रि०) मलना, झोला देना, महन करना ।

गीत तन् (पु०) गान, ताल बाने के अनुसार गाना ।—वादन (पु०) गानकीर्तन ।—मोदी (पु०) [गीत + मुद् + हन्] किन्नर, स्वर्गागायक ।

गीता तन् (स्त्री०) गान, अष्टासम विद्या का ग्रन्थ, रामगीता, भगवद्गीता, गणेशगीता आदि ।

गीति तन् (स्त्री०) [ गी + क्ति ] गान, गीत, आर्या छन्द का एक भेद, यह मात्रावृत्त है ।

गीतिका तन् (पु०) एक मात्रिक छन्द विशेष, गीत, गाना ।

गीदड़ दे० (पु०) सियार, शृगाल, जम्बूक —भपकी (वा०) मन में डरते हुए भी ऊपर से दिलावटी क्रोध जतलाना ।

गीध दे० (पु०) गिद्ध, गृध्र, शकुनि, पक्षि विशेष ।

गीर्वाण तन् (पु०) [ गीर् + वाण ] देवता, देव, सुर, अमर ।—कुसुम (पु०) मन्दार पुष्प, लवङ्गपुष्प ।—नी (स्त्री०) संस्कृत भाषा, हिन्दुस्तान की प्राचीन भाषा, शास्त्रीय भाषा ।

गीला दे० (पु०) मीठा, आर्द्र, छोड़ा, तर ।

गीर्षति तन् (पु०) [ गी + पति ] बृहस्पति, देवगुरु, देवों के गुरु, विद्वान्, पण्डित ।

गु दे० (पु०) विद्या, मल ।

गुग्गालिन दे० (स्त्री०) गुग्गालि, गुग्गाल की स्त्री ।

गुह्यो दे० (स्त्री० पु०) सखी, सखा, साथी, सहचरी, सहचर ।

गुखरु दे० (पु०) गोखरु, गुग्गुलु ।

गुगुलिया दे० (पु०) मदारी ।

गुग्गुर दे० (पु०) गुग्गुलु । [द्रव्य विशेष ।

गुग्गुल तन् (पु०) गुग्गुल, गोद विशेष, गुग्गुलित

गुच्छा तद् (पु०) गुच्छरु, मत्तक, कम्पा, कम्पा ।

—गुच्छे (बहु०) मत्तक, कुदना ।

गुच्छेदार दे० (स्त्री०) कम्पेदार, गुच्छरुफ ।

गुजर या गुजर दे० (पु०) जाट, चहार, गोप, जाति विशेष, ग्वाला, निर्वाह ।

गुप्तार दे० ( पु० ) क्षिपना, लुकना, लुकाव ।—घाट ( पु० ) अयोध्याजी के एक घाट का नाम ।  
 गुप्ती दे० ( स्त्री० ) अस्त्र विशेष, एक प्रकार की छड़ी जिसमें छोटी तलवार क्षिपी रहती है ।  
 गुफना तब् ( पु० ) घुमाकर पत्थर फेंकने की एक प्रकार की गुल्लत, गोफन ।  
 गुफा दे० ( स्त्री० ) गुहा, सोह्रा, कन्दरा, यिल, गद्वर ।  
 —गुमाना दे० ( कि० ) चुमाना, गड़ाना, गाढ़ना, घीघना ।  
 गुप्पार ( पु० ) गरदा, धूल । [ उड़ाया जाता है ।  
 गुप्पारा ( पु० ) कागज़ का पैला, जो आकाश में घुम ( वि० ) गुप्त, क्षिपा हुआ ।  
 गुमटा दे० ( पु० ) बड़ा फौड़ा, प्रण, गुमड़ा, कपास को नष्ट करने वाला एक कीड़ा ।  
 गुमटी दे० ( स्त्री० ) गुग्गुलु, लाट, कलस, शिखर, छोटी कोठरी, अस्त्र विशेष, यह मिथिला में बनता है, तथा अत्यन्त सम्मान सूचक सम्झा जाता है, प्रायः राजा की और से यह पण्डितों को दिया जाता है ।  
 गुमड़ी ( स्त्री० ) छोटी कुदिया ।  
 गुमसना दे० ( कि० ) दुर्गन्ध होना, सड़ना ।  
 गुमसा दे० ( पु० ) सड़ा, गड़ा ।—हट दे० ( पु० ) सड़ाहट, पचाहट ।  
 गुमान दे० ( पु० ) अभिमान, मान, अहङ्कार ।—नी ( पु० ) अहङ्कारी, अभिमानी, एक कवि का नाम, ये कवि कुमायूँ प्रदेश के रहने वाले थे और संस्कृत तथा भाषा के कवि थे ।  
 गुमाशता ( पु० ) व्यापारियों का कागज़ ।  
 गुम्फ तब् ( पु० ) [ गुम्फ + अल् ] ग्रन्थन, गाथना, गूथना, बाहुभूषण विशेष ।  
 गुम्फित तब् ( पु० ) प्रणित, प्रणीत, गुहा हुआ ।  
 गुम्मा ( पु० ) बड़ी हँट ।  
 गुर तब् ( पु० ) मूलभंग, सार, वह प्रक्रिया जिससे कोई काम शीघ्र हो जाय । तब् ( पु० ) तीन की संख्या । [ भेदिया, गुड्विर ।  
 गुरगा तब् ( पु० ) शिष्य, नौकर, अनुचर, जासूस, गुरन्व दे० ( पु० ) गिलोय, गुड़ची ।  
 गुरजना दे० ( कि० ) घुटना, घुड़कना, गर्जन करना

गुरिया दे० ( स्त्री० ) मनीषा, माला के दाने, दाने ।  
 गुरु तब् ( पु० ) [ गुर + उ ] मन्त्रदाता, उपदेशक, शिक्षक, आचार्य, पुरोहित, द्विमात्रिक अचर, धा, है, आदि, गुरु पाँच प्रकार के होते हैं, पिता, उपनयन करने वाला, विद्यादाता, अन्नदाता, और भय से रक्षा करने वाला । बृहस्पति, वह गुरु जो अपने से विद्या, बुद्धि, वक्त्र, वय या पद में बड़ा हो । ( गुं० ) भारी, बोझैल ।—कुल तब् ( पु० ) गुरु या आचार्य का स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को रखकर पढ़ावे ।—कार्य ( पु० ) आवश्यक कार्य, फर्जवान् कार्य ।—जन ( पु० ) उपदेष्टा, बड़े लोग, माननीय ।—तर ( पु० ) बहुत बड़ा, बहुत भारी, माननीय ।—तत्पग ( पु० ) सौतेली मा के साथ सम्बन्ध करनेवाला, गुरु की स्त्री को हरने वाला ।—तत्पव्रत ( पु० ) गुरुपत्नी हरण का प्रायश्चित्त ।—ता या स्व ( स्त्री० ) भारीपन, भार, गौरव ।—दशा ( स्त्री० ) गुरु की दशा, बृहस्पति की दशा ।—दक्षिणा तब् ( स्त्री० ) गुरु की भेंट, विद्या पढ़ चुकने पर आचार्य को जो भेंट दी जाय ।—द्वार ( स्त्री० ) गुरु की छा, वेदाध्यापक अथवा मन्त्रदाता की स्त्री ।—दैव ( पु० ) अभीष्ट देव, पिता, आचार्य ।—दैवत ( पु० ) पुत्र नक्षत्र ।—द्वारा तब् ( पु० ) गुरु, आचार्य के रहने का स्थान, गुरु का स्थान ।—पत्नी ( स्त्री० ) गुरु की स्त्री ।—पाप ( पु० ) दुष्पद, जिसका विलम्ब से परिपाक हो ।—पाप ( पु० ) कठिन पाप, महापाप, अतिपातक ।—प्रमोद ( पु० ) अतिशय आनन्द अत्यन्तद्वय ।—भाई तब् ( पु० ) एक ही गुरु के शिष्य ।—मुख ( पु० ) लब्ध मन्त्र, दीक्षित, गृहीत मन्त्र ।—मुख होना ( कि० ) मन्त्र लेना, चेला होना, गुरु करना ।—मुखी तब् ( स्त्री० ) पंजाब में प्रचलित एक लिपि । मन्त्र ( पु० ) इष्ट मन्त्र, दीक्षा में प्राप्त मन्त्र ।—लघु ( पु० ) मान्य, प्रमान्य, प्रधान, अप्रधान, हस्त, दीर्घ ।—वार तब् ( पु० ) बृहस्पतिवार ।—शुश्रूषा ( स्त्री० ) गुरुसेवा, गुरु की आराधना ।—सेवा ( स्त्री० ) गुरुपूजा ।  
 गुरुवाहन तब् ( स्त्री० ) गुरुपत्नी, माता ।

गुरुवार तत् ( पु० ) वृषपविधाय ।

गुरुपविष्ट तत् ( पु० ) [ गुरु + उपविष्ट ] गुरु से  
शिष्या या उपदेश ग्रहण ।

गुरुपदेश तत् ( पु० ) गुरु के समीप की शिक्षा ।

गुर्गा दे० ( पु० ) वासन मंत्रने वाला, मृत्यु, मेदिना ।

गुर्गाची दे० ( स्त्री० ) मुंदा बुता ।

गुर्गरी दे० ( स्त्री० ) कम्पउबर, झड़ी, अड़इया ।

गुर्जर तद् ( पु० ) देशविशेष, गुजरात, गुजरात के  
कासी, एक जाति विशेष । [ विशेष ।

गुर्जरी तद् ( स्त्री० ) गुजरात की स्त्रियाँ, रागिनी

गुरी दे० ( स्त्री० ) भुंजा हुआ तथा कूटा हुआ जव ।

गुर्चङ्गना दे० ( स्त्री० ) गुरुवती, सपत्नी, माता, सौतेली  
माँ, माननीय स्त्री ।

गुर्वादित्य दे० ( पु० ) योग विशेष, सूर्य, चौर वृहस्पति  
के एक राशिस्थ होने पर यह योग होता है, इस  
योग में विवाह आदि मङ्गल कृत्य नहीं होते ।

गुर्धिया तत् ( स्त्री० ) गर्भवती, गर्भिणी ।

गुर्धी तत् ( वि० ) गर्भवती, भारी । ( स्त्री० ) बड़ी  
वा श्रेष्ठा स्त्री ।

गुल दे० ( पु० ) बग़ार का गोला, दीपक की बत्ती  
का अग्रभाग, पुष्प ।—करना ( क्रि० ) बुझाना,  
शोर करना, हल्ला मचाना, हँसा करना ।—गुला  
( पु० ) सीढ़ी पकड़ी, पकवान विशेष । ( वि० )  
मुलायम, कोमल ।—गुलाना ( क्रि० ) पिघलाना,  
नरमाना, नरम करना हँसाने के लिये बदन को  
सहजाना ।—गुथना गाँठफूटना, रुटना, कोढ़ाना ।

—भट्टी ( स्त्री० ) बलकन, गाँठ ।—हजी ( स्त्री० )  
गीला भाव, नये चावल का भात ।

गुलफन्द ( पु० ) मिश्री या चीनी में मिली हुई गुलाब  
के फूल की पसुरिया ।

गुलगापाड़ा ( पु० ) हल्ला, शोर ।

गुलगुल ( वि० ) कोमल, नरम । [ प्रहार ।

गुलचा ( पु० ) प्रेम पूर्वक गाँठ पर अँगुलियों का

गुलझर्रा ( पु० ) भोग झिझप में मौज मारना ।

गुलाव दे० ( पु० ) पुष्पविशेष, गुलाब के फूलों का  
सार, ( अन्तर ) पाटल पुष्प । [ का सुसुन्दर पानी ।

गुलावजल तद् ( पु० ) गुलाब का आसन, गुलाब

गुलावजामुन दे० ( स्त्री० ) मिठाई का फल विशेष ।

गुलाल दे० ( पु० ) अवीर, रङ्ग विशेष ।

गुलिक दे० ( पु० ) मोती की माला के दाने ।

गुलिया दे० ( स्त्री० ) सिर के पीछे का खड्डा ।

गुली दे० ( स्त्री० ) गुली, बाजरे की मूसी ।

गुलेज दे० ( पु० ) एक प्रकार का धनुष ।

गुल्फ़ तत् ( पु० ) फ़ीजी, पैर की गाँठ ।

गुल्म तत् ( पु० ) रोगविशेष, घ्रीहा, सेना की सेव्या  
विशेष ।—गुल ( पु० ) रोग विशेष ।

गुलर दे० ( पु० ) उदुम्बर, जमर, गुलर । [ छोटी गोली ।

गुला दे० ( पु० ) गुलेल या गोकन की गोली, भाटी की

गुलाला दे० ( पु० ) फूल विशेष ।

गुल्ली तद् ( स्त्री० ) किसी फल की गुठली, लकड़ी का  
लंबातरा छोटा टुकड़ा ।

गुवा दे० ( पु० ) सुपारी, गुंजीफल ।

गुयाक दे० ( पु० ) सुपारी का वृक्ष ।

गुवैया दे० ( स्त्री० ) सखी, सहेली, वयस्था ।

गुवालिन दे० ( स्त्री० ) बहीरिन, गोप स्त्री ।

गुवालयिर दे० ( पु० ) मध्यभारत की एक राजधानी  
का नाम, ग्वालियर ।

गुष्टि तद् ( स्त्री० ) सम्मति, सलाह, मित्रता ।

गुसाईं या गोसाईं तद् ( पु० ) स्वामी, जितेन्द्रिय,  
बहाली, पञ्चायी और कुछ भास्त्रियों की छल ।

गुह तत् ( पु० ) [ गुह + अच् ] कासिकेय, निपाद,  
निपादाधिपति का नाम, कायस्थों की एक पद्वति  
का नाम, विद्या, मल ।—पट्टी ( स्त्री० ) अगहन  
मास की शुद्ध पट्टी ।

गुहक तत् ( पु० ) एक अनार्य राजा का नाम, इसका  
अवेषण के समीप राज्य था । इसकी राजधानी  
का नाम, श्रद्धापुर था, यह महाराज दशरथ का  
मित्र था, इसी कारण रामचन्द्र जी भी इसका  
आदर करते थे । धनवास के समय इसी अनार्य  
राजा की सहायता से रामचन्द्रजी ने गङ्गा को पार  
किया था ।

गुहर दे० ( पु० ) गुस, छिपा, दक्का, लुका ।

गुहनौ दे० ( क्रि० ) गथना, गूथना, पिरोना । [ करना ।

गुहराना दे० ( क्रि० ) पुकारना, समीप बुलाना, सहाय

गुहांजनी दे० ( स्त्री० ) जाल पर की कुड़िया, गुहरी,  
विलनी ।

गुहा तत् ( स्त्री० ) गुफा, कन्दरा, खोह, पर्वत आदि का गहरा ।—गृह ( पु० ) कन्दरा, गर्त ।—शय ( पु० ) विष्णु, व्याघ्र, सिंह । [ ३ ] आह्वान, पुकार ।  
 गुहार दे० ( पु० ) आर्तस्वर से सहायता के लिये किसी गुहारी दे० ( गु० ) गुहार करने वाला, गुहारने वाला ।  
 गुहिल तत् ( पु० ) धन, वित्त, विभव, निधि, मेवाड़ के प्रथम राज्य स्थापक का नाम, सिसोदिया कुल के राजाओं का पहला राजा, इसी राजा के नाम से सिसोदिया क्षत्री अपने को गुहिलजोत कहते हैं ।  
 गुहेरी दे० ( स्त्री० ) गुहाजनी, आँख की खोली पर की फुडिया । कहते हैं यह बिछा को देखने से होती है, इसीसे इसका नाम गुहेरी पड़ा है ।  
 गुह्य तत् ( वि० ) गुप्त, गोपनीय, गूढ़ । ( पु० ) छल, कपट, धूम, गोपनीय श्रेण, विष्णु, शिव । [ यत् ।  
 गुह्यक तत् ( पु० ) देवयोनि विशेष, कुबेर के अनुचर गुह्यकेश्वर तत् ( पु० ) कुबेर, यक्षराज ।  
 गू दे० ( पु० ) गृह, मल, विष्टा । [ का, शब्द रहित ।  
 गूँगा दे० ( गु० ) मूक, मौन, अनबोल, बिना वाणी  
 गूँज दे० ( पु० ) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ।  
 गूँजना दे० ( क्रि० ) गूँज करना, गिनगिनाना, भ्रमर आदि का शब्द करना ।  
 गूँडा दे० ( पु० ) नाव का आढ़ा काठ ।  
 गूँधना दे० ( क्रि० ) गुदना, पिरोना ।  
 गूँदना दे० ( क्रि० ) सानना, एकत्रित करना, गोला बनाना, माड़ना । [ लसोरा, लभेरा ।  
 गूँदनी दे० ( स्त्री० ) गुँदेला, वृक्ष विशेष, गोँदा, गुँदा दे० ( पु० ) अन्तःसार ।  
 गूँधन दे० ( पु० ) लोई, पेड़ा ।  
 गूँधना दे० ( क्रि० ) सानना, गुँदना, माड़ना ।  
 गूगल, गूगल दे० ( पु० ) गोँदविशेष. सुगन्धितद्रव्य ।  
 गूगला तद् ( स्त्री० ) घोंघा, सीप । [ एक भेद ।  
 गूजर तद् ( पु० ) जाति विशेष, जाट, अहीर का गूजरी दे० ( स्त्री० ) गूजर की स्त्री, एक रागिनी, स्त्रियों के एक आभूषण का नाम ।  
 गूक्षा तत् ( पु० ) एक पर्वतान जो अकसर होली के खेला पर बनाया जाता है, गूदा ।  
 गूढ़ तत् ( गु० ) [ गृह + क ] गुप्त, छिपा हुआ, गुह्य, अप्रकार्य, कठिन, सूक्ष्म, एकान्त, गुहा,

निज्जेन स्थान ।—चार ( पु० ) गूढ़ पुरुष, गोहन्दा ।—ज ( पु० ) जारज पुत्र ।—पत्र ( पु० ) करवीर वृक्ष, करील वृक्ष, नागफनी ।—पथ ( पु० ) अन्तःकरण. चित्त ।—पाद ( पु० ) सर्प भुजङ्ग, अहि ।—पुरुष ( पु० ) घर, दूत, गुप्तचर ।—भाषित ( पु० ) गूढ़वाद, गुप्त विज्ञापन ।—अर्थ ( गु० ) गुप्त अर्थ, कठिन अर्थ, जिसका अर्थ इत्दी समझ में न आवे ।  
 गूय दे० ( पु० ) सूत की लड़ाई ।  
 गूयना दे० ( क्रि० ) गाथना, गूँधना, तागना ।  
 गूदड़ दे० ( पु० ) पुराना वस्त्र, कन्या, ( गु० ) कन्याधारी ।  
 गूदड़ी दे० ( स्त्री० ) कन्या, रजाई, सूजनी ।  
 गूदड़, गूदर दे० ( पु० ) फटा पुराना कपड़ा । [ भेना ।  
 गूदा दे० ( पु० ) फलों का सारांश, सिंगी, अन्तःसार, गूदिया दे० ( गु० ) लोभी, इच्छुक ।  
 गूप तत् ( गु० ) गुप्त, छिपा ।  
 गूमड़ा दे० ( पु० ) फोड़ा, सूजन, गिळटी, प्रण ।  
 गूमड़ी दे० ( स्त्री० ) गाँद, ग्रन्थि ।  
 गूलर दे० ( पु० ) हूँसर, उदुम्बर, कमर ।  
 गूहड़िया दे० ( पु० ) घूरा, कड़ा, फतवार, गोबर ।  
 गुञ्ज तत् ( पु० ) गज्जर, लहसुन, व्याज ।  
 गूधु तत् ( गु० ) लालची, लोभी, इच्छुक ।—ता ( स्त्री० ) लोलुपता, लोभ, आकांक्षा, अभिलाष ।  
 गुध तत् ( पु० ) गीघ, गिद्ध, पक्षिविशेष ।—राज ( पु० ) जटापुष्पी ।  
 गूघ्रा तद् ( गु० ) मरभूखा, लोभी, लालची ।  
 गृपी तत् ( स्त्री० ) एकशर की व्यापी गौ, लला विशेष, धराही कन्द ।  
 गृह तत् ( पु० ) ईटा आदि से बनाया हुआ स्थान, घर, गेह, भवन, निकेतन, आगार, कुटुम्ब, वंश ।  
 —कन्या ( स्त्री० ) घृतकुमारी, धीकुमारी ।—कर्म ( पु० ) गृह सम्बन्धी कार्य ।—गोधिका ( स्त्री० ) विसतुह्या, छिपकली ।—छिद्र ( पु० ) गृहदोष, घर की गुप्त बातें, गृहकलङ्क ।—तटी ( स्त्री० ) गली, चौकी, घर के बाहर का चैतरा ।  
 —दास ( पु० ) गृह का भूत ।—दाहक ( पु० ) आततायी, घर में आग लगाने वाला, गृहनाशक ।

—निर्माता ( पु० ) घर बनाने वाला । —पति ( पु० ) गृहस्वामी, घर का मालिक । —पालक ( पु० ) कुरुर, गृहरक्षक । —वाटिका ( स्त्री० ) घर के समीप का बगीचा । —वासी ( पु० ) घर में रहने वाला । —भङ्ग ( पु० ) गृहभेदक, प्रवास । —भेदी ( पु० ) घर का दोष प्रकाशित करने वाला, दूत, सूचक । —मणि ( पु० ) प्रदीप, दीपक । —मेघी ( पु० ) गृही, गृहस्थ, घर वाला । —विच्छेद ( पु० ) कुटुम्बखण्ड, परिवार के साथ विवाद । —स्थ ( पु० ) द्वितीयाश्रमी, ज्येष्ठाश्रमी, गृही, संसारी । —स्थता ( स्त्री० ) गृह स्थापार, गृहस्थ का धर्म । —स्थाश्रम ( पु० ) चार आश्रमों के अन्तर्गत दूसरा आश्रम । —गत ( पु० ) आगन्तुक, अतिथि, पाहुन । —ार्थ ( पु० ) घर के लिये, गृह के निमित्त ।

गृहिणी तत् ( स्त्री० ) गृहस्वामिनी, भार्या, स्त्री, पत्नी ।  
गृही तत् ( पु० ) गृहस्वामी, घर का मालिक, गृहस्थ, घरवाला । [ग्रहण किया हुआ ।

गृहीत तत् ( पु० ) पकड़ा हुआ, स्वीकृत, अङ्गीकृत, गृह्य तत् ( पु० ) गृहासक, गृहस्थों के कर्तव्य कर्म, कर्मोपदेशक शास्त्र विशेष, ग्रहण करने योग्य । —ग्रन्थ ( पु० ) धर्म संहिता, कर्मकाण्ड ग्रन्थ । —सूत्र ( पु० ) स्मृति शास्त्र । —अग्नि ( पु० ) गृह सम्बन्धी अग्नि, अग्निहोत्र का अग्नि । संस्कृत में अग्नि पुलिङ्ग है, किन्तु हिन्दी में यह शब्द कहीं कहीं स्त्रीलिङ्ग भी मान लिया गया है ।

गेंड़ा दे० ( पु० ) एक जन्तु का नाम, इसीके चमड़े की छाल बनती है ।

गेंद दे० ( पु० ) खेलने की एक वस्तु गेंदा ।

गेंदा दे० ( पु० ) पुष्प विशेष, गेंद ।

गेंदी दे० ( स्त्री० ) खेलने की गोली ।

गेंगरा दे० ( पु० ) कंकड़ा, कंकट ।

गे दे० ( स्त्री० ) गये, चले गये, चीत गये ।

गेगली दे० ( पु० ) पोदली, फुहर, कुरूप स्त्री ।

गेड्डा दे० ( पु० ) तकिया, सिरहाना, उपधान, टोटी शर लोटा ।

गेडुरी दे० ( स्त्री० ) पेंडुरी, बीड़ा, इडुरी ।

गेदरा दे० ( पु० ) अनवृक्ष, अज्ञान, भौंदू, अयोग्य ।

गेदा दे० ( पु० ) पचरहित चिड़िया, पखीन, बघा ।

गेय तत् ( पु० ) [ गै + या ] गानयोग्य, सङ्गीत करने के उपयुक्त, गानयोग्य ।

गेया ( पु० ) मिटनी, बोटा, सण्ड ।

गेर दे० ( पु० ) देखो गेरू ।

गेरुया दे० ( पु० ) गेरू से रंगा हुआ वस्त्र विशेष ।

गेरू दे० ( पु० ) गैरिक, पहाड़ की लालमट्टी, उपघानु ।

गेह तद् ( पु० ) गृह, भवन, घर । —शूर ( पु० ) गृह भिय, गृहासक, घर ही में वीरता दिखानेवाला ।

गेहनी तद् ( स्त्री० ) घरवाली, स्त्री ।

गेही तद् ( पु० ) गृही, गृहस्थाश्रमी ।

गेहूँ दे० ( पु० ) गेहूँ, गोधूम, अन्नविशेष । [यादामी ।

गेहूँया, गेहूँया दे० ( पु० ) गेहूँ के रंग का, गेहूँ वरन,

गेड़ा दे० ( पु० ) गेंदा, एक जन्तु, जिसकी पवित्र दूहो,

की घँघुरियाँ अर्घा आदि पितृतर्पण में काम आते हैं ।

गेंती, गैती दे० ( स्त्री० ) कुदाल, मिट्टी खोदने का अन्न विशेष ।

गैन या गेना दे० ( पु० ) नाटा बैज ।

गेया दे० ( स्त्री० ) गाय, घेनु, गो ।

गेर दे० ( वि० ) अन्य, दूसरा । —मामूजी ( वि० )

असाधारण । —मुनासिब ( वि० ) अनुचित । —

मुमकिन ( वि० ) अयोग्य, अनुचित । —वाजिव

( वि० ) अयोग्य, अनुचित ।

गेरा दे० ( पु० ) घास का पत्ता, चाँटी, सुट्टा ।

गेरिक तत् ( पु० ) लाल रङ्ग की मिट्टी, गेरू ।

गेरिय तत् ( पु० ) शिलाजीन ।

गेल दे० ( पु० ) मार्ग, राह, रास्ता, गली, रथ्या, पथ ।

गेहरो दे० ( स्त्री० ) दण्ड, रोकने का दण्ड, धर्मज, बेंडा ।

गे तत् ( स्त्री० ) गौ, घेनु, गैया, पशु, किरण, दिशा,

वचन, पृथ्वी, माता, वृषारिष, इन्द्रिय, सास्वती,

वागीश, चाँस, बिजली, जीभ, दूध देने वाले

जानवर बकरी भेड़ आदि, श्रम नामक आपधि

विशेष, ( पु० ) बैल, घोड़ा, सूर्य, चन्द्रमा, बाण,

गवैया, प्रशंसक आकाश, स्वर्ग, जल, वज्र, शब्द,

नौ का अङ्क, शरीर के रोम ।

गेईठा तद् ( पु० ) जलाने के लिये सुपाया हुआ

गोबर, कंडा, उपला ।

गोठा दे० (पु०) उपला, उपरी, कंडा, छाना, गोहरी ।  
 गोठी दे० (स्त्री०) चेचक, सीतला, रोग विशेष ।  
 गोद दे० (पु०) लासा, चप, बियास ।  
 गोदनी दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष, नारकट ।  
 गोदा दे० (पु०) पची के खाने की लोई जिससे पची फसाये जाते हैं, लभेरा, लसोड़ा ।  
 गोदी दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष ।  
 गोप्याल तद्० (पु०) गोपाल, गोप, अहीर ।  
 गोई दे० (पु०) गुप्त की, छिपाई, छिपाई-हुई ।  
 गोप दे० गुप्त किये, छिपे हुए ।  
 गोकर्ण तद्० (पु०) परिमाण विशेष, एक पसर, मृग विशेष, खरचर, अश्वतर, सर्पविशेष, गणदेवता विशेष, तीर्थविशेष, पर्वतविशेष, गाय का कान, याशिरत ।—नाथ (पु०) एकतीर्थ का नाम, जिस के प्रधान देवता शिव हैं ।  
 गोकुल तद्० (पु०) गौश्री का समूह । प्रज में मधुरा के पास का एक गाँव, वहाँ नन्दजी रहते थे, वहाँ भगवान् श्रीकृष्ण ने अपना वाल्यकाल बिताया था ।  
 गोकुलेश तद्० (पु०) गोकुल का अधिपति, श्रीकृष्ण-चन्द्र । [भूषणविशेष ।]  
 गोखरू तद्० (पु०) गोखुरक, एक औषधि का नाम, गोखुर दे० (पु०) गौ का खुर, एक पौधे का नाम ।  
 गोप्रास तद्० (पु०) भोजन करने के पूर्व, गौ के लिये निकाला हुआ भाग ।  
 गोघात (स्त्री०) गोहत्या ।  
 गोचना दे० (पु०) घरना, पकड़ लेना, गेहूँ और चना ।  
 गोचर तद्० (पु०) इन्द्रियों से जानने योग्य, इन्द्रियों का विषय, प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने, गौश्री के चरने का स्थान, जन्म राशि से लेकर कतिपय राशियों के नाम ।  
 गोचर्म तद्० (पु०) [ गो + चर्मन् ] गौ का चमड़ा ।  
 गोचा दे० (पु०) दाना, घोखा देना —गोची (चा०) घोखे पर घोखा, दवाव पर दबाव, बलाकार से घोखा देना ।  
 गोचारण तद्० (पु०) गोपालन, गौ के चराना ।  
 गोचिकित्सा तद्० (स्त्री०) गौ की औषधि, गौ की दवा ।  
 गोछ दे० (पु०) मूँछ, गोंछ, गोंछा ।

गोजल तद्० (पु०) गोमूत्र ।  
 गोजई दे० (पु०) मिश्रित अन्न, गेहूँ और जव ।  
 गोजर दे० (पु०) कनखजरा, कर्तार, कानसराई ।  
 गोजिका दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष, एक प्रकार का पौधा ।  
 गोजिहा तद्० (स्त्री०) गोभी, कौवी ।  
 गोभा तद्० (पु०) गूभा, गुफिया, पकवान विशेष ।  
 गोठ दे० (पु०) किनारा, मगज़ी, भोज, जातीय भोजन, चौगड़ खेलने की गोटी ।  
 गोटा दे० (पु०) किनारा, किनारी, कोर, चांदी संगे के सारों से जो बनते हैं ।  
 गोटी दे० (स्त्री०) चेचक, शीतला, छाखे ।  
 गोठ तद्० (पु०) गोष्ट, पशुओं के रहने का स्थान, सभा, समूह ।  
 गोड़ दे० (पु०) पाद, पाँव, पिंडली, टाँग, पैर ।  
 गोड़ना दे० (क्रि०) खोदना, खुरचना ।  
 गोड़िया दे० (पु०) जाति विशेष, कहार ।  
 गोड़ी दे० (स्त्री०) प्राप्ति, लाभ, प्राप्ति का आयोजन ।  
 गोण या गौन तद्० (पु०) घोरा, धैला, भाखा, अन्न रखने का धैला ।  
 गोणी तद्० (स्त्री०) गौन, धैला ।  
 गोत तद्० (पु०) गोत्र, वंश, जात, कुल ।  
 गोतम तद्० (पु०) ऋषिविशेष, गोतममुनि, न्याय-दर्शन कर्ता, अक्षपाद देखा ।—अन्य (पु०) शाक्यमुनि, बुद्धदेव ।—नारी (स्त्री०) गोतम मुनि की स्त्री, अहल्या ।  
 गोतमी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, कण्व मुनि की भगिनी ।  
 गोता तद्० (पु०) गोत्र, वंश, कुल, जल में डुबकी लगाना ।—खोर दे० (पु०) डुबकी लगाने वाला ।  
 गोतिया तद्० (पु०) परिवार, कुटुम्बी, जानभाई, सम्बन्धी, स्वगोतीय ।  
 गोती तद्० (पु०) गोत्रज, वंशज, कुटुम्बी ।  
 गोतीत तद्० (पु०) इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से न जानने योग्य, इन्द्रियातीत ।  
 यथा—“गिराज्ञान गोतीत” । —रामायण ।  
 गोत्र तद्० (पु०) वंश, कुल, जाति, गोत, आदि पुरुष, पर्वत, पहाड़ ।—ज (पु०) गोत्र में उत्पन्न, जाति, कुलज, वंशीय, पर्वतीय धातु ।—घन (पु०) पैत्रिक धन, पिता का धन ।—शत्रु (पु०) इन्द्र, शक्र, कुलह्वार ।

गोद दे० ( स्त्री० ) देखो गोदी ।

गोदना दे० ( स्त्री० ) चुभाना, गोड़ना, शरीर पर तिल के आकार के चिह्न बनाना, चेचक का टीका लगाना ।

गोदन्त दे० ( पुं० ) हरिताल, पीले रंग की एक धातु ।

गोदा दे० ( पुं० ) पीपल व बड़ के पके फल । ( स्त्री० ) गोदावरीनदी, श्रीरङ्गनाथ की विवहिता स्त्री, गोदा अम्मा । [ पुण्य कर्म विशेष ।

गोदान तत्त्वं ( पुं० ) गोदान, गौ को अर्पण करना, गोदाम दे० ( पुं० ) माल असबाब रखने का बड़ा घर ।

गोदावरी तत्त्वं ( स्त्री० ) नदी विशेष, इस नाम की प्रसिद्ध एक नदी, यह पवित्र नदियों में से है और दक्षिण में है ।

गोदी दे० ( स्त्री० ) शंकवार, गोद, कनिया, सूजन, पैर का मोटा होना, दस्तक पुत्र लेना ।—पसारना ( वा० ) मारना, जौचना, यात्रा करना ।—लेना ( वा० ) पोसना, पालना, दस्तक बनाना, पोस पूत करना ।

गोदाहन तत्त्वं ( पुं० ) गाय हुहना, गाय से दूध निकालना । [ रोहनी. घृ० ।

गोदाहनी तत्त्वं ( स्त्री० ) गोदाहन पात्र, दुधेड़ी, गोधन तत्त्वं ( पुं० ) गोसमूह, गोरूप धन, दीवाली — के समय की एक पूजा, गोपद्वैतपूजा ।

गोधा तत्त्वं ( स्त्री० ) धनुष के ज्या के आघात को रोकने के लिये चर्मपट्टिका, हाथ की कलाई पर बांधने का चमड़ा, जिसे धनुषारी लोग बांधते हैं ।

गोधिका तत्त्वं ( स्त्री० ) गोह, जब जन्तु विशेष ।

गोधूम तत्त्वं ( पुं० ) शस्यविशेष, एक भ्रष्ट का नाम, नारद्री, गोहूँ, औषधि विशेष ।

गोधूली तत्त्वं ( स्त्री० ) सूर्य के अस्त और उदय होने के इधर । घड़ी और उधर । घड़ी का समय ।

गोधेनु तत्त्वं ( स्त्री० ) दुग्धवती गौ, दुधार गाय ।

गोधौरा दे० ( स्त्री० ) सायङ्काल, सन्ध्याकाल ।

गोन तत्त्वं ( स्त्री० ) टाट, कंबल, चमड़े आदि की बनी बड़ी खुर्जी, जिसमें शनाज आदि भर कर बैल या ऊँट की पीठ पर लावते हैं ।

गोनर्दीय तत्त्वं ( पुं० ) पतञ्जलि मुनि, ध्याकरण महाभाष्यकार । ( पुं० ) गोनर्द देश का, गोनर्द देश सम्बन्धी ।

गोना ( स्त्री० ) छिपाना ।

गोप तत्त्वं ( पुं० ) [ गो + पा + ड ] जातिविशेष, अहीर, ग्वाला, ग्वाल, राता, जमींदार, एक कड़ी का नाम ।—कन्या ( स्त्री० ) अहिरिन । [ स्वामी ।

गोपक तत्त्वं ( पुं० ) [ गोप + क ] बहुत प्रामों का गोपति तत्त्वं ( पुं० ) साँड़, वृष, बैल, गोचक, अहीर, आभीर ।

गोपद तत्त्वं ( पुं० ) गोपद, गाय के खुर का जमीन पर बना हुआ चिह्न, गोशों के रहने का स्थान ।

गोपन तत्त्वं ( पुं० ) [ गुप् + अनट् ] छिपाव, छुकाव अप्रकाश, रक्ष्य, लेजपात ।—हँ ( पुं० ) छिपाने योग्य, गोप्य, गुह्य ।—नीय ( पुं० ) गोप्य, भय-कार्य ।—पत्नी ( स्त्री० ) गोपों का वास्त स्थान ।—वधू ( स्त्री० ) गोरा स्त्री, गोपाङ्गा ।

गोपर तत्त्वं ( वि० ) गोतीत, इन्द्रियों से परे ।

गोपा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ गोप + आ ] लताविशेष, श्यामलता, सिद्धार्थ बुद्ध देव की स्त्री का नाम, कपिलवस्तु नगर के समीपस्थ कलिराज्य के अधिपति की ये कन्या थीं, इन्हीं के गर्भ से बुद्ध देव का एक पुत्र उत्पन्न हुआ था, उस पुत्र का नाम राहुल था, गोपा असाधारण विदुषी और पति-भक्ता स्त्री थी, पति के वनगमन के बाद गोपा ने भी पुत्र के साथ, बुद्धाश्रम में प्रवेश किया था, बुद्ध के मरने पर ये ही उनके आश्रम का सन्तान करती रहीं ।

गोपाल तत्त्वं ( पुं० ) गोप, अहीर, विष्णु का पूर्ण अवतार, यह वसुदेव के पुत्र थे परन्तु द्रज में नन्द के यहाँ इनका वाक्य समय बीता था अतएव इन्हें नन्दनन्दन भी कहते हैं । पद्मपुराण में लिखा है कि यह सर्वेश वाक्यावस्था के समान योग्य वेध ही में रहते थे ।

गोपालक तत्त्वं ( पुं० ) गोप, अहीर, ग्वाला, गोपग्वाला दे० ( पुं० ) गोघाला, गोवालनेवाला ।

गोपालय तत्त्वं ( पुं० ) गोपगृह ग्वालों का घर, द्रज ।

गोपाष्टमी तत्त्वं ( स्त्री० ) कार्तिक शुद्ध अष्टमी, हम दिन गौ की पूजा की जाती है ।

गोपिका तत्त्वं ( स्त्री० ) [ गोप + इप् + आ ] गोपी, गोपस्त्री, गोपाङ्गा, अहीरिन ।



पित तत् ( गु० ) रचित, पालित, गुप्त, अप्रकाशित ।  
गोपी तत् ( स्त्री० ) [ गोप + ई ] गोपत्री, गोपाङ्गना,  
ग्वालिन ।—नाथ ( पु० ) श्रीकृष्ण, गोपियों के  
पति ।

गोपीचन्द्र ( पु० ) एक प्राचीन राजा का नाम जिसके  
जीवन की घटनाएँ जोगी लोग सारंगी पर गाय  
करते हैं । [ पीत वर्ण चन्दन विशेष ।

गोपीचन्दन तत् ( पु० ) एक प्रकार का चन्दन,  
गुच्छ तत् ( पु० ) द्वार विशेष, गौ की पूँछ के  
समान बना हुआ द्वार, गौ की पूँछ ।

गुरुर तत् ( पु० ) नगर द्वार, शहर का फाटक,  
पुरद्वार, किले का फाटक, मन्दिर का फाटक ।

गस्ता तत् ( पु० ) [ गुप् + तृण् ] रक्षक, पालक,  
रक्षाकर्ता, अप्रकाशक ।

गप्य तत् ( गु० ) [ गुप् + य ] रक्षणीय, गोपनीय,  
छिपाने योग्य, छिपाने लायक ।

प्रकाण्ड तत् ( पु० ) श्रेष्ठा गौ, उत्तमा गौ ।

फफा तत् ( स्त्री० ) गोफन, पथर फँके का अख  
विशेष, मिन्दिपाल, डेलवाँस, गुफना, जलम  
की पट्टी ।

फफन तत् ( पु० ) डेलवाँस, गुफना ।

फफिया दे० गोफन, डेलवाँस ।

गवर दे० ( पु० ) गोमय, गौ का मल, गोविष्टा ।—  
गनेश ( पु० ) अकर्मण्य, अलस, जड़, स्थूल,  
भद्दा, मूर्ख ।

गवरी दे० ( स्त्री० ) गोबर का लिपाव, गोमयलेपन ।

गवरीरा दे० ( पु० ) गोबर का कीड़ा ।

गवरीला दे० ( पु० ) गोबरोंवा, कीट विशेष ।

गमिल तत् ( पु० ) मुनि विशेष, सामवेदी संध्या  
के सूत्रकार, गोमिलगृहसूत्र नाम का कर्मकाण्ड  
ग्रन्थ इन्हीं का बनाया है, इस ग्रन्थ का कर्मकाण्डी  
समान में विशेषतः सामवेदियों में बड़ा आदर है ।

गभी दे० ( स्त्री० ) कली, अंकुर, नयाशाखा, पौधा  
विशेष, गोमिह्रा, कोबी ।

गमका तत् ( पु० ) कुम्हड़ा, कोहड़ा ।

गमती तत् ( स्त्री० ) खनाम प्रसिद्ध नदी विशेष,  
वैदिक मन्त्र विशेष ।

गमन्त तत् ( पु० ) पर्वत विशेष, एक पहाड़ का नाम ।

गोमय तत् ( पु० ) [ गो + मयट् ] गोबर ।

गोमक्षिका तत् ( स्त्री० ) दंश, डँस ।

गोमायु तत् ( पु० ) [ गो + मा + यु ] शृगाल,  
सियार, गीदड़, उलकामुखक ।

गोमिथुन तत् ( पु० ) दो गौ, गौ की जोड़ी ।

गोमुख तत् ( पु० ) सेंध, सुरङ्ग, चोरी करने के लिये  
एक प्रकार से मकान में धिड़ करना, गौ का मुख,  
नरसिंह वाजा, नाक नाम का जलजन्तु, योगासन,  
टेढ़मेढ़ा घा, ऐपन, एक यज्ञ का नाम, इन्द्रपुत्र  
जयन्त के सारथी का नाम ।—व्याघ्र तत् ( पु० )  
वह मनुष्य जो देखने में तो सीधा और भोला  
भाला धर्मात्मा दीखे, किन्तु मनका बड़ा तराव  
और दुष्ट हो ।

गोमुखी तत् ( स्त्री० ) [ गोमुख + ई ] हिमालय  
पर्वत से गङ्गाजी के गिरने का स्थान जो गोमुख के  
समान बना हुआ है, तीर्थ विशेष, अपमाली, जप-  
माला रखने की मोली । [ अज्ञान, अयोध ।

गोमूढ तत् ( पु० ) गौ के समान मूर्ख, अतिशय,

गोमूत्र तत् ( पु० ) गोमूत, गौ का मूत ।

गोमूत्रिका तत् ( स्त्री० ) मूत्रविशेष, काव्य का एक  
भेद, चित्रकाव्य विशेष, पद्य बनाने का एक प्रकार,  
एक ग्रन्थ का नाम ।

गोमेद तत् ( पु० ) [ गो + मिद् + अल् ] पीले रङ्ग  
का गौ के मस्तकस्थित पदार्थ विशेष, गौलोचन,  
शीतलक्ष्मीनी, कबावचीनी, गोमेदक मणि ।

गोमेध तत् ( पु० ) [ गो + मिध् + अल् ] यज्ञ विशेष ।

गौर तत् ( पु० ) गौर वर्ण, ( पु० ) गौर, फरसा, कर्म,  
समाधिस्थान ।—मदायन इन्द्रधनु ।

यथा—“ धनु है वह गौरमदायन नहीं शरधार  
वहै गलधार वृथाही ” ।

गौरखधन्धा दे० ( पु० ) एक प्रकार का गोरखधन्धा,  
गोरखधन्धी साधुओं के पास होता है । यह यह  
कि एक डंडे में बहुत सी कड़ियाँ जड़ी रहती हैं ।  
कोई ऐसा काम जिसमें बड़ी बड़ी वस्तुएँ या द्रव्य  
पेंच हों । ऋगड़ा, उलकन, पेंच ।

गौरस तत् ( पु० ) गव्य, दूध, दही, मठा, तक,  
छाछ ।—ग तत् ( पु० ) गाय के दूध से पटा  
हुआ बच्चा ।

गोरसी तद् ( स्त्री० ) दूध ग्रहण करने की श्रंगीरी ।  
 गोरस्त तद् ( पुं० ) [ गो + स्त + अच् ] गोपाल,  
 गौ रखने वाला ।—नाथ ( पु० ) प्रसिद्ध सिद्ध और  
 धर्मप्रवर्तक, ख्रिष्टीय १२ वीं शताब्दी में ये महारमा  
 उत्तर पश्चिम प्रदेश में उपस्थित हुए थे । ये कभी  
 साहब के समकालीन थे । इनके अनेकों शिष्य थे,  
 शिष्य इनको गुरु गोरसनाथ या गुरु गोरखनाथ  
 कहते थे । इनका कहना है कि सब से श्रेष्ठ संसार में  
 योगी पेदी हैं । इन्होंने उदार धर्म का प्रचार किया है,  
 सभी श्रेणी के मनुष्यों को ये अपने सम्प्रदाय में लेते  
 थे । उदारवादी होने के कारण राजा रङ्क सभी  
 इनका आदर करते थे । इन्होंने गोरस-संहिता नामक  
 योग का ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा है ।

गोरा तद् ( पुं० ) गौर वर्ण, गोर, उजला, फिरङ्गी  
 पशुन के जवान । ( स्त्री० ) गोरी ।

गोराई ( स्त्री० ) सौन्दर्य, खूबसूरती ।

गोरू दे० ( पु० ) गो, गौ, घुपम, पशु ।

गोरुत तद् ( पुं० ) दो कोश, कोशद्वय ।

गोरिचन, गोरिचना तद् ( स्त्री० ) स्वनाम ध्यात  
 पीतवर्ण द्रव्य विशेष, गोमल्लक स्थित शुष्कपिच

गोल तद् ( पुं० ) घट्टल, गोलाकार, मण्डलाकार ।

गोत्रक तद् ( पुं० ) पति के न रहने पर स्त्रियों से  
 उत्पन्न पुत्र, अपपति के द्वारा उत्पन्न विधवा पुत्र  
 झूठा, इध्र, अश्व की पुतली, गुंघद, सन्दूक या  
 पैली जिसमें किसी कार्य विशेष के लिये थोड़ा  
 थोड़ा धन डाला जाय, फंड, इन्द्रियों का स्थान ।

गोलचला दे० ( पुं० ) गोलम्दाङ्ग, तोप चलानेवाले ।

गोलमाल दे० ( पुं० ) गड़बड़ ।

गोलमिर्च दे० ( स्त्री० ) कालीमिर्च ।

गोला दे० ( पुं० ) थंड, कन्दुक, गेंद, घेरा, मण्डल,  
 घृष्ट, तोप का गोला, लोहे का गोलाकार पिण्डा,  
 नारियल, अन्न रखने का स्थान, मण्डी, जहाँ अन्न  
 विकता है ।—गुल तद् ( पुं० ) एक प्रकार  
 का बन्दर जिसकी पूछ गाय जैसी होती है ।

गोलाई दे० ( स्त्री० ) गोलापन ।

गोलाकार तद् ( पुं० ) गोलरूप, गोल ।

गोलाध्याय तद् ( पुं० ) ज्योतिषविद्या, ज्योतिष के  
 एक ग्रन्थ का नाम ।

गोलार तद् ( पुं० ) गोलाई गोचरता, इंर फेर ।

गोनाई तद् ( पुं० ) पृथिवी का आधा भाग ।

गोली दे० ( स्त्री० ) छोटा गोला, बन्दूक की गोली ।—

मारना ( वा० ) बन्दूक चलाना, बन्दूक मारना ।

गोलोक तद् ( पुं० ) श्रीकृष्ण का स्थान, नित्यधाम,

वैकुण्ठ ।—प्राप्ति ( स्त्री० ) बल्लभाचार्य जी के

सम्प्रदाय की मुक्ति, गतिविशेष ।—वासी ( पुं० )

भगवान् श्रीकृष्ण, राजा ।

गोलोमा तद् औपध विशेष, वध ।

गोवध ( पुं० ) गोहत्या, गौ का वध करना ।

गोवना दे० ( क्रि० ) छिपाना, छुकारना, छँकना ।

गोवर्द्धन तद् ( पुं० ) वृन्दावन के एक पर्वत का नाम,

स्वनाम प्रसिद्ध पर्वत, पूना न पाने के कारण जय

इन्द्र ने प्रज को वृष्टि से नष्ट करना चाहा था, तब

श्रीकृष्ण ने इसी पर्वत को उठाकर प्रजवासियों की

रक्षा की थी । इस पर्वत को श्रीकृष्ण ने अपनी

कनिष्ठा अंगुली पर धारण किया था, बल्लभाचार्य जी

ने इसी पर्वत से श्रीनाथ जी का अविष्कार किया

था ।—धारी ( पुं० ) गोवर्द्धन पर्वत का धारण

करनेवाला, श्रीकृष्ण ।

गोवर्द्धनाचार्य तद् ( पुं० ) संस्कृत के कवि, शृङ्गार के

प्रसिद्ध आर्यासप्तशति नामक ग्रन्थ का कर्ता, अपने

गीतगोविन्द में जयदेव न इनका उल्लेख और बड़ी

प्रशंसा की है । शृङ्गाररस की कविता लिखने में

यह सिद्धहस्त थे । इनके पिता का नाम नीलाम्बर

था । उमावतिधर के समसामयिक होने के कारण

१२ वीं शताब्दी का प्रारम्भ और मध्य इनका समय

सिद्ध होता है ।

गोवशा तद् ( स्त्री० ) बन्ध्या गौ, बहिला गाय ।

गोविन्द तद् ( पुं० ) विश्व को जानने वाला, ज्ञान-

सिन्धु, गोशाल, श्रीकृष्ण, गोक्षिपति, वृद्धरति,

वेदान्तवेत्ता, शङ्कराचार्य के गुरु का नाम । सिंघों

के इस गुरुओं में से एक, परमल ।—ऊँकुर ( पुं० )

यह मिथिलावासी संस्कृत पण्डित थे, काव्यप्रकाश

की कारिकाओं की टीका इन्होंने लिखी है, जिसका

नाम काव्यप्रदीप है । इनका समय अभी तक

निश्चित नहीं हुआ है परन्तु अनुमान से १२ वीं

सदी का अन्तिम भाग ही विद्वानों ने इनका समय

गोपित तत् ( गु० ) रचित, पालित, गुप्त, अप्रकाशित ।  
गोपी तत् ( स्त्री० ) [ गोप + ई ] गोपस्त्री, गोपाङ्गना,  
ग्वालिन ।—नाथ ( पु० ) श्रीकृष्ण, गोपियों के  
पति ।

गोपीचन्द्र ( पु० ) एक प्राचीन राजा का नाम जिसके  
जीवन की घटनाएँ जोगी लोग सारंगी पर गाय  
करते हैं । [ पीत वर्ण चन्दन विशेष ।

गोपीचन्दन तत् ( पु० ) एक प्रकार का चन्दन,  
गोपुच्छ तत् ( पु० ) दार विशेष, गौ की पूँछ के  
समान बना हुआ दार, गौ की पूँछ ।

गोपुर तत् ( पु० ) नगर द्वार, शहर का फाटक,  
पुरद्वार, किले का फाटक, मन्दिर का फाटक ।

गोसा तत् ( पु० ) [ गुप् + तुण् ] रचक, पालक,  
रचाकर्ता, अप्रकाशक ।

गोप्य तत् ( गु० ) [ गुप् + य ] रक्षणीय, गोपनीय,  
छिपाने योग्य, छिपाने लायक ।

गोप्रकाण्ड तत् ( पु० ) श्रेष्ठा गौ, उत्तमा गौ ।

गोफया तत् ( स्त्री० ) गोफन, पथर फेंकन का अस्त्र  
विशेष, मिन्दपाल, डेलवास, गुफना, जलम  
की पट्टी ।

गोफन तत् ( पु० ) डेलवास, गुफना ।

गोफिया दे० गोफन, डेलवास ।

गोवर दे० ( पु० ) गोमय, गौ का मल, गोविष्ठा ।—  
गनेश ( पु० ) अकर्मण्य, अलस, जड़, स्थूल,  
महा, मूर्ख ।

गोवरी दे० ( स्त्री० ) गोवर का लिपाव, गोमयलेपन ।

गोवरीरा दे० ( पु० ) गोवर का कीड़ा ।

गोवरीला दे० ( पु० ) गोवरीदा, कीट विशेष ।

गोभिल तत् ( पु० ) मुनि विशेष, सामवेदी सध्या  
के सूत्रकार, गोभिलगुप्तसूत्र नाम का कर्मकाण्ड  
ग्रन्थ इन्हीं का बनाया है, इस ग्रन्थ का कर्मकाण्डी  
समाज में विशेषतः सामवेदियों में बड़ा आदर है ।  
गोभी दे० ( स्त्री० ) कली, अंकुर, नयाशाखा, पौधा  
विशेष, गोजिह्वा, कोबी ।

गोमका तत् ( पु० ) कुम्हड़ा, कोहड़ा ।

गोमती तत् ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध नदी विशेष,  
वैदिक मन्त्र विशेष ।

गोमन्त तत् ( पु० ) पर्वत विशेष, एक पहाड़ का नाम ।

गोमय तत् ( पु० ) [ गो + मयट् ] गोबर ।

गोमन्तिरा तत् ( स्त्री० ) दंश, दाँस ।

गोमायु तत् ( पु० ) [ गो + मा + उण् ] शृगाल,  
सियार, गीदड़, उल्कामुखक ।

गोमिथुन तत् ( पु० ) दे० गौ, गौ की जेड़ी ।

गोमुख तत् ( पु० ) संध, सुल्ल, चेरी करने के लिये  
एक प्रकार से समकान में चित्त करना, गौ का मुख,  
नरसिंहा बाजा, नाक नाम का जलजन्तु, योगासन,  
टेढ़ामेढ़ा घा, ऐपन, एक यक्ष का नाम, इन्द्रपुत्र  
जयन्त के सारथी का नाम ।—व्याघ्र तत् ( पु० )  
बड़ मनुष्य जो देखने में तो सीधा धीर मोटा  
भाला धर्मार्मा दीखे, किन्तु मनका बड़ा खराब  
और दुष्ट हो ।

गोमुखी तत् ( स्त्री० ) [ गोमुख + ई ] हिमालय  
पर्वत से गङ्गाजी के गिरने का स्थान जो गोमुख के  
समान बना हुआ है, तीर्थ विशेष, जपमाली, जप-  
माला रखने की मोली । [ यज्ञान, अघोष ।

गोमूढ तत् ( पु० ) गौ के समान मूर्ख, अतिशय,  
गोमूय तत् ( पु० ) गोमूत, गौ का मूत ।

गोमूत्रिका तत् ( स्त्री० ) मूत्रविशेष, कान्य का एक  
भेद, चित्रकाव्य विशेष, पद्य बनाने का एक प्रकार,  
एक बन्ध का नाम ।

गोमेद तत् ( पु० ) [ गो + मिद् + अल् ] पीले रङ्ग  
का गौ के मसकस्थित पदार्थ विशेष, गौलोचन,  
शीतलचीनी, कबाबचीनी, गोमेदक मणि ।

गोमेध तत् ( पु० ) [ गो + मिद् + अल् ] यज्ञ विशेष ।

गोर तत् ( पु० ) गौर वर्ण, ( पु० ) गौर, फरसा, कर्म,  
समाधिस्थान ।—मदायन इन्द्रधनु ।

यथा—“ धनु है यह गोरमदायन नहीं शरधार  
वहै गलधार वृषाही ” ।

गोरखधन्वा दे० ( पु० ) एक प्रकार का गोरखधन्वा,  
गोरखधन्वा साधुओं के पास होता है । वह यह  
कि एक डंडे में बहुत सी कड़ियाँ जड़ी रहती हैं ।  
कोई ऐसा काम जिसमें बड़ी बड़ी उलझने या दाँव  
पैच हो । फगड़ा, उलझन, पैच ।

गोरस तत् ( पु० ) गन्ध, दूध, दही, मठा, तक्र,  
छाछ ।—तत् ( पु० ) गाय के दूध से पला  
हुआ बच्चा ।

गौरसी तद् ( स्त्री० ) दूध गारम करने की श्रेणी।  
 गौरस्त तत् ( पुं० ) [ गो + रच् + अच् ] गोपाल,  
 गौ रखने वाला ।—नाथ ( पुं० ) प्रसिद्ध सिद्ध और  
 धर्मप्रवर्तक, खृष्टीय १२ वीं शताब्दी में ये महारमा  
 उत्तर पश्चिम प्रदेश में उत्पन्न हुए थे । ये कबीर  
 साहब के समकालीन थे । इनके अनेकों शिष्य थे,  
 शिष्य इनको गुरु गोरचनाथ या गुरु गोरखनाथ  
 कहते थे । इनका कहना है कि सब से श्रेष्ठ संसार में  
 योगी येही हैं । इन्होंने उदार धर्म का प्रचार किया है,  
 सभी श्रेणी के मनुष्यों को ये अपने सम्प्रदाय में लेते  
 थे । उदारवादी होने के कारण राजा रङ्ग सभी  
 इनका आदर करते थे । इन्होंने गोरच-सहिता नामक  
 योग का ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा है ।

गौरा तद् ( पुं० ) गौर वर्ण, गौर, उजला, फिझी  
 पशु के जवान । ( स्त्री० ) गौरी ।

गौराई ( स्त्री० ) सौन्दर्य, खूबसूरती ।

गौरू दे० ( पुं० ) गो, गौ, वृषभ, पशु ।

गोक्षत तत् ( पुं० ) दो कोश, फोड़द्वय ।

गौराचन, गौराचना तत् ( स्त्री० ) स्वनाम व्यास  
 पीतवर्ण द्रव्य विशेष, गोमसक स्थित शुष्कपित्त

गोल तत् ( पुं० ) घट्टल, गोलाकार, मण्डलाकार ।

गोलक सत् ( पुं० ) पति के न रहने पर जार से

उपन्न पुत्र, वपति के द्वारा उत्पन्न विधवा पुत्र  
 कूँडा, इत्र, आँख की पुतली, गुंबद, सन्दूक या  
 पैली जिसमें किसी कार्य विशेष के लिये थोड़ा  
 थोड़ा धन डाला जाय, फंड, इन्द्रियों का स्थान ।

गोलचला दे० ( पुं० ) गोलन्दाज़, तोप चलानेवाले ।

गोलमाल दे० ( पुं० ) गड़बड़ ।

गोलमिर्च दे० ( स्त्री० ) कालीमिर्च ।

गोला दे० ( पुं० ) शंङ्ख, कन्दुक, गेंदा, घेरा, मण्डल,  
 घुड़, तोप का गोला, काँटे का गोलाकार पिण्डा,  
 नारियल, अन्न रखने का स्थान, मण्डी, जहाँ अन्न  
 विकता है ।—लङ्गूल तत् ( पुं० ) एक प्रकार  
 का बन्दर जिसकी पूछ गाय जैसी होती है ।

गोलाई दे० ( स्त्री० ) गोलापन ।

गोलाकार तत् ( पुं० ) गोलरूप, गोल ।

गोलाध्याय तत् ( पुं० ) ज्योतिषविद्या, ज्योतिष के  
 एक ग्रन्थ का नाम ।

गोलार तद् ( पुं० ) गोलाई गोलता, ढेर फेर ।

गोलाद्ध तत् ( पुं० ) पृथिवी का आधा भाग ।

गोली दे० ( स्त्री० ) छोटा गोला, बन्दूक की गोली ।—

मारना ( वा० ) बन्दूक चलाना, बन्दूक मारना ।

गोलोक तत् ( पुं० ) श्रीकृष्ण का स्थान, नित्यधाम,

वैकुण्ठ ।—प्राप्ति ( स्त्री० ) बलभाचार्य जी के

सम्प्रदाय की मुक्ति, गतिविशेष ।—वासी ( पुं० )

भगवान् श्रीकृष्ण, राजा ।

गोलोमा तत् औपच विशेष, यक्ष ।

गोचत्र ( पुं० ) गोहत्या, गौ का वध करना ।

गोचना दे० ( क्रि० ) छिपाना, लुकाना, ठाँकना ।

गोवर्द्धन तत् ( पुं० ) वृन्दावन के एक पर्वत का नाम,

स्वनाम प्रसिद्ध पर्वत, पृथा न पाने के कारण जत्र

इन्द्र ने व्रज को धृष्टि से नष्ट करना चाहा था, तब

श्रीकृष्ण ने इसी पर्वत को उठाकर व्रजवासियों की

रक्षा की थी । इस पर्वत को श्रीकृष्ण ने अपनी

कनिष्ठा अंगुली पर धारण किया था, बलभाचार्य जी

ने इसी पर्वत से श्रीनाथ जी का अविवेकार किया

था ।—धारी ( पुं० ) गोवर्द्धन पर्वत को धारण

करनेवाला, श्रीकृष्ण ।

गोवर्द्धनाचार्य तत् ( पुं० ) संस्कृत के कवि, शृङ्गार के

प्रसिद्ध आचार्यसप्तशति नामक ग्रन्थ का कर्ता, अपने

गीतगोविन्द में जयदेव ने इनका उल्लेख और बड़ी

प्रशंसा की है । शृङ्गाररस की कविता लिखने में

यह सिद्धहस्त थे । इनके पिता का नाम नीलाम्बर

था । उमावतिधर के समसामयिक होने के कारण

१२ वीं शताब्दी का प्रारम्भ और मध्य इनका समय

सिद्ध होता है ।

गोवशा तत् ( स्त्री० ) बन्ध्या गौ, बहिला गाय ।

गोविन्द तत् ( पुं० ) विश्व को जानने वाला, ज्ञान-

सिन्धु, गोपाल, श्रीकृष्ण, योगधरिपति, वृहस्पति,

वेदान्तवेत्ता, शङ्कराचार्य के गुरु का नाम । सिरों

के दस गुरुओं में से एक, परब्रह्म ।—उत्कुर ( पुं० )

यह मिथिलावासी संभूत पण्डित थे, काव्यप्रकाश

की कारिकाओं की टीका इन्होंने लिखी है, जिसका

नाम काव्यप्रदीप है । इनका समय सभी तरु

निश्चित नहीं हुआ है परन्तु अनुमान से १२ वीं

सदी का अन्तिम भाग ही विद्वानों ने इनका समय

सिद्ध किया है।—राज ( पु० ) मनुस्मृति के एक टीकाकार का नाम, इन्हीं की बनायी टीका का अवलम्ब करके कल्लूक भट्ट ने मन्वर्थमुक्तावली नाम की टीका बनायी है। इनके पिता का नाम माधव था। ग्यारहवीं सदी के अन्तिम भाग में इन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया था।

गोशाला तत्० ( स्त्री० ) गोमृह, गाय बंधने का स्थान, गोशाला।

गोष्ठ तत्० ( पु० ) बाड़ा, गौयों के रहने का स्थान, मनुस्मृति के अनुसार एक श्राद्ध जो कई मनुष्य मिलकर करते हैं। परामर्श, दल, मण्डली।—विहार ( पु० ) गौ चराने के समय श्रीकृष्ण के केलि।

गोष्टी तत्० ( स्त्री० ) मण्डली, वार्त्तालाप, परामर्श, रूपक या नाटक विशेष, परिवार, सभा, कुटुम्ब, ज्ञाति। [खुर का प्रमाण।

गोष्पद् तत्० ( पु० ) गौ के रहने का स्थान, गौ के गोसद्वृत्त तत्० ( पु० ) चमरी गाय व वनगौ।

गोसाईं या गुसाईं तद्० ( पु० ) सन्यासियों की श्रद्धा, ईश्वर, महन्व, गुरु, धर्मी, जितेन्द्रिय, प्रभु, स्वामी।

गोसैया दे० ( पु० ) ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु।

गोस्तन तत्० ( पु० ) गौ की धन, गुच्छ, धौध स्तवक।

गोस्तनी तत्० ( पु० ) दाचा, दाख, श्रृंगुर।

गोस्थान तत्० ( पु० ) [ गो + स्था + अनट् ] गोष्ठ, गोठ, गोकुल, गोशाला।

गोस्वामी तत्० ( पु० ) गोपति, गोरक्षक, बहुभाचार्य के वंशीय, जितेन्द्रिय, बहुधर्म सम्प्रदाय के गुरु।

गोह दे० ( पु० ) विसलोपरा, गोधा, विपक्षपरा।

गोहत्या तत्० ( स्त्री० ) गोवध, गोहिंसा।

गोहरी दे० ( स्त्री० ) उपरी, कण्डा, छाना।

गोहार दे० ( पु० ) हुलड़, रैला, गुल गपाड़, हुदाई, सहाय, सहायतार्थ आह्वान।

गोही दे० ( स्त्री० ) गाँठ, गुठली।

गोह्म दे० ( पु० ) गेहूँ, गोधूम।

गोह्वन दे० ( पु० ) सर्प विशेष, काल रङ्ग का साँप।

गौ दे० ( स्त्री० ) दाव, सुमीता, अवसर, मौका।

गौ दे० ( स्त्री० ) गाय, गौ, गैधा, घेनु।

गौख दे० ( पु० ) गवाच, खिड़की।

गौखा दे० ( स्त्री० ) ताक, आला, दिश्रवा।

गौगा ( पु० ) किंवदन्ती, अफवाह।

गौहर्दे दे० ( स्त्री० ) अङ्कुर, कैरी, फुनगी।

गौड़ तत्० ( पु० ) स्वनाम ध्यात देश, बङ्गाल का पूर्वी भाग, गौड़ देश का वासी, कायस्थ विशेष दशविध ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक ब्राह्मण।—पाद ( पु० ) शङ्कराचार्य के गुरु के गुरु। इन्होंने सायण का टीका का भाष्य और माण्डूक्योपनिषद् की व्याख्या लिखी है।

गौड़ा दे० ( पु० ) उड़ीसा, कटार। [के मतानुयायी।

गौड़िया दे० ( पु० ) गौड़ देश के वासी, प्रभु चैतन्य

गौड़ी तत्० ( स्त्री० ) गुड़ की मर्दिरा, रागाविशेष, काव्यरीति विशेष। [प्रभु।

गौड़ेश्वर तत्० ( पु० ) कृष्ण चैतन्य स्वामी, गौराङ्ग

गौण तत्० ( पु० ) अप्रधान, अचीन, गौणीवृत्ति के द्वारा बोधित अर्थ।—काल ( पु० ) अप्रधान काल।

गौणी तत्० ( स्त्री० ) अस्ती प्रकार के लक्ष्यों के अन्तर्गत एक लक्षण का नाम।

गौतम तत्० ( पु० ) (१) बुद्धदेव का दूसरा नाम, वे कपिल वस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। इनकी

माता का नाम मायादेवी था। ये अपनी माता की ४४ वर्ष की अवस्था में उत्पन्न हुए थे, इनके जन्म के ७ दिन के बाद इनकी माता परलोक

गामिनी हुईं। यह अपनी माता के एक मात्र पुत्र थे। ये स्वभाव से ही दयालु थे, संसार के दुःखों

से बढ़िह होकर इन्होंने राज्य छोड़ दिया और बन चले गये। पीछे येही बुद्ध नाम से प्रसिद्ध हुए।

(२) गोत्र प्रवर्तक भारद्वाज मुनि का नामान्तर, ये महर्षि गौतम के पुत्र थे।

(३) कृपाचार्य का नामान्तर, ये गौतमगौत्रीय शरद्धान के पुत्र थे। इसी कारण इनका गौतम नाम पड़ा था।

(४) न्याय दर्शन के प्रसिद्ध प्रणेता और आचार्य। यह ईसा से ६०० वर्ष पहले हुए।

(५) अहल्या के पति।

(६) सप्तर्षियों में से एक।

(७) पर्वत का नाम जिससे गोदावरी निकलती है और जो नासिक के पास है।

(८) गौतम स्मृति नामक स्मृति के निर्माता क्षत्रि।

गौतमी ( स्त्री० ) अहल्या, गौतम की बनाई स्मृति, गोदावरी नदी । शकुन्तला के साथ राजा दुष्यन्त के पास गयी हुई एक तपस्विनी ।

गौतुम नारि तत् ( स्त्री० ) अहल्या ।

गौन तद् ( स्त्री० ) घेरे के गैले जिनमें अक्ष भर कर बैस पर जादे जाते हैं । [ प्रथमवार आगमन ।

गौना दे० ( पु० ) विरागमन, बध्प्रवेश, पति के घर गौनहार या गौनहार दे० ( पु० ) गौने के बराती, बध्प्रवेश में दूहे के साथ जाने वाले या वह स्त्री जो दूहे के साथ ससुराल जाय ।

गौर ( वि० ) गौर, रवेत, उज्ज्वल । ( पु० ) धव वृक्ष, चन्द्रमा, सुवर्ण, केसर, माष विरोध, पर्वत विरोध ।

गौर ( पु० ) ध्यान, सोच विचार ।

गौरव तत् ( पु० ) [ गुरु + प्यञ् ] गुरुता, प्रभाव, मर्षादा, गुरुत्व, भार, आदर, सम्मान, पूज्यवृद्धि, प्रतिष्ठा, वश, प्रशंसा, बढ़ाई, भारीपन, बहृष्यन, रुद्राव ।—जनक ( पु० ) मर्षादाजनक, सम्मान सूचक ।—ग्वित ( पु० ) प्रतिष्ठित, मान्य, गौरवयुक्त, पूज्य ।

गौरा-तद् ( स्त्री० ) पारवती, दुर्गा, पद्मविरोध ।

गौराङ्ग तत् ( पु० ) रवेतवर्ण, सुन्दर, पीतवर्ण, यूरोपियन, विष्णु, श्रीकृष्ण, चैतन्य देव, गौर अङ्गवाला ।

गौरि तत् ( स्त्री० ) देवी गौरी । [ की कन्या ।

गौरिका तत् ( स्त्री० ) [ गौरी + इक् + का ] आठ वर्ष

गौरिया दे० ( स्त्री० ) चटक, गौरा, मिठी का हूका ।

गौरिला तत् ( स्त्री० ) पृथिवी, धरणी, धरती ।

गौरी तत् ( स्त्री० ) [ गौर + ई ] पार्वती, उमा, अष्टवर्षीया कन्या, हरदी, दारुहरदी, गोरोचना, म्रियगु-वृक्ष, पृथ्वी, नदी विरोध, वरुण की स्त्री, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, रवेतदूर्वा, रागिनी विशेष, माजव राग की पत्नी, जटामांसी ।—पति ( पु० ) शिव, महादेव ।—पुत्र ( पु० ) कार्तिकेय, राघव ।

गौरीश या गौरीस तत् ( पु० ) शिव, महादेव, मयानीपति, उमापति । [ या घर, गोष्ठ ।

गौशाला तद् ( स्त्री० ) गौशों के रहने का स्थान, ग्यारस दे० ( स्त्री० ) एकादशी तिथि, प्रतविरोध ।

ग्यारह दे० ( पु० ) एकादश संख्या, दश और एक, ११ ।

ग्रथित तत् ( पु० ) [ ग्रन्थ + क्त ] कृतग्रंथन, गुथा हुआ, पिरोया हुआ ।

ग्रन्थ तत् ( पु० ) प्रबन्ध, शास्त्र, पुस्तक, सिक्कों की धर्मपुस्तक का नाम, अनुष्टुप्छन्द, श्लोक ।—कर्त्ता ( पु० ) [ ग्रन्थ + कृ + तृण् ] ग्रन्थकार, निबन्धकार, शास्त्रकर्त्ता ।—कार ( पु० ) [ ग्रन्थ + कृ + ण्य ] ग्रन्थकर्त्ता ।

ग्रन्थक तत् ( पु० ) [ ग्रन्थ + कृक् ] निर्माण कर्त्ता, निबन्धकार, रचयिता, माला का सूत्र ।

ग्रन्थन तत् ( पु० ) [ ग्रन्थ + अनट् ] गुम्फन, ग्रथित करण, गाँधन, रचन, गँथना, निर्माण ।

ग्रन्थि तत् ( स्त्री० ) [ ग्रन्थ + ई ] घाँस आदि की गिरह, डोरी आदि की गाँठ, मायाजाल, कुटिलता, आलू, भद्रमोथा ।

ग्रन्थिक तत् ( पु० ) दैवज्ञ, गणक, संहदेव नामक पाण्डव, पीपराभूल, करीर, गुग्गुल, गठियन ।

ग्रन्थित तद् ( पु० ) [ ग्रन्थ + हत ] ग्रथित, गाँथा हुआ, रचित, निर्मित ।

ग्रन्थिमान तत् ( पु० ) [ ग्रन्थि + मन् ] हरसिंगार, जड़, हड़ जोड़, वह औषधि जिससे हूटी हड्डी जुड़ जाती है ।

ग्रन्थिल तत् ( पु० ) पीपराभूल, भद्वरक्ष, आदी, काँकई वृक्ष, करील, आलू ।

ग्रसंन तत् ( पु० ) [ ग्रस् + अनट् ] भक्षण, खादन, निगलना, आक्रमण, ग्रहण ।

ग्रस्त तत् ( पु० ) [ ग्रस् + क्त ] युक्त, खादित, आच्छादित, आक्रान्त, राहु प्राप्त, असम्पूर्ण वाक्य, गृहीत, खाया गाथा ।—स्त ( पु० ) चन्द्र सूर्य का ग्रहण के अनन्तर भस्त होना ।—दय ( पु० ) [ ग्रस् + दय ] राहु ग्रस्त ( ग्रहण लगे ) सूर्य और चन्द्र का वदय होना ।

ग्रह तत् ( पु० ) [ ग्रह् + अल् ] सूर्य आदि नवग्रह, नौ की संख्या, अनुग्रह, निर्वन्ध, आग्रह, हठ, अध्यवसाय, राहु, स्कन्द, शकुनी आदि रोग ।—कल्लोल ( पु० ) आठवाँ ग्रह, राहु ।

ग्रहण तत् ( पु० ) [ ग्रह् + अनट् ] स्वीकार, लेना, उपबन्धि, प्राप्ति, चन्द्र और सूर्य का उपराग ।—न्त ( पु० ) ग्रहण की समाप्ति, मोक्ष, उग्रह ।

ग्रहस्थापन तत् ( पु० ) नवग्रहों की स्थापना, पूजा विशेष ।

ग्रहणी तत् ( स्त्री० ) अतिसार रोग, स्रग्ग्रहणी रोग ।

ग्रहणीय तत् ( पु० ) [ ग्रह् + अनीय ] ग्रहण करने योग्य, ग्राह्य ।

ग्रहीत दे० ( वि० ) गृहीत, पकड़ा ।

ग्रहीता तत् ( पु० ) ग्रहणकर्ता, ग्राहक, पकड़ा हुआ ।

ग्राम तत् ( पु० ) समूह, मनुष्यों का समूह, गाँव, बस्ती, पुरषा, खेड़ा ।

यथा—गिरि ग्राम लै लै हरि ग्राम मारै,  
मनौ पद्मनीपत्र दन्ती बिद्वारै ।

—शमचन्द्रिका ।

सप्तक, शिव ।—कुक्कुट ( पु० ) पोसा मुर्गा ।

—कूट ( पु० ) श्रद्धाजति ।—गृह्य ( पु० ) गाँव का बाहर ।—तत्ता ( पु० ) गाँव का बड़ई ।

—याज्ञक ( पु० ) गाँव के पुरोहित ।—वासी ( पु० ) गाँव का रहने वाला ।

ग्रामांशी तत् ( पु० ) ग्राम के मुखिया, ( पु० ) ग्रामाधिपति, गाँव के स्वामी, विष्णु, मण्डल, नापित, यच ( स्त्री० ) घेरया, नील का पेड़ ।

ग्रामिक तत् ( पु० ) ग्राम्य, दिहासी, गवईयाँ ।

ग्रामीण तत् ( पु० ) [ ग्राम + इन ] ग्राम में उपज, ग्रामवासी, गधार, गवईयाँ ( पु० ) गाँव का सूकर, कूकर आदि । [ गाँव के मुखिया ।

ग्रामपञ्च तत् ( पु० ) गाँव के ऋग्दे मिटाने वाले,

ग्रामेश तत् ( पु० ) [ ग्राम + ईश ] गाँव का मालिक, जमींदार ।

ग्राम्य तत् ( पु० ) [ ग्राम + य ] ग्राम सम्बन्धी, ग्रामजाल, मूल, गवईर, छल कपट रहित । ( पु० ) काम्य का एक देश, अरलील शब्द, मैथुन, मिथुन राशि, गधा, घोड़ा, खच्चर, बैल आदि पञ्च जो गाँवों में पाये जाते हैं ।—देवता ( पु० ) ग्रामरक्षक देवता ।—धर्म तत् ( पु० ) मैथुन, श्रीमसंज्ञ ।

ग्राध तत् ( पु० ) पयैत, पत्थर, ओला, बिनीरी ।

ग्रास तत् ( पु० ) [ ग्रस् + घञ् ] कबल, कौर, पकड़, सूर्य या चन्द्र में ग्रहण लगना ।—वृद्धादन ( पु० ) अन्न, यज्ञ, रोटी कपड़ा ।

ग्रासक तत् ( पु० ) भणक, खादक, घेरनेवाला, रोकने वाला, छिपाने वाला, दबाने वाला ।

ग्रासना तद् ( कि० ) रोकना, घेरना, दबाना, छिपाना, भण्य करना ।

ग्राह तत् ( पु० ) [ ग्रह् + घञ् ] ग्रहण, जल जन्तु विशेष, सूँस, जलहाथी, ग्राहक, सान, नक, मगर

ग्राहक तत् ( पु० ) ग्रहण करनेवाला, ग्राहक, खरीदने वाला, ब्यालग्राही, सपेरा ।—ता ( स्त्री० ) लोम ग्रहण करने की अभिलाषा ।

ग्राही तत् ( पु० ) [ ग्रह् + णिन् ] मल रोषक धारक, ग्रहणकर्ता, कैय । [ मनोनीत, अभिलषित

ग्राह्य तत् ( पु० ) [ ग्रह् + घ्यप् ] ग्रहण के योग्य

ग्रीवा तत् ( स्त्री० ) गला, गर्दन, कण्ठ, गले के नीचे का भाग, किसी शब्द के पीछे जुड़ने पर इसका रूप "ग्रीव" रह जाता है यथा—“हयग्रीव” “सुग्रीव” ।—भरणा ( पु० ) कण्ठभूषण, कण्ठा

ग्रीष्म तत् ( पु० ) ऋतुविशेष, ऋतुओं के अन्तर्गत एक ऋतु का नाम, उष्ण, निदाघ, गाम्भी के दिन —काल ( पु० ) निदाघ, उष्णकाल ।

ग्रीव्य तत् ( पु० ) [ ग्रीवा + वक् ] कण्ठभूषण, गला का गहना, कण्ठा, हँसुली इत्यादि ।

ग्लपित तत् ( पु० ) [ ग्लप् + क्त ] अवमल, धकित, श्रान्त, धकावट ।

ग्लह तत् ( पु० ) जुष्ट की भाजी, पण, दाव ।

ग्लान तत् ( पु० ) [ ग्लै + क्त ] रोग द्वारा, हुकूम शरीर, रोती, खिन्ने, कमजोर ।

ग्लानि तत् ( स्त्री० ) [ ग्लै + क्त ] श्रान्ति, निन्द्य मानसी व्यथा, मन की धकावट, अलक्षि ।

ग्लार ( स्त्री० ) एक पौधा जिसकी फली शाक के काम में आती है ।—पाठ ( पु० ) धीकृधार ।

ग्लाल तद् ( पु० ) अहीर ।

ग्लाला दे० ( पु० ) अहीर, गोपाल, गोप ।

ग्लालिन दे० ( स्त्री० ) अहिरिन, गोपी ।

ग्लैंडा दे० ( अ० ) समीप, निकट, आसपास, नगर समीप, नियरोही ।

ग्लैंडे दे० ( अ० ) पास, समीप, निकट ।

ग्लौ तत् ( पु० ) चन्द्रमा, शशि, विष्णु, कपूर ।

## घ

घ व्यञ्जनों में से कवर्ग का चौथा अक्षर । इसका उच्चारण जिह्वामूल या कण्ठ से होता है ।

घ तत् ( पु० ) घण्टा, घघोर शब्द, मेघ, धूप ।

घंघोरना दे० ( क्रि० ) मलिन करना, कलुषित करना, कलारना, रौंढला करना ।

घँच दे० ( पु० ) गला, कण्ठ, नरोटी, ग्रीवा ।

घंघरा, घंघरी दे० ( स्त्री० ) लहंगा, साया, षण्डा-  
तक, छिमे के पहनने का एक वस्त्र ।

घचाघच दे० ( धा० ) ठसाठस, मचामच, अत्यन्त सङ्की-  
र्णता, लघाज्व भरा ।

घट तत् ( पु० ) कबस, कुम्भ, गगरी, बड़ा, परिमाण  
विशेष, देह, अन्तःकारण, मन ।—अ ( पु० )  
कुम्भजश्रुति, अगस्त्यमुनि ।—दासी ( स्त्री० )  
कुटनी, दूती, सङ्गमकारिणी ।—योगि ( पु० )  
अगस्त्यमुनि, कुम्भज ।

घटक तत् ( पु० ) योजक, योजनकारी, कुटना, कृत,  
मध्यस्थ, विचरैया, विचवनिया, दलाल, चारण,  
घड़ा, मध्यस्थ ।—ता ( स्त्री० ) योजकता, दैत्य,  
कुटनापन ।

घटकर्पर तत् ( पु० ) राजा विक्रमादित्य की सभा के  
एक समासद पण्डित, इनकी बनायी एक छोटी  
सी पुस्तिका है, जिसका नाम घटकर्पर है, इसके  
अतिरिक्त नीतिसार नामक एक और भी ग्रन्थ  
इनका बनाया है । घटकर्पर काव्य बनाकर इन्होंने  
अपनी यमकप्रियता का परिचय देना चाहा है, घट-  
कर्पर के समान एक रासस काव्य भी यमकप्रधान  
है । सम्भव है वह भी इन्हीं प्रकाण्ड पण्डित का  
बनाया हो । विक्रमादित्य के समकालीन होने से  
इनका समय भी छठवीं शताब्दी माना जाता है ।

घटका ( पु० ) मरते समय की स्थिति, घरा ।

घटती तद् ( स्त्री० ) कमी, न्यूनता, अल्पता, अवनति ।

घटना तद् ( स्त्री० ) योजन, मिलन, संस्थाकरण,  
अकस्मात्, कार्य, धनुष, कर्म, विलक्षण दृश्य,  
( क्रि० ) कम होना, न्यून होना ।

घटनीय तद् ( पु० ) [ घटन + घनीय ] योजनीय,  
सम्भाव्य, घटने योग्य, होने योग्य ।

घटन्न दे० ( स्त्री० ) हास, हीनता, उतार, अल्पता,  
न्यूनता । [ निर्माण काना ।

घटत्र दे० ( पु० ) कम होना, चीज होना, न्यून होना,

घटवद्ध दे० ( स्त्री० ) कमीवशी, न्यूनधिकता ।

घटवार, घटवारिया, घटवालिया दे० ( पु० ) घाट  
वाला, जो नदी के पार उतारने का काम करता है,  
घाट पर बैठकर दान लेने वाला ब्राह्मण, घाट का  
देवता, घाटिया ।

घटहा दे० ( पु० ) घाट का ढेरा लेने वाला, नदी के इस  
पार से उस पार जाने वाली नियत नाव, चपरापी,  
दोपी ।

घटा दे० ( स्त्री० ) मेघ, बादल, मेघों का उमड़ना,  
भीड़ । ( गु० ) कम हुआ, घट गया, न्यून हुआ ।

घटाटोप तत् ( पु० ) [ घट + आटोप ] छोहार,  
पालकी का आच्छादन, पर्दा, जघनिका, दम्भ,  
अभिमान, बादलों की चारों ओर से हमड़ी हुई  
घटा, अत्यन्धकार, गहरी बदली ।

घटाना दे० ( क्रि० ) कम करना, न्यून करना, घाकी  
निकालना, काटना, अपमान करना । यथा—  
“उसने अपने आप अपने को घटा दिया है ।”

घटाव दे० ( पु० ) उतार, कमती, न्यूनता ।

घटिक तत् ( पु० ) घड़ियाली या वह व्यक्ति जो  
घंटा घरा होने पर घंटा बजावे ।

घटिका तत् ( स्त्री० ) घड़ी, मुहूर्त, दण्ड, गुरुक, घड़ी  
यंत्र, २४ मिनट का समय, गगरी, घड़ी के ऊपर  
का भाग । [ संयुक्त, बना हुआ, रचा हुआ ।

घटित तत् ( पु० ) [ घट + इत ] मिश्रित, योगित,  
घटिया दे० ( पु० ) निकट, अधम, अल्प मुख्य की  
वस्तु ।—ई ( स्त्री० ) नीचता ।

घटिहा दे० ( वि० ) घालाक, घात पाकर अपना मतलब  
साधनेवाला, घोवा देनेवाला, दुष्ट, जम्पट ।

घटी तद् ( स्त्री० ) [ घट + ई ] दण्ड, घड़ी, झुद घट,  
समयसूचक यन्त्र । ( दे० ) हानि, घाटा, टोटा ।  
—कार ( पु० ) घड़ी बनाने वाला, घड़ीसاز,  
कुम्हार ।—यन्त्र ( पु० ) समयसूचक यन्त्र, घड़ी,  
जब निकालने का यन्त्र ।



घटे दे० (क्रि०) बने, बनाये गये, कम हुए, थोड़े हुए ।  
 घटोत्कच तत्० ( पु० ) राक्षस विशेष, हिडिम्बा  
 राक्षसी का पुत्र, द्वितीय पाण्डव भीम के औरस  
 से और हिडिम्बा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था ।  
 महाभारत के रणक्षेत्र में इसने पाण्डवों की ओर  
 से युद्ध किया था । कर्ण ने अर्जुन का वध करने  
 के लिये जो इन्द्रदत्त शक्ति शक्ति की थी, वसी  
 शक्ति ने इसे कर्ण को मारना पड़ा, दूसरी गति  
 ही नहीं थी । क्योंकि इसके पराक्रमानल में कौरव  
 सेना दग्ध हो रही थी । यदि कर्ण उस शक्ति को  
 काम न में लाते, तो समस्त कौरव सेना नष्ट भ्रष्ट  
 हो जाती । परन्तु इससे अर्जुन दुर्जय हो गये और  
 कर्ण को भी उसी समय यह निश्चय हो गया कि  
 मैं अर्जुन के द्वारा अवश्य ही मारा जाऊँगा ।

घटोत्कर्ण तत्० ( पु० ) ( १ ) शिव के एक अनुचर का  
 नाम, यह मङ्गल का पुत्र था, इसकी माता का  
 नाम मेधा था । इसका दूसरा नाम घटेरवर था ।  
 शाप के कारण मनुष्य योनि में इसे उत्पन्न होना  
 पड़ा था, वज्रयिनी नगरी में इसका जन्म हुआ ।  
 विक्रमादित्य के नवरत्नों को परास्त करने की  
 इच्छा से इसने तपस्या की थी, परन्तु कालिदास  
 के गतिरिक्त अन्य रत्नों को जीतने का इसे घर  
 मिला ।

( २ ) हरिवंश में लिखा है कि घटेरकर्ण विष्णुद्वेपी एक  
 राक्षस था, हरि का नाम न सुन पड़े इसके लिये यह  
 सर्वदा कानों में घण्टा बाँधकर बजाया करता था ।  
 शिवजी की आज्ञा से बदरिकाश्रम में आकर हरि  
 रूपी क्रीष्ण की इसने स्तुति की और मुक्त हुआ ।  
 घट्टा तत्० ( पु० ) घाट, नदी का या तालाब का  
 किनारा, स्नान करने का स्थान । [ होना, ठेठ ।  
 घट्टा दे० ( पु० ) गिलटी, काम करने से चाम का मोटा  
 घड़घड़ाना दे० ( क्रि० ) गरजना, तड़कना, घड़घड़  
 करना, गड़गड़ाना ।

घड़त दे० ( स्त्री० ) बनाबट, साँचा, थाकृति, डील ।  
 घड़ना दे० ( क्रि० ) गढ़ना, बनाना, निर्माण करना ।  
 घड़ा तद्० ( पु० ) गगरा, कलस, घट, कुम्भ ।  
 घड़िया दे० ( स्त्री० ) कुदिय्या, पुरवा, मिट्टी का छोटा  
 घरतन, जिसमें रखकर सुनार सोना चाँदी गलाते

हैं, शहद का छत्ता, गर्भाशय, पानी के रहँट की  
 छोटी छोटी ठिलियाँ । [ घण्टा, वाघ विशेष ।

घड़ियाल दे० ( पु० ) मगर, नम्र, जलजन्तु विशेष,  
 घड़ियाली दे० ( गु० ) घण्टा बजाने और बनाने वाला ।  
 घड़ी दे० ( स्त्री० ) समय का परिमाण, साठ पल,  
 समय बतानेवाला यन्त्र, —में तोला घड़ी में  
 माशा ( वा० ) व्यवस्थितचित्त, जिसका चित्त  
 चय चय बदलता रहे । [ पलहँगा ।

घड़ीचा, घड़ीचो दे० ( पु० ) तिपाई, लटकन,  
 घण्टा दे० ( पु० ) घड़ी, वाघ, विशेष, कान्धनिमित्त,  
 वाघयन्त्र, घड़ियाल । —पद्य ( पु० ) गाँव का  
 प्रधानमार्ग । —शब्द ( पु० ) घण्टा का शब्द,  
 समयसूचक ध्वनि । [ कोसातकी ।

घण्टालि तद्० ( स्त्री० ) छोटा घण्टा, वृक्ष विशेष,  
 घण्टिका तद्० ( स्त्री० ) ताल के ऊपर की छोटी  
 जीम, चाँदी, लोला ।

घण्टी दे० ( स्त्री० ) तुटिया, छोटा सोटा, छोटा घंटा ।  
 घण्ट दे० ( पु० ) हाथी का घण्टा, प्रताप, बत्ताप,  
 घण्टीमाला । [ घटेरकर्ण, मङ्गल का पुत्र ।

घण्टेश्वर तद्० ( पु० ) देवता विशेष, शिव का गण,  
 घंटिया तद्० ( पु० ) घातक, नृशंस, क्रूरकर्मा, हत्यारा ।  
 घन तद्० ( पु० ) सरलता रहित, गाढ़, निविड़, घविरल,

मेघ, यादरु, ठोस, पोढ़ा, दृढ़, मोटा, अधिक,  
 सञ्जातीय, तीन अङ्गों का पूरण करना, गणित  
 विशेष, हथौड़ा, कपर । —काल ( पु० ) वर्षाब्द ।  
 —गोलक ( पु० ) सेना और चाँदी का मिलान ।  
 —गरज ( पु० ) मेघ शब्द, मेघ गर्जन । —घन  
 ( पु० ) सर्वदा, सदा । —घनाना ( क्रि० ) घन घन  
 शब्द करना । —घेरा ( पु० ) घेरा, जहंगा । —  
 घोर ( पु० ) मेघ की गम्भीर ध्वनि, घनघनाहट । —  
 ज्वाला ( स्त्री० ) विद्युत्, विजुली । —ता ( स्त्री० )  
 गाढ़ता, निविड़ता । ध्वनि ( पु० ) मेघगर्जन,  
 मेघ शब्द । —निहार ( पु० ) तुषारराशि, अधिक  
 तुषार । —नाद ( पु० ) मेघ का शब्द, मेघनाद  
 रावण का पुत्र इन्द्रचित्त । —पदवी ( स्त्री० )  
 आकाश, अन्तरिक्ष, व्योम, नभ । —फल ( पु० )  
 अङ्कविद्या विशेष, गणित विशेष । —मूज्ञ ( पु० )  
 पूरण करने योग्य सञ्जातीय तीन अङ्गों का मूल

अध ॥—रस ( पु० ) सघन, गोद, अवलेह, सम्यक् पकाया रस ॥—श्याम ( पु० ) अधिक कृष्ण वर्ण, मेघ के सदृश काला, श्रीकृष्ण ॥—समय ( पु० ) वर्षा ऋतु ॥—सार ( पु० ) कर्पूर, पारद विशेष ॥ [ गर्दिय, चक्र, फेरफार, जंजाल ।

घनचक्र तद् ( पु० ) बहुलमना पुरुष, मूर्ख, निठला, घना दे० ( गु० ) गहरा, सघन, बहुत देर, अधिक प्रचुर ।

घनात्मन दे० ( पु० ) मैसा, महिष ।

घनाक्षरी तत् ( पु० ) मनहर छन्द, कवित्त ।

घनात्मक तत् ( वि० ) जो लम्बाई चौड़ाई मोटाई अथवा ऊँचाई व गहराई में भराव हो ।

घनाहु तत् ( पु० ) [ घन + आहु ] आपघ विशेष, नागरमोषा ।

घनिष्ट तत् ( वि० ) गाढ़ा, घना निकटस्थ ।

घने तद् ( वि० ) बहुत, अनेक ।

घनेरा या घनेरे दे० ( गु० ) बहुत से, बहुत, अधिक, ( बहु व० ) घनेरे ( स्त्री० ) घनेरी ।

घनई दे० ( स्त्री० ) घड़ों को लकड़ियों में बाँधकर बनाया गया वेड़ा, जिससे छोटी नदियाँ पार की जाती हैं ।

घपची दे० ( स्त्री० ) लिपट, दो हाथ की घिपट ।

घपला दे० ( पु० ) गड़बड़, गोलमाल ।

घबराना, घबड़ाना दे० ( क्रि० ) व्याकुल होना, हड़बड़ाना, दहिस होना । [ बहेग, व्याकुलता ।

घबराहट, घबड़ाहट दे० ( स्त्री० ) दुःख बलेश

घबरी दे० ( स्त्री० ) गुच्छा, स्तवक ।

घमण्ड दे० ( पु० ) रर्ष, अभिमान, अहङ्कार, गर्व ।

घमण्डी दे० ( गु० ) अहङ्कारी, अभिमानी, दाम्भिक ।

घमरोल दे० ( स्त्री० ) रीठा, कोलाहल, भीड़माड़ ।

घमस दे० ( स्त्री० ) निर्वात, वायुरहित, ऊमस ।

घमसान, घमासान दे० ( पु० ) अहङ्कार, घोर, भयानक, लड़ाई, युद्ध ।

घमाघम दे० ( गु० ) कचाकच, घमघम शब्द, आघात का शब्द, अधिक धूप, धूप ही धूप ।

घमाना दे० ( क्रि० ) धूप में बैठना, धूप दिखाना, तापना, पसीने में बूझ जाना । [ पौधा, मढ़माड़ ।

घमोई या घमोर दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का कटिदार

घमौरी दे० ( स्त्री० ) शम्भौरी, शंघौरी ।

घर तद् ( पु० ) गृह, मकान, वासस्थान ॥—घातना

( क्रि० ) गृह में रख लेना, उपपत्ती करना, गृह नाश करना ॥—चलाना ( वा० ) गृह का प्रबन्ध करना, घर का खर्चवर्च चलाना ॥—जाना ( वा० ) घर पर किसी आपत्ति का पड़ना, उजड़ना, बिगड़ना ॥—डुबोना ( वा० ) घर में कलह उत्पन्न करना, अश्व का या अपना घर नष्ट करना ॥—फोरो दे० ( स्त्री० ) घर फोड़नेवाली, घर में फूट कराने वाली, हथर की उधर लगाने वाली, सुगल खोरिन ॥—डूटना ( वा० ) नाश होना, घर का नाश होना ॥—वैठना ( वा० ) निश्चिन्ता बैठना, काम काज न करना, घर का टूटना ॥—वैठ जाना ( वा० ) निश्चिन्त होना, काम न रहने से घर बैठ जाना, घर का टूटना, विनष्ट होना ॥—होना ( वा० ) स्त्री पुरुष में आपस का प्रणय होना ।

घरऊ दे० ( गु० ) बरेला, घरवा, घर सम्बन्धी, घर का ।

घरनई दे० ( स्त्री० ) चौबड़ा, वेड़ा, घेर, घनई ।

घरना दे० ( क्रि० ) गड़ना, बनाना, घर्षण करना, घिसना । [ रहिया ।

घरनी दे० ( स्त्री० ) स्त्री, भार्या, पत्नी, घरवाली,

घरबराव दे० ( पु० ) घर का अटाला, चीज वस्तु ।

घरवार दे० ( पु० ) कुटुम्ब, परिवार । [ की एक अल ।

घरवारी दे० ( गु० ) गृहस्थी, कुटुम्बी, माधुर ब्राह्मणों

घररा दे० ( पु० ) खरखाहट, दुःख, पीड़ा ।

घरराटा दे० ( पु० ) धुनिविशेष, नासिकाध्वनि ।

घरवाला दे० ( पु० ) गृही, गृहस्थी, गृहस्वामी ।

घराऊ दे० ( वि० ) घर का, आपस का ।

घरानी दे० ( पु० ) विवाह में दुलहिन के कुटुम्बी या कन्या कि श्वर के नेतरिया । [ वर्ग, खानदानी ।

घराना दे० ( पु० ) कुटुम्ब, वंश, घर के लोग, परिवार

घरामी दे० ( पु० ) छुर्वैया, घर छाने वाला ।

घरिक दे० ( अ० ) एक घड़ी, घड़ी भर, घोड़ी देर ।

घरिया दे० ( स्त्री० ) प्रघटी, मिट्टी की पनी छोटी कटोरी जिसमें रखकर सुनार सोना, चाँदी गलाते हैं ।

घरी दे० ( स्त्री० ) तह, बुझट, तहलगाई, एक निपत समय, घड़ी । [ सम्बन्धी, घर का ।

घरंजा दे० ( गु० ) घर का पोसा, घर में बसत, घर

घरौदा, घरौंदा दे० ( पु० ) खंख के खिपे लड़कों का बनाया घर, छोटा घर ।

—दौड़ ( स्त्री० ) घोड़ों का दौड़ाना, बाजी रख कर पोड़ा दौड़ाना ।—चहल ( स्त्री० ) घोड़ों का रथ, चार पहिये का रथ, घोड़ा गाड़ी ।—मुह्राँ ( गु० ) घोड़े के समान मुँहवाला, किस्म विशेष, —साल ( पु० ) तथेला, अस्तबल, घोड़ों के रहने का स्थान ।—सना ( गु० ) घुँगर करना, पेंच देना ।  
 घुड़कना, घुड़कना दे० ( कि० ) दशना, धमकाना, धमकी देना, रोष जमाना । [तिरस्कार ।  
 घुड़की दे० ( स्त्री० ) धमकी, भमकी, फिड़की, घुण तत्० ( पु० ) कीड़ा, कृमि विशेष ।—अत्तर ( पु० ) [ घुण + अत्तर ] घुन के बनाये अत्तर, घुन के चलने से जो अत्तर यन आते हैं । अकस्मात् सिद्ध, बिना प्रयत्न के प्राप्त, इज्जित, बिना परिश्रम के प्राप्त ।  
 घुणड़ी दे० ( स्त्री० ) बटन, बुताम या बोताम, बन्द ।  
 घुन तद्० ( गु० ) फाटकीट, काष्ठकृमि, घुण, वे जन्तु जो काठ वा अनाज को भीतर से खाकर पोछा कर देते हैं । [खोखला, पोछा ।  
 घुना तद्० ( गु० ) घुना हुआ, घुन का खाया, घुनात्तर तद्० ( पु० ) घुन के काटे हुए चिन्ह, घुनों की काट कर बनाई हुई रेखाएँ ।  
 घुनघुना दे० ( पु० ) एक खिलौना जो हाथ में लेकर हिलाने से कनकन करता है ।  
 घुनियाँ दे० ( गु० ) घुना, कपटी ।  
 घुप दे० ( पु० ) अन्धकार, अधियारा ।  
 घुमघुमा दे० ( पु० ) घुमाव, टालना, फिर फिर वहीं ।  
 घुमघुमाना दे० ( कि० ) घुमाना, फिराना, बात केरना, बात डलटना ।  
 घुमड़ना दे० ( स्त्री० ) मेघों का घिर आना, ढुँड़िन होना ।  
 घुमरी, घुमड़ी दे० ( स्त्री० ) तिर्मिरी, चक्कर, घूर्णी, एक रोग, मूर्च्छा, परिक्रमा ।  
 घुमटा दे० ( पु० ) चक्कर, घुमरी ।  
 घुमरहिँ दे० ( कि० ) घुमरी खाते हैं, चक्कर खाते हैं ।  
 घुमाना दे० ( कि० ) फिराना, बहकाना, धोखा देते रहना, टहलाना ।  
 घुरकना दे० ( कि० ) घुड़कना, धमकाना, दवाना ।  
 घुरकी दे० ( स्त्री० ) धमकी, फिड़की, घुड़की ।  
 घुरघुरा दे० ( पु० ) कीट विशेष, एक प्रकार का रोग गलगण्ड का भेद ।

घुरना दे० ( कि० ) खराटा मारना, नाक का खरखर शब्द ।  
 घुरनी दे० ( स्त्री० ) घुमरी, तिर्मिरी, चक्कर । [देखा ।]  
 घुरुका तद्० ( पु० ) भीमसेन का एक पुत्र, (घरोक्च घुलना दे० ( कि० ) गलना, पकना, पिघलना, सड़ना ।  
 घुलमिल दे० ( गु० ) मिल गया, घुल गया, एक गया ।  
 घुलाऊ दे० ( गु० ) पिघलाऊ, गलाऊ, सड़ने योग्य ।  
 घुलाना दे० ( कि० ) पिघलाना, गलाना, सड़ाना, नरम करना, पकाना ।  
 घुलावट दे० ( स्त्री० ) पिघलावट ।  
 घुवा दे० ( पु० ) सेमर की रूई ।  
 घुसना दे० ( कि० ) पैडाना, प्रविष्ट होना, भीतर जाना ।  
 घुसपैठ दे० ( पु० ) घाना जाना, पहुँच, पैसार, प्रवेश ।  
 घुसाना दे० ( कि० ) पैडाना, घुसेड़ना, डालना, गाड़ना, लगाना । [लोसना ।  
 घुसेड़ना दे० ( कि० ) डोसना, पैडाना, घुमाना, घुस्की दे० ( स्त्री० ) कुश्टा, दुर्गाचारिणी, व्यभिचारिणी स्त्री ।  
 घुस्युण तद्० ( पु० ) गन्ध द्रव्य विशेष, कुङ्कुम ।  
 घुँइया ( स्त्री० ) बरहई, थरवी । [भादि ।  
 घुँघनी ( स्त्री० ) घी या तेल में तला हुआ, चना मटर घुँघरारे ( वि० ) कुश्नेदार, अँगूठियाँ, कुक्षित केरों के लिये वह विशेषण प्रयुक्त होता है ।  
 घुँघची दे० ( स्त्री० ) लाल रस्ती, गुञ्जा ।  
 घूँघट तद्० ( पु० ) थोड़ीनी का वह भाग जिससे लियों का मुँह ढका रहता है, घोमटा ।  
 घूँघर दे० ( पु० ) बालों के छरले या मरोड़ ।  
 घूँघरू दे० ( पु० ) पैर का एक गहना जो घुमघुम शब्द करने के लिये नाचने के समय पहना जाता है ।  
 घूँट दे० ( पु० ) एक बार में पीने योग्य पानी आदि, यथा—एक घूँट पीलो, मैं खून का घूँट पीकर रह गया । [करना ।  
 घूँटना दे० ( कि० ) निगलना, लील जाना, पेट में घूँटी दे० ( स्त्री० ) छोटा घूँट, बालकों को औपध देने की मात्रा, बालकों की औपधि ।  
 घूँस दे० ( पु० ) सूँघा, चूहा, मृपिक, रिशवत ।  
 घूँसा दे० ( पु० ) मुका, डुक, मुटिका, मूका ।  
 घूँसू दे० ( पु० ) घुग्घू, पेचापेचक ।

धून दे० ( गु० ) द्वेष, विरोध, द्वेद, अनयनाय, खट-  
पट, झगड़ा ।  
धूना दे० ( गु० ) कपटी, द्रोही, छुली, धुना ।  
धूम दे० ( पु० ) धुमाव, धेर, फेर ।  
धूम दे० ( वा० ) धुमाव, चकर । [ करना ।  
धूमना दे० ( कि० ) टहलना, फिरना, लुढ़कना, उद्योग  
धूमि ( कि० ) धूम कर, चकर खाकर ।—त धूमा हुआ ।  
धूर दे० ( पु० ) ताक, देख, निहार, झूझ, कतवार,  
झूझ डालने की जगह, घूरा ।  
धूरची दे० ( स्त्री० ) डलझेड़ा, फँसाव, डलझन ।  
धूरना दे० ( कि० ) ताकना, देखना, क्रोध से आँखें  
खिलाना ।  
धूरिया दे० ( पु० ) घूरा, झूझ ।  
धूर्णन तत्त्वं ( पु० ) [ धृण + अनट् ] भ्रमण, चाक के  
समान घूमना, भ्रम, भ्रान्ति, घेरा, सिर हिलाना ।  
धूर्णित तत्त्वं ( गु० ) [ धृण + क ] भ्रमित, घुमाया गया ।  
धूस दे० ( पु० ) बड़ा मूसा, घूस, रियायत, बरकोच ।  
धूसत दे० ( पु० ) उखल का यथा, घुंसेना ।  
धूषा तत्त्वं ( स्त्री० ) जुगुप्सा, अत्यन्त भयहेला,  
अपज्ञा, चिन, ग्लानि ।—ह ( गु० ) गर्हित, कुत्सित,  
धूषा के योग्य ।—स्पद ( गु० ) धूषाकर, धिनौना,  
कुत्सित, निन्दित । [ अपश्रुत, निन्दित, कुत्सित ।  
धूषित तत्त्वं ( गु० ) [ धृण + क ] अश्रुदान्वित,  
धूष्य तत्त्वं ( गु० ) [ धृण + य ] गाल, गहंणीय,  
तिरस्कार के योग्य ।  
धृत तत्त्वं ( पु० ) [ धृ + क ] धीव, धी ।—कुमारी  
( स्त्री० ) धीकुवारी ।—क ( गु० ) धृत सिद्धित,  
धृत में डुबोया ।  
धृताची तत्त्वं ( स्त्री० ) स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम ।  
धृष्ट तत्त्वं ( गु० ) [ धृ + क ] धर्षित, पिसा हुआ ।  
धृष्टि तत्त्वं ( पु० ) [ धृ + ति ] घिसना, मारना, शूकर,  
सुभर ( स्त्री० ) विष्णुकान्ता नाम की औषधि ।  
धेंधा दे० ( पु० ) घेधा, कूली गढ़न वाला ।  
धेंट दे० ( पु० ) गला, गढ़न ।  
धेंटा दे० ( पु० ) शूकर का यथा ।  
धेगा, धेघा दे० ( पु० ) गलमण्ड रोग, धेघुआ ।  
धेतल, धेतला दे० ( पु० ) जूती विशेष ।  
धेपना दे० ( कि० ) मिलाना, मिश्रण करना ।

धेर दे० ( पु० ) मण्डल, परिधि, घेरा ।—घार ( पु० )  
विस्तार, सुशामय, चौतरफा घेरना ।  
धेरना दे० ( कि० ) चारों घोर से घेरना ।  
धेरनी दे० ( स्त्री० ) रईम का हथ्या । [ मण, मुहासरा ।  
धेरा दे० ( पु० ) परिधि, घुमाव, वृत्त, हाता, पेडा; आक्र-  
धेलवा दे० ( पु० ) धलुआ, रूँक ।  
धेवर दे० ( पु० ) मिठाई विशेष, गुपचुप ।  
धौघा दे० ( पु० ) शम्बूक, खोखला, सीप ।  
धौटना दे० ( कि० ) रगड़ना, मलना, ( पु० ) सोटा  
ब लोड़ा, भंग धुटना । [ रहने का स्थान ।  
धौसला दे० ( पु० ) खाता, चासा, नीड, पचियों के  
धौसुआ दे० ( पु० ) देखो धौसला ।  
धोखना ( कि० ) कण्ठाग्र करने को बारबार पड़ना ।  
धोघी दे० ( स्त्री० ) जेब, थैली, कोली, धौघी ।  
धोटक तत्त्वं ( पु० ) आव, घोड़ा, तुरा, गाड़ी ।  
धोटना दे० ( कि० ) परिश्रम करना, अभ्यास करना,  
डाटना, झूटना, मरोड़ना, पीसना ।  
धोटनी दे० ( स्त्री० ) लुढ़िया, लोढ़िया, लोढ़ा, धोटना ।  
धोटा दे० ( पु० ) धोटने की लकड़ी, पीसने का सोटा,  
कपड़े पर चमक पैदा करने की वस्तु ।  
धोटाळा दे० ( पु० ) चपला, गडबड़ ।  
धोह दे० ( गु० ) नम्र, मीठा मधुर ।  
धोह दे० ( पु० ) गुठना, गिडुआ ।  
धोड़ा दे० ( पु० ) धब्ब, धोटक, तुरा ।—गाड़ी दे०  
( स्त्री० ) : यह गाड़ी जो धोड़े से खोली जाय ।  
( स्त्री० ) धोड़ी, धुड़िया ।  
धोपा दे० ( पु० ) ओढ़ने की एक चीज़, गुप्त स्थान ।  
धोर तत्त्वं ( गु० ) [ धुर + अल् ] मयङ्गूर, मयानक,  
विकट, अन्धकार ।—तर ( पु० ) अत्यन्त भया-  
नक, डरावना ।—रूपी ( गु० ) भयानक, भीषण,  
भयङ्कर ।  
धोला दे० ( पु० ) मट्टा, झाड़ू, मही, तक्र । [ कृत्रिमता ।  
धोलाधुमाव दे० ( पु० ) टालमटोल, बनावट,  
धोलना दे० ( कि० ) मिलाना, घोरना ।  
धोला दे० ( पु० ) गंदला, धुमिला, गाढ़ा, धोला हुआ ।  
धोप तत्त्वं ( पु० ) अहीरों की वस्ती, अहीरों का गाँव,  
तट, ईशानकोण का एक देश, शब्द, ताल का एक  
मेद, यज्ञाती कायस्थों की एक ब्रह्म ।



चकरी तद् ( स्त्री० ) चकरी, चकरी का पांठ, लड़कों का खिलौना विशेष ।  
 चकलाई दे० ( स्त्री० ) चौड़ाई, चकलाई ।  
 चकला दे० ( पुं० ) पत्थरियों का महल, बेरयालय, पाट और सूत से बना कपड़ा, देश का प्रान्त, प्रदेश, सूबा का चक्रा—काठ या पत्थर का, जिस पर रोटी पूरी घेरी जाती है । ( वि० ) चौड़ा ।—वार ( पुं० ) शासक, कर वसूल करनेवाला अधिकारी ।  
 चकलाई दे० ( स्त्री० ) चौड़ाई, फैलाव, विस्तार ।  
 चकलाना दे० ( क्रि० ) चौड़ा करना, चौड़ांना फैलाना ।  
 चकला तद् ( पुं० ) चक्रवाक, हंस जाति का एक पक्षी ।  
 चकवी तद् ( स्त्री० ) चक्रवा की मादा ।  
 चका तद् ( पुं० ) चक्र, पहिया, कुम्हार का चाक, रोटी पूरी घेलेने का चकला ।  
 चकाचक दे० ( स्त्री० ) पूर्णता, पूर्ण, वृत्तिकारक, जैसे—“ चकाचक बनी है, चकाचक है । ”  
 चकाचौंध दे० ( स्त्री० ) उजास, जगरमगर, उजाड़ा, तिलमिलाहट, तिलमिली ।  
 चकावू तद् ( पुं० ) चक्रव्यूह, युद्ध के समय सैनिकों को रणभूमि में विशेष ढंग से खड़ा करना ।  
 चकार तद् ( पुं० ) वर्षामाला का छठवाँ व्यंजन ।  
 चकावी दे० ( स्त्री० ) मैलिया दाढ़ ।  
 चकित तद् ( पुं० ) अव्यभिक्त, विस्मित, आश्चर्यान्वित, व्याकुल, हैरान ।  
 चक्रे दे० ( पुं० ) बड़ी आँख वाला, बड़ब्राह्म ।  
 चकोआ, चकोतरा दे० ( पुं० ) नीपू विशेष, बड़ा नीपू ।  
 चकोर तद् ( पुं० ) पक्षि विशेष, तीतर का एक भेद, यह चन्द्रमा को देख बहुत प्रसन्न होता है । यह आग खाता है । लोग कहते हैं की यह पूर्णिमा के दिन यदि किसी तिजारी ज्वर रोगी की ओर प्रसन्नता से ताक दे, तो उसका ज्वर छूट जाता है और पुनः ज्वर नहीं आता ।  
 चकौड़ दे० ( पुं० ) चकौड़ा, एक प्रकार का पौधा, जिससे दाढ़ छूट जाती है, चकाचौंध ।  
 चक्र तद् ( पुं० ) पहिया, चक्रा, चाक चक्कर, चक्र । ( पद्य में ) चक्रा, कुम्हार का चाक, दिशा ।  
 चक्रर तद् ( पुं० ) चाक, गोलाकार घेरा, मण्डलाकार सड़क, रास्ते पर घूमना, जटिलता, घुमरी, जंगल, अन्न विशेष ।

चक्रस दे० ( पुं० ) चित्रियों का अङ्क ।  
 चक्रा दे० ( पुं० ) चक्र, गाड़ी का पहिया, बड़ा चिपटा टुकड़ा, चक्का, चँपरी, ईटा पत्थर या कड़ू का ढेर जो माप के लिये क्रम से लगाया गया है ।  
 चक्रान दे० ( पुं० ) गाढ़ा, चक्का, अक्षित, धकित ।  
 चक्री दे० ( स्त्री० ) पाट, जाँत, आटा पीसने के लिये पत्थर का यन्त्र ।  
 चक्र दे० ( स्त्री० ) लुरी, चाक ।  
 चक्रा दे० ( पुं० ) चक्रवर्ती राजा, उदयागत पर्यन्त राज्य शासन करने वाला । इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है ।  
 चक्र तद् ( पुं० ) रथाङ्क, रथ का पहिया, कुम्हार का चाक, अन्न विशेष, सुदर्शनचक्र, जल का घुमाव, तगर का फूल, मण्डल, व्यूहबना विशेष, हस्तरेखा विशेष, राह, देश, योगानुसार शरीरस्थ ६ पद्म रेखाओं से बने चौखूटे या गोल खाने । सामुद्रिक के अनुसार हाथ पैर में महीन रेखाओं के धूने हुए शुभाशुभ फलप्रद चिन्ह, भ्रमण, दिशा, वर्षावृत्त विशेष, बोला, जाल ।—धर ( क्रि० ) विष्णु, बाजीगर ।—पाणि ( पुं० ) विष्णुनारायण, श्री-कृष्ण ।—वत् ( थ० ) चक्राकार अन्न, चक्र के समान ।—वर्ती ( पुं० ) सार्वभौम, समुद्र पर्यन्त प्रजा पालन करने वाला, सम्राट् धृष्टा का साग ।  
 —चाक ( पुं० ) पक्षि विशेष, चक्रवा ।—चात तद् ( पुं० ) हवा का चक्कर, बघण्डर ।—चात ( पुं० ) लोफालोक पर्वत, मण्डलाकार, विक्र समूह ।  
 —वृद्धि ( स्त्री० ) वृद्धि पर वृद्धि, पाढ़ पर पाढ़, सूब दर सूद ।—व्यूह ( पुं० ) युद्ध के लिये मण्डलाकार सेना को सजाना, चक्रव्यूह के युद्ध ही में सोलह वर्ष के वीरश्रेष्ठ अर्जुनपुत्र अभिमन्यु को नराधम दुर्योधन के पक्ष के राजाओं ने मिल कर मारा था ।—जज्ञ, ( स्त्री० ) गुरुच, श्रमलता ।  
 चक्रा तद् ( स्त्री० ) समूह, गिरोह, टोली ।—कार ( पुं० ) गोलाकार, घेरा ।—ङ्ग ( पुं० ) हंस ।  
 चक्राङ्कित तद् ( वि० ) जिसने अपने बाहुमूल पर चक्र का चिन्ह लगावा हो । श्रीवैष्णव, श्रीरामा-



चटकना दे० ( क्रि० ) कड़कड़ाना, तड़कना, टूटने या फूटने का शब्द, दरार पड़ना, जँगली फोड़ना, खन-वन होना, खटकना । ( पु० ) थप्पड़, थप्प, धप्पा, धौल, तमाचा ।

चटकनी ( स्त्री० ) किवाड़ बन्द करने की कुंडी विशेष ।

चटकमटक ( स्त्री० ) शृङ्गार, चमक, सजधज ।

चटकरना दे० ( क्रि० ) चुरत करना, मूट निगल जाना ।

चटका दे० ( पु० ) डोटा, चट्टी, पपटा, दाड़ा, भौरा, गरगौआ पत्ती, गौरैया । [चिढ़ाना, कुपित करना ।

चटकाना दे० ( क्रि० ) तोड़ना, उचाटना, छोड़ना,

चटकारना दे० ( क्रि० ) पशुओं का उत्तेजित करने का शब्द विशेष । [चमकदार ।

चटकीला दे० ( पु० ) चमकीला, सुन्दर, मनोहर,

चटखना दे० ( क्रि० ) बीच से टूटना, चटकना ।

चटचटिया दे० ( पु० ) हड़बड़िया, चटख, उतावला ।

चटना दे० ( पु० ) चटोरा, पेड़ ।

चटनी दे० ( स्त्री० ) भोजन का भेद, चाटने की वस्तु, छोटे शिशु के खेलने की वस्तु ।

चटपट दे० ( ध० ) मरपट, शीघ्र, तुरन्त ।

चटपटा दे० ( स्त्री० ) कुर्तीला, तेज, शीघ्र काम करना, भोजन का एक भेद विशेष । [तड़कड़ाना ।

चटपटाना दे० ( क्रि० ) व्याकुल होना, फड़कड़ाना,

चटपटाहट दे० ( स्त्री० ) व्याकुलता, शीघ्रता ।

चटपटिया दे० ( पु० ) कुर्तीला, चतुर ।

चटपटी दे० ( स्त्री० ) उतावली, हड़बड़ी, घबड़ाहट, कुर्तीली, चञ्चल, चपल ।

चटवाना दे० ( क्रि० ) चटाना, सान धराना ।

चटशाल दे० ( स्त्री० ) छोटे शालकें की पाठशाला ।

चटसार दे० ( स्त्री० ) पाठशाला ।

चट तड़ ( वि० ) चण्ड, चालाक, सवाना, भूत छुटा हुआ । [तिनकों का बना बिछौना ।

चटाई दे० ( स्त्री० ) आस्तरण विशेष, पाटी, साथरी,

चटाक दे० ( स्त्री० ) धड़ाका, खड़ाका, घोरनाद ।

चटाका दे० ( पु० ) धड़ाका, कड़का, तड़ाका ।

चटाचट दे० ( पु० ) शीघ्र शीघ्र, लगातार, चटाचट शब्द, प्रतिध्वनि । [विरोध, वैर ।

चटान दे० ( स्त्री० ) शिला, पत्थर, पापाय, क्रोध,

चटापटी दे० ( स्त्री० ) चटपटी, शीघ्रता, फुरती, किसी

फैरने वाले रोग के कारण बहुत से लोगों की शीघ्र शीघ्र मृत्यु का होना । [चाटने वाला ।

चटिया दे० ( पु० ) विद्यार्थी, शिष्य, छात्र, चेला । ( पु० )

चटो दे० ( स्त्री० ) ध्यान, स्थिरता । यथा—निबटो रुचि मीचु घटी हु घटी लगजीव जतीन कि छुटी चटो ।

—रामचन्द्रिका ।

चटु तत्व० ( पु० ) सुखामद, उदर, यतिवर्ग का एक आसन, सुन्दर, मनोहर । [तव० ( स्त्री० ) विजर्वा ।

चटुल तव० ( पु० ) चपन, सुन्दर, मनोहर ।—

चटोरा या चटोरा दे० ( पु० ) स्वादलोलुप, लोभी ।—

पन दे० ( पु० ) अच्छी अच्छी चीजें खाने का व्यसन, स्वादलोलुपता ।

चटोरी दे० ( स्त्री० ) चाटने वाली, स्वादी स्त्री ।

चट्ट ( वि० ) तुरन्त, समाप्त, छुट । ( सुहा० )—फरना समाप्त करना । [चटाई, खुला मैदान, दाग ।

चट्टा दे० ( पु० ) विद्यार्थी, पाठशाला का लड़का, चेला,

चट्टान दे० ( पु० ) पत्थर का छोटा टुकड़ा, चटान, शिलाखण्ड ।

चट्टावट्टा दे० ( पु० ) एक प्रकार का खिलौना ।

चट्टी दे० ( स्त्री० ) चटका, घटती, डोटा, हानि, पड़ाव, स्लीपर जूती, पैर का ज़नाना गहना ।

चड़ दे० ( पु० ) लकड़ी या वृक्ष की डाली टूटने का शब्द, तमाचा, थप्पड़ ।

चड़चड़ दे० ( पु० ) चटचट, पटपट, टेटें, थकथक ।

चड़चड़ाना दे० ( क्रि० ) फाटना, तड़कना, टूटना, फूटना ।

चड़पड़ाना दे० ( क्रि० ) फटना, फूटना ।

चड़बड़ दे० ( पु० ) बड़बड़, थकथक ।

चड़बड़िया दे० ( पु० ) बकरी, बकवादी, गप्पी, खबार ।

चड़्ही दे० ( स्त्री० ) लड़कों का खेल जिसमें जीता हुआ लड़का हारे हुए लड़के की पीठ पर लटकर पूर्व निर्दिष्ट स्थान तक जाता है ।

चड़ह दे० ( क्रि० ) चढ़ता है, ऊपर जाता है, सवार होता है, धावा मारता है ।

चड़के दे० ( क्रि० ) जान धूमके, चड़कर, पलायन से ।

चढ़त दे० ( स्त्री० ) देवता की मंड चढ़ता है ।

चढ़ती दे० ( स्त्री० ) जाय, बढ़वारी, वृद्धि ।

चढ़ना दे० ( क्रि० ) आरोहण करना, ऊपर जाना, धावा करना ।



चतुर्भुजा, चतुर्भुजी तत् ( स्त्री० ) चार भुजावाली  
 अर्थात् देवी, भगवती ।  
 चतुर्भोजन तत् ( पु० ) चार प्रकार का भोजन,  
 यथा—भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, पोष्य ।  
 चतुर्मुख तत् ( पु० ) चतुरानन, महा, विधाता, विधि ।  
 चतुर्मुक्ति तत् ( स्त्री० ) चार प्रकार की मुक्ति,  
 सायुज्य, सालोक्य, सामीप्य और सारूप्य ।  
 चतुर्थोनि तत् ( पु० ) चार प्रकार से उत्पन्न जीव,  
 स्वेदज, अण्डज, वज्रिज और जरायुज ।  
 चतुर्वेद तत् ( पु० ) चारों वेद, साम, यजु, ऋक्, और  
 अथर्व ।—१ ( पु० ) चार वेद ज्ञानेवाला, चतुर्वेद-  
 वक्ता, ब्राह्मण भेद, माथुर ब्राह्मण, ब्राह्मणों का  
 अष्ट विशेष ।  
 चतुर्वर्ग तत् ( पु० ) पुरुषार्थ चतुष्टय, धर्म, अर्थ, काम  
 और मोक्ष । [ चतुर्य, वैश्य और शूद्र ।  
 चतुर्वर्ण्य तत् ( पु० ) ब्राह्मणादि चार वर्णों, ब्राह्मण,  
 चतुर्विंश तत् ( गु० ) चौबीसवाँ, चार और बीस ।  
 चतुर्विंशति तत् ( गु० ) चौबीस, २४ ।  
 चतुर्विध तत् ( गु० ) चार प्रकार, चार तरह ।  
 चतुष्क ( वि० ) चौपहजा ( पु० ) एक प्रकार का भवन ।  
 चतुष्कोण तत् ( गु० ) चौकोन, चौरस ।  
 चतुष्टय ( पु० ) चार की संख्या, चार वस्तुओं का समूह ।  
 चतुष्पथ तत् ( पु० ) चौराहा, चौक, चार मार्गों के  
 मिलने का स्थान ।  
 चतुष्पद तत् ( पु० ) पद्य, चौपाया, चार पैर वाला ।  
 —धर्म ( पु० ) चार अर्थों से युक्त धर्म, धर्म के  
 चार अङ्ग ये हैं—विद्या, सत्य, तपस्या, दान ।  
 चतुष्पदी तत् ( स्त्री० ) चौपाई, छन्द, चार पाद का  
 गीत, चार पाँव वाली ।  
 चतुस्सम्प्रदाय तत् ( पु० ) वैष्णवों के चार  
 प्रधान सम्प्रदाय रामानुज, श्रीमाध्व, रुद्र और  
 सनक । श्रीरामानुज, श्रीमाध्व, श्रीनिम्बार्क,  
 श्रीवल्लभीय ।  
 चतुस्सहस्र तत् ( गु० ) चार हजार, संख्याविशेष,  
 ४००० । [ यज्ञवेदी ।  
 चत्वर तत् ( पु० ) [ चत् + वर ] चौखटा, यज्ञस्थान,  
 चदरा दे० ( पु० ) चादर, चदर ।  
 चदिर तत् ( पु० ) कपूर, चन्द्रमा, हाथी, सर्प ।

चदर दे० ( स्त्री० ) चादर, किसी धातु का लंबा चौड़ा  
 चौकोर पत्तर । [ जाना, खिलना, चटकना ।  
 चनकना दे० ( क्ति० ) चटक जाना, फट जाना, फूट  
 टना तद् ( पु० ) चण्डा, चण्डक, वृट, अन्न विशेष ।  
 चन्द तद् ( पु० ) चन्द्रमा, चन्द्र, चाँद, शशधर,  
 निशाकर ।  
 चन्दन तत् ( पु० ) [ चन्द्र + अनट् ] स्वनाम प्रसिद्ध  
 वृक्ष विशेष, श्री खण्ड मलयगिरि, गन्धसार, सुग-  
 ण्धिकाष्ठ, वानर विशेष, रक्त चन्दन, यद्वा तोता ।  
 चन्दना दे० ( पु० ) तोता, सुआ, शुक्र, पक्षिविशेष ।  
 चन्दजा दे० ( गु० ) गंजा, छत्रवाट, जिसके सिर पर  
 पाल नहीं ।  
 चन्दवा दे० ( पु० ) चाँदनी, छाया, मेघाङ्गूर, गोल  
 धाकर की चकती, पैवंद, मोर पङ्ख की चन्द्रिका ।  
 चन्दा तद् ( पु० ) कर, दान, उगाही, सेवादपत्रों का  
 वार्षिक मूल्य, सहायता, चन्द्र, चन्द्रमा ।  
 यथा—“देखति रही खिलौना चन्दा  
 आरि न कीजिये बालगोविन्द ।”

—प्रजविलास

चन्दिया दे० ( स्त्री० ) चाँदी, खोपड़ी, छोटी रोटी ।  
 चन्दिहा दे० ( गु० ) रुपहला, रुपये का धना, चाँदी  
 का बनाया, सफेद, श्वेत ।  
 चन्देला दे० ( पु० ) चन्देल चण्डी, चन्द्रियों की एक  
 जाति, चन्देल नगर के रहने वाले, चन्दवा ।  
 चन्देली, चन्देरी दे० ( स्त्री० ) एक-नगर विशेष ।  
 ( वि० ) चन्देल नगर के कपड़े ।  
 चन्द्र तत् ( पु० ) [ चन्द + र ] शशाङ्क, चन्द्र, चन्द्रमा,  
 सुवर्ण, द्वीप विशेष, कपूर बिंदी, जो सानुनासिक  
 वर्ण के ऊपर लगाई जाय; हीरा, मृगशिरा नक्षत्र  
 ( वि० ) कमनीय, सुन्दर, आनन्ददायक ।—कान्ता  
 ( स्त्री० ) चन्द्रमा की सोलह कला, इनके नाम ये  
 हैं—अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, वृति,  
 शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, अपारसना, श्री, प्रीति,  
 अङ्गदा, पूषणा, पूर्णा ।—कान्त ( पु० ) मणि-  
 विशेष ।—कुण्ड ( पु० ) कामरूप का प्रसिद्ध एक  
 तीर्थ, सरोवर ।—गुप्त ( पु० ) भारतीय प्राचीन  
 प्रसिद्ध मौर्यवंशीय एक राजा । सन् ३०० ई० में  
 सर्वार्थसिद्धि या महानन्द नाम के एक राजा राज्य

करते थे। इनकी दो स्त्रियाँ थीं। मुरा के लड़के का नाम मौर्य, और सुनन्दा के नौ पुत्रों को नवगन्द कहते थे। पिता ने नवगन्दों को राज्यासन का भार सौंपा और मौर्य को उनका मन्त्री बनाया। मन्त्री मौर्य के धनेक पुत्र उत्पन्न हुए, उन्हें होनहार देखकर नवगन्द ईर्ष्या और अपनी आपत्ति की वजह से करके काँप गये, अतएव उन्होंने मौर्य को बन्दी किया, परन्तु किसी कारणवश चन्द्रगुप्त को वहीने छोड़ दिया, चन्द्रगुप्त थोड़े ही दिनों में अपने सद्गुणों के कारण सर्वप्रिय हो गया। यह देख नवगन्द भयभीत हुए, वसे मारने की चेष्टा करने लगे, इसकी खबर पाते ही चन्द्रगुप्त ने तोष विचार कर अपनी रक्षा का उपाय ढूँढ़ निकाला, तब प्रतिष्ठ अश्वमेधाधी और राजनीतिज्ञ चाणक्य को कौशल से अपने पक्ष में करके चन्द्रगुप्त राजा हुआ।

—प्रहरा ( पु० ) चन्द्रमा का प्रहरा, राहुग्रह।  
 —घण्टा ( स्त्री० ) देवी विशेष, नवदुर्गा के अन्तर्गत तीसरी दुर्गा—चूड़ ( पु० ) शिव, महादेव।  
 —प्रभा ( स्त्री० ) चन्द्रकिरण, ज्योत्स्ना।—भागा ( स्त्री० ) नदी विशेष, चिनाव नदी, पञ्जाब की एक नदी का नाम।—भाल ( पु० ) श्रीमहादेव, गणेशजी।—मण्डि ( पु० ) चन्द्रकान्त मणि, शिव।  
 —मण्डल ( पु० ) चन्द्रविम्ब, चन्द्रमा की परिधि।  
 —मल्लिका ( स्त्री० ) पुष्प विशेष, लताविशेष, इलायची।—मुली ( स्त्री० ) चन्द्रमा के समान सुँह वाली, सुन्दरी, सुमुखि, वरधर्षिणी।—मौलि ( पु० ) महादेव, शिव।—रेखा ( स्त्री० ) चन्द्रकला, चन्द्रमा की एक कला।—रेणु ( पु० ) काव्यचौर, शब्दचौर, भागवहारी।—लोक ( पु० ) चन्द्रमा का लोक, चन्द्रमण्डल।—लौह ( पु० ) चाँदी, रूपा, रजत।—यश ( पु० ) प्रसिद्ध राज सन्तान विशेष, चन्द्रमा के कुल में उत्पन्न राजा।—घाला ( स्त्री० ) यही इलायची।—वत ( पु० ) प्रायश्चित्त विशेष, व्रत विशेष, राजधर्म, राजधर्म का धारण रूप व्रत।  
 —शाला ( स्त्री० ) यष्टिका, यष्टरी।—शिला ( स्त्री० ) चन्द्रचक्र, चन्द्रमा की कला का अग्रभाग। शेखर ( पु० ) शिव, महादेव, पर्वत विशेष।—सिता ( स्त्री० ) कपूर।—सेन ( पु० ) प्राचीन भारत

का एक पराक्रमी राजा का नाम, इनके पिता का नाम समुद्रसेन था, कुम्भेश्वर में पाण्डवों की और से यह लड़ते थे और उसी युद्ध में अश्वमेधा द्वारा यह सदा के लिये रणभूमि में सो गये। (२) चम्पावती नगरी का एक राजा। यह शिकार खेलने वन में गया था और मृग के घोखे से एक मुनि पर इसने बाण छोड़ा। मालूम होने पर इसने मुनि का अनेक प्रकार का अनुनय विनय किया, परन्तु किसी प्रकार मुनि का क्रोध कम नहीं हुआ, मुनि के शाप से राजा काला और बूढ़ा हो गया। आपमुक्त होने के लिये राजा ने अनेक यत्न किये, किन्तु सभी निष्फल हुए। अन्त में एक मुनि की सम्मति से वसन्तपुर ( जयपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर ) में जाने से इनका शाप नष्ट हुआ, छुष्टान्द की प्रथम शताब्दी में इन्होंने चन्द्रावती नगरी स्थापित की। यह नगरी चन्द्रभागा नदी के तीर पर है, यह कालाधार की राजधानी है। ( ३ ) परशुराम के द्वारा यह राजा मारा गया था, इसकी गर्भवती रानी ने महर्षि वाल्म्य के आश्रम में जाकर अपने प्राणों की रक्षा की थी।—हार ( पु० ) अलङ्कार विशेष।—हास ( पु० ) [ चन्द्र + हस् + घञ् ] खड्ग विशेष, ( १ ) रायण के खड्ग का नाम, ( २ ) एक धार्मिक राजा का नाम इनके माता पिता वाक्यायस्या ही में इन्हें अकेला छोड़ परलोक यात्री हुए। उस राज्य का प्रधान मन्त्री, पट्यन्त्र रच कर, इन्हें मरवाने की चेष्टा करने लगा। अतः चन्द्रहास को अपनी राजधानी छोड़ वन में जाकर छिपना पड़ा। इस समय भी स्वर्ण-वास्तव्यभाव-पूर्ण-हृदय इनकी उपमाता ने इनको नहीं छोड़ा, किन्तु उसी ने इन्हें वन में जाकर प्राणरक्षा करने का सपरामर्श दिया और स्वयं भी वह साथ आयी। किसी अवसर पर राज-मन्त्री से इनकी भेंट हुई। राजमन्त्री ने इन्हें पहचाना और इन्हें मारने के लिये इसने अपने गुप्त दूत उनके पीछे लगाये। परन्तु भगवान् के चन्द्रहास का मारा जाना क्वचिन् नहीं मालूम होता था। इसी कारण मन्त्री के सभी प्रयत्न निष्फल हुए और यही राजा हुआ और मन्त्री अपने ही कर्मों से निःसन्तान होकर दुर्गति के साथ मर गया।

चतुर्भुजा, चतुर्भुजी तत् ( स्त्री० ) चार भुजावाली  
 यथात् देवी, भगवती ।  
 चतुर्भोजन तत् ( पु० ) चार प्रकार का भोजन,  
 यथा—भोज्य, भक्ष्य, लेख्य, चोष्य ।  
 चतुर्मुख तत् ( पु० ) चतुरानन, ब्रह्मा, विधाता, विधि ।  
 चतुर्मुक्ति तत् ( स्त्री० ) चार प्रकार की मुक्ति,  
 सायुज्य, सालोक्य, सामीप्य और सारूप्य ।  
 चतुर्थोनि तत् ( पु० ) चार प्रकार से उत्पन्न जीव,  
 स्वैज्य, अण्डज, वज्रिज और जरायुज ।  
 चतुर्वेद तत् ( पु० ) चारों वेद, साम, यजु, श्रुक्, और  
 अथर्व ।—( पु० ) चार वेद जाननेवाला, चतुर्वेद-  
 वक्ता, ब्राह्मण भेद, माधुर ब्राह्मण, ब्राह्मणों का  
 ब्रह्म विशेष ।  
 चतुर्वर्ग तत् ( पु० ) पुरुषार्थ चतुष्टय, धर्म, अर्थ, काम  
 और मोक्ष । [ चतुरिय, वैश्य और शूद्र ।  
 चतुर्वर्ण तत् ( पु० ) ब्राह्मणादि चार वर्ण, ब्राह्मण,  
 चतुर्विंश तत् ( पु० ) चौबीसवाँ, चार और बीस ।  
 चतुर्विंशति तत् ( पु० ) चौबीस, २४ ।  
 चतुर्विध तत् ( पु० ) चार प्रकार, चार तरह ।  
 चतुष्क ( वि० ) चौपहना ( पु० ) एक प्रकार का भवन ।  
 चतुष्कोण तत् ( पु० ) चौकोन, चौरस ।  
 चतुष्टय ( पु० ) चार की संख्या, चार वस्तुओं का समूह ।  
 चतुष्पथ तत् ( पु० ) चौराहा, चौक, चार मार्गों के  
 मिलने का स्थान ।  
 चतुष्पद तत् ( पु० ) पद्य, चौपाया, चार पैर वाला ।  
 —धर्म ( पु० ) चार अङ्गों से युक्त धर्म, धर्म के  
 चार अङ्ग ये हैं—विश्वा, सत्य, तपस्या, दान ।  
 चतुष्पदी तत् ( स्त्री० ) चौपाई, छन्द, चार पाद का  
 गीत, चार पाँव वाली ।  
 चतुस्सम्प्रदाय तत् ( पु० ) वैष्णवों के चार  
 प्रधान सम्प्रदाय रामानुज, श्रीमाध्व, रुद्र और  
 सनक । श्रीरामानुज, श्रीमाध्व, श्रीनिम्बार्क,  
 श्रीवल्लभिय ।  
 चतुस्सहस्र तत् ( पु० ) चार हजार, संख्याविशेष,  
 ४००० । [ यज्ञवेदी ।  
 चत्वर तत् ( पु० ) [ चत् + वर ] चौरस्ता, यज्ञस्थान,  
 चद्रा दे० ( पु० ) चादर, चदर ।  
 चदिर तत् ( पु० ) कपूर, चन्द्रमा, हाथी, सर्प ।

चदर दे० ( स्त्री० ) चादर, किसी धातु का लंबा चौड़ा  
 चौकर पत्तर । [ जाना, खिलना, चटकना ।  
 चनकना दे० ( क्रि० ) चटक जाना, फट जाना, फूट  
 चना तद् ( पु० ) चण्डा, चण्डक, वृद्ध, अन्न विशेष ।  
 चन्द तद् ( पु० ) चन्द्रमा, चन्द्र, चाँद, शशधर,  
 निशाकर ।  
 चन्दन तत् ( पु० ) [ चन्द्र + नन्द ] स्वनाम प्रसिद्ध  
 वृक्ष विशेष, श्री लण्ड मलयगिरि, गन्धसार, सुग-  
 ण्धिकाष्ठ, बानर विशेष, रक्त चन्दन, यज्ञ तोता ।  
 चन्दना दे० ( पु० ) तोता, सुआ, शुक्र, पक्षिविशेष ।  
 चन्दला दे० ( पु० ) गंजा, खरवाट, जिसके सिर पर  
 पाल नहीं ।  
 चन्दवा दे० ( पु० ) चाँदनी, छाया, मेघाडम्बर, गोल  
 आकार की चकती, पैवंद, मोर पङ्क्त की चन्द्रिका ।  
 चन्द्रा तद् ( पु० ) कर, दान, उगाही, संवादपत्रों का  
 वार्षिक मूल्य, सहायता, चन्द्र, चन्द्रमा ।  
 यथा—“देवसि १६१ शिवोना चन्द्रा  
 आरि न कीजिये बालगोविन्दा”  
 —प्रजविलास ।  
 चन्दिया दे० ( स्त्री० ) चाँदी, छोपड़ी, छोटी-रोटी ।  
 चन्दिहा दे० ( पु० ) रुहला, रुपये का बना, चाँदी  
 का बनाया, सफेद, श्वेत ।  
 चन्देला दे० ( पु० ) चन्देल क्षत्री, क्षत्रियों की एक  
 जाति, चन्देल नगर के रहने वाले, चन्देवा ।  
 चन्देली, चन्देरी दे० ( स्त्री० ) एक नगर विशेष ।  
 ( वि० ) चन्देल नगर के कपड़े ।  
 चन्द्र तत् ( पु० ) [ चन्द + र ] शशाङ्क, चन्द, चन्द्रमा,  
 सुवर्ण, द्वीप विशेष, कपूर सिंदी, जो सायुनासिक  
 वर्ण के ऊपर लगाई जाय, हीरा, नृगशिरा नक्षत्र  
 ( वि० ) कमनीय, सुन्दर, आनन्ददायक ।—कन्या  
 ( स्त्री० ) चन्द्रमा की सोलह कला, इनके नाम ये  
 हैं—अमृता, मानंदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति,  
 शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्सना, श्री, प्रीति,  
 अद्भुता, पूषणा, पूर्णा ।—कान्त ( पु० ) मणि-  
 विशेष ।—कुर्गड ( पु० ) कामरूप का प्रसिद्ध एक  
 तीर्थ, सरोवर ।—शुभ ( पु० ) भारतीय प्राचीन  
 प्रसिद्ध सौर्यवंशीय एक राजा । सन् ३०० ई० में  
 सौर्यवंशसिद्धि या महानन्द नाम के एक राजा राज्य

करते थे। इनकी दो स्त्रियाँ थीं। मुरा के लड़के का नाम मौर्य, और सुनन्दा के नौ पुत्रों को नवमन्द कहते थे। पिता ने नवमन्दों को राज्यासन का भार सौंपा और मौर्य को उनका मन्त्री बनाया। मन्त्री मौर्य के अनेक पुत्र उत्पन्न हुए, उन्हें होनहार देखकर नवमन्द ईर्ष्या और अपनी आपत्ति की श्लेषा करके काँप गये, अतएव उन्होंने मौर्यों को हन्दी किया, परन्तु किसी कारणवश चन्द्रगुप्त को वहाँ से छोड़ दिया, चन्द्रगुप्त थोड़े ही दिनों में अपने सद्गुणों के कारण सर्वप्रिय हो गया। यह देख नवमन्द भयभीत हुए, उसे मारने की चेष्टा करने लगे, इसकी खबर पाते ही चन्द्रगुप्त ने सोच विचार का अपनी रक्षा का उपाय ढूँढ़ निकाला, इन्द्र प्रतिष्ठ अथ्यवसायी और राजनीतिज्ञ चायस्य को कौराल से अपने पक्ष में करके चन्द्रगुप्त राजा हुआ।

—ग्रहण ( पु० ) चन्द्रमा का ग्रहण, राहुग्रह।  
 —घराटा ( स्त्री० ) देवी विशेष, नयदुर्गा के अन्तर्गत तीसरी दुर्गा—चूड़ ( पु० ) शिव, महादेव।  
 —प्रभा ( स्त्री० ) चन्द्रकिरण, ज्योत्स्ना। —भागा ( स्त्री० ) नदी विशेष, चिनाव नदी, पञ्जाब की एक नदी का नाम। —भाज ( पु० ) श्रीमहादेव, गणेशजी। —मणि ( पु० ) चन्द्रकान्त मणि, शिव।  
 —मण्डल ( पु० ) चन्द्रविन्ध्य, चन्द्रमा की परिधि।  
 —मल्लिका ( स्त्री० ) पुष्प विशेष, लताविशेष, इलायची। —मुखी ( स्त्री० ) चन्द्रमा के समान मुँह वाली, सुन्दरी, सुमुखि, वरपरिणी। —मौलि ( पु० ) महादेव, शिव। —रेखा ( स्त्री० ) चन्द्रकला, चन्द्रमा की एक कला। —रंग ( पु० ) काव्यचार, शब्दचार, भाग्यहारी। —लोक ( पु० ) चन्द्रमा का लोक, चन्द्रमण्डल। —लौह ( पु० ) चाँदी, रूपा, रजत। —पेश ( पु० ) प्रसिद्ध राज सन्तान विशेष, चन्द्रमा के कुल में उत्पन्न राजा। —घाला ( स्त्री० ) यक्षी इलायची। —घत ( पु० ) प्रायश्चित्त विशेष, घत विशेष, राजधर्म, राजधर्म का पाठन रूप घत।  
 —शाला ( स्त्री० ) अट्टालिका, अटारी। —शिखा ( स्त्री० ) चन्द्रशृङ्ग, चन्द्रमा की कला का अग्रभाग।  
 शोखर ( पु० ) शिव, महादेव, पर्वत विशेष। —सिता ( स्त्री० ) कपूर। —सेन ( पु० ) प्राचीन भारत

का एक पराक्रमी राजा का नाम, इनके पिता का नाम समुद्रसेन था, कुरुक्षेत्र में पाण्डवों की और से यह लड़ते थे और उसी युद्ध में धन्यधामा द्वारा यह सदा के लिये रणभूमि में सो गये। ( २ ) चम्पावती नगरी का एक राजा। यह शिकार खेलने वन में गया था और मृग के घोखे से एक मुनि पर हसने बाण छोड़ा। मालूम होने पर हसने मुनि का अनेक प्रकार का अनुनय विनय किया, परन्तु किसी प्रकार मुनि का क्रोध कम नहीं हुआ, मुनि के शाप से राजा काला और बूढ़ा हो गया। शापसूक्त होने के लिये राजा ने अनेक यज्ञ किये, किन्तु सभी निष्फल हुए। अन्त में एक मुनि की सम्मति से बसमतपुर ( अजपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर ) में जाने से इनका शाप नष्ट हुआ, खुदाय की प्रथम शताब्दी में इन्होंने चम्पावती नगरी स्थापित की। यह नगरी चन्द्रभागा नदी के तीरे पर है, यह आलावार की राजधानी है। ( ३ ) परशुराम के द्वारा यह राजा मारा गया था, इसकी गर्भवती रानी ने महर्षि बालभ्य के आश्रम में जाकर अपने माणों की रक्षा की थी। —हार ( पु० ) अलङ्कार विशेष। —हास ( पु० ) [ चन्द्र + हस् + घञ् ] खज्ज विशेष, ( १ ) रावण के खज्ज का नाम, ( २ ) एक धार्मिक राजा का नाम इनके माता पिता बाल्यावस्था ही में इन्हें अकेला छोड़ परलोक यात्री हुए। इस राज्य का प्रधान मन्त्री, पट्टयन्त्र रच कर, इन्हें मरवाने की चेष्टा करने लगा। अतः चन्द्रहास को अपनी राजधानी छोड़ वन में जाकर छिपना पड़ा। इस समय भी स्वर्गीय-वात्सल्यभाव-पूर्ण-हृदय इनकी उपमाता ने इनको नहीं छोड़ा, किन्तु उसी ने इन्हें वन में जाकर प्राणरक्षा करने का सपरामर्श दिया और स्वयं भी वह साथ आयी। किसी अवसर पर राज-मन्त्री से इनकी भेंट हुई। राजमन्त्री ने इन्हें पहचाना और इन्हें मारने के लिये हसने अपने सुसज्जित उनके पीछे लगाये। परन्तु भगवान् को चन्द्रहास का मारा जाना उचित नहीं मालूम होता था। इसी कारण मन्त्री के सभी प्रयत्न निष्फल हुए और यही राजा हुआ और मन्त्री अपने ही कर्मों से निःसन्तान होकर दुर्गति के साथ मर गया।

चन्द्रमा तत् ( पु० ) चन्द्र, चन्द, चन्दा, निशाकर, विषु, शशि, शराङ्ग । [चँदवा, गुर्च, हलायची ।  
चन्द्रा तत् ( गु० ) सुण्डला, गङ्गा, बुद्धिमान्, ( स्त्री० )  
चन्द्रातप तत् ( पु० ) चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्रमा का  
प्रकाश, आच्छादन विशेष, वितान, चँदवा,  
जोत्सना, वज्रियारी, चन्द्रकिरण ।

चन्द्राना दे० ( क्रि० ) सुखना, मुरझाना, सूखना,  
पश्चात्ताप होना, परिताप होना ।

चन्द्रापीड तत् ( पु० ) बाणभट्टकृत संस्कृत गद्य काव्य  
कादम्बरी के नायक । इनके पिता उज्जयिनी के राजा  
सारापीड थे, इनकी माता का नाम विलासवती  
था । कादम्बरी में लिखा है कि शाप के कारण  
चन्द्रमा ही को महारानी विलासवती के गर्भ से  
उत्पन्न होना पड़ा था, इनके मित्र और मन्त्रिपुत्र  
वैराग्यायन थे ।

चन्द्रावली तत् ( स्त्री० ) एक गोपी का नाम । यह  
राधा की चचेरी बहिन थी, राधा के पिता वृषभानु  
के जेठे भाई चन्द्रभानु की यह लड़की थी । चन्द्रा-  
वली गोवर्द्धनमल से व्याही गयी थी, यह गोवर्द्धन-  
मल करला नामक गाँव का रहने वाला था ।

चन्द्रिका तत् ( स्त्री० ) ज्योत्सना, चन्द्रमा की किरण,  
चाँदनी, प्रकाश विशेष, व्याकरण की पुस्तक का नाम,  
बकोर, मोर के पंख की गोल गोल आँख, बड़ी  
छोटी इलायची, एक मछली, कनफोड़ा घास,  
जूही, चमेली, मेथी, चनसुर, एक देवी, एक वर्षा-  
वृत्त, वासुपत्नी, माथे का एक भूषण ।

चन्द्रोदय तत् ( पु० ) चन्द्रमा का उदय, रात्रि का  
प्रथम प्रहर, आरंभ विशेष, चँदवा ।

चन्द्रोपल तत् ( पु० ) [चन्द्र + उपल] चन्द्रकान्त  
मणि, मायिक्य विशेष ।

चनसुर दे० ( पु० ) हालम, एक शाक विशेष ।

चपकन दे० ( पु० ) एक प्रकार का शैरखा, लम्बा  
अक्षरखा । [मिलना, सटना ।

चपकना दे० ( क्रि० ) चिपटना, छुड़ना, संयुक्त होना,  
चपकाना दे० ( क्रि० ) सटाना, छुड़ाना, मिलाना,  
जोड़ना, सटाना, लपटाना ।

चपटना दे० ( क्रि० ) चपटा होना, मिल जाना, सट  
जाना, लग जाना, लपटना ।

चपटा दे० ( गु० ) समान, बराबर, तुल्य, चौरस,  
चौड़ा, चौखूँटा ।

चपटाना दे० ( क्रि० ) चपटा करना, मिलाना, लपटाना ।

चपटी दे० ( स्त्री० ) बँधी वस्तु, चपटी वस्तु, मिली हुई  
झिरियाँ, संयुक्ता, किलनी जो पशुओं के चिपटती  
हैं, ताजी, मोनि ।

चपड़गट्ट ( वि० ) विपदमल ।

चपड़चपड़ दे० ( पु० ) खाना के खाने का शब्द ।

चपड़ा दे० ( पु० ) एक प्रकार की लाख ।

चपड़ाऊ दे० ( गु० ) निर्लज्ज, ठोठ, छट ।

चपड़ाना दे० ( क्रि० ) खोटा करना, ठीठ करना, बह-  
काना, धरना ।

चपड़ी दे० ( स्त्री० ) गोथरी, कण्डी, तपती, पटिया ।

चपत तत् ( पु० ) चड़, तमाचा, पप्पड़, तड़ी ।

चपना दे० ( क्रि० ) बसाना, लजित होना, अधीन  
होना, मर्हित होना, मसल जाना ।

चपनी दे० ( पु० ) बकनी, बपनी, बकन, कटोरी ।

चपरगट्ट ( वि० ) चौपटचरन, धमागा ।

चपरास दे० ( स्त्री० ) कमर में बाँधने का चिन्ह, स्वामी  
और शूत्य के पद का सूचन करता है ।

चपरासी दे० ( पु० ) नौकर, दूत, इकरारा ।

चपरि दे० ( श० ) शीघ्र, तुरन्त, दबकर, दबककर,  
भूमि से मिलकर, घुस कर ।

चपल तत् ( गु० ) बल्लभ, अस्थिर, तरल, विकल,  
बद्धिम । ( पु० ) पारा, मछली, चुलचुला, जलवाण,  
चातक, पर्यटन विशेष, सुगन्धिद्रव्य विशेष, राई,  
एक प्रकार का चूड़ा ।—ता ( स्त्री० ) चञ्चलता,  
चाञ्चल्य, चापल्य, अस्थिरता ।

चपला तत् ( स्त्री० ) लक्ष्मी, विद्युत्, चञ्चला, पुंश्चली,  
वेश्या, अस्थिरा, कुलटा, व्यभिचारिणी, पीपल,  
जीम, मदिरा; प्राचीन समय की एक नाव ।

चपलाई तत् ( स्त्री० ) चञ्चलता, चिलविलापन, चुल-  
चुलाहट ।

चपाती दे० ( स्त्री० ) रोटी, फुलका । [लजित करना ।

चपाना दे० ( क्रि० ) दाबना, धोपना, लजाना,

चपेट तत् ( पु० ) तमाचा, धप्पा, धप्पड़, हथेली,  
कोक, धोखा । [धप्पड़, धोखा ।

चपेट, चपेटिका तत् ( स्त्री० ) धणसङ्कर, धौल,

चपेटी (खी०) भाद्र शुद्ध षष्ठी ।  
 चपौटी दे० ( खी० ) एक प्रकार की छोटी पगड़ी,  
 पुरानी पगड़ी । [यानी उठी न हो ।  
 चपौरा दे० ( पु० ) जूता जिसकी एड़ी स्लीपर जुमा हो  
 चप्पन दे० ( पु० ) दकना, दक्कन, उपना, चपनी,  
 छिचला, कटेरा ।  
 चप्पल दे० ( पु० ) एक प्रकार का एड़ी बैठा जूता ।  
 चप्पा दे० ( पु० ) चार अंगुलियों का निशान, किसी रङ्ग  
 से दीवार या कपड़े पर बनाया जाता है, चतुर्थांश,  
 थोड़ा भाग, चार अंगुल जगह, थोड़ी जगह ।  
 चप्पी दे० ( खी० ) देह दवाना, अङ्ग मर्दन शरीर  
 दवाना । [का डाँड दवाने वाला ।  
 चप्पू दे० ( पु० ) कलवारी, डाँड़, दण्ड, नाथ खेवने  
 चफाल दे० ( खी० ) पङ्क परित्त द्वीप, जिस द्वीप के  
 चारों ओर दलदल है । [कुचलना, चुभलना ।  
 चवलाई दे० ( खी० ) चबलाना, दाँतों से पीसना,  
 चबलाना दे० ( क्रि० ) चबाना, कुचलना, पीसना ।  
 चवाई दे० ( खी० ) कुचलाई, चर्चण ।  
 चवाउ दे० ( पु० ) सुख, वसतकहाउ, कहासुनी, निन्दा ।  
 चवाना दे० ( क्रि० ) घायना, चिबलाना ।  
 चवूतरा दे० ( पु० ) चीतरा, चखर, अयाई, चौपड़,  
 घैठक, चौकी, घाना ।  
 चवेना दे० ( पु० ) चर्पणक, दाना, चयाकर खाने का  
 दाना, भुजैता, भार में भूजे अन्न ।  
 चवेनी दे० ( खी० ) मिठाई या अलखवा जो बरातियों  
 को शस्ते में दिया जाता है ।  
 चव्य तत् ( खी० ) छोपाधि विशेष, चाव ।  
 चमक दे० ( पु० ) डंक, काँटा, पानी में किसी वस्तु के  
 गिरने की आवाज़ ।  
 चमोरना दे० ( क्रि० ) गोता देना, भिगोना, तर  
 करना । " ताते हुरत चमोरे घी के " ।  
 —सूरदास ।  
 चमक दे० ( खी० ) चिलक, भड़क, छटक, बज्जलता,  
 प्रभा, दीप्ति, दशक, शोभा, लचक, चिक ।  
 चमकता दे० ( पु० ) उज्जगर, उज्जला, जगमग,  
 जगरमगर । [घाना ।  
 चमकना दे० ( क्रि० ) झलकना, लौकना, प्रकाश हो  
 चमकाना दे० ( क्रि० ) प्रकाश करना, झलकाना, साफ़  
 करना, चिढ़ाना, मट्काना, घोषना ।

चमकाव दे० ( वि० ) चमक, उजार, उज्जगर ।  
 चमकाहट दे० ( खी० ) झलक, झलझल । [गादुर ।  
 चमगादड़, चमगीदड़ दे० ( पु० ) दादुर, चमगादुर,  
 चमगादुर दे० ( पु० ) देखो चमगादड़ ।  
 चमगुदड़ी दे० ( खी० ) रात में चलनेवाली चिड़िया ।  
 चमचड़क दे० ( पु० ) पीय, कुरा, दुर्गन्ध, सकरा ।  
 चमचमाना दे० ( क्रि० ) शोभना, अधिक शोभा देना,  
 चमकाना ।  
 चमचमाहट दे० ( खी० ) चमकाहट, शोभा, दीप्ति ।  
 चमचा दे० ( पु० ) चम्मच, कलछी ।  
 चमची दे० ( खी० ) छोटा चम्मच ।  
 चमटा दे० ( पु० ) चिमटा ।  
 चमड़ा दे० ( पु० ) चर्म, त्वक्, छाल, छाल ।  
 चमत्कार तत् ( पु० ) [ चमत् + कृ + घञ् ] विस्मय,  
 आश्चर्य ज्ञान, करामत, डमरू, चिचड़ा ।—  
 ( पु० ) विस्मय जनक, विचित्र आश्चर्य ।  
 चमत्कारक ( वि० ) अद्भुत, आश्चर्यप्रद ।  
 चमत्कृत तत् ( पु० ) आश्चर्यान्वित, पिसित ।—  
 ( खी० ) विस्मय ।  
 चमर तत् ( पु० ) चबर, चामर, व्यालध्यजन, राज  
 चिन्ह विशेष, चमर नामक पशु विशेष ।  
 चमरख दे० ( पु० ) रहटा की सामग्री, एक प्रकार का  
 बट्टा कब । [सुरागाय ।  
 चमरी तत् ( खी० ) सुरा गौ, चमर नामक गौ,  
 चमरू दे० ( पु० ) चमड़, खाल, चरचा ।  
 चमस तत् ( पु० ) [ चम् + अस ] यज्ञपात्र विशेष,  
 चमचा, कलछी, चम्मच, दूर्वा, पापड़, लड्डू, बर्द  
 का आटा, एक ऋषि का नाम, नव योगीश्वरों में  
 से एक ।  
 चमाई दे० ( खी० ) झील, पीछा ।  
 चमाऊ दे० ( खी० ) खड़ाऊ, चरणपादुका, चमर ।  
 चमाचम दे० ( वि० ) झलकते हुए, चमकते हुए ।  
 " बरतन चमाचम भाँजना ।"  
 चमार तद् ( पु० ) चर्मकार, मोची, जूता बनाने वाला ।  
 चमू तत् ( खी० ) सेना, दल, कटक, सेना विशेष, ७२१  
 हाथी, ७२१ रथ, २१८७ घोड़े, २२४२ ( किसी के  
 मतानुसार २६४२ ) पैदल यह चमू है ।—चर ( पु० )  
 सेनापति, सिपाही ।—पति ( पु० ) सेनापति ।

चमूकन दे० ( पु० ) किलनी, पशुओं का छुँवा ।  
 चमेटा तद्० ( पु० ) चपेटा, धपेड़ा, धौल ।  
 चमोटा दे० ( पु० ) चमड़े की धौली जिसमें नाई अन्न रखता है, या वह चमड़े का टुकड़ा जिस पर उत्तरा की धार पड़ी की जाती है ।  
 चम्मच दे० ( पु० ) देखो चमचा ।  
 चम्पक तत्० ( पु० ) पुष्प विशेष, चम्पा का फूल ।  
 —कलिका ( स्त्री० ) चम्पा की कली ।  
 चम्पत दे० ( वि० ) छिपा, अदृश्य, अन्तर्धान, भगना ।  
 —होना भाजाना, छिपाना, चलाजाना, अलक्ष्य होना । [ रङ्गा हुआ ।  
 चम्पन दे० ( स्त्री० ) पीत रङ्ग, पीत वर्ण, पीले रङ्ग से चम्पा तत्० ( स्त्री० ) कर्णपुरी, अङ्गदेश की राजधानी, भागलपुर का प्रदेश, चम्पारण्य, चम्पारन, एक प्रकार का मीठा केला, एक जाति का घोड़ा, रेशम का एक किस्म का कीड़ा, बहुत दड़ा सदा बहार पेड़ जो दक्षिण में होता है ।—धिप दे० ( पु० ) चम्पारण्य नामक प्रदेश के अधिपति कर्णराज, ( दे० ) एक फूल और वृक्ष का नाम ।  
 चम्पाकली दे० ( स्त्री० ) भूषण विशेष, एक प्रकार का गहना, यह गले में पहना जाता है । [ नगरी ।  
 चम्पावती तत्० ( स्त्री० ) नगरी विशेष, चम्पा नामक चम्पू तत्० ( स्त्री० ) काव्य विशेष, गद्य पद्य मय काव्य । यथा भोज + चम्पू ।  
 चम्पा दे० ( पु० ) मुँड़चिरा, एक मिथुनों की जाति ।  
 चम्पू दे० ( पु० ) जलपात्र विशेष, टोटीदार पात्र, यह देव पूजन के काम में आता है । [ चमेली का फूल ।  
 चम्प्रेली दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की लता और पुष्प, चम्पल दे० ( पु० ) चमला, तुम्बा, एक नदी का नाम ।  
 चय तत्० ( पु० ) [ चि + अल् ] समूह, शक्ति, डेर, प्राचीर, प्राकार, चार दीवारी, टीला, गड़, नौच, चवतारा, चौकी, ऊँचा आसन, यज्ञ का अग्नि संस्कार, (चयन) विशेष ।  
 चयन तत्० ( पु० ) संग्रह करण, आहरण, बटोरना, एकत्र करना, एकट्ठा करना । ( दे० ) आनन्द, कुशल, चैन, चैन ।  
 चर तत्० ( पु० ) उठाने योग्य, घालुक, टेक, छिप कर राजकीय बातों को जानने के लिये निष्कृत किया

गया पुरुष, दूसरों की बात जानने के लिये घुमने वाला, कष्ट वेशधारी, दूत, खाना, भोजन, खनन-पची, कौड़ी, मङ्गल, पैसे का जूआ, नदियों के किनारे या सहस्रस्थान की वह भूमि जो नदियों की लाई हुई मिट्टी से बनी हो ( देखो ) दलदल, नदियों के बीच बालू का टापू, छिड़छला पानी ।  
 ( गु० ) चलनेवाला, चलनेयोग्य, जङ्गम, खानेवाला ।  
 चरई दे० ( स्त्री० ) जानवरों के पानी पीने के लिये पानी जिसमें भरा जाय वह कुण्ड ।  
 चरक तत्० ( पु० ) वैद्यक ग्रन्थ विशेष, कुष्ठ रोग का भेद, मुनि विशेष, विख्यात वैद्यक ग्रन्थ चरक संहिता के रचयिता, अनन्त देव चर रूप से छिप कर पृथिवी पर आये और इन्होंने देखा कि यहाँ के वालों अनेक रोगों से अधिक कष्ट उठा रहे हैं । मनुष्यों का कष्ट देखकर उन्हें दया आयी और पड़क वेद ज्ञाता महर्षि का रूप उन्होंने धारण किया तथा सांसारिक व्याधियों से मनुष्यों की रक्षा करके प्रसिद्धि प्राप्त की । अनन्त देव चर रूप ( गुप्तवेश ) से पृथिवी पर अवतीर्ण हुए थे । इसी कारण इनका नाम चरक पड़ा । इन्होंने अग्नि के पुत्र भरद्वाज से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी । दूत, भेदिया, बटोही, पथिक, बौद्धों का एक सम्प्रदाय, भिलाारी । [ ग्रन्थ विशेष ।  
 चरकसंहिता तत्० ( स्त्री० ) चरकमुनि प्रणीत वैद्यक का चरकटा दे० ( पु० ) ऊँट या हाथी का चारा काटने वाला, तुच्छ मनुष्य । [ दागने का निशान, हानी, धक्का ।  
 चरका दे० ( पु० ) कोढ़, कुष्ठ रोग विशेष, रवेत कुष्ठ, चरकी दे० ( पु० ) कुष्ठ रोग वाला, रवेत कोढ़ी ।  
 चरख दे० ( पु० ) चक्र, चका, चेरा, चौफेर, पहिया, खराद, रहँट ।  
 चरखा दे० ( पु० ) सूत काटने का यन्त्र, रहँटा ।  
 चरखी दे० ( स्त्री० ) रहँटी उईटा, विरनी, एक प्रकार का यन्त्र जिस पर आदमी को बैठा कर घुमाया जाता है, एक प्रकार की आतिशबाजी । [ चन्दन बगाना ।  
 चरचना तद्० ( क्रि० ) लेपना, लेपन करना, अग्नौ में चरचर दे० ( पु० ) बकबक, गप, निरर्थक बोल ।  
 चरचरा दे० ( गु० ) बकी, बड़बड़िया, निरर्थक बोलने वाला, मजबूत ।

चरचराना दे० ( कि० ) चटकना, कड़कड़ाना, कुद होना, कुपित होना ।  
 चरचा तद् ( खी० ) चर्चा, कीर्ति, जिकिर ।  
 चरचेजा दे० ( गु० ) गप्पी, बक्की, मुखर, बक्बकड़ा ।  
 चरचेत दे० ( गु० ) चरचा कानेवाला, कीर्तिमान् ।  
 चरट तद् ( पु० ) खञ्जनपक्षी, खड्गरीट, खड्गलीच ।  
 चरण तद् ( पु० ) पद, भद्रधि, पैर, पशु, पक्षी आदि के आहार के लिये घूमना, छन्द का चौपा हिस्सा, बड़ों का साक्षिष्य, चतुर्थांश, मूल, गोत्र, क्रम, आचार, घुमने का स्थान, किरण, अनुष्ठान, गमन, चरने का काम ।—कमल ( पु० ) कोमल चरण, कमल के समान चरण ।—दासी ( खी० ) चाण सेविका, स्त्री, भाव्या, पैर पर गिरा हुआ, जूता, सड़ाई ।—पदवी ( खी० ) पदाङ्क, चरण का चिन्ह ।—पीठ ( पु० ) पादपीठ, पैर के पीछे का भाग, सड़ाई, पाँवरी, चरण रखने का पीड़ा, चरणासन ।—व्यूह ( पु० ) एक ग्रन्थ का नाम, यह वेदव्यास का बनाया है इसमें वेदों का विवरण जिला गया है ।—गुगल ( पु० ) पदयुगल, चरणयुग, दोनों पैर ।—सेवा ( खी० ) उपासना, भागधना, अर्चना, सेवा, शुद्ध्या ।—मृत ( पु० ) चरणोदक, पादोदक, मान्यों का पैर धोया हुआ जल ।—युंघ ( पु० ) कुक्कुट, मुर्गा ।—रविन्द ( पु० ) चरण कमल, पादपत्र ।—ोदक ( पु० ) पादप्रक्षालन जल, चरणामृत, देवता आदि का चरण धोया हुआ जल ।—पोमन्त ( पु० ) चरण के समीप, पदप्रान्त ।  
 चरणि तद् ( पु० ) मनुष्य ।  
 चरती दे० ( गु० ) मत न करनेवाला, अग्रती ।  
 चरना दे० ( कि० ) चुगना, घुमघूमकर घास खाना, ( पु० ) पैर, चरण, एक विशेष दोहा जाति ।  
 चरनी दे० ( खी० ) कठरा, ठाँव, स्थान, बेलों को घास खिलाने के लिये जो मिट्टी का बहुत लम्बा बनाया जाता है ।  
 चरनी दे० ( खी० ) चार घाने, चौभञ्जी, सूकी ।  
 चरपरा दे० ( गु० ) तीता, खट्टा, कटुवा, तीखा, कुर्त्तिला, साहसी । [वद होना, भँकनाना ।  
 चरपराना दे० ( खी० ) परपराना, वेदना मालूम होना,

चरपराहट दे० ( खी० ) परपराहट, भँकनाहट ।  
 चरपरिया दे० ( गु० ) मनचञ्चा, सुन्दर, सुधर ।  
 चरफर दे० ( पु० ) प्रवीणता, निपुणता, दक्षता ।  
 चरफरा दे० ( गु० ) दक्ष, निपुणता, दक्षता ।  
 चरफराहि दे० ( कि० ) चरचराते हैं, दृष्टते हैं, चरति हैं । [साहस, उत्साह ।  
 चरवरापगी दे० ( खी० ) कुर्त्तिलापन, चतुरता, चरवाना दे० ( कि० ) ढोल को रस्सी कसना या चमड़े से मढ़ना ।  
 चरवी दे० ( खी० ) मेव, वया, पीह ।  
 चरम तद् ( गु० ) अन्तिम, शेष, अयसान पराकाष्ठा का ( पु० ) चाम, चमड़ा, ढाल, फरी ।—काल ( पु० ) शेष काल, अन्तिम समय, मरने का समय ।—चल ( पु० ) अस्त पर्वत, अस्तगिरि ।—द्रि ( पु० ) अस्त पर्वत, चलाचल । [रखने का मूल्य ।  
 चरवाई दे० ( खी० ) चराई का मूल्य, चराने का या चरवाहा दे० ( पु० ) चराने वाला, रखने वाला, रख-बारा, गढ़रिया ।  
 चरस दे० ( पु० ) मादक द्रव्य विशेष, सुरबट, मोंट, पानी निकालने का चमड़े का बड़ा एक प्रकार का यरतन, चमड़े का यड़ा ढोल ।  
 चरसा दे० ( पु० ) अघौड़ी, खाल, चमड़ा, चरस, मोंट ।  
 चरई दे० ( खी० ) चराने की मजूरी, चराई का काम, चराई की किया । [का पक्षी ।  
 चराक दे० ( पु० ) चरानेवाला, चरवाहा, एक प्रकार चराचर तद् ( गु० ) [चर+चर] स्थावर-जङ्गम, चल-अचल जड़-चैतन्य, सजीव-निर्जीव, चलने वाले न चलने वाले । ( पु० ) जगत्, आकाश, नमो-मण्डल, जड़चेतन, सजीव निर्जीव, कौड़ी ।  
 चरान दे० ( पु० ) चराई, चोगान, पटपर, पशुओं के चराने का स्थान । [चुगाना ।  
 चराना दे० ( कि० ) पशुओं को घुमाकर घास खिलाना, चराव दे० ( पु० ) चरने योग्य खेत ।  
 चरि तद् ( पु० ) पशु, चौपाये ।  
 चरित तद् ( गु० ) [चर+क्त] गत, पात, प्राप्त, लब्ध, अधिगत । ( पु० ) चरित्र, व्यवहार, आचरण, रीति नीति, उपव्यान, कथा वार्ता, दृष्टान्त, हाल, अहवाल ।—अर्थ ( गु० ) प्राप्त प्रयोजन,



चाबु (पु०) चाँच ।

चाटना दे० (क्रि०) चापना, दाबना, चिन्ह करना ।

चाँटा (पु०) थप्पड़, चपत ।

चाँटी (स्त्री०) चाँटी ।

चाँड दे० (स्त्री०) धुनि, धम्या, खम्भा, टेकन, टेक ।

तत्व० (वि०) बलवान्, उग्र, श्रेष्ठ, कृत ।

चाँद तद्० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, सोम ।—रात (स्त्री०) पूर्णिमा की रात ।—मारना (क्रि०) लक्ष्यवेध, निशाना मारना ।—नै खेत किया (वा०) चन्द्र उदय हुआ ।—मारी (स्त्री०) निशाना बाजी बन्दूक से लक्ष्य वेध का अभ्यास ।

चाँदना दे० (पु०) प्रकाश, ज्योति, तेज ।—पत्त (पु०) शुद्ध पद्म, सुदि, मजेला पाख ।

चाँदनी दे० (स्त्री०) चन्द्रिका, उजियाली, शैमोरी रात, बिछाने की चादर, स्वच्छता ।—चौक (पु०) चौड़ा बाजार, चौक, दिल्ली के चौक को चाँदनी चौक कहते हैं ।

चाँदी दे० (स्त्री०) रुपया, रजत ।

चाँप दे० (स्त्री०) बन्दूक का फल, फाट, दबाव ।

चाँपना दे० (क्रि०) दाबना, दबाना, जोड़ना ।

चा दे० (स्त्री०) पौधा विशेष, जिसकी पत्ती प्रातः और सन्ध्या पी जाती है । आसाम की ओर यह बहुत होती है, चाय ।

चाउर दे० (पु०) चावल ।

चाऊ दे० (पु०) चाब, शौक, उस्ताह । (वि०) मनोहर, मन भावन, पसंदीदा ।

चाक तद्० (पु०) चक्र, कुम्हार की चक्की, पाट, चक्की, जिससे कुम्हार बासन बनाता है ।

चाकचक्य तव० (पु०) दीप्ति, उज्वलता, स्वच्छता ।

चाकना दे० (क्रि०) हँस खींचना, पहचान के लिये चिन्ह लगाना, छापना । (स्त्री०) बिजुली । (रामायण में यह शब्द मिलता है) ।

चाकर दे० (पु०) भृत्य, कर्मचारी, नौकर ।

चाकरानी (स्त्री०) नौकरानी, दासी ।

चाकरी दे० (स्त्री०) नौकरी, टहल ।

चाका दे० (पु०) चक्र, रथ का पहिया ।

चाकी दे० (स्त्री०) चक्की, पाट, जाँता ।

चाकू दे० (पु०) छुरी, असिपुत्रि, कलमतराश ।

चाक्रायण तव० (पु०) चक्रायण के वंशज, जिनका नामोल्लेख छन्दोग्य उपनिषद् में पाया जाता है ।

चाचुप (पु०) नेत्र सम्बन्धी, प्रत्यक्ष ।

चाख दे० (क्रि०) चख कर, स्वाद लेकर ।

चाखना दे० (क्रि०) स्वाद लेना, चखना ।

चाङ्गुला दे० (पु०) घोंघे का रङ्ग विशेष ।

चाचा दे० (पु०) पिता का भाई, काका, चचा । (स्त्री०) काकी, चाची, चचा की खी । [चापल्य ।

चाकचल्य तव० (पु०) चञ्चलता, अस्थिरता, चपलता,

चाट दे० (स्त्री०) चसका, उत्सुकता, जालसा, लोभ, लालच, मादक, पदार्थों में रुचि होने के लिये खाद्य वस्तु, रसास्वाद ।

चाटक तव० (पु०) मण्डली, विंघा, इन्द्रजाल ।

चाटकी तव० (पु०) चाटक विधा जानने वाला, ऐन्द्रजालिक ।

चाटना दे० (क्रि०) चीखन, रसास्वाद लेना ।

चाटी दे० (स्त्री०) मथानि, मथनिया ।

चाटु तव० (पु०) प्रियवाक्य, मीठा वचन, स्तुति, प्रशंसा, खुशामद, लोह का पात्र विशेष ।—फार (पु०) प्रियभाषी, अनुनय विनय करने वाला, चापलस ।—पटु (पु०) मण्ड, भाँड़, ठगनेवाला, मसखरा, विद्रूपक, खुशामदी ।—वादी (पु०) स्तुति करनेवाला, प्रशंसा करनेवाला, खुशामदी ।

चाड दे० (स्त्री०) सहारा, आश्रय, आवश्यकता, प्रयोजन, चोट, टँकली, दबाव ।

चाणक तव० (पु०) मुनिविशेष, गोत्रविशेष, उभाड़ने वाली बात, क्रोध उत्पन्न करने वाली बात ।

चाणक्य तव० (पु०) एक नीति के ग्रन्थ का नाम, मुनिविशेष, नीति शास्त्र के प्रसिद्ध पण्डित, यह चणक गोत्र में उत्पन्न हुए थे अतएव उन्हें चाणक्य गोत्र कहते थे । इनका प्रकृत नाम विष्णुगुप्त था । इनका धनाया धर्मशास्त्र और चाणक्यनीति दो ग्रन्थ पाये जाते हैं । यह पाटलीपुत्र के चन्द्रगुप्त के मन्त्री थे । मुद्राराक्षस में इनकी नीति कुशलता का वर्णन है । गुणायन ने बृहत्कथा में इनको स्मरण किया है । अतएव चन्द्रगुप्त का समय, ३२० ई० से पूर्व का मानना चाहिये ।

चारखूर तत् ( पु० ) दानव विशेष, यह कंसराज का  
 योधा था, जो कृष्ण द्वारा मारा गया ।  
 चारण्डाल तत् ( पु० ) एक अत्यन्त वर्षसङ्कर जाति  
 विशेष, चण्डाल, श्वच १—१ ( स्त्री० ) चण्डाल  
 की स्त्री, चण्डाली, चण्डालिन ।  
 चातक तत् ( पु० ) स्वनाम ल्याप्त पक्षी, पपीहा ।  
 —नन्दन ( पु० ) मेघों के आने का समय, वर्षा  
 ऋतु, वर्षात का मौसम ।  
 चातकिनी तत् ( स्त्री० ) चातकी ।  
 चातर दे० ( पु० ) महाजाल, दुर्जनों का जमाव, दुश्-  
 रिशों का समुदाय, पक्ष्यन्त ।  
 चातुर तत् ( पु० ) चतुर, चलाक, धूर्त, प्रवीण,  
 बुद्धिमान्, कुशल, चार, चौधा, प्रियमापी, नियन्ता ।  
 चातुराश्रम्य तत् ( पु० ) ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वान-  
 प्रस्थ और संन्यास, इन चार आश्रमों का धर्म ।  
 चातुर्मास्य तत् ( पु० ) चार मास में समाप्त होने  
 वाला व्रत । [ छब, शठता ।  
 चातुरी तत् ( स्त्री० ) दक्षता, नैपुण्य, कौशल, चतुरता,  
 चातुर्य तत् ( पु० ) चतुराई, चतुरता, धूर्तता ।  
 चातुर्वर्ष्य तत् ( पु० ) चतुर्वर्ष के धर्म ।  
 चातुर्वेद्य तत् ( पु० ) चार वेदों के ज्ञाता, चतुर्वेदज्ञ,  
 चतुर्वेदी ब्राह्मणों का भेद विशेष । [ की सामग्री ।  
 चात्त्वान तत् ( पु० ) गत, गड़ा, गहर, अभिज्ञोन्न,  
 चातुक दे० ( पु० ) पपीहा, चातक ।  
 चादर दे० ( स्त्री० ) एकलार्द्ध, ओढ़ने का एक प्रकार  
 का वस्त्र, पिछीरा, पिछौरी ।  
 चादरा दे० ( पु० ) मरदानी चादर ।  
 चान्द्र तत् ( पु० ) चन्द्र सम्बन्धीय, चन्द्रमा का, सौम्य ।  
 चान्द्रमास तत् ( पु० ) चन्द्रमा का महीना, कृष्ण  
 प्रतिपदा से पूर्णिमा को समाप्त होने वाला मास ।  
 चान्द्रायण तत् ( पु० ) व्रत विशेष, चन्द्रव्रत, एक  
 प्रकार का प्रायश्चित्त, इस व्रत में चन्द्रमा की कला  
 की घटती और बढ़ती के अनुसार भोजन में घटाव  
 बढ़ाव किया जाता है । यह व्रत एक महीने का  
 होता है ।  
 चाप तत् ( पु० ) धनुष, कोदण्ड, धनुर्दा, दाव,  
 दबाय, एक वृक्ष का नाम ।—कर्ण ( पु० ) धनुष  
 का रोदा, धनुष की प्रत्यंचा ।

चापत दे० ( कि० ) दबाता है, दबाते हैं ।  
 चापन दे० ( पु० ) दबाना, दावन ।  
 “मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई,  
 लगे चरण चापन होइ भाई” —रामायण ।  
 चापल तत् ( पु० ) चञ्चलार्द्ध, चपलाहट ।  
 चापलूस दे० ( पु० ) लुप्तमादी, प्रशंसक, स्तुतिकर्ता,  
 हाँ में हाँ मिलाना । [ मद, अनुनय ।  
 चापलूसी दे० ( स्त्री० ) पलोपत्तो, फुसलाहट, लुप्ता-  
 चापल्य तत् ( पु० ) चरलता, अधीरता, बध्नी बाजी ।  
 चापी दे० ( पु० ) दवाई, छिपाई, छुकाई । [ पकड़ते हैं ।  
 चाफन्द दे० ( स्त्री० ) जाल, मछाह जिससे मछली  
 चावना दे० ( कि० ) दाँतों से कुचलना, पीसना ।  
 चावी दे० ( स्त्री० ) कुञ्जी, ताकी, कुची, ताबे की कुञ्जी ।  
 चावुक दे० ( पु० ) कोड़ा ।—सवार दे० ( पु० ) घोड़े  
 की चाट सगृहलने वाला ।  
 चाम तत् ( पु० ) चर्म, चमड़ा, त्वक, खाल ।  
 चामर तत् ( पु० ) चमर, चँवर, राजा का एक चिन्ह ।  
 चामर पाटना दे० ( कि० ) दाँतों से होठ काटना दाँत  
 कटकटना ।  
 चामीकर तत् ( पु० ) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना, पत्तरा ।  
 चामुण्डराय दे० ( पु० ) पृथिवी राज एक सामन्त राजा  
 का नाम ।  
 चामुण्डा तत् ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, काली, योगनी,  
 चण्डमुख राजसों के मारने वाली देवी, मातृका  
 भेद, एक देवी का नाम, योगनी का नाम ।  
 चाम्पेय तत् ( पु० ) चम्पा पुष्प, चम्पा का फूल, नागकेसर ।  
 चाय तत् ( पु० ) [ चि + चञ् ] सक्षय, तन्मूह, हर्ष  
 स्वाद आस्वाद, चोर, चाहता । दे० ( स्त्री० ) चा,  
 टी, एक वनस्पति जो आसाम में पैदा होती है ।  
 चार तत् ( पु० ) गूढ़ पुरुष, दूत, खोजी, अनुसन्धान-  
 कारी, कारागार, दास, आचार, कृत्रिमविष, मध्या-  
 विशेष, ४ ।—कर्म ( पु० ) द्विपका देवना ।—चतु  
 ( पु० ) राजा, नृपति ।—डुक ( वा० ) डुकड़े डुकड़े,  
 साफ़ साफ़, छल रहित ।  
 चारक तत् ( पु० ) साईस, चरबाहा, चराने वाला ।  
 चारण तत् ( पु० ) जाति विशेष, माट, बन्दी, स्तुति  
 करने वाली जाति, अमणकारी ।  
 चारपाई दे० ( स्त्री० ) साट, खटिया, चरपाई ।

चारपाया दे० ( पु० ) चौपाया, जानवर, पशु ।

चारा दे० ( पु० ) पौधे, छोटे वृक्ष, पशुओं के खाने की चीज घास आदि ।—गोई ( स्त्री० ) फरियाद, दोहाई देना ।

चारि दे० ( पु० ) चार की संख्या, चतुर, गधी, चुगल, लघार ।—अवस्था ( स्त्री० ) चार, अवस्थाएँ यथा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तृतीय । [निकाळा हुआ ।

चारित ( पु० ) चलाया हुआ, खीचा हुआ, अर्क चारित्र ( पु० ) चाल चलन, स्वभाव ।

चारी तत्० ( पु० ) चलनेवाला, गामी, चारों, चार ।

चारु तत्० ( पु० ) सुन्दर, सुहावना, मनोहर, रमणीय, मनोह । ( पु० ) वृहस्पति, कुङ्कुम, केसर, कृष्ण के पुत्र का नाम । ता—( स्त्री० ) सौन्दर्य, सुन्दरता, शोभा ।—पर्याी ( स्त्री० ) गन्धपसारन औषधि विशेष ।—फना ( स्त्री० ) दाख, अङ्गूर, किस-मिल ।—वाहू ( पु० ) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।—विक्रम ( पु० ) बलवान्, बली, बलिष्ठ, मनोहर, गति विशिष्ट ।—प्रती ( स्त्री० ) श्रीकृष्ण जी की एक कन्या का नाम, बुद्धिमान् ।—लोचन ( पु० ) सुन्दर आँख वाला । ( पु० ) हरिण, मृगा ।—शिला ( स्त्री० ) मणि विशेष, डीरा ।—शील ( पु० ) सुरूप, सुन्दरस्वभाव ।—हासिनी ( स्त्री० ) सुन्दर मुस्कान वाली ।

चारैक्षण तत्० ( पु० ) [ चार + ईक्षण ] राजमन्त्री, राजनीतिज्ञ । [रूपवाचक्ययुक्ता रमणी ।

चार्वङ्गी तत्० ( स्त्री० ) सुन्दरी नारी, सुरूप स्त्री,

चार्वक तत्० ( पु० ) बार्हस्पत्य, लौकायतिक, तर्किक, नास्तिक भेद, नास्तिक मत प्रवर्तक श्रेणी । किसी का कहना है कि यह देवगुरु वृहस्पति ही थे । किसी के मत से चार्वक वृहस्पति के शिष्य थे । किसी किसी का कहना है कि चार्वक इस नाम का कोई था ही नहीं । यह न्याय मत के सामान एक दार्शनिक मत है । चार्वक स्वर्ग, मुक्ति, ईश्वर आदि को नहीं मानते । ये लोग स्वर्ग, मुक्ति, यज्ञ, तप, दान, आदि का खण्डन किया करते हैं । वेद के विषय में इनकी सम्मति अत्यन्त निन्दित है । चार्वक दर्शन का दूसरा नाम लोकायत दर्शन है, क्योंकि लौकिक विषय ही इस दर्शन का सर्वस्व

है । चार्वक के मत से परलोक एक असम्भव वस्तु है, अनपेक्ष वे उसे नहीं मानते । किस समय इस मत का प्रचार हुआ था यह निश्चय करना कठिन है । विष्णुपुराण में भी इस मत का उल्लेख किया गया है । महाभारत के शान्ति पर्व में चार्वक के दुर्योधन का मित्र बतलाया गया है । चाण्मीकीय रामायण और तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी इस मत का पता चलता है ।

चाल दे० ( स्त्री० ) चलन, गति रीति, व्यवहार, परिपाटी, धोखा देने की युक्ति, गढ़न, छप्पर, छोंद ।—चलन ( पु० ) आचरण, धर्तव्य, धरित्र ।—पकड़ना ( कि० ) फैलना, चलना, प्रवर्तित होना, धोड़े को गति सिखाना ।—चलना ( कि० ) निवाहना, व्यवहार करना, धोखा देना, धूर्तता करना ।—ढाल ( सं० ) चाल चलन, रीति भाँति, व्यवहार ।

चालक तत्० ( पु० ) [ चल् + णक् ] चालन कर्त्ता, चलाने वाला, भेदक, रेषक, नटखट हाथी ।

चालति ( कि० ) चालती है, छानती है ।

चालन तत्० ( पु० ) स्थानान्तर, मयन, प्रेरण, दूरीकरण, सागण ।

चालना दे० ( कि० ) झाड़ना, पछोड़ना, छानना, आटा चालना, फटकना, देखना, फारना ।

चालनी दे० ( स्त्री० ) आखा, फरना, छानने का पात्र, आटा आदि का मोटा भाग निकालने वाला पात्र, आटा छानने का पात्र, बलनी । [ छल, कपट, धोखा ।

चालवाज १० ( पु० ) धूर्त, कपटी, छत्री—नी ( स्त्री० )

चाला दे० ( पु० ) गति, यात्रा, प्रस्थान, सुहृत् ।

चालाक दे० ( पु० ) धूर्त, निपुण, दक्ष, कुशल ।

चालाकी दे० ( स्त्री० ) धूर्तता, निपुणता ।

चालान दे० ( पु० ) भेजे हुए माल की मूल्य सहित सूची, बीचक, रबला, अपराधी का अपराध प्रमाणित किये जाने के लिये पुलिस द्वारा न्यायालय में उपस्थित करने का मेजना ।

चालिया दे० ( वि० ) धूर्त, छत्री, कपटी । [ रसिक ।

चाली दे० ( पु० ) नटखट, चप्पल, चपल, रसिया,

चालीस दे० ( पु० ) दो बीस चत्वारिंश सख्या, विशेष,

४० ।—चाँ ( पु० ) चालीस संख्या का ( पु० ) मुसलमानों का मृतक उत्सव विशेष, चहखल ।

चालीसा दे० (गु०) चालीस वर्ष की अवस्था वाला, चिह्ना,  
४० पद का कोई काव्य जैसे "हनुमान-चालीसा ।"  
चातुर्व्य (पु०) दक्षिण का एक प्रबल पराक्रमी राजवंश ।  
चाव दे० (पु०) चार अङ्गुल, चाह, उत्कण्ठा, रुचि,  
अभिलाषा, धमक, दुलार, प्रेम । [का स्थान ।  
चायड़ी दे० (स्त्री०) पड़ाव, चट्टी, मुसाफिरों के उतरने  
चायल दे० (पु०) तण्डुल, चावल, अन्न विशेष ।  
चाप तद्० (पु०) स्वर्ण चातक, लहटोरवा, नीबकण्ड,  
यथा— 'चारा चाप, धाम दिशि लेई,  
मनौ सकल महल कहि देई ।"—रामायण ।  
चापु तद्० (पु०) नीबकण्ड ।  
चास तद्० (पु०) खेती, कृषि, जोगाई ।  
चासा तद्० (पु०) किसान, खेतवा, हरबाह, जोगतवा ।  
चाह दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, प्रीति, मनोरथ,  
लालसा, माँग, चादर । [हिन् ।  
चाहक दे० (पु०) चाहनेवाला, छोद्दी, प्रणयी, हितकारी,  
चाहत दे० (स्त्री०) चाह, इच्छा, प्रीति, अभिलाषा,  
प्रेम स्नेह । [लापा करना, प्रयत्न करना ।  
चाहना दे० (क्रि०) प्रेम करना, इच्छा करना, अभि-  
चाहा दे० (पु०) जल के समीप बसने वाला बगले  
की जाति की एक चिड़िया, इच्छित ।  
चाहाचही दे० (स्त्री०) परस्पर प्रीति, अन्वोन्य मैत्री ।  
चाहि दे० (अ०) देखकर, निहार कर, इच्छा से,  
आकासा से, प्रेम से, चाह कर ।  
चाहित दे० (गु०) इच्छित अभिलाषित, प्रिय,  
मनभावन—चाहिता (स्त्री०) ।  
चाहिये दे० (अ०) उपयुक्त है, उचित है, मैम्य है । [की ।  
चाही दे० (क्रि०) देखी, देखने की इच्छा थी, चाहना  
चाहे, चाहा दे० (अ०) ग्रथवा, किम्बा, वा, वा,  
वाक्यान्तर सूचक ।  
चिआँ तद्० (पु०) चिंवा, ईमली का बीज ।  
चिउटा दे० (पु०) चोटा, एक कीड़ा जो मीठे का  
यहुत पसन्द करता है ।  
चिउँटी दे० (स्त्री०) चीटो, पिरीलिका ।  
चिउड़ा-चिउरा दे० (पु०) चोटा, चिड़वा, चूरा ।  
चिऊ दे० (पु०) जवनिहा, परदा, याँस का बना  
हुआ परदा, रोग विशेष, कण्ठाभरण विशेष, कण्ठा  
विशेष, कसाई, हुंकी ।

चिकटा दे० (पु०) वस्त्र विशेष, टसर का बना  
कपड़ा । (गु०) चिकट, तेल का मेल ।  
चिकठा दे० (पु०) तेली, तेल बनाने वाली एक  
जाति विशेष ।  
चिकन दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, महीनसूती  
कपड़ा जिस पर हाथ से बेल बुटे काटे जाते हैं ।  
चिकना दे० (गु०) साफ सुधरा, सुन्दर, स्निग्ध,  
तेलहा, तेलीस, घोंटा हुआ, निर्लज्ज, लम्पट ।  
—घड़ा (वा०) जिसके मन पर किसी के कहने  
का कुछ भी प्रभाव न पड़े । क्षुद्र स्वभाव का ।—  
चाँद (वा०) सुन्दर, रमणीय, मनोहर, मनोज्ञ,  
सुहावना ।  
चिकनाई दे० (स्त्री०) चिकनापन, स्निग्धता, फिसलन ।  
चिकनाना दे० (क्रि०) उज्ज्वल करना, साफ करना,  
चिकन बनाना, घोंटना ।  
चिकनापन (पु०) चिकनाई चिकनाहट ।  
चिकनाहट दे० (स्त्री०) चिकनापन, चिकनाई ।  
चिकनिया दे० (पु०) छैत्रा, चिसनी, सीसीन, लम्पट ।  
चिकलना दे० (क्रि०) मसलना, पीसना, चबाना,  
चूर करना । [जाति, बकरसा ।  
चिकवा दे० (पु०) जानि विशेष, माँस पेघने वाली  
चिकार दे० (पु०) गुल, कोलाहल, चिह्नाहट ।  
चिकारना दे० (क्रि०) चें चें करना, नाकी देना,  
कोलाहल करना, गुल करना, शोर करना, चिह्नाना ।  
चिकारा दे० (पु०) वाय विशेष, एक प्रकार की  
सागरी, चील, डरावना शब्द ।  
चिकारी दे० (स्त्री०) ममा, फुड़ाई, फुडरपन ।  
चिकित्सक तद्० (पु०) [चिक् + तस् + क] चिकित्सा  
करने वाला, रोग दूर करने वाला, भिषक् ।  
चिकित्सा तद्० (स्त्री०) [चिक् + तस् + सा]  
प्रीति प्रतीकार, व्याधि का उपनय, रोग हराना,  
वेद्य कर्म, औपच्य करना, बँदकी ।—तय (पु०)  
[चिकित्सा + आलय] चिकित्सा करने का स्थान,  
औषधालय, दवाखाना ।—शास्त्र (पु०) आयु-  
वेदविद्या, चिकित्सा करने का शास्त्र ।  
चिकित्सित तद्० (पु०) [चिकित्सा + इत]  
चिकित्सा किया हुआ । [की इच्छा, अभिलाषा ।  
चिकीर्षा तद्० (स्त्री०) [कृ + तस् + षा] करने

चिकीर्षित तत् ( पु० ) [ कृ + सन् + आ ] अगि-  
लापित, वाङ्मयित, अभिप्रेत, इष्ट, चाहा हुआ ।  
चिकीर्ष तत् ( पु० ) करने की इच्छा रखनेवाला,  
अभिलाषी ।

चिकुर तत् ( पु० ) देश, कुन्तल, मूर्द्धन, बाल,  
पक्ष विशेष, वृक्ष विशेष, रंगने वाले सार आदि  
छुड़ुं दर, गिलहरी । ( वि० ) चपल ।—पाश ( पु० )  
केश समूह । [ चिह्नहरना, खलोना ।

चिकोरना दे० ( क्रि० ) चोचियाना, चोंच से बिलेरना  
चिकोरा दे० ( गु० ) चञ्जड़, चपल, तरल ।

चिक दे० ( गु० ) छुधुन्दर, यकरी, अजा, छाग, चिपटी  
नाक वाला । यथा—

“पाहो खेत चिक्रा धन ग्रह चिटियन यदयारि,  
येते पर जो नहीं नसे तो जाहूँ करै अथवारि ।”

चिकट दे० ( गु० ) चिकटा, मलीन, मैला, सेलहा ।  
चिकण तत् ( गु० ) स्निग्ध, चिकना, चिकन, लचि-  
कन, फिसलनेवाला । ( पु० ) सुपारी, हड़, कुड़  
तेज अग्नि ।

चिकन ( वि० ) चिकना, मैला ।

चिकना दे० ( वि० ) चिकना, फिसलनदार ।

चिकनी तद् ( स्त्री० ) दमिलनी सुपारी ।

चिकरना ( क्रि० ) चिल्लाना, चिंघाड़ मारना ।

चिकरहि दे० ( क्रि० ) चिकारते हैं, चिंघारते हैं, हाथी  
का भयङ्कर शब्द करना ।

चिकस दे० ( पु० ) आटा, जव का मैदा, जव या गेहूँ  
का महीन आटा । हल्दी मिला हुआ जव का आटा ।

चिकहा दे० ( पु० ) चिकवा, कसाई ।

चिकका दे० ( स्त्री० ) छुधुन्दरी, चूड़ी, मूस की एक  
जाति जिसे सर्प नहीं पकड़ता ।

चिककार दे० ( पु० ) चिंघाड़, हाथी का भयङ्कर शब्द ।

चिकी दे० ( स्त्री० ) सड़ी सुपारी ।

चिखुरन दे० ( पु० ) जहन्नी घास, खेत निराने पर  
निकली हुई घास । [ घास निकालना ।

चिखुरना दे० ( क्रि० ) निराना, जोते हुए खेत से  
चिड़ड़ा, चिड़ड़ी दे० ( स्त्री० ) कीटविशेष, पतिला,  
मींगा, मींगा मछली ।

चिड़नी दे० ( स्त्री० ) मुरगी का बच्चा ।

चिड़ दे० ( पु० ) मुरगी का बच्चा ।

चिड़नी दे० ( स्त्री० ) चिल्लारी, पतल, कीट ।

चिड़ना दे० ( पु० ) चिकार, भयङ्कर शब्द, हाथी का  
शब्द ।—मारना ( वा० ) भयङ्कर शब्द करना,  
चिकारना, हाथी का शब्द करना ।

चिड़ना दे० ( क्रि० ) किलकारना, चिड़ना मारना ।

चिचड़ी दे० ( स्त्री० ) किलनी, एक घास विशेष ।

चिचिड़ा दे० ( पु० ) तरकारी विशेष । [ शब्द करना ।

चिचियाना दे० ( क्रि० ) चिल्लाना, पुकारना, जोर से  
चिट दे० ( स्त्री० ) टुकड़ा, ग्रंथ विशेष, एक छोटा भाग,  
धञ्जी । [ हुआ, ( पण में ) चिता ।

चिटका दे० ( पु० ) रेंटा, कीचड़, क्रुद्ध हुआ, कुपित

चिटकारा दे० ( पु० ) चिन्ह, अङ्क, दाग, छँटा ।

चिटफी दे० ( स्त्री० ) धूप, घाम, ताप, गर्मी ।

चिट्टा दे० ( गु० ) गोरा, गौर वर्ण, स्वैत, सुन्दर  
रूपया, मुद्रा । दे० ( पु० ) साब भर के नका  
मुकसान के हिसाब की फर्द, चन्दे की सूची, वस्तुत,  
मजूदरी, पूरा तथा ठीक ठीक घुत्तान्त ।

चिट्टी दे० ( स्त्री० ) पाती, पत्री, छत, लाटरी, पत्ती,  
पत्र ।—पत्री ( वा० ) लिखा पट्टी, खोता किता-  
बत ।—रसा दे० ( पु० ) डाँक बाँटने वाला,  
डाँकिया ।

चिड़ा दे० ( पु० ) घान्धमस, चिरिक, गौरैया ।

चिड़ दे० ( पु० ) अरुचि, क्रोध, घृणा, ग्लानि, क्रुद्ध,  
जलन, खिजाव, चिड़ ।

चिड़चिड़ा दे० ( पु० ) क्रोधी, खनसाह, चिटकने वाला ।  
—ना ( क्रि० ) तरकना, दरकना, -चटकना, कुंफ-  
लाना ।

चिड़या ( पु० ) चिड़ा ।

चिड़ा दे० ( पु० ) चटक, पक्ष विशेष, गौरैया ।

चिड़ाना दे० ( क्रि० ) सताना, खिजाना, क्रुद्ध करना,  
छेड़ना ।

चिड़िया दे० ( पु० ) पक्षी, अण्डज, पक्षरु, पंछी ।—  
खाना ( पु० ) चिड़ियों की जुमायशगाह ।

चिड़ी ( स्त्री० ) पंछी, पक्षरु, तारा का एक रङ्ग का पत्ता ।

चिड़ीमार दे० ( पु० ) बहंलिया, व्याध, हत्याकारी,  
बधिक ।

चिड़ दे० ( स्त्री० ) देखो चिड़ । [ खींकना ।

चिड़ना दे० ( क्रि० ) अप्रसन्न होना, फलान, कुड़ना,

चित्रिण्ड दे० (स्त्री०) नृत्य विशेष ।

चित् तत्त्वं (स्त्री०) ज्ञान, चेतना, चैतन्य, चित्त की वृत्ति, ( संस्कृत का एक प्रत्यय है जो अनिश्चय याची है जैसे कश्चित्, किञ्चित् ) ।

चित्त तद् ( पु० ) मन, चित्त, हृदय, अन्तःकरण, सुष, स्तरण, श्रौंषे का उल्टा ।—चाय ( वा० ) अभीष्ट, मनभावन, मन को इच्छा मालूम होने वाला ।—चेता ( वा० ) मनमाना, उचित मालूम होना, जंचना, पसन्द आना । ( कि० ) सावधान हुधा, चौकस्ता हुधा ।—चेर ( वा० ) मन हरने वाला, अत्यन्त मिय ।—देना ( वा० ) ध्यान देना, मन लगाना, अधिक समुक्तता से करना ।—लगाना ( वा० ) मगोहर, सुदायना, मनभावन ।—लाना ( वा० ) सावधान हो जाना, सचेत हो जाना । ( स्त्री० ) दृष्टि, वीक्ष, अवलोकन, समझ वृत्ति । ( गु० ) अष्टाक्षित, सीधा लोटना, मुँह ऊपर करके सेना, उतान पड़ना ।—करना ( वा० ) उलटना, उतान गिराना, नीतना, हराना, पराजित करना ।

चित्तकवरा दे० ( गु० ) चितला, सतरंगा, रङ्गविरङ्ग, कवरा, कबुर, अचलक । [ अवलोकन काना ।

चितना दे० ( कि० ) रङ्गा जाना, ताकना, देखना, चितरना दे० ( कि० ) चित्रित करना, रङ्ग देना, रङ्गना, चित्र बनाना ।

चितला दे० ( गु० ) चितकवरा, कबुर ।

चितव ( कि० ) देखता है, घूरता है ।

चितघत ( कि० ) देखता है, ताकता है । [ नजुर, देखना ।

चितवन दे० ( स्त्री० ) दृष्टि, दर्शन, आँकी, अवलोकन,

चितयना दे० ( कि० ) देखना, दर्शन करना, कटाक्ष करना ।

चितहट दे० ( स्त्री० ) लींच, अनिच्छा, घृणा ।

चिता तद् ( स्त्री० ) मुँह के फूँकने के बिये चुनी हुई लकड़ियों का ढेर ।—भूमि तद् ( स्त्री० ) मरघट, शमशान ।—शायी ( गु० ) मुर्दा, मरा हुधा ।

चिताखा दे० ( स्त्री० ) चिता, स्मृतक शय्या ।

चिताङ्ग दे० ( गु० ) चित्त, उतान । [ सूचित करना ।

चिताना दे० ( कि० ) जनाना, जताना, सावधान करना,

चितायना दे० ( कि० ) जताना, चौकस करना ।

चितायनी दे० ( स्त्री० ) जतायनी, सावधान करने का उपदेश ।

चितेरा तद् ( पु० ) चित्रकार, चित्र बनानेवाला रंगसाल ।

चितै ( कि० ) देखका, ताकहर । [ करना ।

चितोना दे० ( कि० ) देखना, विलोकन करना, दर्शन

चित्कार तद् ( पु० ) चिहाना, चिचियाना, उच्चैःशब्द ।

चित्त तद् ( पु० ) [ चित् + क्त ] अनुसन्धान करने

वाली अन्तःकरण की वृत्ति, मन, हृदय, ज्ञान,

सुषि ।—ताप ( पु० ) मन की पीड़ा, मानसिक दुःख ।—प्रसाद ( पु० ) आह्लाद, हर्ष, चित्त के

सात्त्विक भाव का प्रकाश ।—जान ( पु० ) अनु-

प्राहक, कृपावान्, दयालु ।—विभ्रम ( गु० ) उन्माद,

चित्त का ज्ञान शून्य हो जाना ।—विशेष ( पु० )

मन की चञ्चलता, उद्विग्नता, व्याकुलता ।—वृत्ति

( स्त्री० ) चित्त का विकार, चित्त की दशा ।—

समुच्चित ( स्त्री० ) दम्भ, गहङ्गा, मन का

बढ़ना ।

चित्तज तद् ( पु० ) एक जाति का हिरन, चीतल ।

चित्ता तद् ( पु० ) शीपथि, शीपाविशेष ।

चित्ति तद् ( स्त्री० ) अथर्व श्रुति की पत्नी का नाम,

व्याप्ति, कर्म, बुद्धि की वृत्ति ।

चित्ती तद् ( स्त्री० ) बुँदकी, छोटा दाना ।

चित्तोद्वेग तद् ( पु० ) चित्त का उद्वेग, पिरकि,

व्याकुलता ।

चित्तोन्नति तद् ( स्त्री० ) गर्व, अभिमान, अहङ्कार ।

चित्तोर ( पु० ) मेवाड़ की प्राचीन राजधानी, राजपूताने

का यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है और इसे

गहलोतवंशी घणारावन् ने पसाया था ।

चित्य तद् ( पु० ) समाधि का स्थान ।

चित्र तद् ( पु० ) [ चित्र + क्त ] तिखक, छवि,

पट, आलेख्य, अद्भुत, विस्मय, मनोहर, अनेक

प्रकार का रङ्ग, तसवीर, चेत्युटे ।—फगुट ( पु० )

कबूतर, पारावत, परेश ।—कन्दक ( पु० ) त्रिर्भी-

कन्द ।—कार ( पु० ) चित्र बनानेवाले, चितेरा ।

—कारो ( स्त्री० ) चित्रकार का काम, चितेरापन ।

—काय ( पु० ) बाध, व्याघ्र, शेर, चीता ।—कूट

( पु० ) पर्वत विशेष, सुन्दरगण्ड के अन्तर्गत

कामता पहाड़ के नाम से बड़ा प्रसिद्ध है ।—केतु

( पु० ) हय नाम का एक रात्रा हो गया है ।—

गुप्त (पु०) यमराज के लेखक का नाम, जो सप्त के पाप पुण्य लिखा करते हैं, कायस्थों के आदि पुरुष हैं। पुराणों में इनके विषय में लिखा है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अङ्ग से हुई है। सृष्टि करने के पश्चात् जब ब्रह्मा ध्यान में मग्न थे उस समय कलम द्वाता लिये अनेक वस्त्रों से चित्रित एक मनुष्य उत्पन्न हुआ। उसने उत्पन्न होते ही ब्रह्मा से पूछा " क्या करना है " ? ब्रह्मा की आज्ञा पाकर ये प्रायियों के पाप पुण्य लिखने लगे। इनका लिखा विचित्र लेख गुप्त रहता है, इस कारण इनका नाम चित्रगुप्त पड़ा। ब्रह्मा की आज्ञा ही से कायस्थ इनकी जाति निश्चित हुई। अम्बष्ठ, श्रीवास्तव, माधुर, गौड़, भटनागर आदि नाम के नव पुत्र इनके थे। ये यमराज के मन्त्री हैं। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को इनकी पूजा होती है।—देवी ( स्त्री० ) इन्द्रा, वारुणी।—पद्म ( पु० ) तीतर नाम का पत्नी।—पट ( पु० ) प्रति, मूर्ति, फोटो।—भानु ( पु० ) सूर्य, अग्नि, अनल, दिवाकर।—भेज ( पु० ) कहुमरी, एक श्रीपथि का नाम।—रथ ( पु० ) गन्धर्व विशेष। इनका नाम अङ्गार-पर्यं था। इनके पास एक अनेक रत्नों से चित्रित रथ था इसी कारण इनको लोग चित्ररथ कहने लगे। इनकी स्त्री का नाम कुम्भीनसी था। पाण्डवों के वनवास के समय में अर्जुन ने इनके उस रथ को जला डाला। तब से इनका नाम दग्धरथ हो गया था। (२) धर्मरथ नामक राजा के पुत्र का नाम। बलिराज के चेत्रज पुत्र का नाम अङ्गताम था, येही अङ्गदेश के राजा थे। राजा अङ्ग के पुत्र का नाम दधिवाहन था, धर्मरथ के पिता दिविरथ इन्हीं के पुत्र थे। धर्मरथ के ही चित्ररथ पुत्र थे।—लिखित ( पु० ) चित्र में लिखा हुआ, निरचेष्ट, चेष्टाहीन, चेष्टा रहित।—लोखा ( स्त्री० ) अप्सरा विशेष, छन्दो विशेष। दैत्यराज बाणासुर की कन्या उषा की सखी का नाम। यह बाणासुर के मन्त्री कुन्दाण्ड की कन्या थी। इसीने उषा की प्रार्थना और देवर्षि नारद की सहायता से अनिरुद्ध को श्रीकृष्ण के भवन से हर लिया था।—लोचना ( स्त्री० ) मदन पत्नी, मैना पत्नी।—विचित्र ( पु० )

नानावर्ण का, बहुरङ्गी, अनेक प्रकार का, नाना-विध।—शाला ( स्त्री० ) चित्र बनाने का स्थान, जिस स्थान में अधिक चित्र हों।—शिखण्डिज ( पु० ) बृहस्पति, देवगुरु।—सारी ( स्त्री० ) अटारी, सजाया हुआ कमरा।—सेन ( पु० ) गन्धर्व, विशेष अद्वैत वन के एक सरोवर के निकट इनका वास था। पाण्डव भी निर्वासित होकर, इसी वन में रहते थे। एक समय दुर्योधन अपनी सेना और मित्रों के साथ अपने वैभव को दिखाकर युधिष्ठिर आदि को दुःखित करने की इच्छा से चला। इस तालाब के निकट जब वह पहुँचा तब चित्रसेन को वहाँ से हट जाने के लिये उसने कहा। चित्रसेन ने भी उचित उत्तर दिया। अथ दोनों पक्ष में युद्ध होने लगा। दुर्योधन की सेना हार गयी, कर्ण आदि वीरपुत्र पकड़े जाने लगे, दुर्योधन का एक सेवक युधिष्ठिर के समीप गया और उसने अत्यन्त नम्रता से सहायता माँगी। भीम सहायता देने के बिल-कुल विरुद्ध थे। परन्तु युधिष्ठिर ने समझा हुआ कर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव को दुर्योधन की सहायता के लिये भेजा। इनके पराक्रम से गन्धर्व सेना के छक्के छूट गये। वह धधर उधर भागने लगी। इन लोगों ने दुर्योधन, उनकी स्त्रियाँ तथा कर्ण आदि रथियों को कैद से छुड़ाया। गन्धर्व-राज, दुर्योधन आदि को लेकर, युधिष्ठिर के समीप आये, और उन्होंने अपना अपराध क्षमा कराया। दुर्योधन ने भी " चोरे गये छक्के बनने दूये वन के घर आये "।

की लोकोक्ति चरितार्थ की।

चित्रा तत्प० ( स्त्री० ) श्रीकृष्ण की एक सखी का नाम, चौदहवाँ नक्षत्र, एक नदी का नाम, अप्सरा विशेष, चितकवरी गाय।

चित्राङ्ग तत्प० ( पु० ) [ चित्र + अङ्ग ] साँप, रक्त चित्रक, हरताल, चीतल, ईंगुर।

चित्राङ्गद तत्प० ( पु० ) चन्द्रवशीय राजा विशेष। महाराज शन्तनु का राजकुमार, महावीर भीष्म-पितामह का सौतेला भाई था। सत्यवती के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी। इसके छोटे भाई का नाम विचित्रवीर्य था। शन्तनु के अनन्तर यह

राजा हुआ था । इससे प्रजा प्रसन्न थी । चित्राङ्गद नामक गन्धर्व के साथ इसका तीन वर्ष तक घोर युद्ध होता रहा, उसी युद्ध में शन्तनु कुमार चित्राङ्गद मारा गया ।

चित्राङ्गदा तत् ( स्त्री० ) अर्जुन की स्त्री, मनीपुर के राजा चित्राहादन की यह कन्या थी । इसके गर्भ से चित्राहादन नामक पराक्रमशाली पुत्र उत्पन्न हुआ था । अपने माता के वंश में उनका कोई उत्तराधिकारी न रहने के कारण, उनके राज्य का मालिक हुआ । [ प्रकार की स्त्री ।

चित्रिणी तत् ( स्त्री० ) चार प्रकार की स्त्रियों में दूसरे चित्रित ( वि० ) चित्र में खींचा हुआ, रङ्गा हुआ ।

चित्रोक्ति ( स्त्री० ) अलङ्कार युक्त भाषा में कहना, व्योम, आकाश ।

चिथड़ा दे० ( पु० ) फटा हुआ कपड़ा, गूदा ।

चिथड़िया दे० ( पु० ) गूदरिया, गूदरमाषा, चिरकटिया, चिपड़े वाला । [ चीरना, धज्जी धज्जी करना ।

चिथाड़ना दे० ( क्रि० ) फाड़ना, खताड़ना, लथाड़ना, चिथोड़ना ( क्रि० ) फाड़ खाना, भभोरना ।

चिद् तत् ( पु० ) चैतन्य, सजीव, जीवधारी ।

चिदाकाश तत् ( पु० ) चैतन्य, आकाश, ब्रह्म, परमात्मा ।

चिदात्मा तत् ( पु० ) ज्ञानमय आत्मा, ज्ञानस्वरूप, परमात्मा । [ परमात्मा ।

चिदानन्द तत् ( पु० ) ज्ञान और आनन्दस्वरूप

चिदामास तत् ( पु० ) ज्ञान, ज्ञान का प्रकाश, जीवामास । [ ( वि० ) स्फूर्तमान्, मनोहर ।

चिद्रूप तत् ( पु० ) ज्ञानमय या ज्ञानस्वरूप परमात्मा,

चिनक दे० ( पु० ) खुमचुनाइट, जलन सहित दर्द, मूत्र नली की जलन और पीड़ा ।

चिनग दे० ( पु० ) जलन, मूत्रकृच्छ्रोद्योग ।

चिनगना दे० ( क्रि० ) टीसना, जलन होना, चिलाना ।

चिनगारी, चिनगी दे० ( स्त्री० ) लूका, अग्नि स्फुल्लिङ्ग ।

चिनचिनाना दे० ( क्रि० ) चिलाना, चीलना, ग्राह मारना । [ चिनिया कंठा, चिनिया चादमा ।

चिनिया दे० ( वि० ) चीनी, सकेद, छोटा, जैसे—

चिन्त तद् ( स्त्री० ) चिन्ता, चिन्तना, ध्यान, सोच, फिकरा, स्मरण, सुष ।

चिन्तन तत् ( पु० ) अभ्यास, ध्यान, स्मरण ।

चिन्तना तद् ( क्रि० ) अभ्यास करना, मनन करना, ध्यान करना । [ फिक करने योग्य, सोचने योग्य ।

चिन्तनीय तद् ( वि० ) चिन्ता करने योग्य, भावनीय, चिन्तन तद् ( पु० ) चिन्तन देखो ।

चिन्ता तद् ( स्त्री० ) चिन्तन, ध्यान, भावना, उद्वेग, उत्कण्ठा, विषाद, कातरता, भय, घ्रास, सोच, हित वस्तु की प्राप्ति न होने का दुःख ।—की मुद्रा ( वा० ) ध्यानमग्नता, सोच की अवस्था ।—कुल या तुर ( पु० ) [ चिन्ता + आकुल या आतुर ] उद्विग्न, व्याकुल, चिन्तित ।—चित्त ( पु० )

चिन्तायुक्त, उदास, वन्मनस्क ।—पर ( पु० ) भावनायुक्त, चिन्तित ।—प्रणि ( पु० ) प्रह्ला,

कथित प्रणि, परमेश्वर, एक बुद्ध का नाम, कण्ठ में चिन्तामणि, भँवरी वाला घोड़ा । एक गणेश विशेष, यात्रा का एक योग, सरस्वती देवी का मंत्र ।—येश्म तद् ( पु० ) मंत्रणागृह, गोष्ठीगृह ।

चिन्तित तद् ( पु० ) [ चिन्ता + इत्त् ] चिन्ता-न्वित, भावनायुक्त सोच ।

चिन्त्य तद् ( वि० ) विचारणीय, विचार करने योग्य । चिन्दो दे० ( स्त्री० ) दुकड़ा, कपड़े का डुकड़ा ।

चिन्मय तद् ( पु० ) चैतन्यमय, परमात्मा । चिन्ह तद् ( पु० ) लक्षण, पहचान, प्रङ्क, दाग,

परिचय, पताका । चिन्हवाना ( क्रि० ) पहचान कराना ।

चिन्हानी दे० ( स्त्री० ) निशानी, सहिदानी । चिन्हार तद् ( पु० ) परिचित, पहचाना हुआ, खचित, प्रङ्कित, जान पहचान ।

चिन्हारी तद् ( स्त्री० ) परिचय, जान पहचान । चिन्हित तद् ( पु० ) चिन्हयुक्त, प्रङ्कित, मनोनीत, सङ्केतित, दागी ।

चिपकना दे० ( क्रि० ) लगना, सटना, चिपक जाना, सटजाना, दो वस्तुओं का आपस में मिल जाना ।

चिपकाना दे० ( क्रि० ) सटाना, लगाना । [ चिपकजिजा । चिपचिपा दे० ( पु० ) खसदार, लमलमा, सटनेवाला,

चिपचिपाना दे० ( क्रि० ) लसलसाना । चिपटना दे० ( क्रि० ) लिपटना, चिपकना, सटना ।

चिपटा दे० ( पु० ) सटा हुआ, चिपका, लिपटा, पैदा व घँसा हुआ, प्रपटा ।



चिपटाना दे० ( क्रि० ) सटाना, लिपटाना, चिप्पी लगाना, आलिङ्गन करना ।  
 चिपड़ाहा दे० ( गु० ) किचड़ाई या किचराई हुई अखि, कीचड़ भरी अखि । [कण्ठी, गोहठी ।  
 चिपड़ी, चिपरी दे० ( स्त्री० ) उपरी, गोहरी, उपला, चिपरा दे० ( पु० ) गोंद, लासा ।  
 चिपरक दे० ( पु० ) धान्य चमस, चिड़ा ।  
 चिप्पक दे० ( गु० ) छिछलाहा । ( पु० ) पचिविशेष ।  
 चिप्पा दे० ( पु० ) चीप, पैवन्द, जोड़ ।  
 चिप्पी दे० ( स्त्री० ) टिकिया, पैमैद, थिगरी, टिकरी, कूटी और फटी वस्तुओं में जो जोड़ी जाती है ।  
 चिवावला दे० ( पु० ) लड़कपन, लड़कैकासा, चुबहूला ।  
 चिविल्ला दे० ( गु० ) नटखट, चिबिल, चिलबिला ।  
 चिचुक तत् ( पु० ) थोट के नीचे का भाग, डुहरी, ठोड़ी, दाढ़ी, वृषविशेष, मुचकुन्द वृष ।  
 चिमचिमा दे० ( पु० ) तेजछट, तेज का मैल, जमा हुआ तेल । [सटना ।  
 चिमटना दे० ( क्रि० ) चिपटना, चिपटाना, लिपटना, चिमटा दे० ( पु० ) मोचना, चीमटा, आग बठाने के लिये लोहे या पीतल का एक प्रकार का बर्तन सँझसी, चिंवटा । [लगाना ।  
 चिमटाना दे० ( क्रि० ) लिपटाना, चिपटाना, गले चिमटो दे० ( स्त्री० ) चुटकी, सँझसी, छोटा चिमटा ।  
 चिमड़ा दे० ( गु० ) लचीला, कड़ा, चिमड़ा, चीमड़ ।  
 चिमड़ी दे० ( स्त्री० ) बर्रि, सूखी हुई, शुष्क ।  
 चिमसा दे० ( पु० ) पानी का सरेस, लसलसा ।  
 चिर तत् ( अ० ) बहुत काल, दीर्घकाल, बहुत दिन का, बहुत दिन तक, विलम्ब, देरी, अरसा ।—  
 कारी ( गु० ) विलम्ब से काम करने वाला, आलसी, दीर्घसूत्री, शिथिल, बीला ।—काल ( पु० ) दीर्घकाल, अनेक दिन, सदा, सब समय ।—  
 चिराना ( क्रि० ) चिह्नचिहाना, फटकटना ।—  
 जीवक ( गु० ) चिरजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला एक वृक्ष विशेष ।—जीवी दीर्घजीवी, विष्णु, काक, जीवक वृक्ष, शारमली वृक्ष, मार्कण्डेय मुनि, अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृप और परशुराम, ये चिरजीवी हैं ।—स्थायी ( पु० ) नित्य, सर्वदा रहने वाला ।

चिरई ( स्त्री० ) पक्षी, पंछी, चिड़िया ।  
 चिरकना ( क्रि० ) थोड़ा थोड़ा पाखाना फिरना ।  
 चिरकारी ( गु० ) दीर्घ सूत्री, आलसी ।  
 चिरम् तत् ( अ० ) देर, देरी, अरसा, अतिकाल ।  
 चिरञ्जीव तत् ( गु० ) दीर्घायु, यह आशीर्वाद के अर्थ में कहा जाता है । [वाला, दीर्घायु ।  
 चिरञ्जीवी तत् ( वि० ) चिरञ्जीवी, बहुत दिनों जीने चिरकुट दे० ( पु० ) चिट, चिपड़ा, फटा, पुराना ।  
 चिरकुटिया दे० ( गु० ) गुदड़िया, चिपड़िया, गूदड़ बाबा, योगियों का एक भेद, स्थायी कोपड़ी ।  
 चिरचिरा दे० ( पु० ) अपामार्ग, पैधा विशेष, एक औषध का नाम ।  
 चिरचिराना दे० ( क्रि० ) चरचराना, चरचर शब्द होना, एकवाह करना, कटकटाना, कटकना ।  
 चिरचिराहट दे० ( स्त्री० ) चरचरापन, मनमनाहट ।  
 चिरञ्जीव तत् ( गु० ) दीर्घ जीवन, दीर्घायु, उमर ।  
 चिरयटी तत् ( स्त्री० ) युवती स्त्री, पिता के घर रहने वाली युवती, विवाहिता या अविवाहिता कन्या ।  
 चिरन्तन तत् ( गु० ) पुरानी, प्राचीन ।  
 चिरवाना दे० ( क्रि० ) चिराना, फड़वाना ।  
 चिराद दे० ( पु० ) माँस भूतने की गन्ध ।  
 चिराग दे० ( पु० ) दिया, दीपक, प्रदीप, यथा—  
 “ चिराग जलाओ ” । चिराग बुझ गया, ”  
 “ चिराग तले अँपेरा ।  
 चिराना दे० ( क्रि० ) फड़वाना, चिरवाना । ( वि० ) चिरकालीन, पुराना, फटा हुआ, चिर गया, तड़क गया, चटक गया । [दीर्घजीवी ।  
 चिरायु तत् ( पु० ) देवता, ( गु० ) चिरजीवी, चिरु तत् ( पु० ) धातु और कन्धे का जोड़, मोड़ा ।  
 चिरैया दे० ( स्त्री० ) चिड़िया, पक्षी, वर्षा का पुण्य नक्षत्र ।  
 चिरौंजी दे० ( स्त्री० ) पियाला, शुष्कफल विशेष ।  
 चिरौरी दे० ( स्त्री० ) विनसी, प्रार्थना, विनय, अनुनय, खुशामद ।  
 चिर्मटी तत् ( स्त्री० ) ककड़ी । [चील ।  
 चिल दे० ( पु० ) पछि विशेष, अतायी, लहड़ पछी, चिलक दे० ( स्त्री० ) चमक, झलक, प्रकाश, दीप्ति ।  
 चिलकना दे० ( क्रि० ) चमक, झलकना, रह रह कर दद की टीस होना ।

चिलगोज़ा (पु०) मेवा विशेष ।

चिलचिल (स्त्री०) थयरक, थन्नक । [चिलचिलाना ।

चिलचिलाना दे० ( कि० ) शोर मचाना, किकियाना,

चिलड़ाहा दे० ( पु० ) जुपों से भरा हुआ, जुपेला,  
चिल्लर भरा ।

चिलविला दे० ( वि० ) चिलचिलाना, चपल, नटखट ।

चिलम या चिलिम दे० ( स्त्री० ) मिट्टी का एक बर्तन जिसमें  
तम्बाकू और आग रखकर हुक्का पीते हैं । चरदार

( पु० ) चिलम भरने वाला नौकर ।—चरदारी ( स्त्री० )

चिलम भरना, चिलम पिलाना, चिलम पिलानेवाले  
का काम ।—तमाकू ( स्त्री० ) चिलम और तमाकू ।

—चट ( पु० ) अधिक चिलम पीने वाला ।

चिलमची दे० ( स्त्री० ) हाथ आदि धोने का देग के  
आकार का पात्र, छोटी पतली चिलिम ।

चिलमन, चिलमन दे० ( स्त्री० ) चिक, ककरी । यथा—  
दाहा

“आग्रे पिया मेरे सैन में, पुनगी देई चिलाय ।

पलकन चिलमन डार दूँ, चैते यीन बनाय ॥”

चिलहना दे० ( पु० ) पक़िल, कियड़ाहा, पंकेला ।

चिलहोरना दे० ( कि० ) डोगाना, डोकराना ।

चिलिक दे० ( स्त्री० ) मोच, हँच, मोचड़, प्यया, रद ।

चिल्लु दे० ( पु० ) चीलर, चूँई, डोल ।

चिल्लो दे० ( स्त्री० ) चिलाना, शोरगुल, पुकार, हुहाई ।

चिल्ला दे० ( पु० ) धनुष का रोड़ा, ज्या, पगड़ी का छोर  
जो कद्दावतू का होता है, चालीस दिन का समय,  
चालीस दिन का चिकट जाड़ा,

“चिल्ला जाड़े दिन चालीस,

धन के पन्त्रह मकर पचीस ॥”

चिल्लाना दे० ( कि० ) चिह्नारना, पुकारना, शोर करना,  
ऊँचे स्वर से बोखना ।

चिल्लाहट दे० ( स्त्री० ) पुकार, चिंघार, शोरगुल ।

चिल्लो दे० ( स्त्री० ) लोभ, च्युथा का शाक, अण्डे का  
यना भोजन विशेष । [वाला बड़कों का एक खेल ।

चिलहवाड़ा दे० ( पु० ) पेड़ों पर चढ़कर खेला जाने  
चिबुक ( पु० ) छोटी ।

चिहाना दे० ( कि० ) तंग होना, विराग उत्पन्न होना ।

चिहिकना दे० ( कि० ) लहकना, सनसनाना, पचिपों  
का बोलना, पीहिकना ।

चिहुर तद्० ( पु० ) चिकुर, बाल, केश ।

चिहुँकना ( कि० ) चौकना ।

चिहुँटना ( कि० ) चुटकी काटना ।

चिहुँटनी दे० ( स्त्री० ) घुँघची ।

चिहुँटी दे० ( स्त्री० ) चुटकी ।

चौंटी दे० ( स्त्री० ) चिवटी, चिकटी, पिपीलिका ।

चौंचपड़ दे० ( स्त्री० ) किसी बड़े या सचल के सामने  
प्रतिकार या विरोध में किया जाने वाला कार्य ।

चौंथना दे० ( कि० ) फाड़ना, धिपड़ा करना, चिल-  
थिखा होना ।

चोऊटा दे० ( पु० ) कीटविशेष, खनाम प्रसिद्ध कीट ।

चोकर दे० ( पु० ) चिछाहट ।

चोकर दे० ( पु० ) सैब का मैल, जसार मिट्टी ।

चोकर दे० ( वि० ) चिकना, पिसलन ।

चोख दे० ( पु० ) चिंघाड़, चिछाहट ।

चोखना दे० ( कि० ) चिलाना, चलना, खाद लेना ।

चोखर, चोखला दे० ( पु० ) कीच, गारा ।

चोखा दे० ( कि० ) चखा, खाद लिया ।

चोखुर दे० ( पु० ) गिलहरी, कठबिल्ली ।

चोङ दे० ( स्त्री० ) सत्तात्मक पदार्थ, वस्तु, द्रव्य ।  
आभूषण, [जैसे, वह चोङ तिरें रखकर आये हैं,  
लड़की हण्डी है उसे कोई चोङ बनवा दो ।

चोठी दे० ( स्त्री० ) चिट्ठी, पत्री ।

चोड़ दे० ( पु० ) देशी लोहा विशेष, काष्ठ जाति ।

चोत तद्० ( पु० ) चित्त, मन, दिव ।

चीतना दे० ( कि० ) चाहना, इच्छा करना, मनोरथ  
करना, चित्र बनाना, चित्र करना, चित्रेना ।

चीतल दे० ( पु० ) तेंदुआ, चीता, बाघ, सर्प भेद ।

चीता दे० ( पु० ) चाह, इच्छा, मनोरथ, बुद्धि, एक  
जाति का व्याघ्र ।

चीत्कार तद्० ( पु० ) चिल्लाहट, चिह्वाड़, पुकार ।

चीथड़ा दे० ( पु० ) लत्ता, सुनने रसी कपड़े का टुकड़ा ।

चीथना दे० ( कि० ) चिथेड़ना, बकोटना, फाड़ना,  
खरोचना, टुकड़े टुकड़े करना ।

चीन तद्० ( पु० ) देश विशेष, भारत के उत्तर पूर्वस्थित  
देश, अन्न विशेष, जिसका माहाँ धनता है, ऊँड़ी,  
सूत, सीसा, धातु । [देश की वस्तु ।

चीनी दे० ( स्त्री० ) खाँड़, शकर, शर्करा, ( पु० ) चीन

चीनीयुक्त तद् ( पु० ) रेशमी वस्त्र, चीन का बना  
वस्त्र विशेष । [करना, जानना ।

चीन्हा तद् ( कि० ) पंद्रहाना, परिचय (महाबारा)

चीन्हा तद् ( कि० ) पहिचाना । ( पु० ) चिन्ह,  
निशानी ।

चीपड़ दे० ( पु० ) आँख का मल, आँख का कीचड़ ।

चीमड़ दे० ( वि० ) जो खींचने मोड़ने झुकाने से न  
तो टूटे न फटे । [कपड़ा, साड़ी, खींच ।

चीर तद् ( पु० ) पेड़ की छाँव, पुराने वस्त्र का टुकड़ा

चीरना दे० ( कि० ) फाड़ना, फाड़ डालना, टुकड़े  
टुकड़े कर देना ।

चीरफाड़ दे० ( खी० ) चीरना फाड़ना ।

चीरा दे० ( खी० ) पगड़ी, गाँव की सीमा का पथर,

चीर कर बनाया हुआ घाव । —उतारना ( कि० )

किसी गुरुष का किसी स्त्री के साथ प्रथम समागम ।

—बन्द दे० ( पु० ) चीरा बाँधनेवाला । ( वि० )

कुमारी, बचारी ।

चीरी दे० ( खी० ) कीर्तुर, एक कीट विशेष ।

चीरीता दे० ( पु० ) मृनिम्य, श्रोत्रविशेष ।

चीर्य तद् ( पु० ) विदीर्ण, फटा हुआ, खण्डित । —

पर्य ( पु० ) निम्न घृष्ट, पुराने पते ।

चीज दे० ( पु० ) एक पक्षरु का नाम । —भपट्टा

मारना ( वा० ) बलात्कार से छीन लेना, भपट  
लेना ।

चीलर दे० ( पु० ) चील, जूँई, जूँ, चीलड़ ।

चीला दे० ( पु० ) मूँग की पीठी या मीठे आटे के घी  
में सिके एक प्रकार के कढ़ाई में हाथ से पसार कर  
बनाये गये पुरामटे ।

चीयर तद् ( पु० ) सन्यासी का वस्त्र, कौपीन ।

चुभान दे० ( खी० ) चरण, फरना, जल निकलने की

भूमि, नहर, गड्ढा, सोता ।

चुभाना दे० ( कि० ) निकालना, टपकाना ।

चुक्ती दे० ( खी० ) निपटारा, समाप्ति, न्याय, फैसला ।

चुक्ना दे० ( खी० ) समाप्त होना, चुक्ता होना,

अवश्य होना, घटना, न्यून होना ।

चुकाई दे० ( खी० ) चुकोती, चुक्ती, चुकौता ।

चुकाना दे० ( कि० ) निपटाना, मोल उठारना ।

चुकौता दे० ( पु० ) निपटारा, नियम ।

चुकिड़ दे० ( पु० ) कुल्हिया, पुरवा, भोलुआ ।

चुकार दे० ( पु० ) गर्जन, गरज ।

चुकी दे० ( खी० ) छल, भूतार्ई, धोखा, चार्ईपन ।

चुकी दे० ( खी० ) नियम, निरूपण, परिमित, परिणाम,  
समाधान, निष्पत्ति, फैसला । [अभ्यशाक ।

चुक तद् ( पु० ) चुक, खटा, अम्लरस, खटास,

चुगन दे० ( खी० ) चुनन, बिनन, चुनत ।

चुगना दे० ( कि० ) हूँगना, चुगना, बिनना ।

चुहरी दे० ( खी० ) बन्धान, अन्नदान, भिक्षा, एक

प्रकार का सरकारी कर, जो दूसरी जगह से आने  
वाली नई वस्तुओं पर लगता है । —घर ( पु० )

जहाँ चुहरी वस्तु की जाती है । [दिना, चुमकारना ।

चुचकारना दे० ( कि० ) आश्वासन करना, सान्त्वना

चुचकारी दे० ( खी० ) चुमकारी, कुसलाई, पुचकारी ।

चुचाना दे० ( कि० ) चूना, टपकना, टपटपाना, गिरना,

बहना ।

चुचड़ दे० ( पु० ) बड़ी चूँची, मोटा स्तन, बड़ी छाती ।

चुञ्च तद् ( पु० ) मुनि विशेष, चोंच ।

चुञ्चक तद् ( पु० ) भेंड़, मेघ ।

चुटकी ( खी० ) नेच, दो अङ्गुलियों के मिलाने से जो

मुद्रा बनती है । मुट्टी भर अन्न, पचरङ्ग रङ्गने के लिये

बाँध, जिससे कपड़ा सफेद ही रह जाता है । एक

प्रकार का गोटा, जिसे विलियार् भी कहते हैं । एक

प्रकार का चूरन, सीप हुए कपड़े को फैलाना,

खियों के अँगूठे में पहिनने की अँगूठी । बयाई,

चुटकी बगाना । —चढ़ाना ( वा० ) रुखा परखना ।

अँगुलियों से कपड़ा चीरना । —लगाना ( वा० )

जेय काटना । —लेना ( वा० ) ध्वाना, नेचना,

आया करना, गलाना, गरम करना उपहास करना,

काम करना, दिक् करना । —में ( वा० ) शीघ्र, बहुत

शीघ्र । —घजाते में ( वा० ) अत्यन्त शीघ्र । —यों

में उड़ाना ( वा० ) हँसी में बड़ा देना । —यों में

काम होना ( वा० ) शीघ्र काम होना ।

चुटकुला दे० ( पु० ) विलक्षण यात, जटका । —

छोड़ना ( वा० ) विलक्षण यात कहना, कोई ऐसी

यात कहना जिससे कोई नयी यात पैदा हो ।

चुटकुट दे० ( खी० ) फुटकर चीज । [चुटोका ।

चुटका दे० ( पु० ) चुटिया, जड़ा, चोटी । ( वि० )

सुदाना दे० ( कि० ) घाव लगाना, सुटल होना ।  
 सुटिया दे० ( पु० ) लोटी, चोरों का भेद जानने वाला,  
 ( स्त्री० ) शिखा । [ चोटिल करना, ज़खमी करना ।  
 सुटियाना दे० ( कि० ) घाव करना, आक्रमण करना,  
 सुट्टीजा दे० ( पु० ) घायल, ग्राह्य, घत विघत ।  
 सुट्टिहार, सुट्टीद्वारा दे० ( पु० ) चूरी बनाने और  
 बेचने वाला ।  
 सुट्टचा दे० ( पु० ) चीकड़ा, चर्वण, चौरा ।  
 सुट्टल दे० ( स्त्री० ) प्रेतनी, डाकिनी, फूहड़ ।  
 सुनसुनी दे० ( स्त्री० ) खजुलाहट, कण्डू, कृमि, खजू ।  
 सुनत या सुनट दे० ( स्त्री० ) सुनत, तह, परत, तल ।  
 सुनरी दे० ( स्त्री० ) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का  
 रङ्गीन वस्त्र ।  
 सुमाना दे० ( कि० ) विम्वाना, हँटे सुद्वाना, हँटे  
 सुनधा कर दबा देना, गाड़ देना, तोपना ।  
 सुमाघट दे० ( स्त्री० ) सुनट, तह, परत ।  
 सुनौटी दे० ( स्त्री० ) सूना रत्नने का पात्र, सूनादानी ।  
 सुनौती दे० ( स्त्री० ) जलकार, प्रचार, बधावा, चिट्ठा,  
 धिक्कार ।  
 सुन्धला दे० ( पु० ) तिरमिरा, चकचौधा, नेत्ररोगी ।  
 सुन्धलाना दे० ( कि० ) चैंधियाना, तिरमिरा होना ।  
 सुग्धा दे० ( पु० ) जिसे ॥ सूके, छोटी आखीवाला ।  
 सुग्धा दे० ( कि० ) सुगन्ध, सुगन्धना, सुगन्ध, विनना ।  
 सुघी दे० ( स्त्री० ) छोटी पञ्चराग मणि, लकड़ी के छोटे  
 छोटे टुकड़े । [ गोपन, शवाक् ।  
 सुप दे० ( पु० ) निःशब्द, नीरव, मौन, अनबोल,  
 सुपचाप दे० ( पु० ) मौन, विन बोले वाले, निःशब्द,  
 गुप्त रीति से, शब्द-रहित ।  
 सुपड़ना दे० ( कि० ) चिकनाना, मलना, मसलना ।  
 सुपासुप दे० ( पु० ) सुप होकर, सुस्वरूप से, शकस्मात्, सहसा ।  
 सुप्पा दे० ( वि० ) कम बोलने वाला, घुसा ।  
 सुप्पी दे० ( स्त्री० ) मौनत्व, निःशब्दता, शब्दहीनता,  
 खामोशी । [ माइन ।  
 सुमकी दे० ( स्त्री० ) हुबकी, घुड़की, मोठा, अव-  
 सुमना दे० ( कि० ) घुसना, पैठना, बिघना, छिदना,  
 दृश्य में खटकना, चित्त में बना रहना, मग्न, लीन ।  
 सुमाना या सुमोना दे० ( कि० ) घुसेड़ना, पैठलना,  
 छेदना, वेधना ।

सुमाना तद्० ( कि० ) चूमा दिलवाना, विवाह की  
 एक रीति ।  
 सुमकार दे० ( पु० ) सुचकार शब्द, फुसलाना,  
 आश्वासन देकर वश में करना । [ जन करना ।  
 सुमकारना दे० ( कि० ) टिटकारना, फुसलाना, बचे-  
 चुम्मा तद्० ( पु० ) चुम्मा, मिट्टी, थोडा से थोडा छूना ।  
 सुम्बक तद्० ( पु० ) एक प्रकार का लोहा, परपर  
 विशेष, लोहा खींचने वाली एक धातु ।  
 सुम्बन तद्० ( पु० ) सुम्बसयोग, सुम्बा, चूमा ।  
 सुम्बा तद्० ( पु० ) सुम्बन, चूमा ।  
 सुम्भित तद्० ( पु० ) कृत सुम्बन, सुम्बा लिया हुआ ।  
 सुरकी दे० ( स्त्री० ) चिकुर, शिखा, चोटी ।  
 सुरकुट दे० ( पु० ) फटा कपड़ा, चूरचूर, चूरन, घुङ्गनी ।  
 सुरगाना दे० ( कि० ) बकना, चिल्लाना, चैं चैं करना ।  
 सुरमुरा दे० ( पु० ) सुर सुर करनेवाला, चर्वण विशेष ।  
 सुराना दे० ( कि० ) चोरी करना, अपहरण करना,  
 हरना ।  
 सुरी दे० ( स्त्री० ) चूड़ी, काँच की कँगनी ।  
 सुरगना दे० ( कि० ) बड़बड़ाना, बकना ।  
 सुरत दे० ( स्त्री० ) तन्दा, आलस, ऊँच, ऊँचाई ।  
 सुल दे० ( स्त्री० ) सुजलाहट, सुगन्धी, खान, कण्डू ।  
 सुलकना दे० ( कि० ) बिलथिलाना, सुलसुल करना,  
 सुजाना ।  
 सुलसुल दे० ( पु० ) चपलता, चपलता ।  
 सुलसुलाना दे० ( कि० ) गुदगुदाना, कुलसुलाना,  
 सुजलाना, सुलसुल करना ।  
 सुलसुली दे० ( कि० ) गुदगुली, कुलसुली ।  
 सुलसुली दे० ( पु० ) चञ्चल, क्षुब्ध, चपल, मदसत ।  
 सुलसुलाहट दे० ( स्त्री० ) चञ्चलता, छुटपटिया ।  
 सुलसुलिया दे० ( पु० ) सुलसुल, चञ्चल ।  
 सुलहाई दे० ( पु० ) कामातुर, कामी, लम्पट, प्यभिचारी ।  
 सुलहाप दे० ( पु० ) कामुक, कामातुर ।  
 सुलाना दे० ( कि० ) सुजाना, टपकाना, गिराना ।  
 सुल्ला दे० ( पु० ) सुन्धला, सुन्धा, तिरमिरा ।  
 सुन्द दे० ( पु० ) पसर, पसर भर, एक हाथ का  
 सम्बुटाकार ।  
 सुधाना दे० ( कि० ) टपकाना, धीरे धीरे गिराना ।  
 सुसकी दे० ( स्त्री० ) सुँहमर, सुइकी ।

चेहरा ( पु० ) मुखड़ा, शंख, मुँह पर लगाने का मिट्टी का राक्षस धानरादि का मुखड़ा ।  
 चैटा दे० ( पु० ) काला चींटा ।  
 चैत तद्० ( पु० ) चैत्र महीना, वर्ष का पहिला मास ।  
 चैतन्य तद्० ( पु० ) जीवार्त्ता, परमात्मा, ब्रह्म, बुद्धि, ज्ञान, विचार, विवेचना, चेत, चेतना, प्रकृति, ( पु० ) सचेत, चेत में, चौकस, चेतन, चेतनता । ( पु० ) किसी किसी के मत से भगवान् का आविर्भाव विशेष । यह महात्मा १४८२ ई० में बंगाल के नवद्वीप नगर में उत्पन्न हुए थे । श्रीहट्ट निवासी जगन्नाथ मिश्र के यह पुत्र थे । इनकी माता का नाम शची देवी था, इनका नाम निमाई और इनके बड़े भाई का नाम विश्वरूप था । ये दोनों भाई यथा ज्ञान लाभ करके चिरक हो गये । उस समय के नवद्वीप के पण्डितों में, ये सर्वश्रेष्ठ समझे जाते थे । धीरे धीरे यह ज्ञान राज्य में अप्रसर होने लगे । थोड़े दिनों में इनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गयी । इनके अनेक शिष्य हो गये । कहा जाता है कि इन्होंने बड़े बड़े चमत्कारिक काम किये हैं । इन्होंने अपना अन्तिम जीवन पुरी और धुन्दावन में बिताया । उत्कल देश के मन्दिरों में विष्णु मूर्तियों के साथ इनकी भी प्रतिमा स्थापित है । ये गौड़िया वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य माने जाते हैं ।  
 चैता ( पु० ) पची विशेष, गाना विशेष ।  
 चैती ( स्त्री० ) चैत्र में काटी जाने वाली फसल, रबी, राग विशेष । ( पु० ) चैत माम सम्बन्धी ।  
 चैत्र तत् ( पु० ) देवायतन, मस्जिद, गिर्जा, चिता, गाँव का पूज्य वृक्ष, अश्वय वृक्ष, मकान, यशुराला बेल् का पेड़, गौड़ संन्यासी, यौद्धों का मठ ।  
 चैत्र तत्० ( पु० ) चैत, वसन्त ऋतु का पहला महीना, इस महीने की पूर्णिमा, चित्रा नक्षत्र से युक्त होती है । मघु मास, बुद्ध संन्यासी, किन्नरों के एक पर्वत का नाम, चित्रा के गर्भ से बुद्ध के एक पुत्र का नाम, यज्ञभूमि, मन्दिर ।  
 चैत्ररथ तत्० ( पु० ) चित्ररथ नामक गन्धर्व के बनावे हुए कुवेर के एक बाग का नाम, कुवेर का अधान ।  
 चैद्य तत्० ( पु० ) चेदी देश का राजा शिशुपाल, दमघोष सुत ।

चैन दे० ( पु० ) सुख, आनन्द, कल ।  
 चैल तत्० ( पु० ) बख, वसन, कपड़ा । [ जलावन ।  
 चैला दे० ( पु० ) चीरी लकड़ी, जलाने की लकड़ी,  
 चैकना दे० ( कि० ) चोमना, गोमन, गढ़ाना, घबड़ाना, आश्चर्यित होना, अचम्भित होना, अचरज में आना, सोते सोते बर्ग उठना, गो का दूध पीना ।  
 चैंगला दे० ( पु० ) बाँस की नली, जिसमें कागज़ या पुस्तकें रखी जाती हैं ।  
 चैंगा दे० ( पु० ) नली, नलुया, नल ।  
 चैंगी दे० ( स्त्री० ) नली, पोला नली । [ का चोंच ।  
 चैच दे० ( पु० ) चन्चु, ठो, ठोड, नेच, चिड़ियों  
 चैचला, चोचला दे० ( पु० ) हँसी दिहनी, हाव भाव, नखरा, विलास, नाड़ा । "धनिकों के चैचले ।"  
 "होश की अपने कुछ दबा कीजै ।  
 मुम्मे नाहरू न चैचला कीजै ॥  
 चैटला दे० ( पु० ) चुटिला, चँवरी, बाल गूँघने की डोरी, जिससे चोटी गूँघते हैं ।  
 चैड़ा तद्० ( पु० ) चूड़ा, जुड़ा, बाल का जुड़ा ।  
 चैथना दे० ( कि० ) चीरना, फाड़ना, चीथना, धकोटना, नोचना ।  
 चैप दे० ( पु० ) बरसाह, उल्लाह, चाह, इच्छा, सोने का एक गहना जिसे स्त्रियाँ दाँतों में पहनती हैं, हठही । [ एक कर गिरा फल, फली ।  
 चैप्रा दे० ( पु० ) सुगन्धित द्रव्य विशेष, टपका फल,  
 चैप्राइ दे० ( पु० ) पहाड़ी जाति विशेष, पहाड़ी डाँड़ ।  
 चैकर दे० ( पु० ) भूसी, सीडी, हुप, असार, घाटे की भूसी, रई, रवा ।  
 चैला दे० ( पु० ) उत्तम, श्रेष्ठ, खरा, सबा, शुद्ध, तीक्ष्ण, तेज़ धार वाला । ( स्त्री० ) चोखी ।  
 चैखार्ह दे० ( स्त्री० ) खराह, श्रेष्ठता, शुद्धता, तीक्ष्णता ।  
 चैगा दे० ( पु० ) चारा, चिड़ियों का खाना, कामदार एक प्रकार जामा ।  
 चैचला दे० ( पु० ) हाव भाव, नखरा, नाड़ा ।  
 चैज दे० ( पु० ) दूसरों को हँसानेवाली युक्ति, युक्त बात, सुभाषित, व्यङ्ग्य पूर्ण उपहास ।  
 चोट दे० ( स्त्री० ) घाव, चपे, घुस्सा, पटकन, मुक्का, धक्का, आघात, पड़ाइ ।—खाना ( वा० ) मार खाना, आहत होना, हानि उठाना, चूक जाना ।—पर

चोटा ( वा० ) दुःख पर दुःख, एक विपत्ति पर दूसरी विपत्ति ।  
 चोटा दे० ( पु० ) बंटा, जूती, छोथा, गुड़ का मैल, सूद । [ लँगड़ा करना ।  
 चोटियाना दे० ( कि० ) चुटालना, चोटी पकड़ना,  
 चोटी दे० ( स्त्री० ) शिखा, पहाड़ का ऊपरी हिस्सा, सिर के मध्य का बाल समूह, भौंटा, भौंटी । — झाकाश पर घिसना ( वा० ) अड़झार करना, अत्यन्त घमण्ड करना, अभिमान करना । — कट ( वा० ) दास, शिष्य, अपने अधीन का । — कट-धाना ( वा० ) दास होना, अनुगत होना, अधीन बन जाना । — किसी के हाथ में आना ( वा० ) किसी को अपने अधीन करना, अपने घर में करना, आशावर्ती बनाना, दबाना, प्रभाव जमाना, अधिकार जमाना ।  
 चोट्टा दे० ( पु० ) चोर, तस्कर, बटमार ।  
 चोड़ दे० ( पु० ) जनानी कुत्सी, जैगिया, कांचली, झूठा । तत् ( पु० ) उत्तरीय वस्त्र, चोल नाम का प्राचीन वेश ।  
 चोत, चोथ दे० ( पु० ) गोबर, गोमय ।  
 चोथना दे० ( कि० ) फाड़ना, चीरना, चोंचना, नोचना, खसोटना, उधेड़ना ।  
 चोन्धला दे० ( पु० ) चुन्धला, अन्धा, तिमिरा ।  
 चोन्धलाना दे० ( कि० ) चुन्धलाना । [ अन्धापन ।  
 चोन्धी दे० ( स्त्री० ) चुन्ध, चुन्धलाई, तिमिरी,  
 चोप दे० ( पु० ) चोप, चाव, इच्छा, हर्ष, मनोरथ, उत्साह, उद्योग, हौसला । लगन । — ना ( कि० ) मुग्ध होना ।  
 चोपकारी ( स्त्री० ) कलायत्त का काम ।  
 चोपदार ( पु० ) असाधारदार, चोप लेने वाला नौकर ।  
 चोमा दे० ( पु० ) खोंच, खील, कीला ।  
 चोमी दे० ( स्त्री० ) छोटा चोमा । [ द्रव्य ।  
 चोपा दे० ( पु० ) चोथा, एक प्रकार का सुगन्धित चोर तत् ( पु० ) [ चुप + अच् ] तस्कर, दूसरे का धन चुराने वाला, चोटा, अपहरक, अपहरण कर्ता, बिना कहे सुने वस्तु ले जानेवाला । — खाना, घर ( वा० ) गुप्तगृह, तहखाना, छिपा हुआ मकान । — मार्ग ( पु० ) छिपी राह, खिड़की का मार्ग ।

चोर कवि तत् ( पु० ) यह संस्कृत के कवि कारमीर निवासी थे । इनका दूसरा नाम विरहण था । “ विक्रमाङ्कदेव चरित ” “ कर्ण सुन्दरी ” नाटिका और “ चार पञ्चाशिका ” ये तीन ग्रन्थ इनके आज तक उपलब्ध हुए हैं । सुभाषित ग्रन्थों में इनके नाम से और भी उद्धृत श्लोक पाये जाते हैं, इसी से विद्वानों का अनुमान है कि इन्होंने और भी कोई ग्रन्थ बनाये होंगे । चौरपञ्चाशिका निर्माण का हेतु बड़ा ही अद्भुत सुना जाता है । गुजरात के राजा वीरसिंह की पुत्री शशिकला को यह पढ़ाते थे, उस की सुन्दरता पर यह मोहित हो गये । इनका गान्धर्व विवाह भी हो गया । इसके सुनकर राजा ने इनको बंध करने की आज्ञा दी । वध्य-स्थान तक पहुँचते पहुँचते, अपनी प्रेमिका के वर्णन में इन्होंने पचास श्लोक बना डाले । इनकी काव्य रचना का हाल सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ । इस अद्भुत शक्ति और शुद्ध प्रेम से देल कर राजा ने अपनी लड़की विरहण को म्याह दी । ये कल्याण के राजा विक्रमादित्य की सभा के पण्डित थे । इनका समय ११ वीं सदी का अन्तिम और बारहवीं सदी का आदि काल निश्चित जान पड़ता है ।  
 चोरी तत् ( स्त्री० ) अपहरण, हरन, चोरी करना ।  
 चोल तत् ( पु० ) श्रीपथ विरोध, मजीठ, एक देश का नाम, यह देश कावेरी नदी के किनारे पर है । इस समय मैसूर राज्य का दक्षिण भाग । चोल देश को कर्नाटक भी कहते हैं ।  
 चोला दे० ( पु० ) वस्त्र, काप, शरीर, यथा — यमुनादास ने चोला बदल दिया, अर्थात् वनका शरीरान्त हो गया, अथवा उन्होंने कपड़े बदल दिये । — छोड़ना, घटलना ( वा० ) प्राण त्यागना ।  
 चोली दे० ( स्त्री० ) जैगिया, कांचली । [ विरोध ।  
 चोवा दे० ( पु० ) चोथा, अर्गजा, सुगन्धित द्रव्य चोप ( पु० ) रोग विरोध । [ रस का स्वाद लेना ।  
 चोपण तत् ( पु० ) [ चुप + अणट् ] चुलना, घातना, चोप्य तत् ( पु० ) [ चुप + ] चुसने योग्य, रस लेने योग्य, छः प्रकार के भोजन के अन्तर्गत एक प्रकार का भोजन ।

चोसा दे० ( पु० ) वह रेती जिससे लकड़ी रेती जाती है ।  
चोहड़ दे० ( पु० ) जवड़ा, हनु, ठोड़ी, छुड़ी, गले का  
ऊपरी भाग ।

चोहला दे० ( पु० ) खोंवा, चोमा, कीला, कील ।  
चोहाड़ दे० ( पु० ) एक पहाड़ में रहने वाली जाति ।  
चोहान ( पु० ) चन्निनों की एक जाति । [ फाल ।  
चो दे० ( पु० ) चार संख्या, ४, पिछे दाँत, हलका  
चोपन्नी दे० ( स्त्री० ) चार आना, १), रुपये का चौथाई  
भाग ।

चौक दे० ( स्त्री० ) फिक्क, भटक, आशङ्का, चिहुँक ।  
चौकना दे० ( क्रि० ) फिक्कना, ठिठकना, अचम्भा  
करना, अचरज करना, आश्चर्यित होना ।

चौकिल दे० ( गु० ) फिक्कने वाला, भड़कने वाला,  
बनैला, जङ्गली ।

चौंगा दे० ( पु० ) कपट, छल, व्याज, फुसलाहट ।

चौंगी दे० ( स्त्री० ) फुसलाहट, छल, कपट ।

चौड़ दे० ( पु० ) मूढ़, निर्बोध, अनसमझ, बेसमझ ।

चौतरा दे० ( पु० ) चवुतरा, ओटा, घाना, अथाई,  
चौपाड़ । [ तीस, ३४ ।

चौतीस दे० ( गु० ) संख्या विशेष, चार अधिक

चौध दे० ( पु० ) आँल तिरमिराना, साफ साफ नहीं  
दीखना, तिलमिली ।

चौधियाना दे० ( क्रि० ) दृष्टि का मन्द पड़ जाना,  
व्याकुल होना, घबड़ाना, उद्विग्न होना ।

चौरा दे० ( पु० ) भ्रष्ट का लघुघर, खाद, भ्रष्ट रखने के  
लिये जमीन में किया हुआ गढ़ा ।

चौरी दे० ( स्त्री० ) चवरी, छोटा चैवर, चामर, राज  
चिन्ह विशेष ।

चौसर दे० ( पु० ) खेल विशेष, चौपड़, यह खेल पासें  
से खेला जाता है, जुए का एक भेद, फूलों की  
माला ।

चौक दे० ( पु० ) आँगन, मैदान, नगर का प्रधान  
बाज़ार ।—नी ( स्त्री० ) तख्त, काष्ठ निर्मित ४ पाये  
वाली बैठने की वस्तु, बाज़ार, हाट, पैठ, चौराहा,  
चौहटा, छोटा थाना, नाका ।

चौकठा दे० ( पु० ) चौखटा, चौकोर बनी वस्तु ।

चौकड़ दे० ( गु० ) सुन्दर, मनोहर, उत्तम, रमणीय,  
श्रेष्ठ, भला, बली, बलवान्, हष्ट पुष्ट ।

चौकड़ा दे० ( पु० ) भूषण विशेष, देा मोतियों का  
वाला, जिसे लड़के कानों में पहनते हैं । कर्ण-  
भूषण ।

चौकड़ी दे० ( स्त्री० ) बल्ल कूद, फर्लांग, उड़ाल, चार  
आदिमियों का गुट, आभूषण विशेष, चतुर्गुनी,  
पञ्चयी । चार वस्तुओं का समूह, चार घोड़ों की  
गाड़ी ।—भरना ( वा० ) कूद कूद कर चलना,  
जैसे हरिय चलते हैं । उल्लूना, कूदना ।—भूलना  
( वा० ) अपना काम भूलना, मोह में पड़ जाना,  
मौचक्का रह जाना ।—मार बैठना ( वा० ) नारों  
पैर मोड़ कर बैठना, पशुओं का सुखासन, संकुचित  
होकर बैठना, सिमित कर बैठना ।

चौकन्ना दे० ( गु० ) सतर्क, सावधान, चौकस, सचेत,  
विपुल, जाग्रत, जागा हुआ, सचेष्ट, उद्योगी ।

चौकपुरना दे० ( वा० ) वेदी बनाना, कुत्र परम्परा के  
व्यवहारानुसार वेदी पर येल बूटें बनाना ।

चौकभरना दे० ( वा० ) विवाह आदि महल कार्यों  
में चौक बनाना, चौक का मिठाई से भरना ।

चौकस दे० ( गु० ) सावधान, चौकन्ना, सतर्क, पढ़,  
दृढ़ । यथा "दीनेश अपने काम में चौकस है ।"

चौकसाई दे० ( स्त्री० ) सावधानी, सतर्कता ।

चौकसी दे० ( स्त्री० ) धुन, रचा, कर्तव्यज्ञान, सावधानी ।

चौका दे० ( पु० ) लीपा हुआ स्थान जहाँ रसोई बनायी  
जाती है, चौखूटा स्थान, चौकोनी भूमि, रसोई  
बनाने या ब्राह्मणों के सन्ध्या पूजन करने का स्थान,  
चौखूटा पर्यर, चकला, सीसकूल, चार लींग वाला  
जङ्गली बकरा, चार वस्तुओं का समूह, चार बूटियों  
वाला शाय का पत्ता ।

चौकी दे० ( स्त्री० ) चौकोनी काठ की बनी हुई वस्तु,  
कुरसी, रचा, पहरा, चौकसी, चौकीदारों के रहने  
का स्थान, भूषण विशेष जिसे लड़के या स्त्रियाँ  
गले में पहनते हैं ।—द्वार ( पु० ) चौकी देने वाला  
रचा करने वाला, पहरा ।—द्वारी ( स्त्री० )  
चौकीदार की मजूरी, चौकीदार की तनखाह ।—  
देना ( क्रि० ) रखवारी करना, रचा करना, पहरा  
देना ।—मारना ( क्रि० ) छिपकर महसूल को न  
चुकाना, महसूल मारना । [ स्थान ।

चौके दे० ( पु० ) चकले, दुरधे, पवित्र, लीपा हुआ

चौकोना दे० (गु०) चतुष्कोण, चौखूँटा, चार कोने का ।  
 चौकोर दे० (गु०) चौकोना । [द्वार का ढाँचा ।  
 चौखट दे० (पु०) द्वार के चारों ओर का काठ,  
 चौखटा दे० (पु०) चौखटा, चौकोर काठ का ढाँचा ।  
 चौखना दे० (वि०) चारमंजिला, चार खण्ड वाला ।  
 चौखा (पु०) वह स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सीमा  
 मिले । [मण्डल चतुर्दिश ।  
 चौखूँट (वि०) चारों ओर, चारों तरफ । (पु०) पृथिवी  
 चौखूँटा दे० (गु०) चौकोना, चौकोर, चतुष्कोण ।  
 चौगड़ा दे० (पु०) खाहा, शराफ, खरगोश, शम्भा ।  
 चौगंडा दे० (पु०) स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सरहद  
 मिले, चौहद्द, चार पक्षों का समूह ।  
 चौगान दे० (पु०) मैदान, एक खेल विशेष, गेंद खेलने  
 का स्थान, नगाड़ा बजाने की लकड़ी । [ई, सटक ।  
 चौगानी दे० (स्त्री०) हुकूम की नली जो स्त्रीधी होती  
 चौगिर्द दे० (वि०) चतुर्दिश । [करना, चतुर्गुण ।  
 चौगुना, चारगुना दे० (गु०) एक को चार बार  
 चौघड़ा दे० (पु०) पात्र विशेष, जिसमें चार घर या  
 चार खूट हो, पत्ते की खोली जिसमें पान के चार  
 पीढ़े हो । बड़ी जाति की गुजराती इलायची ।  
 चौह तव० (पु०) चूड़ाकरण संस्कार । तव० (वि०)  
 चौपट, सत्यानाश ।  
 चौड़ा दे० (गु०) फैला हुआ, प्रस्थ, चकला, पन्हा ।  
 चौड़ाई दे० (स्त्री०) पाट, चकलाई, फैलाव, विस्तार,  
 विस्तृति ।  
 चौड़ान दे० (पु०) विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, चकलाई ।  
 चौड़ाना दे० (क्रि०) चकलाना, फैलाना, विस्तृत  
 करना, चौड़ा करना । [पाळकी ।  
 चौडोल दे० (पु०) पाळकी विशेष, चौपलिया  
 चौतनी दे० (स्त्री०) छोटे बालकों की चारतनी दार  
 टोपी, चौतोखिया टोपी, चौकलिया टोपी ।  
 चौतरका दे० (पु०) पट मण्डप, वस्त्र गृह, तम्बू,  
 कनात, रावटी ।  
 चौतरा दे० (पु०) चौतरा, चकतरा ।  
 चौतही दे० (स्त्री०) मोटा चार तह का बिलौना ।  
 चौतारा दे० (पु०) वाद्य विशेष, चार तार का बाजा,  
 यह तम्बूरे के समान होता है । [ताल ।  
 चौतात दे० (पु०) रागिनी विशेष, सृष्टन का एक

चौथ दे० (पु०) चतुर्थ, चौथा हिस्सा, खिराज,  
 एक प्रकार का कर जो मराठों के समय में लिया  
 जाता था, चतुर्थी तिथि ।—पन दे० (पु०)  
 बुझाई, बुझापा ।  
 चौथा दे० (गु०) चतुर्थ, चार संख्या की पूर्ति ।—पन  
 (पु०) चौथी अवस्था, बुझाई ।  
 चौथाई दे० (स्त्री०) चौथा हिस्सा, चौथा भाग ।  
 चौथि दे० (स्त्री०) चतुर्थी तिथि ।  
 चौथिया दे० (पु०) चौथे भाग का मासिक, चौथ  
 लेने वाला ।—उवर (पु०) चौथे दिन आने वाला  
 उवर, चातुर्थिक उवर । [जो चौथे दिन की जाती है ।  
 चौथी दे० (गु०) चौथा भाग, वियाह की एक रीति  
 चौदन्त दे० (गु०) चार दाँत का घच्चा, पशुओं की  
 अवस्था विशेष, बली, छट पुष्ट । [वदन्तता ।  
 चौदन्ती दे० (स्त्री०) शूरता, वीरता, अवहट्ठपन,  
 चौदस या चौदश तव० (स्त्री०) चतुर्दशी, चौदहवीं  
 तिथि ।  
 चौदह दे० (गु०) चतुर्दश, संख्या विशेष, १४ ।  
 चौदनिया, चौदानी दे० (स्त्री०) कर्णभूषण विशेष,  
 बाला या बाली विशेष जिसमें चार मोती लगाये  
 जाते हैं । [छट पुष्ट ।  
 चौधर दे० (गु०) बलवान्, बली, मोटा ताड़ा,  
 चौधराई दे० (स्त्री०) चौधरी का काम, प्रधानता,  
 मोटी, मोटपन, मुखियापन, अगुशासन, नेतृत्व ।  
 चौधरी दे० (पु०) समाज का अगुशा, नेता, प्रधान,  
 सरपंच, बाज़ार का मुखिया, अड्डे का मुखिया ।  
 चौपाई तव० (स्त्री०) एक छन्द का नाम । बहरीतों  
 की होली की वह मण्डली जिससे वे रगुशा गाते  
 घर घर घूमते हैं ।  
 चौपट दे० (गु०) उजाड़, नष्ट, दरवाद टूटा, फूटा ।  
 —करना (धा०) उजाड़ना, उजाड़ देना, नष्ट  
 करना, बिगाड़ना ।  
 चौपट्टा (वि०) चौपट करने वाला सत्यानाशी ।  
 चौपटा (वि०) सत्यानाशी, सर्वनाशी । [खेल, छूत ।  
 चौपड़ दे० (पु०) चौसर, खेल विशेष, पाँसों का  
 चौपतिया, चौपत्ती दे० (स्त्री०) छोटी पुस्तक,  
 बिलखे की छोटी कापी, हथबढ़ि, गेहूँ के खेत में  
 ऊपर होने वाली वह घास जो गेहूँ की फसल को



बड़ी हानि पहुँचाती है, उठगन, कसीदे की चार पत्तियों वाली घूटी, ताश का एक खेल विशेष ।

चौपल ( पु० ) पत्थर विशेष ।

लौपह्ला दे० ( पु० ) चौपाला, चारों ओर से समान, वह वस्तु जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो ।

चौपाई दे० ( स्त्री० ) हिन्दी का एक छन्द, जिसमें चार पद होते हैं । यथा—“ मङ्गलमवन, अमङ्गलहारी द्रवहु सुदशरथ, अनिरविहारी । ”

—रामायण

चौपाड़ दे० ( पु० ) बैठक, बैठका, गृह विशेष ।

चौपाया दे० ( पु० ) पशु, जन्तु, चार पैर के जन्तु खट्वा, खटिया ।

चौपाला दे० ( पु० ) पालकी, चौडोला, यान विशेष ।

चौपुरा दे० ( पु० ) चार पुरों के चकने के लिये चार पाटों वाला कुर्छा । [बड़ी कैंट गाड़ी ।

चौपिया दे० ( पु० ) एक छन्द विशेष, चार पहियों की चौबच्चा दे० ( पु० ) चौकोना गड़ा, कुण्ड, कृत्रिम कुण्ड ।

चौबरसी तद् दे० ( स्त्री० ) धातु या उत्सव जो चौथे वर्ष किया जाय । [दाटान ।

चौबारा दे० ( पु० ) उसारा, ढावा, चार दरवाजे का चौबीस दे० ( पु० ) चार अधिक घीस, चार और घीस, २४ ।

चौवे दे० ( पु० ) चतुर्वेदी, चतुर्वेदज्ञता, ग्राहणों की एक अवल, माधुर ग्राहण । ( स्त्री० ) चौबान्न ।

चौबोला दे० ( पु० ) एक मात्रिक छन्द विशेष ।

चौमड़ दे० ( स्त्री० ) ढाड़, जिससे खाद्य पदार्थ चबाया जाता है या कुचला जाता है ।

चौमासा दे० ( पु० ) पावस, वर्षाऋतु, चतुर्मासा, ग्रापाड़ से कुम्हार तक के चार महीने ।

चौमुख दे० ( पु० ) चार मुँह वाला, चौमुहा, चार पत्तियों का दिया, वह मकान जिसमें चारों ओर द्वार हों ।

चौमुखी दे० ( स्त्री० ) महााणी देवी, चारमुख वाली दुर्गा ।

चौमुहानी दे० ( स्त्री० ) चौराहा, चौस्ता ।

चौर तल दे० ( पु० ) चोर, चोरी करने वाला ।—कर्म ( पु० ) चोर का काम, चोरी करना, अपहरण करना ।—भय ( पु० ) चोर का भय चौर से डर ।

चौरङ्ग दे० ( पु० ) चित्त, वतान, चार भङ्ग, दाँव पेच ।

चौरस दे० ( पु० ) समान, तुल्य, समभूमि, बराबर, एकसा, एक सूच, एक सूत में, सीधा ।

चौरसाई दे० ( स्त्री० ) समता, बराबरी, तुल्यता, सीधाई ।

चौरा दे० ( पु० ) चवूतरा, सती की चिता, वीरों की चिता, ग्राम देवता का स्थान ।

चौराई दे० ( स्त्री० ) चौलाई नाम का शाक । [६१ ।

चौरानवे दे० ( पु० ) नव्ये और चार, चार अधिक नव्ये,

चौरासी दे० ( पु० ) अस्सी चार, नव, चार अधिक अस्सी । [चतुष्पथ, चौमुखापथ, चौहट्ट ।

चौराहा दे० ( पु० ) चारों ओर जाने का मार्ग, चौक,

चौरी दे० ( स्त्री० ) चार बार धोई हुई लाख, चौपाड़, चौबारा, छोटा चौर जो धोई की पूँछ के बालों का बनता है, छोटा चवूतरा ।

चौलड़ा दे० ( पु० ) चार लर वाला, चार लरकी माला ।

चौला दे० ( पु० ) अन्न विशेष, गोड़ा, बोरो ।

चौलाई दे० ( स्त्री० ) शाक विशेष, चौराई का शाक ।

चौवर दे० ( पु० ) बलवान, साहसी, बघोगी, बत्साही ।

चौघा दे० ( पु० ) चार बगलियों का विस्तार या माप, चार वृत्तियों वाला ताश का पत्ता, पशु, चारपाया, चौपाया । [से चलने वाली हवा ।

चौसाई दे० ( स्त्री० ) आधी, झकड़, अन्ध, चारों तरफ

चौसार दे० ( पु० ) सर्वसाधारण का यह स्थान जहाँ किसी उत्सव या विचार के लिये लोग इकट्ठे होते हैं, पञ्चायती घर, सर्वसाधारण की बैठक ।

चौस दे० ( पु० ) आटा, मैदा, पिसान, चार बार जोता हुआ खेत ।

चौसर दे० ( पु० ) चौसर, चौनड़, खेल विशेष । [साठ ।

चौसठ दे० ( पु० ) चार और साठ, ६४, चार अधिक

चौहट्ट दे० ( पु० ) चौराहा, चौमुखापथ, चौमुहानी, चौहटा ।

चौहट्टा दे० ( पु० ) चौराहा, बजार, चौक बजार ।

चौहड़ दे० ( पु० ) जावड़ा । [अधिक सत्तर ।

चौहत्तर दे० ( पु० ) सत्तर और चार, ७४, चार

चौहरा दे० ( पु० ) चार सह वाला, चार परत वाला, चौगुना

चौहान दे० ( पु० ) राजपूतों की एक जाति, किसी समय ये भारत के सम्राट् थे, इनका पहला चतुर्बाहु और अन्तिम राजा सम्राट् पृथ्वीराज थे ।

व्यवन तत् (क्रि०) चूना, टकपना, करना। (पु०)  
प्रसिद्ध एक प्राचीन ऋषि, पुलोमा के गर्भ और भृगु  
के श्रौंस से इनका जन्म हुआ था। गर्भवति  
पुलोमा को कोई राक्षस यन्त्राकार पूर्वक हर कर  
लिये जाता था, इस श्रव्याधार से पीड़ित होने के  
कारण उसका गर्भ गिर पड़ा। अतएव उनका नाम  
व्यवन पड़ा। क्योंकि संस्कृत व्यु धातु का अर्थ  
गिरना है। व्यवन एक दिन देवसभा में बैठे थे  
कथोरुपन में इन्हें मालूम हुआ कि महाराज  
कुशिक के वंश से हमारा वंश संयुक्त हुआ है।  
इससे कुशिकराज को नष्ट करने की ये चेष्टा करने  
लगे। परन्तु महाराज की अश्वीम योग्यता और  
महानशीलता देख इनको अपने विचार बदलने पड़े।  
व्यवन के पौर ऋषीक से कुशिक की पौत्री ब्याही  
गयी थी।

किसी सेरोवर के तीर पर व्यवन तपस्या कर रहे

थे। उनका शरीर मिट्टी से ढका हुआ था। केवल  
दो आँखें दीखती थीं। शर्पाति की पुत्री सुकन्या  
को बड़ा कुतूहल हुआ। उसने उनकी आँखें फोड़  
ढालीं। व्यवन के क्रोध से शर्पाति की सेना का  
मलयूय वन्द हो गया। बहुत यत्नसन्धान करने  
पर इसका कारण मालूम हुआ। शर्पाति की  
प्रायश्चा से मुनि प्रसन्न हुए। राजा ने सुकन्या का  
विवाह व्यवन से कर दिया। यह सुकन्या प्रसिद्ध  
पतिव्रताओं में से हैं।—प्राश तत् (पु०)  
आयुर्वेदीय एक प्रसिद्ध अथर्ववेद जिसे साकर व्यवन  
ऋषि युवा हो गये थे।

व्युत तत् (पु०) पतित, पड़ा, झट, गिरा, नष्ट।—  
संस्कारता (स्त्री०) काव्य में व्याकरण का दोष।  
व्युति तत् (स्त्री०) पतन, स्खलन, गिरन, हानि,  
खिण्णता।  
व्यूडा दे० (पु०) चिड़ड़ा या चूरा।

## छ

छ अपञ्जन का सातवाँ वर्ष, इसका स्थान तालु है,  
अर्थात् तालु के द्वारा इसका उच्चारण होता है।  
अतएव इसे तालव्य कहते हैं।  
छ तत् (पु०) छेदन काटना, (गु०) निर्मल, तरल,  
(दे०) छः, संख्या विरोध, पद, ६।  
छई तत् (स्त्री०) चयी, रोगविशेष, राजरोग, एक रोग  
जिसमें मुँह के द्वारा कलेजे से रक्त निकलता है।  
शरीर दुबला हो जाता है। नाव का छप्पर, गद्दी।  
छकड़ा दे० (पु०) गाड़ी, बैलगाड़ी, शकट, रहड़, लहड़।  
छकड़ाना दे० (क्रि०) चौधियाना, घसराना, चकराना,  
अज्ञा का गर्भ संस्कार करना। [कहार खगते हों।  
छकड़िया दे० (स्त्री०) पालकी जिसे उठाने को छः  
छकना दे० (क्रि०) अघाना, घस होना, सन्तुष्ट होना,  
व्याकुल होना, उद्विग्न होना, सशङ्कित होना।  
छकाई दे० (स्त्री०) खवाई, रुसि, सन्तुष्टता।  
छकाऊक दे० (वि०) परिपूर्ण, भरापूर, रस, अघाना।  
छकाना दे० (क्रि०) सन्तुष्ट करना, खिलाना, रुसि  
करना, अघवाना, निरुत्तर करना अचम्मित, करना,  
शङ्कित करना।

छकड़ दे० (पु०) धौल, चप्पड़, पैदा, खाने वाला।  
छका दे० (पु०) छः का समूह, वह समूह जिसमें छः  
हों। एक प्रकार का पिंजरा जिसमें जाली लगी रहती  
है। छप का एक दाव, छः पुन्दकी का तारा का  
पत्ता, सुध, संज्ञा, औसान।—छूटना (क्रि०) होना  
उड़ना, हिम्मत हारना।—पंजा करना (वा०)  
हथर उभार करना, छलना, ठगना, घोटाना, प्रतापना।  
छग तत् (पु०) छग, चकरा, अज, भेंड़ा।  
छगरी तत् (स्त्री०) बकरी, घेरी, क्षिरिया। [छागल।  
छगल तत् (पु०) नीला बछ, बकरी, घेरी, अजग, छाग,  
छगुनी दे० (स्त्री०) चूसनी, गोपणी, घनना, कनिष्ठिका,  
कानी डँगली, छः गुप्ता।  
छंगुली दे० (स्त्री०) छः अंगुलिया, कनिष्ठिका।  
छद्विष या छद्विया दे० (स्त्री०) छद्म पीने या नापने  
का छोटा धरतन, छाप, मट्टा, मटा, तक।  
छट्टूर या छट्टूर दे० (स्त्री०) मूमे की एक जाति,  
प्रायः यह रात को निकलती है। इसकी दुर्गन्धि  
दूर दूर तक फैलती है। कहते हैं कि इसे रात ही  
को सूक्ता है दिन को नहीं।

छज दे० ( गु० ) झाड़खण्डी, झाड़ पतार्ह, घना जङ्गल ।  
 छजना दे० ( कि० ) शोभा देना, सजना, ठीक जैवना ।  
 छज्जा दे० ( पु० ) वरामदा, उसारा, द्वार के ऊपर की लकड़ी, खम्भों के ऊपर की पटरी । [ शब्द कड़कना ।  
 छनछनाना दे० ( कि० ) सनसनाना, गरम धी का छटना दे० ( पु० ) एक प्रकार की चलनी । ( कि० ) घृयक् होना, समूह से अलग होना, घटना, न्यून होना, विछुड़ना ।  
 छटपटाना दे० ( कि० ) छटपट करना, तलपाना, विवश होकर लोटना, मूर्च्छित होकर भूमि में लोटपोट करना ।  
 छटपटी दे० ( स्त्री० ) घबड़ाहट, विकलता, चाह विशेष ।  
 छटर्वा दे० ( गु० ) निकृष्ट, अलग किया हुआ, बीछा, पराया, समाजभ्रष्ट, समाज से निकाला हुआ ।  
 छट्टा दे० ( गु० ) चिट्चिटा, कटुआ, एकान्त अनुरागी, विलक्षण प्रकृति का ।  
 छट्टाक दे० ( स्त्री० ) सेर का सोलहवां भाग, मान विशेष, पाँच तोला, कनेवाँ, तौल विशेष ।  
 छट्टा तव० ( स्त्री० ) उजाल, उजास, शोभा, दीप्ति, प्रकाश, सङ्ग, समाहार, समूह, चुना हुआ, बना हुआ, चालाक ।—फल ( पु० ) नारियाळ वृक्ष, ताल वृक्ष, सुपारी का पेड़ ।—या ( स्त्री० ) विद्युत्, बिजली, तड़ित, सौदामिनी । [ बाना, बनवाना ।  
 छटाना दे० ( कि० ) छटवाना, अलग करवाना, चुन-छट्टे दे० ( पु० ) चुने हुए, बने हुए, घृयक् हुए, चतुर, चालाक, धपना मतलब साधने वाले ।  
 छट्ट दे० ( स्त्री० ) पछी, छट, पछी तिथि ।  
 छट्टी दे० ( स्त्री० ) छठवाँ, पछी, छट्टके के जन्म से छठवाँ दिन, संस्कार विशेष, जो जन्म के छठवें दिन होता है, तिथि विशेष, व्रत विशेष, इस व्रत में सूर्य देव की उपासना की जाती है ।  
 छठ दे० ( स्त्री० ) पछी तिथि विशेष ।  
 छठा ( वि० ) छः मंथर का, छठवाँ ।  
 छठी दे० ( स्त्री० ) पछी तिथि विशेष ।  
 छठे दे० ( गु० ) छठवें, छठवें, पछ, छठवाँ ।  
 छड़ दे० ( स्त्री० ) यखें की लकड़ी, लोहे की छड़, लोहे का सौंका, छटा, डाठी, तिनका, छुर, आँख का दाग जो श्वेत होता है ।

छड़ना दे० ( कि० ) धान के छिकले निकलाना, छोटाना चावल छोटाना ।  
 छड़ा दे० ( पु० ) मोतियों का लच्छा, पैर में पहनने की छड़ी के आकार का एक गहना । ( वि० ) अकेले जैसे छड़ी सवारी ।  
 छड़ाना दे० ( कि० ) चावल साफ करना, बकल छुड़ाना, मूसी अलग करना ।  
 छड़िया दे० ( पु० ) पहरेदार, दरवान, आसावरदार कञ्चुकि, राजा का परिचारक, सकेत गली, कोलिया ।  
 छड़ियाना दे० ( कि० ) छड़ी मारना, छड़ी के समान करना, मार करके क्षम्य करना ।  
 छड़ी दे० ( स्त्री० ) बेंत, लकड़ी. डण्डा, हाथ में रखने का डण्डा, छड़ी के आकार की एक वस्तु, जो फूल से बनायी जाती है । गुलछड़ी, फूलछड़ी, दाँत की मूसी बकड़ी, छिन्नी, छाकुन ।—वरदार ( पु० ) घोषदार ।  
 छड़ीला, छरीला दे० ( पु० ) जटामांसी, पुष्प विशेष एक प्रकार का सुगन्धित सेवार, काई, कौहार की मिट्टी, ( वि० ) पकाकी, अकेला ।  
 छुण तव० ( पु० ) चण, पल, मुहूर्त, क्षिण, थपकाल ।  
 छुटवाना दे० ( कि० ) किसी वस्तु का फालतू भाग कटवा देना, चुनवाना, कटवाना, छिलवाना ।  
 छुँटाई दे० ( स्त्री० ) छोटने की मजूरी, छोटने का काम ।  
 छुँटाव दे० ( पु० ) धान की कूटाई, कटना, बकल निकलाई । [ छुड़ाना ।  
 छुँड़ना दे० ( कि० ) छोड़ना, त्याग करना, सजना ।  
 छुड़ुआ दे० ( पु० ) छूटा, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।  
 छुँडौती दे० ( स्त्री० ) छुटी, छोड़ना, अवकाश युक्त अदण्ड्य, देवता के उद्देश्य से छोड़ा हुआ, छूट ।  
 छुत तव० ( पु० ) छत, फोड़ा, घाघ, चिन्ह, निशान, दाग ( वि० ) चुमा हुआ । ( स्त्री० ) गध, छुत् पटान, पाटन ।—कुम्भज ( पु० ) कनेर, करवीर कन्देल ।—ज ( पु० ) रफ, रुधिर, लोहू, पीव ।—मवाद ।—लोठ ( स्त्री० ) छत पर लोठ लगाना ।  
 छटना दे० ( पु० ) छूटना, छूट, आतपवारण, छाता ।  
 छतनार दे० ( गु० ) फैला हुआ, विस्तृत, सघन, छायादार ।  
 छतरी तव० ( स्त्री० ) छाता, मण्डल, राजाओं की चिता या साधुओं के समाधि स्थान पर बनाया गया

स्मारक भवन । कवियों के बैठने के लिये बाँस का टहर जो एक ऊँचे बाँस पर बाँधा जाता है ।

इन्के या बहल का छाजन, कुङ्कुमुता ।

छता दे० ( पु० ) छाता ।

छति तद्० ( स्त्री० ) छति, हानि, घाटा, मुकसान, टोटा ।

छतिया दे० ( स्त्री० ) छाती, हृदय ।—ना ( कि० ) छाती से लगाना ।

छतिचन दे० ( पु० ) वृच विशेष ।

छतीसा दे० ( वि० ) चतुर, सयान, चाकाक । ( पु० ) नाई ।—पन दे० ( पु० ) भकारी । [ छत्र, छत्ता ।

छत्तर तद्० ( पु० ) छत्र, भोजन स्थान, सत्र, अन्न

छत्ता दे० ( पु० ) मधुमक्खी का घर, मधुमक्खियों का छाता या छत्ता, चाक, गडार, छाता ।

छत्तीस दे० ( पु० ) तीस छः, ३६, छः अधिकतीस ।

छत्तीसी दे० ( स्त्री० ) जिनाऊ, अभिचारियों, दुराचारियों, पर पुरुषरता स्त्री ।

छत्र तत्० ( पु० ) वृष्टि और धूप गोकने के लिये आवरण विशेष, छातपत्र, छाता, छतरी, राजाओं के लगाने का आसन छत्ता जो राजविन्द समझा जाता है ।—

चक्र ( पु० ) चक्रविशेष, नक्षत्र मण्डल ।—छाँह ( स्त्री० ) रचा, शाय ।—धर ( पु० ) छत्रपति,

राजा, महाराजा ।—पति ( पु० ) तिलकधारी राजा, महाराज, आधीन, नरपति ।—भङ्ग ( पु० ) वैधव्य,

रखड़ापा, वृषनाथ, राजनाथ, अराजक ।—वन्धु ( पु० ) नीच चरित्र, चरित्राचम, चरित्र के समान,

चरित्रों का हित् । [ छूळ, कुङ्कुमुता, छताक ।

छत्रक तद्० ( पु० ) वृष विशेष, मूर्द फोर, धरती का छात्रा तद्० ( स्त्री० ) धनिया, धरती का फूट, खुमी,

सोवा, मजीठ, रासन ।

छत्राक ( पु० ) डिगरी, खुमी, कुङ्कुमुता, जलवृक्षा ।

— ( स्त्री० ) एक दवा का नाम ।

छत्री तद्० ( पु० ) चरित्र, दूसरा वर्ण, वीर जाति, राज जाति, नाई, नापित । ( स्त्री० ) छोटा छात्र, भूत

मनुष्यों का एक प्रकार का स्मारक, रमशान में निर्मित यह विशेष, भारत की पुरानी प्रथा के अनुसार ये थमी भी पुराने हिन्दू राज्यों में बनायी जाती है ।

[ कुटीर, पर्णकुटी ।

छत्वर तद्० ( पु० ) घट, गृह, कुअ, छत्ता, छतित गृह,

छत्तर दे० ( पु० ) एक स्थान पर राशीकृत अन्न, धान की राशि, गोला, ढेर ।

छद् तद्० ( पु० ) पत्र, पत्ता, पत्ती, पत्र, पंख, आच्छादन, ढकना, छपना, तमालवृक्ष, पुनर्नवा शीपध,

गदहपूरना, द्वारा, चाल, रीति ।

छद्न तद्० ( पु० ) पत्र, पत्ता, पत्र, तमालवृक्ष, तेजपात अच्छादन, ढकना, छान, छत, खोज, गिलाफ । [ भाग ।

छद्म दे० ( पु० ) ढकड़ा, दो ढमड़ी, पैसे का चौया

छदि तद्० ( स्त्री० ) छपार, छानी, गृहाच्छादन, पाटन ।

छदिकारिणु तद्० ( पु० ) छोटी हलायची, बमन रोकने की शीपधि ।

छद्म तद्० ( पु० ) कपट, छल, धोखा, स्वरूपाच्छादन अपने को छिपाना, अन्य वेदा ।—तापस ( पु० )

भूटा तपस्वी, कपटी मुनि ।—वेश ( पु० ) गुप्तरूप, दूसरा रूप ।

छम्बिका तद्० ( स्त्री० ) गुहूची, मजीठ ।

छशी तद्० ( वि० ) छली, कपटी, बहुकुरिया ।

छनना दे० ( कि० ) निवृद्धना, गलना, साफ होना, बनना । यथा—छने से छनछन कर पानी आता है । एदिथा छन रही हैं ।

छनकाना दे० ( कि० ) बाँच पर रख जल को जलाना, बलकाना, सचेत करना, सावधान करना । "बैठा तो अचेत था परन्तु हम लोगों ने उसे छनका दिया ।"

[ छी या छेल में पानी पड़ने का शब्द ।

छनाक दे० ( पु० ) किसी वस्तु के टूटने का शब्द, गरम छनाका दे० ( पु० ) शीघ्र जल जाना, पानी या दूध

का आगमें शीघ्र जलना, छनाना, उनाका, रप्यों के बजने का शब्द । [ छणिक विचार वाला ।

छनिक तद्० ( पु० ) चणिक, अल्पवस्थित, बचका, छनेक तद्० ( पु० ) चणिक, एक वण, एक मुहूर्त ।

छन्द तद्० ( पु० ) अक्षरों की गणना के अनुसार वेद वाक्यों का भेद यह भेद सात प्रकार का है । वेद,

यह विद्या जिसमें छन्दों के भेद और लक्षणवि हो, काव्य प्रबन्ध । अभिजाप, स्वेच्छाचार, गोट,

जाल, कपट, रंग, ठग, अभिप्राय, एकान्त, विष, ढक्कन, पत्ती, एक प्रकार का हाथ का धाभूषण ।

—गति ( स्त्री० ) छन्दों की चाल, छन्द बनाने की रीति ।—वेद ( वि० ) पद्यात्मक, श्लोक्युक्त ।—

शास्त्र (पुं) पिङ्गल मुनि प्रणीत शास्त्र, जिसमें छन्दों का वर्णन किया है। [में पढ़ना।]  
 छन्दना दे० (क्रि०) गठना, बन्धना, उलझना, उलझन  
 छन्दपातन तत्० (पुं) कपटो तपस्वी, छत्र तापस,  
 धूर्त तपस्वी, तापस वेशधारी धूर्त।  
 छन्दवन्द दे० (पुं) छलबल, कपट, प्रतारण, मक्कर।  
 छन्दानुवर्त्ती तद्० (गुं) आज्ञानुवर्त्ती, आज्ञाधीन,  
 आज्ञापालक।  
 छन्दी दे० (गुं) कपटी, धूर्त, प्रतारक, छत्ती, टग।  
 छन्दोग तत्० (पुं) सामवेदी, सामवेदवेद्या, सामग,  
 सामवेदाध्यायी।—परिशिष्ट (पुं) सामवेदी  
 गोभिल आदि सूत्रों का परिशेष शास्त्र, जिसे महर्षि  
 कात्यायन ने बनाया है। उसमें सामवेदियों के  
 कर्म बताये गये हैं। सामवेद सम्मत शास्त्र  
 विशेष।  
 छन्दोमङ्गल (पुं) अष्टाद पद्य, दूषित पद्यमयी रचना।  
 छन्न तत्० (गुं) [छद् + क] आच्छादित, नष्ट,  
 उन्मत्त, गूढ़, गुप्त रहस्य, छिपा हुआ, टाँपा हुआ,  
 पकायत। [छनना।]  
 छन्ना दे० (पुं) दूध आदि छानने का कपड़ा, गालना,  
 छन्नी दे० (स्त्री०) छोटा छनना, भूषण विशेष।  
 छन्नू दे० (गुं) छानने वाला। [जन् से निकलता है।]  
 छप दे० (पुं) शब्द विशेष, जो आघात पहुँचने पर  
 छपाई दे० (स्त्री०) छः पद का छन्द, छः कड़ी का  
 छन्द, छप्पय, छः पैर वाला।  
 छपकली दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, बिसतुह्या।  
 छपकाना दे० (क्रि०) पानी डालना या पानी में  
 डालना। [मारता है।]  
 छपकी दे० (स्त्री०) एक जन्तु का नाम, जो छिप कर  
 छपना दे० (क्रि०) छपाया होना, सुद्वित करना, छप  
 जाना, छिपाना।  
 छपरा दे० (पुं) छप्पर, घर छाने का छप्पर।  
 छपरिया दे० (स्त्री०) छोटा छपरा।  
 छपरी दे० (स्त्री०) मक्की, मोपड़ी।  
 छपवाना दे० (क्रि०) छपाया कराना, अङ्कित कराना,  
 चितवाना, सुद्वित कराना।  
 छपा तद्० (स्त्री०) रात, निशा। [काम।]  
 छपाई दे० (स्त्री०) छापने की मक्की या छापने का

छपाका दे० (पुं) शब्द विशेष जो जल में किसी  
 वस्तु के डालने से होता है।  
 छप्पन दे० (गुं) पचास छः, ५६, छः अधिक पचास।  
 छप्पय दे० (पुं) छः पद का छन्द, छपाई, पट् पकी छन्द।  
 छप्पर दे० (पुं) आच्छादन, छाँद, छावन।—खट  
 (पुं) पलङ्ग, खाट, मसहरीदार पलङ्ग।  
 छप्परवन्द दे० (पुं) छप्पर बनाने वाला, चाल  
 बाँधने वाला। [सैन्दर्य, शोभा, प्रभा।]  
 छव दे० (स्त्री०) डौल, आकृति, आकार, डब, रूप,  
 छवि दे० (पुं) आकार, शोभा, सैन्दर्य, तसवीर,  
 चित्र। [शोभित मुँह, मनोहर।]  
 छचोला दे० (गुं) रसिक, रसिया, रुचवान्, सुन्दर,  
 छरीस दे० (गुं) बीस छः, २६।  
 छम दे० (गुं) चम, समर्थ, योग्य, शक्तिमान्।—हु  
 (क्रि०) चमा करो, माफ़ करो। [दुराचारी।]  
 छमकट दे० (पुं) कपटी, व्यभिचारी, झिन्गला,  
 छमछम दे० (पुं) शब्द विशेष, भूषणों का शब्द।  
 छमछमाना दे० (क्रि०) चमचमाना, कमकना, शोभित  
 होना। [शालक।]  
 छमण्ड दे० (पुं) निराधार, निरपेक्ष, प्रनाय  
 छमा (स्त्री०) चमा, दया, सहिष्णुता, माफ़ी, धापी,  
 सहन।—पन (पुं) दयालुता, मिहिरवानी, चमापन।  
 छमासी (स्त्री०) छठवें मास का, आद्य कृत्य विशेष,  
 छमाही।  
 छमाही (स्त्री०) प्रत्येक छः छः मास का।  
 छमि (क्रि०) चमा करके।—हहिं (क्रि०) चमा करेंगे।  
 छमिच्छत (स्त्री०) इशारा, मङ्गल, चिन्ह, समस्या।  
 छय तद्० (पुं) चय, नाश, विनाश, घटी, हानि,  
 रोग विशेष, छई।—कारी (पुं) नाश, विनाश।  
 —रोग (पुं) चई, चई।  
 छर दे० (पुं) जटामासी, कड़ुगुन्दा। [पिलरा, पाखाना।]  
 छरछवि दे० (स्त्री०) झाड़े फिरे का स्थान, शौचस्थान,  
 छरस दे० (पुं) छः रस, पट्स।  
 छरिन्दा दे० (गुं) एकाकी, असहाय, अकेला, रिक्त-  
 हस्त, शून्य हाथ, रीते हाथ।  
 छरी दे० (स्त्री०) देखो छड़ी।  
 छरे दे० (गुं) छटे, छुने हुए, बरामे हुए, उत्तम वचन  
 झलक किये हुए, बीने हुए।

वर्द्धन तत्त्वं ( पु० ) [ वर्द्ध + घनट् ] छाँट, कय, वमन, बलटी ।

वर्द्धयिन तत्त्वं [ वर्द्ध + आयन ] खीरा, ककरी ।

वर्द्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) वमन, छाँट, खाँसी ।

वर्द्धा दे० ( पु० ) छोटी छोटी गोली, जो बन्दूक में भरी जाती है, एक नवीन तहर का तिलक जो ब्रह्मजियों से छींच कर लगाया जाता है ।

वर्द्ध तत्त्वं ( पु० ) धुप, व्याज, कपट, शठता, प्रतारणा, ठगई, फरेब, धोखा, बहाना, चातुरी ।—फारी ( गु० ) छल करनेवाला, ठग, धूर्त, धोखेबाज़ ।—प्राही ( गु० ) छल हँडने वाला, प्रतारक, शठ, धूर्त ।

वर्द्धक दे० ( स्त्री० ) उड़ाल, उफान, उमड़, आघात से जल आदि द्रव पदार्थों का पात्र से बाहर निकलना ।

वर्द्धकना दे० ( कि० ) उमड़ना, उलकना, उड़लना, बाहर निकलना जल आदि का ।

वर्द्धकाना दे० ( कि० ) उमड़काना, उड़ेलना, गिराना ।

वर्द्धकना दे० ( कि० ) कूटना, फाँटना, उड़लना, छल्लांग मारना ।

वर्द्धकलाना दे० ( कि० ) जल की गति, ये रोक टोक गति, राशब्द गति, भरी हुई गङ्गा आदि नदियों का शीघ्र गामी प्रवाह । [ ( गु० ) कपटी, छली ।

वर्द्धकित्त तत्त्वं ( पु० ) छलबल, कपट, धोखा ।—

वर्द्धकित्त तत्त्वं ( पु० ) कपट, धोखा, शठता, शाल्य ।

वर्द्धयिनय तत्त्वं ( पु० ) कपट से बढ़ाई, धोखा देने के लिये प्रशंसा ।

वर्द्धना तत्त्वं ( कि० ) छल करना, ठगना, कूटना ।

वर्द्धनी दे० ( स्त्री० ) चलनी, छाटा चालने का छेद-दार पात्र ।

वर्द्धांग दे० ( स्त्री० ) कूटाव, फल्लांग, उड़ाल, फाँट ।—

मारना दे० उड़लना, कूटना, कुलाँच मारना,

हयित होना, आनन्दित हो कूटना ।

वर्द्धाश दे० ( पु० ) लू, लूक, लुका, ब्रह्मलूक, मूत-प्रेतादि का उपद्रव ।

वर्द्धाया दे० ( गु० ) धूर्त, छलकारी, धोखा देने वाला ।

वर्द्धा तत्त्वं ( गु० ) कपटी, धूर्त, शठ, धोखे बाज़ ।

वर्द्धा दे० ( पु० ) आभरण विशेष, शैली, सुन्दरी, श्रेणुलीयक । [ खोपा ।

वर्द्धा दे० ( पु० ) बाँस आदि की घनी डोकरी, दौरा

वर्द्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) शोभा, सौन्दर्य, कान्ति, प्रभा ।

वर्द्धैया दे० ( पु० ) छप्पर छाने वाला, छप्पर बनाने वाला, छट बनाने वाला । [ छाने का शब्द ।

वर्द्धवर्द्ध दे० ( पु० ) शब्द विशेष, अधिक वृद्धि

वर्द्धराना दे० ( कि० ) छितराना, बिखरना, टूटना, फैलना । यथा—

कम्बुक चूर चूर भई तानी ।

टूटी तार मोती वर्द्धरानी —पद्मावत ।

वर्द्धा दे० ( स्त्री० ) सुँह पर का लहसन, छीप, रोग विशेष जिससे सुँह का चमड़ा काटा हो जाता है ।

वर्द्धा दे० ( स्त्री० ) वृद्धि, छाया, प्रतिविम्ब ।

वर्द्धा दे० ( स्त्री० ) लीठे, वान्ति, उबकाई, खूद, छिस्का, काठने का उल्ल, धूपक की गंधी निहम्मी बस्तु ।—करना ( वा० ) उवाल करना, वमन करना, कै करना ।—लेना ( वा० ) धीव लेना, बराय लेना, चुनना, चुन लेना ।

वर्द्धा दे० ( स्त्री० ) बलटी करना, वमन करना, मूसे से शत निकालना, कतरन, काटकूट, फटकना, साफ करना, सुधारना, छलंग करना, चुनना, ठुकड़ा, छिलका, बरायन । [ छिन्न करना, पक्षोरना ।

वर्द्धा दे० ( कि० ) वमन करना, कूटना, कतरना

वर्द्धा दे० ( कि० ) छोड़ना, त्यागना ।

वर्द्धा दे० ( स्त्री० ) पगढ़ा, पशुओं के पैर बान्धने की रस्सी, पकड़ा, जाल, नाँई । [ जकड़ना ।

वर्द्धा दे० ( कि० ) बान्धना, गति रोकना, रोकना,

वर्द्धा तत्त्वं ( वि० ) वेदशास्त्रो, वेद सम्बन्धी, रट्ट, मूल ।

वर्द्धा दे० ( पु० ) माग, धंश, खण्ड, ठुकड़ा, हिस्सा ।

वर्द्धा दे० ( पु० ) सामवेद का एक माहस्य विशेष, वर्द्धा दे० ( पु० ) सामवेद का एक माहस्य का उपनिषद् ।

वर्द्धा दे० ( पु० ) जानवर का बच्चा, छोटा बच्चा ।

वर्द्धा दे० ( स्त्री० ) छाया, परछाई, प्रतिविम्ब, छाँ ।

यथा—” कीन्देसि, धूप सेव धी वर्द्धा ।

कीन्देसि, मेघु बीज तेहि माँहा ॥

—पद्मावत ।

वर्द्धा दे० ( स्त्री० ) वर्द्धा, परछाई ।

वर्द्धा दे० ( पु० ) छायावाज, छायेला, छायायुक्त,

छायान्वित ।

छाई दे० ( कि० ) छाया गयी, छा गयी, फैल गयी,  
व्याप हो गई, पाटी, पाट दी, विमृत् हो गयी,  
( स्त्री० ) राख, पर्स ।

छाक दे० ( पु० ) कलेवा, जलपान, जलखवा, कप ।  
( स्त्री० ) तृप्ति, दुपहरिया, नशा, मस्ती, माठ ।  
“छिन छाके उवकै न फिर खरी विषम छवि छाक ॥”  
—बिहारी ।

छाकना दे० ( कि० ) फटकना, निर्मल करना, साफ  
करना, शुद्ध काना, मल दूर करना, मल हटाना,  
तृप्ति होना, अफरना, अघाना ।

छाके दे० ( पु० ) मतवाले, उन्मत्त, विश्रङ्खल, पिया  
हुआ, हैरान, तन्मय, तृप्ति, अघाये हुए ।

छाग तत्त्वं ( पु० ) बकरा, भज, पशु विशेष—वाहन  
( पु० ) अग्नि, वह्नि, अनल देवता ।—भोजी  
( पु० ) छाग भक्षक, बकरा खाने वाला, बघेरा,  
भेड़िया ।—मुख तत्त्वं ( पु० ) कार्तिकेय का यह  
वृत्तर्ष मुख जो बकरे का सा है, कार्तिकेय का एक  
गण ।—मांस ( पु० ) बकरे का मांस ।—रघु  
( पु० ) अग्नि, अनल, वह्नि ।

छागल तत्त्वं ( पु० ) छाग, भज, पाठा, एक आभूषण ।  
—भोजी ( पु० ) व्यभिचारी, वह कायुक जिसे  
गन्धगाम्य का कुछ भी विचार न हो ।

छागी तत्त्वं ( स्त्री० ) बकरी, छेरी, पाठी, अजा ।  
छाछ या छाछी दे० ( पु० ) तक्र, मट्ठा ।  
यथा—“अपनी छाछ को कौन खट्टा कहता है ।”

छाछठ ( पु० ) संख्या विशेष, ६१ ।  
छाज दे० ( पु० ) शोभा, छप्पर, मार्ग, छाजा, सूप, कोचबक्स ।  
छाजा दे० ( पु० ) सोहा, शोभा, शोभित हुआ, सबा,  
सूप, डगर, छप्पर, छाँद । यथा—

“मुक्तानिकी क्काजरनि मिलि, मनिला लज्जा छाजही ।  
सन्ध्या समय मानहु नक्षतगन, लाल अम्बर राजहि ॥  
जहाँ तहाँ उरध उडे, हील किरन धन समुदाय है ।  
मानो गगन तम्बू तन्यौ, ताके सपेत तक्राय हैं ॥”  
—भूपण ।

“छाज बोले तो बोले, चलनी भी बोले जिसमें  
यद्दर सौ छेद ।

छाजन तद् ( स्त्री० ) वस्त्र, कपड़ा, छप्पर, छावाई, एक  
चर्मरोग ।

छाजना दे० ( कि० ) शोभना, फवना, सजना, खुजना,  
उचित मालूम होना, योग्य होना ।

छाड़ दे० ( पु० ) त्याग, त्याग, कर, तज के, छाड़ कर,  
नदी का छोड़ा हुआ स्थान, मिस्र, विना ।

छाड़े दे० ( कि० ) छोड़े, त्यागे, छोड़े हुए ।

छात दे० ( स्त्री० ) छाता, आधार, छत । तत्त्वं ( वि० )  
छिन्न, दुर्बल, कृश ।

छाता दे० ( पु० ) छत्र, छत्ता, आतपत्र, मधुमक्खियों  
का छत्ता, पहलवानों की छाती, विशाल वृक्षस्थल ।

छाती दे० ( स्त्री० ) छोटा छाता, वर, हृदय,  
वृक्षस्थल, सीना ।—पर धर के कोई नहीं ले  
जायगा ( वा० ) अपने साथ परलोक ले जाना  
अर्थात् आप क्यों चरझते हैं, इस वस्तु को कोई  
ले नहीं जा सकता, अथवा यह वस्तु ऐसी अच्छी  
नहीं है जिसे कोई ले जाय । ( तुच्छ सी वस्तु का  
उपादे भादुर काते देख इस वाक्य का प्रयोग किया  
जाता है । )—पर तो हाथ रखो ( वा० ) इस बात  
की सत्यता या औचित्य को तुम्हारा हृदय स्वीकार  
करता है ।—पर चढ़ कर कौन पी जायगा  
( वा० ) किसी वस्तु को रचित होने के विषय में  
यह कहा जाता है ।—पर पत्थर रखना ( वा० )  
सन्तोष करना, किसी वस्तु की अभिलाषा छोड़  
देना, धीरज बाँधना, धैर्य धरना ।—पर मूँग  
दलना ( वा० ) दुःख देने के अभिप्राय से उसके  
सामने ही अभिय काम करना, चिढ़ाना, कुढ़ाना,  
मर्म वेधना ।—फटना ( वा० ) चिन्ता से घबराना ।  
—पीटना ( वा० ) बिलाप करना, दुःखित होना,  
शोकित होना, विलविलाना, यथा—राम के  
वियोग से सीता छाती पीट पीट कर रह जाती  
हैं ।—ठोकना ( वा० ) उत्साहित होना, साहस  
प्रकाश करना, प्रतिज्ञा करना, भरोसा देना,  
अभय देना, यथा—“छाती ठोक कर भीम  
अखाड़े में उतर गये ” “ मैं छाती ठोक कर इसके  
लिये प्रतिज्ञा करता हूँ । ”—ठंडी होना ( वा० )  
आनन्दित होना, प्रसन्न होना, “तुमको देख कर  
छाती ठंडी हुई ” फिर हमारी छाती कब ठंडी  
होगी ।—का पत्थर ( वा० ) दुःखद, शत्रु  
कण्ठक, “छाती का पत्थर हटाना ही उचित

है।" भाज कब तो हमारी छाती पत्थर की हो गयी है।—खोल कर मिलना ( वा० ) प्रेम से मिलना, बसाह से मिजना, यथा—“लङ्का से कौटकर श्रीरामचन्द्रजी छाती खोलकर भरत से मिले।”—लगाना—से लगाना ( वा० ) प्रीति करना, प्रेम करना, प्रेम से मिलना, छोटों के प्रति बड़ों का प्रेम, “जनक ने रामचन्द्र को छाती से लगाया, पिता ने पुत्र को छाती से लगाया।”—निकाल कर चलना ( वा० ) अकड़ना, अकड़ कर चलना, अहङ्कार से चलना, पैठ कर चलना।—भर ( वा० ) परिमाण विशेष, छाती के बराबर, छाती जितना, “यह पेड़ छाती भर का हो गया, छाती भर पानी में नहाओ।”—भर घाना ( वा० ) कहते कहते कण्ठ रुक जाना, आस निकल पड़ना, मुग्ध हो जाना, मोह के विषय होने से बात का न निकलना।—पर वाल होना ( वा० ) साहस धीरता और दृढ़ता का अनुमान होना, सामुद्रिक का चिन्ह विशेष, यथा—

“जिसके छाती एक न बार  
सौ ऐशों का वह सरदार।”

छात्र तत् ( पु० ) शिष्य, अन्तेवासी, शिष्यायी, विद्यार्थी, चेला, मधु, अधुमचिका विशेष, सरथा।—जय तत् ( पु० ) वह स्थान जहाँ विद्यार्थी बसते, बोर्डिंगहाउस।—गण्ड तत् ( पु० ) तीक्ष्ण बुद्धि वाला विद्यार्थी।—वृत्ति ( स्त्री० ) पढ़ने के लिये खर्चा, वह वृत्ति जो विद्या अर्जन के निमित्त दी जाती है। पारितोषिक, प्रशंसा पूर्वक प्रीति उचित करने वाले विद्यार्थियों को जो दिया जाता है। छादन तद् ( पु० ) डपना, ढकना, ढकन, आच्छादन, ढाँकने का वस्त्र।

छादान दे० ( पु० ) जल रखने का पात्र विशेष, असक, जल रखने के लिये समड़े का बनाया पात्र, जलयैली।

छादित ( वि० ) ढका हुआ, अच्छादित।

छान दे० ( स्त्री० ) छाना, छाँद, छाज, छत।—विन ( वा० ) खोज, अनुसन्धान, जाँच।—घोन ( वा० ) मछी प्रकार विचार, परिपूर्ण अनुसन्धान क्रम, अनुशीलन, अन्वेषण, तदात्मक करना, तहकीकात

करना।—मारना ( वा० ) खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़ मारना। [दिखभाल करना।

छानना ( कि० ) चलनी से छान कर साफ करना, छानवे दे० ( गुं० ) नये और छः, १६, छः अधिक नये। छानस दे० ( स्त्री० ) भूसी, चोकर, तुप, अन्न की सुस्ती, केरायी। [ठकना।

छाना दे० ( कि० ) छाया भरना, पाटना, पाट करना, छाजाना दे० ( कि० ) ढक जाना, छाया होना, पट जाना, घिर जाना, विस्तृत होना, व्याप्त होना, फैलना।

छासा दे० ( कि० ) निखारना, गारना, ढूँढ़ना, खोजना। छाप दे० ( स्त्री० ) टिकट, राग, रँगूटे का चिन्ह, छपाई, मुद्रण, नकल करना, मोहर, चिन्ह अङ्क, हस्ताक्षरी, कार्यालय की मुहर, बॉट का चिन्ह, विशेष जिसमें उसके विषय की बातें छपी रहती हैं, धार्मिक चिन्ह विशेष, तिलक। यथा—

जपमाला छापा तिलक सँ न एकी काम।

मन काचें नाचें बुधा, साँचे राचे शम ॥

—विहारी।

छापना दे० ( कि० ) छापा करना, अङ्कित करना, मोहर लगाना, मुद्रित करना।

छापा दे० ( पु० ) छपाई, चिन्ह, मुद्रा, तिलक।—छाना ( पु० ) प्रेस, छापने की कल जिसमें कितायें छापी जाती हैं।—मारना ( वा० ) धावा करना, डाँका डालना।—लगाना ( कि० ) टिकट लगाना, मोहर लगाना, चिन्ह विशेष से अङ्कित करना।—छासिल ( वा० ) कपड़े छापने वालों का कर, छपियों से कपड़े छापने के लिये जो कर लिया जाता है, कपड़े छापने के व्यवसायियों से लिये जाने वाला कर।

छापी दे० ( पु० ) कपड़े छापने वाला, जाति विशेष, जो कपड़े छापने का काम करती है, छपीरी।

छाम तद् ( गुं० ) घाम, दुर्बल, बलहीन, धरहरित, चीथ, पतला, हूरा।—दूरी तद् ( वि० ) छोटे पेट वाली।

छायल दे० ( पु० ) एक जनाना पहनावा।

“छायल बँद बाप गुमराती”

—जायसी।

छाया तत् ( स्त्री० ) छाँद, अँध, शरण, रक्षा, साया, धूप रहित स्थान, अनातप देश, अरस, प्रतिविम्ब,



प्रतिच्छाया, परछाई, अनुकरण, सूर्य की स्त्री का नाम। सूर्य की स्त्री का नाम संज्ञा या, संज्ञा के गर्भ से यम और यमुना दो सन्तान उत्पन्न हुए थे। संज्ञा सूर्य का तेज नहीं सह सकती थी, अतएव उसने अपनी छाया को सजीव बनाकर अपने स्थान पर बैठा दिया और वह स्वयं पिता के घर चली गयी उसकी यह करतूत पिता को पसन्द नहीं आयी। पिता ने बहुत समझा बुझा कर पति के पास जाने के लिये आज्ञा दी परन्तु संज्ञा ने पिता की आज्ञा न मानी, वह उत्तर देश में जाकर घोड़ी के रूप में रहने लगी, छाया के गर्भ से भी स्वयम्भू और शनैश्वर नाम के दो पुत्र हुए थे। अपने और सौतेले पुत्र के पालने में भेद देखने से सूर्य को मालूम हुआ कि यह संज्ञा नहीं है। पुनः छाया से सब बातें मालूम हुईं। सूर्य विश्वकर्मा के समीप गये। विश्वकर्मा ने कहा कि मेरे पास संज्ञा आयी तो थी, परन्तु मैंने पुनः उसे तुम्हारे ही पास छोड़ा दिया। सूर्य ने उसे बहुत दुँड़ा। पता लगने पर घोड़े के रूप में वससे जाकर मिले। उसी समय अश्विनी कुमारों की उत्पत्ति हुई। सूर्य ने अपने तेज को भीमा करने की प्रतिज्ञा की (कि० वि०) आच्छादित किया, ढाँक दिया।—ग्राही (पु०) आकर्षक, आकर्षण करने वाला।—ग्राहिणी (स्त्री०) एक राक्षसी, छाया ग्रहण करने वाली स्त्री।—दानत० (पु०) एक प्रकार का दान। (काले के कटेरे में घी या तेल भर दान देने वाला अपने मुख को देख उस पात्र में कुछ द्रव्य डालकर धनपात्र को देता है।—नट (पु०) एक रागिनी।—पाद (पु०) छाया से समय मालूम करना, अपनी छाया के परिमाण से समय स्थिर करना।—पद्य (पु०) देवपद्य, आकाश, अन्तरिक्ष, नभोभाग।—पुरुष (पु०) आकाश में देखी गयी पुरुष की छाया, अपना छायास्वरूपी पुरुष।—मण्डप (पु०) चन्द्रतापयुक्त स्थान, चाँदनी के नीचे का स्थान, विवाह के लिये बनाया हुआ मण्डप।—मित्र (पु०) छाता, छत्र, आतपत्र।—सिद्ध (पु०) एक प्रकार के तान्त्रिक जो छाया के द्वारा शुभाशुभ ज्ञान करने की शक्ति प्राप्त करते हैं।—सुत (पु०) ग्रह विशेष, शनिश्वर, शनैश्वर।

छार तद् (स्त्री०) छार, भस्म, दग्ध, राख, धूलि, लाक, खार, खारी निमक, खारी पदार्थ। यथा—  
“छारते सवारिके पहाड़हूते भारी कियो, गारो भयो पति में पुनीत पक्ष पाईके।”

—तुलसीदास।

छारद्वीला दे० (पु०) सुगन्धित वस्तु विशेष, एक प्रकार का जल का सेवार जो सुगन्धित होता है, जो धूप के काम में आता है।

छारी तद् (पु०) छारी, चार करने वाला, दाहक, भस्म करने वाला, महादेव, रुद्र।

छारु दे० (पु०) निनारवा, नितरवा, रोग विशेष, जिसमें सुँह पक जाता है।

छाल दे० (पु०) छिलका, बकला, चोकला, रक्क, चर्म, बकल, एक प्रकार की मिठाई।

“मतलहु छाल और मरहारी।

माठ पिराकें और बुँदारी॥” —जायसी।

चीनी जो अच्छी तरह सफा न की गयी हो।—टो दे० (स्त्री०) छाल का बना कपड़ा, सन या पतसन का बना वस्त्र विशेष।

छाला दे० (पु०) फफोला, फुन्सी, फोड़ा, फुलका, धाव, चमड़ा जैसे मृगजाल। [का पात्र।

छालिया दे० (पु०) एक प्रकार की सुपारी, छायादान

छाली दे० (स्त्री०) कटे हुए सुपाड़ी के टुकड़े, सुपारी।

छालेना दे० (कि०) टुक लेना, छाजाना, छँपेरा करना।

छावना दे० (कि०) छाना, पाटना, छाया करना, छुपर बनाना।

छावनी दे० (स्त्री०) शिविर, सिपाहियों के रहने का स्थान, पलटन के रहने का स्थान, पड़ाव छाने का काम, पाटने का काम।

छावा दे० (पु०) छाया, गया, छादिया, आच्छादित किया, ढाँपा हुआ। (पु०) बच्चा, पुत्र, १० से २० वर्ष तक का हाथी, युवा हाथी।

छासठ (पु०) संख्या विशेष, साठ और छः, ६६।

छाह (स्त्री०) माछ, बही, छाछ।

छिउल (पु०) डाक, पलायन।

छिकनी (स्त्री०) नकछिकनी नामक घास।

छिकुनी दे० (स्त्री०) छड़ी, कमची, बाल की छड़ी, सीटी, बिना बनाया बाल या चेत का टुकड़ा।

निका तत् ( स्त्री० ) धुव. क्षीक। [सू धने से धौंके आती हैं।  
द्विकिका तत् ( स्त्री० ) नव द्विकनी, एक पैसा जिसको  
द्विगुनिया, द्विगुनी, द्विगुली दे० ( स्त्री० ) छोटी  
अंगुली. कनिष्ठिका, कन्यंगुली ।

द्विचड़ा दे० ( पु० ) फोड़े की पपड़ी, घाव का नया  
चमड़ा, मल की थैली ।

द्विचड़ेल दे० ( पु० ) दुबला, दुबैठ, चमचिचड़ ।

द्विचड़ा दे० ( पु० ) खलड़ा, चर्म, चमड़ा, छेवर ।

द्विचूला दे० ( पु० ) हथका, कम गहरा, उठी हुई  
भूमि ।—ई ( स्त्री० ) उपलाई, चिचूलापन ।

द्विचूली दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का लड़कों का खेल,  
थोड़ी गहरी नदी आदि । [पन, नीचता ।

द्विचौरपन, द्विचौरापन दे० ( पु० ) बुद्धता, ओझा-  
द्विचौरा, द्विचौरा दे० ( पु० ) प्रभाव रहित, हीन,  
ओझा, अविश्वासी, नीच, हल्का, अधम ।

द्विटकना दे० ( कि० ) कैदना, बिलरना, ब्यास होना,  
विस्तृत होना, फैल जाना, " चांदनी द्विटक रही  
है" ( पु० ) विचार, प्रफुल्लता, मनोहरता, रमणी-  
यता, " वसन्त में फूलों का द्विटकना क्या मला  
मालूम होता है " । [मिलिर्षा ।

द्विटकनी दे० ( स्त्री० ) सिटकिनी, किवाड़ों की किल,  
द्विटकाना दे० ( कि० ) बिलेरना, बिलराना, फैलना,  
छिटना । [विस्सा ।

द्विटका ( पु० ) परदा, चाड़, पालकी का अगला

द्विटकी दे० ( स्त्री० ) फैली हुई, खिली हुई ।

द्विटफूट दे० ( पु० ) बिथरा, इधर वधर पड़ा हुआ ।

द्विटकाई दे० ( स्त्री० ) सिंचाई । सींचने की मजदूरी ।

द्विटकना दे० ( कि० ) छिटना, सींचना, मिगाना, चाद्रे  
बनाना, पानी छिटकना । [सींचना ।

द्विटकाना दे० ( कि० ) छिटवाना, सिंचवाना,

द्विटकाव दे० ( पु० ) सींच, सिंचाव, छिटाव ।

द्विटना दे० ( कि० ) धारम होना, चल पड़ना ( जैसे  
सागड़ा छिट्ठा ) । [चिटवाना, दुखाना, दुःख देना ।

द्विटाना दे० ( कि० ) छिनाना, छिनवाना, चिटाना,

द्वितनिया, द्वितनी दे० ( स्त्री० ) डलिया, बाँस की  
बनी हुई फूल डाली, दौरी, चम्पेली, चम्पेली, डाका ।

द्वितरना दे० ( कि० ) फैल जाना, बिखर जाना, छिट-  
फूट होना ।

द्वितरवितर ( पु० ) फैले हुए, तितर वितर ।

द्वितराना दे० ( कि० ) बिखराना, फैलाना, ब्यास  
करना, विस्तृत करना ।

द्विति तद् ( स्त्री० ) चिति, पृथिवी, धरती, धानी,  
धरा, भूमि, जमीन । यथा—पाल ( पु० ) राजा ।—  
रुह ( पु० ) वृक्ष, पेड़ ।

" द्विति जल पावक गगन समीरा ।

पञ्च रचित यह अथम सरीरा ॥"

—शामायण ।

द्विदना दे० ( कि० ) विधना, जुमना, गड़ना छिद्र  
होना, रोकना, रुकावट डालना, रोकने की चेष्टा  
करना । ( पु० ) बरिच्छा, फलदान, मँगनी ।

द्विदनी दे० ( स्त्री० ) अन्न विशेष, जिससे वेद किया  
जाता है ।

द्विदरा दे० ( वि० ) छितराया हुआ, छेददार, जर्जर ।

द्विदधाना दे० ( कि० ) छेद करवाना ।

द्विद्र तत् ( पु० ) छेद, विवर, बिल, रन्ध्र, दूषण,  
दाप, कुथान, देव ।—ानुसन्धान ( पु० ) दाप का  
अनुसन्धान, दाप हूँदना ।—ान्वेषण तत् ( पु० )  
दाप हूँदना, खुर निकालना ।—ान्वेषी ( पु० )  
छिद्र का अनुसन्धान करने वाला, दाप हूँदने  
वाला ।—दर्शी ( वि० ) दाप हूँदने वाला ।

द्विद्रित तत् ( पु० ) [छिद्र + क] कृत छिद्र, घेधित,  
छेद किया हुआ, शिख बनाया हुआ, दूषित ।

द्विन दे० ( पु० ) चय, स्नि, छन, अल्प समय,  
अल्पकाल, थोड़ी देर, स्वरूप समय विशेष का  
परिमाण ।—द्विन ( स्त्री० ) प्रति चय, फलपल,  
प्रत्येक पल, सबेदा, सदा ।—भर में ( या० ) एक  
पल में, बहुत ही शीघ्र ।

द्विनकना दे० ( कि० ) साँस को जोर से निकाल कर  
नाक का मल या रद्द निकालना । भड़क कर  
भागना । ( वन्दूक का ) रंजक चोट जाना ।

द्विनरा दे० ( पु० ) पर स्त्री-गामी, व्यभिचारी, लग्नपट ।

द्विनवाना दे० ( कि० ) छुटवाना, छुड़वाना, छे लेना,  
बलपूर्वक ग्रहण करना ।

द्विनाना दे० ( कि० ) छिनवाना, हरण कराना ।

द्विनार, द्विनाल दे० ( स्त्री० ) वेरया, वेरयावृत्ति करने  
वाली स्त्री, कुचाली, व्यभिचारिणी, दुष्ट ।

द्विनाला दे० ( पु० ) व्यभिचार, कुलटापन, कुचाज ।  
 द्विनेक दे० ( पु० ) दणैक, एक चण, एक पत्र ।  
 द्विन्न तत्त्वं ( पु० ) [ द्वि + क ] खण्डित, छेदित ।  
 —धन्वा ( पु० ) रणस्थल में जिस योद्धा का धनुष टूट गया हो ।—नासिका ( गु० ) नकटा, जिसकी नाक कट गयी हो ।—भिन्न ( गु० ) खण्डित, कटाकुटा, टूटाफूटा, तितरबितर, असम्बन्ध, नष्टभ्रष्ट ।—मस्तक ( गु० ) कवच, कटा मूँद, मस्तक रहित, मस्तक हीन ।—मस्ता ( स्त्री० ) देवी विशेष, दश महाविद्या के अन्तर्गत छठी महाविद्या ।—संशय ( गु० ) संशय शून्य, सन्देह शून्य, सन्देह रहित ।—रुहा ( स्त्री० ) गुर्च, गिबोय ।  
 द्विधा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ द्वि + धा ] गूची, गुड़ची, बेरया, पुंखली, व्यभिचारिणी, द्विध मस्ता देवी ।  
 द्विप दे० ( पु० ) वनसी, चड़िया, मछली पकड़ने का यन्त्र । [ टिकटिकी ।  
 द्विपकली दे० ( स्त्री० ) गृह-गोधिका, विसतुह्या, द्विपका दे० ( स्त्री० ) चुपका, गुप्त, छिड़काव, सिधाव ।  
 द्विपना दे० ( कि० ) छुकाना, गुप्त होना, गुप्त होना, दबकना ।  
 द्विपा दे० ( गु० ) लुका, गुप्त, अग्रकट, अग्रकाशित, गुप्त ।  
 —रुस्तम दे० ( पु० ) अग्रसिद्ध, गुणी, गुप्त गुंडा ।  
 द्विपाना दे० ( कि० ) गुप्त करना, गुप्त करना, छिपाना, लुकाना ।  
 द्विपाव दे० ( पु० ) गोपन, दुराव, लुकाव ।  
 द्विपी दे० ( स्त्री० ) द्विध यन्त्र करने की लकड़ी, काग, छोटी धाली । [ जहदी, शितायी ।  
 द्विप्र तद् ( स्त्री० ) द्विप्र, शीप्र, तुरन्त, स्वरित, द्विप्रोद्धवा तद् ( स्त्री० ) गुड़ची, अमृता, अमृत-लता, गुरुन ।  
 द्विमा तद् ( स्त्री० ) चमा, अपराध माफ़ करना ।—  
 योग्य ( गु० ) चमा योग्य, माफ़ करने लायक, चमा करने के योग्य ।  
 द्वियालीस दे० ( गु० ) चालीस और छः, ४६, छः अधिक चालीस, पच्चासी ।  
 द्वियासठ दे० ( गु० ) सठ और छः, ६६, छठ्ठ, छः अधिक सठ, पट्ठ । [ अस्सी, पट्ठशीति ।  
 द्वियासी दे० ( गु० ) अस्सी और छः, ८६, छः अधिक

द्विलका दे० ( पु० ) बकला, बरकल, छाल, स्वका, फल भादि के ऊपर का छाल ।  
 द्विलना दे० ( कि० ) रगड़ना, विसना, चमड़ा उखड़ जाना, रगड़ से चमड़ा छिल जाना ।  
 द्विलाना दे० ( कि० ) कटवाना, रगड़वाना, छाल बतरवाना, रगड़ लगवाना, कटाना ।  
 द्विलैया दे० ( गु० ) छोड़ने वाला, रगड़नहार ।  
 द्विलौरी दे० ( स्त्री० ) रोग विशेष, मोठी शंखुली के बर पर का घाव, घिनही, कुणी । [ सत्तर, पट्सति ।  
 द्विहस्तर दे० ( गु० ) सत्तर और छः, ७६, छः अधिक द्विहना ( कि० ) ठेरें लगाना, एका करना ।  
 द्विहरना ( कि० ) छितराना, बिखराना ।  
 द्विहानी दे० ( पु० ) शमशान, मसान, मरघट । [ अम्य ।  
 द्वी दे० ( अ० ) धिक्कारार्थक अन्य, कुतिसत अर्थ वाचक द्वीक दे० ( स्त्री० ) वेग के साथ नासिका और मुँह से सहसा बहिर्गत होने वाली वायु का झोंका या स्फोट ।  
 द्वीकना दे० ( कि० ) नासिकामुख द्वार से जोर के साथ वायु को इस प्रकार निकालना कि शब्द हो ।  
 द्वीका तद् ( पु० ) रस्सी या जोड़े के पतले तारों की ययी एक प्रकार की जाली जिसको ऊपर टांग कर उसमें दूध भी चादि रखे जाते हैं, सिकहर, शिक्य ।  
 द्वीट दे० ( स्त्री० ) दरेल, छपे कपड़े, एक प्रकार का कपड़ा जिसमें बेक्यूटे छापे जाते हैं, जलकण, जल की बूँद ।  
 “ राधे छिरकत द्वीट छबोली ” —सूरदास ।  
 द्वीटना दे० ( कि० ) बिखराना, जेत में अन्न फैलाना, छितराना, बीज बोना ।  
 द्वीटा दे० ( पु० ) छाँटा, जल के छोटे छोटे अणुद कण ।  
 द्वीट्टा दे० ( पु० ) धुणित मांस, अमध्य मांस, चमड़े के समान अमध्य ।  
 द्वीट्टाजेवर दे० ( स्त्री० ) दुर्दशा, दुर्गति, खराबी ।  
 द्वीज दे० ( स्त्री० ) घाटा, कमी, हानि, छति । [ होना ।  
 द्वीजना दे० ( कि० ) घटना, कम होना, सुखना, न्यून ।  
 द्वीजी दे० ( कि० ) घटे, कम हो, छोड़ा हो, चीख हो, कट जाय, दुखला हो ।  
 द्वीट दे० ( स्त्री० ) छपा हुआ कपड़ा, छाँट, छाँटा ।  
 द्वीटना दे० ( कि० ) फैलाना, बिगाड़ना, बिखराना, नष्ट करना, फैलाना, बिखारित करना, पानी छिड़कना, सार्धा सरसों भादि छोटे छोटे अन्न बोना ।

छीन तद् ( गु० ) चीण, दुर्बल, दुबला, बलहीन ।  
छीना दे० ( कि० ) रक्तक लेना, खींच लेना, ले लेना,  
टानना, हस्तगत करना, ग्रहण करना ।

छीना तद् ( गु० ) चीय, दुबला, रक्षित, हीन, अस्थन्त  
दुबला, कमजोर, थोड़ा, कम. छीन लिया, काट डाला ।

झीनाझीनी दे० ( स्त्री० ) छीनाकपटी ।

झीनाकपटी दे० ( स्त्री० ) बल पूर्वक किसी वस्तु को  
किसी से छीन लेने की क्रिया । [ कतर कर ।

झीनि दे० ( कि० ) छीन कर, बल पूर्वक लेकर, काट कर,  
झीने ( कि० ) दे० छीने हुए, बरबस खिंचे हुए, न्यून हुए,  
नष्ट हुए, कम हुए, बलाकार से छीन ले, कोट काटे ।

झीप दे० ( स्त्री० ) छाँई, लहसन, लहसुन, लहसूरी विशेष,  
जिसमें मछली पकड़ने के लिये मृत बाँधा जाता है ।

( वि० ) तेज, वेगवान् ।

झीपना दे० ( कि० ) कपड़ा छापना, छीट बनाना ।

झीपी दे० ( पु० ) जाति विशेष, जो कपड़ा छापती है ।

झीवर दे० ( स्त्री० ) मोटी छींट ।

झीमी दे० ( स्त्री० ) फरी, किसी पेड़ की फर्जी, कोपा,  
त्वक, छिलका, छाल ।

झीर तद् ( पु० ) चीर, दूध, दुग्ध, दूध ।—फेन तद्

( पु० ) मलाई, फेन ।—समुद्र ( पु० ) दूध का

समुद्र, चीरसागर, यथा —

“खानि पतार पानी तहँ काढ़ा

झीर समुद्र निकल तहँ ठाढ़ा”

पद्यावत ।

झीलन दे० ( स्त्री० ) काटन, कतरन, रचौतन, छाँटन ।

झीलना दे० ( कि० ) कतारना, काटना, छाल उतारना  
फल आदि का छाल निकालना ।

छु पत ( कि० ) दे० छूते ही, छूने ही से, स्पर्श करते ही,  
हाथ लगाते ही, छूता है, स्पर्श करता है ।

छुआछूत दे० ( पु० ) अपवित्र, अधम का स्पर्श,  
स्पर्शास्पर्श ।

छुरीछुरी दे० ( स्त्री० ) एक पौधा विशेष, जिसको छूने से  
उसकी पत्तियाँ मुरका जाती हैं । लज्जवन्ती, लज्जारी ।

छुङ्गलिया दे० ( पु० ) कनिष्ठिका, अंगुली, छिंनुली,  
छोटी अंगुली । [ फटकारना ।

छुङ्गकारना दे० ( कि० ) लहकारना, छिड़कना, डाँटना

छुङ्गली दे० ( स्त्री० ) छिड़की, विमोद, कलोल, खेल ।

छुङ्गप्राना दे० ( कि० ) व्यर्थ इधर उधर घूमना ।

छुङ्गुन्दर दे० ( स्त्री० ) एक आतशबाजी, छुङ्गुन्दर विशेष ।

छुङ्गुहड़ ( स्त्री० ) खाली हाँडी ।

छुट दे० ( अ० ) बिना, छोड़के, अतिरिक्त, छोटा ।

छुटकाना दे० ( कि० ) छोड़ना, मुक्त करना, उद्धार  
करना ।

छुटकारा दे० ( पु० ) मुक्ति, छुटाव, छुड़ाव, उद्धार ।

छुटखेलना दे० ( कि० ) मनमानी करना, बच्छूहलता  
का व्यवहार, गुंडई, बदमाशी ।

छुटखेला दे० ( गु० ) उच्छूहल, गुंडा, बदमाश, लुछा ।

छुटखेली दे० ( स्त्री० ) लुचपन, छिनाल, अपविचार ।

छुटना दे० ( कि० ) मुक्ति पाना, उद्धार पाना, छुट  
जाना, निकलना ।

छुटपन दे० ( पु० ) छुटाई, लघुता, बालकपन, लड़काई ।

छुटान, छुटानी दे० ( स्त्री० ) छुटी, अवकाश,  
अवस्थाप ।

छुटाया दे० ( पु० ) छुटाई, न्युता, छुटपन, छोटापन ।

छुट्टा दे० ( वि० ) जो यथा न हो, अकैला, निहत्था ।

छुट्टी दे० ( स्त्री० ) छुटकारा, अवकाश, अवस्थाप,  
विश्रान्ति समय, विश्राम विदा ।

छुट्टे दे० छूट गये, बाकी बचे, अलग हुए ।

छुड़वाना दे० ( कि० ) मुक्त करना, छुड़वा देना,  
छुटकारा कराना ।

छुड़ाना दे० ( कि० ) उद्धार करना, छुपा करना, दया  
दिलाना, धंधी, फँसी, डलसी या लगी हुई किसी  
वस्तु को अलगपाना, दूसरे के कब्जे से अलग करना ।

छुड़ावा दे० ( पु० ) मुक्ति, छुटकारा । [ महसूल ।

छुड़ौती दे० ( स्त्री० ) छुड़ाने का सूचक, दाम, कर,

छुतिहर दे० ( पु० ) कृपात्र, नीच मनुष्य, अशुचि वस्तु  
के समर्थ से अशुद्ध इया बरतन या घड़ा ।

छुतहरा दे० ( गु० ) अशुद्ध, अपवित्र, शुद्ध रहित ।

छुतिहा दे० ( वि० ) छूत वाजा, अस्थिरय, दूषित,  
पतित, निरुद्ध ।

छुद्र तद् ( गु० ) छुद्र, अविवशनीय, छोटा, अधम,  
नीच, अरु, थोड़ा सा ।—घरिटका ( स्त्री० )

करघनी, मेखला ।—मेखला ( स्त्री० ) छुद्रघण्टिका,

करघनी । [ छुद्रमा, कटाई नाम का एक पौधा ।

छुद्रा तद् ( स्त्री० ) नीज स्त्री, कुलटा, चेश, पतुरिया,

छोड़ौती दे० ( छो० ) छुटकारे का दाम, छुड़ौती, उत-  
रारं, उतारे का दाम ।

छानिप तद्० ( पु० ) चोखिप, भूपति, भूमिपति, प्रथिवी-  
पति, भूप, भुपाल, भूराल, राजा ।

छानी तद्० ( छो० ) चोखी, प्रथिवी, परती, भूमि,  
यथा—“छानी में के छैनीपति छात्रे तिन्ह छत्र  
छाया, छैनी छैनी, छाये छिति छाये निमि राजा  
के, पवन प्रवण्ड परवण्ड बरवेन वायु, बरवे की  
बोली घँदेरी पर कात के, बोले चरी विरद बनावे  
पर पाजनऊ, पात्रे पात्रे बीरपाहु पुनन समान के,  
तुलसी मुदिन मन पुर नर नाही जेते, बार बार  
हैंरं मुख पपष मृगराज के ।” कवित्त रामायण ।

छाप दे० ( पु० ) एक बार का किरा हुआ रह किपी  
यन्त्र पर एक बार रह चढ़ाना, रह माना ।

छापना दे० ( कि० ) भरना, रहना, रह देना । [ कवित्ता ।

छात्र तद्० ( पु० ) चोम, छात्रादृष्ट, मन की चतुर्त्वा,

छात्रा दे० ( पु० ) देखो छोम । [ श्वर श्वर का सिरा ।

छार दे० ( पु० ) किनारा, पान्त, कनार, एक किनारा,

छारना दे० ( कि० ) खोलना, छोड़ना, मुक्त करना ।

छोरा दे० ( छो० ) खड़का, छोकरा, बालक, ( कि० )

खोला, खोल दिया, गाँठ खोला ।

छोरा, छोरी दे० ( छो० ) लड़का, खरकी, पुत्र पुत्री ।

छोरी दे० ( स्त्री० ) कन्या, पुत्री, बालिका । ( कि० )

खोल दी, छोड़ दी ।

छोलादारी ( स्त्री० ) खेमा, छोटा सम्भ ।

छोलाना दे० ( कि० ) छीलना, छाल उतारना ।

छोला दे० ( पु० ) घास, कटी घास, घना, हल बं काट  
कर छीलने वाला ।

छोलनी दे० ( स्त्री० ) सुर्मा घास छीलने का शस्त्र ।

छोलो ( कि० ) छील डाली, छील का ।

छोह दे० ( पु० ) स्नेह, मोद, प्रेम, प्रीति मुदबन ।

छोह दे० ( पु० ) प्यार, प्रीति, प्रेम, रक्कत ।

छोहरा दे० ( पु० ) लड़का, बालक ।—छोहरा ( स्त्री० )  
बाबिका, खड़की ।

छोही दे० ( पु० ) प्रेमी, प्रथपी, चतुरागी, चमिजारी ।

छोकि दे० ( पु० ) बघार, तड़का ।

छोकन दे० ( पु० ) बघार, छोक ।

छोकना दे० ( कि० ) बघारना, छोकना ।

छोकन दे० ( पु० ) छीनाछीनी, छपटाछाटी । [ छपटना ।

छोकना दे० ( कि० ) छपटाछपटी करना, छोकने साथ

छोकल दे० ( पु० ) छपटाछपटी करना ।

छोना दे० ( पु० ) शाबक, सिधु, बरपा, जागपर का  
बघा, खड़का, छोरा, बाबक, छोटा बरपा ।

यथा—

छोनी में न छड़्यो छव्यों छोनिय को छीनो,

छोरो छोनिय छवन नारैं बीरद बहुत ही ।

—कवित्तनामायण ।

छोर तद्० ( पु० ) मुपहन, माया, मुँहवाना, बालबनवाना ।

छोरा ( पु० ) बघार, उबार बामरे का खंडुल । [ बानन्दी ।

छोलिया दे० ( पु० ) हर्षित, प्रमत्त, रसिक, विजामी,

## ज

ज, व्यञ्जन का आठवां अक्षर, इसका उच्चारण तालु द्वारा  
होता है । अतएव यह तालव्य ध्वनि कहा जाता है ।

ज तद्० ( पु० ) किसी शब्द के साथ संयुक्त होने पर यह  
अपति ध्वनि का वाचक हो जाता है । यथा—मियज,

ध्यामज, देहज, हत्यादि । विष्णु, मिष, मुक्ति, सेज,  
वेग, जन्म, पिता, मृत्युश्चय, धन्दःपात्र का तीन

अक्षरों का गण । ( वि० ) वेगवान्, सेज, जेता ।

जई दे० ( स्त्री० ) जौ का छोटा अंकुर, जौ की जाति का  
एक अन्न, खैलुछा ।

जईफ ( पु० ) घूँस, घड़ा ।—( स्त्री० ) घूँसवस्था, घड़ाई ।

जक दे० ( पु० ) पक्ष, रचित धन का रचन, गाढ़े धन  
का रचयारा, कंजम् आदमी ।

जकड़ना दे० ( कि० ) कसना, बाँधना, खींच खींच कर  
बाँधना, रड़ बाँधना ।

जकड़वन् दे० ( पु० ) मकड़वाप, रोग विशेष, पापु  
जनित रोग, कुस्ती का पेश ।

जकुट तद्० ( पु० ) कुत्ता, घैगन का फूँक, मज्जवाचल ।

जकते दे० ( स्त्री० ) सुखपुल की एक जाति ।

जका दे० ( पु० ) जगत, सेसार, दुनिया ।

जस्त तद्० ( पु० ) पक्ष, देव योनि विशेष ।

जन्मा दे० ( पु० ) यक्ष्मा, इस नाम का एक रोग ।  
 जलनाचार्य दे० ( पु० ) यह राजवंशीय प्रधान शिल्पी थे, मैसूर के राजघराने में इनकी उत्पत्ति हुई थी, सीटीय बारहवीं शताब्दी में यह विद्यमान थे । चित्र-रचना की निपुणता इनमें अलौकिक थी । कहते हैं इस समय मैसूर राज्य में जो बड़े बड़े प्रधान मन्दिर वर्तमान हैं, वे सब इन्हीं के बनाये हैं ।  
 जलमी तद्० ( स्त्री० ) यक्षिणी ।  
 जलम दे० ( पु० ) घाय, चत, चोट ।—( वि० ) घायल ।  
 जल्वीरा दे० ( पु० ) कोष, ढेर, समूह, पेड़ों की पौधों का भण्डार ।  
 जलवेड़ा दे० ( पु० ) जमाव, बल्लेड़ा ।  
 जलैया ( पु० ) भूतयोनि विशेष ।  
 जलूम ( पु० ) घाय, कोड़ा ।  
 जग तद्० ( पु० ) जगन्, भुवन, संसार, दुनिया, जङ्गम, चलने वाले, जनसमुदाय । [सृज, दिनकर ।  
 जगद्यलु तद्० ( पु० ) सूर्य, दिवाकर, भातु, मार्चण्ड, जगजगा दे० ( पु० ) दीप्ति सुन्दरता, प्रकाश, शोभा, पीतल का मुलम्मा । [लावण्य ।  
 जगजगाहृद् दे० ( स्त्री० ) चमक, प्रकाश, बज्जाई जगजागी दे० ( स्त्री० ) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात, संसार में विदित ।  
 जगजीवन तद्० ( पु० ) जगत् का आचार, जगत् का प्राण, रचक, पाली, ईश्वर, मेघ, वायु ।  
 जगह्वाल तद्० ( पु० ) स्वर्ग का शायोजन, चाहम्बर ।  
 जगण् तद्० ( पु० ) गणविशेष, पचारवत्ता विषयक रीति विशेष, छन्दों का सन्निवेश और पहचान कराने वाले अष्टविध गणों में का एक गण । अगण में भीच का अपर गुरु और भादि अन्त के लघु होते हैं यथा ।—“ रावार ” इसका देवता जल है ।  
 जगती तद्० ( स्त्री० ) भुवन, लोक, पृथिवी, धरती, भूमि ।  
 —तल संसार, महाण्ड, समस्त भूमयदल, पृथ्वीतल ।  
 जगत् तद्० ( पु० ) संसार, जग, टेक, आहु, कुँए का पनघटा, कुँए का चबूतरा, वायु, महादेव, जङ्गम ।  
 —कर्ता ( पु० ) ब्रह्मा, विधाता, सृष्टिकर्ता, परमात्मा ।—आता ( पु० ) जगताक, जगरचक ।  
 —प्राण ( पु० ) वायु, धनिल, वात ।—साक्षी ( पु० ) सूर्य, दिनमणि, भास्कर, दिवाकर, भातु ।

जगत्सेठ दे० ( पु० ) इतिहास प्रसिद्ध मुनिदायाद निवासी एक धनकुवेर, इनका नाम फतेहचन्द था । १७२२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने इनको जगत्सेठ की उपाधि दी थी, यह जैनी थे । इनके पुरखा मारवाड़ से बगल थाये थे । इनके पिता का नाम उदयचन्द और माता का नाम धनवाई था । धनवाई के भाई माणिकचन्द की कोई लड़का नहीं था, अतएव इन्होंने अपनी बहिन के लड़के फतेहचन्द को गोद लिया । प्रसिद्ध धनी माणिकचन्द के सहाय ऐश्वर्य के माणिक फतेहचन्द हुए थे । बगल के नवाब मीरकासिम के क्रोध में पड़कर जगत्सेठ को अन्त में अपने प्राण गवाने पड़े । जिस धन के लिये इन्होंने कितने छस कपट किया, कितने पड़यन्त्र रचे, परन्तु मौके पर उस धन से उनकी कुछ भी सहायता नहीं मिली ।  
 जगद् तद्० ( पु० ) पालक, रचक ।  
 जगदम्बा या जगदम्बिका तद्० ( स्त्री० ) सब जगत् की माता, जगमाता, वैष्णवी शक्ति, आदिशक्ति, भवानी, दुर्गा । [का प्रारम्भ, परमेस्वर, ब्रह्मा ।  
 जगदादि तद्० ( पु० ) जगत् का प्रारम्भ समय, सृष्टि जगदाधार तत्० ( पु० ) जगत् के आधार, अनन्त, रोषनाग, संसार का अवलम्ब, वायु, परमात्मा, धर्म ।  
 जगदानन्द तद्० ( पु० ) ईश्वर ।  
 जगदीश तद्० ( पु० ) जगत् का स्वामी, परमात्मा, ( १ ) जगन्नाथ ।  
 ( २ ) नवद्वीप निवासी न्यायशास्त्र के एक विषयात विद्वान्, १७ वीं सदी के प्रारम्भ में यह उत्पन्न हुए थे । इनका वाक्यकाल खेलने ही में बीत गया । अष्टादश वर्ष की अवस्था में एक संन्यासी से इनकी भेंट हुई । वे संन्यासी इनकी बुद्धिमानी देख प्रसन्न हुए और इनको पढ़ाने लगे । जगदीश बड़े द्रिष्टि के पुत्र थे, तथापि मन के कष्टों को सहकर भी विद्योपार्जन इन्होंने किया । इनकी बुद्धि तीव्र थी ही, यह एक बड़े भारी विद्वान् हो गये हैं । न्यायशास्त्र के १२ उपादेय ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं ।  
 जगदीश्वर तद्० ( पु० ) परमात्मा ।  
 जगदीश्वरी तद्० ( स्त्री० ) भगवती, लक्ष्मी ।  
 जगद्गुरु तद्० ( पु० ) अत्यन्त पूज्य वा प्रतिष्ठित पुरुष, शङ्कराचार्य के सम्प्रदायाचार्यों की उपाधि, परमेस्वर, शिव, नाराद ।

छोड़ौती दे० ( खी० ) छुटकारे का दाम, छुड़ौती, उत-  
राई, उतारे का दाम ।

छोनिप तद्० ( पु० ) चोनिप, भूपति, भूमिपति, पृथिवी-  
पति, भूप, भुसाल, भूसाल, राजा ।

छोनी तद्० ( खी० ) चोणी, पृथिवी, परती, भूमि,  
यथा—“छोनी में के छोनीपति छाजे तिन्ह छत्र  
छाया, छोनी छोनी, छाये छिति छाये निमि राजा  
के; पवन प्रवण्ड वायण्ड वरये वायु, वरये की  
बोली वैदेरी वर काज के; बोले वन्दी विरद वनाये  
वर याजनऊ, वाजे वाजे वीरबाहु धुनत समाज के;  
तुलसी मुदित मन पुर नर नारी जेले, बार बार  
हेरें मुख अवध मृगराज के ।” कविच रामायण ।

छोप दे० ( पु० ) एक बार का किया हुआ रङ्ग किसी  
वस्तु पर एक बार रङ्ग चढ़ाना, रङ्ग भरना ।

छोपना दे० ( कि० ) भरना, रङ्गना, रङ्ग देना । [स्थिता ।

छोभ तद्० ( पु० ) चोभ, घबराहट, मन की चञ्चलता,

छोभा दे० ( पु० ) देखो छोभ । [श्च उधर का सिरा ।

छोर दे० ( पु० ) किनारा, शान्त, कगर, एक किनारा,

छोरना दे० ( कि० ) खोलना, छोड़ना, मुक्त करना ।

छोरा दे० ( खी० ) लड़का, छोकरा, बालक, ( कि० )

खोला, खोल दिया, गाँठ खोला ।

छोरा, छोरी दे० ( खी० ) लड़का, लड़की, पुत्र पुत्री ।

छोरी दे० ( स्त्री० ) कन्या, पुत्री, बालिका । ( कि० )

खोल दी, छोड़ दी ।

छोलादारी ( स्त्री० ) खेमा, छोटा तम्बू ।

छोलना दे० ( कि० ) छीलना, छाल उतारना ।

छोला दे० ( पु० ) घास, कटी घास, चना, ईख को काट  
कर छीलने वाला ।

छोलनी दे० ( स्त्री० ) सुर्मा घास छीलने का शस्त्र ।

छोलो ( कि० ) छील डाली, छील कर ।

छोह दे० ( पु० ) स्नेह, मोह, प्रेम, प्रीति मुहवत ।

छोह दे० ( पु० ) प्यार, प्रीति, प्रेम, उवकत ।

छोहरा दे० ( पु० ) लड़का, बालक ।—छोहरी ( स्त्री० )  
बालिका, लड़की ।

छोही दे० ( पु० ) प्रेमी, प्रणयी, अनुरागी, प्रमिलापी ।

छौक दे० ( पु० ) बघार, तड़का ।

छौकन दे० ( पु० ) बघार, छौक ।

छौकना दे० ( कि० ) बघारना, छौकना ।

छौकन दे० ( पु० ) छीनाछीनी, कपटाछाटो । [कपटना ।

छौकना दे० ( कि० ) कपटाकपटी करना, चौकड़ी साथ

छौकल दे० ( पु० ) कपटाकपटी करना ।

छोना दे० ( पु० ) शावक, शिशु, बच्चा, जानवर का

बच्चा, लड़का, छोरा, बालक, छोटा बच्चा ।

यथा—

छोनी में च छाँड़्यो छप्यो छोनिप को छैनो,

छोटो छोनिप छपन ताँकी वीरद बहुत छै ।

—कविच-रामायण ।

छोर तद्० ( पु० ) मुण्डन, माथा मुँड़वाना, बालबनवाना ।

छोरा ( पु० ) कोयर, उबार बाबरे का डंडुल । [छानन्दी ।

छोलिया दे० ( पु० ) हर्षित, प्रसन्न, रसिक, बिजासी,

## ज

ज, व्यञ्जन का आठवाँ अक्षर, इसका उच्चारण तालु द्वारा  
होता है । अतएव यह तालव्य वर्ण कहा जाता है ।

ज तत्० ( पु० ) किसी शब्द के साथ संयुक्त होने पर यह  
उत्पत्तिार्थ का वाचक हो जाता है । यथा—मित्रज,

आत्मज, देहज, इत्यादि । विष्णु, विप, मुक्ति, तेज,

वेग, जन्म, पिता, मृत्युश्च, छन्दःशास्त्र का तीन  
अक्षरों का गण । ( वि० ) वेगवान्, तेज, जेता ।

जई दे० ( खी० ) जौ का छोटा अंकुर, जौ की जाति का  
एक अन्न, अँलुआ ।

जईफ ( पु० ) वृद्ध, बड़ा ।—( खी० ) वृद्धावस्था, बुढ़ाई ।

जक दे० ( पु० ) यक्ष, रचित धन का रक्षक, गाड़े धन  
का रक्षक, कंजूस आदमी ।

जकड़ना दे० ( कि० ) कसना, बाँधना, खींच खींच कर  
बाँधना, टङ्ग बाँधना ।

जकड़वन्द दे० ( पु० ) जकड़वाय, रोग विशेष, घालु  
अजित रोग, कुस्ती का पेच ।

जकुट तत्० ( पु० ) कुचा, बँगन का फूल, मलमाचल ।

जक्की दे० ( खी० ) बुलबुल की एक जाति ।

जक्त दे० ( पु० ) जगत्, संसार, दुनिया ।

जक्त तद्० ( पु० ) यक्ष, देव योनि विशेष ।

जच्मा दे० ( पु० ) यच्मा, इस नाम का एक रोग ।  
 जखनाचार्य दे० ( पु० ) यह राजवंशीय प्रधान शिल्पी  
 थे, मैसूर के राजघराने में इनकी उत्पत्ति हुई थी,  
 सीरीय बारहवीं शताब्दी में यह विद्यमान थे ।  
 चित्र-रचना की निपुणता इनमें अलौकिक थी ।  
 कहते हैं इस समय मैसूर राज्य में जो बड़े बड़े  
 प्रधान मन्दिर वर्तमान हैं, वे सब इन्हीं के बनाये हैं ।  
 जखनी तद्० ( स्त्री० ) बघिणी ।  
 जखम दे० ( पु० ) घाव, चूत, घोट ।—( वि० ) घायल ।  
 जखीरा दे० ( पु० ) कोप, डेर, समूह, पेड़ों की पैदाइश का  
 भण्डार ।  
 जखेड़ा दे० ( पु० ) जमाव, बखेड़ा ।  
 जखैया ( पु० ) भूतयोनि विशेष ।  
 जखम ( पु० ) घाव, फोड़ा ।  
 जग तद्० ( पु० ) जगत्, भुवन, संसार, बुनिया, जह्म,  
 चलने-वाले, जनसमुदाय । [सृज, दिनकर ।  
 जगज्जलु तद्० ( पु० ) सूर्य, दिवाकर, भानु, मासण्ड,  
 जगजगा दे० ( पु० ) दीप्ति सुन्दरता, प्रकाश, रोमा,  
 पीतल का मुलम्मा । [लावण्य ।  
 जगजगाहट दे० ( स्त्री० ) बमक, प्रकाश, वज्राई  
 जगजामी दे० ( स्त्री० ) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात,  
 संसार में विदित ।  
 जगजीघन तद्० ( पु० ) जगत् का आधार, जगत् का  
 प्राण, रक्षक, पानी, ईश्वर, मेघ, वायु ।  
 जगङ्गाल तद्० ( पु० ) व्यवस्था का आयोजन, आहम्बर ।  
 जगण तद्० ( पु० ) गणविशेष, पद्मवना विषयक रीति  
 विशेष, छन्दों का सज्जिवेश और पहचान करने वाले  
 अष्टविध गणों में का एक गण । जगण में बीच  
 का अक्षर गुरु और आदि अक्षर के लघु होते हैं  
 यथा ।—“ रावर ” इसका देवता जल है ।  
 जगती तद्० ( स्त्री० ) भुवन, लोक, पृथिवी, धरती, भूमि ।  
 —राज संसार, महाण्ड, समस्त भूमण्डल, पृथ्वीतल ।  
 जगत् तद्० ( पु० ) संसार, जग, टेक, आङ्ग, कुण्ड का  
 पनघटा, कुण्ड का चतुर्त्तम, वायु, महादेव, जह्म ।  
 —कर्ता ( पु० ) महा, विधाता, सृष्टिकर्ता, पर-  
 मात्मा ।—त्राता ( पु० ) जगतारक, जगरक्षक ।  
 —प्राण ( पु० ) वायु, अनिल, वात ।—सोत्ती  
 ( पु० ) सूर्य, दिनमणि, भास्कर, दिवाकर, भानु ।

जगत्सेठ दे० ( पु० ) इतिहास प्रसिद्ध मुशिदाबाद  
 निवासी एक धनकुवेर, इनका नाम फतेहचन्द था ।  
 १७२२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने इनको जगद्-  
 सेठ की उपाधि दी थी, यह जैनी थे । इनके पुरखा  
 मारवाड से बहाल आये थे । इनके पिता का नाम  
 उदयचन्द और माता का नाम धनवाई था । धन-  
 वाई के माई माणिकचन्द के कोई लड़का नहीं था,  
 अतएव इन्होंने अपनी बहिन के लड़के फतेहचन्द  
 को गोद लिया । प्रसिद्ध धनी माणिकचन्द के पतुल  
 ऐश्वर्य के मालिक फतेहचन्द हुए थे । बहाल के नबाब  
 मीरकासिम के क्रोध में पड़कर जगत्सेठ का अन्त में  
 अपने प्राण गवाने पड़े । जिस जन के लिये इन्होंने  
 कितने छल कपट किया, कितने पटवन्त्र रचे, परन्तु मौके  
 पर उस जन से उनको कुछ भी सहायता नहीं मिली ।  
 जगद् तद्० ( पु० ) पालक, रक्षक ।  
 जगदम्बा या जगदम्बिका तद्० ( स्त्री० ) सव जगत्  
 की माता, जगमाता, वैष्णवी शक्ति, आदिशक्ति,  
 भवानी, दुर्गा । [का प्रारम्भ, परमेश्वर, ब्रह्मा ।  
 जगदादि तद्० ( पु० ) जगत् का प्रारम्भ समय, सृष्टि  
 जगदाधार तन्० ( पु० ) जगत् के आधार, जगत्,  
 शेषनाग, संसार का अवलम्ब, वायु, परमात्मा, भस्म ।  
 जगदानन्द तद्० ( पु० ) ईश्वर ।  
 जगदीश तद्० ( पु० ) जगत् का स्वामी, परमात्मा,  
 ( १ ) जगन्नाथ ।  
 ( २ ) नवद्वीप निवासी न्यायशास्त्र के एक विष्णु  
 विद्वान्, १७ वीं सदी के प्रारम्भ में यह उत्पन्न हुए थे ।  
 इनका बाल्यकाल खेलने ही में बीत गया । छद्मराहर्ष  
 की धवस्था में एक संन्यासी से इनकी भेंट हुई । वे  
 संन्यासी इनकी बुद्धिमानी देख प्रसन्न हुए और इनको  
 पढ़ाने लगे । जगदीश बड़े दरिद्र के पुत्र थे, तथापि इनके  
 कष्टों को सहकर भी विद्यार्जन इन्होंने किया । इनकी  
 बुद्धि तीव्र थी ही, यह एक बड़े भारी विद्वान् हो गये  
 हैं । न्यायशास्त्र के १२ उपादेय ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं ।  
 जगदीश्वर तद्० ( पु० ) परमात्मा ।  
 जगदीश्वरी तद्० ( स्त्री० ) भगवती, लक्ष्मी ।  
 जगद्गुरु तद्० ( पु० ) अत्यन्त पूज्य या प्रतिष्ठित  
 गुरु, गुरुआचार्य के सम्प्रदायाचार्यों की उपाधि,  
 परमेश्वर, शिव, नारद ।



जगद्धर तत्० ( पु० ) संस्कृत के एक पण्डित, न्याय वैशेषिक और व्याकरण के बड़े पण्डित थे। वेणी-संहार, वासवदत्ता, मालती माघव आदि संस्कृत ग्रन्थों की टीकाएँ इन्होंने बड़ी योग्यता से लिखी हैं। उनके अन्त में इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है। द्विजाति कुञ्जतिलक चण्डेश्वर नामक एक प्रसिद्ध मीमांसक पण्डित थे, उनके पुत्र रामेश्वर पण्डित भी प्रसिद्ध मीमांसक थे। रामेश्वर के पुत्र गदाधर, गदाधर के पुत्र विद्याधर और विद्याधर के पुत्र रत्नधर हुए। इन्होंने रत्नधर ही के पुत्र जगद्धर थे। जगद्धर के पिता की उपाधि "श्रीमन्महोपाध्याय, पण्डितराज, महाकविराज, धर्माधिकारी" थी, इससे इनके कुल की उद्यता जान पड़ती है। पण्डितधर रामकृष्ण भण्डारकर के निर्णयानुसार इनका समय १४ वीं सदी के पहिले नहीं हो सकता।

जगद्धात्री तत्० ( स्त्री० ) चतुर्भुजा, सिंहवाहिनी, भगवती, शरतकाल की दुर्गापूजा के अनन्तर इनकी पूजा होती है। कहते हैं एक समय देवताओं को यह अभिमान हुआ कि हम लोगों से कोई दूसरा बड़ा नहीं है। ईश्वर या परमेश्वर कोई वस्तु नहीं है। देवताओं के ऐसे उद्धत विचारों को समझ कर, भगवती ज्योतिरूप में उनके सामने आविर्भूत हुई देवता इस ज्योति का निश्चय नहीं कर सके, अतएव इसके परिचय के लिये सत्सम्मति से वायु भेजे गये। ज्योति के मध्यस्थित भगवती दुर्गा उनके सामने एक तृण रख कर बोली, यदि तुम इसको उठा लो तब हम तुमको शक्तिमान् समझेंगी, परन्तु पहाड़ों की खलादने वाले वायु से वह तृण नहीं उठ सका, इसी प्रकार अग्नि आदि और देवता भी भाये, परन्तु उनमें कोई भी सफल नहीं हुआ; तब उनका अभिमान दूर हुआ और उन्होंने समझा कि हम लोगों से भी बड़ कर कोई प्रतापी है। उसी मूर्ति को परमेश्वरी समझ कर, देवता पूजने लगे। यह भगवती रक्षाभरारा, त्रिनयना और चतुर्भुजा हैं। सरस्वती।

जगना तत्० ( कि० ) उठना, प्रबुद्ध होना, जागृत होना, निद्रा त्याग करना, नींद से उठना, उत्साहित होना, उत्तेजित होना, देखी देवता, या, भूत का

अधिक प्रभाव दिखाना, उमड़ना, उभड़ना, बहना, जलना, कार्य करने के लिये तैयार होना।

जगन्नाथ तत्० ( पु० ) श्री क्षेत्र के देवता, जगदीश। ( देखो इन्द्रधनुष ), ईश्वर। — पण्डितराज ( पु० ) यह अलङ्कार शास्त्र के बड़े प्रसिद्ध विद्वान् थे। दिल्ली के बादशाह के दरबार में थे। यह अपने विषय में लिखते हैं "दिल्लीवल्लभपाणिपल्लव-तले नीतं नवीनं वयः" यह तैलङ्ग ब्राह्मण थे, परन्तु काशी में रह कर इन्होंने विद्याभ्यास किया था। इनके पिता का नाम पेरुमट्ट था, माता का नाम लक्ष्मी और ज्ञानेन्द्रभिचु गुरु का नाम था जयपुर के राजा जयसिंह की आज्ञा से इन्होंने जयपुर और काशी में वेधशालायें बनायीं थीं। दिल्ली के बादशाह ने इन्हें पण्डितराज की पदवी दी थी। इन्होंने संस्कृत की बहुत सी पुस्तकें बनायीं थीं। रसगङ्गाधर, मनोरमाकुचमर्दन, गङ्गाजहरी, कल्याणजहरी, अरवचारी काव्य, भामिनी विलास, प्राणभरण, वासवविलास आदि इनके बनाये ग्रन्थों के नाम हैं। किसी मुसलमानिन से इनका प्रणय हो गया था। अतएव काशी के पण्डितों ने इनको जाति बाहर कर दिया। उन्होंने अपनी शक्ति प्रमाणित करने के लिये गङ्गा के किनारे बैठ कर गङ्गाजहरी बनाते बनाते प्राण त्याग किये। बुढ़ापेमें कुछ दिनों तक ये मधुपुरी में भी रहे थे।

जगन्निवास तत्० ( पु० ) ईश्वर, विष्णु।

जगन्निवन्ता तत्० ( पु० ) विष्णु, ईश्वर।

जगन्मय तत्० ( पु० ) विष्णु। — ( स्त्री० ) लक्ष्मी।

जगन्माता तत्० ( स्त्री० ) लक्ष्मी, दुर्गा, आदि शक्ति।

जगन्मोहिनी तत्० ( स्त्री० ) महाभाया।

जगमग या जगमगा दे० ( पु० ) चमकीला, चमकदार प्रभायुक्त, प्रभावान्।

जगमगित दे० ( कि० ) चमचमाता हुआ, दीप्तिमान्।

जगमगाना दे० ( कि० ) रोषना, चमकना, दीपना।

जगमाता तत्० ( स्त्री० ) जगत की माता, देवी, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती।

जगजोनी तत्० ( स्त्री० ) ब्रह्मा, विधाता।

जगरमगर ( पु० ) जगमग, चमकीला।

जगवल्लभा तत्० ( स्त्री० ) चेरया, पादुर, पदुरिया।

जगवाना ( क्रि० ) उठवाना, सावधान करवाना ।  
जगह दे० ( स्त्री० ) स्थान, मूमि, धासी, ठौर, समाई,  
स्थिति, पद, चौक ।—सिर खरचना ( धा० )  
अवसर पर व्यय करना, उचित खर्च करना ।  
—सिर होना ( धा० ) किसी काम पर नियुक्त  
होना, लाभवान् कार्य का मिल जाना, यथोचित  
होना, यथा योग्य नियोग ।  
जगहर दे० ( पु० ) जागरण, प्रबोध, निद्रा त्याग, जगाई ।  
जगाज्योति तद् ( स्त्री० ) जगजगाहट, प्रकाशमान  
प्रकाशशील, सर्वदा प्रकाशित रहनेवाली ज्योति,  
अखण्डदीप, प्रभावशाली देव ।  
जगाना दे० ( क्रि० ) उठाना, सचेत करना, सोते से  
उठाना, जागृत करना, मंत्र आदि का सिद्ध करना ।  
जगार दे० ( स्त्री० ) जागरण ।  
जगावहु दे० ( क्रि० ) जगाधो, उठाधो, जागृत करो ।  
जगेसरतद् ( पु० ) यज्ञेश्वर, यज्ञपुरुष, यज्ञस्वामी, विष्णु ।  
जघन तद् ( पु० ) कमर के नीचे का भाग, कमर, कटि,  
उपस्थ, कटिदेश ।—कूप ( पु० ) चूतड़ों पर का  
गड्ढा ।—चपलता ( स्त्री० ) नृत्य विशेष, नृत्य का  
एक भेद, व्यभिचारिणी, दुराचारिणी, बुराया ।  
जघन्य तद् ( पु० ) अस्त्रिम, चरम, पीछे का ।  
निम्नित, गहिँत, कुसित, अचम, नीच, अन्धधन ।  
—ज ( पु० ) छोटा, कनिष्ठ, युद्ध, चौपा वण ।  
जङ्गम तद् ( पु० ) चलने वाला, अस्थायी, गति शक्ति  
विशिष्ट, अहिच्छिन्नु । शीवों का एक भेद ।—कुटी  
( स्त्री० ) छत्र, आतपत्र ।—ता ( स्त्री० ) जङ्गम का  
धर्म या स्वभाव, चाहत, चपलता, अस्थिरता ।  
जङ्गल तद् ( पु० ) वन, कानन, अरण्य, गिना, जल  
का देश, निर्जन स्थान, वृक्षों का समूह ।—सेतु  
( पु० ) चलने वाला सेतु, जो बाँध चक सके, हटने  
वाला पुल । [विशेष, गवाँच, गौख, रिङ्की ।  
जङ्गला तद् ( पु० ) उजाड़, वन्य, उतपर, रागिनी  
जङ्गलात तद् ( पु० ) वनसमूह, घोषन, वन्य,  
वमनय । [श्लेष, वनवासी ।  
जङ्गली तद् ( पु० ) वन्य, बनोद्भव, वनैला, वन में  
जङ्गल तद् ( पु० ) रोच विशेष, एक प्रकार की  
झाड़, बाँध, सेतु, पुल, जॉट, पगार, भगीना,  
झड़ाधार बढ़ा तसला ।

जङ्गल तद् ( स्त्री० ) जीव, जानु के नीचे का भाग ।  
जङ्गिया दे० ( पु० ) वस्त्र विशेष, जिसे कसरत करने के  
समय पहलवान पहनते हैं । घाच्छादन वस्त्र,  
कटिपट, जङ्गल पर पहनने का वस्त्र ।  
जचना दे० ( क्रि० ) पसन्द होना, अटकल होना,  
अटकला जाना, किसी वस्तु की चन्दाई बुराई और  
दाम का मालूम होना, परीक्षित होना ।  
जचाना दे० ( क्रि० ) अटकल करना, परीक्षा कराना  
खोटे खरे की परीक्षा कराना, पहचनवाना, अनु-  
सन्धान करना ।  
जचावट दे० ( स्त्री० ) जाँच, परीक्षा, अनुसन्धान ।  
जचा दे० ( स्त्री० ) प्रसूता स्त्री ।  
जच्छ ( पु० ) यश ।  
जजमान ( पु० ) यजमान ।  
जजाल दे० ( पु० ) बलकन, कंकड़, प्रपञ्च, दुःख,  
हँस, बलभाव, उद्दिग्धता, व्याकुलता, घराहट,  
कठिनता ।  
जजालिया दे० ( पु० ) गवासी, उपद्रवी, कंकड़िया ।  
जजाली दे० ( पु० ) बजेयी, दुःखी, घरावा हुआ,  
प्रपञ्ची, बलकन में फँसा हुआ ।  
जज्ञोपवीत तद् ( पु० ) यज्ञोपवीत, मण्डसूत्र, जनेऊ,  
उपवीत, संस्कार विशेष, धरमा, मतवन्ध, इस  
संस्कार के अधिकारी श्रवण हैं । यथाक्रम ८-११  
और १२ वर्ष की अवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय और  
वैश्य बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार होता है ।  
जजानि तद् ( पु० ) ययाति, एक राजा का नाम, एक  
चन्द्रवंशी राजा ( ययाति देखो ) ।  
जट तद् ( स्त्री० ) जटा, मिसे हुए बाँध, बच्चों की कटुटी ।  
जटना दे० ( क्रि० ) मूँड़ना, मूमना, दगना, धोखा  
देकर खे लेना ।  
जटल तद् ( स्त्री० ) जटिल, कटिन, गप, एकपाद ।  
जटला दे० ( पु० ) समूह, समुदाय, भीड़, पैठका,  
जनता ।  
जटा तद् ( स्त्री० ) एक में सते हुए बहुत से बाल,  
मापुषों की जटा, अद्विक्ता, अटामीवी नामक  
औरवि विशेष, शनावरि, कर्पासगुच्छ, वेद पाठ  
का एक भेद ।—जट ( पु० ) जटा का समूह,  
संजन बहुत केश, शिव की जटा ।—जटान ( पु० )

जगद्धर तत्० ( पु० ) संस्कृत के एक पण्डित, न्याय वैशेषिक और व्याकरण के बड़े पण्डित थे। वेणी-संहार, वासवदत्ता, मालती माधव आदि संस्कृत ग्रन्थों की टीकाएँ इन्होंने बड़ी योग्यता से लिखी हैं। उनके अन्त में इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है। द्विजाति कुत्रतिलक चण्डेश्वर नामक एक प्रसिद्ध मीमांसक पण्डित थे, उनके पुत्र रामेश्वर पण्डित भी प्रसिद्ध मीमांसक थे। रामेश्वर के पुत्र गदाधर, गदाधर के पुत्र विद्याधर और विद्याधर के पुत्र रत्नधर हुए। इन्होंने रत्नधर ही के पुत्र जगद्धर थे। जगद्धर के पिता की उपाधि " श्रीमन्महोपाध्याय, पण्डितराज, महाकविराज, धर्माधिकारी " थी, इससे इनके कुल की उच्चता जान पड़ती है। पण्डितधर रामकृष्ण भण्डारकर के निर्ययानुसार इनका समय १४ वीं सदी के पहिले नहीं हो सकता।

जगद्धात्री तत्० ( स्त्री० ) चतुर्भुजा, सिंहवाहिनी, भगवती, शरतकाल की दुर्गापूजा के अनन्तर इनकी पूजा होती है। कहते हैं एक समय देवताओं को यह अभिमान हुआ कि हम लोगों से कोई दूसरा बड़ा नहीं है। ईश्वर या परमेश्वर कोई वस्तु नहीं है। देवताओं के ऐसे उद्वत विचारों को समझ कर, भगवती ज्योतिरूप में उनके सामने आविर्भूत हुईं देवता इस ज्योति का निश्चय नहीं कर सके, अतएव इसके परिचय के लिये सँस्रमति से वायु भेजे गये। ज्योति के मध्यस्थित भगवती दुर्गा उनके सामने एक तृण रख कर बोली, यदि तुम इसको उठा लो तब हम तुमको शक्तिमान् समझेंगी, परन्तु पहाड़ों को उखाड़ने वाले वायु से वह तृण नहीं उठ सका, इसी प्रकार अग्नि आदि और देवता भी प्राये, परन्तु उनमें कोई भी सफल नहीं हुआ; तब उनका अभिमान दूर हुआ और उन्होंने समझा कि हम लोगों से भी बड़ कर कोई प्रतापी है। उसी मूर्ति को परमेश्वरी समझ कर, देवता पूजने लगे। यह भगवती रक्ताम्बरा, त्रिनयना और चतुर्भुजा हैं। सरस्वती।

जगता तत्० ( कि० ) उठना, प्रबुद्ध होना, जागृत होना, निद्रा त्याग करना, नींद से उठना, उत्साहित होना, उत्तेजित होना, देवी देवता, या मृत का

अधिक प्रभाव दिखाना, उभड़ना, उभड़ना, बलना, जलना, कार्य करने के लिये तैयार होना।

जगन्नाथ तत्० ( पु० ) श्री क्षेत्र के देवता, जगदीश।

( देखो इन्द्रधनुष ), ईश्वर। — पण्डितराज ( पु० ) यह अबङ्कार शास्त्र के बड़े प्रसिद्ध विद्वान् थे। दिल्ली के बादशाह के दरबार में थे। यह अपने विषय में लिखते हैं " दिल्लीवल्लभपण्डितवतले कीर्तनवीन वयः " यह तैलङ्ग ब्राह्मण थे, परन्तु काशी में रह कर इन्होंने विद्याभ्यास किया था। इनके पिता का नाम पेरुमह था, माता का नाम लक्ष्मी और ज्ञानेन्द्रभिषु गुरु का नाम था जयपुर के राजा जयसिंह की आज्ञा से इन्होंने जयपुर और काशी में वेदशालायें बनायीं थीं। दिल्ली के बादशाह ने इन्हें पण्डितराज की पदवी दी थी। इन्होंने संस्कृत की बहुत सी पुस्तकें पनायीं थीं। रसगङ्गाधर, मनोरमाकुचमर्दन, गङ्गाजहरी, कल्याणजहरी, अरववाही काम्य, मामिनी विलास, प्राणभरण, आसफविलास आदि इनके बनाये ग्रन्थों के नाम हैं। किसी मुसलमानिन से इनका प्रणय हो गया था। अतएव काशी के पण्डितों ने इनको जाति बाहर कर दिया। उन्होंने अपनी बुद्धि प्रमाणित करने के लिये गङ्गा के किनारे बैठ कर गङ्गा जहरी बनाते बनाते प्राण त्याग किये। बुढ़ापेमें कुछ दिनों तक ये मधुपुरी में भी रहे थे।

जगन्निवास तत्० ( पु० ) ईश्वर, विष्णु।

जगन्निवन्ता तत्० ( पु० ) विष्णु, ईश्वर।

जगन्मय तत्० ( पु० ) विष्णु। — ( स्त्री० ) लक्ष्मी।

जगन्माता तत्० ( स्त्री० ) लक्ष्मी, दुर्गा, आदि शक्ति।

जगन्मोहिनी तत्० ( स्त्री० ) महाभाया।

जगन्मया या जगन्मया दे० ( शु० ) चमकीला, चमकदार प्रमायुक्त, प्रभावान्।

जगन्मगित दे० ( कि० ) चमचमाता हुआ, दीप्तिमान्।

जगन्मगाना दे० ( कि० ) शोभना, चमकना, दीपना।

जगन्माता तत्० ( स्त्री० ) जगत् की माता, देवी, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती।

जगजोनी तत्० ( स्त्री० ) ब्रह्मा, विधाता।

जगरमगर ( शु० ) जगमग, चमकीला।

जगवल्लभा तत्० ( स्त्री० ) वेश्या, पादुर, पत्थुरिया।

वाला, अग्नि, सुधा, वधुचा ।—निल ( पु० )  
उदराग्नि, सुधा, वधुचा ।—मय ( पु० ) अतीसार,  
जलोदर, जलोदरोगी ।

जठरा तद् ( पु० ) सक्त, हड़, कठिन, कठोर ।

—गि ( स्त्री० ) पेट की आग, जठराग्नि ।

जठराम तद् ( पु० ) जलोदर, जठरामय, जलन्धर ।

जठेरा दे० ( पु० ) यड़ा, जेठा, अग्रज, ( स्त्री० ) जठेरी  
बड़ी, बुढ़ी, मान्धा, पूजा ।

जड़ तत् ( पु० ) मूल, यहरा, मूढ़, निर्बोध, निर्बुद्धि,  
बलन शक्ति हीन, दुष्ट, अकार्यकारी, जो वेद  
पढ़ने में असमर्थ हो ( पु० ) जळ, पर्वत, वृक्ष,  
सीसा नाम का धातु ( स्त्री० ) मूल, पेड़ या पौधों  
का वह भाग जो ज़मीन के भीतर रहता है ।  
नींव ।—क्रिय ( पु० ) दीर्घसूत्री, आलसी, अलस,  
निष्साही ।—ता ( स्त्री० ) शून्यता, अक्षपन,  
मूढ़ता, स्तब्धता, मूर्खता, बेवकूफी ।—जन्तु  
( पु० ) मूढ़जीव, मूर्ख जीव, निर्बोध पशु पक्षी  
आदि ।—बुद्धि ( पु० ) अज्ञान, निर्बोध, मूर्ख,  
मूढ़ ।—मति ( पु० ) निर्बुद्धि, मूर्ख ।

जड़न दे० ( पु० ) गहने जड़ने का काम, गहनों में  
मोती परपर आदि जड़ना ।

जड़ना दे० ( क्रि० ) लगाना, बैठाना, फटकाना,  
मारना, साटना, नग बैठाना ।

जड़पेड़ दे० ( स्त्री० ) मूल सहित पेड़, समस्त पेड़,  
समूचा वृक्ष ।—से उखाड़ना । ( वा० ) जड़मूल से  
उखाड़ना, समूल नष्ट कर देना, निर्मूल कर देना,  
मूल समेत उखाड़ डालना ।

जड़घट दे० ( स्त्री० ) छाप, छट, छटा, बराद की जड़ ।

जड़भरत तत् ( पु० ) शालग्राम नामक स्थान के  
भरत नामक राजा किसी वन में वानप्रस्थ आश्रम  
ग्रहण करके रहते थे । एक दिन गङ्गा के निकट,  
एक दुःखी सृगशिशु को इन्होंने देखा । दया  
परवश होकर यह उसे अपने आश्रम में ले आये ।  
उसको पालने पोसने लगे । यहाँ थोड़े दिन बीत  
गये । भरत का प्रेम उस सृगशिशु से बहुत  
अधिक हो गया । यहाँ तक कि मरते समय तक  
भी भरत उसे नहीं भूल सके । उसी का स्मरण  
करते करते भरत का प्राण छूट गया । सृगशेनि

में भरत का जन्म हुआ । परन्तु इनको अपने पूर्व  
की बातें स्मरण थीं । अतएव अपने पूर्व आश्रम  
में जाकर सूखी घास आदि से इन्होंने अपना  
जीवन बिताया । दूसरे जन्म में यह ब्राह्मण हुए ।  
विषयोपभोग आदि से सांसारिक विषयों में न फँसने  
के लिये, यह वन्यभक्ष के वेश में रहने लगे । अपनी  
विद्या या बुद्धि का परिचय यह किसी को नहीं देते  
थे । अतएव इनको मूर्ख समझ कर, ताँव वाले  
काम करा लिया करते थे घोर दुःख भोजन के  
लिये इन्हें दे दिया करते थे । पिता की मृत्यु के  
बाद भाइयों के व्यवहार से यह वन में जाकर  
भगवद्भजन करने लगे । [वाला धान ।

जड़हन दे० ( पु० ) अगहनिया धान, कातिक में कटने

जड़हनिया दे० ( पु० ) कतिका धान । [पक्षीकारी ।

जड़ाई दे० ( स्त्री० ) जड़ने का काम, जड़ने की मजूरी,

जड़ाऊ दे० ( पु० ) जड़ा हुआ, जड़ित, जड़ाई किया

हुआ, पच्ची किया हुआ, नग जड़ा हुआ, लचित,

मण्डित, संव्रज ।

जड़ाना दे० ( क्रि० ) जड़ाई करना, जड़वाना, पच्ची

का काम कराना, नग बैठाना, शीत खाना ।

जड़ाव दे० ( पु० ) जड़ने का काम, पच्चीकारी ।—ट

( स्त्री० ) जड़ने का काम या उसका भाव । [कपड़े ।

जड़ावर दे० ( स्त्री० ) जाड़े की सामग्री, जाड़े के

जड़ित तद् ( पु० ) जड़ा हुआ, जड़ाई का काम किया

हुआ, रखादि जड़े हुए ।

जड़िनी दे० ( स्त्री० ) जड़ स्त्री, दुष्टा, मूर्खा ।

जड़िया ( पु० ) जड़ने वाला, सुनार की एक जाति ।

जड़ी दे० ( स्त्री० ) मूल, मुरि, जड़ी हुई, जड़ दी गई ।

—वूटी ( स्त्री० ) दवाई, औषध, हज़री, मूल ।

जड़ोभूत तत् ( पु० ) स्तम्भित, चकित, आश्चर्यित,

स्तम्भीकृत । [हील, ( सर्व० ) जो, जितने, जेतने ।

जत दे० ( स्त्री० ) चाख, भाँति, रीति, प्राकृति, डौब,

जतन तद् ( पु० ) यत्न, उपाय, उद्योग, परिश्रम ।

जतनी तद् ( पु० ) यत्नी, उद्योगी, उपायी, परिश्रमी

सुचतुर, आलाह । [से सूचना देना ।

जताना दे० ( क्रि० ) चेताना, यनाना, यतलाना, पढ़ने

जतौ तद् ( पु० ) यत्नी, संन्यासी, योगी, भित्तारी ।

जनु तद् ( स्त्री० ) लाख, लाघा, लाह, पीपल का मोड़ ।

प्रदीप्त, दीपक, महादेव का तीसरा नेत्र, —टङ्क ( पु० ) महेश, महादेव, रुद्र ।—घर ( पु० ) महादेव, बालक, योगी । एक कोशकार का नाम, बुद्धभेद ।—वल्ली ( स्त्री० ) महादेव की जटा, गन्ध-माली नामक एक औषधि ।—भार ( पु० ) जटा का भार, जटा समूह, जटा समुदाय, बहुल लम्बी लम्बी जटा ।—मांसी ( स्त्री० ) औषधि विशेष, सुगन्ध द्रव्य विशेष, बालछड़ ।

जटायु तत्त्वं ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध पक्षि विशेष, सम्पाति नामक पक्षिराज का छोटा भाई, महाराज दशरथ का मित्र, सूर्य सारथि अरुण का पुत्र, यह महाराज अजोष्याधिपति दशरथ के मित्र थे । जब पद्मवती से रावण सीता जी को हर के लिये जाता था तब जटायु ने सीता का विलाप सुन कर उनको रावण के हाथ से छुड़ाने के बहुत यत्न किये थे, जटायु ने बड़ी धीरता से युद्ध किया रावण का रथ टूट गया, परन्तु अन्त में रावण के अस्त्रप्रहार से जटायु के पंख कट गये, वे भूमि पर गिर गये । जब राम लक्ष्मण, सीता को छुड़ाने निकले थे, तब उनकी भेट जटायु से हुई थी । सीता का समाचार सुनाकर जटायु परलोकगामी हुए । श्रीरामचन्द्र ने अपने पिता के मित्र की अन्तिम क्रिया स्वयं की थी ।

जटाल तत्त्वं ( पु० ) जटायुक, जटाधर, जटाधारी, ( पु० ) कचूर, बटवृष, वरगद, पेड़ का पेड़, गुग्गुल । जटाला तत्त्वं ( स्त्री० ) जटावती, जटावाली, जटामासी, छड़, छर ।

जटालुर तत्त्वं ( पु० ) एक राक्षस का नाम, युधिष्ठिर आदि जब बदरिकाश्रम में रहते थे, उस समय यह राक्षस द्रौपदी को दण्ड करने की इच्छा से वहाँ आया और अपने को बड़ा बुद्धिमान् पण्डित बता कर रहने लगा । एक दिन भीमसेन शिकार के लिये वन गये हुए थे । राक्षस, युधिष्ठिर नकूल और सहदेव के साथ द्रौपदी को बाँध कर ले जाने लगा । संयोगवश भीमसेन से मार्ग में भेट हो गयी, उन्होंने राक्षस को मारकर अपने भाई और द्रौपदी का उद्धार किया ।

जटित तत्त्वं ( पु० ) जड़ित, जड़ा हुआ, संवष्ट, जड़ाज ।

जटिया दे० ( पु० ) जटायुक, जटाविशिष्ट, जटाधारी । जटिल तत्त्वं ( पु० ) जटाविशिष्ट, जटाधारी, जो सरसतापूर्वक न समझा जाय, कठिन, कठोर बल-मन की बातें हुर्बोध । बटवृष, महाचारी, साधु । एक विष्णुभक्त बालक, इसके विषय में बिलम्ब बात कही जाती है । यह पाठशाला जाते डरता था । इसकी माता गोविन्द गोविन्द भजने को कहा करती थी । माता के उपदेशानुसार यह गोविन्द नाम का स्मरण करता हुआ पाठशाला जाने लगा । उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान् बालक के रूप में उसके साथ खेला करते थे । एक दिन जटिल पाठशाला में ठीक समय पर नहीं जा सका । गुरु के कारण पूँछने पर उसने ठीक ठीक बता दिया, परन्तु उन्होंने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया, उसको बँत-से पीटा, परन्तु उसकी देह पर बँत का दाग नहीं पड़ा । यह देख गुरु को यड़ा आश्चर्य हुआ । एक दिन गुरु के यहाँ अस्व था, उन्होंने दही ले आने के लिये जटिल को कह रखा था । ब्राह्मण भोजन के समय एक कूड़िया दही लेकर बालक पहुँचा, लोग उसको किड़की सुनाने लगे । उसने कहा कि "मेरे मित्र गोविन्द ने कहा है कि चाहे कितने ही आदमी इसमें से खाँय परन्तु दही में कमी न होगा" । ऐसा ही हुआ । सब लोगों को विश्वास हुआ । जटिल के साथ गोविन्द के दर्शन करने के लिये गुरु वन में गये ।

जटिला तत्त्वं ( स्त्री० ) राधा की सास का नाम, यह आनन घोष की माता थी । दुर्मद नाम का एक और इसके पुत्र था और एक कन्या थी जिसका नाम कुटिला था । कृष्णप्रणयिनी राधा के चरित्र को यह अत्यन्त कलङ्कित समझती थी । प्रह्लाधारिणी, पीपल, वष, दोनों, गौतम वंश की एक ऋषिकन्या जो सप्तश्रृणियों के पुत्र को स्वाही गयी थी ।

जटी तत्त्वं ( पु० ) बटवृष, वरगद का पेड़, शिवजी, महादेव, पाकर । [एक चिन्ह ।

जटुज दे० ( पु० ) तिल, मसा, लहसन, शरीर में का

जठर तत्त्वं ( पु० ) बदर, पेड़, ( पु० ) वज्र, कठिन, कठोर ।—गङ्गा ( पु० ) पेट की आग, अन्न पचाने

वाला, धमि, चुधा, बभुचा ।—अनल ( पु० )  
उदरामि, चुधा, बभुचा ।—अमय ( पु० ) अतीसार,  
जलोदर, जलोदरोगी ।

जठरा तद् ( पु० ) सप्त, हृद्, कटि, कठोर ।

—गि ( स्त्री० ) पेट की धाम, जठरामि ।

जठराम तद् ( पु० ) जलोदर, जठरामय, जलन्धर ।

जठरा दे० ( पु० ) पड़ा, जेठा, अग्रज, ( स्त्री० ) जठरी  
घड़ी, घड़ी, मान्या, पूया ।

जड़ तत् ( पु० ) मूल, यहरा, मूढ़, निर्बोध, निर्बुद्धि,  
चक्रन शक्ति हीन, दुष्ट, अकार्यकारी, जो वेद  
पढ़ने में असमर्थ हो ( पु० ) जड़, पर्वत, वृक्ष,  
सीसा नाम का धातु ( स्त्री० ) मूल, पेड़ या पौधों  
का वह भाग जो ज़मीन के भीतर रहता है।  
गोंव ।—क्रिय ( पु० ) दीर्घसूत्री, आलसी, अलस,  
निस्साही ।—ता ( स्त्री० ) शून्यता, अकल्पन,  
मूढ़ता, स्तब्धता, मूर्खता, येवहूकी ।—जन्तु  
( पु० ) मूढ़जीव, मूर्ख जीव, निर्बोध पशु पक्षी  
आदि ।—बुद्धि ( पु० ) अज्ञान, निर्बोध, मूर्ख,  
मूढ़ ।—मति ( पु० ) निर्बुद्धि, मूर्ख ।

जड़न दे० ( पु० ) गहने जड़ने का काम, गहनों में  
मोती परपर आदि जड़ना ।

जड़ना दे० ( क्रि० ) लगाना, बैठाना, फटकाना,  
मारना, साटना, नग बैठाना ।

जड़पेड़ दे० ( स्त्री० ) मूल सहित पेड़, समस्त पेड़,  
समूचा वृक्ष ।—से उखाड़ना । ( वा० ) जड़मूल से  
उखाड़ना, समूल नष्ट कर देना, निर्मूल कर देना,  
मूल समेत उखाड़ डालना ।

जड़घट दे० ( स्त्री० ) सुत, हट, ठूठा, धरगद की जड़ ।

जड़भरत तत् ( पु० ) शालग्राम नामक स्थान के  
भरत नामक राजा किसी वन में वानप्रस्थ आश्रम  
ग्रहण करके रहते थे । एक दिन गङ्गा के निकट,  
एक दुःखी मृगशिशु को इन्होंने देखा । दया  
परवश होकर यह उसे अपने आश्रम में ले आये ।  
उसके पालने पोसने लगे । योंही थोड़े दिन बीत  
गये । भरत का प्रेम वंश मृगशिशु से बहुत  
अधिक हो गया । यही नष्ट कि मरते समय तक  
भी भरत उसे नहीं भूल सके । उसी का स्मरण  
करते करते भरत का प्राण छूट गया । मृगयोनि

में भरत का जन्म हुआ । परन्तु इनके अपने पूर्व  
की बातें स्मरण थीं । अतएव अपने पूर्व आश्रम  
में जाकर सूखी घास आदि से इन्होंने अपना  
जीवन बिताया । दूसरे जन्म में यह ब्राह्मण हुए ।  
विषयोपयोग आदि से सांसारिक विषयों में न पँसने  
के लिये, यह वनमत्त के वेश में रहने लगे । अपनी  
विद्या या बुद्धि का परिचय यह किसी को नहीं देते  
थे । अतएव इनके मूर्ख समझ कर, गाँव वाले  
काम करा लिया करते थे योंग कुछ भोजन के  
लिये इन्हें दे दिया करते थे । पिता की मृत्यु के  
बाद भाइयों के व्यवहार से यह वन में जाकर  
भगवद्भजन करने लगे । [वाका धान ।

जड़हन दे० ( पु० ) अगहनिया धान, कातिक में कटने  
जड़हनिया दे० ( पु० ) कतिका धान । [पक्षीकारी ।  
जड़ाई दे० ( स्त्री० ) जड़ने का काम, जड़ने की मजूरी,  
जड़ाऊ दे० ( पु० ) जड़ा हुआ, जड़ित, जड़ाई किया  
हुआ, पच्ची किया हुआ, नग जड़ा हुआ, लचित,  
मण्डित, संवन्न ।

जड़ाना दे० ( क्रि० ) जड़ाई करना, जड़वाना, पच्ची  
का काम कराना, नग बैठाना, शीत खाना ।

जड़ाव दे० ( पु० ) जड़ने का काम, पच्चीकारी ।—ट  
( स्त्री० ) जड़ने का काम या उसका भाव । [कपड़े ।

जड़ावर दे० ( स्त्री० ) जाड़े की सामग्री, जाड़े के  
जड़ित तद् ( पु० ) जड़ा हुआ, जड़ाई का काम किया  
हुआ, रसादि जड़े हुए ।

जड़िनी दे० ( स्त्री० ) जड़ स्त्री, दुष्टा, मूर्खा ।

जड़िया ( पु० ) जड़ने वाला, सुनार की एक जाति ।

जड़ी दे० ( स्त्री० ) मूल, मूरी, जड़ी हुई, जड़ दी गई ।

—वूटी ( स्त्री० ) दवाई, औषध, हज़री, मूल ।

जड़ीभूत तत् ( पु० ) स्तम्भित, चकित, आश्चर्यित,  
स्तब्धीकृत । [खील, ( सर्व० ) जो, जितने, जेते ।

जत दे० ( स्त्री० ) चाल, मति, रीति, प्रकृति, डौब,

जतन तद् ( पु० ) यत्न, उपाय, उद्योग, परिश्रम ।

जतनी तद् ( पु० ) यत्नी, उद्योगी, उपायी, परिश्रमी  
सुखतुर, चालाक । [से सूचना देना ।

जताना दे० ( क्रि० ) चेताना, धताना, यतनाना, पहले

जतौ तद् ( पु० ) यत्ती, संन्यासी, योगी, मित्रारी ।

जतु तत् ( स्त्री० ) लास, चाचा, लाह, पीपल का मोड़ ।

जनुक तत् ( पु० ) जाख, हाँग, जटुल ।

जनुगृह तत् ( पु० ) जाचागृह, लाह का गृह,  
(जनुगृह ही में दुर्योधन ने पाण्डवों को बन्द कराके  
आग लगवा दी थी ।)

जनु तत् ( पु० ) गले की हड्डी, कण्ठला, गले के  
वपरी भाग की हड्डी, कन्धे की जड़ ।

जया तत् ( अ० ) यथा, जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों ।

जया तद् ( पु० ) यूय, मण्डली, दल, समूह, समान,  
टोली, कुंड ।—वाधना ( वा० ) यूय बनाना, दल  
वाधना, दलबन्दी करना ।

जयायित तद् ( अ० ) यथास्थित, ज्यों का त्यों, जहाँ  
का तहाँ, समुचित, योग्य, पूर्ववत्, जैसे का तैसा,  
पहिले ही सा ।

जयार्थ तद् ( अ० ) यथार्थ, ठीक ठीक, यिलकुल ठीक,  
बहुत ही ठीक, उचित, बहुत उत्तम ।

जयोचित तद् ( अ० ) यथायोग्य, यथोचित, जैसा  
उचित हो, उचित, योग्य, जैसा योग्य हो, वाजिबी ।

जद तद् ( अ० ) जय, यद्, जिस समय ।

जदपि तद् ( अ० ) यद्यपि, भले ही, पूर्व कथित वाक्य  
के अर्थ में कुछ विशेष अर्थ इसके द्वारा कहा जाता है ।

“कूलै फरे न वेंत, जदपि सुधा भरपहिं अजद” ॥

—रामायण ।

जदु तद् ( पु० ) यदु, यादव, अर्द्धवंशीय चत्रिय ।

जदुनाथ तद्  
जदुनायक तद्  
जदुपति तद्

} भावात् श्रीकृष्णचन्द्र ।

जदुर्वसी तद् ( पु० ) यदुर्वशी, यादव, यदुकुल के ।

जदुराई या जदुराई तद् ( पु० ) श्रीकृष्ण, यादवपति ।

जदुराय  
जदुवर  
जदुवीर

} तद् ( पु० ) श्रीकृष्णचन्द्र ।

जदपि तद् ( अ० ) जदपि, यद्यपि, जोभी अगर्चि ।

जद्वद् तद् ( पु० ) अकथनीय बात, दुर्बचन ।

जन तत् ( पु० ) मनुष्य, मानव, आदमी, व्यक्ति,  
दास, अनुयायी, प्रजा, देहाती, समुदाय, अंग,  
सप्तमहा व्याहृतियों में पाँचवों, एक राक्षस का नाम ।  
लोक महर्लोक के ऊपर का लोक ।

जनक तत् ( पु० ) पिता, जन्मदाता, उत्पन्न करने वाला,  
मिथिला पुरी के राजघराने की वंशधि । ) जनक

वंश के पूर्वपुरुष का नाम निमि था । निमि के पुत्र  
का नाम मिथि । मिथि के राजत्व-काल में विश्वेक्ष  
का नाम मिथिना पड़ा था । जनक मिथि के पुत्र थे ।

इन्होंने जनक के नाम पर कुल का भी नाम जनक  
पड़ा । सीता के पिता का नाम सीरध्वज जनक था ।

सीरध्वज के छोटे भाई का नाम कुराध्वज था ।

—तनया ( स्त्री० ) जनक की कन्या, सीता,  
जानकी ।—पुर ( पु० ) जनक की राजधानी,  
मिथिला ।—नन्दिनी ( स्त्री० ) सीता ।—सुता  
( स्त्री० ) सीता, जानकी ।

जनकौरा तद् ( पु० ) जनक राजा के सम्बन्धी, जनक  
के कटुम्भी, जनक के पक्ष का ।

जनखा ( पु० ) हिजड़ा, नामद, अनाना ।

जनङ्गम तद् ( पु० ) चाण्डाल, अधम जाति, नीच  
जाति, स्वपक्ष । [साधारण ।

जनता तत् ( स्त्री० ) लोक समूह, जनसमुदाय, सर्व-

जनन तत् [ जन् + अनट् ] जन्म, उत्पत्ति, वंश, कुल,  
पिता, परमेश्वर, प्रसव ।—शौच ( पु० ) बालक  
उत्पन्न होने का सूतक ।

जनना दे० ( क्रि० ) जन्म देना, उत्पन्न करना, प्रसव  
करना, उत्पत्ति करना, सन्तति उत्पन्न करना ।

जननि तत् ( स्त्री० ) माँ, माई, अम्मा ।

जननी तत् ( स्त्री० ) माता, माँ, अम्मा, बुढ़ी का वृक्ष,  
चमगादड़, दया, गन्ध द्रव्य विशेष ।

जनपद तत् ( पु० ) देश, प्रान्त, प्रदेश, जनस्थान, लोकालय,  
मनुष्यों की वासभूमि । [की चर्चा, तिरस्कार, जनरव ।

जनप्रवाद तत् ( पु० ) लोकप्रवाद, लोकनिन्दा, निन्दा

जन्म तत् ( पु० ) उत्पत्ति, जीवन ।—छूँटी ( स्त्री० )

बालक को जन्मते ही ही जाने वाली छूँटी ।—दिन

( पु० ) जन्म होने का दिन ।—धरती ( स्त्री० )

जन्मभूमि ।—पत्नी ( स्त्री० ) जन्मकुण्डली ।

—शौच तत् ( पु० ) यदि जनित अशौच,  
अशौच जो घर में किसी बालक या कन्या के उत्पन्न  
होने पर लगता है ।

जनमाना ( क्रि० ) प्रसव कराना, उत्पन्न कराना ।

जनमे तद् ( क्रि० ) जन्मे, उत्पन्न हुए, पैदा हुए ।

जनमेजय तत् ( पु० ) राजा परीक्षित के पुत्र, पुरु  
राजा के पुत्र ।

जनयिता तत् ( पु० ) पिता, जनक, बाप, जन्मदाता ।  
जनयित्री तत् ( स्त्री० ) माता, जननी, महतारी अम्बा,  
माँ, माँ ।

जनरत्न तत् ( पु० ) लोकापवाद, जनप्रवाह, जनश्रुति,  
ख्याति, प्रसिद्धि, किसी भी बात की चर्चा ।

जनलोक तत् ( पु० ) लोकविशेष, उर्व्वह्य सप्त पवित्र  
लोकों में से एक लोक स्वर्गमेव ।

जनवाद तत् ( पु० ) सम्वाद, समाचार, घर घर की  
चर्चा, लोगों की अफवाह ।

जनवास, जनमांसा तद् ( पु० ) बरातियों के उठरने  
का स्थान, नगर, ग्राम, पुर ।

जनवासे दे० जनवासे में ।

जनश्रुति तत् ( स्त्री० ) किंवदन्ती, अफवाह ।

जनस्थान तद् ( पु० ) दण्डकारण्य, दण्डकारण्य के  
समीपस्थ एक स्थान, जहाँ श्रीरामचन्द्र रहते थे ।

जनहाई दे० ( घ० ) मनुष्य सहित, प्रत्येक मनुष्य,  
प्रतिमनुष्य, हर एक, प्रत्येक व्यक्ति ।

जना दे० ( पु० ) जन, मनुष्य, लोग ( कि० ) पैदा किया ।  
जनाई दे० ( स्त्री० ) जनाने वाली स्त्री, दाई, दाई की

मजदूरी, जता कर, सूचित कर ।

जनातिग तत् ( पु० ) प्रतिमापुत्र, मनुष्य से अधिक,  
मनुष्य की शक्ति से बाहर की ।

जनाधिनाथ तत् ( पु० ) नरपति, राजा, विष्णु ।

जनाना दे० ( कि० ) जन्माना, उत्पन्न करना । दे०

( वि० ) क्षीलमन्थी, नपुंसक, निर्यल, इरपोक स्त्री ।

जनान्तिक तत् ( पु० ) श्रमकाश, गोपन, विषा सम्वाद ।

बादक में आपस में बात करने की एक मुद्रा । हस्त-

सङ्केत से केवल एक मनुष्य को अपने पास बुला

कर धीरे धीरे बात करना जनान्तिक कहा

जाता है ।

जनाव दे० ( पु० ) महाशय, माननीय, श्रेष्ठ, मान्य

पूज्य, सैन, सङ्केत, खलाव, चेताव, सूचना ।—

( कि० ) जना दिया, सूचित कर दिया । [ श्रीकृष्ण ।

जनाईन तत् ( पु० ) विष्णु, भगवान्, नारायण,

जनावर ( पु० ) जानवर, पशु, मूख ।

जनि तत् ( स्त्री० ) जन्म, उत्पत्ति, उद्भव, नारी, स्त्री,

माता, पुत्रपथ, मायी, जनुका, जन्मभूमि । दे०

नहीं, मत, निषेधार्थक ( सर्व० ) जिन ।

जनि का दे० ( स्त्री० ) जेकेकि, पहेली, दो धर्म कहने  
वाले शब्द ।

जन्तित तत् ( पु० ) जन्मा हुआ, उत्पन्न हुआ

जनिता तत् ( पु० ) पिता, पैदा करने वाला

जनित्र तत् ( पु० ) जन्मभूमि, उत्पत्ति स्थान

जनित्री तत् ( पु० ) उत्पन्न करने वाली, माता, माँ

जनियाँ ( पु० ) भ्रैयसी, प्यारी प्राणप्यारी ।

जनी दे० ( स्त्री० ) स्त्री, दासी, माता, कन्या पैदा की ।

जनु दे० ( कि० वि० ) माने, जैसे यथा, जिस तरह,

जिस भाँति । तत् ( स्त्री० ) उत्पत्ति, जन्म ।

जनुक दे० ( घ० ) माने, जना विरोधतः, उपमायक ।

जनेऊ दे० ( पु० ) यज्ञोपवीत, रत्न का दोप, यज्ञसूत्र ।

जनेत दे० ( स्त्री० ) बरात, बराती, विवाहयात्री,

चरयात्रा ।

जनेश तत् ( पु० ) राजा, नृपति ।

जनेपु तत् मनुष्यों में, जन समाज में ।

जनैया ( वि० ) जानने वाला, जन्म देने वाला ।

जनोदाहरण तत् ( पु० ) यश, गौरव, कीर्ति, मान,

प्रतिष्ठा ।

जन्तर तत् ( पु० ) यंत्र, तान्त्रिक यंत्र, कल, यंत्रार ।

—मन्तर ( पु० ) यंत्रमंत्र, जादू टोना, मानमन्त्रि ।

जन्ता दे० ( पु० ) तार खींचने का यन्त्र, बालक जनने

की किया ।—घर दे० ( पु० ) यह घर जिसमें

यथा बना जाय, सौरी ।

जन्ताना दे० ( कि० ) निघोड़ना, कुचल जाना, पित्तजाना ।

जन्तु तत् ( पु० ) प्राणी, जीव, देही, पशु । [ मन्त्र विशेष ।

जन्द् दे० ( पु० ) पारसियों का अत्यन्त प्राचीन धर्म

जन्दा दे० ( पु० ) खेती का एक यन्त्र ।

जन्ना दे० ( पु० ) जन्मना, उपजना, उत्पन्न होना ।

जन्त्र तत् ( पु० ) कल, यन्त्र, यात्रा, गण्डा, तावीज,

जन्तर, टोटका ।

जन्म तत् ( पु० ) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव ।—द ( पु० )

जन्मदाता, पिता, जनक ।—दिन ( पु० ) वर्षादि,

वर्ष दिन, जन्म की तिथि ।—पत्री ( स्त्री० ) छत्र-

कुण्डली, जन्मकुण्डली ।—भूमि ( स्त्री० ) उत्पत्ति-

स्थान ।—शोध ( पु० ) मरण, मृत्यु, जीव धर्म की

समाप्ति ।—स्थान ( पु० ) उत्पत्तिस्थान, स्वदेश ।

जन्माना दे० ( कि० ) उपमाना, उत्पन्न करना ।



जन्मान्तर तत् ( पु० ) दूसरा जन्म, द्वितीय जन्म, अन्य जन्म, [ जन्म सम्बन्धी ।

जन्मान्तरिय तत् ( गु० ) दूसरे जन्म का, अन्य जन्मान्ध तत् ( गु० ) [ जन्म + अन्ध ] अन्ध से इन्ध्या, आजन्म नेत्रहीन, जन्मावधि दृष्टिविहीन ।

जन्माष्टमी तत् ( स्त्री० ) [ जन्म + अष्टमी ] श्रीकृष्ण की जन्मतिथि, भादों कृष्ण पक्ष की अष्टमि, मतान्तर में थावण की कृष्णाष्टमी ।

जन्मोत्सव तत् ( पु० ) [ जन्म + उत्सव ] जन्म दिन का उत्सव, जन्म डझाह, वर्ष गाँठ ।

जन्म तत् ( वि० ) उत्पत्तिशील, उत्पन्न होने वाला, ( पु० ) ज्ञाति, पुत्र, युद्ध, हार, निन्दा, दूँह, बराती, दामाद, पिता, देह, जन्मा, जनसाधारण, राष्ट्र ।  
—जनकभाव ( पु० ) उत्पाद्य-उत्पादक भाव, पिता, पुत्र भाव, नैयायिकों का एक सम्बन्ध विशेष ।

जन्या तत् ( स्त्री० ) माता की संगिनि, बहु की सखी, यधू, प्रीति ।

जन्यु तत् ( पु० ) अग्नि, प्रज्ञा, प्राणी, जन्म सप्त-पिंयों में से एक ।

जप तत् ( पु० ) पुनः पुनः धीरे धीरे कथन, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, बार बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, जप करना, जपना ।—कारी ( पु० ) जापक, जप करने वाला ।—तप ( पु० ) पूजा, अर्चा, भजन, सदाचार, पूजा पाठ ।—नीय ( गु० ) जप करने योग्य, जप्य मन्त्र ।—प्रापण ( गु० ) उपासक, जापक, जप करने वाला, जपनशील ।  
—माला ( स्त्री० ) जप करने की माला, अक्षमाला, जपसूत्र, स्मरणी, सुमिरनी, १०८ दाने की माला ।  
—माली ( स्त्री० ) गोमुखी, एक प्रकार की धैली जिसमें माला रखकर जप किया जाता है ।—यम तत् ( पु० ) जप, ( वाचिक उपांश, और मानसिक रूपे जप के तीन प्रकार हैं ।

जपत तत् ( पु० ) जपता है, जप करता है ।

जपन तत् ( पु० ) देवता का नाम स्मरण, जप ।

जपना तत् ( कि० ) जप करना, मन्त्र उच्चारण करना ।

जपन्ता तत् ( गु० ) जप करने वाला, जापक ।

जपन्ति तत् ( कि० ) जपते हैं, भजते हैं ।

जपा तत् ( स्त्री० ) जपा पुष्प का वृक्ष, गुड़हल का फूल ।

जपीतपी तत् ( पु० ) पूजक, अर्चक, भजमानन्दी जपतपपरायण, तपसी तपस्वी ।

जस तत् ( गु० ) [ जप् + त ] जपित, जप, किया हुआ जब दे० ( अ० ) यदा, जिस समय, जिस काल ।—तक ( अ० ) यावत्, जिस समय तक ।—तलक ( अ० ) जब तक ।

जबड़ा दे० ( पु० ) कला, मुँह के भीतर ऊपर नीचे की हड्डियाँ जिसमें दाढ़ें अड़ी होती हैं ।

जबदना दे० ( कि० ) पूर्ण होना, भर जाना, भरा रहना, सुन न पड़ना, कान का जबदना ।

जबहा दे० ( गु० ) अनाड़ी, भौंदा, नासमस्त, जड़ ।

जबहिया दे० ( गु० ) कुरूप, असुन्दर, भद्दा, कुत्री, कुत्सित आकार वाला । [ सदा, सर्वदा ।

जब न तत्र दे० ( अ० ) अनियमित, बिना समय से, जबलगा दे० (—अ० ) जिस समय तक, जब तक, जब लें । [ बरजोरी, बरपायी ।

जवरई दे० ( स्त्री० ) ज्वाइती, सखी, अन्धाय, प्रबलता,

जवरदस्त दे० ( वि० ) धकी, मजबूत । [ ज्वाइती ।

जवरदस्ती दे० ( स्त्री० ) अन्धाय, अस्वाचार, प्रबलता,

जवरा दे० ( वि० ) बलवान्, ( पु० ) एक जानवर जो दक्षिण अफ्रीका के जङ्गलों में पाया जाता है ।

जमा दे० ( पु० ) जवड़ा, चौहड़ ।

जमाई दे० ( स्त्री० ) जम्हाई ।

जमोरी दे० ( पु० ) एक प्रकार का बड़ा नीयू ।

जम तत् ( पु० ) यम, यमराज, कृतान्त, योग का एक अङ्ग ।—ने ( पु० ) सेयमी । [ चमुकाना ।

जमकना दे० ( कि० ) जम जाना, सख्त होना,

जमकाना दे० ( कि० ) सख्त करना, बँटावा ।

जमघट, जमघटा, जमघट्ट दे० ( पु० ) सीढ़, जमा-बड़ा, ठूढ़ा ।

जमज तत् ( वि० ) यमज, जुहुआँ । [ हर कर ।

जमजम दे० ( अ० ) सदा, निरन्तर, ठहर ठहर, रह

जमड़ा दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की कटारी, जमघर ।

जमदग्नि तत् ( पु० ) एक ऋषि का नाम, जो परशुराम के पिता थे । महर्षि ऋचीक के पुत्र, ये वैदिक ऋषि थे । ऋग्वेद के सूक्तों से जाना जाता है कि जमदग्नि और विन्वामित्र, महर्षि वसिष्ठ के विपक्षी थे । इनका विवाह राजा प्रसेनजित

की कन्या रेणुका से हुआ था। जमदग्नि के पाँच पुत्र थे। रुमणवान्, सुपेन, बहु, विश्वबाहु और राम, यही राम परशु धारण करने के कारण पीछे परशुराम नाम से प्रसिद्ध हुए थे। परशुराम यद्यपि सत्य से छेदते थे, तथापि इनके गुण संय से बढ़े थे। मर्दपि जमदग्नि का र्त्तवीर्य के हाथ मारे गये थे, पीछे परशुराम ने यज्ञ कर जीवित किया था।

जमदीया तद् ( पु० ) यमदीपक, अर्थात् कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को जो जम के नाम से घर के बाहर दिया जाता है।

जमदुतिया तद् ( स्त्री० ) यमद्वितीया, यैदा द्वैज। कार्तिक शुक्ल २। इस दिन मथुरा में विश्रामघाट पर स्नान करने का विशेष माहात्म्य है।

जमदूत तद् ( पु० ) यमदूत, मृत्यु के दूत, मृत्यु चिह्न, जो मरने के पहले होते हैं।

जमधर तद् ( पु० ) कटार, विदूषा, अन्नविरोध, तीली नोक घासी एक प्रकार की छुरी।

जमन तद् ( पु० ) यमन, म्लेच्छ, मुसलमान।

जमना दे० ( कि० ) उत्पन्न होना, निकलना, उगना, अंकुरित होना, बढ़ना, बढ़ होना, गाढ़ा होना, घन होना, दही का जमना, पानी का जमना आदि।

जमनिका तद् ( स्त्री० ) जवनिका, परदा, काई।

"हृदय जमनिका बहु विधि लागी।"—तुलसीदास

जमराज तद् ( पु० ) यमराज, धर्मराज, प्राणियों के पाप पुण्य के उपस्थापक एक देवता। लोकपाल विरोध, दण्ड दिया के स्वामी।

जमहाई तद् ( स्त्री० ) झालस से हाथ पैर टूटना, झुम्मा, बदन टूटना, जर्माना। [यात्राप्रसारण।

जमहाना तद् ( स्त्री० ) जमहाई लेना, यात्राविषेय, जमा दे० ( वि० ) जो एक स्थान पर एकत्र किया गया हो, घरोहर के रूप में रखा हुआ धन। ( स्त्री० ) पूँजी धन, "उनकी कुछ जमा थी तो थी ही" लगान, जोड़, यही या कैशजुक का वह भाग जिसमें धामदनी की रकमे दर्ज की जाती हैं।

—खर्च ( पु० ) आय और व्यय।—जथा ( स्त्री० ) धन सम्पत्ति, नगदी और माल।—मार ( वि० ) धेड़मानी से दूसरे का माल मारने वाला।

जमाई तद् ( पु० ) जमाता, दामाद, कन्यापति।

जमात दे० ( स्त्री० ) समूह, साधुओं का समूह, ब्रह्मादि, ("पवहारी थापा की जमात") कथा।

जमादार दे० ( पु० ) देख भाव रखने वाला अधिकारी, मुखिया।

जमानत दे० ( स्त्री० ) ज़िम्मेदारी।

जमाना दे० ( कि० ) चोट मारना, अभ्यास करना, इकट्ठा करना, राशि करना, बंधना, यथास्थान रखना, अपने अपने स्थान पर रखना, उत्पन्न करना, प्रभाव फैलाना, प्रभाव जमाना, तरल पदार्थ को गाढ़ा करना। [दीप्य।

जमालगोटा दे० ( पु० ) एक शीपथ का नाम, रेचक

जमाव दे० ( पु० ) सीढ़ाड़ा, समूह, समुदाय।

जमावट दे० ( पु० ) जुड़ाई, बन्धान, सङ्गठन।

जमावड़ा दे० ( पु० ) सीढ़ाड़ा, समूह।

जमीन दे० ( स्त्री० ) भूमि, पृथिवी, स्थान, सम्पत्ति।

जमींदार दे० ( पु० ) भूमाधिकारी, भूस्वामी।—भूस्वामी की अधिकृत भूमि, जमीन जिस पर जमींदार का कब्जा हो।

जमुना तद् ( स्त्री० ) यमुना नदी, यह नदी कलिंग पर्वत से निकली है और दिल्ली की परिक्रमा करती मथुरा इत्यादि कालपी होती हुई प्रयाग में गङ्गा से मिली है। अम्बल, केन, वेतवा ये तीन नदियाँ इससे मिली हैं। महाभारत के समय में इस नदी की बड़ी प्रतिष्ठा थी, यह सर्वाधिक पुण्यनदी समझी जाती थी। यह नदी गङ्गा की सब से बड़ी सहायिका नदी है।

जमुहात दे० ( कि० ) जमाई लेता है, जमाता है।

जमोगाना दे० ( कि० ) सहजना, सहजाना, अधिकारी को अधिकार सम्भलाना देना, विचराना होना, स्वीकार कराना, जमानत देना।

जस्ता दे० ( कि० ) बढ़ना, अमन, पनपना, अँकुर होना।

जम्पति तद् ( पु० ) दम्पति, जावारति, स्त्री पुरुष, नरनारी। [श्रीवाल।

जम्वाल तद् ( पु० ) पट्टा, कर्दम, कीचड़, सेवाल,

जम्बोरो तद् ( पु० ) नींबू, जम्बोरी नींबू।

जम्बुक तद् ( पु० ) गीदड़, शृगाल, सियार।

जम्बुमाली तद् ( पु० ) राजस विरोध, रावण के सेनापति प्रहस्त का पुत्र।

जन्मान्तर तत् ( पु० ) दूसरा जन्म, द्वितीय जन्म, अन्य जन्म, । [जन्म सम्बन्धी ।

जन्मान्तरीय तत् ( गु० ) दूसरे जन्म का, अन्य जन्मान्ध तत् ( गु० ) [जन्म + अन्ध] जन्म से अन्धा, आन्ध्र जन्म नेत्रहीन, जन्माध्वि दृष्टिविहीन ।

जन्माष्टमी तत् ( स्त्री० ) [जन्म + अष्टमी] श्रीकृष्ण की जन्मतिथि, भादों कृष्ण पक्ष की अष्टमि, मतान्तर में श्रावण की कृष्णाष्टमी ।

जन्मोत्सव तत् ( पु० ) [जन्म + उत्सव] जन्म दिन का उत्सव, जन्म वड़ाह, वर्ष गाँठ ।

जन्म तत् ( वि० ) उत्पत्तिशील, उत्पन्न होने वाला, (पु०) शांति, पुत्र, पुद्ग, हार, निन्दा, बूढ़, बराती, दामाद, पिता, देह, जन्मा, जनसाधारण, राष्ट्र । —जनकभाव (पु०) उत्पाद्य-उत्पादक भाव, पिता, पुत्र भाव, नैयायिकों का एक सम्बन्ध विशेष ।

जन्मा तत् ( स्त्री० ) माता की सगिनि, बहू की सखी, बहू, प्रीति ।

जन्म तत् ( पु० ) अग्नि, ब्रह्मा, प्राणी, जन्म सप्त-विंशों में से एक ।

जप तत् ( पु० ) पुनः पुनः धीरे धीरे कथन, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, बार बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, जप करना, जपना । —फारी (पु०) जापक, जप करने वाला । —तप (पु०) पूजा, अर्घा, भजन, सदाचार, पूजा पाठ । —नीय (गु०) जप करने योग्य, जप्य मन्त्र । —परायण (गु०) उपासक, जापक, जप करने वाला, जपनशील । —माला (स्त्री०) जप करने की माला, चबमाला, जपसूत्र, स्मरणी, सुमिरनी, १०८ दाने की माला । —माली (स्त्री०) गोमुखी, एक प्रकार की बैली जिसमें माला रखकर जप किया जाता है । —यम तत् (पु०) जप, (वाचिक उपाध्य, और मानसिक) जप के तीन प्रकार हैं ।

जपत तद् (पु०) जपता है, जप करता है ।  
जपन तत् (पु०) देवता का नाम स्मरण, जप ।  
जपना तद् (क्वि०) जप करना, मन्त्र का उच्चारण करना ।  
जपन्ता तद् (गु०) जप करने वाला, जापक ।  
जपन्ति तत् (क्वि०) जपते हैं, भजते हैं ।  
जपा तद् (स्त्री०) जवा पुष्प का वृक्ष, गुड़हल का फूल ।

जपीतपी तत् (पु०) पूजक, अर्चक, भजनानन्दी जपतपपरायण, तपसी तपस्वी ।

जप्त तद् (गु०) [जप् + त] जपित, जप किया हुआ जव दे० (अ०) यदा, जिस समय जिस काल । —तक (अ०) यावत्, जिस समय तक । —तलक (अ०) जब तक ।

जवड़ा दे० (पु०) कड़ा, मुँह के भीतर ऊपर नीचे की हड्डियाँ जिसमें डारें जड़ी होती हैं ।

जवदना दे० (क्वि०) पूर्ण होना, भर जाना, भरा रहना, सुन न पड़ना, कान का जवदना ।

जवहा दे० (गु०) थनाड़ी, भौंदा, नासमझ, जड़ ।  
जवहिया दे० (गु०) कुरूप, अव्युन्दर, भद्दा, कुत्री, कुलित आकार वाला । [सदा, सर्वदा ।

जव न तव दे० (अ०) अनिश्चित, बिना समय से, जवलग दे० — (अ०) जिस समय तक, जब तक, जब लो । [धरजोरी, धरयायी ।

जवरद दे० (स्त्री०) ज्वादती, सखी, अन्याय, प्रबलता, जवरदस्त दे० (वि०) यक्षी, मजबूत । [ज्वादती ।  
जवरदस्ती दे० (स्त्री०) अन्याय, अत्याचार, प्रबलता, जवरा दे० (वि०) बलवान्, (पु०) एक जानवर जो दक्षिण अफ्रीका के जङ्गलों में पाया जाता है ।

जभा दे० (पु०) जबड़ा, चौड़ा ।  
जभाई दे० (स्त्री०) जम्हाई ।  
जभीरी दे० (पु०) एक प्रकार का बड़ा मीठ ।

जम तद् (पु०) यम, यमराज, कृतान्त, योग का एक अर्थ । — (पु०) संयमी । [चमुकाना ।  
जमकना दे० (क्वि०) जम जाना, सख्त होना, जमकाना दे० (क्वि०) सख्त करना, बँडाना ।  
जमघट, जमघटा, जमघट्ट दे० (पु०) भीड़, जमा-बड़ा, ठूठा ।

जमज तद् (वि०) यमज, जुहुर्वा । [हर कर ।  
जमजम दे० (अ०) सदा, निरन्तर, ठहर ठहर, रह जमड़ा दे० (स्त्री०) एक प्रकार की कटारी, जमघर ।  
जमदग्नि तद् (पु०) एक ऋषि का नाम, जो परशुराम के पिता थे । महर्षि ऋचीक के पुत्र, ये वैदिक ऋषि थे । ऋग्वेद के सूक्तों से जाना जाता है कि जमदग्नि और विश्वामित्र, महर्षि ऋषि के विषयी थे । इनका विवाह राजा प्रसेनजित

की कथा रेलुका से हुआ था। जमदग्नि के पाँच पुत्र थे। रुमणवान्, सुपेन, बह्म, विश्वयाहु और राम, वहीं राम परशु धारण करने के कारण पीछे परशुराम नाम से प्रसिद्ध हुए थे। परशुराम यद्यपि सय से छोटे थे, तथापि इनके गुण सय से बड़े थे। महर्षि जमदग्नि कार्तवीर्य के हाथ मारे गये थे, पीछे परशुराम ने यज्ञ कर जीवित किया था।

**जमदीया तद् ( पु० )** यमदीपक, अर्थात् कार्तिक कृष्ण श्रोवाशी को जो जम के नाम से घर के बाहर दिया जाता है।

**जमदुतिया तद् ( स्त्री० )** यमद्वितीया, मैया द्वैज। कार्तिक शुक्ल २। इस दिन मथुरा में विश्रामघाट पर स्नान करने का विशेष माहात्म्य है।

**जमदूत तद् ( पु० )** यमदूत, मृत्यु के दूत, मृत्यु चिन्ह, जो मरने के पहले होते हैं।

**जमधर तद् ( पु० )** कटार, बिहूआ, अस्त्रविशेष, तीली नोक वाली एक प्रकार की तुरी।

**जमन तद् ( पु० )** येमन, श्वेच्छ, मुसलमान।

**जमना दे० ( कि० )** उत्पन्न होना, निकलना, उगना, अंकुरित होना, पड़ना, बढ़ना, गढ़ना, गाढ़ा होना, घन होना, वही का जमना, पानी का जमना आदि।

**जमनिका तद् ( स्त्री० )** जवनिका, पादा, काई।

"हृदय जमनिका बहु बिधि लागी।"—तुलसीदास

**जमराज तद् ( पु० )** यमराज, धर्मराज, प्राणियों के पाप पुण्य के व्यवस्थापक एक देवता। लोकपाल विशेष, दक्षिण दिशा के स्वामी।

**जमहाई तद् ( स्त्री० )** बालस से हाथ पैर टूटना, जुम्मा, पदन टूटना, जमीना। [गात्रप्रसारण।]

**जमहाना तद् ( स्त्री० )** जमहाई जेना, गात्रविशेष,

**जमा दे० ( वि० )** जो एक स्थान पर एकत्र किया गया हो, धरोहर के रूप में रखा हुआ धन। ( स्त्री० ) पूँजी धन, "उनकी कुल जमा थी तो भी ही" लगान, जोड़, वही या कैशबुक का वह भाग जिसमें आमदनी की रकमे दर्ज की जाती हैं।

—खर्च ( पु० ) खाय और व्यय।—जया ( स्त्री० ) धन सम्पत्ति, नगदी और माछ।—मार ( वि० )

भेदमानी से दूसरे का माल मारने धाँडा।

**जमाई तद् ( पु० )** जामाता, दामाद, कन्यापति।

**जमात दे० ( स्त्री० )** समूह, साधुओं का समूह, ब्रह्माङ्ग, ("पवहारी यात्रा की जमात") कथा।

**जमादार दे० ( पु० )** देख भाब रखने वाला अधिकारी, मुखिया।

**जमानत दे० ( स्त्री० )** जिम्मेदारी।

**जमाना दे० ( कि० )** चोट मारना, अभ्यास करना, हकूट्टा करना, राशि करना, बाँधना, यथास्थान रखना, अपने अपने स्थान पर रखना, उपस्र करना, प्रभाव फैलाना, प्रभाव जमाना, तरल पदार्थ को गाढ़ा करना। [श्रीपथ।]

**जमालगोटा दे० ( पु० )** एक औषध का नाम, रेशक

**जमाव दे० ( पु० )** भीड़भाड़, समूह, समुदाय।

**जमावट दे० ( पु० )** जुड़ाई, वन्दान, सङ्गठन।

**जमावड़ा दे० ( पु० )** भीड़भाड़, समूह।

**जमीन दे० ( स्त्री० )** भूमि, पृथिवी, स्थान, सम्पत्ति।

**जमींदार दे० ( पु० )** भूस्वामिकारी, भूस्वामी।—भूस्वामी की अधिकृत भूमि, जमीन जिस पर जमींदार का कब्जा हो।

**जमुना तद् ( स्त्री० )** यमुना नदी, यह नदी कलिंग पर्वत से निकली है और दिल्ली की परिक्रमा करती मथुरा बहावा कालपी होती हुई प्रयाग में गङ्गा से मिली है। चम्बल, केन, येतवा ये तीन नदियाँ इससे मिली हैं। महानगर के समय में इस नदी की बड़ी प्रतिष्ठा थी, यह सर्वाधिक पुण्यनदी समझी जाती थी। यह नदी गङ्गा की सब से बड़ी सहायिका नदी है।

**जमुहात दे० ( कि० )** जमाई जेता है, जमाता है।

**जमोगना दे० ( कि० )** सहेजना, सहमाना, अधिकारी को अधिकार सम्मल देना, पिचवानी होना, स्वीकार कराना, जमानत देना।

**जझा दे० ( कि० )** पड़ना, जमना, पत्रपत्र, चँहर होना।

**जम्पति तद् ( पु० )** दम्पति, जायापति, स्त्री पुरुष, नरनारी। [श्रीवाल।]

**जम्वाल तद् ( पु० )** पङ्क, कर्म, फीचड़, सेवाल,

**जम्बीरी तद् ( पु० )** नींबू, जम्बीरी नींबू।

**जम्बुक तद् ( पु० )** गीदड़, गृगाळ, सियार।

**जम्बुमाली तद् ( पु० )** राघव विशेष, रावण के सेनापति प्रहस्त का पुत्र।

जम्बू तत् ( पु० ) जामुन का पेड़ या फल, जम्बू फल । काश्मीर के अन्तर्गत एक नगर, काश्मीर की राजधानी ।—द्वीप ( पु० ) साठ द्वीपों में मुख्य द्वीप । इसमें नौ खण्ड हैं, जिसका एक खण्ड यह भारतवर्ष है । [ करनेवाला, इन्द्र, महेंद्र ।  
जम्भमेदी तत् ( पु० ) जम्भ नामक राक्षस का भेदन जम्भोरी तद् ( पु० ) जम्भोरी नींबू, मरुधा, मरुवक ।  
जम्बू दे० ( पु० ) जम्बू नगर, काश्मीर की शीतकाल की राजधानी ।

जम्हाई दे० ( स्त्री० ) जैभाई ।

जय तत् ( पु० ) जीत, विजय, फतह, शत्रु का पराभव, आशीर्वाद, प्रार्थना । विष्णु भगवान् के द्वारचक का नाम । जय के छोटे भाई का नाम विजय था । ये दोनों भगवान् विष्णु के द्वारचक थे । एक बार सनक आदि ऋषियों को इन लोगों ने विष्णु दर्शन करने जाने नहीं दिया, जिस कारण महर्षियों ने शाप दिया । पुनः इनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर महर्षियों ने कहा कि " हमारा शाप व्यर्थ नहीं हो सकता, तथापि तुम लोग विष्णु से शत्रुता या मित्रता करके मुक्त हो सकते हो । महर्षियों के शाप से जय, सत्ययुग में हिरण्यक, प्रेता में रावण और द्वापर में शिशुपाल हुआ था; विजय सत्ययुग में हिरण्यकशिपु, प्रेता में कुम्भकर्ण और द्वापर में दन्तवक्र हुआ था । इन लोगों ने तीनों जन्म में भगवान् से शत्रुता की और भगवान् के द्वारा मारे जा कर मुक्त हुए ।

—प ( क्रि० ) जीता, विजय किया, जीत लिया ।

—करी तत् ( स्त्री० ) चौपाई नामक एक छन्द का नाम । युधिष्ठिर का बनावटी नाम, लाभ, धर्मीकरण, महाभारत में वर्णित एक नाग का नाम, एक ऋषि का नाम; विश्वामित्र, धृतराष्ट्र, सञ्जय के पुत्रों के नाम, राजा पुरुवसु के पुत्र का नाम, दक्षिण दरवाजे वाला मकान, सूर्य, अरणी नाम का पेड़, इन्द्र पुत्र जयन्त । ( वि० ) विजया ।

—जयकार ( पु० ) जीत, अभ्युदय, आशीर्वादार्थक ।—जीव दे० ( पु० ) अग्निवाहन, प्रणाम ।

" कहि जयजाँच सीस तिन्ह नाये "

—सुखसीदास ।

—पताका ( स्त्री० ) जयध्वनि, जय का कण्डा, जय का निशान, जयध्वजा ।—पत्र ( पु० ) अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के सिर पर बँधा हुआ जेल, विवाद में जयबोधक पत्र, जीतपत्र ।—मङ्गल ( पु० ) राजवाहन नामक हस्ती, उदरनाशक औषधि, प्रत विशेष ।—माल या माली तत् ( स्त्री० ) विजय की माला, वह माला जो स्वर्णवर में कन्या वर को पहनाती है ।—शील तत् ( पु० ) सर्वदा जीतने वाला ।

जयचन्द्र, जयचन्द्र, जैचन्द्र तत् ( पु० ) कन्नौज का अन्तिम राजा । यह विजयचन्द्र का पुत्र था । दिल्ली के राजा अल्लाउद्दौल खान की पुत्रियों से विजयचन्द्र और अजमेर के राजा सोमेश्वर का विवाह हुआ था । सोमेश्वर के पुत्र का नाम पृथ्वीराज, पृथ्वीराज और जयचन्द्र दोनों दिल्लीपति अल्लाउद्दौल खान के बहिष्कृत थे । अल्लाउद्दौल खान पृथ्वीराज को अधिक चाहते थे । उनके कोई पुत्र नहीं था, अतएव उन्होंने दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को दिया । इससे जयचन्द्र को बड़ा दुःख हुआ । उन्होंने पृथ्वीराज को राज्यच्युत करने का षड़ संकल्प कर लिया । जयचन्द्र प्रतापी राजा थे, उन्होंने नर्मदा नदी के किनारे तक अपना राज्य फैलाया था । अपनी कन्या संयोगिता के विवाह के लिये उन्होंने स्वयम्बर रचा, स्वयम्बर में सभी राजाओं को निमन्त्रण भेजा गया । परन्तु पृथ्वीराज और इनके बहनोई मेवाड़ के महाराणा समरसिंह को निमन्त्रण नहीं भेजा गया, पृथ्वीराज का तिरहरा करने के लिये उनकी मूर्ति को पहरेदार बना कर द्वार पर जयचन्द्र ने खड़ा कर दिया था । दैवयोग से संयोगिता ने उसी पीतल की मूर्ति को ही जयमाला पहना दी । यह सुन कर पृथ्वीराज संयोगिता को ले गया । जयचन्द्र ने इसका बदला लेने के लिये गङ्गानी के शहाबुद्दीन गोरी के ११९१ में दिल्ली पर आक्रमण करने को बुलाया । उसका पनीपत के समीप पृथ्वीराज से युद्ध हुआ, पृथ्वीराज विजयी हुए; गङ्गानी का लुटेरा लूटे, हाथ फिर गया । वर्ष के बाद पुनः उसने दिल्ली की वार भी वहीं की

हार गये। जयचन्द भी पृथ्वीराज से बदला लेकर सुली नहीं हुआ। उस पर भी सुसलमानों ने चढ़ाई की, वह हार कर भागा, नाव पर चढ़ कर नदी पार करता था कि नाव डूब गयी, साथ ही साथ जयचन्द भी डूब गया। इस प्रकार जयचन्द स्वयं तो डूब गया परन्तु उसका अथम नहीं हुआ।

जयन्त तत्० ( पु० ) वृष विरोध ।

जयन्त तत्० ( कि० ) यह संस्कृत की एक कविता है।

इसका अर्थ है जीतता है, हिन्दी में भी इसका प्रयोग रामायण आदि में पाया जाता है।

जयदेव तत्० ( पु० ) १—यह एक प्रसिद्ध भक्त कवि हैं। संस्कृत का गीतगोविन्द नामक गीत काव्य इन्हींका बनाया है, बङ्गाल में मानभूमि जिले के केन्दुलि (किन्तुविल्व) नामक गाँव के रहने वाले थे। इनकी माता का नाम चामादेवी और पिता का नाम भोजदेव था। यह बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मणसेन की सभा में रहते थे। राजा लक्ष्मणसेन का सन् १११६ ई० माना जाता है, अतः उनके साथी-जयदेव के समय के विषय में अब सन्देह करने का कोई कारण नहीं है।

२—यह प्रसन्नराघव नामक नाटक के रचयिता हैं। यह विलक्षण कवि और नैयायिक थे। इनकी माता का नाम सुमित्रा और पिता का नाम महादेव था। इन्होंने अपने को कैण्डिन्य लिखा है। कैण्डिन्य का अर्थ कैण्डिन्य गोत्र, अथवा कृण्डिनपुर निवासी है, इनका निश्चय करना कठिन है। परन्तु कैण्डिन्य गोत्र ही उसका ठीक अर्थ मालूम पड़ता है। इनका दूसरा नाम पद्मचामित्र और पीयूषवर्ष भी था। चन्द्रालोक नामक ब्रह्मर प्रण्य भी इन्हीं का बनाया है। इनके निश्चिन समय का अभी तक ठीक पता नहीं है। तथापि १२ वीं शताब्दी में इनका होना अनुमान किया जाता है।

जयद्रथ तत्० ( पु० ) सिन्धु देश का राजा। दुर्योधन की बहिन दुःशला इनकी व्याही थी। इनके पिता का नाम वृद्धचक्र था। जब पाण्डव काव्यकवन में रहते थे, उस समय उन्होंने द्रौपदी को कुटी में अकेली देख हरना चाहा था, परन्तु उसी समय वहाँ से भीमसेन पहुँच गये। उन्होंने जयद्रथ की

बड़ी अप्रतिष्ठा की, जयद्रथ का सिर मुँडा कर वहाँ से निकाल दिया। जयद्रथ ने घोर तपस्या की। शिव जी ने प्रसन्न होकर वर माँगने के लिये कहा तो उसने एक ही समय पाँचों पाण्डवों को जीतने की इच्छा प्रकट की। शिव जी ने कहा, अर्जुन को छोड़ कर अन्य पाण्डवों को तुम जीत सकते हो। महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु वध के समय, चक्रव्यूह के रक्षक जयद्रथ ही थे, वही वर के प्रभाव से इन्होंने युधिष्ठिर आदि को भीतर नहीं जाने दिया। अर्जुन ये ही नहीं, वह संसलोक के साथ लड़ रहे थे। पुत्रवध सुन के अर्जुन ने सूर्यास्त के पहले ही जयद्रथ के वध करने की प्रतिज्ञा की। दुर्योधन के वीरों ने जयद्रथ की रक्षा करने की चेष्टा की, उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदर्शनचक्र से सूर्य को छिपा लिया। कौरवों ने समझा कि सन्ध्या हो गयी, अब अर्जुन स्वयं मर जायगा। परन्तु मोड़ी ही दूर में उनका विश्वास नष्ट हो गया, सुदर्शनचक्र को भगवान् ने हटा लिया। सूर्य की किरणें थमकने लगीं अर्जुन ने जयद्रथ का सिर काट डाला। जयद्रथ के पिता ने यर दिया था कि जो कोई हमारे पुत्र का सिर भूमि पर गिरावेगा उसका सिर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। इसी कारण अर्जुन ने जयद्रथ का सिर उनके पिता वृद्धचक्र की गोद में रख दिया, उस समय वृद्धचक्र कुण्डलेश्वर के पास स्वमन्त्रपञ्चक स्थान में तपस्या करते थे। जयद्रथ का सिर इन्हीं से भूमि पर गिरा, अतएव उनका भी सिर खण्ड खण्ड हो गया। जयद्रथ के पुत्र का नाम मुरथ था।

जयन्गर तत्० ( पु० ) राजपूताने की पुरानी राजधानी।

जयन्त तत्० ( कि० ) विजयी, बहुरूपिया। ( पु० )

१—अयोध्याराज के एक मन्त्री का नाम। २—इन्द्र का पुत्र अयेन्द्र, पारिभाषिकद्वय के समय इससे और कृष्ण के पुत्र प्रपुष्ट से युद्ध हुआ था। इसीने सीता के चौंच मारी थी। ३—एक रत्न का नाम। ४—कार्तिकेय। ५—धर्म के एक पुत्र का नाम। ६—प्रह्लाद के पिता का नाम। ७—अज्ञातवास में बिराट राजा के पास रहते समय भीमसेन का बनायी नाम। ८—एक पर्वत का नाम। ९—यात्रा के एक योग का नाम।

जलाधारं तत् ( पु० ) पुच्छरिणी, वापी, तदाग, जलाशय, सरोवर । [ भस्म करना ।

जलाना दे० ( कि० ) बालना, दाहना, दग्ध करना, जलापा ( पु० ) द्वेप के कारण उत्पन्न अलन या दाह । जलावला दे० ( वि० ) खाक हुआ, चिड़चिड़ा, क्रोधी, दग्ध ।

जलामय तद् ( वि० ) जलभरा, जलमय, जल में हुआ हुआ, भीगा, आला, आर्द्र, चांदा, गीला । जलामयी देखो जलामय ।

जलाल ( पु० ) प्रताप, महिमा, आतङ्क, यश, तेज । जलावन दे० ( पु० ) ईधन, काष्ठ, जलाने कि लकड़ी, काष्ठ ऊपरी आदि- । [ चक्र, भँवर ।

जलावर्त्त दे० ( पु० ) जल का घुमाव, चकोट, जल-जलाशय तत् ( पु० ) तडाग, सरोवर, सर, इह, कील, तालाव ।

जलाहल ( वि० ) जलमय ।

जलिका दे० ( पु० ) जलौका, जौक ।

जलियां दे० ( पु० ) धीवर, मच्छीमार, कैवर्त ।

जलील ( वि० ) हृच्छ, निरुद्ध, अपमानित, लज्जित ।

जलुका, जलुका तत् ( स्त्री० ) जौक ।

जलूस दे० ( पु० ) किसी उत्सव या अवसर के उपलक्ष्य में, बहुत से लोगों का सजघज कर, नगर में परिक्रमा करने को निकलना ।

जलेचर तत् ( पु० ) जल में चलने या चरने वाले प्राणी, हँस आदि जलचर पक्षी । [ की आग ।

जलेन्धन तत् ( पु० ) बाड़वाभि, बाड़वानल, जल

जले पर मोन लगाना दे० ( वा० ) दुःख पर दुःख देना, दुःखी को दुःख देना, सताये को सताना ।

जलेतन दे० ( वि० ) अति रिसिहा, अत्यन्त क्रोधी, डाही ।

जलेवा ( पु० ) बड़ी जलेबी । [ लपेट ।

जलेबी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिठाई, कुपडली,

जलेशय ( पु० ) विष्णु, मछली । [ जलपति ।

जलेश्वर तत् ( पु० ) जलाधिपति, वरुण, समुद्र,

जलोच्छ्वास ( पु० ) अलमें उठने वाली जहरे, जलकी नाली किसी तालाव से अन्यत्र जल लेजाने का प्रयत्न । [ या घावजी का विवाह ।

जलोत्सर्ग ( पु० ) पुराणों के अनुसार, तालाव, रूप

जलोद्गर तत् ( पु० ) जलन्धर, रोग, छडराम, पेट की बीमारी । [ जलिका, जल का कीड़ा ।

जलौका तत् ( स्त्री० ) [ जल + ओकस् ] जौक, जल्द ( पु० ) अचिलम्ब, शीघ्र । —वाज ( पु० ) शीघ्रता करने वाला ।

जल्दी दे० ( अ० ) शीघ्र, स्वरा, तुरन्त ।

जल्प तत् ( पु० ) वृथा वक्तवाद, झूठा कगड़ा, विजयी की कथा, दूसरे के सिद्धान्त को खण्डन करके अपना मत स्थापित करने की व्यवस्था, वाद, कथा, शास्त्रार्थ । [ यकवादी ।

जल्पक तत् ( पु० ) वावदूक, वाचाल, गप्पी, जल्पना तद् ( कि० ) चकना, विना प्रयोजन की बातें कहना, आप अपनी बड़ाई करना । [ बक्की, बतोलिया ।

जल्पाक तत् ( पु० ) बहुत बोलने वाला, बकवादी, जल्पित तत् ( वि० ) वक्त, कथित, मिथ्या ।

जल्माद दे० ( पु० ) हरया करने वाला, बध करने वाला आतक । [ समझा जाता है ।

जव तत् ( पु० ) यव, एक अन्न का नाम, यह देवाज

जवन तत् ( पु० ) वेग, दौड़ । [ कुनात, काई, मैल ।

जवनिका तत् ( स्त्री० ) आवरण, आच्छादन, पर्दा,

जवा दे० ( पु० ) खैगुली की एक रेखा जिसके अनुसार, शुभाशुभ का ज्ञान सामुद्रिक राख वाले करते हैं, चंद्र, अन्न विशेष ।

जवाई दे० ( स्त्री० ) गमन, जाने का भाव ।

जवाखार दे० ( पु० ) जब से निकाला हुआ एक प्रकार का खार, शोरा विशेष । [ तत् ( स्त्री० )

जवान दे० ( पु० ) युवा, तरुण । —ी ( पु० )

जवाव दे० ( पु० ) उत्तर । —ी ( पु० )

पृथक् किये जाने सम्बन्ध में

जवा ( पु० ) शक्का

जवार

जवारा दे०

जवाला दे०

और

जवांस या जवांसा दे० ( पु० ) कटीली घास, वृष विशेष, गरमी के दिनों में इसकी टट्टी बनाई जाती है । इसका स्वभाव है कि पानी पड़ने से सूख जाता है ।

जवैया ( वि० ) गमनशील, जाने वाला ।

जस तद्० ( पु० ) यश, कीर्ति, नामवरी, भलभली, जैसे, जिस प्रकार से, जिस रीति से ।

जसत या जसता दे० ( पु० ) धातु विशेष, जस्ता ।

जसयत, यशवन्त तद्० ( पु० ) कीर्तिमान्, कीर्तिशाली ।

जसवन्त तद्० ( पु० ) १—विख्यात मुकाजीराव होलकर के पुत्र, इनका पूरा नाम था जसवन्त राव होलकर, मुकाजी राव के चार पुत्र थे, उनमें यह छोटे थे, पिता के मरने के अनन्तर राज्य के लिये चारों में विवाद हुआ, अन्त में जसवन्त राव ही की जीत हुई । यह राता यने । इन्होंने अपने बड़े भाई काशीराव और भतीजे छगेशाव की गुप्त हत्या की थी, जिसके फल से थोड़े ही दिनों में वे पागल हो गये । बहुत दिनों तक दुःख भोग कर सन् १८३१ ई० में वे मर गये ।

२—विख्यात महााष्ट्र साधु इनका अन्य १८३६ ई० में पूना में हुआ था, पहले १०) ६० घेतन की एक सरकारी नौकरी इन्होंने कर ली थी । धीरे धीरे इनकी उन्नति होती गई । अन्त में यह तहसीलदार बनाये गये । ११५) रुपये इनको घेतन मी मिलने लगा, सिपाही-विद्रोह के समय इन्होंने सरकार की बहुत मदद की थी, अतएव इनकी हज्जत भी बहुत बढ़ गई थी । इनको लोग देवता कहा करते थे । एक बार यह कमिश्नर साहब से मिलने सतारा गये थे, वहाँ इनके दर्शकों की भीड़ लग गई । यह देख कमिश्नर साहब ने कलक्टर से इसका कारण पूछा । कलक्टर साहब ने कहा कि "इनको लोग देवता समझते हैं" कमिश्नर साहब ने कहा कि "इनको पेंशन दे दो" । साधु जसवन्त ने अब भजन में अपना मन लगाया, होलकर, सेन्धिया आदि राजा इनका बड़ा आदर करते थे ।

३—माड़वार ( जोधपुर ) के राजा, ये सम्राट् शाह-जहाँ के एक प्रधान सेनापति थे । इनकी वीरता देख औरंगजेब इनसे भीतरी श्रुता रहता था ।

इनके पुत्र पृथ्वीसिंह को औरंगजेब ने घोले से मार डाला और भी इनके दो पुत्र काबुल की लड़ाई में मारे गये । पुत्रशोक से विह्वल राजा जमवन्त को १६४२ ई० में औरंगजेब ने विप के द्वारा मार डाला ।

जसखी तद्० ( वि० ) यशस्वी, कीर्तिमान् ।

जसी दे० ( वि० ) कीर्तिमान्, यशस्वी ।

जसु दे० ( पु० ) देखो जस ।

जसुमती तद्० ( स्त्री० ) नन्द की रानी, यशोदा, यशोमति, कृष्ण की माता । यथाः—

"चलत देखि जसुमति सुख पावै,  
डुमक डुमक भरनीपर रगत जननी देखि दिलावै" ।  
—सूर सङ्गीतसार ।

जसोदा तद्० ( स्त्री० ) जसुमति, नन्दरानी, कृष्ण की माता, यथाः—"सिखावन चलत जसोदा सैया" ।

जसोमति तद्० ( स्त्री० ) जसुमति, जसोदा नन्दरानी, यथाः—"जसोमति लटकति पाह परे" ।

जस्ता तद्० ( पु० ) जस्ता धातु ।

जहर दे० ( पु० ) विष, गरल ।—घाद ( पु० ) जहरीला कोड़ा ।—मुहरा ( पु० ) जहर खींचने वाला काला पत्थर विशेष ।

जहरीला दे० ( वि० ) विषैला, विषाह ।

जहत्स्वार्था तद्० ( स्त्री० ) गौरार्थ, अग्रसिद्धार्थ ।

जहँ दे० ( स्त्री० ) देखो जहाँ ।

जहाँ दे० ( स्त्री० ) यत्र, जिस स्थान में, जियर ।—पनाह ( पु० ) संसार के पालक या रक्षक ।

जहिं ( सर्व० ) जेहि, जिते, जिसको, ( फि० ) सारो, त्यागो, छोड़ो ।—झा जय, जिस समय ।

जहाँ दे० ( स्त्री० ) जहाँ ही, जिस किसी स्थान में ।

जहाज दे० ( पु० ) यड़ी नौका, पोतपान, समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव ।

जहान दे० ( पु० ) संसार, दुनिया ।

जहानक तद्० ( पु० ) प्रलय, समस्त संसार का प्रलय, जगत् का महाप्रलय ।

जहिया ( गु० ) जब, जिय वक्त, जिस समय ।

जही ( गु० ) जहाँ, जहाँही ।

जहाँगीर दे० ( पु० ) भारत का सुगन्त सम्राट्, यह अकबर का पुत्र था, जयपुर की राजन्या मरियम



जलाधार तत् ( पु० ) पुष्करिणी, बापी, तड़ाग, जलाशय, सरोवर । [ भस्म करना । ]  
 जलाना दे० ( क्रि० ) बालना, दाहना, दग्ध करना, जलापा ( पु० ) द्वेप के कारण अल्प जलन या दाह ।  
 जलावला दे० ( वि० ) खाक हुआ, जिड़चिड़ा, क्रोधी, दग्ध ।  
 जलामय तद् ( वि० ) जलभरा, जलमय, जल में डूबा हुआ, भीगा, आला, आर्द्र, बादा, गीला ।  
 जलामयी देखो जलामय ।  
 जलाल ( पु० ) प्रताप, महिमा, भावङ्क, यश, तेज ।  
 जलावन दे० ( पु० ) ईंधन, काष्ठ, जलाने कि लकड़ी, काष्ठ ऊपरी आदि । [ चक्र, संवर । ]  
 जलावर्त्त दे० ( पु० ) जल का घुमाव, चक्रोद, जल-जलाशय तत् ( पु० ) तड़ाग, सरोवर, सर, इंद, मीठ, तालाब ।  
 जलाहल ( वि० ) जलमय ।  
 जलिका दे० ( पु० ) जलौका, जोंक ।  
 जलिया दे० ( पु० ) धीवर, मच्छीमार, कैयत ।  
 जलील ( वि० ) शुद्ध, निरुद्ध, अपमानित, लजित ।  
 जलुका, जलुका तत् ( स्त्री० ) जोंक ।  
 जलूस दे० ( पु० ) किसी उत्सव या अवसर के उपलक्ष्य में, बहुत से लोगों का सजधज कर, नगर में परिक्रमा करने को निकलना ।  
 जलेचर तत् ( पु० ) जल में चलने या चरने वाले प्राणी, हँस आदि जलचर पक्षी । [ की-याग । ]  
 जलेन्धन तत् ( पु० ) बाड़वाभि, बाड़वानल, जल जले पर नोन लगाना दे० ( वा० ) दुःख पर दुःख देना, दुःखी को दुःख देना, सताये को सताना ।  
 जलेतन दे० ( वि० ) शक्ति रिसिद्धा, अत्यन्त क्रोधी, डाही ।  
 जलेया ( पु० ) बड़ी जलेबी । [ लपेट । ]  
 जलेधी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिठाई, कुपडली, जलेशय ( पु० ) विष्णु, मछली । [ जलपति । ]  
 जलेश्वर तत् ( पु० ) जलाधिपति, बरुण, समुद्र, जलोच्छ्वास ( पु० ) जलमें उठने वाली लहरें, जलकी नाली किसी तालाब से अन्यत्र जल खेजाने का प्रयत्न । [ या घायबी का विवाह । ]  
 जलोत्सर्ग ( पु० ) पुराणों के अनुसार तालाब, रूप

जलोदर तत् ( पु० ) जलन्धर, रोग, छूतराम, पेट की बीमारी । [ जलिका, जल का कीड़ा । ]  
 जलौका तत् ( स्त्री० ) [ जल + शोकस ] जोंक, जल्द ( पु० ) अविलम्ब, शीघ्र । — बाड़ ( पु० ) शीघ्रता करने वाला ।  
 जल्दी दे० ( अ० ) शीघ्र, त्वरा, तुरन्त ।  
 जल्प तत् ( पु० ) बूया बकवाद, झूठा-झगड़ा, विजयी की कथा, दूसरे के सिद्धान्त को खण्डन करके अपना मत स्थापित करने की व्यवस्था, वाद, कथा, शास्त्रार्थ । [ बकवादी । ]  
 जल्पक तत् ( पु० ) वाक्दूक, वाचाल, गप्पी, जल्पना तद् ( क्रि० ) बकना, बिना प्रयोजन की बातें कहना, आप अपनी बढ़ाई करना । [ बक्री, बोलिया । ]  
 जल्पाक तत् ( पु० ) बहुत बोलने वाला, बकवादी, जल्पित तत् ( वि० ) बक, कथित, मिथ्या ।  
 जल्लाद दे० ( पु० ) हरा करने वाला, बध करने वाला घातक । [ समझा जाता है । ]  
 जव तत् ( पु० ) यव, एक अन्न का नाम, यह देवान्न जवन तत् ( पु० ) वेग, दौड़ । [ कृनात, काई, मूल । ]  
 जयनिका तत् ( स्त्री० ) आवरण, आच्छादन, पदां, जवा दे० ( पु० ) अँगुली की एक रेखा जिसके अनुसार शुभाशुभ का ज्ञान सामुद्रिक शास्त्र वाले करते हैं, यव, अन्न विशेष ।  
 जवाई दे० ( स्त्री० ) रामन, जाने का भाव ।  
 जवाखार दे० ( पु० ) जव से निकाला हुआ एक प्रकार का खार, शोरा विशेष । [ तत् ( स्त्री० ) अजवाहन । ]  
 जवान दे० ( पु० ) युवा, तरुण । — ( स्त्री० ) तरुणाई जवाव दे० ( पु० ) उत्तर । — ( पु० ) उत्तर सम्बन्धी ।  
 बदबा, नौकरी से श्रृङ्ख किये जाने का हुक्म । — तलव ( पु० ) जिसके सम्बन्ध में समाधान के लिये जवाब माँगा गया हो । — देही ( स्त्री० ) उत्तरदायित्व । — सवाल ( पु० ) शङ्का समाधान, वाद विवाद, प्रश्नोत्तर ।  
 जवार दे० ( पु० ) समुद्र की बाड़, समुद्र का उफताना । — मांटा दे० ( पु० ) समुद्र का उतार चढ़ाव ।  
 जवारा दे० ( पु० ) मुद्रा, जब, जई, अन्न विशेष ।  
 जवाला दे० ( पु० ) गोआई, बेकरा, मिला हुआ जब और गोई ।

जवास या जवासा दे० ( पु० ) कटीली घास, वृष विशेष, गरमी के दिनों में इसकी टट्टी बनाई जाती है। इसका स्वभाव है कि पानी पड़ने से सूख जाता है।

जवैया ( वि० ) गमनशील, जाने वाला।

जस तद्० ( पु० ) यश, कीर्ति, नामवरी, भलमली, जैसे, जिस प्रकार से, जिस रीति से।

जसत या जसता दे० ( पु० ) धातु विशेष, जस्ता।

जसयत, यशवन्त तद्० ( पु० ) कीर्तिवान्, कीर्तिवाली।

जसवन्त तद्० ( पु० ) १—विख्यात तुकाजीराव होलकर के पुत्र, इनका पूरा नाम था जसवन्त राव होलकर, तुकाजी राव के चार पुत्र थे, उनमें यह छोटे थे, पिता के मरने के अनन्तर राज्य के लिये चारों में विवाद हुआ, अन्त में जसवन्त राव ही की जीत हुई। यह रागा बने। इन्होंने अपने बड़े भाई कायीराव और भतीजे खण्डेराव की गुप्त हत्या की थी, जिसके फल से थोड़े ही दिनों में ये पागल हो गये। बहुत दिनों तक दुःख भोग कर सन् १८११ ई० में ये मर गये।

२—विषयाम महासाष्ट साधु' इनका अन्य १८१६ ई० में पूना में हुआ था, पहले १०) ६० घेतन की एक सरकारी मीकरी इन्होंने कर ली थी। धीरे धीरे इनकी उन्नति होती गई। अन्त में यह तहसीलदार बनाये गये। ११२) रुपये इनके घेतन भी मिखने लगा, सिपाही-विद्रोह के समय इन्होंने सरकार की बहुत मदद की थी, अतएव इनकी हज्जत भी बहुत बढ़ गई थी। इनको लोग देवता कहा करते थे। एक बार यह कमिश्नर साहब से मिलने सतारा गये थे, वहाँ इनके दर्शकों की भीड़ लग गई। यह देख कमिश्नर साहब ने कलक्टर से इसका कारण पूछा। कलक्टर साहब ने कहा कि "इनको लोग देवता समझते हैं" कमिश्नर साहब ने कहा कि "इनको पेंशन दे दो"। साधु जसवन्त ने अब भजन में अपना मन लगाया, होलकर, सेन्धिया आदि राजा इनका बड़ा आदर करते थे।

३—माइवार ( जोधपुर ) के राजा, ये सम्राट् शाहजहाँ के एक प्रधान सेनापति थे। इनकी वीरता देख औरंगजेब इनसे भीतरी शत्रुता रखता था।

इनके पुत्र पृथ्वीसिंह को औरंगजेब ने घोले से मार डाला और भी इनके दो पुत्र काबुल की लड़ाई में मारे गये। पुत्रशोक से विद्वल राजा जसवन्त को १६४२ ई० में औरंगजेब ने विप के द्वारा मार डाला।

जसखी तद्० ( वि० ) यशस्वी, कीर्तिवान्।

जसो दे० ( वि० ) कीर्तिमान्, यशस्वी।

जसु दे० ( पु० ) देखो जस।

जसुमती तद्० ( स्त्री० ) नन्द की रानी, यशोदा, यशोमति, कृष्ण की माता। यथा:—

“चलत देखि जसुमति सुख पावै,

डुमुक डुमुक भरनीघर रंगत जननी देख दिलावै”।

—सूर सङ्गीतसार।

जसोदा तद्० ( स्त्री० ) जसुमति, नन्दरानी, कृष्ण की माता, यथा:—“सिखावन चलत जसोदा मैया”।

जसोमति तद्० ( स्त्री० ) जसुमति, जसोदा नन्दरानी, यथा:—“जसोमति लटकति पाइ परे”।

जस्ता तद्० ( पु० ) जस्ता धातु।

जहर दे० ( पु० ) विष, गरल।—घाद ( पु० ) जहरीला फोड़ा।—मुहरा ( पु० ) जहर खींचने वाला काला परवर विशेष।

जहरीला दे० ( वि० ) विषैला, विषाह।

जहत्स्वार्थी तद्० ( स्त्री० ) गौपार्थ, अप्रसिद्धार्थ।

जहँ दे० ( थ० ) देखो जहाँ।

जहाँ दे० ( थ० ) यत्र, जिस स्थान में, जिधर।—पनाह ( पु० ) संसार के पालक या रक्षक।

जहिं ( सर्व० ) जेहि, जिसे, जिसको, ( क्रि० ) मारो, त्यागो, छोड़ो।—आ जय, जिस समय।

जहाँ दे० ( थ० ) जहाँ ही, जिस किसी स्थान में।

जहाँज दे० ( पु० ) यहाँ नौका, पोतघान, समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव।

जहान दे० ( पु० ) संसार, दुनिया।

जहानक तद्० ( पु० ) प्रपञ्च, समस्त संसार का प्रलय, जगत् का महाप्रलय।

जहिया ( पु० ) जय, जिय वक्त, जिस समय।

जही ( पु० ) जहाँ, जहाँही।

जहाँगीर दे० ( पु० ) समय का मुगल सम्राट्, यह अकबर का पुत्र था, जयपुर की राजकुन्या मरियम



जागर दे० ( पु० ) जगरण, होश, कवच ।  
 जागरण तत्त्वं ( पु० ) निद्रा त्याग, जागना, एकादशी  
 आदि का रात्रि जागरण, रात जगा, रतजगा ।  
 जागरित तत्त्वं ( पु० ) जागरण, निद्रा का अभाव ।  
 जागवत्तिक तत्त्वं ( पु० ) याज्ञवल्क्य मुनि ।  
 जागरूक तत्त्वं ( पु० ) जगरणशील, जागरण कर्त्ता,  
 जागने वाला, सावधान, कार्यतरफ ।  
 जागा दे० ( पु० ) जाति विशेष, हृद  
 जागावन्दो दे० ( स्त्री० ) हृदवन्दी, सीमानिर्देश, नींद,  
 ऊँच, ऊँचाई । [ के लिये होइ गगना ।  
 जागाजागो दे० ( स्त्री० ) निद्रात्याग, जागरण, जागने  
 जागू दे० ( वि० ) जागने वाला, जागरण कर्त्ता ।  
 जाग्रत तत्त्वं ( पु० ) जागता, अनिद्रित, सावधान,  
 जागरण विशिष्ट, नींद से उठा हुआ, सचेत ।  
 जाग्रत तत्त्वं ( वि० ) जाग्रत का उत्पन्न, एक प्रकार  
 का स्थलपशु, निर्जल प्रदेश । ( पु० ) टिटिहरी पक्षी  
 कपिजल पक्षी ।  
 जाग्रतिक तत्त्वं ( पु० ) विपवैद्य, विपचिकित्सक, साँप  
 के काटने की चिकित्सा करने वाला, कालवेनिया ।  
 जाग्रुज तत्त्वं ( पु० ) विप, कालकूट, हवाहल, गरज  
 फल विशेष । [ सँपेला, सँपेरा, विप कड़वैया ।  
 जाग्रुलि तत्त्वं ( पु० ) विपवैद्य, सर्पजत चिकित्सक,  
 जाचक तत्त्वं ( पु० ) याचक, प्रार्थी, माँगने वाला,  
 मिथुर, मँगन, मिलारी, बन्दी, मागध, भाट ।  
 जाचत तत्त्वं ( कि० ) याचता है, माँगता है, मिचाटन  
 करता है । [ परीक्षा करना ।  
 जाचना तत्त्वं ( कि० ) माँगना, याचना, परखना,  
 जाचा तत्त्वं ( वि० ) माँगा, चाहा, अभिलषित, ईप्सित,  
 प्रार्थित, परखा । [ प्रार्थित-चाहा हुआ, माँगा हुआ ।  
 जाच्यमान तत्त्वं ( वि० ) याच्यमान, प्रार्थ्यमान,  
 जाजक तत्त्वं ( पु० ) याजक, पुरोहित, यज्ञकराने वाला ।  
 जाजम दे० ( पु० ) बिछौना, शतरंजी दरी, गलीचा,  
 चित्रविचित्र आसन विशेष, जाजिम ।  
 जाजलि तत्त्वं ( पु० ) अथर्ववेदज्ञ गोत्र प्रवर्तक ऋषि,  
 यह कुछ दिनों तक दाम्भिक हो गये थे, इनको  
 अपनी तपस्या का अभिमान हो गया था । पुनः  
 कारी के एक वया ( तुलाचार ) से धर्मशास्त्र का  
 उपदेश सुनकर इनका चित्त ठिकाने हुआ ।

जाजा दे० ( स्त्री० ) कंलीजी, ( कि० ) हट हट,  
 चल चल ।  
 जाजामन्तो दे० ( स्त्री० ) जपत्रयवन्ती एक रागिनी ।  
 जाट दे० ( पु० ) राजपूतों का एक अवान्तर भेद, जाति  
 विशेष ।  
 जाठ दे० ( पु० ) लंठा, कोल्हू की धुरी ।  
 जाड़ दे० ( पु० ) मसूड़ा, दाँतों की जड़ । [ सर्दी ।  
 जाड़ा दे० ( पु० ) शीत, ठण्ड, अड़काल, हेमन्तऋतु,  
 जाड़ो दे० ( स्त्री० ) दन्तपट्टिका, दाँतों की कतार ।  
 ( वि० ) मोटी, स्थूल ।  
 जाह्य तत्त्वं ( पु० ) जड़ता, मूर्खता, मूढ़ता, शीतलता,  
 शीत, अड़ का धर्म, मयसजता, झलसता,  
 मौख्य ।  
 जात तत्त्वं ( वि० ) उत्पन्न । ( स्त्री० ) जाति, वंश, जाति,  
 कुल, समूह, व्यक्त, वृत्ति ।—कर्म ( पु० )  
 दशविध संस्कार के अन्तर्गत संस्कार विशेष ।—  
 पात ( स्त्री० ) पीढ़ी, वंश, कुल, वंशानुक्रम,  
 वंशावली ।—प्रतीत ( पु० ) भात प्रत्यय, जिस  
 का विश्वास हो गया हो, विश्वसनीय ।—पेदा  
 ( पु० ) अग्नि, अग्निल, बह्नि ।—पेज ( पु० ) अग्नि,  
 चित्रक, ईश्वर, सूर्य ।—रूप ( पु० ) लोना,  
 चाँदी, धनूरा, धनूर ।  
 जातक तत्त्वं ( पु० ) पुत्र, बालक, उत्पन्न सन्तान का  
 शुभाशुभ जानने वाल ग्रन्थ, फलित ज्योतिष का  
 एक ग्रन्थ । [ विदना ।  
 जातना तत्त्वं ( स्त्री० ) यातना, पीड़ा, व्याधा, दुष्ट,  
 जाताम्ब तत्त्वं ( पु० ) [ जात + अम्ब ] जन्म से  
 अम्बा, जन्मान्ध, दृष्टिहीन ।  
 जातापत्या तत्त्वं ( स्त्री० ) [ जात + अपत्य + आ ]  
 प्रसूता स्त्री, जिस स्त्री ने पुत्र या कन्या उत्पन्न  
 किया हो ।  
 जाता रहना दे० ( वा० ) भूख जाना, नष्ट हो जाना,  
 खोया जाना, चटकर होना, भ्रष्ट होना, मर  
 जाना, चम्पत होना, हाथ से निकल जाना, चला  
 जाना ।  
 जाति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ जन + ति ] प्राये जाति में  
 मनुष्य समाज का विभाग विशेष जो सृष्टि की  
 आदि ने जन्मानुसार पड़ा था रहा है । गोत्र, कुल,



जाप्रा दे० (कि०) पहचानना, समझना । [में पचना ।  
जाप तद्० ( पु० ) जप, किसी मन्त्र को बार बार मन  
जापक तद्० ( पु० ) जप करने वाला, भजन करने  
वाला, अपने वाला, सदा स्मरण करने वाला, जपी,  
जपकर्ता, सर्वदा मन्त्रोच्चारणकारी ।

जापान ( पु० ) चीन देश के पूर्व एक द्वीप समूह । का  
नाम ।—जापान देश की, जापान देश के वासी ।

जाफरान दे० ( पु० ) कुहूम, केशर ।

जाफरखली खाँ दे० ( पु० ) इनका प्रसिद्ध नाम मीर जाफर  
था, इन्हीं की विरवासवातकता के कारण  
सिराजुद्दौला गद्दी से उतारा गया था, सिराज  
के सिंहासनस्थित होने पर यह बख्शाल के सिंहासन  
के अधिकारी हुए, परन्तु १७६० ई० में इनकी  
चिलासिता अकर्मण्यता देख अंगरेजों ने इन्हें  
गद्दी से उतार दिया ।

जाफर खाँ ( पु० ) इनका प्रसिद्ध नाम मुर्शिद कुली खाँ  
था । दिल्ली के बादशाह आलमगीर ने १७०४ ई०  
में इनको बख्शाल की भवासी दी थी । इन्होंने अपने  
नाम पर प्रसिद्ध नगर मुर्शिदाबाद बसाया था ।

जाय दे० ( पु० ) गमन करना, जाना ।

जावाजी तत्० ( पु० ) एक अरब का नाम ।

जाम तद्० ( पु० ) प्रहर, घण्टा, चार घड़ी, दिन रात  
का आठवाँ भाग, तीन घण्टा, प्याला, चपक,  
मदिरा का प्याला ।—“फना का जाम ऐसा कि  
में पी पी लूँ तू भर भर दे” ।

जामदग्न्य तत्० ( पु० ) जमदग्नि का पुत्र (देखो पशुराम) ।

जामन दे० ( जी० ) वृष और फल विशेष, जोरन,  
जोड़न, जिससे दही जमाया जाता है, जो दही  
जमाने के काम में आता है ।

जामवन्त तद्० ( पु० ) अचराज, रामचन्द्र की सेना  
का प्रधान सैन्यपति, जाम्बवान ।

जामवन्ती तद्० ( जी० ) जाम्बवान की पुत्री, श्रीकृष्ण  
चन्द्र की प्रधान रानियों में से एक रानी, श्रीकृष्ण  
के श्वसुर सत्राजित् के पास एक मणि थी, श्रीकृष्ण  
ने उस मणि को मांगा था, परन्तु उन्होंने नहीं  
दिया । सत्राजित् के छोटे भाई प्रसेन उस मणि  
को धारण कर शिकार खेलने गये थे । वहाँ उनको  
एक सिंह ने मार डाला और मणि ले ली ।

सत्राजित् ने समझा कि श्रीकृष्ण ही ने मणि ले ली  
है । अतः इस कलङ्क को दूर करने के लिये श्रीकृष्ण  
घन में गये । उन्होंने एक जगह देखा कि प्रसेन  
और सिंह मरे पड़े हैं । अपने साथियों को वहाँ  
छोड़ कर वह एक पर्वत की गुहा में घुस गये,  
वहाँ उन्होंने देखा कि एक बालिका इस मणि को  
खिये खेल रही है । श्रीकृष्ण को देख कर बालिका  
और इसकी धाय दोनों चिल्ला उठीं, इनका  
चिल्लाना सुन कर जाम्बवान निकला, और श्रीकृष्ण  
को सामान्य मनुष्य समझ कर उनसे लड़ने लगा ।  
जब वह हार गया, तब उसने श्रीकृष्ण की स्तुति  
की और मणि तथा अपनी कन्या श्रीकृष्ण को  
अर्पित की । जामवन्ती से ब्याह करके श्रीकृष्ण  
मथुरा लौट आये ।

जामा दे० ( पु० ) अन्नरत्न विशेष, घेरदार अन्न ।

जामाता, जामातु तद्० ( पु० ) कन्या का पति,  
जमाई, दामाद ।

जामिनी तद्० ( जी० ) यामिनी, रात्रि, रात, चार  
पहर की रात, वर्षों की भाषा, अरबी, फारसी ।

जामिन, जामिनी दे० जमानत, संरक्षण, प्रातिभब,  
जमानत करना, बिचवान होना ।—दार ( पु० )  
जमानत करने वाला ।

जामुन दे० ( पु० ) फल विशेष, इसका रंग काला होता  
है और घरसात में फलता है ।

जाम्बवान् तद्० ( पु० ) अचपति यह ब्रह्मा के पुत्र  
थे । त्रेतायुग में यह सुमित्र के सेनापति होकर  
सीताजी को छूटने में रामचन्द्रजी के सहायक बने  
थे । द्वापर के अन्त में स्पन्तकमणि के कारण  
इन्होंने श्रीकृष्णचन्द्र से लड़ाई की थी, अन्त में  
मणि और अपनी कन्या को श्रीकृष्ण को इन्होंने  
दे दी । खोजियों ( अनुसन्धानकारियों ) का  
कहना है कि यह जाम्बवान् भालू नहीं थे, किन्तु  
अनार्य राजा थे ।

जाम्बुवत तद्० ( पु० ) कश्चित् मालू ।

जाम्बूनद तद्० ( पु० ) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यमय, काञ्चन ।

जायका दे० ( पु० ) स्वाद, लज्जत ।

जायज दे० ( पु० ) उचित, यथायथ ।

जायद दे० ( पु० ) अधिक, यतिरिक्त ।

जायदाँद दे० ( स्त्री० ) सम्पत्ति, भूमि । [ गर्भ मसाला ।  
जायफल तद्० ( पु० ) फल विशेष, जातीफल, एक  
जाया तद्० ( स्त्री० ) भायाँ, पत्नी, स्त्री, धनिता ।

—जीव ( पु० ) नट, चारण, वेश्यापति ।

—नुजीवी ( पु० ) [ जाया + अनुजीवी ] नट,  
वेश्यापति, स्त्री की कमाई खाने वाला, स्त्री से  
जीने वाला ।—पति ( पु० ) दम्पति, जम्पति,  
स्त्री पुरुष, नर नारी, पति पत्नी ।

जाये दे० ( क्रि० ) उपपन्न किये हुए । ( पु० ) बेटा,  
वालक, सुत, लड़का, सन्तान ।

जार तद्० ( पु० ) उपपत्ती, गुप्तपति, घिगड़ा, लगचा,  
वार, दूसरा पति, भट्टारा, हस का राजा । ( क्रि० )  
जला कर, भस्म करके ।—कर्म तद्० ( पु० )  
व्यभिचार ।—गर्भ ( पु० ) व्यभिचारी, जम्पट,  
उपपत्ति का गर्भ ।—ज ( वि० ) उपपत्ति से उपपन्न  
सन्तान, आरोपण, व्यभिचारजात सन्तान ।

जारण तद्० ( पु० ) [ ज + अनट् ] जलाना, जीर्ण  
करना, चय करना, धातु आदि का फूकना ।

जारना तद्० ( क्रि० ) जलाना, बालना, लहकाना,  
दग्ध करना ।

जारल दे० ( पु० ) काष्ठ विशेष, एक प्रकार की लकड़ी ।

जारा ( क्रि० ) जलाया, भस्म किया । ( पु० ) घात उपपत्ति ।

जारी ( पु० ) बहता हुआ, प्रवाहित ।

जारिणी तद्० ( स्त्री० ) व्यभिचारिणी स्त्री ।

जारीय ( स्त्री० ) काहू, बढ़नी ।

जाल तद्० ( पु० ) सूत आदि का बना हुआ मछली  
या चिड़िया पकड़ने का फन्दा, पाश, जालीदार  
खिड़की, झरोखा, इन्द्रजाल, घोषा, फरेब,

जालिग दे० ( सर्व० ) जिसके लिये, जिस का

जाला तद्० ( पु० ) मकड़ी का फँद, जल रखने का  
बड़ा पात्र, मटका ।

जालिक तद्० ( पु० ) मछुआ, कैवर्त, धौवर, मच्छी-  
मार, मच्छी, मकड़ा, जादे का मकड़ा, इन्द्रजालिक,  
मदारी, बाजीगर, । ( वि० ) जाल से जीने वाला ।

जालिया तद्० ( पु० ) कपटी, छली, मायावी, धूर्त,  
ठग, फोबी-घोषा देने वाला ।

जाली तद्० ( पु० ) जाल करने वाला, मायावी, मछुआ,  
धौवर, व्याध, झंझरी, झरोखा, तद्० ( स्त्री० )  
तरोह, परबल, दे० ( स्त्री० ) कसीदे का एक प्रकार  
काम । एक प्रकार का महीन छेददार वस्त्र, कच्चे  
आम की गुठली के ऊपर की पतली झिल्ली । ( वि० )  
बनाघट, झूठा ।

जाल्म तद्० ( पु० ) पामर, झूठ, असमीक्ष्यकारी, मूर्ख,  
धूर्त, अधम, कुटिल, निष्ठुर, नृशंस ।

जावक तद्० ( पु० ) यावक, अलक, महारार, अवता,  
खियों के पैर रखने का एक रत्न ।

जावका तद्० ( स्त्री० ) लौंग, लौंग का फूल ।

जावनी तद्० ( स्त्री० ) अजवाइन ।

जावा दे० ( पु० ) उपद्वीप विशेष, हिन्द महासागर  
का उपद्वीप, यह द्वीप डच जाति की अधीनता में  
है । यहाँ की बस्ती खूब घनी है । इसकी राजधानी  
बटाविया है । लङ्का में जो वस्तु उपपन्न होती है, वे  
ही यहाँ भी उत्पन्न होती हैं । [ की उत्पत्ति ।

जावाँ दे० ( पु० ) यमज, यमज, एक साथ दो सन्तान

जासु दे० ( सर्व० ) जिसका, जिसकी ।

जासुस दे० ( पु० ) भेदिया, गुप्तचर, मुखबिर ।

दे० ( स्त्री० ) जासूसी का काम, भेदिया ।

( ३ ) जावत्ति, विपत्ति, कसमस,

जिघ्राउ दे० ( पु० ) जिलाव, जीवन दान, रोग से  
हुटकारा ।

जिघ्रान दे० ( पु० ) चुकसान, हानि, चति ।

जिघ्राये दे० पालित जिलाये हुए, पाला पोसा ।

जिगजिगिया दे० ( गु० ) चापलूस, सुशामदी, मिथ्या  
प्रशंसक, चिरौरीया । [चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा ।

जिगजिगी दे० ( स्त्री० ) चिरौरी, सुशामद, अनुनय,

जिगना दे० ( पु० ) दृष्ट विशेष ।

जिगमिप तत् ( स्त्री० ) गमनेच्छा, गमन करने की  
इच्छा, जाने की अभिलाषा ।

जिगमिपु तत् ( वि० ) गमनेच्छुक, जाना चाहने  
वाला, जाने की इच्छा वाला ।

जिगीपा तत् ( स्त्री० ) जीतने की इच्छा, जयेच्छा,  
पराभव करने की इच्छा, व्यवसाय, प्रकप, चकसा ।

जिगीपु तत् ( स्त्री० ) जयेच्छु, जय चाहने वाला, जय  
का अभिलाषा करने वाला ।

जिघत्सु तत् ( वि० ) [ अद् + सन् + ङ ] बुभुक्षु,  
भोजन करने की इच्छा रखने वाला, छुपित, भूला ।

जिघत्सा तत् ( स्त्री० ) [ अद् + सन् + ञा ] भोजन  
की इच्छा, भोजन करने की इच्छा, भोजन करने की  
चेष्टा, भोजन करने का अभिलाषा ।

जिघासु तत् ( वि० ) बध-करणेच्छुक, घातक, घातुक,  
नृशंस, क्रूर, घघाघत ।

जिघासा तत् ( स्त्री० ) [ अद् + सन् + ञा ] क्षुषा,  
मूख, भोजन करने की इच्छा, बुभुषा ।

जिजिया दे० ( स्त्री० ) जयेष्टा भगिनी, यड़ी बहिन,  
सन, चूँची । [जीवनेच्छुक ।

जिजीविपु तत् ( वि० ) जीने की इच्छा करने वाला,

जिज्ञासन तत् ( पु० ) [ ज्ञा + सन् + अनट् ] प्रश्न  
करना, पूछना, जानने की इच्छा प्रकाशित करना ।

जिज्ञासा तत् ( स्त्री० ) प्रश्न, पूछना, जानने की  
इच्छा । [ प्रच्छुक ।

जिज्ञासु तत् ( वि० ) प्रश्न करने वाला, पूछने वाला,

जिज्ञास्य तत् ( वि० ) पूछने योग्य, प्रश्न करने योग्य,  
जिज्ञासितव्य, जिज्ञासनीय ।

जिजीरा दे० ( पु० ) चेड़ी, मिर्कड़, भट्कुल ।

जिठाई ( स्त्री० ) यढ़ाई, जोठापन ।

जिठानी दे० ( स्त्री० ) पति के जेठे भाई की स्त्री ।

जित् ( गु० ) जेता, जय प्राप्त करने वाला ।

जित तत् ( वि० ) [ जि + क ] पराभूत, पराभाव  
प्राप्त, पराजित, पराजयी, वशीभूत, शधीन, जिधर,  
जहाँ । ( पु० ) अर्हदुपासक, जैनविशेष ।—हु  
( कि० ) जीतो, जीत को, जीत भी ।

जितना ( वि० ) परिमाण, अथवा धीर संख्या-  
जितेक थक, ( कि० वि० ) जिस मात्रा में, जिस  
परिणाम में गया—जितना मैं भोजन करता हूँ  
उतना कन्दैया नहीं कर सकता । [बाड़ी की जीन ।

जितनी दे० ( स्त्री० ) परिमाणार्थक, खेल की जीताई,

जितयोनि तत् ( पु० ) हिरन, हरिण, मृग ।

जितवार ( गु० ) जितेवा, विजयी ।

जितशत्रु तत् ( पु० ) कृत शत्रु पराजय, विजयी ।

जितवैया ( गु० ) जीतने वाला ।

जिता ( पु० ) हूँ, वह पारस्परिक सहायता जो किमान  
एक दूसरे की जोताई योभाई में किया करते हैं ।  
जितामित्र तत् ( गु० ) [ जित + मित्र ] विष्णु  
नारायण । ( वि० ) विजयी, जिसने शत्रु जीत  
लिये हैं ।

जिताहार तत् ( पु० ) [ जित + आहार ] अन्न जयी,  
जिसने अन्न को शधीन कर लिया है ।

जिति दे० ( सर्व० ) जितनी, जिधर, जिन तरफ़ ।  
( कि० ) जीत कर ( स्त्री० ) जीत ।

जितेन्द्रिय तत् ( पु० ) [ जित + इन्द्रिय ] इन्द्रिय  
जितेन्द्री तत् ( स्त्री० ) जीत, जिसने इन्द्रियों को बर में  
कर लिया है, शान्त, वशी, अकामी ।

जितै ( कि० वि० ) जिसघोर, जिन तरफ़, जिधर ।

जितौ ( गु० ) जितना ।

जित्वा ( गु० ) विजयी, जीतनेवाला ।

जिद् दे० ( स्त्री० ) हठ, आप्रद, अढ़ ।

जिधर दे० ( स्त्री० ) जहाँ, यत्र, जिस स्थान में ।

जिन तत् ( पु० ) जैन धर्म प्रवर्तक, आचार्य, जिन्यों  
के तीर्थङ्कर, इनके तीर्थङ्कर २४ हैं, यद्यपि सभी  
स्वतन्त्र नाम भिन्न हैं, तथापि केवल जिन पद से भी  
उनका व्यवहार होता है । जिन ही को कोई कोई  
बौद्ध बतलाते हैं और जैन धर्म को बौद्ध धर्म की  
शाखा मानते हैं, उनका ऐसा सम्मत्ता निष्कारण  
नहीं है । बोधों में बौद्ध और जैन का नाम प्रायः



जायदाद दे० ( स्त्री० ) सम्पत्ति, भूमि । [ गर्म मसाला ।  
जायफल तद्० ( पु० ) फल विशेष, जातीफल, एक  
जाया तद्० ( स्त्री० ) भार्या, पत्नी, स्त्री, वनिता ।

—जीव ( पु० ) नट, चारण, वेश्यापति ।

—नुजीवी ( पु० ) [ जाया + अनुजीवी ] नट,  
वेश्यापति, स्त्री की कमाई खाने वाला, स्त्री से  
जीने वाला ।—पति ( पु० ) दम्पति, जम्पति,  
स्त्री पुरुष, नर नारी, पति पत्नी ।

जाये दे० ( क्रि० ) उत्पन्न किये हुए । ( पु० ) बेटा,  
बालक, सुत, लड़का, सन्तान ।

जार तद्० ( पु० ) उपपत्ति, गुप्तपति, घिंघड़ा, लगचा,  
धार, दूसरा पति, भटुआ, रस का राजा । ( क्रि० )  
जला कर, भस्म करके ।—कर्म तद्० ( पु० )  
व्यभिचार ।—गर्भ ( पु० ) व्यभिचारी, जम्पट,  
उपपत्ति का गर्भ ।—ज ( वि० ) उपपत्ति से उत्पन्न  
सन्तान, जारोत्पन्न, व्यभिचारजात सन्तान ।

जारण तद्० ( पु० ) [ ज + अनट् ] जलाना, जीर्ण  
करना, चय करना, धातु आदि का फूकना ।

जारना तद्० ( क्रि० ) जलाना, बालना, लहकाना,  
दग्ध करना ।

जारल दे० ( पु० ) काष्ठ विशेष, एक प्रकार की लकड़ी ।

जारा ( क्रि० ) जलाया, भस्म किया । ( पु० ) धार उपपत्ति ।

जारी ( पु० ) बहता हुआ, प्रवाहित ।

जारिणी तद्० ( स्त्री० ) व्यभिचारिणी स्त्री ।

जारोय ( स्त्री० ) मातृ, वहनी ।

जाल तद्० ( पु० ) सूत आदि का बना हुआ मछली  
या चिड़िया पकड़ने का फन्दा, पाश, जालीदार  
खिड़की, झरोखा, इन्द्रजाल, घोखा, फरेब, बनावट ।  
जालिगि दे० ( सर्व० ) जिसके लिये, जिस कारण,  
जिस हेतु । [ मयझे, मयनी ।

जालगोणिका तद्० ( स्त्री० ) दक्षिमयन भाण्ड,  
जालन्धर तद्० ( पु० ) त्रिगत देश, त्रिगत देशस्थ,  
राक्षस विशेष, ( देखो जलन्धर ) एक ऋषि का  
नाम ।

जालन्धरी विद्या तद्० ( स्त्री० ) इन्द्रजाल ।

जालन्ध्र तद्० ( पु० ) जाली का झरोखा ।

जालसाज ( पु० ) फरेबी, घोखे बाज, झूठी कारवाँह  
करने वाला ।—नी ( स्त्री० ) फरेब, दगाबाजी ।

जाला तद्० ( पु० ) मकड़ी का फाँद, जल रखने का  
बड़ा पात्र, मटका ।

जालिक तद्० ( पु० ) मछुआ, कैवर्त, धीवर, मच्छी-  
मार, मकड़ी, मकड़ा, जाड़े का मकड़ा, इन्द्रजालिक,  
मदारी, गाजीगर, । ( वि० ) जाल से जीने वाला ।

जालिया तद्० ( पु० ) कपटी, ठग, मायावी, धूर्त,  
ठग, फरेबी घोखा देने वाला ।

जाली तद्० ( पु० ) जाल करने वाला, मायावी, वस्तुध,  
धीवर, व्याध, फंफरी, झरोखा, तद्० ( स्त्री० )  
तरोई, परचल, दे० ( स्त्री० ) कसीदे का एक प्रकार  
काम । एक प्रकार का महीन छेददार वस्त्र, कच्चे  
आम की गुठली के ऊपर की पतली किल्ली । ( वि० )  
बनावट, झूठा ।

जाल्म तद्० ( पु० ) पामर, क्रूर, असमीक्ष्यकीरी, मूर्ख,  
धूर्त, अधम, कुटिल, निष्ठुर; नृशंस ।

जावक तद्० ( पु० ) यावक्त, अलक्त, महाँवर, अश्वता,  
खियों के पैर रखने का एक रत्न ।

जावका तद्० ( स्त्री० ) लौंग, लौंग का फूल ।

जावनी तद्० ( स्त्री० ) अजवाइन ।

जावा दे० ( पु० ) उपद्वीप विशेष, हिन्द महासागर  
का उपद्वीप; यह द्वीप डच जाति की अधीनता में  
हैं । यहाँ की बस्ती खूब घनी है । इसकी राजधानी  
बटाविया है । लङ्का में जो वस्तु उत्पन्न होती हैं, वे  
ही यहाँ भी उत्पन्न होती हैं । [ की उत्पत्ति ।

जावाँ दे० ( पु० ) यमज, यमज, एक साथ दो सन्तान

जासु दे० ( सर्व० ) जिसका, जिसकी ।

जासूस दे० ( पु० ) भेदिया, गुप्तचर, मुखबिर ।

जासूसी दे० ( स्त्री० ) जासूसी का काम, भेदिया ।

जाह दे० ( पु० ) वधडाहट, आपत्ति, विपत्ति, कसमस,  
फँसाव ।

जाहा दे० ( पु० ) देखा, निरीक्षण किया । यथा—

“पावती पुनि सत्य सराहा,  
औ फिर मुख महँस कर जाहा” ।

—पञ्चावत ।

जाहि दे० ( सर्व० ) जिसको, जिस किसी को, जिसे ।

जाहिर दे० ( पु० ) प्रकाश कथण, प्रचार करण ।

जान्हवी तद्० ( स्त्री० ) मागीरपी, गद्दा, ( देखो जन्हु ) ।

जिघ्रत दे० ( क्रि० ) जीता है, जीवित है ।

जिघ्राउ दे० ( पु० ) जिल्हा, जीवन दान, रोग से  
 छुटकारा ।  
 जिघ्रान दे० ( पु० ) नुकसान, हानि, चति ।  
 जिघ्राये दे० पालित जिल्हाये हुए, पाला पोसा ।  
 जिगजिगिया दे० ( गु० ) चापलूस, सुशामदी, मिथ्या  
 प्रशंसक, चिरीरिप । [ चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा ।  
 जिगजिगी दे० ( स्त्री० ) चिरीरी, सुशामद, अनुनय,  
 जिगना दे० ( पु० ) वृष्ट विशेष ।  
 जिगमिप तत् ( स्त्री० ) गमनेच्छा, गमन करने की  
 इच्छा, जाने की अभिलाषा ।  
 जिगमिपु तत् ( वि० ) गमनेच्छुक, जाना चाहने  
 वाला, जाने की इच्छा वाला ।  
 जिगोपा तत् ( स्त्री० ) जीतने की इच्छा, जयेच्छा,  
 पराभव करने की इच्छा, व्यवसाय, प्रकप, चकला ।  
 जिगीपु तत् ( पु० ) जयेच्छु, जय चाहने वाला, जय  
 का अभिलाषा करने वाला ।  
 जिघरसु तत् ( वि० ) [ अद् + सन् + ड ] बुझु,  
 भोजन करने की इच्छा रखने वाला, छुपित, भूखा ।  
 जिघरता तत् ( स्त्री० ) [ अद् + सन् + टा ] भोजन  
 की इच्छा, भोजन करने की इच्छा, भोजन करने की  
 चेष्टा, भोजन करने का अभिलाषा ।  
 जिघासु तत् ( वि० ) बघ-करणेच्छुक, घातक, घातुक  
 नृशंस, क्रूर, दधोघात ।  
 जिघासा तत् ( स्त्री० ) [ अद् + सन् + टा ] क्षुधा,  
 भूख, भोजन करने की इच्छा, बुझुषा ।  
 जिजिया दे० ( स्त्री० ) जयेष्टा-भगिनी, बड़ी बहिन,  
 सून, पौधी । [ जीवनेच्छुक ।  
 जिजीविपु तत् ( वि० ) जीने की इच्छा करने वाला,  
 जिज्ञासन तत् ( पु० ) [ ज्ञा + सन् + घनट् ] प्रश्न  
 करना, पूछना, जानने की इच्छा प्रकाशित करना ।  
 जिज्ञासा तत् ( स्त्री० ) प्रश्न, पूछना, जानने की  
 इच्छा । [ प्रच्छेदक ।  
 जिज्ञासु तत् ( वि० ) प्रश्न करने वाला, पूछने वाला,  
 जिज्ञास्य तत् ( वि० ) पूछने योग्य, प्रश्न करने योग्य,  
 जिज्ञासितव्य, जिज्ञासनीय ।  
 जिजीरा दे० ( पु० ) बेड़ी, लिफ्ट, शृङ्खल ।  
 जिठार्ह ( स्त्री० ) घड़ाई, जेठापन ।  
 जिठानी दे० ( स्त्री० ) पति के जेठे भाई की स्त्री ।

जित् ( गु० ) जेता, जय प्राप्त करने वाला ।  
 जित तत् ( वि० ) [ जि + क ] पराभूत, पराभाव  
 प्राप्त, पराजित-पराजयी, पराभूत, अधीन, जिघर,  
 जहाँ । ( पु० ) अर्हदुपासक, जैनविशेष ।—हु  
 ( कि० ) जीते, जीत लो, जीत मी ।  
 जितना ( वि० ) परिमाण, अवधि और संख्या-  
 जितेक ] थक, ( कि० वि० ) जिस मात्रा में, जिस  
 परिणाम में यथा—जितना में भोजन करता हूँ  
 उतना कट्टिया नहीं कर सकता । [ बाड़ी की जीन ।  
 जितनी दे० ( स्त्री० ) परिमाणार्थक, खेव की जीनाई,  
 जितयोनि तत् ( पु० ) हिरन, हरिण, मृग ।  
 जितवार ( गु० ) जितैवा, विजयी ।  
 जितशत्रु तत् ( पु० ) हन शत्रु पराजय, विजयी ।  
 जितवैया ( गु० ) जीतने वाला ।  
 जिता ( पु० ) हूँ, वह पारस्परिक सहायता जो किसान  
 एक दूसरे की जेताई बोझाई में किया करते हैं ।  
 जितामित्र तत् ( गु० ) [ जित + मित्र ] विशु  
 नारायण । ( वि० ) विजयी, जिसने शत्रु जीत  
 लिये हैं ।  
 जिताहार तत् ( पु० ) [ जित + आहार ] अन्न लयी,  
 जिसने अन्न को अधीन कर लिया है ।  
 जिति दे० ( सर्व० ) जितनी, जिघर, जिस तरफ़ ।  
 ( कि० ) जीत कर ( स्त्री० ) जीत ।  
 जितेन्द्रिय तत् ( पु० ) [ जित + इन्द्रिय ] इन्द्रिय  
 जितेन्द्री तत् ( पु० ) जीत, जिसने इन्द्रियों को बरा में  
 कर लिया है, शान्त, वशी, अक्रामी ।  
 जितै ( कि० वि० ) जिसघोर, जिस तरफ़, जिघर ।  
 जितौ ( गु० ) जितना ।  
 जित्वा ( गु० ) विजयी, जीतनेवाला ।  
 जिह् दे० ( स्त्री० ) हठ, आग्रह, बड़ ।  
 जिघर दे० ( अ० ) जहाँ, यत्र, जिस स्थान में ।  
 जिन तत् ( पु० ) जैन धर्म प्रवर्तक, ब्राह्मण, जैनियों  
 के तीर्थङ्कर, इनके तीर्थङ्कर २४ हैं, यद्यपि सभी  
 स्वतन्त्र नाम भिन्न हैं, तथापि केवल जिन पद से भी  
 इनका व्यवहार होता है । जिन ही को कोई कोई  
 बौद्ध बतलाते हैं और जैन धर्म को बौद्ध धर्म की  
 शायी मानते हैं, उनका ऐसा समझना निष्कारण  
 नहीं है । लोगों में बौद्ध और जैन का नाम

एक ही साथ आना ही इसका कारण है। परन्तु इससे अतिशय भिन्न इन दोनों धर्ममतों की एकता की कल्पना अनुचित है। इनके सिद्धान्त, धार्मिक प्रक्रियायें तथा आचार आदि अत्यन्त भिन्न हैं। जैन धर्म प्राचीन है, बौद्ध धर्म नवीन। तत्त्वं ( पु० ) विष्णु, सूर्य, बुद्ध, ( सर्व० ) जिनका बहुवचन।

जिनकरे दे० ( सर्व० ) जिनके, जिस किसी के। [अन्न।

जिन्स दे० ( पु० ) द्रव्य, वस्तु, पदार्थ जात, प्रकार,

जिन्दगानो दे० ( स्त्री० ) जीवन, जिन्दगी, जन्म।

जिदरिया दे० ( स्त्री० ) जेबरी, मँज या सन कि बटी हुई पतली रस्सी।

जिम दे० ( प्र० ) यथा, जैसा, पादश—

"जिम दशनन महीं जीम बिचारी"

—रामायण।

जिमाना दे० ( क्रि० ) भोजन कराना, खिलाना, अतिथि सरकार करना।

जिमीकन्द दे० ( पु० ) सूरन, रस्सी।

जिय तद् दे० ( पु० ) जीव, प्राण, आत्मा, हृदय।

जियरा तद् दे० ( पु० ) जीव, जी, प्राण।

जियाना तद् दे० ( क्रि० ) जिलाना, प्राण दान देना, जीवित करना, पालना पोसना। [जीवन्त।

जियोर दे० ( वि० ) साहसी, उस्ताही, वीर, योद्धा,

झिला दे० ( पु० ) उपपन्न, प्रदेश के किसी भाग का प्रधान स्थान, जहाँ राजकर्मचारी राज्य व्यवस्था करते हैं, जहाँ कलेक्टर साहब रहते हैं।

जिलाना दे० ( क्रि० ) जीता करना, सजीव करना, जीवित करना, जिता देना।

जिल्द दे० ( स्त्री० ) पढ़ा या दफ्ती जो किसी पुस्तक की रचा के लिये उस पर लगा दी जाती है। छात्र, चमड़ा।—गर दे० ( पु० ) जिश्द बाँधने वाला, पुस्तक बन्धनकर्ता, दफ्ती।

जिय तद् दे० ( पु० ) जिय, प्राण, आत्मा, जीव, चेतन, यथा—

"सुमिरहुँ आदि एक कतारु।

जे जिय दीन्ह कीन्ह संपारु" ॥—पद्मावत।

जिवनमूरी या जिवनमूरि तत्त्वं ( स्त्री० ) संजीवनी औषधि, जिलाने वाली बूटी। [जयी, विजयी।

जिप्पा तत्त्वं ( पु० ) अर्जन, किरीटी, इन्द्र, जीतने वाला,

जिजाना दे० ( क्रि० ) जीवित करना।

जिस ( वि० ) विभक्ति युक्त विशेष्य के साथ आने प्राप्त हुआ 'जो' का रूप।

जिस्तु दे० ( सर्व० ) जिसका, सम्बन्धार्थवाची।

जिह ( स्त्री० ) रोदा, ज्या, चिह्ना।

जिहाद ( पु० ) मुसलमानों का धार्मिक युद्ध।

जिहि दे० ( सर्व० ) जो, जिस, जिसको।

जिह्म तत्त्वं ( वि० ) कपटी, कुटिल, छली, धूर्त, मूर्ख, दुष्ट, टेढ़ा, अप्रसन्न, मन्द। ( पु० ) तगर का पुष्प

अधर्म।—कर ( गु० ) कपटी, छली, धूर्त।—

( पु० ) सर्प, सर्प, टेढ़े चलने वाले, बकगाम

बाण, तीर। [जिभोर, चटार

जिह्ल तत्त्वं ( वि० ) बटेरा, लोखुप, लोभी, लुब्ध

जिह्म तत्त्वं ( स्त्री० ) रसना, जीभा, जीम, रसनेन्द्रिय

—मूलीय तत्त्वं ( वि० ) जो जिह्म के मूल

सम्बन्ध युक्त हो।—स्वाद् ( पु० ) [ जिह्म

आस्ताद् ] चाटना, लेहन करना।—प्र ( पु० )

मुत्ताप्र, कण्ठस्थ, बरजवानी।

जी दे० ( पु० ) प्राण, मन, दिक्, हृदय, चित्त, साहस

दम, सङ्कल्प, इच्छा, विचार, चाह, प्रवर्तित बोध

चाह की भाषा में प्रतिष्ठावादी शब्द, सम्मान

सूचक शब्द।—उठाना ( वा० ) उदासीनता, मन

छोड़ना मित्रता में बाधा।—बुरा करना ( वा० )

मिथलाना, बचकाई आना, अप्रतिष्ठा करना, उदासीनता

दिल्लाना।—बढ़ाना ( वा० ) उदाहृत होना।

मन को उन्नत करना, बड़े बड़े कामों को करने

अभिजाया होना, किसी बड़े काम को करने की

प्रबल इच्छा।—विखरना ( वा० ) मन में भेद

होना, अचेत होना, मूर्च्छा आना।—भर जाना

( वा० ) सन्तोष होना, वृत्ति होना, सन्देश रहित

होना, संशय दूर करना, अधाना, अधा जाना।—

आज्ञाना ( वा० ) किसी वस्तु की चाह होना

किसी वस्तु का पसन्द हो जाना।—भर आना

( वा० ) दया आना, दया युक्त होना, दया हर्ष अथवा

सोच से गला रुक जाना। किसी के दुःख से दुःखी

होना।—बहलाना ( वा० ) मन बहलाना, मनो-

रक्षण करना, मनोविनोद करना।—पाना ( वा० )

किसी के स्वभाव से परिचित होना, किसी को

पहचानना ।—पानी करना ( वा० ) खजित करना, दुःखित करना, दुःख देना, चिढ़ाना, खिन्नाना ।—पर खेलना ( वा० ) किसी उद्देश्य से अपने को सड़ूट में डालना, अपने को सड़ूट में डाल कर भी किसी काम को करना, ।—पिघलना ( वा० ) दया आना, किसी के दुःख से दुःखित होना, मोह आना ।—फुड़ना जाना ( वा० ) शोक प्रस्त होना, शोक आना, उदासीन होना ।—फटना ( वा० ) प्रेम टटना ।—फिर जाना ( वा० ) सन्तुष्ट होना, वृत्त होना, भ्रमना, अनिच्छा होना ।—जलना ( वा० ) मन का दुःखित होना, पीड़ा, वेदना, व्यथा ।—जलाना ( वा० ) सताना, दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना, दूसरों के कार्य के विषे अपने को जलाना, स्वयंकट उठा कर भी दूसरों को सुखी करना, निष्काम परोपकार करना ।—चाहना ( वा० ) किसी वस्तु की इच्छा ।—चुराना या छिपाना ( वा० ) आलस करना, शक्ति के अनुसार काम न करना, ।—चलना ( वा० ) इन्द्रियों के विषयों की ओर मन का जाना । चाह, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ ।—चलाना ( वा० ) शक्ति प्रदर्शन करना, सामर्थ्य दिखाना, मन चबाना ।—दान करना ( वा० ) अपराधी को क्षमा करना ।—धड़कना ( वा० ) शक्ति होना, घबड़ाना ।—डूब जाना ( वा० ) शोकित होना, मूर्छित होना ।—रखना ( वा० ) प्रसन्न करना, अश्व के इच्छानुसार काम करना, इच्छापूर्ति करना, मनोरथ सिद्ध करना, यात रख लेना ।—से उतर जाना ( वा० ) अभिय हो जाना, अनीप्सित होना, चाह नहीं रहना ।—से मारना ( वा० ) बध करना, जान से मारना, मार डालना ।—करना ( वा० ) चाहना, इच्छा करना, अभिलाष करना ।—खोल कर करना ( वा० ) बरसाह से करना, प्रसन्नता से करना, किसी काम को सामर्थ्य भर करना ।—खोलकर कहना ( वा० ) स्पष्ट कहना, साफ साफ कहना, निर्भय कहना, बरसाह से कहना ।—पर आना ( वा० ) कष्ट में पड़ना, आफत में कैसना, अनन्यगतिक होना, किसी से लाचार

हो जाना ।—घट जाना ( वा० ) अनुसहित होना, हताश होना ।—लगना ( वा० ) प्रीति करना, प्रेम होना ।—जगाना ( वा० ) प्रेम लगाना, प्रणय, प्रणय करना ।—जेता ( वा० ) मार डालना ।—मारना ( वा० ) निराश कराना मन छोड़ना ।—मिलाना ( वा० ) मित्रता करना ।—में आना ( वा० ) स्मरण आना ।—में जल जाना ( वा० ) ईर्ष से दुःखित होना, कुड़ना ।—में जो आना ( वा० ) आपत्ति से छुटकारा पाना, दुःख के अनन्तर सुखी होना । भय का कारण दूर होने से निर्भय होना ।—में घर करना ( वा० ) हृदय को अपने अधीन करना, अपना प्रेम दूसरे के हृदय में स्थापित करना ।—निकलना ( वा० ) मरना, मर जाना, बेकल होना, भय मीत होना, घबड़ाना ।—हारना ( वा० ) अधीन हो जाना, व्याकुल होना, निराश हो जाना, घबड़ा कर काम छोड़ना, अनुसही हो जाना ।—हट जाना ( वा० ) मन हट जाना, प्रेम टट जाना, विरोध हो जाना, उदासीन हो जाना ।

जीग्रन दे० ( पु० ) जीवन ।

जीका तद्० ( खी० ) जीविका, वृत्ति, पन्धान ।

जीङ्गुराना दे० ( कि० ) सिनेङ्गना, समेटना, सकुचित करना ।

जीजा ( पु० ) बड़ी बहिन का पति ।

जीजी ( खी० ) बड़ी बहिन । [पराभव ।

जीत दे० ( स्त्री० ) जय, विजय, शत्रुपराजय, शत्रु-

जीतना दे० ( कि० ) जयकरना, अपने अधीन करना, बध करना, शत्रु को हराना ।

जीतव दे० ( पु० ) जीवन, जीना, जिन्दगी, स्थिति काल । [जितवैया ।

जीतवना तद्० ( पु० ) जयी, विजयी, जयमान,

जीतवैया दे० ( पु० ) जेता, विजयी ।

जीता दे० ( वि० ) प्राणधारी, चेतन, जीता हुआ ।

जीति ( कि० ) जीतकर, जय प्राप्त करके ।

जीतिया दे० ( खी० ) दत्त विशेष, जीवपुनिका मत, आश्विन शुक्ल अष्टमी का महालक्ष्मी का मत, यह मत प्रायः स्त्रियाँ सन्तान जीवित रहने के हेतु किया करती हैं ।

एक ही साथ थाना ही इसका कारण है। परन्तु इससे अतिशय भिन्न हन दोनों धर्ममार्गों की एकता की कल्पना अनुचित है। इनके सिद्धान्त, धार्मिक प्रक्रियायें तथा आचार आदि अत्यन्त भिन्न हैं। जैन धर्म प्राचीन है, बौद्ध धर्म नवीन। तत् ( पु० ) विष्णु, सूर्य, बुद्ध, ( सर्व० ) जिनका बहुवचन।

जिनकरे दे० ( सर्व० ) जिनके, जिस किसी के। [अज्ञ।  
जिन्स दे० ( पु० ) द्रव्य, वस्तु, पदार्थ, जात, प्रकार,  
जिन्दगानी दे० ( स्त्री० ) जीवन, जिन्दगी, जन्म।  
जिवरिया दे० ( स्त्री० ) जेवरी, सूँज या सज कि बटी  
हुई पतली रस्सी।

जिम दे० ( प्र० ) यथा, जैसा, यादश—

“जिम दशनन महुँ जीम पिबारी”

—रामायण।

जिमाना दे० ( क्रि० ) भोजन कराना, खिलाना, अतिथि  
सरकार करना।

जिमोकिन्द दे० ( पु० ) सूरन, रस्सी।

जिय तद् ( पु० ) जीव, प्राण, आत्मा, हृदय।

जियरा तद् ( पु० ) जीव, जी, प्राण।

जियाना तद् ( क्रि० ) जिलाना, प्राण दान देना,  
जीवित करना, पालना पोसना। [जीवन्त।

जियोर दे० ( वि० ) साहसी, उरसाही, चीर, बोद्धा,  
जिला दे० ( पु० ) उपमान्त, प्रदेश के किसी भाग का  
प्रधान स्थान, जहाँ राजकर्मचारी राज्य व्यवस्था  
करते हैं, जहाँ कलन्तर साहय रहते हैं।

जिलाना दे० ( क्रि० ) जीता करना, सजीव करना,  
जीवित करना, जिला देना।

जिन्द दे० ( स्त्री० ) पट्टा या दफ्ती जो किसी पुस्तक की,  
रक्षा के लिये उस पर लगा दी जाती है। लाख,  
चमड़ा।—गर दे० ( पु० ) जिन्द बाँधने वाला,  
पुस्तक बन्धनकर्त्ता, दफ्ती।

जिय तद् ( पु० ) जिय, प्राण, आत्मा, जीव, चेतन,  
यथा—

“सुमिरहुँ आदि एक करताह।

जे जिय दीन्ह कीन्ह संपारु” ॥—पद्यावत।

जिवनमूरी या जिवनमूरि तद् ( स्त्री० ) संजीवनी  
घोषपत्र, जिलाने वाली डूँटी। [जयी, विजयी।

जिप्पा तद् ( पु० ) अञ्जन, त्रिरीटी, इन्द्र, जीतने वाला,

जिजाना दे० ( क्रि० ) जीवित करना।

जिस ( वि० ) विभक्ति युक्त विशेष्य के साथ थाने से  
प्राप्त हुआ “जो” का रूप।

जिसु दे० ( सर्व० ) जिसका, सम्बन्धार्थवाची।

जिह ( स्त्री० ) रोदा, ज्या, चिह्ना।

जिहाद ( पु० ) मुसलमानों का धार्मिक युद्ध।

जिहि दे० ( सर्व० ) जो, जिस, जिसको।

जिह्वा तद् ( वि० ) कपटी, कुटिल, छली, धूर्त, मूढ़,  
दुष्ट, टेढ़ा, अप्रमत्त, मन्द। ( पु० ) तगर का पुष्प,  
अधर्म।—कर ( पु० ) कपटी, छली, धूर्त।—ग  
( पु० ) साँप, सर्प, टेढ़े चलने वाले, बक्रागामी,  
बाण, तीर। [जिभोर, चटोर।

जिह्वा तद् ( वि० ) चटोरा, लोलुप, लोभी, लुब्ध,  
जिह्वा तद् ( स्त्री० ) रसना, जीभा, जीभ, रसनेन्द्रिय।

—मूलीय तद् ( वि० ) जो जिह्वा के मूल से  
सम्बन्ध युक्त हो।—स्वाद ( पु० ) [ जिह्वा +  
आस्वाद ] चाटना, लेहन करना।—घ्र ( पु० )  
सुलाम, कण्ठस्थ, परजवानी।

जी दे० ( पु० ) प्राण, मन, दिव्य, हृदय, चित्त, साहस,

दम, सङ्कल्प, इच्छा, विचार, चाह, प्रवृत्ति बोल  
चाख की भाषा में प्रतिष्ठावादी शब्द, सम्मान  
सूचक शब्द।—उठाना ( वा० ) उदासीनता, मन  
छोड़ना मित्रता में बाधा।—धुरा करना ( वा० ) जी  
मिचलाना, उबकाई थाना, अप्रीति करना, उदासीनता  
दिलखाना।—बढ़ाना ( वा० ) बसाहित होना,

मन को उन्नत करना, बड़े बड़े कामों को करने का  
अभिजापा होना, किसी बड़े काम को करने की  
प्रवृत्ति इच्छा।—विखरना ( वा० ) मन में भेद  
होना, अचेत होना, भ्रष्टा होना।—भर जाना  
( वा० ) सन्तोष होना, तृप्ति होना, मन्देह रहित  
होना, संशय दूर करना, अथाना, अघा जाना।—  
घ्राजाना ( वा० ) किसी वस्तु की चाह होना,  
किसी वस्तु का पसन्द हो जाना।—भर घ्राणा

( वा० ) दया थाना, दया युक्त होना, दया हर्ष अथवा  
सोच से गला रुक जाना। किसी के दुःख से दुखी  
होना।—बहलाना ( वा० ) मन बहलाना, मनो-  
रक्षण करना, मनोविमोद करना।—पाना ( वा० )  
किसी के स्वभाव से परिचित होना, किसी को

पहचानना ।—पानी करना ( वा० ) खजित करना, दुःखित करना, दुःख देना, चिढ़ाना, खिन्नाना ।—पर खेलना ( वा० ) किसी उद्देश्य से अपने को सड़क में डालना, अपने को सड़क में डाल कर भी किसी काम को करना, ।—पिघलना ( वा० ) दया आना, किसी के दुःख से दुःखित होना, मोह आना ।—पकड़ा जाना ( वा० ) शोक प्रसूत होना, शोच आना, वदासीन होना ।—फटना ( वा० ) प्रेम टूटना ।—फिर जाना ( वा० ) सन्तुष्ट होना, वृत्त होना, प्रधाना, अनिच्छा होना ।—जलना ( वा० ) मन का दुःखित होना, पीड़ा, वेदना, व्यथा ।—जलाना ( वा० ) सताना, दुःख देना, पीड़ा पहुँचाणा, दूसरों के कार्य के लिये अपने को जलाना, स्वयं कष्ट उठा कर भी दूसरों को सुखी करना, निष्काम परोपकार करना ।—चाहना ( वा० ) किसी वस्तु की इच्छा ।—छुराना या छिपाना ( वा० ) आसक्त करना, शक्ति के अनुसार काम न करना, ।—चलना ( वा० ) इन्द्रियों के विषयों की ओर मन का जाना । चाह, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ ।—चलाना ( वा० ) शक्ति प्रदर्शन करना, सामर्थ्य दिखाना, मन चलाना ।—दान करना ( वा० ) अपराधी को क्षमा करना ।—घड़कना ( वा० ) शङ्कित होना, घबड़ाना ।—डूब जाना ( वा० ) शोकित होना, मूर्च्छित होना ।—रखना ( वा० ) प्रसन्न करना, अन्य के इच्छानुसार काम करना, इच्छापूर्ति करना, मनोरथ सिद्ध करना, बात रख लेना ।—से उतर जाना ( वा० ) अप्रिय हो जाना, अनीप्सित होना, चाह नहीं रहना ।—से मारना ( वा० ) बध करना, जान से मारना, मार डालना ।—करना ( वा० ) चाहना, इच्छा करना, अभिलाष करना ।—खोल कर करना ( वा० ) शसाह से करना, प्रसन्नता से करना, किसी काम को सामर्थ्य भर करना ।—खोलकर कहना ( वा० ) स्पष्ट कहना, साफ साफ कहना, निर्भय कहना, बसाह से कहना ।—पर आना ( वा० ) कष्ट में पड़ना, आफत में फँसना, अनन्यगति होना, किसी से लाचार

हो जाना ।—घट जाना ( वा० ) अनुसाहिन होना, हताश होना ।—लगना ( वा० ) प्रीति करना, प्रेम होना ।—जगाना ( वा० ) प्रेम लगाना, प्रणय, वषण करना ।—जेना ( वा० ) मार डालना ।—मारना ( वा० ) निराश कराना मन तोड़ना ।—मिलाना ( वा० ) मित्रता करना ।—में आना ( वा० ) स्मरण आना ।—में जल जाना ( वा० ) ईर्ष्या से दुःखित होना, कुड़ना ।—में जो आना ( वा० ) वापसि से छुटकारा पाना, दुःख के अनन्तर सुखी होना । भय का कारण दूर होने से निर्भय होना ।—में घर करना ( वा० ) हृदय को अपने अधीन करना, अपना प्रेम दूसरे के हृदय में स्थापित करना ।—निकलना ( वा० ) मरना, मर जाना, बेकल होना, भय भीत होना, घबड़ाना ।—हारना ( वा० ) अधीन हो जाना, व्याकुल होना, निराश हो जाना, घबड़ा कर काम छोड़ना, अनुसाही हो जाना ।—हट जाना ( वा० ) मन हट जाना, प्रेम टूट जाना, विरोध हो जाना, वदासीन हो जाना ।

जीअन दे० ( पु० ) जीवन ।

जोका तद्० ( स्त्री० ) जीविका, वृत्ति, मन्थान ।

जोङ्गुराना दे० ( कि० ) सिकोड़ना, समेटना, सङ्कुचित करना ।

जीजा ( पु० ) पढ़ी यहिन का पति ।

जीजी ( स्त्री० ) बड़ी बहिन । [परामर्श ।

जोत दे० ( स्त्री० ) जय, विजय, शत्रुपराजय, शत्रु-

जीतना दे० ( कि० ) जयहरना, अपने अधीन करना, बध करना, शत्रु को हराना ।

जीतव दे० ( पु० ) जीवन, जीना, जिन्दगी, स्थिति काल । [नितवैया ।

जीतवना तद्० ( पु० ) जयी, विजयी, जयमान,

जीतवैया दे० ( पु० ) जेता, विजयी ।

जीता दे० ( वि० ) प्राणधारी, चेतन, जीता हुआ ।

जीति ( कि० ) जीतकर, जय प्राप्त करके ।

जीतिया दे० ( स्त्री० ) मत्त विशेष, जीवशुन्रिका मत्त,

आशिवन शुद्धा अष्टमी का महालक्ष्मी का मत्त, यह मत्त प्रायः छिपा सन्तान जीवित रहने के हेतु किया करती है ।

जीतू दे० ( पु० ) जयी, विजयी, योद्धा, लड़ाका, जितवैया ।

जीते, जी दे० ( वा० ) जब तक जीता है, जीते रहने तक ।

जीन दे० ( पु० ) चारजामा, काठी, घोड़े की पीठ पर कसने की वस्तु, खोगीर ।—पोश ( पु० ) जीन के ऊपर का कपड़ा ।—सचारी ( स्त्री० ) घोड़े की पीठ पर जीन रख कर सवार होने की क्रिया ।

जीना दे० ( क्रि० ) जीता रहना, जीवित रहना ।

जीम दे० ( स्त्री० ) जिह्वा, रसना, रसनेन्द्रिय ।

—चाटना ( वा० ) कालाविल होना, उल्लूक होना, किसी के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित होना

—निकालना ( वा० ) थक जाना, श्रान्त होना, थकने से अचेत होना ।—एकड़ना ( वा० ) बोलने न देना, बोली बन्द करना, बात काटना, वाक्यों का दोष दिखाना ।—घड़ाना ( वा० ) चटोर होना हानि लाभ का ध्यान न करके खाते जाना, निन्दित करना, बकबक करना ।

जीभा ( पु० ) जीभ के समान कोई चीज, जानवरों की धीमारी विशेष । [बकी, मुँहफट ।

जीभारा दे० ( वि० ) चटोर, लोभी, लुब्ध, पक्षवादी,

जीभी दे० ( स्त्री० ) जीभ का मेल साफ करने की वस्तु ।

जीमना दे० ( क्रि० ) भोजन करना, खाना ।

जीमार दे० ( शु० ) घातक, वृशंस, मारने वाला ।

जीमूत तद् ( पु० ) मेघ, बादल, घन, घटा, इन्द्र, पर्वत, मोया, मुस्ता, सूर्य, पोषण कर्ता, आजीविका दाता । विराट की सभा का एक पहलवान, दशार्ह के पुत्र का नाम, शाहमली द्वीप के एक वर्ष का नाम ।—बाहन ( पु० ) ( १ ) प्रसिद्ध स्मार्त पण्डित ये ग्याहर्वी सदी के प्रथम भाग में अरब हुए थे, इन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया है । ( २ ) शालिवाहन राजा का पुत्र । ( ३ ) इन्द्र । ( ४ ) नागानन्द नाटक का प्रसिद्ध नायक ।

जीयत दे० ( पु० ) जीवित, जीवते हुए, इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है । [मसाला ।

जीरक तद् ( पु० ) जीरा, वणिकू द्रव्य विशेष,

जीरा तद् ( पु० ) जीरा, जीरक, स्वनाम प्रसिद्ध मसाला ।

जीर्ण तद् ( वि० ) पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, जरा विशिष्ट, परिपक्व, जर्जरभूत, पारु विशिष्ट ।—ता ( स्त्री० )

अशक्तता, दुर्बलता, दौर्बल्य, निर्वज्रता ।—धस्

( पु० ) फटा पुराना वस्त्र, सड़ा गला कपड़ा ।

जीर्ण तद् ( स्त्री० ) कीर्णता, वृद्धावस्था, परिपक्व, पचाव, अन्नपाक ।

जीर्णोद्धार तद् ( पु० ) पुरानी वस्तुओं की मरम्मत, जीर्ण का उद्धार, पुरानी वस्तुओं को पुनः इरीकरण, पुनः संस्कार, मरम्मत ।

जील दे० ( स्त्री० ) धीमा स्वर, मध्यम स्वर, तानपूरा या साझी आदि का तार ।

जीव तद् ( पु० ) प्राण, आरमा, जीव, जिया, जी, प्राणवारी, चेतन, जानदार, जन्तु, प्राणी, वृद्धस्थिति, देवगुह, विष्णु, शरलेपा नक्षत्र, यकायम का पेड़ —दान ( पु० ) अन्नदान, प्राणदान ।—धारी ( गु० ) प्राणी, चेतन । [सूदखो, सैपरा ।

जीवक तद् ( पु० ) जीने वाला, उपपन्न, सेवक, जीवखानि तद् ( पु० ) परमात्मा, ईश्वर, अनादि पुरुष, जीवों का आश्रय, प्राणियों का आधार ।

जीवगर तद् ( पु० ) सूमा, वीर, पौड़ा, निर्भय । जीवड़ा दे० ( पु० ) प्राणी, जन्तु, जानवर ।

जीवत् तद् ( वि० ) वर्तमान, सजीवि, चेतन ।

—पतिका ( स्त्री० ) सधवा, जिसका पति जीता हो ।—पितृक ( गु० ) जिसका पिता वर्तमान हो ।

जीवन तद् ( पु० ) [ जीव + अनट् ] जीविका, जल, मन्त्रन, मज्जा, वायु, पुत्र, ईश्वर, गन्ना, प्राणधार ।—चरित, चरित्र ( पु० ) जीवन का हाल । वह पुस्तक जिसमें किसी की ज़िन्दगी का हाल हो ।

—धन ( पु० ) जीवन का सर्वस्व, प्राणाधार, प्राणप्रिय ।—मास ( पु० ) जीवन का भय, न जीने का डर ।—मूरि ( स्त्री० ) सजीवनी नाम की एक वृद्धि, प्यारी, प्राणप्रिय ।—मृत ( पु० ) जीते जी मरा, जीता हुआ भी मृत के समान ।—योगि ( पु० ) रत्न विशेष, शरीर में प्राण संचार करने वाला एक प्रकार का रत्न । [रहना ।

जीवना तद् ( स्त्री० ) सेदौषज, ( क्रि० ) जीना, जीता

जीवनी तद् ( स्त्री० ) सजीवनी वृद्धि, जीवन वृत्तान्त, जीवन घटना का वृत्तान्त । [उपाय ।

जीवनोपाय तद् ( पु० ) उपजीविका, वृत्ति, जीने का

जीवनौपध तद् ( पु० ) जिस औपध से मरे हुए भी जी जाते हैं, जीवन रक्षाकारी, जीवनोपाय, उपजीविका, रक्षावृत्ति ।

जीवन्त तद् ( वि० ) जीता, जीवित, सचेत, जीवयुक्त ।

जीवन्ती तद् ( स्त्री० ) सजीवन बूटी, जीव रक्षा करने वाली महौपध ।

जीवमन्दिर तद् ( पु० ) शरीर, देह, काय, तन ।

जीवमुक्त तन् ( वि० ) [ जीव + मुक्त ] जीवन

दशा ही में ज्ञानार्जन की सहायता से मक्ष साक्षात्कार, इस जन्म ही में संसार बन्धन से मुक्त महाराम ।

जीवा तद् ( स्त्री० ) जीवन्ती, औपध विशेष, ज्या, धनुष की डोरी, जो एक छोर से दूसरे छोर तक बँधी रहती है, रोड़ा, जीविका, बालबन्ध, भूमि, जीवन ।

जीवात्मा तद् ( पु० ) आत्मा, प्राण, देही, जीव ।

जीवान्तक तन् ( पु० ) जीवनाशक, जी मारनेवाला, ब्रह्मेष्टि, व्याध, घातक, क्रूर ।

जीवाधार ( पु० ) हृदय, आत्मा का आधार ।

जीविका तद् ( स्त्री० ) वृत्ति, जीवनोपाय, बन्धान ।

जीवित तद् ( पु० ) जीवन्, आयुष्य, आयु, चेतन ।

जीविता तद् ( पु० ) जीने वाला, सजीव, प्राण-धारी ।

जीवी तद् ( वि० ) जीवधारी, प्राणी, सजीवी ।

जीह, जीहा तद् ( स्त्री० ) जीम, जिह्वा, रसना, ज्ञान ।

जुआ दे० ( पु० ) घूतकीड़ा, यात्री खगा कर पंसा या कौड़ी बाँटना, छलकर्म, कपट कर्म ।—चोर ( पु० ) धोखेबाज़, ठग ।—चोरी ( स्त्री० ) ठगी, धोखे-यात्री ।

जुआ दे० ( पु० ) कीड़े ओ सिर के वालों में रहते हैं, जूँ ।

जुआरा ( पु० ) खारी, जुआ खेलने वाला ।

जुआरिहि ( पु० ) खारी को, जुआ खेलने वाले को ।

जुआर-भाटा तद् ( पु० ) ज्वार भाटा, नदी का बड़ना घटना, यह समुद्र के निकटस्थ नदियों में होता है ।

जुआरि दे० ( स्त्री० ) घब विशेष, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अघ, जोगरी ।

जुआरी दे० ( पु० ) जुआ खेलने वाला, घूतकीड़ा कर्ता, कपटी, छलकारी ।

जुकाम, जुखाम दे० ( पु० ) सरदी की बीमारी जिममें नाक बहती और सारा शरीर वेधाम रहता है ।

जुग तद् ( पु० ) युग, बारह, वर्ष की अवधि, सत्य, प्रेता, द्वार और कलि, ये चार युग, युगल, युग्म, जोड़ा, युक्ति ।

जुगत तद् ( स्त्री० ) युक्ति, चतुर्गाई, अपने पक्ष को पुष्ट करने वाली उपपत्ति, अनुभव की हुई सर्वमान्य बातें, अनुमान, रीति । [ जुगनी ।

जुगनी दे० ( स्त्री० ) खपोत, ज्योति, रिहण्य, भग

जुगनू दे० ( पु० ) कण्ठभूषण, आभूषण विशेष जो गले में पहना जाता है, खपोत, परकीर्तना ।

जुगल तद् ( पु० ) जोड़ा, युग्म, दो, युग्म, युग, दुहँ ।

जुगचत दे० ( कि० ) प्रतीक्षा करने, पालन करते, आसरा देखते, यक्ष करते, परखते, निरखते, जोहते ।

जुगवना दे० ( कि० ) यक्ष या रक्षा पूर्वक रखना ।

जुगविधि तद् ( स्त्री० ) दोनों प्रकार से, दोनों रीति से ।

जुगवैया दे० ( पु० ) जुगवने वाला, रचक, बचाने वाला ।

जुगानजुग तद् ( वा० ) युगानुयुग, कई वर्ष, बहुत वर्ष तक, बहुत दिनों तक ।

जुगाना दे० ( कि० ) चल करना, बपाय करना, रक्षा करना, दुःख से उबारना, बचाना ।

जुगालना दे० ( कि० ) पगुलाना, पागुर करना, रोमण्य करना, एक बार चबा कर खाये हुए को पुनः निकाज कर खाना, जैसे बेल खादि करते हैं ।

जुगाली दे० ( स्त्री० ) पागुर, रोमण्य, चर्वित, चर्वण ।

जुगति दे० ( स्त्री० ) युक्ति, रीति, तरीक़ीय, चतुर्गाई, अनुमान ।

जुगुप्सक ( पु० ) व्यर्थ दूसों की निन्दा करने वाला ।

जुगुप्सा तद् ( स्त्री० ) [ गुप् + सन् + भा ] निन्दा, तिरस्कार, कुत्सा, ग्लानि, घृणा ।

जुगुप्सित तद् ( पु० ) [ गुप् + सन् + क ] निन्दित, गहिँत, घृषित, तिरस्कृत ।

जुह दे० ( स्त्री० ) उमर, साहस, उत्साह ।

जुह्नि दे० ( वि० ) जाति पतित, जाति बहिष्कृत ।

जुह दे० ( पु० ) मधुहूर, मूर्चि विशेष, मधुहूर कल्पित मूर्चि, कल्पित मृत पौनि ।

जुह्म ( स्त्री० ) पुन, बड़ाई ।



जीतू दे० ( पु० ) जयी, विजयी, योद्धा, बढ़ाका, जितवैया ।

जीते जी दे० ( वा० ) जय तक जीता है, जीते रहने तक ।

जीन दे० ( पु० ) चारजामा, काटी, घोड़े की पीठ पर कसने की वस्तु, खोगीर ।—पोश ( पु० ) जीन के ऊपर का कपड़ा ।—सवारी ( स्त्री० ) घोड़े की पीठ पर जीन रख कर सवार होने की क्रिया ।

जीना दे० ( क्रि० ) जीता रहना, जीवित रहना ।

जीम दे० ( स्त्री० ) जिद्धा, रसना, रसनेन्द्रिय ।

—चाटना ( वा० ) जालायित होना, उत्सुक होना, किसी के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित होना ।

—निकालना ( वा० ) थक जाना, श्रान्त होना, थकने से अचेत होना ।—एकड़ना ( वा० ) बोलने न देना, बोली बन्द करना, बात काटना, वाक्यों का दोष दिखाना ।—घड़ाना ( वा० ) चटोर होना हानि लाभ का ध्यान न करके खाते जाना, निन्दा करना, बकबक करना ।

जीभा ( पु० ) जीभ के समान कोई चीज़, जानवरों की भीमारी विशेष । [ थकी, मुँहफट ।

जीभारा दे० ( वि० ) चटोर, लोभी, लुब्ध, बकवादी, जीमी दे० ( स्त्री० ) जीभ का मँल साफ़ करने की वस्तु ।

जीमना दे० ( क्रि० ) भोजन करना, खाना ।

जीमार दे० ( गु० ) घातक, नृशंस, मारने वाला ।

जीमूत तत्व० ( पु० ) मेघ, बादल, घन, घटा, हन्द्र, पर्वत, मोघा, मुस्ता, सूर्य, पोषण कर्ता, आजी-

विका दाता । विराट की समा का एक पदलवायु, द्यार्ह के पुत्र का नाम, शाहमली द्वीप के एक

धरं का नाम ।—बाहन ( पु० ) ( १ ) प्रसिद्ध स्मार्त पण्डित ये ग्यारहवीं सदी के प्रथम भाग में उत्पन्न हुए थे, इन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया है ।

( २ ) शालिवाहन राजा का पुत्र । ( ३ ) हन्द्र ।

( ४ ) नागानन्द नाटक का प्रसिद्ध नायक ।

जीयत दे० ( पु० ) जीवित, जीवते हुए, इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है । [ मसाला ।

जीरक तत्व० ( पु० ) जीरा, बणिकू द्रव्य विशेष, जीरा तत्व० ( पु० ) जीरा, जीरक, स्वनाम प्रसिद्ध मसाला ।

जीर्ण तत्व० ( वि० ) पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, जरा विशिष्ट, परिपक्व, अजरीमूत, पाक विशिष्ट ।—ता ( स्त्री० )

अशक्तता, दुर्बलता, दौर्बल्य, निर्वकता ।—धरू

( पु० ) फटा पुराना वस्त्र, सड़ा गला कपड़ा ।

जीर्णि तत्व० ( स्त्री० ) जीर्णता, वृद्धावस्था, परिपक्व, पचाव, अन्नपाक ।

जीर्णोद्धार तत्व० ( पु० ) पुरानी वस्तुओं की मरम्मत, जीर्ण का उद्धार, पुरानी वस्तुओं को पुनः इरीकरण, पुनः संस्कार, मरम्मत ।

जील दे० ( स्त्री० ) धोमा स्वर, मध्यम स्वर, तानपूरा या सावली आदि का तार ।

जीव तत्व० ( पु० ) प्राण, आत्मा, जीव, जिया, जी, प्राणधारी, चेतन, जानदार, जन्तु, प्राणी, वृहस्पति, देवगुरु, विष्णु, अरजोपा नक्षत्र, बकायन का पेड़

—दान ( पु० ) अभयदान, प्राणदान ।—धारी ( गु० ) प्राणी, चेतन । [ सुरक्षित, सैरा ।

जीवक तत्व० ( पु० ) जीने वाला, उपपन्न, सेवक, जीवखानि तत्व० ( पु० ) परमात्मा, ईश्वर, अनादि पुरुष, जीवों का आश्रय, प्राणियों का आधार ।

जीवगर तत्व० ( पु० ) सुर्मा, वीर, पौड़ा, निर्भय ।

जीवड़ा दे० ( पु० ) प्राणी, जन्तु, जानवर ।

जीवत् तत्व० ( वि० ) वर्तमान, सजीव, चेतन ।

—पतिका ( स्त्री० ) सधवा, जिसका पति जीता हो ।—पितृक ( गु० ) जिसका पिता वर्तमान हो ।

जीवन तत्व० ( पु० ) [ जीव + अनट ] जीविका, बल, मक्खन, मज्जा, वायु, पुत्र, ईश्वर, गङ्गा, प्राणाधार ।—चरित, चरित्र ( पु० ) जीवन का हाल ।

यह पुस्तक जिसमें किसी की ज़िन्दगी का हाल हो ।

—धन ( पु० ) जीवन का सर्वस्व, प्राणाधार, प्राणमय ।—मास ( पु० ) जीवन का भय, न जीने का डर ।—मूरि ( स्त्री० ) सजीवनी नाम की एक बूटी, प्यारी, प्राणमय ।—मृत ( पु० ) जीते जी मरा, जीता हुआ भी मृत के समान ।—यौनि ( पु० ) रत्न विशेष, शरीर में प्राण संचार करने वाला एक प्रकार का रत्न । [ रहना ।

जीवना तत्व० ( स्त्री० ) मेदीपथ, ( क्रि० ) जीना, जीता

जीवनी तत्व० ( स्त्री० ) सजीवनी बूटी, जीवन वृत्तान्त, जीवन घटना का वृत्तान्त । [ उपाय ।

जीवनोपाय तत्व० ( पु० ) उपजीविका, वृत्ति, जीने का

जीवनौपध तत् ( पु० ) जिस औपध से मरे हुए भी जी जाते हैं, जीवन रचाकारी, जीवनोपाय, उपजीविका, रचावृत्ति ।

जीवन्त तद् ( वि० ) जीता, जीवित, सचेत, जीवयुक्त ।

जीवन्ती तद् ( स्त्री० ) सजीवन बूटी, जीव रचा करने वाली महौपध ।

जीवमन्त्रि तद् ( पु० ) शरीर, देह, काय, तन ।

जीवन्मुक्त तद् ( वि० ) [ जीवन् + मुक्त ] जीवन दशा ही में ज्ञानार्जन की सहायता से मल साधारण, इस जन्म ही में संसार बन्धन से मुक्त महात्मा ।

जीवा तद् ( स्त्री० ) जीवन्ती, औपध विशेष, ज्या, धनुष की डोरी, जो एक छोर से दूसरे छोर तक बँधी रहती है, रोड़ा, जीविका, बालबन्ध, भूमि, जीवन ।

जीवात्मा तद् ( पु० ) आत्मा, प्राण, देही, जीव ।

जीवान्तक तद् ( पु० ) जीवनान्त, जी मारनेवाला, बहेलिया, व्याध, घातक, मर ।

जीवाधार ( पु० ) हृदय, आत्मा का आधार ।

जीविका तद् ( स्त्री० ) वृत्ति, जीवोपाय, बन्धान ।

जीवित तद् ( पु० ) जीवन, आयुष्य, आयु, चेतन ।

जीविता तद् ( पु० ) जीने वाला, सजीव, प्राण-धारी ।

जीवी तद् ( वि० ) जीवधारी, प्राणी, सजीवी ।

जीह, जीहा तद् ( स्त्री० ) जीम, जिह्वा, रसना, ज्ञान ।

जुआ दे० ( पु० ) घूतक्रीडा, याजी खग कर पासा या कौड़ी डालना, छलकर्म, कपट कर्म ।—चोर ( पु० ) धोखेबाज़, ठग ।—छोरी ( स्त्री० ) ठगी, धोखेबाज़ी ।

जुआ दे० ( पु० ) क्रीड़े जो सिर के वालों में रहते हैं, जू ।

जुआरा ( पु० ) ज्वारी, जुआ खेलने वाला ।

जुआरिहि ( पु० ) ज्वारी को, जुआ खेलने वाले को ।

जुआर-भाटा तद् ( पु० ) ज्वार भाटा, नदी का बढ़ना घटना, यह समुद्र के निकटस्थ नदियों में होता है ।

जुआरि दे० ( स्त्री० ) अन्न विशेष, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अन्न, जोगरी ।

जुआरी दे० ( पु० ) जुआ खेलने वाला, घूतक्रीडा कर्ता, कपटी, छलकारी ।

जुलाम, जुलाम दे० ( पु० ) सरदी की बीमारी जिसमें नाक बहती और सारा शरीर येकाम रहता है ।

जुग तद् ( पु० ) युग, बारह, वर्ष की अवधि, सत्य, प्रेता, द्वापर और कलि, ये चार युग, युगल, युग्म, जोड़ा, युक्ति ।

जुगत तद् ( स्त्री० ) युक्ति, चतुर्गई, अपने पक्ष को पुष्ट करने वाली उपपत्ति, अनुभव की हुई सर्वमान्य बातें, अनुमान, रीति । [ जुगनी ।

जुगनी दे० ( स्त्री० ) खद्योत, ज्योति, रिक्कण, भग

जुगनू दे० ( पु० ) कण्ठभूषण, आभूषण विशेष जो गले में पहना जाता है, खद्योत, पटवीजना ।

जुगल तद् ( पु० ) जोड़ा, युगल, दो, युग्म, युग, दुई ।

जुगल दे० ( कि० ) प्रतीचा करते, पाठन करते, आसरा देखते, यत्न करते, परखते, निरखते, जोहते ।

जुगवना दे० ( कि० ) यत्न या रचा पूर्वक रखना ।

जुगविधि तद् ( स्त्री० ) दोनों प्रकार से, दोनों रीति से ।

जुगवैया दे० ( पु० ) जुगवने वाला, रचक, बचाने वाला ।

जुगानजुग तद् ( वा० ) युगानुयुग, कई वर्ष, बहुत वर्ष तक, बहुत दिनों तक ।

जुगाना दे० ( कि० ) यत्न करना, उपाय करना, रचा करना, दुःख से उबारना, बचाना ।

जुगालना दे० ( कि० ) पगुलाना, पागुर करना, रोमण करना, एक बार चपा कर छाये हुए को पुनः निकाल कर चबाना, जैसे यैल आदि करते हैं ।

जुगाली दे० ( स्त्री० ) पागुर, रोमण, चर्वित, चर्वण ।

जुगति दे० ( स्त्री० ) युक्ति, रीति, सरकीय, चतुर्गई, अनुमान ।

जुगुप्सक ( पु० ) व्यर्थ दूसरों की निन्दा करने वाला ।

जुगुप्सा तद् ( स्त्री० ) [ गुप् + सत् + धा ] निन्दा, तिरस्कार, कुत्सा, ग्लानि, धृष्टा ।

जुगुप्सित तद् ( पु० ) [ गुप् + सत् + क ] निन्दित, गहित, धृष्टित, तिरस्कृत ।

जुह दे० ( स्त्री० ) उमर, साइस, वसाइ ।

जुह्वित दे० ( वि० ) जाति पतित, जाति यहिष्कृत ।

जुह्व दे० ( पु० ) भयङ्कर, मूर्च्छि विशेष, भयङ्कर कथित मूर्च्छि, कथित भूत येनि ।

जुज्ज ( स्त्री० ) युद्ध, लड़ाई ।

जुभाऊ दे० ( वि० ) युद्ध सम्बन्धी, युद्ध के लिये, युद्ध की सामग्री, लड़ाका, शूर, वीर ।—वाजा ( पु० ) युद्ध के लिये प्रस्तुत होने का वाद्य विशेष, रणमेरी, घोड़ाघों को असाहित करने वाला बाजा ।

जुभाऊ दे० ( पु० ) लड़ाका, वीर, भट, रणवीर, शूर ।  
जुभावंट दे० ( खी० ) युद्ध, समर, कलह, युद्ध के लिये उमड़ाव ।

जुभावना दे० ( कि० ) मरवा डालना, मरवा डालने के लिये उपदेश, असदुपदेश, प्रचल से विरोध खड़ा करके मरवा डालना, लड़ा देना ।

जुट ( खी० ) जोड़ी, गुट, समूह, थोक ।

जुटना दे० ( कि० ) मिलना, जुड़ना, एकत्रित होना, इकट्ठा होना, लड़ना, लड़ने के लिये सामने आना, सम्मेलन करना, प्रवृत्त होना ।

जुटाना दे० ( कि० ) जोड़ना, एकत्रित करना, मिड़ाना, जमाना, जमा करना, मिलाना ।

जुट्टैया दे० ( पु० ) जुट जाने वाला, मिड़ने वाला, मिलने वाला, लड़ाका, लड़ने वाला ।

जुठारना दे० ( कि० ) जूठा करना, उच्छिष्ट करना ।

जुठारि दे० ( कि० ) जूठा करके, उच्छिष्ट करके ।

जुड़ना दे० ( कि० ) मिलना, मिल जाना, जुटजाना, सटना, एकत्रित होना ।

जुड़हा दे० ( पु० ) जुगम, जोड़ा । [ जोड़ने का कार्य ।

जुड़ाई दे० ( खी० ) जोड़ने की मजूरी, जोड़ने का दाम,

जुड़ाना दे० ( कि० ) विश्राम करना, थकावट उतारना, ठण्डाना, ठण्डा होना । [ लड़के, यमज सन्तान ।

जुड़िया, जुड़िहा दे० ( पु० ) एक साथ उत्पन्न हो

जुताई दे० ( खी० ) खेत जोतने का काम, चास, जोतना, खेत जोतने की मजूरी । [ कर बनवाना ।

जुताना दे० ( कि० ) खेत जोतवाना, खेत को जोत

जुतिपाना दे० ( कि० ) जूतों से मारना, अप्रतिष्ठा करना, पनही मारना ।

जुत्य दे० ( पु० ) यूथ, समूह ।

जुदा दे० ( वि० ) अलग, पृथक्, भिन्न ।

जुदाई दे० ( खी० ) विच्छेद, विभाग ।

जुद्ध तद् दे० ( पु० ) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई, रण ।

जुधिष्ठिर तद् दे० ( पु० ) युधिष्ठिर, स्वनाम प्रसिद्ध चन्द्रवंशीय राजा, यह अपनी सत्यवादिता के कारण

देव चरित्र हो गये हैं । पाण्डवों में यही सत्य से बढ़े थे । ( देखो युधिष्ठिर ) ।

जुन दे० ( पु० ) समय, काल, थवसर, मौका ।

जुन्हरी दे० ( खी० ) जुझार, अन्न विशेष । [ प्रकाश ।

जुन्दाई दे० ( पु० ) चन्द्रमा । ( खी० ) चाँदनी, चन्द्रिका

जुन्हैया दे० ( खी० ) चाँदनी, तारा, तारका, चन्द्रमा ।

जुवान दे० ( खी० ) जीम, मुख ।—( पु० ) मौखिक, जवानी ।

जुमना दे० ( पु० ) खेत में खाद डालने की क्रिया विशेष ।

जुमला दे० ( पु० ) सब, सम्पूर्ण ( पु० ) पूर्णवाक्य ।

जुरना दे० ( कि० ) एकसा होना, मिल जाना ।

जुरमाना, जुरवाना दे० ( पु० ) अर्पण्ड, धनदण्ड ।

जुरुमा दे० ( खी० ) भार्या, पत्नी, स्त्री, मेहरारू, जोरू ।

जुरै दे० ( कि० ) मिले, प्राप्त हो, लब्ध हो, मिल जाय ।

जुर्म दे० ( पु० ) दोष, अपराध ।

जुल दे० ( पु० ) यड़ावा, उरसाह देना, लल, कपट ।

जुलना दे० ( कि० ) भेंट करना, मिलना ।

जुलाहा दे० ( पु० ) मुसलमान कपड़े बुनने वाला ।

एक कीड़ा जो पानी पर तैरता है । [ धामी सवारी ।

जुलूस दे० ( पु० ) किसी उत्साह का समारोह, धूम-

जुल्क ( खी० ) सिर के लंबे घाल ।

जुलम ( पु० ) अत्याचार, अन्याय ।

जुल्लाव ( पु० ) रेचन, दस्तार दवाई ।

जुवती तद् दे० ( खी० ) युवती, युवा स्त्री, जवान स्त्री ।

जुवराज तद् दे० ( पु० ) युवराज, राजकुमार, राज्य का

अधिकारी, राजपुत्र, उपराजा । [ तल्ल ।

जुवा तद् दे० ( पु० ) युवा, युवावस्था, प्राप्त, जवान,

जुवानो दे० ( पु० ) मौखिक ।

जुवार दे० ( पु० ) अन्न विशेष, जुन्हरी ।

जुवारी दे० ( पु० ) जुधारी, छत्ती, कपटी ।

जुहाना ( कि० ) एकत्र करना ।

जुहार दे० ( पु० ) युद्धार्थ यात्रा की विदाई, वीरों के अभिवादन की रीति, युद्ध का अभिवादन, राजपूतों के प्रणाम करने की शैली, प्रणाम, नमस्कार,

दण्डवत्, पाछागन, यथा—

आप आपमहं करहि जोहार,

यह पसन्त सब कहैं त्योहार ।

—पशावत ।

जुहारना दे० (स्त्री०) किसी दूसरे से सहायता लेना, किसी का पहरान उठाना ।  
 जुहरी तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का फूलदार झाड़ू, जिसमें सफेद सुगन्धित फूल भरसात में लगते हैं ।  
 जुहोता तत्० ( पु० ) आहुति देने वाला ।  
 जू दे० ( अ० ) सम्मान सूचक, माननीयों के आदर प्रदर्शन के लिये यह शब्द उनके नाम के अन्त में जोड़ा जाता है ।- यथा: श्रीकृष्णचन्द्र जू श्री रामचन्द्र जू इत्यादि । तत्० ( स्त्री० ) सरस्वती, वायुमण्डल, पैल या घोड़े के मस्तक पर का टीका ।  
 जूझा दे० ( पु० ) जुधा, घूत, पाशकीड़ा ।  
 जूझाठ दे० ( पु० ) जुधड़, जुधा, लकड़ी की बनी हुई एक वस्तु को कहते हैं, जो बेलों के कन्धे पर रखी जाती है, जिसमें हल बांध कर खेत जोता जाता है ।  
 जूझारी दे० ( पु० ) जुधा खेलने वाला, घूतकर्ता जुए का खिलाड़ी, छली, कपटी ।  
 जूझार दे० ( पु० ) समुद्र का जल उफानाना, समुद्र का जब बढ़ना, समुद्र में उफान आना, चन्द्रमा की पूर्ण वृद्धि होने पर समुद्र में उफान आता है ।  
 जूँ दे० ( स्त्री० ) चिह्ना, चीलड़, एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो कपड़ों के मेल से उत्पन्न होता है ।  
 जूझ दे० ( पु० ) युद्ध, लड़ाई, संग्राम ।-मरना ( वा० ) लड़ कर मरना, जान दे देना, प्राण देना ।  
 जूझना दे० ( कि० ) लड़ना, लड़ाई करना, मरना, मरने के समान कष्ट उठाना । [ वस्त्र ।  
 जूट दे० ( पु० ) समूह, झट, जटा, पटसन, पटसनिया  
 जूठ दे० ( पु० ) भोजन से बचा हुआ, अचिष्ट ।  
 जूठन दे० ( पु० ) भोजन का अवशेष, जूठा, शुद्ध पिता आदि मान्यों का जूठा ।  
 जूठा दे० ( पु० ) खाया हुआ भोजन, मुँह से चुई हुई वस्तु, भोजन करने से बचा हुआ अन्न ।  
 जूड़ दे० ( पु० ) शीतल, ठंडा ।  
 जूड़ा दे० ( स्त्री० ) बँधे हुए बाज, खोपा ।  
 जूड़ी दे० ( पु० ) ऊपर विशेष, शीतल, कम्पज्वर ।  
 जूता दे० ( पु० ) पगखी, पनही, पैर में पहनने की चर्म पादुका, जूती ।-खोर ( पु० ) निर्लज्ज, जूते खाने वाला ।

जूती दे० ( स्त्री० ) सुन्दर और छोटा जूता, खूबसूरत जूता, स्त्रियों के पहनने की छोटी जूती ।-पैजार ( स्त्री० ) टंटा, बखेड़ा, भारपीट, मगड़ा ।  
 जूथ तद्० ( पु० ) यूथ, दल, झुण्ड, समूह, सेना । प ( पु० ) यूथपति, सेनापति, दल का नायक, फौज का अफसर ।  
 जून दे० ( पु० ) समय, काल, वेर, बेड़ा, अवसर अंगरेजी वर्ष का छठवाँ मास । [ ( वि० ) पुराना  
 जूना दे० ( पु० ) घास का बना रस्सा, बीड़ा, गेड्डी ।  
 जूए तद्० ( पु० ) यूए, जुधा, यशस्तम्भ ।  
 जूपी दे० ( पु० ) जुधारी ।  
 जूमना ( कि० ) एकत्रित होना, जमा होना ।  
 जूरना ( कि० ) जोड़ना, मिलाना । [ खोंग ।  
 जूरा दे० ( पु० ) वालों की गाँठ, बँधे हुए बाल, जूड़ा,  
 जूरी दे० ( स्त्री० ) समूह, झुण्ड, दल, यथा—  
 " बाँध तथा आनी जहाँ सूरी,  
 जूरी आय सय सिंहल पूरी "

—पद्मावत ।

जुही, बँधे हुए नये कल्ले, एक प्रकार का पौधा, एक प्रकार के पक्ष ।

जूस दे० ( पु० ) पोट, कटी, रोग के लिये पथ्य ।  
 जूह, जूहा दे० ( पु० ) समूह, जूधा, यूथ, सेना, पक्ष-  
 वत में इस शब्द का स्त्रीलिङ्ग माना है, यथा—  
 " हथि की जूह आथ थंग सारी,  
 हनुमत तवै लंगूर पसारी " ।-पद्मावत

जूही तत्० ( पु० ) यूथिक, यूथ विशेष ।  
 जूमण तत्० ( पु० ) [ जूम + अणट ] जैमाई, आ-  
 तोड़ना, मरोड़ना ।

जूममा } तत्० ( स्त्री० ) मुखविकारा जैमाई, जूमण  
 जूमका }  
 जै दे० ( सर्व० ) जो, जो लोग, सय ।  
 जैई दे० जो कोई, भोजन करके, खाकर ।  
 जैऊ दे० जो कोई भी, अनिर्धारित मनुष्य ।  
 जेट दे० ( पु० ) राशि, ढेर ।  
 जेट तद्० ( पु० ) ज्येष्ठ, बढ़ा, अग्रज, पती का बड़-  
 भाई, ज्येष्ठ महीना, जेट मास ।  
 जेठरा तद्० ( पु० ) ज्येष्ठ, बढ़ा, पहलौटा, प्रथम उत्पन्न पुत्र, जेठा, ज्येष्ठ, अग्रज ।

जुभाऊ दे० ( वि० ) युद्ध सम्बन्धी, युद्ध के लिये, युद्ध की सामग्री, लड़ाका, शूर, वीर ।—वाजा ( पु० ) युद्ध के लिये प्रस्तुत होने का वाद्य विशेष, रणभेरी, घोड़ाघों को उत्साहित करने वाला वाजा ।

जुभाऊ दे० ( पु० ) लड़ाका, वीर, भट, रणबाँकुरा, शूर ।  
जुभावट दे० ( स्त्री० ) युद्ध, समर, कलह, युद्ध के लिये उपकरण ।

जुभावना दे० ( कि० ) मरवा डालना, मरवा डालने के लिये उपदेश, असदुपदेश, प्रवचन से विरोध खड़ा करके मरवा डालना, लड़ा देना ।

जुट ( स्त्री० ) जोड़ी, गुट, समूह, थोक ।

जुटना दे० ( कि० ) मिलना, जुड़ना, एकत्रित होना, इकट्ठा होना, लड़ना, लड़ने के लिये सामने आना, सम्मेलन करना, प्रवृत्त होना ।

जुटाना दे० ( कि० ) जोड़ना, एकत्रित करना, मिट्टा देना, जमाना, जमा करना, मिलाना ।

जुटैया दे० ( पु० ) जुट जाने वाला, मिट्टने वाला, मिलने वाला, लड़ाका, लड़ने वाला ।

जुठारना दे० ( कि० ) जुठा करना, उच्छिष्ट करना ।

जुठारि दे० ( कि० ) जुठा करके, उच्छिष्ट करके ।

जुड़ना दे० ( कि० ) मिलना, मिल जाना, जुटजाना, सटना, एकत्रित होना ।

जुड़हा दे० ( पु० ) युग्म, जोड़ा । [ जोड़ने का कार्य ।

जुड़ाई दे० ( स्त्री० ) जोड़ने की मजूरी, जोड़ने का दाम,

जुड़ाना दे० ( कि० ) विधाम करना, थकावट उतारना, उण्डाना, उण्डा होना । [ लड़के, यमज सन्तान ।

जुड़िया, जुड़िहा दे० ( पु० ) एक साथ उत्पन्न हो

जुताई दे० ( स्त्री० ) खेत जोतने का काम, चास, जोतना, खेत जोतने की मजूरी । [ कर बनवाना ।

जुताना दे० ( कि० ) खेत जोतवाना, खेत को जोत

जुतिपाना दे० ( कि० ) जूतों से मारना, अप्रतिष्ठा करना, पनही मारना ।

जुत्य दे० ( पु० ) युय, समूह ।

जुदा दे० ( वि० ) अलग, पृथक्, भिन्न ।

जुदाई दे० ( स्त्री० ) विछेड, विवोध ।

जुद्ध तद् ( पु० ) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई, रण ।

जुधिष्ठिर तद् ( पु० ) युधिष्ठिर, स्वर्णाम प्रसिद्ध चन्द्रवंशीय राजा, यह अपनी सत्यवादिता के कारण

देव चरित्र हो गये हैं । पाण्डवों में यही सत्य से बड़े थे । ( देखो युधिष्ठिर ) ।

जुन दे० ( पु० ) समय, काल, अवसर, मौका ।

जुन्हरी दे० ( स्त्री० ) जुगार, अन्न विशेष । [ प्रकाश ।

जुन्हई दे० ( पु० ) चन्द्रमा । ( स्त्री० ) चाँदनी, चन्द्रिका

जुन्हैया दे० ( स्त्री० ) चाँदनी, तारा, तारका, चन्द्रमा ।

जुवान दे० ( स्त्री० ) जीम, मुख ।—नी ( पु० ) मौखिक, जवानी ।

जुमना दे० ( पु० ) खेत में खाद डालने की क्रिया विशेष ।

जुमला दे० ( पु० ) सब, सम्पूर्ण ( पु० ) पूर्णवाक्य ।

जुरना दे० ( कि० ) एकसा होना, मिल जाना ।

जुरमाना, जुरवाना दे० ( पु० ) अश्वदण्ड, धनदण्ड ।

जुरुआ दे० ( स्त्री० ) भार्या, पत्नी, स्त्री, मेहरारू, जोरू ।

जुरै दे० ( कि० ) मिले, प्राप्त हो, लब्ध हो, मिल जाय ।

जुर्म दे० ( पु० ) दोष, अपराध ।

जुल दे० ( पु० ) बढ़ावा, उत्साह देना, लल, कपट ।

जुलना दे० ( कि० ) अँट करना, मिलना ।

जुलाहा दे० ( पु० ) सुसलमान कपड़े बुनने वाला ।

एक कीड़ा जो पानी पर तैरता है । [ घासी सवारी ।

जुलूस दे० ( पु० ) किसी उत्साह का समारोह, धूम-

जुल्फ ( स्त्री० ) सिर के लंबे बाल ।

जुल्म ( पु० ) अत्याचार, अन्याय ।

जुल्लाव ( पु० ) रेचन, दस्तावर दवाई ।

जुवती तद् ( स्त्री० ) युवती, युवा स्त्री, जवान स्त्री ।

जुवराज तद् ( पु० ) युवराज, राजकुमार, राज्य का अधिकारी, राजपुत्र, उपराजा । [ तहण ।

जुवा तद् ( पु० ) युवा, युवावस्था, प्राप्त, जवान,

जुवानी दे० ( पु० ) मौखिक ।

जुवार दे० ( पु० ) अन्न विशेष, जुहरी ।

जुवारी दे० ( पु० ) जुगारी, छड़ी, कपटी ।

जुहाना ( कि० ) एकत्र करना ।

जुहार दे० ( पु० ) युद्धार्थ यात्रा की विदाई, वीरों के अभिवादन की रीति, युद्ध का अभिवादन, राजपूतों के प्रणाम करने की शैली, प्रणाम, नमस्कार, दण्डवत, पालामन, यथा—

थाप आपमहं करहि जोहारू,

यह वसन्त सब कहै योहारू ।

—पशावत ।



जेटा तद् ( पु० ) बड़ा, जेठ, ज्येष्ठ पहलौठा, प्रथम उपपक्ष । [की स्त्री ।

जेटानी तद् ( स्त्री० ) जेठ की स्त्री, पति के बड़े भाई

जेटनी तद् ( स्त्री० ) बड़ी, ज्येष्ठ, प्रधानता ।—भधु ( पु० )

धौपधि विशेष, एक प्रकार का पौधा, मुलहठी ।

जेटौत तद् ( पु० ) ज्येष्ठोपपक्ष, जेठ का पुत्र, पति के बड़े भाई का पुत्र ।

जैता दे० ( वि० ) जितना, परिमाण और संख्यायें बाची, तद् ( पु० ) जीतने वाला, विजयी ।

जैती ( वि० ) जितना । [खाते, भोजन करते ।

जैते ( सर्व० ) जितने, जोसे, जोबह, ( कि० वि० )

जैव दे० ( पु० ) खलीता, पाकेट, थैली, कपड़े में लगी हुई थैली ।—कट या कतरा ( गु० ) जेप काटने

वाला, चोर, उचक्का, गिरहकट ।—खर्च ( पु० ) ऊपरी या निज का खर्च । [ जमाने का साधन ।

जैमन तद् ( पु० ) भोजन करना, खाना, जोरन, दही

जैया दे० ( वि० ) जीत जाने योग्य, जीने के योग्य ।

जैर दे० ( पु० ) गर्म बन्धन, जरायु, खेड़ी, फिछी ।

—चंद ( पु० ) घोड़े की मोहरी में का कपड़ा ।

—बार ( गु० ) क्षतिग्रस्त, आपद्ग्रस्त ।

जेल दे० ( पु० ) कारागार, बड़ा घर, लालघर, बंधुओं के रहने का घर, बंधुओं की श्रेणि, पड़क ।

—खाना ( पु० ) कारागार, बंधनालय, बन्दीगृह ।

जैवड़ा दे० ( पु० ) रस्सा, डोर ।

जैवाड़ि या जैवड़ी दे० ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी छोटा रस्सा ।

जैवना तद् ( कि० ) खाना, भोजन करना ।

जैवनार तद् ( पु० ) पंगत का भोजन, दावत, भोज ।

जैवरो दे० ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी, रसरी ।

जैष्ठ ( पु० ) जेठ का महीना ।

जैष्ठा ( स्त्री० ) ज्येष्ठा, नक्षत्र विशेष । [एक घड़े ।

जैहड़ दे० ( स्त्री० ) तल ऊपर रखे पानी से भरे कई

जेहन ( पु० ) धारणशक्ति, बुद्धि ।

जैहर दे० ( पु० ) मटकी, मिट्टी का पात्र, अलङ्कार विशेष, रिपों के एक गहने का नाम ।

जैहल ( पु० ) जेल, कारागार ।—खाना ( पु० ) जेलखाना ।

जैहि दे० ( सर्व० ) जिसको, जिसने, जिसके ।

) जितना, संख्या और परिमाणायें बाची ।

जै दे० ( स्त्री० ) जय, जीत, विजय ।—जैकार करना ( वा० ) जय शब्द का उच्चारण पूर्वक आशीर्वाद देना, अभ्युदय चाहना, मङ्गल मनाना ।

जैगीपव्य तद् ( पु० ) ऋषि विशेष, यह प्रसिद्ध ऋषि अस्तित्व देवल के गुरु थे । पहिले अस्तित्व देवल नामक एक ऋषि गृहस्थ के धर्मों का पावन करते हुए आदिश्रुती पर वास करते थे । कुछ दिनों बाद जैगीपव्य मुनि भी वहाँ आये और उन्होंने योगाभ्यास के द्वारा सिद्धि प्राप्त की । महर्षि देवल जैगीपव्य की योगसिद्धि देख उनके शिष्य हो गये ।

जैत दे० ( पु० ) वृष विशेष, रागिनी विशेष ।

जैतून ( पु० ) वृष विशेष ।

जैत्र ( पु० ) पारा ( वि० ) विजयी ।

जैन तद् ( पु० ) जिनके धर्म को मानने वाला, जिनके बताये धर्म के अनुसार चलने वाला, जिन धर्मों ।

जैनी तद् ( वि० ) जैन मत वाला, धावक, सरावदी, जिनोपासक । [माछा, जीत की साजा ।

जैमाल या जैमाला तद् ( स्त्री० ) जयमाळा, स्वप्नहार

जैमिन तद् ( पु० ) मुनि विशेष, प्रसिद्ध हिन्दू दर्शन प्रणेता, इनके बनाये दर्शन का नाम पूर्व मीमांसा है । इस दर्शन को जैमिनि दर्शन भी कहते हैं ।

आस्तिक पददर्शनों के अन्तर्गत मीमांसा दर्शन भी है । श्रुति और स्मृति का जहाँ विरोध है, उनका विचार इस दर्शन में किया गया है । यह मंत्र रूप ही देवता मानते हैं । इनके मत से सृष्टि अनादि है, ईश्वर सत्ता के अस्तित्व आदि के ऊपर इसमें कुछ भी विचार नहीं किया गया है । यह कृष्ण द्वैपायन व्यास के शिष्य थे । जैमिनी ने सामवेद और महाभारत इनसे पढ़े थे । मीमांसा दर्शन के अतिरिक्त एक संहिता भी इन्होंने बनाई है, जिसका नाम जैमिनी भारत है । सुमन्तु और सुथान नाम के इनके दो पुत्र थे । इनके दोनों पुत्र अनुमयी विद्वान् थे । इनके पुत्रों ने भी वेद की संहिताएँ बनाई हैं । [ के पिता ।

जैयट तद् ( पु० ) महाभाष्य पर टीका करने वाले कैयट

जैवात्रिक ( पु० ) चन्द्रमा, कपूर ( पु० ) शीघ्रजीवी ।

जैसा दे० ( वि० ) यथा, जिस प्रकार, उपमानवाची ।

जैसी ( वि० ) " जैसा " का स्त्रीलिङ्ग ।

जैसे ( क्रि० वि० ) यथा, जिस प्रकार से, जिस ढंग से ।  
 जेहें दे० ( क्रि० ) जायेंगे, गमन करेंगे ।  
 जों दे० ( सर्व० ) कोई, जौन, यदि, सम्बन्धार्थक ।  
 जोई ( सर्व० ) जो, जो कोई ( क्रि० ) देखी, देखकर  
 जों दे० ( क्रि० ) ज्यों, जैसे । [जबजन्तु ।  
 जोंकर दे० ( पु० ) जबौका, रक्तगान करने वाल एक  
 जोंकर दे० ( थ० ) जिस प्रकार, जैसा, यादश ।  
 जोधरी ( स्त्री० ) छोटी मकाई ।  
 जोधैया ( स्त्री० ) चांदनी, जुहदया ।  
 जोहीं दे० ( थ० ) जिस समयमें, जिस कालमें, जभी ।  
 जोख दे० ( स्त्री० ) तौल, माप, नाप, परिमाण, वजन ।  
 जोखना दे० ( क्रि० ) तौलना, तौल करना, वजन  
 करना, नापना, मापना ।  
 जोखा ( पु० ) खेला, हिसाब ।  
 जोखिम दे० ( स्त्री० ) दायित्व, हानि की आशङ्का,  
 विपत्ति लाने वाली वस्तु, जैसे रुपये, जेवर,  
 सोना, चाँदी आदि ।—उठाना ( वा ) दायित्व  
 लेना, रक्षा का भार ग्रहण करना, साहस, किसी  
 मयङ्कर काम करने को उत्साहित होना ।  
 जोखों दे० ( स्त्री० ) जोखिम, घाटा, धीमा ।  
 जोग तद्० ( पु० ) योग, चित्त की वृत्तियों को बाहरी  
 वस्तुओं से हटाना, चित्त को अन्तर्मुख करना,  
 ज्ञान प्राप्त करने का साधन, भगवान् के उचित  
 भक्त धनने का उपाय, मेल, मिलाप, अच्छा समूह ।  
 प्रहों का मेल, तप । ( पु० ) योग्य, लायक—भाया  
 ( स्त्री० ) भगवान् की एक शक्ति ।  
 जोगड़ा दे० ( पु० ) पालण्डी, " घर की जोगी जोगड़ा  
 धान गाँव का सिद्ध ।  
 जोगवत दे० ( क्रि० ) परीक्षा करते, रखते, रखा करते ।  
 जोगसाधन या जोगाम्यास तद्० ( पु० ) योगाम्यास,  
 योगसाधन, योग की क्रियाओं का साधन करना ।  
 जोगी तद्० ( पु० ) योगी, जोगाम्यासी, महात्मा ।  
 जोगिनी तद्० ( स्त्री० ) योगिनी, देवी की सहचरी  
 योगियों की स्त्री ( देखो योगिनी ) ।  
 जोगिया दे० ( पु० ) जोगी या सन्यासियों का रङ्ग,  
 जोगिया रंग, गैरिक, एक रागिनी विशेष ।  
 जोगी ( पु० ) योगी, योगाम्यासी ।—श्वर ( पु० )  
 सिद्ध, तपस्वी ।

जोगीड़ा दे० ( पु० ) एक प्रकार की तुल्यन्दी ।  
 जोगेश्वर तद्० ( पु० ) योगियों के उपास्य देव, भगवान्  
 नारायण, श्रीकृष्ण, शिव । [श्रेष्ठ ।  
 जोग्य तद्० ( वि० ) योग्य, अच्छा, उत्तम, समर्थ,  
 जोजन तद्० ( पु० ) योजन, चार कोस का माप विशेष ।  
 जोट दे० ( पु० ) जोड़ा, साथी, सङ्गी, सहचर ।  
 जोटा दे० ( पु० ) बराबरी का, तुल्य, समान, साथी  
 सहचर, जोड़ी, दोनों । [मीजान ।  
 जोड़ दे० ( पु० ) मेल, प्रत्यय, जोड़ाई, गाँठ, टोटल,  
 जोड़ती दे० ( स्त्री० ) संख्या, गणित, हिसाब, गिनती,  
 संख्या ।  
 जोड़न दे० ( पु० ) जामन, सोझागा ।  
 जोड़ना दे० ( क्रि० ) मिलाना, मिजान करना, एकत्रित  
 करना, गाँठना, गाँठ लगाना, पैयन्द् लगाना । गणन  
 करना, सङ्कलन करना, धन बटोरना, लगाना,  
 सटाना, चिपटाना, जोड़ देना ।  
 जोड़याँ ( पु० ) यमज, दो बालक एक ही साप वरपक्ष  
 हुए हो ।  
 जोड़ा दे० ( पु० ) युग्म, युगल, स्त्री पुरुष, जूना, एक  
 बार पहनने योग्य कपड़े । [मजूरी ।  
 जोड़ाई पु० ( स्त्री० ) जोड़ाई का काम, जोड़ने की  
 जोड़ी पु० ( स्त्री० ) दो, युगल ।  
 जोड़ ( स्त्री० ) जोर, स्त्री, धीरत ।  
 जोत तद्० ( पु० ) रस्ती या चमड़े का तस्मा, जिससे  
 बैल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है ।  
 तराजू के पल्लुओं की रस्ती । यह जमीन जो किसी  
 आशामी को जोतने देने को मिली हो । ( स्त्री० )  
 ज्योति, प्रकाश, किरण ।  
 जोतना दे० ( क्रि० ) हल से जोतना, चालना, चाल  
 करना, हल चलाना, हल से खेत को बोने योग्य  
 बनाना । गाड़ी हल आदि चलाने को उसमें घोड़ों  
 या बैलों को लगाना । [सील ।  
 जोतमान तद्० ( पु० ) ज्योतिष्मान्, चमकदार, प्रकाश-  
 जोतार दे० ( पु० ) हरबाहा, हलबाह, जोतने वाला  
 आत्मा ।  
 जोति तद्० ( स्त्री० ) यह धी का दीपक जिनमें पट्टी  
 बत्ती जिसे फूलबत्ती भी कहते हैं, जलाई जाती है  
 और जो किसी देवी या देवता के नाम पर जलाया



जाता है।—स्वरूप ( पु० ) भगवान्, लय, योगियों के ध्येय आत्मा, आत्मा का प्रकाश, जिसका लय योगी ध्यान करते हैं।

जोतिष तद् ( पु० ) ग्रन्थचक्र आदि के विषय की बातें बताने वाला शास्त्र, काल ज्ञान शास्त्र, इसके प्रधानतः कलित और गणित ये दो भेद हैं, नज्म।

जोतिषो तद् ( पु० ) दैवज्ञ, ज्योतिषी, शास्त्रवेत्ता, गणितज्ञ, ज्योतिष विद्या ज्ञानने वाला।

जोती दे० ( स्त्री० ) तराजू के पतड़े बाँधने की रस्सी, जुआड, डल जोतने वाली रस्सी, जोत।

जोत्स्ना तद् ( स्त्री० ) ज्योत्स्ना, चन्द्रिकायुक्त रात्रि, प्रकाशयुक्त रात, उजेली रात, चन्द्रिका, चांदनी, प्रकाश। [ उजेली रात ]

जोत्स्नी तद् ( स्त्री० ) रात्रि, रात, शुक्लचंद्र की रात, जोघन तद् ( पु० ) आयोधन, लड़ाई, संग्राम, समर। जोथा तद् ( पु० ) घोषा, घोर, लड़ाका, लड़नेवाला, भट, सेना का सिपाही।

जोनराज तद् ( पु० ) काश्मीर के विख्यात ऐतिहासिक। पण्डित, काश्मीर के एक मात्र इतिहास राजतरङ्गिणी के ये कर्ता हैं। कदहण राजतरङ्गिणी को पूरी नहीं कर सके थे, उनके बनाने का शेषभाग पण्डित जोनराज ने पूरा किया, कदहण ने ११४८ ई० में राजतरङ्गिणी में लिखा है कि पण्डित जोनराज महाशय, १५ सेबर् में राजतरङ्गिणी बनाकर शिवसायुज्य प्राप्त हुए। इसी आधार पर यह बात निश्चित हुई है कि जोनराज का समय १४ वीं सदी है। इनकी बनाई राजतरङ्गिणी दूसरी राजतरङ्गिणी के नाम से प्रसिद्ध है। भारविकृत ग्रन्थ की टीका भी इन्होंने बनाई थी। इनके शिष्य का नाम श्रीवर पण्डित था, इन्होंने, १४ वीं और १५ वीं सदी के मध्य में तीसरी राजतरङ्गिणी बनाई है।

जोनि या जोनी तद् ( स्त्री० ) योनि, स्त्री का विशेष

जोवन तद् ( पु० ) यौवन, युवावस्था, तरुणाई, जवानी, स्तन, पयोधर, छाती, चूँची।

जोवनवती तद् ( स्त्री० ) यौवनवती, युवती, तरुणी, युवावस्थावती स्त्री, युवा स्त्री, जवान स्त्री।

जोवना, जोवनवा तद् ( पु० ) जोवन, यौवन, तरुण्य। [ कुटिम्बिनी।

जोय, जोरु तद् ( स्त्री० ) जाया, भार्या, पत्नी, स्त्री, जोर ( पु० ) ताकत, बल, जोड़ा, संगी।

जोरशोर ( पु० ) प्रबलता, बलविक।

जोरदार ( वि० ) बलवान, ताकतवर।

जोराजोरी ( स्त्री० ) बरूपक।

जोरावर ( पु० ) बनवान।

जोरु ( स्त्री० ) स्त्री।

जोरी दे० ( स्त्री० ) जोड़ा, जोड़ी। [ ठगी।

जोला दे० ( पु० ) कपड़, छल, धोखा, धूर्तता, डगाई,

जोवत दे० ( कि० ) अभिलाष काते, चाहते, देखते।

जोवना दे० ( कि० ) देखना, ताकना, खोजना, ढूँढना, अनुसन्धान करना, चितवना। [ भार्या, कामिनी।

जोपित् तद् ( स्त्री० ) योपित्, सीमन्तिनी, स्त्री, जोपी, जोसी दे० ( पु० ) ज्योतिषी, ज्योतिःशास्त्रवेत्ता, दैवज्ञ।

जोहना दे० ( कि० ) घाट देखना, प्रतीक्षा करना, ताकना, खोजना, ढूँढना, पता लगाना, मालूम करना, अनुसन्धान करना।

जोहार ( पु० ) प्रणाम, रामराम।

जोही दे० ( वि० ) खोजी, ढूँढवैया, अनुसन्धानी।

जोहारना ( कि० ) प्रणाम करना।

जो दे० ( पु० ) जिस प्रकार से, जो, यदि, जब।—जग ( श्र० ) जयतक, जिस समय तक, जितनी देर तक।—जयतक। [ जयतक। ] कहना।

जोकना दे० [ देना, ]

जो नत० ( ]

जौलाई (स्त्री०) श्रंगरेजी वर्ष के सातवें मास का नाम ।  
 जौहर (पुं०) रत्न, तत्व, सारांश, उत्तमता, खूबी,  
 शस्त्रों की भेद, राजपूतों का जुहारमत ।  
 जौहरी दे० (पुं०) रत्नविक्रेता, रत्नों के परखने वाला,  
 गुणप्राहक ।  
 झ तत्त्वं (पुं०) बुध, पण्डित, प्रह्ला, महीसूत, मन्त्रल,  
 (वि०) अभिज्ञ, विशिष्ट, चतुर ।  
 ज्ञात तत्त्वं (वि०) [ज्ञा + क] कृतज्ञान, जाना हुआ,  
 विदित, प्रतीत, अवगत ।—सार (अ०) विदिन,  
 मालूम ।—सिद्धान्त (पुं०) शास्त्रतत्त्वज्ञ, शास्त्र  
 का यथार्थ मर्म जानने वाला ।—यौचना (स्त्री०)  
 नायिका विशेष जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो ।  
 ज्ञातव्य तत्त्वं (स्त्री०) [ज्ञा + तव्य] ज्ञान का विषय,  
 जानने योग्य, अवगन्तव्य, बोध्य, ज्ञेय ।  
 ज्ञाता तत्त्वं (पुं०) [ज्ञा + तत्] ज्ञानशील, बोद्धा,  
 ज्ञान प्राप्त, जानने वाला, जानकार ।  
 ज्ञाति तत्त्वं (पुं०) सपिण्ड, भाई बन्धु, कुटुम्ब, परि-  
 वार, यागध्व ।  
 ज्ञान तत्त्वं (पुं०) [ज्ञा + अनट्] बोध, चैतन्य,  
 चेतनता, बुद्धि, अनुमान, अवगम, आत्मा का एक  
 गुण विशेष, समक ।—काण्ड (पुं०) वेद का एक  
 काण्ड जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की रीति है, जिसमें  
 उपनिषद् आदि हैं ।—गम्य (वि०) ज्ञेय,  
 ज्ञातव्य, ज्ञान की सहायता से जानने योग्य ।  
 —द (वि०) ज्ञानदाता, ज्ञान देने वाला, हिता-  
 हित समझाने वाला ।—दीप (पुं०) ज्ञान रूप  
 दीप, ज्ञान का प्रकाश, जिससे अज्ञान दूर होता  
 है ।—पूर्वक (वि०) सज्ञान, ज्ञान के सहित,  
 जानकर, समझकर ।—ज्ञान (पुं०) ज्ञानवान्,  
 पण्डित, प्राज्ञ, विचक्षण ।—जापी (स्त्री०) काशी के  
 एक तीर्थ का नाम, कहते हैं उहण्ड प्रकृति, धर्म-  
 द्रोही, मुहम्मद ग़ोरी जिस समय काशी के मन्दिरों  
 को तोड़ फोड़ कर भारत का धन लूट रहा था, उस  
 समय काशी के प्रधान देवता विष्णुनाथजी मन्दिर  
 छोड़ एक रूप में क्षुब्ध गये । विष्णुनाथ मन्दिर के  
 स्थान ही पर मसजिद बनी हुई पूर्व घटना का  
 स्मारक हो रही है ।—विहीन (वि०) ज्ञानहीन,  
 ज्ञान रहित, मूढ़, मूर्ख, अज्ञान ।—मय (वि०)

ज्ञानविशिष्ट, ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त, ज्ञानी, ज्ञानवान् ।  
 —मार्ग (पुं०) निवृत्तिमार्ग, उपनिषदों का  
 मनन, ज्ञानाम्बास ।—मूल (पुं०) सत्यज्ञान,  
 ज्ञान जनित, ज्ञानोत्पन्न ।  
 ज्ञानी तत्त्वं (वि०) [ज्ञान + इन्] बोद्धा, ज्ञानयुक्त,  
 बुद्धिमान्, प्राज्ञ, (पुं०) दैवज्ञ, महाप्राज्ञ, प्रह्लावेत्ता ।  
 ज्ञानेन्द्रिय तत्त्वं (स्त्री०) [ज्ञान + इन्द्रिय] जिन  
 इन्द्रियों से ज्ञान होता है, बुद्धि, मन, चक्षु, श्रोत्र,  
 घ्राण, जिह्वा, त्वक् । [जनाना ।  
 ज्ञापन तत्त्वं (पुं०) [ज्ञा + णिच् + णच्] बोधन,  
 ज्ञापित तत्त्वं (पुं०) [ज्ञा + णिच् + क] विज्ञापित,  
 जनाया, विदित किया, मालूम कराया ।  
 ज्ञेय तत्त्वं (वि०) [ज्ञा + य] बोधगम्य, जानने योग्य,  
 जानने के उपयोगी ।  
 ज्या तत्त्वं (स्त्री०) माता, मा, जननी, पृथिवी, रोदा,  
 धनुष का चिह्न ।—घोष (पुं०) धनुष का टुकड़ा,  
 धनुष का शब्द ।  
 ज्यादती (स्त्री०) अधिकता, बहुतायत ।  
 ज्यादा (पुं०) बहुत, अधिक । [रक्षण करना ।  
 ज्यानों दे० (क्रि०) जिलाना, पालना, पोसना,  
 ज्यामित (स्त्री०) चक्षुगणित, रेखागणित ।  
 ज्यायान तत्त्वं (वि०) [बृद्ध + ईवस] अग्रज, बड़ा,  
 जेठा, ज्येष्ठ, प्रधान, अतीवृद्ध, वर्षीयान् ।  
 ज्येष्ठ तत्त्वं (वि०) [बृद्ध + ईष्ट] श्रेष्ठ, अतिबृद्ध । (पुं०)  
 ज्येष्ठमास, इस महीने की पूर्णिमा को ज्येष्ठ नक्षत्र  
 होता है और वर्ष चन्द्रमा इसी नक्षत्र के पास रहता  
 है ।—तात (पुं०) पिता का बड़ा भाई ।  
 ज्येष्ठा तत्त्वं (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, अठारहवाँ नक्षत्र ।  
 ज्येष्ठाश्रम तत्त्वं (पुं०) [ज्येष्ठ + आश्रम] गार्हस्थ्य,  
 गृहस्थाश्रम, दूसरा आश्रम ।—ी (पुं०) गृहस्थ,  
 गृहस्थाश्रमी, गृही ।  
 ज्यों (क्रि० वि०) जिस प्रकार, जैसे । [अपरिवर्तित ।  
 ज्यों का ज्यों दे० (अ०) यथार्थ, ठीक, वैसा ही,  
 ज्योतिः तत्त्वं (स्त्री०) दृष्टि, नक्षत्र, प्रकाश, दीप्ति,  
 उजाला, चमक, विष्णु, अग्नि, सूर्य, मेयी ।—शास्त्र  
 (पुं०) ग्रन्थ, शांति, नक्षत्र आदि की विद्या, खगोल  
 विद्या, ज्योतिष ।  
 ज्योतिरिङ्गण तत्त्वं (पुं०) जुगनु, सद्योत ।

जाता है।—स्वरूप (पु०) मगवान्, लय, योगिणों के ध्येय आरामा, आरामा का प्रकाश, जिसका लय योगी ध्यान करते हैं।

जोतिष तद् (पु०) मन्त्रचक्र आदि के विषय की बातें बताने वाला शास्त्र, काल ज्ञान शास्त्र, इसके प्रधानतः फलित और गणित ये दो भेद हैं, नजूम।

जोतिषो तद् (पु०) देवज्ञ, ज्योतिषी, शास्त्रवेत्ता, गणितज्ञ, ज्योतिष विद्या ज्ञानने वाला।

जोती दे० (स्त्री०) तराजू के पत्रड़े या घने की रस्ती, जुझाठ, हल जोतने वाली रस्ती, जोत।

जोस्ना तद् (स्त्री०) ज्योस्ना, चन्द्रिकायुक्त रात्रि, प्रकाशयुक्त रात, उजेली रात, चन्द्रिका, चांदनी, प्रकाश। [उजेली रात।

जोस्नी तद् (स्त्री०) रात्रि, रात, शुक्लपक्ष की रात, जोधन तद् (पु०) आधोधन, लड़ाई, संग्राम, समर। जोधा तद् (पु०) योधा, वीर, लड़ाका, लड़नेवाला, भट, सेना का सिपाही।

जोनराज तद् (पु०) कारमीर के विख्यात ऐतिहासिक। पण्डित, काश्मीर के एक मात्र इतिहास राशतरक्षिणी के ये कर्त्ता हैं। कन्हय्य राजतरक्षिणी को पूरी नहीं कर सके थे, उनके बनाने का शेषभाग पण्डित जोनराज ने पूरा किया, कन्हय्य ने ११४८ ई० में राजतरक्षिणी में लिखा है कि पण्डित जोनराज महाशय, २६ सितंबर में राजतरक्षिणी बनाकर शिवसायुज्य प्राप्त हुए। इसी आधार पर यह बात निश्चित हुई है कि जोनराज का समय १४ वीं सदी है। इनकी बनाई राजतरक्षिणी दूसरी राजतरक्षिणी के नाम से प्रसिद्ध है। भारविकृत ग्रन्थ की टीका भी इन्होंने बनाई थी। इनके शिष्य का नाम शीवर पण्डित था, इन्होंने, १४ वीं और १५ वीं सदी के मध्य में तीसरी राजतरक्षिणी बनाई है।

जोनि या जोनी तद् (स्त्री०) योगि, स्त्री का विशेष चिह्न, भाग, उत्पत्ति स्थान, उद्गम स्थान, आकर, खान, कारण, हेतु, जाति, शरीर।

जोन्ह दे० (पु०) चन्द्रमा, चांदनी।

जोन्हरी (स्त्री०) ज्वार।

जोन्हाई (स्त्री०) चन्द्रमा।

जोपै (अ०) यदि, यद्यपि।

जोवन तद् (पु०) यौवन, युवावस्था, तरुण्य, जवानी, स्तन, पयोधर, छाती, चूँची।

जोवनवती तद् (स्त्री०) यौवनवती, युवती, तरुणी, युवावस्थावती स्त्री, युवा स्त्री, जवान स्त्री।

जोवना, जोवनवा तद् (पु०) जोवन, यौवन, तरुण्य। [कुटिम्बिनी।

जोय, जोरू तद् (स्त्री०) जाया, माया, पत्नी, स्त्री, जोर (पु०) ताकत, बल, जोड़ा, संगी।

जोरशोर (पु०) प्रबलता, अत्यधिक।

जोरदार (वि०) बलवान, ताकतवर।

जोराजोरी (स्त्री०) यकपूर्वक।

जोरावर (पु०) वनवान्।

जोरू (स्त्री०) स्त्री।

जोरी दे० (स्त्री०) जोड़ा, जोड़ी। [ठगी।

जोला दे० (पु०) कपट, छल, धोखा, धूर्तता, ठगई,

जोवत दे० (क्रि०) अभिलाप करते, चाहते, देखते।

जोवना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, खोजना, ढूँढना,

अनुसन्धान करना, चितवनना। [भायाँ, कामिनी।

जोपित् तद् (स्त्री०) योपित्, सीमन्तिनी, स्त्री,

जोपी, जोसी दे० (पु०) ज्योतिषी, ज्योतिःशास्त्र-

वेत्ता, देवज्ञ।

जोहना दे० (क्रि०) घाट देखना, प्रतीक्षा करना,

ताकना, खोजना, ढूँढना, पता लगाना, मालूम

करना, अनुसन्धान करना।

जोहार (पु०) प्रणाम, रामराम।

जोही दे० (वि०) खोजी, ढूँढवैया, अनुसन्धानी।

जोहारना (क्रि०) प्रणाम करना।

जौ दे० (पु०) जिस प्रकार से, जो, यदि, जब।—जग

(अ०) जबतक, जिस समय तक, जितनी देर

तक।—जौं (अ०) जबतक। [कुवाच्य कहना।

जौकना दे० (क्रि०) गाली देना, बकना, बड़बड़ाना,

जौ तद् (पु०) यय, अथविशेष, स्वानामप्रसिद्ध अन्न।

जौन दे० (सर्व०) जो, जिस।

जौतुक (पु०) दहेज, दयना। [ब्रह्म का भोज।

जौनार दे० (पु०) जेवनार, भोजन, भोजन, खाना,

जौपै (अ०) अगर, यदि।

जौरा (पु०) वह अन्न जो गृहस्थ लोग नाईदारी को

काम की मजदूरी में देते हैं।

जौलार्ह (स्त्री०) शंकरजी वर्ष के सातवें मास का नाम ।  
 जौहर ( पु० ) रत्न, तख्त, सारांश, उत्तमता, खूबी,  
 शस्त्रों की भेद, राजपूनों का जुहारवस्त ।  
 जौहरी दे० ( पु० ) रत्नविक्रेता, रत्नों के परखने वाला,  
 गुणग्राहक ।  
 झ तत्त्वं ( पु० ) बुध, पण्डित, ब्रह्मा, महीचूत, मङ्गल,  
 ( वि० ) अभिज्ञ, विशिष्ट, चतुर ।  
 ज्ञात तत्त्वं ( वि० ) [ ज्ञा + क ] कृतज्ञान, जाना हुआ,  
 विदित, प्रतीत, अवगत ।—सार ( प्र० ) विदित,  
 मालूम ।—सिद्धान्त ( पु० ) शास्त्रतत्त्वज्ञ, शास्त्र  
 का यथार्थ मर्म जानने वाला ।—यौवना ( स्त्री० )  
 नायिका विशेष जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो ।  
 ज्ञातव्य तत्त्वं ( स्त्री० ) [ ज्ञा + तव्य ] ज्ञान का विषय,  
 जानने योग्य, अवगन्तव्य, बोध्य, ज्ञेय ।  
 ज्ञाता तत्त्वं ( पु० ) [ ज्ञा + तत् ] ज्ञानशील, बोद्धा,  
 ज्ञान प्राप्त, जानने वाला, जानकार ।  
 ज्ञाति तत्त्वं ( पु० ) सपिण्ड, भाई बन्धु, कुटुम्ब, परि-  
 वार, शान्धव ।  
 ज्ञान तत्त्वं ( पु० ) [ ज्ञा + जनट् ] बोध, चैतन्य,  
 चेतनता, बुद्धि, अनुमान, अवगम, ब्रामा का एक  
 गुण विशेष, समस्त ।—फाण्ड ( पु० ) वेद का एक  
 काण्ड जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की रीति है, जिसमें  
 उपनिषद् आदि हैं ।—गम्य ( वि० ) ज्ञेय,  
 ज्ञातव्य, ज्ञान की सहायता से जानने योग्य ।  
 —द् ( वि० ) ज्ञानदाता, ज्ञान देने वाला, हिता-  
 हित समझाने वाला ।—दीप ( पु० ) ज्ञान रूप  
 दीप, ज्ञान का प्रकाश, जिससे अज्ञान दूर होता  
 है ।—पूर्यक ( वि० ) सज्ञान, ज्ञान के सहित,  
 जानकर, समझकर ।—वान ( पु० ) ज्ञानवान्,  
 पण्डित, प्राज्ञ, विचक्षण ।—वापी ( स्त्री० ) काशी के  
 एक तीर्थ का नाम, कहते हैं वृण्ड प्रकृति, धर्म-  
 द्रोही, मुहम्मद गौरी जिस समय काशी के मन्दिरों  
 को तोड़ फोड़ कर भारत का धन लूट रहा था, उस  
 समय काशी के प्रधान देवता विष्णुनाथजी मन्दिर  
 छोड़ एक रूप में रुद्र गये । विष्णुनाथ मन्दिर के  
 स्थान ही पर मसजिद बनी हुई पूर्व घटना का  
 स्मारक हो रही है ।—विहोन ( वि० ) ज्ञानहीन,  
 ज्ञान रहित, मूढ़, मूर्ख, अज्ञान ।—मय ( वि० )

ज्ञानविशिष्ट, ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त, ज्ञानी, ज्ञानवान् ।  
 —मार्ग ( पु० ) निवृत्तिमार्ग, उपनिषदों का  
 मनन, ज्ञानाभ्यास ।—मूल ( पु० ) सत्यज्ञान,  
 ज्ञान जनित, ज्ञानोत्पन्न ।  
 ज्ञानी तत्त्वं ( वि० ) [ ज्ञान + इन् ] बोद्धा, ज्ञानयुक्त,  
 बुद्धिमान्, प्राज्ञ, ( पु० ) दैवज्ञ, महाप्राज्ञ, ब्रह्मवेत्ता ।  
 ज्ञानेन्द्रिय तत्त्वं ( स्त्री० ) [ ज्ञान + इन्द्रिय ] जिन  
 इन्द्रियों से ज्ञान होता है, बुद्धि, मन, चक्षु, श्रोत्र,  
 घ्राण, जिह्वा, त्वक् । [ जनाना ।  
 ज्ञापन तत्त्वं ( पु० ) [ ज्ञा + यिच् + क् ] बोधन,  
 ज्ञापित तत्त्वं ( पु० ) [ ज्ञा + यिच् + क ] विज्ञापित,  
 जनाया, विदित किया, मालूम कराया ।  
 ज्ञेय तत्त्वं ( वि० ) [ ज्ञा + य ] बोधगम्य, जानने योग्य,  
 जानने के उपयोगी ।  
 ज्या तत्त्वं ( स्त्री० ) माता, मा, जननी, पृथिवी, रोदा,  
 धनुष का चिह्न ।—घोष ( पु० ) धनुष का टङ्कार,  
 धनुष का शब्द ।  
 ज्यादती ( स्त्री० ) अधिकता, बहुतायत ।  
 ज्यादा ( पु० ) बहुत, अधिक । [ रक्षण करना ।  
 ज्यानी दे० ( कि० ) जिलाना, पालना, पोसना,  
 ज्यामित ( स्त्री० ) चक्षुगणित, रेखागणित ।  
 ज्यायान तत्त्वं ( वि० ) [ वृद्ध + ईवस ] अग्रज, बड़ा,  
 जेठा, ज्येष्ठ, प्रधान, अतीवृद्ध, वर्षायान् ।  
 ज्येष्ठ तत्त्वं ( वि० ) [ वृद्ध + ईष्ट ] श्रेष्ठ, अतीवृद्ध । ( पु० )  
 ज्येष्ठमास, इस महीने की पूर्णिमा को ज्येष्ठ नक्षत्र  
 होता है और पूर्ण चन्द्रमा इसी नक्षत्र के पास रहता  
 है ।—तात ( पु० ) पिता का बड़ा भाई ।  
 ज्येष्ठा तत्त्वं ( स्त्री० ) नक्षत्र विशेष, अठारहवाँ नक्षत्र ।  
 ज्येष्ठाश्रम तत्त्वं ( पु० ) [ ज्येष्ठ + आश्रम ] गार्हस्थ्य,  
 गृहस्थाश्रम, दूसरा आश्रम ।—ी ( पु० ) गृहस्थ,  
 गृहस्थाश्रमी, गृही ।  
 ज्यों ( कि० वि० ) जिस प्रकार, जैसे । [ अपरिवर्तित ।  
 ज्यों का ज्यों दे० ( प्र० ) यथार्थ, ठीक, वैसा ही,  
 ज्योतिः तत्त्वं ( स्त्री० ) दृष्टि, नक्षत्र, प्रकाश, दीप्ति,  
 उजाला, चमक, विष्णु, अग्नि, सूर्य, मेघी ।—शास्त्र  
 ( पु० ) ग्रह, राशि, नक्षत्र आदि की विद्या, खगोल  
 विद्या, ज्योतिष ।  
 ज्योतिरिङ्गण तत्त्वं ( पु० ) जुगनू, खगोल ।

ज्योतिर्गण तत् ( पु० ) [ ज्योतिर् + गण ] आकाश-  
स्थित पदार्थ ।

ज्योतिर्विद् तत् ( पु० ) [ ज्योतिर् + विद् + क्प् ]  
गणक, दैवज्ञ, ज्योतिःशास्त्रवेत्ता ।

ज्योतिर्विद्या तत् ( स्त्री० ) [ ज्योतिर् + विद्या ]  
ज्योतिः शास्त्र, ज्योतिष ।

ज्योतिर्वेत्ता तत् ( पु० ) [ ज्योतिर् + वेत्ता ] गणक,  
दैवज्ञ, ज्योतिषी । [ बारह राशियों का चक्र ।

ज्योतिश्चक्र तत् ( पु० ) राशिचक्र, राशि समूह,

ज्योतिष् तत् ( पु० ) वेदाङ्ग, शास्त्र विशेष, ग्रहण  
आदि गणन करने का शास्त्र, ग्रहादि विषयक शास्त्र ।

ज्योतिषी तत् ( पु० ) गणक, दैवज्ञ, जोती ।

ज्योतिष्टोम तत् ( पु० ) [ ज्योतिस् + स्तोम ] यज्ञ विशेष,  
स्वर्ग फलक यज्ञ । [ राशि, रजनी, प्रकाशयुक्त राशि ।

ज्योतिष्मती तत् ( स्त्री० ) मातृकगनी, ज्ञता विशेष,

ज्योतिष्मान् तत् ( पु० ) ज्योतिष्युक्त, तेजस्वी,  
प्रतापी, प्रकाशयुक्त । [ ध्रुवनक्षत्र ।

ज्योतीरथ तत् ( पु० ) [ ज्योतिर् + रथ ] ध्रुवतारा,

ज्योत्स्ना तत् ( स्त्री० ) चन्द्रमा की ज्योति, प्रकाश,  
चांदनी, चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्नायुक्त राशि,

सीफ, सफेद हूल की तोरई ।—काली तत् ( स्त्री० )

ग्रहण के पुत्र पुष्कर की पत्नी जो सोम की कन्या  
थी ।—प्रिय तत् ( पु० ) चक्रेर पक्षी ।—वृत्त

तत् ( पु० ) दीवट, दीपाधार, बैठकी, फानूस ।

ज्यौनार } दे० ( स्त्री० ) भोज, दावत, रसोई ।  
ज्यौनार }

ज्वर तत् ( पु० ) [ ज्वर + भल् ] रोग विशेष,  
ताप, स्वनाम प्रसिद्ध रोग । राघस विशेष, दैत्य-

राज बायासुर के सेनापति का नाम, इसके तीन

पैर, तीन सिर, छः हाथ और नी नेत्र थे । इसकी  
सृष्टि महादेवजी ने की थी, और उन्होंने बाण  
की सहायता के लिये इसे भेजा था । एक बार  
बलराम और प्रद्युम्न के साथ श्रीकृष्ण बाण की  
राजधानी में गये थे, बाण ने अनिरुद्ध को कैद  
कर लिया था, अतएव श्रीकृष्ण का वहाँ जाना आव-  
श्यक था । बाण सेनापति ज्वर ने वहाँ श्रीकृष्ण  
को पीड़ित किया । श्रीकृष्ण ने दूसरे ज्वर की सृष्टि  
की, इसने बाण के सेनापति को परास्त किया और  
उसे बाँध कर श्रीकृष्ण के हाथों समर्पित कर दिया ।  
उसने शरण चाही, श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर उसके  
हृच्छानुसार जगत् में अन्य ज्वरों को न रहने का वर  
दिया । ( हरिवंश )—विनाशिनी ( स्त्री० ) उग्र-  
नाशक यौपथ ।

ज्वरार्त ( पु० ) ज्वर से आक्रान्त, बुखार से दुःखी ।

ज्वरित ( पु० ) जिसे ज्वर हो ।

ज्वल ( पु० ) ज्वाला, लपट, अग्नि, रोशनी । [ होना, अग्नि ।

ज्वलन तत् ( पु० ) अग्निदाह, तपन, बहोपन, कातर

ज्वलना ( पु० ) प्रकाशमान । [ तप्याई ।

ज्वान ( पु० ) जवान, युवा ।— ( स्त्री० ) जवानी,

ज्वार दे० ( पु० ) जुआर, जुन्हरी, समुद्र का वफान ।

ज्वारभाटा दे० ( पु० ) समुद्र के पानी का बढ़ाव  
घटाव, समुद्र के निकट वाली समस्त नदियों में  
यह ज्वारभाटा हुमा करता है ।

ज्वारी ( वि० ) जुआरी, जुमा खेलने वाला ।

ज्वाला ( स्त्री० ) आँच, लौ, लपट, दाह, प्रकाश,

तापजन्य पीड़ा ।—मुखी ( स्त्री० ) पीठस्थान

विशेष, महाविद्या, विशेष, देश विशेष, जिस स्थान

से ज्वाला निकलती हो ।

## भ

भ व्यञ्जन का नवौं घण्टा है, इसका उच्चारण तालु से  
होता है, अतएव इसे भी तालव्यवर्ण कहते हैं ।

भङ्गार तत् ( पु० ) [ भङ्ग + ऋ + घञ् ] भन भन

शब्द भनकार । [ करना ।

भङ्गना दे० ( कि० ) घड़वढ़ाना, भौंखना, अनुताप

भङ्ग तत् ( पु० ) भन, मत्स्य, मछली ।—केतु ( पु० )

मीन केतु, मीनध्वज, मछली के निशान वाला,  
कामदेव, मदन । [ वृष्ट ।

भङ्गाइ दे० ( पु० ) कटिदार घनी झाड़ी, पत्र रहित

भङ्गा दे० ( पु० ) भगा, पहिने का एक वस्त्र ।

भँगिया दे० ( स्त्री० ) भँगुली ।

भँगुला दे० ( पुं० ) भंगा ।

भँगुलिया } दे० ( स्त्री० ) छोटे बालकों का भंगा  
भँगुली } या कुत्ता विशेष ।  
भँगुली

भँग दे० ( पुं० ) भँग । [ के शब्द ।

भँगकार दे० ( पुं० ) भँग शब्द, भँगुर आदि कीर्तों

भँगट दे० ( पुं० ) खटपट, प्रयत्न, टंटा, बखेड़ा ।

भँगटो दे० ( वि० ) भँगटालू । [ चिड़कहा ।

भँगना दे० ( वि० ) कड़वा, चिड़चिड़ा, खीझ,

भँगनाना दे० ( क्रि० ) भँगन शब्द करना, भण्टकार,

आभूषण आदि का शब्द । [ ध्वनि, चिड़चिड़ाहट ।

भँगनाहट दे० ( स्त्री० ) भनकार, घुँघरू शब्द, चूचुर-

भँगरी दे० ( स्त्री० ) जाली, भरोला ।

भँडा दे० ( पुं० ) वह तिठेना या चौकोना वस्त्र जो किसी लंबे चीस में दाँगा जाता है ।

भँडी दे० ( स्त्री० ) छोटा भँडा ।

भँडूला ( पुं० ) वह बालक जिसके सिर पर गर्म के केश हो । [ खटोली ।

भँपान दे० ( पुं० ) पहाड़ पर जाने के लिये एक

भँपाना दे० ( क्रि० ) घट जाना, झुलझना, झुलसना,

भँवर होना, विध्वंस होना, फिट पड़ना ।

भतलू ( पुं० ) झुकावात, सुरगुरु, बृहस्पति, वैश्राख, ध्वनि, तेज पवन । [ घोला ।

भँई ( स्त्री० ) घाया, प्रतिविम्ब, कलक, अन्धकारी,

भँउचा ( पुं० ) टोकरा, हाँचा ।

भक दे० ( पुं० ) मौज, सनक, लहर ।—भोरी ( वा० )

छीनाछीनी, झगडा झगटी, खँचा खँची, खटपाट,

आक्रमण ।—भारना ( वा० ) स्वयं श्रम, बिना,

प्रयोजन का काम करना, स्वयं समय राखना ।

भक भक दे० ( स्त्री० ) यकयक, स्वयं की हुआत ।

भकना दे० ( क्रि० ) यकयक करना, निष्फल धोल्ते रहना, विलाप करना ।

भकरी दे० ( स्त्री० ) पात्र विशेष, जिसमें दूध डुहा जाता है, सोहनी, सोहन पात्र ।

भकाभक दे० ( वि० ) बहुत स्वच्छ, चमकता हुआ, स्वच्छ, साफ सुथरा ।

भकोर दे० ( पुं० ) भोंक, भटका ।

भकोरना दे० ( क्रि० ) दिलोढ़ना, कँपाना ।

भकोरा दे० ( पुं० ) अन्धड़, वायु का वेग ।

भकोलना दे० ( क्रि० ) डुलाना, दिवाना, कँपाना ।

भका ( वि० ) साफ, सुथरा, चमकीला । ( स्त्री० ) सनक ।

भकड़ दे० ( पुं० ) तेज आँधी, अन्धड़, बयार, गरम प्रकृति का मनुष्य, बहुत धकेने वाला मनुष्य ।

भकी दे० ( वि० ) उन्मत्त, पागल, बक्री, बकवादी, प्रलापी, लहरी, तरहरी । [ कामदेव ।

भख ( स्त्री० ) मछली, मछली, माही ।—केतु ( पुं० )

भखना दे० ( क्रि० ) भँखना, पश्चात्ताप करना ।

भगइना, भगरना दे० ( क्रि० ) लड़ना, लड़ाई करना,

खटपट करना, विवाद करना, विरोध उठाना,

कलह करना, मिड़ना, सामना करना ।

भगइ, भगरा दे० ( पुं० ) लड़ाई, दंगा, फसाद, वैर, विरोध, विद्वेष ।

भगइना, भगराना दे० ( क्रि० ) लड़ाई कराना, विरोध कराना, कलह कराना । [ लड़ाई स्त्री ।

भगइलिन दे० ( स्त्री० ) भगइ करने वाली स्त्री,

भगइलू दे० ( पुं० ) लड़ने वाला, लड़ाई करने

वाला, लड़ाका ।

भगा दे० ( पुं० ) घबरा, जाता, कुरता विशेष ।

भगुला दे० ( पुं० ) छोटा भगा, बाबक का जाना ।

भगुलिया दे० ( पुं० ) खुलवा, चोलना, बालकों का कुरता ।

भभ दे० ( पुं० ) लम्बी बाड़ी, बृहत्कूर्च ।

भभक दे० ( स्त्री० ) ठिठक, चमक, मड़क, भूँकलाहट, अग्रिम गन्ध । [ डपटना, डोटना, दधाना ।

भभकारना दे० ( क्रि० ) चमकाना, तिरस्कार करना,

भभका दे० ( पुं० ) एक प्रकार की मिठाई ।

भभकर दे० ( पुं० ) सुराही, जलपात्र विशेष, कूता,

मिठी का बना जल रखने का एक प्रकार का पात्र जिसमें जल ठंडा रहता है ।

भभकरी दे० ( स्त्री० ) जाली, जालीदार भरोला, फटावा ।

भभका तलू ( स्त्री० ) तेज वायु ।—मिल ( पुं० )

[ मझका + घनिल ] ज़ोरदार आँधी ।—घात

( पुं० ) पानी और आँधी ।

भभकी तलू ( स्त्री० ) फूटी कौड़ी ।

भट तलू ( श० ) मुरन्त, शीघ्र, वही समय ।—पट

( वा० ) बहुत शीघ्र, अति शीघ्रता से, बहुत

जल्दी ।—से ( वा० ) मुरन्त, शीघ्र, जल्दी ।

भट्टक दे० ( पु० ) लूट खसोट, लूटराज ।

भट्टकना दे० ( कि० ) भट्टका देना, धोखे से ले लेना, भुलावा देकर लेना, दुबलाना, उतरना, फोका पड़ना, सुखना ।

भट्टका दे० ( पु० ) छींच, छिंचाव, लूट, हरण, भट्टके से मारने का शब्द । मद्रास का तांगा (घोड़ागाड़ी) विशेष ।

भट्टास दे० ( खी० ) बौछार, पानी का छूँटा, वायु के झोके से पानी का इधर उधर जाना, झड़ान ।

भट्टि दे० ( पु० ) झाड़, धनझाड़ी अपने से उत्पन्न कतिपय वृक्षों का समूह, रुखड़ा, घाँधी ।

भट्टिति तत् ( थ० ) द्रुत, शीघ्र, स्वरित, चेनि, तुरन्त, जल्दी । [ताले की कल ।

भट्ट दे० ( खी० ) धंधड़ा, प्रचण्ड वायु, झड़ी, आँच,

भट्टन दे० ( खी० ) पतन, गिरन, पके फल आदि का पतन, झरना, बत्ती की गुल या टेम ।

भट्टना दे० ( कि० ) गिरना, टपकना, पतन होना, झरना, चूना, पके फल आदि का चूना, धजना शहनाई नौबत आदि का । [लड़ाई, क्रोध, जोश, लपट ।

भट्टप दे० ( खी० ) दाँ जीवों की श्वास में सुठभेड़,

भट्टपना दे० ( खी० ) लड़ना, आक्रमण करना, हमला करना, मारामारी करना, झपटना, झपट मारना ।

भट्टपाभट्टपी दे० ( खी० ) लड़ाई दफ़ा, फसाद, लपटा लपटी । [चिड़ाना, खिज़ाना ।

भट्टपाना दे० ( कि० ) लड़ाना, क्रोध कराना

भट्टधरना दे० ( वा० ) सय का सब जल जाना, समी नष्ट होना, समस्त जलना ।

भट्टवेर दे० ( पु० ) जहली वेर, झरवेरी ।

भट्टवेरी दे० ( खी० ) [हटवाना ।

भट्टवाना दे० ( कि० ) झड़ाना, साफ़ कराना, मैल

भट्टाका दे० ( कि० वि० ) तुरन्त, शीघ्र ।

भट्टाका दे० ( पु० ) शीघ्रता, जल्दी । [प्रवाह ।

भट्टाभट्ट दे० ( थ० ) चपट, झपट, शीघ्र, क्रमिक,

भट्टाना दे० ( कि० ) साफ़ कराना, झाड़ दिखवाना,

भट्टवाना, झाड़ फूँक कराना, मन्त्र तन्त्र करवाना ।

भट्टी दे० ( खी० ) लगातार वृष्टि बराबर पानी बग़सते रहना, अविच्छिन्नवृष्टि, बाहरी आमदनी, वार्षिक या मासिक आमद से अतिरिक्त लाभ, ऊपरी आमद ।

भट्टौता दे० ( पु० ) फल के समय की समाप्ति, फल की समाप्ति का समय, फल झार ।

भट्टा दे० ( पु० ) ध्वजा, पताका, कीर्ति ध्वजा, यशः पताका, राज चिन्ह विशेष, सत्कर्म सूचक चिन्ह विशेष, कठिन श्रमवा उपयोगी काम करने वालों का सम्मान सूचक चिन्ह, किसी उत्तम काम का स्मारक, सीमा निर्देशक ।

भट्टा दे० ( वि० ) बहुपत्र, अधिक पत्तों से घना, बहुकेय, बहुत थाल वाला लड़का, छोटा लड़का जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों, बिना मुग़डन किया हुआ लड़का ।

भट्ट तद् ( पु० ) झणव, अनुकरण शब्द, कङ्कण नूपुर आदि की ध्वनि । [सुन्न पड़ जाना ।

भट्टभनी दे० ( खी० ) सनसनी, किसी अन्न का

भट्टक तद् ( पु० ) ध्वनि विशेष, धातु निर्मित बत्तनों का शब्द ।—भट्टक ( खी० ) गहनों के धजने से उत्पन्न हुआ शब्द विशेष । [झणकार करना ।

भट्टकना तद् ( कि० ) भट्टकनाना, भट्टकन करना,

भट्टकार तद् ( पु० ) झंकार झमर आदि की ध्वनि ।

भट्टकारना तद् ( कि० ) धजाना, शब्द करना, भट्ट-भट्ट धजाना ।

भट्टवाँ दे० ( पु० ) धान्य विशेष, एक प्रकार का धान ।

भट्टाभट्ट ( खी० ) भट्टभट्टाहट ।

भट्ट दे० ( थ० ) झट, शीघ्र, तुरन्त, स्वरित ।—से शीघ्रतापूर्वक, त्वरापूर्वक, झपट, झट ।

भट्टकना दे० ( कि० ) निद्रा लेना, पलक मारना, झपकी खाना, झपटना, सहम जाना, लजित होना ।

भट्टकाना दे० ( कि० ) पलक मारना, झपकाना, लजित करना, डराना ।

भट्टकी दे० ( खी० ) जैयाई, डलकी नौद, धोखा, चकमा ।

भट्ट दे० ( खी० ) लपक, वेग से आगे बढ़ना, लेने के लिये आक्रमण करना ।—लोना ( कि० ) छीन लेना, बलात्कार से ले लेना, जबरदस्ती छीनना ।

भट्टपना दे० ( कि० ) लपकना, आगे बढ़ना, घुरी हट्टा से किसी की ओर आगे बढ़ना, चढ़ खाना, चढ़ाई करना, छीनना ।

भट्टा दे० ( पु० ) धावा, आक्रमण, चढ़ाई, छीन, लूट ।—मारना ( कि० ) झपटना, झपट कर छीन लेना, बलात्कार से छीनना, झपट लेना ।

भूपताल ( पु० ) सङ्गीत कला का ताल विशेष ।  
भूपना ( कि० ) पलकों का सुंदरा झुंकना, भूपना, खचित  
होना । [ में धोना ।

भूपलाना दे० ( कि० ) खंगालना, धोना, खूब पानी

भूपाभरी दे० ( स्त्री० ) हड़वड़ी, शीघ्रता, यतिवरा ।

भूपाट दे० ( स्त्री० ) स्फूर्ति, फुर्ती, शीघ्र, ज़रदी  
भूपाट ।

भूपाना दे० ( कि० ) भूपकि लेना, उंचाना, निद्रा लेना,  
आलस वरा अपने आप निद्रा भाना ।

भूपास दे० ( स्त्री० ) भूसी, फूँही, छोटी छोटी धूँद,

झड़ी, ठगाई, धूर्तता । ( पु० ) धूर्त, धोखावाज, ठग ।

भूपासिया दे० ( पु० ) छली, कपटी, धूर्त, अधर्मी, ठग ।

भूपेट । ( स्त्री० ) चपट ।

भूपेटा ( पु० ) चपेट, भूपट झेरा ।

भूपान ( पु० ) भूपान नामक एक प्रकार की डोली ।

भूपकाना दे० ( कि० ) धबड़वाना, चकित करना ।  
अचम्भित करना, आश्चर्यित करना ।

भूपरा या भूपरीला ( वि० ) विशिष्ट रूप बड़े बड़े  
धुंधाले बालों वाला ।

भूवा ( पु० ) लटकन, फुंदना, गुच्छा ।

भूविया दे० ( पु० ) भूषण विशेष, शिथों का एक गहना ।

भूवुआ दे० ( वि० ) लोमश, भूषा, बड़केश, रोंचरा,  
बड़े बड़े बाल वाला, जिसके बाल बड़े बड़े हैं ।

भूव्या दे० ( पु० ) गुच्छा, लटकन, स्तवक, पूँरा ।

भूम तत्त्वं ( पु० ) भोक्ता, भोजन, कर्ता, खादक ।

भूमक दे० ( स्त्री० ) चमक, दीप्ति, प्रकाश, शोभा,

भूमक । [ दा, चिलक, दीप्तिमान्, प्रकाशशील ।

भूमकड़ा दे० ( पु० ) चटक, जगमग, चमकीला, झड़क-

भूमकाना दे० ( कि० ) चमकाना, चिलकाना, चम-

चमाना, नाचना, क्रोध से ह्वा उधर हाथ फेंकना ।

भूमका दे० ( पु० ) प्रताप, तेज, प्रभाव, ज्ञान ।

भूमकी दे० ( स्त्री० ) भूमक, भूमक, चमक, चकचक,

शोभा ।

भूमभूम दे० ( श० ) लगातार, सतत, अविरत,

अशान्त, एक के बाद एक, ध्वनि विशेष ।

भूमभूमना दे० ( कि० ) चमचमाना, चमकाना,

चिलकना । [ बूँद से ।

भूमाका दे० ( पु० ) झड़ी, वृष्टि प्रपात । [ चरत ।

भूमाभूम दे० ( श० ) भूमभूम, लगातार, सतत,

भूमा दे० ( वि० ) भूमा हुआ, ठगा हुआ, आच्छादित ।

भूर नव० ( पु० ) निर्भर, भरना, पूर्व से निकला हुआ  
जल प्रवाह, स्रोत, सोता, भरना । ( स्त्री० ) झड़ी,

वर्षा, आँच जलन । [ गिरने का शब्द ।

भूरभूर दे० ( पु० ) भूभूर, सुराही, अन्न आदि के

भरना दे० ( स्त्री० ) सोता, पूर्व से जल का सोता,  
छोटी नदी, निर्भर ।

भूरप ( स्त्री० ) भूकेर, जपट, वेग, टेक ।

भूरवेर ( पु० ) झड़ी के वेर, जंगली वेर ।

भूरहिं दे० ( कि० ) भरते हैं, बहते हैं, गिरते हैं,  
पसीजते हैं, छनकर गिरते हैं, टपकते हैं, चूते हैं,  
निकलते हैं । [ भर कर, चूकर, टपक कर ।

भूरि, भूरी, भूड़ा दे० ( स्त्री० ) निरन्तर जल वृष्टि,

भूरोखा दे० ( पु० ) भूभूरी, खिड़की, जालीदार  
खिड़की, मोखा ।

भूर्भूर तत्त्वं ( स्त्री० ) वेश्या, पतुरिया, कुलटा, बारा-

भना, तारादेवी का नाम [ ( पु० ) शिव ।

भूर्भूर तत्त्वं ( स्त्री० ) खंती, डकती, बाजा विशेष ।

भूर्ना दे० ( पु० ) सूय विशेष, जिसमें बहुत खेद होते  
हैं और उससे मित्रे अन्न पृथक् पृथक् किये जाते  
हैं । ( कि० ) भरना, गिरना, टपकना ।

भूर्ज दे० ( पु० ) उबाला, कोप, कोप, जलजलाहट,  
उत्पत्ता, आँच, उपक्रामना, समूह ।

भूर्जक दे० ( स्त्री० ) चमक, जगमग, आभा, प्रतिबिम्ब ।

भूर्जकत दे० ( कि० ) चमकते हैं, जगमगाते हैं, आभा  
बढ़ते हैं, दीख पड़ते हैं, साफ़ साफ़ मालूम होते हैं ।

भूर्जकना दे० ( कि० ) प्रकाशित होना, चमकना,  
साफ़ चाफ़ दीख पड़ना, उज्ज्वल होना ।

भूर्जका दे० ( पु० ) फत्तोला, फोला । [ प्रकाश ।

भूर्जकार दे० ( पु० ) जलन, भूर्जक, धाप, आभा,

भूर्जकी दे० ( स्त्री० ) वृष्टि, कटाव, भाँवली, प्रपातवृष्टि ।

भूर्जभूर्ज दे० ( पु० ) चमकता हुआ, बहुत ही साफ़,

अत्यन्त स्वच्छ, पतला सूक्ष्म, नेत्र, तीक्ष्ण, लहक ।

भूर्जभूर्जना दे० ( कि० ) चमकना, चमकित होना,

भूर्जभूर्ज करना, टीसना, पीड़ा करना, क्रोध करना ।

भूर्जभूर्जाहट दे० ( स्त्री० ) चमक, झटक, प्रकाश ।



भक्तना दे० ( क्रि० ) हिलाना, हुलाना, भपकना,  
सुधारना, पंखा करना या हाँकना ।  
भक्तमल दे० ( पु० ) हलकी रेशमी, चमकदमक ।  
भक्तहया दे० ( वि० ) शक्ति, सन्देशी, संशयी, धोखा  
खाया हुआ, ठगा गया, वञ्चित ।  
भक्ता दे० ( पु० ) हलकी वृष्टि, बौछार, पंखा, फालर ।  
भक्ताभल दे० ( वि० ) ज्योतिष्मान्, प्रकाशयुक्त,  
उद्यति विशिष्ट ।—( पु० ) चमकदार, चमकीला ।  
भक्ताना दे० ( क्रि० ) सुधारवाना, साफ करना, टाँका  
लगवाना, किसी वस्तु को रंगे आदि से छुड़वाना ।  
भक्तामल ( पु० ) चमकीला, ( स्त्री० ) चमकदमक ।  
भक्ताधार दे० ( वि० ) चमकीला, भङ्कीला, सुशोभित,  
चमस्कार ।  
भक्तार दे० ( पु० ) झाड़ो, गहनकानन, घना जङ्गल ।  
भक्त तत्त्वं ( पु० ) ब्राह्म, भाई, पट्ट वंश, लपट ।  
—भक्त ( पु० ) पेशा, कर्तृ ।  
भक्तक तत्त्वं ( पु० ) भाँक, मजीरा । [ पसीना, पसेव ।  
भक्तरी तत्त्वं ( स्त्री० ) हुडक नाम का धागा, भाँक,  
भक्ता दे० ( पु० ) बड़ा टोकरा, चप्पा ।  
भक्ताना दे० ( क्रि० ) चिड़ना, खीजना, फिटकियाना ।  
भक्त तत्त्वं [ भक्त + अल् ] मत्स्य, मीन, मछली मकर,  
मच्छ, बड़ी मछली, पाटीन, ताप, मीनराशि ।  
—भक्तन या भक्तु ( पु० ) मदन, कामदेव, मीनध्वज ।  
—भक्त ( पु० ) [ भक्त + अङ् ] अनिरुद्ध, ऊपापति,  
श्रीकृष्ण का पौत्र, कामदेव का दूसरा रूप ।  
—भक्त ( पु० ) [ भक्त + अशन ] मत्स्य भोगी,  
मीनमजी, शिशुमार, मूल, जलजन्तु विशेष ।  
—भक्तरी ( स्त्री० ) [ भक्त + उदरी ] व्यासदेव की  
माता, मत्स्यगन्धा, योजन गन्धा ।  
भक्त ( स्त्री० ) तिरमिगहट, धुंधलापन, छाया, आभा,  
मिलमिलाहट ।  
भक्त दे० ( पु० ) प्रतिध्वनि, लहसन, प्रतिविम्ब,  
रुझक, छाया, मया—“ मेरी भव याचा हरो राधा  
नागरि सोय । जातन की भक्त परे श्याम हरित  
दुति होय । ” ( विहारी की सनसई )  
भक्त दे० ( पु० ) वृष्ट विशेष, झाड़, वेतस ।  
भक्त दे० ( स्त्री० ) ताक, दृष्टि, नजर ।

भक्तड़, भक्कर दे० ( पु० ) कटिदार झाड़ी, करील के  
सूखे झाड़ ।  
भक्तना दे० ( क्रि० ) छिप कर देखना, ताकना, ओट  
से देखना, निहारना, कनखी से देखना ।  
भक्ताभाँकी दे० ( पु० ) ताका ताकी, देखा देखी,  
परस्पर निरीक्षण, परस्परालोकन ।  
भक्ती दे० ( स्त्री० ) दर्शन, अवलोकन । [ हरिण विशेष ।  
भाँख दे० ( पु० ) जन्तु विशेष, घन्य जन्तु, बारहसिंघा,  
भाँजन दे० ( स्त्री० ) स्थियों के पैरों में पहने जाने वाले  
नक्काशीदार पोले कड़े, जिनमें कट्टरी डाली जाती  
है, जिससे चलते समय बने । [ क्रोध, क्रम, मन्द ।  
भाँक दे० ( स्त्री० ) मजीरा, एक प्रकार का बाजन, हल्का  
भाँकट दे० ( स्त्री० ) भगवा, कलह, विरोध, टण्डा ।  
भाँकर दे० ( पु० ) बहुछिद्रयुक्त, जिसमें अनेक छिद्र हों  
या हो गये हों ।  
भाँकरी दे० ( स्त्री० ) बहुत छेद वाली कलछी, भरना ।  
भाँका दे० ( पु० ) साँगा, कीड़ा विशेष, जो गर्मियों के  
दिन में प्रायः विशेष होते हैं । [ भाँक पजाने वाला ।  
भाँकिया दे० ( वि० ) फोपी, फोपी, रिसवा, खिन्न,  
भाँकी दे० ( स्त्री० ) खेल विशेष ।—कौड़ी ( वा० )  
छूटी कौड़ी, कुछ नहीं, निरर्थक, बिना प्रयोजन ।  
भाँट दे० ( पु० ) गुस्ताफ के ऊपर के बाल, परम, शप,  
अधन्त छद्म वस्तु ।  
भाँप दे० ( पु० ) टपन, टकन, ब्रांस या तृण का बना  
हुआ गृहावरण विशेष, दीवार की रक्षा के लिये  
टहर, सिरकी की टट्टी ।  
भाँपना दे० ( क्रि० ) टकना, बन्द करना, आच्छादन  
करना, आवृत करना, तोपना, छाप लेना ।  
भाँपो दे० ( स्त्री० ) छिनाल स्त्री, भोविन, पक्षी ।  
भाँवरा दे० ( वि० ) काला, कृष्ण, कृष्णवर्ण का ।  
भाँवली दे० ( स्त्री० ) नखरा, चोचला, हाव भाव ।  
भाँवा दे० ( पु० ) पक्षी ईंट, अधिक पकने से दो तीन  
या अधिक सटी हुई ईंट, पैर को रगड़ कर साफ  
करने वाली ईंट विशेष ।  
भाँसना दे० ( क्रि० ) बिगाड़ना, फुसलाना, खुशामद  
करके रास्ते पर ले आना, असत्य लाभ का लाभ  
दिखा कर कुछ ले लेना, धोखा देना, ठगना ।  
भाँसा दे० ( पु० ) फुसलाना, धोखा, असत्य लाभ ।

भासू दे० ( पु० ) फुसलाऊ, घोखेबाज, धूर्त, ठग, विगाड़ ।

भा तद० ( पु० ) मैथिल तथा नामर ब्राह्मणों की एक वपाधि ।

भाऊ दे० ( पु० ) भाऊ, पौधा विशेष, विचुल, अफज ।

भाग दे० ( पु० ) फेन, उबाल, पानी में अधिक तरल उठने से या और किसी प्रकार रगड़ पहुँचने से जो सफेद फेन निकलता है ।

भाभा दे० ( पु० ) गाँजा, भाँग, एक प्रकार की नशीली पत्ती, जिसका आज कल के महारामा बड़ा आदर करते हैं, मादक वस्तु विशेष । [ स्थान, मैदवा ।

भाट दे० ( पु० ) निरुद्ध, लता आदि से घिरा हुआ

भाड़ दे० ( पु० ) कटीला, सघन पेड़, दीपक विशेष, जो घृह के आकार का पीतल आदि का बनाया जाता है, जिसमें शीशे के ग्लास लगाये जाते हैं, यत्तियों का भाड़, पशुशाल ।—खरूह ( पु० ) एक वन का नाम, जो बिहार के पूर्व भाग में है, जहाँ वैद्यनाथ नामक महादेव हैं । पुरी के पास के वन का नाम भी भाड़खण्ड ही है, यथा—“भाड़खण्ड में भले विराजो जी” । औरैसा जगन्नाथ पुरी में ठाकुर भले विराजो जी” ।—भूलाड़ ( वा० ) कटीली तथा सूखी भाड़ी, यीहड़ वन, वीरान जङ्गल ।—भूटक ( वा० ) झाड़ना, बहारना, साफ सुथरा करना ।—भूड़ ( वा० ) झाड़न, बहारन, सफाई संशोधन, ऊपरी आदमनी, नियमित आय से अधिक आय, बचा खूबा ।—ढालना ( वा० ) साफ कर देना, तोड़ देना, स्पष्ट कह देना, तिरस्कार करना, अनादर करना, अनुचित कड़े राज का प्रयोग करना ।—पछाड़ कर देखना ( वा० ) खूब देखना, खूब जाँच करना, परखना, अनुसन्धान करना, परीक्षा करना, जाँचना, कसौटी कसना ।—फानूस दे० ( पु० ) शीशे के भाड़ हाथियाँ और गिलास आदि जो रोशनी और सजावट के काम में लाये जाते हैं ।

—घाँघना ( वा० ) अविरत वृद्धि होना, सर्वदा पानी भरसना, किसी वस्तु का ताँता बाँध देना, निरगल धोल्ते जाना ।

भाड़न दे० ( श्री० ) बहारन, छुहारन, कड़ा, कपड़ा,

कतवार, साफ करने/वाला कपड़ा, वह कपड़ा जिससे वस्तु साफ की जाती है ।

भाड़ना दे० ( क्रि० ) साफ करना, छुहारी लगाना, झाड़ लगाना, छुहारना या कपड़े से साफ करना, बुन्दिया झाड़ना, सेव झाड़ना, गिराना, टपकाना, चुभाना, उतारना ।—फूँकना ( वा० ) भूत उतारना, डेटका काना, मन्त्र से नजर आदि हटाना ।

भाड़न्त दे० ( अ० ) सभी समस्त, सम्पूर्ण, अखिल, सब के सब, समस्त रूप से, पूर्णरूप से ।

भाड़ी दे० ( पु० ) तलाशी, विष्णु, मल ।

भाड़ा भपटा लेना दे० ( वा० ) झूठना, छोटाना, अन्वेषण करना, मार्गण करना, तलाशी लेना ।

भाड़ा देना दे० ( वा० ) तलाशी देना ।

भाड़ी दे० ( श्री० ) छोटा और घना घन, सघन छोटा घृह विशेष ।

भाड़े भपटे जाना दे० ( वा० ) मल त्याग करने जाना, पाखाने जाना ।

भाड़ दे० ( पु० ) बड़नी, शोधनी, सम्भाजिनी, छुहारी, कूँचा ।—कश मेहरन, भद्दा, हलाक़लोर ।

भापड़ ( पु० ) धप्पड़, तमाचा, चपेटा ।

भापा दे० ( पु० ) टोकरी, बड़ी टोकरी, ढोरी ।

भावर दे० ( पु० ) पक़िल मूमि, दबदल ।

भावा दे० ( पु० ) चर्मपात्र, चाम का एक प्रकार का पात्र जिससे तेल या घी नापा जाता है । कुप्पा, कुप्पी, छेददार बड़ा कलछा जिससे कड़ाह से पुरियाँ या सेव निकाले जाते हैं, सेव छाँटने की छेददार कलछी ।

भाम ( श्री० ) गुच्छा, कुर्पे से मिदी निकालने का यंत्र विशेष ।

भामर दे० ( पु० ) शान, शाय, सिन्धी, पयरी, एक प्रकार का परवर जिस पर अन्न तीखे किये जाते हैं ।

भामा दे० ( पु० ) माँवा, पक्षी हूँट ।

भाम भाम ( पु० ) झनकार, माँव माँव ।

भार दे० ( वि० ) केवल, निषट, एकमात्र सम्पूर्ण, कुल, समूह । तत् ( श्री० ) दाढ़, भाग की लव, अशिक्षण, विस्फुल्लिङ्ग, प्रकाश, चारपापन ।—खरूह, तत् ( पु० ) पर्वत जो वैद्यनाथ देता हुआ पुरी तक फैला हुआ है । [ झाड़कर ।

भारि दे० ( क्रि० ) झारकर, गिराकर, झरझारकर,

भारी दे० ( स्त्री० ) जलपात्र विशेष, गडुआ, करवा,  
टोटीदार जलपात्र, सुराही, समूह, झाड़ी, वृच  
समूह, वृच जाल, कमण्डलु ।

भाल तद्० ( स्त्री० ) कटु, परपराइट, तीतापन, तरङ्ग,  
कामेच्छा । दे० ( स्त्री० ) दो तीन दिन की लगा-  
तार वर्षा । ( पु० ) झालने की क्रिया, बड़ा टोकरा,  
चातुस्य दूटे वस्तुओं का जोड़ना, दूटा वस्तुन  
सुधारना, जलन, डाह ।

भालना दे० ( पु० ) घोटना, जोड़ना, चिकनाना,  
सिगध करना, पाखिरा करना, साफ़ करना, दूटे  
धातु पात्र का टाँका द्वारा क्षिप्र रोकना ।

भालड़ तद्० ( स्त्री० ) पूजा के समय बजाया जाने वाला  
घड़ियाल [ किनार, गोट, झौंक ।

भालर दे० ( स्त्री० ) जालीदार, किनारा, गुच्छेदार  
भालरा दे० ( पु० ) सोता, झरना, कुण्ड, बड़ा कुण्ड ।

भाला दे० ( पु० ) राजपूतों की एक जाति । [ टोकरा ।

भापा दे० ( पु० ) झौंका, झोपा, बड़ा जालीदार

भिक्षक दे० ( स्त्री० ) चौक, भय, डर, भड़क, अचम्भा ।

भिक्षकना दे० ( कि० ) भड़कना, डरना, चौंकना,  
आश्चर्यित होना, अचम्भित होना ।

भिक्षका दे० ( वि० ) चौंका हुआ, डरा हुआ, भय-  
भीत, अचम्भित । [ भय दिखाना ।

भिक्षकाना दे० ( कि० ) भड़काना, चौंकाना, डरवाना,

भिक्षकी दे० ( स्त्री० ) भड़क, चौंक, डर, भय ।

भिक्षा दे० ( स्त्री० ) फूटी कौड़ी, कानी कौड़ी, जिगना  
नामक एक वृच ।

भिक्षायी दे० ( स्त्री० ) जिगना वृच विशेष ।

भिक्ष दे० ( स्त्री० ) धमकी, घुड़की, फटकार ।

भिक्षना दे० ( कि० ) धमकी देना, धमकाना, घुड़की  
देना, फटकारना, निरस्कार करना, झटका देना ।

भिक्षाभिक्ष दे० ( स्त्री० ) झगड़ा, रगड़ा, टंटो,  
यल्लेड़ा, बकाझकी, फटकारना और धमकी देना ।

भिक्षी दे० ( स्त्री० ) घुड़की, दबाव, धमकी ।

भिक्षिण दे० ( कि० ) क्रोध करना, अधिक  
क्रोधित होना, चिड़चिड़ाता ।

भिनचा दे० ( पु० ) महीन चाँचल वाला धान ।

भिनपा ( कि० ) झँपना, लज्जित होना ।

भिनपा ( कि० ) लज्जित करना, शरमाना ।

भिनहड़ा दे० ( वि० ) दुबल, पतली हड्डी वाला,  
सूखट, सुकटा ।

भिनभिनी दे० ( स्त्री० ) सनसनी, झनझनी, पैर का  
सेा जाना । किसी अन्न की नस दब जाने से उनमें  
एक प्रकार की सनसनी हो जाना, यह शरीर की  
निर्वृत्तता की पहचान है ।

भिरभिर दे० ( पु० ) मन्द प्रवाह, धीरे धीरे बढ़ना,  
छोटी धारा, पतला, हलका । [ कण्डा ।

भिरभिरा दे० ( वि० ) बिलकुल पतला या महीन  
भिरि दे० ( स्त्री० ) झिल्ली, झँगुर, कीटविशेष, दार,  
दरज, गड्ड जिसमें भिरभिर का जन एकत्र हो ।

कुए के पास से निकलने वाला छोटा सोता, तुपार,  
पाला मारी हुई फसल ।

भिरभिराना दे० ( कि० ) झरना, टपकना, गिरना,  
बहना ।

भिलगा दे० ( पु० ) पुरानी खाट, दूटी खाट, जिस  
खाट की बिनावट टूट गई हो । एक प्रकार के  
सिपाही, सैनिक विशेष ।

भिलम दे० ( स्त्री० ) कवच, सज्जाह, छोड़े का अन्न  
जो युद्ध में अर्धों से शरीर की रक्षा के निमित्त  
पहना जाता है, बख्तर, सिर पर का लोहे के कटोरे  
के समान पहनावा । [ एक प्रकार का धान ।

भिलमा दे० ( पु० ) संयुक्तप्रान्त में उत्पन्न होने वाला

भिलमिल दे० ( पु० ) हिलती हुई रोशनी, अस्थिर  
ज्योति, एक प्रकार का शरीक मुलायम कपड़ा ।

— ( वि० ) झीना, चमकता हुआ ।

भिलमिलाना दे० ( कि० ) रह रह कर चमकना,  
प्रकाश का हिलना, बीच बीच में एक बार चमक  
जाना, कभी चमकना, कभी चोप होना ।

भिलमिली दे० ( स्त्री० ) तिरछी और तर ऊपर छापी  
हुई बहुत ही आड़ी पटरियाँ जो किवाड़ों या खिड़-  
कियों में जड़ी जाती हैं । इनसे भीतर बाहर बाहिर  
देख सकता है, किन्तु बाहिर वाला भीतर नहीं  
देख सकता ।

भिलड़ ( पु० ) दूर दूर पर पुना हुआ वस्त्र ।

भिल्लिका तद्० ( स्त्री० ) झँगुर, कीट विशेष ।

भिल्ली तद्० ( स्त्री० ) यति सूदन चमड़ा, पतला चमड़े,  
झँगुर-भिल्लिका — दार ( पु० ) झिल्लीवाला ।

भौकना दे० ( कि० ) पश्चात्ताप करना, अनुताप करना, पछताना, शोकित होना, दुःखित होना, दुःखड़ा रोना ।

भौका दे० ( पु० ) चक्की का कौर, बतना अन्न जितना एक बार में चक्की में ढाला जाय ।

भौखना दे० ( कि० ) क्लिप्त करना, खीजना, दुःखड़ा रोना । [ धीवर, मांझी, कण्ठधार ।

भौगट दे० ( पु० ) मल्लाह, केबट, कैवर्त, दास,

भौगा दे० ( स्त्री० ) चिंगड़ी मछली, एक प्रकार की मछली ।

भौगुर दे० ( पु० ) कीट विशेष, किल्ली, घुरघुरा ।

भौकना दे० ( कि० ) कुंभजाना ।

भौन दे० ( पु० ) भौना, महीन, सूक्ष्म, पतला, पतल, दुर्बल, धारिक । ( स्त्री० ) भौनी, हलकी, महीन ।

भौना दे० ( पु० ) किरकिरी ।

भौनी दे० ( स्त्री० ) किरकिरी, महीन, पतली । यथा—  
चादर मोरी भौनी, मूरख मेल कर दीनी ।  
ई चादर मोर कबिरा छोड़ी ज्यों की त्यों धर दीनी ।  
—कबीर साहब ।

भौवका दे० ( स्त्री० ) भौगुर, कीट ।

भौल दे० ( स्त्री० ) सरोवर, हद, जलाशय, ताल, बहुत बड़ा तालाब, प्राकृतिक जलाशय, चारा रहित बड़ा सरोवर ।

भौसी दे० ( स्त्री० ) फूदी, छोटी छोटी घुन्टे, फुहारा, कपास, घुट्टि की बहुत ही छोटी छोटी घुन्टे ।

भुक्कना दे० ( कि० ) नम्र होना, निहुरना, नबना, लचना, सिर नीचा करना, लज्जा से सिर अवनत करना, अभिवादन करना, बड़े को प्रणाम करना, नीचे की ओर जाना, झोपित होना । यथा—  
“ सुखी रानि औरहु बरगानी ” । — रामायण ।

भुकाना दे० ( कि० ) नवाना, नीचा दिखाना, नम्र करना, प्रणत करना ।

भुकावट दे० ( स्त्री० ) निहुराव, नम्रता, लचाव, लटकाव ।

भुक्कुलाना दे० ( कि० ) क्रोध करना, रिस करना, चिड़चिड़ाता, शीघ्र क्रोध करना, खिसियाना ।

भुलाना दे० ( कि० ) भूटा करना, भूट साबित करना मिथ्या सिद्ध करना, अशुद्ध करना ।

भुटाई दे० ( स्त्री० ) भूटापन, मिथ्या, असत्य । ( कि० ) भूटा करके, मिथ्या बताकर ।

भुटालना दे० ( कि० ) अशुद्ध बताना, मिथ्या होना सिद्ध करना, प्रमाणों के द्वारा मिथ्यात्व प्रतिपादन करना, भूटा ठहराना, भूटा बताना, उच्छिष्ट करना, भूटा करना । मुँह— ( वा० ) कुछ खाना, नाम मात्र के खाने के लिये बैठना, स्वरूप खाना । मुँह। मुँह— ( वा० ) मुँह पर भूटा पनाना, सामने भूटा साबित करना ।

भुट, भुंठ ( पु० ) स्तवक, गुच्छा, भौप, छोटा झाड़ ।

भुण्ड दे० ( पु० ) यूथ, समूह, समुदाय, दल, भीड़भाड़, उद्ग, मण्डल, साधुओं का अखाड़ा, साधुओं का समूह विरोध, जिसमें मिश्रित संख्या के साधु रहते हैं ।

भुण्डा दे० ( पु० ) पताका, वैजयन्ती, झंडा ।

भुण्डी दे० ( स्त्री० ) झाड़ी, दृष्ट का समूह, वनजण्ड, गुच्छा, साधुओं का एक दल विरोध, भुण्ड के अधीनस्थ रहने वाला साधुदल, इसमें भी साधुओं की एक नियत संख्या रहती है ।

भुन दे० ( स्त्री० ) सादर, समानता, लगाव, युवाव ।

भुनभुना दे० ( पु० ) खिलौना, लडकौं के खेल की एक वस्तु ।

भुनभुनी दे० ( स्त्री० ) नूपुर, पैजनी, घुघरू, सनसनी ।

भुमका दे० ( पु० ) गुच्छा, स्तवक, गुच्छा के धाकार का एक गहना, कर्णभूषण, कनकूल, फूल या फल का गुच्छा, वेदी, फल विरोध ।

भुरना दे० ( कि० ) सुखाना, सूख जाना, सूखा हो जाना, कुम्हलाना, सुरक्षाना ।

भुरमुट दे० ( पु० ) भीड़, मण्डली, समूह, समुदाय । कई झाड़ों का ऐसा समूह जो किसी स्थान को ढक ले ।

भुरसना ( कि० ) कुलसना, जल जाना, पाका मार जाना ।

भुराना दे० ( कि० ) सुखाना, शुष्क करना, सुरक्षाना, सूखा हुआ, सुरक्षाय हुआ ।

भुराने दे० ( पु० ) सूखे, सूखे हुए, सुरक्षाय हुए, ( विशेष्य 'भुराना' का बहुवचन ) ।

भुरियाना दे० ( कि० ) बीनना, बराना, सोहनना, निराना, खेत की घास निकाल देना, कोजी में भरना ।

सुर्ना दे० ( कि० ) कुम्हलाना, मुरमाना ।

सुर्नी दे० ( स्त्री० ) समेट, सिकोड़, सिकुड़न, शरीर के मांस का सिकुड़ाव, ढीबा पड़ना ।

सुलकाना दे० ( कि० ) दग्ध करना, भस्म करना, जलाना, जला देना ।

सुलना दे० ( कि० ) डुलना, हिलना, लटकना, हिंडोले पर चढ़कर हिलना, लटक पाना ।

सुलनी दे० ( स्त्री० ) नयनी में डाल कर पहनने का एक प्रकार का गहना ।

सुलसुली दे० ( स्त्री० ) कान के पात, खियों के कान में पहनने के लिये पत्ता के आकार का गहना विशेष । [ अधजला होना ।

सुलसना दे० ( कि० ) भुनना, जलना, अर्ध दग्ध होना,

सुलसाना दे० ( कि० ) जलाना, जला देना, अधजला करना अर्ध दग्ध करना । [ हिंडोला डुलाना ।

सुनाला दे० ( कि० ) लटकाना, डुलाना, हिलाना, सुल्ला दे० ( स्त्री० ) पहनने का कपड़ा मंगा, चोला जानती कुर्ती, सूला ।

सूँभ दे० ( पु० ) घोसला, सुन्ता, घासा, नीड, पत्तियों के रहने का स्थान, खोता ।

सूँभल दे० ( पु० ) क्रोध, खुनस, क्रोधावेश, क्रोध चढ़ना, रिस, चिड़, चिढ़ाहट, कोपावेश ।

सूँटर दे० ( स्त्री० ) दोकसली भूमि, दो अन्न बोयी जायें वाली भूमि, जिस भूमि में दो अन्न बोये जाते हैं । [ बचा खुचा ।

सूँठन भौंठन दे० ( पु० ) जठ, मूठ, उच्छिष्ट, भोजन से मूठ दे० ( पु० ) मिथ्या, अशुद्ध असत्य, निरर्थक ।

—मूठ ( वा० ) मूठ, सरासर मूठ, बिलकुल मूठ, निरा असत्य ।

मूठ दे० ( पु० ) मिथ्यावादी, असत्यवादी, मूठ धोलने वाला, उच्छिष्ट, भोजन का बचा भाग, मूठा, भोजनावशेष ।—भाठा ( वा० ) जठ, उच्छिष्ट ।

मूना दे० ( पु० ) पक्का नारियल, सूखा नारियल का फल, सूक्ष्म वस्त्र, महीन कपड़ा, चूल्हे में आग जलाना ।

मूमक दे० ( स्त्री० ) मीड़, समूह, समुदाय, सभा, भूषण विशेष, कण्ठमूल, ( वि० ) हिलने वाला, कापने वाला ।—साड़ी ( स्त्री० ) साबरदार साड़ी ।

मूममूम दे० ( पु० ) मेघ, धन, बादलों का उमड़ना, हिलमिल कर, अहङ्कार के साथ हिलना ।

मूमना दे० ( कि० ) हिलना, डोलना, बहरना, उंचना, मद से मूलना ।

मूमर दे० ( पु० ) सिर में पहनने का एक गहना, जिसे रंडियाँ अक्सर पहना करती हैं ।

मूर ( वि० ) सूखा, खुरक, रीठा, व्यर्थ, जूठा, दाह, जलन, दुःख ।

मूरना दे० ( कि० ) कूटना, चूर्ण करना, भाड़ना, पेड़ से फल बतारना, सूखना, किसी कारण वश दुर्बल होना, कलपना, पछुताना, पश्चात्ताप करना, दुःखित होना, शोक करना ।

मूरा दे० ( वि० ) सूखा, मुरमाया, कुम्हलाया, अना-वृष्टि, अकाल पड़ना, मँहगी पड़ना, वृष्टि न होना ।

मूल दे० ( स्त्री० ) दीला दाखा वस्त्र, ओहार, हाथी का ओढ़ना, बैल घोड़े आदि पशुओं के ओढ़ने का वस्त्र, सवारी का पर्दा, ओहार, पैली, टोपी ।

मूलना दे० ( कि० ) डोलना, हिलना, लटकना । छन्दोविशेष, कविता बनाने की एक रीति ।

मूला दे० ( पु० ) हिंडोला, पलना, डोला, रस्ती के सहारे बंधा हुआ पाट जिस पर मूलते हैं, बृच-विशेष, वीर बृच, कियों का कुर्ता ।

मूँसी दे० ( स्त्री० ) फूरी, भौंसी, कड़ास, फुहार, एक नगर का नाम, यह प्रयाग के सामने है । यह बहुत ही पुराना है । भारत के चन्द्रवंशी राजाओं की राजधानी, इसका पुराना नाम प्रतिष्ठानपुर है, इसे ही राजा पुरुरवा ने अपनी राजधानी बनाया था, इसी स्थान पर प्रसिद्ध मीमांसक बौद्धविजयी स्वधर्मप्रचारक कुमारभट्ट तुषदग्ध हुए थे । कहते हैं यहाँ के परवर्ती किसी राजा का नाम चौपट था, इस नगरी का नाम उस समय अन्धेर नगरी पड़ गया था । जो हो यह नगर पुराना है इसमें सन्देह नहीं ।

मेलना दे० ( कि० ) सहारना, सहना, ऊपर लेना, पानी में हिलना, धोलना, पचाना ।

भोंक दे० ( स्त्री० ) घक्का, आघात, ठकेज, रेला, मकोरा, बल के साथ खींचना, मुकाव, बाम, ठाट, चाक, थंदाज, पानी का हिलोरा ।—देना

( कि० ) बाग में लगाना, नष्ट काना, भस्म करना, जलाना, जला देना, फेंकना, आपसि में डालना, खतरे में डालना ।

भौकना दे० ( कि० ) फेंकना डकेलना, घुसेड़ना, लगाना, डालना, चूरे में लकड़ी लगाना, भाड़ भौकना, बिना विचारे करना, निरर्थक करना ।

भौका दे० ( पु० ) धक्का, रेंका, अपट्टा, झरोका ।

भौकी दे० ( स्त्री० ) भार, बोझ, जवाबदेही ।

भौंठा दे० ( पु० ) } सिर के बड़े बड़े धात, पिछरे

भौंटी दे० ( स्त्री० ) } या हलके घाल, लट, पिछले

घाल, चेटी, लट, बार, जथा, हिंडोले का भौका ।

भौंपड़ा दे० ( पु० ) मट्टी, छप्पर का छोटा घर, तृण

निर्मित गृह, घास फूस का घर, कुटी, आश्रम ।

भौंपड़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा भौंपड़ा, कुटी ।

भौंपा दे० ( पु० ) गुच्छा, सारक, फल या फूल का

भौंप, भौंटा, घेर घिराव, परिधि ।

भौरा दे० ( पु० ) फल या फूल का गुच्छा ।

भोक दे० ( स्त्री० ) धक्का, ठोकर, सहसा चक्कर भाना,

घूमरी, मरते मरते धक्का जाना, आफत भाना, दुःख

भाना, किसि प्रकार का उपद्रव ।

भौका दे० ( पु० ) ठोकर, ठेस, उड़क, धक्का, आघात,

झटकारा, बलात्कार से खिंचाव, झटका देकर

खींचना, भौंटा पकड़ कर जबरदस्ती खींचना, गिराने

की ह्छा से खींचना, सहसा खींचना, अचानक

अपनी ओर खींच लेना या उकेल देना ।

भौम दे० ( पु० ) खोता, ओमक, पट्टा पेट, लम्बोदर, फलों

का बड़ा धवर, केले का धवद, केले का भौम, एक

गुच्छ में लगे हुए बहुत से फल ।

भौम्हा दे० ( पु० ) बड़पेटा, बड़ा पेट बाबा, तुन्दिल,

स्यूलोदर ।

भौटिंग दे० ( पु० ) भौटवाला, प्रेतभेद, प्रेतों का भेद

विशेष, ( कि० ) भौंका देकर, भौंटा पकड़ कर जट-

काना, केश पकड़ कर खींचना, भौटिया कर खींचना ।

भौटियाना दे० ( कि० ) धात पकड़ के खींचना, भौंटा

खींचना, भौंटा पकड़ कर मारना, क्रोध से भौंटा

खींचना ।

भौटी दे० ( स्त्री० ) छोटा भौंटा, चेटी, पिछले धात, लट,

बंश समूह, जटा समूह, तृण आदि का समूह, धूला ।

भौल दे० ( पु० ) कपड़े की सिङ्गड़, ढील डाँठ, कपड़े

का ठीक न होना, ढँका होना, शरीर में बड़ा होना,

कपड़े का ठीक नहीं बैठना, तरकारी का रस्ता,

मसालेदार तरकारी का रस, यच्छे, लड़के ।

भौलभाल दे० ( पु० ) खोला ढाला, चरपरा रसा ।

भौला दे० ( पु० ) धैला, बड़ी भौली, रोग विशेष,

अर्द्धाङ्ग, लकवा, वायु विकार से आधे अङ्ग का अचे-

तन हो जाना, किसी अङ्ग का मारा जाना पतला ।

( वि० ) लटका, सिङ्गड़ा हुआ ।

भौली दे० ( स्त्री० ) कोथली, धैली, जेब, छोटा भौला ।

भौर दे० ( पु० ) कड़ी, तरकारी का रसा ।

भौरा दे० ( वि० ) साँवर, भौंवर, काढा, कृष्ण वर्ण,

साँवला, गेहुँदा रङ्ग न काढा न गोरा, सारक,

गुच्छा, झन्डा । [ तरह जलाना ।

भौंसना दे० ( कि० ) जलाना, खूब जला देना, झण्टी

भौंसा दे० ( वि० ) जला हुआ, भस्म किया हुआ,

दरघ, झुलसा हुआ, जलाया हुआ ।

भौर दे० ( स्त्री० ) झण्डा, टण्टा, लड़ाई ।

भौरी दे० ( स्त्री० ) खेत की घास ।

भौया दे० ( पु० ) टोकर ।

भौहाना दे० ( कि० ) चिड़चिड़ाता, गुनाह, कुसकारना,

मारने की सीमा दिखाना, अनायास गिरना ।

अ

अ यह व्यञ्जन का दसवाँ वर्ण है, तालव्य वर्ण है, क्योंकि ताल से इसका उच्चारण होता है । नासिका

से उच्चारण होने के कारण इसको नासिक्य भी कहते हैं, यह चवर्ग का पंचम अक्षर है ।

सुर्ना दे० ( कि० ) कुम्हलाना, सुरसाना ।

सुर्नी दे० ( स्त्री० ) समेट, सिकोड़, सिकुड़न, शरीर के मांस का सिकुड़ाव, ढीला पड़ना ।

सुलकाना दे० ( कि० ) दग्ध करना, मरस करना, जलाना, जला देना ।

सुलना दे० ( कि० ) डुलना, हिलना, लटकना, हिंडोले पर चढ़कर हिलना, लटकना ।

सुलनी दे० ( स्त्री० ) नधनी में डाल कर पहनने का एक प्रकार का गहना ।

सुलसुली दे० ( स्त्री० ) कान के पात, खियों के कान में पहनने के लिये पत्ता के आकार का गहना विशेष । [ अधजला होना ।

सुलसाना दे० ( कि० ) सुनना, जलना, अर्घ दग्ध होना, सुलसाना दे० ( कि० ) जलाना, जला देना, अधजला करना अर्घ दग्ध करना । [ हिंडोला डुलाना ।

सुलाला दे० ( कि० ) लटकाना, डुलाना, हिलाना, सुल्ला दे० ( स्त्री० ) पहनने का कपड़ा मंगा, चोला जनानी कुर्ती, सूला ।

सूँभ दे० ( पु० ) घोसला, खुन्ता, घासा, नीड, पधियों के रहने का स्थान, खोता ।

सूँभल दे० ( पु० ) क्रोध, खुनस, क्रोधावेश, क्रोध बढ़ना, रिस, विड़ चिढ़ाहट, कोपावेश ।

सूँटर दे० ( स्त्री० ) दोकसली भूमि, दो अन्न बोयी जाने वाली भूमि, जिस भूमि में दो अन्न बोये जाते हैं । [ बचा खुचा ।

सूँठन भौंठन दे० ( पु० ) जूठ, सूँठ, उच्छिष्ट, भोजन से सूँठ दे० ( पु० ) मिथ्या, अशुद्ध असत्य, निरर्थक ।

—सूँठ ( वा० ) सूँठ, सरासर सूँठ, बिलकुल सूँठ, निरा असत्य ।

सूँठ दे० ( पु० ) मिथ्यावादी, असत्यवादी, सूँठ बोलने वाला, उच्छिष्ट, भोजन का बचा भाग, सूँठा, भोजनावशेष । —सूँठा ( वा० ) जूठ, उच्छिष्ट ।

सूना दे० ( पु० ) पक्का नारियल, सूखा नारियल का फल, सूक्ष्म वस्त्र, महीन कपड़ा, चूल्हे में आग जलाना ।

सूमक दे० ( स्त्री० ) मीड़, समूह, समुदाय, सभा, मूषण विशेष, कर्णफूल, ( वि० ) हिलने वाला, कपने वाला । —साड़ी ( स्त्री० ) साबरदार साड़ी ।

सूम दे० ( पु० ) मेघ, घन, बादलों का उमड़ना, हिलमिल कर, अदृष्ट के साथ हिलना ।

सूमना दे० ( कि० ) हिलना, डोलना, बहरना, जंघना, मद से मूलना ।

सूमर दे० ( पु० ) सिर में पहनने का एक गहना, जिसे रंडियाँ अक्सर पहना करती हैं ।

सूर ( वि० ) सूखा, सुश्क, रीता, व्यर्थ, जूठा, बाह, जलन, दुःख ।

सूरना दे० ( कि० ) कटना, चूँच करना, मारना, पैर से फल उतारना, खूबना, किसी कारण वश तुल्य होना, कलपना, पछुताना, पश्चात्ताप करना, दुःखित होना, शोक करना ।

सूरा दे० ( वि० ) सूखा, सुरमाया, कुम्हलाया, घना-वृष्टि, सकाल पड़ना, महीनी पड़ना, वृष्टि न होना ।

सूज दे० ( स्त्री० ) ढीला ढाला वस्त्र, ओढ़ार, हाथी का ओढ़ना, बैल घोड़े आदि पशुओं के ओढ़ने का वस्त्र, सवारी का पर्दा, ओढ़ार, धैली, टोपी ।

सूजना दे० ( कि० ) डोलना, हिलना, लटकना ।

सूज्यविशेष, कविता बनाने की एक रीति ।

सूजा दे० ( पु० ) हिंडोला, पलना, डोला, रस्सी के सहारे बंधा हुआ पाट जिस पर झूलते हैं, वृक्ष विशेष, ठील वृक्ष, खियों का कुर्ता ।

सूँसो दे० ( स्त्री० ) सूई, भींसी, मटाल, ऊँहार, एक नगर का नाम, यह प्रयाग के सामने है । यह बहुत ही पुराना है । भारत के चन्द्रवंशी राजाओं की राजधानी, इसका पुराना नाम प्रतिष्ठानपुर है । इसे ही राजा पुरवा ने अपनी राजधानी बनाया था, इसी स्थान पर प्रसिद्ध मीमांसक बौद्धविजयी स्वधर्मप्रचारक, कुमारलभट्ट तुपदग्ध हुए थे । कहते हैं यहाँ के परवर्त्तों किसी राजा का नाम धौपट था, इस नगरी का नाम उस समय अन्धेर नगरी पड़ गया था । जो हो यह नगर पुराना है इसमें सन्देह नहीं ।

सैलना दे० ( कि० ) सहारना, सहना, ऊपर लेना, पानी में हिलना, बोलना, पचाना ।

शोक दे० ( स्त्री० ) घका, आघात, टकेज, रेला, ककोरा, बल के साथ खींचना, मुकाब, धाम, ठाट, चाब, अंदाज, पानी का हिलोरा । —देना

टगर तत् ( पु० ) सुहागा, मीठा, तगर का वृष ।  
टगरना दे० ( कि० ) डगरना, लुढ़कना, बहना,  
गिरना ।

टगरा दे० ( वि० ) टेढ़ा, बाँका, तिरछा, सरग पताजी ।  
टगराना दे० ( कि० ) घुसाना, डगराना, लुढ़काना,  
पिराना ।

टघलना } ( कि० ) पिघलना, हृदय का द्रवीभूत  
टघरना } होना, घुलना, धलना ।

टघलाना } ( कि० ) पिघलना, गलाना, घुलाना,  
टघराना } द्रव करना ।

टङ्क तत् ( पु० ) [ टङ्क + अल् ] परिमाण विरोध, चार  
भासे की तौल, टाँकी, छैनी, जिससे परस्पर  
काटा जाता है । खज, तलवार, मोध, अहङ्कार,  
सुहागा, सुरपी, दूँ, मुद्रा, सिक्का, खनिग्र,  
खनता, फहड़ा, टाँकी, तलवार का म्यान, कोश,  
पर्वन का चङ्क, कुदाल, खटाई, मीला कैय,  
कुपहाड़ी ।

टङ्कक तत् ( पु० ) [ टङ्क + क ] रजत मुद्रा, सिक्का ।  
—पति ( पु० ) मुद्राप्यञ्च, टकसाल का मासिक,  
टकसाल का अधिपति ।—शाजा ( स्त्री० ) मुद्रा-  
निर्माणगृह, टकसाख ।

टङ्कण्य तत् ( पु० ) सुहागा, उपचातु विरोध, जिससे  
सोना चाँदी आदि गलाई जाती है । [ मूलना ।

टङ्कना तत् ( कि० ) टाँकना, सीना, लटकाना,

टङ्कार तत् ( पु० ) ज्या का शब्द, धनुष के रोदे का  
शब्द, चिह्नले का शब्द, आश्रय, विस्मय, अचम्भा,  
प्रसिद्ध, धनुष का भयानक शब्द ।

टङ्की ( स्त्री० ) पानी रखने का छोटा चहलवा ।

टङ्कार दे० ( स्त्री० ) धनुष के रोदे का शब्द, धनुष की  
टङ्कार, धनुष की भयानक ध्वनि, रोदे को पीछे खींच  
कर छोड़ देने पर जो आवाज़ होती है उसे टङ्कोर  
कहते हैं ।

टङ्कोरना दे० ( कि० ) झाड़ना, धनुष के रोदे को  
झाड़ना, ज्या को खींचना, इसे सोंक करने के लिये  
खींच कर छोड़ना ।

टङ्कड़ी दे० ( स्त्री० ) पैर, पाँव, टगरी, गोड़, फिली ।

टञ्ज दे० ( पु० ) छपण, सुम, सूमड़ा, कंजूम, मक्खी-  
चूस ।

टटका दे० ( वि० ) नया, नवीन, कोरा, अभिनव,  
ताज़ा, असी का, तुरन्त बना हुआ । ( पु० ) बतरा  
पुतरा । ( स्त्री० ) टटकी, नयी, नवीना, ताज़ी ।

टटड़ी या टटरी दे० ( स्त्री० ) घेरा, मँड, घाला,  
थालघाल, घूर्चों के मूल में पानी सींचने के लिये  
जो घेरा बनाया जाता है । खोपड़ी, ठठी, टट्टी ।

टटपूँजिया दे० ( वि० ) थोड़ी पँजी वाला, घसप मूल  
घन वाला, जिसके पास स्वरूप घन हो ।

टटवाना दे० ( स्त्री० ) छोटी घोड़ी, टटुई ।

टटिया दे० ( स्त्री० ) क्राँप, द्वार धन्द करने और घृष्टि  
से दीवार की रक्षा करने के लिये लृणादि निर्मित  
टहर, टट्टी ।

टटोहरी दे० ( स्त्री० ) पक्षी विरोध, दिग्भि ।

टटुआ दे० ( पु० ) घोड़ा, छोटा घोड़ा ।

टटुई दे० ( स्त्री० ) टटवानी, छोटी घोड़ी ।

टटोलना दे० ( कि० ) हाथों से झड़ना, छ छ करके  
पहचानना, टेक्ना टेई करना ।

टट्टर दे० ( पु० ) क्राँप, बड़ी टट्टी, टटिया ।

टट्टरा दे० ( पु० ) टट्टा, डोंग, डोल या नगाड़े का शब्द ।

टट्टा तत् ( पु० ) बड़ा टट्टर ।

टट्टी दे० ( स्त्री० ) क्राँप, टट्टर, टटिया, छोटा टट्टर ।

टट्टू दे० ( पु० ) छोटा घोड़ा, टटुआ ।

टट्ट घट्ट दे० ( पु० ) पूजा का भारी आडम्बर ।

टट्टा दे० ( पु० ) लड़ाई झगड़ा, बलेड़ा, उपद्रव ।

टट्टा, टंटा दे० ( पु० ) झगड़ा, बलेड़ा, उपद्रव ।

टटिया दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की भाँग ।

टन दे० ( पु० ) टङ्कोर, धनुष का शब्द, अहङ्कार

घंटे की ध्वनि विरोध, परिमाण विरोध, अट्टाहस  
मन का एक टन होता है ।—टन दे० ( स्त्री० )  
घंटा बजाने का शब्द । [ तीक्ष्ण स्वर ।

टनक दे० ( स्त्री० ) टीस, कर्करा शब्द, गम्भीर शब्द,

टनाटन दे० ( स्त्री० ) घंटा बजाने का लगातार शब्द ।

टनाना दे० ( कि० ) विस्तार करना, विस्तृत करना,  
फैलाना, पसारना, बान्धना, खींच कर बान्धना,  
कसकर बान्धना ।

टप दे० ( स्त्री० ) फिटन, टमटम आदि का वह साप-  
धान जो इच्छानुसार चढ़ाया या गिराया जाता है ।  
बूँद बूँद टपकने का शब्द, किसी वस्तु के सङ्गत



## ट

ट ध्वज का ग्यारहवाँ धण, यह मूर्द्धन्य है। क्योंकि इसका वचारण मूर्द्धा से होता है।

ट तत् ( पु० ) चामन, शब्द, नाद, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अङ्गुश, बुढ़ाई, वृद्धावस्था, जरा, नारि-यल का लोपदा।

टक दे० ( स्त्री० ) ताक, देख, निरन्तर, दर्शन, लगा-तार देखना, अनिमेषप्रेक्षण, बिना पलक गिराये देखना, निरन्तर दृष्टि, अखण्डावलोकन, बड़ी तराजू का चौखूँटा पलड़ा।—टक ( स्त्री० ) जगतात देखते ही रहना, निरन्तर देखना, अविरत दृष्टि से देखना, अनिमेष दृष्टि से देखना।—टका ( पु० ) टकटकी, नेत्रों का खुला रह जाना।—टकाना ( क्रि० ) निश्चल दृष्टि से देखना।—टकी ( स्त्री० ) निश्चल दृष्टि।—टोना ( क्रि० ) टोलना, छूना, हँडना।—टोरना—टोलना हँडना, हाथ से छूकर हँडना।—टोहना ( क्रि० ) हँडना। [ करना।

टकटोरना ( क्रि० ) टटोलना, हँडना, तलाश टकना दे० ( पु० ) घुटना, ( क्रि० ) सिलना।

टकराना दे० ( क्रि० ) टकर खाना, टकरा जाना, टकर मारना, आघात करना, धक्का मारना, टोना, टटोलना। [ टकाना, सिलवाना।

टकवाना दे० ( क्रि० ) लुझवाना, सिलाना, तगाना, टकसार या टकसाज तद् ( पु० ) टङ्कनशाला,

सिका बनाने का स्थान, जिस स्थान पर रुपये पैसे धाले जाते हैं, मुद्रालय।—का खोटा ( वा० ) पदले से ही बिगड़ा हुआ, शिवा के समय ही से शच्छुल्ल, जिसको अच्छी शिवा नहीं मिली।

—चढ़ना ( वा० ) शिवा पाना, शिचित होना, उपदेश पाना, शिचित होने के लिये प्रयत्न करना, सीखने के लिये चेष्टा करना।—बाहर ( वा० ) अशिचित, अनपढ़, मूर्ख, खोटा, बिगड़ा, खराब।

टकसालिया तद् ( पु० ) टकसाल का काम करने टकसाली तद् ( पु० ) वाला, जिस टकसाली की चोर से टकसाल चलता हो, सिके डलवाने वाला,

या डालने वाला, टकसाज का खरा माना हुआ, ( जैसे टकसाली भाषा ) पका, प्रामाणिक ( टक-साली कथा )।

टकहाई ( स्त्री० ) टकेकी, नीच, कुलटाछी, इरनाई। टका दे० ( पु० ) रुपये पैसे, जोड़ा पैसे या रुपये, यथा:—“टका धर्म टका कर्म टकैव परम पदम्। यस्य गेहे टका नास्ति हाटक ( बाज़ार में ) टक टकायते ॥” एक त्रोल विशेष।

टकाई दे० ( स्त्री० ) सिलाई, टाँकने की मजूरी।

टकाना ( क्रि० ) सिलवाना, सिलाना।

टकाही ( स्त्री० ) देखो टकहाई।

टकी दे० ( स्त्री० ) ताक, चुकी, किसी की ताक में छिपना, लुकाव। [ तकुप्रा।

टकुप्रा दे० ( श० ) छेदने का साधन, तकला, टकेत, टकैत दे० ( पु० ) धनवान्, धनी, माजदार, आढ्य, धनाढ्य, आदरसूचक पद।

टकोर दे० ( स्त्री० ) ध्वनि, धुन, टङ्कार, चुचकार, चुमकार, चुचकारी, चुमकारी, ढोल बजाने का शब्द, थाप, सेंक।

टकोरना दे० ( क्रि० ) सेंकना, तताना, गरम करना, शय्य करना, ताता करना, तपाना, ठोकर लगाना, बजाना।

टकोरा दे० ( पु० ) छोटा आम, अँबिया।

टकौना दे० ( पु० ) टका, दो पैसे।

टकौरी ( स्त्री० ) छोटा ( तौलने का ) कौटा।

टकर दे० ( स्त्री० ) ठोकर, ठोकर लगाना, सहसा अङ्ग से अङ्ग का धक्का लगाना।—खाना ( वा० ) ठोकर खाना, अज्ञात किसी चीज़ से भिड़ जाना, आफत में पड़ जाना, अचानक दुःखी होना, हानि उठाना, छतिमस्त होना।—देना ( वा० ) सिर से ठोकर देना, पशुओं का परस्पर आघात करना।—मारना ( वा० ) धक्का लगाना, ठोकर मारना, डकेलना, खेलना, खेलना, पटकना, मुकाबिला करना, सामना करना, बराबर में खड़ा होना।

टखना दे० ( पु० ) गुल्फ, घुंटी, डेंवना, घुटना।

टगा तद् ( पु० ) मात्रिकगणों में से एक।

टस दे० ( स्त्री० ) किसी वजनी वस्तु के खिसकने का शब्द ।—से मस न होना ( वा० ) जरा भी न हटना, जरा भी न हिलना ।

टसक दे० ( स्त्री० ) टीस, चमक, दर्द, व्यथा, पीड़ा ।  
टसकना दे० ( क्रि० ) टीस देना, व्यथा होना, घटना, हटना, हिलना, रोना घोना । [ दूर हटना ।

टसकाना दे० ( क्रि० ) हिलाना, चलाना, खसकाना,

टसना दे० ( क्रि० ) मसकना, फटना, फट जाना ।

टस से मस दे० ( वा० ) इधर से उधर, इस बात से उस बात पर, एक विषय को छोड़कर दूसरे विषय पर, पूर्व स्थिति को छोड़ कर दूसरी स्थिति पर ।

टसर तद्० ( पु० ) त्रसर, एक प्रकार का रेशमी मोटा कपड़ा ।

टहक दे० ( स्त्री० ) गँठ की पीड़ा, प्रथ की चेदना ।

टहकना दे० ( क्रि० ) दुखना, दर्द करना, व्यथा होना, पिराना, पिघलना, द्रव होना ।

टहटह, टहटहा दे० ( वि० ) सुन्दर, नवीन, ताज़ा मनोहर, रमणीय, टटका ।

टहना दे० ( पु० ) पेड़ की शाखा, शाख, डाल ।

टहनी दे० ( स्त्री० ) पेड़ की छोटी शाखा, छोटी डाली ।

टहल दे० ( पु० ) सेवा, श्रृंखला, सिद्धमत, घर का काम काज, यथाः—

“ नीच टहल सय गृह कै करिहों,  
पद विचोकि भवसागर तरिहों ” ।

—राभायण ।

—टकोर ( वा० ) श्रृंखला, काम काज, गृहकर्म ।

— टकोर करना ( वा० ) सेवा करना, अधीनता बजाना ।

टहलना दे० ( क्रि० ) चलना, फिरना, घूमना, भ्रमण करना, हवा खाने जाना, सन्ध्या सुबह भ्रमण करना ।

टहलानी दे० ( स्त्री० ) दासी, सेविका, सेवा करने वाली स्त्री, घर का काम काज करने वाली स्त्री, मजूरिन, नौकरानी । [ दबा खिलाना ।

टहलाना दे० ( क्रि० ) घुमाना, फिरना, चलाना,

टहलुआ, हटलुवा दे० ( पु० ) सेवक, चाकर, नौकर, गृह कर्म करने वाला, दास, टहल करने वाला ।

टहलुई दे० ( स्त्री० ) लौंडी, हासी, चाकरानी, काम करने वाली, टहल करने वाली स्त्री, वह लकड़ी जो दीपक में घसी शकसाने को डाली जाती है ।

टहलू दे० ( पु० ) नौकर, चाकर ।

टही दे० ( स्त्री० ) युक्ति, जोड़ तोड़, ताक ।

टह्नाका दे० ( पु० ) पहेली, घुटकुला ।

टही दे० ( पु० ) बालक का शब्द, बालक की रुलाई, जन्मते बालक का शब्द ।

टहोका, टहोका दे० ( पु० ) घूँसा, चपेटा, धप्पड़ ।

टाँक तद्० ( पु० ) टह्क, चार मासे का परिमाण सीने का साधन, एक प्रकार की सुई, सिलाई, सीवन । [ टाँका चलाना ।

टाँकना दे० ( क्रि० ) सीना, सिलाई करना, तुरपना,

टाँकर दे० ( पु० ) लम्पट, लुच्चा, बदमाश, गुंडा, बच्छल्लू ।

टाँका दे० ( पु० ) सीवन, जुड़ाई, जोड़, जोड़न, सन्धान ।

टाँकी दे० ( स्त्री० ) पर्यर काटने का घस्त्र, छेनी, खलानी, नाचूर, छोड़ा खर्बूजा या अन्य किसी फल का चौकोना टुकड़ा, जिससे फल का घस्त्र घुटा होना पहचानते हैं । कुल्हाड़ी, खसटा, पानी जमा करने का हौज़, छोटा चहपचा ।

टाँकू दे० ( वि० ) टाँकने वाला, पर्यर काटने वाला ।

टाँग दे० ( स्त्री० ) टैंगड़ी, गोड़, पैर, पैँड़ी से घुटने तक का भाग, लटकाव, टैगाव ।—घड़ाना ( वा० ) धनधिकार चर्चा या हस्तक्षेप ।—तोले से निकलना ( वा० ) हार मानना ।—तोड़ना ( वा० ) निकम्मा करना, किसी भाषा के टूटे फूटे शब्द बोलना ।—पसार कर सेना ( वा० ) निश्चिन्त सेना । [ करना ।

टाँगन दे० ( क्रि० ) लटकाना, ऊपर चढ़ाना, धम्या

टाँगना दे० ( पु० ) एक प्रकार का धोड़ा, पहाड़ी धोड़ा ।

टाँगी दे० ( स्त्री० ) कुल्हाड़ी, फरसा, लकड़ी काटने का एक घस्त्र विशेष, टाँगी ।

टाँच दे० ( वि० ) ] हठीला, हठी, बक, टेढ़ा ( पु० )

टाँचड़ा दे० ( वि० ) ] पेच, दयाव ।

टाँट दे० ( स्त्री० ) सिर के बीच का भाग, चदिरी, तालु, टटरी, खोपरी ।

टाँट दे० ( वि० ) पोढ़ा, ठोस, तसार, सायुक, कड़ा बत्ताही, उधोगी, बत्साहरील । [ प्रगश्मता ।

टाँठाई दे० ( स्त्री० ) पोढ़ापन, बत्साह, ठोसाई,

गिरने का शब्द ( घाम का टपकना ) । ( पु० )  
पानी रखने के नाँद के बँग का खुला बड़ा बरतन,  
एक शीज़ार, बाँस का टोकरा जिसमे मुर्गी के बच्चे  
रक दिये जाते हैं ।

टपक दे० ( पु० ) रह रह कर होने वाली पीड़ा या

वेदना, जल आदि की बूँद गिरने का शब्द ।

टपकना दे० ( कि० ) चूना, बूँद बूँद गिरना ।

टपका दे० ( पु० ) पानी की बूँद, अलग अलग होकर  
गिरना, पक्के फलों का वृक्ष से आप ही आप  
गिरना, आप से गिरा हुआ घाम का पका फल ।

टपकाना दे० ( कि० ) चुभाना, छानना, निकालना,  
रक्त आदि निकालना, छानना ।

टपका टपकी दे० ( स्त्री० ) बूँदा बूँदी, फुहार ।

टपजाना दे० ( कि० ) कूद जाना, उछल जाना, भागे  
पड़ जाना, अचानक होना, पीछे की बात भूल जाना,  
पक्षी की बात को भूल जाना ।

टपना दे० ( कि० ) नाँचना, छानना, कूद कर जाना,  
फँद कर निकल जाना ।

टप पड़ना दे० ( कि० ) बीच में कूद पड़ना, हाथ  
बटाना, दूसरों के काम के बीच आ पड़ना, अवि-  
चार से किसी काम को गड़बड़ा लेना, किसी काम की  
गुस्ता या हानि लाभ बिना सोचे ही उसमें लग  
जाना, अचानक आ जाना ।

टपरा दे० ( पु० ) छप्पर, छाजन, कोपड़ा ।

टपाटप दे० ( पु० ) लगातार, टप टप कर टपकना ।

टपाना दे० ( कि० ) कुदा देना, नँघवाना, कुदवाना,  
फँदाना, फँदवा देना ।

टप्पा दे० ( पु० ) डाकघर, डाकखाना, पोस्ट आफिस,  
घरनाई, पालकी डोने वाले कहारों की डाक, बीच  
बीच में डगका पड़ाव, अन्तर, छोटा भूमिभाग,  
नियत दूरी, मोटी सीवन, रागिनी विशेष, एक  
प्रकार के गीत का नाम । गेंद का उछाल, एक  
प्रकार का काटा ।—छाना ( वा० ) गोली या गेंद  
को बलवत्तै हुए चलना ।

टप्पर दे० ( पु० ) परिवार, कुल, पंथ, कुटुम्ब ।

टमक दे० ( स्त्री० ) पीड़ा, यातना, वेदना,  
कष्ट, टीस । ध्वनि विशेष, पानी में पानी गिरने  
का शब्द ।

टमकना दे० ( कि० ) गिरना, टपकना, चूना, टमक  
होना, प्रण में वेदना होना ।

टमकी दे० ( स्त्री० ) डगडुगिया ।

टमटम दे० ( स्त्री० ) धोड़े से खींची जाने वाली खुली  
दो पहिरों की छोटी गाड़ी ।

टमटी दे० ( स्त्री० ) एक बरतन विशेष ।

टर दे० ( स्त्री० ) अदृष्टार, गुमान, अकड़ पेंड, मँडक  
की बोली, हठ, अड़, तुच्छ बात । ( वि० ) मत-  
वाला, उन्मत्त, अचेत, असावधान ।—टरा ( स्त्री० )  
बकबक, बड़बड़ ।—टराना ( कि० ) बकबक  
करना, टटर करना, निरर्थक बहुत बोलना, बक-  
बाद करना ।—टरी ( पु० ) बकवादी, बहुभाषी,  
बड़बड़िया ।

टरई दे० ( कि० ) हटती है, टलती है, हटजाना ।

टरना दे० ( कि० ) हटना, टल जाना, खिसक जाना,  
दूर हो जाना, भग जाना ।

टरकाना दे० ( कि० ) हटाना, खिसयाना, टाल देना ।

टराना दे० ( कि० ) हटाना, हटा देना, टाल देना,  
भगा देना, हटवाना ।

टरा दे० ( वि० ) क्रोधी, बकवादी, बक्की, गुंडा ।

टराना दे० ( कि० ) बकबक करना, चिड़चिड़ाना,  
क्रोध में आकर बकना, गाली देना ।

टलना दे० ( कि० ) हटना चम्पत होना, भग जाना,  
चला जाना, सरकना, दूर होना, जाता रहना, नष्ट  
हो जाना । [ अर्थ ।

टलप दे० ( स्त्री० ) छोट, टुकड़ा, कतरन, खण्ड, भाग,  
टलमलाना दे० ( कि० ) डगमगाना, स्थिति का अवि-  
स्थित होना, संदिग्ध स्थिति का होना, ललचना ।

टलाटली दे० ( स्त्री० ) बहाना, मिस, हीलाहवाला ।

टलाना दे० ( कि० ) छिपाना, टकना, लुकाना, हटवा  
देना, हटावा कर छिपा देना, सरका देना, लुका  
देना । [ सारहीन वस्तु, ठोकर ।

टल्ला दे० ( पु० ) झूठमूठ, असत्य, मिथ्या, निरर्थक,

टल्ली दे० ( पु० ) एक प्रकार का बाँस ।

टल्लेनवीसी दे० ( स्त्री० ) व्यर्थ का काम, निटल्लापन,  
बहाना, टालमटोल ।

टवर्ग तव० ( पु० ) ट ठ ड ढ ण, टकारादि पाँच अक्षर ।

टवार् दे० ( स्त्री० ) व्यर्थ धूमना ।

टस दे० ( स्त्री० ) किसी वजनी धातु के खिसकने का शब्द ।—से मत न होना ( वा० ) ज़रा भी न हटना, जरा भी न हिलना ।

टसक दे० ( स्त्री० ) टीस, चमक, बर्द, ब्यथा, पीड़ा ।

टसकना दे० ( क्रि० ) टीस देना, ब्यथा होना, घटना, हटना, हिलना, सेना धोना । [ दूर हटना ।

टसकाना दे० ( क्रि० ) हिलाना, चलाना, खसकाना,

टसना दे० ( क्रि० ) मसकना, फटना, फट जाना ।

टस से मस दे० ( वा० ) हथर से उधर, इस बात से उस बात पर, एक विषय को छोड़कर दूसरे विषय पर, पूर्व स्थिति को छोड़ कर दूसरी स्थिति पर ।

टसर तद् ( पु० ) टसर, एक प्रकार का रेशमी मोटा कपड़ा ।

टहक दे० ( स्त्री० ) गाँठ की पीड़ा, ग्रन्थ की वेदना ।

टहकना दे० ( क्रि० ) टुखना, दर्द करना, ब्यथा होना, पिराना, पिघलना, द्रव होना ।

टहटह, टहटहा दे० ( वि० ) सुन्दर, नवीन, ताज़ा मनोहर, रमणीय, टटका ।

टहना दे० ( पु० ) पेड़ की शाखा, शाख, डाल ।

टहनी दे० ( स्त्री० ) पेड़ की छोटी शाखा, छोटी डाली ।

टहल दे० ( पु० ) सेवा, छुश्रूपा, खिदमत, घर का काम काज, यथा:—

“नीच टहल सब गृह के करिहों,

पद विभोकि भवसागर तरिहों” ।

—रामायण ।

—टकोर ( वा० ) छुश्रूपा, काम काज, गृहकर्म ।

—टकोर करना ( वा० ) सेवा करना, अधीनता बजाना ।

टहलना दे० ( क्रि० ) चलना, फिरना, घूमना, भ्रमण करना, हवा खाने जाना, सन्ध्या सुबह भ्रमण करना ।

टहलनी दे० ( स्त्री० ) दासी, सेविका, सेवा करने वाली स्त्री, घर का काम काज करने वाली स्त्री, मजूरिन, नौकरानी । [ हवा खिलाना ।

टहलाना दे० ( क्रि० ) घुमाना, फिरना, चलाना, टहलुभा, टहलुवा दे० ( पु० ) सेवक, चाकर, नौकर, गृह कर्म करने वाला, दास, टहल करने वाला ।

टहलुई दे० ( स्त्री० ) लॉडी, दासी, चाकरानी, काम करने वाली, टहल करने वाली स्त्री, वह लकड़ी जो दीपक में पची बकसाने को डाली जाती है ।

टहलू दे० ( पु० ) नौकर, चाकर ।

टही दे० ( स्त्री० ) युक्ति, जोड़ तोड़, ताक ।

टह्का दे० ( पु० ) पहेली, चुटकुला ।

टही दे० ( पु० ) बालक का शब्द, बालक की रुलाई, जन्मते बालक का शब्द ।

टहोफ, टहोका दे० ( पु० ) घूँसा, चपेटा, पम्प ।

टाँक तद् ( पु० ) टह्क, चार भागों का परिमाण सीने का साधन, एक प्रकार की सुई, सिलाई, सीवन । [ टाँका चलाना ।

टाँकना दे० ( क्रि० ) सीना, सिलाई करना, तुरपना,

टाँकर दे० ( पु० ) लम्पट, लुब्धा, बदमाश, गुंडा, उच्छृङ्खल ।

टाँका दे० ( पु० ) सीवन, जुड़ाई, जोड़, जोड़न, सम्पान ।

टाँकी दे० ( स्त्री० ) पत्थर काटने का यन्त्र, छेनी, खसानी, मासूर, फोड़ा खर्यूजा या अन्य किसी फल का चौकोना टुकड़ा, जिससे फल का अर्ध्वा ज़रा होना पहचानते हैं । कुल्हाड़ी, खसटा, पानी जमा करने का हौज़, छोटा चहयचा ।

टाँकू दे० ( वि० ) टाँकने वाला, पत्थर काटने वाला ।

टाँग दे० ( स्त्री० ) टैंगड़ी, मोढ़, पैर, पैड़ी से घुटने तक का भाग, लटकाव, टैगाव ।—घाड़ाना ( वा० ) अनधिकार चर्चा या हस्तक्षेप ।—तले से निकलना ( वा० ) हार मानना ।—तोड़ना ( वा० ) निकम्मा करना, किसी भाषा के बड़े फूटे शब्द थोड़ना ।—पसार कर सोना ( वा० ) निश्चिन्त सोना । [ करना ।

टाँगन दे० ( क्रि० ) लटकाना, ऊपर चढ़ाना, खम्बा

टाँगना दे० ( पु० ) एक प्रकार का घोड़ा, पहाड़ी घोड़ा ।

टांगी दे० ( स्त्री० ) कुल्हाड़ी, फरसा, लकड़ी काटने का एक अच्छा विशेष, टांगी ।

टाँच दे० ( वि० ) } हठीला, हठी, बक, टेढ़ा ( पु० )

टाँचड़ा दे० ( वि० ) } पेच, दयाव ।

टाँट दे० ( स्त्री० ) सिर के बीच का भाग, चाँदी, तालु, टटदी, खोपरी ।

टाँठ दे० ( वि० ) पोड़ा, दोस, ससार, सायुक, कड़ा शसाही, उद्योगी, हस्ताक्षरी । [ प्रगल्भता ।

टाँठाई दे० ( स्त्री० ) पोड़ापन, हस्ताक्ष, दोसाई,

टांड दे० ( स्त्री० ) दीवारों के बीच जड़ा तख्ता जिस पर सामान रखा जाय। मझ, मवान, बैठाने के लिये बाँस आदि का बना ऊँचा आसन।

टांडा दे० ( पु० ) खेप, एक मनुष्य का बोझ, एक बार के उठाने योग्य वस्तु, बनजारे की वस्तु।

टांडी तद्० ( स्त्री० ) टिड्डी, कीट विशेष।

टाँय टाँय दे० ( स्त्री० ) कर्कश शब्द, बकवाद।

टाँय टाँय फिस ( चा० ) बकवाद बहुत किन्तु परियाम कुछ भी नहीं। [ बिछावन, घोरा।

टाट दे० ( पु० ) सन का बना हुआ एक प्रकार का

टाटक दे० ( वि० ) टटका, नया, नवीन, ताज़ा।

टाटी दे० ( स्त्री० ) टटिया, टटो, भाँप, टट्टर।

टाटी तद्० ( स्त्री० ) थाली, मञ्जुली।

टाड़ी दे० ( स्त्री० ) लकड़ी काटने का अथ विशेष, छोटी कुबहाड़ी, फरसी, छोटा फरसा।

टान ( स्त्री० ) तनाव, खिंचाव। [ खींचना।

टानना दे० ( क्रि० ) फैलाना, विस्तार करना, पूँचना,

टाप दे० ( पु० ) लाँघ, नाँघ, उल्लूहण, डाँक, घोड़े का शब्द, जो उसके दौड़ने पर होते हैं। बाँस का बना हुआ एक प्रकार का टोकरा, जिससे मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। सुरगियों के बन्द करने का साध।

टापना दे० ( क्रि० ) टाप मारना, हँड़ना, खोजना, ताकते रह जाना, निराश हो जाना, निराश बैठे ताकते रहना, भूखा रह जाना।

टापा दे० ( पु० ) खाँचा, बाँस का बना दौरा बड़ा पिंजरा, टषा, मैदान, बछ्छाल, हूद।

टापू दे० ( पु० ) द्वीप, भूमि का वह भाग जो चारों ओर से पानी से घिरा हो। ( देखो द्वीप )

टावर दे० ( स्त्री० ) छोटा झील, तालाब, अकृत्रिम छोटा ताल। ( पु० ) बालक, लड़का।

टार दे० ( क्रि० ) टारकर, हटाकर, बाँधकर, उल्लूहण कर, सरका कर। ( पु० ) घोड़ा, लौंडा, कुटना, भँडुआ, ढेर।

टारन दे० ( पु० ) उल्लूहण, हटावन, टालन।

टारना दे० ( क्रि० ) हटाना, सरकाना, दूर करना, टालना।

टारी दे० ( स्त्री० ) दूर, अन्तर, फासिल।

टाल दे० ( स्त्री० ) टालमटोल, म्याज से काल काटना, घहाना, करके समय निकालते जाना। लकड़ी अथ

आदि के बेचने का स्थान, लकड़ी का ढेर, अन्न-राशि, पहलवानों की लड़ाई का घोसा।

टालटूल दे० ( पु० ) व्याज, घहाना, मिस।

टालना दे० ( क्रि० ) हटाना, शिथाना, काटना, निशाहना।

टालमटोल दे० ( पु० ) घहानावाजी, कपट, धोल।

टाला दे० ( पु० ) छल, कपट, धोखा, बड़बर्माई।

—वाला बताना ( चा० ) टालना, टालमटोल बताना, धोल घुमाव करना, इतस्ततः करना, पट्टीवाजी करना।

टाली दे० ( स्त्री० ) गाय बैल के गले की घंटी। जवान गाय जो तीन वर्ष से कम की हो और बहुत चञ्चल हो, बड़ी ईंट, एक प्रकार की ईंट।

टाहली ( पु० ) टहलुवा, दास, सेवक।

टिकटिकी दे० ( स्त्री० ) छिपकिली, बिसतुह्या, गृहगोधिका, टिकडी, ऊँची तिपाई जिस पर बाँध कर अपराधी के बैठ लगाये जाते हैं या फाँसी लगायी जाती है।

टिकठी दे० ( स्त्री० ) तिपाई, तीन पाय की टिकठी।

टिकड़ा दे० ( पु० ) बाटी, श्रीगाकड़ी, चपटा गोल टुकड़ा। ( स्त्री० ) टिकड़ी।

टिकना दे० ( क्रि० ) बसना, ठहरना, चलना, रहना, कपड़े आदि का बहुत दिनों तक चलना।

टिकरी ( स्त्री० ) टिकिया, एक प्रकार का पकवान।

टिकली दे० ( स्त्री० ) बेंदी, स्त्रियों के सिर पर लगाने का एक प्रकार का आभूषण, सौभाग्य चिन्ह, टिकुली, छोटी टिकिया।

टिकस ( पु० ) कर, भाड़ा, किराया।

टिकाऊ दे० ( वि० ) टिकने वाला, ठहराक, चलाऊ, चलने वाला। [ चलाना।

टिकाना दे० ( क्रि० ) रखना, टहराना, बसाना,

टिकाव दे० ( पु० ) ठहरने का स्थान, टिकने का स्थान, ठहराव, स्थिति, टढ़ता, पड़ाव। [ पास-स्थान।

टिकासर दे० ( पु० ) टिकने का स्थान, टहरने की भूमि,

टिकासा दे० ( वि० ) टिकने वाला, पथिक, राही, पटोही।

टिकिया दे० ( स्त्री० ) छोटी रेाटी, बाटी, पिंसी हुई वस्तु की गोल और चिपटी बनी हुई वस्तु, कोयले की गोल गोल टिकड़ी जो तम्बाकू पीने के काम में आती है।

टिकुरा दे० ( पु० ) टीका, मीठा।

टिकुली } देखो " टिहली "।  
टिकुनी }

टिकैत तद्० ( पु० ) युवराज, अधिष्ठाता, सरदार,  
नाथद्वारे के गोसाईं जी की उपाधि।

टिकोर दे० ( पु० ) लेई, पुलदिस, जेप, लोवरी।

टिकोरा दे० ( पु० ) आम की घतिपा।

टिकड दे० ( पु० ) मोटी रोटी, बाटी।

टिको दे० ( स्त्री० ) लगाना, प्रवेश, बग़ाव, पैठ, पैसा,  
टिकिया, पैवन्द, कपड़े या चमड़े का टुकड़ा, जो  
जोड़ने के काम आता है।

टिघलाना दे० ( क्रि० ) पिघलाना, गलाना, द्रवित  
करना, पतला करना, पतलाना।

टिटकारना दे० ( क्रि० ) बेल आदि को जमाहित  
करना, टिक टिक करके पशु को जोर से चलाना।

टिटकार दे० ( पु० ) टिटकारी से हाँकना, टिटकारी  
देकर चलाना।

टिटकारी दे० ( पु० ) पशु हाँकने का शब्द।

टिटिहरी दे० ( पु० ) पचीविशेष, टिट्टिम, कहा जाता  
है कि इसका बोलना भाभी अशुभ का सूचक है।

टिट्टिम तम० ( पु० ) पचीविशेष, टिटिहरी, टिट्टी।

टिड्डा दे० ( पु० ) पतङ्ग, फलिङ्गा, फड़ङ्गा, करिङ्ग।

टिट्टी दे० ( स्त्री० ) वृणनाशक कीट, बख़्तनाश करने  
वाला।

टिपका दे० ( पु० ) दाग़, टीका, अङ्गुली आदि के द्वारा  
रङ्ग से किसी वस्तु को चिह्नित करना।

टिप्पन तद्० ( पु० ) टिप्पण, सूक्ष्म टीका, स्वर्ण  
विवरण, जन्मपत्र।

टिप्पनी तद्० ( स्त्री० ) टिप्पणी, टीका, विवरण,  
किसी विषय का भावार्थ, किसी पर अपना मत  
प्रकाशित करना, किसी सन्दिग्ध विषय को समझने  
के लिये सुझास करना, स्पष्टीकरण।

टिप्पस दे० ( स्त्री० ) युक्ति, प्रयोजन साधन का डौल।

टिपूसुलतान दे० ( पु० ) मैसूर के प्रसिद्ध सुलतान  
हैदरअली का पुत्र, हैदरअली के मरने के बाद  
टिपू उनके पद का अधिकारी हुआ, १७८२ ईसवी  
दिसम्बर को मैसूर की सुलतानी इसे मिली,  
इसका जन्म १७९६ ई० में हुआ था। हैदरअली

और अङ्गरेजों से विरोध था, अतएव हैदरअली  
के मरने के बाद अङ्गरेजों ने मैसूर पर चढ़ाई  
करना चाहा था, परन्तु टिपू की युद्धकुशलता से वे  
कुछ दिनों तक दबे रहे, अङ्गरेज सेनापति म्यान्  
२ महीने तक बदनौर में टिपू की सेना से घिरा  
हुआ था। परन्तु अन्त में उसे आत्मसमर्पण  
कर देना पड़ा। बदनौर से होकर टिपू ने मन्नलोर  
में अङ्गरेजों सेना पर चढ़ाई की, कुछ दिनों तक  
युद्ध चलता रहा परन्तु अन्त में सन्धि हो गयी।  
अन्धियारा में लिखा गया था कि अब आपस में  
लड़ना नहीं होगी। यह सन्धि हो जाने पर टिपू ने  
ट्रावन्कोर पर चढ़ाई की, अङ्गरेज और ट्रावन्कोर  
के राज्य में मिश्रता थी, अतएव पुनः आपस में  
विरोध उपस्थित हुआ। मद्रास के अङ्गरेज  
सेनापति मेडोर्ज १२ हजार सेना लेकर टिपू से  
लड़ने के लिये आये। मरहटे अङ्गरेजों से मिल  
गये। हैदराबाद के निज़ाम भी उसी तरफ हो  
गये। इस युद्ध के नायक बड़े लाठ कर्नवालिस थे।  
चारों ओर से टिपू घिर गया, १७९१ ई० में इस  
सेना के साथ टिपू ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध  
किया, अन्त में इस सेना से सलुद के सामने टिपू  
को हार माननी पड़ी, उसने सन्धि करनी चाही,  
सन्धि भी स्वीकृत हुई, परन्तु इस सन्धि के अनु-  
सार टिपू को अपने राज्य का आधा हिस्सा  
छोड़ देना पड़ेगा। सुलतान ने यह भी मान लिया,  
आधे राज्य में से मरहटे और निज़ाम ने आधा  
आधा बाँट लिया। एक प्रकार से ४।५ वर्ष  
शान्ति से कटे, टिपू ने इस बीच में अपनी बड़ी  
उन्नति करली थी, पुनः कासीसी और मरहटों  
की सहायता से बलवान् होकर अङ्गरेजों से टिपू  
ने युद्ध खाना, बड़ी युद्ध शक्ति था, इसी युद्ध में  
टिपू मारा गया।

टिमाना दे० ( क्रि० ) लाजब देना, ललवाना, प्रतिदिन  
थोड़ी सी वृत्ति देना।

टिमाव दे० ( पु० ) दिन की थोड़ी सी जीविका,  
लाजब मात्र की वृत्ति। [परसना।

टिमटिम दे० ( पु० ) मन्द मन्द शृष्टि, धीरे धीरे पानी

टिमटिमाना दे० ( क्रि० ) दीपक का मन्द मन्द जलना।



दुसकना दे० ( कि० ) बिडकना, कन्दन करना, रोना, कूटना, पीलना ।  
 दुसकना दे० ( कि० ) सिनकना, रोना, रिसा जाना, कुद हो जाना । [ शब्द, पाद का धीमा शब्द ।  
 दु० दे० ( पु० ) अपान वयु का शब्द, अथवा वायु का उगना दे० ( कि० ) चोंचकना, चोंचों से चिनार, कुतरना, एक एक दाना खाना ।  
 दु० दे० ( पु० ) लो, रोई, धान की फलियों के ऊपर की पतली चौर बुझली थाल । [ धृ० ।  
 दु० दे० ( खी० ) तुन्द, तुम्दि, नाभी, हृद्, स्थाणु, ह्रस्व दे० ( पु० ) दुकड़ा, खण्ड, अणु—सा ( अ० ) थोड़ा सा, तनिक सा, जरा सा, अल्प परिमाण में ।— ( पु० ) टाँक का एक प्रकार का शब्द । दुकड़ा, हिस्सा, खंड, बखरा, भांग ।  
 दु० दे० ( खी० ) मुटि, दूदन, कूटन, खण्डन, टोटा, कमी, हानि, लुप्तपान, लेख का वह अंश जो पुस्तक आदि लिखते समय छूट जाता है और वह पीछे से लिख दिया जाता है । ( खी० ) दूद गया, दूटना ।  
 दु० दे० ( कि० ) दूद जाना, छाया हो जाना, बिड़ जाना, नष्ट होना, आक्रमण करना, बल पूर्वक आक्रमण करना, चढ़ जाना, चढ़ाई करना ।  
 दु० दे० ( वि० ) द्वारा हुआ, फटा हुआ—फूटा ( वि० ) नष्टभ्रष्ट, निति/वित्ति, खण्डहर, खण्डरात ।  
 दु० दे० ( खी० ) थोड़ी बात, चुड़किया, छुरी, आम-रण विशेष ।— ( पु० ) थोड़ी पूँजी, अल्प मूल धन, कुछ थोड़ी बात ।  
 दु० दे० ( पु० ) धाँक का फट, डाम की जड़, वृक्षों के कोमल पत्ते, मदार का फट, अङ्कुर ।  
 दु० दे० ( खी० ) कोपल, कली, अँकुर ।  
 दु० ( खी० ) तोते की बोलनी की नक़्क । [ की मङ्गली ।  
 दु० दे० ( पु० ) मत्स्य विशेष, एक प्रकार दु० दे० ( पु० ) घुटना । [ बाँस ।  
 दु० दे० ( खी० ) सहारा, छप्पर आदि को सहारने का टेंट दे० ( पु० ) करील का फल, कपास का पका फट, फुरती, धाँसों का छँटा, धोती का खिरटाव, जो कमर में लपेट कर धोती पहनते हैं, बेईमानी, धोखाधड़ी ।

दु० दे० ( पु० ) फटविशेष, धाँस के भीतर चोट से उभा मान, टेंटा ।  
 दु० दे० ( पु० ) अचिचार की बात, उच्छृङ्खल बातें, आघात मरी बातें, हठगुण बातें, व्यर्थ कथन, निरर्थक बोलना, कूटनी ।  
 दु० दे० ( खी० ) करील का चड़ा और पका फल, रोग विशेष, कमर का एक रोग ।  
 दु० दे० ( पु० ) मटई, गने की नम, गले की घाँटी ।  
 दु० दे० ( पु० ) तोते की बोलनी, चिरटाहट, किच-किनाहट, चीख, कूक, निरर्थक चिल्लाहट ।—का हीरा ( पु० ) एक प्रकार का नया हीरा, घनावदी हीरा दु० नाम के किसी धनोक्त ने इसे बताया है, इसी कारण इस हीरे का नाम टेंट का हीरा पड़ा है ।  
 दु० दे० ( खी० ) भोट, झिराय, आड़, ( कि० ) तेज करके, तीव्र करके, तीक्ष्ण करके, शान चढ़ा के, देव के, तेज किया, सान खाई, पैनी करके ।  
 दु० दे० ( खी० ) देव, आदन, स्वभाव, धान ।  
 दु० दे० ( खी० ) धूनी, टिकाव, सहारा, अवलम्ब, टेहन, खम्भा, प्रथ, प्रतिज्ञा, दृढ़, सङ्कल्प ।  
 दु० दे० ( स्त्री० ) आड़, धाम, धामजा, रोक ।  
 दु० दे० ( कि० ) आड़ना, धामना, सहारा लगाना, आश्रय देना ।  
 दु० दे० ( स्त्री० ) धूनी, टेहन, सहारा ।  
 दु० दे० ( पु० ) टोला, जँधी ज़मीन, मिट्टी का ढेर, मिट्टी का पहाड़ ।  
 दु० दे० ( खी० ) टोटा, स्त्रा, जँधी ज़मीन ।  
 दु० दे० ( स्त्री० ) रदन, धुन ।  
 दु० दे० ( पु० ) टेह, आड़, अवलम्ब ।  
 दु० दे० ( वि० ) दृढप्रतिज्ञ, प्रतिज्ञा पालन करने वाला, सत्यवन्ध, बड़ी दृढ़ता से प्रतिज्ञा पालन करने वाला, दही, निही ।  
 दु० दे० ( पु० ) चाले का सूषा ।  
 दु० दे० ( पु० ) पान, ताम्बूल ।  
 दु० दे० ( स्त्री० ) सूत कातने का तकला, धमारों का सूषा, गोप नामक आभूषण ।  
 दु० दे० ( पु० ) पेंदी, एक प्रकार का चलाई ।  
 दु० दे० ( पु० ) एक, बाँका, उमड़ खामड़, अदृश्य, तिरछा, सीधा नहीं ।—करना ( कि० ) मुकाना,



टिलटिलाना दे० (क्रि०) चिट्ठाना, छेड़ना, दस्त आना ।  
टिलिया दे० (स्त्री०) छोटि मुर्गी, मुर्गी का बच्चा ।  
टिलूवा दे० (पु०) फुसटारू, खुलामदी, चिरोती  
करने वाला ।

टिल्ला (पु०) जैची जगह, गीरा ।

टिहरा दे० (पु०) छोटा गाँव, छोटी बस्ती, पुरवा ।

टिहरी दे० (स्त्री०) छोटी बस्ती, पहाड़ी, गवई, एक  
राजधानी का नाम जो उत्तर भारत में गढ़वाज  
प्रान्त में है ।

टिहुनो दे० (स्त्री०) घुटना, कोहनी ।

टिडुकना (क्रि०) चौंटना, झकझकना, क्रोधित होना ।

टोंट दे० (पु०) फत्र विशेष, करील का फत्र, टेंटों ।

टोक दे० (पु०) चुटिया, फाँटी, सिर और गले के  
एक गहने का नाम ।

टीका तत्त्वं (स्त्री०) टिप्पणी, विवरण, कठिन शब्द  
या विषय का सरलार्थ ब्यथन, तिलक, चन्दन,  
एक गहना जिसे प्रायः स्त्रियाँ ललाट और मस्तक  
पर पहनती हैं । विवाह की एक रीति, जो कन्या-  
पक्ष वाले घर को भेंट देते हैं । विवाह काने के  
लिये किसी को मनानीत करना, गुदवाना, चक्क  
और पत्रेग आदि का टीका, अभिषेक, राज्या-  
भिषेक, विवाहाभिषेक ।—कार तत्त्वं (पु०)  
व्याख्याकार ।

टीकैन दे० (वि०) टीका विशिष्ट, अभिषिक्त, जिसकी  
टीका या अभिषेक हो गये हो, नाथद्वारे के  
गोस्वामीजी की पदवी ।

टीटजों दे० (स्त्री०) औपचि विशेष ।

टीड़ी दे० (स्त्री०) टिड़ी, शठभ, पवङ्ग । [चहर ।

टोन दे० (पु०) रांग, रांगे की कजईदार लोहे की

टोप दे० (पु०) अधरण पत्र, तनसुब, दस्तावेज,  
येहरे का तमसुक, जिव पर मूब और सूद के  
हाये सुकता करने के लिये अन्न आदि का देना  
लिखा जाता है । स्वा का आगेद, माने में स्वा  
को जैंग चढ़ाना, स्मरण के लिये किसी बात  
को संक्षिप्त रीति से लिख देना, टोपना, टोपना,  
दवाव, जन्मकुपडजी, हुंछी ।—टाप (स्त्री०)  
बनावट, सजावट, सीबाउ आदि का जहाँ तहाँ  
मरम्मत करना, टोपा टोई, भूषण ।

टोपना दे० (क्रि०) दवाना, अधिकार जमाना,  
प्रभाव फैटाना, टटोलना, हाथों से छू छू कर के  
ढूढ़ना, निचोड़ना, बिन्दी लगाना, जिलना ।

टोवा दे० (पु०) टीला, भीटा । [सजावट ।

टोमटाम दे० (स्त्री०) डाट बाट, तड़क भड़क,

टोल दे० (स्त्री०) छोटी मुर्गी, टिलिया ।

टोला दे० (पु०) ऊँची भूमि, ढालवाँ स्थान, मिट्टी  
का प्राकृतिक स्वरूप, भीटा ।

टोस दे० (स्त्री०) पीड़ा, व्यथा, वेदना, यन्त्रणा ।  
—मारना (क्रि०) पीड़ा होना ।

टोसना दे० (क्रि०) रह रह कर दद होना ।

टुक तद् (वि०) स्तोक, स्वर, अक्षर, नेक, थोड़ा,  
अक्षर परिमाण ।

टुकड़ा दे० (पु०) टुक, अंग, खण्ड, भाग ।

टुकपा दे० (वि०) थोड़ा सा, जरा सा

टुड़ा दे० (पु०) छोटी पूँड़, बड़ी पूँड़ ।

टुङ्गार दे० (स्त्री०) अक्षरचूरक भोजन, पिना हफ्ता  
के खाना । [पोच, थोड़ा, अधम ।

टुग्रा दे० (पु०) लुबा, लम्हा, लपटा, अष्टवर्ग,

टुथ दे० (पु०) खर्च, नन्दा, छोटा, छोटे कद का, ठँगना ।

टुटका दे० (पु०) टोटका ।

टुटपुंजिया (वि०) बहुत थोड़े धन वाला ।

टुटके टूँ दे० (वि०) अहेला, पतला, कमजोर ।

टुटो नद् (स्त्री०) नाभि, थोड़ीरी ।

टुटुटु तत्त्वं (पु०) वृक्ष विशेष, रसोना वृक्ष ।

टुटुनाना दे० (क्रि०) गुनगुनाना, धीरे धीरे माना,  
शनैः शनैः चलाना, मन्द मन्द बजाना ।

टुट्टा दे० (पु०) हथकटा, अङ्गमरू, हुडा, शाला रहित  
वृक्ष, खुय, हूँड, स्थाणु । [गया हा ।

टुट्टा दे० (वि०) हथकटा, लूटा, जिसका हाथ कट

टुट्टाडाना दे० (क्रि०) पीठ पर हाथ बांधना, मुरक  
कसना, मुरक चढ़ाना, मुरक दाँवना ।

टुष्टिड ग कसना दे० (क्रि०) } मुरक चढ़ाना, मुरक

टुष्टिड ग चढ़ाना दे० (क्रि०) } कसना, अग्रगणी के

टुष्टिडया वाँचना दे० (क्रि०) } हाथों को पीठ की

और खोंच का बाँधना ।

टुष्टिड तद् (स्त्री०) मुन्दि, तोंड, नामी, हथकटी  
को, बिना हाथ की को ।

दुसकना दे० ( क्रि० ) बिठकना, फट-टन करना, रोना, रुकना, चीलना ।

दुसकना दे० ( क्रि० ) सिरकना, रोना, रिसा जाना, फुट हो जाना । [ शब्द, पाद का घीना शब्द ।

दु० दे० ( पु० ) अपान वयु का शब्द, अथवा वायु का

हंगना दे० ( क्रि० ) चोंचगना, चोंचों से चिनना, कुतरना, एक एक दाना खाना ।

दुँड ( पु० ) भौ, मोहँ, धान की फलियों के ऊपर की पतली और नुकीली बाल । [ धृ० ।

दुँडी तण० ( स्त्री० ) तुन्द, तुम्दि, नाभी, टुङ्ग, स्थाणु,

दुँक दे० ( पु० ) दुकड़ा, खण्ड, अणु—सा ( थ० ) घोड़ा सा, तनिक सा, जरा सा, अल्प परिमाण में ।—( पु० ) डोटक का एक प्रकार का शब्द । दुकड़ा, हिस्सा, खण्ड, खण्ड, भाग ।

दुँक नद० ( स्त्री० ) घुट्टि, टूटन, फूटन, खण्डन, टोटा, कमी, हानि, नुकसान, लेख का वह अंश जो पुस्तक आदि लिखते समय छूट जाता है और वह पीछे से लिख दिया जाता है । ( स्त्री० ) टूट गया, टूटना ।

दुँकना दे० ( क्रि० ) टूट जाना, खराब हो जाना, बिड़ जाना, नष्ट होना, आक्रमण करना, बल पूर्वक आक्रमण करना, चढ़ जाना, चढ़ाई करना ।

दुँडा दे० ( वि० ) दुँडा हुआ, फटा हुआ—फूटा ( वि० ) नष्ट भ्रष्ट, निराश्रित, खण्डहर, खण्डरात ।

दुँम दे० ( स्त्री० ) घोड़ी यात, घुड़फिटा, घुनरी, आमरण विशेष ।—दाम ( पु० ) घोड़ी पूँजी, अरा मूत्र धन, कुछ घोड़ी यात ।

दुँसा दे० ( पु० ) आँक का फत्र, डाम की जड़, पृषों के कोमल पत्ते, मझार का फत्र, अङ्कुर ।

दुँसी दे० ( स्त्री० ) कोपल, कली, अङ्कुर ।

दुँ ( स्त्री० ) तोते की थोड़ी की नक़्क । [ की मइली ।

दुँगरा, दुँगरी दे० ( पु० ) मात्स्य विशेष, एक प्रकार

दुँघुना ( पु० ) घुटना । [ वाँस ।

दुँघुनी ( स्त्री० ) सहारा, छप्पर आदि को सहारने का

दुँट दे० ( पु० ) कंजीर का फल, कराम का पक्का फल, कुशती, आलों का दुँडा, धोती का लिटाव, जो कमर में लपेट कर धोती पहनते हैं, बेईमानी, धोखाबाजी ।

दुँटर दे० ( पु० ) फटविशेष, आँख के भीतर चोट से उभरा मांस, दुँडा ।

दुँटा दे० ( पु० ) अविचार की रात्र, उच्छृङ्खल बातें, आमह भरी बातें, हठतुल्य बातें, अर्थ कथन, निरर्थक बातना, फूटभरी ।

दुँटी दे० ( स्त्री० ) कड़ी का बड़ा और पक्का फल, रोग विशेष, कमर का एक रोग ।

दुँटुमा दे० ( पु० ) नटई, गन्ने की नप, गले की घांटी ।

दुँटं दे० ( पु० ) तोते की थोड़ी, चिहटाहट, किच-किबाहट, चील, फूट, निरर्थक चिल्ल हट ।—का ह्रीरा ( पु० ) एक प्रकार का नया हीरा, बनावटी हीरा दुँटं नाम के किसी चाक्रोन्न ने इसे बनाया है, इसी कारण इस हीरे का नाम दुँटं का हीरा पड़ा है ।

दुँई दे० ( स्त्री० ) ओट, क्षिपाव, झाड़, ( क्रि० ) तेज करके, सीधा करके, सीक्ष्य करके, शान बड़ा के, टेव के, तेज किया, सान लगाई, पैनी करके ।

दुँड दे० ( स्त्री० ) टेव, आदव, स्वनध, वान ।

दुँक दे० ( स्त्री० ) धूनी, टिठाव, सहारा, अघलम्ब, टेहन, खम्भा, प्रण, प्रतिज्ञा, हठ सङ्कल ।

दुँकन दे० ( स्त्री० ) झाड़, धाम, धामबा, रोक ।

दुँकना दे० ( क्रि० ) आड़ना, धामना, सहारा लगाना, आश्रय देना ।

दुँकनी दे० ( स्त्री० ) धूनी, टेहन, सहारा ।

दुँकरा, दुँकरा दे० ( पु० ) टीला, ऊँची ज़मीन, मिट्टी का ढेर, मिट्टी का पड़ाइ ।

दुँकरी दे० ( स्त्री० ) टीरा, स्नूर, ऊँची ज़मीन ।

दुँकला ( स्त्री० ) रदन, धुन ।

दुँकान दे० ( पु० ) टेक, आद, अघलम्ब ।

दुँको दे० ( वि० ) दृश्यतिष्ठ, प्रतिज्ञा पालन करने वाला, सत्यमन्ध, बड़ी दृढ़ता से प्रतिज्ञा पालन कर वाला, दही, जिंदी ।

दुँकुआ ( पु० ) चारखे का सूण ।

दुँकुरी दे० ( पु० ) पान, ताम्बूल ।

दुँकुरी दे० ( स्त्री० ) सूत्र कातने का तकला, चमारों का सूण, गोव नामक घाम्बूयण ।

दुँडा दे० ( पु० ) पेंडी, एक प्रकार का चलाई ।

दुँद दे० ( पु० ) बक, बाँझ, उमड़ खाँझ, बाँझ सिखा, सीना मुई ।—दुँदना ( क्रि० )

नवाना, बाँका करना, तिरछा, करना।—बड़ा  
( वा० ) तीरथीन, तिरछा, बाँका, चक्र, कुटिल ।  
देड़ा ( वि० ) चक्र, कुटिल, उज्जड़, नटखट, शरीर ।  
देड़ाई दे० ( स्त्री० ) चक्रता, बाँकापन, तिरछापन ।  
देड़ी दे० ( स्त्री० ) अहङ्कार, गर्व, दर्प, अभिमान,  
अधमता, नीचता निचाई, हठ, दुराम्रह ।  
टेना ( क्रि० ) इथियार पर धार रखना, इथियार तेज  
करना, मूँछ के बालों को झूँट झूँट कर खड़ा करना ।  
टेनी दे० ( स्त्री० ) छोटी लठिया, छिक्की जो चरवाहे  
रखते हैं ।  
टैयुल ( पु० ) मेल, चौकैर जैची चौकी । [ जोति, समय ।  
टैम दे० ( स्त्री० ) यत्ती का जला हुआ गुल या फूल,  
टैर दे० ( स्त्री० ) जय, पुकार, गुहार, दीनतापूर्वक रक्षा  
के लिये आह्वान, स्वर, तान, ताल ।  
टेरना दे० ( क्रि० ) पुकारना, लजकारना, बुलाना, हाँक  
मारना, आह्वान करना, गोहार करना ।  
टेरी ( स्त्री० ) पतली डाँख, छोटी दहनी ।  
टैरे दे० ( क्रि० ) बुलामे, पुकारे, हँकारे ।  
टेजना दे० ( क्रि० ) टारना, घुसेड़ना, हटाना, ठके-  
लना, घलपूर्वक पीछे हटाना ।  
टेव दे० ( स्त्री० ) धान, आदत, हठ, जिद, प्रतिज्ञा,  
स्वभाव, अभ्यास, चाल ।  
टेवकी दे० ( स्त्री० ) धूनी, खम्मा, धम्मा, सहारा,  
दीवार आदि का अवलम्ब, नाव का सब से ऊपर  
का छोटा पात्र ।  
टेवना दे० ( क्रि० ) पाड़ देना, तेज करना, तीखा  
करना, पैसाना, सान चढ़ाना, धार देना ।  
टेवा दे० ( पु० ) टिप्पण, जन्मपत्री, जिपमें जन्म के  
समय की प्रगति गणित के द्वारा ठीक काले लिखी  
रहती है और प्रज्ञा की गति में अन्तर पढ़ने से तद-  
नुसार मनुष्यों के सुख दुःख की व्यवस्था कही  
जाती है ।  
टैवैया ( पु० ) तेज काने वाला ।  
टैव दे० ( पु० ) पलाय का फूँ, एक प्रकार का खेल,  
सुन्दर पान्थु निर्गुण मनुष्य ।  
टेहरा दे० ( पु० ) गाँव, पुरवा, गँवह, छोटी यस्ती ।  
टेहना दे० ( पु० ) विशाह की एक रीति ।  
टैक्स दे० ( पु० ) कर, मद्रसू ।

टैटी दे० ( स्त्री० ) देखो टॉट । [ कौड़ी ।  
टैयों दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की छोटी और चपटी  
टोभाई दे० ( स्त्री० ) स्पष्ट, छुड़ाई ।  
टोघाटोई दे० ( स्त्री० ) टटोलाई, छुड़ाई ।  
टैका दे० ( स्त्री० ) अटकाव, रुकाव, रुकावट, रोक ।  
—टाक ( स्त्री० ) छेड़छाड़  
टोक दे० ( पु० ) छोर, सिरा, किनारा, नेक, कोना ।  
टोकना दे० ( क्रि० ) पूछना, यात्रा से जाते हुए को  
पूछना, रोकना, रूपा करना, बुरी दृष्टि से देखना ।  
टोकरा दे० ( पु० ) दौरी, डलिया, कौघा ।—टोकरूरी  
( स्त्री० ) छोटा टोकरा, डलिया, माँपा ।  
टोका टोकी दे० ( स्त्री० ) पूछताछ, छेड़छाड़, टोक-  
टाक, रुकाव । [ धादि की क्रिया ।  
टोटका दे० ( पु० ) अन्तरमन्तर, धरीकरण, उच्चाटन  
टोटकेवाई दे० ( स्त्री० ) टोटका करने वाली ।  
टोटक दे० ( पु० ) एक प्रकार का घुघु, पण्डुकविशेष ।  
टोटल दे० ( पु० ) जोड़, ठीक, वेग ।  
टोट्टा दे० ( पु० ) घड़ी, घाटा, चुकसान, हानि ।  
टोट्टा दे० ( पु० ) पटाका, मुर्रा, धारुद की पुड़िया  
जो बन्दूक में भर कर चलाई जाती है, कारतूस,  
बाँस के छोटे छोटे टुकड़े, टूटा, हथहूटा ।  
टोंटी दे० ( स्त्री० ) पनाला, मोरी, नक, पानी जाने की  
नली, नालिका ।—टौर ( पु० ) जलपाव विशेष,  
हथहर जिपमें टोंटी लगी रहती है, गडुघा ।  
टोडरमल दे० ( पु० ) सम्राट् अकबर के यह प्रधान  
राजस्व मन्त्री थे, यह खत्री थे, पञ्जाब के लहौर  
में इनका जन्म हुआ था, यह युद्ध विद्या में अत्यन्त  
निपुण थे । इन्होंने सम्राट् ने अपने सेनापतियों की  
श्रेणी में भी अर्थात् किया था । यह माने जाते तथा  
कविता करने में भी चतुर थे । यह गणित के प्रसिद्ध  
विद्वान् थे, जानने योग्य आन्याय बातों में भी  
इनका ज्ञान कुछ कम नहीं था । यद्यपि ये राज्य  
के खजाने के अध्यक्ष थे तथापि विद्या और वीरता  
में इनकी प्रतिष्ठा कुछ कम नहीं थी । टोडरमल के  
पहले राज्य का हिमाय हिन्दी में लिखा जाता था,  
परन्तु इनके समय से फारसी में लिखा जाने लगा ।  
२० वर्ष की अवस्था में ये इतने बड़े राज्य के  
दीवान बने थे, कर वसूल करने के लिये जो नियम

इन्होंने बनाये थे, उनसे ये बड़े यशस्वी समझे जाने लगे। अकबर के राज्य में टोडरमल के समान धाडिटर ( हिसाब परीक्षक ) दूसरा नहीं था। अपनी बुद्धि और परिश्रम से टोडरमल मुहरिर से दीवान बन गये थे, इन्हें राजा की भी पदवी मिली थी।

टोड़ी दे० ( स्त्री० ) रागिनी विशेष।

टोनरोटी दे० ( स्त्री० ) चुंकी, कर।

टोनघा दे० ( पु० ) बाक, पक्षी, लहसुन, टोटका।

टोनहा दे० ( पु० ) मन्त्री, यन्त्री, टोटका करनेवाला, जादू करने वाला।

टोनहाई दे० ( स्त्री० ) जादूगरनी, टोना, यन्त्र, मन्त्र।

टोनही दे० ( स्त्री० ) टोना करने वाली स्त्री,

टोनहैया दे० ( स्त्री० ) जादूगरनी।

टोना दे० ( पु० ) जादू। ( कि० ) टटोलना, हड़ना, खोजना। ( पु० ) बशीकरण, छलन, जादू, झुलावा। —टानी ( स्त्री० ) मन्त्र यन्त्र का प्रयोग।

—टामन ( पु० ) टोटका, बश करने के उपाय।

टोप दे० ( पु० ) बड़ी टोपी, कनटोप, साहब लोगों की टोपी, लीबन, टाँका।

टोपन दे० ( पु० ) टोकना, दौरा।

टोपरा दे० ( पु० ) टोकना, दौरा।

टोपरी दे० ( स्त्री० ) टोकरी, दौरा।

टोपा दे० ( पु० ) सिर का ढकना, कपाट, खोपड़ी,

बड़ा चौड़े मुँह का बरतन।

टोपी दे० ( स्त्री० ) सिर पर रखने का सिया हुआ एक प्रकार का बख। —दार ( वि० ) जिस पर टोपी हो या जो टोपी लगाने पर काम में आवे। —वाला दे० ( पु० ) टोपी पहने हुए आदमी, टोपी बेचने वाला।

टोर दे० ( स्त्री० ) कटारी, कटार।

टोरना ( कि० ) तोड़ना।

टोरा दे० ( पु० ) भीत की रक्षा की शैलती, पानी आदि से भीत की रक्षा करने के लिये जिस पर छाया जाता है।

टोल दे० ( स्त्री० ) सभा, समिति, जमाव, यूप, दल, समूह, रोड़ा, सार्ड, नील, महला।

टोला दे० ( पु० ) गाँव का एक भाग, खण्ड, धंश, नगर की पट्टे, महला। [ एक जाति का बाँस।

टोली दे० ( स्त्री० ) समूह, यूप, छोटा महला, सिल,

टोह दे० ( पु० ) पता, अनुसन्धान, खोज।

टोहना दे० ( कि० ) पता लगाना, अनुसन्धान करना, खोजना, हड़ना, अन्वेषण करना।

टोहाटाई दे० ( स्त्री० ) खानधीन, तलाश।

टोहिया ( पु० ) टोह रखने वाला।

टोही ( वि० ) तलाश करने वाला। [ तमसा है।

टोँस ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, इसका दूसरा नाम

टूँक दे० ( पु० ) लोहे का हथका सन्तूक।

टून दे० ( स्त्री० ) रेलगाड़ी के कई एक जुड़े हुए डब्बों को टून कहते हैं।

## ठ

ठ व्यञ्जन का बारहवाँ अक्षर, यह मूर्धन्य है क्योंकि इसका उच्चारण मूर्दा से ही होता है।

ठ तत्त्वं ( पु० ) प्रतिमा, देवता, इन्द्रिय से ग्रहण करने योग्य वस्तु, शिव, महानाद, घोर शब्द, चन्द्र, मण्डल, सूर्यमण्डल, शून्य, जनसमूह।

ठई दे० ( स्त्री० ) ठहराई, निश्चिन्त की हुई, निश्चिन्त की हुई।

ठक ( स्त्री० ) दो वातुओं के टकराने का शब्द।

ठा. ठक दे० ( पु० ) शब्द विशेष, छक्की आदि काटने का शब्द, झगड़ा, टंटा।

ठकठकाना दे० ( कि० ) ठेकना, खटखटाना, मारना, फूटना, झगड़ाना, चौर करना, विरोध करना।

ठकठकिया दे० ( वि० ) टंटा करने वाला, झगड़ालू, बखेड़ा।

ठकठेजा दे० ( पु० ) घकाधकी, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा।

ठकठेगा, ठकठेवा दे० ( स्त्री० ) छोटी नाव, डोंगी, पनसुइया, करताल, करताल बजा कर भिछा माँगने वाला।

ठकार ( पु० ) ठ अक्षर।

ठकुरासुदानी दे० ( पु० ) मीठी मीठी घात, थिय बेली, मुँह देवी यान, सुखामद।

ठकुराई दे० ( स्त्री० ) प्रधानता, सुष्यता, ईश्वरता, आधिपत्य, अधिकार, मालिकानाई, स्वामित्व, राज्य।

ठकुराइन दे० ( स्त्री० ) ठाकुर की स्त्री, मलिकाइन,  
स्वामिनी ।

ठकुरानी दे० ( स्त्री० ) ठाकुर की स्त्री ।

ठकुरायत दे० ( स्त्री० ) आधिपत्य ।

ठकुर तर्० ( पु० ) ठाकुर, पूज्य मूर्ति ।

ठग दे० ( पु० ) गठः टग, चोर, धोखा देकर चोरी करने  
वाला, भुलावा देकर चुगाने वाला, प्रतारक, धोखे-  
वाज़ ।—वाज़ी ( स्त्री० ) ठगई, धूर्तना, ठग का  
काम, कपट, छल, माया ।—विद्या ( स्त्री० )  
ठगई, धूर्तता, धोखा देने की चतुराई ।—जाना  
( कि० ) छुड़ना, ठगना, धोखा देना, बहकाना,  
बहका कर ले लेना ।—लेना ( कि० ) कपट  
करना, धूर्तता करना, चक्रे में डालना, छल से  
ले लेना ।

ठगई दे० ( स्त्री० ) प्रतारणा, छत्र, धूर्ताई, धोखा ।

ठगना दे० ( कि० ) भुलाना, धोखा देना प्रतारण करना ।

ठगई दे० ( स्त्री० ) प्रतारण, धोखा, चोरी, कपट, छल,  
घटुक्ता । [ वक्षित होना ।

ठगाना दे० ( कि० ) ठगा जाना, प्रतारित होना,

ठगिन दे० ( स्त्री० ) ठगनी, धूर्ता, प्रतारिका ।

ठगिनी दे० ( स्त्री० ) ठगने वाली स्त्री, धूर्ता, ठगई  
करने वाली, ठग की स्त्री, जो ठगई करती हो ।

ठगिया दे० ( पु० ) वञ्चक, प्रतारक, धोखेवाज़, छली,  
कपटी, धोखा देने वाला ।

ठगी दे० ( स्त्री० ) धूर्तता, धोखेवाज़ ।

ठगे ( कि० ) छले, धोखा दिये, बहकाने हुए ।

ठगौरी दे० ( स्त्री० ) ठगई, धोखा, छल, भुलावा,  
माया, ठगना ।

ठगरा दे० ( पु० ) ऋगड़ा, कलह, वैरविरोध, टण्टा ।

ठट्ट दे० ( पु० ) भीड़भाड़, कुण्ड, समूह, दल, मण्डली,  
सूय, गिरोह ।

ठट्टर दे० ( पु० ) ठंड, चाल, खपड़ल मकान छाने के  
लिये जो बाँस से टट्टर बनाया जाता है, मकान पर  
रखने के लिये बाँस का बना हुआ ठंड ।

ठट्टा दे० ( पु० ) हँसी, दिलगी, परिहास, कौतुक, मने-  
विनाद, दल, समूह, कुंड, भीड़ ।—करना  
( कि० ) हँसी उठोड़ी करना, उपहास करना,  
चिढ़ाना ।—मारना ( कि० ) हँसी करना, हँसना,

उपहास करना ।—मार कर हँसना ( वा० )  
खर हँसना, अट्टहास करना ।

ठट्टेगज दे० ( वि० ) परिहासगोत्र, हँसेड़ा ।—  
( स्त्री० ) ठट्टा करना, हास्य करना ।

ठठ दे० ( पु० ) ठट्ट, भीड़, मण्डली, दल, समूह, कनार

ठठक दे० ( स्त्री० ) प्रतिग्रन्थ, रुझाव, अट्टहास, भय,  
भीति । [ डोना, भीन होना, डर जाना ।

ठठकना दे० ( कि० ) रुकना, रुकाना आश्रयित

ठठना दे० ( कि० ) निर्माण करना, संशोधन करना,  
बनाना, सजाना, सजदेना, सजित करना, दुःख से  
अधीर होकर अथवा अथ पीटना, स्वयं दुःख  
उठाना, मारना, पीटना ।

ठठरा दे० ( पु० ) वृत्त, टट्टा, चाड़, घेरा, घिाव, खोटा ।

ठठरी दे० ( स्त्री० ) दाँवा, आकृति, आका का प्रथम  
सङ्कटन, बङ्गाल, ठाठ, रथी, दुबेल शरीर, जिसमें  
कंधल ढङ्गिया ही शेष हो ।

ठठाई दे० ( कि० ) मार का, पीट का, मार मार का,  
अति बरसाद से, अति प्रसन्नता से । यथा—

एक संग नहीं होहिं सुमाल,

हँसत ठठाई फुडारत माल ।

—शामायण ।

ठठाना दे० ( कि० ) लगातार मारना, मारना, पीटना,  
कूटना, सिा धुनना, मारते ही जाना ।

ठठुकि दे० ( कि० ) रुड का, ठठकड़ा, अट्टकड़ा,  
प्रतिग्रन्थित होकर ।

ठठेरा दे० ( पु० ) जातिविरोध, वर्तन बेचने वाली जाति,  
कसेरा । [ स्त्री, कसेरा जाति की स्त्री ।

ठठेरिन, ठठेरी दे० ( स्त्री० ) ठठेरा की स्त्री, कसेरा की

ठठेर ठठोल दे० ( पु० ) परिहासगोत्र, ठट्टेवाज़,  
ठठोड़ी करने वाला ।

ठठोली दे० ( स्त्री० ) हँसी, दिलगी, परिहास ।

ठट्टा ( पु० ) खड़ा ।

ठट्टा दे० ( पु० ) गुड्डे के बीच की लकड़ी, मुड्डा ।

ठट्टा दे० ( स्त्री० ) जाड़ा, शीत, शीतकाल, सर्दी ।

ठट्टा दे० ( स्त्री० ) शीतलता, शीतकाल, जाड़े का  
समय ।

ठट्टा दे० ( पु० ) शीतल, सदा ।—करना ( कि० )  
शीतल करना, शान्त करना, बढ़ते अग्नि अथवा

कुद मनुष्य को शांत करना, ढाँढ़स देना, धीरज  
 देधाना, किसी को सुखी देल कर स्वयं प्रसन्न  
 होना, अभिप्रेत सिद्धि से आनन्दित होना।—  
 पड़ना (धा०) शान्त होना, शीतल होना, न्यून  
 होना, घटना, चीय होना, क्रोध कम होना, पौरुष  
 चीय होना, चञ्चलता नष्ट होना, उरसाह का कम  
 होना, मण आदि की जलन कम होना।—होना  
 (धा०) टपड़ा पड़ना।

ठण्ढाई दे० (स्त्री०) शीतलता, शैत्य स्निग्ध, ठण्डी  
 घ्राणधि, सौंफ, कासनी, गुलाब की पत्ती,  
 धारूने की मोंगी, बादाम आदि का पीस कर  
 बनाते हैं।

टण्ढी दे० (स्त्री०) जाड़ा, शैत्य, शीत, शीतलता।  
 —साँस भरना (धा०) दुःख करना, पश्चात्ताप  
 करना, हाथ मारना, लंघी साँस लेना।

ठन (स्त्री०) धातु विशेष के बगाने का शब्द। क  
 (स्त्री०) शब्द, धनि।—का (पु०) शब्द,  
 धनि।—कार (पु०) रुपये का शब्द।

ठनकना दे० (क्रि०) ठन ठन शब्द करना, ठोसना,  
 धमकना, सिंहा का हुलना, अपने किसी काम को  
 दुःखपूर्वक करना हानिकारी समझना।

ठनगन दे० (पु०) मज्जल कारों के खवसा पर नेग पाने  
 वालों का अधिक नेग पाने के लिये मचलना,  
 किसी वस्तु के लिये शालकों का मचलना।

ठनठन-गोपाल दे० (पु०) छुंछी वस्तु, निर्धन  
 मनुष्य।

ठनठनाना दे० (क्रि०) ठनठन शब्द करना, कन-  
 कनाना, कनकाना।

ठनाका दे० (पु०) ठन शब्द, कड़वा, कनकार।

ठनाठन (क्रि० वि०) कनकार के साथ रुपये का शब्द।

ठना दे० (क्रि०) पारखना, जंचना, उहरना, निश्चय होना।

ठपना दे० (क्रि०) छपना, छपगाना, चिन्ह करना,  
 दाग लगाना। [जाता है, मुहर, मोहर।

ठप्पा दे० (पु०) ठपने की वस्तु, यन्त्र जिससे छाप

ठमक दे० (स्त्री०) एक रुक कर चलना, लचक।

ठमकना दे० (क्रि०) उहरना, उहर जाना, थड़क कर  
 चलना, किसी की प्रतीक्षा करने के लिये उहरना,  
 किसी की बात ताकने के लिये उहरना।

ठरक दे० (पु०) खुराटा, घुराँना, नासिकाध्वनि,  
 जो कफप्रकृति के मनुष्यों को सोने पर होती है।

ठरन दे० (स्त्री०) अधिक शीत, बहुत जाड़ा, अधिक  
 जाड़े से अश्वों का शिथिल होना, ठिठुरन।

ठरना दे० (क्रि०) ठिठुर जाना, शिथिल होना।  
 (पु०) मादकवस्तु विशेष, एक प्रकार की मदिरा।

ठरिया दे० (पु०) एक प्रकार की मट्टी का बना हुआ  
 हुआ। [मादक वस्तु विशेष।

ठरा दे० (पु०) मोटा सूत, तनी, भड़ा जूता विशेष,

ठलुआ, ठलुवा दे० (वि०) निकम्बा, बेकाम।

ठपन, ठपनि दे० (स्त्री०) चाल, गति, हठने की रीति  
 विशेष खड़े होने की विशेष रीति, अकड़ाई की  
 चाल, ढँढ़ की चाल, रपेटवाली चाल, बैठक, स्थिति,  
 आसन, मुद्रा, अन्दाज।

ठवर दे० (पु०) ठौर स्थान।

ठस दे० (वि०) ठोस, कड़ा, गफ, दृढ़, भारी, बुल,  
 मट्टर, खोटा (रुपया), भरा पूरा, घनाभ  
 (ठस आदमी), कृपण, हठी,

ठसक दे० (स्त्री०) दर्प, गर्व, अहङ्कार, अकड़, गुया  
 महश, निष्कारण महश, देखोआ, प्रतिष्ठा,  
 गर्वाली चंटा।

ठसकदार दे० (वि०) घमंड़ी, शानदार। [टूट जाना।

ठसकना दे० (पु०) ठसकना, पटकना, टूटना,

ठसका दे० (पु०) पटहाव, अहङ्कार, अभिमान, ठसक,  
 सुखी खाँसी—“खाँसी का दो तीन बार ठसका  
 घसी आ जाता है।”

ठसनी दे० (स्त्री०) ठाँसने की सामग्री, जिसमें कोई  
 ची० ठाँसी जाती है, शब्दाका, धमक का गज।

ठसाठम दे० खचाखच, ठूम ठूम कर भरा हुआ।

ठसना दे० (पु०) साँचा, आकृति, आकार, गठन,  
 ढाँचा, अहङ्कार, अभिमान।

ठहर ठहर दे० (वि०) रह रह कर, रुक रुक।

ठहरना दे० (क्रि०) रुकना, रुकवाना, बसना, रहना,  
 बास करना, प्रतीक्षा, बाट ताकना, टिकना,  
 घटकाना, निश्चय होना, पक्का होना, नियंत्र हो  
 जाना।

ठहराई दे० (स्त्री०) ठहराने की किया या मजदूरी  
 अधिकार।

ठकुराइन दे० ( स्त्री० ) ठाकुर की स्त्री, मलिकाइन, स्वामिनी ।

ठकुरानी दे० ( स्त्री० ) ठाकुर की स्त्री ।

ठकुरायत दे० ( स्त्री० ) आधिपत्य ।

ठकुर तन० ( पु० ) ठाकुर, पूज्य मूर्ति ।

ठग दे० ( पु० ) गठ, टा, चोर, धोखा देकर चोरी करने वाला, भुलावा देकर चुगाने वाला, प्रतारक, धोखेवाज़ ।—वाज़ी ( स्त्री० ) ठगई, धूर्तता, ठग का काम, कपट, छल, माया ।—विद्या ( स्त्री० ) ठगई, धूर्तता, धोखा देने की चतुराई ।—जाना ( क्रि० ) छुड़ना, ठगना, धोखा देना, बहकाना, बहका कर ले लेना ।—लेना ( क्रि० ) कपट करना, धूर्तता करना, चक्रे में डालना, छल से ले लेना ।

ठगई दे० ( स्त्री० ) प्रतारणा, छत्र, धूर्तई, धोखा ।

ठगना दे० ( क्रि० ) भुलाना, धोखा देना प्रतारण करना ।

ठगाई दे० ( स्त्री० ) प्रतारण, धोखा, चोरी, कपट, छल, वस्तुता । [ वस्तु होना ।

ठगाना दे० ( क्रि० ) ठगा जाना, प्रतारित होना,

ठगिन दे० ( स्त्री० ) ठगनी, धूर्त, प्रतारिका ।

ठगिनी दे० ( स्त्री० ) ठगने वाली स्त्री, धूर्त, ठगई करने वाली, ठग की स्त्री, जो ठगई करती हो ।

ठगिया दे० ( पु० ) वस्तु, प्रतारक, धोखेवाज़, छली, कपटी, धोखा देने वाला ।

ठगो दे० ( स्त्री० ) धूर्तता, धोखेवाज़ ।

ठगे ( क्रि० ) छले, धोखा दिये, बहकाये हुए ।

ठगौरी दे० ( स्त्री० ) ठगाई, धोखा, छल, भुलावा, माया, ठगना ।

ठचरा दे० ( पु० ) ऋगड़ा, कलह, वैरविरोध, टण्डा ।

ठठ दे० ( पु० ) मीड़माड़, कुण्ड, समूह, दल, मण्डली, गूँथ, गिरोह ।

ठठर दे० ( पु० ) ठठ, चाल, खपड़ल मकान छाने के लिये जो बाँस से ठठर बनाया जाता है, मचान पर रखने के लिये बाँस का चंदा हुआ ठठ ।

ठठा दे० ( पु० ) हँसी, दिलगी, परिहास, कौतुक, मने-विनाद, दल, समूह, कुंड, मीड़ ।—फरना ( क्रि० ) हँसी ठठोड़ी करना, उहास करना, धिक्काना ।—मारना ( क्रि० ) हँसी करना, हँसना,

उपहास करना ।—मार कर हँसना ( वा० ) खूब हँसना, अट्टास करना ।

ठठेमाज दे० ( वि० ) परिहासगोत्र, हँसेवा ।—( स्त्री० ) ठठा करना, हास्य करना ।

ठठ दे० ( पु० ) ठठ, मीड़, मण्डली, दल, समूह, कनार ।

ठठक दे० ( स्त्री० ) प्रतिपन्ध, रुकाव, अट्टाव, भय, भीति । [ होना, भीन होना, डर जाना ।

ठठकना दे० ( क्रि० ) रुकना, अट्टाना आश्रयित

ठठना दे० ( क्रि० ) निर्माण करना, संशोधन करना, बनाना, समाना, सज्जना, सजित करना, दुःख से अधीर होकर अपना धन पीटना, स्वयं दुःख उठाना, मारना, पीटना ।

ठठरा दे० ( पु० ) वृत्त, टट्टा, आड़, घेरा, घिगाव, घोट ।

ठठरो दे० ( स्त्री० ) टाँवा, आकृति, आकार का प्रथम सङ्कटन, कङ्काल, ठाठ, रथी, दुबल शरीर, जिसमें केवल हड्डियाँ ही शेष हों ।

ठठाई दे० ( क्रि० ) मार कर, पीट कर, मार मार कर, अति बरसाद से, अति प्रसन्नता से । यथा—

एक संग नहीं होई भुआलू,

हँसत ठठाई फुझाउय गालू ।

—रामायण ।

ठठाना दे० ( क्रि० ) लगातार मारना, मारना, पीटना, कूटना, सिर धुनना, मारते ही जाना ।

ठठुकि दे० ( क्रि० ) रुक कर, ठठरुठर, अट्टकहा, प्रतिबन्धित होकर ।

ठठेरा दे० ( पु० ) जातिविरोध, यत्न बेचने वाली जाति, कसेरा । [ स्त्री, कसेरा जाति की स्त्री ।

ठठेरिन, ठठेरी दे० ( स्त्री० ) ठठेरा की स्त्री, कसेरा की

ठठेर ठठोल दे० ( पु० ) परिहासगोत्र, ठठेवाज़,

ठठोड़ी करने वाला ।

ठठोली दे० ( स्त्री० ) हँसी, दिलगी, परिहास ।

ठठा ( पु० ) खड़ा ।

ठठा दे० ( पु० ) गुड़ी के बीच की लकड़ी, मुड्डा ।

ठठा दे० ( स्त्री० ) जाड़ा, शीत, शीतकाल, सर्दी ।

ठठा दे० ( स्त्री० ) शीतलता, शीतकाल, जाड़े का समय ।

ठठा दे० ( पु० ) शीतल, सर्द ।—फरना ( क्रि० )

शीतल करना, शान्त करना, बढ़ते अग्नि अथवा

फुद मनुष्य को शान्त करना, डाँड़स देना, धीरज  
पैधाना, किसी को सुखी देख कर स्वयं प्रसन्न  
होना, अभिज्ञपित सिद्धि से आनन्दित होना ।—  
पड़ना ( वा० ) शान्त होना, शीतल होना, न्यून  
होना, घटना, क्षीण होना, क्रोध कम होना, पौर्ण  
क्षीण होना, चञ्चलता नष्ट होना, बरसाद का कम  
होना, व्रण आदि की जलन कम होना ।—होना  
( वा० ) टण्डा पड़ना ।

ठण्डाई दे० ( स्त्री० ) शीतलता, शैत्य स्निग्ध, ठण्डी  
झीपछि, सौंफ, कासनी, गुलाब की पत्ती,  
धरावृजे की मोती, बादाम आदि का पीस कर  
बनाते हैं ।

ठण्डी दे० ( स्त्री० ) जाड़ा, शैत्य, शीत, शीतलता ।  
—साँस भरना ( वा० ) दुःख करना, पश्चात्ताप  
करना, हाथ मारना, लंबी साँस लेना ।

ठन ( स्त्री० ) धातु विशेष के बगाने का शब्द । क  
( स्त्री० ) शब्द, धनि ।—का ( पु० ) शब्द,  
धनि ।—कार ( पु० ) हारये का शब्द ।

ठनकना दे० ( क्रि० ) ठन ठन शब्द करना, टोसना,  
धमकना, सिसा का दुखना, अपने किसी काम को  
दुःखपूर्वक करना हानिकारी समझना ।

ठनगन दे० ( पु० ) मज्जल कार्यों के अवसर पर नेग पाने  
वालों का अधिक नेग पाने के लिये मचलना,  
किसी वस्तु के लिये बालकों का मचलना ।

ठनठन-नोपाज दे० ( पु० ) छुंछी धनु, निर्धन  
मनुष्य ।

ठनठनाना दे० ( क्रि० ) ठनठन शब्द करना, झन-  
झनाना, झनकाना ।

ठनाका दे० ( पु० ) ठन शब्द, झङ्कार, झनकार ।

ठनाठन ( क्रि० वि० ) झनकार के साथ रूपये का शब्द ।

ठना दे० ( क्रि० ) पालना, आचना, ठहरना, निश्चय होना ।

ठपना दे० ( क्रि० ) छुपना, छुपाना, चिन्ह करना,  
दाग लगाना । [ जाता है, सुहर, मोहर ।

ठप्पा दे० ( पु० ) छानने की वस्तु, यन्त्र जिससे छाया

ठमक दे० ( स्त्री० ) रुक रुक कर चलना, लचक ।

ठमकना दे० ( क्रि० ) ठहरना, ठहर जाना, अटक कर  
चलना, किसी की प्रतीक्षा करने के लिये ठहरना,  
किसी की बात ताकने के लिये ठहरना ।

ठरक दे० ( पु० ) खुराटा, खुराना, नासिकाध्वनि,  
जो कफवृद्धि के मनुष्यों को सोने पर होती है ।

ठरन दे० ( स्त्री० ) अधिक शीत, बहुत जाड़ा, अधिक  
जाड़े से अर्द्धों का शिथिल होना, ठिठुरन ।

ठरना दे० ( क्रि० ) ठिठुर जाना, शिथिल होना ।  
( पु० ) मादकवस्तु विशेष, एक प्रकार की मदिरा ।

ठरिया दे० ( पु० ) एक प्रकार की मट्टी का बना हुआ  
हुका । [मादक वस्तु विशेष ।

ठरा दे० ( पु० ) मोटा सूत, तनी, भड़ा जूता विशेष,

ठलुआ, ठलुवा दे० ( वि० ) निकम्मा, बेकाम ।

ठयन, ठयनि दे० ( स्त्री० ) चाल, गति, बठने की रीति  
विशेष खड़े होने की विशेष रीति, अकड़ाई की  
चाल, पेंड की चाल, पेठवाली चाल, बैठक, स्थिति,  
आसन, मुद्रा, अन्दाज ।

ठवर दे० ( पु० ) ठौर स्थान ।

ठस दे० ( वि० ) टोस, कड़ा, गफ, रड़, भारी, बुल,  
मट्टर, छोटा ( रूपवा ), भरा पूरा, घनाञ्ज  
( ठस आदमी ), कृपण, हठी,

ठसक दे० ( स्त्री० ) दर्प, गर्व, अहङ्कार, अकड़-पूपा  
महर्ष, निष्कारण महर्ष, देवौघा, प्रतिष्ठा,  
गर्वाली देहा ।

ठसकदार दे० ( वि० ) घमंटी, शानदार । [दृष्ट जाना ।

ठसकना दे० ( पु० ) ठसकना, पटकना, दृटना,

ठसका दे० ( पु० ) पटकाव, अहङ्कार, अभिमान, ठसक,  
सुखी खाँसी—“ खाँसी का दो तीन बार ठसका  
अभी आ जाता है ।”

ठसनी दे० ( स्त्री० ) ठाँसे की सामग्री, जिसमें कोई  
चीज ठाँसी जाती है, शोलाका, चन्दू का गज ।

ठसाठम दे० लबाब, ठूँप ठूँप कर भरा हुआ ।

ठसा दे० ( पु० ) साँचा, आकृति, आकार, गठन,  
ढाँचा, अहङ्कार, अभिमान ।

ठहर ठहर दे० ( वि० ) रह रह कर, रुक रुक ।

ठहरना दे० ( क्रि० ) रुकना, रुकवाना, बसना, रहना,  
बास करना, प्रतीक्षा, बाट ताकना, टिकना,  
अटकना, निश्चय होना, पक्का होना, निश्चय हो  
जाना ।

ठहराई दे० ( स्त्री० ) ठहराने की क्रिया या मजबूरी  
अधिकार ।



ठहराऊ ( वि० ) टिकाऊ, दृढ़, मजबूत ।

ठहराना दे० ( क्रि० ) रखना, टिकाना, अटकाना, बसाना, रहने के लिये स्थान देना, निश्चित करना, निर्णय करना पक्का करना, ठीकठाक करना, शर्त करना, नियत करना, निश्चयाना, रोकना, रोक रखना ।

ठहराव दे० ( पु० ) रुकाव, निश्ठाव ठहरने का स्थान, टिकाव, निर्णय, निश्चय, निश्चित विषय, जो वादविवाद के पश्चात् स्वीकृत हुआ हो । मन्तव्य, प्रस्ताव, विचारविरोध, जो किसी उद्देश्य से निश्चित किये जाते हैं, शर्त ।

ठहरौनी दे० ( स्त्री० ) विवाह में देने वाले दापजे का ठहराव । [की हैसी ।

ठहराका दे० ( पु० ) धमाका, धड़ाका, अट्टहास, ज़ोर ठाँ, ठाँव दे० ( पु० ) बन्दूक की आवाज़ ठाँव, स्थान, स्थल, ठौर, ठिकाना, भूमि ।

ठाई तद् ( स्त्री० ) स्थायी, बहुत दिनों तक रहने वाला, ठाँव, ठौर, पास, समीप ।

ठाँड़ दे० ( पु० ) स्थान, ठाँव, ठौर, अवसर ।

ठाँठ दे० ( वि० ) नीरस, बेरूच की गौ ।

ठाँय दे ( स्त्री० ) स्थान, जगह, समीप, पास ।

ठाँय ठाँय दे० ( स्त्री० ) रगड़ा फगड़ा, बन्दूक का शब्द ।

ठाँय दे० ( स्त्री० ) स्थान, जगह ।

ठाँसना दे० ( क्रि० ) लथालथ भरना, दबा दबा के भाना, हूसना ।

ठाकुर तद् ( पु० ) ठाकुर, देवता, देवता की मूर्ति, ईश्वर की मूर्ति, स्वामी, प्रभु, भालिक, प्रधान प्रभु, मुखिया, नायक, चतुरिय ज़मीन्दारों की माननीय पदवी, ज़मीन्दार, पहले मैथिल ब्राह्मणों को भी ठाकुर या ठाकुर की पदवी दी जाती थी, विद्यापति ठाकुर, गोविन्द ठाकुर इत्यादि, नाई, नापित ।—द्वारा ( पु० ) मन्दिर, देवालय, देव-स्थान, भगवान् का मन्दिर ।—बाड़ी ( स्त्री० ) मन्दिर, देवस्थान, गंगीवा कुर्था के साथ का मन्दिर, जिस देवस्थान में गंगीचा कुर्था आदि घतमान हों, ठाकुरद्वारा ।—सेवा तद् ( स्त्री० ) देवता का पूजन ।

ठाट दे० ( पु० ) ठठी, तैयारी, बेपरवना, शान, छप्पर का ठाट, सड़कभट्टक, चमस्कार, कुण्ड, समूह, दल ।

ठाटवाट दे० ( पु० ) सन्ध्या, नदक, भट्टक ।

ठाटर दे० ( पु० ) टट्टा, टट्टी, ठठी, पञ्जर, ढाँवा, बनाव ।

ठाट देखो " ठाट " ।

ठाड़ दे० ( वि० ) ऊँचा, खड़ा, स्थित, उपस्थित ।

ठाड़ा दे० ( वि० ) खड़ा, सीधा, लम्बायमान ।

ठाढ़ दे० ( वि० ) खड़ा, खड़ाहुआ, सीधा, उपस्थित उपस्थित हुआ, जो पिसा न हो, उपब्र

"कीन चढ़त लीला हरि जयहीं ।

ठाढ़ करत है कारन तयहीं ॥"

—रघुनाथदास ।

—ठाढ़ी ( स्त्री० ) बहुत शीघ्र, जल्दी, शीघ्रता से, तुरन्त, तूर्त स्वरित, खड़े खड़े ।

ठान तद् ( स्त्री० ) समारम्भ, अनुष्ठान, चेष्टा ।

ठानट्ट दे० ( पु० ) अप्रकृत शब्द, परस्पर आदि के लोड़ने का शब्द, बन्दूक का शब्द ।

ठानना दे० ( क्रि० ) प्रारम्भ करना, ठहराना, प्रतिज्ञा करना, निश्चय करना ।

ठाना दे० ( क्रि० ) प्रारम्भ किया, ठहराया, निश्चय किया, विचार, दृढ़ किया, प्रतिज्ञा किया ।

ठानी दे० ( स्त्री० ) ठहराई, विचारी ।

ठाम दे० ( पु० ) ठाँव, ठौर, ठिकाना, स्थान, स्थल, जगह, श्रद्धा, श्रंगेर ।

ठार दे० ( पु० ) सदी, शीत, हिम, तुपार, पाला, बर्फ ।

ठाला दे० ( वि० ) बिना काम का, बेकार, खाली, कर्महीन ।

ठाली ( वि० ) खाली, रीता ।

ठासना दे० ( क्रि० ) भरना, हूसना, ब्याना, दबा दबा करके भरना । [ठाँव, ठौर, मौका ।

ठाहर या ठाहुर दे० ( स्त्री० ) स्थान, जगह, स्थल, ठिक दे० ( स्त्री० ) स्थान या अवसर विरोध, धिगकी,

चकती ।—ठाहर ( स्त्री० ) ठीकरवाली जगह ।

ठिकरा, ठिकड़ा दे० ( पु० ) खपड़ा, मिट्टी के फूटे बर्तन का टुकड़ा ।

ठिकान या ठिकाना दे० ( पु० ) वास, वासस्थान, ठाँव, ठौर, ठाम, पता—ठूढ़ना ( क्रि० ) रहने के लिये स्थान ठूढ़ना, रोजगार ठूढ़ना ।—जगाना ( क्रि० ) प्रबन्ध करना, व्यवस्था कर देना ।

ठिकानी दे० ( वि० ) ठिकाने वाला, जिसका ठिकाना लग गया हो ।

ठिकाने लगाना दे० ( कि० ) मारा जाना, मारा पड़ना, अन्त तक पहुँच जाना, अवधि प्राप्त करना, पूरा होना। मार डालना, खाया डालना, नष्ट कर डालना, पूरा करना, समाप्त कर देना, अवधि तक पहुँचा देना। [खर्व, बीना, वामन।

ठिंगना दे० ( वि० ) नाटा, छोटा, छोटे आकार का, ठिठक दे० ( स्त्री० ) आश्चर्य में होना, भयभीत होना, आश्चर्य होना, अचम्मित होना।—जाना ( कि० ) आश्चर्य से घबड़ा जाना।—रहना ( कि० ) अचम्मे में आकर ज्ञानशून्य हो जाना, कर्तव्याकर्तव्य निर्धारण नहीं कर सकना।

ठिठकना दे० ( कि० ) ठिठक जाना, अचम्मे में घाना, विरिमत होना, आकस्मिक, अद्भुत घटना से निःसंख्य हो जाना, चकित होना।

ठिठरना दे० ( कि० ) अकड़ना, अमना, पाले से हाथ पैर का सख पड़ जाना, जड़ना। [ अकड़ाई।

ठिठर, ठिठराहट दे० ( स्त्री० ) टंडक, शैथ, जाड़ा, ठिठुर दे० ( स्त्री० ) ठिठर, ठिठराहट, टंडक, अकड़ाई, अकड़।

ठिठुरना दे० ( कि० ) ठिठरना, अकड़ना, अमना, शीत से अकड़ना। [ का मारा हुआ।

ठिठुरा दे० ( वि० ) ठिठरा हुआ, अकड़ा हुआ, पाले दिनकना दे० ( कि० ) धीरे धीरे रोना, शनैः शनैः रोना, सिसकना, सिसकी लेना, दुनकना।

डिया दे० ( पु० ) जगह, ठिकाना, हद्द का पथर या खंभा, धूनी, कारीगरों के काम करने का स्थान।

डिर तद्० ( स्त्री० ) पाला, कड़ी सर्दी।

डिरना दे० ( कि० ) अमना, घन होना, सख्त होना, बँध जाना, जम जाना, एकत्रित होना, कठिन होना, पाठा लगाना, जड़ाना।

डिलना ( कि० ) डेलना, डकेलना।

डिलिया दे० ( स्त्री० ) गगरी, छोटा घड़ा, मटकी, मटकनी। [ का खिलौना।

डिलवा ( पु० ) छोटा घोंडा, मिट्टी का बना छोटे घोड़े डिलुआ ( वि० ) डलुआ, निकम्मा।

डिल्ला ( पु० ) घड़ा, घड़ा घड़ा।

डीक दे० ( वि० ) उचित, योग्य, यथार्थ, पूरा, शुद्ध, बराबर, सत्य, यथोचित, यथायोग्य, जोड़।

—ग्राना ( कि० ) मिजना, बराबर होना, उचित घटना, जितना चाहिये उतना होना।—करना ( कि० ) शुद्ध करना, निश्चित करना, निश्चित कर लेना, दण्ड देकर सुधारना, मारना, पीटना, सुधारना।—ठाक ( पु० ) शुद्ध, सत्य, कृतप्रयत्न, कृतव्यवस्था, जिपकी व्यवस्था हो गई हो, निश्चित, निर्णित।—ठाक करना ( वा० ) निश्चित करना, प्रयत्न करना।—मठोक ( अ० ) यथार्थ शुद्धता से, यथार्थता से, जोड़तोड़, बिजड़ल डीक।

डीकरा, डीकड़ा दे० ( पु० ) ठिकरा, मिट्टी के कूड़े बरतन का टुकड़ा।

डीकरी दे० ( स्त्री० ) छोटा डीकरा, मिट्टी, कल्लू।

डीका दे० ( स्त्री० ) निश्चय, डीक, उचित, यथार्थ, हड़, बाजबी द्वारा, काम करने के पहले ही उसके लिये मजूरी आदि का निश्चय कर लेना।

डीकदार दे० ( पु० ) डीका लेने या देने वाला।

डीप दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की झड़ी।

डीलना ( कि० ) डकेलना, डेलना।

डीवन तद्० ( पु० ) धूक, खलार।

डीहा तद्० ( पु० ) गद्दी, हद्द, सीमा, जगह।

डुकना ( कि० ) पिटजाना, मार खाना।

डुकराना दे० ( कि० ) जतियाना, छात से मारना, डोकर से मारना, पैर से या चोंच से डोकर मारना।

डुडू दे० ( स्त्री० ) छोटी, दाढ़ी, चिबुक, मुँगा चबेना, जिसमें लावा न हो, बिना लावा का चबेना।

डुनुक दे० ( स्त्री० ) सिसक, दिनक, धीरे धीरे रोना।

डुनुकना डुनकना दे० ( कि० ) सिसकना, दिनकना, धीरे धीरे रोना।

डुमकना दे० ( कि० ) सुडौल चलना, स्वाभाविक ऐठन से चलना। यथा—“डुमक खजत रामचन्द्र बाजत पैजनिया।”

डुमका, डुमका दे० ( वि० ) छोटा, नाटा, ठिठना, खर्व, बीना, वामन।

डुमुकी दे० ( स्त्री० ) पतंग की डोरी को विशेष रूप से खटका देना, रुकावट, एक छोटा गीत, खरी छोटी पूरी। ( वि० ) नाटी, छोटी।

डुमरी दे० ( स्त्री० ) एक छोटा गीत, सफ़ावा, गप।

हुमुकि ( स्त्री० ) मन्द गमन, रुक रुक कर चला।

ठहराऊ ( वि० ) ठिहाऊ, दृढ़, मजबूत ।

ठहराना दे० ( क्रि० ) रखना, ठिकाना, अटकाना, बसाना, रहने के लिये स्थान देना, निश्चित करना, निर्णय करना पक्का करना, ठीकठाक करना, शर्त करना, नियत करना, निरादानी, रोकना, रोक रखना ।

ठहराव दे० ( पु० ) रुकाव, निवृत्ताव ठहरने का स्थान, ठिकाव, निर्णय, निश्चय, निश्चित विषय, जो वादविवाद के पश्चात् स्वीकृत हुआ हो । मन्तव्य, प्रस्ताव, विचारविरोध, जो किसी उद्देश्य से निश्चित किये जाते हैं, शर्त ।

ठहरौनी दे० ( स्त्री० ) विवाह में देने वाले दायजे का ठहराव । [की हैंसी ।

ठहाका दे० ( पु० ) घमाका, धड़ाका, अट्टहास, जोर ठाँ, ठाँव दे० ( पु० ) बन्दूक की आवाज़ ठाँव, स्थान, स्थल, ठौर, ठिकाना, भूमि ।

ठाँई तद् ( स्त्री० ) स्थायी, बहुत दिनों तक रहने वाला, ठाँव, ठौर, पास, समीप ।

ठाँउँ दे० ( पु० ) स्थान, ठाँव, ठौर, अवसर ।

ठाँठ दे० ( वि० ) गीरस, बेदूध की गौ ।

ठाँयँ दे० ( स्त्री० ) स्थान, जगह, समीप, पास ।

ठाँय ठाँय दे० ( स्त्री० ) रगड़ा फगड़ा, बन्दूक का शब्द ।

ठाँय दे० ( स्त्री० ) स्थान, जगह ।

ठाँसना दे० ( क्रि० ) लडवाव्य भरना, दबा दबा के भरना, ठूसना ।

ठाकुर तद् ( पु० ) ठाकुर, देवता, देवता की मूर्ति, ईश्वर की मूर्ति, स्वामी, प्रभु, माजिक, प्रधान प्रभु, मुखिया, नायक, चत्रिय जमीन्दारों की माननीय पदवी, जमीन्दार, पहले मैथिल ब्राह्मणों को भी ठाकुर या ठाकुर की पदवी दी जाती थी, विद्यापति ठाकुर, गोविन्द ठाकुर इत्यादि, नाई, नापित ।—द्वारा ( पु० ) मन्दिर, देवालय, देव-स्थान, भगवान् का मन्दिर ।—बाड़ो ( स्त्री० ) मन्दिर, देवस्थान, बगीचा कुर्छा के साथ का मन्दिर, जिस देवस्थान में बगीचा कुर्छा आदि वर्तमान हों, ठाकुरद्वारा ।—सेता तद् ( स्त्री० ) देवता का पूजन ।

ठाट दे० ( पु० ) ठठी, सैथारी, बेपरचना, शान, छप्पर का ठाट, सड़कभड़क, चमत्कार, सुन्द, समूह, दल ।

ठाटवाट दे० ( पु० ) सनधन, नदक, भड़क ।

ठाटर दे० ( पु० ) टट्टा, टट्टी, ठठी, पञ्जर, ढाँचा, बनाव ।

ठाट देखो " ठाट " ।

ठाड़ दे० ( वि० ) ऊँचा, खड़ा, स्थित, उपस्थित ।

ठाड़ा दे० ( वि० ) खड़ा, सीधा, लम्बायमान ।

ठाढ़ दे० ( वि० ) खड़ा, खड़ाहुधा, सीधा, उपस्थित उपस्थित हुधा, जो पिसा, न हो, उपब "कीन चढ़त लीला हरि जयहीं ।

ठाढ़ करत है कारन तबहीं ॥"

—रघुनाथदास ।

—ठाढ़ी ( अ० ) बहुत शीघ्र, जल्दी, शीघ्रता से, तुल्य, तूर्त स्वरित, खड़े खड़े ।

ठान तद् ( स्त्री० ) समारम्भ, अनुष्ठान, चेष्टा ।

ठानतू दे० ( पु० ) अव्यक्त शब्द, परस्पर आदि के तोड़ने का शब्द, बन्दूक का शब्द ।

ठानना दे० ( क्रि० ) प्रारम्भ करना, ठहराना, प्रतिज्ञा करना, निश्चय करना ।

ठाना दे० ( क्रि० ) प्रारम्भ किया, ठहराया, निश्चय किया, विचार, दृढ़ किया, प्रतिज्ञा किया ।

ठानी दे० ( स्त्री० ) ठहराई, विचारी ।

ठाम दे० ( पु० ) ठाँव, ठौर, ठिकाना, स्थान, स्थल, जगह, श्रद्धा, श्रमेर ।

ठार दे० ( पु० ) सर्दी, शीत, हिम, तुपार, पाला, बर्फ ।

ठाळा दे० ( वि० ) बिना काम का, बेकार, खाली, कर्महीन ।

ठालों ( वि० ) खाली, रीता ।

ठासना दे० ( क्रि० ) भरना, ठूसना, दबाना, दबा दबा करके भरना । [ठाँव, ठौर, मौका ।

ठाहर या ठाहुर दे० ( स्त्री० ) स्थान, जगह, स्थल, ठिक दे० ( स्त्री० ) स्थान या अवसर, विशेष, थिगली,

चकती ।—ठाँर ( स्त्री० ) ठीकरा की जगह ।

ठिकरा, ठीकरा, ठीकरा का ढ

ठिकान या

ठाँव, ठौर,

लिये स्थान

( क्रि० ) प्रबन्ध

ठिकानी दे० ( वि० )

लग गया हो ।

ठिकाने लगाना दे० ( कि० ) मारा जाना, मारा पड़ना, अन्त तक पहुँच जाना, अवधि प्राप्त करना, पूरा होना । मार डालना, खपा डालना, नष्ट भ्रष्ट कर डालना, पूरा करना, समाप्त कर देना, अवधि तक पहुँचा देना । [खर्वे, बौना, वामन ।  
ठिंगना दे० ( वि० ) नाटा, छोटा, छोटे आकार का, ठिठक दे० ( स्त्री० ) आश्चर्य में होना, भयभीत होना, आश्चर्यित होना, अचमित्त होना ।—जाना ( कि० ) आश्चर्य से घबड़ा जाना ।—रहना ( कि० ) अचम्भे में, आकर ज्ञानशून्य हो जाना, कर्तव्याकर्तव्य निर्धारण नहीं कर सकना ।

ठिठकना दे० ( कि० ) ठिठक जाना, अचम्भे में पाना, विस्मित होना, आकस्मिक, अद्भुत घटना से निःसंशय हो जाना, चकित होना ।

ठिठरना दे० ( कि० ) अकड़ना, अमना, पाले से हाथ पैर का सख पड़ जाना, जड़ना । [ अकड़ाई ।

ठिठर, ठिठराहट दे० ( स्त्री० ) ठंडक, शैत्य, जाड़ा, ठिठुर दे० ( स्त्री० ) ठिठर, ठिठराहट, ठंडक, अकड़ाई, जकड़ ।

ठिठुरना दे० ( कि० ) ठिठरना, जकड़ना, अमना, शीत से अकड़ना । [ का मारा हुआ ।

ठिठुरा दे० ( वि० ) ठिठरा हुआ, जकड़ा हुआ, पाले

ठिनकना दे० ( कि० ) धीरे धीरे, रोना, शनैः शनैः रोना, सिसकना, सिसकी लेना, ठुनकना ।

ठिया दे० ( पु० ) जगह, ठिकाना, हट्ट का पथर या खंभा, धूनी, कारीगरों के काम करने का स्थान ।

ठिर तद्० ( स्त्री० ) पाला, कड़ी सर्दी ।

ठिरना दे० ( कि० ) अमना, घन होना, सख्त होना, बँध जाना, जम जाना, एकत्रित होना, कठिन होना, पाठा खगना, जड़ना ।

ठिलना ( कि० ) ठेलना, ढकेलना ।

ठिलिया दे० ( स्त्री० ) गगरी, छोटा घड़ा, मटकी, मटकनी । [ का खिलौना ।

ठिलवा ( पु० ) छोटा घोड़ा, मिट्टी का बना छोटे घोड़े

ठिलुआ ( वि० ) ठलुआ, निकम्मा ।

ठिल्ला ( पु० ) घड़ा, बड़ा घड़ा ।

ठीक दे० ( वि० ) उचित, योग्य, यथार्थ, पूरा, शुद्ध, बराबर, सत्य, यथोचित, यथायोग्य, जोड़ ।

—आना ( कि० ) मिलना, बराबर होना, उचित घटना, जितना चाहिये उतना होना ।—करना ( कि० ) शुद्ध करना, निश्चित काना, निश्चित कर लेना, दण्ड देकर सुधारना, मारना, पीटना, सुधारना ।—ठाक ( पु० ) शुद्ध, सत्य, कृतप्रवण, कृतव्यवस्था, जिपकी व्यवस्था हो गई हो, निश्चित, निर्णीत ।—ठाक करना ( वा० ) निश्चित करना, प्रवण करना ।—मठीक ( भ० ) यथार्थ शुद्धता से, यथार्थता से, ओझताड़, बिजकल ठीक ।

ठीकरा, ठीकड़ा दे० ( पु० ) ठिकरा, मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा ।

ठीकरी दे० ( स्त्री० ) छोटा ठीकरा, गिटकी, ककड़ा ।

ठीका दे० ( स्त्री० ) निश्चय, ठीक, उचित, यथार्थ, हट्ट, धाजपी हुजारा, काम करने के पहले ही उसके लिये मजूरी यादि का विषय कर लेना ।

ठीकेदार दे० ( पु० ) ठीका लेने या देने वाला ।

ठीप दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की अझीरी ।

ठीलना ( कि० ) ढकेलना, ठेलना ।

ठीवन तद्० ( पु० ) थूक, खलार ।

ठीहा तद्० ( पु० ) गद्दी, हट्ट, सीमा, जगह ।

ठुकना ( कि० ) पीटजाना, मार खाना ।

ठुकराना दे० ( कि० ) बतियाना, लात से मारना, ठोकर से मारना, पैर से या बाँच से ठोकर मारना ।

ठुड़ी दे० ( स्त्री० ) ठोड़ी, दाढ़ी, चिबुक, मुँहा, चबेना, जिसमें लावा न हो, बिना लावा का चबेना ।

ठुनुक दे० ( स्त्री० ) सिसक, ठिनक, धीरे धीरे रोदना ।

ठुनुकना ठुनकना दे० ( कि० ) सिसकना, ठिनकना, धीरे धीरे रोना ।

ठुमकना दे० ( कि० ) सुडौल चलना, स्वामाधिक ऐठन से चलना । यथा—“ठुमक चलत रामचन्द्र याज्ञत पैजनिषा ।”

ठुमका, ठुम्का दे० ( वि० ) छोटा, नाटा, ठिङ्गा, खर्वे, बौना, वामन ।

ठुमकी दे० ( स्त्री० ) पसंग की डोरी को विशेष रूप से कटका देना, रुकावट, एक छोटा गीत, खरी छोटी परी । ( वि० ) नाटी, खोटी ।

ठुमरी दे० ( स्त्री० ) एक छोटा गीत, अफवाह, गप ।

ठुमुकि ( स्त्री० ) मन्द गमन, रुक रुक कर चला ।

दुसकना दे० ( क्रि० ) पादना, अपानवायु का त्याग,  
धीरे धीरे रोना, दूसरों के कथोपकथन में कड़ी बात  
कह देना, एक न एक अड़झ लगाते रहना ।

दुसकी दे० ( स्त्री० ) शब्दरहित वायुत्याग, पाद ।

दुसाना दे० ( क्रि० ) भराना, भरवाना, दुसवाना,  
ठंसाना । [जो गने में पहना जाता है ।

दुस्सी दे० ( स्त्री० ) पाटिया, एक सुवर्ण का आभूषण

ठूँठ दे० ( पु० ) डुंढा, बिना पत्ते की ढाल, पत्ता ढाल  
रहित वृक्ष, सुवृक्ष, यूषा, स्थाणु, कटा हाथ,  
हथकटा मनुष्य । [दी गई हो ।

ठूँठिया दे० ( वि० ) ठूँठ वृक्ष जिसकी शाखा काट

ठूँठो दे० ( स्त्री० ) छूँटी, डोटी, अन्न का डोँठ ।

ठेंडना, ठेंवना ( पु० ) घुटना, ठेवना ।

ठेंकुर ( पु० ) देखो अड़गोड़ा ।

ठेंगना दे० ( वि० ) खर्व, छोटा, नाटा ।

ठेंगा दे० ( पु० ) लाठी, लठ्ठ, रँगूठा ।—ठगी (अ०)

लाठा लाठी, परस्पर में मारामारी ।—घजाना  
( क्रि० ) लाठी चलाना, मारामारी करना ।

ठेंठ ( पु० ) शुद्ध, केवल, अमिश्रित, प्राकृतिक, स्वभाव-  
सिद्ध, कान का मैल ।

ठेंठी दे० ( स्त्री० ) कान का मैल, ठुड़ा । [दृष्टा बढ़ा बोरा ।

ठेक दे० ( स्त्री० ) टेकनी, सहारा, अवलम्ब, अन्न से भरा

ठेका दे० ( पु० ) दहा, रोक, ठेपी, ठेंठी, बेतल आदि  
का मुँह बन्द करने के लिये टेपी, रुकावट, बाँध  
पर का ताल ।—थिकारी ( पु० ) ठीकादार ।

ठेकी दे० ( स्त्री० ) विश्राम का स्थान, जहाँ सिर का  
थोका उतारने के लिये सुविधा हो ।

ठेठ दे० ( पु० ) अमिश्रित, अनमिल, बेमेल, शुद्ध ।

ठेपी दे० ( स्त्री० ) ठेंठी, दहा, डिट, काग ।—मुँह में  
देना ( वा० ) थका रहना, चुपचाप रहना, कुछ  
भी न बोलना ।

ठेलना दे० ( क्रि० ) ढकेलना, रेलना, पेलना, धक्का,  
देना, झोंकना, हटाना, आगे बढ़ाना ।

ठेला दे० ( पु० ) धक्का, ढकेल, झोंक, एक प्रकार की  
माछ लादने की गाड़ी, जिसे आदमी खींचते हैं ।

—ठेली ( अ० ) धक्कामधक्का, रेलपेल ।

ठेवना तद् ( पु० ) वह स्थान जहाँ खेत-सिंचाई  
के लिये जल गिरे ।

ठेवना दे० ( पु० ) घुटना, जात, ठेंडना ।

ठेस दे० ( पु० ) ठोकर, चपेट, चोट, धक्का ।

ठेसना दे० ( क्रि० ) ठूसना, भरना ।

ठेसरा दे० ( पु० ) नकचड़ा, अमिमानी, गर्वीबा ।

ठेहरी दे० ( स्त्री० ) दरवाजों के पल्लों के नीचे की वह

लकड़ी जिस पर किवाड़ों की चूट घूमती है ।

ठेंही दे० ( स्त्री० ) मारी हुई ईख ।

ठैया दे० ( स्त्री० ) जगह, स्थान ।

ठेरना ( क्रि० ) ठहरना ।

ठोक दे० ( स्त्री० ) प्रहार, धात, गाड़ । [घपाना ।

ठोकना दे० ( क्रि० ) मारना, पीटना, गाड़ना, घ-  
ठोंग दे० ( स्त्री० ) चोंच अथवा रंगुली की मार ।

ठोंगना दे० ( क्रि० ) चोंचियाना, चोंच से बिलेरना,

चिरहोरना ।

ठोंगाना दे० ( क्रि० ) चोंचियाना, ठोंगना ।

ठोंठ दे० ( स्त्री० ) चोंच, ठोर, झोठ, पक्षियों का झोठ ।

ठोंठी तव् ( स्त्री० ) चने के दाने का कोण, पोस्ता  
की ढोंठी ।

ठो ( अन्व० ) संख्या बोधक, यथा—एक ठो, दो ठो ।

ठोक दे० ( स्त्री० ) मार-कूट, मारने का शब्द, ठोके  
का शब्द ।

ठोकर दे० ( स्त्री० ) ठेस, पैर की मार, लतियाना,  
बाधा, पैर में चोट लग जाना ।—खाना ( क्रि० )

गिर पड़ना, लुढ़कना, झूल करना, झूँक जाना,  
चूकना, हानि उठाना, घटी सहना ।—लगना

( क्रि० ) पैर में चोट लगना ।

ठोकरा दे० ( वि० ) कडा, कर्ना, कठिन, कठोर, सख्त ।

ठोकरी दे० ( स्त्री० ) कई महीने की व्यांघी हुई गौ ।

ठोकराना दे० ( क्रि० ) आप ही आप ठोकर खाना,  
घोड़ा आदि का ठोकर खाना ।

ठोठ दे० ( वि० ) जड़, मूल्य, गावदी ।

ठोठरा दे० ( वि० ) पोपला, बिना दाँतों का मुख, गुण्डा ।

ठोड़ी, ठोढ़ी दे० ( स्त्री० ) ठुड़ी, चिबुक, दाढ़ी ।

ठोप दे० ( पु० ) बूँद, बिन्दु ।

ठोर दे० ( स्त्री० ) चोंच, चम्बु, पक्षियों का ठोठ ( पु० )

बहुत सम्प्रदायी मन्दिरों में बनाई जाने वाली एक  
प्रकार की मिठाई ।

ठोल दे० ( स्त्री० ) ठोर, चीनी में परी मोटी सी परी ।

ठोला दे० ( पु० ) कुहिया, चिड़ियों का भोजन पात्र, छोटे छोटे सतंग, जिनमें चिड़ियों का खाना और पानी देते हैं। शंगुलियों का पर्व, गठि।

ठोस दे० ( वि० ) पोढ़ा, ससार, कठोर, दृढ़, घना, अन्तःसार-युक्त। भीतर से भरा हुआ, भीतर से खोखला नहीं।

ठोसना दे० ( क्रि० ) ठासना, दवाना, भरना, दबा दबा के भरना।

ठोसा दे० ( पु० ) ठेंगा या छंगूठा, सोने या चांदी की गोली, जिस पर देवता का आवाहन और पूजन किया जाता है।

ठोहना ( क्रि० ) ठिकाना, तलाश करना।

" जो अपने पद पाऊँ तो ठोहूँ। "

—केराव।

ठोहर दे० ( पु० ) घकाल, तेजी, महँघ।

ठौनी ( स्त्री० ) ठवनि, स्थिति, स्थान।

ठौर दे० ( स्त्री० ) अँव, ठिकाना, स्थल, जगह, प्रबन्ध, मौका, घात, अवसर, जीविका का स्थान।

—रहना ( क्रि० ) यहीं रहना, खेत रहना, मारा जाना, मारा पड़ना।

## ड

ड यह व्यञ्जन का सौहार्द वर्ण है, मूर्खा से बचाराण होने के कारण इसे मूर्खन्य कहते हैं।

ड तत् ( पु० ) शिव, महादेव, पशुपति, भय, डर, शब्द, ध्वनि, नाद, बाङ्गवानल।

डकई दे० ( पु० ) केले की एक आति।

डकरा दे० ( पु० ) विष, एक प्रकार की ओषधि काली मिर्ची ( वि० ) तीक्ष्ण, तीला, कटु, जिसकी गन्ध फैलने वाली हो, तीक्ष्णगन्धि, कटुगन्धि।

डकराना दे० ( क्रि० ) बेल या जैसे की बोली।

डकवाहा ( पु० ) चिट्ठी बढाने वाला।

डकार दे० ( स्त्री० ) डङ्गार, भोजन से वृत्ति का सूचक मुँह द्वारा निकलने वाला पेट का एक शब्द विशेष।—जाना ( क्रि० ) खा जाना, पचा जाना, किसी से कुछ लेकर देने की इच्छा न करना।

—घैठना ( क्रि० ) पचा लेना, पचा कर निश्चित बैठना, किसी से लिये हुए को भूल जाना।

—लेना ( क्रि० ) डकारना, डकार जाना, हस्तगत कर लेना, अधीन करना।

डकारना दे० ( क्रि० ) डंकार लेना, गरजना, पचा जाना।

डकैत दे० ( पु० ) डाँक, चोर, घटमार, छुटेरा, असहाय पर आक्रमण करके उसकी वस्तुओं को छीन लेने वाला। [समूह।

डकैती दे० ( पु० ) डाँक, डकैत, डकैतों का दल, डकैत

डकैती दे० ( स्त्री० ) डाँका मारने का काम, घटमारी।

डकैत दे० ( पु० ) } भड़िया, भडूरी के वंशज,

डकौतिया दे० ( पु० ) } एक सङ्कर जाति, ये ज्योतिष

का व्यवसाय करते हैं और शनि आदि का निकट

दान लेते हैं। कहते हैं, एक भडूरी नाम के ब्राह्मण

ज्योतिष विद्या के पारङ्गत विद्वान् थे, वह कहीं

बाहर गये हुए थे, उनके विचार में एक ऐसा

मुहूर्त दो दिन के बाद आने वाला था, जिस मुहूर्त

के गर्भ से बड़े भारी विद्वान् का उत्पन्न होना

निश्चित होता था। वह गृह के लिये प्रस्थित हुए

परन्तु वन का मार्ग भूल जाने से ठीक समय

अपने घर नहीं पहुँच सके। मुहूर्त था पहुँचा,

परन्तु भडूरी जी अपनी वन में ही थे। वह बड़े

चिन्तित थे। इसी समय एक ग्वालिन जो कहीं

जा रही थी वहाँ उपस्थित हुई। ज्योतिषी जी ने

उससे सब बातें कह कर इस विषय में सम्मति

पूछी। उसने कहा मुहूर्त निकट है, प्रायः किसी

प्रकार घर पहुँच नहीं सकते, ऐसे मुहूर्त का निकल

जाना, जिसमें एक बड़े विद्वान् के उत्पन्न होने

की सम्भावना है उचित नहीं है। मैं यहाँ उपस्थित

हूँ। अतएव यह सम्भव है कि आगे के बीरस और

मेरे गर्भ से उतनी वीर्यशाली सन्तति न हो। तथापि

यह निश्चित है कि सामान्य की अपेक्षा वह अधिक

वीर्यवान् हो, क्योंकि मुहूर्त का भी तो कुछ

बल है। भडूरी जी इस बात पर सहमत हुए।

उन्हीं से उत्पन्न डकौतिया हैं।

टुसकना दे० ( क्रि० ) पादना, अपानवायु का त्याग,  
धीरे धीरे रोना, दूसरों के कथोपकथन में कड़ी बात  
कह देना, एक न एक अड़क लगाते रहना ।

टुसकी दे० ( स्त्री० ) शब्दरहित वायुत्याग, पाद ।

टुसाना दे० ( क्रि० ) भराना, भरवाना, टुसवाना,  
टंसना । [ जो गने में पढ़ना ज्ञाता है ।

टुस्ती दे० ( स्त्री० ) पाटिया, एक सुवर्ण का आभूषण

टूट दे० ( पु० ) टुंटा, बिना पत्ते की डाल, पत्ता डाल  
रहित वृक्ष, सुथ, धूणा, स्याण्ड, कटा हाथ,  
हथकटा मनुष्य । [ की गई हो ।

टूटिया दे० ( वि० ) टूट वृक्ष जिसकी शाखा काट

टूटो दे० ( स्त्री० ) खूँटी, डोटी, अन्न का डाँठ ।

टेंडना, टेयना ( पु० ) घुटना, टेवना ।

टेंकुर ( पु० ) देखो अड़गोड़ा ।

टेंगना दे० ( वि० ) खर्व, छोटा, नाटा ।

टेंगा दे० ( पु० ) लाठी, लठ्ठ, छँगूडा ।—ठगी ( अ० )

लाठा लाठी, परस्पर में मारामारी ।—बजाना

( क्रि० ) लाठी बजाना, मारामारी करना ।

ठेंठ ( पु० ) शुद्ध, केवल, अमिश्रित, प्राकृतिक, स्वभाव-  
सिद्ध, कान का मैल ।

ठेंठी दे० ( स्त्री० ) कान का मैल, ठूठा । [ दुधा पड़ा बोरा ।

ठेक दे० ( स्त्री० ) टेकनी, सहारा, अवलम्ब, अन्न से भरा

ठेका दे० ( पु० ) डहा, रोक, ठेपी, ठेंडी, घोटल आदि  
का मुँह बन्द करने के लिये टेपी, रुकावट, बाएँ  
पर का ताल ।—धिकारी ( पु० ) ठीकादार ।

ठेकी दे० ( स्त्री० ) विध्राम का स्थान, जहाँ सिर का  
धोमा उतारने के लिये सुविधा हो ।

ठेठ दे० ( पु० ) अमिश्रित, अनमिल, घेमेल, शुद्ध ।

ठेपी दे० ( स्त्री० ) ठेंडी, डहा, डाँठ, काग ।—मुँह में  
देना ( वा० ) अवाक रहना, चुपचाप रहना, कुछ  
भी न बोलना ।

ठेलना दे० ( क्रि० ) डकेलना, रेलना, पेलना, धक्का,  
देना, झोंकना, हटाना, आगे बढ़ाना ।

ठेला दे० ( पु० ) धक्का, डकेल, झोंक, एक प्रकार की  
माछ खादने की गाड़ी, जिसे आदमी खींचते हैं ।  
—ठेली ( अ० ) धक्कामधक्का, रेलपेल ।

ठेवका तद० ( पु० ) वह स्थान जहाँ खेत सिंचाई  
के लिये जल गिरे ।

टेवना दे० ( पु० ) घुटना, जानु, टेडना ।

टेस दे० ( पु० ) ठोकर, चपेट, चोट, धक्का ।

टेंसना दे० ( क्रि० ) टेंसना, भरना ।

टेंसरा दे० ( पु० ) नरुचड़ा, अमिमानी, गर्वीला ।

टेंहरी दे० ( स्त्री० ) दरवाजों के पलों के नीचे की वह  
जगह जिस पर किवाड़ों की चूट घूमती है ।

टेंहो दे० ( स्त्री० ) मारी हुई ईंस ।

टैया दे० ( स्त्री० ) जगह, स्थान ।

टैरना ( क्रि० ) ठहरना ।

ठोक दे० ( स्त्री० ) प्रहार, धात, गाड़ । [ थपाना ।

ठोकना दे० ( क्रि० ) मारना, पीटना, गाड़ना, थप-

ठोम दे० ( स्त्री० ) चौंच अथवा छंगुली की मार ।

ठोंगना दे० ( क्रि० ) चौंचियाना, चौंच से बिसैरना,  
चिरहोरना ।

ठाँगाना दे० ( क्रि० ) चौंचियाना, ठोंगना ।

ठाँठ दे० ( स्त्री० ) चौंच, ठोर, थोठ, पक्षियों का थोठ ।

ठाँठी तद० ( स्त्री० ) चने के दाने का कोश, पोस्ता  
की ढोँठी ।

ठो ( अव्य० ) संख्या बोधक, यथा—एक ठो, दो ठो ।

ठोक दे० ( स्त्री० ) मार फूट, मारने का शब्द, ठोकने  
का शब्द ।

ठोकर दे० ( स्त्री० ) ठेस, पैर की मार, लतियाना,  
बाधा, पैर में चोट लग जाना ।—खाना ( क्रि० )

गिर पड़ना, खुदकना, भूल करना, भूँस जाना,  
चूकना, हानि उठाना, घटी सहना ।—लगना

( क्रि० ) पैर में चोट लगना ।

ठोकरा दे० ( वि० ) कड़ा, कर्क, कठिन, कठोर, सख्त ।

ठोकरी दे० ( स्त्री० ) कई महीने की ब्यायी हुई गी ।

ठोकराना दे० ( क्रि० ) आप ही आप ठोकर खाना,  
घोड़ा आदि का ठोकर खाना ।

ठोठ दे० ( वि० ) जड़, मूर्ख, गावदी ।

ठोठरा दे० ( वि० ) पोपला, बिना दाँतों का मुख, तुण्डा ।

ठोड़ी, ठोढ़ी दे० ( स्त्री० ) ठुड़ी, चिबुक, दाढ़ी ।

ठोप दे० ( पु० ) बूँद, बिन्दु ।

ठोर दे० ( स्त्री० ) चौंच, चन्चु, पक्षियों का ठोठ ( पु० )

बहुत सम्प्रदायी मन्दिरों में बनाई जाने वाली एक  
प्रकार की मिठाई ।

ठोल दे० ( स्त्री० ) ठोर, चीनी में पंगी मोटी सी पूरी ।

ठोला दे० ( पु० ) कुविद्या, चिड़ियों का भोजन पात्र, छोटे छोटे बर्तन, जिनमें चिड़ियों का खाना और पानी देते हैं। शृगुलियों का पर्व, गाँठ।

ठोस दे० ( वि० ) पोढ़ा, सतारा, कठोर, दृढ़, घना, अन्तःसार-युक्त। भीतर से भरा हुआ, भीतर से खोखला नहीं।

ठोसना दे० ( क्रि० ) ठासना, दवाना, भरना, दबा दबा के भरना।

ठोसा दे० ( पु० ) ठेंगा या शृंगूठा, सोने या चाँदी की गोली, जिस पर देवता का आवाहन और पूजन किया जाता है।

ठोहना ( क्रि० ) ठिकाना, तलाश करना।

“ जो अपना पद बाँज से ठोहें। ”

—केशव।

ठोहर दे० ( पु० ) थकावट, तेजी, महँ।

ठौनी ( स्त्री० ) ठवनि, स्थिति, स्थान।

ठौर दे० ( स्त्री० ) ठाँव, ठिकाना, स्थल, जगह, प्रबन्ध, मौका, घात, अवसर, जीविका का स्थान।

—रहना ( क्रि० ) यहाँ रहना, खेत रहना, मारा जाना, मारा पड़ना।

## ड

ड यह व्यञ्जन का तेरहवाँ वर्ण है, मूर्द्धा से उच्चारण होने के कारण इसे मूर्द्धन्य कहते हैं।

ड सत्० ( पु० ) शिव, महारैव, पशुपति, भय, डर, शब्द, ध्वनि, नाद, बाहुवामल।

डकई दे० ( पु० ) केले की एक जाति।

डकरा दे० ( पु० ) विष, एक प्रकार की ओषधि काली मिट्टी ( वि० ) तीक्ष्ण, तीखा, कटु, जिसकी गन्ध फैलने वाली हो, तीक्ष्णगन्धि, कटुगन्धि।

डकराना दे० ( क्रि० ) डैल या भँसे की थोली।

डकवाहा ( पु० ) चिट्ठी बाँटने वाला।

डकार दे० ( स्त्री० ) उद्गार, भोजन से वृद्धि का सूचक मुँह द्वारा निकलने वाला पेट का एक शब्द विशेष।—जाना ( क्रि० ) खा जाना, पचा जाना, किसी से कुछ लेकर देने की इच्छा न करना।

—घैठना ( क्रि० ) पचा लेना, पचा कर निश्चित घैठना, किसी से लिये हुए डेा भूल जाना।

—लेना ( क्रि० ) डकारना, डकार जाना, हस्तगत कर लेना, अधीन करना।

डकारना दे० ( क्रि० ) डकार लेना, गरजना, पचा जाना।

डकैत दे० ( पु० ) डाँक, चोर, चटमार, छुटेरा, असहाय पर आक्रमण करके उसकी वस्तुओं को छीन लेने वाला। [समृद्ध।

डकैती दे० ( पु० ) डाँक, डकैत, डकैतों का दल, एकैत

डकैती दे० ( स्त्री० ) डाँका मारने का काम, चटमारी।

डकैत दे० ( पु० ) डकैतिया, भट्टरी के घंराज, डकौतिया दे० ( पु० ) एक सङ्कर जाति, ये ज्योतिष

का व्यवसाय करते हैं और शनि आदि का निकृष्ट दान लेते हैं। कहते हैं, एक भट्टरी नाम के ब्राह्मण ज्योतिष विद्या के पारंगत विद्वान् थे, वह कहीं याहर गये हुए थे, उनके विचार में एक ऐमा मुहूर्त दो दिन के बाद आने वाला था, जिस मुहूर्त के गर्भ से बड़े भारी विद्वान् का उत्पन्न होना निश्चित होता था। वह गृह के लिये प्रस्थित हुए परन्तु वन का मार्ग भूल जाने से ठीक समय अपने घर नहीं पहुँच सके। मुहूर्त था पहुँचा, परन्तु भट्टरी जी अपनी वन में ही थे। वह बड़े चिन्तित थे। उसी समय एक ग्यालिन जो कहीं जा रही थी वहाँ उपस्थित हुई। ज्योतिषी जी ने उससे सब बातें कह कर इस विषय में सम्मति पूरी। उसने कहा मुहूर्त निकट है, आप किसी प्रकार घर पहुँच नहीं सकते, ऐसे मुहूर्त का निकल जाना, जिसमें एक बड़े विद्वान् के उत्पन्न होने की सम्भावना है उचित नहीं है। मैं यहाँ उपस्थित हूँ। अतएव यह सम्भव है कि आरके योग्य और मेरे गर्भ से उतनी धीरंशाजी सन्तति न हो, तथापि यह निश्चित है कि मागान्य की प्रपेया यह अधिक धीरंशान् हो, क्योंकि मुहूर्त का भी तो कुछ बल है। भट्टरी जी इस बात पर सहमत हुए। उन्होंने से शपथ डकौतिया है।



हुसकना दे० ( क्रि० ) पादना, अपानवायु का त्याग,  
धीरे धीरे रोना, दूसरों के कथोपकथन में कड़ी बात  
कह देना, एक न एक अड़झ लगाते रहना ।

हुसकी दे० ( स्त्री० ) शब्दरहित वायुत्याग, पाद ।

हुसाना दे० ( क्रि० ) भराना, भरवाना, हुसवाना,  
ठंसाना । [ जो गने में पहना जाता है ।

हुस्ती दे० ( स्त्री० ) पाटिया, एक सुवर्ण का आभूषण  
हूँठ दे० ( पुं० ) डुंढा, बिना पत्ते की डाल, पत्ता डाल

रहित वृण, खुथ, थूणा, स्थाणु, कटा हाथ,  
हथकटा मनुष्य । [ दी गई हो ।

हूँठिया दे० ( वि० ) हूँठ वृच जिसकी शाखा काट

हूँठी दे० ( स्त्री० ) खूँटी, डोटी, अन्न का डाँठ ।

हुँटना, हुँटना ( पुं० ) घुटना, ठेवना ।

हुँकुर ( पुं० ) देखो अड़गोड़ा ।

हुँगना दे० ( वि० ) खर्व, छोटा, नाटा ।

हुँगा दे० ( पुं० ) लाठी, लठ्ठ, अँगूठा ।—ठगी ( अ० )  
लाठा लाठी, परस्पर में मारामारी ।—घजाना  
( क्रि० ) लाठी चलाना, मारामारी करना ।

हुँठ ( पुं० ) शुद्ध, केवल, अमिश्रित, प्राकृतिक, स्वभाव-  
सिद्ध, कान का मैल ।

हुँठी दे० ( स्त्री० ) कान का मैल, ठट्ठा । [ हुआ घड़ा बोरा ।

हुँक दे० ( स्त्री० ) टेकनी, सहारा, अवलम्ब, अन्न से भरा

हुँका दे० ( पुं० ) डट्टा, रोक, ठेपी, ठँडी, योतन आदि  
का मुँह पन्द करने के लिये टेगी, रुकावट, बाँध  
पर का ताल ।—धिकारी ( पुं० ) ठीकादार ।

हुँको दे० ( स्त्री० ) विश्राम का स्थान, जहाँ सिर का  
थोका उतारने के लिये सुविधा हो ।

हुँठ दे० ( पुं० ) अमिश्रित, अनमिज, बेमेल, शुद्ध ।

हुँपो दे० ( स्त्री० ) ठँडी, डट्टा, डाँट, काग ।—मुँह में  
देना ( वा० ) अवाक् रहना, चुपचाप रहना, कुछ  
भी न बोलना ।

हुँलना दे० ( क्रि० ) डकेलना, रेलना, पेलना, धका,  
देना, झोंकना, हटाना, आगे बढ़ाना ।

हुँला दे० ( पुं० ) धका, डकेल, झोंक, एक प्रकार की  
माज छादने की गाड़ी, जिसे आदमी खींचते हैं ।

—हुँली ( अ० ) धक्कामधक्का, रेलपेल ।

हुँका तद् ( पुं० ) वह स्थान जहाँ खेत-सिंचाई  
के लिये जल गिरे ।

हुँवना दे० ( पुं० ) घुटना, जानु, ठेंवना ।

हुँस दे० ( पुं० ) ओकर, चपेट, चोट, धक्का ।

हुँसना दे० ( क्रि० ) हुँसना, भरना ।

हुँसरा दे० ( पुं० ) नकचढ़ा, अमिमानी, गर्वीबा ।

हुँहरी दे० ( स्त्री० ) दरवाजों के पत्तों के नीचे की वह  
लकड़ी जिस पर किवाड़ों की चूठ घूमती है ।

हुँहो दे० ( स्त्री० ) मारी हुई ईख ।

हुँया दे० ( स्त्री० ) जगह, स्थान ।

हुँरना ( क्रि० ) ठहरना ।

हुँक दे० ( स्त्री० ) प्रहार, घात, गाड़ । [ धपाना ।

हुँकना दे० ( क्रि० ) मारना, पीटना, गाड़ना, धक्-  
का देना ।

हुँका दे० ( स्त्री० ) चौंच अथवा अंगुली की मार ।

हुँगना दे० ( क्रि० ) चौंचियाना, चौंच से बिखेरना,  
चिखोरना ।

हुँगाना दे० ( क्रि० ) चौंचियाना, हुँगना ।

हुँठ दे० ( स्त्री० ) चौंच, ठोर, छोट, पक्षियों का झोठ ।

हुँठी तव ( स्त्री० ) चने के दाने का केश, पोस्ता  
की ढोंडी ।

हुँ ( अन्व० ) संख्या बोधक, यथा—एक ठो, दो ठो ।

हुँक दे० ( स्त्री० ) मार कूट, मारने का शब्द, ठोकरने  
का शब्द ।

हुँकर दे० ( स्त्री० ) ठेस, पैर की मार, लतियाना,  
बाधा, पैर में चोट लग जाना ।—खाना ( क्रि० )  
गिर पड़ना, लुढ़कना, भूल करना, भूँख खाना,  
चुक्ना, हानि उठाना, घटी सहना ।—लगना  
( क्रि० ) पैर में चोट लगना ।

हुँकरा दे० ( वि० ) कड़ा, कर्त, कठिन, कठोर, सख्त ।

हुँकरी दे० ( स्त्री० ) कई महीने की ब्यायी हुई गी ।

हुँकराना दे० ( क्रि० ) आप ही आप ठोकर खाना,  
घोड़ा आदि का ठोकर खाना ।

हुँठ दे० ( वि० ) जड़, मूल, गावदी ।

हुँठरा दे० ( वि० ) पोपला, बिना दाँतों का मुख, गुण्डा ।

हुँड़ी, ठोड़ी दे० ( स्त्री० ) ठुड़ी, चिबुक, दाढ़ी ।

हुँप दे० ( पुं० ) बूँद, बिन्दु ।

हुँर दे० ( स्त्री० ) चौंच, चप्पु, पक्षियों का ठोठ ( पुं० )  
वलय सम्प्रदायी मन्दिरों में बनाई जाने वाली एक  
प्रकार की मिठाई ।

हुँल दे० ( स्त्री० ) ठोर, चीनी में पंगी मोटी सी पूरी ।

ठोला दे० ( पु० ) कुहिया, चिड़ियों का भोजन पात्र, छोटे छोटे बर्तन, जिनमें चिड़ियों का खाना और पानी देते हैं। श्रृंगलियों का पर्व, गाँठ।

ठोस दे० ( वि० ) पोड़ा, ससा, कठोर, दृढ़, घना, अन्तःसार-युक्त, भीतर से भरा हुआ, भीतर से खोखला नहीं।

ठोसना दे० ( क्रि० ) ठासना, दबाना, भरना, दबा दबा के भरना।

ठोसा दे० ( पु० ) ठेंगा या श्रृंगदूडा, सोने या चाँदी की गोली, जिस पर देवता का आवाहन और पूजन किया जाता है।

ठोहना ( क्रि० ) ठिकाना, तलाश करना।

“ जो अपने पद पाँके से ठाँहों । ”

—केशव।

ठोहर दे० ( पु० ) झकाल, तेजी, महर्घ।

ठौनी ( स्त्री० ) ठवनि, स्थिति, स्थान।

ठौर दे० ( स्त्री० ) ठाँव, ठिकाना, स्थल, जगह, प्रबन्ध, मौका, घात, अवसर, जीविका का स्थान।

—रहना ( क्रि० ) वहीं रहना, खेत रहना, मारा जाना, मारा पड़ना।

## ड

ड यह व्यञ्जन का तेरहवाँ वर्ण है, मूर्दा से उच्चारण होने के कारण इसे मूर्जन्य कहते हैं।

ड तत् ( पु० ) शिव, महादेव, पशुपति, भय, डर, शब्द, ध्वनि, नाद, बाहुवान्।

डकई दे० ( पु० ) केले की एक जाति।

डकरा दे० ( पु० ) विष, एक प्रकार की ओषधि काली मिट्टी ( वि० ) सीक्ष्ण, तीला, कटु, जिसकी गन्ध फैलने वाली हो, तीक्ष्णगन्धि, कटुगन्धि।

डकराना दे० ( क्रि० ) बैल या भैंसे की बोली।

डकवाहा ( पु० ) चिट्ठी बाँटने वाला।

डकार दे० ( स्त्री० ) उद्गार, भोजन से रुसि का सूचक मुँह द्वारा निकलने वाला पेट का एक शब्द विशेष।—जाना ( क्रि० ) खा जाना, पचा जाना, किसी से कुछ लेकर देने की इच्छा न करना।

—वैठना ( क्रि० ) पचा लेना, पचा कर निश्चित बैठना, किसी से लिये हुए रों भूल जाना।

—लेना ( क्रि० ) डकारना, डकार जाना, हस्तगत कर लेना, अधीन करना।

डकारना दे० ( क्रि० ) डकार लेना, गरजना, पचा जाना।

डकैत दे० ( पु० ) डाँक, चोर, चटमार, खुशहा, असहाय पर आक्रमण करके उसकी वस्तुओं को छीन लेने वाला। [समूह।

डकैती दे० ( पु० ) डाँक, डकैत, डकैतों का दल, डकैत

डकैती दे० ( स्त्री० ) डाँका मारने का काम, चटमारी।

डकैत दे० ( पु० ) भड़िया, भड़री के वंशज,

डकौतिया दे० ( पु० ) एक सङ्कर जाति, मे ज्योतिष

का व्यवसाय करते हैं और शनि आदि का निकृष्ट

दान लेते हैं। कहते हैं, एक भड़री नाम के ब्राह्मण

ज्योतिष विद्या के पारंगत विद्वान् थे, वह कहीं

बाहर गये हुए थे, उनके विचार में एक ऐमा

मुहूर्त दो दिन के बाद आने वाला था, जिस मुहूर्त

के गर्भ से बड़े भारी विद्वान् का उत्पन्न होना

निश्चित होता था। वह गृह के लिये प्रस्थित हुए

परन्तु वन का मार्ग भूल जाने से ठीक समय

अपने घर नहीं पहुँच सके। मुहूर्त आ पहुँचा,

परन्तु भड़री जी अभी वन में ही थे। वह बड़े

चिन्तित थे। उसी समय एक ग्वाजिन जो कहीं

जा रही थी वहाँ उपस्थित हुई। ज्योतिषी जी ने

उससे सब बातें कह कर इस विषय में सम्मति

पूछी। उसने कहा मुहूर्त निकट है, आप किसी

प्रकार घर पहुँच नहीं सकते, ऐसे मुहूर्त का निकल

जाना, जिसमें एक बड़े विद्वान् के उत्पन्न होने

की सम्भावना है उचित नहीं है। मैं यहाँ उपस्थित

हूँ। अतएव यह सम्भव है कि आपके घरस और

मेरे गर्भ से उतनी धीर्यराजी सन्तति न हो, तथापि

यह निश्चित है कि सामान्य की अपेक्षा वह अधिक

धीर्यवान् हो, क्योंकि मुहूर्त का भी तो कुछ

बल है। भड़री जी हुए बात पर सहमत हुए।

उन्हीं से उत्पन्न डकौतिया हैं।

डग दे० ( पु० ) कदम, फाल, विन्यास ।

डगडगाना दे० ( कि० ) हिलना, हिलते डुलते चलना, कम्पित होकर चलना, काँपते चखना, फलमल करना ।

डगना दे० ( कि० ) हिलना, चञ्चल होना, स्थिर नहीं रहना, फिसल जाना, काँपना, खिसकाना, चूकना, टिगना ।

डगमग दे० ( वि० ) चञ्चल, अस्थिर, काँपने वाला, स्थिर न रहने वाला, चलायमान, डाँवाडोल ।

डगमगाना दे० ( कि० ) हिलना, चञ्चल होना, डाँवाडोल होना, काँपना, लड़खड़ाना चलायमान होना ।

डगमगानि दे० ( कि० ) चञ्चल हुई, डगमग हुई, डाँवाडोल हुई, हिली, काँपी ।

डगर दे० ( स्त्री० ) मार्ग, रास्ता, राह, पथ, पद्धति, पैड़ा । यथा—“ प्रेमनगर की डगर कठिन है जहाँ रेंगरेज़ सयाना । ”

डगरना दे० ( कि० ) हिलना, फिरना, फिसल जाना, वालचीं भूमि से लुढ़क जाना, रास्ते रास्ते घूमना ।

डगरा दे० ( पु० ) रास्ता, बाँस का बना हुआ टोकरा जो गोल और छिड़ला होता है ।

डगरिया दे० ( स्त्री० ) डगर, रास्ता, राह, मार्ग, पथ, यथा—“ कहीं गये मनमोहन त्याग, डगरिया ब्रूक न पड़ी । ”—सूरदास ।

डगा ( पु० ) डगी बजाने का डंडा ।

डगी दे० ( वि० ) हिलते, खसकते, सरकते, चलते, टसकते, कम्पित हो, चलायमान हो । [ हड़ीला घोड़ा ।

डगा दे० ( पु० ) दुर्बल घोड़ा, अस्थिरपञ्चरावशिष्ट घोड़ा ।

डङ्क दे० ( पु० ) चमक, बिच्छू का काँटा जो ज़हरीला होता है, विपैला काँटा, कलम की जीम, निब डङ्क मारा हुआ स्थान या घाव ।—मारना ( कि० ) बिच्छू या बरें का काटना ।

डङ्का दे० ( पु० ) वाद्यविशेष, दुन्दुभी बाजा, नगारा, भीसा, नगाड़ा, युद्धयात्रा विवाहयात्रा आदि में यह बजाया जाता है । [ जानने वाली स्त्री ।

डङ्किनी दे० ( स्त्री० ) डाकिन, भूत प्रेत की विद्या

डङ्कियाना दे० ( कि० ) डङ्क से मारना, डङ्क से चोट करना, डङ्क मारना, ज़हरीला काँटा घुसाना ।

डङ्कीला दे० ( वि० ) डङ्कवाला, ज़हरीले काँटे वाला ।

डङ्करी ( पु० ) चौपाया, गांव, बैल, भैंस आदि ।

डङ्करी ( स्त्री० ) डङ्किनी विशेष, लंबी लकड़ी ।

डट दे० ( पु० ) निशाना ।

डटना दे० ( कि० ) बघत रहना, तैयार रहना, प्रस्तुत रहना, धमना, रुकना, जल जाना, प्रस्तुत होकर खड़ा रहना । [ करना ।

डटाना ( कि० ) सटाना, मिटाना, जमाना, खड़ा

डटाई दे० ( स्त्री० ) डटाने की मजदूरी, डटाने का काम ।

डटैया दे० ( वि० ) डटाने वाला, बघत, प्रस्तुत ।

डट्टा दे० ( पु० ) डाट, बोतल आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु, बड़ों मेंल, साँचा, हुक्रे का नेचा ।

डङ्गमुण्डा दे० ( वि० ) दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी मुँह दी गई हो । [ वाला ।

डङ्गियल दे० ( वि० ) दाढ़ी वाला, लम्बी दाढ़ी

डङ्गुआ } दे० ( वि० ) जला हुआ, दाघ, भस्मीभूत

डङ्गोई ( पु० ) तेल विशेष जो जला के निकाला जाता है, पाताल यन्त्र से निकाला हुआ तेल ।

डंठा दे० ( पु० ) डंठी, मँटी, दण्डी, डंड, अन्न या फल आदि का डंड, जिस लकड़ी के सहारे वे वृक्ष में लगे रहते हैं ।

डण्ड तद् ( पु० ) दण्ड, अपराध का प्रायश्चित्त, अपराधी को उसके अपराध की गुरुता और लघुता के अनुसार सज़ा देना, जिसके अर्थदण्ड शरीरदण्ड आदि कई भेद हैं । व्यायामविशेष, एक प्रकार की कसरत, जिसमें दोनों हाथ और पैरों के बल पर शरीर का सञ्चालन किया जाता है ।—पेल ( पु० ) पहलवान, कसरती जवान ।

डण्डवत् तद् ( पु० ) दण्डवत्, दण्ड के समान समस्त अङ्गों से गिरना, भूमिष्ट होकर प्रणाम करना, अष्टाङ्ग प्रणाम करना ।

डण्डवार ( पु० ) जैची दीवार, चारदीवारी ।

डण्डवी ( पु० ) कद, दण्ड देने वाला, दण्डित ।

डण्डा तद् ( पु० ) दण्ड, दण्डा, बट्ट, लाठी, सेटा, पताका की लकड़ी, कण्डे की लकड़ी ।

डण्डाडोली दे० ( स्त्री० ) घालकों का एक खेल ।

डिण्डिया दे० ( पु० ) की का घस विरोध, स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा, दुपट्टा, ओढ़नी, बाज़ार का कार उगाहने वाला ।

डगडी तद्० ( स्त्री० ) सुठिया, दस्ती, हथ्या, बेंट, कुल्हाड़ी, फरसा आदि अस्त्रों में लगाई हुई लकड़ी, पकड़ने की लकड़ी, नाब, फूल के नीचे का लम्बा पतला भाग, भूपान, विज्ञेन्द्रिय । काष्ठविरोध, जो तराजू के पलड़ों में लगाया जाता है । ( पु० ) दण्डी, सैन्यासी जो दण्ड धारण करते हैं । पगदण्डी, बिन्द, परबिन्द, गुप्त मार्ग, चोर गली । [ रेखा, सीधी खड़ी या लीक ।

डगडीर, डंडीर दे० ( स्त्री० ) सीधी धारी, सीधी डगडीर तद्० ( पु० ) दण्डवत्, प्रणाम ।

डपटना दे० ( कि० ) डाँटना, दशाना, कड़े शब्दों से तिरस्कार करना, सुधारने के लिये डाँट बताना ।

डपोरशङ्ख तद्० ( पु० ) जो कड़े बहुत पर दे या करे कुछ भी नहीं । देखने में चतुर किन्तु वास्तव में कम समझ बड़े डोल डौल का मूर्ख ।

डप्पू दे० ( वि० ) बहुत मोटा, बहुत बड़ा ।

डफ दे० ( पु० ) बड़ी खंजरी, एक प्रकार के बाजे का नाम, मज में इसी पर होखी गाते हैं ।

डफला दे० ( पु० ) डफ नाम का एक प्रकार का बाजा ।

डफली दे० ( स्त्री० ) खंजरी । [ मारना, जोर से रोना ।

डफारना दे० ( कि० ) डूक मारना, चील मारना, दहाड़

डफाली दे० ( पु० ) डफ बनाने वाला, खंजरी पर चमड़ा बढ़ाने वाला, डफ बाजा कर भीख माँगने वाला, एक प्रकार का मुसलमान फकीर ।

डव दे० ( पु० ) बल, सामर्थ्य, शक्ति, पराक्रम, जेब, पैला, पतला चमड़ा जो कुप्पा आदि बनाने के काम आता है ।

डवकना दे० ( कि० ) चमस्कार होना, शोभित होना, जगमगाना, चमकना, टीस मारना, लँगड़ा कर चलना । [ मोटा, स्थूल ।

डवका दे० ( पु० ) ताज़ा, कुँए का टटका जल । ( वि० )

डवगर दे० ( पु० ) चर्मकार, मोची, चमड़े को साफ करने वाला, चमड़ा कमाने वाला ।

डवडवाना दे० ( कि० ) आँखें भर आना, आँखें आना, कण्ट रुक जाना, अधिक हर्ष या शोक से शब्द न निकलना ।

डवरा दे० ( पु० ) सीली भूमि, पञ्चिल भूमि, लिवाड़ छपरी, गन्दे जल का छोटा तालाब, गढ़वा, गँवई का वह छोटा तालाब, जिसमें मैस या सुघर बैठ कर पानी गन्दा कर देते हैं ।

डवरिया दे० ( वि० ) छतरहत्या, बाँवा हत्या, बाँवे हाथ से काम करने वाला ।

डवरी दे० ( स्त्री० ) छोटा ताल ।

डवस दे० ( पु० ) रषण, चिन्ता, व्यवस्था, तैयारी, जलयात्रा के उपयुक्त वस्तुओं का भाण्डार, समुद्र यात्रा के उपयोगी वस्तु ।

डवा दे० ( पु० ) “ डक्या ” पानी का गढ़ा ।

डवाडोल ( गु० ) चञ्चल, अस्थिर ।

डविया दे० ( स्त्री० ) छोटा डकवा ।

डवाना दे० ( कि० ) हुवाना, बोरना, जब मैं गोता खिचाना, उगाड़ना, नष्ट भ्रष्ट करना, बिगाड़ना ।

डव्वा दे० ( पु० ) बड़ी डियिया, खन्दा, कुप्पा, रेल-गाड़ी का खाना, धातु या काष्ठ का पात्र विरोध ।

डव्वा, डव्वा दे० ( पु० ) छोटे या पीतल का कर्तुला जिससे बड़े कार्यों में ढाल आदि परोसी जाती है ।

डमकना ( कि० ) जल में डूबना उतराना । [ मटर ।

डमका ( पु० ) कुँए का ताज़ा पानी सुना हुआ

डमकौरी ( स्त्री० ) शरद की ढाल की बरी ।

डमर तद्० ( पु० ) डर से भागना, भय के कारण भागना, राजा को अपने समान अन्य राजा का भय, अस्त्रकलह । [ दई, गठिया ।

डमरुष्ठा दे० ( पु० ) घुटने की गाँठ का रोग, जोड़ों का डमरु तद्० ( पु० ) बाघ विरोध, शिव जी के बजाने का बाजा, कापालिक योगियों के बजाने का बाजा, चमरकार, आरच्य, अद्भुत ।—मध्य ( पु० ) दो द्वीपों को आपस में जोड़ने वाला एक प्रकार का भूमि खण्ड विरोध वह भूमि जिससे दो टापू आपस में मिले रहते हैं ।—यंत्र ( पु० ) दयाई तैयार करने का एक यंत्र । [ का बाजा ।

डमर दे० ( पु० ) खंजरी के आकार का एक प्रकार डमर तद्० ( पु० ) [ डि + अनट् ] नमोऽगमन, आकाशमार्ग में चलना, उड़ना, उड़ कर चलना, पक्षी की गति । [ लोफ दक्षयत ।

डम तद्० ( पु० ) भय, त्रास, भीति, शङ्का, घातक,

डरना तद् ( कि० ) भय करना, घास पाना, शङ्का करना ।  
 डरपति ( कि० ) डरती है, भयभीत होती है ।  
 डरपना तद् ( कि० ) भय खाना, डरना, घबरा होना ।  
 डरपाना दे० ( कि० ) डराना, भयभीत करना ।  
 डरपे दे० ( कि० ) डरे, डर गये, भयभीत हुए ।  
 डरपोंक तद् ( वि० ) डरने वाला, भीरु, डरपोक ।  
 डरपोंकना तद् ( वि० ) डरनेवाला, भीरु, डरपोक ।  
 डरवैया तद् ( वि० ) भयभीत, भीरु, डरपोक ।  
 डराऊ तद् ( वि० ) डराने वाला, भयङ्कर, भयानक, भयावहा ।  
 डराऊ तद् ( वि० ) डरने वाला, भीरु, भीत ।  
 डराना तद् ( कि० ) भय देना, डरवाना, भय दिखाना, भीत करना ।  
 डरालू तद् ( वि० ) भीरु, डरपोक ।  
 डरावना तद् ( वि० ) भयदायक, भयानक, भयङ्कर ।  
 डरावा ( पु० ) विधियों को डराने की एक प्रक्रिया ।  
 डरी दे० ( स्त्री० ) डली, छोटे छोटे टुकड़े, डर गई ।  
 डरीला दे० ( वि० ) डारवाला, टहनीदार ।  
 डरीना दे० ( वि० ) डराऊ, डरावना, भयानक ।  
 डल दे० ( पु० ) टुकड़ा, खण्ड । तद् ( स्त्री० ) झील ।  
 डलवा दे० ( पु० ) टोकरा, दौरा ।  
 डलवाना दे० ( कि० ) झोंकवाना, गिरवाना, भरवाना, फेंकवाना । [ खण्ड ।  
 डला दे० ( पु० ) डलवा, टोकरा, बड़ा टुकड़ा, टोंका, डलिया दे० ( स्त्री० ) छोटी टोकरा, बांस की बनी फूल रखने की छोटी टोकरा ।  
 डली ( स्त्री० ) टुकड़ा, छोटा टुकड़ा, टुक, खण्ड ।  
 डस दे० ( स्त्री० ) सराजू की रस्ती, जिससे पलड़े डंडी में बांधे जाते हैं । सूत, सूत की डोरी, मदिरा विशेष, छीर । ( कि० ) काट, छेद ।  
 डसन ( स्त्री० ) दंसन, काटन ।  
 डसना दे० ( कि० ) डङ्क मारना, छेदना, काटना, पतली धार वाली चीज से काटना, साँप का काटना, डङ्कियाना, घुमाना, गड़ाना ।  
 डसाना ( कि० ) कंघाना, बिछाना, बिस्तार बिछाना ।  
 डसि दे० ( कि० ) डस कर, डस के, काट के ।  
 डसौना दे० ( पु० ) डसाने की वस्तु, बिछौना, बिस्तर, बिस्तरा ।

डहक दे० ( पु० ) गुफा, कन्दरा, छोद, छिपने की जगह ।  
 डहकना दे० ( कि० ) डौंकना; लाजब करना, बिल-खना, चिराया से डुःखित होना, बिगड़ना, धूल करना, छितराना ।  
 डहकाना दे० ( कि० ) खोना, -नष्ट करना, निराश करना, निराश लौटना, बिगाड़ना, धोखा देना, ठगना, सताना ।  
 डहकि दे० ( कि० ) डहक के, ठग कर, धोखे में आकर ।  
 डहडहा दे० ( वि० ) डहलहा, हरा भरा, ताज़ा, प्रफुल्ल, खिल्ला हुआ, प्रफुल्लित ।  
 डहडहाना दे० ( कि० ) खिलना, विकसना, विकसित होना, खिल जाना, प्रफुल्ल होना, हरा भरा होना ।  
 डहन तद् ( पु० ) डैना, पर, पंख । ( स्त्री० ) जलन, दाह ।  
 डहर दे० ( स्त्री० ) डगर, मार्ग, रास्ता, राह, पथ, कुल्ला, मट्टी का बड़ा बरतन जिसमें भ्रमना भरा जाता है ।  
 डहरिया दे० ( स्त्री० ) डहर, डगर, मार्ग ।  
 डहू ( पु० ) बड़हर का पेड़ तथा फल ।  
 डाँक दे० ( पु० ) चाँदी या ताँबे का असन्त पतला पत्तर, ( स्त्री० ) बमन, बजरी ।  
 डाँकना दे० ( कि० ) बाँधना, फाँदना, बमन करना ।  
 डाँग दे० ( स्त्री० ) पर्वत के ऊपर की भूमि, शिखर, जंगल, वन ( पु० ) कूद, फलाँग ।  
 डाँगर दे० ( पु० ) पशु, बलहीन पशु, दुर्बल पशु, मूली की पत्ती ( वि० ) मूर्ख, दुबला ।  
 डाँट ( स्त्री० ) अधीनता, अधिकार, दखल ।  
 डाँट डपट दे० ( स्त्री० ) तिरस्कार, अपराधी को सावधान करने के लिये तिरस्कार । [ करना ।  
 डाँटना दे० ( कि० ) ताड़ना, दधाना, घुड़कना, भस्मन ।  
 डाँटल दे० ( पु० ) डण्डी, डण्डी, डाँटी ।  
 डाँटी दे० ( स्त्री० ) डण्डा, डाली, डाँट, डण्डी ।  
 डाँड दे० ( पु० ) दण्ड, बड़ला, अपराधी को सज़ा, [ चामूण्ड, चिम्बण्ड, अर्धण्ड, शरीरदण्ड, समाज दण्ड आदि इसके भेद हैं । ] नाव चलाने वाली बाँस की बल्ली, डाँडा, रीढ़, पीठ की हड्डी, जकड़ी, लाठी, लट्ट ।—भरना ( कि० ) लुभाना देना, दण्ड देना ।—लेना ( कि० ) लुभाना, चसल करना ।  
 डाँडना दे० ( कि० ) बड़ला लेना, सज़ा करना, दण्ड देना, शास्ति देना ।

डांडा दे० ( पु० ) मेंड़, सिवाना, सीमा, किसी देश  
ग्राम आदि की अवधि, खेत की सीमा ।

डांडी दे० ( स्त्री० ) कर्णधार, खेवैया, नाथ चहाने  
वाला, माँकी ।

डाँदरी तद्० ( स्त्री० ) धुनी हुई मटर की फली ।

डामाडोल दे० ( पु० ) अनिश्चित, अव्यवस्थित, हृषर  
से वधर, अस्थिर ।

डाँवू दे० ( पु० ) दलदल में उत्पन्न होने वाला नरगट ।

डाँवरा तद्० ( पु० ) खट्वा, घेरा, पुत्र ।

डाँवरी तद्० ( स्त्री० ) लड़की, पेटी । [बड़ा न हो ।

डाँवर दे० ( पु० ) पाय का बच्चा, बच्चा ओ बहुत

डाँवाडोल दे० ( वि० ) धक्कल, विचलित, अस्थिर ।

डाँसे दे० ( पु० ) बड़ा मच्छड़, बड़ी मक्खली ।

डाहना तद्० ( स्त्री० ) चुड़ैल, राक्षसी, दोगहाई, कुरूप  
एवं कर्करा स्त्री ।

डाक दे० ( पु० ) घोड़े आदि के बदलने या विग्राम  
का स्थान, चौकी । ( स्त्री० ) चिट्ठी पत्री आदि को

शीघ्र भेजने का प्रबन्ध, सततधमन उग्र गन्ध,  
जहाज का स्टेशन, नीलाम की बोली—झाना,

घर ( पु० ) पत्रादि के आने जाने का दफ्तर ।—  
गाड़ी ( स्त्री० ) सबसे तेज चलने वाली गाड़ी ।—

वंगला दे० ( पु० ) वह इमारत जो सरकार की ओर  
से यात्रियों के ठहरने के बनी हो ।—महसूल

दे० ( पु० ) वह व्यय जो डाँक द्वारा किसी माक  
को भेजने या मँगाने में लगे ।—मुंशी दे० ( पु० )

डाँकघर का नाम, झार्क, पोस्टमास्टर ।—व्यय दे०  
( पु० ) डाँक महसूल । [देना, बलघन करना ।

डाकना दे० ( क्रि० ) धमन करना, धोकना, उग्र गन्ध  
डाकर ( पु० ) तालाबों की सूखी मिट्टी ।

डाका दे० ( पु० ) बलात्कार से अपहरण, ज़बरदस्ती  
छीन लेना, चोरों का घावा, छाप, आक्रमण ।—

जनी ( स्त्री० ) लूटना, डाका मार कर सम्पत्ति छीन  
लेना ।—पड़ना ( क्रि० ) लुट जान, डाके से चोरी

हो जाना, बलात्कार से अपहरण हो जाना, छाप  
पड़ना ।—डालना ( क्रि० ) रास्ते चलते हुए का

माल बलात्कार से छीन लेना, बलपूर्वक आक्रमण  
करना ।—देना ( क्रि० ) लूटना, छीनना, हस्तगत

कर लेना ।

डाकिन, डाकिनी दे० ( स्त्री० ) डाहन, चुड़ैल, प्रेतिनी,  
जन्तर मन्तर जानने वाली स्त्री, योगिनी ।

डाकिया दे० ( पु० ) डाकू, डाका डालने वाला, डाक  
ले जाने वाला पिपून, पोस्टमैन, चिट्ठीदाता ।

डाकी दे० ( वि० ) छाज वेद, बहुत खाने वाला,  
शौचरिक्त, शक्ति से अधिक काम करने वाला ।

( स्त्री० ) धमन, कै ।

डाकू दे० ( पु० ) डकैत, बलात्कार पूर्वक अपहरण  
करने वाला, दस्यु, साहसी, घटमार, लुटेरा ।

डागा ( पु० ) नगाड़ा बजाने की लकड़ी ।

डाट दे० ( स्त्री० ) धुड़की, धमकी, तिरस्कार, भर्त्सन,  
अनादरसूचक शब्दों का प्रयोग, फिट्की, डपट,

टेक, रोक, काग, खगाव की रोक ।

डाटना दे० ( क्रि० ) धमकाना, धुड़काना, फिट्कना,  
डपटना, मुँह बन्द करना, रोक रखना, कस कर

खाना, बड़ी सज्जध से कपड़े पहनना ।

डाढ़ दे० ( स्त्री० ) पिछले बड़े दाँत जिनसे भोजन पीसा  
और चबाया जाता है ।

डाढ़ा तद्० ( स्त्री० ) दावानल, घाग ।

डाढ़ी दे० ( स्त्री० ) दाढ़ी, दाढ़ का दूसरा भाग,  
हुड़ी, गालों पर के बाल । [कठिन ।

डाढ़े दे० ( क्रि० ) जलाये, भस्म किये । ( पु० ) लपक  
डाव दे० ( पु० ) नारियल का कच्चा फल, परतला,

जिसमें छलवार लटकाई जाती है । डाम, धर्म,  
कुरा ।

डाबर दे० ( पु० ) पात्र विशेष जिसमें हाथ धोया  
जाता है, चिलमची, गढ़वा, गोल तालाब । ( वि० )

गन्दला, मैला, कलुषित, फावर ।

डाम तद्० ( पु० ) कुरा, कच्चा नारियल ।

डामर तद्० ( पु० ) शिवोक्त शास्त्रविशेष, तन्त्रभेद,  
समान राष्ट्र का भय, परचक्रभय, पूना, राज, सारंग ।

डामल दे० ( स्त्री० ) जनममियाद, जनम कैद ।

डामाडोल दे० ( वि० ) अस्थिर, चञ्चल ।

डायन दे० ( स्त्री० ) डाकिन, चुड़ैल ।

डार, डाल दे० ( स्त्री० ) शाखा, डाल, डाली । ( क्रि० )

फेंक कर, गिराकर—झी डार ( वा० ) मुँड का  
मुँड, दब का दब, पंक्ति की पंक्ति, टांजी, जत्या,  
समूह, शाखा की शाखा ।

—पाव ( पु० ) एक पाव और आधा पाव, छः छटाक।—पौडा ( पु० ) घाट, जो डेढ़ पाव का हो, डेढ़ पाव की तौल।

डेना दे० ( पु० ) विदेश का वास-स्थान, कुछ दिनों रहने का स्थान, घर, तम्बू, पटमण्डप, कपड़े का मकान, नाचने गाने वालों की मण्डली। ( वि० ) धारा, ( डेना हाथ )। [का स्थान।

डेरा दे० ( पु० ) खेमा, तंबू, ठहरने की जगह, रहने डेराहिं ( फि० ) डराते हैं, भयभीत होते हैं।

डेल, डेला दे० ( पु० ) डेला, लोढ़ा, डुकड़ा। दे० ( खी० ) रबी की फसल के लिये जोत कर छोड़ी हुई जमीन। तव० ( पु० ) बणलू पची।

डेवढ़ दे० ( पु० ) कम, सिलसिला, डेवड़ा।

डेवड़ा दे० ( वि० ) डेढ़गुना, एक और आधा गुना, सादृगुणित। [द्वार, चौखट, डेढ़ गुनी।

डेवढ़ी दे० ( खी० ) दरवाज़ा, सदर दरवाज़ा, फाटक, डैना तद० ( पु० ) उड़ने का साधन, पड़, पड़, पाँख, विद्वियों के पर। दे० ( पु० ) डाल, शाखा, टहनी।

डोई दे० ( खी० ) काठ की मूठ की कलछी।

डोंगर दे० ( पु० ) डूंगर, टीला, पहाड़ी।

डोंगा दे० ( पु० ) नाव विशेष, छोटी नाव।

डोंगी दे० ( खी० ) घटि छोटी नाव, कलछी।

डोंड़ी दे० ( खी० ) दिंडोरा, हुगहुगी, मनादी।—फिराना ( फि० ) एक प्रकार के बाने के सहारे से किसी बात को प्रकाशित करना, राजकीय आज्ञा को प्रचारित करना।

डोंरा दे० ( पु० ) सर्पविशेष, दो मुँहा सर्प।

डोंकना दे० ( फि० ) थोकना, धमन करना, उलटी करना, ड्यकाई आना।

डोकरा दे० ( पु० ) वृद्ध, जरा, जीर्ण, बुढ़ा, बूढ़ा।

डोकरी ( खी० ) वृद्धा, बुढ़िया, डुकरिया।

डोव दे० ( पु० ) हथ, हथकी, बुढ़की, गोता, रङ्गना।

—देना ( फि० ) रङ्ग देना, रङ्ग बढाना, गोता देना।

डोवा दे० ( पु० ) गोता, डुयकी।

डोम, डोमड़ा दे० ( पु० ) जातिविशेष, अन्त्यज जाति, जो सूप आदि बनाने का रोज़गार करते हैं।

डोमनी या डोमिन ( खी० ) डोम की खी 'मुस-बतान जाति के लोग जिनकी स्त्रियाँ केवल स्त्रियों ही के सामने गाती और नाचती हैं और मर्द गर्वये और बजानिये होते हैं। ( श्रीघर )

डोर दे० ( खी० ) रस्सी, कुर्प से पानी निकालने की रस्सी, डोरा, तागा, सूत।

डोरक तव० ( पु० ) डोर, सूत, सूत्र, गण्डा, रसासूत्र।

डोरा दे० ( पु० ) सूत्र, सूत, सोने का सूत, धागा, लीक, लकीर, रेखा, तलवार की धार, आँख के बाल डोरे, आँखों में जो बाल रङ्ग की लकीर सी होती है।

डोरियाये दे० ( फि० ) रस्सी में बांध कर पकड़े।

डोरिया दे० ( पु० ) एक प्रकार का कपड़ा, एक प्रकार का बगला, जुलाहा का तागा उठाने वाला लड़का, एक नीच जाति जो रजवाड़ों में शिकारी कुत्ते रखती है। [की रस्सी।

डोरी दे० ( खी० ) सुतरी, रस्सी, डोर, पानी निकालने डोला दे० ( पु० ) कुर्प से पानी निकालने का पात्र जो लोहा या चमड़े का बनना है, पकना, दिंडोरा।

डोलची दे० ( खी० ) छोटा डोल, कपड़े का बना छोटा डोल।

डोल डाल दे० ( पु० ) पालाने जाना, चल फिर।

डोलत दे० ( फि० ) चलता है, फिरता है, हिलता है।

डोलना दे० ( फि० ) चोलना, हिलना, हलना, फिरना, भटकना।

डोला दे० ( पु० ) एक प्रकार की पालकी जिस पर स्त्रियाँ चढ़ती हैं।—देना। ( फि० ) सामान्य कुल की खी का विवाह के लिये बचकुल के घराने में जाना, अविवाहिता लड़की को विवाहार्थ भेजना, शुद्ध जातियों का अपनी विधवा पुत्री को दूसरे पति के यहाँ भेजना, लड़की न्याह देना, विवाहार्थ अपनी लड़की या बहिन आदि राजा को समर्पित करना, मुसलमानी बादशाहत के समय में राजपूताने के कतिपय राजाओं ने अपनी बहिन और बेटियों का दोला मुसलमानों को दिया था। इस विवाह रूपी यज्ञ के श्राविक, आमेर के राजा भगवानदास और मानसिंह ये।

ढोली दे० ( स्त्री० ) पालकी विशेष, जो स्त्रियों के चढ़ने के लिये है, चौपान्ना, स्त्रियों की पालकी । ( कि० ) गई, चली गई, दहल गई । [ गरगज ।  
 डौंगा दे० ( पु० ) मझ, मचान, ऊँचा आसन,  
 डौड़ी दे० ( स्त्री० ) डौड़ी, मनादी, दिंदोरा ।  
 डौढ़ी दे० ( स्त्री० ) डेवड़ी, द्वार, दरवाजा, उमारा ।  
 ( गु० ) डेढ़गुना, अचस्वर से गाना ।

डौल दे० ( पु० ) ढाँचा, प्रकार, रीति, ढङ्ग, ढप, व्योत, तरह, भाँति ।—डाल ( पु० ) दशा, हावत, प्रयत्न, चेष्टा, बपाय ।  
 ड्यौढ़ा दे० ( वि० ) डेवड़ा, डेढ़गुना ।  
 ड्यौढ़ी दे० ( स्त्री० ) डेवड़ी, डौढ़ी, द्वार, दरवाजा, फाटक ।—द्वार या चान ( पु० ) द्वार की रक्षा करने वाला, दरबान, द्वारपाल, प्रतिहार, द्वारपाक ।

## ढ

ढ ध्वजन का चौदहवाँ वर्ष है, यह भी मूर्द्धन्य है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है ।  
 ढ तत्त्वं ( पु० ) बड़ा ढोल, ध्वनि, नाद, गम्भीर शब्द, कुत्ता, कुत्ते की पूँछ, साँप ।  
 ढईदेना दे० ( कि० ) प्रायेपवेशन से कुछ पाना, घरना देकर न्येता पाना, किसी प्रकार का भय दिखा कर अपना कार्य सिद्ध करना, घरना देना ।  
 ढक दे० ( पु० ) तौल विशेष, तौलने का मग, पट-खरा, बाट, पत्थर या लोहे का गोला जिससे तौला जाता है । [ देना, धिपा देना ।  
 ढकना दे० ( पु० ) ढरना, ढकन, चिपनी ( कि० ) ढक ढकनी दे० ( स्त्री० ) छोटा ढकना, ढकने के लिये छोटी वस्तु । [ धका, टकर ।  
 ढका तद् ( पु० ) तिन सेरा बाँट, घाट, बड़ा ढोल, ढकार तद् ( पु० ) ढ अक्षर, ढ वर्ष, ढ वर्ग का चौथा वर्ष, ध्वजन का चौदहवाँ अक्षर । ( स्त्री० ) ढकार, बद्गार, एक प्रकार का शब्द जो भोजन के बाद वृत्ति की सूचना करता है, उर्द्धवासु ।  
 ढकेल दे० ( पु० ) धक्का, डेल, रेल पेज ।  
 ढकेलना ( कि० ) डेलना, धक्का देना, रेलना, पेलना ।  
 ढकेला ढकेली दे० ( स्त्री० ) डेलमडेली, रेल पेली ।  
 ढकेलू दे० ( पु० ) धक्का देने वाला, डेलने वाला, ढकेलने वाला, ढटाने वाला, भगाने वाला ।  
 ढकोसना दे० ( कि० ) एक साँस में पीना, ज्यादा पीना ।  
 ढकोसला दे० ( पु० ) आडम्बर, पाछगड, मिथ्याज्ञान, कपट व्यवहार ।  
 ढकन दे० ( पु० ) ढकना, ढपना, लुकावन, धिपावन ।

ढका तद् ( पु० ) [ ढका + या ] वाद्य विशेष, बड़ा ढोल, नगारा, भेरी, दुन्दुभी, डमरू ।—री ( स्त्री० ) देवी विशेष, दुर्गा का एक नाम ।  
 ढगण तद् ( पु० ) एक मासिक गण ।  
 ढङ्ग दे० ( पु० ) रीति, प्रकार, प्रथा, लक्षण, चाल-चलन, रहन सहन । [ प्रकार की लगाम ।  
 ढटिया दे० ( स्त्री० ) ढट्टी, बागबोर, घोड़े की एक ढट्टीगड़ ( पु० ) बड़े डील डील का, सुखड़ा, मोटा ताजा ।  
 ढट्टा ( पु० ) डंडल; उधार, जुन्हरी आदि का सूखा डंडल, मुरेठा का एक छोर जो मुँह और दाढ़ी पर बाँधा जाता है ।  
 ढट्टी ( स्त्री० ) डाढ़ी बाँधने का कपड़ा ।  
 ढाट दे० ( पु० ) ठेपी, डेंडी, रोक, घनरी आदि अश्वों की डंडी । [ जङ्गली कौआ ।  
 ढडकौआ दे० ( पु० ) एक प्रकार का भयानक कौआ, ढडवा दे० ( पु० ) पत्नी-विशेष, एक प्रकार की बिड़िया जो मैने की जाति की होती है ।  
 ढडढा दे० ( वि० ) बड़ा साथ ही घेरेगा । ( पु० ) ढाँचा, आडम्बर ।  
 ढुँड्ढो दे० ( स्त्री० ) बुद्धिया, चरखी, एक पत्नी ।  
 ढँदोरना दे० ( कि० ) खोचना, हँदना, पता लगाना, जल में भूखी हुई वस्तु को हँदना ।  
 ढँदोरा दे० ( पु० ) दिंदोरा, डौढ़ी, हुगहुगी, पाजे के साथ राजाज्ञा सुनाना ।  
 ढँदोरिया दे० ( पु० ) ढँदोरा केले वाला ।  
 ढनमनाना दे० ( कि० ) गिर पड़ना, फिसल जाना, चूक जाना, लुढ़कना । [ फिसल गई ।  
 ढनमनी दे० ( स्त्री० ) हुलकी, लुढ़क गई, गिर पड़ी,



दपदपाना दे० ( कि० ) डोल घजाना, डोलक पीटना,  
विना ताल के डोलक घजाना ।

दपना दे० ( कि० ) ढकना, छिपना, लुकना, अपने को  
छिपाना । ( पु० ) ढकना, ढकने की वस्तु ।

दपला दे० ( पु० ) ढफली, वाद्य विशेष ।

दपली दे० ( स्त्री० ) ढफली ।

दप्पू दे० ( वि० ) बहुत बड़ा ।

ढफ दे० ( पु० ) बड़ी खंजरी ।

ढव दे० ( पु० ) डौल, आकार, आकृति, डीलडौल,  
गठन, गठन, बनावट, प्रकल, तरकीब ।

ढवहो दे० ( वि० ) कलुष, आविल, गँदला, मैला,  
मलिन, मिट्टी मिला हुआ जल । [रूपवाच ।

ढवीला दे० ( वि० ) ढवदार, सुडौल, सजीला,

ढवुआ दे० ( पु० ) ताने का सिक्का, वह छप्पर जो  
खेतों के मधानों पर छाया जाता है ।

ढमढम दे० ( पु० ) डोल व नगाड़े का शब्द ।

ढमलाना दे० ( कि० ) लुढ़काना, गिरना, फिसलाना ।

ढयना ( कि० ) ध्वस्त होना, नष्ट होना ।

ढरक दे० ( स्त्री० ) ढाल, लुढ़काव, नीचे की ओर  
झुकी हुई भूमि, ढलक, बहाव, ढरकन ।

ढरकन दे० ( स्त्री० ) देखो ढरक ।

ढरकना ( कि० ) गिर कर बहना, ढलना ।

ढरनि दे० ( स्त्री० ) पतन, गति, झुकाव, दयालुता,  
सहन दयालुता । [चालचलन ।

ढरी दे० ( पु० ) पथ, रास्ता, शैली, ढंग, युक्ति,

ढरी दे० ( स्त्री० ) ढली, लुढ़की, पिघली, ओर आ  
गई, प्रसन्न हुई, अनुरक्त हुई । [फिसलन ।

ढलक दे० ( स्त्री० ) ढरक, बहाव, ढाल, लुढ़कन,

ढलकना दे० ( कि० ) ढरक कर जाना, पानी आदि  
द्रव पदार्थों का गिर जाना, लुढ़कना, पड़ना,  
गिरना ।

ढलका दे० ( पु० ) आँख का वह रोग जिससे आँख  
से सदा पानी बहा करता है । ( पु० ) बुन्धना,  
चौधना, मुका, छलका ।

ढलकाना दे० ( कि० ) गिराना, लुढ़काना, औँचा  
कर गिरना, उलट कर गिरना, औँचा करना ।

ढलना दे० ( कि० ) गिरना, फिसलना, धीनना, धीत  
जाना, ध्वसीत होना, झलकना, डगरना, झुकना,

भर जाना, साँचे में पिघले धातुओं को भरना,  
अनुकूल होना, रीकना, प्रसन्न होना ।

ढलती फिरती छाँव दे० ( वा० ) सांसारिक पदार्थों  
का परिवर्तन, पदार्थों की अनित्यता, फेरबदल,  
अस्थिरता ।

ढलमलाना दे० ( कि० ) चञ्चल होना, उगमगमना,  
अस्थिर होना, कपिना, कम्पित होना ।

ढलाना दे० ( कि० ) साँचे से घनाना, साँचे  
ढलवाना । [ढाला हुआ ।

ढलुआ दे० ( वि० ) उतार, नीचा, लुढ़काव, ढाल ।

ढलैत दे० ( पु० ) वीर, प्रस्त्रधारी, योद्धा, ढाल सज्जन  
बांधने वाला, साहसी योद्धा । [तुड़वाना ।

ढवाना दे० ( कि० ) ढहाना, गिरवाना, पड़वाना,

ढहना दे० ( कि० ) गिरना, पड़ना, गिर पड़ना,  
पतित होना, टूट जाना, टूट कर गिर पड़ना ।

ढहाए दे० ( कि० ) गिराए, गिरा दिए, तुड़वाए ।

ढहावहि दे० ( कि० ) गिरवाते हैं, तुड़वाते हैं,  
उलटवाते हैं । [आधा और दुगुना, २५

ढाई वि० ( पु० ) अड़ाई, दो और आधा, साँदे

ढाँकना दे० ( कि० ) छिपाना, ढापना, लुकाना ।

ढाँकी दे० ( कि० ) तोपी, ढाँक पी, मूंदी, छिपाई

ढाँग दे० ( स्त्री० ) कन्डला, शिखर, शृंग, पहाड़  
चोटी, पर्वत का ऊपरी भाग ।

ढाँचा दे० ( पु० ) ठाठ, साँचा, घर, झील, बाँध  
जाने वाले का प्रथम रूपसङ्गठन, प्रारंभिक  
अवधनी वस्तु, ढाट का घेरा । [छुपा

ढापना दे० ( कि० ) ढाँकना, छिपाना, लुका

ढाँसना दे० ( कि० ) दोष देना, कलङ्क लगाना,  
अपवाद करना, सूखी खाँसी खाँसना ।

ढाँसा दे० ( पु० ) दोष, कलङ्क, अपवाद,  
की ठसक ।

ढाक दे० ( स्त्री० ) पलाश वृक्ष, प्रभाव, तेज, प्र  
एक प्रकार का बाजा जो साँप के विष उ  
के काम आता है ।—के तीन पात ( व  
सदा बुरी स्थिति में, कभी भरा पूरा नहीं ।

ढाटा दे० ( पु० ) एक प्रकार का कपड़ा, जो  
बाँधन के काम में आता है । एक प्रका

बड़ी पगड़ी जो राजपूताने के इन्धिय बाँधते हैं

ढाठो दे० ( स्त्री० ) घोड़े का मुँह बाँधने की रस्सी, कसन, मुँहबन्धना, घोड़े के मुँह पर बाँधा जाने वाला फँदा ।

ढाड़ दे० ( स्त्री० ) चीख, चिंगाड़ ।

ढाड़स तद्० ( पु० ) दाढ्य, दढ़ता, स्थिरता, मानसिक दढ़ता, भरोसा, साहस, धीरता, धैर्य ।  
—देना ( कि० ) भरोसा देना, धैर्य देना ।  
—बँधाना ( कि० ) धैर्य रखने का उपदेश देना, साहस देना, धीरज देना, दढ़ता देना, दढ़ होने के लिये उपदेश देना, शान्ति धराना ।

ढाड़िन दे० ( स्त्री० ) ढाकी की स्त्री ।

ढाड़ो दे० ( पु० ) जाति विशेष, माने बजाने का व्यवसाय करने वाली एक नीच जाति :—लौला ( स्त्री० ) एक खेल, भगवान् कृष्ण की बाजलीला का अभिनय ।

ढान दे० ( पु० ) घेरा, वेड़ा, बाड़ा, हाता ।

ढाना दे० ( कि० ) ढाहना, गिराना, उखाड़ना ।

ढावर दे० ( पु० ) गहरा, गँदला, मैला, मलिन ।

ढावा दे० ( पु० ) ओतारा, ओरी, बरण्डा, ओबती, वह वांसा जहाँ दाम लेकर रोटी खिलाई जाती है । [विशेष, उतार, पथ ।

ढार दे० ( स्त्री० ) प्रकार, भक्ति, भेद, भेव, कर्णभूषण,

ढारना दे० ( कि० ) डालना, उलटना, बाँधाना ।

ढारी दे० ( स्त्री० ) ढार, ढाल, ढलकाव, ढार दी, ढरका दी । [( स्त्री० ) फरी, फलक, चर्म ।

ढाल दे० ( पु० ) उतार, ढलाव, ढलाऊ, झुकाव,

ढालना दे० ( कि० ) साँचे में उतारना, बिगाड़ना, नीचे गिराना, किसी धातु को पिघला कर साँचे में उतारना, बहाना, शराव पीना, सस्ता बँचना, साना छोड़ना, चंदा उतारना ।

ढालना दे० ( वि० ) ढालू, उतराव, उतारू, लुढ़काव, ढला हुआ, साँचे से ढाल कर निकाला हुआ ।

ढालिया ( पु० ) ढाल कर बर्तन बनाने वाली एक जाति विशेष । [बड़ा, ढाला हुआ ।

ढालू दे० ( वि० ) उतार, बिगाड़, बिगाड़ने वाला ।

ढास ( पु० ) डाकू, विश्वासघातक :—ना ( कि० ) खासना । ( पु० ) तकिया, बढ़कन ।

ढाहति दे० ( कि० ) ढाहती है, गिराता है, नारा करता है । [कार ।

ढाहा दे० ( पु० ) नदी का किनारा, कार, ऊँचा

दिग दे० ( पु० ) समीप, पास, निकट, गगीच, किनारा, खोर ।

ढिठाई तद्० ( स्त्री० ) ढीठपन, गुस्ताखी, घृष्टता ।

ढिडिम दे० ( पु० ) टिटिहरी पक्षी, टिटिम ।

ढिँढोरा दे० ( पु० ) डुगडुगिया ।

ढिवका दे० ( पु० ) गुमदा, गिलटी, फोड़े का गड़ा ।

ढिवरी दे० ( स्त्री० ) वह झुच्छीदार डिविया जिसके ऊपर बचोर रख कर मट्टी के तेल से गीसनी करते हैं । साँचे की पेंदी, पेच की शोक, बाजद ।

ढिमढिमी दे० ( स्त्री० ) डमरू, खँजरी आदि वाजों का शब्द ।

ढिलाई दे० ( स्त्री० ) सुस्ती, आलस्य, शिथिलता ।

ढिल्लड़ दे० ( वि० ) आलसी, धकमंथ्य, सुस्त, शिथिल । [गुस्ताख ।

ढीठ तद्० ( वि० ) घृष्ट, चञ्चल, बेधड़क, निडर,

ढीठा तद्० ( पु० ) घृष्ट, मगरा ।

ढीढ़स दे० ( पु० ) ढिँडा, एक प्रकार का शाक ।

ढोल दे० ( स्त्री० ) आलस, असवधानी, अचेती, देरी, विलम्ब, कालघेप ।

ढोला दे० ( वि० ) जो तना या कसा न हो । गीला, मुक्त, छुटा हुआ, शिथिल, आलसी, असवधान, अचेत, मन्व । [मोचन, विलम्ब, कालघेप ।

ढोलाई दे० ( स्त्री० ) शिथिलता, छुटकारा, मुक्ति,

ढोहा दे० ( पु० ) ढीला, ढूँगर, पहाड़ ।

ढुकना दे० ( कि० ) धुमना, प्रवेश करना, भीतर जाना, मिला जाना, शामिल होना, झुकना, सिर झुकाना ।

ढुकी दे० ( स्त्री० ) ताक, पीछा करना, किसी के चरित्र का गुप्त अनुसन्धान करना ।

ढुनमुनिया ( स्त्री० ) बच्चों का एक खेल जिसमें बच्चे लुढ़कते हैं, कजली की एक दंग ।

ढुरकना ( कि० ) लुढ़कना, खिसकना । [की गति ।

ढुरना दे० ( कि० ) नखुरे से चलना, नाचना, कथंतर

ढुलना दे० ( कि० ) ढुरना, ढलना, लुढ़कना ।

ढुलवाना दे० ( कि० ) उठवाना, गठरी उठवाना, गिरवाना ।

दपदपाना दे० ( कि० ) ढोल बजाना, ढोलक पीटना,  
विना ताल के ढोलक बजाना ।

दपना दे० ( कि० ) ढरुना, छिपना, लुक्ना, अपने को  
छिपाना । ( पु० ) ढकना, ढकने की वस्तु ।

दपला दे० ( पु० ) ढफली, वाद्य विशेष ।

दपली दे० ( स्त्री० ) ढफली ।

दप्पू दे० ( वि० ) बहुत घड़ा ।

ढफ दे० ( पु० ) बड़ी खंजरी ।

ढव दे० ( पु० ) ढौल, आकार, आकृति, ढीलढील,  
गढ़न, गठन, बनावट, अकल, तरकीब ।

ढवहो दे० ( वि० ) कलुप, आविल, गँदला, मैला,  
मलिन, मिट्टी मिखा हुआ जल । [रूपवान् ।

ढवीला दे० ( वि० ) ढवदार, सुढौब, सजीला,

ढवुआ दे० ( पु० ) ताँबे का सिक्का, वह छप्पर जो  
खेतों के मधानों पर छाया जाता है ।

ढमढम दे० ( पु० ) ढोल व नगाड़े का शब्द ।

ढमलाना दे० ( कि० ) लुढ़काना, गिराना, फिसलाना ।

ढयना ( कि० ) ध्वस्त होना, नष्ट होना ।

ढरक दे० ( स्त्री० ) ढालू, लुढ़काव, नीचे की ओर  
झुकी हुई भूमि, ढलक, बहाव, ढरकन ।

ढरकन दे० ( स्त्री० ) देखो ढरक ।

ढरकना ( कि० ) गिर कर बहना, ढलना ।

ढरनि दे० ( स्त्री० ) पतन, गति, झुकाव, दयालुता,  
सहज दयालुता । [बालचलन ।

ढरी दे० ( पु० ) पथ, रास्ता, शैली, ढंग, युक्ति,

ढरी दे० ( स्त्री० ) ढली, लुढ़की, पिघली, ओर आ  
गई, प्रसन्न हुई, अनुरक्त हुई । [फिसलन ।

ढलक दे० ( स्त्री० ) ढरक, बहाव, ढालू, लुढ़कन,

ढलकना दे० ( कि० ) ढरक कर जाना, पानी आदि  
द्रव पदार्थों का गिर जाना, लुढ़कना, पड़ना,  
गिरना ।

ढलका दे० ( पु० ) आँख का वह रोग जिससे आँख  
से सदा पानी बहा करता है । ( पु० ) चुन्घना,  
चौंघना, झुका, झलका ।

ढलकाना दे० ( कि० ) गिराना, लुढ़काना, औंधा  
कर गिराना, उलट कर गिराना, चौंधा करना ।

ढलना दे० ( कि० ) गिरना, फिसलना, खीनना, चीत  
जाना, व्यतीत होना, झलकना, डगरना, झुकना,

भर जाना, साँचे में पिघले धातुओं को भरना,  
अनुकूल होना, रीकना, प्रसन्न होना ।

ढलती फिरती छाँव दे० ( वा० ) सांसारिक पदार्थों  
का परिवर्तन, पदार्थों की अनित्यता, फेरबदल,  
अस्थिरता ।

ढलमलाना दे० ( कि० ) चञ्चल होना, डगमगाना,  
अस्थिर होना, काँपना, कम्पित होना ।

ढलाना दे० ( कि० ) साँचे से बनाना, साँचे में  
ढलवाना । [ ढाळा हुआ ।

ढलुआ दे० ( वि० ) उतार, नीचा, लुढ़काव, ढालू ।

ढलौत दे० ( पु० ) धीर, अस्त्रधारी, योद्धा, ढालतखतार  
बांधने वाला, साहसी योद्धा । [ तुड़वाना ।

ढवाना दे० ( कि० ) ढहाना, गिरवाना, पड़वाना,

ढहना दे० ( कि० ) गिरना, पड़ना, गिर पड़ना,  
पतित होना, टूट जाना, टूट कर गिर पड़ना ।

ढहाप दे० ( कि० ) गिराप, गिरा दिये, तुड़वाप ।

ढहावहि दे० ( कि० ) गिरवाते हैं, तुड़वाते हैं,  
वज्रवाते हैं । [ आघा और दुगुना, २१

ढाई वि० ( पु० ) अड़ाई, दो और आधा, साढ़दण्ड,

ढाँकना दे० ( कि० ) छिपाना, ढापना, लुकाना ।

ढाँकी दे० ( कि० ) तोपी, ढाँक वी, सूदी, छिपाही ।

ढाँग दे० ( स्त्री० ) कन्धला, शिखर, शृङ्ग, पहाड़ की  
चाटी, पर्वत का ऊपरी भाग ।

ढाँचा दे० ( पु० ) ठाठ, साँचा, घर, ढौल, बनावे  
जाने वाले का प्रथम रूपसङ्गठन, प्रारूपनिर्माण,  
अधवनी वस्तु, खाट का घेरा । [छुपाना ।

ढापना दे० ( कि० ) ढाँकना, छिपाना, लुकाना,

ढाँसना दे० ( कि० ) दोष देना, कलङ्क लगाना,  
अपवाद करना, सूखी खाँसी खाँसना ।

ढाँसा दे० ( पु० ) दोष, कलङ्क, अपवाद, खाँसी  
की ठसक ।

ढाक दे० ( स्त्री० ) पलाश वृक्ष, प्रभाव, तेज, प्रताप,  
एक प्रकार का बाग़ा जो साँप के विष उतारने  
के काम आता है ।—के तीन पात ( वा० )

सदा बुरी स्थिति में, कभी भरा पूरा नहीं ।

ढाटा दे० ( पु० ) एक प्रकार का कपड़ा, जो बाड़ी  
बांधने के काम में आता है । एक प्रकार की

बड़ी पगड़ी जो राजपूताने के सन्निय बांधते हैं ।

ढोल दे० ( पु० ) बड़ा ढोलक ।  
 ढोलक दे० ( पु० ) छोटा ढोल ।  
 ढोलकिया दे० ( पु० ) ढोलक बजाने वाला, ढोलक  
 बजाने में निपुण । [ घाली मित्रिया बजाती हैं ।  
 ढोलकी दे० ( स्त्री० ) छोटी ढोल, ढोलक, जिसे गाने  
 ढोलन दे० ( पु० ) प्रियतम, रसिक, रसिया । [ होता है ।  
 ढोलना दे० ( पु० ) एक प्रकार का बाजा जो ढोल के समान  
 ढोला दे० ( पु० ) छोकरा, बालक, रामविशेष,  
 शङ्कर का एक प्राचीन प्रसिद्ध प्रेमी, ढोला मारू  
 की कथा प्रेमी समाज में प्रसिद्ध है । शायद इस  
 कथा की पुस्तक भी छप गई है । गाने वाली एक  
 जाति । एक प्रकार का कीड़ा, सीमा का चिन्ह,  
 जदाव, शरीर, पति, मूर्ख मनुष्य ।  
 ढोलिन, ढोलिना दे० ( स्त्री० ) ढोला जाति की, स्त्री,  
 इस जाति के लोग मारवाड़ में अधिकता से पाये  
 जाते हैं, इनका धन्धा गाना बजाना है ।

ढोलिया दे० ( पु० ) ढोल बजाने वाला, ढोलकिया,  
 सजा सभाया पलंग, बिछाया हुआ पलंग ।  
 ढोलो दे० ( पु० ) ढोल बजाने वाला, ढोलकिया,  
 जातिविशेष, ढोला । ( स्त्री० ) दो सौ पान की  
 चाटी, दो सौ पान की एक गहूँ ।  
 ढोलैत दे० ( पु० ) ढोल वाला, ढोल बजाने वाला,  
 ढोलकिया ।  
 ढौंचा दे० ( कि० ) साढ़े चार, साढ़े चार गुना अधिक,  
 साढ़े चार से गुणित, साढ़े चार का पहाड़ा ।  
 ढौकन तत्० ( पु० ) [ ढौक + अनट् ] पूँसा, डाकौच,  
 डाली, नजर, किसी प्रकार का लोभ दिखाकर अपने  
 मतलब का काम कराने का उपाय ।  
 ढौरी दे० ( स्त्री० ) ताप, दाह, दहक, चोंप, रट, धुन,  
 जगना ।  
 ढौसना ( कि० ) हथं प्रकट करने के लिये अभ्यक्त ध्वनि  
 विशेष ।

## ण

ण व्यञ्जन का पन्द्रहवाँ वर्ण, यह भी मूर्द्धन्य है ।  
 ण तत्० ( पु० ) विन्दु, रेव, भूषण, निगुंण, गुणरहित,  
 निराप, ज्ञान, बोध, बुद्धि, हृदय, शिव, दान,

अन्न, वषाव, विद्वान्, जलस्थान, निर्बाण, त्रिगुणा-  
 कार । ( वि० ) गुणशून्य ।

णगण तत्० ( पु० ) एकमात्रिकगण विशेष ।

## त

त व्यञ्जन का सोलहवाँ वर्ण, यह दृग्य कहा जाता है,  
 क्योंकि इसके उच्चारण का स्थान दन्त है ।  
 त तत्० ( पु० ) चीर, अमृतपुच्छ, गोद, भलेच्छ, गर्भ,  
 शठ, सिवालपुच्छ, वृच, रथ, सुमत, बौद्ध, वेदाद,  
 कुटिल, तीव्र, तैरना । ( स्त्री० ) पुण्य, तरुण ।  
 तत्प्रल्लुक् ( पु० ) सम्बन्ध, रिश्ता, लगाव ।—  
 ( पु० ) जमींदार का समूचा भाग ।—दार  
 ( पु० ) जमींदार ।  
 तत्प्रस्तुय ( पु० ) कट्टरपन ।  
 तहसा ( पु० ) तैसा, जैसा, वैसा ।  
 तई दे० ( अ० ) तक, पर्यन्त, अवधि, सीमा, जिये,  
 वास्ते, तदर्थ । ( स्त्री० ) ताक, दृष्टि ।  
 तई दे० ( स्त्री० ) लोहे की छिछली कड़ाही, जिसमें  
 जलेपी मालपुत्रा आदि बनाये जाते हैं ।

तऊँ दे० ( अ० ) तथापि, तौभी, तदपि ।  
 तक दे० ( अ० ) तकक, तई, पर्यन्त, अवधि । ( स्त्री० )  
 दृष्टि, ताक, तराजू, तलहड़ी ।—तक ( पु० ) पद्य  
 आदि के हाँके का शब्द ।  
 तकदीर ( स्त्री० ) भाग्य, प्रारब्ध, नसीब ।  
 तकना दे० ( कि० ) ताक लगाना, दृष्टि रखना, देखा  
 करना, एकटक देखना, चितवना, सरपट्ट दृष्टि ।  
 तकरार ( स्त्री० ) अगड़ा, टंटा, फसल काटे जान पर  
 बाद देकर जोता जाने वाला खेत ।  
 तकरीर ( स्त्री० ) गुफ़ूरा, बहस, भाषण, बातलाप ।  
 तकला दे० ( पु० ) तकुआ, सूत कातने का यन्त्र,  
 चरखा । ( स्त्री० ) छोटा तकला, अटेरन, परेता,  
 चर्खी ।  
 तकलीफ ( स्त्री० ) दुःख, बाधा, मुसीबत ।

दुलाई, दुलवाई दे० ( स्त्री० ) दुबाने की मजूरी, गंठरी उठाने की मजूरी ।

दुलाना दे० ( क्रि० ) दुगाना, दलवाना, गिरवाना ।

दुआ दे० ( पु० ) मेंद, मिट्टी का छोटा बर्तन जो बूचों की जड़ में डाले हुए पानी को रोक रखने के लिये बनाया जाता है । [ टोह ।

दूँदोद दे० ( क्रि० ) पूँवताड़, खोज, अनुसन्धान,

दूँदन दे० ( क्रि० ) खोज, टोह, सन्धान ।

दूँदना दे० ( पु० ) खोजना, टोह लगाना, पता लगाना ।—ढाँदना ( क्रि० ) खोजना, हेमना, तलाश करना, प्रयत्नपूर्वक दूँदना ।

दूँदर दे० ( पु० ) राजपूताने के अन्तर्गत एक प्रान्त-विशेष, जयपुर राज्य का प्रान्त ।

दूँदिया दे० ( पु० ) जैन सन्यासी, जैन धर्म के निष्ठक । ( पु० ) दूँदने वाला, टोह लगाने वाला, अनुसन्धानी ।

दूक दे० ( स्त्री० ) दुबकी, ताक । [ कटना ।

दूकना दे० ( क्रि० ) घुसना, पैटना, पास आना, बन्ध

दूका दे० ( पु० ) घाप, डेस, किसी की ताक में छिपना, डंडल, घास का मान विशेष जो दस पूले का होता ।

दूसर दे० ( पु० ) जातिविशेष, वैश्यों की एक जाति ।

दूह तद् दे० ( पु० ) डेर, टीला ।

दूँ दे० ( पु० ) तरङ्ग, लहर, बीचि ।

दूँ दे० ( पु० ) सारस पक्षी । [ यन्त्र ।

दूँकली दे० ( स्त्री० ) कुर्मी से जल निकालने का एक

दूँका दे० ( पु० ) धान आदि का चकला छुटाने का यन्त्र ।

दूँकी दे० ( स्त्री० ) फूटने का यन्त्र ।

दूँडस दे० ( पु० ) तरकारी विशेष ।

दूँडी दे० ( स्त्री० ) पोस्ता का फूल, कर्णभूषणविशेष ।

दूँ दे० ( पु० ) जातिविशेष, एक नीच जाति, कौवा, मूर्ख ।

दूँदर दे० ( पु० ) आँख की फूली, टेंट ।

दूँदा दे० ( पु० ) गर्भ, लम्बोदर, बड़ा पेट, लंबी नाभि, पैरों का मध्य भाग ।

दूँदो दे० ( स्त्री० ) कान का एक प्रकार का गहना, देड़िया, तरकी, फजी, फलिया । [ अधिक ।

देर दे० ( स्त्री० ) राशि, मोला, टाला । ( वि० ) बहुत,

देरा दे० ( पु० ) भेंगा, रस्सी पेंडन की कल, चिन्हविशेष ।

देरी दे० ( स्त्री० ) राशि, टाल, थोक, डेर, समूह ।

देला दे० ( पु० ) मिट्टी का टुकड़ा, पिण्डा, लोंदा, खण्ड ।—चैथ ( स्त्री० ) भादों शुक्ल की चतुर्थी । उस दिन की रात्रि को अशुचित हिन्दू दूसरों के घरों में देला फेंकते हैं और उसके बदले में गाली सुनते हैं । कहा जाता है कि ऐसा करने वाले मनुष्य साल भर कजहरी नहीं होते । परन्तु शास्त्रों में देला फेंकना कहीं नहीं लिखा है । किन्तु स्वामन्तक मणिके विषय वाली कथा सुनने को लिखा है । ( देखो जाम्बवान् और स्वामन्तक ) ।

देया दे० ( स्त्री० ) अद्वैता, अद्वैत सेर का मान, तैल । —टुकर ( वि० ) जन शून्य, उजाड़, जगड़, शून्य, रिक्त ।

देया दे० ( पु० ) मेट, उपहार, उत्सव विशेष में आश्रितों का सालिकों को दिया हुआ उपहार ।

देड़ दे० ( स्त्री० ) देही, फली, बीजकोष ।

देक दे० ( पु० ) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन । राजपूताने प्रान्त में प्रणाम नमस्कार के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । दण्डवत् ।

देकना दे० ( क्रि० ) पीना, घूटना, निगलना, निगल जाना ।

देका दे० ( पु० ) पत्थर का बड़ा टुकड़ा, पाँच की संख्या, आम आदि खुरिदने में इसका उपयोग किया जाता है ।

देग दे० ( पु० ) पालण्ड, आडम्बर, धूर्त्ता ।—धतुर ( पु० ) धूर्त्ता, पालण्ड ।—वाजी ( स्त्री० ) पालण्ड ।

देगी दे० ( वि० ) पालण्ड ।

देटा दे० ( पु० ) बालक, बेटा, पुत्र, सन्तान ।

—“ तुम हो देटा नन्द बवा के, हम बृषभाउ-दुबारी ” । देटो ( स्त्री० ) ।

देटौना ( पु० ) पुत्र, बेटा, दोटा ।

देना दे० ( क्रि० ) लेजाना, उठाकर लेजाना, उठाना, एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रखना ।

देर दे० ( पु० ) माघ, गोरू, पशु, गी, भैंस आदि पशु, घोष, दोलक, घुमि, क्रम, धरन, लगन ।

देरा दे० ( पु० ) मुसलमानों का ताजिया ।

देरी दे० ( स्त्री० ) दाढ़, ताप, दहक, रट, धुन, ली, खगन, यान ।

ढोल दे० ( पु० ) बड़ा ढोलक ।  
 ढोलक दे० ( पु० ) छोटा ढोल ।  
 ढोलकिया दे० ( पु० ) ढोलक बजाने वाला, ढोलक  
 बजाने में निपुण । [ घाली स्त्रियाँ बजाती हैं ।  
 ढोलकी दे० ( स्त्री० ) छोटी ढोल, ढोलक, जिसे गाने  
 ढोलन दे० ( पु० ) प्रियतम, रसिक, रसिया । [ होता है ।  
 ढोलना दे० ( पु० ) एक प्रकार का बाजा जो ढोल के समान  
 ढोला दे० ( पु० ) छोकरा, थालक, रागविशेष,  
 शृङ्गार का एक प्राचीन प्रसिद्ध प्रेमी, ढोला मारु  
 की कथा प्रेमी समाज में प्रसिद्ध है । शायद इस  
 कथा की पुस्तक भी छप गई है । गाने वाली एक  
 जाति । एक प्रकार का कीड़ा, सीमा का चिन्ह,  
 लड़ाव, शरीर, पति, मूर्ख मनुष्य ।  
 ढोलिन, ढोलिमा दे० ( स्त्री० ) ढोला जाति की, स्त्री,  
 इस जाति के लोग मारवाड़ में अधिकता से पाये  
 जाते हैं, इनका धन्धा माना बजाना है ।

ढोलिया दे० ( पु० ) ढोल बजाने वाला, ढोलकिया,  
 सजा सजावा पहँगा, चिन्नाया हुआ पहँगा ।  
 ढोलो दे० ( पु० ) ढोल बजाने वाला, ढोलकिया,  
 जातिविशेष, ढोला । ( स्त्री० ) दो सौ पान की  
 थाली, दो सौ पान की एक गद्दी ।  
 ढोलैत दे० ( पु० ) ढोल वाला, ढोल बजाने वाला,  
 ढोलकिया ।  
 ढौंचा दे० ( कि० ) साढ़े चार, साढ़े चार गुना अधिक,  
 साढ़े चार से गुणित, साढ़े चार का पहाड़ा ।  
 ढौकन तनू० ( पु० ) [ ढौक + अनन् ] घूँसा, शक्रेय,  
 डाली, नजर, किसी प्रकार का लाभ दिखाकर अपने  
 मतलब का काम कराने का उपाय ।  
 ढौरी दे० ( स्त्री० ) ताप, दाह, दहक, चोप, रट, धुन,  
 लगना ।  
 ढौसना ( कि० ) हथे प्रकट करने के लिये अस्पष्ट ध्वनि  
 विशेष ।

## रा

रा व्यञ्जन का पन्द्रहवाँ वर्ण, यह भी मूर्द्धन्य है ।  
 रा तत्० ( पु० ) विन्दु, देव, भूषण, निर्गुण, गुणरहित,  
 निर्णय, ज्ञान, बोध, बुद्धि, हृदय, शिव, दान,

अन्न, वषाण, विद्वान्, जलस्थान, निर्वाण, त्रिगुणा-  
 कार । ( वि० ) गुणशून्य ।  
 रागाय तत्० ( पु० ) एकमात्रिगुण विशेष ।

## त

त व्यञ्जन का सोलहवाँ वर्ण, यह दन्त्य कहा जाता है,  
 क्योंकि इसके उच्चारण का स्थान दन्त है ।  
 त तत्० ( पु० ) चौर, अमृतपुच्छ, गोद, स्नेच्छ, गर्भ,  
 शठ, सिवालपूछ, घृच्छ, रस, सुमत्त, योद्ध, योद्धा,  
 कुटिल, तीम, तैना । ( स्त्री० ) पुण्य, तरुण ।  
 तथ्यल्लुक ( पु० ) सम्बन्ध, रिश्ता, लगाव ।—  
 ( पु० ) जर्मोदार का समूचा भाग ।—दार  
 ( पु० ) जर्मोदार ।  
 तथ्यस्तुव ( पु० ) कटारपन ।  
 तइसा ( पु० ) तैसा, जैसा, वैसा ।  
 तई दे० ( अ० ) तक, पर्यन्त, अवधि, सीमा, लिये,  
 वास्ते, तदर्थ । ( स्त्री० ) ताक, दृष्टि ।  
 तई दे० ( स्त्री० ) लोहे की छिड़की कड़ाही, जिसमें  
 जलेबी मालपुआ आदि बनाये जाते हैं ।

तऊ दे० ( अ० ) तथापि, तौभी, तदपि ।  
 तक दे० ( अ० ) तबक, तई, पर्यन्त, अवधि । ( स्त्री० )  
 दृष्टि, ताक, तराजू, तखड़ी ।—तक ( पु० ) पद्य  
 आदि के डॉकने का शब्द ।  
 तकदीर ( स्त्री० ) भाग्य, प्रारब्ध, नसीब ।  
 तकना दे० ( कि० ) ताक लगाना, दृष्टि रखना, देखा  
 करना, एकटक देखना, चितवना, सट्टइ दृष्टि ।  
 तकरार ( स्त्री० ) कगड़ा, टंटा, फसल काटे जान पर  
 खाद देकर जोता जाने वाला खेत ।  
 तकरीर ( स्त्री० ) गुफ़ूरा, बहस, भाषण, बार्तालाप ।  
 तकला दे० ( पु० ) तकुआ, सूख कातने का यन्त्र,  
 चरखा । ( स्त्री० ) छोटा तकला, अटेरन, परेता,  
 चर्खी ।  
 तकलीफ ( स्त्री० ) दुःख, बाध, मुसीबत ।

तकवाहा दे० ( पु० ) ताकने वाला, रचक चौकीदार  
पहराया, पहरवाला ।  
तकवाही दे० ( श्री० ) रचा, चौकीदारी, पहरा, पहर-  
वाले का काम, अगोरना । [ दृष्टि रखो, लक्ष्य करो ।  
तकड़ दे० ( कि० ) ताकें, देखें, अवलोकन करो,  
तकसीम ( स्त्री० ) भाग ।  
तकाई ( स्त्री० ) रखवाली, रखवाली की मजूरी ।  
तकान दे० ( पु० ) भावभङ्गी, हव ।  
तकाना दे० ( कि० ) ताक रखवाना, दृष्टि रखवाना,  
लक्ष्य रखवाना, रखवाली करना ।  
तकार दे० ( पु० ) दधि मयने का ढण्ड, ढई ।  
तकि दे० ( अ० ) ताक कर, लक्ष्य कर, देखकर ।  
तकिया दे० ( स्त्री० ) सिरहाने रखने की वस्तु, ओसीसा,  
घलीत, उपधान, सिरहाना ।  
तकीनी दे० ( स्त्री० ) छोटा उसीसा ।  
तकुआ दे० ( पु० ) सूत कातने की लोइराबाका जो  
चर्रें में लगायी जाती है, तकल ।  
तक तव्० ( पु० ) छाँड़, मट्टा, मही ।  
तक्त तव्० ( पु० ) [ तक्त + अल् ] आस्थादन, कर्त्तन,  
काटना, चमड़ा, चर्म, चित्रानुचर ।—शिला ( पु० )  
प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर, यह पञ्जाब में था, इसका  
वर्त्तमान यूनानियों के इतिहास में आया है ।  
तक्तक तव्० ( पु० ) [ तक्त + अक् ] बड़ई, लकड़ी  
काटने वाला, स्वनाम प्रसिद्ध सर्पराज, विश्वकर्मा,  
सूत्रधार, घृच विशेष ।  
तखड़ी दे० ( स्त्री० ) पलड़ा, तराजू, अन्न आदि  
तखरी दे० तौलने की तुला ।  
तख्मीना ( पु० ) अटकल, अनुमान ।  
तखान तव्० ( पु० ) तदृश, बड़ई, लकड़ी काटने वाला,  
खाती । [ अन्त का अक्षर लघु हो यथा 'जीमूत' ।  
तगण तव्० ( पु० ) कविता का गणविशेष, जिसके  
तगना दे० ( कि० ) सीना, सिलाई करना, तागा चलाना ।  
तगर तव्० ( पु० ) पुष्पविशेष, सुगन्धित काष्ठविशेष,  
मदमा वृक्ष, मदन वृक्ष । [ की मजूरी ।  
तगाई दे० ( स्त्री० ) सिलाई, तागने का काम, तागने  
तगादा ( पु० ) मार्ग ।  
तगांना दे० ( कि० ) तागा डालना, सिलवाना [ जाता है ।  
तग्मा दे० ( पु० ) सूत, बटा हुआ सूत, जिससे तागा

तगड़ी दे० ( स्त्री० ) कर्पनी, कटिसूत्र ।  
तङ्ग दे० ( पु० ) हैरान, सका, चुस्त, थोड़ा, सकेत,  
छोड़ें की जीन की पेटी, कसन ।  
तङ्गा दे० ( पु० ) दो पैसे, टका ।  
तङ्गी दे० ( स्त्री० ) मङ्गीर्यता, वक्रेश, गुरीबी ।  
तचना दे० ( कि० ) सन्तप्त होना, दुःखी होना, गम  
होना, तपना, तप्त होना ।  
तचा तव्० ( श्री० ) चाम, चमड़ा, छाल, गरम ।  
तचाना दे० ( कि० ) गरम करना, तपाना, जलाना ।  
तज दे० ( पु० ) नेत्रपात, तेजपात का घृष्ट, छोड़, छोड़  
दे, त्याग, सिवा ।—( कि० ) छोड़ कर, त्याग  
कर । [ देना है ।  
तजइ दे० ( कि० ) छोड़ देता है, त्यागता है, त्याग  
तजन दे० ( पु० ) परित्याग, त्याग । ( पु० ) चातुक, फोड़ा ।  
तजना दे० ( कि० ) त्यागना, छोड़ना, सम्पन्न  
छोड़ देना ।  
तजि दे० ( अ० ) छोड़ कर, तज कर, त्याग कर ।  
तजिये दे० ( कि० ) छोड़ो, छोड़ो दो, छोड़िये । यथा—  
" जाको प्रिय न राम वैदेही, तजिये ताहि कोटि  
वैरी सम यद्यपि परम सन्नेही ।"—मुक्तसिदास ।  
तह तव्० ( पु० ) तत्त्वज्ञाता, ज्ञानी, आत्मज्ञ, पण्डित,  
स्वरूप ज्ञाता, ईश्वर का जानने वाला ।  
तजरवा ( पु० ) अनुभव ।  
तजरवत दे० तजरवा, अनुभव, विचार, यथार्थ ज्ञान ।  
तजवीज ( स्त्री० ) उपाय, निर्णय, फैसला, प्रवन्ध ।  
तट तव्० ( पु० ) [ तट + अल् ] तीर, कूट, किनारा,  
नदी का कछार, प्रदेश, शिव । ( कि० वि० ) समीप,  
पास ।—स्थ ( वि० ) तीर पर रहने वाला, तीर-  
वासी, मध्यस्थ, वदासीन, अलग रहने वाला, निर-  
पेक्ष । ( पु० ) लक्षणस्वरूप, स्वरूपलक्षण के अति-  
रिक्त लक्षण, परमार्थिकता, अप्रचपातिता ।  
तटाक तव्० ( पु० ) तड़ाग, बड़ा सरोवर, बृहद्  
जलाशय, जिस सरोवर में कमलपुष्प हों ।  
तटिनी तव्० ( स्त्री० ) [ तट + इत् ] नदी ।  
तटी तव्० ( स्त्री० ) नदीकूल, तीर, तट, किनारा,  
तटवाला, तीरवाला, सेषक, तराई, घाटी ।  
तड़ दे० ( पु० ) दल, पड़, गिरोह, जया, दोब्बी,  
अन्यक्त शब्द ।—तड़ ( पु० ) लकड़ी आदि के

टूटने का अत्यन्त शब्द ।—बंदी ( स्त्री० )  
 दलादली, एक जाति के कुछ लोगों का गिरोह ।  
 तड़क दे० ( स्त्री० ) चटक, चाट, एक लकड़ी जिस  
 पर से छाजन होती है । [प्राण, छौंक देना ।  
 तड़कना दे० ( क्रि० ) चटकना, टूटना, फूटना, टूट  
 तड़का दे० ( पु० ) प्रातःकाल, मोर, विहान, भिन-  
 सार, सवेरा, छौंक, श्वार । [समय ।  
 तड़के दे० ( अ० ) सवेरे, प्रातःकाल, प्रातःकाल के  
 तड़कतड़काना दे० ( क्रि० ) तड़कतड़क शब्द होना, फिटकना,  
 कोधित होना, रिसाना । [ ( वि० ) चमकीला ।  
 तड़प दे० ( स्त्री० ) चटक, झपट, चमक, भड़क । -दार  
 तड़पड़ा दे० ( पु० ) दृष्टि गिरने का शब्द ।  
 तड़पना दे० ( क्रि० ) तलफना, दुःख से छटपटाना,  
 हाथ पैर धुनना ।  
 तड़पाना दे० ( क्रि० ) तलफाना, दुःख देना ।  
 तड़पोला ( पु० ) प्रभावशाली, कुर्नीला, चटपटिया ।  
 तड़फ दे० ( स्त्री० ) व्याकुलता, घमड़ाहट अत्यन्त  
 दुःख दायी, उद्विग्नता, अधिक दुःख से अधीरता ।  
 यथा—“जब से तड़फ रहा है” “बिना जल के  
 मछलियाँ तड़फ रही हैं ।” “तड़फ तड़फ कर  
 वसने प्राण दे दिये ।” [उद्विग्न होना, छटपटाना ।  
 तड़फड़ाना दे० ( क्रि० ) तड़पना, व्याकुल होना,  
 तड़फड़ाहट दे० ( स्त्री० ) धुकधुकी, धड़क, तड़क ।  
 तड़फड़ी दे० ( स्त्री० ) छटपटी, धुकधुकी, शक्या से छटपटी ।  
 तड़फना दे० ( क्रि० ) तड़कड़ाना, तड़पना, व्याकुल  
 होना, छटपटाना । [उद्विग्न करना ।  
 तड़फाना दे० ( क्रि० ) तड़पाना, व्याकुल करना,  
 तड़ा दे० ( पु० ) टाप, उपद्वीप, दोआब ।  
 तड़ा दे० ( वि० ) चमकाकर, सड़कीला, चटकीला,  
 देवीप्यमान, शीघ्र, तुरन्त ।—पड़ाक ( अ० ) अति  
 शीघ्र, बहुत जल्दी, अत्यन्त शीघ्रता से, शीघ्रता पूर्वक ।  
 तड़ाका तत्० ( स्त्री० ) समुद्र का किनारा, समुद्रतट,  
 बड़ी बड़ी नदियों का तीर—( पु० ) मारने का  
 शब्द, टूटने की ध्वनि ।  
 तड़ाग तत्० ( पु० ) तालाब, पोखरा, सरोवर,  
 जलाशय, पाँच सौ धनुष के परिमाण का जलाशय ।  
 तड़ाघात तत्० ( पु० ) [ तड़ा + आघात ] ऊपर उठे  
 हुए हस्तिशुण्ड का आघात ।

तड़ातड़ ( क्रि० वि० ) तड़कतड़ शब्द सहित ।  
 तड़ाड़ा दे० ( पु० ) जल की तीव्र धारा, तरेड़ा, तरला ।  
 तड़ाया दे० ( पु० ) रसिकता, छैलापन, चटक, मटक,  
 चढ़क भड़क । [धोखा, छल ।  
 तड़ावा दे० ( पु० ) दर्प, अभिमान, ऊपरी दिखावट,  
 तड़ित् तत्० ( स्त्री० ) विद्युत्, बिजली, सौदामिनी,  
 चञ्चला, चपला, कौंधा, दामिनि ।—कुमार तत्०  
 ( पु० ) जैनियों का एक देवता ।—पति तत्०  
 ( पु० ) बादल ।—प्रभा तत्० ( स्त्री० ) काश्चिदेय  
 की एक मात्रिका ।—यान् तत्० ( पु० ) बादल,  
 नागरमोक्ष ।—समाचार ( पु० ) बिजली के  
 द्वारा समाचार स्रेयना, टेलीग्राफ, तारबर्की, तार ।  
 तड़िया दे० ( स्त्री० ) समुद्र तट का पवन । [बिजली ।  
 ताडिल्लता तत्० ( स्त्री० ) [ताडित् + लता] विपुलता,  
 तड़ी दे० ( स्त्री० ) चरन, चौल, थोला, बाहान ।  
 तड़इक तत्० ( पु० ) खज्जन पत्ती, खँड़ा, खंडलीच,  
 भारद्वाज पत्ती, फेन, अधिक समास वाला वाक्य,  
 छान की लकड़ी, धरन, घड़ी, कड़ी, तहस्कथ,  
 वृच का वह स्थान जहाँ से शालें फूटती हैं । साफ़  
 सुथरा, निर्मल । ( पु० ) मायाबहुल, मायावी ।  
 छली, प्रपञ्ची । [कसंभ्य कर्मों का उपदेशक ।  
 तयहु तत्० ( पु० ) शिव का द्वारपाल, अनुकर्म, शिषक,  
 तयहुल तत्० ( पु० ) चावल, चावर, चिना मकलें का  
 धान, फूटा धान, तन्दुल ।  
 तत् तत्० ( अ० ) बुद्धिस्थ परामर्श सर्वनाम, वह,  
 वही, प्रक्ष का विशेषण, प्रसिद्धार्थक वायु ।  
 —कन्द ( पु० ) अदरक, बााहीकन्द ।—कर्तृक  
 ( वि० ) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ ।  
 —कर्म ( पु० ) वह कर्म, वही कर्म, जाना हुआ  
 कार्य, प्रसिद्ध कार्य ।—कार्य ( पु० ) वह कार्य,  
 सो काम ।—काल ( पु० ) उसी काल उसी  
 समय, उसी चण, चटपट । कालिक ( वि० ) उस  
 समय का, तदानीन्तन ।—कालीन ( वि० ) उसी  
 काल का, उसी समय का ।—कालोत्पन्न ( वि० )  
 उस समय का उत्पन्न ।—कृत ( वि० ) उसका  
 बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ ।—क्षण ( पु० )  
 उसी चण, उसी समय, उसी काल में ।—तुल्य  
 उसके समान, उसके सदृश, उसके ऐसा ।—पर



तनिष्ठ तत् ( पु० ) [ तद् + इष्ठ ] छद्, अत्यल्प, न्यून, क्षीण अति सूक्ष्म । [ की तनी, तनया, पुत्री, कन्या । तनी दे० ( स्त्री० ) अँगरेजी का बन्द, अँगरेजी बाँधने तनीयान् तत् ( वि० ) [ तनु + ईयस् ] सूक्ष्मतर, अत्यन्तर, बहुत थोड़ा, छुट्टा, छोटा, लघु ।

तनु तत् ( पु० ) [ तन + उ ] शरीर, देह, खूब, चर्म, तन, स्त्री, केशुली, जन्मकुण्डली में जन्मस्थान । ( वि० ) दुबला, कोमल, सुन्दर, बढ़िया ।—कूप ( पु० ) रोमकूप, रोमछिद्र ।—च्छत् ( वि० ) नर्म, ( पु० ) कवच, यक्षतर, सच्चाह, युद्ध में जाने के उपयोगी परिच्छिद्र ।—ज ( पु० ) पुत्र, भारमज, सुत, पुत्र ।—जा ( स्त्री० ) कन्या, पुत्री, तनया, दुहिता ।—ता ( स्त्री० ) क्षीणता, सूक्ष्मता ।—त्व ( पु० ) क्षीणत्व, सूक्ष्मत्व ।—त्र ( पु० ) कवच, शरीररक्षाकारी, सच्चाह ।—त्राय ( पु० ) तनुत्र, शरीररक्षण ।—त्याग ( पु० ) मृत्यु, देहत्याग, शरीरपात, मरण ।—घत ( पु० ) एक प्रकार के नरक का नाम ।—ग्रथ ( पु० ) वाष्पीक रोग, छोटा वाय ।—मध्या ( स्त्री० ) क्षीण कटि स्त्री, पतली कमरवाली स्त्री ।—रुक्ता ( पु० ) रोम, खोम, बाल, केश ।

तनुक दे० ( वि० ) अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म, तनिक ।

तनू तत् ( पु० ) देह, तन, काया, शरीर ।—ज ( पु० ) पुत्र, भारमज ।—जा ( स्त्री० ) कन्या ।—नपात् ( पु० ) अग्नि, वह्नि, भग्न, चित्रक, प्रजापति के प्रपौत्र का नाम, घी, मक्खन ।—भृत् ( पु० ) मनुष्य, देही, देहधारी ।

तनोतु तत् ( क्रि० ) फैले, फैलावे, विस्तृत होवे ।

तनोह तत् ( पु० ) रोंगटे, खोम ।

तन्त दे० ( पु० ) परिवार, प्रबन्ध व्यवस्था, सुखसिद्धि, तुरन्त, शीघ्र, सन्तान, औपधि, उपाय ।

तन्तनाना दे० ( क्रि० ) पिनपिनाना, तनना, सीखा होना, भड़ाना, क्रोध से थकना । [ थोड़ा, तन्तनाना ।

तन्तनाहट दे० ( स्त्री० ) पिनपिनाहट, जलने की तन्ति तत् ( पु० ) तन्तुवाय, ततवा, कपड़ा बिनने वाली एक हिन्दू जाति ।

तन्तु तत् ( पु० ) सूत, सूत्र, तागा, धागा, हाथर, धंश, सन्तान ।—काष्ठ ( पु० ) तत का काठ ।

—कीट ( पु० ) रेशम का कीड़ा, पाटकीट ।

—निर्यास ( पु० ) तालवृक्ष ।—वाय ( पु० ) कपड़ा बिनने वाला, छुलाहा, ताँती, ततवा, केरी ।

—शाला ( स्त्री० ) कपड़ा बिनने का घर, ततवा ।

—सन्तान ( पु० ) अतिसूक्ष्म सूत, बहुत पतल सूत, महीन सूत ।

तन्तुना दे० ( पु० ) तनुना, तार ।

तन्त्र तत् ( पु० ) सिद्धान्त, परिवार का काण्ड, औपधि, प्रधान, मुख्य, श्रुति की एक शाखा का नाम, हेतु, द्वयर्थक, दोतरफा बात, राष्ट्र, साधक, उपाय, अपने राज्य की चिन्ता, प्रबन्ध, धनगृह, वपन, बोना, साधन, कुल, शिष्य, पार्वतीकथित शास्त्र, इस शास्त्र के दो भेद हैं, पञ्चमहातन्त्र का नाम बहिष्णुतन्त्र और दूसरे का नाम वासुदेवतन्त्र है । बहिष्णुतन्त्र में पञ्चदेव की उपासना सात्त्विक मनुष्यों के लिये सात्त्विक रीति पर बखि है । वासुदेवतन्त्र राक्षसी प्रकृति के मनुष्यों के लिये है । तन्त्र के इसी भाग के उपासकों में पञ्चमहातन्त्र की विधि प्रचलित है । इस शास्त्र के यज्ञ से ग्रन्थ अब भी उपलब्ध होती हैं ।

तन्त्राधाय तत् ( पु० ) [ तन्त्र + अधाय ] अपने राज्य की व्यवस्था और शत्रु राज्य की दशा-तथा पराजय का ज्ञान ।

तन्त्रि तत् ( स्त्री० ) निद्रा, नौद, घूम, जैव, आलस्य, आलस ।—पालक ( पु० ) राजा जयद्रथ का नाम ।

तन्त्री तत् ( स्त्री० ) [ तन्त्र + ई ] वीणागुण, वाद्य का तार, गुह्यी, शरीर की नाड़ियाँ, नाड़ीमे युवतीभेद । ( पु० ) एक प्रकार का धामा, सितार । तन्त्रशास्त्री, तन्त्रशास्त्रवेत्ता ।

तन्द्रा तत् ( स्त्री० ) [ तन्त्र + आ ] ईप्सुनिद्रा, थक, चट, आन्ति, रूपकी ।

तन्द्रालु तत् ( वि० ) [ तन्द्रा + आलु ] झुल्ला, आलस्य, निद्रालु, आलस, निद्रालु ।

तन्द्री तत् ( स्त्री० ) अत्यन्त-परिश्रम करने से इन्द्रि- की थपट्टा, सर्वाङ्गशैथिल्य ।

तन्ना दे० ( क्रि० ) खींचना, फैलाना, विस्तार करना ।

तन्नाना दे० ( क्रि० ) तन्तनाना, थकड़ाना, थकड़ा हो जाना, मिश्रज, गरम करना ।

तन्निमित्त तद् ( घ० ) [ तद् + निमित्त ] तदर्थं  
तद्देष्टु, उसके लिये, उसके कारण, उसके हेतु ।  
तन्निष्ठ तद् ( वि० ) [ तद् + निष्ठ ] तत्रस्थ, तद्वर्ती,  
वहाँ स्थित ।  
तन्मय तद् ( वि० ) [ तद् + भव ] दत्तचित्त, लगा  
हुआ, लवणीन, लीन ।—ता तद् ( स्त्री० )  
लीनता, एकाग्रता ।  
तन्मात्र तद् ( पु० ) [ तद् + मात्र ] केवल, यही,  
केवल, एक, अद्वितीय, सांख्यानुसार, पञ्चभूतों का  
मादि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप, यथा—शब्द, स्पर्श  
रूप, रस, गन्ध । [ वृन्दरी, कामिनी ।  
तन्त्री तद् ( वि० ) [ तद् + ई ] चीन्हा, कुराही,  
तप तद् ( पु० ) [ तद् + घल् ] गर्मी, उष्णता, गर्मी  
की श्रुत, अग्नि, एक कल्प का नाम, एक लोक  
का नाम, तपस्या, शरीर सेवम करने के उपाय,  
पूजा, आराधना, माघ महीने का नाम ।  
तपत दे० ( स्त्री० ) गर्मी, उष्णता ।  
तपती तद् ( स्त्री० ) सूर्य की पुत्री का नाम, यह सूर्य-  
पती छाया के गर्भ से उत्पन्न हुई थी, कुलवंशीय  
श्रेष्ठ नामक एक प्रसिद्ध राजा थे, शब्द का पुत्र  
सेवराज यथा सूर्य भक्त था, सेवराज की तपस्या  
और उपासना से प्रसन्न होकर सूर्यदेव ने अपनी  
कन्या सेवराज को प्याह दी ।  
तपन तद् ( पु० ) [ तद् + अनट् ] ग्रीष्म, ताप, सूर्य  
सूर्यकान्तमणि, नरक-विशेष, जहाँ पाप फल का  
भोग करने के लिये अग्नि से पापी जलाये जाते  
हैं । मल्लतक बुद्ध, भिडार्वा का पेड़, मदार  
अरनी का पेड़, नायिका का नायिक के वियोग में  
हाव भाव विशेष, सुरजमुखी, एक प्रकार का  
अग्नि, धूप ।—तनया ( स्त्री० ) सूर्यपुत्री, शमीवृक्ष  
यमुना नदी ।—मणि ( पु० ) सूर्यकान्तमणि ।  
—रमजा ( स्त्री० ) गोदावरी नदी, यमुना  
नदी ।  
तपना तद् ( क्रि० ) गरम होना, दहकना, जलना,  
प्रभाववान् होना, अतितेजयुक्त होना, तेजस्वी  
होना । [ स्वर्ण, काञ्चन ।  
तपनीय तद् ( पु० ) उचापनीय, तपाने योग्य, सुवर्ण,  
तपरी दे० ( स्त्री० ) मँड, धूहा, बाँध, छोटा बाँध ।

तपलोक तद् ( पु० ) तपोलोक, स्वर्ग विशेष, ऊर्ध्व,  
स्थित सप्तलोकों के अन्तर्गत छठीं लोक ।  
तपश्चरण तद् ( पु० ) तप, तपस्या ।  
तपश्चर्या तद् ( स्त्री० ) तपस्या, तपश्चरण ।  
तपस् तद् ( पु० ) चन्द्रमा, सूर्य, पची शिशिराश्रुत,  
जन लोक के ऊपर का लोक ।  
तपसा तद् ( स्त्री० ) तप से, तपस्या करके, तप के द्वारा,  
कष्ट से, आराधना से, तापती नदी । [ वाला, तपी ।  
तपसाज तद् ( पु० ) तपस्वी, तपसी, तप करने  
तपसी तद् ( पु० ) तपस्वी, तप करने वाला ।  
तपस्क तद् ( पु० ) तपस्वी, योगी ।  
तपस्य तद् ( पु० ) कागुन का महीना, कागुणमास,  
अर्जुन, कुन्दपुष्प, तप, मनु के दस पुत्रों में से  
एक । [ हृध्वरभजन ।  
तपस्या तद् ( स्त्री० ) तप साधना, योगसाधन,  
तपस्विनी तद् ( स्त्री० ) [ तपस् + वित् + ई ] तपस्या  
कारिणी, धर्तनिष्ठनियमकारिणी, तपस्या करने  
वाली स्त्री ।  
तपस्वी तद् ( पु० ) [ तपस् + वित् ] तपस्याकारी, अपि,  
मुनि, दीन, दयापात्र, श्रीकृष्णार, मधुली विशेष ।  
तपा दे० ( पु० ) पूजक, आराधक, अर्पक, तपस्वी ।  
( वि० ) तप में मग्न । [ करना, भाग दिखाना ।  
तपाना दे० ( क्रि० ) गर्म करना, उष्ण करना, तप्त  
तपात्यय तद् ( पु० ) वर्षाकाल, प्रावृद्ध काल, वर्षा  
का समय । [ अनुसन्धान ।  
तपास दे० ( पु० ) अनुवेष्टन, खोज, सन्धान, ढूँढ़,  
तपित तद् ( पु० ) [ तप + इत् ] तप्त, उष्ण, उचाप-  
युक्त । [ संयमी, नियमयुक्त ।  
तपी तद् ( पु० ) तपस्वी, तपस्या करने वाला, आत्म-  
तपु तद् ( पु० ) आग, सूर्य, शत्रु । ( वि० ) तप्त,  
गरम, तपाने वाला । [ यथ, तपी ।  
तपेश्वर, तपेश्वरी तद् ( पु० ) तपस्वी, तपश्चर्यापरा-  
तपी दे० ( क्रि० ) तप जाये, गरम हो जाये, तपस्या करे ।  
तपोधन तद् ( पु० ) तपस्वी, मुनि, अपि जिनके  
तपस्या ही धन है, जिनके धन के द्वारा होने वाले  
कार्य तपस्या के द्वारा होते हैं, दीनामहम्ना ।  
( स्त्री० ) तपश्चारिणी, तपस्विनी, नियम पशायण  
स्त्री, योगसाधनपरा ।

तपोनिष्ठ ( पु० ) तपस्वी ।

तपोवन, तपोवन तत्त्वं ( पु० ) तपस्वियों का आश्रम, वन का प्रदेश विशेष, जहाँ तप करने वाले रहते हैं ।

तपोबल तत्त्वं ( पु० ) तप की शक्ति । [ स्थान ।

तपोभूमि तत्त्वं ( स्त्री० ) तपोवन, तप करने का तपोमूर्ति तत्त्वं ( पु० ) [ तपस् + मूर्ति ] तपस्वी, ईश्वर, तपस्या की मूर्ति, महातपस्वी ।

तपोरति तत्त्वं ( पु० ) तपस्वी, जिसकी तप में रति हो ।

तपोराशि तत्त्वं ( पु० ) [ तपस् + राशि ] तपस्वी, बड़ा तपस्वी, जिसकी तपस्या अधिककाल व्यापिनी हो ।

तपोलोक तत्त्वं ( पु० ) ऊपर के चौदह लोकों में से ऊँचा लोक ।

तप्त तत्त्वं ( वि० ) [ तप् + क् ] उष्ण, तपा हुआ, संतप्त, गर्म, क्रुद्ध, दुःखित, अविशित पीड़ित ।

—कुम्भ ( पु० ) नरकविशेष, तपा हुआ, घड़ा ।

—कुण्ड ( पु० ) गरम पानी का तालाब, गरम पानी का स्नाना ।—कुरुक्षु ( पु० ) व्रतविशेष, प्रायश्चित्त विशेष ।—बालुक ( पु० ) नरकविशेष, जो तपी बालुका से बना हुआ है ।—मापक ( पु० ) एक प्रकार की परीचा ।—मुद्रा ( स्त्री० )

शरीर पर ग्रहण किये जाने योग्य अमृतस्र धातुमय भगवान् के आयुर्वैद्यों का चिह्न ।

तप्पा दे० ( पु० ) चकला, पुरावा, पुरा, पली, गाँव ग्राम, गवई ।

तफसील दे० ( स्त्री० ) विवरण, धोरा । [ विशेषता ।

तफावत दे० अन्तर, व्यवधान, भेद, पार्यक्ष्य, तब दे० ( अ० ) तदा, उस समय, उस काल, उस पण

ऐसी दशा में, ऐसी स्थिति में, फिर, उसके पीछे, तदनन्तर ।—हिं या ही ( अ० ) ठीक उसी समय

उसी के बाद । [ बदली, परिवर्तन ।

तबदील ( पु० ) बदला हुआ, परिवर्तित ।—१ ( स्त्री० )

तबलची दे० ( पु० ) तबला बजाने वाला । [ बाजा ।

तबजा दे० ( पु० ) ताक देने का चमड़े से मड़ा एक तबाह ( पु० ) बरबाद, चौपट, नाश को प्राप्त ।

—१ ( स्त्री० ) नाप, अधःपतन ।

तबियत दे० ( स्त्री० ) जी, मन, चित्त ।

११ दे० ( अ० ) तबही, तदैव, वही समय ।

तम तत्त्वं ( पु० ) विशेषण शब्दों के अन्त में आने से अनेकों के बीच एक का उरुर्ध्व बोधक, अत्यन्त, सप्ते बढ़ कर, अन्धकार, तमोगुण, अहङ्कार, तमालवृक्ष, तेजपात का वृक्ष, पाप, क्रोध, अज्ञान, कालिमा, मोह, नरकविशेष, राहु, बराह, पैर के छाने का हिस्सा ।

तमः तत्त्वं ( पु० ) प्रकृति का गुण, त्रिगुण के अन्तर्गत एक गुण का नाम, तमोगुण, अन्धकार, शोक, पाप, अहङ्कार, क्रोध ।

तमक दे० ( स्त्री० ) तेज़ी, जेरा, इद्वेग, क्रोध ।

तमकना ( दे० ) ( कि० ) क्रोधित होना, क्रोध से लाज मुख होना ।

तमका दे० ( पु० ) बहुत गर्मी, अधिक उष्णता ।

तमकि ( दे० ) ( कि० ) क्रोध हुआ हो, खोरी बढ़ा के, चिढ़ के ।

तमगा दे० ( पु० ) पदक, मेडल, तगमा, क्रुद्ध हुआ ।

तमगुन ( पु० ) तमोगुण ।

तमचर तत्त्वं ( पु० ) राचल, उखल ।

तमचुर तत्त्वं ( पु० ) ताम्रचूर्ण, सुरागा, कुक्कुट ।

तमत दे० ( वि० ) अनिलानी, हल्बुक, आकाशी, प्राणी ।

तमतमाना दे० ( कि० ) लाल होना, अधिक क्रोध करना, चिढ़ना [ का नाम ।

ततप्रम तत्त्वं ( पु० ) नरकविशेष, अन्धकारमय, नरक

तमस तत्त्वं ( पु० ) अन्धकार, तमोगुण, नगर, नदी, विशेष, कृप, नरकविशेष, राहु, मनुविशेष ।

तमसा तत्त्वं ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, इसी नदी के तीर पर महर्षि वाल्मीकि रहते थे ।

तमस्विनी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ तमस् + चिन् + ई ] रात्रि, रजनी, निशा, अंधेरी रात, हररी ।

तमस्सुक दे० ( पु० ) ऋणपत्र, कर्जपत्र, वह पत्र जो कर्ज लेने वाले धनी को लिखते हैं, दस्तावेज, लेख ।

तमस्वितति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ तमस् + तति ] अन्धकार समूह, घोर अन्धकार ।

तमा तत्त्वं ( पु० ) राहु ( स्त्री० ) रात, निशा ।

तमाकू, तमाकू दे० ( पु० ) सुरती, स्वनामप्रसिद्ध पत्र विशेष । भूम पान करने योग्य पत्रविशेष, खाने की सुरती, खैनी तमाकू ।

**五、附註**

क्याही (चौम) बंदे का नाम बसोही है, अर्थात् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
 श्री गणेशाय नमः

[illegible]

वृत्तान्त (३) शिवजी के विषय मन्त्र मन्त्र  
इस काल में, काली सन्धि मन्त्र मन्त्र

का. नं. १२५ (३) वि. नं. १२५

उत्पादितो (सं०) इति सूत्रेण सूचितः ।

१. (क) नदी, नाल, नहर, नालिका, नालिका  
 २. (ख) नदी, नाल, नहर, नालिका, नालिका

(3) कनक देस में बाले ।

द्वितीयः प्रश्नः ( २ ) रात्रि, ज्योतिषः — १११

( ५० ) राधन, रजदीन !

तन्निष्ठ वरः (५०) [वर्जित + र] तिङि, कर्मकम्,  
अर्थ, एक नाक।—पञ्च कर्मकम्, यदी दाल ।

तनिला तद० ( खो० ) [ तमेत + भा ] रात्रिभारमद  
रात्रि, कृष्णरात्र की वर्षेती रात ।

तमो त्व० ( स्त्री० ) [ तम + ई ] अन्धकारमय रात्रि,  
निशा, तमिस्रा ।—श ( पु० ) अन्धमा ।—स्व

(पु०) रावल, निशावर, घोर, म्यभिवारी, २३९२ ।

तमीज़ दे० ( स्त्री० ) विवेक, पहचान, बुद्धि, शिष्टता,  
अदकः—दार ( वि० ) बुद्धिमान, शिष्ट, धिरेकी ।

तमूरा दे० ( पु० ) बाध विशेष, सितार जैसा एक  
बाजा, चौतारा ।

तमागुण्य तद० ( पु० ) [ तमस् + गुण्य ] प्रकृति के त्रिविध गुणों के अन्तर्गत एक गुण विशेष । मोह, क्रोध आदि को उत्पन्न करने वाला गुणविशेष ।

तमोगुणी तत् ( वि० ). सदङ्कारी, अभिमानी, दुर्वा,  
गर्वा, क्रोधी प्रकृतिवाञ्छा ।

तमोऽग्न तत्त्वं ( पु० ) तमोनाशक, दीपक, ज्ञान, भक्षि,  
सूर्य, चन्द्र, बुद्ध, विष्णु, केशव. शम्भु ।

तमोज्योति तत्त्वं ( पु० ) [ तमम् + ज्योति ] ज्योतिः-  
रिद्रण, क्षयोत्, जुगन् ।

तमोनुद तत्त्वं ( पु० ) [ तमस् + नुद् + भण् ] गर्भ,  
रपि, दिनकर, ईश्वर, चन्द्र, भूमि, भञ्जानमाशक पुद्गल ।

तमोपह तव० ( पु० ) [ रामस् + अप् + इन् + च ]  
 चन्धकारनाशक, सुयं, चन्द्र, अग्नि, शीघ्र, शीघ्रक, शान ।

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

1951

... 1911 ...

[illegible][illegible]

*[Faint handwritten notes at the bottom of the page]*

१००००० (५) १०००००, १०००००, १०००००  
 १००००० (५) १०००००, १०००००, १०००००

समस्या (क) का उत्तर, अज्ञेय ।

तम्रार (५०) मसुना, तम्रार १-१, मसुना १-१  
 तम्रार (५०) [ ५५ मसुना ] तम्रार, मसुना, मसुना

शक्ति, सार्व, वाच और प्रसादी । ( वि० वि० )  
तले, लदे, पीछे, पीछे, निराले, शत्रुओं के मरण की

कान्ते से कुछ दूरे के बीच एक की मरफटा। बगमावा  
है। विवेक, ब्रह्म । दे० ( नि० ) गीता, शीतल,

हरि लक्ष्मण ( पदो ) तारा, वज्र, लीला ।

परक दे० ( धी० ) सहक, धरक, कपी, लक, निपा।  
पारक ( ति० ) लकक, लकक, लकक। - कलक

( कि० ) अज्ञान का नाश, धर्म का नाश ।

अथवा वे ( कि० ) मोक्ष विचार करने, अनुशीलन करने, उद्बोधन, उद्धार, उद्बोधन ।

સરકાર દે- ( પ્રા ) મુલતી, મુમતી, સોમ, બીજા રક્ષિ  
મા માનવ, માન, માનવ જન માટે જાણી શકાય

માનવ અને આત્મે છે ।

महाराष्ट्र राज्य ( मी. ) मूलिकारी, मराठी भाषा

रवि: रे० ( गि० ) राकौ कर्को, पूजाग राकौ, दृढ र्को ।

આ રૂબરૂ જાણીએ, સમજીએ ।

तंकीव दे० ( स्त्री० ) उपाय, मेज, बनावट, शैली, तरीका ।  
 तरकुल ( पु० ) ताड़ का पेड़ । [ भरतन ।  
 तरगुलिया ( स्त्री० ) अनाज भरने का एक छिछला  
 तरकी ( स्त्री० ) बुद्धि, बढ़ती ।  
 तरङ्ग तत्त्वं ( स्त्री० ) लहर, द्विकोर, ऊर्मि, वीचि, देऊ,  
 हिलकोरा । ( पु० ) उमङ्ग, मौज, मानसिक उमङ्ग,  
 कपड़ा, घोड़े की फलांग, सोने की तारों को उमेट  
 कर बनाने गयी हाथों में पहनने की चूड़ी ।  
 तरङ्गिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) नदी, सरिता ।  
 तरङ्गित तत्त्वं ( वि० ) [ तरङ्ग + इत् ] ऊर्मियान,  
 लहरायेक, लहराता हुआ ।  
 तरङ्गी तत्त्वं ( वि० ) लहरी, प्रसमौजी, चञ्चलमना,  
 उसाही, उदाहवाला, तरङ्गवाला ।  
 तरखा दे० ( स्त्री० ) जल का तीव्र बहाव, धारा का वेग ।  
 तरतरा दे० ( पु० ) पृष्ठ प्रकार का थाल ।  
 तरदीप ( स्त्री० ) खण्डन, भँसुली ।  
 तरदुदुद ( पु० ) सोच, छटा,  
 तरतराना ( कि० ) कड़कड़ाना ।  
 तरन तद् ( पु० ) तरण, तैर जाने वाला, पार होने  
 वाला, मुक्त हो जाने वाला ।—तारनः ( पु० )  
 अपने साथियों के सहित मुक्त होने वाला, स्वयं  
 तरे और दूसरों को भी तारे ।  
 तरना दे० ( कि० ) पार होना, उदार पाना, तर जाना ।  
 तरनि तद् ( पु० ) तरणि, सूर्य, रवि, आनु, दिवाकर ।  
 तरनी तद् ( स्त्री० ) तरणी, नौका, नाव ।  
 तरङ्गट ( स्त्री० ) पानी भयवा अन्य किसी तरल  
 पदार्थ के नीचे बैठा हुआ मेल ।  
 तरङ्गन ( स्त्री० ) पानी के नीचे बैठा हुआ मेल ।  
 तरङ्गा ( पु० ) तेलियों के गोवर एकत्र करने का स्थान ।  
 तरङ्गाना ( कि० ) तरङ्गी आँख से संकेत करना ।  
 तरज तद् ( पु० ) तर्ज, डपट, डपेट, डाँट, तर्जन,  
 गाने की रीति, गान का प्रकार, रीति, प्रकार,  
 ढंग । ( कि० ) डाँट कर, निहार कर ।  
 तरजत तद् ( कि० ) तर्जत, तड़पता है, डाँटता है ।  
 तरजन तद् ( पु० ) तर्जन, गर्जन, तड़प, डपेट, डाँट ।  
 तरजना ( कि० ) फटकारना, डाँट बतलाना ।  
 ( स्त्री० ) थंगूडे के समीप की थंगली, भय, डर ।

तरजुई ( स्त्री० ) छोटी तराजू ।  
 तरजुमा ( पु० ) भाषान्तर, अनुवाद, उल्था ।  
 तरण तत्त्वं ( पु० ) [ तृ + अणट् ] उत्तरण, वृत्तरण,  
 पार जाना, तैरना, उदार, बहाव, डोंगा, नाव,  
 स्वर्ग । ( पु० ) पार होने वाला, उबरने वाला,  
 तरे वाला, मुक्त होने वाला ।  
 तरणि तत्त्वं ( स्त्री० ) [ तृ + अणि ] नौका, नाव,  
 घेंकुघारि, घृतकुमारी । ( पु० ) सूर्यकिरण, अर्क  
 वृक्ष, अकवन वृक्ष :—रत्न ( पु० ) माणिक्य, मणि,  
 सूर्यकान्त मणि ।—सुत ( पु० ) यम, शक्ति, कर्ण ।  
 —सुता ( स्त्री० ) यमुना, कालिन्दी नदी ।  
 तरणी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ तरण + ई ] नौका, नाव,  
 घृतकुमारी, तरनी, पद्मवारिणी ।  
 तरन्त तद् ( पु० ) भेक, मेड़क, कुहासा, भासार, झड़ ।  
 तरन्ती तद् ( स्त्री० ) नौका, तरणी, तरी ।  
 तरपन तद् ( पु० ) तर्पण, वृत्ति, मनःप्रसाद, मन की  
 प्रसन्नता, मन्त्रों के द्वारा पितरों के उद्देश्य से  
 जलप्रदान । [ करते हैं ] ।  
 तरपहिं तद् ( कि० ) तड़पते हैं, गर्जते हैं, तरपन  
 तरफ दे० ( स्त्री० ) पारवे, दिग्, धोर, पक्ष, ओर ।—  
 दार ( पु० ) पक्षपाती, पक्षवाला, सहायक, समर्थक,  
 हिमायती ।—दारी दे० ( स्त्री० ) पक्षपात ।  
 तरफना दे० ( कि० ) तड़पना, व्याकुल होना ।  
 तरवतर दे० ( वि० ) सरावोर, भीगा हुआ ।  
 तरबूज दे० ( पु० ) स्वयंभू प्रसिद्ध फल विशेष, कलौदा,  
 हिंगवाना ।  
 तरले तत्त्वं ( पु० ) हार के बीच का मणि, हार,  
 हीरा, लोहा, तब, पेंदा, बीड़ा । ( वि० ) चञ्चल,  
 द्रवीभूत, पतला, दीप्तियुक्त । ( पु० ) चञ्चल,  
 अस्थिर, अनिश्चितचित्त, पतला, लीक्ष्य, चोखा ।  
 —ता ( स्त्री० ) चञ्चलता, द्रवत्व ।—लोचनी  
 ( स्त्री० ) चञ्चलनयनी, चपलनेत्रा, नारी, सुयी ।  
 तरला तत्त्वं ( स्त्री० ) [ तरज + ला ] यवांगू, मड़-  
 मड़िका, बाँस विशेष ( वि० ) सबसे नीचे वाला,  
 नीचे वाला । [ द्रवत्व ] ।  
 तरलाई तद् ( स्त्री० ) तारण्य, तरलता, चञ्चलता,  
 तरलायित तद् ( वि० ) जाततारण्य, जिसमें तरलता  
 उत्पन्न हुई हो । ( पु० ) उच्च तरङ्ग, बड़े तरङ्ग ।

तरलित तत् ( वि० ) [ तरल + इत् ] चाण्वस्यान्वित,  
चलित, विचलित, आन्दोलित, द्रवीभूत ।

तरव तद् ( पु० ) तर्क, वृक्ष, पेड़, रूख, गाछ । [ वृक्ष ।  
तरवर तद् ( पु० ) तरवर, बड़ा वृक्ष, उपयोगी वृक्ष, विय  
तरवरिया दे० ( पु० ) तरवार धारण करने वाला,  
खड्गधारी, तलवार चलाने वाला । [ खांडा ।

तरवार या तरवारि तद् ( स्त्री० ) तलवार, खड्ग,  
तरस दे० ( स्त्री० ) तट, तीर, रोग, बन्दर, वेग बल ।  
( पु० ) कठघना, दया, रहम ।

तरसना दे० ( क्रि० ) यहुत चाहना, उत्कण्ठित होना,  
जी जगा रहना, दया दिखाने की इच्छा रखने  
पर भी दया नहीं दिखा सकना, केवल उत्कण्ठित  
होना, अभाव का बलेश सदा करना ।

तरसाना ( क्रि० ) आशा उपर्यक्त करके उसे पूरी न  
करना, व्यर्थ ललचाना ।

तरह दे० ( स्त्री० ) भाँति, प्रकार, ढाँचा, ढब, रीति,  
ढंग, युक्ति, ब्याप, हाल, अवस्था ।

तरहटी दे० ( स्त्री० ) पहाड़ की तराई, नीची भूमि ।  
तराई दे० ( स्त्री० ) पहाड़ या नदी आदि के पास की  
तरी या सीढ़ वाली भूमि, पहाड़ की घाटी ।

तराजू दे० ( स्त्री० ) तुला, पलड़ा, जो अन्न आदि के  
तौलने के काम में आता है ।

तरान दे० ( पु० ) उगाहन, प्राप्त किया हुआ, सहसीला  
गाया, बसूल किया गया, राजकर, चन्दा आदि ।

तराना दे० ( क्रि० ) पार कराना, उद्धार करना, बचाना,  
एक गाना विशेष ।

तराबोर दे० ( वि० ) सराबोर, खूब भीगा हुआ ।

तरारा दे० ( पु० ) पानी की लगातार गिरने वाली  
धार, बहाल, कुत्राव ।

तरावट दे० ( स्त्री० ) ठंडक, नमी, स्निग्ध भोजन ।

तरास तद् ( पु० ) त्रास, भय, शङ्का, डर, पिपासा,  
प्यास, तृषा ।

तरि तत् ( स्त्री० ) [ तृ + इ ] नौका, तरी, तरबरी,

तरी तद् ( स्त्री० ) [ तृ + अल + ई ] नौका ।

तरीका दे० ( पु० ) ढङ्ग, प्रकार, उपयोग की रीति ।

तव तत् ( पु० ) वृक्ष, द्रुम, गाछ ।—ज ( पु० ) वृक्ष  
से उत्पन्न फल फूल आदि ।—जीवन ( पु० )  
वृष्ट मूल ।

तवभ्रा दे० ( पु० ) तलवा; भुँजिया चाँवल ।

तख्त या तखन तद् ( वि० ) नवीन, नूतन, युवा,  
जवान, खिला हुआ, प्रफुल्लित । ( पु० ) बड़ा, जीरा,  
परण्ड, मोतिया ।—ज्वर ( पु० ) सात दिन के  
भीतर का ज्वर, नवज्वर, नवीन ज्वर ।—दधि  
( पु० ) पाँच दिन का बासी दही ।

तख्ताई तद् ( स्त्री० ) यौवन, युवावस्था, युवाकाल,  
जवानी ।

तख्ती तद् ( स्त्री० ) युवती, युवावस्था की स्त्री,  
जवान स्त्री, फोडखर्पीया स्त्री, नवयौवना, रमणी,  
कामिनी, गृहकन्या, दम्ती नामक वृक्ष विशेष, पुष्प  
विशेष, सेवती का फूल, जमालगोटा, खीड़ा नामक  
गन्धद्रव्य, मेघराग की एक रागिनी ।

तख्ताई तद् ( स्त्री० ) जवानी, तख्तावस्था ।

तरेड़ा दे० ( पु० ) टोंटी से पानी काँ गिरना, धार  
बाँध कर पानी गिरना ।

तरेरना दे० ( क्रि० ) खोरी चढ़ाना, आँख दिखाना,  
आँख बदलना ।

तरेत दे० ( पु० ) बया, लहर का चिह्न ।

तरैया तद् ( स्त्री० ) तारका, तारा मन्त्र । यथाः—  
“यथा तरैया प्रात के, सब रूप भये बढ़ास ।  
खलि दिन मण्डि कर राम छवि, सकुचाने चहुँ आस ।”

कवि बाक्य ।

तरोवर ( पु० ) वृक्ष, पेड़ ।

तरौंड़ी ( स्त्री० ) जुलाहे के हारों के नीचे की लकड़ी ।

तरौंस दे० ( पु० ) तीर, तट, किनारा पेंध में काजल ।  
यथाः—

“ह्याम सुरति करि राधिका, तबति तरनिजा तीर,  
सुखनि करति तरौंस को, खिनक तरौंही नीर ।”

—सतसई ।

तरौना दे० ( पु० ) कर्णभूषण विशेष, एक प्रकार का  
गहना, जिसे स्त्रियाँ कानों में पहनती हैं । यथा—

“लसत श्वेत सारी दिप्यो, तरख तरौना कान ।  
परयो मनो सुखसि सखिज, रवि प्रतिविम्ब बिहान ॥”

—सतसई ।

तर्क तद् ( पु० ) [ तर्क + अल ] तर्क, उद्घापोह, युक्ति-  
द्वारा विवेचना, न्यायशास्त्रसम्बन्धी विचार, हुज्जत  
तर्कार, अनुमान, कल्पना, अनुमानात्मिक—वितर्क

तरकीव दे० ( स्त्री० ) उपाय, मेख, घनावट, शैली, तरीका ।

तरकुल ( पु० ) ताड़ का पेड़ । [ भरतन ।

तरकुलिया ( स्त्री० ) अनाज भरने का एक छिछला

तरक्री ( स्त्री० ) वृद्धि, बढ़ती ।

तरङ्ग तव० ( स्त्री० ) लहर, हिलोहर, ऊर्मी, वीची, टेङ्ग, हिलकोरा । ( पु० ) उमङ्ग, मौज, मानसिक उमङ्ग, कपड़ा, घोड़े की फलाँग, सोने की तारों को उमेट कर घनाई गयी हाथों में पहनने की चूड़ी ।

तरङ्गिणी तव० ( स्त्री० ) नदी, सरिता ।

तरङ्गित तव० ( वि० ) [ तरङ्ग + इत् ] ऊर्मियान, लहरोंयुक्त, लहराता हुआ ।

तरङ्गी तव० ( वि० ) लहरी, मचमौजी, चञ्चलमना, उल्लाही, उल्लाहवाला, तरङ्गवाला ।

तरखा दे० ( स्त्री० ) जल का तीव्र बहाव, धारा का वेग ।

तरतरा दे० ( पु० ) एक प्रकार का थाल ।

तरदीप ( स्त्री० ) खण्डन, भँसुली ।

तरदुदुद ( पु० ) सोच, खटका,

तरतराना ( कि० ) कड़कड़ाना ।

तरन तव० ( पु० ) तरण, तैर जाने वाला, पार होने वाला, मुक्त हो जाने वाला ।—तारन ( पु० ) अपने साथियों के सहित मुक्त होने वाला, स्वयं तरे और दूसरों को भी तारे ।

तरना दे० ( कि० ) पार होना, उद्धार पाना, त्र जाना ।

तरनि तव० ( पु० ) तरणि, सूर्य, रवि, आनु, दिवाकर ।

तरनी तव० ( स्त्री० ) तरणी, नौका, नाव ।

तरङ्गट ( स्त्री० ) पानी अथवा अन्य किसी तरल पदार्थ के नीचे बैठा हुआ मैल ।

तरङ्गन ( स्त्री० ) पानी के नीचे बैठा हुआ मैल ।

तरङ्गा ( पु० ) तेलियों के गोबर एकत्र करने का स्थान ।

तरङ्गाना ( कि० ) तरिखी आँख से संकेत करना ।

तरज तव० ( पु० ) तर्ज, डपट, डपेट, डाँट, तर्जन, गाने की रीति, गान का प्रकार, रीति, प्रकार, ढंग । ( कि० ) डाँट कर, निहार कर ।

तरजत तव० ( कि० ) तर्जत, तड़पता है, डाँटता है ।

तरजन तव० ( पु० ) तर्जन, गर्जन, तड़प, डपेट, डाँट ।

तरजना ( कि० ) फटकारना, डाँट बतलाना ।

तरजनी ( स्त्री० ) थंगूटे के समीप की बंगली, भय, डर ।

तरङ्गई ( स्त्री० ) छोटी तराजू ।

तरलुमा ( पु० ) भाषान्तर, अनुवाद, बतया ।

तरण तव० ( पु० ) [ तृ + अणट् ] उत्तरण, वतरना, पार जाना, तैरना, उद्धार, बचाव, डोंगा, नाव, स्वर्ग । ( पु० ) पार होने वाला, उतरने वाला, तरने वाला, मुक्त होने वाला ।

तरणि तव० ( स्त्री० ) [ तृ + अणि ] नौका, नाव, घेंकुआरि, घृतकुमारी । ( पु० ) सूर्यकिरण, अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष :—रत्न ( पु० ) माणिक्य, मणि, सूर्यकान्त मणि ।—सुत ( पु० ) यम, शनि, कर्ण ।—सुता ( स्त्री० ) यमुना, कालिन्दी नदी ।

तरणी तव० ( स्त्री० ) [ तरण + ई ] नौका, नाव, घृतकुमारी, तरनी, पञ्चवारिणी ।

तरन्त तव० ( पु० ) भँक, भँडेक, कुहासा, भ्रसार, रुढ़ ।

तरन्ती तव० ( स्त्री० ) नौका, तरणी, तरी ।

तरपन तव० ( पु० )—तरपण, वृत्ति, मनःप्रसाद, मन की प्रसन्नता, मन्त्रों के द्वारा पितरों के उद्देश्य से जलप्रदान । [ करते हैं ।

तरपहिं तव० ( कि० ) तड़पते हैं, गर्जते हैं, तरपन

तरफ दे० ( स्त्री० ) पार्व, दिग्ग, धार, पक्ष, ओर ।—दार ( पु० ) पक्षपाती, पक्षवाला, सहायक, समर्थक, हिमायती ।—दारी दे० ( स्त्री० ) पक्षपात ।

तरफना दे० ( कि० ) तड़पना, व्याकुल होना ।

तरबतर दे० ( वि० ) सराबोर, भीगा हुआ ।

तरबूज दे० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध फल विशेष, कलईवा, हिंगवाना ।

तरल तव० ( पु० ) हार के बीच का मणि, हार, हीरा, लोहा, तल, पेंदा, बीड़ा । ( वि० ) चञ्चल, द्रवीभूत, पतला, दीप्तियुक्त । ( पु० ) चञ्चल, अस्थिर, अनिश्चितचित्त, पतला, तीक्ष्ण, चोला ।—ता ( स्त्री० ) चञ्चलता, द्रवत्व ।—लोचनी ( स्त्री० ) चञ्चलनयनी, चपलनेत्रा, नारी, स्त्री ।

तरला तव० ( स्त्री० ) [ तरल + आ ] यवागू, मड़, भच्छिडा, बाँस विशेष ( वि० ) सबसे नीचे वाला, नीचे वाला । [ द्रवत्व ।

तरलाई तव० ( स्त्री० ) तारव्य, तरलता, चञ्चलता,

तरलायित तव० ( वि० ) आततारव्य, जिसमें तरलता ।

उत्पन्न हुई हो । ( पु० ) उच्च तरङ्ग, बड़े तरङ्ग ।

तरलित तत् ( वि० ) [ तरल + इत ] आणवक्यान्वित,  
चलित, विक्षलित, आन्दोलित, द्रवीभूत । -

तरव तत् ( पु० ) तर, वृष्ट, पेड़, रूख, गाछ । [ वृष्ट ।  
तरवर तत् ( पु० ) तरवर, बड़ा वृष्ट, उपयोगी वृष्ट, पिय  
तरवरिया दे० ( पु० ) तरवार धारण करने वाला,  
सह्यचारी, तलवार चलाने वाला । [ खांडा ।

तरवार या तरवारि तत् ( स्त्री० ) तलवार, सह्य,  
तरस दे० ( स्त्री० ) तट, तीर, रोग, चन्द, वेग बल ।  
( पु० ) कल्याण, दया, रहस्य ।

तरसना दे० ( कि० ) यद्गुत चाहना, उत्कण्ठित होना,  
जी ब्रगा रहना, दया दिखाने की इच्छा रखने  
पर भी दया नहीं दिखाना सकना, केवल उत्कण्ठित  
होना, अभाव का बलेश सदा करना ।

तरसाना ( कि० ) आशा उत्पन्न करके उसे पूरी न  
करना, व्यर्थ ललचाना ।

तरह दे० ( स्त्री० ) भाँति, प्रकार, ढाँचा, ढब, रीति,  
रंग, युक्ति, उपाय, हाल, अवस्था ।

तरहटो दे० ( स्त्री० ) पहाड़ की तराई, नीची भूमि । -  
तराई दे० ( स्त्री० ) पहाड़ या नदी आदि के पास की  
तरी या सीढ़ वाली भूमि, पहाड़ की घाटी ।

तराजू दे० ( स्त्री० ) तुला, पलक, जो अन्न आदि के  
तौलने के काम में आता है ।

तरान दे० ( पु० ) उगाहन, प्राप्त किया हुआ, तहसीला  
गया, वसूल किया गया, राजकर, चन्दा आदि ।

तराना दे० ( कि० ) पार कराना, उद्धार करना, बचाना,  
एक गाना विशेष ।

तरावीर दे० ( वि० ) सराबोर, खूब भीगा हुआ ।

तरारा दे० ( पु० ) पानी की लगातार गिरने वाली  
धार, उछाल, कुर्बाँच ।

तरावट दे० ( स्त्री० ) ठंडक, नमी, स्निग्ध भोजन ।

तरास तत् ( पु० ) श्रास, भय, शङ्का, डर, पिपासा,  
प्यास, व्या ।

तरि तत् ( स्त्री० ) [ वृ + इ ] नौका, तरी, तरणी,  
तरी तत् ( स्त्री० ) [ वृ + अल् + ई ] नौका ।

तरीका दे० ( पु० ) ढङ्ग, प्रकार, उपयोग की रीति ।

तरु तत् ( पु० ) वृष्ट, द्रुम, गाछ । - ज ( पु० ) वृष्ट  
से उत्पन्न फल फूल आदि । - जीवन ( पु० )  
वृष्ट मूल ।

तरुआ दे० ( पु० ) तलवा, भुँजिया चाँवल ।

तरुण या तरुन तत् ( वि० ) नवीन, नूतन, युवा,  
जवान, खिलवा हुआ, प्रफुल्लित । ( पु० ) बड़ा, जीरा,  
पुण्ड, मोतिया । - उवर ( पु० ) सात दिन के  
भीतर का उवर, नवउवर, नवीन उवर । - दधि  
( पु० ) पाँच दिन का बासी दही ।

तरुणाई तत् ( स्त्री० ) यौवन, युवावस्था, युवाकाल,  
जवानी ।

तरुणी तत् ( स्त्री० ) युवती, युवावस्था की स्त्री,  
जवान स्त्री, पोटयवर्षीया स्त्री, नवयौवना, रमणी,  
कामिनी, गृधकन्या, दन्ती नामक वृष्ट विशेष, पुष्प  
विशेष, सेवती का फूल, जमालगोटा, धीड़ा नामक  
गन्धद्रव्य, मेघराग की एक रागिनी ।

तरुनाई तत् ( स्त्री० ) जवानी, तरुणावस्था ।

तरेड़ा दे० ( पु० ) टोंटी से पानी काँ गिरना, धार  
बाँध कर पानी गिरना ।

तरैरना दे० ( कि० ) खोरी चढ़ाना, खाल दिखाना,  
खाल बदलना ।

तरैत दे० ( पु० ) वया, लहर का चिह्न ।

तरैया तत् ( स्त्री० ) तारका, तारा मन्त्र । यथा:—  
“यया तरैया प्रात के, सब वृष भये बढ़ास ।

सबि दिन मण्डि कर राम छवि, सङ्कचाने चहुँ आस ।”  
कवि वाक्य ।

तरोवर ( पु० ) वृष्ट, पेड़ ।

तरौंड़ी ( स्त्री० ) तुलाहे के हथके की नीचे की लकड़ी ।

तरौंस दे० ( पु० ) तीर, तट, किनारा पैंदे में काजल ।  
यथा:—

“स्याम सुरति करि राधिका, तक्षति तानिजा तीर,  
अँसुवनि करति तरौंस की, खिनक सरौंही नीर ।”  
—सतसई ।

तरौना दे० ( पु० ) कर्णभूषण विशेष, एक प्रकार का  
गहना, जिसे स्त्रियाँ कानों में पहनती हैं । यथा—  
“लसत रवेत सारी दिव्यो, तरख तरौना कान ।  
परयोमनो मुरसरि सखिल, रवि प्रतिविम्ब बिहान ॥”  
—सतसई ।

तर्क तत् ( पु० ) [ तर्क + अल् ] तर्क, उद्धारोद्, पुद्धि-  
द्वारा विवेचना, न्यायशास्त्रसम्यन्धी विचार, हुआत  
तर्कार, अनुमान, कल्पना, अनुमानोक्ति—वितर्क



तरकीब दे० ( स्त्री० ) उपाय, मेज, बनावट, शैली, तरीका ।

तरकुल ( पु० ) ताड़ का पेड़ । [ बरतन ।

तरगुलिया ( स्त्री० ) अनाज भरने का एक छिछला

तरकी ( स्त्री० ) वृद्धि, बढ़ती ।

तरङ्ग तत्त्वं ( स्त्री० ) लहर, हिलार, ऊर्ध्व, वीचि, ठेक,

हिलकोरा । ( पु० ) उमङ्ग, मौज, मानसिक उमङ्ग,

कपड़ा, घोड़े की फलाईंग, सोने की तारों को उमोठ कर बनाई गयी हाथों में पहनने की चूड़ी ।

तरङ्गिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) नदी, सरिता ।

तरङ्गित तत्त्वं ( वि० ) [ तरङ्ग + इत् ] ऊर्मियान,

लहरायेक, लहराता हुआ ।

तरङ्गी तत्त्वं ( वि० ) लहरी, मनमौजी, चञ्चलमग,

उत्साही, उछाहवाला, तरङ्गवाला ।

तरखा दे० ( स्त्री० ) जल का तीव्र बहाव, धारा का वेग ।

तरतरा दे० ( पु० ) एक प्रकार का याल ।

तरदीप ( स्त्री० ) खण्डन, भँसूखी ।

तरदुद ( पु० ) सोच, छटका,

तरतराना ( क्रि० ) कड़कड़ाना ।

तरन तद् ( पु० ) तरण, तैर जाने वाला, पार होने

वाला, मुक्त हो जाने वाला ।—तारन ( पु० )

अपने साथियों के सहित मुक्त होने वाला, स्वयं

तरे और दूसरों को भी तारे ।

तरना दे० ( क्रि० ) पार होना, उद्धार पाना, त्र जाना ।

तरनि तद् ( पु० ) तरणि, सूर्य, रवि, भाग्य, दिवाकर ।

तरनी तद् ( स्त्री० ) तरणी, नौका, नाव ।

तरलुट ( स्त्री० ) पानी अथवा अन्य किसी तरल

पदार्थ के नीचे बैठा हुआ मेल ।

तरलून ( स्त्री० ) पानी के नीचे बैठा हुआ मेल ।

तरल्ला ( पु० ) तेलियों के गोबर एकत्र करने का स्थान ।

तरल्लाना ( क्रि० ) तिरछी आँख से संकेत करना ।

तरज तद् ( पु० ) तर्ज, डपट, डपेट, डाँट, तर्जन,

गाने की रीति, गान का प्रकार, रीति, प्रकार,

डंग । ( क्रि० ) डाँट कर, निहार कर ।

तरजत तद् ( क्रि० ) तर्जत, तड़पता है, डाँटता है ।

तरजन तद् ( पु० ) तर्जन, गर्जन, तड़प, डपेट, डाँट ।

तरजना ( क्रि० ) फटकारना, डाँट बतलाना ।

( स्त्री० ) थंगड़े के समीप की डंगली, भय, डर ।

तरजुई (

तरजुमा

तरण

पार

स्वयं

तरन

तरणि

घकु

वृत्

सूर्य

—

तरणी

घृतक

तरन्त तद्

तरन्ती तद्

तरपन तद्

प्रसन्न

जलप्रदा

तरपहि तद्

तरफ दे० (

वार ( पु० )

हिमायत

तरफना दे०

तरबतर दे० (

तरबूज दे० ( पु० )

हिंगवाना

तरल तद् ( पु० )

हीरा, लोहा,

द्रवीभूत,

अस्थिर, आ

—ता (

( स्त्री० ) चञ्च

तरल्ला तद् ( स्त्री० )

मचिका, याँस

नीचे वाला ।

तरल्लाई तद् ( स्त्री० )

तरल्लायात तद् (

उत्पन्न हुई हो ।

तलवरिया दे० ( वि० ) तलवार धारण करने वाला ।  
 तलवा दे० पैर के नीचे का भाग, पादतल ।  
 तलवार दे० ( स्त्री० ) खड्ग, असि ।  
 तलवासना दे० ( क्रि० ) पैर खियाना ।  
 तलहट्टी तद्० ( स्त्री० ) पहाड़ के नीचे की जमीन,  
 तराई । [जूते के नीचे का चमड़ा, तला ।  
 तला दे० ( स्त्री० ) पेंदा, अधोभाग, निम्नस्थान, थाह,  
 तलाई दे० ( स्त्री० ) तलैया, छोटा तलाव ।  
 तलाक ( पु० ) मुसलमान ईसाइयों में पति पत्नी का  
 विधिवत् पारस्परिक त्याग ।  
 तलातल दे० ( पु० ) लोकविरोध, रसातल, पाताल,  
 नीचे के सात लोकों में का एक लोक ।  
 तलाव दे० ( पु० ) पुष्करिणी, पोखरा, सरोवर, तड़ाग ।  
 तलाश दे० ( पु० ) अनुसन्धान, खोज, सम्बन्ध,  
 श्रवण, मार्ग, ढूँढ़, आवश्यकता, चाह ।  
 तलित दे० ( वि० ) तला हुआ, धी या तेल में सुना  
 हुआ । [खोक, खण्ड, अक्ष, निर्मल ।  
 तलिन तत्० ( स्त्री० ) शय्या, ( पु० ) विरल, दुर्बल,  
 तली दे० ( स्त्री० ) तला, पेंदा, जूते के नीचे का चमड़ा ।  
 तलुआ दे० } पवि के नीचे का भाग ।  
 तलवा दे० } —चाटना ( वा० ) हताश होना,  
 निराश होना, हतमनोरथ होना, सुखामद  
 करना ।  
 तलुवे तले हाथ धरना ( वा० ) शार्प सिद्धि के लिए  
 अनुगत बनना, लछोपत्तो करना, लछो चप्पो  
 करना, सुखामद करना, अनुनय विनय करना ।  
 तले दे० ( श० ) नीचे, अधोभाग से, नीचे की ओर,  
 इतर के, घट के, कुछ कम ।—ऊपर ( वा० )  
 उलट पुलट, नीचे ऊपर, दोनों तरफ ।  
 तलेटी तद्० ( स्त्री० ) पेंदी, तलहटी, तराई ।  
 तलेंचा ( पु० ) महाराज के ऊपर का भाग ।  
 तलैया दे० ( स्त्री० ) छोटा तलाव ।  
 तलप तत्० ( पु० ) शय्या, पलंग, बिछौना, अटालिका ।  
 —कोट ( पु० ) बिछौना का कीट, खटकीरा,  
 खटमल । [ मरातिव ।  
 तल्ला तद्० ( पु० ) अक्षर, मित्रला, पांस, खण्ड,  
 तल्लिका तत्० ( स्त्री० ) ताली, कुँची, कुञ्जी, चामी ।  
 तथ तद्० ( सर्व० ) मुद्रा, तेरा ।

तथा दे० ( पु० ) लोहे का छिड़ला गोख भरतन जो  
 रोटी सेरुने के काम में लाया जाता है ।  
 तवाजा ( स्त्री० ) आवमगत, अतिथि सत्कार ।  
 तवायफ ( स्त्री० ) वेश्या, रंडी ।  
 तवारोख ( स्त्री० ) इतिहास ।  
 तशरीफ ( स्त्री० ) महत्त्व, बडप्पन, मान्यता ।  
 तशतरी दे० ( स्त्री० ) रिकारी, धाली जैसा इकका  
 छिड़वा वातन ।  
 तपना दे० ( क्रि० ) भाग देना, दाटना, भाग करना ।  
 तपरी दे० ( स्त्री० ) पात्रविरोध, तपि का एक वर्तन  
 जिसमें तपण आदि का जल गिराया जाता है ।  
 तट तद्० ( वि० ) दबा हुआ, पिसा हुआ, कटा हुआ,  
 झीला हुआ ।  
 तट्टा तत्० ( पु० ) विश्वकर्मा, आदित्य का नाम  
 झीलने वाला, तपि की धाली जिसमें भगवान्  
 को स्नान कराया जाता है ।  
 तस ( पु० ) तैसा, जिस प्रकार ।  
 तसदीक ( स्त्री० ) जाँच, गवाही, पुष्टि ।  
 तसमा ( पु० ) चमड़े की चौड़ी डोर । [का रेसम ।  
 तसर तद्० ( पु० ) तसर, पट्टबल विरोध, एक प्रकार  
 तसला दे० ( पु० ) कटोरे की तरह का बड़ा गहरा  
 लोहे, पीतल या तपि का बरतन ।  
 तसल्ली ( स्त्री० ) चैन, धीरज, आराम ।  
 तसवीर ( स्त्री० ) चित्र ।  
 तसवीह ( स्त्री० ) माफा ।  
 तसी ( पु० ) तीन बार जुता हुआ खेत ।  
 तस्कर तत्० ( पु० ) चोर, चोहा, अपदार्थ, दूसरे का  
 धन अपहरण करने वाला, श्रवण, कान, मीनफल  
 एक प्रकार का केंत, गन्धद्रव्य विरोध ।—ता  
 ( स्त्री० ) चोरपन, चोहई ।  
 तस्करि तत्० ( स्त्री० ) कोपना नारी, क्रोधी स्वभाव  
 की स्त्री, क्रोधिनी, क्रोधयुक्ता नारी, चोरी, चौर्य ।  
 तस्म दे० ( पु० ) चमोटा, चमोटी ।  
 तस्मई दे० ( स्त्री० ) स्त्री, हविष्य ।  
 तस्मिन् तद्० ( सर्व० ) उसमें, यहाँ पर ।  
 तस्मै तत्० ( सर्व० ) उसके लिए, उसको ।  
 तस्य तद्० ( सर्व० ) उसका ।  
 तस्सु दे० ( पु० ) मापविरोध, इंच ।

( पु० ) शङ्का, सन्देह, अनिश्चित सिद्धान्त को निश्चित करने के लिए विवाद, बहस, वादविवाद, सोचविचार ।—विद्या ( स्त्री० ) आन्वीचिकी, न्यायविद्या ।—शास्त्र ( पु० ) पदुद्दर्शन के अन्तर्गत एक दर्शन विशेष, गौतम और वैशेषिक का बनाया शास्त्र ।

तर्कक तत्त्वं ( पु० ) [ तर्क + तृक् ] याचक, आकांक्षी, तर्ककारक । [ क्रिया ।

तर्कन, तर्कण तत्त्वं ( पु० ) तर्ककरण तर्क करने की तर्कित तत्त्वं ( वि० ) [ तर्क + इत् ] विवेचित, आलोचित, शङ्कित, सन्देहान्वित, सन्देहयुक्त ।

तर्की तत्त्वं ( पु० ) [ तर्क + इत् ] तर्ककारक, नैयायिक, न्यायशास्त्रवेत्ता, विवेचक । ( दे० ) कर्णभूषण विशेष ।

तर्कु तत्त्वं ( स्त्री० ) सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकुला ।

तर्कुटी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ तर्कुट + ई ] सूत्र निर्माणयन्त्र, सूत बनाने की कल, तकुआ, फिरकी ।

तर्कुल दे० ( पु० ) ताड़ का वृक्ष, ताड़फल, ताजीफल ।

तर्खा दे० ( पु० ) तीक्ष्णधारा, प्रखर धारा, वेग से चलने वाली धारा, शीघ्रवाहिनी धारा ।

तर्ज दे० ( स्त्री० ) शैली, रीति, तरह, ढंग, ढंग, घनाघट, तरीका ।

तर्जन तत्त्वं ( पु० ) [ तर्ज + अन्ट् ] भरसन, ताड़न, गर्जन, धमकाने का कार्य, क्रोध से भयानक शब्द करना ।

तर्जनी तत्त्वं ( स्त्री० ) अँगूठे के पास की अँगुली, निर्देश करने वाली अँगुली, बतलाने वाली, प्रादेशिकी । यथा—

“इहाँ कुम्हड़ बलिया कोट नाहीं ।

जो तर्जनि देखत मरि जाहीं ।”—राभायण ।

तर्जित तत्त्वं ( वि० ) [ तर्ज + इत् ] भरसित, ताड़ित, धमकाया गया ।

तर्जुमा दे० ( पु० ) अनुवाद, उदया, एक भाषा में लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में करना ।

तर्पक तत्त्वं ( पु० ) नवीनवस्त्र, तस्काळ उपर्य बड़ड़ा ।

तर्पता दे० ( वि० ) स्निग्ध, अति चिकन ।

तर्ताराना दे० ( क्रि० ) चञ्चलता करना, गलफटाकी करना, सझाटा भरना ।

तर्तराहट दे० ( स्त्री० ) सझाटा, गीदड़ भभकी, गलफटाकी, रझावा ।

तर्पण तत्त्वं ( पु० ) [ तृप् + अन्ट् ] तृप्तिकारण, प्रोषण, यज्ञकाष्ठ, महायज्ञविशेष, पितृयज्ञ, श्वेत्तपि और पितरों को जलायज्जलि द्वारा परिपुष्ट करना । मन्त्रों द्वारा पितृ-पितामह के उद्देश्य से जलप्रदान ।

तर्व दे० ( स्त्री० ) घाघ की लय, स्वर, ध्वनि ।

तर्ताना दे० ( क्रि० ) बड़बड़ाना, धक्कड़ करना, कुड़ना, चिड़ना, खों का बतार चढ़ाव अलापना ।

तर्तरिया दे० ( पु० ) तलवार बांधने वाला; लक्षधारी ।

तर्प तत्त्वं ( पु० ) [ तृप् + अल् ] अभिलाषा, तृष्णा, इच्छा, समुद्र, सूर्य ।

तर्पण तत्त्वं ( पु० ) [ तृप् + अन्ट् ] तृषा, पिपासा, तृष्णा, प्यास, अभिलाषा, इच्छा । [ प्यासा ।

तर्पित तत्त्वं ( वि० ) तृपित, पिपासित, तृषान्वित, तर्स दे० ( स्त्री० ) दया, कृपा, कदवा, अनुकम्पा ।—

खाना ( क्रि० ) दया करना, कृपा करना ।

तर्साना दे० ( क्रि० ) ललचाना, लुभाना ।

तर्सें दे० ( अ० ) परसें का पिछला दिन, परसें के आगे का दिन, वर्तमान दिन से पड़ला या पिछला चौथा दिन ।

तल तत्त्वं ( पु० ) [ तल् + अल् ] खण्ड, महीतल, नीचे, अधोभाग, गढ़ा, कानन, वन, तला, पानी के नीचे का भाग, तलवा, तली, हथेली, सतह, स्वभाव, पाटन, ताड़ का पेड़, मुठिया, गोह, कलाई बिता, खहारा, महादेश, पाताल विशेष, नरक विशेष ।—घर ( पु० ) नीचे का घर, तहखाना ।

—छूट ( पु० ) मैल, निचोड़, खुदखुदरा, नीचे बैठे हुए मैल ।—पट ( पु० ) मलमेट, मटियामेट चौपट, विनष्ट ।—फोर ( अ० ) तल फोड़ कर निकला हुआ । [ ताल, पोखरा; फल विशेष ।

तलक दे० ( अ० ) तक, पर्यन्त, अवधि । तत् ( पु० )

तलना दे० ( क्रि० ) भ्रूणना, भ्रूजना, तेज में भ्रूजना ।

तलफना दे० ( क्रि० ) तड़पना, छटपटाना, व्याकुल होना ।

तलव दे० ( पु० ) वेतन; आवश्यकता, माँग ।

तलमलाना दे० ( क्रि० ) ललचाना, लोभाना, विकृत

गति से चलना, दुर्बलता से हक रक कर चलना,

दिखते डोलते चलना, तड़फड़ाना ।

तलघरिया दे० ( वि० ) तलघार धारण करने वाला ।  
 तलवा दे० पैर के नीचे का भाग, पादतल ।  
 तलघार दे० ( स्त्री० ) खड्ग, असि ।  
 तलवासना दे० ( क्रि० ) पैर खियाना ।  
 तलहटी तद्० ( स्त्री० ) पहाड़ के नीचे की जमीन,  
 तराई । [ जूते के नीचे का चमड़ा, तला ।  
 तला दे० ( स्त्री० ) पेंदा, अधोभाग, निम्नस्थान, पाद,  
 तलाई दे० ( स्त्री० ) तलैया, छोटा तलाव ।  
 तलाक ( पु० ) मुसलमान ईसाइयों में पति पत्नी का  
 विधिपूर्वक पारस्परिक त्याग ।  
 तलातल दे० ( पु० ) लोकविरोध, रचातल, पाताल,  
 नीचे के सात लोकों में का एक लोक ।  
 तलाव दे० ( पु० ) पुष्करिणी, पोखरा, सरोवर, तड़ाग ।  
 तलाश दे० ( पु० ) अनुसन्धान, खोज, सन्धान,  
 अन्वेषण, मार्गण, ढूँढ़ ढाँढ़, आवश्यकता, चाह ।  
 तलित दे० ( वि० ) तला हुआ, घी या तेल में भुना  
 हुआ । [ स्नो, स्क्वज, अवप, निर्मल ।  
 तलिन तत्० ( स्त्री० ) शय्या, ( पु० ) विरल, दुर्बल,  
 तली दे० ( स्त्री० ) तला, पेंदा, जूते के नीचे का चमड़ा ।  
 तलुआ दे० } पर्व के नीचे का भाग ।  
 तलवा दे० } —चाटना ( वा० ) हताश होना,  
 निराश होना, हतमनोरथ होना, खुरामद  
 करना ।  
 तलुवे तले हाथ धरना ( वा० ) शार्प सिद्धि के लिए  
 अनुगत बनना, लछोपत्तो करना, लछो चप्पे  
 करना, खुरामद करना, अनुनय विनय करना ।  
 तले दे० ( घ० ) नीचे, अधोभाग से, नीचे की ओर,  
 हतर के, घट के, कुछ कम ।—ऊपर ( वा० )  
 उन्नत पुन्नत, नीचे ऊपर, दोनों तरफ़ ।  
 तलेटी तद्० ( स्त्री० ) पेंदी, तलहटी, तराई ।  
 तलेंचा ( पु० ) महाराज के ऊपर का भाग ।  
 तलैया दे० ( स्त्री० ) छोटा तलाव ।  
 तलप तत्० ( पु० ) शय्या, पलंग, बिछौना, अट्टालिका ।  
 —कोट ( पु० ) बिछौना का कीट, खटकीरा,  
 खटमल । [ मरातिथ ।  
 तल्ला तद्० ( पु० ) अस्तर, मितल्ला, पाँस, खण्ड,  
 तल्लिका तत्० ( स्त्री० ) ताली, कुँची, कुञ्जी, चाभी ।  
 तप तद्० ( सर्व० ) हुन्हाहा, तेरा ।

तवा दे० ( पु० ) लोहे का छिठला गोल धरतन जो  
 रोटी सेकने के काम में लाया जाता है ।  
 तवाज़ा ( स्त्री० ) आवभगत, अतिथि सत्कार ।  
 तवायफ ( स्त्री० ) वेश्या, रंडी ।  
 तवारोख ( स्त्री० ) इतिहास ।  
 तशरीफ ( स्त्री० ) महत्व, बडप्पन, मान्यता ।  
 तशतरी दे० ( स्त्री० ) रिकाशी, घाली जैसा हल्का  
 छिछुला धरतन ।  
 तपना दे० ( क्रि० ) भाग देना, बाँटना, भाग करना ।  
 तपरी दे० ( स्त्री० ) पात्रविरोध, तबिये का एक वर्तन  
 जिसमें तर्पण आदि का जल गिराया जाता है ।  
 तष्ट तत्० ( वि० ) दबा हुआ, पिसा हुआ, कटा हुआ,  
 छीला हुआ ।  
 तष्टा तत्० ( पु० ) विष्कर्मों, आदित्य का नाम  
 छीलने वाला, तबिये की घाली जिसमें भगवान्  
 को स्नान कराया जाता है ।  
 तस ( पु० ) तैसा, जिस प्रकार ।  
 तसदीक ( स्त्री० ) जाँच, गवाही, पुष्टि ।  
 तसमा ( पु० ) चमड़े की चौड़ी डोर । [ का रेशम ।  
 तसर तद्० ( पु० ) तसर, पट्टवन्न विरोध, एक प्रकार  
 तसला दे० ( पु० ) कटोरे की तरह का बड़ा गहरा  
 लोहे, पीतल या तबिये का धरतन ।  
 तसल्ली ( स्त्री० ) चैन, धीरज, आराम ।  
 तसवीर ( स्त्री० ) चित्र ।  
 तसवीह ( स्त्री० ) माछा ।  
 तसी ( पु० ) तीन बार जुता हुआ खेत ।  
 तस्कर तत्० ( पु० ) चोर, चोहटा, अपहर्ता, दूसरे का  
 धन अपहरण करने वाला, श्रवण, कान, मैनफल  
 एक प्रकार का बेंत, गन्धद्रव्य विरोध ।—ता  
 ( स्त्री० ) चोरपन, चोहई ।  
 तस्करी तत्० ( स्त्री० ) कोपना नारी, क्रोधी स्वभाव  
 की स्त्री, क्रोधिनी, क्रोधयुक्ता नारी, चोरी, चौर्य ।  
 तस्म दे० ( पु० ) चमोटा, चमोटी ।  
 तस्मई दे० ( स्त्री० ) स्त्री, हविष्य ।  
 तस्मिन् तत्० ( सर्व० ) उसमें, वहाँ पर ।  
 तस्मै तत्० ( सर्व० ) उसके लिए, उसको ।  
 तस्य तत्० ( सर्व० ) उसका ।  
 तस्स दे० ( पु० ) मापविरोध, हंच ।

तहसनहस दे० ( अ० ) नष्ट भष्ट, तितर बितर, बरबाद, ख़स्त ।

तह ( स्त्री० ) परत ।

तहसील दे० ( पु० ) ख़जाना, कोश, वसूली, करग्रहण, उगाही, सरकारी कचहरी जहाँ मालगुज़ार अपनी अपनी मालगुज़ारी जमा करते हैं ।—दार ( पु० ) राजकर की उगाही करने वाला अफ़सर ।—दारी ( स्त्री० ) तहसीलदार का पद, राजकर वसूल करने का काम ।

तहसीलना ( कि० ) वसूल करना, उगाहना ।

तह, तहाँ, तहवाँ दे० ( अ० ) उस स्थान पर, उस स्थान में, उस ठाँव, उस भूमि पर ।

तहाना दे० ( कि० ) छपेटना, चौपटना, चौपरत करना, घरी करना, मड़ना, चुनना, चुनत करना ।

तहियाँ दे० ( कि० वि० ) उस दिन, पहले के दिन, पहले । [ स्थान पर ।

तही दे० ( कि० वि० ) वहाँ, वहाँ, 'उस स्थान, उसी

ता दे० ( सर्व० ) उस । दे० ( अम्य० ) तक, पर्यन्त ।

तत् ( प्रत्य० ) एकभाव वाचक अम्यय । जैसे वत्समता, शत्रुता आदि ।

ताई ( कि० वि० ) नाई, तक । [ घोड़ागाड़ी ।

तांगा दे० ( पु० ) गाड़ी विशेष, एक प्रकार की

तांत दे० ( स्त्री० ) चमड़े की रस्सी, कपड़ा बिनने का यंत्र, पंक्ति, श्रेणी, तार, कतार ।—बांधना ( कि० )

यकपकी, चमड़े की रस्सी से बांधना ।—रिया ( पु० ) दुपला पतला ।

तांती दे० ( पु० ) जातिविशेष, ततया, कोरिया, पटवा, कपड़ा बिनने वाली एक हिन्दू जाति ।

ताँबे दे० ( पु० ) ताँबे का वर्ण, ताँबे की वस्तु, मूठी चुन्नी । [ धातु ।

ताँबा दे० ( पु० ) धातुविशेष, ताम्र, स्वनामप्रसिद्ध

ताइत दे० ( पु० ) चर्मरंजु, चर्मबन्धनी, तन्त्री, ताँत, यन्त्र, जन्तर, गण्डा, टोटका ।

ताई दे० ( स्त्री० ) चाची, काकी, ताऊ की स्त्री, काका की स्त्री, पिता के बड़े भाई की स्त्री, कज़ाही जिसमें जलेबी आदि बनाई जाती है ।

ताईद ( स्त्री० ) सुपुष्टि, अनुमोदन, भली प्रकार समर्पण ।

ताऊ दे० ( पु० ) बड़ा चाचा, पिता का बड़ा भाई, पितृव्य ।

ताऊस ( पु० ) मोर, केकी, मयूर ।

ताक दे० ( स्त्री० ) छीठ, छटि, दर्शन, लक्ष्य, दृष्टिपात, अवलोकन, सन्धान करण, टकटकी, किसी मीके की बाट जोहना, खोज —भाँक दे० ( स्त्री० ) देख भाळ ।

ताकर दे० ( सर्व० ) इसका, तिसका ।

ताक दे० ( पु० ) थाला, ताखा । [ बलवान ।

ताकत ( स्त्री० ) बल, अधिकार ।—वर ( पु० )

ताकना दे० ( कि० ) भाँकना, देखना, घूरना, दृष्टिपात करना । [ ( सर्व ) तिसका ।

ताका ( दे० ) ( कि० ) देखा, निहारा, निगान बाँधा,

ताकि दे० ( कि० ) देखकर, लखकर । ( अम्य० ) अतः, जिससे, इसलिये । [ अनुगोच ।

ताकीद ( स्त्री० ) भली प्रकार कही हुई बात, प्रयान

ताखा दे० ( पु० ) थाला, ताक ।

ताखी ( पु० ) दो प्रकार की खाँखें वाला, ऐसी ।

ताग दे० ( पु० ) डोरा, सूत, सूत्र, धागा ।—तोड़ ( पु० ) गोटा, किनारी, धारी ।

तागना दे० ( कि० ) सीना, डोरा चढ़ाना, टाँकना, टाँका लगाना, सुई में धागा लगाना, सुई में धागा पिरोना ।

तागा दे० ( पु० ) धागा, सूत, मोटा धागा ।

ताज दे० ( पु० ) मस्तकावरण विशेष, राजा के सिर की पगड़ी, मुकुट, किरिट ।

ताजक त्व० ( पु० ) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष ।

ताजन दे० ( पु० ) कोड़ा, कशा, चाबुक ।

ताजवीवी दे० ( स्त्री० ) मुगल सम्राट् शाहजहाँ की बेगम, मुमताज़ महल ।

ताजमहल दे० ( पु० ) मुमताज़ महल का समाधि मन्दिर जो आगरे में सम्राट् शाहजहाँ ने बनवाया था यह बड़ा ही सुन्दर है ।

ताज़गी दे० ( स्त्री० ) नवीनता, सरलता, सरसभाव, अच्छापन, टकपान । [ हटपट ।

ताज़ा दे० ( वि० ) टटका, अम्बान, रसाब, नवीन,

ताज़िया ( पु० ) कागज़ की आकृति जो मुसलमान मोहरों में बनाते हैं ।

ताजोम ( खी० ) आदर, अदब ।— १ ( गु० ) अधिक प्रतिष्ठित ।

ताजो दे० ( पु० ) बुद्ध अथर्व विशेष, पहाड़ी घोड़े की एक जाति, तेज़ घोड़ा, कुत्ते की एक जाति ( गु० ) टटका, नवीन । [ गहना, कर्नूल ।

ताटङ्क तत्० ( पु० ) कर्णभूषण विशेष, कान का एक

ताटस्य तत्० ( पु० ) उदासीनता, सखिभट, सामीप्य ।

ताड़ दे० ( पु० ) जान पहचान, परिचय, समझ, बोध, अवगम, ताल, ताल वृत्त, ताड़ का पेड़ ।

ताड़क दे० ( पु० ) ताड़ने वाला, समझने वाला, जानने वाला ।

ताड़का तत्० ( खी० ) सुकेतु नामक पक्ष की कन्या, [ सुकेतु, निःसन्तान था, सन्तान प्राप्ति के लिये उसने प्रह्ला की श्राधना की, प्रह्ला के घर से ताड़का का जन्म हुआ । यह जन्म के पुत्र सुन्द को व्याही गई थी । किसी कारणवश सुन्द अगस्त्य के शाप से मारा गया । स्वामी की मृत्यु का बदला लेने के लिए ताड़का और उसका पुत्र दोनों अगस्त्य के आश्रम में पहुँचे । अगस्त्य के शाप से ये माता पुत्र राक्षस भावापन्न हुए । इससे ताड़का का क्रोध और भी द्विगुणित हुआ और ये ब्राह्मण जाति के शत्रु बन बैठे । ब्राह्मण को देखते ही ये आग बचूला होकर उन पर आक्रमण करने लगे । इनके आत्याचार से अगस्त्य का आश्रम जन-शून्य हो गया अपनी रक्षा के लिये महर्षि उस आश्रम को छोड़ कर भाग गये । उस वन का नाम ही ताड़का वन हो गया । राजा यमुना के दक्षिण तट पर जो बारा जिला है वही ताड़का का वन है । ताड़का और उसके पुत्र के क्रत्याचार से महर्षिवृन्द बड़ा दुःखी हुआ । इनके रक्षा पाने के लिए विश्वामित्र श्योधाया पहुँचे, महागान्धरय से राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र ने मंगाया । यद्यपि पुत्रप्रेम के वशवर्ती महाराज दशरथ, राम लक्ष्मण को देना नहीं चाहते थे, तथापि राजधर्म की गुरुता की ओर देख उन्होंने राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ कर दिया । विश्वामित्र के तपोवन में वे दोनों आई चाये, रामचन्द्र ने ताड़का को मार डाला और मारीच को बाणों

द्वारा दूर फेंक दिया । ताड़का को मारने से खीबघ के दोष की आशङ्का रामचन्द्र पर नहीं की जा सकती है, क्योंकि जो ताल ठोंक कर रथ में लड़ने को तैयार है, जिसने खी अनेचित्त खड्ग और कोमलता छोड़ दी है उसे खी कहना ही किस परिभाषा के अनुसार न्याय सन्नत हो सकता है । ]

तडङ्क तत्० ( पु० ) ताटङ्क, कर्णभूषण विशेष, कान का एक गहना । [ आघात, धुङ्की, गुणन, दण्ड ।

ताडन तत्० ( पु० ) [ तड् + णिच् + अनट् ] मार, प्रहार, ताड़ना दे० ( कि० ) जान लेना, समझ लेना । ( खी० )

डाँट, धमकी, दण्ड, भर्त्सना ।

ताड़नी तत्० ( खी० [ ताडन + ई ] छोड़े आदि को मारने की छड़ी, चाबुक, कोड़ा, कशा ।

ताड़नीय तत्० ( वि० ) [ तड् + णिच् + अनीय ] ताड़ने योग्य, ताड़न करने के उपयुक्त, मारने योग्य, अपराधी ।

ताडपत्र तत्० ( पु० ) ताड़ वृक्ष का पत्र ।

ताडित, ताडित तत्० ( गु० ) [ तड् + णिच् + क ] आघातप्राप्त, जिसका ताड़न किया गया हो, मारा हुआ । ( कि० ) मारता है, डाँटता है ।

ताड़ी दे० ( स्त्री० ) ताल रस, नशीला ताड़ का रस, मादक द्रव्यविशेष, कटार की मूठ ।

ताड्यमान तत्० ( वि० ) [ तड् + णिच् + शान् ] पीट्यमान, हटाया गया, पीटा गया, आघातप्राप्त, बजाने के लिए मृदङ्ग आदि को आहत करना ।

ताड्य तत्० ( पु० ) नृत्य, नाच, उद्धत नृत्य, कोमलता विवर्जित नृत्य । कहते हैं तण्डि नामक एक अपि 'ने इस विद्या का सर्वप्रथम मनुष्यों में प्रचार किया, इसी कारण इसको ताण्डव कहते हैं । महादेव और उनके गण इसी नृत्य के पचपाती हैं ।

ताण्डवी तत्० ( पु० ) सङ्गीत के चौदह तालों में से ताल विशेष । [ आघाचार्य तण्डि मुनि हैं ।

ताण्डि तत्० ( पु० ) नृत्य शास्त्र, वह शास्त्र जिसके ताण्डवी तत्० ( पु० ) सामवेदान्तगत ताण्ड्य शास्त्र को पढ़ने वाला ।

तात तत्० ( पु० ) भद्र, मान्य, माननीय, अद्वेय, पूज्य, रत्नाय, पिता, चाचा, प्रियभाई, प्रियमित्र, पुत्र । यथा—'तात प्रणाम तात सन कहेऊ ।'

—रामायण ।

यहाँ पहला तात शब्द प्रियमित्रवाची है और दूसरा पितावाची । प्रिय सम्बोधन, पुत्र शिष्य आदि का सम्बोधन, यथा:—

“कहहु तात जननी बलिहारी ।” —रामायण ।

( वि० ) गरम, उष्ण, तप्त, तपाया हुआ ।

तातगु ( पु० ) चाचा, काका । ( गु० ) हाल का, उसी या इसी समय का ।

तातनी तातनी दे० ( पु० ) उसकी, उसका ।

तातल दे० ( वि० ) ताता, गर्म । तत् ( पु० ) पिता के समान सम्बन्धी, छोटे का काँटा, पाक, रोग ।

ताता दे० ( वि० ) गरम, उष्ण । [ आशय, मर्म, मतलब, भाव ।

तातील ( स्त्री० ) यन्दी, छुटी । ( पु० ) अभिप्राय,

तातायेई दे० ( स्त्री० ) नाच का एक बोल ।

ताते दे० ( सर्व० ) उससे, उस कारण से, उस हेतु से ।

( वि० ) गरमा गरम, संतप्त, तपे हुये ।

तात्कालिक तत् ( वि० ) तत्कालोपपन्न, उसी समय का उत्पन्न हुआ, तत्कालोद्भव, तत्कालीन ।

तात्पर्य, तात्पर्य्य तत् ( पु० ) अभिप्राय, अर्थ, मर्म, आशय, मतलब ।

तात्विक तत् ( वि० ) यथार्थ, ठीक ठीक ।

तादृक्स्थय तत् ( पु० ) तद्रूपता, उसी प्रकार से स्थित, वही भाव । [ जन, उसके लिये ।

तादृश्य तत् ( पु० ) समान अभिप्राय, उसके प्रयोग-

तादात्म्य तत् ( पु० ) तत्स्वरूपता, अभेदसम्बन्ध, भेद रहने पर भी अभेद प्रतीति ।

तादाद् ( स्त्री० ) संख्या, गिनती, शुमार, अनुमान ।

तादृश तत् ( वि० ) तद्रूप, उसी प्रकार, उसी के समान, वैसे ही, उसके ऐसा ।—तादृशी ( स्त्री० ) तद्रूप, तत्समान ।

तान तत् ( स्त्री० ) [ तन् + घञ् ] खींच, विस्तार, शानविशेष, राग, स्वर । ( पु० ) गान का एक अङ्ग-

विशेष ।—ताड़ना ( क्रि० ) परिहास करना, घाघेप करना, तान की समाप्ति करना ।—पुरा ( पु० ) वाद्य विशेष, सितार के ऐसा एक बाजा ।

—सेन ( पु० ) नामी गवैया, यह गौड़ ब्राह्मण थे, इन्होंने गान विद्या में अद्भुत पारदर्शिता प्राप्त की थी । कहते हैं एक समय अपने प्रतिद्वन्दी बैजू बावरे के साथ शास्त्रार्थ करते हुए इन्होंने दीपक

राग गाया । दीपक राग गाते ही चारों ओर से दीपक आकर इनके शरीर में चिपट गये । शत यह थी कि तानसेन के शरीर में जब दीपक चिपटने लगेंगे, उसी समय बैजू बावरा मेघ राग गाकर पानी बरसावेंगे, परन्तु बैजू बावरे ने ऐसा नहीं किया । अतएव तानसेन का शरीर दग्ध हो गया । वस अन्त्याय से दुःखित होकर इन्होंने अपने जन्म-स्थान को छोड़कर गुजरात की यात्रा की । घटनाक्रम से यह एक गाँव में पहुँचे वहाँ ताता और नाना नाम की दो स्त्रियाँ जो इस विद्या में बड़ी निपुणता रखती थीं इन्होंने इनको अच्छा किया । तभी से तानसेनी राग का गाना ताना नाना से शुरू करते हैं ।

तानव तत् ( पु० ) तनुता, चीथता, कुराता ।

ताना दे० ( पु० ) फैलाया हुआ सूत, कपड़े बिनने के लिये फैलाया हुआ सूत, ओत, तानासूत, तानी ।

यथः—

“ताना नाचे घाना नाचे नाचे सूत पुराना ।

करिगह भीतर कविरा नाचे, यह सतगुरु कर बाना ।”

—कवीर साहब ।

कटाच, दरी या कालीन बुनने का यन्त्र-या कारवा ।

( क्रि० ) ताव देना, गरम करना, तपा कर जीचना ।

तानावाना ( पु० ) फेराफेरी, अदल बदल ।

कपड़ा बुनने के समय जम्मे चौड़े फैलाये

हुए सूत [ तिनको, तिन्हीं को ।

तानि दे० ( क्रि० ) तान कर, खींच कर । ( सर्व० )

तानी दे० ( स्त्री० ) ताना बिनने का सूत । ( गु० )

रागी, गवैया ।

तानारीरी दे० ( स्त्री० ) साधारण गाना ।

तान्त्रिक तत् ( पु० ) तन्त्रशास्त्रज्ञ, तन्त्रशास्त्रवेत्ता,

शास्त्रतत्त्वज्ञ, ज्ञातसिद्धान्त, सुपण्डित ।

तान्ना दे० ( क्रि० ) खींचना, कसना, तन्मू तानना, टानना, फैलाना ।

ताप तत् ( पु० ) [ तप + घञ् ] सन्ताप, उष्णता,

ज्वान्ता, मन की पीड़ा, बुझार ।—जनक ( पु० )

उष्णजनक, क्रेशकर, पीड़ादायक ।

तापक तत् ( वि० ) तापकर्ता, ताप देने वाला, दुःख-

दायी, दुःखदाता । ( पु० ) ज्वर, बुझार ।

तापन तत् ( पु० ) [ तप् + शिच् + अनट् ] तप्त करना  
तपाना, जजाना, शोकयुक्त होना, पीड़न, सूर्य,  
कामदेव के पाँच बाणों में से एक, सूर्यकान्तमणि,  
मदार, ढोल पाना, एक नरक, शत्रु को पीड़ा पहुँ-  
चाने वाला तान्त्रिक प्रयोग ।

तापना दे० ( क्रि० ) घमाना, गर्माना, देह सँकना,  
आग के पास बैठना, झुंकना, उड़ाना, बरबाद करना ।

तापविलज्जी दे० ( स्त्री० ) डोहा, पिलही रोग, पेट का  
रोग, रोग विशेष ।

तापस तत् ( पु० ) तपस्वी, योगी, तपश्चरणकर्ता,  
तपस्या करने वाला ।—तप इक्षुगुदीदृष्ट, एक प्रकार  
का वृष, जिसके फल से तेल निकलता है,  
पंगला ।

तापहीन तत् ( वि० ) उष्णतरहित, पीड़ाहित ।

तापिच्छ तत् ( पु० ) वृक्षविशेष, यथाम तमाल का पेड़ ।

तापित तत् ( वि० ) दुःखित, तापयुक्त ।

तापी तत् ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, यह नदी  
विन्ध्य पर्वत के दक्षिण की ओर है और अपने  
नाम से प्रसिद्ध है ।

छापीय दे० ( पु० ) सोनामाखी, औपचविशेष ।

तापूस् तत् ( पु० ) तमालपत्र, त्रेत्रपात ।

ताप्य तत् ( पु० ) धातुमाफिक, सोनामाखी, तापीय ।

ताफ्ता दे० ( पु० ) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, जिसे  
धूपड़ा ही कहते हैं । [ निरन्तर ।

ताबड़तोड़ दे० ( अ० ) एक पर एक, लगातार, सतत,

ताबे ( गु० ) वशीभूत, अधीन, आज्ञाकारी ।—द्वार

( वि० ) सेवक, नौकर ।—द्वारी ( स्त्री० )

नौकरी, चाकरी, अधीनता ।

ताम ( पु० ) ऐव, विकार, घबड़ाहट, क्रोध, श्लानि,

बरावना, हैरान, क्रुद्ध । [ हुआ धातु ।

तामचीनी तत् ( स्त्री० ) धातुविशेष, ताँबा मिठा

तामजाम ( स्त्री० ) एक प्रकार की पालकी ।

तामड़ा दे० ( पु० ) ताँबे के रत्न का एक मणि ।

तामरस तत् ( पु० ) कमल, पद्म, ताँबा, ताम्र,  
सोना, सुवर्ण, चतुरा, सारस । [ का पौधा ।

तामलाकी तत् ( स्त्री० ) भूमिका, आँवला, एक प्रकार

तामजिह्मी तत् ( स्त्री० ) ताम्रजिह्मी, एक नगर का  
नाम, जो दक्षिण यमाल में है, तामलूक ।

तामस तत् ( वि० ) तामसिक, तमोगुणयुक्त, मूक,  
जड़, दुष्ट, खल । ( पु० ) क्रोध, भद्रङ्कार, तमोगुण ।

तामसिक तत् ( पु० ) तामस, तमोगुण का कार्य,

तमोगुणयुक्त, धर्मविवर्जित कृत्य, तमोगुणी, तामसी ।

तामसी तत् ( स्त्री० ) निशा, रात्रि, कालरात्रि, दुर्गा,

जयामासी । ( पु० ) क्रोधी, आलसी, तमोगुणी,

रिसवा, कोपी, कोपन स्वभाववाला ।

तामह दे० ( अ० ) तत्र, उसमें, उस मध्य में, उस  
बीच में । [ धातुविशेष ।

तामा तत् ( पु० ) ताम्र, ताँबा, स्वनाम प्रसिद्ध

तामिल तत् ( पु० ) देशविशेष ।

तामिर ( पु० ) अन्धकारमय नरक विशेष, क्रोध,  
द्वेष, डाह, अविद्याविशेष ।

तामेसरी ( स्त्री० ) ताँबे के रंग का एक रंग ।

तामील दे० ( पु० ) सम्पादन करना, आज्ञानुसार काम

कर देना, मालिक की आज्ञा का पालन करना,

देश विशेष ।

तामीली दे० ( स्त्री० ) सम्पादन, आज्ञापालन, आज्ञा

पालन करने वाले को जो दिया जाता है । अदा-

लत के अपराधियों का सम्मन तामील करने के

लिये बाढ़ी और प्रतिवादी पत्र से जो मित्रता है,

अथवा वे स्वयं दबाव डालकर ले लेते हैं । देश

भाषा विशेष, तामील देश की भाषा ।

तामेश्वर, ताम्रेश्वर तत् ( पु० ) औपचविशेष, अपने

नाम से प्रसिद्ध औपच, ताँबे का भस्म ।

ताम्बूल तत् ( पु० ) नागरथेल का पात, पान ।

ताम्बूली तत् ( पु० ) ताम्बूल की लता, नागरथेल ।

ताम्बूलिक तत् ( पु० ) तमोली, पान घेघने वाला ।

ताम्र तत् ( पु० ) धातुद्रव्यविशेष, ताँबा ।—कर

( पु० ) कसेरा, ठेरा, ताँबे का व्यापार करने

वाला ।—कुट ( पु० ) तम्बाकू का पौधा ।—गर्भ

( पु० ) तृप्तिया, नीजायोया, ताँबा इनसे

निकाला जाता है ।—चूट ( पु० ) कुश्कुट, मुरगा,

कुकरौचा ।—पत्र ( पु० ) ताँबा का बना पत्र, पहले

जिस पर राजाज्ञा लिखी जाती थी ।—चर्ण

( वि० ) ताँबे के रंग का ( पु० ) शरीर का घाम,

सिलान नामक द्वीप ।

तामदाद ( स्त्री० ) देखो तादाद ।



तायफा दे० ( पु० ) नर्तकी सम्प्रदाय, गण्डियों का समूह।  
 वेश्या, वेश्यासमुदाय।  
 तायी तद्० ( पु० ) बड़ा चाचा, पिता का बड़ा भाई।  
 ( कि० ) तपाया हुआ, गर्म किया हुआ। लोहे  
 आदि धातुओं का खिंचा हुआ सूत, धातु का  
 धागा।—घाघना ( वा० ) जगातार जारी  
 रखना, किसी काम को जगातार करना, ताँता बाँध  
 देना।—टूटना ( वा० ) अलग होना, छूट जाना,  
 बँद होना।

तारक तत्० ( पु० ) मन्त्रविशेष, उद्धारकर्ता मन्त्र,  
 रामतारक मन्त्र, तारक, सितारा, नक्षत्र, आँख  
 की पुतली, तारक एक राक्षस का नाम, देवशत्रु।  
 तारकासुर ने तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न करके दो  
 वर पाये थे। पहला वर यह था कि इस संसार में  
 उससे बलवान् दूसरा कोई उत्पन्न न हो, और  
 दूसरा वर यह था कि महादेव के पुत्र से ही वह  
 मारा जाय। ब्रह्मा का वर पाकर वह देवताओं  
 को दुःख देने लगा। देवताओं के कष्ट की सीमा  
 न रही। उसका वध साधन करने के लिये देव-  
 ताओं ने प्रयत्न करना प्रारम्भ किया। महादेव के  
 पुत्र उत्पन्न होने के लिये देवताओं ने पड्यन्त्र  
 रचा। क्योंकि योगिराज महादेव विवाह  
 करना ही नहीं चाहते थे। अतएव उन लोगों  
 ने कामदेव को इसका भार सौंपा। कामदेव  
 जाकर महादेव की प्रोधाग्नि में अस्म हो गया।  
 इससे देवताओं के कष्ट की सीमा न रही।  
 हिमाद्रितनया पार्वती शिव को पतिव्रण करने  
 के लिये उन दिनों वसी पर्वत पर तपस्या कर  
 रही थीं। घोर तपस्या करने के अनन्तर महादेव  
 प्रसन्न हुए और उनसे विवाह किया। उनके गर्भ  
 से कार्तिकेय उत्पन्न हुए। देवताओं ने इनको  
 अपना सेनापति बनाया। युद्ध में इन्होंने तारकासुर  
 को मार डाला। ( २ ) इन्द्र का शत्रु राक्षस, इसने  
 इन्द्र को बड़ा कष्ट दिया, इन्द्र विष्णु की शरण  
 में गये, विष्णु ने नयुंसक का रूप धारण करके  
 इसे मार डाला।

तारकारि तद्० ( पु० ) [ तारक + ऋरि ] तारकासुर  
 का शत्रु कार्तिकेय, स्वामिकारिक, बहादन।

तारकी तत्० ( वि० ) तारकायुक्त, तारासहित।  
 तारकूट तद्० ( पु० ) ताम्रकूट, रूपा, पीतल।  
 तारकेश्वर तत्० ( पु० ) सदाशिव, महादेव, इस नाम  
 का तीर्थविशेष।

तारटूटना दे० ( कि० ) टिकी उड़ाना, कारबार नष्ट  
 हो जाना, प्रवेश बन्द होना, भुलावा देकर अपने  
 वश में लाये हुए का छिटक जाना।

तारण तत्० ( पु० ) [ तृ + णिच् + अन्ट् ] उद्धार-  
 ण, पारकरण, पार उतारना, उद्धार करना।  
 —तरण ( पु० ) पार करने वाला, उद्धार करने  
 वाला, स्वयं उद्धार होने वाला।

तारणा दे० ( कि० ) पार करना, उद्धार करना, प्राण,  
 करना, उबारना। [ करण की पत्नी।

तारणी ( स्त्री० ) याज और वपयाज की माता और  
 तारणीय तत्० ( पु० ) [ तृ + णिच् + अनीय ] तारण  
 करने योग्य, उद्धारणीय, उद्धार करने योग्य, पार  
 करने योग्य।

तारतयडुल तत्० ( पु० ) सफेद उबार।

तारतम्य तत्० ( पु० ) न्यूनाधिक्य, सामान्य प्रभेद,  
 दो पदार्थों में एक की अधिकता और दूसरे की  
 न्यूनता, थोड़ा बहुत भेद।

तारतोड़ दे० ( पु० ) कारचोबी विशेष, एक प्रकार का सोने  
 के तारों का काम, बूटेकारी, बुटा निकालने का काम।

तारन तद्० ( पु० ) तारने वाला, उद्धार।

तारना दे० ( कि० ) उद्धार करना, उबारना, पार  
 करना, मुक्त करना। [ फटा हुआ।

तारपतार दे० ( वि० ) तिवरितर, द्विजमिश्र,

तारपीन ( पु० ) चीड़ जकड़ी का तेल।

तारल्य तत्० ( पु० ) द्रवत्व, चपलता।

तारा तत्० ( स्त्री० ) सितारा, नक्षत्र, आँखों की पुतली।

( १ ) कपिराज वालि की स्त्री, यह सुपेण नामक  
 कपिराज की कन्या और अज्ञप्त की माता थी।  
 वालि के मारे जाने के अनन्तर इसने सुग्रीव को  
 अपना पति बनाया था। यह पशुकन्याओं में है  
 जिनका प्रातःस्मरण करना शास्त्रकारों ने बताया है।

( २ ) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक विद्या, वह  
 काली का दूसरा रूप है, इनका आकार—काजी  
 के समान तो नहीं—परन्तु तामी भयङ्कर है।

इनका वर्ण नील है, जीम लम्बी और लपलपाती हुई है, पाँच मस्तक जिन पर अर्द्धचन्द्र हैं, तीन आँखें हैं, चार हाथ और न्याय इनका वाहन है ।

( ३ ) देवगुरु बृहस्पति की स्त्री, चन्द्रमा इनकी सुन्दरता पर मोहित होकर एक दिन इनको हर ले गये, बृहस्पति ने चन्द्रमा का अत्याचार देवताओं से कह सुनाया, देवता और ऋषियों ने तारा को दे देने के लिये चन्द्रमा से कहा, परन्तु चन्द्रमा ने किसी का कहना नहीं सुना । यह देख रुद्र बृहस्पति की ओर से लड़ने के लिये प्रस्तुत हुए । ब्रह्मा ने बात को अधिक बढ़ते देख चन्द्रमा को समझा बुझा कर उनसे तारा दिलवा दी, उस समय तारा के गर्भ था, बृहस्पति ने गर्भ निकाल कर अपने पास रक्षाने का अनुरोध किया, तारा ने उस गर्भ को सरपत पर निकाल कर रख दिया । उस लड़के का नाम रक्षित किया गया बृहस्पति, परन्तु जब चन्द्रमा को यह मालूम हुआ कि मेरे और उस से उसकी उत्पत्ति हुई है, तब चन्द्रमा ने उसे ले लिया, और इसका नाम रक्षित पुत्र । भाग्य । ( कि० ) तार दिया, उद्धार किया ।—गया—( पु० ) नक्षत्र समुदाय, नक्षत्रों का समूह ।—पति ( पु० ) चन्द्रमा, बृहस्पति, बालि ।—पथ ( पु० ) आकाश, गगन मण्डल, नभोमण्डल ।—पीड ( पु० ) चन्द्र, चन्द्रमा, विषु, निशाकर ।—मण्डल ( पु० ) नक्षत्र मण्डल, नक्षत्रसमुदाय ।

तारावाह दे० ( स्त्री० ) प्रसिद्ध सीसोदिया और पृथ्वीराज की वीर पत्नी । यह सौलङ्की राजासुर सूरतान की कन्या थी । तारावाह के पिता पितामह आदि खोड़ा में राज्य करते थे । एक बार लायला नामक अफगान ने इन पर चढ़ाई की, सूरतान वहाँ से भाग कर राजपूताना आरावली के पाद-देशस्थ वेदना में आकर रहने लगे । उस समय तारावाह युवती थीं, युद्ध के साज में रहना उन्हें बहुत अधिक अच्छा मालूम होता था । उनकी प्रतिज्ञा थी कि जो मुसलमानों से खोड़ा का उद्धार करेगा उसी से मैं अपना विवाह करूँगी । मेवाड़ के राजा राजमल के पुत्र पृथ्वीराज को इन्हे अपने अपना पति बनाया । पुनः इस दम्पति ने राजपूत सेना लेकर खोड़ा पर

चढ़ाई की और उस पर अपना अधिकार फैला लिया । पृथ्वीराज प्रभुराय की विश्वासघातकता से मारे गये, उन्हीं के साथ वीरबाला तारावाह का भी अन्त हो गया ।

( २ ) प्रसिद्ध महाराष्ट्र वीर शिवाजी की पुत्रवधू और राजाराम की पत्नी । १७०० ई० में पति की मृत्यु होने पर सिंहगढ़ पर औरङ्गजेब की सेना की चढ़ाई रोकने के लिये तारावाह ने योद्धाओं का वेष धारण कर लड़ाई की थी । तीन बरस तक लगा-तार लड़ाई होने के बाद सिंहगढ़ औरङ्गजेब के अधिकार में आया था, किन्तु उग्रही औरङ्गजेब वहाँ से लौटा ल्योंहीं तारावाह ने सिंहगढ़ को अपने अधिकार में कर लिया । माहटों के अनेक युद्ध और राजनीति में तारावाह की विचक्षण युद्धमत्ता का परिचय मिलता है । १७२३ ई० में तारावाह ने परलोक यात्रा की । [ भाँखों की पुतली ।

तारिका तद्० ( स्त्री० ) तालीरस, ताड़ी, ( तद्० ) तारिखी तद्० ( स्त्री० ) दश महाविद्या में दूसरी महाविद्या, उद्धारकर्त्री, उद्धार करने वाली स्त्री ।

तारी दे० ( स्त्री० ) ताड़ी, भावकद्रव्य, तार का बना हुआ । तेल मापने का बर्तन जिसमें पाँच सेर तेल आता है ।

तारोख दे० ( स्त्री० ) दिवस, दिन, तिथि ।

तारोफ दे० ( स्त्री० ) प्रशंसा, स्तुति, स्तव, परिचय ।

तारुय्य तद्० ( पु० ) यौवन, यौवनावस्था, जवान्नी ।

तारु तद्० ( पु० ) तालु, तालू ।

तारे गिनना दे० ( वा० ) नौद न गाना, निठक्ले बैठे रहना, निकम्मा रहना । [ न्यायशास्त्री, तर्क शास्त्रज्ञ ।

तार्किक तद्० ( पु० ) तर्कशास्त्रवेत्ता, नैपथिक, ताल तद्० ( पु० ) हरिताल, तालीशपत्र, दुर्गा का सिंहासन, तालाब, गान का परिमाण, ताली बजाने का शब्द, ताड़ का पेड़, खजूर का पेड़, जॉय या बाँह पर हथेली मार कर किया हुआ, शब्द, मजीरा, चरमे का एक ताल, वित्त, महादेव, पोखरा ।—कूटा ( पु० ) आँके बजाकर भगवद् भजन करने वाला ।—केतु ( पु० ) ताड़ के चिन्ह वाली ध्वजा वाले भीष्म, बलराम ।—खजूरी ( स्त्री० ) वृक्षविशेष, द्रुपहरिया वृक्ष ।—मारना—डोकना ( वा० ) युद्धार्थ आह्वान

करना चेष्टा विशेष से मलयुद्ध करने के लिए बुलाना,  
एक भुजा को जोड़ कर दूसरे हाथ से उसे ठोकना ।

—ध्वज ( पु० ) बलराम श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।—

पत्नी, मूलिका ( स्त्री० ) श्रौणधविशेष, मूसली ।—

वृन्त ( पु० ) पंखा, तालपत्र निर्मित पंखा, व्यजन,  
वेना, बेनिया ।—वृन्तक ( पु० ) पंखा, व्यजन ।

तालक दे० ( पु० ) आगल, बिहली, मिटकिनी ।

तालमखाना दे० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध पैघा, फल ।

तालद्वय तद० ( पु० ) ताल के द्वारा उचारित वर्ण,  
तालजात [ ह, झं, च, छ, ज, झ, य, घ, श ] ।

ताला दे० ( पु० ) द्वार शब्द करने की कल, द्वार का  
अवरोधक यन्त्र, बड़ा तालाब ।

तालाङ्क तद० ( पु० ) बलदेव, हलधर, थारा, एक  
साग, शुभ लक्षणों वाला प्रकृष, पुस्तक, महादेव ।

ताली दे० ( स्त्री० ) चाभी, कुञ्जी, ताला शब्द करने की  
चाभी, दोनों हाथ धजाने का शब्द, घपोड़ी, ताल

वृत्त विशेष, ताड़ी, मूसली, अरहर ।—एक हाथ  
से बजाना ( वा० ) अनहोनी धान, असम्भव ।

—बजाना, मारना ( वा० ) हाथ पर हाथ पट-  
कना, ठट्ठा करना, ठट्ठाका मारना, परिहास करना,  
शुत्कारना, दुत्कारना, धिक्कारना । [ अण्ययन ।

तालीम दे० ( पु० ) शिक्षा, सिखावन, उपदेश

तालीस तद० ( पु० ) वृक्षविशेष ।

तालु या तालू त० ( पु० ) तारू, मुँह के ऊपर का  
भाग, मूर्छा, तालुघा, ताल, तालवृक्ष ।

तालेवर ( पु० ) धनी, क्षैलतमन्द, मालदार ।

ताव तद० ( पु० ) ताप, सन्ताप, क्रोध, ऐंठ, थकड़  
थकड़न, तमक, बल, शक्ति, सामर्थ्य, कागज का

तड़ा, परख, परीक्षा, उतावली, शीघ्रता, हड़-  
बड़ी ।—देना ( क्रि० ) मरोड़ना, ऐंठना, बटना,

बल देना, मूर्छों पर हाथ रखकर अपनी शक्ति  
बतलाना, चाशनी बनाना ।—पँचखाना ( वा० )

गरम होना, मोहित होना । [ अवधिवाची अण्यय ।

तावत् तद० ( प्र० ) तब तक, वहाँ तक, इतना तक,

ताचना तद० ( क्रि० ) तपाना, गरम करना, गरम  
काके खराई खोटाई की जाँच करना, ताव देना,  
परखना, कसना, जाँचना, बल देना, अकड़ाना,  
मरोड़ना, ऐंठना ।

ताव भाव दे० ( पु० ) मीका, अवसर । ( वि० )  
हलकासा, खरासा ।

तावर ( स्त्री० ) बुलार, जलन, ज्वर ।

तावरो ( पु० ) घाम, दाढ़, गर्मी, चक्कर, मूर्छा,  
धशदाहट ।

तावल ( स्त्री० ) उतावलापन, हड़बड़ी ।

तावान ( पु० ) सड़ा, वण्ट, डट ।

तावीज़ दे० ( पु० ) अलङ्कारविशेष, गण्डा, यन्त्र ।

तास, ताश दे० ( पु० ) गंजीका, बूटेदार पट्ट, एक प्रकार  
का खेल खेलने के लिये कई प्रकार के चित्रित  
पत्ते, सीन का डोरा ।

तासा, ताशा दे० ( पु० ) वाद्यविशेष, एक प्रकार का  
इंसी बाजा ।

तामीर ( स्त्री० ) गुण, बसर, प्रभाव ।

तासु दे० ( सर्व० ) की, बसका, तरसम्बन्धी, तिसका ।

तासों दे० ( सर्व० ) बससे ।

तादम ( अन्य० ) तौमी, फिर भी, तब भी, तिसपर भी ।

ताहि या ताही दे० ( सर्व० ) उसको, उसे,  
तिसको ।

ताहिरी दे० ( स्त्री० ) भोजनविशेष, एक प्रकार का  
भोजन, पीले चावल और मी । [ शब्द ।

तिकतिक दे० ( पु० ) गाढ़ी आदि के बँल चबाने का  
तिकुरी दे० ( स्त्री० ) तिहाई, तीसरा, एक प्रकार का

यन्त्र जिससे यज्ञोपवीत का सूत बटा जाता है ।

तिकोनिया तद० ( वि० ) त्रिकोण, तीन कोण का  
पदार्थ, तिखड़ा ।

तिका दे० ( पु० ) माँस का छोटा टुकड़ा ।

तिक तद० ( पु० ) [ तिज् + क ] रसविशेष, तीव्ररस,  
तीखा, चिरायता, तिक्तसयुक्त, तीता, कड़वा,

चरपरा, पिच्छपाइरा, सुगन्ध, कुटज, वरुण वृक्ष ।

—तयडुला ( स्त्री० ) पिप्पली, पीपल ।—चक्रा  
( स्त्री० ) कुटकी ।

तिकक तद० ( पु० ) पड़ोल, पावर, चिरतिक,  
चिरायता, काला कल्या, ईलगुदी, नीम, कुटज ।

तिकका तद० ( स्त्री० ) कटुतुम्बी, चिपेटा ।

तिखरा दे० ( वि० ) तिवारा, तिहारा, तिहरा, तीन-  
बेर ।—करना ( क्रि० ) तीन बार खेत को जोतना,  
तीन बार स्वीकार करना ।

तिखारना दे० ( कि० ) दो बार जोते हुए खेत को जोतना, किसी यात की सत्यता जाँचने के लिये तीन बार पड़ना, परखना । [ तिहरा ।  
 तिगुन या तिगुना तद्० ( वि० ) त्रिगुण, तिन गुना, तिगम तद्० ( वि० ) [ तिज् + म ] तीक्ष्ण, उग्र, खर, कटु, पैना, तेज़ । ( पु० ) वज्र, पीपर, पुरुषशीय एक चक्षिप । [ मानु, दिवाकर ।  
 तिग्मांशु तद्० ( पु० ) [ तिग्म + अंशु ] सूर्य, रवि, तिघरा ( पु० ) मटकी, दूध दही रखने का बर्तन ।  
 तिज्जारत ( स्त्री० ) व्यापार, उद्योग, व्यवसाय ।  
 तिच्छन तद्० ( पु० ) तीक्ष्ण, तेज, कठोर ।  
 तिज्जारी दे० ( स्त्री० ) अन्तरिया, कम्पउर, तीसरे दिन आनेवाला ज्वर ।  
 तिज्जल तद्० ( पु० ) [ तिज् + हल ] चन्द्रमा, रावसा, तिङ्गी विङ्गी दे० ( वि० ) तितर वितर, छितराया हुआ । [ डुकड़ा ।  
 तिणका तद्० ( पु० ) कृष्ण, घास, तिनका, घास का तित दे० ( अ० ) तन्त्र, तर्ही, तर्ही ।  
 तितना दे० ( कि० वि० ) उतना, परिमाणवाची ।  
 तितरवितर दे० ( अ० ) छिन्नभिन्न, इधर उधर, छितरा हुआ ।  
 तितरी दे० ( स्त्री० ) } कीटविशेष, लघुकीट, रंगविरङ्ग  
 तितला दे० ( स्त्री० ) } पर वाला कीट ।  
 तितारी दे० ( स्त्री० ) तीन तार की, तीन नृत्त वाली, तीन ताल वाली । [ चम्पवान्, धैर्यवान्, धीरतायुक् ।  
 निनिन्नक तद्० ( पु० ) सदनशील, सहिष्णु, समी, तितित्ता तद्० ( स्त्री० ) धैर्य, धीरज, चमा, सहनशीलता । [ तितित्तक ।  
 तितित्तु तद्० ( पु० ) [ तिज् + सन् + उ ] सहिष्णु, तितित्त्वा, तितित्त्मा दे० ( पु० ) अटक, घोखा, धाँधल, दम्भ, अनुकरण, अवशिष्टांश, परिशिष्ट ।  
 तितोर्पु तद्० ( स्त्री० ) तरने की इच्छा ।  
 तितर्पु तद्० ( पु० ) [ तृ + सन् + उ ] तरणेश्चुक, तरना चाहने वाला ।  
 तिते ( पु० ) तितने, उतने ।  
 तितेक ( स्त्री० ) उतने, उतना ।  
 तितो ( पु० ) उतना ।  
 तितिर तद्० ( पु० ) तीतर पक्षी, पक्षी, पक्षीविशेष ।

तिय तद्० ( पु० ) घाग, कामदेव, काल, वर्षा ऋतु ।  
 तिथित्त्वं ( स्त्री० ) प्रतिपदा आदि पन्द्रह चन्द्रकला की क्रिया, चन्द्रकला का उतराव, घटाव, पञ्चदश चन्द्रकला से युक्त काल, दिन, हिन्दु धर्म की तारीख ।  
 —पत्र ( पु० ) पञ्चाङ्ग, जन्त्री, पत्रा । —तय ( पु० ) तिथि की हानि । [ तीन द्वा हों, बैठक ।  
 तित्तरा दे० ( पु० ) तीन द्वार का ढालान, घर जिसमें तित्तरों दे० ( स्त्री० ) तीन द्वार का छोटा घा, छोटी बैठक, छतरी । [ ओर ।  
 तिघर दे० ( सर्व० ) उस स्थान पर, उस स्थान की तिघारा दे० ( पु० ) पौधाविशेष, तीन धारे का सङ्गम, त्रिवेणी, तीन धारा वाला ।  
 तिन या तिन्ह दे० ( सर्व० ) "तिस" का बहुवचन उन, वे लोग । ( पु० ) तिनका ।  
 तिनकना दे० ( कि० ) कसलाना, बिगड़ाना, चिढ़ाना ।  
 तिनका दे० ( पु० ) खर, डाँठो, घास का टुकड़ा, तृण । —दानाँ में लेना ( वा ) शरण जाने की एक मुद्रा, अधीन होना, जी का दान माँगना, अपराध चमा करना ।  
 तिनगना ( कि० ) बिगड़ना, कूटहाना, कसलाना, कूटना ।  
 तिग्निड तद्० ( स्त्री० ) इमली, कुचिया ।  
 तिन्द तद्० ( पु० ) वृक्ष और फल विशेष ।  
 तिन्दुक तद्० ( पु० ) तमालवृक्ष, तेंदुवा ।  
 तिन्दुला तद्० ( स्त्री० ) औषधविशेष, पीपर ।  
 तिन्नी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का चावल, जो फला-हार में गिना जाता और अष्टमिपञ्चमी के दिन खाया जाता है ।  
 तिपाई दे० ( स्त्री० ) तीन पाये की चौकी, टिकटी ।  
 तिपैरा दे० ( पु० ) बड़ा कूप जिस पर तीन घाट हों, तीन चरलों के एक साथ चलाने के हों ।  
 तिवारा दे० ( पु० ) तीन बेर, तीसरी बार, तीन द्वार का घर या कोठा ।  
 तिवासी दे० ( वि० ) तीन दिन का रखा हुआ ।  
 तिर्व्वत दे० ( पु० ) देशविशेष, हिमालय के उच्चस्थित एक देश का नाम ।  
 तिमि तद्० ( पु० ) शतयोजनविस्तृत मास्य, गृह्य मास्यविशेष । ( अ० ) तिस, माँति, तिस प्रकार, तिस तरह ।

तिमिङ्गल तत् ( पु० ) तिमि से भी बड़ा मत्स्य,  
सुयुद्ध मछली, एक प्रकार का अण्डज जीव ।

तिमिर तत् ( वि० ) भौंगा, स्थिर, अचञ्चल, अचल ।  
तत् ( पु० ) अन्धकार, अंधेरा, अंधियारा ।—हर  
( पु० ) सूर्य, रवि, चन्द्रमा, अग्नि ।

तिमिप ( पु० ) सफेद कुँहड़ा, ककड़ी, फूट ।

तिमो तत् ( स्त्री० ) दूध की पुत्री, कश्यप की स्त्री, मत्स्य  
विशेष । [ तीन रास्ते मिलते हैं । ]

तिमुहानी दे० ( स्त्री० ) वह स्थान जहाँ तीन नदी या  
तिय, तिया दे० ( स्त्री० ) स्त्री, योपित्, नारी, अबला ।

तियतरा ( गु० ) तीन लड़कियों के बाद उत्पन्न हुआ पुत्र ।

तियला ( पु० ) खियों के घख । [ कोने की वस्तु । ]

तिरकोना तत् ( वि० ) त्रिकोण, तीन कोनिया, तीन

तिरखा तत् ( स्त्री० ) पिपासा, प्यास । [ का अस्त्र । ]

तिरखूँटी दे० ( स्त्री० ) त्रिकोण अस्त्रविशेष, तीन कोने

तिरछा तत् ( वि० ) टेढ़ा, बाँका, बक ।—देखना

कनखियों से देखना, तिरछी चितवन से देखना ।

तिरछाना तत् ( क्रि० ) टेढ़ा करना, बाँका करना,

हठीला होना, हठ करना ।

तिरछी तत् ( वि० ) टेढ़ी, बाँकी ।

तिरछीहँ दे० ( क्रि० वि० ) तिरछापन या बाँकापन

लिये हुए । [ बूँद करके टपकना । ]

तिरतिराना दे० ( क्रि० ) रिसाना, किरकिराना, बूँद

तिरना दे० ( क्रि० ) तैरना, उतराना, पैरना, हेखना ।

तिरपद तत् ( पु० ) } तिपाई, तीन पैर की ऊँची

तिरपदी तत् ( स्त्री० ) } चौकी ।

तिरपटा ( गु० वि० ) पेचाताना, अँगा । [ अधिक पचास । ]

तिरपन दे० ( वि० ) पचास और तीन, ५३, तीन

तिरपाई दे० ( स्त्री० ) देखो तिरपद ।

तिरपाल दे० ( पु० ) रोगन लगा हुआ कनकस जो मोह

के पानी से धुाने के लिये अनाज या अन्य वस्तु से

भरे बोरों पर रेलवे स्टेशनों पर डाला जाता है ।

तिरपौलिया दे० ( पु० ) सिंहद्वार, राजमहल का घड़

द्वार जिसमें तीन पीलें हों और जो धनुष के आकार

का बना हुआ हो ।

तिरफला तत् ( पु० ) त्रिफला, तीन फल का समुदाय

अँवला, हर और बहेड़ा, तीन फल, तीन फल की

झूरी ।

तिरवेनी तत् ( स्त्री० ) त्रिवेणी ।

तिरभङ्गा दे० ( वि० ) टेढ़ामेढ़ा, ऊमड़खामड़, तिरछा,  
बाँका । [ नाम । ]

तिरभङ्गी तत् ( पु० ) छन्दविशेष, श्रीकृष्ण का एक

तिरमिरा तत् ( पु० ) नेत्र में उत्पन्न एक प्रकार का

रोग जो शारीरिक निर्वलता से उत्पन्न होता है,

चकाचौंध ।

तिरमिराना ( क्रि० ) दृष्टि का उलझे में न उहरना,

चौंधना, चँधियाना ।

तिरस तत् ( वि० ) टेढ़ापन से, वक्रता से ।

तिरसठ दे० ( वि० ) साठ तीन, १३, तीन अधिक साठ ।

तिरस्कार तत् ( पु० ) निन्दा, अवमान, अपमान,

अप्रतिष्ठा । [ शात । ]

तिरस्कृत तत् ( वि० ) अपमानित, निन्दित, अव-

तिरस्किया तत् ( स्त्री० ) अनादर, अप्रतिष्ठा, अवहेला,

पहरावा, शान्छादन ।

तिरहुत या तिरहुति दे० ( पु० ) देश विशेष, विहार

का एक प्रान्त, मिथिला देश ।

तिराना दे० ( क्रि० ) तैरना, पार होना, पैरना, लान

होना । [ अधिक नब्बे । ]

तिरानवे दे० ( वि० ) नब्बे और तीन, १३, तीन

तिराव दे० ( पु० ) पैराव, डेलाव, बाह, तरने योग्य ।

तिरासी दे० ( गु० ) अस्सी तीन, ८३, तीन अधिक अस्सी ।

तिराहा दे० ( पु० ) तिरमुहानी ।

तिरिया दे० ( स्त्री० ) स्त्री, नारी, लुगाई, कामिनी,

योपित् ।—चरित्र ( पु० ) स्त्रियों का छल प्रपञ्च,

स्त्री का मकर । [ पुबल । ]

तिरीचिरी दे० ( अ० ) तितरवितर, छिन्नभिन्न, उथल-

तिरेंदा दे० ( पु० ) बंसी के काँटे के छः सात अंगुल

ऊपर बँधी लकड़ी को पानी की सतह पर तैरा

करती है और जिसके डूबने से किसी मछली के

फँस जाने का बोध होता है । समुद्र में बथली जगह

या जल के भीतर चट्टान के बतलाने को जो पीछे

छोड़े जाते हैं, उन्हें भी “ तिरेंदा ” कहते हैं ।

तिरोधान तत् ( पु० ) [ तिरस + धा + अनट् ]

अन्तर्धान, लुप्त, छिपाव, ढकाव, व्यवधान,

आच्छादन ।

तिरोधायक तत् ( पु० ) आड़ करने वाला ।

तिरोमात्र तत् ( पु० ) अदर्शन, अन्तर्धान ।  
तिरोभूत तत् ( वि० ) अदृष्ट, गुप्त, छिपा हुआ ।  
तिरोहित ( वि० ) [ तिरस् + घा + क ] अन्तर्हित,  
गुप्त, आच्छादित ।

तिरौंड़ा ( गु० ) तिरछा ।

तिर्मिरा दे० ( पु० ) चञ्चल, अस्थिर, इच्छता से  
व्याकुल, उद्धिग्नचित्त ।

तिर्मिराना दे० ( क्रि० ) झूलना, खटकना, चौंथियाना,  
व्याकुलता से हाथ पैर धुनना, पानी पर तैल की  
बूँदों का फैलना ।

तिर्मिरी दे० ( स्त्री० ) चकर, घुमड़ी, भँवर ।

तिर्यक् स्वर० ( वि० ) तिरस् + अच् + क्तिप् ] टेढ़ा,  
बाँका, तिरछा प्रकार, कुटिल, प्राणिविशेष ।—पति  
( पु० ) सिंह, शार्ङ्ग ।—छोता ( पु० ) पशु पक्षी  
आदि, मल्ला का आठवाँ संग ।—योनि ( पु० )  
पशु पक्षी आदि ।

तिरुत दे० ( पु० ) प्रान्तविशेष, बिहार का प्रान्त,  
मिथिला, तिरहुत ।

तिल तत् ( पु० ) मत्स्य विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध अन्न-  
विशेष, शरीर का चिन्ह, काले काले शरीर के दाग,  
अश्वत्थ, बहुत थोड़ा ।—कुट ( पु० ) तिल की  
मिठाई, तिल की बनाई एक प्रकार की मिठाई ।  
—चट्टा ( पु० ) केट विशेष, तैलपा, तैलधोरिका ।  
—चावली ( स्त्री० ) मिला हुआ तिल और चावल,  
एक प्रकार का चपेना, काली और श्वेत वस्तुओं का  
मिलाव ।—चूरा ( स्त्री० ) तिलकुट, मोदक  
विशेष, कुटा हुआ तिल ।—तैल ( पु० ) तिल का  
तेल ।—घेनु ( स्त्री० ) तिल की बनी हुई गाय,  
जो दान करने के लिये प्रायः माघ महीने में बनाई  
जाती है ।—पणी ( स्त्री० ) चन्दन ।—पिञ्ज  
( पु० ) तिल का पल्लव ।—पिण्डक ( पु० ) तिल  
की खली, तिल का उषटन ।—वर ( पु० ) पक्षि-  
विशेष ।—मेद ( पु० ) पोस्त का पौधा, पोस्त का  
विरवा ।

तिलक तत् ( पु० ) टीका, चन्दन आदि का मेस्तक-  
स्थित चिन्ह, पुष्पवृक्ष विशेष, शरीरस्थ तिल, अश्व-  
मेद, रोगमेद, राज्याभिषेक, गद्दी, सगाई की रस्म,

मुख्य, यह शब्द विशेष शब्दों के अन्त में आनेसे  
उनकी सकृष्टता—अधिकता बतलाता है । यथाः—  
"शुक्लतिलक सदा तुम उद्यमन धामन ।"

—जानकीमङ्गल ।

तिलकमुद्रा ( पु० ) टीका तथा भगवद् आयुधों का  
चिन्ह ।

तिलमिलाना ( क्रि० ) चौंथियाना ।

तिलझा दे० ( पु० ) सिपाही, सैनिक, तैलझदेख के  
रहने वाले कहते हैं सब से पहले अहरेजी सेना में  
तैलझ देख के ही बासी नहीं किये गये थे, इसी  
कारण अहरेजी सैनिकों का नाम ही तिलझा हो  
गया ।

तिलझी दे० ( स्त्री० ) गुड़ड़ी, पतङ्ग, चक्र ।

तिलड़ा, तिलरा दे० ( पु० ) तिललरा हार, तीन  
ज्वर का हार । ( स्त्री० ) तिलरी ।

तिलवा दे० ( पु० ) तिलों का लड्डू ।

तिलस्म ( पु० ) जादू, चमत्कार, करामात ।—नी  
( पु० ) जादू का, तिलस्म सम्बन्धी ।

तलहिन दे० ( पु० ) तेल के बीजों ( जैसे तिल, सरसों  
सीसी आदि ) की फसल ।

तिलहा दे० ( वि० ) तेल के समान चिकना, तेल में  
पका या बना, चिकण, तेजिया, सेजी ।

तिला दे० ( पु० ) सोना, पगड़ी का छोर, जिसमें सोने  
के तारों का काम किया होता है, नपुंसकता दूर  
करने के लिये एक तैल विशेष ।

तिलाई दे० ( स्त्री० ) सोनहला, छोटी कढ़ाही ।

तिलाक ( स्त्री० ) देखो तलाक ।

तिलाञ्जलि तत् ( स्त्री० ) मृतक संस्कार का एक कार्य  
विशेष, तिल सहित जल की श्रेष्ठति जो मृत पुरुष  
के नाम से दी जाती है ।—देना ( वा० ) तिल भर  
भी सन्धन न रखना, सम्पूर्णतया त्याग देना ।

तिलावा ( पु० ) बड़ा कूप जिसपर तीन पुरबट चले ।  
रौंद, पहरेदार का घर ।

तिलिया दे० ( पु० ) विष विशेष, सरपट ।

तिली दे० ( स्त्री० ) तिल, जिसका कुल्लेज बनाया जाता है ।

तिलुवा दे० ( पु० ) तिल का लड्डू, तिल का बना  
लड्डू । [ पण्डुकी ।

तिल्वर दे० ( पु० ) पति विशेष घण्टा, पण्डक

तिलोत्तमा तद् ( खी० ) स्वर्ग की अज्ञाना, देवाज्ञाना, स्वर्गीय अस्तित्व। पहले दैत्यराज हिरण्यकशिपु के वंश में निकुम्भ नामक एक दैत्य उत्पन्न हुआ था। उसके सुन्द और उपसुन्द नामक दो पुत्र थे। इन दोनों ने त्रिलोक जीतने की इच्छा से कठोर तपस्या की, ब्रह्मा ने इन्हें वर दिया कि त्रिलोक में कोई भी तुम लोगों को मार नहीं सकेगा, हाँ यदि तुम लोग किसी कारण आपस में विवाद करोगे, अभी तुम दोनों की परस्पर के आघात से मृत्यु होगी। अब क्या था, वे उपद्रव करने लगे देवता उनके अत्याचार से प्रत्यन्त पीड़ित हुए। मित्रकर सभी देवता, ब्रह्मा के पाम गये, ब्रह्मा न विध्वकर्मा को बुलाया और सर्वोद्ग सुन्दरी रमणी की सृष्टि करने के लिये उससे कहा, उन्होंने पसार के सभी उत्तम पदार्थों से तिल तिल समग्र कणों के एक रमणी की सृष्टि की, जिसका नाम तिलोत्तमा रखा गया। ब्रह्मा की आज्ञा से वह सुन्द उपसुन्द के समीप गई। उसको देख उन असुरों के हृदय में आप ही आप विवादान्न भड़क उठा। वे तिलोत्तमा के लिये आपस में लड़ने लगे और आपस ही में कट मर गये। यही तिलोत्तमा दुर्वासा के शाप से बाणायसुर के यहाँ उत्पन्न हुई थी।

तिलोक ( पु० ) तीनलोक, त्रिलोक ।— ( पु० ) छन्द विशेष जिसमें २१ मात्राएं होते हैं।

तिलोदक तद् ( तिल + उदक ) तिल और जल मिलाकर तर्पण, पितरों का तर्पण, पितृतर्पण।

तिलोदन तद् ( पु० ) [ तिल + ओदन ] मिला हुआ तिल और ओदन, खिचड़ी, कुशराख।

तिलौकना ( क्रि० ) तेल लगाकर चिकनाना।

तिलौक्या ( वि० ) तेलिया रंग या स्वाद वाला।

तिल्लो तद् ( खी० ) पिलही, छीदा, तिल नाम का अन्न, बाँस विशेष।

तिवारा तद् ( पु० ) तिदरी, त्रिगुणित, तीसरे बार।

तिवारी, तिवाड़ी तद् ( पु० ) त्रिपाठी, त्रिवेदी।

तिनासी दे० ( पु० ) तीन दिन का वासी।

तिप् तद् ( खी० ) तृषा, तृष्णा, पिपासा, व्यास।

तिष्ठना तद् ( क्रि० ) ठहरना, स्थिर होना, विश्रान्ता, खड़ा होना, गति शून्य होना।

तिष्ठति तद् ( वि० ) ठहरा हुआ, बैठा हुआ।

तिष्ठेत् तत् ( पु० ) [ तिप् + य ] पुन्यनक्षत्र, भाद्रपद नक्षत्र, पीस मास, कबियुग, कल्याणकारी।

तिसका दे० ( सर्व० ) उसका, विसका, तिवारा।

तिसराय ( क्रि० वि० ) तीसरी बार।

तिसरायत दे० ( पु० ) वादी और प्रतिवादी से दूसरा, मध्यस्थ मध्यवर्ती, उदासीन, विचवर्ही।

तिसरै दे० ( पु० ) दो ऋग्वेद वाला से पृथक् तीसरा, तटस्थ, मध्यस्थ, तीसरे भाग का अधिकारी।

निस्तुत दे० ( पु० ) शीघ्र पथ विशेष।

तिहत्तर दे० ( वि० ) सत्तर और तीन, ७३, तीन और सत्तर। [ त्रिगुणित, तिगुना।

तिहरा दे० ( पु० ) तिबड़ा, तीनलड़ा। ( वि० )

तिहराना दे० ( क्रि० ) तिहरा करना, तीन बार बटना, तीन बार बल देना, त्रिगुण करना, तीन तह करना। [ काम, तिहरा बना।

तिहरावट दे० ( खी० ) तिगुनाव, तिगुना करने का

निहरी दे० ( वि० ) तीन तह की।

तिहरे दे० ( सर्व० ) तिहारे, तुम्हारा।

तिहवार तद् ( पु० ) खोहार, पर्व, उत्सव।

तिहवारी तद् ( खी० ) खोहार के दिन का नेप जो कमीन लोगों को दिया जाता है।

तिहवाई दे० ( खी० ) तीसरा हिस्सा, तीसरा भाग।

तिहायत दे० ( पु० ) तीसरा, उदासीन, मध्यस्थ, पक्षपात रहित।

तिहारो दे० ( खी० ) तुम्हारी, तुम्हारे सम्बन्ध की।

तिहारे दे० ( पु० ) तुम्हारे, तुम्हारे सम्बन्ध का।

तिहारी दे० ( पु० ) तुम्हारा तुम्हारे सम्बन्ध का।

तिहु दे० ( वि० ) तीनों, तीन।—पुर ( पु० ) त्रिपुर, दैत्यों का एक प्रधान नगर, इस नगर का नाश महादेव ने किया था।—लोक ( पु० ) त्रिलोक,

तीनों लोक, पाताल, मत्स्य और स्वर्ग।

तिहैया दे० ( पु० ) तृतीयस्थ, तीसरा भाग।

ती तद् ( खी० ) खी. पत्नी, भ्रमरावली, नलिनी, मनोहरण छन्द का नाम।

तीघ्रन तद् ( खी० ) शाक, माजी। [ पिछला भाग।

तीकट दे० ( पु० ) नितम्ब, पश्चाद्देश, कटि का

तीक्ष्ण तत्त्वं ( वि० ) तेज, तीखा, पैना, चोखा, फोपी, गरम प्रकृति, तीता, कहुवा, उरसाही, चिप्रकारी, चतुर, दक्ष, प्रवीण, निपुण, ( पु० ) विप, लौह, युद्ध, मरण, शस्त्र, समुद्र का नोन, यवचार, रवेत्कुण्ड, तीक्ष्णगण, यथाः—अरजेया, आर्द्रा, ज्येष्ठा, मूल । ( वि० ) निरालस, सुबुद्धि, योगी ।—कसूटक ( पु० ) घन्टा, बसुल, इगदी करीर ।—कन्द ( पु० ) प्याज, पलाण्ड ।—कर्मा ( पु० ) निपुण दक्ष, चतुर, कुशल ।—ता ( स्त्री० ) तेज, श्वयण, प्रख्याता ।—दण्ड ( पु० ) शार्दूल, व्याघ्र, बाघ ।—बुद्धि तत्त्वं ( वि० ) बुद्धिमान्, कुराग्र बुद्धि वाला ।

तीक्ष्णा तत्त्वं ( स्त्री० ) तारादेयी का एक नाम, जोंक, मिर्च, माककानी, लता विरोध, वृष विरोध, घघ, कँबाच । [ धारदार ।

तीखा तत्त्वं ( वि० ) तीक्ष्ण, चोखा, पैना, तेज, तीखी नद ( स्त्री० ) सूक्ष्मस्वर, पनखा शब्द ।

तीखुर दे० ( पु० ) वृष विरोध का सत, आटा विरोध, फलाहार विरोध, आरुहट ।

तीक्ष्ण तत्त्वं ( वि० ) तीक्ष्ण, तेज, धारदार, चोखा, पैना, अत्यन्त पैनी धारवाला ।—ना ( स्त्री० ) तीक्ष्णता । [ रुली, खरी ।

तीक्षी दे० ( स्त्री० ) तीखी, तीक्ष्ण, पैनी, चोखी, तीक्ष्ण दे० ( पु० ) देखो तीक्ष्ण ।

तीज दे० ( स्त्री० ) तृतीया, तीसरी तिथि, भादों सुदी, तीज, विवाह के पीछे की एक रसम ।

तीजा दे० ( वि० ) तीसरा, तृतीय, तीसर । मुसलमानों के यहाँ का मृतक के तीसरे दिन का रूम ।

तीजिया ( स्त्री० ) श्रावण शुद्ध तृतीया का पर्व, त्योहार विरोध छोटी तीज ।

तीजे दे० ( वि० ) तीरा, तीरे ।

तीत दे० ( वि० ) तीखा, कहुवा तीव्र, तीता ।

तीतर दे० ( पु० ) तित्तिर, पक्षिविरोध ।—के मुँह में लक्ष्मी ( वा० ) अयोग्य सङ्गम, जो जिस काम के योग्य नहीं है उस पर, वह काम सौपना ।—के मुँह में कुशल ( वा० ) अयोग्य के काम से अपनी रक्षा की घाशा, जो जिसके बिने सर्वथा अयोग्य है उससे आशा रखना ।

तीतरि दे० ( स्त्री० ) पक्षी विरोध, तितली, पतङ्ग पतिङ्ग, चित्रित पञ्चवाला कीट ।

तीता तद् ( वि० ) चरपरा, कहुवा, कटु, नम, गीला । दे० ( पु० ) ऊसर भूमि, ढँकी या रहट का अगला हिस्सा, ममीरे के पेड़ का एक नाम ।

तीन दे० ( पु० ) संख्या विरोध, त्रि, ३ ।—काल तत्त्वं ( पु० ) तीनों काल, भूत, भविष्य, वर्तमान ।—तेरह ( पु० ) तितर बितर, डारवाडोख, छिटफूट, छिन्नभिन्न, ढल का नाश, समूह भ्रंश ।

तीनी ( स्त्री० ) तिनी का चावल एक धान विरोध ।

तीमारदारी ( स्त्री० ) बीमारदारी, बीमारों की दहल ।

तीय दे० ( स्त्री० ) भवला, स्त्री, नारी, पयाः—

सवैया—

“पीय पहरनि पास न जाहु यों,

तीय बहादुर लों कह सोयै ।

कौन बचैई नवाब तुम्हें,

भनै भूपन भोसिला भूप के रोपै ॥

बन्दि कियो हूँ साइसखा,

जसवन्त से भाव करख से दोपै ।

सिंह सिवाजी के वीरन से,

जो अमीरनि बीचि गुनिजन घोपै ।”

—शिवराज भूपण ।

तीयल दे० ( स्त्री० ) स्त्रियों के पहनने के तिन कपड़े ।

तीयन दे० ( पु० ) सरकारी विरोध, एक प्रकार की बनी हुई सरकारी । ( स्त्री० ) तिय का बहुवचन ।

तीर तत्त्वं ( पु० ) नदी का किनारा, तट, कूल, घाघ, सर, समीप, निकट, पास ।—रूय ( पु० ) तीर-स्थित, तटस्थित, तीर पर का, किनारे पर का ।

—न्दाजू ( पु० ) तीर चलाने वाला, निशाने बाज ।

—न्दाजी ( स्त्री० ) तीर चलाने की क्रिया, धनुष विद्या ।

तीरथ तत्त्वं ( पु० ) तीर्थ, देवयात्रा देव दर्शनार्थ यात्रा, चरखोदक ।—पनि, राजू, राजू ( पु० ) प्रयाग क्षेत्र, सब तीर्थों का राजा, प्रयाग । यथाः—

“वट विश्वास अचल निज धर्मा,

तीरथराजु प्रयाग सुकर्मा ।” —रामायण ।

तीरा दे० ( पु० ) देखो तीर ।

तीर्थ तत्त्वं ( पु० ) [ वृ + क ] उत्तीर्थ, पारकृत, पार हुआ ।



तीर्थ तत् ( पु० ) शास्त्र, अध्वर, क्षेत्र, पुण्यस्थान, उपाय, नारीरज, अवतार, घाट, ऋषि सेवित जल, पात्र, वरसन, उपाध्याय, उपदेशक, गेनि, दर्शन, विप्र, आगम. निदान, संन्यासियों की उपाधि विशेष, ब्राह्मण का दहिना कान [ दहिने हाथ के अँगूठे का ऊपरी भाग ब्रह्मतीर्थ, अँगूठे और तर्जनी का मध्य भाग पितृतीर्थ तथा कनिष्ठा का निचला भाग प्रजापत्यतीर्थ एवं उँगलियों का अग्रभाग देवतीर्थ कहा जाता है । ] चरणासृत, यज्ञ, मन्त्र, अग्नि, ईश्वर, माता-पिता, अतिथि ।  
—डूर ( पु० ) जैनों के चौबीस घमांचार्य अथवा अवतार ।—इवांत्त ( पु० ) तीर्थकाक, तीर्थ में रहने वाले काक प्रकृति के मनुष्य, मिथ्या यात्रिक, श्रद्धाभक्ति हीन तीर्थयात्री ।—पर्यटन ( पु० ) तीर्थभ्रमण—पाद तत् ( पु० ) विष्णु । पाद्रीय तत् ( पु० ) श्रीवैष्णव ।—यात्रा तत् ( स्त्री० ) पवित्र स्थानों का स्नानादि तथा दर्शनार्थ यात्रा, पुण्यस्थानों का घूमना ।—राज ( पु० ) तीर्थाधिप, तीर्थस्वामी, महातीर्थ, प्रयाग ।—सेवी ( वि० ) पुण्यक्षेत्र में वास करने वाले, धानप्रस्थाश्रमी ।

तीर्थिक तत् ( पु० ) पण्डा, बौद्धधर्मद्वेषी ब्राह्मण । तीली दे० ( स्त्री० ) तूली, सलाई, पिण्डली । तीवर दे० ( पु० ) वर्षासङ्कर जाति विशेष, बहेलिया, व्याध, समुद्र, मधुआ ।

तीव्र तत् ( वि० ) अधिक तेज, कटु, कटुआ, प्रखर, नितान्त, दुःसह, प्रचण्ड । ( पु० ) लोहा, नदी का तट, शिव ।—कण्ठ तत् ( पु० ) सुरन, जमी-कन्द, षोल ।—गन्धा ( स्त्री० ) जवाईन, अम-वाइन ।—वेदना ( स्त्री० ) अत्यन्त अधिक कष्ट, महायातना । [ तीन दश, पीड़ा ।

तीस दे० ( वि० ) संख्या विशेष, बीस और दश, तीसरा दे० ( क्रि० ) तृतीय, तीसरा ।

तीसवाँ ( पु० ) उगतीस के बाद का ।

तीसी दे० ( स्त्री० ) अन्न विशेष, आलसी, अतसी, आसी, पसीना, ( वि० ) तीस संख्या से परिमित ।

तुअ ( सर्व० ) तब, तुम्हारा ।

तुअना ( क्रि० ) चूना, ठपकना, गिर पड़ना ।

तुअर दे० ( पु० ) अरहर, आढकी ।

तुई ( सर्व० ) तू, तूही, तुम्हीं ।

तुक दे० ( पु० ) पद, कड़ी, छन्द, भाग, यमक, समान पद की योजना, यथा—निहारी, तिहारी आदि । चौपाई आदि के अन्त में जिस प्रकार के पद रखे जाते हैं ।—

दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी,

ठग नाचे दुग्ग पर रंडमुंड फरके ।

भूपन मनत बाजे जिते जीत नगारे भारे,

सारे कर नाटी भूपसिंचल को सरके ।

मारे सुनि सुभट पनारे बद्मट ताके,

तारे लगे गिरन सितारे गजधर के ।

गोकुण्डा धीरन के बीजापुर बीरन के,

दिखली डर मीरन के दाढ़िम से द्रके ।

—सिवाबावनी ।

—वन्दी ( स्त्री० ) कविता विशेष, जिसमें समान पद हों, भई कविता ।

तुकला दे० ( पु० ) कीट विशेष, छोटी पतंग,

तुकली ( स्त्री० ) छोटी गुड़ी ।

तुकान्त तत् ( स्त्री० ) अन्त्यानुप्रास, तुकवन्दी, काफिया वन्दी ।

तुकाजी होलकर दे० ( पु० ) जगद प्रसिद्ध महारानी अहल्याबाई के सेनापति, अहल्याबाई का इन पर बड़ा ही स्नेह था, उसी स्नेह का फल स्वरूप राज-प्रतिष्ठा सूचक "होलकर" की उपाधि महारानी अहल्याबाई ने इन्हें दी थी ।

तुकाराम दे० ( पु० ) एक महाराष्ट्र साधु, १५५८ ई० में पूना के समीपस्थ देहूक नामक ग्राम में इनका जन्म हुआ था । यह जाति के शूद्र थे, तथापि दक्षिण देश के सभी श्रेणी के लोग इनका आदर करते थे । ११ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ था, परन्तु वाक्यकाल ही से इनकी प्रवृत्ति धर्म की ओर झुकी हुई थी । २० वर्ष की अवस्था में इनके पिता और माता परलोकवासी हुए, उसी समय इनके बड़े भाई भी विरक्त होकर घर से चले गये । संयोगवश उसी समय दक्षिण देश में अकाब भी पड़ा हुआ था, इन्हीं सब घटनाओं से तुकाराम ने संसार का यथार्थ स्वरूप देख लिया ।

उन्होंने संसार छोड़कर भजन करना ही अपने लिये उत्तम कार्य विचार लिया। इनकी बनाई कविता का नाम अभङ्ग है। आठ हजार से भी अधिक इनकी बनाई कविता हैं। इनकी कविता दक्षिण देश में आर की वस्तु समझी जाती है। एक समय चयपति शिवा जी इनसे उपदेश लेने गये थे और उपदेश लेकर वे वन में जाकर तपस्या करने लगे। उन्होंने संसार चिन्ता विरक्त छोड़ दी। यह देख शिवाजी की माता ने तुकाराम को यह समाचार सुनाया। पुनः तुकाराम ने उन्हें तात्त्विक उपदेश देकर शिवाजी को कार्य में लगाया। तुकाराम की मृत्यु का समय प्रायः अनिश्चित है, तथापि अनुमान किया जाता है कि संवत् १६२६ में उन्होंने परलोक यात्रा की।

तुकड़ ( पु० ) तुकड़दी करने वाला, अपट्ट कवि। कविता के नियमों के विरुद्ध कविता करने वाला।

तुकल दे० ( पु० ) बड़ी पतल, बड़ी गुठ्ठी।

तुका दे० ( पु० ) बांस के टुकड़े, मुड़ा बाण, भोयर-तीर, पहाड़ी, छोटा पर्वत।

तुल ( पु० ) चोकर, झूली, झिलका।

तुगा तल० ( खी० ) तुगाचरी, वंशलोचन।—झीरी—वंशी ( खी० ) वंशलोचन।

तुङ्ग तल० ( पु० ) तुङ्गागृह, पर्वत, उच्चग्रह, नारिकेल, यो, वेद। ( वि० ) उन्नत, उच्च, ऊर्ध्व, प्रधान, उग्र, तीव्र।—ता ( खी० ) उच्चता, महत्ता।—भद्रा ( खी० ) दक्षिण देश की प्रसिद्ध नदी, मैसूर प्रान्त की एक नदी का नाम।

—वृत्त ( पु० ) नारियल का पेड़।

तुच्छ तल० ( वि० ) अल्प, थोड़ा, बहुत थोड़ा, अवज्ञात, तिरस्कृत, हेय, नीच, हीन, अधम निजला निकम्मा।

—ज्ञान ( पु० ) हेयज्ञान, अनादर, अमान्यता।

—ता ( खी० ) अवज्ञा, हेयता, नीचता, अधमता।

—द्रुम ( पु० ) नीच वृक्ष, परण्ड वृक्ष।

तुम्ह ( सर्व० ) तुम।

तुम्हे ( सर्व० ) तुमको।

तुट तल० ( पु० ) संग्राम, युद्ध, रण।

तुड़ाना दे० ( कि० ) बैल आदि पशुओं का पराहा तोड़ कर भागना, रुपया मुनाना, मूल्य घटवाना।

तुयड तल० ( पु० ) मुख, बदन, चेहरे, ठौर।

तुतरा ( ला ) दे० ( वि० ) अस्पष्ट उच्चारण करने वाला, अटक अटक कर बोलने वाला, हकलाकर बोलने वाला।

तुतरा ( ला ) ना दे० ( कि० ) अस्पष्ट उच्चारण करना, अटक अटक कर बोलना।

तुतिया दे० ( खी० ) तुतिया, उपपातु विशेष, विष विशेष, तुल्य, नीलाधोपा।

तुतही दे० ( खी० ) टोटीदार छोटी घंटी।

तुल्य तल० ( पु० ) तुतिया, नीलाधोपा।

तुन दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष, नन्दीवृक्ष।

तुनकी दे० ( खी० ) पत्तली एक प्रकार की रोटी।

तुनतुनाना दे० ( कि० ) सूक्ष्म स्वर से बजाना, सितार आदि बजाना।

तुन्द तल० ( पु० ) जठर, पेट, उदर।—परिमुज ( वि० ) झलस, झालसी, अकमाँ, पेट पर हाथ फेरते रहने वाला, निकम्मा।

तुन्दिल तल० ( वि० ) तौदेल, बम्बोदार, बड़ा पेटवाला, लम्बे पेटवाला मनुष्य।

तुन दे० ( पु० ) तुन वृक्ष विशेष।—चाय ( पु० ) दर्जी, सूचीकार, कपड़े सीने वाला।

तुपक दे० ( खी० ) बन्दूक, छोटा बन्दूक, पिस्तौल।

तुपकिया दे० ( खी० ) छोटी तुपक। ( पु० ) बन्दूक चलाने वाला। [ छाँची पानी।

तुफान दे० ( पु० ) छाँची, अँधड़ा, पानी, कड़, तुम दे० ( सर्व० ) मज्जम पुरुष का बहुवचन।—तनौ

( सर्व० ) तुम्हारा, तुम्हारे, सम्बन्ध का।—हि तुमको, आपको।

तुमड़ी दे० ( खी० ) सँपेरी की वंशी, एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं। तुम्हली, साधुओं का काष्ठ निर्मित जलपात्र, सूदा कद्दू का पात्र।

तुमरा ( सर्व० ) तुम्हारा।

तुमाई दे० ( खी० ) पुनाई, तुमाने का पैसा, तुमाने की मजूरी।

तुमाना दे० ( कि० ) पुनवाना, तुनवाना, रुई पुनाना।

तुमुल तल० ( पु० ) रण संकुल, सङ्कीर्णयुद्ध, अस्पन्त लोमहर्षण युद्ध, घोर युद्ध, भयानक युद्ध, शोरगुल, बहदे का वृक्ष।

तीर्थ तत्त्वं ( पु० ) शास्त्र, अध्वर, क्षेत्र, पुण्यस्थान, उपाय, नारीरज, अवतार, घाट, अपि सेवित जल, पात्र, धरतन, उपाध्याय, उपदेशक, योगि, दर्शन, विप्र, आगम. निदान, संन्यासियों की उपाधि विशेष, ब्राह्मण का दहिना कान [ दहिने हाथ के अंगूठे का ऊपरी भाग महातीर्थ, अंगूठे और तर्जनी का मध्य भाग पितृतीर्थ तथा कनिष्ठा का निचला भाग प्रजापत्यतीर्थ एवं उँगलियों का अग्रभाग देवतीर्थ कहा जाता है । ] चरणाश्रुत, पशु, मन्त्र, अग्नि, ईश्वर, माता-पिता, अतिथि ।  
 —डूँर ( पु० ) जैनियों के चौबीस धर्माचार्य अथवा अवतार ।—धर्माज्ञ ( पु० ) तीर्थकाक, तीर्थ में रहने वाले काक प्रकृति के मनुष्य, मिथ्या यात्रिक, श्रद्धाभक्ति हीन तीर्थयात्री ।—पर्यटन ( पु० ) तीर्थभ्रमण—पाद तत्त्वं ( पु० ) विष्णु । पादीय तत्त्वं ( पु० ) श्रीवैष्णव ।—यात्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) पवित्र स्थानों का स्नानादि तथा दर्शनार्थ यात्रा, पुण्यस्थानों का घूमना ।—राज ( पु० ) तीर्थाधिप, तीर्थस्वामी, महातीर्थ, प्रयाग ।—सेवी ( वि० ) पुण्यक्षेत्र में वास करने वाले, धानप्रस्थाश्रमी ।

तीर्थिक तत्त्वं ( पु० ) पण्डा, बौद्धधर्मद्वेषी ब्राह्मण । तीर्त्ता दे० ( स्त्री० ) तूली, सत्ताई, पिण्डली । तीवर दे० ( पु० ) वर्षसङ्कर जाति विशेष, बहेलिया, ध्याय, समुद्र, मधुघा ।

तीव्र तत्त्वं ( वि० ) अधिक तेज, कटु, कटुभा, प्रखर, नितान्त, दुःसह, प्रचण्ड । ( पु० ) लोहा, नदी का तट, शिव ।—फराट तत्त्वं ( पु० ) सूरन, जमी-कन्द, थोल ।—गन्धा ( स्त्री० ) जवाहन, अज-वाहन ।—वेदना ( स्त्री० ) अत्यन्त अधिक कष्ट, महाभारता । [ तीन दश, पीड़ा ।

तीस दे० ( वि० ) सख्या विशेष, बीस और दश, तीसरा दे० ( क्रि० ) तृतीय, तीसर ।

तीसवाँ ( पु० ) उनतीस के बाद का ।

तीसी दे० ( स्त्री० ) अक्ष विशेष, आलसी, अतसी, अत्सी, पसीना, ( वि० ) तीस सख्या से परिमित ।

तुष्प ( सर्व० ) तप, तुम्हारा ।

तुष्पना ( क्रि० ) चूना, ठपकना, गिर पड़ना ।

तुष्प दे० ( पु० ) अरहर, आठकी ।

तुई ( सर्व० ) तू, तूही, तुम्ही ।

तुक दे० ( पु० ) पद, कड़ी, छन्द, भाग, यमक, समान पद की योजना, यथा—निहारी, तिहारी आदि । चौपाई आदि के अन्त में जिस प्रकार के पद रखे जाते हैं ।—

दुग पर दुग जीते सरजा सिवाजी गाजी,

दुग नाचे दुग पर रंडमुंड फरके ।

भूपन भगत बाजे जिते जीत नगारे भारे,

सारे कर नाटी भूपसिंहल को सरके ।

मारे सुनि सुभट पनारे उबुभट ताके,

तारे लगे भिरन सितारे गजघर के ।

गोलकुण्डा धीरन के बीजापुर बीरन के,

दिल्ली उर मीरन के दाहिम से दुरके ।

—सिवाबाबनी ।

—वन्दी ( स्त्री० ) कविता विशेष, जिसमें समान पद हों, अर्थात् कविता ।

तुकला दे० ( पु० ) कीट विशेष, छोटी पतङ्ग, तुकली ( स्त्री० ) छोटी गुद्दी ।

तुकान्त तत्त्वं ( स्त्री० ) अन्यानुप्रास, तुकवन्दी, काकिया वन्दी ।

तुकाजी होलकर दे० ( पु० ) जगत् प्रसिद्ध महानी अहमदाबाई के सेनापति, अहमदाबाई का इन पर बड़ा ही स्नेह था, उसी स्नेह का फल स्वरूप राज-प्रतिष्ठा सूचक "होलकर" की उपाधि महारानी अहमदाबाई ने इन्हें दी थी ।

तुकाराम दे० ( पु० ) एक महाराष्ट्र साधु, १२४८ ई० में पूना के समीपस्थ देहुक नामक ग्राम में इनका जन्म हुआ था । यह जाति के शूद्र थे, तथापि दक्षिण देश के समीप श्रेणी के लोग इनका आदर करते थे । ११ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ था, परन्तु वाल्यकाल ही से इनकी प्रवृत्ति धर्म की ओर मुकी हुई थी । २० वर्ष की अवस्था में इनके पिता और माता परलोकवासी हुए, उसी समय इनके बड़े भाई की विरक्त होकर घर से चले गये । संयोगवश उसी समय दक्षिण देश में अकाब भी पड़ा हुआ था, इन्हीं सभ घटनाओं से तुकाराम ने संसार का यथार्थ स्वरूप देख लिया ।

उन्होंने संसार छोड़कर भजन करना ही अपने लिये उत्तम कार्य विचार लिया। इनकी बनाई कविता का नाम अभङ्ग है। आठ हजार से भी अधिक इनकी बनाई कविता हैं। इनकी कविता दक्षिण देश में आर की वस्तु समझी जाती है। एक समय सत्रपति शिवा जी इनसे उपदेश लेने गये थे और उपदेश लेकर वे चन में जाकर तपस्या करने लगे। उन्होंने संसार चिन्ता त्रिकुल छोड़ दी। यह देख शिवाजी की माता ने तुकाराम को यह समाचार सुनाया। पुनः तुकाराम ने उन्हें तात्त्विक उपदेश देकर शिवाजी को कार्य में लगाया। तुकाराम की मृत्यु का समय प्रायः अनिश्चित है, तथापि अनुमान किया जाता है कि संवत् १६२६ में उन्होंने परलोक यात्रा की।

**तुकड़ (पु०)** तुकड़दी करने वाला, अपटु कपि। कविता के नियमों के विरुद्ध कविता करने वाला।

**तुकल दे० (पु०)** बड़ी पतल, बड़ी गुड़ी।

**तुका दे० (पु०)** बांस के टुकड़े, मुड़ा बाण, ओधर-तीर, पहाड़ी, छोटा पर्वत।

**तुख (पु०)** चोकर, सूखी, झिलका।

**तुगा तव० (खी०)** तुगाचीरी, वंशलोचन।—**तीरी**—**वंशी (खी०)** वंशलोचन।

**तुङ्ग तव० (पु०)** पुसागवृक्ष, पर्वत, बुधमरु, नारिकेल, योग, मेद। (वि०) उद्यत, उद्य, ऊर्ध्व, प्रधान, उग्र, तीव्र।—**ता (खी०)** उद्यता, महत्ता।—**भद्रा (खी०)** दक्षिण देश की प्रसिद्ध नदी, मैसूर प्रान्त की एक नदी का नाम।

—**वृत्त (पु०)** नारियल का पेड़।

**तुङ्ग तव० (वि०)** अरुण, घोड़ा, बहुत घोड़ा, अवज्ञात, तिरस्कृत, हेय, नीच, हीन, अधम निडला निरुत्तम।—**ज्ञान (पु०)** हेयज्ञान, अनादर, अमान्यता।—**ता (खी०)** अवज्ञा, हेयता, नीचता, अधमता।—**द्रुम (पु०)** नीच वृक्ष, परण्ड वृक्ष।

**तुम्भ (सर्व०)** तुम।

**तुम्भे (सर्व०)** तुमको।

**तुट तव० (पु०)** समाम, तुट, रूख।

**तुड़ाना दे० (कि०)** बेल आदि पशुओं का पगहा तोड़ कर भागना, रुपया भुनाना, मूल्य घटवाना।

**तुण्ड तव० (पु०)** मुख, यदन, चोंच, ठौर।

**तुतरा (जा) दे० (वि०)** अस्पष्ट उच्चारण करने वाला, थटक थटक कर बोलने वाला, हकबाकर धोलने वाला।

**तुतरा (जा) ना दे० (कि०)** अस्पष्ट उच्चारण करना, थटक थटक कर बोलना।

**तुतिया दे० (खी०)** तूतिया, उपधातु विरोध, विष विशेष, तुल्य, नीलापोषा।

**तुतुही दे० (खी०)** टोटीदार छोटी घंटी।

**तुत्य तव० (पु०)** तूतिया, नीलापोषा।

**तुन दे० (पु०)** वृक्ष विरोध, नन्दीवृक्ष।

**तुनकी दे० (खी०)** पतली एक प्रकार की रोटी।

**तुनतुनाना दे० (कि०)** सूक्ष्म स्वर से बजाना, सितार आदि बजाना।

**तुन्द तव० (पु०)** जठर, पेट, उदर।—**परिमृज (वि०)** अलस, आलसी, अकर्मा, पेट पर हाथ फेरते रहने वाला, निरुत्तम।

**तुन्दिल तव० (वि०)** तोदिल, जम्बोदार, यड़ा पेटवाला, लम्बे पेटवाला मनुष्य।

**तुन दे० (पु०)** तुन वृक्ष विरोध।—**वाय (पु०)** दर्भों, सूचीकार, कपड़े सीने वाला।

**तुपक दे० (खी०)** बन्दूक, छोटा बन्दूक, पिस्तौल।

**तुपकिया दे० (खी०)** छोटी तुपक। (पु०) बन्दूक चलाने वाला। [घाँघी पानी।

**तुफान दे० (पु०)** आंधी, चँचद, पानी, कड़,

**तुम दे० (सर्व०)** मध्यम पुरुष का बहुवचन।—**तनौ (सर्व०)** तुम्हारा, तुम्हारे, सम्बन्ध का।—**हि तुमको, आपको।**

**तुमड़ी दे० (खी०)** सँपेरे की बंशी, एक प्रकार का वाद्य जिस सँपेरे बजाते हैं। पुङ्गली, साधुओं का काष्ठ निर्मित जलपात्र, सूखा कद्दू का पात्र।

**तुमरा (सर्व०)** तुम्हारा।

**तुमाई दे० (खी०)** धुनाई, तुमाने का पैसा, तुमाने की मन्त्री।

**तुमाना दे० (कि०)** धुनवाना, तुनवाना, रुई धुनाना।

**तुमुल तव० (पु०)** रण सेकुल, सङ्कीर्णयुद्ध, अल्पत लोमहर्षय युद्ध, घोर युद्ध, अयानक युद्ध, योगयुद्ध, बड़े का वृक्ष।

तुम्हरी तत् ( स्त्री० ) बीणा, बीना ।

तुम्हा दे० ( पु० ) सुखा लब्धया या लौका, जिसकी

तुम्ही साधु लोग बनाते हैं ।

तुम्बिका तत् ( स्त्री० ) कद्दू, छात्र, लौका ।

तुम्बिया तत् ( स्त्री० ) कमण्डल, करवा ।

तुम्बी तत् ( स्त्री० ) लौकी, मदार की वंशी ।

तुम्पुर तत् ( पु० ) वाद्य विशेष, तंजुरा, तानपूरा ।

तुम्पुरु तत् ( पु० ) गन्धर्व विशेष, स्वर्गांगायक, जिनो-  
पासक विशेष, धनिया [ आप ही के ।

तुम्ह दे० ( सर्व० ) तुम, आप ।—रेहि दे० तुम्हारे ही,

तुम्ह दे० ( स्त्री० ) तरकारी विशेष ।

तुर्क तत् ( पु० ) तुर्क, देश विशेष, उस देश के वासी  
सुसलमान हैं । जाति विशेष, जो तुर्कदेश में रहती  
है, तुर्क देशवासी ।

तुर्कटा ( पु० ) सुसलमान, धवन, स्नेह ।

तुर्कान ( पु० ) सुसलमानों के रहने का स्थान ।—  
( पु० ) तुर्कों के रहने की जगह । ( वि० ) तुर्क  
सम्बन्धी ।

तुर्कानी या तुर्किन ( स्त्री० ) तुर्क की स्त्री या तुर्क  
की भाषा, तुर्क में जपल होने वाली वस्तु । ( वि० )  
तुर्कों जैसी ।

तुर्ग तत् ( पु० ) तुर्ग, अश्व, घोटक, घोड़ा, चित्त,  
मन, अन्तःकरण ।—ब्रह्मचर्य ( पु० ) न मिलने के  
कारण स्त्रीत्याग ।—रोही ( पु० ) अश्वारोही,  
घोड़सवार, घुड़सवार [ घुड़वड़ा, घुड़सवार ।

तुर्गी तत् ( स्त्री० ) घोड़ी, अश्वगन्धा । ( पु० )

तुर्ग तत् ( पु० ) ] अश्व, घोड़ा, जव्दी चलने

तुर्ग तत् ( पु० ) ] वाला, चित्त ।

तुर्गाहा तत् ( स्त्री० ) औषध विशेष, असगन्ध,  
अश्वगन्धा ।

तुरत, तुरन्त दे० ( अ० ) ही शीघ्र, स्वरित, तूर्ण,  
झटपट, जल्दी, अभी साथ ही, वसी दम, तत्काल,  
जल्दी से तुरत ही, शीघ्र ही, अति शीघ्र ही,  
स्वरित, झटपट ।

तुरपन दे० ( स्त्री० ) टांका, टोंप, सिलाई, तगाई,  
तागा चलाना, एक प्रकार का छोटा टांका  
लगाना ।

तुरपना दे० ( कि० ) सीना, टांका, टांका चलाना ।

तुरमती दे० ( स्त्री० ) बाज, पक्षिविशेष, मूरपक्षी ।

तुरही दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का बाजा जो मुँह से  
बजाते हैं, रखसिंगा, साधुओं के बजाने की तुरही ।

तुरा ( स्त्री० ) शीघ्रता, त्वरा, जल्दी । ( पु० ) घोड़ा,  
मन, चित्त, शीघ्रगामी ।

तुराई दे० ( स्त्री० ) तोसक, गद्दा । ( वि० ) त्वरा, वेग

तुराना दे० ( कि० ) छूट जाना, लुप्तगन, पैल आदि  
पशुओं का बन्धन तोड़कर भागना, पयाना,  
आतुर होना ।

तुरापाटू तत् ( पु० ) देवान, हन्त, सुरेन्द्र ।

तुरिय दे० ( पु० ) घोड़ा, अश्व ।

तुरी तत् ( स्त्री० ) कपड़ा धिनने का उपकरण विशेष,  
तन्त्रकाष्ठ, चितेरा, ताँती की कुची, बोड़ी,  
लगाम, बाग, फूलों का गुच्छा, मोती की लड़ियों  
का कन्था, तुरही । ( पु० ) मवार, अश्वारोही ।

तुरीय तत् ( वि० ) चतुर्थ अवस्था, चौथा, चार संख्या  
को पूर्य करने वाली संख्या ( पु० ) ब्रह्म, अज्ञान से  
प्राप्त चेतनता का आधार, अनुपस्थित, चैतन्य,  
मुक्तावस्था । ( स्त्री० ) एक अवस्था, जीव की अवस्था  
विशेष ।—वर्ण ( पु० ) चौपावर्ण, शूद्र, अवर  
वर्ण ।—आश्रम ( पु० ) चतुर्थ आश्रम, चौथा  
आश्रम, संन्यास आश्रम । [ वासी ।

तुर्क तत् ( पु० ) तुर्क, सुसलमान, तुर्किस्तान का  
तुरुपना दे० ( कि० ) देखो तुरुपना ।

तुरुम दे० ( पु० ) पैकड़ा, रिकाव, बेड़ी, पादयन्त्रिणी  
रज्ज, पैर बाँधने की रस्सी ।

तुरुक तत् ( पु० ) देश विशेष, तुर्क, तुर्किस्तान,  
तुर्की देश, गन्ध द्रव्य विशेष, शिलासर, धूप,  
लोयान, घुड़सवार । [ के मनुष्य, अश्व ।

तुर्क ( पु० ) देखो तुर्क ।—धान ( पु० ) तुर्क जाति  
तुर्किन ( स्त्री० ) देखो तुर्किन ।

तुर्की ( स्त्री० ) टर्की, तुर्किस्तान ।

तुर्त दे० ( अ० ) तुरन्त, तुरत, शीघ्र ।—फुर्त ( पु० )  
बहुत ही शीघ्र, बात की बात में ।

तुर्ताव दे० ( अ० ) शीघ्र, तुरन्त, तुरत ।

तुर्ती फुर्ती दे० ( अ० ) तुरन्त, शीघ्र, शीघ्रता से ।

तुर्तु दे० ( पु० ) सतर्क, सावधान, वेगवान्, तेज,  
प्रखर ।

तुर्ग दे० ( पु० ) कलगी, शोपी का कुँदना, चोटो  
किनारा, जटाधारी, कोढ़ा ।

तुल तद्० ( गु० ) तुल्य, सदृश, समान, बराबर ।  
—कर खड़े होना ( वा० ) किसी काम के लिये  
तैयार रहना । —तुलाना ( क्रि० ) विलपिलाना,  
नरमाना, नरम होना ।

तुलना तद्० ( क्रि० ) जोखना, परिमाण करना,  
कतना, तौलना, माप करना । ( स्त्री० ) दृष्टान्त,  
सादृश, उपमा, सादृश्यकरण, समीकरण, याचरी  
करना, एक की दूसरे से समानता, सधना,  
बँधना, अन्दाज़ होना, भरना, उतारू होना ।

तुलनी तद्० ( स्त्री० ) तुला या तराजू की डंडी में  
सुई के दोनों ओर का कोड़ा ।

तुलवाई दे० ( स्त्री० ) तौलने की उन्नत ।

तुलवाना दे० ( क्रि० ) तौल कराना ।

तुलसिका तद्० ( स्त्री० ) हरिप्रिय, वृन्दा, तुलसी,  
एक पवित्र और पूजनीय देववृक्ष, इसके पत्र भग-  
वान् विष्णु की पूजा में काम आते हैं ।

तुलसी तद्० ( स्त्री० ) तुलसिका, हरिप्रिय, स्वनाम  
प्रसिद्ध देववृक्ष ।—दल तद्० ( पु० ) तुलसी  
की फुलगी, तुलसी की पत्ती ।

तुलसीदास तद्० ( पु० ) भारत के प्रसिद्ध भक्त कवि,  
यह सरयूगरी ब्राह्मण थे । यमुना के किनारे  
रामपुर नामक गाँव में यह उत्पन्न हुए थे ।  
हिन्दी भाषा में इनके यनाये प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम  
“मानस रामायण” है। कहते हैं भगवान् श्रीराम-  
चन्द्र ने रामायण ब्रह्म के लिये इनको स्वप्न में  
आदेश दिया था । उनका दार्शनिक सिद्धान्त  
विशिष्टाद्वैत था । रामानन्द स्वामी के समान यह  
भी विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रचारक थे । कहते हैं  
तुलसीदास बड़े ही स्त्रीपरायण थे । एक दिन  
इनकी स्त्री रत्नावली अपने पिता के घर चली  
गई । तुलसीदास को जब पता लगा तो वह दौड़े  
दौड़े अपने श्वसुर के घर गये, उनकी स्त्री से  
मेंट हुई, स्त्री ने कहा कि इस चर्ममय शरीर में  
जितनी तुम्हारी शक्ति है, यदि उतनी राम में  
होती तो तुम्हारा संसार-रूप छूट जाता । श्री की  
इन बातों का तुलसीदास पर बड़ा प्रभाव पड़ा,

वह उसी क्षण से संसार से विरक्त हो गये । वह  
तीर्थयात्रा को निकले, काशी, मथुरा श्रयोष्या  
आदि अनेक तीर्थों में बहुत दिनों तक घूमते  
रहे जब वे अपनी स्त्री आदि को स्मरण नहीं  
करते थे । घूमते घूमते संयोग वश एक दिन वे  
अपने श्वसुर के घर पहुँचे । उनकी वृद्धा स्त्री  
उनका सरकार करने लगी । थोड़ी देर के बाद  
उसने अपनी पति को पहचाना । स्त्री ने कहा—  
खड़ाई लाऊँ, तुलसीदास ने कहा—झोरी में  
है, स्त्री ने कहा—रूप लाऊँ, तुलसीदास ने  
कहा—झोरी में है । यह सुनकर उनकी स्त्री ने  
कहा—महाराज जब सभी वस्तु आपकी झोरी  
में हैं, तब एक विचारी स्त्री का क्या अपराध है ?  
तुलसीदास ने जब समझा कि उनकी स्त्री उनसे  
अधिक ज्ञानी है । झोली उन्होंने उसी समय  
फेंक दी । स्मरण के राजा उनकी बड़ी भक्ति करते  
थे । बालकाण्ड तक रामायण की रचना तुलसीदास  
ने श्रयोष्या में की थी, जब वहाँ के पैरागियों से  
कुछ झगड़ा हो गया तब वह वहाँ से काशी आ  
गये और वहाँ उन्होंने अपनी रामायण की पूर्ति  
की । तुलसीदास जिस स्थान पर रहते थे, वह  
आज तक भी तुलसीघाट के नाम से प्रसिद्ध है ।  
इनकी परलोकयात्रा के विषय में यह बोधा  
प्रसिद्ध है ।

“सब सौह सौ अस्सी, ( १६८० ) अस्सी गज के  
तीर श्रावणशुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर ।”

तुला तद्० ( स्त्री० ) तराजू, तखरी, तौलने का साधन  
बराबरी, समान, उपमा, सममराशि ।—कौटि  
( स्त्री० ) तराजू की डंडी के दोनों किनारे, तौल  
विशेष, विलिखा, नूपुर, श्रवण की संख्या ।—दान  
( पु० ) दान विशेष, अपने शरीर के बराबर किसी  
वस्तु का दान ।—धार ( पु० ) काशीनिवासी  
एक धर्मपरायण और प्रज्ञातस्वज्ञ वणिक, इसने  
महर्षि जाजलि के मोक्षधर्म का उपदेश दिया था ।  
( २ ) वाराणसी निवासी एक ग्याध, इसने माता  
पिता की सेवा के प्रभाव से सर्वदर्शिता प्राप्त की  
थी । सभी का जीवनवृत्तान्त यह अनायास ही  
जान सकता था ।

तुम्बरी तत् ( स्त्री० ) बीणा, वीणा ।

तुम्बा दे० ( पु० ) सूखा लडवा या लौका, जिसकी तुमड़ी साधु लोग बनाते हैं ।

तुम्बिका तत् ( स्त्री० ) कद्दू, लालू, लौका ।

तुम्बिया तत् ( स्त्री० ) कमण्डल, करवा ।

तुम्बी तत् ( स्त्री० ) लौकी, मदारी की बंशी ।

तुम्बुर तत् ( पु० ) चाय विशेष, तंबूरा, तानपूरा ।

तुम्बुरु तत् ( पु० ) गन्धर्व विशेष, स्वर्गागायक, जिनो-पासक विशेष, धनिया [ आप ही के ।

तुम्ह दे० ( सर्व० ) तुम, आप ।—रहि दे० तुम्हारे ही,

तुम्ह दे० ( स्त्री० ) तरकारी विशेष ।

तुरक तत् ( पु० ) तुर्क, देश विशेष, उस देश के वासी सुखमान हैं । जाति विशेष, जो तुर्कदेश में रहती है, तुर्क देशवासी ।

तुरकटा ( पु० ) सुखमान, यवन, स्नेच्छ ।

तुरकान ( पु० ) सुखमानों के रहने का स्थान ।—( पु० ) तुर्कों के रहने की जगह । ( वि० ) तुर्क सम्बन्धी ।

तुरकानी या तुरकिन ( स्त्री० ) तुर्क की स्त्री या तुर्क की भाया, तुर्क में अपठ होने वाली वस्तु । ( वि० ) तुर्कों जैसी ।

तुरग तत् ( पु० ) तुरङ्ग, अश्व, घोटक, घोड़ा, चित्त, मन, अन्तःकरण ।—ब्रह्मचर्य ( पु० ) न मिलने के कारण स्त्रीत्याग ।—रोही ( पु० ) अश्वारोही, घोड़सवार, घुड़सवार [ घुड़चढ़ा, घुड़सवार ।

तुरगी तत् ( स्त्री० ) घोड़ी, अश्वगन्धा । ( पु० )

तुरङ्ग तत् ( पु० ) अश्व, घोड़ा, जल्दी चलने तुरङ्गम तत् ( पु० ) वाला, चित्त ।

तुरङ्गाङ्गा तत् ( स्त्री० ) औपथ विशेष, असगन्ध, अश्वगन्धा ।

तुरत, तुरन्त दे० ( अ० ) ही शीघ्र, स्वरित, तूर्ण, ऋपट, जल्दी, अभी साय ही, उसी दम, तत्काल, जल्दी से तुरत ही, शीघ्र ही, अति शीघ्र ही, स्वरित, ऋपट ।

तुरपन दे० ( स्त्री० ) टाँका, टोंप, सिलाई, तगाई, तागा चलाना, एक प्रकार का छोटा टाँका लगाना ।

तुरपना दे० ( कि० ) सीना, टाकना, टाका चलाना ।

तुरमतो दे० ( स्त्री० ) बाज, पक्षीविशेष, कूपक्षी ।

तुरही दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का घाजा जो मुँह से बजाते हैं, रणसिंगा, साधुओं के यज्ञने की तुरही ।

तुरा ( स्त्री० ) शीघ्रता, स्वरा, जल्दी । ( पु० ) घोड़ा, मन, चित्त, शीघ्रगामी ।

तुराई दे० ( स्त्री० ) तोसक, गद्दा । ( वि० ) स्वा, वेग ।

तुराना दे० ( कि० ) छूट जाना, हुड़ाना, बैज आदि पशुओं का बन्धन-तोड़कर भागना, घबराना, आतुर होना ।

तुरापाट तत् ( पु० ) देवराज, इन्द्र, सुरेन्द्र ।

तुरिय दे० ( पु० ) घोड़ा, अश्व ।

तुरी तत् ( स्त्री० ) कपड़ा बिनने का उपकरण विशेष, तन्त्रकाष्ठ, चितेरा, ताँती की कुची, घोड़ी, लगाम, बाग, फूलों का गुच्छा, मोती की लड़ियों का झूठा, तुरही । ( पु० ) पथार, अश्वारोही ।

तुरीय तत् ( वि० ) चतुर्थ अवस्था, चौथा, चार संख्या को पूरा करने वाली संख्या ( पु० ) प्रह, अज्ञान से प्राप्त चेतनता का आधार, अनुपस्थित, चैतन्य, मुक्तावस्था । ( स्त्री० ) एक अवस्था, जीव की अवस्था विशेष ।—चूर्ण ( पु० ) चौथावर्ण, शुद्ध, श्वर वर्ण ।—आश्रम ( पु० ) चतुर्थ आश्रम, चौथा आश्रम, संन्यास आश्रम । [ वासी ।

तुरुक तत् ( पु० ) तुरुक, सुखमान, तुर्किस्तान का,

तुरुपना दे० ( कि० ) देखो तुरपना ।

तुरुम दे० ( पु० ) पैकड़ा, रिकाय, बेड़ी, पादयन्त्रिनी रङ्गू, पैर बाँधने की रस्ती ।

तुरुष्क तत् ( पु० ) देश विशेष, तुर्क, तुर्किस्तान, तुर्की देश, गन्ध द्रव्य विशेष, शिलासर, धूप, लोथान, घुड़सवार । [ के मनुष्य, अश्व ।

तुर्क ( पु० ) देखो तुरक ।—वान ( पु० ) तुर्क जाति

तुर्किन ( स्त्री० ) देखो तुरकिन ।

तुर्की ( स्त्री० ) टर्की, तुर्किस्तान ।

तुर्ज दे० ( अ० ) तुरन्त, तुरत, शीघ्र ।—फुर्त ( पु० ) बहुत ही शीघ्र, बात की बात में ।

तुर्तावि दे० ( अ० ) शीघ्र, तुरन्त, तुरत ।

तुर्ती फुर्ती दे० ( अ० ) तुरन्त, शीघ्र, शीघ्रता से ।

तुर्तुप दे० ( पु० ) सतर्क, सावधान, वेगवान्, तेज़, प्रहार ।

तुर्ग दे० ( पु० ) कलगी, रोपी का फुँदना, चोटो  
किनारा, जटाधारी, कोड़ा ।

तुल तद्० ( गु० ) तुल्य, सदृश, समान, बराबर ।  
—कर खड़े होना ( पा० ) किसी काम के लिये  
तैयार रहना । —तुलाना ( कि० ) बिलबिलाना,  
नरमाना, नरम होना ।

तुलना तद्० ( कि० ) जोखना, परिमाण करना,  
कूतना, तौलना, मान करना । ( स्त्री० ) दृष्टान्त,  
सादृश, उपमा, सादृश्यकरण, समीकरण, बराबरी  
करना, एक की दूसरे से समानता, सधना,  
बँचना, बन्दोबस्त होना, मारना, उतारू होना ।

तुलनी तद्० ( स्त्री० ) तुला या तराजू की डंडी में  
बुई के दोनों ओर का लोहा ।

तुलवाई दे० ( स्त्री० ) तौलने की उजरत ।

तुलवाना दे० ( कि० ) तौल कराना ।

तुलसिका तद्० ( स्त्री० ) हरिप्रिय, वृन्दा, तुलसी,  
एक पवित्र और पूजनीय देववृक्ष, इसके पत्र भग-  
वान् विष्णु की पूजा में काम आते हैं ।

तुलसी तद्० ( स्त्री० ) तुलसिका, हरिप्रिय, स्वनाम  
प्रसिद्ध देववृक्ष ।—दल तद्० ( पु० ) तुलसी  
की कुनगी, तुलसी की पत्ती ।

तुलसीदास तद्० ( पु० ) भारत के प्रसिद्ध भक्त कवि,  
यह सरयूपारी ब्राह्मण थे । यमुना के किनारे  
राजापुर नामक गाँव में यह जन्म हुए थे ।  
हिन्दी भाषा में इनके बनावे प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम  
“मानस रामायण” है । कहते हैं भगवान् श्रीराम-  
चन्द्र ने रामायण बराने के लिये इनको स्वप्न में  
आदेश दिया था । इनका दार्शनिक सिद्धान्त  
विशिष्टाद्वैत था । रामानन्द स्वामी के समान यह  
भी विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रचारक थे । कहते हैं  
तुलसीदास बड़े ही स्त्रीपरायण थे । एक दिन  
इनकी स्त्री रतावली अपने पिता के घर चली  
गई । तुलसीदास को जब पता लगा तो वह दौड़े  
दौड़े अपने श्वसुर के घर गये, उनकी स्त्री से  
भेंट हुई, स्त्री ने कहा कि इस चर्ममय शरीर में  
जितनी तुम्हारी अनुरक्ति है, यदि उतनी राम में  
होती तो तुम्हारा संसार-रुट छूट जाता । स्त्री की  
इन बातों का तुलसीदास पर बड़ा प्रभाव पड़ा,

यह उसी क्षण से संसार से विरक्त हो गये । यह  
तीर्थयात्रा को निकले, काशी, मथुरा अयोध्या  
आदि अनेक तीर्थों में बहुत दिनों तक घूमते  
रहे अब वे अपनी स्त्री आदि को स्मरण नहीं  
करते थे । घूमते घूमते संयोग वश एक दिन वे  
अपने श्वसुर के घर पहुँचे । उनकी वृद्धा स्त्री  
उनका सत्कार करने लगी । थोड़ी देर के बाद  
उसने अपनी पति को पहचाना । स्त्री ने कहा—  
खधाई लाऊँ, तुलसीदास ने कहा—सोरी मैं  
है, स्त्री ने कहा—कपूर लाऊँ, तुलसीदास ने  
कहा—सोरी मैं है । यह सुनकर उनकी स्त्री ने  
कहा—महाराज जब सभी वस्तु आपकी सोरी  
में हैं, तब एक विचारी स्त्री का क्या अपराध है ?  
तुलसीदास ने अब समझा कि उनकी स्त्री उनसे  
अधिक ज्ञानी है । सोली उन्होंने उसी समय  
फेंक दी । सम्भर के राजा उनकी बड़ी भक्ति करते  
थे । बालकाण्ड तक रामायण की रचना तुलसीदास  
ने अयोध्या में की थी, जब वहाँ के वैरागियों से  
कुछ झगड़ा हो गया तब वह वहाँ से काशी आ  
गये और वहाँ उन्होंने अपनी रामायण की पूर्ति  
की । तुलसीदास जिस स्थान पर रहते थे, वह  
आज तक भी तुलसीघाट के नाम से प्रसिद्ध है ।  
इनकी परलोकयात्रा के विषय में यह दोहा  
प्रसिद्ध है ।

“सबत् सोहस सौ भसी, ( १६८० ) असी गज के  
तीर आवण्डुल्लु ससनी, तुलसी तज्यो शरीर ।”

तुला तद्० ( स्त्री० ) तराजू, तखरी, तौलने का साधन  
बराबरी, समान, उपमा, ससमराशि ।—कौटि  
( स्त्री० ) तराजू की डंडी के दोनों किनारे, तौल  
विशेष, विडिआ, नूपुर, शरभ की संध्या ।—दान  
( पु० ) दान विशेष, अपने शरीर के बराबर किसी  
वस्तु का दान ।—घार ( पु० ) काशीनिवासी  
एक धर्मपरायण और मज्जतत्त्वज्ञ यणिक, इसने  
महर्षि जाजलि को मोक्षधर्म का उपदेश दिया था ।  
( २ ) वाराणसी निवासी एक ब्याध, इसने माता  
पिता की सेवा के प्रभाव से सर्वदेहिता प्राप्त की  
थी । सभी का जीवनवृत्तान्त यह अनायास ही  
जान सकता था ।





आयोजन, तैयारी ।—तवील ( घा० ) छोटी वस्तु को बड़ी समझना, समान्य बात को बड़ी समझ कर उसके लिये बड़ी तैयारियाँ करना ।

तूनीय तत् ( पु० ) कदम्बवृक्ष, कदम्ब का पेड़ ।

तूनीनी तत् ( पु० ) लक्ष्मणकन्द, रुईवाला वृक्ष, सेमर का पेड़ ।

तूनी तत् ( स्त्री० ) नील का वृक्ष, तसवीर बनाने की कलम, एक प्रकार की बाजों की कृत्रिम जिससे चित्रकार तसवीरों पर रङ्ग चढ़ाते हैं । [ भी कहते हैं ।

तूर तत् ( पु० ) राजपूतों की एक जाति, जिसे तूरर तूष्णी या तूष्णीम् तत् ( वि० ) मौन, चुप ।

तूस ( पु० ) भूसा, भुस एक प्रकार की जन, पशमीना, नमदा ।—ती ( शु० ) करंजई रङ्ग का ।

तुख ( पु० ) जायफल ।

तुखा ( स्त्री० ) तृषा, प्यास, लालसा ।

तृष तत् ( पु० ) घास, खड़, खर, घासकूस, तिनका ।

—कुटी ( स्त्री० ) घास की बनी झोपड़ी, तृषा-प्लावित जघु गृह ।—राज ( पु० ) नारियल, नारियल का पेड़, ऊल, तालवृक्ष ।—घत् ( वि० ) तृष के समान, लघु, तुच्छ, सारहित, निकम्मा, बटवला ।

तृषविन्दु तत् ( पु० ) आधिविशेष, द्वार के वेद-प्यास, इन्होंने २४ द्वारतुगों में वेदों का विभाग किया था, अतएव इनको वेदप्यास की उपाधि मिली थी ।

तृषावर्त्त तत् ( पु० ) दैत्यविशेष, कंस का अनुवर दानव । इसको श्रीकृष्ण का वध करने के लिये कंस ने गोकुल भेजा था, वधण्डल धन करके वह श्रीकृष्ण को लेकर ऊपर उड़ गया, परन्तु श्रीकृष्ण बहुत भारी हो गये, इस कारण उनको वह ले नहीं जा सका, और श्रीकृष्ण ने इसका गला पकड़ लिया । अतएव वह भाग भी नहीं सका, दानव वेदोश हो कर भूमि पर गिर पड़ा और मर गया ।

तृषोदक तत् ( पु० ) घास और पानी, पशुओं का भोजन ।

तृतीय तत् ( वि० ) तीसरा, तीन की पूर्ववाली संख्या ।—प्रकृति ( स्त्री० ) तीसरा, प्रकृति, स्त्री और पुरुष से विलक्षण स्वभाव वाला, नपुंसक ।

तृतीया तत् ( स्त्री० ) पंच का तीसरा दिन, तीसरी तिथि, गौरी इस तिथि की स्वामिनी हैं ।—न्त ( वि० ) [ तृतीय + अन्त ] जिसके अन्त में तृतीया विभक्ति के चिह्न हों ।—श ( पु० ) [ तृतीय + श्र ] तीसरा भाग, तीसरा हिस्सा ।

तृपति ( स्त्री० ) प्रसन्नता, तृप्ति ।

तृप्त तत् ( वि० ) [ तृप् + क ] परितोषान्वित, सन्तुष्ट, हर्षित, आप्यायित, प्रसन्न, हृष्ट ।

तृप्ति तत् ( स्त्री० ) [ तृप् + क ] क्षुद्रितृप्ति, परितोष, आह्लाद, सन्तोष ।—कर ( वि० ) सन्तोषजनक, तृप्ति करने वाला ।—जनक ( वि० ) तृप्तिकर, आह्लादजनक ।

तृपुण्ड्र तत् ( पु० ) त्रिपुण्ड्र, तिलक विशेष, तीन धारी का वैष्णव तिलक, जैसा शैव लगाते हैं ।

तृपुर तत् ( पु० ) त्रिपुर एक दैत्य के नगर का नाम, ( देखो त्रिपुरारि ) । [ हर और महेन्द्र ।

तृफल तत् ( स्त्री० ) त्रिकला, तीन फल, आंवला,

तृविक्रम तत् ( पु० ) त्रिविक्रम, भगवान का धामन अवतार, धामन । [ स्वती का सङ्गम ।

तृवेनी तत् ( स्त्री० ) त्रिवेणी, गङ्गा यमुना और सर-तृमुवन तत् ( पु० ) त्रिभुवन, तीन लोक, त्रिलोक,

स्वर्ग, मर्त्य और पाताल । [ त्रिमार्ग ।

तृमुहानी दे० ( स्त्री० ) त्रिमुहानी, तीन मार्गों का योग,

तृय दे० ( स्त्री० ) स्त्री, युवती, त्रिया ।

तृलोक तत् ( पु० ) त्रिलोक, तीन लोक ।

तृविध तत् ( पु० ) त्रिविध, तीन प्रकार का, तीन रङ्ग का । [ त्रिविध ।

तृवृत्, तृवृत्ता तत् ( स्त्री० ) त्रौषध विशेष, त्रिषोष,

तृषा तत् ( स्त्री० ) [ तृप् + घ्रा ] तृष्या, पीपासा, प्यास, चाह, दरकार ।—र्त ( वि० ) [ तृषा + आर्त ] पिपासा से पीड़ित, प्यास से व्याकुल ।

तृषावन्त तत् ( वि० ) प्यासा, पिपासित ।

तृपित तत् ( वि० ) [ तृप् + क ] तृष्यायुक्त, पिपासित, प्यासा, अभिलाषी, इच्छुक, बालची ।

तृष्णा तत् ( स्त्री० ) [ तृप् + न + आ ] पिपासा, पीने की इच्छा, उत्कण्ठा, अत्यन्त अभिलाष, अधिक वसुङ्कता, लोलुपता, खोम ।—तृय ( पु० ) तृषा निवृत्ति, पिपासा शान्ति, धासनाश, लोलुपता की निवृत्ति ।

तुसङ्क तद् ( पु० ) त्रिशङ्कु, एक सूर्यवंशी राजा, राजा हरिश्चन्द्र के पिता ( देखो त्रिशङ्कु )  
 तुसून तद् ( पु० ) त्रिसून, महादेव का मुख्य अस्त्र ।  
 तं दे० ( आ० ) से, लेकर ।  
 तेंतालीस दे० ( वि० ) चालीस और तीन, ४३, तीन अधिक चालीस । [ तीस ।  
 तेंतीस दे० ( वि० ) तीस और तीन, ३३, तीन अधिक तेंदुआ दे० ( पु० ) घाघ, चीता, छोटा बाघ ।  
 तेंदु दे० ( पु० ) फल विलेप, घृत और फल ।  
 ते ( सर्व० ) वे, वे सब ।  
 तेऊ ( सर्व० ) वे सब के सब, वे भी ।  
 तेइस दे० ( वि० ) बीस तीन, २३, तीन अधिक बीस ।  
 तेकाला दे० ( पु० ) अन्न विशेष, त्रिशूल के आकार का एक अन्न, मछली पकड़ने का यन्त्र ।  
 तेग दे० ( पु० ) तलवार, तरवार, कृपाण ।  
 तेगवहादुर दे० ( स्त्री० ) सिक्खों का नवौं गुरु, १६७५ ई० में औरङ्गजेब की आज्ञा से इनका सिर काटा गया था । इनके पिता का नाम हरगोबिन्द था, यह सिक्खों के छठवें गुरु थे । इनकी माता का नाम नानकी था । सम्राट् औरङ्गजेब ने इन्हें पकड़ कर दिल्ली मँगवाया था । मुसलमान होने के लिये सम्राट् ने इन्हें बड़े कष्ट दिये, परन्तु इन्होंने मुसलमान होना न चाहा । तेगवहादुर ने अपने गले में एक कागज का टुकड़ा बाँध कर सम्राट् से कहा कि हमारे गले में जो यन्त्र बाँधा है, उसके प्रभाव से कटा सिर शूट जाता है । उसी समय सम्राट् ने सिर कटवा लिया, परन्तु सिर न शूट । उनके गले से कागज खोल कर देखा गया तो उसमें लिखा था कि "सिर दिया, सर नहीं दिया" अर्थात् सिर तो दिया, परन्तु मन की बातें नहीं दीं ।  
 तेगा दे० ( पु० ) तलवार, खड्ग ।  
 तेज तद् ( पु० ) तेजस्, प्रभाव, पराक्रम, प्रताप, बल, चमक, प्रकाश, वीर्य, सोना, पित्त, गर्मी, मयूखन, मज्जा, तीसरा तत्व (अग्नि) जिज्ञा शरीर ।  
 तेजपात दे० ( पु० ) तज का पत्ता, एक गरम मसाला, तमालपत्र ।  
 तेजवल तद् ( पु० ) औपघ विशेष ।

तेजमान् तद् ( वि० ) प्रतापी, तेजस्वी, चमत्कारी, बली, वीर्यमान् ।  
 तेजचन्त तद् ( वि० ) प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी ।  
 तेजस् तद् ( स्त्री० ) दीप्ति, ताप, प्रताप, प्रखरता, तीक्ष्णता, उग्रता, वेग, बल, वीर्य, सखरता, पराक्रम, तीव्रता, प्रभाव, अग्नि, सुवर्ण । [ पुष्टिक ।  
 तेजस्कर तद् ( वि० ) तेज बढ़ाने वाले पदार्थ, पुष्टई, तेजस्विनी तद् ( स्त्री० ) महाज्योतिष्मती, महाप्रतापान्विता, तेजोयुक्ता, मालकंगनी ।  
 तेजस्वी तद् ( वि० ) प्रतापान्विता, प्रभावशाली, बलवान्, दीप्तिमान् ।  
 तेजारत ( स्त्री० ) व्यापार, उद्यम, कारोबार ।  
 तेजी ( स्त्री० ) उग्रता, प्रबलता । [ प्रकाशस्वरूप ।  
 तेजोमय तद् ( पु० ) अग्निपुञ्ज, ज्योतिर्मय प्रकाशमय, तेतना ( पु० ) उतना, जितना । [ माण का ।  
 तेता दे० ( वि० ) तावत्, तितना, उतना, वन परि-  
 तेताला दे० ( पु० ) तिमहला, तीन खण्ड का मकान, तीन खण्ड की अटारी ।  
 तेतालीस ( पु० ) संख्या विशेष ४६ । -  
 तेति तद् [ ते + इति ] बस वे ।  
 तेतिक ( पु० ) उतना ।  
 तेते तद् ( सर्व० ) वे वे, जिनने, उतने ।  
 तेतो दे० ( वि० ) तितना, उतना ।  
 तेपची दे० ( स्त्री० ) टाँका, टोप । [ विशेष ।  
 तेमन तद् ( वि० ) आर्द्राकरण, ओढ़ा, मीठा, व्यञ्जन  
 तेरस दे० ( स्त्री० ) प्रयोदशी तिथि । [ अधिक दश ।  
 तेरह दे० ( वि० ) दस तीन, १३ संख्या विशेष, तीन तेरह दे० ( पु० ) तीसरा वर्ष ।  
 तेल तद् ( पु० ) तैल, तिल विकार, स्निग्ध द्रव्य ।  
 —चढ़ाना ( क्रि० ) व्याह की एक रीति, दुलहा और दुलहिन की देह में हल्दी और तेल लगाना ।  
 तेलित दे० ( स्त्री० ) तेजी की छी, तेल घेचने वाली, वर्षासङ्कर जाति विशेष की स्त्री ।  
 तेलिया दे० ( पु० ) एक रङ्ग विशेष, तेल का सारङ्ग, विष विशेष [ तैलकार ।  
 तेजी दे० ( पु० ) जाति विशेष, वर्षासङ्कर जाति,  
 तेवर दे० ( पु० ) घूमरी, चक्र, तिमिरी ।  
 तेवरस दे० ( पु० ) तेरह, तीसरा वर्ष ।

तैवराणा दे ( कि० ) घूमना, घूमराणा, चक्कर आना ।  
तैवरी दे० ( स्त्री० ) घुड़की, घमकी, फिटकी, घाँटें  
कड़ी करके घुड़कना ।—चढ़ाना ( वा० ) घुड़कना,  
आँटें दिखाना, भौं चढ़ाना, घमकाना ।

तैवहार दे० ( पु० ) पर्व, उत्सव, वड़ाह ।

तैवो दे० ( अ० ) तैसा, तादृश, उस प्रकार, वैसा ।

तैवोधा दे० ( वि० ) चूँधा, चूँधला, लोँधा, अन्धा,  
रात का अन्धा । [ अड़ङ्कार ।

तैह दे० ( पु० ) क्रोध, कोप, क्रान्त, साहस, घमण्ड,  
तैहर दे० ( स्त्री० ) श्रियों के पैर के एक गहने का नाम ।

तैहा दे० ( पु० ) तैह, क्रोध, कोप ।

तैही दे० ( सर्व० ) उसको, उसीको ।

तै दे० ( कि० वि० ) से ( सर्व० ) तू ।

तैविज तत्त्वं ( पु० ) कथ्य विशेष ।

तैत्तिर तत्त्वं ( पु० ) पश्चि विशेष, तित्तिरपक्षी, तित्तिर  
पक्षियों का झुण्ड ।

तैत्तिरीय तत्त्वं ( वि० ) यजुर्वेदीय शाखा विशेष, यजु-  
वेद का विद्वान्, यजुर्वेदज्ञ । [ विद्वान् ।

तैत्तिरीयक तत्त्वं ( वि० ) यजुर्वेद की एक शाखा का  
तैयार दे० ( वि० ) उद्यत, प्रस्तुत ।

तैरना दे० ( कि० ) पैरना, तरना, हेजना, पार होना ।

तैज तत्त्वं ( पु० ) तेज, तिज आदि से उत्पन्न चिक्कन  
पदार्थ ।—हार ( पु० ) कर्णसङ्कर जाति विशेष,  
तेली ।—किट्ट ( पु० ) तैलमल, तेज का मैज,  
तेल का कीट ।

तैलङ्ग तत्त्वं ( पु० ) देश विशेष, कर्णाटक देश का एक  
प्रान्त विशेष, उस देश के वासी, दशविध ब्राह्मणों  
के श्रान्तर्गत एक ब्राह्मण विशेष ।

तैलङ्गा दे० ( पु० ) तैलङ्ग देश निवासी, अंग्रेज़ी सेना  
के सिपाही । ( देखो तिलङ्गा ) ।

तैलचोरिका तत्त्वं ( स्त्री० ) तिलचिटा, तैलपा, पश्चि  
विशेष । [ चोरिका ।

तैलपा तत्त्वं ( पु० ) पश्चिविशेष, तिलचटा, तैल-  
तैलमाजो तत्त्वं ( स्त्री० ) बत्ती, पत्नीता ।

तैलिनी तत्त्वं ( स्त्री० ) पत्नीता, बत्ती ।

तैली तत्त्वं ( पु० ) तैलकार, तेली । ( वि० ) तेल  
सम्बन्धी तैलमय ।

तैप तत्त्वं ( पु० ) पैपमास, पूस का महीन ।

तैपी तत्त्वं ( स्त्री० ) पुष्यनक्षत्रयुक्ता पूर्वार्धमा, पैपी  
पूर्वार्धमासी, पूस की पूर्वार्धमा ।

तैसा दे० ( अ० ) उसके समान, उसके सदृश ।

तै दे० ( अ० ) तब, तदा, तिसन्देह ।

तौ दे० ( अ० ) त्यों, इस प्रकार ।

तौद तत्त्वं ( स्त्री० ) तुन्द, बड़ा पेट, जठर, बम्बा पेट ।

तौदी तत्त्वं ( स्त्री० ) तुन्दिका, तौद का मध्य, नाभि,  
नामिकुहर ।

तौदीला तत्त्वं ( वि० ) } तुन्दिला, मोटा, स्थूलकाय  
तौदिल तत्त्वं ( वि० ) } बड़ा पेटवाला ।  
तौदिला तत्त्वं ( वि० ) }

तौही दे० ( अ० ) उसी क्षण में, उसी काल में, उसी  
समय में ।

तौक तत्त्वं ( पु० ) सन्तति, सन्तान, पुत्र, कन्या ।

तौकह दे० ( सर्व० ) तुपको, तुम्हको ।

तौल ( पु० ) तोप, सन्तोप ।

तौटक तत्त्वं ( पु० ) छन्दविशेष, द्वादशाक्षर छन्द, एकछन्द  
का नाम जिसके प्रतिपाद में बाहर अक्षर होते हैं ।

तौड़ दे० ( पु० ) दूट, फूट, खडन, भञ्जन, नदी का  
वेग, नदी की तेज़ी, प्रवाह की प्रबलता, धारा  
की तीव्रता, दूध का या दही का पानी, तक,  
खों, तकक, पर्यन्त ।—जोड़ ( वा० ) दाँव पेंच,  
चाल, युक्ति ।—ढालना ( कि० ) विनाश करना,  
नष्ट करना, फोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना ।—देना  
( कि० ) खोंचना, गोंचना, फल फूल आदि का  
तोड़ना ।

तोड़ना दे० ( कि० ) फोड़ना, टुकड़ा करना, रुपया  
भुनाना, रुपये के पीसे बदलाना, हल खलाना  
सँघ लगाना, कुसारीख भङ्ग करना, अशक  
करना, दाम घटाना, संस्था को भङ्ग करना,  
कारखाने को बन्द करना, प्रतिज्ञा भङ्ग करना,  
अलग करना, स्थिर न रहने देना ।

तोड़ल दे० ( पु० ) थाला, कड़ा, कङ्कण, हाथ में पद-  
नन का गहना । [ भुनाने का दाम ।

तोड़वाई, तुड़वाई दे० ( स्त्री० ) पटा, फुड़ाई, रुपया  
तोड़वाना, तुड़वाना दे० ( कि० ) रुपया भुनाना,  
फोड़ना, पुनः बनवाने के लिये गहने आदि का  
तुड़वाना ।

तोड़ा दे० ( पु० ) रथों से भरी धौली, हजार-रथों की धौली, चटका, पलीता, थकी जिससे तोप आदि में भाग लगाई जाती है। सिकड़ी, गले की सीकरी, पैर में पहनने का चर्दी का एक भूषण, घाटा, घटी, नुकसान, नदी का किनारा, रस्सी का टुकड़ा।

तोड़ाना, तुड़ाना दे० ( क्रि० ) तोड़वाना, तुड़वाना।

तोड़ी दे० ( स्त्री० ) सरसों, राई, अन्नविशेष।

तोतना दे० ( क्रि० ) निवार, दूरी आदि बुनना, गूथना

तोतरि दे० ( स्त्री० ) तोतली, थणों की बोली।

तोतला, तुतला दे० ( वि० ) अस्फुटवाक्, अस्पष्टवाक्, लड़खड़ा। [ बोलना।

तोतलाना, तुतलाना दे० ( क्रि० ) हलकाना, अस्पष्ट

तोता दे० ( पु० ) पक्षिविशेष, शुक, सुआ, सुगर।

—चश्म दे० ( पु० ) तोते जैसी आँखें फेरने वाला, बेशीज, दुःशील, येमुरौवत।—चश्मी दे० ( स्त्री० ) दुःशीलता, येवफाई।

तोती दे० ( स्त्री० ) तोते की मादा, उपपत्नी, रखनी, सुरेतिन।

तोपड़ा दे० ( पु० ) मझिका, मक्खी, पक्षिविशेष।

तोपना दे० ( क्रि० ) ठाँकना, छिपाना, लुकाना, आच्छादित करना।

तोपा दे० ( क्रि० ) ढका, ढाँपा, छिपाया।

तोपाना दे० ( क्रि० ) गड़वाना, छिपवाना, लुकवाना।

तोप्यो दे० ( क्रि० ) देखो तोपा।

तोवड़ा दे० ( पु० ) एक प्रकार की धौली, जिसमें घोड़ों को ढाना खिलाया जाता है। चमड़े की धौली।

तोमड़ी या तुमड़िया दे० ( स्त्री० ) तुमड़ी, तुम्बी, साधुओं का जलपात्र।

तोमर तत्० ( पु० ) अन्नविशेष, बरछी, साँग, माला, यह अन्न हाथ से चलाया जाता है, एक लम्बे डण्डे में शूल लगा हुआ रहता है। एक चत्रियों की जाति विशेष, कविता का एक छन्द।—ग्रह ( पु० ) पोद्दा, जो भाले से लड़ाई लड़ते हैं।—धर ( पु० ) अग्नि, अनल, हुताशन।

तोय तत्० ( पु० ) जल, सबिल, वारि, नीर, पूर्वा-पादा नचत्र।—काम ( पु० ) परिव्याध, जल में

उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का वेत।—चानीर ( वि० ) जलामिलापी, जलप्रायी, जल चाहने वाला।—द ( पु० ) जल देने वाला, तर्पणकर्ता। ( पु० ) मेव, वारिद, घटा।—धर ( पु० ) वारिद, तोयद, मेव, जलद।—धि ( पु० ) जलधि, समुद्र, सागर।—निधि ( पु० ) समुद्र, सागर, जलधि।—पिप्पली ( स्त्री० ) जलपीपल, जलज शंक विशेष्—प्रसादन ( पु० ) कतकफल, निर्मली फल, जिसको पीस कर जल में डालने से जल साफ हो जाता है।—सूचक ( पु० ) मेक, बर्षाभू, मेढक, जिसके बोलने से वृष्टि होने की सूचना मिलती है।

तोयाधिवासिनी तत्० ( स्त्री० ) [ तोय + अधि वासिनी ] लक्ष्मी, पाटला वृक्ष।

तोयाशय तत्० ( पु० ) जलस्थान, तड़ागादि।

तोर दे० ( स्त्री० ) शरहर, ( सर्व० ) तेरा।

तोर्दे दे० ( स्त्री० ) तुरई, शक।

तोरण तत्० ( पु० ) [ तुर + यनट् ] बहिर्द्वार, बाह्यद्वार, बन्दनवार, फूल या पत्तों की माला जो घरसब में लटकाई जाती है, कन्धरा, कण्ठी, महादेव।

तोरी दे० ( स्त्री० ) तरकारी विशेष, सरसों, राई।

तोल दे० ( स्त्री० ) तौल, जोख, नाप, परिमाण।

तोलक तत्० ( पु० ) अस्ती, रत्ती भर, बारह मासो भर, तोला, ( दे० )—बटखरा, बाँट, तौलने वाला, मुलवैया। [ अस्ती रत्ती।

तोला तत्० ( पु० ) परिमाण विशेष, बारह मासो,

तोश तत्० ( पु० ) हिंसा, हिंसक।

तोशक दे० ( पु० ) आक्षरण विशेष, दलंग पर शिष्टाने का गहर।—खाना दे० ( पु० ) बस्त्रों तथा गहनों का कुठार या भाण्डार।

तोशा दे० ( पु० ) पायेय, मार्ग में भोजन करने के लिये सामग्री, मामूली खाने पीने की वस्तु।

—खाना दे० ( पु० ) देखो तोशखाना।

तोप तत्० ( पु० ) [ तुप् + अल् ] तुष्टि, तृप्ति, हर्ष, आनन्द, आह्लाद। ( वि० ) थोड़ा, अल्प।

तोपक तत्० ( वि० ) [ तुप् + अक् ] हर्षजनक, परि तोपक, परितोपकारक, धीरजदाता, वृत्त करने वाला, प्रसन्न करने वाला।

तोपण तत् ( वि० ) [ तुष + अनट् ] वृत्तिकरण,  
आनन्दितकरण, वृत्ति, सन्तोष ।  
तोपित तत् ( पु० ) दूषित, धोरजवान्, तुष्ट, तुष्ट ।  
तोसक दे० ( स्त्री० ) तोशक, गद्दा ।  
तोहरा, तोहार ( सर्व० ) तुम्हारा ।  
तोहि दे० ( सर्व० ) तुमको, तुम्हको । [ अन्य सन्ताप ।  
तौसना दे० ( कि० ) गारमी से मुलस जाना, उष्णता  
तौ ( कि० वि० ) तो, फिर । [ विशेष ।  
तौतातिक तत् ( पु० ) तुलात महकृत दर्शनशास्त्र  
तौन ( सर्व० ) यह, मे ( स्त्री० ) दूष दुहने सम्य गाय  
के अगले पैर में बछड़ा बांधने की रस्ती ।  
तौर्य तत् ( पु० ) मुञ्ज आदि बाघ विशेष, डोबक  
आदि बाजा । [ तीन ।  
तौर्यत्रिक तन् ( पु० ) नृत्य, गीत और बाघ ये  
तौर तत् ( पु० ) एक प्रकार का यज्ञ । दे० ( पु० )  
चाबडाल, प्रकार, भाति ।  
तौरेत दे० ( पु० ) यहूदियों का प्रधान धार्मिक ग्रन्थ ।  
तौल तत् ( पु० ) तुला, परिमाण कपा, तोलने की  
रीति, मापनदण्ड, जोख, तोल । [ तोलना ।  
तौलना दे० ( कि० ) जोखना, परिमाण करना,  
तौलवाई तद् ( स्त्री० ) तौल करने का काम, तौलाई ।  
तौलाई तद् ( स्त्री० ) तौल की मजूरी, यवाई ।  
तौलाना दे० ( कि० ) जोखवाना, तौल काना ।  
तौलिया दे० ( स्त्री० ) छोटी झेंगाछी, शरीर पोतने  
की झेंगाछी । [ आदि बनाये जाते हैं ।  
तौली दे० ( स्त्री० ) पात्र विशेष, बटलोही, जिसमें भात  
तौलिया दे० ( पु० ) तोलनेवाला, यथा । [ पर भी ।  
तौही दे० ( अ० ) तौमी; तय भी, तयापि, इस  
तौह दे० ( अ० ) तयापि, तौमी, तोही ।  
त्यक तत् ( पु० ) [ त्यज् + क ] कृतत्याग, उष्णित,  
विभर्जित, छोड़ा हुआ, त्याग किया हुआ, विरक्त,  
विशिष्टचित्त ।—जीवन ( पु० ) गतप्राण, मृत ।  
त्यकाशि तत् ( पु० ) अग्नि रहित ग्राह्य, अग्निहोत्र  
रहित । [ योग्य ।  
त्यजन ( पु० ) त्याग, त्यजनीय ( पु० ) त्याज्य, छोड़ने  
त्याग तत् ( पु० ) [ त्याज् + धन् ] दान, वर्जन, उत्सर्ग,  
विरक्त, वैराग्य ।—पत्र ( पु० ) वर्ज्यपत्र, फारसी,  
इस्तिफा ।—शील ( पु० ) दाता, दानशील ।

त्यागन दे० ( कि० ) त्यजन, त्याग, विराग ।  
त्यागना दे० ( कि० ) छोड़ना, तजना, त्याग करना ।  
त्यागी तत् ( वि० ) दाता, शूर, वर्जनीय, त्याग-  
कारी, विवर्जक, कर्मफल को त्यागनेवाला, वैरागी,  
छोड़ने वाला, विरक्त ।  
त्याजित तद् ( वि० ) त्यक्त, विभर्जित, छोड़ा हुआ ।  
त्याज्य तत् ( वि० ) त्याग योग्य, वर्जनीय, परित्याग  
करने के योग्य, त्याग करने योग्य, छोड़ने योग्य ।  
त्यौ दे० ( अ० ) उस प्रकार के, उसी रीति से ।  
त्यौधा दे० ( वि० ) हात का अन्धा, रतौंधिया,  
सुन्धला । [ लता, चतुराई ।  
त्योनार, त्योनार दे० ( स्त्री० ) निपुणता, दृष्टि, कुश-  
त्योनारी, त्योनारी दे० ( स्त्री० ) कर्म निपुण स्त्री, अपने  
काम को चतुरता पूर्वक स्वच्छ बनानेवाली स्त्री ।  
त्योरी दे० ( स्त्री० ) चितवन, दृष्टि, निगाह, घुड़की,  
धमकी ।—चढ़ाना ( कि० ) क्रुद्ध होना, घालें  
बदलना । [ पीछे ।  
त्योस्त दे० ( पु० ) वर्तमान वर्ष से दस वर्ष पहले या  
त्योहार तद् ( पु० ) पूर्व दिन, उत्सव का दिन ।  
त्योहारी तद् ( स्त्री० ) त्योहार के दिन कमीने और  
छोटों को दी जाने वाली वस्तु ।  
त्यौं ( कि० वि० ) त्यौं ।  
त्योरी ( पु० ) त्योरी, चितवन, धमकी ।  
त्रपा तत् ( स्त्री० ) [ त्रप् + भा ] मीठा लज्जा, लाज,  
धर्म, हया ।—कर ( पु० ) अज्ञाकर ।—म्यित  
( वि० ) सज्ज, लज्जा ।—भर ( पु० ) पूर्ण-  
लज्जा, अधिक लज्जा ।—घान् ( वि० ) त्रपायुक्त  
त्रपान्वित, लज्जायुक्त । [ प्राप्त, सबज्ज ।  
त्रपित तत् ( वि० ) [ त्रप् + क ] लज्जित, अज्ञा-  
त्रापित तत् ( वि० ) अत्यन्त लज्जित, अतिशय मीढ़ा-  
न्वित, सबज्ज ।  
त्रपु तत् ( पु० ) सीसा, रंगा । [ ह्यायची ।  
त्रपुरी तत् ( स्त्री० ) छोटी ह्यायची, गुजराती  
त्रय तत् ( वि० ) तीन. तीन की संख्या, ३, तीसरा ।  
—गद्ग ( स्त्री० ) तीन गद्ग, यथा—मन्दाकिनी,  
भागीरथी और प्रभावती ।—ताप ( स्त्री० ) तीन  
ताप, वैदिक, वैदिक और भौतिक ।—पावक ( पु० )  
तीन अग्नि, आद्वितीय, दृष्ट्याग्नि और मार्दवत्याग्नि

अथवा ऋतानल, दावानल और बडवानल ।—  
रेखा (स्त्री०) तीन लकीर ।—रोग (पुं०) घात-  
पित और कफ से उत्पन्न रोग ।

प्रयी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ त्रय + ई ] वेदत्रय, ऋग्, यजुः  
और साम ये तीन वेद, पुरन्धी, गृहणी, सीम-  
न्तिनी, सोमरात्री वृत् ।—तनु ( पुं० ) सूर्य,  
मास्कर, रवि ।—धर्म ( पुं० ) वेदोक्त धर्म, कर्म-  
काण्ड ।—मय ( पुं० ) ईश्वरीय, ईश्वर ।—मुख  
( पुं० ) ब्राह्मण, द्विज, विप्र ।

प्रयोदश तत्त्वं ( वि० ) सख्या विशेष, तेरह की संख्या,  
तेरह संख्या की पूर्ति करने वाली संख्या, १३ ।

प्रयोदशी तत्त्वं ( स्त्री० ) तिथिविशेष, चन्द्रमा की  
तेरहवीं कक्षा के बढ़ने या खय होने का समय,  
तेरस, तेरहवीं तिथि ।

प्रसरेणु तत्त्वं ( पुं० ) तीन परमाणुओं का परिमाण,  
अणु परिमाण, गण्डके सूक्ष्म छिद्रों से जो सूर्य  
की किरणें आती हैं उनमें जो कण कण सा वीस  
पड़ता है उसके सातवें भाग को परमाणु कहते  
हैं तीन परमाणुओं का प्रसरेणु होता है ।

प्रसित तत्त्वं ( वि० ) प्रसृत, डरा हुआ, भयभीत  
भीर, शङ्कित, शङ्कान्वित ।

प्रस्त तत्त्वं ( वि० ) शङ्कित, शसपास, भीर ।

प्राण तत्त्वं ( पुं० ) [ प्रै + अणट् ] रक्षण, उद्धारकरण,  
निस्तार, उद्धार, रक्षा, बचाव, कवच ।—कर्त्ता  
( वि० ) रक्षक, उद्धारकर्त्ता, रक्षा करने वाला ।

प्राणी तत्त्वं ( वि० ) प्राणकर्त्ता, रक्षक । [ परित्राण ।

प्रात तत्त्वं ( वि० ) [ त्रै + क ] रक्षित, कृतस्था, उद्भूत,

प्राता तत्त्वं ( पुं० ) [ त्वै + कृण् ] रक्षाकर्त्ता, प्राण-  
कर्त्ता, उद्धारक, बचाने वाला । [ प्रासरक्षण, रक्षित ।

प्रायमाण तत्त्वं ( पुं० ) [ प्रै + मान् ] रक्ष्यमाण,

प्रास तत्त्वं ( पुं० ) [ त्रस् + घञ् ] प्रय, शङ्का, डर,  
हीरा आदि मणिगै का एक प्रकार का दोष ।—

दायी ( वि० ) [ दाम् + दा + शिञ् ] भयदाता,  
शङ्कादायक, भयप्रदर्शक, भयदायक, भयप्रद ।

प्रासरु तत्त्वं ( वि० ) प्रासदायी, भयदायक, भयदाता ।

प्रासा तत्त्वं ( वि० ) शङ्कित, भीत, भयमान ।

प्रासित तत्त्वं ( पुं० ) [ त्रस् + शिञ् + क ] भयान्वित,  
डरपाया गया ।

प्राह तत्त्वं ( क्रि० ) ब्राहि, बचाओ, रक्षा करो, प्राण  
करो ।—करना ( घा० ) रक्षा करने के लिये  
पुकारना, दुःख से श्वाकुल होकर रक्षक को  
पुकारना ।

प्राहि तत्त्वं ( क्रि० ) रक्षा करो, बचाओ, प्राण करो ।

त्रि तत्त्वं ( वि० ) संख्या विशेष वाचक, तीन संख्या का  
वाचक, ३, इसका योग अन्य शब्दों के साथ आदि  
और अन्त में किया जाता है । जब यह शब्दों के  
आदि में आता है, तब इसका ठीक ठीक रूप  
रहता है, परन्तु जब यह शब्दों के अन्त में आता  
है तब त्रि के स्थान में त्रय हो जाता है । यथा—  
त्रिभुवन, त्रिदण्ड, त्रिमूर्ति, त्रिवेद आदि, तापत्रय,  
वेदत्रय, भुवनत्रय, दण्डत्रय आदि ।

त्रिश तत्त्वं ( वि० ) तीसवाँ, तीस संख्या को पूर्ण  
करने वाली संख्या ।

त्रिगति तत्त्वं ( वि० ) तीस, ३० ।

त्रिक तत्त्वं ( पुं० ) तीन, संख्या, ३, त्रिपथ स्थान,  
तिरमुहानी, त्रिकला, त्रिकुट, त्रिवली, पेट के तीन  
बल, कमर ।

त्रिकुट तत्त्वं ( पुं० ) पर्वत विशेष, त्रिकूट पर्वत ।

त्रिकच्छक तत्त्वं ( पुं० ) घोड़ी पहनने की रीति, रीति  
के अनुसार घोड़ी पहनना, तीन काँड़ ।

त्रिकट तत्त्वं ( पुं० ) गोबुरीलता, गोखरू ।

त्रिकटु, त्रिकटू तत्त्वं ( पुं० ) मिर्च, सोड, पीपल का  
मिश्रण ।

त्रिकर्मा तत्त्वं ( वि० ) तीन कर्म ( यानी पढ़ना, ब्रह्म  
करना और दान देना ) करने वाले, भूमिदाता ।

त्रिकाल तत्त्वं ( पुं० ) मृत, भविष्य, वर्तमान काल,  
प्रातः, मध्याह्न, संध्या काल ।—ह्र ( पुं० ) बुद्ध ।

( वि० ) सर्वज्ञ, त्रिकालवेत्ता ।—दर्शी ( पुं० ) ऋषि,  
मुनि । ( वि० ) त्रिकालज्ञ ।

त्रिकुट तत्त्वं ( पुं० ) सिंघाड़ा ।

त्रिकुटा तत्त्वं ( पुं० ) सोंठ, मिर्च, पीपल ।

त्रिकुटी तत्त्वं ( स्त्री० ) दोनों भौंहों के बीच का स्थान ।

त्रिकूट तत्त्वं ( पुं० ) पर्वत विशेष, इसी पर्वत पर लङ्का  
नगरी बसी है । यथा:—

“ गिरि त्रिकूट ऊपर बस लङ्का,  
तहाँ रह रावण सहज अशङ्का । ” —रामायण ।

त्रिकोण तत्त्वं ( वि० ) तीन कोण, त्रिकोण विशिष्ट, जो स्थान त्रिकोण रेखा के अन्तर्गत है । ( पु० ) योनि, भग, लग्न से पाँचवीं और नवीं लग्न को त्रिकोण कहते हैं ।—मिति ( स्त्री० ) त्रिकोण वस्तुओं का मापने वाली विद्या । [ ये तीन ।

त्रिगुण तत्त्वं ( पु० ) त्रिवर्ग, धर्म, अर्थ, काम त्रिगुण तत्त्वं ( पु० ) देशविशेष, जालम्हार, पञ्चाय का एक प्रान्त विशेष ।

त्रिगुण तत्त्वं ( पु० ) साथ, रज और तमोगुण । ( वि० ) तीन से गुणित, जो तीन संख्या से गुणा गया हो ।—कृत ( वि० ) तीन बार जोता हुआ खेत, तीन चासा ।—तीति ( पु० ) प्रत्य, परम पुरुष । ( वि० ) निर्गुण, जीवन्मुक्त, ज्ञानी ।—तमक ( वि० ) गुणप्रयविशिष्ट, संसार के पदार्थ ।

त्रिचतुर तत्त्वं ( वि० ) तीन या चार, अनिशित ।

त्रिजग तत्त्वं ( पु० ) त्रिजगत्, तीनलोक, त्रिभुवन ।—योनि ( पु० ) त्रिभुवनकर्ता, त्रिजग को बनाने वाला ।

त्रिजगत् तत्त्वं ( पु० ) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ।

त्रिजटा तत्त्वं ( स्त्री० ) लङ्केश्वर रावण के अन्तःपुर की एक राक्षसी । यह सीता की रक्षा करने के लिये नियुक्त की गई थी । दूसरी राक्षसियों का व्यवहार सीता के साथ अत्यन्त निष्ठुर और क्रूर था । परन्तु त्रिजटा के हृदय में सीता की अलौकिकता अङ्गीकृत हो गई थी । त्रिजटा सीता के प्रति दयायुक्त व्यवहार करती थी । बेल का पेड़ ।

त्रिज्या तत्त्वं ( स्त्री० ) व्यासार्ध रेखा, आधे विस्तार की रेखा ।

त्रिजाना तत्त्वं ( स्त्री० ) धनुष, कामुक, कमान ।

त्रिणाचिकेत तत्त्वं ( पु० ) यजुर्वेद का एक अध्याय, यजुर्वेद का एक भाग, यजुर्वेदाध्यायी ।

त्रित तत्त्वं ( पु० ) गौतम मुनि का पुत्र । एकल और द्वित नामक इनके दो भाई और थे । ये तीनों अत्यन्त तपस्वी थे । त्रित अपने अन्य दो भाइयों की अपेक्षा अधिक विद्वान् और कर्मा थे । एक समय ये तीनों भाई पशु-सम्राट् करने के लिये किसी गाँव में गये । पशु-सम्राट् हो जाने के पश्चात् त्रित को वन में छोड़कर दोनों भाई घर

चले गये । वहाँ एक भेड़िया त्रित की भोर बढ़ा, इससे डर कर वह भागे । भागते भागते वह एक कुएँ में गिर गये । उसी कुएँ में त्रित ने सोमयज्ञ किया । कहते हैं उस यज्ञ में देवगण उपस्थित हुए थे और उसी कूप में सरस्वती नदी का भी आविर्भाव हुआ था । इसी कारण उस कूप का वृक्षानतीर्थ नाम पड़ा । उस कूप का जल पीने से सोमरस पीने का फल होता है । त्रित के शाप से इनके दोनों भाई भेड़िया हो गये और वे वन में घूमने लगे ।

त्रितय तत्त्वं ( वि० ) तीन की एक संख्या, तीन संख्या, ३, धर्म, अर्थ और काम का समुदाय ।

त्रिदण्ड तत्त्वं ( पु० ) श्रीवैष्णव सन्यासियों का सन्यासाश्रम का चिन्ह विशेष ।—धारण ( पु० ) सन्यासियों का दण्डग्रहण विशेष, सन्यास आश्रम ग्रहण करते समय कालदण्ड, वागदण्ड और मनोदण्ड का ग्रहण करना । दण्ड ग्रहणविधि ।

त्रिदण्डो तत्त्वं ( पु० ) [ त्रिदण्ड + १२ ] श्रीवैष्णव-सम्प्रदाय के त्रिदण्डधारी पति, सम्प्राप्ति विशेष, त्रिदण्ड धारण करने वाले सन्यासी ।

त्रिदश तत्त्वं ( पु० ) देवता, सुर, चमरा, जीम ।—दीर्घका ( स्त्री० ) स्वर्गगङ्गा, मन्दाकिनी, गङ्गा ।—नदी ( स्त्री० ) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा ।—धधू ( स्त्री० ) देव की, त्रिदश यनिता, देवाहना, अम्बरा ।—मञ्जरी ( स्त्री० ) गुलसी, बहुमञ्जरी ।—अङ्गुश ( पु० ) [ त्रिदश + अङ्गुश ] अशनि, वज्र ।—आचार्य ( पु० ) [ त्रिदश + आचार्य ] देवगुरु, गृहस्पति ।—आयुध ( पु० ) [ त्रिदश + आयुध ] वज्र, अशनि ।—ारि ( पु० ) [ त्रिदश + अरि ] दनुज, दामव, दैत्य ।—आलय ( पु० ) [ त्रिदश + आलय ] स्वर्ग, त्रिविष्टप, सुमेरुपर्वत ।—आवास ( पु० ) स्वर्ग, सुरपुरी, देवलोक, सुमेरुपर्वत ।—आहार ( पु० ) [ त्रिदश + आहार ] अमृत, सुधा, पीरूप ।—श्वरो ( स्त्री० ) [ त्रिदश + श्वरो ] देवी, दुर्गा ।

त्रिविध तत्त्वं ( पु० ) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष ।—वाद ( पु० ) दार्शनिक सिद्धान्त विशेष ।

त्रिविधौकस् तत्त्वं ( पु० ) [ त्रिविध + ओकस् ] स्वर्ग, स्वर्ग में रहने वाले देवता, चमरा ।



अथवा गठानल, दावानल और यड़वानल ।—  
रेखा (स्त्री०) तीन चक्री ।—रोग (पु०) वाच-  
पित और कफ से उत्पन्न रोग ।

अथो तत् ( स्त्री० ) [ अथ + ई ] वेदत्रय, ऋग, यजुः  
और साम ये तीन वेद, पुरन्धी, गृहणी, सीम-  
न्तिनी, सोमराजी वृत्त ।—तनु ( पु० ) सूर्य,  
आरुद्र, रवि ।—धर्म ( पु० ) वेदोक्त धर्म, कर्म-  
काण्ड ।—मय ( पु० ) ईश्वरीय, ईश्वर ।—मुख  
( पु० ) ब्राह्मण, द्विज, विप्र ।

अथोदश तत् ( वि० ) संख्या विशेष, तेरह की संख्या,  
तेरह संख्या की पूर्ति करने वाली संख्या, १३ ।

अथोदशी तत् ( स्त्री० ) तिथिविशेष, चन्द्रमा की  
तेरहवीं कक्षा के यढ़ने या लय होने का समय,  
तेरस, तेरहवीं तिथि ।

असरेणु तत् ( पु० ) तीन परमाणुओं का परिमाण,  
अणु परिमाण, गवाक्ष के सूक्ष्म छिद्रों से जो सूर्य  
की किरणें प्राती हैं उनमें जो कण कण सा दीख  
पड़ता है उसके सातवें भाग को परमाणु कहते  
हैं तीन परमाणुओं का असरेणु होता है ।

असित तत् ( वि० ) प्रसृत, डरा हुआ, अयमीत  
भीरु, शङ्कित, शङ्कान्वित ।

अस्त तत् ( वि० ) शङ्कित, शसमाप्त, भीरु ।

आण तत् ( पु० ) [ अ + अण् ] रक्षण, उद्धारकरण,  
निस्तार, उद्धार, रक्षा, बचाव, कवच ।—कर्त्ता  
( वि० ) रक्षक, उद्धारकर्त्ता, रक्षा करने वाला ।

आणो तत् ( वि० ) आणकर्त्ता, रक्षक । [ परित्राण ।

आत तत् ( वि० ) [ अ + क् ] रक्षित, कृतारक्षा, उद्भूत,

आता तत् ( पु० ) [ अ + क् ] रक्षाकर्त्ता, आण-  
कर्त्ता, उद्धारक, बचाने वाला । [ आतरक्षण, रक्षित ।

आयमाण तत् ( पु० ) [ अ + मान् ] रक्षमाण,

आस तत् ( पु० ) [ अस् + घञ् ] अथ, शङ्का, डर,  
हीरा आदि मणियों का एक प्रकार का दोष ।—

दायी ( वि० ) [ आस + दा + शिच् ] अयदाता,  
शङ्कादायक, अयप्रदर्शक, अयदायक, अयप्रद ।

आसरु तत् ( वि० ) आसदायी, अयदायक, अयदाता ।

आसा तत् ( वि० ) शङ्कित, भीत, अयमान ।

आसित तत् ( पु० ) [ अस् + शिच् + क् ] अयान्वित,  
डरपाया गया ।

आह तत् ( कि० ) आहि, बचाओ, रक्षा करो, आण  
करो ।—करना ( वा० ) रक्षा करने के लिये  
पुकारना, दुःख से व्याकुल होकर रक्षक को  
पुकारना ।

आहि तत् ( कि० ) रक्षा करो, बचाओ, आण करो ।

अि तत् ( वि० ) संख्या विशेष वाचक, तीन संख्या का  
वाचक, ३, इसका योग अन्य शब्दों के साथ आदि  
और अन्त में किया जाता है । जब यह शब्दों के  
आदि में आता है, तब इसका शीक शीक रूप  
रहता है, परन्तु जब यह शब्दों के अन्त में आता  
है तब अि के स्थान में अय हो जाता है । यथा—  
त्रिभुवन, त्रिवृण्ड, त्रिमूर्ति, त्रिवेद आदि, तापत्रय,  
वेदत्रय, भुवनत्रय, दण्डत्रय आदि ।

अिश तत् ( वि० ) तीसवीं, तीस संख्या को पूर्ण  
करने वाली संख्या ।

अिशति तत् ( वि० ) तीस, ३० ।

अिक तत् ( पु० ) तीन संख्या, ३, त्रिपथ स्थान,  
तिरमुहानी, त्रिकला, त्रिकटु, त्रिवली, पेट के तीन  
बल, कर्कर ।

अिककुटु तत् ( पु० ) पर्वत विशेष, त्रिकूट पर्वत ।

अिकच्छक तत् ( पु० ) धोती पहनने की रीति, रीति  
के अनुसार धोती पहनना, तीन काँच ।

अिकट तत् ( पु० ) गोबुरीलता, मोखरू ।

अिकटु, अिकटू तत् ( पु० ) मिर्च, सोड, पीपल का  
मिश्रण ।

अिकर्मा तत् ( वि० ) तीन कर्म ( यानी पढ़ना, यज्ञ  
करना और दान देना ) करने वाले, भूमिहार ।

अिकाल तत् ( पु० ) भूत, अविष्यद्, वर्तमान काल,  
प्रातः, मध्याह्न, संध्या काल ।—अ ( पु० ) बुद्ध ।

( वि० ) सर्वज्ञ, त्रिकालवेत्ता ।—दर्शो ( पु० ) अवि-  
मुनि । ( वि० ) त्रिकालज्ञ ।

अिकुट तत् ( पु० ) सिंघाड़ा ।

अिकुटा तत् ( पु० ) सोंठ, मिर्च, पीपल ।

अिकुटी तत् ( स्त्री० ) दोनों मीलों के बीच का स्थान ।

अिकूट तत् ( पु० ) पर्वत विशेष, इसी पर्वत पर लङ्का  
नगरी बसी है । यथा:—

" गिरि त्रिकूट ऊपर बस लङ्का,

तहाँ रह रावण सहज अशङ्का ।" —रामायण ।

त्रिकोण तत् ( वि० ) तीन कोण, त्रिकोण विशिष्ट, जो स्थान त्रिकोण रेखा के अन्तर्गत है । ( पु० ) योनि, भग, लग्न से पाँचवीं और नवीं लग्न को त्रिकोण कहते हैं ।—मिति ( स्त्री० ) त्रिकोण वस्तुओं के मापने वाली विद्या । [ ये तीन ।

त्रिगुण तत् ( पु० ) त्रिवर्ग, धर्म, अर्थ, काम त्रिगर्त्त तत् ( पु० ) देशविशेष, जालन्धर, पञ्जाब का एक प्रान्त विशेष ।

त्रिगुण तत् ( पु० ) सत्व, रज और तमोगुण । ( वि० ) तीन से गुणित, जो तीन संख्या से गुणा गया हो । —कृत ( वि० ) तीन बार जोता हुआ खेत, तीन चासा ।—तीते ( पु० ) ग्रह, परम पुरुष । ( वि० ) निर्गुण, जीवन्मुक्त, ज्ञानी ।—तमक ( वि० ) गुणत्रयविशिष्ट, संसार के पदार्थ ।

त्रिचतुर तत् ( वि० ) तीन या चार, अनिशिक्त ।

त्रिजग तत् ( पु० ) त्रिजगत्, तीनलोक, त्रिभुवन ।—योनि ( पु० ) त्रिभुवनकर्त्ता, त्रिजग का बनाने वाला ।

त्रिजगत् तत् ( पु० ) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ।

त्रिजटा तत् ( स्त्री० ) लङ्केश्वर रावण के अन्तःपुर की एक राजसी । यह सीता की रक्षा करने के लिये नियुक्त की गई थी । दूसरी राजसियों का व्यवहार सीता के साथ अत्यन्त निष्ठुर और क्रूर था । परन्तु त्रिजटा के हृदय में सीता की अलीकिकता अङ्कित हो गई थी । त्रिजटा सीता के प्रति दयायुक्त व्यवहार करती थी । खेल का पेड़ ।

त्रिज्या तत् ( स्त्री० ) व्यासार्ध रेखा, आधे विस्तार की रेखा ।

त्रिजाना तत् ( स्त्री० ) धनुष, कामुक, कमान ।

त्रिणाचिकेत तत् ( पु० ) यजुर्वेद का एक अध्याय, यजुर्वेद का एक भाग, यजुर्वेदाध्यायी ।

त्रित तत् ( पु० ) गौतम मुनि का पुत्र । एकत और द्वित नामक इनके दो भाई और थे । ये तीनों अत्यन्त तपस्वी थे । त्रित, अपने अन्य दो भाइयों की अपेक्षा अधिक विद्वान् और कर्मों में । एक समय ये तीनों भाई पशु-संग्रह करने के लिये किसी गाँव में गये । पशु-संग्रह हो जाने के पश्चात् त्रित को वन में छोड़कर दोनों भाई घर

चले आये । वहाँ एक भेड़िया त्रित की ओर बढ़ा, उससे डर कर वह भागे । भागते भागते यह एक कुएँ में गिर गये । उसी कुएँ में त्रित ने सोमपत्र किया । कहते हैं उस यज्ञ में देवगण उपस्थित हुए थे और उसी कूप में सरस्वती नदी का भी आधिर्भाव हुआ था । इसी कारण उस कूप का उद्पानतीर्थ नाम पड़ा । उस कूप का जल पीने से सोमरस पीने का फल होता है । त्रित के शाप से इनके दोनों भाई भेड़िया हो गये और वे वन में घूमने लगे ।

त्रितय तत् ( वि० ) तीन की एक संख्या, तीन संख्या, ३, धर्म, अर्थ और काम का समुदाय ।

त्रिदण्ड तत् ( पु० ) धीवैष्णव सन्यासियों का सन्यासाश्रम का चिह्न विशेष ।—धारण ( पु० ) सन्यासियों का दण्डग्रहण विशेष, सन्यास आश्रम ग्रहण करते समय कालदण्ड, वागदण्ड और मनोदण्ड का ग्रहण करना । दण्ड ग्रहणविधि ।

त्रिदण्डी तत् ( पु० ) [ त्रिदण्ड + ( इ० ) ] श्रावैष्णव सम्प्रदाय के त्रिदण्डधारी पति, सन्यासी विशेष, त्रिदण्ड धारण करने वाले सन्यासी ।

त्रिदश तत् ( पु० ) देवता, सुर, अमर, जीम ।—दीर्घका ( स्त्री० ) स्वर्गगङ्गा, मन्दाकिनी, गङ्गा ।—नदी ( स्त्री० ) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा ।—वधू ( स्त्री० ) देव स्त्री, त्रिदश यनिता, देवाहना, अम्बरा ।—मञ्जरी ( स्त्री० ) तुलसी, बहुमञ्जरी ।—कुश ( पु० ) [ त्रिदश + कुश ] अरानि, वज्र ।—आचार्य ( पु० ) [ त्रिदश + आचार्य ] देवगुरु, बृहस्पति ।—युध ( पु० ) [ त्रिदश + आयुध ] यज्ञ, अरानि ।—रि ( पु० ) [ त्रिदश + अरि ] दनुज, दानव, दैत्य ।—लज्य ( पु० ) [ त्रिदश + आलज्य ] स्वर्ग, त्रिविष्टप, सुमेरुपर्वत ।—आवाप्त ( पु० ) स्वर्ग, सुरपुरी, देवलोक, सुमेरुपर्वत ।—आहार ( पु० ) [ त्रिदश + आहार ] अमृत, सुधा, पीयूष ।—श्वरी ( स्त्री० ) [ त्रिदश + ईश्वरी ] देवी, दुर्गा ।

त्रिदिव तत् ( पु० ) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष ।—धाद ( पु० ) दार्शनिक सिद्धान्त विशेष ।

त्रिदिवौकस् तत् ( पु० ) [ त्रिदिव + ओकस् ] स्वर्ग, स्वर्ग में रहने वाले देवता, अमर ।

त्रिदोष तत् ( पु० ) वात पित्त और कफ का विकार दोषत्रय ।—प्र ( वि० ) औषध विशेष, जिससे त्रिदोष प्रच्छा होता है । त्रिदोष नाशक औषध ।  
—ज ( वि० ) त्रिदोष जनित रोग, सन्निपात रोग ।

त्रिधा तत् ( वि० ) तीन प्रकार से, त्रिविध ।  
त्रिधातु तत् ( पु० ) गणेश, हरेम्ब, गणेश की मूर्ति तीन धातु की अधिक प्रशस्त है अतएव गणेश को त्रिधातु कहते हैं । धातुत्रय, तीन धातु, सोना, चाँदी और ताँबा । [ धामत्रय, सूर्य, स्वर्ग, पाताल ।  
त्रिधामा तत् ( पु० ) शिव, विष्णु और अग्नि, त्रिधारा तत् ( स्त्री० ) तीनधारा, स्रोतत्रय, गङ्गा, सैन्धु ।  
त्रिध्वनि तत् ( स्त्री० ) तीन प्रकार की ध्वनि, मधुर, मन्द और गम्भीर । [ नयनत्रय ।

त्रिनयन तत् ( पु० ) शिव, शम्भु, महादेव ( वि० )  
त्रिनयना तत् ( स्त्री० ) दुर्गा, भगवती ।  
त्रिनेत्र तत् ( पु० ) शम्भु, महादेव ।—चूडामणि ( पु० ) शरावर, चन्द्र, चन्द्रमा ।

त्रिपञ्चाशत् तत् ( वि० ) सख्या विशेष, तिरपन, तीन अधिक पचास, २१ ।

त्रिपताक तत् ( पु० ) रेखा प्रयाङ्कित कपाज, नाटक के अभिनय की एक मुद्रा, तीन अँगुलियों के सङ्केत से दूसरों को रोककर एक आदमी के साथ रहस्य भाषण करना । तीन रेखा पड़ा हुआ ललाट ।

त्रिपथगा तत् ( स्त्री० ) गङ्गा, भागीरथी ।

त्रिपद् तत् ( वि० ) पदत्रय, त्रिरेखायुक्त ( पु० ) तिपाई, त्रिभुज । [ गायत्री छन्द ।

त्रिपदा तत् ( स्त्री० ) वृक्ष विशेष, हंसपदी वृक्ष, त्रिपदिका तत् ( स्त्री० ) धातुनिर्मित गड्ढा रखने की तिपाई ।

त्रिपदी तत् ( स्त्री० ) हाथी के बाँधने की रस्सी, भाषा कविता का एक छन्द, हंसपदी, गायत्री, तिपाई ।

त्रिपर्णा तत् ( स्त्री० ) शालपर्णी, वन कपासी ।

त्रिपाट तत् ( पु० ) त्रेत्रविद्या भेद ।

त्रिपाठी ( पु० ) त्रिवेदी, तिवारी, तीन वेदों का ज्ञाता ।

त्रिपाद तत् ( पु० ) विष्णु, नारायण, ज्वर विशेष ।

त्रिपादिका तत् ( स्त्री० ) हंसपदी जता ।

त्रिपु दे० ( पु० ) सीमा, धातु विशेष, रांगा ।

त्रिपुरी दे० ( स्त्री० ) इन्द्रवारुण, इन्द्रादन ।

त्रिपुरा तत् ( स्त्री० ) [ त्रिपुर + था ] हंसपदी, मलिका, त्रिवृत् । [ होती हैं, शीवों का तिलक ।

त्रिपुराड तत् ( पु० ) तिलक, जिसमें तीन आड़ी रेखाएँ

त्रिपुराड तत् ( पु० ) तीन आड़ी रेखाओं का तिलक, भस्म आदि से मस्तक पर बनाई देड़ी लकीर, देड़ी तीन रेखा, त्रिपुण्ड्र, दैत्यविशेष ।

त्रिपुर तत् ( पु० ) मय दानव निर्मित पुत्रत्रय, दैत्य विशेष ।—दहन ( पु० ) त्रिपुरान्तक, महादेव, शिव, त्रिपुरारि ।

त्रिपुरा तत् ( स्त्री० ) देवी विशेष, एक देवी का नाम ।

त्रिपुरान्तक तत् ( पु० ) त्रिपुर दहन, शिव, महादेव, शम्भु ।

त्रिपुरारि तत् ( पु० ) महादेव का एक नाम, पुत्रत्रय के नाश करने से महादेव ने यह नाम पाया है ।

तारकासुर के तीन पुत्र थे, जिनका नाम ताकाच, कमलाच और विद्युन्माली था । इन तीनों ने तपस्या करके ब्रह्मा से वर पाया था कि—“तुम लोग तीन नगर में वास करोगे, हजार वर्ष के बाद ये नगर आपस में मिलेंगे, उस समय जो बाण से उन नगरों का नाश कर सकेगा उसी के द्वारा तुम लोगों का वध होगा । “यह वर पाकर उन्होंने मय दानव को तीन नगर बनाने का आदेश दिया,

मय ने अपने तपोबल से स्वर्ग में सेने का, अन्तरिक्ष में रजत का, और मरुत्यलोक में लोहे का यों तीन नगर बनाये । कमलाच स्वर्ग में, तारकाच अन्तरिक्ष में और विद्युन्माली मरुत्यलोक में वास करता था ।

तारकाच के इति नामक पुत्र ने भी तपस्या की और उसने भी ब्रह्मा से वर पाया कि उसके नगर के एक सरोवर में अस्त्र द्वारा मृतम्यक्ति को डुबाने से वह उसी समय जीवित हो उठेगा । ब्रह्मा से ऐसे वर पाकर उन असुरों का अत्याचार बहुत ही बढ़ गया ।

उनके अत्याचार से रोहित होकर देवता ब्रह्मा के पास गये । ब्रह्मा ने विचार कि महादेव के बिना इन असुरों का विनाश दूसरे से नहीं होगा । अतएव देवताओं को साथ लेकर ब्रह्मा महादेव के पास गये । ब्रह्मा के मुख से असुरों के अत्याचार की बात सुनकर महादेव को बड़ा क्रोध हुआ । उन्होंने देव-ताओं के कल्याण के लिये असुरों के विनाश करने

के लिये असुरों के विनाश करने

के लिये असुरों के विनाश करने

के लिये असुरों के विनाश करने

का सङ्कल्प किया। वह दिव्यरथ पर आरुढ़ हुए।  
महा सारथि बने। घोड़ी दूर जाकर वह घोड़े पर  
चढ़े, पुनः बैल पर चढ़ कर उन्होंने असुरों के नगर  
देखे। उसी समय उन्होंने अश्वों का स्तन काटा  
और बैल के छुर बीच से फाड़ दिये। महादेव धनुष  
पर पाशुपत अस्त्र चढ़ाकर तीनों नगरों के मिलने  
की प्रतीक्षा करने लगे। जब वे पुर मिलने लगे  
उसी समय महादेव ने बाण छोड़ कर उन तीनों  
नगरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। पुर के बासी छिड़ने  
लगे, महादेव ने इन सभी को जलाकर परिधम  
समुद्र में फेंक दिया। देवता निष्कण्टक हो गये।

त्रिपुस दे० ( पु० ) खीरा, फल विशेष।

त्रिपौलिया दे० ( पु० ) सिंहद्वार, राजमहल का पहला  
द्वार, तीन द्वार का मकान। [हर और बड़े का फल।

त्रिफला तत्० ( स्त्री० ) समभाग मिश्रित आंवला,

त्रिवली तद्० ( स्त्री० ) पेट पर पड़ने वाले तीन बल।

त्रिवेनी तद्० ( स्त्री० ) त्रिवेणी।

त्रिभङ्गा तद्० ( पु० ) तीन अङ्ग का भङ्ग, मूर्त्ति विशेष।

त्रिभङ्गा तद्० ( पु० ) टेढ़ा खड़ा होना।

त्रिभङ्गी तद्० ( पु० ) छन्द विशेष, श्रीकृष्ण की एक  
मूर्त्ति विशेष। [ तिनकेना।

त्रिभुज तद्० ( पु० ) त्रिकोण रेखा, तीन भुजा का,

त्रिभुजात्मक तद्० ( पु० ) [ त्रिभुज + आत्मक ] त्रिभुज,  
त्रिकोण। [ स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

त्रिभुवन तद्० ( पु० ) त्रिलोकी, त्रैलोक्य, तीन लोक,

त्रिभु तद्० ( पु० ) ऋग्वेद का एक भाग, प्रथुवाता  
आदि तीन ऋचाओं का वेत्ता, धी, चीनी और शहद।

त्रिमुखा तद्० ( स्त्री० ) बुद्धदेव की माता, मायादेवी।

त्रिमूर्ति तद्० ( पु० ) ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्त्ति।

त्रिमुहानी दे० ( स्त्री० ) तीन मार्गों का मिलान, जहाँ  
तीन मार्ग मिले हो।

त्रियां दे० ( स्त्री० ) नारी, स्त्री, कामिनी, यनिता।

त्रियामा तद्० ( स्त्री० ) [ त्रि + याम + आ ] रात्रि,  
रजनी, निशा, यमुना नदी, हल्दी, काला चितोप,  
नील का पेड़।

त्रियुग तद्० ( पु० ) विष्णु, नाशयुग, वसन्त, वर्षा और  
शरद ऋतुत्रय। सत्ययुग, द्वापर, त्रेता—युगत्रय।

त्रियोनि. तद्० ( पु० ) जोन आदि से उत्पन्न कहें।

त्रिलोक तत्० ( पु० ) तीन लोक, त्रिभुवन, स्वर्ग,  
मर्त्य और पाताल।

त्रिलोकी तद्० ( स्त्री० ) तीन लोकों का समूह, यथा—  
मूर्त्ती, भुवर्लोक और स्वर्लोक, त्रिभुवन, त्रिजगत्।

—नाथ ( पु० ) तीनों लोकों के नाथ, विष्णु,  
ईश्वर, भगवान्। [ शम्भु।

त्रिलोचन तद्० ( पु० ) त्रिनेत्र, त्रिनयन, महादेव,  
त्रिलोह या त्रिलोहक तद्० ( पु० ) सोना, चाँदी और  
ताँबा से तीन धातु। [ रज और तम।

त्रिचर्ग तद्० ( पु० ) धर्म, अर्थ और काम, त्रिगुण सत्त्व,  
त्रिचर्पात्मक तद्० ( वि० ) त्रैवापिक, तीन वर्ष का,  
तीन साल का। [ तीन वर्ष की गौ।

त्रिचर्पिका तद्० ( स्त्री० ) त्रिहायणी, त्रिचर्पा गौ,

त्रिचली तद्० ( स्त्री० ) जठर का अवयव विशेष, नाभि  
के ऊपर पेट की तीन रेखाएँ।

त्रिविक्रम तद्० ( पु० ) वामनावतार विष्णु, वामन  
भगवान्, इनकी कथा प्रसिद्ध है।

त्रिविक्रमभट्ट तद्० ( पु० ) संस्कृत के एक कवि का  
नाम, ये कवि प्रसिद्ध विद्वान् देवादित्य शर्मा के  
पुत्र थे। वात्स्यायना में पढ़ने लिखने की ओर  
इनकी विशेष रुचि नहीं थी, इनके पिता ग्रामान्तर  
गये। उसी समय एक विदेशी पण्डित राजा के यहाँ  
आये और उन्होंने शास्त्रार्थ करने के लिये राजा से  
कहा। उस राजा का राज्य पण्डित त्रिविक्रमभट्ट के  
पिता ही थे। राजा ने उन्हें बुलाया। उनके वप-  
स्थित न रहने के कारण त्रिविक्रमजी राजा के समीप  
गये, राजा ने उनका शास्त्रार्थ करने को कहा और  
दिन भी नियत कर दिया। विद्या में विरोध परि-  
चय न होने के कारण वह चिन्तित हुए और सर-  
स्वती के मन्दिर में जाकर उनकी आराधना करने  
लगे। भगवती प्रसन्न हुई और पिता के न जाने  
तक सब शास्त्र के ज्ञान देने का इन्हें वर दिया।  
इन्होंने शास्त्रार्थ में बादी को जीता और ये नलचम्पू  
नामक ग्रन्थ बनाई। सत्त उच्छ्वास तक उन्होंने  
बनाया था कि इनके पिता बाहर से चले आये,  
अतएव विवश होकर नलचम्पू इन्हें अर्पण ही छोड़  
देना पड़ा। खूदीय आठवीं शताब्दी इनका समय  
अनुमान से सिद्ध किया जाता है।

त्रिविध तत् ( वि० ) तीन प्रकार का, तीन धारा, त्रिधा ।

त्रिविप्रप ( पु० ) स्वर्ग, तिष्ठत देश ।

त्रिवेनी या त्रिवेणी तत् ( स्त्री० ) स्थान विशेष, गाढ़ा, यमुना और सरस्वती का सङ्गम स्थान, प्रयाग, तीन चेदी ।

त्रिवेद तत् ( पु० ) ऋक् यजुः और साम ये तीन वेद ।

त्रिशङ्कु तत् ( पु० ) विशङ्क, शङ्कभ, चातक, पची, खद्योत, राजा विशेष, सूर्यवंशीय एक राजा । हन्ती शरीर से स्वर्ग जाने के लिये इन्होंने महर्षि वशिष्ठ को यज्ञ कराने के लिये कहा था । इनकी अभिलाषा पूर्ति को वशिष्ठ ने असम्भव बतलाया । तब ये वशिष्ठजी के पुत्रों के पास गये और उनसे अपनी अभिलाषा कह सुनायी । इन्होंने कहा कि जिस काम के विषय में पिता की असम्मति है उस काम को करना हम लोगों को उचित नहीं है । तब त्रिशङ्कु ने कहा कि जय तुम लोग यज्ञ नहीं कराओगे, तब मैं दूसरा गुण कर लूँगा । वशिष्ठ के पुत्रों ने इन्हें शाप दिया, तदनुसार वह चाण्डाल हो गये । तदनन्तर विश्वामित्र के पास त्रिशङ्कु गये और अपना मनोरथ कह सुनाया । विश्वामित्र ने अपने योगबल से सभी कार्यों जान ली और यह यज्ञ करने के लिये प्रस्तुत हो गये । उस यज्ञ में ऋषि और देवताओं को निमंत्रित किया, केवल वशिष्ठ पुत्र और महोदय नामक ऋषि निमन्त्रित नहीं किये गये थे । वशिष्ठ के पुत्रों ने आपत्ति की कि जिस यज्ञ में पत्रिय अस्त्रयुं और चाण्डाल यज्ञमान है, उस यज्ञ में देवता और ऋषिगण क्योंकर जा सकते हैं । यह सुन विश्वामित्र को बड़ा क्रोध हुआ । विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्रों को कुङ्कुमास मोजी डोम और महोदय को निषाद हो जाने का शाप दिया । विश्वामित्र के अनुरोध से अन्योन्य महर्षियों ने यज्ञ प्रारम्भ किया, परन्तु कोई भी देवता नहीं आया । इससे विश्वामित्र का क्रोध और भी बढ़ा और ये अपनी तपस्या के बल से उसे स्वर्ग भेजने का प्रयत्न करने लगे । इन्द्र ने इनको ऐसा नहीं करने दिया । फिर क्या था विश्वामित्र एक नवी सृष्टि करने

लगे । सप्तर्षि मण्डल और नक्षत्रों की इन्होंने सृष्टि की, यह देखकर देवों ने विश्वामित्र को समझाया, विश्वामित्र ने कहा त्रिशङ्कु को नीचे नहीं गिरने दूँगे । देवों ने यह मान लिया, तब से त्रिशङ्कु अन्तरिक्ष में तिर नीचे किये हुए लटका हुआ है ।

( २ ) हरिवंश में एक दूसरे त्रिशङ्कु की कथा लिखी मिलती है । यह ऐन्द्रावरुण के पुत्र थे । इनका पहला नाम सत्यव्रत था । इन्होंने दूसरे की प्याही की को हर लिया था । इससे इनके पिता अप्रसन्न हुए थे । तदनन्तर गुरु वशिष्ठ की कामदुषा गी मार कर इसने गोमांस खाया, इन्हीं तीन पापों के कारण इसका त्रिशङ्कु नाम पड़ा था । इसकी अधार्मिकता के कारण पिता ने उसे अपने राज्य से निकाल दिया था । इसकी दुर्दशा देखकर विश्वामित्र को दया आई । इन्होंने त्रिशङ्कु को पिता का राज्य दिखवा दिया । इसी शरीर से स्वर्ग भेजने के लिये विश्वामित्र ने यज्ञ कराया था । देवताओं ने इसे स्वर्ग में स्थान दिया, इसकी स्त्री का नाम सत्यरथा था । सत्यरथा के गर्भ से हरिश्चन्द्र नामक त्रिशङ्कु को एक पुत्र हुआ था । यह पुण्यारमा हरिश्चन्द्र त्रैलोक्य नाम से पुकारा जाता है ।

त्रिशूल तत् ( पु० ) अस्त्र विशेष, महादेव जी का मुख्य अस्त्र ।—धारी ( पु० ) शिवास्त्रधारी, महादेव, शम्भु ।—पाणि ( पु० ) महादेव ।

त्रिशूली तत् ( पु० ) शिव, महादेव, महेश ।

त्रिशूङ्ग तत् ( पु० ) त्रिशूट, पर्यंत, त्रिकोण । [ नाम ।

त्रिष्टुप तत् ( पु० ) छन्दो विशेष, एक वैदिक छन्द का त्रिसन्धि तत् ( स्त्री० ) पुष्प विशेष ।

त्रिसन्ध्य तत् ( पु० ) सायं, प्रातः और मध्याह्न काल ।—त्र्यापिनी ( स्त्री० ) त्रिसन्ध्या के अन्तर्गत कियन् चण व्यापिनी तिथि ।

त्रिसन्ध्या तत् ( स्त्री० ) प्रातः, सायं और मध्याह्नकाल ।

त्रिस्थली ( स्त्री० ) प्रयाग, काशी और गया ।

श्रुति तत् ( स्त्री० ) चति, हानि, अपवय, नाश, न्यूनता, आञ्जलहून, प्रतिज्ञा का अन्वया करना, भ्रम, प्रसाध, संशय, काञ्चनेर, सुहृत्, चण दवा-

रमक काल, अल्प, छोटी इलायची।—कारक  
( पु० ) चतुष्कारक, हानिकारी, दोषी, अपराधी ।  
श्रुति तत्त्वं ( वि० ) खण्डित, भग्न, छत, टूटा हुआ ।  
श्रुती तत्त्वं ( स्त्री० ) देवी श्रुति ।  
त्रेता तत्त्वं ( स्त्री० ) युग विशेष, दूसरा युग, इस युग  
का नाम १२११००० वर्ष का है । यज्ञाग्नि विशेष,  
यज्ञ के तीन दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय  
अग्नि ।—अग्नि ( पु० ) [ त्रेता + अग्नि ] यज्ञ के  
अग्नि का रक्षा करने वाला, आहिताग्नि ।  
—युगाद्य ( स्त्री० ) त्रेतायुग की आरम्भ तिथि,  
कार्तिक शुक्ल नवमी ।

त्रैधा तत्त्वं ( अ० ) [ त्रि + धा ] त्रिधा, तीन प्रकार ।  
त्रैगुण्य तत्त्वं ( पु० ) त्रिगुण का धर्म, त्रिगुण का,  
स्वभाव, सर्व, रज और तम इनका समुदाय ।  
त्रैवर्गिक तत्त्वं ( वि० ) त्रिवर्ग सम्बन्धी ।  
त्रैवार्षिक तत्त्वं ( वि० ) वर्ष त्रवार्षिक, तीन वर्ष का,  
त्रिसांस्वत्वारिक ।

त्रैविद्य तत्त्वं ( पु० ) त्रिवेदज्ञ, वेदत्रयवेत्ता ।  
त्रैविध्य तत्त्वं ( वि० ) प्रकारत्रय, तीन प्रकार ।  
त्रैमासिक तत्त्वं ( वि० ) त्रिमासी, तीन मास सम्बन्धी,  
तीन मास का ।

त्रैराशिक तत्त्वं ( पु० ) अङ्क प्रकरण विशेष, जिसमें  
एक वस्तु का मूल्य जानने से तीन वस्तुओं का  
मूल्य जाना जाता है । तीन की संख्या का गणित  
सम्बन्धी नियम ।

त्रैलिङ्गस्वामी तत्त्वं ( पु० ) प्रसिद्ध तैलङ्गस्वामी इन  
महात्मा का जन्म दक्षिणायन ब्राह्मणवंश में हुआ  
था । सन् १५२६ ई० के पूर महीने में विजिना  
जिला के हेलिया ग्राम में इनका जन्म हुआ था ।  
इनके पिता का नाम नृसिंहधर था, यह बड़े दानी  
थे । इनकी दो स्त्री थीं । बड़ी स्त्री के गर्भ से त्रैलिङ्ग  
धर उत्पन्न हुए थे । यही त्रैलिङ्गधर पीछे त्रैलिङ्ग  
स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए । त्रैलिङ्ग की ७० वर्ष  
की अवस्था में इनके पिता का स्वर्गवास हुआ । पिता  
के विधवा के अनन्तर इन्होंने अपनी माता से  
शास्त्रों का अध्ययन और योगाभ्यास की शिक्षा  
पायी । इनकी २२ वर्ष की अवस्था में माता  
का परलोकवास हुआ । माता के अन्तिम

संस्कार के बाद पुनः ये घर नहीं लौटे । इनके  
छोटे भाई ने घर चलने के लिये बहुत विनय  
किया, परन्तु इन्होंने कुछ नहीं सुना । तदनन्तर  
उनके छोटे भाई ने इनसे लिए वहाँ मकान बनवा  
दिये, और भोजन की भी व्यवस्था कर दी । इसी  
समय भगीरथ स्वामी नामक योगी के साथ  
इनका परिचय हुआ । त्रैलिङ्ग इन्होंने स्वामीजी  
के साथ पुष्कर तीर्थ के गये और वहाँ इन्होंने  
योग के गुह्यत्यों का ज्ञान प्राप्त किया । इन्होंने  
उन्हीं से मन्त्र ग्रहण भी किया । कुछ दिनों के  
बाद भगीरथ स्वामी, अनेक तीर्थों में घूमते हुए  
सेतुबन्ध रामेश्वर पहुँचे । वहाँ से स्वामीजी के  
घर से एक दक्षिण ब्राह्मण धनी और पुत्रवान् हुआ  
था । स्वामीजी का अलौकिक प्रभाव देखकर  
लोग सेटा धन आदि के लिये उन्हें सनाने लगे ।  
अतएव विवश होकर स्वामीजी वहाँ से हिमालय  
की ओर नैपाल राज्य में गये और कुछ दिनों  
तक वहाँ योगाभ्यास करते रहे । वहाँ सबों की  
अधिकता के कारण स्वामीजी पुनः भारत में  
लौटकर नर्मदा के तीर पर मार्कण्डेय मुनि के  
आश्रम में रहने लगे । अनन्तर इन्होंने काशी में  
रहना स्थिर किया । स्वामीजी का प्रभाव चारों  
ओर फैल गया, लोग दूर दूर से इनके दरारों के  
लिये आते थे । काशी के यात्री विश्वनाथ के  
समान भक्ति करते थे । १८० वर्ष की अवस्था में  
ये विनाशी शरीर को छोड़कर मुक्त हुए ।

त्रैलोक्य तत्त्वं ( पु० ) त्रिभुवन, त्रिलोकी, स्वर्ग मर्त्य  
और पाताल, महाण्ड ।—विजया तत्त्वं ( स्त्री० )  
भाग, अंग ।

त्रैवर्णिक ( शु० ) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का धर्म ।  
त्रैवार्षिक तत्त्वं ( वि० ) तीन वर्ष सम्बन्धी ।  
त्रैविक्रम तत्त्वं ( पु० ) विष्णु, वामन भगवान् ।  
त्रैटक तत्त्वं ( पु० ) संस्कृत का एक छन्द विशेष, नाटक  
का एक भेद ।

श्रोटी तत्त्वं ( स्त्री० ) चन्नु, चोंच, श्रोत, छेँठ । [ का घर ।  
श्राव दे० ( पु० ) श्राव, तरकस, हनुषि, श्राव रखने  
श्रुतीश तत्त्वं ( पु० ) त्रिकालाधिपति, त्रिलोकेश,  
सूर्य, दिवाकर ।

अभ्युक्त तत् ( पु० ) शिव, महादेव, त्रिलोचन ।  
 —सख ( पु० ) कुवेर, यक्षराज, धनाधिप ।  
 अयाहिक तत् ( वि० ) तीसरे दिन होनेवाला, तीसरे दिन का, दो दिन के बाद होने वाले रोग आदि ।  
 त्वक् तत् ( स्त्री० ) स्पर्शेन्द्रिय, छाल, बल्कल, चमड़ा, दालचीनी । —कणु ( पु० ) फोड़ा, ग्रन्थ, स्फोटक, घाव, छत । —पत्र ( पु० ) तेजपात ।  
 —सार ( पु० ) रस ।  
 त्वचा तत् ( स्त्री० ) चर्म, बल्कल, छाल ।  
 त्वङ्मय तत् ( पु० ) आपके चरण ।  
 त्वदीय तत् ( वि० ) तुम्हारा, तुम्हारा सम्बन्धी ।  
 त्वरा तत् ( स्त्री० ) वेग, शीघ्रता, द्रुत, शीघ्र ।  
 —कारक ( पु० ) शीघ्रकारक, द्रुतकारी । —नित ( वि० ) [ त्वरा + प्रसृत ] चूर्ण, त्वरित ।  
 त्वरित तत् ( वि० ) त्वरान्वित, ( पु० ) शीघ्र, द्रुत ।

त्वरितोदित तत् ( वि० ) [ त्वरित + उदित ] शीघ्र कथित वाक्य, जल्दी से कहा गया वाक्य ।  
 त्वष्टा तत् ( पु० ) [ त्वच् + ष्टम् ] आदित्य विशेष, सूर्य, विष्णुर्मा, महादेव, प्रजापति विशेष, वर्ण-सङ्कर जाति विशेष, बड़ई, चित्रा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता । [ नक्षत्र ।  
 त्वाष्ट्र तत् ( पु० ) वृत्रासुर, वृत्रनामक असुर, वज्र, चित्रा त्वाष्ट्री तत् ( स्त्री० ) चित्रा नक्षत्र, संज्ञा नाम की सूर्य की स्त्री ।  
 त्विष तत् ( स्त्री० ) शोभा, प्रभा, कान्ति, दीप्ति, छवि, वाक्य, व्यवसाय, निमीष, जीतने की इच्छा ।  
 त्विषा तत् ( स्त्री० ) दीप्ति, शोभा, राशि, किरण ।  
 त्विषामपति तत् ( पु० ) सूर्य, रवि, आनु ।  
 त्विषि तत् ( पु० ) किरण, राशि, तेज, प्रभा ।

## थ

थ अभ्युक्त का सत्तरहवाँ अक्षर, दन्तस्थान से उच्चारण होने के कारण इसे दन्त कहते हैं ।  
 थ तत् ( पु० ) पदाङ्ग, रक्षण, व्याधि विशेष, अय-चिह्न, भक्षण, मङ्गलध्वंस ।  
 थई दे० ( स्त्री० ) जगह, डेर, अटाला ।  
 थई दे० ( स्त्री० ) कपड़ों की राशि, चूल्हसमूह, ईंटों की बनी अटारी, गृहनिर्माता, घर बनानेवाला राज, पवई । [ धूनी, पाया ।  
 थंवा, थंवा, थंम तत् ( पु० ) स्तम्भ, खम्भा, खम्भ, थंमना दे० ( क्रि० ) ठहराना, रुकना, सम्मिलना, स्थिर होना ।  
 थक दे० ( पु० ) थका, चक्का, चक्कान, डेला, गाँव की सरहद, प्रामसीमा, डेर, राशि, आटाडा । —थक ( वि० ) लयपथ, तरबतर, सिक्क, असक्त ।  
 थकना दे० ( क्रि० ) थान्त होना, हारना, हार जाना, अधिक परिश्रम से इन्द्रियों का अवनय होना, हाथ पैर आदि की शिथिलता, घीमा पड़ जाना, मुगध हो जाना ।  
 थकरी दे० ( स्त्री० ) छियों के घाल झाड़ने की लस की बनी कुँची ।

थका दे० ( वि० ) थान्त, थका हुआ, थकित, थान्त ।  
 थकान दे० ( स्त्री० ) थकावट, शिथिलता ।  
 थकाना दे० ( क्रि० ) थान्त करना, परिश्रम कराकर शिथिल करना; हारना ।  
 थका मोदा दे० ( वि० ) थका हुआ, थान्त, थमित ।  
 थकार तत् ( पु० ) थ अक्षर, तर्वा का दूसरा वर्ण ।  
 थकावट दे० ( स्त्री० ) थकान, हारत, हारस ।  
 थकि दे० ( क्रि० ) थक कर, हार कर, लाचार हो ।  
 थकित दे० ( वि० ) थका हुआ, थान्त, शिथिल, अवश झुका हुआ ।  
 थकैनी ( स्त्री० ) थान्ति, थकावट ।  
 थकौहाँ ( पु० ) थकामाँदा, थका हुआ ।  
 थका दे० ( पु० ) थक, थकान, जोंदा, घनीभूत पदार्थ, जमा हुआ पदार्थ, जमावट । [ डीङ्ग, मन्द ।  
 थगित दे० ( वि० ) रुका हुआ, ठहरा हुआ, शिथिल, यति ( स्त्री० ) घरोहर, याती । —हर ( पु० ) वह व्यक्ति जिसके पास याती या भरोहर रखती हो ।  
 थती दे० ( वि० ) पत्नी, वंशी, नियतात्मा, थोक, राशि, डेर ।  
 थन तत् ( पु० ) स्तन, गौ आदि की चूची, बीरीजेवा ।  
 थनी दे० ( स्त्री० ) थोड़े और हाथी का एक दोष ।

यनेला या यनेली दे० ( पु० ) स्तन का रोग विशेष,  
स्तन का घाव, गुथरले की जानि का कीड़ा ।  
यनेश्वरी तन्० ( पु० ) कुरुक्षेत्र के रहनेवाले ब्राह्मण ।  
यनैत दे० ( पु० ) गाँव का मुखिया, वह आदमी जो  
जमींदार की ओर से लगान वसूल करने पर  
नियत हो ।  
यपक दे० ( पु० ) थाप, ठोक, चुमकार ।  
यपकी दे० ( स्त्री० ) यपक, जमीन को पीट कर चौरस  
करने वाली ञाठ की सुँगरी, थापी, चुमकारी ।  
यपड़ा दे० ( पु० ) चपत, चपेटा, चप्पड़ ।  
यपड़ी दे० ( स्त्री० ) बरताली, हाथों से ताली देना ।  
यपधपो दे० ( स्त्री० ) यपकी ।  
यपना तद्० ( क्रि० ) स्थापना, बैठाना, स्थापित  
करना, देवता आदि की प्रतिष्ठा करना ।  
यपा तद्० ( वि० ) स्थापित, प्रतिष्ठापित, स्थापना  
किया हुआ । [कराना ।  
यपाना तद्० ( क्रि० ) स्थापना करना, प्रतिष्ठित  
यपेड़ा दे० ( पु० ) धौल चपेटा, यपड़ा, धक्का, टकर ।  
यपोड़ी ( स्त्री० ) यपड़ी, ताली ।  
यप्पड़ दे० ( पु० ) चरत, चपेटा, थाप ।  
यम तद्० ( पु० ) लग्न, लग्न, पाया, धूनी ।  
यमकारी दे० ( वि० ) रोकने वाला ।  
यमड़ा दे० ( वि० ) तुन्दिल, तोंदिल, बड़े पेटवाले ।  
यमना, यमना दे० ( क्रि० ) रुकना, थमना, ठहरना ।  
यर दे० ( पु० ) थल, सिंह, बाघ का खोह, बीहड़  
जङ्गल, बीहान घन ( स्त्री० ) तह, परत ।  
यरधर दे० ( स्त्री० ) कम्प, कपन, डगमग, हलचल,  
एक प्रकार का कम्प, बहुत कम्प, यथा—“जाड़े  
में यरधर कपता हुआ भी प्रातःकाल गङ्गास्थान  
करने गया ।”—कैपनी दे० ( स्त्री० ) एक  
छोटी चिट्ठीया विरांघ । [से कपना ।  
यरधराना दे० ( क्रि० ) कपना, कम्पित होना, भय  
यरधराहट दे० ( स्त्री० ) कम्प ।  
यरधरी दे० ( स्त्री० ) कपकपी ।  
यरहार्ह, यरार्ह दे० ( स्त्री० ) पहरान, निहोरा ।  
यरहराना दे० ( क्रि० ) चिन्ता से कपना ।  
यरिया दे० ( स्त्री० ) याली, टात्री । [यात्री ।  
यरलिया, यरलिया, यरकुलिया दे० ( स्त्री० ) छोटी

धराना दे० ( क्रि० ) कम्पित होना, कम्पित करना,  
कँपा देना, शङ्कित करना ।  
यल तद्० ( पु० ) स्थल, जगह, जमीन, ठाँव, धरती,  
स्थान, ऊँची धरती, बाघ की माँह, ब्रह्मपण्डल ।  
यलकना दे० ( क्रि० ) धड़कना, फड़कना, तलकना,  
बधल पुधल होना । [वाले मनुष्य आदि जीव ।  
यलचर तद्० ( पु० ) स्थलचारी, भूमि पर रहने या चलने  
यलचारी तद्० ( वि० ) भूमि पर चलने वाले प्राणी ।  
यलयल दे० ( वि० ) मोठेपन के कारण कूटता या  
हिलता हुआ ।  
यलयलाना ( क्रि० ) सामान्य आघात से भी हिलने  
लगना, कम्पित होना, जिस प्रकार मोटे आदमियों  
का मांस हिलता है ।  
यलवेड़ा दे० ( पु० ) नाव लगने का घाट । [परतन  
यलिया दे० ( स्त्री० ) छोटा घाल, भोजन धरने का  
यली दे० ( स्त्री० ) स्थान, बैठक, बाखू का मैदान ।  
पाण्डुर, पर्वत या वन की प्रान्त भूमि ।  
ययार्ह दे० ( पु० ) राज, यार्ह, मकान बनाने वाला, ईंटे  
पत्थर की जोड़ार्ह करने वाला कारीगर । [होना ।  
यहराना दे० ( क्रि० ) कपना, शङ्कित होना, भीत  
यहाना ( क्रि० ) बाह लेना, गहराई मापना ।  
यांग दे० ( स्त्री० ) चोरों का गुप्त गृह, माँह, लोज,  
परा, सुराग ।  
यांगी दे० ( पु० ) चोरों का भेदिया, यांग लगाने  
वाला, चोरी का माल मोल लेने वाला, चोरों के।  
चोरी के लिये समय स्थान आदि की सूचना देने  
वाला । चोरों का अड्डा रहने वाला, चोरों का  
सरदार ।  
यार्म दे० ( पु० ) लग्न, लग्न, धूनी ।  
यार्मना दे० ( क्रि० ) अवलम्बन करना, रोकना, घट-  
काना, आड़ना, सहायता करना, विलम्ब करना ।  
यावला दे० ( पु० ) क्यारी, आबवाला, वाला ।  
या ( क्रि० ) है का भूत काल, रहा ।  
यार्ह तद्० ( वि० ) न मिटने वाला, बना रहने वाला ।  
( पु० ) बैठक, ययार्ह ।  
याक तद्० ( पु० ) ग्रामसीमा, थोक, ढेर का ढेर,  
राशि, अटाला । ( क्रि० ) एक कर, द्वार कर ।  
याकना दे० ( क्रि० ) रुकना, आन्त होना, स्थान्त होना ।



धाति, धातो ( स्त्री० ) सञ्चित धन, जमा, धरोहर, भ्रमान्त । [पशु बाँधने का स्थान ।

धान दे० ( पु० ) कपड़े का धान, स्थान, देवल, जगद धानक तद्० ( पु० ) जगद, धाला, फेन, भाग ।

धाना दे० ( पु० ) स्थान, ठिकाना, बैठक, चौकी, चौकी, सिराही के रहने का स्थान, कोतवाली, झुहा ।—

पति तव० ( पु० ) दिक्पाल, ग्रामदेवता ।

धानी दे० ( पु० ) स्थानी, स्थान का स्वामी, स्थान का प्रधान या मुख्य । ( वि० ) सम्पन्न, पूर्ण ।

धानेदार दे० ( पु० ) कोतवाल, पुलिस का एक अफसर ।

धानैत ( पु० ) धानापति, ग्रामदेवता ।

धाप दे० ( स्त्री० ) धौल, घण्ट, पशु का पर्व, मर्याद, बैठक, धपकी, छोटे होल के बजाने का शब्द ।

धापन् तद्० ( पु० ) स्थापित करने का कार्य, रखने का कार्य ।

धापना दे० ( क्रि० ) धोपना, गोबर पाचना, उपरी बनाना, धपधपाना, डोकना, रखना, स्थापन करना, ठहरा देना, धरना, मुकुर कराना, बैठना, कलश स्थापन की पूजा ।

धापरा दे० ( पु० ) डोंगी, छोटी नाव ।

धापा दे० ( पु० ) पशु के शव का चिन्ह, पंजे का चिन्ह ।—देना या लगाना ( क्रि० ) किसी मन्त्रल कार्य के अवसर पर छिर्वा येपन के धापे लगती हैं । [ गंधा ।

धापित दे० ( वि० ) स्थापित, प्रतिष्ठित, बैठाया

धापी दे० ( स्त्री० ) धापने का शब्द, काठ की बनी हुई धापी, जिससे छत आदि पीटते हैं ।

धाम दे० ( पु० ) धम्म, धूनी, टेक, मस्तूज ।

धामना दे० ( क्रि० ) रोकना, पकड़ना, अटकाना, हाथ में लेना, संभालना । [ फरना ।

धाम्हना दे० ( स्त्री० ) सम्भालना, रोकना, विलम्ब

धायी दे० ( वि० ) स्थायी । [ वहा पात्र ।

धार, धाल दे० ( पु० ) बड़ी धाखी, भोजन करने का

धारा ( सर्व० ) तुम्हारा

धाल ( पु० ) देला धार ।

धाला दे० ( पु० ) धालाधाला, धाँवला ।

धाली दे० ( स्त्री० ) धनिया, भोजन करने का पात्र ।

धाव दे० ( स्त्री० ) धाव ।

धावर तद्० ( पु० ) धावर, प्राणिविशेष, अचल, घृष्टादि ।

धाह दे० ( स्त्री० ) तला, पेदा, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त, अन्त, पार, सीमा, संख्या, परिमाण आदि । किसी वस्तु का गुप्त रीति से लगाया गया पता, उताराघट, आडठ, अंदाज़, जल का गहराव, जल के नीचे की भूमि ।

धाहना ( क्रि० ) धाह लेना, पता लगाना ।

धाहुरा दे० ( वि० ) छिड़ला, जिसमें गहरा पानी न हो ।

धाही दे० ( पु० ) नदी का बघला स्थान, जहाँ अधिक जल न हो । [ गहरी न हो ।

धाहा दे० ( स्त्री० ) डखली, नदी, नदी विशेष, जो

धियारी, धियली दे० ( स्त्री० ) चक्ती, पैबन्द, फटे

हुए कपड़े का छेद दन्द करने को कपड़े का जो डुकड़ा लगाया जाता है वह । [ रहन, ठहराव ।

धिति तद्० ( स्त्री० ) स्थिति, स्थिरता, निश्चितवास,

धिर तद्० ( वि० ) स्थिर, अचल, निश्चित ।

धिरकना दे० ( क्रि० ) निपुणतापूर्वक नाचना ।

धिरकी दे० ( स्त्री० ) चमरकार, विशेषता, घुमने की रीति ।

धिरता तद्० ( स्त्री० ) स्थिरता, अचलत्व ।

धिरा तद्० ( स्त्री० ) स्थिरा, पृथ्वी, धरती ।

धिराना दे० ( क्रि० ) स्थिर होना, बैठना, ठहराना, मिट्टी के बैठ जाने से पानी का साफ होना ।

धिर दे० ( क्रि० ) स्थिर हो, कायम रह ।

धी दे० ( क्रि० ) “ धा ” का स्त्रीलिङ्ग ।

धीर दे० ( वि० ) सुखी, स्थिर ।

धुकधुकाना दे० ( क्रि० ) धुकाना, बार बार धुकना ।

धुकटाई दे० ( वि० ) ऐसी शीतल जिसे देख सब धूँकें या निन्दा करें ।

धुकाई दे० ( स्त्री० ) धुंकने का काम ।

धुकाना दे० ( क्रि० ) निन्दा कराना, अप्रतिष्ठा कराना,

मुँह में रखी वस्तु को गिरवाना, गलावाना ।

धुकफाफुहीत दे० ( स्त्री० ) तिरस्कार, मैं मैं तू तू,

धिवकार, धुकना धौना नास्त देना । [ सूचक शब्द ।

धुङ्गी दे० ( स्त्री० ) लानत धुणा और तिरस्कार

धुतकारना दे० ( क्रि० ) अन्याय के साथ निका-

धुथकारना दे० ( क्रि० ) लाना, धपमानित करके

निकाल देना ।

धुयना ( पु० ) निकला हुआ खंवा मुँह ।  
 धुयनी दे० ( स्त्री० ) यूक का मुँह । [ लटकाना ।  
 धुयाना दे० ( क्रि० ) भी चढ़ाना, तेवरी चढ़ाना, थोड  
 थू ( थ- ) यूकने का शब्द, धिऊ, धिः ।  
 यूक दे० ( पु० ) मुँह का पानी, कफ, खसारा ।  
 यूकना दे० ( क्रि० ) यूक फेंकना, खसारना ।  
 यूणी तद् ( स्त्री० ) स्थूष, स्तम्भ, खम्भा, सहारे  
 की लकड़ी जो छपरों में खपायी जाती है ।  
 धुनकिया, धुनिया । [(वि०) घुरा, खाप ।  
 धूयड़ा दे० ( पु० ) यूकर आदि पशुओं का मुँह, यूकनी,  
 धूयन, धूयना दे० ( पु० ) आगे निकला हुआ लम्बा  
 मुँह, धूयड़ा, पशुओं का मुँह ।  
 धूयुन ( पु० ) देला धूयन ।  
 धूनी तद् ( स्त्री० ) धूणी, स्तम्भ, खम्भा, घन ।  
 धूरन दे० ( पु० ) पीटन, कूचन, कूचना, कूटना ।  
 धूरना दे० ( क्रि० ) कूटना, मारना, पीटना, रस्ती  
 बनाने के लिये भूँज या नारियल के छुके को  
 पीटकर पतला बनाना ।  
 धूला तद् ( वि० ) मोटा, भारी, भड़ा ।  
 धूला तद् ( वि० ) मोटा, ताड़ा ।  
 धूली दे० ( स्त्री० ) दलिया, सूजी, डाल की ब्यापी  
 हुई ली को जो पकाया हुआ दलिया दिया जाता  
 है वह भी धूली कहाता है ।  
 धूवा तद् ( पु० ) टीला, हूह, मिट्टी का लौंदा ।  
 ( स्त्री० ) धुंधी, धिक्कार ।  
 धूहर, धूहड़ दे० ( पु० ) वीधा विरोध, मीझ, सँहड़,  
 यह कड़ीली वीधा होता है ।  
 धूहा तद् ( पु० ) हूह, टीला, अटाखा ।  
 धूही दे० ( स्त्री० ) मिट्टी की ढेर ।  
 धेइयेई दे० ( स्त्री० ) आनन्द, हर्ष, नृत्य, जनिता  
 आनन्द, यात्रे के अनुकरण का शब्द विरोध ।  
 दे० ( वि० ) धिक्कार थिरक का नाचने की मुद्रा  
 तथा शब्द । [की विष्पी ।  
 धेगली दे० ( स्त्री० ) टिकड़ी, जोड़, पैशन्द, कपड़े में  
 धेवा दे० ( पु० ) नग, हीरा, धेगुड़ी या और किसी  
 गहने में जड़े जाने वाले बहुमूल्य पत्थर ।  
 धेधर दे० ( वि० ) धका हुआ, अमित ।  
 धैचा ( पु० ) खेत के मचान का छाँजन ।

धैये दे० ( थ० ) वाद्यानुकरण शब्द, यात्रे के समान  
 नाचने वाले अपने घुँघर से जो शब्द निकालते हैं ।  
 धैया दे० ( पु० ) खेत के मचान के ऊपर का छपर ।  
 धैजा दे० ( पु० ) बोरा, मोन, लोया, कोयटा ।  
 धैजी, धैजिया दे० ( स्त्री० ) छोटा धैजा, कोयली,  
 बटुषा, खोली ।  
 धैक दे० ( पु० ) धाक, हकटा, सध का सध, एकत्र,  
 समुदाय, राशि, समूह, डेरा, एक देरा, भाग,  
 विक्री का हकटा माल, टोडा, मुहला ।—धार  
 दे० ( पु० ) वह व्यापारी जो खुदरा न बेशकर  
 हकटा माल बेचे ।—वन्दे ( स्त्री० ) दन्तादली,  
 दलवन्दी ।  
 धोड़ दे० ( पु० ) फले हुए केले का गामा, फलित  
 कदली वृक्ष का गम, कम, न्यून, चर ।  
 धोड़ा दे० ( वि० ) अल्प, किञ्चित्, कम, न्यून, तनिक ।  
 —धोड़ा ( थ० ) कुछ कुछ, अल्प अल्प, शनैः शनैः,  
 धीरे धीरे, कम कम ।—धोड़ा होना ( वा० )  
 लजित होना, घटना, धीरे धीरे आगे बढ़ना,  
 क्रमशः अग्रसर होना ।—बहुत ( वा० ) घाटबाड़  
 न्यूनार्थक, कमोत्तर ।—से धोड़ा ( वा० )  
 अल्प, बहुत कम ।  
 धोतरा दे० ( वि० ) मोँयर, धोयरा, कुण्ठित, तेज़ नहीं ।  
 धोती दे० ( स्त्री० ) धूयन । [ पेटी, पेली ।  
 धोथ दे० ( स्त्री० ) निस्तारता, खोखलापन, तौंद  
 धोथरा दे० ( वि० ) खोखला, निरुत्साह, जो किसी  
 काम में न था सके । [ धार का ।  
 धोथला दे० ( वि० ) अतीक्ष्ण, कुण्ठित, बिना,  
 धोथा दे० ( पु० ) धोपध विरोध, फतहीन तीरा,  
 बिना धार का बाण, मोपध अन्न, ( वि० ) छूँघा,  
 रीता, रिक्त, बेदुमका । ( सर्व० ) भड़ा, बेहंगा ।  
 धोथी ( स्त्री० ) एक प्रकार की घास ।—धात दे०  
 ( वा० ) अनर्थक वाक्य, बिना प्रयोजन का वाक्य,  
 अर्थहीन वचन, ऊटपटांग वात ।  
 धोप दे० ( पु० ) पालकी के धोस का मुखड़ा, टोप,  
 ढाँप, छाप, मुहर, मूषण, अलङ्कार ।  
 धोपड़ी दे० ( स्त्री० ) चपल, धौल, तड़ी ।  
 धोपना दे० ( क्रि० ) एकत्रित करना, सँमालना,  
 धोपना, खोपना, गजिना, घटोरना, माथे मड़ना ।

शोपियाना दे० ( कि० ) चूना, बूँद बूँद गिराना, फिरफिराना, बुँदियाना ।

शोपी दे० ( पु० ) चपेट, चपत. धक्का, मुक्का ।

शोब, शोभ दे० ( स्त्री० ) धरन की धूनी, लड़ही का टेकन, लड़ी का टेकन ।

शोबड़ा दे० ( पु० ) धूपन ।

## द

द यह व्यञ्जन का अट्टारहवाँ और दन्त्य वर्ण है क्योंकि इसका उच्चारणस्थान दन्त है ।

द तत् ( पु० ) दाता, पर्वत, दान, दाँत, खण्डन, रक्षण, भार्या, पत्नी, संस्करण, सुधारन, किसी शब्द के अन्त में आने से यह देने वाले का बोध करता है । यथा—धनद, जलद, पयोद आदि । इसका काटता अर्थ हिन्दी में अभसिद्ध है ।

दर तद् ( पु० ) दैव, भाग्य, अदृष्ट, ईश्वर, देयता ।  
—मारा ( वि० ) भाग्यदत्त, भाग्य का मारा, दुर्भाग्यी, अभाग्यी ।

दृष दे० ( पु० ) देख, विधाता अदृष्ट, ईश्वर, दे० ( वि० ) भाग्य ।

दृग ( वि० ) चकित, स्तब्ध । ( पु० ) भय, डर, घबराहट ।

दृगई दे० ( वि० ) दृंग करने वाला, उपद्रवी ।

दृगल दे० ( पु० ) पहलवानों का युद्ध, समूह, जमावड़ा ।

दृंगा दे० ( पु० ) झगड़ा, उपद्रव, घलेड़ा ।

दृगैत ( पु० ) उपद्रवी, बागी ।

दृडना ( कि० ) दण्ड देना, सजा देना ।

दृंतिया ( स्त्री० ) छोटे छोटे दाँत ।

दृंतुरिया ( स्त्री० ) छोटे छोटे दाँत ।

दृंतुजा ( पु० ) बड़े दाँतों वाला ।

दृंदाना ( कि० ) गर्माना, गरमी लगाना ।

दृंदी ( पु० ) एक प्रकार की मिठाई, कण्डालू ।

दृंदरी ( स्त्री० ) चैलों द्वारा सूखे अन्न के डंठलों रोंद-बाना, दाँप चलवाना ।

दृंश तत् ( पु० ) दन्तघात, सर्प या अन्य किसी विपैले कीड़े का काटा हुआ घाव, डँस, कवच, असुर विशेष, भृगुमुनि के शाप से अलक नामक कीट की योनि इसने पाई थी ।—मीरु ( पु० ) महिष, भैंसा ।

योर दे० ( पु० ) केने का गाम, धूर का पेड़ ।

थोरा दे० ( वि० ) थोड़ा, अल्प, किञ्चित् ।

थोरी ( स्त्री० ) हीन, अनार्य, जाति विशेष, थोड़ी ।

थोहर दे० ( पु० ) थूहर, सेहड़ा, सीन ।

थौना दे० ( पु० ) गौने के बाद की स्त्री की बिदाई ।

दंशक तत् ( पु० ) कीट विशेष, वन मच्छी, ( पु० )

दन्ताघातकारी, इङ्कामारने वाला, सर्प आदि ।

दंशन तत् ( पु० ) [ दंश् + क्त्वा ] काटना, दन्ताघात करना, दाँत से काटना । [ हुआ, छण्डित ।

दंशित तद् ( पु० ) [ दंश् + इत् ] दन्त द्वारा काटा

दंशी तद् ( वि० ) डँसने वाला; आघेपयुक्त बधन धोलने वाला, द्वेयी । ( स्त्री० ) छोटा डँस ।

दंष्ट्र तत् ( पु० ) [ दंश् + त्र ] दन्त, रदन, दाँत ।

दंष्ट्रा तत् ( स्त्री० ) [ दंष्ट्र + आ ] विशाल दन्त, —नखविष तत् ( पु० ) बिल्ली, कुत्ता, बन्दर,

मेढक, छिपकली आदि वे जीवजन्तु जिनके दाँत और नखों में विष हों ।—युद्ध तत् ( पु० )

युद्ध ।—ल तत् ( पु० ) एक राक्षस का नाम । ( वि० ) बड़े बड़े दाँतों वाला । [ हिंसक-जन्तु ।

दंष्ट्री तत् ( वि० ) बृहदन्त विशेष, युद्ध, सर्प,

दंस् तत् ( पु० ) दंश ।

दंठरना ( कि० ) दौड़ना, भागना ।

दक तत् ( पु० ) वक्र, पानी, जल, रस ।

दकार तत् ( पु० ) तवर्ग का तीसरा वर्ण “ द ” ।

दक्षिण तद् ( पु० ) उत्तर के सामने की दिशा ।

—ती तद् ( वि० ) दक्षिण का, देवी विशेष । ( पु० ) दक्षिण देश का रहने वाला ।

दत्त तत् ( पु० ) निपुण, कुशल, प्रवीण, पटु, दाहिना,

( पु० ) मुनि विशेष, शिव का बैल, वृद्ध विशेष, अग्नि, शिव, मुरगा, विष्णु, बल, वीर्य । प्रजापति विशेष । यह प्रजा के दस मानस पुत्रों में से एक

थे । इनका विवाह मनु की कन्या प्रसूति से हुआ था । इनकी १५-कन्याएं थीं । इनमें से तेरह कन्याएं धर्म को, एक अग्नि को, एक

पितृगण को और एक शिव को व्याही गई थीं। शिव को व्याही कन्या का नाम सती था। एक समय शिव ने दक्ष का अभ्युत्थान नहीं किया, इससे दक्ष को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने शिव की बड़ी निन्दा की और उन्होंने शिव को समाजव्युत्त करके उनका यज्ञभाग रोक दिया। कुछ दिनों के बाद दक्ष सब प्रजापतियों के अधिपति बनावे गये, इससे दक्ष का अहङ्कार और भी बढ़ गया। उन्होंने बृहस्पति नामक यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया, उस यज्ञ में सभी निमन्त्रित किये गये, परन्तु शिव और सती नहीं। पिता के यज्ञ करने का समाचार सुनकर सती ने पिता के घर जाने की शिव की अनुमति चाही, शिव ने अनुमति दे दी। सती पिता के यज्ञ में उपस्थित हुईं। सती के सामने दण्डंश्च दक्ष शिव की निन्दा करने लगे पति की निन्दा न सुनने के लिये सती ने वहीं शरीर त्याग दिया। इसकी खबर नारद ने शिव तक पहुँचाई। शिव क्रोध से अधीर हो गये। उन्होंने अपनी अठा भूमि पर पड़की। उसमें से वीरभद्र की उत्पत्ति हुई, वीरभद्र शिव के अनुचरों के साथ यज्ञभूमि में पहुँचे और उन्होंने यज्ञ नष्ट अष्ट करके दक्ष का सिर उतार लिया और उसे जला डाला। पुनः प्रह्ला की प्रार्थना करने पर शिव ने बकरे का सिर दक्ष के कथन्ध में जोड़ने की अनुमति दी। दक्ष जीवित हुए। तब यज्ञ समाप्त करके उन्होंने अनेक प्रकार से महादेव की स्तुति की।

—श्रीमद्व्यासगत।

—तात् (वि०) कुशलता। (खी०) पृथिवी।  
—कन्या (खी०) दुर्गा, भगवती, सती। कतु-  
ध्वंसी तत् (पु०) महादेव वीरभद्र। —जा  
(खी०) उमा, सती, दुर्गा, सत्ताहस नक्षत्र।  
—जापति (पु०) चन्द्र, शिव कश्यप, धर्म,  
अग्नि, रुद्र। —ता (खी०) चतुरता, पटुता,  
नैपुण्य, निपुण्यता। —सावर्णि (पु०) नवम मनु।  
—सुत (पु०) दक्ष प्रजापति के पुत्र प्रचेता।  
—सुता (खी०) सती, उमा, महादेव जी की  
पत्नी, भवानी।

दत्तन दे० (पु०) दक्ष शब्द का लभभाषा के नियमा-  
नुसार बहुवचन, यथा—देव, देवन लोक,  
लोकन। नायक विशेष। यथा—  
“एक भक्ति सब तियन से जाये होय सनेह,  
सो दत्तन मतिराम बानत है मति गेह।”

—सरसाज।

दक्षिण तत् (वि०) सरस्व, उदार, अनुकूल, परछन्दा,  
नुवर्ती, अन्यचित्तानुवर्ती, चतुर, प्रवीण, अपसव्य,  
दक्षिण दिशा, दहिनाभाग, चार प्रकार के पतिमें  
में से एक पति, अनेक नायिकाओं का समानभाव  
से देखने वाला। (देखो दत्तन)। —कालिका  
(खी०) महाविद्या विशेष, आद्या शक्ति। —केन्द्र  
बद्धवानल, बद्धवाग्नि। स्वशब्द (पु०) विन्ध्याचल  
के दक्षिण का देश। —गोल तत् (पु०) वैरागिणी  
(तुला, शुक्रि, चतु, मकर, कुम्भ और मीन) जो  
विषुवत् रेखा के दक्षिण पड़ती है। —ता (खी०)  
अनुकूलता, सरलता सारस्वतः—पथ दक्षिण दिशा।  
—पूर्वा (खी०) दक्षिण और पूरव का कोन। —  
पश्चिमा (खी०) दक्षिण और पश्चिम का कोन। —  
हस्त (पु०) दाहिना हाथ। —अग्नि (पु०) [दक्षिण  
+ अग्नि] यज्ञविशेष। —चल (पु०)  
[दक्षिण + चल] मध्य पर्वत, दक्षिण दिशा का  
पर्वत विशेष। —पथ (पु०) दक्षिण भाग के  
लिये मार्ग। —परा तत् (स्त्री०) नैऋत कोण।  
—प्रवण तत् (पु०) उत्तर की अपेक्षा दक्षिण  
की तरफ अधिक नीचा या ढालुवा स्थान।  
—पर्वत (पु०) [दक्षिण + पर्वत] शङ्खविशेष,  
दहिनी ओर मुड़ा हुआ शङ्ख, बहुमुख्य शङ्ख,  
मङ्गलसूचक अग्नि। —मिमुख (वि०) [दक्षिण +  
अभिमुख] दक्षिण ओर का रूप। —मुख (वि०)  
दक्षिणस्थ, दक्षिण दिशा में कृतमुख। —मूर्ति  
तत् (पु०) शिव की तान्त्रिक मूर्ति विशेष।  
—विह तत् (पु०) दक्षिण में आनेवाला पाव।  
—शा (स्त्री०) दक्षिण दिशा।  
दक्षिणा तत् (स्त्री०) दक्षिण दिशा धर्म कर्म का  
पारितोषिक, भेंट, पूजा। कर्म की मूर्ति के लिये  
दान, नायिका विशेष। —ह (वि०) [दक्षिण  
+ अह] दक्षिणा योग्य, दक्षिण के अधिकारी।

धृतराष्ट्र का एक पुत्र, दौने का वृक्ष, शिव । संस्कृत के एक कवि का नाम । यह बड़े प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । यह आलङ्कारिक भी थे । इनके बनाये ग्रन्थों का संस्कृत साहित्य में बड़ा सम्मान है । काव्यादर्श, दशकुमारचरित, छन्दोविचिति और कलापरिच्छेद ये चार ग्रन्थ इनके बनाये गये हैं । काव्यादर्श और दश-कुमारचरित प्रसिद्ध ही हैं परन्तु छन्दोविचिति या कलापरिच्छेद अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं । इनके स्थान का कुछ ठीक ठिकाना नहीं मिलता । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कहते हैं कि ये संन्यासी थे । संन्यासी कहीं एक जगह पर बसकर पहले नहीं रहा करते थे । संन्यासियों को दण्डी भी कहते हैं । अतएव विद्यासागर का कहना ठीक मालूम होता है, एक तो संस्कृत कवियों के समय निरूपण में योही भ्रमेष्टा होता है । उनमें भी इन रमते बाबा का समय निरूपण करना यड़ा ही कठिन है । तथापि ऐसा अनुमान किया जाता कि मृच्छ-कटिककार शुद्रक से ये प्राचीन नहीं थे । इनकी लेखनीयता के अनुसार इन्हें कालिदास के कुछ पहले का मान सकते हैं । अतएव २ वीं सदी का अन्त भाग यदि इनका समय माना जाय तो बहुत से क्लृप्ति निपट जायेंगे । इनको दण्डिन् भी कहते हैं ।

**दण्ड्य तत्त्वं ( पु० )** [ दण्ड् + य ] दण्डाहं, दण्डयोग्य, दण्डनीय ।

**दत्तना दे० ( कि० )** दानना, सामना करना ।

**दत्तवन दे० ( स्त्री० )** दत्तन, दन्तधावन, दांत साफ करने की लकड़ी ।

**दत्तारा दे० ( वि० )** दातों वाला, दाँतैला ।

**दत्तिया दे० ( स्त्री० )** छोटा दाँत । ( पु० ) पहाड़ी तीतर, नीले मोर । इन्दोलखण्ड की एक राजधानी ।

**दत्तुग्रन दे० ( स्त्री० )** दत्तवन ।

**दत्तुवन दे० ( स्त्री० )** दाँतों का साफ करने के लिये नीम व बयल आदि की लकड़ी की कूची ।

**दत्तुन दे० ( स्त्री० )** दत्तुवन, सुन्तारी ।

**दत्तुना दे० ( पु० )** दाँत विशेष ।

**दत्तुली दे० ( स्त्री० )** छोटे छोटे दाँत, बच्चों के दाँत ।

**दत्तान दे० ( स्त्री० )** दत्तन, दन्तधावन ।

**दत्त तत्त्वं ( वि० )** [ दा + क्त ] दिया गया, दिया हुआ ।

( पु० ) दान, राजा विशेष, भगवान् का एक अवतार, दत्तात्रेय अवतार ( देखो दत्तात्रेय ) ब्रह्माजी कायधों की उपाधि । द्वादश विध पुत्र के अन्तर्गत एक पुत्र, जिसे दत्तपुत्र कहते हैं । आरति काल में सङ्कल्पपूर्वक जिस पुत्र को स्तेही श्रीराम अपने समान व्यक्ति को दे बड़े पुत्र । वैश्यों की उपाधि, यथा—चाण्डदत्त, अर्धदत्त आदि ।—गुप्त ( पु० ) अनसूया और अत्रि के पुत्र ( देखो दत्तात्रेय ) ।

**दत्तकपुत्र तत्त्वं ( पु० )** दत्तक, द्वादश विध पुत्राभ्यागत पुत्र विशेष, पोसपुत्र, गोद लिया हुआ पुत्र, सुतयक्षा । [ लगाया हो ।

**दत्त-चित्त तत्त्वं ( वि० )** जिसने भली भाँति मन दत्ता तत्त्वं ( स्त्री० ) [ दत्त + आ ] विवाहिता कन्या, पात्रसारकृन् घर की दी हुई कन्या ।—रमा ( वि० ) [ दत्त + आत्मा ] स्वयं दत्तपुत्र, जो दूसरे का पुत्र होने के लिये स्वयं अपने को दान करे । अनुगत, जिसने अपने को समर्पित कर दिया है ।—त्रेय ( पु० ) [ दत्त + अत्रेय ] दत्तानामक अत्रिपुत्र । भगवान् विष्णु भद्रिशी अनसूया के गर्भ से दत्ता त्रेय के रूप में उत्पन्न हुए थे । कुशिकवंशी कुष्ठ रोगी एक ब्राह्मण प्रतिष्ठानपुर ( वर्तमान खूँसी ) में रहता था । उसकी पतिव्रता स्त्री अनेक प्रकारों से उसकी सेवा श्रुश्रूषा किया करती थी, एक दिन वह ब्राह्मण किसी वेश्या पर अनुरक्त हु । श्रीराम उसके घर ले चलने के लिये अपनी स्त्री से कहा । स्त्री उसको कन्ये पर बिठा कर वेश्या के घर ले चली । रात आँधरी थी, जाते हुए कुन्ती ब्राह्मण का पैर अग्नि-माण्डव्य नामक ऋषि की देह में लगा । इससे क्रोध होकर मुनि ने शाप दिया कि जिसका पैर मेरे जग है वह सूर्योदय होते ही मर जायगा । मुनि का शाप सुनकर वह स्त्री बहुत चिन्तित हुई, पुनः वह दण्डापूर्वक बोली, " अब सूर्योदय नहीं होगा " पतिव्रता का कहना सच नहीं हो सकता, रात बीत गई, परन्तु सूर्य के दर्शन नहीं हुए । उससे देवता बड़े चिन्तित हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये, बहुत विचार के अनन्तर देवताओं ने यह स्थिर किया कि पतिव्रता को शान्त करना

पतिव्रता ही का काम है। अतएव देवता अनसूया की शरण गये। अनसूया उस पतिव्रता स्त्री के पास गई और उन्होंने कहा कि सूर्योदय होने दो, तुम्हारा पति मर जायगा तो उसे मैं जिला दूंगी। उस पतिव्रता स्त्री ने कहा कि अब सूर्योदय हो, उधर सूर्योदय हुआ, उधर उसका पति मर गया, अनसूया ने उसके पति को जिला दिया। अनसूया से घर माँगने के लिये देवों ने कहा, अनसूया ने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिये, ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर हमारे पुत्र हों। देवताओं ने यही घर दिया। उन्हीं विदेवों का अवतार दत्तात्रेय हैं। इन्होंने चौबीस गुरुओं से शिक्षा ग्रहण की थी।

—दत्त ( वि० ) [ दत्त + आदत्त ] दत्त उपहृत, दिया हुआ लेना।—दत्त ( शु० ) [ दत्त + आदत्त ] सङ्कृत, सेवित, सेव्यमान्।—नयकर्म ( पु० ) दान करके पुनः नहीं लेना।—पहृत ( शु० ) दान करके लीन लेना, देकर ले लेना।—प्रदानिक ( पु० ) [ दत्त + अग्रदानिक ] अष्टादश विवाद के अन्तर्गत विवाद विशेष, दिये हुए ऋण का शोध कराने के लिये विवाद।—वधान ( शु० ) [ दत्त + अवधान ] कृतावधान, अभिनिविष्ट, आसक्त, आसक्तचित्त।

दधिम तत् ( पु० ) दत्तक पुत्र, दिया हुआ पुत्र, गृहीत पुत्र, पोसपुत्र। [ त्याग, देना।

ददन तत् ( पु० ) [ दत् + अनट् ] दान, वितरण, ददरा दे ( पु० ) छड़ा, साकी।

ददरीक्षेत्र दे० ( पु० ) भृगुमुनि का स्थान, जहाँ कासिक की पूर्यमा को मेला लगता है। यह स्थान बलिया के पास है।

ददलाना दे० ( कि० ) डाँटना, साँसना, भाँसना करना।

ददा दे० ( पु० ) दादा, पितामह।

ददियाँरा दे० ( पु० ) ददिहाल या दादी का मैका।

ददियाल दे० ( पु० ) पुरखे, कुल, घराना, वंश, दादी का घर, दादी का मैका।

ददिया-ससुर दे० ( पु० ) ससुर का चाप।

ददिया-सास दे० ( स्त्री० ) ददिया-ससुर की स्त्री।

ददोड़ा, ददोरा दे० ( पु० ) फोड़ा, गुमड़ा, कुलाव, घाव, चींटी आदि के काटने का चिन्ह।

ददु तत् ( स्त्री० ) दाद, सजुकी।—म ( पु० ) चक्र-मर्दक, चक्रवद, एक पाँचे का नाम।—नाशिनी ( स्त्री० ) तैलिनी कीट, ददु, नाशक धोपध।—रोगी ( वि० ) ददु रोग विशिष्ट, ददु रोगयुक्त।

ददु तत् ( पु० ) दादरोग।

दधि तत् ( पु० ) दही, अमाया हुआ दूध।—काँदो ( पु० ) पर्व विशेष का व्यवहार, जन्माष्टमी या रामनवमी के उपलक्ष्य में दही और हलदी मिला कर बालना।—मुख ( पु० ) शिशु, बालक, एक यानर का नाम जो रामसेना का योद्धा था।—वत्त ( पु० ) सुमीव के एक पुत्र का नाम।—रिपु ( पु० ) अग्रस्त्य-मुनि।—सार ( पु० ) मन्त्रजग, नवनीत, धी, घृत।—सुत ( पु० ) चन्द्रमा, कमल, मुक्ता, मोती, जालन्धर क्षत्रिय, मन्त्रजग। सुता—तत् ( स्त्री० ) स्त्री।—स्नेह तत् ( पु० ) दही की मलाई।—स्वेद ( पु० ) तक्र, मट्ठा, छाछ।

दधोच या दधोचि तत् ( पु० ) मुनि विशेष, ब्रह्मायड पुराण में यह शुक्राचार्य के पुत्र लिखे गये हैं। महर्षि अथर्व के चौरस से कईय प्रजापति की कन्या शान्ति के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे, यह पात ऋग्वेद में लिखी हुई है। कहते हैं कि जिस समय दध हरिद्वार में शिवयिहीन यज्ञ कर रहे थे, उस समय इन्होंने शिव को निमन्त्रित करने के लिये दध को बहुत समझाया, परन्तु दध ने इनकी एक न सुनी, इसी कारण यह असन्तुष्ट होकर दध के यज्ञ से चले गये। जिस समय ब्रह्माश्रु के आक्रमण से देवता दुःखित थे, उस समय उन्हें मालूम हुआ था कि दधोचि मुनि की दह्री से यदि अन्न बनाया जाय तो उससे ब्रह्माश्रु मारा जा सकता है। यह जान कर इन्द्र दधोचि के पास उनकी दह्री माँगने के लिये गये। इसके पहले इन्द्र ने दधोचि का अपकार किया था। महर्षि दधोचि तपस्या कर रहे थे, उनकी कठोर तपस्या की बात सुनकर इन्द्र ने अलस्युषा नाम की अत्तरा को तपस्या भग्न करने के लिये भेजा था। अलस्युषा को देखकर महर्षि का धीर्यपात हुआ। उसीसे सारस्वत नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इन्द्र के वपस्वित होने पर उदा-

चेता दधीचि उनके पूर्व अपकार को मूल गये और उन्होंने अपना शरीर अप्रैण कर दिया। उनकी दृष्टि से वज्र बनाया गया और उससे वृषासुर मारा गया। दधीचि का नाम प्रसिद्ध दानवीरों में विख्यात है।

दनद्वाना (क्रि०) दनदन शब्द करना, आनन्द मनाना।  
दनादन दे० (क्रि० वि०) दनदन शब्द सहित, जैसे दनादन तोयें दाने लगें।

दनु तत्० (खी०) प्रजापति द्य की कन्या और करयप की स्त्री, इसी के गर्भ से वातापी, नरक, घृषपर्वा, निकुम्भ, मन्त्रम्य, वनायु, प्रभृति चालीस दानवों की उत्पत्ति हुई थी।—ज (पु०) दनु से उत्पन्न असुर, दानव, दैत्य।—जद्विप् (पु०) देवता, सुर, धमर, देव।—जारि (पु०) देवता, देव, विष्णु।—राय (पु०) हिरण्यकरयप।

दन्त तत्० (पु०) दाँत, दशन, रदन, ३२ की संख्या, कुञ्ज, पहाड़ की चोटी।—घात (पु०) [ दन्त + आघात ] दाँतों का आघात, दशनाघात, हाथी के दाँतों की रकर।—घल (पु०) हाथी, करी, गज, हस्ती।—युध (पु०) [ दन्त + आयुध ] शूकर, बराह।—कथा तत्० (खी०) सुनी सुनाई बात, जनश्रुति, कल्पित बात।—काष्ठ (पु०) दन्तधावन, दाँत साफ करने की लकड़ी, दतुवन।—च्छद (पु०) ओष्ठ, ओठ, अधर, अधरोष्ठ।—धावन (पु०) दन्तशुद्धि, दन्तमार्जन, दन्तकाल।—धानी (खी०) धनिया।—पत्र (पु०) कुण्डल, कर्णालङ्कार विशेष, कान का एक गहना, धाली।—पिष्ट (वि०) कृतध्वेष चर्चित, चबाया हुआ।—बीज (पु०) दाहिम, अनार नामक फल।—वेष्टन (पु०) दन्तमार्स, मसूदा, मस्तुर।—शठ (पु०) कपिल्य, माँह नाम की औषध, जंभोरी।—शूल (पु०) दन्तवेदना, दाँतों की पीड़ा।

दन्तघ्नक तत्० (पु०) शिशुपाल का भाई, विष्णुरूपी श्रीकृष्ण से मारे जाने पर यह वैकुण्ठगामी हुआ। यही प्रेता में कुम्भकर्ण नामक राक्षस और सत्ययुग में हिरण्यकशिपु नामक दैत्य हुआ था। [रास। दन्तलिका तत्० (खी०) अगाम, पगहर, प्रगह,

दन्तिका तत्० (खी०) वृष्टविशेष, बड़ी सतावर।  
दन्तिनी तद्० (खी०) हस्तिनी, हथिनी।  
दन्ती तत्० (पु०) हाथी, गज, करी। (वि०) दंतैल, दंतिली, दंष्ट्री। (स्त्री०) स्वनामख्यात वृष्ट।

—फल (पु०) पिस्ता, मेवा विशेष।  
दन्तीला दे० (वि०) दाँतवाला, दन्तैल, जिसके बड़े बड़े दाँत हों, शूकर, बृक, सुभर, भेदिया।  
दन्तुर तत्० (पु०) उन्नत, दन्तयुक्त, बृहन्त विशिष्ट जिसके दाँत उभड़ खामद हों।—च्छद (पु०) बीजासुर, अनार।

दन्तुरिया दे० (स्त्री०) वक्त्रों के छोटे दाँत।  
दन्तैल दे० (वि०) } बड़े दाँतवाला, लम्बे दाँतों का।  
दन्तैल दे० (वि०) }  
दन्तोलुखलिक तत्० (पु०) वे संन्यासी जो ओखली में झूटा अन्न ग्रहण नहीं करते।

दन्तयोष्ठ्य तत्० (वि०) वे वर्ण जिनका उच्चारण दाँत और ओठ से हो, " व " अक्षर।  
दन्त्य तत्० (वि०) दाँतों की सहायता से उच्चारण किये गये वर्ण, द, च, छ, ज, य और श।  
दन्तहामान (पु०) दहकता हुआ।

दन्ताना दे० (क्रि०) निर्भर होकर काम करना, निषहक बैठना, निडर होकर बैठना।  
दश दे० (पु०) बन्दूक तोप आदि के छूटने का शब्द।  
दपट या दपेट (खी०) दौड़, धावा, सर्पट, कपट, धुइकी, डपट, डाँट, धमकी।  
दपटना दे० (क्रि०) कपटना, दौड़ना, सर्पट लगाना, डाँटना, धुइकना।

दपदपाना दे० (क्रि०) दप दप करना, धमकना, दाँत होना, शोभित होना।  
दफ्तो (स्त्री०) पुट्टा, जिखद, गाता।  
दफन (पु०) मृतक को जमीन में गाड़ने की क्रिया।  
दफनाना (क्रि०) मुर्दा गाड़ना।  
दफा दे० (खी०) घेर, घार, कानून की धारा।  
दफ्तर दे० (पु०) कार्यालय।—री दे० (पु०) जिखद-साज, किताबों की जिखद बाँधने वाला।  
द्वक दे० (खी०) सिकुड़न।  
द्वकना दे० (क्रि०) चुप हो रहना, ब्रिप जाना, ब्रिप रहना, लुकाना, छिपाना, घात में बैठना।

दयकाना दे० ( कि० ) छिपाना, लुकाना, छापना, छिपाना, धमकाना । [छिपाव ।

दयकी दे० ( खी० ) दाँव, छिपकी, धात, लुकाव, दयकीला या दयकैल दे० ( वि० ) दया हुआ, परतन्त्र ।

दयङ्ग या दयङ्गा दे० ( वि० ) प्रभाववान्, कुशील, कुदम्भा ।

दयदया दे० ( पु० ) आठ्ठ, रोष, प्रताप ।

दयना दे० ( कि० ) नष्ट होना, नवना, जलाना, अधीन होना, डरना, छिपना, दयकना ।

दयवाना ( कि० ) दूसरे से दवाने का काम कराना ।

दया दे० ( पु० ) दाँव, पेच, धात । ( खी० ) औपधि, औपध । [ निकालने का काम ।

दवाई ( खी० ) औपध, मंझाई, डंठल से अनाज के दाने दवाऊ ( पु० ) द्यून्, दवाने वाला, गाड़ी या ह्का जिसके अगले भाग में पिछले भाग की अपेक्षा अधिक बल हो । [लुकाना, धामना ।

दयाना दे० ( कि० ) दायना, दकना, छिपाना,

दयामारना दे० ( कि० ) कुचक कर मार डालना, पराधीन को दुःख देना । [करना, झीन लेना ।

दया लेना दे० ( कि० ) अपने अधीन करना, वश

दवाय दे० ( पु० ) प्रभाव, दाव, चाप, पराक्रम, अधीनता, अधिकार ।—मानना ( कि० ) डरना, सहमना, धाक मानना । [दास, रेखीला ।

दयीला दे० ( वि० ) औपध विशेष, प्रभाववान्, रोष-व्येषाव दे० ( वा० ) होले होले, धीरे धीरे, शनैः शनैः, धीमे धीमे । [वश्य ।

दयैल दे० ( वि० ) दया हुआ, अधीन, परतन्त्र, प्रजा, दयौचना दे० ( कि० ) दयाना, दयाव डालना, पानी में दयोचा देना । [परधर ।

दयोस दे० ( कि० ) एक प्रकार का पथर, चकमक

दयोसना दे० ( कि० ) मद्पीना, घूट घूट मदिरा पीना ।

दय तव० ( वि० ) घोड़ा, कम, अवप ।

दम तव० ( पु० ) शान्ति, दण्ड, शासन, तपस्या के क्लेश सहन करने की शक्ति, धर्माह्न विशेष, दान्ति, दमन, वाह्य हन्त्रियों का नियन्त्र, हन्त्रियों का दशाना, हन्त्रियों को विषयों से रोकना । गर्व,

अहङ्कार, दम्भ, दर्प, कीचड़, बुद्ध का एक नाम, दमयन्ती के एक आता का नाम, विष्णु, दयाव ।

दे० ( पु० ) साँस, पक्ष, प्राण, जीवनी शक्ति (जैसे अब इस कपड़े में कुछ भी दम नहीं रहा ।)

व्यक्तित्व । ( जैसे आपही के दम का सारा खेल है । ) घोला, धार ।—कर्त्ता ( पु० ) शासक,

अधिकारी ।—घोष ( पु० ) चन्द्रवंशी राजा विशेष, यह चेदि देश के अधिपति थे । यदुवंशी वसुदेव की भगिनी सुप्रभा दमघोष को व्याही गई थी, सुप्रभा के गर्भ से शिशुपाल और दन्त-

वक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे । वसुदेव की जेठी पहिन कुन्ती के गर्भ से युधिष्ठिर भीम आदि उत्पन्न हुए थे । श्रीकृष्ण वसुदेव के पुत्र थे ।

युधिष्ठिर और शिशुपाल श्रीकृष्ण के द्यूषा के पुत्र थे । [पाला योगी, भोजी ।

दमक दे० ( पु० ) चमक, झलक, प्रकाश दमन करने

दमकना दे० ( कि० ) चमकना, झलकना ।

दमकला दे० ( पु० ) एक प्रकार की पिचकारी, वह

झँझी जिसमें कोयला जले । [रुपा, पैता ।

दमड़ा दे० ( पु० ) सम्पत्ति, धन, दौलत, श्रद्धा,

दमड़ी दे० ( खी० ) पैने का आठवाँ भाग, बिजचिल चिट्ठिया ।—के तीन तीन होना ( पा० ) उजड़ना, नष्ट होना, सस्ता होना, व्यर्थ होना ।

दमदमा दे० ( पु० ) मेसचा, घुस । [प्रकाशित होना ।

दमदमाना दे० ( कि० ) दमदम करना, अतिशय

दमदार दे० ( वि० ) दृढ़, मज्बूत, जानदार, चोखाला, तीव्र ।

दमन तव० ( पु० ) [ दय + अनट् ] वंशीकरण, दण्ड,

शासन, निग्रहकरण, पुत्रविशेष, दौना नामक पौधा, विष्णु, शिव, एक अपि का नाम, एक

राजस का नाम, कुन्द । राजपुत्र विशेष, यह विदर्भराज भीम का पुत्र था । सन्तान न होने के कारण बहुत दिनों तक भीम ने बहुत कष्ट से समय बिताया । एक समय विदर्भराज के यहाँ

दमन नामक ब्राह्मण अतिथि होकर गये, उनके घर से विदर्भराज के तीन पुत्र और एक कन्या वरपक्ष हुई, राजा ने वन्हीं अपि के नामा-

नुसार ही अपने पुत्र और कन्या का नामकरण



किया, तीनों पुत्रों का नाम, दमदन्त और दमन तथा कन्या का नाम दमयन्ती हुआ ।

दमनक तत् ( पु० ) यौना, एक पौधे का नाम ।  
( वि० ) दमनशील ।

दमनी तत् ( स्त्री० ) सङ्कोच, जञ्जा ।

दमनीय तत् ( वि० ) दमन करने योग्य, ताड़ने योग्य, ताड़न करने के उपयुक्त, तोड़ने योग्य, यथा—  
दोहा:—

“ कुँवर मनोहर विजय बद्धि,

कीरति अति कमनीय ।

पावनहार विरंचि जनु,

रख्यो न धनु दमनीय ॥”

—रामायण ।

दमनू दे० ( पु० ) दवाने वाला, दमन करने वाला ।

दमघाज दे० ( वि० ) कुसलाने वाला ।—दे० ( स्त्री० )

घोला, छल, धहानावाड़ी ।

दमयन्ती तत् ( स्त्री० ) नल राजा की पत्नी, विदर्मा-  
धीश्वर भीम की कन्या, महर्षि दमन के घर से  
राजा भीम को यह कन्याएँ प्राप्त हुआ था,  
अपनी अपूर्व सुन्दरी कन्या का विवाह करने के  
अर्थ राजा भीम ने एक स्वयम्बर सभा रची, उसमें  
देवता पर्यन्त निमग्नित किये गये । दमयन्ती  
ने हाँस के मुँह से नल की प्रशंसा सुनी थी ।  
दमयन्ती ने देवताओं को छोड़कर नल का ही  
घर किया । कलि और शनि भी इस स्वयम्बर  
सभा में जा रहे थे, परन्तु रास्ते ही में लौटे हुए  
द्वों से दमयन्ती द्वारा नल का वरण किया  
जाना उन्होंने सुना । इससे दोनों बड़े अप्रसन्न  
हुए और वे दमयन्ती को कष्ट देने के लिये समय  
हूँढ़ने लगे । ११ वर्ष के बाद कलि नल के शरीर  
में प्रविष्ट हुआ । नल राजच्युत होकर दमयन्ती  
के साथ वन वन मारे फिरे, इधर उनका भाई  
निपघ देश का राजा बना, इसी प्रकार बहुत दिन  
नल के कष्ट सहने के अनन्तर कलि स्वयं हार कर  
उनके शरीर से निकल गया नल और दमयन्ती  
पुनः निपघ देश के राजसिंहासन पर विराजे ।

दमरक, दमरख दे० ( स्त्री० ) चमरख, कमरख ।

दे० ( पु० ) साँस का प्रसिद्ध रोग, स्वास रोग ।

दमाद् दे० ( पु० ) कन्या का पति, जामाता ।

दमादम ( कि० वि० ) लगातार ।

दमाना दे० ( कि० ) नवाना, नम्र करना, निहुराना,  
लचकाना ।

दमामा दे० ( पु० ) धौंसा, नगाड़ा, दुन्दभि, डंका ।

दमारि तत् ( पु० ) वन की आग ।

दमावति दे० ( स्त्री० ) दमयन्ती ।

“राजा नल कहै जैसे दमावति ।”

—जायसी ।

दमी ( पु० ) दमनीय, नैवा जिससे दम लगायी  
जाती है । [ स्त्री पुरुष, जोर खसम, जोड़ा ।

दम्पति, दम्पती तत् ( पु० ) जायापति, पतिपत्नी,

दम्भ तत् ( पु० ) अहङ्कार, गर्व, कपट, दुष्टता; पाप  
दिलाल धर्माचरण, पाखण्ड लोकप्रवचनार्थ-  
धर्माचरण ।

दम्भी तत् ( वि० ) अहङ्कारी, पाखण्डी, लोगों को  
ढगने के लिये धर्माचरण, स्वार्थ साधनार्थ धार्मिक,  
कपटाचारी, बहुलाभयत ।

दम्भोक्ति तत् ( स्त्री० ) [ दम्भ + वक्ति ] गर्वोक्ति,  
अहङ्कारयुक्त वचन, गरबीली बात ।

दम्भोजि तत् ( पु० ) वज्र, अशनि, इन्द्र का वज्र ।

दम्य तत् ( वि० ) दमनाई, दमन करने योग्य, दण्ड  
देने योग्य । ( पु० ) बधिया करने योग्य वस्तु ।

दया तत् ( स्त्री० ) दूसरे का दुःख दूर करने की  
इच्छा, कृपा, स्नेह, करुणा, अनुग्रह ।—द्विष्टि  
तत् ( स्त्री० ) करुणा अथवा अनुग्रह का भाव ।

—निधान तत् ( पु० ) अत्यन्त दयालु पुरुष ।

—निधि तत् ( पु० ) अत्यन्त दयालु पुरुष,

ईश्वर ।—पात्र तत् ( पु० ) दया के योग्य

व्यक्ति ।—मय ( वि० ) दयास्वरूप, साक्षात्

करुणावतार, कृपास्वरूप, दयाशील, कृपामय ।

—युक्त ( वि० ) दयावान् ।—स्तु ( वि० )

कृपावान्, दयायुक्त ।—वन्त ( वि० )—वान्

( वि० ) कृपावान्, करुणामय ।—शील ( वि० )

कृपामय, दयामय ।—सागर तत् ( पु० ) अत्यन्त

दयालु पुरुष ।

दयानत ( स्त्री० ) ईमान, सत्यनिष्ठा ।—दार ( पु० )

ईमानदार, सच्चा, सत्यनिष्ठ ।

दयाद्र ( वि० ) दयालु, दया से पूर्ण ।

दयानन्द सरस्वती तत् ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध महारामा, आर्यसमाज के आविष्कारक ये संन्यासी थे । इनके पूर्वार्धम की बातें विवादमय हैं, और ये परस्पर इतनी अनमिल हैं कि उन पर अरोसा नहीं किया जा सकता है । इन्होंने जिस समाज का अभिनव आविष्कार किया है वह आर्यसमाज के नाम से प्रसिद्ध है । सत्यार्थप्रकाश, अष्टवेदभाष्य भूमिका आदि हिन्दी भाषा में लिखे इनके ग्रन्थ हैं । आर्यसमाजियों में सत्यार्थप्रकाश की बड़ी प्रतिष्ठा है । सत्यार्थप्रकाश में धर्मसिद्धान्तों की आलोचना नहीं की गई है, किन्तु मनुष्यों के चरित्रों की, अतएव कतिपय आर्यसमाजी विद्वान् भी इस रीति को उत्तम नहीं समझते । मूर्तिपूजा और आद्र आदि को ये वेद विरुद्ध बताते हैं । इनका दार्शनिक सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत है । परन्तु विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के पकाण्ड विद्वान् कहते हैं कि इनका यह सिद्धान्त भी अभिनव आविष्कार ही है ।

दयालु तद् ( वि० ) दयालु, कृपालु, दया करने वाला । [स्नेही ।

दयित तत् ( पु० ) पति, स्वामी, भर्ता । ( गु० ) प्रिय, दयिता तत् ( स्त्री० ) पत्नी, भार्या, प्रिया, प्रियतमा, स्त्री ।—धोत्र ( वि० ) स्त्री के धारीभूत, स्त्री के अधीन, स्नेह ।

दयौ दे० ( कि० ) दिया, अर्पित किया, समर्पित ।

दर तत् ( पु० ) डर, भय, भीति, शङ्क, मोक्ष, भाव, प्रतिष्ठा, खिड़की, बिना किवाड़े का द्वार, दरार, छेद । ( गु० ) अवधार्यक, ईष्यार्थक, थोड़ा ।

दरकच ( स्त्री० ) रगड़ या दूध जाने से लगी हुई चोट । दरकना दे० ( कि० ) फट जाना, अनायास दो टुकड़े हो जाना, चिरना, विदीर्ण होना ।

दरका दे० ( पु० ) फटा, दरार, बीच का फटाख, चीरा, छिद्र, छेद, फाँक । [टुकड़े करना ।

दरकाना दे० ( कि० ) काटना, चीरना, छेद करना ।

दरकार दे० ( पु० ) आवश्यक, अपेक्षित, जरूरी ।

दरकिनार दे० ( कि० वि० ) थलहारा, अलग, शृङ्खल ।

दरकी दे० ( स्त्री० ) फटी, चिरी ।

दरखास्त ( स्त्री० ) अर्जी, प्रार्थना, निवेदन ।

दरख्त ( पु० ) पेड़, वृक्ष ।

दरमाह ( स्त्री० ) मकबरा, देहरी, दरवा ।

दरगुजरना ( कि० ) छोड़ना, उभा करना ।

दरज तद् ( स्त्री० ) द्वारा, दरार, छेद ।

दरजा ( पु० ) वर्ग, श्रेणी, कक्षा ।

दरजिन दे० ( स्त्री० ) दरजी की स्त्री, दर्जिन ।

दरजी दे० ( पु० ) सूचिजीवी, सूचिकर्मका, कपड़ा सीनेवाला ।

दरणा तत् ( पु० ) ध्वंस, विनाश ।

दरद तत् ( पु० ) स्नेहलु जाति, भयानक, भय, हींग, हिंगुल, किरास, घात विरोध, शिंगरफ, सिमरिख, पारा । ( स्त्री० ) व्यथा, पीड़ा, वातना, वेदना ।

दरदर दे० ( पु० ) द्वार द्वार, ईशुर, सिन्दूर ।

दरदरा दे० ( वि० ) अघकुटा, अघपिसा, मोटा पिसा हुआ, दानेदार । [रवे की, अघकुटी ।

दरदरी तत् ( स्त्री० ) पृथिवी । दे० ( वि० ) मोटे दर्ना ( कि० ) पीसना, नष्ट करना ।

दरप दे० ( पु० ) दर्प, गल्ल, घनड ।

दरपक दे० ( वि० ) दर्पक, कामदेव, मदन ।

दरपन दे० ( पु० ) दर्पण, आईना, झुकर ।

दरपना ( कि० ) कोश में भरना, घनड करना ।

दरपनी तद् ( स्त्री० ) छोटा दर्पण ।

दरपरदा दे० ( कि० वि० ) आड़ में, छिप के ।

दरघ तद् ( पु० ) दूष्य, दान, घात । [जाता है ।

दरघहरा दे० ( पु० ) मध विरोध, यह चाँवल से बनाया दरवा दे० ( पु० ) कबूतरों के रखने का सानेदार सन्दूक, काउक । [का काम ।

दरवान दे० ( पु० ) द्वारपाल ।— ( स्त्री० ) द्वारपाल दरवार दे० ( पु० ) राजसभा, विचारस्थान ।— ( पु० ) समासद, दरबार में बैठने वाले ।

दरमा दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की रटाई, लृण निर्मित एक आसन, चाँच, फट ।

दरमाहा दे० ( पु० ) मासिक, महीना, घेतन, एक महीने की मन्त्री ।

दरमियाण ( पु० ) मध्य, बीच ।— ( पु० ) विधवनिया, दलाब, मध्यस्थ । ( गु० ) बीच का, मध्य का ।

दरवाज़ा दे० ( पु० ) फाटक, द्वार, दुआर, किवाड़, कपाट । [ हुषा ।  
 दरविद्वजित तत्त्वं ( पु० ) ईषदुन्मीलित, थोड़ा खिला  
 दरवेश ( पु० ) फकीर, साधु ।  
 दरश तद् ( पु० ) दर्श, देखना ।  
 दरस्त तद् ( पु० ) देखादेखी, दर्शन, दीदार ।  
 दरसन तद् ( पु० ) दर्शन, दीदार ।  
 दरसना ( क्रि० ) देख पड़ना ।  
 दरसनो हुंडी दे० ( स्त्री० ) देखते ही जिसके रूपों का सुगतान हो वह हुंडी ।  
 दरसाना ( क्रि० ) दिखलाना, झूझकाना ।  
 दरही दे० ( स्त्री० ) मछली विशेष ।  
 दराई ( स्त्री० ) दरने का काम, दरने की मज़दूरी ।  
 दराती दे० ( स्त्री० ) हँसुआ, हँसुआ, एक प्रकार का मछ, जिससे खेत आदि काटे जाते हैं ।  
 दराज़, दरार, दरारा दे० ( पु० ) फटा हुआ स्थान, चीर, फाँक, दरका, दरार, निशान । [ भाव, दर ।  
 दरि तत्त्वं ( स्त्री० ) पर्वत की गुहा, कन्दरा, मोल, दरित तत्त्वं ( वि० ) भीत, त्रस्त, डरा हुआ, शङ्कित ।  
 दरिद्र तद् ( पु० ) कंगाली, कंगाल, निर्धन ।  
 दरिद्र तद् ( पु० ) दरिद्र ।  
 दरिद्र तत्त्वं ( पु० ) कंगाल, निर्धन, निस्त्र, रङ्क, दीन, दुखिया, गरीब ।—ता ( स्त्री० ) निर्धनता, दीनता, दुःख, दुर्गति, दैन्य । [ निर्धन ।  
 दरिद्रात तत्त्वं ( वि० ) दीन, दुखी, निस्त्र, धनहीन, दरिद्री तद् ( वि० ) दरिद्र, कंगाल, निर्धन, धनहीन ।  
 दरिया दे० ( पु० ) नदी, समुद्र, सिन्धु ।  
 दरियाई ( वि० ) नदी सम्बन्धी ।—घोड़ा ( पु० ) समुद्री घोड़ा ।—नारियल ( पु० ) नारियल विशेष ।—दिल ( वि० ) बदार, दानी ।—दिली ( स्त्री० ) बंदारता ।  
 दरियाफ्त ( पु० ) मालूम, ज्ञात, जाना हुआ ।  
 दरियाव दे० ( पु० ) नदी, समुद्र ।  
 दरी तत्त्वं ( स्त्री० ) गुफा, खोह, कन्दरा, पर्वत की गुहा, कन्दर, आसन विशेष, शतरंजी । ( वि० ) विदीर्ण करने वाला, डरपोक ।—भूत् ( पु० ) पर्वत, पहाड़, गिरि ।  
 ( पु० ) खिड़की ।

दरीची ( स्त्री० ) जंगला, खिड़की । [ मधुवचन ।  
 दरीन दे० ( वि० ) प्रब्रभाषा के नियमानुसार, दरी का  
 दरीवा दे० ( पु० ) पान बेचने का स्थान ।  
 दरेती दे० ( स्त्री० ) दाख या चने दलने की छोटी चक्की, खेत काटने की हँसिया ।  
 वरेस दे० ( स्त्री० ) फूलदार छाप का महीन सूती कपड़ा ।  
 वरेसी दे० ( स्त्री० ) दुकली, मरम्मत ।  
 दरैया ( पु० ) दरनेवाला, घातक, नाशक ।  
 दरोरा ( पु० ) असत्य, झूठ, मिथ्या ।—हलसी ( स्त्री० ) झूठी साची देने का जुर्म ।— ( पु० ) प्रवचक, धानेदार ।  
 दर्ज ( स्त्री० ) दर्ज, दरार ।  
 दर्जन दे० ( पु० ) बाह का समुदाय ।  
 दर्जा दे० ( पु० ) श्रेणी, कोटि, वर्ग ।  
 दर्जिन दे० ( पु० ) दर्जी की स्त्री ।  
 दर्जी दे० ( पु० ) कपड़ा सीने वाला ।  
 दर्द दे० ( पु० ) पीड़ा, व्यथा ।  
 ददुर तत्त्वं ( पु० ) मेघा, मेंढक, भेक ।  
 ददु तत्त्वं ( पु० ) दाद, दिनाय ।  
 दर्प तत्त्वं ( पु० ) अभिमान, अहङ्कार, गर्व, घमंड, आत्मरक्षा, आत्मस्तुति, मान ।—कारी ( पु० ) अभिमानी । [ बाजा, गरुडी, घमंडी ।  
 दर्पक तत्त्वं ( पु० ) कामदेव, मग्गय, मदन, दर्प करने दर्पण या दर्पन तत्त्वं ( पु० ) रूप देखने का आधार, आदर्श, सुकुर, आरती ।  
 दर्पणी तद् ( स्त्री० ) छोटी दर्पण, मुँह देखने का छोटा शीशा, बहा, आईना ।  
 दर्पणीय तत्त्वं ( वि० ) सुन्दर, दिखनौट, उत्तम, अच्छा, मनोहर ।  
 दर्पी तत्त्वं ( वि० ) अभिमानी, अहङ्कारी ।  
 दर्धार दे० ( पु० ) दरवार ।  
 दर्द तत्त्वं ( स्त्री० ) कुराग, डाम, काश ।  
 दर्दा दे० ( पु० ) दरार, पहाड़ी रास्ता ।  
 दर्दना दे० ( क्रि० ) निर्भयता पूर्वक आगे बढ़ना, घेघड़क आगे जाना ।  
 दर्पिका तत्त्वं ( स्त्री० ) गाम्भी, तरकारी आदि चलाते का बर्तन, पात्र विशेष ।

दर्शी तत्त्वं ( श्री० ) कर्षी, चमची, डोई, साँप का फन ।—कर ( पु० ) फन वाला साँप, सर्प, अहि, भुजंग, भुवङ्ग ।

दर्श तत्त्वं ( पु० ) [ दृश् + भल् ] अवलोकन, दर्शन, श्रमावस्था, पञ्चान्तकृत योग विशेष, चन्द्रमा सूर्य की एकत्र स्थिति ।

दर्शक तत्त्वं ( पु० ) द्वारपाल, द्वारी, दरबान, प्रवीण, दर्शयिता, दर्शनकारक, दिखाने वाला, बताने वाला, निरीक्षक, प्रधान ।

दर्शन तत्त्वं ( पु० ) [ दृश् + भनट् ] अवलोकन, निरीक्षण, देखना, नयन, नेत्र, चक्षु, स्वप्न, बुद्धि, धर्म, उपलब्धि, वर्ण, वर्ण, रंग । शास्त्र विशेष, तत्त्व-विद्या, प्रधान शास्त्र, भारतीय दर्शन, द्वादश है । इनमें छः आस्तिक दर्शन और छः नास्तिक दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हैं । न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा ये आस्तिक दर्शन हैं । ( देखो पददर्शन ) माध्यमिक, योगाचार, सोश्रान्तिक, लोकायतिक, जैन और यौद्ध ये छः नास्तिक दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

दर्शनप्रतिभू तत्त्वं ( पु० ) प्रतिनिधि, हाज़िर जामिन, वह मनुष्य जो किसी व्यक्ति विशेष को समय पर उपस्थित कर देने का दायित्व अपने ऊपर ले ।

दर्शनी-दे० ( स्त्री० ) दर्शन निमित्त भेंट, उपहार, भेंट, चढ़ावा, पारितोषिक, एक प्रकार की हुण्डी जिसे देखते ही कृपा पटाना पड़ता है ।

दर्शनीय तत्त्वं ( वि० ) [ दृश् + भनीय ] मनोहर, मनोज्ञ, दर्शन योग्य ।—मानी ( वि० ) अपने को सुन्दर समझने वाला, अपने रूप का अभिमानी ।

दर्शनच्छा तत्त्वं ( श्री० ) देखने की इच्छा, दर्शन स्पृहा ।

दर्शित तत्त्वं ( वि० ) दिखलाया हुआ, दिखाया, उदित, प्रकाशित । [ रक, विचार करने वाला ।

दर्शी तत्त्वं ( पु० ) निरीक्षक, दर्शनकारी, द्रष्टा, विचा-

दल तत्त्वं ( पु० ) पत्र, पत्ता, पत्नी, समूह, समुदाय, सैन्य संग्रह, खण्ड, टुकड़ा, आधा, कीचड़, ऊँचाई, दाम, स्थूलता, मोटाई, ग्यान, घन, जल में वृद्ध होने वाला सृष्ट विशेष ।—पति ( पु० ) समूह का नेता, समाजपति, समाजश्रेष्ठ, प्रधान ।—बल कौञ्जफाटा, सेना ।

दलक दे० ( श्री० ) धमक, चमक, धरधराहट, टीस, घुदकी । [ चींकना, डराना ।

दलकना दे० ( क्रि० ) फट जाना, चिर जाना, धराना,

दलकपाट दे० ( पु० ) मिड़ा हुआ कपाट, हरी पल-दियों का कोश जिसके अन्दर कली होती है ।

दलकि ( क्रि० ) दहस कर, धराना कर, फट कर ।

दलकोश तत्त्वं ( पु० ) कुन्द का पेड़ ।

दलगज्जन तत्त्वं ( वि० ) सेना को मारने वाला भारी घीर । ( पु० ) धान विशेष । [ झोड़ा विशेष ।

दलधम्मन दे० ( पु० ) कमखाव घुलने वालों का

दलदल दे० ( श्री० ) धसाव, धसान, पछिल भूमि, चहला ।—( पु० ) दलदलवाला ।

दलदलाना दे० ( क्रि० ) कापना, हिलना, हुलना, धरधराना । [ धराहट ।

दलदलाहट दे० ( श्री० ) कम्प, दलक, धमक, धर-

दलद्वार दे० ( वि० ) मोटे दल वाला, मोटे परत वाला, मोटी सहवाला ।

दलन तत्त्वं ( पु० ) [ दल + भनट् ] मर्दन, निपटीदन, टुकड़े टुकड़े करना, चूर चूर करना ।

दलना दे० ( क्रि० ) दाल बनाना, दो टुक करना, दाब भलाव भलाव करना, रँदना, मीड़ना ।

दलवादल दे० ( पु० ) मेवों का समूह, धनघटा, धोर-घटा, बड़ी सेना, बड़ा शासियाना, बड़ा पट-मण्डप ।

दलमलना दे० ( श्री० ) मोजना, मोंसना, मलना, दलन करना ।—करना ( वा० ) पीसना, मोजना

तोड़ना, तोड़ डालना, मर्दन करना । [ करवाना ।

दलवाना दे० ( क्रि० ) दाल बचवाना, दलने का काम

दलवैया दे० ( पु० ) दलनेवाला, दाल बनाने वाला ।

दलसूसा दे० ( पु० ) पत्ते का सिरा, पत्ते की नस ।

दलहन ( पु० ) चना, मूँग, उद. अमर, आदि दाल के अन्न ।

दलहरा दे० ( पु० ) दाल का व्यापारी ।

दलान ( पु० ) खोसाता, चैदक, धरामदा ।

दलाना दे० ( क्रि० ) दलवाना, दाल बनवाना ।

दलाल दे० ( पु० ) बिचवाई, मध्यस्थ, कुटना, पार-

सियों और जाटों की जाति विशेष । [ पाता है ।

दलाली दे० ( श्री० ) बिचवानी, वह द्रव्य जो दलाल

दलित दे० ( गु० ) मर्दित, रोंदा गया, फाड़ा गया, अधःकृत, तिरस्कृत ।  
 दलित् तद् ( पु० ) दरिद्र, दीन, दुखी ।—ता ( खी० ) दारिद्र्य, दरिद्रता, दैन्य, दुःख ।  
 दलित्नी तद् ( पु० ) दरिद्री, दरिद्रित, दीन, कंगाल, निर्धन, धनहीन ।  
 दलिया दे० ( पु० ) अधकुट्टा, मोटा पीसा हुआ अन्न ।  
 दलिहन दे० ( पु० ) अन्न विशेष, जिससे दाल बनाते हैं, मूँग, अरहर, वरद आदि ।  
 दली दे० ( वि० ) दलित, दली गई, दो टुक की गई ।  
 दलीपसिंह दे० ( पु० ) पञ्जाब केसरी महाराज प्रतापसिंह का छोटा लड़का । सन् १८३८ ई० में ४ वर्ष की अवस्था में यह सिंहासन पर बैठे गये । १८४६ ई० में सिख युद्ध के अन्त होने पर पञ्जाब लड़कियों के अधिकार में आया । दलीपसिंह एक माह की देल रेल में रहने लगे । दलीपसिंह के थालिग होने पर, इन्हें दो लाख की वृत्ति मिलती थी । १८६३ ई० में यह ईसाई हो गये । इसके बाद दलीप विधायक गये, जिससे इनकी माता को यद्वा कट हुआ । सन् १८६३ ई० की २३ वीं अक्टूबर के पेरिस के होटल में दलीपसिंह मर गये ।  
 दलील ( खी० ) युक्ति, तर्क वितर्क ।  
 दलैली दे० ( खी० ) चक्की, जाली, दाढ़ बनाने की कल ।  
 दलेज दे० ( खी० ) सिपाहियों का एक प्रकार कषायद जो उन्हें दण्डस्वरूप दी जाती है ।  
 दलैया दे० ( पु० ) दलने वाला, नाश करने वाला ।  
 दलभ तद् ( पु० ) छल, धोखा, चक्र, पाप ।  
 दलाल दे० ( पु० ) दलाल, माल विचवाने वाला ।  
 दलाला दे० ( खी० ) छुटनी, दूती ।  
 दलाली दे० ( खी० ) दलाली । [ वन की आग ।  
 दव तद् ( पु० ) वन, अरण्य, वनाभि, वनडाहा, दचना ( पु० ) ढकना, ढाकने का पात्र विशेष ।  
 दवनी ( खी० ) पौधा विशेष, मँड़ाई, दवारी ।  
 दवरिया दे० ( खी० ) दवारि, दावानल ।  
 दया दे० ( खी० ) औपच, ओपधि ।  
 दवाई दे० ( खी० ) दवा, औषधि ।  
 दयालाना, दवाईलाना ( पु० ) औषधालय ।  
 दवागि तद् ( खी० ) दावानल ।

दवागिन तद् ( खी० ) दवागि ।  
 दवागि, दवानल तद् ( पु० ) दावानल, वन की आग, वृषों की रगड़ से स्वतः उत्पन्न अग्नि ।  
 दवात दे० ( खी० ) मसिपाय, दवाही रखने का पात्र ।  
 दवानल ( पु० ) दावानल, दवागि ।  
 दवामी ( गु० ) चिरस्थायी, सदैव एकसा रहने वाला ।  
 —चंदोधस्त ( पु० ) वह व्यवस्था जिससे भूमि-कर ( मालगुजारी ) सदा एकसी रहे, उसमें कमी चेरी न हो ।  
 दवारि तद् ( पु० ) दावानल, वन की आग ।  
 दविष्ट तद् ( वि० ) सुदूर, अत्यन्त दूरवर्ती, अतिशय दूरवर्ती ।  
 दवीयान् तद् ( वि० ) दूरतर, अतिशय दूरवर्ती ।  
 दश तद् ( गु० ) [ दशन् + डट् ] संख्या-विशेष, द्विगुण पाँच, १० ।—कगुठ ( पु० ) रावण, दशानन, लङ्केश्वर ।—कगुठजित ( पु० ) श्रीराम, रावण, रघुनाथ ।—कन्ध, कन्धर ( पु० ) रावण, दशानन ।—कर्म ( पु० ) अन्नप्राशनादि दशविध कर्म वे ये हैं :—( १ ) गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमन्तोन्नयन, ४ जातकरण, ५ निष्क्रमण, ६ नामकरण, ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकरण, ९ उपनयन, १० विवाह ) मरण के दसवें दिन का कृत्य ।—क्रिया गणित विशेष, दश गंडे की गणना ।—गात्र तद् ( पु० ) स्तनक का एक कर्म जो इसके मरने के दस दिन तक किया जाता है । शरीर के दस मुख्य अङ्ग ।—ग्रीव ( पु० ) रावण, लङ्केश्वर ।  
 —दिक् ( गु० ) पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैऋत्य, वायु, ऊर्ध्व, और अधः ।  
 —दिक्पाल ( पु० ) दशों दिशाओं के अधिपति, इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, प्रह्ला और अनन्त ।—धा ( खी० ) दस प्रकार, दस बार ।—नामी दे० ( पु० ) शङ्कर मत के अनुयायी दस प्रकार के संन्यासी ( यथा—१ तीर्थ, २ आश्रम, ३ वन, ४ अरण्य, ५ गिरि, ६ पर्वत, ७ सागर, ८ सरस्वती, ९ भारती, १० पुरी ) ।—पुर ( पु० ) देशभेद, मालवार देश का एक खण्ड, पुरभेद ।—भुजा ( खी० ) दुर्गा ।  
 —महाविद्या ( खी० ) दसविध देवी विशेष,

( यथा—काली, तारा, पोडरी, सुवनेश्वरी, मीरवी, द्विधमस्त, धूमावती, बगला, मातङ्गी और कमला ।—मुख ( पु० ) दशकन्धर, लङ्केश्वर, रावण ।—मुखान्तक ( पु० ) श्रीराम, रघुनाथ । मूल—( पु० ) शोषधि विशेष, दश औषधियों के मूल ।—योगभङ्ग ( पु० ) ज्योतिष का नक्षत्र येष विशेष, जिसमें यियाहादि शुभ कर्म वर्जित हैं ।—रथ ( पु० ) इक्ष्वाकु कुलोत्पन्न राजा विशेष, सूर्यवंशीय राजा, यह अज के पुत्र और श्रीराम-चन्द्र तथा उनके तीन भाइयों के पिता थे । इनकी राजधानी का नाम अयोध्या था, इनकी तीन प्रधान रानियाँ कौशल्या, सुमित्रा और केकयी थीं । परन्तु बहुत वर्ष बीत गये उनमें से किसी के पुत्र नहीं हुआ, अतः यमिष्ठ की अनुमति से इन्होंने पुत्रेष्टि नामक यज्ञ करना विचारा और उस यज्ञ को सम्पन्न करने के लिये विभाण्डक ऋषि के पुत्र ऋष्यशृङ्ग को बुलाया । उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया और यज्ञशेष तीन रानियों के स्थाने के लिये भिन्नवाया । कौशल्या ने राम को, सुमित्रा ने लक्ष्मण और रघुनाथ को और केकयी ने भरत को यथा समय वरपन्न किया । यज्ञ करने के पहले दशरथ स्नाना करने धन में गये थे । वहाँ किसी का शब्द सुन कर इन्होंने शब्दवेधी पाण माया । उस पाण से अन्ध मुनि का पुत्र सारथ्य मारा गया । अन्ध मुनि पुत्र विवोध से मरने लगे । उन्होंने मरते मरते राजा को शाप दिया कि तुम भी पुत्र विवोध से मरोगे । दशरथ जब अपने पुत्र श्रीराम का राज्याभिषेक करने की तैयारी करते थे, उस समय मन्थरा के कुचक से केकयी ने राजा के पहले दिये दो बरों में एक तो राम का वनवास और दूसरा भरत का राज्याभिषेक माँगा । इसी घर्म-सेकट में पड़ कर राजा दशरथ को अपने प्राण देने पड़े थे ।—शीत ( पु० ) दशानन, रावण ।—हृरा ( स्त्री० ) उषेष्ट शुक्ला दशमी, इसे गङ्गादशहरा कहते हैं । क्योंकि यह गङ्गा की जन्मतिथि है । श्राव्णिन शुक्ला दशमी । कहते हैं इस दिन रामचन्द्र ने रावण को मारा था, पर यह ठीक नहीं है । इसे विजया-दशमी भी कहते हैं ।

दशन तत् ( पु० ) दाँत, दन्त, कवच, शिखर ।—च्छद ( पु० ) श्रोष्ठ, अक्षर, होंठ ।—शु ( पु० ) दशन शोभा, दन्तरुचि ।  
दशम तत् ( वि० ) दश संख्या को पूर्य करने वाली संख्या, दशवाँ ।—जव ( पु० ) दशमांश, दसवाँ हिस्सा ।  
दशमी तत् ( स्त्री० ) पक्ष का दसवाँ दिन, दसवींतिथि ।  
दगा तत् ( स्त्री० ) अवस्था, भाव, गति, वृत्ति, स्थिति, दिशा की बत्ती, चित्त, कपड़े का छोर ।  
दगांश तत् ( पु० ) दशवाँ भाग, दशवाँ हिस्सा ।  
दगांगुल तत् ( पु० ) दश अंगुल का परिमाण, खर-बूजा, डँगरा ।  
दशानन तत् ( पु० ) रावण, दशकण्ठ । [अथतार ।  
दशावतार तत् ( पु० ) चारों युगों में विष्णु के दस दशाविपाक तत् ( पु० ) दुःख की अन्तिम अवस्था ।  
दशार्ण तत् ( पु० ) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत के पूर्व और दक्षिण भाग का देश, मालवा का पश्चिम भाग, इस देश की राजधानी का नाम विदिशा है ।  
दशार्ध तत् ( पु० ) युद्ध, देश विशेष, यदुरेश, यदु देश के रहने वाले ।  
दशाश्व तत् ( पु० ) चन्द्रमा, निशाकर ।  
दशाश्वमेध तत् ( पु० ) दस अश्वमेध यज्ञ विशेष, तीर्थ विशेष ।  
दशाश्व तत् ( पु० ) दशमुख, रावण, दशानन ।  
—जित् ( पु० ) राम, रघुनाथ ।  
दगाह तत् ( पु० ) दस दिन में किये जाने वाले कर्म, दस दिन साध्य कार्य ।  
दशाहीन तत् ( वि० ) दुर्भाग्य, दुर्बल्य, दुर्गत, दुर्बल्यपक्ष, बिना को का कपड़ा ।  
दशोला दे० ( वि० ) सुखी, सुमाय, श्रीमान् ।  
दस तद् ( वि० ) दस संख्या विशेष, पाँच की दूनी संख्या ।—माथ दे० ( पु० ) रावण ।  
दसहृत ( पु० ) हस्ताक्षर ।  
दसन तत् ( पु० ) दाँत ।  
दसवाँ ( पु० ) १ के बाद की संख्या ।  
दसो ( स्त्री० ) कपड़े के किनारे का सूत, बैलगाड़ी की पट्टी, रांघी, चिन्द, पता ।  
दत्ती तत् ( पु० ) दश, धामा, सूत, सूत्र ।

दसौंखा दे० ( पु० ) पङ्खा का झूलना ।  
 दसौंझार तद्० ( पु० ) दस द्वार, शरीर के मार्ग, विजया-  
 दशमी के वाद का समय । [ प्रशंसक, राय, चारण ।  
 दसौंधी दे० ( पु० ) भाट, श्रद्धा, स्तुतिकर्ता, गुणगानकारी,  
 दस्त तत्० ( वि० ) प्रसिद्ध, प्रस्थापित, नष्ट । ( दे० )  
 हस्त, हाथ, कर, पाखाना ।—कार ( पु० ) हाथसे  
 कारीगरी का काम करने वाला ।—कारी ( स्त्री० )  
 हाथ की कारीगरी । [ सही करना ।  
 दस्तखत दे० ( पु० ) स्वाक्षर, सही, अपने नाम की  
 दस्ता दे० ( पु० ) धातुविशेष, तामचीनी, रागा, कलई,  
 मूठ, बेंद, गुच्छा फूलों का, सिपाहियों की छोटी  
 टोपी, गारद, चपरास, संजाफ, कागज़ के बैचीस  
 तावों की गड्डी, सोटा, डंडा, हरगिला ।  
 दस्ताना दे० ( पु० ) हाथ का मोजा । [ चक, जुलाव ।  
 दस्तावर दे० ( वि० ) वह दवा जो दस्त लावे, चिरे-  
 दस्ताघेज़ दे० ( पु० ) वह कागज़ जिसमें किसी व्यवहार  
 विशेष की शर्तें लिखी हों, श्रृणपत्र ।  
 दस्ती दे० ( वि० ) हाथ का । ( स्त्री० ) छोटी मूठ,  
 छोटा कलमदान ।  
 दस्तूर दे० ( पु० ) रीति, चाल, प्रथा, नियम, विधि ।  
 दस्तूरी दे० ( स्त्री० ) हक, कमीशन ।  
 दस्त्यु तत्० ( पु० ) साहसिक, चोर, तस्कर, डाकू,  
 डकैत, दुर्वृत्ति, एक पुरानी जाति ।—वृत्ति  
 अथवा द्युत ( स्त्री० ) चोरी, डकैत ।  
 दस्त तत्० ( पु० ) शिशिर, गर्दभ, अश्विनीकुमार,  
 अश्विनीसुत, जोड़ा ।—द्वैता ( स्त्री० ) अश्विनी  
 नामक नक्षत्र । ( वि० ) दोहा, हिंसा करनेवाला ।  
 दस्तौ तद्० ( पु० ) अश्विनीकुमारद्वय, देववैद्य ।  
 दह दे० ( पु० ) गह्वर, गर्त, गहरा, आवर्त, जलकुण्ड  
 ( स्त्री० ) उवाला, लपट, लौ ।  
 दहक दे० ( स्त्री० ) दाढ़, चमक, चिजक, प्रकाश, शर्मा ।  
 दहकना दे० ( क्रि० ) जलना, पश्चात्ताप करना, पछ-  
 ताना, अनुत्ताप करना, बलना ।  
 दहकाना दे० ( क्रि० ) जलाना, बिगाड़ना, पश्चात्ताप  
 करना, अनुत्ताप करना, पछताना ।  
 दहड़दहड़ दे० ( अ० ) वेग से, जोर से, प्रखरता से,  
 तीक्ष्णता से ।—जलना ( वा० ) बड़े वेग से  
 जलना, बहुत वेग से आग का लहकना ।

दहदह दे० ( स्त्री० ) दहदह ।  
 दहन तत्० ( पु० ) [ दह + अनट ] दाह, जलन, भस्मी  
 करण, भस्म होना, अग्नि, अनल, पावक, आग,  
 चित्रक वृक्ष, मल्लोत्तक, भिल्लावा, तीन की संख्या,  
 क्यूतर, एक रुद्र का नाम, ज्योतिष का एक योग ।  
 ( वि० ) दुष्टचित्त, दुर्जन, जलाने वाला, दुःख देने  
 वाला ।—केतन ( पु० ) धूम, धुआँ ।—प्रिया  
 ( स्त्री० ) स्वादा और राधा, अग्नि की भार्या ।  
 दहना दे० ( क्रि० ) जलना, बलना, भस्म होना, दहना,  
 जलप्रवित होना । ( वि० ) दक्षिण भाग,  
 दहिना ।  
 दहनाराति तत्० ( पु० ) [ दहन + अराति ] जल, सजिल,  
 तोय, पानी, अग्नि का शत्रु ।  
 दहनीय तत्० ( पु० ) [ दह + अनीय ] दाह, दाहाई,  
 दग्ध करने योग्य, जलाने के उपयुक्त ।  
 दहनोपल तत्० ( पु० ) दहन + उपल ] अग्निमय राश्वर,  
 सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा । [ ततावे ।  
 दह्य तद्० ( क्रि० ) जलावे, तप्त करे, भस्म करे,  
 दहर तत्० ( पु० ) छोटा मूसा, चूहा, छुहिया, छुह-  
 दर, आता, भाई, बालक, नरक, वरुण । ( वि० )  
 स्वल्प, सूक्ष्म । तद्० ( पु० ) दह, नदी में वह स्थान  
 जहाँ जल गहरा हो, कुण्ड, गड्ढा, पाल ।—काश  
 तत्० ( पु० ) चिदाकाश, ईश्वर ।  
 दहल दे० ( स्त्री० ) भय से सटसा काँप जाने की क्रिया ।  
 दहलना दे० ( क्रि० ) दबना, शक्ति, शङ्काक्रान्त,  
 काँपना, डरना, भयभीत होना ।  
 दहला दे० ( पु० ) ताश का वह पत्ता जिस पर दस  
 वृत्तियाँ होती हैं । तत्० ( पु० ) पादा, बालबाल ।  
 दहलाना दे० ( क्रि० ) दवाना, काँपना, कम्पित करना,  
 भयभीत करना ।  
 दहशत ( स्त्री० ) भय, डर । [ विशेष ।  
 दहमेरा दे० ( पु० ) दस सेर का तौल, परिमाण  
 दहाई दे० ( स्त्री० ) अक्षरों की गणना में दूसरे स्थान पर  
 लिखा हुआ अक्षर, उस का मान या भाव ।  
 दहाड़ना दे० ( क्रि० ) गरजना, डकारना ।  
 दहाना दे० ( क्रि० ) जलाना, भस्म करना, बलना ।  
 दे० ( पु० ) द्वार, मशक का मुख, ( नदी का )  
 मुहाना, मोरी, घोड़े के मुख की लगाम ।

दहिजार दे० ( पु० ) दाढ़ीभार ।

दहिना दे० ( वि० ) दक्षिण, दक्षिण भाग ।

दही तर्० ( पु० ) दधि, दूध का विकार, जमा दूध ।

दहूँ ( अघ्य० ) अपना, या, किंवा ।

दहेड़, दहेल दे० ( पु० ) पक्ष विशेष ।

दहँड़ी दे० ( स्त्री० ) दही की हाँड़ी, जिसमें दही रखा या जमाया जाता है ।

दहेज दे० ( पु० ) दायज, यौतुक ।

दहोतरसौ ( पु० ) एक सौ दस, ११० ।

दहामान तर्० ( गु० ) [ दह् + मान ] दग्ध, पुष्ट, उच्चित, जलाया हुआ । [ किपा ।

दहो दे० ( पु० ) दही, दधि । ( कि० ) जलाया, भस्म

दा तर्० ( वि० ) देने वाला, दाता, दानी, दानकर्त्ता ।

दे० ( पु० ) सितार का एक बोल ।

दाइज दे० ( पु० ) यौतुक, दैजा, दान, कन्याप्रदाता की देयवस्तु, जो कन्या का पिता कन्यादान के उपलक्ष में घर को देता है ।

दाइजा दे० ( पु० ) दाइन ।

दाई तद्० ( वि० ) दायी, दाता, देनेवाला, वह जिस शब्द के अन्त में आता है उसका देनेवाला अर्थ होता है । ( सुखदाई, दुखदाई आदि । ) ( स्त्री० ) धाय, धात्री, वच्चे को दूध पिलाने वाली दासी, चकरानी, नौकरानी, फारसी का दाया शब्द से यह शब्द निकला है ।

दाई दे० ( वि० ) दाहिनी । [ का नाम ।

दाऊ दे० ( पु० ) बढ़ा भाई, बड़ा चाचा, ब्रह्मदेवजी

दाउँ दे० ( पु० ) दाँव ।

“सुक्ति तुँभारिहि आपन दाउँ ।”—गुलसीदास ।

दाऊदी दे० ( स्त्री० ) एक झाड़ू अथवा उसका फूल,

एक प्रकार की आतखबाजी, सफेदी, यह शब्द अरबी के दायदी शब्द से निकला है यथा—(अ०)

—गुलदायदी, ( हिं )—गुलदाऊदी । ( पु० ) एक

प्रकार का सबसे अच्छा गेहूँ । [खेवने की डाँडी ।

दाँड तद्० ( पु० ) दण्ड, सत्रा, ताड़ना, शासन, नाव

दाँड़ना ( कि० ) दण्ड देना, सत्रा देना ।

दाँड़ा दे० ( पु० ) सीमा, सीध, मेंड, सिवाना ।—मेड़ा

( पु० ) सिवाना, छोर, दो ग्राम या खेतों के विभाग का चिन्ह विशेष ।

दाँड़ी दे० ( पु० ) खेवर, नाव खेवने के लिये लकड़ी का बना हुआ दाँड़ ।

दाँत तद्० ( पु० ) दन्त, रदन, दाढ़, दशन ।—उँगली

फाटना ( वा० ) अचम्भे में आना, आश्चर्यित होना,

विस्मित होना, विस्मय करना ।—कच्चकचाना

( वा० ) क्रोध करना, क्रोध से दाँत पीसना ।—

कटकटाना ( वा० ) अपकारी का बदला न

सुका सकने के कारण क्रोध से जलना ।—फाटी

रोटी खाना ( वा० ) घनिष्ठ मित्रता करना, दिली

दोस्ती ।—खट्टे करना ( वा० ) दूसरे के प्रयत्न

को विफल करना, अपने पराक्रम से शत्रु को नीचा

दिखाना ।—तले उँगली दवाना ( वा० ) अचम्भा

करना, विस्मित होना, भौचक रह जाना ।—

निकालना ( वा० ) हार जाना, अपनी अयोग्यता

और विवशता अतलाना ।—पर चढ़ाना ( वा० )

कलङ्कित करना, अपमानित करना ।—पीसना

( वा० ) क्रोध करना, क्रोध बतलाने के लिये दाँत

कटकटाना ।—बजना ( वा० ) कटकटाना, क्रोध

करना, झगड़ना, बक बक करना ।—रखना ( वा० )

किसी के लिये वरकण्डित होना, स्पर्धा करना,

श्वश्रा करना, चुपल जानना ।

दाँतन दे० ( पु० ) दतवन, दन्तधावन, दाँत साफ करने की लकड़ी, मुखारी ।

दाँताकितकित ( स्त्री० ) बाक युद्ध, झगड़ा, गाली गलौज ।

दाँताकिलकिल तद्० ( स्त्री० ) दन्तकिञ्जकिळा, बक-

भक, झगड़ा, गाली गलौज, वाग्युद्ध ।

दाँती तद्० ( स्त्री० ) घास काटने का हँसिया, थारा,

के दाँत, दाँ ।

दाँया ( पु० ) बायें का उलटा ।

दाँव दे० ( पु० ) घात, अवसर, मौका, घारी, समय,

अपने अनुकूल समय ।—चलना ( वा० ) जीतना,

जय करना, सरस होना, आगे बढ़ना, बढ़ चलना,

रातराज आदि खेलों में गोटी आगे बढ़ना ।—

चलाना ( वा० ) अधिकार चलाना, घात करना,

घोट पहुँचाना ।—पकड़ना ( वा० ) मजबुत

करना, कुरनी लड़ना, कुरती में दाँव पेंच करना ।

—वैठना ( वा० ) अवसर छाना, हाथ से मौका

चला जाना ।



दाँवरी तद् ( स्त्री० ) रस्ती ।

दाक्षाया तद् ( पु० ) गृध्र पत्नी ।

दाक्षाया तद् ( वि० ) दक्ष सम्बन्धी, दक्ष प्रजापति के पुत्र आदि, सुवर्णलंकृत । ( पु० ) सोना, सुनहली चीजें, मोहर, दक्ष द्वारा अनुष्ठित यज्ञ, इस यज्ञ में सती ने अपने पतिनिन्दा के कारण प्राण दे दिये थे, पीछे से शिव ने वीरभद्र को भेज यज्ञ नष्ट करा दिया था ।

दाक्षाया तद् ( स्त्री० ) दुर्गा, सती, रोहिणी अथवा अश्विनी आदि सप्तविंशति नक्षत्र, दन्ती वृक्ष, जमालगोदा का वृक्ष । ( वि० ) सोने का ।—पति ( पु० ) शिव, चन्द्रमा, धर्म ।

दाक्षिण तद् ( पु० ) कथन, उपाय, अधिकार, दक्षिण, देशीय, दक्षिण सम्बन्धी, दक्षिणासम्बन्धी । तद् ( पु० ) एक होम का नाम ।

दाक्षिणात्य तद् ( वि० ) दक्षिण देशजात, दक्षिण-देशीय । ( पु० ) नारिकेल वृक्ष ।

दाक्षिण्य तद् ( पु० ) उदारता, अनुकूलता, सरलता, भावविशेष, दक्षिणाचार्य । ( वि० ) दक्षिणाहं, दक्षिण का, दक्षिणा पाने योग्य । [ का नाम ।

दाक्षी तद् ( पु० ) दक्ष की कन्या, पाणिनि की माता दाक्ष्य तद् ( पु० ) दक्षता, निपुणता, नैपुण्य ।

दाख तद् ( पु० ) द्राक्षा, अँगूर, सुनका ।

दाखिल दे० ( पु० ) बर्षण, परिशोधकरण, गृहीत वस्तु का लौटाना, जमा करना ।—खारिज दे० ( पु० ) सरकारी कागज़ में एक अधिकारी का नाम काट कर दूसरे अधिकारी का नाम चढ़ा देना ।—दफ्तर ( पु० ) दबा देना, रख लेना ।

दाखिला दे० ( पु० ) प्रवेश, पैठ ।

दाग दे० ( पु० ) मृतक कर्म, चिन्ह, अङ्क, कलङ्क, दाग आग से जलने का चिन्ह ।—चढ़ाना ( वा० ) कलङ्क लगाना ।—देना ( वा० ) तपे छोड़े से चिन्ह करना, दागना, जलाना, अङ्कित करना, कलङ्क लगाना ।—लगाना ( वा० ) अथवा होना, नाप से कलङ्क होना ।—लाना ( वा० ) दाग लगाना, अपकीर्ति होना ।

दागना दे० ( कि० ) चिन्ह करना, दाग देना, तपाये लोहे से शरीर जलाना, अङ्कित करना, तप या यन्त्रक छोड़ना, तप की बाढ़ दागना ।

दागी दे० ( वि० ) चिन्हित, अङ्कित, दण्डित ।

दाव तद् ( वि० ) जला हुआ, दग्ध । तद् ( पु० ) गरमी, ताप, दाह ।

दाटना ( कि० ) डाटना, दपटना ।

दाढ़क तद् ( पु० ) दाढ़, दाँत ।

दाड़स दे० ( पु० ) सर्प विशेष । [ हलायची ।

दाड़िम तद् ( पु० ) अनार, बीजपूरक, फल विशेष, दाढ़ी दे० ( स्त्री० ) अनार ।

दाढ़ दे० ( स्त्री० ) चाँद, पिछले दाँत, पीसने के दाँत ।

दाढ़ा दे० ( स्त्री० ) बड़ा दाँत, दन्तविशेष ।

दाढ़ी दे० ( स्त्री० ) मुख के नीचे का भाग, रमधु, चिबुक, डुड्डी के थाल ।—बनाना ( कि० ) चौर कराना, हजामत बनवाना ।—जार दे० ( पु० ) जली दाढ़ी वाला, स्त्रियों की एक गाली ।

दात तद् ( वि० ) क्षिप्र, कर्तित, छेदन किया हुआ, काटा हुआ, ( पु० ) दातव्य, वदान्यता, दान ।

दातन दे० ( पु० ) दत्तन, दन्तकाष्ठ । [ का पात्र ।

दातव्य तद् ( वि० ) देने योग्य, दानार्ह, दान करने दाता तद् ( पु० ) देनेवाला, दानी, दानशील, दान-कर्त्ता, वदान्य, उदार ।

दातार तद् ( वि० ) दाता, दानी, देने वाला ।

दातुन दे० ( स्त्री० ) दातुन, मुखारी ।

दातृता या दातृत्व तद् ( पु० ) वदान्यता, दानशीलता, दानशक्ति, अकूप्यता, दान करने की शक्ति ।

दातौन दे० ( स्त्री० ) दातुन ।

दात्यूह तद् ( पु० ) पचिविशेष, घातक, परीहा, मेघ ।

दात्र तद् ( पु० ) [ दा + त्र ] अन्नविशेष, दाँती, हँसिया, देनेवाला । [ करने वाली स्त्री ।

दात्री तद् ( स्त्री० ) [ दातृ + ई ] दानकर्त्री, दान

दाद दे० ( पु० ) रोगविशेष, दग्ध, खजू ।—मर्दन ( पु० ) दग्ध मर्दन, औषधविशेष, चरुषट् ।

दादनी दे० ( स्त्री० ) रकम जो देनी है या चुकानी है । पेशगी दी हुई रकम ।

दादरा दे० ( पु० ) एक प्रकार का चलता राग । [ भाई ।

दादा दे० ( पु० ) पितामह, पिता का पिता, आज्ञा, बड़ा दादि, दाद दे० ( पु० ) सुराद, अमीष्ट, मनोवांछा ।

दादी ( स्त्री० ) पितामह की स्त्री, पिता की माता, आजी ।

दादुर तद् ( पु० ) दुर्बर, मोढ़क, मण्डूक ।

दादू दे० ( पु० ) युन्देलवण्ड में पुत्र आदि का मिय सम्बोधन, एक महात्मा का नाम, इन्होंने अपना एक नया पन्थ चलाया है। इनका पूरा नाम दादूदयाल है। इनका चलाया मत दादूपन्थ के नाम से प्रसिद्ध है, इनके शिष्य दादूपन्थी कह कर अपना परिचय देते हैं। यह मति भक्तिप्रधान है।

दादूदयाल दे० ( पु० ) देखो दादू।

दाधना दे० ( कि० ) दग्धना, जलाना, बालना।

दाधिक तत्० ( वि० ) दधिसंस्कृत वस्तु, दधिमिश्रित मिश्राक, दहीबड़ा। [वर्ध का।

दाधीचि तत्० ( पु० ) दधीचिनोत्र, दधीचि के दान तत्० ( पु० ) [ दा + अनट् ] पुण्यार्थ धनत्याग,

उत्सर्ग, त्याग, वितरण, कर, महसूब, राजनीति के चार अपाओं में से एक। शुद्धि, छेदन, एक प्रकार का मधु। हाथी का मदनल।—पति

( पु० ) नित्य दानकर्त्ता, सततदाता।—पत्र ( पु० ) वृत्तिदाभिलिपि, दान की हुई वस्तु पर सम्प्रदान का स्वत्व बतलाने के लिये लेख।

—पात्र ( पु० ) दान देने योग्य व्यक्ति।

—जीला ( स्त्री० ) भगवान् श्रीकृष्ण की जीला विशेष।—वज्र ( पु० ) दान के लिये वज्र के समान, वैश्य, एक प्रकार का घोड़ा।—वीर

( पु० ) अति दानकर्त्ता, प्रसिद्ध दानी।—वारि तत्० ( पु० ) विन्ध्य, इन्द्र, देवता।—वेन्द्र तत्०

( पु० ) राजा बलि।—शाली ( वि० ) दाता, यदान्य।—शील ( शु० ) दाता, दानकर्त्ता, यदान्य।

दानव तत्० ( पु० ) असुर, दैत्य, दनुज, दनु की सन्तान।—रि ( पु० ) देवता, सुर, असुरराष्ट्र।

गुरु तत्० ( पु० ) शुक्राचार्य।

दानवारी तत्० ( पु० ) हाथी का मद।

दानवी तत्० ( स्त्री० ) दानव की स्त्री। ( वि० ) दानव सम्बन्धी।

दाना दे० ( वि० ) अनुभव, बुद्धिमान्, ज्ञाता, समिद्ध।

( पु० ) अन्न, अनाज, शस्य, धान्य, छोड़े का दूधा हुआ चना, भुजा हुआ चना।—पानी

( धा० ) अन्नजल, सेवोग, समय।

दानार्ह ( स्त्री० ) बुद्धिमानी।

दाना-चारा दे० ( पु० ) दाना घा.र, खाना पीना।

दानाप्यस्त तत्० ( पु० ) राज्यों में दान का प्रबन्ध करने वाला अफसर।

दानिनी तत्० ( स्त्री० ) दान देने वाली स्त्री।

दानी तत्० ( वि० ) दाता, उदार, दानशील, दान देनेवाला, सततदाता। ( पु० ) कर संग्रह करने वाला।

[ दान के वशुक्त।

दानीय तत्० ( वि० ) [ दा + दानीय ] सम्प्रदान, दातव्य, दानेदार दे० ( वि० ) रवादार, दादर।

दास्त तत्० ( शु० ) [ दस् + क्त ] सुरक्षित, बशीभूत, जितेन्द्रिय, तपस्या के बलेश सहने योग्य।

दान्ति तत्० ( स्त्री० ) [ दन् + क्ति ] तपःबलेश सहिष्णुता, तपस्या के कष्टों की सहन करने की शक्ति, इन्द्रियनिग्रह, दमन।

दाप दे० ( पु० ) प्रताप, दप, गर्व, अभिमान, अहङ्कार, शक्ति, बल, शौर, उत्साह, रोष, क्रोध, ह्वाप।

दापक दे० ( पु० ) दवानेवाला, अभिमानी, अहङ्कारी, प्रतापी। [ आतङ्क, अधिकार, रोष।

दाव दे० ( स्त्री० ) बाप, दपने या दवाने का भाव, दाव रखना दे० ( धा० ) छिपाना, छिपा खेना,

लुप्ताना, उक्ताना, अधिकार रखना।

दावि दे० ( कि० ) दाव कर, कस कर।

दाम तत्० ( स्त्री० ) गोबन्धन रज्जू, रस्सी, माछा। ( पु० ) रुपया पैसा, मोक्ष, भाग्य, मूल्य। ( वि० ) एक पैसे का चौबीसवां भाग।

दामन दे० ( स्त्री० ) बाँधल, अधुल, बन्धमान्तभाग, कपड़े का छोर, शरय, घाभय, धवलम्ब।—गौर

( शु० ) प्रसनेवाला, दावा करने वाला, पीछे पहने वाला। [ ताम्रलिप्त ]।

दामलिप्त तत्० ( पु० ) ताम्रलिप्त देश, ( देशो दामवती तत्० ( स्त्री० ) माछा, चक्, फूलों की माछा।

दामाञ्जन तत्० ( पु० ) शय्यादि का पादबन्धन रज्जू, विज्ञाही, छोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी।

दामाद ( पु० ) जमाता, कन्यापति।

दमासाह ( पु० ) दिवाजिया जिसकी जायदाद पात्रने वालों में उनके पावने के अनुसार बँट जाय।

दामासाही दे० ( स्त्री० ) यवार्थ भाग, वचित भाग के कार्य।

दामिनी तत् ( स्त्री० ) - विजुली, तड़ित, विद्युत् ।

यथा:—

देहा ।

दामिनि दमकि रही घनमाहीं ।

खल की प्रीति यथा धिर नाहीं ॥—रामायण ।

दामी दे० ( स्त्री० ) कर, बाढ़, लगती, लगान, राज-  
देरा कर ।—लगाना ( क्रि० ) कर लगाना, कर  
ठहराना ।—वासिलात ( पु० ) गाँव के प्रधान  
अणुदाता । [ होता है ।

दामीयात दे० ( पु० ) वस्तुविशेष, जिससे रक्त विकार  
दामोदर तत् ( पु० ) [ दाम + इदर ] श्रीकृष्ण का  
एक नाम । कहते हैं श्रीकृष्ण लड़कई में बड़े चञ्चल  
थे । घर की वस्तुओं को वह तोड़ फोड़ डालते  
थे, इसी कारण यलोदा ( कृष्ण की पालिका माता )  
ने श्रीकृष्ण की कमर में रस्सी बाँध कर उन्हें ओखली  
से बाँध दिया और स्वयं निश्चित होकर काम  
करने लगीं । इधर श्रीकृष्ण भी समय पाकर वैसे ही  
घर से निकल पड़े, उनके घर के पास ही दो पेड़  
थे । उन्हीं के बीच से वे निकलने लगे, परन्तु  
ओखली बाँधी रहने के कारण निकल न सके, उन्होंने  
निकलने के लिये ज्योंही जोर लगाया त्योंही वे  
शोंवाँ पेड़ टूट गये । तभी से श्रीकृष्ण का नाम  
दामोदर हुआ ।

दामोदर गुप्त तत् ( पु० ) संस्कृत का एक कवि, यह  
कवि कश्मीरनिवासी थे । कुट्टनीमत नामक एक  
ग्रन्थ इनका बनाया संस्कृत साहित्य में पाया  
जाता है । कश्मीर के इतिहास राजतरङ्गिणी से  
मालूम पड़ता है कि यह कवि महाराजा जयापीड़  
के मन्त्री थे, इनका समय सन् ७७२ से ८०३  
तक विद्वानों ने अनुमान किया है, अतएव  
दामोदर गुप्त का भी यही समय जानना चाहिये ।  
प्रेमचन्द की समयमातृका और इनका कुट्टनीमत  
ये दोनों एक ही प्रकार के और एक ही उद्देश्य से  
लिखे गये हैं । चेर्याओं के फन्दे से बचाने के  
लिये ही उन्होंने कुट्टनीमत नामक ग्रन्थ लिखा  
है । चेर्याओं की चाञ्चलियाँ इसमें खूब साफ  
दिखलाई गई हैं । यद्यपि इसका विषय अरबील  
है, तथापि इसकी उपयोगिता की ओर ध्यान देने

से इसकी उच्चमता माननी पड़ती है । मेरी समझ  
से तो विद्या में न सही, परन्तु कविता में  
पण्डितराज जगन्नाथ से इनकी तुलना कई अंशों  
में की जा सकती है ।

दमोदर मिश्र तत् ( पु० ) ये कवि भोजराज के  
समकालीन हैं, इन्होंने ने हनुमानाटक का संग्रह  
किया है । इस ग्रन्थ के संग्रह करने के अतिरिक्त  
और कोई इनका उल्लेखयोग्य ग्रन्थ नहीं है ।  
ग्यारहवीं सदी इनका समय बताया जाता है ।

दाम्पत्य तत् ( पु० ) परिणयावस्था, विवाह की  
अवस्था, स्त्रीपुरुषसम्बन्धी ।—मुक्तिपत्र ( पु० )  
तिलाकनामा, जिस पत्र को लिख कर स्त्री पुरुष  
आपस का सम्बन्ध तोड़ देते हैं । यह रीति  
हिन्दुओं की नहीं, किन्तु आधुनिक सम्प्र-  
दायियों की है ।

दामिक तत् ( पु० ) दम्भयुक्त, अहङ्कारी, आत्म-  
रलाधी, आत्मप्रशंसा करने वाला, पाखण्डी, धूर्त ।  
( पु० ) वक्पची ।

दाय तत् ( पु० ) यौतुक आदि देवघन, कन्यादान  
के अनन्तर घर या घर के पिता को दिया  
जानेवाला धन, पैतृकधन, पिता के धन का  
भाग, वैवाहिक धन, वपौती, दांइज, विपत्ति,  
आपद् ।—वन्धु ( पु० ) आता, दायद, साथ  
रहनेवाले पिता के धनाधिकारी ।—भाग ( पु० )  
मृत पिता आदि का धनविभाग, ग्रन्थ विशेष,  
धर्मशास्त्र का ग्रन्थ, जिसमें धनाधिकारियों का  
निरूपण है । स्वरानिरूपक धर्मशास्त्र का अर्थ  
विशेष ।

दायक तत् ( पु० ) दाता, देनेवाला, दान करने  
वाला [ दान, यौतुक, दहेज ।

दायज्ञा तत् ( पु० ) दाय, दाइजा, ब्याह सम्बन्धी ।  
दायरा ( पु० ) मण्डल, वृत्त, मण्डली, कक्षा, डफली,  
खैजड़ी ।

दाया तत् ( पु० ) दवा, दावी, अभियोग, वाद ।  
दायाँ ( पु० ) दहिना ।

दायाद तत् ( पु० ) पुत्र, जाति, सपिण्ड, उत्तराधि-  
कारी, कुटुम्ब, परिवार, धनाधिकारी । [ कारिणी ।  
दायादी तत् ( स्त्री० ) कन्या, दुहिता, उत्तराधि-

दायार्ह तत् ( पु० ) [ दाय + अर्ह ] पिता के धन पाने का अधिकार । [ होना निश्चित हो चुका है ।  
दायित तत् ( वि० ) निश्चित अपराधी, जिम्मा बोधी  
दायित्व तत् ( पु० ) उत्तरदायित्व, जबाबदारी जिम्मेदारी ।  
दायी तत् ( वि० ) दानशील, अन्नप्रस्त, भारप्रस्त, कुशुलक, प्रतिवादी, किसी काम के बनने या बिगड़ने का उत्तरदाता ।

दार तत् ( पु० ) पत्नी, जाया, भावों, स्त्री, लुगार्ह ।  
—कर्म ( पु० ) विवाह, पाणिप्रहण, व्याह ।  
—त्यागी ( वि० ) स्वरत्नी त्यागी, अपनी स्त्री को छोड़ देने वाला ।—संग्रह ( पु० ) विवाह, पाणिप्रहण । [ शिशु, बालक ।

दारक तत् ( पु० ) अन्नविशेष, काटने का अस्त्र, पुत्र, दारुचीनी तत् ( स्त्री० ) दारुचीनीय, चीन देश की लकड़ी, दालचीनी । [ काड़ना या चीना ।

दारुण तत् ( पु० ) विदीर्ण करना, काड़ना, बीच स दारु तत् ( पु० ) विविशेष, पारा, हिंशुल ।

दारुमदार ( पु० ) निर्भर, आश्रय, दहराव, निर्भर ।

दारुय दे० ( कि० ) नाश करै, विदीर्ण करै ।

दारा तत् ( स्त्री० ) जाया, भावों, स्त्री, पत्नी ।

—धिगमन ( पु० ) [ दारा + अधिगमन ] पाणिप्रहण, विवाह, दाराप्राप्ति ।—पत्य ( पु० ) [ दारा + अपत्य ] स्त्री, पुत्र ।

दारिद्र्य ( पु० ) अनाद, दाहिम ।

दारिका तत् ( स्त्री० ) कन्या, पुत्री, दुहिता, तनया ।

दारित तत् ( वि० ) कृतविदारण, कृतमग्न, तोड़ा हुआ, काड़ा हुआ । [ कंगाली ।

दारिद्र्य तत् ( पु० ) दारिद्र्य, दीनता, निर्धनता, दारिद्र्य, दारिद्र्य तत् ( पु० ) दरिद्रता, दीनता, दुःख, दैन्य, अन्न आदि का कष्ट, निर्धनता ।

दारी तत् ( पु० ) बहु दारविशिष्ट, पारदारगामी, व्यवहारी, सम्पत्ता, सुदुरोग विशेष, विवाह, पति । ( स्त्री० ) युद्ध में पकड़ी हुई दासी ।—जार ( पु० ) गाली विशेष दासीपति गुलाम, दासीपुत्र ।

दारु तत् ( पु० ) काष्ठ, लकड़ी, देवदार वृक्ष ।  
—कदली ( स्त्री० ) वनकदली, वनकेला ।—गन्धा ( स्त्री० ) गन्धद्रव्य विशेष ।—गर्मा ( स्त्री० ) दारुमयी स्त्री, काष्ठनिर्मित पुत्तिका, कठपुतली ।

—चीनी ( स्त्री० ) एक वृक्ष का छाल, दालचीनी ।

—ज ( वि० ) काष्ठमय, काठ का बना ।—जजिज ( पु० ) काठ की पुतली, कठपुतली ।—निशा ( स्त्री० ) दारुहरिद्रा, दारुहरदी ।—फल ( पु० ) चिखगोला ।—मय ( वि० ) काष्ठमय, काष्ठनिर्मित, काठ का बना हुआ मकान आदि ।—हरिद्रा ( स्त्री० ) दारुहरदी ।—हस्तक ( पु० ) काठ का बना हाथी, काठ की कलड़ी ।

दारुक तत् ( पु० ) देवदार, वृक्षविशेष, श्रीकृष्ण के एक सारथि का नाम, सुमद्राहाण के समय इसने अर्जुन से कहा था कि मैं बादलों के विरुद्ध रथ नहीं हाँक सकता इस कारण आप मुझे बाँधकर जहाँ चाहें वहाँ जा सकते हैं । मृत्यु के समय का श्रीकृष्ण का संवाद इसने अर्जुन को सुनाया और दुखी होकर स्वयं वन में चला गया ।

दारुण या दारुन तत् ( पु० ) चिख । ( वि० ) भयानक, घोर, कठोर, कठिन, असह्य ।—वीर्य ( वि० ) भयानक, घोर, भीम ।

दारु दे० ( स्त्री० ) मद, शराब, मदिरा, मारुद ।

दारुड़ा दे० ( पु० ) मद, शराब ।

दारुड़ी दे० ( स्त्री० ) मद, मदिरा, शराब ।

दारोगा ( पु० ) प्रबन्धक, दुरोगा, घानेदार ।

दारुया दे० ( पु० ) दाहिम, अनार, यथाः—

दाहा

सुभर भरयो तव सुनकनतु पाक्यो कुवत कुचाळ ।

क्यों धीं दास्यो ज्यों हितो द्रकत नाहिं न लाळ ॥

—विहारी सतसई ।

दारुण्य तत् ( पु० ) दृढ़ता, बढिता, कादित्य ।

दार्वा तत् ( स्त्री० ) दौपचविशेष, रसात ।

दार्वा तत् ( स्त्री० ) दारुहरिद्रा, दारुहरदी ।

दार्शनिक तत् ( वि० ) दर्शनशास्त्रवेत्ता, दर्शनशास्त्रज्ञ । [ आदर्शित ।

दार्ष्टान्त तत् ( वि० ) उपमिति, उपमेय, आदर्श, दार्ष्टान्तिक ( पु० ) दृष्टान्त सम्बन्धी ।

दाल दे० ( स्त्री० ) दाल हुआ बना अरहर भूंग आदि, दलहन ।—गलना ( पा० ) प्रभाव होना, पहुँचना ।  
दालिद्र तत् ( पु० ) दारिम, रंक ।

दाजिम दे० ( पु० ) अनार, दाहिम ।

दाघ तत् ( पु० ) जलज, घन, अस्त्र विशेष, वारी, उपताप, दाघानल, घनाग्नि । [ अलमाना ।

दाघन दे० ( पु० ) पीड़न, मर्दन, मीसना, डठि से अन्न दाघना दे० ( कि० ) दवाना, अन्न निकालना, डठ से अन्न निधाना ।

दाघरि या दाघरी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की रस्ती, जिससे कृतार से बैठ बांधे जाते हैं और उन्हींसे रौंदा कर भूसा और अन्न पृथक् करते हैं ।

दाघा दे० ( पु० ) हक्, स्वयं, स्वत्वप्राप्ति के लिये निवेदन ।—गीर ( पु० ) दाघा करने वाला ।

दाघाग्नि तत् ( पु० ) दाघानल ।

दाघात ( स्त्री० ) मसीदाघ, दघात ।

दाघादार ( पु० ) अपना अधिकार जताने वाला ।

दाघानल तत् ( पु० ) दाघाग्नि, दाघबन्धि, घन की आग, घनाग्नि, वगैरुद्भव अग्नि ।

दाघिनी ( स्त्री० ) बिजली, रिपियों के माथे का एक गहना ।

दाघी दे० ( स्त्री० ) पाचना, प्रार्थन, नालिश ।

दाश तत् ( पु० ) मछली पकड़ने वाला, मछलाह, कर्णधार, मछुआ, धीवर ।

दाशरथ या दाशरथि तत् ( पु० ) दशरथापत्य, दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र आदि ।

दाशाहं तत् ( पु० ) विष्णु, नारायण ।

दाश्व तत् ( पु० ) दानकर्ता, दाता, दानशील ।

दास तत् ( पु० ) भृत्य, किङ्करी, कैवर्त, धीवर, शूद्र, दलहामा । उपनाम विशेष, साधुओं की एक अल ।

—ता ( स्त्री० ) पराधीनता, परतन्त्रता सेवकहं, पराधीनभाव, सेवकभाव ।—रत्न ( पु० ) दास्य, सेवकभाव ।—नन्दिनी ( स्त्री० ) व्यासमाता, सत्यवती ।—कृत्ति ( स्त्री० ) पराधीन जीवन, नौकरी, दासता ।—नुदास ( पु० ) सेवक का सेवक ।

दासा दे० ( पु० ) एक प्रकार का काष्ठ, जो लकड़ी के नीचे दीवार पर रखे हैं, हंसुआ, थोरी की खूँटी ।

दासी तत् ( स्त्री० ) अजिण्या, कर्मकरी, किङ्करी, भृत्य स्त्री, शूद्रा, परिचारिणी, परिचारीका, चेली, सेवकी, लौंडी ।

दास्तान ( स्त्री० ) दलबृत्तान्त, वर्णन, कथा ।

दास्य तत् ( पु० ) दासत्व, सेवा, जीविका, भृत्यता, नौकरी ।

दाह तत् ( पु० ) दहन, भस्मीकरण, ज्वाला, ताप, जलन, ज्वार, सेक, कुलसाव ।—काम या क्रिया ( पु० ) मुरदे को जलाने का कर्म ।—जनक ज्वालाकर ।—द्विना ( वा० ) दग्ध करना, अन्वेष्टि

संस्कार करना, मुर्दा जलाना ।—सर ( पु० ) प्रेतावास, श्मशान, शवशाल स्थान, चिताभूमि ।—हरण ( पु० ) औपचर्यविशेष, वीर्य मूल, ससहस, सुगन्धित घास विशेष । [वाला, दाह देने वाला ।

दाहक दे० ( पु० ) दाहकर्ता, दाह करने वाला, जलाने दाहना दे० ( कि० ) जलाना, पाजना, भस्म करना ।

( वि० ) दाहिना, दक्षिण, दक्षिण भाग । [ क्रिया ।

दाहा दे० ( कि० ) जलाया ( पु० ) जलन, भस्म दाहात्मक तत् ( वि० ) दाहस्वरूप, दाहमद ।

दाहिन या दाहिना दे० ( वि० ) दाहिना, दक्षिण, दक्षिण, सरल, सीधा । [ उपयुक्त, जलाने योग्य, दाहाई ।

दाहा तत् ( वि० ) [ दह + पप्रत् ] दाह करने के दाह्य तत् ( पु० ) दह्यता, निपुणता ।

दिशाली ( स्त्री० ) बहुत छोटा मिट्टी का दीपक ।

दिशा ( पु० ) दीश, दीपक ।—वस्ती ( स्त्री० ) दिश जलाने का ।

दिक् तत् ( पु० ) दिशा, दिग्, ओर ।—पति ( पु० ) दिशाध्यक्ष, दिक्पाल, दश दिशाओं के अधिपति ।

क्रम से वे ये हैं, पूर्व का इन्द्र, अग्निहोत्र का अग्नि, दक्षिण का यमराज, नैऋत्य कोण का नैऋत्य, पश्चिम का वरुण, वायव्य कोण का पवन, उत्तर का कुबेर, ईशान कोण का महादेव, ऊपर की दिशा का ब्रह्मा और नीचे की दिशा का अनन्त या विष्णु पति हैं ।—शूल ( पु० ) दिशविशेष में जाने का निषिद्ध दिन । अग्नि और सोमवार पूर्व का वृहस्पतिवार दक्षिण का, रवि और शुक्रवार पश्चिम का और मङ्गल बुध उत्तर का दिक्शूल हैं ।

वर्षाव निर्दिष्ट दिनों में निर्दिष्ट दिशा की यात्रा निषिद्ध है ।

दिक् दे० ( वि० ) दुःखी, व्यथित, कष्टयुक्त, बखेरी ।

दिक्त ( स्त्री० ) परेशान, कठिनाई, तंगी ।

दिक्दार दे० ( वि० ), रोगपीडित, व्यथित, रोगी, भीमार, दुःखी दीन, कष्टप्राप्त, बखेरयुक्त ।

दिखना ( कि० ) दिखाई पड़ना ।

दिखलाना दे० ( क्रि० ) समझाना, बुझाना, दर-  
साना, बताना बयलाना, प्रकटित कराना, प्रकाशित  
कराना, प्रकाश कराना, लखाना, लखित कराना,  
प्रत्यक्ष कराना, साधारण कराना ।

दिखराय दे० ( क्रि० ) दिखा कर, जनाय कर ।

दिखलावा दे० ( पु० ) हुहा, धूमधाम, बाहरी साज-  
बाज ।

दिखाई दे० ( स्त्री० ) लखाई, सुझाई । —देना दे०  
( क्रि० ) मालूम होना, मालूम पड़ना ।

दिखाऊ दे० ( वि० ) दिखावटी, सुन्दर, सजीला,  
सुहावना, बाहरी सुन्दरता, सुश्री ।

दिखाना दे० ( क्रि० ) बतलाना, सुझाना, प्रत्यक्ष  
कराना, दरसाना ।

दिखाव या दिखावट दे० ( पु० ) बाहरी चटकमटक,  
टीमटाम, टीपटाप ।

दिखावटी ( पु० ) दिखावा, बनावटी ।

दिखावा ( पु० ) आवर, तड़क भड़क ।

दिखैया ( पु० ) दिखाने वाला, देखने वाला ।

दिखौआ ( पु० ) बनावटी ।

दिखू तद् ( स्त्री० ) दिशा, दिक्, ओर, देश,  
पक्ष ।

—अन्त ( पु० ) दिशा का अन्त, दिग्मध्यख,  
चक्रवाल, दिशाओं की परिधि । —अन्तर,  
अन्तराल पु० ) शून्य, आकाश, व्योम, नभ ।

—अन्वर ( पु० ) विवस्त्र, वस्त्रहित, नग्न, नंगा ।

( पु० ) शिव, सन्यासी । —गज ( पु० ) दिशाओं  
के हस्ती, आठ दिग्गज हैं उनके नाम ये हैं —वेरा-  
वत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अक्षय, पुण्डरीक,  
सावंभौम, सुप्रतीक —दर्शन तद् ( पु० ) बहु-  
दर्शन, सर्पमावालीकन, इक्षितमात्र से दिखाना ।

—दाह ( पु० ) देशदोह, अग्नि का उपपात ।

—ध ( वि० ) विपाक, विष से बुझया हुआ

पाण —पाल ( पु० ) दिशाओं के रक्षक इन्द्र

वरुण, यम, कुबेर आदि । —घाताः ( वि० ) नग्न,

विवस्त्र, नग्न । —विजय ( पु० ) विद्या अथवा

युद्ध के द्वारा देशविजय । —विजयी ( वि० ) देश-

जयी, विजेत्रता, सर्वत्र जयशील । —विदिक

( स्त्री० ) मन्त्र दिशाओं में, चारों ओर । —सुम

( पु० ) दिशाओं का अथवा ज्ञान, दूसरी दिशा  
को दूसरी दिशा समझना । —समण ( पु० ) सर्वत्र

अमण, दिग्मर्थन । —मण्डल ( पु० ) चक्रवाल,

दिगन्त । —मुख ( पु० ) दिशाभिमुख । —व्यापी

तद् ( वि० ) सर्वव्यापी । —वान, वार तद्

( पु० ) पदरू । —शून तद् ( पु० ) दिशाशून्य ।

दिग्गी दे० ( स्त्री० ) दिघी, तालाब, बापी, पोखरा ।

दिघी दे० ( स्त्री० ) दीर्घिका, तालाब, पोखरा, बापी,

तड़ाग ।

दिङ्नाग तद् ( पु० ) एक बौद्ध दार्शनिक पण्डित का  
नाम, ये बौद्धमत के अचार्य भी थे । ये काशी में  
रहते थे । इनका कालिदास के समकालीन होना  
पण्डित लोग बताते हैं, अतः कालिदास का ६००  
ई० समय इनका भी समय माना जाता है ।

दिठवन ( स्त्री० ) कार्तिक शुक्ल ११ री, देवी हजान की  
एकादशी ।

दिठियार ( पु० ) नेत्र वाला, आँख वाला, प्रत्यक्ष ।

दिठौना दे० ( पु० ) यशों का तिक्क जो रश्मि दोष  
हटाने के लिये किया जाता है । दुपमुँहे बालकों  
के माथे पर लगाया हुआ कामज का बिन्दा जो  
इस लिये लगाया जाता है कि उन्हें दूसरे की नज़र  
न लगे ।

दियड दे० ( पु० ) नृसिंहोप ।

दिढ़ाना तद् ( क्रि० ) दृढ़ करना, ठहराना ।

दिनवार ( पु० ) रविवार ।

दिति तद् ( स्त्री० ) प्रजापति वरुण की कन्या, कश्यप  
की स्त्री और दैत्यों की माता का नाम । देवताओं  
की लड़ाई में दैत्यों के नाश होने पर दिति ने एक  
दिन अपने पति से इन्द्र को शरासत करने वाले एक  
पुत्र की प्रार्थना की, ' कश्यप दिति की प्रार्थना पूर्ण  
करके बोले, तुम हो हज़ार वर्ष तक गर्भ धारण करना  
होगा और प्रसव होने तक बहुत ही दुःखना पूर्वक  
रहना होगा, दिति भी बड़ी सावधनी से पति के  
बताये नियमों का पालन करने लगी । इस समा-  
चार को पाकर इन्द्र व्यथित हुए, यह मौका देखने  
लगे । एक दिन बिना पैंर धोये दिति से गई, उसी  
अवसर पर इन्द्र ने यम से गर्भ के ४९ खण्ड कर  
दिये । उसी गर्भ से ऋषभ पुत्रों का नाम मन्द है ।

दितिज ( स्त्री० ) दैत्य, दिति से उत्पन्न ।

दिदार ( पु० ) देखा देखी, दर्शन ।

दिदृष्टा तत्त्वं ( स्त्री० ) दर्शनेच्छा, देखने कि इच्छा, देखने की इवाहिवा ।

दिदृष्टु ( पु० ) देखने की कामना रखने वाला ।

दिधिन्ता तत्त्वं ( स्त्री० ) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जलाने की इच्छा ।

दिधिपु तत्त्वं ( स्त्री० ) द्विरुपा, दो बार व्याही स्त्री ।

—पति ( पु० ) द्विरुपापति, दो बार व्याही स्त्री का पति, विधवापति ।

दिन तत्त्वं ( पु० ) सूर्यज्योति से नियमित काल, वासर, दिवस, घण्टा, अर्धः ।—कर ( पु० ) दिन-

पति, दिनमणि, सूर्य, रवि ।—फाटना ( वा० )

समय बिताना, गुजर करना, दुःख या आलस्य-से

दिन बिताना ।—केशर ( पु० ) तम, अन्धकार ।

—का दिन ( वा० ) समस्त दिन, समूचा दिन ।

—खुलना ( वा० ) अच्छे ' दिन आना, सुख का

समय उभति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना

—गंवाना ( वा० ) आलस में पड़कर बैठे रहना

वृथा समय खोना ।—चढ़ना ( वा० ) अधिक

समय बिताता, विलम्ब होना, खियों के रातोघर्मे

होने में विलम्ब होना ।—चढ़ाना ( वा० )

विलम्ब करना, अति काल करके किसी काम को

प्रारम्भ करना, 'आलस से कार्य समय बिता

देना ।—चर्या ( स्त्री० ) दिन भर का काम

—ज्योतिः ( पु० ) आतप, धूप, घाम ।

—ढलना ( वा० ) दिन घटना, दिन चला जाना

दिन पलटना, अच्छा या बुरा दिन आना, समय

का परिवर्तन होना ।—दानो ( वि० ) प्रतिदिन

दाता, प्रतदिन दानकर्ता ।—दिन ( पु० ) प्रति

दिन ।—दुःखित ( वि० ) चक्रवाक पक्षी, चक्रवा

( वि० ) दिनहीन, दरिद्र, निःस्व निर्धन ।—नाथ

( पु० ) दिनकर, दिवाधिपति, सूर्य ।—पड़ना

( वा० ) सन्ध्या होना, दिन बीतना, दुःख पड़ना,

दुःख आना ।—फिरना ( वा० ) भाग्य खुलना,

बुरे दिनों का चला जाना और अच्छे दिनों का

आना ।—वदिन ( वा० ) प्रति दिन, दिन पर

दिन ।—यत्न ( पु० ) पथ, पष्ठ, ससम, अष्टम

एकादश और द्वादश राशि ।—मरना ( वा० )

दुःख और कष्ट में समय बिताना ।—मनि या मणि

( पु० ) दिवाकर, आनु, सूर्य ।—मान ( पु० )

दिवस, काल, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय

सूर्योदय और सूर्यास्त से नियमित काल ।—मुदना

( वा० ) दिन छिपना, सूर्यास्त होना, सन्ध्या होना ।

—मुख ( पु० ) प्रातःकाल, सवेरा, भिनसार, विहान ।

—मूर्द्धा ( पु० ) उदयाचल, पूर्व-पर्वत ।

दिनकर तत्त्वं ( पु० ) संस्कृत के एक पण्डित और

कवि इन्होंने कालिदास के शृंगार की टीका बनायी

थी । १३८२ ई० में रघुवंश की टीका उन्होंने

बनायी ऐसा कुछ लोगों का कहना है । ये बौद्ध-

धर्मावलम्बी थे; सम्भव है इन्हीं की टीका को लक्ष्य

करके मल्लिनाथ ने "दुर्व्याख्या विपमूर्च्छिता"

कहा हो । यह दिन कर वेदभाष्यकर्ता सायण और

सर्वदर्शसंग्रहकर्ता माधव से प्राचीन जँचते हैं ।

इनका समय चौदहवीं सदी का पिछला भाग ही

माना जा संकता है । इन्हें मिश्र की उपाधि थी,

इनका पूरा नाम दिनकर मिश्र था । ( २ ) यह

बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि जिला के देवता ग्राम में

१८१६ ई० में उत्पन्न हुए थे । इनका नाम दिनकर

राव था । इनके पिता महाराष्ट्र ब्राह्मण थे और

उनका नाम राव राहु था । दिनकर राव चार

पौत्रियों से गवालियर में रहते थे । वहाँ इनके पूर्व-

पुरुष ऊँचे ऊँचे पदों पर थे । दिनकर राव संस्कृत

और फारसी के विद्वान् थे । पहले पहल इनको

हिस्साबनवीस का काम दिया गया । इनकी योग्यता

और प्रभुभक्ति के कारण इनका पद बढ़ता ही गया ।

अन्त में यह गवालियर राज्य के दीवान बनाये

गये । उस समय राज्य की अवस्था बहुत बिगड़ी

हुई थी । खजाने में रुपये नहीं थे । उन्होंने पाँच

हाज़ार के स्थान में दो हाज़ार अपना मासिक वेतन

कर लिया था । राज्य के कामों पर इन्होंने उपयुक्त

मनुष्यों को रखकर उत्तम प्रयत्न किया । सिपाही

विद्रोह के समय इन्होंने अंगरेज़ी सरकार की बड़ी

सहायता की थी, उस समय के बड़े लाट ने इनकी

सहायता के बदले में इन्हें काशी के ज़िन्ने में एक

बड़ी ज़मींदारी दी । सन् १८२६ ई० में इन्होंने

श्वालियर का मन्त्रीपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक धौलपुर में राज के सुपरिटेण्डेंट का काम करते रहे, तदनन्तर थड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सभ्य बनाये गये । सन् १८६४ ई० में इन्हें के० सी० एल० आई की पदवी गवर्नमेंट ने दी । पुनः ये राजा बनाये गये, लार्ड डफरिन ने इनकी राजा की उपाधि ग्रहण कर दी । वृद्ध अवस्था में उन्होंने सभी कामों को छोड़कर भगवद्-भजन में मन लगाया । सन् १८९६ ई० में इस एक भारतीय प्रभुभक्त की जीवन लीला समाप्त हुई ।

**दिनाई दे०** ( स्त्री० ) दाद, दद्द, सेंहुवा । [ दिन का भाग ।

**दिनांश तत्०** ( पुं० ) पूर्वाह्न, मध्याह्न, सायान्हादि

**दिनादि तत्०** ( पुं० ) [ दिन + आदि ] प्रभात, प्रातःकाल, सवेरा । [ दिनचर्य ।

**दिनान्त तत्०** [ दिन + अन्त ] दिवसावसान, सन्ध्या,

**दिनमारं दे०** ( पुं० ) दिनमार्क देश के वासी-

**दिनारा दे०** ( वि० ) पुराना, वासी, रखा हुआ ।

**दिनालोक तत्०** ( पुं० ) [ दिन + आलोक ] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, भूप ।

**दिनी दे०** ( वि० ) पुराना, बहुत दिनों का ।

**दिनेर, दिनेश तत्०** ( पुं० ) [ दिन + ईश ] दिनपति, दिनकर, सूर्य, भाग्य ।

**दिनैला दे०** ( वि० ) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का ।

**दिनोंधी तत्०** ( वि० ) दिन का अन्धा, जिसे दिन में न सूखे ।

**दिपति** ( स्त्री० ) दीप्ति, कलक, आभा ।

**दिपना** ( क्रि० ) चमकना । [ दी जाने वाली परीक्षा ।

**दिव** ( पुं० ) निर्दोषता और कथन की सत्यता के लिये विमर्क या विमार्ग ( पुं० ) परिष्क, भेजा, घमंड ।

—**दार** ( पुं० ) प्रबल, मानसिक शक्ति ।

**दियट दे०** ( स्त्री० ) दीपक रखने की ऊँची बैठकी, दीवट ।

**दियरा** ( पुं० ) एक प्रकार का पकवान ।

**दिया दे०** ( स्त्री० ) दीपक, दीप, चिराग ।—**चत्ती** ( स्त्री० ) दिया जलाने का काम ।—**सलाई** ( स्त्री० ) स्नानार्थ प्रसिद्ध दीप बालने की एक वस्तु, आग काढ़ी ।

**दिल** ( पुं० ) कलेजा, मन, चित्त, हृच्छा, सोहस ।

—**गौर** ( पुं० ) उदास, खिन्न ।—**चला** ( पुं० )

बहादुर, उदार, दाता, दानी ।—**चस्प** ( पुं० ) मनोरञ्जक, चित्ताकर्षक ।—**जमई** ( स्त्री० ) सन्तोष, विश्वास ।—**जला** ( पुं० ) दग्ध हृदय, शोकाकूल ।—**दरियाव** ( पुं० ) उदार, दानी दाता ।—**पसंद** ( पुं० ) मनोहर, वृत्तेदार वद्य विशेष, ग्रामविशेष ।—**वहार** ( पुं० ) रंग विशेष—**रुवा** ( पुं० ) प्यारा ।

**दिलजाना दे०** ( क्रि० ) दिलाना, दान कराना, देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया ।

**दिलवाली दे०** ( वि० ) दिल्ली का वासी, दिल्ली का बना । ( स्त्री० ) उदार स्त्री, साहस वाली स्त्री ।

**दिलवैया दे०** ( वि० ) दिलाने वाला, दान कराने वाला, प्रेरणा करके दान कराने वाला ।

**दिलाना दे०** ( क्रि० ) दिलवाना, दान कराना ।

**दिलासा** ( पुं० ) ठाँठस ।

**दिली** ( पुं० ) हादिक, अत्यन्त घनिष्ठ ।

**दिलीप तत्०** ( पुं० ) सूर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे । उन्होंने ३१ अध्वमेध यज्ञ किये थे, काजिदास का रघुवंश इन्हीं के चरित्र से प्रारम्भ किया गया है ।

**दिलेर** ( पुं० ) साहसी, वीर, शूर ।—**नी** ( स्त्री० ) साहस, उत्साह । [ हंसेड़ा, मसखरा ।

**दिलनगी** ( स्त्री० ) हँसी मज़ाक ।—**वाज़** ( पुं० )

**दिल्ली दे०** ( पुं० ) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की राजधानी । [ दिवा, दिन ।

**दिव तत्०** ( पुं० ) स्वयं, अन्तरिक्ष, आकाश, वन,

**दिवरानी** ( स्त्री० ) पति के छोटे भाई की स्त्री ।

**दिवस तत्०** ( पुं० ) दिन, दिवा, वन, अहः, वासर ।

—**मुख** ( पुं० ) प्रभात, प्रातःकाल ।

**दिवसात्यथ तत्०** ( पुं० ) दिन की समाप्ति, सायं, सायंकाल, सन्ध्या । [ सुषप्ति ।

**दिवस्पति तत्०** ( पुं० ) [ दिवस् + पति ] इन्द्र, देवराज,

**दिवा तत्०** ( पुं० ) दिन, दिवस, वासर ।—**कर** ( पुं० )

सूर्य, दिनकर, दिनमणि । संस्कृत के एक कवि का नाम । राजशेखर ने अपने पूर्व के कवियों में इनका भी नाम लिखा है । ये कबीर के अधीश्वर हर्ष-वर्द्धन के सभासदों में से थे । श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव



उनके सभापण्डित दिवाकर का भी वही समय मानना चाहिये। यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी विद्या का अनादर नहीं किया जाता था। हर्षवर्द्धन की सभा में बाण, मयूर, आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी। इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक है :-

अथ प्रभावो वारुण्यो यन्मातृहृदिवाकरः,

श्री हर्षस्याभारतसम्भवः समो बाणमयूरयोः ॥

इनका पूरा नाम मातृहृदिवाकर था।

( २ ) भारद्वाज गोत्रोपपन्न एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्राह्मण। इनके पिता का नाम नृसिंह था। शिव देवज्ञ इनके चचा और विद्यादाता गुरु थे। पं० सुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शके १२२८ या १६०६ ई० बतलाते हैं। इनके बचपने कई एक ग्रन्थ हैं। उनमें आतकपद्धति नामक सन् १२१६ ई० में निर्मित हुआ था। गोशायरी नदी के तीर पर गोल नामक ग्राम में इनका निवास स्थान था।—गंध ( वि० ) दिन का अन्ध, जिसे दिन में नहीं सूझता हो, दिनोंध। ( पु० ) उलूक, उल्लू।—भीत ( पु० ) पेचक, उलुषा, उल्लू, चोर, तस्कर।—मणि ( पु० ) पर्व, दिनकर।—मध्य ( पु० ) मध्याह्न, दिन का मध्यभाग द्वितीय प्रहर।

दिवान ( पु० ) मंत्री, वजीर। ( पु० ) पागल, खूबी। दिवाला दे० ( पु० ) ऋण चुकाने की अशक्ति, न्यास किये हुए धन को न देना।

दिवाली तद् ( स्त्री० ) दीपावली, कार्तिक मास की अमावस्या का त्योहार, जिस दिन लक्ष्मी पूजन तथा दीदान किया जाता है।

दिगिज तद् ( वि० ) स्वर्गीय, दिव्य, अलौकिक।

दिविरथ तद् ( पु० ) राजा विशेष, महाराजा अथवा पुत्र और दधिवाहन का पीत्र, दिविरथ का पुत्र धर्मरथ और पीत्र चित्ररथ था।

द्विविपद् तद् ( पु० ) देवता, अमर, देव।

द्वित्रंश तद् ( पु० ) इन्द्र, देवराज।

दिवादास तद् ( पु० ) ब्रह्मरूप के पुत्र। ये मेनका के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनकी बहिन का नाम अहिल्या था।

( २ ) काशिराज मनुवंशीय रिपुञ्जय के पुत्र, इन्होंने तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न किया था और वर पाया था। ब्रह्मा के वर से नागराज की कन्या अहमोहिनी से इनका विवाह हुआ था और स्वर्ग से कुसुम और रत्न इनको मिले थे। इसी कारण इनका दिवोदास नाम पड़ा था। इन्होंने बहुत दिन तक काशी का राज्य किया था।

( ३ ) इनके प्रतर्दन नाम का एक पुत्र था। इनके पिता का नाम सुदेव था। आयुर्वंशीय सुदोत्र पुत्र काशी प्रथम राजा, इनके पुत्र काशिराज, या काश्य इनके नाम पर ही उस राज्य का काशी नाम पड़ा। उसी वंश में ईहय नामक एक राजा उत्पन्न हुए। यदुवंशीय ईहय के पुत्रों ने इन्हें मार डाला। उसके बाद सुदेव काशी के राजा हुए, वह भी ईहय वंशियों के द्वारा मारे गये। तदनन्तर उनके पुत्र दिवोदास काशी के राजा हुए और इन्होंने काशी को खूब यत्न पूर्वक सुरक्षित किया। उस समय काशी गङ्गा के उत्तर तीर और गोमती के दक्षिण तीर तक विस्तृत थी। मद्रक्षेत्र के पुत्र ने काशी पर चढ़ाई की और उसने युद्ध में दिवोदास को हरा दिया। तदनन्तर मद्रक्षेत्र के पुत्र दुर्दुम को दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने हराया। [मर।

दिवोकास तद् ( पु० ) स्वर्ग निवासी, देवता, देव,

दिव्य तद् ( वि० ) स्वच्छ, स्वर्गीय, सुन्दर, मनोज, ऐश्वर्य, ईश्वर सम्बन्धी। ( पु० ) शपथ।

—कारा ( वि० ) कोपप्राप्ति, शपथकर्ता।—कुण्ड

( पु० ) कामरूपी काम नाम पर्वत के पूर्वभागस्थ पुष्करणी विशेष।—गन्ध ( पु० ) गन्ध, लौंग।

—गायन ( पु० ) स्वर्गीय गायक, गन्धर्व।—जल

( पु० ) जलचक्र, उपचक्र।—शार्द ( प्र० )

अयाचित, उपस्थित, बिना मार्ग प्राप्त।—दृष्टि

( वि० ) अलौकिक ज्ञान सम्पन्न, सर्वज्ञ।—धर्मा

( वि० ) धार्मिक, धर्मात्मा, मनोज्ञ, मनोहर,

रम्य।—रत्न ( पु० ) चिन्तामणि।—रथ ( पु० )

व्योमयान, देवता का विमान।—रस तद् ( पु० )

पाग, पारद, रस।—लता ( स्त्री० ) दुर्वा।

—घसन, चक्र ( पु० ) सुन्दर वक्र, वक्र,

स्वर्गीय ( पु० )

—ज्ञान ( पु० ) उच्चल ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, महाज्ञान । —स्पर्शन ( पु० ) सुन्दर गृह, स्वर्गीय गृह, उत्तम वासस्थान ।

दिव्याङ्गना तत् ( स्त्री० ) सुन्दरी, वराङ्गना, मनोहरा स्त्री, उत्तमा सुन्दरी, स्वर्गीय स्त्री :

दिव्यादिव्य तत् ( पु० ) [ दिव्य + प्रदिव्य ] अलौकिक मनुष्य, देव तुल्य मनुष्य, नायक विशेष ।

दिव्योदक तत् ( पु० ) [ दिव्य + उदक ] आकाश जल, तुषार, हिम ।

दिशू तत् ( स्त्री० ) दिक्, पूर्व, आदि दस दिशाएँ ।

दिशा तत् ( स्त्री० ) दिग्, दिशा, दिक् । —शूल ( पु० ) दिक्शूल ।

दिशि तद् ( स्त्री० ) दिशा । —नाथ ( पु० ) विकपाल, दिशाघो के स्वामी । —प, पाल ( पु० ) दिक्पाल, दिशानाथ, लोकपाल, ( पु० ) दिशाघो के राता, दिग्पाल ।

दिश्य तद् ( वि० ) दिग्भूतं वस्तु दिग्भात, दिशाघो में अपन्न होनेवाली वस्तु, दिशा सम्बन्धी ।

दिष्ट तत् ( पु० ) भाग्य, दैव, निवर्त । ( वि० ) [ दिशू + क ] उपदिष्ट, उपदेश पाया हुआ । —वन्धक एक प्रकार के रहन या गिरवी रखने का ढंग इसमें महाजन को सिर्फ रुपये का ध्यान मिलता है । भुक् ( वि० ) भाग्याधीन, भाग्यकष्ट का भोग करने वाला । [ अव्यय ।

दिष्ट्या तत् ( अ० ) हर्ष, अतिशय आनन्द सूचक दिस ( पु० ) दिशा ।

दिसना ( क्रि० ) दिखना ।

दिम्ना ( स्त्री० ) दिसा ।

दिसैया ( पु० ) देखने या दिवाने वाला । [ विदेश, परदेश । दिशावर, दिसावर तद् ( पु० ) अपर देश, अन्य देश, दिशावरी या दिसावरी तद् ( वि० ) अपर देशीय, अन्य देशी, दूसरे देश का, दूसरे देश का माल । ( पु० ) एक प्रकार का पान ।

दिहरा दे ( पु० ) देवालय, देवस्थान, मन्दिर ।

दिहली तद् ( स्त्री० ) द्वार, देहली, देवड़ी दोनों किवाड़ों के नीचे की लकड़ी ।

दिहात ( स्त्री० ) देहात, गाँव । —नी ( पु० ) गँवैया, गाँव में रहनेवाला ।

दीक्षक तत् ( पु० ) दीक्षादाता, मन्त्रोपदेशकर्त्ता, गुरु, उपदेशक, मन्त्रदाता, धर्मोपदेशक ।

दीक्षा तत् ( स्त्री० ) भजन, पूजन, मन्त्र, संमन्त्र, गुरु मुख से अपने इष्टदेव का मन्त्र प्रत्यक्ष, उपदेश ।

—कर्त्ता ( पु० ) गुरु, उपदेशक, दीक्षाकारक ।

दीक्षित तत् ( वि० ) [ दीक्ष् + क ] उपदिष्ट, गृहीत-मन्त्र, भजन करने में प्रवृत्त, कान्यकृत्त प्राहाणों की एक भल, उपाधि । [ पढ़ना, दीठ पढ़ना ।

दीखना दे ( क्रि० ) दिखाई देना, सूचना, दीख

दीठ तद् ( स्त्री० ) दृष्टि, आँख, नेत्र, नयन, चक्षु, दर्शन, नाक । —यंद ( स्त्री० ) जादू, नतरयंदी ।

दीठा तद् ( पु० ) दृष्टा, दर्शन, देखने वाला ।

दीठि तद् ( स्त्री० ) दृष्टि, दर्शन, नेत्र, नयन ।

दीदा ( स्त्री० ) दृष्टि, नज़र, नेत्र ।

दीदार ( पु० ) दर्शन, मुलाकात, मेट । [ बड़ी बहिन ।

दीदी दे ( स्त्री० ) बड़ी बहिन, बड़ी ननद, पति की

दीधिति तत् ( स्त्री० ) किरण, राशी, तैम, न्याय के एक ग्रन्थ का नाम, पचपत्र मिश्र कृत एक न्यायग्रन्थ ।

दीन तत् ( वि० ) दरिद्र, निर्धन, निराध, दुःखी, ग्लान, भीत । —चेतन ( वि० ) विपण्य, अपमद्य, वहिष्प्रचित, व्याकुल मानस । —चेता ( पु० )

निरहङ्कार, अभिमान शून्य, सीधा सादा । —ता,

या ताई ( स्त्री० ) दरिद्रता, दुःख, अधीनता ।

—दयालु ( वि० ) दीनों पर दया करने वाला,

दीनशलक, दुखियों का दुःख दूर करने वाला ।

—नाथ ( पु० ) दीनपालक, दीनारक्षक । —ग्रन्थ

( पु० ) दीन पर कृपा करने वाले भगवान् ।

—वरसल ( वि० ) कारुण्यरामा, कृपालु, दयालु ।

दीनानाथ तत् ( पु० ) [ दीना + नाथ ] दीन के रक्षक,

दीन के स्वामी, भगवान् ।

दीनार तत् ( पु० ) स्वर्णालङ्कार, मुद्रा, निष्क परि-

माण, देर कर्ष परिमित मुद्रण, व्यवहार की

सुगमता के लिये मान करने की वस्तु, पचीस

रत्ती भर सोना, सोने के पुराने सिक्के का नाम ।

दीप तत् ( पु० ) प्रदीप, दिया, आलोक, जलती हुई

बत्ती की अभिप्रिया । —क तत् ( पु० ) [ दीप

+ यक् ] प्रकाशक, चोतक, शोभाकर, शोभा-

कारक । ( पु० ) दीप, दिवा, काग्यालङ्कार विशेष, जहाँ उपमान और उपमेय दोनों का एक ही धर्म वर्णन किया जाय, वह दीपक अलङ्कार है । इसके दो भेद हैं दीपक और आवृत्त दीपक । यथा:—

दोहा

वर्ण्य अवर्ण्यन को धरमु जहँ वरनत हैं एक ।

दीपक ताको कहत हैं भूपन सुकवि विवेक ॥

बदाहरण—

कामिनी कन्त सों, जामिनी कन्त सों,

दामिनी पावस मेघ घटा सों ।

कीरति दान सों, सुरति ज्ञान सों,

प्रीति बड़ी सनमान महासों ॥

भूपन भूपन सों तहनी,

नलिनी नव पूषन देव प्रभासों ।

जाहिर चारिहूँ ओर जहान,

कैसे हिंवान खुमान सिवासों ।

—शिवराज भूपण ।

—कज्जल ( पु० ) दिया की कजली ।—किट्ट

( पु० ) दीपक की कजली, काजल ।—तक ( पु० )

दीप वृक्ष, दीपों के द्वारा निर्मित वृक्षाकार

वस्तु विशेष जो दिवाली तथा अन्य उत्सवों में

बनाया जाता है ।—दान ( पु० ) दिया जलाना,

दीपोत्सव करना ।—ध्वज ( पु० ) कज्जल,

काजल ।—माला, मानिका ( स्त्री० ) दिवाली

का लोहार ।—वृत्त ( पु० ) फाड़ फाँस, बिछोरी

फाड़ ।—शिखा ( स्त्री० ) दीपक की ज्वाला ।

दीपन तत्त्वं ( पु० ) [ दीप + अनट् ] ( वि० ) अग्निवर्द्धक,

पाचक, दीप्तिकारक, प्रकाशक ।

दीपनी तत्त्वं ( स्त्री० ) यवानी, अजवाइन, अजमोदा ।

दीपनीया तत्त्वं ( स्त्री० ) औषध वर्ग विशेष, अज-

वाइन, अजमोदा । [ दीप्तियुक्त ।

दीपान्वित तत्त्वं ( वि० ) शोभान्वित, दीप्तिविशिष्ट,

दीपिका तत्त्वं ( स्त्री० ) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष,

रागिनी विशेष, दीपक, दीप ।

दीपित तत्त्वं ( वि० ) [ दीप् + इत् ] दीप्त, प्रज्वलित

शोभित, शोभान्वित, प्राप्त, प्रकाश, प्रकाशित ।

दीप्त तत्त्वं ( वि० ) [ दीप + क्त ] ज्वलित, प्रकाशित,

निश्चित, तीक्ष्णीभूत, दग्ध, परिवृद्ध, बढ़ा हुआ ।

—जिह्वा ( स्त्री० ) उष्णामुली, शृगाली ।

—लोचन ( पु० ) विडाल, माजार, विखली ।

दीप्तात्त तत्त्वं ( पु० ) [ दीप्त + अत् ] माजार, विडाल, मयूर, बिछा ।

दीप्ताग्नि तत्त्वं ( पु० ) [ दीप्त + अग्नि ] अगस्त्य मुनि ।

( वि० ) तीक्ष्ण ज्वरानल युक्त, प्रज्वलित अग्नि ।

दीप्ताङ्ग तत्त्वं ( पु० ) [ दीप्त + अङ्ग ] मयूर, मोर कलापी, खिली ।

दीप्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ दीप् + क्ति ] शोभा, प्रभा,

शुति, तेज, उजियाला, रोशनी, चमक, लाट, ली ।

सुन्दरता, वाय के वेग की तीव्रता, स्त्रियों के स्वभाव

सिद्ध गुण ।—मत्त्व ( वि० ) सप्रकाशता, दीप्ति ।

—मान् शोभाकर, उज्ज्वल, दीप्तियुक्त ।

दीप्तोपल तत्त्वं ( पु० ) [ दीप्त + उपल ] सूर्यकान्तमणि ।

दीप्यमान् तत्त्वं ( वि० ) प्रकाशमान्, प्रपद्य, प्रकाशयुक्त ।

दीमक दे० ( पु० ) वल्मीक, एक प्रकार की श्वेत

चौंटी, कीट विशेष, मिट्टी का भूह ।

दीप्यत दे० ( पु० ) चिराय दीपक रखने की काठ की

धनी वस्तु विशेष । [ दान सम्बन्धी वस्तु ।

दीप्यमान् तत्त्वं ( वि० ) जो दिया जाता है, वर्तमान

दीर्घ तत्त्वं ( वि० ) आयत, लम्बा चौड़ा, उलूक, उच्च,

बड़ा, पशुम, पक्ष, ससम, अष्टम राशि, त्रिमासिक

वर्ष, आ, ई, ऊ आदि ।—काय ( वि० )

आयत देह, लम्बा शरीरवाला ।—काल ( पु० )

अधिक समय, अनेक क्षण, चिरकाल, बहुकाल ।

—केश ( पु० ) लम्बे केश, लम्बी चाटी ।—प्रीति

( पु० ) उष्ट्र, ऊँट । ( वि० ) दीर्घकण्ठ, लम्बी

गरदन वाला ।—जङ्घा ( पु० ) सारस पक्षी,

ऊँट, बगला, वकपक्षी ।—जिह्वा ( पु० ) साँप,

सर्प । ( स्त्री० ) राजा विरोचन की कन्या ।

—जीवित ( पु० ) चिरायु, बहुत दिनों तक

जीनेवाला ।—जीवी ( पु० ) बहुत काल जीवी,

चिरजीवी । ( पु० ) अश्वत्थामा, यक्षि, ध्यास,

हनुमान्, विभीषण ।—तमा ( पु० ) एक महर्षि

का नाम, उतथ्य महर्षि के पुत्र, ये जन्मान्ध

थे ।—तक ( पु० ) ताड़वृक्ष, ताड़ का पेड़, जंघा

वृक्ष ।—दण्ड ( पु० ) परण्ड वृक्ष, रेडो का वृक्ष ।

—दर्शी ( वि० ) दूरदर्शी, पारदर्शी, दूरन्वेशी ।

—दृष्टि ( वि० ) दूरदर्शी, बहुत, प्रवीण । ( पु० )  
परिहृत, गृध्रपक्षी ।—नाद ( पु० ) शब्द ।—निद्रा  
( स्त्री० ) मृत्यु, मरण, कालधर्म ।—निश्वास  
( पु० ) मानसिक कष्ट बतलाने वाला, प्रबल  
श्वास ।—पत्रक ( पु० ) जहसुन, लाल जहसुन,  
पुनर्नया ।—पत्रा ( स्त्री० ) वृक्ष विशेष, चिरपोटा ।  
—पुष्पक ( पु० ) मदार, आक, अकवन ।—पृष्ठ  
( पु० ) सर्प, विषपर ।—मूल ( पु० ) सालवर्षी,  
जवासा ।—मूलक ( पु० ) ओषधि विशेष ।  
विभारा ।—रद ( पु० ) सुहर, शूकर, यराह ।  
—रसन ( पु० ) सपे, मुज्ज, उरग, अहि ।  
( वि० ) गद्दी जीमवाला, ।—रोमा ( पु० ) श्वश्रु,  
भयशुक्र, भाहु ।—वंश ( पु० ) नल, लृण विशेष,  
खस ।—वक्र ( पु० ) हाथी, हस्ति ।—वर्ण्य ( पु० )  
दीर्घ स्वर ।—सकृधि ( पु० ) शकट, गाड़ी, रथ ।  
—सत्र ( पु० ) यज्ञ विशेष, तीर्थ विशेष ।  
—सन्धानी ( वि० ) दूरदर्शी, सूक्ष्ममति ।  
—सन्ध्या ( पु० ) निथ सत्कार किया ।  
—स्थी ( वि० ) शिथिल, गालस, आलसी, चिर-  
क्रिया, विलम्ब से काम करने वाला ।

दीर्घाकार तत्त्वं ( वि० ) दीर्घ आकृति युक्त, बृहदाकार ।  
दीर्घाङ्गा तत्त्वं ( पु० ) दीर्घवर्ण, अम्बा मार्ग ।  
दीर्घायु तत्त्वं ( वि० ) चिरंजीवी, दीर्घजीवी, बहुत  
दिनों तक जीने वाला परमायुष्य । ( पु० )  
शाश्वत वृक्ष, सेमल का पेड़, काक, मार्कण्डेय  
मुनि, सप्त चिरंजीवी ।

दीर्घिका तत्त्वं ( स्त्री० ) जलाशय विशेष, तीन सौ  
धनुष के परिमाण का तलाव, वापी, बावड़ी, दिग्घी ।  
दीर्घ्य तत्त्वं ( पु० ) [ द + क ] विदारित, भग्न, कटा, टूटा ।  
दीर्घत दे० ( स्त्री० ) दीर्घ रखने का आधार, पीतल,  
लकड़ी या मिट्टी की बनी एक प्रकार की वस्तु  
जिस पर दिया रखा जाता है ।

दीर्घतो दे० ( स्त्री० ) छोटा दिया ।  
दीर्घान दे० ( पु० ) राज का मुख्य सचिव ।  
दीर्घा दे० ( स्त्री० ) दीया, दीपक ।

दीर्घाली दे० ( स्त्री० ) चमड़े की पट्टी, दीपमालिका,  
स्योहार विशेष जो कार्तिक की अमावस्या को  
होता है ।

दीसना तत्त्वं ( स्त्री० ) दीख पड़ना, प्रत्यक्ष होना  
सूचना ।

दीसा तत्त्वं ( स्त्री० ) देखा ।

दीह तत्त्वं ( वि० ) दीर्घ, बड़ा, लंबा, बृहत् । यथाः—  
दोहा ।

दीह दीह दिग्गजन के केशव मने कुमार ।

दीन्हें राजा दशरथहिं दिग्गपालन लणहार ॥

—रामचन्द्रिका ।

दुः तत्त्वं ( स्त्री० ) यह जिन शब्दों के आदि में आता  
है वे शब्द निन्दार्थ बोधक हो जाते हैं, यथा—  
दुर्जन, दुःशील आदि । कहीं कहीं कठिना बोधक  
अर्थ को भी यह बोधन करता है ।—दुर्गम,  
दुराराध्य, दुरागोह, दुःसाधन आदि ।

दुःख तत्त्वं ( पु० ) पीड़ा, क्लेश, कष्ट, व्यथा, मन का  
एक धर्म विशेष, शोक, सन्ताप, मन का मोम ।  
कर तत्त्वं ( वि० ) दुःखदायी, क्लेश कर ।  
—मय ( वि० ) सम्भव, पीड़ा युक्त, दुःखी ।  
मोक्ष ( पु० ) परिश्रम, रक्षा ।—सागर ( पु० )  
शोकार्णव, संसार, अधिक शोक । [ शोक ।

दुःखदा दे० ( पु० ) आपत्ति, आपदा, दुर्गति, व्यथा,  
दुःखदाई दे० ( वि० ) दुःखदाता, क्लेशकारी ।

दुःखदाता तत्त्वं ( वि० ) दुःख देनेवाला, क्लेश  
दायक । [ व्यथा होना ।

दुःखना दे० ( स्त्री० ) पीड़ा होना, दुःख पहुँचना,  
दुःखाना दे० ( स्त्री० ) पीड़ा देना, कष्ट देना, दुःख  
पहुँचाना ।

दुःखान्त तत्त्वं ( पु० ) दुःख का अन्त, दुःख का अन्त  
सान, नाटक विशेष जो दुःखद घटना से समाप्त  
किया गया हो ।

दुःखित तत्त्वं ( वि० ) पीड़ित, दुःखी, दुःखिया ।

दुःखिया दे० ( वि० ) वरिष्ठ, क्लेश, दुःखी ।

दुःखियारा दे० ( वि० ) दुःखित, पीड़ित ।

दुःखी तत्त्वं ( वि० ) क्लेशभाक्, दुःखान्वित, दुःखयुक्त  
दुःखिया ।

दुःशाला तत्त्वं ( स्त्री० ) अन्धराज घतराष्ट्र की कन्या  
दुर्योधन की छोटी बहिन, यह सिन्धुदेश के राजा  
जयद्रथ को व्याही थी इसके पुत्र भा नाम सुरय  
था । महाभारत के युद्ध में अर्जुन के हाथ से

जयद्रथ मारा गया था । उस समय उसका पुत्र सुरथ वचा था, अतएव दुःशला ही सिन्धुदेश का शासन करती थी । पाण्डव अश्वमेध यज्ञ के समय यज्ञ का घोड़ा लेकर घूमते घूमते सिन्धु-देश गये, उनके आने का समाचार पाते ही सुरथ के प्राण पखेरू उड़ गये । यह सुनकर अर्जुन ने सुरथ के नाशजिम पुत्र को सिन्धुदेश के राज्या-सन पर बैठा दिया ।

दुःशासन तत् ( वि० ) अवाप्य, अवश, मनमानी करने वाला, जिसका शासन करना कष्टप्रद या दुस्साध्य हो । ( पु० ) धनराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन का छोटा भाई दुर्योधन सब समय हस्ती की सम्प्रति से काम करता था । यही कुरुक्षेत्र के युद्ध का मूल कारण था और में पाण्डवों के हार जाने पर दुःशासन ने ही केश पकड़ कर द्रौपदी को सभा में लाकर उसे नंगी करने की चेष्टा की थी । किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण की सहायता से द्रौपदी की मानरक्षा हुई थी, इधर दुःशासन द्रौपदी का वस्त्र खींचने लगा और उधर वस्त्र बढ़ने लगा । वस्त्र खींचते खींचते दुःशासन काँप गया और वस्त्र द्रौपदी को छोड़ दिया । इस अपमान को चुकाने के लिये भीमसेन ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक दुःशासन का वक्षस्थल फाड़ कर रक्त न पीजँगा और उस रक्त से द्रौपदी का केश न रंगूँगा तब तक द्रौपदी के घाल खुजे रहेंगे । महाभारत के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी ।

दुःशील तत् ( वि० ) दुष्ट स्वभाव, दुश्चरित्र, कुशील, दुराचारी ।

दुःश्रव ( पु० ) काव्य का श्रुति कटु दोष ।

दुःसप्त तत् ( वि० ) असप्तसप्त, अन्याय अयोग्य, अकालिक, अकार्यकाल । [समय ।

दुःसमय तत् ( पु० ) असमय, विपत्काल, दुःख का दुःसह तत् ( वि० ) असह, जो सहा न जाय, उक्त, अति कठिन, अतिशय दुःखदायक ।

दुःसाध्य तत् ( वि० ) दुःख से निष्पादन करने योग्य, कष्टसाध्य, बहुत परिश्रम से सिद्ध होने योग्य, कठिन, दुष्कर बढ़ी कठिनाई से सिद्ध होने योग्य ।

दुःसाहस तत् ( पु० ) अतिशय साहस, अधिक मानसिक दृढता, उत्कट साहस, निर्भयता ।

दुःसाहसी तत् ( वि० ) असप्त साहसी, अत्यन्त उत्साही, अपरिणामदर्शी, असावधान, प्रमत्त ।

दुःस्वर्णा तत् ( स्त्रीः ) कपिकण्डू, कवाळ, जवाला ।

दुःस्वप्न तत् ( पु० ) कुस्वप्न, अशुभ सूचक स्वप्न ।

दुःस्वभाव ( पु० ) बदमिजाज्जुं हरे स्वभाव वाला, बदचलन । [में हो ।

दुःश्रावा ( पु० ) वह भूलण्ड जो दो नदियों के बीच दुष्प्रार या दुष्प्रारा तद् ( पु० ) द्वार, फाटक, दरवाजा, डेवड़ी ।

दुइ ( पु० ) दो ।

दुइज ( स्त्री० ) द्वितीया तिथि ।

दुई तद् ( स्त्री० ) द्वैत, भेद बुद्धि ।

दुकड़हा ( पु० ) दो कौड़ी का, नीच, अधम, तुच्छ ।

दुकड़ा दे० ( पु० ) पैसे का चौथा भाग, दमड़ी, छद्म ।

दुकड़ी दे० ( स्त्री० ) भुलस, ठाठी, कड़ियाली ।

दुकान दे० ( स्त्री० ) हाट, बजार जहाँ सौदा रखा और बेचा जाता है ।—द्वार ( पु० ) दुकान का मालिक ।—द्वारी ( स्त्री० ) हाट बाजार का काम ।

दुकाल तद् ( पु० ) दुष्काल, दुर्भिक्ष, काल, महंगी, अन्नहानि ।

दुकूल तत् ( पु० ) कपड़ा, वस्त्र, रेशमी कपड़ा, चोम, वस्त्र, पटवस्त्र, उत्तरीय वस्त्र, उपरना, हुपट्टा, ओढ़ने का वस्त्र नदी के दोनों किनारे, पिता और माता के दोनों कुल ।

दुकूल ( पु० ) जिसके सामने और भी कोई हो ।

दुकड़ ( पु० ) वाता विशेष जो तपते जैसा होता है ।

दुका ( पु० ) जो अकेला न हो । ताश का एक पत्ता विशेष ।

दुखंडा ( पु० ) दुतण्डा, दो खण्ड का मकान ।

दुख ( पु० ) दुःख ।

दुखद ( पु० ) दुःखदायी ।

दुखदुंद ( पु० ) दुःख और उश्यात ।

दुखना ( स्त्री० ) पीड़ा होना ( पु० ) देखने वाला ।

दुखारा ( पु० ) पीड़ित, दुःखिया ।

दुखारी ( पु० ) व्यथित, दुःखी ।

दुखिया या दुखियारा ( गु० ) दुःखी ।  
दुगई दे० ( स्त्री० ) बिपारी, कैची, जिसके सहारे झुप्पर  
खड़ा किया जाता है ।

दुगुन, दुगना तद्० ( गु० ) द्विगुण, दोहरा, दूना ।

दुगुणा तत्० ( पु० ) द्विगुण, दूना ।

दुग्ध तत्० ( पु० ) दूध, घीर, पय, स्तन्य ।—प्रद  
( वि० ) क्षीरप्रद, दुग्धार, बहुदुग्ध । [ दिनेवाली गाय ।

दुग्धगती तत्० ( स्त्री० ) क्षीरस्तनी, क्षीरिणी, दूध

दुग्धिका तत्० ( स्त्री० ) दूधिया, एक प्रकार का पौधा ।

दुग्धिनी तत्० ( स्त्री० ) कड़वी तुंगी ।

दुग्धी तत्० ( स्त्री० ) दुधिया पौधा, सेहुंड, सेहुण्ड ।

( पु० ) दुग्धमय, पायस, क्षीर, तसई ।

दुचित्त, दुचित्ता तद्० ( वि० ) द्विचित्त, दुकीभाप्रस्त,  
भ्याकुल, उद्विग्न, सहाय, सन्देहान्वित, दुर्वर्ध ।

दुचित्ताई तद्० ( स्त्री० ) चिन्ता, दुविधा, सन्देह,  
भ्याकुल, उद्विग्नता, द्वैधिल ।

दुन दे० ( भ० ) निषेधार्थक तथा अयमानार्थक अण्वय ।

दूर हो, चला जा, निहो जादि के अर्थ में इसका

प्रयोग किया जाता है ।—कार ( पु० ) किड़की,

घुड़की, ताड़ना, धमकी ।—फारी ( स्त्री० ) हुतकार,

डाँट साँव, ताड़ना, घुड़की ।—द्वयक ( वा० )

घुड़की, धमकी, डाँट, ससिना, ताड़ना, शिषा देना,

सिखाना, शासन करना । [ अचीन करना, डाँटना ।

दुत्ताना, दुताना दे० ( क्रि० ) दशाना, वश करना,

दुति तद्० ( स्त्री० ) घुति, शोभा, चमक, प्रकाश प्रभा ।

दुतिवन्त तद्० ( वि० ) घुतिमान्, भड़कीला, चमकदार,

शोभायमान । यथा—

दुतिवन्त का विपक्ष घुति कीर्णों ।

धरणी कह इन्दुव्यू गहि दीर्घों ॥

—शामसुन्दरी ।

दुदही, दुद्धि दे० ( स्त्री० ) एक पौधे का नाम जो  
दवा के काम में आता है । [ दो भेद ।

दुधा तद्० ( भ० ) द्विधा, दो प्रकार, दो रीति,

दुधार दे० ( स्त्री० ) बहुदुग्धदा, बहुत दूध देने वाली,

जो गाय बहुत दूध देती है ।

दुधैत दे० ( वि० ) बहुत दूध देनेवाली ।

दुनी दे० ( स्त्री० ) रामायण में यह शब्द दुनिया के  
अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

दुन्द तद्० ( पु० ) द्वन्द्वयुद्ध, मलयुद्ध, परस्पर युद्ध,  
कलह, विवाद ।

दुन्दुमि तत्० ( पु० ) मगरा, डंठा, धौंसा, महिपल्ली

दानव, बानरगात्र बालि ने इसे मारकर अष्टमूक

पर्वत पर फेंक दिया था । यह देवदर मतल्ल मुनि

ने उसको शाप दिया, तभी से बालि अष्टमूक पर्वत

पर नहीं जा सकता । मतल्ल मुनि का यह शाप

सुग्रीव के लिये अमृत के समान हुआ था, बालि

के डर से भाग का सुग्रीव ने यहीं शरण ली थी ।

दुपट्टा दे० ( पु० ) छेड़ने का शब्द, स्वनाम प्रसिद्ध

यस्य विशेष ।—तान के सेना ( वा० ) निश्चित

होकर रहना, आलस में पड़ा रहना, काने योग्य

काम ग करना, असावधान रहना, ध्यान देने

योग्य विषय पर उदासीन होना ।—दिलाना

( वा० ) सहेत करके किसी को बुलाना, या कुछ

कहना, युद्ध के समय सन्धि के लिये इशारा

करना । अत्रकाश मीनने का सहेत ।

दुपद तद्० ( पु० ) द्विपद, दो पैर बाटा, मनुष्य ।

दुपहर ( पु० ) मध्याह्न ।

दुपहरिया दे० ( स्त्री० ) मध्याह्न, अथवा मध्यरात्रि,

पुष्करविशेष, आतिशयाग्नी विशिष्ट । [ सन्दिग्ध ।

दुफपजो ( गु० ) दोनों फसलों में उत्पन्न होने वाला

दुबकना ( क्रि० ) छिपना, लुप्ताना ।

दुबलाना ( क्रि० ) दुबला होना, बीमार होना ।

दुबला तद्० ( वि० ) दुबल, चाण, निर्बल, बल

रहित, पतला ।

दुबलाई दे० ( स्त्री० ) दुबलता, दुबलापन, निर्बलता ।

दुविद ( द्विविद ) तद्० ( पु० ) एक बानर का नाम

जो सुग्रीव की सेना का एक सेनापति था ।

दुविधा दे० ( स्त्री० ) सन्देह, शङ्का, भ्रम, अनिश्चय

ज्ञान, दुभाव ।

दुविधि तद्० ( स्त्री० ) दो प्रकार, दो भाँति, दो रीति ।

दुभाव तद्० ( पु० ) दुविधा । [ भाषा का वेता ।

दुभाषिया दे० ( पु० ) दो भाषा जानने वाला, दो

दुमुख तद्० ( पु० ) राक्षस विशेष, दो मुखवाला ।

दुर् तत्० ( भ० ) निषेध, दुःख, अवपेक्षण, मित्रा,

अशुभ, दुर्दिन, दुर्बल आदि । “ गु ” अण्वय के

विग्रीत अर्थ यह बतलाता है ।—अतिक्रम

( वि० ) दुस्तर, कठिन, जिसका अतिक्रम दुःख से  
 किंवा जाय ।—अन्त्यय ( वि० ) अगम्य, दुर्गतर,  
 दुर्गम, मद्धट, दुस्तर, जिसके पार जाना कठिन हो ।  
 —अष्टाष्ट ( पु० ) दुर्भाग्य, बुरे दिन ।—अधिगम  
 ( वि० ) दुष्प्राप्य, जिसकी प्राप्ति दुःख से हो ।  
 —अन्त ( वि० ) दुष्ट, उपद्रवी, अव्याप्य ।—अव-  
 स्था ( स्त्री० ) दुर्दशा, आपद् की दशा, विपत् का  
 समय ।—आग्रह ( पु० ) निर्वन्ध, अभिनिवेश,  
 निन्दित हठ, किसी बात पर बलरपकड़ ।—आचार  
 ( पु० ) कुल्यवहार, कदाचार, विरुद्धाचरण,  
 कुनीति ।—आचारी ( वि० ) अन्यायी, दुःशील,  
 लम्पट ।—आत्मा ( वि० ) पापारमा, निर्दय, दुष्ट,  
 उपद्रवी, क्रूर, पापी ।—आधर्ष ( वि० ) प्रगल्भ,  
 अहङ्कारी, दुर्गम, भयङ्कर । ( पु० ) पीली सरसों ।  
 —आप ( वि० ) दुष्प्राप्य, दुर्लभ, दुःख से पाने  
 योग्य ।—आरोह ( वि० ) दुःख से आरोहण  
 करने योग्य, ऊँचा पेड़, जिस पर दुःख से चढ़ा  
 जाय ।—आलाप ( पु० ) कटुवाक्य, बुरी बात,  
 गाली ।—आलोक ( पु० ) दुर्निरीक्ष्य, दुर्दर्श,  
 अति कष्ट से देखने योग्य ।—आशय ( वि० )  
 क्रूर, दुष्ट मानन ।—आशा ( स्त्री० ) बुरी आशा,  
 नहीं पूर्ण होने योग्य आशा ।—आसद ( वि० )  
 दुष्प्राप्य, दुर्लभ ।

दुर्ह दे० ( कि० ) विपत्ता है, लुकता है ।

दुर्ना दे० ( कि० ) क्षिपना, लुकना, भगना, पलाना,  
 पलायन करना । [ भेद भाव रखना ।

दुराना दे० ( कि० ) छिपाना, गुप्त रखना, लुकाना,  
 दुरालाप तद्० ( पु० ) गाली, दुर्वचन ।

दुरास दे० ( पु० ) लुब्ध, क्षिपाव, झल, कपट ।

दुरित तद्० ( पु० ) पाप, कलुष, अपराध, दोष, अधर्म ।

दुरिष्ट तद्० ( वि० ) अतिमन्द, अतिगहननिन्दित, महापापी,  
 पापिष्ठ, दुष्ट । [ एक दाव, दुभा, हटी, क्षिपी ।

दुरी दे० ( स्त्री० ) खेल में दौ पड़ना, जुए के खेल का  
 दुरक्त तद्० ( पु० ) शाप, गाली, दुर्वचन ।

दुरक्ति तद्० ( स्त्री० ) दुर्वाध कथन, बार बार कहना,  
 एक बात को दो प्रकार से दो बार कहना । अनु-  
 चित रीति से कहना, जैसे गँवार बोलते हैं, भोजन  
 खोजने, दूध ऊध आदि ।

दुखला दे० ( वि० ) दौमुखी, दोनों ओर एक ही सा,  
 जिस वस्तु का दोनों बानू एक समान हो ।

दुर्गतर तद्० ( वि० ) दुरतिक्रम, दुर्लभ्य, दुःख से  
 तरने योग्य, निरुत्तर, अपरिहार्य ।

दुरेफ तद्० ( पु० ) द्विरेफ, अमर, मौंरा ।

दुरोदर तद्० ( पु० ) जुभा, जुभा का खेल ।

दुर्ग तद्० ( पु० ) गढ़, कोट, किला ।—अध्यत्त ( पु० )

[ दुर्ग + अध्यत्त ] दुर्गारक, गढ़ का रखवारा,  
 किलादार, किले का स्वामी । [ कंगाल ।

दुर्गत तद्० ( वि० ) विपन्न, दुर्बस्था, दुखी, दरिद्र,

दुर्गति तद्० ( स्त्री० ) विपत्ति, दुःख, कुगति, बुरी

अवस्था, नलेश, दुर्बस्था, दुर्दशा दरिद्रता, कंगाली ।—

नाशिनी ( स्त्री० ) दुःखहारिणी, भगवती दुर्गा ।

दुर्गन्ध तद्० ( स्त्री० ) } दुष्ट गन्ध, बुरी बास,

दुर्गन्धि तद्० ( स्त्री० ) } कुयास, कुमहक ।

दुर्गन्धा तद्० ( स्त्री० ) ललाण्ड, प्याज ।

दुर्गम तद्० ( वि० ) कष्टगम्य, दुःख से जाने योग्य,  
 औघट, वीहृद्, वीरान, अजय, न प्राप्त होने योग्य ।

—ता ( स्त्री० ) गम्भीरता, कठिनता, औघटपन ।

दुर्गा तद्० ( स्त्री० ) हिमालय की कन्या, भगवती,

शक्ति विरोध, आधा शक्ति, दुर्गा नामक असुर के

विनाश करने से हुनका दुर्गा नाम पड़ा है । देव-

ताओं को स्वर्ग से निकाल कर महिषासुर स्वर्ग का

राजा बन बैठा । इससे दुखी होकर देवता ब्रह्मा के

निष्ठ गये, ब्रह्मा देवताओं को साथ लेकर महादेव

के पास गये, देवताओं की दुःख कहानी सुन कर

महादेव ने क्रोध किया और उनके मुख से एक

उवाचि प्रकट हुई, इसी प्रकार सभी देवों के शरीर

से एक एक उवाचि प्रकट हुई और उस उवाचि

समुदाय ने एक स्त्री का रूप धारण किया । देवों

ने अपने अपने अस्त्र शस्त्र उस रमणी को दिये,

उसी स्त्री ने महिषासुर का नाश किया था । आधा-

शक्ति देवी महिषासुर के सामने जख लड़ने को

उपस्थित हुई थीं, तब उससे महिषासुर ने कहा

था—देवी आप मुझको मारोगी, इसका मुझे कुछ

भी कष्ट नहीं है, परन्तु आपके साथ साथ मेरी भी

संसार में पूजा हो इसकी व्यवस्था आपको करनी

चाहिये । देवी ने “ तथास्तु ” कहा ।

—नवमी ( श्री० ) तिथि विशेष, एवं विशेष, फार शुद्धरात्र की नवमी, नवरात्र की नवमी ।  
 दुर्गामी तद्० ( वि० ) कुनामी, कुनागामी, दुराचारी ।  
 दुर्गावती दे० ( श्री० ) चित्तौर के महाराज सांगा की कन्या, बेसिन के राजा सिलोढ़ी को यह ब्याही गई थी । गुनरात के सूबेदार बहादुरशाह ने १५३१ ई० में सिलोढ़ी को पकड़ कर सुसलमान बना दिया । सिलोढ़ी के छोटे भाई लक्ष्मण ने कुछ दिनों तक बड़ी वीरता से लड़ कर गड़ की रक्षा की थी, परन्तु अन्तर्गत सुसलमान सेना से गड़ बचाना कठिन समझ कर उसने सुसलमानों को गड़ दे देना स्थिर कर लिया । राजमहिषी दुर्गावती ने सुसलमानों के हाथ पड़ने से मर जाना ही अच्छा समझ कर ७०० सौ राजपूत स्त्रियों के साथ अग्निकुण्ड में शरीर भस्म कर दिया ।  
 ( २ ) चन्देल राजपूत महोबा के राजा की कन्या । महोबा हमीरपुर जिला का एक मुख्य जनपद है । दुर्गावती के रूप तथा गुण की प्रशंसा सुनकर गौर जाति के राजपूत राजा दत्तपत्साह ने इनके साथ विवाह करने का पैगाम पठाया, परन्तु महोबा के राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया । दत्तपत्साह सेना लेकर चढ़ आये और महोबा के राजा को परास्त कर उन्होंने दुर्गावती के साथ अपना विवाह किया । परन्तु दत्तपत्साह बहुतदिन तक दुर्गावती के साथ नहीं रह सके । विवाह होने के ३ वर्ष के बाद ही दुर्गावती विधवा हो गयी । उस समय उनके ३ वर्ष का एक पुत्र था । उसी अपने पुत्र की रक्षक होकर यह गड़ मण्डल राज्य का शासन काने लगी । इनके शासन काल में राजा और प्रजा दोनों सुखी हुए । दुर्गावती का यह सुख भी तिथि से नहीं देखा गया, इनके राज्य के सुखी होने का समाचार दिल्ली के बादशाह अकबर ने सुना । अर्पेलोलुप अकबर की आज्ञा से मध्यप्रदेश से इनके मेनावति आसफखान ने १८०० सेना लेकर गड़मण्डल की राजधानी सिंहगढ़ पर चढ़ाई की । प्रथम दिन के युद्ध में विजयलक्ष्मी महारानी की ओर रही, परन्तु दूसरे दिन के युद्ध में हाथी पर चढ़ी हुई रानी आहत हुई । उनके शरीर में दो

बाण लगे । उनकी यह अवस्था देखकर सेना भागने लगी । युद्ध में जय की आज्ञा न देखकर महारानी ने महावत से संकुल लेकर उसी के द्वारा युद्धभूमि में प्राणत्याग दिये ।  
 दुर्गद ( पु० ) जो जल्दी पकड़ में न आ सके । ( पु० ) अपामार्ग, चिचड़ी, अँधामारा ।  
 दुर्घट तत्० ( वि० ) कष्टसाध्य, दुःसाध्य, अति कठिन, जिसकी सिद्ध अति कष्ट से हो, न जीतने योग्य ।  
 दुर्घटना तत्० ( श्री० ) दुष्ट घटना, दुःख की घटना, विपत्तयाम ।  
 दुर्जन तत्० ( वि० ) क्रूर, दुष्ट, खल, क्रूरित आचार वाला, अधम, नीच, छोटा मनुष्य, लुच्चा । —ता ( श्री० ) क्रूरता, दुष्टता, अधमता, शत्रुता ।  
 दुर्जनताई तद्० ( श्री० ) दुर्जन का कर्म, क्रूरता, दुष्टता, दुष्टाई ।  
 दुर्जय तत्० ( वि० ) दुष्ट से जीतने योग्य, दुर्दम, कष्ट से दमन करने योग्य, अपराधायी । ( पु० ) प्रवजशत्रु ।  
 दुर्जय ( पु० ) जिपका जीतना बहुत कठिन हो ।  
 दुर्सेय ( पु० ) दुर्बोध, कठिनाई से जानने योग्य ।  
 दुर्दम तत्० ( वि० ) दुर्दम्य, दुर्जयी, दुर्दमनीय, दुःख से दमन करने योग्य, प्रबल, पराक्रमी, अयश ।  
 दुर्दशा तत्० ( श्री० ) दुर्गति, विपत्ति, हीन अवस्था ।  
 दुर्दांत तत्० ( वि० ) दुरन्त, अशान्त, प्रबल, भयङ्कर, भयानक । [ मेघाशुत दिन ।  
 दुर्दिन तत्० ( पु० ) कुदिन, पानी यादल का दिन, दुर्दैव तत्० ( पु० ) दुर्भाग्य, कुभाग्य, अभाग ।  
 दुर्दर्प ( पु० ) निलज, दुष्ट ।  
 दुर्नाम तत्० ( पु० ) अकीर्ति, अयश, अपयश, कुनामा, निन्दा, अपशंसा, बदनामी ।  
 दुर्नामा तत्० ( पु० ) अशं रोग, बवासीर ।  
 दुर्नामी तत्० ( पु० ) अपयशी, बदनाम ।  
 दुर्निवार तत्० ( वि० ) जो बहुत कष्ट से निवारण किया जाय । [ असचरित, कुचरित, कुसमाय ।  
 दुर्नीति तत्० ( श्री० ) अन्याय, कुनीति, कुम्वहार, दुर्वचैत तद्० ( वि० ) दुश्चिन्ता, उद्विग्न ।  
 दुर्वल तत्० ( वि० ) दुबला, बल रहित, निर्बल अशमय, बलहीन, कमजोर, वेदम । —ता ( श्री० ) बलहीनता, अशामर्थ्य, निर्बलता ।



दुर्मेगा तत् ( श्री० ) पति स्नेह रहिता, माय्यहीना श्री, अभिय भार्या ।

दुर्माय्य तत् ( पु० ) दूरदृष्ट, अभाय्य, मन्दभाय्य ।

दुर्भाष तत् ( पु० ) दुष्टभाष, दुष्ट, अभिप्राय, निन्दित स्वभाव ।

दुर्भित्त तत् ( पु० ) अकाल, कुसमय, महँगी ।

दुर्नति तत् ( श्री० ) कुबुद्धि, मन्दबुद्धि अज्ञान, मूर्खता ।

दुर्नद तत् ( वि० ) मस्त, चढझूरी, घमण्डी, तमो-गुप्तयुक्त, मतवाला, एक राक्षस का नाम ।

दुर्मेगा तत् ( वि० ) उद्भिन्नचित्त, अन्यमनस्क, चिन्तित, भावित, उदास, विमर्ष, स्तब्ध ।

दुर्मुख तत् ( पु० ) बानर विशेष, घोरक, महिषासुर का सेनापति विशेष । ( पु० ) दुर्भावी, कठोर वचन बोलने वाला, कुडीर ।

दुर्मुख तत् ( पु० ) दसनी, मुगा, सुन्दर ।

दुर्मुख्य तत् ( वि० ) महँगा, बहुमूल्य, बहुतमूल्य का ।

दुर्मेधा तत् ( वि० ) मेधाहीन, दुर्बुद्धि, अज्ञानी ।

दुर्योग तत् ( पु० ) घुरा समम, मेवाच्छन्न दिन अनेक अष्टम सूचक वाधक योगों का मेल, कुयोग, दुःसमय, कुमहत्त ।

दुर्योनि तत् ( वि० ) नीचवंशोद्भव, नीच वंश में उत्पन्न, अन्यत्र, पतित जाति, अपृथ्व्य जाति ।

दुर्योधन तत् ( पु० ) [ दुर + युध् + अनट् ] एतद्राष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र, महाभारत के युद्ध में पेढी कौरव दल के नेता थे । यह भीम के समवयस्क थे, भीम के बलवीर्य आदि देवकर वे जरा करते थे । पाण्डवकाल में खेल में दुर्योधन ने भीम को विप देवकर समुद्र में फेंकवा दिया था, बासुकी के प्रयत्न से भीम के प्राणों की रक्षा हुई थी । राजा एतद्राष्ट्र ने अपने ज्येष्ठ भतीजे युधिष्ठिर को युवराज बनाना चहा था, परन्तु दुर्योधन के विरोध करने से यह नहीं हो सका । दुर्योधन की सम्मति से एतद्राष्ट्र ने पाण्डवों को हस्तिनापुर से निकाल कर वारणास्य नामक नगर में भेज दिया । वारणास्य में पाण्डवों को जला देने की ह्मत्ता से दुर्योधन ने त्यागागुद वनवास था, परन्तु उनकी ह्मत्ता सफल न हुई । यहाँ से भाग कर पाण्डव पाञ्चाल राज्य में चले गये । इस राज्य के राजा द्रुपद थे, द्रुपद

के साथ कौरवों की युगानी शत्रुता थी, द्रुपद की कन्या द्रौपदी का पाण्डवों के साथ विवाह होने पर वह शत्रुता और भी बढ़ गई । द्रौपदी के स्वयम्भर में अनेक छोटे बड़े राजा निमन्त्रित हुए थे । कौरव भी गये थे । एक एक करके कौरवों ने लक्ष्य वेध करने का प्रयत्न किया, परन्तु विफल हुए । पाण्डव भी घ्राह्यण वेध में वहाँ उपस्थित थे अन्त में छत्र-वेधधारी अर्जुन ने लक्ष्य भेद किया और द्रौपदी उन्हीं को मिली । एतद्राष्ट्र ने पाण्डवों को बुला कर उन्हें आधा राज्य दे दिया और ह्मत्प्रस्थ में उनकी राजधानी बना दी । वहाँ पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया, इनका यज्ञ बड़ी भूमधाम से समाप्त हुआ । द्रुष्ट दुर्योधन से यह नहीं देखा गया । उसने शकुनि से मित्र कर धर्मार्थमा युधिष्ठिर को युष्ठा खेलने के लिये बुझाया । शकुनि के छत्र से युधिष्ठिर राज्य हार गये, पुनः द्रौपदी दाँव पर रखी गई उसे भी हार गये । दुर्योधन ने भरी सभा में द्रौपदी को अपमानित किया । द्रौपदी का अपमान देखकर भीम ने दुःशासन का वचस्पल और दुर्योधन का वच सोझने की प्रतिज्ञा की, वीर भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी । दुर्योधन ने पाण्डवों को १३ वर्ष के लिये वन में भेज दिया । एक समय पाण्डवों को अपनी प्रभुता दिखाने के लिये दुर्योधन से घोष-यात्रा की, परन्तु वहाँ चित्रसेन नामक गन्धर्व के द्वारा वे बन्दी हुए । इनका समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने भीम और अर्जुन को उनकी रक्षा के लिये भेजा । इन लोगों ने दुर्योधन को कैद से छुड़ाया । दुर्योधन इससे बहुत लज्जित हुआ । परन्तु उसने पाण्डवों के इस उपकार का बदला उपकार के द्वारा लुप्ताना निश्चित किया । पाण्डवों के वनवास की अवधि समाप्त हुई । उन्होंने श्रीकृष्ण को दुर्योधन के पास आधा राज्य लौटा देने का प्रस्ताव करने के लिये भेजा । परन्तु अभिमानी द्रुष्ट दुर्योधन ने बिना युद्ध के एक दिनके के बाँधर भी भूमि देना न चाही । अतः युद्ध हुआ उसमें कौरवों का सर्वनाश हुआ । एक एक करके कौरव मारे गये । १८ दिन में दुर्योधन का आह्वति देकर यह युद्धयज्ञ समाप्त किया गया ।

दुर्लक्षण तत् ( पु० ) अशुभ चिन्ह, अशुभ, दुःख  
लक्षण, अलक्षण, कुलक्षण ।

दुर्लभ तत् ( वि० ) दुर्प्राप्य, अति प्रशस्त, प्रिय,  
अनोखा, अपूर्व, अलभ्य, कष्टप्राप्य ।

दुर्लोभ तत् ( पु० ) मन्दवासना, दुर्बलसा, अनुचित  
अभिवाप, अप्राप्य वास्तु की अभिलाषा ।

दुर्लभ्य तत् ( पु० ) अप्राप्य, कष्ट से प्राप्त होने योग्य ।

दुर्वचन तत् ( पु० ) दुर्वाच्य, कुलित वचन, कुशचन,  
निन्दित वचन, कुवाच्य, गाली, दुष्टवचन ।

दुर्वर्त तत् ( पु० ) कुपय, असन्मार्ग, कुलित आचार ।

दुर्वह तत् ( वि० ) बहन करने के अयोग्य, भारी  
बोझ । [ निन्दित वात ।

दुर्वच्य तत् ( पु० ) कुशच्य, दुर्वचन, गाली,  
दुर्वादि या दुर्वोदि तत् ( पु० ) निन्दित वचन, अकीर्ति,  
अपय, अपयश, दुर्नाम, बदनामी ।

दुर्गार तत् ( वि० ) अतिशय, अतिवर्ध, जो निवारण  
नहीं किया जा सके, मयवा जो दुःख से निवा-  
रित हो । [ लाप, दुष्ट इच्छा, कुवासना ।

दुर्गामना तत् ( स्त्री० ) बुरी वासना, असत् अमि-

दुर्वासा तत् ( पु० ) अग्नि मुनि के पुत्र, अनसूया के  
गर्भ से इनका जन्म हुआ था । ये महादेव के  
अंश से अनसूया के गर्भ में जन्मे थे । दुर्वासा बड़े  
क्रोधी थे । श्रीर्व मुनि की कन्या कन्दली के साथ  
इनका विवाह हुआ था । इनके शाप से देवराज  
हृद्ग राज्यभ्रष्ट हो गये थे । इन्हीं के शाप से पति  
परित्यक्ता शकुन्तला को अनेक कष्ट भोगने पड़े  
थे । एक समय गाम खीर खाते खाते इन्होंने  
श्रीकृष्ण को फटा था कि इसे तुम अपने सब शरीर  
में लगा लो । श्रीकृष्ण ने वैसा ही किया, परन्तु  
माहण का अनादर न हो । इस कारण उन्होंने  
पायस को अपने पैरों में नहीं लगाया । यह देख  
दुर्वासा ने कहा तुमने पैर में पायस नहीं लगाया,  
अतएव पैर के अतिरिक्त तुम्हारा और सब अङ्ग  
अवश्य होगा । इसी कारण मृत्यु के समय श्रीकृष्ण  
के पैर ही में व्याध का बाण लगा था । दुर्वासा  
के शाप से श्रीकृष्ण के पुत्र को सुपल उपग्रह हुआ  
था, जिससे यदुवंश का नाश हुआ । यह कुन्ती  
की सेवा से अत्यन्त प्रसन्न थे और प्रसन्न होकर

इन्होंने कुन्ती को एक मन्त्र बताया था जिससे  
प्रभाव से कर्ण और पाण्डवों की उत्पत्ति हुई ।  
इनकी क्रोध कड़ानी यद्भुत है और इनकी प्रकृति  
विलक्षण थी । [ चित. उभट्ट, गैवार ।

दुर्विनीत तत् ( वि० ) अविनीत, दुष्ट, अशिष्ट, अमि-  
दुर्विपाक तत् ( पु० ) दुः। फल, अशुभ परिणाम,  
दुर्दैव, दुर्भाग्य ।

दुर्विग्रह तत् ( वि० ) असत्य, कठिन, फटोर ।

दुर्वृत्त तत् ( पु० ) दुर्जन, दुरात्मा, उपद्रवी, कुमार्गी,  
दुष्ट, बदमाश, गुंडा ।

दुर्वृद्धि तत् ( स्त्री० ) मन्दवृद्धि, कुमति, अज्ञान ।

दुर्वृद्धी तत् ( वि० ) अवोध, मूढ़, दुष्ट, घनाचारी ।

दुर्वोप्य तत् ( पु० ) कुमति, अवोध, मूढ़, दुःख से  
समझाने योग्य । [ छोड़े की एक प्रका की चाल ।

दुलकी दे० ( स्त्री० ) कुकर की चाल, अन्धगति विशेष,  
दुलड़ा दे० ( पु० ) दो लड़की माता । ( पु० ) दोनरा,  
दुगुना । [ दो लड़कों का होता है ।

दुलकी दे० ( स्त्री० ) बियों के एक गहने का नाम जो

दुलसी दे० ( स्त्री० ) पशुओं के विड़ले दो पैरों की  
मार ।—झाँटना ( वा० ) छात मारना, पास  
नहीं जाने देना, कड़ी बातें सुनाकर हाराना ।  
—मारना ( वा० ) विड़ले दानों पैरों से मारना,  
किसी को अपमानित करना ।

दुलहन दे० ( स्त्री० ) दुल्हेवा, नव परिणीता यद्, नई  
व्याही बहू, बधो, बनरी, दुलहिन । [ बनरा, नौरा ।

दुलही दे० ( पु० ) बर, विवाहार्थ प्रस्तु । पुट्य, बधा,

दुलहिन दे० ( स्त्री० ) दुलहन, नई बहू, बधू, बधो ।

दुलाई दे० ( स्त्री० ) ओढ़ने का बख पियेप, रईसा  
ओढ़ना जो आड़े के दिनों में ओढ़ने के काम में  
आता है, फुँद, छोट और नैनमुख की दोहर ।

दुलाना ( क्रि० ) कुजाना, दुजाना ।

दुलार दे० ( पु० ) प्यार, स्नेह, लाह, प्रेम, मीति ।

दुलारा दे० ( वि० ) प्यार, स्नेहपात्र, प्रिय, छाड़ला ।

दुलारी दे० ( स्त्री० ) प्यारी, प्रिया, छाड़िनी, लाह  
की, प्यार की ।

दुलारे दे० ( पु० ) दुबार किये हुए, मुँह लगे, बाँझिले ।

दुनन ( पु० ) सज, दुर्जन, शत्रु, शपथ ।

दुवार तत् ( पु० ) द्वार, दुवार, कपाट, कियाइ ।

दुविद तत् ( पु० ) द्विविद, एक बानर का नाम, यह लङ्का के युद्ध में रामचन्द्रजी की सेना में था ।  
 दुवे रे० ( पु० ) माछाणों की एक छल, पञ्चगौड़ माछाणों की छल, दुवेदी ।  
 दुवो ( पु० ) दोनों ।  
 दुगमन दे० ( पु० ) गद्य, बेरी, विपरी, अरि, रिपु ।  
 दुशाला रे० ( पु० ) शाल का जोड़ा, मडा कम्बज, ऊनी पह्मूय वस्त्र विशेष जो थोढ़ने के काम में आता है, जिसके चारों तरफ फूल पत्ती कढ़ी होती हैं । [ कुम्ब्यहार ।  
 दुश्चरित्र तत् ( पु० ) मन्द प्रकृति, कुतीति, कुचलन, दुश्चरित्रा तत् ( स्त्री० ) कुचल, अभिचारिणी, छिनाल ।  
 दुश्चरित्रता तत् ( स्त्री० ) कुचाल, कम्ब्यहार, बद-माशी, गुंडापन ।  
 दुश्चिकित्स्य ( वि० ) असाध्य रोगी, जिसकी कठिनाई से चिकित्सा की जा सके, चिकित्सा के लिये असाध्य ।  
 दुष्कर तत् ( वि० ) कष्टसाध्य, छेशकर, दुःख से करने योग्य, असाध्य, दुस्त्याध्य ।  
 दुष्कर्म तत् ( पु० ) कुकर्म, नीच क्रिया, अधम व्यवहार, बदफेजी, बदमाशी ।  
 दुष्कर्मो तत् ( पु० ) दुष्कृतकारी, कुक्रियान्वित, पापी, अष्टाचारी, दुरात्मा, बदफेज, बदमाश ।  
 दुष्कुलीन तत् ( वि० ) दुष्कुलोद्भव, कुवंशजात, अधम कुल में उत्पन्न ।  
 दुष्कृत तत् ( पु० ) पाप, कुक्रिया, अपराध, दोष ।  
 दुष्कृती तत् ( वि० ) पापी, पापाचारी, दुष्कर्मी, दुरात्मा, बदमाश, गुंडा ।  
 दुष्ट तत् ( पु० ) बुरा, नीच, उपद्रवी, अधम, पापिष्ठ, मित्रेण, विरुद्धान्तः करण, कुजन, बदमाश, गुंडा ।  
 —चारी ( वि० ) अघातक, खल, दुर्जन ।  
 —ता ( स्त्री० ) दौरात्म्य, खलता, दुर्जनता, बदमाशी, गुंडापन ।  
 दुष्टा तत् ( स्त्री० ) अष्टा, पुंश्रुती, व्यभिचारिणी, भ्रमती, छिनाल, दुराचारिणी ।  
 दुष्टात्मा तत् ( पु० ) दुष्ट, नीच, उपद्रवी, बदमाश, गुंडा, अन्तःकरण का छोटो । [ साध्य प्रवेश ।  
 दुष्प्रवेश तत् ( पु० ) दुर्गम प्रवेश, अति परिश्रम

दुष्प्राप्य तत् ( वि० ) दुर्लभ, अप्राप्य, अगम्य ।  
 दुष्यन्त तत् ( पु० ) चन्द्रवंशीय एक राजा, इनको दुष्यन्त भी कहते हैं । एक समय अदर खेजने दुष्यन्त वन में गये थे । जाते जाते वह कण्व मुनि के आश्रम में पहुँचे । अपने परित्रों को बाहर ही छोड़कर राजा आश्रम में गये । वहाँ उन्होंने तपस-वेधधारिणी एक अविवाहिता युवती देखी, उसका नाम शकुन्तला था । राजा ने उसी के मुँह से इसकी अपत्ति तथा नाम आदि सुने थे । दुष्यन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह किया और किसी कार्यवश अपनी राजधानी को लौट गये । राजधानी में आकर शकुन्तला को सुन्नधाने की राजा ने प्रतिज्ञा की थी, परन्तु वहाँ जाकर वे भूल गये । शकुन्तला के एक पुत्र हुआ । उस बालक की तीन वर्ष की अवस्था होने पर महर्षि कण्व ने जातकर्म आदि संस्कार करके शकुन्तला को राजा के पास भेजा । राजा ने शकुन्तला के विवाह की बातें भूलकर उसका प्रत्याख्यान किया । तत्कालीन शकुन्तला ने भी बड़ी बड़ी बातें राजा को सुनाई, इसी समय देवबाणी हुई । “ राजा तुम अपनी पत्नी और पुत्र को ग्रहण करो ” । ( महाभारत आदि पर्व ) ( कालिदास ने अपने अभिज्ञान शकुन्तला नामक नाटक में इस कथा को कुछ उलट दिया है ।  
 दुसह तत् ( वि० ) असह्य, कठिनता से सहने योग्य ।  
 दुसाध दे० ( पु० ) दोसाद, नीच जाति, अस्थाय, अस्पृश्य जाति, अद्वैत जाति ।  
 दुसूती दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो बिछाने के काम में आता है, दो सूत का बिना बज ।  
 दुस्तर तत् ( वि० ) दुस्तर, अतर्पणीय, दुस्तरणीय, कठिनता से पार जाने योग्य । [ योग्य ।  
 दुस्त्यज तत् ( वि० ) अपरिहरणीय, दुःख से त्यागने दुस्त्य तत् ( वि० ) दुरवस्थान्वित, दुःखी, दरिद्र, छेशयुक्त, असुख । —ता ( स्त्री० ) दारिद्र्य, दैन्य, दौर्भाग्य, क्लेश, दुर्गति ।  
 दुहत्या ( पु० ) दो मूठ वाला ।  
 दुहना दे० ( क्रि० ) दोहना, गारना, गी के स्तनों से दूध निकालना ।

दुहराना दे० ( क्रि० ) दूना करना, दो बार करना या कराना, द्वाहक, दो परत करना ।  
 दुहाई दे० ( स्त्री० ) गुहार, पुकार, दुःख से उबारने के लिये पुकार, शरण, शपथ, कसम ।—तिहाई करना ( या० ) बार बार पुकारना, व्याकुल होकर रचक को पुकारना, संकट से बचाने को बुलाना ।  
 दुहाना दे० ( क्रि० ) दुहवाना, दूध निकलवाना ।  
 दुहार दे० ( पु० ) दूध दुहनेवाला ।  
 दुहि दे० ( क्रि० ) दुहकर ।  
 दुहिता तत्० ( स्त्री० ) कन्या, कुमारी, पुत्री, लड़की, बेटी ।—पति ( पु० ) जामता, जमाई, दामाद ।  
 दुहेला दे० ( वि० ) कठिन, भारी, थोकेल ।  
 दुहँ दे० ( अ० ) दो, दोनों, उभय ।  
 दुहुँवा या दुहा तत्० ( वि० ) दोहने के योग्य, दोहने के उपयोगी ।  
 दुहामान तत्० ( पु० ) जिसमें दुहा जाय, दोहनी विशिष्ट ।  
 दूध्या दे० ( पु० ) दो का झड़, तारा का बड़ पत्ता जिन पर दो बूँदें हों । कलाई में पहनने का चाँदी का गहना ( दे० ) आशीस ।  
 दूज दे० ( स्त्री० ) द्वितीया तिथि, पक्ष का दूसरा दिन ।  
 दूजा दे० ( वि० ) द्वितीय, दूसरा, अन्य ।  
 दूवर दे० ( पु० ) द्वितीयवर, दूसरा घर, जिसके दो विवाह हुए हों ।  
 दूत तत्० ( पु० ) याताहार, चर, संवाददाता, सन्देशी, निष्पार्थ, मितार्थ और सन्देशहारक—दूत के ये तीन भेद होते हैं । कार्य की सिद्धि असिद्धि आदि का भार जिस दूत पर हो वह निष्पार्थ दूत कहा जाता है । जिसके लिये स्वामी का आदेश हो उतना ही काम करने वाला दूत मितार्थ कहा जाता है और जो केवल सम्वाद कहने वाला दूत है । उसे सन्देशहारक कहते हैं ।—ता ( स्त्री० ) दूत का काम, दूतत्व । [चार पहुँचाने वाली, कुटिनी ।  
 दूतिका तत्० ( स्त्री० ) दूती, नायिका की सखी, समा-  
 दूती तत्० ( स्त्री० ) दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचारहारिणी, कुटिनी, कुटनी । यथाः—  
 दोहा ।  
 “निपुन दूतता में सदा, ताहि दूती बखान ।  
 उत्तम, मध्यम, अधम ये तीन मति से जन ॥

( उत्तम दूती )

मोहै जो सुदु खोजिकै, मयुर बचन अभिराम ।  
 ताहि कहत कविराज हैं, उत्तम दूती नाम ॥

( मध्यम दूती )

कछु बचन हित के कहै, बोलै अहित कछु क ।  
 मध्यम दूती कहत हैं, तासैं सुकवि अचूक ॥ ”

( अधम दूती )

अधम दूतिका जानिये बचन कहत सतराय ।  
 ग्रन्थन का मयि देखिके यामत सब कविराय ॥

—रसराम ।

दूत्य ( पु० ) दूतकर्म ।

दूध तत्० ( पु० ) दुग्ध, घीर, दध, गोरस ।—पूत ( पु० ) घन जन ।—मुँहा ( पु० ) पछा जो माता का दूध पीता हो ।—नुल ( पु० ) दुध-सुहा ।

दूधाधारी तत्० ( वि० ) दूध पी के जीनेवाला, केवल दूध के आहार पर रहने वाला, दुग्धाहारी, केवल दूध का अहार करने वाला, पधारी ।

दूधामाती दे० ( स्त्री० ) दूध और मात, विवाह की एक रीति, विवाह के चौथे दिन का घर और दूध का परस्पर का भोजन ।

दूधिया दे० ( पु० ) एक प्रकार का पीषा जिसका रस दूध के समान होता है, भाँग जो दूध में लानी गयी हो, दूध मिली हुई । [दूधिया पीषा ।

दूभी दे० ( वि० ) दूध का, दुर्घटा । ( पु० ) माँड़ी, दून ( पु० ) दूना ।

दूना दे० ( वि० ) दोहरा, दुगुना, द्विगुण ।

दूब तत्० ( पु० ) दुर्बा, लृण विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध लृण, वह लृण गणेशजी पर चढ़ाने के काम में आता है और इसे घोड़े बड़े चाव से खाते हैं ।

दूबर या दूबरा तत्० ( वि० ) दुर्बल, निर्बल, दूध रहित, पत्तील । [दूध की इरियाछी ।

दूविश दे० ( स्त्री० ) रक्ष विशेष, दूब के समान रक्ष ।

दूवे ( पु० ) द्विपदी, दुबे, प्राणियों की मरह विशेष ।

दूर तत्० ( वि० ) अनिकट, असन्निकट, अन्तर, बीच, व्यन्धान, परे, न्यारा ।—गामो ( वि० ) दूर गमन करी, दूर जानेवाला । ( पु० ) तीर, शायु, पवन ।  
 —गम ( पु० ) गवा, रासम ।—तर ( पु० ) अधिक

दूर. अत्यन्त दूर।—दर्शक ( पु० ) दूरहीन, देखने का एक यन्त्र जिसकी सहायता से बहुत दूर की वस्तु देखी जाती है। ( वि० ) दूर देखने वाला, अग्रसे।—दर्शिता ( स्त्री० ) विवेक, विवेकिता, दूरदर्शी। दर्शी ( वि० ) विवेकी, ज्ञानी, गीप, दूरदर्शी।—दूरि ( स्त्री० ) दूरदर्शन, विवेक।—वीन ( पु० ) दूरवीक्षण, दूर देखने का यन्त्र।—भागना ( वा० ) धृष्टा करना, अपमान करना, सम्पन्न तोड़ना।—वीक्षण ( पु० ) दूरहीन, दूर दर्शन यन्त्र।—मूल ( पु० ) अवस्था।—स्थ ( पु० ) दूरस्थित, दूरवर्ती, दूरदेश का।

दूरीकरण तत्त्वं ( पु० ) दूर कर देना, हटा देना, अन्तर का देना, भगा देना। [ हटाया हुआ। दूरीकृत तत्त्वं ( वि० ) भगाया हुआ, निहाला गया, दूर दूरा दत्त ( स्त्री० ) दूष विशेष, दूष घास।—दूमी ( स्त्री० ) [ दूरा + अमी ] भादों शुक्लपक्ष की अष्टमी।

दुलह दे० ( पु० ) देवी दुल्हा।

दूषक तत्त्वं ( वि० ) [ दूष + क ] निन्दक, निन्दा करने वाला, कलङ्कित करने वाला, दूषिता।

दूषण तत्त्वं ( पु० ) निन्दा, दोष, प्रुष्टि, दोष प्रकाशन, भर्त्सन, कुक्कण, राक्षस विशेष। लक्ष्मेश्वर रावण के एक सेनापति का नाम, इसमें दूसरे भाई का नाम खर था। रावण का राज्य गोदावरी तीरस्थ दण्डकाण्य तक विस्तृत था। उसकी रक्षा के लिये खर और दूषण नामक दो सेनापति १४ हजार सेना के साथ बर्हा रहते थे। रावण की बहिन सूर्यनखा भी इसी वन में रहती थी। सीता और लक्ष्मण के साथ जिस समय रामचन्द्र इस वन में रहते थे उस समय सूर्यनखा ने अपना व्याह रामचन्द्र से करने की इच्छा प्रकट की थी। इससे क्रुद्ध होकर लक्ष्मण ने उसकी नाक और कान काट डाले। सूर्यनखा की ऐसी दुःशा देखकर खर और दूषण ने रामचन्द्र पर चढ़ाई की। पर्वत हलार सेना का मालिक दूषण या खर और दूषण दोनों ही राम के हाथ मारे गये। केवल अकम्पन नामक एक राक्षस इस समाचार को रावण के पारुषण-वाचने के लिये बचा हुआ था।

दूषित तत्त्वं ( वि० ) दोष प्राप्त, अभिशप्त, निन्दित, दोषयुक्त, अष्ट, कलङ्कित, अपवादित, बदनाम।

दूषोका तत्त्वं ( स्त्री० ) लीच, कीचट, कीचड़, शाली का मल। [ नीप, कुपित, गदित।

दूष्य तत्त्वं ( वि० ) दूषणीय, दूषण करने योग्य, निन्द-

दूसर, दूसरा दे० ( वि० ) द्वितीय, दूसरा और अन्य।

दूहिया दे० ( पु० ) दो मुँहा चुरहा।

दूग तत्त्वं ( पु० ) दूक, घाल, चबु, नेत्र, तयन।

—झल तत्त्वं ( पु० ) पलक, नेत्रपट, दगपट।

दूगणीत ( पु० ) गणित विधि विशेष. जो ग्रहों को वेध कर किया जाता है।

दूगोचर ( गु० ) आँख से दिखाई देने वाला।

दूढ़ तत्त्वं ( वि० ) पोढ़ा, अचञ्च, कठोर, अति-

शय, प्रगाढ़, बलवान्, कठिन।—तम्र ( वि० )

अशयन्त कठिन, अतिशय कठोर।—तर ( वि० )

अधिक कठिन।—ता ( स्त्री० ) कठिग्य, कठि-

नता, स्थिरता।—त्व ( पु० ) कठिन्य, कठोरता।

—धन्या ( पु० ) समर्थ धनुर्धारी, सद्य धन्यी।

—प्रतिज्ञ ( वि० ) स्थिर प्रतिज्ञ, सत्य प्रतिज्ञ,

सत्यसन्ध।—व्रत ( पु० ) धर्म, कर्म में एकाग्र-

चित्त, धर्मप्रायण।—मुष्टि ( पु० ) खज्ज, कृपाय,

तत्त्वज्ञ। [ विशेष, मज्जून अर्थात् वाका।

दूदाङ्ग तत्त्वं ( पु० ) हीरक, हीरा। ( वि० ) कठिन अथ

दूदाना दे० ( वि० ) पोढ़ा करना, बलवाद करना,

सबल बनाना, मज्जून करना।

दूदार्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) धनुष का अग्रभाग, कोटी।

दूत तत्त्वं ( वि० ) [ दू + क ] गदित, अहंकृत, अभि-

मान्नी, अहङ्कारी, घमंड़ी, गर्वीला, खोलीखान्

दूश्य तत्त्वं ( वि० ) देखने योग्य, देखने की वस्तु,

रमणीय, मनोहर। ( पु० ) तमारा।

दूश्यमान तत्त्वं ( पु० ) देखने योग्य, दर्शनीय, देखने

के लिये उपयोगी।

दूषहृती तत्त्वं ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, यह नदी

आर्षावर्त देश की पूर्वी सीमा पर बहती है।

दूष्ट तत्त्वं ( वि० ) दूषित, आलोकित, नेत्रगोचर,

प्रकट देखा गया, देखा हुआ।—कूट ( पु० )

कूटप्रवर, पहेलिका, पहेली बुझाव।—वाद् ( पु० ) प्रायश्चाद।

द्विप्राप्त तत् ( पु० ) [ दृष्ट + प्रन्त ] उदाहरण, उपमा, नजीर, मिसाल, निदर्शन, समानता करण, तुलना करण ।

दृष्टि तत् ( स्त्री० ) आज्ञाकन, निरीक्षण, दर्शन, चक्षु, आँख, नेत्र, नयन नज़र, निगाह, बुद्धि, विवेक, विचार ।—गोचर ( पु० ) नयनगोचर, साक्षात्, प्रत्यक्ष ।—पात ( पु० ) दर्शन, ताक, कटाच, चितवन ।—शोश ( पु० ) शिव, महादेव ।

देवप्राज्ञा दे० ( पु० ) दीमक का बना हुआ घर, बरगीक ।  
देई दे० ( कि० ) देवै, देता है, दे करके ।

देखना दे० ( पु० ) पेलना, छलना, ताकना, निहारना ।—भाजना ( वा० ) ध्यान से देखना, विचार पूर्वक देखना, ताकना, निहारना, छलना ।

देखवैया दे० ( वि० ) दर्शक, देखने वाला ।

देखा दे० ( वि० ) दर्शन किया, अवलोकन किया, साक्षात्कार किया ।—देखो ( स्त्री० ) दृष्टानुसरण, रैल के अनुसरण करना ।—सुना ( वा० ) साक्षात् सन्दर्शन, विचार पूर्वक निश्चय किया हुआ, जाना हुआ ।

देजा दे० ( पु० ) दायजा, दहेज, यौतुक, कन्यादेय द्रव्य, ( कि० ) सौंप जा, अर्पण कर जा ।

देड़ दे० ( वि० ) साढ़ेंक, आधा अधिक एक, एक और आधा, डेढ़ ।

देदीप्यमान तत् ( पु० ) ज्ञातव्यमान, अतिशय दीप्ति विशिष्ट, चमकीला, चमकदार, प्रकाश शील ।

देन दे० ( पु० ) श्रवण, उधार, देय ।—द्वार ( पु० ) अध-मर्त्य, कर्जालार, श्रवण लेने वाला ।—लेन ( पु० ) व्यवहार, व्यापार, पतिज, देना लेना ।

देना दे० ( कि० ) दे देना, दे डालना, सौंपना, त्यागना, अर्पित करना । ( पु० ) श्रवण, देय, देन, उधार, कर्ज ।—पाना ( वा० ) देन लेन, दिया घन पाना ।

देनी दे० ( स्त्री० ) देने वाली, सौंपने वाली ।

देमारना दे० ( कि० ) पटकना, पटक देना, पछाड़ डालना । [ नीय ।

देय तत् ( वि० ) दान योग्य, देने योग्य, परिशोध-देर दे० ( स्त्री० ) विलम्ब, चमोड़, डील ।  
देरी दे० ( स्त्री० ) विलम्ब, गोथ, देर ।

देव तत् ( पु० ) [ दिव् + अच् ] धमा, सुर, देवता, नाटकोक्ति में राजा ।—कली ( स्त्री० ) एक रागिनी का नाम ।—काण्डार ( पु० ) चनसुर, एक वीधे का नाम ।—काष्ठ ( पु० ) देवदार काष्ठ, पन्ध ।—कुराड ( पु० ) बिना बनाया हुआ कुराड, स्वयं बना हुआ जलकुण्ड, देव खात ।—कुसुम ( पु० ) ज्वल्लता, लवङ्ग ।—खात ( पु० ) अकृत्रिम जलाशय ।—गायक ( पु० ) गन्धर्व, देव योनि विशेष ।—गिरि ( पु० ) हिमालय पर्वत । ( स्त्री० ) रागिनी विशेष ।—गुह ( पु० ) वृहस्पति, सुराचार्य ।—गृह ( पु० ) देवालय, देव मन्दिर, ठाकुरवाड़ी, चन्द्रमा और सूर्य का ज्योतिर्मण्डप ।—चिकित्सक ( पु० ) अश्विनी कुमार ।—ठान ( पु० ) देवोद्यान, व्रत विशेष, कातिक शुक्ला एकादशी । इय दिन भगवान् विष्णु निद्रा त्याग करते हैं ।—तप ( पु० ) मन्दार वृक्ष, पारिजात, वधन-वृक्ष ।—ता ( पु० ) अमर, देव, सुर ।—ताधिप ( पु० ) देवराज, देवसामी, इन्द्र ।—तीर्थ ( पु० ) श्रीगुलि का अग्रभाग, उसी से देव तर्पण किया जाता है ।—तुल्य ( वि० ) देवता के समान, अमर सदा ।—त्व ( पु० ) देवताओं के धर्म, देवपद देवता का आधिपत्य ।—त्र ( पु० ) देवत्व, देवता, को अर्पित घन आदि ।—दत्त ( पु० ) बुद्ध का छोटा भाई, अजुन के शत्रु का नाम, शरीर धारण करने वाले पशु प्राणियों के अन्तर्गत एक प्राण विशेष । ( वि० ) देवप्रसाद, देवता का दिया हुआ ।—दाह ( पु० ) वृक्ष विशेष, पारिमृदक, देवकाष्ठ ।—दामी ( स्त्री० ) अत्सरा, स्वर्गावरण, देवता को मेट की हुई स्त्री, जाति विशेष की स्त्री ।—दूत ( पु० ) देवता का सेना हुआ दूत, यवन, पापु ।—देय ( पु० ) महादेव, महा ।—देष्टा ( पु० ) देव शत्रु, देव निन्दक, नास्तिक, पापगुनी, अमुर, दानव, दैत्य ।—धान्य ( पु० ) देवता का धान्य ।—धुनि ( स्त्री० ) देवनारी, गङ्गा, भागीरथी ।—धूप ( पु० ) गुग्गुलु, धूप विशेष ।—नागरी ( पु० ) देव समान विद्वानों की जिप्ति, हिन्दी भाषा की वर्णमाला ।—निन्दक ( पु० ) ईश्वर निन्दाकारी, नास्तिक पापगुनी ।—निष्ठ ( पु० ) ईश्वरवादी, ईश्वरभक्त ।

—पति ( पु० ) इन्द्र, देवराज, सुरपति ।—पथ ( पु० ) देवमार्ग, छायादार, आकाशमार्ग, परिवाद-पथ ।—पूजक ( पु० ) देवोपासक, देवार्चक, देवा राधनकर्ता ।—पूजा ( स्त्री० ) देवता का पूजन, देवता की आराधना ।—प्रतिमा ( स्त्री० ) देव-प्रतिमूर्ति, भगवान् की मूर्ति ।—वधू ( स्त्री० ) देव स्त्री, महारानी, यथा—

“देववधू जबहिं हरि स्थायो ।

वर्षों तबहीं तजि ताहि न आये ॥” —रामचन्द्रिका ।

—ब्रह्मा ( पु० ) देवशक्ति, नारद मुनि ।—ब्राह्मण ( पु० ) देव पूजित ब्राह्मण, देव मुख्य ब्राह्मण ।

—भवन ( पु० ) अश्वत्थ वृक्ष, पीपल का पेड़, स्वर्ग ।—मणि ( पु० ) कौस्तुभ मणि, घोड़े के अङ्ग विशेष की मँथरी ।—माता ( स्त्री० ) अदिति, कश्यप की स्त्री ।—मातृक ( पु० ) वृष्टि के जल से पालित देव ।—मास ( पु० ) गर्भ का आठवाँ महीना, देवों का महीना, मनुष्य के परिमाण से तीन वर्ष का समय ।—मुनि ( पु० ) नारद ।

—यज्ञ ( पु० ) होम, हवन, मन्त्रोच्चारण पूर्वक अग्नि में घृताहुति प्रदान ।—योन ( पु० ) उप-देवता, भूत प्रेत पिशाच आदि, गन्धर्व ।—रथ ( पु० ) देवयान, देवताओं का विमान, पुष्पक रथ ।

—राज ( पु० ) इन्द्र, सुरपति । रात ( पु० ) राजा परीक्षित ।—लोक ( पु० ) देवों का वास-स्थान, स्वर्ग ।—जागी ( स्त्री० ) संस्कृत भाषा ।

—वृक्ष ( पु० ) कश्यपवृक्ष, कश्यपुम ।—वर्णिनी ( स्त्री० ) भारद्वाज मुनि की कन्या और विश्रवा की पत्नी, इनके गर्भ से विश्रवा ने वैश्रवण नामक एक पुत्र उत्पन्न किया था, वैश्रवण का दूसरा नाम कुबेर था । ये देवों के घनाध्यक्ष हैं, पहले लङ्का-पुरी इनकी राजधानी थी । परन्तु अपने सौतेले भाई रावण को इन्होंने लङ्का दे दी, और स्वयं हिमालय के उत्तर अलकापुरी को अपनी राज-धानी बनाया ।—श्रीणि ( स्त्री० ) सरपरिप, देवों की सभा ।—सर ( पु० ) मानसरोवर ।

—सेना ( स्त्री० ) सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या इनका दूसरा नाम यष्टी था, देवसेनापति कर्त्तिकेय से इनका विवाह हुआ था,

इनकी दूसरी यहिन का नाम दैत्यसेना है ।

—स्त्री ( स्त्री० ) देवाङ्गना, देवपत्नी ।—स्थान ( पु० ) देवालय, देवगृह, देवमन्दिर ।—स्व ( पु० ) देवधन, देवपूजा के लिये स्थापित कोश ।—हिसक ( पु० ) असुर, दैत्य, दानव, सुरारि ।

देवक तत् ( पु० ) भोजवंशीय राजा विशेष, भोज वंशीय राजा आहुक के पुत्र । इनके भाई का नाम, उग्रसेन और कन्या का नाम देवकी था, देवक श्रीकृष्ण के नाना थे, ( पु० ) देवता का, देव का ।

देवकी तत् ( स्त्री० ) देवक रामकन्या, श्रीकृष्ण की माता ।—नन्दन ( पु० ) श्रीकृष्ण ।

देवन तत् ( पु० ) [ दिव + अनट् ] क्रीडा, व्यवहार, जितरीपा, कीलोद्यान, धूलि, स्तुति, धूत, जुआ, देवता का बहुवचन ।

“देवन दीन्हों दुन्दभी ।”

देवयानी तत् ( स्त्री० ) दैत्यगृह शुक्राचार्य की कन्या और राजा ययाति की स्त्री । दैत्यराज वृषपर्व की कन्या शर्मिष्ठा के साथ इसका यहा प्रेम था । एक दिन दोनों स्नान करने गयीं । भूल से शर्मिष्ठा ने देवयानी के कपड़े पहनालिये, इससे उन दोनों में विवाद हुआ । शर्मिष्ठा ने देवयानी के पिता को अपने पिता का स्तुतिपाठक ( खुशामदी ) कहा और देवयानी को दुर्ग में फँककर स्वयं घर चली गई । आग्यवश उसी वन में राजा ययाति भूहेर खेजने आये थे, उन्होंने कुर्प से स्त्री की चिह्नाहट सुनकर उसे निकलवाया । कुर्प से निकल कर देवयानी अपने घर नहीं गयी, उसने एक दासी से अपना वृत्तान्त अपने पिता के निकट कहल-वाया । पिता शुक्राचार्य सब बातें सुनकर वृषपर्व के निकट गये और उसके राज्य से अपने जाने की इच्छा, कारण के साथ प्रकट की । इससे वृषपर्व बहुत घबड़ाया और यह देवयानी के समीप आकर उसके प्रसन्न करना चाहा । देव-यानी ने कहा कि यदि हजार दासियों के साथ तुम्हारी कन्या शर्मिष्ठा मेरी दासी बने तो मैं तुम्हारे नगर में जा सकती हूँ । वृषपर्व ने यह स्वीकार किया । शर्मिष्ठा ने अपने पिता की आज्ञा को सादर और सहर्ष स्वीकार किया और

यह हज़ार दासियों के साथ देवयानी की सेवा करने लगी। एक समय देवयानी, शर्मिष्ठा और उनकी दासियाँ किसी यज्ञ में विचर रही थीं, उसी समय राजा ययाति भी संयोग से उस वन में उपस्थित हुए। प्रथम दर्शन ही से राजा ययाति और देवयानी का प्रेम हो गया था। देवयानी ने उनके पति बनाना चाहा, शुक्राचार्य ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। देवयानी का ब्याह हो गया। उनके साथ शर्मिष्ठा भी देवयानी की ससुराल गई।

देवर दे० ( पु० ) पति का छोटा भाई।

देवरानी दे० ( स्त्री० ) देवर की स्त्री, देवताओं की रानी, देवराज की स्त्री। यथा:—

“देवराज! लिये देवरानी मगो,  
प्रथम संयुक्त मूलोक में मोहिमे।”

—रामचन्द्रिका।

देवल तत्० ( पु० ) मद्रि विशेष, असित मुनि के पुत्र और व्यासदेव के शिष्य। एक समय रश्मा नामक स्वर्ग की अप्सरा इन पर आसक्त हुई, परन्तु इन्होंने उसका प्रत्याख्यान किया। इससे चिढ़ कर रश्मा ने शाप दिया कि तुम्हारी यह सुन्दरता व्यर्थ है, तुम इसके योग्य नहीं हो, तुम कुरूप हो जाओ। रश्मा के शाप से देवल अष्टावक्र हो गये थे।

देवल तत्० ( पु० ) देव पूजापञ्जीवी, पुजारी ब्राह्मण, नारद मुनि, धर्मशास्त्र वेत्ता मुनि विशेष। ( दे० ) मन्दिर, ठाकुरद्वारा, देवस्थान, यथा:—

“मुन्सी देवल देव का लागे लाख करार।

काग अभागो हगि भाग्यो महिमा भई न पौर॥”

देवहूति तत्० ( स्त्री० ) स्वायम्भुव मनु की कन्या तथा कर्हम प्रजापति की भार्या, इन्हीं के गर्भ से सांख्यदर्शन प्रणेत। मद्रि कपिल का जन्म हुआ था। कपिल के अतिरिक्त इसके नौ और कन्याएँ भी थीं। [ देने वाला।

देवा तद्० ( पु० ) देव, देवता अमर, सुर, दिवाल,

देवाङ्गना तद्० ( स्त्री० ) देवस्त्री, देवभार्या, अप्सरा।

देवान दे० ( पु० ) कर्मसचिव, राजा के हासन में योग देनेवाला मन्त्री, राजा का प्रधान सचिव।

देवाना ( गु० ) उन्नत, विघ्नित, पागल।

देवानांप्रिय ( पु० ) मूल, बकरा।

देवारि तत्० ( पु० ) दैत्य, निशाचर, दानव।

देवाल दे० ( पु० ) चारदीवारी, प्राचीर, चारों ओर

की भीत, देनेवाला, दानी, दानशील।

देवालय तत्० ( पु० ) देवस्थान, देवल, देवगृह।

देवाला दे० ( पु० ) दिवाला व्यापार विगड़ना, खेन देन का मारा पड़ना, दिवाला।

देवालिया दे० ( वि० ) जिसका दिवाला निकल गया, गतसर्वस्व, निर्धन, दरिद्र।

देवाजी दे० ( स्त्री० ) दिवाजी का शोहार।

देवालैर दे० ( स्त्री० ) देवल, सराफी, महाजनी।

देवि तत्० ( स्त्री० ) देवी देवी।

देवी तत्० ( स्त्री० ) दुर्गा, भवानी, नाट्योक्ति में कृताभिरुचि रानी, सामान्य देवपत्नी, ब्राह्मणी, आदित्य-मक्ता, श्यामा नामक एक पवि विशेष।

देवेन्द्र तत्० ( पु० ) देवधिप, देवान, इन्द्र।

देवोत्थान तत्० ( पु० ) कात्तिक सुदी एकादशी जिस दिन भगवान् विष्णु विद्या का त्याग करते हैं।

देवोत्थान तत्० ( पु० ) देवता का उपवन, सुन्दर वाटिका, विहार स्थान, मन्दन कानन।

देवोन्माद ( पु० ) वह पागलपन जिसमें रोगी पवित्र रहता सुगन्धित पुष्प मालाएँ पहनता है। अस्त्र बन्द नहीं करता और संस्कृत शोलता है। यह देवता के कोप से होता है।

देवोपासन तत्० ( स्त्री० ) देवाराधना, देवपूजा।

देश तत्० ( पु० ) पृथिवी का खण्ड, मण्डल, चक्र-खोक, स्थान, प्रदेश, मुकुर।—कार ( पु० ) एक राग विशेष:—द्रुशामिह ( पु० ) देश की अवस्था जानने वाला, देश वृत्तान्त-वेत्ता।—निकाज ( पु० ) दण्ड विशेष, किसी अपराध के कारण अपना देश छोड़कर बाहर हो जाने की राजाज्ञा।

—मक ( पु० ) देश की सेवा करने वाला, देश को

कठों से झुड़ाने वाला।—भाषा ( स्त्री० ) देश

की भाषा, राष्ट्रभाषा, देश की बोली।—भय

( गु० ) देश में व्याप्त, देश में सर्वत्र विस्तृत।

—रूप ( पु० ) वचित, योग्य, देशानुसार।—स्थ

( वि० ) देश में स्थित, देश में वर्तमान, देश





दैर्घ्य तत्त्वं ( पु० ) दीर्घता, लंबाई ।

दैव्या दे० ( स्त्री० ) माँ, माता, देव, आश्रय या आश्रित होने पर यह शब्द सुँह से निकलता है ।

दैव तत्त्वं ( पु० ) भाग्य, अदृष्ट, विधाता, प्रारब्ध, जलाट, भैरुलि का अग्रभाग, अष्टविध विवाहान्तर्गत विवाद विशेष ।—ज्ञ ( पु० ) गणक, ज्ञाचार्य, ज्योतिषी ।—दुर्विपाक ( पु० ) दूरदृष्ट, दुर्भाग्य, दैव दुर्घटना ।—घाया ( स्त्री० ) आकाश-घाया, अमानुषी बचन, संस्कृत वाक्य ।—युग ( पु० ) देवताओं का युग, देवताओं के परिमाण के अनुसार बारह हजार वर्ष परिमित काल और मनुष्यों की गणना के अनुसार चार युग ।—योग ( पु० ) दैवात्, इडात्, अकस्मात्, अचानक ।—याद्री ( वि० ) आलसी, आग्याधीन, अकर्मण्य, सुप्त, काहिल । [सम्बन्धी ।

दैवत तत्त्वं ( पु० ) देव समूह । ( वि० ) देव दैवतक तत्त्वं ( पु० ) भौत, भूतभक्त, भूत सेवक । दैवागत तत्त्वं ( पु० ) भाग्य से प्राप्त सुख या दुःख, अकस्मात्, इडात् ।

दैवात् तत्त्वं ( थ० ) इडात्, अकस्मात्, दैवाधीन । दैवाधीन तत्त्वं ( पु० ) दैवायत्त, ईश्वराधीन, इडात्कार । दैवानुरागी तत्त्वं ( पु० ) ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त, भगवद्भक्त, भाग्य से प्रेम करने वाला, भाग्यानुसार काम करने वाला ।

दैवानुराधी तत्त्वं ( वि० ) दैववशीभूत, दैवायत्त, भाग्यानुवर्ती, भाग्य पर निर्भर रहने वाला ।

दैवायत्त तत्त्वं ( पु० ) दैवाधीन, भाग्यानुसार, अकस्मात्, इडात्, ईश्वराधीन ।

दैविक तत्त्वं ( वि० ) देव सम्बन्धी, भाग्य से उत्पन्न व्याधि, पीड़ा विशेष, भूतादि उपद्रव जनित पीड़ा । यथा:—

“ दैहिक दैविक भौतिक तत्त्वा ।

रामराज क्राहू नहिं व्यापा ॥ ” —रामायण । प्रारब्ध का, विधिभय ।

दैवी तत्त्वं ( स्त्री० ) इडात् घटना, आपद्, सम्पत्ति विशेष, मानसिक सम्पत्ति, जो हृद तथा परलोक के कार्यों में सहायक हो, जिसका उपदेश गीता में भगवान् ने किया है ।

दैव्य तत्त्वं ( पु० ) भाग्य, अदृष्ट, दैव, पूर्वकर्म, प्रारब्ध ।

दैशिक तत्त्वं ( वि० ) देश सम्बन्धी, नैपायियों के मत से एक सम्बन्ध, समान देश जात वस्तुओं में यह सम्बन्ध माना जाता है । देशनिष्ठ विशेषणता ।

दैहिक तत्त्वं ( वि० ) देह सम्बन्धी, कायिक, शारीरिक, जिस्मानी ।

दैहीं दे० ( कि० ) दानार्थक, देना धातु की भविष्य कालिक क्रिया, दूँगा । यथा:—

“ निज भुज बल मैं धैर बढ़ावा ।

दैहीं बतर जो रिपु चढ़ि खावा ॥

—रामायण ।

दो दे० ( वि० ) द्वि, दो की संख्या ( कि० ) लावो, दे दो ।

दोउ या दोऊ दे० ( वि० ) दोनों, उभय, युग्म ।

दोआव ( पु० ) दो नदियों के बीच का देश ।

दोक दे० ( पु० ) बछेड़ा, दो दाँत का पछेड़ा ।

दोकना दे० ( कि० ) गर्जना, गर्जन करना, घुसघुराना, घूरना, हडाहना ।

दोकला ( पु० ) दो कलों वाला ताजा ।

दोकोहा ( पु० ) दो कुहर वाला ऊँट ।

दोख ( पु० ) दोष, दुर्गुण ।

दोखना ( कि० ) कलह लगाना ।

दोखी ( पु० ) पेवी, अपराधी, शयु ।

दोगला दे० ( वि० ) वर्णसङ्कर, दूसरे वर्ण से उत्पन्न ।

दोगाड़ा दे० ( पु० ) दोनली बंदूक, वह बंदूक जिसमें दो गली हों, वह बंदूक जिसमें एक साथ दो गोळियाँ या कारतूस भरे जाय ।

दोगाना दे० ( वि० ) दोहरा, द्विगुण, द्विगुणित, दोजड़ा ।

दोगुना ( पु० ) दुगुना ।

दोचर दे० ( वि० ) दुहा, दूसरा ।

दोजख ( पु० ) नरक, पौधा विशेष ।

दोजा ( पु० ) वह पुरुष जिसके दो विवाह हुए हों ।

दोजिया ( स्त्री० ) गर्भवती स्त्री ।

दोजीवा तत्त्वं ( स्त्री० ) द्विजीवा, गर्भिणी, अन्तः सत्त्वा, अन्तरात्मा, वह स्त्री जो गर्भवती हो, दुग्धदा ।

दो जी से होना दे० ( वा० ) गर्भ रहना, गर्भवती होना, अन्तःसत्त्वा होना ।

दोआ दे० ( पु० ) दूआवर, दो विवाहकर्त्ता, दूसरे विवाह का वर, एक विवाह के पश्चात् दूसरा विवाह करने वाला ।

दो तल्ला ( गु० ) दो मंजिला । [ बाजा ।

दोतारा ( पु० ) एक तरह का दुआला, एक प्रकार का दोदना दे० ( कि० ) कुडाना, मुकरना, बात कहकर पनटना ।

दोधक तत्० ( पु० ) छन्द विशेष ।

दोधूयमान तत्० ( वि० ) पुनः पुनः कम्पन विशिष्ट, घराघा कर्पने वाला, हमेशा हिलने वाला ।

दोन ( पु० ) दुआया, दो पहाड़ों के बीच का स्थान, दो वस्तुओं का मेल, काठ का खोखला पात्र विशेष जो खेतों की सिंचाई के काम आता है ।

दोना दे० ( पु० ) दोना, पत्तों का बना हुआ कटोरा-नुमा पात्र, एक प्रकार का पत्रपात्र, पुष्प विशेष, दोनामरुआ ।

दोनाली दे० ( स्त्री० ) दो नली की बंदूक ।

दोनों दे० ( वि० ) दोऊ, उभय, दो ।

दोपहर ( पु० ) मध्याह्न ।

दोपीठा ( गु० ) दोखला ।

दोवर दे० ( गु० ) दुहरा, दो तह, दो बार ।

दोवे दे० ( पु० ) दुपे, ब्राह्मणों की एक पक्षी ।

दोभापिया ( वि० ) दुभषित ।

दोमुहा तद्० ( पु० ) द्विमुख, दो मुँह का साँप, करवा, गडुया, द्विजिह्वा ।

दोय दे० ( वि० ) दो, दो की संख्या, २ ।

दोरक तत्० ( पु० ) सितारा का तार, अनन्त चतुर्दशी के दिन का स्वरूप प्रसार, जिसे अनन्त कहते हैं ।

दोर्दाइ तत्० ( पु० ) गडुरुपी दण्ड, मुजदण्ड ।

दोल तत्० ( पु० ) दोलोसव, श्रीकृष्ण का मूलन, हिंडोला ।

दोलन तत्० ( पु० ) [ दुल् + अनट् ] मूलन, हिलन ।

दोला तत्० ( पु० ) हिंडोला, मूलना, पालना ।

दोलिका तत्० ( स्त्री० ) हिंडोला, मूलन, जिस पर मूलते हैं ।

दोप तत्० ( पु० ) [ दुप् + अच् ] दूषण, भ्रष्टि, कलङ्क, भ्रम, पाप, अपराध, चूक, शूल, ऐव, दुर्गुण,

कमूर, निन्दा, अनिष्ट, बात पित्त और कफ ।—

कर ( पु० ) दूषणावह, अनिष्टकर, निन्दाकर ।—

खण्डन ( पु० ) अपराध मार्जन, कलङ्क मार्जन,

दोपापनयन ।—गायक ( पु० ) निन्दक ।—

ग्राहक ( पु० ) दोष ग्रहणकर्त्ता, अपवाद कारक,

निन्दक, खल, छिद्रान्वेपी ।—ज्ञ ( पु० ) पण्डित,

चिकित्सक, दोषवेत्ता ।—त्रय ( पु० ) बात, पित्त,

कफ ।—नाश ( पु० ) पापमोचन, अपवादहरण ।

—भाक् ( पु० ) अपराधी, निन्दाई, निन्दा के योग्य ।

दोषक तत्० ( पु० ) निन्दक, अपराधी, दोषी, पापी ।

दोषना दे० ( कि० ) दोष देना, दोष लगाना, अपराध लगाना ।

दोपा तत्० ( स्त्री० ) रात्रि; निशा, रात । ( अ० ) प्रदोष, निशामुख, सन्ध्या ।—तन ( वि० ) निशा-जात, रात्रिमय, रात में उत्पन्न ।

दोपादोप तत्० ( पु० ) मलाई, बुराई, वृत्तम निकृष्ट ।

दोपारोपण तत्० ( पु० ) दोष लगाना, अपराध लगाना, जुर्म लगाना ।

दोपावह तत्० ( वि० ) [ दोष + आवह ] दोषोपबन्ध, जिससे दोष की उत्पत्ति हो । [ युक्त, अग्रह ।

दोपी तत्० ( वि० ) कलङ्की, अपराधी, पापी, दोष-

दोषकट्टक तत्० ( वि० ) दोषमात्रदर्शी, जो गुणों को छोड़ कर केवल दोष ही दोष देखा करता है, ऐव देखने वाला, छिद्रान्वेपी ।

दोसरा दे० ( पु० ) दूसरा, द्वितीय, सही, साथी, सहचर ।

दोसाद दे० ( पु० ) धातुल, नीच जाति विशेष, दुसाध, अप्सृष्ट जाति, अक्षुष्ट जाति, अत्यज जाति ।

दोस्त दे० ( पु० ) मित्र, बन्धु, सुहृद् ।— ( स्त्री० ) मंत्री, स्नेह ।

दोहगा ( स्त्री० ) रखनी, वह स्त्री जिसका पति मृत हो गया हो और जिसे अन्य पुरुष ने रख लिया हो ।

दोहड़िका दे० ( स्त्री० ) भाषा का एक छन्द, विशेष ।

दोहल्यङ् दे० ( स्त्री० ) दोनों चपेट, ताली ।

दो ( पु० ) दोहता,

धेवती ।

दोहती,

दोहद तत् ( पु० ) हृष्टा, स्पृहा, गर्भ, गर्भिणी का अभिलाप, गर्भिणी की झालसा, साध । — लक्षण ( पु० ) गर्भ के लक्षण, गर्भचिन्ह ।

दोहदयती तत् ( स्त्री० ) अन्नपानादि पदार्थों में अभिलाप रखने वाली गर्भवती स्त्री । [ दुहना ।

दोहन तत् ( पु० ) दुग्ध निस्तारण, दूध निकालना,

दोहनी तत् ( पु० ) दोहनपात्र, दूध दुहने का पात्र ।

दोहर दे० ( स्त्री० ) दोहरावक, जो ओढ़ने के काम में आता है, गल्लफ, खाप । [ आवृत होना ।

दोहरना ( क्रि० ) दोहरा करना, दोहरा होना, दूसरी

दोहरा दे० ( पु० ) द्विगुण, द्विगुणित, दुगुणा, पच-विशेष, पहेली का छन्द ।

दोहराव दे० ( पु० ) दोहराया हुआ, दोहराने का काम, तह करना ।

दोहला ( पु० ) दो बार की ब्यायी हुई गौ ।

दोहली ( स्त्री० ) श्याक, मदरा ।

दोहा दे० ( पु० ) दो चरण का श्लोक, पद्यविशेष, यह ४८ मात्राओं का होता है । प्रथम तृतीय चरण में तेरह तेरह मात्राएँ और द्वितीय चतुर्थ चरणों में ग्यारह ग्यारह मात्राएँ होती हैं ।

दोहाई दे० ( स्त्री० ) हुहाई, पुकार, गुहार, विचार के लिये प्रार्थना करना, शपथ, सीगन्ध ।

दोहान तद् ( पु० ) ठिंदावन, दो वर्ष का बच्चा ।

दोहिता तद् ( पु० ) दोहित्र, बेटी का बेटा ।

दोंगड़ा दे० ( पु० ) भारी चप्पा ।

दौड़ दे० ( स्त्री० ) धावा, सर्पट, प्रति वेग से गमन, शीघ्र गमन, प्रखिल का दल जो पुंढों या लुधारियों के गिरोह को गिरफ्तार करने को जाता है — धूप ( स्त्री० ) यज्ञ, परिश्रम, उद्योग, चेष्टा । — धूप करना ( वा० ) बहुत उद्योग करना, यज्ञ परिश्रम करना । [ चलना ।

दौड़ना दे० ( क्रि० ) धावना, सर्पट लगाना, वेग से

दौड़ा दे० ( पु० ) धुड़चड़ा, धुड़सवार, बटमार । — दौड़

( क्रि० ) अविश्रान्त, अधिक । — दौड़ो ( स्त्री० )

दौड़ धूर, शीघ्र गमन ।

दौड़ाक दे० ( पु० ) दौड़ने वाला, धावक, दौड़ाहा ।

दौड़ाना दे० ( क्रि० ) वेग से चलाना, शीघ्र चबना ।

दौड़ाहा दे० ( पु० ) दौड़ने वाला, सन्नेसिया, हरकाग ।

दौत्य तत् ( पु० ) दूत का धर्म, दूत का कर्म, चार्तावहता, चार्तावाहक ।

दौना दे० ( पु० ) पत्ते से बना कटोराजुमा पात्र, दोना ।

दौर ( पु० ) भ्रमण, फेरा । [ दौरी से बढ़ा ।

दौरा दे० ( पु० ) टोकरा, बड़ी टोफरी, टोकरना,

दौरात्म्य तत् ( पु० ) दुरात्मा का कार्य, परपीड़न,

श्लाघ, दुष्टता, घनिष्ट, दुर्जनता, दुष्टता,

राजीपन, नीचता ।

दौरान ( पु० ) चकर, फेरा, मोंका ।

दौरी दे० ( स्त्री० ) चंगेरी, टोफरी, छोटा दौरा ।

दौहित्र तत् ( पु० ) दुहिता, पुत्र, दोहता, कन्या

तनय, बेटी का बेटा । [ बेटी की बेटी ।

दौहित्री तत् ( स्त्री० ) कन्या की कन्या, दुहिता पुत्री,

द्युति तत् ( स्त्री० ) प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति, शोभा,

किरण, तेज, प्रभा । [ विद्, अकंचुष ।

धुमण्डि तत् ( पु० ) सूर्य, रवि, भाग्य, अकीर्ण का

धुमरसेन तत् ( पु० ) शाक्यदेश के राजा, इनके पुत्र

का नाम सत्यवान् और पुत्रवधू का नाम सावित्री

था । राजा धुमरसेन किसी विशेष कारण से अन्धे

हो गये थे । कतिपय अधम कर्मचारियों ने सिद्ध

का राजा धुमरसेन को शनघ्युत कर दिया । तब

महाराणी शैव्या और पुत्र सत्यवान् को लेकर

राजा धुमरसेन उन में गये, एक समय मद्रदेश के

राजा उसी वन में गये और वहाँने अपनी कन्या

का विवाह सत्यवान् से करना ठीक किया । मद्र-

देश की राजकुमारी का ब्याह सत्यवान् ने हो

गया । सत्यवान् अश्वगु थे, थोड़े ही दिनों में

उनकी आयु पूर्ण हो गई । सावित्री ने अपने

पतिमन के प्रभाव से यमराज को मोहित करके

उनसे कितने ही वर पाये । वहाँ वरों के

प्रभाव से राजा धुमरसेन ने मद्र और राज्य पुनः

पाये और मृत सत्यवान् भी पुनः जीवित हो गये ।

राजा धुमरसेन योग्य पुत्र सत्यवान् को राज्य का

भार देकर और उचित समय पर धानप्रत्य व्रत

ग्रहण कर पुनः वन में चले गये ।

धुलोफ ( पु० ) स्वर्ग लोक ।

धुसद तत् ( वि० ) स्वर्गवासी, स्वर्ग में रहने वाला,

( पु० ) देवता, देव, सुर ।

यूत तत्त्वं ( पु० ) जुआ, स्वनाम प्रसिद्ध प्रीडा विशेष ।  
 —कार ( पु० ) जुआही, जुआ खेलनेवाला ।  
 —क्रीड़ा ( स्त्री० ) जुए का खेल ।—पूर्णिमा  
 ( स्त्री० ) आश्विन की पूर्णिमा ।  
 द्यो ( तत्त्वं पु० ) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक, आकाश ।  
 द्योत तत्त्वं ( पु० ) दीप्ति, प्रकाश, चमक, किरण ।  
 द्योतक तत्त्वं ( पु० ) प्रकाशक, प्रकाशशील, दीप्तिमान् ।  
 द्योतन तत्त्वं ( पु० ) प्रकाशन, प्रकाशकरणा, दर्शन,  
 प्रदीप ।  
 द्योतित तत्त्वं ( वि० ) प्रकाशित, प्रकटित, व्यक्तीकृत ।  
 द्योतनी दे० ( स्त्री० ) देवराणी, पति के छोटे भाई  
 की स्त्री ।  
 द्यौंस ( पु० ) दिन, दिवस । [का मान ।  
 द्रम्म तत्त्वं ( पु० ) मान विशेष, सोलह, १६ पण  
 द्रव्य तत्त्वं ( पु० ) स्नेह द्रव्य, चिकनी वस्तु, पनीली वस्तु,  
 रसीली वस्तु, रस, पलायन, गतिवेग ।—आच  
 ( पु० ) तरलभाव, गलना, पिघलना ।  
 द्रवण ( पु० ) दौढ़, गमन, गति, बहाव ।  
 द्रविड तत्त्वं ( पु० ) देश विशेष, दक्षिण देश का एक  
 प्रान्त, वहाँ के रहने वाले ब्राह्मण द्राविड़ कहे  
 जाते हैं । [रुपा, पैसा ।  
 द्रविण तत्त्वं ( पु० ) धन, द्रव्य, काज्जन, सोना,  
 द्रवित तत्त्वं ( वि० ) बहता हुआ, पिघला हुआ, कृपा-  
 युक्त, नम्र । [पिघलाना, गलाना ।  
 द्रवीकरण तत्त्वं ( पु० ) कठिन द्रव्य को सरल करना,  
 द्रवीभूत तत्त्वं ( पु० ) गलित, मिश्रित, टिघला हुआ,  
 पिघला हुआ । [युक्त हो ।  
 द्रव्यो, द्रव्यदे० ( कि० ) दया करो, कृपा करो, ५  
 द्रव्य तत्त्वं ( पु० ) विच, धन, नैयायिकों के मत  
 पृथिवी, अप, तेज, यः आकाश, काल, ५  
 आत्मा और मन हैं ।—

द्राधिमा तत्त्वं ( स्त्री० ) दीर्घता, लंबाई, दीर्घत्व,  
 दीर्घ । [भेद, सोहागा पिघलाने वाला ।  
 द्रावक तत्त्वं ( पु० ) द्रवकारक, गलाने वाला, प्रसर  
 द्रावण तत्त्वं ( पु० ) द्रवकरण, गलाना, निर्मलीकरण,  
 पिघलाना, बहाना, साफ करना ।  
 द्राविड़ तत्त्वं ( पु० ) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत की  
 दक्षिण दिशा का देश, द्रविड़ देशवासी, ब्राह्मण  
 विशेष, कचूर । [एलायची, द्रविड़ देश की भाषा ।  
 द्राविड़ो तत्त्वं ( स्त्री० ) द्रविड़ देशोत्पन्न वस्तु, छोटी  
 द्रुत तत्त्वं ( पु० ) पिघला हुआ लुवर्ण आदि, शीघ्र,  
 तुरन्त, त्वरित । ( पु० ) नृत्य विपन्नक शीघ्र गमन ।  
 —गामी ( पु० ) शीघ्रगामी, द्रुतगमनकत्ती,  
 जल्दी चलने वाला ।—पद ( पु० ) छन्द विशेष ।  
 द्रुपद तत्त्वं ( पु० ) चन्द्रवंशी द्रुपत् नामक राजा का  
 पुत्र, राजा द्रुपत् के साथ भरद्वाज ऋषि की मित्रता  
 थी । द्रुपत् के पुत्र द्रुपद और भरद्वाज के पुत्र द्रोण  
 दोनों समान वय के थे, अतएव इनमें भी मित्रता  
 होगई । राजा द्रुपत् के मरने पर द्रुपद राजा  
 बनाये गए । भरद्वाज के मरने के बाद द्रोण तपस्या  
 करने लगे । द्रुपद राजा होकर अपने बाल्यमित्र को  
 भूल गये थे । एक समय द्रोण पूर्व मैत्री स्मरण  
 करके राजा के पास गये, परन्तु राजा ने दूरिद्र  
 ब्राह्मण पुत्र से मैत्री करनी न चाही । कुछ दिनों  
 के बाद द्रोण कौरव और पाण्डवों के अश्वशिक्षक  
 नियत हुये । द्रोण द्रुपद के अपमान को भुले नहीं  
 थे । भीम अर्जुन आदि जय अश्व शिक्षा में निपुण  
 थे । तब द्रोण ने पर चढ़ाई करके उसे  
 अपने साथ लिये अर्जुन को  
 दी । अर्जुन पर चढ़ाई की  
 के १५ को बांधकर  
 की बात

किया। इसी यज्ञ से द्रोणहन्ता एष्ट्युम्न की उत्पत्ति हुई थी। उसी यज्ञवेदी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जिसे द्रौपदी अथवा कृष्णवर्ण होने के कारण कृष्णा कहते हैं। महाभारत के युद्ध में द्रोण ने द्रुपद को मारा था, परन्तु द्रुपद पुत्र एष्ट्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य मारे गये। द्रुपद का एक नपुंसक सन्तान शिखण्डी था, जिसके द्वारा भीष्म मारे गये।

द्रुपदी तद्० ( स्त्री० ) राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, ( देखो द्रौपदी )

द्रुमं तत्० ( पु० ) [ द्रु + म ] वृक्ष, पारिजात, पेड़, रूख, तरवार।—व्याधि ( स्त्री० ) लाड़ा, लाल, लाही।—श्रेष्ठ ( पु० ) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़। ( वि० ) उत्तम वृक्ष, श्रेष्ठ पेड़।—लय ( पु० ) जंगल।—श्रम ( पु० ) गिरगिट ( पु० ) वृक्षवासी।

द्रुमालिक तद्० ( पु० ) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम।

द्रुमारि तत्० ( पु० ) [ द्रुम + अरि ] वृक्षों का शत्रु, हाथी, गज, कर्ी। ( वि० ) कुठार, कुल्हाड़ी, अश्वघ्न, प्रचण्ड वायु।

द्रुमाश्रय तद्० ( पु० ) [ द्रुम + आश्रय ] शरट, कूक-लास, गिरगिट। ( वि० ) वृक्ष पर रहने वाले प्राणिमात्र।

द्रुमिजा ( स्त्री० ) छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होनी चाहिये।

द्रुमेश्वर तद्० ( पु० ) [ द्रुम + ईश्वर ] तालवृक्ष, अश्व-वृक्ष, पीपल का पेड़, चन्द्रमा, निशाचर।

द्रुहिण तद्० ( पु० ) विधाता, विधि, ब्रह्मा, प्रजापति। [ भाग।

द्रैकाण तद्० ( पु० ) लग्न के तीसरे भाग का एक द्रोण तत्० ( पु० ) परिमाण विशेष, चार आड़क का परिमाण, आड़क चतुष्टय। ३२ सेर प्रचलित परिमाण। द्रोणाचार्य, कौरव पाण्डवों के धनुर्विद्या के गुरु, ( देखो द्रोणाचार्य ) कृष्ण काक, वृश्चिक, विष्ट, चार सौ धनुष परिमाण का जलाशय। श्वेतवर्ण छोटा फूल।—काक ( पु० ) धनैला कौवा, धन्यवायस, दाढ़ काक।—पुष्पी ( स्त्री० ) पीथा विशेष, गोशीर्षक पृष्ठ यह औषध के

काम में आती है।—मुख ( पु० ) चार सौ गावों में से सुन्दर गाँव।

द्रोणाचल ( पु० ) द्रोण नामक पहाड़।

द्रोणाचार्य तद्० ( पु० ) [ द्रोण + आचार्य ] भरद्वाज ऋषि के पुत्र। भरद्वाज का आश्रम गङ्गा तट पर था एक दिन गङ्गास्नान के समय भरद्वाज ने विवक्षा शृताची नाम की अम्बरा को देखा। उसके देखने से कामविश्व महर्षि का रेतःपात हुआ। शृताची ने उसको द्रोण नामक यज्ञ के पात्र में रख दिया, कुछ दिनों के बाद उस यज्ञपात्र से एक लड़का उत्पन्न हुआ। महर्षि ने उसका नाम भी द्रोण ही रखा। भरद्वाज ने अग्निवेश्य नामक ऋषि को आग्नेयाश्र की शिक्षा दी थी। द्रोण ने भी धनुर्विद्या और आग्नेयाश्र की शिक्षा उन्हीं अग्निवेश्य से पायी। द्रोण का मित्र द्रुपद नामक राजा था। ( देखो द्रुपद ) परन्तु किसी विशेष कारण से इनकी मित्रता नष्ट हो गयी। पिता की आज्ञा से शरद्धान की कन्या कृपी से द्रोणाचार्य ने अश्वना व्याह किया। उसी विवाह से द्रोण के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम अश्वत्थामा था। अश्व विद्या सीखने के लिये द्रोण महेंद्र पर्वत पर परशुराम के निकट गये और वहाँ उन्होंने अश्व विद्या सीखी। पाण्डव और कौरवों को पढ़ाने के लिये भीष्मपितामह ने इन्हें नियुक्त किया। अर्जुन इनका प्रिय शिष्य था। अर्जुन ने जब गुरुदक्षिणा देने की इच्छा प्रकट की तब द्रोणाचार्य ने कहा था—“अर्जुन जब कभी हम तुमसे युद्ध करें उस समय तुम भी मेरे साथ एव युद्ध करना। उस समय किसी प्रकार का सङ्कोच मत करना।” इसी कारण महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने गुरु के साथ घोर संग्राम किया। नहीं तो द्रोण का स्वयं से अधिक प्रिय शिष्य अर्जुन कभी गुरु के साथ युद्ध करने का साहम नहीं करता। उसी युद्ध में अश्वत्थामा के मरने का संवाद सुनकर द्रोण मूर्छित हुए। इसी अग्रगर पर एष्ट्युम्न ने तलवार से उनका सिर काट डाला।

द्रोणी तद्० ( स्त्री० ) [ द्रोण + ई ] देश विशेष, नदी विशेष, ढोंगी, छोटो नौका, पर्वत विशेष, दो वृक्षों की सन्धि।

द्रोह तत्० ( पु० ) [ द्रुह् + अल् ] वैर, द्वेष, लाग, विरोध, जिघांसा, अनिष्ट चिन्तन, अपकार, हानि पहुँचाने की इच्छा ।—कारी ( पु० ) [ द्रुह् + कृ + णिच् ] द्वेषी, वैरी, विरोधी ।  
—चिन्तन ( पु० ) दूसरों का अनिष्ट करने की चिन्ता, किसी की बुराई सोचना ।

द्रोहिया तद्० ( वि० ) द्रोही, द्वेषी, वैरी, विरोधी ।  
द्रोही तत्० ( पु० ) [ द्रुह्—इत् ] द्रोह करने वाला, अनिष्टकारी, खल, पिशुन, स्वभाव से वैरी, विरोधी, द्वेषी ।

द्रोणायन तत्० ( पु० ) [ द्रोण—थायन ] द्रोणाचार्य का पुत्र, अश्वत्थामा, यह सप्त चिरजीवियों में से हैं ।

द्रौपदी तत्० ( स्त्री० ) पाञ्चालराज द्रुपद की यज्ञ-वेदी से उत्पन्न कन्या । इसका वर्ण काला था इस कारण इसका दूसरा नाम कृष्णा था । स्वयं-वर स्थान में लक्ष्यभेद करके अर्जुन ने इसे पाया था । परन्तु पाँचों भाइयों का इससे ब्याह हुआ । यह अपने पतियों के साथ वन वन घूमती फिरती थी । अज्ञातवास के समय विराट के घर इसने सैरिन्ध्री ( दासी ) का काम किया था । दुःशासन और दुष्येधन ने भरी सभा में इसका अपमान किया था । इसीका बदला भीम ने कुरुक्षेत्र के युद्ध में लिया था । महाभारत युद्ध समाप्त होने पर कुछ दिनों तक यह सुख शान्ति से राज्यभोग करती थी । पुनः जब इसके पति महाप्रस्थान के लिये उद्यत हुए तब द्रौपदी भी अपने पतियों के साथ चली, हिमपर्वत पर चढ़ने के समय सब से पहले यही गिर गयी थी ।

द्रुद्ध तत्० ( पु० ) युग्म, जोड़ी, युगल, मिथुन, रहस्य, स्त्री पुरुष की जोड़ी, विवाद, कलह, रोग विशेष, पदविध समास के अन्तर्गत एक समास का नाम ।  
द्रुद्ध समास. सुख दुःख, राग द्वेष, शीत आतप आदि ।—कारी ( वि० ) कलहकारक, झगड़ालू, विवादी ।—चर ( पु० ) चक्रवाक पक्षी, चक्रवा ।  
—ज ( पु० ) [ द्रुद्ध + जन् + ड् ] दो दोषों से उत्पन्न रोग, कलहजन्य, कलह से उत्पन्न ।—युद्ध ( पु० ) मल्ल युद्ध, हाथापाई ।

द्रय ( पु० ) दो ।

द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत् तत्० ( वि० ) दो अधिक चालीस, ४२, बयालीस ।

द्वात्रिंशत्, द्वित्रिंशत् तत्० ( वि० ) दो अधिक तीस, ३२, बत्तीस ।—अक्षरी ( पु० ) ग्रन्थ, पुस्तक ।

—जलक्षण ( पु० ) जलसे लक्षण, जो महापुरुषों में होते हैं, वे ये हैं—सुकृत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुचिता, अभ्यास, ब्रह्मविद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्रीत्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, पुष्टविद्या, प्रियविद, सत्संग, अकाम गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जिते, न्द्रियत्व, दातृत्व, धर्म, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धैर्य इति ।

द्वादश तत्० ( पु० ) [ द्वादश + ड् ] दो अधिक दश, १२ बारह, बारहवीं संख्या ।—उपवन ( पु० ) साङ्केतिक बारह उपवन यथाः—शान्तनुकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, वरसाना, संकेत, नन्दघाट, चोरघाट, बलरामस्थल, नन्दगाँव, गोकुल, चन्दनवन ।—कर ( पु० ) बृहस्पति, कार्तिकेय ।—पत्र ( पु० ) योनि विशेष ।—भानु ( पु० ) बारह सूर्य ।—भानुकला ( स्त्री० ) सूर्य की बारह कलाएँ उनके नाम ये हैं । तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरिची, ज्वलिनी, रुचि, रुचिनिम्ना, भोगदा, विश्वयोधिनी, धारिणी, रुमा, शोषिणी ।  
—लोचन ( पु० ) कार्तिकेय, कुमार, देव सेनापति ।—तप्त तत्० ( पु० ) [ द्वादश + अण ] कार्तिकेय, गृह, पठानन ।—घन ( पु० ) बारह वन जो व्रज में हैं । मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, येलवन, भागडीर वन ।

द्वादशांशु तत्० ( पु० ) [ द्वादश + अंशु ] बृहस्पति, सुराचार्य, देवगुरु । [ अक्षरों का मंत्र विशेष ।

द्वादशाक्षर तत्० ( पु० ) वासुदेव भगवान् का १२ द्वादशाक्षरुल तत्० ( पु० ) [ द्वादश + अंशुल ] वितति परिमाण, एक बीता, आधा हाथ, एक विलस ।

द्वादशात्मा तत्० ( पु० ) [ द्वादश + आत्मा ] सूर्य, भानु, दिवाकर, अकवन का पेड़ ।

द्वादशाह ( पु० ) श्रुतक का १२ वें दिन का कृत्य, १२ दिवस में समाप्त होने वाला यज्ञ विशेष ।

द्वादशी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ द्वादश + ड् + ई ] तिथि विशेष, पक्ष की बारहवीं तिथि, चन्द्रमा की बारहवाँ कला का समय ।

द्वापर तत्त्वं ( पु० ) युग विशेष, तीसरा युग, इसका मान २६४००० वर्ष का होता है । इसमें श्रीकृष्ण और बौद्ध दो अवतार हुए थे । सन्देश, अनिरुचय ।  
द्वापञ्चात् तत्त्वं ( वि० ) संख्या विशेष, दो अधिक पचास, १२, यावन ।

द्वार तत्त्वं ( पु० ) निकलने का मार्ग, घर में से निकलने का पथ, दरवाजा ।—कण्टक ( पु० ) किवाड़, कपाट, अरगल ।—परिडित ( पु० ) किसी राज्य का मुख्य परिडित ।—पाल ( पु० ) द्वाररक्षक, दरवान ।—पालक ( पु० ) द्वाररक्षक, द्वारवान, पहलूया, प्रहरी ।—यन्त्र ( पु० ) द्वार बन्द करने का यन्त्र, ताला, कुकुल ।

द्वारका तत्त्वं ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध पुरी, श्रीकृष्ण की नगरी, जो काठियावाड़ में समुद्र के तट पर और समुद्र के भीतर है ।

द्वारकेश तत्त्वं ( पु० ) श्रीकृष्ण, द्वारका के अधिपति ।  
द्वासा तत्त्वं ( पु० ) कारण से, हेतु से, सहायत से, जरिया, निमित्त ।

द्वावावती तत्त्वं ( स्त्री० ) द्वारवती, द्वारका, जिसको श्रीकृष्ण ने बसाया था, जो सुवर्णमयी द्वारका के नाम से प्रसिद्ध है ।

द्वारिका तत्त्वं ( स्त्री० ) द्वारका, द्वावावती, चार धाम के अन्तर्गत तीर्थ विशेष ।—धीश ( पु० ) [ द्वारिका + अधीश ] श्रीकृष्णजी ।

द्वारी तत्त्वं ( पु० ) [ द्वार + इन् ] द्वारपाल, द्वाररक्षक, दरवान, पौरिया । [ वासत ।

द्वापष्टि, द्विपष्टि तत्त्वं ( वि० ) दो अधिक साठ, ६२, द्वाप्तसति, द्विसप्तति, तत्त्वं ( वि० ) संख्या विशेष, दो अधिक सत्तर, ७२, बहत्तर । [ दरवान, पौरिया ।

द्वास्थे तत्त्वं ( पु० ) द्वाररक्षक, द्वारपाल, द्वारी, द्विः तत्त्वं ( अ० ) बारद्वय, दो बार ।—श्रुतिधर ( पु० ) [ द्विःश्रुति + ध + अच् ] किसी बात को दो बार सुनने से जो स्मरण रखता हो ।

द्विगु तत्त्वं ( पु० ) समास विशेष, यह समास तत्सुल्ल समास के अन्तर्गत है । [ संख्या द्वारा गुणित ।

द्विगुण तत्त्वं ( वि० ) दुगुना, दोहरा, दुबारा, दो

द्विगुणित तत्त्वं ( वि० ) द्विगुणीकृत, दुगुना किया हुआ, दो से जरब दिया हुआ ।

द्वित्र्यारिंशत् तत्त्वं ( वि० ) संख्या विशेष, दो अधिक चालीस, ४२, बयालीस ।

द्विज तत्त्वं ( पु० ) [ द्वि + जन ] दो बार उत्पन्न ब्राह्मणादि त्रिवर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, इन वर्णों की दूसरी उत्पत्ति जन्म और संस्कार से होती है अतएव ये द्विज कहे जाते हैं । अष्टाद्वज, पक्षी, दंत, दन्त ।—पति ( पु० ) चन्द्रमा, शशाङ्क, चन्द्रमा ब्राह्मणों के स्वामी हैं । धृति में लिखा है “ सोमोऽस्माकं राजा ” अर्थात् सोम हम लोगों का राजा यानी शसक है ।—प्रापा ( स्त्री० ) आलयाल, वृक्ष मूल में जल देने के लिये बनाया हुआ थाला ।—प्रिया ( स्त्री० ) सोमलता, सोम नाम की बहो । ( वि० ) त्रिवर्ण की प्रिय वस्तु ।—वन्धु ( पु० ) ब्राह्मण के समान, अभ्राह्मण, कुलित ब्राह्मण ।—वर्ग ( पु० ) श्रेष्ठ ब्राह्मण, उत्तम ब्राह्मण ।—ब्रुव ( पु० ) जातिमात्र का ब्राह्मण, नीचब्राह्मण ।—राज ( पु० ) चन्द्रमा, शशाङ्क, शशाङ्क ।

द्विजन्मा तत्त्वं ( पु० ) [ द्वि + जन + मन् ] विप्र, ब्राह्मण, दन्त, पक्षी, क्षत्रिय, वैश्य । ( वि० ) दो बार उत्पन्न होने वाला । [ अष्टाद्वज, पक्षी ।

द्विजाति तत्त्वं ( पु० ) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, द्विजातीय तत्त्वं ( पु० ) त्रिवर्ण सम्यन्धी ।

द्विजालय तत्त्वं ( पु० ) [ द्विज + आलय ] धृष्ट कोटर, ब्राह्मण गृह, पत्थियों का स्थान, घाँसला, चोंता ।

द्विजिह्व तत्त्वं ( पु० ) [ द्वि + जिह्व ] सर्प, पिशुन, खल, इधर की बात उधर कहने वाला, चुगल-खोर, चुगली खाने वाला ।

द्विजोत्तम तत्त्वं ( पु० ) [ द्विज + उत्तम ] ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, श्रेष्ठपक्षी, गरुड । [ एक रेखा विशेष ।

द्विज्या तत्त्वं ( स्त्री० ) [ द्वि + ज्या ] गोलाप्याय की द्वितय तत्त्वं ( वि० ) [ द्वि + तय ] युग्म, दो ।

द्वितीय तत्त्वं ( वि० ) [ द्वि + तीर्थ ] दो को पूरण करने वाली संख्या, दूसरा, दूसरा, द्वय ।

द्वितीया तत्त्वं ( स्त्री० ) [ द्वितीय + आ ] गेहिनी, भायाँ, तिथि विशेष, चन्द्रमा की दूसरी तथा सत्तरहवीं कला की क्रिया का समय ।



धनुही दे० (खी०) छोटा धनुष, खेजने की धनुवी ।  
 धनेश, धनेश्वर तद्० (पु०) धनाधिरति, कुबेर ।  
 धनेसा तद्० (पु०) धनेश, कुबेर, धनाधिप, गुह्यका-  
 धिप, यक्षराज । [ सर्वोच्चधनी ।  
 धन्नासेठ तद्० (पु०) धनश्रेष्ठ, बहुत धनी, कृतार्थ,  
 धन्नोटा दे० (पु०) धन के नीचे लगाई जाने वाली  
 लकड़ी, धुनी ।

धन्य तद्० (पु०) [ धन + य ] कृतकर्मा, साधु, भाग्य-  
 वान्, पुण्यवान्, सुकृती, श्रेष्ठ, प्रसन्नता पूर्वक  
 आश्चर्य बोधक शब्द ।—मानना (वा०) धन्यवाद  
 करना, उपकार मानना, उपकृत होना ।—वाद  
 (पु०) साधुवाद, प्रशंसावाद, स्तुति, स्तव,  
 आशीर्ष ।—वादी (वि०) उपकृत, कुण्ड,  
 स्तुतिकर्ता, गुणानुबन्ध, भागध, धन्दी ।

धन्या तद्० (खी०) [ धन्य + आ ] कृतार्था स्त्री,  
 भाग्यवती स्त्री, श्रेष्ठा स्त्री, धनिया, आत्मलकी,  
 एक नक्षी का नाम ।

धन्याक तद्० (पु०) [ धन्या + क ] धनिया ।

धन्व तत्० (पु०) धन्वन्, धनुष ।

धन्वङ्ग तद्० (पु०) [ धनु + अङ्ग ] धन्वन् वृत्त  
 विशेष ।

धन्वदुर्ग तद्० (पु०) निज्जल देश, जलशून्य स्थान,  
 मरुदेश, मारवाड़ ।

धन्वन्तरि तद्० (पु०) देववैद्य, दिवोदास, समुद्र  
 मन्थन करने से यह उत्पन्न हुए थे । सुलभक्रोध  
 महर्षि दुर्वासा के शाप से इन्द्र लक्ष्मीअष्ट हो  
 गये थे, इसी कारण प्रह्ला ने समुद्र मथन करने  
 के लिये देवताओं को आज्ञा दी । लक्ष्मी चन्द्रमा  
 आदि के साथ देववैद्य धन्वन्तरि भी निकले थे ।  
 धन्वन्तरि समुद्र से निकल कर अपने सामने विष्णु  
 को देखकर कहने लगे, प्रभो ! मैं आपका पुत्र हूँ  
 आप कृपाकर मुझको भी यज्ञ का भाग प्रदान करें,  
 और मेरे रहने के लिये स्थान बता दें । विष्णु ने  
 उत्तर दिया, वत्स ! यज्ञ का भाग देवताओं में बंट  
 चुका है, अब तुमको यज्ञ का भाग देना मेरी  
 शक्ति के बाहर की बात है, दूसरे जन्म में तुम्हारी  
 बड़ी प्रसिद्धि होगी । गर्भावस्था ही में अणिमादि  
 योग की सिद्धिर्था तुमको प्राप्त हो जायेगी और

उसी शरीर के द्वारा तुम देवत्व प्राप्त कर सकोगे  
 तथा लोकोपकार के लिये आयुर्वेद को आठ भागों  
 में विभक्त करोगे । यही दूसरे जन्म में काशीराज  
 दिवोदास हुए थे । इनके बचाने प्रण्य का नाम  
 धन्वन्तरि संहिता है । ये प्रधानतः शक्यतन्त्र के  
 चिकित्सक थे ।

( २ ) महाराज विक्रम की सभा के नवरत्नों में से  
 एक रत्न, ये क्षीटीय छठवीं सदी के हैं । घट-  
 कर्पूर, लपणक आदि इन्हीं के समकालीन थे । इनके  
 पनामे किसी भी ग्रन्थ का आज तक पता नहीं  
 चला है, ही-नवरत्नों के रत्नों में कतिपय श्लोक,  
 इनके नाम से प्रसिद्ध हैं । ये श्लोक भी इनकी  
 अद्भुत कविशक्ति के परिचायक हैं ।

धन्वावास तद्० (पु०) जवासा ।

धन्वा तद्० (पु०) मरुदेश, निज्जल देश ।—कार  
 (पु०) धनुष के आकारवाला ।

धन्वी तद्० (पु०) धनुधारी, धानुष्क ।

धप दे० (पु०) चपेट, धपड़, समावा ।

धपधप दे० (पु०) श्वेतवर्ण, डण्डल, लच्छ ।

धपाड़ या धप्पड़ दे० (पु०) दौड़, सरपट, धावन ।

धप्पा दे० (पु०) धोखा, छल, चपेट, कलङ्क, अपवाद ।

धन्वा दे० (पु०) दाग, घुरा धिन् ।

धम (खी०) धमक ।

धमक (खी०) भयदायक शब्द, आघात से उत्पन्न  
 शब्द, पैरों की आड़ ।

धमका दे० (पु०) बोझिल वस्तु के गिरने का शब्द,  
 धमक ।

धमकाना दे० (कि०) हाँटना, किड़कना, डारना, भय,  
 दिखाना, घुड़कना ।

धमकाहट दे० (खी०) घुड़की, किड़की ।

धमघूसड़ दे० (वि०) मोटा, स्थूल, तौंज, बहुत  
 मोटा, निर्बुद्धि ।

धमनी तद्० (खी०) [ धमन + ई ] नाड़ी, शिरा, नस ।

धमाका दे० (पु०) किसी भारी वस्तु के सहसा  
 गिरने का शब्द ।

धमाचौकड़ी दे० (खी०) रोखा, गुलगापाड़ा, कोलाहल ।

धमाधम दे० (पु०) लगातार पैर या किसी अन्य  
 वस्तु के पीटने का शब्द ।

धमार, धमाल दे० ( पु० ) ताल विशेष, होली में गाया जाने वाला गीत विशेष, चौताल ।

धमोका दे० ( पु० ) एक प्रकार की खंजरी ।

धम्मिल्ल तत्त्वं ( पु० ) संयनकेश, बगायी हुई चोरी ।

धर दे० ( स्त्री० ) धरती, भूमि । 'पु०' घड़, देड़, काय, सिरहीन शरीर, सिर में नीचे का भाग ( कि० ) पकड़ ।

धरक दे० ( स्त्री० ) धड़क, भय, डर, व्याकुलता ।

धरका दे० ( पु० ) धड़का, गम्भीर ध्वनि, भयदायक ध्वनि, हृदय का कम्पन ।

धरकी दे० ( कि० ) धड़की, धकधकाई ।

धरण, धरन तत्त्वं ( पु० ) [ ध + धनट् + ई ] पृथिवी विशेष, २४ रसी, एक पल का दसवाँ हिस्सा, कड़ी, स्वर, नामी ।—उल्लाङ्गना ( वा० ) नामी टलना, पेट की नाड़ी का बिगड़ जाना ।

धरणी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ ध + धनट् + ई ] पृथिवी, मैदानी, नाड़ी, मूल विशेष, शाश्वत वृक्ष ।—तल ( पु० ) अवनीतल, पृथिवीतल, वसुमती, वसुधा, पाताल ।—धर ( पु० ) शेषनाग, अनन्त विष्णु, पर्वत, पहाड़, राजा ।—पति ( पु० ) भूपति, महिषास, राजा ।—पाल ( पु० ) राजा, महीपति ।—सुता ( स्त्री० ) सीता, जानकी ।

धरत दे० ( कि० ) धरते ही, रखते ही ।

धरती दे० ( स्त्री० ) पृथ्वी, पृथिवी, भूमि ।

धरना दे० ( कि० ) प्रदण्य करना, पकड़ना, रखना, अधीन करना ।—द्वेना ( वा० ) एक प्रकार का हठ, जब कोई बली मनुष्य दुर्बल मनुष्य को किसी कारण से दुःख देता है, उस समय दुर्बल मनुष्य प्राण देने के लिये अथवा दुःख से ब्राण पाने के लिये बली मनुष्य के वा पशु बैठ जाता है और खाना पीना बिलकुल छोड़ देता है, इसे ही धरना देना कहते हैं ।

धरनैत दे० ( पु० ) धरना देने वाला, हठी, दुगाग्रही ।

धरपना तद् ( कि० ) धरण, भरसन, डाँटना, दयाना, क्रोध करना ।

धरहर दे० ( स्त्री० ) महाय, अवलम्ब, आश्रय, यथा—  
“यदि संसार असार भेद राम नाम श्रुतिसार ।  
रवि सुपुर धरहर करे नरहरि नाम उदार ॥”

—प्रह्लाद चरित्र ।

धरन्ता ( पु० ) पकड़ने वाला ।

धरा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ ध + अच् + धा ] पृथिवी, भूमि, गर्भाशय, भेद, नाड़ी, महादान विशेष ।

—तल ( पु० ) भूतल, सर्वलोक, पृथिवीतल ।

—धर ( पु० ) विष्णु, हर्म पर्वत ।—भर ( पु० )

[ धरा + अमर ] विप्र, ब्राह्मण, भूदेव ।

धराना दे० ( कि० ) श्रणी होना, अधीन होना, धारना, रखना ।

धारित्री तत्त्वं ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरणी, भूमि ।

धरोहर दे० ( पु० ) न्याय, याती, गिरो रखा हुआ द्रव्य, बन्धक, रक्षा के लिये रखा धन, अमानत ।

धरौना दे० ( पु० ) पुनर्विवाह ।

धर्त्तव्य तत्त्वं ( पु० ) [ ध + तव्य ] धारणीय, ग्राह्य, स्वातन्त्र्य, प्रदण्य करने योग्य ।

धर्त्ता तत्त्वं ( पु० ) धारण करनेवाला, कपटी, कर्मण्ड ।

धर्म तत्त्वं ( पु० ) [ ध + मन् ] शुभकर्म, पुण्य, श्रेय, सुकृत, न्याय, आचार, उपमा, यज्ञ, अहिंसा, उपनिषद्, उत्तम आचार, स्वभाव, रीति, जाति-व्यवहार, पंच, मत, कर्तव्य, व्यवस्था ।—कर्म ( पु० ) शुभ भाग्य बनाने वाली क्रिया, धर्मकार्य ।

—काय ( पु० ) बुद्ध ।—कृत्य ( पु० ) धर्मकर्म,

शास्त्रविहित कर्म ।—कोप ( पु० ) धर्मलक्ष्य ।

—वारिणी ( स्त्री० ) सहधर्मिणी, जाया, भार्या,

वनिता, पत्नी, स्त्री, लता विशेष ।—चिन्ता ( स्त्री० )

मुख्यभावना, सरकर्म की चिन्ता ।—जीवन ( पु० )

धर्ममय जीवन, धर्मानुयायी ब्राह्मण ।—श ( पु० )

धर्म ज्ञानयुक्त, धर्मिष्ठ, धार्मिक ।—ज्ञान ( पु० )

परलोक सम्बन्धी शुभाशुभ ज्ञान, कर्तव्य ज्ञान,

धर्मबोध ।—तत्त्व ( पु० ) धर्म की वधार्यता

धर्मरहस्य ।—द्वेष्टी ( वि० ) धर्मेघाती, पापिष्ठ,

पापी, वेदनिन्दक, शास्त्रनिन्दक ।—धुरन्धर ( वि० )

धार्मिक नेता, धर्म के कार्यों में आगे रहने

वाला, धर्मात्मा, धर्माचार्य ।—ध्वज—ध्वजी

( वि० ) धर्म की धजा वाला, दार्मिक, पालखड़ी,

कपटी, किसी स्वार्थ के कारण धर्म करने वाला,

दिखावे का धर्मात्मा ।—निष्ठ ( पु० ) धर्मिष्ठ,

मुख्यवान्, धर्मस्थापक ।—पत्नी ( स्त्री० ) अपने

मोत्र की विवाहिता स्त्री, शास्त्रविधि के अनुसार

विवाहिता पत्नी, धर्म की स्त्री, दण की कन्या ।  
 —पुत्र ( पु० ) युधिष्ठिर, नर, नारायण, वह पुत्र  
 जितने वचन देकर पुत्र मान लिया गया हो ।  
 —बुद्धि ( स्त्री० ) धर्म और अधर्म का विचार ।  
 —भ्राता ( पु० ) सहपाठी, साथी, साथ पढ़ने वाला,  
 सहपाठी । —भोरु ( पु० ) जिसको धर्म का भय हो ।  
 —मूर्ति ( पु० ) धर्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मा-  
 यत्ता । —याज्ञक ( पु० ) पुरोहित, पुराण वाचने  
 वाला, यज्ञ कराने वाला । —राज ( पु० ) धर्म से  
 राज्य चलाने वाला, न्यायी राजा, यमराज, युधिष्ठिर  
 का दूसरा नाम । —गाला ( स्त्री० ) अपासनागृह,  
 पूजा कराने का घर, दासगृह, दान करने के लिये  
 बनाया हुआ घर, अतिथिशाला, धर्मार्थ गृह,  
 विचारस्थान । —शास्त्र ( पु० ) मनु आदि महर्षियों  
 के बनाये शास्त्र, व्यवस्था शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, [मनु,  
 अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उनास, अङ्गिरा,  
 यम, आपस्तम्ब, सैमन, काश्यप, बृहस्पति,  
 पराशर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दण्ड, गैतम,  
 शास्त्रातप, अष्टि इन महर्षियों के नामों से  
 धर्मशास्त्र कहे जाते हैं ।] —गोल ( वि० ) धार्मिक,  
 पुण्यशील, पुण्यत्मा । —सभा ( स्त्री० ) न्यायालय ।  
 —संहिता ( स्त्री० ) स्मृतिशास्त्र, धर्मशास्त्र । —सूत्र  
 ( पु० ) जैमिन प्रणीत एक ग्रन्थ विशेष ।

धर्म तत्त्वं ( पु० ) देव विशेष, प्रज्ञा के दक्षिण अङ्ग से  
 इनकी उत्पत्ति हुई है, वाराहपुराण में लिखा है कि  
 सृष्टि उत्पन्न करते समय प्रज्ञा की बड़ी चिन्ता हुई  
 थी। उसी समय इनके दक्षिण अङ्ग से एक मनुष्य  
 वराह हुआ जिसका नाम धर्म था। वह पुरुष  
 कानों में श्वेत कुण्डल, कण्ठ में श्वेत भाटा और  
 अङ्गों में चन्दन लगाये हुए था। प्रज्ञा ने कहा—  
 तुम चतुष्पाद वृषभ के समान हो, अतएव तुम ही  
 श्वेत्त होकर इस सृष्टि का पालन करो । इसी कारण  
 सत्ययुग में धर्म चतुष्पाद, त्रेता में त्रिपाद, द्वापर  
 में द्विपाद और कलि में केवल एक पाद होकर  
 प्रजा की रक्षा करता है। गुण, द्रव्य, क्रिया  
 और जाति ये ही धर्म के चार पाद हैं, वेद  
 में धर्म का त्रिष्टम्भ नाम भी पाया जाता है।  
 इसके दो सिर और सात हाथ हैं। एकादशी

तिथि में धर्म का वास है इसी कारण एकादशी तिथि  
 को उपवास करने वालों का पातक दूर होता है।  
 धर्मदास तत्त्वं ( पु० ) यह एक संस्कृत के कवि थे।  
 इनका बनाया विदग्धमुखमण्डन नामक ग्रन्थ पाया  
 जाता है। लोगों का अनुमान है कि ये बौद्धधर्म के  
 पक्षपाती थे। इनके स्थान और समय के विषय में  
 किसी को भी कुछ ठीक पता नहीं है, तथापि  
 कतिपय विद्वानों का अनुमान है कि ये कवि मगध  
 देश के वासी थे; क्योंकि मगध देश में बौद्धधर्म  
 का विशेष प्रचार था और इनका समय ख्रीष्टपू  
 र्वीं सदी के पूर्व ही माना चाहिये। क्योंकि इनके  
 यद्द का समय शङ्कराचार्य का ही जो बौद्धदेवी थे।  
 कतिपय विद्वानों की सम्मति है कि धर्मदास भोज-  
 राज से बहुत अग्रचीन हैं, क्योंकि इनकी लेख-  
 शैली पुरानी नहीं मालूम होती।

धर्मध्वज तत्त्वं ( पु० ) मिथिला के जनकवंशी एक  
 राजा का नाम। दण्डनीति, वेद और उपनिषद् में  
 इनका अग्राध पाण्डित्य था, एक समय सुलभा नाम  
 की एक सेन्यासिनी योगधर्म की चर्चा करती हुई  
 और धर्मध्वज की विद्वत्ता की प्रशंसा करती हुई  
 मिथिला में उपस्थित हुई। धर्मध्वज के मोक्ष शास्त्र  
 सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा लेने के हेतु उसने अपना  
 रूप छोड़ कर एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण किया  
 और वह भिखा माँगने के व्याज से राजा के निकट  
 उपस्थित हुई। बहुत देर तक राजा उस सेन्यासिनी  
 से धर्म सम्बन्धी बातें करते रहे। अन्त में उस स्त्री  
 का मोक्षशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान देखकर उन्हें आश्चर्य  
 हुआ।

धर्मव्याप तत्त्वं ( पु० ) मिथिजावासी एक व्याप का  
 नाम, यह पूर्वजन्म में श्रोत्रिय ब्राह्मण था। एक  
 समय किसी राजा के साथ वह घन में अंदर खेलने  
 गया था, वहाँ उस श्रोत्रिय ब्राह्मण ने शृङ्खलाधारी  
 किसी तपस्वी के बाण मारा। उसीके शाप से उसे  
 शूद्रयोनि में जन्म लेना पड़ा। धर्मव्याप अपनी  
 जाति के अनुरूप सौम्य विक्रय आदिका काम करता  
 था, पान्ति उसका धर्मज्ञान बहुत बढ़ा बढ़ा था।  
 बहुत दूर दूर के विद्वान् ब्राह्मण उसके धर्मज्ञान  
 सीखने आते थे।

धर्मात्मा तत् ( पु० ) [ धर्म + आत्मा ] साधु, पुण्य-  
शील, धार्मिक, धर्मेनिष्ठ ।

धर्माधिकरण तत् ( पु० ) [ धर्म + अधिकरण ]  
राजा का विचार स्थान, न्यायालय, विवाहागार,  
धर्मार्थ ।

धर्माधिकारी तत् ( पु० ) [ धर्म + अधिकारी ]  
विचारकर्ता, विचारक, धर्मोपदेष्टा, धार्मिक, व्यव-  
स्थादाता, महाराष्ट्र माहात्म्य की उपाधि विशेष ।

धर्माध्यक्ष तत् ( पु० ) [ धर्म + अध्यक्ष ] विचारकर्ता,  
न्यायमूर्ति, विचारक, न्यायाधिप ।

धर्मानुसार तत् ( पु० ) [ धर्म + अनुसार ] धर्म के  
अनुसार, धर्म की रीति से ।

धर्माश्रय तत् ( पु० ) [ धर्म + आश्रय ] पुण्यस्थान  
विशेष, तपोवन, मठपिथों के आश्रम, पवित्र बन ।

धर्मागतार ( पु० ) [ धर्म + अवतार ] धर्म का अवतार,  
धर्म का स्वरूप, बड़ा धार्मिक ।

धर्मासन तत् ( पु० ) [ धर्म + आसन ] विचार का  
आसन, न्यायकर्ता के बैठने का आसन ।

धर्मिष्ठ तत् ( पु० ) [ धर्म + इष्ठ ] साधु, पुण्यशील,  
पुण्यवान्, धर्मात्मा, धार्मिक ।

धर्मो तत् ( वि० ) पुण्यवान् धर्मात्मा, साधु ।

धर्मोपदेशक तत् ( पु० ) [ धर्म + उपदेशक ] गुरु,  
आचार्य, धर्म के विषय का उपदेश देने वाला ।

धर्म्य तत् ( वि० ) [ धर्म + य ] न्याय्य, उचित ।

धा तत् ( पु० ) पति, स्वामी, भर्ता, स्वनाम प्रसिद्ध  
वृक्ष विशेष ।

धवला तत् ( पु० ) श्वेतवर्ण, शुद्ध, भीला, वृक्ष विशेष,  
सफेद । ( वि० ) सुन्दा, श्वेतगुणयुक्त ।—पत्त  
शुद्ध पत्र, हंस ।

धवला ( खी० ) सफेद गौ ( गु० ) सफेद । -गिरि  
( पु० ) हिमालय की एक चोटी ।

धवलाख्य दे० ( पु० ) पिपाज । [ भाते हैं ।

धवा दे० ( पु० ) जाति विशेष, कटार जाति, जो पानी  
धोने तत् ( पु० ) [ धृ + प्रक ] प्रगल्भता, प्रगल्भ्य,  
अमर्ष, साहस, धृति । [ धीर, धीर ।

धर्पक तत् ( पु० ) [ धृ + प्रक ] साहसी, अहङ्कारी,

धर्पण तत् ( पु० ) [ धृ + प्रणट् ] साहसकरण,

प्राभवकाय, दुष्टता का व्यवहार, रति ।

धर्पित तत् ( पु० ) [ धृ + प्रिच् + क ] परिभूत,  
पराजय प्राप्त, हारा हुआ । [ पैठना ।

धसकना दे० ( क्रि० ) धसना, धस जाना, गिना,  
धसने दे० ( खी० ) पोज भूमि, दलदल भूमि, धसने  
योग्य स्थान ।

धसना दे० ( क्रि० ) घुसना, मड़ना, पैठना ।

धसान, धसाव दे० ( पु० ) दृढ़, पक्का भूमि ।

धसाना दे० ( क्रि० ) घुसाना, पैठाना, मड़ाना ।

धागर दे० ( पु० ) एक हिन्दू जाति विशेष, जो प्रायः  
किपानी धार कुशीमरी कानी है ।

धाघना दे० ( क्रि० ) मकेलना, अकलना, अनुचित  
रीति से खाना, किसी अराधी को पकड़ कर  
चटान कर देना ।

धाघल दे० ( खी० ) निचायेतन झगड़ा, लड़की,  
बिना कारण की लड़ाई । ( खी० ) धीप-धु धी ।

( पु० ) झगड़ालू, लड़ाका, कजहारी ।

धांयलावाजो दे० ( खी० ) अवाधुनी, अत्याचार ।

धांयधाय दे० ( खी० ) शब्द विशेष, तोप आदि के  
तरप, टूटने की ध्वनि, धड़ाका ।

धांसना दे० ( क्रि० ) खांसना, खोलना, ठूसना ।

धांसा दे० ( खी० ) रोग विशेष. सांसी. खांसी, काश  
की बीमारी ।

धाइ या धाई तद् ( खी० ) धात्री, उपमाता, दूध  
पिलाने वाली मयता, दाई । ( क्रि० ) दीढ़ कर,  
भाग कर, झपट कर ।

धाक दे० ( खी० ) डर, भय, प्रभाव, आतङ्क, रोष,  
रुभाव, प्रताप । [ दंगला ।

धाकर दे० ( पु० ) वर्षापूर्व जाति विशेष, नीच जाति,

धाखी दे० ( पु० ) पलाश वृक्ष ।

धागा दे० ( पु० ) तागा, सूत, डोरा ।

धाता तत् ( पु० ) [ धा + तृ ] प्रज्ञा, विधाता,  
बनाने वाला, विष्णु. सूर्य, भृगु मुनि के पुत्र ।

( गु० ) पात्रक, रचक, धारक ।

धातु तत् ( पु० ) शरीर धारक वस्तु. कफ, शत,  
पित्त, रक्त, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र

महाभूत । यथा—तृणिकी, जल, तेज, वायु,

आकाश । [ तद्गुण—गन्ध, रस, रूप, स्पर्श,  
शब्द ] गुरु, मनसिष्ठ आदि, शब्दयोगि, प्रकृति,

व्याकरण के धातु, [ सू, पठं, पठ् आदि । ]  
 अष्टधातु—[ सोना, रूपा, काँसा, तँवा, सीसा,  
 रंगा, लोहा और पारा । ]—मात्त्रिक ( पु० )  
 सोनामाँखी ।—वादी ( पु० ) धातु परीचक ।  
 —वेदी ( पु० ) धातु-विद्यावेत्ता, धातुद्रव्य  
 परीचक ।—साधिन ( वि० ) धातु द्वारा प्रयुक्त,  
 जिसके बनाने में धातु का प्रयोग किया गया हो ।  
 ओपधि विशेष ।

धातुज्ञय ( पु० ) प्रमेहादि रोग जिसमें धातु नष्ट हो ।  
 धात्वितर तत्त्वं ( वि० ) [ धातु + इतर ] विना धातु  
 का, धातुरहित ।

धात्री तत्त्वं ( स्त्री० ) [ धा + तृच् + ई ] धाई, उप-  
 माता, दाई, पृथिवी, आमलकी वृक्ष ।—पत्र  
 ( पु० ) नट, तालीशपत्र, आमलकी पत्र ।—पुत्र  
 ( पु० ) उपमाता का पुत्र, नट, नर्तक ।—फल  
 ( पु० ) आमलकी, चाँवला ।

धान तत्त्वं ( पु० ) धान्य, सतुप तण्डुल, बकला सहित  
 तण्डुल, विना कूटा चावल, अनङ्गिला चाँवला ।

धाना दे० ( क्रि० ) दौड़ना, काम करना, टहल करना,  
 परिश्रम करना । [ सच्, सतुवा ।

धानाचूर्ण तत्त्वं ( पु० ) भुंजे जब और चमं का चूर्ण,  
 धानी दे० ( स्त्री० ) धान विशेष, धान के समान एक  
 प्रकार का रंग, रक्त विशेष, हरे और पीले रक्त के  
 मिश्राने से जो रक्त होता है ।

धानुक तत्त्वं ( पु० ) धानुक, अनुघात, तीरन्दाज,  
 एक नीच जाति ।

धान्य तत्त्वं ( पु० ) अन्न, विना कूटा चावल, चार  
 तिल का परिमाण, धनिया ।—कौष्टक ( पु० )  
 धान रखने का गृह, गोला ।—चमस ( पु० )  
 चिपिरक, चिड़हा ।—धेनु ( पु० ) दान करने के  
 लिये अन्न की बनी धेनु ।—बीज ( स्त्री० ) बीज का  
 धान, बोने के लिये धान ।—राज ( पु० ) शस्य  
 विशेष, यव, जौ ।—राशि ( पु० ) धान की  
 राशि ।

धाप दे० ( पु० ) एक फुट का माप, एक सौस में  
 जितनी दूर तक दौड़ा जा सके, ऊपर चढ़ने की  
 पैड़ियाँ, जिन पर पैर रखा जाता है । [ लड़का ।

धामाई दे० ( पु० ) कोका, दूधमाई, अपनी धाय का

धाम तत्त्वं ( पु० ) धामन, घर, स्थान, गेह, देश, आश्रय,  
 अवलम्ब, प्रभा, क्षिति, राशि, प्रसाद; पुन्यचेष्ट  
 आदि ।—निधि ( पु० ) सूर्य, रवि, दिवाकर ।

धामा दे० ( पु० ) चेष्टनिमित्त पात्र विशेष, घेत का  
 बना टोरा, चंगेरा ।

धामिन दे० ( पु० ) सर्प की एक जाति, इस जाति के  
 सर्प दौड़ने में यढ़ तेज होते हैं ।

धाय दे० ( स्त्री० ) दूध पिलाने वाली, धात्री, उपमाता,  
 धाई ।—मारना दे० ( वा० ) पुकार के रोना, रक्त  
 न मिलने के कारण रोना, हाय हाय करके रोना ।

धार तत्त्वं ( पु० ) [ ध + णिच् + ञच् ] देना, श्रय,  
 जलधारा, तीर, तट, किनारा, अन्न के धाने का  
 भाग, प्रखारता, तीक्ष्णता ।

धारक तत्त्वं ( पु० ) [ ध + यक् ] धारणकर्त्ता । ( दे० )  
 श्रेणी, अधमर्ण्य, धरता, कर्जवृद्ध ।

धारण तत्त्वं ( पु० ) [ ध + णिक् + ञच् ] धारने  
 की अवस्था, ग्रहण, अवलम्बन, रक्षण, रखना,  
 परिधान करना, श्रय लेना ।

धारणा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ धारण + णा ] बुद्धि, विषय  
 ग्रहण करने वाली बुद्धि, उचित मार्ग पर स्थिति,  
 मन की स्थिरता, विश्वास, वरसाह, स्मरण, चेत ।

धारना दे० ( क्रि० ) रखना, समाना, स्मरण करना,  
 चेत करना, ( पु० ) कर्ज, श्रय, अधमर्ण्य ।

धारस दे० ( पु० ) ढालस, धैर्य, धीरता ।

धार तत्त्वं ( स्त्री० ) रीति, व्यवहार, आचरण,  
 प्रकार, प्रणाली, प्रकरण, प्रवाह, बहाव, सोता,  
 ताजीरात हिन्द की दफा, ( क्रि० ) धारण किया,  
 ढा लिया ।—धाहिक ( वि० ) परम्परागत,  
 क्रमागत, अविच्छिन्न प्रचलित, विना विच्छेद का,  
 लगातार आया हुआ ।—यन्त्र ( पु० ) जल की  
 कल, कुहारा, जल फेंकने का यन्त्र ।—ताही ( पु० )  
 धारा के समान बहने वाला ।—सार ( पु० )  
 [ धारा + आसार ] भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा ।  
 —सम्पात ( पु० ) अधिक वृष्टि ।

धाराधर ( पु० ) बादल, तलवार । [ डाकूओं की सेना ।  
 धारि दे० ( स्त्री० ) धाड़ा ढालने वालों का समूह,  
 धारिणी ( स्त्री० ) पृथिवी, सेमर का वृक्ष, देवताओं  
 की १४ स्त्रियों जिनके नाम हैं—(१) शची (२)

वनस्पति, (३) गार्गी (४) धृष्टोष्णी (५) रुचि-  
राकृति, (६) सिनीवाला (७) कुहू, (८) राका  
(९) अनुमति (१०) आयाति (११) प्रज्ञा, (१२)  
सेला (१३) घेल (१४) इन्द्राणी । [इन्द्रा ।  
धारित तत् ( वि० ) धृत, धारण किया हुआ, एकटा  
धारी दे० ( स्त्री० ) रेता, लकीर, एक पौधे का नाम ।  
(वि०) रखने वाला, शायी ।—द्वार (वि०) कपडा  
विशेष जिसमें लकीरें हों ।  
धार्तराष्ट्र तत् ( पु० ) धृतराष्ट्र राजा के पुत्र  
दुर्योधन आदि, काळा पैर और चौंचवाला हंस,  
फलहंस, एक प्रकार का सर्प ।  
धार्मिक तत् ( वि० ) पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मनिष्ठ,  
धर्माचरण करने वाला ।—ता ( स्त्री० ) धार्मि-  
कत्व, धर्मशीलता, धर्मभाव ।  
धार्य तत् ( पु० ) धारणीय, धारण करने योग्य, प्राप्त ।  
धाव दे० ( पु० ) दौड़, दृष्ट विशेष ।  
धावक तत् ( वि० ) धावनकर्ता, दौड़नेवाला, द्रुत-  
गामी, हरकारा, दूत । ( पु० ) संस्कृत के एक कवि  
का नाम । ये कवि बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध  
हैं । ये कवि रामिका सौमिल के समकालीन हैं ।  
इनके विषय में विवरण मिल्लण दन्तकथाएँ  
प्रचलित हैं । कोई कहता है श्रीहं के नाम से  
इन्होंने नाटिका बनायी थी, और बहुत धन भी  
पाया था । परन्तु इस दन्तकथा में प्रमाण कुछ भी  
नहीं है । हाँ काव्यप्रकाश की “श्रीहर्षादेवा-  
वकादीनामिव धनम्” यह पंक्ति प्रमाण में कही  
जा सकती है । परन्तु यह पाठ ठीक नहीं है  
क्योंकि इस पाठ को पुष्ट करने वाला प्रमाण कहीं  
इन्हें पर भी नहीं मिलता है । अतएव “श्रीहर्षा  
देवावादीनामिव धनम्” काव्यप्रकाश का यही  
ठीक पाठ मानना चाहिये । इस बात को सिद्ध  
करने के लिये प्रमाण भी बहुत हैं । अभिनन्दन  
कवि ने कहा है “श्रीहर्षों विततार गणकवये  
याप्याय याषी फलम्” इति, इसी प्रकार और भी  
प्रमाण उद्धृत किये जा सकते हैं । अतएव इनकी  
श्रीहर्ष से सम्बन्धयुक्त न करके कालिदास से  
प्राचीन और भास या रामिल सौमिल के समकालीन  
मानना ही युक्तियुक्त प्रतीत होता है ।

धावन तत् ( पु० ) [धाव + अन्ट] वेग पूर्वक गमन,  
दौड़ना, गति, फिाव । ( दे० ) दूत, हरकारा,  
दौड़नेवाला । [रगेदना, धर्चना ।  
धावना दे० ( कि० ) दौड़ना, दूधर उधर घूमना,  
धावनी दे० ( स्त्री० ) दूती, परिचारिका ।  
धावमान तत् ( वि० ) दौड़ता हुआ, भागता हुआ,  
द्रुतगामी, शीघ्रगामी, तेज़ दौड़ने वाला ।  
धावा दे० ( पु० ) दीप, चढ़ाई, आक्रमण, छापा ।  
—मारना (वा०) चढ़ाई करना, आक्रमण करना,  
छापा मारना ।  
धाह दे० ( स्त्री० ) चीख, दुःख का शब्द, कूक ।  
धिक् तत् ( अ० ) निश्चय सूचक अव्यय, फटकार,  
धी धी, घृणा, जानत ।  
धिकार तत् ( पु० ) फटकार, तिरस्कार ।  
धिकारना दे० ( कि० ) निन्दा करना, फटकारना,  
तिरस्कार करना । [धगमानित ।  
धिकारी दे० ( वि० ) शापित, निन्दित, गहिँत,  
धिग् तत् देखो धिक् । [धनियों का एक अष्ट ।  
धिगरा, धिगाड़ा दे० ( पु० ) उपपत्ति, जार, लगुना,  
धिगाना दे० ( पु० ) हाँक, पुकार, उपद्रव ।  
धिगा दे० ( स्त्री० ) बेटी, पुत्री, कन्या, तनया ।  
धिरये दे० ( कि० ) धमकाया, डाँटा, फटकाया ।  
धिराना दे० ( कि० ) धमकाना, ताड़ना देना, हानि  
पहुँचाने की धमकी देना ।  
धिपण तत् ( पु० ) बृहस्पति, देवगुरु, देवाचार्य ।  
धिपणा तत् ( स्त्री० ) बुद्धि, ज्ञान, मति, धी ।  
धी तत् ( स्त्री० ) मति, बुद्धि, ज्ञान ।  
धींग, धींगड़ा दे० ( पु० ) उपपत्ति, जार, लगुना ।  
धींगाधींगी दे० ( स्त्री० ) हड़ा हड़ड़ी ।  
धींगाधींगी दे० ( स्त्री० ) उच्छ्वस व्यवहार, अनुचित  
रीति, असम्भ कार्य, मनमानी कारवाही, हड़ाकुड़ी ।  
धींगामुश्ती ( स्त्री० ) धींगाधींगी ।  
धीति तत् ( स्त्री० ) पीरावा, रुढ़ना, प्रतीति,  
विश्वास, यथा—  
“मोहिं द्वार वैठाय सखि, तू कित जल हित जाय ।  
धीति लाल तेरा करी, दधि घुराय मन लाय ॥”  
—कवि बाबय ।  
धोम दे० ( पु० ) सुख, शिथिल, आलसी, धीर ।

धोमत् तत् ( वि० ) बुद्धिमान्, बुद्धियुक्त ।  
धोमर दे० ( पु० ) एक जाति विशेष, कहाल जाति,  
मच्छीमार, कैरत्त, जालजीवी ।

धोमा दे० ( वि० ) सुस्त, शिथिल, आलसी, बेमल  
धीर । [ शिथिलता, आलस्य ।

धोमाई दे० ( स्त्री० ) धोमापन, सुस्ती, ठिठ्ठाई;  
धोमान् तत् ( पु० ) बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, दक्ष,  
कुशल, ज्ञानवान् ।

धोमापन दे० ( पु० ) देखो धोमाई ।

धोमे धोमे दे० ( य० ) तनैः शनैः, धीरे धीरे, होले  
होले, मन्द मन्द ।

धीय दे० ( स्त्री० ) बुद्धि, मति, कन्या, पुत्री तनया ।

धीर तत् ( वि० ) धैर्यान्वित, पण्डित, बलवान्,  
अचञ्चल, सुस्थिर, दान्त, स्थिरमति, विनीत,  
शिष्ट ।—ता ( स्त्री० ) धीरस्वभाव, शिष्टता,  
प्रज्ञा, धैर्य ।—र ( पु० ) दान्त स्वभाव ।

—प्रशान्त ( पु० ) नाट्योक्ति में सर्वगुण युक्त  
नायक ।—लजित ( पु० ) अति साहसी नायक,  
इस शब्द का प्रयोग प्रायः नाटक में ही किया  
जाता है ।—रुग्ण ( पु० ) सहिष, धीर, मोढ़ा,  
दृढ़, साह, विजार ।

धीरज तत् ( पु० ) धैर्य, धीरता, स्थिरता, बहुत  
विघ्नो से भी नहीं घबड़ाना ।

धीरा तत् ( स्त्री० ) शिष्टा, विनीत, नायिका विशेष,  
मानिनी, प्रणयमा, मध्या नायिका, मध्या और  
प्रौढ़ा नायिकाओं का धीरा एक भेद है यथाः—  
“वचननि की रत्नानि सौं, विपदि जनावत कोप ।  
मध्या-धीरा कहत हैं, ताहि सुमति रस कोप ॥”

—रसराज ।

( पु० ) धीर, धैर्यवान् ।

धीराधीरा तत् ( स्त्री० ) [ धीरा + अधीरा ] मानिनी  
मध्या प्रणयमा नायिका यथा—

“रति उद्यम द्वै नाहको, डर दिखाने वाम ।  
प्रौढ़ अधीरा धीरतिय, वरनत कवि मतिराम ॥”

—रसराज ।

धीरिया दे० ( स्त्री० ) कन्या, दुहिता, बेटी ।

धीरो दे० ( स्त्री० ) कनीनिका, तारा, आँखों में की  
पुतली, नेत्रों की काली पुतली ।

धीरे दे० ( य० ) शनैः, मन्द, धीरता से, स्थिरता से ।  
धीरेधीरे दे० ( य० ) कोमलता से, मन्द मन्द, शनैः  
शनैः ।

धीरोदात्त तत् ( पु० ) [ धीर + उदात्त ] नायकविशेष,  
अति साहस तथा दया से युक्त जिसके व्यवहार हो ।

धीरोद्धत तत् ( पु० ) [ धीर + उद्धत ] नायकभेद  
नाटक का नायक, जो साहसी हो, धीर हो, अग्नी  
प्रशंसा ग्रहण करने वाला हो ।

धीवर, धोमर तत् ( पु० ) मरत्यवीरी जाति विशेष,  
कैरत्त, जालजीवी, मच्छीमार ।

धीशक्ति तत् ( स्त्री० ) बुद्धिसामर्थ्य, ज्ञानशक्ति,  
बुद्धि की रक्षणता ।

धीसञ्चय तत् ( पु० ) मन्त्री, अमात्य, बुद्धिजीवी,  
राजकीय कार्यों में सप्रमति देने वाला मन्त्री ।

धुआँ तत् ( पु० ) धूम, अग्निताका, अग्निचिह्न,  
वायुविशेष, चिताधूम, नाश । यथा—

“धुआँ देखि त्वर दूषण केरा ।

जाइ सुपनखा रायण प्रेरा ॥”

—कश ( पु० ) अग्नि चोट, स्टीमर ।—दान  
( पु० ) धुआँ निकलने का शब्द ।—ना ( कि० य० )

धुआँ निकलना, धुआँ लगने से किसी वस्तु का  
बिगड़ जाना ।—यंघ ( पु० ) धुआँ की तरह  
भटकेन वाला ।

धुँगार दे० ( पु० ) धुँक, यवार, धुँकन ।

धुँगारना दे० ( कि० ) बवारना, धुँकना, तड़का देना ।

धुँघ दे० ( पु० ) चौधलाई, कुहरा, झेंपेरा, अमकाश ।

धुँघकार दे० ( पु० ) झेंपेरा, अन्धकार, तम,  
अप्रकाश, धुँमलापन । [ अमकाश, धुँमला ।

धुँघजा दे० ( वि० ) झेंपला, तमल, अन्धल,

धुँघलाई दे० ( स्त्री० ) अन्धेरा, धुँधलाई ।

धुँध तत् ( पु० ) राक्षस विशेष, यह प्रसिद्ध मधु  
राक्षस का पुत्र था । यह राक्षस उतकू मुनि के

आश्रम के पास रेतीले सभूमि में रहा करता  
था । जनसंहार करने के लिये इस राक्षस ने बहुत

दिनों तक मरुच्छर में चित सांकर-तपस्या की ।  
धीरे धीरे यह एक वर्ष तक ब्रास बन्द कर लेता

था, एक वर्ष के बाद जब एक दिन वह ब्रास खोलता  
था, तब वन पर्वत सब काँप जाते थे । यह देख कर

देवता भी भयभीत हो जाते थे। गृहद्वय के पुत्र कुत्रतयात्र ने इसे मारा था। [धूर्त, उग्र, उखाती।  
 धुंधेला दे० ( वि० ) छली, कपटी, हठी, दुराग्रही,  
 धुरु ( पु० ) सलाई जिसपर कलावत बटा जाय।  
 धुरुड़ धुरुड़ दे० ( पु० ) धड़क, हड़कम्प, कँकणी,  
 धरपरी, धरपराहट, धड़काहट, डुलाव, हिलाव।  
 धुनड़ी दे० ( स्त्री० ) धैली, तोड़ा, रुपसे रखने की  
 धैली, धसनी।  
 धुरुधुकी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का गहना जो गले  
 में पहना जाता है, व्याकुलता, सोच, धड़काहट।  
 धुकनी ( स्त्री० ) धूरी, धौकनी।  
 धुती ( स्त्री० ) पताका, ध्वजा।  
 धुतिनी ( स्त्री० ) सेना, कौज।  
 धुनकार ( पु० ) धुनकार, फटकार तिरस्कार।  
 धुचकी ( स्त्री० ) धुचकार।  
 धुत्ता दे० ( पु० ) धूर्त्ता, छल, कपट, धोखा।—देमा  
 ( वा० ) धोखा देना, छलना, कपट करना।  
 धुन दे० ( स्त्री० ) लौ, धमिलाव, मनोरथ, चसका।  
 धुनकना दे० ( क्रि० ) तुमना, धुनना, रुई धुनना।  
 धुनचो दे० ( स्त्री० ) छोटा धनु, धनुष, धनुही।  
 धुनि } ( स्त्री० ) ध्वनि शब्द नाद सावाज ( क्रि० )  
 धुनी } धून कर, पीट कर, सिमर कर।  
 धुनिर्पा दे० ( पु० ) जाति विशेष, पेहना, तुमने वाला।  
 धुनिहाव दे० ( पु० ) हड़कटन, हड़ो की पीड़ा,  
 शरीर का पीड़ा।  
 धुनीनाथ ( पु० ) समुद्र, सागर।  
 धुनेहा दे० ( पु० ) रुई तुमने वाला, धुनिर्पा।  
 धुन्ना दे० ( क्रि० ) धुनना, सिर पीटना, सिर धुनना।  
 धुनुमारतल ( पु० ) कुबलाय्य राजा, गृहद्वय का पुत्र,  
 बीरबहूरी, गृहधर्म, गोल्दमाल, कुहराम, कोलाहल।  
 धुजा दे० ( पु० ) लहंगा, चाँवरा, स्त्रियों के पहनने  
 का सिला हुआ एक वस्त्र जिसे वे कमर पर कस  
 कर पहनती हैं। [ नहीं, धुमैला।  
 धुमला दे० ( पु० ) भ्रमकार, झँपेला, बहुत स्वच्छ  
 धुमलाई दे० ( स्त्री० ) झँपियारा, अस्वच्छता।  
 धुमैला दे० ( वि० ) धुँधे के रंग का, अस्वच्छ।  
 धुर तल ( पु० ) भार, बोझ, जुवा, गाड़ी या हल  
 खींचने के समय जो पैरों के कन्धे पर रखे जाते

हैं। आदि, चारुभ, अन्त, किनारा, छोरा  
 मुण्य, सीमा, हद, अन्त्य, मूल, जड़, धुरा, धुर,  
 ( वि० ) ठीक ( यथा "धुर सरो" )—से धुरतक  
 ( वा० ) इस सिरे से उस सिरे तक, आदि से  
 अन्त तक।—धुर दे० ( वि० ) सीधे, यथा।  
 ( यथा—वे धुराधुर चले गये )।—कट ( पु० )  
 कर या लगान जो आसामी ज्येष्ठ मास में पैशगी  
 देता है।  
 धुरपद दे० ( पु० ) एक प्रकार के राग का नाम।  
 धुरसा दे० ( पु० ) धुंसा, लोई, ऊँचे वस्त्र विशेष,  
 एक प्रकार का ऊनी कपड़ा जो जाड़े के दिनों में  
 छोढ़ने के काम में आता है।  
 धुरसाक दे० ( स्त्री० ) ठीक सन्ध्या समय, रोपूकी  
 का समय, रोपूरिया काल।  
 धुरन्धर तल ( वि० ) [ धुर + धृ + ल ] धुरीण, मल्ल,  
 धुरंधर, अखड़, प्रकाण्ड, भारवाहक, गाड़ी हल  
 आदि खींचने वाला, बड़े कामों का प्रबन्ध करने  
 वाला, प्रधान, नेता, मुखिया, अगुषा।  
 धुरवा दे० ( पु० ) मेघ, बादल, यथा—  
 "धुंधुधारे धुरवा चहुँपाया।  
 समुक्ति पर नहीं ध्वनि प्रकाश ॥"  
 धुरव्य दे० ( पु० ) मेघ, बादल।  
 धुरा तल ( स्त्री० ) भार, बोझ, चिन्ता, ध  
 की धुरी, जिसके सहारे पहिया घूमता है।  
 धुरियाना दे० ( क्रि० ) मटियाना, माटो लगाना, धूर  
 लगाना, धूज बढ़ाना।  
 धुरी दे० ( स्त्री० ) लकड़ी या लोहे का ढण्डा जिस पर  
 गाड़ी के पहिये घूमा करते हैं।  
 धुरीण तल ( पु० ) [ धुर + धृ + ल ] भार सहन करने  
 वाला, प्रधान, श्रेष्ठ धुरन्धर, साहसी, मुखिया, अगुषा।  
 धुर्य तल ( वि० ) धुरन्धर, धुरीण, शोक ठठाने  
 वाला, भारवाही। ( पु० ) श्रम नामक शोषधि,  
 नृपम, वैद्य, प्रधान, श्रेष्ठ, मुखिया, अगुषा।  
 धुलना दे० ( क्रि० ) साफ होना, निर्मल होना, स्वच्छ  
 होना, धोया जाना, पवित्र होना। [ धुलाना।  
 धुलवाना दे० ( क्रि० ) साफ कराना, स्वच्छ कराना,  
 धुलाई दे० ( स्त्री० ) काड़े धोने का काम, वस्त्र धोना,  
 बख साफ करना, कपड़े साफ करने की मजूरी।



धुलाना दे० ( कि० ) निर्मल कराना, साफ कराना, कपड़े साफ कराना ।

धुलेंड़ी दे० ( स्त्री० ) लोहार विशेष, होली का दूसरा दिन, जिस दिन लोग धूल उड़ाते हैं ।

धुस्स ( पु० ) डीह, टीला ।

धुस्सा दे० ( पु० ) धुमा, लोह ।

धुश्रां दे० ( पु० ) धूम, धुआँ । [ वेशुमार ।

धुश्रांधार दे० ( पु० ) बहुत धुआँ । ( वि० ) बेसन्हाल, धुंधारा दे० ( पु० ) धुआँ निकलने का मार्ग, मोला,

जिससे धुआँ निकाला जाता है ।

धुंधरा दे० ( पु० ) धुंधला, अस्वच्छ ।

धूत तत्त्वं ( पु० ) [ धू + क ] कम्पित, कंपाया हुआ, ( दे० ) धूत, छकी, छलिया, कपटी ।—पाप ( पु० ) पापयुक्त ।

धूति दे० ( स्त्री० ) पूर्तता, बगई, झूल, कपट, यथा—  
“मुलसी श्रुवर लेवकहि, सकै न कलियुग धूति” ।

धूधू ( पु० ) आग जलने का शब्द ।

धूना दे० ( पु० ) राज, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, यह एक वृक्ष का गोंद होता है, अलकतरा, तारकोल का सत ।

धूनी दे० ( स्त्री० ) वह अग्निकुण्ड जिसमें साधु लोग आग रखते हैं और अपने भक्तों को वसी धूनी से भस्म निकाल कर दिया करते हैं । भूतनाथा दूर करने के लिये कतिपय श्रोपधियों का धूम ।—देना ( वा० ) जला देना, समाधि देना, मृत साधु का अन्तिम संस्कार करना ।—रमाना ( वा० ) साधु होना, घर छोड़ के निकल जाना, योगी का वेप धरना ।—लगाना ( वा० ) स्थिर होना, डट जाना, हठ करना ।—लेना ( वा० ) आग, तापना, पशुधूम लेना ।

धूप दे० ( स्त्री० ) रौद्र, आतप, तपन, सूर्य का प्रकाश, धाम, तपिश । ( पु० ) सुगन्ध काष्ठ विशेष, जो देवपूजा में जलाया जाता है, गुग्गुल ।—काल ( पु० ) गर्मी का समय, ग्रीष्मकाल ।—घड़ी ( स्त्री० ) ग्रंथ विशेष जिसके द्वारा धूप की छाया से समय जाना जाता है ।—झाह ( स्त्री० ) एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।—दान या दानी ( स्त्री० ) धूप देने का छोटा पात्र विशेष ।—

सराना ( कि० ) भगवान् के सामने रसोई प्रपण करना ।

धूपना दे० ( कि० ) धूप देना, धूप गलाना ।

धूपित दे० ( वि० ) धूप दिया हुआ, धूप से वासित किया गया, धूप से सुगन्धित किया हुआ ।

धूम तत्त्वं ( पु० ) भीगी लकड़ी के संयोग से अग्नि से निकले परमाणु, धुँआ, अग्निचिन्ह ।—केतन ( पु० ) अग्नि, अनल, केतुप्रद ।—केतु या केतन ( पु० ) अग्नि उत्पात का चिन्ह विशेष; उत्पात का प्राकृतिक चिन्ह, शिखायुक्त, धूम के आकार का तारा, ग्रहभेद ।—ध्वज ( पु० ) अग्नि, अनल, वह्नि ।—पान ( पु० ) हुका पीना, सिगरेट पीनी आदि का पीना ।—प्रभा ( स्त्री० ) धूमान्वार नामक एक नरक विशेष । यन्त्र ( पु० ) इस्तिन, जो वाष्प के सहारे चलता हो ।—नाहिनी ( स्त्री० ) रेलगाड़ी । ( दे० ) रौन्ना, हलचल, डोलाहल ।—धाम ( स्त्री० ) उत्सव की मीड़ ।

धूमावती तत्त्वं ( स्त्री० ) दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक महाविद्या । तन्त्रशास्त्रों में इनकी उपाति इस प्रकार लिखी है । एक समय पार्वती ने भूत से व्याकुल होकर; महादेव से खाने की वस्तु माँगी, परन्तु महादेव नहीं दे सके । इसी कारण पार्वती ने महादेव ही को खा डाला । परन्तु इससे पार्वती के शरीर से धूम निकलने लगा । तभी से पार्वती का नाम धूमावती प्रसिद्ध हुआ । पुनः महादेव ने अपना शरीर कपित करके कहा “देवि । जब तुमने मुझको खा लिया है तब तुम विषवा हो गई, अतएव अब से तुमको विषवां वेश से रहना चाहिये, इसी वेश में लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और अब से तुम्हारा नाम धूमावती हुआ । पुराणसिद्धि के लिये कृष्णचतुर्वर्षी को धूमावती का जप किया जाता है । [ के रङ्ग का, धुमैला । धूमरा, धूमल, धूमला दे० ( वि० ) मटमैला, धुप धूमा दे० ( वि० ) धूमरा, धूमल, मटमैला, धुप का साराङ्ग । धूमिल ( पु० ) धुंधला, धुप के रंग का । धूमी दे० ( वि० ) ऊधमी, उपाती, उपद्रवा । धूम्र तत्त्वं ( पु० ) कृष्ण रक्त । कृष्ण लोहित वर्ण केतु धूमकेतु

—केश ( पु० ) राघव विशेष, जो शुम्भ का सेना नायक था; कपोत, कबूतर ।—पान ( पु० ) तमाखु आदि पीना ।—पान यन्त्र ( पु० ) हुका ।

धूम्रलोचन तत्त्वं ( पु० ) एक राघव का नाम, दान-वेन्द्र शुम्भ का सेनापति। शुम्भ ने हसी को ६० हज़ार सेना के साथ, भुवनमोहिनी महामाया को पकड़ने के लिये भेजा था । महामाया के हुक्म से ६० हज़ार सेना के साथ धूम्रलोचन भस्म हो गया ।

धूम्राक्ष तत्त्वं ( पु० ) एक राघव का नाम ।

धूर दे० ( स्त्री० ) धूल, रज, रेत ।

धूरा दे० ( पु० ) चूर्य, सफ़ूक ।

धूरि दे० ( स्त्री० ) धूलि, रज, रेत, गर्द ।

धूरी दे० ( स्त्री० ) धुरी, धूलि ।

धूर्जटि तत्त्वं ( पु० ) महेश्वर, महादेव, शिव ।

धूर्त तत्त्वं ( पु० ) वक्त्रक, प्रतारक, शठ, खल ।—ता ( स्त्री० ) शठता, खलता, प्रवृत्तना बहमाशी, गुंडई, पाजीपन । [( स्त्री० ) नष्ट, ध्वस्त ।

धूल, धूलि दे० ( स्त्री० ) रज, रेख, धूरि ।—धाती धूसना दे० ( कि० ) निम्नित करना, अपमान करना, कोसना । [पीछा रङ्ग, मटियारा रङ्ग ।

धूसर या धूसरा तत्त्वं ( पु० ) ईषर् पाण्डुवर्ण, हलका धूसरित ( पु० ) धूल से सना हुआ, धूल लगा हुआ । धूहा दे० ( पु० ) धोखा, एक प्रकार के खेल का मध्यस्थान, चञ्चापुरुष जिसे खेल में गाढ़ते हैं ।

धुक ( अव्य० ) धिक् ।

धृत तत्त्वं ( पु० ) [ धृ + कृ ] धारण विशिष्ट, धारण किया हुआ । अपराधी, पकड़ा हुआ, गृहीत, धारित ।—कार्मुकेषु ( वि० ) अनुवांशधारी, मोढ़ा, धीर ।—पट ( वि० ) गृहीत वस्त्र, वस्त्रावृत, कपड़ा पहना हुआ ।—रामन् ( वि० ) [ धृत + धारमन् ] जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला, सुस्थिर, प्रवृत्तधारी, योगी ।

धृतराष्ट्र तत्त्वं ( पु० ) शान्तनुनन्दन, विचित्रवीर्य का चैत्रन पुत्र, इनकी माता काशिराज की पुत्री अम्बिका थी, काशिराज की दूसरी कन्या अम्बालिका भी विचित्रवीर्य ही से ब्याही गई थी । अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए थे । धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारराज सुबल की कन्या

गान्धारी से हुआ था । गान्धारी के गर्भ से धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र हुए थे और एक कन्या । दुर्मेघन आदि इन्हीं के पुत्र थे । कन्या का नाम दुःशला था । यह सिन्धुराज अय्यद्वय से ब्याही गई थी । महाभारत के युद्ध में इनके सभी पुत्र मारे गये । गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र वन में चले गये । ६ महीने वहाँ रहने पाये थे कि इतने में उस वन में आग लगी, अन्धराज धृतराष्ट्र दौड़ नहीं सकते थे, अतएव वहाँ जल गये । ( २ ) नाग विशेष यह कद्रु का पुत्र था, इसके साथ पाण्डवों का विरोध था । अश्वमेध का घोड़ा लेकर अर्जुन मणिपुर गये । वहाँ अर्जुन पुत्र वज्रुवाहन ने घोड़ा पकड़ लिया । पिता पुत्र में लड़ाई हुई, अर्जुन मारे गये । वज्रुवाहन की माता पित्राह्नदा और अर्जुन की पत्नी उलूपी वहाँ आकर बिलाप करने लगीं । उलूपी की सम्मति और माता की आज्ञा से वज्रुवाहन सजीवन मणि लेने के लिये पाताल गये । वहाँ धृतराष्ट्र नामक नाग के कहने से वासुकी ने मणि देना अस्वीकार किया अतएव वज्रुवाहन और वासुकी में लड़ाई हुई । लड़ाई में वासुकी हार गया और उसने सजीवन मणि वज्रुवाहन को दे दिया । यह देखकर धृतराष्ट्र ने अपने दो पुत्रों को अर्जुन के पास भेजा । अपने पिता की आज्ञा के अनुसार इन्होंने अर्जुन का सिर काट कर एक वन में फेंक दिया । दूसरे अर्जुन का शरीर मस्तक शून्य देखकर वहाँ हाहाकार मच गया । अन्त में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दोनों पुत्रों को मार कर अर्जुन का मस्तक ले आये । वह मस्तक अर्जुन के शरीर से जोड़ दिया गया और सजीवन मणि के स्पर्श से अर्जुन पुनः जी उठे ।

धृति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ धृ + कृ ] धैर्य, धीरज, दाढ़स मन की स्थिरता धारणा, सुख, योगविशेष । [ गम्भीर ।

धृतिमान् तत्त्वं ( पु० ) स्थिरचित्त, धैर्यवल्गुमी, धीर,

धृष्ट तत्त्वं ( पु० ) [ धृ + कृ ] प्रगल्भ, साहसी, बलाही, निर्लज्ज, बहुविध नायक के अन्तर्गत एक नायक विशेष । यथाः—

“ करे दोष निरसक जो, डरे न तिय के मान ।

बाज घरे मन में नहीं, नायक धृष्ट निदान ॥ ”

—रसराज ।

धुलाना दे० ( क्रि० ) निर्मल कराना, साफ कराना, कपड़े साफ कराना ।

धुलेंड़ी दे० ( स्त्री० ) लोहार विशेष, ढोली का दूसरा दिन, जिस दिन लोग धूल डढ़ाते हैं ।

धुस्स ( पु० ) हीढ़, टीला ।

धुस्सा दे० ( पु० ) धुसा, लोहा ।

धुर्मा दे० ( पु० ) धूम, धुर्मा । [ येशुमार ।

धुर्माधार दे० ( पु० ) बहुत धुर्मा । ( वि० ) बेमहाल ।

धुधारा दे० ( पु० ) धुर्मा निकलने का मार्ग, मोला, जिससे धुर्मा निकाला जाता है ।

धुधरा दे० ( पु० ) धुधला, राखचढ़ ।

धूत तत्० ( गु० ) [ धू + क ] कल्पित, कँपाया हुआ, ( दे० ) धूत्त, छत्ती, छलिया, कपटी ।—पाप ( गु० ) पापयुक्त ।

धूति दे० ( स्त्री० ) धूलना, डगई, छल, कपट, धपा—  
“सुनसी रघुवर नेवकहि, सकैन क जियुग धूति” ।

धूधू ( पु० ) आग जलने का शब्द ।

धूना दे० ( पु० ) राल, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, यह एक वृक्ष का गोंद होता है, अलकतरा, तार-कोल का सत ।

धूनी दे० ( स्त्री० ) वह यन्त्रकुण्ड जिसमें साधु लोग आग रखते हैं और अपने भक्तों को बसी धूनी से भस्म निकाल कर दिया करते हैं । भूतशोध दूर करने के लिये कतिपय श्रोपधियों का धूम ।—देना ( वा० ) जला देना, समाधि देना, मृत साधु का अन्तिम संस्कार करना ।—रमाना ( वा० ) साधु होना, घर छोड़ के निकल जाना, योगी का वेप धरना ।—लगाना ( वा० ) स्थिर होना, डढ़ जाना, डठ करना ।—लेना ( वा० ) आग तापना, पशुभि लेना ।

धूप दे० ( स्त्री० ) रौद्र, आतप, तपन, सूर्य का प्रकाश, घाम, तपिरा । ( पु० ) सुगन्ध काष्ठ विशेष, जो देवपूजा में जलाया जाता है, गुग्गुल ।—काल ( पु० ) गर्मी का समय, ग्रीष्मकाल ।—घड़ी ( स्त्री० ) यंत्र विशेष जिसके द्वारा धूप की छाया से समय जाना जाता है ।—झाड़ ( स्त्री० ) एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।—दान या दानी ( स्त्री० ) धूप देने का छोटा पात्र विशेष ।—

सराना ( क्रि० ) भगवान् के सामने रसोई अर्पण करना ।

धूपना दे० ( क्रि० ) धूप देना, धूप जलाना ।

धूपित दे० ( वि० ) धूप दिया हुआ, धूप से वासित किया गया, धूप से सुगन्धित किया हुआ ।

धूम तत्० ( पु० ) भीगी लकड़ी के संयोग से अग्नि से निकले परमाणु, धुँआँ, अग्निचिह्न ।—केतन ( पु० ) अग्नि, अनल, केतुमह ।—केतु या केतन ( पु० ) अग्नि उत्पन्न का चिह्न विशेष, उत्पन्न का प्राकृतिक चिह्न, शिंखायुक्त, धूम के आकार का तारा, ग्रहमेद ।—ध्वज ( पु० ) अग्नि, अनल, वह्नि ।—पान ( पु० ) हुका पीना, सिगरेट बीड़ी आदि का पीना ।—प्रभा ( स्त्री० ) धूमान्धकार नामक एक नरक विशेष । यन्त्र ( पु० ) इन्जिन, जो वाष्प के सहारे चलता हो ।—वाहिनी ( स्त्री० ) रेलगाड़ी । ( दे० ) रौंटा, हलचल, ढोलाइल ।—धाम ( स्त्री० ) बसव की बीड़ ।

धूमावती तत्० ( स्त्री० ) दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक महाविद्या । तन्त्रशास्त्रों में इनकी वर्णित इस प्रकार लिखी है । एक समय पार्वती ने भूय से व्याकुल होकर, महादेव से खाने की वस्तु माँगी, परन्तु महादेव नहीं दे सके । इसी कारण पार्वती ने महादेव की कोखा डाला । परन्तु इससे पार्वती के शरीर से धूम निकलने लगी । तभी से पार्वती का नाम धूमावती प्रसिद्ध हुआ । पुनः महादेव ने अपना शरीर कल्पित करके कहा “देवि ! जब तुमने मुझको खा लिया है तब तुम विधवा हो गई, अतएव अब से तुमको विधवा पेश से रहना चाहिये, इसी वेश में लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और अब से तुम्हारा नाम धूमावती हुआ । पुरश्चर्यासिद्धि के लिये कृष्णचतुर्दशी को धूमावती का जप किया जाता है । [ के रङ्ग का, धुमैरा । धूमरा, धूमल, धूमला दे० ( वि० ) मटमैला, धुँप धूमा दे० ( वि० ) धुमैरा, धूमला, मटमैला, धुँप का सा रङ्ग । धूमिल ( पु० ) धुंधला, धुँप के रंग का । धूमी दे० ( वि० ) ऊधमी, धपाती, धपाती । धूम्र तत्० ( पु० ) कृष्ण रक्त मिश्रित वर्ण, कृष्ण जोहित वर्ण, बैंगनी ।—केतु तत्० ( पु० ) देवो धूमकेतु

—केश ( पु० ) राघव विशेष, जो शुभ्र का सेना नायक था; कपेल, कवूतर ।—पान ( पु० ) तमाखु, आदि पीना ।—पान यन्त्र ( पु० ) हुका ।

धूम्रलोचन तत्त्वं ( पु० ) एक राघव का नाम, दान-वेन्द्र शुभ्र का सेनापति। शुभ्र ने इसी को ६० हजार सेना के साथ, भुवनमोहिनी महामाया को पकड़ने के लिये भेजा था । महामाया के डुकूल से ६० हजार सेना के साथ धूम्रलोचन मरम हो गया ।

धूम्राक्ष तत्त्वं ( पु० ) एक राघव का नाम ।

धूर दे० ( स्त्री० ) धूल, रज, रेत ।

धूरा दे० ( पु० ) चूर्ण, सड़क ।

धूरि दे० ( स्त्री० ) धूलि, रज, रेत, गर्द ।

धूरी दे० ( स्त्री० ) धुरी, धूलि ।

धूर्जटि तत्त्वं ( पु० ) महेश्वर, महादेव, शिव ।

धूर्त तत्त्वं ( पु० ) वज्रक, प्रतापक, शठ, खल ।—ता ( स्त्री० ) शठता, खलता, प्रवञ्चना बदमाशी, गुंडई, पाजीपन । [ ( स्त्री० ) भट, बखल ।

धूल, धूलि दे० ( स्त्री० ) रज, रेत, धूरि ।—घाती धूसना दे० ( कि० ) निन्दित करना, अपमान करना, कोसना । [ पीला रङ्ग, मटियारा रङ्ग ।

धूसर या धूसरा तत्त्वं ( पु० ) ईश्वर पाण्डवर्ण, इलका धूसरित ( पु० ) धूल से सना हुआ, धूल लगा हुआ । धूहा दे० ( पु० ) धोखा, एक प्रकार के खेल का मध्यस्थान, चञ्चापुरुष जिसे खेल में गाड़ते हैं ।

धुक ( अव्य० ) धिक् ।

धृत तत्त्वं ( पु० ) [ धृ + कृ ] धारण विशिष्ट, धारण किया हुआ । अपराधी, पकड़ा हुआ, गृहीत, धारित ।—कार्मुकेषु ( वि० ) बहुवर्णधारी, मोढ़ा, वीर ।—पट ( वि० ) गृहीत वस्त्र, वस्त्रावृत, कपड़ा पहना हुआ ।—तमन् ( वि० ) [ धृत + धामन् ] जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला, सुस्थिर, प्रवृत्त, योगी ।

धृतराष्ट्र तत्त्वं ( पु० ) शान्तनुवन्दन, विचित्रवीर्य का श्रेष्ठ पुत्र, इनकी माता काशिराज की पुत्री श्रमिका थी, काशिराज की दूसरी कन्या श्रम्यालिका भी विचित्रवीर्य ही से ब्याही गई थी । श्रम्यालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए थे । धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारीराज सुबल की कन्या

गान्धारी से हुआ था । गान्धारी के गर्भ से धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र हुए थे और एक कन्या । दुर्योधन आदि इन्हीं के पुत्र थे । कन्या का नाम दुःशला था । यह सिन्धुराज जयद्रथ से ब्याही गई थी । महामारत के युद्ध में इनके सभी पुत्र मारे गये । गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र वन में चले गये । ६ महीने वहाँ रहने पाये थे कि इतने में उस वन में आग लगी, अन्धराज धृतराष्ट्र बौद्ध नहीं सकते थे, अतएव वहीं जल गये । ( २ ) नाग विशेष यह कदु का पुत्र था, इसके साथ पाण्डवों का विरोध था । अश्वमेध का घोड़ा लेकर अर्जुन मथिपुर गये । वहाँ अर्जुन पुत्र वज्रवाहन ने घोड़ा पकड़ लिया । पिता पुत्र में लड़ाई हुई, अर्जुन मारे गये । वज्रवाहन की माता पित्राह्वदा और अर्जुन की पत्नी उलूपी वहाँ आकर विलाप करने लगीं । उलूपी की सम्मति और माता की आज्ञा से वज्रवाहन सजीवन मथि लेने के लिये पाताल गये । वहाँ धृतराष्ट्र नामक नाग के कहने से वासुकी ने मथि देता बख्शीकार किया अतएव वज्रवाहन और वासुकी में लड़ाई हुई । लड़ाई में वासुकी हार गया और उसने सजीवन मथि वज्रवाहन को दे दिया । यह देखकर धृतराष्ट्र ने अपने दो पुत्रों को अर्जुन के पास भेजा । अपने पिता की आज्ञा के अनुसार इन्होंने अर्जुन का सिर काट कर एक वन में फेंक दिया । इधर अर्जुन का शरीर मस्तक शून्य देखकर वहाँ हाहाकार मच गया । अन्त में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दोनों पुत्रों को मार कर अर्जुन का मस्तक ले आये । वह मस्तक अर्जुन के शरीर से जोड़ दिया गया और सजीवन मथि के स्पर्श से अर्जुन पुनः जी बढे ।

धृति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ धृ + कृ ] धर्म, धीरज, शाइस मन की स्थिरता धारणा, मुख, योग विशेष । [ गम्भीर ।

धृतिमान् तत्त्वं ( पु० ) स्थिरचित्त, धैर्यावलम्बी, धीर,

घृष्ट तत्त्वं ( पु० ) [ घृ + कृ ] मगलम, साइसी, उरसाही, निर्लेख, चतुर्विध नायक के अन्तर्गत एक नायक विशेष । यथा:—

“ करे दोष निरसक जो, डरे न तिय के मान ।  
राज चरे मन में नहीं, नायक घृष्ट निदान ॥ ”

—रसराम ।

धुलाना दे० ( कि० ) निर्मल कराना, साफ कराना, कपड़े साफ कराना ।

धुलेंडी दे० ( स्त्री० ) खोहार विशेष, होली का दूसरा दिन, जिस दिन लोग धूल उड़ाते हैं ।

धुस्त ( पु० ) ढीठ, टीला ।

धुस्ता दे० ( पु० ) धुमा, लोह ।

धुआँ दे० ( पु० ) धूम, धुआँ । [ वेशुमार ।

धुआँधार दे० ( पु० ) बहुत धुआँ । ( वि० ) बेसम्हाल,

धुआँधारा दे० ( पु० ) धुआँ निकलने का मार्ग, मोखा, जिससे धुआँ निकाला जाता है ।

धुँघरा दे० ( पु० ) धुँधला, चस्बेड़ ।

धूत तत्० ( गु० ) [ धू + क्त ] कम्पित, कँपाया हुआ, ( दे० ) धूँत, छकी, छलिया, कपटी ।—पाप ( गु० ) पापयुक्त ।

धूति दे० ( स्त्री० ) धूँतना, ढगई, छल, कपट, यथा—  
“ तुलसी रघुवर सेवकहि, सकैन कलियुग धूति ” ।

धूधू ( पु० ) आग जलने का शब्द ।

धूना दे० ( पु० ) राज, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, यह एक वृक्ष का गोंद होता है, अलकतरा, तार-कोल का सत ।

धूनी दे० ( स्त्री० ) वह अग्निकुण्ड जिसमें साधु लोग आग रखते हैं और अपने मर्कों को इसी धूनी से भस्म निकाल कर दिया करते हैं। भूतबाधा दूर करने के लिये कतिपय श्रोपधियों का धूम ।—देना ( वा० ) जला देना, समाधि देना, मृत साधु का अन्तिम संस्कार करना ।—रमाना ( वा० ) साधु होना, घर छोड़ के निकल जाना, योगी का वेप धरना ।—लगाना ( वा० ) स्थिर होना, डट जाना, डठ करना ।—लेना ( वा० ) आग, तापना, पशुआग्नि लेना ।

धूप दे० ( स्त्री० ) रौद्र, आतप, तपन, सूर्य का प्रकाश, घाम, तपिश । ( पु० ) सुगन्ध काष्ठ विशेष, जो देवपूजा में जलाया जाता है, गुग्गुल ।—फाल ( पु० ) गर्मी का समय, ग्रीष्मकाल ।—घड़ी ( स्त्री० ) यंत्र विशेष जिसके द्वारा धूप की जाया से समय जाना जाता है ।—छाह ( स्त्री० ) एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।—दान या दानी ( स्त्री० ) धूप देने का छोटा पात्र विशेष ।—

सारना ( कि० ) भगवान् के सामने रसोई अर्पण करना ।

धूपना दे० ( कि० ) धूप देना, धूप जलाना ।

धूपित दे० ( वि० ) धूप दिया हुआ, धूप से वासित किया गया, धूप से सुगन्धित किया हुआ ।

धूम तत्० ( पु० ) मीमी लकड़ी के सेवग से अग्नि से निकले परमाणु, धुँआ, अग्निचिन्ह ।—केतन ( पु० ) अग्नि, अनल, केतुप्रह ।—केतु वा केतन ( पु० ) अग्नि उत्पात का चिन्ह विशेष, उत्पात का प्राकृतिक चिन्ह, शिखायुक्त, धूम के आकार का तारा, ग्रहभेद ।—ध्वज ( पु० ) अग्नि, अनल, चिन्ह ।—पान ( पु० ) ठुका पीना, सिगरेट पीनी आदि का पीना ।—प्रभा ( स्त्री० ) धूमाम्बुकार नामक एक नरक विशेष । यन्त्र ( पु० ) इजिन, जो वाष्प के सहारे चलता हो ।—वाहिनी ( स्त्री० ) रेलगाड़ी । ( दे० ) रौन्डा, डलचल, डोलाहल ।—घाम ( स्त्री० ) बरसव की मीड़ ।

धूमावती तत्० ( स्त्री० ) दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक महाविद्या । तन्त्रशास्त्रों में इनकी उक्ति इस प्रकार लिखी है । एक समय पार्वती ने भूँव से व्याकुल होकर, महादेव से खाने की वस्तु माँगी, परन्तु महादेव नहीं दे सके । इसी कारण पार्वती ने महादेव ही को खा डाला । परन्तु इससे पार्वती के शरीर से धूम निकलने लगा । तभी से पार्वती का नाम धूमावती प्रसिद्ध हुआ । पुनः महादेव ने अपना शरीर कल्पित करके कहा “ देवि ! जब तुमने मुझको खा लिया है तब तुम विश्वास हो गई, अतएव अब से तुमको विश्वास वेश से रहना चाहिये, इसी वेश में लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और अब वे तुम्हारा नाम धूमावती हुआ । पुरश्चर्यासिद्धि के लिये कृष्णचतुर्दशी को धूमावती का जप किया जाता है । [ के रत्न का, धुमेजा । धूमरा, धूमल, धूमला दे० ( वि० ) मटमैला, धुँधला धूमा दे० ( वि० ) धूमरा, धूमला, मटमैला, धुँधला सा रङ्ग । धूमिल ( गु० ) धुंधला, धुँध के रंग का । धूमी दे० ( वि० ) ऊधमी, उपाती, उपद्रवा । धूम्र तत्० ( पु० ) कृष्ण रक्त मिश्रित वर्ण, कृष्ण लोहित वर्ण, बैंगनी ।—केतु तत्० ( पु० ) देवो धूमकेतु

—केश (५०) राक्षस विशेष, जो शुम्भ का सेना नायक था; कपोत, कव्तर ।—पान (५०) तमाखु आदि पीना ।—पान यन्त्र ( ५० ) हुका ।

धृञलोचन तत् ( ५० ) एक राक्षस का नाम, दान-वेन्द्र शुम्भ का सेनापति। शुम्भ ने इसी को ६० हजार सेना के साथ, सुव्रतमोहिनी महामाया को पकड़ने के लिये भेजा था । महामाया के हुक्मरार से ६० हजार सेना के साथ धृञलोचन भस्म हो गया ।

धृञात्त तत् ( ५० ) एक राक्षस का नाम ।

धूर दे० ( स्त्री० ) धूल, रज, रेत ।

धूरा दे० ( ५० ) चूर्ण, सख ।

धूरि दे० ( स्त्री० ) धूलि, रज, रेत, गर्द ।

धूरी दे० ( स्त्री० ) धुरी, धूलि ।

धूर्ति तत् ( ५० ) महेश्वर, महादेव, शिव ।

धूर्त्त तत् ( ५० ) वस्तु, प्रसारक, शठ, खल ।—ता ( स्त्री० ) शठता, खलता, प्रवृत्तता बदमाशी, गुंडई, पाजीपन । [[ स्त्री० ) गढ, धल ।

धूल, धूलि दे० ( स्त्री० ) रज, रेणु, धूरि ।—घाती धूस्ना दे० ( स्त्री० ) निन्दित करना, अपमान करना, कोसना । [पिशा रक्त, मटियारा रक्त ।

धूसर या धूसरा तत् ( ५० ) ईश्वर पाण्डुरवर्ण, हलका धूसरि ( ५० ) धूल से सना हुआ, धूल लगा हुआ । धूहा दे० ( ५० ) धोखा, एक प्रकार के खेल का अभ्य-स्थान, चञ्चापुरुष जिसे खेल में गाड़ते हैं ।

धुक ( अन्त्य० ) धिक् ।

धृत तत् ( ५० ) [ धृ + क ] धारण विशिष्ट, धारण किया हुआ । अपराधी, पकड़ा हुआ, गृहीत, धारित ।—फार्मुकेषु ( वि० ) चतुर्थांशधारी, षोडश, धीर ।—पट ( वि० ) गृहीत वस्त्र, वस्त्रा-वृत्त, कपड़ा पहना हुआ ।—रामन् ( वि० ) [ धृत + आरामन् ] जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला, सुस्थिर, मझाचारी, योगी ।

धृतराष्ट्र तत् ( ५० ) शान्तनुनन्दन, विचित्रवीर्य का चैत्रज पुत्र, इनकी माता काशिराज की पुत्री अम्बिका थी, काशिराज की दूसरी कन्या अम्बा-जिका भी विचित्रवीर्य ही से ब्याही गई थी । अम्बाजिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए थे । धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारराज सुभज की कन्या

गान्धारी से हुआ था । गान्धारी के गर्भ से धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र हुए थे और एक कन्या । दुर्योधन आदि इन्हीं के पुत्र थे । कन्या का नाम दुःशला था । यह सिन्धुराज जयद्रथ का ब्याही गई थी । महाभारत के युद्ध में इनके सभी पुत्र मारे गये । गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र वन में चले गये । १ महीने वहाँ रहने पाये थे कि इतने में उस वन में आग लगी, अन्धराज धृतराष्ट्र दौड़ नहीं सकते थे, अतएव वहीं जल गये । ( २ ) नाग विशेष यह कद्रु का पुत्र था, इसके साथ पाण्डवों का विरोध था । अश्वमेध का घोड़ा लेकर अर्जुन मणिपुर गये । वहाँ अर्जुन पुत्र वभ्रुवा-इन ने घोड़ा पकड़ लिया । पिता पुत्र में लड़ाई हुई, अर्जुन मारे गये । वभ्रुवाहन की माता चित्राङ्गदा और अर्जुन की पत्नी उलूपी वहाँ आकर विलाप करने लगीं । उलूपी की सम्मति और माता की आज्ञा से वभ्रुवाहन सजीवन मणि लेने के लिये पाताल गये । वहाँ धृतराष्ट्र नामक नाग के कहने से वासुकी ने मणि देना अवधीकार किया अतएव वभ्रुवाहन और वासुकी में लड़ाई हुई । लड़ाई में वासुकी हार गया और उसने सजीवन मणि वभ्रु-वाहन को दे दिया । यह देखकर धृतराष्ट्र ने अपने दो पुत्रों को अर्जुन के पास भेजा । अपने पिता की आज्ञा के अनुसार उन्होंने अर्जुन का सिर काट कर एक वन में फेंक दिया । इधर अर्जुन का शरीर मस्तक शून्य देखकर वहाँ हाहाकार मच गया । अन्त में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दोनों पुत्रों को मार कर अर्जुन का मस्तक ले आये । वह मस्तक अर्जुन के शरीर से जोड़ दिया गया और सजीवन मणि के स्पर्श से अर्जुन पुनः जी उठे ।

धृति तत् ( स्त्री० ) [ धृ + क्ति ] धैर्य, धीरज, दाढ़स मन की स्थिरता धारणा, सुख, योग विशेष । [ गम्भीर । धृतिमान् तत् ( ५० ) स्थिरचित्त, धैर्यावलम्बी, धीर, धृष्ट तत् ( ५० ) [ धृ + क ] प्रगल्भ, साहसी, उत्साही, निर्लज्ज, चतुर्विध नायक के अन्तर्गत एक नायक विशेष । यथाः—

“ करे दोष निरसक जो, डरे न तिय के मान ।

राज घर मन में नहीं, नायक धृष्ट निदान ॥”

—रसराम ।

धुलाना दे० ( क्रि० ) निर्मल कराना, साफ कराना,  
कपड़े साफ कराना ।

धुलेंड़ी दे० ( स्त्री० ) खोहार विशेष, होली का दूसरा  
दिन, जिस दिन लोग धूल उड़ाते हैं ।

धुस्स ( पु० ) सीढ़, टीला ।

धुस्सा दे० ( पु० ) धुसा, लोहा ।

धुम्पा दे० ( पु० ) धूम, धुआँ । [ वेशुमार ।

धुम्पाधार दे० ( पु० ) बहुत धुआँ । ( वि० ) बेतम्हाल,

धुम्पारा दे० ( पु० ) धुआँ निकलने का मार्ग, मोखा,  
जिससे धुआँ निकाला जाता है ।

धुम्पारा दे० ( पु० ) धुंभुला, चस्बच्छ ।

धूत तत्व० ( गु० ) [ धू + क्त ] कषिपत, कँपाया हुआ,  
( दे० ) धूर्त, छली, छलिया, कपटी ।—पाप  
( गु० ) पापयुक्त ।

धूति दे० ( स्त्री० ) धूर्तता, डगहँ, छल, कपट, यथा—  
“तुजसी रघुवर सेवकहि, सकेन क नेयुग धूति” ।

धूधू ( पु० ) आग जलने का शब्द ।

धूना दे० ( पु० ) राख, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,  
यह एक वृक्ष का गोंद होता है, अलकतरा, तार-  
कोल का सत ।

धूनी दे० ( स्त्री० ) वह अग्निकुण्ड जिसमें साधु लोग  
आग रखते हैं और अपने भक्तों को इसी धूनी  
से भस्म निकाल कर दिया करते हैं । भूतयाधा  
दूर करने के लिये कतिपय ओषधियों का धूम ।  
—देना ( वा० ) जला देना, समाधि देना, मृत  
साधु का अन्तिम संस्कार करना ।—रमाना  
( वा० ) साधु होना, घर छोड़ के निकल जाना,  
योगी का वेष धरना ।—लगाना ( वा० ) स्थिर  
होना, डट जाना, डठ करना ।—लेना ( वा० )  
आग तापना, पशुअग्नि लेना ।

धूप दे० ( स्त्री० ) रौद्र, आतप, तपन, सूर्य का प्रकाश,  
धाम, तपिश । ( पु० ) सुगन्ध काष्ठ विशेष, जो  
देवपूजा में जलाया जाता है, गुग्गुलु ।—काल  
( पु० ) गर्मी का समय, भीष्मकाल ।—घड़ी  
( स्त्री० ) यंत्र विशेष जिसके द्वारा धूप की छाया  
से समय जाना जाता है ।—झाह ( स्त्री० ) एक  
प्रकार का वस्त्र विशेष ।—दानं या दानी  
( स्त्री० ) धूप देने का छोटा पात्र विशेष ।—

सराना ( क्रि० ) भगवान् के सामने रसोई प्रार्थ  
करना ।

धूपना दे० ( क्रि० ) धूप देना, धूप जलाना ।

धूपित दे० ( वि० ) धूप दिया हुआ, धूप से वासि  
किया गया, धूप से सुगन्धित किया हुआ ।

धूम तत्व० ( पु० ) भीगी लकड़ी के संयोग से अग्नि से  
निकले परमाणु, धुँआँ, अग्निचिन्ह ।—केतन  
( पु० ) अग्नि, अगल, केतुग्रह ।—केतु या केतन  
( पु० ) अग्नि उत्पात का चिन्ह विशेष, उत्पात  
का प्राकृतिक चिन्ह, शिखायुक्त, धूम के आकार  
का तारा, ग्रहभेद ।—ध्वज ( पु० ) अग्नि, अगल,  
चिन्ह ।—पान ( पु० ) झुका पीना, सिगरेट पीनी  
आदि का पीना ।—प्रभा ( स्त्री० ) धूमन्धकार  
नामक एक नरक विशेष । यन्त्र ( पु० ) इजिप्त,  
जो वाष्प के सहारे चलता है ।—वाहिनी ( स्त्री० )  
रेलगाड़ी । ( दे० ) रौद्रा, झलचल, डोलाइल ।  
—धाम ( स्त्री० ) वासव की मीढ़ ।

धूमावती तत्व० ( स्त्री० ) दश महाविद्याओं के अश्व-  
गत एक महाविद्या । तन्त्रशास्त्रों में इसकी उत्पत्ति  
इस प्रकार लिखी है । एक समय पार्वती ने शूब  
से ध्याकुल होकर, महादेव से खाने की वस्तु माँगी,  
परन्तु महादेव नहीं दे सके । इसी कारण पार्वती  
ने महादेव की कोखा डाला । परन्तु इससे पार्वती  
के शरीर से धूम निकलने लगी । तभी से पार्वती  
का नाम धूमावती प्रसिद्ध हुआ । पुनः महादेव  
ने अपना शरीर कषिपत करके कहा, “देवि ! अब  
तुमने मुझको खा लिया है तब तुम विधवा हो गई,  
अतएव श्व से तुमको विधवा वेश से रहना  
चाहिये, इसी वेश में लोग तुम्हारी पूजा करेंगे  
और श्व से तुम्हारा नाम धूमावती हुआ ।  
पुरश्चरणासिद्धि के लिये कृष्णचतुर्दशी को धूमावती  
का जप किया जाता है । [ के रङ्ग का, धुमैला ।

धूमरा, धूमल, धूमला दे० ( वि० ) मटमैला, धुँप  
धूमा दे० ( वि० ) धूमरा, धूमला, मटमैला, धुँप का सारंग ।

धूमिल ( गु० ) उधका, धुँप के रंग का ।

धूमी दे० ( वि० ) ऊधसी, उत्पाती, वपदारी ।

धूम तत्व० ( पु० ) कृष्ण रक्त मिश्रित वर्ण, कृष्ण जोषित  
वर्ण, बैंगनी ।—केतु तत्व० ( पु० ) देखा धूमकेतु

—केश (५०) राघव विशेष, जो शुभ्र का सेना नायक था; कपेल, कव्हर ।—पान (५०) तमाखु आदि पीना ।—पान यन्त्र (५०) हुफा ।

धूम्रलोचन तत् (५०) एक राघव का नाम, दान-वेन्द्र शुभ्र का सेनापति। शुभ्र ने इसी को ६० हजार सेना के साथ, भुवनमोहिनी महामाया को पकड़ने के लिये भेजा था। महामाया के हुक्म से ६० हजार सेना के साथ धूम्रलोचन मर गया।

धूम्राक्ष तत् (५०) एक राघव का नाम।

धूर दे० (स्त्री०) धूल, रज, रेत।

धूरा दे० (५०) चूर्ण, सफ़ूक।

धूरि दे० (स्त्री०) धूलि, रज, रेत, गर्द।

धूरी दे० (स्त्री०) धुरी, धूलि।

धूर्जटि तत् (५०) महेश्वर, महादेव, शिव।

धूर्त तत् (५०) वज्रक, प्रतारक, शठ, खल ।—ता (स्त्री०) शठता, खलता, प्रवञ्चना बदमाशी, गुंडई, पाजीपन। [[ स्त्री० ) नष्ट, चरत।

धूल, धूलि दे० (स्त्री०) रज, रेख, धूरि ।—घाती धूसना दे० (क्रि०) निन्दित करना, अपमान करना, कोसना। [पीला रङ्ग, मटियारा रङ्ग।

धूसर या धूसरा तत् (५०) हँस पाण्डुवर्ण, हलका धूसरित (गु०) धूल से सना हुआ, धूल लगा हुआ। धूहा दे० (५०) धोखा, एक प्रकार के खेल का मध्य-स्थान, चञ्चापुरुष जिसे खेल में गाड़ते हैं।

धूक (अध्य०) धिक्।

धृत तत् (गु०) [धृ+क] धारण विशिष्ट, धारण किया हुआ। अपराधी, पकड़ा हुआ, गृहीत, चारित ।—कार्मुकेषु (वि०) चतुर्बाणधारी, बोंदा, वीर ।—पट (वि०) गृहीत वस्त्र, वस्त्रा-वृत, कपड़ा पहना हुआ ।—रामन् (वि०) [धृत + आरामन्] जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला, सुस्थिर, महाचारी, योगी।

धृतराष्ट्र तत् (५०) शान्तनुनन्दन, विचित्रवीर्य का चतुर्थ पुत्र, इनकी माता काशिराज की पुत्री अम्बिका थी, काशिराज की दूसरी कन्या अम्बालिका भी विचित्रवीर्य ही से ब्याही गई थी। अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए थे। धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारराज सुबल की कन्या

गान्धारी से हुआ था। गान्धारी के गर्भ से धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र हुए थे और एक कन्या। दुर्योधन आदि इन्हीं के पुत्र थे। कन्या का नाम दुःशला था। यह सिन्धुराज जयद्रथ के ब्याही गई थी। महाभारत के युद्ध में इनके सभी पुत्र मारे गये। गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र वन में चले गये। ६ महीने वहाँ रहने पाये थे कि इतने में उस वन में आग लगी, अन्धराज धृतराष्ट्र दौड़ नहीं सकते थे, अतएव वहाँ जल गये। (२) नाग विशेष यह कर्तु का पुत्र था, इसके साथ पाण्डवों का विरोध था। अश्वमेध का घोड़ा लेकर अर्जुन मणिपुर गये। वहाँ अर्जुन पुत्र वज्रवा-हन ने घोड़ा पकड़ लिया। पिता पुत्र में लड़ाई हुई, अर्जुन मारे गये। वज्रवाहन की माता धित्राङ्गदा और अर्जुन की पत्नी उलूपी वहाँ आकर बिलाप करने लगीं। उलूपी की सम्मति और माता की आज्ञा से वज्रवाहन सजीवन मणि लेने के लिये पाताल गये। वहाँ धृतराष्ट्र नामक नाग के कहने से वासुकी ने मणि देना अस्वीकार किया अतएव वज्रवाहन और वासुकी में लड़ाई हुई। लड़ाई में वासुकी हार गया और उसने सजीवन मणि वज्रवाहन को दे दिया। यह देखकर धृतराष्ट्र ने अपने दो पुत्रों को अर्जुन के पास भेजा। अपने पिता की आज्ञा के अनुसार उन्होंने अर्जुन का सिर काट कर एक वन में फेंक दिया। इधर अर्जुन का शरीर मस्तक शून्य देखकर वहाँ हाहाकार मच गया। अन्त में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दोनों पुत्रों को मार कर अर्जुन का मस्तक ले आये। यह मस्तक अर्जुन के शरीर से जोड़ दिया गया और सजीवन मणि के स्पर्श से अर्जुन पुनः जी उठे।

धृति तत् (स्त्री०) [धृ+क्ति] धैर्य, धीरज, दाइस मन की स्थिरता धारणा, सुख, योगविशेष। [गम्भीर। धृतिमान् तत् (५०) स्थिरचित्त, चैर्पावळम्बी, धीर, घृष्ट तत् (५०) [धृ+क] प्रगल्भ, साहसी, बलाही, निर्लज्ज, चतुर्विध नायक के अन्तर्गत एक नायक विशेष। यथाः—

“करी दोष निरसक जो, डरे न तिय के मान।  
खान धरे मन में नहीं, नायक घृष्ट निदान॥”

—धराज।



—ता ( स्त्री० ) दिठाई, प्रगल्भता, निर्लज्जता, भूतता, मचलाहट, साहस ।—केतु ( पु० ) शिशु-पाल का पुत्र जो पाण्डवों की ओर से लड़ा था ।  
धृष्णु तत्त्वं ( वि० ) [ धृ+णु ] दृष्ट, प्रगल्भ, निर्लज्ज ।

धृष्टद्युम्न तत्त्वं ( पु० ) पाण्डवराज द्रुपद का पुत्र और द्रुपद का पौत्र, महाभारत के युद्ध में इसने पुत्र शोकाक्षर द्रोणाचार्य का सिंहाकाट था और युद्ध के अन्तिम दिन रात को द्रोणाचार्य के पुत्र अर्जुनाय ने छिप कर पाण्डवों के शिविर में घुस कर अपने पित्रघाती दृष्टद्युम्न को मार डाला था ।  
धैर्यामुष्टि दे० ( स्त्री० ) मुकामुक्ती, घुस्साघुस्सी, घुस्सुस्सा ।

धेनु तत्त्वं ( स्त्री० ) सवस्ता गौ, नवप्रसूता गौ, दुधार गाय, पृथिवी ।—मत्तिका ( स्त्री० ) डंक, डांस ।

धेनुक तत्त्वं ( पु० ) असुर विशेष, यह गर्दभ के आकार का था । नरमांस खोलुप इस राक्षस को बलराम ने मारा था । एक समय श्रीकृष्ण और बलराम गौ चराते चराते ताल वन में चले गये और वहाँ ताल तोड़ने लगे । उसी वन में धेनुक रहा करता था । ताल गिरने का शब्द सुनकर धेनुक इनकी ओर दौड़ा । बलराम ने उसके दोनों पैर पकड़ कर ताल के पेड़ से उसे दे मारा, जिससे उसकी मृत्यु हुई ।

धेनुमती तत्त्वं ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, गोमती ।

धेय ( पु० ) धारण करने योग्य ।

धेर ( पु० ) अनार्थ जाति विशेष ।

धेला या धेलचा दे० ( पु० ) धधेला, आधा पैसा, एक प्रकार का सिक्का, जिसका दाम आधा पैसा होता है ।

धेली दे० ( स्त्री० ) अठखी, अघेली, आधा रुपया ।

धैर्य तत्त्वं ( पु० ) धीरता, स्थिरता, अचाञ्छल्य, चमा, सहिष्णुता ।—कलित ( पु० ) धैर्यशाली, धीर ।

—व्युत् ( वि० ) अस्थिर, चञ्चल, अधीर, असहिष्णु ।—शाली ( वि० ) स्थिरता विशिष्ट, धीर, शान्त ।

धैवंत तत्त्वं ( पु० ) गाने का एक स्वर विशेष ।

धो दे० ( कि० ) धो डाल, साफ़ कर ।

धोआ दे० ( पु० ) फल की मँद, उपहार, इपायन ।

धोइता तत्त्वं ( पु० ) दौहित्र, दोहिता, बेटी का बेटा ।

धोई दे० ( स्त्री० ) बिना झुलके की मूंग की दाढ़, जो सिझाई गयी हो और जिसमें पानी न हो । [गोल धोंघा दे० ( पु० ) टीका, मट्टी का ढेर, मट्टी का घोंवाला दे० ( पु० ) धूमर, धुआँ निकलने की राह ।

धोक दे० ( पु० ) देवता या गुरु को प्रणाम करना, दण्डवत करना ।

धोकड़ दे० ( वि० ) बलशाली, महाबली, पराक्रमी ।

धोख या धोखा दे० ( पु० ) छुड़, कपट, भ्रम, भुलावा, छुड़ना, प्रसारणा, प्रवञ्चना, अचानक, अचानक ।

—खाना ( वा० ) छला जाना, वञ्चित होना, ठगा जाना ।—देना ( वा० ) ठगना, छुड़ना, धकाना, भुलावा देना ।

धोता दे० ( पु० ) धूर्त, छली, कपटी ।

धोती दे० ( स्त्री० ) कटिवस्त्र, पहनने का वस्त्र, धौत-वस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र । [करना ।

धोना दे० ( कि० ) पखारना, प्रखालन करना, साफ़

धोप दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की तलवार ।

धोव दे० ( पु० ) कपड़े साफ़ करने का काम, धोने का काम, धुले कपड़े की छेप ।

धोविन दे० ( स्त्री० ) धोबी की स्त्री, रजकी ।

धोवी दे० ( पु० ) रजक, कपड़े धोने वाली जाति ।—घास ( स्त्री० ) नदी दूब ।—पड़ाइ ( पु० ) कुतरी का एक पेव ।

धोयी तत्त्वं ( पु० ) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि,

“यवनदूत” नामक एक ग्रन्थ, इन्होंने संस्कृत भाषा में बनाया है जो मेघदूत के समान है । ये कवि चण्देश के निवासी थे । ये कवि जयदेव कवि के समकालीन थे । जयदेव का समय ख्रीष्टीय १२वीं सदी का पूर्व भाग निर्धारित हो चुका है । उसी के अनुसार धोयी कवि का भी समय मानना चाहिये । जयदेव ने इन्हें “कविप्रपति” कहा है ।

धोर या धोरे ( पु० ) समीप, निकट, घार, किनारा ।

धोरण ( पु० ) सवारी, दौड़, सरपट ।

धोरिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) परम्परागत बात, क्रमागत

रीति, धुर से चली आयी बात ।

धोवती ( स्त्री० ) धोती ।

घोसा ( पु० ) भेली, गुड़ की पिण्डी ।

घौ दे० ( गु० ) वृष विशेष, घव वृष ।

घौं दे० ( पु० ) बौन, प्राच मन, बीस सेर, एक मन का आधा, ( अर्थ ) या, यद्यत् ।

घौंक दे० ( छी० ) रोग विशेष, काराधवास ।

घौंकना दे० ( क्रि० ) फूंकना, भाथी चलाना, घौंकनी से हवा देना ।

घौंक्ती दे० ( छी० ) भक्षा, भाथी, चमड़े का एक यन्त्र जिससे लुहार भाग पञ्चलित करने को हवा निकालते हैं ।

घौंका दे० ( छी० ) घौंकनी, भक्षा ।

घौंज दे० ( छी० ) विवेचना, विचार, परिशीलन ।

घौंस दे० ( पु० ) धमकी, झुल्लावा, चढ़ाई, आक्रमण, भमकी, दौड़ ।

घौंसा दे० ( पु० ) नगारा, दुन्दुभि, बड़ा नगारा ।—पदी ( छी० ) झुकावा, काँसा ।

घौंसिया दे० ( पु० ) प्रधान, अगुआ, नेता, दल का प्रधान, दौड़ के दल का प्रधान । [ परिष्कृत ।

घौंत तद्० ( वि० ) प्रचलित, घोसा हुआ, श्वेत,

घौंताल दे० ( पु० ) घनवान, सूमा, दुर्जन ।

घौंताली दे० ( स्त्री० ) घन, बल, सुमापन ।

घौमक तद्० ( पु० ) देश विशेष ।

घौम्य तद्० ( पु० ) पाण्डवों के पुरोहित का नाम, इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम देवल था । चित्राण की सम्मति से पाण्डवों ने घौम्य को अपना पुरोहित बनाया था । नारद ने प्रसन्नता पूर्वक इनको सूर्य-देव का स्तोत्र दिया था । उसी स्तोत्र की शिक्षा घौम्य ने युधिष्ठिर को दी थी । उसी स्तोत्र के प्रभाव से युधिष्ठिर को अक्षय घटलोई मिली थी ।

घौर दे० ( पु० ) कपोत विशेष, कबूतर की एक जाति, जङ्गली कबूतर ।

घौरा दे० ( वि० ) घवल, श्वेत, शुक्ल, शुभ्र ।

घौल दे० ( स्त्री० ) घण्ट, चपत, घण्टा, थाप ।—जड़ना ( वा० ) पीटना, सुक्का मारना ।—मारना ( वा० ) ।

—जगाना ( वा० ) घण्ट मारना, घौल मड़ना ।

—जगाना ( व ) हानि उठाना, घटी सहना, हताश होना, मनेरघ भङ्ग होना, निराश होना ।

घौला दे० ( वि० ) घीरा, घवल, श्वेत, शुक्ल, शुभ्र

—गिरि ( पु० ) घवलगिरि, हिमालय पर्वत

—घक्रड़ ( पु० ) मारपीट, उपद्रव ।—घप्प ( पु० ) मारपीट, दंगा ।

घौली ( छी० ) वृष विशेष । [ श्वेत जमाना

घौलाना दे० ( क्रि० ) घौलियाना, घण्ट मारना

घ्यात तद्० ( वि० ) [ ध्यै + क ] विचारित, चिन्तित

सोचा हुआ, ध्यान किया हुआ ।

घ्यातव्य तद्० ( पु० ) [ ध्यै + तव्य ] ध्यान योग्य, ध्यान देने योग्य, अवश्य उपदेसी, प्रति शय प्रिय । [ विचारक

घ्याता तद्० ( पु० ) [ ध्यै + ल्यु ] ध्यानकर्ता

घ्यान तद्० ( पु० ) [ ध्यै + अनट् ] सोच, विचार चिन्ता, उरकण्डा पूर्वक स्माण, अनुसन्धान, ज्ञान, वस्तु का पुनः स्मरण, लौ ।—योग तद्० ( पु० ) समाधियोग ।

ध्यानसिंह दे० ( पु० ) पञ्चाय केसरी रणजीतसिंह

का प्रधान मन्त्री, इस पर रणजीतसिंह बड़ा भरोसा रखते थे । ध्यानसिंह के बड़े भाई का नाम गुलाबसिंह था और इनके छोटे भाई का नाम सुबितसिंह था । इन तीनों भाइयों पर महाराज बड़ा प्रीति रखते थे । इनको राजा की उपाधि मिली थी । इसके बाद राजा की आज्ञा से राजकीय पत्रों में " राजा कलान यदादुर " लिखे जाते थे : महाराज रणजीतसिंह ने अपने अन्तिम समय में अपने पुत्र खड्गसिंह को राज्य का उत्तराधिकारी और इनका अभिभावक ध्यान सिंह को नियत किया । परन्तु खड्गसिंह रणजीतसिंह के उत्तराधिकारी होने के योग्य नहीं था । दुष्टों के परामर्श से वह ध्यानसिंह पर अविश्वास करने लगा, अन्त में ध्यानसिंह और उनके पुत्र का महल में खाना भी उसने रोक दिया । इस समाचार का कुफल खड्गसिंह को बहुत ही शीघ्र मिला । वह यन्त्री होकर जेल भेज दिये गये । उनके पुत्र नवनिहालसिंह को पश्चात् की गद्दी मिली । खड्गसिंह की मृत्यु जेलखाने में हुई, उसी दिन नव निहालसिंह भी तोरण द्वार के गिरमाने से दबका

—ता ( स्त्री० ) ठिठाई, प्रगल्भता, निर्लज्जता, भ्रूँता, मचलाहट, साहस ।—केतु ( पु० ) शिशु-पाल का पुत्र जो पाण्डवों की ओर से लड़ा था ।  
धृष्ट तत्त्वं ( वि० ) [ धृष्ट + तत्त्वं ] छट, प्रगल्भ, निर्लज्ज ।

धृष्टद्युम्न तत्त्वं ( पु० ) पाण्डुराज हृपद का पुत्र और द्रुपद का पौत्र, महाभारत के युद्ध में इसने पुत्र शोकाचरु द्रोणाचार्य का सिर काटा था और युद्ध के अन्तिम दिन रात के द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने छिप कर पाण्डवों के शिविर में घुस कर अपने पित्रघाती धृष्टद्युम्न को मार डाला था ।

घैनामुष्टि दे० ( स्त्री० ) मुकामुक्की, घुस्साघुस्सी, घुस्घुस्सा ।

धेनु तत्त्वं ( स्त्री० ) सवस्था गौ, नवप्रसूता गौ, दुधार गाय, पृथिवी ।—मत्तिका ( स्त्री० ) ढंक, डाँस ।

धेनुक तत्त्वं ( पु० ) असुर विशेष, यह गर्दम के आकार का था । नरमांस कोलुप इस राक्षस के यक्षराम ने मारा था । एक समय श्रीकृष्ण और बलराम गौ चराते चराते ताल वन में चले गये और वहाँ ताल तोड़ने लगे । उसी वन में धेनुक रहा करता था । ताल गिरने का शब्द सुनकर धेनुक इनकी ओर दौड़ा । बलराम ने उसके दोनों पैर पकड़ कर ताल के पेड़ से उसे दे मारा, जिससे उसकी मृत्यु हुई ।

धेनुमती तत्त्वं ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, गोमती ।

धेय ( पु० ) धारण करने योग्य ।

धेर ( पु० ) अनार्थ जाति विशेष ।

धेला या धेलचा दे० ( पु० ) अघेला, आधा पैसा, एक प्रकार का सिक्का, जिसका दाम आधा पैसा होता है ।

धेली दे० ( स्त्री० ) अठ्ठी, अघेली, आधा रुपया ।

धैर्य तत्त्वं ( पु० ) धीरता, स्थिरता, अघावृत्त्य, चमा, सहिष्णुता ।—फलित ( पु० ) धैर्यशाली, धीर ।

—च्युत ( वि० ) अस्थिर, चञ्चल, अधीर, असहिष्णु ।—शाली ( वि० ) स्थिरता विशिष्ट, धीर, शान्त ।

धैवत तत्त्वं ( पु० ) गाने का एक स्वर विशेष ।

धो दे० ( कि० ) धो डाल, साफ़ कर ।

धोआ दे० ( पु० ) फल की भेंट, उपहार, उपायन ।

धोइता तद् ( पु० ) दौहित्र, दौहिता, बेटी का बेटा ।

धोई दे० ( स्त्री० ) बिना झिलके की मूंग की दाब, जो सिझाई गयी हो और जिसमें पानी न हो । [ गोल

घोंघा दे० ( पु० ) टीन्ना, मट्टी का ढेर, मट्टी का

घोंवाला दे० ( पु० ) धमार, धुआँ निकलने की राह ।

धोक दे० ( पु० ) देवता या गुरु को प्रणाम करना, दण्डवत करना ।

धोकड़ दे० ( वि० ) बज्जाली, महाबली, पराक्रमी ।

धोख या धोखा दे० ( पु० ) छद्म, कपट, भ्रम, भुलावा,

छलना, प्रतारणा, प्रवृत्तना, अचानक, अचानक ।

—खाना ( वा० ) छुला जाना, वक्षित होना,

ठगा जाना ।—देना ( वा० ) ठगना, छलना,

बहकाना, भुलावा देना ।

धोता दे० ( पु० ) धूँच, छली, कपटी ।

धोती दे० ( स्त्री० ) कटिवस्त्र, पहनने का वस्त्र, प्रीत-वस्त्र, कमर में पहिने का वस्त्र । [ करना ।

धोना दे० ( कि० ) पखारना, प्रखालन करना, साफ़

धोप दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की तलवार ।

धोब दे० ( पु० ) कपड़े साफ़ करने का काम, धोने का काम, धुले कपड़े की खेप ।

धोविन दे० ( स्त्री० ) धोबी की स्त्री, रजकी ।

धोबी दे० ( पु० ) रजक, कपड़े धोने वाली जाति ।—

धास ( स्त्री० ) बड़ी दूब ।—पड़ाइ ( पु० ) कुरती का एक पेच ।

धोयी तत्त्वं ( पु० ) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि,

“ पवनदूत ” नामक एक ग्रन्थ, इन्होंने संस्कृत

भाषा में बनाया है जो मेघदूत के समान है । ये

कवि वज्रदेश के निवासी थे । ये कवि जयदेव कवि

के समकालीन थे । जयदेव का समय ख्रिष्टीय १२ वीं

सदी का पूर्व भाग निर्धारित हो चुका है । उसी के

अनुसार धोयी कवि का भी समय मानना चाहिये ।

जयदेव ने इन्हें “ कविदामपति ” कहा है ।

धोर या धोरे ( पु० ) समीप, निकट, घार, किनारा ।

धोरण ( पु० ) सवारी, दौड़, सरपट ।

धोरिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) परम्परागत बात, क्रमागत

रीति, धुर से चली आयी बात ।

धोवती ( स्त्री० ) धोती ।

धोसा ( पु० ) भेली, गुड़ की पिण्डी ।

धो दे० ( गु० ) वृच विशेष, चव वृच ।

धौं दे० ( पु० ) धौन, घाघ मन, बीस-सेर, एक मन का आधा, ( अम्य ) या, अथवा ।

धौंक दे० ( स्त्री० ) रोग विशेष, कायबलास ।

धौंकना दे० ( क्रि० ) हूंकना, भायी चलाना, धौंकनी से हवा देना ।

धौंकनी दे० ( स्त्री० ) मछा, भायी, चमड़े का एक यन्त्र जिससे लुहार चाग पज्वलित करने को हवा निकालते हैं ।

धौंका दे० ( स्त्री० ) धौंकनी, मछा ।

धौंज दे० ( स्त्री० ) विवेचना, विचार, परिशीलन ।

धौंस दे० ( पु० ) धमकी, भुलावा, चढ़ाई, आक्रमण, भमकी, दौड़ ।

धौंसा दे० ( पु० ) नगारा, दुन्दुभि, बड़ा नगारा ।—  
पदी ( स्त्री० ) भुलावा, काँसा ।

धौंसिया दे० ( पु० ) प्रधान, अगुआ, नेता, दल का प्रधान, दौड़ के दल का प्रधान । [ परिष्कृत ।

धौंत तत्० ( वि० ) प्रचलित, धोआ हुआ, रवेत,

धौंताल दे० ( पु० ) धनवाग, घूर्मा, दुर्जन ।

धौंताली दे० ( स्त्री० ) घन, बल, घूर्मापन ।

धौमक तत्० ( पु० ) देश विशेष ।

धौम्य तत्० ( पु० ) पाण्डवों के पुरोहित का नाम, इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम देवल था । चित्ररथ की सम्मति से पाण्डवों ने धौम्य को अपना पुरोहित बनाया था । नारद ने प्रसन्नता पूर्वक इनको सूर्य-देव का स्तोत्र दिया था । उसी स्तोत्र की शिष्टा धौम्य ने सुधिष्ठिर को दी थी । उसी स्तोत्र के प्रभाव से सुधिष्ठिर को अचय बटलोई मिली थी ।

धौर दे० ( पु० ) कपोत विशेष, कवूतर की एक जाति, जङ्गली कवूतर ।

धौरा दे० ( वि० ) धवल, रवेत, शुद्ध, शुभ्र ।

धौल दे० ( स्त्री० ) धण्ड, चपत, घप्पा, घाप ।—जड़ना ( वा० ) पीटना, मुक्का मारना ।—मारना ( वा० ) ।

—लगाना ( वा० ) धण्ड मारना, धौल मड़ना ।

—लगना ( व ) हानि उठाना, घटी सहना, हताश होना, मनोरथ भङ्ग होना, निराश होना ।

—धप्पा ( वा० ) मारपीट, मार हट्ट, चोट चपेट ।

धौला दे० ( वि० ) धौरा, धवल, रवेत, शुद्ध, शुभ्र ।

—गिरि ( पु० ) धवलगिरि, हिमालय पर्वत ।

—धकड़ ( पु० ) मारपीट, उपद्रव ।—धण्ड ( पु० ) मारपीट, दंगा ।

धौलो ( स्त्री० ) वृच विशेष । [ चपत अमाना ।

धौलाना दे० ( क्रि० ) धौलियाना, धण्ड मारना,

ध्यात तत्० ( वि० ) [ ध्यै + क्त ] विचारित, चिन्तित, सोचा हुआ, ध्यान किया हुआ ।

ध्यातव्य तत्० ( गु० ) [ ध्यै + तव्य ] ध्यान के योग्य, ध्यान देने योग्य, अत्यन्त उपयोगी, चतित-शय श्रेष्ठ । [ विचारक ।

ध्याता तत्० ( पु० ) [ ध्यै + लृण ] ध्यानकर्ता,

ध्यान तत्० ( पु० ) [ ध्यै + शनट् ] सोच, विचार, चिन्ता, उरकण्डा पूर्वक स्मरण, अनुसन्धान, ज्ञान, वस्तु का पुनः स्मरण, लौ ।—योग तत्० ( पु० ) समाधियोग ।

ध्यानसिंह दे० ( पु० ) पञ्चाव केसरी रणजीतसिंह

का प्रधान मन्त्री, इस पर रणजीतसिंह पदा भरोसा रखते थे । ध्यानसिंह के बड़े भाई का नाम गुलाबसिंह था और इनके छोटे भाई का नाम सुवितसिंह था । इन तीनों भाइयों पर महाराज बड़ी प्रीति रखते थे । इनको राजा की उपाधि मिली थी । इसके बाद राजा की आज्ञा से राजकीय पदों में “ राजा कलान यद्वाहुर ” लिखे जाते थे । महाराज रणजीतसिंह ने अपने अन्तिम समय में अपने पुत्र खड्गसिंह को राज्य का उत्तराधिकारी और उनका अभिभावक ध्यान सिंह को नियत किया । परन्तु खड्गसिंह रणजीतसिंह के उत्तराधिकारी होने के योग्य नहीं था । दुष्टों के परामर्श से वह ध्यानसिंह पर अविश्वास करने लगा, अन्त में ध्यानसिंह और उनके पुत्र का मदल में घाना भी उसने रोक दिया । इस समाचार का कुकल खड्गसिंह को बहुत ही शीघ्र मिला । वह बन्दी होकर जेल भेज दिये गये । उनके पुत्र नवनिहालसिंह को पञ्चाव की गद्दी मिली । खड्गसिंह की मृत्यु जेलखाने में हुई, वही दिन नव निहालसिंह भी तोरण द्वार के गिरगाने से दबड़ मर गये । इनके बाद खड्गसिंह की खो ने राज्य

मन्दी के जल से उत्पन्न होती थी।—मुख  
( पु० ) नदी का महाव ।

नन्दश तत्० ( पु० ) समुद्र, सागर, महादधि ।  
मन्दोला दे० ( पु० ) यही नौद, जिसमें घैल आदि को  
खिलाया जाता है, जो मन्दी का घना होता है ।  
ननका दे० ( पु० ) छोटा पच्चा, लड़का, लाड़ला,  
हुबारा ।

ननद तद्० ( स्त्री० ) पति की बहिन, ननदी ।  
ननदिया, ननदी दे० ( स्त्री० ) ननद, पति की भगिनी ।  
ननिहाल दे० ( पु० ) नाना का घर, माता के पिता का  
घर, नाना का गाँव ।

ननु तत्० ( अ० ) निश्चय, अवधारण, अनुज्ञा, सम्म-  
विदान, अनुमति, अनुनय, आमन्त्रण, आर्षेय,  
विरोधोक्ति, उत्प्रेषा ।

नन्द तत्० ( पु० ) श्रीकृष्ण का पालने वाला पिता,  
यमुना के दूसरे तीर पर पहले एक गोकुल नामक  
गाँव था, वहाँ गोप वसते थे । नन्द वहाँ गोपों  
के अधिपति थे । उस समय कंस मथुरा का राजा  
था । नन्द मथुरा के राजा के करद सामन्त थे ।  
भगवान् श्रीकृष्ण गोकुल ही में पले थे । वहाँ  
उन्होंने कंस के द्वारा भेजे हुए राक्षसों का वध  
किया था । वहाँ से कंस के धनुर्यज्ञ में विमन्त्रित  
होकर श्रीकृष्ण मथुरा गये और वहाँ कंस को मार  
कर अपने माता पिता के वहाँ रहने लगे । पुनः वे  
युद्धावन नहीं लौटे कृष्ण के खले जाने के बाद ही  
से नन्द का जीवन एक प्रकार का थोका हो गया  
था । इस और डिम्बक को मारने के लिये एक  
बार श्रीकृष्ण युद्धावन गये थे और वहाँ नन्द  
और यशोदा से भेंट भी हुई थी, नन्द और  
यशोदा को समझा कर श्रीकृष्ण पुनः मथुरा लौट  
आये इसके बाद एक बार और भी श्रीकृष्ण से  
इनकी भेंट हुई थी वह भेंट प्रभास क्षेत्र में हुई  
थी जो अन्तिम भेंट थी । नन्द पहले जन्म में  
द्रोण नामक वसु थे ।

( २ ) मगध का राजा, इस नाम के नौ राजा  
पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरुढ़ हुए थे । इनकी  
व्यक्ति के विषय में अनेक प्रकार की बातें  
मिलती हैं । पुराणों में लिखा है कि वे एक शूद्र

के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । इनके पिता का नाम  
नन्दी था । परन्तु बौद्ध ग्रन्थकार कहते हैं कि  
नन्द वेत्या के गर्भ और नाई के औरस से उत्पन्न  
हुए थे । जो हो ये भाग्यशाली थे इसमें सन्देह  
नहीं । पाटलिपुत्र का राजा अपुत्रक मर गया था ।  
राजमन्त्री यही विचारते थे कि किसका अभियेक  
किया जाय, किन्तु जब वे कुछ भी निश्चय न कर  
सके तब उस समय की प्रथा के अनुसार वे नगर  
के बाहर राजहस्ति, अश्व, छत्र, कुम्भ और चामर  
आदि राजसामग्री लेकर उपस्थित थे । उसी समय  
नन्द वहाँ उपस्थित हुए । राजहस्ति ने इन्हीं पर  
घड़े के जल से अभियेक किया और खूँद से उनके  
अपनी पीठ पर रख लिया, चारों ओर मञ्जुष्वनि  
होने लगी । इनके वंश में क्रमशः सात नन्द राजा  
हुए थे । कल्पक नामक एक महापण्डित नन्द के  
मन्त्री थे । अन्त में नवें नन्द राजगद्दी पर बैठे, जिन्हें  
महानन्द भी कहते हैं । इनके मन्त्री कल्पक के पुत्र  
शकटाल थे । इन्हीं के सम्भाषण्डित विख्यात वारुचि  
थे । प्रसिद्ध राजनीति कुशल चाणक्य ने इसी नन्द  
वंश को राज्यभ्रष्ट करके चन्द्रगुप्त को राजासन दिया  
था । जिस वटना का अवलम्बन करके विशालदत्त ने  
मुद्राराक्षस नामक नाटक बनाया है ।—रानी  
( स्त्री० ) यशोदा, श्रीकृष्ण की पालने वाली माता ।

नन्दकुमार तत्० ( पु० ) ये कश्यप गोत्रज द्रव्य के  
वंशधर थे । बंगाल के महाराज आदि शूर ने  
कन्नोज से पाँच ब्राह्मण विद्वान् बुलाये थे । इन्हें  
वहाँ में से एक थे । नन्दकुमार के पूर्वपुरुष  
मुनिदाबाद जिले के जरूल गाँव में रहते थे ।  
महाराज नन्दकुमार के पिता का नाम पद्मानाम  
था । नन्दकुमार के पूर्वपुरुष पीतमुण्डी नामक  
गाँव में रहते थे, इसी कारण इनका वंश पीतमुण्डी  
ब्राह्मण नाम से विख्यात था । बंगाल के नवाब  
अलीवर्दीखान के समय में नन्दकुमार ने अमीनी के  
पद पर रह कर बहुत धन कमाया था । परन्तु  
वहाँ के दीवान से कुछ खटपट हो जाने के कारण  
इन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा, अलीवर्दी के मरने  
के अनन्तर सिराजुद्दौला बंगाल के नवाब हुए ।  
नन्दकुमार नौकरी के लिये सिराज के वहाँ आने

जाने लगे। सिराज ने नन्दकुमार को दीवानी का काम दिया। अंगरेजों के साथ अनबनाव होने के कारण सिराज के पदच्युत होने के अनन्तर नन्दकुमार लार्ड क्लाइव के मुँगी नियुक्त हुए। क्लाइव के विजयत चले जाने पर, बैरेलट साहब बंगाल के गवर्नर हुए। ये पहिले तो नन्दकुमार को बड़ी प्रीति से देखते थे परन्तु पीछे किसी कारण से इन दोनों में पास्पर विरोध हो गया। बैरेलट के बाद कार्टिगार बंगाल के गवर्नर हुए, ये भी अपना समय पूरा करके चले गये। भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल थारिंग्टन हेस्टिंग्स के जमाने में नन्दकुमार को एक मुकद्दमे में उस समय के जज सर इला-जाह्म ने प्राणान्त दण्ड की आज्ञा दी। नन्दकुमार मरने के समय २९ लाख रुपये और भूमि सम्पत्ति छोड़ गये थे। एक बार इन्होंने एक लख ब्राह्मणों को इच्छाभोजन कराया था।

नन्दन तत्त्वं ( पु० ) [ नन्द + नृ ] पुत्र, घेडा, भानन्द-दायक, सुखदायक, प्रसादक, प्रसन्न करने वाला, सन्तान, विष्णु, नारायण, पर्वत विशेष, इन्द्र का उपवन। ( वि० ) हर्षजनक, आह्लादनक।—ज ( पु० ) हरिचन्दन।

नन्दनन्दन तत्त्वं ( पु० ) श्रीकृष्ण।

नन्दा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ नन्द + मा ] तिथि विशेष, दोनों पक्षों की प्रतिपूर्ति, पछी और एकादशी तिथि, सम्पत्ति। भगवती का दूसरा नाम। बाराह पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा ने देवी से कहा था कि देवि ! आपने देवों के बहुत बड़े कार्य किये हैं, परन्तु आपके एक और भी देवताओं का कार्य करना चाहिये। आपके महिषासुर का विनाश करना होगा। ब्रह्मा के यह कहने के अनन्तर देवताओं ने भगवती की हिमालय में स्थापना की और वे इससे बहुत प्रसन्न हुए, इसी कारण भगवती का नाम नन्दा पड़ा। दूसरी पुस्तकों में लिखा हुआ है कि भगवती देवलोक नन्दनकानन और पवित्र हिमालय में रह कर बहुत आनन्दित हुई थी। इसी कारण उनका नाम नन्दा पड़ा है।

नन्दामज तत्त्वं ( पु० ) [ नन्द + आमज ] श्रीकृष्ण, श्रीबलराम।

नन्दि तत्त्वं ( पु० ) शिव का द्वारपाल, घूत कीड़ा, लुघा का खेल।

नन्दिग्राम तत्त्वं ( पु० ) ग्राम विशेष, जहाँ श्रीरामचन्द्र के वनवास के समय भरतजी तपस्या करते हुए राज्य व्यवस्था करते थे।

नन्दिघोष तत्त्वं ( पु० ) अयुध के रथ का नाम, भानन्द देने वाला नन्दिघों का शब्द, भाटी की स्तुति। मङ्गल घोषणा।

नन्दिनी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ नन्द + इन् + ई ] कन्या, पुत्री, उमा, गङ्गा, वशिष्ठ की धेनु। कामधेनु की कन्या, नन्दिनी, महर्षि वशिष्ठ ने इसी धेनु का पालन किया था। सेवा से प्रसन्न करके इसी नन्दिनी के प्रसाद से भयोष्पापति राजा विष्णु ने रघु नामक पुत्र पाया था। साजी, पत्नी की बहिन।

नन्दी तत्त्वं ( पु० ) [ नन्द + इन् ] शिव का अनुचर, महादेव ने इसके द्वारद्वक का काम दिया था। वृषविशेष, बटबृष, बालङ्गायत मुनि, यह शिव के श्रय थे।

[ भगिनी का पति। नन्दोई, नन्दोसी दे० ( पु० ) नन्द का पति, पति की नन्दोजी दे० ( पु० ) नन्द, मही का पड़ा योड़ा भाड़ा।

[ शिष्ट, बालक। नन्हा दे० ( वि० ) छोटा, नाटा, लघु, छोटा लड़का, नपुंसक तत्त्वं ( पु० ) छोब, हिंनडा, पुंसवहीन, पुंस-पवहीन।—ता ( स्त्री० ) नामदी।—लिङ्ग ( पु० ) तीसरा लिङ्ग।

नसा तत्त्वं ( पु० ) कन्या का पुत्र, दौहित्र।

नफर दे० ( पु० ) नौकर, पाकर, सेवक, भृत्य।

नफरत ( स्त्री० ) घृणा।

नफरी ( स्त्री० ) एक दिन की मजदूरी।

नफा ( पु० ) लाभ।

नफोरी दे० ( स्त्री० ) बाघ विशेष, शरही, सहनाई।

नवेड़ना ( कि० ) सुलझाना, निपटाना।

नवेड़ा ( पु० ) समाप्ति, सुलझाव, निरर्थक। [ नादियाँ।

नवज ( स्त्री० ) नाड़ी, पहुँचे के ऊपर की रक्तवाहिनी,

नवे ( पु० ) सख्या विशेष, १०।

नम तत्त्वं ( पु० ) आकाश, वात, असमान, आवण का महीना।—श्वर ( पु० ) आकाश में खड़े पाते पक्षी।—श्वर ( पु० ) आकाश।

नमग तत्त्वं ( पु० ) पची, परिंद, नमचर, देवता, नचत्र, ग्रह, पखेरू, चिड़िया ।—नाय ( पु० ) गरुड़, चन्द्रमा ।

नमगामी तत्त्वं ( पु० ) नमग, पची, नचत्र ।

नमगेश तत्त्वं ( पु० ) नमगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा ।

नमचर तत्त्वं ( पु० ) पखेरू, पची विद्यासागर, मेघ, वायु, पवन । ( वि० ) आकाश में धूमने वाला, आकाशचारी, खेचर ।

नमचर या नमचर तत्त्वं ( पु० ) आकाश में उड़ने वाले, आकाशचारी, पची, तारा, ग्रहदेवता, विद्याघर, सिद्ध, गन्धर्व ।

नमस्य तत्त्वं ( पु० ) आद्रपद, नारों का महीना, आद्रमास ।

नमस्यान् तत्त्वं ( पु० ) [ नमस् + वत् ] वायु, अनिल, पवन, हवा । [ गमन, उड़ना, उड़यन ।

नमोगति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ नमस् + गति ] आकाश

नमोधूम तत्त्वं ( पु० ) [ नमस् + धूम ] वारिद, मेघ, धन ।

नम ( पु० ) तर, भोग, आर्द्र ।

नमः तत्त्वं ( अ० ) नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन ।  
—ते आपको नमस्कार करता हूँ ।

नमक ( पु० ) नौन, लवण ।—अदा करना ( कि० )  
उपकार के बदले उपकार करना ।—फूटना ( कि० )  
बेहमीनी का परिणाम भोगना ।—हराम ( पु० )  
उपकारक के प्रति अपकार करने वाला ।—हलाल ( पु० )  
उपकार का बदला देने वाला ।

नमकीन दे० ( वि० ) नोन की वस्तु, पकाज जिसमें  
नमक पड़ा हो, लवणाक ।

नमत, नमति तत्त्वं ( कि० ) नमस्कार करता है, प्रणाम  
करता है, अभिवादन करता है, नम्र होता है,  
नयता है, मुकता है ।

नमन तत्त्वं ( पु० ) [ नम + अनट् ] अधोगमन, नम्र-  
होना, प्रणाम करना, विनीत होना, नत होना ।

नमस्कार तत्त्वं ( पु० ) [ नमस् + कार ] प्रणाम,  
सम्मान प्रदर्शन करना ।

नमोज दे० ( पु० ) मुसलमानों की ईश्वरपूजा, मुसलमानों  
की ईश्वर वन्दना की रीति ।

नमामह तत्त्वं ( कि० ) हम कोम प्रणाम करते हैं ।

नमित तत्त्वं ( पु० ) कृत नमस्कार, विनम्र, कृतविनय,  
प्रह्वीभूत ।

नमुचि तत्त्वं ( पु० ) कामदेव, मदन, कन्दर्प, दैत्य,  
विशेष, प्रसिद्ध दानव, महासुर शुम्भ-का तीसरा  
भाई, शुम्भ से छोटा विशुम्भ और विशुम्भ से  
छोटा नमुचि था ।

( २ ) विख्यात दानवराज, इसके साथ इन्द्र की  
मित्रता थी । तथापि इन्द्र ने नमुचि को मार डाला,  
नमुचि के मारने से इन्द्र को महाहत्या का  
दोष लगा था । इस दोष को दूर करने के लिये  
इन्द्र ने अरुणा नामक नदी में स्नान किया था ।  
अरुणा नदी सरस्वती नदी की प्रधान शाखा है ।  
एक समय दानवराज नमुचि इन्द्र के भय से स्वयं  
की कियों में छिपा हुआ था, यह देखकर इन्द्र  
ने इससे मित्रता की, और बोले, मित्र ! मैं सब  
कहता हूँ दिन में या रात में भीगे या शुष्क वस्त्र  
द्वारा मैं तुम्हारा विनाश करने की चेष्टा नहीं  
करूँगा । एक दिन नीहार से दिखाएँ आच्छन्न  
थी । उसी समय जलफेन द्वारा इन्द्र ने नमुचि का  
सिर छेदन किया । उस समय वह बिड़मुण्ड  
बोला अरे पापी ! तुमने मित्रवध किया, यह  
कह कर दानवराज के सिर ने इन्द्र को दौड़ाया,  
डर कर इन्द्र महा की शरण गये, प्रसा के उप-  
देश से इन्द्र अरुणा नदी में स्नान तथा यज्ञ  
करके पापमुक्त हुए । अनन्तर वह दानवराज का  
सिर भी अरुणा तीर्थ में स्नान कर अक्षयधाम को  
गया ।

नम्र तत्त्वं ( वि० ) [ नम्र + र ] कृतप्रणाम, विनयी,  
विनीत, मिलनसार ।—ता ( स्त्री० ) विनय,  
विनीतत्व, मृदुत्व, विनीतभाव ।

नय तत्त्वं ( पु० ) नीति, रीति, भांति, न्याय, धर्म, दूत  
विशेष । ( वि० ) न्याय्य, शीघ्र, नेता । दे०  
( पु० ) नौ की सख्या, निपेध, अस्वीकार ।  
—कारी ( पु० ) नचवैया, नाचने वाला ।

नयन तत्त्वं ( पु० ) खोहन, नेत्र, आँख, चक्षु ।  
—नेत्र ( पु० ) दृष्टिोपर, नेत्रपथ, आँखों  
का सामना ।—विशारद ( पु० ) नीतिकुशल,  
नीतिशास्त्र पण्डित ।

नयना तद्० ( स्त्री० ) आँखों का तारा, पुतली, तारका, कनीनिष्ठा ।

नयनी ( स्त्री० ) आँख की पुतली, इस शब्द का व्यवहार प्रायः उपमान वाचक शब्दों के साथ हुआ करता है । [ आधुनिक, नव, टटका ।

नया दे० ( वि० ) नवीन, नूतन, अभिनव, ताज़ा, नर तत्० ( पुं० ) मानव, मनुष्य, मानुष, पुरुष, भाग्यवत में विष्णु का चौथा अवतार नर का बतलाया गया है । यह धर्म की पत्नी सुक्ति के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं । नर और नारायण ये दो मूर्तियाँ, परन्तु दोनों की आकृति समान थी । महाभारत में लिखा है कि नर नारायण भद्रिकाग्रम में कठोर तपस्या करते थे । नारदजी वहाँ गये वहाँ वड़ा आश्चर्य हुआ कि जिनकी उपासना संसार कर रहा है, देवता आदि भी जिनका सर्वदा ध्यान करते हैं, वे किसकी उपासना करते हैं । नारद ने पूछा, भगवन् ! आप लोग किसकी उपासना कर रहे हैं । भगवन् बोले—जो सूक्ष्म, अविशेष्य, कार्यविहीन, अचल, निर्य, तथा त्रिगुणातीत हैं, जिनसे सब आदि गुण उत्पन्न होते हैं, जो वास्तव में अमर्यक होने पर भी व्यक्तरूप से अवस्थान करके प्रकृति नाम से परिचित हैं, वे परमात्मा ही हम लोगों के भी कारण हैं, हम लोग उन्हीं की उपासना करते हैं । नर नारायण की कठिन तपस्या देख देवता डर गये, इनकी तपस्या में विघ्न करने के अर्थ इन्द्रादि देवों ने अस्त्रायें भेजीं, परन्तु वहाँ अस्त्रायों के किये कुछ न हुआ । उर्वशी की सृष्टि करके नारायण ने अस्त्रा और देवों के मनोरथ पर पानी फेर दिया । यही नर नारायण द्वारा के अन्त में अर्जुन और श्रीकृष्ण के रूप में अवतीर्ण हुए थे । —देव ( पुं० ) राजा, नृपति, ब्राह्मण, विप्र । —नारायण ( पुं० ) दो अप्रियों का नाम, भगवान् का चौथा अवतार, श्रीकृष्ण, अर्जुन । —पति ( पुं० ) राजा, नृपति, नरेन्द्र । —पुर ( पुं० ) मर्यादोक्त, नृलोक्त, मृलोक्त । —मेघ ( पुं० ) गज विशेष, जिन यज्ञ में मनुष्य का वध करके बलि दी जाती है । किसी समय में नभेश शब्द से

ब्राह्मणों का भोजन कराना समझा जाता था, परन्तु अब यह अर्थ गौण हो गया है । —लोक ( पुं० ) नरपुर मर्यादाम, मर्यादोक्त । —वाहन ( पुं० ) कुवेर, यक्षराज, उदयन का पुत्र, गन्धर्व, चक्रवर्ती । —सिंह ( पुं० ) नृसिंह, भगवान् का अवतार ।

नरक तर० ( पुं० ) देवरात्रिप्रभेद, दैत्य विशेष, भूमि का पुत्र, कष्टजनकस्थान, पापभोगस्थान, निर्य । पुराणों के नरकों में नाम इस प्रकार गिनाये गये हैं । तामिस्र, अन्धतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुम्भीपाक, कालसूत्र, असिग्नवन, शूकरमुख, अन्धकूप, कृमिभोजन, सन्देश, तप्तभूमि, वज्रकण्टक, शावमली, वैताणी, पुरोद, प्राणरोच, विशसन, लालाभय, सारमेयादन, अधीचिरयःपान, क्षाकहर्म, रक्षोगण, भोजन, शूलप्रोत, दन्तशूक, अविनिरोधन, पर्यावर्तन, सूचीमुख आदि । —रक्त ( पुं० ) श्रीकृष्ण का नाम । —कुण्ड ( पुं० ) कष्टदायक कुण्ड, पाप का फल भोगने का कुण्ड, महापैतृ पुराण में लिखा है कि नरक कुण्ड ८१ हैं । —गामो ( पुं० ) पापी । —चतुर्दशी ( स्त्री० ) कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ शी ।

नरकट दे० ( पुं० ) नृपविशेष, सरकंडा । नरकासुर तत्० ( पुं० ) एक राक्षस का नाम, यह श्रीकृष्ण का मित्र था । नरकैसरी तत्० ( पुं० ) नरसिंह, भगवान् का चौथा अवतार । ( वि० ) नरश्रेष्ठ, प्रधान मनुष्य । नरकान्तक तत्० ( पुं० ) [ नरक + अन्तक ] विष्णु, श्रीकृष्ण । नरकामय तत्० ( पुं० ) [ नरक + आमय ] प्रेत, पिशाच, नरक का रोग, कुष्ठरोग । नरकी तत्० ( पुं० ) नरकयोग, दुःखी, पापी । नरङ्ग तत्० ( पुं० ) नारङ्गो, नारङ्ग, संतरा, नरङ्गो, कमला शीव । नरदहा दे० ( पुं० ) नाजी, पनाला, कीचड़ की दौरी । नरम दे० ( वि० ) मृदु, कोमल, अकठिन, आर्द्र, शीतल । नरमद् दे० ( वि० ) सुबद्ध, सुख देने वाला, डिरोल, ममक्षुषा । [ मृदु पनाना । नरमाना दे० ( कि० ) नरम करना, कोमल करना, नरसिंहा दे० ( पुं० ) एक प्रकार का वाजा, सुरही ।





नहारी ( सी० ) फलेवा, प्रातःकाल का जल पान ।  
 नहाता ( क्रि० ) स्नान करता । [ का घर ।  
 नहियर दे० ( पु० ) पोहर, मैका, खी का अपने पिता  
 नहीं दे० ( पु० ) नख, नाखून ।

नहीं दे० ( अ० ) निषेध, मना, मत, न, नकारना ।  
 नहुप तत्त्वं ( पु० ) चन्द्रवंशीय आयु नामक राजा के  
 पुत्र । इन्होंने तपस्या और यज्ञ आदि के अनुष्ठान  
 द्वारा इन्द्र का पद पाया था । महर्षि अगस्त्य के  
 शाप से इन्द्रपद से भ्रष्ट होकर पृथ्वी पर दस  
 हजार वर्ष तक साँप होकर रहने पड़ा था ।  
 नहुप के बहुत प्रार्थना करने पर अगस्त्य ने अनुग्रह  
 फरके कहा था कि तुम्हारे धरा में युधिष्ठिर नामक  
 राजा होंगे उन्हीं की प्रसन्नता से तुम्हारी गति  
 होगी । वनवास के समय भीम एक दिन अहेर को  
 गये थे, वहाँ भीम को नहुपरूपी राजगर ने पकड़  
 लिया । भीम के आने में विलम्ब देखकर उनको  
 डूबने के लिये युधिष्ठिर भी निकले । वहाँ की  
 अवस्था देखकर युधिष्ठिर ने सर्प का परिचय  
 पूछा और साथ ही भीम की रक्षा का उपाय भी ।  
 सर्प अपना परिचय देकर उसी समय शपथमुक्त  
 हुआ और दिव्य शरीर धारण करके यथास्थान  
 चला गया ।

नहसत ( पु० ) मगहसी । [ अच्यय ।  
 ना दे० ( अ० ) नहीं, अभाव, निषेध, निषेधार्थक  
 नाइक ( पु० ) मुखिया, अगुआ ।  
 नाइन दे० ( स्त्री० ) नापित की स्त्री, नाई की स्त्री ।  
 नाई दे० ( अ० ) सदृश, समान, तुल्य, प्रकार ।  
 नाई दे० ( पु० ) नापित, नाऊ, सौरकार, स्वनाम स्थापित  
 जाति विशेष ।  
 नाउट दे० ( पु० ) नाभि, डुङ्गी ।  
 नाऊ दे० ( पु० ) नाई, नापित ।  
 नाँदिया दे० ( पु० ) महादेव का वाहन, बैल, धूपध,  
 जो महादेव का वाहन हैं ।  
 नांव, नाऊँ दे० ( पु० ) नाम, संज्ञा, अभिधान, कीर्ति  
 यश, प्रतिष्ठा ।  
 नाँह दे० ( अ० ) निषेधार्थक अच्यय ।  
 नाक तत्त्वं ( पु० ) [ न + अर्क ] स्वर्ग, जहाँ दुःख न हो,  
 स्वर्गलोक । दे० ( स्त्री० ) नासिका, नासा । पति

( पु० ) इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र ।—नटी ( स्त्री० )  
 अप्सरा, देवाङ्गना, स्वर्गचर्या ।—कटाना ( वा० )  
 अपमानित होना, आनादर कराना ।—कटी होना  
 ( वा० ) स्वयं अपनी प्रतिष्ठा गँवाना, अपना मान  
 खोना, अयशस्वी होना, बदनाम होना ।—का  
 चाला ( वा० ) अत्यन्तप्रिय, ईप्सित, सुहृत् ।  
 चढ़ाना ( वा० ) अग्रसन्न होना, विरक्त होना, मुन्द  
 होना ।—रखना ( वा० ) प्रतिष्ठा रखना, मान  
 रक्षित रखना ।—सकोड़ना ( वा० ) नाक चढ़ाना,  
 अग्रसन्न होना, अग्रसन्नता जनाने की एक मुद्राविशेष ।  
 नाकड़ा दे० ( पु० ) रोग विशेष, नाक का एक रोग ।  
 नाका दे० ( पु० ) मार्ग का अन्त, एक मार्ग का अन्त  
 और दूसरे का प्रारम्भ, चौकी, निवास, सुई का  
 छेद, मगर, दरियार, हाँगर ।

नाकिन दे ( स्त्री० ) यह स्त्री जो नाक से थोले ।  
 नाग तत्त्वं ( पु० ) सर्प, साँप, अहि, पद्मग, हाथी,  
 दन्ती, सुम्प, वायु भेद ।—उरग ( पु० ) धातु  
 विशेष, सीसा ।—कन्या ( स्त्री० ) नागों की कन्या,  
 पातालवासी देवताओं की कन्या ।—फेशर ( पु० )  
 पुष्प विशेष, एक प्रकार के फूलों का वृक्ष ।  
 —गर्म ( पु० ) सिन्दूर ।—चास्पेय ( पु० ) नाग-  
 केशर वृक्ष ।—ज ( पु० ) सिन्दूर, रङ्ग ।—दन्त  
 ( पु० ) गजदन्त, हाथी का दाँत, घर की दिवाल्लों  
 में गड़े ढण्ड, खूँटी ।—दन्तक ( पु० ) घर की  
 भीत में लगे ढण्डे, खूँटी, आला, ताप ।—दन्ती  
 ( स्त्री० ) श्रीहस्तिनी, विशाखा, इन्द्रयात्री ।  
 —दमनी ( स्त्री० ) छोटा पौधा विशेष ।—पञ्चमी  
 ( स्त्री० ) श्रावण शुक्ल की पञ्चमी जिस दिन नाग  
 की पूजा होती है ।—पाश ( पु० ) शस्त्र विशेष,  
 सर्पसुँह, एक फंदा जिससे युद्ध के समय शत्रु  
 को बाँध लेते थे । फाँस, फंदा, फाँसी ।—फाँस  
 ( पु० ) पाश, फाँसी, फंदा ।—चेल ( पु० )  
 पान, ताम्रल ।—भापा ( स्त्री० ) माहृतभापा,  
 यह भापा जो पातालवासी योलेते हैं ।—माता  
 ( स्त्री० ) कश्यप अपि की स्त्री, फद्दा ।—रिपु  
 ( पु० ) नहुल, न्योला, मोर, मयूर, गरुड, हाथी  
 का धैरी, सिंह ।—लोक ( पु० ) पाताल, नागों  
 का वासस्थान ।

नागदौन दे० ( पु० ) पौधा विशेष, मरुआ, सुगन्ध-  
युक्त पौधा ।

नागन, नागनी दे० ( स्त्री० ) सर्पिणी, साँपिन, नाग  
की मादा ।

नागर तत्० ( पु० ) नगरवासी, चतुर, दक्ष, निपुण,  
कुशल, ब्राह्मण विशेष, इस जाति के ब्राह्मण गुज-  
रात में विशेषता से पाये जाते हैं ।

नागरतृ तत्० ( पु० ) नारङ्गी, कौला नीबू ।

नागरमुस्ता तत्० ( स्त्री० ) मोथा विशेष, जड़ विशेष ।

नागरमोथा तद् ( पु० ) सुगन्धितृण विशेष का मूल,  
नागरमुला ।

नागरि तद् ( स्त्री० ) चतुर स्त्री, नगर की स्त्री ।  
नागरिन तद् ( स्त्री० )

नागरी तत्० ( स्त्री० ) लिपि विशेष, एक प्रकार के  
अक्षर, संस्कृत, अक्षर, शिचित्तों की लिपि, सम्मों  
की लिपि । [ है, लाङ्गल ।

नागल तद् ( पु० ) हल, जिससे खेत जोता जाता  
नागा दे० ( पु० ) नम, दसनामी गुसाइयों की एक  
शाखा, बैरागियों की एक शाखा ।

नागाहा तद् ( स्त्री० ) नागदौन, मरुआ ।

नागारि तद् ( पु० ) [ नाग + अरि ] गरुड़, नागशत्रु,  
वैनतेन, मयूर, मोर, न्योला ।

नागार्जुन तद् ( पु० ) सहस्रबाहु, कार्तवीर्य, इसी  
महाप्रतापी राजा को मरुशराम ने मारा था ।

नागिन । तद् ( स्त्री० ) नाग की स्त्री, सर्पिणी  
नागिनी । साँपिन ।

नागोजीमठ तद् ( पु० ) एक संस्कृत वैयाकरण का  
नाम, ये काशीनिवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे । इनके  
पता का नाम शिवभट्ट और माता का नाम सती  
था । ये शृङ्गेरपुर ( सिंगरौर ) के राजा रामसिंह  
के आश्रित थे । इन्होंने बहुत अन्य रचे हैं ।  
परिभाषेन्दुशेखर, लघुशब्देन्दुशेखर, बृहन्मञ्जूषा,  
लघुमञ्जूषा आदि ध्याकरण के अन्य प्रायश्चित्तेन्दु-  
शेखर, तीर्थेन्दुशेखर, आदि शेषरामन्त धर्मशास्त्र के  
चारह अन्य तथा बहुत से ग्रन्थों की टीका इनकी  
बनाई हैं । मरते हैं सोलह वर्ष तक ये कुछ  
नहीं पढ़ते थे, पीछे किसी के उपदेश से इन्होंने  
पागोघरी के मन्त्र का उप किया, जिससे इनकी

असीम शक्तिसमता हुई । विद्वान् इनका समय  
१७ वीं सदी स्थिर करते हैं ।

नागोद दे० ( पु० ) छाती पर रखने का कवच, उर-  
छाया, छाती का किलम ।

नागौर दे० ( पु० ) मारवाड़ के एक नगर का नाम,  
यहाँ के नागौरी चैल प्रसिद्ध हैं । [ फलोंग जाना ।

नाघना दे० ( स्त्री० ) लौंघना, ढाकना, डाक जाना,

नाच दे० ( पु० ) नृत्य, नाट्य, नाचना ।—नचाना  
( वा० ) सताना, पोंड़ित करना, विक करना, तंग  
करना, विवश करना ।

नाचना दे० ( स्त्री० ) नृत्य करना नाच करना, नचाना ।

नाचहि दे० ( स्त्री० ) नाचता है, नृत्य करता है,  
कूदता है ।

नाचिकेता तद् ( पु० ) प्रसिद्ध तपस्वी उद्दालक के  
पुत्र, एक समय महर्षि उद्दालक पूजन सामग्री  
नदी के तीर पर छोड़कर चले आये । घर आकर  
उन्होंने अपने पुत्र नाचिकेता को उन सामग्रियों  
को लेने के लिये भेजा, परन्तु उन्हें वे वहाँ न  
मिलीं, अतएव नाचिकेता रीते हाथ चले आये,  
उनको देख पिता अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने  
कहा तुम यमराज का दर्शन करो । पिता के ऐसा  
कहते ही नाचिकेता गिर कर मर गये । उद्दालक  
की दशा अद्भुत हो गई, वह भी मूर्च्छित हो गये ।  
शव वहीं पड़ा रहा, दूसरे दिन देखा गया उस  
शव में कुछ चेष्टा होने लगी । उद्दालक ने अपने  
पुत्र को यह कह कर प्रणाम किया कि तुमने  
अपने प्रभाव से देवलोक का दर्शन किया है ।  
तुम्हारा शरीर मनुष्य का शरीर नहीं है । पुनः  
नाचिकेता ने अपनी यात्रा का हाल बर्णन किया ।  
कठोपनिषद् में नाचिकेता का घृतान्त दूसरे प्रकार  
से कहा गया है । वहाँ उनको राजपुत्र लिखा है ।

नाज दे० ( पु० ) अनाज, अन्न, धान्य, नखरा,  
घमण्ड, मान ।

नाज ( पु० ) नखरा, हावभाव ।

नाजायज ( पु० ) अनुचित, अनियमित ।

नाजिम ( पु० ) प्रयत्नकर्ता, प्रधान, प्रबन्धकर्ता ।

नाट दे० ( पु० ) वाता, वासस्थान, रहने की भूमि,  
कथादेश विशेष, नृत्य, नाच ।

नाटक तत् ( पु० ) गद्यपद्यमय काव्य विशेष, रङ्ग-  
शाला में खेलने के उपयुक्त काव्य, दृश्यकाव्य का  
एक भेद । ( गु० ) नर्तक, नचवैया, नाचने वाला ।

—शाला ( स्त्री० ) नाटक गृह, घर जहाँ नाटक  
खेला जाता है । [ मसझरा ।

नाटकी ( गु० ) नाटक वाला, स्वांग करने वाला,  
नाटकीय ( गु० ) नाटक सम्बन्धी, नाटक की कथा ।  
नाटन दे० ( पु० ) नर्तन, नाच, नाच करना  
नाटा दे० ( वि० ) हस्व, खर्व, हस्वाकृति, डिंगना,  
बौना, छोटे कद का ।

नाटिका तत् ( स्त्री० ) नाड़ी, दृश्यकाव्य विशेष,  
स्वांग, उपरूपक का एक भेद ।

नाटो दे० ( स्त्री० ) छोटी, डिंगनी, छोटे कद की,  
हस्वाकृति की स्त्री ।

नाट्य तत् ( पु० ) नदी का पुत्र, बेरयापुत्र ।

नाट्य तत् ( पु० ) नृत्य, गीत और वाद्य, नट  
समूह, नाट्य आरम्भ करने के नचत्र, यथा—  
अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती,  
ज्येष्ठा, शतभिषा, और रेवती ।—शाला ( स्त्री० )  
नाट्य मन्दिर, नाच घर, अटारी के द्वार के समीप  
का घर । [ विषयक वाक्य ।

नाट्योक्ति तत् ( स्त्री० ) [ नाट्य + उक्ति ] नाटक  
नाट दे० ( पु० ) अभाव, नास्ति, शून्य, रहित, वर्जित ।  
नाठा ( पु० ) अकैला, अनाथ, अमहाथ ।

नाठी दे० ( क्रि० ) नष्ट की, नष्ट हुई, भागी, टल गई,  
हट गई, मुकर गई, पलट गई, गई ।

नाइ दे० ( स्त्री० ) प्रिया, घाँटी, नरेंदी, गला, गर्दन ।  
नाड़ा ( पु० ) इज्जारबन्द । [ घड़ी ।

नाडिका तत् ( स्त्री० ) एक घड़ी, साठ पल, घटिका,  
नाडिमराडल तत् ( पु० ) स्वर्गाथ रेखा विशेष,  
निरुद्धेश ।

नाडी तत् ( स्त्री० ) धमनी, शिरा, उदरस्थशिरा, हाथ  
की मुख्य नस, नली ।—तिक्त ( पु० ) औषध  
विशेष, चिरायता ।—धर्म ( पु० ) सुनार, स्वर्ण-  
कार ।—मराडल ( पु० ) नाडियों का समूह,  
नाडी समुदाय ।—ज्ञान ( पु० ) रोग परीक्षा,  
निदान ज्ञान ।—घण्टा ( पु० ) नमों का घाव,  
नासूर ।

नात दे० ( पु० ) सम्बन्धी, बिरादरी, नातेदार, हित् ।  
नातर या नातरु तत् ( थ० ) नहीं गो, नान्यथा,  
नान्यतर ।

नाता दे० ( पु० ) सम्बन्ध, नात ।

नाताकृत ( पु० ) बलहीन, दुर्बल ।

नातिन दे० ( स्त्री० ) पौत्री, पुत्र की बेटी ।

नाती दे० ( पु० ) पौत्र, पुत्र का पुत्र, पुत्र का बेटा,  
पोता । यथा:—

“ उत्तम कुल पुलस्त्य के नाती ।

शिव विरंचि एहेहु बहुभाँती ॥ ” —रामायण ।

नाते ( क्रि० वि० ) मिस्र में, सम्बन्ध से, लिए,  
निमित्त ।—द्वार ( पु० ) सम्बन्धी ।

नाथ तत् ( पु० ) स्वामी, प्रभु, नियन्ता, कर्ता, प्रति-  
पालक, नाक का रस्ती, जो दुष्ट बेल आदि को  
पहनाने हैं । एक सम्प्रदाय विशेष, गोरक्षनाथ  
का चलाया कनफटा सम्प्रदाय का दूसरा नाम  
नाथ सम्प्रदाय है । इनके अनुयायियों के नाम के  
अन्त में नाथ लगा दिया जाता है । यथा—गोरक्ष-  
नाथ, गम्भीरनाथ, मुद्गन्दरनाथ आदि ।

नाथवान् तत् ( पु० ) पराधीन, प्रभु विशिष्ट, मालिक  
के नाथ, सत्यामिक ।

नाथना दे० ( क्रि० ) यशीभूत करना, नाक छेदकर  
नथ पहनाना, नथ पहनाने के लिए नाक छेदना ।

नाई दे० ( स्त्री० ) नदोला, मिट्टी का घना पड़ा थोड़ा  
घरतन जिसमें गाथ बेल मानी खाते हैं ।

नाइ तत् ( पु० ) [ नद् + घञ् ] ध्वनि, शब्द, गरजन,  
अर्द्धचन्द्राकार बर्ण, जिसका उच्चारण अनुस्वार  
के समान होता है, ब्रह्मस्वरूप विशेष ।

नाइन तत् ( पु० ) [ नद् + शिच् + अन्त ] शब्द  
करना, गरजना, ध्वनि करना, नाइ करना ।

नाइना दे० ( क्रि० ) आरम्भ करना ।

नाइविन्दु तत् ( पु० ) बिन्दु सहित, अर्द्धचन्द्र,  
योगियों के ध्यान करने का तत्त्व । [ लने का मार्ग ।

नादाहा दे० ( पु० ) पनाला, नाली, खाई, जल निरु-

नादिन तत् ( वि० ) कथित, ध्वनित, मंजान शब्द ।

नाथना दे० ( क्रि० ) युक्त करना, जोतना, बेल  
को हल या गाड़ी बँचने के लिये जुग में  
लगाना ।

नाथा दे० ( पु० ) पानी निकालने का मार्ग, पाट या चमड़े की यनी रस्ती जिससे बेल जुए में जोते जाते हैं।

नानक दे० ( पु० ) सिक्खों के गुरु। १४६९ ई० में ईरावती नदी के तीरस्थ पञ्जाब के तलबन्दी नामक गाँव में नानक का जन्म हुआ था। नानक के पिता का नाम कालू था। सात वर्ष की अवस्था में कालू ने अपने पुत्र को विद्यालय में पढ़ने के लिये भेजा। नौ वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र को यज्ञोपवीत देने के लिए कालू प्रयत्न करने लगे। यह देख नानक ने अपनी असम्मति प्रकाशित करके कहा इस लौकिक यज्ञोपवीत से क्या लाभ, परमात्मा का नाम उपवीत है। कालू सामान्य स्थिति के गृहस्थ थे। उन्होंने एक दिन कुछ पैसे नानक को बाज़ार से सामान ले आने के लिए दिये। परन्तु नानक शरीरों को पैसे बाँट कर घर लौट आये। उनके पिता-ताड़ना देने लगे। उस समय नानक ने कहा कि मनुष्यों के साथ बेचने खरीदने में जो लाभ होता है, उससे अधिक लाभ ईश्वर के साथ बेचने खरीदने में होता है। उस समय नानक की अवस्था १५ वर्ष की थी। एक दिन नानक सोते थे, उनके पैर किसी देवमन्दिर की ओर थे। इससे लोगों को आश्चर्य हुआ किसी के पूछने पर नानक ने कहा जिधर मैं पैर फैलाऊँ उधर ही तो ईश्वर के मन्दिर है। इस प्रकार भावी सिख गुरु का हृदय धर्मभाव से पूर्ण था। नानक एकेश्वरवादी थे। इन्होंने बड़े परिश्रम से अपने पन्थ को प्रचलित किया था। इनके बनावे ग्रन्थ का नाम “ग्रन्थसाहय” है। इस पन्थ के साधु उदासी पड़े जाते हैं। नानक के हिन्दू और मुसलमान दोनों शिष्य थे। लोग कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान इन दोनों जातियों में प्रेम स्थापित करना ही नानक का उद्देश्य था। ४० वर्ष की अवस्था में ये शिष्यों के गुरु हुए। कहते हैं उनके मृत शरीर को मुसलमान चैले कबर देना चाहते थे और हिन्दू जलाना। इसलिये दोनों में खूब झगड़ा हुआ, अन्त में देखा गया कि नानक

का शरीर वहाँ नहीं था, इस कारण कफन के दो टुकड़े करके चैलों ने अपना अपना मनोरथ पूर्ण किया।—पन्थ दे० ( पु० ) सिख सम्प्रदाय, गुरु नानक प्रचारित मत, एकेश्वरवाद।—पन्थी दे० ( पु० ) गुरु नानक के मत के अनुयायी, सिख।

—शाही दे० ( पु० ) नानकपन्थी, अर्थात् सिख। नानकार ( पु० ) कर रहित भूमि, माफी ज़मीन। नानखताई ( खी० ) टिकिया की तरह एक प्रकार की सोंधी और ब्रह्मा मिठाई।

नानवाई ( पु० ) रोटी बना कर बेचने वाला। [नाना। नानसरा ( पु० ) ननिया ससुर, पति या खी का नाना तत्० ( थ० ) अनेकार्थक, उभयार्थ, विविध।

दे० ( पु० ) मातामह, माता के पिता।—कार ( पु० ) [नाना + आकार] अनेक रूप के, विविध भाँति के, अनेक आकार के, बहुत चाल के।

—कारण ( पु० ) भाँति भाँति के कारण, अनेक प्रकार के हेतु।—जातीय ( पु० ) अनेक प्रकार, अनेक तरह।—त्मा ( पु० ) [नाना + आत्मा]

आत्मभेद, पृथक् पृथक् आत्मा।—ध्वनि ( पु० ) अनेक प्रकार के शब्द, विविध ध्वनि।—प्रकार ( पु० ) बहुत भाँति, अनेक रीति।—भाँति ( वि० ) भाँति भाँति, तरह तरह, रंग रंग।—मत ( पु० ) भिन्न भिन्न मत, बहुविध सिद्धान्त।—रूप ( पु० ) अनेक प्रकार।—र्थ ( पु० ) [नाना + अर्थ]

अनेक अर्थ, बहुत अर्थ।—विधि ( गु० ) अनेक प्रकार, अनेक उपाय।—शास्त्रज्ञ ( पु० ) विविध विद्या विचारद, पदशास्त्री।

नानी दे० ( स्त्री० ) मातामही, माता की माता। नानुकर ( पु० ) सन्देह, अस्वीकार, नाहीं। नान्द दे० ( पु० ) मट्टी का बड़ा पात्र।

नान्दिया दे० ( पु० ) शिववाहन, वृषभ। नान्दीमुख तत्० ( पु० ) श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म विवाह आदि उत्सव कृत्यों में किया जाता है

अभ्युदयिक श्राद्ध। यथा—  
“तव नान्दीमुख श्राद्ध करि जातकर्म सब कीन।”

—रामायण। नान्ह ( गु० ) नन्हा, छोटा। नान्हरिया ( पु० ) छोटा बच्चा, बालक।

नाम्ना ( पु० ) नन्दा, घोड़ा ।

नाप दे० ( पु० ) माप, परिमाण, तौल, वजन, जोख ।

नापना दे० ( क्रि० ) मापना, परिमाण करना, तौलना जोखना ।

नापित तत्० ( पु० ) नाई, चौरकार, बाल बनाने वाला, नाऊ ।

नाभ तत्० ( पु० ) } पेट का मध्य स्थान, नाभि,  
नाभि तत्० ( स्त्री० ) } नाभ एक राजा का नाम

चक्र का मध्य, तोंदी, नाभ ।—जन्मा ( पु० ) मक्षा, प्रजापति, विधाता ।—वर्ष ( पु० ) भारतवर्ष, हिन्दुस्तान ।

नाम तत्० ( पु० ) नाव, संज्ञा, अभिधान, यश, ख्याति, प्रसिद्ध ।—फ ( पु० ) नामवाला । इसका प्रयोग नाम वाले शब्दों के अन्त में होता है ।—करण या कर्म ( पु० ) संस्कारविशेष, नाम रखना, जन्म के दसवें दिन यह संस्कार किया जाता है ।—करना ( वा० ) प्रसिद्ध करना, यश फैलाना, विख्यात होना ।—कीर्तन ( पु० ) नै प्रशार की भक्ति का एक भेद ।—हुवाना ( वा० ) कञ्जित होना, बढ़ना होना, दुर्नाम होना ।—देना ( वा० ) नाम रखना ।—देव ( पु० ) एक भगवत् भक्त का नाम जिसकी विलुप्त कथा भक्तमाल में है ।—धरना ( वा० ) नाम रखना, नाम ठहराना, दोषी ठहराना, अपराधी बतलाना ।—धराई ( स्त्री० ) बदनामी, बेहज्जी, अप्रतिष्ठा ।—धैय ( पु० ) संज्ञा, नाम ।—निकालना ( वा० ) नामी होना, यशस्वी होना, प्रसिद्ध होना, नेकनाम होना ।—निशान ( पु० ) नाम पता, नाम धाम, पता छिड़ाना ।—लेकर भाग खाना ( वा० ) दूसरे की प्रतिष्ठा से आय प्रतिष्ठित बनाना, किसी प्रतिष्ठित से अपना सम्बन्ध बताकर घन कमाना ।—जेना ( वा० ) स्तुति करना, मन्त्र का जप करना, स्मरण करना, स्मरण करते रहना ।—शेष ( पु० ) श्रुत, नष्ट, जिमका केवल नाम रह गया हो ।—होना ( वा० ) यश होना, कीर्ति बढ़ना, प्रतिष्ठा बढ़ाना, प्रसिद्ध होना ।—शेष तत्० ( वा० ) नष्ट, श्रायु प्राप्त, श्रुत, मरा हुआ ।

नाम तत्० ( पु० ) नाव, संज्ञा, अभिधान, यश, ख्याति, प्रसिद्ध ।—फ ( पु० ) नामवाला । इसका प्रयोग नाम वाले शब्दों के अन्त में होता है ।—करण या कर्म ( पु० ) संस्कारविशेष, नाम रखना, जन्म के दसवें दिन यह संस्कार किया जाता है ।—करना ( वा० ) प्रसिद्ध करना, यश फैलाना, विख्यात होना ।—कीर्तन ( पु० ) नै प्रशार की भक्ति का एक भेद ।—हुवाना ( वा० ) कञ्जित होना, बढ़ना होना, दुर्नाम होना ।—देना ( वा० ) नाम रखना ।—देव ( पु० ) एक भगवत् भक्त का नाम जिसकी विलुप्त कथा भक्तमाल में है ।—धरना ( वा० ) नाम रखना, नाम ठहराना, दोषी ठहराना, अपराधी बतलाना ।—धराई ( स्त्री० ) बदनामी, बेहज्जी, अप्रतिष्ठा ।—धैय ( पु० ) संज्ञा, नाम ।—निकालना ( वा० ) नामी होना, यशस्वी होना, प्रसिद्ध होना, नेकनाम होना ।—निशान ( पु० ) नाम पता, नाम धाम, पता छिड़ाना ।—लेकर भाग खाना ( वा० ) दूसरे की प्रतिष्ठा से आय प्रतिष्ठित बनाना, किसी प्रतिष्ठित से अपना सम्बन्ध बताकर घन कमाना ।—जेना ( वा० ) स्तुति करना, मन्त्र का जप करना, स्मरण करना, स्मरण करते रहना ।—शेष ( पु० ) श्रुत, नष्ट, जिमका केवल नाम रह गया हो ।—होना ( वा० ) यश होना, कीर्ति बढ़ना, प्रतिष्ठा बढ़ाना, प्रसिद्ध होना ।—शेष तत्० ( वा० ) नष्ट, श्रायु प्राप्त, श्रुत, मरा हुआ ।

नामा ( पु० ) नामक, नामधारी ।

नामाङ्कित तत्० ( पु० ) [ नाम + अङ्कित ] नाम-चिह्नित, नाम मुद्रित, खुदा हुआ नाम । ( वि० ) प्रसिद्ध, विख्यात, प्रतिष्ठित, यशस्वी ।

नामाचली दे० ( स्त्री० ) [ नाम + अचली ] विष्णुसंह-नाम, देवनामाङ्कित उत्तरीय रामनामी, नामधेयी, नामों की सूची, नामों की तालिका ।

नामित ( पु० ) बचाया हुआ, नम्र बना हुआ ।

नामी दे० ( वि० ) विख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, कीर्तिमान् ।—होना ( वा० ) प्रसिद्धि पाना, विख्यात होना ।

नामुमकिन ( पु० ) असम्भव, जो हो न सके ।

नायक तत्० ( पु० ) [ नी + यक् ] प्रदराक, नेता, श्रेष्ठ, अग्रगामी, प्रधान, द्वार के मध्य का मण्डि, माला का सुमेरु, सेनापति, अध्यक्ष, प्रेमाभिलाषी पुरुष, शृङ्गारसाधक पुरुष । यथा दोहा—

“तबुन सुघर सुन्दर सकल, काम कलानि प्रवीन,  
नायक से मतिराम कदि, कवित गीत रसलीन”

—रसराज ।

नायन दे० ( स्त्री० ) नाइन, नायित की स्त्री ।

नायत्र दे० ( पु० ) महायक, प्रतिनिधि ।

नायिका तत्० ( स्त्री० ) प्रेमासक्त युवती, सामान्य वनिता, सखी, भगवती की एक शक्ति विशेष, शृङ्गार रस का आलम्बन । यथा दोहा—

“वराजत जाहि विलोकि कै, चित बिच रममाव,  
साहि बखानत नायिका, जो प्रवीन कविराय”

—रसराज ।

स्वकीया, परकीया और सामान्याभेद से नायिका तीन प्रकार की हैं । यथा:—

“स्वकीय व्याही नायिका, परकीया परपाम,  
सो सामान्या नायिका, जाको पन से काम” ।

पुनः आठ अवस्था के भेद से इनमें से प्रत्येक के आठ भेद होते हैं ।

नायिकी तत्० ( स्त्री० ) नायक की स्त्री, सीप, धिया, कुदनी, दूती, घेरया, नर्तकी, नाचने वाली ।

नार तत्० ( पु० ) नर समूह, यहुन मनुष्य । ( दे० स्त्री० ) स्त्री, सुगाई ।

नारक तत्० ( वि० ) नारक सम्बन्धी, नारक में रहने वाले जीव ।

नारकी तत्० (वि०) नरकस्थ, नरकवासी, नरकभोगी, पापी, दुराचारी, दुराचार ।

नारङ्गक तत्० ( पु० ) फल वृक्ष विशेष, कमला नींबू, शंतरा एक प्रकार का खटमिट्टा फल ।

नारङ्गी (स्त्री०) फल विशेष ।

नारद तत्० ( पु० ) देवर्षि, मुनि विशेष, नारद के विषय में श्रीमद्भागवत में इस प्रकार लिखा है । नारद वेदज्ञ ब्राह्मणों की एक दासी के पुत्र थे । बाल्यकाल में ये उन ब्राह्मणों की सेवा करते थे । ब्राह्मण भी इनसे बहुत प्रेम करते थे । एक दिन नारद ने ब्राह्मणों का उच्छिष्टान्न खा लिया, इससे उनका चित्त शुद्ध हो गया और ये हरिगुण गान करने लगे, इस समय उनकी अवस्था पाँच वर्ष की थी । इसके कुछ ही दिनों के बाद साँप के काटने से इनकी माता का वियोग हुआ । अब नारद स्वाधीन हो गये । आश्रम छोड़ कर उत्तर दिशा की ओर ये उपरिगत हुए । घूमते घूमते यह एक जङ्गल में पहुँचे । वे भूख प्यास से सताये हुए थे ही सो एक तालाब में स्नान जलपान करके ये वही के तीर पर एक बड़े के पेड़ की छाया में बैठ गये और भगवान् का स्मरण करने लगे । भगवान् ने हृदय में उनको दर्शन दिये, परन्तु नारद भगवान् का दर्शन बहुत समय तक नहीं कर सके । इससे नारद को बड़ा कष्ट हुआ । भगवान् ने नारद को आकाशवाणी द्वारा समझाया । नारद, इस जन्म में तुम हमारा सतत दर्शन नहीं कर सकते, हमने तुम्हारी अनुरागवृद्धि के लिये ही तुमको दर्शन दिया है । तुम साधु सेवा करो, वही से तुम हमारे पास आ सकते हो । इसके अनन्तर नारद इस शरीर को छोड़ परमधाम पहुँचे । पुनः पुनसृष्टि के समय नारद, मरीचि, भृगु आदि ब्रह्मा के मानस पुत्र हुए । ब्रह्मवैवर्तपुराण ने नारद को ब्रह्मा का पुत्र बतलाया है ।—( पु० ) एक प्रकार का गान, विध्यामित्र के एक पुत्र का नाम ।—( पु० ) नारद सम्बन्धी ( पु० ) अठारह पुराणों में से एक । नारदियार दे० ( पु० ) फिली, खेड़ी । नारा दे० ( पु० ) नाला, लाल घागा, मौली, कमरबन्द, पाजामा को कमर में अटका कर रखने वाला, घटा

और गुँगा डोरा, बड़े जोर से राने का शब्द, वर्षा का जल बहने का मार्ग ।

नाराच तत्० ( पु० ) लौहमय बाण, विगिल, तीर ।

नाराज दे० ( पु० ) असन्तुष्ट, धमसन्न ।

नारायण तत्० ( पु० ) विष्णु, ( नग देखो ) संस्कृत का एक ज्योतिषी, इन्होंने मुहूर्त्तमासण्ड नामक ज्योतिष का एक ग्रन्थ संस्कृत में लिखा है और मासण्ड यहूआ नामक उसकी टीका भी आप ही ने लिखी है । पण्डित सुधाकर द्विवेदी के मत से इन ग्रन्थों का निर्माणकाल सन् १२७१-१२७२ ई० है । नारायण ने भी अपने ग्रन्थ में यही अपना समय लिखा है । मुहूर्त्त मासण्ड के अन्त में इन्होंने अपना कुछ परिचय दिया है, जो यह है । इनके पिता का नाम अनन्त था । देवगिरि से कुछ दूर पर टापर नामक गाँव में ये रहते थे । इनका समय १९ वीं शताब्दी मानना ही उचित है ।—तैल ( पु० ) औषध विशेष, पका हुआ तैल विशेष ।—बलि ( स्त्री० ) मृत पतितों के ब्रह्मा के लिये प्रायश्चित्त विशेष ।

नारायणी तत्० ( स्त्री० ) लक्ष्मी, नारायण की स्त्री, दुर्गा, गङ्गा, सुदगल मुनि की पत्नी, शतावरी, जूतावर, नारायण सम्बन्धनी ज्योति विरोध ।

नारि दे० ( स्त्री० ) नारी, अवला, नाड़ी, यह यंत्र जिसमें कपड़े घुनने के समय सूत रखा जाता है । बाँस का टुकड़ा, जिसमें मट्टा आदि भर का बड़ोँ या पैलों को दिया जाता है ।

नारिकेल, नारिकेल तत्० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध फल विशेष, नारियल, धौफल ।

नारियल दे० ( पु० ) नारिकेल फल ।

नारी तत्० ( स्त्री० ) नाड़ी, पुरुष धर्मयुक्ता स्त्री, स्त्री, योनि, अचला, महिला, बालना, कुटुम्बिनी ।—दूषण ( पु० ) धियों के मद्यरान कुसङ्ग आदि छः दोष, यथा पान ( नशा आदि का ), दुर्जन संसर्ग, धूमना, ( ), पर-धौर वास के दूषण सेवा, होना,

नार दे० ( पु० ) ( देखो नहारुआ ) ।

नाल तत्० ( पु० ) कमल आदि की उँटी, हरिताल, नार । ( दे० ) फोका, गल, नली, नल के आकार की बनी हुई वस्तु, घोड़ा बैल आदि के खुर में जड़ी जाने वाली वस्तु, जो लोहे की बनी हुई होती है । [ जिमे मनुष्य होते हैं ।

नालकी दे० ( स्त्री० ) शिविका, पाखंडी, वान विशेष, नाला दे० ( पु० ) जल निकलने का मार्ग, मेरी, पनाला ।

नालायक दे० ( वि० ) अयोग्य, दुष्ट, पाखी, सोढ़ ।

नालिक तत्० ( पु० ) धारनेवाला, चंद्रक, सुमुण्डी ।

नालिंसिंदुक दे० ( पु० ) संभाल ।

नाली दे० ( स्त्री० ) छोटा नाला, मुहारी, मुहरी ।

नाव तद्० ( स्त्री० ) नौ, नौका, तरनी, डोंगी, घोट ।

नाचना दे० ( क्रि० ) नमन, नचना, झुकना, प्रणत होना ।

नाचरि दे० ( स्त्री० ) निचारा, जलक्रीड़ा, नाव पर झलक्रीड़ा, नाव झुलाना, नाच फौना ।

नायिक तत्० ( पु० ) कर्णधार, माँझी, नाव खेने वाला, कैपट, कैवर्त्त ।

नाश तत्० ( पु० ) [ नश् + घञ् ] चय, ध्वंस, लय, पति, हानि, अपचय, अदर्शन ।—वान् ( पु० ) विनश्वर, नश्वर, विनाशी ।

नाशक तत्० ( पु० ) नाशकर्ता, ध्वंसक, चयकारी, उतिकर, हानिकर्ता, उन्नाह, चयकारक ।

नाशन तत्० ( पु० ) [ नश् + शिच् + अन्ट् ] रक्ष, हनन, मारण ।

नाशपाति या नाशपाती दे० ( पु० ) कल विशेष, धर्मात् में क्षय होने वाला कल ।

नाशित तत्० ( पु० ) [ नश् + शिच् + क् ] ध्वंसित, हत, वच्छेदित ।

नाशितव्य तत्० ( पु० ) [ नश् + शिच् + तव्य ] नाश करने योग्य, नष्ट करने के श्ययुक्त ।

नाशी तत्० ( वि० ) नाशक, नाशकर्ता, उन्नाह, बड़ाक ।

नास दे० ( स्त्री० ) नस्य, सुषनी, हुलास, तमाह का पूर्ण ।—दाना ( स्त्री० ) नास रखने की दिविया ।

नासना दे० ( क्रि० ) भागना, पलायन, पीठ देना ।

नासत्य तत्० ( पु० ) राश्विनीकुमार, सेवक ।

नासमक दे० ( पु० ) बुद्धिहीन, अशोध, अज्ञान, मूढ़, मूर्ख ।—नी ( स्त्री० ) मूर्खता, अज्ञानता ।

नासा तत्० ( स्त्री० ) [ नास् + घा ] नासिका, नाक, द्वार पर की लकड़ी, रोग विशेष, नाकड़ा, नासिका-द्वार पर निकला हुआ मस ।—पाक ( पु० ) नाक का एक रोग विशेष ।—पुट ( पु० ) नाक, नाक का वह चमड़ा जो खेँहों के किनारे पक्ष का काम देता है ।—मेदून ( पु० ) नरुपिंकनी घाम ।—धामावर्त्त ( पु० ) वाम नासिका में वह नले के गहने, नथ, घेसर आदि । मल ( पु० ) नाक की मल ।—योनि ( पु० ) नरुपिंक विशेष ।

नासिक ( पु० ) बंदई के पास का तीर्थ विशेष, जहाँ मोदावरी के तट पर पशुवटी है ।

नासिका तत्० ( पु० ) घ्राणेंद्रिय, नाक, मामा ।—मल ( पु० ) नाक का मल ।

नासीर तत्० ( पु० ) अग्रसर, अग्रगामी, येनापति के धामे चलने वाली सेना । ( स्त्री० ) नस ।

नासूर दे० ( पु० ) नसूर, नस का घाय, पुराना घाव ।

नास्तित तत्० ( क्रि० ) नहीं है, अविद्यमानता, अभावा ।

नास्तिक तत्० ( पु० ) [ नास्ति + इङ् ] अनीयवादी, ईश्वर नास्तिकवादी, ईश्वर की सत्ता न मानने वाला, जो वेद का प्रमाण नहीं मानते हैं, वेद निन्दक, पातण्डी, आर्वाक, खीकापतिक ।—ता ( स्त्री० ) नास्तिक्य, कर्मकाज आदि कुछ नहीं, हम प्रकार का ज्ञान, सिध्दा रटि ।—घाट ( पु० ) परलोक न मानने वाला सिद्धान्त ।

नास्तित्व तत्० ( पु० ) अभावा, असम्भवा, शून्यता ।

नास्त्य तत्० ( वि० ) नाक का । ( पु० ) नासिका में क्षय होने वाला, बैल की नाक में लगाई जाने वाली रस्ती ।

नाह दे० ( पु० ) स्वामी, माजिक, नाथ, पति ।

नाहक दे० ( पु० ) व्यर्थ, विना प्रयोजन, अर्थघात, अनुचित ।

नाहुर दे० ( पु० ) व्याघ्र, बाघ, शेर, शार्ङ्ग ।

नाहुर दे० ( पु० ) शेर, बाघ, वाम का दुकड़ा, मीट जोखने का रस्सा ।

नाहल दे० ( पु० ) श्लेष्मटी की एक जाति विशेष ।

नाहि दे० ( घ० ) नहीं, निषेध, अस्विकारार्थक धर्म्य ।

नाहीं दे० ( घ० ) नहीं, न, अस्त, निषेध बोधक धर्म्य ।



नाहुवि तत् ( पु० ) [ नहुप + ह्व ] राजा नहुप का पुत्र, राजा यथाति ।

निः तत् ( अ० ) उपसर्ग विशेष, निषेधार्थक, निश्चयार्थक, निवेश, भूतार्थक, अतिशयार्थक, संशय, आक्षेप, कौशल, उपरम, सामीप्य, आश्रय, दान मोक्ष, अन्तर्भाव, वन्दन, विन्यास । यह उपसर्ग जिन शब्दों के पहले आता है उनके अर्थ को विपरीत कर देता है । यथा—निहृयोमी, वयोमशून्य ।—कण्टक ( वि० ) सुखी, आनन्दी, वाधा रहित, निःशत्रु ।—पाप ( वि० ) अशोध, पाप रहित, निरपराध ।—शङ्क ( वि० ) भिडार, भ्रम, भयशून्य, साहसी ।—प्रभ ( वि० ) प्रभाहीन, तेजहीन, दीप्ति रहित ।—शब्द ( वि० ) नीच, शब्दहीन, मौनी, वाक्य रहित, अवाक् ।—शलाक ( वि० ) निर्जन, एकान्त, रहस्य गोचर, गुप्तस्थान ।—शेय ( वि० ) समाप्त, सम्पूर्ण, शेष रहित ।—श्रेयसी ( स्त्री० ) सीढ़ी, नसेनी, अधिरोहिणी, काष्ठमय सोपान । काष्ठ की सीढ़ी ।—श्रेयः ( पु० ) कुशल, शुभ, अनुभव, भक्ति, मोक्ष, मुक्ति, विद्या ।—श्वसित ( वि० ) दीर्घनिरवासी ।—श्वस ( पु० ) ग्राणवायु, प्रवास ।—सङ्ग ( वि० ) सङ्ग रहित, सङ्गयुक्त, वासनारहित ।—संशय ( वि० ) निःसन्देह, निश्चय, संशय रहित ।—सन्देह ( वि० ) असंशय, निश्चय, ध्रुव ।—सम्पर्क ( पु० ) असम्पर्क, व्दासीन ।—सरण ( पु० ) विद्या, उपाय, निकलना, निकलने का मार्ग, शत्रु, निर्वाण, बहिर्गमन, निर्गमन, चरण, सरकना, मरना, मृता ।—सहाय ( वि० ) सहायहीन, असहाय, एकाकी, अकेला, निराश्रय, दुःखी, अनाथ ।—सार ( वि० ) असार, सारहीन, सेज रहित, छूँछा, रिक्त, खाली ।—सारण ( पु० ) वहिष्करण, निर्गतकरण, निकासना ।—मृत ( वि० ) चरित, मृता हुआ, गिरा हुआ, निकला हुआ, निर्गत ।—स्नेह ( पु० ) प्रेममय, सुखा, निदोष ।—स्पृह ( वि० ) स्पृहाहीन, इच्छा रहित, अनिच्छुक ।—स्व ( वि० ) हरिद, निर्धन ।

निग्रर ( अय्य० ) पास, समीप ।—ना ( कि० ) समीप जना, पास पहुँचना ।

निकट तत् ( वि० ) समीप, पास, अदूर, आसन्न, सन्निकट, नगीच, उपकण्ठ, उपान्त, सन्निकट ।—वर्त्ती ( पु० ) निकटस्थ, समीपस्थ ।—ह्य ( पु० ) पास रहने वाला ।

निकन्द तत् ( वि० ) निःस्कन्ध, स्कन्धरहित, बलहीन । निकन्दन तत् ( पु० ) निर्मूलन, उखाड़ना, उखाड़ना । निकपट तत् ( वि० ) निकपट, शुद्ध मन का । निकम्मा दे० ( वि० ) निहत्ता, बिना काम का, निर्गुणी, आलसी, शिथिल ।

निकर तत् ( पु० ) [ नि + कृ + अलृ ] समूह, राशि, सार, न्याय, देवधन, निधि, निश्चय, कररहित । निकरना दे० ( कि० ) निकलना, निर्गत होना, बहिर्गत होना, निकालना ।

निकरस्व तत् ( पु० ) समूह, यूप, दल, विरोह । निकल दे० ( स्त्री० ) निकास, निर्गह ।—चलना ( वा ) बाहर हो जाना, भाग जाना, पला जाना, अधिक होना, बड़ के घोलना ।—पड़ना ( कि० ) बाहर आना, लौटार होना, आगे से बाहर होना । निकलना दे० ( कि० ) निकलना, निःसृत होना, आगे जाना, भागना, भाग उठना ।

निकसना दे० ( कि० ) निकलना । निकपा तत् ( स्त्री० ) राक्षस माता । ( अ० ) निकट, समीप, अन्तिम ।

निकाई दे० ( स्त्री० ) निकाने की मञ्जरी, निराई । निकाना दे० ( कि० ) बोये हुए खेत से घास निकालना, निराना, सोहनी करना ।

निकाम तत् ( वि० ) निष्काम, जिसको किसी बात की इच्छा शेष न हो, इच्छारहित, निस्पृह, कामना रहित ।

निकाय तत् ( पु० ) [ नि + चि + घञ् ] नियल, निवास, लक्ष्य, समूह, समूहों की एकता, कुंड, ढेर, राशि, परमात्मा ।

निकार तत् ( पु० ) [ नि + कृ + घञ् ] अपकार, धिक्कार, निन्दा, अनादर ।

निकारना दे० ( कि० ) निकालना, बाहर करना, घुसने न देना, निषेध करना, अस्वीकार करना ।

निकाज दे० ( पु० ) निसार, निकास, बाहर आना,



निगद तत्० ( पु० ) [ नि + गद् + अल् ] कथन, भाषण  
कहना, औपधी विशेष ।

निगदित तत्० ( पु० ) [ नि + गद् + क्त ] कथित,  
भाषित, उल्लेख किया हुआ उक्त, वर्णित,  
कहा हुआ ।

निगत दे० ( वि० ) नंगा, लङ्घ्य, नग्न, दिगम्बर ।

निगन्दना दे० ( क्रि० ) तागना, टाँगना, सीना,  
पिरोना ।

निगन्दाई दे० ( स्त्री० ) सीने का काम, सीना ।

निगम तत्० ( पु० ) [ नि + गम् + अच् ] शास्त्र विशेष,  
वेद की शाखा, नगर, ग्राम आदि, वास्तव्य, पुरी,  
वेद, बाजार की राह, निश्चय मार्ग ।—ह्र ( पु० )  
निगमशास्त्रवेत्ता, निगमशास्त्रज्ञाता, निगमविद् ।

—नदी ( स्त्री० ) भागीरथी, गङ्गानदी ।—निवासी  
( पु० ) वेदों में निवास करने वाला, विष्णु, ब्रह्मा ।

निगलना दे० ( क्र० ) घूँटना, लीलना, गले में उतार  
जाना, खा जाना, गट कर जाना ।

निगाली दे० ( स्त्री० ) हुका पीने की नली, मुँह नाल ।

निगुण तद्० ( वि० ) निर्गुण, गुणशून्य, गुण रहित ।

निगूढ़ तत्० ( वि० ) [ नि + गुह् + क्त ] दुर्ज्ञेय, अप्र-  
काश्य, गुप्त, लुका हुआ, अति गुप्त, अति छिपा  
हुआ, अति कठिन, अप्रकट, दुर्गम । [ चायबाल ।

निगोड़ा दे० ( पु० ) अकर्म, दुराचारी, दुष्कर्मी,

निमार दे० ( वि० ) डोस, हट, पोड, निरेट ।

निग्रह तत्० ( पु० ) [ नि + ग्रह् + अल् ] ताड़ना,  
प्रहार, यन्त्रण, क्लेश, यन्धन, सीमा, चिकित्सा,  
इन्द्रियादि दमन, शासन, चिह्न, धिन, कुपध ।

निग्रहरण तत्० ( पु० ) [ नि + ग्रह् + अनट् ] पराजय,  
आक्रमण, विरोध, कलह, युद्ध, मानखण्डन,  
हट, यन्धन, घुड़की, रोप, कोप, क्रोध ।

निग्राही तत्० ( पु० ) [ नि + ग्रह् + शिन् ] क्लेशदायक  
निग्रहकर्ता, दण्डदायक । [ काम होते ही ।

निघटत दे० ( क्रि० ) निघटते ही, न्यून होते ही,

निघटना दे० ( क्रि० ) घटना, कम होना, न्यून होना ।

निघटाना दे० ( क्रि० ) घटवाना, कम कराना ।

निघटा दे० ( क्रि० ) घटी, घट गई, कमती हुई ।

निघटत तद्० ( पु० ) निघट, कोश अभिधान, नाम-  
संग्रह ।

निघराटु तत्० ( पु० ) अभिधान, नामकोश ।

निघरघटा दे० ( पु० ) दुलखाना, घटता करना, बिठाई  
करना ।

निघ्न तत्० ( वि० ) अधीन, वशीभूत, शिष्ट, आयत ।

निचय तत्० ( पु० ) [ नि + चि + अल् ] संघ, गण,  
समूह, दल, यूथ ।

निचला ( पु० ) नीचे वाला, निश्चय, अचञ्चल ।

निश्चित तद्० ( वि० ) निश्चिन्त, चिन्ताशून्य, बेफिक्र,  
अशोचि, अचिन्ता ।

निश्चिंताई दे० ( स्त्री० ) अनवधानता, असावधानी,  
प्रमाद ।

निश्चित होना दे० ( वा० ) निवटना, अवकाश पाना,  
अपना काम पूरा करना ।

निचाई दे० ( स्त्री० ) नीचता, अधमता, तुच्छता,  
कुटिलता, ओछापन, छद्मता, नीचपन हलकापन,  
छोटाई ।

निचोड़ दे० ( पु० ) सार, निष्कर्षक, निष्पत्ति, आश्रय ।

निचोड़ना दे० ( क्रि० ) दयाना, गारना, चूस लेना,

निचोड़ या निचोर ( वि० ) लुटेरा, लोमी, धाड़धप ।  
( पु० ) रस, सार, तत्व, निदान, अन्वय ।

निच्चावर दे० ( स्त्री० ) उतारा, हर्षदान किसी प्रिय  
के सिर के चारों ओर रुपया या पैसा घुमाकर नाई  
बारी को देना, नोछावर करना, बारना ।

निच्छिद्र तत्० ( क्रि० ) छिद्रहीन, रन्ध्रशून्य, सर्वाङ्ग  
सम्पूर्ण ।

निज तत्० ( वि० ) [ नि + जन् + इ ] स्वीय, स्वकीय,  
आत्मीय ।—तन्त्र ( वि० ) स्वाधीन, स्वतन्त्रता ।

—मतावलम्बी ( वि० ) आत्म मतावलम्बी,  
अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला—स्व  
( पु० ) स्वकीय धन, अपने अधिकार का धन ।

निजाल दे० ( पु० ) निर्विवाद, कपटशून्य,  
निरापद, निश्चिन्त ।

निम्ननिम्न दे० ( स्त्री० ) पवित्रता, शुद्धता, योग्यता ।

निम्नाना दे० ( क्रि० ) निरखना, मौकना, ठहरना,  
बुझाना, निर्वापित करना, अग्नि का बुझाना ।

निम्नारना दे० ( क्रि० ) खसोटना, मटकना, आवना,  
बुहारी काड़ना, झारना, साफ़ करना ।

निभोल दे० ( वि० ) झोल रहित, कसा हुआ, सुधील ।

निटिलाक्ष तत् ( पु० ) [ निटिल + अक्ष ] शिव, महा-  
देव, शम्भु ।

निठरजा दे० ( पु० ) निकम्मा, आलसी, लुचा, ठलुचा ।

निठुर तद् ( वि० ) निष्ठुर, कठोर, कठिन हृदय,  
निर्दय, स्नेहशून्य, विन प्रीति, संग दिल, कड़ा दिल  
वाला ।—ता ( स्त्री० ) निर्दयता, कठिनता, कड़ाई ।

निठुराई दे० ( स्त्री० ) कठोरता, कठिनता, हृदय की  
कुरता । [ छट, ढीट ।

निडर दे० ( वि० ) निर्भय, निःशङ्क, भयशून्य, अशङ्क,

निढाला दे० } ( वि० ) ज्ञानशून्य, जड़, स्थावर,  
ननडाला दे० } अचल ।

नित दे० ( अ० ) नित्य, प्रतिदिन, सदा, सर्वदा ।

—उठ ( अ० ) प्रति दिन उठकर, नियमित, सदा,  
निरन्तर ।—नय ( वि० ) नित्य नया, प्रति दिन नया,  
नित्य नित्य दूसरा ।—प्रति ( अ० ) नित्य, प्रतिदिन,  
सतत, सदा, सर्वदा । [ कला, पर्वत का प्रान्त भाग ।

नितम्ब ( पु० ) कटि के पीछे का भाग, चूतड़, पुट्टा,  
नितम्बनो तत् ( स्त्री० ) [ नितम्ब + इन् + ई ]  
प्रसक्त नितम्ब विशिष्ट स्त्री, भवला, नारी,  
स्त्रीमात्र, चौड़ी कटि वाली स्त्री ।

नितराम ( अ० ) सदा, सर्वदा ।

नितान्त तद् ( पु० ) अतिशय, अत्यन्त, अधिक  
( वि० ) एकान्त, अवश्य, अतिशय विशिष्ट ।

नित्य तद् ( वि० ) कालत्रयम्यापी, तीनों काल में  
रहने वाला, शान्त्व, ध्रुव, सनातन, जिसका  
कमी नाश न हो । ( पु० ) समुद्र, स्थिर, निश्चित,  
जन्म मृत्यु रहित, सनातन, प्रतिदिन, सतत,  
अशान्त, अनिष्ट, अजल ।—कर्म ( पु० ) प्रतिदिन  
का कर्त्तव्य कर्म, प्रतिदिन अनुष्ठेय कर्म, आवश्यक  
क्रिया, प्रत्याह्निक व्यापार ।—कृत्य ( पु० ) नित्य-  
कर्म ।—क्रिया ( स्त्री० ) प्रतिदिन का कर्त्तव्य  
कर्म, प्रत्याह्निक व्यापार ।—गति ( पु० ) वायु,  
अनिल, पवन ।—ता ( स्त्री० ) चिरकालीनत्व,  
सनातनता ।—दान ( पु० ) प्रतिदिन का कर्त्तव्य  
दान ।—नैमित्तिक ( पु० ) नित्य और नैमित्तिक  
कर्म, सम्ब्योरासन और ग्रहण स्नानादि ।  
—प्रति ( अ० ) प्रतिदिन, सदानियम से ।  
—प्रलय ( पु० ) चतुर्विध प्रलयान्तर्गत प्रलय

विशेष, जीव का प्रतिदिन का नाश ।—मुक्त  
( वि० ) क्रियावान्, कर्मनिष्ठ, चिरमुक्त, जीवनमुक्त ।

—यौवन ( वि० ) स्थिर यौवन, सदा युवा रहने  
वाला ।—यौवना ( स्त्री० ) स्थिर यौवना, चिर-  
यौवना, द्रौपदी, कुन्ती, आदि ।—शः ( पु० )  
प्रत्यह, अनवरत, सदा, सर्वदा ।—सम ( पु० )  
निर्विकार, अप्रशस्त वस्त्र । [ वस्तु का विचार ।

नित्यानित्यविवेक तद् ( पु० ) नित्य और अनित्य  
नित्यानन्द तद् ( पु० ) सदानन्द जिसका आनन्द  
सर्वदा वर्तमान रहे । पद्माल के गोस्वामी वंश के  
आदि पुरुष, वे पहले सन्यासी हो गये थे, परन्तु  
पीछे किसी कारण से गृहस्थ हो गये । वे चैतन्य  
महाप्रभु के साथी थे ।

निश्चय दे० ( पु० ) स्तम्भ, खम्भा ।

निधरा दे० ( पु० ) स्वच्छ हुआ जल, मिट्टी के बँट  
जाने से निर्मल हुआ जल, निर्मल जल ।

निधारना दे० ( क्रि० ) निखारना, साफ करना, स्वच्छ  
करना, धारना ।

निर्दई ( पु० ) दयाहीन, निर्दयी ।

निर्दग्धिका तद् ( स्त्री० ) रवेत, छोटी चटाई ।

निर्दरा दे० ( क्रि० ) निन्दा करना, अपमान करना ।

निर्दरहिं दे० ( क्रि० ) निन्दा करते हैं, नहीं मानते,  
प्रतिष्ठा नहीं करते । [ निन्दा काके ।

निर्दरि दे० ( अ० ) निरादर काके, अपमान काके,

निर्दर्शन तद् ( पु० ) [ नि + दर्श् + भनट् ] दृष्टान्त,  
वदाहरण ।—यथ ( पु० ) दृष्टान्तयथ ।—मुद्रा  
( स्त्री० ) प्रतिष्ठा, मुद्रा, मानसूचक मुद्रा ।

निर्दर्शना तद् ( स्त्री० ) [ निर्दर्शन + ना ] काष्णालङ्कार  
विशेष, इसका लक्षण इस प्रकार है । यथाः—  
सदृश वाक्य जुग अरथ को, कतिवे एक भरोष ।  
भूपन ताहि निर्दर्शना, कहत पुदि दे ओष ॥  
( वदाहरण )

दोहा ।

औरनि को जो जनम है, सो जाहो एकरीत ।

औरनि को जो राज सो, सिधवरजा की मौन ॥

साहिन सो रन मधि के, कीनें सुकवि निहाल ।

सिध सराजा को थाला है, औरनि को जंवाल ॥

—शिवराज भूषण ।

निदाघ तत् ( पु० ) ग्रीष्मकाल, वष्णु, धर्म ।—कर  
( पु० ) सूर्य, दिवाकर ।—काल ( पु० ) ग्रीष्मकाल-  
शब्द, ज्येष्ठ और आषाढ़ का महीना, अन्त्य, अन्त्य-  
करण, नतीजा ।

निदान तत् ( पु० ) मूल कारण, चिन्ह, बोध, आदि  
कारण. कारण, रोग निर्णय, रोग का मूलानु-  
सन्धान, वैद्यक के एक ग्रन्थ का नाम ( अ० )  
अन्त में, पीछे, निष्कर्ष, सारांश ।

निदारुण ( पु० ) भयानक, कठिन, कठोर ।  
निदिध्यासन तत् ( पु० ) [ नि + ध्वे + सन् + अनट् ]  
पुनः पुनः स्मरण, परमार्थ चिन्ता विशेष ।  
निदेश तत् ( पु० ) [ नि + दिश् + अल् ] आज्ञा,  
आदेश, अनुमति, नियोग, कथन, कथा, अनुशा-  
सन यथा: —

“कीन्हेसि मेर निदेश निमेह ।

देव दबाय नागतर पेह । ” —प्रह्लादचरित ।

निद्रि ( स्त्री० ) निधि, खजाना, धनानगर ।  
निद्र ( पु० ) अस्त्रविशेष ।  
निद्रा तत् ( स्त्री० ) अवस्था विशेष, मनुष्य की एक  
अवस्था, मेथ्या नामक नाड़ी से मन का संयोग,  
सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना । [ बाला, सुवेया ।  
निद्रालु तत् ( वि० ) निद्राशील, निद्रायुक्त, सोने  
निद्रित तत् ( वि० ) प्राप्तनिद्रा, निद्रागत, सोया हुआ ।  
निधङ्क या निधरक दे० ( वि० ) निर्भय, निडर,  
अशङ्क, साहसी, बघोरी, बख्साही । ( अ० )  
अवानक, सहसा, एकाएक, अकस्मात् ।

निधन तत् ( वि० ) धनहीन ( पु० ) मृत्यु, मरण,  
नाश, ह्वंस, मृत्यु, मौत ।—ता ( स्त्री० ) कंठाक्षी,  
हरिद्रवा, निर्धनता ।

निधान तत् ( वि० ) घर, ऊँच, खजाना, खान ।  
निधि तत् ( स्त्री० ) [ नि + ध्य + क् ] कुवेर का  
माण्डार, सम्पत्ति, रत्न विशेष, आधार, समुद्र,  
माण्ड, कोप, संस्था, बहुत धन ।—जात ( पु० )  
समुद्र से उत्पन्न रत्न आदि ।—नाथ ( पु० )  
कुवेर, धनाधिप ।—पाल या प्रभु ( पु० ) कुवेर,  
अधीश, स्वामी, राजा ।—सुतो ( स्त्री० ) लक्ष्मी ।  
निधेय ( पु० ) रखने योग्य, स्थापनीय, स्थापन करने  
योग्य ।

निनद ( पु० ) शब्द, ध्वनि ।

निनाद तत् ( पु० ) [ नि + नद् + घञ् ] शब्द, रव,  
आहट, गर्जन, ध्वनि । [ ध्वनित, शब्दित ।

निनादित तत् ( पु० ) [ नि + नद् + णिच् + क्त ]  
निनाया दे० ( पु० ) खटमल, माकुण्ड, बड़िस, कृमि  
विशेष, खटकिरावा ।

निनायी दे० ( पु० ) रोग विशेष, मुख का एक रोग ।

निनार ( पु० ) समस्त, बिलकुल, सम्पूर्ण ।

निनारा ( पु० ) धृषक, न्यारा, दूर हटा हुआ ।

निनीवा दे० ( पु० ) छारु रोग ।

निनीषा तत् ( स्त्री० ) [ नि + सन् + ञ् ] ग्रहणेच्छा,  
लेने की इच्छा, ग्रहण करने का अभिलाष ।

निनीषु तत् ( पु० ) ग्रहणेच्छु, ग्रहण करने का  
अभिलाषी ।

निनेता तत् ( पु० ) नायक, प्रधान, मुख्य, प्रेष, नेता ।

निनीना ( स्त्री० ) झुकाना, नीचे करना ।

निन्दक तत् ( वि० ) दूसरे का दोष बूझने वाला,  
परदोषानुसन्धानकर्ता, निन्दा करने वाला ।

निन्दकाई दे० ( स्त्री० ) निन्दकता, निन्दा करने का  
स्वभाव ।

निन्दता दे० ( स्त्री० ) कलङ्क लगाना, दोष लगाना ।

निन्दनीय तत् ( वि० ) निन्दा का पात्र, निन्दा के  
योग्य, गद्गर्, निन्दा ।

निन्दा तत् ( स्त्री० ) कुत्सा, गद्गर्, अपवाद, दुर्नाम,  
भयस, मिथ्या कलङ्क, घुराई ।—स्तुति ( स्त्री० )  
व्याज स्तुति, मुपावाद, मिथ्यास्तुति, अम्यथा स्तोत्र ।

निन्दास दे० ( स्त्री० ) ऊँचास, झवकी, निद्रालुता ।

निन्दासा दे० ( पु० ) ऊँचास, निन्द्रालु ।

निन्दित तत् ( वि० ) अपेक्षित, अवज्ञात, लुप्तसित,  
गहित, कुत्सित, अधम, दुषित, कलङ्कित ।

निन्द्य तत् ( वि० ) निन्दनीय, देय, तुच्छ ।—कर्म  
( पु० ) कुत्सित कर्म, निन्दित काम ।

निन्नानवे दे० ( वि० ) नौ अधिक नब्बे, १६, एक  
कम सौ ।—के फेर में पड़ना ( वा० ) धन जोड़ने  
में लगना, कृपणता, चक्कर में पड़ना, किं कर्त्तव्य  
विमूढ़ होना ।

निप ( पु० ) बुरा ।—जो ( स्त्री० )

निपट दे० ( वि० ) अति, बिलकुल, पूरा पूरा, बहुत-  
यत से, बहुत, अधिक, अत्यन्त, अतिशय ।

निपटना दे० ( क्रि० ) पूरा होना, खतम होना, समाप्त  
होना, सम्पूर्ण होना । [ करना ।

निपटाना दे० ( क्रि० ) ठहराना, पूरा करना, समाप्त  
निपटारा दे० ( पु० ) निवेदना, फैसला, निर्णय ।

निपटारू दे० ( पु० ) निवेदने वाला, निवेदक, निर्णायक ।  
निपटेरा ( पु० ) देखो निपटारा ।

निपतन तत्त्वं ( पु० ) [ नि + पत् + अनट् ] अधःपतन,  
भरण, नष्ट होना, मारा जाना, नीचे गिरना ।

निपतित तत्त्वं ( पु० ) पतित, प्युत, अष्ट, स्खलित,  
गिरा हुआ ।

निपात तत्त्वं ( पु० ) मृत्यु, पतन, गिरना, भरण,  
नाश, निधन, अधःपतन, व्याकरण में च आदि  
और प्र आदि अर्थों को निपात कहते हैं ।

निपातरू तत्त्वं ( पु० ) नाटक, उगाड़ने वाला, गिराने  
वाला, ढाहने वाला । [ मारना ।

निपातना दे० ( क्रि० ) गिराना, ढाहना, नाश करना,  
निपातित तत्त्वं ( वि० ) [ नि + पत् + पितृ + क ]

अधःपितृ, नीचे गिराया हुआ ।

निपात तत्त्वं ( पु० ) कूप या तालाब के पास पशुओं  
के जल पीने के लिये बनाया हुआ जलकुण्ड  
आहाब, कठरा, हौदी ।

निपीडन तत्त्वं ( पु० ) [ निः + पीड् + अनट् ] मर्दन,  
व्यथा, पीड़ा देना, दुःख देना, मसलना ।

निपीडित तत्त्वं ( वि० ) मर्दित, व्यथित, दुःखित ।

निपुण तत्त्वं ( वि० ) कार्यक्षम, अभिरुचि, पटु, योग्य,  
प्रवीण, चतुर, कुशल, दक्ष ।—ता ( स्त्री० ) कार्य-  
क्षमता, योग्यता, प्रवीणता, चातुरी । [ दक्षता ।

निपुणार्ह दे० ( स्त्री० ) बुद्धिमत्ता, चतुराई, कुशलार्ह,

निपुत्रो ( पु० ) पुत्रहीन, निर्वाण ।

निपुणार्ह दे० ( स्त्री० ) चतुरता, निपुणार्ह ।

निपूत या } ( वि० ) पुत्रहीन, निःसन्तान, अपुत्री ।  
निपूता दे० }

निपाड़ना दे० } ( क्रि० ) दाँत दिखाना, निकोसना,  
निपोरना } निर्लज्जता की एक मुद्रा ।

निफल तत्त्वं ( वि० ) विफल, परिणाम शून्य, निष्प-  
योजन, व्यर्थ, निष्फल, निरर्थक, फल रहित ।

निफोट ( पु० ) स्पष्ट, साफ साफ ।

निचकौरी ( स्त्री० ) नीम का फल ।

निचटना ( क्रि० ) छुट्टी पाना, पूरा होना, मलत्याग  
करने को भी कहीं कहीं निचटना कहते हैं ।

निचट्टी दे० ( वि० ) छुट्टी हुई, खर्च, चंटा ।—रत्न  
( पु० ) छुट्टी हुई रत्न, यद्वा चंटा मनुष्य, यद्वा

चालाक आदमी, दुनियासाज आदमी, दुनियादार  
आदमी । [ फैसला, खातमा ।

निचट्टेरा दे० ( पु० ) सफाई, निर्णय, छुटकारा,

निचट्ट ( पु० ) गुंथा हुआ, बँधा हुआ ।

निचट्ट तत्त्वं ( पु० ) ग्रन्थ, सम्बन्ध, ग्रन्थों की वृत्ति,  
स्थिर जीविका, धन्येज, धनधान, रोग विशेष ।

निचट्टन तत्त्वं ( पु० ) ठहराव, पण, समय, शर्त, हेतु,  
कारण, निमित्त, दीया आदि का ऊर्ध्वभाग ।

निचट्टित तत्त्वं ( पु० ) बढ़, संप्रहीत ।

निचल तत्त्वं ( वि० ) निर्यल, दुबला, दुर्बल, बलहीन,  
सामर्थ्यहीन । [ करना, दिन काटना ।

निवाह तत्त्वं ( पु० ) निर्वाह, पूरा करना, समाप्त  
निवाहना दे० ( क्रि० ) पूरा करना, सिद्ध करना, योग्यता,

पूर्वक समाप्त करना, रक्षा करना ।

निवाह दे० ( वि० ) टिकाऊ, निपटारू, स्थायी, चिर-  
स्थायी, बहुत दिनों तक रहने वाला । [ देने से ।

निवहे दे० ( क्रि० ) साथ किये, संग दिये, साथ

विपुत्रा दे० ( पु० ) नीच, निम्न, लीमू ।

निवेड़ना दे० ( क्रि० ) निपटाना, पूरा करना, चुकाना,  
साफ़ करना ।

निवेड़ा दे० ( पु० ) निपटारा, निवेदना, सफाई ।

निवेड़ी दे० ( वि० ) निवाह, निपटारू ।

निवेरू दे० ( वि० ) निवेदने वाला, निर्णय करने वाला ।

निचौरी दे० ( स्त्री० ) “ निमकौड़ी ” देखो ।

निम तत्त्वं ( वि० ) तुल्य, सदृश, समान । ( पु० )

प्रकार ।

निभना दे० ( क्रि० ) पार लगना, पार पड़ना, समाप्त  
होना, बन जाना । [ रक्षा करना ।

निभाना दे० ( क्रि० ) निवाहना, चलाना, पार करना,

निमाव ( पु० ) निवाह, निवाह ।

निभृत तत्त्वं ( वि० ) नष्ट, विनीत, निर्जन, चिरल,

गुप्त, प्रच्छन्न, निश्चल, अस्मित, एकान्त, रहस्य ।

निदाघ तत् ( पु० ) शीघ्रकाल, उष्ण, घर्म ।—कर ( पु० ) सूर्य, दिवाकर ।—काल ( पु० ) शीघ्रकाल-  
काल, ज्येष्ठ और आषाढ़ का महीना, अन्त्य, अन्त्य-  
करण, नतीजा ।

निदान तत् ( पु० ) मूल कारण, चिन्ह, बोध, आदि  
कारण, कारण, रोग निर्णय, रोग का मूलानु-  
सन्धान, वैद्यक के एक ग्रन्थ का नाम ( अ० )  
अन्त में, पीछे, निष्कर्ष, सारांश ।

निदारण ( पु० ) भयानक, कठिन, कठोर ।

निदिध्यासन तत् ( पु० ) [ नि + धै + सन् + अनट् ]  
पुनः पुनः स्मरण, परमार्थ चिन्ता विशेष ।

निदेश तत् ( पु० ) [ नि + दिश् + अल् ] आज्ञा,  
आदेश, अनुमति, नियोग, कथन, कथा, अनुशा-  
सन यथा: —

“कीन्हेसि मेर निदेश निमेह ।

देह दबाय नागतर पेह । ” —प्रह्लादचरित ।

निधि ( स्त्री० ) निधि, खज़ाना, धनागार ।

निद्र ( पु० ) अस्त्रविशेष ।

निद्रा तत् ( स्त्री० ) अवस्था विशेष, मनुष्य की एक  
अवस्था, मेथ्या नामक नाड़ी से मन का संयोग,  
सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना । [ बाला, सुवैया ।

निद्रालु तत् ( वि० ) निद्राशील, निद्रायुक्त, सोने  
निद्रित तत् ( वि० ) प्राप्तनिद्रा, निद्रागत, सोया हुआ ।

निधङ्ग या निधरक दे० ( वि० ) निर्भय, निडर,  
अशङ्क, साहसी, उद्योगी, बरसाही । ( अ० )

अचानक, सहसा, एकाएक, अकस्मात् ।

निधन तत् ( वि० ) अनाहीन ( पु० ) मृत्यु, मरण,  
नाश, ह्वंस, मृत्यु, मौत ।—ता ( स्त्री० ) कंठाजी,  
हरिद्रता, निर्धनता ।

निधान तत् ( वि० ) घर, ठाँव, खज़ाना, खान ।

निधि तत् ( स्त्री० ) [ नि + ध्य + क् ] कुबेर का  
भाण्डार, सम्पत्ति, रत्न विशेष, आचार, समुद्र,  
भाण्ड, कोष, संस्था, बहुत धन ।—जात ( पु० )  
समुद्र से उत्पन्न रत्न आदि ।—नाथ ( पु० )  
कुबेर, धनाधिप ।—पाल या प्रभु ( पु० ) कुबेर,  
अधीश, स्वामी, राजा ।—सुता ( स्त्री० ) लक्ष्मी ।

निधेय ( पु० ) रखने योग्य, स्थापनीय, स्थापन करने  
योग्य ।

निनद ( पु० ) शब्द, ध्वनि ।

निनाद तत् ( पु० ) [ नि + नद् + धञ् ] शब्द, रव,  
आहट, गर्जन, ध्वनि । [ ध्वनित, शब्दित ।

निनादित तत् ( पु० ) [ नि + नद् + शिच् + क् ]

निनाया दे० ( पु० ) खटमल, मक्कुण, बड़ित, कृमि  
विशेष, खटकिरावा ।

निनायी दे० ( पु० ) रोग विशेष, मुख का एक रोग ।

निनार ( पु० ) समस्त, बिलकुल, सम्पूर्ण ।

निनारा ( पु० ) पृथक, न्यारा, दूर हटा हुआ ।

निनीचा दे० ( पु० ) छारु रोग ।

निनीपा तत् ( स्त्री० ) [ नि + सन् + प्रा ] ग्रहणेच्छा,  
लेने की इच्छा, ग्रहण करने का अभिलाष ।

निनीपु तत् ( पु० ) ग्रहणेच्छु, ग्रहण करने का  
अभिलाषी ।

निनेता तत् ( पु० ) नायक, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, नेता ।

निनीना ( कि० ) झुकाना, नीचे करना ।

निन्दक तत् ( वि० ) दूसरे का दोष ढूँढ़ने वाला,  
परदोषानुसन्धानकर्ता, निन्दा करने वाला ।

निन्दकाई दे० ( स्त्री० ) निन्दकता, निन्दा करने का  
स्वभाव ।

निन्दना दे० ( कि० ) कलङ्क लगाना, दोष लगाना ।

निन्दनीय तत् ( वि० ) निन्दा का पात्र, निन्दा के  
योग्य, गर्ह्य, निन्दा ।

निन्दा तत् ( स्त्री० ) कुल्ला, गर्हा, अपवाद, दुर्नाम,  
अशय, मिथ्या कलङ्क, गुराई ।—स्तुति ( स्त्री० )  
व्याज स्तुति, शृपावाद, मिथ्यास्तुति, अश्रयथा स्तोत्र ।

निन्दास दे० ( स्त्री० ) ऊँचास, फव्वरी, निद्रालुता ।

निन्दासा दे० ( पु० ) ऊँचास, निद्रालु ।

निन्दित तत् ( वि० ) श्लेषित, अवज्ञात, जुगुप्सित,  
गर्हित, कुत्सित, अधम, दूषित, कलङ्कित ।

निन्द्य तत् ( वि० ) निन्दनीय, हेय, तुच्छ ।—कर्म  
( पु० ) कुत्सित कर्म, निन्दित काम ।

निनानवे दे० ( वि० ) नौ अधिक नब्बे, ११, एक  
कम सौ ।—के फेर में पड़ना ( वा० ) धन जोड़ने  
में लगाना, कृपणता, चक्कर में पड़ना, किं कर्त्तव्य  
विमूढ़ होना ।

निप तत् ( स्त्री० ) बुच विशेष ।—जो ( स्त्री० )  
अन्न की उत्पत्ति, लाभ, बुद्धि ।

निम्न दे० ( पु० ) वृत्त विशेष, नीच, कागजी नीच के वृत्त, कागजी नीच ।

नियत तत्० ( वि० ) [ नि + यत् + क्त ] नियम विशिष्ट, अटकाया, लगातार, छेक, मित्य, सर्वदा, निश्चित, निर्दिष्ट, स्थिरीकृत, यद्, दमित, शासित, निश्चित, नियुक्त, ठहराया हुआ ।—मानस ( वि० ) प्रशान्त चित्त, जितेन्द्रिय ।

नियतात्मा तत्० ( वि० ) [ नियत + आत्मा ] आत्म-बलीभूत, बर्ग, यमी, यती, जितेन्द्रिय, वरेन्द्रिय ।

नियताहार तत्० ( वि० ) [ नियत + आहार ] परिमित भोजन, मितभुक्, मितशयन, अस्वाहार ।

नियति तत्० ( स्त्री० ) [ नि + यत् + क्त ] नियम, वैध, विधि, भाग्य, अरु, विधाता ।

नियतेन्द्रिय तत्० ( पु० ) [ नियत + इन्द्रिय ] जितेन्द्रिय, इन्द्रियदमनशील, संयत शरीर, प्रशान्त चित्त ।

नियन्ता तत्० ( पु० ) [ नि + यत् + तृ ] शासक, शासनकर्ता, प्रभु, नियामक, सारथि, नियम करने वाला, शासन करने वाला, रथवाज ।

नियन्त्रित तत्० ( वि० ) संयमित, नियमित, निगृहीत, यन्त्रित, जंकड़ा हुआ, बंधा हुआ, निवारण किया हुआ, रोका गया ।

नियम तत्० ( पु० ) [ नि + यत् + अल् ] निश्चय, अवधारण, निर्णय, निरूपण, प्रकाम, धारा, दमन, निषेध, योग, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान इनको नियम कहते हैं । प्रतिज्ञा, धन्योकार, स्वीकार, उपवासादि व्रत, कर्तव्य कर्म, नेम, प्रतिबन्ध, अटकाय, योग का एक शब्द ।

नियमन तत्० ( पु० ) [ नि + यत् + अनट् ] नियम, बन्धन, दमन, धारण, रूकावट, निवारण, रोक, अटकाय, छेद ।

नियमशाली तत्० ( पु० ) [ नियम + शाली ] नियम-युक्त, रीत्यनुयायी, नियमिन कार्यकर्ता, नियम पूर्वक कार्य करने वाला ।

नियमसेवा तत्० ( स्त्री० ) नियमपालन, कार्तिक भास में नियम पूर्वक भगवान् का आराधन ।

नियमित तत्० ( पु० ) [ नि + यत् + क्त ] कृतनियम, नियमबद्ध, निश्चित, विधिबद्ध ।

नियर दे० ( अ० ) समीप, निष्ठ, पास, नजदीक ।

नियराई दे० ( स्त्री० ) समीपता, निष्ठता ।

नियराना दे० ( कि० ) पास आना, नगवाना, निष्ठ आना, समीप पहुँचना ।

नियरे दे० ( अ० ) समीप, समीप में, निष्ठ में ।

नियामक तत्० ( पु० ) नियमकर्ता, नियन्ता, निरचा-यक, पातवाहक, कर्णधार, नाविक ।

नियाय तत्० ( पु० ) न्याय, धर्म, सचाई, उचित व्यवहार ।

नियार दे० ( पु० ) कही, चर, छेदना, बहू आदि को इनके पिता के घर से बुलाने के लिये दिन कहना भोजना । [ धातु का छान्द ।

नियारा दे० ( वि० ) पृथक् धन्य, न्यारा, असेवक

नियारिया दे० ( पु० ) सुनार, सुवर्णकार ।

नियुक्त तत्० ( पु० ) [ नि + युज् + क्त ] नियोग विशिष्ट, नियोजित, जिसका नियोग किया जाय, जिस पर किसी काम का भार दिया जाय, आज्ञा प्राप्त, अवधारित, ज्ञात ।—( स्त्री० ) काम का सौहरा, नियुक्त किया जाना ।

नियुन तत्० ( नि० ) [ नि + यु + क्त ] संवय विशेष, दस लाख, १०,०००० ।

नियुद्ध तत्० ( पु० ) [ नि + युध् + क्त ] बाहुयुद्ध, महयुद्ध, पहलवानों की कुरती ।

नियोग तत्० ( पु० ) [ नि + युज् + घञ् ] अवधारण, आज्ञा, हुक्म, नियोजन, अनुमति, शासन, प्रेषण, आरापण, मनोनिवेश, प्रवृत्ति, निश्चय, अधिकार प्रेषण, आज्ञा, पति के भाई या अन्य किसी से सन्तानोपपत्ति करा लेना ।—कर्त्ता ( पु० ) नियोग करने वाला, भार अर्पणकर्त्ता ।—धर्म ( पु० ) पति की मृत्यु होने पर पति के छोटे भाई से पुत्र उत्पन्न कराना । यह प्रथा कलियुग में वर्जित है ।

नियोगी तत्० ( वि० ) नियोग विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञाग्राह, किसी व्यापार में लगा हुआ ।

नियोजन तत्० ( पु० ) [ नि + युज् + क्त ] नियुक्त करण, प्रेषण, आदेशन, आज्ञा देकर किसी कार्य में लगाना, स्थापन ।

नियोजित तत्० ( वि० ) नियुक्त, संयोजित, स्थापित, आदिष्ट, किसी कार्य में नियुक्त किया हुआ ।



निम तत्० ( पु० ) शलाका, शंकु, सूची, क्तरनी ।  
 ( दे० ) थोड़ा, न्यून, कम ।  
 निमक दे० ( पु० ) लवण, नोन, लोन, नून ।—हराम  
 ( वि० ) अव्यक्त, विश्वासघातक ।  
 निमकी दे० ( स्त्री० ) अचार विशेष, नीबू का अचार,  
 नोन का नींबू ।  
 निमकीड़ी दे० ( स्त्री० ) नीमवृक्ष का फल, निबोरी ।  
 निमन दे० ( वि० ) सुन्दर, दर्शनीय, मनोहर, मनोरम,  
 रमणीय, पोड़ा, दृढ़, स्वस्थ, दोस ।  
 निमनाई दे० ( स्त्री० ) पोड़ाई, सुन्दरताई, अच्छापन ।  
 निमनाना दे० ( क्रि० ) पोड़ा बनाना, सुन्दर करना,  
 अच्छा बनाना, सुधारना, संहालना ।  
 निमन्त्रण तत्० ( पु० ) आमन्त्रण, आह्वान, आवाहन,  
 नेवता, बुलाहट ।—पत्र ( पु० ) उत्सव में सम्मि-  
 लित होने के लिये बुलावे का पत्र । [ आहूत ।  
 निमन्त्रित तत्० ( वि० ) नेवता गया, बुलाया गया,  
 निमन्त्रयिता तत्० ( वि० ) आह्वानकर्ता, आमन्त्रण-  
 कर्ता, आमन्त्रण भेजने वाला, यजमान वा उत्सव-  
 कर्ता जो आमन्त्रण भेज कर बुलाता है, न्योता  
 देकर बुलाने वाला ।  
 निमन ( गु० ) निमग्नित, हुआ हुआ ।  
 निमज्जन ( पु० ) अवगाह, स्नान, डुबकी लगा कर किया  
 हुआ स्नान ।  
 निमग्नित ( गु० ) डूबा हुआ, निमग्न ।  
 निमट्ना ( क्रि० ) देखो “ निघटना ” ।  
 निमय तत्० ( पु० ) [ नि + मि + अल् ] चिनिमय,  
 परिवर्तन, एक पदार्थ देकर दूसरा पदार्थ लेना,  
 बदला ।  
 निमात्ता ( गु० ) सावधान, जो मत्त न हो ।  
 निमान ( पु० ) नीची जगह, ढलुवा जगह ।—( गु० )  
 गहरी जगह, नीची जगह ।  
 निमि तत्० ( पु० ) सीता के पिता कुशध्वज जनक के  
 पूर्वपुरुष, इनके पुत्र का नाम मिमि था और  
 इनके नाम के अनुसार उस राज्य को भी मिथिला  
 कहते हैं । मिमि के पुत्र का नाम जनक था ।  
 जनक के अनन्तर इनके वंशधर केवल “ जनक ”  
 इस उपनाम से परिचित होते थे । सीताजी के  
 पिता का नाम जनक नहीं था किन्तु उपनाम था ।

निमित्त तत्० ( पु० ) कारण, हेतु, मिदान ( श्र० )  
 प्रयोजन, वास्ते, लिये ।—कारण ( पु० ) प्रयोजन,  
 हेतु, निमित्त, न्याय के मत से उत्पादक त्रिविध  
 कारणों के अन्तर्गत कारण विशेष ।—राज ( पु० )  
 विदेह, राजा जनक, मिथिला के एक राज विशेष ।  
 निमिप ( पु० ) पलक, नेत्रों का बंद होना, काल  
 विशेष ।—नेत्र ( पु० ) तीर्थ विशेष, नैमिषारण्य ।  
 —ति ( गु० ) मिचा हुआ, बंद ।  
 निमीलन तत्० ( पु० ) [ नि + मील + धनट् ] मुद्रित  
 करना, आँख मूँदना, आँख मीचना ।  
 निमीलित तत्० ( वि० ) मुद्रित, मूँदा हुआ, बन्द  
 हुआ पलकों से नेत्र को बन्द करना ।  
 निमेप तत्० ( पु० ) [ नि + निप् + अल् ] नेत्रों के  
 पलक का स्पन्दन काल, पलक, अति सूक्ष्म काल,  
 विपल, चण, लघ । [ भाजी ।  
 निमोना ( पु० ) हरे चनों या मटरों की रसदार  
 निम्र तत्० ( वि० ) अधः, नीचे, नीचे की ओर, नीचा-  
 स्थान, गहरा, गंभीर, गदा, गर्त ।—ना ( स्त्री० )  
 नदी, स्रोतस्विनी ।—ता ( स्त्री० ) गम्भीरत्व,  
 गहराई, नीचापन, अधोगतत्व । [ का पेड़  
 निम्य तत्० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष विशेष, नीम  
 निम्बक तत्० ( पु० ) नीम का पेड़, नीबू ।  
 निम्बरक तत्० ( पु० ) नीम का वृक्ष ।  
 निम्बादित्य तत्० ( पु० ) एक वैष्णव सम्प्रदाय के प्रव-  
 र्तक आचार्य । इन्होंने द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार  
 किया है । इनका निम्बादित्य नाम पढ़ने का कारण  
 सुनने में यह आता है कि ये किसी जैन साधु से  
 शास्त्रार्थ करते थे । शास्त्रार्थ करते ही करते संन्या  
 हो गई । अब संन्या होने के कारण जैन साधु तो  
 भोजन कर ही नहीं सकता है, इसी असुविधा को  
 मिटाने के लिये इन्होंने एक नीम के पेड़ पर सूर्य  
 को रोक दिया और उस साधु से भोजन करने के  
 लिये कहा । सूर्य देव तब तक उस पेड़ पर थे जब  
 तक उस साधु ने भोजन नहीं कर लिया । यही  
 कारण है कि इनका नाम निम्बादित्य या निम्बार्क  
 पड़ा । इनके बनाये ग्रन्थ का नाम धर्माधि-  
 बोध है । इनका समय १० वीं सदी माना  
 जाता है ।

निराकृत (गु०) हटाया हुआ, अपमानित, अस्वीकृत ।  
 निराचार तत्त्वं (वि०) [ निर + आचार ] अनाचार,  
 आचारभ्रष्ट, आचार रहित । [ निर्भावना, निर्भय ।  
 निरातङ्क तत्त्वं (वि०) [ निर + आतङ्क ] निःशङ्क,  
 निरादर तत्त्वं (वि०) [ निर + आदर ] आदरहीन,  
 अपमान, अप्रतिष्ठा ।  
 निराधार तत्त्वं (वि०) [ निर + आधार ] अधार  
 शून्य, अनाशय, आश्रय रहित, शून्यस्थित ।  
 निरानन्द तत्त्वं (वि०) [ निर + आनन्द ] आनन्द  
 रहित, आनन्द शून्य, दुःखी । [ निर्विघ्न ।  
 निरापद तत्त्वं (गु०) [ निर + आपद ] अनापद,  
 निरामय तत्त्वं (वि०) [ निर + आमय ] रोगरहित,  
 नीरोग, स्वस्थ ।  
 निरामिष तत्त्वं (वि०) [ निर + आमिष ] आमिष  
 शून्य, मांस रहित (गु०) प्रत विशेष ।  
 निरायुध तत्त्वं (वि०) [ निर + आयुध ] आयुध  
 रहित, निरस्त्र, अस्त्र हीन, शास्त्री हाथ ।  
 निराजम्ब तत्त्वं (वि०) [ निर + आलम्ब ] अवलम्बन  
 रहित, अनाश्रय, विना आश्रय का ।  
 निराजय तत्त्वं (वि०) [ निर + आलय ] आलय रहित,  
 बिना मकान, एकान्त, निर्जन, अनिवसवास,  
 निराळा, एकान्त । [ रहित, कर्मिष्ठ, उद्योगी ।  
 निराजस्य तत्त्वं (वि०) [ निर + आलस्य ] आलस्य  
 निराजा दे० (वि०) एकान्त, निर्जल स्थान, जन  
 शून्य स्थान । [ लना ।  
 निराचना दे० (वि०) निराना, खेत से घास निका-  
 निराश तत्त्वं (वि०) आशाहीन, बेभरोस, हताश ।  
 निराश्रय तत्त्वं (वि०) [ निर + आश्रय ] आश्रय  
 शून्य, निराश, निराजम्ब ।  
 निरास तत्त्वं (गु०) [ निर + अस + घञ् ] निराक-  
 रण, दूरीकरण, खण्डन, निषेध, त्याग ।  
 निराहार तत्त्वं (वि०) [ निर + आहार ] अमेजन,  
 अनाशन, भोजनानाश, भूखा ।  
 निरिन्द्रिय तत्त्वं (वि०) [ निर + इन्द्रिय ] इन्द्रिय  
 शून्य, इन्द्रिय रहित, अंध, पशु प्रभृति ।  
 निरी (स्त्री०) केवल, निरा, निष्ट ।  
 निरीक्षक (गु०) देखने वाला, दर्शक, देख आल  
 करने वाला ।

निरीक्षण तत्त्वं (गु०) [ निर + ईक्ष् + अन् ] अव-  
 लोचन, देखन, दर्शन, ईक्षण ।  
 निरीक्षदेश तत्त्वं (गु०) निरक्षदेश, देश विशेष, पलभा  
 शून्य स्थान, पूर्व दिशा में भद्राश्ववर्ष में यमशेट  
 नामक स्थान । दक्षिण भारत में लङ्का, पश्चिम  
 दिशा में केतुमाजवर्ष में रोमकनामक स्थान,  
 उत्तरकुर्वर्ष में सिद्धपुरी ।  
 निरीश्वर तत्त्वं (गु०) [ निर + ईश्वर ] ईश्वरानाश-  
 वादी, नास्तिक ।—दर्शन (गु०) ईश्वर सत्ता न  
 माननेवाले शास्त्र, सांख्य जैन आदि ।—चाद  
 (गु०) परमेश्वर की सत्ता न मानने वाला सिद्धान्त,  
 नास्तिक सिद्धान्त ।—चादी (गु०) नास्तिक ।  
 निरीह तत्त्वं (गु०) [ निर + ईहा ] ईहा शून्य,  
 निरचेष्ट, निस्पृह, स्थिर, धीर, शिष्ट, यासना  
 रहित, निरभिहाष । इस शब्द का प्रयोग निरपराध  
 के अर्थ में करना अत्यन्त भूल है ।  
 निरुक्त तत्त्वं (गु०) वेदाङ्ग शास्त्र विशेष, इसमें वैदिक  
 शब्दों के कई प्रकार के अर्थ जिले गये हैं । यास्क  
 मुनि विरचित एक ग्रन्थ का नाम ।—नी (स्त्री०)  
 शब्दों की व्याख्या, व्याकरण के नियमानुसृत  
 शब्द व्याख्या ।  
 निरुत्तर तत्त्वं (वि०) [ निर + उत्तर ] उत्तर हीन,  
 अवाक उत्तर देने में असमर्थ ।  
 निरुत्साह तत्त्वं (वि०) [ निर + उत्साह ] उत्साहहीन,  
 निरचेष्ट, जो कोई काम उत्साहपूर्वक न करे ।  
 निरुत्सुक तत्त्वं (वि०) [ निर + उत्सुक ] अकुण्ठित,  
 निरुत्सुक, उत्सुकता रहित ।  
 निरुद्योग तत्त्वं (वि०) [ निर + उद्योग ] उद्यमहीन,  
 उद्यमानाश विशिष्ट, निरचेष्ट, निरुत्साह, विकाम ।  
 निरुपद्रव तत्त्वं (वि०) [ निर + उपद्रव ] उत्पात  
 रहित, दीरात्म्यहीन, शान्त, अचञ्चल ।  
 निरुपम तत्त्वं (वि०) [ निर + उपम ] अनुल, उपमा  
 शून्य, अनुपम, अपूर्व ।  
 निरुपाधि तत्त्वं (वि०) [ निर + उपाधि ] उपाधि-  
 हीन, अभ्याज, अकपट, निर्मल, शुद्ध ।  
 निरुपाय तत्त्वं (वि०) [ निर + उपाय ] उपाय रहित,  
 निराश्रय । [ काद, भस्वरूप, अरूप ।  
 निरूप तत्त्वं (वि०) अवयवहीन, कारणनिक, निरा-

निर् तत् ( उपसर्ग ) नहीं, विना, निश्चय, घाह, बाहर, उचित ।—केवल ( गु० ) शुद्ध, केवल, खालिस ।

निरङ्गुर तद् ( वि० ) निराकार, आकार रहित, आकार शून्य, प्राकृतिक आकार, मनुष्यों के आकार से रहित, ( पु० ) परमेश्वर, परमात्मा, विष्णु महात्मा ।

निरङ्कुश तद् ( गु० ) [ निर् + अङ्कुश ] अनिवार्य, स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी, नियमनिरादर पूर्वक कार्य-कर्त्ता, हठीला, जिद्दी ।

निरक्षदेश ( पु० ) भूमध्य रेखा के समीप की भूमि जहाँ रात और दिन एक परिमाण के होते हैं ।

निरक्षन ( पु० ) निरीक्षण, दर्शन ।

निरक्षर ( गु० ) अनपढ़, मूर्ख, अक्षर ज्ञान रहित ।

निरखना दे० ( कि० ) देखना, ताकना, निरीक्षण करना । [ निष्पृह ।

निरञ्जन तद् ( वि० ) निष्कलङ्क, निर्मल, तेजोमय,

निरत तद् ( वि० ) [ नि + र + क ] अतिशय अनुत्क, आसक्त, लगा हुआ, तत्पर किसी कार्य में निरन्तर लगा हुआ ।

निरति तद् ( स्त्री० ) अप्रति, अप्रेम, अस्नेह ।—शाय ( गु० ) सर्वोत्तम, शकृष्ट, सब से अच्छा ।

निरधार तद् ( पु० ) निर्धार, निश्चय, निर्णय ।

निरनुनासिक ( गु० ) वे अक्षर जिनका उच्चारण नासिका की सहायता से नहीं होता । [ अपार ।

निरन्त तद् ( वि० ) अन्त रहित, अन्त शून्य, अनन्त,

निरन्तर तद् ( वि० ) लगातार, नितवत निविद्ध, घन, अनवकाश, सर्वदा, अविच्छेद, अनवरत, असीम, अपरिधान, अमेद, सदृश, समान, सघन, सदा हुआ ।

निरन्तराभ्यास तद् ( पु० ) [ निरन्तर + अभ्यास ] स्वाध्याय, वेदाध्ययन, पठित शास्त्रों का अभ्यास ।

निरन्तराल तद् ( वि० ) [ निर् + अन्तराल ] अविच्छेद, निवकाश, अवकाश शून्य ।

निरञ्ज तद् ( वि० ) [ निर् + अञ्ज ] अस्त्राभाव, अनाहार, शून्य, विना अन्न का ।

निरपत्य तद् ( वि० ) [ निर् + अपत्य ] निःसन्तान, पुत्र कन्याविहीन, सन्तानहीन ।

निरपराध तद् ( गु० ) [ निर् + अपराध ] अपराध शून्य, दोष रहित, निष्पाप, निर्दोष । [ अनुद्देग ।

निरपाय तद् ( पु० ) [ निर् + अपाय ] रक्षा, निर्विघ्न,

निरपेक्ष तद् ( पु० ) [ निर् + अपेक्ष ] स्वाधीन, अनपेक्ष, उदासीन, जापरवाह ।—ति ( गु० ) अनावश्यक, अनचाहा ।

निरमोही ( गु० ) मोहरहित, जिसे किसी प्रकार का मोह न हो ।

निरय तद् ( पु० ) नरक, दुःख भोगस्थान । [ बेमर्याद ।

निरवधि तद् ( वि० ) अवधि रहित, बेहद, निस्सीम,

निरगल तद् ( गु० ) [ निर् + अगल ] अवाध, अप्रति-यन्त्रक, घेरोकटोक ।

निरर्थक तद् ( वि० ) [ निर् + अर्थक ] अनर्थक, अप्रयोजन, व्यर्थ, विकृत, वृथा, निष्फल, अवैधीन ।

निरवच्छिन्न ( वि० ) लगातार, क्रमशः, क्रम वद्ध ।

निरवद्य ( गु० ) दोषशून्य, शुद्ध, स्वच्छ ।

निरवधि ( गु० ) सीमा रहित ।

निरवयव ( गु० ) निराकार ।

निरवाना ( कि० ) निराई करवाना ।

निरवारना ( कि० ) टाकना, हटाना, निवारण करना ।

निरशन ( पु० ) अपवास, कड़ाका ।

निरस्त तद् ( पु० ) नीरस, रसहीन, रसाभाव, शुष्क ।

निरसन तद् ( पु० ) [ निर् + अस + अनट् ] प्रत्या-श्यान, निराकरण, खण्डन, निचेप, विसर्जन ।

निरस्त तद् ( वि० ) [ निर् + अस + क ] प्रत्याख्यात,

निराकृत, निवारित, हटाया हुआ, हराया गया, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, त्यक्त ।

निरस्त्र तद् ( वि० ) [ निर् + अस्त्र ] अस्त्र रहित, बे हथियार का, खाली हाथ । [ एकाकी ।

निरा दे० ( अ० ) केवल, मात्र, असहाय, अन्य रहित,

निराई ( स्त्री० ) निराने का काम ।

निराकरण ( पु० ) फैसला, निवटारा, सन्देह को दूर करना, शक मिटाना ।

निराकार तद् ( वि० ) [ निर् + आकार ] आकार

रहित, अशरीर, शून्य, सूना । ( पु० ) आकाश, परमेश्वर, विष्णु, ब्रह्मा, शिव ।

निराकाङ्क्षी तद् ( वि० ) निस्पृह, सन्तुष्ट, शान्त ।

निराकुल ( गु० ) निराङ्क, निश्चिन्त, व्याकुल नहीं ।

निर्मम तत् ( वि० ) निर्मोही, निर्लोभ, ममताहीन, अनुराग शून्य, निरुद्ध, ममता रहित ।

निर्मर्याद तत् ( वि० ) [ निर् + मर्याद ] अनादरकारी, मान्यताहीन, मर्यादाशून्य, अपमानकारी ।

निर्मल तत् ( वि० ) मल रहित, स्वच्छ, परिष्कृत, शुद्ध, उज्ज्वल ।—ता ( स्त्री० ) शुद्धता, परिष्कार ।

निर्मली दे० ( स्त्री० ) फट विशेष. कतक फल ।

निर्मलोल्लस तत् ( पु० ) [ निर्मल + लस ] स्फटिक ।

निर्माण तत् ( पु० ) [ निर् + मा + घनट् ] बनावट, गठन, रचना, ग्रन्थन, सृष्टिकरण ।

निर्माता तत् ( पु० ) [ निर् + मा + तृ ] निर्मात्र कारक, निर्माणकर्ता, रचक, रचयिता, रचने वाला, बनाने वाला ।

निर्मात्य तत् ( पु० ) [ निर् + मात्य ] देवोच्छिष्ट द्रव्य, जिसे देव पुत्र आदि, देवप्रसाद, देवदत्त वस्तु, प्रसाद, नैवेद्य । ( वि० ) बासा पुत्र आदि, पर्वयिन द्रव्य ।

निर्मित तत् ( वि० ) [ निर् + मा + क ] गठित, रचित, कृत, बनाया हुआ निर्माण किया हुआ, रचा हुआ, गढ़ा हुआ, रचना किया हुआ ।

निर्मिति तत् ( स्त्री० ) [ निर् + मा + क्ति ] निर्माण, गठन, रचन, करण ।

निर्मूल तत् ( वि० ) [ निर् + मूल ] मूल रहित, उखाड़ा हुआ, जड़ से खोड़ा हुआ, बिना जड़ का, बिना मूल का । ( पु० ) घँस, नाश, उच्छेद ।

निर्मोक तत् ( पु० ) [ निर् + मुच् + घञ् ] कंचली, सपरिवर्क, साँप का छोड़ा हुआ कञ्चुक, गरमी के दिनों में बिप से अधिक सन्तप्त होकर साँप अपने ऊपर का चमड़ा छोड़ देते हैं यह उनका स्वाभाव है, केसुल, केसुली ।

निर्मोह तत् ( वि० ) [ निर् + मुह् + घञ् ] निर्दय, कठोर, कठिन हृदय का ।—ी ( शु० ) प्रेमशून्य, दयाशून्य, अनुराग रहित ।

निर्यातन तत् ( वि० ) [ निर् + यत् + लिच् + घनट् ] प्रतिहिंसा, वैशोचन, अपकार का बदला, शत्रुता चुक्राना. दान, त्याग, रस्ती हुई वस्तु को लौटाना, श्रावण का परिशोध, मारण, हत्या ।

निर्याम तत् ( पु० ) [ निर् + याम ] कषाय, कथ, चूर्वा का रस, गोद, काड़ा, मीमांसा, सिधर, मिश्रण ।

निर्युक्ति तत् ( स्त्री० ) [ निर् + युज् + क्ति ] युक्ति रहित, अनुपयुक्त, अनुचित ।

निर्युक्तिक तत् ( वि० ) [ निर् + युक्ति ] युक्ति रहित, अयुक्तिक, मनगढ़न्त, अनुचित, अनुरयुक्त ।

निर्योगक्षेम तत् ( वि० ) निश्चित, धिन्ता शून्य, चिन्ता रहित । [ अनपत्रप. नकटा, वेदया, येरामे ।

निर्लज्ज तत् ( वि० ) [ निर् + लज्जा ] लज्जाहीन

निर्लिप्त तत् ( वि० ) [ निर् + लिप् + क ] लेप रहित निर्लेप, अनाशक्त, बेलाग, बेलास ।

निर्लेप तत् ( वि० ) [ निर् + लिप् + घञ् ] लेपशून्य सङ्ग रहित, पापशून्य, स्वतन्त्र ।

निर्लेश तत् ( वि० ) लेश रहित, सर्वथा प्रभाव ।

निर्लोभ तत् ( वि० ) लोभरहित, लोभहीन, अलोभी ।

निर्वाचक तत् ( वि० ) [ निर् + वाचक ] चुननेवाला, निर्देशकर्ता, निर्देशकारी ।

निर्वाचन तत् ( पु० ) [ निर् + वच् + लिच् + घनट् ] चुनाव, किसी समूह से अपने मनोमत को निकाल लेना, समुदाय से किसी एक को चुनना ।

निर्वाण तत् ( पु० ) [ निर् + वा + क ] अस्तगमन, निर्वृत्ति, गजगमन, हाथी का स्नान, मग्न, अपवर्ग, मोक्ष, विद्यान्ति, विद्याम, निश्चल, शून्य, विद्या का उद्देश, नमि देश में जप करने योग्य प्रणव श्रीर मातृका संप्रतिन मूलमन्त्र ।—मस्तक ( पु० ) परित्राय, रक्षा, मोक्ष ।—सुख ( पु० ) मोक्ष का आनन्द, ब्रह्मानन्द, मुक्ति, मोक्ष, वैकुण्ठ ।

निर्घेश तत् ( वि० ) बंशहीन, निःसंगान, सपुत्रक ।

निर्वात तत् ( वि० ) [ निर् + वात ] वायु रहित स्थान, वह स्थान जहाँ वायु न जा सके ।

निर्वाध तत् ( वि० ) [ निर् + वाधा ] बाधा रहित, अकण्टक, सुगम, सरल ।

निर्वापण तत् ( पु० ) [ निर् + वप् + लिच् + घनट् ] त्याग, दान, प्राणनाश, वध, बुझाना, समाप्त होना, निरोप होना ।

निर्वास तत् ( पु० ) [ निर् + वस् + घञ् ] वहिर्हरण, दूरीकरण, बाहर कर देना, निकाल देना ।

निर्वासक तत् ( पु० ) निकालने वाला, निकाल देने वाला, बाहर करने वाला ।

निरूपण तत् ( पु० ) [ नि + रूप् + अन्ट् ] निर्णय  
करना, वितर्क करना, स्थिर करना, अवधारण ।  
निरूपित तत् ( वि० ) [ नि + रूप् + क्त ] कृानिरू-  
पण, निर्णय किया हुआ, विस्तारपूर्वक कथित,  
निर्णीत । [ ताकना, अवलोकन करना ।  
निरेखना दे० ( क्रि० ) निरीक्षण करना, देखना,  
निरेट दे० ( वि० ) निगर, पोड़ा, टोस ।  
निरोग तद् ( वि० ) रोग रहित, सुस्थ, आरोग्य,  
भला, चंगा ।—१ ( गु० ) रोग मुक्त, रोगरहित ।  
निरोध तद् ( पु० ) [ नि + रुध् + अल् ] वेष्टन,  
अवरोध, घेरा, फाँस ।—क ( गु० ) रोकने वाला  
रुकावट डालने वाला, घेरा डालने वाला ।—न  
( पु० ) रोक, घाम, रुकावट । [ निकला हुआ ।  
निर्गत तद् ( वि० ) [ निर् + गम् + क्त ] निःसृत,  
निर्गन्ध तद् ( वि० ) निकल कर ।  
निर्गन्ध तद् ( वि० ) गन्धशून्य, गन्धहीन ।  
निर्गम तद् ( पु० ) [ निर् + गम् + अञ् ] बाहिर  
जाना, निकलना, निःसरण । [ करना, पलायन ।  
निर्गमन तद् ( पु० ) बाहिर जाना, निकलना, प्रस्थान  
निगुण या निगुन तद् ( पु० ) त्रिगुणातीत, सर्व  
रज और तम इन तीन गुणों से अतीत, परमेश्वर,  
विद्या आदि सद्गुणों से शून्य, गुणहीन, निरुद्ध,  
मूर्ख । [ विशेष, एक औपच्य का नाम, सेभाल ।  
निगुण्डो तद् ( स्त्री० ) नीलशेकालिकापुष्प, पुष्प  
निघण्ट तद् ( पु० ) कोश, शब्दाद्यं निरूपक पुस्तक,  
सूची, वृक्षगुणागुण दर्शक ग्रन्थ ।  
निर्द्वज ( गु० ) द्वालहीन, कपट हीन ।  
निजन तद् ( वि० ) एकान्त, जनशून्य, जनहीन,  
विजन, निभृत । [ जरा रहित ।  
निर्जर तद् ( पु० ) अमर, देवता, देव । ( वि० ) अजर,  
निजल तद् ( वि० ) जलशून्य देश आदि, मरुभूमि ।  
—एकादशी ( स्त्री० ) जेठ की शुक्ला एकादशी ।  
निर्जित तद् ( वि० ) प्राप्त पराजय, परास्त, परा-  
जित, वशीभूत ।  
निर्जोष तद् ( वि० ) जीवात्मा रहित, प्राणशून्य,  
जड़, अचेत, मरा हुआ, मृत, दुर्बल, अन्त ।  
निर्भर तद् ( पु० ) प्रयत्न से गिरनेवाला जल प्रवाह, प्रवाह  
का भरना, भरना, सोत, सोता चरमा, सूर्य का घोड़ा ।

निर्भरिणो तद् ( स्त्री० ) नदी, सोतस्त्रिनी ।  
निर्णय तद् ( पु० ) निश्चय, सफाई, स्वच्छता, फरि-  
याव, अवधारण, स्थिरीकरण, विचार, तर्क, चर्चा,  
विरोध परिहार, सिद्धान्त ।—कर्त्ता ( पु० )  
निश्चयकर्त्ता, निर्णयकारक, अवधारक ।  
निर्णयोपमा ( स्त्री० ) अलङ्कार विशेष जिसमें उपमेय  
और उपमान के गुणों का विवेचन किया जाता है ।  
निर्णीत तद् ( वि० ) कृतनिश्चय, स्थिरीकृत, निष्पन्न,  
सिद्ध, निश्चय किया हुआ ।  
निर्णैता तद् ( पु० ) निश्चयकारक, अवधारणकर्त्ता ।  
निर्दंष्ट दे० ( स्त्री० ) कठोर अन्तःकरण वाला, निर्दय,  
दयाहीन, दयाशून्य ।  
निर्दय तद् ( वि० ) निष्ठुर, कठिन, दयाशून्य ।  
—ता ( स्त्री० ) निष्ठुरता, दयाशून्यता ।  
निर्दयता ( स्त्री० ) क्रूरता, कठोरता । [ कथित ।  
निर्दिष्ट तद् ( वि० ) निरूपित, स्थिरीकृत, निश्चित,  
निर्देश तद् ( पु० ) [ निर् + दिश् + अल् ] आज्ञा,  
आदेश, प्रस्ताव, कथन, निरूपण, निर्णय ।  
निर्दोष तद् ( वि० ) दोष रहित, अपराध शून्य,  
निष्कलङ्क, निष्पाप ।  
निर्धन तद् ( वि० ) धनशून्य, धनहीन, दरिद्र,  
कंगाल, रंक ।—ता ( स्त्री० ) कंगाली, गरीबी ।  
निर्धर्म तद् ( वि० ) धर्मरहित, धर्मशून्य, अधार्मिक ।  
निर्धार तद् ( पु० ) निश्चय, निर्णय, जाति गुण  
और क्रिया के उत्तरक अथवा अपकर्ष के द्वारा  
प्रजातीय से पृथक् करना । [ करना ।  
निर्धारण तद् ( पु० ) निश्चय, निर्णय करना, स्थिर  
निर्पक्ष तद् ( वि० ) निष्पन्न, अनाद्य, दीन, असहाय ।  
निर्द्वज ( गु० ) निष्कल ।  
निर्द्वज तद् ( गु० ) द्वालहीन, अवल, अशक्त, दुर्बल ।  
निर्वाचन ( पु० ) चुनाव, निर्णय ।  
निर्वासन तद् ( पु० ) दूरीकरण, नगर आदि से  
बाहर करना, देश निकाला देना ।  
निर्वुद्धि तद् ( वि० ) असमक, अज्ञान, ज्ञानहीन,  
अज्ञोद्य, मूर्ख ।  
निर्वृद्ध दे० ( वि० ) अयुक्त, नासमक, मूर्ख ।  
निर्भय तद् ( वि० ) भय रहित, निडर, साहसी, धृष्ट,  
कोठ ।

निर्मम तत् ( वि० ) निर्मोही, निर्लोभ, ममताहीन, अनुराग शून्य, निस्पृह, ममता रहित ।  
 निर्मर्याद तत् ( वि० ) [ निर् + मर्याद ] अनादरकारी, सामान्यताहीन, मर्यादाशून्य, अपमानकारी ।  
 निर्मज्ज तत् ( वि० ) मज्ज रहित, स्वच्छ, परिष्कृत, शुद्ध, उज्जला ।—ता ( स्त्री० ) शुद्धता, परिष्कार ।  
 निर्मली दे० ( स्त्री० ) फत्र विशेष, कतक फत्र :  
 निर्मलोपल तत् ( पु० ) [ निर्मल + उपल ] स्फटिक ।  
 निर्माण तत् ( पु० ) [ निर् + मा + अनट् ] बनावट, गठन, रचना, प्रस्थान, सृष्टिकारण ।  
 निर्माता तत् ( पु० ) [ निर् + मा + ट् ] निर्माण कारक, निर्माणकर्ता, रचक, रचयिता, रचने वाला, बनाने वाला ।  
 निर्माह्य तत् ( पु० ) [ निर् + माह्य ] देवोच्छिष्ट द्रव्य, निवेद्यत पुष्प आदि, देवप्रसाद, देवदत्त वस्तु, प्रसाद, नैवेद्य । ( वि० ) बासा पुष्प आदि, पर्युपिण द्रव्य ।  
 निर्मित तत् ( वि० ) [ निर् + मा + क ] गठित, रचित, कृत, बनाया हुआ निर्माण किया हुआ, रचा हुआ, गढ़ा हुआ, रचना किया हुआ ।  
 निर्मित तत् ( स्त्री० ) [ निर् + मा + क्ति ] निर्माण, गठन, रचन, करण ।  
 निर्मूल तत् ( वि० ) [ निर् + मूल ] मूल रहित, उखड़ा हुआ, जड़ से खोदा हुआ, बिना जड़ का, बिना मूल का । ( पु० ) ध्वंस, नाश, उच्छेद ।  
 निर्मोक्ष तत् ( पु० ) [ निर् + मुक् + घञ् ] कंघड़ी, सर्पत्थक, साँप का छोड़ा हुआ कञ्जुक, गरमी के दिनों में विष से अधिक सन्तप्त होकर साँप अपने ऊपर का चमड़ा छोड़ देते हैं यह उनका स्वभाव है, केसुल, केसुली ।  
 निर्मोह तत् ( वि० ) [ निर् + मुह + घञ् ] निर्दय, कठोर, कठिन हृदय का ।— ( पु० ) प्रेमशून्य, दयाशून्य, अनुराग रहित ।  
 निर्यातन तत् ( वि० ) [ निर् + यत् + णिच् + अनट् ] प्रतिहिंसा, वैशोचन, अपकार का बदला, शत्रुता चुक्राना, दान, त्याग, रखी हुई वस्तु को लौटाना, घृष्ट का परिशोध, मारक, हत्या :  
 निर्वास तत् ( पु० ) [ निर् + वास ] कषाय, काग, चूर्वा का रस, मोद, काड़ा, मीमांसा, स्थिर, निश्चय ।

निर्युक्ति तत् ( स्त्री० ) [ निर् + युज् + क्ति ] युक्ति रहित, अनुपयुक्त, अनुचित ।  
 निर्युक्तिक तत् ( वि० ) [ निर् + युक्ति ] युक्ति रहित, अयौक्तिक, मनगढ़न्त, अनुचित, अनुपयुक्त ।  
 नियोगक्षेम तत् ( वि० ) निश्चिन्त, चिन्ता शून्य, चिन्ता रहित । [ अनपत्रप, नकटा, वेहया, येरमे ।  
 निर्लज्ज तत् ( वि० ) [ निर् + लज्जा ] लज्जाहीन  
 निर्लिप्त तत् ( वि० ) [ निर् + लिप् + क् ] लेपरहित निर्लेप, अनाशक्त, बेलाग, बेलास ।  
 निर्लेप तत् ( वि० ) [ निर् + लिप् + क् ] लेपशून्य सज्ज रहित, पापशून्य, स्वतन्त्र ।  
 निर्लेश तत् ( वि० ) लेश रहित, सर्वथा अभाव ।  
 निर्लोभ तत् ( वि० ) लोभरहित, लोभहीन, अलोभी ।  
 निर्वाचक तत् ( वि० ) [ निर् + वाचक ] चुननेवाला, निर्देशकर्ता, निर्देशकारी ।  
 निर्वाचन तत् ( पु० ) [ निर् + वच् + णिच् + अनट् ] चुनाव, किसी समूह से अपने मनोमत को निकाल लेना, समुदाय से किसी एक को चुनना ।  
 निर्वाण तत् ( पु० ) [ निर् + वा + क् ] शरदगमन, निर्वृत्ति, गमनसन्न, हाथी का स्नान, सहम, अपवर्ग, मोक्ष, विभ्रान्ति, विश्राम, निश्चय, शून्य, विद्या का उद्देश, नामि देश में जप करने योग्य प्रणव और मातृका संप्रदित मूलमन्त्र ।  
 —मस्तक ( पु० ) परित्राण, रचा, मोक्ष ।—सुख ( पु० ) मोक्ष का आनन्द, प्रज्ञानन्द, सुक्ति, मोक्ष, वैकुण्ठ ।  
 निर्वेश तत् ( वि० ) वंशहीन, निस्तरान, प्रपुत्रक ।  
 निर्वात तत् ( वि० ) [ निर् + वात ] वायु रहित स्थान, वह स्थान जहाँ वायु न जा सके ।  
 निर्वाध तत् ( वि० ) [ निर् + बाधा ] बाधा रहित, अकण्टक, सुगम, सरल ।  
 निर्वापण तत् ( पु० ) [ निर् + वप् + णिच् + अनट् ] त्याग, दान, प्राणनाश, वध, बुझाना, समाप्त होना, निःशेष होना ।  
 निर्वास तत् ( पु० ) [ निर् + वास् + घञ् ] वहिष्करण, दूरीकरण, बाहर कर देना, निकाल देना ।  
 निर्वासक तत् ( पु० ) निकालने वाला, निकाल देने वाला, बाहर करने वाला ।

निर्वासित तत् ( वि० ) [ निर् + वस् + णिच् + क ]  
दूरीकृत, निकाला गया ।

निर्वास्य तत् ( गु० ) [ निर् + वस् + ण्यञ् ] निर्वा-  
सन योग्य, निकालने योग्य, अपराधी ।

निर्वाह तत् ( पु० ) [ निर् + वह् + घञ् ] निष्पति,  
समाप्तिविधा, कार्यसाधन ।

निर्विकल्पक तत् ( पु० ) ज्ञान विशेष, सामान्य ज्ञान,  
भेद, भ्रमशून्य।—समाधि ( पु० ) ज्ञातृज्ञान आदि  
भेद के नाश होने के कारण अद्वितीय वस्तु के  
आकार से आकारित होकर एक रूप से अवस्थान,  
परमात्मा, साक्षात्कार ।

निर्विकार तत् ( वि० ) विकार शून्य, विकाश रहित,  
निर्दोष, घृणा रहित, एक रस, एक भाव ।

निर्विघ्न तत् ( वि० ) अबाध, जिसमें किसी प्रकार  
बाधा न हो, अक्रोश, अनुद्वेग, विघ्न रहित, अङ्ग-  
चन शून्य ।

निर्विवेक तत् ( वि० ) निर्बोध, विचार रहित ।

निर्विवाद तत् ( वि० ) विवाद शून्य, आपत्तिहीन ।

निर्विशङ्क तत् ( वि० ) निर्भय, साहसी, निडर ।

निर्वाञ्ज तत् ( वि० ) बीज रहित, खूना, छूँछा ।  
—समाधि ( स्त्री० ) समाधि विशेष ।

निर्वार तत् ( वि० ) वीर शून्य, वीरहीन ।

निर्वृत्ति तत् ( स्त्री० ) सिद्धि, निष्पत्ति, वृत्ति रहित ।

निर्वेद तत् ( पु० ) अपनी अवज्ञा, स्वावमानन,  
आत्मावहेलन ।

निर्वेर तत् ( वि० ) शत्रु रहित, अज्ञात शत्रु । { बदर ।

निर्व्याज तत् ( वि० ) कपट शून्य, निकपट, सरल,

निर्व्याधि तत् ( वि० ) व्याधि हीन, अरोग, निरोग ।

निर्विरण्य तत् ( वि० ) [ निर् + ह् + घञ् ] शय  
बहिष्करण, मुर्दा निकालना, रथी निकालना ।

निर्वेतुक तत् ( वि० ) प्रयोजन शून्य, अहेतुक, अका-  
रण्य, निष्कारण ।

निज ( पु० ) विभीषण के राक्षस मंत्री का नाम ।

निजज या निजज्ज तत् ( वि० ) निज्जज्ज, लज्जा-  
हीन, बेहया, बेशर्मे ।

निलय तत् ( पु० ) गृह, निवास, आलय ।

निलाम दे० ( पु० ) सबसे अधिक दाम लगाने वाले  
के हाथ किसी वस्तु के बेचने की रीति ।

निलीन तत् ( वि० ) खूब छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त,  
गुह्य, तिरोहित । [ निवारण कर्त्ता ।

निवर ( पु० ) निरर्थक करने वाला, पचाने वाला,  
निवरा तत् ( स्त्री० ) कुमारी, अविवाहिता ।

निवर्तन तत् ( पु० ) लौटाना, रोकना, वापस आना ।

निषह ( पु० ) समूह, मुँड, वृक्ष ।

निवाजना ( क्रि० ) दया करना, रक्षा करना ।

निवात ( पु० ), आत हीन प्रदेश, वह स्थान जहाँ  
पवन न आ जा सके ।

निवातकवच तत् ( पु० ) दैत्य विशेष, यह दैत्य  
ब्रह्मा का पुत्र और दैत्यपति हिरण्यकशिपु का  
पौत्र था । इसके वंशज दानव निवातकवच के नाम  
से प्रसिद्ध हैं । महाभारत में इनकी संख्या तीन  
कोटि लिखी हुई है । यह दानवों का दल देवों  
का प्रबल शत्रु है । पाण्डवों के वनवास के समय  
अर्जुन इन्द्र से अश्वविद्या सीखने के लिये स्वर्ग गये  
थे । इन्द्रादि देवों से और अश्वविद्या में निपुण  
युद्ध तथा गन्धर्वों से उन्होंने अश्वविद्या सीखी ।  
अश्वविद्या की शिक्षा समाप्त होने पर अर्जुन से  
गुरुदक्षिणा देने के लिये इन्द्र ने कहा । जब अर्जुन  
ने गुरुदक्षिणा देना स्वीकार की, तब इन्द्र ने  
निवातकवच राक्षसों का बध ही गुरुदक्षिणा में  
माना । मातङ्गी परिचालित दिव्य रथ पर चढ़कर  
अर्जुन निवातकवच राक्षसों के वासस्थान पर  
पहुँचे । उनके साथ अर्जुन का घोर युद्ध हुआ ।  
वस युद्ध में निवातकवच का समूह विनाश हुआ ।  
इन दानवों का वासस्थान रसातल में था ।

निवान दे० ( वि० ) नीवान, गहराई, निम्नता,  
तला, निचाई, अधः । [ दोहर करना ।

निवाणा दे० ( क्रि० ) मुकाना, निहुराना, मोहना,

निवार दे० ( पु० ) रोक, कोर, पटी, जिससे पलंग  
बिने जाते हैं । [ मना करने वाला ।

निवारक तत् ( पु० ) दूर करने वाला, रोकने वाला,

निवारण तत् ( पु० ) रोक, रुकावट, अटकाव, बाधा  
दूर करना, निवारना, हटाना, प्रशमित करना,  
व्यशमित करना ।

निवारत दे० ( क्रि० ) बचावत, बचाता है, रक्षा  
करता है, रोकता है ।

निवारना दे० ( क्रि० ) रोकना, बचाना, बजना, हटाना, दूर करना ।  
 निवारा तद्० ( पु० ) जलक्रीड़ा, नाव फेरना ।  
 निवारि दे० ( क्रि० ) बचा कर, रोक कर, बरज कर, मने कर, हटक कर ।  
 निवारी ( स्त्री० ) फूल विशेष, जो चैत्र में फूलता है ।  
 निवारित तद्० ( वि० ) बचाया हुआ, रोक हुआ, रचित किया हुआ, हटका हुआ ।  
 निवाला ( पु० ) कौर, प्राप्त ।  
 निवास तद्० ( पु० ) [ नि + वस् + घञ् ] वासस्थान, देश, मकान, जगह, घर, गृह, निष्ठ ।  
 निवासी तद्० ( वि० ) रहने वाला, बसने वाला, वासकर्ता ।  
 निविड या निविर तद्० ( वि० ) सघन, घना, बहुत सटा हुआ, एक से एक मिला हुआ । [ हुआ ।  
 निविष्ट ( पु० ) लगा हुआ, तत्पर, जिन, निपटा  
 निवीत ( पु० ) गले से लटका हुआ, यज्ञोपवीत, चादर ।  
 निवृत्त दे० ( क्रि० ) निपट कर, अवकाश पाकर ।  
 निवृत्त ( पु० ) छूटा हुआ, विरक्त । [ विश्राम ।  
 निवृत्ति तद्० ( स्त्री० ) अवकाश, बन्धन मुक्ति, निवेदक ( पु० ) प्रार्थी, निवेदन करने वाला ।  
 निवेदन तद्० ( पु० ) प्रार्थना, विनती, अभिलाष प्रकाश, मनोरथ कथन ।—पत्र ( पु० ) प्रार्थनापत्र ।  
 निवेदित तद्० ( वि० ) अर्पित, समर्पित, दिया हुआ, निवेदन किया हुआ, दान किया हुआ ।  
 निवेदना ( क्रि० ) समाप्त करना, किसी झगड़े का निर्णय कर उसे समाप्त करना ।  
 निवेरा ( पु० ) खुना हुआ, छाँटा हुआ निर्वाचित ।  
 निवेश ( पु० ) पड़ाव, शिपिर, रास्ते में ठहरने की जगह ।  
 निशङ्क तद्० ( वि० ) शङ्का रहित, शङ्का शून्य, निर्भय, निडर, निःसन्देह, निःसंशय ।  
 निशचर ( पु० ) राक्षस । ( पु० ) रात में चञ्चल होने वाला ।  
 निशमन ( पु० ) देखना, सुनना ।  
 निशा तद्० ( स्त्री० ) रात्रि, रजनी, शर्वरी, यामिनी, रात, हरिद्रा, हृदी ।—कर ( पु० ) चन्द्रमा, विषु-  
 ह्नु ।—गम ( पु० ) [ निशा + आगम ] रात्रि

का आगम, सन्ध्या, सन्ध्याकाल, साँझ ।—चर ( पु० ) राक्षस, चोर, शृगाल, बलूक, बरलू, सर्प, चक्रवाक, चकवा पक्षी ।—चरी ( स्त्री० ) राक्षसी, वेश्या, कुलटा ।—चारी ( पु० ) रात में चञ्चल होने वाला ।—टन ( पु० ) [ निशा + घटन ] बलूक, बरलू ।—न्त ( पु० ) [ निशा + अन्त ] रात्रि का अन्तकाल, प्रभात, प्रातःकाल, माहमुहूर्त ।  
 —पति ( पु० ) चन्द्र, विषु, शराधर, कपूर, कपूर ।—वसान ( पु० ) [ निशा + वसवान् ] रात्रि शेष, प्रभातकाल, उषा ।  
 निशात तद्० ( वि० ) शायित, तीक्ष्णीकृत, शान दिया हुआ, पैनाया हुआ ।  
 निशान दे० ( पु० ) बड़े स्वजा, जो राजाओं का राज-चिह्न है ।—१ ( पु० ) लक्ष्य ।—२ ( स्त्री० ) चिह्न, स्मरण करने का साधन ।  
 निशि तद्० ( स्त्री० ) निशा, रात्रि, रात ।—चर ( पु० ) निशाचर, चन्द्रमा ।—नाथ ( पु० ) चन्द्रमा, चाँद ।—मुख ( पु० ) प्रदोष, सन्ध्यकाल ।  
 —मातु ( पु० ) चन्द्रमा ।  
 निशित तद्० ( वि० ) तीखा, तीक्ष्ण, पैना, पैनी ।  
 निशीथ तद्० ( पु० ) अर्द्धरात्रि, आधीरात, रात्रि मध्य ।  
 निशीथिनी तद्० ( स्त्री० ) रात, रात्रि, रजनी ।  
 निशुम्भ तद्० ( पु० ) विख्यात दानव, यह कश्यप के औरस और उसकी पत्नी दनु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । इसके उपेष्ट भाई का नाम शुम्भ और छोटे का नाम नमुचि था । नमुचि को इन्द्र ने मारा था । छोटे भाई की मृत्यु से शुम्भ और निशुम्भ ये दोनों अत्यन्त क्रोधित हुए और इन दोनों महा-वीरों ने इन्द्र पर चढ़ाई की देवताओं को स्वर्ग से निकाल कर ये स्वयं स्वर्ग के अधीश्वर बन बैठे । एक समय महिषासुर के मन्त्री रक्षवीज नामक प्रसिद्ध दानव से इनकी भेंट हुई । इन दोनों ने रक्षवीज से सुना कि विन्ध्य पर्वत पर कात्यायनी देवी के हाथ महिषासुर मारा गया और उसके सेनापति चण्ड और मुरड भय से जल में छिपे हुए हैं । इन्होंने कात्यायनी देवी का नारा करने के लिये संकल्प किया और चण्ड मुरड से भी साक्षात्



किया। अथ इन लोगों ने सुधीर नामक दूत को देवी के निकट भेजा। दूत देवी के निकट जाकर कहने लगा—पृथिवी में शुम्भ और निशुम्भ से वद कर दूसरा वीर नहीं है और तुम भी इस संसार में सर्वोत्तम सुन्दरी हो अतएव तुमको उचित है कि इन दोनों में जिससे चाहो तुम अपना विवाह कर लो। देवी ने कहा—तुम जो कहते हो वह बहुत ठीक है परन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा की है कि जो युद्ध में मुझको हरा देगा उसी से मैं अपना ब्याह करूँगी। शुम्भ के पास जाकर दूत ने ये बातें कहीं। धूम्रलोचन नामक दैत्य को उन लोगों ने देवी को पकड़ लाने के लिए भेजा। धूम्रलोचन को देवी ने मार डाला। तब चण्ड और मुण्ड को शुम्भ ने देवी के पास भेजा। चण्ड मुण्ड की भी वही दशा हुई। चण्ड मुण्ड के मारे जाने पर तीस कोटि अश्वहिंशी सेना के साथ रक्तबीज भेजा गया। देवी के साथ रक्तबीज यही वीरता से लड़ा, परन्तु अन्त में वह भी मारा गया। अथ अगला शुम्भ और निशुम्भ युद्धक्षेत्र में उपस्थित हुए और मन भर लड़ कर, इन्होंने भी वीरों के समान गति पाई।—मर्दिनो ( स्त्री० ) दुर्गादेवी, काल्यायनी देवी।

निशेप ( पु० ) निशाकर, चन्द्रमा।

निश्चय तत्त्वं ( पु० ) स्थिर, अचञ्चल, असंशय, निरर्थक, सिद्धान्त, अवधारण, विरवास, प्रतिज्ञा, स्पष्ट, अवश्य।—आत्मक ( पु० ) यथार्थ, निरसन्देहात्मक।

—ज्ञान ( पु० ) दृढप्रत्यय, श्रद्धा।

निश्चर ( पु० ) ११ वे मन्वन्तर के सप्तविंशों में से एक ऋषि का नाम।

निश्चल तत्त्वं ( वि० ) अचल, स्थिर ( पु० ) पर्वत, वृक्ष, स्थावर।

निश्चला तत्त्वं ( वि० ) अचला, स्थिरा ( स्त्री० ) पृथिवी, भूमि।

निश्चित तत्त्वं ( वि० ) निर्णीत, स्थिरीकृत, निश्चय किया हुआ।—कर्मा ( वि० ) स्थिरकर्मा, दृढकर्मा।

निश्चिन्त तत्त्वं ( वि० ) चिन्ताहीन, अस्थिर, उद्वेग शून्य, चिन्ता रहित, बेचिन्ता।

निश्चेष्ट तत्त्वं ( वि० ) चेष्टा, अचेष्ट, मूर्च्छा प्राप्त, बेहोश

निश्चिद्र तत्त्वं ( वि० ) छिद्र रहित, दोष रहित।

निश्च्येयस ( पु० ) सुक्ति, मोक्ष।

निश्वास तत्त्वं ( पु० ) [ नि + श्वास + घञ् ] प्राणवायु, श्वास, साँस।—संहिता ( स्त्री० ) शिव प्रणीत शास्त्र विशेष।

निशेप ( पु० ) समाप्त, जिसका कुछ भी न बचा हो।

निपट् तत्त्वं ( पु० ) तूष्ण, याग रखने की धैली, भावा, तूणीर, तरकस।

निपण्य तत्त्वं ( वि० ) ध्रुव्य, विपण्य, उपविष्ट, बैठा हुआ।

निपथ तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विशेष, देशविशेष, निपथ देश का राजा, निपाद, स्वर। [ धोवर विशेष।

निपाद तत्त्वं ( पु० ) स्वर विशेष, पहला स्वर, चाण्डाल,

निपिद्ध तत्त्वं ( वि० ) निपेध का विषय, वञ्चित, निवारित, रोका, प्रतिपेधित, मना किया हुआ।

निपिद्धाचरण तत्त्वं ( वि० ) अकर्मकरण, शास्त्र विरुद्ध आचरण।

निपूदन ( पु० ) नाशकर्ता, मारने वाला।

निपेक तत्त्वं ( पु० ) संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार।

निपेचन ( पु० ) खेत आदि का सींचना।

निपेध तत्त्वं ( पु० ) प्रतिपेध, निवृत्ति, निवारण, वारण, मना करना।—पञ्च ( पु० ) निपेध की आज्ञा सूचक पत्र। [ रोकने वाला।

निपेधक तत्त्वं ( पु० ) निपेधकर्ता निवारणकर्ता,

निष्क तत्त्वं ( पु० ) एक सौ आठ रत्ती भर सोना, सुवर्ण, हेम, एक प्रकार का गले का गहना, धुक-धुकी, शास्त्रीय परिमाण विशेष, अशरफी, दीनार।

निष्कण्टक तत्त्वं ( वि० ) अकण्टक, कण्टक शून्य, निरुद्वेग।

निष्कपट तत्त्वं ( वि० ) कपट शून्य, अकपट, सीधा, सरल।

निष्कर्म तत्त्वं ( वि० ) कर्म रहित, वृत्ति।

निष्काम तत्त्वं ( वि० ) निष्काम, निष्काम

निष्काम फल

निष्कारण तत् ( वि० ) कारणहीन, हेतुशून्य, निष्प्र-  
योजन, अहेतुक ।  
निष्क्रमण तत् ( पु० ) संस्कार विशेष, निःसरण,  
बाहिर निकलना ।  
निष्क्रान्त तत् ( वि० ) निर्गत, प्रस्थित, निःसृत,  
बाहिर निकला हुआ ।  
निष्क्रिय तत् ( पु० ) ब्रह्म, निरञ्जन । ( वि० )  
क्रिया शून्य, अकर्मा, जड़ । [ तत्रत्य ।  
निष्ठ तत् ( वि० ) स्थित, स्थिर, तत्पर, अभिनिविष्ट,  
निष्ठा तत् ( स्त्री० ) निष्पत्ति, नाश, अन्त, निर्वहण,  
यात्रा, इदमभक्ति, धर्मविरवास, धर्मतत्परता, विद्यास,  
स्थिरता ।—चातु ( गु० ) अद्वा भक्ति रखने वाला ।  
निष्ठुर तत् ( वि० ) परुष, फठोर, निर्दय, कठिन,  
क्रूर, दुराचार ।—ता ( स्त्री० ) क्रूरता, कठोरता,  
निर्दयीपन ।  
निष्णात तत् ( वि० ) प्रवीण, विज्ञ, परिष्ठत, अभिज्ञ,  
पारङ्गत, पारदर्शी । [ निरचय ।  
निष्पत्ति तत् ( स्त्री० ) समाप्ति, शेष, अवधारण,  
निष्पन्द तत् ( वि० ) पिना ध्वज का, स्पन्द रहित,  
अचलन, निष्कम्प, स्थिर, दृढ़ । [ कृत, सिद्ध ।  
निष्पन्न तत् ( वि० ) समाप्त, शेष, सम्पन्न, साह,  
निष्प्रिग्रह तत् ( पु० ) योगी, तपस्वी, वैरागी, संन्यासी ।  
निष्पादन तत् ( पु० ) सम्पादन, साधन, निष्पत्ति  
कराण, शेष करना, सिद्धान्त करना, समाधान  
करना, प्रतिज्ञा पूरण करना, निष्पत्ति, नियुक्ति ।  
निष्पाप तत् ( पु० ) निरपराध, निर्दोष, पापहीन ।  
निष्पतिभ तत् ( वि० ) अज्ञ, जड़, मूर्ख, निर्बोध,  
हतबुद्धि । [ पद, विग्र रहित ।  
निष्प्रत्यूह तत् ( वि० ) निर्विघ्न, बाधाहीन, निरा-  
निष्प्रभ तत् ( वि० ) दीप्तिरहित, प्रभाहीन, अस्वच्छ  
हृत्तमनोरथ । [ अहेतुक, अकारण ।  
निष्प्रयोजन तत् ( वि० ) प्रयोजन रहित, निरर्थक,  
निष्फल तत् ( वि० ) विफल, निरर्थक, व्यर्थ, फल रहित ।  
निःसङ्ग तत् ( वि० ) निःशक्य, अशक्त, पुरुषार्थहीन ।  
निःसङ्कट तत् ( वि० ) निःसङ्कट, सङ्कटमुक्त, सङ्कट  
रहित, अनायास ।  
निःसन्धार्दे ( स्त्री० ) सन्धि रहित, निरिद्धद,  
ठोस, पोढ़ा

निसरना दे० ( क्रि० ) निकलना, निकसना, बाहर  
होना, निकरना ।  
निसर्ग तत् ( पु० ) प्रकृति, स्वभाव, रूप, स्वर्ग,  
सृष्टि, त्याग, परिवर्तन, स्वाभाविक, प्राकृतिक ।—ज  
( वि० ) सहजात, स्वभावज, नैसर्गिक ।  
निसवासर ( क्रि० वि० ) रातदिन ।  
निसाँस दे० ( वि० ) आह भरना, विलाप करना ।  
निसाँसी दे० ( गु० ) दुःखी, व्यस्त, उद्विग्न ।  
निसान दे० ( पु० ) नगारा, हुन्दुमी, सूर्य ।  
निसार दे० ( पु० ) निकास, निकाल ।  
निसारु तत् ( पु० ) निःश्वास, साँस, प्राणवायु ।  
निसित तत् ( वि० ) पैनी, तीव्र, धारदार, निशित ।  
निसदिन ( क्रि० वि० ) रातदिन, सदा, सदैव, हमेशा ।  
निसिनिस्ति ( स्त्री० ) हर रात, रात रात, आधीरात ।  
निसोठी ( गु० ) तख्तीन, थोथी, सारहीन ।  
निसृष्ट तत् ( वि० ) मध्यस्थ, म्यक्त, अर्पित, छोड़ा  
हुआ, त्यक्त ।  
निसृष्टार्थ तत् ( पु० ) दूत विशेष, धन का आय  
व्यय और पालन आदि के विषय में नियुक्त  
किया हुआ दूत ।  
निसेनी या निसैनी तत् ( स्त्री० ) काठ या बाँस की  
बनी डंढीदार सीढ़ी, नलैनी ।  
निसोत दे० ( पु० ) एक औपधि का नाम ।  
निस्तब्ध ( गु० ) निश्चेष्ट, क्रियाहीन ।—ता ( स्त्री० )  
निश्चेष्टता, निष्क्रियता, हर्ष एवं शोक के वेग में  
मग की एक निष्क्रिय अवस्था ।  
निस्तदण तत् ( पु० ) पार होना, तरंग, उद्धार  
करना, मुक्ति पाना, छुटकारा होना, उपाय ।  
निस्तल तत् ( वि० ) तल रहित, गोलाकार, गोल,  
चर्चुल ।  
निस्तार तत् ( पु० ) [निस् + तृ + घञ्] रक्षा, उद्धार,  
प्राण, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, बचाव ।  
निस्तारना दे० ( क्रि० ) बचाना, उबारना, उद्धार  
करना, छुटकारा देना, प्राण करना, रक्षा करना ।  
निस्तारा दे० ( पु० ) छुटकारा, बचाव, मोक्ष, मुक्ति ।  
निस्तेज तत् ( वि० ) तेजहीन, प्रगाप रहित, मोथा ।  
निस्तोक दे० ( पु० ) निवटेरा, निर्णय, फैसला ।  
निस्त्रप तत् ( वि० ) निर्लज्ज, अशिष्ट, लज्जा रहित ।

किया। अब इन लोगों ने सुधीर नामक दूत को देवी के निकट भेजा। दूत देवी के निकट जाकर कहने लगा—शुभियी मैं शुम्भ और निशुम्भ से बड़ कर दूसरा वीर नहीं है और तुम भी इस संसार में सर्वोत्तम सुन्दरी हो अतएव तुमको उचित है कि इन दोनों में जिससे चाहो तुम अपना विवाह कर लो। देवी ने कहा—तुम जो कहते हो वह बहुत ठीक है परन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा की है कि जो युद्ध में मुझको हरा देगा उसी से मैं अपना ब्याह करूँगी। शुम्भ के पास जाकर दूत ने ये बातें कहीं। धूम्रलोचन नामक दैत्य को उन लोगों ने देवी को पकड़ लाने के लिए भेजा। धूम्रलोचन को देवी ने मार डाला। तब चण्ड और मुण्ड को शुम्भ ने देवी के पास भेजा। चण्ड मुण्ड की भी वही दशा हुई। चण्ड मुण्ड के मारे जाने पर तीस कोटि असौहिणी सेना के साथ रक्तवीज भेजा गया। देवी के साथ रक्तवीज बड़ी वीरता से लड़ा, परन्तु अन्त में वह भी मारा गया। अब अगला शुम्भ और निशुम्भ युद्धक्षेत्र में उपस्थित हुए और मन भर लड़ कर, इन्होंने भी वीरों के समान गति पाई।—मर्दिनी ( स्त्री ) दुर्गादेवी, काल्यायनी देवी।

निशेष ( पु० ) निशाकर, चन्द्रमा।

निश्चय तत्त्वं ( पु० ) स्थिर, अचञ्चल, असंशय, निर्णय, सिद्धान्त, अवधारण, विश्वास, प्रतिज्ञा, स्पष्ट, अवश्य।—तत्त्वक ( पु० ) यथार्थ, निस्सन्देहात्मक।

—ज्ञान ( पु० ) दृढप्रत्यय, श्रद्धा।

निश्चर ( पु० ) ११ वे मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम।

निश्चल तत्त्वं ( वि० ) अचल, स्थिर ( पु० ) पर्वत, वृक्ष, स्थावर।

निश्चला तत्त्वं ( वि० ) अचला, स्थिरा ( स्त्री ) पृथिवी, भूमि।

निश्चित तत्त्वं ( वि० ) निर्णीत, स्थिरीकृत, निश्चय किया हुआ।—कर्मा ( वि० ) स्थिरकर्मा, दृढकर्मा।

निश्चिन्त तत्त्वं ( वि० ) चिन्ताहीन, सुस्थिर, उद्वेग शून्य, चिन्ता रहित, वैकिङ्क।

निश्चेष्ट तत्त्वं ( वि० ) चेष्टा रहित, अनुयोग, निरुपाय, अचेत, मूर्च्छा प्राप्त, बेहोश।

निश्चिद्र तत्त्वं ( वि० ) छिद्र रहित, दोष रहित।

निश्चैयस ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष।

निश्वास तत्त्वं ( पु० ) [ नि + श्वस् + घञ् ] प्राणवायु, श्वास, साँस।—संहिता ( स्त्री० ) शिव प्रणीत शास्त्र विशेष।

निशेष ( पु० ) समाप्त, जिसका कुछ भी न बचा हो। निपट्ट तत्त्वं ( पु० ) तूष्ण, वायु रखने की थैली, भाषा, तूषीर, तरकस।

निपण्य तत्त्वं ( वि० ) क्षुण्य, विपण्य, उपविष्ट, बैठता हुआ।

निषध तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विशेष, देशविशेष, निषध देश का राजा, निषाद, स्वर। [ धीवर विशेष।

निषाद तत्त्वं ( पु० ) स्वर विशेष, पहला स्वर, चाण्डाल, निषिद्ध तत्त्वं ( वि० ) निषेध का विषय, वर्जित, निवारित, रोका, प्रतिषेधित, मना किया हुआ।

निषिद्धाचरण तत्त्वं ( वि० ) अकर्मकरण, शास्त्र विरुद्ध आचरण।

निपूदन ( पु० ) नाशकर्ता, मारने वाला।

निषेक तत्त्वं ( पु० ) संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार।

निषेचन ( पु० ) खेत आदि का सींचना।

निषेध तत्त्वं ( पु० ) प्रतिषेध, निवृत्ति, निवारण, वारण, मना करना।—पत्र ( पु० ) निषेध की आज्ञा सूचक पत्र। [ रोकने वाला।

निषेधक तत्त्वं ( पु० ) निषेधकर्ता निवारणकर्ता,

निष्क तत्त्वं ( पु० ) एक सौ आठ रत्ती भर सोना, सुवर्ण, हेम, एक प्रकार का गले का गहना, धुक-धुकी, शास्त्रीय परिमाण विशेष, अशरफी, दीनार।

निष्कण्टक तत्त्वं ( वि० ) अकण्टक, कण्टक शून्य, निरुद्वेग।

निष्कपट तत्त्वं ( वि० ) कपट शून्य, अकपट, सीधा, सरल, कपट रहित।

निष्कर तत्त्वं ( वि० ) कर रहित, राजस्व रहित, वृत्ति।

निष्कर्ष तत्त्वं ( पु० ) निश्चय, निष्पत्ति, स्थिरीकृत, व्यवस्था, तात्पर्य, सत्य, प्रत्यक्ष, सिद्धान्त।

निष्कलङ्क तत्त्वं ( वि० ) निर्दोष, अपराधहीन, शुद्ध, दीप्तशील।

निष्काम तत्त्वं ( वि० ) कामना रहित, इच्छा शून्य, फल की अनिच्छा सहित काम, जिस काम का फल भगवान् को अर्पित किया जाय।

निष्कारण तत् ( वि० ) कारणहीन, हेतुशून्य, निष्प्र-  
योजन, अहेतुक ।  
निष्कर्मण तत् ( पु० ) संस्कार विरोध, निःसरण,  
बाहिर निकलना ।  
निष्क्रान्त तत् ( वि० ) निर्गत, प्रस्थित, निःसृत,  
बाहिर निकला हुआ ।  
निष्क्रिय तत् ( पु० ) ग्रह, निरञ्जन । ( वि० )  
क्रिया शून्य, अक्रमां, जड़ । [ तत्रत्य ।  
निद्र तत् ( वि० ) स्थित, स्थिर, तत्पर, अभिनिविष्ट,  
विष्टा तत् ( स्त्री० ) निष्पत्ति, नाश, अन्त, निर्वहण,  
यात्रा, दृढमति, धर्मविरवास, धर्मतत्परता, विश्वास,  
स्थिरता ।—धान् ( गु० ) श्रद्धा भक्ति रखने वाला ।  
निष्ठुर तत् ( वि० ) परुष, कठोर, निर्दय, कठिन,  
क्रूर, दुराचार ।—ता ( स्त्री० ) क्रूरता, कठोरता,  
निर्दयीपन ।  
निष्ठांता तत् ( वि० ) प्रवीण, विज्ञ, पण्डित, अभिज्ञ,  
पारङ्गत, पारदर्शी । [ निश्चय ।  
निष्पत्ति तत् ( स्त्री० ) समाप्ति, शेष, अवधारण,  
निष्पन्द तत् ( वि० ) बिना धड़क का, स्पन्द रहित,  
अचलन, निष्कम्प, स्थिर, दृढ़ । [ कृत, सिद्ध ।  
निष्पन्न तत् ( वि० ) समाप्त, शेष, सम्पन्न, साह,  
निष्परिग्रह तत् ( पु० ) योगी, तपस्वी, वैरागी, संन्यासी ।  
निष्पादन तत् ( पु० ) सम्पादन, साधन, निष्पत्ति  
करण, शेष करना, सिद्धान्त करना, समाधान  
करना, प्रतिज्ञा पूरण करना, निष्पत्ति, नियुक्ति ।  
निष्पाप तत् ( पु० ) निरपराध, निर्दोष, पापहीन ।  
निष्पत्तिम तत् ( वि० ) अज्ञ, जड़, मूर्ख, निर्दोष,  
हतउद्दि । [ पद, विग्र रहित ।  
निष्पत्त्युद् तत् ( वि० ) निर्विघ्न, याथाहीन, निरा-  
निष्पन्न तत् ( वि० ) दीप्तिरहित, प्रभाहीन, अस्वच्छ  
हतमनोरथ । [ अहेतुक, अकारण ।  
निष्प्रयोजन तत् ( वि० ) प्रयोजन रहित, निरर्थक,  
निष्फल तत् ( वि० ) विफल, निरर्थक, व्यर्थ, फल रहित ।  
निस्तब्ध तत् ( वि० ) निःशब्द, अशब्द, पुरुषार्थहीन ।  
निस्तब्ध तत् ( वि० ) निःस्तब्ध, सङ्कटमुक्त, सङ्कट  
रहित, अनायास ।  
निस्तन्धाई दे० ( स्त्री० ) सन्धि रहित, निरिच्छ,  
होस, पोडा

निसरना दे० ( क्रि० ) निकलना, निकसना, बाहर  
होना, निष्करना ।  
निसर्ग तत् ( पु० ) प्रकृति, स्वभाव, रूप, स्वार्थ,  
सृष्टि, त्याग, परिवर्तन, स्वभाविक, प्राकृतिक ।—ज  
( वि० ) सहजात, स्वभावज, नैसर्गिक ।  
निसर्वासर ( क्रि० वि० ) रातदिन ।  
निसांस दे० ( वि० ) ग्राह भरना, विलाप करना ।  
निसांसी दे० ( गु० ) दुःखी, व्यस्त, उद्विग्न ।  
निसान दे० ( पु० ) नगरा, दुन्दुभी, सूर्य ।  
निसार दे० ( पु० ) निकास, निकाल ।  
निसारु तत् ( पु० ) निःशाल, सौत, प्राणवायु ।  
निसित तत् ( वि० ) पैनी, तीक्ष्ण, धारदार, निश्चित ।  
निसदिन ( क्रि० वि० ) रातदिन, सदा, सदैव, हमेशा ।  
निसिनिसि ( स्त्री० ) हर रात, रात रात, आधीरात ।  
निसोठी ( गु० ) तत्त्वहीन, योधी, सारहीन ।  
निसृष्ट तत् ( वि० ) मध्यस्थ, न्यून, अप्रति, छोडा  
हुआ, त्यक्त ।  
निसृष्टार्थ तत् ( पु० ) दूत विशेष, धन का श्राव  
व्यय और पालन आदि के विषय में निदुक्त  
किया हुआ दूत ।  
निसैनी या निसैनी तत् ( स्त्री० ) काठ या थोस की  
बनी बंदीदार सीढ़ी, नलैनी ।  
निसोत दे० ( पु० ) एक शौर्यपि का नाम ।  
निस्तब्ध ( गु० ) निरचेष्ट, क्रियाहीन ।—ता ( स्त्री० )  
निरचेष्टता, निष्क्रियता, हर्ष एवं शोक के वेग में  
भग की एक निष्क्रिय अवस्था ।  
निस्तरण तत् ( पु० ) पार होना, तराना, उद्धार  
करना, मुक्ति पाना, छुटकारा होना, उपाय ।  
निस्तल तत् ( वि० ) तल रहित, गोलाकार, गोल,  
धर्तुज ।  
निस्तार तत् ( पु० ) [ निस् + त् + धन् ] रण, उद्धार,  
ग्राप, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, पचाय ।  
निस्तारना दे० ( क्रि० ) यथाना, उपारना, उद्धार  
करना, छुटकारा देना, ग्राह करना, रपा करना ।  
निस्तार दे० ( पु० ) छुटकारा, यथाय, मोक्ष, मुक्ति ।  
निस्तोत्र तत् ( वि० ) तेजहीन, प्रनाय रहित, मोघा ।  
निस्तोफ दे० ( पु० ) निषेध, निर्णय, फैसला ।  
निरूप तत् ( वि० ) निर्लभ्य, अशिष्ट, खया रहित ।

निर्दिश तत् ( वि० ) अस्ति, खड्ग, तलवार ।  
 निस्पन्द तत् ( वि० ) स्पन्दन शून्य, कम्प शून्य,  
 निश्चेष्ट, अटल, स्थिर । [निरमिलाप ।  
 निस्पृह तत् ( वि० ) स्पृहा शून्य, चान्द्रा रहित,  
 निस्व तत् ( वि० ) निर्धन, दरिद्र, दुःखी, अर्थहीन ।  
 निस्वन तत् ( पु० ) शब्द, ध्वनि, निनाद ।  
 निस्वांस ( पु० ) निःश्वास ।  
 निस्सङ्कोच ( गु० ) सङ्कोच रहित, बेतकल्लुफ ।  
 निस्सन्तान ( गु० ) निर्वंश, सन्तति हीन ।  
 निस्सन्देह ( गु० ) सन्देहरहित, सचमुच ।  
 निस्सरण ( पु० ) निकलना, बहाव, निकास ।  
 निस्सार ( गु० ) तुच्छ, सारहीन, पोला ।  
 निस्सारित ( गु० ) निकाला हुआ ।  
 निस्वार्थ ( गु० ) निष्काम, अभिलाषा शून्य ।  
 निहङ्ग दे० ( वि० ) नङ्गा, नग्न, चिन्ता रहित, फकड़ ।  
 —जाड़ला ( गु० ) दरिद्रता में मल रहनेवाला,  
 उच्छृङ्खल दरिद्र । [ वध किया हुआ ।  
 निहत तत् ( वि० ) आहत, निपातित, मारा गया,  
 निहत्या दे० ( वि० ) अश्वहीन, अश्वरहित, झाली  
 हाथ, बिना हाथ का ।  
 निहाई दे० ( स्त्री० ) लोहे की यनी एक प्रकार की  
 बस्तु जिस पर तपे हुए सोने चाँदी आदि को  
 गड़ते हैं । अयोधन, निहाली ।  
 निहानी दे० ( स्त्री० ) स्त्री का रज, अतृप्त, कपड़े होना ।  
 निहायत दे० ( अ० ) अत्यन्त, अधिक, अतिशय,  
 अपरिमित ।  
 निहार तत् ( पु० ) कुहर, कुहिरा अन्धकार,  
 शिशिर, हिम, यथा—  
 “ जिमि निहार में दिनकर दूरा । ” ( रामायण )  
 निहारना दे० ( क्रि० ) देखना, विलोकन करना, दर्शन  
 करना, अवलोकन करना, निरीक्षण करना, ध्यान  
 पूर्वक देखना ।  
 निहारा दे० ( क्रि० ) देखा, निरीक्षण किया, अवलो-  
 कन किया ।  
 निहाल दे० ( वि० ) प्रसन्न, सुखी, आनन्दित, हर्षित,  
 वृत्त, अभिलाषपूर्ण होने से वृत्त, मनोरथ सिद्धि ।  
 निहाली दे० ( स्त्री० ) निहाई, अयोधन ।  
 निहित तत् ( पु० ) [ नि + धा + क ] स्थापित,

अर्पित, न्यस्त, रखा हुआ, रक्षापूर्वक रखने के  
 लिये रखा हुआ ।  
 निहुरना दे० ( क्रि० ) झुकना, दबना, नयना, नम्र  
 होना, प्रणत होना ।  
 निहुरा दे० ( पु० ) नत, झुका, नम्र । [नम्र करना ।  
 निहुराना दे० ( क्रि० ) झुकाना, नवाना, प्रणत करना,  
 निहोर दे० ( वि० ) कृपा, उपकार, विनती, विनय ।  
 निहोरा दे० ( पु० ) चिरौरी, विनती, अनुनय, विनय,  
 उपकार, प्रार्थना, पुरस्मान, उलाहना, डरहना,  
 नम्रता ।  
 निह्व तत् ( पु० ) [ नि + न्हु + अल ] अपलाप,  
 अपन्धव, गोपन, झुकाना, छिपना, अविश्वास,  
 न मानना ।  
 निह्लाद तत् ( पु० ) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद ।  
 नौद तत् ( स्त्री० ) निद्रा, ऊपकी, उँघाई, आलस ।  
 —उचाट होना ( वा० ) नौद न आना, नौद  
 टटना ।—भर सोना ( वा० ) खूब सोना, गहरी  
 निद्रा से सोना ।  
 नौदड़ी या } ( स्त्री० ) नौद, निद्रा ।  
 नौदरी }  
 नौदना दे० ( क्रि० ) सोना, शयन करना ।  
 नौदू दे० ( पु० ) सुवैया, निद्रालु, शयालु ।  
 नौव दे० ( पु० ) वृष विशेष, निम्न वृष ।  
 नौवू दे० ( पु० ) निवृत्ता, जँभिरी नौवू, फल विशेष ।  
 नीक नीका } दे० ( वि० ) भला, अच्छा, उत्तम,  
 या नीके } सुन्दर, खूबसूरत ।  
 नीच तत् ( वि० ) अधो, निम्न, अपकृष्ट, अधम,  
 इतर, जघन्य ।—गा ( वि० ) नीचगामी, पानर,  
 अधम ।—गा ( स्त्री० ) नदी, ह्वादिनी, निम्न-  
 गामिनी ।—गामी ( वि० ) नीचे की ओर से  
 चलने वाला, निम्नगामी, निर्जन ।—ता ( स्त्री० )  
 अधमता, अपकृष्टता, जघन्यता ।  
 नीचट ( पु० ) एकान्त, निर्जन, दृढ़, पक्का ।  
 नीचा दे० ( वि० ) नीच, अधम, छोटा । ( पु० ) तला,  
 तल ।—ऊँचा ( वा० ) ऊँचइलावद ।  
 नीचाई दे० ( स्त्री० ) नीचता, नीचपन, छुटाई ।  
 नीचाशय तत् ( वि० ) [ नीच + आशय ] छुदाशय,  
 छुदान्तःकरण, लघुहृदय ।

नीचू दे० ( पु० ) अथल्ल, वृक्षविशेष, एक वृक्ष का नाम ।

नीचे दे० ( अ० ) तले ।

नीजन ( गु० ) निर्जन, एकांत, वीरान ।

नीजू ( स्त्री० ) पानी भरने की डोर ।

नीकर ( पु० ) करना, खोत ।

नीठ दे० ( वि० ) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का ।— ( स्त्री० ) अरुचि, अनिच्छा ।— ( गु० ) अप्रिय, अनचाहा ।

नीड़ तत्० ( पु० ) पक्षि का वासस्थान, विहंगावास, कुलाय, वासस्थान, घोंसला, खोता । [ हुआ ।

नीत तत्० ( वि० ) [ नी + क्त ] प्राप्त, गृहीत, लिया

नीति तत्० ( स्त्री० ) [ नी + क्ति ] न्याय्य व्यवहार, उचित व्यवहार, चलन शास्त्र विशेष, नय ।

—कथा ( स्त्री० ) ग्रन्थ विशेष, हितोपदेश,

छद्मउपाख्यान ।—ज्ञ ( वि० ) नीतिशास्त्रवेत्ता,

नीतिशास्त्र विचारद, राजमन्त्री ।—विधा

( स्त्री० ) नीतिशास्त्र, हितोपदेश देने वाला शास्त्र

—सार ( पु० ) नीतिशास्त्र विशेष ।

नीद दे० ( स्त्री० ) } निद्रा ।  
नीद्रा दे० ( स्त्री० ) }

नींधना ( गु० ) गरीब, निर्धन ।

नीप तत्० ( पु० ) कदम्ब वृक्ष, कदम्ब का पेड़ ।

नीवी तत्० ( स्त्री० ) व्यापार करने वालों का मूलधन, खियों का कटिबन्ध ।

नीवू दे० ( पु० ) निम्बू, एक प्रकार का खट्टा फल जिसका रस विशेष करके काम में लाया जाता है ।

नीम दे० ( पु० ) नींबू । [मनोरम ।

नीमन दे० ( वि० ) अच्छा, भला, उत्तम, सुन्दर,

नीमर ( गु० ) निर्यल, दुबला, यलहीन ।

नीमा ( पु० ) जामा, विवाह में दूल्हा के पहिने का वस्त्र विशेष ।—स्तीन ( स्त्री० ) आधे बाह का कुर्ता ।

नीमावत दे० ( पु० ) एक ग्रन्थ, जिसे नीमाचन्द्र सरस्वती ने चलाया है ।

नीर तत्० ( पु० ) पानी, जल, रस, सलिल, पय ।

—ज ( पु० ) पद्म, कमल, रुद्रविलास । ( वि० ) जल से उत्पन्न वस्तुमात्र, निर्धली देश, अरजस्का स्त्री, कुमारिका, कन्या ।

नीरय दे० ( वि० ) निरर्थक, निष्फल, वृथा, व्यर्थ ।

नीरद तत्० ( पु० ) [ नीर + दा + ड् ] जलद, मेघ, मोया

नीरधि तत्० ( पु० ) सागर, समुद्र, पयोनिधि, तोय-निधि ।

नीरनिधि तत्० ( पु० ) सागर, समुद्र, जलधि ।

नीरमय तत्० ( वि० ) [ नीर + मयट् ] जलमय, जल-वेष्टित, जल में डूबा हुआ ।

नीरस तत्० ( वि० ) [ नीस् + रस ] रसहीन, शुष्क, बेस्वाद, स्वाद रहित । [ उतारना ।

नीराजन तत्० ( पु० ) निसर्जन, आरती, आरती

नीरुज तत्० ( वि० ) स्वस्थ, रोग का अभाव ।

नीरोमि तत्० ( वि० ) रोग शून्य, पीड़ा रहित, सुस्थ ।

नील तत्० ( पु० ) श्याम रंग, आकाश के रंगवाला,

नील रंगयुक्त वृक्ष, तालीशपत्र, विप, गरल, १०८

तुल्य के भेदों के अन्तर्गत एक प्रकार का तुल्य । पर्यंत

विशेष, मणि विशेष, नदी विशेष, यह नदी मिसर

देवा में बहती है । निधि विशेष, कुवेर के एक

खजाने का नाम । वानर विशेष, यह रामचन्द्रजी की

सेवा में था और इसने सेतु बनाने में रामचन्द्र

की बड़ी सहायता की थी ।

( २ ) माहिष्मती पुरी के एक राजा । इनकी एक

अत्यन्त सुन्दरी कन्या के रूप पर मोहित होकर

अग्नि ने उससे अपना व्याह किया । अग्नि ने राजा

नील को यह बर दिया था कि जो कोई इस नगरी

पर चढ़ाई करेगा, वह भस्म हो जायगा । युधिष्ठिर

के राजसूय यज्ञ के समय सहदेव ने इस नगर पर

चढ़ाई की थी, उस समय सहदेव ने देखा कि उनकी

सेना आग से घिरी हुई है, तब सहदेव ने अग्नि की

स्तुति और उपासना की, अग्नि ने प्रसन्न होकर

नीलराज की पूजा लेकर सहदेव से लौट जाने

के लिए कहा । अग्नि की आज्ञा से नीलराज ने

सहदेव की पूजा की । सहदेव भी फर लेकर

वहाँ से दक्षिण की ओर चले गये ।—गाय

( स्त्री० ) एक बनेला पशु ।—गिरि ( पु० ) एक

पर्वत का नाम जो दक्षिण भारत में है ।

नीलक तत्० ( पु० ) नील रक्त का मृम विशेष, मीज

गणित का प्रमाण विशेष ।

नीलकण्ठ तत्० ( पु० ) नीले कण्ठवाला, शिव, महादेव, शम्भु, मोर, मयूर, शिखी, संस्कृत ज्योतिः शास्त्रवेत्ता, इनकी बनाई "ताजिक नीलकण्ठी" नाम की पुस्तक का ज्योतिषी समाज में विशेष आधार है। इनके पिता का नाम धनन्त और पितामह का नाम चिन्तामणि था। सुहृत्चिन्तामणि नामक ग्रन्थ के कर्ता रामदैवज्ञ इन्हीं के छोटे भाई थे। नीलकण्ठ के पुत्र भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्होंने भी सुहृत्चिन्तामणि की टीका पीयूष धारा बनाई है। इन्होंने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में अपने पिता का कुछ वृत्तान्त लिखा है जिससे मालूम होता है कि नीलकण्ठ मीमांसक, नैयायिक, ज्योतिषी और वैयाकरण भी थे और ये अक्षर के समासद भी थे। ये विदर्भ देश के रहने वाले थे। इनकी स्त्री का नाम पद्मा था। ये अक्षर वादशाह के समकालीन थे, इसलिये इनका समय ख्रिष्टीय १६ वीं सदी का पिछला भाग ही मानना चाहिये। [नीलपङ्कज। नीलकमल तत्० ( पु० ) नीलवर्ण का पद्म, कृष्ण कमल, नीलगवय तत्० ( पु० ) नील गौ, रोम, गौ के समान एक जङ्गली जन्तु। नीलगव दे० ( पु० ) नील गौ, रोम, नीलगवय। नीलग्रीव तत्० ( पु० ) महादेव, शिव, नीलकण्ठ, विष पान करने के कारण महादेव का कण्ठ नीला पड़ गया है, इसीसे इन्हें नीलकण्ठ कहते हैं। नीलवड्डी दे० ( स्त्री० ) नील का दुकड़ा, नीलरङ्ग। नीलम दे० ( पु० ) नीलकान्त मणि, रत्न विशेष। बोलम। [विशेष। नीलमणि तत्० ( पु० ) नीलम, नीलकान्तमणि, रत्न नीलमाधव तत्० ( पु० ) विष्णु, नारायण, जगन्नाथ, जगदीश। नीललोहित तत्० ( पु० ) शिव, महादेव, शम्भु, नीलकण्ठ, नील और रक्त मिश्रित वर्ण, बैंगनी रङ्ग, मेघदूत। [मानी रङ्ग। नीलवर्ण तत्० ( वि० ) श्याम रङ्ग, आकाशी रंग, आस-नीला दे० ( पु० ) नीले रङ्ग वाला, नील रङ्ग में रङ्गा हुआ। नीलाई दे० ( स्त्री० ) श्यामता, नीलना, नीलापन। नीलाधोरा दे० ( पु० ) निलाञ्जन, वृत्तिरा, उपधातु विशेष।

नीलाम दे० ( पु० ) विक्री, बिक्रय, बेचना। यह शब्द पुस्तगाली, "लेलाम" शब्द का अपभ्रंश है। किसी वस्तु को मोल लेने वाले—चाहे वे कितने ही हों उस वस्तुका—मूल्य बोलने जाते हैं, इसमें से जो सबसे अधिक मूल्य देना स्वीकार करता है और उसके बाद दूसरा नहीं बोलता, तो वह वस्तु सबसे अधिक मूल्य देने वाले के हाथ बेची जाती है।

नीलाम्बर तत्० ( पु० ) बलदेव, शनैश्चर। नीलार्च तत्० ( पु० ) पौधा विशेष, कटीला एक वृक्ष जिसमें पीले फूल लगते हैं, प्रियवाता, प्रियार्वाता। नीलोत्पल तत्० ( पु० ) नीलकमल, नीले पत्तों का कमल, नील पङ्कज, नीलेन्द्रीवर।

नीलोपल तत्० ( पु० ) नीलम, नीलमणि।

नीलोफर ( पु० ) नीलकमल।

नीव ( स्त्री० ) जड़, आधार।

नीवा दे० ( पु० ) सुनाहट, मन्दाई, मन्दिता।

नीवार तत्० ( पु० ) तिली का वृक्ष, एक प्रकार का अन्न जो ताड़वाँ में होता है। [हजारमन्द।

नीवी तत्० ( स्त्री० ) धनियों का मूलधन, पूँजी, नारा

नीवृत् तत्० ( पु० ) देश, जनपद, जनस्थान।

नीशार तत्० ( पु० ) शीत निवारण करने वाला आच्छादन, शामियाना, कनात, तम्बू, पटमण्डप, वसनगृह।

नीसानो ( पु० ) छन्दविशेष।

नीसारना दे० ( क्रि० ) निकालना, निकासना।

नीहार तत्० ( पु० ) घनीभूत शिशिर, बरफ, हिम, तुषार, ओस, कुहर, कुहासा।

नीहारिका ( स्त्री० ) कुहरा, कुहासा, पदार्थों की प्रथमावस्था। एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जगत के वायव्य पदार्थ ओस होने के पूर्व घाण्य रूप के थे। इसे नीहारिकावाद कहते हैं।

नुकता ( पु० ) विन्दु, अनुस्वार का चिन्ह।—चीन ( पु० ) दोषदर्शी, समालोचक।—चीनी ( स्त्री० ) दोष निकालना, समालोचना।

नुकती ( स्त्री ) बुँदिया, बुँदी, मिठाई विशेष।

नुकस ( पु० ) घोटों का सफेद रङ्ग।

नुकसान ( पु० ) घाटा, ख़ोटा, हानि।

मुकीला ( गु० ) नोकदार, सुन्दर ।  
 मुकड़ ( पु० ) छोर, कोना, नोक ।  
 मुफस ( पु० ) दोष, खराबी, वृष्टि ।  
 मुखट्टा दे० ( पु० ) नख का खसोट, नख का बकोट ।  
 मुचना ( कि० ) उल्लाड़ना, खुरचना ।  
 मुचवाना ( कि० ) उल्लाड़वाना ।  
 मुति ( स्त्री० ) स्तुति, स्तोत्र, सुशामद ।  
 मुत्काहराम ( गु० ) वर्षा सङ्कर ।  
 मुनाई ( स्त्री० ) सुनाई, सुन्दरता, लावण्य, खरापन ।  
 मुनियां दे० ( पु० ) जाति विशेष, मोनिया ।  
 मूतन, मूला तत् ( वि० ) नया, नवीन, अभिनव ।  
 मूधा दे० ( पु० ) तमाहू विशेष । [ की मृष्टेन्द्रिय ।  
 मून दे० ( पु० ) खोन, मोन, नमक ।—नी ( स्त्री० ) बचनों  
 मूपुर तत् ( पु० ) बहिया, भूषण विशेष, यह भूषण  
 पैर की अंगुलियों में पहना जाता है, पायजेत्र, पैजनी  
 छुंछरु ।  
 मूर ( पु० ) शोभा, प्रकाश, ज्योति, सौन्दर्य की धामा ।  
 मृगपाल ( पु० ) मनुष्य की खोपड़ी ।  
 मृग तत् ( पु० ) एक राजा का नाम, ये बहुत दानी  
 थे, दान में व्यतिक्रम होने से इन्हें शरट की योनि  
 प्राप्त हुई । पुनः धीरुष्ण ने इनका उद्धार किया ।  
 मृग्य तत् ( पु० ) नर्तन, नाच, नाचना ।—कारी  
 ( वि० ) नाचने वाला, नचैया, नट, नर्तकी ।—की  
 ( स्त्री० ) नाचनेवाली ।  
 मृदेव या मृदेवता तत् ( पु० ) राजा, मृर ।  
 मृप तत् ( पु० ) राजा, भूगाल, भूपति, नरपति, राजा ।  
 —वाती ( पु० ) राजवंशनायक, परशुराम,  
 भार्गव ।  
 मृपति तत् ( पु० ) नरपति, राजा, मृपाल ।  
 मृपाल तत् ( पु० ) राजा, भूपति, नरपति, मृपति ।  
 मृवराह तत् ( पु० ) शूर, वीर, योद्धा, बहादुर रूप-  
 धारी भगवान् विष्णु का अवतार विशेष ।  
 मृशंस तत् ( वि० ) घातक, मूर, दुष्ट, व्याध, हत्यारा,  
 परद्रोही ।  
 मृसिंह तत् ( पु० ) प्रधान मनुष्य नरश्रेष्ठ, भगवान्  
 का एक अवतार विशेष, जिनका रूप मनुष्य और  
 सिंह के समान था, नरसिंह अवतार ।—चतुर्दशी  
 ( स्त्री० ) वैशाखमास की शुक्ला चतुर्दशी, इसी दिन

भगवान् नृसिंह प्रगट हुए थे, इस कारण इसको  
 नृसिंहजयन्ती भी कहते हैं । [ का नृसिंहावतार ।  
 मुहरि तत् ( पु० ) नरसिंह अवतार, भगवान् विष्णु  
 नेई, नेऊ ( स्त्री० ) नेध, गढ़, निड ।  
 नेउला ( पु० ) नेवल, नकुल, जन्तु विशेष ।  
 नेऊन रे० ( पु० ) मखन, नवनीन ।  
 नेक, नेकु दे० ( वि० ) कुल, थोड़ा, अल्प, अत्यल्प, तनक,  
 अच्छा, मला, उत्तम, मनोहर, मनोरम, रमणीय ।  
 —नाम दे० ( वि० ) नामी, कीर्तिमान्, पशुध्वी ।  
 नेका तत् ( पु० ) पोषक, पालक, पोषणकर्ता ।  
 नेग दे० ( पु० ) विवाद में दल जो बंधा रहता है ।  
 पंचान, दक्षर ।—चार ( पु० ) तावेदार आदि को  
 विवाद आदि उत्सवों में देना ।  
 नेगो दे० ( वि० ) नेग पाने के अधिकारी, नेग में  
 हिस्सा बटाने वाला, परजा, मँगता, अधिकारी ।  
 नेजक तत् ( पु० ) घोड़ी, रजक, परिष्कारक, शुद्ध  
 करने वाला, कपड़ा धोने वाला ।  
 नेजन तत् ( पु० ) परिष्करण, शोधन ।  
 नेटा दे० ( पु० ) पोंटा, नाक का मल, रेंट । [ बाला ।  
 नेठमी दे० ( वि० ) स्थिर, स्थायी, एक स्थान पर रहने  
 नेतक दे० ( पु० ) बड़कुल, नरकट । [ अगुधा ।  
 नेना तत् ( पु० ) नाँव का दूध, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ,  
 नेति तत् ( पु० ) न इति, चन्त रहित, अनन्त, इतना  
 नहीं, बेहद, नहीं, ऐसा नहीं ।  
 नेती दे० ( स्त्री० ) मयानी की रस्मी, मयानी घुमाने  
 की रस्सी । एक प्रकार का मोटा डोरा, जिसको  
 हठयोगी नाक में डाल कर साफ करते हैं, योग  
 की क्रिया विशेष ।  
 नेत्र तत् ( पु० ) चक्षु, अक्षि, नयन, आँख ।—  
 कनीनिका ( स्त्री० ) आँखों की पुतली, दृष्टि ।  
 —उद्ग ( पु० ) नेत्रपिघायक चर्मपुट, नेत्र बन्द  
 करने वाली पपनी, पलक ।  
 नेत्रलोत दे० ( पु० ) बन्धवा, बन्दी, दृष्टिगत, अपराधी ।  
 नेत्राशु तत् ( पु० ) अशु, चक्षु का जल, आँसु ।  
 नेनुआ ( पु० ) एक शाक का नाम ।  
 नेपथ्य तत् ( पु० ) वेश, अलङ्कार, भूषण, रङ्गभूमि  
 का भीतरी भाग जहाँ नाटक के पात्र सजते हैं,  
 जनान घाना, शृङ्गार घर ।



नेपाल तत्० ( पु० ) देश विशेष ।—ने ( वि० )

नेपाल का रहने वाला ।

नेपुर तद्० ( पु० ) नूपुर, पादभूषण, बिडिया, पायजेब ।

नेम तद्० ( पु० ) नियम, संयम, धर्म में दृढ, घट, प्रतिज्ञा, वचन, सङ्कल्प ।—धर्म ( पु० ) शुद्ध व्यवहार ।

नेमि तद्० ( स्त्री० ) चक्र का घेरा, चक्रपरिधि, रथ के पहियों का वह भाग जो भूमि में लगा रहता है । चक्र का प्रान्त भाग, कूप के समीप घना हुआ औरस चौतरा, कुएँ के पास रस्सी रखने के लिये रखी हुई तिराखी लकड़ी ।—चक्र ( पु० ) पहिया, पाण्डुवंशीय राजा विशेष । [यान्त्रिक ।

नेमी तद्० ( वि० ) नियमी, नियम करने वाले, नियम नेराना ( क्रि० प्र० ) पास पहुँचना, नजदीक जाना ।

नेरुना दे० ( पु० ) पयाल, नाली, डांडी ।

नेरे, नेरी दे० ( प्र० ) निकट, समीप, नियरा, पास ।

नेव दे० ( स्त्री० ) भीत की जड़, नीबू, मूल ।

नेवतना दे० ( क्रि० ) निमन्त्रण देना, बुलाने के लिये पत्र भेजना ।

नेवता दे० ( पु० ) बुझाहट, निमन्त्रण, न्योता ।

नेवना दे० ( क्रि० ) नवना, नम्र होना, निहुरना, नमना । [घाव, कहीं इसे नेवल भी कहते हैं ।

नेवर दे० ( स्त्री० ) घोड़े के पैरों में रगड़ से उत्पन्न नेवल, नेवला दे० ( पु० ) नकुल, न्योला, यह सर्पों का स्वाभाविक शत्रु है । [जाता है ।

नेवार ( पु० ) निवार, सूती पट्टी जिससे पलङ्ग बुना

नेवाजी दे० ( क्रि० ) शरण में ली, कृपा की । ( पु० ) कृपा करने वाला, दयालु, ( स्त्री० ) कृपा, दया ।

नेवाजू दे० ( पु० ) कृपालु, दयालु, मेहरबान ।

नेह तद्० ( पु० ) स्नेह, प्रीति, प्रेम, चिकनाहट, चिकणा ।

नेहरुया दे० ( पु० ) नहरुया रोग । [शुभचिन्तक ।

नेही तद्० ( वि० ) स्नेह, प्रिय, प्रेमी, मित्र, सुहृद्,

नैकृत्य तत्० ( वि० ) निकटभाव, सामीप्य, समीपता, निकटता, निकटत्व । [नायक, पथी

नैगम तत्० ( पु० ) उपनिषद्, वयिक्, नागर, नय,

नैचा ( पु० ) हुक्के की चली । [हालुवा रास्ता ।

नैची ( स्त्री० ) नीचा मार्ग, पुरवट के बैलों के चलने का

नैज तत्० ( वि० ) आत्मीय, आत्म सम्बन्धी । [होना ।

नैजाना दे० ( क्रि० ) झुकना, निहुरना, नवना, नम्र

नैतिक ( पु० ) नीति सम्बन्धी, आचार व्यवहार सम्बन्धी ।

नैन, नैना तद्० ( पु० ) नयन, आँख, पगहा, गलावन छाँद, पशु बांधने की रस्सी ।—नी ( स्त्री० ) नेत्रवाली ।

नैनू दे० ( पु० ) नैनी, नवनीत । [नय रक्षा

नैपाल तद्० ( पु० ) त्राँचा, देश विशेष, नीति रक्षा,

नैपाली तद्० ( पु० ) सनसिल नामक धातु, नैपाल वाली । [कुशलता ।

नैपुण्य तत्० ( पु० ) निपुणता, चतुरता, बख्ता,

नैमित्तिक तत्० ( वि० ) निमित्त सम्बन्धी, किसी हेतु से आया, खोदार आदि का उत्पन्न, किसी कारण विशेष से किया जाने वाला काम ।

नैमिष तत्० ( पु० ) तीर्थ विशेष, एक तीर्थ का नाम जो हरिद्वार के पास है ।

नैमिपारण्य तत्० ( पु० ) वह वन जहाँ सूतजी पौराणिक रहते थे तथा और भी अनेक महर्षि रहा करते थे ।

नैया दे० ( पु० ) नौ, नौका, नाव, तरणी ।

नैयायिक तत्० ( पु० ) न्यायशास्त्र विशारद, तर्कशास्त्र विशारद, न्याय पढ़ने या पढ़ाने वाला ।

नैराश्य तत्० ( पु० ) निराशा, आशा का अभाव, इतार ।

नैर्मल्य तत्० ( पु० ) निर्मलता, शुद्धता, स्वच्छता, मन्नाभाव । [प्रसाद, चढ़ावा ।

नैवेद्य तत्० ( पु० ) अर्पण, ब्रह्मर्ग, देवता का भोग,

नैसर्गिक तत्० ( पु० ) . . . . .

नोह दे० ( कि० ) दूध दुहते समय गौ के पिछले पैर जिससे बांधते हैं । [ की रस्ती ।  
 नोह दे० ( खी० ) दूध दुहते समय गाय के पैर बांधने नोकचोंक दे० ( खी० ) सट्टे से बाँते करना, लगाना ।  
 नोकमोंक दे० ( खी० ) खँवाखँची, खँवातानी, उपाय चड़ी, अनवगाय, लटपट, पारस्परिक द्वेष ।  
 नोच दे० ( पु० ) चुरकी, यकौट, खसोट । [ खसोटना ।  
 नोचना दे० ( कि० ) चुटकी मागना, बकोटना, नोटिस दे० ( पु० ) ( विशासन, सूचनापत्र ।  
 नोन दे० ( पु० ) निमक, नून, नोन ।—चा ( पु० ) एक प्रकार का आम का भवार ।  
 नोना दे० ( कि० ) गाय भैंस आदि का दूध दुहने के लिये पैर बांधना ( पु० ) फल विशेष, मीताफल, पुरानी दीवाळ की गली हुई मिट्टी ।—पानी ( पु० ) लपपयुक्त जल, खारी पानी, लवणाम्ल, समुद्र का जल । [ काम फरती है, बुनिया ।  
 नोनिया दे० ( पु० ) जाति विशेष, जो नून बनाने का नोप दे० ( पु० ) एक प्रकार की रस्ती जिससे गाय का पैर बांधते हैं ।  
 नोहर ( पु० ) भनौला, खड्ग्य ।  
 नौ तय० ( पु० ) नाव, नौका ।  
 नौकर दे० ( पु० ) चाकर, सेवक, भूय, महीना लेकर सेवा करने वाला ।—नौ ( खी० ) टहलनी ।  
 नौकरी दे० ( खी० ) चाकरी, सेवा, नौकर का काम ।  
 नौका तत्० ( खी० ) नाव, नौ, तरणी ।  
 नौखण्ड तत्० ( पु० ) ( नवखण्ड देला ) ।  
 नौगरा दे० ( खी० ) ग्रामभूषण विशेष, पट्टेची, कँगन ।  
 नौचो दे० ( खी० ) छोटी अवस्था की चेरवा, चेरवा की शिप्पा, जो उसके बाद उसके पद की आधि-कारिणी होती है ।  
 नौद्यावर दे० ( पु० ) निद्यावर, उतावा ।  
 नौजवान ( पु० ) तदण, नवयुवक ।  
 नौदना दे० ( कि० ) निदुरना, नष्ट होना, प्रणत होना ।  
 नौतन ( पु० ) नूतन, नया । [ आदर पूर्वक बुलाना ।  
 नौतना दे० ( कि० ) निमन्त्रण देना, नेवता देना, नौता दे० ( पु० ) निमन्त्रण, नेवता ।  
 नौना दे० ( कि० ) नवना, निदुरना, नौवना; नौना मिट्टी ।

नौनी दे० ( खी० ) नैन्, मखन ।  
 नौवत दे० ( खी० ) समय, अवसर, वाद्ययंत्र अर्थात्, नगाड़ा नकीरा और कर्मा ।—खाना ( पु० ) वाद्यगृह ।  
 नौमासा तत्० ( पु० ) गर्भ के नवें मास का उत्सव, संस्कार विशेष, पुंभवन ।  
 नौमि तत्० ( कि० ) में प्रथम करता हूँ । [ नवो तिथि ।  
 नौमी तत्० ( खी० ) नवमी, तिथि विशेष, पक्ष की नौरंग ( पु० ) पक्षी विशेष, औरंगजेब का अपभ्रंशन ।  
 नौरतन तत्० ( पु० ) नयरा ।  
 नौरोज ( पु० ) नये साळ का प्रथम दिवस, मातवर्ष में अकबरशाह ने इस नाम का एक मेला जारी किया था ।  
 नौल दे० ( वि० ) नवज, सुन्दर ।  
 नौलखा ( पु० ) नौ लाख का, मूल्यवान ।  
 नौला ( पु० ) न्योला, नकुल ।  
 नौशा ( पु० ) दूधडा, वर ।  
 नौसिखिया ( पु० ) नवशिक्षित, भ्रष्टज्ञ ।  
 नौशिल तत्० ( पु० ) नवशिक्षित द्वारा, विद्यार्थी ।  
 नौसादर दे० ( पु० ) एक प्रकार का खार ।  
 न्यकार तत्० ( पु० ) तिरस्कार, कुरसा, निन्दा, गद्ग, अवज्ञा, घृणा ।  
 न्यग्रोध तत्० ( पु० ) वटवृक्ष, वरगद् ।  
 न्यवुद् तत्० ( पु० ) दस घरघर, संख्या विशेष ।  
 न्यस्त तत्० ( पु० ) [ न्यस् + क ] समर्पित, दत्त, सजित, स्थापित, रक्षित ।—शस्त्र ( पु० ) जिसने शस्त्र छोड़ दिया हो, परास्त, हरा हुआ ।  
 न्याउ ( पु० ) न्याय ।  
 न्याय तत्० ( पु० ) नीति, बुद्धि, यथार्थ, उचित, तर्कशास्त्र, विचार, चित्तक, विवेचना ।—शोश तत्० ( पु० ) न्यायकर्ता, न्यायवादी ।—लय ( पु० ) [ न्याय + लाय ] धर्माधिकरण, विचारगृह ।—कर्ता ( पु० ) विचारक, न्यायाधीश, तर्कशास्त्रवेत्ता, गौतम मुनि ।—तः ( वि० ) धर्म से, न्याय से ।—शास्त्र ( पु० ) तर्कशास्त्र ।  
 न्यायक तत्० ( पु० ) विचारक, न्यायकारी, न्यायकर्ता ।  
 न्यायी तत्० ( पु० ) मन्व्यस्य, न्यायकर्ता, उचित करने वाला ।

नेपाल तत्० ( पु० ) देश विशेष ।— ( वि० )

नेपाल का रहने वाला ।

नेपुर तद्० ( पु० ) नृशर, पादभूषण, विद्याया, पायनेत्र ।

नेम तद्० ( पु० ) नियम, सेवम, धर्म में हठ, मत, प्रतिज्ञा, वचन, सङ्कल्प ।—धर्म ( पु० ) शुद्ध व्यवहार ।

नेमि तत्० ( स्त्री० ) चक्र का घेरा, चक्रारिधि, रथ के पहियों का वह भाग जो भूमि में लगा रहता है । चक्र का प्रान्त भाग, कूप के समीप बना हुआ चौरस चौतरा, कुएँ के पास रखी रखने के लिये रखी हुई तिशाखी लकड़ी ।—चक्र ( पु० ) पहिया, पाण्डुरंगरीय राजा विशेष । [ पात्रक ।

नेमी तद्० ( वि० ) नियमी, नियम करने वाले, नियम नेराना ( कि० प्र० ) पास पहुँचना, नज़दीक जाना ।

नेरवा दे० ( पु० ) पयाल, नाली, डाँठी ।

नेरे, नेरी दे० ( श्र० ) निकट, समीप, निघरा, पास ।

नेष दे० ( स्त्री० ) भीत की जड़, नीव, मूल ।

नेचतना दे० ( कि० ) निमन्त्रण देना, बुलाने के लिये पत्र भेजना ।

नेवता दे० ( पु० ) बुलाहट, निमन्त्रण, न्योता ।

नेवना दे० ( कि० ) नवना, नम्र होना, निहृम्ना, वमना । [ घाव, कहीं इसे नेवना भी कहते हैं ।

नेवर दे० ( स्त्री० ) छोड़े के पैरों में रगड़ से उत्पन्न नेवज, नेवला दे० ( पु० ) नकुल, न्योला, यह सर्पों का स्वाभाविक शयु है । [ जाता है ।

नेवार ( पु० ) निवार, सूनी पट्टी जिनसे पलङ्ग बना

नेवाजी दे० ( कि० ) शरण में ली, कृपा की । ( पु० ) कृपा करने वाला, दयालु, ( स्त्री० ) कृपा, दया ।

नेवाजू दे० ( पु० ) कृपालु, दयालु, मेदरवान ।

नेह तद्० ( पु० ) स्नेह, प्रीति, प्रेम, चिकनाहट, चिकना ।

नेहरुग्रा दे० ( पु० ) नहरुग्रा रोग । [ शुभचिन्तक ।

नेही तद्० ( वि० ) स्नेह, प्रिय, प्रेमी, मित्र, सुहृद् ।

नैमृत तद्० ( पु० ) राक्षस विशेष, निष्कृति नामक राक्षस के वंशज । यह दक्षिण और पश्चिम के कोने का अधीश्वर है ।

नैऋत्य तद्० ( पु० ) दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, इस दिशा के अधिपति निष्कृति हैं इस कारण इसको नैऋत्य कहते हैं ।

नैऋत्य तद्० ( वि० ) निकटभाव, सामीप्य, समीपता, निकटता, निष्कृत्य । [ नायक, पथी ।

नैगम तद्० ( पु० ) उपनिषद्, धार्मिक, नागर, नय,

नैचा ( पु० ) हुक के की नली । [ डालुवा रास्ता ।

नैची ( स्त्री० ) नीचा मार्ग, पुखट के बँलों के चलने का

नैत्र तद्० ( वि० ) आरामीय, आराम सम्बन्धी । [ होना ।

नैजाना दे० ( कि० ) झुटना, निहुरना, नवना, नम्र

नैतिक ( पु० ) नीति सम्बन्धी, आचार व्यवहार सम्बन्धी ।

नैन, नैना तद्० ( पु० ) नयन, आँख, पगहा, गावज

छाँद, पशु बाँधने की रस्ती ।— ( स्त्री० ) नेत्रवाली ।

नैनू दे० ( पु० ) नैनी, नवनीत । [ नय रक्षा ।

नैपाल तद्० ( पु० ) ताँबा, देश विशेष, नीति रक्षा,

नैपाली तद्० ( पु० ) मनसिल नामक धातु, नैपाल वासी । [ कुशलता ।

नैपुण्य तद्० ( पु० ) निपुणता, चतुरता, इक्षता,

नैमित्तिक तद्० ( वि० ) निमित्त सम्बन्धी, किसी हेतु

से आया, स्थानाद आदि का उत्पन्न, किसी कारण विशेष से किया जाने वाला काम ।

नैमित्त तद्० ( पु० ) तीर्थ विशेष, एक तीर्थ का नाम जो हरिद्वार के पास है ।

नैमिपारश्व तद्० ( पु० ) वह धन जहाँ सूतजी पौराणिक रहते थे तथा और भी अनेक महर्षि रहा करते थे ।

नैषा दे० ( पु० ) नै, नौका, नाव, तरणी ।

नैषायिक तद्० ( पु० ) न्यायशास्त्र विचारक, तर्कशास्त्र विचारक, न्याय पढ़ने या पढ़ाने वाला ।

नैराश्य तद्० ( पु० ) निराशा, आशा का अभाव, हताशा ।

नैर्मल्य तद्० ( पु० ) निर्मलता, शुद्धता, स्वच्छता, मज्जाभाव । [ प्रसाद, चढ़ावा ।

नैवेद्य तद्० ( पु० ) अर्पण, वस्त्र, देवता का भोग,

नैसर्गिक तद्० ( पु० ) स्वाभाविक, प्राकृतिक, स्वभाव-सिद्ध, स्वतः उत्पन्न ।

नैष्ठिक तद्० ( पु० ) यावज्जीवन गुरु के गृह में प्रवृत्त चर्य मत पालने वाला, धार्मिक, विश्वासी ।

नैहर दे० ( पु० ) पीहर, मयका, स्त्री के पिता का घर ।

नैषा ( पु० ) रस्ती का टुकड़ा जिससे दूध दुहते समय किसी किसी गाय के पीछे के पैर बाँध दिये जाते हैं ।

नोह दे० ( कि० ) दूध दुहते समय गौ के पिछले पैर जिससे बाँधते हैं । [ की रस्सी ।

नोई दे० ( खी० ) दुध दुहते समय गाय के पैर बाँधने नोकचोंक दे० ( खी० ) सहेत से बाँते करना, लाग-डाट ।

नोकभोंक दे० ( खी० ) खैवालैची, खैवातानी, उपरा चढ़ी, अनवनाव, बटपट, पारस्परिक द्वेष ।

नोच दे० ( पु० ) चुटकी, बकोट, खमेट । [ खमेटना ।

नोचना दे० ( कि० ) चुटकी भागना, बकोटना,

नोटिस दे० ( पु० ) विज्ञापन, सूचनापत्र ।

नोन दे० ( पु० ) निमक, नून, नोन ।—चा ( पु० ) एक प्रकार का आम का अचार ।

नोना दे० ( कि० ) गाय भैंस आदि का दूध दुहने के लिये पैर बाँधना ( पु० ) फल विशेष, सीताफल, पुरानी कीवाक की गली हुई मिट्टी ।—पानी ( पु० ) लवणयुक्त जल, खारी पानी, लवणाम्बु, समुद्र का जल । [ काम करती है, लुनियाँ ।

नोनिया दे० ( पु० ) जाति विशेष, जो नून बनाने का नोय दे० ( पु० ) एक प्रकार की रस्सी जिससे गाय का पैर बाँधते हैं ।

नोहर ( पु० ) अनौछा, अलभ्य ।

नौ तन् ( पु० ) नाव, नौका ।

नौकर दे० ( पु० ) चाकर, सेवक, भृत्य, महीना लेकर सेवा करने वाला ।—ानी ( खी० ) टहलनी ।

नौकरी दे० ( खी० ) चाकरी, सेवा, नौकर का काम ।

नौका तन् ( खी० ) नाव, नौ, तराही ।

नौखण्ड तद् ( पु० ) ( नवखण्ड देखो ) ।

नौगरा दे० ( खी० ) आभूषण विशेष, पहुँची, कँगन ।

नौची दे० ( खी० ) छोटी अवस्था की वेश्या, बेरवा की शिष्या, जो उसके बाद उसके पद की अधिकारिणी होती है ।

नौछावर दे० ( पु० ) निछावर, उतारा ।

नौजवान ( पु० ) तरुण, नवयुवक ।

नौढ़ना दे० ( कि० ) निढ़ुरना, नम्र होना, प्रणत होना ।

नौतन ( पु० ) नूतन, नया । [ आदर पूर्वक बुलाना ।

नौतना दे० ( कि० ) निमन्त्रण देना, नेवता देना,

नौता दे० ( पु० ) निमन्त्रण, नेवता ।

नौना दे० ( कि० ) नवना, निढ़ुरना, नौढ़ना; नौना मिट्टी ।

नौनी दे० ( खी० ) नैनु, मन्थन ।

नौवत दे० ( खी० ) समय, अवसर, वाद्ययंत्र अर्थात्, नगाड़ा नफीरा और कर्क ।—खाना ( पु० ) वाद्यगृह ।

नौमासा तन् ( पु० ) गर्भ के नवें मास का उत्सव, संस्कार विशेष, पुंयवन ।

नौमि तन् ( कि० ) मैं प्रणाम करता हूँ । [ नवों तिथि ।

नौमो तद् ( खी० ) नवमी, तिथि विशेष, पक्ष की

नौरंग ( पु० ) पक्षी विशेष, घोरंगड़ेय का अवधंसन ।

नौरतन तद् ( पु० ) नवरात ।

नौरोज ( पु० ) नवे साल का प्रथम दिवस, भातवर्ष में अकबरशाह ने इस नाम का एक मेला जारी किया था ।

नौल दे० ( वि० ) नवउ, सुन्दर ।

नौलखा ( पु० ) नौ लाख का, मूल्यवान ।

नौला ( पु० ) न्योछा, नकुल ।

नौशा ( पु० ) दुश्हा, वर ।

नौसिलिया ( पु० ) नवशिखित, अवलज ।

नौशिल तद् ( पु० ) नवशिखित छात्र, विद्यार्थी ।

नौसादर दे० ( पु० ) एक प्रकार का खार ।

न्यक्कार तन् ( पु० ) तिरस्कार, कुश्ला, निन्दा, गद्दा, अवज्ञा, घृणा ।

न्यग्रोध तन् ( पु० ) बटवृक्ष, बरगद ।

न्यसुद् तन् ( पु० ) दम भरय, संख्या विशेष ।

न्यस्त तन् ( पु० ) [ न्यस् + क्त ] समर्पित, दत्त, सज्जित, स्थापित, रचित ।—शस्त्र ( पु० ) जिसने शस्त्र छोड़ दिया हो, पगस्त, हरा हुआ ।

न्याउ ( पु० ) न्याय ।

न्याय तद् ( पु० ) नीति, युक्ति, यथार्थ, दित्त, तर्कशास्त्र, विचार, वितर्क, विवेचना ।—अधोश तद् ( पु० ) न्यायकर्त्ता, न्यायवादी ।—अजय ( पु० ) [ न्याय + अजय ] धर्माधिकार्य, विचारगृह ।—कर्त्ता ( पु० ) विचारक, न्यायाधीश, तर्कशास्त्रवेत्ता, गौतम मुनि ।—तः ( वि० ) धर्म से, न्याय से ।—शास्त्र ( पु० ) तर्कशास्त्र ।

न्यायक तद् ( पु० ) विचारक, न्यायकारी, न्यायकर्त्ता । न्यायो तन् ( पु० ) मन्व्यस्य, न्यायकर्त्ता, वचित करने वाला ।

न्याय्य तत्त्वं ( वि० ) उचित, यथार्थ, प्रशस्त ।  
 न्याया दे० ( वि० ) अलग, पृथक्, भिन्न, अति  
 रिक्त ।  
 न्यास तत्त्वं ( पु० ) रखने योग्य घन आदि अर्पण,  
 त्याग, तान्त्रिक क्रिया विशेष, धरोहर ।  
 न्याय तत्त्वं ( पु० ) न्याय, उचित, यथार्थ  
 विचार ।

न्यून तत्त्वं ( गु० ) असम्पूर्ण, किञ्चित्, थोड़ा, कम,  
 अल्प ।—ता ( स्त्री० ) छुटाई, नीचता, नीचापन ।  
 न्योताना ( कि० ) निमंत्रण देना, न्योता देना ।  
 न्योतहरी ( गु० ) निमंत्रित ।  
 न्योता दे० ( पु० ) निमन्त्रण, आह्वान, नीता ।  
 न्योला दे० ( पु० ) नकुल, नागरिपु ।  
 न्याना ( कि० ) स्नान करना ।

## प

प व्यञ्जन वर्ण का ह्रस्वीसर्वा अक्षर है । इसका उच्चारण  
 ओष्ठ से होता है, हम कारण इसे ओष्ठ्य कहते हैं ।  
 प तत्त्वं ( पु० ) पवन, वायु, पर्ण, पत्र, पात ।  
 पवार दे० ( पु० ) चक्र, राजपूनी की एक जाति  
 विशेष, परमार क्षत्रिय, अग्निवंशीय क्षत्रिय ।  
 पवारा दे० ( पु० ) कहानी, कथा, इतिहास ।  
 पवारिया दे० ( पु० ) भाट, कहानी कहने वाली एक  
 जाति जो नाचती और गाती है ।  
 पकड़ दे० ( स्त्री० ) ग्रहण, धरन, रोक ।  
 पकड़ना दे० ( कि० ) ग्रहण करना, रोकना, धरना,  
 गहना, अशुद्धि बताना । [ग्रहण कराना ।  
 पकड़ाना दे० ( कि० ) धरवा देना, पकड़वा देना,  
 पकना दे० ( कि० ) सीकना, रूँधना, पक्व होना ।  
 पकला दे० ( वि० ) घाव, छत, फोड़ा, कुंसी ।  
 पकवाई दे० ( स्त्री० ) पकाने का काम, सिद्ध करने का  
 काम, पकाने की मजूरी । [घी में बनी हुई सामग्री ।  
 पकवान दे० ( पु० ) पक्वाण, पकाया हुआ अन्न, मिठाई,  
 पकवाना दे० ( कि० ) सीकाना, बनवाना, रूँधाना ।  
 पका दे० ( वि० ) पक्व, पका हुआ, सिद्ध ।—पकाया  
 ( वा० ) पक्व बना हुआ, तैयार, सिद्ध, पकाकर  
 रखा हुआ, तैयार किया हुआ ।—ई दे० ( स्त्री० )  
 पकाने का काम, पकाने की मजूरी, सिद्धता,  
 तैयारी, पकाव ।—ता दे० ( कि० ) पकवाना,  
 पका करना, रूँधना, चुराना, सीकाना ।  
 पकाय दे० ( पु० ) ढड़ता, स्थिरता, पुखतापन ।  
 पफोड़ा दे० ( पु० ) पफौड़ी ( स्त्री० ) पाक विशेष,  
 बरा, फुलौड़ी, बजका ।

पका दे० ( वि० ) रींचा हुआ, पकाया हुआ, निपुण,  
 चतुर, दक्ष, सावधान, दृढ़, पोढ़ा, प्रौढ़, सिद्ध,  
 बनया हुआ ।  
 पकी दे० ( स्त्री० ) पोढ़ी, निखरी ।—रसोई दे०  
 ( स्त्री० ) वह रसोई जो खली, न हो, निखरी ।  
 पक्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ पच् + क्ति ] पाक, पकाना,  
 पकना, पाक करना, सिद्धि, पकाई ।  
 पक तत्त्वं ( वि० ) [ पच् + क ] परिणत, तैयार हुआ,  
 सिद्ध हुआ, सुदृढ़, निपुण, विनाश के लिये उन्मुख,  
 निरुद्ध विनाश । [घी में बनी हुई खाने की वस्तु ।  
 पकाश तत्त्वं ( गु० ) [ पक् + अश ] मिठाई आदि, केवल  
 पकाशय तत्त्वं ( पु० ) [ पक् + आशय ] नामि का  
 अधोभाग, पक्वाणस्थान, अन्न पकने का स्थान,  
 अन्नकोष ।  
 पत्त तत्त्वं ( पु० ) पंद्रह दिन रात, पाख, आधा  
 महीना, अर्धरा और उजेला पाख, पधियों का  
 अवयव विशेष, पर, पद्ध, पाख, डयना, डैना ।  
 सहायक, बल, सखा, मण्डज, दक्ष, समूह, पारव,  
 पांजर, रामकुंजर, पची, बलय, देह का अवयव,  
 देहाङ्ग ।—द्वार ( पु० ) पार्श्वद्वार, खिड़की का  
 द्वार ।—घर ( पु० ) चन्द्र, शशधर, संस्कृत के  
 एक प्रसिद्ध पवित्र का नाम ( देखो जयदेव )  
 ( वि० ) पञ्च धारण करने वाले, सहायक, साहा-  
 यदाता ।—पात ( पु० ) तरफदारी, अनुचित  
 सहायता दान, एक ओर झुकाव ।—पाती ( पु० )  
 पञ्चपातकर्त्ता, अनुचित साहाय्यदाता, अन्याय से  
 एक पक्ष की सहायता करने वाला, तरफदार ।

पक्षक तत्त्वं ( पु० ) मित्र, सुहृद्, सहायक, सिद्धि ।  
पक्षाघात तत्त्वं ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध-रोग विशेष,  
किसी किसी श्रेण का अवश हो जाना, लक्ष्मण  
का मार जाना ।

पक्षान्त तत्त्वं ( पु० ) [ पक्ष + अन्त ] पूर्णिमा, अमा-  
वस्या, पञ्चदशी पर्व । [यान्तर ।

पक्षान्तर तत्त्वं ( पु० ) भिन्नपक्ष, दूसरा पक्ष, विप-  
पक्षिराज तत्त्वं ( पु० ) गरुड़, मयूर, एक प्रकार का  
घोड़ा ।

पक्षिशाशक तत्त्वं ( पु० ) पक्षी के बच्चे ।

पक्षी तत्त्वं ( पु० ) पक्षधारी, परवाले जीव, पक्ष विशिष्ट,  
चिड़िया, पक्षरू, याव, तीर, विशिष्ट, सहायक ।

पक्षीय तत्त्वं ( वि० ) पक्ष का, दक्ष का, समूह का,  
शोर का, हिमायती, तरफदार ।

पक्ष्म तत्त्वं ( पु० ) अश्लोम, शरघनी, बाल के बाल,  
किञ्चुक, केदार, सूत्र आदि का अत्यल्प भाग,  
पलक । [ पञ्चद्व दिन, पाल ।

पक्ष तत्त्वं ( पु० ) पक्ष, पक्षधारा, आधा महीना,  
पक्षड़ी तत्त्वं ( स्त्री० ) पुष्प की पत्ती ।

पक्षरौटा दे० ( पु० ) तबक, सोने या रूपे का पत्र,  
जो पान के बीड़े या मिठाई पर लगाया जाता है ।

पक्षवारा दे० ( पु० ) पक्ष, मासार्द्ध, पञ्चद्व दिन ।

पक्षा दे० ( पु० ) पक्ष, पक्ष, पर । यथा—

“पक्षा मेर घारे जटा शीश सोई ।—  
( ज्ञानदीपक ) ।

पक्षाउज दे० [ देखो पक्षावज ] ।

पक्षान तत्त्वं ( पु० ) पापाण, परधर, उपल, यथा—  
“ज्यो पनिहारी जेवरी, खैचत कटत पक्षान ।

तुलसी रसना राम कहू. पाप कितिक अनुमान ॥”

पक्षारना दे० ( क्रि० ) प्रचालन करना, घोना, खंवा-  
लना, साफ करना, शुद्ध करना ।

पक्षारि दे० ( क्रि० ) धोये, प्रचालन किये, शुद्ध किये ।

पक्षाल दे० ( स्त्री० ) पुर, मसक, बड़ी मसक, चर्म  
निर्मित जलपात्र, यह एक प्रकार का चाम का  
बड़ा चौकोन घंटा होता है जिसमें जल लाते हैं ।  
भारवाड़ आदि देशों में जहाँ जल की महुँगी है  
वहाँ ऐसे थैले विशेष पाये जाते हैं ।

पक्षावज दे० ( पु० ) सप्तर, एक प्रकार का यान ।

पक्षावजी दे० ( पु० ) पक्षावज बजानेवाला  
पक्षरू दे० ( पु० ) पक्षी, चिड़िया, पक्षी ।

पक्षेस दे० ( पु० ) छाया, चिन्ह, मुद्रा, अङ्क, छाप ।

पक्षोर दे० ( पु० ) ठोकर, छात की ठोकर ।

पक्षोरन दे० ( पु० ) ठोकरे, यह पक्षोर शब्द का बहु-  
वचन है । [मारना. लात से मारना ।

पक्षोरना दे० ( क्रि० ) ठोकर मारना, लात का धक्का

पखोड़ा या पखौरा दे० ( पु० ) पार्श्व की हड्डी,  
कंधे की हड्डी ।

पग दे० ( पु० ) पद, पाँव, पैर, चरण, जोड़ ।—डगड़ी,  
या द्यगड़ी ( स्त्री० ) छोटा, मार्ग, बिना बनाया  
हुआ मार्ग, पदचिह्न, लीक, गुप्तमार्ग ।—धारना  
( क्रि० ) पधारना, आना ।—पर ताल घजाना  
( क्रि० ) नाचना और पैर से ताल बजाते जाना ।

पगड़ो दे० ( स्त्री० ) पाग, पगिया, सिरपन्था, सिर  
बाँधने का वस्त्र विशेष, वस्त्रोप, चौरा ।

पगना दे० ( क्रि० ) निमजित होना, डूबना, डूब  
जाना, रस में डूबना, मग्न होना, लीन होना ।

पगला दे० ( पु० ) पागल, उन्मत्त, मूख सिद्धी ।

पगहा दे० ( पु० ) बड़ी रस्सी, जिससे बैल भैंस आदि  
बाँधे जाते हैं ।

पगहिया, पगही दे० ( स्त्री० ) छोटा पगहा ।

पगा दे० ( वि० ) रस में डूबा हुआ, चीनी के रस  
में डूबाया गया । [गारा, गीली मिट्टी ।

पगार दे० ( पु० ) भीत बनाने के लिये गीली मिट्टी,

पगारनि दे० ( स्त्री० ) मुँदेरा, दूत की चाराँ ओर जो  
कुछ कैचा बना होता है । यथाः—

“अति उत्तम अगारनि बनी पगारनि  
जनु चिन्तामणिगार ।”

—रामचन्द्रिका ।

पगिया दे० ( स्त्री० ) पगड़ी, पाग, चौरा ।

पगु दे० ( पु० ) पाँव, पैर, पद, चरण ।

पगुराना दे० ( क्रि० ) रोमन्ध करना, चवाये हुए को  
पुनः खाना, जुगाली करना ।

पङ्क तत्त्वं ( पु० ) कर्दम, कड़ा, काँदो, पाँक, कीचड़ ।

—ज ( पु० ) कमल, पद्म, सरोरुद, पुण्डरीक ।

—निधि ( पु० ) समुद्र, सागर ।—रुद्ध ( पु० )  
कमल, पद्म, सरोरुद, सरसिज ।

पङ्क्ति तत्त्वं ( वि० ) कर्दममय, पङ्क्त्युक्त ।

पङ्क्तुद्वय तत्त्वं ( पु० ) पद्म, कमल, सारम नामक पञ्च विशेष ।

पङ्क्तार ( पु० ) वेद, सेवान, सिवार, बाँध, सीढ़ी ।

पङ्क्ति ( जु० ) कर्दम वाली जगद । ( पु० ) नौका, नाव ।

पङ्क्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) सजातीय संस्थान विशेष, एक समाज के मनुष्यों की बैठक, पाँति, पान, पङ्क्त, धारी, लकीर, श्रेणी कतार, पय का छन्द विशेष, दस की संख्या, पृथिवी, गौरव, प्रतिष्ठा, पाक, जन समूह, समा —चर ( पु० ) कुलपची, कुलम् । —द्रुपक ( पु० ) मवाङ्ग्य, श्राद्ध भोजी ब्राह्मण श्राद्ध में भोजन करने वाला ब्राह्मण, पवित्र ब्राह्मण । —पावन ( पु० ) पङ्क्ति को पवित्र करने वाला, श्रोत्रिय ब्राह्मण ।

पंख दे० ( पु० ) पाँख, पख, डयना, डैना ।

पंखड़ा दे० ( स्त्री० ) पँखड़ी, कली, फूल की पत्ती ।

पंखा दे० ( पु० ) धिजना, प्यजन, येना, पङ्खा ।

पंखिया दे० ( वि० ) रूगड़ा, पखेड़िया, दुराचारी, कुकर्मि ( स्त्री० ) छोटा पंखा ।

पंखी दे० ( स्त्री० ) छोटा पंखा, चिड़िया, पच्छी ।

पंगत दे० ( स्त्री० ) पाँति, धारी, श्रेणि, कतार ।

पंगला दे० ( वि० ) लगड़ा, पंगुल । [का कृत्रिम नून ।

पंगा दे० ( वि० ) पतला पानीसा, पणिहा, एक प्रकार

पंगास दे० ( पु० ) मछली का एक भेद ।

पंगु तत्त्वं ( वि० ) पाद बिछल चरने में असमर्थ, खज, खोड़ा, पाद हीन । ( पु० ) शनिमह ।

पंगुल तत्त्वं ( पु० ) श्वेताम्ब, शुक्लवर्ण का घोड़ा, श्वेत काँच के समान घोड़ा । ( वि० ) पंगु ।

पचक दे० ( स्त्री० ) पटकन, शुष्कता, सुखाई, उतार ।

पचकना दे० ( कि० ) पटकना, सूखना, शुष्क होना, गलना, सूख कर सिकुड़ जाना । [विभाग हों ।

पचखना दे० ( वि० ) पाँच खण्ड बाजा, जिसमें पाँच

पचघारा दे० ( वि० ) पाँच घर वाले मकान ।

पचतालिया दे० ( पु० ) वस्त्र विशेष, श्रोतनी की सारी ।

पचना दे० ( कि० ) सड़ना, गलना, यत्न करना, उद्योग करना, परिश्रम करना, अधिक परिश्रम से थक जाना, हलम होना ।

पचपचाना दे० ( कि० ) अत्यन्त सड़ना, पसीजना ।

पचपन दे० ( वि० ) संख्या विशेष, पचास और पाँच, २५ । [मिथान, पचखण्ड ।

पचमहला दे० ( वि० ) पचखना, पाँच महल का

पचमान तत्त्वं ( पु० ) पकाने वाला, पकाता हुआ ।

पचमिल दे० ( वि० ) मिलित, मिश्रित ।

पचमेल दे० ( वि० ) पचमिल, पाँच वस्तुओं को मिला-वट, मिश्रित, छाजमेल [ मैं पाँच लर हो ।

पचजड़ी दे० ( स्त्री० ) पाँच लरका हार, जिस हार

पचलोना दे० ( पु० ) औपध विशेष, एक ओपधि का नाम जिसमें पाँचों नमक पड़े हों ।

पचा डालना दे० ( कि० ) पचाना, खा जाना, जीर्ण कर देना, हड़प जाना, दया लेना ।

पचानवे दे० ( वि० ) संख्या विशेष, नव्वे पाँच १२ ।

पचाना दे० ( कि० ) पकाना, जीर्ण करना, हलम करना, सड़ाना ।

पचाव दे० ( पु० ) जीर्ण, पकाव, पचना, पक्व हो जाना ।

पचास दे० ( वि० ) संख्या विशेष, पाँच दहाई, २० ।

—क दे० जगमग पचास के ।

पचासी दे० ( वि० ) संख्या विशेष, अस्सी पाँच, ५५, पाँच अधिक अस्सी ।

पचि तत्त्वं ( कि० ) पच कर, हलम होके, धुपक होके, धुस कर, जी तोड़ कर । [ पाँच अधिक बीस ।

पचोस दे० ( वि० ) संख्या विशेष, बीस पाँच, २५,

पचोसा दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का खेल का नाम, यह खेल सात कौड़ियों से खेला जाता है ।

पचूका दे० ( पु० ) पिचकारी, दमकला ।

पचोतर दे० ( पु० ) पञ्चतर, पाँच अधिक सौ,

पचोतरा दे० ] पाँच रुपये सैकड़ा ।

पचौनी दे० ( स्त्री० ) पाकाशय, आमाशय, अन्न पचने का स्थान, ओम्ब, ओम, पटा ।

पचर दे० ( पु० ) कील, खूँटी, मेल, बड़ा खूँटा ।

—मारना ( वा० ) खिकाना, सताना, दुःख देना, थाड़ देना, हेतवे हुए किसी काम में विघ्न डालना, किसी के काम को बढ़ा देना ।

पचो दे० ( वि० ) लगा हुआ, संलग्न, संयुक्त, आसक्त, सटा हुआ ।—होना ( वा० ) दो वस्तुओं को सटाना, किसी चीज़ से दो वस्तुओं को जोड़

देना, बहुत प्रेम करना, अतिशय प्रेम होना ।  
 —फारी ( स्त्री० ) जड़ाई, खुड़ाई, गहनों पर नग  
 आदि जोड़ने का काम, जड़ाऊ गहने बनाना, रफू  
 करना, टीका मारना, सुधारना, खुड़ाई करना ।  
 पच्छिम, पच्छिम तद्० ( पु० ) पश्चिम, वह दिशा  
 जिसमें सूर्य अस्त होते हैं ।  
 पच्छी तत्० ( पु० ) पक्षी, चिड़िया, पक्षेरु ।  
 पछड़ा दे० ( स्त्री० ) पटकन, छड़कन, गिरना ।  
 —छाना ( बा० ) सिर के धाल गिरना, चेन्नाग  
 गिरना, छित गिरना । [ देना ।  
 पछड़ा दे० ( स्त्री० ) गिरना, पटकना, भूमि में गिरा  
 पछताना दे० ( स्त्री० ) पश्चात्ताप करना, पछुतावा  
 करना, पीछे से किसी बात पर दुःख करना,  
 शोक करना, खेद करना, अनुताप, वश न  
 रहने के कारण अभिय किसी कार्य के हो जाने से  
 जो दुःख होता है वह पश्चात्ताप कहा जाता है ।  
 पछुतावा दे० ( पु० ) पश्चात्ताप, शोक, खेद, अनुताप ।  
 पछनी दे० ( स्त्री० ) एक चरख का नाम, जिससे फोड़े  
 आदि चीरे जाते हैं, छुरा, नहरनी ।  
 पछपात तद्० ( पु० ) पछपात, सिफारिश, किसी  
 धोर का साथ ।  
 पछवा दे० ( स्त्री० ) पश्चिमवात, पच्छिम की हवा, जो  
 पवन पच्छिम की धोर से आती है । [ दिशा के देश ।  
 पछाई दे० ( पु० ) पश्चिम दिशा, पश्चिमदेश पश्चिम  
 पछियाव दे० ( स्त्री० ) पश्चिम हवा, पछवा बयार ।  
 पछोड़ना } ( स्त्री० ) पटकना, सूब से पटक कर  
 पछोरना } साफ करना ।  
 पजावा दे० ( पु० ) भट्टा जहाँ ईंटें आदि पकायी  
 जाती हैं ।  
 पजेव दे० ( स्त्री० ) घूँघरू, पाँव का गहना, मूँवर ।  
 पजोड़ा दे० ( वि० ) निष्क्रमा, दुष्ट, दुश्चरित्र, अधम,  
 नीच ।  
 पञ्च तत्० ( वि० ) संख्या विशेष, पाँच, ५ ( पु० )  
 चौधरी, समाज का अगुआ, पञ्चायत में बैठकर  
 विचार करने वाला, मज्यस्थ, विचारकर्ता ।  
 —कपाल ( पु० ) यक्ष विशेष ।—कपाय ( पु० )  
 क्षीपक विशेष ।—कोश ( पु० ) छद्ममय, प्रायमय,  
 मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय के पाँच

कोश ।—गज्य ( पु० ) गौ के पाँच पदार्थ दही,  
 दूध, गोमूत्र, गोमय, गोघृत, ।—चामर ( पु० )  
 छन्द विशेष, वह छन्द सोलह अक्षरों का होता है,  
 इसमें एक अक्षर लघु और एक अक्षर गुरु होता  
 है ।—चूड़ा ( स्त्री० ) अप्सरा विशेष, स्वर्गीय  
 वेश्या विशेष ।—जन ( पु० ) दैत्य विशेष, असुर  
 विशेष, यह असुर पाताल में रहता था, भगवान्  
 श्री कृष्ण ने इसे मारा था, इसकी हड्डी से जो  
 शङ्ख बना है उसे पाशुपत्य कहते हैं, वह भगवान्  
 कृष्ण का प्रिय शङ्ख है ।—ज्योनार ( पु० ) पाँच  
 प्रकार का भोजन, भोज्य, भक्ष्य, लेख्य, चोप्य,  
 पेय, पंचों की ज्योनार ।—तत्व ( पु० ) पञ्चतत्त्व,  
 आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथिवी ।—तन्त्र  
 ( पु० ) पाँच प्रकार के तन्त्र, मारण, मोहन, बरी-  
 काण, बचाटन और वीर्यपण, इस नाम की एक  
 पुस्तक ।—तन्मात्र ( पु० ) पृथिवी आदि सूक्ष्म  
 पञ्चभूत, रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श ।—ता या त्व  
 ( स्त्री० ) मृग्य, मरण, निधन, काल धर्म, पशुत्व ।  
 —थु ( पु० ) कोयल, कोकिला ।—दश ( वि० )  
 पन्द्रहवाँ संख्या, पन्द्रह वें पूर्ण करने वाली  
 संख्या ।—दशानर्थ ( पु० ) पन्द्रह प्रकार के  
 अनर्थ, यथा—चोरी, हिंसा, मिथ्या, दुग्ध, काम,  
 क्रोध, विस्मरण वैर, अशर्तता, भेद, खेद, चिन्ता,  
 लोभ, गर्व, स्वर्द्धा ।—धा ( अ० ) पाँच प्रकार,  
 पञ्चविध ।—नख ( पु० ) मनुष्य, जानर, हस्ती,  
 कूर्म, व्याघ्र, शशक, शङ्खकी, गोपी, गेंडा, कूर्म ।  
 —नद् ( पु० ) देश विशेष, पंजाब देश, वह देश  
 जहाँ पाँच नदी हैं । सतलज, व्यास, रावी, घग्ग, सत-  
 लज ।—पाण्डव ( पु० ) पाण्डु राजा के पाँच  
 पुत्र यथा—सुबिहिर, भीम, अर्जुन, नकुल और  
 सहदेव ।—पात्र ( पु० ) पूजा का पात्र विशेष,  
 पाँच पात्रों से किया जाने वाला, पार्वण आद,  
 विशेष ।—प्राण ( पु० ) शरीरस्थ, प्राणादि पाँच  
 वायु, यथा—प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान ।  
 —भद्र ( पु० ) घोड़ा जिसके ५ शुभ लक्षण हों ।  
 भूत ( पु० ) पञ्चतत्त्व, पृथिवी, जल, तेज, वायु  
 और आकाश ।—भूतात्मा ( पु० ) देही, प्राणी,  
 शरीरी ।—मकार ( पु० ) द्वा



उषाग्ना, मघ, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मेथुन ।  
 —महायज्ञ ( पु० ) सृष्टियों के पाँच प्रकार के  
 नित्य, कर्म. यथा—ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ,  
 नृपयज्ञ, और मृतयज्ञ अर्थात् पाठ, तर्पण, हवन,  
 अतिथिमेवा और पूजा ।—मुख ( पु० ) श्रीमहा-  
 देव ।—मुद्रा ( स्त्री० ) देवपूजा में नित्य की  
 जाने वाली पाँच मुद्राएँ, यथा—आवाहनी, स्वा-  
 पनी, सन्निधानी, सम्बोधनी और सम्मुखीकरणी ।  
 —रत्नो ( वि० ) विचित्र वर्ण, अनेक प्रकार के  
 रंगों से रंगा ।—रत्न ( पु० ) सुवर्ण आदि पाँच  
 प्रकार के रत्न, यथा—सुवर्ण, रौप्य, मुक्ता,  
 स्फटिक, ताँबा ।—रात्र ( पु० ) ग्रन्थ विशेष,  
 श्रीवैष्णवशास्त्र का ग्रन्थ ।—रक्त ( पु० ) शिव,  
 महादेव ।—वटी ( स्त्री० ) पाँच प्रकार के वृक्षों  
 का समूह, एक स्थान का नाम, जो गोदावरी  
 नदी के तीरे पर है, वनवास के समय कुछ वर्षों  
 तक श्रीरामचन्द्रजी यहीं रहते थे ।—शर ( पु० )  
 कामदेव, मदन, मन्मथ ।—शाख ( पु० ) हाथ  
 कर, दत्त ।—शिख ( पु० ) सिंह, कैसरी, अपि  
 विशेष, ये विख्यात दार्शनिक आसुरि के शिष्य  
 थे । आसुरि प्रसिद्ध सांख्य दर्शन के रचयिता  
 महर्षि कपिलदेव के शिष्य थे । पञ्चशिख ने ही  
 सांख्य दर्शन का प्रचार किया है । आसुरि की  
 स्त्री का नाम कपिला या । पञ्चशिख ने पुत्रभाव  
 से गुरुपत्नी कपिला के स्तन्यपान किये थे, इसी  
 कारण इन्होंने बहुत लोग कपिलापुत्र भी कहते  
 हैं ।—सूना ( स्त्री० ) प्रायियों के वध के पाँच  
 स्थान, यथा—चूबहा, चपकी, ऊखल, वदनी और  
 घड़ा रखने का स्थान ।

पञ्चक तत्त्वं ( पु० ) अनिष्टा से लेकर देवती तक पाँच  
 तत्त्व, पाँच संख्या, पञ्चम सम्बन्धीय ।

पञ्चो दे० ( स्त्री० ) पानी के जोर में चलने वाली  
 चपकी, जलयन्त्र, एक प्रकार का यन्त्र जो पानी के  
 घटके से चलता है, इससे आटा आदि पीसा  
 जाता है ।

पञ्चम तत्त्वं ( वि० ) पाँच की संख्या को पूरण करने  
 वाली संख्या, बीया आदि से उत्पन्न स्वर  
 विशेष ।

पञ्चमी तत्त्वं ( स्त्री० ) चन्द्रमा की पाँचवी कला की  
 क्रिया का काल, तिथि विशेष, पाँचवी तिथि, पक्ष  
 की पाँचवी तिथि ।

पञ्चाङ्ग तत्त्वं ( पु० ) पत्रा, पञ्जिका, ग्रह, नक्षत्र, तिथि  
 आदि देखने का पत्रा, जंत्री ।

पञ्चाङ्गुल तत्त्वं ( वि० ) पाँच अँगुलि परिमाण युक्त ।  
 पञ्चाङ्गुली तत्त्वं ( स्त्री० ) पाँच अँगुलियाँ, पाँचों  
 अँगुली, यथा—अँगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका  
 और कनिष्ठा ।

पञ्चाध्यायी तत्त्वं ( स्त्री० ) श्रीमद्भागवत के रासमण्डल  
 के पाँच अध्यायों का समुदाय, रासपञ्चाध्यायी ।

पञ्चानन तत्त्वं ( पु० ) सिंह, कैसरी, शेर, महादेव,  
 शिव, शङ्कर ।

पञ्चामृत तत्त्वं ( पु० ) शर्करा, दुग्ध, घृत, दधि  
 और मधु, इन पाँचों वस्तुओं के मेल से बनी हुई  
 वस्तु, यह वस्तु भगवान के स्नान के लिए बनाई  
 जाती है ।—योग ( पु० ) औपधि विशेष, गुरुव,  
 गोष्ठुर, भूसली मुखिका और . शतावरा, इनके  
 योग से बनी औपधि ।

पञ्चाम्नाय तत्त्वं ( पु० ) शिव के पाँच मुख से निकला  
 हुआ पाँच प्रकार का शैवशास्त्र, तन्त्रशास्त्र ।

पञ्चायत दे० ( स्त्री० ) जातीय सभा, जो किसी  
 विवाद को शान्ति करने के लिये होती है, विचार  
 करने की सभा ।

पञ्चाल तत्त्वं ( पु० ) देश विशेष, पञ्जाब देश ।

पञ्चालिका तत्त्वं ( स्त्री० ) यक्ष आदि की बनाई  
 हुई पुतली, कठपुतली, गुड़िया, गीत विशेष,  
 द्रौपदी, पञ्चाल देश की राजकन्या ।

पञ्चावस्था तत्त्वं ( स्त्री० ) मनुष्यों की पाँच अवस्थाएँ,  
 यथा—शाल्य, कुमार, पीण्ड, युवा और  
 वृद्ध ।

पञ्चीकरण तत्त्वं ( पु० ) पञ्चभूत के भागों का मिलान,  
 सृष्टि प्रकरण का एक सिद्धान्त ।

पञ्चेन्द्रिय तत्त्वं ( पु० ) पाँच इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञाने-  
 न्द्रिय या कर्मेन्द्रिय ।

पञ्चो दे० ( पु० ) सायी, सक्ती, मित्रमण्डल ।

पञ्चाला दे० ( पु० ) गुह्री की पूँछ ।

पञ्चो दे० ( पु० ) पची, पखेरू, चिड़िया ।

पञ्जर तत्० ( पु० ) शरीर की हड्डियों का समूह, पाँजर, पसली, ठठरी, पिंजड़ा, पचियों के रहने के स्थान, पिंजरा ।

पञ्जिका तत्० ( खी० ) पुस्तक विशेष, जिससे तिथि वार आदि जाने जाते हैं, पचाङ्क, तिथिपत्र ।

पञ्जीरी दे० ( खी० ) एक प्रकार का देवता का प्रसाद, कस्तूर, धी में आटा भून कर और शरकरा मिला कर जो पदार्थ बनता है ।

पट तत्० ( पु० ) वस्त्र, वसन, कपड़ा, कपड़े का बना हुआ चित्र, पर्दा, यवनिका शब्द विशेष जो आघात से उत्पन्न होता है, गिरने या मारने का शब्द, किवाड़, देवमन्दिर का किवाड़, तिर्यक्, सीधा ।—कार ( पु० ) सन्तुषाप, वस्त्र निर्माथ-कर्ता ।—कुटी ( खी० ) कपड़े का घर, तम्बू, कनात ।—मञ्जरी ( खी० ) एक रागिनी का नाम ।—मण्डप ( पु० ) बखगृह, तम्बू ।—वेश्य ( पु० ) कपड़े का घर, डेरा, रामियाना ।

पटक तत्० ( पु० ) डेरा, कनात, पटाव, छावनी, शिविर, सेना के रहने का स्थान ।

पटकन दे० ( खी० ) पछाड़, पटकी, चोट ।—खाना ( बा० ) पछाड़ खाना, गिरना ।

पटकना दे० ( क्रि० ) पछाड़ना, गिराना, नीचे गिराना ।

पटका दे० ( पु० ) कमरबन्द, कमर बाँधने का वस्त्र ।

—जाना ( क्रि० ) पछाड़ा जाना, गिराया जाना, पटकाना दे० ( क्रि० ) गिराया जाना, पछाड़ा जाना ।

पटखर ( पु० ) चियड़ा, पुराना कपड़ा ।

पटड़ा दे० ( पु० ) सिली, तख्ता, पटरी, पीड़ा ।

पटतर दे० ( पु० ) उपमा, बराबरी, समता, उदाहरण, मिसाल ।

पटन दे० ( पु० ) पाटन, छावन, कोठा आदि की पटरी से पाटना, छत पाटना, छत बनाना ।

पटना दे० ( क्रि० ) पाटना, पाटन करना, छावना, भर पाना, वसूल हो जाना, हुँदी आदि के रुपये मिल जाना, सौचना, पानी सौचना, भरना, छाया जाना । ( पु० ) नगर विशेष, पाटलीपुत्र, यह नगर किसी समय बिहार की राजधानी था ।

पटनि ( खी० ) कपड़े, वस्त्र ।

पटनी दे० ( खी० ) नैया, मॉकी, कर्णधार, केवट ।

पटपट दे० ( पु० ) शब्द विशेष, अत्यन्त शब्द जो धातु आदि के भूजने से या मारने से होता है ।

पटपर दे० ( वि० ) बंजर, ऊसर ।

पटरा दे० ( पु० ) पटड़ा, तख्ता ।

पटरानी तद्० ( खी० ) बड़ी रानी, महिषी, महारानी, राजा की वह स्त्री जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो, पटरानी ।

पटरी दे० ( खी० ) छोटा पटरा, तख्ता ।

पटल तत्० ( पु० ) परदा, उपना, कियाड़, परवर ।

पटली ( खी० ) धोशी, पंक्ति, पौत, झूले पर बैठने की काठ की पटरी । [ रेशम या डोरे में पिरोते हैं ।

पटथा दे० ( पु० ) जाति विशेष, जो आभूषणों को पटवाना दे० ( क्रि० ) रुपये भरवाना, रुपये वसूल कर लेना, सिंचवाना, किसी गढ़े को भरवाना ।

पटवारी दे० ( पु० ) गाँव का हिसाब रखने वाला, भूमि का लेखा रखने वाला ।

पटह तत्० ( पु० ) भेरी, दुन्दुभि, तगारा ।

पटा दे० ( पु० ) पाट, काष्ठान्न, जिस पर धैत कर भोजन या देव पूजन आदि किया जाता है ।

पीड़ा, गदका । [ पटाक शब्द ।

पटाक ( पु० ) किसी छोटी चीज़ के गिरने का पटाका दे० ( पु० ) छुड़ाका, शब्द विशेष, एक प्रकार की आतिशयाज्ञी, धर्मिकीड़ा ।

पटाना दे० ( क्रि० ) सौचना, पानी देना, चौका देना, लीपना, गोबर से या मिट्टी से लीपना, पोतना ।

कड़ी और पटरी से छत को बन्द कराना । हुँदी के रुपये भरना, विवाद मिटाना, विलुप्त होना, फैल जाना, किसी गर्त को मिट्टी से भरवाना ।

पटापट दे० ( पु० ) मारने का शब्द, अत्यन्त शब्द विशेष ।

पटाव दे० ( पु० ) सिचाई, छावाई, हार के ऊपर का काठ, छत की कड़ी पर तख्ता आदि रख कर मिट्टी का भराव देना ।

पटिया दे० ( खी० ) पटरी, पट्टा, सिली, सिर की वनाई चोटी, स्लैट, पट्टी । ( पु० ) एक गहना जो गले में पहना जाता है, पटिया, दुस्सी ।

पटीना दे० ( पु० ) एक प्रकार के पट्टी का नाम ।

पट्टीमा दे० ( पु० ) छापने का पट्टा, जिस तख्ते पर कपड़े रख कर छपी लोग छापते हैं ।  
 पट्टीर तत्० ( पु० ) चलनी, चालनी, कियारी, खेत, चारिद, मेघ, वेणुसार, बंशरोचन, वातरोग विशेष, चन्दन, खदिर, खैर, उदर, जठर, पेट, कन्दर्प ।  
 पट्टीलना दे० ( कि० ) निचोड़ना, चूसना, सार निकाल लेना, मारना, पीटना, फुसलाना ।  
 पट्ट तत्० ( वि० ) दब, निपुण, नीरोग, चतुर, कुशल, होशियार, चालाक, सुन्दर, तीक्ष्ण, स्फुट, निष्ठुर दयाहीन, धूर्त शठ । ( पु० ) पटोल, परोरा, परवर, फरेला ।—ता ( स्त्री० ) ।—त्व ( पु० ) चतुराई, दक्षता, कुशलता, निपुणता ।  
 पट्टवा दे० ( पु० ) पटवा, रेशम का काम करने वाला, रेशम से माला आदि रँगने का काम करने वाला, पट्टरा जो याजू घेरली पिरोते हैं ।  
 पट्टका दे० ( पु० ) पटका, कमरबन्द, कटिबंधन, कमर बाँधने का कपड़ा ।  
 पट्टत दे० ( पु० ) पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पट्टता, चतुरता ।  
 पट्टवा दे० ( पु० ) पाट, सन विशेष, जिसकी रस्सी तथा कपड़े कम्बल आदि बनते हैं ।  
 पट्टर दे० ( पु० ) एक पीपे का नाम, गोंदी ।  
 पट्टरा दे० ( पु० ) एक तरह का वृक्ष ।  
 पट्टल दे० ( पु० ) लठवाजी का काम, प्रभुत्व, अधिकार, जाति विशेष, कुर्मी जाति का सरपन्न, गाँव का मुखिया, अगुवा, गुजरात महाराष्ट्र आदि प्रान्तों के कायस्थों की एक पदवी ।  
 पट्टेला दे० ( पु० ) एक प्रकार की नाव, बजरा ।  
 पट्टेली दे० ( स्त्री० ) छोटा पट्टेला, छोटी नाव ।  
 पट्टैत दे० ( पु० ) लटैत, डँगैल, लठ चलाने की क्रिया में कुशल, पट्टेजा ।  
 पट्टैला ( पु० ) देखो पट्टेला ।  
 पट्टोतन दे० ( पु० ) पटन, पाटन, तख्ते से घर पाटना ।  
 पट्टोर दे० ( पु० ) रेशमी वस्त्र, रेशमी डोगा, पट्टवा, पाट के बने कपड़े ।  
 पट्टोल तत्० ( पु० ) परवर, परोरा, परवल ।  
 पट्टोलिका ( स्त्री० ) सफेद फूल की तुलई ।  
 पट्टोहिया दे० ( पु० ) उल्लू, पेचा, उल्लूक ।  
 पट्टोनी दे० ( पु० ) पट्टेली नाव, पैया ।

पट्ट तत्० ( पु० ) पाटी, रेशमी सन के कपड़े, कौशेय वस्त्र, पगड़ी ।—महिषी ( स्त्री० ) प्रधान महारानी, पट्टरानी ।—शिष्य तत्० ( पु० ) प्रधान चेला ।  
 पट्टन तत्० ( पु० ) नगर, पत्तन, बड़ा ग्राम, शहर ।  
 पट्टा दे० ( पु० ) घोड़े की पेटी, कुत्ते के गले में बाँधने का चमड़ा, कानों के पास रखे हुए वाला, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार पत्र ।  
 पट्टी दे० ( स्त्री० ) पाटी फोड़ा बाँधने का कपड़ा किसी वस्तु का भाग, लिखने की पट्टिया, तपस्ती ।  
 पट्ट दे० ( पु० ) एक प्रकार का गरम कपड़ा जो ऊन का होता है, जिसे पट्ट भी कहते हैं ।  
 पट्टा दे० ( पु० ) नवयुवा, पहलवान, कुर्ती लड़ने वाला, पाठा, जवान हाथी, नस, सिरा ।  
 पटन तत्० ( पु० ) पाठ, पढ़ना, अध्ययन  
 पठनीय ( गु० ) पढ़ने योग्य ।  
 पठाना दे० ( कि० ) भोजना, खाना, करना, पठवाना ।  
 पठानी ( कि० ) खाना करना, भोजना, पठवाना ।  
 पठावनी ( स्त्री० ) पठाने की उज्जरत ।  
 पठित ( गु० ) पढ़ा हुआ । [ छोटी यकनी ।  
 पठिया दे० ( स्त्री० ) युवती, तरुणी, जवान स्त्री,  
 पठौना दे० ( कि० ) पठाना, भोजना, पठवाना ।  
 पठौनी दे० ( स्त्री० ) पठाने की मजूरी, भेजने का दाम, भिजवाने की उज्जरत, सौगात जो लड़की के घर वालों की ओर से घर के घर वालों के यहाँ भेजी जाती है ।  
 पड़ जाना दे० ( कि० ) पटका जाना, पड़ाई खा जाना, गिरना ।  
 पड़ना दे० ( कि० ) गिरना, पटकना, धटना, घट जाना, ठहर जाना, डेरा करना ।  
 पड़वा तत्० ( स्त्री० ) प्रतिपदा, परवा, परेवा ।  
 पड़पड़ाना दे० ( कि० ) बड़बड़ाना, बिना प्रयोजन की बातें करना, पीटना, खूब पीटना, जलना ।  
 पड़रहना दे० ( वा० ) सो रहना, काम छोड़ देना, हताश होना, निराश हो जाना ।  
 पड़रा दे० ( पु० ) मैस का बच्चा, पड़वा ।  
 पड़ा दे० ( पु० ) पड़रा, मैस का बच्चा ।  
 पड़ापड़ा दे० ( अ० ) बार बार मार से खूब मार के, धमाधम पीटकर ।

पड़ापाना दे० (क्रि०) अनायास पाना, सहज से पाना, यिना परिश्रम पा लेना, गिरा पाना ।

पड़ाव दे० (पु०) शिविर, सन्निवेश, सेना के उभरने का स्थान, छावनी, देश कंप्, मार्ग का वास-स्थान ।

पड़िया दे० (स्त्री०) भैंस की बच्ची, पाड़ी ।

पड़ोस दे० (पु०) प्रतिवास, समीपवास, सचिकटवास ।

पड़ोसी दे० (पु०) प्रतिवासी, समीपवासी पास पास रहने वाले आपस के पड़ोसी हैं । [ अग्न्यास ।

पढ़न दे० (स्त्री०) पढ़ने की चाल, अध्ययन की रीति,

पढ़ना दे० (क्रि०) पाठ पढ़ना, अध्ययन करना,

अभ्यास करना, मँचना, सीखना, रटना, धोखना ।

पढ़न्त दे० (स्त्री०) अध्ययन, पाठ, सन्या, सवक ।

पढ़ा दे० (वि०) परिष्कृत, पढ़ा हुआ ।—गुना (वि०)

—लिखा (वि०) पढ़ा हुआ, प्रवीण, अभिज्ञ ।

पढ़ाना दे० (क्रि०) सिखाना, सिखलाना, शिक्षा

देना, विद्या अध्ययन कराना, पाठ पढ़ाना,

सन्या देना ।

पढ़िन दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली ।

पण तत्० (पु०) प्रतिज्ञा, वचन, होष, शर्त, बीस

गण्डे कीड़ी का परिमाण, व्यवहार, लेन देन का

व्यापार, मूल्य, वेतन ।—न तत्० (पु०) बेचना,

विक्रय करना, दूकान चलाना ।

पण्य (पु०) छोटा नगाड़ा ।

पणित तत्० (वि०) बेचा गया, बेचा हुआ, विक्रीत

शर्त किया हुआ, स्तुत, स्तुति किया हुआ ।

पण्ड (स्त्री०) मति, बुद्धि । [ (स्त्री०) मति, बुद्धि ।

पण्डा दे० (पु०) पुजारी, देवपूजक, तीर्थ पुरोहित ।

पण्डित तत्० (पु०) विद्वान्, पढ़ा हुआ अध्यापक,

पढ़ाने वाला—मन्य (पु०) पण्डितमिमानी,

विद्यामिमानी, मूर्ख ।

पण्डिता (स्त्री०) पढ़ी लिखी औरत, शिक्षिता स्त्री,

विदुषी स्त्री ।—ई दे० (स्त्री०) पण्डित का काम,

कर्मकाण्ड आदि करने का कृत्य ।

पण्डिताइन दे० (स्त्री०) पण्डित की स्त्री ।

पण्डुक दे० (पु०) पछी विशेष, धुष्पू ।

पण्डुची दे० (स्त्री०) जल का पछी विशेष ।

पण्य (पु०) बेचने योग्य वस्तु, व्यवहार की वस्तु,

बेचने के लिये बाजार में रखी हुई वस्तु ।

—वीथी (स्त्री०) हाट, बाजार, दूकान ।

—शाला (स्त्री०) दूकान, हाट, बाजार ।—स्त्री

(स्त्री०) बेरिया, बाराहना, पतुरिया ।

पत दे० (स्त्री०) सुण्याति, बढ़ाई, प्रतिष्ठा, कीर्ति,

यश ।—ज (पु०) परिद, पची ।

पतङ्ग तत्० (पु०) सूर्य, पची, फतिहा, टिहरी, गुहरी,

कनकौद्या, उड़ने वाला झीड़ा, एक प्रकार की

लकड़ी जिससे रङ्ग निकाला जाता है ।

पतङ्गा दे० (पु०) फतिहा, चिनगारी, चिनगी,

स्फुलिक, अग्नि के छोटे छोटे कण ।

पतञ्जलि { तत्० (पु०) व्याकरण महाभाष्यकर्ता

या पतञ्जली } अथि इन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर भाष्य-

बनाया है । योगदर्शन कार पतञ्जलि और व्याकरण

महाभाष्यकार पतञ्जलि दोनों एकही व्यक्ति थे । कात्या-

यन ने पाणिनि के सूत्रों का खण्डन किया और पाणिनि

के पचपाती पतञ्जलि ने कात्यायन के वार्तिकों का

अपने भाष्य में खण्डन किया । इन्होंने एक वैद्यक का

भी ग्रन्थ बनाया है । भारत के पूर्वभागस्थ गोनर्द

प्रदेश के ये वाली थे, इनकी माता का नाम

गोयिका था । पुरातत्ववेत्ता पण्डितों ने महाभाष्य

के शब्दों और वाक्यों के आधार पर पतञ्जलि

का समय निर्णय कर दिया है “ मौर्यैर्हिरेयपरि-

भिरचाः प्रकल्पिता ” इस वाक्य के टुकड़े से यह

अवश्य मानना होगा कि चन्द्रगुप्त के पीछे पतञ्जलि

हुए हैं । अतएव उन विद्वानों ने ईशवी सन् के

१८० वर्ष पूर्व पतञ्जलि का समय माना है । इसी

प्रकार और प्रमायों के आधार पर यूनानी

मिनिपहर और पाटलीपुत्र (पटना) के राजा पुष्प-

मित्र के समकालीन थे पतञ्जलि का मानते हैं ।

पतझड़ दे० (पु०) एक ऋतु का नाम, जिस ऋतु

में घृष्टों के पत्ते झड़ जाते हैं, घसन्त ।

पतन तत्० (पु०) [ पत् + अनट् ] पड़ाइ, पटकन,

पड़न, गिरन, स्थलन ।

पतत्र तत्० (पु०) पत्र, पंख, पर, पाँख ।—नि (पु०)

पची, चिड़िया । [ पात्र ।

पतदुग्रह तत्० (पु०) पीकदान, पीकदानी, स्टीवन

पतला दे० (वि०) सूक्ष्म, झीना, कृश, दुर्बल, महीन ।

पतलाई दे० ( स्त्री० ) दुर्बलता, दुबलापन ।  
 पतलो ( पु० ) सरकंडे की पताई ।  
 पतवार दे० ( स्त्री० ) कन्हर, नाव के पीछे का डॉक  
 जिससे नाव दहिने बाये घुमायी जाती है ।  
 पता दे० ( पु० ) चिन्ह, खोज, सन्धान, ठिकाना ।  
 पताका तत्० ( स्त्री० ) ध्वजा, कंडा, निशान,  
 फरहरा ।

पताकी तत्० ( पु० ) पताकाधारी, ध्वजाधारी,  
 ध्वजैल, ध्वजा वाला ।—नी ( स्त्री० ) सेना ।

पति तत्० ( पु० ) स्वामी, प्रभु, भर्ता, रक्षक, धव ।  
 —देव—देवता ( स्त्री० ) पति को देवता के  
 समान समझने वाली स्त्री, देवयुद्धि से पति ही की  
 सेवा करने वाली, पतिव्रता । यथा:—

“ पतिदेवन की गुरु बेटी ।  
 तेरों यम मृत फहावत चेटी ॥ ”

—रामचन्द्रिका ।

—भुक् ( पु० ) पति में अनुराग रखने वाली स्त्री ।

—व्रता ( स्त्री० ) कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पति  
 की सेवा करने वाली स्त्री ।

पतित तत्० ( वि० ) भ्रष्ट, दोषी, कलहूरी, जाति च्युत,  
 समाजच्युत, अधर्मी । ( पु० ) अन्त्यज, अकूत जाति,  
 अस्पृश्य जाति ।—पावन ( पु० ) पतितों को  
 पवित्र करने वाला, परमात्मा, परमेश्वर ।

पतिमा तद्० ( स्त्री० ) प्रतिमा, मूर्ति, किसी वस्तु  
 की बनी हुई मूर्ति । [ का पत्र ।

पतिया दे० ( स्त्री० ) चिट्ठी, पत्र, प्रतीति पत्र, विश्वास  
 पतियाना दे० ( क्रि० ) भरोसा करना, विश्वास करना,  
 प्रतीति करना ।

पतियारा दे० ( पु० ) भरोसा, विश्वास, प्रतीति ।  
 पतिवरण तद्० ( स्त्री० ) पतिवरण करने के योग्य स्त्री,  
 विवाह योग्य अथवा बाली । [ चटाई ।

पतरी दे० ( स्त्री० ) चटाई विशेष, एक प्रकार की  
 पतील दे० ( वि० ) पतला, झीना, मिहीं ।— ( पु० )  
 बटुआ, बटुला ।

पतीली दे० ( स्त्री० ) बटुवी, बटुई, बटलोई, देगची ।  
 पतुकी दे० ( स्त्री० ) मिट्टी की हबिया, छोटी  
 कड़ाही ।

पतुरिया दे० ( स्त्री० ) चेरया, नर्तकी, चाराहना ।

पतुली ( स्त्री० ) पहुँचे में पहनने का एक प्रकार का  
 आभूषण ।

पतुही ( स्त्री० ) छोटे दानों वाली मटर की छीमी ।

पतोह दे० ( स्त्री० ) बेरा की स्त्री, पुत्रवधू, बहू ।

पतोवा दे० ( पु० ) पत्ती, पत्ता, पल्लव, पात ।

पतन तत्० ( पु० ) नगर, ग्राम, पुर, शहर ।

पत्तर दे० ( पु० ) पत्र, पत्ता, चिट्ठी, सोने चाँदी या  
 ताँबे का पत्र, जिसमें दान आदि की बातें लिखी  
 जाती हैं ।

पत्तल दे० ( स्त्री० ) पतवार, पतरी, पत्ता ।

पत्ता दे० ( पु० ) पात, पत्र, पत्ती, कानों में पहनने का  
 स्त्रियों का एक आभूषण ।—होना ( वा० ) भाग  
 जाना, निकल जाना, चंपत होना ।

पत्ति तत्० ( पु० ) पैदल चलने वाली सेना, एक प्रकार  
 की सेना का नाम । एक रथ, एक हाथी, तीन  
 घोड़े और पाँच पैदल जिस सेना में हों उसका  
 नाम पत्ति है ।

पत्ती दे० ( स्त्री० ) पाती, पत्र, पंखड़ी, भोंग, बूटी ।

पत्थर दे० ( पु० ) पत्थान, सिला, पाथर, उपल ।

—झाती पर रखना ( वा० ) सन्तोष करना, सह-  
 लेना, बश न चलने से चुप रह जाना, यहूत बड़ी  
 आपत्ति को धीरज पूर्वक सहना ।—पसीजना  
 ( वा० ) कोमल चित होना, सद्प होना, दयावान्  
 होना, दुःखी पर दया करना —पानी होजाना  
 ( वा० ) कठोर चित का भी कोमल हो जाना,  
 क्रूर चित में भी दया उत्पन्न होना ।—सा फेंक  
 मारना ( वा० ) बिना समझे झूठे लड़ना, बात  
 बिना जाने ही उल्टा देना, कठोर बात कहना,  
 कड़ी बात कहना ।—से सिर फोड़ना ( वा० )  
 कठिन काम करने के लिये उद्यम होना, मूर्ख को  
 सिखाना, नासमझ को समझाना ।—डेरना ( वा० )  
 भारी होना, ठिठक जाना, अचञ्च होना, निर्दय  
 होना ।—फला ( स्त्री० ) पुरानी चाक की बंदूक ।  
 पत्ती तत्० ( स्त्री० ) भार्या, स्त्री, दार, जोर, कुटुम्बिनी ।  
 पत्थारी दे० ( पु० ) पतियारा ।  
 पत्र तत्० ( पु० ) पाती, चिट्ठी, पत्ता, पत्र, पत्रा,  
 —दाता ( पु० ) चिट्ठी देने वाला, चिट्ठी बाँटने  
 वाला, चिट्ठीरसा ।—दारक ( पु० ) प्रभु, भ्रात्र,

बाबक, बाबु ।—परशु ( खी० ) सेने के पत्र काटने वाली कैंची ।—पाश्या ( खी० ) सेने का टीका, गहना विशेष, जो मस्तक पर लगाया जाता है, खौर ।—रञ्जक ( पु० ) पत्र खिलाना, चित्र बनाना, रंग चढ़ाना, परक ।—रथ ( पु० ) पत्नी चिट्ठिया ।—रेखा ( खी० ) तिलक की रेखा, सन्दन लगाना । [ पृष्ठ, वरक ।

पशो दे० ( पु० ) तिथिपत्र, पञ्चाङ्ग, पञ्जिका, पञ्चा, पञ्चाङ्ग तत्त्वं ( पु० ) पृष्ठ संख्या, पत्रों पर के अङ्क । पञ्चालय तत्त्वं ( पु० ) डाकखाना, पोस्ट आफिस । पत्रिका तत्त्वं ( खी० ) चिट्ठी, पत्रो, पाती । पत्रो ( खी० ) देखो पत्रिका ।

पथ तत्त्वं ( पु० ) मार्ग, राह, रास्ता, वाट, पैँडा, डगर । पथर दे० ( पु० ) पत्थर, पत्थान ।—कला ( पु० ) पुरानी चाल की बंदूक ।—चटो ( पु० ) शक विशेष, कृपण ।—फोड़ ( पु० ) कठकोढ़ना, पछि विशेष ।

पथराना दे० ( क्रि० ) पत्थर के समान हो जाना, कड़ा होना, मय्य आदि का कड़ा होना, पत्थर से मछना, पत्थर मारना ।

पथरी दे० ( खी० ) आँकड़, कंकरी, एक प्रकार का रोग, बूटी विशेष पथियों के भीतर का अङ्क, पथरीटी, कूड़ी, पत्थर का पात्र ।

पथरीला या पथरीली दे० ( वि० ) कट्टरेली, जहाँ बहुत कट्टर हो, प्रसन्नमय भूमि । [ का घरतन । पथरीटी दे० ( खी० ) पत्थर की कूड़ी, पथरी, पत्थर पथिक तत्त्वं ( पु० ) बटोही, पात्री, अथग, राहगीर, राही, मुपाफिर, रास्ता चलने वाला ।

पथिवाहक ( पु० ) कहार, मजूर । पथ्य तत्त्वं ( पु० ) रोगी का आहार, रोगी का हितकारी आहार, दाज का जूस आदि ।

पथ्या तत्त्वं ( खी० ) हड़, हर्, हरीतकी, रोगियों के अनुकूल भक्ष्य पदार्थ, हलके गुणकारी भोजन ।

पद् तत्त्वं ( पु० ) पवि, पैर, चरण, पैर का चिन्ह, पदाङ्क, स्थान, प्रतिष्ठा, मान, आदर, अधिकार, महिमा, शब्द स्वरूप, विमर्शिक के साथ का शब्द ।—क्रम ( पु० ) डग, पग ।—न ( पु० ) पैदल, पिवादा, पैदल चलने वाला ।—चर ( पु० ) पद-

गामी, मनुष्य ।—च्युत ( पु० ) अधिकारभ्रष्ट, पदभ्रष्ट ।—ज ( पु० ) पवि की श्रृंगखिमी ।—त्याग ( पु० ) अधिकारत्याग, स्थानत्याग, ।—त्राण ( पु० ) पद की रक्षा करने वाला, जूता, पगखी, पनही । पदना दे० ( पु० ) पदकण्ड, पदने वाला, अधिक पदने वाला, डरपोकन, डरपोक, भीरु ।

पदनी दे० ( खी० ) दुराचारीणी, व्यभिचारीणी । पदपटी दे० ( खी० ) नृत्य विशेष, एक प्रकार का नाच । पदपत्र तत्त्वं ( पु० ) पुष्करमूल, पुष्करमूल, कमल का पत्र, कमलपत्र, अधिकारपत्र, पद की नियुक्ति का अधिकारपत्र ।

पदपीठ तत्त्वं ( पु० ) खड़ाक, जूता । पदम तत्त्वं ( पु० ) पद्म, कमल, सरोवर । पदवी तत्त्वं ( खी० ) पदवति, उपाधि, छल, सम्मान सूचक पद, स्वरूप शोचक शब्द, पन्था, पथ, मार्ग । पदवृत्त तत्त्वं ( पु० ) युक्त शब्द, व्युत्पन्न शब्द, दो शब्दों के मिलाने से बना हुआ शब्द, छन्द भेद, जिन शब्दों में अक्षरों का नियम रहता है वे पद वृत्त या अक्षरवृत्त कहे जाते हैं ।

पदस्थ तत्त्वं ( वि० ) पदाङ्क, पद पर वर्तमान । पदाङ्क तत्त्वं ( पु० ) पदचिन्ह, पैर का दाग ।—अनुसरण करना ( वा० ) पीछे पीछे चलना, अनुयायी बनना, अनुकरण करना ।

पदाघात तत्त्वं ( पु० ) लात का आघात, पैर से मारना । [ सेना, पैदल सेना । पदाति तत्त्वं ( पु० ) पदातिक, पैदल चलने वाली पदाना दे० ( क्रि० ) तह करना, दुःख देना, धमकाना, डरवाना, डैशन करना, धकाना ।

पदाम्भोज तत्त्वं ( पु० ) चरण कमल, कमल के समान चरण, कमल तुल्य पद । [ कमल तुल्य चरण । पदार्थविन्द तत्त्वं ( पु० ) [ पद + धरविन्द ] पदपत्र, पदार्थ तत्त्वं ( पु० ) वस्तु, सामग्री, सामान, तत्त्व, पद का अर्थ, शब्दों का प्रतिपाद, वैरोपि न्याय के मत से सात वस्तुओं की पदार्थ संज्ञा है —द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष, समवाय और अभाव, नैयायिकों के मत से सोलह पदार्थ ।

पदासन तत्त्वं ( वि० ) पादपीठ, पीड़ा, बैठने का पीड़ा, काष्ठालन विशेष ।

पतलाई दे० ( स्त्री० ) दुबलता, दुबलापन ।

पतलो ( पु० ) सरकंदे की पताई ।

पतवार दे० ( स्त्री० ) कन्हर, नाव के पीछे का डौड़ जिससे नाव दहिने बाये घुमायी जाती है ।

पता दे० ( पु० ) चिन्ह, खोज, सन्धान, ठिकाना ।

पताका तत्व० ( स्त्री० ) ध्वजा, झंडा, निशान, फहरा ।

पताकी तत्व० ( पु० ) पताकाधारी, ध्वजाधारी, ध्वजैल, ध्वजा वाला ।—नी ( स्त्री० ) सेना ।

पति तत्व० ( पु० ) स्वामी, प्रभु, भर्ता, रक्षक, धव ।  
—देव—देवता ( स्त्री० ) पति को देवता के समान समझने वाली स्त्री, देवबुद्धि से पति ही की सेवा करने वाली, पतिव्रता । यथा:—

“ पतिदेवन की गुरु घेटी ।

तेरों यम मृत फहावत घेटी ॥ ”

—रामचन्द्रिका ।

—ध्रुक ( पु० ) पति में अनुराग रखने वाली स्त्री ।

—व्रता ( स्त्री० ) कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पति की सेवा करने वाली स्त्री ।

पतित तत्व० ( वि० ) अष्ट, दोषी, कलङ्की, जाति च्युत, समाजच्युत, अधर्मी । ( पु० ) अन्त्यज, अछूत जाति, अस्पृश्य जाति ।—पावन ( पु० ) पतितों को पवित्र करने वाला, परमात्मा, परमेश्वर ।

पतिमा तद्व० ( स्त्री० ) प्रतिमा, मूर्ति, किसी वस्तु की बनी हुई मूर्ति । [ का पत्र ।

पतिया दे० ( स्त्री० ) चिट्ठी, पत्र, प्रतीति पत्र, विधास पतियाना दे० ( क्रि० ) भरोसा करना, विधास करना, प्रतीति करना ।

पतियारा दे० ( पु० ) भरोसा, विधास, प्रतीति ।

पतिवरा तद्व० ( स्त्री० ) पतिवरण करने के योग्य स्त्री, विवाह योग्य अवस्था वाली । [ चट्याई ।

पतरी दे० ( स्त्री० ) चट्याई विशेष, एक प्रकार की पतील दे० ( वि० ) पतला, झीना, मिहीं ।— ( पु० ) बटुवा, बटुला ।

पतीली दे० ( स्त्री० ) बटुवी, बटुई, बटुलोई, देगची ।

पतुकी दे० ( स्त्री० ) मिट्टी की हबिया, छोटी कड़ाही ।

पतुरिया दे० ( स्त्री० ) वेरया, नर्तकी, वाराङ्गना ।

पतुली ( स्त्री० ) पहुँचे में पहनने का एक प्रकार का आभूषण ।

पतुही ( स्त्री० ) छोटे दानों वाली मटर की छीमी ।

पतोह दे० ( स्त्री० ) वेरा की स्त्री, पुत्रवधू, बहू ।

पतोवा दे० ( पु० ) पत्नी, पत्ता, पद्म, पात ।

पतन तत्व० ( पु० ) नगर, ग्राम, पुर, शहर ।

पत्तर दे० ( पु० ) पत्र, पत्ता, चिट्ठी, सोने चाँदी या ताँबे का पत्र, जिसमें दान आदि की बातें लिखी जाती हैं ।

पत्तल दे० ( स्त्री० ) पतवार, पतरी, पत्ता ।

पत्ता दे० ( पु० ) पात, पत्र, पत्ती, कानों में पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण ।—होना ( वा० ) भाग जाना, निकल जाना, चंपत होना ।

पत्ति तत्व० ( पु० ) पैदल चलने वाली सेना, एक प्रकार की सेना का नाम । एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल जिस सेना में हों उसका नाम पत्ति है ।

पत्ती दे० ( स्त्री० ) पाती, पत्र, पंखड़ी, भोंग, बूटी ।

पत्थर दे० ( पु० ) पत्थान, सिला, पाथर, उपल ।

—छाती पर रखना ( वा० ) सन्तोष करना, सह-लेना, वश न चलने से चुप रह जाना, बहुत बड़ी आपत्ति को धीरज पूर्वक सहना ।—पसीझना ( वा० ) कोमल चित होना, सदा होना, दयावान् होना, दुःखी पर दया करना ।—पानी होजाना ( वा० ) कठोर चित्त का भी कोमल हो जाना, क्रूर चित्त में भी दया उत्पन्न होना ।—सा फेंक मारना ( वा० ) बिना समझे बूझे लड़ना, बात बिना जाने ही उत्तर देना, कठोर बातें कहना, कड़ी बात कहना ।—से सिर फोड़ना ( वा० ) कठिन काम करने के लिये ब्रह्म होना, मूल के सिखाना, नासमझ को समझाना ।—होना ( वा० ) भारी होना, ठिठक जाना, अवज्ञ होना, निर्देय होना ।—कला ( स्त्री० ) पुरानी चाल की बंदूक ।

पत्नी तत्व० ( स्त्री० ) मार्या, स्त्री, दारा, जोरू, कुडुमिनी ।

पत्न्यारो दे० ( पु० ) पतियारा ।

पत्र तत्व० ( पु० ) पाती, चिट्ठी, पत्ता, पत्र, पत्रा, ।—दाता ( पु० ) चिट्ठी देने वाला, चिट्ठी बाँटने वाला, चिट्ठीरसा ।—दारक ( पु० ) प्रभु, भर्ता,

बाजक, पायु ।—परशु ( स्त्री० ) सेने के पत्र  
काटने वाली कैची ।—पाश्या ( स्त्री० ) सेने का  
टीका, गहना विशेष, जो मस्तक पर लगाया जाता  
है, खौर ।—रञ्जक ( पुं० ) पत्र खिलाना, चित्र  
यनाना, रंग बढ़ाना, ररक ।—रथ ( पुं० ) पची  
चिड़िया ।—रेखा ( स्त्री० ) तिलक की रेखा,  
चन्दन लगाना । [ पृष्ठ, वरक ।

पत्रो दे० ( पुं० ) तिथिपत्र, पञ्चाङ्ग, पञ्जिका, पञ्चा,  
पञ्चाङ्ग तत्त्वं ( पुं० ) पृष्ठ सख्या, पत्रों पर के अङ्क ।  
पत्रालय तत्त्वं ( पुं० ) डाकखाना, पोस्ट आफिस ।  
पत्रिका तत्त्वं ( स्त्री० ) चिट्ठी, पत्री, पाती ।

पत्री ( स्त्री० ) देशो पत्रिका ।

पथ तत्त्वं ( पुं० ) मार्ग, राह, रास्ता, वाट, पैदा, डगर ।

पथर दे० ( पुं० ) पथर, पत्थान ।—कला ( पुं० )  
पुरानी चाल की बंदूक ।—चटा ( पुं० ) शाक  
विशेष, कृपण ।—फोड़ ( पुं० ) कठफोड़ना, पथि  
विशेष ।

पथराना दे० ( क्रि० ) पथर के समान हो जाना,  
कड़ा होना, मथ आदि का कड़ा होना, पथर से  
मचना, पथर मारना ।

पथरी दे० ( स्त्री० ) बाँकड़, कंठरी, एक प्रकार का  
रोग, घूटी विशेष पथियों के भीतर का अङ्ग,  
पथरीटी, कूड़ी, पथर का पात्र ।

पथरीला या पथरीली दे० ( वि० ) कङ्करीली, जहाँ  
बहुत कङ्कर हैं, प्रस्तरमय भूमि । [ का बरतन ।

पथरीटी दे० ( स्त्री० ) पथर की कूड़ी, पथरी, पथर  
पथिक तत्त्वं ( पुं० ) बटोही, यात्री, आशग, राहगीर,  
राही, मुयाफिर, रास्ता चलने वाला ।

पथिवाहक ( पुं० ) उहार, मजूर ।

पथ्य तत्त्वं ( पुं० ) रोगी का आहार, रोगी का हित-  
कारी आहार, दाल का जूस आदि ।

पथ्या तत्त्वं ( स्त्री० ) हड़, हर, हरीतकी, रेगियों के  
अनुकूल भक्ष्य पदार्थ, हलके गुणकारी भोजन ।

पद् तत्त्वं ( पुं० ) पाँव, पैर, चरण, पैर का चिन्ह,  
पदाङ्ग, स्थान, प्रतिष्ठा, मान, आदर, अधिकार,  
महिमा, शब्द स्वरूप, विभक्ति के साथ का शब्द ।

—क्रम ( पुं० ) डग, पग ।—ग ( पुं० ) पैदल,  
पियादा, पैदल चलने वाला ।—चर ( पुं० ) पद-

गामी, मनुष्य ।—च्युत ( पुं० ) अधिकारभ्रष्ट,  
पदभ्रष्ट ।—ज ( पुं० ) पाँव की अँगुलियाँ ।—त्याग  
( पुं० ) अधिकारत्याग, स्थानत्याग, ।—त्राण ( पुं० )  
पद की रक्षा करने वाला, जूता, पगखी, पनही ।

पदना दे० ( पुं० ) पदबद्ध, पादने वाला, अधिक पादने  
वाला, डरपोकन, डरपोक, भीह ।

पदनी दे० ( स्त्री० ) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी ।

पदपटी दे० ( स्त्री० ) नृत्य विशेष, एक प्रकार का नाच ।

पदपत्र तत्त्वं ( पुं० ) पुढका मूल, पुष्कर मूल, कमल  
का पत्र, कमलपत्रा, अधिकारपत्र, पद की नियुक्ति  
का अधिकारपत्र ।

पदपीठ तत्त्वं ( पुं० ) खड़ाक, जूता ।

पदम तत्त्वं ( पुं० ) पद्म, कमल, सरोवह ।

पदवी तत्त्वं ( स्त्री० ) पद्वति, वषाधि, अङ्ग, सम्मान  
सूचक पद, स्वरूप धोतक शब्द, पन्था, पध, मार्ग ।

पदवृत्त तत्त्वं ( पुं० ) युक्त शब्द, व्युत्पन्न शब्द, दो  
शब्दों के मिलाने से बना हुआ शब्द, बन्द भेद,  
जिन शब्दों में अक्षरों का नियम रहता है वे पद  
वृत्त या अक्षरवृत्त कहे जाते हैं ।

पदस्थ तत्त्वं ( वि० ) पदारुण, पद पर बसमान ।

पदाङ्ग तत्त्वं ( पुं० ) पद चिन्ह, पैर का दाग ।—अनु-  
सरण करना ( वा० ) पीछे पीछे चलना, अनु-  
यायी बनना, अनुकरण करना ।

पदाघात तत्त्वं ( पुं० ) लात का आघात, पैर से  
मारना । [ सेना, पैदल सेना ।

पदाति तत्त्वं ( पुं० ) पदातिक, पैदल चलने वाली  
पदाना दे० ( क्रि० ) तह करना, दुःख देना, धमकाना,  
डरवाना, हैशान करना, डकाना ।

पदाम्मोज तत्त्वं ( पुं० ) चरण कमल, कमल के समान  
चरण, कमल तुल्य पद । [ कमल तुल्य चरण ।

पदारविन्द तत्त्वं ( पुं० ) [ पद + अरविन्द ] पदपद्म,  
पदार्थ तत्त्वं ( पुं० ) वस्तु, सामग्री, सामान, तत्त्व,

पद का अर्थ, शब्दों का प्रतिपाद, वैशेषिक न्याय  
के मत से सात वस्तुओं की पदार्थ संज्ञा है—द्रव्य,  
गुण, कर्म, सामान्य विशेष, समवाय और धभाव,  
नैयायिकों के मत से सोलह पदार्थ ।

पदासन तत्त्वं ( वि० ) पादपीठ, पीड़ा, बैठने का  
पीड़ा, काष्ठासन विशेष ।





हजारों वीर राजपूत पट्टे ओहारी पालकी में चढ़ कर अलाउद्दीन के डेरे में जमा होने लगे, भीमसिंह के लिये पश्चिमी से थोड़ी देर के लिये अँट करने की भी व्यवस्था हुई थी। अपनी पालकी में भीमसिंह को बैठा कर पश्चिमी लौटी, पश्चिमी की सहेलियाँ जा रही हैं यह समझ कर किसी ने रोका टोका नहीं। अभी तक पश्चिमी नहीं आई इससे खिल-जी अलाउद्दीन बहुत घबड़ाया, शीघ्र ही उसने पालकियों के ओहारा उठवाये, ओहारा उठाने पर जो उसने देखा उससे उसका क्रोध और निराशा अधिक बढ़ गई। पालकी से उतर कर राजपूत वीरों ने शीघ्र ही सम्राट् की सेना पर घावा किया। सम्राट् की सेना वहाँ ही लड़ाई में जूझ गई। इधर भीमसिंह एक घोड़े पर सवार होकर चित्तौर के किले में पहुँचे। परन्तु इतना करने पर भी पश्चिमी अपने स्वामी की रक्षा न कर सकी। अलाउद्दीन ने बड़े समारोह से चित्तौर पर चढ़ाई की, राजपूत वीर भी जो खोल कर किले की रक्षा करने लगे। पश्चिमी का चाचा गोरा और उसका भतीजा बादल ये दोनों बड़ी वीरता से अनेक शत्रुओं को मार अन्त में उसी युद्ध में काम आये। स्वयं भीमसिंह युद्धक्षेत्र में उपस्थित हुए, इधर राजपूत धीराव्रतार्यों ने चिता में प्रवेश किया। भीमसिंह युद्ध में मारे गये, चित्तौर की भूमि वीर-शून्य हो गई; परन्तु अलाउद्दीन को पश्चिमी नहीं मिली, अलाउद्दीन ने देखा था कि चिता से भूम निकल रहा है। वह स्थान एक तीर्थ समझा जाता है।

पद्य तत्त्वं ( पु० ) छन्द, कवि की कृति, काव्य, श्लोक कविता, शास्त्र, शठता।—रचना ( स्त्री० ) श्लोक बनाना, कविता करना, पद्यग्रथन।

पधारना दे० ( क्रि० ) अना जाना, बिदा होना, पूर्णों के आने के या जाने के समय इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

पन तद् ( पु० ) पण, होड़, ठहराव, शर्त, प्रण, प्रतिज्ञा अवस्था, यचन, भाव, वाचक, भावार्थ चोतक। यथा—लड़कपन, भोलापन आदि।—फपड़ा ( पु० ) मीणा फपड़ा जो बण्य आदि के बँधने के

लिये होता है।—गोटी ( स्त्री० ) बनी बसन्त, चेचक का एक भेद।—घट ( पु० ) जलावधार, पानी भरने का घाट।—घ ( पु० ) प्रत्यङ्गा, रोदा, चिह्नी, धनुष का गुण।—चक्की ( स्त्री० ) एक प्रकार की चक्की जो पानी के वेग से चलती है।—पना ( क्रि० ) मोटा होना, बढ़ना, परिवृद्ध होना, ताजा होना सरसङ्ग होना।—पनाहट ( स्त्री० ) सनसनाहट, जोर से हवा के चलने का शब्द।—बट्टा ( पु० ) पान रखने का डब्बा।—भात ( पु० ) पानी में भिगाया हुआ भात।—घाड़ी ( स्त्री० ) पान की बाड़ी, पान का बागीचा, जहाँ पान बोया जाता है।—घार ( पु० ) पीथा विशेष, राजापुरों की एक शाख।—घारा ( पु० ) पत्तल, पतरी।—शल्ला ( स्त्री० ) व्याज, पैशाल।—सा ( वि० ) फीका, अलौना, खाने की किसी वस्तु में अधिक पानी पड़ जाने के कारण पानी का सा स्वाद होना।—स ( पु० ) कटहर का बृक्ष, कटहर का फल, सुमीव की सेना के एक वानर यूथपति का नाम।—सारी ( पु० ) पसारी, ( पु० ) गांधी श्रौषध आदि किराना बेचने वाला बनिया।—साल ( पु० ) व्याज, पनशाला, पानी पिलाने का स्थान, प्रपा।—सोई ( स्त्री० ) छोटी नाव, बोगी—ह्रा ( पु० ) पता, चिन्ह, सुराग, चोरी, गई वस्तु का पता बताने के लिये कुछ ठहराव करना, दख का चौदान, कपड़े की चौड़ाई।—हाना ( क्रि० ) गी अँस आदि का दूध दुहने के लिये उनका स्तन सुहराना।—हारा ( पु० ) पनभरा, पानी भरने वाला, नौकर।—हारिन ( स्त्री० ) पानी भरने वाली, मजूरिन।—हारी ( स्त्री० ) पानी भरने वाली स्त्री, पनहारिन।

पनच दे० ( पु० ) पणच, डोल, नगारा, ढंका।

पनही दे० ( स्त्री० ) जूता, पगरसी, उपानह।

पनारी ( स्त्री० ) नाली, मोरी। [मार्ग, नाली, मोरी।

पनाली तद् ( स्त्री० ) प्रणाली, जल निकलने का

पनिया दे० ( पु० ) पानी, जल। ( वि० ) पानी का सर्प।

पनियाना दे० ( क्रि० ) सँचना, पानी देना, पानी भरना।

पनियाला दे० ( पु० ) पनिया, एक प्रकार के फल का नाम।

पानी दे० (वि०) प्रण करने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञा ।  
 पनीर दे० ( पु० ) छेना से बना हुआ खाद्य, खाद्य विशेष, खाने की एक वस्तु का नाम, अम्ल संयोग से दूध को फाड़ डालने से जो खाद्य बनता है ।  
 पनीहा दे० ( पु० ) पानी के संयोग से बनी हुई वस्तु, जलजन्तु, जल में उत्पन्न होने वाला जीव ।  
 पनेरी दे० ( पु० ) पानवाला, तमोली ।  
 पनैरिन दे० ( स्त्री० ) पानवाली, तमोलिन ।  
 पन्थ दे० ( पु० ) धर्ममार्ग, मत, मार्ग पद्धति ।  
 पन्था दे० ( पु० ) मार्ग, बाट, पैदा, पन्थ, मार्ग, रास्ता, राह ।  
 पन्थी दे० ( पु० ) किसी धर्मपथ के अनुयायी, पन्थाई ।  
 यथा:—दातृपन्थी, कबीरपन्थी, पथिक, यात्री, योही, अन्वग, मार्ग चलने वाला । [ यत्नम्बी ।  
 पन्थाई दे० ( वि० ) पन्थी, पन्थ का अनुयायी, मता-पन्नाग तत्त्वं ( पु० ) [ पद् + न + गम् + ट् ] सर्प, उरग, अहि, श्लेष विशेष ।—पति ( पु० ) श्लेष, सर्प-राज, अग्रन्त । [ निचला ।  
 पन्नगारि तत्त्वं ( वि० ) सर्पशत्रु, गरुड़, मोर, कृध, पन्नगाशन तत्त्वं ( पु० ) [ पन्नग + अशन ] पन्नगारी, गरुड़ पक्षी ।  
 पन्नगो तत्त्वं ( स्त्री० ) सर्पिणी, मनसादेवी ।  
 पन्ना दे० ( पु० ) रत्न विशेष, हरे रत्न का मणि, हरिन्मणि, पृष्ठ, पेज ।  
 पन्नी दे० ( स्त्री० ) सुवर्ण आदि का पतला पथ, तयक ।  
 पपडा दे० ( पु० ) टुकड़ा, चूर्ण, छिलका ।  
 पपड़ियाँ दे० ( स्त्री० ) छोटा पपड़ा ।  
 पपड़ियाकत्था दे० ( पु० ) खेतकत्था, सक्केद खैर ।  
 पपड़ी दे० ( स्त्री० ) छिलका, परत, त्वक, उर्द या मूँग के आटे के बने पापड़ ।  
 पपड़ीला दे० ( वि० ) पड़तीला, अधिक छिलके वाला ।  
 पपनी दे० ( स्त्री० ) बरनी, बरवनी, पद्म, बरौनी ।  
 पपरा दे० ( पु० ) पपड़ा, छिलका, त्वक्, वृक्ष आदि का त्वक् ।  
 पपरी दे० ( स्त्री० ) छोटी पपड़ी, पतला छिलका ।  
 पपीना दे० ( पु० ) पपैया, अरख्य खरबूजा ।  
 पपीहा दे० ( पु० ) पक्षी विशेष, चातक, इस पक्षी का स्वभाव है कि नदी आदि का पानी कभी नहीं

पीता, किन्तु स्वर्ती में बरसने वाले मेघों का ही पानी पीता है ।  
 पपैया दे० ( पु० ) खिलौना विशेष, एक प्रकार का वृक्ष, पपीता, अरख्य खरबूजा, पक्षी विशेष ।  
 पपोंटा दे० ( पु० ) पलक, आँख का पलक, अक्षिपुट ।  
 पम्पा ( स्त्री० ) किष्किन्धा के समीप एक सरोवर का नाम ।  
 पय तत्त्वं ( पु० ) पानी, नीर, जल, दूध, क्षीर, क्षीर ।  
 —मुख ( पु० ) केवल दूध पीने वाला, दुधमुँहा ।  
 पयद् तत्त्वं ( पु० ) वादल, धन, स्तन ।  
 पयस्विनी तत्त्वं ( स्त्री० ) दुग्धवती धेनु, दुधार गाय, अधिक दूध देने वाली गौ, नदी, स्रोतस्विनी ।  
 पयान तत्त्वं ( पु० ) प्रयाण, यात्रा, प्रस्थान, जाने का उद्योग, बिदाई, गमन, चाला बिदा ।  
 पयाल दे० ( पु० ) पुष्पार, नेरुआ, खड़, सूखी घास ।  
 पयोद ( पु० ) मेघ, बादल ।  
 पयोधर तत्त्वं ( पु० ) स्तन, चूची जिससे दूध निकलता हो, मेघ, यारिद, वादल ।  
 पयोधि तत्त्वं ( पु० ) समुद्र सागर, भूमखडल के चारों ओर फैले हुए सात सागर ।  
 पयोनिधि तत्त्वं ( पु० ) समुद्र, सागर, अम्बुनिधि ।  
 पयोम्रत तत्त्वं ( पु० ) दूध या जल के आहार पर व्रत करना, व्रत विशेष ।  
 पयोराशि तत्त्वं ( पु० ) समुद्र, पयोधि, पयोनिधि ।  
 पर तत्त्वं ( वि० ) अन्य, इतर, भिन्न, दूर, अनामीय, शत्रु, प्रधान, वरकृष्ट, श्रेष्ठ, अधिक, पश्चात् ( अ० ) उपरान्त, तत्पर, बहंत । [ जाना ।  
 परकना दे० ( क्रि० ) सधना, अभ्यासी होना, मित्र परकाज तत्त्वं ( पु० ) परकार्य, अन्यदीय कार्य, दूसरे का काम । [ का काम करने वाला ।  
 परकाजी तत्त्वं ( वि० ) परोपकारी, परार्थी, दूसरे परकना दे० ( क्रि० ) सधाना, अभ्यास डालना, मिलाना, पहराना । [ का, भिन्न विषय ।  
 परकीय तत्त्वं ( वि० ) अन्यदीय, अन्य सम्बन्धी, दूसरे परकीया तत्त्वं ( स्त्री० ) परपुरुष गामिनी स्त्री, दूसरे की स्त्री, नायिका विशेष । यथा:—  
 "प्रेम करे परपुरुष सों परकीया सौ जान ।"  
 —रसराज ।

परख दे० ( स्त्री० ) परीक्षा, जाँच, खोज, अनुसन्धान ।  
परखना दे० ( क्रि० ) जाँचना, परीक्षा करना, सचाई,  
छुटाई का अनुसन्धान, कसौटी कसना ।

परखाई दे० ( स्त्री० ) जाँच का काम, परीक्षा करना,  
परखने का काम, परखने की मज़दूरी ।

परखाना या परखवाना दे० ( क्रि० ) जाँचवाना ।  
परीक्षा कराना, असली नकली पहचनवाना ।

परखी ( स्त्री० ) एक छोटी खोहे की सूझनुमा चीज़  
जिससे घंद घोंरे का अन्नादि निकालकर नमूने के  
तौर पर देखा जाता है ।

परखैया दे० ( पु० ) अचैया, परीचक ।

परखरी दे० ( स्त्री० ) सोना डालने का साँचा ।

परखनी दे० ( स्त्री० ) सोना चाँदी डालने की परखी ।

परखा दे० ( पु० ) परीक्षा, जाँच, अनुसन्धान,  
परिचय । [कल सामान ।

परचून दे० ( पु० ) आटा, ढाल, मसाला आदि फुट-  
परचूनिया दे० ( पु० ) परचून बेचनेवाला बनिया,  
मोदी ।

परचूनो दे० ( स्त्री० ) परचून के बेचने का व्यापार,  
मोदीखाने का व्यापार ।

परचा दे० ( पु० ) परख, जाँच, परीक्षा ।

परछती दे० ( स्त्री० ) छाँद का शेष भाग, छुदिमान्त ।

परछना ( क्रि० ) दुबड़ा दुलहिन की आरती उतारना ।

परछाई दे० ( स्त्री० ) शरीर या किसी वस्तु की माया,  
प्रतिबिम्ब, प्रतिछाया ।

परछिद्र तत्त्वं ( पु० ) परदोष, दूसरे की श्रुति, दूसरे  
का दोष । [कारण ज़मीन के स्वामी को दिया जाय ।

परजकर ( पु० ) वह कर जो ज़मीन में बसने के  
परजवट दे० ( पु० ) कर, शुल्क, भाड़ा, किराया, राजा की

भूमि अपने काम में लाने के कारण जो राजा को कर  
दिया जाता है । [पाखा पोखा, दूसरी जाति का ।

परजातं तत्त्वं ( वि० ) दूसरे के द्वारा उपपन्न, दूसरे का

परत दे० ( स्त्री० ) तह, लफ, धाक, छिन्का, पपड़ा ।

परतम ( वि० ) बढ़े से बढ़ा, सबसे बढ़ा ।

परतन्त्र तत्त्वं ( वि० ) पराधीन, अन्याधीन, अन्यवश,

परवश, दूसरे के कब्जे में ।

परतल दे० ( पु० ) ढेग डण्डा । [लटकाई जाती है ।

परतला दे० ( पु० ) तबवार की पटी, डाघ, जिसमें तलवार

परता दे० ( पु० ) अटेन, चरखी, परेता, सूत कातने  
की कल, खर्च और भन्ना मिला कर भाव, ( इस  
वस्तु का 'परता' यहाँ नहीं पड़ता । )

परती दे० ( स्त्री० ) बंजर, अनुर्वर भूमि, ऊसर भूमि,  
जिस भूमि में अन्न आदि उत्पन्न न हो, रेतीली  
भूमि । [भरोसा, यकीन ।

परतीत तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रतीति, निश्चय, निश्वास,

परत्र तत्त्वं ( वि० ) अन्यत्र, परकाल, परलोक, स्वर्ग ।

परत्व तत्त्वं ( पु० ) परता, पर का भाव, पार्थक्य,  
श्रेष्ठता, तत्परता ।

परदादा दे० ( पु० ) प्रपितामह, बाबा का बाप ।

परदादी दे० ( स्त्री० ) प्रपितामही, बाबा की माता,  
बुड्ढा दादी ।

परदार, परदारा तत्त्वं ( स्त्री० ) परभार्या, अन्य की  
स्त्री, दूसरे की स्त्री, दूसरे की लुगाई, दूसरे की  
औसत ।—मिगमन तत्त्वं ( पु० ) व्यभिचार ।

परदुःख तत्त्वं ( पु० ) अन्य की पीड़ा, दूसरे का बलेष्ट ।

परदेश तत्त्वं ( पु० ) विदेश, अन्य देश, भिन्न देश ।

परदेशी तत्त्वं ( वि० ) विदेशी, वैदेशिक, दूसरे देश का,  
दूसरे देश का वासी । [की हानि करने वाला ।

परद्वेष तत्त्वं ( पु० ) परहिंसक, परानिष्टकारी, दूसरे

परद्रोह तत्त्वं ( पु० ) परानिष्ट, दूसरे का अशुभ, पर  
घोड़न ।

परधन तत्त्वं ( पु० ) धन्यजन, धन्यद्वय, दूसरे का धन ।

परन तत्त्वं ( पु० ) प्रथ, प्रतिज्ञा, नियम ।

परनाना दे० ( क्रि० ) विवाह कराना, म्याह देना ।

( पु० ) प्रमातामह, नाना के पिता ।

परनानी दे० ( स्त्री० ) प्रमातामही, प्रमातामह की पत्नी ।

परन्तप तत्त्वं ( पु० ) विजयो, शत्रु नाशक, वीर ।

परन्तु तत्त्वं ( वि० ) किन्तु, अचिरन्तु, भवर, किंवा ।

परपराना दे० ( क्रि० ) चरपराना, कड़ुवी वस्तु के  
मर्मस्थान में लगने से वेदना विशेष ।

परपराहट दे० ( स्त्री० ) चरपराहट, काल ।

परपुष्ट ( पु० ) कोकिल, ( वि० ) अन्य द्वारा पोषित ।

परपूर दे० ( वि० ) पूर्ण, भरपूर, परिपूर्ण ।

परपैठ दे० ( पु० ) असली हुँदी की तीसरी प्रति या  
नकल, पहली हुँदी, उसकी दूसरी प्रति  
पैठ और तीसरी प्रति का नाम परपैठ ।

परव तत् ( पु० ) पर्य, अत्य, लोहार ।

परवा-तत् ( स्त्री० ) प्रतिपदा, एकम । [ परवश ।

परवस तत् ( पु० ) पराधीन, अन्यवश, परतन्त्र,

परब्रह्म तत् ( पु० ) परमात्मा, परम पुरुष, पुरुषोत्तम ।

परभुक्त ( स्त्री० ) दूसरे की भोगी हुई ।

परभूत तत् ( पु० ) कोकिल, कोयल । ( वि० )

शत्रु को सहायता पहुँचाने वाला, शत्रु का साथ देने वाला, अन्यपालित ।

परम तत् ( वि० ) उत्कृष्ट, प्रधान, श्रेष्ठ अग्रगामी,

अग्रतर ।—गति ( स्त्री० ) सुक्ति, मोक्ष, उत्कृष्ट

गति, उत्तम गति ।—पद ( पु० ) श्रेष्ठ स्थान,

उत्तम पद, सुक्ति पद, देवता का घाम ।

—पुरुष ( पु० ) परमात्मा, विष्णु ।—ब्रह्म

( पु० ) परमेश्वर, परमात्मा, नारायण ।—धाम

( पु० ) वैकुण्ठ, परमपद, सुक्तिपद ।—मित्र ( पु० )

उत्कृष्ट मित्र, अतिशय मित्र ।—लाम ( पु० )

अतिशय लाम, अत्यन्त लाम, इति उत्कृष्ट

लाम ।—हंस ( पु० ) योगी, सन्यासी, अवधूत,

सन्यासियों की एक अवस्था विशेष ।

परमत तत् ( पु० ) दूसरे का मत, दूसरे का सिद्धान्त,

अन्य सम्मति, दूसरे की सलाह ।

परमत दे० ( पु० ) चर्वण, भूँजा विशेष ।

परमायु तत् ( पु० ) अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु, जिससे

छोटा दूसरा न हो, कणमात्र, काल विशेष ।

परमात्मा तत् ( पु० ) [ परम + आत्मा ] परब्रह्म,

पुरुषोत्तम, परम देवता । [ हर्ष ।

परमानन्द तत् ( पु० ) अत्यन्त आनन्द, अतिशय

परमाज्ञ तत् ( पु० ) [ परम + अज्ञ ] पायस, दुग्ध,

खीर, पञ्चाक्ष । [ आयु, उमर, बड़ी अवस्था ।

परमायु तत् ( पु० ) [ परम + आयु ] जीवित काल,

परमार्थ तत् ( पु० ) [ परम + अर्थ ] उत्कृष्ट वस्तु,

यथार्थ, तत्त्वविषय, सर्वोत्तम काम, कीर्ति, धर्म-

कार्य, यथार्थ ज्ञान, पवित्र ज्ञान ।

परमेश्वर तत् ( पु० ) [ परम + ईश्वर ] परब्रह्म, शिव,

विष्णु, परमात्मा, सर्वेश्वर्य सम्पन्न, ईश्वर, भगवान् ।

परमेश्वरी तत् ( स्त्री० ) लक्ष्मी, दुर्गा, पार्वती, सरस्वती ।

परमेष्ठी तत् ( पु० ) ब्रह्मा, पितामह, जिन विशेष,

शालग्राम विशेष, गुरु विशेष ।

परम्पर तत् ( पु० ) प्रपौत्रादि, क्रमागत, उत्तरो-  
त्तर, मृग विशेष ।

परम्परा तत् ( स्त्री० ) अन्वय, घंश, कुल, सन्तान,

परिपाटी, अनुक्रम, क्रमशः, आनुपूर्वी ।—गत

( वि० ) [ परम्परा + आगत ] क्रमागत, वंशानुक्रम

से आया हुआ, पीढ़ी-दर पीढ़ी से आया हुआ ।

परला दे० ( वि० ) दूसरी ओर का, उधर का, इस

ओर का ।

परलोक तत् ( पु० ) अन्यलोक, दूसरा लोक, स्वर्ग-

दिलोक, लोकान्तर, उत्तर काल, जन्मान्तर ।

—गमन ( पु० ) मृत्यु, मरण, निधन, परलोक

गमन, लोकान्तर गमन ।

परवल या परवर दे० ( पु० ) पलवः, स्वनामख्यात

फल, जिसकी तरकारी होती है, परवर । [ परवान ।

परवश तत् ( वि० ) पराधीन, अन्यवश, अन्यधीश,

परवा, पड़वा तद् ( स्त्री० ) प्रतिपदा, चन्द्रमा की

प्रथम कला, शुक्ल पक्ष कृष्णपक्ष की प्रथमतियि ।

परवान तत् ( वि० ) परतन्त्र, पराधीन, परवश ।

परश तत् ( पु० ) रत्न विशेष, पारसमणि ।

परशु तत् ( पु० ) अस्त्र विशेष, परश्वज, कुठार,

कुल्हाड़ी ।—धर ( पु० ) गणेश, कुठारधारी ।

परशुराम तत् ( पु० ) महर्षि जमदग्नि के पुत्र, इनकी

माता का नाम रेणुका था । इनके पितामह महर्षि

अचिक ब्राह्मण थे, परन्तु इनकी पितामही सत्य-

वती चण्डिका थीं । परशुराम का नाम केवल राम

ही था, परन्तु गन्धमादन पर्वत पर इन्होंने तपस्या

के द्वारा महादेव को सन्तुष्ट किया और उनसे

तेजोमय परशु पाया, इसी कारण इनका नाम

परशुराम हुआ । परशुराम ने अपनी माता रेणुका

का सिर काट डाला था और इसीसे बार चण्डियों

का समूल नाश करने की चेष्टा करने पर भी

परशुराम पृथिवी को निःचण्डिय नहीं बना सके

थे । महर्षि पराशर ने सौदास पुत्र सर्वकर्मा की

रक्षा की थी, और भी अनेक राजकुमारों की

जहाँ तहाँ रक्षा हुई थी, महर्षि कश्यप, ने इन

समस्त चण्डिय राजकुमारों को ले आकर राज्या-

भिषेक कराया । [ एक दिन के अनन्तर ।

परश्व तत् ( अ० ) परसों, आने वाला तीसरा दिन,

परस दे० ( पु० ) स्पर्श, छूत । [ करने ही से ।  
 परसत दे० ( कि० ) छूते ही, स्पर्श करते ही, स्पर्श  
 परसना दे० ( कि० ) स्पर्श करना, छूना ।  
 परसिया दे० ( पु० ) हँसिया, हँसुवा, दाँती, दराती ।  
 परसूत दे० ( पु० ) रोग विशेष, परसुन का रोग, लड़का  
 होने के बाद जो खियों का रोग होता है ।  
 परसूती दे० ( स्त्री० ) लड़के वाली, जिसके तुरन्त  
 लड़के हुए हों, परसूत रोग वाली स्त्री ।  
 परसैया दे० ( पु० ) परासने वाला, परासैया ।  
 परसों दे० ( अ० ) आगे या पीछे का तीसरा दिन, एक  
 दिन के अनन्तर का पहला या पीछे का दिन ।  
 परस्यौ दे० ( पु० ) रहना, वास करना, ठहरना,  
 स्थित होना ।  
 परसूपर तत्० ( अ० ) अग्न्येन्द्र, इतरेतर, आपस में ।  
 परसैपद तत्० ( पु० ) व्याकरण में क्रिया का एक  
 प्रकार का चिह्न ।  
 परा तत्० ( अ० ) विमोच, मुक्ति, प्राधान्य, प्रति-  
 लोभ्य, वैपरित्य, भ्रष्टार्थ, आभिमुख्य, विक्रम,  
 गति ( वपसर्ग ) भङ्ग, अहङ्कार, अनादर, प्रत्या-  
 श्रुति, तिरस्कार, शब्द का स्वरूप विशेष । नामि-  
 रूप मूलाधार से उत्पन्न प्रथम शक्ति, नाद स्वरूप  
 वर्ण, शब्द का आदि स्वरूप ( वि० ) आयुःकृष्ट,  
 सबसे पर, सबसे बड़ा, सर्वोपरि, सबके ऊपर ।  
 पराई दे० ( स्त्री० ) दूसरे की, गैर की, अन्य की ।  
 पराक तत्० ( पु० ) व्रत विशेष, प्रायश्चित्त विशेष,  
 खड्ग, बुद्ध रोग विशेष, जन्तु भेद ।  
 पराकाष्ठा ( स्त्री ) अन्त, चरम सीमा, सीमान्त,  
 चरमसीमा, प्रज्ञा की आधी आयु ।  
 पराक्रम तत्० ( पु० ) शक्ति, वीर्य, विक्रम, प्रताप,  
 वधोग, निष्क्रमण ।—शून्य ( पु० ) शक्तिहीन,  
 निर्वीर्य, प्रताप रहित, दुर्बल ।  
 पराक्रमी तत्० ( वि० ) वीर्यवान्, विक्रमी, प्रतापा-  
 न्वित, प्रतापी, बलवान्, साहसी, शूर, वीर, बहादुर ।  
 पराग तत्० ( पु० ) पुष्परेणु, पुष्पधूलि, स्नानीयद्रव्य,  
 गिरि विशेष, उपराग, चन्दन, खड्गन्द गमन,  
 स्वेच्छापूर्वक गमन ।  
 परागति ( स्त्री ) गायत्री ।  
 परागना ( कि० ) अनुसक्त होना ।

पराङ्मुख, परामुख तत्० ( पु० ) विमुख, महिमुख,  
 लौटा हुआ, उदासीन, मुंहफिरा ।  
 पराजय तत्० ( पु० ) पराभव, तिरस्कार, हार ।  
 पराजिका ( स्त्री ) पराज नाम की एक रागिनी ।  
 पराजित तत्० ( वि० ) कृत पराजय, पराभूत, विजित,  
 निर्जित, हारा हुआ ।  
 पराजिता तत्० ( स्त्री० ) जता विशेष, विष्णुकामता ।  
 पराजिता तत्० ( पु० ) पराजयकर्त्ता, विजयी, जीतनेवाला ।  
 पराठा दे० ( पु० ) बहटा, घी की सहायता से सेकी  
 हुई मोटी परतदार पूरी, स्वगम प्रसिद्ध पक्वान्न ।  
 परात दे० ( पु० ) थाल, बड़ी थाली ।  
 परातिका तत्० ( स्त्री० ) ओपधि विशेष, लाल पुनर्नवा ।  
 पराती दे० ( स्त्री० ) परात, थाली । ( पु० ) प्रातःकाळ  
 गाने योग्य भजन, प्रभाती । [ परमात्मा, विष्णु ।  
 परात्पर ( वि० ) सर्वश्रेष्ठ, जिसके परे कोई न हो ( पु० )  
 परात्मा ( पु० ) परमात्मा ।  
 परादन ( पु० ) फारस देश का घोड़ा ।  
 पराधीन तत्० ( वि० ) अस्वतन्त्र, पराधर, परतन्त्र ।  
 —ता ( स्त्री० ) परतन्त्रता ।  
 परान ( पु० ) प्राण । [ होना ।  
 पराना दे० ( कि० ) भागना, भाग जाना, बँट खड़ा  
 परानी तत्० ( पु० ) प्राणी, जीवधारी, पतन ।  
 पराप्त तत्० [ पर + अप्त ] अन्त का अन्त, दूसरे का  
 अन्त, दूसरे का दिया हुआ अन्त ।  
 परापर ( पु० ) कालसा ।  
 पराभव तत्० ( पु० ) पराजय, हराना, परिभव, तिर-  
 स्कार, उल्लंघन, विनाश, उखाड़ना ।  
 परामित्त ( पु० ) वान प्रस्थ विशेष, जो गृहस्थों के घरों  
 से थोड़ी मिछा ले वन में निर्वाह करते हैं । [ हारा ।  
 पराभूत तत्० ( वि० ) पराजित, परास्त, निर्जित,  
 परामर्श तत्० ( पु० ) उपदेश, मंत्र, विचार, सम्मति,  
 सहाय ।—न ( पु० ) सोचना, स्मरण, चिन्तन,  
 विचारना, मशवरा करना । [ पना करना ।  
 परामर्ष तत्० ( पु० ) निवृत्ति, तितिषा, चमा, सहना,  
 परामोद दे० ( पु० ) कुसजाव, कुलागा, माँस ।  
 परामृष्ट ( वि० ) पकड़ कर मर्दा हुआ, पीड़ित, विघारा  
 हुआ, निर्णीत । [ निपुण, हलार, भ्रमीष्ट ।  
 परायण तत्० ( पु० ) आसन्नवचन, अलासक, आशय,

परायत्त (वि०) पराधीन। [और का।  
 पराया दे० (वि०) अन्यदीय, अन्य सम्बन्धी, दूसरे का,  
 परायु (पु०) ब्रह्मा।  
 परार (वि०) पराया, दूसरे का।  
 परारध (पु०) परार्द्ध। [बाला तीसरा वर्ष।  
 परारि तत्० (वि०) पूर्वतर वर्ष, गया हुआ या आने  
 परारु (पु०) करेला। [भिन्न।  
 परार्य तत्० (पु०) अन्त्यार्थ, दूसरे के निमित्त, स्वार्थ  
 परार्द्ध तत्० (वि०) लक्ष कोटी, अन्तिम संख्या,  
 संख्या का शेष, ब्रह्मा की आधी आयु।  
 परार्द्धि (पु०) विष्णु। [सर्वोत्तम।  
 पराद्धर्ष तत्० (वि०) प्रघान, श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट,  
 पराल दे० (पु०) पलाल, घास, तृण।  
 परालब्ध (पु०) प्राप्त, भाग्य, नसीब।  
 परावत (पु०) फालसा। [लोगों का भागना।  
 पराघन (पु०) भगदड़, पलायन, एक साथ बहुत से  
 पराघर (वि०) सर्व श्रेष्ठ, दूर पास वा, निकट दूर का  
 हथर उधरा का।  
 परावर्त (पु०) लौटना, पलटाव, अदृक् बदल, लेन  
 देन।—न (पु०) प्रत्यावर्तन, पीछे फिरना, जैनियों  
 के मतानुसार प्रयोगों का दोहराना, उद्धरण।—  
 व्यवहार (पु०) किसी मुकदमे की फिर से जांच।  
 परावर्तित (वि०) पीछे फेरा हुआ, पलटाया हुआ।  
 परावस्तु (पु०) (१) असुरों के पुरोहित का नाम,  
 (२) रैम्यमुनि के एक पुत्र का नाम। (३)  
 एक गन्धर्व का नाम (४) विश्वामित्र के एक पुत्र  
 का नाम।  
 परावह (पु०) सप्त प्रकार के वायुओं में से एक।  
 परावा (वि०) पराया, विराना।  
 परावृत्त (वि०) फेरा हुआ, बदला हुआ।—(पु०)  
 पलटाव, मुकदमे का पुन विचार।  
 परावेदी (स्त्री०) भटकटैया, कटई।  
 पराशर तत्० (पु०) महर्षि वशिष्ठ का पौत्र और  
 शक्ति का पुत्र, इनकी माता का नाम अदृश्यन्ती  
 था। इनके विषय में महाभारत में लिखा है कि  
 एक समय अयोध्या के राजा कर्मापवाद अहरे  
 खेल कर था रहा था और हथर से वशिष्ठ के  
 ज्येष्ठ पुत्र शक्ति जा रहे थे, राजा ने इन्हें मार्ग

छोड़ने के लिये कहा परन्तु इन्होंने उस पर कुछ  
 ध्यान न दिया। इस कारण कर्मापवाद ने शक्ति  
 के कोड़ा लगाया। शक्ति ने राक्षस हो जाने का  
 राजा को शाप दिया, तुरन्त राक्षस बनकर राजा  
 ने शक्ति को खा डाला और पुनः घोर घोर वशिष्ठ  
 के अन्यान्य पुत्रों को भी मार डाला। इसमें विश्व-  
 मित्र की भी सम्मति थी। वशिष्ठ पुत्रशोक से  
 कातर होकर प्रायः देने को उद्यत हुए। वे पर्वत  
 से कूदे, अग्नि में कूदे। परन्तु किसी प्रकार  
 उनके प्राय नहीं निकले, अन्त में हताश होकर  
 वे अपने आश्रम को लौटे आते थे। उसी समय  
 पीछे से वेदध्वनि सुनायी पड़ी। वशिष्ठ ने पूछा  
 कौन है? उत्तर मिला आपकी ज्येष्ठ पुत्रवधू  
 अदृश्यन्ती, अदृश्यन्ती ने कहा—“मेरे गर्भ में  
 आरका पौत्र वर्तमान है, बारह वर्ष से यह वेदा-  
 ध्यान कर रहा है।” यह सुनकर वशिष्ठ प्रसन्न  
 हुए, इन्होंने देखा कि हमारा वंश चलाने वाला  
 वर्तमान है, उसी समय एक राक्षस खाने के लिये  
 अदृश्यन्ती की ओर लपका। वशिष्ठ ने मन्त्रबल  
 से उसका राक्षसत्व दूर किया। यह राक्षस राजा  
 कर्मापवाद था। वशिष्ठ ने अयोध्या जाकर उसे  
 राज्यरासन करने का आदेश दिया। पराशर बड़े  
 होने पर अपने पिता की मृत्यु का संवाद सुनकर  
 एक यज्ञ करने को उद्यत हुए। राक्षसकुल का  
 नाश करना ही उस यज्ञ का उद्देश्य था। परन्तु  
 पुलस्त्य पुलह आदि ऋषियों ने इन्हें समझाया कि  
 तुम्हारे पिता की मृत्यु राक्षसों से नहीं हुई,  
 किन्तु अपनी मृत्यु का प्रघान कारण तुम्हारे पिता  
 ही हैं। यह सुनकर पराशर ने यज्ञ करना छोड़  
 दिया। मातृवध्या नामक धोवर कन्या से पराशर  
 के एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम द्वैपायन  
 था। पराशर ने एक संहिता बनाई थी, जिसका  
 नाम “पराशरसंहिता” या पराशरस्मृति है।  
 पराश्रय तत्० (वि०) पराधीन, परवश।—(स्त्री०)  
 बाँदा, परगाड़ा,।—न्ति (वि०) परतन्त्र।  
 परास (पु०) किसी विशिष्ट स्थान से उतगा अन्तर  
 जितने पर विशिष्ट स्थान से फैली हुई कोई वस्तु  
 गिरे।—(स्त्री०) एक रागिनी का नाम।

परासु ( वि० ) प्राणहीन, गत प्राण ।

परास्त तत् ( वि० ) पराजित, पराभूत, हारा ।

पराह तत् ( पु० ) भागभाग, भगाड़, देशत्याग ।

पराहिं दे० ( क्रि० ) भागते हैं, भाग जाते हैं, चले जाते हैं, दीड़ जाते हैं ।

पराह तत् ( पु० ) दिन का दूसरा भाग, अपराह ।

परि तत् ( अपसर्ग ) सर्वतोभाव, वञ्जन, म्याधि, शेष, इस प्रकार, शाखान, भाग, चीप्सा, आच्छिन्न, लच्छ, दोषाल्याय, दोषकथन, निरसन, पूजा, व्यापकता, विस्मृति, भूषण, उपरम, शोक, सन्तोषभाषण ।

परिक ( स्त्री० ) छोटी चाँदी ।

परिकर तत् ( पु० ) कटियन्धन, कमरबन्द, पर्यङ्क, खट्वा, खाद, परिवार, समारम्भ, घृन्द, समूह, सहकारी, विवेक ।

परिकरमा ( स्त्री० ) परिक्रमा ।

परिकर्म तत् ( पु० ) कुङ्कुम आदि के द्वारा चक्र संस्कार, स्नान उष्यम लगाना आदि । शरीर संस्कार मात्र ।—१ ( पु० ) सेवक, दहलुआ ।

परिकल्पनं ( पु० ) प्रपञ्चना, दशायात्री घोखाधड़ी ।

परिकल्पना तत् ( स्त्री० ) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, उद्योग, कर्म, क्रिया ।

परिकीर्ण ( वि० ) व्यास, विस्तृत, समर्पित ।

परिकीर्तन तत् ( पु० ) प्रस्ताव, स्तुति, बढ़ाई, प्रतिष्ठा कर्तव्य, सब प्रकार से प्रशंसा करना ।

परिकुट ( पु० ) शहर के फाटक की खाई ।

परिक्रम ( पु० ) दहलना, फेरी देना परिक्रमा ।—१ ( पु० ) दहलना, घूमना ।—२ तत् ( स्त्री० ) भीड़ार्थ पैदल चलना, पद विहार, देवपरिक्रमा, प्रदक्षिण ।

परिस्त ( वि० ) नष्ट, भष्ट ।

परिस्तव ( पु० ) छींक ।

परिज्ञा ( स्त्री० ) कीचड़, परीचा, जाँच ।

परिज्ञित ( पु० ) एक राजा, परीक्षित ।

परिज्ञित ( वि० ) खाई आदि से घिरा हुआ ।

परिक्षोद्रा ( वि० ) निर्धन, कंगाल ।

परिखना ( क्रि० ) पहचानना, जाँचना ।

परिखा तत् ( स्त्री० ) राजधानी के चारों ओर की खाई, खाल, नाला ।

परिखाना ( क्रि० ) जाँचना, परखना ।

परिगणन तत् ( पु० ) मापना, गिनना, गणन करना, संख्या करना । [ संख्याकृत ।

परिगणित तत् ( वि० ) ठीक ठीक गणना किया हुआ, परिगत तत् ( वि० ) प्राप्त, लब्ध, विदित, ज्ञात, विस्मृत, चेष्टित, गत, वेष्टित ।

परिगह ( पु० ) कुटुम्बी, आश्रित जन ।

परिगृहित ( वि० ) ढका हुआ, छिपाया हुआ ।

परिगृहीत ( वि० ) स्वीकृत, शामिल ।

परिगृह्या ( स्त्री० ) धर्मपत्नी, विवाहिता स्त्री ।

परिग्रह तत् ( पु० ) प्रतिग्रह, स्वीकार, सेना के पीछे का भाग, पत्नी, भार्या, परिजन, भृत्य, सेवक, परिवार, आदान, ग्रहण, स्वीकार, शाप, शपथ, राहु के द्वारा सूर्य का ग्रहण, सूर्य ग्रहण ।—१ ( पु० ) पूर्णरूप से ग्रहण करना, कपड़े पहनना । [ गदा, मुद्गर, शूल ।

परिग्रह तत् ( पु० ) लोहा जड़ी लाठी, लौहमय यष्टि,

परिघोष तत् ( पु० ) शब्द विरोध, मेघगर्जन मेघध्वनि ।

परिचय तत् ( पु० ) विरोध रूप से ज्ञान, जानपहचान, मेल, मिश्रता ।

परिचर तत् ( पु० ) युद्ध के समय शत्रु के प्रहार से रथ की रक्षा करने वाला, सेना की व्यवस्था करने वाला, दण्डनायक, सहायक । [ उपासना ।

परिचर्या या परिचरजा तत् ( स्त्री० ) सेवा, शुभूपा,

परिचायक तत् ( वि० ) ज्ञापक, बोधक, जिसके द्वारा परिचय प्राप्त हो, ज्ञान पहिचान करनेवाला, मध्यस्थ । [ सुभूपाकारी, गुलाम ।

परिचारक तत् ( पु० ) भृत्य, सेवक, नौकर, चाकर,

परिचारिका तत् ( स्त्री० ) दासी, लौदी, सेविका ।

परिचारे ( क्रि० ) प्रचारे, ललकारे, बुलाये ।

परिचालन ( पु० ) चलाना, चलने में लगाना, हिलाना हरकत देना ।

परिचित तत् ( वि० ) परिचय विशिष्ट, ज्ञात, चीन्हा हुआ, जाना, परिचय, जानकारी ।

परिचय ( वि० ) परिचय योग्य ।

परिच्छद तत् ( पु० ) देश, वसन, भूषण आदि, परिधान, आच्छादन, पोशाक, परिवार, हस्ति अथ आदि का वस्त्र ।



परिच्छिन्न तत्त्वं ( वि० ) परिच्छेद विविध, अवधि प्राप्त, सीमाबद्ध, परिमित ।

परिच्छेद तत्त्वं ( पु० ) ग्रन्थ विच्छेद, ग्रन्थ के अध्याय, सीमा, अवधि, विभाग, प्रकरण, व्यवधान पर्व ।

परिच्छाहीं ( स्त्री० ) परछाईं ।

परिजंक ( पु० ) पर्यंक ।

परिजटन ( पु० ) पर्यटन ।

परिजन तत्त्वं ( पु० ) परिवार, कुटुम्ब, पुत्रकलत्र आदि पालनीय वर्ग, स्वजन, सम्बन्धी, नातेदार, रिस्तेदार, अनुचर, अनुगामी ।

परिज्ञान तत्त्वं ( पु० ) निश्चय बोध, सब प्रकार से जाना हुआ, विशेष रूप से ज्ञात ।

परिणत तत्त्वं ( पु० ) [ परि + नम् + क ] परिणाम प्राप्त, पक्क, पक्का हुआ, देड़ा चलने वाला हाथी, नन्न, नवा हुआ ।

परिणति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ परि + नम् + क्ति ] परिणाम, निष्पत्ति, समता से शेष होना, निष्प्रभाव ।

परिणय तत्त्वं ( पु० ) विवाह, दारपरिमह, ब्याह ।

परिणाम, (परीणाम) तत्त्वं ( पु० ) [ परि + नम् + घञ् ] विकार, प्रकृति का दूसरे रूप में बदल जाना, अवस्थान्तर प्राप्ति, भावान्तर लाभ, उत्तर काल, शेष ।—दर्शी ( वि० ) दूरदर्शी, चिह्न, अभिज्ञ, परकालदर्शी, दूरदर्शी ।—घाद ( पु० ) सांख्य दर्शन का सिद्धान्त विशेष, जिस में जगत् की उत्पत्ति नाश आदि नित्यपरिणाम के रूप में माने गये हैं ।

परिणायक तत्त्वं ( पु० ) पति, घर, धन, पाँसा खेलने वाला ।—रत्न ( पु० ) बौद्ध चक्र वर्तियों के सप्तधन कोषों में से एक ।

परिणाह तत्त्वं ( पु० ) परिसर, विस्तार, विस्तृत, विशालता, चौड़ाई, आकार, आकृति, दीर्घरवास ।

परिणोता तत्त्वं ( स्त्री० ) [ परि + नी + क + आ ] विश्राहिता, ऊड़ा, शान्तिगृहीता ।

परिणोता ( पु० ) पति, स्वामी, कर्त्ता ।

परिणोया ( वि० ) व्याहने योग्य ।

परितः तत्त्वं ( श्र० ) सर्वतः, चतुर्दिशा में व्याप्त, चारों तरफ से, चारों ओर से ।

परितच्छ ( पु० ) प्रत्यक्ष ।

परिताप तत्त्वं ( पु० ) [ परि + तप + घञ् ] मनस्ताप, सन्ताप, क्लेश, दुःख, शोक, भय ।

परितुष्ट तत्त्वं ( गु० ) [ परि + तुप् + क ] सन्तुष्ट, आह्लादित, आनन्दित, हृष्ट ।

परितुष्टि तत्त्वं ( स्त्री० ) सन्तोष, तृप्ति, आह्लाद, हर्ष ।

परितुष्ट तत्त्वं ( गु० ) [ परि + तुप् + क ] सम्यक् तृप्त, अतिशय तृप्त, अधिक तृप्त, ।— ( स्त्री० ) तृप्ति, अधाना ।

परितोप तत्त्वं ( पु० ) हर्ष, तृप्ति, सन्तोष आह्लाद, स्नातिरजमा, प्रसन्नता ।—फ ( पु० ) सन्तुष्ट करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।—ण ( पु० ) परितुष्ट, सन्तोष ।

परित्यक्त तत्त्वं ( वि० ) परित्याज्य, छोड़ने योग्य, परिहृत, त्यक्त, सब प्रकार से छोड़ा हुआ ।— ( पु० ) परित्याग करने वाला, त्यागने वाला ।

परित्याग तत्त्वं ( पु० ) सब प्रकार से त्याग, विसर्जन, वर्ज्य ।

परित्याज्य ( वि० ) परित्याग योग्य ।

परित्राण तत्त्वं ( पु० ) रक्षा, बचाव, उद्धार, निष्कृति ।

परित्रात तत्त्वं ( वि० ) रक्षित, पालित, पाला हुआ ।— तत्त्वं ( वि० ) निस्तारक, परित्राणकर्त्ता, रक्षक ।

परिदान तत्त्वं ( पु० ) परिवर्त विनिमय, बदला, लेने देने ।

परिदेवक तत्त्वं ( वि० ) विलापकर्त्ता, दुःख देने वाला, दुःखदायी, जुआरी, जुआ खेलने वाला ।

परिदेवन तत्त्वं ( पु० ) अनुशोचन, अनुताप, पश्चात्ताप, विलाप, पछतावा, धूतक्रीड़ा, छुप का खेल ।

परिधन } तत्त्वं ( पु० ) पहराव, पहनावा, पहिरने  
परिधान } का वस्त्र, परिधेयवसन, यथा—

“जया मुकुट परिधन मुनिचोरा” । रामायण ।

परिधि तत्त्वं ( स्त्री० ) परिवेप, घेष्टन, वेद, मण्डलाकार रेखा, चन्द्र-सूर्य मण्डल, चन्द्र-सूर्य मण्डल के चारों ओर जो कभी कभी मण्डल दीख पड़ता है, घेरा, मण्डल । [ योग्य ।

परिधेय तत्त्वं ( वि० ) पहनने के योग्य, धारण करने परिध्वंस तत्त्वं ( पु० ) अपचय, नाश, हानि, क्षति, वर्णसङ्कर जाति विशेष । [ प्रतिष्ठा प्राप्त ।

परिनिष्ठित तत्त्वं ( वि० ) परिज्ञात, ज्ञानी, प्रतिष्ठित,

परिपक्व तत्त्वं (वि०) सुपक, पका हुआ, पट्ट, निपुण, उपयुक्त, योग्य, दक्ष, कुशल, चतुर, कार्यदक्ष, कार्यकुशल । [ लुटेरा, डग ।

परिपन्थी तत्त्वं ( पु० ) शत्रु, वैरो, विपक्ष, चोर, परिपाक तत्त्वं ( पु० ) जीर्णता, पकता, परिष्णाम, नैपुण्य, निपुणता, फल, निष्कर्ष, उत्तर काल ।

परिपाटी तत्त्वं ( स्त्री० ) रीति, प्रथा, चाल, अनुक्रम, पराक्रम, उत्तम, अद्भुत विद्या । [ रचा करना ।

परिपालन तत्त्वं ( पु० ) प्रतिपालन, पोषण, रक्षण, परिपालक तत्त्वं ( पु० ) प्रतिपालक, रक्षाकर्ता,

रक्षक, धोपकारी ।

परिपालित तत्त्वं ( वि० ) रक्षित, प्रतिपालित, आश्रित ।

परिपिष्टक तत्त्वं ( पु० ) सीसक, सीसा, धातु विशेष ।

परिपूत तत्त्वं ( वि० ) पवित्र, शुद्ध, बिना छिलके का धान ।

परिपूरन तत्त्वं ( वि० ) समस्त, सकल, समपूर्ण ।

परिपूरित तत्त्वं ( वि० ) भरा हुआ, भरापूरा ।

परिपूर्णा तत्त्वं ( पु० ) परिपूरन, समस्त, सकल, सम्पूर्ण, पूरित, भरा हुआ, पूर्ण, प्रचुर, यथेष्ट ।

परिघ्राजक ( पु० ) सन्धासी ।

परिमव तत्त्वं ( पु० ) पराजय, पराभव, परास्त, अवज्ञा, अनादर, हेयवृद्धि ।—पद ( पु० ) हुक्कति, हुंर्या ।

परिमाध तत्त्वं ( पु० ) अवज्ञा, अनादर, पराभव, पराजय ।

परिमापण ( पु० ) निन्दापूर्वक फयन ।

परिभाषा तत्त्वं ( स्त्री ) परिष्कृतभाषा, प्रज्ञप्ति, अन्य संक्षेप करने के लिये साङ्केतिक नियम ।

परिभूत ( वि० ) हराया हुआ ।

परिभ्रमण तत्त्वं ( पु० ) पर्यटन, अन्ववर्तन भ्रमण, सतत घूमना, सर्वदा घूमते रहना ।

परिभ्रष्ट ( वि० ) नष्ट, पतित ।

परिमण्डल तत्त्वं ( वि० ) वर्तुल, गोलाकार, चक्र, गोल ।—चक्र ( पु० ) ग्रहण, ग्रहचक्र ।

परिमल तत्त्वं ( पु० ) मलने से या रगड़ने से उत्पन्न सुगन्ध, महक, सुगन्ध, सौरभ । [ जोख ।

परिमाण या परिमान तत्त्वं ( पु० ) माप, वजन, गोल, परिमार्जित तत्त्वं ( वि० ) परिशोधित, शुद्ध, साफ़ ।

परिमित तत्त्वं ( वि० ) प्रमाणित, न्याय्यता, नाप हुआ, मापा हुआ, नियमित ।—व्ययी ( पु० )

मितव्ययी, समस्त धन कर पच करने वाला, खर्च में किफायत करने वाला, किफायतशाली ।

परिमिति तत्त्वं ( स्त्री० ) परिमाण, किनारा, अवधि ।

परिरम्भ तत्त्वं ( पु० ) आलिङ्गन, भेंटना, श्लेष, लिपटाना ।

परिवर्जन तत्त्वं ( पु० ) त्याग, परिहार ।

परिवर्त तत्त्वं ( पु० ) बदला, खेन देन, क्रय विक्रय, हेरीफेरी । [ करना ।

परिवर्त्तन तत्त्वं ( पु० ) पलटाव, पलटना, पुराफेरी

परिवर्त्त ( वि० ) पीछे का, बाढ़ का । ( पु० ) प्रतिनिधि, बदला ।

परिवा ( स्त्री० ) प्रतिपदा, प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि ।

परिवाद तत्त्वं ( पु० ) गाली, डकड़ना, निन्दा, द्वेष ।

परिवादक तत्त्वं ( पु० ) निन्दक, निन्दा करने वाला, द्वेषी ।

परिवार या परिवारु तत्त्वं ( पु० ) परिवन, घातना, कुटुम्बी, कुटुम्ब के मनुष्य, पुत्रादि, कुनया, भाईबंध ।

परिवारण तत्त्वं ( पु० ) मारना, रोकना, रुकावट डालना, बाधा डालना ।

परिवाह तत्त्वं ( पु० ) जल की बहाव, बहाव, मेघपथ, मेघमार्ग ।

परिवृत तत्त्वं ( पु० ) रक्षित, आच्छादित, घिरा हुआ, परिवेष्टित, कपेटा हुआ, ढका हुआ ।

परिवेषण तत्त्वं ( पु० ) परेसना, भोजन परमना ।

परिवेष्टन तत्त्वं ( पु० ) वस्तुदिक् से आच्छादन, मण्डलाकार वेष्टन, आच्छादन ।

परिघ्राजक तत्त्वं ( पु० ) सन्धासी, मुनि, चतुर्थाग्रमी ।

परिघाट् तत्त्वं ( पु० ) सन्धासी, यती, योगी ।

परिशिष्ट तत्त्वं ( पु० ) अवशेष विशिष्ट, अवशिष्टार्थ प्रकाशक, ग्रन्थ भाग, बाकी, अवशिष्ट ।

परिशुद्ध तत्त्वं ( वि० ) परिशोधित, परिष्कृत, साफ़ सुथरा, पवित्र, शुद्ध, बज्जल । [ हुआ ।

परिशुष्क तत्त्वं ( वि० ) अतिशय शुष्क, पतुत सूखा

परिशेष तत्त्वं ( पु० ) अन्त, सीमा, विच्छेद, समाप्ति ।

परिशोध तत्त्वं ( पु० ) परिशोधन, सर्वतोभाव से शुद्ध ऋणापनयन, ऋण सुकाना, प्रतिकार, प्रतिदान ।

परिधम तत्त्वं ( पु० ) आयास, श्रम, उद्योग, चेष्टा, क्लेश, थकावट ।

परिश्रमी तत् ( पु० ) बसोगी, श्रम। चर्चा, चेष्टाविवृत ।  
परिश्रान्त तत् ( वि० ) श्रमयुक्त, सब प्रकारसे परि-  
श्रमयुक्त, अवसन्न, ह्वान्त ।

परिपटु तत् ( स्त्री० ) सभा, संसद, समिति, बहुत  
लोगों के एकत्रित होने का स्थान । [ १५६ ]

परिष्कार तत् ( पु० ) निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध, सुव्यक्त,  
परिष्कृत तत् ( वि० ) श्रुषित, शलङ्कृत, श्रुषययुक्त,  
निर्मल, शुद्ध, स्वच्छ, वेष्टित, प्राप्त संस्कार ।

परिषद्गत तत् ( पु० ) आलिङ्गन, रमण ।

परिसर दे० ( पु० ) निकाल, निकाल, कगार ।

परिस्त्रया तत् ( स्त्री० ) गणना, सीमा, काव्यालङ्कार  
विशेष, यथा —

“अनत वानि कसु वस्तु जहँ, वरनत एकदि और ।  
ताहि कहत परिस्त्रय हैं, भूपनकवि दिखदौर ॥”  
गुण आदि का किसी वस्तु विशेष में जहाँ नियम  
किया जाता है वहाँ ही परिस्त्रयान्तर होता है,  
यथा—“अति मतवारे जहाँ हिरदै निहारियतु,  
तुरगन मैंही चशलाई परकीति है । श्रुषण भनत  
जहाँ पर जगैं वाननि मैं, कोक पच्छिनिहि माँह  
विधुरन रीति है, गुनिगन चोर जहाँ एक चितही के  
लोक, वैधैं अहँ एक सरजाकी गुन प्रीती है, कंफु  
कदली में वैरु घृष्ट बदली में सिवाज अदली के  
राजा में ये राजनीति है ।”

—शिवराजभूषण ।

परिहर दे० ( क्रि० ) छोड़ कर, त्याग कर ।

परिहरना दे० ( क्रि० ) छोड़ना, त्याग करना, त्यागना ।

परिहार तत् ( पु० ) अवज्ञा, अनादर, अपमान, मोचन,  
त्याग, एक जाति विशेष, राजपूतों की एक शाखा ।

परिहास तत् ( पु० ) उपहास, ठट्ठा, कौतुक, कुतूहल ।

परिहास्य तत् ( पु० ) हँसने के योग्य, हास्य के उप-  
युक्त, हँसी का पात्र ।

परिहित तत् ( वि० ) परिधान किया हुआ, आच्छा-  
दित, वेष्टित ।

परी दे० ( स्त्री० ) माँह से तेल निकालने की एक प्रकार  
की कलछी, अक्सरा, देवाङ्गना, स्वर्ग की बेरया ।

परीच्छित तत् ( वि० ) अन्य ईप्सित, दूसरे का इष्ट ।

परीक्षक तत् ( वि० ) परीक्षा करने वाला, जाँच  
करने वाला, प्रश्नों के उत्तरपत्र देखने वाला ।

परीक्षा तत् ( स्त्री० ) प्रत्यक्ष रीति से गुण का विवे-  
चन, जाँच, परख, खोज ।

परीक्षित तत् ( पु० ) जिसका गुण विवेचित हुआ है,  
अभिमन्यु के पुत्र । ये मात्स्यराज विराट की कन्या  
उत्तरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । एक समय कर्क  
नामक स्थान में वास के समय राजा परीक्षित ने  
सुना कि इसके राज्य में कलि पुत्र आया है, वे  
कलि को दमन करने के लिये सास्वती नदी के तीर  
पर पहुँचे । वहाँ उन्होंने देखा कि राजाचित बख  
पहन कर एक शूद्र एक गौ और एक बैल को ढण्डे  
से पीट रहा है । उस बैल के केवल एक ही पैर  
था । राजा परीक्षित ने समझा ये ही धर्म हैं और  
वह शूद्र कलि है । कलि को मारने के लिये राजा  
ने तलवार उठायी । उस समय कलिराज वैष उतार  
कर राजा के पैरों पर गिर पड़ा और उसने शरण  
ग्रहण किया । शरणागत समझ कर राजा ने उसे  
छोड़ दिया और जुआ, मद्य, हिंसा और स्त्री ये चार  
स्थान उसने रहने के लिये उन्होंने बताया । एक  
समय राजा अथेर खेलने गये थे । समय अधिक  
हो जाने के कारण राजा बुधातुर हो गये थे । वे  
एक आश्रम में एक मद्रपि के पास गये । मुनि  
मीनी थे, इसी कारण उन्होंने राजा के प्रश्नों के  
उत्तर नहीं दिये । इससे क्रुद्ध होकर एक मरा साँप  
राजा ने उस मुनि के गले में खगा दिया । इस  
मुनि के शूद्र नामक एक पुत्र था, उन्होंने किसी  
से यह घटना सुनी और शपथ दिया कि जिसने मेरे  
पिता के गले में साँप लगाया है, उसको सातवें  
दिन तचक साँप काटेगा । मुनि ने जब अपने पुत्र  
से ये बातें सुनी तो वे बड़े दुखी हुए और राजा को  
शाप की बात कहवा भेजी जिससे वे सावधान हो  
जाय । देखते देखते सातवाँ दिन भी आगया,  
तचक राजा को काटने के लिये जा रहा था उसे  
एक ब्राह्मण मिला जो राजा की चिकित्सा करने जाता  
था । तचक ने उसकी परीक्षा की, जिससे उसकी  
चिद्वृत्ता से भीत होकर तचक ने बहुत रुपये देकर  
उस ब्राह्मण को छोटा दिया । ठीक समय तचक ने  
राजा को काटा और राजा का जीवन समाप्त हुआ ।  
पुरु दे० ( पु० ) पौर, पर्व, ग्रन्थि, बस आदि की गाँठ ।

परुष तत् ( पु० ) निष्ठुर वचन, कठोर वाक्य, कुवचन, गाली । ( वि० ) कठोर, कड़ा, निर्दय, अनेक रंग का, कर्तुर्वर्था, रुच, तीक्ष्ण, निष्ठुरोक्ति ।

—ता ( स्त्री० ) कठिनता, निष्ठुरता, नीचता, शोषापन ।—भाषी ( वि० ) कठोरभाषी, गाली बकने वाला ।

परुषाक्षर तत् ( पु० ) टेढ़े अक्षर, व्यङ्ग्य वचन, तानाजनी, कुवचन, कट्टिक, निष्ठुर वचन ।

परुषोक्ति तत् ( स्त्री० ) [ परुष + उक्ति ] कठोरवाक्य, नीरस वचन, गालीगलौज ।

परै दे० ( ध० ) धनन्तर, पश्चात्, शेष में, धन्य में, दूर, उधर, पछी धोर, इस पार ।

परैखा दे० ( पु० ) पश्चात्ताप, अनुताप, पछतावा ।

परैत तत् ( वि० ) मृत, मरे हुए मनुष्यों को श्राद्ध न होने तक परेत कहते हैं, पिशाच, प्रेत । ( पु० ) योनि विशेष, भूत, प्रेत, पिशाच ।—राट् ( पु० ) भेतराज, यमराज, धर्मराज ।

परैतना दे० ( क्रि० ) अदेरना, सूत कपेटना, चरखी में सूत लपेटना, सूत की कैंटी पगाना ।

परैता दे० ( पु० ) अदेरन, चलाई, रहेटा ।

परैया तत् ( पु० ) पारावत, कपोत, कबूतर, प्रतिपद तिथि, पक्ष की पहली तिथि ।

परैश तत् ( पु० ) [ पर + ईश ] परमेश्वर, परमात्मा ।

परैशान दे० ( वि० ) घमड़ाया हुआ, व्याकुल ।

परैह दे० ( पु० ) कढ़ी, जूय, रसा ।

परैदा तत् ( वि० ) भूत काल, जो सामने न हो, जो देखा न गया, जो अज्ञात हो ।

परैपकार तत् ( पु० ) [ पर + उपकार ] पराया हित, अन्वहित, दूसरे की भलाई ।

परैपकारी तत् ( वि० ) दूसरे का हितकारी, पर-हितकर्ता, अन्य शुभ चिन्ताक, दूसरे की भलाई चाहने वाला करने वाला । [ सम्मति ]

परैपदेश तत् ( पु० ) दूसरे के हित की बात कहना,

परैस दे० ( पु० ) समीप, निकट, पड़ोस ।

परैसना दे० ( क्रि० ) परसना, भोजन की सामग्री पत्तल या याली में रखना ।

परैसा दे० ( पु० ) भोजन के लिये सज्जित सामग्री, सजाया हुआ थाल ।

परैसी दे० ( पु० ) अपने घर के पास के घर में रहने वाला ।  
परैसैया दे० ( पु० ) परैसने वाला, परिवेषक, भोजन देने वाला, परसैया ।

परैहन दे० ( पु० ) सवारी, रथ, वहली, गाड़ी ।

परैहा दे० ( पु० ) घरस, मोट, पुरबद, पुर, चमड़े का थना थैला, जिससे जल निकालते हैं ।

पर्कटी तत् ( स्त्री० ) बृच विशेष, पाकड़ का बृच यह बृच वनस्पतियों में है । उस बृच को वनस्पति कहते हैं जिसमें बिना फूल उगे ही फल फलें ।

पर्वा दे० ( स्त्री० ) परस, जाँच, परीक्षा, अनुभव, चिन्हा । [ कराना ]

पर्वाना दे० ( क्रि० ) भेंट करवाना, मिलाना, परिचय

पर्वागिया दे० ( पु० ) आटे वाला, आटा धाल आदि बेचने वाला, मोदी । [ परचूग बेचने का काम ]

पर्चनी दे० ( स्त्री० ) आटे का व्यापार, मोदीगाना,

पड़ुती दे० ( स्त्री० ) परछती, छाँद का प्रान्त भाग, छोट्टा छप्पर ।

पट्ठा दे० ( पु० ) टकुवा, तकुवा, सूजा, जला हुआ धान ।

पट्ठाई दे० ( स्त्री० ) प्रतिबिम्ब, प्राया, परछाँई ।

पर्ज दे० ( स्त्री० ) बोलक के पगाने का हथकड़ा, बोलक का एक बोल ।

पर्जक ( पु० ) पर्यंक, पलंग ।

पर्जनी ( स्त्री० ) दाखल्वी ।

पर्जन्य तत् ( पु० ) इन्द्र, शब्दकारी भेष, भेष का शब्द, धारिद, यादल ।— ( स्त्री० ) दाखल्वी ।

पर्ग तत् ( पु० ) पत्र, दल, पत्ता, पत्ती, पगा, पान, पलाय ।—कार ( पु० ) यहू, तम्बोली ।—कपूर ( पु० ) पागकूर ।—कुटी ( स्त्री० ) पत्तों से बनी कोपड़ी, पथे निर्मित कुटी, गूथ आदि की बनी कोपड़ी ।—कुर्व ( पु० ) घट विशेष, जिसमें ३ दिन ढाक, गूलर, कमल और घेल के पत्तों का जाय लिया जाता है ।—टल्लू ( पु० ) घट विशेष जिसमें प्रथम दिन ढाक के, दूसरे दिन गूलर के, तीसरे दिन कमल के और चौथे दिन घेल के पत्तों का जाय पीकत पाँचों दिन गुन्य का जल पिया परगे है ।—खगड़ ( पु० ) वनस्पति जिसमें फूल न लगते हैं ।—चोरक ( पु० ) गन्धद्रव्य विशेष ।—गर ( पु० ) ढाक के पत्तों का बना पुसला जो भित्री

मरे हुए व्यक्ति का दाह कर्म करने को उसकी हड्डियों के न मिलने पर बना कर जलाया जाता है।

—भोजन ( पु० ) वह व्यक्ति जो केवल पत्ते खाकर रहे, बकरी।—मणि ( स्त्री० ) पत्ता, अक्ष विशेष।—माचल ( पु० ) कमरख का वृक्ष।

—भृग ( पु० ) वृषों पर रहने वाले वानर आदि जीव जन्तु।—य ( पु० ) असुर का नाम जो इन्द्र द्वारा मारा गया।—राह ( पु० ) वसन्त ऋतु।—लता ( स्त्री० ) पान की वेल।—चल्क ( पु० ) ऋषि विशेष।—चल्की ( स्त्री० ) पलाशी नान की लता।—शवर ( पु० ) देश विशेष।

—शाला ( स्त्री० ) मुनियों का पत्र रचित गृह, पत्र गृह।—शालाग्र ( पु० ) भाद्राश्व वर्ष के एक पहाड़ का नाम।—सि ( पु० ) कमल, पानी में बना हुआ घर, सागर। [ नाम।

पर्याक ( पु० ) पार्ष्णिगोत्र के प्रवर्तक ऋषि का पर्यासि ( पु० ) तुलसी।

पर्याक ( पु० ) पत्ते बेचने वाला। [ की अरणी।

पर्याका ( स्त्री० ) मानकन्द, शालपर्णी, अग्नि मथने पर्यािनी ( स्त्री० ) मयवन। [ ( पु० ) सुगन्ध वाला।

पर्याी तत्त्वं ( पु० ) वृष्ट, द्रुम, तरु, रूख, पेड़।—र पत्तं ( पु० ) तह, परत।

पर्दानी ( स्त्री० ) धोती।

पर्दा दे० ( पु० ) यवनिका, पर्दा।

पर्दावा दे० ( पु० ) बाबा का आप, प्रपितामह, वृद्ध-पितामह, पिता का दादा। [ विशेष, पापड़।

पर्यट तत्त्वं ( वि० ) वृष्टविशेष, पित्तपापड़ा, शोषधि

पर्यटी तत्त्वं ( स्त्री० ) मुलतानी मट्टी, एक सुगन्धित लता का नाम, पपड़ी, पपरी, कुर्कुरी पनली रोटी।

पर्यङ्क, पर्यंक तत्त्वं ( पु० ) खाद, सट्टा, पलका, पलंग, सेज, शय्या।—चन्द्रन ( पु० ) आसन विशेष, योगासन का भेद, यह आसन वक्ष से पीठ जानु और जंघा को बाँधने से बनता है।

पर्यटन तत्त्वं ( पु० ) यात्रा गमन, घूमना, भ्रमण।

पर्यययोग तत्त्वं ( पु० ) जिज्ञासा, प्रश्न, किसी अज्ञात विषय को जानने के लिये प्रश्न।

पर्यन्त तत्त्वं ( पु० ) शेष सीमा, अन्तसीमा, तक।

—देग ( पु० ) सीमान्त, देश, किसी देश के

अन्त का देश।—धू ( स्त्री० ) नदी नगर पर्वत आदि के समीप की भूमि, परिसर भूमि।

पर्यवसान तत्त्वं ( पु० ) चरम, अन्त, समाप्ति, शेष, परिमाण।

पर्यासि तत्त्वं ( पु० ) [ परि + थाप् + क ] यथेष्ट, काफी, आवश्यकता के अनुसार, जरूरत के मुताबिक, उतना जितने से काम चल जाय।

पर्याय तत्त्वं ( पु० ) पाला, कम, आनुपूर्वी, परिवर्तन, प्रकार, अवसर, निर्माण, द्रव्यधर्म सगन्ध विशेष सम्पर्क विशेष, डोल, झोसरा, घारी।—वाचक ( पु० ) एकार्थ वाचक, पदार्थ बोधक।—शयन ( पु० ) सिपाहियों का पर्याय से सोना, पहले वालों का पारी से सोना।

पर्यालोचना तत्त्वं ( स्त्री० ) ध्यान से देखना, विशेष रूप से अवलोकन, विचार पूर्वक देखना।

पर्युत्सुक तत्त्वं ( वि० ) [ परि + उत्सुक ] शोकांत, उद्दिग्ध चित्त, व्याकुल।

पर्युपित तत्त्वं ( वि० ) [ परि + यप् + क ] पहिले दिन की बनाई वस्तु, बारी। [ सिर का, पट्टा।

पर्ला दे० ( वि० ) उस पार का, उस सिर का, परले

पर्व तत्त्वं ( पु० ) दोसि, प्रस्ताव, लक्ष्यान्तर, अमा-वस्या और प्रतिपद की सन्धि, विषम संक्रान्ति आदि, ग्रन्थविच्छेद, ग्रन्थ का भाग विशेष, अध्याय, चणिक काल, स्वल्पकाल, उत्सव, त्योहार।

पर्वणी तत्त्वं ( स्त्री० ) त्योहार, उत्सव।

पर्वत तत्त्वं ( पु० ) शैल, गिरि, नग, पहाड़, देवर्षि विशेष ये देवर्षि नारद के चढ़े सिद्ध और उनके सहयोगी थे।—ज ( पु० ) पर्वत जात, पर्वत से उत्पन्न।—नन्दिनी ( स्त्री० ) पार्वती।

—राज ( पु० ) हिमालय पर्वत।

पर्वतारि तत्त्वं ( पु० ) इन्द्र, शक्र, सुरपति, वज्रपाणि।

सुनते हैं कि पहले, इन पर्वतों के पर थे, इसी से ये भी अन्यान्य पर्वतों के समान उड़ा करते थे।

कभी कभी ये उड़कर पर बैठ जाया करते

इनके दे० क्या दशा होती थी

ने की है, यह खबर

सभा इसका

करने के लिये पर्वतों के पक्ष फट डाले तभी से  
हृन्द् को पर्वतारि कहते हैं । [ पहाड़ी ।  
पर्वतिया दे० ( पु० ) लौकी, लौथा, फट्ठू । ( वि० )  
पर्वतीय तत्त्वं ( वि० ) पर्वतजात, पर्वत से उत्पन्न  
पर्वतवासी, पर्वत सम्बन्धी ।  
पर्वाल दे० ( पु० ) अश्वनहारी, कामल वाली ।  
पल तत्त्वं ( पु० ) आमिष, कर्ष चतुष्टय, चार तोला,  
साठ विपलकाल, अयस्त्रय काल, थोड़ा समय, घड़ी  
का साठवाँ अंश, निमेष, वृण, घास, खर ।—  
कर्ण ( पु० ) धूपघड़ी के शङ्कु की उस समय  
की परछाईं की लम्बाई जब सूर्य संक्रान्ति के  
मध्याह्न काल में सूर्य विपुलत रेखा पर होता है ।  
—दूरिया ( वि० ) अत्यन्त उदार, बड़ा दानी ।  
—भर में ( वा० ) उसी क्षण, तुरन्त, शीघ्र,  
बहुत शीघ्र ।—भारते ( वा० ) पल भर में, शीघ्र,  
अत्यन्त शीघ्र । [ सिरा, नोक ।  
पलाई ( स्त्री० ) घृष्ट की कोमल डाली या टहनी,  
पलक दे० ( पु० ) निमेष, पल, पपनी ।—पोटा  
( पु० ) आँख का रोग विशेष जिसमें बरनियाँ  
भङ्ग जाती हैं और नेत्र बराबर रूपका करते हैं ।  
पलका ( पु० ) पलंग, पर्यङ्क ।  
पलक्या ( पु० ) पालक का शाक ।  
पलंग दे० ( पु० ) पर्यङ्क, खाट, बटिया, शय्या ।  
—झी दे० ( स्त्री० ) छोटा पलंग, खटोला ।  
पलटन दे० ( स्त्री० ) सेना, योद्धा, सिपाहियों का दल,  
एक पलटन में हजार सिपाही रहते हैं ।  
पलटना दे० ( क्रि० ) बदलना, फेर बदल करना, लौटना,  
सुकरना, मुड़ना ।  
पलटा दे० ( पु० ) परिवर्तन, परिवर्त, बदला, बदला  
बदला, प्रतिकार, प्रतिकूल, किये का फल ।—खाना  
( वा० ) फिरना, उलटना ।—लेना ( वा० ) लौटा  
लेना, बदला लेना, धैर शोध करना, धैर  
सुकाना ।  
पलटाना दे० ( क्रि० ) बदलाना, फिराना, लौटाना ।  
पलटाघ दे० ( पु० ) फिरोब, लौटाव ।  
पलड़ा दे० ( पु० ) पल्ला, तराजू का पल्ला ।  
पलया दे० ( पु० ) लोट पोटा ।—मारना ( वा० )  
लोटना पोटना ।

पलथी दे० ( स्त्री० ) आसन विशेष, स्वस्तिक आसन,  
याएँ पैर की दहिने जंघे पर धीर दहिने पैर को  
याएँ जंघे से मिला कर बैठना, मनुष्यों की एक  
प्रकार की बैठक । [ पाग, पनपना ।  
पलना दे० ( क्रि० ) प्रति पालित होना, बढ़ना, बढ़ि  
पलल तत्त्वं ( पु० ) मांस, आमिष, खली जो पशुओं  
को खिलाते हैं ।  
पलवल दे० ( पु० ) परवल, परोरा । [ रक्षा करना ।  
पलवाना दे० ( क्रि० ) पोसवाना, पालन कराना,  
पलवार दे० ( पु० ) नाव विशेष, बड़ी नाव ।  
पलवारि दे० ( पु० ) नाव का चलाने वाला, कैप्टन,  
मखाना, मॉफी, खेवट ।  
पला दे० ( पु० ) बढ़ा चमचा, कछ्ठा, डब्बू, परी, नेल  
घी आदि निकालने की कलड़ी विशेष ।  
पलागडु तत्त्वं ( पु० ) प्याज ।  
पलांग दे० ( पु० ) घोड़े की जीन ।  
पलाना दे० ( क्रि० ) भागना, भय से एक स्थान छोड़  
कर दूसरे स्थान को जाना, छाना, छा जाना ।  
पलानी दे० ( स्त्री० ) छावनी, छाँद, वृष निर्मित ।  
पलाना दे० ( क्रि० ) जीन बाँधना, घोड़े पर जीन  
कमना ।  
पलायक ( पु० ) भगोड़ा ।  
पलायन तत्त्वं ( पु० ) भय के कारण दूसरे स्थान में  
जाना, प्रस्थान, भागना, रूपोश होना ।  
पलायमान तत्त्वं ( पु० ) भगोड़ा, भगू, भगनोद्यत ।  
पलायित तत्त्वं ( वि० ) भागा हुआ ।  
पलाल दे० ( पु० ) पयाल, पुवाल ।  
पलाघ दे० ( पु० ) पलानी, छावनी ।  
पलाश तत्त्वं ( पु० ) वृक्ष विशेष, किंशुक वृक्ष, टेवू  
का पेड़, हाँक का वृक्ष, हरा रंग, मगध देव,  
राजस, पच, पचा, पची ।—पापड़ा ( पु० ) पलाय  
का धीन ।  
पलास दे० ( पु० ) पालने का काम, रफा करना ।  
पलित तत्त्वं ( वि० ) किसी कारण से केशों का पक  
जाना, बालों का सफेद हो जाना, ताप, कर्दम,  
वृद्ध, शिथिल ।  
पलौ दे० ( स्त्री० ) परी, एक प्रकार का चम्मच, घी,  
सेब आदि निकालने की कटुई ।

पल्लित दे० ( पु० ) भूत, प्रेत, पिशाच, येनि विशेष,  
भूत येनि । ( वि० ) मेलना कुचैला ।

पल्लिता दे० ( पु० ) तोप की रंजक में आग छुलाने की  
बत्ती, कपड़े की मोटी बत्ती ।

पल्लुवा दे० ( पु० ) पालित, पला हुआ, पोसा हुआ,  
पाला पोसा ।

पलेथन दे० ( पु० ) सूखा घाटा, जिसके सहारे रोटी  
बेली जाती है ।— निफालना ( वा० ) पीटना,  
पीट कर घेदम कर देना ।

पलेव दे० ( पु० ) परेह, पड़ी, जूस ।

पलोदत दे० ( क्रि० ) चरण सेवा करता है, धीरे  
धीरे पाँव दबाता है । [पहलौटा ।

पलोटा दे० ( वि० ) प्रथम पुत्र, प्रथम उत्पन्न पुत्र,

पल्ल तत्० ( पु० ) धान रखने का स्थान, गोला,  
बाज़ार ।

पल्लव तत्० ( पु० ) नये पत्तों सहित शाखा का अग्र-  
भाग, पत्र, शाखा, शैकुल, नवीन पत्तों का गुच्छा,  
किशलय, विटप ।—क ( पु० ) मछली विशेष ।—  
प्राहि पाण्डित्य ( वा० ) जिस विद्या का फल  
न देखा जाय, निष्फल विद्या, व्यर्थ अनाप  
शाना बचना ।

पल्लवाख ( पु० ) कामदेव ।

पल्लवित तत्० ( वि० ) पल्लवयुक्त, सपल्लव, विवृत,  
बहुजीकृत, नवीन पत्रयुक्त, किशालाविवृत ।

पल्लवी ( पु० ) पेड़ । ( वि० ) पल्लवयुक्त ।

पल्लवा दे० ( पु० ) अन्तर, व्यवधान, दूरी, सहायता,  
कपड़े का छोर, आवर तीन मन का बोझा,  
( वि० ) दूसरा, इस ओर का, ( पल्लवा गवि ) ।

—द्वार ( पु० ) मजूर, शोक होने वाला ।

पल्ली तत्० ( स्त्री० ) छोटा गाँव, गँवई, जाजम, शत-  
रंजी । ( वि० ) उस ओर की, उस पल्लवीपार ।

पल्लू दे० ( पु० ) वस्त्र का छूट, कपड़े का छोर ।

—द्वार ( पु० ) गरी के काम वाला कपड़ा, जरी  
दर कपड़ा । [चास ( पु० ) कलुषा ।

पल्लव तत्० ( पु० ) अव्ययलक्षण, वापी, तड़ाग ।—

पल्लिवट्टा दे० ( पु० ) पगड़ड़ा, पानी भरे घड़े रखने  
का स्थान ।

पव ( पु० ) गोधर, वायु, भोसान, बरसाना ।

पवई ( स्त्री० ) पची विशेष ।

पवन तत्० ( पु० ) वायु हवा, वतास, वायु कोय का  
स्वामी, देवता विशेष ।—कुमार ( पु० ) हनुमान,  
भीम ।—तनय ( पु० ) हनुमान, भीम ।—  
चक्र ( पु० ) बवंडर, चक्रवात, चक्र खाती हुई  
जोर की हवा ।—सखा ( पु० ) अग्नि, आग ।—  
रेखा ( स्त्री० ) यदुवंशी व्रजसेन की स्त्री का नाम,  
कंस इन्हीं का घेरा था ।—सुन ( पु० ) पवन  
का पुत्र, हनुमान, भीम ।

पवनायन तत्० ( पु० ) फरोला, खिड़की ।

पवनाल ( पु० ) पुनरा नाम का धान्य । [का नाम ।

पवनावर्त्ती तत्० ( स्त्री० ) नक्षत्रि कश्यप की एक स्त्री  
पवनाश या पवनाशी या पवनाशन तत्० ( पु० ) वायु

भचक्र, वायु का आहार करने वाला, सर्प सर्प ।

पवनी ( स्त्री० ) गाँव में रहने वाली वह नाऊ बारी  
आदि प्रजा जिसे गाँव के उच्च जाति वालों से  
नियमित रूप से कुछ मिलता है ।

पवमान ( पु० ) पवन, गार्हपत्याग्नि चन्द्रमा का  
एक नाम ।

पवर्ग ( पु० ) वर्षमासा का पाँचवा वर्ग ।

पवाई दे० ( स्त्री० ) घोड़े के पैर की सँकर, पैकड़ी,  
पकड़ा, एक जूता, एक पैछा ।

पवाज दे० ( पु० ) गँवईया, ग्रामीण, गँवार, नीच,  
अधम ।

पवाना ( क्रि० ) खिलाना । [चल कर ।

पवारि दे ( क्रि० ) डार कर, फेर कर, बछाल कर,

पवार दे० ( पु० ) जाति विशेष, छत्रियों की एक  
जाति, छत्रिय जाति की एक शाखा, परमार ।

पवारना दे० ( क्रि० ) कँकना, डालना, पड़ाना ।

पवि तत्० ( पु० ) वज्र, इन्द्र का अस्त्र विशेष, कुजिया ।

—पात ( पु० ) वज्र पड़ना, विमली गिरना ।

पवित्र तत्० ( वि० ) शुद्ध, स्वच्छ, पाप रहित, साफ़,  
विमल, निर्मल, पाक, दोष रहित, निर्दोष, निष्क-  
लङ्घ ।—ता ( स्त्री ) शुद्धता, स्वच्छता, निष्क-  
लङ्घता, निर्दोषता, निर्मलता, विमलता ।

पवित्रा तद् ( स्त्री० ) कुश के पने लहले विशेष जो  
हाथों की अंगुलियों में आकर मंत्र धारण  
किये जाते हैं की

धैर्यही, एक प्रकार की रेशम की माला को पवित्रा  
 एकादशी को भगवान को समर्पित की जाती है ।  
 पवित्री तद् ( स्त्री० ) कुश मुद्रिका, पैती, यह कुश  
 की बनाई जाती है, केवल सुवर्ण अथवा अष्टधातु  
 से भी यह बनती है । पूजा, तर्पण आदि में इसके  
 धारण करने की विधि है ।  
 पशम दे० ( पु० ) ऊर्ण, लोम, ऊन ।  
 पशामी दे० ( वि० ) ऊन की बनी, मुलायम ऊन के  
 बने परमीना, दुहाले आदि ।  
 पशमीना ( पु० ) पशम का बना कपड़ा ।  
 पशु तद् ( पु० ) जन्तु विशेष, सींग पृच्छ याबा,  
 मायी, चतुश्चाद, आश्विमान, साधकों के त्रिमास  
 में का एक भाव ।—ता ( स्त्री० ) श्रुमाय,  
 सूत्रता ।—तुल्य ( वि० ) पशु सरल, निर्बंध,  
 अशूल, मूर्ख, मूढ़ ।—पति ( पु० ) शिव, महादेव,  
 त्रिलोचन ।—पाल ( पु० ) पशुपालनकर्त्ता, पशु-  
 रक्षक ।—राज ( पु० ) सिंह, मृगेश्वर, शेर ।  
 पश्चात् तद् ( घ० ) पीछे, पश्चिम दिक्, अनन्तर, बाद ।  
 पश्चात्ताप तद् ( पु० ) कर्मांतर सन्ताप, पश्चाद्  
 शोक, अनुशोचन, पशुताया ।  
 पश्चाद्वर्त्ती तद् ( वि० ) अनुवर्त्ती, पश्चाद्गामी, पश्चाद्  
 अवस्थित, पीछे चलने वाला, स्वमतस्थित ।  
 पश्चार्थ तद् ( वि० ) शेषार्ध, अग्रार्ध, शरीर का  
 अग्र भाग ।  
 पश्चिम तद् ( पु० ) पश्चिम दिशा, पछाई ।  
 पशुपताहर तद् ( पु० ) चीर, चार, जो देखते देखते  
 घुरा ले, बड़ाईगीर, घुमार ।  
 पश्यामि तद् ( क्रि० ) मैं देखता हूँ ।  
 पश्याचार तद् ( पु० ) आचार विशेष, वाममार्गियों  
 की क्रिया विशेष । [पच ।  
 पपवारा दे० ( पु० ) एक पच, पास भर, पन्द्रह दिन,  
 पपान ( पु० ) पत्थर, पाषाण ।  
 पस्तरना दे० ( क्रि० ) फैलाना, विस्तृत होना, अधिक  
 दूर तक व्याप्त होना, छेत जाना, पड़ जाना ।  
 पसराय दे० ( पु० ) फैलाव ।  
 पसली दे० ( स्त्री० ) पाँजर की रुड्डी, पञ्जर ।  
 पसा दे० ( पु० ) मुट्टी भर, दो मुट्टी भर ।  
 पसाई दे० ( स्त्री० ) चाखल विशेष ।

पस्ताना दे० ( क्रि० ) रँधे हुए चावलों का नाँव  
 निकालना ।  
 पसार तद् ( पु० ) प्रसार, फैलाव, विस्तृति, व्यापकता ।  
 पसारना दे० ( क्रि० ) फैलाना, सूखने के लिये धूप  
 में फैलाना, बिछाना ।  
 पसारा दे० ( पु० ) विस्तार, फैलाव ।  
 पसारी दे० ( पु० ) पन्सारी, गांधी ।  
 पसीजना दे० ( क्रि० ) पानी छटना, नरम होना,  
 पसीने का निकलना, दयालु होना, दयालु होना ।  
 पसीना दे० ( पु० ) प्रस्वेद, स्वेद, पसेव ।  
 पसीव दे० ( पु० ) पसीना, प्रस्वेद, स्वेद ।  
 पसून दे० ( स्त्री० ) सौवन, तुपन ।  
 पसूनना दे० ( क्रि० ) तुपना, सीना, झोरा डालना ।  
 पसेव दे० ( पु० ) किसी किसी लकड़ी को जलाने पर  
 उसके किसी अंगजले भाग से बद्बूधर पीला  
 पानी सा जो निकलने लगता है उसे पसेव कहते  
 हैं, पसीना ।  
 पस्ताना दे० ( क्रि० ) पञ्चताना, पञ्चताया करना,  
 परधात्ताप करना, अनुताप करना, अनुशोचन करना ।  
 पद् दे० ( स्त्री० ) तड़का, भोर, सवेरा, भिनसार ।  
 —फटना ( क्रि० ) प्रातःकाल होना, सवेरा होना,  
 सुवेदय होना । [मुलाफात, चिन्हार ।  
 पहचान दे० ( स्त्री० ) परिचय, चिन्हारी, जानकारी,  
 पहचानना दे० ( क्रि० ) जानना, चीन्हा ।  
 पहनना दे० ( क्रि० ) पहिरना, परिधान करना,  
 कपड़ा पहनना, वस्त्र धारण करना ।  
 पहनाय ( पु० ) पोशाक, रहिराय ।  
 पहनावा दे० ( पु० ) पहिनाय, कपड़े पहिने का ढंग,  
 उदाहा " पहनावा उदाहा " ।  
 पहर तद् ( पु० ) काल विशेष, प्रहर, समय का  
 परिमाण, दिन का चतुर्थीय, एक प्रहर प्रायः तीन  
 घण्टे का होता है ।  
 पहरा दे० ( पु० ) चौकी, रक्षा । [धारण कराना ।  
 पहराना दे० ( क्रि० ) पहचाना, पहिराना, कपड़े  
 पहरा देना दे० ( वा० ) चौकी देना, रक्षायोजी करना ।  
 पहिराना ( क्रि० ) पहराना ।  
 पहरे में डालना दे० ( वा० ) रक्षा में रखना, हवालात  
 में देना, पहरे को सौंपना ।



पहरे में पड़ना दे० (वा०) हवालात में रखना, किसी अशराफ के विचारार्थ हवालात में रखा जाना ।  
 पहरावना, पहराउन दे० (पु०) वस्त्रविशेष जो प्रत्येक बराती को विशा के समय कन्या के पिता की ओर से पहराया जाता या दिया जाता है ।  
 पहरावनी दे० (खी०) वस्त्र, वसन, कण्डे का जोड़ा, जो विवाह शादि उत्सव के समय दिया जाता है ।  
 पहरिया पहरुआ दे० (पु०) पहरा देने वाला, चौकी करने वाला, चौकीदार ।  
 पहरु दे० (पु०) प्रहरी, पहरा देने वाला, पहरुआ ।  
 पहल दे० (खी०) प्रान्त, भाग, एक ओर का, खेत की भुजा । [धुनी हुई दूधी हुई ।  
 पहला दे० (पु०) प्रथम, आद्य, प्रारम्भ का । (पु०)  
 पहाड़ दे० (पु०) पर्वत, शैल, गिरि ।—सो राते (वा०) पड़ी रात, दीर्घ रजनी, कष्ट की रात्रि, मलेश की रात । [अङ्गों की सूची ।  
 पहाड़ा दे० (पु०) जोड़ती, गुणन, सङ्कलन जुड़े जुड़ाये पहाड़िया दे० (वि०) पर्वतवासी, पहाड़ का रहने वाला, पर्वती ।—(खी०) छोटा पहाड़, पहाड़ी ।  
 पहाड़ी दे० (खी०) छोटा, पहाड़, टीला, टेकरी, पहाड़ पर रहने वाला ।  
 पहिचान दे० (खी०) जान पहिचान, चिन्हार ।  
 पहिनना दे० (क्रि०) पहनना, धारण करना ।  
 पहिया दे० (पु०) चक्र, रथचक्र, गाड़ी का चक्र पहिया ।  
 पहिरना दे० (क्रि०) पहनना, धारण करना ।  
 पहिरावन दे० (पु०) वस्त्र, वसन, पहरावन ।  
 पहिला दे० (वि०) प्राथमिक, प्रारम्भिक, पहले का, आगे का, अगला ।  
 पहिले दे० (अ०) आगे, प्रथम, आदि ।  
 पहिलौठा दे० (पु०) प्रथम पुत्र, ज्येष्ठ पुत्र ।  
 पहुँच दे० (खी०) आगमन, शक्ति, सामर्थ्य, पैसा, प्रवेश, पैठ, प्राप्त सूचक पत्र, रसीद ।  
 पहुँचना दे० (क्रि०) प्राप्त होना, पहुँच जाना, चला जाना, बढ़ जाना, पूगना, पास आना ।  
 पहुँचा दे० (पु०) मण्डित, कलाई ।  
 पहुँचाना दे० (क्रि०) प्राप्त कराना, भित्ताना, पूगाना ।  
 पहुँची दे० (खी०) कलाई में धारण करने का जूना आभूषण विशेष ।

पहुड़ना दे० (क्रि०) लेटना, सोना, शयन करना, पौढ़ना ।  
 पहुड़ाना दे० (क्रि०) लेटाना, सुलाना, शयन करना, पौढ़ना । [आतिथ्य, अतिथि सत्कार, दावत ।  
 पहुँई या पहुनाई दे० (खी०) मेहमानी, भादर, पड़ुप तद् (पु०) पुष्प, कुसुम, फूल । [एक रस्म ।  
 पहिना दे० (पु०) बरात की विदाई के दिन की पहेंली दे० (खी०) प्रहेलिका, गूढ़ प्रश्न, यह काव्य का एक गुण है । इसमें एक सामान्य अर्थ प्रकाशित किया जाता है, परन्तु असली अर्थ छिपा रहता है, इस प्रकार जहाँ एक वाक्य से दो अर्थ प्रकाशित किये जाते हैं उसे प्रहेलिका या पहेंली कहते हैं । [भरे घड़े रले जायें ।  
 पन्हेंड़ा दे० (पु०) यह स्थान जहाँ पीने के पानी के पन्हेंड़ी दे० (खी०) वह छोटा स्थान जहाँ पानी से भरे घड़े रले जायें ।  
 पा दे० (पु०) पाँव, पैर, पद, चरण ।  
 पाई (पु०) पैर, पाँव ।—ता (पु०) पाँवता, पलँग का वह भाग जिस ओर पैर रहें ।  
 पाँक दे० (पु०) कीचड़, पल्ल, कद्दम, दलदल ।  
 पाँख, पाँखड़ा (पु०) पंखा, पर ।  
 पाँखड़ी (खी०) पखड़ी ।  
 पाँखरी (खी०) पखड़ा । [गिरती है ।  
 पाँखी (खी०) पतंगे, पंखदार कीड़ी जो दीपक पर पाँग (पु०) वह नई जमीन जो किसी नदी का जल घट जाने पर निकले, कछार, खादर, गह्वरा ।  
 पाँगल (पु०) जँट । [जाता है ।  
 पाँगा दे० (पु०) एक प्रकार का नृत्य, जो बनाया पाँच दे० (वि०) पञ्च, सख्या विशेष, ५ ।—सात (वा०) संकट, उलझन, व्याकुलता, उद्विग्नता, उद्वेग । [कार्य वर्जित हैं ।  
 पाँचक (पु०) धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिसमें अनेक पाँचजन्य (पु०) श्रीकृष्ण का शत्रु ।  
 पाँचभौतिक (पु०) पाँच तत्वों से बना हुआ शरीर ।  
 पाँचर (खी०) लकड़ी के छोटे टुकड़े ।  
 पाँचालिका (खी०) कपड़े की बनी गुदिया ।  
 पाँचाल (पु०) बड़ई, नाई, जुलाहा, धोबी और चमार इन पाँचों का समुदाय, भारत के पश्चिमोत्तर

का प्रान्त विशेष ।—१ ( स्त्री० ) गुड़िया, वाक्य, रचना-प्रयत्नाली विशेष, द्रौपदी, स्वर साधन की रीति विशेष ।

पाँचवाँ दे० ( पु० ) पञ्चम, पाँच को पूर्ण करनेवाली संख्या ।

पाँजर दे० ( पु० ) पसली, पार्श्व, पञ्जर, पाँजर की हड्डी ।

पाँझ ( वि० ) नदी के जल का कम होकर लोगों के आने जाने का मार्ग हो जाना ।

पाँडव ( पु० ) महाभारत के नायक युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, मकुल, सहदेव । सफेद हाथी, सफेद रंग ।

पाँडे दे० ( पु० ) पाठक, अध्यापक, ब्राह्मण, ब्राह्मणों की एक उपाधि, पढ़ाने वाला ।

पाँत ( स्त्री० ) श्रेणी, कतार, अवली ।

पाँती, पाँती दे० ( स्त्री० ) श्रेणी, कतार, पंक्ति, अवली, मिठाई का परोसा जो लड़की के विवाह में बरातियों के घरों में प्रत्येक व्यक्ति के हिसाब से बाटा जाता है ।

पाँतर दे० ( पु० ) बजाड़, निर्जन स्थान, धीराव ।

पाँपश दे० ( पु० ) पाँवड़ा, पायंदाड़ ।

पाँपती दे० ( पु० ) पैताना, पैर की थोरा, पैर की थोर का चिड़ौना । [ थोर घना हुआ छोटा धाग ।

पाँयाग ( पु० ) राजपसाड़ के पास पास या चारों

पाँव दे० ( पु० ) पैर, चरण, पद, गोड़ ।—ठठाना ( वा० ) शीघ्र शीघ्र चलना, वेग से चलना ।

—उतरना ( वा० ) पाँव का दूट जाना, पाँव का फूलना ।—काँपना ( वा० ) डरना, किसी काम को करते भय मालूम होना ।—किसी का उभाड़ना

( वा० ) किसी स्थान पर ठहरने नहीं देना, किसी को जमाने नहीं देना ।—किसी के गले में डालना ( वा० ) तर्क के द्वारा उसी की बातों से उसे दोषी ठहराना ।—चल जाना ( वा० )

शगमगाना, अस्थिर होना ।—जमाना ( वा० ) बड़ होना, बढ़तापूर्वक ठहराना ।—जमीन पर न ठहरना ( वा० ) शर्यत प्रसन्न होना, अतिशय हर्ष से फूल जाना, अभिमान करना, अहङ्कार

करना ।—डालना ( वा० ) किसी काम को प्रारम्भ करना, किसी काम को करने के लिये इच्छा होना ।—डिगना ( वा० ) फिसलना, ढपटना,

किसी काम से निराश होना ।—तले मलना

( वा० ) पीड़ा देना, दुःख देना, पीड़ित करना ।

—तोड़ना ( वा० ) किसी के काम में बाधा डालना, किसी को हानि पहुँचाना, आलस में बैठे रहना, अधिक चञ्चना ।—घो घो पोना

( वा० ) अधिक आदर करना, अत्यन्त भक्ति करना, अनुनय विनय करना, चिरोरी करना ।

—निकालना ( वा० ) मर्पादा छोड़ना, कुत्र रीति को डफि जाना ।—एकड़ना ( वा० ) शरण में आना, चिरोरी करना, विनती करना ।—पर पाँव रखना ( वा० ) अनुकरण करना दूसरे के

चाल पर चलना, शीघ्रता करना ।—पाँव ( वा० ) पैदल ।—पीटना ( वा० ) अधीर होना, घबड़ा जाना, व्यर्थ का परिश्रम करना, निष्फल उद्योग

करना ।—पूजना ( वा० ) भक्ति करना, बल्लग रहना, प्रपक् रहना ।—फूँक फूँक रखना

( वा० ) सावधान होना, सावधानी से चलना विचारपूर्वक किसी काम को करना ।—फैलाकर सोना ( वा० ) निश्चिन्त रहना, बिना चिन्ता के

रहना, निश्च रहना, निर्भय रहना ।—फैलाना ( वा० ) अपनी अधिकार बढ़ाना, फैल करना,

पसार करना ।—मर जाना ( वा० ) धक जाना, शान्त होना ।—रगड़ना ( वा० ) निष्फल काम करना, निरर्थक उद्योग करना, शोक करना, दुःख

प्रकाश करना ।—लगना ( वा० ) प्रणाम करना, नमस्कार करना ।—से पाँव बाँधना ( वा० )

सर्वदा किसी के पीछे लगा रहना, रक्षा करना, एक वृत्त के लिये भी नहीं छोड़ना ।—से पाँव मिड़ाना ( वा० ) बराबरी करना, तुल्यता करना ।

—सोना ( वा० ) पाँव धूल्य होना, पाँव में फिन-फिनी उठाना ।—द्वे आना ( वा० ) धीरे धीरे आना, शनैः शनैः आना ।

पाँवड़ा दे० ( पु० ) टाट या चारियल कि जटा की बनी चटाई का टुकड़ा जो पैर पोड़ने के लिये खोद्वी पर बिछाया जाता है, पाँपश ।

पाँशव तव० ( पु० ) पाँगा निमक ।

पाँशु, पाँशु तव० ( पु० ) घृति, रेणु, रेणुका, स्त्री का मासिक धर्म ।

पाँशुका तव० ( स्त्री० ) घृति, रज, रेणु, रजस्वला स्त्री ।

पाणिनीय तत्त्वं ( पु० ) पाणिनि मुनि निर्मित ग्रन्थ ।  
पाणिपाद तत्त्वं ( पु० ) हाथ पैर, कर चरण, हाथ और पाँव ।

पाणिपीडन तत्त्वं ( पु० ) पाणिग्रहण, विवाह ।  
पाण्डर तत्त्वं ( पु० ) कुन्द पुष्प, गौरक धातु विशेष,  
( गु० ) श्वेत वर्ण युक्त ।  
पाण्डव तत्त्वं ( पु० ) पाण्डुनन्दन, पाण्डुपुत्र, पाण्डु  
राजा के पुत्र, पञ्चपाण्डव ।

पाण्डित्य तत्त्वं ( पु० ) पण्डित का धर्म और कर्म,  
नैपुण्य, दक्षता, विद्या, पण्डिताई, विद्वत्त्व, विद्वत्ता ।

पाण्डु तत्त्वं ( पु० ) शुकुल और पीत मिश्रित वर्ण, रक्त  
पीत मिश्रित वर्ण । कुलवंशीय एक राजा का नाम ।  
निचित्रवीर्य का चेतन पुत्र, महर्षि कृष्ये द्वैपायन  
व्यास के औरत और निचित्रवीर्य की विधवा  
पत्नी शर्मस्तिका के गर्भ से उत्पन्न । पाण्डु की दो  
स्त्रियाँ थीं । कुन्ती और माद्री । भोजन्या कुन्ती  
ने पाण्डु को स्वयम्बर में पाय किया था । इसके  
अनन्तर भीष्मपितामह ने मद्र देश के राजा की  
पुत्री माद्री को पाण्डु से व्याह दिया । भीष्मपिता-  
मह की धृतराष्ट्र; पाण्डु और विदुर के रक्त थे,  
शुक्तिष्ठिर, भीम और धर्मज कुन्ती के गर्भ से  
उत्पन्न हुए थे । माद्री के गर्भ से नकुल और  
सहदेव उत्पन्न हुए थे । पाण्डु को चेतन पुत्र  
पाण्डव कहे जाते हैं । पाण्डु ने शान्तनु की नष्ट-  
धीर्ति का उद्धार किया था, अनेक राजाओं को  
जीत कर उन्होंने अधिक धन एकत्रित किया था ।  
और उन्नी धन से पाँच यज्ञ किये थे । यज्ञ करने  
के अनन्तर पाण्डु अपनी पत्नियों के साथ धन में  
गये । वहाँ उन्होंने काममोहित एक मृग का यध  
किया, उसने शाप दिया कि तुम स्त्री सङ्ग करते  
ही मर जाओगे । मरने के भय से पाण्डु ने स्त्री-  
सङ्ग करना ही छोड़ दिया । दुर्वास ने कुन्ती  
को जिस मन्त्र का उपदेश दिया था, उसी से  
कुन्ती ने वेदों का आह्वान करके तीन पुत्र  
उत्पन्न किये । पाण्डु के अनुरोध से कुन्ती ने  
उस मन्त्र का उपदेश माद्री को भी किया, माद्री  
ने भी अपने दो पुत्र उत्पन्न किये । एक दिन पाण्डु  
ने कामार्त होकर माद्री का सङ्ग किया, जिससे

उनकी मृत्यु हुई, पाण्डु का मृत शरीर हस्तिना-  
पुर लाया गया था और उसका अन्तिम संस्कार  
विदुर ने किया ।

पाण्डुर तत्त्वं ( पु० ) शुकुल पीत मिश्रित वर्ण ।  
पाण्डुरा तत्त्वं ( स्त्री० ) मसुराज, लता विशेष, शुकुल  
पीत वर्ण वाली स्त्री, गणपणी लता ।

पाण्डेय तत्त्वं ( पु० ) ब्राह्मणों की एक जाति विशेष,  
अध्यापक, पाठक, पंडित ।

पात तत्त्वं ( पु० ) [ पत + घञ् ] पतन, गिरना  
पड़ना । ( दे० ) पुस्तक के पन्ने, वृक्ष आदि के  
पत्ते कर्णभूषण, एक प्रकार का गहना ।

पातक तत्त्वं ( पु० ) पाप, त्रय, किरिय, कलुष,  
अशुभ, अपराध, दोष ।

पातकी तत्त्वं ( पु० ) दापी, दापी, अपराधी ।

पातघ्राघरा ( वि० ) अत्यन्त घरापोंक ।

पातञ्जल तत्त्वं ( पु० ) याम्य विशेष, योग शास्त्र, पत-  
ञ्जलि निर्मित योग दर्शन ।

पातर दे० ( स्त्री० ) वेश्या, पतुरिया, गणिका, ( पु० )  
पतला, दुर्बल, निर्बल ।

पातराज ( पु० ) सर्प विशेष ।

पातशाह ( पु० ) बादशाह ।— ( स्त्री० ) बादशाही ।

पाता तत्त्वं ( वि० ) रक्षिता, रक्षक, रक्षण कर्ता,  
दे० ( पु० ) पत्र, पत्ता, पत्ती ।

पाताया ( पु० ) मोजा, मुलतजा ।

पाताल तत्त्वं ( पु० ) लग्न से चौथा स्थान, स्वनाम  
प्रसिद्ध गढ़ा, रसातल, नागलोक, अधोभुवन,  
नरक, विबर, चङ्गवानल, एक यन्त्र विशेष जिससे  
शोधधि बनाते हैं । पाताल के सात भेद हैं, यथा—  
अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, नितल,  
रसातल ।—अतल ( पु० ) पातालवासी दैत्य विशेष ।  
—खण्ड ( पु० ) पाताललोक ।—गरुड़ या  
गरुड़ी ( पु० ) क्षितिहटा, क्षिरेटा ।—तुम्भी  
( स्त्री० ) लता विशेष ।—निलय ( पु० ) दैत्य  
सर्व ।—नृपति ( पु० ) सीसा ।—मंत्र ( पु० )  
मंत्र विशेष जिसके द्वारा कड़ी शोधधि पिललाई  
जाती है ।

पातित्य तत्त्वं ( वि० ) पातक, पाप, दुराचार, दुष्कृत,  
जाति अष्ट होने का कारण ।

पातिव्रत्य तत्त्वं ( पु० ) पतिव्रता का धर्म, साध्वी धर्म, सतीत्य धर्म ।

पाती दे० ( स्त्री० ) चिट्ठी, पत्री, पत्र ।

पात्र तत्त्वं ( पु० ) जिसके द्वारा जल आदि पिया जाय, पाघार, भाजन, भाण्ड, राजमन्त्री, सचिव, देश तीर का चन्तरा, पर्ण, पत्र, पत्ता, नाटक खेलने वाला, नट, अनुकूलकार, पर जिसको कन्या दी जाय । पिता आदि गुणों से युक्त, योग्य, दानीय व्यक्ति, पारलौकिक कल्याण के लिये जिसको दान दिया जाय ।—क ( पु० ) हाँकी, घाली, भिजावात्र ।—तरऊ ( पु० ) पाघ विशेष ।—ता ( स्त्री० ) योग्यता, अधिकार ।—त्य ( पु० ) पात्रता ।

पात्रिय ( वि० ) वह व्यक्ति जिसके संग पैठर एक घाली में भोजन किया जा सके, सहभोजी ।

पात्रो ( वि० ) जिसके पास वस्त्रन हों, जिसके पास सुयोग्य लोग हों ( स्त्री० ) छोटे वस्त्रन ।

पाय तत्त्वं ( पु० ) जल, पानी, नीर, तैल ।—नाथ ( पु० ) समुद्र ।—पति ( पु० ) वरुण ।—घासिनी ( स्त्री० ) नागवल्ली लता ।

पाथना दे० ( क्रि० ) धोपना, कपड़े पनाना, उपरी बनाना, गोबर पाथना । [ थिला, पथा ।

पाथर दे० ( पु० ) पथर, प्रसर, पालान, पापाय, पाथा ( पु० ) जल, अन्न, आकाश ।

पायि ( पु० ) समुद्र, आँख, पाय की पपड़ी, पितृ तर्पण के लिये जल विशेष, कीलाल ।

पाथेय तत्त्वं ( पु० ) पथ में व्यव करने की सामग्री, पथिकों के स्वर्च करने का द्रव्य, रास्ते का स्वर्च, रास्ते में खाने का भोजन, राहरी स्वर्च ।

पाथोज तत्त्वं ( पु० ) कमल, पथ, पुष्प-रीक ।

पाथोद् तत्त्वं ( पु० ) मेघ, घन, वारिद, बादल, समुद्र ।

पाथोधि तत्त्वं ( पु० ) [ पाथस् + धा + क्ति ] जलराशि, समुद्र, सागर, जलधि, तैलनिधि ।

पाथोनिधि तत्त्वं ( पु० ) [ पाथस् + नि + धा + क्ति ] समुद्र, सागर, पाथोधि ।

पाद् तत्त्वं ( पु० ) [ पट् + घञ् ] चरण, पैर, पाँव, ऋग्वेदीय मन्त्रों का चतुर्थीय, श्लोक का चतुर्थीय, चतुर्थ भाग, चौथा भाग, चट्टे पर्वत के समीप का

छोटा पर्वत ।—र ( स्त्री० ) जूता, खड़ाऊँ ।—कटक

( पु० ) चिकुआ ।—कुच्छू ( पु० ) मत विशेष,

प्रायश्चित्त विशेष ।—खसड ( पु० ) पत्त, जंगल ।

—पद्धति ( स्त्री० ) रास्ता, पगडंडी ।—ग्रहण

( पु० ) पादस्पर्श पूर्वक प्रणाम, अभिवादन ।—

चारी ( पु० ) व्यादा, पदाति । ( वि० ) पैदल

चलने वाला, पैरे से चलने वाला ।—ज ( पु० )

अपर वर्ष, शुद्ध जाति ।—जाग ( पु० ) जूता,

खड़ाऊँ, पद-पक, पैर के मोर्ग ।—दारी ( स्त्री० )

पादकोट, दियाई, गीत से पैर का कटना ।—प

( पु० ) वृष्ट, हुम, तरु, रुख, पेड़ ।—पक्ष

( पु० ) पक्ष राश्य चक्षु, चरण कान्त ।—

पीठ ( पु० ) पाद स्थानार्थ आसन, पादासन,

पैर रखने का पीड़ा ।—प्रज्ञासन ( पु० ) पैर

धोना, पाँव धोना ।—प्रहार ( पु० ) पादाघात,

आत मारना ।—प्रवाहन ( पु० ) पैर धोना,

पगचम्पी करना ।

पादक ( वि० ) चलने वाला, चतुर्थांश, छोटा पैर ।

पादकंदरु ( पु० ) नूपुर, बिड़िया ।

पादकालिका ( पु० ) नूपुर ।

पादगोडर ( पु० ) पीलपर्व रोग, स्त्रीपद रोग ।

पादग्रन्थि ( स्त्री० ) पदा नीर बुझा के मध्य का भाग,

गुरुक ।

पादचत्वर ( पु० ) बरसा, गालूका धीरा, मोटा ।

पीपल का पेड़ । ( वि० ) निन्दक, पुनरुत्थार ।

पादचारी ( पु० ) पैदल चरनवाला ।

पादना दे० ( क्रि० ) पाद मारना, प्रचोदयु लाग

करना ।

पाद नान दे० ( पु० ) काला निमक ।

पाय या पादार्घ्य तत्त्वं ( पु० ) शक्ति के पैर धोने

का जल ।

पादार्पण तत्त्वं ( पु० ) प्रवेश करना, पैर देना ।

पादुका तत्त्वं ( स्त्री० ) खड़ाऊँ, जूता, पनही, पग,

रस्ती, पोलिया, म्जिलीपर ।

पादोदक तत्त्वं ( पु० ) पाँव धोवन, देवता का गुरु

के पैर का घोसा जल, चरणामृत, पाय, पाँव धोने

के लिये जल ।

पाधा दे० ( पु० ) उपाध्याय पुरोहित ।

पान तत्त्वं ( पु० ) पीना, द्रव द्रव्य जल आदि को पी जाना, ( दे० ) ताम्बूल, पत्ता, रामायण में पान का अर्थ, हस्त, कर, हाथ है ।—पात्र ( पु० ) मदिरा पीने का पिथाला, जलपात्र, पानी पीने का पात्र, पनडब्बा —शौखंड ( पु० ) अतिशय भक्षणपी, मतवाला ।

पाना दे० ( कि० ) प्राप्त होना, मिलना, एकत्रित करना, लाभ होना । ( पु० ) पत्ता, पृष्ठ, किसी वस्तु का हिसाब लिखा हुआ कागज ।—(खी०) खिचि वंश में उत्पन्न एक राजपूत स्त्री । यह चित्तौर के महाराणा संभासिंह के यहाँ उनके बालक पुत्र उदयसिंह की धाय थी, इसने अपने पुत्र के प्राण लो कर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा की थी । पाना का स्वार्थत्याग और प्रसुमति संसार के इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखा गया है । इसकी आत्युपयुक्त कीर्ति संसार में अटल रहेगी ।

पानात्यय तत्त्वं ( पु० ) [ पान + अत्यय ] मदात्यय रोग, अधिक नशा होने का रोग, जो प्रायः मृत पातों को हुआ करता है । [ मद्य पीने में अनुरक्त ।

पानासक तत्त्वं ( वि० ) [ पान + आसक ] मद्य प्रिय, पानाहार तत्त्वं ( पु० ) [ पान + आहार ] खाना पीना, अन्न जल ।

पानी दे० ( पु० ) जल, लेप, नीर, सामर्थ्य, शक्ति, लावण्य, चमक, शोभा, वनापट की सुन्दरता ।—करना ( वा० ) नष्ट करना, खराब कर देना, लजित करना, लज्जामा, सहज करना, सुगम करना ।—का झुजझुला ( वा० ) अस्थिरता, नष्टवृत्ता, चण्डभ्रमता, चाञ्चल्य ।—देना ( वा० ) तर्पण करना, पितरों को जल देना ।—न माँगना ( वा० ) ऐसा मारना, जिससे मुरन्त मर जाय ।—पड़ना ( वा० ) मेघ बरसाना, घृष्ट होना, लजित होना, शरमाना ।—पीपी कोसना ( वा० ) सर्वदा बुरा मनाना, अत्यन्त दृष्टुम चाहना ।—पीना ( वा० ) जलपान करना, जलपान करना ।—भरना ( वा० ) अधीन होना, अधीनता स्वीकार करना, फिट पड़ना, तुच्छ होना ।—में आग लगाना ( वा० ) असह्य काम करना । मिटे कगड़े को फिर उखाड़ना ।—पतला करना

( वा० ) पीड़ा पहुँचाना, दुःख देना, दुःख करना । [ वाका फल विशेष ।

पानी फल दे० ( पु० ) सिंघाड़ा, पानी में उत्पन्न होने पान्थ तत्त्वं ( वि० ) पथिक, राही, यात्री, बटोही ।

पाप तत्त्वं ( पु० ) अधर्म, कलुष, अघ, अपराध ।

—खराडन ( पु० ) पाप नाशक, संय विशेष, मृत विशेष जो पाप दूर करने के लिये किये जाते हैं ।

—ग्रह ( पु० ) अर्द्ध चन्द्र, मङ्गल, राहु, शनि, शुक्र, रवि, अनिष्टकारक ग्रह, अशुभ ग्रह ।—चेता ( पु० ) पापारमा, पापी ।—जनक ( पु० ) पापारमा-दक ।—नापित ( पु० ) धूर्तनापित ।—रूपी ( वि० ) पाप की मूर्ति, पापात्मा, अधर्म ।—रोग ( पु० ) कुष्ठ रोग, चेचक ।

पापड़ दे० ( पु० ) मूँग या उदं की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी ।—बैलना ( वा० ) पापक बनाना, बहुत परिधम करना, बहुत मिहनत का काम करना, उत्पात खड़ा करना ।—खार दे० ( पु० ) केले की राख, केले के बूझ को जला कर एक प्रकार का बनाया हुआ चार । [ पापी ।

पापारमा तत्त्वं ( वि० ) पापिष्ठ, अक्षर्मी, अपराधी, पापिन दे० ( खी० ) पापीयसी, पाप करने वाली स्त्री, ( पु० ) अनेक पापी, पापिनी स्त्री, अधर्मचारिणी, यथा—

“ मैं पापिन ऐसी जली, कोयला हुई न राख ।”

पापी तत्त्वं ( वि० ) पापारमा, पापिष्ठ, अपराधी, दुष्कर्मी, दुराचारी ।

पामर तत्त्वं ( वि० ) अधम, नीच, पापिष्ठ, दुष्ट ।

पामरी तत्त्वं ( खी० ) अधमा स्त्री, रेशमी वस्त्र ।

पामा तत्त्वं ( खी० ) रोग विशेष, जुनली, खाज, कण्ड ।

पामारि तत्त्वं ( पु० ) गन्धक, खुबली नाणक ।

पायक दे० ( पु० ) वियादा, पैदल, पदाति, सेवक, दूत, चर, मल्ल, पहलवान ।

यथा—“हनुमान से पायक हैं जिनकेरे ।”

—तुलसीदास ।

पायद दे० ( पु० ) मधान, मद्य, माँच ।

पायजामा दे० ( पु० ) बलाचक्रान्त विशेष, एक प्रकार का कपड़ा जो पैर में पहना जाता है, स्वनाम प्रसिद्ध वस्त्र ।

पायती दे० ( स्त्री० ) पैर की शोर की खाट, पैताना, पदतल, खाट का वह भाग जिधर पैर रहता है ।  
 पायल दे० ( स्त्री० ) पैर का भूषण, पायल्लेख । ( गु० ) सुपात्र, सुन्दर गति, बाँस की सीढ़ी ।  
 पायस तत्त्वं ( पु० ) दुग्ध आदि के द्वारा बनाया अन्न, परमाद्य, तसमर्ह, चावल, दूध और चीनी मिश्रित पक्वान्न, खीर । [ पत्थर के बने खाँभे ।  
 पाया दे० ( पु० ) खाट का एक पैर, मक्का, ईँटा या पायिक दे० ( पु० ) दूत, विषादा, पदातिका, हरकारा ।  
 पायो तत्त्वं ( पु० ) पानकर्त्ता, पीने वाला, पान करने वाला ।  
 पार तत्त्वं ( पु० ) तीर, दूसरा छट, नदी लांघ कर जिन स्थान पर जाया जाय । समाप्ति, शेष, पूर्णता, प्राप्त, लक्ष्म, तरण, श्रद्धा, मोक्षन ।  
 —क तत्त्वं ( वि० ) समर्थ, कर्म समाप्तिकर्त्ता, पारग, पूर्णिकारक, पालक, प्रोत्तिकारक, व्यायामकारी । —करना दे० ( वा० ) पार जाना, पार बतरना, लांघना, किसी काम को पूरा करना, निवाहना, पूर्ण करना । [ वाला, परलैषा ।  
 पारल दे० ( पु० ) पारलने वाला, परीचर, जाँचने पारखी दे० ( पु० ) पारख, परलैषा ।  
 पारग तत्त्वं ( वि० ) [ पार + गम् + ड् ] समर्थ, पारगामी, निपुण, कर्मदक्ष, नदी समुद्र आदि के पार बतरने वाला ।  
 पारण तत्त्वं ( पु० ) प्रथम के दूसरे दिन का भोजन, उपवास के दूसरे दिन का विहित भोजन ।  
 पारतन्त्र्य तत्त्वं ( पु० ) परतन्त्रता, पराधीनता, अस्वाधीनता, पारवत्य ।  
 पारत्रिक तत्त्वं ( वि० ) परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक, परलोक का विषय । [ लिङ्ग ।  
 पारथिव तत्त्वं ( पु० ) पार्थिव, मिट्टी का बना शिव पारद तत्त्वं ( पु० ) धातु विशेष, पारा, रस धातु श्लेष्म ज्ञाति विशेष । [ निष्पन्न, अभिज्ञ ।  
 पारदर्शी तत्त्वं ( वि० ) पारगामी, निपुण, दक्ष, पारदर्शिक तत्त्वं ( पु० ) कामुक, परलोचन, दूसरी स्त्री पर शासक । [ भोजन ।  
 पारन तत्त्वं ( पु० ) पारण, उपवास के दूसरे दिन का पारना दे० ( पु० ) पारण करना, पूर्ण करना, पूरा करना ।

पारमार्थिक तत्त्वं ( वि० ) परमार्थ सम्बन्धी, पारमार्थिक, पारलौकिक, मोक्षमापक, मुख्य, प्रधान ।  
 पारम्पर्य तत्त्वं ( गु० ) पारम्परागत, क्रमक्रम, अनुक्रम परम्परा से आया, कुल रीति, कुछ परम्परा ।  
 पारज दे० ( पु० ) पीषा विशेष ।  
 पारलौकिक तत्त्वं ( वि० ) परलोक सम्बन्धी, परलोक के उपयोगी, परलोक का विषय ।  
 पारवश तत्त्वं ( पु० ) शूद्रा के गर्म और मातृगण औरस से उत्पन्न सन्तान, निराद जाति, परलोक तनय, राज, लोहाछ ।  
 पारस दे० ( पु० ) स्वर्णमयि, एक प्रकार के पारर का नाम जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है । देश विशेष, ईरान, कास देश । —नाथ ( पु० ) पारयनाथ, जिन विशेष, तेईवर्ग जिन । —पीतल ( पु० ) वृष विशेष ।  
 पारस्ताल दे० ( पु० ) गत या घागामी धर्म ।  
 पारसी तत्त्वं ( स्त्री० ) भाषा विशेष, पारस देश की भाषा, ईरान की भाषा, पारसवासी, एक जाति विशेष । [ बनाते हैं, पार कंटा, दूसरी शोर को ।  
 पारहि दे० ( क्रि० ) पार करते हैं, पूरा करते हैं ।  
 पारसीक तत्त्वं ( पु० ) पारस्य देशीय, पारस देश के वासी या वस्तु । [ ( क्रि० ) पर किया ।  
 पारा दे० ( पु० ) धातु विशेष, पारद, रस धातु, पार ।  
 पारायण तत्त्वं ( पु० ) पुराण पाठ विशेष, निवर्तन पूर्वक सप्ताह भर पठन या पाठन ।  
 पारायणिक तत्त्वं ( पु० ) पारायणकर्त्ता, पाठक, पात्र ।  
 पारायत तत्त्वं ( पु० ) कपोत, गृह कपोत, कपूतर, श्रावन्त की लक्ष्मी । [ का तट ।  
 पारावार तत्त्वं ( पु० ) समुद्र, सागर, दोनों ओर पारावर तत्त्वं ( पु० ) पारावर का पुत्र, वंद्यपुत्र । ( गु० ) पारावर सम्बन्धी, पारावर-मृत्ति, भिक्षु संहिता ।  
 पारायण तत्त्वं ( पु० ) पारायण पुत्र, प्यासदेन ।  
 पारिजात तत्त्वं ( पु० ) पारिभद्र वृक्ष, रंजन, सुरदुम, देवनाग्री का वृक्ष, पुत्र विशेष, दरचन्दन वृक्ष ।  
 पारिणह्य तत्त्वं ( पु० ) सम्बन्ध, बन्धन, मृगारहरण मृगम्यो के लिये उपयुक्त सामग्री ।  
 पारित्यथा तत्त्वं ( स्त्री० ) सधरा प्रियों के धारण करने की उपयुक्त वस्तु, टिकुली, मँदी ।

पान तत्त्वं ( पु० ) पीना, द्रव द्रव्य जल आदि को पी जाना, ( दे० ) ताम्बूल, पत्ता, रामायण में पान का अर्थ, हस्त, कर, हाथ है । —पान्न ( पु० ) मदिरा पीने का पियाला, जलपान, पानी पीने का पाय, पनद्वया —शौण्ड ( पु० ) अतिशय नशपायी, मतवाला ।

पाना दे० ( क्रि० ) प्राप्त होना, मिलना, एकत्रित करना, लाभ होना । ( पु० ) पन्ना, पृष्ठ, किसी वस्तु का हिसाब लिखा हुआ कागज । —( स्त्री० ) सिचि वंश में हर्षवर्धन एक राजपूत स्त्री । यह चित्तौर के महाराणा संग्रामसिंह के यहाँ उनके बालक पुत्र वदयसिंह की धाय थी, इसने अपने पुत्र के प्राण खो कर वदयसिंह के प्राणों की रक्षा की थी । पाना का स्वायत्त्याग और प्रभुभक्ति संसार के इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखा गया है । इसकी अत्युच्च कीर्ति संसार में अटक रहेगी ।

पानात्यय तत्त्वं ( पु० ) [ पान + अत्यय ] मदात्यय रोग, अधिक नशा होने का रोग, जो प्रायः मृत पालों को हुआ करता है । [ मद्य पीने में अनुरक्त ।

पानासक्त तत्त्वं ( वि० ) [ पान + आसक्त ] मद्य प्रिय, पानाहार तत्त्वं ( पु० ) [ पान + आहार ] खाना पीना, अन्न जल ।

पानी दे० ( पु० ) जल, सोय, नीर, सामर्थ्य, शक्ति, लावण्य, चमक, शोभा, बनावट की सुन्दरता ।

—करना ( वा० ) नष्ट करना, खराब कर देना, लजित करना, लजवाना, सहज करना, सुगम करना । —फां छुलछुला ( वा० ) अस्थिरता, सञ्चरता, चण्डमङ्गुरता, चापुलक्य । —देना ( वा० ) तर्पण करना, पितरों को जल देना । —न माँगना ( वा० ) ऐसा मारना, जिससे मुरम्त भर जाय । —पड़ना ( वा० ) मेघ बरसाना, बृष्टि होना, लजित होना, शरमाना । —पीपी कौसना ( वा० ) सर्वदा खुरा मनाना, अत्यन्त अशुभ चाहना । —पीना ( वा० ) जलपान करना, जलपान करना । —मरना ( वा० ) अधीन होना, अधीनता स्वीकार करना, फिट पड़ना, तुच्छ होना । —में आग लगाना ( वा० ) असम्भव काम करना । मिटे आगड़े को फिर उमाड़ना । —पतला करना

( वा० ) पीड़ा पहुँचाना, दुःख देना, दुःख करना ।

[ वाबा फल विशेष ।

पानी फल दे० ( पु० ) सिंघाड़ा, पानी में उधन होने पान्थ तत्त्वं ( वि० ) पथिक, राही, यात्री, घटोही ।

पाप तत्त्वं ( पु० ) अधर्म, कलुष, अध, अपराध ।

—खण्डन ( पु० ) पाप नाशक, मंत्र विशेष, मन्त्र विशेष जो पाप दूर करने के लिये किये जाते हैं ।

—ग्रह ( पु० ) अर्द्ध चन्द्र, मङ्गल, राहु, शनि, बुध, रवि, अनिष्टकारक ग्रह, अशुभ ग्रह । —चेता ( पु० ) पापात्मा, पापी । —जनक ( पु० ) पापोपा-

दक । —नापित ( पु० ) धूर्तनापित । —रूपी ( वि० ) पाप की मूर्ति, पापात्मा, अधर्म । —रोग ( पु० ) क्रुष्ट रोग, चेचक ।

पापड़ दे० ( पु० ) मूँग या उदं की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी । —वेतना ( वा० ) पापड़ बनाना, बहुत परिश्रम करना, बहुत मिहनत का काम करना, बर्पात खड़ा करना । —खार दे० ( पु० ) केले की राख, केले के बूच को जला कर एक प्रकार का बनाया हुआ खार । [ पापी ।

पापात्मा तत्त्वं ( वि० ) पापिष्ठ, अधर्मी, अपराधी, पापिन दे० ( स्त्री० ) पापीयसी, पाप करने वाली स्त्री, ( पु० ) अनेक पापी, पाविनी स्त्री, अधर्मचारिणी, यथा—

“ मैं पापिन ऐसी उली, कोयला हुई न राख ।”

पापी तत्त्वं ( वि० ) पापात्मा, पापिष्ठ, अपराधी, दुष्कर्मी, दुराचारी ।

पामर तत्त्वं ( वि० ) अधम, नीच, पापिष्ठ, दुष्ट ।

पामरी तत्त्वं ( स्त्री० ) अधमा स्त्री, रेशमी बख ।

पाम्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) रोग विशेष, खुजली, खान, कण्डू ।

पामरि तत्त्वं ( पु० ) गन्धक, खुजली नाशक ।

पायक दे० ( पु० ) पियादा, पैदल, पदाति, सेवक, दूत, चर, मछ, पहलवान ।

यथा—“ हनुमान से पायक हैं जिनके ।”

—तुलसीदास ।

पायद दे० ( पु० ) मचान, मच, नाँच ।

पायजामा दे० ( पु० ) धातुचक्रादन विशेष, एक प्रकार का कपड़ा जो पैर में पहना जाता है, स्वनाम प्रसिद्ध वस्त्र ।

पायंती दे० ( खी० ) पैर की ओर की खाट, पैनाना, पदतल, खाट का वह भाग जिधर पैर रहता है ।  
 पायल दे० ( खी० ) पैर का झूपण, पायज़ेव । ( गु० )  
 सुचारु, सुन्दर गति, शीस की सीढ़ी ।  
 पायस तत्० ( पु० ) दुग्ध आदि के द्वारा बनाया घृत,  
 परमाद्य, तसमई, चावल, दूध और चीनी मिश्रित  
 पक्वान्न, खीर । [ पत्थर के बने खम्भे ।  
 पाया दे० ( पु० ) खाट का पुरु पैर, मचवा, ईटा या  
 पायिक दे० ( पु० ) दूत, पिवादा, पदातिङा, हरकारा ।  
 पायो तत् ( पु० ) पानकर्त्ता, पाने वाला, पान  
 करने वाला ।  
 पार तत्० ( पु० ) तीर, दूसरा तट, नदी लांघ कर  
 जिन स्थान पर जाया जाय । समाप्ति, शेष,  
 पूर्णता, प्रान्त, लङ्घन, तरण, बद्धरण, मोचन ।  
 —क तत्० ( वि० ) समर्थ, कर्म समाप्तिकर्त्ता,  
 पारग, पूर्तिङारक, पाठक, प्रीतिकारक, व्यायाम-  
 कारी ।—करना दे० ( वा० ) पार जाना, पार  
 बतारना, लांघना, किसी काम को पूरा करना,  
 निवाहना, पूर्ण करना । [ वाला, परलैया ।  
 पारख दे० ( पु० ) पारखने वाला, परीक्षक, जिनके  
 पारखी दे० ( पु० ) पारख, परलैया ।  
 पारग तत्० ( वि० ) [ पा + गम् + ड् ] समर्थ, पार-  
 गामी, निपुण, कर्मदक्ष, नदी समुद्र आदि के पार  
 बतारने वाला ।  
 पारण तत्० ( पु० ) व्रत के दूसरे दिन का भोजन, वप-  
 वास के दूसरे दिन का विहित भोजन ।  
 पारतन्त्र्य तत्० ( पु० ) परतन्त्रता, पराधीनता,  
 अस्वाधीनता, पारवश्य ।  
 पारथिक तत्० ( वि० ) परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक,  
 परलोक का विषय । [ जिह्वा ।  
 पारयिव तत्० ( पु० ) पार्थिव, मिट्टी का बना शिव  
 पारद तत्० ( पु० ) धातु विशेष, पारा, रस धातु  
 श्लेष्म जालि विशेष । [ निष्पान, अभिज्ञ ।  
 पारदर्शी तत्० ( वि० ) पारगामी, निपुण, दक्ष,  
 पारदर्शक तत्० ( पु० ) कामुक, परछोत, दूसरी  
 स्त्री पर शासक । [ भोजन ।  
 पारन तत्० ( पु० ) पारण, वपवास के दूसरे दिन का  
 पारना दे० ( पु० ) पारण करना, पूर्ण करना, पूरा करना ।

पारमार्थिक तत्० ( वि० ) परमार्थ सम्बन्धी, पारकाळ  
 विषयक, पारलौकिक, मोक्षप्राप्तक, मुख्य, प्रधान ।  
 पारम्पर्य तत्० ( गु० ) परम्परागत, कुलक्रम, अनुक्रम,  
 परम्परा से आया, कुल रीति, कुल परम्परा ।  
 पारज दे० ( पु० ) पीछा विशेष  
 पारलौकिक तत्० ( वि० ) परलोक सम्बन्धी, परलोक  
 के उपयोगी, परलोक का विषय ।  
 पारवश तत्० ( पु० ) युद्ध के गर्भ और ब्राह्मण के  
 औरस से उत्पन्न सन्तान, निषाद जाति, पर स्त्री  
 तनय, शत्रु, लोहाद्य ।  
 पारस दे० ( पु० ) स्वर्णमयि, एक प्रकार के पत्थर का  
 नाम जिसके रश्मि से लोहा भी सेना हो जाता है ।  
 देश विशेष, ईरान, फारस देश ।—माथ ( पु० )  
 पारयनाथ, जिन विशेष, तेईवर्षा जिन ।—पीतल  
 ( पु० ) वृष विशेष ।  
 पारसाज दे० ( पु० ) गत या प्रागामी वर्ष ।  
 पारसी तत्० ( खी० ) भाषा विशेष, पारस देश की  
 भाषा, ईरान की भाषा, पारसवासी, एक जाति  
 विशेष । [ बनाते हैं, पार कैं, दूसरी ओर को ।  
 पारहि दे० ( क्रि० ) पार काते हैं, पूरा करते हैं ।  
 पारसीक तत्० ( पु० ) पारस्य देशीय, पारस देश के  
 वासी या वस्तु । [ ( क्रि० ) पर किया ।  
 पारा दे० ( पु० ) धातु विशेष, पारद, रस धातु, पार ।  
 पारायण तत्० ( पु० ) दुराण पाठ विशेष, नियम-  
 पूर्वक सप्ताह भर पठन या पाठन ।  
 पारायणिक तत्० ( पु० ) पारायणकर्त्ता, पाठक, छात्र ।  
 पारावत तत्० ( पु० ) कपोत, शृङ्ग कपोत, क्यूतर,  
 ब्राह्मन्स की लकड़ी । [ का तट ।  
 पारावार तत्० ( पु० ) समुद्र, सागर, दोनों ओर  
 पाराशर तत्० ( पु० ) पराशर का पुत्र, वेदम्यास । ( गु० )  
 पराशर सम्बन्धी, पराशर-मूर्ति, भिषु संहिता ।  
 पाराशर्य तत्० ( पु० ) पाराशर पुत्र, व्यासदेव ।  
 पारिजात तत्० ( पु० ) पारिमद्र वृक्ष, देवतप, सुरद्रुम,  
 देवतार्थों का वृक्ष, पुष्प विशेष, हरचन्दन वृक्ष ।  
 पारिणाल्य तत्० ( पु० ) सम्बन्ध, बन्धन, मृगापकरण  
 गृहस्थों के लिये उपयुक्त सामग्री ।  
 पारित्यया तत्० ( खी० ) सघरा छिपों के धारण  
 करने की उपयुक्त वस्तु, टिकुली, येंदी ।



पारितोषिक तत्त्वं ( वि० ) तुष्टिजनक दान, प्रसन्नता-  
सूचक दान, पुरस्कार ।  
पारिन्द्र या पारीन्द्र (वि०) सिद्ध, सृगेन्द्र, योग, पञ्चानन ।  
पारिपथिक तत्त्वं ( पु० ) तस्कर, चोर, लुटेरा, डाकू ।  
पारिपात्र तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विशेष, एक पर्वत का  
नाम, विन्ध्याचल के पश्चिमी भाग का नाम जो  
माजवा देश की सीमा पर है ।  
परिपार्श्व ( पु० ) श्रुत्तर, धरदत्ती ।  
परिपार्श्वक तत्त्वं ( पु० ) नट विशेष, जो सूत्रधार  
की सहायता करता है, पासवान्, धरदत्ती ।  
परिभद्र तत्त्वं ( पु० ) देवदास वृत्त, निम्न वृत्त,  
साखू का पेड़ ।  
परिभाष्य तत्त्वं ( पु० ) ज्ञानान्त, प्रतिभू ।  
परिभाषि तत्त्वं ( पु० ) साङ्केतिक विशेष, विषयों  
के विशेष, अर्थबोधक शब्द विशेष ।  
परिमाणुद्वय तत्त्वं ( पु० ) अति सूक्ष्म परिमाण, वह  
परिमाण जिससे छोटा दूसरा न हो ।  
परिपात्र ( पु० ) देखो "पारिपात्र" ।  
परिरक्षक ( पु० ) तपस्वी, साधु ।  
पारिग ( पु० ) परात, घोषल ।  
परिशील ( पु० ) एक प्रकार का पुष्पा ।  
परिपद तत्त्वं ( पु० ) सभासद, सभास्य सम्य । ( वि० )  
परिपद सम्यन्धी, सभा सम्यन्धी ।  
पारी दे० ( स्त्री० ) पारी, पाला, अवसर, क्रम, पर्याय ।  
पारीण तत्त्वं ( वि० ) पारगमनकर्त्ता, पारगामी ।  
पारुष्य तत्त्वं ( पु० ) परनिन्दा, परद्रोह, परनिष्ठ,  
अभिय भाषण, चार प्रकार के वाचिक पापों के  
अन्तर्गत पाप विशेष । कठोरता, परुषत्व, दुर्वैष्य,  
कठोर वचन ।  
पार्श्व ( पु० ) राख, भस्म । [ पाण्डव ।  
पार्थ तत्त्वं ( पु० ) पृथा का पुत्र, अर्जुन, तीसरा  
पाथक्य तत्त्वं ( पु० ) प्रयकता, प्रयक होना, मिश्रण, प्रमेद ।  
पार्थ ( पु० ) एक रथ का नाम । [ ( वि० ) प्रथु सम्यन्धी ।  
पार्थनी ( पु० ) भारीरन, बड़ाई, स्थूलता, मोटाई ।  
पार्थिव तत्त्वं ( पु० ) राजा, नृपति, महीपाल । ( वि० )  
पृथिवी सम्यन्धी, पृथिवी का विकार, पृथिवी से  
उत्पन्न, मृन्मय । — ( स्त्री० ) पृथिवी से उत्पन्न,  
सीता, उमा, पार्वती ।

पार्पर ( पु० ) यम ।  
पार्वण तत्त्वं ( पु० ) पितृपक्ष में किया जाने वाला  
श्राद्ध विशेष । पर्व पर किया जाने वाला श्राद्ध,  
समावस्था आदि के दिन कर्त्तव्य श्राद्ध, पर्व कृत्य ।  
पार्वत ( वि० ) पर्वत सम्यन्धी । ( पु० ) बकायन, हंगुर,  
शिला जंतु, सिलाजीत, सीताधातु, एक अक्ष ।  
—पीलु ( वि० ) अक्षरोट ।  
पार्वती तत्त्वं ( स्त्री० ) सैनाष्ट्र सृष्टिका, मुलतानी  
मिट्टी, धात्री फल, आमसकी, धाँसला, एक प्रकार  
का पत्थर, दुर्गा, भगवती, महादेव की स्त्री, अपने  
पिता द्रुप के यज्ञ में पिता निमन्त्रण के सती रूप-  
स्थित हुई, परन्तु वहाँ पिता के द्वारा की गई पति  
की निन्दा से लह नहीं सकी अतएव वहाँ, यज्ञ-  
कुण्ड में कूद कर इन्हीं अपने प्राण दे दिये । तद्-  
नन्तर पर्वतराज हिमालय के घर, मेनका के गर्भ  
से ये उत्पन्न हुई । ये पर्वतराज की कन्या थीं । इस  
कारण इनका पार्वती नाम हुआ । शिव से विवाह  
करने के लिये इन्हीं कठिन तपस्या की थी । — य  
( पु० ) पहाड़ी । — लोचन ( पु० ) ताल के साठ भेदों  
में से एक ।  
पार्श्व तत्त्वं ( पु० ) कन्धा के नीचे का भाग, पार्श्व,  
पास, निकट, समीप । — नाथ ( पु० ) जैनों के  
वेईसवाँ तीर्थङ्कर । — वर्ती ( वि० ) पारवस्थ, सह-  
चर, पास रहने वाला । — भाग ( पु० ) हाथ के  
समीप का भाग, पसली । — शूल ( पु० ) शूलरोग  
विशेष, पंजर का शूल ।  
पाल तत्त्वं ( पु० ) पालक, रक्षक, दायककर्त्ता, स्वनाम  
ख्यात वस्तु, जो नावों पर टांगी जाती है, जिसके  
सहारे नाव चलती है तन्त्र, छोटा तन्त्र, बरसाती  
वासपात में रख कर फल पकाने की विधि ।  
पालक तत्त्वं ( पु० ) रक्षक, पोषक, शासनकर्त्ता, अध्व-  
रक्षक । ( दे० ) भाजी, शाक विशेष, पाजक का  
साग । — ता ( स्त्री० ) दयालुता, रक्षता, रक्षा ।  
पालकी दे० ( स्त्री० ) शिविका, डोली ।  
पालक्य तत्त्वं ( पु० ) पालक का साग ।  
पालन तत्त्वं ( पु० ) [ पाल + नट ] मरण पोषण,  
प्रतिपालन, रक्षण, अङ्गीकार करण, पूरण,  
निर्वाह ।

पालना तत् ( क्रि० ) पालन करना, रक्षा करना, पोषना, निवाहना, हिण्डोला झूलन ।

पालनीय तत् ( वि० ) पालने योग्य, रक्ष्य करने योग्य, पालन करने के उपयुक्त ।

पालघी दे० ( क्रि० ) पालन करिष्वा ।

पाला दे० ( पु० ) रक्षित, पोसा हुआ, नीहार, हिम, तुषार, पारी, घारी, पर्याय, क्रम निरूपण, काल निरूपण । [ प्रथम करना ।

पालापन दे० ( पु० ) अभिषादन, प्रणाम, पर्व छूना, पलाश तत् ( वि० ) पलाश वृक्ष विशिष्ट, पलाश वृक्ष सम्बन्धी, हरे रंग का, सुदृढ़ वृक्ष, टाक ।

पालि तत् ( स्त्री० ) भाषा विशेष । यौद्धों के समय का हिन्दुस्तानी भाषा । यह भाषा संस्कृत से गिरी और मागधी आदि प्राकृत भाषाओं से बढ़ी हुई पीछ की भाषा है, यौद्ध धर्म के प्रम्य इसी भाषा में लिखे गये हैं ।

पालिक दे० ( पु० ) पोषक, रक्षक, पालक ।

पालित तत् ( वि० ) रक्षित, स्थापित, पोषित, रक्षा किया हुआ ।

पाली तत् ( स्त्री० ) पक्षि, श्रेणि, कोर्न, प्रगंसा, कवित्त भोजन, झलझार विशेष, कान की वाली भूँड़ वाली स्त्री, प्राग्ग भाग, सेतु, उत्सङ्ग, गोदी, देश, प्रथम परिमाण ।

पाले दे० ( भ० ) अधीन, वश में, सचिकार में अधीनता में ।—पड़ना ( वा० ) अधीन होना, वश होना ।—यथा

“ आज फरकै खल काल हवाले ।

परै कठिन राखण के पाले ॥ ”

—रामायण

पाव दे० ( पु० ) चतुर्धांश, चौथाई भाग, चौथ, एक सेर का चौथाई, चार छुट्ठीक ।

पावक तत् ( पु० ) अग्नि, अमल, आग, वह्नि । ( वि० ) पवित्र, पवित्र करने वाला, परिष्कारक, पवित्रकारी ।

पावड़ा दे० ( पु० ) पवित्र ।

पावन तत् ( पु० ) पवित्र, पवित्रकारक, स्वच्छ, शुद्ध करने वाला, जल, अग्नि, मोक्ष, कुरा, मग्न, सप्तम, सूर्य दर्शन आदि पावन करने वाले हैं ।

पावना दे० ( पु० ) पाना, प्राप्त होना, मिलना, प्राप्य, पाने योग्य, आदाय घन, बाकी ।

पावला दे० ( पु० ) चौथा भाग, चतुर्धांश, चार आना, रुपये का चौथा भाग, चवड़ी ।

पावली दे० ( स्त्री० ) रुपये का चौथाई भाग, चवड़ी ।

पावस दे० ( पु० ) वर्षा ऋतु, प्रावृट् काल, वर्षा काल, बरसात ।

पाश तत् ( पु० ) रज्जु, रस्सी, गुन, फाली, फन्दा, शस्त्र विशेष । [ धेनुता ।

पाशक तत् ( पु० ) पासा, पासा खेलना, जुआ

पाशा दे० ( पु० ) शस्त्र, जुआ, चौपड़, कर्ण भूषण विशेष ।

पागिन तत् ( पु० ) पाशयुक्त, पद, बन्धा हुआ ।

पागी तत् ( पु० ) पाशधर, रज्जु विनिष्ट, बरहण ।

पाशुपत तत् ( पु० ) पशुपति मन्त्र के उपासक, शैव शैव सम्प्रदायी ।

पाशुपतास्त्र तत् ( पु० ) शस्त्र विशेष । अर्जुन का शस्त्र, यही अस्त्र अर्जुन ने तपस्या द्वारा महादेव से पाया था ।

पाश्चात्य तत् ( वि० ) पश्चाज्जात, पश्चाद्वर्ष, पीछे पैदा हुआ, पश्चिम देशी, पश्चिम के वासी, पश्चिम देशोद्भव, योद्धा देश वासी ।

पापाण तत् ( पु० ) फिला, पत्थर, पापर ।—दारण, या दारक ( पु० ) टांकी, धेनी, पत्थर काटने का अस्त्र ।

पास दे० ( भ० ) समीप, निकट ।

पासा दे० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध श्रीद्वेषयोगी वस्तु, पाशा ।

पासी दे० ( पु० ) जाति विशेष, व्याघ्र ।

पाहन दे० ( पु० ) पापाण, पत्थर, पापर ।—कुमि ( पु० ) एक प्रकार का कीड़ा, पत्थर का कीड़ा, यह पत्थर ही में अपने रहने का घर बनाता है ।

पाहुर दे० ( पु० ) पहरा, चौकीदार, रक्षक, पहरी, चौकी देने वाला । [ गांव से सम्बन्ध रखना ।

पाहो दे० ( स्त्री० ) दूसरे गांव में सेली करना, दूसरे

पाहुन दे० ( पु० ) पाहुना, अतिथि, मेहमान ।

पाहुर दे० ( पु० ) बैना, उपहार, दान ।

पाहुँ दे० ( पु० ) व्यक्ति, जन, सर्वसाधारण ।

पिआरा दे० ( पु० ) प्रिय, प्यारा, मनेही ।

पिऊ दे० ( पु० ) पति, स्वामी, प्रियतम, भर्ता, प्यारा ।

पिक तत् ( पु० ) परभूत, कोकिल, कोइल ।—घपनी ( स्त्री० ) मिष्टभाषिणी स्त्री, कोकिल के समान गोलने

वाली छी ।—चैनी ( छी० ) पिक वयनी, मधुर मापिणी, मधु मापिणी ।  
 पिकदान या पोरुदान दे० ( पु० ) निष्ठिवन पात्र, धूने का पात्र, उगावदान । [ होना, पानी होना ।  
 पिघलना दे० ( क्रि० ) टघलना, द्रव होना, पतला पिघलाना दे० ( क्रि० ) टघडा, गलाना, द्रव करना, पतला करना ।  
 पिघलाव दे० ( पु० ) टघलाव, गलाव । [ वर्ण ।  
 पिङ्ग तत्त्वं ( पु० ) पिङ्गल वर्ण विशिष्ट, कपिल, पीत पिङ्गल तत्त्वं ( पु० ) नील पील मिश्रित वर्ण, कपिश रङ्ग । कङ्गार, कपिश, पिशङ्ग, पीतल, डरताल । नील पीत वर्ण विशिष्ट, नील पीत, निधि विशेष, कपि, वानर, अग्नि, मुनि विशेष, नकुल, श्यावर, विप विशेष, एक सम्बरसर का नाम, पिङ्गलाचार्य कृत छन्दोमन्थ विशेष ।  
 पिङ्गला तत्त्वं ( छी० ) चिदेह देश में रहने वाली एक वेश्या का नाम, कथिका, नाडी विशेष, जो दहिनी नाक से निकलती है, पथि विशेष । राजा मरुदरि की पत्नी का नाम, घामन नाम के दक्षिण दिग्भाज की हथिनी का नाम ।  
 पिङ्गुर दे० ( पु० ) हिंडोला, झूजना, पालना ।  
 पिञ्जरा दे० ( क्रि० ) दबना, सिङ्गड़ना, सिमिटना ।  
 पिञ्जकाना दे० ( क्रि० ) दवाना, सिकोटना ।  
 पिञ्जकारी दे० ( पु० ) पचूका, दमकला रङ्ग पानी आदि दूर फेंकने के लिये यन्त्र विशेष ।  
 पिञ्जराव तत्त्वं ( पु० ) पशु का अङ्ग, पेट, उदर, जठर ।  
 पिञ्जिडल तत्त्वं ( वि० ) गुन्दिल, छेद वाला । [ हुआ ।  
 पिञ्जपिञ्जा दे० ( पु० ) पिङ्गपिङ्ग, सड़ा हुआ, गला पिञ्जु तत्त्वं ( पु० ) कापास, कपास, शृष विशेष, कुछ विशेष, एक असुर का नाम, औरव, शल्य विशेष, कर्पे परिमाण ।  
 पिञ्जुका दे० ( पु० ) पिञ्जकारी, पचका ।  
 पिञ्जुमन्द तत्त्वं ( पु० ) निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़ ।  
 पिञ्जर दे० ( पु० ) धाल की जलन ।  
 पिञ्ज तत्त्वं ( पु० ) मयूरपुच्छ, मोरपङ्ख, शिखण्ड, छाटगुल, पूँछ ।  
 पिञ्जक ( पु० ) पूँछ, मोचरस ।  
 पिञ्जिका ( छी० ) शीशम, शिशपा ।

पिञ्ज ( पु० ) दवाकर चपटा करने की क्रिया ।  
 पिञ्जपाद ( पु० ) पैरों का एक रोग विशेष ।—  
 ( वि० ) पिञ्जपाद रोग युक्त घोड़ा ।  
 पिञ्जग्राण ( पु० ) बाज पक्षी, श्येन ।  
 पिञ्जभार ( पु० ) मोर की पूँछ ।  
 पिञ्जल ( पु० ) अकाशवेल, मोचरस, शीशम, वासुकि के वंश का सर्प विशेष । ( वि० ) चिकना, किसलाहटी, जिस पर से पैर फिसले ।  
 पिञ्जलचङ्कदा ( छी० ) बेर, बदरी वृक्ष, उषोव की शाक । [ पड़ना, रपटना ।  
 पिञ्जलन दे० ( पु० ) पिङ्गलना, खसकना, गिरना, पिञ्जा ( छी० ) सुपारी, शीशम, नारङ्गी का वृक्ष, आकाशलता, निर्मली का पेड़, चाँवल का मीड़ ।  
 पिङ्गलगा ( पु० ) अयोन, आश्रित, अनुवर्ती, अनुगामी, चेला, सेवक, दहलुआ ।  
 पिङ्गलगू या पिङ्गलगू ( पु० ) “देखो पिङ्गलगा ।”  
 पिङ्गलना दे० ( क्रि० ) फिसलना, गिरना, पड़ना, पैर रपटने से गिर जाना ।  
 पिङ्गलवाई दे० ( छी० ) डाकिन, भूतिन, चुहैल ।  
 पिङ्गला दे० ( वि० ) पीछे का, अनन्तर का, परचाव ।  
 पिङ्गवाड़ा दे० ( पु० ) परचागांग, पीछे का भाग, मकान का पिङ्गला हिस्सा ।  
 पिङ्गाड़ो दे० ( छी० ) एक प्रकार की रस्सी, जिससे घोड़ों का पिङ्गला पैर बाँधा जाता है । ( अ० ) पीछे, परचाव, पुष्ट भाग । [ चान ।  
 पिङ्गान दे० ( वि० ) परिचय, पहचान, जान पहि-  
 पिङ्गाने दे० ( वि० ) परिचित, जाने हुए, पहचाने गए ।  
 पिङ्गुत दे० ( अ० ) पीछे, परचाव, पीछे का भाग । ( पु० ) मकान का पिङ्गवाड़ा ।  
 पिङ्गल दे० ( पु० ) पिङ्गवाड़ा, घर का पिङ्गला भाग ।  
 पिङ्गौरा दे० ( पु० ) दोहर, दुपट्टा, चदर, उत्तरीय, ऊपर ओढ़ने का वस्त्र ।  
 पिङ्गौरी दे० ( छी० ) दोहर, दुपट्टा, पतली चादर ।  
 पिङ्गन तत्त्वं ( पु० ) रूई धुने की धनुही ।  
 पिङ्गजर तत्त्वं ( पु० ) अश्व विशेष, पीत रक्त वर्ण, रक्त पीत मिश्रित वर्ण, पिञ्जरा, जिसमें पखेरू रखे जाते हैं । पक्षियों के रखने का घर । नागकेशर पुष्प, शरीर का अस्थि समूह ।

पिञ्जरा, पिंजरा, पिंजड़ा दे० ( पु० ) पची रखने का घर, जो लकड़ी या लोहे के तारों से बनता है ।

पिञ्जल तत्० ( पु० ) कुरा पत्र, हरिताल, अतिशय ध्याकुल होना, तीतर पची, भूषण विशेष, अन्नद, याजूबन्द, बिजायत ।

पिञ्जिका तत्० ( स्त्री० ) रुई का गल्ला ।

पिञ्जियारा दे० ( पु० ) पिजारा; रुई धुनने वाला, धीजने वाला ।

पिञ्जूल तत्० ( पु० ) यात्री, दीप की बत्ती, मशाल ।

पिञ्जूप तत्० ( पु० ) फर्शमल, कान का मल, छूट, डंड ।

पिट तत्० ( पु० ) पेटी, पिटाता, सन्दूक, पिटारी, नरकुल, नरकट । [ पिटारी ।

पिटक तत्० ( पु० ) घेरादि रचित पात्र विशेष, पिटाता,

पिटका ( स्त्री० ) पिटारी । [ पीटने की लकड़ी, डंडा ।

पिटना दे० ( क्रि० ) मार खाना । ( पु० ) मुगदर, मुँगरा,

पिटारा दे० ( पु० ) कपड़े आदि रखने का लकड़ी या बेल का बूझा हुआ बख्सा ।

पिटारी दे० ( स्त्री० ) छोटा पिटाता ।

पिटक ( पु० ) दाँत का मल ।

पिट्स ( स्त्री० ) शोक में छाती पीटने की क्रिया ।

पिट्ट ( वि० ) मार खाने का अभ्यासी । [ विशेष ।

पिट्टर ( पु० ) मोथा, मथानी, थाली, घर विशेष, अग्नि

पिटो दे० ( स्त्री० ) उर्द की भीमी हुई पिसी दाल ।

पिड़क ( पु० ) कुंसी, स्कोटक ।

पिड़का ( स्त्री० ) देड़ो "पिड़क ।"

पिण्ड तत्० ( पु० ) आटे की बनी गोला वस्तु विशेष,

देह का एक देश, गृह का एक देश, शरीर, देह,

पितरों के उद्देश से दिया हुआ दान, गोला,

मण्डल, घर्तुलाकार, गन्धद्रव्य विशेष, जपा पुष्प,

आजीवन, जीविका, अन्न का गोला जो पितरों

के उद्देश से दिया जाता है ।—छुटाना ( वा० )

बघाना, भार उतारना, अपना दासित्व हटाना,

पीछा छुड़ाना, उद्धार पाना ।—फला ( स्त्री० )

तुम्ही विशेष, कटुतुम्ही, तितलौकी ।

पिण्डली दे० ( स्त्री० ) फिट्टी, पिण्डरी, रोग विशेष,

नसों का अकड़ना ।

पिण्डा तत्० ( पु० ) पितरों को उद्देश करके दिया हुआ

अन्न, डुकड़ा, मैनफल, कस्तूरी विशेष ।

पिण्डरा दे० ( पु० ) लुटेरा, टग, दकैत, एक जाति विशेष, जिसका लूटना ससोटना काम है, डाकुओं का दल । चपखक, बौद्ध, संन्यासी, गोप, महिषी, रचक, चरवाहा, हुम विशेष । [ जड़ ।

पिण्डालू दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, शोषधि विशेष की पिटित तत्० ( वि० ) शरीरकृत, एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ, मिलित, जड़ित, गुणित ।

पिण्डी तत्० ( स्त्री० ) पिण्डी, तगर, लौया, लार, लजूर विशेष, शान निरूपण करने का उपन्यास, वेदी, पिलिपडी, लटाई, शिष का लिङ्ग, देवता की मूर्ति ।—मुन्ना ( स्त्री० ) नागरमोथा ।

पिण्डुक या पिण्डक तत्० ( पु० ) पची विशेष, धुन्नु, कटुतर की जाति का एक पलेन्द्र ।

पिण्डोल दे० ( पु० ) खदिया मिट्टी, छूई ।

पिण्याक तत्० ( पु० ) पीना, खली, तिल आदि से तेल निकाल लेने पर जो उसका भाग बचता है ।

पितर दे० ( पु० ) पितृ, पितृपैतामह, पूर्वपुरुष, पूर्वज, पुरखा, पिता, दादा, परदादा आदि ।—पार्ष ( पु० ) यमरात्र । [ का मुर्चा, जड़ ।

पितराई दे० ( स्त्री० ) पितर सम्बन्धी, कुटुम्ब, पीतल

पितरिहा ( वि० ) पीतल का ।

पितरी तत्० ( पु० ) माता पिता, मा बाप, यह शब्द संस्कृत है, पितृ शब्द के प्रथमा द्विवचन का यह रूप है ।

पितरीला दे० ( पु० ) पितृ पूजन करने का पात्र, पात्र विशेष, जिसमें पितरों की पूजा करने की सामग्री रखी जाती है ।

पितलाना दे० ( क्रि० ) पीतल के बर्तन में रखने के कारण दही आदि का थिगड़ जाना, पीतल का मुर्चा लग जाना ।

पिता या पितृ तत्० ( पु० ) बाप, जनक, जन्मदाता, तात ।—मह तत्० ( पु० ) पिता के पिता, बाबा,

आजा, पितृ जनक, ब्रह्मा, प्रजापति, मुनि विशेष ।

—महरी तत्० ( स्त्री० ) पितामह पत्नी, पितृजननी, दादी, आजी ।

पितिया दे० ( पु० ) पितृव्य, चचा, काका, पिता का भाई ।

—नो ( स्त्री० ) चची, चाची ।—ससुर ( पु० )

चचिया ससुर ।—सास ( स्त्री० ) चचिया सास ।

वाली छी ।—वैनी ( छी० ) पिक वयनी, मधुर  
भाषिणी, मञ्जु भाषिणी ।

पिकदान या पीकदान दे० ( पु० ) निष्ठोवन पात्र,  
धूकने का पात्र, उगालदान । [ होना, पानी होना ।  
पिघलना दे० ( कि० ) टघलना, द्रव होना, पतला  
पिघलाना दे० ( कि० ) टघडा, गलाना, द्रव करना,  
पतला करना ।

पिघलाव दे० ( पु० ) टघलाव, गलाव । [ वर्यं ।  
पिङ्ग तत्० ( पु० ) पिङ्गल वर्णं विशिष्ट, कपिश, पीत  
पिङ्गल तत्० ( पु० ) नील पील मिश्रित वर्ण, कपिश  
रङ्ग । कङ्गार, कपिश, पिशङ्ग, पीतल, हरताल ।  
नील पीत वर्णं विशिष्ट, नील पीत, निधि विशेष,  
कपि, धानर, अग्नि, मुनि विशेष, नकुल, स्थावर,  
विप विशेष, एक सम्बरसर का नाम, पिङ्गलाचार्य  
कृत छन्दोग्य विशेष ।

पिङ्गला तत्० ( खी० ) विदेह देश में रहने वाली एक  
वेश्या का नाम, कर्णिका, नाड़ी विशेष, जो दहिनी  
नाक से निकलती है, पक्षि विशेष । राजा भट्ट हरि  
की पत्नी का नाम, धामन नाम के दक्षिण दिग्गज  
की हथिनी का नाम ।

पिङ्गूर दे० ( पु० ) हिंडोछा, कूत्रना, पालना ।  
पिचकता दे० ( कि० ) दबना, लिङ्गुना, सिमिटना ।  
पिचकाना दे० ( कि० ) दमाना, सिकोड़ना ।  
पिचकारी दे० ( पु० ) पचूका, दमकछा रक्त पानी  
आदि दूर फेंकने के लिये यन्त्र विशेष ।

पिचराड तत्० ( पु० ) पय का अङ्ग, पेठ, उदर, जठर ।  
पिचगिडल तत्० ( वि० ) गुन्द्रिल, लोद वाला । [ हुआ ।  
पिचपिचा दे० ( गु० ) पिबपिला, सड़ा हुआ, गला  
पिचु तत्० ( पु० ) कार्पास, कपास, घृष्ट विशेष, कुष्ठ  
विशेष, एक असुर का नाम, भैरव, शस्य विशेष,  
कप परिमाण ।

पिचुका दे० ( पु० ) पिचकारी, पचका ।  
पिचुमन्द तत्० ( पु० ) निम्ब घृष्ट, नीम का पेड़ ।  
पिचर दे० ( पु० ) आँख की जखन ।  
पिच्छ तत्० ( पु० ) मयूषुच्छ, मोरपङ्ख, शिखण्ड,  
बाहुगुल, पूँछ ।

पिच्छक ( पु० ) पूँछ, मोचरस ।  
पिच्छिका ( खी० ) शीशम, शिशपा ।

पिच्छक ( पु० ) दयाकर चपरा करने की क्रिया ।  
पिच्छपाद ( पु० ) पैरों का एक रोग विशेष ।—  
( वि० ) पिच्छपाद रोग युक्त घोड़ा ।  
पिच्छत्राण ( पु० ) बाज पत्ती, श्येन ।  
पिच्छभार ( पु० ) मोर की पूँछ ।  
पिच्छल ( पु० ) अकासवेल, मोचरस, शीशम,  
वासुकि के वंश का सर्प विशेष । ( वि० )  
चिकना, किसलाहटी, जिस पर से पैर किसले ।  
पिच्छलच्छदा ( खी० ) घेर, बदरी घृष्ट, उपोद  
की शाक । [ पङ्ना, रपटन ।

पिच्छलन दे० ( पु० ) पिछलना, खसकना, गिरना,  
पिच्छा ( खी० ) सुपारी, शीशम, नारङ्गी का दूध,  
आकाशलता, निर्मली का पेड़, चौबल का माँद ।  
पिछलगा ( पु० ) अयोन, आश्रित, अनुवर्ती,  
अनुगामी, चेला, सेवक, दहलुआ ।

पिछलगू या पिछलगू ( पु० ) “देखो पिछलगा ।”  
पिछलना दे० ( कि० ) किसलना, गिरना, पङ्ना, पैर  
रपटने से गिर जाना ।

पिछलयाई दे० ( खी० ) दाकिन, भूतिन, चुड़ैल ।  
पिछला दे० ( वि० ) पीछे का, अनन्तर का, परचात्र ।  
पिछवाड़ा दे० ( पु० ) परचात्राग, पीछे का भाग,  
मकान का पिछला हिस्सा ।

पिछाड़ी दे० ( खी० ) एक प्रकार की रस्सी, जिससे  
घोड़ों का पिछला पैर बाँधा जाता है । ( अ० )  
पीछे, परचात्र, पृष्ठ भाग । [ चान ।

पिछान दे० ( वि० ) परिचय, पहचान, जान पहि-  
पिछाने दे० ( वि० ) परिचित, जाने हुए, पहुँचाने गए ।  
पिछूत दे० ( अ० ) पीछे, परचात्र, पीछे का भाग ।  
( पु० ) मकान का पिछवाड़ा ।

पिछेल दे० ( गु० ) पिछवाड़ा, घर का पिछला भाग ।  
पिछौरा दे० ( पु० ) दोहर, दुपट्टा, चदर, उत्तरीय,  
ऊपर ओढ़ने का वस्त्र ।

पिछौरा दे० ( खी० ) दोहर, दुपट्टा, पतली चादर ।  
पिछन तत्० ( पु० ) रुई धुनने की धुनही ।

पिञ्जर तत्० ( पु० ) अश्व विशेष, पीत रक्त वर्ण, रक्त  
पीत मिश्रित वर्ण, पिञ्जरा, जिसमें पखेरू रखे जाते  
हैं । पक्षियों के रखने का घर । नागकेशर पुष्प,  
शरीर का अस्थि समूह ।

पिञ्जरा, पिंजरा, पिंजड़ा दे० ( पु० ) पसी रखने का घर, जो लकड़ी या लोहे के तारों से बनता है ।  
 पिञ्जल तत्त्वं ( पु० ) कुत्र पत्र, हरिताल, अतिशय व्याकुल होना, तीतर पक्षी, भूषण विशेष, अद्भुत, वाज्रवन्द, विजायट ।  
 पिञ्जिका तत्त्वं ( स्त्री० ) रुई का गन्ना ।  
 पिञ्जियारा दे० ( पु० ) पिजारा, रुई धुनने वाला, पीजने वाला ।  
 पिञ्जूल तत्त्वं ( पु० ) पाती, दीप की बत्ती, मशाल ।  
 पिञ्जूप तत्त्वं ( पु० ) कर्णमल, कान का मल, खूंट, ठेंढ ।  
 पिठ तत्त्वं ( पु० ) पेठी, पिठारा, सन्दूक, पिठारी, नरकुल, नरकट । [ पिठारी ।  
 पिठक तत्त्वं ( पु० ) पेठादि रचित पात्र विशेष, पिठारा, पिठका ( स्त्री० ) पिठारी । [ पीठने की लकड़ी, डंढा ।  
 पिठना दे० ( क्रि० ) मार खाना । ( पु० ) सुगन्ध, सुँगरा, पिठारा दे० ( पु० ) कपड़े आदि रखने का लकड़ी या बेल का बना हुआ ढाया ।  
 पिठारी दे० ( स्त्री० ) छोटा पिठारा ।  
 पिष्टक ( पु० ) दाँत का मैल ।  
 पिष्टस् ( स्त्री० ) शोक में छाती पीठने की क्रिया ।  
 पिष्ट् ( पि० ) मार खाने का अभ्यासी । [ विशेष ।  
 पिठर ( पु० ) मोथा, मयानी, थाली, घर विशेष, अग्नि पिठो दे० ( स्त्री० ) उर्द की भींगी हुई पिसी दाल ।  
 पिड़क ( पु० ) कुंसी, स्फोटक ।  
 पिड़का ( स्त्री० ) देखो "पिदक ।"  
 पिण्ड तत्त्वं ( पु० ) आटे की बनी गोल वस्तु विशेष, देह का एक देश, गृह का एक देश, शरीर, देह, पिठरों के उद्देश से दिया हुआ दान, गोल, मण्डल, वर्तुलाकार, गन्धद्रव्य विशेष, जपा पुष्प, आजीवन, जीविका, श्रद्धा का गोला जो पितरों के उद्देश्य से दिया जाता है ।—कुटाना ( वा० ) पचाना, भार उतारना, अपना दायित्व हटाना, पीछा छुड़ाना, उद्धार पाना ।—फला ( स्त्री० ) तुम्ही विशेष, फटुतुम्ही, तितलीकी ।  
 पिण्डली दे० ( स्त्री० ) किल्ली, पिण्डरी, रोग विशेष, नसों का श्रकड़ना ।  
 पिण्डा तद् ( पु० ) फारों को उद्देश्य करके दिया हुआ श्रद्धा, दुकान, मैतपत्र, फस्टूरी विशेष ।

पिण्डरा दे० ( पु० ) लुटेरा, ठग, डाकैत, एक जाति विशेष, जिसका लूटना खासोटना काम है, ठाकुरों का दल । चपराक, बीढ, संन्यासी, गोप, महिषी, रचक, चरवाहा, हुम विशेष । [ जड़ ।  
 पिण्डाळू दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, घोषधि विशेष की पिण्डित तत्त्वं ( वि० ) राशीकूल, एकग्रित, एकद्वि क्रिया हुआ, मिलित, पड़ित, गुणित ।  
 पिण्डी तत्त्वं ( स्त्री० ) पिण्डी, तगर, लौंघा, लाउ, खजूर विशेष, शान निरूपण करने का उपन्यास, वेदी, पिलिण्डी, लड़ाई, शिप का लिह, देवना की मूर्ति ।—मुस्ता ( स्त्री० ) नागरमोथा ।  
 पिण्डुक या पिण्डक तत्त्वं ( पु० ) पसी विशेष, हुण्डू, पत्तर की जाति का एक पर्येक ।  
 पिण्डोल दे० ( पु० ) खदिया मिट्टी, हूई ।  
 पिण्याक तत्त्वं ( पु० ) पीना, पत्नी, तिल आदि से तेल निकाल लेने पर जो उमरु भाग बचता है ।  
 पितर दे० ( पु० ) पितृ, पितृपैतामह, पूर्वपुरुष, पूर्वज, पुरसा, पिता, दादा, परदादा आदि ।—पार्त ( पु० ) यमराज । [ का मुर्चा, जह ।  
 पितराई दे० ( स्त्री० ) पितर सम्बन्धी, कुटुम्ब, पीतल पितरिहा ( वि० ) पीतल का ।  
 पितरी तत्त्वं ( पु० ) माता पिता, मा बाप, यह शब्द संस्कृत है, पितृ शब्द के प्रथमा द्विवचन का यह रूप है ।  
 पितरीला दे० ( पु० ) पितृ पूजन करने का पात्र, पात्र विशेष, जिसमें पितरों की पूजा करने की सामग्री रखी जाती है ।  
 पित्तजाना दे० ( क्रि० ) पीतल के बर्तन में रखने के कारण दही आदि का बिगड़ जाना, पीतल का मुर्चा लग जाना ।  
 पिता या पितृ तत्त्वं ( पु० ) बाप, जनक, जन्मदाता, तात ।—मह तत्त्वं ( पु० ) पिता के पिता, चाचा, आजा, पितृ जनक, यक्षा, प्रजापति, सुनि विशेष ।  
 —मही तत्त्वं ( स्त्री० ) पितामह पत्नी, पितृवन्नी, दादी, आजी ।  
 पितिया दे० ( पु० ) पितृव्य, चचा, चाचा, पिना का भाई ।  
 —नो ( स्त्री० ) पक्षी, चार्ची ।—सत्तर ( पु० ) चपिया सत्तर ।—सास ( स्त्री० ) चपिया नाम ।

पितु ( पु० ) पिता ।

पितृ तत्त्वं ( पु० ) जनक, पिता ।—ऋक्थ ( पु० ) पितृधन ।—क ( वि० ) पितृ सम्बन्धी, पिता का पैतृक ।—ऋण ( पु० ) पितरों का ऋण, पुत्रोत्पादन से यह ऋण छूटा है ।—कर्मकल्प ( पु० ) पितृकर्म आदि, पिता की और्ध्वदेहिक क्रिया, पितृश्राद्ध ।—कानन ( पु० ) श्मशान, प्रेतभूमि, शवदाह-स्थान ।—कृत्य ( पु० ) पितृश्राद्ध, पितृक्रिया ।—गृह ( पु० ) पिता का घर, प्रेतभूमि, श्मशान ।—घातक ( पु० ) पितृहन्ता, पिता को मारने वाला ।—तर्पण ( पु० ) पितरों के उद्देश्य से दिया गया जल, पितरों का तृप्ति साधन ।—तिथि ( स्त्री० ) पर्व, अमावस्या, पिता का मरण दिन ।—तीर्थ ( पु० ) तीर्थ विशेष, गया तीर्थ, तर्जनी और अँगुठका मध्यस्थान ।—दान ( पु० ) पितरों के उद्देश्य से अन्न वस्त्र आदि का दान ।—पक्ष ( पु० ) वयार मांस का कृष्णपक्ष । ( वि० ) पिता के दल के ।—पति ( पु० ) यम, यमराज, काल, दण्डधर ।—पैतामह ( पु० ) पूर्वज, पूर्व पुरुष ।—प्रसू ( स्त्री० ) सन्ध्या, साय-काल, पितामही ।—भ्राता ( स्त्री० ) पितृव्य, चाचा, काका ।—ग्रह ( पु० ) तर्पण, श्राद्ध ।—लोक ( पु० ) लोक विशेष, पितरों का स्थान ।—घन ( पु० ) श्मशान, प्रेतभूमि, शवदाह स्थान ।—व्य ( पु० ) चचा, काका, पितृभ्राता ।—श्राद्ध ( पु० ) पितृक्रिया, पितृकृत्य ।—प्वसा ( स्त्री० ) पिता की भगिनी, बुआ ।—सन्निभ ( पु० ) पितृ-तुल्य, पितृसम ।

पित्त तत्त्वं ( पु० ) शरीरस्थ धातु विशेष, तिक्तधातु ।—घ्नी ( स्त्री० ) पित्त नाशिनी लता विशेष, गुहूची, गुहूच ।—ज्वर ( पु० ) पित्त जनित ज्वर, पित्त के कारण शरीर दाह ।—रक्त ( पु० ) रोग विशेष, पित्त रक्त पीड़ा, पित्त रक्त जनित पीड़ा ।

पित्तल दे० ( पु० ) धातु विशेष, पीतल ।

पित्ता तत्त्वं ( पु० ) शरीर का भीतरी भाग, पित्ताधार, क्रोध ।—निकालना ( वा० ) दण्ड देना, ताड़न करना, सजा देना ।—मारना ( वा० ) क्रोध कम करना, सहना, समा करना ।

पित्तनी तत्त्वं ( स्त्री० ) शालपर्णी नामक वृद्धि विषेप । पित्तपाण्डा दे० ( पु० ) एक औषधि का नाम । पित्पङ्गी दे० ( स्त्री० ) कुदकी पत्ती । पिधान तत्त्वं ( पु० ) ढकना, शच्छादन, आवरण । पिन दे० ( पु० ) शब्द, ध्वनि विशेष । पिनकी दे० ( पु० ) पीनक वाला, शफीमची । पिनपिनाना दे० ( क्रि० ) टंकोरना, टनकना, शब्द होना, शब्द करना, क्रोध करना, क्रुद्ध होना । [ कराना । पिनहाना दे० ( क्रि० ) पहनाना, पहराना, परिधान । पिनाक तत्त्वं ( पु० ) शिथल । पिनाकी तत्त्वं ( पु० ) महादेव, शिव, महेश । पिन्ना दे० ( पु० ) खली, पीना । पिन्नी ( स्त्री० ) चावल का लट्ठ । पिपड़ा दे० ( पु० ) मकोड़ा, कीट विशेष । पिपा दे० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध पात्र, काष्ठ निर्मित गोलाकार पात्र विशेष, मद्यपात्र, मदिरापात्र, पीपा । पिपासा तत्त्वं ( स्त्री० ) प्यास, तृषा, तृष्णा, जल पीने की इच्छा ।—तुर ( वि० ) [ पिपासा + आतुर ] अधिक प्यासा, बहुत प्यासा हुआ । [ शुक्, प्यासा । पिपासित तत्त्वं ( वि० ) तृपित, तृषाम्बित, पिपासा पिपासु ( वि० ) प्यासा, बरकट इच्छा रखने वाला, लालची यथा ।—रक्तपिपासु । पिपीतकी ( स्त्री० ) वैशाख शुद्ध १२ शी । पिपील तत्त्वं ( स्त्री० ) चींटी, पिपीलिका । यथा— “ जिमी पिपील चह सागर बाहा । ”

—रामायण ।

पिपीलक तत्त्वं ( पु० ) चीजँटा ।

पिपीलिका तत्त्वं ( स्त्री० ) चींटी, चिड़टी, चिड़टी ।—भक्तक या भक्ती ( पु० ) दक्षिण अफ्रीका का एक जन्तु जिसका आहार चिट्ठियाँ हैं ।—मातृक-दोष ( पु० ) बालकों का एक रोग विशेष ।

पिप्पटा ( स्त्री० ) मिठाई विशेष ।

पिप्पल दे० ( पु० ) पीपल वृक्ष, अम्लवर्ष ।—क ( पु० ) खनमुख ।—याङ्ग ( पु० ) एक औषधि विशेष, मोमचीनी ।

पिप्पली तत्त्वं ( स्त्री० ) औषधि विशेष, पीपर ।—खण्ड ( पु० ) आयुर्वेद के अनुसार औषधि विशेष ।—मूल ( पु० ) पिपरामूल ।

पिय तद् ( पु० ) प्रिय, प्रियतम, पति ।

पियर दे० ( पु० ) पीला, हल्दी का रंग ।

पिया ( पु० ) पिय ।

पियाना दे० ( कि० ) पिलाना, पान कराना ।

पियार दे० ( पु० ) प्यार, प्रेम, नेह, दुलार ।

पियारा दे० ( वि० ) प्यारा, प्रिय, प्रेमी, मनेहार, मनेरम, दुलारा ।

पियारी दे० ( स्त्री० ) प्रिया, प्रियन्मा, दुन्दारी ।

पियाल तत् ( पु० ) घृष विशेष, चिरोँजी का पेड़, मेवा विशेष ।

पियाला दे० ( पु० ) कटोरा, प्याला ।

पियास दे० ( स्त्री० ) प्यास, तृषा, विपासा ।

पियासा दे० ( वि० ) विपासित, प्यासा, तृषित, तृषा-वित । [ स्थान का नाम : ]

पियासी दे० ( स्त्री० ) मास्य विशेष, मास्यों के एक

पिछूख या पिछूव ( पु० ) अमृत ।

पिरकी दे० ( स्त्री० ) फुड़िया, फुंसी ।

पिरपी ( स्त्री० ) पृथ्वी ।

पिरन ( पु० ) चौपाये पाशुओं का लँगड़ापन ।

पिराई ( स्त्री० ) पीलापन ।

पिराक ( पु० ) पकवान विशेष, गुंका । [ होना ।

पिराना दे० ( कि० ) दुःख होना, व्यथा होना, पीड़ा

पिरीत दे० ( वि० ) प्रिय, प्यारा, प्रियतम, प्रेमपात्र ।

यथा—'जय रघुनन्दन प्राण पिरीते ।

सुप्त दिन नाथ बहुत दिन भीते ॥ '

—रामायण ।

पिरोजा दे० ( पु० ) जंगली रंग की एक सामान्य मछि ।

पिरोना दे० ( कि० ) गूँघना, गंधना, गुड़ना ।

पिलई दे० ( स्त्री० ) रोग विशेष, बरबट, पिलही, तापतिही ।

पिलक ( पु० ) पीले रंग की एक चिड़िया ।

पिलचना दे० ( कि० ) लिपटना, चिमटना ।

पिलड़ी दे० ( स्त्री० ) गोली, पिण्डी ।

पिलफना ( कि० ) गिराना, लुढ़काना, ढकेलना ।

पिलखन ( पु० ) वाहर का घृष ।

पिलना दे० ( कि० ) घावा करना, घावा मारना, डेलना, धका देना, ढकेलना ।

पिलपिला दे० ( पु० ) पिचपिचा, दुर्बल, शिथिल, ढीला ।

पिलपिलाना दे० ( कि० ) नरमाना, ढीला होना, शिथिल होना, दुर्बल होना । [ शिथिलता ।

पिलपिलाहट दे० ( स्त्री० ) कोमलता, दुर्बलता,

पिलाना दे० ( कि० ) पिणाना, पान कराना ।

पिल्ला दे० ( पु० ) कीट, कीड़ा, कृमि, पिण्डू ।

पिल्ला दे० ( पु० ) कुत्ते का घाघा, घोटा कुत्ता ।

पिल्लू दे० ( पु० ) कीड़ा, कीट, पिल्ला ।

पिशङ्ग तत् ( पु० ) पिङ्गक वर्ण । ( वि० ) पिङ्गलवर्ण विशेष, मटियारा रङ्ग ।

पिशाच तत् ( पु० ) देवघोनि विशेष, प्रेत, वपदेवता, विघर्षी मनुष्य, अनाचारी ।—ग्रस्त ( पु० )

उन्नत, घातुल, शंङ्खड बफने वाला ।—घ्न

( वि० ) पिशाचों को मर्द करने वाला । ( पु० )

पीली सरसों ।

पिशाचक ( पु० ) भूत, पिशाच ।—पी ( पु० ) कुवेर ।

पिशाची ( स्त्री० ) पिशाचघी, जटामांसी ।

पिशित तत् ( पु० ) मास, पक्व, आमिष ।

पिशिताशन तत् ( पु० ) [ पिशित + अशन ] राक्षस,

पिशाचर, मांसभक्षी ।

पिशुन तत् ( वि० ) झिप कर दौप पताने वाला, दो मनुष्यों में विरोध कराने वाला, झूठ, चुगल-खोर, निन्दक ।—वचन ( पु० ) दुर्वच्य, निन्दुर

वाक्य, गाली ।

पिशुना ( स्त्री० ) चुगलजोरी ।

पिष्ट ( वि० ) चूर्ण किया हुआ ।

पिष्टक तत् ( पु० ) पूरी, पुष्पा, मिठाई, पकवान ।

पिष्टपेषण ( पु० ) शिमे को पीसना, कड़ी घात को फिर

कटना । [ पीसने की मञ्जी ।

पिसाई दे० ( स्त्री० ) घाटा घादि पीसने का काम,

पिमान दे० ( पु० ) आटा, चून ।

पिसाना दे० ( कि० ) चूर्ण कराना, पुरुषाना ।

पिस् दे० ( पु० ) कृमि विशेष ।

पिम्नौनी ( स्त्री० ) पीमने का काम ।

पिस्ता ( पु० ) घृष विशेष, जो राग, दमिरक, इराक

और मुरासान से लेकर अफगानिस्तान तक होता है ।



पिहित तत् ( वि० ) गुप्त, आच्छादित, छिपाया हुआ,  
ढका हुआ, आवृत । [ पान कर, पी कर ।  
पी दे० ( पु० ) प्रिय, प्रियतम, पति, स्वामी, ( कि० )  
पीक दे० ( स्त्री० ) खहार, थूक ।—दान ( पु० )  
दानो ( स्त्री० ) खहार दान, बरतन विशेष जिसमें  
रहैस लोग थूक कर अपने सामने रखते हैं,  
उगालदान ।  
पीच दे० ( स्त्री० ) माँड़ी, काँजी । [ कचरना ।  
पीचना दे० ( कि० ) पीटना, लात मारना, कुचलना,  
पीचू दे० ( पु० ) फल विशेष ।  
पीड़ा दे० ( पु० ) पश्चाद, अनन्तर, पिछला भाग ।  
—करना ( वा० ) खदेरना, भगाना, दोड़ना ।  
—फेरना ( वा० ) लौटा देना, परिवर्तन करना,  
जिससे जिया हो उसी को दे देना, त्यागना,  
फेरना ।  
पीछे दे० ( प्र० ) पश्चाद, अनन्तर, परे ।—डालना  
( वा० ) भूल जाना, भुला देना, धर रखना, हरा  
देना, दूर कर देना ।—पड़ना ( वा० ) दिक् करना,  
सताना, किसी काम के लिये सतत कहना ।  
—लगना ( वा० ) पीछे पड़ना, दृष्टि रखना,  
सर्वदा दुःख देना, सतत दुःख देने की चेष्टा करना ।  
पीजन ( पु० ) मेहों के बाल धुनने की धुनकी ।  
पीजर या पीजरा ( पु० ) पितड़ा ।  
पीजाना दे० ( कि० ) पी लेना, चूमना, मोध शोकना ।  
पीटना दे० ( कि० ) मारना, कूटना ।  
पीठ तद् ( स्त्री० ) घुट, पिछाड़ी, पीछे, आसन, पीड़ा ।  
—को पीछे डालना ( वा० ) बघाना, रचा करना,  
प्राय करना ।—ठोंकना ( वा० ) हिंस्रत शोधना,  
साहस देना, अभय देना, प्रशंसा करना, हिमायत  
करना ।—देना ( वा० ) भागना, भाग जाना,  
मुकरना, हताश होकर किसी काम से हाथ हटा  
लेना, हटना, टकना ।—पर हाथ फेरना ( वा० )  
प्रसन्नता प्रकाश करना, उत्साह बढ़ाना, महायत्ना  
देना, धीरता देना, उद्विग्न बँधाना ।—फेरना  
( वा० ) सम्मुख होना, प्रस्तुत होना, उद्यत होना,  
किसी काम को करने लगना ।—लगना ( वा० )  
पटक जाना, पड़ाई खाना, कुश्ती में हार जाना,  
घोड़े की पीठ पर बाध होना ।—क ( पु० ) पीड़ा ।

पीठा दे० ( पु० ) भोजन विशेष ।  
पीठिका ( स्त्री० ) पीड़ा, श्रंश, अप्पाय ।  
पीठियाओंक दे० ( वि० ) सटे सटे, भिड़ा हुआ, सटा  
हुआ, एक दूसरे में जुड़ा हुआ ।  
पीठी दे० ( स्त्री० ) पीसी वगैर की बाल ।  
पीठीता दे० ( पु० ) पत्रों का पृष्ठ, पीठ ।  
पीड़ दे० ( स्त्री० ) दुःख, वेदन, व्यथा, पीड़ा, वद,  
वेदना । [ दापक ।  
पीड़क तत् ( वि० ) दुःखदायी, दुःखदायक, क्लेश-  
पीड़ना दे० ( कि० ) दुःख देना, पीड़ा देना, क्लेश  
देना ।  
पीड़ा तत् ( स्त्री० ) व्यथा, दुःख, वेदना, बाधा ।  
—कर ( वि० ) पीड़क, क्लेशकर, दुःखदायी ।  
पीड़ित तत् ( वि० ) दुःखित, दुखी, पीड़ा युक्त ।  
पीड़ुरी ( स्त्री० ) पिडंकी ।  
पीड्यमान तत् ( वि० ) पीड़ युक्त, पीड़ा विशिष्ट ।  
पीढ़न दे० ( पु० ) पीढ़ों पर, पीढ़ों को, पीढ़े,  
पट्टे ।  
पीड़ा दे० ( पु० ) पटरा मोड़ा, मचिया, पटा, काष्ठान ।  
( स्त्री० ) वंश परम्परा, पुरुषानुक्रम ।—संघ  
( पु० ) मद्रकाचार, भूमिका ।  
पीत तत् ( पु० ) वर्ण विशेष, एक प्रकार का रंग,  
हलदिया रङ्ग ( पु० ) पीतवर्ण युक्त, पीयर, बीला ।  
—क ( पु० ) केशर, हरताल, अगर,  
सोनामांखी, तुन, हवदी, पीतल, पीलाचंदन, राहद,  
गाजर, सफेदजीर, पीलालोच, चिरायता, सोना  
पाठा ।—कन्द ( पु० ) गाजर ।—कदली ( पु० )  
चंपक, कदली, सोनकेला ।—करवीरक ( पु० )  
पीलाकनेर ।  
पीतम दे० ( पु० ) प्रियतम, प्रिय, पीय, स्वामी ।  
पीतरस तत् ( पु० ) हरिद्रा, हलदी ।  
पीतल दे० ( पु० ) मिश्रित धातु विशेष । [ पीतल का ।  
पीतला दे० ( वि० ) पीतल निर्मित, पीतल का बना,  
पीताम्बर तत् ( पु० ) [ पीत + अम्बर ] शीकण,  
विष्णु । ( वि० ) पीतवर्ण वस्त्रयुक्त, पीले रंग की  
रेशमी घोटी पहने हुए, या पीले रंग के कपड़े  
पहने हुए ।  
पीती ( पु० ) घोड़ा ( स्त्री० ) ग्रीति ।

पीतु ( पु० ) सूर्य, अग्नि, यूथपति ।—वाङ् ( पु० )  
गृध्र, देवदार ।

पीथ ( पु० ) पानी, धी, अग्नि, सूर्य, काल ।

पीथि ( पु० ) घोड़ा । [ हुआ ।

पीन तत् ( वि० ) पीवर, स्थूल, मांसल, मोटा, भरा

पीनक दे० ( स्त्री० ) अफीम के नशे की झोंक, अफीम  
के नशे से उच्चाई आना ।

पीनना दे० ( क्रि० ) तृप्त ।

पीनस दे० ( पु० ) नासिका का एक रोग विशेष,  
पालकी ।—चारा ( वि० ) जिसकी नाक में पीनस  
का रोग हो ।

पीनसा ( स्त्री० ) ककड़ी ।

पीनसी ( वि० ) पीनस से पीड़ित ।

पीना दे० ( क्रि० ) पान करना, जल पीना, सिङ्गना,  
सङ्कुचित होना ।

पीनी ( स्त्री० ) पोस्त, सीसी, तिलकी खनी ।

पीप ( स्त्री० ) मवाद, फोड़े या घाव से सफेद लसवार  
जो मवाद निकलता है उसे पीप कहते हैं ।

पीपर दे० ( पु० ) देखो पीपल ।

पीपरि ( पु० ) छोटा पाकड़ ।

पीपल दे० ( पु० ) अश्वत्थ का वृक्ष, पिपल का पेड़ ।

पीपला दे० ( पु० ) तलवार की नोक ।

पीपलामूल दे० ( पु० ) औषधि विशेष ।

पीपा दे० ( पु० ) काष्ठ या लोहा निर्मित गोलाकार  
पात्र विशेष, मद्यपात्र, मद्य रखने का पात्र ।

पीथ दे० ( स्त्री० ) मल विशेष, पूय, फोड़े का मल ।

पीथियाना दे० ( क्रि० ) पटना, पीथ बहना, गल-  
गलाना ।

पीथ ( पु० ) प्रिय ।

पीयर ( वि० ) पीला ।

पीया ( पु० ) पिय । [ हिंसक प्रतिकूल ।

पीयु ( पु० ) काळा सूया, थूक, कौथा, धक्का ( वि० )

पीयूख ( पु० ) अमृत-रसि ( पु० ) चन्द्रमा ।

—वर्ष ( पु० ) चन्द्रमा, कपूर, वृन्द विशेष ।

पीयूष तत् ( पु० ) अमृत, सुधा, अमी, दूध ।

पीर दे० ( स्त्री० ) दुःख, वेदना, पीड़ा, व्यथा ।

पीरा दे० ( स्त्री० ) पीड़ा, पीर ।

पीराई दे० ( स्त्री० ) दीख बजाने वाला ।

पीरी ( स्त्री० ) बुढ़ापा, गुरुवाई, चालाकी, ठेका,  
हुशियार, अमानुसिक शक्ति, चमत्कार, कारनामा ।

पीरू ( पु० ) एक प्रकार का मुर्गा ।

पील ( पु० ) हाथी, शतरंज के खेल का एक मोहरा  
जिसे “कील” या ऊंट भी कहते हैं ।

पीला दे० ( वि० ) पीतवर्ण, पीतवर्ण का, पीले रंग का ।

पीलाई दे० ( स्त्री० ) पीतल, पीला रंग, पीलापन ।

पीलाम दे० ( पु० ) रेशमी वस्त्र विशेष ।

पीली दे० ( स्त्री० ) मोहर, सुवर्ण मुद्रा, सोने की  
मोहर ( क्रि० ) पी चुके, पी लिया ।

पीलु तत् ( पु० ) वृक्ष विशेष, जिसके पत्ते हाथी  
खाते हैं, एक राग का नाम । [ राग विशेष ।

पीलू ( पु० ) वृक्ष विशेष, फलों में पड़ने वाले कीड़े,

पीवकाइ दे० ( पु० ) मद्य, वन्मद्य, पियैया ।

पीव या पीवर तत् ( वि० ) स्थूल, पीन, मोटा,  
चर्बी वाला, धलिष्ठ, ताकतवर । [ करना ।

पीसना दे० ( क्रि० ) पिसान करना, शूकना, चूर्ण

पीहर दे० ( पु० ) नैहर, नैका, रथी के पिता का घर,  
माइका ।

पीहु दे० ( पु० ) पिस्तू, कुलि विशेष ।

पुं सत् ( पु० ) पुरुष, पुमान्, नर, पुरुष वाचक शब्द ।

पुंलिङ्ग तत् ( पु० ) पुरुष चिह्न, पुरुषत्व ।

पुंशक्ति तत् ( स्त्री० ) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पुरुष का  
सामर्थ्य । [ कुलदा ।

पुंछाली तत् ( स्त्री० ) पतुरिया, व्यभिचारिणी, बेरया,

पुंसवन तत् ( पु० ) गर्भ संस्कार विशेष, स्त्रियों के  
करने का एक यत ।

पुंस्त्व तत् ( पु० ) पुरुषार्थ, पुरुषत्व ।

पुष्पाल दे० ( पु० ) पुवाल, पयाल, पलाल ।

पुकार दे० ( स्त्री० ) हाँक, गुहार, डाँक, दुःख निवेदन ।

पुकारना दे० ( क्रि० ) गुहारना, हाँक मारना, डाँकना,  
आह्वान करना ।

पुकसी ( स्त्री० ) कालिमा, कालिल ।

पुखराज दे० ( पु० ) मणि विशेष, एक रत्न का नाम,  
पखराय मणि, गोमेद ।

पुङ्ग तत् ( पु० ) राशि, श्रेणि, समूह, दल, घेर ।

—फल ( पु० ) पुङ्गीफल, सुपाड़ी ।

पुङ्गल ( पु० ) शास्त्र ।

पुङ्गव तत् ( वि० ) श्रेष्ठ बड़ा, माननीय, उत्तम, यह शब्द जिसके अन्त में आता है, उसीकी श्रेष्ठता बतलाता है। यथा—राजपुङ्गव, ब्राह्मणपुङ्गव आदि।—

केतु ( पु० ) शिव। [लीं।

पुङ्गनिया दे० ( स्त्री० ) नाक में पहनने की फुछी या पुङ्गीफन ( पु० ) सुपाड़ी।

पुचकार दे० ( पु० ) सांख्यन वाक्य, हाइस देना, वश करना, बिगड़े हुए बैल आदि को सांख्यन वाक्य से वश में करना। [में चूना पोता जाता है।

पुचारा दे० ( पु० ) चूना पोतने की कूची जिससे भीत पुच्छ तत् ( पु० ) लारूगूल, पद्म, दुम, जन्तु विशेष, पश्चाद्भाग विशेष।

पुच्छल तत् ( वि० ) पूँछ वाला, पुच्छ विविष्ट, पुच्छ युक्त।—तारा ( स्त्री० ) धूमकेतु, अशुभ, सूचक तारा। [कारी।

पुच्छवैया दे० ( पु० ) पूच्छ, पूछने वाला, अनुसन्धान-पुत्रना दे० ( क्रि० ) पूरा होना, पूर्ण होना, पूरा न रहना, पूजित होना, प्रतिष्ठा पाना, पूर्ण कराना।

पुजाना दे० ( क्रि० ) पूजा कराना, पूजा पाना, भराना।  
पुजापा दे० ( पु० ) पूजा के उपकरण, पूजा की सामग्री।  
पुजारी दे० ( वि० ) पूजा करने वाला, पूजक, अर्चक।  
पुञ्ज तत् ( पु० ) डेर, राशि, समूह, जड़ पदार्थों का समूह।—१ ( पु० ) गुच्छा, समूह, गट्टा।—  
वृज ( पु० ) सुसना का शाका—। ( अय्य० ) बहुत सा।

पुञ्जि ( पु० ) समूह, पूँजी।

पुट तत् ( पु० ) युगल, युग्म, आच्छादन, पत्रादि रचित पुष्पाधार, मध्य, अन्त्यन्तर चूर्ण, पेपण, अश्वसुर, घोड़े का पैर, ओपधि पकाने का पात्र विशेष, होना, डिब्बी, अंगुली किसी दवाई में जल व रस डाल के उसे घोंटना और सुखाना, मिजाव, मिलना, पद्म, कमल।

पुटक तत् ( पु० ) देना, वस्त्र निर्मित पात्र, पद्म, कमल।

पुटकिनी तत् ( स्त्री० ) पद्मिनी, पद्मजता, पद्मयुक्त वंश, पद्म समूह। आशयत प्रणव से युक्त मन्त्र।

पुटित तत् ( वि० ) युक्त, आच्छादित, आवृत।

पुटो तत् ( स्त्री० ) आच्छादन विशेष, कौपीन पत्रादि रचित पात्र, होना।

पुट्टा दे० ( पु० ) पशु आदि का पश्चाद्भाग, कटि के ऊपर का भाग।

पुड़ा दे० ( पु० ) बड़ी पुड़िया, गट्टा, पुलन्द।

पुड़िया दे० ( स्त्री० ) कागज की छोटी गठ जिसमें दवा आदि बांधी जाती है।

पुड़ी दे० ( स्त्री० ) खाल, ढोल का चमड़ा, चर्म।

पुण्ड दे० ( पु० ) तिलक, चंदन, टीका।

पुण्डरीक तत् ( पु० ) शुक्ल पद्म, श्वेत कमल, कमल मात्र, श्वेतचन्द्र, औपव विशेष, अमिहोष का दिग्गज, कोपकार विशेष।

पुण्डरीकाक्ष तत् ( पु० ) [पुण्डरीक + अक्ष] श्रीकृष्ण, कमल के समान जिसकी आँखें हों।

पुण्ड्र तत् ( पु० ) इक्षु विशेष, पौड़ा, जल, दैत्य विशेष, बहिराज का चेतन पुत्र। मन्थ महर्षि दीर्घतमा के त्रौरस से बहिराज की महारानी सुदेष्णा के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न हुए थे, इनमें पुण्ड्र एक हैं। इनके नाम पर इनका अधिकृत राज्य भी परिचित होता है।

पुण्ड्रक दे० ( पु० ) मायवीलता, तिलक, हँस, पौड़ा।

पुण्य या पुन्य तत् ( पु० ) शुभ अदृष्ट, धर्म, सुकृत, शोभन कर्म, उत्तम कर्म, पावन, पवित्र।—कर्म ( पु० ) पवित्र कर्म, धर्म कर्म।—कृत ( वि० ) पुण्यकर्ता, धार्मिक, सुकृती।—गन्ध ( पु० ) चम्पा।—जन ( पु० ) सज्जन, राजस, वज्र।—जनेश्वर ( पु० ) कुबेर, यचरान।—पत्तन ( पु० ) एक नगर का नाम, पूजा।—भूमि ( स्त्री० ) आर्यावर्त देश, हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य का स्थान, पुण्यस्थल, तीर्थस्थान।—धान्य ( वि० ) पुण्ययुक्त, सुकृती, धार्मिक।—शील ( पु० ) पुण्यशाली, धार्मिक, पवित्र।—श्लोक ( पु० ) विष्णु, युधिष्ठिर, नल राजा।

पुण्याई या पुन्याई दे० ( स्त्री० ) धर्म, सुकृत कर्म, धार्मिकता।

पुण्यात्मा तत् ( पु० ) [पुण्य + आत्मा] पुण्यस्वभाव पुण्यचारी, धर्मशील, धर्मचारी, धार्मिक।

पुण्याह तत् ( पु० ) पुण्यजनक दिवस, पवित्र दिन, सरकारी मान्यगुप्तरी बसूल करने का पहला दिन।—वाचन ( पु० ) देव कर्मों में स्वस्तिवाचन के

पहले मङ्गल के लिये पुण्याह शब्द का तीन बार उच्चारण ।

पुनला दे० ( पु० ) मूर्ति, काष्ठ वृक्ष यादि निर्मित मूर्ति ।  
पुतली दे० ( स्त्री० ) श्राव का तारा, काष्ठादि निर्मित छोटी प्रतिमा ।

पुनर्दे दे० ( स्त्री० ) पोतने का काम या मजूरी ।

पुत्तलिका तत् ( स्त्री० ) पुत्री, गुड़िया ।

पुत्तिका तत् ( स्त्री० ) पुतली, काष्ठ निर्मित मूर्ति, पुतलिका, कीट विशेष, छुद्रमक्षिका ।

पुत्र तत् ( पु० ) पुत्र, अपत्य, सन्तान, बेटा, पुत्रात्मक नाक से उच्चा करने वाला ।—जीवो ( पु० ) वृष्ट विशेष, पुत्र जीवक वृक्ष ।

पुत्रार्थी तत् ( पु० ) [ पुत्र + अर्थ ] सन्तान काँची, पुत्रेष्टु, पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाला ।

पुत्रिका तत् ( स्त्री० ) कन्या, दुहिता, तनया, पुत्र के समान रखी हुई कन्या, पुतलिका, पुतली ।  
—पुत्र ( पु० ) दौहित्र, दौहिता, पुत्री का पुत्र, गौण पुत्र, दत्तक लिया हुआ कन्यापुत्र ।

पुत्रिणी तत् ( वि० ) पुत्रवती, ससन्ताना, लड़के वाली ।

पुत्री तत् ( स्त्री० ) दुहिता, कन्या, तनया ।

पुत्रेष्टि तत् ( पु० ) सन्तानार्थे यज्ञ, सन्तान प्राप्ति का उपायभूत यज्ञ ।

पुत्रीना दे० ( पु० ) सुगन्ध द्राक विशेष, स्वनाम व्याप्त घनस्पति जिसकी चटनी घना कर खायी जाती है ।

पुद्गल तत् ( पु० ) आत्मा, देह, शरीर, जैनिश्वे के मत से चैतन्य विशिष्ट पदार्थ विशेष । ( वि० ) सुन्दराकार रूपादि विशिष्ट द्रव्य ।

पुनः तत् ( अ० ) द्वितीयवार, पुनर्वार, बारम्बार भेद अवधारण, अधिकार, फिर, पुनि, बहुरि ।—पुनः ( अ० ) बार बार, फिर फिर, मुहुः मुहुः, असकृत् ।—पुनः पुनः या पुनपुन नारी विशेष जो तारा के पास है ।—संस्कार ( पु० ) द्वितीया-वार उपनयनादि संस्कार ।

पुनरपि तत् ( अ० ) द्वितीयवार, पुनर्वा ।

पुनरागमन तत् ( पु० ) द्वितीयवार आगमन, बौटना, बौट आना, फिर आना ।

पुनरावृत्ति तत् ( स्त्री० ) फिर आवृत्ति, पुनः पाठ ।

पुनराय दे० ( पु० ) दूसरे बार, पुनर्वार, पुनश्च ।

पुनर्दक्षि तत् ( स्त्री० ) पुनः कथन, कही बात के फिर कहना, काव्य का एक दोष ।

पुनरुत्थान तत् ( पु० ) पुनः उठना, द्वितीय बार उठना ।

पुनर्जन्म तत् ( पु० ) द्वितीय बार उत्पत्ति, दूसरा जन्म, पुनः उद्भव ।

पुनर्नव ( वि० ) जो फिर से नया हो गया हो ।

पुनर्नवा तत् ( स्त्री० ) श्राक, गन्धपुष्पा ।

पुनर्भव तत् ( पु० ) नव, नह । ( वि० ) पुनर्जन्म, पुनः उत्पन्न, पुनः विवाह ।

पुनर्भूत तत् ( स्त्री० ) हिस्सा, दो बार व्याही स्त्री ।

पुनर्वसु तत् ( पु० ) सातवां नक्षत्र, गन्धर्व, सुनिर्मद ।

पुनर्विवाह तत् ( पु० ) प्रथम मृत के ममय का संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार, द्वितीय बार विवाह, दूसरा विवाह । [ अतिष्ठ करमा ]

पुनर्वाना दे० ( स्त्री० ) अगाध काना, अपमान करना, पुनश्च तत् ( अ० ) पुनर्वा, पुनरपि, द्वितीय बार, फिर भी, और भी ।

पुनि दे० ( अ० ) फिर, पुनः, बहुरि, द्वितीय बार ।—पुनि ( अ० ) बार बार, पुनः पुनः, बारम्बार । यथाः—

“ पुनि पुनि जावा दरस दिखावा । ”

—तुलसीदास ।

पुनोत तत् ( वि० ) पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, पावन, पाक । [ मान करना ।

पुनः दे० ( स्त्री० ) गाली देना, अगाध काना, अप-

पुनराय तत् ( पु० ) पुनः, वृष्ट विशेष, पाटल गुम ।

पुनार ( पु० ) बकबक का पेड़ ।

पुमान् तत् ( पु० ) पुरुष ।

पुर तत् ( पु० ) नगर, पुरा, गाँव, ग्राम हटादियुक्त स्थान, वह ग्राम जिसमें राजा आदि हैं । एक राक्षस का नाम ।—प्राण ( पु० ) शहरपनाह, परकोट ।—द्वार ( पु० ) परकोटा का फाटक ।  
—पाल ( पु० ) कोतवाल ।

पुरइन दे० ( स्त्री० ) कोई, कुमुदिनी, कुमोदिनी, नलिनी, कुमोदिनि, नीलोत्तर ।

पुरउव दे० ( स्त्री० ) पूर्ण करेंगे, पूरा करेंगे ।

पुरखा ( पु० ) पूर्व पुरुष, पूर्वज ।

पुरजन तत् ( पु० ) पुरवासी, पुर के मनुष्य ।

नगरी पुरुरवा की राजधानी थी, यह नगरी गङ्गा के किनारे स्थापित की गई थी। इस कारण उसका नाम प्रतिष्ठान था। पुरुरवा की गन्धर्वों से एक अग्नि पूर्ण स्थान मिला था। उसी अग्नि से पुरुरवा ने अनेक यज्ञ किये और यज्ञबल से ये गन्धर्वलोक में गये।

**पुरुष तत्त्वं ( पु० )** पुमान्, नर, जीव, जीवात्मा।  
—**कार ( गु० )** पुरुष का कर्म, चेष्टा, पौरुष, शौर्य।  
—**कुञ्जर ( पु० )** पुरुषश्रेष्ठ, यह शब्द भी पुरुष शब्द के समान है। जिन संज्ञा वाचक शब्दों के अन्त में यह शब्द आता है उनकी श्रेष्ठता बोधन करता है। यथा—नरकुञ्जर, सचिवकुञ्जर,।  
—**नुक्रम ( पु० )** पुरुषों की चली आई हुई परम्परा।—**त्वं ( पु० )** पुरुषभाव, पुँसत्व, साहस।  
—**त्वहीन ( वि० )** पुँसत्व रहित, नपुँसक, हिजड़ा, खोजा।—**सिंह ( पु० )** पुरुषसिंह, पुरुषश्रेष्ठ, उत्तम पुरुष।

**पुरुषादक ( पु० )** नरभक्षी राक्षस।  
**पुरुषाधम तत्त्वं ( पु० )** [ पुरुष + अधम ] निकृष्ट मनुष्य, नीच, पामर मनुष्य।  
**पुरुषार्थ तत्त्वं ( पु० )** पुरुष का प्रयोजन, पुरुष का उद्देश्य—धर्म अर्थ काम और मोक्ष इनकी पुरुषार्थ संज्ञा है।—**र्षि ( वा० )** उद्योगी, परिश्रमी, सामर्थ्यवान्।  
**पुरुषोत्तम तत्त्वं ( पु० )** नारायण, विष्णु, भगवान्, श्रीकृष्ण। ब्रह्मचार्य जी के मत से गोलोकविहारी नित्य अनिर्वचनीय श्रीकृष्ण।  
**पुरुरवा ( पु० )** इलाका पुत्र, एक चन्द्रवंशी राजा जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर (प्रयाग के समीप) क्लृप्ती में थी।

**पुरैः दे० ( स्त्री० )** कमलपत्र, कमल चेल।  
**पुरोचन तत्त्वं ( पु० )** दुर्योधन का मित्र और सेवक दुर्योधन की आज्ञा से इसने बारणावत नगर में पाण्डवों का विनाश करने की इच्छा से लाक्षागृह बनाया था। विदुर के सङ्केत से पाण्डवों को पुरोचन की दुष्टता मालूम हो गई। भीमसेन ने पुरोचन के घर में और उनके रहने के लिये जो

लाक्षागृह बना था उसमें आग लगा कर स्वयं निकल गये। पुरोचन परिवार के साथ वहीं जल गया।

**पुरोडाश या पुरोडास तत्त्वं ( पु० )** यज्ञीय हवि विशेष, जब के आटे की बनी हुई एक प्रकार की रोटी, हवन का अवशेष, यज्ञभाग का हवि।  
**पुरोधा तत्त्वं ( पु० )** पुरोहित, ऋत्विक्, याजक, यज्ञ कराने वाला। [ वाला।  
**पुरोवर्त्ती तत्त्वं ( वि० )** अग्रसर, अग्रगामी, आगे चलने पुरोहित तत्त्वं ( पु० ) ऋत्विक्, पुरोधा, याजक, धर्म कराने वाला ब्राह्मण, उपाध्याय।—**र्षि ( स्त्री० )** पुरोहित का काम।

**पुरोहितानी दे० ( स्त्री० )** पुरोहित की स्त्री।  
**पुर्वा दे० ( पु० )** वृद्ध, पूर्वज, पूर्व पुरुर।  
**पुर्चक दे० ( पु० )** बल, कपट, साहस, बढ़ावा, उत्साह।

**पुर्वा दे० ( स्त्री० )** पूर्व की हवा।  
**पुर्वाई दे० ( स्त्री० )** पुर्वा, पूर्व की हवा।  
**पुर्वाणा दे० ( क्रि० )** भरवाना, पूर्ण करना।  
**पुर्वैया दे० ( स्त्री० )** पुर्ववाई, पूर्व की हवा।  
**पुर्सा दे० ( पु० )** पुरुष की कँचाई का परिमाण, पुरुष के बराबर, चार हाथ का नाप।  
**पुल दे० ( पु० )** सेतु, बाँध, बन्ध।  
**पुलक तत्त्वं ( पु० )** रोमाञ्च, रोमोद्वेद, शरीर के अन्तर और बाहर हर्षजन्य विकार, प्रस्तर विशेष, मण्डि का दोष विशेष, गन्धर्व विशेष, हरताल।  
—**वलि ( स्त्री० )** आनन्द से प्रफुल्ल रोम।

**पुलकित तत्त्वं ( वि० )** हर्षित आह्लादित, रोमाञ्चयुक्त, प्रसन्न। [ ऋषि, ब्रह्मा के मानस पुत्र।  
**पुलपुला दे० ( वि० )** गला हुआ, सड़ा हुआ, पिलपला।  
**पुलपुलाना दे० ( क्रि० )** भयभीत होना, डरना, कपना, डीला पड़ना, शिथिल होना।

**पुलपुलाहट दे० ( स्त्री० )** भय, डर। [ ऋषि।  
**पुलस्ति तत्त्वं ( पु० )** सप्तऋषियों के अन्तर्गत एक पुलस्त्य तत्त्वं ( पु० ) मुनि विशेष, सप्तऋषियों के अन्तर्गत ऋषि विशेष। पुलस्ति ऋषि, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, इनकी गणना प्रजापतियों में है। इनके पुत्र का नाम विश्रवा था।

पुलह तत्० ( पु० ) पुलस्त्य के समान ये भी ब्रह्मा के मानस पुत्र और सप्तर्षियों के अन्तर्गत हैं। इनकी स्त्री का नाम गति था, गति के गर्भ से कर्म श्रेष्ठ, परीयान् और सहिष्णु नामक तीन पुत्र पुलह के हुए थे। कोई पुलह की स्त्री का नाम चमा बताते हैं और उनके गर्भ से कर्म, अश्वरीय और सहिष्णु नामक तीन पुत्रों का होना मानते हैं।

पुलहाना दे० ( कि० ) मनाना, खुरा करना, प्रसन्न करना। [ अरुपता ]

पुलाक तत्० ( पु० ) तुच्छ धान्य, शस्यहीन धान्य, पुलाव दे० ( पु० ) मॉलोदन, मॉस के साथ बना हुआ भात, मुसलमानों में इसका अधिक प्रचार है।

पुलिन तत्० ( पु० ) ठट, तीर, किनारा, जल से निकला हुआ भाग, द्वीप।

पुलिन्द तत्० ( पु० ) स्लेच्छ जाति विशेष, भील, शबर।

पुलिन्दा दे० ( पु० ) गदरी, कागजों का मुट्ठा, पोथी।

पुलौम ( पु० ) एक दैत्य जिसकी बेटी का नाम शची था।

पुलोमजा तत्० ( स्त्री० ) इन्द्राणी, शची, इन्द्र की स्त्री का नाम, पुलोम नामक दानव की कन्या, जो इन्द्र को व्याही गयी थी।

पुलौमही ( स्त्री० ) अश्वीम।

पुलोमा तत्० ( स्त्री० ) महर्षि ऋगु की पत्नी और च्यवन की माता, दैत्यराज वैधानर की ये कन्या थीं। [ की डौंडी ]

पुवार या पुवाल दे० ( पु० ) पयाल, पलाल, धान

पुष्कर तत्० ( पु० ) हलि शुयडाम, वाघभायड, मुख, आकाश, अज, पद्म, कमल, कुछ रोग की शोषधि, कायड, शर, वायु, द्वीप-विशेष, युद्ध, असिकोप, तलवार की स्थान, रोग विशेष, नाग विशेष, सारस पक्षी, वरुण पुत्र, पर्वत विशेष, तीर्थ विशेष, जो अजमेर के पास है। एक राजा का नाम। निषध देश के राजा नल का छोटा भाई। इसने कलि की सहायता से जूए में राजा नल को हरा कर उन्हें राज्यव्युत्त कर दिया था और स्वयं निषध देश का राजा बन गया था। जय कलि ने नल को छोड़ दिया तब नल पुनः अपने राज्य के अधिकारी हुए थे।

पुष्करिणी तत्० ( स्त्री० ) सौ धनु के परिमाण का चौकोना जलाधार, जलाशय, तालाव।

पुष्कल तत्० ( पु० ) श्रास चतुष्टयात्मक मित्र। ( वि० ) अधिक ढेर, श्रेष्ठ, उत्तम।

पुष्ट तत्० ( वि० ) तैयार, भरा हुआ, बलवान, बलिष्ठ, मज्जबूत, प्रतिपालित, मांसल, स्थूल, हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा।

पुष्टं तत्० ( स्त्री० ) शोषधि विशेष, पुष्टकर शोषधि।

पुष्टि तत्० ( स्त्री० ) मुदाई, पोषण, पालन, पोष्य भक्तान्तर्गत देवता विशेष।—कर ( पु० ) बल यद्धक, पुष्टई।—का ( स्त्री० ) जल की सीप, सुतही, सीपी।—दा ( स्त्री० ) अश्वगन्धा वृक्ष, पुष्टिदात्री, स्तौत्यकारिणी।—मार्ग ( पु० ) वृक्षम-सम्प्रदाय।

पुष्प तत्० ( पु० ) कुसुम, प्रसून, फूल, गुल, स्त्री का रज, विकास, कुवेर का रथ, चन्द्र रोग विशेष, फुली रोग।—करावडक ( पु० ) उज्जयिनी नगरी का एक बाग जो शिव का बाग कहा जाता है।—चाप ( पु० ) कामदेव, मदन।—रस ( पु० ) पुष्प का मधु, मकरन्द।—रेणु ( पु० ) पराग, धूलि।

पुष्पक तत्० ( पु० ) एक विमान का नाम जिस पर परिकर सहित श्रीरामजी लंका से अयोध्या गये थे।

पुष्पदन्त तत्० ( पु० ) शिव का अनुचर विशेष, यह अनुचर एक समय शिव और पार्वती की यातों सुनता था, इससे पार्वती बहुत क्रुद्ध हुईं। उनके शाप से मर्त्यलोफ में कौशाम्बी नगरी में एक ब्राह्मण के यहाँ पुष्पदन्त उत्पन्न हुए थे। इस ब्राह्मण का नाम सोमदत्त था। सोमदत्त ने अपने पुत्र का नाम कालायन बरलचि रखा था।

( २ ) एक प्रधान गन्धर्व, ये पार्वती की सहचरी जया के स्वामी थे। इन पर किसी कारण शिव जी क्रुद्ध हुए थे, जिससे इनकी आकाश में चलने की शक्ति नष्ट हो गई, पुनः प्रार्थना करने पर शिवजी प्रसन्न हुए और गन्धर्व पुष्पदन्त की गई शक्ति फिर मिल गई। पुष्पदन्त के बनाये शिव स्तोत्र का नाम महिम्न स्तोत्र है।

(३) यह दिग्गजों में का एक दिग्गज । उत्तर और पश्चिम दिशा के अधिपति वायु इस हाथी पर चढ़ कर उन दिशाओं की रक्षा करता है ।

पुष्पाञ्जलि तत् ( स्त्री० ) पुष्पपूर्ण अञ्जलि ।

पुष्पित तत् ( वि० ) विकसित, प्रकुल ।— १ ( स्त्री० ) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पेष्ट ( पुं० ) कामदेव ।

पुष्पोद्यान ( पुं० ) फूलवारी, बाग ।

पुष्प तत् ( पुं० ) एक नक्षत्र का नाम, आठवाँ नक्षत्र ।  
पुस्तक तत् ( स्त्री० ) ग्रन्थ, पोथी, ( यह शब्द हिन्दी साहित्य में "पोथी" अथवा "किताब" का अर्थ-वाची होने के कारण स्त्रीलिङ्ग समझा जाता है ।

— १ ( स्त्री० ) पोथी, पुस्तक ।—कार ( वि० ) पोथी के रूप का ।—लिय ( पुं० ) वह घर जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो । [ फूल, फूल ।

पुहप या पुहुपि तत् ( पुं० ) पुष्प, कुसुम, प्रसून,

पुहमि तत् ( स्त्री० ) पृथिवी, पृथ्वी, धरती, घरा ।

पूछा दे० ( पुं० ) पक्षाघात विशेष, मीठी पूछी ।

पूगी दे० ( स्त्री० ) बाँसुरी, सुरजी ।

पूछ दे० ( स्त्री० ) पुच्छ, लाडल ।

पूछताछ ( स्त्री० ) दर्याफ ।

पूछना दे० ( क्रि० ) पोंछना, झाड़ना, साफ करना, प्रश्न करना, जिज्ञासा करना ।

पूछार दे० ( वि० ) बड़ी पूछवाला, शब्दवार पूछवाला ।

पूजी दे० ( स्त्री० ) मूल धन, सम्पत्ति ।

पूग तत् ( पुं० ) वृन्द, समूह राशि ।

पूगना दे० ( क्रि० ) पहुँचना, पास जाना, प्राप्त होना ।

पूगीफल तत् ( पुं० ) सुपारी, कसैली, छालिया ।

पूछ दे० ( स्त्री० ) आदर, सम्मान, अन्वेष्ट, प्रश्न ।

पूछना दे० ( क्रि० ) जिज्ञासा करना, अनुसन्धान करना, रोह लगाना, प्रश्न करना ।

पूछी दे० ( स्त्री० ) मछलियों की पूछ ।

पूजक तत् ( पुं० ) पुजारी, देवलक, अर्चक, मंदिरों में चेतन लेकर पूजा करने वाला ।

पूजन तत् ( पुं० ) पूजा, अर्चन, आराधन ।

पूजना दे० ( क्रि० ) अर्चन करना, आराधन करना, ध्यान करना ।

पूजनीय तत् ( वि० ) पूजनार्ह, पूजन के योग्य, पूजन करने के उपायुक्त, श्रेष्ठ, बढ़ा, आदर के लायक ।

पूजा तत् ( स्त्री० ) अर्चा, आराधना, आदर, सम्मान ।

पूज्य तत् ( वि० ) पूजनीय, पूजने योग्य ।—मान ( वि० ) पूज्य, पूजनीय ।

पूठ दे० ( पुं० ) पुठ्ठा, पथ के चूतड़ की हड्डी ।

पूठा दे० ( पुं० ) पुठ्ठा, गाता, जिल्द ।

पूड़ा दे० ( पुं० ) पकौड़ी, बरा ।

पूड़ी दे० ( स्त्री० ) पूरी, गेहूँ के आटे की बनी वस्तु जो घी में सेंक कर तैयार की जाती है ।

पूणी दे० ( स्त्री० ) रुई की पहल । [ पवित्र ।

पूत तत् ( पुं० ) पुत्र, सन्तान, बेटा, प्रपत्य । तत्

पूतना तत् ( स्त्री० ) दानवी विशेष, इसी दानवी को

कंस ने कृष्ण को मारने के लिये गोकुल भेजा था ।

यह माया से सुन्दर मूर्ति बना कर मन्द के घर

गई और कृष्ण को गोदी में लेकर विपक्षित स्नान

वनके पिलाने लगी, श्रीकृष्ण स्नानपान कामे लगे,

परन्तु श्रीकृष्ण के स्नानपान करने से दानवी के

रत्नों में भयङ्कर पीड़ा होने लगी । उसने अपना

भयङ्कर रूप प्रकट किया और श्रीकृष्ण से अपना

स्नान छुड़ाने लगी, परन्तु छुटा नहीं, बेदना बढ़ने

लगी, दानवी भी धीरे गर्जना करती हुई सदा के

लिये रो गई । श्रीकृष्ण इसकी देह पर चढ़ कर

खेलने लगे । [ वाला ।

पूतनारि तत् ( पुं० ) श्रीकृष्ण, पूतना का बध करने

पूतनासूदन तत् ( पुं० ) श्रीकृष्ण ।

पूतरी दे० ( स्त्री० ) पुतली, मूर्ति, छाल की तरह ।

पूतली तत् ( स्त्री० ) गुड़िया, पुतलिका, कपड़े का

बना खिलौना ।

पूतात्मा तत् ( पुं० ) [ पूत + आत्मा ] पवित्र स्वभाव,

शुद्ध-देह, निष्पाप शरीर, कलङ्क रहित ।

पूति तत् ( स्त्री० ) [ पू + क्ति ] पवित्रता, शुद्धि,

स्वच्छता ।—कर्णक ( पुं० ) कर्णों गोग विशेष,

कान का पाकना ।—गन्ध ( पुं० ) दुर्गन्ध ।

पूती कृत तत् ( वि० ) पवित्रित, पवित्रीकृत, शोधित,

शुद्ध किया हुआ, सञ्चित, रचित ।

पूदनी दे० ( पुं० ) सुगन्धि साग विशेष ।

सलाई दे० ( स्त्री० ) शलाका विशेष, जिससे पुनी  
 बनाई जाती है ।  
 नयाँ दे० ( स्त्री० ) पूर्णिमा, पूर्णमासी, मास का  
 अन्तिम दिन, जिस दिन महीना समाप्त होता है ।  
 दी दे० ( स्त्री० ) रुई का गल्ला ।  
 दा दे० ( स्त्री० ) पुनिया, पूर्णिमा, पूर्णमासी ।  
 तत्त्वं ( पु० ) पूषा, पिष्टक, पशुवाह विशेष ।  
 तत्त्वं ( पु० ) प्रय से निकला हुआ गंदा सफ़ेद  
 बिगाड़ा हुआ खून, दुर्गन्ध रक्त, पीय ।  
 तत्त्वं ( पु० ) जल समूह, जल प्रवाह, जल धारा,  
 खाद्य विशेष, मुक्तिर्पा में मरी जाने वाली वस्तु ।  
 क तत्त्वं ( वि० ) पूरणकर्ता, समापक, समाप्ति  
 करने वाला, प्राणायाम विशेष । बाई नाक से  
 श्वास खींचने का नाम पूरक है । श्वासन करने का  
 अङ्ग, फल विशेष, धीन पूरक, विमोहा नीमू ।  
 तत्त्वं ( पु० ) [ पू + अनट् ] पिण्ड विशेष, पूर्ण  
 करना, भरना, पूरा करना, भर देना ।  
 णीय तत्त्वं ( वि० ) पूर्ण करने के उपयुक्त, पूरा  
 करने के योग्य ।  
 ना दे० ( क्रि० ) गिनना, सुनना, बनाना ।  
 तत्त्वं ( पु० ) पूर्व दिशा । [ सम्पूर्ण ]  
 दे० ( स्त्री० ) पूरण, पूर्ण, भरा पूरा, सय, समस्त,  
 ई दे० ( स्त्री० ) शोभाई, भराई, पूर्णता ।  
 या दे० ( स्त्री० ) रागिनी विशेष ।  
 दे० ( पु० ) पूर्ण, भरा, सम्पन्न, शेष, भरा, भरपूर ।  
 पुड़ी दे० ( स्त्री० ) लुचई, मोहारी, पकवान विशेष ।  
 तत्त्वं ( पु० ) भरा, पूरा, सम्पन्न, शेष ।—कुम्भ  
 ( पु० ) जल पूरित घट, मङ्गल घट, पूर्ण कलस ।  
 —ज्या ( स्त्री० ) सीधारीदा, सीधी रेखा ।—ता  
 ( स्त्री० ) पूर्ति, पूरण, भरण ।—पात्र ( पु० ) वस्तु  
 पूर्ण पात्र, हवन के समय चावल आदि से भर कर  
 दान किया जाने वाला पात्र । पात्र विशेष, जिसमें  
 २५ सुट्टी चावल भरा जाता है ।—भूत ( पु० )  
 काल विशेष, पहले का समय, बीता समय । जो  
 समय स्वयं देखा गया हो, परन्तु उसे बीते बहुत  
 दिन हो गये हों वह पूर्णभूत कहा जाता है ।  
 —मा या मास्ती ( स्त्री० ) पूर्णिमा, शुक्ल पक्ष की  
 पन्द्रहवीं तिथि, पूजा, पन्द्रस ।

पूर्णा तत्त्वं ( स्त्री० ) पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और  
 अमावस्या इनकी पूर्ण सजा है ।  
 पूर्णवितार तत्त्वं ( पु० ) भगवान का चवतार विशेष,  
 भगवान् की षोडस कलाओं का प्रकाश, श्रीकृष्ण  
 भगवान् ।  
 पूर्णाहुति तत्त्वं ( स्त्री० ) [ पूर्ण + आहुति ] हवन पूर्ण  
 करने की आहुति, अन्तिम आहुति ।  
 पूर्णिमा तत्त्वं ( स्त्री० ) शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि,  
 जिस दिन चन्द्रमा की कला पूर्ण होती है ।  
 पूर्ण तत्त्वं ( पु० ) खातादि कर्म, परोपकारार्थ तालाब  
 कुआँ आदि खुदवाना ।  
 पूर्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) पूरण, भाण, पालन, पूर्णता,  
 समाप्ति ।  
 पूर्व तत्त्वं ( पु० ) पूरव दिशा, प्राची दिशा । ( वि० )  
 पहले का, आदि का, प्राय, प्राथमिक ।—गङ्गा  
 ( स्त्री० ) नदी विशेष ।—ज ( पु० ) श्रेष्ठ भ्राता,  
 अप्रभ, पुरखा ।—दिन ( पु० ) गत दिवस, गया  
 कल का दिन ।—देश ( पु० ) प्राची दिशा के देश,  
 मध्य देश ।—पक्ष ( पु० ) शुक्ल पक्ष, श्राद्ध का  
 प्रथम, मृदान्त का विरुद्ध पक्ष ।—गुरुप ( पु० )  
 पिता पितामह आदि ।—याम ( पु० ) प्रथम प्रहर  
 पहला पहर ।—यत् ( स्त्री० ) पहले के समान ।  
 —वर्ती ( पु० ) आगे वाला, अग्रसर ।—वायु  
 ( पु० ) पूर्व का पवन, पुरवीया ।—जिहित ( वि० )  
 पहले का लिखा हुआ ।—राग ( पु० ) नायक और  
 नायिका की अवस्था विशेष । शरीर भक्षण जन्म  
 परस्पर अनुराग ।  
 “ जो प्रथमहिं देखे सुने, बाढ़े प्रेम समान ।  
 विन मिलाप जो विकलता, सो है पूरव राग ॥ ”  
 —रसराज ।  
 पूर्वा तत्त्वं ( स्त्री० ) पूर्व दिक्, प्राची दिक्, प्रथम ।  
 ( वि० ) पूर्वज, प्रथम जात, पूर्वद्वार । ( दे० ) गाँव,  
 पुरवा, डोला ।—ऽमिमुख ( पु० ) पूर्व मुख, पूरव  
 के सामने ।—ऽम्प्रास ( पु० ) पहले का भक्ष्य, प्राण  
 की वान ।—ऽवधि ( वि० ) पूर्व कालावधि,  
 चिरकाल पर्यन्त ।—ऽवस्था ( स्त्री० ) पहले की  
 अवस्था, प्रथम अवस्था ।—ऽगदा ( स्त्री० ) लता  
 इस लक्ष्यों के अन्तर्गत शीतार्वा मध्य ।—हु



( पु० ) दिन के भाग का पहला भाग, दिन का पहला याम ।

पूर्वी दे० ( स्त्री० ) रागिनी विशेष । [ कड़ा हुआ ।

पूर्वोक्त तत्० ( वि० ) [ पूर्व + उक्त ] प्रथम कथित, पहले

पूला दे० ( पु० ) घास की श्रृटिया, घास की गड़ी ।

पूप दे० ( पु० ) वीप मास. पूस, धनुर्मास ।

पूपण तत्० ( पु० ) सूर्य, रवि, मानु ।—( स्त्री० )

कार्तिकेय की अनुचरी, एक मातृका का नाम ।

पूपा तत्० ( स्त्री० ) सूजन, चन्द्रकला विशेष, शरीरस्थ

वायु विशेष, जो दक्षिण कान से निकलता है ।

( पु० ) सूर्य, रवि, मारकर ।—रमज ( पु० ) मेघ,

बादल ।

पूस ( पु० ) पौषमास ।

पुन ( पु० ) अनाज. अन्न ।

पुच्छक तत्० ( पु० ) प्रसक्तार्त्ता, जिज्ञासु, पूछने वाला ।

पुच्छा तत्० ( स्त्री० ) जिज्ञासा, प्रश्न, प्रवेपच ।

पुतना तत्० ( स्त्री० ) सैन्य, सेना, कटक, विशेष

संख्यायुक्त सेना ।

पृथक् तत्० ( थ० ) भिन्न, अन्य, विच्छेद; न्यारा,

अलग, भिन्न, जुदा ।—करण ( पु० ) भक्षण

करना, भिन्न करना, विभक्त करना ।—क्षेत्र ( पु० )

एक पुरुष से अनेक वर्ण की स्त्रियों से उत्पन्न पुत्र ।

पृथगात्मता तत्० ( स्त्री० ) विवेक, वैराग्य ।

पृथग्जन तत्० ( पु० ) साधारण मनुष्य, मूर्ख, नीच,

पापी, प्राकृत । [ विविध, बहुरूप ।

पृथग्विध तत्० ( थ० ) नाना प्रकार, अनेक विध,

पृथगी तत्० ( स्त्री० ) मेदिनी, भूमि, धाती, घरा ।

पृथा तत्० ( स्त्री० ) कुन्ती, पाण्डवों की माता ।

पृथिवी तत्० ( स्त्री० ) भूमि, धरिणी ।—पति ( पु० )

भूपति, राजा, यम, बराह, ऋषभ नामक ओषधि ।

—पाल ( पु० ) राजा, भूपति, भूमीधर ।

—पालक ( पु० ) राजा, भूपती, दण्डधर ।

पृथी ( स्त्री० ) पृथ्वी ।

पृथु तत्० ( वि० ) महत्, निपुण, विशाल ।—राज

( पु० ) सूर्यवंशी पाँचवाँ राजा, आदि राजा ।

ये वेणु राजा के पुत्र थे । इन्होंने अपने बाहुबल से

पृथिवी के समस्त राजाओं को जीत लिया था ।

इन्होंने पृथिवी को बराबर समतल कर दिया था,

इस कारण इनका नाम पृथु पड़ा था । इनके राज-

सुय यज्ञ में आकर महर्षियों ने इनका राज्याभिषेक

किया था । इनके शासनकाल में विना ओते ही

भूमि से अन्न उत्पन्न होता था । महाराज पृथु ने

अनेक यज्ञ किये थे, और समस्त प्राणियों को अग्नि-

हविर्न द्रव्य प्रदान करके सन्तुष्ट किया था । इन्होंने

अश्वमेध यज्ञ करने के समय पृथिवी की समस्त

वस्तुओं की सोने की प्रतिमा बनवा कर ब्राह्मणों को

दिया था । इन्होंने ६९ हजार सुवर्ण-वृक्ष और

मणिलभ्य भूषित सुवर्णमय पृथिवी बनवा कर ब्राह्मणों

को दान दी थी । इनकी उत्पत्ति इस प्रकार है ।

अत्रिवंशी अङ्ग नामक भ्राजापति ने धर्मराज की

कन्या सुनिधा के गर्भ से वेणु नामक एक पुत्र

उत्पन्न किया था । वेणु महादुराचारी और कुमार्गी

राजा था । उसकी समस्त से संसार में उसके अति-

रिक्त और कोई पूजा के योग्य न था, अप्रत्यक्ष उसने

याग यज्ञ आदि करना बन्द कर दिया । वेणु के

अत्याचार से प्रजा दुःखित होगयी, तब मरीचि

आदि ऋषियों ने वेणु को चितावनी दी, परन्तु

उसने हन धातों पर क्रुद्ध भी ध्यान नहीं दिया, तब

महर्षियों का क्रोध और बढ़ गया, उन्होंने वेणु का

निग्रह करना ठग लिया । सब महर्षियों ने मिलकर

शाप देकर वेणु को मार डाला और सब महर्षि

मिल कर वेणु के उर को मथने लगे, मथने से एक

काला मनुष्य उत्पन्न हुआ । जो निषाद जाति का

आदि पुरुष है । पुनः ऋषियों ने वेणु का दहिना

हाथ मथना प्रारम्भ किया, उससे पृथु की उत्पत्ति

हुई ।

पृथु तत्० ( पु० ) [ पृथु + क ] चिन्ता । ( पु० )

बालक, शिशु, कुमार ।

पृथुमा तत्० ( पु० ) [ पृथु + रोमन् ] मछली, मत्स्य,

मीन । ( वि० ) बृहदल्लोमयुक्त, रोमांशर ।

पृथुज तत्० ( वि० ) महत्, बड़ा, अति विस्तृत ।

पृथुशिवा तत्० ( पु० ) वृष विशेष, खीन वृष ।

पृथुदक तत्० ( पु० ) [ पृथु + उदक ] तीर्थ विशेष ।

पृथुवर तत्० ( पु० ) [ पृथु + वर ] मेघ,

मंड । ( वि० )

वाजा ।

ते तत् ( स्त्री० ) भूमि, जमीन, पृथिवी, धार्मी, धरित्री ।—पति ( पु० ) राजा, नरपति ।—पाल ( पु० ) राजा, भूपति ।

पेका तत् ( स्त्री० ) बड़ी इलाह, छोटी इलाह-इची, कृष्ण जीरक, कलौजी ।

पेरान्त तत् ( पु० ) भारत का अन्तिम हिन्दू राजा । सन् ११९३ ई० में महम्मद ग़ोरी पृथ्वी राजा को जीत कर और कैद कर ग़ज़नी ले गया । वही ले जाकर उसने पृथ्वीराज की आखें फोड़ डालीं । अन्त में चन्द कवि के कौशल से महाराज पृथ्वीराज ने महम्मद ग़ोरी का घब किया और स्वयं उन्होंने शास्त्रहत्या कर ली । ( देखो जयचन्द )  
[ तत् ( पु० ) विन्दु, कण, श्वेत विन्दु युक्त सृण, राजा विशेष ।

रु तत् ( पु० ) बाण, शर ।

रु तत् ( पु० ) [ रुत + अन्त्य ] वायु, पवन, मत्तास, राजा विशेष ।

रु तत् ( पु० ) [ रुत + उदर ] अक्षोदर, छोटे पेट वाला । ( पु० ) सर्प ।

रु तत् ( पु० ) शरीर के पीछे का भाग, पीठ, पुस्तक का एक पन्ना, सफ़ा ।—ग्रन्थि ( पु० ) कुन्ज, कुबड़ ।—ता ( स्त्री० ) पश्चात्, पृष्ठ देश, पीठ की ओर ।—पोषक ( पु० ) पीठ ठोकने वाला, सहायक, मददगार ।—वंश ( पु० ) पृष्ठास्थि, पीठ की हड्डी, मेरुदण्ड ।—ग्रन्थि ( पु० ) पृष्ठ देश में स्फोटक विशेष, पीठ का फोड़ा, पिरकी ।

स्थि तत् ( स्त्री० ) [ पृष्ठ + अस्थि ] पीठ की हड्डी ।

दे० ( स्त्री० ) पिटारी, मञ्जूषा, पेटी ।

दे० ( स्त्री० ) कूड़ा का हिलाना, पछि विशेष ।

दे० ( स्त्री० ) हाट, बज़ार, मण्डी ।

दे० ( पु० ) लबा, पेंदी, नीचे का भाग, अधोभाग ।

( स्त्री० ) पेंदा, गुदा, गाजर ।

( स्त्री० ) पेटी, पिटारी ।

ता दे० ( क्रि० ) प्रेषण, देखना, निरखना, दूरान करना । स्वीकृत बनाना, खेल करना, क्रीड़ा करना ।

निया दे० ( पु० ) स्वीकृत करने वाला, गद्दरूपिया, देखने वाला, दूरक ।

वैया दे० ( पु० ) देखने वाला, देखवैया, प्रेषक ।

पेखित दे० ( वि० ) प्रथित भेजा हुआ ।

पेखिय दे० ( क्रि० ) देखिये, अवलोकिय ।

पेच दे० ( पु० ) घुमाव, मोर, कील विशेष, कंटा ।

पेचक तत् ( पु० ) बल्लूक, घुघू, खमट ।

पेचा दे० ( पु० ) बल्लू, किचकिचुआ ।

पेट दे० ( पु० ) उदर, जठर ।—आना ( वा० ) पेट

चबना, दस्त आना, अधिक खाड़े फिना, दस्त की

बीमारी ।—को दुख देना ( वा० ) भूखें मरना,

पेट भर अन्न न खाना ।—का पानी न हिलना

( वा० ) किसी बात को छिपाना, प्रकाश करने का

समय जाने पर भी प्रकाशित नहीं करना, छिपाना,

डुलना नहीं, स्थिर रहना ।—को आग ( वा० )

जुवा, भूख की पीड़ा, सन्ता । का दुःख ।—को

आग बुझाना ( वा० ) खाना, भोजन करना ।

—को चातें ( वा० ) गुप्त बातें, विषी बातें ।

—भड़काना ( वा० ) पेट में रुद होना, पेट की

पीड़ा ।—गिरना ( वा० ) गर्भपात होना, गर्भ का

गिर जाना, गर्भ नष्ट होना, ।—जलना ( वा० )

भूखा रहना, घुथित होना ।—दिखाना ( वा० )

अपनी अवस्था जनावा, इतिवृत्ता प्रकाशित करना ।

—पालना ( वा० ) किसी प्रकार निर्वाह करना,

स्वार्थ साधना, दुख से दिन बिताना ।—पीठ

एक होना ( वा० ) दुर्बल होना, निर्बल होना ।

—पोखना ( वा० ) सब से छोटा लड़का, अन्तिम

गर्भ की सन्तान ।—पोखू ( वा० ) पेटार्थ, पेट

खाऊ, पेट पाने वाला ।—फूलना ( वा० ) पहुत

हँसना, हँसते हँसते पेट में बल पड़ जाना ।

—बढ़ाना ( वा० ) लोभ करना, दूसरे का धन

पचाना ।—बाँधना ( वा० ) कम खाना ।—भर

( वा० ) जी भर, इच्छा भर ।—भरना ( वा० )

धधाना, तृप्त होना, सुख करना, तृप्त करना, सुख

देना ।—मारना ( वा० ) धामघात करना, स्वयं

मार कर मर जाना, शास्त्रहत्या करना ।—में

पैठना ( वा० ) अन्तरङ्ग बनना, अत्यन्त निग्र

बनना, भेद लेना, भीतर की बातें जानना ।—में

लेना ( वा० ) सहना, झेलना ।—रहना ( वा० )

गर्भ रहना, गर्भवती होना ।—लग जाना ( वा० )

भूखें मरना, भूखें रहना, पेट भर अन्न न मिलना ।

—लग रहना (वा०) झुधित होना, झूखे रहना ।  
—से होना (वा०) गर्भिणी होना, पेट रहना,  
गर्भ रहना । —हड़बड़ाना (वा०) पेट की बीमारी  
होना ।

पेटा रे० ( पु० ) टोकरा, पिटारी, पिटारा, पेठा ।

पेटारा रे० ( पु० ) पिटारा, टोकरा ।

पेटार्थी, पेटार्थ दे० ( वि० ) खाऊ, पेहू ।

पेटिया दे० ( पु० ) पति दिन का भोजन, सीधा, एक  
समय खाने के योग्य सीधा ।

पेटो दे० ( स्त्री० ) कमरबन्द, कमरकस, पेट का बन्धन,  
पिटारी, सन्दूक, छोटा पिटारा ।

पेटू दे० ( वि० ) पेटार्थी, उदर पोषू ।

पेटौला दे० ( पु० ) रोग विशेष, अतिसार, आँव  
गिरना, दिरुदिकाना, व्याकुलता, उद्वेग, बहिष्मता ।

पेटा दे० ( पु० ) कौहड़ा, कृष्माण्ड ।

पेड़ दे० ( पु० ) वृत्त, रूल, तरु, हुम, द्रवत ।

पेड़ा दे० ( पु० ) मिठाई विशेष, एक मिठाई का नाम ।

पेड़ो दे० ( स्त्री० ) छोटा पेड़ा, सुपारी, नील आदि की  
कटी हुई दाँठो, पान की एक जाति ।

पेड़ू दे० ( पु० ) नामी के नीचे का भाग ।

पेम तद्० ( पु० ) प्रेम, स्नेह, प्रीति ।

पेमो तद्० ( वि० ) प्रेमी, प्रीतिपात्र, प्रिय ।

पेय तद्० ( वि० ) पान योग्य, पान करने के उपयुक्त ।

पेग दे० ( पु० ) पति विशेष, विलायती मुर्गा ।

पेलना दे० ( क्रि० ) डेलना, ठूसना, ठाँसना, घुसेड़ना,  
तेल निकालना, त्यागना ।

पेलहत्ति दे० ( क्रि० ) रामायण में इस शब्द का प्रयोग,  
त्याग करेंगे, डाल देंगे, छोड़ देंगे, हटा देंगे, मिटा  
दे देंगे, न मानेंगे, तिरस्कार करेंगे—अर्थ में हुआ है ।

पेयड़ी दे० ( स्त्री० ) पीला-रङ्ग, पिण्ड ।

पेयसो दे० ( स्त्री० ) पीयूष, अमृत, सुधा, खाद्य विशेष,  
जो फटे वृक्ष से बनता है, हाल की व्यायी गौ का  
पहला वृक्ष, पेयस ।

पेशगी दे० ( वि० ) अप्रिम, अगाऊ ।

पेशाच दे० ( पु० ) मृद, मृत्, प्रभाव ।

पेशी तद्० ( स्त्री० ) अण्ड, मांसपेशी, सुपक्वकलिका,  
नदी विशेष, पिशाची विशेष, राक्षसी विशेष, अस्ति-  
कोप, म्यान ।

पेयकं तत्० ( पु० ) मर्दनकारी, पीसने वाला ।

पेयण तत्० ( पु० ) [ पिप् + थनट् ] मर्दन, पीसना,  
चूर्ण करना, चोटना ।

पेयणी तत्० ( स्त्री० ) पेयण यन्त्र, शिलपट, सिल ।

पेयणीय तत्० ( वि० ) पेयण योग्य, पीसने योग्य ।

पेपन दे० ( पु० ) निरीक्षण, प्रेक्षण, तमाशा ।

पे दे० ( अ० ) पर, ऊपर, परन्तु, निश्चय, अवश्य,  
( पु० ) पेय, दोष, वृक्षपानी ।

पैकड़ा दे० ( पु० ) वेड़ी, साँकर, रिफाव ।

पैकड़ी दे० ( स्त्री० ) वेड़ी, पैर की जंजीर, पैर बाँधने  
की साँकल ।

पैकार दे० ( पु० ) फेरीवाला, व्योपारी ।

पैको दे० ( स्त्री० ) हुक्के का भाड़ा दिवैया, एक खेल ।

पैखाना ( पु० ) मल, पिन्डा, मल त्यागने का स्थान ।

पैगवर ( पु० ) दूत, नवी, ईश्वर का दूत ।

पैगाम ( पु० ) सन्देश ।

पैगू दे० ( पु० ) महादेश का प्रान्त विशेष ।

पैचना दे० ( क्रि० ) पछोड़ना, फटकना, बनाना ।

पैचा दे० ( पु० ) उधार, बदला, पलटा ।

पैज दे० ( पु० ) प्रय, प्रतिज्ञा, होड़ ।

पैजनी दे० ( स्त्री० ) भूषण विशेष, पैर का गहना, एक  
आभूषण जिसे लड़के पहनते हैं, और जो कमूतरों  
के पैरों में डाली जाती है, कौंक ।

पैड दे० ( स्त्री० ) फाल, डेग, चलने के समय दोनों पैर  
के बीच की भूमि । [ भोजन ।

पैड़ा दे० ( पु० ) मार्ग, बाट, गैल, रास्ते में खाने का

पैताना दे० ( क्रि० ) पैर की और, पदतल, पायतल ।

पैतालीस दे० ( वि० ) संख्या विशेष, चालीस और  
पाँच, ४५, पाँच अधिक चालीस ।

पैती दे० ( स्त्री० ) पवित्री, कुश के छल्ले ।

पैतीस दे० ( वि० ) संख्या विशेष, तीस और पाँच, ३५ ।

पैसठ दे० ( वि० ) संख्या विशेष, साठ और पाँच, ६५ ।

पैठ दे० ( स्त्री० ) हुण्डी का खोना, पहुँच, हुण्डी की  
प्रतिलिपि, हुण्डी के खोने पर जो लिखी जाती है ।

पहुँच, प्रवेश । [ जाना ।

पैठना दे० ( क्रि० ) प्रवेश करना, घुसना, भीतर

पैठार दे० ( पु० ) देखो पैठार । [ कराना ।

पैठालना दे० ( क्रि० ) प्रवेश कराना, घुसना ।

पैङ्ग दे० ( पु० ) पदाङ्ग, पङ्क्ति, पैरों का चिन्ह ।  
 पैड़ा दे० ( पु० ) ऊँची सड़कें, जो बरसाने के दिनों  
 में काम में लाई जाती हैं ।  
 पैड़ी दे० ( स्त्री० ) सोढ़ी, सोपान, निमिनी ।  
 पैररा दे० ( पु० ) चलने की रीति, गति विशेष,  
 कुतूहल या लकड़ी खेजने के समय की चाल ।  
 पैतला दे० ( वि० ) उथला, छिड़ला, उत्तान ।  
 पैतृक तत्त्व ( वि० ) पित्रवत्, पिता का धन, वंशीति,  
 मारुमी ।  
 पैदल दे० ( पु० ) पैरों से चलने वाला, पदालि,  
 सिपाही ।  
 पैदा ( पु० ) उत्पन्न, प्रकट ।  
 पैने दे० ( पु० ) छोटी नहर, नाली, खेतों में पानी ले  
 जाते के लिए छोटी नहर ।  
 पैना दे० ( वि० ) तीक्ष्ण, तेज । ( पु० ) अङ्गुश, अँगुठा ।  
 पैनाना दे० ( क्रि० ) नीक्षण करना, नेत्र करना, धार  
 दिलवाना ।  
 पैनाला दे० ( पु० ) पनारा, मोरी ।  
 पैया दे० ( पु० ) पहिया, चक्र, निस्सार, धान्य ।  
 पैयान तत्त्व ( पु० ) प्रस्थान, प्रस्थिति, विदा, यात्रा ।  
 पैर दे० ( पु० ) पाँव, पद, चरण ।  
 पैरना दे० ( क्रि० ) पैरना, पैरने की रीति ।  
 पैरवी ( स्त्री० ) विगती, खुशामद; प्रयत्न, उद्योग ।  
 पैराई दे० ( स्त्री० ) तैरना, पैरने की रीति ।  
 पैराक दे० ( स्त्री० ) पैरने वाला, अधड़ी तरह पैरना  
 जानने वाला । [ दुबारा जल जहाँ हो ।  
 पैराय दे० ( पु० ) पैरने के योग्य जल, अधिक जल,  
 पैरी दे० ( स्त्री० ) पाँव का एक प्रकार का गहना ।  
 पैला दे० ( पु० ) काष्ठ का पात्र विशेष, जिममें अन्न  
 आदि पाया जाता है, माषपात्र ।  
 पैवन्द ( पु० ) जोड़, पँवदा ।  
 पैवाच तत्त्व ( पु० ) आठ प्रकार के विवाह के धन-  
 नीत एक विवाह । ( वि० ) पिशाच सम्बन्धी  
 पिशाच का ।  
 पैगुन्य तत्त्व ( पु० ) पित्रवत्ता, स्वतन्त्रता, परनिन्दा, शत्रु  
 का आदि चिन्तन ।  
 पैमा दे० ( पु० ) माँये का पिछा, डेबुआ, धन, द्रव्य,  
 रोकड़, सम्पदा ।—उड़ाना ( था० ) बहुत खर्च,

करना, अधिक व्यय करना, घुराना, टगना ।  
 —खाना ( था० ) विरवासवान करने का सेना ।  
 —डुबाना ( था० ) धन गँवाना, धन परवार  
 करना, घटी उठाना ।—हूबना ( था० ) धन का  
 मारा जाना, धन का नाश होना, घाटा होना ।  
 पैसार दे० ( पु० ) पैंसार, प्रवेष्ट । [ करना ।  
 पैसे लगाना दे० ( था० ) धन लगाना, धन व्यर्ज  
 पैसेवाला दे० ( वि० ) धनवान, धनी ।  
 पैसों से दरबार बांधना दे० ( था० ) धूम देकर  
 मनमाना काम करना, धूम देना ।  
 पैहे दे० ( क्रि० ) पावेगा, प्राप्त करेगा । [ छोटा लकड़ा ।  
 पांझा दे० ( पु० ) साँव का यथा, दूध पीने वाला यथा,  
 पोआना दे० ( क्रि० ) घमाना, तपाना, रोटा बेन  
 करके देना ।  
 पांईस दे० ( अ० ) अलग हो, दूर, यह शब्द नीच  
 जाणियों का साथवान करने के लिये—जिससे वे  
 छुट्टे नहीं बोला जाता है । अथवा वे ही बोले  
 जाते हैं जिससे लोग हट जाँव ।  
 पांकिना दे० ( क्रि० ) चय चय में पतले बन होना ।  
 पांका दे० ( पु० ) फीट, कृमि ।  
 पांगा दे० ( पु० ) मूँगे, डोला । ( गु० ) छँदा, मृत्प ।  
 पांगी दे० ( स्त्री० ) नली, छँदी, गोपली, मूँगी छी ।  
 पांङ्ग दे० ( पु० ) भाङ्गन, साफ़ करण ।  
 पांङ्गना दे० ( क्रि० ) भाङ्गना, साफ़ करना, ध्वस्त  
 करना, पांङ्ग कर साफ़ करना ।  
 पांटा दे० ( पु० ) नासिका मज, गेटा, धिनक ।  
 पांखर दे० ( पु० ) नागाय, सरोवर, तटाय ।  
 पांन दे० ( पु० ) घुरे, नष्ट, नीच, मंद, कथम,  
 अज्ञानो, अज्ञानि, दुःखित ।  
 पांयला दे० ( पु० ) यही गट्टी, गट्टा, गट्टा ।  
 पांयली दे० ( स्त्री० ) गट्टी, सफर विशेष ।  
 पोटा दे० ( पु० ) मँदा, पनक, पनो का मोम, पचीनी,  
 मोम, लकड़ा । [ उगमारी  
 पोड़ा दे० ( वि० ) पुट, चन्दा, पीट, ग्राहमी,  
 पोड़ाई दे० ( स्त्री० ) फड़ाई, पुष्टता, मनोरमा, माय्य ।  
 पोत तत्त्व ( पु० ) मित्र, भावक, धाम, बधा, लगनी,  
 नीचा, समुद्रपान, उदात्त, दम करने का हाथी ।  
 दे० मानगुमारी, देन, कियत ।

पोतक तत्त्वं ( पु० ) बालक, बच्चा, जनमतुषा बच्चा ।  
 पोतड़ा दे० ( पु० ) बच्चे का बिछौना ।  
 पोतड़ी दे० ( स्त्री० ) खेरी, फिहरी, हल ।  
 पोतना दे० ( क्रि० ) लीपना, मिट्टी या चूने से दीवाल  
 पोतना । ( पु० ) पोतने का यन्त्र या कूँची, जिससे  
 पोतते हैं, पोता । [ पुतना, अरुढकोश ।  
 पोता दे० ( पु० ) पौत्र, पुत्र को पुत्र, पुत्र का लड़का,  
 पोती दे० ( स्त्री० ) पुत्र की कन्या, पौत्री, बेटे की  
 कन्या ।  
 पोथा दे० ( पु० ) बड़ी पोथी, ग्रन्थ ।  
 पोथी दे० ( स्त्री० ) ग्रन्थ, पुस्तक ।  
 पोढ़ना दे० ( पु० ) पसी विशेष ।  
 पोना दे० ( क्रि० ) गूँथना, गाँथना, गूहना, पिरोना ।  
 पोपनी दे० ( स्त्री० ) बाघ विशेष, एक बाजे का  
 नाम ।  
 पोपला दे० ( वि० ) दन्त रहित, बिना दाँतों का ।  
 पोमचा दे० ( पु० ) रंगीन वस्त्र, एक प्रकार का रंगा  
 हुआ कपड़ा ।  
 पोय दे० ( स्त्री० ) लता विशेष, जो बरसात में उत्पन्न  
 होती है, शाक विशेष ।— ( स्त्री० ) लता विशेष,  
 जिसकी भाजी बनायी जाती है ।  
 पोर दे० ( पु० ) गाँठ, ग्रन्थि, बाँस की गाँठ, दो गाँठों  
 के बीच का भाग ।  
 पोरा दे० ( पु० ) पोर ।  
 पोरी दे० ( स्त्री० ) छोटी गाँठ ।  
 पोला दे० ( वि० ) छूँटा, शुष्क, रीता, रिक्त, खाली,  
 नरम, कोमल ।  
 पोली दे० ( स्त्री० ) अनारी, अनाड़ी, मूर्ख, अज्ञानी ।  
 पोशाक ( स्त्री० ) पहिनने के कपड़े, परिच्छद ।  
 पोशीदा ( वि० ) गुप्त, छिपा हुआ ।  
 पोप ( पु० ) पालन, परवरिश ।  
 पोपक तत्त्वं ( पु० ) [ पुप + यक् ] पालक, पालनकर्त्ता,  
 भरणकारी, सहायता देने वाला ।  
 पोपण तत्त्वं ( पु० ) [ पुप + अनट् ] प्रतिपालन, रक्षण,  
 पोपणीय तत्त्वं ( वि० ) पोष्य, पोसने योग्य, पोषण  
 करने के उपयुक्त ।  
 पोपयितु तत्त्वं ( पु० ) कोकिल, भर्त्ता, पति,  
 स्वामी ।

पोष्टा तत्त्वं ( पु० ) पोषण, पालयिता, पालन करने  
 वाला ।  
 पोष्य तत्त्वं ( वि० ) पाल्य, पोषणीय, पालन करने  
 योग्य ।— पुत्र ( पु० ) दत्तक पुत्र, पालन पोषण के  
 द्वारा बनाया हुआ पुत्र ।— धर्म ( पु० ) अवरय  
 पालनीय, वृद्ध पिता माता आदि, परिजन धर्म ।  
 पोसना दे० ( क्रि० ) पालन पोषण करना, रखा  
 करना ।  
 पोसना दे० ( पु० ) अफीम का वृक्ष, दाने का पेड़ ।  
 पोह दे० ( पु० ) प्रातःकाल, भोर, तड़का, बिहान,  
 सवेरा ।  
 पोहना दे० ( क्रि० ) रोटी बनाना । [ करने-घाला ।  
 पोहारो तद् ( वि० ) पयहारी, केवल वृक्ष का आहार  
 पोहियहि दे० ( क्रि० ) परोहये, गूँधिये, पोहना  
 चाहिये ।  
 पो दे० ( स्त्री० ) जल सत्र, चौपड़ के पासे का एक ।  
 पौगण्ड तत्त्वं ( पु० ) अवस्था विशेष, पाँच वर्ष से  
 सोलह वर्ष की अवस्था तक ।  
 पौंचा ( पु० ) साढ़े पाँच का पहाड़ा ।  
 पौड़ा दे० ( पु० ) ईंष्टु विशेष, उख, पीड़ा ।  
 पौढ़ना दे० ( क्रि० ) सोना, शयन करना, लेटना ।  
 पौढारा दे० ( क्रि० ) सुलाप, शयन कराप ।  
 पौण्डरीक दे० ( वि० ) पुण्डरीक सन्ध्या, कमल का ।  
 पौण्ड्र तग ( पु० ) देश विशेष, चन्देल देश, भीमसेन  
 के राजा का नाम, ईंष्टु विशेष, पौंवा, उख ।  
 पौंड्रक तत्त्वं ( पु० ) जाति विशेष, ईंष्टु विशेष,  
 पुण्ड्र देश का एक राजा पौण्ड्रक वासुदेव नाम से  
 इनकी प्रसिद्धि है । जरासन्ध के ये बड़े मित्र थे ।  
 इनके पिता का नाम वसुदेव था । वसुदेव की दो  
 स्त्रियाँ थीं, सुतनु और नाचाडी, सुतनु के गर्भ से  
 पौंड्रक और नाचाडी के गर्भ से कपिल उत्पन्न  
 हुए थे, कपिल संसारत्यागी होकर योगी हो गये ।  
 अपना नाम वासुदेव रख कर पौंड्रक राज्य करते  
 थे । वासुदेव श्रीकृष्ण द्वारिका ही से इसकी  
 डिठाई सुना करते थे । श्रीकृष्ण का वासुदेव कहा  
 जाना पौण्ड्रक से सहा नहीं जाता था । पौण्ड्रक  
 करता था, गदाधारी हूँ, मेरे  
 प्रकार वह अपनी

उदण्डता प्रकाशित किया करता था। यह और भी कहता था कि वासुदेव इस नाम को ग्वाल के छोकरे ने ले लिया है। श्रीकृष्ण को सुधारने के लिये उसने द्वारिका पर आक्रमण किया था। अनेक यादव उसकी सेना के द्वारा मारे गये। अन्त में श्रीकृष्ण और पौण्ड्रक के साथ युद्ध हुआ, अब पौण्ड्रक को असली वासुदेव का पता लग गया, इसी युद्ध में वह मारा गया।

पौत्तलिक तद् ( पु० ) मूर्तिपूजक।

पौत्र तद् ( पु० ) पोता, पुत्र का पुत्र।

पौत्रो तद् ( स्त्री० ) पोती, पुत्र की कन्या।

पौधा दे० ( पु० ) वृक्ष का अंकुर, छोटा वृक्ष।

पौन दे० ( स्त्री० ) तीन चौथाई, चार भाग का तीन हिस्सा।

पौना दे० ( पु० ) भरना, लोहे का एक वर्तन जिससे सेव तथा पत्थरी आदि छानी जाती हैं। हाथ से रोटी बनाना।

पौने दे० ( पु० ) एक चौथाई कम। [फाटक।

पौर तद् ( पु० ) नगर सम्बन्धी, द्वार, किवाड़,

पौरक ( पु० ) घर के बाहर का भाग।

पौरव तद् ( पु० ) पुरु वंशभव राजा विरोध, दुष्यन्त।

पौरस्य तद् ( वि० ) प्रथम, आद्य, पूर्व का, पूर्वार्थ, पूर्व दिशा सम्बन्धी। [मतावलम्बी।

पौराणिक तद् ( पु० ) पुराण शास्त्रज्ञ, पुराण

पौरिया दे० ( पु० ) द्वारपाल, द्वारपालक, डेवहीदार, दरवान।

पौरी दे० ( स्त्री० ) पीर, डेवड़ी, द्वार।

पौरुष तद् ( पु० ) पुरुषत्व, पुरुष का कर्म, पुरुष की शक्ति, पुरुषार्थ, यत्न, हिम्मत, साहस, ताकत।

पौरुषेय तद् ( वि० ) पुरुष निर्मित, पुरुष का बनाया हुआ।

पौरुष्य ( पु० ) साहस, पुरुषत्व।

पौरुहूत ( पु० ) इन्द्र का अस्त्र, वज्र।

पौरु ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिट्टी या जमीन।

पौरिय ( पु० ) नगर के समीप का स्थान, देश, ग्राम आदि। [दारीग।

पौरीगय ( पु० ) पाकशालाचक्क, चावची खाने का

पौरोहित्य तद् ( पु० ) पुरोहित का कर्म।

पौर्णमास ( पु० ) एक योग वा इष्टिका जो पूर्णमासी को किया जाता है। [वन की अघिष्टात्री देवी।

पौर्णमासी तत् ( स्त्री० ) पूर्णिमा, पूर्णमासी, वृन्दा-पौर्वाङ्गिक तत् ( वि० ) पूर्वाङ्ग की क्रिया, पूर्वाङ्ग सम्बन्धी। [विनीषण।

पौलस्य तत् ( पु० ) कुंभर, रावण, कुम्भकर्ण,

पौलिया दे० ( स्त्री० ) पौरिया, छोटी खड़ाऊँ।

पौलो दे० ( स्त्री० ) पौरी, खड़ाऊँ।

पौलोमी तद् ( स्त्री० ) पुलोमना, पुलोम नामक दानय की कन्या, इन्द्राणी, शची।

पौवा दे० ( पु० ) चौथा भाग, पाव भर।

पौष तद् ( पु० ) पूस, चैत्रादि द्वादश महीने के अन्तर्गत दशम मास, धनुर्मास।

पौष्टिक तद् ( पु० ) पुष्टि यर्द्धक, पुष्टई, पुष्टिकर पोषक। ऐसी दवाई जिससे शरीर पुष्ट हो।

पौंसरा या पौंसला दे० ( पु० ) पौ, प्याऊ, प्रपा, पानी पिलाने का स्थान, पौशाला।

पौह दे० ( पु० ) जलशाला, जलसत्र।

प्याऊ ( पु० ) देखो "पौंसला"।

प्याना दे ( कि० ) पिलाना, पान कराना।

प्यार दे० ( पु० ) प्रेम, प्रीति, स्नेह।

प्यारा दे० ( वि० ) प्रेमी, प्रिय, स्नेही, प्रियतम।

—ज्ञानता ( वा० ) आदर करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ जानना।

प्यारी दे० ( स्त्री० ) प्रिया, प्रियारी, प्रियतमा।

प्याला दे० ( पु० ) कदोरा।

प्यावना दे० ( कि० ) प्याना, पिलाना, पान कराना।

प्याऊ दे० ( स्त्री० ) प्रपा, पानी शाला, जहाँ धर्मार्थ पानी पिलाया जाय।

प्यास दे० ( स्त्री० ) श्या, पिपासा, शृष्णा।—शुभाना ( वा० ) पानी पीना, प्यास दूर करने के लिये प्यास हू पानी पी लेना, मनोरथ पूर्ण करना।—मारजा दे० ( वा० ) अधिक प्यास लगाना, पिपासित होना।—लगना ( वा० ) पिपासा लगना, शृष्णा मालूम होना।

प्यासा तद् ( वि० ) पिपासित, शृष्णावन्त, शृष्णान्वित।

प्र तद् ( उपसर्ग ) आरम्भ, उरकथं, सर्वतोभाव, प्राधान्य, आद्य, स्वादि, उत्पत्ति, व्यवहार।

पोतक तत् ( पु० ) बालक, बच्चा, जनमत तथा बच्चा ।  
 पोतड़ा दे० ( पु० ) बच्चे का बिछौना ।  
 पोतड़ी दे० ( स्त्री० ) खेरी, मिहरी, हल ।  
 पोतना दे० ( क्रि० ) लीपना, मिट्टी या चूने से दीवाल  
 पोतना । ( पु० ) पोतने का बख या कूँची, जिससे  
 पोतते हैं, पोता । [ पुतना, अण्डकोश ।  
 पोता दे० ( पु० ) पौत्र, पुत्र का पुत्र, पुत्र का लड़का,  
 पोती दे० ( स्त्री० ) पुत्र की कन्या, पौत्री, बेटे की  
 कन्या ।  
 पोथा दे० ( पु० ) बड़ी पोथी, ग्रन्थ ।  
 पोथी दे० ( स्त्री० ) ग्रन्थ, पुस्तक ।  
 पोदना दे० ( पु० ) पक्षी विशेष ।  
 पोना दे० ( क्रि० ) गूँथना, गँथना, गूँथना, पिरोना ।  
 पोपनी दे० ( स्त्री० ) बाघ विशेष, एक बाघे का  
 नाम ।  
 पोपला दे० ( वि० ) दन्त रहित, बिना दाँतों का ।  
 पोमचा दे० ( पु० ) रंगीन वस्त्र, एक प्रकार का रंगा  
 हुआ कपड़ा ।  
 पोय दे० ( स्त्री० ) लता विशेष, जो बरसात में उत्पन्न  
 होती है, शाक विशेष ।— ( स्त्री० ) लता विशेष,  
 जिसकी भाजी बनायी जाती है ।  
 पोर दे० ( पु० ) गाँठ, ग्रन्थि, बॉस की गाँठ, दो गाँठों  
 के बीच का भाग ।  
 पोरा दे० ( पु० ) पोर ।  
 पोरी दे० ( स्त्री० ) छोटी गाँठ ।  
 पोला दे० ( वि० ) हँछा, शुन्य, रीता, रिक्त, खाली,  
 नरम, कोमल ।  
 पोली दे० ( स्त्री० ) अनारी, अनाड़ी, मूर्ख, अज्ञानी ।  
 पोशाक ( स्त्री० ) पहिनने के कपड़े, परिच्छुद ।  
 पोशीदा ( वि० ) गुप्त, छिपा हुआ ।  
 पोप ( पु० ) पालन, परवरिश ।  
 पोपक तत् ( पु० ) [ पुप् + यक् ] पालक, पालनकर्त्ता,  
 भरणकारी, सहायता देने वाला ।  
 पोपण तत् ( पु० ) [ पुप् + अनट् ] प्रतिपालन, रक्षण,  
 पोपणीय तत् ( वि० ) पोष्य, पोसने योग्य, पोपण  
 करने के उपयुक्त ।  
 पोपयितु तत् ( पु० ) कोकिल, भर्त्ता, पति,  
 स्वामी ।

पोषा तत् ( पु० ) पोषण, पालयिता, पालन करने  
 वाला ।  
 पोष्य तत् ( वि० ) पाल्य, पोषणीय, पालन करने  
 योग्य ।—पुत्र ( पु० ) दत्तक पुत्र, पालन पोषण के  
 द्वारा बनाया हुआ पुत्र ।—वर्ग ( पु० ) अवर्य  
 पालनीय, वृद्ध पिता माता आदि, परिजन वर्ग ।  
 पोसना दे० ( क्रि० ) पालन पोषण करना, रखा  
 करना ।  
 पोसना दे० ( पु० ) अफीम का वृक्ष, दाने का पेड़ ।  
 पोह दे० ( पु० ) प्रातःकाल, भोर, तड़का, बिहान,  
 सवेरा ।  
 पोहना दे० ( क्रि० ) रोटी बनाना । [ करने-धोला ।  
 पोहारी तत् ( वि० ) पयहारी, केवल दूध का आहार  
 पोहियहि दे० ( क्रि० ) परोइये, गूँधिये, पोहना  
 चाहिये ।  
 पौ दे० ( स्त्री० ) जल सत्र, चौपड़ के पासे का एकका ।  
 पौगण्ड तत् ( पु० ) अवस्था विशेष, पाँच वर्ष से  
 सोलह वर्ष की अवस्था तक ।  
 पौंचा ( पु० ) साढ़े पाँच का पहाड़ा ।  
 पौड़ा दे० ( पु० ) ईँछु विशेष, उख; पौड़ा ।  
 पौंदना दे० ( क्रि० ) सोना, शयन करना, लेटना ।  
 पौंदारा दे० ( क्रि० ) सुलाप, शयन कराप ।  
 पौण्डरीक दे० ( वि० ) पुण्डरीक सम्बन्धी, कमल का ।  
 पौण्ड्र तत् ( पु० ) देश विशेष, चन्देल देश, भीमसेन  
 के शङ्ख का नाम, ईँछु विशेष, पौंदा, उख ।  
 पौंड्रक तत् ( पु० ) जाति विशेष, ईँछु विशेष,  
 पुण्ड्र देश का एक राजा पौण्ड्रक वासुदेव नाम से  
 इनकी प्रसिद्धि है । जरासन्ध के ये बड़े मित्र थे ।  
 इनके पिता का नाम वसुदेव था । वसुदेव की दो  
 पत्नियाँ थीं, सुतनु और नाचाडी, सुतनु के गर्भ से  
 पौंड्रक और नाचाडी के गर्भ से कपिल उत्पन्न  
 हुए थे, कपिल संसारत्यागी होकर योगी हो गये ।  
 अपना नाम वासुदेव रख कर पौंड्रक राज्य करते  
 थे । वासुदेव श्रीकृष्ण द्वारिका ही से इसकी  
 डिठाई सुना करते थे । श्रीकृष्ण का वासुदेव कहा  
 जाना पौण्ड्रक से सहा नहीं जाता था । पौण्ड्रक  
 कहा करता था मैं शङ्ख चक्र गदाधारी हूँ, मेरे  
 जैसी समता किस में है, इसी प्रकार वह अपनी

प्रकोप्या ( स्त्री० ) एक अप्सरा का नाम ।  
 प्रक्रम तत्० ( पु० ) क्रम, अवसर, उद्योग, आरम्भ, अनुष्ठान । [ आरम्भ करना, आगे बढ़ना ।  
 प्रक्रमण ( पु० ) भली भाँति घूमना, पार करना,  
 प्रक्रान्त तत्० ( पु० ) [ प्र + क्रम + क्त ] आरब्ध,  
 शु किया हुआ, आरम्भ किया हुआ, अनुष्ठित ।  
 प्रक्रिया तत्० ( स्त्री० ) राजाश्यों का चामर व्यजन और  
 छत्र धारणादि व्यापार, देवचेष्टा, दैवकर्म, रीति,  
 प्रकार, विधि ।  
 प्रक्रिञ्च तत्० ( वि० ) रूख, सन्तुष्ट, पसीना से लैदफद ।  
 प्रक्लेद ( पु० ) नमी, तरी ।  
 प्रक्षय ( पु० ) क्षय, नाश, वरबाही ।  
 प्रक्षाल ( पु० ) प्रायश्चित । [ शुद्ध करना ।  
 प्रक्षालन तत्० ( पु० ) पखारना, धोना, साफ़ करना,  
 प्रक्षिप्त ( पु० ) फेंका हुआ, पीछे से मिलाया हुआ ।  
 प्रक्षेप तत्० ( पु० ) फेंकना, त्यागना, त्याग करना,  
 छोड़ना ।  
 प्रखर तत्० ( पु० ) तीखा, तीक्ष्ण, निश्चित । ( वि० )  
 घोड़े की जीन, चारजामा ।—ता ( स्त्री० ) तेज़ी,  
 उग्रता ।  
 प्रखरांशु तत्० ( वि० ) तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण ।  
 प्रख्यान तत्० ( वि० ) प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी,  
 कीर्तिमान् ।  
 प्रख्याति तत्० ( स्त्री० ) प्रसिद्धि, सुयश, नामवरी ।  
 प्रगट तत्० ( वि० ) स्पष्ट, खुला हुआ, प्रकट, व्यक्त,  
 प्रसिद्ध, प्रत्यक्ष, जाहिर, विदित ।  
 प्रगटना दे० ( क्रि० ) व्यक्त होना, प्रसिद्ध होना,  
 जाहिर होना, विदित होना ।  
 प्रगल्भ तत्० ( वि० ) प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभास्वित,  
 दाम्भिक, व्यापक, छट, डीठ, दम्भ युक्त, उपस्थित  
 बुद्धि वाला, शास्त्र विजयी ।—ता ( स्त्री० )  
 प्रागल्भ्य, दाम्भिकता, डिठाई ।—ा ( स्त्री० ) प्रौढ़ा  
 —वचना ( स्त्री० ) नायिका विशेष, वात चीन करते ही  
 करते अपना दुःख, क्रोध और उलहना प्रकट करे ।  
 प्रगाढ़ तत्० ( वि० ) रङ्ग, कठोर, अधिक, अतिशय,  
 बहुल, कूच्छ, कष्ट ।  
 प्रगुण तत्० ( वि० ) मरल, फल, उदार । ( पु० ) उत्तम  
 स्वभाव ।

प्रगृहीत ( वि० ) भली भाँति ग्रहण किया हुआ,  
 जिसका उच्चारण सन्धि के नियमों पर ध्यान रखे  
 बिना किया गया हो ।  
 प्रगृह्य ( वि० ) ग्रहण करने योग्य, सन्धि के नियमों  
 का ध्यान रखे बिना उच्चारण करने योग्य ।  
 प्रग्रह तत्० ( पु० ) तुला सूत्र, तुलारज्जु, तराजू की  
 डोरी, पशु बाँधने की डोरी, लगाम, पगडा,  
 बन्दी, स्तुतिपाठक ।  
 प्रग्राह तत्० ( पु० ) बाँधने की डोरी, रस्सी ।  
 प्रघटक ( पु० ) सिद्धान्त ।  
 प्रघटी दे० ( स्त्री० ) कुम्हिया, सोना आदि धातुओं के  
 गलाने का पात्र, घरिया, प्रगट हुई । [ दालान ।  
 प्रघाण तत्० ( पु० ) द्वार के बाहर का बरामदा या  
 प्रघसू ( पु० ) रावण के एक सेनानायक राक्षस का  
 नाम । दैत्य, राक्षसी ( वि० ) भक्षक, खानेवाला ।  
 प्रघ्नयड तत्० ( वि० ) अत्युग्र, नीम, तीक्ष्ण, असह्य,  
 भयानक ।—मूर्ति ( स्त्री० ) प्रताप युक्त शरीर,  
 भयानक आकार ।—ता ( स्त्री० )—त्य ( पु० )  
 तेज़ी, तीखापन, प्रबलता, उग्रता, भयङ्करता ।—ा  
 ( स्त्री० ) सफेद फूल वाली सफेद दूध, दुर्गा,  
 जयदी, दुर्गा की एक सखी । [ फैलाव, विस्तृत ।  
 प्रचलन तत्० ( पु० ) प्रचार, प्रसार, प्रसिद्ध, व्यापकता,  
 प्रचलित तत्० ( वि० ) प्रसिद्ध, व्यापक, सर्वत्र शुद्धित,  
 सर्वत्र व्यवहृत, जिसका व्यवहार सब स्थानों में  
 होता हो । [ प्रचलन, विस्तार, व्यापकता ।  
 प्रचार तत्० ( पु० ) [ प्र + चर् + घञ् ] प्रकाश व्यक्त,  
 प्रचारक तत्० ( वि० ) प्रकाशक, व्यक्तकारक, प्रसिद्ध-  
 कर्ता, फैलाने वाला । [ स्पष्टकरण, चराना ।  
 प्रचारण तत्० ( पु० ) व्यक्त, करण, प्रकाश करण  
 प्रचारना दे० ( क्रि० ) प्रसिद्ध करना, फैलाना, चलाना ।  
 प्रचारित तत्० ( वि० ) फैलाया हुआ, चलाया  
 हुआ, प्रसिद्ध किया हुआ, चलन में आया  
 हुआ ।  
 प्रचुर तत्० ( वि० ) अधिक, बहुत यथेष्ट ।—ता  
 ( स्त्री० ) बाहुल्य, आधिक्य, अधिकता, अधिकाई ।  
 —त्य ( पु० ) यथेष्टता, आधिक्य ।—पुंगव ( पु० )  
 चोर, तस्कर ।  
 प्रचेतसी तत्० ( स्त्री० ) प्रचेता गुणि की कन्या ।



प्रकट तत् ( गु० ) [ प्र + कट् + घञ् ] स्पष्ट, प्रकटित, प्रकाशित, व्यक्त ।  
 प्रकटन तत् ( पु० ) [ प्र + कट् + अनट् ] प्रकाशन, व्यक्तीकरण, प्रकाश करना, व्यक्त करना ।  
 प्रकटित तत् ( वि० ) प्रकाशित, व्यक्त, स्पष्ट ।  
 प्रकम्प तत् ( पु० ) कँपन, कँपकंपाहट, धरधरी ।  
 प्रकम्पन तत् ( पु० ) वायु, नरक विशेष ।  
 प्रकर तत् ( पु० ) फैले हुए कुसुम आदि, समूह, दल, गिरोह ।  
 प्रकरण तत् ( पु० ) [ प्र + कृ + अनट् ] प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति, रूपक भेद, ग्रन्थ सन्धि, ग्रन्थ विच्छेद, निरूपणीय एक विषय की समाप्ति एकाध्यायिक सूत्रों का समूह, प्रसङ्ग, काण्ड, अध्याय ।  
 प्रकरी तत् ( स्त्री० ) नाट्याङ्ग, चत्वर भूमि, नाटक खेजने की वेदी । [ उरकर, श्रेष्ठता, प्रशस्त ।  
 प्रकर्ष तत् ( पु० ) [ प्र + कृप् + अल् ] उत्तमता, प्रकाण्ड तत् ( वि० ) बृहत्, अतिशय, विशाल ।  
 ( पु० ) वृक्ष स्कन्ध, वृक्ष का वह स्थान जहाँ से शाखा निकलती है ।  
 प्रकाम तत् ( गु० ) [ प्र + काम् + घञ् ] यथेप्सित, यथेष्ट, इच्छा पूर्वक, इच्छापूर्ति, मनमाना, मन भर, लूष । = [ भौंति, तरह, क्रम, मुक्ति ।  
 प्रकार तत् ( पु० ) [ प्र + कृ + घञ् ] दङ्ग, रीति प्रकारान्तर तत् ( वि० ) [ प्रकार + अनन्तर ] अन्य विध, अन्य प्रकार, दूसरी रीति ।  
 प्रकाश तत् ( पु० ) [ प्र + काम् + अल् ] व्यक्त, विकाश, उदय, दीप्ति, प्रकट, स्पष्ट, प्रसिद्ध, ख्याति, उज्जला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज, चमक, फैलाव, दीप्तिमान ।  
 प्रकाशक तत् ( पु० ) प्रकाशकर्ता, दीप्तिकारक, प्रकाश करने वाला, उजाला करने वाला ।  
 प्रकाशन तत् ( पु० ) [ प्र + काश् + अनट् ] प्रचार करण, व्यक्तकरण, फैलाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, प्रकाश करना ।  
 प्रकाशित तत् ( वि० ) [ प्र + काश् + क्त ] प्रकाश, विशिष्ट, अविकृत, प्रकटित, उदित, व्यक्तीभूत, प्रसिद्ध, उदित ।

प्रकाशी ( पु० ) चमकता हुआ ।  
 प्रकाश्य तत् ( वि० ) प्रकाशनीय, प्रकटनीय, प्रकाश करने योग्य, प्रकाश करने के उपयुक्त ।  
 प्रकास ( पु० ) प्रकाश का अपभ्रंश ।  
 प्रकीर्ण तत् ( वि० ) [ प्र + कृ + क्त ] विरहित, विस्तृत, अनेक प्रकार से मिश्रित । ( वि० ) ग्रन्थविच्छेद, अध्याय, काण्ड, चामर ।—क ( पु० ) चँवर, अध्याय प्रकरण, विस्तार, फुटकर, जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुओं को मिलावट हो ।—केशी ( स्त्री० ) दुर्गा । [ वर्णन, कथन ।  
 प्रकीर्तन तत् ( पु० ) [ प्र + कृत् + अनट् ] प्रस्तावन, प्रकीर्ति तत् ( वि० ) कथित, भाषित, उक्त, व्याहृत, वर्णित, निरूपित । [ युक्त, क्रुद्ध ।  
 प्रकुपित तत् ( वि० ) क्रोधान्वित, क्रोधित, क्रोध-प्रवृत्त तत् ( वि० ) उत्तमता से किया हुआ, यथार्थ, सत्य, ब्राम्हणिक ।  
 प्रकृतार्थ तत् ( वि० ) [ प्रकृत + अर्थ ] उचित अर्थ, उचित व्यवहार, यथार्थ, उपयुक्त ।  
 प्रकृति तत् ( स्त्री० ) [ प्र + कृ + क्त ] स्वभाव, धर्म, गुण, माया, ईश्वर की शक्ति । चरित्र, योनि, उत्पत्ति स्थान, उद्भव क्षेत्र, चिन्ह, जन्म क्षेत्र, शङ्क, स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोप, राष्ट्र, राज्य, दुर्ग, किला, पुरवासी, समूह, शक्ति, परमात्मा, पञ्चभूत, इक्षीस अक्षर के पाद वाला छन्द विशेष, माता, धातु, प्रत्यय के पहले का भाग, सत्त्व, रज और तम इन त्रिगुणों की साम्यावस्था, प्रधान, माया, शक्ति, चैतन्य, भगवान् की माया नाम की शक्ति ।—सिद्ध ( वि० ) स्वभाव जात, स्वभाव सिद्ध, स्वभाविक ।  
 प्रकृष्ट तत् ( गु० ) [ प्र + कृप् + क्त ] उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, मुख्य, उत्कृष्ट, प्रधान, भला ।—ता ( स्त्री० ) श्रेष्ठता, उत्तमता ।  
 प्रकोट ( पु० ) परिखा, परिकेय, पुस्त, शहरपनाह ।  
 प्रकोप ( पु० ) अत्यन्त अधिक कोप । चपलता, किसी रोग की प्रबलता ।  
 प्रकोष्ठ तत् ( पु० ) कोठे के नीचे का घर, हाथ का पहुँचा, कलाई से केहुनी तक, कलाई और केहुनी के बीच का भाग ।

प्रकोपणा ( स्त्री० ) एक अप्सरा का नाम ।  
 प्रक्रम तत्० ( पु० ) क्रम, ध्वसर, उद्योग, आरम्भ, अनुष्ठान । [ आरम्भ करना, आगे बढ़ना ।  
 प्रक्रमण ( पु० ) भली भाँति घूमना, पार करना,  
 प्रक्रान्त तत्० ( पु० ) [ प्र + क्रम + क्त ] आरम्भ,  
 यु किया हुआ, आरम्भ किया हुआ, अनुष्ठित ।  
 प्रक्रिया गन्० ( स्त्री० ) राजाओं का चारमर व्यजन और  
 छत्र चारणादि व्यापार, देवचेष्टा, दैवकर्म, रीति,  
 प्रकार, विधि ।  
 प्रक्रिन्न तत्० ( वि० ) तृप्त, सन्तुष्ट, पसीना से लदफट ।  
 प्रक्रुद्ध ( पु० ) नमी, नरी ।  
 प्रक्षय ( पु० ) क्षय, नाश, बरपादी ।  
 प्रक्षाल ( पु० ) प्रायश्चित्त । [ शुद्ध करना ।  
 प्रक्षालन तत्० ( पु० ) पलारना, धोना, स्नाप्य करना,  
 प्रक्षिप्त ( पु० ) फेंका हुआ, पीछे से मिलाया हुआ ।  
 प्रक्षेप तत्० ( पु० ) फेंकना, त्यागना, त्याग करना,  
 छोड़ना ।  
 प्रखर तत्० ( पु० ) तीखा, तीक्ष्ण, निश्चित । ( वि० )  
 घोड़े की जीन, चारजामा ।—ता ( स्त्री० ) तेजी,  
 उम्रता ।  
 प्रखण्डानु तत्० ( वि० ) तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण ।  
 प्रख्यान तत्० ( वि० ) प्रसिद्ध, विख्यात, अशस्वी,  
 कीर्तिमान् ।  
 प्रख्याति तत्० ( स्त्री० ) प्रसिद्धि, सुवश, नामवरी ।  
 प्रगट तत्० ( वि० ) स्पष्ट, खुला हुआ, प्रकट, व्यक्त,  
 प्रसिद्ध, प्रखर, जाहिर, विदित ।  
 प्रगटना दे० ( क्रि० ) व्यक्त होना, प्रसिद्ध होना,  
 जाहिर होना, विदित होना ।  
 प्रगल्भ तत्० ( वि० ) प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभान्वित,  
 दाम्भिक, व्यापक, धृष्ट, डीठ, दम्भ युक्त, उपस्थित  
 बुद्धि वाला, शास्त्र विजयी ।—ता ( स्त्री० )  
 प्रागल्भ्य, दाम्भिकता, टिठाई ।—ता ( स्त्री० ) प्रौढ़ा  
 —यचना ( स्त्री० ) नायिका विशेष, बात चीन करते ही  
 करते अपना दुःख, क्रोध और उलहना प्रकट करे ।  
 प्रगाढ़ तत्० ( वि० ) दृढ़, कठोर, अधिक, अतिशय,  
 बहुत, कूच्छ, फट ।  
 प्रगुण तत्० ( वि० ) सरल, अजु, उदार । ( पु० ) उत्तम  
 स्वभाव ।

प्रगृहीत ( वि० ) भली भाँति ग्रहण किया हुआ,  
 जिसका उच्चारण सन्धि के नियमों पर ध्यान रखे  
 बिना किया गया हो ।  
 प्रगृह्य ( वि० ) ग्रहण करने योग्य, सन्धि के नियमों  
 का ध्यान रखे बिना उच्चारण करने योग्य ।  
 प्रग्रह तत्० ( पु० ) तुला सूत्र, तुलारज्जू, तराजू की  
 डोरी, पशु बाँधने की डोरी, लगाम, पगहा,  
 बन्दी, स्तुतिपाठक ।  
 प्रग्राह तत्० ( पु० ) बाँधने की डोरी, रस्सी ।  
 प्रघटक ( पु० ) सिद्धान्त ।  
 प्रघटी दे० ( स्त्री० ) कुल्हिया, सेना आदि धातुओं के  
 गलाने का पात्र, धरिया, प्रगट हुई । [ दातान ।  
 प्रघाण तत्० ( पु० ) द्वार के बाहर का परामदा या  
 प्रघ्नू ( पु० ) रावण के एक सेनानायक राक्षस का  
 नाम । दैत्य, राक्षसी ( वि० ) भक्षक, खानेवाला ।  
 प्रघ्नवत् तत्० ( वि० ) अशुभ, नीच, तीक्ष्ण, असह,  
 भयानक ।—मूर्ति ( स्त्री० ) प्रताप युक्त शरीर,  
 भयानक आकार ।—ता ( स्त्री० )—त्व ( पु० )  
 तेजी, तीखापन, प्रबलता, उम्रता, भयङ्करता ।—  
 ( स्त्री० ) सफेद फूल वाली सफेद वृक्ष, दुर्गा,  
 चण्डी, दुर्गा की एक सखी । [ फैलाव, विस्तृत ।  
 प्रचलन तत्० ( पु० ) प्रचार, प्रसार, प्रसिद्ध, व्यापकता,  
 प्रचलित तत्० ( वि० ) प्रसिद्ध, व्यापक, सर्वत्र गृहीत,  
 सर्वत्र व्यवहृत, जिसका व्यवहार सब स्थानों में  
 होता हो । [ प्रचलन, विस्तार, व्यापकता ।  
 प्रचार तत्० ( पु० ) [ प्र + चर् + घञ् ] प्रकाश व्यक्त,  
 प्रचारक तत्० ( वि० ) प्रकाशक, व्यक्तकारक, प्रसिद्ध-  
 कर्ता, फैलाने वाला । [ स्पष्टकरण, चराना ।  
 प्रचारण तत्० ( पु० ) व्यक्त, करण, प्रकाश करण  
 प्रचारना दे० ( क्रि० ) प्रसिद्ध करना, फैलाना, चलाना ।  
 प्रचारित तत्० ( वि० ) फैलाया हुआ, चलाया  
 हुआ, प्रसिद्ध किया हुआ, चलन में आया  
 हुआ ।  
 प्रचुर तत्० ( वि० ) अधिक, बहुत यथेष्ट ।—ता  
 ( स्त्री० ) बाहुल्य, आधिक्य, अधिकता, अधिकारी ।  
 —त्व ( पु० ) यथेष्टता, आधिक्य ।—पुरुष ( पु० )  
 चोर, तस्कर ।  
 प्रचेतसी तत्० ( स्त्री० ) प्रचेता मुनि की कन्या ।

प्रवेत्ता तत् ( पु० ) वरुण, मुनि विरोध प्रकृष्टचित्त, प्रशस्त चित्त, प्राचीन चहंराज का पुत्र, प्रजापति विरोध, ब्रह्मा का पुत्र, लोक पितामह, ब्रह्मा ने अपने शरीर से वेद वेदाङ्गवित् पुत्रों की सृष्टि की, उनके नाम ये हैं—अग्नि, पुलस्त्य, पुलह, मरीचि, भृगु, अङ्गिरा, भृगु, चशिष्ट, वोढु, कपिल, आसुरी, कवि, मंडू, शङ्ख, पञ्चशिख और प्रचेता ।

प्रचेल ( पु० ) पीला चन्दन ।—क ( पु० ) घोड़ा ।  
प्रचोदक ( वि० ) प्रेरणा करने वाला, उत्तेजित करने वाला ।

प्रचोदन ( पु० ) प्रेरणा, उत्तेजना, आज्ञा, नियम ।  
प्रचोदित तत् ( वि० ) प्रेरित, नयोजित, गमनानु-  
मति प्राप्त, जाने की अनुमति प्राप्त, सम्यक् कथित ।  
प्रच्युत तत् ( वि० ) पतित, चरित, गिरा हुआ,  
स्थलित, पदभ्रष्ट, पदच्युत ।

प्रच्युत ( पु० ) पड़ने वाला, भ्रष्ट कर्ता ।  
प्रच्युत तत् ( पु० ) [ प्र + छ्द्य + अल् ] आच्छादन,  
उत्तरीय वस्त्र, चदर ।—पट ( पु० ) उत्तरीय वस्त्र,  
पिछौरी ।

प्रच्युत तत् ( वि० ) आच्छन्न, आच्छादित, गुप्त ।  
प्रच्युतिका तत् ( स्त्री० ) कैं, उलटी, उद्गार, वमन,  
वमि रोग विरोध । [ चादर ।

प्रच्युत तत् ( पु० ) डरका, पिछौरी, ओढ़नी,  
प्रजय तत् ( पु० ) प्रकृष्टवेग, अतिशय वेग ।

प्रजरण तत् ( पु० ) उबलन, जलन, बरन ।

प्रजरित तत् ( वि० ) उबलित, जलाया हुआ, भस्म ।

प्रजक्ष्य तत् ( पु० ) वाक्य विरोध, कहानी, किस्सा ।

—न ( पु० ) बातचीत ।

प्रजा तत् ( स्त्री० ) सन्तान, सन्तति, वंशवर्ती मनुष्य,  
अधिकारस्थित, रैयत ।—काम ( पु० ) पुत्रप्राप्ति  
की इच्छा रखने वाला ।—कार ( पु० ) प्रजा  
अपन्न करने वाला प्रजापति, ब्रह्मा ।

प्रजागर तत् ( पु० ) अतिशयजागरण, अत्यन्त  
चिन्ता ।—ा ( स्त्री० ) एक अष्टरा का नाम ।

प्रजाधिकारी राज्य तत् ( पु० ) प्रजा सत्तात्मक-राज्य  
शासन, जेहां का राज्य प्रजा की व्यवस्था के अनु-  
सार चलता हो ।

प्रजापति तत् ( पु० ) ब्रह्मा, दत्त, कश्यप आदि  
महर्षि, महीपाल, राजा, जामाता, दिवाकर,

बन्धि, स्वष्टा, दस प्रजापति, पिता, स्वनामध्यात  
कोट विरोध ।

प्रजारी दे० ( क्रि० ) जला कर, भस्म करके, दग्ध करके ।  
यथा—वागर्हि ढोल देहि सच तारी ।

नगर केरि पुनि पूँछ "प्रजारी ॥

—रामायण ।

प्रजावनी तत् ( स्त्री० ) भ्रातृजाया, उपेष्ट भ्रातृपत्नी,  
पुत्रवती स्त्री । [ आहार ।

प्रजासन दे० ( पु० ) प्रजा का भोजन, प्रजाशन, साधारण  
प्रजित ( पु० ) वित्त करने वाला ।

प्रजाहित तत् ( पु० ) प्रजा का उपकार, प्रजा का शुभ ।

प्रजेश या प्रजेश्वर तत् ( पु० ) राजा, महीपाल,  
भूपाल ।

प्रजोग ( पु० ) प्रयोग ।

प्रज्जटिका ( स्त्री० ) छन्द विरोध, जिसके पर्येक चरण  
में १६ मात्राएं होती हैं ।

प्रज्ञ तत् ( वि० ) विश्व, अभिज्ञ, पण्डित, प्रवीण ।  
—ता ( स्त्री० ) विद्वत्ता, पाण्डित्य ।

प्रज्ञप्ति तत् ( स्त्री० ) निवेदन, विज्ञापन, सङ्केत ।

प्रज्ञा तत् ( स्त्री० ) बुद्धि, मति, धी ।—चक्षु ( पु० )  
धृतराष्ट्र । ( वि० ) बुद्धिमान्, ज्ञानी, ज्ञान, दृष्टि के

द्वारा देखने का वा, चक्षु ।—यारमिता ( स्त्री० )  
बौद्ध ग्रन्थानुसार गुणों की पराक्रांता ।—मय ( पु० )

विद्वान्, पण्डित । [ अवलम्ब ।

प्रज्वलित तत् ( वि० ) अतिशय उबलन विशिष्ट,  
प्रज्वलन तत् ( पु० ) पत्नी की गति विरोध, प्रथम

वङ्गयन, तिर्यग्गमन ।

प्रण तत् ( पु० ) पन, प्रतिज्ञा, कौशल, करार, पुराण,  
पुरातन, बहुकालीन ।—ख ( पु० ) नख का

अप्रमाण ।

प्रणत तत् ( वि० ) [ प्र + नम् + क्त ] प्रणति विशिष्ट,  
कृत प्रणाम, चरणों में गिरा हुआ, नम्र, विनत ।

—पाल ( वि० ) शरणागतारक्षक, दीनपालक ।

प्रणानि तत् ( स्त्री० ) [ प्र + नम् + क्त ] प्रणाम, प्रणि-  
पात, नम्रता ।

प्रणय तत् ( पु० ) [ प्र + नी + यत् ] प्रेम, प्रीति,  
अनुराग, अनुक्ति, विश्रम्भ, निर्माण ।

प्रणयन तत् ( पु० ) [ प्र + नी + यत् ] रचन,  
प्रस्तुतकरण, निर्माण, संस्कार करण, रचना, ग्रंथन ।

प्रणयिनो तत् ( स्त्री० ) प्रेमास्पदा, अनिता, प्रिया, भार्या, अङ्गना, स्त्री ।  
 प्रणयो तत् ( वि० ) प्रेमी, अनुरागी, अनुरक्त ।  
 प्रणय तत् ( पु० ) श्रोक, मन्त्रसेतु ।  
 प्रणयना ( क्रि० ) प्रणाम करना ।  
 प्रणयो दे० ( क्रि० ) प्रणाम करता हूँ, नम्र होता हूँ ।  
 प्रणाम तत् ( पु० ) [ प्र + नम्र + घञ् ] प्रणति, प्रणि-  
 पात, अत्यन्त भक्ति और श्रद्धा के सहित नमस्कार ।  
 प्रणामी तत् ( वि० ) नमस्कारी, देवताओं के प्रणाम  
 के लिये दी जाने वाली दक्षिणा ।  
 प्रणायक ( पु० ) नेता, सेना, नायक ।  
 प्रणाल ( पु० ) पनाला, मोरी, नाकी ।  
 प्रणाली तत् ( स्त्री० ) धारा, रीति, प्रकार, अङ्ग  
 निकलने का मार्ग, परम्परा, पनाला, नदवा ।  
 प्रणाश तत् ( पु० ) ध्वंस, नाश, उपात।—न ( पु० )  
 नाश करने का भाव या क्रिया।—ी ( पु० ) नाश  
 करने वाला । [ प्रयत्न, प्रवेशन ।  
 प्रणिधान तत् ( पु० ) मनेयोग, अवगति, ध्यान,  
 प्रणिधि तत् ( पु० ) चर, दूत, प्रार्थना, अवधान ।  
 प्रणिपात तत् ( पु० ) प्रणति, प्रणाम, नमस्कार ।  
 प्रणिहित तत् ( वि० ) रक्षित, स्थापित, मनोयोग  
 कृत, समाहित । [ पाला ।  
 प्रणी तत् ( वि० ) अटल प्रण वाळा, दृढ़ प्रतिज्ञा  
 प्रणीत तत् ( वि० ) संस्कृत अग्नि, यज्ञ मन्त्र द्वारा  
 प्रज्वलित अग्नि, घनापा हुआ, रचा हुआ, तैयार  
 किया हुआ।—ा ( स्त्री० ) यज्ञ अङ्ग विशेष,  
 यज्ञ पात्र विशेष ।  
 प्रणीता ( पु० ) स्वमिता, कर्त्ता ।  
 प्रणोय ( वि० ) लौकिक संस्कार युक्त, अधीन, वशवर्त्ती ।  
 प्रणोदित तत् ( वि० ) प्रेरित ।  
 प्रतनु ( वि० ) चीख, दुबला, सूक्ष्म, मिहीन, शरीर,  
 बहुत छोटा ।  
 प्रतपन ( पु० ) तप्तकरना, उत्ताप, गर्मी ।  
 प्रतप्त तत् ( वि० ) उच्च, प्रभाववान् ।  
 प्रतान तत् ( पु० ) विस्तार, चौड़ा, बायु रोग विशेष ।  
 प्रताप तत् ( पु० ) प्रभाव, तेज, प्रखरता, शूरता,  
 ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, हृकषाब्ज।—ी या चान,  
 प्रतापी, हृकषालमंद ।

प्रतापसिंह तत् ( पु० ) मेवाड़ के प्रसिद्ध स्वदेरासेवक  
 सन्यासी महाराणा, चित्तौर के अधिपति, महाराणा  
 उदयसिंह के पुत्र । इन्होंने धर्मरक्षा के लिये जो  
 कष्ट सहे हैं उससे इनका नाम इतिहास में प्रसिद्ध  
 है । राजस्थान के समस्त राजा मुगलसम्राट् के  
 अधीन हो गये । स्वार्थ के वश होकर धर्म की  
 अवहेला कर समस्त राजाओं ने अपनी स्वाधीनता  
 बेच दी थी, परन्तु महाराणा ने अनेक कष्ट सह  
 कर, अपनी स्वाधीनता की रक्षा की थी । एक  
 समय अम्बर के राजकुमार मानसिंह ( अकबर पुत्र  
 सलीम का साला ) दिल्ली जाने के समय प्रताप की  
 राजधानी कमलमीर गये । प्रताप ने उनके स्वागत  
 के लिये बड़ी तैयारी की, भोजन के समय प्रताप  
 का पुत्र अमरसिंह वहाँ खड़ा था । मानसिंह  
 प्रताप के न जाने का कारण बार बार अमरसिंह  
 से पूछने लगे । अन्त में प्रताप वहाँ उपस्थित हुए  
 और बोले कि " जो राजपूत कुलाङ्गार अपनी  
 बहिन घेदिप्राँ सुसस्मानों के प्याहता हैं और तुकों  
 के साथ निल भोजन करता है, उसके साथ सूर्य-  
 वंशी राजा भोजन नहीं कर सकता । " इस बात  
 से मानसिंह का क्रोध बढ़ गया । मान दिल्ली पहुँच  
 कर अनेक जुलबल फैला कर प्रताप को कष्ट पहुँ-  
 चाने लगा । अन्त में उसने अकबर से कह कर  
 प्रताप पर चढ़ाई करा दी । परन्तु उस चढ़ाई से  
 प्रताप डरने वाले नहीं थे । मुट्ठी भर राजपूतों को  
 लेकर महाराणा ने सुसस्मानों सेना का सामना  
 किया, इसी प्रकार वे यावज्जीवन लड़ते रहे,  
 परन्तु स्वाधीनता वन्दने नहीं देखी । इन्हीं को  
 धर्मरक्षा के कारण भारत ने " हिन्दुओं के सूर्य "  
 की उपाधि दी थी । आज तक इनके वंशज भी  
 उसी गौरवाम्पद उपाधि से भूषित किये जाते हैं ।  
 धर्मरक्षा के कारण ये चमर हैं ।  
 प्रतापी तत् ( वि० ) प्रतापवान्, तेजस्वी, तेजधारी,  
 ऐश्वर्यवान्, प्रभावशाली ।  
 प्रतारक तत् ( वि० ) बयक, ठग, धूर्त, झूठ ।  
 प्रतारण तत् ( पु० ) चतुरा, ठगई, धूर्तता, शठता ।  
 प्रतारणा तत् ( स्त्री० ) प्रवृत्ता मिथ्या उल्लास,  
 ठगई, धूर्तता ।

प्रतारित तत् ( वि० ) प्रवृत्ति, छला हुआ, धोखा खाया हुआ, मिथ्या कथित, ठगा हुआ ।

प्रतिचा ( स्त्री० ) रोड़ा, धनुष की डोरी, चिन्हा, उधा ।

प्रति तत् ( उपसर्ग ) प्रतिनिधि, मुख्य, सदस्य, लक्षण, चिन्ह एक एक, सय, समस्त, भाग, अंश, प्रतिदान, स्तोक, अक्षर, निश्चय, प्रशस्ति, विरोध, समाधि, अभिमुखता, आभिमुख्य, स्वभाव, पास, सामने बैसा ही ज्यों का त्यों ।

प्रतिकार, प्रतीकार तत् ( पु० ) बदला, पलटा, उपाय ।

प्रतिकारक ( पु० ) प्रतिकार करने वाला, बदला चुकाने वाला ।

प्रतिक्रिय ( पु० ) जवाबी का जवाबीदार ।

प्रतिकूप ( पु० ) परिला, खाई ।

प्रतिकूल तत् ( वि० ) विपक्ष, विरुद्ध, डलटा, प्रतिबन्धक ।—ता या त्व ( स्त्री० ) विपक्षता, प्रतिपक्षता, विरोध ।—( स्त्री० ) सौत, सराही ।

प्रतिकृति ( स्त्री० ) तसवीर, मूर्ति छाया, बदला, प्रतीकार, रजा । [ फल, बदला ।

प्रतिक्रिया तत् ( स्त्री० ) प्रतिकार, प्रतिविधान, प्रति-

प्रतिक्षण तत् ( पु० ) क्षण क्षण, पलपल, प्रतिपद ।

प्रतिग्रह तत् ( पु० ) दान, ग्राह्य के विधिवद्दान, ग्रहविशेष ।

प्रतिग्रहण तत् ( पु० ) आदान, ग्रहण, स्वीकार, दान लेना, बदला लेना, एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु लेना ।

प्रतिग्रहीत ( पु० ) दान लेने वाला, प्रतिग्रहीता ।

प्रतिघात तत् ( पु० ) मारण, आघात, मार के बदले की मार ।—नी शत्रु, बैरी, विद्रोही ।

प्रतिचिकीर्षु तत् ( वि० ) प्रतिकार करने का इच्छुक । बदला चुकाने की इच्छा रखने वाला ।

प्रतिचिन्तन तत् ( पु० ) चिन्तित का पुनः चिन्तन, बार बार ध्यान ।

प्रतिच्छा ( स्त्री० ) प्रतीक्षा, बाट, इन्तज़ार ।

प्रतिच्छाया तत् ( स्त्री० ) प्रतिबिम्ब, प्रतिकृति, परछाई ।

प्रतिच्छाई दे० ( पु० ) प्रतिबिम्ब, छाया, परछाई ।

प्रतिज्ञा तत् ( स्त्री० ) अज्ञोकार, शपथ, प्रण, पण, वादा ।—पत्र ( पु० ) अज्ञोकारलिपि, स्वीकार पत्र ।

प्रतिज्ञात तत् ( पु० ) वादा किया हुआ, प्रतिज्ञा किया हुआ, अज्ञोकार, स्वीकृत ।

प्रतिज्ञान तत् ( पु० ) अज्ञोकार, प्रतिज्ञा, स्वीकार, पण । [ देखना, पुनः पुनः दर्शन ।

प्रतिदर्शन तत् ( पु० ) दर्शनान्तर दर्शन, फिर फिर

प्रतिदान तत् ( पु० ) दान के बदले का दान, विनिमय, बदला, रखे हुए द्रव्य का लौटाना, धरोहर को लौटा देना, यमानत लौटाना । [ नित्य, सर्वदा ।

प्रतिदिन तत् ( पु० ) प्रत्यह, अहरह, दिन दिन,

प्रतिदेय तत् ( वि० ) पुनर्दातव्य, लौटाने योग्य, फेर देने योग्य ।

प्रतिद्वन्द्व ( पु० ) बराबर वालों का आपस का झगड़ा ।

—ी ( पु० ) शत्रु, बराबरी का विरोधी ।

प्रतिद्वन्द्वता ( स्त्री० ) परावर वालों की लड़ाई ।

प्रतिधानि तत् ( स्त्री० ) प्रतिबन्ध, शब्द का शब्द, भाई ।

प्रतिनिधि तत् ( पु० ) बदली, एवज, प्रधान का स्थानापन्न, प्रतिभू ।—त्व ( पु० ) प्रतिनिधि होने का भाव, किया या काम ।

प्रतिनिर्यातन ( पु० ) अपकार जो अपकार का बदला देने को किया जाय । [ फेरना ।

प्रतिनिवर्त्तन तत् ( पु० ) प्रत्यावर्त्तन, लौटाना

प्रतिपक्ष तत् ( पु० ) बैरी, अरि, शत्रु, रिडु ।—( पु० ) विरुद्धी, शत्रु, बैरी के पक्ष का, शत्रु का साथी ।

प्रतिपद तत् ( स्त्री० ) तिथि विशेष, चन्द्रमा की पहली कला का क्रियाकाल, शुक्ल और कृष्ण पक्ष की पहली तिथि, पावा, पड़वा, प्रतिपदा ।

प्रतिपत्ति तत् ( स्त्री० ) सुख्याति, सम्मान, सम्भ्रम, गौरव, प्रशस्तता, पदपात्रि, प्रशोध, निष्पत्ति, दान, प्रतिष्ठा, यश ।

प्रतिपन्न तत् ( वि० ) जाना हुआ, निश्चित, प्रमाण-सिद्ध, अवगत, अज्ञोकार, प्रतिष्ठित, माननीय, मान्य । [ ज्ञापक, संस्थापक, प्रकाशक ।

प्रतिपादक तत् ( पु० ) प्रतिपत्तिजनक, बोधक,

प्रतिपादन तत् ( पु० ) सम्पादन, बोधन, ज्ञापन, कथन, दान, प्रतिपत्ति ।

प्रतिपादित ( वि० ) जो भली भाँति समझा दिया गया हो, निर्धारित, निरूपित ।

प्रतिपाद्य तत्० ( वि० ) बोधनीय, ज्ञापनीय, कथनीय, वर्णन के योग्य, व्यापन के लायक ।  
 प्रतिपाल ( पु० ) रक्षक, पोषक । [ कर्ता ।  
 प्रतिपालक तत्० ( पु० ) पालनकर्ता, रक्षक, पोषण-  
 प्रतिपालन तत्० ( पु० ) पालन, रक्षण, पोषण ।  
 प्रतिपालना दे० ( क्रि० ) पोसना, पालना, रखना, रक्षा करना ।  
 प्रतिपालित ( वि० ) रक्षित, पालन किया हुआ ।  
 प्रतिपाल्य तत्० ( वि० ) प्रतिपालनीय, रक्षणीय, गोपनीय, पोषणीय, पोष्य, पालन करने योग्य ।  
 प्रतिपुरुष तत्० ( पु० ) प्रतिनिधि, प्रत्येक मनुष्य ।  
 प्रतिप्रसव तत्० ( पु० ) निषेध की हुई वस्तु का पुनः बिधान, एक बार रोक कर पुनः आज्ञा देना ।  
 प्रतिफल तत्० ( पु० ) तुल्यफल, समुचित फल, कर्म के अनुसार फल, जैसा कर्म वैसा फल । कृतप्रतिकार । [ प्राप्त ।  
 प्रतिफलित तत्० ( वि० ) प्रतिविम्बित, प्रतिच्छाया  
 प्रतिबन्ध तत्० ( पु० ) कार्य प्रतिबन्धक, प्रतिद्वन्द्व, विग्रह, बाधा, रुकावट ।  
 प्रतिबन्धक तत्० ( पु० ) प्रतिरोधक, बाधक, निवारक, व्याघातकारक, निवारणकर्ता, रोकने वाला ।  
 —ता ( स्त्री० ) रोक, रुकावट, अड़चन, विग्रह, बाधा ।  
 प्रतिविंब ( पु० ) परछाई, छाया, मूर्ति, चित्र, शीशा ।  
 —क ( पु० ) अनुगामी । [ यरावर का बोद्धा ।  
 प्रतिभट्ट तत्० ( पु० ) प्रत्येक वीर, समान वीर,  
 प्रतिभा तत्० ( स्त्री० ) बुद्धि, ज्ञान, प्रत्युत्पन्नमतिव, दीप्ति, प्रगल्भता ।—शाली ( वि० ) प्रतिभा वाला ।  
 प्रतिभाग तत्० ( पु० ) प्रत्येक अंश, राज्य के हिस्से ।  
 प्रतिभू तत्० ( पु० ) जामिनदार, मनौतिया ।  
 प्रतिम तत्० ( वि० ) तुल्य, सदृश, समान ।  
 प्रतिमा तत्० ( स्त्री० ) प्रतिमूर्ति, मूर्ति के समान, प्रतिकृति, प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, चित्र, छवि ।  
 प्रतिमान तत्० ( पु० ) प्रतिविम्ब, प्रतिच्छाया, हाथ के मल्लक का एक भाग । [ मार्ग ।  
 प्रतिमार्ग तत्० ( पु० ) प्रतिपथ, मार्ग मार्ग, प्रत्येक  
 प्रतिमास तत्० ( पु० ) मास मास, प्रत्येक मास ।

प्रतिमूर दे० ( पु० ) प्रतिविम्ब, परछाई, छाया ।  
 प्रतिमूर्ति तत्० ( स्त्री० ) आकार, छवि, प्रतिमा, प्रति-  
 कृति, मूर्ति के समान मूर्ति ।  
 प्रतियज्ञ तत्० ( पु० ) लिप्ता, बान्ध्या, वन्दी, निग्रह करने का प्रयत्न, गुह्यन्तर का ग्रहण, संस्कार, संशोधन, ग्रहण, प्रतिग्रह ।  
 प्रतियोग तत्० ( पु० ) विरोध, विवाद, प्रतिपक्षता ।  
 —ता ( स्त्री० ) विपक्षता, शत्रुता, विरोध, विवाद, प्रतिस्पर्धा, चढ़ा उतरी ।  
 प्रतियोगी तत्० ( वि० ) विरोधी, प्रतिपक्ष, विरुद्ध पक्ष । ( पु० ) विरोधी, शत्रु, सहयोगी का विपरीत ।  
 —ता ( स्त्री० ) विपक्षता, शत्रुता, विरोध, विवाद, प्रतिस्पर्धा, चढ़ा उतरी ।  
 प्रतिरथ ( पु० ) बराबर का लड़ने वाला ।  
 प्रतिरात्र तत्० ( पु० ) प्रतिरात्रि, प्रत्येक रात ।  
 प्रतिरूप तत्० ( पु० ) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, आकृति ।  
 ( वि० ) समान, सदृश, तुल्य, बराबर ।  
 प्रतिरोध तत्० ( पु० ) तिरस्कार, सत्प्रतिपक्ष, निषेध, रोक, रुकावट । [ रोक, रोक, अपहारक ।  
 प्रतिरोधक या प्रतिरोधी तत्० ( पु० ) चोर, तस्कर, प्रतिलिपि तत्० अनुरूपलिपि, समान लेख, नकल ।  
 प्रतिलोम तत्० ( वि० ) बाँयाँ, उलटा, विपरीत, धाम, बिलोम ।—ज ( पु० ) प्रतिलोम जात, उत्तम वर्ण की स्त्री में अथम वर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान ।  
 —विवाह ( पु० ) विवाह विरोध जिसमें वर नीच वर्ण का और वधू उच्च वर्ण की हो ।  
 प्रतिवचन तत्० ( पु० ) उत्तर, प्रत्युत्तर ।  
 प्रतिवर्ष तत्० ( पु० ) प्रत्येक वर्ष, साल साल ।  
 प्रतिवाक्य तत्० ( पु० ) प्रतिवचन, उत्तर प्रत्युत्तर ।  
 प्रतिवाद तत्० ( पु० ) खयदन, विरोध, आपत्ति, प्रतिपक्षी का वचन ।  
 प्रतिवादी तत्० ( वि० ) प्रतिपक्षी, विपक्षी, प्रत्यर्थी ।  
 प्रतिवाधक तत्० ( पु० ) निवारक, प्रतिबन्धक, बाधा कारक । [ स्थिति ।  
 प्रतिवास तत्० ( पु० ) पड़ोस, निकट वास, समीप  
 प्रतिवासर तत्० ( पु० ) प्रतिदिन, प्रत्यह, दिन दिन ।  
 प्रतिवासी तत्० ( पु० ) आसन्न गृही, निकटस्थ, प्रतिवेशी, पास पास रहने वाला, पड़ोसी ।

प्रतिविधान तत् ( पु० ) प्रतीकार, प्रतिक्रिया, वानिरण, उपाय । [अनुरूप ।  
 प्रतिविम्ब तत् ( पु० ) प्रतिच्छाया, प्रतिमा, प्रतिमूर्ति,  
 प्रतिविम्बित तत् ( वि० ) प्रतिच्छाया प्राप्त ।  
 प्रतिवेश तत् ( पु० ) मकान के सामने का मकान,  
 गृह के समीपस्थ गृह, पड़ोस । [ पड़ोसी ।  
 प्रतिवेश या प्रतिवासी ( वि० ) समीप रहने वाला,  
 प्रतिशब्द तत् ( पु० ) प्रतिध्वनि, शब्द का शब्द ।  
 प्रतिश्राय तत् ( पु० ) रोगविशेष, पीनस रोग,  
 जुकाम, सरदी । [ निश्चित कथन ।  
 प्रतिश्रव तत् ( पु० ) अङ्गीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा,  
 प्रतिश्रुत तत् ( वि० ) अङ्गीकृत, स्वीकृत, प्रतिज्ञात ।  
 — ( वि० ) स्वीकृति, प्रतिध्वनि, अनुमति ।  
 प्रतिषिद्ध तत् ( वि० ) निषिद्ध, निषेधित, निषेध  
 किया हुआ ।  
 प्रतिषेध तत् ( पु० ) निषेध, हटक, रोक ।  
 प्रतिष्क ( पु० ) दूत ।  
 प्रतिष्ठ ( वि० ) प्रसिद्ध, प्रख्यात ।  
 प्रतिष्ठा तत् ( स्त्री० ) कीर्ति, आदर, गौरव, सम्मान,  
 स्थापना, चार अक्षर का जुन्द विशेष, संस्कार  
 विशेष, उद्यापन ।—कारक ( वि० ) सम्मान-  
 कारक, गौरवकारक ।—सूचक ( पु० ) सम्मान  
 प्रकाशक, आदर प्रकाशित करने वाला ।  
 प्रतिष्ठान तत् ( पु० ) नगर विशेष, राजा पुरवा  
 की राजधानी । हरिवंश में लिखा है कि यह नगर  
 गङ्गा से उत्तर की ओर है, परन्तु कालिदास कहते  
 हैं कि गङ्गा और यमुना के सङ्गम पर यह नगर है,  
 आज कल यह नगर भूसी नाम से प्रसिद्ध है ।  
 —पुर ( पु० ) राजा पुरवा की राजधानी जो  
 प्रयाग के समीप गंगा के उस पार भूसी में है ।  
 प्रतिष्ठित तत् ( वि० ) प्रतिष्ठायुक्त, गौरवान्वित,  
 स्थापित ।  
 प्रतिसीरा ( स्त्री० ) परदा, बचनिका ।  
 प्रतिस्पर्धा तत् ( स्त्री० ) ईर्ष्या, मत्सरता, गुह्यद्वेष,  
 स्पर्धा, डाह, जलन ।— ( वि० ) उद्वेग ।  
 प्रतिहत तत् ( वि० ) रुद्ध, निराश, निराकृत, प्रति-  
 ध्वद, रोक, अष्ट ।  
 प्रतिहार तत् ( पु० ) द्वार, खोदी, देवनी ।

प्रतिहारी तत् ( पु० ) द्वारपाल, पौरिया, खोदीवान ।  
 प्रतिहिंसा तत् ( स्त्री० ) हिंसा का प्रतिशोध, अप-  
 कार का बदला ।  
 प्रतीक तत् ( पु० ) एक देश, अङ्क, अवयव, व्याख्या  
 में किसी श्लोक या वाक्य का उद्धृत एक अंश या  
 चरण ।  
 प्रतीकार तत् ( पु० ) अपकारी के प्रति अपकार, धर-  
 शोधन, शत्रुता निर्यातन, प्रतिकूल, प्रतिशोध,  
 चिकित्सा, निवारण का उपाय, बदला, उपशम,  
 उपाय । [ वाला, प्रयासी ।  
 प्रतीकृत तत् ( पु० ) बाट देखने वाला, राह जोहने  
 प्रतीक्षा तत् ( स्त्री० ) इन्तज़ारी, बाट देखना, किसी  
 के आने के लिये उहरना ।  
 प्रतीकाश तत् ( पु० ) तुल्य, समान, सदृश, तुलना,  
 उपमा ।  
 प्रतीची तत् ( स्त्री० ) पश्चिम दिशा, सूर्य के अस्त  
 होने की दिशा ।—श ( पु० ) पश्चिम दिशा के  
 स्वामी, वरुण । [ दिशा में स्थित  
 प्रतीचीन तत् ( वि० ) पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम  
 प्रतीच्य ( वि० ) पश्चिमी । [ क्थात, प्रसिद्ध  
 प्रतीत तत् ( वि० ) ज्ञात, अवगत, हट, सादर  
 प्रतीति तत् ( स्त्री० ) ज्ञान, बोध, क्थाति, प्रसिद्धि,  
 कीर्ति, आदर, हर्ष ।  
 प्रतीप तत् ( पु० ) महाराज शन्तनु का पिता  
 ( वि० ) प्रतिकूल, विपरीत, विरोधी । [ अवगत  
 प्रतीयमान तत् ( वि० ) ज्ञेय, बोधगम्य, अनुभूत  
 प्रतीहार ( पु० ) सन्धि का मेल का एक भेद ।  
 प्रतीद ( पु० ) पैना, चाबुक, सामगान विशेष ।  
 प्रल तत् ( वि० ) पुरातन, पुराण ।—तत्त्व ( पु० )  
 पुरातत्त्व, वह विद्या जिसमें प्राचीन समय की बातों  
 की विवेचना हो । [ प्रकट, प्रसिद्ध  
 प्रत्यक्ष तत् ( वि० ) साक्षात्, सम्मुख, सामने, प्रकाश  
 प्रत्यग्र तत् ( वि० ) नूतन, नवीन, अभिनव, शुद्ध  
 बोधित ।  
 प्रत्यङ्ग तत् ( पु० ) अवयव विशेष, कर्ण नासिका आदि  
 प्रत्यन्त तत् ( पु० ) म्लेच्छ देश । ( वि० ) सज्जिह्व  
 प्रान्त भाग ।—पर्वत ( पु० ) पर्वत के समीप  
 का छद्म पर्वत ।

प्रत्यभिज्ञान तत्त्वं ( पु० ) पश्चात् ज्ञान, पीछे जानना, स्मरण, अनुमान, कारण विशेष से स्मरण होना ।

प्रत्यभियोग तत्त्वं ( पु० ) प्रत्यपराध, अपराधी होकर पुनः अपराध करना, अभियुक्त होकर अभियोग करना ।

प्रत्यभिलाप तत्त्वं ( पु० ) पुनरभिलाप ।

प्रत्यभिचाद या प्रत्यभिचादन ( पु० ) वह आशीर्वाद जो किसी पुरुष को प्रशाम करने पर मिले ।

प्रत्यय तत्त्वं ( पु० ) विन्यास, निरचय, ज्ञान, अचीन, शपथ, हेतु, चिद, आचार, प्रकृति से उत्तर आने वाली विभक्ति । [पच, मुद्रालेह ।

प्रत्ययीं तत्त्वं ( पु० ) शत्रु, प्रतिवादी, चर्यों का प्रति प्रत्यर्पण तत्त्वं ( वि० ) पुनर्दान, कौटाना, केर देना, प्रति दान । [विघ्न, व्याघात ।

प्रत्ययाय तत्त्वं ( पु० ) पाप, दुरादृष्ट, दोष, अनिष्ट,

प्रत्यह तत्त्वं ( श० ) प्रतिदिन, दिन दिन, प्रतिवासर ।

प्रत्याख्यान तत्त्वं ( पु० ) निराकरण, निरसन, खण्डन, अस्वीकार, निन्दक ।

प्रत्यागमन ( पु० ) लौट आना ।

प्रत्यादेश तत्त्वं ( पु० ) निराकरण, खण्डन, भक्त के प्रति देवता का आदेश, उपदेश, देववाणी, परामर्श ।

प्रत्यावर्त्तन ( पु० ) लौट आना, वापिस आना ।

प्रत्याशां तत्त्वं ( स्त्री० ) आसरा, आकाङ्क्षा, वाञ्छा, अभिलाषा, विश्वास, भरोसा, प्रतीक्षा, वाट देखना । - रहित ( वि० ) आशा रहित, वाङ्मा शून्य । [अभिलाषी ।

प्रत्याशी तत्त्वं ( वि० ) भरोसा वाला, आकाङ्क्षी,

प्रत्यासन्न तत्त्वं ( वि० ) निकटवर्ती, समीपस्थित ।

प्रत्याहार तत्त्वं ( पु० ) अपने अपने विषयों से इन्द्रियों को हटाना ।

प्रत्युत तत्त्वं ( अ० ) वैपरीत्य, वाञ्छ, वान् ।

प्रत्युत्तर ( पु० ) जवाब का जवाब ।

प्रत्युत्पन्न तत्त्वं ( वि० ) उत्पत्ति विधिष्ट, प्रस्तुत, प्रतिमान्वित ।—प्रति ( वि० ) उपस्थित बुद्धि, सूक्ष्म बुद्धि युक्त, सूक्ष्मदर्शी, प्रतिमान्वित ।

प्रत्युपकार तत्त्वं ( पु० ) उपकार के अनन्तर उपकार,

प्रत्युपकारी तत्त्वं ( वि० ) उपकार के बदले उपकार करने वाला ।

प्रत्युप या प्रत्युप ( पु० ) प्रमात, मातःकाल, सूर्य, वसु विशेष ।

प्रत्युह तत्त्वं ( पु० ) विघ्न, बाधा, थापद्, अटकाव । प्रत्येक तत्त्वं ( अ० ) एक एक, प्रति प्रति, भिन्न भिन्न, हरएक, यमस्त, सकल ।

प्रथम तत्त्वं ( वि० ) श्रेष्ठ, पहला, पेशतर, मुख्य, आगे, आदि में, शुरू में ।—गति ( स्त्री० ) उत्तम गति दान । -ज ( पु० ) जेडा, बड़ा ।—पुरुष ( पु० ) उत्तमपुरुष ।—साहस ( पु० ) अपराधियों का प्रथम दण्ड, प्रथम बार का अपराध ।

प्रथमतः तत्त्वं ( प्र० ) पहले पहल का, प्रथम, पूर्व ।

प्रथमा तत्त्वं ( स्त्री० ) पहली विभक्ति, श्रेष्ठा, बड़ी, प्रथान । [श्रेष्ठ अङ्ग, मस्तक ।

प्रथमावयव तत्त्वं ( पु० ) प्रथमोपपन्न अङ्ग, आद्य अङ्ग, प्रथमी ( स्त्री० ) पृथिवी ।

प्रथा तत्त्वं ( स्त्री० ) चलन, धारा, रीति, व्यवहार, व्याप्ति, प्रकार । [( स्त्री० ) व्याप्ति, प्रसिद्धि ।

प्रथति तत्त्वं ( वि० ) स्यात्, प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध ।—प्रयी ( स्त्री० ) पृथिवी ।

प्रथु ( पु० ) विण्, पृथु ।

प्रद तत्त्वं ( वि० ) दानकर्त्ता, दानी, दाता, देनेवाला ।

प्रदक्षिण या प्रदक्षिणा तत्त्वं ( पु० ) देवोद्देश्य से दक्षिणावर्त भ्रमण, चतुर्दिक भ्रमण, चारों ओर भ्रमण, मण्डलाकार घूमना । [समर्पित ।

प्रदत्त तत्त्वं ( वि० ) आदर पूर्वक दान दिया हुआ,

प्रद्वर तत्त्वं ( पु० ) स्त्रियों का रोग विशेष, स्त्रियों का धातु क्षीय रोग । यह चार प्रकार का होता है ।

प्रदर्शक तत्त्वं ( पु० ) दर्शक, प्रकाशक, दिखानेवाला ।

प्रदर्शन तत्त्वं ( पु० ) ईक्ष्य, दर्शन, दिवाना ।—स्थान ( पु० ) जुमायशगाह ।

प्रदर्शनी तत्त्वं ( स्त्री० ) जुमाइश, वह स्थान जहाँ दिखाने की भाँति भाँति की चीज़ें रखी जाय और उनमें जो सर्वोत्तम समझी जाय उस पर पुरस्कार दिया जाय ।

प्रद्वल ( पु० ) वायु. तीर ।

प्रदान तत्त्वं ( पु० ) दान, अर्पण, प्रकृष्ट दान, त्याग ।

प्रदीप तत्त्वं ( पु० ) दीपक, दीया, दीप ।

प्रदीप्त तत्त्वं ( पु० ) दण्डवत्तित. प्रकाशित ।



प्रदेश तत् ( पु० ) एक देश, स्थान, देश का एक भाग, प्रांत, तज्जनी और अङ्गुष्ठ का परिमाण ।  
 प्रदेशनी या प्रदेशिनी तत् ( स्त्री० ) तज्जनी नामक अँगुली ।  
 प्रदोष तत् ( पु० ) सायंकाल, सूर्यास्त के पश्चात् दो सुहृत् काल । रात्रि के पहले चार दण्ड, गोधूलि बेलों, सन्ध्या, दिन की समाप्ति, रात्रि का आरम्भ, दिन और रात के बीच की सन्धि ।—काल ( पु० ) सायंकाल, सन्ध्या का समय ।  
 प्रद्युम्न तत् ( पु० ) कन्दर्प, कामदेव, श्रीकृष्ण का पुत्र । ये हविमयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । शिव के क्रोधरूपी अग्नि में भस्म होकर कामदेव प्रद्युम्न के रूप में श्रीकृष्ण के यहाँ उत्पन्न हुए । जन्म से सातवें दिन श्रीकृष्ण का शत्रु शम्बर सुतिकागृह से प्रद्युम्न को ढ़ठा ले गया । श्रीकृष्ण ने सब जान गये, तथापि उन्होंने इसके ब्रिये कुछ प्रयत्न नहीं किया । दैत्यपति शम्बर की महारानी का मायावती नाम था । मायावती के पुत्र नहीं था । शम्बर ने प्रद्युम्न को पालन करने के लिये मायावती के हाथ सौंपा था । यही मायावती स्वयं रति थी । प्रद्युम्न को देखते ही मायावती को अपने पूर्वजन्म की बातें स्मरण हो आयीं । मायावती ने पति का पुत्रवत् पालन करना अनुचित समझ धात्री को उनके पालन का भार सौंपा । जब प्रद्युम्न युवा हुए, तब मायावती ने उनको अपना पति बनाना चाहा, यह देख प्रद्युम्न ने कहा कि पुत्र पुत्र भाव छोड़ कर यह भाव क्यों स्वीकार करना चाहती हो । मायावती ने कहा, " नाथ । आप मेरे पुत्र नहीं हैं और न शम्बर ही आपका पिता है । आपके पिता श्रीकृष्ण हैं, शम्बर आप को यहाँ चुरा कर लाया है । मैं आपके रूप पर मोहित हूँ, आप शम्बर का नाश कर मेरा मनोरथ पूर्ण कीजिये । यह सुन कर प्रद्युम्न ने शम्बर के साथ युद्ध किया और वैष्णव अस्त्र से शम्बरासुर को मार वह द्वारका चले गये ।  
 प्रद्योत ( पु० ) किरण, रश्मि, आभा, चमक, एक यज्ञ का नाम ।  
 प्रद्योतन ( पु० ) सूर्य, चमक, दीप्ति ।  
 प्रधन ( पु० ) अधिक धनी, लड़ाई, युद्ध ।

प्रधान ( प्रधान ) तत् ( वि० ) श्रेष्ठ, मुख्य । ( पु० ) प्रशस्त, माया, प्रकृति, परमात्मा, बुद्धि, सेनापति, मन्त्री, सचिव आदि ।—ता ( स्त्री० ) श्रेष्ठता, मुख्यता, प्रधानत्व ।—नगर ( पु० ) राजधानी, प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर, जिला ।  
 प्रधि ( पु० ) पहिये का घुसा ।  
 प्रधी तत् ( वि० ) प्रकट बुद्धि युक्त, उत्तम बुद्धि विशिष्ट । ( स्त्री० ) प्रकट बुद्धि ।  
 प्रध्वंस तत् ( पु० ) नाश, विनष्टि, लय, अपचय । — या — क ( पु० ) नाश करने वाला ।  
 प्रन ( पु० ) प्रथ ।  
 प्रनाम तत् ( पु० ) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन ।  
 प्रनाशी तत् ( वि० ) विनशनील, अक्षय, अचिर-स्थायी ।  
 प्रपञ्च तत् ( पु० ) विपर्यास, झग, धोखा, विस्तार, प्रतारण, जगत्, संसार ।— ( वि० ) झूठी, कपटी, ठोंकी, बल्लेझिया ।  
 प्रपञ्चित तत् ( पु० ) विस्तृत, अमयुक्त, प्रतारित ।  
 प्रपन्न तत् ( वि० ) शरणागत, आश्रयाकाङ्क्षी, आश्रित ।  
 प्रपा तत् ( स्त्री० ) पानीपाळा, पौताळा, प्याऊ ।  
 प्रपात तत् ( पु० ) पर्वतों का पार्व, किनारा, झरना, जैसे " जलप्रपात " ।  
 प्रपितामह तत् ( पु० ) प्रपिता, पितामह के पिता ।  
 प्रपितामही तत् ( स्त्री० ) प्रपितामह की पत्नी, पितामह की माता ।  
 प्रपुत्रा दे० ( पु० ) लता विशेष, पर्वार नामक पौधा ।  
 प्रपौत्र तत् ( पु० ) पौत्र का पुत्र, पोते का बेटा ।  
 प्रपौत्री तत् ( स्त्री० ) पौत्र की कन्या, पोते की लड़की ।  
 प्रफुल्ल तत् ( वि० ) विकाश युक्त, उत्फुल्ल, विकसित, खिल ।—ता ( स्त्री० ) हर्ष, आह्लाद, उल्लास, विकास ।—चदन ( पु० ) प्रसन्न चदन, प्रसन्न मुख ।  
 प्रफुल्लित तत् ( वि० ) प्रस्फुरित, विकशित, विकासयुक्त ।  
 प्रबन्ध तत् ( पु० ) सन्दर्भ, ग्रन्थ, काव्यादि ग्रन्थन, परस्पर अन्वित वाक्य समूह, क्रम से की गयी वाक्य रचना ।—कल्पनी ( स्त्री० ) प्रबन्ध रचना, काव्य रचना ।

प्रबन्धक तत् ( पु० ) प्रबन्धकर्त्ता, प्रबन्ध रचयिता ।  
 प्रवर तत् ( पु० ) अति भेद, गोत्र विषयक २ तथा ३ प्रवर ।  
 प्रवज तत् ( वि० ) वज्रवान्, बली, साहसी, डीठ,  
 सहजोर, मजबूत ।—ता ( स्त्री० ) बलाकार,  
 पावरशय, पारशता ।  
 प्रवाल तत् ( पु० ) विद्रुम, मूंगा ।  
 प्रवृद्ध तत् ( वि० ) जाग्रत, जागता हुआ, सचेत,  
 सावधान, सावहित । [निद्रा त्याग, नौद से जागना ।  
 प्रबोध तत् ( पु० ) ज्ञान, सावचेती, सावधानी,  
 प्रबोधन तत् ( पु० ) जागरण, जगाना, चिताना,  
 चितावनी देना, सावधान करना ।  
 प्रभञ्जन तत् ( पु० ) अनिल, वायु, पवन ।—जाया  
 ( पु० ) हनुमान ।—सुत ( पु० ) हनुमान्, भोम ।  
 प्रभद्र तत् ( पु० ) वृष्ट विशेष, नीम का पेड़ ।  
 प्रभवं तत् ( पु० ) उत्पत्ति, जन्म, जन्म हेतु, जन्म  
 कारण, जहाँ से जन्म होता है, स्थान ।  
 प्रभा तत् ( स्त्री० ) दीप्ति, आलोक, प्रकाश, तेज,  
 कुबेर की पुत्री, गोपी विशेष ।—फर ( पु० ) रवि,  
 दिनकर, अग्नि, चन्द्र, समुद्र, अर्क वृष्ट, अकषण  
 का पेड़ ।—कीट ( पु० ) खयोत, जुगनू ।  
 प्रभात तत् ( पु० ) प्रातःकाल, प्रत्युष, सवेरा ।  
 प्रभाती तत् ( स्त्री० ) एक रागिनी जो सवेरे गायी  
 जाती है । [माहात्म्य, गौरव, शान्ति ।  
 प्रभाष तत् ( पु० ) कोष और द्युष्ट का तेज, शक्ति  
 प्रभावती तत् ( स्त्री० ) पाताल गङ्गा, त्रयोदशाक्षर  
 छन्द, वज्रनाथ दैत्य की कन्या, जिसको श्रीकृष्ण ने  
 हरण किया था । [गथाधिप विशेष ।  
 प्रभास तत् ( पु० ) तीर्थ विशेष, सोमतीर्थ, जैन-  
 प्रभिन्न तत् ( पु० ) मत्तहस्ती, मतवाला हाथी ।  
 प्रभु तत् ( पु० ) स्वामी, मालिक, पालक, समर्थ,  
 नायक, नेता ।—ता या त्व ( स्त्री० ) प्रधानता,  
 आधिपत्य, कर्तृत्व ।—भक्त ( पु० ) स्वामी का  
 अनुरागी, कुबकुर ।  
 प्रभूत ( वि० ) जो भली भाँति हुआ हो, निकला हुआ,  
 प्रभु ।—ति ( स्त्री० ) उत्पत्ति शक्ति, अधिकता,  
 प्रचुरता ।  
 प्रभूत तत् ( वि० ) प्रचुर, अधिक, अतिशय ।  
 प्रभृति तत् ( थ० ) गणबोधक, इत्यादि, वगैरह ।

प्रभेद तत् ( पु० ) भिन्नता, विशेष, पैलस्यय, पृथक्ता  
 प्रमथ तत् ( पु० ) शिव गण ।  
 प्रमथाधिप तत् ( पु० ) शिव, महादेव, शम्भु ।  
 प्रमद् तत् ( पु० ) हर्ष ।—कानन ( पु० ) रम्यवन,  
 राजाश्रम के अन्तःपुर के योग्य उपवन ।—धन  
 ( पु० ) राजा के अन्तःपुरोचित वन, राजाश्रम के  
 महल के भीतर का नजरबाग ।  
 प्रमदा तत् ( स्त्री० ) उत्तमा स्त्री, रमणीया नारी,  
 सुलक्षणा स्त्री । [रहित ज्ञान, अनुभव ।  
 प्रमा तत् ( पु० ) यथार्थ ज्ञान, प्रमिति, प्रमाण, भ्रम  
 प्रमाण तत् ( पु० ) मर्यादा, शास्त्र, निदर्शन, दृष्टान्त,  
 उदाहरण, साक्षी, लेख, प्रभृति, प्रतिपत्ति, मान-  
 नीय, सत्यवादी, नित्य ।—पद्म ( पु० ) निदर्शन  
 पद्म, दृष्टान्त लिपि ।  
 प्रमाणिक तत् ( वि० ) प्रामाणिक, जिसे ठीक समझ  
 कर ग्रहण कर सके, मातवर ।  
 प्रमाणिता ( वि० ) प्रमाणाद्वारा सिद्ध, निश्चित ।  
 प्रमातामह तत् ( पु० ) मातामह के पिता, परनाना,  
 नाना के पिता ।  
 प्रमातामही तत् ( स्त्री० ) प्रमातामह की स्त्री, माता-  
 महा की जननी, परनानी, नाना की माता ।  
 प्रमाथ तत् ( पु० ) प्रमथन, बल द्वारा हरण, बिलो-  
 डन, निकालना ।  
 प्रमाथी तत् ( पु० ) पीडनकर्त्ता, मारणकर्त्ता, प्रमथन-  
 शील, देह और इन्द्रिय को दुःख पहुँचाने वाला ।  
 प्रमाद् तत् ( वि० ) अनवधानता, असवधानी, भ्रम,  
 भूल ।  
 प्रमादिक ( वि० ) गलती करने वाला ।—ति ( स्त्री० )  
 वह कन्या जिसे किसी ने वृषित कर दिया हो ।  
 प्रमादी तत् ( वि० ) प्रमाद् विशिष्ट, अनवधानता-  
 युक्त, असत्कर्त्ता, अन्तःस्वभाव । [सिद्ध ।  
 प्रमित तत् ( वि० ) ज्ञात, विदित, अवगत, प्रमाण  
 प्रमिति तत् ( स्त्री० ) प्रमा, यथार्थ ज्ञान, सत्यबोध,  
 यथार्थ बोध ।  
 प्रमीला तत् ( पु० ) तन्त्रा, तन्त्री ।  
 प्रमुख तत् ( वि० ) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, मान्य, मान  
 नीय, अग्रगण्य ।  
 प्रमुदित तत् ( वि० ) हृष्ट, आह्लादित, आनन्दित

प्रमेय तत्त्वं ( वि० ) उपपाद्य, प्रतिपादन करने के योग्य, प्रमाण साध्य, प्रमाण से सिद्ध किया जाने वाला । [बहुमूत्रता ।

प्रमेह तत्त्वं ( पु० ) रोग विशेष, मेह रोग, मूत्र दोष, प्रमोचन तत्त्वं ( पु० ) मोचन, त्याग, उतरण, मुक्तकरण, उद्धरण

प्रमोद तत्त्वं ( पु० ) हर्ष, आह्लाद, उल्लास ।—क ( पु० ) प्रमोद करने वाला, एक प्रकार का जवहान । —न ( पु० ) विष्णु का नाम । ( वि० ) हर्षकारक, प्रचुर ।—ति ( स्त्री० ) उत्पत्ति, शक्ति, अधिकता, प्रचुरता ।

प्रपन्न तत्त्वं ( पु० ) पवित्र, पूत, शुद्ध, नियमित, तत्पर । [आदर ।

प्रयत्न तत्त्वं ( पु० ) प्रकृष्ट, यत्न, अध्यवसाय, चेष्टा, प्रयाग तत्त्वं ( पु० ) तीर्थ विशेष, तीर्थराज, प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ गङ्गा यमुना और गुप्त सरस्वती का सङ्गम है । यहाँ ब्रह्मा जी ने अश्वमेध यज्ञ किये थे । —वाल ( पु० ) ब्राह्मण विशेष, जो सङ्गम के तट पर दान लेते हैं ।

प्रयाण तत्त्वं ( पु० ) गमन, प्रस्थान, नियाँण, यात्रा । प्रयास तत्त्वं ( पु० ) प्रयत्न, श्रम, झंझ, आयास, चेष्टा, परिश्रम, थकावट ।

प्रयुक्त तत्त्वं ( वि० ) प्रकरयुक्त, प्रकृष्ट समाधि युक्त, प्रकृष्ट संयोग युक्त, संयम विशिष्ट ।

प्रयोग तत्त्वं ( पु० ) प्रयुक्ति, अनुष्ठान, व्यवहार, निदर्शन, उदाहरण । [फारी, प्रवर्तक, प्रेरक ।

प्रयोजक तत्त्वं ( पु० ) प्रयोजकर्ता, नियोजक, नियोग-प्रयोजन तत्त्वं ( पु० ) कार्य, हेतु, निमित्त, अभिप्राय, उद्देश्य, मतलब ।

प्रयोज्य तत्त्वं ( वि० ) जिसका प्रयोग किया जा सके । ( पु० ) भूय, चेला, मूल धन ।

प्ररोचना तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रवर्तना, प्रवर्तनार्थ, रोचक कथा, फुसलाहट ।

प्रहरो तत्त्वं ( पु० ) शंकर, बीजोद्भेद ।

प्रलपित तत्त्वं ( वि० ) कथित, उक्त, मिथ्या उच्चारित, अश्रद्धा वक्ता हुआ, उटपटाँग कहा हुआ ।

प्रलम्ब तत्त्वं ( पु० ) दैत्य विशेष, दनु का पुत्र, एक समय श्रीकृष्ण, बलराम और गोप बालक खेल रहे

थे, वहाँ यह गोप का वेष धर कर गया था । श्री कृष्ण प्रलम्बासुर की अभिसन्धि समझ कर गोप बालकों से मलयुद्ध करने लगे इस युद्ध में यही होड़ रखा गया था कि जो हार जायगा, वह जीतने वाले को अपने कन्धे पर बैठा कर घुमावेगा, प्रलम्बासुर बलराम के साथ युद्ध में हार कर उनको अपने कन्धे पर बैठाकर ले चला । कुछ दूर ले जाकर प्रलम्बासुर बलराम का यथ करना ही चाहता था कि बलराम इतने भारी हो गये जिससे प्रलम्बासुर उनको ढो नहीं सका । अन्त में प्रलम्ब अपनी मूर्ति धारण कर उनकी ओर लपका, परन्तु बहुत शीघ्र ही बाहुयुद्ध में बलराम ने उसे मार डाला ।

प्रलय तत्त्वं ( पु० ) कल्पान्त, लय, युगान्त, कल्प का नाश, संचय, नाश, मृत्यु ।—कर्ता ( पु० ) लयकारक, विनाशक, महादेव ।

प्रलाप तत्त्वं ( पु० ) अनर्थक वचन, उन्मत्तों के समान असङ्गत वचन, बकवाद, अर्थरहित वातचीत ।

प्रलेप तत्त्वं ( पु० ) प्रकृष्ट लेपन, औपधि आदि का लेपन, लेप ।

प्रलोभ तत्त्वं ( पु० ) बड़ा लोभ, विशेष लालच, घूस, स्पृहा, लालसा, वाञ्छा, अभिलाषा ।

प्रलोभन तत्त्वं ( पु० ) लोभ, लुभाव, लालच । प्रवचन ( पु० ) व्याख्या, अर्थ खोलकर बताना ।

प्रवञ्चना तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रतर्ण, ढगई । प्रवण तत्त्वं ( वि० ) नम्र, विनत, मुका हुआ, नया हुआ, नीची भूमि ।

प्रवर तत्त्वं ( पु० ) सन्तान, वंश, श्रेष्ठ, प्रधान, गोत्र । प्रवर्त्त तत्त्वं ( पु० ) आरम्भ, लगना, नियुक्त, तत्पर ।

प्रवर्त्तक तत्त्वं ( पु० ) प्रेरक, प्रयोजक, उन्माददाता, सहायक, उठाने वाला ।

प्रवर्त्तन तत्त्वं ( पु० ) प्रेरण, प्रवृत्ति, आज्ञापन प्रेषण । प्रवर्त्तित तत्त्वं ( पु० ) आज्ञापित, प्रेरित, लगाया हुआ ।

प्रवर्षण तत्त्वं ( पु० ) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत दक्षिण दिशा में किष्किन्धापुरी के पास है । वनवास के समय वर्षा ऋतु में राम और लक्ष्मण इसी पर्वत पर रहे थे ।

प्रवाद तत् ( पु० ) प्रसार, चर्चा, विन्दावाद, किंवदन्ती, उद्धृती खर ।

प्रवास तत् ( पु० ) विदेश, अन्यदेश, परदेश, भिन्न देश, देशान्तर, देशान्तरवास ।

प्रवासन तत् ( पु० ) देशान्तर भोजना ।

प्रवासी तत् ( वि० ) विदेशी, अन्य देश वासी, देशान्तर में रहने वाला ।

प्रवाह तत् ( पु० ) नदी की धारा, स्रोत, यहाव ।

प्रवाहक तत् ( पु० ) गाड़ीवान, गाड़ी हॉकने वाला । [होना, पेट चलना ।

प्रवाहिका तत् ( स्त्री० ) अतीसार रोग, दस्त जारी

प्रविष्ट तत् ( वि० ) निविष्ट, घुसा हुआ ।

प्रवीण तत् ( वि० ) निपुण, कुशल, दक्ष, चतुर, बुद्धिमान, सयाना, चालाक ।—ता ( स्त्री० ) निपुणता, चतुराई ।

प्रवृत्त तत् ( वि० ) उद्यत, तत्पर, लगा हुआ ।

प्रवृत्ति तत् ( स्त्री० ) कार्य में लगने की इच्छा, यत्न, उपाय, इच्छा अभिरुचि ।

प्रवेश तत् ( पु० ) पैर, पहुँच, बैठार, बैठाय, रसाई ।

प्रवेशक तत् ( पु० ) प्रवेश कर्ता, प्रवेशकारी पैठने वाला, घुसने वाला । [यशस्वी, भला ।

प्रशंसनीय तत् ( वि० ) तारीफ के योग्य, प्रशंसापात्र,

प्रशंसा तत् ( स्त्री० ) स्तुति, तारीफ ।

प्रशम तत् ( पु० ) शमता, उपशम, शान्ति, विराम, निवारण । [विरति, निवारण ।

प्रशमन तत् ( पु० ) मारण, यथ, शमता, प्रशान्ति,

प्रशस्त तत् ( वि० ) सुन्दर, स्वच्छ, विस्तृत, परिसर युक्त, प्रशंसनीय, अति धैर्य, अति उत्तम ।

प्रशस्ति तत् ( स्त्री० ) उत्तमता, गुण स्तुति, अभिनन्दन, वे विशेषण जो पत्र के आरम्भ में जिसके नाम से पत्र लिखा जाय, उसके लिये, लिखे जाते हैं ।

प्रशान्त तत् ( वि० ) अत्यन्त समताशाली, अतिधीर ।

प्रश्न तत् ( पु० ) जिज्ञासा, पूछना ।

प्रश्रय तत् ( पु० ) प्रणय, स्नेह, स्पर्धा, प्रगल्भता ।

प्रश्राव तत् ( पु० ) पेशाव, मूत्र ।

प्रश्रित तत् ( वि० ) प्रणयी, विनीत, स्नेहान्वित, एक हाथ में आने योग्य द्रव्य ।

प्रश्रय तत् ( वि० ) मिथिल, अमक । [दीर्घ निद्रावास ।

प्रश्रयाम तत् ( पु० ) नासिका से वायु का निकालना,

प्रश्रा तत् ( वि० ) प्रश्नकर्ता, प्रच्छन्न, जिज्ञासु ।

प्रष्ट तत् ( वि० ) अग्रगामी, धैर्य, प्रधान, मुख्य, अग्रग्रा ।

प्रष्टा तत् ( पु० ) पीठ, अग्रग्रा, मुख्य, श्रेष्ठ ।

प्रसक्त तत् ( वि० ) प्रसङ्ग विरहित, अतिशय, अनुरक्त, अनुरागी, प्राप्त, उपस्थित ।

प्रसङ्ग तत् ( पु० ) सङ्गति विशेष, प्रसक्ति, प्रलाप, मैथुन, सख्यन्ध, उद्देश, उपलक्ष, अपसर ।

प्रसन्न तत् ( पु० ) सन्तुष्ट, दयान्वित, निर्मल, स्वच्छ, प्रफुल्ल ।—चित्त ( पु० ) सन्तुष्ट चित्त, दयालु, अनु

ग्राहक ।—ता ( स्त्री० ) सन्तोष, प्रसाद, प्रफुल्लता, निर्मलता, स्वच्छता ।—मुख ( वि० ) जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट हो हैसता हुआ चेहरा ।

प्रसाद तत् ( पु० ) दया, कृपा, प्रसन्नता पूर्व, दी हुई वस्तु, प्रसन्नता, अनुग्रह, काव्य का गुण विशेष, स्वास्थ्य, सुस्थता, देव निवेदित द्रव्य, नैवेद्य, गुरु की जड़न, कृपा ।

प्रसव तत् ( पु० ) गर्भ मोचन, जनन, पल, कुसुम, फूल ।—गृह ( पु० ) स्तिका गृह, सौरी ।

प्रसर तत् ( पु० ) प्रकट रूप के सञ्चार, विस्तार, प्रणय, वेग, समूह । [ फैलाव ।

प्रसरण तत् ( पु० ) मेला आदि का चारों तरफ

प्रसन्न ( पु० ) हेमन्तऋतु ।

प्रसादन तत् ( पु० ) प्रसन्नता करण, सेवन, मनाना, प्रसन्न करना ।

प्रसादी तत् ( वि० ) प्रसन्नता युक्त, कृपा विरहित, देव निवेदित अन्न ।

प्रसाधन तत् ( पु० ) निष्पादन, सम्पादन, वेद्य रचना ।

प्रसाधनी तत् ( स्त्री० ) कङ्कितिका, वैगदी ।

प्रसाधिका तत् ( स्त्री० ) वेश कारीणी, वेश रचना करने वाली, शृङ्गार करने वाली ।

प्रसार तत् ( पु० ) प्रसरण, विस्तार, फैलाव, प्रसरण ।

प्रसारण तत् ( पु० ) विस्तार करण, पसारना, विप्रेरणा, पञ्चविध कर्म के अन्तर्गत एक प्रकार का कर्म ।

प्रसारित तत् ( वि० ) विस्तारित, विरल, फैलाया हुआ ।

प्रसारी ( वि० ) फैलने वाला ।  
 प्रस्ति ( स्त्री० ) पीय, मवाद ।  
 प्रसिनि ( स्त्री० ) रस्सी, रश्मि, ज्वाला, लपट ।  
 प्रसिद्ध तत्त्वं ( वि० ) ख्यात, प्रख्यात, उजागर,  
 विख्यात, नामलब्ध, प्रतिष्ठित, प्रचलित, श्रूयित ।  
 प्रसिद्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) ख्याति, प्रचार, भूषा, श्रलङ्कार ।  
 प्रसोद तत्त्वं ( कि० ) प्रसन्न हो, कृपा करो ।  
 प्रसुप्त ( वि० ) खूब सोया हुआ ।—फि ( स्त्री० )  
 गाड़निद्रा, नींद ।

प्रसू तत्त्वं ( स्त्री० ) माता, जननी, अग्न्या ।  
 प्रसूत तत्त्वं ( वि० ) उत्पन्न, जात ।  
 प्रसूत ( वि० ) उत्पन्न, पैदा, उत्पादक । [उत्पन्न किये हैं ।  
 प्रसूता तत्त्वं ( स्त्री० ) जच्चा, प्रसवकारिणी, जिससे बच्चे  
 प्रसूति तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रसन्न, उद्भव, उत्पत्ति, जन्म,  
 जन्माना, दूध की पत्नी और सती की माता का  
 नाम, दूध यज्ञ का विनाश करके जब महादेव ने  
 दूध को मार डाला था, तब ऊन्हीं की प्रार्थना से  
 महादेव ने दूध को पुनः जीवित किया था ।

प्रसूतिका ( स्त्री० ) प्रसूता, वह स्त्री जिसके बच्चा हुआ हो ।  
 प्रसून तत्त्वं ( पु० ) पुष्प, फूल, कुसुम ।  
 प्रसूत ( वि० ) फैला हुआ, बढ़ा हुआ, भेजा हुआ,  
 विनीत, तपस्व, लगा हुआ, प्रचलित, लपट ।  
 —ज ( पु० ) व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र ।

प्रसेक ( पु० ) सेचन, निचोड़ ।  
 प्रसेद ( पु० ) पसीना ।  
 प्रसेध ( पु० ) बीनकी तूथी, थैला ।  
 प्रस्कन्दन ( पु० ) फलंग, ऋषट्, शिव, विरेचन, अतीसार ।  
 प्रस्कन्त ( वि० ) पतित, गिरा हुआ ।  
 प्रस्खलन ( पु० ) स्खलन, पतन, पत्ते का विझावना ।  
 प्रस्तर तत्त्वं ( पु० ) पाषाण, पथर, पाथर, शिला,  
 उपल, पल्लवादि रचित शय्या ।—मय ( पु० )  
 पाषाणमय, पथरीला ।

प्रस्तरण ( पु० ) विद्याना, विद्वाना ।  
 प्रस्तार ( पु० ) फैलाव, विस्तार, परत, समतल ।  
 प्रस्ताव तत्त्वं ( पु० ) अवसर, प्रसङ्ग, स्तुति, प्रकरण,  
 मृत्तान्त कथा, कथानुष्ठान ।  
 प्रस्तापना तत्त्वं ( स्त्री० ) आरम्भ, वाक्यानुष्ठान, भूमिका,  
 अवतरणिका, मुख्य घटक्य के पहले का वक्तव्य ।

प्रस्ताविक तत्त्वं ( वि० ) समयानुसार, यथासमय ।  
 प्रस्तावित तत्त्वं ( पु० ) कथित, उल्लिखित, कृत, विचारित,  
 कर्तव्य रूप से निर्धारित ।

प्रस्तुत तत्त्वं ( वि० ) प्रकरण प्राप्त, प्रकरणीक, प्राप्त-  
 ङ्गिक, निष्पन्न, प्रकर्ष, स्तुति युक्त, उपस्थित,  
 प्रतिपन्न, उद्यत ।

प्रस्थ तत्त्वं ( वि० ) प्रकृष्ट स्थिति विशिष्ट । ( पु० )  
 परिमाण विशेष, ताल, एक सेर, पर्वत का एक  
 देश, पर्वत की समतल भूमि ।

प्रस्थान तत्त्वं ( पु० ) गमन, यात्रा, प्रयाण, निर्माण  
 प्रस्थापन तत्त्वं ( पु० ) प्रेरण, प्रेरण, पठाना, भेजना ।  
 प्रस्थापित तत्त्वं ( वि० ) प्रेषित, प्रेरित, अति सुन्दर  
 रूप से स्थापित ।

प्रस्तुपा ( स्त्री० ) पोते की स्त्री, पतोह ।  
 प्रस्तुट ( वि० ) खिला हुआ, विकसित ।  
 प्रस्तुष्टित तत्त्वं ( वि० ) प्रकुलित, प्रकाशित, विकसित ।  
 प्रस्त्रवण तत्त्वं ( पु० ) उत्तम रूप से बहना, पर्वत का  
 निर्गम, एक पर्वत का नाम ।

प्रस्त्राव ( पु० ) क्षरण, क्षरना, पेशाव ।  
 प्रस्त्रव तत्त्वं ( पु० ) मूत्र, मूत, पेशाव ।  
 प्रस्वेद तत्त्वं ( पु० ) अतिशय गर्म, अधिक पसीना ।  
 प्रहर तत्त्वं ( पु० ) दिन के आठ भाग का एक भाग,  
 चार घड़ी । [चौकीदार ।

प्रहरी तत्त्वं ( पु० ) यामिक, पहरेदार, पहरेदार,  
 प्रहर्ष तत्त्वं ( पु० ) अतिशय आह्लाद, अत्यन्त हर्ष ।  
 प्रहर्षिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रवेदशास्त्र छन्द विशेष ।  
 प्रहसन तत्त्वं ( पु० ) परिहास, उपहास, आक्षेप, रूपक  
 विशेष, नाटक का एक भेद ।

प्रहस्त तत्त्वं ( पु० ) विस्तृत, अक्षुण्णित वाला हाथ, चापट,  
 चावट, तबड़ा, शवण का एक सेनापति का नाम ।  
 प्रहार तत्त्वं ( पु० ) आघात, मारण ।  
 प्रहारी तत्त्वं ( वि० ) मारणकर्ता, मारने वाला ।  
 प्रहित तत्त्वं ( वि० ) प्रिप्त, निरस्त, प्रेषित, प्रेरित ।  
 प्रहीण ( वि० ) परित्यक्त, छोड़ा हुआ ।

ग्रहत ( पु० ) ब्रह्मवैवर्तदेव, भूत, यक्ष ।  
 ग्रहत ( वि० ) चलाया हुआ, फेंका हुआ, फैलाया  
 हुआ, ढाया हुआ, मारा हुआ । ( पु० ) प्रहार,  
 चोर, एक ऋषि का नाम ।

प्रहृष्ट तत् ( वि० ) सन्तुष्ट, उद्वसित, आनन्दित ।

—मना ( वि० ) सन्तुष्ट चित्त ।

प्रहेलिका तत् ( स्त्री० ) दुर्विशेष भ्रम, कृतार्थ भाषित, दुरुद्ध वाक्य, पहेली, चुकीबल ।

प्रह्लाद तत् ( पु० ) दैत्यपति हिरण्यकशिपु का पुत्र । ये परम विष्णु भक्त थे, वात्स्यावस्था ही से इनकी विष्णुभक्ति प्रकाशित हो गयी थी । दैत्यराज ने अपने पुरोहित पण्ड और भ्रमरक को प्रह्लाद के पढ़ाने के लिये नियुक्त किया था । प्रह्लाद की विष्णुभक्ति देख कर वेचारे ब्राह्मण राजी जाने के भय से काँपने लगे । अपना बचाव करने के लिये उन लोगों ने हिरण्यकशिपु से कह दिया कि राज-पुत्र भालिक हो गया । हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को बहुत समझाया, परन्तु कुछ फल नहीं हुआ । हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को क्रुद्ध समझ कर उसे मार डालने के लिये भनैक प्रयत्न किये, परन्तु प्रह्लाद नहीं मरे । एक दिन प्रह्लाद अपने पिता के सामने भगवान् का गुण कीर्तन करने लगे । प्रह्लाद ने कहा परमेश्वर व्यापक है, उनकी प्रभा चारों ओर फैली हुई है । हिरण्यकशिपु ने कहा तो इस खम्भे में तोरा ईश्वर क्यों नहीं है ? प्रह्लाद ने खम्भे की ओर देख कर भगवान् को प्रणाम किया; परन्तु हिरण्यकशिपु खम्भे में भगवान् को नहीं देख सका था, अतएव उसने खम्भे पर पदाघात किया । वस, वह खम्भा बीच से फट गया, वहीं से नृसिंहरूप-धारी भगवान् प्रकट हुए और उन्होंने दैत्यकुल का नाश कर दिया । देव पितर ऋषि आदि सभी वहाँ उपस्थित हुए और उन लोगों ने भगवान् की स्तुति की, परन्तु नृसिंह का क्रोध शान्त नहीं हुआ । अन्त में प्रह्लाद उनकी स्तुति करने लगा, भगवान् ने कहा, प्रह्लाद मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ । तुम वर माँगो, प्रह्लाद ने कहा कि महाराज, आप शुभे वर का जालव न दिखावें, हम कामासक्त हैं, अतएव हमको वर न चाहिये, यदि आप वर देना चाहते हैं तो वही वर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी वासना उत्पन्न न हो । भगवान् ने वही वर दिया । पुनः भगवान् के कहने से प्रह्लाद ने दूसरा वर यह माँगा कि मेरे पिता का अपराध

क्षमा हो । भगवान् ने “ एवमस्तु ” कह कर पितृ-शोक-कातर प्रह्लाद को आश्वसित किया ।

प्रह्व ( वि० ) नम्र, विनीत, आसक्त ।

प्रह्वलीका ( स्त्री० ) पहेली ।

प्राक् तत् ( अ० ) पूर्व, आगे, पहले, प्रथम, आद्य, आदि, प्रारम्भ ।—तन ( पु० ) पुराना, प्राचीन, पक्ष ।—काल ( पु० ) पूर्वकाल, प्राचीन समय ।

प्राकाम्य तत् ( पु० ) शिव के अष्टविध ऐश्वर्यों के अन्तर्गत ऐश्वर्य विशेष, यथेष्टता, प्रचुरता स्वेच्छा-नुसार ।

प्राकार तत् ( पु० ) ईंटों की बनी दीवार, चार दीवार, कोट की भीत, नगर के चारों ओर की दीवार ।

प्राकृत तत् ( वि० ) प्रकृत सम्बन्धी, नीच, अधम, अन्त्यज, भाषा विशेष, वास्तविक, वस्तुतः, स्वाभाविक ।—उत्तर ( पु० ) वर्षा, शरत् और यत्न से क्रम से बात, पित्त और कफ से उत्पन्न उदर ।—प्रलय ( पु० ) प्रलय विशेष, प्रकृति का नाश, महाप्रलय ।—भाषा ( स्त्री० ) भाषा विशेष, संस्कृत का एक भेद ।—शत्रु ( पु० ) एक देश पर अपना अपना अधिकार चाहने वाले राजा, स्वाभाविक शत्रु । [मामूली, मौक्तिक, लौकिक, नीच ।

प्राकृतिक ( वि० ) प्रकृति सम्बन्धी, स्वाभाविक, प्राख्य तत् ( पु० ) प्रखरत्व, तीक्ष्णता ।

प्रागभाष तत् ( पु० ) संलग्नाभाव विशेष, विनाश भावत्व, सम्भावना, किसी वस्तु के उत्पन्न होने के पहले का अभाव ।

प्रागल्भ्य तत् ( पु० ) प्रवशता, अहङ्कार, अविमान, दुर्ग, गर्व, घमण्ड, व्यापकता, औद्धत्य, स्त्रियों का स्वाभाविक भाव ।

प्राधूर्मिक तत् ( पु० ) पाहुन, अतिथि, अभ्यागत । प्राची तत् ( स्त्री० ) पूर्व दिशा, सूर्योदय दिक्, पूर्व दिक्, वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है ।

प्राचीन तत् ( पु० ) पूर्व देश का उत्पन्न, पूर्व दिशा का उत्पन्न, पूर्वकाल का उत्पन्न, पुरातन, पूर्वकालीन, वृद्ध ।—भाषा ( स्त्री० ) प्राचीन कथा, पुरातन इतिहास ।—ता ( स्त्री० ) पूर्वकालीनता, प्राचीनत्व, पुरातनत्व, वृद्धावस्था ।—वर्हि ( पु० ) राजा विशेष ।

प्राचीर तत् ( पु० ) बाहर का कोट, प्राकार, चार-  
दिवारी । [ बहुल्य, बहुतायत ।

प्राचुर्य तत् ( पु० ) प्रचुरता, अधिकता, बाहुल्य,  
प्राचेतस् ( पु० ) प्राचीन बर्हि के पुत्र, प्रचेतागण,  
वाल्मीकि मुनि, विष्णु, वसु, वरुण के पुत्र का नाम,  
प्रचेता के वंशज ।

प्राच्य तत् ( पु० ) शरावती नदी के पूर्व दक्षिणदेश ।  
( वि० ) पूर्वदेशीय, पूर्वदेश-उत्पन्न ।

प्राजाक ( पु० ) रथ चलाने वाला, सारथी ।

प्राजापत्य तत् ( पु० ) द्वादश दिन का व्रत, रोहिणी  
नक्षत्र, प्रयाग, विवाह विशेष । [ दक्ष, निपुण ।

प्राज्ञ तत् ( वि० ) परिहृत, बुद्धिमान्, अभिज्ञ, विज्ञ,  
प्राज्ञ तत् ( वि० ) प्रभु, यष्टेष्ट, बहु, अधिक ।

प्राज्ञज्ञ तत् ( वि० ) सरल, फल, सीधा ।

प्राज्ञलि तत् ( स्त्री० ) संयुक्त कद्वय, अश्लिष्ट ।

प्रान्त ( पु० ) अंत, शेष, सीमा, छोर, दिशा, देश का  
भाग, प्रदेश ।—भूमि ( स्त्री० ) किसी वस्तु का  
अन्तिम भाग, किनारा छोर । [ न्याय कर्त्ता ।

प्राड्विवाक तत् ( पु० ) व्यवहार द्रष्टा, विचारक,  
प्राण तत् ( पु० ) हृदयस्थ वायु, जीव, अनिल वायु,

निश्वास, प्रज्ञा, प्रज्ञापति, स्वनाम क्यात यथिक  
द्रव्य ।—त्याग ( पु० ) जीवन वितर्जन, जीवन

त्याग, मृत्यु, मरण ।—दण्ड ( पु० ) वध दण्ड,  
प्राण नाशक दण्ड ।—दाता ( पु० ) जीवन दाता,

प्राण रक्षक ।—नाथ ( पु० ) स्वामी, नाथ, पति,  
प्रभु ।—पण ( पु० ) प्राणत्याग, प्राण त्याग पर्यंत

प्रतिज्ञा, अत्यन्त आयास ।—प्रतिष्ठा ( स्त्री० )  
प्रतिष्ठा आदि में देवत्वकरण, जीव संस्थान ।

—प्रिय ( वि० ) प्रियतम, प्राण तुल्य प्रिय ।—मय  
कोप ( पु० ) कर्मेन्द्रिय सहित प्राण पञ्चक ।—सम

( वि० ) प्राण तुल्य, प्राण सदृश ।—समा ( स्त्री० )  
जाया, भार्या, पत्नी । [ मृत्यु ।

प्राणान्त तत् ( पु० ) प्राणवसान, प्राण शेष, मरण,  
प्राणायाम तत् ( पु० ) योगाग्न विशेष, न्यास विशेष,

रेचक, पूरक और कुम्भक नामक प्राणों के दमन  
करने के उपाय, रक्षा के प्रमाणद में ले जाने की  
क्रिया । [ जीव, गरीरी, देही, जीवधारी ।

प्राणी तत् ( वि० ) प्राण विनिष्ठ, मनुष्य, सचेतन

प्राणेश या प्राणेश्वर तत् ( पु० ) पति, स्वामी, प्राणों  
का ईश्वर ।

प्रातः तत् ( पु० ) प्रभात, विहान, सूर्योदय के समय  
का तीन सुहृत् काल ।—कर्म, कृत्य ( पु० )

प्रातःकाल किया जाने वाला कर्म, सन्ध्यावन्दना-  
दिकर्म, सबेरे करने के काम ।—काल ( पु० )

सूर्योदय के अनन्तर छः दण्ड काल ।—क्रिया  
( स्त्री० ) प्रातःकाल का कर्त्तव्य कर्म ।—सन्ध्या

( स्त्री० ) प्रातःकाल की सन्ध्या, प्रातःकाल के  
किये जाने वाली वैदिक मन्त्रोपासना ।

प्रातराश तत् ( पु० ) प्रातःकालीन भोजन, प्रातर्भो-  
जन, जलपान, जलस्नान । [ चता, शत्रुता ।

प्रातिकूल्य तत् ( पु० ) वैपरीत्य, विरुद्धाचार्य, विप-  
प्रादुर्भाव तत् ( पु० ) आविर्भाव, उदय, प्रकाश,

महिमा । [ वितस्ति, बीता, बालिस्त ।  
प्रादेश तत् ( पु० ) तर्जनी सहित विस्तृत अङ्गुष्ठ,

प्राधा तत् ( स्त्री० ) प्रजापति महर्षि कश्यप की भार्या,  
गन्धर्व और अम्बरा इन्हीं के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं ।

प्राधान्य तत् ( पु० ) प्रधानता, प्रधानत्व, श्रेष्ठता,  
मुख्यता ।

प्रान्तर तत् ( पु० ) दूर, शून्य पथ, दुर्गम-पथ, जाया  
अल आदि रहित स्थान, उन्माद स्थान, वीरान, जङ्गल ।

प्रापक तत् ( पु० ) प्रापककर्त्ता, पहुँचाने वाला ।  
प्रापण तत् ( पु० ) प्राप्ति, पावना, पहुँचाना, मिलना ।

प्राप्त तत् ( वि० ) लब्ध, आसादित, मिलित, प्रस्था-  
पित ।—काल ( पु० ) निर्दिष्ट काल, उपयुक्त

समय । [ धनादि वृद्धि ।  
प्राप्ति तत् ( स्त्री० ) पाना, लाभ, अधिगम, अपार्जन,

प्राप्य तत् ( वि० ) प्राप्त्य, प्रापणीय ।  
प्रामाणिक तत् ( वि० ) अति मान्य सिद्धान्त, पथार्थ,

सत्य, प्रमाणयुक्त । [ प्रमाण सिद्ध ।  
प्रामाण्य तत् ( पु० ) प्राणत्व, प्रहण करने योग्य,

प्रायः तत् ( अ० ) बाहुल्य, बहुधा, कभी कभी, लग-  
भग, करीब । [ करने वाले कर्म ।

प्रायश्चित्त तत् ( पु० ) पापनाशन कर्म, पापघ्न  
प्रारब्ध तत् ( पु० ) पूर्वसृष्टि कर्म, अरष्ट, प्राक्तन-

कर्म, पूर्व कर्म, भाग्य । [ अनुष्ठान ।  
प्रारम्भ तत् ( पु० ) उत्तम रूप से आरम्भ, उपक्रम,

फटाव दे० (पु०) विलगाव, भिन्नता, भेद, अलगवाव ।  
फटिक तद्० (पु०) पाषाण विशेष, स्फटिक, विद्यौरी  
पथर ।

फड़ दे० (खी०) घृत स्थान, जुवा घर ।  
फड़क दे० (खी०) स्फुरण, रह रह कर फरकना ।  
फड़कना दे० (कि०) स्फुरण होना, फुरफुराना, वायु  
के कारण धातों का ईप्स्व कम्पन, फरकना ।

फड़की दे० (खी०) ओट, प्यथान, अन्तर, आड़ ।  
फड़फड़ाना दे० (कि०) फटफटाना, तलफना, छट-  
पटाना । [ डीठ, यकयादी ।

फड़फड़िया दे० (वि०) भद्भद्विया; जल्दीपान, छट,  
फड़ाना दे० (कि०) चिरवाना, चिराना, फड़वाना ।  
फड़िया, फड़िया दे० (खी०) फिल्ली, भौंगुर, एक  
प्रकार का कीट ।

फड़िया दे० (पु०) पैकार, विसौती, खरीद कर बेचने  
वाला, व्यापारी, फड़वान, जुए के अट्टे का मालिक ।  
फण तत्० (पु०) सर्प का चौड़ा भस्तक, फणा, फण ।  
—धर (पु०) नाग, सर्प, सर्प ।

फणिक्रमक तत्० (पु०) छोटा पत्ता, तुलसीदल ।  
फणिक्रमि तत्० (पु०) सर्पराज, शेष, अनन्त, वासुकी ।  
फणी तत्० (पु०) सर्प, सर्प, नाग, पथर, कील ।  
फणीन्द्र, फणीज तत्० (पु०) सर्पराज, फणिक्रमि,  
वासुकी, अनन्त । [वाला छोटा कीट ।

फतिङ्गा, फतिंगा दे० (पु०) पतङ्ग, पतंग, उड़ने  
फटफुटाना दे० (कि०) फटफट करना, उबलाना, बल-  
लाना, छोटे छोटे दाने पड़ना । [का भस्तक, हुनर ।  
फन दे० (पु०) फण, नाग का मुँह, नाग जाति के सर्प  
फनगा दे० (पु०) अँलफोड़ा, टिङ्गी, कीट विशेष ।  
फनफनाना दे० (कि०) फुफकारना, फुफकार घोड़ना,  
उत्तेजित होना ।

फनि या फनी दे० देखो फन ।  
फनिक दे० (पु०) सर्प, सर्प, फन वाला ।  
फनीज दे० (पु०) सर्पराज, नागेश, सर्प ।  
फफसा दे० (वि०) फूला हुआ, फीका, फोफसा ।  
फफून्दना, फफूँदना (कि०) सड़ना, बसना ।  
फफूँदा, फफूँदा दे० (पु०) किसी वस्तु को सील में  
रखने से उस पर जो यद्वद्वार सफेदी लग जाती है,  
उसे फफूँदा कहते हैं ।

फफूँदी, फफूँदी दे० (खी०) सड़ाहट, गुमसाहट ।  
फफोला दे० (पु०) छाला, स्फोट, स्फोटक, पल्का,  
फासका । [चिन्ता, व्याधि, मानसी व्यथा ।

फफोले फूटना दे० (वा०) मानसिक दुःख, मन की  
फफोले दिल को फोड़ना दे० (वा०) मन की चाह  
 पूरी करना, गुम्मार निकालना, इच्छा पूर्ण करना ।  
फव दे० (खी०) शोभा, मनोहरता, रमणीयता, रम्यता ।  
फवकना दे० (कि०) पनपना, डाल निकलना, शाखा  
फूटना, कल्ला फूटना ।

फवता दे० (वि०) योग्य, सज्जना, ठीक, सुहाभा ।  
फवती कहना दे० (वा०) घटती हुई बातें कहना,  
जुटकुला घोंड़ना, हँसी करना, खुदख करना, किसी  
की शोभा को हसना ।

फवन दे० (स्त्री०) शोभा, शृङ्गार, समावट, छाजन ।  
फवना दे० (कि०) सोहना, शोभना, शोभा देना या पाना ।  
फवि (खी०) कवन, छवि, शोभा । [रमणीय ।  
फवीला दे० (वि०) सजीला, शोभावमान, रम्य,  
फर दे० (पु०) फल, भाला की नाक, फलक ।  
फरकना दे० (कि०) फड़कना, काँपना, स्फुरण होना,  
फुरफुराना, धरधराना ।

फरक (पु०) भटगाव, अन्तर, पार्ष्व । [फड़क ।  
फरक (स्त्री०) फरकने की क्रिया या भाव, चञ्चलता,  
फरकि दे० (कि०) फड़क कर, घराँ कर, धरधरा कर ।  
फरचा दे० (पु०) परिवर्तन, निष्पत्ति, मेघों का फटना ।  
फरवाना दे० (कि०) आशा देना, सुकाना ।

फरछा दे० निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध । [शोधना, मलना ।  
फरछाना दे० (कि०) स्वच्छ करना, निर्मल करना,  
फरजंद (पु०) पुत्र, लड़का, बेटा ।  
फरजी (पु०) शतरंज का एक मोहरा ।

फरफन्द दे० (पु०) छल, कपट, धोखा, धुष्टता ।  
फरफन्दिया दे० (वि०) छली, कपटी, धोखेबाज़ ।  
फरमा (पु०) हाँचा, डौब, कागज़ का पूरा छग  
हुआ तब्लता । [या बनाने के लिये दी जाती है ।

फरमाइश (खी०) आज्ञा खास कर किसी चीज़ लाने  
फरमान (पु०) राजकीय आज्ञापत्र ।  
फरमाना (कि०) आज्ञा देना, कहना ।  
फरलांग (पु०) भूमि की लंबाई का एक माप, न  
फरलांग का एक मील होता है ।



प्रौढ़ि तत् ( स्त्री० ) सामर्थ्य, उत्साह, प्रगल्भता, उद्यम, उद्योग, अध्यवसाय ।—घाद ( पु० ) प्रभुता के सहित विवाद ।

स्रव तत् ( पु० ) मेघ, वानर, चाण्डाल, प्लुतगति, उल्लान, भूमि, जलकाक, पानी, कौड़ी, नौका, नाव, तरण्य ।

स्रवङ्गम तत् ( पु० ) वानर, कपि ।

स्रावन् तत् ( पु० ) जलमग्न, दूबा ।

स्रीहा तत् ( स्त्री० ) रोग विशेष, पिलही, ताप तिहो ।

प्लुत तत् ( पु० ) स्वर विशेष, अतिशय दीर्घ स्वर ।

प्लुति तत् ( स्त्री० ) कूटना, फाँटना, उल्लान ।

प्लोत ( पु० ) पदी, पित्त जो मुँह से गिरता है ।

प्लोप ( पु० ) दाह, जलन ।

## फ

फ यह व्यञ्जन का बाइसवाँ अक्षर है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है इस कारण इस वर्ण की ओष्ठ्य संज्ञा है ।

फाँदना दे० ( क्रि० ) फसना, अटकना, उलझना, रुकना ।

फाँदलाना दे० ( क्रि० ) सुलाना, सुलावा देना, फुसलाना ।

फाँदा दे० ( पु० ) फाँसी, फसदी, उलझन, अटकन ।

फाँसना दे० ( क्रि० ) उलझना, अटकना, बकना, फंदे में फँसना ।

फाँसाव दे० ( पु० ) उलझाव, अटकाव ।

फाँसियावा दे० ( पु० ) बटमार, ठग, जल्लाद ।

फकनी दे० ( स्त्री० ) फकी ।

फकड़ी दे० ( स्त्री० ) अनादर, अपमान, तिरस्कार ।

फकिया दे० ( स्त्री० ) फौक, खण्ड, टुकड़ा, अंश भाग ।

फफोड़िया दे० ( पु० ) बतक्कड़, बकबकिया, बकवादी, गप्पी, बातूनी ।

फफोड़ियात दे० ( स्त्री० ) वे सिर पैर की बात, अनर्थक बात, बिना प्रयोजन की कथा, उटपटाँग बात ।

फफ तत् ( पु० ) दुराचार, दुराचारी ।

फफड़ दे० ( वि० ) निर्हंग, उच्छृङ्खल, डुङ्ग, बखेदिया, झगड़ालू, लड़ाकू । [ वितण्डा ।

फफा ते० ( पु० ) पफ़ा, पतला, पानी सा, पूर्वपल, फफ़ाक ( वि० ) व्यर्थ, बेफायदा ।

फफ़िका तत् ( स्त्री० ) लपेट की बात, असद्व्यवहार, धोखा, सुलावा, मिथ्या, न्याय सम्बन्धी व्याख्या ।

फफ़ी दे० ( स्त्री० ) फाँकी, दवा की मात्रा ।

फगुनहट दे० ( स्त्री० ) फगुन की हवा ।

फगुआ, फगुवा दे० ( पु० ) होली, होली का त्यवहार ।

फफ़ा, फफ़ा दे० ( पु० ) फवल, आस, फफ़ाव ।

फफ़ो, फफ़ी दे० ( स्त्री० ) फकनी ।

फफ़ा दे० ( पु० ) कीट, कीड़ा, पतङ्ग ।

फफ़र ( स्त्री० ) सवेरा, प्रातःकाल ।

फफ़ल ( पु० ) कृपा, अनुग्रह ।

फफ़ीलत ( स्त्री० ) उत्कृष्टता ।

फफ़ीहत या फफ़ीहती ( स्त्री० ) दुर्दशा, दुर्गति ।

फफ़ूल ( वि० ) व्यर्थ ।

फफ़ दे० ( वि० ) प्रकाश प्राप्त, विकसित, फूला हुआ, प्रफुल्लित । ( थ० ) फटकार, तिरस्कार, अनादर, मन्त्राद्य ।

फफ़क तद् ( पु० ) स्फटिक, प्रस्तर विशेष ( क्रि० ) पछोर ।

फफ़कन दे० ( स्त्री० ) पछोरन, अन्नकण ।

फफ़कना दे० ( क्रि० ) पछोरना, अन्न से कण निकालना ।

फफ़कार दे० ( पु० ) तिरस्कार, शाप ।

फफ़करी या फफ़किरी दे० ( स्त्री० ) फिटकरी, चार विशेष ।

फफ़की दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का जाल जिससे पसी पकड़े जाते हैं, व्याध का बड़ा पिंजरा ।

फफ़ना दे० ( क्रि० ) दूटना, टुकड़े होना, तड़कना, खो खण्ड होना ।

फफ़फ़टाना दे० ( क्रि० ) फफ़फ़टाना, व्याकुल होना, हाथ पैर धुनना, विवश होने के कारण उल्लाना कूटना, छुटपटाना ।

फफ़ा दे० ( वि० ) सखिन्न, फाँकदार, दरका हुआ ।

फफ़ाक दे० ( थ० ) शीघ्र, तुरत, तुरन्त, उसी समय, तत्क्षण, तत्काल ।

फफ़ाका दे० ( पु० ) धक्का, बन्दूक आदि का शब्द ।

फफ़ाना दे० ( क्रि० ) अलग कराना, पृथक् कराना, टुकड़े कराना, चिरवाना ।

फाड़ ( पु० ) फसल, अचरा ।

फाड़ दे० ( पु० ) फँदा, फाँसी, पाग, फसड़ी ।

फाड़ना दे० ( क्रि० ) फूटना, फटलना, लाँचना ।

फाँदा दे० ( पु० ) फँदा, फाँसी, फसदी ।

फाँदी दे० ( स्त्री० ) भार, गन्ना का बोझा ।

फाँपना दे० ( क्रि० ) फूटना, सूजना, सूजन होना ।

फाँपा दे० ( वि० ) फूला, सूजा । [ सुँद, विद्र ।

फाँफड़ या फाँफिर दे० ( पु० ) अवकाश, अन्तर, छेद,

फाँस दे० ( पु० ) सूझ कर काटा । [ जाल में बंधाना ।

फाँसना दे० ( पु० ) बाँधना, डलमाना, पकड़ना,

फाँसा दे० ( पु० ) फाँदा, फन्दा, फँसदी ।

फाँसी दे० ( स्त्री० ) दण्ड विशेष, प्राण दण्ड, एक

प्रकार की रस्सी जिसमें गला फँसा कर थादमी

मार डाले जाते हैं ।—देना ( क्रि० ) गले में

फाँसी डाल कर मार डालना ।—पड़ना ( वा० )

मारा जाना, प्राण दण्ड से दण्डित होना ।—

लगाना ( वा० ) गला घोट कर मरना, फाँसी

लगा कर मरना, आत्महत्या करना ।

फाग दे० ( पु० ) होली का खेल, होली में रंग आदि

ढाबना ।—खेलना ( वा० ) होली का खेला

मनाना, रंग डालना, गुठाल या अधीर मलना ।

फागुन या फाल्गुन दे० ( पु० ) फागुन मास, बारहवाँ

महीना ।

फाट ( पु० ) हिस्सा, भाग, चौड़ाई ।

फाटक दे० ( पु० ) मुख द्वार, बड़ा दरवाजा, बाहर

का दरवाजा, सड़ दरवाजा । [ नुकसान ।

फाटना दे० ( क्रि० ) फूटना, टूटना, बिगड़ना,

फाटी दे० ( क्रि० ) फट गई ।

फाड़ ( पु० ) बुराई, दराज, दाँ ।

फाड़लाऊ दे० ( वि० ) काटने वाला, कटहर, कटखन ।

फाड़खाना दे० ( क्रि० ) चिथाड़ना, काटना, काट

खाना, क्रोध करना ।

फाड़ना दे० ( क्रि० ) चीरना, फोड़ना, तोड़ना ।

फाड़ा, फारा दे० ( वि० ) चीरा हुआ, फटा, दरका ।

फावी दे० ( क्रि० ) बली जगी, शोभायमान हुई,

सजी, खुली, सुन्दर लगी ।

फायदा ( पु० ) लाभ ।

फारना ( क्रि० ) फाड़ना, चीरना ।

फारस ( पु० ) भारत वर्ष से पश्चिम, ईरान का देश ।

— ( स्त्री० ) ईरानी भाषा ।

फारा ( पु० ) कतरा, टुकड़ा ।

फाल तत्त्वं ( पु० ) एक प्रकार की जोहे की कील जो इल

के आगे लगाई जाती है, जिससे जमीन खोदी जाती

है । शिव, बलराम, सूती वस्त्र विशेष, नवविध

शपथ के अन्तर्गत अष्टम शपथ, सुवारी का टुक ।

फालिसा दे० ( पु० ) फल विशेष । [ पार्थ ।

फाल्गुन तत्त्वं ( पु० ) वर्ष का बारहवाँ मास, अशुभ,

फाय दे० ( पु० ) खेलवा, हँक, धस्तु खरीदने के याद

जो शिना दाम की वस्तु ली जाती है ।

फावड़ा दे० ( पु० ) कुदाम, कुशारी, फासा ।

फावड़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा कुदाम, कुशारी ।

फसिलता ( पु० ) दूरी, अन्तर ।

फाहा दे० ( पु० ) रुई का छोटा गोला, जो सुगन्ध द्रव्य

अथवा आदि में डूबा रहता है । मलहम की पट्टी ।

फिकारना दे० ( क्रि० ) सिर नम्र करना, सिरभारना ।

फिकिर दे० ( स्त्री० ) चिन्ता, उपाय, कलना ।

फिक ( स्त्री० ) चिन्ता, फिकिर । [ अद्यमान ।

फिट दे० ( पु० ) फिटकार, दुस्कार, तिरस्कार,

फिटकरी दे० ( स्त्री० ) चार विशेष । [ प्राप, सराय ।

फिटकार दे० ( पु० ) धिक्कार, तिरस्कार, गाली,

फिटकारना दे० ( क्रि० ) धिक्कारना, तिरस्कार करना,

शाप देना, सरापना ।

फिटाना दे० ( क्रि० ) फँसाना, सनवाना, घुबवाना ।

फिट्ट दे० ( वि० ) लजित, शर्माया हुआ, शर्ता हुआ ।

यथा— उसका चेहरा 'फिट्ट' पड़ गया ।

फिर दे० ( अ० ) और, पुनः, अगस्त्य, पुनि, बहुवि,

पीछे, बाद, पश्चात् ।

फिरका ( पु० ) नक्का, जमात, कौम ।

फिरकी दे० ( स्त्री० ) एक खेजने की वस्तु, फिरिहरी ।

फिर जाना दे० ( क्रि० ) लौटना, लौटमाना, पल-

टना, मुड़ जाना, पराङ्मुख होना ।

फिरत दे० ( वि० ) फिरा हुआ, लौटाया हुआ, लौटाया

गया, फेरा हुआ । ( स्त्री० ) चापसी, बद कर या

चुप्री का महसूल जो किसी महसूली माल के

नगर में लाये जाने पर ली जाती थीर उस माल

का दूसरी जगह भेजने पर वापिस दी जाती है ।

फरश ( पु० ) घड़ी, दरी, धरातल, समतल भूमि ।

—ी ( स्त्री० ) हुका की नली ।

फरस दे० ( पु० ) विद्वाना ।

फरसा दे० ( पु० ) परश, कुटार, कुल्हाड़ी ।

फरहरा दे० ( पु० ) श्वभा, पताका, केतु ।

फरहरो दे० ( स्त्री० ) झण्डी का कपड़ा । ( गु० )

अधभूखा ।

फंरा ( पु० ) व्यञ्जन विशेष ।

फराक ( पु० ) मैदान, आयत स्थान ( वि० ) लंबा

चौड़ा ।—त ( वि० ) विस्तृत, आयत, लंबा

चौड़ा, समतल ।

फराखी ( स्त्री० ) चौड़ाई, विस्तार, फैलाव, सम्पन्नता ।

फरागत ( स्त्री० ) छुटकारा, मुक्ति, छुट्टी ।

फराठी दे० ( स्त्री० ) खपाची । [ उतरा हुआ ।

फरामोण ( वि० ) विस्मृत, भूला हुआ, चित्त से

फरार ( वि० ) भागा हुआ ।

फरालना ( क्रि० ) पसारना, फैलाना ।

फरास ( पु० ) फाँस ।

फरिया दे० ( स्त्री० ) छोटा बहूंगा, कन्यायों की घघरिया ।

फरी दे० ( स्त्री० ) ढाल, फलक । [ खेती जाती है ।

फरहा दे० ( पु० ) फारड़ा, अन्न विशेष, जिससे मिट्टी ।

फराँटा दे० ( पु० ) वाँस का टुकड़ा, शब्द विशेष ।

फराँना दे० ( स्त्री० ) हिलना, उड़ना, फहराना ।

फल तत्त्वं ( पु० ) शम्य, लाभ, फलक, चर्म, ढाल,

इष्टसिद्धि, अभिप्राय, कर्म जन्म शुभ या अशुभ

फल, अनिष्ट इष्ट ।—जनक ( पु० ) फलक, सफल ।

—द ( वि० ) फलदाता, फलदायक ।—दाता

( पु० ) फल देने वाला, फलप्रद ।—मूल ( पु० )

फल और मूल ।

फलक तत्त्वं ( पु० ) चर्म, ढाल, अस्थिसंरक्ष, नाग-

क्षेसर, काष्ठ, पद्म, पट्टा, तत्त्वा ।—ना ( क्रि० )

छलकना, उमगना, फलकना ।

फलका ( पु० ) फफोला, छाला, फलक ।

फलना दे० ( क्रि० ) सफल होना, फल लगना, फरना ।

फलवृत्तौवल दे० ( पु० ) एक प्रकार का खेल ।

फलवान् तत्त्वं ( वि० ) सफल, सार्थक, फलयुक्त ।

फला दे० ( पु० ) युक्त अक्षर, सारे स्वर, धायादि का

अप्रमाण, अक्षों की धार ।

फलाङ्ग दे० ( पु० ) द्युत गति, लाँफ, लहनु, फलास ।

फलाना दे० ( पु० ) अमुक ।

फलाफल तत्त्वं ( पु० ) लाभालाभ, हिताहित ।

फलास दे० ( पु० ) डेग, फलाङ्ग । [ भोजन ।

फलाहार तत्त्वं ( पु० ) फल भोजन, अन्नान्निक

फलित तत्त्वं ( वि० ) फल विशिष्ट, सफल, ज्योतिष

विशेष ।

[ तात्पर्यार्थ, सिद्धान्त ।

फलितार्थ तत्त्वं ( पु० ) [ फलित + अर्थ ] सिद्ध अर्थ,

फलियाँ दे० ( स्त्री० ) छीमी, फली ।

फली तत्त्वं ( पु० ) फल युक्त, फलयान्, सफल, फल

विशिष्ट, छीमी, फलियाँ ।

फलुषा दे० ( पु० ) गठीला, फाल्गुन ।

फलोदय तत्त्वं ( पु० ) [ फल + उदय ] लाभ, प्राप्ति,

मनोरथ सिद्धि, आनन्द ।

फलोत्तमा तत्त्वं ( स्त्री० ) द्राक्षा वृक्ष, मुनका ।

फल्का दे० ( पु० ) फफोला, छाला ।

फलुगु तत्त्वं ( पु० ) असार, निरर्थक, तुच्छ । ( पु० )

गया की एक नदी का नाम । इसी नदी के तीर

पर गया शहर बसा है ।

फण्वारा दे० ( पु० ) कुहारा ।

फसकड़ दे० ( पु० ) पैर फँसा कर बैठना ।

फसकना दे० ( क्रि० ) फटना, फूटना, दरकाना, भर-

कना, ढीला होना, शिथिल होना ।

फसकाना दे० ( क्रि० ) फाड़ना, दरकाना, ढीला

करना, शिथिल करना ।

फसड़ी दे० ( स्त्री० ) फाँसी, फन्दा ।

फसना दे० ( क्रि० ) बसना, रुकना, बलकना ।

फसफसा दे० ( वि० ) निर्बल, पिछपिछा ।

फसटी ( स्त्री० ) फन्दा, फाँसी ।

फसाना दे० ( क्रि० ) उलकाना, बसकाना, अधीन

करना, घरा में करना ।

फहरना या फहराना दे० ( क्रि० ) उड़ाना, फारना ।

फाँक दे० ( क्रि० ) फल आदि का टुकड़ा, अंश, विभाग,

हिस्सा, भाग ।

फाँकना दे० ( क्रि० ) फट्टा मारना, खाना, चढ़ाना ।

फाँकी दे० ( स्त्री० ) पूर्वपक्ष, न्याय की व्याख्या,

राष्ट्रीय प्रश्नों का विचार, फकिरका, दया की माँग,

चूँच देना । ( क्रि० ) चोका देना ।

फाँड़ ( पु० ) धड़ल, अचरा ।

फाँड़ दे० ( पु० ) फँड़ा, फाँसी, पाग, फसड़ी ।

फाँड़ना दे० ( क्रि० ) फूटना, धड़लना, लड़ाना ।

फाँड़ा दे० ( पु० ) फँड़ा, फाँसी, फसड़ी ।

फाँड़ी दे० ( स्त्री० ) भार, गन्धों का बोझ ।

फाँपना दे० ( क्रि० ) फूटना, सूजना, सूजन होना ।

फाँपा दे० ( वि० ) फूला, सूजा । [ मुँह, जिंद ।

फाँफड़ या फाँफूर दे० ( पु० ) अवकाश, अन्तर, छेद,

फाँस दे० ( पु० ) सूक्ष्म कटाई । [ जाल में बन्धना ।

फाँसना दे० ( पु० ) बाँधना, बन्धना, पकड़ना,

फाँसा दे० ( पु० ) फाँसा, फन्दा, फँसड़ी ।

फाँसी दे० ( स्त्री० ) दण्ड विशेष, प्राण दण्ड, एक

प्रकार की रस्सी जिसमें गला फँसा कर यादमी

मार डाले जाते हैं ।—देना ( क्रि० ) गले में

फाँसी डाल कर मार डालना ।—पड़ना ( वा० )

मारा जाना, प्राण दण्ड से दण्डित होना ।—

लगाना ( वा० ) गला घोट कर मरना, फाँसी

लगा कर मरना, आत्महत्या करना ।

फाग दे० ( पु० ) होली का खेल, होली में रंग यादि

झाड़ना ।—खेलना ( वा० ) होली का खेला

मनाना, रंग डालना, गुलाल या अथी मलना ।

फागुन या फाल्गुन दे० ( पु० ) फागुन मास, शरद्वर्ष

महीना ।

फाट ( पु० ) हिस्सा, भाग, चौड़ाई ।

फाटक दे० ( पु० ) मुख्य द्वार, बड़ा दरवाज़ा, बाहर

का दरवाज़ा, सदर दरवाज़ा । [ नुकसान ।

फाटना दे० ( क्रि० ) फूटना, टूटना, बिगड़ना,

फाटी दे० ( क्रि० ) फट गई ।

फाड़ ( पु० ) सुरास, दराज, दाँ ।

फाड़खान दे० ( वि० ) काटने वाला, कटहा, कटखना ।

फाड़खाना दे० ( क्रि० ) चियाड़ना, काटना, काट

खाना, क्रोध करना ।

फाड़ना दे० ( क्रि० ) चीरना, फोड़ना, तोड़ना ।

फाड़ा, फारा दे० ( वि० ) चोरा हुआ, फटा, दरका ।

फावो दे० ( क्रि० ) मली जगी, शोभायमान हुई,

सजी, खुजी, सुन्दर लगी ।

फायदा ( पु० ) लाभ ।

फारना ( क्रि० ) फाड़ना, चीरना ।

फारस ( पु० ) भारत वर्ष से पश्चिम, ईरान का देश ।

— ( स्त्री० ) ईरानी भाषा ।

फारा ( पु० ) कुतरा, टुकड़ा ।

फाल तत्व ( पु० ) एक प्रकार की लोहे की कील जो हल

के आगे लगाई जाती है, जिससे ज़मीन खोदी जाती

है । शिव, बलराम, सुनी वल विशेष, नवविध

शपथ के अन्तर्गत अष्टम शपथ, सुवारी का टुक ।

फालसा दे० ( पु० ) फल विशेष । [ पार्थ ।

फाल्गुन तत्व ( पु० ) वर्ष का बारहवाँ मास, अर्जुन,

फाव दे० ( पु० ) खेलवा, कूँक, वस्तु खरीदने के बाद

जो बिना दाम की बस्तु ली जाती है ।

फावड़ा दे० ( पु० ) कुदर, कुशरी, करसा ।

फावड़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा कुदर, कुशरी ।

फसिजा ( पु० ) दूरी, अन्तर ।

फाहा दे० ( पु० ) रुई का छोटा गोला, जो सुगन्ध द्रव्य

अंतर आदि में डूबा रहता है । मछइम की पट्टी ।

फिकारना दे० ( क्रि० ) सिर नम्र करना, सिरधारना ।

फिकिर दे० ( स्त्री० ) चिन्ता, उपाय, कथन ।

फिक ( स्त्री० ) चिन्ता, फिकिर । [ अपमान ।

फिट दे० ( पु० ) फिटकार, ठुकरा, तिरस्कार,

फिटकरी दे० ( स्त्री० ) चार विशेष । [ पाप, सराप ।

फिटकार दे० ( पु० ) धिक्कार, तिरस्कार, गाली,

फिटकारना दे० ( क्रि० ) धिक्कारना, तिरस्कार करना,

शाप देना, सरापना ।

फिटाना दे० ( क्रि० ) फँवाना, सनवाना, हुचवाना ।

फिट्ट दे० ( वि० ) लज्जित, शर्मिला हुआ, शर्मा हुआ ।

यथा— उसका चेहरा 'फिट्ट' पड़ गया ।

फिर दे० ( अ० ) और, पुनः, अनन्तर, पुनि, बहुरि,

पीछे, बाद, पश्चात् ।

फिरका ( पु० ) अग्रा, जमाव, कौम ।

फिरकी दे० ( स्त्री० ) एक खेलने की वस्तु, फिरिहिरी ।

फिर जाना दे० ( क्रि० ) लौटना, लौटमाना, पल-

टना, मुड़ जाना, पराङ्मुख होना ।

फिरत दे० ( वि० ) फिरा हुआ, लौटाया हुआ, लौटाया

गया, फेरा हुआ । ( स्त्री० ) चापसी, वह कर या

चुकी का महसूल जो किसी महसूली माल के

नगर में लाये जाने पर ली जाती और उस माल

का दूसरी जगह भेजने पर चापिस दी जाती है ।

फिरता दे० ( कि० ) रमता, चलता, घूमता ।  
 फिरना दे० ( कि० ) घूमना, अमण, करना, पर्यटन करना, रमना, लौटना, पलटना, सुझना ।  
 फिराना दे० ( कि० ) घुमाना, लौटाना पलटाना, मोड़ना ।  
 फिराव दे० ( पु० ) घुमाव, फेरवद्वज, पलटाव ।  
 फिरे दे० ( कि० ) लौटे, घूमे, उलटे, वापस आये, खौट आया ।  
 फिरी दे० ( स्त्री० ) खिंची, फिरहिरी ।  
 फिरी दे० ( स्त्री० ) खेलने की एक वस्तु ।  
 फिरली दे० ( स्त्री० ) पिंडली, घुटना । [पीछा करना ।  
 फिसफिसाना दे० ( कि० ) डरना, भीत होना, आगा  
 फिसलन दे० ( स्त्री० ) बिड़लन, रपटन । [रपटना ।  
 फिसलना दे० ( कि० ) बसकना, गिरना, खिसकना,  
 फिसलना दे० ( वि० ) बिड़लना, पिच्छल, जहाँ  
 की भूमि बहुत चिकनी हो ।  
 फिसलाव ( पु० ) बिड़लन, रपटन । [रपटना ।  
 फिसलाहट दे० ( स्त्री० ) चिकनाहट, बिड़लाहट,  
 फिहरिस्त ( स्त्री० ) खाता, सूची, बही ।  
 फीचना दे० ( कि० ) धोना, धोती धोना, कपड़े धोना ।  
 फीका दे० ( वि० ) नीरस, स्वाद रहित, ऊसठ, सीठा,  
 जो न मीठा हो न निमकीन ।  
 फीता ( पु० ) कपड़े की पट्टी ।  
 फुँकार दे० ( पु० ) फुफकार, कुद्ध सर्प आदि का शब्द ।  
 फुकना दे० ( कि० ) जलना । ( पु० ) आग फुकने की  
 निगाबी । मृदाधार, थैली ।  
 फुकनी दे० ( स्त्री० ) आग फूँकने के लिये बाँस की या  
 धातु विशेष की चोंगी ।  
 फुँगी, फुनगी ( स्त्री० ) कली, फुनगी । [थकेला ।  
 फुट दे० ( वि० ) अलग, भिन्न, आयुग्म, एकांकी,  
 फुटकर या फुटकल दे० ( वि० ) भिन्न भिन्न, अलग  
 अलग, पृथक् पृथक्, कई प्रकार की वस्तुओं का  
 समूह जैसे "फुटकर खर्च ।" [एकाकी ।  
 फुटकी दे० ( स्त्री० ) छिटकी, अयुग्म, असहाय, अकेला,  
 फुटल दे० ( वि० ) फुट, आयुग्म, अकेला ।  
 फुड़िया दे० ( स्त्री० ) फुंसी, छोटा घाय ।  
 फुटकार दे० ( पु० ) दुस्कार, तिरस्कार ।  
 फुटकना दे० ( कि० ) कुटना, उड़कना ।

फुद्गो दे० ( स्त्री० ) पंडि विशेष । [पत्ते ।  
 फुनगी दे० ( स्त्री० ) कली, कोंपल, मञ्जरी, कोसल  
 फुनंग दे० ( स्त्री० ) पेड़ का शिखर, पेड़ की सबसे  
 ऊँची चोटी ।  
 फुँसी दे० ( स्त्री० ) अन्धोरी, गर्मी के दिनों में पसीना  
 मरने से जो छोटी छोटी फुनसी निकलती है ।  
 फुँदना दे० ( पु० ) झुंझा, झालर, गुच्छा, खवक ।  
 फुफ्फा दे० ( पु० ) बुआ के पति, फुफ्फु के स्वामी,  
 फूफा ।  
 फुफ्फु दे० ( स्त्री० ) पिता की बहिन, फूफा, बूफा ।  
 फुफकार दे० ( पु० ) फुकार, फूँ फूँ का शब्द,  
 फुँकार ।  
 फुफोरा दे० ( वि० ) फुफा के सम्बन्धी ।  
 फुर दे० ( पु० ) सख, यथार्थ, ठीक, परीक्षित, सच्चा,  
 प्रमाखित ।  
 फुरफुराना दे० ( कि० ) शरीर के रोंगटों के सहसा  
 खड़े होने से शरीर का एक बार काँप उठना,  
 काँपना, हिलना ।  
 फुरफुरी दे० ( स्त्री० ) थरथरी, कम्प, कम्पन ।  
 फुरहारी दे० ( स्त्री० ) कपकपी, हिरन ।  
 फुरि } दे० ( कि० ) सूफकर, सूफी, उपजी, ध्यान  
 फुरी } में आई ।  
 फुर्त दे० ( वि० ) फुर्तीला, बेगवान् ।  
 फुर्ती दे० ( स्त्री० ) शीघ्रता, चटपटी । [बाला ।  
 फुर्तीला दे० ( वि० ) चटपटा, बेगवान्, शीघ्र करने  
 फुलका दे० ( वि० ) फूला हुआ, हलका ( पु० )  
 फफोला, पतली रोटी । [ठंडा ।  
 फुलकारना दे० ( कि० ) फुफकारना, फुलाना, फन  
 फूलकारी दे० ( पु० ) एक प्रकार का कपड़ा, जिसमें  
 सुई के काम बने रहते हैं, नैनू कपड़ा ।  
 फुलकी दे० ( स्त्री० ) हलकी रोटी, पतली रोटी ।  
 फुलभड़ी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की  
 आतशबाजी ।  
 फुलवाई दे० ( स्त्री० ) फुलवाही, उपवाटिका, फूलों का  
 बगीचा । [उपवाटिका ।  
 फुलवाड़ी या फुलवारी दे० ( स्त्री० ) उपोयान,  
 फुलहथा दे० ( पु० ) लाठी की मार ।  
 फुलाना दे० ( कि० ) सुझाना, मोटा करना, फुला देना ।

कुलासरा दे० ( पु० ) लकड़ो चप्पो ।  
 कुलेल दे० ( पु० ) युगन्धित लेल ।  
 कुलौरी दे० ( स्त्री० ) चेलन या भूँग की पकौड़ी ।  
 कुल्ल ( वि० ) खिल्ला हुआ ।— ( वि ) फूटा हुआ ।  
 कुल्लो दे० ( स्त्री० ) साल का एक रोग, नाक का एक  
 आम्बुषण, पुँगनिया ।  
 कुसकुसाना दे० ( क्रि० ) छिप कर बातें करना, काना  
 कानी करना, गुप्त बातें करना ।  
 कुसकुसाइट ( स्त्री० ) कुसकुस करने का भाव, द्वेष ।  
 कुसलाऊ ( वि० ) बहकाने वाला । [ धोखा देना ।  
 कुसलाना दे० ( क्रि० ) झुलावा देना, झूलाना,  
 कुसलावा ( पु० ) झूलाना, चकमा, झुलावा ।  
 कुसाहिन्दा दे० ( वि० ) धिनौना, घृणास्पद, दुर्गन्धी ।  
 कुस्का दे० ( वि० ) दुर्बल, शक्तिहीन, ढीला ( पु० )  
 छाया, फकोला ।  
 कुहारा दे० ( पु० ) कववारा, जल की कल विशेष ।  
 फूँ ( स्त्री० ) फुककार, सर्प आदि का साँस लेना ।  
 फूँक दे० ( स्त्री० ) धाँस, साँस दम, प्राण ।—देना  
 ( वा० ) आग लगाना, मन्त्र से काढ़ना ।—फूँक  
 कर पाँध धरना ( वा० ) सावधानी से काम  
 करना, सोच विचार कर चलना ।  
 फूँकना दे० ( क्रि० ) भाग मुकगाना, बजाना ।  
 फूँकारना दे० ( क्रि० ) फनफनाना, फुककारना, क्रोध  
 का निव्यास ।  
 फूँही दे० ( स्त्री० ) झौली, छोटी बूँद ।  
 फूँकना दे० ( क्रि० ) मुँह से हवा निकालना, आग  
 झुलगाना ।  
 फूफ्फा ( स्त्री० ) बुधा, पिता की बहिन ।  
 फूट दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, ककड़ी, पकी हुई  
 ककड़ी, विरोध, परस्पर द्वेष, अनमेल, असम्मति,  
 झलगाव, झिजगाव ।—फूटना ( वा० ) विरोध  
 होना, द्वेष बढ़ना, विरोध उत्पन्न होना ।—फूट  
 कर रोना ( वा० ) दुःख रोना, बड़े कष्ट से रोना ।  
 —रहना ( वा० ) द्वेष बढ़ना, खल्लग होना ।  
 —होना ( वा० ) अनमनाना, झिजगाव ।  
 फूटन दे० ( स्त्री० ) अनमनाना, विरोध, द्वेष ।  
 फूटना दे० ( क्रि० ) फटना, टूटना, नष्ट होना, टुकड़े  
 टुकड़े होना ।

फूटला दे० ( वि० ) टूटा हुआ, फूटा, नष्ट भट्ट, भग्न ।  
 फूटा दे० ( पु० ) भग्न, खण्डित, टूटा ।  
 फूटी दे० ( क्रि० ) टूटी हुई, भग्न । ( स्त्री० ) झंझी  
 कौड़ी ।—महँ पर काजल न सड़ें ( वा० )  
 समय पर सामान्य कष्ट न सह कर पीछे सखि  
 कष्ट उठाना, छोटे कष्ट से बचने के लिये बड़े कष्ट  
 में फैसला । [ पति  
 फूफा दे० ( पु० ) फूफा के पति, रिता के भगिनी-  
 फूल दे० ( पु० ) पुष्प, कुसुम ( क्रि० ) फूला, खिलना,  
 खुल गया ।—फोड़ी ( स्त्री० ) एक प्रकार का साग ।  
 फूलना दे० ( क्रि० ) खिलना, खूबना, फूलसना, आन-  
 न्दित होना ।  
 फूलाव दे० ( पु० ) सृजन, शोष, फुलावट ।  
 फूली दे० ( स्त्री० ) भाँस का रोग । "फूलना क्रिया  
 का भूत काल" ( स्त्री० ) फूली हुई ।  
 फूम दे० ( पु० ) घुष, घास, मूर्ख घास ।—में निग-  
 गारी डालना ( वा० ) झगड़ा उठाना, झगड़ा  
 टंटा करना ।  
 फूलड़ा दे० ( पु० ) गूदड़, कगाड़ा, प्रशी, पुराने पत्र ।  
 फूसी दे० ( स्त्री० ) चोकर, भूली ।  
 फूदड़ या फूहर दे० ( वि० ) शरिषित, धनमौला,  
 मूर्ख ।—पन ( पु० ) भद्रापन ।  
 फूहड़ा या फूहरा दे० ( वि० ) कुलित वादी, कुपका ।  
 फूहा दे० ( पु० ) रुई का फाहा जिते धूप में गिगो  
 कर बर्षों को पिलाते हैं ।  
 फूहार, फूहारी दे० ( स्त्री० ) झौली, छोटी पोटी बूँद ।  
 फूँक दे० ( स्त्री० ) प्रपेप, निपेप, त्याग ।  
 फूँकना दे० ( क्रि० ) प्रपेपण करना, त्यागना, दूर  
 करना, निकाल देना, अलग कर देना, पीछे की  
 सरपट चौहाना । जब पराधीन की के त्याग के अर्थ  
 में इसका प्रयोग होता है ।  
 फूँक देना ( वा० ) दूर गिरा देना, निपेप करना ।  
 फूँकाव दे० ( पु० ) फूँक, त्याग ( वि० ) त्यागने  
 योग्य, फूँकने योग्य ।  
 फूँकैत दे० ( पु० ) फेकने वाजा ।  
 फूँट दे० ( स्त्री० ) फमरपन्न, फटियन्न, पटुन ।  
 —बाँधना ( वा० ) उबार होना, त्रिबार होना,  
 प्रसृत होना, डानना, फमर बाँधना, कुपडगी ।

फेंटना दे० ( क्रि० ) मिलाना, बेसन आदि को अच्छी तरह सागना ।

फेंटा दे० ( पु० ) मुरेठा, साफा ।

फेंटी दे० ( स्त्री० ) घाँटा, लच्छा, अड़ैया । [असामर्थ्य ।

फेकड़ी दे० ( स्त्री० ) चलने की शक्ति, आगमन का फेण तद्० ( पु० ) फेन, झाग, गाद, मल ।

फेन तत्० ( पु० ) झाग, समुद्र कफ, जलमल ।—दार फेनयुक्त ।—चाही ( पु० ) जल, रस, समुद्र, दूध ।

फेनाना दे० ( क्रि० ) झाग आना, फेन उठना, धान्त होना, धकित होना । [ मिठाई ।

फेनी दे० ( स्त्री० ) पकवान विशेष, एक प्रकार की फेनुस दे० ( पु० ) अमृत, सुधा, पीयूष, नव प्रसूत, गौ और भैंस का दूध । [साँस लो जाती है, लंगड़ ।

फेफड़ा ( पु० ) छाती के ऊपर का भाग जिसके द्वारा फेफड़ी ( स्त्री० ) शून्य, चलनशक्ति ।

फेर दे० ( श्र० ) पुनः, पुनि, यहुरि, पारवार । ( पु० ) घुमाव, आँकापन, चकता, चकर, पलटाव, बदली, घुरे विन, अभाग्य, फटिनता ।—खाना ( वा० ) चकर खाना, भटकना, कट उठाना, दुःख सहना ।

—देना ( वा० ) लौटा देना, पलटा देना, पीछा दे देना, प्रत्यर्पण करना ।—फार ( वा० ) अदल बदल, झल कपट, धोखा, झूठ उधर ।

फेरना दे० ( क्रि० ) लौटाना, घुमाना, हटाना ।

फेरा दे० ( पु० ) घुमाव, प्रदक्षिण, भाँवर, ससपत्नी ।

फेराफेरी दे० ( स्त्री० ) अलट्टी पलट्टी, परस्पर अर्पण ।

फेरी दे० ( स्त्री० ) प्रदक्षिणा, भिड़ा मँगना, भिड़ा के लिये चकर लगाना ।—वाला ( पु० ) विसाँती, पैकार, गली गली घूम कर येचने वाला दूकानदार ।

फेरू तत्० ( पु० ) सियार, श्याल, गीदड़ ।

फेरू दे० ( पु० ) फेर, चकर, चक्र, घुमाव ।

फेंटा ( पु० ) देखो " फेंटा " ।

फैलना दे० ( क्रि० ) पसरना, बिखरना, बखरना, चारों ओर फैल जाना ।

फैलाना दे० ( क्रि० ) बिछाना, पसारना, बिखार युक्त करना, चौड़ाना, प्रचार करना, प्रकाश करना ।

फैलाव दे० ( पु० ) पसराव, प्रचार, बिछाव ।

फोंक दे० ( शु० ) खोखला, पोला, भीतर से शून्य, थोया । ( स्त्री० ) पाय का एक भाग जिधर पेच लगाया जाता है ।—नी ( स्त्री० ) नली, छड़ी ।

फोंफी दे० ( स्त्री० ) नली, छड़ी, नलिका, एक प्रकार का बाजा । ( वि० ) पोली, खोखली ।

फोंहार दे० ( स्त्री० ) फुहार, फूँदी, भौंसी

फोंक दे० ( पु० ) सीठी, निस्तार वस्तु ।

फोकट दे० ( पु० ) छूँछा, कद्दाल, दरिद्र । ( शु० ) सेंट का, बिना दाम का, बिना परिश्रम का ।

फोकड़ दे० ( पु० ) घूरा, कूड़ा ।

फोकर ( पु० ) दरिद्र, दीन, फंगाल ।

फोंड़ना दे० ( क्रि० ) तोड़ना, भग्न करना, नष्ट करना, फाड़ना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना ।

फोंड़ा दे० ( पु० ) ब्रथ, स्फोटक, पिरकी । ( क्रि० ) तोड़ा, तोड़ दिया, टुकड़े कर दिया ।

फोरा दे० ( क्रि० ) सोव दिया, तोव डाला ।

फोला दे० ( पु० ) फफोला, झाला, फुस्का । [झाला ।

फोस्का दे० ( पु० ) फफोला, फोला, फुलका, झलका, फौज दे० ( स्त्री० ) सेना, सैन्य, सैनिक, थोड़ा ।

—दारी ( स्त्री० ) झगड़ा टंटा, मारपीट ।—नी ( वि० ) सैनिक ।

फौत दे० ( स्त्री० ) मृत्यु, मरण, निधन ।

फौज दे० ( श्र० ) मुरन्त, शीघ्र ।

फौलाद ( पु० ) पक्का लोहा ।—नी ( वि० ) फौलाद का बना हुआ ।

व

व यह व्यञ्जन का तेईसवाँ वर्ण है, यह ओष्ठ्य वर्ण है,

क्योंकि इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है ।

व तत्० ( पु० ) वरुण, समुद्र, सागर, जल ।

वैक ( पु० ) मुकाव, मुकावट ।

वैकाई दे० ( स्त्री० ) चकता, टेढ़ापन, तिरछापन ।

वैंग ( पु० ) राँगे की भस्म का रस विशेष, वंगाल ।

वैंगरी दे० ( स्त्री० ) स्त्रियों का एक आभूषण जो पहुँचे पर पहिना जाता है ।

बंगला ( पु० ) अंगरेजी बंग का मकान ।  
 बंगाल ( पु० ) भारतवर्ष का पूर्वी प्रान्त विशेष ।  
 बंगालिन ( स्त्री० ) बंगाल देश वासिनी स्त्री ।  
 बंगाली ( स्त्री० ) बंगाल का वासिन्दा ।  
 बंगी ( स्त्री० ) भोंरा, लट्ठ ।  
 बंजर ( वि० ) उजाड़, ऊसर, बोरान ।  
 बंजारा ( पु० ) रोजगारी, वह ज्योपारी जो बेल आदि पर माल लाद कर घूमा करता है ।  
 बंजारी ( स्त्री० ) बंजारे की स्त्री ।  
 बँभोटी दे० ( स्त्री० ) ओषधि विशेष, गर्भ नाशक ओषधि ।  
 बँटवाना दे० ( क्रि० ) विभाग करना, बँटाना, हिस्सा लगाना । [ कर्त्ता ]  
 बँटवैया दे० ( पु० ) बाँटने वाला, विभाजन, विभाग-  
 बँटाना दे० ( क्रि० ) भाग करना, हिस्सा करना, भाग लगाना ।  
 बंडी दे० ( स्त्री० ) छोटा झगड़ा, अथर्वहर्ष ।  
 बंडेरी ( स्त्री० ) घर के छत, का सर्वोच्च भाग ।  
 बंडौहा दे० ( पु० ) बरबड़, चक्रवात, अन्धड़ ।  
 बंद ( पु० ) बंधन ।  
 बंदगी ( स्त्री० ) सलाम, पूजा, गुलामी ।  
 बंदनधार ( पु० ) उत्सव के अवसर पर द्वार पर बाँधी जाने वाली पत्तों की माला ।  
 बंदर ( पु० ) धानर ।—ने ( स्त्री० ) बंदर की मादा ।  
 बंदी ( पु० ) भाद, चारण, जैदी ।—गृह ( पु० ) जेलखाना ।—जन ( पु० ) चारण, भाद ।  
 बंदूक ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध आग्नेयास्त्र विशेष ।  
 बंदूहा ( पु० ) दूफान, अंधड़ ।  
 बंदोड़ ( स्त्री० ) बाँदी, भौकरीनी ।  
 बंदोबस्त ( पु० ) प्रत्यक्ष व्यवस्था ।  
 बंदोल ( पु० ) दासीपुत्र ।  
 बंध ( पु० ) गिरी, गाँठ, बन्धन ।—क ( पु० ) रहन, धाती, गिरवी, धरोहर ।—जा ( क्रि० ) गाँठ पड़ना, बंध होना, प्रैद होना ।—जाना ( क्रि० ) गाँठ दिलवाना ।—ई ( स्त्री० ) बाँधने की मजदूरी ।  
 बंधानी ( स्त्री० ) कुली, मजदूर ।  
 बंधुआ ( ए० ) बंदी, जैदी ।

बंधुर ( वि० ) ढाल, चढ़ाव, उतराव । ( पु० ) हंस पत्नी ।  
 बंधेज ( पु० ) बंधान, नियत ।  
 बंसी ( स्त्री० ) बाँस का बना मुँह से बजाने का वाजा ।  
 बस्त्र दे० ( पु० ) लता, लतिका, बेल ।  
 बक तव० ( पु० ) पक्ष विशेष, बगला ।—ध्यान लगाना ( पा० ) पालक करना, दम्भ करना, महत्त्व साधने के लिये धार्मिक वनना दिवौआ धर्म । असुर विशेष, श्रीकृष्ण के हाथ से मार गया है । श्रीकृष्ण गोप बालकों के साथ गाय चराने के लिये वन गये थे, वहाँ प्यासी गायों को जल पिलाने के लिये वे एक तालाब पर गये । उसी समय बकरूपधारी असुर श्रीकृष्ण को निगल गया । अनन्तर श्रीकृष्ण के तेज से अग्नि होकर उसने श्रीकृष्ण को उगल दिया उपरान्त श्रीकृष्ण ने उसकी बाँच पकड़ कर उसे मार डाला ।  
 बक दे० ( स्त्री० ) बकवाद, बकबक, निरर्थक बात, बकवादहट, गुलगवाड़ा, व्यर्थ की बातें । बगला, एक पक्षी का नाम ।—भक्त ( पा० ) बकबक, बकवाद ।—भक्त करना ( पा० ) मगड़ा डंठा करना, बकवाद करना, घृणा करना ।—बक करना ( पा० ) बोल चाल करना, मन माने करना ।—बक लगाना ( पा० ) गुलगवाड़ा करना, झिझकाना, शोर मचाना ।  
 बकली दे० ( स्त्री० ) ओषधि विशेष ।  
 बकना दे० ( क्रि० ) बकवाद करना ।  
 बकबकिया दे० ( वि० ) बालूनी, गप्पी, बकबादी ।  
 बकवाद दे० ( पु० ) बकबक, बकबक ।  
 बकबादी दे० ( पु० ) बकबकिया, गप्पी, गपोड़िया, बूयाबादी ।  
 बकबास्त दे० ( पु० ) बकवाद, बाचालता, मुसरापन ।  
 बकबाहा दे० ( पु० ) बड़बड़िया, बकी, बाचाल, बकबादी, बकवाद करने वाला ।  
 बकरा दे० ( पु० ) अज, धाग, धागल ।  
 बकरी दे० ( स्त्री० ) छेरी, धागी, धाना ।  
 बकला दे० ( पु० ) दितका, धाग, लकड़, लचा ।  
 बकसा दे० ( पि० ) समेट, मित्रान, मन्येजी ।





वनायुज तत् ( पु० ) घोड़ा, अश्व, अरवी घोड़ा ।

वनाव दे० ( पु० ) वनावट, सिंगार, सजावट, मिलाप, मिश्रता । [ आकार, सङ्गठन ।

वनावट दे० ( स्त्री० ) रचना, निर्माण, डीठडौल,

वनावटी दे० ( स्त्री० ) कारुणिक, यगयी हुई,

कथना प्रवृत्त, मिथ्या । [ प्रदान

वनिज दे० ( पु० ) वाणिज्य, व्यापार, जेनदेन, आदान

वनिया दे० ( पु० ) वणिक, व्यापारी, सौदागर ।

वनियायन दे० ( स्त्री० ) वणिक स्त्री, वनिये की स्त्री ।

वनी दे० ( स्त्री० ) बुलहिन, नई बहू ।

वनेटी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की छाती, जिसके

दोनों ओर गोल जट्टे लगे रहते हैं, अथवा कोई

कोई मराल लगा देते हैं और उस लकड़ी को

धुमाते हैं ।

वनैनी दे० ( स्त्री० ) वनिये की स्त्री ।

वनैला दे० ( जि० ) अल्लू, वनवासी । [ रत्न ।

वनोदिया दे० ( स्त्री० ) कपाली रत्न, कपास के समान

वन्दनधार दे० ( पु० ) तोरण ।

वन्दर दे० ( पु० ) वानर, कपि, मकंद, जहाजों के

ठहरने का स्थान ।—की सी छाँल बदजना

( वा० ) शीघ्र फीस करना, बहुत जल्दी रिसाना,

मुलाहिजा तोड़ना ।—की तरह नचाना ( वा० )

अपने अधीन को तंग करना ।—फटा जाने

अदरक का स्वाद ( वा० ) निर्गुण गुण की

परीक्षा नहीं कर सकना, अयोग्य योग्य के गुणों का

आदर करना नहीं जानना ।—खत ( पु० ) असाध्य

घाव, कठिन फोटा । [ खीट, वन्दर की स्त्री ।

वन्दरी दे० ( स्त्री० ) स्रग्ग विशेष, एक प्रकार की

चन्द्री तद् ( पु० ) यशोगायक, स्तुतिकर्ता, भाट

आरण्य, कैदी, वन्धुआ । श्रृण्व विशेष, जिसे मित्रार्थ

महक पर लगाती हैं ।—गुह ( पु० ) जेलखाना,

कारागार ।—जेन ( पु० ) भाट, चारण, गुण

बखान करने वाले । [ चेरी ।

वन्देही दे० ( स्त्री० ) दाम्नी, परिवारिका, सेविका,

वन्दोल दे० ( पु० ) शृंगपुत्र, दास का खट्वा ।

वन्ध तत् ( पु० ) बांधना, गाँठ, ग्रन्थि ।—में पड़ना

( वा० ) फन्द में फसना, आकृत में पड़ना, कैद

होना, जेल में पड़ना ।

वन्धक तत् ( पु० ) बाँती, धरोहर, निवेय, न्यास,

गिरों ।—दाता ( पु० ) शृण्वदाता, रेहनदार ।

—धारी ( पु० ) गिरा रखने वाला, न्यासधारी ।

—पत्र ( पु० ) रेहननामा ।

वन्धन तत् ( पु० ) बांधना, गाँठ, कैद, गिरा

लगाना, कैद करना । [ जोडा माना ।

वन्धना दे० ( कि० ) वन्ध होना, सटकना, बन्धाना,

वन्धाई दे० ( स्त्री० ) बांधने का काम, बांधना, बांधने

की मजूरी ।

वन्धान दे० ( स्त्री० ) बन्धन, नियत शास्त्रीयिका,

निश्चित वृत्ति, नियत वृत्ति, किसी बात का निरवध ।

वन्धानी दे० ( पु० ) परपर होने वाला, नशा का

नित्य संयक, चाफ़ीमची ।

वन्धु तद् ( पु० ) मित्र, सुहृद, प्रेमी, सम्बन्धी ।

वन्धुआ दे० ( वि० ) बन्धित, बाँधा हुआ, कैदी,

बन्दी । [ विहङ्ग ।

वन्धुर तद् ( वि० ) बन्धाय, वतराय । ( पु० ) हंस,

वन्धुल तद् ( पु० ) असती पुत्र, वेश्या पुत्र, भद्रुषा

विवाल का बेटा ।

वन्धेज दे० ( पु० ) वन्धान, नियमित ।

वन्ध्या तद् ( स्त्री० ) बाँध स्त्री, अशुभवर्णी की ।

वन्धा दे० ( कि० ) बाना, तैयार होना, सुधारना ।

( पु० ) घर, दूहा ।

वन्धी दे० ( स्त्री० ) बन्दी, बुलहिन, धरती ।

वन्हा दे० ( पु० ) टोमा, टुटका, धम्र गम्भ ।—ई

( स्त्री० ) जाह्नानी, शोन्ही ।

वर्पज दे० ( पु० ) बाप का श्रृंग, वपौती, धनूक धन ।

वपुग दे० ( वि० ) रङ्ग, चनाप, असहाय, दी, कैलाट ।

वपौती दे० ( स्त्री० ) बर्पज, बाप का श्रृंग ।

वफारा दे० ( पु० ) वाप, बाक, माफ, दान अथवा

किसी कोषधि की भाषा में रोगशील शरीर के श्रृंग

को संकना ।—लेना ( वा० ) श्राप शरीर में

लगने देना, बाधना । [ चटका ।

वधुआ दे० ( पु० ) लड़का, पुत्र, प्रिय श्रृंग, दुलारा

वधुवा ( पु० ) लाट्टा लट्ठा । [ वधु मा नाम ।

वधूर, वधूज ( पु० ) वधुर, वधु विशेष, एक करीब

ववेसिया दे० ( पु० ) प्रलापी, प्रलाप करने वाला,

गप्पी, गपोगिया, बवाली रोग वाला ।

घवेसी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, शरीर रोग, बवासीर ।  
 घव्नी दे० (स्त्री०) चूना, सीटी, चुन्ना, चुम्बन, मच्छी ।  
 घम दे० (स्त्री०) सोता, स्रोत, चार हाथ का माप ।  
 घमकना दे० (क्रि०) चिल्लाना, उभरना, ऊपर उठना, सूजना, फूलना ।  
 घम्वा, वंवा दे० (पु०) सोता, स्रोत, पानी, का नल ।  
 घया दे० (पु०) पक्षी विशेष, एक पक्षी का नाम, यह पक्षी सीख बहुत जल्दी मान लेता है, तौड़, तौड़ाई का पेशा करने वाला ।  
 घयाला दे० (वि०) घादी, बातुल, बात विशिष्ट ।  
 घयान दे० (पु०) कपन, कहन, वर्णन ।  
 घयाना दे० (पु०) खुरीद फुरोस्त पक्षी करने को खुरीदी हुई वस्तु के मूल्य में से कुछ मूल्य पेशगी या अगाऊ देना, साहू ।  
 घयार दे० (पु०) बाहु, पवन, घताम ।  
 घयालीस दे० (वि०) संख्या विशेष, चालीस और दो, ४२, दो अधिक चालीस । [ अस्सी, ४२ ।  
 घयासी दे० (वि०) अस्सी और दो, दो अधिक बरंडा, घरघड़ा दे० (पु०) घरामदा, बालान ।  
 घर तद् दे० (पु०) घरदान, आशिष, आशीर्वाद, इष्ट प्राप्ति, मनोरथसिद्धि, पति, स्वामी, दूल्हा ।  
 घरई (पु०) तमोली, पान खेवने वाला । [ घरसना ।  
 घरखना दे० (क्रि०) घुट्टि होना, वर्षा होना, पानी बरगद दे० (पु०) घट, बड़ का पेड़ ।  
 घरगा दे० (पु०) कड़ी, तण्डक, घरन, लम्बी सीधी लकड़ी जो कड़ी आदि बनाने के काम में आती है ।  
 घरजना दे० (क्रि०) वर्जन करना, निषेध करना, बारण करना, मना करना ।  
 घरटा तद् दे० (स्त्री०) हंसी, रात्रहंसी, बर ।  
 घरत तद् दे० (पु०) मत, उपास, व्यवसाय, चमड़े की रस्सी ।  
 घरतन, वर्तन दे० (पु०) पासन, पात्र, मायड ।  
 घरतना दे० (क्रि०) काम में लाना, उपयोग में लाना, व्यवहार करना ।  
 घरतनी दे० (स्त्री०) अघरीटी, घर्षमाळा । [ घाटना ।  
 घरताना दे० (क्रि०) भाग खगाना, विभाग करना, बरद तद् दे० (पु०) घर देने वाला, घर दाता ।  
 घरदान तद् दे० (पु०) आशीर्वाद, प्रसाद, उपहार, इनाम ।

घरदो (स्त्री०) लड़ा हुआ बैल, पोराक जो एक विशेष प्रकार की हो ।  
 घरदैत दे० (पु०) भाग, दसोंपी, आशीर्वादक, आशीर्वाद देने वाला ।  
 घरध दे० (पु०) बैल, वृषभ ।  
 घरधा (पु०) देखो घरध । [ गर्भ धारण करना ।  
 घरधना दे० (क्रि०) बढ़ाना, पालन करना, गौ का चरधाना दे० (क्रि०) गौ को गर्भ धारण कराना ।  
 घरन तद् दे० (पु०) वर्ण, रंग, अचर, लिखावट ।  
 ( घ० ) बलि, प्रत्युत ।  
 घरना दे० (क्रि०) बरण करना, स्वीकार करना, बराना, अपने अभिमत को स्वीकार करना, प्याह करना, पति को बरण करना ।  
 घरनी दे० (स्त्री०) पलकों के अग्रभाग पर जमे हुए घाल । ( वि० ) बरण किया हुआ ।  
 घरवनी दे० (स्त्री०) बरनी ।  
 घरवस दे० (पु०) प्रवक्षता, ज़हरदस्ती ।  
 घरव दे० (पु०) पक्षी विशेष । [ का सर्प ।  
 घरवट दे० (पु०) रोग विशेष, पिलही, एक प्रकार घरघाद् (वि०) नष्ट, सत्यानाश ।  
 घरवादी दे० (स्त्री०) नाश, विनाश ।  
 घरवासिया दे० (वि०) बहुरूपिया, रङ्गा रचने वाला ।  
 घरमा (पु०) बड़ई का एक औज़ार जिससे लकड़ी में छेद करते हैं ।—ना (क्रि०) घरमे से छेद करना । [ बढ़ाना ।  
 घरराना दे० (क्रि०) प्रलाप बफना, स्वप्न में बड़-  
 घरवट (पु०) तिछी, पिलही, झीडा ।  
 घरवा दे० (पु०) एक इन्द्र का नाम, काँटा जिससे मछली मारी जाती है, रागिनी विशेष, कहते हैं उस रागिनी की मधुरता पर सर्प और हिरन मोहित हो जाते हैं ।  
 घरस तद् दे० (पु०) वर्ष, सम्बत्, संवत्सर, एक नशीली वस्तु जो अफीम से बनायी जाती है ।—गाँठ दे० (पु०) जन्म दिन के तपल्ल का उरसव, साल गिरह ।  
 घरसना दे० (क्रि०) पानी पड़ना, घुट्टि होना ।  
 घरसघान दे० (वि०) वार्षिक, सांवत्सरिक, वर्षा ।  
 घरसौड़ी दे० (स्त्री०) वार्षिक कर, आड़ा, वार्षिक बुत्ति ।

वरहा दे० ( पु० ) गोचर भूमि, पशुओं के चरने की भूमि, पुरवट का रस्ता, खेत में पानी ले जाने की नाली ।

वरा दे० ( पु० ) वडा, तर्द की पिटी की पड़ी ।

वराई दे० ( क्रि० ) छीटा, चुनी, छटकर, चुनकर ।

वरात दे० ( स्त्री० ) विवाह की यात्रा, बरयात्रा, बर के साथियों का गमन । [ के लोग ।

वराती दे० ( पु० ) वरात में आने वाले, बर की ओर

वराना दे० ( पु० ) धृक् रहना, अलग रहना, पर-हेज़ करना, बचा जाना ।

वरावर ( वि० ) समान, साथ साथ, लगातार ।—

( स्त्री० ) समागता, मुकाबिला ।

घरामदा दे० ( पु० ) बरण्डा, बालान ।

घरारा दे० ( पु० ) रस्सी, चमोटी ।

घराय दे० ( पु० ) संयम, रोक, परहेज़, बचाव ।

घराह तद् ( पु० ) सूकर, सूअर, विष्णु का तीमरा अवतार ।

घरियाई दे० ( स्त्री० ) बलाकार, जोराबरी, जबरदस्ती ।

घरियार दे० ( पु० ) बलवान, प्रबल, बलशाली, प्रभाववान्, समर्थ ।

घरियारा दे० ( वि० ) बलवान्, बड़ कर, बटे हुए ।

घरी दे० ( स्त्री० ) कली, चुने की कली, पड़ी ।

घरुण दे० ( पु० ) वरुण, जल के अधिपति देवता, पश्चिम दिशा के अधिपति दिक्पाल ।

घरुणालय तद् ( पु० ) [ वरुण + आलय ] समुद्र, सागर, वरुण के रहने का स्थान ।

घरुणी दे० ( स्त्री० ) पपनी, गाँस पर के बाल ।

घरेज दे० ( पु० ) पनवाड़ी, पान का खेत ।

घरेठन दे० ( स्त्री० ) घोबिन, रजकी । [ जाति ।

घरेठा दे० ( पु० ) घोड़ी, रज़रु, कपड़ा घोने वाली एक

घरेरा दे० ( स्त्री० ) बिरनी, हाड़ा, एक प्रकार का पंख-दार कीट ।

घरे दे० ( पु० ) तमोली, पान बाड़ा ।

घरेन दे० ( स्त्री० ) तमोलिन, पनेरिन । [ उड्डल ।

घरोठा दे० ( पु० ) घोयी, डेवड़ी, उबार आदि का

घरौठा दे० ( पु० ) रजक, घोयी, डेवड़ी ।

घर्दा, वरदो दे० ( पु० ) शस्त्र विशेष, भागा ।

घर्दत दे० ( पु० ) घर्षे वाला, घर्षाधारी, भाँसत ।

घर्त, घरत दे० ( पु० ) काम, अध्यास, साधन ।

घर्तन, वरतन दे० ( पु० ) बरतन, वासन, पात्र ।

घर्तना, वरतना दे० ( क्रि० ) काम में लाना, उपेक्षा करना, व्यवहार करना ।

घर्तात्र, वरताघ दे० ( पु० ) आघाण, व्यवहार ।

घर्दा दे० ( पु० ) पैल ।

घर्मा दे० ( पु० ) अश्व विशेष, पड़ई का अश्व विशेष, जिससे लड़कियों में छेद किया जाता है । अनिय जाति सूकर, यथा—विजयतिंद घर्मा ।

घर्माना दे० ( क्रि० ) छेदना, घेचना, घीचना ।

घर्ना दे० ( क्रि० ) सोते में दडना ।

घर्नाहट दे० ( स्त्री० ) प्रलाप, गडगवाड़, बड़बड़ ।

घर्वे दे० ( पु० ) भापा के एक छन्द का नाम ।

घर्व तव० ( पु० ) संवत्सर, बारह महीना ।

घर्पासन तद् ( पु० ) वस भर का भोजन, वर्ष भर पर भोजन करने वाला । [ धाद ।

घर्पा दे० ( स्त्री० ) वर्ष दिन के बाद का कृत्य, वार्षिक

घर्सात दे० ( स्त्री० ) वर्षाकाल, वर्षा का समय ।

घर्ह तव० मोरपट्ट, मयूर पुच्छ, मोर का पंख ।

घर्हो तव० ( पु० ) मयूर, मोर, केकी, शिरण्डी ।

घल तव० ( पु० ) सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, बल, पैँठन ।

घलकना दे० ( क्रि० ) डमरना, डपकना, झीलना, अपनी बड़ाई याप करना । [ घिलाप करना ।

घलभा दे० ( क्रि० ) पिसना, डुनकना, रोना,

घलताड़ दे० ( पु० ) घृण विशेष । [ बाळतोड़ ।

घलतोड़ दे० ( पु० ) बाल के छूटने से शायद कोड़ा,

घलद् दे० ( पु० ) बरघ, वृषभ, पैल ।

घलदाऊ दे० ( पु० ) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।

घलदी दे० ( पु० ) लड़ा हुआ पैँठ । [ होना ।

घलना दे० ( क्रि० ) जलना, घरकना, दहना, दग्ध

घल-वकरा दे० ( पु० ) घाघारल मारा जाने वाला, बलिदान के लिये निर्दिष्ट दस्त ।

घलबलाना-दे० ( क्रि० ) डबलना, कानातुर होना, ऊँट की बोली ।

घलयौर दे० ( पु० ) बलदेव, श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्र ।

घलमद् तव० ( पु० ) बलदेव, बलराम ।

घलम, बलमा दे० ( पु० ) बलम, स्वामी, भिद्यतम ।

घलमि ( पु० ) देना बलम ।

वलराम तत्० ( पु० ) घनुद्वेष्ट के उपेष्ट पुत्र, ये उनकी स्त्री रोहणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। देवकी के सातवें गर्भ के समय कंस ने रक्षक नियुक्त किये थे, परन्तु माया ने उस गर्भ को खींच कर रोहणी के गर्भ में स्थापित कर दिया। रक्षकों को तो ये बातें मालूम नहीं हुई, अतः उन लोगों ने कंस से कहा कि गर्भ नष्ट हो गया। एक गर्भ आकर्षण करके दूसरी जगह रखा गया इस कारण रोहणी के पुत्र का नाम सङ्कर्षण पड़ा। वलराम ने गदायुद्ध में भगवत् का राजा जरासन्ध को हरा दिया था, परन्तु मारा नहीं था। दुर्योधन की कन्या लक्ष्मणा के स्वयम्बर के समय कौरवों ने श्रीकृष्ण पुत्र साम्ब को पकड़ कर कैद कर लिया था। यह सुन कर वलराम वहाँ पहुँचे, परन्तु दुर्योधन किसी प्रकार साम्ब को छोड़ना नहीं चाहता था। यह देख कर वलराम ने कौरवपुरी की गङ्गा में केंद्र देने के लिये उस नगरी के दीवार में हल लगाया, हस्तिनापुर घूमने लगा, यह देख कर दुर्योधन साम्ब और लक्ष्मणा के सहित उनकी सेवा में उपस्थित हुआ, साम्ब को समर्पण कर उसने गदायुद्ध सीखने की उनसे प्रार्थना की। महावीर वलराम ने, भाण्डौर घन में एक मुक्के के आघात से प्रलम्बासुर को मार गिराया था। उन्होंने गर्भ रूपी धेनुकासुर को भी पर्वत पर कैद कर मार डाला था।

बलवन्त दे० ( गु० ) बलवान्, समर्थ, सशक्त।

बलवान् ( गु० ) देखो बलवन्त। [ और पनखी लकड़ी।

बलही दे० ( स्त्री० ) आँटी, भार, बोझ, बुरा, लम्बी

बलहीन तत्० ( वि० ) निर्बल, बल शून्य, दुर्बल।

बलार्ह दे० ( वि० ) बलीर्षा, आशीर्वाद, आसीस, बाहरी,

दूर कं, उदासीन।—लेना ( वा० ) दुःख से सहा-

यता पहुँचाना, अन्य के दुःख हटाने की इच्छा।

बलान्तर तत्० ( पु० ) बरषस, हठात्, जबरदस्ती।

बलि तत्० ( पु० ) नैवेद्य, देवता का भोग, अंश,

पूजा, राजा विशेष, दानवपति, ये विशेषण के पुत्र

और पितृदत्त के पौत्र थे। बलि के सौ पुत्र थे,

पाप सब से बड़ा था। पराक्रमी दानवपति बलि

को दहन करने के लिये भगवान् ने वामन अवतार

प्रदण किया था। बलि ने एक अश्वमेध बलि किया

था, उस यज्ञ की समाप्ति के समय भगवान् वामन रूप धर करके वहाँ उपस्थित हुए। वामन रूपी विष्णु ने बलि की अनेक प्रकार से प्रशंसा करके उससे तीन पैर भूमि माँगी। दैत्यगुरु-शुक्राचार्य ने भगवान् को पहचान लिया था, अतएव बलि को उन्होंने दान देने से रोका, परन्तु बलि ने उनकी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। बलि ने प्रतिज्ञा अष्ट होना उचित नहीं समझा। बलि ने वामन की यथाविधि पूजा की, और तीन पैर भूमि उनही सङ्कल्प कर दी। अथ वामन ने अपना रूप इतना विशाल बनाया कि कौनों के आश्चर्य की सीमा न रही। उन्होंने दो पदों ही में स्वर्ग और गार्वलोका नाप डाला, तीसरे पैर के लिये स्थान नहीं था। इनको मायावी समझ कर बलि के अनुचरों ने इन्हें अस्त्र शस्त्र ले कर मारना चाहा, परन्तु वे शीघ्र ही विष्णु के अनुचरों द्वारा हटा दिये गये। बलि ने भी अपने अनुचरों को युद्ध करने से रोका। अनन्तर विष्णु ने तीसरा पैर रखने के लिये बलि से स्थान माँगा। बलि अपना सिर ही पैर रखने के लिये स्थान पताया। वामन का तीसरा पैर जब बलि के सिर पर रखा गया, तब दानवपति भगवान् की स्तुति करने लगा। उसी समय विष्णु के अनन्य भक्त और बलि के पितामह गृह्णाद वहाँ उपस्थित हुए। उनकी प्रार्थना से भगवान् ने बलि का वस्त्रन कटवा दिया। भगवान् ने गृह्णाद से कहा कि "बलि ने बहुत त्याग करके अपनी सत्यता का पालन किया है, अतएव मैं इनको देवताओं को भी दुर्लभ पद दूँगा। सावधि संवन्तर में ये इन्द्र होंगे। जब तक वह संवन्तर नहीं आता, तब तक सुतल में जाकर इन्हें रहना पड़ेगा, मैं सर्वदा कौमोदकी गदा लेकर वहाँ उपस्थित रहूँगा, और इनकी रक्षा करूँगा।" भगवान् विष्णु की आज्ञा से बलि सुतल नामक पाताल में रहने लगे।

बलिदान तत्० ( पु० ) देवभोग, देवता के लिये किसी जीव की हिंसा।

बैलिस्टर ( पु० ) बैरिस्टर।

बलिष्ठ तत्० ( वि० ) बलशाली, बलवान्, समर्थ।

वलि तत् ( वि० ) सिक्कन पड़ा हुआ, शिकन-  
दार, बल पड़ा हुआ, सिमटा ।  
वलिपुत्र तत् ( पु० ) काक, कौआ, काग ।  
वलिस्ता तत् ( स्त्री० ) उपश्रात, विशेष, गन्धक ।  
वलिसङ्ग तत् ( पु० ) अँकुर, चातुक, कोड़ा, बानरों  
का समूह ।  
वलिहारी दे० ( स्त्री० ) निंदावर, बधाई ।—जाना  
( वा० ) निंदावर होना, बल जाना, बलबल  
जाना ।  
वलो तत् ( वि० ) बलवान्, समर्थ, पराक्रमी, पराक्रम  
शाली ।—यह ( पु० ) सौँद, वृषभ ।—मुख ( पु० )  
धानर, कपि, मकंठ, बन्दर ।  
वलीयान् तत् ( वि० ) बली, बलशाली, बलवान्,  
पराक्रमी, अत्यन्त पराक्रमी, अधिक बलवान् ।  
बलु दे० ( पु० ) ताकत, बल, ( क्रि० ) सुलग उठ,  
बर जा, भभक जा ।  
बलुआ या बलुवा दे० ( वि० ) रेतीला, धालुकामय ।  
बलूरना दे० ( क्रि० ) नोचना, खसोटना, खखोरना,  
खुरचना ।  
बलुला दे० ( पु० ) बुलबुला, बुलका, बुदबुदा ।  
बलेंडी दे० ( स्त्री० ) मर्कचा, मगरा, खजरा । दो  
चप्पर के बीच का उठा हुआ भाग ।  
बलैया दे० ( स्त्री० ) बलाई ।  
बल्लम दे० ( पु० ) भाला, सेल, बध्ना, नेजा, अस्त्र  
विशेष । [ बॉल ।  
बल्ली दे० ( स्त्री० ) बल्ला, नाव खेने का यका, लम्बा  
बघराडर दे० ( पु० ) अन्धड़, बगुला ।  
बघाई दे० ( स्त्री० ) बिगई, पैर तले का धाव, विपा-  
दिका, शीत से पैर का फटना ।  
बघासीर दे० ( पु० ) रोग विशेष, अशं रोग ।  
बस दे० ( पु० ) कान्ध, अधिकार, बल । ( अ० ) अधीन,  
बहुत, पर्याप्त, अलम् ।—करना ( वा० ) अधीन  
करना, बस में करना, चुप करना, ठहरना ।  
बसत तत् ( पु० ) बस्त्र, कपड़ा ।  
बसना दे० ( क्रि० ) रहना, भरना, ठहरना, वास  
करना । दे० ( पु० ) बसरा, बही खाता ।  
बगनी दे० ( स्त्री० ) रुपये रखने की पतली बैली जो  
प्यार में धँप ली जाती है, बैली ।

बसन्त तत् ( पु० ) बसन्त, एक ऋतु का नाम, जो  
प्रधान ऋतु समझी जाती है । फाल्गुन और चैत  
ये दोनों महीने बसन्त ऋतु में हैं, कोई कोई चैत  
और वैशाख को ही बसन्त ऋतु मानते हैं ।  
—फूलना ( वा० ) सरसों का फूल ।—क्रे घर  
की भी खबर है या बसन्त की कुछ भी खबर  
है ( वा० ) कुछ ज्ञात भी है, कुछ जानते भी हो ।  
बसन्ती तत् ( पु० ) पीला रङ्ग । ( वि० ) पीले रंग का ।  
बसराना दे० ( क्रि० ) पूरा करना, समाप्त करना ।  
बसाना दे० ( क्रि० ) ठिकाना, नये गाँव भराना,  
बस्ती बसाना ।  
बसुला दे० ( पु० ) बड़ई का एक अस्त्र विशेष, जिससे  
लकड़ी काटी और छीली जाती है । [ का अस्त्र ।  
बसुली दे० ( स्त्री० ) बड़ईयों का अस्त्र, ईंट छोटने  
वस्तु दे० ( वि० ) सड़ा, उबला, दुर्गन्धयुक्त । [ स्थान ।  
बसेरा दे० ( पु० ) खोता, धोंसला पक्षियों के रहने का  
बसोवास दे० ( पु० ) स्थित, स्थान, वास ।  
बस्ती दे० ( स्त्री० ) ग्राम, गाँव, बड़ाया, पुरवा, पूरा ।  
बस्तु तत् ( स्त्री० ) वस्तु, द्रव्य, चीज जिस ।  
बस्ना दे० ( पु० ) स्थिति, बसन, बसना, बैठन, लपेटना ।  
बहकना दे० ( क्रि० ) निराश होना, धोखा खाना,  
भटकना, भूलना, लचक्युत होना, उद्देश्य अष्ट होना ।  
बहकाना दे० ( क्रि० ) भुलाना, निराश करना,  
धोखा देना ।  
बहङ्गी दे० ( स्त्री० ) बोक डोने के लिये लगानेवाला एक  
बस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं ।  
बहजाना दे० ( क्रि० ) बहना, बिगड़ना, खराब होना ।  
बहत्तर दे० ( पु० ) सत्तर और दो, दो अधिक सत्तर, ७२ ।  
बहिन दे० ( स्त्री० ) भगिनी, बहिन । [ का चलना ।  
बहना दे० ( क्रि० ) चलना, पानी का चलना, हवा  
बहने दे० ( पु० ) बहने दे०, भगिनीपति, बहिन  
का पति ।  
बहनेली दे० ( स्त्री० ) बहिन ।  
बहनोई दे० ( पु० ) बहनोऊ, बहिन का पति, भगिनीपति ।  
बहर दे० ( स्त्री० ) नावों की मोड़, नौका समूह ।  
बहरा दे० ( वि० ) बधिर, न सुनने वाला ।  
बहरिया दे० ( पु० ) अशुद्ध वर्तन, अपवित्र वासन,  
( वि० ) बहर का, अपवित्र, प्रतिधि, पाहुन ।

बहरी दे० ( स्त्री० ) पसी विशेष, बाज पसी ।  
 बहल दे० ( स्त्री० ) गाड़ी, बैलगाड़ी, रथ, एक प्रकार की  
 बैलगाड़ी जो पुराने समय में बनती थी ।  
 बहलाना दे० ( क्रि० ) प्रसन्न होना, भूलना, खेलना,  
 बहकना ।  
 बहलाना दे० ( क्रि० ) खिलाना, प्रसन्न करना, मनो-  
 रञ्जन करना, मन बहलाव करना, भुलाना,  
 फिराना ।  
 बहलिया दे० ( पु० ) गाड़ीवान, गाड़ी हाँकने वाला ।  
 बहलो ( स्त्री० ) छोटा बहल, चढ़ने की गाड़ी,  
 रथ, बैलगाड़ी ।  
 बहादुर ( वि० ) शूर, वीर ।—नी ( स्त्री० ) वीरता, शूरता ।  
 बहादेना दे० ( क्रि० ) लोढ़ना, उजाड़ना, बिगाड़ना,  
 खराब करना, फेंकना ।  
 बहाना दे० ( क्रि० ) भसाना, चलाना, बहा देना ।  
 बहा फिरना दे० ( वा० ) भटकते फिरना, बिना काम  
 के दौड़ते फिरना । [ का जाना ।  
 बहाव दे० ( पु० ) बाढ़, चढ़ाव, नदी की चाल, सोते  
 बहिन दे० ( स्त्री० ) भगिनी, बहन, सहोदरा ।  
 बहिरा दे० ( वि० ) बधिर, बहरा ।  
 बहिराना दे० ( क्रि० ) बाहर निकालना, बाहर  
 करना ।  
 बहिर्देश तत्० ( पु० ) बाह्य स्थान, बाहर की भूमि,  
 बाहर का देश । [ विपरीत आचरणकर्ता ।  
 बहिर्मुख तत्० ( पु० ) धर्म विमुख, उदासीन, अधर्मी,  
 बहिला दे० ( स्त्री० ) बन्ध्या, बौक, बिना लड़के की  
 स्त्री, जिसके कभी लड़का न हुआ हो ।  
 बही दे० ( स्त्री० ) खाता, खसरा, महाजनी के हिसाब  
 लिखने की पुस्तक । [ सामग्री ।  
 बहीर दे० ( स्त्री० ) सैनिकों का सामान, सेना की  
 बहु तत्० ( अ० ) बहुत, अधिक, बड़ा विशाल ।  
 —तिय ( वि० ) बहुत दिन, बहुत समय, बहुत  
 बार, अनेक समय ।—दर्शी ( वि० ) बहुत देखने  
 वाला, दूरदर्शी, विद्वान्, अभिज्ञ, परिचित ।—घा  
 ( अ० ) बहुत प्रकार से, अनेक प्रकार से, अनेक  
 बार, अनेक समय ।—आहु ( पु० ) रावण, सहस्र-  
 बाहु, कर्तवीर्य ।—मूल्य ( वि० ) बहुत-मूल्य  
 का, बहुत दाम का, बढ़िया, महंगा ।—बचन

( पु० ) अधिक संख्या योषक प्रत्यय । ( गु० )  
 अनेक वचन, अधिक वाक्य ।—विधि ( गु० )  
 अनेक-प्रकार, अनेक भाँति ।—घ्रीहि ( पु० )  
 समास विशेष, एक समास का नाम, जिससे अन्य  
 पदार्थ का बोध होता है । इस समास में अन्य  
 पदार्थ की प्रधानता रहती है ।  
 बहुत दे० ( वि० ) अनेक, अधिक, ढेर, भूरि ।  
 बहुतात दे० ( स्त्री० ) अधिकता, आधिक्य, अधिकाई,  
 समाई ।  
 बहुतायत दे० ( स्त्री० ) अधिकाई, सरसाई ।  
 बहुतेरा दे० ( वि० ) अनेक, अधिक, प्रायः ।  
 बहुतेन दे० ( पु० ) इन्द्र, देवराज ।  
 बहुर या बहुरि दे० ( अ० ) फिर, और, पुनः, पुनः ।  
 बहुरङ्गी दे० ( वि० ) चञ्चल, चपल, अल्पस्थित,  
 चित्रित, रंग विरंग ।  
 बहुरना दे० ( क्रि० ) लौटना, वापिस आना ।  
 बहुराना दे० ( क्रि० ) लौटाना, फेर लाना, बचा लाना ।  
 बहुरि दे० ( अ० ) और बार, पुनः, फेर, पुनः ।  
 बहुरिया दे० ( स्त्री० ) बहू, बधू, दुलहिन ।  
 बहुरूपा दे० ( पु० ) गिरगिट, शरट, कहते हैं स्वभाव  
 ही से इसका रंग प्रति दिन बदला करता है ।  
 बहुरूपिया दे० ( पु० ) स्वर्गी, भाँड़, अनेक रूप धर  
 कर जो मीछ मोंगते हैं ।  
 बहूल तत्० ( वि० ) प्रचुर, अधिक, बहुत । ( पु० ) कृष्ण  
 वर्ण, काला रंग, आकाश, गगन, अग्नि ।—गन्धा  
 ( स्त्री० ) इलायची ।  
 बहू दे० ( स्त्री० ) बधू, स्त्री, दुलहिन, पतोह, पुत्रवधू ।  
 बहेड़ा ( पु० ) फल विशेष ।  
 बहेलिया दे० ( पु० ) बधिर, ब्याँध, चिड़ीमार ।  
 बहैत दे० ( पु० ) रमता, दुष्ट, दुर्जन, फिरने वाला ।  
 बहोर दे० ( अ० ) फिर, दुहरैया, लौटाने वाला,  
 बहोरी फेरी । [ सूचक शब्द ।  
 बहोनेटा दे० ( पु० ) ब्राह्मण का पुत्र, तिरस्कार-  
 घञ्चना ( क्रि० ) बाँचना, समझना ।  
 बंडा दे० ( वि० ) बेपूँछ का, पूँछ रहित, कुरूप,  
 अकेला, बिना परिवार का, तरकारी विशेष ।  
 बाँक दे० ( स्त्री० ) चकता, तिरछापन, टेढ़ापन, मुकन,  
 नदी आवि का, घुमाव, दोप, धपराव,

विशेष, जिसका आकार कटार के समान होता है, भूपर्य विशेष, यह भूपर्य बाहु मध्य में पहना जाता है ।—पन ( पु० ) विद्योत्पन्न, तिरछापन ।

धाँका दे० ( वि० ) टेढ़ा, तिरछा, लुचा, छैला, अकड़ैत ।

धाँगा दे० ( पु० ) सवीज कपास ।

धाँचना दे० ( क्रि० ) पढ़ना, पाठ करना ।

धाँका तद्० ( स्त्री० ) धाँका, चाद, मनोरथ, अभिलाष ।

धाँकित तद्० ( क्रि० ) ईप्सित, अभीष्ट, चाहा हुआ, इच्छित, अभिलषित ।

धाँजर दे० ( पु० ) यज्ञर, उत्तर, पटपर ।

धाँक दे० ( स्त्री० ) पन्थ्या, अप्रसूता ।

धाँठ दे० ( पु० ) भाग, धँस, हिस्सा, तौलने का बटखरा, गाय भैंस का वह भोजन जो दूध दुहने के समय उन्हें दिया जाता है । सन्ध्या का धँधा हुआ भोजन । [ धाँटना, हिस्सा लगाना ।

धाँटना दे० ( क्रि० ) भाग करना, विभाग करना,

धाँड़ा दे० ( वि० ) पुच्छ रहित पशु, बिना पूँछ का पशु, अकेला, असहाय, जिसके कोई न हो ।

धाँड़ी दे० ( स्त्री० ) लकड़, लट्टा, लट्ट ।

धाँदर ( पु० ) यंदर, कपि ।

धाँदा दे० ( पु० ) अमरवेल, आकाशवेल, आकाशलता, घुँघों के ऊपर जो एक प्रकार की लता उगती है, एक नगर विशेष । [ खरीदी हुई दासी ।

धाँदी दे० ( स्त्री० ) लौड़ी, दासी, सेविका, परिचारिका,

धाँध दे० ( पु० ) मँड, बन्ध, आड़ ।

धाँघना दे० ( क्रि० ) जरड़ना, रोकना, बनना ।

धाँधनू दे० ( पु० ) रंगने की प्रक्रिया विशेष ।

धाँवी ( स्त्री० ) साँप का बिल ।

धाँस दे० ( पु० ) वंश वृक्ष, एक पेड़ विशेष, भूमि मापने की लकड़ी ।—पर चढ़ना ( वा० ) बढ़ना, होना, कलङ्कित होना, दुर्नाम होना ।—फोड़ा ( पु० ) जाति विशेष । इस जाति के लोग धाँस की टोकरी आदि बनाकर बेचते हैं और उसी से अपना निर्वाह करते हैं । [ नाम ।

धाँसली दे० ( स्त्री० ) मुरली, धंसी, एक बाजे का बाँसा या पाँसा दे० ( पु० ) नाक की हड्डी, जो नाक के भीतर रहती है ।

धाँसी तद्० ( स्त्री० ) धंसी, धाँसुरी, मुरली ।

धाँसुरी दे० ( स्त्री० ) मुरली, धंसी ।

धाँह तद्० ( स्त्री० ) बाहु, मुजा, बाजू ।—टूटना ( वा० )

निःसहाय होना, सहायक न होना, किसी वान्धव

का वियोग होना ।—चढ़ाना ( वा० ) लड़ाई

करने के लिए उद्यत होना, झगड़ा करना ।—देना

( वा० ) सहायता देना ।—पकड़ना ( वा० ) सहा-

यता करना, पकड़ करना, आश्रय देना ।—घल

( वा० ) सहायक, पक्षपाती, पक्ष करने वाला ।

—गहना ( वा० ) सहायता करना, रक्षा करने

की प्रतिज्ञा करना ।—गहे की लाज ( वा० ) रक्षा

करने की प्रतिज्ञा करने पुनः उसे अनेक कष्ट उठा

कर भी न छोड़ना ।

धाई दे० ( स्त्री० ) बात, अजीर्ण, अपच ।—पचना

( वा० ) उत्सुकता का कम होना, निराश होना,

हताश होना ।—मैं भड़कना ( वा० ) बफना,

बचबढ़ाना ।

धाईस दे० ( वि० ) धीस और दो, २२, संध्या विशेष ।

धाईसी दे० ( पु० ) एक प्रकार की सेना का नाम, राजा की रक्षक सेना ।

धाईहा दे० ( पु० ) घात रोगी, गड़िया घाता ।

धाउर दे० ( वि० ) बौरहा, धौधम, पागल ।

धाऊ दे० ( पु० ) बाधु, पवन ।

धाकला दे० ( पु० ) एक तरकारी का नाम ।

धाकस दे० ( पु० ) भइसा, वाता बुध, समूक, पेटी, विदार ।

धाकी ( वि० ) बचा हुआ, अवशिष्ट ।

धाखर दे० ( पु० ) बहनाई, चौक, धागन ।

धाग दे० ( स्त्री० ) लगाम, धागदोर ।—टूटना ( वा० )

विवर होना, बस में न रहना, छोड़े की धाग

छूटने से स्वयं बेकस होना ।—मोड़ना ( वा० )

शीतला का ढल जाना ।—डोर ( स्त्री० ) धम्पी

लगाम, बाग, लगाम की रस्ती या रास ।

धागा दे० ( पु० ) जोड़ा, लिखत, पारितोषिक दिया जाने वाला कपड़ा । [ विशेषी ।

धागी दे० ( पु० ) घुड़चढ़ा, असवार, अश्वपार, राघु,

धागुर दे० ( पु० ) फंडा, जाल, धाग, फाँसी ।

धाघ तद्० ( पु० ) ध्याघ, घेर, नाहर ।

धाघनी तद्० ( स्त्री० ) ध्याघी, धाघिन ।



वाघम्वर तद् ( पु० ) व्याघ्रम्वर, बाघ का चर्म,  
बाघ की खाल ।  
वाघा दे० ( पु० ) व्याघ्र, चीता, शेर । [निकलना ।  
वाघी तद् ( खी० ) रोम-विशेष, पाठा, पाठ का  
वाङ्ग दे० ( खी० ) चुनाव, छूट, निर्वाचन ।  
वाङ्मना दे० ( कि० ) चुनना, छाटना; चिनना, बहुतों  
में से छेड़ कर उत्तम निकालना ।  
वाङ्गी दे० ( खी० ) बहिया, गाय की बच्ची ।  
वाजन् दे० ( पु० ) बाजा, वाद्ययन्त्र ।  
वाजना दे० ( कि० ) याने से शब्द होना, शब्द होना ।  
वाजरा दे० ( पु० ) धनु विशेष, खनाम प्रसिद्ध धनु ।  
वाजा दे० ( पु० ) वाजन्, वाद्य ।  
वाजीगर ( पु० ) जादूगर, ।  
वाजीगरमी ( खी० ) जादूगरनी ।  
वाजू दे० ( पु० ) भूषण विशेष, चन्द्र, सुजयन्द ।  
—वन्द ( पु० ) वाजू भूषण विशेष ।  
वाट दे० ( पु० ) पन्थ, मार्ग, राह, रास्ता, डगर ।  
—काटना ( वा० ) मार्ग तै कराना, रास्ता  
चलना । [वाग ।  
वाटिका दे० ( खी० ) फुलवाड़ी, उपवन, बगीचा,  
वाटी दे० ( खी० ) घर, गृह; वासस्थान, एक प्रकार की  
मोटी गोल रोटी, चनाम व्यात रोटी, झोंगाकड़ी ।  
वाड़, वाढ़ दे० ( खी० ) धार, तलवार आदि की तीक्ष्ण-  
ता, पंक्ति, पति, फनार, बेड़ा, आड़ ।—झाड़ना  
( वा० ) एक साथ कई चट्टक दागना ।—झाड़ना  
( वा० ) एक साथ बहुत दागना ।—झिलवाना  
( वा० ) धार तेज करवाना, शान चढ़वाना, तीक्ष्ण  
कराना ।—झाड़ना ( वा० ) ऊँट आदि से कुछ  
स्थान की परिधि बनाना, बाड़ा बनाना ।—रखना  
( वा० ) तीखा करना, शान चढ़ाना ।—ही जब  
खेत जाय तो रखवाली कौन करे ( लो० ४० )  
रख ही भुसक का काम करे तो रचा की क्या  
आया, निजसे हानि होना असम्भव है यदि  
वसीसे हानि पहुँचे तो फिर भरोसा किस पर  
किया जाय ।  
वाड़व तत् ( पु० ) प्राण्य, घोड़ों का समूह ।  
वाड़वानन तत् ( पु० ) [वाड़व + वनन] समुद्र  
का अग्नि, समुद्र की आग ।

वाड़ा दे० ( पु० ) दाता, घेरा ।  
वाड़िया दे० ( पु० ) शान चढ़ाने वाला, धुरी या  
तलवार आदि को तीखा करने वाला । [का घर ।  
वाड़ी दे० ( खी० ) उपवन, बाग, बगीचा, बाग में  
वाढ़ दे० ( खी० ) तलवार की धार, अधिकता, अधि-  
काइ, बढ़ती, परिवृद्ध, नदी में अधिक जल का  
आना, चढ़ाव, चढ़ाव, बँटक आदि का क्रमशः  
शब्द ।  
वाढ़ना दे० ( कि० ) बढ़ना, उमड़ना, उफानना ।  
वाण तत् ( पु० ) अंश विशेष, शर, यज्ञिराज का  
ज्येष्ठ पुत्र, भूँज की बनी हुई रस्ती, संख्या  
विशेष, पाँच की संख्या ।—वाङ्गा ( खी० )  
नदी विशेष, सोमेश्वर नामक पर्वत से निकली हुई  
नदी, कहते हैं किसी कारण से राघव ने सोमेश्वर  
पर्वत पर वाण मारा था, जिससे उस पर्वत के दो  
खण्ड हो गये और उसके सन्धि स्थान से एक  
नदी निकली जिसका नाम वाणगङ्गा पड़ा ।  
—भट्ट ( पु० ) संस्कृत के एक कवि और ग्रन्थ-  
कार, गद्यकाव्य की रचना में ये सर्व श्रेष्ठ हैं ।  
हर्षचरित और कादम्बरी नामक दो गद्य-काव्य  
इनके बनाये हैं और चण्डिकाशतक नामक एक  
पद्य-काव्य भी है । पार्वतीपरिणय नामक एक  
छोटी नाटिका भी इनके नाम से प्रसिद्ध है । परन्तु  
इस विषय में विद्वानों की सम्मति भिन्न प्रकार  
की है । ये कवि कान्यकुब्ज-देशाधिपति राजा हर्ष  
वर्द्धन के सभापण्डित थे । हर्षवर्द्धन का समय छठी  
शताब्दी निश्चित हुआ है, अतएव इनके सभा-  
पण्डित का भी वही समय मानना पड़ेगा ।  
—लिङ्ग ( पु० ) नर्मदा नदी में उत्पन्न शिवलिङ्ग  
विशेष । [व्यवसाय, व्यापार, लेन देन ।  
वाण्डय तत् ( पु० ) वैश्य वृत्ति विशेष, क्रयविक्रय,  
वाणी तत् ( खी० ) वचन, बोली, उक्ति, भाषण,  
सरस्वती । [बुद्धा, वृद्धा ।  
वांरुहा, वांरुहा दे० ( पु० ) निराश्रय, निःसहाय, लुंटा,  
वात दे० ( खी० ) बोलचाल, कथा, कथन, सम्भाषण,  
बोलने का विषय, प्रश्न, जिज्ञासा, कारण । निदान  
( पु० ) रोग विशेष, गठिया, पाई ।—उठाना  
( वा० ) आज्ञा का उल्लङ्घन करना, वाद न मानना,

चर्चा करना ।—करना ( वा० ) बोलना, बतियाना, बातचीत करना ।—काटना ( वा० ) कपन का खण्ड करना ।—बात का घतफड़ या घतगड़ बनाना या करना ( वा० ) छोटी बात को बड़ी बनाना, सामान्य बात पर हुजुम करना ।—को बात में ( वा० ) अभी, तुरन्त, शीघ्र, कटपट ।—गढ़ना ( वा० ) बात बनाना, फुसलाने की इच्छा से मिथ्या प्रशंसा करना ।—चबाना ( वा० ) बोलते बोलते चुप हो रहना, धीरे धीरे बोलना, ठहर ठहर कर बातें करना ।—चलाना ( वा० ) किसी की चर्चा करना, बोलने का प्रारम्भ करना ।—चीत ( वा० ) परस्पर भाषण, आपस में बक्ति प्रत्युक्ति ।—टाड़ना ( वा० ) आज्ञा भङ्ग करना, प्रस्तुत बात का उत्तर न देना ।—पर बात याद आती है ( वा० ) यह बात कहने की मेरी इच्छा नहीं थी, परन्तु प्रसन्न आ पड़ने से कहता हूँ जहाँ ऐसी अभिप्राय पतलाना होता है वहाँ यह बात कही जाती है ।—पी जाना ( वा० ) कट्टिक को भी सह लेना ।—फेरना ( वा० ) उछा करना, किसी की बात की अपहेला करना ।—फेरना ( वा० ) कहते कहते बात बदल देना, प्रकृष्टमात्र न कहने योग्य निकली हुई बात को छिपा लेना अथवा उसका अर्थ बदल देना ।—बढ़ाना ( वा० ) रूढ़िवादी करना, छोटी बात के लिये बड़ना, किसी बात को बढ़ा कर कहना ।—बनाना ( वा० ) स्वार्थ साधने के लिये कूड़ी बातें कहना ।—बिगाड़ना ( वा० ) बने हुए कार्य को भट कर देना ।—मानना ( वा० ) कहना मानना, आज्ञा मानना ।—रखना ( वा० ) प्रतिज्ञा पालन करना, कही बात को पूरा करना ।—रहना ( वा० ) प्रतिज्ञा का रह जाना, माम रह जाना ।—लगाना ( वा० ) हथर की बात उधर करना, निम्ना करना, रूढ़िवादी लगाना ।

बाती दे० ( स्त्री० ) बची दिया में जलाई जाने वाली बाती, बर्ची, पलीता । [ वाला, बढ़ाड़िया ।

बातूनिया दे० ( वि० ) बाबाज, अधिक, बातें करने बातूनी दे० ( वि० ) बातें बनाने वाला, अधिक बोलने वाला, गप्पी, चक्रवादी, बाबाज ।

बातें दे० ( स्त्री० ) बात का बहुवचन ।—करना दे० ( वा० ) बतियाना, सम्भाषण करना ।—बनाना दे० ( वा० ) कूड़ी बातें कहना, अपना अपराध छिपाने के लिये कूट बोलना ।—मारना दे० ( वा० ) अपनी धीरता बताना, डोंगै हाँकना ।—सुनना दे० ( वा० ) ध्यान से बात सुनना, कट्टिक सहना, अधिचेष्ट बचन सहना ।—सुनाना दे० ( वा० ) अधिचेष्ट करना, निम्ना करना, कड़ी कड़ी बातें कहना ।—बातों में उड़ाना दे० ( वा० ) किसी की प्रार्थना पर ध्यान न देना, किसी के काम की बातों पर हँसी करना ।—बातों में धर लेना दे० ( वा० ) निरुत्तर करना, बक्ति प्रत्युक्ति में चुप करा देना ।—बातों में लपेटना दे० ( वा० ) बिना प्रयोजन किसी को रोकना, पहले बातें बना बड़ी बड़ी आशार्थ देकर पीछे धोखा देना ।

बादल दे० ( पु० ) मेघ, घटा, बहल ।

बादला दे० ( पु० ) खप्पा, एक प्रकार की बरी का तार, जो सोना और रूपा का बनता है ।

बादिनि दे० ( स्त्री० ) बोलनेवाली, रूढ़िवादी ।

बादुर दे० ( पु० ) चमगीदड़ ।

बाध तत्० ( पु० ) रोक, रुकावट, निवारण । ( दे० ) मूँज की बोरी जिससे प्रायः खाद बिनी जाती है ।

बाधक तत्० ( पु० ) प्रतिबन्धन विनाशक, रोकने वाला । [ दुःख, प्रसूति सम्बन्धी पीड़ा ।

बाधा तत्० ( स्त्री० ) पीड़ा, दुःख, फलेय, मानसिक बाधित तत्० ( वि० ) प्रतिबन्धित, रोक हुआ ।

—करना ( वा० ) अनुगत करना, आभारी बनाना ।

बाध तत्० ( वि० ) बाधनीय, रोकने योग्य, प्रतिकूल करने के उपयुक्त, बर्शाभूत, घेयश ।

बाध दे० ( स्त्री० ) टेय, श्रम्यास । ( पु० ) बाध, दार, खाद, मूँज की बनी रस्ती ।

बाधगी दे० ( स्त्री० ) आदर्श, ध्यान्त, नमूना ।

बाधने दे० ( वि० ) संख्या विरोध, नये और दो, १२ ।

बाधा दे० ( पु० ) स्वभाव, प्रकृति, व्यवहार, परिच्छेद, वेप निव्यास, वेप चारण्य, भरनी, जिस सूत से कपड़े की चौड़ाई भरती जाती है । प्रतिज्ञा, विचार अथ विरोध । ( कि० ) सुजाना, पटना, दिविषा होना, दो मांग होना ।

यानी दे० ( स्त्री० ) कपड़े बुननेका सूत, चाप्पी, योली ।  
 —यौनी दे० ( स्त्री० ) बिनावट, बिनवाई, चुनावट ।  
 यानूया दे० ( पु० ) जल पत्ती विशेष । [ का नाम ।  
 यानूसा, यानूसी दे० ( पु० ) एक प्रकार के कपड़े  
 यानैत दे० ( वि० ) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला,  
 चाप्य भारण करने वाला, धनुर्धर ।  
 बान्धव तत्त्वं ( पु० ) भाई बन्धु, कुटुम्ब, परिवार  
 सम्बन्धी, नतैत, नातेदार ।  
 बाप दे० ( पु० ) पिता, जनक ।—करना ( वा० ) बाप  
 के समान आदर करना, अज्ञानुवर्ती होना, घरा  
 होना ।—दे बाप ( वा० ) आश्चर्य-भय-द्योतक ।  
 —मारे का बैर ( वा० ) अतिशय विरोध, बड़ा  
 भारी विरोध ।—न मारी पीढ़ी बेटा तीर-  
 न्दाज ( लो० उ० ) अयोग्य पिता के पुत्र का  
 घमण्डी होना । जिसका बाप अयोग्य हो और  
 वह भी स्वयं अयोग्य हो और वह अपना बखान  
 करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है ।  
 बापड़ा, बापरा दे० ( वि० ) दीन, असहाय, दरिद्र,  
 कंगाल । यह मारवाड़ी प्रयोग है । [ असहाय ।  
 बापरो दे० ( पु० ) बापका, दीन, दुखिया, असमर्थ,  
 बाफ तद् ( पु० ) बाप्प, बफारा, गरम जल आदि  
 का धुआँ ।  
 बाँवनी दे० ( स्त्री० ) बाँधी, सर्प का बिल, साँपों के  
 रहने का स्थान । बावन संख्या विशिष्ट ।  
 बावर दे० ( पु० ) मिठाई विशेष ।  
 बाबा दे० ( पु० ) बाप, दादा, बुढ़ा, साधु, संन्यासी,  
 इस शब्द का प्रयोग बड़े माननीय के अर्थ में  
 किया जाता है ।—जी ( पु० ) योगी, संन्यासी,  
 साधु आदि ।  
 बाबू दे० ( पु० ) बालक, पुत्र, ठाकुर, जमींदार,  
 बहाली, किरानी, आज कल यह पुरुष मात्र के  
 लिये प्रयुक्त होता है ।  
 बाँवी दे० ( स्त्री० ) बावनी, सर्प का बिल ।  
 बाम दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की मछली का नाम ।  
 ( पु० ) बाँया, उलटा, सुन्दर स्त्री । ( पु० ) महा-  
 देव, कामदेव ।  
 बामा तत्त्वं ( स्त्री० ) स्त्री, पत्नी, भार्या ।  
 बाम्हेन तद् ( पु० ) आक्षेप ।

बाम्हेनी दे० ( स्त्री० ) एक पौधे का नाम, जो दवा  
 के काम में आता है । अजूनहारी, कजिया, ब्राह्मणी,  
 कीट विशेष, छिपकली, विसलुइया ।  
 बाय दे० ( कि० ) प्रसार कर, फैलाकर । ( पु० )  
 बायु, बाई, बात ।  
 बायन दे० ( पु० ) उपहार, बैना, ठाली, किसी उत्सव  
 विशेष के उपलक्ष में मित्रों के घर जो भेजा  
 जाता है ।  
 बायना दे० ( पु० ) " बायन " देखो ।  
 बायव तद् ( पु० ) बायव्य कोण, बायु कोण, पश्चिम  
 उत्तर का कोना । ( पु० ) अन्य, दूसरा, भिन्न ।  
 बायव्य तद् ( पु० ) बायु कोण ।  
 बाँया दे० ( वि० ) बामाक्ष, बायीं ओर, उलटा ।  
 —पाँव पूजना ( वा० ) पक्षिण्डियों के घोले में  
 आना, दाम्भिकों पर विश्वास करना ।  
 बायो दे० ( कि० ) फैलाया, पसारा, विस्तारित किया ।  
 बार दे० ( स्त्री० ) विलम्ब, समय, दिन, बेला, अवसर,  
 देरी ।—लगाना ( वा० ) विलम्ब करना, देरी  
 लगाना । [ गज ।  
 बारण तत्त्वं ( पु० ) बारण, रुकावट, अटकाव, हायी,  
 बारन तद् ( पु० ) बारण, रोक, रुकावट ।  
 बारना दे० ( कि० ) बिलगाना, अलग अलग करना,  
 निषेध करना, रोकना, रुकावट डालना । [ पहरिया ।  
 बारनारी तत्त्वं ( स्त्री० ) वेश्या, गणिका, बाराङ्गना,  
 बारेंवार तद् ( अ० ) बार बार, प्रतिबन्ध, हर वही,  
 प्रति पल ।  
 बारह दे० ( वि० ) संख्या विशेष, दस और दो, दो  
 अधिक दश, १२ ।—खड़ी ( स्त्री० ) द्वादश माप्रायों  
 का व्यञ्जनों के साथ मिलान ।—घाँट ( पु० )  
 नाश, सर्वनाश, चौपट ।—घाँट होना ( वा० )  
 उजड़ना, बिगड़ना, खराब होना, सत्यानाश होना ।  
 बारहदरी दे० ( स्त्री० ) बारह दरवाजा का मकान,  
 हवादार मकान, बरूला । [ खड़ी ।  
 बारखरी दे० ( स्त्री० ) अचरों का मिलाना, बारह-  
 बायसिंगा दे० ( पु० ) कन्दसार, मृग विशेष, यह  
 जङ्गली अन्तु है, हिरनों से बड़ा होता है ।  
 बारह तद् ( पु० ) बराह, सूकर, सूअर ।  
 बारहीवर दे० ( पु० ) औषधि विशेष, नेत्रबाला ।

वारिश दे० ( स्त्री० ) वर्षा, मेह का बरसना ।  
 वारी दे० ( स्त्री० ) जल, पानी, फुलवारी, बाढ़ी, बगीचा,  
 झरोखा, कान और नाक में पहनने का गहना,  
 बिन व्याही कन्या, बरारी कन्या, ( थ० ) थोसरी,  
 पाला । ( पु० ) जाति विशेष, पत्नी बनाने वाला,  
 मसाल दिखाने वाला । ( क्रि० ) निहावर करी,  
 रोकी, मना की ।—दार ( पु० ) नियत समय का  
 नौकर ।

वारीक दे० ( वि० ) महीन, झीना ।

वायुपी तद्० ( स्त्री० ) मदिरा, मद्य, वरुण देवता की  
 दिशा, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र ।

वारुद दे० ( स्त्री० ) दारू, शोरा, गन्धक और कोयले  
 से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाते ही भस्म से उड़  
 जाती है ।

वाये दे० ( पु० ) बच्चे, लड़के, बालक ।

वाल तद्० ( पु० ) लड़का, बालक, बच्चा, केश, शिरो-  
 रत्न । ( पु० ) ना समझ, अज्ञान, मूर्ख ।—तीड़ा  
 ( स्त्री० ) बच्चों का खेल ।—गोपाल ( वा० )  
 बाल बच्चे, लड़के वाले ।—ग्रह ( पु० ) बालकों  
 के कष्टदायक ग्रह, उपग्रह, पूतना आदि ।—बाँधी  
 कौड़ी मारना ( वा० ) निशाना लगाना ।—घाल  
 बच गये ( वा० ) बिलकुल बच जाना, ब्याक्रमण  
 से रक्षा पाना ।—वाल वैरी होना ( वा० ) खय  
 से विरोध होना ।—वाल गजमोती पिरोना  
 ( वा० ) खय श्रृंखल करना, खूब सजाना ।—घन्वे  
 ( वा० ) लड़के वाले, पुत्र पौत्र आदि ।—बाँका  
 न होना ( वा० ) किसी प्रकार की हानि न होना,  
 कुछ भी न बिगड़ना ।

वालक तद्० ( पु० ) लड़का, छोटा, बेटा ।—पन  
 ( पु० ) वायु, लड़काई, बालपन ।

वालका दे० ( पु० ) योगी या संन्यासियों का चेला ।

वालकड़ दे० ( स्त्री० ) श्रौषधि विशेष, सुगन्ध वाला ।

वालतोड़ दे० ( पु० ) बाल टूटने से जो घाय होता है ।

वालना दे० ( क्रि० ) सुलगाना, जलाना, दीपक  
 आदि का जलाना ।

वालभोग दे० ( पु० ) प्रातःकाल का नैवेद्य, प्रातःकाल  
 जो भगवान् को नैवेद्य लगाया जाता है ।

वालम दे० ( पु० ) म्रियतम, पति, प्यारा ।

वालमखीरा दे० ( पु० ) एक तरह की ककड़ी, खीरा  
 विशेष । [कवि, रामायण के कर्ता ।

वालमीकि तद्० ( पु० ) एक मुनि का नाम, आदि

वालरौड़ तद्० ( स्त्री० ) बालरगड़ा, बालविधवा ।

वाललीला तद्० ( स्त्री० ) लड़कपन का खेल, बाल  
 चरित्र । [बालकों पर दयालु ।

वालधत्स तद्० ( पु० ) कबूतर, बालकों पर कृपा,

वालमुख तद्० ( पु० ) वायु का मुख, बालकपन  
 का मुख ।

वाला तद्० ( स्त्री० ) छोटी शवस्था की लड़की, एक  
 उमर की स्त्री, कुण्डल, कानों में पहनने का गहना ।

—चाँद ( पु० ) द्वितीया का चन्द्रमा, द्वैज का  
 चन्दा ।—पन ( पु० ) बालकपन, लड़काई ।—

मोला ( वा० ) सीया सादा, छल कपट रहित ।

वालि तद्० ( पु० ) वानरराज, इनकी राजधानी का  
 नाम किष्किन्धा था । मेरु पर्वत पर योगध्यान

मग्न महा के नेत्रों से अकस्मात् भास्व टपक पड़े,  
 उससे एक सुन्दर बानरी उत्पन्न हुई । इसी बानरी

के गर्भ से हंसराज इन्द्र और सूर्य के श्रीरस से  
 सुग्रीव और बालि उत्पन्न हुए थे । महा की आज्ञा

से बालि ने किष्किन्धा में अपना राज्य स्थापन  
 किया । बालि की स्त्री का नाम तारा और सुग्रीव

की स्त्री का नाम रुमा था । किसी मापाधी दैत्य  
 का बध करने के लिये एक समय बालि पाताळ

गया था, उसके घाते में शिलन्ध दैत्य सुग्रीव ने  
 इसकी मृत्यु निमित्त कर ली और तदनुसार

वहाँ से यह सम्वाद प्रचारित किया । मन्त्रियों  
 ने सुग्रीव को राजा बनाया, राज्यासन पर

बैठ कर सुग्रीव बालि की स्त्री तारा को रक्ष  
 कर राजसुख भोगने लगे । कुछ दिनों के बाद

पाताळ से बालि अपनी राजधानी में लौट आया,  
 सुग्रीव के आचरणों से दुःखित होकर बालि सुग्रीव

को मारने के लिये चेष्टा करने लगा । प्राण पचाने  
 के लिये सुग्रीव वहाँ से भाग गया, बालि ने अपनी

स्त्री और सुग्रीव की स्त्री को भी रक्ष लिया, अन्त  
 में बालि रामचन्द्र की लक्ष्म्यता से मारा गया ।

—कुमार ( पु० ) शब्द ।

वाजिका ( स्त्री० ) लड़की, छोटी

वालिश तत्वं ( वि० ) मूर्ख, अज्ञ, नासमर्थ, तक्रिया ।  
वाली दे ( स्त्री० ) लड़की, कन्या, कुण्डल ।  
वाल्मुका तत्वं ( स्त्री० ) रेत, बालू, कछुआ ।—मय  
( पु० ) रेतीला, फिरफिरा ।

वालू दे० ( स्त्री० ) वालुका, रेत, रेती, रेणु, सिकता ।  
—चर ( पु० ) गंजे का एक भेद ।—चरी  
( स्त्री० ) रेशमी वस्त्र विशेष ।—शाही ( स्त्री० )  
एक मिठाई का नाम ।

वाल्म्य तत्वं ( पु० ) लड़कपन, लड़काई ।  
वाव दे० ( पु० ) वायु, पवन, पवार ।—गोला ( पु० )  
रोग विशेष, पेट की पीड़ा, शूल ।—बांधना  
( वा० ) चिरोरी करना, फड़ बांधना ।—बहना  
( वा० ) हवा चलना, कीसी प्रकार का विचार  
कैजाना ।—के घेड़े पर सवार होना ( वा० )  
अभिमान करना, घमण्ड में आकर किसी को कुछ  
न समझना ।—वतास ( पु० ) देवी थापद, भूत  
बाधा ।—शूल ( पु० ) वायगोला ।

वावग दे० ( पु० ) बोझाई । [ वाघाल ।  
वाचभक्त दे० ( वि० ) गम्भी, वक्तावी, वदमदिया,  
वाचड़ी दे० ( स्त्री० ) वावली, चप्राग, छोटा तलाप ।  
वाचना दे० ( वि० ) ठिगना, बचना, खर्व ।  
वावला दे० ( वि० ) विचित्र, उन्मत्त, पागल, सिड़ी ।  
वावली दे० ( स्त्री० ) वावड़ी, तड़ाग, तालाब,  
बनमत्त स्त्री ।

वाव्य तत्वं ( पु० ) नेत्र जल, आंसू, वाष्प, भाफ ।  
वास दे० ( पु० ) स्थान, वासस्थान, रहने का स्थान,  
बेरा, बसेरा । ( स्त्री० ) महक, सुगन्ध, गन्ध ।  
वासन दे० ( पु० ) वस्त्रन, भीड़ा, पात्र ।  
वासना दे० ( स्त्री० ) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ ।  
( क्रि० ) सुगन्धित करना, वासना, महकाना,  
वास देना ।

वासा दे० ( पु० ) स्थान, रहने का स्थान, बेरा ।  
वासी दे० ( वि० ) निवासी, रहने वाला, निवास  
करने वाला, दिनारा, कई दिनों का बना हुआ,  
पर्युपित भक्ष, भाफ निकाला हुआ, दुर्गन्ध युक्त ।  
—घबे न फुत्ता खाय ( लो० व० ) विशेष  
का कारण नहीं रहना, ऐसी कोई बात ही नहीं  
जिससे फगाड़ा हो ।—फूलों वास नहीं परबेसी

वालाभा आस नहीं ( लो० व० ) दूसरों के  
अधीन बातों में लाभ की आशा नहीं, समय पर  
किसी काम को न कर, समय बीतने पर उसकी  
सिद्धि की आशा निरर्थक है

वाहक तत्वं ( पु० ) [ वह + याक् ] ढोने वाला, भार  
पहुँचाने वाला, मजूर । [ आदि ।

वाहन तत्वं ( पु० ) [ वह + घनट् ] यान, सवारी  
वाहना दे० ( क्रि० ) थक चलाना, फेंकना, छोड़ना  
त्यागना, भैस गौ आदि का गर्भ धारण करना ।

वाहर दे० ( अ० ) अन्यत्र, दूसरा स्थान, परदेश,  
अन्य देश ।—कै खाय जाय, घर के गीत गावें  
( लो० व० ) जिसका नियमित अधिकार है उसे  
तो कुछ नहीं भलाई और सब जेलें । हकदार को  
न मिलना और दूसरे को लाभ होना ।

वाहिज दे० ( पु० ) बाहरी, बाहर से, बाहर वाला ।

वाहु तत्वं ( पु० ) बहि, भुना ।—ज ( पु० ) बाहु से  
उत्पन्न, दूसरा पर्व, चतुर्थ ।—युद्ध ( पु० ) मछ-  
युद्ध, पहलवानों की लड़ाई, कस्ती ।

वाहुल्य तत्वं ( पु० ) बहुलता, आधिक्य, अधिकई ।  
“बाहुल्यता” शब्द चिल्लुल अशुद्ध है, तौ भी  
इसका प्रयोग किया जाता है ।

विजन ( पु० ) तरकारी, साग, भाजी ।

विदी ( स्त्री० ) शून्य, शुकता, दाग ।

विधिना ( क्रि० ) बंक मानना, बसना ।

विवेाट ( स्त्री० ) दीमक ।

विक तत्वं ( पु० ) बूक, कुण्डार, भेड़िया ।  
विकट तत्वं ( पु० ) भयङ्कर, भयानक, डरावना,  
कठिन, कठोर, अदृश्य, टेढ़ामेढ़ा, ऊँचा, लीचा,  
दुःखदायी । [ होता ।

विकना दे० ( क्रि० ) विकी होना, बेचा जाना, समाप्त

विकराल तत्वं ( पु० ) डरावना, भयङ्कर, भयानक,  
विकट, कठोर ।

विकल तत्वं ( वि० ) व्याकुल, उद्धिग्न, बेचैन ।

विकसना दे० ( क्रि० ) खिलना, विकसित होना,  
फूलना, स्फुटित होना, प्रसरण होना ।

विकसित तत्वं ( वि० ) खिला हुआ, फूला हुआ,  
प्रफुल्लित, प्रसन्न । [ वस्तु, जो चीज़ बेची जाय ।

विकाऊ दे० ( वि० ) विक्रेय, वस्तु, बेची जाने वाली

विकाना दे० ( कि० ) विक जाना, खप जाना, उठाना ।

विकाव दे० ( खी० ) विक्री, खपत, उठाव ।

विकास्त तद्० ( पु० ) चमक, प्रकाश, आनन्द, हर्ष, विकास ।

विक्री दे० ( पु० ) खेल के साथी, किसी खेल के एक पक्ष वाले भाग में विक्री कहे जाते हैं ।

विक्री दे० ( खी० ) विक्रय, विकाय, खपत ।

विखरना दे० ( कि० ) फैलना, पसरना, फुट्ट होना, तितर बितर होना, फोष करना ।

विगड़ना दे० ( कि० ) खराब होना, नष्ट होना, मन-बनाव होना, फोष करना, विरोधी होना ।

विगड़ी दे० ( खी० ) लूट, लड़ाई ।

विगसना दे० ( कि० ) विकसना, विकसित होना, खिलना, फूलना ।

विगहा दे० ( पु० ) बीधा, बीस विस्वा ।

विगाड़ दे० ( वि० ) विरोधी, तोड़, भङ्ग, लड़ाई, फगड़, हानि, क्षति । [ पहुँचाना ।

विगाड़ना दे० ( कि० ) विरोध करना, तोड़ना, क्षति विगोई दे० ( खी० ) झुलावा, छुपाव, छिपाव ।

विघ्न तद्० ( पु० ) विघ्न, रुकावट, बाधा, अड़वना ।

विच दे० ( ख० ) धीच, अन्तर, व्यवधान ।

विचकना दे० ( कि० ) मड़कना, सतर्क होना ।

विचकना दे० ( वि० ) मड़कने वाला, सतर्क सावधान ।

विचकाना दे० ( कि० ) मड़काना, विड़ाना, सतर्क करना ।

विचलना दे० ( कि० ) विचलित होना, फिसलना, विचलना, खसकना, स्थलित होना ।

विचली दे० ( खी० ) धीचवाली, मध्यस्था ।

विचवई दे० ( पु० ) मध्यस्थ, विचवान, बलाल ।

विचवाई ( खी० ) दलाही ।

विचार तद्० ( पु० ) ध्यान, निर्णय ।—क ( पु० ) न्यायकर्ता ।—ल ( पु० ) न्याय का स्थान, कचेहरी ।

विचारना दे० ( कि० ) ध्यान करना, सोचना, निर्णय करना, समझना, सूझना, जाचना ।

विचारित तद्० ( वि० ) सोना हुआ, निश्चय किया हुआ । [ कर्ता ।

विचारी तद्० ( वि० ) विचारक, विचारकर्ता, निर्णय

विचाली दे० ( खी० ) पुआल, एक प्रकार की घटाई जो पुआल या चाँस की सपचियों से बनाई जाती है ।

विचौनिया दे० ( पु० ) मध्यस्थ, तिसरेत, विचवाई ।

विचौनिया दे० ( खी० ) पावड़ के तिकोने टुकड़े ।

विद्धाव दे० ( पु० ) चिलाव, पसराव ।

विच्छू दे० ( पु० ) अन्त विरोध, वृद्धि, जिसका उच्छ विप्रेका होता है ।

विजना दे० ( कि० ) फैलना, पसारना, विस्तृत होना ।

विजराहट दे० ( खी० ) विरोध, दृयकता, भिन्नता ।

विजलता दे० ( कि० ) मिलगना, दृयक होना, अलग होना, पैर फिसलना, रपटना ।

विजलावा ( वि० ) फिसलावा ।

विजलाहट दे० ( खी० ) फिसलना, फिसलावट ।

विजधाना दे० ( कि० ) फैलाना, पसराना विधान ।

विज्जाता दे० ( पु० ) विदुआ, भूषण विरोध ।

विज्जाना दे० ( कि० ) फैलाना, पसारना ।

विज्जिया दे० ( पु० ) नूपुर, जिसमें के पैर की अँगुलियों में पहनने का आभूषण ।

विज्जुना दे० ( कि० ) विरोध होना, दृयक, दृयक होना, अलग होना, अलग हो ।

विज्जुरना दे० ( कि० ) विरुक्त होना, विरोध होना, अलग अलग होना ।

विज्जुषा दे० ( पु० ) अलविरोध, मटार विरोध, विद्विषा एक गहने का नाम जो पैरों में पहना जाता है ।

विज्जोह दे० ( पु० ) विरोध, जुदाई, भिन्नता, भेद ।

विज्जोहना दे० ( कि० ) अलगगाना, विरोध करना, भिन्न करना ।

विज्जौना दे० ( पु० ) विस्तार, विधान ।

विजना दे० ( पु० ) व्यजन, पढ़ा ।

विजली दे० ( खी० ) विद्युत्, दमिनी, पपला, बादलों की टकर से उत्पन्न अग्नि ।

विजय तद्० जय० जीव, फतह ।

विजया तद्० ( खी० ) भङ्ग, भङ्ग की पत्ती ।

विजान दे० ( वि० ) अज्ञान, मूर्ख, अज्ञान ।

विजायट या विजायठ दे० ( पु० ) एक आभूषण का नाम जो बाँह में पहना जाता है, यामुन्द ।

विजारा दे० ( पु० ) सॉट, दृयम, पैत ।

विजारा दे० ( पु० ) बीज धाला, बीज युक्त ।

विजाला दे० ( वि० ) वीजयुक्त, वीज सहित ।  
 विजोग तद्० ( पु० ) वियोग बिलुप्त, वियोग ।  
 विज्जु तद्० ( स्त्री० ) विजुष्ट ।  
 विज्जु दे० ( पु० ) जन्तु विशेष ।  
 विभक्तना दे० ( क्रि० ) चमकना, डरना, भय करना ।  
 विभक्ताना दे० ( क्रि० ) चमकाना, चौकाना, डराना ।  
 विञ्जन तत्० ( पु० ) व्यञ्जन, तरकारी, भाजी  
 विट दे० ( पु० ) विष्टा, मल, थोट ।—चर ( पु० )  
 शूकर, गाँव का सूअर । [छिटक जाना ।  
 विटना दे० ( क्रि० ) विथुरना, छिटकना अलगना,  
 विटप तत्० ( पु० ) वृक्ष की शाखा, नये पल्लव ।  
 विटाना दे० ( क्रि० ) छिटकाना, विधराना, गिराना,  
 विसराना ।  
 विटौरा दे० ( पु० ) गुदरौंटी, गोंदडा, ऊपरी ।  
 विठाना दे० ( क्रि० ) बैठाना, उठराना, रोकना ।  
 विडकन दे० ( पु० ) पक्षी विशेष, बंदर आदि पक्षी,  
 यथा—विडकन घनघूरे, भक्षिके बाज जीवे  
 रामचन्द्रिका ।  
 विडरना दे० ( क्रि० ) भागना, भाग जाना, डरना,  
 डर जाना ।  
 विडार तद्० ( पु० ) वनयिलाव, विडार ।  
 विडारना दे० ( क्रि० ) भगाना, डरवाना ।  
 विडारो दे० ( स्त्री० ) भगाई, भगड़ ।  
 विडौजा तद्० ( पु० ) हुन्द्र, पाकशासन, देवराज ।  
 विड्राई दे० ( क्रि० ) कमाकर, पैदा करके ( स्त्री० ) कचौरी ।  
 वितरण तद्० ( पु० ) त्याग, दान, बाँटना । [डालना ।  
 वितरना दे० ( क्रि० ) देना, दे देना, यिना मूल्य दे  
 बिताना दे० ( क्रि० ) रावाना, काटना, व्यतीत करना ।  
 वितोत तद्० ( वि० ) व्यतीत, गत, धीता हुआ ।  
 वित्त तद्० ( पु० ) धन, द्रव्य ।  
 वित्ता दे० ( पु० ) वित्तिलि वित्ताँद, बालरस, बिलस  
 वित्तिया दे० ( वि० ) यवना, टिगना ।  
 वित्थकना दे० ( क्रि० ) आश्चर्यित होना, अचम्भे में  
 आना, पड़ा रहना, जहाँ का तहाँ रह जाना, आगे  
 नहीं बढ़ना ।  
 विथरना दे० ( क्रि० ) छिटकना, विखरना, विखर जाना ।  
 विथ्या तद्० ( स्त्री० ) व्यथा, पीड़ा, दुःख, आपत्ति,  
 मानसी व्यथा ।

विथुरना दे० ( क्रि० ) विथरना, फैल जाना, इधर  
 उधर होना  
 विदरना दे० ( क्रि० ) विहरना, फटना, चिरना ।  
 विदरी दे० ( स्त्री० ) विदर देशी, दस्ता ।  
 विदा दे० ( स्त्री० ) विदाई, खानगी, भेजना, छुट्टी, जाने  
 की आज्ञा ।—करना ( वा० ) भेजना, जाने की  
 अनुमति देना ।  
 विदारण तद्० ( क्रि० ) फाड़ना, चीरना ।  
 विदारज दे० ( क्रि० ) विदारण करना, फाड़ना, चीरना ।  
 विदाहना दे० ( क्रि० ) जोते हुए खेत में हँगा चलाना,  
 हँगाना, खेत के ढोंके फोड़ कर बराबर करना ।  
 विदुपन दे० ( पु० ) पण्डित गण, विद्वान् लोग, तत्त्व के  
 जानने वाले ।—विदूषक तद्० ( पु० ) भौंड,  
 मसलगा, नकल करने वाला ।  
 विदोरना दे० ( क्रि० ) चिढ़ाना, बिराना ।  
 विध तद्० ( स्त्री० ) विधि, रीति, व्यवहार ।  
 विधना दे० ( पु० ) प्रज्ञा, प्रज्ञापति, विधाता, ( क्रि० )  
 भिदना, छेदना ।  
 विधवा तद्० ( स्त्री० ) रौंढ, घेवा, जिस स्त्री का पति  
 मर गया हो ।  
 विधावट दे० ( स्त्री० ) साल, छेद, रन्ध्र ।  
 विन दे० ( थ० ) बिना, रहित, छोड़ कर, अतिरिक्त ।  
 —धार्ये तरना ( वा० ) असमय हो जाना, बिना  
 अवसर मरना, बेमौत मरना ।—रौंये जड़का  
 दूध नहीं पाता ( वा० ) बिना प्रयत्न के कुछ भी  
 नहीं मिलता, अमीष्ट प्राप्ति के लिये थोड़ा भी प्रयत्न  
 करना आवश्यक है ।—भय प्रीति नहीं ( वा० )  
 बिना पराक्रम दिखाये प्रभाव नहीं जमता, प्रभाव  
 विस्तार के लिये अपनी प्रभुता दिखाने चाहिये ।  
 —मौंगे दे दूध बराबर मौंगे दे से पानी  
 ( लो० उ० ) बिना मौंगे मिलना उत्तम है । जो  
 स्वयं तुम्हारा कल्याण करना चाहता है, उसी पर  
 भरोसा रखो, तुम्हारे कहने से जो तुम्हारा कल्याण  
 करेगा उससे अधिक लाभ नहीं ।  
 विनतो दे० ( स्त्री० ) विनय, चिन्तनी, प्रार्थना ।  
 विनना दे० ( क्रि० ) बदोरना, एकत्रित करना, चुनना ।  
 विनवाना दे० ( क्रि० ) बदोरना, एकत्रित कराना,  
 कपड़े आदि का बुनना, चुनवाना ।

विनवाई दे० ( स्त्री० ) विनने का काम, विनने की मजूरी ।  
विनसना दे० ( क्रि० ) नष्ट होना, विगड़ना, खराब होना ।

विना तद् ( थ० ) रहित, अतिरिक्त, बिना ।

विनाई दे० ( स्त्री० ) बिनाबद, विनने का काम ।

विनास तद् ( पु० ) नाश, संहार, विन्यस ।

विनौना दे० ( क्रि० ) विनय करना, अर्चना, पूजा करना, ध्यान करना, पूजना, छूटना ।

विनौला दे० ( पु० ) कपास का बीज ।

विन्दी दे० ( स्त्री० ) बिन्दु, शून्य ।

विन्धना दे० ( क्रि० ) डसना, लड़क मारना, छिन्दना ।

विन्ना दे० ( क्रि० ) जाली काटना, कपड़े में बेल बूटे निकालना ।

विपत दे० ( स्त्री० ) आपत्ति, दुःख, श्रेय ।

विपता दे० ( स्त्री० ) दुःख, फट, छेद, आपत्ति ।

यथा—

“एक सुलावे चौदह आवें,  
निज निज विपता रोय सुनावें ।  
भूखे मरें भरे नहीं पेट,  
क्या सखि सज्जन नहीं प्रेमुष्ट ।”

—भारतेन्दु ।

विपरना दे० ( क्रि० ) आक्रमण करना, धावा करना, चढ़ाई करना ।

विपादिका तत् ( स्त्री० ) विवाह, ब्याह ।

विपरना दे० ( क्रि० ) चिड़ना, धष्ट होना, बीट [ होना ।

विफै दे० ( पु० ) बृहस्पतिवार, गुरुवार ।

विमाता तद् ( स्त्री० ) सौतेली माता ।

विम्बोड तत् ( स्त्री० ) दीमक, चालूमीक ।

विया दे० ( पु० ) बीज, गुठली ।

वियारा दे० ( स्त्री० ) रात्रि का भोजन, ब्यालू ।

वियाह तद् ( पु० ) विवाह, ब्याह ।

विरक्त तद् ( पु० ) विरक्त, योगी, आसकाम, वासना शून्य, इच्छा रहित ।

विरचन दे० ( पु० ) वैर का आटा ।

विरंत तद् ( पु० ) प्रीति रहित, बैरागी, मुमुक्षु, उदासीन, जिसे संसार से प्रीति न हो ।

विरद तद् ( पु० ) यश, स्वाति, प्रसिद्धि, सुकीर्ति ।

विरमना दे० ( ( क्रि० ) विराम करना, विग्राम करना, ठहरना, विलम्ब करना, विलम्ब लगाना ।

विरमाना दे० ( क्रि० ) ठहराना, रोकना, विलमाना ।

विरज दे० ( पु० ) छितराया हुआ, जुदा, भलग भलग ।

विरला दे० ( पु० ) कोई शून्य, अपूर्व, अतुलनीय, एकाग्र, कोई एक ।

विरव दे० ( पु० ) देखो विरवा ।

विरवा दे० ( पु० ) रूखड़ा, पौषा, छोटा वृक्ष ।

विरसता तद् ( स्त्री० ) भगवा, टंडा, मनमुटाव ।

विरसना तद् ( क्रि० ) रहना, टिकना, ठहरना ।

विरह तद् ( पु० ) वियोग, विछोड़, विदुषन ।

विरहनी तद् ( स्त्री० ) विरहिणी, वियोगिनी, अपने पति से जिस स्त्री का वियोग हो गया है ।

विरहा तद् ( पु० ) वियोग, विछोड़, अहीरों का गीत ।

विरहिया दे० ( वि० ) विरहिणी, विरही ।

विरही तद् ( पु० ) वियोगी ।

विराजना दे० ( क्रि० ) शोभना, सुन्दर भालूम होना, सुख भोग करना, सुख पूर्वक रहना ।

विराना दे० ( क्रि० ) छिड़ना । ( पु० ) अन्यदीप, अन्य सम्बन्धी, दूसरे का । [यावत् समाप्ति सूचक चिन्ह ।

विराम तद् ( पु० ) विग्राम, वाक्य की समाप्ति,

विरिया दे० ( स्त्री० ) अवसर, समय, पारी, पाला ।

विरोग दे० ( पु० ) विरह, वियोग ।

विरोगन दे० ( स्त्री० ) वियोगिनी, विरहिनी ।

विर्नी दे० ( स्त्री० ) यँ, यरनी, हड्डा ।

विल तद् ( पु० ) छिद्र, गूरे आदि जन्तुओं के रहने का स्थान, मॉद, बॉमी, सँभ ।

विलकना दे० ( क्रि० ) सिसकना, रोना । [ सिसकना ।

विलखना दे० ( क्रि० ) देखना, निरपना, उदास होना,

विलग दे० ( वि० ) अलग, भिन्न, जुदा, न्यारा, शृण्व, आन, अन्य, दूसरा ।—मानना ( था० ) भेद

मानना, जुदाई मानना, विरोध करना ।

विलगना दे० ( क्रि० ) भिन्न भिन्न होना, शृण्व शृण्व होना, फटना, छटना । [ करना ।

विलगाना दे० ( क्रि० ) अलगाना, अलगहदा करना, शृण्व

विलगाव दे० ( पु० ) भिन्नता, भेद, विप्लव ।

विलगाई दे० ( क्रि० ) अलग होते हैं, शृण्व शृण्व होते हैं ।



विलचना दे० ( कि० ) छुड़ना, चुनना, बाँटना, विलगाना ।

विलटना दे० ( कि० ) बिगाड़ना, नष्ट होना, स्खलित होना, धर्म अष्ट होना ।

विलनी दे० ( स्त्री० ) सूक्ष्म कीट विशेष, जो आँखों के सामने घुमा करती है, आँख पर की फुदिया ।

विलबन्द ( कि० ) निपटारा, निर्णय । [विशेष ।

विलविल ( कि० ) विल्ली को भगाने के लिये शब्द

विलविलाना दे० ( कि० ) विलाप करना, कूकना, व्याकुल होना, तड़पना, तड़फड़ाना ।

विललाना दे० ( कि० ) विलाप करना, रोना ।

विलल्ला दे० ( पु० ) भौंद, मूर्ख, येसमझ, अवारा ।

विलसना दे० ( कि० ) शोभित होना, आनन्दित होना, सुख भोगना, सुख भोग करना ।

विलस्त दे० ( पु० ) विलाँद, चित्ता, वितस्ति ।

विलहरा दे० ( पु० ) पनवट्टा, पान रखने का डब्बा ।

विलहरी दे० ( स्त्री० ) छोटा पनवट्टा, पान रखने का छोटा डब्बा ।

विलाई दे० ( स्त्री० ) विल्ली, माजारा, कदकूस, लोहा या पीतल की धनी एक वस्तु जिससे फट्ट के लच्छे काटते हैं । किवाड़ी की चिटकनी, जिससे किवाड़ी बन्द करते हैं ।

विलाना दे० ( कि० ) नष्ट होना, ध्वंस होना, मिट जाना ।

विलादि दे० ( स्त्री० ) विलस्त, वितस्ति, चित्ता ।

विलापना दे० ( कि० ) रोना, विलखना, दुःख करना ।

विलार दे० ( पु० ) माजारा, विलाव, विलाई । [का नाम ।

विलावल दे० ( स्त्री० ) रागनी विशेष, एक रागनी

विलोना विलोचना दे० ( कि० ) मथना, दही से मक्खन निकालना, दही मथना ।

विल्ला दे० ( पु० ) विलाव, विलाव ।

विल्ला दे० ( स्त्री० ) विलाई, विल्ला ।—भी लड़ती है तो मुँह पर पंजा धर लेती है । ( लो० उ० )

दूसरे से सामना करने के पहले अपनी रचा का उपाय कर लेना चाहिये । अपनी रचा का प्रबन्ध करके दूसरों से भिड़ना चाहिये ।—के भाग झूँक टूटा । ( लो० उ० ) भाग्य से भगवत पूर्ण हो गया । संयोग वश काम हो गया ।

विवाँई दे० ( स्त्री० ) पैर के तलवे में का घाव ।

विपखोपरा दे० ( पु० ) गोद, गोधा ।

विसन तद् दे० ( पु० ) व्यसन, बुराई, दोष, बुरा अभ्यास, आदत, देव ।

विसनो तद् दे० ( पु० ) व्यसनी, बुद्धा, लगपट ।

विसविसाना दे० ( कि० ) सड़ना, बजवजाना ।

विसर दे० ( पु० ) भूल, चूक, विस्मरण ।

विसरना दे० ( कि० ) भूलना, विस्मरण होना, भट-कना, याद न रहना । [क्राना ।

विसराना दे० ( कि० ) भुलना, गहकाना, विस्मरण

विसांत दे० ( स्त्री० ) पूँजी, मूलधन ।

विसाँती दे० ( पु० ) फेरी बाजा, पैकार ।

विसांध दे० ( पु० ) दुर्गन्ध, कुवास । [क्राना ।

विसाना दे० ( कि० ) मोल लेना, खरीदना, क्रय

विसारना दे० ( कि० ) भुलाना, विसारना । [वस्तु ।

विसाह दे० ( स्त्री० ) मोल ली हुई वस्तु, खरीदी

विसाहना दे० ( कि० ) मोल लेना, खरीदना ।

विसुरना दे० ( कि० ) विलाप करना, विलपना, धीरे धीरे रोना ।

विस्तुइया दे० ( स्त्री० ) विस्तुई, छिपकली ।

विस्तुई दे० ( स्त्री० ) छिपकली, पल्ली । [परिदे ।

विहंग तद् दे० ( पु० ) विहंग, पक्षी, पक्षेरू, चिकिया,

विहन दे० ( पु० ) चीया जो खेत में बोने के लिये रखा जाता है ।

विहनौर दे० ( स्त्री० ) बीज बोने की क्यारी ।

विहरना दे० ( कि० ) विहार करना, आनन्द करना घूमना, टहरना । [नियमित धन ।

विहरी दे० ( स्त्री० ) चन्दा, सहायता, सहायताय

विहखना दे० ( कि० ) बीच से फटना, दरफना, छाती फटना ।

विहसना दे० ( कि० ) मुसकाना, हँसना । [विशेष ।

विहाग ( पु० ) रात में गायी जाने वाली रागनी

विहान दे० ( पु० ) प्रातःकाल, भोर, भिनसार ।

विहाना दे० ( कि० ) छोड़ना, त्यागना, निर्वाह करना काल काटना । [ ( पु० ) औपधि विशेष ।

विही दे० ( स्त्री० ) फल, अमरूद ।—दाना जो सूँज की बनती

घड़ा रखा जाता है ।

धीधना दे० ( क्रि० ) धेदना, भेदना, भेदन करना, वेदना । [फर फिर जमाये जाते हैं ।

धीधड़ ( पु० ) धान आदि अनाज के पीछे जो उखाड़

वीयर दे० ( पु० ) विल, छिद्र, छेद, मॉद, सॉप, आदि के रहने का स्थान । [होता है, भूमि का नाप ।

धीघा दे० ( पु० ) घियहा, बीस विस्वे का एक बीघा

धीच दे० ( अ० ) मध्य, मॉक, मॉह, अन्तर, भीतर ।

( पु० ) विद्वेष, विरोध ।—पड़ना ( वा० )

अन्तर पड़ना, विरोध होना ।—विचाव करना

( वा० ) विरोध शान्त करना, झगड़ा निपटाना,

निर्णय करना, द्वेष दूर करा देना ।—में पड़ना

( वा० ) मध्यस्थ होना, किसी बात को निपटाने

का भार लेना ।

धीचो धीच दे० ( वा० ) मध्य में, ठीक बीच में ।

धीझा दे० ( पु० ) विच्छ, वृक्षिक ।

धीज तत् ( पु० ) धीर्य, गुणम, पिया ।

धीजक दे० ( पु० ) वस्तुओं की सूची, चालान, बेची

और खाना की हुई वस्तुओं की संख्या और उनका मूल्य बताने वाली फहरिस्त । [ विरोध ।

धीजना दे० ( पु० ) पंखा, ध्वजन, तालघुन्त, कीर

धीजार दे० ( पु० ) अधिक बीज वाला, बीजमय,

बीजैला, जिसमें बीज ज्यादा हों ।

धीज दे० ( स्त्री० ) जन्तु विरोध, नकुल, नेडला ।

धीझना दे० ( क्रि० ) खोदना, रेलना, ठेलना, पेलना ।

धीट दे० ( स्त्री० ) बिट, मल, विष्टा, पचियों की विष्टा ।

धीटना दे० ( क्रि० ) छलकना, उपराना, ढलना,

विथाना ।

धीठा दे० ( पु० ) गेंदुरी, धीड़ा, जिसको सिर पर रख कर भरा हुआ घड़ा पहिहारी ले जाती है ।

धीड़ा दे० ( पु० ) धीटिका, पान की धीड़ी, लगा हुआ

पान एक प्रकार का सूत जो तलवार की मूठ में बाँधा जाता है ।—उठाना ( वा० ) किसी काम

को सिद्ध करने के लिये प्रतिज्ञा करना । पहले यह

प्रथा थी कि जब किसी राजकुल में कोई बड़ा काम

आ पड़ता था, तब राज्य के लोग बुलाये जाते थे

और उनके बीच तलवार या धीर कोई वस्तु रख दी जाती थी । उनमें जो अपने को शक्तिमान् सम-

झन्ता था वह उस वस्तु को उठा लेता था । हमका

अर्थ यह होता था कि इसने काम पूरा करने की प्रतिज्ञा की ।—डालना ( वा० ) किसी काम को पूरा करने के लिये लोगों से कहना ।

वीणा तत्० ( स्त्री० ) वीणा, धीन बाजा ।

वीतना दे० ( क्रि० ) ध्वीत होना, पूरा होना,

समाप्त होना, गुजरना ।

वीता दे० ( पु० ) बालिरत । ( क्रि० ) वीतने का

भूतकाल, गया समय ।

वीन दे० ( स्त्री० ) वीणा, वाद्य विरोध ।

वीनना दे० ( क्रि० ) बुनना, बनाना, निर्माण करना ।

वीवी दे० ( स्त्री० ) स्त्री, मेहरारू, मेहरिया, मेम,

छेंमेज या मुसलमान की स्त्री ।

वीमा दे० ( पु० ) जोखिम, हुपड़ी, यह एक प्रकार की

राजकीय व्यवस्था है । डॉक के द्वारा भेजी जाने

वाली वस्तु के टूटने फूटने की जिम्मेदारी लेने के

लिये जो डॉक विभाग का कुछ नियमित द्रव्य देकर

जो व्यवस्था करनी पड़ती है उसे वीमा कहते हैं ।

इसके अतिरिक्त बीमे का व्यापार भी होता है ।

व्यवसायी जीवन वीमा इत्यादि का व्यापार करते

हैं । बड़े बड़े नगरों में मकान आदि का भी वीमा

कराया जाता है । वीमा की अवधि में यदि मकान

जल जाय तो बीमे वालों को मकान का दाम देना

पड़ता है । [रोग, मर्ग, अस्वस्थता ।

वीमार दे० ( पु० ) रोगी, मरीज, अस्वस्थ ।—१ ( स्त्री० )

वीर तद्० ( पु० ) उत्साही, शूर, अभ्यवसायी, भाई,

भैया, कान का गहना ।—यहूटी ( स्त्री० ) कीट

विरोध, यह लाल रक्त का होता है और बरसात में

ही पैदा होता है ।

वीरता ( स्त्री० ) बहादुरी, शूरता ।

वीरा दे० ( पु० ) भाई, भैया, घोड़ा, पान की खिली ।

वीरासन तद्० ( पु० ) वीरों के बैठने का घासन,

वीरों की बैठक ।

वीरी दे० ( स्त्री० ) वीड़ा, वीरा, पान की खिली ।

वीस दे० ( पु० ) संख्या विरोध, २०, एक कोढ़ी ।

वीसा दे० ( पु० ) बीस नए बाजा कुत्ता, कुत्ते दो

प्रकार के होते हैं, अठराह और बीसा, बीसा कुत्ते

बड़े भयानक और विपरीते होते हैं । उनका करा

हुआ आदमी भाग्य ही से पचता है ।

विलचन दे० ( कि० ) छोटना, चुनना, बाँटना,  
विलगाना ।  
विलटना दे० ( कि० ) विगड़ना, नष्ट होना, स्खलित  
होना, धर्म भ्रष्ट होना ।  
विलनी दे० ( स्त्री० ) सूक्ष्म कीट विशेष, जो आँखों के  
सामने धूसा करती है, आँख पर की फुड़िया ।  
विलवन्द ( कि० ) निपटारा, निरर्थक । [विशेष ।  
विलविल ( कि० ) विल्ली के भगाने के लिये शब्द  
विलविलाना दे० ( कि० ) विलाप करना, कूकना,  
व्याकुल होना, तड़पना, तड़फड़ाना ।  
विललाना दे० ( कि० ) विलाप करना, रोना ।  
विललता दे० ( पु० ) भौंदा, मूर्ख, बेसमझ, अचारा ।  
विलसना दे० ( कि० ) शोभित होना, आनन्दित  
होना, सुख भोगना, सुख भोग करना ।  
विलस्त दे० ( पु० ) विलाँव, विस्त, वितस्ति ।  
विलहरा दे० ( पु० ) पनबद्धा, पान रखने का डब्बा ।  
विलहरी दे० ( स्त्री० ) छोटा पनबद्धा, पान रखने का  
छोटा डब्बा ।  
विलाई दे० ( स्त्री० ) विल्ली, साजारा, कदवूकस, लोहा  
या पीतल की बनी एक वस्तु जिससे कदवू के  
लच्छे काटते हैं । किलाड़ी की चिटकनी, जिससे  
किलाड़ी बन्द करते हैं ।  
विलाना दे० ( कि० ) नष्ट होना, ध्वंस होना, मिट जाना ।  
विलाँव दे० ( स्त्री० ) विलस्त, वितस्ति, विस्त ।  
विलापना दे० ( कि० ) रोना, विलखना, दुःख  
करना ।  
विलार दे० ( पु० ) साजारा, विलाव, विलाई । [का नाम ।  
विलावल दे० ( स्त्री० ) रागनी विशेष, एक रागनी  
विलोना विलोचना दे० ( कि० ) मथना, दही से  
सखन निकालना, दही मथना ।  
विल्ला दे० ( पु० ) विडाल, विलाव ।  
विल्ला दे० ( स्त्री० ) विलाई, विल ।—भी लड़ती  
है तो मुँह पर पंजा धर लेती है ( लो० उ० )  
दूसरे से सामना करने के पहले अपनी रक्षा का  
उपाय कर लेना चाहिये । अपनी रक्षा का  
प्रवन्ध करके दूसरों से मिहना चाहिये ।—के  
भाग टूँक टूटा ( लो० उ० ) भाग्य से अनुरथ  
पूर्ण हो गया । संयोग वश काम हो गया ।

विवाँई दे० ( स्त्री० ) पैर के तलवे में का घाव ।  
बिपखोपरा दे० ( पु० ) गोह, गोधा ।  
बिसन तद्० ( पु० ) व्यसन, डराई, दोष, डरा  
अभ्यास, आदत, टेव ।  
बिसनी तद्० ( पु० ) व्यसनी, लुच्चा, लगपट ।  
बिसविसाना दे० ( कि० ) सड़ना, बजबजाना ।  
बिसर दे० ( पु० ) भूल, चूक, विस्मरण ।  
बिसरना दे० ( कि० ) भूलना, विस्मरण होना, भट-  
कना, याद न रहना । [कराना ।  
बिसराना दे० ( कि० ) भुजाना, बहकाना, विस्मरण  
बिसांत दे० ( स्त्री० ) पूँजी, मूलधन ।  
बिसाँती दे० ( पु० ) फेरी वाला, पैकार ।  
बिसांध दे० ( पु० ) दुरांध, कुवास । [कराना ।  
बिसाना दे० ( कि० ) मोल लेना, खरीदना, क्रय  
बिसारना दे० ( कि० ) भुलाना, बिसारना । [वस्तु ।  
बिसाह दे० ( स्त्री० ) मोल ली हुई वस्तु, खरीदी  
बिसाहना दे० ( कि० ) मोल लेना, खरीदना ।  
बिसुरना दे० ( कि० ) विलाप करना, विलपना, धीरे  
धीरे रोना ।  
बिसतुइया दे० ( स्त्री० ) बिस्तुई, छिपकली ।  
बिस्तुई दे० ( स्त्री० ) छिपकली, पल्ली । [परिदे ।  
बिहंग तद्० ( पु० ) बिहंग, पक्षी, पखेरू, चिड़िया,  
बिहन दे० ( पु० ) बीया जो खेत में बोने के लिये  
रखा जाता है ।  
बिहनौर दे० ( स्त्री० ) बीज बोने की क्यारी ।  
बिहरना दे० ( कि० ) बिहार करना, आनन्द करना  
धूमना, टहरना । [नियमित धन ।  
बिहरी दे० ( स्त्री० ) चन्दा, सहायता, सहायताय  
बिहगना दे० ( कि० ) बीच से फटना, दरकना, छाती  
फटना ।  
बिहसना दे० ( कि० ) मुसकाना, हँसना । [विशेष ।  
बिहाग ( पु० ) रात में गायी जाने वाली रागनी  
बिहान दे० ( पु० ) प्रातःकाल, भोर, भिनसार ।  
बिहाना दे० ( कि० ) छोड़ना, त्यागना, निवाँह करना  
फाल काटना । [ ( पु० ) औपधि विशेष ।  
बिही दे० ( स्त्री० ) सफरी फल, थमरूद ।—दाना  
वीड़ा दे० ( स्त्री० ) गेंडुरी, पेंडुरी, जो मूँज की बनती  
है और जिस पर भरा हुआ घड़ा रखा जाता है ।

बीधना दे० ( कि० ) घेदना, भेदना, भेदन करना, वेदना । [कर फिर जमाये जाते हैं ।

बीधड़ ( पु० ) धान आदि अनाज के पौधे जो उखाड़

बीयर दे० ( पु० ) बिल, बिंद, घेद, भौद, साँप, आदि के रहने का स्थान । [होता है, भूमि का नाप ।

बीघा दे० ( पु० ) विघहा, बीस विघे का एक बीघा

बीच दे० ( अ० ) मध्य, मॉक, मॉह, अन्तर, भीतर ।

( पु० ) विरोध, विरोध ।—पड़ना ( या० )

अन्तर पड़ना, विरोध होना ।—विचाव करना

( या ) विरोध शान्त करना, झगड़ा निपटाना,

निर्णय करना, द्वेष दूर करा देना ।—में पड़ना

( या० ) मध्यस्थ होना, किसी बात को निपटाने

का भार लेना ।

बीचो बीच दे० ( या० ) मध्य में, ठीक बीच में ।

बीझा दे० ( पु० ) बिच्छू, वृक्षिक ।

बीज तत् ( पु० ) बीर्य, पुद्गल, विषा ।

बीजक दे० ( पु० ) वस्तुओं की सूची, चालान, पेची

और रपाना की हुई वस्तुओं की संख्या और उनका

मूल्य मताने वाली फेहरिस्त । [विशेष ।

बीजना दे० ( पु० ) पंखा, व्यजन, तालघृन्त, कीर

बीजार दे० ( पु० ) अधिक बीज वाला, बीजमय,

बीजैला, जिसमें बीज ज्यादा हों ।

बीज दे० ( स्त्री० ) जन्तु विशेष, नकुल, नेउला ।

बीभ्रना दे० ( कि० ) खोदना, रेलना, डेलना, पेलना ।

बीट दे० ( स्त्री० ) बिट, मल, बिछा, पछियों की बिछा ।

बीटना दे० ( कि० ) छलकना, उपराना, डलना,

बिथरना ।

बीठा दे० ( पु० ) गेंदुरी, बीड़ा, जिसको सिर पर रख

कर भरा हुआ घड़ा पनिहारी से जाती है ।

बीड़ा दे० ( पु० ) बीटिका, पान की बीड़ी, लगा हुआ

पान एक प्रकार का सूत जो तलवार की मूठ में

बाँधा जाता है ।—उठाना ( या० ) किसी काम

को सिद्ध करने के लिये प्रतिज्ञा करना । पहले यह

प्रथा थी कि जब किसी राजकुल में कोई बड़ा काम

आ पड़ता था, तब राज्य के लोग जुलाये जाने थे

और उनके बीच तलवार या और कोई वस्तु रख

दी जाती थी । उनमें जो अपने को शक्तिमान् सम-

ग्रह्य यह होता था कि इसने काम पूरा करने की प्रतिज्ञा की ।—डाखना ( या० ) किसी काम को पूरा करने के लिये लोगों से कहना ।

बीषा तत्० ( स्त्री० ) बीषा, बीन बाजा ।

बीतना दे० ( कि० ) व्यतीत होना, पूरा होना,

समाप्त होना, गुजरना ।

बीता दे० ( पु० ) बालिरत । ( कि० ) बीतने का

भूतकाल, गया समय ।

बीन दे० ( स्त्री० ) बीषा, बाघ विशेष ।

बीनना दे० ( कि० ) बुनना, धनाना, निर्माण करना ।

बीबी दे० ( स्त्री० ) स्त्री, मेहरारू, मेहरिया, मेम,

ब्रैम्रेज या मुसलमान की स्त्री ।

बीमा दे० ( पु० ) जोखिम, हुपडी, यह एक प्रकार की

राजकीय व्यवस्था है । बाँक के द्वारा भेजी जाने

वाली वस्तु के टूटने फूटने की जिम्मेदारी लेने के

लिये जो बाँक बिमाग को कुछ नियमित द्रव्य देकर

जो व्यवस्था करनी पड़ती है उसे बीमा कहते हैं ।

इसके अतिरिक्त बीमे का व्यापार भी होता है ।

व्यवसायी जीवन बीमा इत्यादि का व्यापार करते

हैं । बड़े बड़े नगरों में मकान आदि का भी बीमा

कराया जाता है । बीमा की अवधि में यदि मकान

जल जाय तो बीमे वालों को मकान का दाम देना

पड़ता है । [रोग, मर्ज, अस्वस्थता ।

बीमार दे० ( पु० ) रोगी, मरीज, अस्वस्थ ।—नी ( स्त्री० )

बीर तत्० ( पु० ) उत्साही, शूर, अभ्यवसायी, भाई,

भैया, कान का गहना ।—घट्टी ( स्त्री० ) बीट

विशेष, यह लाल रक्त का होता है और वरसात में

ही पैदा होता है ।

बीरता ( स्त्री० ) बहादुरी, शूरता ।

बीरा दे० ( पु० ) भाई, भैया, बीड़ा, पान की बिट्टी ।

बीरासन तत्० ( पु० ) बीरों के बैठने का आसन,

बीरों की बैठक ।

बीरी दे० ( स्त्री० ) बीड़ा, बीरा, पान की खोली ।

बीस दे० ( पु० ) संख्या विशेष, २०, एक कोड़ी ।

बीसा दे० ( पु० ) बीस नख वाला कुत्ता, कुत्ते दो

प्रकार के होते हैं, अठराहा और बीसा, बीसा कुत्ते

बड़े भयानक और बिपैले होते हैं । उनका काया

बोसी दे० ( स्त्री० ) अन्न मापने का नाप ।

बुँद ( पु० ) कान का आभूषण विशेष ।

बुँदा दे० ( पु० ) हिन्दी, हिन्दु, शून्य, गोलाकार, टीका, कौंच की एक छोटी टिकुली ।

बुँदिया दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिठाई का नाम ।

बुँदला दे० ( पु० ) बुन्देलखण्ड का राजपूत, बुन्देलखण्ड का रहने वाला । [ परिमित

बुकटा, बुकटा दे० ( पु० ) सुट्टी भर, भर सुट्टी, सुट्टि

बुकनी दे० ( स्त्री० ) चूर्ण, चूरा, सफूफ ।

बुकलाना दे० ( क्रि० ) बकना, स्वयं बकते रहना, बकमकाना । [ का लाल रङ्ग ।

बुका दे० ( पु० ) बुकटा, सुट्टी भर, बुकनी, एक प्रकार

बुकी दे० ( स्त्री० ) कपड़े पर का बक, वह कपड़ा जो कपड़े पर रक्खा जाता है ।

बुजना दे० ( पु० ) जियों के पहनने का कपड़ा, जिसे शशुद्धि की दशा में धियाँ पहनती हैं, नहान का कपड़ा ।

बुजहरा या बुकहरा दे० ( पु० ) पात्र विशेष, जिसमें पानी गर्म किया जाता है । [ होना ।

बुझना दे० ( क्रि० ) झीपक का गुल होना, ठण्डा

बुझाना दे० ( क्रि० ) बुतबा देना, गुल करा देना, प्रत्यर्पण करना, भाग ठण्डी करना, दिया बुझाना ।

बुझौवल दे० ( स्त्री० ) पहेली, रहस्य ।

बुझाना दे० ( क्रि० ) बुझाना, लालमस करना, धोना ।

बुझा दे० ( पु० ) बुझ, बुझा । ( शु० ) बाचीन, पुराना, जौर्य, शीर्य ।

बुझमस दे० ( शु० ) अपने को बुझा समझने वाला बुझा, जवान की चाल चलने वाला बुझा ।—लगना ( वा० ) बुझाई में जवानी का काम करना ।

बुझा दे० ( वि० ) बुझ, बुझा, डोकरा ।

बुझाई ( स्त्री० ) बुझापा ।

बुझापा दे० ( पु० ) बुझाई, बुझावस्था ।—विगंड़ना ( वा० ) बुझावस्था में कष्ट सहना, बुझाई में कलङ्क लगना ।

बुझिया दे० ( स्त्री० ) बुझा स्त्री, बुझी ।

बुझा दे० ( पु० ) कण भूषण विशेष, कान के एक गहने का नाम ।

बुत्त दे० ( पु० ) जूआ खेलने की एक वस्तु, जिस पर पाँसा फेंका जाता है ।

बुताना दे० ( क्रि० ) बुकाना, बुक जाना, गुल होना ।

बुत्ता दे० ( पु० ) डगहाई, झल, कपट, धूर्तता, धोखा ।

—देना ( वा० ) ठगना, बुझना, धोखा देना ।

बुदबुद तद् ( पु० ) बुलबुला, पानी का बुबका, बबूला । [ कुक्ष बकते रहना ।

बुदबुदाना दे० ( क्रि० ) धीरे धीरे बोलना, मनमाना

बुद्ध तद् ( शु० ) सर्वज्ञ, सुगत, विदित, ज्ञात । ( पु० )

भगवान् का अवतार विशेष कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन का पुत्र । इनका दूसरा नाम या गौतम ।

बुद्ध ने जिस धर्म का संसार में प्रचार किया वह भी उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है । समस्त भूमण्डल में

बौद्ध धर्म का प्रचार है, यहाँ तक कि संसार का तीसरा भाग बौद्ध धर्मावलम्बी है । तिब्बत चीन

और जापान में भी बौद्ध धर्म फैला हुआ है ।

बौद्धमत में बारह इन्द्रियाँ मानी जाती हैं ।

पाँच कर्मेन्द्रिय और पाँच ज्ञानेन्द्रिय तथा मन और बुद्धि नामक दो उभयेन्द्रिय । शरीर द्वादश इन्द्रिय

का आश्रय है इसी कारण बौद्धमत में शरीर की द्वादशाश्रयत संज्ञा है । सेवा ही इस शरीर का

प्रधान कर्म है, इनके देवता सुगत हैं । इनके मत में प्रायश्च और अनुमान दो ही मर्यादा हैं, सुतरा

शब्द प्रमाण रूप वेद का इनके यहाँ आदर नहीं है अगस्त्यभंगुर है । बौद्ध कहते हैं प्रतिष्ठित जगत्

का परिवर्तन हो रहा है, अतएव जगत् के कोई पदार्थ स्थायी नहीं हैं । परिवर्तन होना ही इस

जगत् का लक्षण और स्वरूप है । सांख्य और बौद्ध की अनेक बातों में एकता है । दोनों कहते हैं कि

दुःख का कारण जन्म, जन्म का कारण कर्म, कर्म का कारण प्रवृत्ति और प्रवृत्ति का कारण अज्ञान

है । इससे यह स्पष्ट ही सिद्ध होता है कि सांख्य दर्शन ही बौद्ध धर्म का मूल है । बौद्धों के मत में

चार भेद हैं, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक । माध्यमिक बौद्धों के मत में जगत्

स्वयष्ट पदार्थ के समान मिथ्या है, समस्त शून्य है । योगाचारों के मत में सभी बाह्य वस्तु असत्य

है, केवल विज्ञानरूप आत्मा ही सत्य है । सौत्रा-

नित्य बौद्ध वास्तवस्तु, को सत्य और अनुमान सिद्ध मानते हैं, वैसायिक बौद्धों के मत से समस्त पदार्थ प्रत्यक्ष सिद्ध है। बौद्धों के मत से सब पदार्थ चय स्थायी हैं। ऐसी स्थिर वासना का नाम मार्ग तत्व है और यही मोक्ष है।

बुद्धि तत्त्वं ( श्री० ) [ बुध् + कि ] मनीषा, धी, धीपणा, ज्ञान का कारण, विवेक शक्ति।—मान् ( वि० ) मनीषी, समझदार, विवेकी।—हीन ( वि० ) मूर्ख, नासमझ, अज्ञान।

बुद्धीन्द्रिय तत्त्वं ( पु० ) बुद्धि और इन्द्रिय, इन्द्रिय सहित बुद्धि, बुद्धि नाम की इन्द्रिय।

बुध तत्त्वं [ बुध + क ] पण्डित, सौम्य, विद्वान्, चतुर, भमिष्ठ, चतुर्थग्रह, चन्द्रमा का पुत्र, बुधा-वतार, सूर्यवंशी एक राजा का नाम।—जन ( पु० ) पण्डितजन, भमिष्ठ, बुद्धिमान्।—धार ( पु० ) बुध का दिन, चौथा दिन।

बुधान तत्त्वं ( पु० ) बुध, पण्डित, अध्यापक, भ्राता की सभा।

बुतना या बुत्ता दे० ( कि० ) भिनना, जाली निकालना, कपड़े में छेद घटे निकालना।

बुभुक्षा तत्त्वं ( श्री० ) भोजन की इच्छा, भोजना-मिलाप, खाने की रुचि।

बुभुक्षित तत्त्वं ( वि० ) भूखा, बुभुक्षित, पेद, पेठार्थ।

बुरा दे० ( वि० ) कुराव, दुष्ट, नीच, अधम, निकम्मा।—कहना ( वा० ) निन्दा करना, कलङ्कित करना।

दुर्मश फैलाना।—चीतना ( वा० ) अशुभ चाहना, किसी की बुराई चाहना, विगाद-चाहना।—घेठा छोटा पैसा समय पर काम आता है ( वा० )

किसी प्रकार की भी बुरी वस्तु क्यों न हो समय पर काम आती है।—मानना ( वा० ) अपमान होना, अपमान समझना, द्वेष मानना।—जगना ( वा० ) कष्ट होना, अनुचित आलूग होना।

बुराई दे० ( श्री० ) दुष्टता, नीचता, अधमता, छोटा-पन, बुरापन।—पर कमर बांधना ( पु० ) अशुभ करने को इच्छत होना, कष्ट पहुँचाने की चेष्टा करना।

मुर्ज ( पु० ) घरहरा, मीनार।

बुलबुल्ला दे० ( पु० ) बुदबुदा, पानी का बुदबुद, बुल्ला।

बुलका दे० ( पु० ) बुलबुल्ला।

बुलवाना ( कि० ) बुल्ला भोजना।

बुल्लाक दे० ( पु० ) नाक में पड़ने का एक गहना।

बुल्लाना दे० ( कि० ) पुकारना, हाँक मारना, आह्वान करना।

बुल्लाहट दे० ( श्री० ) आह्वान, पुकार, टाकना।

बुल्ला दे० ( पु० ) बुदबुदा, बुलबुल्ला।

बुदनी दे० ( श्री० ) पहली बिक्री।

बुदरी दे० ( श्री० ) सूने जौ।

बुहारज दे० ( श्री० ) झाड़न, कूड़ा ककट। [करना।

बुहारना दे० ( कि० ) झाड़ना, बुहारी लगाना, साफ़

बुहारी दे० ( श्री० ) झाड़, बड़नी, बड़नी।

बूझा दे० ( श्री० ) बहिन, भगिनी, पिता की बहिन, कुसु, कूया।

बूई दे० ( श्री० ) भय सूचक, डराने का शब्द। [टपका।

बूँद ( श्री० ) बिन्दु, जलकण, जलबिन्दु, छोंटा,

बूँदा दे० ( पु० ) बड़ी बूँद।—बाँदी ( वा० ) पानी बरसना, धीरे धीरे पानी पड़ना, झीली गिरना।

बूँदी दे० ( श्री० ) बुद्धि, वर्षा की बूँद, एक प्रकार की मिठाई। [चूरन करना।

बूकना दे० ( कि० ) पीसना, कूटना, चूर्ण करना,

बूका दे० ( पु० ) चूर्ण, बूकनी, सफूफ।

बूचा दे० ( वि० ) कनकटा, कण्ठहीन, जिसके काम न हो, या कट गये हों।

बूक दे० ( श्री० ) समझ, बुद्धि, ज्ञान, पहिचान, श्रद्धा।

( कि० ) समझ कर, जान कर। [सोचना।

बूझना दे० ( कि० ) समझना, हृदयार्थ करना, जानना,

बूझाई दे० ( श्री० ) शिष्टा, सील, परिचय, बुझावट।

बूट दे० ( पु० ) अन्न विशेष, चणक, चना। [काम।

बूटा दे० ( पु० ) बेल, कपड़े में सूत का या तार का बना

बूटी दे० ( श्री० ) छोटा बूटा, जड़ी, मूरी, औषध।

बूझना दे० ( कि० ) हचकना, मग्न होना, जड़ में दूबना।

बूझिया दे० ( वि० ) दूबने वाला, जल में गिरी वस्तु को हच कर निकालने वाला, पनडुब्बा, गोतागोर।

बूड़ी दे० ( श्री० ) भाजे की भोक, बर्छी की धार, भाजे का फल।

बूटा ( पु० ) बुद, बुद्धा। ( वि० ) पुराना, प्राचीन, अधिक दिन का, अधिक समय का।—घारा

( वा० ) बहुत बूझ, बुटा, बाझाक।

घुड़ी ( स्त्री० ) बुढ़िया ।

घूता दे० ( पु० ) शक्ति, सामर्थ्य, बल । [ बहिन ।

घूँट दे० ( स्त्री० ) बहिन, भगिनी, छोटी बहिन, दुलारी

घूर दे० ( स्त्री० ) भूरी, छिन्नका, केराई, अन्न का कण ।

—के लज्झू ( वा० ) एक प्रकार की मिठाई का नाम ।—के लज्झू जो खाय सो भी पड़ताय न खाय सो भी पड़ताय ( लो० ३० ) जिस काम के करने से कुछ विशेष फल न हो, वैसे काम जो देखने से अच्छे मालूम पड़ें पर उनका फल कुछ नहीं ।

घूरा दे० ( पु० ) साफ की हुई खाई, लकड़ी का घूरा, भारा से लकड़ी चिरते समय जो भारीक घूरा निकलता है ।

घे दे० ( पु० ) घघे, घरे, नीच सम्बोधन ।

घेंग ( पु० ) भेक, मेढक ।

घेंट दे० ( पु० ) किसी अन्न का मूठ, हथकड़ा, दस्ता ।

घेंड़ना दे० ( क्रि० ) पकड़ कर बन्द करना ।

घेंडा दे० ( वि० ) तिरछा, बाँका, बक्र, टेढ़ा । ( पु० ) अर्गल, कियाइ बन्द करने की लकड़ी ।

घेंधना दे० ( क्रि० ) बिधना, चुमाना, गाड़ना ।

घेईमान ( वि० ) झूठा, अविव्धासी ।—ने ( स्त्री० ) अघर्म, अविव्धास ।

घेकार ( वि० ) बिना काम, निष्प्रयोजन, व्यर्थ ।

घेग ( पु० ) घेड़ी, शीघ्रता ।

घेगार दे० ( पु० ) बिना मजूरी का काम, बल पूर्वक किसी से काम लेना और मजूरी न देना वा योड़ी मजूरी देना ।—पकड़ना ( वा० ) जबरदस्ती बिना मजूरी के काम करने के लिये पकड़ना, जबरदस्ती किसी को काम करने के लिये बाध्य करना ।

वेगारी दे० ( स्त्री० ) वेगारी का काम, सेतमेंत का काम ।

वेचना दे० ( क्रि० ) चिमरी करना, मोल लेकर देना, दाम लेकर देना, बदला बदला करना, बदलौबल करना ।

वेचारा ( वि० ) दुखिया, यपुरा, असहाय ।

वेचू दे० ( वि० ) बेचने वाला ।

वेजू दे० ( पु० ) अन्त विशेष, नकल, मेड़ला ।

वेम्ती दे० ( पु० ) लक्ष्य, निशाना, ताक, चिन्ह ।

वेटवा दे० ( पु० ) लड़का, पुत्र, बेटा ।

वेटा दे० ( पु० ) पुत्र, लड़का, छोकरा, सन्तान, सन्तति ।

वेटिया, वेटी दे० ( स्त्री० ) पुत्री, तनया, दुहिता, लड़की । [ हाकन ।

वेठन तद् ( पु० ) वेष्टन, लपेटन, खोल, आच्छादन,

वेड़ दे० ( पु० ) घेरा, बाड़ा, मेंद ।

वेड़ा दे० ( पु० ) घरनई, चौपड़ा, खटला, नावों या जहाजों का समूह ।—पार लगाना ( वा० ) दुःख से बच्चा करना, दुःख दूर करना ।—पार होना ( वा० ) सब दुःखों से छुटना, मनोरथ सफल होना ।

वेड़िया दे० ( स्त्री० ) जाति विशेष ।

वेड़ी दे० ( स्त्री० ) बन्धन सूत्र, पैरुड़ी, पात्र विशेष, जो सींचने के काम में आता है ।

वेड़ौल ( वि० ) बदराक, कुरूप ।

वेड़ना दे० ( क्रि० ) घेरना, बाँधा बाँधना ।

वेड़व ( वि० ) भंदा, कुरूप ।

वेढ़ा दे० ( पु० ) कठघरा, कठरा ।

वेण, वेणु तद् ( पु० ) वंशी, वांसुरी, मुरली ।

वेत तद् ( स्त्री० ) वेत, एक प्रकार की लकड़ी जो लचीली होती है । यथा—

“कूले, फरै न वेत यदपि सुधा बरसहि जलद, मूरख हृदय न वेत जो गुह मिलहि विरधि सम ।”

—रामायण ।

वेदखल ( वि० ) अधिकारभ्युक्त, बहिष्कृत, निकाला हुआ । [ यका हुआ ।

वेदम ( वि० ) बिना दम का, यका हुआ, अत्यन्त

वेदसिरा तद् ( पु० ) एक मुनि का नाम ।

वेदिका या वेदी तद् ( स्त्री० ) स्पण्डिल, कर्मकाण्ड के विषय में यज्ञादि कर्म के लिये रेणु निर्मित एक छोटा सा यज्ञतला । [ साल ।

वेध तद् ( पु० ) नष्टप्रयुक्तयोग विशेष, छिद्र, छेद,

वेधड़क दे० ( वि० ) निर्भय, भय शून्य, निडर, निघड़क । [ गड़ाना, चुमाना ।

वेघना दे० ( क्रि० ) छेदना, गाँसना, फोड़ना, भेदना,

वेन तद् ( स्त्री० ) वेणु, वांसुरी, वंशी ।

वेना दे० ( पु० ) पहा, बस का घना हुआ पहा ।—

वेँदिया दे० ( स्त्री० ) एक जमाना आभूषण जो माथे पर धारण किया जाता है ।

घेनी तद् ( स्त्री० ) घेणी, चोटी, जुड़ा, किचाड़ में  
 खगाया जाने वाला एक काठ । [ घीनता ।  
 घेवस ( वि० ) परवश, पराधीन ।— ( स्त्री० ) परा-  
 वेधाक ( वि० ) चुकता, परवशी ।  
 घेमात नद् ( स्त्री० ) विमाता, सौतेली माता ।  
 घेर दे० ( पु० ) एक वृक्ष और उसके फल का नाम,  
 बदरी वृक्ष, बदरी फल । ( स्त्री० ) बार, अवसर,  
 चिलम्प, घेला ।—घेर ( श० ) बार बार, अनेक  
 बार, अनेक समय, बारम्बार ।—मयानक ( पु० )  
 अमानक राशि, प्रलय की रात, मृत्यु की रात ।  
 घेरी दे० ( स्त्री० ) घेर के काढ़, बदरी वन, घेरकड़ी ।  
 घेल दे० ( पु० ) घूटा, सूत या तार से बनाया हुआ  
 कपड़े पर का काम, कटिदार एक वृक्ष और उसके  
 फल का नाम । ( स्त्री० ) ।—द्वार ( पु० ) फावड़ा  
 चलाने वाला मजदूर । [ रोटी पोई जाती है ।  
 घेलन दे० ( क्रि० ) स्वनाम प्रसिद्ध वस्तु विशेष, जिससे  
 घेलना दे० ( क्रि० ) झेलना, बढ़ागा, रोटी पीटना ।  
 घेलनी दे० ( स्त्री० ) टहनी, शाला, लता । [ काम ।  
 • घेल घूटा दे० ( पु० ) चित्रकारी का काम, सूई का  
 घेला दे० ( पु० ) पुष्प विशेष, एक सुगन्धित पुष्प  
 और उसके पेड़ का नाम मोती का फूल, कटोरा,  
 पाद्य विशेष, यह बात्रा आकार में सारङ्गी के समान  
 होता है, बंगाली लोग अधिक यज्ञाते हैं । [ सके ।  
 घेलि दे० ( स्त्री० ) लता, पौधा जो स्वयं खड़ा न हो  
 घेल दे० ( पु० ) लुक्कन, लुक्काव ।  
 घेलो दे० ( वि० ) बढ़ासीन, ग्लान, निराश, हताश ।  
 घेलौस दे० ( वि० ) कीसी का पचपात न करने वाला,  
 हृष्टवक्ता । [ मुखौता, अज्ञानता ।  
 घेवकुफ ( वि० ) अनारी, मूर्ख, अज्ञान ।— ( स्त्री० )  
 वेवरेदार दे० ( श० ) स्थल रूप से, साफ साफ, लोब  
 के, प्रकाश भाव से, क्रमशः, यथा क्रम ।  
 घेवहर दे० ( पु० ) अश्व, बद्धार, धार, कर्जु, खेनदेन ।  
 घेवहरिया दे० ( पु० ) अश्वदाता, कर्जु देने वाला,  
 उत्तमर्ण, महाजन । [ प्रथा, परस्पर रीति रसम ।  
 घेवहार तद् ( पु० ) अश्वहार, चाल चलन, रीति,  
 घेवान दे० ( पु० ) विमान, मृतक की अस्थी ।  
 घेसन दे० ( पु० ) घने का छाटा ।  
 घेसनौरी दे० ( स्त्री० ) घेसन की रोटी ।

वेसर दे० ( पु० ) नाक का एक गहना ।  
 वेसरा दे० ( पु० ) पत्नी विशेष, वाज, सिफरा ।  
 वेसुरा दे० ( वि० ) अमेल, वेताला, कुम्भान्य, भरी  
 आवाज वाला, स्वर से भिन्न गाने वाला ।  
 वेस्त्रा तद् ( स्त्री० ) वेस्त्रा, पतुरिया, नर्तकी, गणिका  
 नगर नारी, बाराहना ।  
 वेह तद् ( पु० ) वेध, छिद्र, साल, घेद ।  
 वेहड़ दे० ( वि० ) जंगल, वन ।  
 वेहना दे० ( पु० ) धुनिया, धुनिर्वा, रुई धुनने वाला ।  
 वेहोश ( वि० ) अचेतन, चेतना रहित, मूर्छित ।  
 वेहोशी ( स्त्री० ) मूर्छा ।  
 वैंगन दे० ( पु० ) तरकारी विशेष, वैंगन, भटा, धुन्ताक ।  
 वैंगनी या वैजनी दे० ( पु० ) रंग विशेष, वैंगन के  
 समान रंग । ( वि० ) वैंगनी ( गु० ) वैंगनी रंग  
 में रंगा हुआ ।  
 वैँटा दे० ( पु० ) वैँट, कुल्हाड़ी की मूँठ, हथकड़ा ।  
 वैँदा दे० ( पु० ) वैँदा, टिकुली, टीका, गोलाकार टीका ।  
 वैँदी दे० ( स्त्री० ) बिन्दु, टिकुली ।  
 वैकाल दे० ( पु० ) तीसरा पहर, अपराह्न ।  
 वैकुरात तद् ( पु० ) नारायण का धाम, विष्णु का धाम ।  
 वैंगन दे० ( पु० ) वैंगन, भटा, धुन्ताक ।  
 वैजन्ती माल तद् ( स्त्री० ) पञ्चरङ्गी माला, भगवान्  
 की माला, नीलम, मोती, माणिक, पुलराज और  
 हीरा इन रत्नों से बनी माला, वैजन्ती माला का  
 लक्षण नीचे दोहे से स्पष्ट है—  
 “बाँसी सीपी सूकरी फरी दरी मठ शाल,  
 पट्ट पट्ट मुक्ता पोहिये सो वैजन्ती माल ।”  
 वैठक दे० ( स्त्री० ) बैठक, बैठने का स्थान या रीति  
 आसन, एक प्रकार की कसूरत ।  
 वैठना दे० ( क्रि० ) आसन मारना, आसन मार के  
 बैठना, उपविष्ट होना, उपवेशन करना, दीवार  
 आदि का गिर जाना, बिना काम के होना ।  
 वैठा दे० ( पु० ) बैठा हुआ, चपटा, चिपटा ।  
 वैठाना दे० ( क्रि० ) बैठालना, बैठने को कहना, स्थापन  
 करना, दूदी हड्डी को बैठाना, बैठने की आज्ञा देना ।  
 वैठार दे० ( पु० ) बैठक, स्थिति, पैठार, पैठाय, पहुँचा ।  
 वैठालना ( क्रि० ) बैठाना । [ नदी, यमद्वार की नदी ।  
 वैतरनी या वैतरणी तद् ( स्त्री० ) नदी विशेष मेढ,



वैतरा या वैतला दे० ( पु० ) एक प्रकार की सोंठ, मूला अदरक ।  
 वैद तद्० ( पु० ) वैद्य, वैद्यकी करने वाला, चिकित्सक ।  
 वैदक तद्० ( पु० ) वैद्यक, चिकित्सा का शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें रोग परीक्षा और रोगों की चिकित्सा की विधि लिखी है । [ ध्वनि ।  
 वैन दे० ( स्त्री० ) वचन, योली, कथन, बात, शब्द, वैया दे० ( पु० ) शिरोभूषण विशेष, एक प्रकार का भूषण जो माथे में पहना जाता है । भाजी, वायन, उपहार, शाणी, वचन, योली, कोई वस्तु जो उत्सवों पर बिरादरी में बाँटी जाय ।  
 वैपार तद्० ( पु० ) व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय ।  
 वैपारी दे० ( पु० ) महाजन, बणििक, सौदागर, व्यवसायी, व्यापार करने वाला ।  
 वैमान्य तद्० ( पु० ) वैमान्य सौतेला भाई ।  
 वैया दे० ( पु० ) पत्नी विशेष ।  
 वैयान दे० ( पु० ) प्रसव, जन्म, उत्पत्ति । [ फलाना ।  
 वैयाना दे० ( क्रि० ) जन्माना, उत्पन्न करना, प्रसव वैयाला दे० ( वि० ) वायु विशिष्ट, वायु वाला, वादी ।  
 वैरंग ( पु० ) महसुली, महसूलतलब, बिना टिकट लगा रौक में भेजा हुआ पत्र, जिसका महसूल पत्र पाने वाले को देना पड़े ।  
 वैर तद्० ( पु० ) फल विशेष, बदरी फल वैर, हरेप विद्रेप, शत्रुता, विरोध ।—पड़ना ( वा० ) हरेप होना, विरोध करना ।—खेना ( वा० ) वैर का बदला चुकाना, प्रतिशोध करना । १ ( पु० ) शत्रु, दुश्मन ।  
 वैरल दे० ( पु० ) वैरागी का वेष । [ भूषण ।  
 वैरली दे० ( स्त्री० ) स्त्रियों के वाह में पहनने का वैरागड़ा ( पु० ) वैरागी, साधारण, वैष्णव साधु ।  
 वैरांगा दे० ( पु० ) वैरागी का वेष ।  
 वैल दे० ( पु० ) वरघ, वरद, भूपम ।  
 वैस तद्० ( स्त्री० ) वयस, अवस्था, उमर । ( पु० ) तीसरा वर्ष, बनिया, राजपूतों की एक जाति, वैसवारा प्रान्त के रहने वाले ।  
 वैसन्दर तद्० ( पु० ) वैधानर, अग्नि, आग ।  
 वैसाख तद्० ( पु० ) वैशाख मास, वर्ष का दूसरा महीना ।

वैसाखी दे० ( स्त्री० ) अस्त्र विशेष, टेक, धूनी ।  
 वैसाई दे० ( वि० ) आलसी, असकती, आलकसी ।  
 वोआई दे० ( स्त्री० ) खेत बोने का काम, बीजवपन ।  
 वोआना दे० ( क्रि० ) खीटना, खेत बोना, खेत में बीज छिड़काना ।  
 वोआरा दे० ( पु० ) खेत बोने का समय, सुकाल ।  
 वोइया दे० ( स्त्री० ) छोटी टोकरी ।  
 वोंट दे० ( पु० ) हाँट, दंटा, डट्टल ।  
 वोक दे० ( स्त्री० ) बकरे का शब्द, बकरे की धोली ।  
 वोकरा दे० ( पु० ) छाग, बकरा, भ्रम ।  
 वोकरी दे० ( स्त्री० ) छेरी, छुँगी, बकरी, भ्रजा ।  
 वोच दे० ( पु० ) जलभक्त विशेष, जलद, कुम्भीर, मगर ।  
 वोचा दे० ( पु० ) पालकी का भेद, एक प्रकार की पालकी ।  
 वोम दे० ( पु० ) मार, धारी, वोमना ।—सिर पर होना । ( वा० ) किसी प्रकार का कठिन काम या जाना ।  
 वोमना दे० ( क्रि० ) भरना, लादना, ढववाना ।  
 वोमल दे० ( वि० ) भारी, बजनदार, वजनी ।  
 वोट ( स्त्री० ) छोटी नाव, डोंगी, सल्लाओं में प्रतिनिधि भेजने के लिये सम्मति ।  
 वोटी दे० ( स्त्री० ) नाँस के छोटे छोटे टुकड़े ।—वोटी फड़कना ( वा० ) बहुत चालाक होना, फरेब करना, फरफण्ड करना ।  
 वोठा दे० ( पु० ) डंढा, फल के ऊपर की डंडी ।  
 वोड़ना दे० ( क्रि० ) डुबाना, डुड़ाना, मग्न करना ।  
 वोड़ी ( स्त्री० ) कली, बिना खिली फूल ।  
 वोताम ( पु० ) घटन, घुंड़ी ।  
 वोद दे० ( पु० ) बकरा, छाग, भ्रज, छागड ।  
 वोदली दे० ( स्त्री० ) मोली, गोली ।  
 वोदा दे० ( वि० ) निर्वल, अशक्त, निर्जीव, असमर्थ, नासमर्थ, मूर्ख ।  
 वोद तद्० ( वि० ) व्युत्पन्ना, बुद्धिमान् समझदार ।  
 वोध तद्० ( पु० ) ज्ञान, समर्थ, बुद्धि, विवेक, मति ।  
 वोधक तद्० ( पु० ) बोधनकर्त्ता, वाचक, शिक्षक, बताने वाला ।  
 वोधन तद्० ( पु० ) [ बुध + भनट् ] ज्ञान, बोध, विवेक, समर्थ ।

बोधना दे० ( क्रि० ) समझाना, घटाना, घटाना ,  
कुसलाना, सुलाना ।

बोधनीय तत्त्वं ( वि० ) बोधन करने योग्य, बोधनाई  
बोधन के उपयुक्त ।

बोना दे० ( क्रि० ) खेत बोना, बीज डालना, खेत में  
बीज छुटाना । [ भा समय ।

बोबी दे० ( स्त्री० ) बोधार्थ, खेत बोने का काम, बोने

बोबी दे० ( पु० ) माल, सम्पत्ति, गठरी, गाँठ ।

बोर दे० ( पु० ) पैजेव का घूँघर ।

बोरा दे० ( पु० ) गोन, टाट का थैला, बड़ा थैला ।

( क्रि० ) डुबोया, गमक किया । [ थैला, टाट ।

बोरिया दे० ( पु० ) चटाई, पारी, बोरा, बड़ा

बोरो दे० ( पु० ) इन्द्रधनुष, एक प्रकार का चावल ।

बोज दे० ( पु० ) वाय शब्द, गीत का शब्द, यात ।

बोजचाल दे० ( स्त्री० ) बातचीत, सम्भाषण, कथन,

सम्वाद । [ बाला प्राणी, जीव ।

बोजता दे० ( पु० ) बोलने की शक्ति । ( वि० ) बोलने

बोजना दे० ( क्रि० ) यात करना, कहना, कथन

करना, सम्भाषण करना ।

बोजवाला दे० ( पु० ) प्रताप, आशीर्वाद विशेष ।

बोली दे० ( स्त्री० ) बाणी, भाषा, यात ।—टोलो

सुनना ( पा० ) ताना सहना । [ तरणी ।

बोहित तद् ( पु० ) जहाज़, नौका, नाव, जलयान,

बोंड दे० ( पु० ) मंजरी, बाल । [ चकराना ।

बोंड़ना दे० ( क्रि० ) लिपटना, भवराना, बलखाना,

बोंडियाना दे० ( क्रि० ) बवण्डर के साथ धूमना,

चदर खाना, धूमना ।

बौद्ध दे० ( पु० ) जल सहित वायु का झोका ।

बौद्ध तद् ( पु० ) बुद्ध भगवान्, बुद्ध मत के अनुयायी ।

बौना दे० ( वि० ) बामन, डिंगना, खर्व ।

बौर दे० ( पु० ) मञ्जरी, फूल, मौर, बौंड, बाल ।

बौरहा दे० ( पु० ) उन्मत्त, सिद्धी, पागल, पावला ।

बौराना दे० ( क्रि० ) उन्मत्त होना, सिद्धाना, पागल

होना ।

बौरापन दे० ( पु० ) पागलपन, उन्मत्तता ।

बौराहा दे० ( पु० ) पावला, पागल, उन्मत्त ।

बौरापन ( पु० ) देखो " बौरापन " ।

बौता दे० ( वि० ) पोपला, वृन्धहीन ।

बौहा दे० ( पु० ) पपरीला, कड़रीला ।

बौहाई दे० ( स्त्री० ) उपदेश, रोगिणी स्त्री ।

ब्यजन दे० ( पु० ) पंखा ।

ब्याज ( पु० ) सूद, बियाज ।

ब्यान दे० ( पु० ) बिघाना, पशुओं का प्रसव ।

ब्याना दे० ( क्रि० ) बियाना, उत्पन्न करना, प्रसव  
करना ।

ब्यालू ( पु० ) ब्यारी, रात का भोजन ।

ब्याह दे० ( पु० ) विवाह, परिणय ।

ब्याहता दे० ( स्त्री० ) विवाहिता, परिणीता, ब्याही हुई ।

ब्याहना दे० ( क्रि० ) विवाह करना, परिणय करना ।

ब्याहा दे० ( वि० ) ब्याहा हुआ, विवाहिता ।

ब्योगा दे० ( पु० ) एक भस्म विशेष, जिससे चमड़ा

छीटा जाता है ।

ब्योत दे० ( पु० ) गड़न, बोल, छोट, काट,

कपड़े की काट ।

ब्योतना दे० ( क्रि० ) कपड़े काटना, कतरना ।

ब्योपार तद् ( पु० ) व्यापार, वाणिज्य, क्षेत्रज्ञ,

व्यवसाय, सौदागरी ।

ब्योपारी तद् ( पु० ) सौदागर, व्यापारी ।

ब्योमासुर तद् ( पु० ) एक राक्षस का नाम, यह

कंस का मन्त्री था ।

ब्योरा दे० ( पु० ) समाचार, वृत्तान्त ।

ब्योहार तद् ( पु० ) व्यवहार, व्योपार ।

ब्रज तद् ( पु० ) गोकुल नामक गाँव, गोष्ठ ।—बाला

( स्त्री० ) ब्रज की स्त्री, गोपी, गोपिका ।—भाषा

( स्त्री० ) ब्रज की बाली ।

ब्रह्म तद् ( पु० ) वेद, तप, तपस्या, विशाङ्क हिरण्य-

गर्भ, ईश्वर, जगत्कर्त्ता ।—कुराह ( पु० ) ब्रह्मा

का बगवा सरोवर विशेष, सीधे विशेष ।—घाती

( पु० ) ब्राह्मण मारने वाला, ब्रह्महत्याकारी ।

—चर्य ( पु० ) ब्राह्मण विशेष, प्रथम ब्राह्मण

वेदाध्ययन करने का समय, व्रत विशेष ।—चारी

( पु० ) प्रथमाश्रमी, यज्ञोपवीत के अनन्तर नियम-

पूर्वक गुरुकुल में वेदाभ्यास करने वाला ।—क्ष

( पु० ) ब्रह्मज्ञानी, ब्राह्मत्ववश, वेदज्ञ, वेदविद ।

—ज्ञान ( पु० ) परमात्मा विषयक ज्ञान ।—एय

( पु० ) वेद बोधित कर्म ।—तत्त्व ( पु० ) ब्राह्म-

तत्त्व, ब्रह्मधर्म, ब्रह्मस्वरूप, ब्रह्मज्ञान ।—तीर्थ ( पु० ) पुष्करमूल ।—भोजन ( पु० ) ब्राह्मणों का खिलाना ।—पुरी ( स्त्री० ) सुमेरु पर्वत पर ब्रह्मा की पुरी ।—भूति ( स्त्री० ) वेदाधिकार, ब्रह्म ऐश्वर्य, ब्रह्मतेज, ब्राह्मण का धर्म ।—यज्ञ ( पु० ) वेद पाठ ।—योग ( पु० ) परमेश्वर प्रार्थना, भक्ति, उपासना ।—रन्ध्र ( पु० ) मस्तक का मध्यस्थान ।—राक्षस ( पु० ) भूत विशेष, योनि विशेष ।—रात्रि ( स्त्री० ) ब्रह्मा की रात, जिसमें १००० युग होते हैं 'मनुष्यों के २१६००००० वर्ष बीत जाते हैं, वह रात्रि, जिसमें श्रीकृष्ण ने रास झोड़ा की थी ।—लोक ( पु० ) ऊर्ध्वलोक विशेष, ब्रह्मा का निवास स्थान ।—वादी ( पु० ) वेदाङ्गी, ब्रह्मशानी ।—अथ ( पु० ) वेद ।—सूत्र

( पु० ) यज्ञोपवीत, जनेऊ, वेदान्त सूत्र ।—हत्या ( स्त्री० ) ब्राह्मण की हत्या ।  
ब्रह्मर्षि तत्त्व ( पु० ) वेद मन्त्र द्रष्टा, ब्राह्मण, ऋषि ।  
—देश ( पु० ) भाग्यवत, कुक्षेत्र ।  
ब्रह्मा दे० ( पु० ) देश विशेष, ब्रह्मा का पूर्व का देश, विधाता, ईश्वर ।  
ब्रह्माण्ड तत्त्व ( पु० ) जगत्, संसार ।  
ब्रह्मा दे० ( पु० ) अचम्भा, आश्चर्य, ब्राह्मणों की समा ।  
—मुहूर्त्त ( पु० ) सूर्योदय के पहले की चार घड़ी ।  
ब्राह्मण तत्त्व ( पु० ) पहला वर्ण, विप्र ।  
ब्राह्मणी तत्त्व ( स्त्री० ) विप्रपत्नी, ब्राह्मण की स्त्री ।  
ब्राह्मण्य तत्त्व ( पु० ) ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की समा, सातवाँ ग्रह ।

## भ

भ व्यञ्जन का चौबीसवाँ वर्ण, छोष्ट स्थान से उच्चारण होने के कारण इसे ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं ।  
भ तत्त्व ( पु० ) अश्विनी आदि सप्ताहस २० नक्षत्र, ग्रह, राशि, भ्रमर, भ्रान्ति, शुक्राचार्य ।  
भँगड़ या भँगड़ी ( वि० ) भाग पीनेवाला ।  
भँगरा ( पु० ) पक्षी विशेष ।  
भँगिन ( स्त्री० ) भंगी की स्त्री, महतरानी ।  
भँगी ( पु० ) महतर ।  
भँगोरा ( पु० ) भाग बेचने वाला ।  
भँगेरिन ( स्त्री० ) भाग बेचने वाली की औरत ।  
भँगना ( क्रि० ) जोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना ।  
भँटा ( पु० ) बैगन ।  
भँड़ ( पु० ) मसखरा, नीच, बेहया ।  
भँड़ा ( पु० ) मटका, मिट्टी का बर्तन ।  
भँटमास दे० ( पु० ) अन्न विशेष ।  
भँडेजा ( पु० ) मसखरा, भँड ।  
भँडौचा ( पु० ) फलड़ ।  
भँडुआ ( पु० ) वह फकीर जो भूख के कारण लूटे मारे ।  
भँडोरना ( क्रि० ) काटना, काटखाना, कुत्ते का काटना, काड़ खाना ।

भँवर दे० ( पु० ) भौंरा, भावत, चक्र ।—कली ( स्त्री० ) गलाची, डोरी, एक लोहे की कड़ी विशेष ।  
भँवरी तद् ( पु० ) भ्रमर, घटपद ।  
भँवरी तद् ( स्त्री० ) भ्रमरी, वित्तिरी ।  
भँसार ( पु० ) मार ।  
भई दे० ( क्रि० ) हुई, होगई, ( पु० ) भाई, भैया ।  
भघसी दे० ( स्त्री० ) अंधेरा घर, गुफा, खोह ।  
भकुवा, भकुआ दे० ( वि० ) निबुंद, लण्ड, मूर्ख, भौंदा ।  
भकुवी दे० ( वि० ) मूर्ख स्त्री, निबुंद स्त्री । [ मूढ़ होना ।  
भकुवाना दे० ( क्रि० ) अकचकावा, सुलाना, कर्तव्य-  
भकोसना दे० ( क्रि० ) खाना, ठूस-ठूस कर खाना ।  
भक्त तत्त्व ( वि० ) [ भक् + क ] सेवक, तत्पर अनु-  
गत, भात, श्रोतृ ।—कार ( पु० ) पांचक, रत्ना-  
यादर । चरसल— ( पु० ) भक्तों पर दया करने  
वाला, सेवक, सुखद ।  
भक्ताई दे० ( स्त्री० ) भक्ति करना, परमेश्वरानुराग ।  
भक्ति तत्त्व ( स्त्री० ) [ भक् + क्ति ] परमात्मा में परम-  
अनुराग, आराधना, उपासना, प्रीति, विश्वास, सेवा,  
श्रद्धा, अनुक्ति, श्रवण, कीर्तन, श्रवण, चन्दन,  
स्मरण, निवेदन, सख्य, दास्य और सेवन ये भक्ति  
के नौ भेद हैं ।—वस्तु ( पु० ) मक, पत्तक, सेवक ।

भक्त तद् ( पु० ) भक्ष, भोजनीय पदार्थ, खाने योग्य वस्तु, आहार, भोजन ।

भक्तक तत् ( पु० ) [ भक् + कृत् ] खाने वाला खादक । [ भोजन करने की वस्तु ।

भक्त्या तत् ( पु० ) [ भक् + धनट् ] भोजन, आहार,

भक्तणीय तद् ( पु० ) [ भक् + धनीय ] भोजनाई, भोजन योग्य, भोजन करने के उपयुक्त ।

भक्तित तत् ( पु० ) [ भक् + इत् ] खाया हुआ, खादित । [ भोजनाई, भोजन के उपयुक्त ।

भक्ष्य तत् ( पु० ) [ भक् + य ] भक्षणीय, खानेयोग्य,

भग तत् ( पु० ) धीचिद्, योगि, इच्छा, चाट, ज्ञान, वैराग्य, कीर्ति, साहाय्य, ऐश्वर्य, यज्ञ, धर्म, मोक्ष, यश, सौभाग्य, शोभा ।

भगण तत् ( पु० ) भग्नसमूह, भग्न मण्डल, गण विशेष, भग्न वृत्त पथ में तीन तीन भग्न के एक एक गण होते हैं, भगण में भादि का भग्न गुरु होता है जैसे—राघव, माघव नागर आदि ।

भगत तद् ( पु० ) भक्त, भक्ति करने वाला, नर्तक, वक्षक, नचनिया ।—खेलना ( वा० ) स्वर्ग रचना, रूप वतारना । [ की जी ।

भगतन दे० ( स्त्री० ) वेश्या, पतुरिया, नर्तकी, भक्त

भगताई दे० ( स्त्री० ) भगतन, भक्त का कर्म, भक्ति ।

भगतिया दे० ( पु० ) गवैया कथिक, जाति-विशेष, कथक ।

भगदत्त तत् ( पु० ) भाग्योत्तिष्ठपुर, वर्तमान आसाम के राजा का नाम, यह सराका का उपेष्ट पुत्र था । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय इसने अर्जुन से ८ दिनों तक युद्ध किया था । युद्ध में हार कर यह युधिष्ठिर के अधीन हो गया था । महा-भारत के युद्ध में दुर्योधन की ओर से इसने बहुत भयङ्कर युद्ध किया था । द्रोणाचार्य के सेना पतित्व में यह अर्जुन से चढ़ता रहा और उन्हीं के हाथ से मारा गया । इसने अर्जुन के मारने के लिये वैद्य-घात्र का प्रयोग किया था, परन्तु श्रीकृष्ण ने उस यज्ञ को अपनी छाती से रोक लिया इससे उसका यज्ञ व्यर्थ गया ।

भगन्दर तत् ( पु० ) रोग विशेष, एक रोग का नाम गुदा के आस पास का नासूर ।

भगल दे० ( पु० ) छल, कपट, धोखा ।

भगलिया दे० ( पु० ) छुबी, कपटी, ठग ।

भगवत तद् ( पु० ) भगवान्, परमेश्वर, नारायण ।

भगवन्त तद् ( पु० ) ईश्वर, परमेश्वर ।

भगवां दे० ( पु० ) गेरुआ कपड़ा, कापाय वस्त्र ।

भगवान् तत् ( पु० ) पट्ट ऐश्वर्य युक्त, नारायण ।

भगाना दे० ( क्रि० ) हडाना, हकाना, खेदना खदेड़ना, दुरदुराना ।

भगिनि या भगिनी तत् ( स्त्री० ) बहिन, बहन, दीदी, सहोदरा, भगनी ।

भगीरथ तत् ( पु० ) सूर्यवंशोप दिव्यपराज के पुत्र और धृष्टमान के पौत्र । राजा दिलीप भगीरथ को राज्य देकर तपस्या करने के लिये हिमालय चले गये, वहाँ बहुत दिनों तक तपस्या करने के पश्चात् उन्होंने शरीर त्याग किया । राज्य पाकर भगीरथ सोचने लगे कि किस प्रकार स्वर्ग से गङ्गा लायी जा सकती है । भगीरथ प्रजा हितैषी धर्मात्मा राजा थे, तथापि उनके कोई पुत्र नहीं था । वे मन्त्रियों को राज्य सौंप कर गङ्गा को लाने के लिये निकले । हिमालय के गोकर्ण तीर्थ पर ऊर्ध्वपादु हो कर वे तपस्या करने लगे । उनकी तपस्या से सन्तुष्ट हो कर वर देने के लिये ब्रह्मा जी आये, उनसे दो वर देने के लिये भगीरथ ने प्रार्थना की । (१) फलित के शाप से भस्म हमारे साठ हजार प्रपितामह गङ्गा जल से पवित्र होकर स्वर्गवासी हों । (२) हमारा वंशलोप न हो । ब्रह्मा जी ने प्रथम वर के प्रार्थना के उत्तर में कहा तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा, परन्तु गङ्गा के गिरने का वेग पृथिवी सहन नहीं कर सकती, अतएव तुम महादेव की आराधना करो, वे यदि गङ्गा को धारण करना स्वीकार करेंगे तब तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा । दूसरे वर के लिये उन्होंने कहा तुम्हारे वंश की रक्षा होगी, भगीरथ ने महादेव की आराधना की, महादेव प्रसन्न होकर गङ्गा का वेग धारण करने के लिये प्रस्तुत हुए । महादेव के मस्तक पर बड़े वेग से गङ्गा का प्रवाह गिरने लगा, गङ्गा ने चाहा कि अपने तीव्र वेग से महादेव को पाताल में लिये चली जाऊँ । गङ्गा का यह अभि-प्राय समझ कर महादेव ने गङ्गा को अपनी जटा

ही में रोक रखा । एक वर्ष तक गङ्गा वहीं धूमती रहीं । पुनः भगीरथ के स्तुति करने पर महादेव ने गङ्गा को अपनी जटा से बाहर निकाल दिया । गङ्गा की सात धारयें निकली, जिनमें तीन पूर्व की ओर तीन पश्चिम की ओर गयीं । सातवाँ प्रवाह भगीरथ के साथ साथ चला, भगीरथ पैदल धारा के साथ नहीं चल सकते थे, इस कारण उन्हें एक रथ मिला । भगीरथ के साथ चलने वाली गङ्गा की धारा का नाम भगीरथी है ।

भगेल दे० ( स्त्री० ) पराजय, हार । ( पु० ) भगोड़ा, भागने वाला ।

भगोड़ दे० ( वि० ) भागने वाला भगेल, भगैया ।

भग्गुल दे० ( वि० ) भगोड़ । ( पु० ) दूत, हरकरा ।

भग्गू दे० ( वि० ) भगोड़ा, डरोपाक, बुजदिल ।

भग्न तत्० ( वि० ) पराजित, द्रुतिष्ठ, चूर्णित, टूटा हुआ, नष्ट । [ खण्डित भाग ।

भग्नश तत्० ( पु० ) भाग, टूटा हुआ हिस्सा,

भग्नशाला तत्० ( वि० ) निराशा, हताश, जिसकी आशा भग्न हुई हो, हतमोहार ।

भङ्ग तत्० ( पु० ) भेद, खण्डन, टूटा, तङ्ग, धर्म, लहर, पराजय, रोग विशेष, कौटिल्य, कुटिलता, भय, रचना, गेल बूटे काठना । ( स्त्री० ) एक प्रकार की पत्ती, नशीली पत्ती ।

भङ्गन, या भंगन दे० ( स्त्री० ) मेहतारानी, हलाखखोरिन, भङ्गी की स्त्री । [ का नाम ।

भङ्गना, भंगना दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की मछली

भङ्गा दे० ( पु० ) भाग, पक्ष विशेष ।

भङ्गार दे० ( पु० ) भङ्गरा, भङ्गारा, जड़ी विशेष ।

भञ्चक दे० ( वि० ) धाचड़ा, अचञ्चित, विस्मित, आश्चर्यित ।

भञ्चकना दे० ( क्रि० ) अचञ्चित या विस्मित होना, लंगड़ा का चलना, लंग खाकर चलना ।

भञ्चक तत्० ( पु० ) नष्ट भण्डल, राशि चक्र ।

भञ्चन तत्० ( पु० ) भक्षण, आहार, भोजन जैवतार । [ जैवते हैं, आहार करते हैं ।

भञ्जहिं दे० ( क्रि० ) वाते हैं, भोजन करते हैं,

भजई दे० ( प्र० ) भजन करे, सेवे, स्मरण करे, ध्यान करे, नाम स्मरण करे ।

भजन तत्० ( पु० ) स्मरण, कीर्तन, ध्यान, निरन्तर रटन, जप, गान । [ स्मरण करना, भागना ।

भजना दे० ( क्रि० ) ध्यान करना, ध्याना, जपना

भजनोका दे० ( पु० ) अर्चक, पूजक, भजनकर्ता, भजन करने वाला । [ करते हैं ।

भजहिं दे० ( क्रि० ) भजते हैं, सुमिरते हैं, स्मरण

भजहु दे० ( क्रि० ) भजो, भजन करो, स्मरण करो, सुमिरो ।

भजामहे तत्० ( क्रि० ) हम लोग भजते हैं । [ रटके ।

भजि दे० ( प्र० ) भजन करके, स्मरण करके, भजके,

भजि जाना दे० ( क्रि० ) भागना, चम्पत होना, हटना, लुकना, छिपना ।

भजिय दे० ( क्रि० ) स्मरण कीजिये, सुमिरिये, भागिये, भागना चाहिये, हट जाइये, हटना चाहिये ।

भजी दे० ( क्रि० ) सुमिरन करो, स्मरण करो । ( स्त्री० ) दौड़ी, भागी ।

भजे दे० ( क्रि० ) भजन करने से, स्मरण करने से ।

भञ्जक तत्० ( वि० ) भञ्जनकर्ता, तोड़नेवाला ।

भञ्जन तत्० ( पु० ) तोड़न, भाँगना, नष्ट करना, नाश करना ।—द्वार ( पु० ) तोड़ने वाला, हटाने वाला, नाश करने वाला ।

भञ्जाना दे० ( क्रि० ) भुनाना, चदलवाना, खपा हुआ, गहना हुआ ।

भञ्जित, तत्० ( वि० ) खण्डित, चूर्णित, तोड़ा हुआ ।

भट तत्० ( पु० ) [ भट् + अच् ] थोड़ा, धीर, लबाका, यहांदुर, शूर, मल्ल, पहलवान, बर्बादकर जाति विशेष ।

भटई दे० ( स्त्री० ) गुणगान, बखान, स्तुति, मिथ्या प्रशंसा, भाँटों का काम, भाँटों का व्यवहार ।

भटकना दे० ( क्रि० ) बहकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, भ्रान्त होना । [ मैं डालना, डराना ।

भटकाना दे० ( क्रि० ) भुलाना, भुलावा देना, भ्रम भटकीला दे० ( वि० ) भययुक्त, डरावना, भटकने वाला ।

भटपड़ना दे० ( क्रि० ) अभाग्य होना, गिर पड़ना ।

भटमेरे दे० ( पु० ) घात प्रतिघात, धक्कमधक्का, धक्का चुकी ।

भट्टि तत्० ( पु० ) शूली पर पक माँसादि, दग्ध माँस, जलाया माँस, कबाब, सलाहियों पर भूना माँस ।

भटियारा दे० ( पु० ) एक जाति विशेष, मुसलमानों का खाना पकाने वाली और सराय में मुसाफिरों को ठहराने वाली जाति, संस्कृत में इसे भ्रष्टकार कहते हैं।

भट्ट दे० ( खी० ) सखी, प्रणयिनी, प्रिया। यथा—  
“देखि के भट्ट को मैं लट्ट है रहे शिवनाथ  
थोड़े पीत पट्ट सो अद्य वै बाल ठाढ़ी है।

भट्ट तत्त्वं ( पु० ) जाति विशेष, भाट, मीमांसादि शास्त्रवेत्ता, वृत्तिणी ब्राह्मणों का एक आस्पद।

—नारायण ( पु० ) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि।  
इनका बनाया वैष्णोसंहार नामक एक नाटक है।  
राजा आदिशूर के समय में मध्यदेश से जो पाँच ब्राह्मण ब्रह्मल गये थे, उनमें भट्टनारायण भी हैं।  
डॉ० राजेन्द्रलाल मित्र महोदय आदि शूर का ही नामान्तर वीरसेन बतलाते हैं। वीरसेन का समय १८ वीं सदी निश्चित हुआ है। भट्टनारायण का बनाया प्रयोगरत्न नामक दूसरा ग्रन्थ है।  
भट्टनारायण के पिता का नाम भट्ट महेश्वर था।

—लोट्ट ( पु० ) काश्मीर निवासी संस्कृत कवि, काव्य प्रकाशकार ने अपने रसरनिरूपण में इनका मत उद्धृत किया है। राजानक सम्पक ने भी अपने अलङ्कारसर्वस्व में इनका मत उद्धृत किया है। ऐसी दशा में यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि इनका कोई भी ग्रन्थ नहीं था। परन्तु उस ग्रन्थ का पता नहीं है। काव्यप्रकाशकार मम्मट भट्ट से ये प्राचीन हैं इसमें सन्देह नहीं। तो भी ११ वीं सदी के पहले के ये नहीं हो सकते। यह विद्वानों की सम्मति है। इनके ठीक समय का निर्णय करना विद्वानों ने श्रसम्भव माना है।

भट्टार तत्त्वं ( पु० ) सूर्य, रवि। ( गु० ) पूजनीय, मान्य, पूज्यपाद।

भट्टारक तत्त्वं ( पु० ) नाट्योक्ति में राजा को कहते हैं।  
देव, सूर्य तपोधन।—चार ( पु० ) रविवार, अतवार। [सम्बन्धी उपाधि।

भट्टाचार्य तत्त्वं ( पु० ) ब्रह्मलियों का आस्पद, विया भट्टकल्लुट तत्त्वं ( पु० ) काश्मीरी पण्डित, इनके गुरु का नाम बसु गुप्त था, बसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है। उसकी स्पन्द सर्वस्व

नाम की टीका भट्टकल्लुट ने बनाई है। ये काश्मीर के राजा अर्चन्त घर्मा के समकालीन थे। राजतरङ्गिणी के अनुसार इनका समय ६ वीं सदी मालूम होता है। प्रसिद्ध अलङ्कारिक सुकुल इनके पुत्र थे। ये शैव थे।

भट्टोत्पल तत्त्वं ( पु० ) प्रसिद्ध ज्योतिर्वेत्ता, यराहमिहिर के ग्रन्थों की इन्होंने टीका लिखी है। केवल यराह मिहिर कृत पञ्चसिद्धान्तिका टीका इनकी बनाई नहीं मिलती, इसका जो कारण हो। प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है। परन्तु ये अपने को केवल उत्पल ही लिखा करते थे। घृह्य जातक की टीका में इन्होंने अपना समय ८८८ शके अर्थात् ९६६ ई० लिखा है।

भट्टोद्भव तत्त्वं ( पु० ) काश्मीरी पण्डित थे, वे काश्मीर के राजा जयापीड के सभासद थे। महाराज जयापीड का राज्यकाल सं० ७७६ से लेकर ८७२ ई० तक था। अतएव उनके सभासद का भी ८वीं सदी का प्रारम्भ ही समय माना जा सकता है। अलङ्कारसारसंग्रह नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है। जिसकी टीका प्रतीहारन्द्रराज ने रची। कुमारसम्भव नामक एक काव्य भी इन्होंने रचा था, परन्तु उसका इस समय पता नहीं। कुहनी मतकर्ता दामोदर गुप्त वामन आदि पण्डित इनके समय के हैं। व्याकरण अलङ्कार में ये अत्यन्त निपुण पण्डित थे। काव्य प्रकाश के टीकाकारों ने इन्हें कहीं कहीं उद्धृत, कहीं उद्धृत भट्ट और क्विती स्थान में उद्धृताचार्य भी लिखा है। अलङ्कार सारसंग्रह और कुमारसम्भव काव्य इन दो पुस्तकों को छोड़ कर अन्य पुस्तकों का पता नहीं मिलता।

भट्टी दे० ( खी० ) भाट, पताया, यड़ा चूल्हा।—

भट्टाना दे० ( क्रि० ) तोपना, गाड़ना, छिपाना।

भट्टियाना दे० ( क्रि० ) नदी की धार पर बहना, धार में बहना, कुंआ आदि भट्टवा देना।

भट्टियारा दे० ( पु० ) जाति विशेष, सराय का स्वामी।

भट्टियारिण दे० ( खी० ) भट्टियारे की खी।

भट्टियाल दे० ( वि० ) बहाव, घटाव, प्रवाह।

भड़ दे० ( पु० ) बड़ी नाव, डोंगा। [फक्क, चँक।

भड़क दे० ( खी० ) चमक, ऊँक, रोभा, यराह

भङ्कना दे० ( क्रि० ) चमकना, चौकना, किम्कना ।  
भङ्काना दे० ( क्रि० ) चमकाना, चौकाना, किम्काना, बिजकाना, घबड़ावना ।

भङ्ककी दे० ( स्त्री० ) घुड़की, डरपाव, भमकी ।  
भङ्ककीला दे० ( गु० ) चटकीला, सजीला ।  
भङ्ककेल दे० ( गु० ) जङ्गली, अनपरचा ।

भङ्कङ्ग दे० ( गु० ) सरल, सीधा, झकपटी, निरलुल ।  
भङ्कभङ्गिया दे० ( पु० ) फड़फड़िया, जल्दबाज़ उठावला ।  
भङ्कभूँजा दे० ( पु० ) कौड़, भूँजा, भूतने वाला, भूर्जी ।

भङ्गरिया दे० ( पु० ) छली, डोमहा, जाति विशेष, जो हाथ देखने का काम करते हैं । तीर्थों में यात्रियों को दर्शन कराने वाले ग्राह्य विशेष, यन्त्रिचरा ग्राह्य जो निषिद्धान लेते हैं ।

भङ्गसाईं दे० ( स्त्री० ) भाइ, भट्टी, बड़ा चूल्हा, भूँजे का चूल्हा, भरभाइ । [फरके खाने वाला ।

भङ्गिहा दे० ( पु० ) चटोरा, चाटने वाला, चोर, चोरी,

भङ्गिहाई दे० ( स्त्री० ) कुटनाई, कुटनापन । चोरी, दाग, धोखा, कपट, छल, ठगहाई, भड़ियापन, तथा " सो दशशीश आन की नाई " ।

इत उत चितै चला भङ्गिहाई ॥ "

रामायण ।

भङ्गुआ, भङ्गुचा दे० ( पु० ) वेरयापुत्र, वेरया के साथ रहने वाला, कुटना । [दिने वाला, किरायेदार ।

भङ्गैत दे० ( पु० ) भाई के मकान में रहने वाला, भाइ

भणन तत्त्वं ( पु० ) [ अण् + घनच् ] कथन, पठन, पढ़ना ।

भणित तत्त्वं ( वि० ) कथित, उक्त, पठित, पढ़ा हुआ ।

भण्ड दे० ( पु० ) अण्ड, दुश्चरित्र, नीच चरित्र, निर्लज्ज, भंडई करने वाला ।

भण्डन तत्त्वं ( पु० ) प्रतारण, छलन, छलना, ठगना ।

भण्डा दे० ( पु० ) पात्र, यर्तन, बड़े बड़े वर्तन, मटकी, मटका ।

भण्डार तत्त्वं ( पु० ) कोठा, बुलार । [जिवनार ।

भण्डारा दे० ( पु० ) साधुओं का भोज; साधुओं की

भण्डारी दे० ( पु० ) भण्डार का अध्यक्ष, भण्डारों की देख रेख करने वाला, रखोइया, रोकड़िया ।

भण्डेरिया दे० ( पु० ) भंडरिया ।

भण्डेला दे० ( पु० ) भौंड़, भड्वा ।

भतार तत्त्वं ( पु० ) भर्ता, पति, स्वामी ।

भतीजा दे० ( पु० ) आतृण्य, भाई का पुत्र ।

भतीजी दे० ( स्त्री० ) भाई की पुत्री ।

भत्ता दे ( पु० ) भात, मक्क, भाता ।

भद दे० ( स्त्री० ) घप्पा, पढ़ाका, किसी वस्तु के गिरने का शब्द, वृक्ष के फल गिरने या पैर का शब्द ।

भदभदाना दे० ( वि० ) भदभद शब्द करना ।

भदभदाहट दे० ( स्त्री० ) भदभद शब्द ।

भदाक दे० ( पु० ) धक्का पड़ाक, भड़ाक शब्द के साथ गिरना, घँसा गिरना जिससे भयानक शब्द हो ।

भदेश या भईस दे० ( गु० ) महा, कुरूप ।

भदैसल ( पु० ) वेडील, कुब्राना । [वेडील, भदैसल ।

भद्दा दे० ( वि० ) निर्वाध, अज्ञानी, अवोध, मूर्ख, भौंड़,

भद्र तत्त्वं ( पु० ) मङ्गल, कल्याण, सुख, मोघा, करण

विशेष, विधि करना, शिव, खजान पत्नी, हस्तिका,

जाति विशेष :—होना ( या० ) मुँहन कराना,

हिन्दुओं की एक प्रथा, जब कोई मरता है तब

मुँहन किया जाता है :—फाली ( स्त्री० ) हुर्गा,

महामाया, काली :—श्री ( स्त्री० ) चन्दन, कैसर,

कुङ्कुम, मङ्गल, शोभा, श्री । [मनोत्र, देश विशेष ।

भद्रक तत्त्वं ( पु० ) भद्र पुस्तक, देवदार वृक्ष । ( वि० )

भद्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) ख्यात खता विशेष, रास्ता,

नील वृक्ष, ज्योम नदी, तिथि विशेष, द्वितीया,

पञ्चमी, द्वादशी ।

भद्राक्ष तत्त्वं ( पु० ) कृत्रिम ब्रह्माक्ष ।

भद्रिका तत्त्वं ( स्त्री० ) दशा विशेष, कल्याणी ।

भद्रौ दे० ( पु० ) बकौतिया, सामुद्रिक शास्त्रवेत्ता ।

भनई दे० ( क्रि० ) कहता है, वर्णन करता है ।

भनेक दे० ( पु० ) शब्द, ध्वनि, आदट ।

भनित दे० ( क्रि० ) कहा हुआ, वर्णित, रचित ।

भवकना दे० ( क्रि० ) उमलना, फुद होना, जल उठना,

तड़पना ।

भवकाना दे० ( क्रि० ) फुद कराना, जलाना, तड़पाना ।

भवक ( स्त्री० ) फुड़वना, फुलना ।

भवका दे० ( पु० ) पात्र विशेष, जिससे छर्के निकालते हैं, ( क्रि० ) डबला, दहका, फफका ।

भवकी दे० ( स्त्री० ) भड़की, घमकी, घुड़की ।

भम्भङ् दे० ( पु० ) डर, सौदा,

मञ्जल दे० ( पु० ) मोटा, स्थूल, तोदैल, तुन्दिल ।  
 भमक ( पु० ) भक्क । [ फफाना, खलखलाना ।  
 भमकना दे० ( क्रि० ) गिरना, टपकना, झकलना,  
 भमर दे० ( पु० ) खटका, डर, रौला, घबड़ाहट, उद्देग,  
 व्याकुलता ।—ना ( क्रि० ) फूलना, सूजना ।  
 भभराना दे० ( क्रि० ) सूजना, फूलना, खटकना,  
 खटका होना । [ ताव, बिम्बुक ।  
 भभूका दे० ( पु० ) सुन्दर, मनोहर, साफ, स्वच्छ,  
 भभूत तद्० ( स्त्री० ) विभूति, अभ्य, चार ।  
 भभोरना ( क्रि० ) फाड़ खाना ।  
 भय तद्० ( पु० ) डर, भीति, शङ्का, वास ।—खाना  
 ( वा० ) डरना, घास करना ।—कारक ( पु० )  
 डराने वाला, भय देने वाला, भगानक, भयङ्कर ।  
 भयङ्कुर तद्० ( वि० ) भयानक, डरोना, भयङ्गाक ।  
 भयचक दे० ( पु० ) भयातुर, भयभीत, डरा हुआ ।  
 भयभीत तद्० ( वि० ) डरा हुआ, घबड़ाया हुआ,  
 भयातुर ।  
 भयहूँ दे० ( स्त्री० ) छोटे भाई की स्त्री ।  
 भयातुर तद्० ( वि० ) भयचक, डरोना, भयभीत,  
 भयविह्वल ।  
 भयानक तद्० ( वि० ) डरावना, भयङ्कर, भयप्रद ।  
 भयापह तद्० ( पु० ) भय नाशक, भय दूर करने वाला ।  
 भयापा दे० ( पु० ) यन्त्राव, भाईपना, अपनायता ।  
 भयावना दे० ( वि० ) डरावना, भयङ्कर भयानक ।  
 भयावह तद्० ( वि० ) भयदायक, भयानक, भयङ्कर ।  
 भयावहि दे० ( क्रि० ) डराते हैं, शङ्कित करते हैं,  
 घास देते हैं ।  
 भयाहूँ ( स्त्री० ) छोटे भाई की स्त्री ।  
 भर दे० ( वि० ) पूरा, पूर्ण, सुँदासुँद, एक जाति ।  
 ( क्रि० ) पूर्ण करो, पाटन करो ।  
 भरज दे० ( क्रि० ) भरता हूँ, पूरा करता हूँ, पूर्ण  
 करता हूँ, ऋण चुकाता हूँ, देता हूँ, दान करता हूँ ।  
 भरका दे० ( पु० ) घुम्काया हुआ घूना, घूने की कच्ची ।  
 भरकाना दे० ( क्रि० ) घुम्काया, घूना घुम्काना, गर्म  
 करना । [ करना, रचाना, बचाव ।  
 भरणा तद्० ( पु० ) भरना, पूरना, पाटना, पोषण  
 भरणी तद्० ( स्त्री० ) पृथु नक्षत्र का नाम, दूसरा  
 नक्षत्र ।

भरणीय तद्० ( पु० ) योग्य, पावन योग्य, पालनाई ।  
 भरत तद्० ( पु० ) अयोध्याधिपति दशरथ का पुत्र,  
 ये महात्मा श्री कृष्ण के गर्भ से सम्भूत थे । जड़  
 भरत, राजा दुष्यन्त के शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न  
 पुत्र, इन्होंने ही इस देश का नाम भारतवर्ष रखा  
 है । नाट्यशास्त्र प्रणेता श्रुति विशेष, इनके समय  
 का ठीक पता अभी तक भी पुरातत्वावेषियों  
 को नहीं लगा है, तथापि ये साइस पूर्वक कहते  
 हैं की ये ईसा के पूर्व ६ वीं सदी के पूर्व के नहीं  
 हो सकते । अस्तु जो कुछ हो परन्तु ये बहुत ही  
 पुराने हैं, कालिदास के भी पूर्ववर्ती हैं, भास के  
 नाटकों के श्रोकों से भी इनकी प्राचीनता सिद्ध  
 होती है । [ कृषिया, पाजीगर ।  
 भरतपुत्रक तद्० ( पु० ) नट, विष्णुक, माँझ, पट्ट-  
 भरताग्रज तद्० ( पु० ) धीरामचन्द्र ।  
 भरद्वाज तद्० ( पु० ) विष्णुस्य प्राचीन श्रुति, इत्यप्य  
 की पत्नी समता के गर्भ और बृहस्पति के धीरस  
 से ये उत्पन्न हुए थे, मरुत्गण ने इनका भरण  
 किया था और ये दो के द्वारा उत्पन्न हुए थे इस  
 कारण इनका नाम भरद्वाज पड़ा । इनका दूसरा  
 नाम वितथ है । एक समय गङ्गातान के समय  
 भूताधी नामक अप्सरा को देखकर इनका रेतः-  
 पात हुआ वह रेत एक द्रोण में रखा गया, वससे  
 एक पुत्र उत्पन्न हुआ । यही पुत्र विष्णुस्य द्रोणा-  
 चार्य थे । प्राणियों का दुःख दूर करने के लिये  
 देवताओं के अनुरोध से इन्होंने स्वर्ग में जाकर  
 इन्द्र से आयुर्वेद का अध्ययन किया । इन्द्र से  
 समस्त आयुर्वेद का अध्ययन करके ये मर्यादोक  
 लौट आये, और आयुर्वेद की शिषा इन्होंने मह-  
 र्षियों को दी । उनसे शिषा पाकर महर्षियों ने  
 आयुर्वेद का प्रचार किया । [ चारय ।  
 भरन दे० ( पु० ) पूरन, पूर्ति, तोषण, पाटन, पोषण,  
 भरना दे० ( क्रि० ) पूरा करना, ऋण चुकाना, घन्सूक  
 में गोली भरना, सहना, पाना, दुःख पाना, दुःख  
 सहना ।  
 भरनी दे० ( स्त्री० ) भरनेवाली, पूर्ण करने वाली, एक  
 नक्षत्र का नाम, जिस नक्षत्र में वृष्टि होने से वर्ष  
 साते हैं ।



भरपाना दे० ( कि० ) दाम पाना, दाम वसूल होना ।  
 भरपूर दे० ( गु० ) पूर्ण, अत्यन्त पूर्ण, अतिशय पूर्ण ।  
 भरभराना दे० ( कि० ) झूटना, झिड़कना, सूजना,  
 फूलना ।

भरभरी दे० ( स्त्री० ) सुजाय, फूलाय ।

भरम तद् दे० ( पु० ) भ्रम, भ्रान्ति, संशय, सन्देह, भेद,  
 रहस्य, तत्त्व ।—खुलना ( वा० ) भेद खुल जाना,  
 रहस्य प्रकाश होना ।—खोल देना ( वा० )  
 सन्देह मिटाना, भ्रम दूर करना ।—गर्वाना  
 ( वा० ) प्रतिष्ठा लेना, यश में घबरा लगाना,  
 कीर्ति में बहा लगाना ।—निकल जाना ( वा० )  
 सन्देह दूर होना, संशय मिटना, भेद खुलना ।

भरमाना दे० ( कि० ) ठगना, धन्य करना, छलना ।  
 भरमीला दे० ( वि० ) संतुष्टी, सन्देशी, भरम वाजा ।  
 भरधाना दे० ( कि० ) पूर्ण कराना, पूरा करवाना,  
 पुरवाना ।

भरा दे० ( वि० ) पुरा, पूर्ण ।

भराई ( स्त्री० ) भरने का काम, भरने की मजदूरी ।  
 भराना दे० ( कि० ) पूरा करना, पूर्ण कराना, भराना,  
 भरवाना ।

भरावट दे० ( स्त्री० ) पूर्ति, पूर्णता, भर्ती ।

भरी दे० ( स्त्री० ) तोला, वारहमास, तौल विशेष ।

भरैत या भड़ैत ( पु० ) किरायेदार ।

भरोठा दे० ( पु० ) थोका, भार, मोट ।

भरोसा दे० ( पु० ) आशा, विश्वास, प्रतीति, प्रत्यय ।

भर्म तत् दे० ( पु० ) शिव, महादेव, प्रज्ञा, ज्योति, तेज,  
 प्रकाश, दीप्ति ।

भर्जन तत् दे० ( पु० ) भूजना, भूना ।

भर्ता तत् दे० ( पु० ) पति, स्वामी, भतार । ( पु० )  
 पालने वाला, रक्षक, प्रतिपालक । ( दे० ) एक  
 प्रकार की तरकारी, भाँटा, थालू, आदि को भून  
 कर जो बनाया जाता है ।

भर्ति या दे० ( पु० ) जाति विशेष, ठेरा, कसेरा ।

भर्ती दे० ( स्त्री० ) समाप्ति, भरावट, पूर्णता, पूर्ति ।  
 —करना ( कि० ) शामिल करना, सम्मिलित  
 करना । [ गहाँ, अपवाद ।

भर्त्सना तत् दे० ( स्त्री० ) तिरस्कार, निन्दा, कुत्सा,

भर्त्सक तत् दे० ( पु० ) तिरस्कार करने वाला, निन्दक ।

भर्तृहरि तत् दे० ( पु० ) विक्रमादित्य राजा के भाई,  
 इनके बनाये तीन शतक शृङ्गार, वैराग्य और  
 नीति प्रसिद्ध हैं, कहते हैं अपनी स्त्री की दुश्चरित्रता  
 से दुःखी होकर ये घर छोड़ कर वनवासी हो गये  
 थे । वाक्यप्रदीप नामक एक व्याकरण विज्ञान का  
 अमूल्य ग्रन्थ भर्तृहरि के नाम से प्रसिद्ध है । इसका  
 विश्रय करना कठिन है कि वाक्यप्रदीपकर्ता ये  
 ही भर्तृहरि हैं या अन्य । इनका भी वही ६ वीं  
 सदी ही समय मानना उचित है ।

( २ ) इनका बनाया भट्टी नामक काव्य प्रसिद्ध है ।  
 भट्टी काव्य संस्कृत साहित्य का एक रत्न है ।  
 इसके पाठ करने वाले इनके व्याकरण के असा-  
 धारण ज्ञान से सुपरिचित हैं । इस ग्रंथ के प्रत्येक  
 श्लोक यहाँ तक कि पंक्तियों में भी प्रयोग कुशलता  
 देखी जाती है । [ प्रीय ।

भल दे० ( वि० ) भला, उत्तम, श्रेष्ठ, मनोहर, रम-

भलका दे० ( पु० ) भूषण विशेष, सोने की टिकली ।

भलमनसात या भलमनसाहत दे० ( वि० ) सहा-  
 पुरुषत्व, मनुष्यत्व, पुरुषत्व ।

भलमनसी दे० ( स्त्री० ) सुशीलता ।

भला ( वि० ) उत्तम, शीलवान, अच्छा, श्रेष्ठ, सद्गुणी ।

—कर भला हो, सौदा कर नफा हो ( बो०-  
 उ० ) जैसा करोगे वैसा पाओगे, कर्मानुसार ही  
 फल होता है ।—आदमी ( वा० ) अच्छा आदमी,  
 श्रेष्ठ पुरुष ।—मानना ( वा० ) उत्तम समझना,  
 अहसान मानना ।—चढ़ा ( वि० ) नीरोग, मोटा  
 स्वस्थ ।

भलाई दे० ( स्त्री० ) अच्छापन, कुशलचेम, कल्याण,  
 मङ्गल ।—लेना ( वा० ) अहसान लेना, नेकी  
 करना, अहसान करना ।—रहना ( वा० ) सुवश  
 रहना, कीर्ति रहना ।

भल्लूक या भल्लूक तत् दे० ( पु० ) रीझ, मालू ।

भल्लूक तत् दे० ( पु० ) भागा, बरछी, चर्खा । महादेव ।

भव ( पु० )

भवदीय

भवन

भवभूति

माधव नामक तीन माटव बनाये थे। भवभूति-  
सीटीय ८ वीं सदी के प्रारम्भ में उत्पन्न हुए थे।  
पद्मपुर नामक गाँव इनका जन्मस्थान है। इनके  
पिता का नाम मीलकण्ठ था और पितामह का नाम  
भूपाल भट्ट था। इनकी माता अनुकर्ण गोत्र में  
उत्पन्न हुई थीं। इस कारण यह जतकर्णी नाम से  
प्रसिद्ध हैं। शब्द प्रयोग की कुशलता और भाव की  
व्यक्तता के विचार से भवभूति का स्थान संस्कृत  
साहित्य में बहुत ऊँचा है। इन तीन ग्रन्थों के  
व्यतिरिक्त भवभूति का दूसरा भी कोई ग्रन्थ अवश्य  
होगा। क्योंकि संग्रह ग्रन्थों में भवभूति के नाम से  
जो श्लोक दिये जाते हैं वे उनके प्रसिद्ध ग्रन्थों में  
नहीं हैं। राजा यशोधर की रचना के ये पण्डित थे।  
इनकी रचना कट्यारस प्रधान है।

भषाद्वय तत्त्वं ( वि० ) धारकें तुल्य, आपके समान,  
धारकें योग्य। [ काली ।

भषानी तत्त्वं ( स्त्री० ) पार्वती, स्थि की स्त्री, दुर्गा,  
भषार्य्य तत्त्वं ( पु० ) [ भव + अर्थ्य ] संसार-सागर,  
संसार रूपी समुद्र, नीचल समुद्र।

भषितव्यता तत्त्वं ( स्त्री० ) होनहार, भावी, भाग्य,  
कपाल, यथा:—

“ जैसी हो भषितव्यता वैसी उपजै पुदि ।

होनहार हृदय वसी बिसर जात सब सुदि ॥ ”

भषिष्यु तत्त्वं ( पु० ) होने वाला, होनहार, भावी।

भषिष्य तत्त्वं ( पु० ) दोगहार, होने वाला, भषित-  
व्यता।

भषिष्यत् तत्त्वं ( पु० ) आगामी काल विशेष, आगामी  
काल।—घल्ला ( पु० ) भषिष्यत् काल की यातें  
जानने वाला, भषिष्येत्वा, होनहार जानने वाला।

भषैया दे० ( पु० ) कथक, नर्तक, नाचने वाला।

भष्य तत्त्वं ( वि० ) सत्य, भावी, उज्ज्वल, सुन्दर।

भस दे० ( पु० ) भस्म, राख, विभूति, किसी वस्तु  
की अवशेष शेष।

भसकना दे० ( क्रि० ) गिरना, पड़ना, फाँकना।

भसना दे० ( क्रि० ) तरना, सरना, बहना, उतराना।

भसभसा दे० ( वि० ) पोला, यलथला।

भसाना दे० ( क्रि० ) बसाना, चलाना, बिराना, बहाना।

भस्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) चमड़े की चौकनी, भाषी।

भस्म तत्त्वं ( स्त्री० ) राख, चार, भभूत।—सात्  
( अ० ) अशेष भस्म, समस्त जला।

भस्मक तत्त्वं ( पु० ) रोग विशेष, जिस रोग में लोग  
घाते तो बहुत हैं, परन्तु दुर्बल होते जाते हैं।

भद्वराना दे० ( क्रि० ) कौपना, ढगना, ढगमगाना,  
गिरना, पड़ना।

भांग दे० ( पु० ) बूटी, बिजया, भंग।

भाज दे० ( पु० ) पेंठ, बल, मोड़।

भाजना दे० ( क्रि० ) पेंठना, बल देना, मोड़ना।

भाजा दे० ( पु० ) भगिनेय, बहिन का देता।

भाजी दे० ( स्त्री० ) बहिन की बेटी।

भाटा दे० ( पु० ) भटा, बैगन।

भाड़ दे० ( पु० ) यहुरूपिया, निर्लज्ज, एक तरह का  
तमारा करने वाला, हँदा।

भाड़ना दे० ( क्रि० ) घिसाड़ना, गाली देना।

भाड़ा दे० ( पु० ) सृष्टिका का यद्वा पात्र, मटका।

भाँदोर तत्त्वं ( पु० ) वृक्ष विशेष, अजीर का वृक्ष।

भाँड़ैती दे० ( स्त्री० ) स्वाँग, बहुरूपीपना।

भाँति दे० ( स्त्री० ) बील, वय, रीति, प्रकार।

भाँति भाँति दे० ( पा० ) तरह तरह का, नाना प्रकार  
का, कई तरह का।

भाँपना दे० ( क्रि० ) ताड़ना, देखना, जानना।

भाँवर दे० ( स्त्री० ) घुमाव, भाँवरी, सात बार घूमना,  
परिक्रमा, बूझा और दुलहिन का वेदी की परि-  
क्रमा करना।

भाँवरी दे० ( स्त्री० ) देखो भाँवर। [ प्रकाश।

भा दे० ( क्रि० ) हुआ, भाया। ( पु० ) उजारा, चमक,

भाई तद्दे० ( पु० ) आता, सहोदर।—चारा ( पु० )

भाई का सम्बन्ध, भयापा।—धन्द ( पु० ) भाई  
बन्धु, बिरादरी।

भाक तद्दे० ( पु० ) कृत्रिम, गौण, पिद्वलम्बु।

भाकसी ( स्त्री० ) अन्धकूप, कैदियों के रहने का घर,  
हवालात, छोटा घर। [ भाष्य करना।

भाखना दे० ( क्रि० ) बोलना, कहना, कथन करना,

भाखा तद्दे० ( स्त्री० ) भाषा, बोली, बात।

भाग तद्दे० ( पु० ) अंश, हिस्सा, बॉट, विभाग ( तद्दे० )

भाग्य, प्रारब्ध।—खुलना ( वा० ) भाग्यवान्  
होना, प्रारब्ध का अच्छा होना, सुख मिलना।

—जागना ( वा० ) धनी होना, अचछा भाग होना ।—त्राहो ( पु० ) भागी, हिस्सादार ।—भरोसा ( वा० ) धीरता, धीरज, धैर्य, ठाँढ़स । भागङ् दे० ( स्त्री० ) पलायन, भागल, देशत्याग । भागना दे० ( क्रि० ) पलाना, भाग जाना, दौड़ना, धवड़ा करना । [ चला जाना । भाग चलना दे० ( वा० ) निकल चलना, भाग जाना, भागधेय तद्० ( पु० ) भाग्य, प्रारब्ध, शुभकर्म उत्तम कर्म । [ यथा कर भाग जाना भाग चलना । भाग निकलना दे० ( वा० ) छिप कर भागना, जान भागमान तद्० ( वि० ) भाग्यमान, प्रारब्ध । भागमानो तद्० ( स्त्री० ) सौभाग्यवती । भागघन तद्० ( वि० ) भगवान् का भक्त । ( पु० ) अष्टादश पुराणान्तर्गत पुराण विशेष । भागहार तद्० ( पु० ) भागनियम, श्रृंश की रीति, भाजक । ( पु० ) भागहस्ता, श्रृंशहारी, भाग का अधिकारी । [ भागद, दौड़ादौड़ । भागाभाग दे० ( पु० ) चलाचली, प्रस्थान की हलचल, भागिनिय तद्० ( पु० ) भाँजा, भगिनीपुत्र, बहिन का बेटा, भयने । भागी दे० ( वि० ) सामी, हिस्सेदार, यद्वैत, अंशरी । भागीरथी तद्० ( स्त्री० ) [ भागीरथ + इञ् ] गङ्गा, सुरधुनी, सुनदी । भाग्य तद्० ( पु० ) प्राक्तन शुभाशुभ कर्म, दैव, भाग-धेय, भवितव्यता, अदृष्ट, प्रारब्ध । भाग्यवन्त तद्० ( वि० ) धनी, धनिक, शुभ, अदृष्टवाला । भाग्यवान् तद्० ( वि० ) भाग्यवन्त, अदृष्टवान्, पुण्य-कर्मन् । [ दरिद्र, दुःखी । भाग्यहीन तद्० ( वि० ) अभागी, हतभाग्य, मन्दभाग्य, भाजन तद्० ( पु० ) पात्र, योग्य, आदक, परिमाण । ( दे० ) यासन, यरतन । भाजना दे० ( क्रि० ) भूँजना, सुनना, तलना, भागना । भाजर दे० ( स्त्री० ) भगोड़, भगैल । भाजी दे० ( स्त्री० ) साग, तरकारी, याचना, बायन । भाज्य दे० ( वि० ) भागाद, भाजनीय, अंश करने योग्य, पद्धतार्थ, जिसका अंश से विभाग किया जाय । भाट दे० ( पु० ) चारण, स्तुति गायक, बन्दी, एक जाति विशेष, जिसका काम मय्य महासा करना है ।

भाटन दे० ( स्त्री० ) भाट की स्त्री । भाटा ( पु० ) समुद्र का उतराव । भाटियाल ( पु० ) उतराव, गिराव । भाटिया दे० ( पु० ) इस नाम की एक व्यापारी जाति । भाटियानी दे० ( स्त्री० ) भाटिया जाति की स्त्री । भाठा दे० ( पु० ) समुद्र का उतराव । भाठियाल दे० ( पु० ) भाटियाल, उतराव, गिराव । भाठी दे० ( स्त्री० ) धौकनी, भाती । [ जाता है । भाड़ दे० ( पु० ) वह यड़ा चूल्हा जहाँ अन्न भूना भाड़ा दे० ( पु० ) किराया, शुल्क, महसूल, घर आदि का कर । [ भाड़े का काम । भाड़ैत ( वि० ) भाड़े पर रहने वाला ।— ( स्त्री० ) भागड़ तद्० ( पु० ) बर्तन, वासन । भागड़ार ( पु० ) मंडार । भात दे० ( पु० ) भक्त, श्रोत । भाता दे० ( वि० ) सुहायना, सुन्दर, मनभावन । भाथा दे० ( पु० ) तृण, तरकल । भाथी दे० ( स्त्री० ) चमड़े की धौकनी । भावो तद्० ( पु० ) भाद्रमास, भादवा, भाद्रपद । भावो दे० ( पु० ) वर्ष का छठवाँ महीना, जिस महीने में भाद्रपद नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हो ।—की भरन ( वा० ) अधिक वृष्टि, ऋष, ऋषी । भान तद्० ( पु० ) ज्ञान, स्मरण, बोध, सुधि, चेत । भाना दे० ( क्रि० ) अच्छा लगना, सुहायना मालूम होना, सुहाना, मनभावन होना । भानमती दे० ( स्त्री० ) नटिनी, जाति विशेष की स्त्री, जो इन्द्रजाल विद्या में निपुण होती है । भानु तद्० ( पु० ) सूर्य, रवि, सूर्य की किरण ।—ज ( पु० ) अश्विनाकुमारद्वय, शनैश्वर, यमराज, राजा कर्ण ।—जा ( स्त्री० ) यमुना, जमुना नदी । भानुमती तद्० ( स्त्री० ) कहते हैं प्रसिद्ध कवि कालिदास की स्त्री का नाम भानुमती था, ये भोजराज की कन्या थी, ये ऐन्द्रजालिक विद्या में निपुण थी । भोजराज के वंशज इस विद्या में अति निपुण थे और वे इस विद्या से अपना मनोरंजन किया करते थे, इसी कारण इन्द्रजाल विद्या का दूसरा नाम भोजराजो हो गया । केनरा विद्या का

मख तत्त्वं ( पु० ) पञ्च, ऋतु, याग ।  
 मखन दे० ( पु० ) साखन, मखन, नैन् ।  
 मखना दे० ( पु० ) हाथी विशेष, छोटा हाथी ।  
 मखनिया दे० ( पु० ) माखन घेचने वाला ।—दूध  
 दे० ( पु० ) मखन निहाला हुआ दूध ।  
 मखाना दे० ( पु० ) फल विशेष, औषध विशेष ।  
 मखी दे० ( स्त्री० ) मक्खी, मधिका ।  
 मग तद् ( पु० ) मार्ग, डगर, घाट, राह, पैदा ।  
 मगध ( पु० ) संयुक्त प्रान्त और बंगाल की सीमाओं  
 के बीच का देश, बिहार का दक्षिणी प्रान्त मगध  
 कहलाता है । पंदी, माट ।  
 मगधेश्वर ( पु० ) मगध का राजा, जगन्नाथ ।  
 मगन दे० ( वि० ) भ्रान्तिवृत्त, हरित, प्रफुल्ल ।—ता  
 ( स्त्री० ) हर्ष, प्रसन्नता । [ विशेष ।  
 मगर तद् ( पु० ) मकर, मछ, माह, जल जन्तु  
 मगरमच्छ ( वि० ) मत्त, स्वतन्त्र ।  
 मगरा दे० ( वि० ) छोट, मिलउन्न, छट, घमण्डी  
 महङ्कारी ।  
 मगराई दे० ( स्त्री० ) डिठाई, छटता, मचलाहट ।  
 मगरापन दे० ( पु० ) मचलाई, छटता, घमण्ड ।  
 मगरेला दे० ( पु० ) बीज विशेष ।  
 मगसिर तद् ( पु० ) मार्ग शीर्ष, अगहन महीना ।  
 मगही ( वि० ) मगह का, बनारस पाण विशेष ।  
 मगहैया दे० ( पु० ) मगध देशवासी ।  
 मगरी ( स्त्री० ) मगर की मादा ।  
 मगुरी ( स्त्री० ) मत्स्य विशेष ।  
 मग्न तद् ( वि० ) हुषा हुआ, खीन, तन्मय ।  
 मग्न दे० ( पु० ) मद्क, सुवास, सुगन्ध, उत्तम गन्ध ।  
 मगघा तद् ( पु० ) इन्द्र, देवराज, सुरपति देवताओं  
 का अधिपति ।  
 मघा तत्त्वं ( पु० ) नक्षत्र विशेष, दशार्वा नक्षत्र ।  
 मघौना ( स्त्री० ) राखी, इन्द्राणी ।  
 मङ्गा दे० ( पु० ) माला, जप करने की माला, सुमिरनी ।  
 मङ्गल तत्त्वं ( पु० ) अभिप्रेत, अर्थ की सिद्धि, कल्याण,  
 शुभ, चैम, कुशल, ग्रह विशेष, तृतीयग्रह ।—चार  
 ( पु० ) भीमवार, मङ्गल का दिन, तीसरे ग्रह का  
 दिन ।—समाचार ( पु० ) अच्छा संवाद,  
 सुसम्वाद ।

मङ्गलाचरण तत्त्वं ( पु० ) मङ्गल के लिये अनुष्ठान,  
 मङ्गल कृत्य, अन्य के आदि में इष्टदेव की वन्दना ।  
 मङ्गलाचार तत्त्वं ( पु० ) मङ्गल, उत्सव ।  
 मङ्गलामुखी तद् ( वि० ) गर्वया, गाने वाली,  
 मङ्गल मनाने वाली, रण्डी ।  
 मङ्गली तद् ( वि० ) मङ्गल करने वाला, मङ्गलकारी  
 कल्याणदायक । जिसकी कुण्डली में जन्म, चतुर्थ,  
 सप्तम, अष्टम और द्वादश स्थान में मङ्गल पड़ा हो,  
 यह योग यदि पुरुष में पड़ा हो तो खूदन्ता योग  
 कहा जाता है, और स्त्री में पड़ा हो तो पुरुषहन्ता ।  
 मङ्गल्य ( पु० ) मसूर, जीरा, दही, सुवर्ण, सिन्दूर,  
 पीपल, नारियल सफेद चन्दन, गोरोचन, कैथ, बैल,  
 ( स्त्री० ) शाक विशेष ।  
 मङ्गसिर तद् ( पु० ) मार्गशीर्ष, अगहन का महीना ।  
 मचक दे० ( स्त्री० ) गाँठ की पीड़ा, धीरे धीरे बढ़े ।  
 मचकना दे० ( क्रि० ) व्यथा होना, चराना, पीड़ा  
 होना । [ चलाना ।  
 मचकाना दे० ( क्रि० ) मड़काना, रूपकाना, भाँख  
 मचना दे० ( क्रि० ) रचना, उठना, होना, सम्पादन  
 करना, किया जाना । [ मचमच शब्द ।  
 मचमच दे० ( अ० ) चरचर, मरमर, ध्वनि विशेष,  
 मचमचाना दे० ( क्रि० ) मचमच करना, हिलाना,  
 कँपाना, जिससे मचमच शब्द हो ।  
 मचलना दे० ( क्रि० ) मड़कना, घमंड करना, अभि-  
 मान करना, अहङ्कार करना, हठ करना, दुराम्ह  
 करना । [ हठ ।  
 मचलपन दे० ( पु० ) मचलाहट, अभिमान, अहङ्कार,  
 मचला दे० ( वि० ) हठी, हठीला, अहङ्कारी, अभि-  
 मान्ती, घमंडी ।  
 मचलाई ( स्त्री० ) देखो मैंगराई । [ बहाना करना ।  
 मचलाना दे० ( क्रि० ) हठ करना, दुराम्ह करना,  
 मचलाहा दे० ( वि० ) हठीला, बौटा, छट, घमंडी ।  
 मचवा दे० ( पु० ) खाट का पाया, छोटा खटोला ।  
 मचान ( पु० ) शिकार खेलने या खेल की रखवाली  
 के लिये जो जँची बैठक बनाई जाती है उसे  
 मचान कहते हैं । [ प्रारम्भ करना ।  
 मचाना दे० ( क्रि० ) करना, होने देना, उठाना,  
 मचामच दे० ( अ० ) मटपट, बढ़ाबढ़, घचापघ ।

मचिया दे० ( स्त्री० ) पीढ़ा, छोटी खाट, मोड़ा ।  
 मचाइना दे० ( कि० ) निचाइना, पेठना, गारगा ।  
 मच्छ तत्० ( पु० ) मछली, मत्स्य, मीन ।  
 मच्छर दे० ( पु० ) मशक, मसा ।  
 मच्छड़ दे० ( पु० ) मच्छर ।  
 मच्छी दे० ( स्त्री० ) चुमा, चुम्मा, मोठी, मोठिया ।  
 मच्छर दे० ( पु० ) चूहा । ( वि० ) मूख, अनभिज्ञ, यही मूछ वाला ।  
 मछली दे० ( स्त्री० ) मत्स्य, मच्छ, मीन ।  
 मछुआ दे० ( पु० ) धीवर कैवत, मछली पकड़ने वाला । [ विशेष ।  
 मजोठ दे० ( पु० ) रङ्गविशेष, लाल रङ्ग, औषधि ।  
 मजीत दे० ( वि० ) पुराना, सस्ता, निकम्मा ।  
 मजोरा दे० ( पु० ) वाद्य विशेष, भाँक ।  
 मजूर दे० ( पु० ) सेवक, परिचारक, भूत, कामकाजी, दास, दैनिक चेतन पर काम करने वाला कारखाने में काम करने वाला ।— ( स्त्री० ) दैनिक चेतन, मेहनताना ।  
 मज्जक ( पु० ) स्नान करने वाला पुरुष ।  
 मज्जन तत्० ( पु० ) स्नान, नहान, धो धो कर नहान ।  
 मज्जा तत्० ( पु० ) वैदक के सप्त धातु के अन्तर्गत धातु विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गुदा ।—सार ( पु० ) जायफल ।  
 मज्जित ( वि० ) गहाया हुआ, हुया हुआ ।  
 ममला दे० ( वि० ) माध्यमिक, बीच का, मध्य का, मध्यम, मसोला, न बड़ा न छोटा, मध्यम क्रदका ।  
 ममारि या ममारी दे० ( पु० ) मध्य, माँक, बीच, अन्तर ।  
 ममेली दे० ( स्त्री० ) मसोली, गहेली ।  
 ममोला दे० ( पु० ) बीचला, मध्य का, मध्यम ।  
 ममोली दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की छोटी गाड़ी, ममेली ।  
 मञ्ज तत्० ( पु० ) मचना, उच्चासन ।  
 मञ्जा, मंजा दे० ( पु० ) खाट, चौकी, सिंहासन ।  
 मञ्ज, मंजन तत्० ( पु० ) मार्जन, माजन, दाँत धोने का द्रव्य, चूर्ण विशेष । [ साफ़ करना ।  
 मंजना, मंजना दे० ( कि० ) उजला होना, फरछाना, मखरी तत्० ( स्त्री० ) यौन, मुकुल, कली, कोड़ी ।

मञ्जर तत्० ( पु० ) बिलाव, विडाल, बिला ।  
 मञ्जु, मञ्जुल तत्० ( वि० ) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मनोज्ञ, शमीप्सित, इष्ट ।  
 मञ्जूपा तत्० ( स्त्री० ) पेयारी, पियारी, सन्दूकची, छोटा सन्दूक, संस्कृत व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम । [ शवभाव ।  
 मटक दे० ( स्त्री० ) चोचला, भावली, नखरा, मटकन, मटकना दे० ( कि० ) आँख धुमाना, आँख चमकाना, भाँकना, ताकना । ( पु० ) पुरवा, मिट्टी का छोटा घरतन ।  
 मटका दे० ( पु० ) यड़ी गगरी । [ फटाफट करना ।  
 मटकाना दे० ( कि० ) आँख धुमाना, आँख चमकाना, मटकी दे० ( स्त्री० ) मिट्टी का छोटा घड़ा, गगरी ।  
 मटकोठा दे० ( पु० ) मिट्टी का बना घर ।  
 मटर दे० ( पु० ) एक व्रत का नाम । [ मटर ।  
 मटरा दे० ( पु० ) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, धड़ा ।  
 मटरी दे० ( स्त्री० ) छोटा मटर, छीमी ।  
 मटियाना दे० ( कि० ) माटी लगाना, माटी चुपड़ना, सहना, सुख हो जाना ।  
 मटियारा दे० ( पु० ) जुताऊ खेत, जो खेत जोता जाता है, जिसमें मट्टी हो ।  
 मटियाव दे० ( पु० ) उपेक्षा, उदासीनता, प्रदर्शन, आनाकानी, सहन ।  
 मट्टी दे० ( स्त्री० ) माटी, मृत्तिका, मिट्टी, निर्जीव शरीर ।—करना ( वा० ) नाश करना, बिगाड़ना, खराब करना ।—खाना ( वा० ) मांस खाना, दुग्ध पहुँचाना, पीड़ा देना ।—डालना ( वा० ) तोपना, गाड़ना, ऋगड़ा मिटाना, दोष छिपाना, देना—( वा० ) सुर्दा गाड़ना, सुर्दा दफन करना, तोपना, छिपाना, किसी का छिद्र प्रकाशित नहीं होने देना ।—पर लड़ना ( वा० ) भूमि के लिये ऋगड़ना, व्यर्थ लड़ना, छोटी सी बात के लिये लड़ना ।—में मिलना ( वा० ) पेकार होना, खराब होना, नष्ट होना, बरबाद होना ।—होना ( वा० ) निर्बल होना, सत्यानाश होना, बिना काम का होना, बेकार होना ।  
 मट्टुका दे० ( पु० ) मटका, यड़ी गगरी  
 मट्टा दे० ( पु० ) छुई, मटा, तक ।

मठ तत्० ( पु० ) छात्रावास, छात्रों के रहने का स्थान, संन्यासी साधुओं का घर, पाठशाला, देवागार ।

मठर ( पु० ) अपि विरोप । [ पञ्चान ।

मठड़ी दे० ( स्त्री० ) मठरी, एक प्रकार का निमकीन-

मठरी दे० ( स्त्री० ) " मठड़ी " ।

मठा दे० ( पु० ) मट्टा, मही, बोल, तक । ( वि० )

ढीला, शिथिल, आलसी ।

मठार ( पु० ) बों का मैल ।

मठार दे० ( पु० ) मटका, माँड़, मटकना ।

मड़वा दे० ( पु० ) यज्ञस्तम्भ, वह लकड़ी का खंभा

जिसके पास विवाह का कृत्य पूरा किया जाता है ।

मड़ियांना दे० ( कि० ) चिरकावा, जमाना ।

मड़ुआ दे० ( पु० ) एक अन्न का नाम ।

मड़ोड़ दे० ( पु० ) ऐठ, पेट का एक रोग ।

मड़ोड़ना दे० ( कि० ) ऐठना, बल देना ।

लड़ोड़ा दे० ( पु० ) ऐठन, मरोड़ा, शूल की चीमारी ।

मढ़न दे० ( स्त्री० ) अवरण, अस्तर, ढालन, खोल ।

मढ़ना दे० ( कि० ) तोपना, आवरण करना, छिपा देना, कपड़ा चढ़ाना ।

मढ़ा दे० ( पु० ) कोठा, यही कोठरी ।

मड़ी दे० ( स्त्री० ) झुटी, झोंपड़ी, मण्डप ।

मड़ैया दे० ( स्त्री० ) छोटा छप्पर, बहुत छोटी झोंपड़ी ।

मणि तत्० ( पु० ) पत्थर विरोप, मुक्ता आदि रत्न, नग ।—कर्णिका ( स्त्री० ) कानी के एक तीर्थ का नाम ।—कार ( पु० ) मणियुक्त अलङ्कार आदि

बनाने वाला जौहरी, न्याय के चिन्तामणि नामक ग्रन्थ का कर्ता ।—ग्रीव ( पु० ) घनाधिपति कुबेर के पुत्र का नाम ।—पूर ( पु० ) पट्टचक्र के अन्तर्गत

नाभि चक्र स्थित तीसरा चक्र ।—बन्ध ( पु० ) कलाई, पहुँचा ।—मण्डप ( पु० ) रत्नमय गृह ।—मय ( वि० ) मणि द्वारा निर्मित,

प्रभूत रत्न युक्त ।—माल ( स्त्री० ) मणिमय हार, मणि की माला, दन्तचक्र विरोप, लक्ष्मी, दीप्ति ।

—हार ( पु० ) देवों मणिमाल ।

मणियान तत्० ( पु० ) कुबेर के एक कर्मचारी का नाम, एक बार इसने अज्ञान में महर्षि अगस्त्य के

सिर पर थूक दिया । महर्षि ने मनुष्य द्वारा मारे

जाने का इसको शाप दिया । गन्धमादन पर्वत पर जब यह रहता था उसी समय सुवर्ण कमल लेने सीमसेन वहाँ गये और उन्हीं के हाथ से वह मारा गया ।

मणियाँ या मनिया दे० ( स्त्री० ) माला का श्राना ।

मणियार दे० ( पु० ) मणिहार, चूड़िहार, चूड़ी वाला,

चूड़ी बनाने और बेचने वाला ।

मण्ड तत्० ( पु० ) माँड़, जूस ।

मण्डन तत्० ( पु० ) भूषण, अलङ्कार, गहना, सजने की वस्तु ।

मण्डप तत्० ( पु० ) जन विश्रामगृह, कृष्णादि निर्मित देवगृह, मड़वा, ब्याह के लिये बनाया गृह गृह ।

मण्डल तत्० ( पु० ) चन्द्र सूर्य के बाहर की परिधि, परिवेश, गोल, चक्र, संघात, समूह, सैनिकों की स्थिति विरोप, व्याघ्रतल नामक गन्ध द्रव्य, कुल, नगरों का प्रधान नगर, जनपद, जिला, सूबा ।

मण्डलाकार तत्० वि० ) गोलाकार, वर्तुलाकार ।

मण्डलाधीश तत्० ( पु० ) मण्डलेश्वर, मण्डलाध्यक्ष ।

मण्डलाना, मंडलाना दे० ( कि० ) धूमना, फिरना, चक्कर फाट कर धूमना ।

मण्डलिया दे० ( पु० ) कपोत विरोप ।

मण्डली तत्० ( स्त्री० ) समूह, समा, जया, दूय ।

—क ( पु० ) दस लाख की आय वाला ।

मण्डवा, मँडवा दे० ( पु० ) मण्डप, कुञ्ज, पेरा, बैठक, तृण, निर्मित देवगृह ।

मण्डवी, मँडवी दे० ( स्त्री० ) अन्न विरोप ।

मण्डा, मँडा दे० ( पु० ) पेड़ा, दूध की मिठाई ।

मण्डित तत्० ( वि० ) भूषित, अलङ्कृत, वेष्टित, जड़ित, शोभित, शृङ्गारित ।

मण्डियाना, मँडियाना दे० ( कि० ) कोई रागाना, कल्प करना, कल्प चढ़ाना ।

मण्डो, मंडी दे० ( स्त्री० ) हाट, बाजार, प्रस आदि विक्रय का स्थान, गोला, गज ।

मण्डूक तत्० ( पु० ) भेक, मेंग, मेढक, मुनि विरोप ।

मण्डूकी ( स्त्री० ) माझी, प्रगल्भा स्त्री, मेढक की मादा, मेढकी, निपुण स्त्री ।

मत तत् ( पु० ) अभिप्राय, सिद्धान्त, आशय, रीति, ढङ्ग, धर्म, धर्म या शास्त्र का मन्तव्य, विचार, पन्थ, धर्मपन्थ । —मनान्तर ( पु० ) अनेक मत ।  
—विरोधी ( पु० ) धर्मविरोधी, अधर्मी । —जन्मस्थी ( वि० ) मताश्रयी, धर्मानुयायी ।

मतधारे दे० ( पु० ) मत्त, उन्मत्त, दीवाना, पागल, भद्गदारी, शराबी ।

मतङ्ग तत् ( पु० ) हाथी, हस्ति, गज, करी, अप्यमूक पर्वत वासी, एक मुनि, यानर-राज बालि ने जब दुन्दुभि नामक असुर को मार कर फेंका तब उसके शरीर के रुधिर का छीटा मतङ्ग मुनि के शरीर पर पड़ा । इससे क्रुद्ध होकर मुनि ने बालि को शाप दिया कि अप्यमूक पर्वत पर आने से बालि की मृत्यु होगी । तभी से वह अप्यमूक पर्वत पर नहीं जाता था । इसीसे जब सुग्रीव किष्किन्धा से निकाले गये तब बालि के भय से इसी पर्वत पर रहना उन्होंने उचित समझा ।

मतना दे० ( पु० ) कल का एक भेद ।

मतभेद तत् ( पु० ) अभिप्राय विरुद्ध सिद्धान्त ।

मतमतान्तर ( वि० ) अन्य मज्जहय ।

मतराना दे० ( क्रि० ) मनाना, समझाना, बुझाना, जनाना ।

मतलाना दे० ( क्रि० ) जी विनाना, जी मथना, जी मन्थलाना ।

मतवाला दे० ( वि० ) उन्मत्त, माता, मदमाता, अहङ्कार ।

मतविरुद्ध ( वि० ) धर्म के विपरीत ।

मतहीन तत् ( वि० ) मतिहीन, निर्बुद्धि, बुद्धिहीन ।

मत्ता दे० ( वि० ) उपदेश, परामर्श, विचार, सम्मति, सलाह । —स्तर ( पु० ) मिश्रमत, विरुद्ध सम्मति । —चलम्बो ( पु० ) मताश्रयी, मत पर चलने वाला ।

मति तत् ( स्त्री० ) बुद्धि, मेधा, मनीषा, धी । —

मत्त तत् ( वि० ) उन्मत्त, मतवाला, पागल ।

मत्थ ( पु० ) मछली । [ की बढ़ती न सहना ]

मत्सरं तत् ( पु० ) द्वेष, डाह, ईर्ष्या, जलन, दूसरे

मत्सरता तत् ( स्त्री० ) द्वेष, हिसकटिया ।

मत्स्य तत् ( पु० ) जल जन्तु विशेष, माछ, मछली,

मीन, पुराण विशेष, भगवान का प्रथम अवतार,

बिराट देश । —गन्धा ( स्त्री० ) मन्झोदरी, व्यास

की माता । —गड ( पु० ) मछली का छंदा ।

—विस्ता ( स्त्री० ) कुटनी, श्रीपथि विशेष ।

मथन तत् ( पु० ) विलोचन, लोचन ।

मथना दे० ( क्रि० ) मन्थना, विलोना, धी निकालना ।

मथनिया दे० ( स्त्री० ) दधि मथने की धनी हुई विशेष रूप की लकड़ी ।

मथनी दे० ( स्त्री० ) महानी, मथनिया ।

मथा दे० ( पु० ) माथा, मस्तक, कपाल, सिर ।

मथानी दे० ( स्त्री० ) दही मन्थने की हँडिया ।

मथित तत् ( वि० ) मथा हुआ, विलोया हुआ ।

मथुरा तत् ( स्त्री० ) नगर विशेष, सप्तपुरियों के अन्तर्गत पुरी विशेष, श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ । [ के वासी ]

मथुरिया तत् ( पु० ) मथुर, चौथे मासण, मथुरा

मथुरेश ( पु० ) श्रीकृष्णचन्द्र

मथौर दे० ( पु० ) चन्द्रा, बिहरी, पिहू ।

मथौरा दे० ( पु० ) सूरजमुखी छाता ।

मद तद् ( पु० ) गर्व, मत्तता, मोह, मद्य, मादक वस्तु । —माता ( वि० ) मतवाला, उन्मत्त, अहङ्कारी ।

मदक ( पु० ) शक्तीम से बनी नशीली वस्तु ।

मदकट ( पु० ) चीनी, खोंड़ ।

मदन तत् ( पु० ) कामदेव, वसन्त ऋतु, धतूरे का वृक्ष । —गोपाल ( पु० ) श्रीकृष्ण । —चतुर्दशी

( स्त्री० ) चैत्रशुक्ला १४ । —पाठक ( पु० )

कोयल । —वाण ( पु० ) कामदेव का वाण, एक

फूल का नाम । —मोहन ( पु० ) श्रीकृष्ण ।

मदालस ( पु० ) थालसी ।  
 मदिक दे० ( पु० ) अभिमानी, अहङ्कारी, घमंडी ।  
 मदिरा तत् ( स्त्री० ) सुरा, दारू, मद्य, आसव ।  
 मदीय ( वि० ) मेरा, हमारा । [ घमंडी ।  
 मदोन्मत्त ( वि० ) मदमाता, गवाँला, अभिमानी,  
 मद्गु तत् ( पु० ) अन्न विशेष, भूँग ।  
 मद्गुर दे० ( पु० ) मत्स्य विशेष, एक प्रकार की  
 मछली, मछली की एक जाति ।  
 मद्य तत् ( पु० ) सुरा, मदिरा, मद, दारू शराब ।  
 —प ( पु० ) मद्यपी, शराबी, मद्य पीने वाला ।  
 मद्र ( पु० ) मारवाड़, खुरी, हर्ष ।  
 मद्रक ( वि० ) मारवाड़ी, मद्रसुता ( स्त्री० ) माद्री ।  
 मधु तत् ( पु० ) मद्य, मदिरा, पुष्परस, शहद, चैत्र  
 महीना ।—कर ( पु० ) भ्रमर, भौरा ।—करी  
 ( स्त्री० ) मधुकरि, अतिथिभिन्ना ।—कौप ( पु० )  
 शहद का छाता ।—च्छदा ( स्त्री० ) मेर की  
 शिला, बूटी ।—प ( पु० ) भँवरा, भ्रमर, अलि ।  
 —पर्क ( पु० ) दधि युक्त मधु, दही और शहद ।  
 'पोडरोपचार' पूजा का छठवाँ उपचार ।—मास  
 ( पु० ) चैत्र, चैत का महीना ।  
 मधुप तत् ( पु० ) मधुपान करने वाला, भौरा, फूलों  
 का रस पीने वाला ।  
 मधुपर्श दे० ( पु० ) पल्लक, रसयुक्त फल ।  
 मधुपुरी ( स्त्री० ) मधुरा नगरी ।  
 मधुमल तत् ( पु० ) मोम ।  
 मधुपुष्प ( पु० ) मधुश्रा ।  
 मधुमाखी ( स्त्री० ) शहद की मक्खी ।  
 मधुमात दे० ( पु० ) रागिणी विशेष ।  
 मधुर तत् ( पु० ) मीठा, सुमिष्ट ।—ता ( स्त्री० )  
 मिठास ।—सा ( स्त्री० ) दास, खँगूर ।  
 मधुरी दे० ( स्त्री० ) मीठी, रसीली ।  
 मधुकरि, मधूकरी तत् ( स्त्री० ) ब्राह्मचारियों की  
 भिन्ना, वृत्ति विशेष, मधुकर की वृत्ति ।  
 मधुव्रत ( पु० ) भौरा, भ्रमर ।  
 मध्य तत् ( वि० ) अन्तराल, बीच, मॉक, मझार ।  
 —भाग ( पु० ) मध्यस्थान, बीचो बीच ।—  
 दिवस ( पु० ) मध्याह्न, दोपहर ।—देश  
 ( पु० ) मध्य का देश, बीच का देश ।—लोक

( पु० ) मनुष्य लोक, मर्त्यलोक, पृथिवी ।—वर्ती  
 ( स्त्री० ) नचवैया, विचवई ।—स्थ ( पु० )  
 बीचवाला, निर्णय कर्ता ।—स्थल ( पु० ) कदि,  
 कमर, बीच का स्थान ।  
 मध्यम तत् ( पु० ) स्वर विशेष, राग विशेष, उप-  
 पत्ति विशेष, मध्य देश, मद्रों की सामयिक संज्ञा,  
 मध्य में उत्पन्न ।—पाण्डव ( पु० ) अर्जुन, धन-  
 अय, सत्यसाची ।  
 मध्यमा तत् ( स्त्री० ) द्दष्टजस्का नारी, श्रृंगुलि  
 विशेष, नायिका विशेष यथा :—दोहा ।—  
 “म्रिय सों हित तैं हित करें, अनहित कीने मान ।  
 ताहि मध्यमा कहत हैं, कवि मतिराम सुजान ॥  
 —रसजान ।  
 मध्याह्न तत् ( पु० ) दिन का मध्य, दोपहर ।  
 मन तत् ( पु० ) चित्त, हृदय । ( दे० ) परिमाण  
 विशेष, चालीस सेर की तौल ।—का दे०  
 ( पु० ) जपमाला की गुरिया, मणियाँ, गले की  
 हड्डी ।—कामना तत् ( स्त्री० ) अभिलाष,  
 इच्छा, मनोरथ ।—मारि ( पु० ) उदास, मुस्त,  
 चिन्तायुक्त ।  
 मनई दे० ( स्त्री० ) मनुष्य, नर । [ बान्, समर्थ ।  
 मनगड़ा दे० ( वि० ) बली, पराक्रम, धलवाला, यल  
 मनखरा दे० ( पु० ) मनफटा चित्त फटा ।  
 मनघटा दे० ( पु० ) क्षुप की जगत्, चौरा ।  
 मनचला दे० ( वि० ) उल्लाही, साहसी, रसिक ।  
 मनचोर ( वि० ) दिल चुराने वाला, दिल लुभानेवाला ।  
 मनत दे० ( पु० ) मनीती, स्वीकार, मानना ।  
 मनन तत् ( पु० ) चिन्तन, स्मरण, ध्यान, जानी हुई  
 बात का स्मरण करना ।  
 मननशक्ति ( स्त्री० ) विचारने की शक्ति ।  
 मनमाना ( वि० ) मनचीता, मनचाहा ।  
 मनभावन दे० ( वि० ) सुन्दर, सुहावना, मनोहर ।  
 मनमथ तत् ( पु० ) मन्मथ, कामदेव, मदन ।  
 मनमुटाव दे० ( पु० ) अनयन, विरसता । [ मनोज्ञ ।  
 मनमोहन तत् ( वि० ) मनभावन, मनोहर, सुन्दर,  
 मनमौज दे० ( पु० ) उच्छृङ्खलता, यथेच्छाचारिता ।  
 मनसा दे० ( स्त्री० ) इच्छा, अभिलाष, मनोरथ, मन  
 करके, मन के द्वारा, राय, सम्मति ।



मरियल दे० ( वि० ) दुर्बल, दुबटा, पतला, निर्बल ।  
मरी दे० ( स्त्री० ) मरुतु रोग, संक्रामक रोग, मरक,  
महामारी ।

मरीचि तत्त्वं ( स्त्री० ) किरण, राशी, छत्रसरेण का  
परिमाण । ( पु० ) ब्रह्मा के पुत्र, मुनि विशेष, ये  
सप्तर्षि में एक हैं ।—माला ( स्त्री० ) सूर्य  
आदि का किरणसमूह, दीप्ति समुदाय ।—माली  
( पु० ) सूर्य, चन्द्र । [ में जल प्रलय ।

मरीचिका तत्त्वं ( स्त्री० ) मृगवृष्णा, सूर्य की किरणों  
मय तत्त्वं ( पु० ) निर्जल देश, जल रहित देश विशेष,  
मारवाड़ । [ सुगन्धित होते हैं ।

मरग्रा दे० ( पु० ) एक पौधे का नाम, जिस के पत्ते  
मरुतु तत्त्वं ( पु० ) वायु, उन्माद वायु ।—पर्क  
आकाश, अन्तरिक्ष ।—पय ( पु० ) भाकाश,  
गगन, अन्तरिक्ष ।—पुत्र ( पु० ) भीमसेन,  
हनुमान ।—फज ( पु० ) घनोपल, ओला ।—  
सख ( पु० ) देवराज, इन्द्र, अग्नि, अनन्त ।

मरुभूमि तत्त्वं ( स्त्री० ) निर्जल देश, वृष्ट जला  
वृष्णादि शून्य भूमि या देश, शुष्क देश ।

मरोड़ दे० ( स्त्री० ) मड़ोड़, पेट, बल, पेट का दर्द ।

मरुस्थल ( पु० ) मरु भूमि ।

मरोड़ी दे० ( स्त्री० ) पेटन ।

मरीलि ( पु० ) मगर, नरक ।

मरोह दे० ( पु० ) छोह, स्नेह, प्रेम, प्यार, दुलार ।

मर्कचा दे० ( पु० ) बलेंडी, खजरा ।

मर्कट तत्त्वं ( पु० ) पानर, कवि, कीश ।

मर्कटो तत्त्वं ( स्त्री० ) घानरी । [ बाँक, माँह ।

मकर ( पु० ) अष्टराज नामक वृष्ट विशेष । ( स्त्री० )

मर्त्य तत्त्वं ( पु० ) मरणधर्मा, मनुष्य, मर्द, मानव,  
मनुज ।—लोक ( पु० ) मनुष्य लोक, मरने का  
लोक, मृत्यु लोक, भूमण्डल ।

मर्दक तत्त्वं ( पु० ) पवार नामक पौधा । ( वि० )  
मर्दन करने वाला, मलने वाला, मीसने वाला ।

मर्दन तत्त्वं ( पु० ) गात्रमर्दन, अङ्गधर्षी, मलन, रगड़न ।

मर्दन तत्त्वं ( पु० ) वाय विशेष, पहेड़ ।

मर्दित तत्त्वं ( वि० ) चूर्णित, मला हुआ ।

मर्दनिया दे० ( पु० ) नीकर, सेवक, शरीर में तेज  
लगाने की नीकरी करके वासा ।

मर्म तत्त्वं ( पु० ) मरम, रहस्य, भेद, अभिप्राय,  
आशय जीवन स्थान ।—ज्ञ ( वि० ) मर्मवेत्ता,  
रहस्यज्ञ, तात्पर्यज्ञाता ।—वेत्ता ( वि० ) मर्मज्ञ,  
तात्पर्य ज्ञाता । [ पत्ते का शब्द ।

मर्मर तत्त्वं ( पु० ) शब्द विशेष, ध्वनि विशेष, सूखे  
मर्मरौक ( पु० ) दीन, दारिद्र्य, दुःखिया, गरीब ।

मर्मा ( पु० ) भेदी, भेद जानने वाला ।

मर्यादा तत्त्वं ( स्त्री० ) मान, पत, प्रतिष्ठा, सीमा, देश ।

मर्यादिक तत्त्वं ( पु० ) मानी, सम्मानी ।

मर्य ( पु० ) चमा, शान्ति, वर्दारित ।

मर्यण तत्त्वं ( पु० ) तितिक्षा, चमा, सहन, शान्ति ।

मल तत्त्वं ( पु० ) मैल, विषा, पाप, किट्ट, बात, पित्त,  
कफ आदि ।—मल ( पु० ) वृष्ट विशेष, एक प्रकार

का सूती धारीक कपड़ा ।—मास ( पु० ) अधिक

मास, अधिक मास, लौंढ, सुसोत्तम महीना ।

—राशि ( पु० ) कूड़े का ढेर ।

मलफना दे० ( कि० ) मटकना, नष्ट हो चला, मटक

कर चला ।

मलङ्गी, मलंगी दे० ( पु० ) जाति विशेष, जो नोन

बनाने का काम करती है ।

मलत दे० ( वि० ) मलता, घिसा, सिखपट ।

मलन दे० ( पु० ) रगड़न, रगड़न, मर्दन ।

मलना दे० ( कि० ) मीजना, घसना, रगड़ना, मर्दन

करना, रगड़ कर साफ करना ।

मलवा दे० ( पु० ) मख, फूँहा, मैल ।

मलमेट दे० ( पु० ) शमाद, सत्यानाश, नाश, विध्वंस ।

मलय तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विशेष, दक्षिणार्ध, चन्द्र-

वाहि, देश विशेष, वपद्वीप विशेष ।—ज ( पु० )

श्रीखण्ड, चन्दन ।—पवन ( पु० ) सुगन्ध वायु ।

मलयी तत्त्वं ( स्त्री० ) पदमाक, विवृता लता विशेष ।

—गिरि ( पु० ) पहाड़ जिस पर चन्दन उपज

होता है, मलयाचल ।

मलवाई दे० ( स्त्री० ) मलने की मजूरी ।

मलाई दे० ( स्त्री० ) साढ़ी, दूध का सार ।

मलाना दे० ( कि० ) मलवाना, मर्दन कराना, घिसाना ।

मलार दे० ( स्त्री० ) रागिनी विशेष ।

मलिन तत्त्वं ( वि० ) मैला, घुँघला, अस्वच्छ, साफ

नहीं, उदास, कृष्णवर्ण, निव्व नैमित्तिक क्रिया

भाष् दे० ( पु० ) वाष्, यफारा, घुषाँ, धूम ।

भाफना दे० ( कि० ) अटकल लगाना, झूतना, अनुमान

ले किसी के भीतरी हाल का पता लगाना ।

भाभी दे० ( स्त्री० ) भौजाई, बड़े भाई की स्त्री ।

भाँवर दे० ( स्त्री० ) फेरा, सप्तपदी । विवाह के समय

घरमू का सात बार भँवना के चारों ओर फिरना ।

भामिन दे० ( स्त्री० ) क्रोधी, क्रोध करने वाला ।

भामिनी तत्त्वं ( स्त्री० ) स्त्री, लुगाई, तरुणी, कुपित

स्त्री ।—विलास ( पु० ) अगलाय पवित्रराज

कृत काव्य का एक ग्रन्थ ।

भायप दे० ( पु० ) भाईपन, भाईचारा, धनसाहच ।

भाद तत्त्वं ( पु० ) मुख्य, शोका, काम-सन्पादन करने

का अधिकार, आठ हजार तोला परिमित पस्तु ।

भारत तत्त्वं ( पु० ) ग्रन्थ विशेष, महाभारत, भरत

पुत्र, नट, अग्नि ।—वर्ष ( पु० ) जम्बू द्वीप के

नव वर्ष के अन्तर्गत वर्ष विशेष, हिन्दुस्तान ।

—वर्षीय ( पु० ) भारतवर्षवासी, भारतवर्ष में

रहने वाला ।

भारती तत्त्वं ( स्त्री० ) वाक्य, वचन, बोली, सरस्वती,

परी विशेष, भाई परी, काव्य की एक युक्ति ।

भारतीय तत्त्वं ( वि० ) महाभारत उक्त, महाभारत

कथित, महाभारत सम्पन्नी, भारतवर्षीय, भारत-

वर्ष सम्बन्धीय, हिन्दुस्थानी, हिन्दुस्थान का ।

भारद्वाज तत्त्वं ( पु० ) श्रोत्राचार्य, मुनि विशेष,

धनस्य मुनि, महल भद्र । [वाला, भागवतकर्ता ]

भारवाहक तत्त्वं ( वि० ) मोटिया, कहार, भार ढोने

भारवि तत्त्वं ( पु० ) संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, इनका

कनाया हुआ किरातार्जुनीय नामक काव्य प्रसिद्ध

है । ये कालिदास के समकालीन माने जाते हैं ।

इसके प्रमाण में एक शिल्ला खोज दिया जाता

है । जो ६३४ ई० में खिटा गया था । उस

शिल्ला में खुदे हुए पत्र से यह बात सिद्ध होती है ।

पहिलों का अनुमान है कि ये चौथी सदी में उत्पन्न

हुए थे ।

भारा दे० ( पु० ) बोक, मोट, भार ।

भारी दे० ( वि० ) गुरु, गहना, वस्त्र, मँगा, मोटा ।

भायारी दे० ( पु० ) मैयापता, बड़ेपन, भाईचारा ।

भार्या तत्त्वं ( स्त्री० ) स्त्री, पत्नी, जाया ।

भार्यातिक्रम तत्त्वं ( पु० ) स्त्रीत्याग-स्त्रीनाश, पर-  
स्त्रीगमन । [नोक ।

भाज तत्त्वं ( पु० ) लडाव, मस्तक । ( २० ) भाजे की

भाजा दे० ( पु० ) यहाँ, अस्त्र विशेष, तारा ।

भाजू दे० ( पु० ) रीझ, मरलूक ।

भाजित दे० ( पु० ) यहाँ चलाते वाला ।

भाव तत्त्वं ( पु० ) अभिप्राय, चेष्टा, सत्ता, स्वभाव,

जन्म, क्रिया, लीला, पदार्थ, विभूति, धातवर्ष,

मेनि, उपदेश, संसार, नवग्रहों की द्वाय चेष्टा

कुण्डली के १२ घर ( कि० ) भावे, अच्छे लो,

प्रिय लो ।

भाषई तद् ( स्त्री० ) होनहार, भवितव्यता भविष्य ।

भाषक तत्त्वं ( पु० ) भाष, मनोविज्ञान । ( पु० )

चिन्ताकारक, सोचने वाला, सत्ताधन ।

भावज्ञ दे० ( स्त्री० ) भोजाई, बड़े भाई की स्त्री,

भाभी ।

[ रहस्यवेत्ता ।

भावज्ञ तत्त्वं ( वि० ) भावज्ञाता, समज्ञाता, समझ,

भावता दे० ( वि० ) प्रिय, चाहीता, अभिलषित,

हँसित, हट, प्रिय, मनोहर, जो चाहा जाय ।

भावना तत्त्वं ( कि० ) चिन्ता, ध्यान, पर्यालोचना ।

भाववाचक दे० ( पु० ) संज्ञा शब्द विशेष, जो कि

वस्तु का धर्म गुण बतलाता है ।

भावह दे० ( स्त्री० ) छोटे भाई की स्त्री ।

भाषान्तर तत्त्वं ( पु० ) प्रकारान्तर, अन्य अभिप्राय,

भिन्न अभिप्राय, दूसरे प्रकार ।

भावार्थ तत्त्वं ( पु० ) अभिप्राय, तात्पर्य ।

भाविक तद् ( वि० ) भावुक, चिन्ताशील, अभिप्रायज्ञ ।

भाषित तत्त्वं ( वि० ) चिन्तित, विचारित, सोचा

हुँचा, विचारा हुआ ।

भावी तत्त्वं ( वि० ) भविष्यत्काल, आगामी, उत्तर

काल, होनहार, भवितव्य ।

भावुक तत्त्वं ( पु० ) महल, कल्याण, कुशल वेम ।

भावे दे० ( श० ) खेल, विचार में, मन में ।

भाव्य तत्त्वं ( वि० ) भवितव्य, भावनीय, चिन्तनीय,

भावी, होनहार । [ वाग्देवता, वाद्यो ।

भाषा तत्त्वं ( स्त्री० ) वाक्य, कथा, वचन, बोली,

भाषित तत्त्वं ( वि० ) कथित, उक्त । ( पु० ) वचन,

बोली, भाषा ।

भाषी तत्त्वं ( वि० ) बादी, वक्ता, कथक, कहने वाला ।  
भाष्य तत्त्वं ( पु० ) टीका, टिप्पणी, सूत्रार्थ, सूत्र विव-  
रण ग्रन्थ, सूत्रार्थ का विशद रूप से वर्णन करने  
वाला ग्रन्थ, विस्तृत टीका ।—कार ( पु० ) महा-  
भाष्यकर्त्ता मुनि विशेष, पतञ्जलि । ( वि० ) भाष्य-  
कर्त्ता, भाष्य बनाने वाला ।

भासना दे० ( क्रि० ) विदित होना, मालूम होना,  
ज्ञात होना, प्रकट होना, प्रकाशित होना ।

भासान्त तत्त्वं ( पु० ) सूर्य, चन्द्र पक्षी विशेष,  
नक्षत्र । ( वि० ) मनोहर, सुहावना, रमणीय ।

भासुर तत्त्वं ( वि० ) दीप्तिमान्, दीप्तिमान् ।

भास्कर तत्त्वं ( पु० ) सूर्य, अग्नि, रवि ।

भास्कराचार्य तत्त्वं ( वि० ) प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् और  
गणितज्ञ, इनके पिता का नाम महेश आचार्य या  
महेश देवज्ञ था । ये दक्षिण देश के सहा नामक  
पर्वत के समीपवर्ती विजिडपिड नामक गाँव में  
१०३६ शके १११४ ई० में उत्पन्न हुए थे ।  
इन्होंने ३९ वर्ष की अवस्था में अपने विख्यात  
सिद्धान्तशिरोमणि नामक ग्रन्थ की रचना की ।  
इस ग्रन्थ के चार खण्ड हैं, १ लीलावती या  
पाटीगणित, २ बीजगणित, ३ ब्रह्मगणिताध्याय  
४ गोलाध्याय । अन्तिम दोनों ग्रन्थ ज्योतिष के  
ग्रन्थ हैं । इनके पुत्र का नाम खड्गभीर और कन्या  
का नाम लीलावती था । कहते हैं कि इन्होंने अपनी  
प्रिय कन्या के नाम से अपने ग्रन्थ का पहला भाग  
पनाया था ।

भास्करानन्द स्वामी तत्त्वं ( पु० ) प्रसिद्ध संन्यासी,  
इनका जन्म १८३३ ई० के आरियन् शुद्ध सप्तमी  
को कागपुर जिले के मँपेलाळपुर गाँव में हुआ था,  
ये बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं । इन्होंने १८०१ ई० में  
अपनी लीला संवरण की । [ स्वच्छ, उज्ज्वल ।

भास्वर तत्त्वं ( वि० ) दीप्ति युक्त, तेजस्वी, प्रतापी,  
भिक्षा तत्त्वं ( स्त्री० ) भिक्षण, याचन, चाह, चाहना,  
माँगना, याचना, याक्षा, सेवा, नौकरी ।—जीवी  
( वि० ) याचित वस्तु द्वारा जीने वाला, भिक्षुक,  
भक्षारी ।—टन ( पु० ) [ भिक्षा + टन ]  
भिक्षार्थ गमन, भिक्षा के लिये जाना, भीख माँगने  
के लिये धूमना ।

भिन्न तत्त्वं ( पु० ) चतुर्थाश्रमी, संन्यासी, परिव्राजक,  
बौद्ध संन्यासी, याचक, भिक्षारी ।

भिन्नक तत्त्वं ( पु० ) भिन्नोपजीवी, भीख से जीने वाला,  
याचक, अर्थी, भीख माँगने वाला, भिक्षारी ।

भिखारी दे० ( वि० ) खोलहा, शून्य, रिक्त ।

भिखारी दे० ( पु० ) याचक, माँगता, भीख माँगने  
वाला, भिक्षुक । [ सजल करना ।

भिगाना दे० ( क्रि० ) धाँद करना, घोड़ा करना,

भिगोना दे० ( क्रि० ) देखो भिगाना । [ भिगाना ।

भिजाना दे० ( क्रि० ) घाट करना, ओढ़ा करना,

भिडनी दे० ( स्त्री० ) भिडना, भेंटी ।

भिटाई दे० ( स्त्री० ) वह द्रव्य जो भाई, पिता, चाचा,  
अपनी कन्या, बहिन, भतीजी दुष्टा आदि को  
मिलने के समय देते हैं ।

भिड़ना दे० ( क्रि० ) मिलना, सटना, सट जाना,  
लड़ना, मुटभेद होना, सामना करना ।

भिड़ाना दे० ( क्रि० ) लड़ाना, लड़ाई लगाना, झगड़ा  
कराना, झगड़ा लगा देना ।

भिड़ ( स्त्री० ) रमतरोई, शाक विशेष ।

भिंडी दे० ( स्त्री० ) तारकारी विशेष ।

भित्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) दीवार, भीति, जड़, मूल ।

भिनकना दे० ( क्रि० ) भिनभिन शब्द करना, मस्खिलों  
का बैठना, घिनाना ।

भिनभिनाना दे० ( क्रि० ) घिनाना, भिनकना ।

भिनुसार दे० ( पु० ) देखो भिसार ।

भिन्न तत्त्वं ( वि० ) [ भिद + क्त ] भेद विशिष्ट, विदा-  
रित, पृथक्, भिन्न, अन्य, अतिरिक्त, चत रोग  
विशेष, अतीत ।—गुणान ( पु० ) अद्भुत विशेष,  
न्यून अद्भुत की वृद्धि करना ।

भिघाना दे० ( क्रि० ) सिर में चकर आना, सिर घूमना,  
सिर ठकना, नाराज़ हो जाना ।

भिन्नार्थक तत्त्वं ( वि० ) अन्य तात्पर्य, अन्य अर्थ,  
दूसरा आशय । [ भिनसार ।

भिसार दे० ( पु० ) चिहान, प्रातःकाल, सबेरा,

भिरत दे० ( क्रि० ) लड़ते हैं, मिड़ते हैं, लुटते हैं,  
युद्ध करते हैं ।

भिलाषा दे० ( पु० ) औपचि विशेष ।

भिलौजा ( स्त्री० ) भिलावे का यौज ।

भिलौजी दे० ( खी० ) भिलावे का वीज ।  
 भिल्ल तत्० ( पु० ) जाति विशेष, जंगली जाति, भील ।  
 भिपक् तत्० ( पु० ) पैय, चिकित्सक ।  
 भिपारि तत्० ( पु० ) भिषुक, भिलमंगा, मंगता ।  
 भी तत्० ( खी० ) भय, प्राप्त, डर, बाधक । ( दे० )  
 वाक्य समुदायक धर्म्यय ।  
 भील दे० ( खी० ) भिला ।  
 भीगना दे० ( कि० ) गीला होना, छोड़ा होना, भीजना ।  
 भींगा ( वि० ) छोड़ा, गीला ।  
 भीखना दे० ( कि० ) निचोड़ना, दवाना ।  
 भीजना दे० ( कि० ) भीतना, भीतना ।  
 भीजा दे० ( वि० ) भीगा, गीला, छोड़ा ।  
 भीटा दे० ( पु० ) खंडहर, गरीब हुई भीत, पुराना घर, जैसी क्षीन । [ कष्ट, आपद ।  
 भीड़ दे० ( खी० ) समुदाय, सङ्घ, जमावड़ा, दुख, भीड़ा दे० ( वि० ) सङ्कीर्ण, सङ्कुच, संकेत ।  
 भीत दे० ( खी० ) दीवार, भित्ति । ( वि० ) डरा हुआ, भय प्राप्त ।  
 भीतर दे० ( अ० ) अन्तर, बीच, मध्य, में ।  
 भीतरिया दे० ( अ० ) भीतर रहने वाला, रसेई बनाने वाला ।  
 भीति तत्० ( खी० ) भय, प्राप्त, डर, बाधक ।  
 भीम तत्० ( वि० ) भैरव, भीषण, भयङ्कर, भयानक, भयजनक । ( पु० ) राजा युधिष्ठिर का छोटा भाई, द्वितीय पाण्डव । पाण्डु का प्रेक्ष्य पुत्र । कुन्ती के गर्भ से और वायु के वीरस से ये उत्पन्न हुए थे । भीम और दुर्योधन दोनों परापर उमर के थे । ये दोनों एक ही दिन उत्पन्न हुए थे । भीम बड़े बलवान् थे । दुर्योधन आदि कोई इनकी परावरी नहीं कर सकता । इस कारण दुर्योधन सदा इनसे डर रहता था और भीम के मारने का प्रयत्न किया करता था । एक दिन भीम को विष खिला कर दुर्योधन ने जब में, फेंकवा दिया, भीम बहते बहते नागशोक पहुँचे और वहाँ इनकी रक्षा हुई । नागलोक से आकर भीम ने दुर्योधन का पाप युधिष्ठिर से कहा । अन्त्य पादवर्षों के साथ भीम को भी वारणावत नगर के लाङ्गागृह में जला देने की चेष्टा दुर्योधन ने की थी । दुर्योधन की चालाकी

समझ कर भीम लाङ्गागृह में आग लगाने के पहले ही कुन्ती और माद्यों के साथ पहाई से निकल गये । दुष्य राज्या में जाने के पहले ही हिदिम्बा नामक राक्षस को मार कर भीम ने उसकी पहिन हिदिम्बा को ब्याहा । हिदिम्बा के गर्भ से भीम के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम घटोत्कच था । द्रौपदी की प्राप्ति के पश्चात् युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ नगर में आकर राजसूय यज्ञ करना प्रारम्भ किया । कृष्ण और अर्जुन के साथ मगध राज्य में जाकर भीम ने जरासन्ध को मार डाला था । कपट रूप में युधिष्ठिर को हरा कर दुर्योधन ने द्रौपदी का अपमान किया था । समा के बीच में ही भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि इसका बदला चुकाने के लिये मैं माद्यों के साथ दुर्योधन को मार डालूँगा और दुःशासन के हृदय का रुधिर पीऊँगा, तथा दुर्योधन का जहा तोड़ डालूँगा । कुरुप्रेत के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी । पादवर्षों के महाप्रस्थान के समय द्रौपदी, सहदेव, नकुल और अर्जुन के पतन के अनन्तर भीमसेन ने भूमि में गिर कर प्राण त्याग किया था । युधिष्ठिर ने उस समय कहा था । कि तुम दूसरों को न देकर स्वयं ला जाते थे और अपने सामने दूसरे को खलयाली नहीं समझते थे इसी कारण तुम्हें यहाँ गिरना पड़ा है ।  
 भीमसेन दे० ( खी० ) सुगन्ध द्रव्य विशेष, एक प्रकार का कपूर, एक प्रकार की नाम ।  
 भीरु तत्० ( वि० ) भयशील, डरने वाला ।  
 भील तत्० ( पु० ) एक पहाड़ी जाति का नाम ।  
 भीषण तत्० ( वि० ) भयङ्कर, भयानक, भैरव, घोर, भयजनक, भयावह । ( पु० ) सेहुँद वृक्ष, अटकटैया, बाज पची ।  
 भीषा तत्० ( स्त्री० ) प्राप्त, भयङ्करता, भय ।  
 भीष्म तत्० ( पु० ) भयानक, भयङ्कर । ( पु० ) गाँधेय, शान्तनु राजा का पुत्र, ये गाँधेय के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । इन्होंने पिता की सुल लाजसा पूर्ण करने के लिये जीवन पर्यन्त महाधर्म रहने और राज्य बचाने की प्रतिज्ञा की थी ।  
 भीष्मक तत्० ( पु० ) विदर्भ राज्य का राजा, भीष्मपुत्र की पटरानी स्तमथी इन्हीं की पुत्री थी ।

भीष्मपञ्चक तत् ( पु० ) घट विशेष, कार्तिक शुक्ल  
 पञ्चादशी से पण्चिमा तक का घट ।  
 भुञ्जाल तत् ( पु० ) भूपात्र, राजा, नरपति ।  
 भुक्त तत् ( वि० ) भक्षित, खादित, खा चुका, भोगा  
 गया — भोगी ( वि० ) पुनः भोगकर्ता, विशेष  
 रूप से अनुभवी ।  
 भुगतता दे० ( क्रि० ) भोगना, सहना, कर्मों का फल  
 भोगना, कष्ट उठाना, कष्ट सहना ।  
 भुगतान दे० ( पु० ) चुकान, पाई पाई चुका देना ।  
 भुगताना दे० ( क्रि० ) दण्ड देना, भोग करवाना,  
 सहाना, सहवाना, पूरा कर देना, अधिक निकलते  
 हुए रुपये चुका देना ।  
 भुग्मा दे० ( वि० ) सीधा, भोला, मोंद ।  
 भुद्ग तत् ( वि० ) कुटिल, वक्र, कुयड़ा, देहा, तिरछा ।  
 भुद्य दे० ( वि० ) अनगढ़, अनपढ़, मूर्ख, अज्ञान,  
 अनभिज्ञ, अनारी, मूर्ख, भद्दा ।  
 भुज तत् ( पु० ) भुजा, बाहु ।  
 भुजङ्ग, भुजङ्गम तत् ( पु० ) सर्प, साँप, अहि ।  
 भुजवन्द दे० ( पु० ) वाजपन्द, अङ्गद, विजायद ।  
 भुजा तत् ( स्त्री० ) बाँह, भुज, बाहु ।  
 भुजिया दे० ( वि० ) भूँजा हुआ, उसना हुआ, बेसन  
 का सेव, चायल की एक जाति ।  
 भुर्जा दे० ( पु० ) भदभूँजा ।  
 भुष्टा दे० ( पु० ) बाल, मकई की फली, जनहार ।  
 भुरडली, भुंडली दे० ( स्त्री० ) कीट विशेष, एक  
 कीट का नाम ।  
 भुतना दे० ( पु० ) भोंकल, छोटा भूत, प्रेत, पिशाच ।  
 भुतहा दे० ( वि० ) फूहड़, भूत के समान ।  
 भुनना दे० ( क्रि० ) भूँजना, भर्जन करना, खेंकना ।  
 भुनपाना दे० ( क्रि० ) भूँजने का काम अन्य से करवाना ।  
 भुनार्ह ( स्त्री० ) भूँजने का काम या मजदूरी ।  
 भुनाना दे० ( क्रि० ) भँजाना, तुड़वाना, [का चबेना ।  
 भुरभुरा दे० ( पु० ) कुरकुरा, कुकुरा, एक प्रकार  
 भुरभुराना दे० ( क्रि० ) छोटाना, छिड़कना, कैलाना ।  
 भुलकाड़ ( वि० ) भूलने वाला ।  
 भुलसाना दे० ( क्रि० ) जलना, भुलसाना ।  
 भुलाना दे० ( क्रि० ) भुलवाना, फुसलाना, धोखा  
 देना, छलना करना, प्रतारण करना ।

भुलाधा देना दे० ( वा० ) भुलाना, भुलवाना, फुस-  
 लाना, चढकाना ।  
 भुव तत् ( पु० ) स्वर्ग, आकाश, अग्न्यर, पृथिवी,  
 भूमण्डल । — पाल तत् ( पु० ) राजा, पृथिवी  
 का पालन, करने वाला भूपति ।  
 भुवङ्ग तद् ( पु० ) भुजङ्ग, साँप, सर्प ।  
 भुवन तत् ( पु० ) जगत्, लोक, प्राणी, जीव ।  
 भुस दे० ( स्त्री० ) तुप, चोकर, छिलका, अनाज के  
 ढंठल का चुरा । [ जिसमें भूसा रखा जाता है ।  
 भुसेरा दे० ( स्त्री० ) भूसा रखने का स्थान, वह घर  
 भू तत् ( स्त्री० ) भूमि, धरती, पृथ्वी ।  
 भूडोल दे० ( पु० ) भूचाल, भूकम्प ।  
 भूइसी तद् ( स्त्री० ) देखो, " भूरसी " ।  
 भूँजा दे० ( पु० ) भदभूँजा, भुर्जी ।  
 भूकना दे० ( क्रि० ) भौं भौं करना, कुत्ते का शब्द ।  
 भूकम्प तत् ( पु० ) भूचाल, भूडोल ।  
 भूख दे० ( स्त्री० ) भोजन करने की इच्छा, खाने का  
 अभिलाष, शुधा, आहाररेच्छा, वुमुचा ।  
 भूखा दे० ( वि० ) वुमुचित, शुधातुर ।  
 भूगर्भ तत् ( वि० ) भूमि का मध्य, भूमि का अन्धन्तर ।  
 भूगोल तत् ( पु० ) भुवन कीप, महीमण्डल, पृथिवी  
 की आकृति के विवरण करने वाला शास्त्र ।  
 भूचक्र तत् ( पु० ) विषुवत्, रेखा, मध्य रेखा,  
 भूमण्डल ।  
 भूचर तत् ( पु० ) स्थलचर, मनुष्य आदि ।  
 भूचाल तद् ( पु० ) भूकम्प, भूडोल, भूडोल,  
 भूमिकम्प ।  
 भूइ दे० ( स्त्री० ) बालुकामय भूमि, रेतिली भूमि ।  
 भूडल दे० ( पु० ) अन्नक, अन्नरत्न ।  
 भूडोल तद् ( पु० ) भूचाल ।  
 भुराडपेरा, भुंडपेरा दे० ( पु० ) अशकुन, अपशकुन ।  
 भूत तत् ( पु० ) काल विशेष, अतीत काल, योनि  
 विशेष, पिशाच आदि । अधोमुख या ऊर्ध्वमुख  
 पिशाच । रुद्रानुचर, बालग्रह, कृष्ण चतुर्दशी ।  
 — काल ( पु० ) अतीत काल ।  
 भूतनी तद् ( स्त्री० ) भूत की स्त्री, प्रेतनी ।  
 भूतल तत् ( पु० ) पृथिवी तल, धरती, भूमि,  
 भूमण्डल ।

भूतात्मा तत्त्वं ( पु० ) जीवात्मा, देह, महा, परमेष्ठी, शिव, युद्ध, विष्णु ।  
 भूति तत्त्वं ( स्त्री० ) ऐश्वर्य, धन, महादेव के अग्रिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य, शिव का भस्म, हाथी का शृङ्गार, सम्पत्ति, जाति, श्रद्धि नामक औपधि, भस्म, राख ।  
 भूतेश तत्त्वं ( पु० ) शिव, महादेव । [रणकारी ।  
 भूदार तत्त्वं ( पु० ) शूकर, सूअर, बाराह, भूमि विद्रा-  
 भूदेव तत्त्वं ( पु० ) ब्राह्मण, द्विज, विप्र, भूसुर ।  
 भूधर तत्त्वं ( पु० ) पर्वत, गिरि, शैल, भूमि धारणकर्ता ।  
 भूप तत्त्वं ( पु० ) नृपति, राजा, भूपाल, महीपाल ।  
 भूपति ( पु० ) राजा, ऋषभ नाम की औपधि ।  
 भूपाल तत्त्वं ( पु० ) राजा, नृपति, महीपाल ।  
 भूमल दे० ( स्त्री० ) गरम राख, सूर्य किरण से तपी पूल ।  
 भूमूर्त ( पु० ) गरम धूर, उष्ण भूमि ।  
 भूभृत ( पु० ) राजा, पर्वत ।  
 भूमि तत्त्वं ( स्त्री० ) भू, पृथिवी, धरती ।—कम्प ( पु० ) भूकम्प, भूचाल ।—ज्ञा ( स्त्री० ) सीता, जानकी ।—पाल ( पु० ) महीपति, भूपाल राजा ।  
 भूमिका तत्त्वं ( स्त्री० ) आभास, रचना, प्रस्तावना, उपक्रम, ग्रन्थ रूप धारण, छद्मवेश, ग्रन्थों की पूर्वपीठिका, कथामुख, चित्त की अवस्था विशेष ।  
 भूमिया दे० ( पु० ) भूमि का देवता, उस भूमि का वाली ।  
 भूय तत्त्वं ( स्त्री० ) पुनः, फिर, बार बार । [पुनः ।  
 भूयोभूय तत्त्वं ( स्त्री० ) बार बार, फिर फिर, पुनः ।  
 भूर दे० ( स्त्री० ) दक्षिणा, मँगलोत्सव समय का दान ।  
 भूरसी, भूरसी दे० ( स्त्री० ) दक्षिणा विशेष, वस्त्र आदि में जो द्रव्य बिना सङ्कल्प के ब्राह्मणों को दिया जाता है ।  
 भूरा दे० ( पु० ) नर्य विशेष, पिङ्गल वर्ण, कपिल, कपिश । ( वि० ) पिङ्गल वर्ण का, कपिश ।  
 भूरि तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रसुर, यथेष्ट, अधिक, ढेर, बहु ।  
 —प्रेमा ( पु० ) चक्रवाक पक्षी, चक्रवा ।—भाय ( पु० ) ग्रीदह, स्वार ।—लाभः ( पु० ) बहुत प्राप्ति, अधिक लाभ ।  
 भूरिश्रवा तत्त्वं ( वि० ) कीर्तिमान्, अतिशय यशस्वी ।  
 - ( पु० ) चन्द्रवंशीय राजा सोमवत्स का पुत्र, महा-

भारत युद्ध में ये कौरवों की ओर से युद्ध करते थे ।  
 पहले अर्जुन ने इनके बाहु, काट डाले थे; वही समय सात्यकी ने तलवार से इनका सिर काट डाला था ।  
 भूकह तत्त्वं ( पु० ) घृष, पैद, रुद्र, गाढ़ ।  
 भूर्ज ( पु० ) मोत्र पत्र का पेड़ ।  
 भूर्जपत्र तत्त्वं ( पु० ) एक वृक्ष की छाल ।  
 भूल दे० ( स्त्री० ) चूक, विस्मृति, अज्ञान से अपराध, भ्रुति, गलती ।  
 भूलना दे० ( क्रि० ) विस्मरण होना, विसरना, चूकना ।  
 भूलोक ( पु० ) मृत्युलोक । [रास्ता भूला हुआ ।  
 भूला विस्तरा दे० ( वा० ) भूला भटका, मार्गभ्रष्ट, भूला भटका दे० ( वा० ) विषय, पतित, रास्ता भूलने से भटकता हुआ ।  
 भूलोक तत्त्वं ( पु० ) भयंलोक, मृत्युलोक, मनुष्यलोक ।  
 भूप दे० ( क्रि० ) भूषित करता है, सजाता है ।  
 भूपक तत्त्वं ( वि० ) भूषण कारक, अलङ्कारक, अलङ्कार करने वाला, शृङ्गार करने वाला ।  
 भूषण या भूषण तत्त्वं ( पु० ) [भूष+कृत] आभरण, अलङ्कार, हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, वीर रस के एक प्रसिद्ध कवि । ( वि० ) भूषणधारी, अलंकारकारक ।  
 भूषित तत्त्वं ( वि० ) अलंकृत, शोभित, शृङ्गारित ।  
 भूसा दे० ( पु० ) भुष, उप ।  
 भूसी दे० ( स्त्री० ) चोकर, पछोरन ।  
 भूसुर तत्त्वं ( पु० ) भूदेव, ब्राह्मण ।  
 भृकुटी तत्त्वं ( स्त्री० ) भी, भौंह, खोरी ।  
 भृगु तत्त्वं ( पु० ) नागवं, शुक्राचार्य, पवन का करारा, प्रधात, मुनि विशेष, विख्यात मुनि, पहले के समय में महादेव वादणी मूर्ति धर कर एक यज्ञ करते थे, इस यज्ञ में देव कन्या और देवाङ्गनाएँ उपस्थित थीं । देवाङ्गनाओं को देखकर प्रधात का वीर्यपात हुआ, उसको अपनी किरणों से उड़ा कर सूर्य ने अग्नि में डाल दिया, इससे भृगु अङ्गिरा और कवि ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए । इनको देख कर महादेव ने कहा कि ये हमारे पुत्र हैं । अग्नि ने कहा कि जब ये मेरे द्वारा उत्पन्न हुए हैं तब

दूसरे के पुत्र नहीं हो सकते। ग्रन्था ने कहा कि इनकी उत्पत्ति मेरे वीर्य से हुई है, अतः इनका पिता मैं ही हूँ। इसी प्रकार तीनों आपस में विवाद करने लगे। तब देवताओं ने निर्णय कर दिया। एक एक पुत्र तीनों देवताओं को दे दिये गये। भृगु महादेव को, अश्विना अग्नि को और कवि ग्रन्था को मिले।

- भृङ्ग तत् ( पु० ) अमर, शक्ति, पटपद, अंबर।  
 भृङ्गराज तत् ( पु० ) वीषा विशेष, अंगरा।  
 भृङ्गी तत् ( स्त्री० ) कीट विशेष, औरी, लखोरी।  
 ( पु० ) शिबगण्य विशेष।  
 भृति तत् ( स्त्री० ) वेतन, मजूरी, कमाई, महीना, मासिक या दैनिक वेतन।—भुक्त ( पु० ) वेतन प्राप्ति, दैनिक। [बेला, नौकर, टहलुवा।  
 भृत्य तत् ( पु० ) परिचारक, सेवक, दास, किङ्कर, भृष्ट तत् ( पु० ) भुजा हुआ, भुना हुआ, जल सेवार्थ के बिना पकाया।—भि ( स्त्री० ) भूजना।  
 भैरु तत् ( पु० ) जन्तु विशेष, मण्डूक वेंग, मेढक, दादुर। [वपहार।  
 भैंट दे० ( स्त्री० ) दर्शन, भेंट, साक्षात्कार, सौगात, भेंटना ( क्रि० ) भेंट करना, भेंट होना, मिलना, मुलाकात करना।  
 भैंटनी दे० ( स्त्री० ) वह पदार्थ जो भैंट के समय दिया जाता है, नजर।  
 भैंटी, भैंट दे० ( स्त्री० ) थोड़ा, डंठा, फल आदि के ऊपर की डंठी ( क्रि० ) मिली, संयुक्त हुई।  
 भैक ( पु० ) भैरक, दादुर।  
 भैल ( पु० ) भैष, घेघ, परिच्छिन्न, आकार, डील, स्वरूप बनाना।—धारो ( पु० ) भैष बनाने वाला।  
 भैगा दे० ( वि० ) टेढ़ा, तिरछा, घांका, बहुत टेढ़ा।  
 भैजना ( क्रि० ) पहुँचाना, पठाना।  
 भैजा ( पु० ) सिर का गुंथा।  
 भैट ( स्त्री० ) भैंट, दर्शन, डाली, सौगात।  
 भैटना ( क्रि० ) देखना, भेंट देना, मिलना।  
 भैटी ( स्त्री० ) डाल।  
 भैट्ट ( स्त्री० ) देखो भैटी।  
 भैट्ट दे० ( पु० ) मेढ़ा, भैष।  
 भैड़ा दे० ( पु० ) मेढ़ा, भैष।

- भैड़िया दे० ( पु० ) हिंस्र जन्तु विशेष, हुंकार।—  
 धसान ( वा० ) देखा देखी करना, किसी कारण न रहने पर भी केवल दूसरे करते हैं इसलिये स्वयं भी करना भैड़ियाधसान कहा जाता है।  
 भैड़ी दे० ( स्त्री० ) मेढ़ी, मेपी, गाडर।  
 भैद तत् ( पु० ) मिश्रता, दूसरे के अधिकार से हटा कर अपने अधिकार में करना, शत्रुओं के वश करने योग्य चार उपायों के अन्तर्गत तीसरा उपाय, विदारण, विवेचन, विवेक, छिपी बात, गुप्त समाचार, विच्छेद, वृथकता।  
 भैदक तत् ( वि० ) विदारक, मिश्रता तोड़ने वाला, विवेक श्रोपधि, फोड़ने वाला।  
 भैदकिया दे० ( वि० ) भैदी, छोली, पता लगाने वाला, गुप्तचर, जासूस। [मर्मज्ञ।  
 भैदी दे० ( पु० ) भैदक, चर, भीतरी बात जानने वाला, भैद दे० ( पु० ) भैदी, भैद रखने वाला, मर्म जानने वाला।  
 भैद्य तत् ( पु० ) भैदनीय, भैद के योग्य।  
 भैना दे० ( स्त्री० ) बहिन, भगिनी।  
 भैर तत् ( स्त्री० ) भैरी, वाद्य विशेष।  
 भैरी तत् ( स्त्री० ) वाद्य यन्त्र विशेष, हुंदाभी, मुनादी, हुगहुगिया, नरसिंहा, गुरही, पटह, मगारा।  
 भैला दे० ( पु० ) वीषा विशेष, भिलावा।  
 भैलो दे० ( स्त्री० ) गुड़ का लड्डू।  
 भैष दे० ( पु० ) स्वभाव, प्रकृति, भैद, मर्म, भीतरी बातें, भंग, सबाह, सुदाई, फूट।  
 भैष तत् ( पु० ) वेश, रूप, आकार, आकृति, पूर्व पुरुषों का वासस्थान।  
 भैषज तत् ( पु० ) औषध, दवा।  
 भैस दे० ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध पशु विशेष, महिषी।  
 भैसा दे० ( पु० ) महिष। [वट्ट रोग।  
 भैसिया दाद या भैसा दाद दे० ( पु० ) रोग विशेष, भैचक दे० ( स्त्री० ) आश्चर्यित, अचम्बित।  
 भैमी तत् ( स्त्री० ) माघ शुक्ल पक्षादरी, राजा भीम की पुत्री, दमयन्ती, नल की स्त्री।  
 भैया दे० ( पु० ) भाई, भ्राता।  
 भैयापा दे० ( पु० ) भयारो, बन्धुत्व, भाईचारा।  
 भैरव तत् ( पु० ) शङ्कर, महादेव, देव विशेष, भयानक रस, बाद विशेष, राग विशेष, एक रोग का

नाम, शिवजी के गण का अधिपति । ( वि० )  
 भयानक, भयङ्कर, भीषण, कराब ।  
 भैरवी तत्त्वं ( स्त्री० ) शय्यभूतिन, अवभूत आश्रम में  
 गई स्त्री, रागिनी विशेष, भैरव राग की स्त्री ।—चक्र  
 ( पु० ) वामाधारियों का भयपानार्थ चक्र विशेष ।  
 भैरों तद् ( पु० ) भैरव ।  
 भैरुं दे० ( स्त्री० ) अनुम वधू, छोटे भाई की स्त्री ।  
 भौकड़ा दे० ( वि० ) बड़ा, मोटा, स्थूल, विराट ।  
 भौकना दे० ( क्रि० ) झूलना, डोंकना, चुमाना, भौं  
 भौं करना ।  
 भौकस दे० ( पु० ) भोक्ता, भूतहा, डोनहा ।  
 भौघरा दे० ( पु० ) तलघरा, तलकोठा, नीचे का घर ।  
 भौड़ा दे० ( वि० ) कुट्टीक, कुसित रूप वाला ।  
 भौघरा दे० ( वि० ) भोघरा, कुण्डित, कुसित, विना  
 धार का ।  
 भौदू दे० ( पु० ) भूत, भेयङ्कर, सीधा, भोका, धन-  
 ज्ञान, भनमिश्र । [ बाजा ।  
 भौपू दे० ( पु० ) नासिंघा, सींग, एक प्रकार का  
 भौई दे० ( स्त्री० ) कहार, धीमर, पाखंडी ठोने वाला ।  
 भौकस दे० ( पु० ) मन्त्र यन्त्र करने वाला, भोक्ता,  
 डोनहा ।  
 भौकत्र्य ( वि० ) भोजनीय, खाने योग्य ।  
 भौका तत्त्वं ( वि० ) भोग करने वाला, भोगी, खाऊ,  
 अधिक खवैया । [ मालिक ।  
 भौकृ ( वि० ) खानेवाला, ( पु० ) विष्णु, भर्ता,  
 भोग तत्त्वं ( पु० ) सुख दुःख का अनुभव, जो घादि  
 का उपभोग, सौंर का शरीर, पालन, भोजन, तिर-  
 स्कार, अपमान, देवता का निवेद्य, गंगा की उस  
 धार का नाम जो पाताल में है ।—राग ( पु० )  
 देवता का सेवन पूजन ।  
 भोगना दे० ( क्रि० ) सुख दुःख उठाना, कर्म का फल  
 भोगना, सुख दुःख सहना ।  
 भोगा दे० ( पु० ) छल, कपट, धोखा ।—घटी तत्त्वं  
 ( स्त्री० ) नाग नगरी ।  
 भोगी तत्त्वं ( वि० ) विद्यासी, ऐश्वर्यवान्, व्यसनी,  
 दुराचारी, भानन्दी, सुखी, प्रारब्धी । [ फल ।  
 भोग्य तत्त्वं ( वि० ) भोगने योग्य, सुख दुःख, कर्म  
 भोज दे० ( पु० ) जेनार, बाहार ।

भोजदेव तत्त्वं ( पु० ) राजा विशेष, ये मालया के  
 अन्तर्गत धारा नगरी के राजा थे । ये ११ वीं  
 स्तोत्रीय शताब्दी में उत्पन्न हुए थे । मे केवल राजा  
 ही नहीं थे, किन्तु संस्कृत साहित्य का ज्ञान इन  
 का आगम था । सरस्वती कण्ठामरण, भोज चम्पू  
 आदि इनके ग्रन्थों का संस्कृतज्ञों में बड़ा धावर  
 है । स्मृति शास्त्र के भी ये बड़े भारी पण्डित थे ।  
 इन्होंने मनु-संहिता की एक टीका बनाई थी ।  
 इन्हींके समय में भारत में संस्कृत विद्या का  
 बड़ा प्रचार था । संस्कृत के अधिकांश साहित्य  
 ग्रन्थ इन्हींके आश्रित कवियों के बनाये हैं ।  
 भोजन तत्त्वं ( पु० ) बाहार, खाना ।—खानी दे०  
 ( स्त्री० ) रसाईदार, जहाँ सब प्रकार के भोज्य  
 पदार्थ प्राप्त हो ।—ीय ( वि० ) भोजन के योग्य ।  
 भोजपत्र तत्त्वं ( पु० ) सूर्यपत्र, वृक्ष की छाल ।  
 भोज्य दे० ( वि० ) भोजन योग्य, खाने के योग्य ।  
 भौल दे० ( वि० ) अन्नक, उपचातु विशेष ।  
 भौता दे० ( वि० ) भोयर, कुण्डित, मुताधार ।  
 भौपा दे० ( पु० ) मन्त्र यन्त्र करने वाला, भोक्ता ।  
 भौभीरा ( पु० ) भवि विशेष, विदुष, प्रवाल, मूंगा ।  
 भौर दे० ( स्त्री० ) प्रातःकाल, सवेरा, विहान ।  
 भौला दे० ( वि० ) छलहीन, निष्कपट, सीधा, भौदू ।  
 भौं दे० ( स्त्री० ) मृकुटी, भू ।  
 भौंकना दे० ( क्रि० ) भौं भौं करना, भौंकना, विना  
 प्रयोजन बक बक करना, कुत्ते के बोलने का शब्द ।  
 भौंचाल दे० ( पु० ) मूढोल, मूकप, भूमिकप,  
 भूचाल । [ चक्र ।  
 भौर दे० ( पु० ) भंवर, आवर्त, घुमाव, पानी का  
 भौरा दे० ( पु० ) भ्रमर, भलि, पदपद, मधुप ।  
 भौरियाना दे० ( क्रि० ) घूमना, फिरना, चकर  
 काटना, भ्रमर की गति से चलना ।  
 भौरी दे० ( स्त्री० ) आवर्त छोड़े का एक दोष और  
 गुण । गले के नीचे की थोर जिस छोड़े के बाल  
 फिरे रहते हैं वह छोड़ा अर्थात् समझा जाता है ।  
 परन्तु वही बालों का आवर्त यदि किसी दूसरे  
 स्थान पर रहता है तो वह दोष समझा जाता है ।  
 यदि यह मनुष्य के मस्तक पर आगे  
 तो दो स्त्रीधन्ता योग समझा जाता



दूसरे के पुत्र नहीं हो सकते। ब्रह्मा ने कहा कि इनकी उत्पत्ति मेरे वीर्य से हुई है, अतः इनका पिता मैं ही हूँ। इसी प्रकार तीनों आपस में विवाद करने लगे। तब देवताओं ने निर्णय कर दिया। एक एक पुत्र तीनों देवताओं को दे दिये गये। भृगु महादेव को, अक्रिा अग्नि को और कवि ब्रह्मा को मिले।

भृङ्ग तत् ( पु० ) अमर, अलि, पटपद, भँवरा।

भृङ्गराज तत् ( पु० ) पौधा विशेष, भँगरा।

भृङ्गी तत् ( स्त्री० ) कीट विशेष, भौरी, लखोरी।

( पु० ) शिवगण विशेष।

भृति तत् ( स्त्री० ) वेतन, मजूरी, कमाई, महीना, मासिक या दैनिक वेतन। —भुक्त ( पु० ) वेतन प्राप्ति, पैतनिक। [बेला, नौकर, टहलवा।

भृत्य तत् ( पु० ) परिचारक, सेवक, दास, फिद्दर, भृष्ट तत् ( पु० ) भुजा हुआ, भुना हुआ, जल संयोग के दिना पकाया। —भि ( स्त्री० ) भूजना।

भेक तत् ( पु० ) जन्तु विशेष, मण्डक वैग, मेढक, दादुर। [उपहार।

भेंट दे० ( स्त्री० ) दर्शन, भेंट, साक्षात्कार, सीमांत, भेंटना ( क्रि० ) भेंट करना, भेंट होना, मिलना, मुलाकात करना।

भेंटनी दे० ( स्त्री० ) वह पदार्थ जो भेंट के समय दिया जाता है, नजर।

भेंटो, भेंट दे० ( स्त्री० ) थोड़ा, डंठा, फल आदि के ऊपर की डंठी ( क्रि० ) मिली, संयुक्त हुई।

भेक ( पु० ) मँडक, दादुर।

भेख ( पु० ) भेष, वेष, परिच्छद, आकार, डील, स्वरूप बनाना। —धारी ( पु० ) भेष बनाने वाला।

भेंगा दे० ( वि० ) टेढ़ा, तिरछा, घाँका, बहुत टेढ़ा।

भेजना ( क्रि० ) पहुँचाना, पठाना।

भेजा ( पु० ) सिर का गुंथा।

भेज ( स्त्री० ) भेंट, दर्शन, टाळी, सीमांत।

भेजना ( क्रि० ) देखना, भेंट देना, मिलना।

भेटी ( स्त्री० ) डाल।

भेठ ( स्त्री० ) देखो भेटी।

भेड़ दे० ( पु० ) मेढ़ा, भेय।

भेड़ा दे० ( पु० ) मेढ़ा, भेय।

भेड़िया दे० ( पु० ) हिंस्र जन्तु विशेष, हुँडार। — धसान ( वा० ) देखा देखी करना, कीसी कारण न रहने पर भी केवल दूसरे करते हैं इसलिये स्वयं भी करना भेड़ियाधसान कहा जाता है।

भेड़ी दे० ( स्त्री० ) मेढ़ी, भेयी, गाडर।

भेद तत् ( पु० ) भिन्नता, दूसरे के अधिकार से हटा कर अपने अधिकार में करना, शत्रुओं के वश करने योग्य चार उपायों के अन्तर्गत तीसरा उपाय, विदारण, विवेचन, विवेक, छिपी बात, गुप्त समाचार, विच्छेद, पृथक्ता।

भेदक तत् ( वि० ) विदारक, भिन्नता तोड़ने वाला, विवेक शोधक, फोड़ने वाला।

भेदकिया दे० ( वि० ) भेड़ी, खोजी, पता लगाने वाला, गुप्तचर, जासूस। [मर्मज्ञ।

भेड़ी दे० ( पु० ) भेदक, चर, भीतरी बात जानने वाला, भेद दे० ( पु० ) भेटी, भेद रखने वाला, मर्म जानने वाला।

भेद्य तत् ( पु० ) भेदनीय, भेद के योग्य।

भेना दे० ( स्त्री० ) पहिन, भगिनी।

भेर तत् ( स्त्री० ) भेरी, वाद्य विशेष।

भेरी तत् ( स्त्री० ) वाद्य यन्त्र विशेष, हुँदभी, मुनारी, डुगडुगिया, नरसिंहा, गुरही, पटह, भगारा।

भेजा दे० ( पु० ) पौधा विशेष, भिलाया।

भेली दे० ( स्त्री० ) गुद् का लड़्डू।

भेव दे० ( पु० ) स्वभाव, प्रकृति, भेद, मर्म, भीतरी बातें, भंग, सजाव, शुदाई, फूट।

भेष तत् ( पु० ) वेश, रूप, आकार, आकृति, पूर्व पुरुषों का वास्तव्य।

भेषज तत् ( पु० ) शोधक, दवा।

भेंस दे० ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध पशु विशेष, महिषी।

भेंसा दे० ( पु० ) महिष। [दुद रोग।

भेंसिया दाद या भेंसा दाद दे० ( पु० ) रोग विशेष, भेचक दे० ( स्त्री० ) आश्चर्यित, अचम्भित।

भैमी तत् ( स्त्री० ) माघ शुक्ल पक्षादशी, राजा भीम की पुत्री, दमयन्ती, मल की स्त्री।

भैया दे० ( पु० ) भाई, भ्राता।

भैयापा दे० ( पु० ) भयारो, बन्धुत्व, भाईचारा।

भैरव तत् ( पु० ) शङ्कर, महादेव, देव विशेष, भयानक रस, बाद विशेष, राग विशेष, एक रोग का

नाम, शिवजी के गण का अधिपति । ( वि० )  
मयानक, भयङ्कर, शीघ्र, कराज ।  
मैरवी तत् ( खी० ) भयपूतिन, भयभूत आश्रय में  
गई स्त्री, रागिनी विशेष, भैरव राग की स्त्री ।—चक्र  
( पु० ) यामाधारियों का मध्याध्याय चक्र विशेष ।  
मैरी तत् ( पु० ) मैर ।  
मैरु दे० ( स्त्री० ) अनुज धनु, छोटे भाई की स्त्री ।  
मोकड़ा दे० ( वि० ) बड़ा मोटा, स्पूट, चिगाड़ ।  
मोकना दे० ( कि० ) हूलना, ठोकना, धुमाना, मीं  
मीं करना ।  
मोकस दे० ( पु० ) भोक्ता, भूतहा, टोन्हा ।  
मोघरा दे० ( पु० ) तलघरा, तलकोठा, मीचे का घर ।  
मोड़ा दे० ( वि० ) कुर्चीज, कुत्तित रूप वाला ।  
मोघरा दे० ( वि० ) मोघरा, कुण्ठित, कुत्तित, बिना  
घार का ।  
मोदू दे० ( पु० ) मूले, बेवकूफ, सीधा, भोला, अम-  
बान, अनभिज्ञ । [ बाबा ।  
मोपू दे० ( पु० ) नासिंघा, सींगा, एक प्रकार का  
मोई दे० ( खी० ) कहाँ, धीमर, पालकी डोने वाला ।  
मोकस दे० ( पु० ) मन्त्र यन्त्र करने वाला, भोक्ता,  
टोन्हा ।  
मोकल्य ( वि० ) भोजनीय, खाने योग्य ।  
मोका तत् ( वि० ) भोग करने वाला, भोगी, खाऊ,  
अधिक खैर । [ मासिक ।  
मोकू ( वि० ) खानेवाला, ( पु० ) विष्णु, भर्ता,  
भोग तत् ( पु० ) सुख दुःख का अनुभव, जो आदि  
का उपभोग, सप का शरीर, पालन, भोजन, तिर-  
स्कार, उपमान, देवता का निवेद्य, गंगा की वस  
धार का नाम जो पाताल में है ।—राग ( पु० )  
देवता का सेवन पूजन ।  
भोगना दे० ( कि० ) सुख दुःख उठाना, कर्म का फल  
भोगना, सुख दुःख सहना ।  
भोगा दे० ( पु० ) छल, कपट, धोखा ।—धृती तत्  
( खी० ) नाग नगरी ।  
भोगी तत् ( वि० ) विहासी, पेय्ययवान्, व्यसनी,  
दुराचारी, आनन्दी, सुखी, पारखी । [ फल ।  
भोग्य तत् ( वि० ) भोगने योग्य, सुख दुःख, कर्म  
भोज दे० ( पु० ) भोजन, आहार ।

भोजदेव तत् ( पु० ) राजा विशेष, ये मालवा के  
अन्तर्गत धारा नगरी के राजा थे । ये ११ वीं  
सौदीय शताब्दी में हल्लज हुए थे । ये केवल राजा  
ही नहीं थे, किन्तु संस्कृत साहित्य का ज्ञान इन  
का आगच्छ था । सरस्वती कण्ठाभरण, भोज चम्पू  
आदि इनके ग्रन्थों का संस्कृतज्ञों में बड़ा आदर  
है । स्मृति शास्त्र के भी ये बड़े भारी पण्डित थे ।  
इन्होंने मनु-संहिता की एक टीका बनाई थी ।  
इन्हींके समय में भारत में संस्कृत विद्या का  
बड़ा प्रचार था । संस्कृत के अधिकांश साहित्य  
ग्रन्थ इन्हींके आश्रित कवियों के बनाये हैं ।  
भोजन तत् ( पु० ) आहार, खाना ।—खानी दे०  
( खी० ) रसोईदार, जहाँ सब प्रकार के भोज्य  
पदार्थ प्राप्त हो ।—नीय ( वि० ) भोजन के योग्य ।  
भोजपत्र तत् ( पु० ) भूजपत्र, वृक्ष की छाल ।  
भोज्य दे० ( वि० ) भोजन योग्य, खाने के योग्य ।  
भोइल दे० ( वि० ) अन्नक, उपधातु विशेष ।  
भोता दे० ( वि० ) भोयत, कुण्ठित, मुराभार ।  
भोपा दे० ( पु० ) मन्त्र यन्त्र करने वाला, भोक्ता ।  
भोमीरा ( पु० ) मणि विशेष, चिनुम, प्रवाल, मृगा ।  
भोर दे० ( खी० ) प्रातःकाल, सपेरा, पिहान ।  
भोला दे० ( वि० ) छलहीन, निष्कपट, सीधा, भोदू ।  
भौं दे० ( खी० ) भुङ्कूदी, भू ।  
भौंकना दे० ( कि० ) हँ हँ करना, भूँकना, बिना  
प्रयोजन बक बक करना, कुत्ते के भौलने का शब्द ।  
भौंचाल दे० ( पु० ) भूडोल, भूकम्प, भूमिकम्प,  
भूचाल । [ चक्र ।  
भौर दे० ( पु० ) अंबर, आवर्त, धुमाध, पानी का  
भौरा दे० ( पु० ) अमर, अलि, पदपद, मधुप ।  
भौरियाना दे० ( कि० ) घूमना, फिरना, चकर  
काटना, अमर की गति से चलना ।  
भौरी दे० ( खी० ) आवर्त घोंड़े का एक दोप धौर  
गुथ । गले के नीचे की ओर जिस घोंड़े के बाल  
फिरे रहते हैं वह घोंड़ा अच्छा समझा जाता है ।  
परन्तु वही बालों का आवर्त यदि किसी दूसरे  
स्थान पर रहता है तो यह दोप समझा जाता है ।  
यदि यह मनुष्य के मस्तक पर आगे की ओर हो  
तो दो स्त्रीहन्ता योग समझा जाता है ।

भौपना दे० ( क्र० ) हँ हा करना, भौकना ।  
 भौ दे० ( पु० ) भय, डर, शक्का, वास ।  
 भौचक दे० ( अ० ) थकसात, सहसा, अचानक ।  
 भौजाई दे० ( स्त्री० ) भाभी, बड़े भाई की स्त्री ।  
 भौतिक तत्त्वं ( वि० ) भूत सम्बन्धी, भूत का,  
 अदृश्य ।  
 भौना दे० ( क्रि० ) भ्रमण करना, फिरना, घूमना ।  
 भौनास दे० ( पु० ) हाथी बांधने का खूँटा ।  
 भौमवार तत्त्वं ( पु० ) मङ्गलवार ।  
 भ्रंश तत्त्वं ( पु० ) ध्वंस, नाश ।  
 भ्रम तत्त्वं ( पु० ) सन्देह, संशय ।  
 भ्रमण तत्त्वं ( पु० ) पर्यटन, घूमना, भौंवर फिरना ।  
 भ्रमर तत्त्वं ( पु० ) भौरा, अलि, मधुप ।

भ्रष्ट तत्त्वं ( वि० ) पतित, अधर्मी, गिरा अधःपतित,  
 स्थानच्युत ।—ता ( स्त्री० ) पातित, दुष्टता ।  
 भ्राता तत्त्वं ( पु० ) भाई, सहोदर, वन्धु ।  
 भ्रातृ ( पु० ) सगाभाई, सहोदर भ्राता ।  
 भ्रान्त ( वि० ) भूला, भटका ।  
 भ्रान्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) भूल, भ्रम, संशय, सन्देह ।  
 भ्रामक तत्त्वं ( पु० ) रोग विशेष, मूछों रोग, मिर्गी ।  
 ( पु० ) सन्देह उत्पन्न करने वाला, धूमने वाला,  
 धुमाने वाला ।  
 भ्रू तत्त्वं ( स्त्री० ) भौं, भुङ्करी ।  
 भ्रूण तत्त्वं ( पु० ) गर्भ, गर्भस्थ पालक ।—हत्या  
 ( स्त्री० ) गर्भनाश, गर्भ गिराना ।  
 भ्रूसङ्ग तत्त्वं ( पु० ) लोरी चढ़ाना, घुड़की ।

म

म व्यञ्जन का पचीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान  
 श्रोत्र-होने से यह श्रोत्र्य वर्ण कहा जाता है ।  
 म तत्त्वं ( पु० ) महा, शिव, चन्द्रमा, विष्णु, यम  
 समय, विष ।  
 मङ्गतर ( स्त्री० ) वचनेयता, भाँगी ।  
 मङ्गता दे० ( पु० ) मिथुन, भिलासरी फंगल, दरिद्र ।  
 मङ्गनी दे० ( स्त्री० ) उभार, सगाई ।  
 मङ्गरा दे० ( पु० ) बपेड़ी, छौंद का सिर, खपड़ा ।  
 मङ्गवाना ( क्रि० ) मँगाना, पास लाने के लिये कहना ।  
 मङ्गुला ( पु० ) साला गृथना ।  
 मङ्गीरा ( पु० ) एक प्रकार की कोक ।  
 मङ्गुआ ( पु० ) अन्न विशेष ।  
 मङ्गना ( क्रि० ) ढकना, खगाना, छिपाना, डोलक  
 आदि पर चाम मङ्गना ।  
 मङ्की दे० ( पु० ) माता के घर, नैहर, पीहर ।  
 मङ्गी तद् ( स्त्री० ) दोस्ती, मित्रता, मैत्री, सुहृदत्व ।  
 मङ्गड़ा दे० ( पु० ) कीट विशेष, जाल का कीड़ा ।  
 मङ्गड़ना दे० ( क्रि० ) देहा चलाना, जी चुराना, जी छिपाना ।  
 मङ्गड़ी दे० ( स्त्री० ) कीट विशेष, छोटा मङ्गड़ा ।  
 मङ्कर तत्त्वं ( पु० ) जल, जन्तु विशेष, दशम राशि,  
 कामदेव की ध्वजा का चिन्ह, कुवेर का धन विशेष,  
 माघ का महीना, फरेब, मयलापन, मगरापन ।

( दे० ) छल, फट, धोखा—केतु ( पु० ) कामदेव ।  
 —ध्वज ( पु० ) कामदेव, रस, सिन्दूर, विशेष,  
 चन्द्रोदयरस ।  
 मङ्करन्द तत्त्वं ( पु० ) पराग, पुष्प रस, पुष्पासव,  
 मङ्कराक्ष तत्त्वं ( पु० ) राक्षस विशेष, यह राक्षस के  
 सेनापति खर राक्षस का पुत्र था, यह स्वयं भी  
 राक्षस का सेनापति था । इसको रामचन्द्रजी ने  
 मारा था । [ पहनने का गहना विशेष ।  
 मङ्कराकृत ( पु० ) मङ्कर के समान आकार का कान में  
 मङ्कराना दे० ( पु० ) एक स्थान का नाम, जहाँ श्वेत  
 पत्थर निकलता था । यद स्थान मारवाड़ में है ।  
 मङ्करिन ( पु० ) समुद्र, सागर ।  
 मङ्करी दे० ( स्त्री० ) मङ्गरी, मङ्गर की मादा, मीन,  
 लाल लगाने वाली मक्खी, एक रोग, फरेबित ।  
 मङ्करोना दे० ( क्रि० ) भिंगाना, गीला करना, ओढ़ा  
 करना, आर्द्र करना ।  
 मङ्कुट तत्त्वं ( पु० ) मुकुट, मोर, सिरपेच, किरीट ।  
 मङ्कुर ( पु० ) आरंली, दर्पण, कचनार का पुष्प ।  
 मङ्कोड़ा दे० ( पु० ) चीटा, चीउँटा, पिपड़ा ।  
 मङ्कोय दे० ( पु० ) एक वृक्ष और उस का फल ।  
 मङ्खन दे० ( पु० ) नैन, नवनीत, माखन ।  
 मङ्खी दे० ( स्त्री० ) मङ्गी, मङ्गिका, माखी ।

ह्यागी, पापग्रस्त ।—ता ( स्त्री० ) माखिन्य, विर-  
सता, अमफुलता ।—मुख ( वि० ) कूर, खल,  
म्लान वदन । ( पु० ) भूत प्रेत ।

मलिनी तत् ( स्त्री० ) रजस्वला स्त्री, अतृप्त नारी ।

मलिन्द ( पु० ) अमर, भौरा, अजि ।

मलिम्लुच दे० ( स्त्री० ) मलमास, अघिक्रमास,  
अग्नि, तस्कर, चोर, पवन, वायु, हवा ।

मलिया दे० ( स्त्री० ) कौच या लकड़ी का बना छोटा  
पात्र विशेष, जिसमें लगाने का तेल रखा जाता है ।

मलीन तत् ( वि० ) मलिन, असुन्दर, अवच्छिन्न ।

—ता ( स्त्री० ) अशुद्धता ।

मल्लुक ( पु० ) एक मलिक का कौड़ा ।

मल्लेज तत् ( पु० ) मल्लेज, मैली जाति वाले, असभ्य,  
जङ्गली, धर्षर, संस्कृत के अतिरिक्त भाषा बोलने  
वाला, असंस्कृतज्ञ, वह अति जिसमें चातुर्वर्ण्य  
व्यवस्था न हो ।

मल्लेपज्ञ ( वि० ) दस वर्ष की उम्र से अधिक उम्र का  
बोड़ा । [ ( वि० ) मल्लेपवाला ।

मल्लैया दे० ( स्त्री० ) हाथी, मिट्टी की छोटी गगरी,

मल्ल तत् ( पु० ) पञ्चबाण, बाहुयोद्धा, पहलवान,  
कुरती लड़ने वाला ।—मुद्ध ( पु० ) कुरती, पह-  
लवानों की लड़ाई । [पुष्प विशेष ।

मल्लक ( पु० ) दिया, दीपक, नारियल का बना पात्र,  
मल्लरा तत् ( पु० ) राग विशेष, दूसरा राग, छः रागों  
में का दूसरा राग ।

मल्लारी तत् ( स्त्री० ) रागिनी विशेष ।

मल्लिक तत् ( पु० ) हंस विशेष, शुद्ध हंस ( दे० )  
अर्थात् विशेष, गाने वालों की एक जाति ।

मल्लिका तत् ( स्त्री० ) पुष्प विशेष, एक बेल का  
फूल, पात्र विशेष, सृष्टि का पात्र, दोना ।

मल्लूर तत् ( पु० ) मालूर, वृक्ष विशेष, मेल, विष ।

मल्लास दे० ( पु० ) शरथ, आसरा, अरोसा, आस ।

मल्लक तत् ( पु० ) मल्लक, मच्छर, मसा, डाँस ।

मल्लहरी दे० ( स्त्री० ) मल्लहरी, लटवा बरण, एक प्रकार  
का बना हुआ कपड़ा, जो मशी से बचने के लिये  
लगाया जाता है ।

मल्ल दे० ( श्र० ) चुप, मौन, नीरव, निःशब्द, स्थिरता ।

—मारना ( वा० ) चुप रहना, मौन रहना ।

मपि ( स्त्री० ) स्याही । [ ( पु० ) मल्लक, मसा ।  
मल्लक दे० ( स्त्री० ) पुर, पुरवट, चमड़े का जलपात्र ।  
मल्लकना दे० ( क्रि० ) दबाना, फटना, टूटना, घोड़ा  
फट जाना, दरकना, दरक जाना ।

मल्लकाना दे० ( क्रि० ) फड़वाना, दबवाना, दरकवाना ।

मल्लहरी दे० ( स्त्री० ) दिलगी, हंसी, चुलबुलाहट ।

मल्लविदे दे० ( स्त्री० ) मसा, माँस वृद्धि ।

मल्लहरी, मल्लहरी दे० ( स्त्री० ) मल्लहरी । [जलते रहना ।

मल्लमलाना दे० ( क्रि० ) दाँत पीसना, भीतर ही

मल्ललाना दे० ( क्रि० ) कुचलना, मीनना ।

मसा दे० ( पु० ) मल्लविदे, इच्छा । [का स्थान ।

मल्लान तत् ( पु० ) रमशान, मरघट, मुरदा जलाने

मल्लानिया दे० ( पु० ) डोन, डुमार । ( पु० ) रमशान-  
वासी, रमशान पर रहने वाला ।

मल्लिदानी तत् ( स्त्री० ) मल्लिपात्र, दवात ।

मली तत् ( स्त्री० ) स्याही, सिपाही, काजी ।

मलीना दे० ( स्त्री० ) मल्लसी, तीसी ।

मलीपात्र ( पु० ) दवात ।

मल्लू दे० ( पु० ) दाँतों के ऊपर का मांस ।

मल्ल दे० ( पु० ) अन्न विशेष, मसूर ।

मल्लरिया दे० ( स्त्री० ) सीतला, चैचक, माता ।

मल्ले दे० ( स्त्री० ) मूँछ, रमशु । [दूध होना ।

मल्लेसना दे० ( क्रि० ) मरोड़ना, निचाड़ना, धीरे धीरे

मल्लक तत् ( पु० ) माया, सिर, कपाव ।

मल्लू दे० ( पु० ) नाव का डंका, जिस पर पाल  
ताना जाता है । यह शब्द पोर्तुगाली भाषा के  
‘मल्लो’ या ‘मल्लो’ शब्द से निकला है ।

मल्ल्याधार तत् ( पु० ) मलीपात्र, दवात ।

मल्ल दे० ( पु० ) इच्छा, मसा, माँस वृद्धि, डाँस,  
मच्छर । [ दाँत का, ऊँचे मोल का ।

मल्ल दे० ( पु० ) मल्ल, बहुत मूल्य का, अधिक

मल्ल दे० ( स्त्री० ) काल, दुर्मिच, दुःसमय ।

मल्ल ( पु० ) उत्सव, यज्ञ, तेज, रोयनी, मँस ।

मल्ल दे० ( स्त्री० ) सुगन्ध, सुवास, गन्ध । [धाना ।

मल्लकना दे० ( क्रि० ) बसाना, गन्ध आना, सुवास

मल्लकाना दे० ( क्रि० ) सुगन्ध, सुवास, गन्ध आना ।

मल्लकीला दे० ( वि० ) सुगन्धित, सुवासित, सुगन्ध

युक्त ।

महत् तत्त्व ( वि० ) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य, माननीय, पूज्य, श्रेष्ठेय ।

महतारी दे० ( स्त्री० ) माता, जननी, माँ ।

महतिया दे० ( पु० ) चौधरी, देहातियों के लिये

प्रतिष्ठा युक्त विशेषण, महतो । [ जाति का प्रतिष्ठित ।

महतो दे० ( पु० ) जाति विशेष, कोहरी, चौधरी,

महत्त्व तत्त्व ( पु० ) बड़ापन, श्रेष्ठता उच्चता, प्रतिष्ठा,

माघ, मर्यादा ।

महत्तम ( वि० ) सब से बड़ा ।

महत्तर ( वि० ) एक की अपेक्षा बड़ा ।

महन्ता दे० ( कि० ) मयना, बिकोना, बिलोद्वन करना ।

महन्त, महँत तत्त्व ( पु० ) मठाधीश, बैरागी वैष्णव

साधुओं का प्रधान, गद्दीघर । [ महन्त की रीति ।

महन्ताई, महँताई तत्त्व ( स्त्री० ) महन्त का काम

महन्ताना दे० ( पु० ) मजूरी, मेहनत का, पारिश्रमिक ।

महर दे० ( पु० ) प्रधान, मुख्य, नेता । [ घाली जाति ।

महरा दे० ( पु० ) कहार, धीमर, मोई, काम करने

महरी दे० ( स्त्री० ) महरा की स्त्री ।

महलोक तत्त्व ( पु० ) लोक विशेष, भूवर्गों आदि

सप्तलोक के अन्तर्गत चौथा लोक । [ श्रेष्ठ ऋषि ।

महर्षि तत्त्व ( पु० ) [ महा + ऋषि ] मन्त्रद्रष्टा ऋषि,

महा तत्त्व ( वि० ) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुत, महान ।

—उच्चत, महोच्चत ( पु० ) कदम्ब वृक्ष, कदम्ब

का पेड़ ।—कन्द ( पु० ) लहसुन ।—काय

( पु० ) शिव का द्वारपाल, नन्दीश्वर, हाथी

( वि० ) मोटा शरीर वाला, भारी ।—काज

( पु० ) विष्णु स्वरूप, अखण्ड समय, शिव की

मूर्ति विशेष, प्रथमगण विशेष ।—काली

( स्त्री० ) दुर्गा, महाकाल की पत्नी ।—कुम्भी

( स्त्री० ) कर्मफल ।—कोढ़ ( पु० ) अतिशय कुष्ठ,

अत्यन्त कुष्ठ रोगाक्रान्त ।—खाल ( पु० ) समुद्र

की खाड़ी ।—घोर ( पु० ) भय विशेष, काकड़ा-

सिंघी, अत्यन्त भयानक, बहुत डरने वाला ।—

जन ( पु० ) साहूकार, सेठ ।—जनी ( स्त्री० )

महाजन का काम, कोठीवाली, लेन देन का काम,

प्यवहार ।—जम्बू ( पु० ) जासुन, फल विशेष ।

—तम ( पु० ) माहात्म्य, उपकारिता, उपयो-

गिता, प्रसिद्धि, बड़ाई, अतिशय अन्धकार, अत्यन्त

अंधेरा ।—तज ( पु० ) पश्चिम तल, पाताळ ।

—तीर्थ ( पु० ) उत्तम तीर्थ, पुण्य तीर्थ, उत्तम क्षेत्र,

पुण्यस्थान ।—तेजा ( वि० ) प्रतापी, तेजस्वी,

नचत्री, भाग्यवान् ।—निद्रा ( स्त्री० ) मरण, मृत्यु,

अधिक निद्रा, अचेत नींद ।—निशा ( स्त्री० )

आधीरात, निराशय ।—नुभाव ( वि० ) [ महा +

अनुभव ] महाशय, प्रशस्त हृदय, विराज-हृदय ।

—पद्मक ( पु० ) सर्प विशेष, निधि विशेष ।

—पातक ( पु० ) पाप विशेष, महाद्वेष, सुरा-

पान, शुक स्त्री गमन आदि से उत्पन्न पाप ।—

पातकी ( पु० ) महापापी, अधर्मी, पतित ।

—पुरुष ( पु० ) श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम पुरुष, सुजन,

सज्जन ।—प्रभु ( पु० ) परमारा, परमेश्वर, चैतन्य

देव, पञ्चमाचार्य ।—प्रजय ( पु० ) जिनोद-का

नाश, विश्व का ध्वंस, कल्याण, ब्रह्मा की आयु

की समाप्ति ।—प्रसाद ( पु० ) भगवान् जगदीश

का निवेदित भात ।—वली ( पु० ) दलवान्

पराक्रमी, पराक्रमशाली ।—भारत ( पु० )

इतिहास, ग्रन्थ ।—माया ( स्त्री० ) अनादि

अविद्या ।—मारी दे० ( स्त्री० ) मरक, संक्रामक

रोग, प्लेग ।—राज ( पु० ) राजाधिराज, बड़ा

राजा ।—रानी ( स्त्री० ) महाराज की स्त्री ।—जय

( पु० ) परमेश्वर, आश्रम, अमावस्या, श्राद्ध

विशेष ।—घट ( पु० ) पूष माघ की वर्षा ।—घत

( पु० ) हस्तिक, हाथीवान, महावत ।—घर

( पु० ) रंग विशेष, लाल रङ जिससे खिया पैर

रङ्गती है ।—घिया ( स्त्री० ) इस महाकाजी ।

( १ ) काली, ( २ ) तारा, ( ३ ) शोइपी, ( ४ ) मुक्तेश्वरी,

( ५ ) भैरवी, ( ६ ) विघ्न मत्ता, ( ७ ) भूमावती

( ८ ) बगला मुखी, ( ९ ) ( १० ) कमलात्मका ।—

वीर ( पु० ) शूर, सिंह, हनुमान, केकिल ।—

शय ( वि० ) [ महा + आशय ] महानुभव,

वस्तुचेता, दाता, महापुरुष ।—साहस ( पु० )

निधेदक, निर्भय ।—श्वेता ( स्त्री० ) सात्वती,

कादम्बरी का एक पात्र, लता विशेष ।

महात्मा तत्त्व ( वि० ) महाशय, महानुभाव, धार्मिक ।

महान् तत्त्व ( पु० ) महत् तत्त्व, ( वि० ) बड़ा, श्रेष्ठ

रत्नाधनीय, माननीय ।

महानी दे० ( स्त्री० ) मयनी, मयानिया ।

महिका ( स्त्री० ) कर्ज, रिन ।

महिदेव तत् ( पु० ) ब्राह्मण, विष, द्विज ।

महिपाल ( पु० ) नृपति, राजा ।

महिमा तत् ( स्त्री० ) श्लाघा, प्रशंसा, बढ़ाई ।

महिजा तत् ( स्त्री० ) स्त्री, नारी, मालकहनी ।

महिष तत् ( पु० ) भैंसा, पशु विशेष ।

महिषा तत् ( पु० ) भैंसा, पशु विशेष, महीष ।

महिषी तत् ( स्त्री० ) भैंस, पटरानी, महारानी, यक्षी  
रानी । [ स्वामी ।

महिषेस तत् ( पु० ) यमराज, महिषासुर, भैंसे का

महिसुर तत् ( पु० ) ब्राह्मण, भूषुर, चारवर्णी में  
प्रथम वर्ण ।

मही ( स्त्री० ) धरणी, धरती, पृथ्वी, बही, छाँड़ ।

—तल ( पु० ) पृथ्वीतल, मृतल, भूमण्डल ।

—प ( पु० ) राजा नरेश, भूप ।—पति ( पु० )

महीप, पृथिवी पति ।—भुज ( पु० ) राजा नरेश ।

—भृत ( पु० ) राजा, पर्वत ।—रुह ( पु० )

वृक्ष, तरु, रूख ।—श ( पु० ) राजा नृपति ।

महीना दे० ( पु० ) मासिक आय, महीने दिन की  
महरी । [ फल, मधुक ।

महुआ दे० ( पु० ) स्वनामख्यात वृक्ष और उसका

महुरत तद् ( पु० ) सुहृद्, दो बड़ी, उत्तम समय ।

महेन्द्र तद् ( पु० ) [ महा + इन्द्र ] प्रधान राजा,  
इन्द्र, देवराज ।—नगरी ( स्त्री० ) अमरावती ।

महेरी दे० ( स्त्री० ) महेर, खीर, पायस ।

महेला दे० ( पु० ) पहाया लोबिया, घोड़े का एक  
प्रकार का मोहन । [ शिव ।

महेश दे० ( पु० ) [ महा + ईश ] महेश्वर, महादेव,

महेश्वर ( पु० ) महादेव, शङ्कर ।—ी ( स्त्री० ) ईश्वरी  
देवी, पार्वती, भारवाही वनिये की जाति विशेष ।

महेष्वास ( पु० ) महाधनुर्वासी ।

महेला ( स्त्री० ) बड़ी इलायची ।

महोत्त तद् ( पु० ) [ महा + उत्त ] बैल, साँड़, वृषभ ।

महोला दे० ( पु० ) पक्षी विशेष ।

महोत्पल ( पु० ) कमल, पद्म ।

महोत्सव तद् ( पु० ) [ महा + उत्सव ] बड़ा उत्सव,  
महापर्व ।

महोदधि ( पु० ) सागर, समुद्र ।

महोदय ( पु० ) महाभुभाव, महाराज, कान्यकुब्ज देश  
अहंकार ।

महोसा दे० ( पु० ) जहसन, तिल । [ अम्यर्थे बोधेपि ।

महोषध तद् ( पु० ) ब्रतीस । ( वि० ) उत्तम औषध,

महौ दे० ( पु० ) छाँड़, तक्र, मही, मट्टा ।

मा दे० ( स्त्री० ) माता, महतारी, जननी ।

माई दे० ( स्त्री० ) माता, मा, जननी ।

माई दे० ( स्त्री० ) मामा की स्त्री, दूरावे की तरफ  
इसका प्रयोग होता है । [ धीच ।

माँ दे० ( स्त्री० ) माता, महतारी । ( अ० ) में, मध्य,

माँग दे० ( स्त्री० ) देश विन्यास, याचना ।—बिकनी

( स्त्री० ) पक्षी विशेष ।—जा ( कि० ) याचना,

याचना करना, चाहना ।—नी दे० ( स्त्री० ) वाग्दान

देना, वचन लेना, मँगनी, लगाना ।—लेना दे०

( वा० ) उधारलेना, याचना करना ।—दे० ( स्त्री० )

मँगनी, उधार ।

माँवा तद् ( पु० ) मय, पलङ्ग, खाद, खद्वा ।

माँची दे० ( स्त्री० ) खटोला, खादी ।

माँज दे० ( पु० ) पीव, विगढ़ार रक्त, सड़ा हुआ रुधिर ।

माँजना दे० ( कि० ) उजलाना, उजरा करना, साफ़  
करना, स्वच्छ करना ।

माँम दे० ( अ० ) मध्य, बीच, अन्तर ।

माँमत्त दे० ( स्त्री० ) ठाढ़, सज धज, शोभा ।

माँमा दे० ( पु० ) पतल उड़ाने का डोरा, परसात का  
नया जल ।

माँमी दे० ( पु० ) नौका चलावे वाला, कर्णधार,  
नाविक, मसझाह, केवट ।

माँई दे० ( पु० ) चावल का बवालन, कलक, सारवाही  
राग विशेष ।

माँड़ना दे० ( कि० ) घाटा को जल डाल कर मसबना ।

माँड़ा दे० ( पु० ) एक प्रकार की रोटी ।

माँड़ी दे० ( स्त्री० ) कलप, लोई ।

माँदा दे० ( पु० ) मण्डप, निर्मित, देवगृह ।

माँद दे० ( स्त्री० ) गुफा, जन्तुओं के रहने का स्थान ।

माँस तद् ( पु० ) मांस, पलङ्ग, घामपि ।

माँसल तद् ( वि० ) स्थूल, मोटा ।

माँसाद् तद् ( वि० ) माँसमयी, माँसहारी, माँस  
खाने वाला ।

मांसहारी तत्त्वं ( पु० ) मांस खाने वाला, मांसभक्षक ।  
 माहि दे० ( अ० ) मध्य, में, बीच, अन्तर ।  
 माकन्द तत्त्वं ( पु० ) आम्र, आम, रसाल, सहकार ।  
 माख दे० ( पु० ) उरिद, बड़ी जाति की मक्खी, रुष्ट, रोष, क्रोध ।— १ दे० ( स्त्री० ) मक्खी, मच्छिका ।  
 ( क्रि० ) क्रुद्ध भई, रिसियायी ।  
 माखड़ा दे० ( वि० ) मूलं, निवृद्धि, अयोध, अज्ञान ।  
 माखन दे० ( पु० ) नैन, मक्खन ।  
 मामाघ तत्त्वं ( वि० ) मगध देश में उत्पन्न । ( पु० )  
 हाथ से घोड़ा बजाने वाला, मात चारण, नकीब,  
 जो राजाओं के आगे स्तुति पाठ करते चलते हैं ।  
 वर्षाशङ्कर जाति विशेष ।  
 माघ तत्त्वं ( पु० ) मास विशेष, वर्ष का इसका  
 महीना, संस्कृत का एक कवि, इनका बनाया हुआ  
 महाकाव्य शिशुपाल वध है, कुछ लोग उसे माघ  
 भी कहते हैं ।  
 माहुर दे० ( पु० ) मशक, मच्छड़, मसा, डाँस ।  
 माह्वी दे० ( स्त्री० ) मक्खी, माखी, मच्छिका ।  
 मा-जाई दे० ( स्त्री० ) एक माता से उत्पत्ति, सहो-  
 दरता, एक गर्भजात ।  
 माजू दे० ( पु० ) फल विशेष, औषध विशेष, माजूफल ।  
 मास्तधार तत्त्वं ( पु० ) मध्यधार, बीच में, कठिन,  
 कार्य का मध्य ।  
 माठी दे० ( स्त्री० ) मिट्टी, मृत्तिका ।  
 माठा दे० ( पु० ) छाँड़, भरी ।  
 माह्व दे० ( वि० ) कौतुकी, ठोस, हँसोड़ा ।  
 माड़नी दे० ( स्त्री० ) माँड़ी, फलप, लोई ।  
 माड़िया दे० ( वि० ) दुबला, दुर्बल, पतला ।  
 माड़ौ दे० ( पु० ) मयडप, मँडवा ।  
 माणवक तत्त्वं ( पु० ) बालक, सोलह वर्ष की अवस्था  
 तक का ब्राह्मणकुमार, चट, उपनयन किया हुआ  
 ब्राह्मण कुमार, बीस लड़की का हार । [ माणिक्य ।  
 माणिक तत्त्वं ( पु० ) रत्न विशेष, लाल रत्न का मणि,  
 माणिका ( पु० ) एक प्रकार का रत्न, मणि,  
 जवाहर ।  
 माणिक्य तत्त्वं ( पु० ) रत्न विशेष, माणिक, मणि रत्न ।  
 मात तत्त्वं ( स्त्री० ) मात्रा, स्वर वर्ण, स्वर का आकार  
 विशेष जो व्यञ्जन वर्णों के साथ मिलता है ।

मातृपुर्सा दे० ( स्त्री० ) शिष्टई, किसी नातेदार या  
 हित के यहाँ किसी की मृत्यु होने पर समवेदना  
 प्रकशित करने जाना । [ विशेष ।  
 मातृ तत्त्वं ( पु० ) हाथी, गज, हस्ति, कर्त, मुनि-  
 मातृ तत्त्वं ( स्त्री० ) नवीं महाविद्या, इनके चार  
 हाथ और तीन नेत्र हैं । मस्तक अर्धचन्द्र से सुशो-  
 भित है । ये लाल वस्त्र पहनती हैं । तलवार, डाल  
 पाश और अङ्गुश इनके चारों हाथों के अग्र हैं ।  
 मातना दे० ( क्रि० ) मतवाला होना, पागल होना ।  
 मातलि तत्त्वं ( पु० ) देवराज इन्द्र का सारथी । इन  
 की कन्या गुणकेशी सुमुख नामक नाग की ब्याही  
 गयी थी ।  
 माता तत्त्वं ( स्त्री० ) जननी, मा ।—मह ( पु० )  
 नाना, माता का वाप ।—महौ ( स्त्री० ) नानी,  
 मा की मा ।  
 मातु तत्त्वं ( स्त्री० ) देखो माता ।  
 मातुल तत्त्वं ( पु० ) मामा, माता का भाई । [ उन्मत्त  
 माते दे० हे मैया, हे माता । ( पु० ) मतवाले, बौराने,  
 मात्र तत्त्वं ( अ० ) अल्प, थोड़ा, किञ्चित्, स्वल्प ।  
 मात्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) परिमाण, मोताद, रेखा, स्वर ।  
 मांस्य तत्त्वं ( पु० ) दाह, ईर्ष्या, जलन, दूसरों की  
 अभिवृद्धि न सहना ।  
 माथ या माथा दे० ( पु० ) मस्तक, जलाट, सिर,  
 अग्रभाग, पेशानी ।—उनकना ( वा० ) अनिष्ट  
 की आशङ्का करना, भीत होना, डरना ।—राड़ना  
 ( वा० ) विनती करना, चिन्तनी करना, नम्रता-  
 पूर्वक प्रार्थना ।  
 माथी लेना दे० ( वा० ) समान बनाना, बराबर करना ।  
 माथुर तत्त्वं ( पु० ) ब्राह्मण विशेष, मथुरा के पाली  
 ब्राह्मण, चौथे, चतुर्वेदी ।  
 माथे पर चढ़ाना दे० ( वा० ) मुँह लगाना, ठीठ  
 करना, आदर करना, अतिशय आदर करना,  
 आवश्यकता से अधिक मानना ।  
 मादक तत्त्वं ( पु० ) उन्मादकारी द्रव्य, नशीली वस्तु ।  
 —ता ( स्त्री० ) नशा, अमल ।  
 माद्री दे० ( स्त्री० ) जानवरों का जोड़ा पूरा करने  
 वाली, जानवरों की स्त्री, स्थानीया ।  
 माद्री तत्त्वं ( स्त्री० ) राजा पाण्डु की रानी और मद्र-

देश के राजा की कन्या । इसके गर्भ से अधिनी-कुमार के औरस से नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे । पाण्डु के मरने के अनन्तर ये भी पति के साथ मर गईं ।

माधव तत्० ( पु० ) विष्णु का नामान्तर, मा लक्ष्मी को कहते हैं, उनके पति होने के कारण विष्णु का नाम माधव है । वसन्त ऋतु, बैसाख का महीना, किरातार्जुनीय महाकाव्य का विषयात् टीकाकार ।

माधवाचार्य तत्० ( पु० ) वेदों के भाष्यकर्ता सायणाचार्य के बड़े भाई, ख्रिष्टीय १४वीं सदी में वृत्ति की तुलुभद्रा नदी के तीरस्थ पम्पा नगरी में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम मायण और माता का नाम श्रीमती था । ये विजयनगर के राजा बुद्धराय के कुलगुरु और प्रधान मन्त्री थे । इन्होंने भारतीयीय के पास संन्यास ग्रहण किया था । १३३३ ई० में ये शृङ्गेरी मठ के अध्यक्ष बनाये गये । ६० वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हुई । इन्होंने परागर संहिता का एक भाष्य लिखा है, उसी में अपना परिचय भी दिया है ।

माधवी तत्० ( स्त्री० ) लता विशेष, वसन्ती लता । माधुर्य तत्० ( पु० ) मधुरता, मीठापन, मिठास । माध्वी तत्० ( स्त्री० ) मदिरा विशेष, महुये का मद्य । मानव तत्० ( पु० ) प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान, यश, कीर्ति ।

मानता दे० ( पु० ) पथ, प्रतिज्ञा, मनौती । मानना दे० ( क्रि० ) पथ रखना, आदर करना, सम्मान करना, प्रेम करना । माननीय तत्० ( वि० ) मान्य, छोष्ट, पूज्य, श्लाघ्य । मानव तत्० ( पु० ) मनुष्य, दनुज । मानस तत्० ( पु० ) मन, हृदय, एक सरोवर का नाम, मन, मन करके ।

मान सम्मान दे० ( पु० ) आदर, प्रतिष्ठा । मानसिंह दे० ( पु० ) अम्बर के राजा भगवानदास का भतीजा, इनके पिता का नाम जगतसिंह था । भगवानदास ने इनको अपना दत्त पुत्र बनाया था । भगवानदास के मरने के बाद मानसिंह अम्बर के राजा हुए । भगवानदास की बहिन

सम्राट् अकबर से ब्याही गई थी और मानसिंह ने अपनी बहिन का ब्याह सलीम से किया था । सम्राट् के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होने के कारण इनको राज्य का उच्चपद मिला था, इन्होंने पठानों के हाथ से बङ्गदेश को छीन कर मुगल सम्राट् के अधीन किया । क्रायल पर भी इन्होंने मुगल सम्राट् की विजय पताका फहराई थी, परन्तु रणस्थल में महाराणा प्रताप से मिल कर इन्हें अपने स्वरूप का ज्ञान हो गया था ।

मानहुँ, मानहू दे० ( थ० ) मानो, समान, सरा । ( क्रि० ) मानो, जानो, समझो ।

मानिक जोड़ दे० ( पु० ) पक्षी विशेष ।

मानिनी तत्० ( स्त्री० ) मानवती, अभिमानवती स्त्री । भानी तत्० ( वि० ) अभिमानी, अहङ्कारी ।

मानुष तत्० ( पु० ) मनुष्य, मानव ।

मानुष्य तत्० ( पु० ) मनुष्यत्व, पौरुष ।

मानो दे० ( थ० ) हव, या, उपमार्थक । ( क्रि० ) आदर करो, जानो, समझो वृत्ति । ( पु० ) विष्टी, बिलाव ।

मान्य तत्० ( पु० ) मानने योग्य, सत्कार योग्य, प्रतिष्ठा के योग्य, आदर योग्य, पूजनीय, पूज्य, माननीय ।—ता तत्० ( स्त्री० ) पूजा, प्रतिष्ठा, सत्कार, सम्मान, मान ।

माप दे० ( पु० ) परिमाण, माप ।

मापना दे० ( क्रि० ) परिमाण करना, नापना, तौलना ।

मा वाप दे० ( पु० ) माता पिता ।

मामा दे० ( पु० ) मातुल, मा का भाई ।

मामी दे० ( पु० ) मामा की छो, मामा की पत्नी ।

—पीना ( पु० ) पशुपात करना, पशु सींचना ।

मामू दे० ( पु० ) मामा, मातुल, सपर्य विशेष ।

माया तत्० ( स्त्री० ) रूपा, मोह, दया, करुणा, अनुकम्पा, प्रेम, स्नेह, धूल, कपट, धोखा, सन्पत्ति, धन, योगमाया, इन्द्रजाल विद्या ।—रुत ( पु० ) संसार, इन्द्रजाली । ( वि० ) माया से निर्मित, माया द्वारा बनाया हुआ ।—पति ( पु० ) परमात्मा, विष्णु, भगवान् ।

मायावी तत्० ( वि० ) झूठी, कपटी, राक्षस विशेष ।



मायिक तत्त्वं ( पु० ) ऐन्द्रजालिक, नट, नटवरचन्द ।  
करके तमाशा करने वाला । [स्वामी, इन्द्रजाली ।  
मायी तद् ( पु० ) माया करने वाला, माया का  
मार तत्त्वं ( पु० ) कामदेव, मन्मथ, मदन । ( स्त्री० )  
प्रहार, लड़ाई ।—कुटाई ( स्त्री० ) मारना, कटना,  
धुनना ।—केश ( पु० ) मारक ग्रह, लग्न से दूसरे  
और सातवें घर का स्वामी ।—खाना ( वा० )  
पिठाना, पिटना ।—गिराना ( वा० ) पड़ावना,  
पटक देना ।—पड़ना ( वा० ) भरखाना, पिठाना ।  
—पीट ( स्त्री० ) मारामारी, लड़ाई भिड़ाई ।  
—मारना ( वा० ) अपवाद करना, आत्महत्या  
करना ।—जाना ( वा० ) लूट लाना ।—लेना  
( वा० ) मारना, जीतना ।—हुटाना ( वा० )  
जीत लेना, मारना और हुटाना, मार कर हुटा  
देना । [ धर्मपद्धति ।  
मार्ग तद् ( पु० ) मार्ग, पथ, बाट, डगर, धर्ममार्ग,  
मारना दे० ( क्रि० ) पीटना, बिगाड़ना, बध करना ।  
मारात्मक तत्त्वं ( पु० ) हिसक, हिल । [ होना ।  
मारा पड़ना दे० ( वा० ) मारा जाना, बड़ी हाजि  
मारामारा फिरना दे० ( वा० ) बिना काम इधर उधर  
फिरना, डँवाडोल होना, कहीं आसरा न मिलना ।  
मारी तत्त्वं ( स्त्री० ) मृत्यु, मौत, मृत्युदायक रोग ।  
मारीच तत्त्वं ( पु० ) राक्षस विशेष, ताड़का राक्षसी  
का वेदा ।  
मास्त तत्त्वं ( पु० ) हवा, वायु, बयार, पवन ।  
—सुत ( पु० ) हनुमान और भीमसेन ।  
मास्ततमज तत्त्वं ( पु० ) वायुपुत्र, हनुमान ।  
मास्त दे० ( पु० ) युद्ध वाय, लड़ाई का राजा, एक  
प्रकार का गाना जो लड़ाई में गाया जाता है ।  
मारे दे० ( ध० ) फरार, निमित्त, से, यथा—धूप  
के मारे । ज्यादा है, मारे भीड़ के मार्ग नहीं  
सूझता है ।  
मार्ग तत्त्वं ( पु० ) सबक, बाट, राह, रास्ता, पथ ।  
—रा ( पु० ) बाण, शर, तीर ।  
मार्गशीर्ष तत्त्वं ( पु० ) अग्रहन, मगसिर, मृगशिर ।  
मार्जन तत्त्वं ( पु० ) परिकार करण, शोधन ।  
मार्जार तत्त्वं ( पु० ) बिल्ली, बिल्ला । ( स्त्री० )  
मार्जारि ।

माल दे० ( पु० ) मल, पट्टा, पहलवाल ।  
मालती तत्त्वं ( स्त्री० ) पुष्प विशेष ।  
मालपुत्रा दे० ( पु० ) एक प्रकार की मीठी पूरी ।  
माला तत्त्वं ( स्त्री० ) पुष्पहार, रत्न या सेने का हार ।  
—कार ( पु० ) माली, बारावान, माला बनाने  
वाला ।—दीपक ( पु० ) अर्घालङ्कार विशेष ।  
मालिन दे० ( स्त्री० ) मालाकार की स्त्री ।  
मालिन्य तत्त्वं ( वि० ) मलिनता, मैलापन ।  
माली दे० ( पु० ) पुष्प व्यवसायी, मालाकार ।  
माल्य तत्त्वं ( पु० ) माला, पुष्प की माला ।  
मावस तद् ( पु० ) अमावस, अमावस्या ।  
माघा दे० ( पु० ) अण्डे की पिलाई, खोआ, दूध का  
जला हुआ अत्यन्त गाढ़ा सार ।  
माशुक ( पु० ) प्यारा, प्रिय ( स्त्री० ) माशुका ।  
माप तत्त्वं ( पु० ) अन्न विशेष, उरद ।  
मापा, माशा दे० ( पु० ) मात विशेष, वजन, आठ  
रत्ती की तौल ।  
मापपर्णी ( स्त्री० ) धन उर्द ।  
मापवरी ( स्त्री० ) उर्द की बड़ी ।  
मापीण ( पु० ) खेत जिसमें उर्द उत्पन्न हो ।  
मास तत्त्वं ( पु० ) महीना, तीस दिन ।—का धार  
( पु० ) महीने का अन्तिम दिन ।  
मासन ( पु० ) औषध विशेष ।  
मास्तर ( पु० ) भक्त समुद्भव, मापद ।  
मास्तान्त तत्त्वं ( पु० ) मास का पिछला दिन, मास  
की समाप्ति का दिन ।  
मास्तिक ( वि० ) माहवारी वेतन, मास सम्बन्धी ।  
मास्ती ( स्त्री० ) माँ की बहिन, मौसी ।  
मासुरी ( स्त्री० ) दाढ़ी, शम्भु ।  
मासूम ( वि० ) छोटा बच्चा, अल्प आयु ।  
मास्य ( वि० ) मास सम्बन्धीय, माहवारी ।  
माह ( पु० ) महीना, मास, माघ ।  
माहर ( पु० ) फल विशेष ।  
माहुर दे० ( पु० ) गरल, जहर, विष, हज़ाहल ।  
माहित्य ( पु० ) महत्त्व, बड़ाई, प्रभाव, प्रताप ।  
माहि ( ध० ) मध्य, बीच में, मांस ।  
माहित्य ( स्त्री० ) दशा, हालत ।  
माहिप ( वि० ) भैरव सम्बन्धी ।

माहिष्य ( पु० ) वर्षादाकरजाति, चेरया के गर्भ में  
 चत्रिय से पैदा हुई श्रौलाद ।  
 माही ( पु० ) मत्स्य, मछली ।—गीर ( पु० ) मछुवा ।  
 माहेन्द्र ( पु० ) शुभदण्ड, चण विरोध, इन्द्र का,  
 गाय । [ वैश्य विरोध ।  
 माहेश्वरी ( स्त्री० ) दुर्गादेवी, पार्वती, शिवरानी,  
 मिङ्गनी, मिंगनी दे० ( स्त्री० ) बकरी आदि की लैंडी ।  
 मिचकारना दे० ( क्रि० ) निचोड़ना, गालना,  
 खंगालना, अर्वांसना । [ करना  
 मिचना दे० ( क्रि० ) बन्द करना, मूँदना, चाँखें बन्द  
 मिचराना दे० ( क्रि० ) धीरे धीरे खाना, अनिच्छा से  
 खाना, अर्हचि पूर्वक भोजन ।  
 मिचलाना दे० ( क्रि० ) चाँख मूँदना, मीचना, बन्द  
 करना, बमन होने के पूर्व जी का घुरा होना,  
 उबका आना ।  
 मिटना दे० ( क्रि० ) बिगड़ना, बनी हुई बात का  
 बिगड़ना, लिखे अक्षरों का बिगड़ना ।  
 मिटाना दे० ( क्रि० ) बिगाड़ना, नष्ट करना ।  
 मिट्टीया दे० ( स्त्री० ) मट्टी का घर्तन, घड़ा, गगरी ।  
 मिट्टी दे० ( स्त्री० ) मिट्टी, मृत्तिका, माटी ।  
 मिट्टी दे० ( स्त्री० ) चूसा, चुम्बन ।  
 मिठरी दे० ( स्त्री० ) मटरी, निमकीन पकवान विरोध ।  
 मिठाई दे० ( स्त्री० ) मिष्ठान, मिठास, मधुरता ।  
 मिठास दे० ( स्त्री० ) मधुरता, मिष्टता, मिठाई ।  
 मिठिया दे० ( स्त्री० ) चूसा, मिट्टी ।  
 मित तत्त्वं ( वि० ) परिमित, नया हुआ, तौला हुआ ।  
 —भद्र ( पु० ) परिमितदाता, हिसाब से देने  
 वाला ।—व्ययी ( पु० ) परिमित व्ययी, अल्प व्यय  
 करने वाला, आय के अनुसार व्यय करने वाला ।  
 मितक्षरा तत्त्वं ( स्त्री० ) स्मृति के एक ग्रन्थ का  
 नाम । प्रसिद्ध वाजपयस्य स्मृति की टीका ।  
 मिति तत्त्वं ( स्त्री० ) मान, परिमाण, अन्न, अर्थात् ।  
 मित्ती तत्त्वं ( स्त्री० ) तिथि, हिन्दुस्तानी तारीख ।  
 मित्र तत्त्वं ( पु० ) पण्डु, सखा, सुहृद, मीत, शत्रु से  
 अन्य, हित, स्नेही, प्रेमी ।—ता ( स्त्री० ) बन्धुता,  
 सख्य, परस्पर प्रीति ।—टोही ( पु० ) मित्र का  
 टोही, खल, दुष्ट, बैरी ।—लाम ( पु० ) सुह-  
 र्थासि, बन्धुलाम ।—धर्मा ( पु० ) सुहृदगण ।

मित्राई तत्त्वं ( स्त्री० ) मित्रता, पण्डुता ।  
 मित्र तत्त्वं ( थ० ) परस्पर, अन्योन्य, आपस में ।  
 मिथिला तत्त्वं ( स्त्री० ) नगरी विरोध, जनकराज की  
 पुरी ।—पति ( पु० ) मिथिला का राजा, जनक ।  
 मिथिलेश तत्त्वं ( पु० ) [ मिथिला + ईश ] राजा  
 जनक ।—कुमारी ( पु० ) जानकी, सीता ।  
 मिथुन तत्त्वं ( पु० ) जोषा, युग्म, स्त्रीपुरुष का जोषा,  
 इन्द्र, युगल, लीसरी राशि ।  
 मिथ्या तत्त्वं ( स्त्री० ) असत्य, झूठ, अथर्थात् ।  
 —चार ( वि० ) [ मिथ्या + आचार ] कपटचार,  
 दाम्भिक ।—दृष्टि ( स्त्री० ) कर्मफलापवादक ज्ञान,  
 नास्तिकता, अस्त्य, दर्शन ।—याद्री ( वि० )  
 असत्यवादी, झूठा ।—भियोग ( पु० ) [ मिथ्या  
 + अभियोग ] असत्य दोषारोपण, मिथ्यावाद,  
 झूठी लड़ाई । [ चित्ती ।  
 मिनी दे० ( स्त्री० ) जिननी, प्रार्थना, निवेदन,  
 मिमियाना दे० ( क्रि० ) मों मों शब्द करना, यकरी  
 का शब्द करना ।  
 मिमियाहट दे० ( स्त्री० ) यकरी आदि का शब्द ।  
 मिरगी, मिरगी दे० ( स्त्री० ) मूच्छा, रोग विरोध,  
 अपस्मार ।  
 मिरजई, मिरजई ( स्त्री० ) कमर तक का छंगरखा ।  
 मिरजा ( पु० ) सुगलों की पदवी ।  
 मिरास्ती ( पु० ) रंढो का साङ्गिन्दा, रंढी का भँवुवा ।  
 मिर्च दे० ( पु० ) मरिच, मोल मरिच ।  
 मिर्चा दे० ( स्त्री० ) मिर्चाई, लाल मिर्च ।  
 मिर्दङ्ग, मिरदंग, मिर्दंग तत्त्वं ( पु० ) मृदङ्ग, बाघ  
 विरोध, हस्तबाध, एक प्रकार का ढोल, पखावज ।  
 मिर्दहा दे० ( पु० ) ग्रामवासी, अर्द्धली ।  
 मिलन दे० ( पु० ) मेल, मिलाप, साक्षात्कार, संयोग,  
 दर्शन, भेंट ।—सार ( वि० ) मेढी, मिलाप ।  
 मिलना दे० ( क्रि० ) प्राप्त होना, लाभ, भेंटना,  
 मिलना, मेल करना, जुड़ना, पाना, बराबर  
 होना ।—जुलना ( या० ) सदा मिला रहना,  
 शुद्ध भाव से मिलना, दिल खोज कर मिलना ।  
 मिलना दे० ( स्त्री० ) मिलाप, संयोग, मिलनेवासी ।  
 मिलाना ( क्रि० ) मेल कराना, मद्देजना, जुड़ाना ।  
 प्रेम पूर्वक रहना, प्रेम्भू भाव से रहना ।

मिलाप दे० ( पु० ) मेल, प्रेम; मित्रता, मिताई ।  
मिलापी दे० ( वि० ) मिलनसारी, मेली, सज्जन,  
मित्र ।

मिलाप दे० ( पु० ) मिलौनी, मेल, बनाप, मित्रता ।  
मिलित तत्० ( वि० ) एकत्रित, मिश्रित, मिला  
हुआ ।

मिले जुले रहना दे० ( वा० ) मेल मिलाप से रहना,  
प्रेम पूर्वक रहना, ऐक्य भाव से रहना ।

मिश्र तत्० ( पु० ) वैद्य, ग्राह्यणों की पदवी, प्रतिष्ठित  
मनुष्य, पूज्य, माननीय ।—( वि० ) संयुक्त,  
मिश्रित । ( पु० ) देश विशेष ।—कैंगी ( खी० )

एक अप्सरा, एक स्वर्ग वेश्या ।

मिश्रक ( पु० ) मेलक, मिलानेवाला,

मिश्रण ( पु० ) मिलावट, संयोजन ।

मिश्रित तत्० ( वि० ) मिलित, मिला हुआ, घोल  
मेल ।—भापा ( खी० ) मिली हुई भापा, खिचड़ी  
भापा, अद्युद्ध भापा, कई भापा का मिश्रण ।

मिश्री दे० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई ।

मिष तत्० ( पु० ) कपट, यहाना । [ माधुर्य,

मिष्ट तत्० ( वि० ) मीठा, मधुर ।—ता ( खी० )

मिष्टान्न तत्० ( पु० ) मिठाई, पकवान । [ कारण ।

मिस, मिसि, मिसु दे० व्याज, बहाना, हिला, सबव

मिसर ( पु० ) मिश्रदेश ।

मिसरी ( खी० ) देखो मिश्री ।

मिसना दे० ( क्रि० ) पीसना, चूर्ण करना, मलना ।

मिसल ( पु० ) कागजात का मुद्रा ।

मिसाल ( पु० ) नज़ीर, उदाहरण ।

मिस्ती दे० ( खी० ) मुलमजून, खियों का शृङ्गार ।

मिखी ( पु० ) कारीगर ।

मिहदी दे० ( खी० ) मेहदी, वृष विशेष, इसके पत्तों  
से खियाँ हाथ पैर रङ्गती हैं ।

मिहना दे० ( पु० ) ताना, बोली, ठोली ।—मारना  
( वा० ) ताना मारना, ठोली करना ।

मिहरा दे० ( पु० ) खी के समान रहने वाला पुरुष,  
नारीरूपी पुरुष, मेहरा, हिजड़ा, जनाना ।

मिहरा दे० ( स्त्री० ) महिला, नार, तिरिया, तीव ।

मिहरी दे० ( खी० ) मिहरियाँ, खी, भार्या, पत्नी ।

मिहाना दे० ( क्रि० ) गोला होना, भींगना, सीपना ।

मिहिका तत्० नीहार, कुहरा, हिम ।

मिहिर तत्० ( खी० ) रवि, दिवाकर, सूर्य । दे०  
( खी० ) मेहरवानी, कृपा ।

मीझनी, मींगनी दे० ( खी० ) देखो " मिङ्गनी " ।

मींगी दे० ( स्त्री० ) बीज, गूदा, सार, मज्जा, मेद ।

मीच दे० ( स्त्री० ) मीत, मृदु, मरण, निधन, कला ।

यथा—

" चिन्तनीय द्वै वस्तु हँ, सदा जगत के बीच ।

ईश्वर के पदपद्म युग, धीर आपनी मीच ॥ "

मीचना दे० ( क्रि० ) मूँदना, टाँकना, मिचना, मरना ।

मीजना दे० ( वि० ) मलना, मसलना, रगड़ना, रगड़  
कर रस निकालना ।

मींजान ( पु० ) मोड़, तुलाराशि, तराजू ।

मींजू दे० ( पु० ) मंसूर, कलाई विशेष ।

मीठा दे० ( वि० ) मधुर, धीमा, विष विशेष ।

मीठिया दे० ( स्त्री० ) मीठी, चूसा, चुम्बा, मच्छी ।

मीठी दे० ( स्त्री० ) मच्छी, मीठिया, चूसा । ( वि० )

मधुर " मीठा " शब्द का स्त्रीलिङ्ग ।

मीठ ( वि० ) मृदा हुआ, मूढिष ।

मीणा ( पु० ) जंगली आदमियों की जाति विशेष ।

मीत तत्० ( पु० ) मित्र, सुजन, सनेही, मीता ।

मीतन दे० ( पु० ) सनामी, एक नाम बाबा, सखी,  
सनेही, मीत का बहुवचन, मित्रों ।

मीता दे० ( पु० ) मित्र, मीत ।

" रघुवर, साँचे मन के मीता । "

मीन तत्० ( पु० ) मछली, मत्स्य ।—केतन ( पु० )  
कामदेव, मदन, मन्मथ ।

मीना दे० ( पु० ) जङ्गली जाति विशेष, इस जाति के  
लोग राजपुताने में रहते हैं और थोड़ी डकैती करते  
हैं, मछली को भी कहते हैं । यथा—

" निन्दहिं आप सराहहिं मीना,

धिगू जीवन रघुबीर विहीना । " —रामायण ।

मीमांसक तत्० ( पु० ) मीमांसक शास्त्रवेत्ता, सिद्धान्त-  
कारी, निष्पत्तिकारी, निर्णयकर्त्ता ।

मीमांसा तत्० ( स्त्री० ) विचार, निष्पत्ति, सिद्धान्त,  
निर्णय, दर्शनशास्त्र विशेष, इस दर्शन के मे दो  
मेद हैं पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा । पूर्व

मीमांसा में धर्मशास्त्र की परस्पर विरुद्ध बातों का निर्णय किया गया है। उत्तर मीमांसा में उपनिषद् के वाक्यों का विचार किया गया है। उत्तर मीमांसा का दूसरा नाम वेदान्तदर्शन है, पूर्व मीमांसा के आचार्य जैमिनि और उत्तर मीमांसा के आचार्य व्यास हैं। [ सिद्धान्तित।

मीमांसित तत् ( वि० ) विचारित, निर्णयित, मोर ( पु० ) सरदार, सैयद, समुद्र, सीमा।

मील ( पु० ) १७६० गज का माप विशेष, यग।

मीलन ( पु० ) सङ्गोच, टमटमाना।

मीसना दे० ( कि० ) मलना, मर्दन करना।

मुँह दे० ( पु० ) मुख, बदन, भ्रान्त।—अँधेरा

( वा० ) सन्ध्या का समय या प्रातःकाल, अन्धेरा, जय मुख न दीखे।—अपना सा जे के रह जाना ( वा० ) निराश होना, हताश होना, कुछ कर न सकना।—घाना ( वा० ) रोग विशेष, मुँह फूलना, मुँह में छाले पड़ना।—उतर जाना ( वा० ) उदास होना, दुखी होना, कष्ट पाना।—करना ( वा० ) सामना करना, मिलाना,

बराबरी करना, साथ देना, फोड़ा चीरना, आक्रमण करना, धावा करना। दूट पड़ना, देखना, चलना, जाना।—का फूँहड़ ( वा० ) गाली बकने वाला, मनमाना बोलने वाला।—काला ( वा० ) कलङ्क, अपराध, दोष।—काला करना ( वा० ) कलङ्क लगाना, अपराध लगाना, अपमान करना।

—के कौंधे उड़ जाना ( वा० ) उदास होना, व्याकुल होना, चिन्तित होना।—खोतिना ( वा० ) गाली देना, सामना करना, जवाब देना, उत्तर करना।—चढ़ाना ( वा० ) क्रोध करना, मेल करना, प्रेम करना, सामने होना।—चलाना ( वा० ) काटना, खाना, इधर की बात उधर करना, चुगली करना।—चौर ( वा० ) जजाख, जजाखील, डरपोक, अपराधी।—चोरी ( वा० ) लालच, भय, छिपकर।—छिपाना ( वा० ) छिपना, लुक्कना, लज्जा से छिपना।—छठाना ( वा० ) मुँह पर मारना, कज्जित करना, निकार करना, मूढ़ा सावित करना।—छालना ( वा० ) मारना, धावना, धावन करना, किसी विषय में भाग

लेना।—ताकना ( वा० ) चकित होना, विस्मित होना, भौचका जाना।—तोड़ना ( वा० ) दबा देना, पराजय कर देना, हराना, दुःख देना।—तो देखें ( वा० ) अवगम्यता बताना, अपनी शक्ति न जान कर बड़े काम को करने वालों को इस वाक्य से सावधान किया जाता है।—धुपाना ( वा० ) मुँह बनाना।—दियाई ( छी० ) बच्चे या नई बहुओं को मुँह देकर कुछ देना।—देख कर बात करना ( वा० ) खुशामद करना, किसी को प्रसन्न करने के लिये उसके मन के योग्य बातें करना। देखना, सहायता माँगना, आज्ञा की प्रतीक्षा करना, यादर करना।—देख रहना ( वा० ) आश्चर्य होना, किसी के कारण क्रोध दबा लेना।—देखे की भीति ( वा० ) बाहरी प्रेम, दिखावटी प्रेम।—परगम होना ( वा० ) सामने क्रोध करना।—पर जाना ( वा० ) कहना।—पर हवाई उड़ना ( वा० ) मुँह की रगत बह जाना, निष्प्रम होना, फिह पड़ना।—पसारना ( वा० ) अधिक मारना।—फेरना ( वा० ) अप्रसन्न होना, रुक जाना।—फैलाना ( वा० ) अधिक चाहना, ज्यादा माँगना, अधिक लोभ दिखाना।—बन्द करना ( वा० ) बोलने न देना, निरुचर करना।—बनाना ( वा० ) खोरी चढ़ाना, अप्रसन्न होना।—घाना ( वा० ) मुँह छोळना, मुँह फाड़ना, जम्हाई लेना।—विराड़ना ( वा० ) अप्रसन्न होना, क्रोध करना, बुरा मानना, जिद्दा का स्वाद बिगड़ना।—बिराड़ना ( वा० ) खोरी चढ़ाना, क्रोध करना, अपमानित करना, तंग कर देना, दुःख देना।—घोला ( वा० ) किया हुआ, बनाया हुआ, शब्द से बनाया हुआ।—भरी ( वा० ) रिक्त, घूस, वक्रोच।—माँगा ( वा० ) अभीष्ट, चाहा हुआ, अपनी इच्छा के अनुसार।—मारना ( वा० ) घुप रहना, उदास होना, चिन्तित होना।—मैं पानी घ्राना ( वा० ) अधिक चाह, अतिशय लोभ, लालच।—मोड़ना ( वा० ) फिर जाना, छोड़ देना, चला जाना।—लगना ( वा० ) डिल मिश्र जाना, अधिक प्रेम होना, अधिक मित्रता होना।—लगाना ( वा० )

ठीठ करना, आदर करना, प्रेम करना, बहुत चाहना ।—ले को रह जाना (धा०) लजा जाना, लजित होना ।—सुकड़ना (धा०) मुँह का रह पड़ना, मुँह उतरना ।—से फूल भड़ना (धा०) आशीर्वाद देना ।

मुद्रतवर ( वि० ) विवस्त्र, विश्वासपात्र ।

मुद्रतर ( वि० ) मदकदार, सुगन्धित, सुवासित ।

मुद्रा ( पु० ) मरा हुआ, मुर्दा ।

मुद्रम ( पु० ) प्रधान, पहिल, अगला ।

मुद्रमा ( पु० ) अभियोग, मुद्यामिला । [मानना ।

मुकरना दे० ( क्रि० ) नकारना, शस्वीकार करना, न

मुकरैर ( पु० ) फिर नौकर रखना ।

मुकाम ( पु० ) स्थान, जगह ।

मुकाबला ( पु० ) विरुद्धता, मिलान ।

मुकु ( पु० ) मोक्ष, उत्सर्ग ।

मुकुटतत्त्वं ( पु० ) किरीट, मुकुट, चूड़ा, सिरपेच, सेहरा ।

मुकुर तत्त्वं ( पु० ) दर्पण, आदर्श, शीशा, आहुना आरसी ।

मुकुरी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का छन्द और अलङ्कार । किसी बात को कह कर पुनः उसको छिपाने की ह्दला से बहना । यथा—

“यानि चित चहुँ दिशि डोले,  
चातक ज्यों पुनि पिप पिय बोले ।  
प्रलय होय, चावे नहिँ नेह,  
क्यों सखि सजजन ना सखि नेह ॥”

मुकुल तत्त्वं ( पु० ) कलि, कलिका, बीर ।

मुकुजित तत्त्वं ( वि० ) मुकुटाया हुआ, अर्द्ध स्फुटित, अधखिला, थोड़ा खिला ।

मुकेल दे० ( पु० ) नकेल, ऊँट का नयना ।

मुका दे० ( पु० ) चुस्ता, मुष्टि, घूसा ।

मुक तत्त्वं ( वि० ) खुटा, चुटा, लफ, मुक्ति प्राप्त, मोक्ष प्राप्त, बंधन रहित, खुला हुआ, अन्न मरण रहित ।—हस्त (वि०) वदान्य, दाता, दानशील ।

मुका तत्त्वं ( स्त्री० ) रत्न विशेष, मोती, मौक्तिक ।

—कलाप ( पु० ) मुकाहार, मोती की माला ।

—फल ( पु० ) मुका, मोती, मौक्तिक ।—चली

( स्त्री० ) मुकाहार, मोती की माला ।—मणि

( पु० ) मोती, मौक्तिक ।

मुक्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) दुःख की अत्यन्त निवृत्ति, नित्य सुख की प्राप्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेय, निःश्रेयस, मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग, परित्राण, मोक्षन, सङ्गति ।  
—दाता ( पु० ) मुक्ति देने वाला, सद्गुरु, ज्ञान, उद्धारक, उद्धारकर्ता ।

मुख तत्त्वं ( पु० ) बदन, मुँह, मुखड़ा (वि०) प्रधान, मुख्य नेता ।—दूषक ( पु० ) मुख बिगाड़नेवाला, मुख दुर्गन्ध करने वाला, विपाज ।—मण्डल ( पु० ) तिलक घृष ।

मुखड़ा दे० ( पु० ) मुख, बदन, मुँह ।

मुखर तत्त्वं ( वि० ) अभिवादी, हुसूल, बकवादी, बड़बड़िया ।—ता ( स्त्री० ) अभिप्रवादित्व ।

मुखशुद्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) वक्त्रशोधन, मुख प्रबालन, दन्तधावन । [ जिह्वाप्र ।

मुखस्थ तत्त्वं ( वि० ) मौखिक, मुखस्थित, कथाम्र,

मुखापेक्षा तत्त्वं ( स्त्री० ) अनुरोध, पक्षपात ।

मुखावलोकन तत्त्वं ( पु० ) मुखदर्शन, मुख देखना ।

मुखामुखी दे० ( स्त्री० ) सामना सामनी, मुँहमुँही, मुख परम्परा द्वारा ।

मुकालिफ ( पु० ) विरुद्ध, घेरी, शत्रु ।

मुखिया दे० ( पु० ) मुख्य, प्रधान, पहला, अगुया, अग्रगण्य, श्रेय, सर्वोत्तम, नामी ।

मुख्य तत्त्वं ( पु० ) प्रथम कल्प, यज्ञ आदि में शास्त्रोक्त प्रथम कर्ता । ( वि० ) श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया ।

मुगदर दे० ( पु० ) मोगरी, मोगरा, मुगरी ।

मुगल ( पु० ) मुसलमानों की एक जाति ।

मुग्ध तत्त्वं ( वि० ) मोहित, विस्मित । ( पु० ) सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ, मूर्ख ।

मुग्धा तत्त्वं ( स्त्री० ) कन्या, कुमारी, नायिका विशेष, स्त्रीय नायिका का एक भेद । यथा—

“अभिनव यौवन आगमन, जाके तन में होय,  
सोको मुग्धा कहत हैं, कवि कोविद सख कोय ।”

—रसरत्न ।

मुक्क ( पु० ) लाख, लाषा ।

मुक्कन ( पु० ) पुष्पघृष विशेष ।

मुक्का दे० ( पु० ) मांस का टुकड़ा ।

मुजरा दे० ( पु० ) प्रणाम, दण्डवत, सविनय भेंट, येश्या का नृत्यरहित बैठ कर गाना ।

मुजरिम ( पु० ) अपराधी, कसूरवार ।  
 मुञ्ज, मुंज तत्० ( पु० ) वृष विशेष, राजा विशेष,  
 भोजराज के पचा ।  
 मुराई ( स्त्री० ) मोटापन, स्थूलता ।  
 मुटापा दे० ( पु० ) मुठाई, स्थूलता ।  
 मुठो तद्० ( स्त्री० ) मुष्टिक, मूठ, पकोट बघड़ा ।  
 मुठमेर या मुठमेड़ दे० ( पु० ) समीप की गैट, अति  
 निकट समीप, नजदीक की मुलाकात, हायापाई ।  
 मुठिया दे० ( पु० ) हाथभर, मुठ्ठीभर, दसा, मूठ ।  
 मुड़ना दे० ( क्रि० ) टेढ़ा होना, बल खाना, घुँड़न  
 पड़ना ।  
 मुड़ियाना दे० ( क्रि० ) मुड़ना, फिरना, घूमना ।  
 मुड़ दे० ( पु० ) प्रधान, मुसिया, बड़ा मूर्ख ।  
 मुण्ड, मुंड तत्० ( पु० ) मुँह, कपाल, सिर, मस्तक ।  
 मुण्डक तत्० ( पु० ) नावित, नाक, चौरकार ।  
 मुण्डन ( पु० ) बेशब्देदन ।  
 मुण्डना, मुँडना दे० ( क्रि० ) बाल बनाना, मूँड़ना ।  
 मुण्डला, मुँडला दे० ( पु० ) मूँहा, मुण्डित, मुण्डा  
 हुआ ।  
 मुण्डवाना, मुँडवाना दे० ( क्रि० ) मुण्डन कराना,  
 मुण्डित कराना, मुण्डला बनाना । [छंगरेजी जूना ।  
 मुण्डा, मुँडा ( पु० ) पतंग का सिर, चन्दला,  
 मुण्डासा, मुँडासा दे० ( पु० ) सुरेठा, साफा,  
 मुण्डबन्धा ।  
 मुण्डित तत्० ( वि० ) मुँडा हुआ, मुटा हुआ, दीक्षित ।  
 मुण्डिया, मुँडिया दे० ( पु० ) सिर, कपाल, मस्तक ।  
 ( पु० ) मुड़े सिर का ।  
 मुण्डी, मुँडो दे० ( स्त्री० ) एक औषधि का नाम ।  
 मुण्ड तत्० ( पु० ) संन्यासी, यति, मुण्डित सिर ।  
 मुण्डेर, मुँडेर दे० ( पु० ) परछत्ती, मंड, कम ऊँची  
 या नीची दीवार ।  
 मुण्डेर, मुँडेर दे० ( स्त्री० ) छोटी भीत ।  
 मुतअल्लिक ( वि० ) सम्बन्धी, नातेदार ।  
 मुतना दे० ( पु० ) छटमुतवा, जो सोते सोते खाट  
 पर ही मृत हो ।  
 मुनास दे० ( पु० ) मृतने की हथ्का ।— ( पु० )  
 मृतने की आवश्यकता रखने वाला ।  
 मुद् तत्० ( पु० ) आनन्द, हर्ष, आह्लाद ।

मुदरिस ( पु० ) पढ़ानेवाला ।  
 मुदित तत्० ( वि० ) हर्षित, आह्लादित, निहाल ।  
 मुदिर ( पु० ) मेघ, बादल, मंडक ।  
 मुदी ( स्त्री० ) बुन्दाई, हर्ष, प्रीति ।  
 मुद्ग तत्० ( पु० ) मूँग, कलाई विशेष ।  
 मुद्गर तत्० ( पु० ) मोगरी, मुगरा ।  
 मुद्दे दे० ( पु० ) बँदी, बादी, प्राणी । [ मोहर ।  
 मुद्रा तत्० ( पु० ) छापा, छला, अङ्क, सिक्का, कपया,  
 मुद्राआलह ( पु० ) प्रतिवादी ।  
 मुद्राङ्कित तत्० ( वि० ) अङ्कित, छापा गया, अङ्कित ।  
 मुद्रिका ( स्त्री० ) सोने चाँदी की बनी हुई झँगडी ।  
 मुद्रित तत्० ( वि० ) अङ्कित, छापा हुआ, मुहर  
 दिया हुआ ।  
 मुघा ( पु० ) मूठ, निरर्थक ।  
 मुनका दे० ( पु० ) सेवा विशेष, एक प्रकार की दाग ।  
 मुनमुन दे० ( अ० ) प्यार से बुझाने के अर्थ में इसका  
 प्रयोग होता है ।  
 मुनाफा ( पु० ) फायदा, लाभ ।  
 मुनासिब ( पु० ) ठीक, वचित ।  
 मुनमुनाना दे० ( क्रि० ) गुनगुनाना, मुनमुन करना,  
 विछी को बुलाना, चीरे धीरे झूठ बोलना ।  
 मुनि तत्० ( पु० ) योगी, तपस्वी, वेदज्ञ महात्मा ।—  
 पट ( पु० ) मुनियों के बख, बकल, बुच की  
 छात्र के बख ।—राज ( पु० ) मुनिप्रेष्ठ, मुनियों  
 के प्रधान ।—वर ( पु० ) मुनिवर्य, मुनियों में  
 श्रेष्ठ ।  
 मुनिन्द ( पु० ) मुनीन्द, मुनिराज ।  
 मुनिया दे० ( स्त्री० ) पक्षी विशेष, लाल चिड़िया ।  
 मुनीश तत्० ( पु० ) श्रेष्ठ, मुनि प्रधान, मुनिराज ।  
 मुंदना दे० ( क्रि० ) बन्द करना, तोपना, डीपना ।  
 मुंद्रा दे० ( पु० ) बड़ा, गोरखपंथी साधुओं के कान  
 में डाली हुई गोल वस्तु विशेष ।  
 मुल ( पु० ) बिनामूल्य, बरदान ।  
 मुमाखी दे० ( स्त्री० ) मधुमक्षिका, मौमाखी, मधुमाखी ।  
 मुमानो दे० ( स्त्री० ) मामी, मातुली, मामा की स्त्री ।  
 मुमूर्षा ( स्त्री० ) मौत की इच्छा ।  
 मुमूर्ष तत्० ( पु० ) मरनहार, मायासत्र, मृतप्राप ।  
 मुर ( पु० ) दैत्य विशेष ।

मुरई दे० ( स्त्री० ) मूली, एक प्रकार की जड़ ।  
 मुरकना दे० ( क्रि० ) पेटना, बल पड़ना, हड्डी का टूटना । [ पहनने का गहना ।  
 मुरकी दे० ( स्त्री० ) कान का भूषण विशेष, कान में मुरचड़ दे० ( पु० ) बाजा विशेष ।  
 मुरचंड दे० ( पु० ) मुँह से बजाने का एक बाजा ।  
 मुरज दे० ( पु० ) सृद्ध, बाजा विशेष ।  
 मुरझाना दे० ( क्रि० ) सूखना, सूख जाना, उदास होना, निरम होना ।  
 मुरझाकरना दे० ( वा० ) जकड़ना, घाँघना । [ चबेना ।  
 मुरमुरा दे० ( पु० ) शब्द विशेष, एक प्रकार का मुरला दे० ( पु० ) पोपला, पची विशेष, मोर, मयूर ।  
 तव० ( स्त्री० ) एक नदी का नाम ।  
 मुरली तव० ( स्त्री० ) बंसी, बाँसुरी ।—धर ( पु० ) बंसीधर श्रीकृष्णचन्द्र ।  
 मुरसा दे० ( पु० ) देखो, " मुहाँसा " ।  
 मुरहा दे० ( पु० ) नटखट, चुड़ैल, पेठा, मयूर, मोर ।  
 मुराई दे० ( स्त्री० ) जाति विशेष, कुँजड़ा, कोहरी, शाक तकरारी आदि का व्यापार करने वाली जाति ।  
 मुराद दे० ( स्त्री० ) अभिलाष, मिश्रत ।  
 मुराधार दे० ( वि० ) मोंपरा, मोया, कुण्डित ।  
 मुरैठा दे० ( पु० ) साफा, फेंटा ।  
 मुरेला दे० ( पु० ) मोर का बच्चा, छोटा मोर ।  
 मुरैठी दे० ( स्त्री० ) सुलहड़ी ।  
 मुरां दे० ( पु० ) कुबकूट, पची विशेष ।—( स्त्री० ) मुरां की स्त्री ।  
 मुरां दे० ( पु० ) पटाका, छल्लुवर, अँस की एक जाति ।  
 मुलतानी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की शक्ति, शक्तिका विशेष ।  
 मुलहड़ी दे० ( स्त्री० ) ओषधि विशेष, मुरैठी ।  
 मुलाई दे० ( स्त्री० ) शँकाव, निरख, दर, भाष ।  
 मुलाना दे० ( क्रि० ) धोँकना, मूख्य या भाव ठहराना ।  
 मुख दे० ( पु० ) पाइ, मुखा ।  
 मुक्क तव० ( पु० ) शब्द, शब्दकोश, कस्तूरी ।  
 मुष्टामुष्टी तव० ( स्त्री० ) मुक्कामुक्की, मुस्सामुस्सी ।  
 मुष्टि तव० ( स्त्री० ) मुष्टी, मूँडी, मूँका ।  
 मुसकाना दे० ( क्रि० ) हँसना, हँस कराना, हँस हास्य करना ।

मुसकुराई दे० ( स्त्री० ) मन्दस्मित, मुसकुराहट ।  
 मुसकुराना दे० ( क्रि० ) मुसकाना, हँसना, मन्दस्मित करना ।  
 मुसल तव० ( पु० ) मूषक, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं ।  
 मुसलमान दे० ( पु० ) एक जाति विशेष, मुद्गमद के मतवलम्बी ।  
 मुसली तव० ( पु० ) बलभद्र, बलराम, श्रीकृष्णचन्द्र के बड़े भाई, मूषिका, चूही, मुहिया ।  
 मुसाना तव० ( क्रि० ) चोरी करवाना, छुटवाना ।  
 मुस्ता तव० ( स्त्री० ) मूल विशेष, मोया ।  
 मुहरा दे० ( पु० ) हराबल, शगाड़ी ।  
 मुहरी दे० ( स्त्री० ) कोप, बन्दूक का मुँह ।  
 मुहाँसा दे० ( पु० ) फोड़ा, कुंसी, मुँह पर के फोड़े, जवानी सूचक चेहरे के फोड़े, मुहासा ।  
 मुहुमुहुः तव० ( प्र० ) चारचार, पुनःपुनः, मूयः शनेक बार ।  
 मुहूर्त्त तव० ( पु० ) समय विशेष, दो घड़ी समय, दो दण्ड काल, किसी काम करने का निर्धारित उत्तम समय, दिन रात का तीसरा भाग, ४८ मिनट ।  
 मूँघा दे० ( वि० ) मरा, मृत, निर्जीव ।  
 मूँग दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का अन्न विशेष, एक हरे रङ्ग का अन्न जिसकी दाल बनती है ।  
 मूँगा दे० ( पु० ) विद्रुम, प्रवाल, समुद्र में उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की मूषमयान वस्तु ।  
 मूँगिया दे० ( वि० ) रङ्ग विशेष, मूँगा का रंग, मूँगे के समान रंग ।  
 मूँछ दे० ( स्त्री० ) मोंछ, मूँछ, गोंछ ।  
 मूँज दे० ( स्त्री० ) दाम, लुण्ण विशेष, एक प्रकार का लुण्ण, जिसकी रस्ती बनाई जाती है ।  
 मूँड़ दे० ( पु० ) मस्तक, सिर, कपाल ।—फिकारना ( वा० ) सिर चला करना ।  
 मूँड़ना दे० ( क्रि० ) ढगना, बाल मूँड़ना, बाल कतरना, सिर छुटवाना, कुसलाना, धोखा देना ।  
 मूँडला दे० ( वि० ) मुहिया, मुण्डित, मूँडा हुआ ।  
 मूँहा दे० ( पु० ) मोड़ा, बँटने की चौकी ।  
 मूँवना दे० ( क्रि० ) बन्द करना, तोपना, ढाँकना, छिपाना, रोकना ।

मूँदरी दे० ( स्त्री० ) मुद्रिका, छत्ता, शँगूरी ।

मुँह दे० ( पु० ) मुख, मदन, मुखा ।

मूँहा दे० ( पु० ) मुख का रोग ।

मूँक तद्० ( वि० ) मूँगा, जो बोल न सके, वाचा-  
शक्ति रहित, अनबोल, वाक् शक्ति हीन ।

मूँका दे० ( पु० ) घूँसा, मुका, मुठी, झरोखा ।

मूँको दे० ( स्त्री० ) मुझी, घूसा, पका ।

मूँखा दे० ( पु० ) पध्दती, दीवार, मूँदेर, जँह ।

मूँगरी दे० ( स्त्री० ) कपड़े पीटने का मोगरा, मूँगरी ।

मूँचकाना दे० ( कि० ) मुँह चढ़ाना, पेठना, बल देना ।

मूँचना दे० ( पु० ) चिमरी, चिमटा, लोहे का एक  
प्रकार का अस्त्र, जिससे बाल नोचते हैं ।

मूँछ दे० ( स्त्री० ) मूँछ, मोंछ ।

मूँझाकड़ा दे० ( पु० ) बड़ी मूँछ ।

मूँझेल दे० ( वि० ) बड़ी मूँछों वाला ।

मूँठ दे० ( पु० ) घेंट, दस्ता ।

मूँठा दे० ( पु० ) भरमूँठ, बेंट, कड़ा ।

मूँटी दे० ( स्त्री० ) मुट्ठी, मुक्ता, मुका, घूसा ।

मूँद तद्० ( वि० ) मूँद, अज्ञानी, अनपढ़, अनभिज्ञ ।

—ता ( स्त्री० ) मूँदता, अज्ञानता ।

मूँत तद्० ( पु० ) मूँत, लघुराक्षा, पेशाब ।

मूँतना दे० ( कि० ) लघुराक्षा करना, पेशाब करना ।

मूँथ तद्० ( पु० ) प्रसाव, मूत, पेट का निकला हुआ  
जल ।—कूच्छ ( पु० ) मूँथ रोग, मूँथ रोध रोग ।

फरमरी रोग ।—घात ( पु० ) देखो " मूँथकूच्छ " ।

—दोष ( पु० ) प्रमेह, मूँथगत दोष ।—निरोध  
( पु० ) मूँथ प्रतिबन्धक रोग विशेष, मूँथकूच्छ  
रोग ।

मूँना दे० ( कि० ) मरना, मृत होना ।

मूँनू दे० ( वि० ) लघु, छोटा, थोड़ा, अल्प, किञ्चित् ।

मूँत तद्० ( स्त्री० ) मूँति, छवि, आकृति, प्रतिमा ।

मूँख तद्० ( वि० ) मूँद, अज्ञान, अज्ञान, अनभिज्ञ ।

—ता ( स्त्री० ) अज्ञानता, मूँदता ।

मूँच्छना तद्० ( कि० ) गीत का अर्थ विशेष ।

मूँच्छा तद्० ( स्त्री० ) सम्मोह, अचेतन अवस्था,  
बेहोशी ।—गत ( पु० ) मूँछाग्रास, बेहोश, अचेत ।

मूँच्छित तद्० ( वि० ) मूँछा प्राप्त, अचेत, बेहोश ।

मूँस्ति तद्० ( स्त्री० ) प्रतिमा, आकार, पुतली, तस्वीर ।

—पूजक ( पु० ) देव पूजक, चतुर्वर्ण के मनुष्य ।

—मन्त ( पु० ) आकारमन्त, शरीरघाती ।

मूँदज तद्० ( पु० ) बाल, केरा ।

मूँदन्य तद्० ( पु० ) मूँदा स्थान से उधारित होनेवाले  
वर्ण, झ, ट ठ ड ढ थ, र प, ये वर्ण मूँदन्य हैं ।

मूँदा तद्० ( पु० ) मसक, तालु से ऊपर का भाग ।

मूँल तद्० ( पु० ) जड़, वंश, कुल, पूँजी, पुस्तक का  
मूल भाग ।—कारिका ( स्त्री० ) मूल ग्रन्थार्थ  
प्रकाशक पद्य, धन मूल की वृद्धि विशेष ।—धन  
( पु० ) मूल्य ग्रन्थ, असल पूँजी ।—भूत ( पु० )  
जड़ ।

मूँलक तद्० ( पु० ) मूली, मुरई । [ दान ।

मूँल्य तद्० ( पु० ) मूल, मोल, भाव, निरस, दर,

मूँरा ( पु० ) चूहा ।

मूँप तद्० ( पु० ) चूहा, मूँसा, मूँपिका ।

मूँपल तद्० ( पु० ) मूँसल, चँवल आदि अन्न कूटने  
का लकड़ी का कूटना ।

मूँपण तद्० ( पु० ) हरण, चोरी करण, चोरी करना ।

मूँपा तद्० ( पु० ) मूँस । [ खसोदना ।

मूँसना दे० ( कि० ) हरना, चोरी करना, लूटना,

मूँसर ( पु० ) देखो ' मूँसल ' । [ का बहा ।

मूँसरा दे० ( पु० ) चूहा, मूल, गण, लोहे के लाल

मूँसल ( पु० ) मूँसरा, अनाज कूटने की लकड़ी विशेष ।

मूँसला दे० ( पु० ) जड़, मूल ।

मूँसा दे० ( पु० ) चूहा, इन्दूर ।

मूँग तद्० ( पु० ) हरिण, सगा, कुलङ्ग ।—झाला ( पु० )

मूँगचर्म, अजिन ।—जल ( पु० ) मूँग मूँथा का

जल ।—मूँथा ( स्त्री० ) मूँग में जल ' ज्ञान, व्यर्थ

मूँथा, मूँथा लाभ ।—नयनी ( स्त्री० ) बड़ी आँख

वाली, सुन्दरी स्त्री ।—नामि ( स्त्री० ) कस्तूरी,

मूँगमद ।—पति ( पु० ) पशुओं का राजा, सिंह,

मूँगेन्द्र ।—मद ( पु० ) कस्तूरी ।—राज ( पु० )

मूँगपति, पशुओं का राजा ।—जाच्छन ( पु० )

चन्द्रकलङ्क ।—लोचनी ( स्त्री० ) मूँगनयनी,

बड़ी आँखें वाली, मूँग के समान आँखें वाली ।

—शिरा ( पु० ) एक नख का नाम ।

मूँगया तद्० ( स्त्री० ) शिकार, आटेद, अट्टर ।

मूँगो तद्० ( स्त्री० ) हरिणी, रोग विशेष, निर्मा ।



मृगेन्द्र तत् ( पु० ) [ मृग + इन्द्र ] सिंह, मृगराज.  
 मृगपति । [ करने योग्य ।  
 मृग्य तत् ( वि० ) अन्वेषणीय, दर्शन, अनुसन्धान  
 मृजा तत् ( स्त्री० ) मार्जन, शुद्धिकरण; माँजना, फरछाना ।  
 मृडं तत् ( पु० ) शिव, महादेव, शम्भु ।  
 मृगाल तत् ( पु० ) कमल नाल, कमल की जड़ ।  
 मृत तत् ( वि० ) मृथा, मरा हुआ; मुर्दा ।  
 मृतक तत् ( पु० ) शव, लोथ, मुर्दा ।  
 मृत्तिका तत् ( स्त्री० ) मट्टी, मिट्टी, माटी ।  
 मृत्यु तत् ( स्त्री० ) मौत, मरण, निधन ।  
 मृत्युञ्जय तत् ( पु० ) शिव का एक नाम ।  
 मृदङ्ग, मृदंगा तत् ( पु० ) बाद्य विशेष, मेरी ।  
 मृदु तत् ( वि० ) नरम, कोमल ।—ता ( स्त्री० )  
 कोमलता ।  
 मृषा तत् ( अ० ) झूठा, मिथ्या, असत्य ।  
 में ( अन्व ) बीच ।  
 मेंमनी दे० ( स्त्री० ) मींगनी, लेंडी, लीढ़ ।  
 मेंड ( स्त्री० ) बाँध, याद, घेरा ।  
 मेंडक दे० ( पु० ) दादुर, भेक, भयहूक ।  
 मेंडा दे० ( पु० ) मेंढ, कुप का मुँह, मेंढ ।  
 मेंड़ियाना ( क्रि० ) घिरना, बटोरना, घेरना ।  
 मेंड़ा दे० ( पु० ) मेंडा, मेप, गाढर ।  
 मेंह दे० ( पु० ) घृष्टि, पर्पा, बदा, कड़, कड़ी ।  
 मेंहदी दे० ( स्त्री० ) पीया विशेष ।  
 मेल दे० ( पु० ) फील, छटा, मेप ।  
 मेखला तत् ( स्त्री० ) बुद्ध घंटिका, करघनी, मृग-  
 छाला से बना हुआ यज्ञोपवीत ।  
 मेखली दे० ( स्त्री० ) टाट, पट्टी ।  
 मेघ तत् ( पु० ) मेह, बादल, रागविशेष ।—इन्द्रवर  
 ( पु० ) रावण का छत्र विशेष—भाद. ( पु० ) मेघ  
 का शब्द, मेघ के समान शब्द, रावण के पुत्र का  
 नाम । देवराज इन्द्र को पराजित करने के कारण  
 उसका नाम इन्द्रजित पड़ा था । लङ्का के युद्ध में  
 इसने राम लक्ष्मण को दो बार हराया था, परन्तु  
 अन्त में यह लक्ष्मण के हाथों मारा गया ।—पति  
 ( पु० ) इन्द्र, देवराज ।—घरणा ( पु० ) मेघ के  
 रङ्ग के समान ।—माला ( स्त्री० ) मेघ, समूह,  
 मेघों की माला ।

मेघाध्वा तत् ( पु० ) मेघपथ, अन्तरिक्ष, आकाश ।  
 मेघागम तत् ( पु० ) वर्षाकाल, वर्षा का समय ।  
 मेटना दे० ( क्रि० ) धो डालना, नाशना, खराब करना ।  
 मेथी दे० ( स्त्री० ) एक साग का नाम, एक प्रकार का  
 मसाला जो छौंकने के काम में आता है ।  
 मेद दे० ( पु० ) मजा, बसा, चर्बी ।  
 मेदिनी तत् ( स्त्री० ) धरिणी, धरती, भूमि, अष्टवर्ग  
 में—प्रसिद्ध ग्रंथविशेष, संस्कृत के एक कोश  
 ग्रन्थ का नाम । [ गीतल ।  
 मेदुर तत् ( पु० ) अतिशय स्निग्ध, अत्यन्त चिकन,  
 मेघ तत् ( पु० ) श्रुत, याग, यज्ञ, अध्वर ।  
 मेधा तत् ( स्त्री० ) बुद्धि विशेष, धारणायती बुद्धि,  
 मनीषा ।—तिथि ( पु० ) ये मनुस्मृति के विख्यात  
 टीकाकार हैं, इनके पिता का नाम भीर शिव स्वामी  
 भट्ट था ।—वती ( स्त्री० ) बुद्धिमती, मेधा  
 विशिष्ट, महाज्योतिष्मती ज्ञाता ।  
 मेधावी तत् ( वि० ) मेधायुक्त, स्मरण शक्ति विशिष्ट,  
 मतिमान् । ( पु० ) पण्डित, अभिज्ञ ।  
 मेघि तत् ( पु० ) खलिहान में पशुओं को बाँधने के  
 लिये ऊँचा गाड़ा हुआ फाड़ ।  
 मेघ्य ( वि० ) पवित्र ।  
 मेमना दे० ( पु० ) बकरी का बच्चा ।  
 मेरा ( सर्व० ) धपना ।  
 मेरु तत् ( पु० ) पर्वत विशेष, सुनेरुपर्वत, जपमाला  
 का सर्व प्रधान मनिया ।—दण्ड ( पु० ) पीठ के  
 बीच की हड्डी ।  
 मेरु तद् ( पु० ) संयोग, मिलाप, भेंट ।  
 मेरुना दे० ( क्रि० ) डालना, छेड़ना, रखना ।  
 मेला दे० ( पु० ) भीड़, रौला, समूह, समुदाय, देव-  
 दर्शन, पर्व विशेष, या, तमाशा देखने के लिये  
 बहुत लोगों का एकत्रित होना, भीड़ ( क्रि० )  
 मिलाया, डाला, फैला ।—ठेला ( धा० ) भीड़ भाड़ ।  
 मेली तत् ( वि० ) मिश्र, मिलापी, परिचित, जाना  
 हुआ । ( स्त्री० ) रख दी, छोड़ दी, धर दी ।  
 मेव दे० ( पु० ) जाति विशेष । [ मेवा वेचने वाला ।  
 मेवाती दे० ( पु० ) मेवात वाली, मेवात का रहने वाला,  
 मेवाड़ ( पु० ) राजपूताने का प्रान्त विशेष ।  
 मेप तत् ( पु० ) मेपराशि, पहली राशि, मेघ ।

मेह तद् ( पु० ) मेघ, घटा, रोग विरोध, मूत्र रोग ।  
मेहतर दे० ( पु० ) चूड़वा, भङ्गी, अन्त्यज, अस्थुर्य,  
अच्छृत ।

मेहतरानी दे० ( स्त्री० ) भङ्गी की स्त्री, भङ्गिनी ।

मेहना दे० ( पु० ) ठोली, खिछी, ताना ।

मेहमान ( पु० ) अतिथि ।

मेहरा दे० ( पु० ) नपुंसक, जनाना, हिजड़ा ।

मेहन्हा दे० ( वि० ) ठोलिए, हँसोड़ ।

में ( सर्व० ) आप ।

मेंका ( पु० ) मां का घर ।

मेंका दे० ( पु० ) नैहर, पोहर, खियों का पितृगृह ।

मेंत्रो तद् ( स्त्री० ) मित्रता, बन्धुता, प्रेम, स्नेह ।

मैथिलो तद् ( स्त्री० ) जानकी, सीता, मिथिला देश  
की स्त्री । [ सङ्गम, प्रसङ्ग ।

मैथुन तद् ( पु० ) स्त्रीसंसर्ग, सुरत, रतिक्रिया,

मैफल तद् ( पु० ) औषध विशेष ।

मैना दे० ( स्त्री० ) एक पक्षी का नाम, सारिका, पार्वती  
की माता, मैना पक्षी । [ का पुत्र ।

मैनाक तद् ( पु० ) पर्वत विशेष, हिमालय पर्वत

मैमा दे० ( स्त्री० ) विमाता, सौतेली माता ।

मैया दे० ( स्त्री० ) महतारी, माता, अम्मा ।

मैल दे० ( स्त्री० ) मल, मुर्छा । [ मलिन ।

मैला दे० ( वि० ) गंदला, गंदा, अशुद्ध, अपवित्र,

मैहिका दे० ( पु० ) महिष, भैंस ।

मो दे० ( सर्व० ) मुक्त । [ रखना ।

मोकना दे० ( कि० ) छोड़ना, मेलना, धरना,

मोक्ष तद् ( पु० ) मुक्ति, परमानन्द प्राप्ति, कर्मबन्धन  
का नाश, छुटकाय, छुटकारा ।

मोखा दे० ( पु० ) झोला, जंगला, गवाच ।

मोगरा दे० ( पु० ) मुगरा, मुद्गर, पुष्प विशेष ।

मोगरी दे० ( स्त्री० ) मुद्गर, छोटा मुगरा ।

मोग्र तद् ( पु० ) प्राचीर, दीवार, ( वि० ) निरर्थक,  
हीन, व्यर्थ, व्यर्थ ।

मोच दे० ( पु० ) लचक ।—न तद् ( पु० ) उदार,  
उदारता, अपहरण ।—ना दे० ( पु० ) चिमरा,  
सिवड़ा ।—रस तद् ( पु० ) गोंद विशेष, सेमल  
वृक्ष का गोंद ।—श्रायो तद् ( पु० ) सेमल का  
वृक्ष ।

मोचा तद् ( पु० ) कदली वृक्ष, केले का गाम ।  
मोचो दे० ( पु० ) चमार, चर्मकार, जूता बनाने वाली  
जाति ।

मोङ्ग दे० ( स्त्री० ) मूँछ, मुँह पर का बाल ।

मोष्ट दे० ( पु० ) गरी, योम्, भार, चमड़े  
का ढोल ।

मोष्टकी दे० ( स्त्री० ) कुदारी, मोटी स्त्री ।

मोष्टरी ( स्त्री० ) पोटी, छोटी गाँठ ।

मोष्टा दे० ( वि० ) स्थूल, तुन्द ।

मोष्टापा दे० ( पु० ) स्थूलता, मोटाई । [ बाका ।

मोष्टिया दे० ( पु० ) कुली, भारवाहक, मोटरी होने

मोठ दे० ( पु० ) मोट, गठरी, योम् ।

मोड़ दे० ( पु० ) गोंक, फेर, घुमाव, घल, पेंढन ।

मोड़ना दे० ( कि० ) फेरना, घुमाना ।

मोड़ा दे० ( पु० ) मुड़ा हुआ, वैरागी, संन्यासी, साधु ।

मोढ़ा दे० ( पु० ) मूढ़, सरकंठे और जेबरी का बना  
बैठने का ऊँचा आसन, कंथा ।

मोठिया दे० ( पु० ) पुष्प विशेष, बेला का फूल ।

—विन्दु ( पु० ) रोग विशेष, आँख का एक रोग ।

मोती तद् ( स्त्री० ) मुक्ता, मौक्तिक, रत्न विशेष,

स्वनाम प्रसिद्ध समुद्रीय रत्न ।—की स्त्री घ्राच

उतारना ( वा० ) अप्रतिष्ठा होना, अपमान होना,

तिरस्कार होना, घनादर होना ।—कूट फर

भरने ( वा० ) प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना ।

—पिरोने ( वा० ) माला गूँथना, मधुरता के

साथ खेलना, या खिलना ।—चूर ( पु० ) एक

प्रकार की मिठाई का नाम ।

मोँथन, मोँथरा दे० ( वि० ) कुपित, मोठा ।

मोथरा दे० ( पु० ) बोधे का रोग विशेष, हड्डा रोग ।

मोथा दे० ( पु० ) एक पौधे की जड़, चागर मोथा ।

मोद् तद् ( पु० ) हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द ।

मोदक तद् ( पु० ) लड्डू । ( वि० ) हर्षदाता,  
हर्षकारक ।

मोदी दे० ( पु० ) परचूनिया, बनिया ।

मोघू दे० ( पु० ) सीधा, मोला, निरङ्गल, कपट रहित ।

मोनी दे० ( स्त्री० ) गोंक, अस्त्र आदि का ध्रम भाग ।

मोम दे० ( पु० ) मधुमल, शहद का कीट ।

मोमिया दे० ( पु० ) औषधि विशेष ।

मोर तद् ( पु० ) मयूर, पक्षि विशेष, शिखी, केकी ।  
—चङ्ग ( पु० ) मुरचङ्ग, वायु विशेष ।—झल  
( पु० ) चमर, एक प्रकार का चँवर ।—पङ्खी  
( स्त्री० ) एक प्रकार की नाव ।—मुकुट ( पु० )  
मोर पङ्ख का बना मुकुट ।

मोरहुति दे० मेरी तरफ से, मेरे वाली, मेरी वेर,  
मेरी थी । [ निकलने का मार्ग ।

मेरी दे० ( स्त्री० ) पनाला, नाला, मकान, का जल  
मोल दे० ( पु० ) भाव, दाम, मूल्य, किसी वस्तु का  
दाम ।—ठहराना ( वा० ) दाम लगाना, मूल्य  
आँकना, निरख ठहरना, दाम ठहराना ।—तोला  
( वा० ) भाव, कीमत, दर ।—चढ़ाना ( वा० )  
दाम बढ़ाना, भाव चढ़ाना ।—लेना ( वा० )  
झरीदना, बिसाहना ।

मोपक तत् ( पु० ) ढग, लुटेरा, धूर्त, चोर, तस्कर ।

मोसना दे० ( कि० ) चुराना, ढगना, लूटना ।

मोह तत् ( पु० ) मूर्च्छा, अज्ञानता, अविद्या, प्यार,  
माया, अधिक प्रेम, तामसिक प्रेम ।—में आना  
( वा० ) प्रिय के मिलने से अचेत होना ।

मोहन तत् ( पु० ) मोहने वाला, जिसको देखने से  
आपही आप मोह उत्पन्न हो, मोहना, वश करना ।  
( पु० ) श्रीकृष्ण का नाम ।—मोग ( पु० )  
भोजन विशेष, हलुया, सीरा ।—माला ( स्त्री० )  
माला विशेष, सोने और मूँगे के दानों से बनी  
माला । [ करना ।

मोहना दे० ( कि० ) वश करना, मन हरना, अधीन

मोहनी दे० ( स्त्री० ) भुलावन, मोहन करने वाली, वंश  
करने वाली, सुन्दरी, लुभावनी ।

मोहाना दे० ( पु० ) मुहाना, संगम स्थान, बेसी ।

मोहित तत् ( पु० ) मूर्च्छित, अचेत, मुग्ध, मोह  
प्राप्त । [ बिस्मय ।

मोहिनी तत् ( स्त्री० ) सुन्दरी, युवती, रूपवती,

मो दे० ( पु० ) मधु, शहद ।

मोआ ( पु० ) अवसर, ठीक स्थान ।

मौकफ ( पु० ) बंद, छुड़ाना, बरखास्त करना ।

मौकिक तत् ( पु० ) मोती, मुका ।

मौज ( स्त्री० ) लहर, तरंग ।

मौझी तत् ( स्त्री० ) मुञ्जतृण निर्मित मेखला, मूँज  
की फरधनी ।—वन्धन ( पु० ) मुञ्ज मेखला  
वन्धन, उपनयन, यज्ञोपवीत संस्कार । [ किरिटी ।

मौड़ दे० ( पु० ) मुकुट, मोर, सिंहरा, सिरपेंच,

मौन तत् ( पु० ) शब्द प्रयोग शून्यता, अभिप्राय,  
अकथन, तूष्णीभाव, चुपचाप ।—ग्रत ( पु० )  
न बोलने का नियम, अभिप्राय, चुपचाप रहना ।

मौना दे० ( पु० ) लटका, डबिया. दगरा ।

मौनी तत् ( पु० ) मौनवती, मौनयुक्त, नीरव, तूष्णी-  
म्भूत, मौन विशिष्ट ।

मौमाखी दे० ( स्त्री० ) मधुमक्षिका ।

मौर दे० ( पु० ) मझरी, यौर, कली, मुकुट, किरिटी,  
वह मुकुट विशेष जो विवाह के समय दूल्हा के  
सिर पर रखा जाता है । [ सित होना ।

मौराना दे० ( कि० ) खिलना, स्फुटित होना, विक-

मौरूसी ( पु० ) पुरतैनी, वंशानुगत ।

मौख्य तत् ( पु० ) मूर्खता, जड़ता, अनभिज्ञता ।

मौर्षी तत् ( स्त्री० ) धनुष का गुण, रोदा, चिला ।

मौलना दे० ( कि० ) बृषों में पुष्प लगाना, मझरित  
होना ।

मौलवी ( पु० ) इस्लाम धर्म का ज्ञाता, मालिक ।

मौलसिरी दे० ( स्त्री० ) एक वृक्ष और उसका पुष्प,  
वकुल, वकुल पुष्प ।

मौलाना दे० ( पु० ) मुसलमानों का धर्मगुरु ।

मौलि तत् ( स्त्री० ) मल्लक, सिर. भाल, माथा, चूड़ा,  
चोटी, किरिटी, मुकुट; संयत केश, धन्वी हुई चोटी ।

मौलिक तत् ( वि० ) मूल सम्बन्धी, जड़ का, जड़  
की वस्तु । ( पु० ) कुलीन भिन्न, अकुलीन ।

मौली दे० ( स्त्री० ) नारा, मुकुट, मल्लक ।

मौसा दे० ( पु० ) मौसी का पति, माँ की यहीन का  
पति, पिता का सावु ।

मौसी दे० ( स्त्री० ) माता की भगिनी, मातृप्वसा ।

मौसेरा दे० ( वि० ) मौसा के सम्बन्ध का ।

मौहूर्त्तिक तत् ( पु० ) ज्योतिर्विज्ञा, दैवज्ञ, गणक ।

अदिमा तत् ( स्त्री० ) संस्कृत में पुलिङ्ग मृदुता,  
कोमलता, नम्रता, नरमाई । [ कोमल ।

अदीयान तत् ( वि० ) अतिशय मृदु, अत्यन्त

त्रिप्रमाण तत् ( वि० ) मृतकल्प, अवसन्न, मृत  
तुल्य, मृतप्राय ।

ज्ञान तत् ( पु० ) मलिन, शुष्क, विरस, विपादयुक्त,  
खेदित ।—ता ( स्त्री० ) ज्ञानभाव, खेद, विपाद,  
विषयता, अवसन्नता ।—मुख ( वि० ) उदास,  
मलिन मुख, विपादयुक्त ।—वदन ( पु० )  
विषयमुख, उदासीन मुख ।

ज्ञानि तत् ( स्त्री० ) कान्तिचय, विपाद, खेद,  
शुष्कता, मलिनता ।

म्लिष्ट तत् ( पु० ) अस्पष्ट वाक्य, अभ्यक्त वचन,  
अस्पष्ट स्वर ।

स्तेक्य तत् ( पु० ) अन्यत्र जाति, किरात, शय्य,  
पापरत्न, वेदाचारहीन जाति ।—वेष्ट ( पु० )  
भेदों के रहने का देश ।

## य

य अन्यपर्य यकार, इल का छन्वीसवाँ व्यंज, इसका  
ब्रह्मण्य स्थान तालु है इस कारण इसको तालव्य  
कहते हैं । [ कर्ता ।

य तत् ( पु० ) वायु, यज्ञ, कीर्ति, योग, धान, गमन,  
यक ( पु० ) यज्ञविशेष ।

यकीन ( वि० ) निश्चय, भरोसा ।

यकृत् तत् ( पु० ) पेट के दाहिने ओर का मांस  
खण्ड, बदरोग, फीफर, तापिलिही, पिछही रोग ।

यक्ष तत् ( पु० ) देवयैनि विशेष, कुवेर के अनु-  
चर ।—राज ( पु० ) कुवेर, यक्षों के राजा ।

यक्षिणी ( स्त्री० ) यक्ष भार्या ।

यक्ष्मा तत् ( पु० ) रोग विशेष, फषी रोग ।

यज्ञ ( पु० ) अग्निहोत्री ।

यजन तत् ( पु० ) याग करना, पूजन, यज्ञ ।

यजमान तत् ( स्त्री० ) यज्ञकर्त्ता, यज्ञाहुष्ठान में  
धीक्षित, प्रती ।

यजाक ( वि० ) दाता, उदार ।

यजुः तत् ( पु० ) वेद विशेष, यजुर्वेद ।

यजुर्वेद तत् ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध वेद ।

यजुर्वेदी तत् ( वि० ) यजुर्वेदवेत्ता, यजुर्वेदाध्यापक,  
यजुर्वेद के अनुसार कर्म करने वाला ।

यज्ञ तत् ( पु० ) याग, अन्तर, मख, कतु, जाग,  
होम, हवन ।—अंश ( पु० ) यज्ञ की हवि, यज्ञ  
भाग ।—कुण्ड ( पु० ) यज्ञ करने के लिये  
चौकोना बना हुआ गर्त ।—देव तत् ( पु० ) यज्ञ  
के देवता, विष्णु, नारायण ।—पशु ( पु० )  
वह पशु जिसके मांस से यज्ञ किया जाय ।—पुरुष  
( पु० ) विष्णु, पुरुषोत्तम, नारायण ।—वेदी

( स्त्री० ) यज्ञ के लिये साफ की हुई भूमि ।

—भाजन ( पु० ) यज्ञार्थ पात्र, यज्ञ के यत्न ।

—भूमि ( स्त्री० ) यागस्थान, यज्ञस्थल, यज्ञशाला ।

—सूत्र ( पु० ) यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

यज्ञाङ्ग तत् ( पु० ) गूजर का वृक्ष, पादिर वृक्ष ।—

( स्त्री० ) सोमवल्ली, गूलर ।

यज्ञान्त ( पु० ) यज्ञ का अन्त, यज्ञ के अन्त का स्थान ।

यज्ञारि ( पु० ) शिव, त्रिपुरारि ।

यज्ञिक ( पु० ) पलाश वृक्ष ।

यज्ञीय ( पु० ) उदुम्बर वृक्ष, यज्ञ सम्पन्धी ।

यज्ञेश्वर ( पु० ) विष्णु ।

यज्ञोपवीत तत् ( पु० ) यज्ञसूत्र, मल्लसूत्र, जनेऊ,  
वक्षुषा । [ मान, याज्ञिक ।

यज्ञा तत् ( पु० ) वेद विधि पूर्वक यागकर्त्ता, यज्ञ

यतन तत् ( पु० ) यत्न, उपाय, चेष्टा, उद्योग ।

यत् ( अ० ) दे० जितना, जहाँ तक, ओ, जितका, जीता  
हुआ मुद्रा । [—चान्द्रायण ( पु० ) प्रत विशेष ।

यति तत् ( पु० ) जितेन्द्रिय, संन्यासी, परिमार्जक ।

यतन दे० ( पु० ) उपाय, उद्योग, तदवीर, बंदोबस्त ।

यतः ( अ० ) यस्मात्, चूँकि । [परिधर्मी ।

यतनी तत् ( स्त्री० ) यत्न करने वाला, उद्योगी,

यतीम ( पु० ) अनाय, मातृ पितृ हीन ।

यत्किञ्चित् तत् ( अ० ) थोड़ा बहुत, जो कुछ ।

यत्न तत् ( पु० ) यतन, उपाय, उद्योग, चेष्टा । [संभानी ।

यत्नो तत् ( वि० ) यतन करने वाला, शोधी, अनु-

यत्नवान् ( वि० ) देखो यत्नी ।

यत्न तत् ( अ० ) जहाँ, जिस स्थान पर, जिस स्थान  
में ।—तत्र ( अ० ) जहाँ वहाँ ।

मेर तद् ( पु० ) मयूर, पक्षि विशेष, शिखी, केकी ।  
—चङ्ग ( पु० ) मुरचङ्ग, वायु विशेष ।—ठल  
( पु० ) चमर, एक प्रकार का चैवर ।—पङ्खी  
( स्त्री० ) एक प्रकार की नाव ।—मुकुट ( पु० )  
मेर पङ्क का बना मुकुट ।

मेरदुति दे० मेरी तरफ से, मेरे वाली, मेरी बेर,  
मेरी थी । [ निकलने का मार्ग ।

मेरी दे० ( स्त्री० ) पनाला, नाला, मकान, का जल  
मोल दे० ( पु० ) भाव, दाम, मूल्य, किसी वस्तु का  
दाम ।—ठहराना ( वा० ) दाम लगाना, मूल्य  
आँकना, निरख ठहराना, दाम ठहराना ।—तोला  
( वा० ) भाव, कीमत, दर ।—चढ़ाना ( वा० )  
दाम बढ़ाना, भाव बढ़ाना ।—लेना ( वा० )  
खरीदना, बिसाहना ।

मेरपक तत् ( पु० ) डग, छुटेरा, धूँत, चोर, तस्कर ।

मेरसना दे० ( कि० ) घुमाना, ठगना, लूटना ।

मेरह तत् ( पु० ) मुरझा, अज्ञानता, अविद्या, प्यार,  
माया, अधिक प्रेम, तामसिक प्रेम ।—में छाना  
( वा० ) मित्र के मिलने से अचेत होना ।

मेरहन तत् ( पु० ) मेरहने वाला, जिसको देखने से  
आपसी आप मोह उत्पन्न हो, मोहना, वश करना ।  
( पु० ) श्रीकृष्ण का नाम ।—मेरा ( पु० )  
भोजन विशेष, हलुवा, सीरा ।—माला ( स्त्री० )  
माला विशेष, सोने और मूँगे के दानों से बनी  
माला । [ करना ।

मेरहना दे० ( कि० ) वश करना, मन हरना, अधीन

मेरहनी दे० ( स्त्री० ) सुजावन, मोहन करने वाली, वंश  
करने वाली, सुन्दरी, लुभायनी ।

मेरहाना दे० ( पु० ) मुहाना, संगम स्थान, बेणी ।

मेरहित तत् ( पु० ) मूर्च्छित, अचेत, सुग्ध, मोह  
प्राप्त । [ विरया ।

मेरहिनी तत् ( स्त्री० ) सुन्दरी, सुवती, रूपवती,

मौ दे० ( पु० ) मधु, महद ।

मौका ( पु० ) अवसर, ठीक स्थान ।

मौकूफ ( पु० ) बंद, छुड़ाना, धरखास्त करना ।

मौकिक तत् ( पु० ) मोती, मुक्ता ।

मौज ( स्त्री० ) लहर, तरंग ।

मौज्जी तत् ( स्त्री० ) मुञ्जवृक्ष निर्मित मेखला, मूँज  
की करघनी ।—वन्धन ( पु० ) मुञ्ज मेखला  
बन्धन, उपनयन, यज्ञोपवीत संस्कार । [ किरिद ।

मौड़ दे० ( पु० ) मुकुट, मौर, सिहरा, सिरपेंच,

मौन तत् ( पु० ) शब्द प्रयोग शून्यता, अभिप्राय,

अकथन, तूष्णीभाव, चुपचाप ।—व्रत ( पु० )

न बोलने का नियम, अभिप्राय, चुपचाप रहना ।

मौना दे० ( पु० ) जटका, बजिया, डगरा ।

मौनो तत् ( पु० ) मौनव्रती, मौनयुक्त, नीरव, तूष्णी-  
म्भूत, मौन विशिष्ट ।

मौमाखी दे० ( स्त्री० ) मधुमक्षिका ।

मौर दे० ( पु० ) मञ्जरी, बौर, कली, मुकुट, किरिद,  
वह मुकुट विशेष जो विवाह के समय दूहा के  
सिर पर रखा जाता है । [ सित होना ।

मौराना दे० ( कि० ) खिलना, स्फुटित होना, विक-

मौरूसी ( पु० ) पुरतनी, वंशानुगत ।

मौरुख्य तत् ( पु० ) मूर्खता, जड़ता, अनभिज्ञता ।

मौर्धी तत् ( स्त्री० ) घनुप का गुण, रोदा, चिला ।

मौलाना दे० ( कि० ) बृच्चों में पुण्य लगाना, मञ्जरित  
होना ।

मौलवी ( पु० ) इस्लाम धर्म का ज्ञाता, मालिक ।

मौलसिरी दे० ( स्त्री० ) एक वृक्ष और उसका पुष्प,  
वकुल, वकुल पुष्प ।

मौलाना दे० ( पु० ) मुसलमानों का धर्मगुरु ।

मौलि तत् ( स्त्री० ) मल्लक, सिर, भाल, माथा, चूड़ा,  
चोटी, किरिद, मुकुट, संयत केश, बन्धी हुई चोटी ।

मौलिक तत् ( वि० ) मूल सम्यग्धी, जड़ का, जड़  
की वस्तु । ( पु० ) कुलीन भिक्षु, अकुलीन ।

मौली दे० ( स्त्री० ) नारा, मुकुट, मल्लक ।

मौसा दे० ( पु० ) मौसी का पति, माँ की बहिन का  
पति, पिता का साढ़ ।

मौसी दे० ( स्त्री० ) माता की भगिनी, मातृपत्न्या ।

मौसेरा दे० ( वि० ) मौसा के सम्बन्ध का ।

मौहूर्त्तिक तत् ( पु० ) ज्योतिर्विज्ञा, दैवज्ञ, गणक ।

अदिमा तत् ( स्त्री० ) संस्कृत में पुलिङ्ग श्रुतता,  
कोमलता, नन्नता, नरमाई । [ कोमल ।

अदीयान तत् ( वि० ) अतिशय श्रुत, अत्यन्त

त्रियमाण तत् ( वि० ) मृतकल्प, अवसन्न, मृत  
तुल्य, मृतप्राय ।

म्नान तत् ( पु० ) मलिन, शुष्क, विरस, विपादयुक्त,  
खेदित ।—ता ( स्त्री० ) स्नानभाव, खेद, विपाद,  
विपर्ययाता, अवसन्नता ।—मुख ( वि० ) उदास,  
मलिन मुख, विपादयुक्त ।—चदन ( पु० )  
विपर्ययमुख, उदासीन मुख ।

म्नानि तत् ( स्त्री० ) कान्तिचम्प, विपाद, खेद,  
शुष्कता, मलिनता ।

म्नित तत् ( पु० ) अस्मत् वाच्य, अभ्यक्त वचन,  
अस्फुट स्वर ।

म्नेच्छ तत् ( पु० ) अन्त्यज जाति, किरात, शबर,  
पापरत, वेदाचारहीन जाति ।—वैश ( पु० )  
म्नेच्छों के रहने का देश ।

## य

य अन्यवत्थ प्रकार, ढल का छप्पीसवाँ वर्ष, इसका  
व्यवहार स्थान तालु है इस कारण इसको तालुष्य  
कहते हैं । [ कर्त्ता ।

य तत् ( पु० ) वायु, यज्ञ, कीर्त्ति, योग, यान, यमन,  
यक ( पु० ) यज्ञविशेष ।

यकीन ( वि० ) निश्चय, भरोसा ।

यकृत तत् ( पु० ) पेट के दाहिने ओर का मांस  
खण्ड, बदरोग, झीङा, तापतिष्ठी, पिलही रोग ।

यक्ष तत् ( पु० ) देवयोगि विशेष, कुबेर के अनु-  
चर ।—राज्ञ ( पु० ) कुबेर, यक्षों के राजा ।

यक्षिणी ( स्त्री० ) यक्ष भार्या ।

यक्ष्मा तत् ( पु० ) रोग विशेष, चर्बी रोग ।

यज्ञत्र ( पु० ) अग्निहोत्री ।

यज्ञन तत् ( पु० ) भाग करण, पूजन, यज्ञ ।

यज्ञमान तत् ( स्त्री० ) यज्ञकर्त्ता, यज्ञानुष्ठान में  
दीक्षित, व्रती ।

यज्ञाक ( वि० ) दाता, दधार ।

यजुः तत् ( पु० ) वेद विशेष, यजुर्वेद ।

यजुर्वेद तत् ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध वेद ।

यजुर्वेदी तत् ( वि० ) यजुर्वेदवेत्ता, यजुर्वेदाध्यापक,  
यजुर्वेद के अनुसार कर्म करने वाला ।

यज्ञ तत् ( पु० ) याग, अघ्नय, मख, ऋतु, जाग,  
होम, हवन ।—छांश ( पु० ) यज्ञ की हवि, यज्ञ  
भाग ।—कुण्ड ( पु० ) यज्ञ करने के लिये  
घोकोना बना हुआ गर्त ।—देव तत् ( पु० ) यज्ञ  
के देवता, विष्णु, नारायण ।—पशु ( पु० )  
यह पशु जिसके मांस से यज्ञ किया जाय ।—पुरुष  
( पु० ) विष्णु, पुरुषोत्तम, नारायण ।—वेदी

( स्त्री० ) यज्ञ के लिये साफ़ की हुई भूमि ।

—भाजन ( पु० ) यज्ञार्थ पात्र, यज्ञ के वर्तन ।

—भूमि ( स्त्री० ) यागस्थान, यज्ञस्थल, यज्ञशाला ।

—सूत्र ( पु० ) यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

यज्ञाङ्ग तत् ( पु० ) गृध्र का घृच, प्रादिर घृच ।—  
( स्त्री० ) सोमवल्ली, गूलर ।

यज्ञान्त ( पु० ) यज्ञ का अन्त, यज्ञ के अन्त का स्थान ।

यज्ञारि ( पु० ) शिव, त्रिपुरारि ।

यज्ञिक ( पु० ) पञ्चाश घृच ।

यज्ञोप ( पु० ) बहुभार घृच, यज्ञ सम्बन्धी ।

यज्ञेश्वर ( पु० ) विष्णु ।

यज्ञोपवीत तत् ( पु० ) यज्ञसूत्र, मण्डसूत्र, जनेऊ,  
बदमा । [ मान, याज्ञिक ।

यज्ञा तत् ( पु० ) वेद विधि पूर्वक यागकर्त्ता, पात्र

यतन तत् ( पु० ) यत्न, व्याय, चेष्टा, वद्योग ।

यत् ( भ० ) दे० जितना, जहाँ तक, ओ, जिसका, जीता  
हुआ मुद्रा । [—चान्द्रायण ( पु० ) व्रत विशेष ।

यति तत् ( पु० ) जितेन्द्रिय, सेव्यासी, परिमार्जक ।

यतन दे० ( पु० ) व्याय, वद्योग, तद्वीर, बंदोबस्त ।

यतः ( भ० ) यस्मात्, छंकि । [ परिभ्रमी ।

यतनी तत् ( स्त्री० ) यत्न करने वाला, वद्योगी,

यतीम ( पु० ) अनाय, माव पितृ हीन ।

यत्किञ्चित् तत् ( भ० ) थोड़ा बहुत, जो कुछ ।

यत्न तत् ( पु० ) यतन, व्याय, वद्योग, चेष्टा । [ सम्भानी ।

यत्नो तत् ( वि० ) यतन करने वाला, छोड़ी, भन्त-

यत्नवान् ( वि० ) रेतो बली ।

यत्न तत् ( भ० ) जहाँ, जिस स्थान पर, जिस स्थान  
में ।—तत्र ( भ० ) जहाँ तहाँ ।

यथा तत् ( अ० ) जैसा, ज्यों, जिस प्रकार, जिस रीति ।—कथञ्चित् ( अ० ) जिस किसी प्रकार से, वढ़े ऋष्ट से, वढ़े परिश्रम से ।—काल ( पु० ) यथा समय, उपयुक्त समय, उचित काल, समया-नुसार ।—क्रम ( पु० ) क्रमानुरूप, आनुपूर्विक, क्रमशः ।—तथा ( अ० ) जैसा तैसा, ज्यों त्यों ।—योग्य ( पु० ) यथोचित, जैसा उचित ।—र्थ ( वि० ) [यथा + अर्थ] ठीक, सत्य, उचित । ( अ० ) विधिवत्, यथायोग्य, व्यवस्था के अनुसार, रीति के अनुसार ।—विधि ( वि० ) विधिपूर्वक, विधि के अनुसार ।—शक्ति ( वि० ) सामर्थ्यानुसार, अपने बल के अनुसार ।—शास्त्र ( वि० ) शास्त्रा-नुसार, शास्त्रानुसूल ।—सम्भव ( वि० ) जैसा होने योग्य, जहाँ तक हो सके ।—साध्य ( वि० ) साध्यानुसार, यथाशक्ति ।—स्थि ( वि० ) सत्य, यथार्थ, निश्चित ।

यथावत् ( अ० ) सम्पूर्ण, समाप्त, सब । [मनोऽथ । यथेच्छा तद् ( स्त्री० ) यथेच्छ, इच्छानुसार, जैसा यथेष्ट तद् ( वि० ) इच्छानुसार, यथेच्छ, इच्छानुरूप, प्रचुर, अधिक । [कथित ।

यथोक्त तद् ( वि० ) पूर्वकथित, पूर्ववत्, पहले यथोचित तद् ( पु० ) यथा योग्य, जैसा उपयुक्त, उत्तम मत ।

यद्यपि ( अ० ) यद्यपि ।

यद्यर्थाय तद् ( अ० ) जब से, जिस काल से, जब तक ।

यद् ( वि० ) जो ।

यदा तद् ( अ० ) जब, जिस काल में ।

यदि तद् ( अ० ) पश्चात्तर, सम्भावनायै, यद्यपि ।

यक्षीय ( वि० ) जिसका ।

यद्गु ( पु० ) राजा विशेष ।—कुल ( पु० ) यदुवंश, यदुवंशी राज घराना विशेष ।—नाथ ( पु० ) श्रीकृष्ण ।—वंश ( पु० ) यदुराज का घराना ।—वंशी ( पु० ) यदु के वंश के लोग ।

यद्गुच्छा ( स्त्री० ) जैसी इच्छा हो ।

यद्यपि तद् ( अ० ) जो भी । [श्रित, अनियमित ।

यद्वा तद्वा तद् ( अ० ) ऐसा वैसा, अथवा पुरा, अनि-

यन्त्र तद् ( पु० ) कल, देवताओं का अधिष्ठान, पात्र विशेष, निमन्त्रण, युक्ति पूर्वक शिष्टय आदि कर्म

करने के लिये पक्षों विशेष, अग्नि यन्त्र, दाह यन्त्र आदि, कोष्ठक, हुटका ।

यन्त्राण तद् ( स्त्री० ) पीड़ा, दुःख, क्लेश ।—दायक ( पु० ) क्लेशदायक, दुःखदायक । [हृया ।

यन्त्रित तद् ( पु० ) नियमित, रोका हुआ, बंधा

यन्त्री तद् ( पु० ) ओम्हा, यन्त्र विशिष्ट ।

यम तद् ( पु० ) यमराज, काल, अन्तक, सूर्यपुत्र ।

—स्वप्ता ( स्त्री० ) यमुना ।

यमक तद् ( पु० ) शब्दालङ्कार विशेष, इस अलङ्कार के बहाहरण में एक ही शब्द की दो दो तीन तीन चार प्राप्ति होती है यथाः—

“ भिन्न अरय किरि किरि जहाँ वेई अजर घुन्द, थावत हैं सो यमक कहि वनत हुदि बिलन्द ” ।

शिवराज मूपण ।

यमदूत तद् ( पु० ) यमराज का गण, यम का सन्देश, मृत्यु का लक्षण ।

यमज ( वि० ) जोड़ा, एक साथ जन्मे दो ।

यमघार तद् ( पु० ) कटार, अस्त्र विशेष ।

यमन तद् ( पु० ) यवन, मुसलमान, राग विशेष ।

यमनिका तद् ( स्त्री० ) कनात, परदा ।

यमनी ( वि० ) यमन वेश का ।

यमल तद् ( पु० ) जोड़ा, युग, दो ।

यमलार्जुन तद् ( पु० ) वृक्ष विशेष, कहते हैं कुबेर के दोनों लड़के बेरयाओं के साथ गङ्गा में नङ्गे स्नान करते थे । अभाग्यवश नारद वहीं आ पहुँचे, उन्होंने इस अनीति को देख कर कुबेर के बेटों को शाप दिया कि तुम दोनों वृक्ष हो जाओ, नारद के शाप से वे ठो वृक्ष हो गये । पुनः अग-वान् कृष्ण ने इनको नारदजी के शाप से उबार ।

यमुना ( स्त्री० ) जमुना नदी ।—प्राता ( पु० ) यमराज ।

यत्नापैल तद् ( वि० ) विपरा, पसरा, फैला ।

यव तद् ( पु० ) अन्न विशेष, जौ ।—क्षार ( पु० ) लवण विशेष, शोरा ।

यवन तद् ( पु० ) यमन, मुसलमान ।

यवनिका ( स्त्री० ) देखो “ यमनिका ” ।

यवशा ( स्त्री० ) अजवाइन ।

यवस ( पु० ) वृक्ष, घास ।

यवागू ( पु० ) रेगी का आद्य विशेष ।

यथोपस ( वि० ) छोटा, युवा ।

यश तत्त्वं ( पु० ) कीर्ति, श्वाति, प्रसिद्धि, नाम, नामवरी ।—स्कर ( वि० ) कीर्तिकारक ।

यशस्वी तत्त्वं ( वि० ) कीर्तिमान्, सुख्यात, लब्ध, प्रतिष्ठा ।

यशोदा तत्त्वं ( स्त्री० ) नन्दपत्नी, श्रीकृष्ण की माता ।

यष्टि, यष्टिका तत्त्वं ( स्त्री० ) लाठी, खकड़ी, छड़ी ।

यह दे० ( सर्व० ) निश्चयवाचक सर्वनाम ।

यहाँ दे० ( प्र० ) इधर, इस ओर, इस स्थान पर ।

—का यही ( प्र० ) ठीक इसी स्थान ।

या ( सर्व० ) यह । ( अग्न्य० ) वा, हे ।

याग तत्त्वं ( पु० ) यज्ञ, होम, हवन, यज्ञ ।

याचक तत्त्वं ( पु० ) जाचक, मिथुक, भँगत, मिथारी फकीर ।

याचना दे० ( क्रि० ) भीख माँगना ।

याजक तत्त्वं ( पु० ) याज्ञिक, ऋत्विज, पुरोहित ।

याजन तत्त्वं ( पु० ) याज्ञिक का कर्म, यज्ञ कराना ।

याज्ञिक तत्त्वं ( पु० ) यज्ञ करने वाला ।

यातना तत्त्वं ( स्त्री० ) ससत, दण्ड, पीड़ा, दुःख, तीव्र वेदना, अधिक कष्ट ।

यातायात तत्त्वं ( पु० ) आवागमन, गमनागमन ।

यातुधातु तत्त्वं ( पु० ) राक्षस, निशाचर, दैत्य ।

यात्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) कूच, प्रस्थान ।

यात्री तत्त्वं ( पु० ) परदेशी, तीर्थ करैया, मुसाफिर ।

याथार्थिक तत्त्वं ( वि० ) वास्तविक, ठीक, सत्य ।

याथार्थ्य तत्त्वं ( पु० ) सत्यता, सचाई, यथार्थता ।

याद् ( पु० ) बुध, कण्ठ ।—व ( पु० ) श्रीकृष्ण ।

यान तत्त्वं ( पु० ) सवारी, वाहन ।

यानी ( अग्न्य० ) धर्मार्थ । [ काल काटना ।

यापन तत्त्वं ( पु० ) निर्वाह, कालचेष्ट, समय बिताना, यावू दे० ( पु० ) टाँगन, टट्टू ।

यावूक तत्त्वं ( पु० ) महावर, खाल रह, लास ।

याम ( पु० ) पहर, प्रहर, समय ।—घोष ( पु० )

गुर्ग ।—ता ( पु० ) जामाता ।

यामि ( स्त्री० ) धर्मपत्नी ।

यामिनी तत्त्वं ( स्त्री० ) रात, रात्रि, निशा, रजनी ।

यामना ( पु० ) सुरमा, अंजन ।

याम्य ( पु० ) चन्दन का पेड़, अगस्त्यमुनि ।

यमावर ( पु० ) अरवविशेष जो धन्वमेघ में काम आता है । अयाचित भीत ।

यार ( पु० ) मित्र, दोस्त ।

यायाक ( पु० ) लास, शाली ।

यावज्जीवन तत्त्वं ( पु० ) यावदायुः, जीवन पर्यन्त ।

यावत् तत्त्वं ( प्र० ) जब तक, जब लग, जबतहीं ।

यावनी ( स्त्री० ) यवनों की ।—भाषा ( स्त्री० ) यवनों की भाषा ।

याही ( सर्व० ) इसे, इसको ।

यियुत्तु ( वि० ) यज्ञ करने की इच्छा रखने वाला ।

युक्त तत्त्वं ( वि० ) विशिष्ट, सहित, समेत ( पु० ) उचित, योग्य, यथार्थ ।

युक्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) मिलन, मेल, योग्यता, प्रवीणता, चतुराई, चतुरता, हथौटी, विवेचना ।

युग तत्त्वं ( पु० ) दो, युग्म, जोड़ा, जुग, सत्य व्रता आदि चार युग, बृद्धि नामक चौपध, चार हाथ, रथ, हल आदि का अन्न विशेष, जुमाक, जुर्मा ।

—धर्म ( पु० ) काल का धर्म, कालमाहारण्य ।

—पत् ( प्र० ) एकदा, एक कालीन, एक समय ।

युगल तत्त्वं ( पु० ) दो, जोड़ा ।—मन्त्र ( पु० )

लक्ष्मीनारायण का मन्त्र, दो देवता का मन्त्र ।

युगान्त तत्त्वं ( पु० ) प्रलय, युगशेष, युग का अवसान ।

युग्म तत्त्वं ( पु० ) दो, जोड़ा, युग, द्वय ।—पत्र ( पु० ) रक्तकाण्वन वृक्ष ।—पर्य ( पु० ) कोवि-  
दारवृक्ष, सप्तवर्ष वृक्ष ।

युजान ( पु० ) गाड़ीवान्, सारथी । [ योग्य ।

युज्यमान तत्त्वं ( वि० ) युक्त होने के इष्टयुक्त, मिलने युज्जान तत्त्वं ( पु० ) सूत, साराधि, वि०, ध्यान के

द्वारा सब बातों को जानने वाला योगी ।

युत तत्त्वं ( वि० ) मिलित, अष्टपगभूत, एकत्र, विशिष्ट, जड़ित । ( पु० ) इक्षुवृक्ष, चार हाथ ।

युद्ध तत्त्वं ( पु० ) लड़ाई, संघात, समार, विशार ।—निर्देश ( पु० ) युद्ध की आज्ञा, युद्ध का संश्लेष ।

—सज्जा ( स्त्री० ) युद्ध की तैयारी ।

युधाजित् ( पु० ) अरत के मामा का नाम ।

युधारन ( पु० ) चरित्र जाति । [ पाण्डव ।

युधिष्ठिर तत्त्वं ( पु० ) पाण्डुपुत्र, अज्ञात शत्रु, प्रथम



युयु ( पु० ) घोड़ा, अश्व । [ नाम ।  
 युयुत् ( पु० ) योद्धा, सिपाही घतराष्ट्र का दूसरा  
 युवक तत् ( पु० ) तरुण, जवान, नवीन, युवा । [ स्त्री ।  
 युवती तत् ( स्त्री० ) यौवनवती, तरुणी, युवावस्था वाली  
 युवन ( वि० ) युवा । [ का उत्तराधिकारी ।  
 युवराज तत् ( पु० ) राजा का बड़ा बच्चा, राज्य  
 युवा तत् ( पु० ) जवान, तरुण, यौवन अवस्था वाला ।  
 युष्मद् ( सर्व० ) तू, हम ।  
 यू दे० ( अ० ) ऐसा, इस प्रकार ।  
 यूही ( अन्व० ) इसी तरह ।  
 यूक ( पु० ) जू, मङ्कुष, छटमल ।  
 यूय तत् ( पु० ) सत्रातीय समूह, वृन्द ।—नाथ  
 ( पु० ) वनेला हाथियों के मध्य में श्रेष्ठ हाथी ।  
 —प ( पु० ) सेनापति, दल का प्रधान ।—भ्रष्ट  
 ( पु० ) समूह से निकला हुआ हस्ति ।  
 यूयी ( स्त्री० ) लुही ।  
 यूय तत् ( पु० ) यंजस्तम्भ, छम्मा ।  
 यूय तत् ( पु० ) जूस, पथ्य विशेष ।  
 योग तत् ( पु० ) सामादि चतुर्विध 'उपाय', सङ्गति,  
 युक्ति, चित्तवृत्तिनिरोध, विषयान्तर से मन की  
 निवृत्ति, मेल, संयोग ।—ज ( पु० ) ब्रह्मीक  
 सन्निकर्ष । ( वि० ) योगसम्बन्धी ।—निद्रा  
 ध्यान ।—पट्ट ( पु० ) ध्यान करते समय पहिने  
 का कपड़ा ।—भ्रष्ट ( वि० ) योग से गिरा हुआ ।—  
 —माया ( स्त्री० ) महामाया, पावेती ।—रुद्धि  
 ( स्त्री० ) शब्द विशेष ।—रुद्ध ( स्त्री० ) योगी ।

योगिनी तत् ( पु० ) श्रुतिनी, पिशाचिनी, दाकिनी ।  
 योगी तत् ( पु० ) योगसाधक, तपस्वी ।  
 योगेश्वर तत् ( पु० ) सिद्ध, तपस्वी, योगी ।  
 योग्य तत् ( पु० ) उपयुक्त, उचित, यथार्थ ।—ता  
 ( स्त्री० ) निपुणता ।  
 योजक ( पु० ) मिलाने वाला, दलाल ।  
 योजन तत् ( पु० ) चार कोस का परिमाण ।—गन्धा  
 ( स्त्री० ) कस्तुरि ।  
 योजना तत् ( स्त्री० ) विन्यास, मिलाप, योग्य का  
 योग्य के साथ विन्यास करना ।  
 योद्धा तत् ( पु० ) यूर, वीर, लड़ने वाला, सैनिक,  
 सिपाही ।  
 योधन तत् ( पु० ) युद्ध, लड़ाई, संग्राम ।  
 योधा ( पु० ) देखो योद्धा ।  
 योधापन दे० ( पु० ) वीरता, शूरता ।  
 योनि तत् ( स्त्री० ) स्त्रीचिह्न, भग, उपसृति स्थान ।  
 योपित तत् ( स्त्री० ) नारी, स्त्री, अबका, बाला ।  
 यौ दे० ( अ० ) इस प्रकार, ऐसा, इस रीति ।  
 यौतिक तत् ( पु० ) ज्योतिष, सङ्ग विद्या, गणित ।  
 यौतुक तत् ( पु० ) दहेन, दायजा ।  
 यौधेय ( पु० ) योद्धा ।  
 यौवन तत् ( पु० ) जवानी, तरुणाई, यौवनावस्था ।  
 —जक्षणा ( वि० ) लावण्य, खूबसूरती ।  
 यौवनाश्व ( पु० ) मान्धाता राजा का नाम ।  
 यौवराज्य ( वि० ) युवराजपद ।  
 यौत्सना ( स्त्री० ) उजियाली रात ।

र

र यह व्यञ्जन का सच्चाइसर्वा धर्म है । इसका उच्चारण  
 स्थान मूर्दा है । इससे यह अक्षर मूर्दन्य कहा  
 जाता है ।

र तत् ( पु० ) शक्ति, कामाग्नि । ( वि० ) तीक्ष्ण ।  
 रर दे० ( स्त्री० ) मयनी, बिलोनी ।  
 ररस ( पु० ) घनी, राजा ।  
 ररस तत् ( स्त्री० ) रश्मि, किरण, दीप्ति ।  
 ररुट, ररुट दे० ( पु० ) लल निकालने का यन्त्र ।  
 ररस ( वि० ) शीघ्रता, तेजी ।

रकुवा ( पु० ) क्षेत्रफल, विस्तार ।  
 रकुम ( पु० ) सावाद, तहरीर ।  
 रकाव ( स्त्री० ) छोड़े की कांटी का पायदान ।  
 रकावी ( स्त्री० ) तरतरी ।  
 रक्त तत् ( पु० ) रक्षिर, लोह, शोणित, कुँकुम,  
 केशर । ( वि० ) रक्त वर्ण, खाल रंग ।—क्रोद्ध  
 ( पु० ) रक्त कुट कुट रोग विशेष ।—झ ( पु० )  
 लोच वृष्ट ।—चन्दन ( चन्दन, देवी  
 ( पु० ) ( स्त्री० )

जौक, जलौका ।—पात ( पु० ) हत्या, रुधिरपात, बौह का गिरना ।—पित्त ( पु० ) रक्तचाप रोग ।  
—बीज ( पु० ) एक राक्षस का नाम, यह राक्षस शुम्भ निशुम्भ का सेनापति था । यह दुर्गा के हाथ से मारा गया ।

रत्नाकार ( पु० ) मृंगा, प्रवाल ।

रत्नाक्ष ( पु० ) मैसा, चकोर, कोकिल, सारस कव्तर, लाल नेत्रवाला ।

रत्नाक ( पु० ) मदार, शकौचा ।

रत्निका ( स्त्री० ) घुघची ।

रत्नोत्पल ( पु० ) लालकमल, शास्त्रमयी वृक्ष ।

रत्नक तत्त्वं ( पु० ) रक्षा करने वाला, पालने वाला, पात्रक, वद्वारकर्ता, स्वामी, प्रभु ।

रत्नय तत्त्वं ( पु० ) रक्षा, पालन, पोषण । [ नीच ।

रत्नस्त तत्त्वं ( पु० ) राक्षस, निशाचर, सर्कर्म द्वेषी,

रत्ना तत्त्वं ( स्त्री० ) बचाव, पचाना, रखवाली करना, राख, भस्म ।—पेक्षक ( पु० ) [ रक्षा + प्रवेचक ] द्वारपाल, डेवड़ीदार, सिपाही, दरवान ।

रक्षित तत्त्वं ( पु० ) रक्षा हुआ, रक्षा किया हुआ ।

रक्ष छोड़ना दे० ( क्रि० ) घरना, रखना, सौंपना, अर्पण करना । [ करना ।

रक्ष देना दे० ( क्रि० ) घरना, रखना, टिकाना, स्थापित

रखना दे० ( क्रि० ) ल्यागना, सौंपना सौंपना ।

रखवाना दे० ( क्रि० ) धराना, सौंपाना, प्रेषित करना ।

रखवाला दे० ( पु० ) रक्षक, रक्षा करने वाला, गढ़-रिया, चरवाहा ।

रखवाली दे० ( स्त्री० ) रक्षा, रक्षाई, रखवाली ।

रखिया दे० ( पु० ) रक्षा, बचाव, रखवाली, रक्षाई ।

रखी दे० ( स्त्री० ) रक्षा का कर ।

रखौया दे० ( पु० ) रक्षक, रखवाला, रक्षा करनेवाला ।

रग दे० ( स्त्री० ) रोग, माड़ी, नस ।

रगड़ दे० ( स्त्री० ) सहृषण, घिसाव ।

रगड़ना दे० ( क्रि० ) घोंटना, मलना, घिसना ।

रगड़ा दे० ( पु० ) झगड़ा, घिसाव, बलात्कार से लड़ाई ।—भगाड़ा ( वा० ) लड़ाई, दंगा, बखेड़ा, फसाद ।

रगेद ( स्त्री० ) छदेद ।

रगेवना दे० ( क्रि० ) छदेदना, भगाना, पीछा करना ।

रङ्ग, रङ्ग दे० ( पु० ) कङ्काल, दरिद्र, कृपण ।

रघु तत्त्वं ( पु० ) एक सूर्यवंशी राजा । राजा द्विजीव का पुत्र । इन्हींके वंश में श्रीरामचन्द्र ने अवतार लिया था ।—नन्दन ( पु० ) श्रीरामचन्द्र ।—नाथ ( पु० ) श्रीराम ।—पति ( पु० ) श्रीराम रघुनाथ ।—राज ( पु० ) श्रीराम सीता के एक राजा ।—चंश ( पु० ) रघुकुल, काम्य विशेष, काबिदास का बनाया एक काव्य ।—चर ( पु० ) रघुप्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।

रङ्ग, रंग तत्त्वं ( पु० ) वर्ण, डोल, रीति, ढंग ।

—उड़ जाना ( वा० ) रंग बदल जाना, रंग फीका

पड़ना ।—उतर जाना ( वा० ) पीला होना, रंग

फीका पड़ना, सोच में होना, कुतूहा, कल्पना ।

—करना ( वा० ) सुखी करना, बिलसना, समय

को आनन्द में बिताना ।—चढ़ना ( वा० ) गहो

में चूर होना ।—देखना ( वा० ) परिमाण देखना,

निष्पत्ति देखना ।—नाथ तत्त्वं ( पु० ) भगवान्

विष्णु की मूर्ति विशेष जो दक्षिण देश में है ।

यह श्रीवैष्णवों का प्रधान पवित्र स्थान है ।

—वरंग ( पु० ) अनेक रंग का, चित्र विचित्र

भाँति भाँति ।—विगड़ना ( वा० ) किसी की

बुरा विगड़ना, रंग उबरना ।—भङ्ग ( पु० )

आनन्द में विगाड़ होना, आनन्द में खेद ।

—भूमि ( स्त्री० ) नाट्यशाला, नाटक खेलने का

स्थान ।—महल ( पु० ) आनन्द काने का महल,

विलास करने का महल ।—मारना ( वा० ) खेल

जीतना ।—रलिया ( स्त्री० ) आनन्द, हर्ष,

हुवांस, भोग विलास ।—रस ( पु० ) आनन्द,

हर्ष ।—रातना ( पु० ) अति अनिष्ट मित्रता ।

—रावा ( वा० ) रंगा हुआ, प्रसन्न, आनन्द ।

—रूप ( पु० ) आकार प्रकार, रंग ढंग, धमक

दमक ।—लगना ( वा० ) रंगना, अपना अधि-

कार जमाना, प्रमाण विस्तार करना ।—

साजी दे० ( स्त्री० ) विप्रकारी, रंग चढ़ाने का

काम ।

रङ्गना, रंगना दे० ( क्रि० ) रंग करना, रंग चढ़ाना ।

रङ्गवाई, रंगवाई दे० ( स्त्री० ) रंगने का काम, रंगने की मजूरी ।

रङ्गवैया, रंगवैया दे० ( पु० ) रंगनेहार, रंगकार,  
रंग करने वाला ।  
रङ्गाई, रंगाई दे० ( स्त्री० ) रंगने का पैसा, रंगवाई ।  
रङ्गाना, रंगाना दे० ( क्रि० ) रंगवाना, रंग करना ।  
रङ्गावट, रंगावट दे० ( स्त्री० ) रंगाई, रंगाई देना ।  
रङ्गी, रङ्गीला, रंगी, रंगोला दे० ( पु० ) रसीला,  
रसिक, मीठी, छेला, चमकीला ।  
रचक तत्त्वं ( पु० ) रचना करने वाला, निर्माता ।  
( अ० ) थोड़ा, स्वल्प, सजावट, सजाने वाला,  
समैया ।  
रचना तत्त्वं ( स्त्री० ) यनावट, सजावट ।  
रचयिता ( पु० ) निर्माता, रचने वाला ।  
रचाना दे० ( क्रि० ) यमाना, सजाना ।  
रज तत्त्वं ( स्त्री० ) भूजि, पराग, रेत ।  
रजस ( स्त्री० ) भूल, पराग, रेत ।  
रजक तत्त्वं ( पु० ) धोबी, कपड़े धोने वाला ।  
रजत तत्त्वं ( पु० ) चाँदी, रूपा, रौप्य ।—द्युति ( पु० )  
गौरवर्ण, श्वेत वर्ण ।  
रजन तत्त्वं ( पु० ) राग श्यादन, रंगना, रंग चढ़ाना ।  
रजनि, रजनी तत्त्वं ( स्त्री० ) रात्रि, रात, यामिनी ।  
—कर ( पु० ) चन्द्रमा, चन्द्र ।—चर ( पु० )  
राफल, असुर, निशाचर, भूत ।—जल ( पु० )  
गुप्ता, ओस, मीहार, कुहार, कुहेसा ।—मुख  
( पु० ) प्रदोष, सन्ध्याकाल । [ स्थान ।  
रजधानी तत्त्वं ( स्त्री० ) राजधानी, राजा के रहने का  
रजवाड़ा दे० ( पु० ) राज्य, रामसमूह, राजस्थान ।  
रजस्वला तत्त्वं ( स्त्री० ) ऋतुमती स्त्री ।  
रजाई दे० ( स्त्री० ) आश्रा, आयसु, रजा, हुबन, छुटी,  
मोहलत ।  
रजाई ( स्त्री० ) शीतकाल में ओढ़ने का कपड़ा विशेष ।  
रजामंदी ( स्त्री० ) प्रसन्नता, खुशी, अनुमति ।  
रजाय दे० ( पु० ) आश्रा, अनुशासन ।  
रजायसु दे० ( पु० ) राजाशा, राजा का आदेश ।  
रजोगुण तत्त्वं ( पु० ) प्रकृति के त्रिविध गुणों में का  
एक गुण ।  
रजोवती तत्त्वं ( स्त्री० ) रजस्वला, ऋतुमती ।  
रज्जु तत्त्वं ( स्त्री० ) सूत, रस्सी, डोरी, जेबरी ।  
रज्जक तत्त्वं ( पु० ) चित्रकार, रंगसाज, रंग करनेवाला ।

रञ्जन तत्त्वं ( पु० ) रंगसाजी, चित्रकारी ।  
रटन दे० ( पु० ) घोपना, रटना, एक बात को कई  
बार कहना ।  
रटना दे० ( क्रि० ) घरावर घोलते रहना, कई बार  
घोलना, दोहराना तिराना ।  
रण तत्त्वं ( पु० ) युद्ध, खड़ाई, संग्राम, समर ।  
—गद्दा ( पु० ) गद्द, छाई, मोर्चा बन्दी ।—भूमि  
( स्त्री० ) समर भूमि, युद्ध भूमि, रणक्षेत्र,  
रणक्षेत्र ।—घास ( पु० ) महल, रानियों के रहने  
का स्थान ।  
रणित तत्त्वं ( वि० ) शक्ति, वज्रता हुआ ।  
रण्ड ( पु० ) रेंड, रेंडी । [ स्त्री, असुहागिनी, विधवा स्त्री ।  
रण्डा तत्त्वं ( स्त्री० ) रंडि, विधवा, बिना पति की  
रण्डापा, रंडापा दे० ( पु० ) वैधव्य, विधवापन ।  
रणिडिया, रंडिया दे० ( स्त्री० ) रण्ड, विधवा स्त्री ।  
रणडी, रंडी दे० ( स्त्री० ) वेस्वा, पतुरिया, दुरा-  
चारिणी ।  
रंडूया दे० ( पु० ) वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो ।  
रत तत्त्वं ( पु० ) मैथुन, कामकेलि, स्त्री प्रसन्न । ( वि० )  
आसक्त, लब्धवीन —जगा ( पु० ) रात्रि जागाण ।  
—तालिन ( पु० ) उस्ताद, कामुक, भुवना, पर-  
स्त्रीगामी ।—ताली ( स्त्री० ) कुटनी, पुंशक्ती ।  
रतन तत्त्वं ( पु० ) रत्न, हीरा आदि रत्न ।  
रतनार दे० ( वि० ) लाल वर्ण का, लाल रंग का ।  
रतनिया दे० ( पु० ) एक प्रकार का चाँवल ।  
रतयाही दे० ( स्त्री० ) सुरैतिन, रसी हुई स्त्री । ( अ० )  
रात ही रात, रातोंरात ।  
रताना दे० ( क्रि० ) कामातुर होना ।  
रतायनी ( स्त्री० ) वेस्वा, रंडी ।  
रतालू दे० ( पु० ) एक प्रकार का मूल ।  
रति ( स्त्री० ) रत्नी, आठ चाँवल की ताल ।  
रती दे० ( स्त्री० ) धीति, प्रेम, क्रीड़ा, स्त्री सङ्ग, काम-  
देव की स्त्री ।—पति ( पु० ) कामदेव, कन्दर्प,  
अनङ्ग ।  
रतीचमकना दे० ( या० ) पढ़ना, फलना, फूटना,  
भाग्यवान् होना ।  
रतीवन्त दे० ( वि० ) भाग्यवान्, प्रारब्ध ।  
रतीया दे० ( पु० ) वह पुरुष जिसे रतीधी का रोग हो ।

रतींधी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, यह रोग जिसके होने से रात में न देख पड़े।

रत्ती दे० (स्त्री०) तैल विशेष, घाट यंत्र का तैल।

रत्न तत्त्वं (पु०) मणि, बहुमूल्य पत्थर।—कन्दर्ज

(पु०) मूँगा, प्रवाल, विद्रुम।—गर्म (पु०)

समुद्र, सागर। (स्त्री०) पृथिवी, भूमि, धरती।

—जटित (वि०) रत्नसंचित, रत्नभूषित, जिसमें

रत्न जड़े हों।—जोत (पु०) एक प्रकार का

पौधा, अश्व की औषध।—माला। (स्त्री०)

रत्नों की बनी माला, मोती की माला।—सानु

(पु०) देवालय, देवलोक, सुमेरु पर्वत।

—सिंहासन (पु०) राजसिंहासन, रत्नों से जड़ा

हुआ सिंहासन। (स्त्री०) मेदिनी, पृथिवी।

रत्नाकर तत्त्वं (पु०) महेन्द्र, सागर, समुद्र।

रत्नावली तत्त्वं (स्त्री०) रत्नों की माला, रत्न श्रेणि, एक

माटिका का नाम, जिसे राजा धौहर्य ने बनाया था।

रथ तत्त्वं (पु०) गाड़ी, बहल।—कार (पु०) रथ

बनाने वाला, बढ़ई, घण्टासूत्र जाति विशेष,

माहिष जाति के पुरुष से करण जाति की कन्या

में उत्पन्न सन्तान को रथकार कहते हैं।—गर्मक

(पु०) शिविका, पालकी।—गुप्ति (स्त्री०) रथ

का परदा, ओढ़ार।—पाद (पु०) पहिया,

चाका।—वान (पु०) सारथी, रथवाह, रथ

हाँकने वाला।—पादक (पु०) सारथी,

रथवान, यन्त्रा। [ चक्का।

रथाङ्ग तत्त्वं (पु०) [ रथ + अङ्ग ] पहिया, चक्का,

रथी तत्त्वं (पु०) सवार, रथ पर चलने वाला, रथ

का स्वामी।

रथ्या तत्त्वं (स्त्री०) गली, मार्ग, राह, बाट, डगर।

रत्न, रत्न तत्त्वं (पु०) दाँत, दशन, दन्त निष्प्रयोजन।

रत्नचिह्न, रंगार, उगाळ, छाँट, कै।—रत्नक (पु०)

धोळ, चघर, ओठ।

रत्ना दे० (पु०) नील की परत।

रत्नी दे० (स्त्री०) निकम्मा, पुराना कागज।

रत्न तत्त्वं (पु०) रथ, युद्ध, संग्राम, समर।—गढ़

(पु०) छावनी, शिविर।—घन (पु०) महाबल,

भयानक वन।—घास (पु०) रात्रियों के रहने

का स्थान।

रन्तिदेव तत्त्वं (पु०) शन्द्रवंशी राजा विशेष।

रन्धना दे० (कि०) पकना, पुराना, सीजे जाना।

रन्ध तत्त्वं (पु०) बिद, वेद, चित।

रपट, रपटन दे० (स्त्री०) फिसलन, खिसकन।

रपटना दे० (कि०) फिपलना, गिरना, खिसकना।

रपटा दे० (पु०) अभ्यास, धान, स्वभाव।

रपटाना दे० (कि०) दौड़ना, मगाना, कुशाना।

रफूचकर (कि०) भाग जाना।

रफूगर (पु०) फटे कपड़ों की मरम्मत करनेवाला।

रवड़ दे० (स्त्री०) भ्रम, चकाई, धकावट, हाड़ धूप,

एक घुघ का दूध। [ धकना, धम करना।

रवड़ना दे० (कि०) व्यर्थ दौड़ धूप करना, भटकना,

रवड़ा दे० (वि०) भ्रान्त, धका। [ रौंटा दूध।

रवड़ी दे० (स्त्री०) बलौरी, मीठा डाल कर खूब

रबी (पु०) मार्च, अपरैल में काटी जानेवाली अनाज

की फसल।

रम (स्त्री०) मदिरा विशेष। [ भूय, पाछ।

रमचेरा दे० (पु०) गुलाम, किह्लर, नौकर, सेवक,

रमठ (पु०) हाँग।

रमण तत्त्वं (पु०) [ रत्न + भ्रमट ] चित विनोद,

क्रीड़ा, खेल, विहार, साधियों के साथ क्रीड़ा।

रमणी तत्त्वं (स्त्री०) मनेहारिणी स्त्री, सुन्दरी स्त्री,

खलना, महिला।

रमणीक तत्त्वं (वि०) मनभावन, मनेहार, सुन्दर।

रमणीय तत्त्वं (वि०) मनेहार, सुन्दर, सुपढ़।

रमन दे० (पु०) खेल, क्रीड़ा, भौतुक, विहार।

रमना दे० (कि०) रमण करना, खेलना, कृदना।

रमझा दे० (पु०) जाने या भीतर घुलने की परवानगी

का पत्र, पत्रन। [ अङ्ग विशेष, पत्रन शास्त्र।

रमल तत्त्वं (पु०) विदेशी फलित, ज्योतिष शास्त्र का

रमा तत्त्वं (स्त्री०) अक्षरी, विष्णुपत्नी।—पति

(पु०) विष्णु।

रमाना दे० (कि०) खिलाना, फुसलाना, बफाना।

रम्मा तत्त्वं (स्त्री०) स्वार्णिकना विशेष, एक अप्सरा

का नाम, केली, कदली।

रम्या तत्त्वं (स्त्री०) रात्रि, सुन्दरी, मनेहारिणी, पद्मिनी।

रय तत्त्वं (पु०) वेग, प्रवाद, धारा।

रयो (कि०) मिले, रंगे।

ररना (क्रि०) बोलना ।

रलना (क्रि०) मिलाया, पितना, मिसना, साधा-  
रकार करना ।

रलाना दे० (क्रि०) मिसाना, मीचाना ।

रलजक तत्त्वं ( पु० ) कम्बल, पशमीने का कम्बल ।

रल तत्त्वं ( पु० ) शब्द, ध्वनि, नाद, विनाद, आहट ।

रलना दे० ( पु० ) रनवास का सेवक, चुंगी की फूस ।

रवा दे० ( पु० ) छोटे छोटे कण, चूर, धूल, बाल ।

रवि तत्त्वं ( पु० ) सूर्य, सातचण्ड, दिवाकर ।—कर

सूर्य की किरण ।—तनया ( स्त्री० ) यमुना

नदी ।—नन्दिनी ( स्त्री० ) यमुना नदी ।—पुत्र

( पु० ) कर्ण, सुग्रीव, यमराज, शनैश्वर ।—मणि

( पु० ) सूर्यकान्तमणि, आतिशी शीशा ।—

मगडल ( पु० ) सूर्यमण्डल, सूर्यलोक ।—घार

आदित्यवार, शतवार, द्वादवार ।

रविक ( पु० ) नीम का वृक्ष ।

रविज ( पु० ) शनिश्चर ग्रह, यम, वैवस्वतमनु ।

रश्मि तत्त्वं ( स्त्री० ) किरण, तेज, फान्ति, भयूक,

रास, घोड़े की बागडोर ।

रस तत्त्वं ( पु० ) विषय, बल, प्रेम, स्वाद, संवाद,

अर्क, सार, निष्कर्ष, भोजन के छः रस, शृङ्गार

हास्य आदि नव रस, पारा, मेल, मिलाप, भस्म,

श्रौषधियों का भस्म ।—रस ( शब्० ) धीरे धीरे ।

—ह ( पु० ) रसिक, रसज्ञाता, रस समझने

वाला ।—ह्रा ( स्त्री० ) जीभ, रसना ।—राज

( पु० ) पारा धातु, मतिरामकृत काव्यग्रन्थ ।

रसद ( पु० ) सेना आदि के भोजन की सामग्री ।

रसन तत्त्वं ( पु० ) स्वाद, चीखना । ( स्त्री० ) जह-

सन, कन्द विशेष ।

रसना तत्त्वं ( स्त्री० ) रसज्ञा, जीभ, जिह्वा ।

रसनेन्द्रिय ( पु० ) जिह्वा, जीभ, जवान ।

रसमसा दे० ( वि० ) भाँजा, भाँगा, आर्द्र, थोड़ा ।

रसमसाना दे० ( क्रि० ) भाँगना, आर्द्र होना

पसीजना । [ खींचा जाता है ।

रसर दे० ( पु० ) डोरी, मोटी रस्सी जिससे पानी

रसरो दे० ( स्त्री० ) रस्सी ।

रसघत दे० ( स्त्री० ) रसौत, अजून विशेष ।

रसघती तत्त्वं ( स्त्री० ) रसीली, रसयुक्ता, सुशीला ।

रसा तत्त्वं ( स्त्री० ) पृथिवी, भूमि, धरती, धरणी ।

रसाञ्जन तत्त्वं ( पु० ) काजल, सुर्मा ।

रसातल तत्त्वं ( पु० ) पृथिवी तल, अधोलोक विशेष,

सातवाँ लोक, बलिराज का लोक ।

रसाना दे० ( क्रि० ) जोड़ना, मिलाना, संयुक्त करना ।

रसायन तत्त्वं ( पु० ) कीमिया, रस विशेष, प्राण

बचाने वाले रस ।—फल ( स्त्री० ) हरीतकी

हर ।—विद्या ( स्त्री० ) रस सम्यन्धी विद्या,

जिसमें धातुओं का मिलाना पृथक् करना आदि

बाते लिखी हैं ।

रसाल तत्त्वं ( पु० ) आम, आम्र ।

रसिक तत्त्वं ( पु० ) रसज्ञ, रसज्ञाता; रसीला,

रसिया, लम्पट, दुराचारी, गुंडा ।

रसिकाई तत्त्वं ( स्त्री० ) रसिकता ।

रसिया दे० ( पु० ) रसिक, रसज्ञ, लम्पट, असक्त ।

रसियाना दे० ( क्रि० ) सीला होना, भाँगना ।

रसीद दे० ( स्त्री० ) पहुँच, पत्र, संवादपत्र ।

रसीला दे० ( वि० ) रसयुक्त, रसपूर्ण, रस विशिष्ट ।

रसे दे० ( शब्० ) धीरे धीरे, हाँसे हाँसे, शनैः शनैः ।

रसेइया दे० ( पु० ) रिधैया, पाचक, पकाने वाला ।

रसेई दे० ( स्त्री० ) पाक, भोजन ।

रसौत दे० ( पु० ) अजून विशेष, रसघत ।

रस्सा दे० ( पु० ) डोरी, जेवरी ।

रस्सो दे० ( स्त्री० ) डोरी, रसरी ।

रह दे० ( क्रि० ) रहना, ठहरना, या, रहा, ( पु० )

रास्ता, मार्ग ।

रहकल दे० ( स्त्री० ) छोटी तोप, तुपक ।

रहकला दे० ( पु० ) छकड़ा, गाड़ी, सामान बोने

वाली गाड़ी ।

रहचोला दे० ( पु० ) लक्षोपत्तो, चापलूती, मोठी बातें ।

रहजाना दे० ( वा० ) बाट जोहना, ठहराना, सन्तोष

करना । [ कल ।

रहट दे० ( स्त्री० ) गरारी, चली, पानी निकालने की

रहटा दे० ( स्त्री० ) चली, गरारी ।

रहड़ दे० ( पु० ) सगड़, छकड़ा ।

रहत दे० ( पु० ) टिकाव, ठहराव, स्थिति, वास ।

रहते दे० ( शब्० ) होते, सामने, आँख के सामने ।

रहन दे० ( स्त्री० ) चञ्जन, रीति, व्यवहार, भाँति ।

रहना दे० ( क्रि० ) ठिकाना, ठहराना, बसना ।  
 रहमान ( पु० ) रहम करने वाला, दयालु ।  
 रहमार दे० ( पु० ) बटमार, चोड़ा, चोर, तस्कर, चोर ।  
 रहला दे० ( पु० ) चना, बूद, छोला ।  
 रहवा दे० ( पु० ) चेला, लोंछा, दास, भृत्य, नौकर ।  
 रहवाई दे० ( स्त्री० ) घर का भाड़ा, घर में रहने का किराया । [ रहने वाला ।  
 रहवाई दे० ( पु० ) पास, निवासी, ठहरने वाला, रहस तद० ( पु० ) छोजपन, हसौवा, हसोकापन, कृष्णलीला । [ न्दित होना, हर्षित होना ।  
 रहसना दे० ( क्रि० ) हुलसना, प्रसन्न होना, आन-  
 रास्य तत्० ( पु० ) गुप्त तत्व, गुप्त बातों, मंत्र, भेद, मर्म, सलाह, राज, निगूढ़, गोपनीय, गुप्त ।  
 रहाइस दे० ( स्त्री० ) स्थिति, पास, ठिकाण ।  
 रहाय दे० ( पु० ) रहन, स्थिति, ठिकाण ।  
 रहित तत्० ( वि० ) वर्जित, होन, शून्य, बिना घोड़े का, राली, लाल, धृक्, भिन्न ।  
 रहीम ( अ० ) दयालु, रहम करने वाला । ( पु० ) प्राचीन कवि विशेष ।  
 राई दे० ( स्त्री० ) सर्प, सर्पों, ( पु० ) राजा, प्रधान, स्वामी, यह राजा के अर्थ में संज्ञा शब्दों के पीछे आता है । यथा—रघुराई, यदुराई ।  
 राईया दे० ( स्त्री० ) कणिका, सर्प, सर्पों, तोरी ।  
 राउ दे० ( पु० ) राजा, भूपति, राव । [की उपाधि ।  
 राउत तद० ( पु० ) राजपुत्र, मान्य, ठाकुर, चहीरों  
 राय दे० ( पु० ) रागा, राणा, राजपुत्र, राजपुत ।  
 —रायन ( पु० ) राजराज, महाराज, राजों में प्रधान ।  
 रायता दे० ( पु० ) व्यञ्जन विशेष ।  
 रायर्षाश दे० ( पु० ) भाला, बर्षा ।  
 रांग, रांगा दे० ( पु० ) धातु विशेष, सीसा ।  
 राँमल दे० ( पु० ) प्रिय, प्रियतम, सज्जन, एक प्रसिद्ध प्रणयी, राजपूताने में इसका स्वाँग रचते हैं ।  
 राँमरा दे० ( पु० ) खिलौने वाला । [ प्रेमी ।  
 राँमाँ दे० ( वि० ) प्यारा, प्रिय, प्रियतम, स्नेही,  
 राँइ दे० ( स्त्री० ) विधवा, अपत्निका, बिना पति की

स्त्री ।— का साँइ ( वा० ) विधवा पुत्र, विधवा हुआ लड़का । [ अफला ।

राँडा दे० ( वि० ) रॉक, चन्ध्या, बिना फल का, राँदनी दे० ( स्त्री० ) शाक विशेष, एक शाक का नाम ।

राँद पड़ोस दे० ( पु० ) अड़ोस पड़ोस ।

राँधना दे० ( क्रि० ) राँधना, पकाना, सींजना, उबालना, रसोई बनाना ।

राँपी दे० ( स्त्री० ) सुपी. घास काटने का अछ, करखी, मोची का एक औज़ार ।

राँभना दे० ( क्रि० ) गाय का शब्द, गौका टकताना ।

राकस ( पु० ) राक्षस, दानव, दैत्य, प्रकाशमान पदार्थ का जीव विशेष ।

राका तत्० ( स्त्री० ) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूर्णों ।

—पति ( पु० ) चन्द्र, चन्द्रमा ।

राख दे० ( स्त्री० ) भस्म, भभूत । [पूर्वक ठहराना ।

राखना दे० ( क्रि० ) रखना, बरना, ठहराना, रखा

राखों दे० ( स्त्री० ) रखासूय, रेशम या सूत का बना हुआ एक डोरा विशेष जो सावन की पूर्णिमा को हाथ में बाँधी जाती है ।—पूनों दे० ( स्त्री० ) धावण, पूर्णिमा ।

राग तत्० ( पु० ) रङ्ग, लाल, क्रोध, अश्रुताग, प्रेम, स्नेह, गान का सुर, भैरव, मझार, मेघ, धी, सारङ्ग, हियडोल, बसन्त और दीपक ये छः राग हैं ।—झाना ( वा० ) आनन्द होना, आनन्द मानना ।—रंग ( वा० ) गाना बजाना ।

रागना दे० ( क्रि० ) गीत गाना, गाना प्रारम्भ करना ।

रागिनी या रागिणी तत्० ( स्त्री० ) गान भेद, तान रागिनी झुलस हैं । भैरव आदि छः रागों में प्रत्येक राग की छः छः रागिणी होती हैं । [ श्रोणी ।

रागी तत्० ( पु० ) गायक, गान निपुण, प्रिय,

राघव तत्० ( पु० ) रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र, रघुराज,

रघुवंश के राजा । [ खगना, लीन होना ।

राचना दे० ( क्रि० ) प्रेम चिन्तन होना, मिलना,

राक दे० ( पु० ) शिल्पियों के अछ, बड़े आदि कारी-

गरों के औज़ार ।

राज तद० ( पु० ) राज्य, राजा का अधिकार, कारी-

गर, संगतारथ, थवई ।—कन्या ( स्त्री० )

की बेटी, राजकुमारी, राजकुवारी।—कर (पु०) राजस्व, राजकर, लगान, राजा को दिया जाने वाला धन, पण धँस।—कीय (पु०) राजा का, राजसम्बन्धी, सरकारी, बादशाही।—कीय महासभा (स्त्री०) राजा का दरबार, शाही दरबार।—कुटुम्ब (पु०) राजघराना, राजवंश, राजकुल।—कुमार (पु०) राजपुत्र, राजा का यह पुत्र जो राज्य का अधिकारी हो।—कृत्य (पु०) राजकाज, राजा का काम।—कोश (पु०) राजा का खजाना, राजा का वह खजाना जो प्रजा के लाभ के लिये जमा रहता है, जिसके रुपये प्रजा की भलाई के लिये लगाये जाते हैं।—गादी (स्त्री०) राजासन, राजा का आसन, सिंहासन, राजगद्दी।—गृ (वि०) शाही सम्बन्धी, शोभित, निर्मित।—त्व (पु०) राजा का अधिकार, राजा का काम, प्रभुता।—द्वार (पु०) राजा के महल का द्वार, बड़ा द्वार, पुर्णद्वार नगर का फाटक।—द्वय (पु०) राजा की शक्ति विशेष, शासन सम्बन्धी ब्रह्म, राजा का दिया हुआ दण्ड।—द्वय (पु०) अगले दोनों दाँत।—द्रोही (पु०) राज्य का मोह करने वाला, राजा का अनुमन्त्रित।—धर (पु०) अमात्य, मन्त्री, सचिव।—धानी (स्त्री०) राजनगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहते हैं।—ना (क्रि०) चमकना, शोभना।—नीति (स्त्री०) राजा के शासन करने की रीति, ग्रन्थ विशेष।—न्य (पु०) राजपुत्र, उत्तिय, अग्नि, चौर का पेड़, राजा का पुत्र।—पत्नी (स्त्री०) राजा की स्त्री।—पुत्र (पु०) राजपुत्र, राजपुत, उत्तिय।—पूत (पु०) उत्तिय।—भोग (पु०) बड़ा भोग, दोपहर का बड़ा भोग, मध्याह्न काल का निवेद्य।—मन्दिर (पु०) राजमयन, राजा का महल।—मार्ग (पु०) राजपथ, सड़क।—राज (पु०) कुवेर, चन्द्रमा, सद्यष्ट।—राणी (स्त्री०) महारानी, राजा की रानी।—रोग (पु०) चय रोग, बड़े रोग जो अच्छे नहीं होते।—शासन (पु०) राजा का दण्ड।—सूय (पु०) बल विशेष, राजा के करने का बल।—हंस (पु०) पक्षी विशेष।

राजना दे० (क्रि०) चमकना, शोभना, शोभित होना, विराजना।  
 राजस् त्व० (पु०) रत्नगुण, अहङ्कार, गर्व।  
 राजस्व त्व० (पु०) (राजकर, राजधन, राजा को देय धन, मालगुजारी।  
 राजा त्व० (पु०) नृपति, भूपति, भूमिपति, भूपाल।  
 राजाज्ञा त्व० (स्त्री०) राजा की आज्ञा, राजा का आदेश।  
 राजाधिराज (पु०) सम्राट्, चक्रवर्ती।  
 राजावर्त (पु०) रावटी, लाजावर्त।  
 राजित (पु०) शोभित।  
 राजी त्व० (स्त्री०) पंक्ति, पंक्ति, श्रेणि, अवलि।  
 राजीव (पु०) कमल, पद्म।  
 राजेश्वर त्व० (पु०) [ राजा + ईश्वर ] महाराज, राजाओं के मालिक, महोपति।  
 राज्ञी त्व० (स्त्री०) महारानी, महिषी, राजपत्नी।  
 राज्य त्व० (पु०) राज, देश, राष्ट्र, राजा की अधिकृत देश।  
 राठ (पु०) देश विशेष, जो गंगा के पश्चिमी तट पर है।  
 राठौर (पु०) राजपूतों की जाति विशेष।  
 राढ़ी दे० (पु०) ब्राह्मण विशेष, राढ़ देशी ब्राह्मण।  
 राणा दे० (पु०) राजपूत, उत्तिय विशेष, राजा।  
 राणी दे० (स्त्री०) राज्ञी, राजपत्नी, रानी।  
 रात त्व० (स्त्री०) रात्रि, रजनी, निशा, रात।  
 रातना दे० (क्रि०) रंगना, लाल रंग में रंगना, लाल होना।  
 राता त्व० (वि०) रक्त, लाल, लाल रंग में रंगा हुआ।  
 रातिव (पु०) घेड़ा हाथी का दाँत, खुराक।  
 राते (वि०) जाल, रहे। [ शुल्बला।  
 रातौंधिया त्व० (वि०) रात्रग्रन्थ, रात का अन्ध, रात्र (पु०) ज्ञान, शिक्षा, हृष्य।  
 रात्रि त्व० (स्त्री०) रात, निशा, रात।—चर (पु०) राघव, निशाचर, भूत, राघव। [कोकिल आदि।  
 रात्र्यन्ध (पु०) जिस रात में न देख पड़े, कौशा, सोता, राढ़ दे० (पु०) पीप, पीप, बिगड़ा खून।  
 राधा त्व० (स्त्री०) श्रीकृष्ण की स्त्री, गोपी, वृषभान की पुत्री।—कान्त (पु०) श्रीकृष्ण।  
 —कुण्ड (पु०) गोवर्द्धन पर्वत के पास का एक

कुण्ड जिसे श्रीकृष्ण ने खुदवाया था।—घट्टिम  
( पु० ) श्रीकृष्ण।—सुत ( पु० ) कर्ण।

राधिका तत् ( स्त्री० ) राधा नाम की एक गोपी, जो  
श्रीकृष्ण मल्लभा बतलाई जाती है।

रान ( पु० ) जाँघ, जानू।

रानी ( स्त्री० ) वेगम, राजपत्नी।

राय दे० ( स्त्री० ) गुड़ का रस, सीरा, खोथा।

रायड़ी दे० ( स्त्री० ) ज्वार बाजरे का मठा या दूध में  
पकाया हुआ खाटा।

राम तत् ( पु० ) परशुराम, भगवान् का अवतार। ये  
जमदग्नि ऋषि के पुत्र थे और इन्होंने इक्ष्वाकु पार  
वर्षियों का नाश किया था (२) रामचन्द्र, यह भी  
भगवान् ही के अवतार थे। राजा दशरथ के यहाँ  
ये प्रकट हुए थे। (३) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े  
भाई।—कहानी ( स्त्री० ) बड़ी कहानी, दुःख  
पूर्ण कथा।—राम ( स्त्री० ) प्रणाम, नम्रता,  
पूजा बोधक।—फली ( स्त्री० ) रागिणी विशेष,  
एक रागिणी का नाम।—गिरि ( पु० ) पर्वत  
विशेष, चित्रकूट पर्वत, यह हुन्देलखण्ड में है।

—जनी ( स्त्री० ) पहाड़ी, हिन्दू घरवा।—तरोई  
( स्त्री० ) एक तरकारी का नाम।—दूत ( पु० )  
रामचन्द्र का दूत, हनुमान।—दोहाई ( पु० )  
राम की राध, राम की सौगन्द।—भवमी  
( स्त्री० ) वैश्वरूप।—भद्र ( पु० ) श्रीराम।  
—रस ( पु० ) लवण, नून, निमक।—शर  
( पु० ) नरकट, सृष्ट विशेष।

रामा तत् ( स्त्री० ) नारी, सुन्दरी स्त्री। [अनुयायी।  
रामानन्दी तत् ( वि० ) वैरागी, साधु, रामानन्द के  
रामानुज तत् ( पु० ) विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रव-  
र्तकों में ये सर्वाग्रगण्य थे। इन्होंने भारतवर्ष में  
जैतियों और मायावादियों का प्रभाव हटाने के  
लिसे प्राणरूप से प्रयत्न किया था और अपने  
प्रयत्न में ये सफल भी हुए थे। स्मृति-काल तरङ्ग में  
इन्के प्रकट होने का समय शाकाब्द १०४६ अर्थात्  
११९७ ई० बतलाया गया है। परन्तु कोई कोई  
इन्का जन्म १००२ ई० में मानते हैं। इन्होंने  
विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं।  
रामायण तत् ( पु० ) रामकथा, एक ग्रन्थ विशेष।

रामावत दे० ( पु० ) साधुविशेष, रामानन्दी साधु।

राय दे० ( पु० ) वृत्रियों की वपाधि।

रायता दे० ( पु० ) रायता, व्यञ्जन विशेष।

रायमानिया दे० ( पु० ) चावल विशेष, एक प्रकार  
का चावल। [कलह।

रार दे० ( पु० ) कगड़ा, विवाद, विरोध, विद्वेष,

राल दे० ( पु० ) धूना, एक प्रकार का गोंद, जो धूप  
में डाला जाता है, सुँह से निकलने वाला चिपचिप  
धूक।

राव दे० ( पु० ) राय, राई, राजकुमार वृत्रियों की  
वपाधि।—चाव ( पु० ) राव रङ्ग, भोग विहास।

रावटी दे० ( स्त्री० ) छोटा तंबू, छोटा कपड़ों का,  
लाजावर्त पत्थर।

रावण तत् ( पु० ) दशानन, लङ्का का अधिपति।  
—रि ( पु० ) श्रीरामचन्द्र।

रावणि ( पु० ) मेघनाद, रावण का पुत्र।

रावत दे० ( पु० ) वीर, बहादुर, सुरमा, साबन्त।

रावरा, रावरो ( सर्व० ) तुम्हारा।

रावी ( स्त्री० ) पंजाब की एक नदी विशेष।

राशि तत् ( स्त्री० ) धाम आदि का ढेर, मेघ, वृक्ष,  
आदि बारह राशि, गणित का एक अङ्ग विशेष।

—चक्र ( पु० ) राशि चक्र, लग्न मण्डल, द्वादश  
भाग। [शासन प्राणाक्षी।

राष्ट्र तत् ( पु० ) बसा हुआ देश, शासित देश, देश

रास तत् ( पु० ) क्रीड़ा, खेल, व्याज, एक प्रकार का  
नृत्य, छोटे छोटे लड़के और लड़कियाँ पहले आपस  
में एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते थे। जैसा  
आज कल श्रीकृष्ण खीला होती है।—घारी  
( पु० ) रास करने वाले। [स्वाद।

रासन तत् ( पु० ) रसना से उत्पन्न ज्ञान, जीम का

रासम तत् ( पु० ) गढ़वा, गढ़म। ( स्त्री० ) रासनी।

रासी दे० ( पु० ) मध्यम।

राहना दे० ( पु० ) चक्की में दाँत घनाना।

राहु तत् ( पु० ) आठवाँ प्रद, दैत्य विशेष, केतु का  
सिर, कहते हैं यही चन्द्रमा और सूर्य को प्रसता  
है।—प्रस्त ( पु० ) चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण।—  
ग्रास ( पु० ) ग्रहण, चन्द्रमा और सूर्य का  
ग्रहण।



रिक्त तत्त्वं ( वि० ) खोखला, शून्य, रीता ।  
 रिचा तत्त्वं ( स्त्री० ) शक्त् वेद का मन्त्र विरोध ।  
 रिक्तवैया दे० ( पु० ) रिक्तने वाला, प्रसन्न करने वाला ।  
 रिक्ताना दे० ( क्रि० ) प्रसन्न करना, मनाना, सताना,  
 दुःख देना । [ शून्य करना ।  
 रिताना दे० ( क्रि० ) रिक्त करना, छुँछा करना,  
 रिक्त तद् ( स्त्री० ) शत्रु, समय ।—राज ( पु० )  
 वसन्त ।  
 रिद्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) शक्ति, सम्पत्ति, बढ़ती ।  
 रिपु तत्त्वं ( पु० ) शत्रु, वैरी, द्वेष, विरोध ।—ता  
 ( स्त्री० ) शत्रुता, द्वेष, विरोध ।—हा ( पु० )  
 शत्रुनाशकारी ।  
 रिपुञ्जय तत्त्वं ( पु० ) यति बलवान्, शत्रुजयो ।  
 रिस दे० ( स्त्री० ) क्रोध, कोप, खिसियाहट, अप-  
 सन्नता । [ टपकना, चूना, गिरना ।  
 रिसना दे० ( क्रि० ) क्रोध करना, खिसियाना, झरना;  
 रिसहा दे० ( स्त्री० ) क्रोधी, कोपी ।  
 रिसाना दे० ( क्रि० ) क्रोधयुक्त होना, क्रोध करना ।  
 री दे० ( स्त्री० ) शरी, सम्बोधन ।  
 रींगना दे० ( क्रि० ) चलना, फिरना, चिड़ना, खिसि-  
 याना, छाती के बल चलना ।  
 रींघना दे० ( क्रि० ) पकाना, चुनना ।  
 रीझ तद् ( पु० ) भालू, शर, भरलुक ।  
 रीझ दे० ( स्त्री० ) पसंद, चाह, इच्छा, अभिलाष ।  
 रीझना दे० ( क्रि० ) चाहना, आशिक होना, प्रीति  
 करना ।  
 रीठा ( पु० ) एक प्रकार का फल ।  
 रीढ़ दे० ( स्त्री० ) पीठ के बीच की हड्डी ।  
 रीता दे० ( वि० ) शून्य, खाली, छुँछा, रिक्त ।  
 रीति तद् ( स्त्री० ) चाल, चरन, प्रकार, व्यवहार ।  
 रीरियाना दे० ( क्रि० ) विधियाना, चिचियाना ।  
 रीस दे० ( स्त्री० ) क्रोध, कोप । [ उबियाहट ।  
 रीक् तद् ( पु० ) रोग, उदार, दाता, दीप्ति, प्रकाश,  
 रीकना दे० ( क्रि० ) अटकना, बन्द होना, प्रतिहत  
 होना, विरत होना । [ रुकावट ।  
 रीकवैया दे० ( पु० ) रोकने वाला, प्रतिबन्धक, छँक,  
 रीकाव दे० ( पु० ) छँक, बाधा, प्रतिबन्धक, रोक,  
 अटकाव ।

रुकावट ( स्त्री० ) अटकाव, धिराव, अड़चन ।  
 रुक्म तद् ( पु० ) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्य, राजा  
 भीष्मक का बड़ा बेटा, यह रुक्मिणी का भाई था  
 और श्रीकृष्ण का साला ।  
 रुक्मिणी तद् ( स्त्री० ) कुरुक्षेत्र के राज भीष्मक  
 की पुत्री, जिसे श्रीकृष्ण ने व्याहा था ।  
 रुख दे० ( पु० ) समुख, सामना, आमना सामना,  
 सम्मति, अनुमति, मर्जी । [ अचिक्रण ।  
 रुखा तद् ( वि० ) रुख, रुखा, कठोर, स्नेह रहित,  
 रुखाई दे० ( स्त्री० ) कठोरता, कड़ाई, रुखता ।  
 रुखानी ( स्त्री० ) बड़ई का एक औजार ।  
 रुख तद् ( वि० ) रोगी, टेढ़ा, बाँका, तिरछा ।  
 रुच तद् ( स्त्री० ) रुचि, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ ।  
 रुचक तद् ( पु० ) आभूषण विरोध, माला  
 सजीखार । [ होना, भाना ।  
 रुचना दे० ( क्रि० ) अच्छा लगना, मनोहर मालूम  
 रुचि तद् ( स्त्री० ) इच्छा, अभिलाषा ।—कर  
 ( वि० ) प्यारा, पाचक, रुचि उत्पन्न करने  
 वाला ।—मान ( वि० ) प्रकाशमान ।  
 रुचिर ( वि० ) सुन्दर, मीठा, मनोहर, मनभावन ।  
 रुच्य तद् ( वि० ) सुन्दर, मनोहर, रुचिकर ।  
 रुजा तद् ( पु० ) रोग, बीमारी ।  
 रुख तद् ( पु० ) धड़, बिना सिर का देह, कबन्ध ।  
 रुदन तद् ( पु० ) रोना, रोवन, रुलाई, अधुपात  
 करना, आँसू बहाना, विलाप ।  
 रुद्ध तद् ( वि० ) रुका हुआ, छेका, अटका  
 हुआ, बँधा हुआ । [ जाते हैं ।  
 रुद्र तद् ( पु० ) शिव, महादेव, रुद्र एकादश कड़े  
 रुद्राक्रीड तद् ( पु० ) [ रुद्र + आक्रीड ]  
 रमशान, रुद्र का विनोद स्थान ।  
 रुद्राक्ष तद् ( पु० ) रुद्र विरोध, जिसके दानों की  
 माला शैव और सन्यासी लोग पहनते हैं ।  
 रुद्रायणी तद् ( स्त्री० ) शिवा, भवानी, पार्वती, उमा ।  
 रुद्री ( स्त्री० ) ११ विस्वपत्र, ११ शीशी गंगाजल,  
 शिव पूजन ।  
 रुधिर तद् ( पु० ) रक्त, शोणित, खून ।  
 रुपना दे० ( क्रि० ) बटना, अड़ना, यमना ।  
 रुपया दे० ( पु० ) सुना, चाँदी का सिक्का ।

रूपहरा रे० ( वि० ) रूपा का बनाव हुआ, रूपा सम्बन्धी ।

रूपैया दे० ( पु० ) रूपया, मुद्रा, सिक्का ।

रूपैइला दे० ( वि० ) " रूपहरा " देखो ।

रुह ( पु० ) दैत्य, एक प्रकार का हिरन, सर्प ।

रुलना दे० ( क्रि० ) जोहे से पीसना, चूर करना, चूँच करना, चूकना । [ चाना ।

रुलाना दे० ( क्रि० ) दुख देना, दुखाना, पीड़ा पहुँचाना ( क्रि० ) रिसाना, रुठ होना, अप्रसन्न होना, कोपना, क्रोध करना ।

रुष्ट तत्० ( वि० ) रुद्ध हुआ, क्रुद्ध, कुपित ।

रुई दे० ( स्त्री० ) रूँआ, कपास ।

रुईया दे० ( पु० ) रुई का व्यापारी, रूप का ।

रुँक दे० ( स्त्री० ) घेलुवा, घलुआ, खरीदने वाले को ठहराई हुई दर या तौल के अतिरिक्त जो घस्त मिलती है । [ बाल, रोप ।

रुँगटा दे० ( पु० ) रोम, रोबों, लोम, शरीर पर के

रुँघट दे० ( स्त्री० ) मैल, मल, मलिनता ।

रुँधना रे० ( क्रि० ) रोकना, रुकावट डालना, ठँकना, अगोरना ।

रुख दे० ( पु० ) वृक्ष, पेड़, तरु, तख्तर ।

रुखड़ दे० ( पु० ) खोंगी विशेष ।

रुखड़ा दे० ( पु० ) छोटा पेड़, बिरया, पौधा ।

रुखा तद्० ( वि० ) रुख, फठिन, कठोर, सूखा ।

रुखाई दे० ( स्त्री० ) कठोरता, फठिनता, रूखापन ।

रुखानी दे० ( स्त्री० ) अस्त्र विशेष, छेनी, काँटी ।

रुखी दे० ( स्त्री० ) चिल्ली, गिलहरी ।

रुज दे० ( पु० ) कीट विशेष ।

रुम्हा दे० ( वि० ) रोग से पीड़ित, रुझ ।

रुठना दे० ( क्रि० ) अप्रसन्न होना, रुसना, झगड़ना, बिगड़ना ।

रुठनी दे० ( वि० ) झगड़ालू, अव्यवस्थित चित्त ।

रुढ़ तद्० ( पु० ) उत्पन्न, प्रसिद्ध ।

रुढ़ि तद्० ( स्त्री० ) उत्पत्ति, प्रसिद्ध, शब्दार्थ विशेष, प्रकृति प्रलयगत अन्य अर्थ होने पर भी, अन्यार्थ वाचक शब्द रुढ़ि कहे जाते हैं ।

रूप तद्० ( पु० ) आकार, आकृति, सुन्दरता ।—जस्त ( पु० ) राँगा ।—निधान ( पु० ) अतिशय

सुन्दर ।—रस ( पु० ) रूपा का भस्म ।—राशि ( पु० ) सुन्दरता का समूह, अतिशय सुन्दर ।

—चती ( स्त्री० ) रूपवाली, सुरूपा, सुन्दरी ।

—चान् ( वि० ) सुन्दर, सुरूपा, सुघड़ ।—हला ( पु० ) रूपे का बना, रूपावाला । [ रूप, सुरत ।

रूपक ( पु० ) अलङ्कार विशेष, दृश्यकाव्य, नाटक,

रूपा तद्० ( पु० ) रजत, चाँदी, श्वेत धातु विशेष ।

रुमटी दे० ( स्त्री० ) घोल घुमाव, मिष, ध्याज, बहाना ।

रुमाल दे० ( पु० ) शँगोड़ा, छोटा शँगोड़ा ।

रुरी ( स्त्री० ) सौन्दर्यवती, सुन्दरी ।

रुसना दे० ( क्रि० ) रुठना, कुपित होना, क्रुद्ध होना, कुहाना, रोष करना ।

रुसी दे० ( स्त्री० ) सिर का मैल, चाँई ।

रे दे० ( अ० ) नीच सम्बोधन ।

रेंक दे० ( पु० ) गदहे की योली ।

रेंकना दे० ( क्रि० ) गधा का बोलना ।

रेंगना दे० ( पु० ) चलना, साँप की चाल चलना ।

रेंट दे० ( स्त्री० ) रहट, पानी निकालने की कल, चरखी ।

रेंटा दे० ( पु० ) पोंदा, नेटा, नासिका का मल ।

रेंड, रेंडी दे० ( स्त्री० ) गरुड का वृक्ष, रेंड का पेड़ ।

रेंदा ( स्त्री० ) छोटी ककड़ी । [ प्ररबुगा

रेंदी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का प्ररबुगा, छोटा

रेंहुट दे० ( स्त्री० ) नाक द्वारा निकलने वाला कफ, बलगम, नेटा, पोंदा ।

रेंहुटा दे० ( पु० ) चरखा ।

रेख तद्० ( स्त्री० ) रेखा, लकीर, चिन्ह, विन्दु समूह,

जिसकी मोटाई न हो, किन्तु केवल शंभाई हो

वह रेखा कही जाती है । भाग्य, प्रारब्ध, छोटी

मोँछ जो तरुणावस्था के पूर्व निकलती है ।—

निकलना तद्० ( क्रि० ) मोँछ की रेखा निकलना,

मोँछ के बालों का प्रथम प्रसृत होना ।

रेखा तद्० ( स्त्री० ) लकीर, चिन्ह, सलाह, प्रपाल,

भाग्य, प्रारब्ध ।—ङ्कित ( वि० ) चिन्हित,

रेखा से चित्र पर चिन्ह किया गया हो ।—मागित

( पु० ) एक प्रकार का गणित ।

रेघारी दे० ( स्त्री० ) हलकी रेखा, चिन्ह ।

रिक्त तत् ( वि० ) खोखला, शून्य, रीता ।  
 रिक्ता तत् ( स्त्री० ) शब्द वेद का मन्त्र विशेष ।  
 रिक्तवैया दे० ( पु० ) रीक्तने वाला, प्रसन्न करने वाला ।  
 रिक्ताना दे० ( क्रि० ) प्रसन्न करना, मनाना, सताना,  
 दुःख देना । [ शून्य करना ।  
 रिक्ताना दे० ( क्रि० ) रिक्त करना, छुँछा करना,  
 रिक्त तत् ( स्त्री० ) शत्रु, समय ।—राज ( पु० )  
 वसन्त ।  
 रिद्धि तत् ( स्त्री० ) अद्धि, सम्पत्ति, बढ़ती ।  
 रिपु तत् ( पु० ) शत्रु, वैरी, द्वेष, विरोध ।—ता  
 ( स्त्री० ) शत्रुता, द्वेष, विरोध ।—हा ( पु० )  
 शत्रुनाशकारी ।  
 रिपुञ्जय तत् ( पु० ) अति बलवान्, शत्रुजयी ।  
 रिस दे० ( स्त्री० ) क्रोध, कोप, खिसियाहट, अप-  
 सन्नता । [ टपकना, घुना, गिरना ।  
 रिसना दे० ( क्रि० ) क्रोध करना, खिसियाना, झरना,  
 रिसदा दे० ( स्त्री० ) क्रोधी, कोपी ।  
 रिसाना दे० ( क्रि० ) क्रोधयुक्त होना, क्रोध करना ।  
 री दे० ( स्त्री० ) अरी, सम्बोधन ।  
 रींगना दे० ( क्रि० ) चलना, फिरना, चिड़ना, खिसि-  
 याना, छाती के बल चलना ।  
 रींघना दे० ( क्रि० ) पकाना, चुराना ।  
 रीझ तत् ( पु० ) माल, शब्द, भरलुक ।  
 रीझ दे० ( स्त्री० ) पसंद, चाह, इच्छा, अभिलाष ।  
 रीझना दे० ( क्रि० ) चाहना, आशिक होना, प्रीति  
 करना ।  
 रीठा ( पु० ) एक प्रकार का फल ।  
 रीढ़ दे० ( स्त्री० ) पीठ के बीच की हड्डी ।  
 रोता दे० ( वि० ) शून्य, खाली, छुँछा, रिक्त ।  
 रीति तत् ( स्त्री० ) चाल, चरन, प्रकार, व्यवहार ।  
 रीतिपाना दे० ( क्रि० ) धिधियाना, चिधियाना ।  
 रोस दे० ( स्त्री० ) क्रोध, कोप । [ उवियाहट ।  
 रक् तत् ( पु० ) रोग, उदर, दाता, दीप्ति, प्रकाश,  
 रक्ता दे० ( क्रि० ) अटकना, बन्द होना, प्रतिहत  
 होना, चिरत होना । [ रुकावट ।  
 रुक्तवैया दे० ( पु० ) रोकने वाला, प्रतिवन्धक, छँक,  
 रुकाव दे० ( पु० ) छँक, बाधा, प्रतिवन्धक, रोक,  
 अटकाव ।

रुकावट- ( स्त्री० ) अटकाव, धिराव, अड़चन ।  
 रुक्म तत् ( पु० ) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्य, राजा  
 भीष्मक का बड़ा बेटा, यह रुक्मिणी का भाई था  
 और श्रीकृष्ण का साला ।  
 रुक्मिणी तत् ( स्त्री० ) कुरुक्षेत्र के राज भीष्मक  
 की पुत्री, जिसे श्रीकृष्ण ने व्याहा था ।  
 रुख दे० ( पु० ) सन्मुख, सामना, आमना सामना,  
 सम्मति, अनुमति, मर्जी । [ अचिक्रण ।  
 रुखा तत् ( वि० ) रुख, रुखा, कठोर, स्नेह रहित,  
 रुखाई दे० ( स्त्री० ) कठोरता, कड़ाई, रुखाता ।  
 रुखानी ( स्त्री० ) बड़ई का एक औजार ।  
 रुख तत् ( वि० ) रोगी, टेढ़ा, बाँका, तिरछा ।  
 रुच तत् ( स्त्री० ) रुचि, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ ।  
 रुचक तत् ( पु० ) आभूषण विशेष, माला  
 सजीवार । [ होना, माना ।  
 रुचना दे० ( क्रि० ) अच्छा लगना, मनोहर मालूम  
 रुचि तत् ( स्त्री० ) इच्छा, अभिलाषा ।—कर  
 ( वि० ) प्यारा, पाचक, रुचि उत्पन्न करने  
 वाला ।—मान ( वि० ) प्रकाशमान ।  
 रुचिर ( वि० ) सुन्दर, मीठा, मनोहर, मनभावन ।  
 रुच्य तत् ( वि० ) सुन्दर, मनोहर, रुचिकर ।  
 रुजा तत् ( पु० ) रोग, बीमारी ।  
 रुग्ण तत् ( पु० ) धन, विना सिर का देह, कबन्ध ।  
 रुदन तत् ( पु० ) रोना, रोदन, रुलाई, अश्रुपात  
 करना, आँधू बहाना, विलाप ।  
 रुद्ध तत् ( वि० ) रुका हुआ, जेका, अटका  
 हुआ, बाँधा हुआ । [ जाते हैं ।  
 रुद्र तत् ( पु० ) शिव, महादेव, रुद्र एकादश कहे  
 रुद्राक्रोड तत् ( पु० ) [ रुद्र-आक्रोड ]  
 रमयान, रुद्र का विनोद स्थान ।  
 रुद्राक्ष तत् ( पु० ) वृक्ष विशेष, जिसके दानों की  
 माला शैव और सन्यासी लोग पहनते हैं ।  
 रुद्राणी तत् ( स्त्री० ) शिवा, भवानी, पार्वती, उमा ।  
 रुद्री ( स्त्री० ) ११ विल्वपत्र, ११ शीशी गंगाजल,  
 शिव पूजन ।  
 रुधिर तत् ( पु० ) रक्त, शोणित, लून ।  
 रुपना दे० ( क्रि० ) बटना, अड़ना, यमना ।  
 रुपया दे० ( पु० ) सुना, चाँदी का सिक्का ।

रूपहरा रे० ( वि० ) रूपा का घना हुआ, रूपा सम्बन्धी ।  
 रूपैया दे० ( पु० ) रुपया, मुद्रा, सिक्का ।  
 रूपैइला दे० ( वि० ) " रूपहरा " देखो ।  
 रुक् ( पु० ) दैत्य, एक प्रकार का हिरन, सर्प ।  
 रुक्ता दे० ( कि० ) लोहे से पीसना, चूर करना, चूर्ण करना, चूकना । [ चाना ।  
 रुक्तांता दे० ( कि० ) दुख देना, दुखाना, पीड़ा पहुँ-  
 चाना ( कि० ) रिसाना, रुष्ट होना, अप्रसन्न होना,  
 कोपना, क्रोध करना ।  
 रुष्ट तत्त्वं ( वि० ) रुद्ध हुआ, क्रुद्ध, कुपित ।  
 रूई दे० ( स्त्री० ) रूँधा, कपास ।  
 रूईया दे० ( पु० ) रूई का व्यापारी, रूप का ।  
 रूँक दे० ( स्त्री० ) घेलुवा, घलुआ, खरीदने वाले को  
 ठहराई हुई दर या तौल के अतिरिक्त जो वस्तु  
 मिलती है । [ बाल, रोप ।  
 रूँगटा दे० ( पु० ) रोम, रोबी, लोम, शरीर पर के  
 रूँघट दे० ( स्त्री० ) मैल, मल, मलिनता ।  
 रूँघना रे० ( कि० ) रोकना, रुकावट डालना, छेंकना,  
 अगोरना ।  
 रूख दे० ( पु० ) वृक्ष, पेड़, तरु, तखर ।  
 रूखड़ दे० ( पु० ) योगी विशेष ।  
 रूखड़ा दे० ( पु० ) छोटा पेड़, विरया, पाँधा ।  
 रूखा तद् ( वि० ) रुच, कठिन, कठोर, सूखा ।  
 रूखाई दे० ( स्त्री० ) कठोरता, कठिनता, रूखापन ।  
 रूखानी दे० ( स्त्री० ) अस्त्र विशेष, छेनी, काँटी ।  
 रूखी दे० ( स्त्री० ) चिखुरी, गिलहरी ।  
 रूज दे० ( पु० ) कीट विशेष ।  
 रूझा दे० ( वि० ) रोग से पीड़ित, रुझ ।  
 रूठना दे० ( कि० ) अप्रसन्न होना, रूसना, भगड़ना,  
 विगड़ना ।  
 रूठनी दे० ( वि० ) रुगड़ाल, अप्रवस्थित चित्त ।  
 रूढ़ तत्त्वं ( पु० ) उत्पन्न, प्रसिद्ध ।  
 रुढ़ि तत्त्वं ( स्त्री० ) उत्पत्ति, प्रसिद्ध, शब्दार्थ विशेष,  
 प्रकृति प्रत्ययागत अन्य अर्थ होने पर भी, अन्याय  
 वाचक शब्द रुढ़ि कहे जाते हैं ।  
 रूप तत्त्वं ( पु० ) आकार, आकृति, सुन्दरता ।—जस्त  
 ( पु० ) राँगा ।—निधान ( पु० ) अतिशय

सुन्दर ।—रस ( पु० ) रूपा का भस्म ।—राशि  
 ( पु० ) सुन्दरता का समूह, अतिशय सुन्दर ।  
 —चती ( स्त्री० ) रूपवाली, सुरूपा, सुन्दरी ।  
 —चान् ( वि० ) सुन्दर, सुरूपा, सुषड ।—हला  
 ( पु० ) रूप का घना, रूपावाला । [ रूप, सुरत ।  
 रूपक ( पु० ) अलङ्कार विशेष, दृश्यकाव्य, नाटक,  
 रूपा तद् ( पु० ) रजत, चाँदी, श्वेत धातु विशेष ।  
 रूमटो दे० ( स्त्री० ) बोल घुमाव, मिप, ब्याज,  
 बहाना ।  
 रूमाल दे० ( पु० ) शँगोळा, छोटा शँगोळा ।  
 रूरो ( स्त्री० ) सौन्दर्यवती सुन्दरी ।  
 रूसना दे० ( कि० ) रूठना, कुपित होना, क्रुद्ध  
 होना, कुहाना, रोप करना ।  
 रूसी दे० ( स्त्री० ) सिर का मैल, चाँई ।  
 रे दे० ( अ० ) नीच सम्बोधन ।  
 रेंक दे० ( पु० ) गद्दे की बोलती ।  
 रेंकना दे० ( कि० ) गद्दा का बोलना ।  
 रेंगना दे० ( पु० ) चलना, साँप की चाल चलना ।  
 रेंट दे० ( स्त्री० ) रहट, पानी निकालने की कल,  
 चरली ।  
 रेंटा दे० ( पु० ) पोंदा, नेटा, नासिका का मल ।  
 रेंड़, रेंड़ी दे० ( स्त्री० ) पुनपुन का वृक्ष, रेंद का पेड़ ।  
 रेंदा ( स्त्री० ) छोटी ककड़ी । [ झरबुमा  
 रेंदी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का झरबुमा, छोटा  
 रेंहट दे० ( स्त्री० ) नाक द्वारा निकलने वाला कफ,  
 बलाम, नेटा, पोंदा ।  
 रेंहटा दे० ( पु० ) चरखा ।  
 रेख तद् ( स्त्री० ) रेखा, लकीर, चिन्ह, चिन्हु समूह,  
 जिसकी मोटाई न हो, किन्तु केवल धाँवाई हो  
 वह रेखा कही जाती है । भाग्य, प्रारब्ध, छोटी  
 मोछ जो तरणावस्था के पूर्व निकलती है ।—  
 निकलना तत्त्वं ( कि० ) मोछ की रेखा निकलना,  
 मोछ के बालों का प्रथम प्रकट होना ।  
 रेखा तत्त्वं ( स्त्री० ) लकीर, चिन्ह, ललाट, कपाल,  
 भाग्य, प्रारब्ध ।—रुद्धि ( वि० ) चिन्हित,  
 रेखा से सिद्ध पर चिन्ह किया गया हो ।—गायात  
 ( पु० ) एक प्रकार का गणित ।  
 रेघारी दे० ( स्त्री० ) हलकी रेखा, चिन्ह ।

रेचक ( पु० ) जुलाब, दस्तावर दवा ।

रेचन ( पु० ) दस्त फरवाना, जुलाबदेना ।

रेणु तत् ( स्त्री० ) धूली, माटी की बुकली, रज ।

—का ( स्त्री० ) जमदग्नि ऋषि की पत्नी जो परशुराम की जननी थी ।

रेत ( पु० ) बाल, धूल ।

रेतः तत् ( पु० ) वीर्य, शुक्र, धातु, शरीरस्थ सप्त धातुओं के अन्तर्गत मुख्य धातु ।

रेतना दे० ( कि० ) काटना, अछा को तेज करना, ऐसा काटना जिससे धीरे धीरे कटे, रेतो से घिसना ।

रेतल दे० ( पु० ) किरकिरा, रेतोला, ककरेल ।

रेता दे० ( पु० ) बाल, रेणु, रेत ।

रेताई दे० ( स्त्री० ) रेतने की मजूरी । [ करना ।

रेतियाना दे० ( कि० ) रेतना, चिकनाना, तेज रेतो दे० ( स्त्री० ) बालू, रेत, किरकिरा, सोहन, एक लोहे का पत्र जिससे लोहा आदि रेता जाता है ।

रेतीला दे० ( पु० ) रेतयुक्त, रेतसहित, बलुआ, किरकिरा, कँकरेल । [ वाला ।

रेतुआ दे० ( पु० ) रेतने वाला, रेतने का काम करने देय ( वि० ) निन्दित, झूठ, कृपण, प्रहार ।

रेफ तत् ( पु० ) रकार, र अक्षर, व्यञ्जन का सत्ता-इसवाँ अक्षर, " र " ।

रेलना दे० ( कि० ) डेलना, धक्का देना, डकेलना ।

रेलपेल दे० ( स्त्री० ) अधिकता, अधिकाई बहुतायत, प्रचुरता । [ की श्रेणी, डकेल, धक्का ।

रेला दे० ( पु० ) ढक्का, बाढ़, नदी की वृद्धि, पशुओं

रेवड़ी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिठाई । —के फोर में पड़ना ( वा० ) फन्दे में फँसना, फँसना में पड़ना ।

रेवत ( पु० ) बलदेव जी के ससुर का नाम ।

रेवती तत् ( स्त्री० ) नक्षत्र विशेष, सत्ताईसवाँ नक्षत्र, एक राजकन्या, जो बलराम को ब्याही गई थी ।

—रमण ( पु० ) बलराम, बलदेव ।

रेवा तत् ( स्त्री० ) नदी विशेष, नर्मदा नदी ।

रेख ( पु० ) द्वेप, ईर्ष्या, क्रोध ।

रेह दे० ( स्त्री० ) सजी, मिट्टी की

विशेष, जो कपड़े साफ करने के

रेहड़ दे० ( पु० ) एक प्रकार की

रेहला दे० ( पु० ) चना, चणक, वृट् ।

रेहू पेहू दे० ( स्त्री० ) अधिकता, अधिकाई ।

रे ( पु० ) धन, सोना, विभव, अर्थ ।

रैन दे० ( स्त्री० ) रात्रि, रात, निशा, रजनी ।

( पु० ) राचस ।

रैवत तत् ( पु० ) पर्वत विशेष, जो द्वारका के पास है जो आनकल गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है । महादेव, चौदह मनुष्यों में का एक मनु, रैवती का पिता ।

रौश्रां दे० ( पु० ) रोम, रोंगटा, लोम । [ हाहाकार ।

रोमाई दे० ( स्त्री० ) बिसूरना, रोना, विलाप, रोदन,

रोश्राना दे० ( कि० ) रुझाना, दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना ।

रोश्रास दे० ( पु० ) रुझाई, रोमांस, रोने की हृच्छा ।

रोप दे० ( स्त्री० ) रोंग्रा, रोंगटा, लोम ।

रोंगटी दे० ( स्त्री० ) रुगड़ा, ठगविद्या, धूर्तता ।

रोंट दे० ( स्त्री० ) छल, वञ्चना, प्रतारण, बहाना, ब्याज, मिथ ।

रोंटना दे० ( कि० ) मुकरना, लकारना, छल करना, बहाना करना, धोखे घुमाव करना । [ प्रपञ्ची ।

रोंटिया दे० ( पु० ) विश्वासघातक, छली, कपटी,

रोंपना दे० ( कि० ) लगाना, गाड़ना, घुस आदि लगाना, एक स्थान से उखाड़ कर दूसरी जगह

बोना ।

रोवा तत् ( पु० ) रोम, रोंग्रा, रोंगटा ।

रोक दे० ( स्त्री० ) अटक, छँक, रुकाव, अटकाव ।

रोकड़ दे० ( स्त्री० ) नयद, नक़्दी, रुपैया पैसा ।

रोकड़िया दे० ( पु० ) कोठारी, भण्डारी, खज़ाँची, रुपया पैसा रखने वाला । [ प्रतिबन्ध ।

रोकन दे० ( स्त्री० ) आड़, ओट, बाधा, ब्याधात, रोकना ) घेरना, अवरोध करना, अटकाना,

करना,

रोग

व्याधि,

शारीरिक

(

पीड़ित,

रोगी तत्त्वं ( पु० ) रोगिया, रोगप्रस्त, पीडित, असुख ।  
 रोजक तत्त्वं ( पु० ) रुचिकारक, पाचक, मनभावन ।  
 रोजन ( पु० ) पसेव, हलदी, गोरोचन, मनोहर, रुचिकर, केसर, हर्षण ।  
 रोजना तत्त्वं ( स्त्री० ) गोरोचन, हरदी, पीठारंग ।  
 रोजिष्णु तत्त्वं ( वि० ) दीप्तिराल, प्रकाशमान, रुचि-  
 शील, रुचने योग्य ।  
 रोज दे० ( पु० ) दिन, दिवस, विलाप, रोदन ।  
 रोज दे० ( पु० ) नीलगाय, मृग विशेष ।  
 रोज दे० ( पु० ) एक प्रकार की मोटी रोटी, जो प्रायः  
 हनुमानजी के नैवेद्य के लिये बनाई जाती है ।  
 रोजा दे० ( पु० ) रोज, मोटी रोटी ।  
 रोटी दे० ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध भोज्य वस्तु, कुलका ।  
 रोड़ा या रोड़ी दे० ( पु० ) यद्वा कङ्कूर, ईंट परपर  
 आदि के टुकड़े, पञ्जाब की एक प्रसिद्ध वणिक्  
 जाति । [ थाई बहना ।  
 रोदन तत्त्वं ( पु० ) रुदन, रुलाई रोना, मश्रुपात करना,  
 रोध तत्त्वं ( पु० ) तट, तीर, किनारा, करारा, नदी  
 का तट, रोक, रुकावट, अटकाव ।  
 रोधन तत्त्वं ( पु० ) रोकथाम, अटकाव, प्रतिपन्ध ।  
 रोना दे० ( क्रि० ) रोदन करना, थाई बहाना, डब-  
 डबाना ।  
 रोपक ( पु० ) रोपनेवाला, वृक्षादि लगानेवाला ।  
 रोपण तत्त्वं ( पु० ) स्थापन, पेड़ लगाना ।  
 रोपना दे० ( क्रि० ) वृक्ष आदि का बगाना, रोपण  
 करना ।  
 रोजा तत्त्वं ( पु० ) रोपणकर्ता, रोपने वाला, लगाने  
 वाला, पेड़ या घात आदि का रोपण करने वाला ।  
 रोम तत्त्वं ( पु० ) ज्ञोम, बाल, केश, रोंग्रा ।—कूप  
 ( पु० ) रोम का छिद्र, रोम के निकलने का  
 स्थान ।—पाट ( पु० ) रोम का बना चूड़ा,  
 दुशाला, कम्बल ।—हर्षण ( वि० ) भयानक,  
 भयङ्कर, कठिन कार्य ।  
 रोमक तत्त्वं ( पु० ) देश विशेष, रूम देश । ( वि० )  
 रोम देश के वासी, रूसी ।  
 रोमन्य तत्त्वं ( पु० ) पगुराना, पगुरी करना, चवाई  
 हुई वस्तु का पुनः चवाना ।

रोमाञ्च तत्त्वं ( पु० ) रोंग्रा का खड़ा होना, सिहरना,  
 भय या हर्ष से रोंग्रा का उठजाना, पुलक ।  
 रोमाञ्चित तत्त्वं ( पु० ) हर्ष या भय से शरीर के  
 रोमों का खड़ा होना, पुलकित ।  
 रोमाचलो ( स्त्री० ) रोम श्रेणि, रोएँ की पंक्ति जो  
 नाभि के पास से निकलती हैं ।  
 रोम दे० ( स्त्री० ) हल्लड़, धूमधाम, भीड़भाड़ ।  
 रोमाकार दे० ( अ० ) अतिशय कुंघ से ।  
 रोरी ( स्त्री० ) देखो रोखी । [ चिकनाना ।  
 रोलना दे० ( क्रि० ) बराबर करना, चिकना करना,  
 रोजा दे० ( पु० ) रिस, एक छन्द का नाम ।  
 रोलो दे० ( स्त्री० ) कुंडम, श्रीचूर्ण, श्री, एक प्रकार  
 का रंग, साधु जिसका तिलक लगाते हैं ।  
 रोप तत्त्वं ( पु० ) क्रोध, कोप, रीस, रिस, अप्रसन्नता ।  
 रोह ( पु० ) ऊपर चढ़ना, चढ़कुर, कली ।  
 रोहिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) नक्षत्र विशेष, चौथा नक्षत्र,  
 बलराम की माता ।—पति ( पु० ) चन्द्रमा,  
 चन्द्रदेव ।  
 रोहित, रोह तत्त्वं ( पु० ) एक प्रकार की मछली ।  
 रोहिताश्रय ( पु० ) राजा हरिरचन्द्र के पुत्र का नाम,  
 भ्राग ।  
 रोही ( पु० ) बरगद की नीचे की ओर खटकने वाली  
 अटाई ।  
 रोह ( पु० ) मछली विशेष ।  
 रोताई ( स्त्री० ) लड़ाई, युद्ध, सरदारी ।  
 रौंदना दे० ( क्रि० ) कुचलना, पीसना, चूर करना,  
 चूर्ण करना ।  
 रौंधना दे० ( क्रि० ) रौंदना, बन्द करना, कुचलना ।  
 रौद्र तत्त्वं ( वि० ) भयानक, भयङ्कर । ( पु० ) रण  
 विशेष ।  
 रौघ ( पु० ) चांदी, धातु विशेष ।  
 रौर दे० ( पु० ) रौला, कीर्ति, प्रसिद्ध । [ नरक ।  
 रौरव तत्त्वं ( पु० ) नरक विशेष, अति कष्टदायक  
 रौला दे० ( पु० ) धूमधाम, पसेवा, होइछा ।  
 रौव्य ( पु० ) एक मनु का नाम ।  
 रौस दे० ( पु० ) वारजा, बरामदा ।  
 रौहिण्य ( पु० ) बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भात ।

## ब

ल यह व्यञ्जन का अट्टाईसवाँ अक्षर है, दन्त से यह उच्चारित होता है इसीसे इसे दन्त्य कहते हैं ।

ल तव० ( पु० ) इन्द्र, मन्त्र, कीट, दीप्ति, प्रकाश ।

लकड़ दे० (पु०) काष्ठ, काठ, लकड़ी, कुन्दा ।—हारा  
(पु०) लकड़ी चीरने वाला, लकड़ी बेचने  
वाला । [पड़े मोटे कुन्दा ।

लकड़ा दे० ( पु० ) लकड़, बड़ा कुन्दा, लकड़ी के  
लकड़ी दे० ( स्त्री० ) काठ, इन्धन, काष्ठ, जलावन,  
जलावे की लकड़ी, छड़ी, डंडा ।

लक्या दे० ( पु० ) रोग विशेष, पचाघात ।

लकीर दे० ( स्त्री० ) रेखा, घाटी, चिह्न पंक्ति, पंक्ति ।

लकुट या लकुटिया दे० ( पु० ) लामो, छड़ी-।

लकीर ( स्त्री० ) रेखा, लीक हाँड़ी ।

जकाड ( पु० ) बट्ट, लफडी

लक्ष तत्. ( पु० ) संख्या विशेष, लाख, सौ हजार,  
व्याज, बढाना, कैतव, कपट, अपदेश ।

लक्षक तत्वं ( पु० ) दर्शक, दिष्टाने वाढ्या, बढाने  
पाह्या । [रीति, भति ।

लक्षण तत् ( ५० ) चिन्ह, पहचान, स्वभाव, प्रकार,  
लक्षण तत् ( स्त्री० ) शब्द की शक्ति विशेष,  
शब्दाय से सम्बन्ध रखने वाले, वस्तुन्त का बोधक,  
अध्याहार । [ परिचित ]

लक्षित तत्त्व ( वि० ) ज्ञाना हुषा, विदित, ज्ञात,  
लक्ष्मण तत्त्व ( पु० ) श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई,  
महाराज दशरथ की छोटी रानी सुमित्रा का पुत्र ।

जन्मप्राप्त ( स्त्री ) श्रीकृष्ण की पदानिधि में  
की एक पदानिधि, यह मद्रदेश के राजा की कन्या  
थी । ( २ ) दुर्वाधन की कन्या, श्रीकृष्ण के पुत्र  
साम्भ ने इसे हर कर व्याहारा, सारसी, सारस  
पक्षी की स्त्री ।

जलमी तत्त्वं ( स्त्रो० ) विष्णुप्रिया, इन्दिरा, कमला,  
लोकमाता, हरियल्लभा । समुद्र से निकले हुए  
चौदह रत्नों के अन्तर्गत शन-विशेष, ऐश्वर्य,  
धन, सम्पत्ति, सम्बदा । —कान्त, नाथ, पति  
( पु० ) विष्णु, नारायण, रामनाथ, रमापति,  
मागवान्, रमेश । —धान ( पु० ) धनी, धनवान् ।

लक्ष्मण तत् ( पु० ) चिन्ह, अङ्क ।

लक्ष्य तत्० ( पु० ) निशाना, उद्देश्य ।

लत्र ( पु० ) प्रत्यय, माया का प्रथ ।

लखना दे० ( क्रि० ) पहचानना, चीन्हना, ताड़ना,  
जानना, देखना, मालना । [ लक्षांशीश ।

लक्षपति तद् ( पु० ) लक्षपति, धनी, धनवान्,  
लखलखा दे० ( पु० ) औपधि विरोध, मूर्खान्द्र करने  
की औपधि विशेष ।

**लखनखाना दे० ( कि० ) हाफिज ।**

जखलूट दे० ( वि० ) । बड़ाक, अपगंधी, नंगा,  
खुर्चीला । [ जाना ।

लखा दे० ( पु० ) लखे, लखित, देखा, दृष्टि, ज्ञात,

लखाऊ दे० ( पु० ) लखने योग्य, जानने योग्य, समझने लायक ।

लखिया दे० (पृ०) लखनहार, ताड़नहार, लक्षक,  
जानने वाला, समझने वाला ।

लखेरा दे० ( पु० ) जाति विशेष, लाह का काम करने वाली जाति. लहेरा. लाख चढ़ैया ।

लखौरा दे० ( वि० ) लाह से बना हुआ लाखी ।

लग दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि, लौ, साथ, संग ।

—चलना ( वा० ) साथ साथ चलना, पास जाना ।—भग. ( अ० ) आस पास, निकट, प्रायः

करीय, अन्वाज्ञन । [( पु० ) एक जीव विशेष ।

लगड़ दे० ( पु० ) पक्षी विशेष, बाज ।—वग्धा

लगन ( खी० ) धुन, प्रीति, प्रेम, लग्न ।

लगना दे० ( क्रि० ) सोहना, शोभना, बृहद् आदि का बड़ जमाना । [एक, सित्त सिलेवार, श्रविस्चिद्धा ।]

लगातार दे० (अ०) बराबर, क्रमशः एक फी बाद (पु०)

लगान.दे० ( पु० ) उत्तर, टिकाव, ठिकाना, माल  
गुजारी, किराया, भाड़ा, कर ।

लगाना दे० ( क्रि० ) रोपना, बोना, घपन करना,  
मिलाना, सटाना ।

लगाव दे० ( पु० ) मेल, मिलाप, ..

लगा दे० ( ) लग,

लगुइ . . . सोरा

लङ्गुहा दे० ( पु० ) मगोहर, सुन्दर, मनभावन ।

लङ्गुआ, लङ्गुवा दे० ( पु० ) बार, जार, लगा हुआ, उपपत्ति, आशिक ।

लङ्गा दे० ( पु० ) प्रेम, प्यार, नाव खेने के लिये बड़ा बाँस ।—न खाना ( वा० ) अगाध, सर्वश्रेष्ठ होना । [ की छोटी बह्नी ।

लङ्गो दे० ( स्त्री० ) नाव चलाने का छोटा बाँस, बाँस लान्न तत्त्वं ( पु० ) मेघ आदि राशियों के उदय होने के समय का मुहूर्त्त, समय । ( पु० ) लगा हुआ, सदा हुआ, मिला ।

लङ्गक तत्त्वं ( पु० ) प्रतिभू, जामिन ।

लङ्गिमा तत्त्वं ( स्त्री० ) ( संस्कृत में पुलिङ्ग ) लघुता, छुटाई, छोटापन, लाघव, योगियों की आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि ।

लङ्गित तत्त्वं ( वि० ) छोटा, नीच, लघु ।

लङ्गु तत्त्वं ( वि० ) छोटा, हलका, हस्त्वर्थ, शीघ्र, नीचा, एक मात्रिक स्वर ।—फाय ( पु० ) बकरा, छाग । ( वि० ) छोटा शरीर वाला ।—ता ( स्त्री० ) छोटापन, छुटाई, नीचता, निचाई ।—हस्त ( पु० ) छोटा हाथ ।—शङ्का ( स्त्री० ) मूत्र, मश्राव, पेशाब ।

लङ्घो तत्त्वं ( स्त्री० ) छोटी, अति छोटी । [ भाग ।

लङ्ग, लङ्क दे० ( पु० ) कमर, कटि, शरीर का मध्य लङ्ग तत्त्वं ( स्त्री० ) राजसाधिप रावण की राजधानी लङ्का पहले कुवैर के अधिकार में थी, परन्तु रावण ने बलपूर्वक उससे छीन कर उसे अपनी राजधानी बनाई ।—पति ( पु० ) रावण, विभीषण, लङ्का का राजा ।

लङ्ग, लङ्ग ( वि० ) अपाहिज, पंगु ।

लङ्गड़, लङ्गर दे० ( पु० ) विना पैर के, पद रहित, चरण हीन, लोहे का बना हुआ भारी और अकुश नुमा एक प्रकार का कौटा जिससे नाव रोकी जाती है, एक प्रकार का पैर में पहना जाने वाला जानना जेवर ।

लङ्किनी ( स्त्री० ) राक्षसी विशेष ।

लङ्गड़ा ( वि० ) एक पैर का व्याधि ।

लङ्गर ( पु० ) जहाज को ठहराने का ज्ञास शक का भारी लोहा । ( वि० ) बीठ, लंगड़ा ।

लङ्करी, लङ्गरी दे० ( स्त्री० ) थाली, थरिया ।

लङ्गूचा दे० ( पु० ) खाने की एक वस्तु ।

लङ्गूर दे० ( पु० ) बानर विशेष, यद्यि पूँछ वाला बन्दर, वीर, लङ्गूचा बन्दर, इसकी पूँछ लम्बी और मुक्त काला होता है ।

लङ्गोट दे० ( पु० ) लङ्गोटा, कौपीन, पहलवानों की एक प्रकार का कटिवस्त्र, कछुनी, करधनी ।—

बन्द ( पु० ) अनन्याहता, महाचारी, कच्छबन्ध ।

लङ्गोटिया दे० ( पु० ) समवयसी, समवयस्क, बालापन का साथी ।

लङ्गोटी ( स्त्री० ) कछुनी ।

लङ्घन तत्त्वं ( पु० ) [ लघि + अन्ट् ] लौघना, पार उतारना, पार होना, उपवास, उपास करना ।

लङ्घना दे० ( कि० ) उछलना, कूदना, पार उतरना, फाँदना, लौघ जाना ।

लङ्घक दे० ( स्त्री० ) नवन, लचीला, मुकाव ।

लङ्घकना दे० ( कि० ) नवना, मुकना, लचना ।

लङ्घका दे० ( पु० ) धक्का, फोक, एक प्रकार की नाव, मत्स्य विशेष । [ हिलना ।

लङ्घकाना दे० ( कि० ) कोंकना, मुकना, नवाना,

लचना दे० ( कि० ) टेढ़ा होना, नवना, मुकना, तिरछा होना ।

लङ्घलङ्घाना दे० ( कि० ) लङ्घलङ्घ होना, नवना ।

लङ्घर दे० ( पु० ) अनादी, अज्ञान, अवोध, मूढ़, मूर्ख ।

लङ्घाना दे० ( कि० ) टेढ़ा करना, नवाना, मुकाना ।

लङ्घन तत्त्वं ( कि० ) लङ्घण, स्वभाव, चिन्ह, आकार, आकृति के विशेष चिन्ह ।

लङ्घा दे० ( पु० ) स्तवक, गुच्छा, रंगे सूत की आँटी ।

लङ्घन ( पु० ) लङ्घण, चिन्ह ।

लङ्घमन ( पु० ) लक्ष्मण ।

लङ्घमी ( स्त्री० ) लक्ष्मी ।

लङ्गलङ्गा दे० ( वि० ) चिपचिपा, गोंददार, लसलसा ।

लङ्गलङ्गाना दे० ( कि० ) चिपचिपागा, लसलसाना, सटना, नरमाना, नरम होना ।

लङ्गशाना दे० ( कि० ) लजित करना, सङ्कोच करना, लजाना, शर्मिन्दा करना ।

लङ्गालु या लङ्गालु तत्त्वं ( वि० ) लज्जावान्, लजाने वाला, शर्मिन्दा, हयादार ।



लज्जालू ( वि० ) शर्मीला, ( पु० ) छुईमुई, जिसको लजवन्ती भी कहते हैं ।  
 लज्जियाना दे० ( क्रि० ) लजाना, लज्जा करना ।  
 लज्जीला दे० ( वि० ) लाजवन्त, सङ्कोची ।  
 लज्जा तव० ( स्त्री० ) शर्म, लाज, सङ्कोच, शील ।  
 —रहित ( नि० ) निर्लज्ज, वेशर्मा, बेहया ।  
 शील ( वि० ) लज्जालू, लज्जीला, शर्मीला ।  
 लज्जित तव० ( वि० ) लज्जायुक्त, लज्जीला, शर्मिन्दा ।  
 लट दे० ( स्त्री० ) लट्ठी, केश, सिर का घाल ।  
 यथा:—  
 “ ताही समय लट एक छुट्फि कपोलन पर,  
 मानो राहु चन्द्रमा को चाबुक चलायो है । ”  
 लटक दे० ( स्त्री० ) दग, रीति, भौंति, प्रकार, टंगाव, मुकाव । — रहा है ( क्रि० ) झूल रहा है, टंगा रहा है ।  
 लटकन दे० ( पु० ) आभूषण विशेष, भुमका, एक बृच का फूल, जिससे कपड़े रँगे जाते हैं ।  
 लटकना दे० ( क्रि० ) झूलना, टँगना, हिलना, पीछे रहना ।  
 लटका दे० ( पु० ) गुन, शन्तर, मन्तर; टुटका, टोना, भाव फूँक, कौतूहलोत्पादक बात, चुटकुला ।  
 लटकाना दे० ( क्रि० ) झूलना, टँगना ।  
 लटकाव दे० ( पु० ) टँगाव, मुकाव, मुलाव ।  
 लटपट दे० ( वि० ) मिला, सदा, चिपटा ।  
 लटपटा दे० ( वि० ) चञ्चल, खिलाव, गटपट ।  
 लटपटाना दे० ( क्रि० ) लड़खड़ाना, विचलित होना, ढिगना ।  
 लटा दे० ( वि० ) दुर्बल, निर्वल, असक्त, असमर्थ ।  
 लटाई दे० ( स्त्री० ) परती, चर्खी, जिसमें डोरा रख कर सुई उड़ाई जाती है ।  
 लटपटा दे० ( वि० ) दुबला पतला, अत्यन्त निर्वल, अतिशय असमर्थ, अटाला । [ छोटी जटा ।  
 लट्टरिया दे० ( पु० ) लट्ठा, जटा, चौटी, बच्चों की लट्टरी ( स्त्री० ) देखो “ लट्टरिया ”  
 लटोरा ( पु० ) पक्षी विशेष ।  
 लट्ट दे० ( पु० ) भौंरा; अमर, एक प्रकार का खिलौना, जिसे लड़के नचाते हैं । — होना ( वा० ) मोहित होना, आसक्त होना, किसी के प्रेम में फँसना ।

लट दे० ( पु० ) बड़ी लाठी, चक्का सोटा, बड़ा डंडा ।  
 लटालाठी दे० ( स्त्री० ) लठवाणी, लाठी की लड़ाई ।  
 लठियाना दे० ( क्रि० ) लाठी मारना, लाठी से मारना, लाठी से पीट देना ।  
 लट्टर दे० ( वि० ) शिथिल, ढीला, ढंदा, धीमा, आलस, आलस्यता, सुप्त ।  
 लड़ दे० ( स्त्री० ) लरी, पॉति, पंक्ति, मोती आदि की माला । ( क्रि० ) झगड़, भिड़, गुप ।  
 लड़कपन दे० ( पु० ) लड़काई, बालपन ।  
 लड़कवुद्धि दे० ( स्त्री० ) चित्तविक्षापन, बुलबुलाहट ।  
 लड़का दे० ( पु० ) बालक, डोरा, छोकरा, शिशु ।  
 — घाजा ( वा० ) बच्चा बच्ची, लड़का लड़की ।  
 लड़काई दे० ( स्त्री० ) बालपन, शिशुता, लड़कपन ।  
 लड़की दे० ( स्त्री० ) छोकरी, बेटी, तनया, कन्या, कुमारी, दुहिला ।  
 लड़खड़ाना दे० ( क्रि० ) झगमगाना, ढिगना, स्थिर, नहीं रह सकना ।  
 लड़ना दे० ( क्रि० ) लड़ाई करना, संग्राम करना, युद्ध करना, यत्नेना करना ।  
 लड़बड़ दे० ( वि० ) हलका, तुतल ।  
 लड़खड़ाना दे० ( क्रि० ) लड़खड़ाना, तोतलाना, अस्पष्ट उच्चारण करना ।  
 लड़वायला दे० ( वि० ) झूठी, पागल ।  
 लड़ाई दे० ( स्त्री० ) युद्ध, संग्राम, सङ्ग्रह । — करना ( वा० ) लड़ना, झगड़ना, दखेड़ा करना ।  
 लड़ाक, लड़ाका तद् ( वि० ) झगड़ालू, विवादी लड़ने वाला । [ लगाना, लूकाना ।  
 लड़ाना दे० ( क्रि० ) लड़ना, लड़ाई करना, झगड़ना ।  
 लड़ियाना दे० ( क्रि० ) गूँथना, पिटोना, लड़ बनाना, पोहन ।  
 लड़ो दे० ( स्त्री० ) पॉति, पंक्ति ।  
 लड़ैता ( वि० ) प्यारा, दुलारा ।  
 लड़ू दे० ( पु० ) मोदक, मिठाई, मोतीचूर आदि ।  
 लड़ा, लड़िया दे० ( पु० ) लड़का, भार डोने वाली गाड़ी, लड़ी । [ भौंटा, मोदला ।  
 लंठ दे० ( पु० ) निबोध, अवोध, गँवार, लंहरा दे० ( वि० ) अनाथ, असहाय, एककी, बंदा ।

लत दे० ( स्त्री० ) बुरी आदत, यान, अम्यास, चाल, बुरी यान ।—ना ( कि० ) घेड़े का घेड़ी के साथ जोड़ा खाना ।

लतरी दे० ( स्त्री० ) पुरानो जूती ।

लता तत् ( स्त्री० ) बेल, बह्नी, बहरी, उस पौधे को कहते हैं जिसकी लंबाई तो बहुत हो परन्तु वह बिना आश्रय के खड़ी न रह सके ।—तरु ( पु० ) खजूर, नारंगी का पेड़ ।—पनस ( पु० ) खरबूजा तरबूज । [ घेड़े की खात ।

लताड़ दे ( स्त्री० ) फटकार, अपवाद, तिरस्कार, लताड़ना दे० ( कि० ) फटकारना, तिरस्कार करना, लथेड़ना, लात मारना ।

लतिका तत् ( स्त्री० ) कोमलता, बहरी, बहरी ।

लतिया दे० ( पु० ) बुरी चाल का, कुचालो, दुराचारी ।

लतियाना दे० ( कि० ) लात मारना ।

लत्ता दे० ( पु० ) फटा पुराना कपड़ा, चीयड़ा, चिरकुट ।

लत्ती दे० ( स्त्री० ) लत्ता, घास, लट्टू नचाने की डोर ।

लथड़ना दे० ( कि० ) लड़ फट होना, कीचड़ से सींगना ।

लथरपथर दे० ( पु० ) लवालवा, गुँह तक, ठसाठस ।

लथेड़ना दे० ( कि० ) लयाड़ना, फटकारना ।

लदना दे० ( कि० ) धोमकल होना, भार धोमकल ।

लदना दे० ( कि० ) धोमकल, भरना, भार रखना ।

लदाय दे० ( पु० ) मोट, धोमक, भार ।

लददू दे० ( वि० ) लदने योग्य, लदने वाला ।

लप दे० ( स्त्री० ) रूप, शीघ्र, जल्दी, सुट्टी भर हथेली, पसर, पसा ।

लपका दे० ( स्त्री० ) चटक, भड़क, चमक, शोभा, प्रकाश, दीप्ति ।

लपकना दे० ( कि० ) चमकना, लहकना, आगे बढ़ना । [ बुरी चाल ।

लपका दे० ( पु० ) रूपक, आक्रमण, फुर्ती, शीघ्रता, लपकाना दे० ( कि० ) हाथ बढ़ाना, लेने के लिये आगे बढ़ना, चाहना, अभिलाष करना ।

लपकी दे० ( स्त्री० ) मुख्य विशेष ।

लपची दे० ( स्त्री० ) एक जाति की मक्खली ।

लपभूप दे० ( वि० ) फुर्तीला, चञ्चल, सतर्क, सावधान, अस्थिर ।

लपट दे० ( स्त्री० ) लौ, सुगन्ध, मसक, चिपक, सठ ।

लपटना दे० ( कि० ) सटना, मिलना, लगना ।

लपटा दे० ( पु० ) घास विशेष, लगाव, मगन्ध ।

लपटी दे० ( स्त्री० ) हलुवा, चिपकी, सटी ।

लपडचटाई दे० ( स्त्री० ) “ लवङ्गचटाई ” देखो ।

लपसी दे० ( स्त्री० ) पतला शीरा, पतला हलवा ।

लपाटिया दे० ( पु० ) झूठा, मिथ्या वादी, लवार ।

लपाटी दे० ( स्त्री० ) मिथ्या, झूठमूठ ।

लपित दे० ( स्त्री० ) कहा हुआ, कथित, जो एक बार कहा जा चुका है । [ सूक्ष्म ।

लपानक दे० ( वि० ) दुबला, पतला चीय, मीना, लपेट दे० ( स्त्री० ) बेठन, बेष्टन, ठकन ।—झपेट

( स्त्री० ) घोलधुमाव, डालमट्टल, बहाना ।

लपेटन दे० ( पु० ) बेठन, लपेटन का कपड़ा ।

लपेटना दे० ( कि० ) बेठन लगाना, पौधना बेठन नयाना ।

लपेटयां दे० ( वि० ) पेंड्या, धुमाया हुआ ।

लप्पा दे० ( पु० ) पट्टा, गोंदा, किनारी ।

लवङ्गलन्दा दे० ( पु० ) नटखट, शलेल, उच्छृङ्खल ।

लवङ्गचटाई दे० ( स्त्री० ) सूखी चूची, गिरी हुई चूची, चिपिलस्तन । [ उधर की धातें ।

लवङ्ग सयङ्ग दे० ( पु० ) बरकक, झूठसाँच, झूठ

लवङ्गा दे० ( पु० ) झूठा, असत्यवादी, धनर्थक वादी ।

लवनी दे० ( स्त्री० ) ताड़ी बुझाने का घड़ा या चूल्हा ।

लवरघटा दे० ( पु० ) नकचदा, छोटी यात से मोध करने वाला ।

लवभन्न दे० ( पु० ) जल्दी, शीघ्रता, लथर पथर ।

लवलवा दे० ( वि० ) चिपचिपा, जसदार ।

लवालस दे० ( स्त्री० ) चापलूसी, लसोपत्तो, सुखामद ।

लवार दे० ( पु० ) झूठा, गप्पी ।

लवालव दे० ( वि० ) गुँह तक, ठसाठस ।

लवी दे० ( स्त्री० ) चीनी की चासनी ।

लवादा दे० ( पु० ) रुई भरा जामा, यका धागा, लठ, मोटा सांटा ।

लावेदा दे० ( पु० ) लाठी ।

लब्ध तत् ( वि० ) [ लभ् + क ] प्राप्त, उपाजित ।

— वर्ण ( पु० ) पवित्र, विचक्षण, विद्वान् ।

लौघिना दे० ( कि० ) उतरना, पार होना, पार जाना, कूदना, फाँटना ।  
 लाक्षा तत्० ( स्त्री० ) लाख, महावा, महावर का रंग, बाढ़ । [ से कथित अर्थ ।  
 लाक्षणिक तत्० ( वि० ) लक्षण युक्त, लक्षणा वृत्ति  
 लाख दे० ( पु० ) सख्या विशेष, लक्ष, सौ हजार की सख्या, लाह, लावा, जन्तु, लाही ।  
 लाखी दे० ( स्त्री० ) लाही का रंग ।  
 लाग दे० ( पु० ) द्वेष, विरोध, बैर, शत्रुता, विद्वेष ।  
 लागत दे० ( स्त्री० ) मोल, दाम, मूल्य ।  
 लागना दे० ( कि० ) मिट्टना, विरोध करना, लपटाना, लगना । [ द्वेष, शत्रु, विरोधी ।  
 लागी दे० ( स्त्री० ) स्नेह, छोह, प्यार । ( पु० )  
 लागू दे० ( वि० ) चलने वाला, पिछलग्ग, अनुयायी, अनुगत । [ छुटाई, निरोगता, सुस्थता ।  
 लाघव तत्० ( पु० ) लघुता, ओछाई, क्षुद्रता, नीचता, लाङ्गल तत्० ( पु० ) हल, जिससे खेत जोता और बोया जाता है ।— ( पु० ) चलदेवजी, जलपोष, नारियल ।—कौटि ( पु० ) हल के जुँह पर लगा हुआ लोहे का फाल ।  
 लाङ्गूल तत्० ( पु० ) पूँछ, पशुओं का अङ्ग विशेष ।  
 — ( पु० ) कौंच का बीज, वानर ।  
 लाची ( स्त्री० ) इलायची ।  
 लाज तत्० ( स्त्री० ) लज्जा, सङ्कोच, शर्म ।  
 —घन्त ( वि० ) लजीला, कुलवन्त ।  
 लाजा तत्० ( पु० ) लावा, खीक, खोई, धान का लावा ।  
 लाजावर्त तत्० ( पु० ) मणि विशेष, रावटी ।  
 लाङ्गल तत्० ( पु० ) चिन्ह, थपराध, कलङ्क, दाग, धब्बा । [ बुराई ।  
 लाङ्गुना तत्० ( स्त्री० ) निन्दा, तिरस्कार, अपमान, लाङ्गल तत्० ( वि० ) तिरस्कृत, निन्दित, अपमानित । [ जो मूल विशेष गिरता है ।  
 लाभा दे० ( पु० ) लस, भैर आदि के व्याने के समय  
 लाट तत्० ( पु० ) देश विशेष, खम्मा, खम्भ ।  
 प्राचीन, पुराना, जीर्ण ।  
 लाठी तत्० ( स्त्री० ) काष्ठ की एक रीति का नाम, लाट देश की स्त्री । ( दे० ) फेफड़ी ।

लाठ दे० ( पु० ) मोटा खम्मा, मोटा धीर लम्बा खम्मा, कोल्हू का लाटा ।  
 लाठी दे० ( स्त्री० ) लकड़ी, सोटा ।  
 लाड़ दे० ( पु० ) छोह, प्यार, दुलार ।—लड़ाना ( वा० ) प्रेम करना, दुलार करना, दुलार से खिलाना ।  
 लाड़ला दे० ( वि० ) प्यारा, दुलारा, प्रिय ।  
 लाड़ली दे० ( स्त्री० ) प्यारी, दुलारी, प्रिय ।  
 लाह दे० ( पु० ) लड्डू, मोदक ।  
 लात दे० ( स्त्री० ) पैर ।  
 लातिन ( स्त्री० ) भाषा विशेष, लैटिन ।  
 लाद दे० ( स्त्री० ) थोक, भार, अन्तड़ी, हृदय ।  
 लादना दे० ( कि० ) भरना, बोझना, भार भरना ।  
 लादिया दे० ( पु० ) लादने वाला ।  
 लादी दे० ( स्त्री० ) गदरी, गदहे पर का थोक ।  
 लादू दे० ( वि० ) लादू, लादने योग्य, लादने के उपयुक्त ।  
 जाना दे० ( कि० ) ले जाना, पास ले जाना ।  
 जापक ( पु० ) गीढ़, सियार ।  
 जाफना दे० ( कि० ) कूदना, फाँटना, हाँफना ।  
 जाभ दे० ( पु० ) प्राप्ति, नफा पाना, मिलना, सुद ।  
 जार दे० ( पु० ) मणि विशेष, दुलारा, दुलारमा, प्रिय, प्यारा । ( वि० ) लाल रङ का, रफ वर्ण ।  
 —युक्कीड़ ( पु० ) बहुत बड़ा मूर्ख, जो स्वयं मूर्ख हो, परन्तु अपने को अधिक बुद्धिमान समझे ।  
 जालच दे० ( पु० ) लाभ, कृष्णा, चाह, इच्छा, अभिलाष ।  
 जालची दे० ( पु० ) लोभी, स्वार्थी ।  
 जालड़ी दे० ( स्त्री० ) मानिक, चुन्नी ।  
 जालन दे० ( पु० ) पालन करना, प्रेम पूर्वक पालना पोसना, पोषण करना ।  
 जालना दे० ( कि० ) पालना, प्यार से खिलाना ।  
 जालसा तत्० ( स्त्री० ) इच्छा, मनोराज, अभिलाष ।  
 जाला दे० ( पु० ) कायस्थ, जाति विशेष, पटवारी ।  
 जालाटिक तत्० ( वि० ) ललाट देख कर शुभाशुभ कहने वाला, परभाग्योपजीवी, भाग्याधोन, प्रारब्धाधीन, भाग्य का भरोसा रखने वाला ।

लालित ( पु० ) दुलारा हुआ, पाला हुआ, पोषित ।  
लालित्य तत्त्वं ( पु० ) मनोहरता, रमणीयता,  
सुन्दरता ।

लाली ( स्त्री० ) लटकी, प्यारी, लज्जाई ।

लाव दे० ( पु० ) रस्ती, लड़ास ।

लावण्य तत्त्वं ( पु० ) सुन्दरता, शरीर की स्वाभाविक  
प्रभा जिससे सुन्दरता उत्पन्न होती है ।

लावलाव दे० ( पु० ) लोभ, खाइ, अभिलाष, लृप्ता ।

लावसाव दे० ( पु० ) लाभ, प्राप्ति, बढ़ती, वृद्धि ।

लावा दे० ( पु० ) खील, खोई ।

लावू दे० ( स्त्री० ) कौका, कद्दू ।

लास ( पु० ) लय, रास, मोद ।—क ( पु० ) मयूर,  
मर्तन्त्र, नचैया ।

लासा दे० ( पु० ) चेष, गोंद, जो चिड़ियाँ पकड़ने के  
काम में आता है, फँस । [ लाख, लाही ।

लाह तद् ( पु० ) लाम, प्राप्ति, डेमकुण्ड, मग्नल,

लाहा तद् ( पु० ) लाभ, प्राप्ति, लब्धि ।

लाही दे० ( स्त्री० ) लाव, लावा, तोरी, सर्प, सर्पों,  
महीन कपड़ा ।

लहौर ( पु० ) पञ्जाब की राजधानी ।

लिखत ( पु० ) तमसुक, दीप, चिट्ठीपत्रो । [ चिट्ठी ।

लिखतङ्ग, लिखतंग दे० ( पु० ) खेल, नियमपत्र,

लिखना दे० ( क्रि० ) अच्छर बनाना, लिखाई करना ।

लिखनी तद् ( स्त्री० ) कलम, लिखने का साधन,  
लेखनी ।—दास ( पु० ) लेखक ।

लिखन्त दे० ( पु० ) प्रारब्ध, भाग्य, कपाव, लकाट,  
लिखा हुआ ।

लिखा दे० ( पु० ) प्रारब्ध, होनहार, भवितव्य ।

लिखाई दे० ( स्त्री० ) लिखना, लिखने का काम ।

लिखावट दे० ( स्त्री० ) खेल, अच्छों की बनावट ।

लिखित तत्त्वं ( पु० ) लिखा हुआ ।

लिङ्ग तत्त्वं ( पु० ) पुरुषेन्द्रिय, पुरुष चिन्ह, चिन्ह,  
अक्षण, शरीर विशेष, कारण शरीर, शिवजी की  
विण्डी ।

लिचु ( पु० ) एक प्रकार का फल ।

लिम्हड़ी दे० ( स्त्री० ) हल, पोतड़ी ।

लिटाना दे० ( क्रि० ) सुलाना, पौड़ाना, सुखा देना ।

लिट्टी दे० ( स्त्री० ) मोटी रेटी, बाटी ।

लिथड़ना दे० ( क्रि० ) लथाड़ना, अपमानित करना,  
तिरस्कार करना ।

लिथाड़ना दे० ( क्रि० ) पड़ाड़ना, लथाड़ना ।

लिपटना दे० ( क्रि० ) चिपकना, सटना, सिटपिटाना ।

लिपटाना दे० ( क्रि० ) सटाना, मिड़ाना, युक्त करना ।

लिपटाव दे० ( पु० ) चिपटाव, सटाव, मिलान ।

लिपड़ी दे० ( स्त्री० ) पुरानी पगड़ी ।

लिपचाना दे० ( क्रि० ) पुतवाना, पुताना, चौका  
दिलाना, पोतना चलवाना ।

लिपाई दे० ( स्त्री० ) लीपने का काम ।

लिपि तत्त्वं ( स्त्री० ) लेप, लेख, हस्ताक्षर, हस्तलेख ।

—कर ( पु० ) लेखक, लिखने वाला ।

लित तत्त्वं ( वि० ) लिपा हुआ, लिपा पोता ।

लिवलिवा दे० ( वि० ) लसलसा, चिपचिपा, लपलपा ।

लिव्या दे० ( पु० ) चपत, चमेटा, धीख चप्पा ।

लिम दे० ( स्त्री० ) कलङ्क, दोष, अपराध, रईसा,  
चिन्ह, अक्षय ।

लिये दे० ( भ० ) वास्ते, निमित्त, तार्थ, हेतु, हेतुर्थ ।

लिलाना दे० ( क्रि० ) चाहना, इच्छा करना, खड-  
चाना, लोभ करना, लृप्ता करना ।

लिलार ( पु० ) ललाट, कपाल, प्रारब्ध, नसीब ।

लिधाना दे० ( क्रि० ) पुलवाना, आधान करना ।

लिवालाना दे० ( वा० ) साथ बुला लाना, साथ ले  
कर आना ।

लिहाफ दे० ( पु० ) रुई भरी हुई मोटी रूलाई ।

लिहाड़ा दे० ( पु० ) तुच्छ, नीच, अधम, कदाचार,  
दुष्टाचारी, तुच्छ ।

लीक दे० ( स्त्री० ) रेखा, चिन्ह, पगडण्डी ।

लीख तद् ( स्त्री० ) सिर के बालों की छोटी जूँ ।

लीचड़ दे० ( वि० ) हुराद, कष्ट, अर्थविशेष, धन-  
दास, सुस्त, दीबा ।

लीची दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, एक वृक्ष कीर इससे  
फल का नाम ।

लीसी दे० ( स्त्री० ) गाद, मल, तरफट ।

लीतरा दे० ( पु० ) पुराना जूता, दूटा जूता ।

लीद दे० ( स्त्री० ) घोड़े की पिन्डा ।

लीन तत्त्वं ( वि० ) तन्मय, तप, आसक्त, हुआ  
हुआ, मग्न ।

लॉघना दे० ( कि० ) उतरना, पार होना, पार जाना, कूटना, फाँटना ।  
 लाक्षा तत्० ( स्त्री० ) लाख, महावरा, महावर का रंग, वाह । [ से कथित अर्थ ।  
 लाक्षणिक तत्० ( वि० ) लक्षण युक्त, लक्षणा वृत्ति  
 लाख दे० ( पु० ) सख्या विशेष, लक्ष, सौ हजार की सख्या, लाह, लाछा, जन्तु, लाही ।  
 लाखी दे० ( स्त्री० ) लहरी का रंग ।  
 लाग दे० ( पु० ) द्वेष, विरोध, वैर, शत्रुता, विद्वेष ।  
 लागत दे० ( स्त्री० ) मोल, दाम, मूल्य ।  
 लागना दे० ( कि० ) मिटना, विरोध करना, लपटाना, लगना । [ द्वेष, शत्रु, विरोधी ।  
 लागी दे० ( स्त्री० ) स्नेह, छोह, प्यार । ( पु० )  
 लागू दे० ( वि० ) चलने वाला, पिछलगू, अनुयायी, अनुगत । [ छुटाई, नीरोगता, सुस्थि ।  
 लाघव तत्० ( पु० ) लघुता, ओझाई, क्षुद्रता, नीचता, लाज्जल तत्० ( पु० ) हल, जिससे खेत जोता और बोया जाता है ।—नी ( पु० ) बलदेवजी, ललपोवर, नारियल ।—कोटि ( पु० ) हल के मुँह पर लगा हुआ लोहे का फाल ।  
 लाङ्गूल तत्० ( पु० ) पूँछ, पंखों का अङ्ग विशेष ।  
 —नी ( पु० ) कौंच का बीज, वानर ।  
 लाची ( स्त्री० ) इलायची ।  
 लाज तद्० ( स्त्री० ) लज्जा, सङ्कोच, शर्म ।  
 —घन्त ( वि० ) लजीला, कुलवन्त ।  
 लाजा तद्० ( पु० ) लावा, खीब, खोई, धान का लावा ।  
 लाजावर्त तद्० ( पु० ) मणि विशेष, रायटी ।  
 लाञ्छन तद्० ( पु० ) चिन्ह, अपराध, कलङ्क, दाग, घट्टा । [ बुराई ।  
 लाञ्छना तद्० ( स्त्री० ) निन्दा, तिरस्कार, अपमान, लाञ्छित तद्० ( वि० ) तिरस्कृत, निन्दित, अपमानित । [ जो मल विशेष गिरता है ।  
 लाभा दे० ( पु० ) लस, सैल आदि के व्यन्तों के समय  
 लाट तद्० ( पु० ) देश विशेष, खंभा, खम्भ ।  
 प्राचीन, पुराना, जीर्ण ।  
 लाठी तद्० ( स्त्री० ) काष्ठ की एक रीति का नाम, लाठ देश की स्त्री । ( दे० ) फेंकड़ी ।

लाठ दे० ( पु० ) मोटा खम्भा, मोटा धौर, खम्भा खम्भा, कोरू का लाटा ।  
 लाठी दे० ( स्त्री० ) लकड़ी, सोटा ।  
 लाड़ दे० ( पु० ) छोह, प्यार, दुलार ।—लड़ाना ( वा० ) प्रेम करना, दुलार करना, दुलार से खिलाना ।  
 लाड़ला दे० ( वि० ) प्यारा, दुलारा, प्रिय ।  
 लाड़ली दे० ( स्त्री० ) प्यारी, दुलारी, प्रिय ।  
 लाह दे० ( पु० ) लड्डू, मोदक ।  
 लात दे० ( स्त्री० ) पैर ।  
 लातिन ( स्त्री० ) भाषा विशेष, लैटिन ।  
 लाद दे० ( स्त्री० ) धोक, भार, झन्झट, हृदय ।  
 लादना दे० ( कि० ) भरना, धोकना, भार भरना ।  
 लादिया दे० ( पु० ) लादने वाला ।  
 लादी दे० ( स्त्री० ) गठरी, गद्दे पर का धोक ।  
 लादू दे० ( वि० ) लददू, लादने योग्य, लादने के उपयुक्त ।  
 जाना दे० ( कि० ) ले जाना, पास ले आना ।  
 जापक ( पु० ) गीदड़, सियार ।  
 जाफना दे० ( कि० ) कूटना, फाँटना, हाँफना ।  
 जाभ दे० ( पु० ) प्राप्ति, नफा पाना, मिलना, सूद ।  
 जार दे० ( पु० ) मणि विशेष, दुलारा, दुलारना, प्रिय, प्यारा । ( वि० ) लाल रङ्ग का, रक्त वर्ण ।  
 —शुभकंड़ ( पु० ) बहुत बड़ा मूल्य, जो स्वयं मूल्य हो, परन्तु अपने को अधिक बुद्धिमान समझे ।  
 जालच दे० ( पु० ) लाभ, चूषा, चाह, इच्छा, अभिलाष ।  
 जालची दे० ( पु० ) जोभी, स्वार्थी ।  
 जालड़ी दे० ( स्त्री० ) मानिक, चुन्नी ।  
 जालन दे० ( पु० ) पालन करना, प्रेम पूर्वक पालना पोसना, पोषण करना ।  
 जालना दे० ( कि० ) पालना, प्यार से खिलाना ।  
 जालसा तद्० ( स्त्री० ) इच्छा, मनोरथ, अभिलाष ।  
 जाला दे० ( पु० ) कायस्थ, जाति विशेष, पटवारी ।  
 जालाटिक तद्० ( वि० ) ललाट देख कर शुभाशुभ कहने वाला, परमायुषजीवी, मायामोक्ष, प्रारब्धाधीन, भाग्य का भरोसा रखने वाला ।

लालित ( पु० ) दुलारा हुआ, पाला हुआ, पोषित ।  
लालित्य तत् ( पु० ) मनोहरता, रमणीयता,  
सुन्दरता ।

लाली ( स्त्री० ) छटकी, प्यारी, लज्जाई ।

लाव दे० ( पु० ) रस्सी, लड़ास ।

लावण्य तत् ( पु० ) सुन्दरता, शरीर की स्वाभाविक  
प्रभा जिससे सुन्दरता उत्पन्न होती है ।

लावलाव दे० ( पु० ) लोभ, चाह, अभिलाष, लृप्णा ।

लावसाव दे० ( पु० ) लाभ, प्राप्ति, यशस्वी, वृद्धि ।

लावा दे० ( पु० ) खील, छोई ।

लावू दे० ( स्त्री० ) लौका, कद्दू ।

लास ( पु० ) नृत्य, राम, मोद ।—क ( पु० ) मयूर,  
नर्तक, नर्तिका ।

लासा दे० ( पु० ) चप, गोंव, जो चिट्ठियाँ पकड़ने के  
काम में आता है, फँदा । [ लाख, लाही ।

लाह तद् ( पु० ) लाम, प्राप्ति, ऐमकुशल, महल,

लाहा तद् ( पु० ) लाभ, प्राप्ति, लम्बि ।

लाही दे० ( स्त्री० ) लाख, लाहा, तोरी, सर्प, ससों,  
महीन कपड़ा ।

लाहौर ( पु० ) पञ्जाब की राजधानी ।

लिखत ( पु० ) तमस्तुक, टीप, चिट्ठीपत्र । [ चिट्ठी ।

लिखतङ्ग, लिखतंग दे० ( पु० ) लेख, नियमपत्र,

लिखना दे० ( क्रि० ) अक्षर बनाना, लिखाई करना ।

लिखनी तद् ( स्त्री० ) कलम, लिखने का साधन,  
लेखनी ।—दास ( पु० ) लेखक ।

लिखन्त दे० ( पु० ) प्रारब्ध, भाग्य, कपाल, लबाट,  
लिखा हुआ ।

लिखा दे० ( पु० ) प्रारब्ध, होनहार, भवितव्य ।

लिखाई दे० ( स्त्री० ) लिखना, लिखने का काम ।

लिखावट दे० ( स्त्री० ) लेख, अक्षरों की बनावट ।

लिखित तद् ( पु० ) लिखा हुआ ।

लिङ्ग तद् ( पु० ) पुरुषेन्द्रिय, पुरुष चिन्ह, चिन्ह,  
अक्षण, शरीर विशेष, कारण शरीर, शिवजी की  
विण्डी ।

लिजु ( पु० ) एक प्रकार का फल ।

लिम्बड़ी दे० ( स्त्री० ) हल, पोतड़ी ।

लिटाना दे० ( क्रि० ) सुलाना, पौढ़ाना, सुना देना ।

लिट्टी दे० ( स्त्री० ) मोटी रेती, बाटी ।

लिथड़ना दे० ( क्रि० ) लथाड़ना, अपमानित करना,  
तिरस्कार करना ।

लिथाड़ना दे० ( क्रि० ) पढ़ाड़ना, लथाड़ना ।

लिपटना दे० ( क्रि० ) चिपकना, सटना, सिटपिटाना ।

लिपटाना दे० ( क्रि० ) सटाना, मिटाना, युक्त करना ।

लिपटाव दे० ( पु० ) चिपटाव, सटाव, मिलान ।

लिपड़ी दे० ( स्त्री० ) पुरानी पगड़ी ।

लिपयाना दे० ( क्रि० ) पुतवाना, पुताना, चौका  
दिलाना, पोतना चलवाना ।

लिपाई दे० ( स्त्री० ) लीपने का काम ।

लिपि तद् ( स्त्री० ) लेप, लेख, हस्ताक्षर, हस्तलेख ।

—कर ( पु० ) लेखक, लिखने वाला ।

जिस तद् ( वि० ) लिपा हुआ, लिपा पोता ।

जिबजिबा दे० ( वि० ) लसलसा, चिपचिपा, लथलथा ।

लिथ्वा दे० ( पु० ) चपल, चमेटा, धौल धरपा ।

लिम दे० ( स्त्री० ) कलङ्क, दोष, अपराध, दाँसा,  
चिन्ह, लक्षण ।

लिये दे० ( भ० ) वास्ते, निमित्त, तदर्थ, हेतु, हेतुवर्ध ।

जिलाना दे० ( क्रि० ) चाहना, इच्छा करना, लल-  
चाना, लोभ करना, लृप्णा करना ।

जिलार ( पु० ) ललाट, कपाल, प्रारब्ध, नसीब ।

जिवाना दे० ( क्रि० ) बुलवाना, आह्वान करना ।

जिवालाना दे० ( वा० ) साथ बुला लाना, साथ ले  
कर आना ।

जिहाफ दे० ( पु० ) रुई भरी हुई मोटी रसाई ।

जिहाड़ा दे० ( पु० ) मुच्छ, नीप, अधम, कदाचार,  
दुराचारी, मुच्छ ।

जीक दे० ( स्त्री० ) रेखा, चिन्ह, पगडण्डी ।

जीख तद् ( स्त्री० ) सिर के बालों की छोटी जूँ ।

जीचड़ दे० ( वि० ) कुरूप, कष्टास, अपविशाय, धम-  
दास, सुस्त, दीबा ।

जीची दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, एक वृक्ष और उसके  
फल का नाम ।

जीमी दे० ( स्त्री० ) गाद, मल, तलछट ।

जीतरा दे० ( पु० ) पुराना जूता, हटा जूता ।

जीद दे० ( स्त्री० ) घोड़े की बिन्दा ।

जीन तद् ( वि० ) तन्मय, सार, आसक्त, ईया  
हुआ, मग्न ।

लोपना ( क्रि० ) पोतना, खेरना, थोपना ।  
 लीवड़ दे० ( पु० ) लीवड़, पाँक, पकड़ । [ की शान्ति ।  
 लीम दे० ( पु० ) सन्धि, मेख, मिझाप, शान्ति, विरोध  
 लीमू दे० ( पु० ) नीबू, निबुआ ।  
 लीर दे० ( स्त्री० ) चिट, चिपड़ा, कतरन ।  
 लील तव० ( पु० ) नील । ( वि० ) नीला, नील रंग ।  
 लीलना दे० ( क्रि० ) निगलना, घोटना, गलाधःकरण,  
 गले के भीतर करना ।

लीलहि ( स्त्री० ) विनाश्रम, खेलही खेलमें, अनायास  
 ( क्रि० ) निगल जाय । [ अनुकरण ।

लीला तव० ( स्त्री० ) मीठा, बिहार, खेल, कौतुक,  
 लीलावती तन० ( स्त्री० ) विलासपती स्त्री, विलास  
 युक्ता स्त्री । प्रसिद्ध ज्योतिष्येचा भास्कराचार्य की  
 कन्या, कहते हैं भास्कराचार्य का प्रसिद्ध पाटी-  
 गणित इन्हीं के नाम पर रचा गया है । जगह  
 जगह पर उस ग्रन्थ में भास्कराचार्य ने लीलावती  
 के नाम का उल्लेख किया है । जिससे मालूम  
 होता है कि उस ग्रन्थ की ओत्री उनकी कन्या  
 लीलावती ही थी ।

लुक दे० ( पु० ) आकाश से गिरने वाला तारा, लू ।  
 लुकना दे० ( क्रि० ) छिपना, गुप्त होना ।  
 लुकन्द्रा दे० ( पु० ) दुराचारी, दुष्ट, दुष्कृत, लुचा,  
 लग्नट ।

लुका ( वि० ) गुप्त, छिपा हुआ, —अन ( पु० )  
 अजन विशेष, जिसके आँखों में लगाने से लगाने  
 वाला अदृश्य हो जाता है ।

लुकाना दे० ( क्रि० ) छिपाना, ढाँकना, गुप्त करना ।  
 लुखरी ( स्त्री० ) लोमड़ी, हुँगर ।  
 लुगई दे० ( स्त्री० ) नारी, स्त्री ।  
 लुच दे० ( पु० ) निरा, केवल, नंगा, वधाड़ा ।  
 लुचई दे० ( स्त्री० ) पूरी, सोहारी, लुचपन, दुष्टता ।  
 लुचपन दे० ( पु० ) दुष्टता, दुश्चरित्रता, बदमाशी ।  
 लुचरा दे० ( पु० ) मकड़ा, कीट विशेष ।  
 लुचा दे० ( पु० ) कुकर्म, अन्यायी, दुष्ट, दुराचारी ।  
 लुजलुजा ( वि० ) लचीला, कमजोर ।  
 लुआ दे० ( वि० ) हस्तक्षिप्त, हाथ से हीन, लुआ ।  
 लुटना दे० ( क्रि० ) लुट जाना, अपहृत होना, छिन  
 जाना, धन हरण होना ।

लुटवैया दे० ( पु० ) लूटने वाला, ठग, थटमार, धूर्त ।  
 लुटाना दे० ( क्रि० ) गवाना, खोना, बहाना, दे  
 देना, बाँट देना ।

लुटिया दे० ( स्त्री० ) छोटा लोटा ।  
 लुटेरा, लुटेरू दे० ( पु० ) लूट करने वाला, लुटवैया ।  
 लुट्स दे० ( पु० ) विगाड़, नास, ध्वंस, लूटखोटा ।  
 लुठन ( पु० ) घोड़ा गधा आदि की घकावट दूर  
 करने के लिये जमीन पर कोटपोट करना ।

लुढ़का दे० ( पु० ) कान का एक प्रकार का गहना ।  
 लुढ़की दे० ( स्त्री० ) छोटा लुढ़का ।  
 लुड़खना दे० ( क्रि० ) दुलखना, दुलकना, ढलकना ।  
 लुड़खुड़ी दे० ( स्त्री० ) दुलखन, लुड़कन ।  
 लुड़कना दे० ( क्रि० ) गिरना, गिर जाना, ढलकना ।  
 लुढ़ाना दे० ( क्रि० ) अगोरना, लोहना, गिराना, घुस  
 से फूल आदि को अलग करना ।

लुढ़िया दे० ( पु० ) छोटा लोढ़ा, जोड़ा, बड़ा, जिससे  
 मसाला आदि पीसा जाता है ।

लुढ़ियाना दे० ( क्रि० ) कपड़े सीना, टाँके दिये हुए  
 कपड़े को मजबूत सीना ।

लुखित ( पु० ) चुराया हुआ, अपहृत । [ लुका ।  
 लुगडा, लुंडा दे० ( वि० ) बंडा, पुच्छहीन, चिने  
 लुतरा दे० ( वि० ) बड़बड़िया, बकवादी, अप्पी, झूठा,  
 असत्यवादी, निन्दक, निन्दा करने वाला ।

लुनाई दे० ( वि० ) लावण्य, निमकीनपन ।  
 लुनिया दे० ( स्त्री० ) लुनिया, एक घास का नाम,  
 एक जाति का नाम ।

लुपरी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का भोग, लपसी ।  
 लुपलुप दे० ( क्रि० ) पशु आदि के खाने का शब्द विशेष ।  
 लुप्त तव० ( वि० ) नष्ट, विध्वंस, आँखों की मोट,  
 अवर्धन, गुप्त । [ दवा, औषधि पिण्ड ।  
 लुप्तदी दे० ( स्त्री० ) लेप आदि के लिये पीसी हुई  
 लुब्ध तव० ( वि० ) [ लुम् + क ] लोभी, सवृण्य,  
 वृण्णायुक्त, स्वार्थी ।

लुब्धक तव० ( पु० ) व्याध, बहेजिया, शिकारी ।  
 लुभाना दे० ( क्रि० ) ललचाना, लोभ देना, लोभ  
 दिखाना । [ राजा का नाम ।

लुम्पक ( पु० ) चोरी करने वाला, चोर, नाथका एक  
 लुरके ( पु० ) लुढ़की, कान में पहनने का गहना ।

लुहण्डा. लुहंडा दे० ( पु० ) लोहे का हण्डा ।  
 लुहरा दे० ( पु० ) लहुरा, छोटा, कनिष्ठ ।  
 लुहाङ्गी, लुहांगी दे० ( स्त्री० ) लोहे से मढ़ी हुई छाडी ।  
 लुहान दे० ( वि० ) लहू भरा, रक्तपूर्ण, रक्तमय ।  
 लुहार दे० ( पु० ) जाति विशेष, लोहा का काम करने वाली जाति, लोहाकार । ( स्त्री० ) लुहारिन ।  
 लू दे० ( स्त्री० ) उष्णवायु, गरम बतारा ।  
 लूआठ दे० ( पु० ) जली लकड़ी, अघबज्जी, अर्धदग्ध ।  
 लूर दे० ( स्त्री० ) हवा विशेष, गरम वायु, लू ।  
 —ट ( वि० ) अघबज्जा, लुआठ ।  
 लूकटी दे० ( स्त्री० ) लोमड़ी ।  
 लूकना दे० ( क्रि० ) लू लगाना, लू से जलना, दग्ध होना, छिपना ।  
 लूकवाही दे० ( पु० ) अगवाही, होली के दिन का एक प्रकार का नृत्य निर्मित दग्ध, जिसमें आग बालते हैं । [ आग की लपट ।  
 लूका दे० ( स्त्री० ) जलती लकड़ी, चिनगारी, लपट, लूख दे० ( स्त्री० ) आग, लूक, ज्वाला ।  
 लूट दे० ( स्त्री० ) चोरी, अपहरण, अपहार, डकैती, डाँका ।—खसोट ( स्त्री० ) लुहस, डाँका ।  
 लूटना दे० ( क्रि० ) अपहरण करना, ठगना, डाँका मारना ।  
 लूटक ( पु० ) लूटने वाला, ठग, फरारद ।  
 लूता तत्व० ( स्त्री० ) मकड़ी, एक प्रकार का कीड़ा जो जाला बनाता है । संस्कृत में जिसे ऊर्ध्वाभ अर्थात् रेशम का कीड़ा कहते हैं ।  
 लून दे० ( पु० ) नोन, जयण, निमक, काटा गया ।  
 लूनिया दे० ( पु० ) जाति विशेष, जो नोन निकालने का पेशा कहते हैं । सारा, एक पीपे, का नाम, येलादार ।  
 लूनी दे० ( स्त्री० ) माखन, भवखन, नैनू, नवनीत ।  
 लूला दे० ( वि० ) पंगा, दूटे पैरों वाला ।  
 लूह दे० ( स्त्री० ) लू, लूक ।  
 लूहर ( पु० ) लूकेडा, लूक, गिरा हुआ तारा ।  
 लू दे० ( अ० ) तक, सलक, अवधि, पर्यन्त ।  
 लूई दे० ( स्त्री० ) माँड़ी, माँव, एक प्रकार का भोजन ।  
 बिना घी चीनी का हलुआ जिसमें कागज चिपकाया जाता है ।

लूँदी दे० ( स्त्री० ) मींगनी, बकरे आदि की बीट ।  
 —( पु० ) एक तरह का दरपोक कृता, वि० नामदं, असमर्थ ।  
 लूँदा दे० ( पु० ) अन्तःसार शुन्य फल, बँधा फल, खोखला फल, मेड़ आदि का मुँड ।  
 लेख तत्व० ( पु० ) लिखित, लिखतंग, प्रबन्ध, रचना, लिखावट ।  
 लेखक तत्व० ( पु० ) लिखने वाला, लिखने का काम, करने वाला, लिपिकर, प्रत्यकर्ता ।  
 लेखको तत्व० ( स्त्री० ) लिखाई, लेखक का काम ।  
 लेखन तत्व० ( पु० ) सीपि, लिखाई, लिखावट ।  
 लेखनी तत्व० ( स्त्री० ) लिखनी, लिखने का साधन, कलम ।  
 लेख पत्र ( पु० ) ताड़ का पत्ता ।  
 लेखा दे० ( पु० ) गिनती, गणित, हिसाब ।  
 लेख्य तत्व० ( वि० ) चिट्ठी पत्री, लिखने योग्य, चित्र, तस्वीर ।  
 लेख्यगृह ( पु० ) दफ्तर, कचहरी, आफिस ।  
 लेज दे० ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी ।  
 ले जाना दे० ( क्रि० ) ले भागना, उठा ले जाना, बूस्से स्थान पर रखना ।  
 लेजुर दे० ( स्त्री० ) रस्सी, डोरी लेज ।  
 लेजुरी दे० ( स्त्री० ) देखो लेज ।  
 लेट दे० ( पु० ) गध, मकान आदि को पट्टा बनाने के लिये चूना सुरझी आदि का बना लेप ।  
 —लगाना ( क्रि० ) लोटना ।  
 लेटना दे० ( क्रि० ) सोना, शयन करना, आराम करना, विश्वास करना ।  
 लेठगना ( क्रि० ) चोरी करना ।  
 लेनदेन दे० ( पु० ) व्यवहार, व्यापार ।  
 लेना दे० ( क्रि० ) ग्रहण करना, अपने अधिकार में करना, पकड़ना । [ लगाने की दवा, मलहम ।  
 लेप तत्व० ( पु० ) पोतने की वस्तु, घण्ट आदि पर ले पड़ना दे० ( क्रि० ) संग सोना, ले जाना, नाश करना, विगाड़ना ।  
 लेपना दे० ( क्रि० ) पोतना, लेप लगाना ।  
 लेपन ( पु० ) लेपने की वस्तु, मरहम हत्यादि ।



ले पालक दे० ( पु० ) धर्मपुत्र, पाला हुआ पुत्र,  
पोसा हुआ बेटा, पोष्यपुत्र । [ पोसना ।  
ले पालना दे० ( क्रि० ) बेटा के समान पालना,  
ले मरना दे० ( वा० ) कलङ्क लगाना, दोषी करना,  
अपने साथ नष्ट करना, स्वयं झराव होना दूसरों  
को भी झराव करना ।  
ले रखना दे० ( क्रि० ) सञ्चय करना, संग्रह करना,  
वटोरना, एकत्रित करना ।  
ले रहना दे० ( क्रि० ) सङ्ग रखना, साथी बनाना,  
अपने अधिकार में कर लेना ।  
लेरू, लेरूछा दे० ( पु० ) बच्छा, बछड़ा ।  
लेजा दे० ( पु० ) भेड़ का बच्चा, भैमना, छोटी भेड़ ।  
लेलुट दे० ( वि० ) लहलुट, ले फर न देने वाला ।  
ले लेना दे० ( क्रि० ) छीनना, छीन लेना, लूटना,  
खसोटना ।  
लेलिह ( पु० ) साँप, सर्प, नाग ।  
लेव दे० ( स्त्री० ) भीत की पपड़ी, छाप ।  
लेवा दे० ( पु० ) ग्राहक, लेने वाला, मट्ठी और राख  
जो बटलोई की पेंदी में इस लिये लगाई जाती  
है जिससे वह जले नहीं ।—वेई ( स्त्री ) लेनदेन,  
व्यवहार, व्यापार ।  
लेवार दे० ( पु० ) गीली मिट्टी, भीत पर छाप लगाने  
की मिट्टी, लेप, लेवा ।  
लेवास दे० ( पु० ) राख, लेट ।  
लेवैया दे० ( पु० ) लेने वाला, लेवा, ग्राहक ।  
लेश तत्० ( पु० ) अल्प, लघु, थोड़ा, स्वल्प, अत्यल्प,  
लघ, मात्रा । [ फर बंद करना ।  
लेसना दे० ( क्रि० ) लीपना, पोतना, मट्ठी से थोप  
लेसालेस दे० ( पु० ) लिपाई, चारों ओर लीपने का  
काम होना ।  
लेस ( पु० ) भूसी मिली हुई मिट्टी जो भीत  
में लगाई जाती है । लीपपोत । [ भोजन ।  
लेहन तत्० ( पु० ) चाटना, थबलेहन, पतली वस्तु का  
लेह ( स्त्री० ) जड़दी, शीघ्रता, उतावली ।  
लेहना दे० ( पु० ) चारा, घास, पाला ।

लैस दे० ( पु० ) तैयार, प्रस्तुत, बना बनाया, सिद्ध,  
( पु० ) तक्का ।  
लोई दे० ( स्त्री० ) धुस्सा, ऊन की यनी थोड़ने की  
वस्तु, गुंथे आटे के गोल गोल पिण्ड, जिन्हें  
बेल कर पूड़ी तैयार की जाती है ।  
लों दे० ( अ० ) तक, पर्यन्त, अवधि ।  
लोकिया दे० ( स्त्री० ) कद्दू, शाक विशेष ।  
लोग ( स्त्री० ) एक तरह का गरम मसाला । डेला,  
धोंया ।  
लौंद दे० ( पु० ) अधिक मांस, पुरुषोत्तम महीना ।  
लौंदा दे० ( पु० ) पिण्डा, मिट्टी आदि का पिण्डा ।  
लोक तत्० ( पु० ) लोग, जन, मनुष्य, भुवन, द्वीप,  
मनुष्यों का वासस्थान ।—पाल ( पु० ) राजा,  
दिक्पाल ।  
लोकना दे० ( क्रि० ) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को  
धींच ही में पकड़ लेना । पकड़ना, गोचना,  
हुलना ।  
लोकनाथ ( पु० ) राजा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव ।  
लोकप ( पु० ) लोकपाल, लोक का पालने वाला,  
राजा । [ कमला, रमा ।  
लोकमाता ( स्त्री० ) लोकों की माता, लक्ष्मी,  
लोकरा दे० ( पु० ) चीथरा, फटा कपड़ा ।  
लोकलोचन ( पु० ) सूर्य, भास्कर, सूरज ।  
लोकापगाह ( पु० ) यदनामी, लोकनिन्दा,  
अपकीर्ति ।  
लोखर दे० ( पु० ) हथियार, लोहे का पात्र ।  
लोखरी पु० ) लोमड़ी, हूँडार ।  
लोग तत्० ( पु० ) लोक, मनुष्य, जन ।  
लोगाई दे० ( स्त्री० ) लुगाई, स्त्री, नारी, मेहरारू ।  
लोचन तत्० ( पु० ) आँख, नयन, नेत्र, चक्षु ।  
लोचना ( स्त्री० ) सुन्दर नेत्रवाली, सुन्दरी ।  
लौटन दे० ( स्त्री० ) छपटन, नेत्र, नयन, चक्षु, आँख,  
पटकन, मण्डलिया ।—कवूतर ( पु० ) कपोत  
विशेष, कवूतर की एक जाति । [ पटकना खाना ।

लोढ़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा लोढ़ा, लुढ़िया ।  
 लोथ दे० ( पु० ) सूतक, सूतक शरीर, सुर्दा, शव ।  
 लोथरा दे० ( पु० ) मौस का पिण्ड, बोटी ।  
 लोथा दे० ( पु० ) बोरा, पैला ।  
 लोथी दे० ( स्त्री० ) गठीलां लोठी, लट्ठा ।  
 लोढी दे० ( पु० ) पठानों की जाति विशेष, इस जाति के लोग भी कुछ दिनों तक भारत के राजा रह चुके हैं ।  
 लोधिवा दे० ( पु० ) जाति विशेष, किसान, कुर्मी ।  
 लोधी दे० ( पु० ) " लोधिवा " देखो ।  
 लोन दे० ( पु० ) लून, लून, लवण, निमक । [ विशेष ।  
 लोना दे० ( वि० ) खाग, लवण युक्त । ( पु० ) फल  
 लोनार दे० ( पु० ) खारी भूमि, खार, चार भूमि ।  
 लोप तत्त्वं ( पु० ) अदृश्य, अदर्शन, नाश, विध्वंस, अगोचर, गुप्त ।  
 लोपमुद्रा ( स्त्री० ) अगस्त्य ऋषि की पत्नी ।  
 लोपड़ी दे० ( स्त्री० ) लोढ़ा, लोप विशेष ।  
 लोपी ( पु० ) लोप करने वाला, नाशकर्ता ।  
 लोवाना दे० ( पु० ) सुगन्धयुक्त द्रव्य विशेष, जो धूप में जलाया जाता है । [ सेमिया है ।  
 लोविया दे० ( पु० ) एक तरकारी, जिसका नाम बन  
 लोभ तत्त्वं ( पु० ) वृष्य, लाजच, इच्छा, ईप्सा ।  
 लोभना दे० ( क्रि० ) मोहित होना, चाहना, जलचना ।  
 लोभी तत्त्वं ( वि० ) लालची, लोलुप, लुब्ध ।  
 लोभ तत्त्वं ( पु० ) रोम, रॉन्स, रूँगटा ।  
 लोभड़ी ( स्त्री० ) लोलरिया, लुकी, जन्तु विशेष ।  
 लोभश ( पु० ) एक ऋषिका नाम, ( वि० ) जिसके देह में बहुत बाल हैं ।  
 लोयन तद् ( पु० ) लोचन, नयन, नेत्र ।  
 लोर दे० ( पु० ) ऑर्स्, अशु, नयनजल ।  
 लोल तत्त्वं ( पु० ) चञ्चल, लालची ।  
 लोलक तत्त्वं ( पु० ) फान का एक गहना विशेष ।  
 लोलुप तत्त्वं ( पु० ) अत्यन्त लोभो, लालची, लुब्ध ।  
 लोवा ( पु० ) लवापसी, लोमड़ी ।  
 लोष्ट तत्त्वं ( पु० ) डेला, मिट्टी, मृत्तिका ।  
 लोह तद् ( पु० ) धातु विशेष, लौह धातु।—चन ( पु० ) लोहे का चूरा, रेत।—चड़ा ( पु० ) लोहे

का पात्र, लोहे का वर्तन।—सार ( पु० ) लोहे का भस्म, कान्तिसार ।

लोह ( पु० ) लोहा, अथ, आहन ।  
 लोहा तत्त्वं ( स्त्री० ) धातु विशेष, लोह, लौह ।  
 लोहान दे० ( पु० ) रुधिरपूर्ण, लुहान, रक्तमय, लोह से लद फद ।  
 लोहार दे० ( पु० ) लोहकार, लोहे का काम करने वाला ।  
 लोहकार ( पु० ) एक जाति विशेष, लुहार ।  
 लोहण्ड ( पु० ) लोहे का पात्र, फड़ाही ।  
 लोहानी ( पु० ) पठानों की एक जाति ।  
 लोहावजाना ( क्रि० अ० ) तलवार खेक लड़ना ।  
 लोहित तत्त्वं ( वि० ) रक्त, लाल, कुसग्मा ।  
 लोहिया दे० ( वि० ) लोहे का, लोहमय ।  
 लोही दे० ( स्त्री० ) लोई, सने हुए आटे के टुकड़े, जिन्हें बढ़ाकर पूरी या रोटी बनाई जाती है ।  
 लोहू दे० ( पु० ) रुधिर, शोणित, रक्त । [ सीमा ।  
 लों दे० ( अ० ) लों, तक, तलक, अथधि, पर्यन्त  
 लोंग तद् ( पु० ) लवण, लवंग, पुष्प विशेष, पुंग-निया, नाक में पहिने का आभूषण विशेष, कुली ।  
 लोंडा दे० ( पु० ) छोकरा, छोरा, बालक, चारु, नाचने वाला लड़का । [ रानी ।  
 लोंडिया दे० ( पु० ) लुकड़िया, लौंडी, दासी, चाक-लौ ( स्त्री० ) जलती हुई वती की ज्वाला ।  
 लौकना दे० ( क्रि० ) चमकना, चिजली चमकना ।  
 लौका दे० ( पु० ) पिजली, विपुल, इन्द्रधनुष, यही लौकिया, शाक विशेष ।  
 लौकिक तत्त्वं ( वि० ) सांसारिक, इस लोक का, इस लोक में होने वाला ।  
 लौकी दे० ( स्त्री० ) पर्वती, छोटी लौका, फद्द ।  
 लौटना दे० ( क्रि० ) पलटना, फिरना, घूमना घूम जाना, लौट जाना ।  
 लौटाना दे० ( क्रि० ) फिराना, घुमाना, पलटाना ।  
 लौन तद् ( पु० ) निमक, नोन ।  
 लौना दे० ( क्रि० ) कटना, कटनी करना । [ मास ।  
 लौन्द; लौन्द दे० ( पु० ) मलमास, अधिमास, अधिर्क  
 लौह तत्त्वं ( पु० ) धातु विशेष, लोह, लोहा ।  
 व्यारी ( स्त्री० ) मेढ़िया, हुँदार ।

## व

व यह व्यञ्जन का उन्तीसवाँ वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान दन्त और श्रोष्ठ है इस कारण इसे दन्तयोष्य कहते हैं। [कुटुम्ब।

वंश तत्० ( पु० ) सन्तान, सन्तति, कुल, परिवार, वंशवाली तत्० ( स्त्री० ) वंश परम्परा, कुल, पीढ़ी, पुरुष, पुरत।

वंशकार ( पु० ) वांसफोड़ा, बोंम, मझी।

वंशज ( पु० ) वंश का, बाँस से उत्पन्न।

वंशलोचन ( पु० ) बाँस से निकलने वाला एक पदार्थ।

वंशी तत्० ( स्त्री० ) वाद्य विशेष, बाँस का बना हुआ बाजा, मुरली, बासुरी।

वंशीधर ( पु० ) वंशी वाला, श्रीकृष्ण।

वंश्य ( वि० ) कुलोत्पन्न, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न।

वक्र तत्० ( पु० ) पक्षी विशेष, वगुला, कौञ्चपक्षी।

वकुल तत्० ( पु० ) वृक्ष विशेष, मौलसरी का पेड़।

वकृत्ति ( स्त्री० ) भूर्त्ता, पाखण्ड, छल।

वका तत्० ( पु० ) बोलने वाला, कहनेवाला, व्याख्याता, व्याख्यानदाता। [अभिप्राय प्रकाशन।

वकृता तद्० ( पु० ) कथन, व्याख्यान उपदेश,

वक्र तत्० ( वि० ) टेढ़ा, बाँक, तिरछा, कुटिल।

वक्राकां तत्० ( स्त्री० ) टेढ़ी बात, ताना मारना, थलङ्कार विशेष, यथा:—

“जहाँ श्लेष के काकुसों, अरथ लगावै और।

धकाउकति तासों कहत भूपन कवि सिर मौर।

उदाहरण—

फरि मुहीम आपे कहि हज़रत मन सब येन।

सियसरजासों गङ्गाधरि ऐहैं मधि के हैं।

—शिराज भूषण।

वक्रग्रीवा ( पु० ) ऊँट।

वक्त्रःस्थल तत्० ( पु० ) छाती, हृदय, उरःस्थल, कलेजा।

वक्त्रोज तत्० ( पु० ) उरोज, खन, कुच, चूची, छाती।

वङ्क तद्० ( वि० ) वक्र, तिरछा, टेढ़ा, बाँका, कुटिल।

वङ्किल तत्० ( वि० ) टेढ़ा मेढ़ा। [विशेष, बङ्गाल।

वङ्ग तत्० ( पु० ) घात विशेष, राँगा का भस्म, देश

वङ्गसेन ( पु० ) अगस्त्य का पेड़।

वच तत्० ( पु० ) ओषधि विशेष, वाक्य, वचन।

वचन तत्० ( पु० ) उक्ति, कथन, वाक्य।—व्यक्ति ( स्त्री० ) बात की सफाई।

वज्र तत्० ( पु० ) देवराज इन्द्र का शस्त्र विशेष, बिजली, विद्युत्, हीरक, हीरा, श्रीकृष्ण का प्रपौत्र और अनिरुद्ध का पौत्र।—दन्त ( पु० ) सुकर, सूअर।—दन्ती ( स्त्री० ) पौधा विशेष।—नाभा ( पु० ) सुमेरु पर्वत पर रहने वाला एक असुर, महा के घर से यह सकल देवताओं का शत्रु था और वज्रपुर नामक एक नगर भी इसे मिला था। तब से सुमेरु पर्वत छोड़ कर ये उसी नगर में रहने लगा था। कुछ दिनों बाद यह वर के अभिमान से समस्त लोक को पीड़ित करने लगा और स्वर्ग छोड़ने के लिये इतने इन्द्र को भी कहाँ लाया। इन्द्र वृहस्पति के आदेश के अनुसार वज्र नाम को साथ लेकर करप मुनि के पास गये और वहाँ उन्होंने सभी बातें कह कर महामुनि करप को सम्मति माँगी। करप ने कहा, वत्स वज्रनाभ, मैं इस समय एक यज्ञ करने के उद्योग में हूँ, इसकी समाप्ति होने पर जो उचित होगा वह मैं कहूँगा, तब तक वज्रपुर में ही तुम रहो।

वज्रक ( पु० ) हीरा।

वज्रधर ( पु० ) इन्द्र।

वज्राघात तत्० ( पु० ) वज्रपात, वज्र से मारना।

वज्रक तत्० ( पु० ) उग, उगने वाल, धूर्त्त, प्रतारक, श्यामल, सिवाल।—ता ( स्त्री० ) धूर्त्ता, उगई।

वज्रना तत्० ( स्त्री० ) प्रतारण, धूर्त्ता, उगई। [विना।

वज्रित तत्० ( वि० ) प्रतारित, उगा हुआ, रहित शून्य,

वट तत्० ( पु० ) वृक्ष विशेष, वट का पेड़, वरगढ़।

वटर तत्० ( पु० ) मुर्गा, मुर्गा, चोर, पहाड़ी, आसन, चयई।

वटिका, वटी तत्० ( स्त्री० ) गोली बड़ी।

वटु तत्० ( पु० ) विद्यार्थी, बालक, प्रधानाचार्य विद्याभ्ययन करने वाला, ब्राह्मण कुमार।

वटुक तत्० ( पु० ) बालक, वटु, औरव विशेष।

वडधानल ( पु० ) समुद्र की अग्नि।

वड तद्० ( पु० ) वरगढ़, वट वृक्ष।

वडिश तत्० ( पु० ) मछली पकड़ने का काँटा।

घण्टक तत्० ( पु० ) घाँटने वाला, विभाग करने वाला, विभाजक, अलगगाने वाला, पृथक्कर्ता।  
 घत् तत्० ( अ० ) समान, सदृश, उपमा, तुल्य, यथा—  
 मादृशवत्, पण्डितवत्।  
 घत्स तत् ( पु० ) शिशु, बच्चा, बछड़ा।—उर ( वि० )  
 अतिशय छोटा, अत्यन्त छोटा बच्चा।  
 घत्सर तत्० ( पु० ) वर्ष, साल, संवत्, बारह महीनों का काल। [ वार्षिक।  
 घत्सरीय तत्० ( वि० ) घत्सर सम्बन्धी, वर्ष का,  
 घत्सज तत्० ( वि० ) पुत्र, प्रेमी, स्नेही, जोही, दयावान्।  
 घत्सासुर तत्० ( पु० ) कंस का अनुचर, असुर विशेष, यही श्रीकृष्ण को मारने के लिये कंस के द्वारा गोकुल भेजा गया था। श्रीकृष्ण को मारने की इच्छा से यह गोकुल में घत्सरूप धारण करके घूमता था। यह जान कर श्रीकृष्ण ने इसे मार डाला।  
 घदन तत्० ( पु० ) आस्य, सुख, सुँह।  
 घद्रीनाथ ( पु० ) एक तीर्थ, चार धामों में एक धाम।  
 घदान्य तत्० ( पु० ) दाला, दानशील।  
 घघ ( पु० ) हत्या, प्राणहिंसा।  
 घधू तत् ( स्त्री० ) स्त्री, भार्या, दारा, स्तुषा, पुत्र-वधू।  
 घन तत्० ( स्त्री० ) जल, नीर, अरयय, जङ्गल, कान्तार, विपिन, वृक्षों का समूह, जो वृक्ष स्वयं उत्पन्न हुए हों।—चर ( पु० ) जङ्गली, वनैला, वन्य, घन में रहने वाला।—ज ( पु० ) कमल, जलज, निरज।—पांशुली ( प० ) न्याय, बहेलिया।  
 माला ( स्त्री० ) तुलसी, कुन्द, मन्दार, परिजात और कमल इनसे बनी लम्बी माला, पैर तक लटकने वाली माला।—रूपति ( पु० ) वृक्ष विशेष, जिन वृक्षों में बिना फूल के ही फल लगें, वे वनस्पति हैं।  
 घनिता तत्० ( स्त्री० ) भार्या, स्त्री, प्रियतमा, प्यारी।  
 घनमिया ( स्त्री० ) कोयल।  
 घनेला जे० ( वि० ) वन्य, वनवासी, वनचर, वनचारी।  
 घन्दन तत्० ( पु० ) प्रणाम, अभिवादन।—चरित ( वि० ) प्रशंसा योग्य, माननीय गुण।

घन्दना तत्० ( पु० ) स्तुति, नमस्कार, प्रणाम, नित्य नमस्कार। [ करने लायक, पूज्य।  
 घन्दनीय तत्० ( वि० ) घन्दन करने योग्य, प्रणाम घन्दा, वंदा दे० ( पु० ) आकाश लता, वृक्षों पर से निकला हुआ वृक्ष विशेष।  
 घन्दित तत्० ( वि० ) प्रणमित, नमस्कार किया हुआ, जिसको लोग प्रणाम करें, पूज्य।  
 घन्दी तत्० ( पु० ) माट, दर्शीधी, स्तुतिकर्ता, स्तुति करने वाला, बँधा हुआ, कैद किया, कैदी।  
 —जन ( पु० ) माट आदि स्तुतिकारी।  
 वन्य तत्० ( वि० ) वनैला, जङ्गली, वनचर।  
 वग्धु ( पु० ) कुटुम्बी, परिवार के लोग।  
 वपन तत्० ( पु० ) बोना, बीजारोपण, मुण्डन, केश-कटन, बाल मुझना।  
 वपनी तत्० ( स्त्री० ) नापितशाला, नाइयों का झुन्डा।  
 वपुः तत्० ( पु० ) शरीर, देह, काय।  
 वपुरा ( वि० ) गुच्छ, नीच, ओझा।  
 वप्त तत्० ( वि० ) वपनकर्ता, बीज बोने वाला, मुण्डनकर्ता।  
 वप्र तत्० ( पु० ) प्राचीर, दीवार, भीत, चारदीवारी।  
 वध्रु तत्० ( पु० ) बाधक विशेष, यदुबंध के नाथ होने पर श्रीकृष्ण की आज्ञा से वे बाधकों की स्त्रियों की रक्षा के लिये जाते थे, परन्तु रास्ते ही में दक्षुषों ने इन्हें मार डाला।  
 वध्रुगाहन तत्० ( पु० ) अर्जुन का पुत्र, ये मण्डिपुर की राजकन्या चित्राङ्गदा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। नाना के मरने के बाद ये मण्डिपुर के राजा हुए थे।  
 वमन तत्० ( पु० ) उवाम्त, चाम्ति, बलटी, कै।  
 वमनी तत्० ( स्त्री० ) जलौका, जोंक।  
 वयस् तत्० ( स्त्री० ) अवस्था, चायु, आयुष्य, उमर।  
 वयस्य तत्० ( वि० ) वयसिय, वयःप्राप्त, अवस्था वाला। [ मित्र।  
 वयस्य तत्० ( पु० ) समान अवस्था वाला, सखा  
 वयस्या तत्० ( स्त्री० ) सखी, सहेली।  
 वर तत्० ( पु० ) आशीय, आशीर्वाद, शुभचिन्तन, शुभानुष्ठान, मनोरथसिद्धि। ( पु० ) श्रेष्ठ, वरम, अच्छा, प्रधान।—द ( पु० ) अभीष्टाता, इष्टदेव।

घरण्य तत्त्वं ( पु० ) वेधन, लपेटना, चुनना, धीनना, आह्वान करना, निमन्त्रण देना ।  
 घरणा तत्त्वं ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, जो काशी के उत्तरी भाग से बहती हुई गङ्गा में जा मिली है ।  
 घरग तत्त्वं ( स्त्री० ) हंसी, हंसिनी । [का दान ।  
 घरदान ( पु० ) घर देना, आशीर्वाद देना, विवाह घर रहना दे० ( वा० ) जमी होना, जयवन्त होना  
 घरपतिक ( पु० ) अन्नक, अन्नरस ।  
 घररुचि तत्त्वं ( पु० ) व्याकरण का वार्तिककार, सोमेश्वर भट्ट कृपासिस्मरण में लिखा हुआ है कि ये सोमेश्वर नामक ब्राह्मण के पुत्र थे । इन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिक बनाए थे । कुछ लोगों का कहना है कि ये उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक रत्न थे । प्राकृत प्रकाश नामक एक प्राकृतभाषा का व्याकरण इन्होंने बनाया था ।  
 घररु दे० ( पु० ) बिनी, धीनी, हड्डा ।  
 घरवरिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) उत्तमा स्त्री, गुणवती और रुचिनी स्त्री ।  
 घररु दे० ( पु० ) पत्ता, पत्र ।  
 घरा तत्त्वं ( स्त्री० ) घुक्रुणी, औषधि विशेष ।  
 घराक तत्त्वं ( पु० ) बेचारा ।  
 घराटक तत्त्वं ( पु० ) कौड़ी, कपड़िका ।  
 घराणसी ( स्त्री० ) काशी, वरुणा और असी के बीच में होने से इसका यह नाम पड़ा है ।  
 घराह तत्त्वं ( पु० ) भारत के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी । इनके पुत्र मिहिर विक्रमादित्य की सभा के बराह मिहिर नाम से प्रसिद्धि थे और ये नवरत्नों में से थे । भगवान् का अवतार विशेष ।  
 घरिए तत्त्वं ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।  
 घर दे० ( अ० ) यदि, अगर, पदान्तर, भले ही ।  
 घरण्य तत्त्वं ( पु० ) वृष विशेष, जल का देवता, जल का अधिपति देव । ये पश्चिम दिशा के दिक्पाल हैं । अदिति के गर्भ और कश्यप के औषस से इनकी उत्पत्ति हुई थी । श्रीमद्भागवत् में लिखा है कि ऋगु और वात्सीकि इनके पुत्र थे । इनकी चर्पिणी नामक स्त्री के गर्भ से ये दोनों पुत्र

उत्पन्न हुए थे । बहुत दिनों से इस देवता की पूजा आर्यों में प्रचलित है । ऋग्वेद में इस देवता को पराक्रमशाली और विमानाचारी के रूप में वर्णन किया गया है । इनके प्रधान अस्त्र का नाम पाश है इसी कारण इनको पाशी भी कहते हैं ।  
 घरुथ तत्त्वं ( पु० ) समूह, दल, गिरोह, यूथ ।  
 घरुथी तत्त्वं ( स्त्री० ) सेना, चमू, फौज ।  
 घरुथ तत्त्वं ( पु० ) रथ ओढ़ारने का कपड़ा, समूह, मुण्ड, घरुथ ।  
 घरुथनी तत्त्वं ( स्त्री० ) सेना, अनी, फौज ।  
 घरे दे० ( अ० ) इस पार, इधर, समीप, समूह, जिये, वास्ते ( काहे घरे ) । ( क्रि० ) घरना क्रिया का भूतकालिक रूप ।  
 घरेजी दे० ( स्त्री० ) वृष विशेष, अक्रोह वृष ।  
 घरेपी दे० ( स्त्री० ) भूषण विशेष, एक गहने का नाम ।  
 घरोरु तत्त्वं ( स्त्री० ) श्रेष्ठ जंघा वाली ।  
 घरोरु ( स्त्री० ) बड़ की जंघा, सोर ।  
 घरोरु दे० ( पु० ) असंगन्ध, औषधि विशेष ।  
 घर्ग तत्त्वं ( पु० ) कच्चा, समान जाति का समूह, समान का समूह, गुण जाति और क्रिया इनसे समान वालों का समूह । एक स्थान से उच्चारण होने वाले अक्षर, गणित विशेष, एक अङ्क को इसी में घात करने से जो गुणनफल होता है ।—क्षेत्र ( पु० ) जिस क्षेत्र की चारों भुजा समान और चारों कोण की समान हों ।—मूल ( पु० ) वह अङ्क जिसका वर्ग किया गया हो । यथा—४—का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ होता है ।  
 घर्गीय तत्त्वं ( वि० ) वर्ग का, समूह का, श्रेणी का, दर्जे का ।  
 घर्जन तत्त्वं ( पु० ) निषेध, त्याग, परिहार । [निषिद्ध ।  
 घर्जित तत्त्वं ( वि० ) रोका हुआ, छोड़ा हुआ, बर्जा, वर्ण्य तत्त्वं ( पु० ) रंग, राग, ब्राह्मण आदि चार वर्ण, अक्षर, माला ।—माला ( स्त्री० ) ककहरा, अक्षर माला ।—सङ्कर ( पु० ) विभिन्न जाति के माता पिताओं से उत्पन्न, दोगला ।  
 घर्णक तत्त्वं ( वि० ) प्रशंसक, स्तुतिकर्ता । ( पु० ) रंग, चित्रों में भरा जाने वाला रंग ।



महर्षि विश्वामित्र इनके स्वाभाविक शत्रु थे ।  
सूर्यवंशियों के ये शत्रोहित थे ।

वशीकरण तत्त्व ( पु० ) अधीन करने की प्रक्रिया,  
तन्त्र या मन्त्र विशेष जियसे वशीकरण होता है ।  
वशीभूत तत्त्व ( वि० ) हिका, परचा, वश में किया हुआ ।  
वश्य तत्त्व ( वि० ) वशीभूत, अधीन, परचा ।  
वषट् तत्त्व ( अ० ) इससे देवताओं की हवि दी  
जाती है । [ गाँव, ग्राम ।  
वसति तत्त्व ( खी० ) वास, वासस्थान, पुर, नगर,  
वसन तत्त्व ( पु० ) धस्त्र, कपड़ा ।  
वसन्त तत्त्व ( पु० ) ऋतुराज, फागुन और चैत  
महीना, किसी के मत से चैत और वैशाख वसन्त  
ऋतु है । राग विशेष, शीतला, चेचक, गोटी ।  
—वृत्त ( पु० ) कोकिला, आम्र वृक्ष ।

वसह ( पु० ) शिवजी का वाहन, नादिया ।  
वसा तत्त्व ( पु० ) मज्जा, चर्बी ।  
वसन्ती ( पु० ) पीला, एक रंग विशेष ।  
वसीठ दे० ( पु० ) दूत, हरकारा ।  
वसीठी दे० ( खी० ) दूतता, दूत का काम ।  
वसु तत्त्व ( पु० ) गण देवता विशेष, वसु नामक आठ  
देवता प्रसिद्ध हैं । यथा—वर, ध्रुव, सोम,  
विष्णु, अन्न, अन्निल, प्रवृष और प्रभास ।  
( २ ) चेदि देश का राजा, इसका जन्म पुरुवंश  
में हुआ था । इन्द्र के अनुग्रह से इन्हें चेदि देश  
का राज्य मिला था । कुछ दिनों के बाद अस्थ शस्त्र  
छोड़ कर वसु तपस्या करने लगे, इनकी तपस्या  
से इन्द्र को बड़ा भय हुआ, इन्द्र इनके समीप  
आये, प्रेम पूर्वक इन्द्र राज्यशासन करने के लिये  
इनसे अनुमति करने लगे । इन्होंने इन्द्र की बातें  
मान लीं, और तदनुसार तपस्या छोड़ कर ये  
राज्यशासन करने लगे । इनके साथ इन्द्र की  
बड़ी मित्रता हो गई थी, ये मर्यादाक से भी इन्द्र  
की मित्रता निभा सकते थे । इन्द्र ने आकाशगामी  
एक विमान इन्हें दिया था, इसी विमान पर चढ़-  
कर ये कभी कभी आकाश में घूमते थे । अतएव  
इसका दूसरा नाम उपरिचर प्रसिद्ध हुआ था ।—  
देव ( पु० ) श्रीकृष्णचन्द्र के पिता ।—द्या ( खी० )  
धरणी, पृथ्वी ।—मती ( स्त्री० ) बसुधा ।

वसुधरा तत्त्व ( स्त्री० ) पृथ्वी, वसुधा ।  
वस्तव्य तत्त्व ( पु० ) वास योग्य, ठहरने योग्य, वसने  
के उपयुक्त । [ द्रव्य, सामग्री ।  
वस्तु तत्त्व ( खी० ) ( संस्कृत में नपुंसक ) पदार्थ,  
वस्तुतः ( अव्य० ) ठीक ठीक, यथार्थ, सचमुच ।  
वस्त्र तत्त्व ( पु० ) वसन, कपड़ा ।  
वह दे० ( सर्व० ) अन्य पुरुष विशेष ।  
वहला दे० ( पु० ) धावा, बहाई, आक्रमण ।  
वहाँ दे० ( पु० ) उस स्थान पर ।  
वह्नि तत्त्व ( पु० ) आग, अग्नि, अन्नल ।  
वा तत्त्व ( पु० ) विरूप, पत्रान्तर, अपवाद ।  
वांशी तत्त्व ( खी० ) मुरली, वंशी ।  
वाक्, वाक्य ( पु० ) भाषा, वाणी, वचन ।—वातुरी  
( स्त्री० ) वचनपटुता ।—देव ( पु० ) हयग्रीव, देवी  
श्री, शारदा, सरस्वती ।—पति ( पु० ) हयग्रीव,  
बृहस्पति, देवगुरु ।—युद्ध ( पु० ) जयानी कगड़ा ।  
वाकुची दे० ( स्त्री० ) ओषध विशेष ।  
वाक्यार्थ तत्त्व ( पु० ) [ वाक्य + अर्थ ] वाक्य का  
अर्थ, शब्द बोध ।  
वाग्जाल तत्त्व ( पु० ) प्रपञ्च, वाक् समूह ।  
वाग्दत्त तत्त्व ( पु० ) वचनदत्त, वचन से दिया, एक  
प्रकार का विवाह ।  
वागुरी, वागुरी तत्त्व ( पु० ) मृगध्वन, पशु कँसाने का  
जाल, कन्दा, यथा—  
मात चरण सिरमाय, चले पुरत शङ्कित हिये ।  
वागुरि विषम तोराय, मनो भाग मृग भागवास ।  
—रामायण ।  
वाच तत्त्व ( पु० ) वचन, वाक् वाक्य, भाषा,  
बोली अन्तर्जो जेयी चड़ी ।  
वाचक तत्त्व ( पु० ) शब्द, अर्थबोधक, अर्थबोधन  
करने वाला, वाँचने वाला, पुराणवक्ता, कथक ।  
वाचनिक तत्त्व ( वि० ) वचन; कथित, वचन स्रवन्त्री ।  
वाचा तत्त्व ( पु० ) वाक्, वचन, वच ।  
वाचाल तत्त्व ( वि० ) बचकी, गप्पी, बकवादी, गोप-  
हिण्या, मुद्गर ।  
वाचस्पति ( पु० ) बृहस्पति, देवगुरु ।  
वाच्य तत्त्व ( पु० ) वक्तव्य, बोलने योग्य । ( पु० )  
बोध्य अर्थ, शब्दार्थ ।

वाङ्मय दे० ( अ० ) वाङ्मय, धन्य, प्रिय वाक्य ।  
 वाज दे० ( पु० ) पक्षी विशेष ।  
 वाजपेय तत्त्वं ( पु० ) यज्ञ विशेष ।—ती तत्त्वं ( पु० )  
 कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की श्रेष्ठ पदवी ।  
 वाजी तत्त्वं ( पु० ) घोड़ा, अश्व ।  
 वाङ्मय तत्त्वं ( खी० ) आकांक्षा, मनोरथ, स्पृहा ।  
 वाङ्मयित तत्त्वं ( वि० ) आकांक्षित, इच्छित, अभिलषित ।  
 वाट दे० ( पु० ) मार्ग, पथ, अध्या, राह, डगर ।  
 वाटिका तत्त्वं ( खी० ) फुलवाड़ी, बगीचा, आराम ।  
 वाङ्मय दे० ( पु० ) स्थान, बाड़, सान ।  
 वाङ्मय दे० ( खी० ) आगन, उपवन, उद्यान, बगीचा ।  
 वाण तत्त्वं ( पु० ) तीर, शर, पद्म, काण्ड ।  
 वाणासुर ( पु० ) दैत्य राज बलि का पुत्र ।  
 वाणिज्य ( पु० ) व्यापार, सौदगरी ।  
 वाणी तत्त्वं ( खी० ) बात, बोली, शब्द, वचन ।  
 वात तत्त्वं ( पु० ) वायु, पवन, हवा, रोग विशेष,  
 गठिया ।—शूल ( पु० ) शूल विशेष ।  
 वातय ( पु० ) सर्प, साँप, हिरन, मृग ।  
 वातल तत्त्वं ( पु० ) वात रोगी, अन्मत्त, वायुमत्त ।  
 वातस्य तत्त्वं ( पु० ) कृपा, अनुकम्पा, स्नेह ।  
 वाद तत्त्वं ( पु० ) विवाद, वाक्कुलह, शास्त्रार्थ, सम्मा-  
 पण, बालाप ।  
 वादरायण ( पु० ) वदिकाग्रम वासी व्यास मुनि ।  
 वादानुवाद तत्त्वं ( पु० ) उत्तर प्रत्युत्तर, कगड़, कलह ।  
 वादी तत्त्वं ( पु० ) विरोधी, मुद्दई, प्रथम अभियोग  
 करने वाला । [ वक्त्रही, बताने वाला ।  
 वाद्य तत्त्वं ( पु० ) पाजा, वाद्य यन्त्र ।—कर ( पु० )  
 वानप्रस्थ तत्त्वं ( पु० ) तीसरा आश्रम ।  
 वातर तत्त्वं ( पु० ) ऋषि, यन्त्र, मकैट, शक्ति ।  
 वातरमुख ( पु० ) नारियल, चंद्र का मुँह ।  
 वापी तत्त्वं ( खी० ) तड़ाग, बावड़ी, सरोवर ।  
 वाम तत्त्वं ( पु० ) बायाँ । ( वि० ) विरोधी, शत्रु,  
 अनुमन्त्रितक, अहितकारी ।  
 वामन तत्त्वं ( पु० ) शीता, सर्व, हूब, आकार, बाल ।  
 वामा तत्त्वं ( खी० ) नारी, स्त्री ।—चार ( पु० ) कौल  
 सम्प्रदाय, शाक्तमत का एक भेद, मधमास सेवन  
 आदि जिनकी धर्म क्रिया है ।

वायु तत्त्वं ( पु० ) पवन, पथार, यतास, हवा ।  
 —ग्रस्त ( वि० ) अन्मत्त, वायु पुत्र हनुमान ।  
 वार दे० ( पु० ) ठोकर, आक्रमण, धाव, पाला, घाती ।  
 वारक तत्त्वं ( पु० ) निवारकर्ता, निरोधक, रुक-  
 पैया, बाधक । [विघ्न, हस्त, हाथी ।  
 वारण तत्त्वं ( पु० ) अटकाव, रुकाव, रुकावट, बाधा,  
 वारन दे० ( पु० ) अर्पण, भेंट चढ़ाना, न्योदावर  
 करना, बलि, अटकाव, रोक, रुकावट ।  
 वारना ( कि० अ० ) घेर लेना, अर्पण करना, भेंट  
 चढ़ाना या न्योदावर करना ।  
 वारा दे० ( पु० ) सस्ताई, बचाई, बचाव, निष्कार ।  
 वाराङ्गना तत्त्वं ( खी० ) विन्याङ्गना, स्वर्गीया स्त्री ।  
 वाराह तत्त्वं ( पु० ) शूकर, सूअर ।  
 वारि तत्त्वं ( पु० ) जल, नीर, अप, पानी, अशु ।  
 —चर ( पु० ) जलजन्तु, जलचर ।—ज ( पु० )  
 कमल, पद्म ।—द ( पु० ) मेघ, जलह, तोषद,  
 धरा, घन ।—धि ( पु० ) समुद्र, सागर ।  
 वारी दे० ( खी० ) घर, मकान, गृह ।  
 वारीश ( पु० ) समुद्र, सागर, सिंधु ।  
 वारुणी तत्त्वं ( स्त्री० ) मदिरा, शराब, पश्चिम दिशा,  
 पश्चिम, वरुण की । [लाप ( पु० ) वातचीत ।  
 वार्ता तत्त्वं ( स्त्री० ) वृत्तान्त, बात, समाचार ।—  
 वार्तिक तत्त्वं ( पु० ) सूत्रों की टीका, सूत्र में कहे  
 नहीं गये वा दो बार कहे विषयों का विचार जित  
 ग्रन्थ में हो ।  
 वार्द्धक्य तत्त्वं ( पु० ) वृद्धावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ीपन ।  
 वार्षिक तत्त्वं ( वि० ) वर्ष में होनेवाला, साधारणिक ।  
 वालखिल्य तत्त्वं ( पु० ) अंगुष्ठ प्रमाण शरीर वाले  
 सात हजार महर्षियों का समूह । इन्हीं की तपस्या  
 से गरुड़ उत्पन्न हुए हैं । एक समय महर्षि करव  
 ने पुत्र की इच्छा से यज्ञ प्रारम्भ किया था ।  
 उन्होंने उस यज्ञ में लकड़ी ले आने के लिये इन्द्र  
 और वालखिल्य को नियुक्त किया था । समस्त  
 वालखिल्यों का समूह बड़े कष्ट से एक राखटा ले  
 आ रहा था, क्योंकि वे बहुत दूरी छोटे और दुर्गम  
 थे । रास्ते में जबलपूर्व एक गोपबं में वे रुक रहे  
 थे, बलामिमानी पुत्रन्दर यह देत कर उपहास  
 एक इनको डाक कर खड़े गये ।



बड़ा कष्ट हुआ और इस इन्द्र से अधिक बलशाली दूसरे इन्द्र की यज्ञ द्वारा वे प्रार्थना करने लगे। तब इन्द्र की प्रार्थना करने पर महर्षि कश्यप ने कहा, देखो इनको प्रह्ला ने इन्द्र बनाया है और हम दूसरे इन्द्र की प्रार्थना करते हो इससे प्रह्ला के नियम का तिरस्कार होगा और हम तुम्हारी भी प्रार्थना निष्फल नहीं करना चाहते हैं, अतएव तुम्हारा प्रार्थित इन्द्र पतमेन्द्र हो, बालविरियों ने कश्यप के प्रस्ताव को स्वीकृत किया।

**वाल्मीकि तत् ( पु० )** विख्यात रामायण के कर्ता मुनि। ये अयोध्याधिपति रामचन्द्र के समय में थे। परन्तु रामचन्द्र से ये अवस्था में बहुत बड़े थे। अयोध्या के दक्षिण ओर गङ्गा बहती है, गङ्गा के दक्षिण की ओर का वास आनायो की वस्ती थी, यह प्रदेश जङ्गल था। उसी जङ्गल के बीच से तमसा नदी प्रवाहित हुई है, इसी नदी के तीर पर महर्षि वाल्मीकि का आश्रम है। वही आश्रम में इन्होंने अपने भुवन विख्यात काव्य की रचना की है। ये ही भारत के आदि कवि हैं। कोई कहते हैं कि अयोध्या से मथुरा जाने के मार्ग में वाल्मीकि का आश्रम है, अतएव लयणासुर का वध करने के लिये जाते हुए शत्रुघ्न वाल्मीकि के आश्रम में ठहरे थे। इनके डाकू होने की कथा आप रामायण में नहीं है।

**वावटूक तत् ( पु० )** वक्ता, विख्यात वक्ता, अत्यन्त बोलने वाला।

**वाष्प ( स्त्री० )** भाप।

**वास तत् ( पु० )** स्थान, रहने का स्थान, गन्ध, महक।

**वासना ( स्त्री० )** इच्छा, प्रयास।

**वासन्ती तत् ( स्त्री० )** बत्ता विशेष, साधवी बत्ता।

**वासव ( पु० )** देवताओं का राजा, इन्द्र।

**वासर तत् ( पु० )** दिन, दिवस, दिवा, बार, तिथि।

**वासित तत् ( वि० )** सुगन्धित।

**वासी तत् ( वि० )** बसेला, रहने वाला, निवासी,

वाशिंदा। ( पु० ) दण्डा अन्न, भात निकला भोजन, फल का बना हुआ भोजन।

**वाष्पुकि ( पु० )** सपों के राजा का नाम।

**वासुदेव ( पु० )** वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण।

**वास्तव तत् ( पु० )** यथार्थ, निश्चय, ठीक, सत्य।

**वास्तूक ( पु० )** वसुई का साग।

**वास्प तत् ( पु० )** वाष्प, भाप।

**वाहिनी तत् ( स्त्री० )** सेना, घमू।

**वाह्य तत् ( वि० )** बाहर, बाहरी, बाहर का।

**वि तत् ( उप० )** वियोग, विशेष, निश्चय, ईष्य, घोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन, ज्ञान, गति, आलस्य, पाठन।

**विकङ्कत ( पु० )** कटाई।

**विकट तत् ( वि० )** भयानक, भयङ्कर, क्रूर।

**विकट तत् ( वि० )** विह्वल, उद्विग्न, व्याकुल, चपूरा, असम्पूर्ण।

**विकराज तत् ( वि० )** अतिशय भयानक, घोर भयङ्कर, डरावना, भयप्रद, भयजनक।

**विकल्प तत् ( पु० )** सन्देह, संशय, भ्रान्ति, भ्रम, अनिश्चय।

**विकराज ( वि० )** डरावना, जिसे देखने से डर लगे।

**विकल ( वि० )** चबदाया हुआ, व्याकुल, विह्वल।

**विकार तत् ( पु० )** विकृति, परिवर्तन, परिवृत्ति, बदलफेर, बदलाव।

**विकसन ( पु० )** खिलना, फूलना, प्रकाशित होना।

—**विकसित ( वि० )** फूला हुआ।

**विकाल तत् ( पु० )** गोपूली, सन्ध्या, सायंकाल।

**विकशन तत् ( पु० )** प्रकाश, प्रफुल्लता, खिलना।

**विकाश तत् ( पु० )** प्रकाश, उद्भेद, व्यक्ति।

—**सिद्धान्त ( पु० )** एक प्रकार का दर्शन सिद्धान्त।

**विकीरण ( पु० )** विखेला, छितराना, फेंकना।

**विकृत तत् ( वि० )** विरूप, अस्वरूप, मशीन। ( पु० ) घृणा। [परिवर्तन, बदलाव।

**विकृति तत् ( स्त्री० )** विचार, अन्यथाभाव,

**विक्रम तत् ( पु० )** पराक्रम, बल, शक्ति, सामर्थ्य, शूरता, वीरता, प्रभुता, वीर्य।

**विक्रमादित्य तत् ( पु० )** [ विक्रम + आदित्य ]

वज्रयिनी के विख्यात विद्याप्रेमी राजा। ये स्वयं पण्डित थे, और पण्डितों को बहुत धन देकर उनकी विद्या का आदर करते थे, इनके समय में

सर्वोत्तम नौ पण्डित थे, जो नवरत्न कहे जाते थे ।  
उन पण्डितों के नाम हैं कालिदास, वररुचि,  
अमरसिंह, धन्वन्तरि, चणक, चेतालभट्ट, घट-  
कर्पूर, शंकु और वराहमिहिर । बहुतों के मत  
से ई० सन् के २६ वें पहिले विक्रम का समय  
माना गया है । इनकी विद्वत्सनीय जीवनी कोई  
गहीं मिलती ।

विक्रमी तत्० ( वि० ) बलवान, बली, पराक्रमशाली,  
वीर, विक्रम के समय में उनका चलाया वस्त्र  
की गणना, सम्बन्ध ।

विक्रय तत्० ( पु० ) पिकी, बेचना, माल खपाना ।  
विक्रीय, विक्रेता तत्० ( पु० ) बेचने वाला, विक्री  
करने वाला ।

विक्षिप्त ( वि० ) पागल, जिसकी बुद्धि ठीक न हो ।  
विक्षेप तत्० ( पु० ) व्याघात, बाधा, व्याकुलता,  
फेरना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना ।

विख्यात तत्० ( वि० ) प्रसिद्ध, स्यात्प्रसाद, कीर्ति-  
मान्, परास्वी ।

विख्याति तत्० ( स्त्री० ) कीर्ति, यश, प्रसिद्ध ।  
विगत तत्० ( वि० ) गया हुआ, योता हुआ, व्यतीत ।  
—श्रम ( वि० ) श्रम रहित, बिना थकावट का ।

विगति तत्० ( स्त्री० ) विरोध, विगाद, खराबी ।  
विगर्हण तत्० ( पु० ) तिरस्कार, निन्दन, निन्दा  
करना । [ गुण का ।

विगुण तत्० ( वि० ) गुणहीन, विगतगुण, बिना  
बिगोये दे० ( वि० ) क्षिप्त हुआ, गुप्त, छुका ।  
विग्रह तत्० ( पु० ) विरोध, लड़ाई, युद्ध, संग्राम,  
द्वेष, शरीर, देह, अङ्ग, प्रतिमा ।

विघटन तत्० ( पु० ) अलगबाग, वृषकार, वियोग,  
अलग अलग होना, खिलना, फूलना ।

विघात तत्० ( पु० ) विद्र, अङ्कन, रूकावट, बाधा,  
व्याघात, अटक, नाश, ध्वंस, बिगाड़ ।

विघातक तत्० ( पु० ) बाधक, नाशक, घातक ।  
विघ्न तत्० ( पु० ) बाधा, अटकाव, रुकावट ।

—राज ( पु० ) श्री गणेश जी ।  
विचक्षण तत्० ( पु० ) चतुर, निपुण, बुद्धिमान् ।

विचरण तत्० ( पु० ) भ्रमण, घूमना ।  
विचल तत्० ( पु० ) चञ्चल, अस्थिर, अचिर ।

विचलना दे० ( क्रि० ) विचलित होना, अचिर होना,  
भ्रमण । [ निर्णय, मानसिक समिप्राय ।

विचार तत्० ( पु० ) ध्यान, सोच, अनुमान, तत्त्व-  
विचारणीय तत्० ( पु० ) विचार करने योग्य, निर्णय  
योग्य ।

विचारित तत्० ( वि० ) निर्णयित, व्यवस्थापित ।  
विचित्र तत्० ( वि० ) अनेक रंग का, अद्भुत ।

विचित्रवीर्य तत्० ( पु० ) महाराज शान्तनु का पुत्र,  
काशिराज की कन्या अम्बालिका और अग्निदा  
इनको व्याही गई थीं । अम्बालिका के गर्भ से  
पाण्डु और अग्निदा के गर्भ से धृतराष्ट्र उत्पन्न  
हुए थे ।

विच्छेद तत्० ( पु० ) विभेद, पाथेय, भेद, अन्तर ।  
विजन तत्० ( वि० ) निजन्, जनहित, जनशून्य,  
विजय तत्० ( पु० ) जय, जीत ।

विजया तत्० ( स्त्री० ) भाग, वृद्धि, तिथि विशेष,  
कुमार शुक्ल ११ एकादशी, दुर्गा ।

विजयादशमी ( स्त्री० ) दशहरा, आर्यन शुक्ल  
दशमी का विशेष नाम है । इस दिन राम ने  
रावण को मार कर लज्जा जीती थी । [ दूसरी जाति ।

विजाति तत्० ( स्त्री० ) अन्य जाति, भिन्न जाति,  
विज्ञ तत्० ( पु० ) पण्डित, चतुर, प्रवीण, अभिज्ञ,  
ज्ञाता, बुद्धिमान्, विद्वान् ।—ता ( स्त्री० ) पण्डि-  
ताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, चतुरता ।

विज्ञप्ति तत्० ( स्त्री० ) विज्ञापन, इतिवृत्त ।  
विज्ञानी ( वि० ) ज्ञानवान, पण्डित, अति चतुर ।

विज्ञान तत्० ( पु० ) शिष्य और शास्त्र सम्बन्धी  
ज्ञान ।

विज्ञापन तत्० ( पु० ) जाहिरात, सूचना ।—पत्र  
( पु० ) सूचनापत्र, जाहिरात ।

विट तत्० ( पु० ) जार, भुङ्गना ।  
विटप तत्० ( पु० ) वृक्ष, पेड़, रूख । यथाः—

पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी ।  
मोह विटप नहीं सकत उपारी ॥

रामायण  
विदम्बना तत्० ( स्त्री० ) दुःखदायक, दुःख, निरस्कार,  
अपमान, अनुकरणीय । [ स्तुत ।

विदम्बित तत्० ( वि० ) अपमानित, निन्दित, ।

विद्याल तत्त्वं ( पु० ) विद्वत्, माजोर, विस्तार ।  
 वितण्डा तत्त्वं ( खी० ) मिथ्यावाद, वाक्पथ्य,  
 शास्त्रार्थ में गूस्से का पक्ष लयटन करने की रीति ।  
 वितरण तत्त्वं ( पु० ) दाण, त्याग, बँटवना, पार होना ।  
 वितर्क तत्त्वं ( पु० ) अनुमान, विचार, तर्क ।  
 वितल तत्त्वं ( पु० ) पाताल, विरोध ।  
 वितस्ति तत्त्वं ( खी० ) विशिष्ट, विना, बीजा ।  
 वितान तत्त्वं ( पु० ) चरित्र, चैदम् । [ गत ।  
 वितृष्णा तत्त्वं ( वि० ) गृह्यहीन, निरुद्ध, विराग,  
 विल तत्त्वं ( पु० ) धन, ऐश्वर्य, विभव । [ होना ।  
 विथयना तत्त्वं ( कि० ) चपूरा पड़ा रहना, बन्ना  
 विदग्ध तत्त्वं ( पु० ) चतुर, प्रबोध, अनुभवी ।  
 विदर्भ ( पु० ) महाभारत के समय के एक देश का  
 नाम जहाँ प्रसिद्ध राजा द्रुपदजी का जन्म हुआ  
 था, बंगाल का एक जिला ।

विदारण तत्त्वं ( पु० ) काटन, चीरन, भेदन ।  
 विदिक तत्त्वं ( खी० ) विद्विता, उपदिष्टा ।  
 विदित तत्त्वं ( वि० ) ज्ञान, जाना हुआ, गुप्ता हुआ ।  
 विदिष्टा तत्त्वं ( खी० ) अगरी विरोध, उपदिष्टा ।  
 विदीर्णा तत्त्वं ( वि० ) काटना, चीरना, पिटाता हुआ ।  
 विदुर तत्त्वं ( पु० ) दृष्ट्युपपादन स्थान के सौम्य से  
 और विप्रिय योग की श्री अग्निष्वा की परिचारिका  
 के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । ये चम्पराज्य धन-  
 राष्ट्र के मन्त्री थे, परन्तु पाण्डवों का अधिक पक्ष  
 करते थे । ये न्यायवतायण और सत्यवादी थे ।  
 जिस समय दुर्योधन आदि पाण्डवों के नगर में  
 पाण्डवों को भोजन पर अनुग्रह में उन लोगों को  
 मारने का विचार करते थे, उस समय विदुर की  
 ही कृपा से पाण्डवों की रक्षा हुई थी । पाण्डवों के  
 विवाह के परवान् धराष्ट्र की आज्ञा से ये पाण्डव  
 राज्य में गये थे और वहाँ से पाण्डवों को लिखा  
 जाये थे । महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर जब  
 युधिष्ठिर राजा हुए थे, तब १५ वर्ष तक विदुर  
 उनके साथ हस्तिनापुर में रहे थे । सन्तान धराष्ट्र  
 के साथ बन गये और वहाँ उन्होंने योगफल से  
 शरीर क्षोभ दिया । फलते हैं ये पूर्वजन्म में यम  
 थे । परन्तु अग्निमायध्व के साथ से युद्ध योगि  
 में उत्पन्न हुए थे ।

विदुजा तत्त्वं ( खी० ) श्रीपौराण महिषी, ये श्री  
 महिषा और श्रीपौराणी श्री थी । इनके पति की  
 मृत्यु के बाद विदुजा ने इनके साथ पर आश-  
 न्य किया । प्रयत्न मनु के चात्रमण से इनका पुत्र  
 सत्यप पहले दर गया था, परन्तु पुनः माता के  
 उन्माद वाच्यों में उन्मादित होकर प्रथम मनु विदु-  
 राज का उन्माद मानना किया और उन्हें इस कर  
 करने दिया का राज्य किया । [याना मुमाद्व ।  
 विद्वक तत्त्वं ( पु० ) ममपरा, राजा के साथ रहने  
 विद्वयी ( खी० ) पण्डिता, विद्विता श्री ।  
 विद्वेज तत्त्वं ( पु० ) राज्य देश, भिन्न देश, अपने देश  
 में कृपा देश ।  
 विद्वेजी तत्त्वं ( वि० ) परदेशी, प्रमाणा ।  
 विद्वेज तत्त्वं ( पु० ) जनक, मिथिला का राजा ।—  
 जा ( खी० ) मीमा जी । [ मतिहित, उपस्थित ।  
 विद्यमान तत्त्वं ( पु० ) वर्तमान, मौजिज, गिन,  
 विद्या तत्त्वं ( खी० ) ज्ञान, साधन ज्ञान, वाच्य  
 ज्ञान ।—धर ( पु० ) देशभक्ति विरोध गुप्ती,  
 पवित्र, कारीगर, पवित्र ।—धौ ( पु० )  
 [ विद्या + धौ ] धाम, तिष्ठ, पढ़ने वाला,  
 पढ़ाया ।—नय ( पु० ) [ विद्या + धातव्य ]  
 पाठगाना, पढ़ने का स्थान ।—यान् ( वि० )  
 पवित्र, विद्वान् ।

विद्युत् ( खी० ) जपता, तवित, विद्युती ।  
 विद्रुम तत्त्वं ( पु० ) शूभा, प्रभाव, रस विरोध ।  
 विद्रोह तत्त्वं ( पु० ) विरोधी, विद्रोह, धर ।  
 विद्रोही तत्त्वं ( पु० ) धरी, शत्रु, अहित, अहित-  
 कारक ।

विद्वान् तत्त्वं ( पु० ) विद्यावान्, पण्डित, पढ़ा ।  
 विद्रोह तत्त्वं ( पु० ) धर, विरोध ।  
 विध तत्त्वं ( खी० ) विधि, रीति, प्रकार, दण्ड, धाँवा ।  
 विधया तत्त्वं ( खी० ) रंवा, राट, पतिहीना श्री ।  
 विधातव्य तत्त्वं ( वि० ) करने योग्य, विधेय ।  
 विधाता तत्त्वं ( पु० ) महा, सृष्टिकर्ता, भाग्य ।  
 विधान तत्त्वं ( पु० ) विधि, रीति, शास्त्रोक्तोक्ति,  
 उपाय ।

विधायक तत्त्वं ( वि० ) विधान करने वाला, निर्णय  
 करनेवाला, सिद्धान्त करने वाला, सिद्धान्त वाक्य ।

विधि तत् ( स्त्री० ) ( संस्कृत में पुलिङ्ग ) व्यवस्था,  
विधान, उपाय, उद्योग, भाग्य ।—घट् ( अ० )  
विधिपूर्वक, यथारिति ।

विधिन्तुन्द तत् ( पु० ) राहु, ग्रह विशेष ।

विधु तत् ( पु० ) चन्द्रमा, चन्द्र ।

विधुर तत् ( पु० ) विकल, स्त्रोहीन पुरुष ।

विधुचदनी ( स्त्री० ) अति सुन्दरी, चन्द्रमुखी, चन्द्रमा  
की तरह सुन्दर मुख वाली । [ गया ।

विधूत तत् ( वि० ) कम्पित, कैपाता हुआ, हिलाया

विधेय तत् ( पु० ) होनहार, कर्तव्य ।

विध्वंस तत् ( पु० ) नाश ।

विध्वस्त तत् ( वि० ) नष्ट, विनष्ट ।

विनत तत् ( वि० ) नम्र, प्रणत, झुका हुआ ।

विनता तत् ( स्त्री० ) गरुड की माता, महर्षि  
कश्यप की स्त्री । [ अनुनय, विनय ।

विनति, विनती तद् ( स्त्री० ) नम्रता, निवेदन,

विनय । तत् ( पु० ) विनती, शिष्टता, शिष्टाचार,  
नम्रता ।

विनष्ट तत् ( वि० ) विगड़ा, विनाश प्राप्त ।

विनश्यद तत् ( वि० ) भङ्गुर, नाशी, नाश होनेवाला ।

विना तत् ( अ० ) छोड़कर, रहित, अतिरिक्त, भिन्न ।

विनायक तत् ( पु० ) मणेश, गजानन, नमन करने  
वाला ।

विनियोग ( पु० ) स्थिर करना, बँटाना ।

विनाश तत् ( पु० ) ध्वंस, नाश, , संहार, मरण ।

विनाशित तद् ( वि० ) विध्वस्त, नष्ट, नष्ट किया  
हुआ, नाश किया हुआ । [ विपाद ।

विनिपात तत् ( पु० ) पतन, विपद, अवःपात

विनिमय तत् ( पु० ) लेनदेन, बदल बदल, परिवर्तन ।

विनीत तत् ( वि० ) विनयी, नम्र, सुशील ।

विनीतात्मा तत् ( वि० ) नम्र, सुशील ।

विनेता तत् ( पु० ) शासक, शिक्षक, राजा ।

विनोद तत् ( पु० ) कौतुक, खेल, हँसी, ठट्ठा ।

विन्दक तत् ( पु० ) लानयुक्त, सलाह । [ कणिका ।

विन्दु तत् ( पु० ) बूँद, अनुस्वार, शून्य, कफा,

विन्ध्य तत् ( पु० ) पर्वत विशेष ।—गिरि तत्

( पु० ) विन्ध्याचल पर्वत ।—वासिनी ( स्त्री० )

दुर्गादेवी, अष्टभुजा ।

विन्ध्याचल तत् ( पु० ) एक पर्वत का नाम, एक  
नगर का नाम, जहाँ विन्ध्यवासिनी देवी हैं ।

विन्ध्यस्त तत् ( वि० ) स्थापित, यथाक्रम धृत, क्रम से  
रखा हुआ ।

विन्यास तत् ( पु० ) स्थापन, रचना, रखना ।

विपक्ष तत् ( पु० ) विरुद्ध पक्ष, वैरी का पक्ष ।

विपत्ति तत् ( स्त्री० ) आपद, विपद्, दुःख, दुर्गति ।

विपथ तत् ( पु० ) कुमार्ग, बुरी तरह ।

विपद् तद् ( पु० ) आपदा, दुर्दशा, दुःख ।

विपरीत तत् ( वि० ) उलटा, धाम, विरोधी, शत्रु ।

विपर्यय तत् ( वि० ) विरोध, उलटा, ऊपर उधर,  
अस्तन्यस्त ।

विपर्यस्त ( पु० ) व्यतिक्रान्त, उलट फेर करने वाला ।

विपर्यास ( पु० ) विपरीत, उलटा ।

विपल तत् ( पु० ) चण. एक पल का सौंठवाँ भाग ।

विपश्चिन्त तत् ( पु० ) विद्वान्, शेषज्ञ, बुद्धिमान् ।

विपाक तत् ( पु० ) परिणाम, फल, कर्म भोग, सिद्धि ।

विपिन तत् ( पु० ) अरण्या, जङ्गल, वन ।

विपाशा ( स्त्री० ) पंजाब की व्यास नदी का दूसरा नाम ।

विपुल तत् ( वि० ) प्रचुर, अधिक, बहुत, गम्भीर,  
बड़ा विस्तृत ।

विप्र तत् ( पु० ) ब्राह्मण, द्विज, श्रोत्रिय ब्राह्मण,  
वेदज्ञ ब्राह्मण । [ खाया हुआ ।

विप्रलब्ध तत् ( वि० ) वञ्चित, प्रतारित, धोखा

विप्रलब्धा ( स्त्री० ) नायिका विशेष । जो स्त्री

प्रिय से मिलने के लिये संकेत में जाकर यहाँ

पति के न मिलने पर दुखी हो, उसी का नाम ।

विप्रलाप ( पु० ) अनर्थकारी वाक्यों का कहना,  
बिलप करना ।

विप्रलब्ध तत् ( पु० ) उपद्रव, हलचल । [ शृया, प्रकार्य ।

विफल तत् ( वि० ) निष्फल, फल रहित, निरर्थक

विभक्त तत् ( वि० ) बंटा हुआ. धृक् लृक्, अलग  
अलग ।

विभक्ति तत् ( स्त्री० ) अंश, बौट, टुकड़ा, प्रत्यय,  
कारकों के चिह्न । [ संवत्सर का नाम ।

विभय तत् ( पु० ) सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, एक

विभाग तत् ( पु० ) भाग, अंश, टुकड़ा, बौट

मह ।

विभाजक तत्० ( पु० ) अंशकर्ता, विभागकर्ता, पृथक् करने वाला । [ बाँटा हुआ ।

विभाजित तत्० ( वि० ) अंशित, अंश किया हुआ,

विभाजना तत्० ( स्त्री० ) अर्थालङ्कार विशेष, यथा—

भयो काज विन हेतहूँ बरनै है जिहि ठौर ।

तहूँ—विभाजना होती है भापत कनि सिरमैर ।

उदाहरण—

साहि तनै शिवराज की, सहज डेव यह पेन ।

अनरीकै दारिद हरे, अनलीकै अरिसैन ।

—शिवराजभूषण ।

विभावसु ( पु० ) सूर्य, मदार का पेड़, अग्नि, चन्द्र ।

विभीषण तत्० ( व० ) भयानक, भयङ्कर, विकराल, डरीना । ( पु० ) लङ्कापति रावण का छोटा भाई जिसे रावण को मार कर रामचन्द्र ने लङ्का की राजगद्दी पर बैठाया था । [ दर यताना ।

विभीषिका तत्० ( स्त्री० ) भयप्रदर्शन, भय दिखाना,

विभु तत्० ( पु० ) स्वामी, प्रभु, प्यापक ।

विभूति तत्० ( स्त्री० ) ऐश्वर्य, धन, भस्म, राख ।

विभूषण तत्० ( पु० ) अलङ्कार, गहना, शोभा ।

विभेद तत्० ( पु० ) विच्छेद, भिन्नता, पृथक्ता ।—क ( पु० ) विभाजक, विच्छेदक ।

विभ्रम तत्० ( पु० ) स्त्रियों की स्वाभाविक चेष्टा विशेष, धवराहट, प्रिय आगमन से घबरा जाना ।

विमर्श, विमर्शन तत्० ( पु० ) विचार, अनुष्णान, परामर्श । [ साफ, सुयरा ।

विमल तत्० ( वि० ) मल रहित, निर्मल, स्वच्छ,

विमाता तत्० ( स्त्री० ) दूसरी माता, सौतेली मा ।

विमान तत्० ( पु० ) स्थ, गाड़ी, देवयान विशेष, जो आकाशपथ से चलता है । लोक विशेष ।

विमुक्ति तत्० ( वि० ) छुटा हुआ, छुटा, वन्धन रहित ।

विमुक्त तत्० ( स्त्री० ) मोच, छुटकारा, उद्धार, मुक्ति ।

विमुख तत्० ( वि० ) विरोधी, पराङ्मुख, फिटा हुआ ।

विनुग्ध ( वि० ) अज्ञान, मूढ़, मूर्ख ।

विमूढ़ तत्० ( वि० ) अज्ञानी, अनभिज्ञ, अतिशय मूर्ख । [ मुक्त करना, त्यागना ।

विमोचन तत्० ( पु० ) [ वि + मुञ्च + अनट ] छोड़ना,

विम्व तत्० ( पु० ) मण्डल, प्रतिविम्ब, छाया, मूर्ति, तसवीर, फल विशेष, कुन्दलन का फल ।

विम्विसार तत्० ( पु० ) मगध के प्राचीन राजा, ये बुद्धदेव के समकालीन थे और उन्हीं से इन्होंने बौद्धधर्म की दोषा ग्रहण की थी । इनके पुत्र का नाम अजातशत्रु था ।

विम्युक्त तत्० ( पु० ) लोल, भभूका ।

वियोग तत्० ( पु० ) विच्छेद, विछोह, विभुदना, विरह ।

वियोगी तत्० ( पु० ) विरही ।

वियोगिनी ( स्त्री० ) विरहिणी स्त्री का नाम, मिय-विहीन स्त्री ।

विरक्त तत्० ( पु० ) वैरागी, वासना शून्य, शीतराग, संसार विरागी । [ रचा हुआ ।

विरचित तत्० ( वि० ) बनाया हुआ, निर्मित, रचित,

विरचना ( क्रि० अ० ) बनाना, रचना, पैदा करना, उत्पन्न करना ।

विरञ्जि तत्० ( पु० ) मल्ला, प्रजापति, विधाता ।

विरज तत्० ( वि० ) क्रोधरहित, अहङ्कारशून्य, निरभिमान ।

विरजा ( स्त्री० ) गो लोह की एक नदी का नाम, एक पौधे का नाम, राधिका की एक सखी का नाम, दूध । [ जिसने छोड़ दिया है ।

विरत तत्० ( वि० ) निवृत्त, छोड़ा हुआ, विरक्त,

विरति तत्० ( स्त्री० ) वैराग्य, त्याग, निवृत्ति ।

विरथ ( वि० ) विना रथ का, रथहीन, पैदल ।

विरद तत्० ( पु० ) बखान, प्रशंसा, गुणगान ।

विरदैत दे० ( पु० ) गुणगान करने वाला, भाद, वरण, बन्दो, विरद बखानने वाला । [ विरजा ।

विरल तत्० ( वि० ) अनुपम, अनूठा, अनेकाला,

विरस तत्० ( वि० ) रसहीन, नीरस, विना स्वाद का वैजायका ।

विरह तत्० ( पु० ) वियोग, विछोह, विभुदन ।

विरहित ( वि० ) वियोगी, विभुदना हुआ ।

विराग तत्० ( पु० ) विरक्ति, वैराग्य, संसार में आसक्ति का त्याग, ममता त्याग ।

विराज तत्० ( पु० ) चञ्चल, आदि पुरुष, विष्णु का स्वरूप रूप ।—मान ( पु० ) शोभायमान, [ सोहता

हुआ, विराजित ।—ना ( कि० ) योगित होना, अर्थात् मालूम होना ।

विरज तत् ( वि० ) रोग रहित, नोरोग ।

विराट् तत् ( पु० ) चतुर्दशभुवन रूप परमात्मा की मूर्ति । ( पु० ) विशाल, बिलार, विकराल ( पु० ) मत्स्य देश का राजा । इसके यहाँ पाण्डवों ने एक वर्ष छिप कर बिताया था । यह अतुल ऐश्वर्य सम्पन्न तथा शक्तिशाली राजा था । इसका साला कीचक सेनापति था और यह अत्यन्त बलवान् था । त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा को पराजित कर उसने उसके राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया था । सुशर्मा राज्यभ्रष्ट होकर हस्तिनापुर में दुर्योधन के यहाँ रहते थे । एक रात को भीमसेन ने महयुद्ध करके कीचक को मार डाला था कीचक के मारे जाने की बात चारों ओर फैल गई । यह सुधोग समझ कर सुशर्मा ने कौरवों की सहायता से विराट् की दक्षिण गोशाला पर आक्रमण किया । विराट् भी युद्ध करने के लिये गये, परन्तु सुशर्मा ने उनकी सेना को हरा कर उन्हें ह्रैद कर लिया । अनन्तर युधिष्ठिर की आज्ञा से भीमसेन ने विराट् को रचा की । कुछ दिनों के बाद आगस्त्य सेना और भीष्म, कर्ण आदि सेनापतियों के साथ दुर्योधन ने विराट् की उत्तर गोशाला पर धावा किया । अर्जुन ने समस्त कुटुम्ब के छत्रके छुड़ा दिये और गौत्रों की रक्षा की । अज्ञातवास की समाप्ति होने पर पाण्डवों का विराट् से परिचय हुआ । विराट् ने अपनी कन्या उत्तरा को अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से प्याह दिया । कुशवैभ के युद्ध में विराट् पाण्डवों की ओर से लड़ते रहे । युद्ध के पन्द्रहवें दिन इनको द्रोण ने मार डाला था ।

विराध तत् ( पु० ) राक्षस विशेष, वनवास के समय यह राक्षस राम के द्वारा मारा गया था ।

विराम तत् ( पु० ) निवृत्ति, विश्राम, शान्ति, विश्रान्ति अन्त, अवसान, समाप्ति ।

विरुद्ध तत् ( वि० ) विपरीति, वाम, शत्रु ।—ता ( स्त्री० ) भगवा, शत्रुता, अहिवाचरण, विपरीत-चरण ।

विरूप तत् ( वि० ) कुत्स, भौंडा ।

विरूपान्त ( पु० ) एक राक्षस का नाम, महादेव जी, शिवजी ।

विरैक तत् ( पु० ) रोग विशेष, अतीसार, पेदोखा ।

विरैचक तत् ( पु० ) सारक, निकलने वाला, दस्तावर औषध ।

विरैचन तत् ( पु० ) मल निस्सारण, जुलाव ।

विरांचन ( पु० ) प्रह्लाद का वेदा और यालि का पिता, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा ।

विरोध तत् ( पु० ) द्वेष, शत्रुता, लड़ाई भगवा ।

—क ( पु० ) विवादी, वैरी, शत्रु ।

विरोधी तत् ( पु० ) शत्रु, रिपु, वैरी ।

विरोधोक्ति ( स्त्री० ) उलटी बात करना, अनर्थ वचन ।

विल तत् ( पु० ) विल, छिद्र, छेद, मौँद ।

विलक्षण तत् ( वि० ) अद्भुत, आश्चर्यमय अल्प, उत्तम, श्रेष्ठ, भला ।

विलग ( वि० ) भिन्न, अलग, पृथक् ।

विलगाधना दे ( वा० ) अलग करना, पृथक् करना, भिन्न करना, अलगना ।

विलज्ज ( वि० ) निर्लज्ज, बेहया ।

विलपना दे० ( कि० ) रोना, चिड़ाना, दुःख करना, रोदन करना ।

विलपत दे० ( कि० ) रोते हुए, रोदन करते हुए ।

विलम्ब तत् ( पु० ) देर, अधिक समय ।—ना ( कि० अ० ) रहना, डहरना, देर करना ।

विलम्बना दे० ( वा० ) देर लगाना, अधिक समय लगाना ।

विलय तत् ( पु० ) नाश, जगत् का नाश, प्रलय ।

विलायत ( पु० ) परदेश, इस शब्द का प्रयोग विशेष कर इंग्लैण्ड के लिये होता है । [ दुःख करना ।

विलाप तत् ( पु० ) रोना, विलखना, चिड़ाना,

विलास तत् ( पु० ) खेल, क्रीड़ा, कौतुक, भोग, सुख, आनन्द ।

विलासी तत् ( वि० ) भोगी, आनन्दी ।

विलीन तत् ( वि० ) नष्ट, लुप्त ।

विलुप्त तत् ( वि० ) अदृष्ट, नष्ट, गुप्त ।

विलोकन तत् ( पु० ) दृष्टि, ताक, दर्शन, देखना ।

विलोकना दे० ( क्रि० ) देखना, ताकना, दर्शन करना ।  
 विलोकित ( पु० ) देखा हुआ ।  
 विलोचन तत्० ( पु० ) नेत्र, नयन, आँख, चक्षु ।  
 विलोडना ( क्रि० ) मयना, महना, हिलोरना ।  
 विलोप तत्० ( पु० ) अदर्शना, नाश, ध्वंस ।  
 विलोम तत्० ( पु० ) विपरीत, उलटा, आक्रम, नीचे से ऊपर । [बेल का फल ।]  
 विल्व तत्० ( पु० ) बेल का पुष्प ।—फल तत्० ( पु० )  
 विषर तत्० ( पु० ) छिद्र, छेद, पिछ ।  
 विचरणा तत्० ( पु० ) विस्तृत, हाल, गुण कथन ।  
 विचर्य तत्० ( वि० ) क्रिद्, लभित, पश्चात्ताप युक्त ।  
 विचर्जन ( पु० ) उन्नति ( क्रि० ) उन्नति होना ।  
 विचर्जित ( पु० ) किसी के द्वारा उन्नति कराया हुआ ।  
 विचरा तत्० ( वि० ) अवश, पराधीन, अनन्योपाय ।  
 विचला तत्० ( वि० ) चला रहित, गम, नङ्गा ।  
 विवसा ( पु० ) इच्छित, चागिच्छत, चाहा हुआ ।  
 विवाद तत्० ( पु० ) वाद, वाक कलह, शास्त्रार्थ, झगडा ।  
 विवादी तत्० ( पु० ) विवादकारक, वादी, मुद्दे ।  
 विवाह तत्० ( पु० ) व्याह, परिणय, पाणिग्रहण ।  
 विवाहित तत्० ( पु० ) व्याहा हुआ, कृतपरिणय, व्याहता ।  
 विवाहित तत्० ( स्त्री० ) व्याही हुई, परिणीता ।  
 विविक्ष तत्० ( पु० ) पूत, पवित्र, पकान्त, निर्जन ।  
 विविध तत्० ( वि० ) नाना प्रकार, मति मति, अनेक प्रकार का ।  
 विबुध ( पु० ) देवता, पण्डित ।  
 विवृत्ति तत्० ( वि० ) व्याख्यान, टीका, विषाण ।  
 विवेक तत्० ( पु० ) विचार, निर्णयात्मिका बुद्धि ।  
 विवेकी तत्० ( पु० ) न्यायाकर्ता, विचारक, निर्णयकर्ता ।  
 विवेचक या विवेकक तत्० ( पु० ) निर्णयकर्ता, विचारकर्ता । [ज्ञान ।]  
 विवेचना तत्० ( स्त्री० ) विचार, सल असल का विवेचित ( पु० ) विचारा हुआ ।

विशद तत्० ( वि० ) विस्तृत, विस्तारयुक्त, विशाल ।  
 विशाखदत्त तत्० ( पु० ) संस्कृत का एक, नैतिक कवि, मुद्रा-राघव नामक नाटक इन्होंने बनाया है । संस्कृत साहित्य में इस ग्रन्थ का बड़ा आदर है । मिस्टर तैलङ्ग कहते हैं कि इस ग्रन्थ का रचना-काल ईसा की ७ वीं सदी है ।  
 विशाखा तत्० ( पु० ) सोलहवाँ नक्षत्र ।  
 विशार ( पु० ) मछली ।  
 विशारद ( वि० ) चतुर, दब, ज्ञाता, पण्डित ( पु० ) मौलसी का पेड़ ।  
 विशाल तत्० ( पु० ) विस्तृत, बड़ा, चौड़ा, बृहत् ।  
 विशिख तत्० ( पु० ) वाण, शर, तीर । ( वि० ) शिला रहित, चिनाचोटी का ।  
 विशिष्ट तत्० ( पु० ) संयुक्त, जुदा, मिला ।  
 विशुद्ध तत्० ( वि० ) बहुत पवित्र, निर्मल, इज्जत, विमल, खलिस । [विशेष ।]  
 विशुचिका ( स्त्री० ) ईजा, काळरा, छई, एक रोग विशेष तत्० ( वि० ) प्रकार, भेद, जाति, अधिक, मुख्य, प्रधान, खास ।—ण ( पु० ) गुणवाचक । जिस शब्द से विशेष्य का मुख्य गुण आदि का बोध होता है ।—तः ( अ० ) विशेष रूप से, अधिकता से, खास कर ।—ता ( स्त्री० ) भेद, सिद्धता, प्रयुक्तता, अधिकता, प्रधानता, मुख्यता ।  
 विशेषोक्ति तत्० ( स्त्री० ) अलङ्कार विशेष ।  
 विशेष्य तत्० ( पु० ) प्रधान, मुख्य, धर्मी, द्रव्य, जिसकी प्रशंसा की जाय ।  
 विशोक तत्० ( वि० ) शोकाहित, विगत शोक ।  
 विश्रम्भ तत्० ( पु० ) विश्वास, प्रत्यय, निश्चय ।  
 विश्रान्त तत्० ( वि० ) थकित, थका हुआ, पैदा हुआ ।  
 —घाट ( पु० ) यमुना जी के एक घाट का नाम, यह मथुरा में है । [ करना ।]  
 विश्राम तत्० ( पु० ) सुख, थकावट दूर करना, विराम ।  
 विश्रुत ( वि० ) विख्यात, प्रसिद्ध, नामी ।  
 विश्लिष्ट ( पु० ) शिथिल, वियोगी, अलग रहने वाला । [अलगाव ।]  
 विश्लेष तत्० ( पु० ) वियोग, विरह, विछोड़, भेद, विश्व तत्० ( पु० ) अगत्, संसार, देव विशेष इनके भाव में पिण्ड और बलि दी जाती है ।—कर्मा ( पु० )

परमात्मा, देव, शिवही विशेष ।—नाथ ( पु० )  
जगत्, स्वामी, काशी के प्रधान देव, महादेव,  
परमेश्वर ।—म्भरा ( स्त्री० ) पृथ्वी, धरती, रणी ।  
—रूप ( पु० ) ईश्वर ।

विश्वम्भरं तत् ( पु० ) जगत् का पाठनकर्ता, संसार  
का भरण पोषण करने वाला, विश्व ।

विश्वासनीय तत् ( वि० ) विश्वास योग्य, विश्वास  
का पात्र । [ किया गया हो ।

विश्वसित तत् ( वि० ) विश्वस्त, जिसका विश्वास  
विश्वस्त तत् ( वि० ) जात प्रत्यय, प्रतीति योग्य ।

विश्वाभिज्ञ तत् ( पु० ) [ विश्व + भिज्ञ ] विश्वगत  
महर्षि, ये राजवंश में उत्पन्न हुए थे, परन्तु  
इन्होंने कठिन तपस्या और साधनों से महर्षि पद  
पाया था ।

विश्वास तत् ( पु० ) प्रत्यय, प्रतीति, धारणा,  
भरोसा ।—घातक ( पु० ) कपटी, धोखेबाज,  
ठग, धूर्त ।—पात्र विश्वासनीय, विश्वास योग्य ।

विश्वेश ( पु० ) शिवजी, विश्वेश्वर ।

विष तत् ( पु० ) गरल, कालकूट, हलाहल, लहर,  
माहुर ।—धर ( पु० ) सर्प, साँप, भुजङ्ग ।—वैद्य  
( पु० ) विष उतारने वाला, गारुड़ी ।

विपरायण तत् ( वि० ) उदात्त, दुःखी ।

विषम तत् ( वि० ) अयुग्म, अनमेल, असमान,  
असुख, बराबरी नहीं, कठिन, कठोर, भयङ्कर ।

—उत्तर ( पु० ) उत्तर विशेष, एक प्रकार का उत्तर ।

—ता ( स्त्री० ) कठिनता, कठोरता ।—त्राण  
( पु० ) कामदेव, मदन, कन्दर्प ।—त्रिभुज ( पु० )  
जिसकी भुजाएँ बराबर न हों ।

विषय तत् ( पु० ) पदार्थ, वस्तु, इन्द्रियार्थ वस्तु,  
भोग विवास, देश । ( य० ) जिवे, निमित्त, अर्थ ।

—क ( वि० ) संसारी ।—वासना ( स्त्री० )  
भोग विलास की इच्छा ।

विषयी तत् ( पु० ) चित्तासी, भोगी, संसारी ।

विषहर तत् ( पु० ) विष नाशक, विषघ्न ।

विषाण तत् ( पु० ) सींग, शङ्ख, हाथी का दाँत ।

विषाद् तत् ( पु० ) शोक, दुःख, क्रोध, खेद ।

विषुव ( पु० ) जब दिन रात बराबर हों उस दिन का  
नाम ।

विषुवत्, विषव तत् ( पु० ) पृथिवी की मध्यरेखा,  
मध्यरेखा ।—रेखा ( स्त्री० ) धरती के बीच की  
रेखा, मध्यरेखा, मध्यरेखा । [ विशेष ।

विष्टर तत् ( पु० ) आसन, कुश का आसन, वृष  
विष्टि तत् ( स्त्री० ) भद्रा, अशुभ समय, बेगार ।

विष्टा तत् ( पु० ) मल, गुरीप, गू ।

विष्णु तत् ( पु० ) परमेश्वर, परमात्मा, सृष्टिपालक,  
देव विशेष ।—पद ( पु० ) आकाश, वैकुण्ठ ।

—पद्मी ( स्त्री० ) गङ्गा, संक्रान्ति विशेष ।

विस ( सर्व० ) वड, इस ।

विसर्ग तत् ( पु० ) स्वर के पीछे के दो चिन्तु (ः) ।

विसर्जन तत् ( पु० ) त्याग, छोड़ना, त्याग देना ।

विसारना ( क्रि० ) भूल जाना ।

विसासिनि ( स्त्री० ) सौत, दाहिनी, सौतिनी ।

विसृचिका तत् ( स्त्री० ) रोग विशेष, महामारी,  
ईड़ा, कालरा ।

विसृना ( क्रि० ) शोक करना, रोना, दुविधा में  
पड़ना । [विस्तारयुक्त, ( दे० ) चिह्नाना ।

विस्तर तत् ( वि० ) अधिक, विस्तृत, बड़ा हुआ,

विस्तार ( पु० ) फैलाव, बिछालता ।

विस्तारित तत् ( वि० ) फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ ।

विस्तीर्ण तत् ( वि० ) बढ़ा, विस्तारयुक्त, फैला  
हुआ, चौड़ा ।

विस्तृत तत् ( वि० ) विहीर्ण, विशाल, बड़ा ।

विस्तुलिङ्ग ( पु० ) चिन्तनारी ।

विस्तोत तत् ( पु० ) कोड़ा, धाव, कुँसी ।—क  
( पु० ) शीतला, चेचक, गोड़ी, गाँठ ।

विस्मय तत् ( पु० ) अचरज, अचरमा, अश्चर्य ।

विस्मरण तत् ( पु० ) भूलना, विसरना, विस्मित होना ।

विस्मित तत् ( वि० ) विस्मययुक्त, अचरमित, आश्चर्यित ।

विस्मृति तत् ( स्त्री० ) विस्मरण, भूल, विसरना ।

विस्वाद् तत् ( पु० ) स्वादहीन, स्वादरहित ।

विहङ्ग, विहङ्गम तत् ( पु० ) पक्षी, पक्षर ।

विहरण तत् ( पु० ) भ्रमण, पर्यटन, घूमना, रास ।

विहसना ( क्रि० अ० ) हँसना, खिलना ।

विहार तत् ( पु० ) क्रीड़ा, खेल, लड़के लड़कियों का

आपस में हाथ पकड़ कर घूमना । मोर्दों का उपा-

सनास्थान, बौद्धमन्दिर, भारत का प्रान्त विशेष ।



विहारी ( पु० ) श्रीकृष्ण, एक कवि का नाम जिन्होंने अपने नाम की सतसई बनाई है। ये शृंगार, रस के अच्छे कवि थे। ( वि० ) विहार करने वाला, चंचल, चपल। [ निर्णयित। ]

विहित तत् ( वि० ) कथित, उक्त, उचित, कर्तव्य, विहीन तत् ( वि० ) विना, रहित, शून्य, । [ उद्धिप्त। ]

विहल तत् ( पु० ) व्याकुल, घबराया हुआ, चञ्चल, वीक्षण तत् ( पु० ) दर्शन, दीर्घ, विलोकन।

वीक्षित तत् ( वि० ) दृष्ट, विलोकित, देखा हुआ।

वीचि तत् ( स्त्री० ) लहर, तरङ्ग।

वीज तत् ( पु० ) वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र, मूलकारण, बीजा।—

गड़ित ( पु० ) गणित का ग्रन्थ विशेष, अल्पक गणित।—पूर ( पु० ) बिजौरा नीच।

वीणा तत् ( स्त्री० ) सितास्तुमा एक याजा, जिसे नारद और सरस्वती आदि बजाते हैं।

वीत तत् ( वि० ) अगम्य, गत, व्यतीत, समाप्त, बीता हुआ।—हृदय ( पु० ) हैहय राज्य के अधिपति। इन्होंने चारण्यसी के राजा दिवोदास को जीत कर काशी को अपने अधिकार में कर लिया था सही, परन्तु दिवोदास के पुत्र ने इन्हें जीत कर अपनी राजधानी लौट ली थी। वीतदृश्य ने प्राण बचाने की इच्छा से भरद्वाज मुनि के आश्रम में आश्रय लिया था।

वीथि तत् ( स्त्री० ) गली, गैल, प्रहोली।

वीप्सा तत् ( स्त्री० ) अधिकता, व्यापकता।

वीय ( वि० ) दो २।

वीर तत् ( पु० ) बलवान्, योद्धा, काव्य का रस।

—प्रसू ( स्त्री० ) वीर जननी, वीर माता।—गति ( स्त्री० ) युवचैत्र में प्राण विसर्जन, मरण।—ता ( स्त्री० ) शूरता, वीरत्व।—भद्र ( पु० ) महादेव का प्रिय अनुचर, इसने दक्ष-यज्ञ का नाश किया था। पति की निन्दा न सह कर सती का प्राणत्याग करने का संवाद जब महादेव ने सुना, तब क्रोध से थपीर होकर उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पड़की, वसी से वीरभद्र उत्पन्न हुआ था।—भाव ( पु० ) महादुरी, वीरता।—भूमि ( स्त्री० ) युवचैत्र, बंगाल प्रान्त का नगर विशेष।—रस ( पु० )

काव्य का एक रस विशेष।—वृत्ति ( स्त्री० ) शूरा का वाना, वीरों का काम।

वीर्य तत् ( पु० ) सामर्थ्य, बल, वीज।—धान ( पु० ) पराक्रमी, बलवान्, बलशाली।

वृक तत् ( पु० ) मेढ़िया, हूँडार, अग्नि विशेष, भीम के जठराग्नि का नाम।

वृकोदर तत् ( पु० ) [ वृक + उदर ] जिसके उदर में वृक नामक अग्नि हो, भीम, भीमसेन।

वृक्ष तत् ( पु० ) पेड़, रुख, तरु, तक्षर, तरहर।

वृत्त तत् ( पु० ) घेरा, मण्डल, मण्डलाकार, गोल।

वृन्द।—खण्ड ( पु० ) वृत्त का टुकड़ा, जो त्रिज्या और जीवा से घिरा हो।—वर्द्ध ( पु० ) मोश का आधा।

वृत्तान्त तत् ( पु० ) बात, समाचार, हाल, बार्ता।

वृत्ति तत् ( स्त्री० ) जीविका, जीवनेपाय, व्यवसाय।

वृत्रासुर तत् ( पु० ) [ वृत्र + असुर ] राक्षस, विशेष, जिसके इन्द्र ने मारा था।

वृथा तत् ( अ० ) अनर्थक, निष्प्रयोजन।

वृद्ध तत् ( पु० ) बूढ़ा, पुराना, प्राचीन, जीर्ण, ढोकरा।—प्रपितामह ( पु० ) पिता का पितामह।

—प्रपितामही ( स्त्री० ) बाप की दादी।

वृद्धा तत् ( स्त्री० ) बुढ़िया, बूढ़ी, ढोकरा।

वृद्धि तत् ( स्त्री० ) लाभ, बढ़ती, उन्नति, मुनाफा।

वृन्द तत् ( पु० ) समूह, प्राणियों का दल, धूय, जया।

— ( स्त्री० ) शुद्ध, तुलसी, राधिका, देवी विशेष। ( पु० ) ढेर, समूह, शेक।

वृन्वारक तत् ( पु० ) देवता, अमर, देव।

वृन्दापन तत् ( पु० ) मथुरा के पास का एक वन जहाँ श्रीकृष्ण रहते थे।

वृश्चिक तत् ( पु० ) चीछ, आठवीं राशि।

वृष तत् ( पु० ) बैल, वृषभ, धर्म।—केतु ( पु० ) शिव, महादेव।—दंश ( पु० ) विलाव।—भातु ( पु० ) श्रीराधिका जी के पिता का नाम।

वृषण तत् ( पु० ) अण्डकोश, पोता, अण्ड।

वृषभ तत् ( पु० ) बैल, बघा।—ध्वज ( पु० ) महादेव।

वृषल तत् ( पु० ) जाति विशेष, शुद्ध जाति, चन्द्र-गुप्त राजा। ( स्त्री० ) वृषली।

वृषाकपि तत् ( पु० ) धर्म को न कँपाने वाला, महा-  
देव, विष्णु । [ दाग कर जोड़ना ।  
वृषोत्सर्ग तत् ( पु० ) धाद का अङ्ग विशेष, सौँद  
वृष्टि तत् ( स्त्री० ) वर्षा, मेघ, बारिश, बरसात ।  
वृहत् तत् ( पु० ) बड़ा, विशाल, विस्तृत ।  
वृहद्वेश तत् ( पु० ) भगवान् विष्णु की वह मूर्ति  
जो वैकुण्ठ पर दक्षिण में है उन्हें वाला जी भी  
कहते हैं, यह हिन्दुओं का एक प्रधान तीर्थ  
स्थान है ।  
वेग तत् ( पु० ) शीघ्रता, प्रवाह, धारा ।—गामी  
शीघ्र चलने वाला घोड़ा ।—वान् ( पु० ) पवन,  
चीता । ( वि० ) जल्द चलने वाला ।  
वेगि ( कि० वि० ) शीघ्र, जल्दी ।  
वेगी तत् ( वि० ) शीघ्रगामी, वेग वाला ।  
वेणी तत् ( स्त्री० ) चोटी, नदियों का सङ्गम, त्रिवेणी ।  
वेणु तत् ( पु० ) बाँस ।—क ( पु० ) बंशलोचन,  
ढाग, बाज़ीगर, चालाक ।  
वेत वे० ( पु० ) एक वृक्ष का नाम, आकाश ।  
वेतन तत् ( पु० ) तनखाह, तलब, पगार, मजूरी ।  
वेताल तत् ( पु० ) प्रेत योनि विशेष ।  
वेत्ता तत् ( पु० ) जानने वाला, ज्ञाता, वेदी ।  
वेत्र तत् ( पु० ) दंत का वृक्ष, छड़ी, चाबुक ।  
वेद तत् ( पु० ) हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ, वेद चार हैं,  
यजु, साम, ऋक् और अथर्व । ज्ञान, उपासना और  
कर्म वेद से इनके तीन काण्ड हैं ।—गर्म ( पु० )  
प्रज्ञा, ब्राह्मण ।—गिरा ( स्त्री० ) वेदवाणी, वेद  
के वाक्य । ( पु० ) अपि विशेष ।—माता  
( स्त्री० ) गायत्री । [ बलेख ।  
वेदना या वेदना तत् ( स्त्री० ) पीड़ा, दुःख, यातना,  
वेदाङ्ग तत् ( पु० ) वेद के अङ्ग, वेद ज्ञान प्राप्त करने  
के उपयोगी शास्त्र । शिषा, कल्प, व्याकरण  
ज्योतिष, छन्द और निरुक्त ये छः वेदाङ्ग हैं ।  
वेदान्त तत् ( पु० ) वेद का भाग विशेष, उपनिषद्,  
उपनिषद् का विचार करने वाला दर्शन ।—  
( पु० ) आत्मवादी, वेदान्त का जानने वाला ।  
वेदि ( स्त्री० ) पीठ, पीड़ा, होम करने का चकूतरा ।  
वेदिका तत् ( स्त्री० ) वेदी, होम करने का चानुरा ।  
वेदो तत् ( स्त्री० ) वेदिका, स्थण्डिल, हवन स्थान ।

वेध ( पु० ) छेद, सुराख, एक ग्रह पर दूसरे ग्रह की  
छाया ।—ना ( कि० ) छेद करना ।—मुख्या  
( स्त्री० ) कपूर, कस्तूरी ।  
वेला तत् ( स्त्री० ) समय, काल, एक घाघ विशेष ।  
वेश तत् ( पु० ) आकार, परिच्छेद, सजावट, शोभा ।  
वेशर दे० ( पु० ) मूषण विशेष, नाक का गहना ।  
वेश्म ( पु० ) गृह, घर, भेख ।  
वेश्या तत् ( स्त्री० ) पतुरिया, गणिका वारस्त्री,  
बाराहना ।  
वेप ( पु० ) कपड़ा, गहना, डील, चाल ।  
वेष्टन तत् ( पु० ) बैठन, लपेटन । [ काटना ।  
वैजना दे० ( कि० ) लीलना, उधेड़ना, काटना  
वैकाल दे० ( पु० ) अपराह, दोपहर के बाद का  
समय, चौथा पहर ।  
वैकुण्ठ तत् ( पु० ) लोक विशेष, विष्णु का धाम ।  
—नाथ ( पु० ) विष्णु भगवान ।  
वैगन्ध ( पु० ) गन्धिक । [ बौध भिक्षुक ।  
वैखानस तत् ( पु० ) यती विशेष, वानप्रस्थाधर्मी,  
वैचित्र्य ( पु० ) विचित्रता, चित्र विचित्र ।  
वैजन्ती ( स्त्री० ) कपड़ा, पताका ।  
वैतरणी तत् ( स्त्री० ) नरक की एक नदी का नाम ।  
वैताल ( पु० ) पिशाच, भाट, बन्दी ।  
वैतात्रिक ( पु० ) गायक, राज घराने के गायक ।  
वैदिक तत् ( पु० ) वेदपाठी, वेद पढ़ने वाला ।  
( वि० ) वेदोक्त, वेद कथित, वेद में कही बात,  
जो बात वेद में लिखी हो या उससे विरुद्ध न हो ।  
वेदेही तत् ( स्त्री० ) जानकी, सीता ।  
वेद्व्य ( पु० ) नीलक, नीलमणि ।  
वैद्य तत् ( पु० ) चिकित्सक, वैद्यशास्त्रवेत्ता ।—  
नाथ ( पु० ) शिव, दिव्योदास, धन्यन्तरि, वैज-  
नाथ, जिनका मन्दिर आदिलखण्ड में है ।  
वैद्यक तत् ( पु० ) चिकित्साशास्त्र, आयुर्वेद ।  
वैनतेय तत् ( पु० ) गरुड़, यषिरान, विनतापुत्र ।  
वैभव तत् ( पु० ) ऐश्वर्य, सम्पत्ति, धन, सम्पदा ।  
वैमनस्य तत् ( पु० ) मीनरी ट्रेण, मनमुटाप ।  
वैयाकरण तत् ( पु० ) व्याकरण पढ़ने वाला या  
नसका ज्ञान । उसके अर्थ में व्याकरण शास्त्र का  
प्रयोग करना अशुद्ध है ।

वैर तत् ( पु० ) द्वेष, शत्रुता, विरोध । [निस्पृह ।  
वैरागी तत् ( पु० ) विरक्त, वीतराग, संसारत्यागी,  
वैराग्य तत् ( पु० ) विषय त्याग, विषय उदासीनता,  
निस्पृहता ।

वैरी तत् ( पु० ) शत्रु, रिपु, विरोधी, अरि, द्वेषी ।  
वैलक्षण्य ( पु० ) विचित्रता, भावान्तर ।  
वैवस्व ( पु० ) धर्मराज, मनु विशेष ।  
वैशाख तत् ( पु० ) महीना का नाम, जिस महीने में  
विशाखा नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हो, दूसरा मास ।  
वैशाखी ( स्त्री० ) धूनी, वैशाख की पृथ्वी ।  
वैशेषिक ( पु० ) न्याय का एक भाग, दर्शन विशेष ।  
वैश्य तत् ( पु० ) वर्ण विशेष, तीसरा वर्ण, बनिया,  
महाजन आदि ।

वैष्णव तत् ( पु० ) विष्णुमत्त, विष्णु के उपासक,  
विष्णु उपासक सम्प्रदाय । ( स्त्री० )—वैष्णवी ।  
वैसा दे० ( सर्व० ) उसके समान, उसके ऐसा, उसके  
तुल्य, तत् सदृश ।

वैसे दे० ( वि० ) बिना मूल्य, सेंटमेंत, उसी तरह ।  
घोहित ( पु० ) जहाज़, बड़ी नाव ।  
घोल दे० ( पु० ) गोंद, गुग्गुलु, धूप विशेष ।  
व्यक्त तत् ( वि० ) स्पष्ट, प्रकाशित, दर्शन योग्य ।  
व्यक्ति तत् ( स्त्री० ) एक मनुष्य, एकाकी, एक वस्तु  
जन, मनुष्य ।

व्यग्र तत् ( वि० ) व्याकुल, उद्दिग्ध, विकल ।  
व्यङ्ग तत् ( पु० ) अङ्गहीन, विकलाङ्ग ।  
व्यञ्जन तत् ( पु० ) पङ्खा, वेना, वेनिया ।  
व्यञ्जक तत् ( पु० ) प्रकाशक, भावबोधक शब्द जिनसे  
अर्थ प्रकाशित होते हैं ।

व्यञ्जन तत् ( पु० ) तरकारी, साग, बर्ण, अक्षर,  
स्वरहीन वर्ण, क से ह तक वर्ण ।

व्यञ्जना तत् ( स्त्री० ) शब्द शक्ति, जिससे अर्थों का  
बोध होता है । [विपर्यय ।

व्यतिक्रम तत् ( पु० ) डाँकना, लॉचना, विलोम,  
व्यतिरिक्त तत् ( वि० ) अन्य, भिन्न ।

व्यतिरेक तत् ( पु० ) भेद, अलग, भिन्नता, एक  
कान्था लङ्कार ।

व्यतीत तत् ( वि० ) गत, बीता, गथाबीता ।

व्यतीपात तत् ( पु० ) योग विशेष, सप्रहर्ष योग ।

व्यत्यय तत् ( पु० ) अतिक्रम, लॉचना, डाँकना ।  
व्यथा तत् ( स्त्री० ) पीड़ा, दुःख, वेदना, क्लेश,  
कष्ट ।

व्यथित तत् ( वि० ) पीड़ित, दुःखित, क्लेश ग्रस्त,  
कष्ट पतित ।

व्यपदेश तत् ( पु० ) बहाना, ध्याज, केवल ।

व्यभिचार तत् ( पु० ) परस्त्री या परपुरुष संगम,  
निन्दित कर्म, न्याय का एक दोष ।

व्यभिचारिणी तत् ( स्त्री० ) कुलटा, नष्ट चरित्रा,  
छिनाल औरत, पर पुरुषरता स्त्री ।

व्यभिचारी तत् ( पु० ) जम्पट, कुमार्गी, छिनरा ।

व्ययः तत् ( पु० ) खर्च, लागत, खय, नाश ।

व्यर्थ तत् ( वि० ) वृथा, निरर्थक, निरुन्मा, बिना  
काम का, निष्फल ।

व्यवकलन तत् ( पु० ) गणित विशेष, घटाना,  
घाती निकालना । [ प्रयुक्त ।

व्यवच्छेद तत् ( पु० ) भेद, भिन्नता, अलग्नाय,  
व्यवधान तत् ( पु० ) अन्तर, दूरी, दो पदार्थों के  
• बीच का अन्तर ।

व्यवसाय तत् ( पु० ) व्यवहार, लेनदेन, उद्योग,  
रोज़गार ।—१ ( पु० ) व्यापारी ।

व्यवस्था तत् ( स्त्री० ) प्रबन्ध, उपाय, प्रक्रिया,  
अभिनियम ।—एक ( पु० ) व्यवस्था करने वाला,  
प्रबन्धक । [ ठीक, ठीक ।

व्यवस्थित तत् ( वि० ) अचल, अटल, निश्चित  
व्यवहार तत् ( पु० ) उद्यम, धन्धा, काम, रोज़गार ।  
व्यवहरिया दे० ( पु० ) व्यवहार करने वाला, महा-  
जन, श्रमदाता । [ राक्षस्युक्त ।

व्यवहित तत् ( वि० ) व्यवधान प्राप्त, अन्त-  
व्यसन तत् ( पु० ) आत्मिक, अभ्यास, खोटी  
आदत ।—१ ( पु० ) व्यसन करने वाला ।

व्यस्त तत् ( वि० ) व्याकुल, उद्दिग्ध ।

व्याकरण तत् ( पु० ) शास्त्र विशेष, भाषा को निय-  
मित करने वाला शास्त्र, शब्दशास्त्र ।

व्याकुल तत् ( वि० ) घबड़ाया हुआ, उद्दिग्ध, व्यग्र,  
व्यस्त ।—ता ( स्त्री० ) घबड़ाहट, व्यग्रता  
चंचलता ।

व्याख्या तत् ( स्त्री० ) वर्णन, टीका, विवृति ।

व्याख्यान तत् ( पु० ) उपदेश, वक्तृता ।  
 व्याघात तत् ( पु० ) बाधा, स्वावट, रोक, अटकाव ।  
 व्याघ्र तत् ( पु० ) बाघ, नाहर, चीता ।  
 व्याज तत् ( पु० ) ध्वाना, मिय, छल, कपट । ( दे० )  
 सुद, लाभ ।—क ( वि० ) व्याज, छली, धृष्टी ।  
 व्याजु वे० ( पु० ) व्याज के लिये, सुद पाने के लिये,  
 । उधार दिया हुआ ।  
 व्याध तत् ( पु० ) अघोरिया, शिकारी, वहेलिया ।  
 व्याधि तत् ( स्त्री० ) रोग, पीडा, दुःख, छेश ।  
 व्यान तत् ( पु० ) प्राण विशेष ।  
 व्यापक तत् ( पु० ) सर्वत्र विस्तृत, सर्वत्र फैला  
 हुआ ।—ता ( स्त्री० ) विस्तार, फैलाव ।  
 व्यापना दे० ( क्रि० ) हर जगह हो जाना, फैलना,  
 सर्वत्र फैल जाना ।  
 व्यापार तत् ( पु० ) रोजगार, कामधन्धा,  
 व्यवसाय ।  
 व्यापी तत् ( पु० ) व्यापक, विशु, सर्वगत ।  
 व्याप्त तत् ( पु० ) पिरुत, फैला हुआ ।  
 व्याप्ति तत् ( स्त्री० ) विस्तार, फैलाव, न्याय मत से  
 अनुमान का कारण ।  
 व्यामोह तत् ( पु० ) पश्चात्ताप, पीडा, दुःख ।  
 व्यायाम तत् ( पु० ) कसरत, शारीरिक श्रम ।  
 व्याल तत् ( पु० ) साँप, सर्प, अहि, भुजङ्ग ।—  
 ( स्त्री० ) झड़ोखा, साँपिनी ।  
 व्यावहारिक ( पु० ) मंत्री, सलाहकार ।

व्यास तत् ( पु० ) महर्षि विशेष, पुराणकर्ता, पुराण  
 रूढ़ने वाला ।—गद्दी तद् ( स्त्री० ) यद्वा आसन  
 जिस पर बैठ कर पुराण की कथा कही जाय ।  
 व्यासार्द्ध ( पु० ) व्यास का आधा ।  
 व्याहृति तत् ( स्त्री० ) वैदिक मन्त्र विशेष, जिससे  
 प्राणायाम किया जाता है ।  
 व्युत्क्रम तत् ( पु० ) उलटा पलटा, क्रमरहित ।  
 व्युत्पत्ति तत् ( स्त्री० ) शास्त्रीय ज्ञान में अभिनिवेश,  
 बोध शास्त्र, परज्ञान ।  
 व्युत्पन्न तत् ( वि० ) शास्त्र में प्रवीण ।  
 व्यूह तत् ( पु० ) सेना की रचना विशेष, समूह,  
 राशि ।—ा ( पु० ) क्रियावर्दी ।  
 व्योम तत् ( पु० ) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष ।  
 —केश ( पु० ) शिव ।—चर ( पु० ) पक्षी,  
 ग्रह, देवता ।—यान ( पु० ) विमान ।  
 यज्ञ ( पु० ) गोस्थान, मधुरामण्डल ।—म ( पु० )  
 अमण, पर्यटन ।—वासी ( पु० ) यज्ञ में  
 रहने वाला ।  
 यजेन्द्र ( पु० ) श्रीकृष्ण ।  
 यण तत् ( पु० ) घाव, फोडा, फुंसी, चत ।  
 यत तत् ( पु० ) पुष्य, तिथि का उपवास, अनुष्ठान ।  
 यात तत् ( पु० ) समूह, यूय, वल ।  
 यात्य तत् ( पु० ) पतित, संस्कारहीन ।  
 य्रीडा तत् ( स्त्री० ) लज्जा, लाज, शर्म, हया ।  
 य्रीहि तत् ( स्त्री० ) धान्य विशेष, छोटे छोटे अन्न ।

## श

श व्यञ्जन का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु  
 होने के कारण इसे तालव्य कहते हैं ।  
 श तत् ( पु० ) कल्याण, मङ्गल ।  
 शंयु तत् ( वि० ) प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित ।  
 शंव तत् ( वि० ) सुकृती, पुण्यात्मा, धर्मी ।  
 शंवर तत् ( पु० ) जल, शङ्ख, मायावी राक्षस विशेष ।  
 इन्द्रजात विद्या का यह एक आचार्य हो गया है ।  
 इसी विद्या का दूसरा नाम शंविरी भी पड़ा है ।  
 शंसा तत् ( स्त्री० ) चाहना, चाह, अभिलाष,  
 उत्सुकता, उत्कट अभिलाष ।

शंसित तत् ( वि० ) उक्त, कथित, प्रोक्त, निश्चित,  
 स्तुत्य ।  
 शंस्य तत् ( वि० ) स्तुत्य, प्रशंसनीय, प्रशंसा के योग्य ।  
 शङ्कर ( पु० ) तमोज्ञ, शिष्टता ।—द्वार ( वि० )  
 सम्य, शिष्ट ।  
 शक तत् ( पु० ) देश विशेष, एक जाति विशेष,  
 जिसकी विजय राजा विक्रमादित्य ने की थी ।  
 राजा शालिवाहन का चलाया संवत् । दे० ( स्त्री० )  
 सन्देह, संशय ।—कर्ता ( पु० ) शक नामक  
 साल चढ़ाने वाला । यथा, युधिष्ठिर, विक्रमा-

दिल, चन्द्रमुख, शशि वाहन, आदि संवत्सर प्रवर्तक ।

शकट तत् ( पु० ) रथ, गाड़ी, बैलगाड़ी, झकड़ा ।

शकटासुर तत् ( पु० ) दानव विशेष, कंस ने श्री-कृष्ण को मारने के लिये इसको भेजा था । इसने शकट का रूप धारण करके श्रीकृष्ण को मारने का उद्योग किया था, परन्तु स्वयं मारा गया ।

शकल ( पु० ) स्वरूप, सूरत, चिन्ह, चर्म, लच्छ, भाग, छिलका ।

शकाब्द तत् ( पु० ) शालिवाहन प्रवर्तित संवत् ।

शकारि तत् ( पु० ) राजा विक्रमादित्य ।

शकुन तत् ( पु० ) सगुन, शुभसूचक चिन्ह, मङ्गल-गान, पक्षी विशेष । [ और दुर्योधन का मामा ।

शकुनी तत् ( पु० ) गान्धार राजा सुयल का पुत्र-शकुन्त ( पु० ) पक्षी, चिड़िया ।

शकुन्तला तत् ( स्त्री० ) विख्यात पुरुवंशी राजा दुष्यन्त की महारानी, महर्षि विश्वामित्र के औरस और मेनका नामक अप्सरा के गर्भ से यह उत्पन्न हुई थी । महर्षि कश्यप ने इसे पाला पोसा था । विख्यात कवि कालिदास निर्मित एक नाटक ।

शकुल ( पु० ) मधुली विशेष ।

शकुत् ( पु० ) मज, विष्ठा, पुरीप ।

शकर ( स्त्री० ) चीनी ।

शक्ती ( वि० ) सन्देही, संशयी । [ दृढ, पुष्ट ।

शक्त तत् ( वि० ) समर्थ, शक्तिमान्, कठोर, बलवान् ।

शक्ति तत् ( स्त्री० ) बल, पुरुषार्थ, सामर्थ्य, पराक्रम, अस्त्र विशेष, भाला, बर्षा । इन्द्राणी, वैष्णवी आदि आठ शक्तियाँ । वशिष्ठ का ज्येष्ठ पुत्र ।

—मान् ( पु० ) पुरुषार्थी, पराक्रमी ।

शकु ( पु० ) सतुआ ।

शक ( पु० ) इन्द्र सुरपति ।—जित् ( पु० ) मेघ-नाद, इन्द्रजीत ।—धनुष ( पु० ) इन्द्रधनुष ।

—सुत ( पु० ) इन्द्रपुत्र ; जयन्त ।—वालि ( पु० ) अर्जुन ।

शकाणी ( स्त्री० ) इन्द्राणी, शची, इन्द्र की पत्नी ।

शकाह ( पु० ) इन्द्रजव, कीट विशेष, इन्द्र गोप ।

शकस ( पु० ) जन, प्राणी, मनुष्य ।

शकल ( पु० ) कामकाज ।

शगुन ( पु० ) शकुन, शुभाशुभ की पूर्व सूचना ।

शगुनिया ( वि० ) शकुन विचारने वाला ।

शङ्क ( पु० ) भय, डर, सर्पराज ।

शङ्कर तत् ( पु० ) शिव, शम्भु, महादेव । ( वि० )

शुभकर, कल्याणकर, महलप्रद ।

शङ्करा तद् ( स्त्री० ) रागिणी विशेष ।—चार्य ( पु० ) धर्मचार्य विशेष । [ भय ।

शङ्का तत् ( स्त्री० ) सन्देह, संशय, शक, श्रास, डर, शङ्कित तत् ( वि० ) डरा हुआ, भयभीत, डरपोकता, बुझदिल ।

शङ्क तत् ( पु० ) कीला, खँटा, बर्षा ।

शङ्ख तत् ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध बाद्य विशेष ।—चूड़ ( पु० ) एक नागराज ।—पुष्पी ( स्त्री० )

जड़ी विशेष ।—सुर ( पु० ) एक राक्षस ।

शङ्खिनी तत् ( स्त्री० ) एक प्रकार की स्त्री ।

शञ्जान ( पु० ) शिकरा, यात्र । [ इन्द्र ।

शची ( स्त्री० ) इन्द्र की स्त्री का नाम ।—पति ( पु० )

शटी ( पु० ) एक प्रकार का फल ।

शठ तत् ( पु० ) धूर्त, ठग, कपटी, वञ्चक ।—ता ( स्त्री० ) धूर्तता, ठगई ।

शण तत् ( पु० ) शम, पाद, नृप विशेष, जिसके छाल की रस्सी बनायी जाती है ।—सूत्र ( पु० ) सुतली, बैर्यों का यज्ञोपवीत । [ साँटियाँ ।

शण्ड तत् ( पु० ) बैल, साँढ़ ।—नी ( स्त्री० ) उदिनी,

शण्ड ( पु० ) नपुंसक, हिजड़ा, साँढ़ । [ सैकड़ों ।

शत तत् ( पु० ) सौ संख्या, १०० ।—शः असंख्यात,

शतक ( वि० ) सौ का, सैकड़ा ।

शतकोटि ( पु० ) इन्द्र के घन का नाम, सौ करोड़ ।

शतक्रतु ( पु० ) इन्द्र ।

शतघ्नी ( स्त्री० ) तोप, महामारी ।

शतपुष्प ( स्त्री० ) सौंफ । [ नक्षत्र ।

शतमिषा तत् ( स्त्री० ) नक्षत्र का नाम, चौबीसवें

शतमूली तत् ( स्त्री० ) लता विशेष । [ दरी ।

शतरंज ( स्त्री० ) एक खेल का नाम ।—नी ( स्त्री० )

शता ( स्त्री० ) सौंफ ।

शत्रु तत् ( पु० ) द्वेषी, बैरी, रिपु, अरि ।—ता ( स्त्री० ) दुष्टता, रिपुता ।—घ्न ( पु० ) राजा दशरथ के पुत्र ।

शनि तत् ( पु० ) सप्तम ग्रह, सूर्यपुत्र, शनैश्चर ।

—घार ( पु० ) सातवाँ दिन, मन्दवार ।

शनिः शनैः तत् ( अ० ) हौजे हौजे, धीरे धीरे ।

शनैश्चर तत् ( पु० ) देखो शनि ।

शपथ तत् ( पु० ) सौगन्ध, सोंह, किरिया ।

शप्पा तत् ( पु० ) चोंद, चन्द्रमा, योफा, भार ।

शय दे० ( पु० ) मुदाँ, प्राणहीन शरीर, सुतक ।

शब्द तत् ( पु० ) ध्वनि, निनाद, बोली ।—शास्त्र

( पु० ) व्याकरण ।

शम तत् ( पु० ) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय वशीकार ।

शमन तत् ( पु० ) यम, यमराज, शान्ति ।

शमा ( पु० ) प्रकाश ।—ज्ञान ( पु० ) सोवद, वैडकी ।

शमो तत् ( स्त्री० ) वृष विशेष, अग्निगर्भं वृष ।

शम्भूक तत् ( पु० ) सोप, घोंघा, एक शूद्र तपस्वी ।

शम्भु ( पु० ) महादेव ।

शयन तत् ( पु० ) नींद, निद्रा, पलँग ।

शय्या तत् ( स्त्री० ) सेज, पलंग, पिछौना, खाट ।

शर तत् ( पु० ) याण, तीर, सरफपडा, सायक,

विशिस ।—जन्मा ( पु० ) कार्तिकेय ।

शरट् तत् ( पु० ) कृष्णतास, गिरगिट ।

शरय तत् ( पु० ) रक्षा, उद्धार, घर, मकान ।

शरण्यागत तत् ( वि० ) आश्रित, शरण्याधी, रक्षा के लिये आगत ।

शरयय तत् ( वि० ) शरण के योग्य, शरणदाता ।

शरद् तत् ( स्त्री० ) एक ऋतु, कुम्हार और कार्तिक महीना ।

शरह ( स्त्री० ) दर, भाव, रस्म, रीति ।

शराकत ( स्त्री० ) सम्मिलित, जो बटा हुआ न हो ।

शराँटा दे० ( पु० ) शब्द विशेष, सरसराहट, सरसर शब्द, प्रचंड वायु के चलने का शब्द ।

शराफत ( स्त्री० ) सौजन्य, सम्पत्ता, भलमनसाहत ।

शराव तत् ( पु० ) पुरवा, सकेरा, मिट्टी का, पात्र विशेष, मदिरा ।—( वि० ) मद्यप शराव पीने वाला ।

शरास्त ( स्त्री० ) नरछटी, दुष्टता ।

शरासन तत् ( पु० ) धनुष, घन्वा, वाण का आसन ।

शरीर तत् ( पु० ) काय, देह, अन्न, यात्र ।

शरीरी तत् ( पु० ) शरीरधारी पुरुष, आत्मा ।

शर्करा तत् ( स्त्री० ) चीनी, खांड ।

शर्त ( स्त्री० ) ठहराव, पण, नियम ।

शर्वत ( पु० ) चीनी घुआजल ।—( स्त्री० ) रंग विशेष, एक प्रकार का नील ।

शर्म ( स्त्री० ) हया, शरम, लज्जा ।

शर्मा तत् ( पु० ) ब्राह्मणों का उपपद ।

शर्वरी तत् ( स्त्री० ) रात्रि, रजनी, रात, निशा, वामिनी ।

शलभ तत् ( पु० ) कीट, पतङ्ग, छीड़ा, मकोड़ा ।

शलाका तत् ( स्त्री० ) सलाह, कूँची, तूली ।

शलीता दे० ( पु० ) पैला, बेरा ।

शलूका दे० ( स्त्री० ) पहिरन विशेष, छिपों के पहि-  
नने के एक कपड़े का नाम ।

शल्य तत् ( पु० ) बाण, शल्य मद्रदेश के राजा, यौर  
मुषिष्ठिर के मामा थे । महाभारत युद्ध में ये कर्ण  
के सारथी बने थे ।

शव तत् ( पु० ) प्राणहीन शरीर, मुदाँ ।

शवर तत् ( पु० ) जंगली जाति विशेष, भील,  
पुखिन्द ।—( स्त्री० ) भिल्लनी विशेष ।

शशक तत् ( पु० ) ससा, खरहा, खुरगोश ।

शशमाही ( स्त्री० ) लुमाही ।

शशा ( पु० ) खुरगोश ।—कु ( पु० ) चन्द्रमा ।

शशि वा शशी तत् ( पु० ) चन्द्रमा; विष्णु ।

शश्वत् ( अर्थ० ) सदा, सर्वदा, सनातन ।

शस्त्र तत् ( पु० ) शस्त्र, हथियार ।

शस्य तत् ( पु० ) धान्य, धान, अन्न के पौधे ।

शहशाह ( पु० ) बादशाह, सम्राट् ।

शहत्त ( पु० ) फज विशेष ।

शहद ( पु० ) मधु, दवा विशेष ।

शहनाई ( स्त्री० ) एक बाजा विशेष ।

शाक तत् ( पु० ) साग, माजी, सब्जी ।

शाकल या शाकल्य तत् ( पु० ) हवन सामग्री,  
होम की वस्तु ।

शाका ( पु० ) शालिवाहन का चलाया साल ।

शाक तत् ( पु० ) शक्ति का उपासक, सम्प्रदायविशेष ।

शाख या शाखा तत् ( स्त्री० ) डाल, टहनी ।—मृग  
( पु० ) वानर, कीश ।

शाखो तत् ( पु० ) वृक्ष, रुख, पेड़, तह ।

शाठ्य तत् ( पु० ) शठता, ठगई, धूर्तता ।  
 शाण तत् ( पु० ) एक प्रकार का पत्थर, जिस पर  
 हथियार तेज़ किये जाते हैं, शान । [ सुवर्ण ।  
 शात ( पु० ) क्षयाण, सुख ।—कुम्भ ( पु० )  
 शान ( पु० ) हथियार पैगाने का पत्थर विशेष ।  
 —दार ( वि० ) भड़कीला, सुन्दर ।—शौकत  
 ( पु० ) आनन्दमग्न, शौकीनी ।  
 शान्त तत् ( वि० ) स्थिर, अचञ्चल, अचञ्चल ।  
 शन्तु ( पु० ) भीष्मपितामह के पिता का नाम ।  
 शान्ति तत् ( स्त्री० ) शम, स्थिरता, चैन, ठंडाई ।  
 शाप तत् ( पु० ) सराप, धिक्कार, अशुभ चिन्तन ।  
 शाम ( स्त्री० ) सन्ध्या, सूर्यास्त का समय ।  
 शामत ( स्त्री० ) बुराई, बुराबी ।  
 शामा ( स्त्री० ) पक्षी विशेष ।  
 शामियाना ( पु० ) चँदोवा, चाँदनी, पञ्चगृह ।  
 शामिल ( वि० ) समुद्र, सम्मिलित ।  
 शामी या शान लगाना या धरना दे० ( वा० ) तेज़  
 करना, चार चढ़ाना ।  
 शामूक तद् ( पु० ) घोंघा, सीप ।  
 शाम्बरी तद् ( स्त्री० ) माया, इन्द्रजाल विद्या ।  
 शामभव तत् ( पु० ) शिवोपासक, शैव ।  
 शायक तत् ( पु० ) विशिष्ट, तीर, बाण ।  
 शायद ( अन्व० ) कदाचित् ।  
 शायर दे० ( पु० ) कवि, कवित्त बनाने वाला ।  
 शायरी दे० ( स्त्री० ) कविता, पद्यमयी रचना ।  
 शायस्ता ( वि० ) सन्ध, शिष्ट, सज्जन ।  
 शायी ( वि० ) शयन करने वाला, सुवैया ।  
 शारंग ( पु० ) पपीहा, मृग, हाथी, भौरा, मोर, धनुष ।  
 शारद् ( वि० ) शरत् सम्बन्धी ।  
 शारदा ( स्त्री० ) सरस्वती, वाग्देवी ।  
 शारदी ( वि० ) शरद् ऋतु का ।  
 शारदोत्सव ( पु० ) शारदी पूर्णिमा का उत्सव ।  
 शारिका तत् ( स्त्री० ) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का  
 कपड़ा ।  
 शारीरक ( वि० ) शरीर सम्बन्धी, व्यास सूत्रों पर  
 भाष्य, आत्मा, जीव ।  
 शार्ग ( वि० ) शर्ग का बना हुआ । ( पु० ) धनुष,  
 पक्षी विशेष ।

शार्दूल तत् ( पु० ) पक्ष विशेष, बाघ, व्याघ्र ।  
 शाल तत् ( पु० ) बाँटा, कील, मस्य, विशेष, वृक्ष  
 विशेष, पर्वत विशेष ।—ग्राम ( पु० ) भगवत्  
 मूर्ति विशेष, जो चण्डकी नदी से निकलती है ।  
 शाला तत् ( स्त्री० ) गृह, मदान, आलय ।  
 शालि तत् ( पु० ) धान, चावल ।—नी ( स्त्री० )  
 छंद विशेष, छेदनेवाली, दुःख देनेवाली ।—वाहन  
 ( पु० ) राजा विशेष ।  
 शाल्मली तत् ( पु० ) वृक्ष विशेष, सेमल का वृक्ष ।  
 शालक ( पु० ) बघा, पशुओं का बघा । [ नाम ।  
 शालर तत् ( पु० ) मन्त्र शास्त्र विशेष, एक पशु का  
 शाश्वत ( वि० ) लगातार, बराबर, सतत, सदैव ।  
 शासन तत् ( पु० ) पालन अपराध का दण्ड ।  
 —पत्र ( पु० ) हुकुमनामा ।—प्रणाली ( स्त्री० )  
 राज्यव्यवस्था, राज्य पद्धति ।  
 शासनीय तत् ( वि० ) शासन करने योग्य, दण्डनीय ।  
 शासित तत् ( वि० ) जिसका शासन किया जाय ।  
 शास्ति तत् ( पु० ) शासन, सीख, शिक्षा, राजाज्ञा ।  
 शास्त्र तत् ( पु० ) नहीं जाने हुए ज्ञान को बताने वाले  
 ग्रन्थ, विद्या ।—ज्ञ ( पु० ) शास्त्र जानने वाला ।  
 शास्त्रार्थ तत् ( पु० ) शास्त्र सम्बन्धी विवाद,  
 शास्त्र चर्चा ।  
 शास्त्री तत् ( पु० ) शास्त्रज्ञ, शास्त्रवेत्ता ।  
 शास्त्रीय तत् ( वि० ) शास्त्र सम्बन्धी, शास्त्र सम्मत ।  
 शाह ( पु० ) बादशाह, स्वामी, प्रभु ।—री ( वि० )  
 शाह सम्बन्धी ।  
 शिकन दे० ( स्त्री० ) बल, सिकुड़न ।  
 शिकस्त ( पु० ) हार, पराजय ।  
 शिकायत ( स्त्री० ) निन्दा, बलहना ।  
 शिन्ध तत् ( पु० ) सिकुड़, सीका ।  
 शिक्क तत् ( पु० ) सिलाने वाला, अध्यापक, विद्या  
 दाता । [ ( पु० ) यत्नीयतनामा ।  
 शिक्ता तत् ( वि० ) सीख, सिलाई,  
 शिक्ती तत् ( पु० ) हुक्म,  
 शिल्पर  
 उपर  
 )

शिल्पा तत् ( स्त्री० ) चेटी, हिन्दू लोग सिर के बीच में कुछ बाल रख छोड़ते हैं जो उनकी धार्मिक दृष्टि में उपयोगी और आचरण्यक वस्तु समझी जाती है। ज्वाला, अग्नि की ज्वाला।—चूड़ ( पु० ) केशपास, जटाजूट,।—बल ( पु० ) मयूर, पची विशेष। [मोर, मयूर, अग्नि, एक पेड़ का नाम।]  
 शिल्पी तत् ( वि० ) शिल्पा विशेष, शिल्पायुक्त। ( पु० )  
 शिल्पित तत् ( वि० ) डोला, झालसी, मन्द, धीमा, अदृढ़।—ता ( स्त्री० ) झालस्य, खोलापन।  
 शिल्पि ( स्त्री० ) सेम, एकलता।  
 शिरः तत् ( पु० ) शिर, मस्तक, भाल, कपास, कपार।—घरा ( पु० ) जिम्मेदार।  
 शिरा तत् ( पु० ) नाड़ी, नल, घमनी।  
 शिरीष ( पु० ) मिरिस का पेड़।  
 शिरोधरा ( स्त्री० ) गर्दन, मोवा।  
 शिरोमण्य तत् ( पु० ) सिर पर धारण करने की वस्तु, सिर का एक आभूषण। ( वि० ) उत्तम, श्रेष्ठ, सब से बड़ा, सर्वोत्तम।  
 शिरोमह तत् ( पु० ) बाल, केश।  
 शिल्पा तत् ( स्त्री० ) सिद्ध, चहान, परयर।—जित शिल्पा रख, शैलज, पर्वतों से उत्पन्न होने वाला द्रव्य विशेष, जो दवा के काम में आता है।  
 शिलीमुख ( पु० ) बाण, तीर, भौंरा।  
 शिलोच्चय ( पु० ) पर्वत, परयर की राशि।  
 शिल्प तत् ( पु० ) कारुण्य, कारिगर, चित्र, व्यवसाय, गुन, हुनर।—कार ( पु० ) शिल्पी, चित्रकार, चित्ता, कारीगर।—शाजा ( स्त्री० ) कारखाना।  
 शिल्पी ( पु० ) कारीगर।  
 शिव तत् ( पु० ) महादेव, मदेश, महल्ल, शुभ, कवपाण।—पुरी ( स्त्री० ) काशी, वाराणसी।  
 —राजी ( स्त्री० ) मत विशेष।—सेनानी ( पु० ) काश्चित्केय।  
 शिवा तत् ( स्त्री० ) पार्वती, दुर्गा, उमा।  
 शिवालय तत् ( पु० ) शिवमन्दिर, शिव का स्थान।  
 शिवाला तत् ( पु० ) शिवालय, शिवमन्दिर।  
 शिवि तत् ( पु० ) राजा उशीनर का पुत्र, ये राजा यमाति के दौहित्र थे।

शिविका तत् ( स्त्री० ) पालकी, डोली।  
 शिविर तत् ( पु० ) छावनी, पड़ाव, सेना सन्निवेश, सेना के रहने का स्थान।  
 शिशिर तत् ( पु० ) शत्रु विशेष, जाड़ा, पाला, हिम, सर्दी, माघ और फागुन इन दो महीनों को शिशिर शत्रु कहते हैं।  
 शिशु तत् ( पु० ) बालक, बाल, बच्चा।—पाल ( पु० ) चेदि देश का राजा, बड़ चेदिराज दमघोष का पुत्र था। यह श्रीकृष्ण की युद्धा का लड़का था, इसके छोटे भाई का नाम दन्तवक्र था। शिशु-पाल की माता सुप्रभा को यह मालूम हो गया था कि शिशुपाल को श्रीकृष्ण मारेंगे। इसलिए उन्होंने श्रीकृष्ण को शिशुपाल को एक सौ अपराध घमा करने के लिये प्रसन्न किया था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उसने श्रीकृष्ण को बड़ी गालियाँ दीं, उसके सौ अपराध पूरे होने के बाद श्रीकृष्ण ने उसे मार डाला।—ता ( स्त्री० ) लड़कई, लड़कपन, चञ्चलता।—मार ( पु० ) सूत, जलजन्तु विशेष, आकाश में ताराओं का समूह विशेष।  
 शिश्र ( पु० ) पुष्पेन्द्रि, लिङ्ग।  
 शिष्ट तत् ( पु० ) सदाचारी, प्रतिष्ठित, भलामानस।  
 —ता ( स्त्री० ) सदाचार, भलमनसी।  
 शिष्ट दे० ( स्त्री० ) नेवता, निमन्त्रण, आदर, सम्मान, शिष्टाचार।—ज्ञाना ( स्त्री० ) फिली नातेदार के बड़ा श्रोत होने पर मातमपुत्री या समवेदना प्रकाशित करने के लिये जाना।  
 शिष्टाचार ( पु० ) सत्कार, शिष्टों का आचार।  
 शिष्य तत् ( पु० ) छात्र, विद्यार्थी, चेला।  
 शोकर तत् ( पु० ) कण, जलकण, फुहार, कुद्दी।  
 शोध तत् ( वि० ) स्वरित, तुल्य, द्रुत, ध्रुव, अद्वि।  
 —गामी ( वि० ) वेगवान्, वेगी, अद्वि चलने वाला।—ता ( स्त्री० ) जड़दी, वेग, उतावली।  
 शीत तत् ( वि० ) ठंडा, सर्द, शीतल, झालसी ( पु० ) जाड़ा, सर्दी, हिम, पाला।—कटियन्त्र ( पु० ) धृतिवी के २३३ श्रेय वृत्त और २३३ ही श्रेय दक्षिण का गू भाग।—कर ( पु० ) ठंडी किरणों वाला, चन्द्रमा।—काल ( पु० ) हेमन्त शत्रु,



भाड़े का दिन।—ज्वर ( पु० ) जुड़ी, यह ज्वर जो जाड़ा खग कर आवे। [शीतगुण, ठंडापन।  
 शीतल तत् ( पु० ) ठंडा, सर्द।—ता ( स्त्री० )  
 शीतलाई या शीतलताई ( स्त्री० ) शीतलता, ठंडाई, ठंडापन।  
 शीतला तत् ( स्त्री० ) देवी विशेष, माता, चेचक।  
 शीतांशु तत् ( पु० ) चन्द्रमा, चन्द्र, सुधांशु।  
 शीताङ्ग तत् ( पु० ) एक रोग विशेष, जिस रोग में आधा शरीर शून्य हो जाता है। अर्द्धाङ्ग, पचा-  
 घात, लकड़ा, रोग।  
 शीतार्त्त तत् ( पु० ) शीतपीड़ित, ठंड से कपिन।  
 शीतोष्ण ( वि० ) गर्म ठंडा, सर्द गर्म, सुख दुःख।  
 शीरा दे० ( पु० ) हलुआ, मोहनभोग, चीनी के पानी में आग पर सूजी गला कर जो बनाया जाता है उसे शीरा कहते हैं।  
 शीर्ण तत् ( वि० ) जीर्ण, पुराना, प्राचीन, पुराना होने से गला हुआ, विरकृत, निकम्मा।  
 शीर्ष तत् ( पु० ) सिर, सिर, माथा, मस्तक।  
 शील तत् ( पु० ) कृति, धान, उत्तम स्वभाव, लम्हा, सम्मान करने वाला स्वभाव।—धान ( वि० ) सुशील, मिलनसार, सम्मान करने वाला।  
 शीघ्र दे० ( पु० ) एक वृक्ष और उसकी लकड़ी।  
 शीघ्रमहल ( पु० ) शीघे का घर।  
 शीशा ( पु० ) कांच, दर्पण, ऐनक।  
 शीशी ( स्त्री० ) शीघे का छोटा पात्र।  
 शीस ( पु० ) माथा, मस्तक, सिर।  
 शुक्र तत् ( पु० ) पक्षी विशेष, तोता, सूआ, सुगा।  
 देव—( पु० ) वेद विभागकर्ता महर्षि कृष्ण हैपायन के पुत्र, इनका उपनयन महादेव ने किया था, देवराज इन्द्र ने इनको कमण्डल और देवासन देकर सम्मानित किया था।—शुक्रदेव ब्रह्मचर्य पूर्वक पिता के निकट मोक्षधर्म का अध्ययन करते थे। भोड़े दिनों के बाद पिता के उपदेश से मोक्षधर्म में अपना सन्देह मिटाने के लिये मिथिला-धिप जनकराज के पास गये। मोक्षधर्म की शिक्षा पूरी करके हिमालय प्रदेश में वे व्यासश्रम में रहने लगे। वहाँ बहुत दिनों तक शिष्य भगवद को उपदेश देते रहे।

शुकाचार्य ( पु० ) देखो शुक्रदेव।  
 शुक्ति तत् ( स्त्री० ) सीप, घोंघा।  
 शुक्र तत् ( पु० ) ब्रह्म विशेष, छठवाँ ब्रह्म, उग्रना-  
 मार्गव, कवि, अपि विशेष, दैत्यगुरु, आग, अग्नि, बल, सामर्थ्य।—चार ( पु० ) छठवाँ दिन।  
 शुकाचार्य तत् ( पु० ) दैत्यगुरु, ये महर्षि भृगु के पुत्र थे। इनके एक कन्या और दो पुत्र थे, कन्या का देवयानी और पुत्रों का नाम पण्ड तथा अमर्क था। देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच ने इन्हींसे मृत-सञ्जीवनी विद्या सीखी थी।  
 शुक्रिया ( स्त्री० ) साधुवाद, धन्यवाद।  
 शुक्ल तत् ( वि० ) श्वेत वर्ण, उजला, धौला, सफेद।  
 —पद्म ( पु० ) सुदी, जिस पत्र में चन्द्रमा बढ़ता है। [ शुद्ध, निर्मल, पूत, स्वच्छ।  
 शुक्ल तत् ( वि० ) श्वेत, श्वेतवर्ण, शुक्र, पवित्र, शुद्धी तत् ( स्त्री० ) औषध विशेष, सोंठ, सूखा हुआ अदरक।  
 शुण्ड तत् ( पु० ) सूँड़, हाथी का कर।  
 शुद्ध तत् ( वि० ) पवित्र, सफा, स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष, दोष रहित।—ता ( स्त्री० ) पवित्रता, निर्दोषपिता, स्वच्छता। [पत्र ( पु० ) सफाईनामा।  
 शुद्धि तत् ( स्त्री० ) पवित्रता, शोधन, सफाई, शुद्धि, शुद्धोदन तत् ( पु० ) कपिल वस्तु के राजा, तथा जगत्प्रसिद्ध बुद्धदेव के पिता।  
 शुनःशेफ तत् ( पु० ) महर्षि अचीक का मकला पुत्र, महाराज अम्बरीष के यज्ञ में ये बलि देने के लिये लाये गये थे। कृपापरवश महर्षि चिरवामित्र ने इनको अग्नि की स्तुति सिखाई थी। इनकी स्तुति से अग्निदेव प्रसन्न हुए और ये भी यज्ञाग्नि से अन्न करीर निकले। तदनन्तर चिरवामित्र ने ही इनको अपना पोष्य पुत्र बना लिया।  
 शुभ तत् ( पु० ) मङ्गल, कल्याण, अच्छा, भला।  
 —चिन्तक ( पु० ) हितचिन्तक, हितकारी।  
 —लभ ( पु० ) उन्हा, सुहृत्, कल्याणकारी समय, मङ्गलमय अवसर। [ प्रद।  
 शुभङ्कर तत् ( वि० ) मङ्गलकारी, कृपाल, कल्याण-  
 शुभाकाङ्क्षी तत् ( वि० ) शुभ चाहने वाला, हित-चिन्तक, हितैषी।

शुभ्र तत् ( वि० ) स्वच्छ, विशद, श्वेत ।  
 शुम्भ तत् ( पु० ) दानवराज, इसके छोटे भाई का नाम निशुम्भ था । चण्डी के हाथों ये मारे गये ।  
 शुरु ( पु० ) आरम्भ, प्रारम्भ, आदि ।  
 शुल्क तत् ( पु० ) किराया, भाड़ा, चुङ्गी, फीस ।  
 शुधूपक तत् ( पु० ) सेवा करने वाला, सेवक, भृत्य, नौकर ।  
 शुधूपा तत् ( स्त्री० ) सुनने की इच्छा, सेवा, टहल ।  
 शुपेण तत् ( पु० ) दानवराज, इनकी कन्या तारा वाली बेटी प्याही थी । इन्होंने शक्तिहत लक्ष्मण का औपधोपचार किया था । [ फडेर ।  
 शुष्क तत् ( वि० ) [ शुष् + क ] सूखा, नीरस,  
 शुकर तत् ( पु० ) सूअर, बर्राह ।—खेत ( पु० )  
 शुकरचैत्र, तीर्थ विशेष । [ की स्त्री ।  
 शुद्ध तत् ( पु० ) चौथा वर्ष ।—नी ( स्त्री० ) शुद्ध  
 शून्य तत् ( वि० ) रिक्त, रीता, जनशून्य, असम्पूर्ण,  
 असमस्त । छूँड़ा, छाली, एकान्त, आकाश ।  
 —ता ( स्त्री० ) छूँड़ापन । —वादी ( पु० )  
 शौद्ध विशेष, नास्तिक ।  
 शूर तत् ( पु० ) वीर, उत्साही, बलवान् ।—ता  
 ( स्त्री० ) वीरता, उत्साह ।—सेन ( पु० )  
 मथुरा के एक राजा का नाम ।—वीर ( वि० )  
 बहादुर ।  
 शूर्प तत् ( पु० ) सूप, छाज, सिरकी का बना एक  
 पात्र जिससे अन्न पड़ोरा जाता है ।—नखा  
 ( स्त्री० ) रावण की बहिन जिसकी माक लक्ष्मण  
 ने काटी थी । [ का कौटा ।  
 शूल तत् ( पु० ) अश्व विशेष, लोहे का एक प्रकार  
 शूली ( पु० ) दीप ( वि० ) शूलरोगवाला ।  
 शुगाल तत् ( पु० ) सियाल, गोदह ।  
 शुद्धला तत् ( स्त्री० ) साँफल, सिकरी ।  
 शुद्धलित तत् ( वि० ) साँफल के समान नया हुआ,  
 एक दूसरे से लगाया हुआ ।  
 शुद्ध तत् ( पु० ) सींग, विषाण ।—चेर ( पु० )  
 नगर विशेष, आदी, अदरख ।  
 शुद्धार तत् ( पु० ) सजावट, शोभा शोभा के  
 लिये शरीर का परिष्कार और भूषण आदि  
 पहनना । रस विशेष, प्रथम रस, शुद्धार रस

में रति स्थायी भाव है नायक और नायिका  
 आलम्बन हैं ।  
 शृङ्गरी तत् ( वि० ) सींग वाला, शृङ्ग विशिष्ट । ( पु० )  
 श्रुति विशेष, ये लोमश श्रुति के चले थे । इन्होंने  
 राजा परीक्षित को साँप काटने का शाप दिया था ।  
 शेखचिल्ली ( पु० ) प्रसिद्ध मसखरा ।  
 शेखर तत् ( पु० ) फूलों की माला जो मुकुट पर  
 धारण की जाती है । भूषण विशेष । हिन्दी के एक  
 कवि का नाम । सिर, मस्तक, कपाल ।  
 शेखी ( स्त्री० ) अभिमान, धमएड ।  
 शेर ( पु० ) चरघ, बाघ ( स्त्री० ) शेरिनो ।  
 शैल तत् ( पु० ) बर्बा, भाला, अस्त्र विशेष ।  
 शैलु ( पु० ) मंथी का साग ।  
 शेष तत् ( वि० ) अवशिष्ट, बचा हुआ, श्रन्त, सीमा ।  
 ( पु० ) सर्प, साँप, नाग ।—शायी ( पु० )  
 विष्णु, नातराय । [ युद्धापा ।  
 शेषायास्या तत् ( स्त्री० ) दृढावस्था, श्रन्त की दशा,  
 शैतान ( पु० ) धर्मकर्म विरोधी, अहुर ।  
 शैत्य तत् ( पु० ) शीतलता, ठंडा, सर्दी ।  
 शैथिल्य तत् ( पु० ) शिथिलता, आलस्य, ढिलाई ।  
 शैल तत् ( पु० ) पहाड़, पर्वत ।—राज ( पु० )  
 हिमालय, हिमाचल । [ भिन्न, मील ।  
 शैलाट तत् ( पु० ) [ शैल + अट ] सिंह, फिरात,  
 शैली ( स्त्री० ) रीति, भौति प्रकार ।  
 शैव तत् ( पु० ) शिवभक्त, शिवोपासक, एक साम्प्र-  
 दाय विशेष ।  
 शैवाल तत् ( पु० ) सेवाल, जलमल, जम्बाल, सिवार ।  
 शैवी ( स्त्री० ) पार्वती ( वि० ) शिवोपासक,  
 शैव ।  
 शैव्या तत् ( स्त्री० ) महाराज हरिश्चन्द्र की रानी,  
 महर्षि विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र की धर्मवृद्धि,  
 आत्मत्याग, कष्ट सहिष्णुता आदि की प्रशंसा के  
 लिये इन्हें बड़ा कष्ट पहुँचाया था । उस समय  
 महारानी शैव्या एक ब्राह्मण के हाथ पिकी थीं ।  
 ऐसे कष्ट के समय उनका पुत्र साँप के काटने से  
 मर गया । मृतपुत्र का शय स्मरण में  
 शैव्या रो रही थी, इसी स्मरण में  
 चन्द्र दाम का काम करते थे ।

पर प्रसन्न हुए, मृतपुत्र पुनः जीवित हुआ और उन लोगों को उनका राज्य मिल गया।

शैशव ( पु० ) बालकपन, शिशुता, लड़कपन।

शोक तत् ( पु० ) शोच, चिन्ता, दुःख, खेद परचात्ताप, पछतावा।

शोकाकुल तत् ( वि० ) शोकयुक्त, शोकपीडित।

शोकार्त्त तत् ( वि० ) शोकाकुल, शोकयुक्त।

शोकापह तत् ( वि० ) शोकनाशक, दुःखनाशक।

शोख ( वि० ) ढीठ, अभिमानी।—( स्त्री० ) धृष्टता, अभिमान।

शोच ( पु० ) चिन्ता, दुःख, विचार ( क्रि० ) शोचना।

शोण तत् ( पु० ) अतसी, रक्त, लालवर्ण, नद विशेष।

शोणित तत् ( पु० ) लोह, रुधिर, रक्त।

शोध तत् ( पु० ) सृजन।

शोध तत् ( पु० ) खोज, अनुसन्धान, शुद्धि, श्रयण को चुकाना, बदला। [ पवित्र करण।

शोधन तत् ( पु० ) स्वच्छ करना, निर्मल करना,

शोधनी तत् ( स्त्री० ) सुहारी, वदनी।

शोधा ( वि० ) शूद्र किया हुआ, डूँड़ा गया।

शोभन तत् ( वि० ) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, भला।

शोभा तत् ( स्त्री० ) कान्ति, दोसि, सुन्दरता, झुवि, मनोहरता।—यमान ( वि० ) सुन्दर मनोहर।

शोभित तत् ( पु० ) विभूषित, शोभायमान, अलंकृत सजा हुआ।

शोर ( पु० ) कोलाहल, गुलगुप्पा।

शोरा ( पु० ) द्रव्यविशेष। [ बनाये जाते हैं, अंगारा।

शोला ( पु० ) घृष्ट विशेष, जिसकी छाल के वस्त्र

शोहदा वे ( वि० ) विलासी, लुछा, लंपट, झैला।

शोपक तत् ( वि० ) शोषण करने वाला, रसापकर्षक, रस खींचने वाला, चूसने वाला।

शोषण तत् ( पु० ) सोखना, चूसना, सुखाव।

शौक्तिक ( पु० ) मोती, सीप, युक्ति से उत्पन्न।

शौच तत् ( पु० ) शुचिता, पवित्रता, सुन्दरता, स्नान, स्वच्छता।

शौचिडक तत् ( पु० ) कलवार, शराब प्येचने वाला।

शौनक तत् ( पु० ) एक तपोव्रत सम्पन्न ऋषि, इन्होंने नैमिषारण्य में द्वादश वर्ष में समाप्त होने वाले एक यज्ञ का अनुष्ठान किया था।

शौरि ( पु० ) श्रीकृष्ण।

शैर्य तत् ( पु० ) श्रुता, सामर्थ्य, शक्ति।

श्मशान तत् ( पु० ) मुर्दाघाट, मरघट, नदी, तालाब या नगर के बाहर का वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं।

श्मश्रु तत् ( पु० ) मूँछ, मोछ।

श्याम तत् ( वि० ) काला, कृष्णवर्ण।—कण ( पु० ) अश्व विशेष।—ता ( स्त्री० ) कालापन, सौंवालापन।—सुन्दर ( पु० ) श्रीकृष्ण।

श्यामल तत् ( वि० ) कृष्णवर्ण विशिष्ट, काला।

श्यामा तत् ( स्त्री० ) युवती, यौवन प्राप्ता स्त्री, सोलह वर्ष की स्त्री, पत्नी विशेष, देवी विशेष।

श्यामाक तत् ( पु० ) साँव, धान्य विशेष।

श्यालक तत् ( पु० ) साला, स्त्री का भाई, पत्नी का भ्राता।

श्याला ( पु० ) साला, पत्नी का भाई।

श्येन तत् ( पु० ) पत्नी विशेष, बाज पत्नी।

श्रद्धा तत् ( स्त्री० ) आदर, प्रेम, सम्मान, गुरु, पिता आदि माननीय व्यक्ति विषयक प्रेम।—लु ( वि० ) श्रद्धायुक्त, श्रद्धावान्।

श्रद्धेय तत् ( वि० ) श्रद्धा करने योग्य, पूज्य, मान्य।

श्रम तत् ( पु० ) परिश्रम, मिहनत, उद्योग।—

जीवी ( पु० ) कुली, मजूर, किसान।—कण ( पु० ) पसीना।

श्रमित तत् ( वि० ) श्रान्त, थका हुआ, थका, मौँदा।

श्रमी तत् ( वि० ) परिश्रम, करने वाला, उद्योगी, उत्साह पूर्वक प्रयत्न करने वाला।

श्रवण तत् ( पु० ) कान, कर्ण, कर्णेंद्रिय। ( स्त्री० ) नक्षत्र विशेष, एक नक्षत्र का नाम, चार्दसवौ नक्षत्र।

श्राद्ध तत् ( पु० ) श्रद्धा पूर्वक किया हुआ कर्म, पितरों की कृति के लिये तर्पण, पिण्ड दानादि।

—देव ( पु० ) यमराज, धर्मराज, ब्राह्मण।—पक्ष ( पु० ) आरिखन का कृष्णपक्ष।

श्रान्त तत् ( वि० ) श्रमित, थका हुआ, थकित।

श्रान्ति तत् ( स्त्री० ) श्रम, थकावट, परिश्रम जन्य थकसाद, शरीर की थिलथिला।

श्रावक ( पु० ) जैन गृहस्थ, सरावगी।

श्रावण तत् ( पु० ) मास विशेष, पाँचवाँ महीना ।  
श्रावणी तत् ( स्त्री० ) श्रावण की पूर्णिमा ।—कर्म  
तत् ( पु० ) उपाकर्म, श्रावण की पूर्णिमा को  
किये जाने वाले कर्म ।

श्री तत् ( स्त्री० ) सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, विभव,  
शोभा, कान्ति, श्रुति, छवि, लक्ष्मी, इन्दिरा,  
विष्णुपत्नी, रौरी, कुङ्कुम, लौंग, बाण्नी ।—खण्ड  
( पु० ) चन्दन, हरिचन्दन ।—चक्र ( पु० ) देवी की  
पूजा का यन्त्र विशेष ।—चूर्या तत् ( स्त्री० ) रौरी,  
कुङ्कुम ।—धराधार्य ( पु० ) भागवत के विष्णुवत  
रीकाकार पण्डित विशेष ।—नगर ( पु० ) कारमीर  
राज्य की राजधानी ।—निवास ( पु० ) विष्णु,  
नारायण, वेङ्कटेशजी का नाम । ( वि० ) धनी ।—पति  
( पु० ) लक्ष्मीपति, नारायण, विष्णु भगवान् ।—  
फल ( पु० ) विरवफल, नारियल, नारिकेल ।—  
मत् ( वि० ) धनधान, धनी, लक्ष्मीपात्र ।—युक्त  
( पु० ) धनी, कीर्तिमान्, यशस्वी ।—युत ( पु० )  
भागवान्, लक्ष्मीपात्र, धनी ।—यत्स ( पु० )  
विष्णु भगवान् के वसःस्थल का चिन्ह ।—हत  
( वि० ) शोभाहीन, निम्न ।—हट्ट ( पु० ) वाका  
के पूर्व एक नगर का नाम, सिलहट्ट ।—हर्ष ( पु० )  
महाराज भादिसर में जो कान्यकुब्ज से पाँच ब्राह्मण  
बुलवाये थे उनमें एक धीहर्ष भी थे । इन्हीं के  
वंशज मुञ्चोपाध्याय कहे जाते थे । इनका समय  
१००० ई० सन् अनुमान किया जाता है । इनके  
पिता का नाम धीहरी था । नैपथीय चरित नामक  
काव्य इन्होंने बनाया है । जो संस्कृत साहित्य का  
चमकता हुआ एक रत्न है । इसके अतिरिक्त गोडो-  
र्षीयकुलप्रशस्ति, अर्थववर्णन काव्य नवसाहस्राङ्क-  
चरित, खण्डन खण्डसाध भादि, बहुत ग्रन्थ इन्होंने  
बनाये हैं । पान्थ इनमें खण्डन खण्डसाध के अति-  
रिक्त दूसरे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते । ये विद्या  
बुद्धि में अतुलनीय थे । इन्होंने नैपथीयचरित में  
अपनी जिस अद्भुत कवित्वशक्ति का परिचय दिया  
है वह अमोली है ।

श्रुत तत् ( पु० ) सुना हुआ, कर्णगत, कर्णप्राप्त,  
कर्णोत्तर ।—कीर्ति ( स्त्री० ) शत्रुघ्न की स्त्री, यह  
कुरावज जनक की कन्या थी, इसके दो पुत्र थे,

एक का नाम सुबाहु और दूसरे का नाम  
शत्रुघाती था ।

श्रुति तत् ( स्त्री० ) कान, कर्ण, वेद ।  
श्रवा ( पु० ) यज्ञीय पात्र विशेष ।  
श्रेष्ठी तत् ( स्त्री० ) पंक्ति, पति, खकीर, कतार ।  
श्रेयः तत् ( पु० ) मन्त्र, कल्याण, शुभ ।  
श्रेष्ठ तत् ( वि० ) प्रधान, बड़ा, माननीय ।—ता ( स्त्री० )  
प्रधानता, बलमता ।  
श्रोतव्य तत् ( वि० ) श्रवणीय, सुनने योग्य, अच्छे  
उपदेश ।  
श्रोता तत् ( पु० ) सुनने वाला, सुनवैया ।  
श्रोत्र तत् ( पु० ) कान, कर्ण, श्रवणेन्द्रिय, श्रवण ।  
श्रोत्रिय तत् ( पु० ) वेदज्ञ, वेदपाठी ।  
श्लाघा तत् ( स्त्री० ) स्तुति, प्रशंसा । [ के योग्य ।  
श्लाघ्य तत् ( वि० ) प्रशंसनीय, धर्नीय, श्लाघा  
श्लेष तत् ( पु० ) आलिङ्गन, संयोग, अलङ्कार विशेष,  
इसके समझ और अलङ्कार दो भेद होते हैं । यथा—  
एक वदन में होत नहीं, बहु अर्थन को ज्ञान ।  
श्लेष कहत हैं ताहि दो, भूपन सकल सुज्ञान ॥  
—शिवराज भूपत्य ।

श्लेष्मा तत् ( पु० ) कफ, खलार, शरीर, सम्प्रन्धी,  
त्रिविध विकारों में एक प्रकार का विकार ।  
श्लोक तत् ( पु० ) कीर्ति यय, कीर्तिमान, यय, ध्वन्द्व,  
ध्वन्द्व विशेष, यनुदुप वृत्त ।  
श्वपच ( पु० ) श्वर, चायडाल ।  
श्वसुर तत् ( पु० ) पति या पत्नी के पिता, पति का  
पिता, पत्नी का पिता ।  
श्वधू तत् ( स्त्री० ) सास, पति या पत्नी की माता,  
श्वसुर की स्त्री ।  
श्वसन ( पु० ) श्वा, वायु, पवन ।  
श्वान तत् ( पु० ) कुत्ता, कुत्ता ।  
श्वास तत् ( पु० ) प्राण, दम, भाणवायु, साँस ।  
श्वज तत् ( पु० ) रोग विशेष, श्वेत कृष्ट, सफेद  
कोढ़ ।

श्वेत ( पु० ) सफेद, शैल, शुक्ल ।—केतु ( पु० )  
अपि विशेष ।—ता ( स्त्री० ) सफेदी ।—  
सर्प ( स्त्री० ) पीली सर्पों । उज्ज्वल, शुक्ल,  
शुक्लवर्ण, धवल ।—क्षीप ( पु० ) वैकुण्ठ की

विशेष, एक देश का नाम, इसी द्वीप में नर नारायण तपस्या करते थे। महर्षि कपिल का भी तपस्थान यही है।

श्वेता. (स्त्री०) दूध, घास, तृण। [लक के पुत्र थे। श्वेतकि तत् ( पु० ) अपि विशेष, ये महर्षि उद्गा- श्वेतिका ( स्त्री० ) सौंफ।

ष

संभोजन का इकतीसवाँ वर्ण, यह वर्ण मूर्धन्य है। क्योंकि इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।  
पट् तद् ( वि० ) संख्या विशेष छः ६।—ऊर्मि ( स्त्री० ) छः प्रकार की तरङ्गें, वे ये हैं—प्राण और मन की भ्रूज, व्यास, शोक तथा मोह और शरीर सम्यन्धी जरा तथा सृष्टि ये ही षट्ऊर्मियाँ हैं। इसी बात को एक संस्कृत पण्डित कहता है, यथा।—  
“बुभुक्षुच पिपासाच प्राणस्य मनसः स्मृतौ।  
शोक मोहौ शरीस्य जरासृष्ट्युपहर्मयः॥”  
—कर्म ( पु० ) छः प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं यथा—अभ्यसन, अध्ययन, यजन, याजन दान और प्रतिग्रह।—कौण ( पु० ) छकोना छः कोण का जेत आदि।—चक्र ( पु० ) शरीरस्थ छः चक्र उनके नाम हैं। आचार, स्वाधिष्ठान, मणियूह, अतहत, विष्टुद्धि, मन्त्र।—पद ( पु० ) अमर, भौता।—पदी ( स्त्री० ) छप्पय छन्द, छन्द विशेष।—प्रयोग ( पु० ) तन्त्र सम्यन्धी छः प्रयोग, शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विमेषण, उच्चाटन और मारण।—रस भोजन ( पु० ) पट्संयुक्त भोजन।—वदन ( पु० ) कार्तिकेय, देव सेनापति।—वर्ण ( पु० ) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।—शास्त्र ( पु० ) पट्दर्शन, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातञ्जल।

पङ्क्त तत् ( पु० ) [ पट् + अङ् ] वेद के छः अङ्ग शिखा कल्प, व्याकरण, ज्योतिः, छन्द, निरुक्त। हाथ पैर आदि शरीर के अङ्ग।  
पङ्कजि तत् ( पु० ) अमर, भौता।  
पङ्कविधि तत् ( पु० ) छः प्रकार, छः भौति।  
पङ्कानन ( पु० ) कार्तिकेय, देवसेनानी।  
पङ्कतु ( पु० ) [ छः + क्तु ] वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।  
पङ्कदर्शन ( पु० ) देखो पट्शास्त्र।  
पङ्क तत् ( पु० ) सौंफ, बैल, समूह।  
पङ्क तत् ( पु० ) नपुंसक, हिजड़ा।  
पण्टि तत् ( वि० ) संख्या विशेष, ६०।  
पण्ट तत् ( वि० ) छठवाँ, छः को पूर्ण करने वाली संख्या।—ने ( स्त्री० ) तिथि विशेष, कारक विशेष।  
पण्टम् तत् ( पु० ) छठवाँ, छठा।  
पौडश तत् ( वि० ) सोलह, १६।—दान ( पु० ) दान विशेष।—भुजा ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी।—संस्कार ( पु० ) कर्म विशेष, सोलह प्रकार के संस्कार। यथा गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जात-कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूषा-कर्ण, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदास्त्र, समावर्तन, विवाह, द्विरागमन, स्नान, औष्यदेहिक।  
पौडशी ( स्त्री० ) आद विशेष।

स

संभोजन का बीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है, अतएव यह वर्ण दन्त्य है।  
सं तद् ( अ० ) सम, साथ, सङ्ग, सहित।  
संस्कार तद् ( पु० ) शिव, महादेव, रामायण में यह शब्द इस रूप में प्रसिद्ध है।  
संकुल तद् ( वि० ) अग-हुया, पूरा, पूर्ण, समस्त।

संक्रम तत् ( पु० ) सञ्चर, एक स्थान स्थान पूर्वक अन्यत्र गमन, जाना, एक वस्तु का गुण दूसरी वस्तु पर जाना।  
संक्रान्त तत् ( वि० ) सम्यन्धी, विषयक, प्रतिविम्बित।  
संक्रान्ति तत् ( स्त्री० ) सूर्य का एक राशि पर से दूसरी राशि पर जाना। [ उदना।  
संक्रामक तत् ( वि० ) फैलने वाला, छुआछूटी,

संज्ञितं तत्त्वं ( गु० ) [ सं + विप् + क ] न्यून, खल्व,  
 घोड़ा, घटाना, कम किया हुआ ।  
 संज्ञेय तत्त्वं ( पु० ) [ सं + विप् + घञ् ] न्यूनता,  
 भ्रष्टता, सारभाव ।  
 संख्या ( स्त्री० ) एक प्रकार का विप ।  
 संख्या तद् ( स्त्री० ) गणना, गिनती, संकलन ।  
 संग तत्त्वं ( पु० ) साथ, सहबल ।  
 संगत तत्त्वं ( स्त्री० ) सङ्गति, साथ, मित्रता, सिक्कों  
 का धर्ममन्दिर । [ का स्थान ।  
 संगम तत्त्वं ( पु० ) मेल मिलाप, नदियों के मिलने  
 संग्रह तद् ( पु० ) एकत्रीकरण, सञ्चय, बटोरना ।  
 संग्राम तद् ( पु० ) युद्ध, समर, रण लड़ाई जंग ।  
 संचना दे० ( क्रि० ) सञ्चय करना, संग्रह करना,  
 पत्रित करना, बटोरना ।  
 संज्ञा तत्त्वं ( स्त्री० ) नाम, आख्या, अभिधान, नाम-  
 धेय, बुद्धि, चेतनता, गायत्री, सूर्य की स्त्री और  
 विश्वकर्मा की कन्या का नाम ।  
 संज्ञाना ( क्रि० ) सजाना, यथाक्रम रखना ।  
 संज्ञोपन दे० ( क्रि० ) संयोजन करना, संयुक्त करना ।  
 संज्ञोपा दे० ( वि० ) परोसा, सजाया ।  
 संन्यासी तद् ( पु० ) चतुर्थाश्रमी, योगी, यती ।  
 संपत् तत्त्वं ( स्त्री० ) सम्पद्, धन, पेशवर्ग, विभव ।  
 संमलना दे० ( क्रि० ) सहायता पाकर संचना, धनना,  
 पकड़ना, पचना, उभरना, उद्धार पाना ।  
 संमालना दे० ( क्रि० ) सहायता देकर पचाना,  
 सहारा देना, उभारना, पचाना ।  
 संयम तत्त्वं ( पु० ) नेम, नियम, प्रवृत्ति, इन्द्रिय निग्रह,  
 इन्द्रियों को अपने वश में करना ।  
 संयमिनी ( स्त्री० ) यमपुरी ।—पति ( पु० ) यमराज ।  
 संयमी तत्त्वं ( पु० ) सुनि, योगी, यती, वही, जिसने  
 योग किया द्वारा अपनी इन्द्रियों को वश कर  
 लिया है । [ हुआ ।  
 संयुक्त तत्त्वं ( वि० ) सम्बन्धयुक्त, मिळा हुआ, सटा  
 संयुक्ता दे० ( स्त्री० ) पृथ्वीराज की रानी और कबीर  
 के राधा जयचन्द्र की कन्या । इनका ११०० ई०  
 में जन्म हुआ था । ११६० ई० में पृथ्वीराज ने  
 इनको प्याहा और ११६३ ई० में युद्धमद गोरी  
 के साथ युद्ध में पृथ्वीराज के पराजित और शत्रु

के हाथ बन्दी होने पर संयुक्ता ने देह त्याग किया  
 था । इन्होंने युद्ध में जाने के लिये वधत अपने  
 पति को युद्ध सामग्री से सजाया था ।  
 संयुग तत्त्वं ( पु० ) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई ।  
 संयुत तत्त्वं ( वि० ) संयोग प्राप्त, मिलित, मिळा  
 हुआ, जुड़ा हुआ ।  
 संयोग तत्त्वं ( पु० ) मेल मिलाप, सम्बन्धी विशेष ।  
 संयोजित तद् ( वि० ) मिळाया गया, कृत संयोग ।  
 संरम्भ तत्त्वं ( पु० ) कोप, क्रोध, मानसिक आवेग,  
 आक्रोश । [ सेवा करना, विस्तार करना ।  
 संराधन तत्त्वं ( पु० ) सेवा करना, सप प्रकार की  
 संराध तत्त्वं ( पु० ) ध्वनि, शब्द, पक्षियों का शब्द ।  
 संलग्न तत्त्वं ( पु० ) संयुक्त, योग प्राप्त, मिळा हुआ,  
 घटित ।  
 संज्ञाप तत्त्वं ( पु० ) सम्भाषण, आवाप, परस्पर  
 कहना ।  
 संवत् तत्त्वं ( पु० ) संवत्सर, वर्ष, वरस, हाथन,  
 सन् ।—सर ( पु० ) वर्ष, संवत्, वरस ।  
 संवत्सरी ( स्त्री० ) संवत् का व्यवहार ।  
 संवरण तत्त्वं ( पु० ) आवरण, आच्छादन, ढँकना ।  
 संवरना दे० ( क्रि० ) सजना, शोभित होना ।  
 संवर्त ( पु० ) ऋषि विशेष ।  
 संवाद तत्त्वं ( पु० ) समाचार, बातचीत, चर्चा ।  
 संवारना दे० ( क्रि० ) सजाना, शृङ्गार करना ।  
 संशय तत्त्वं ( पु० ) सन्देह, सप, शिन्ता ।  
 संशयात्मा ( पु० ) शक्ती, सन्देहयुक्त डाँवाबोल ।  
 संशयापन्न तत्त्वं ( वि० ) सन्देहयुक्त, सन्देही, भ्रान्त,  
 भ्रम पूर्ण ।  
 संशोधन तत्त्वं ( पु० ) परिष्करण, मार्जन, संशुद्धि ।  
 संशक्त तत्त्वं ( वि० ) मिळा, समीप, आसक्त ।  
 संसरण तत्त्वं ( वि० ) उपजाऊ, वर्धन ।  
 संसर्ग तत्त्वं ( पु० ) सम्बन्ध, संगत, मैत्री ।  
 संसर्गा तत्त्वं ( पु० ) सम्बन्धी, मेल ।  
 संसार तत्त्वं ( पु० ) जगत्, जग, यमनागमन स्थान ।  
 संसारी तत्त्वं ( वि० ) संसार का, कौटुम्बिक, संसार  
 सम्बन्धी ।  
 संसृति तत्त्वं ( स्त्री० ) विघ्न, संसार,  
 आवागमन ।

संस्कार तत् ( पु० ) मलीनता निराकरण, दोष हटाना, मल दूर करना, शोधन करना, सफाई, शुद्धता, द्विजातियों के लिये कर्म विशेष ।

संस्कृत तत् ( वि० ) संस्कारित, संस्कार किया हुआ, परिष्कृत । ( पु० ) देवमार्ग, हिन्दुस्तान की पुरानी राष्ट्र भाषा, देववाणी । [ हंग, रूप, सङ्गठन ।

संस्थान तत् ( पु० ) विन्यास, बनावट, बनाने का संस्थापक ( पु० ) स्थापन कर्ता, प्रतिष्ठा करने वाला प्रवर्तक ।

संस्पर्श तत् ( पु० ) स्पर्श, छुट । [ टङ् ।

संहत तत् ( वि० ) मिला हुआ, मिश्रित, ठोस, बली,

संहति तत् ( स्त्री० ) समूह, ढेर, योक, अधिकता ।

संहार तत् ( पु० ) नाश, विनाश, प्रलय, नरक, विशेष, एक भैरव का नाम ।

संहारना दे० ( क्रि० ) नाश करना, मार डालना ।

संहिता तत् ( स्त्री० ) कवि प्रणीत ग्रन्थ ।

सई दे० ( स्त्री० ) एक नदी का नाम ।

सकत तत् ( स्त्री० ) शक्ति, बल, सामर्थ्य, कड़ा, कठोर । [ बडाना ।

सकना दे० ( क्रि० ) समर्थ होना, वयुक्त होना,

सकरा दे० ( वि० ) सकेत, सङ्कीर्ण, छोटा, संग ।

सकराई ( स्त्री० ) सङ्कीर्णता ।

सकारना दे० ( क्रि० ) सङ्कारण करना, सकेत करना, छोटा बनाना ।

सकर्मक तत् ( पु० ) जिस क्रिया के कर्म हो, कर्म युक्त क्रिया, जैसे पीना, खाना, देखना ।

सकल तत् ( वि० ) समस्त, भय, सम्पूर्ण ।

सकाना दे० ( क्रि० ) शक्ति होना, डरना, भय करना, श्रास पाना ।

सकाम तत् ( वि० ) कामना सहित किया गया कर्म, थपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये कृतकर्म । ( वि० ) कामना सहित, सफल, फलवान् । [ अर्पण करना ।

सकारना दे० ( क्रि० ) स्वीकार करना, मुगलान करना,

सकारि दे० ( ध० ) प्रातःकाल, प्रभात, सबेरे, प्रातःकाल, यथाः—

सजन सकारे जाँयगे, नैन मरेंगे रोइ ।

विधना ऐसी रैन कर, ओर कमउ न होइ ॥

सकाल तत् ( पु० ) प्रातःकाल, प्रभात, सबेरा ।

सकिलना ( क्रि० ) हटना, समिटना, सुकड़ कर बैठना ।

सकुच दे० ( स्त्री० ) लाज, सङ्कोच, डर, भय, श्रास ।

सकुचना दे० ( क्रि० ) सङ्कोच करना, लाजाना, शर्माना ।

सकुचा दे० ( वि० ) सकेत, सङ्कीर्ण ।

सकु दे० ( पु० ) सतुआ, सतू ।

सकृत् तत् ( ध० ) एक बार । [ भस्व ।

सकेत तत् ( वि० ) सकरा, छोटा, सङ्कीर्ण, सङ्कुचित,

सकेतना दे० ( क्रि० ) सकेत करना, छोटा करना,

समेटना, एकत्र करना । [ सह-डालना ।

सकेलना दे० ( क्रि० ) समेटना, बटोरना, सहिमाना,

सकेला दे० ( वि० ) एक प्रकार का जोड़ा । ( वि० )

सकेले वाला, समेटने वाला ।

सकोच तत् ( पु० ) सङ्कोच, सहम ।— ( वि० )

छजीला, सङ्कोची । [ बटोरना ।

सकोइना दे० ( क्रि० ) सङ्कोच करना, सकेलना,

सकोरा दे० ( पु० ) मिट्टी का प्याखा । [ सरैया ।

सकोरी दे० ( स्त्री० ) धाकी, मिट्टी की परई,

सखरा ( वि० ) कधी रसाई ।

सखरी दे० ( वि० ) कच्ची, निखरी की बरदी ।

—सोई ( स्त्री० ) रोटी, दाढ़, मात आदि की

रसाई जो चौके के भीतर ही खायी जा सके ।

सखा तत् ( पु० ) मित्र, बन्धु, साथी, सखी ।

सखी तत् ( स्त्री० ) सहेली, संगिनी, बयस्या, धाकी ।

सख्य तत् ( पु० ) मित्रता, बन्धुत्व, दोस्ती ।

सगढ़ तत् ( पु० ) एकद, छकड़ा, एक प्रकार की गाढ़ी

जिसे चैल खींचते हैं । [ माग डाक कर बनाते हैं ।

सगपहता दे० ( पु० ) एक प्रकार की दाढ़, जिसे

सगर ( पु० ) अयोध्या के एक राजा विशेष ।

सगा दे० ( वि० ) स्वजन, सम्बन्धी, नतैत ।

सगाई दे० ( स्त्री० ) सम्बन्ध, नाता, मंगनी ।

सगुण, या सगुन तत् ( वि० ) गुण सहित, गुण विशिष्ट, गुणयुक्त ।

सगरे ( वि० ) समस्त, सब ।

सगोती तत् ( वि० ) सगोत्री, एक कुल का, भाई

बन्धु, मांस पदार्थ विशेष ।

( पु० ) गोत्रवाला,

गण ।

सघन तत्त्वं ( वि० ) घना, सान्द्र, निविड, मिठा हुआ, खूब सटा हुआ ।  
 सङ्कट तत्त्वं ( पु० ) विपत्ति, दुःख, कष्ट, आपद् ।  
 सङ्कटा ( स्त्री० ) योगिनी, यथाशौं में से एक दशा का नाम, देवी विरोप ।  
 सङ्कर तत्त्वं ( पु० ) वर्णसंभूत, दोगला, दो जाति के माता पिता से उत्पन्न । ( रामायण में ) शिव, महादेव । ( वि० ) मिठा हुआ ।  
 सङ्कर्षण तत्त्वं ( पु० ) बलदेव, श्रीकृष्ण के चचे भाई, ये देवकी के गर्भ से निकाल कर रोहिणी के गर्भ में लाये गये थे, अतएव इनका नाम सङ्कर्षण हुआ था ।  
 सङ्कल तत्त्वं ( पु० ) राशि, ढेर ।  
 सङ्कलन तत्त्वं ( पु० ) जोड़, जोड़नी ।  
 सङ्कल्प तत्त्वं ( पु० ) मानसिक कर्म, इच्छा, चाह, धमिलाप ।—प्रभव ( वि० ) सङ्कल्प से उत्पन्न, सङ्कल्प योनी, सङ्कल्पज ।  
 सङ्कल्पना दे० ( कि० ) दान देना, नियम करना, किसी काम के लिये प्रतिज्ञा करना ।  
 सङ्कीर्ण तत्त्वं ( वि० ) घन, सघन, निविड, सकरा, सकेत ।—ता ( स्त्री० ) कौताही, घाँरी ।  
 सङ्कीर्तन तत्त्वं ( पु० ) गुणगान, बखान, भजन ।  
 सङ्कुचित तत्त्वं ( पु० ) सकुचा, सुरक्षा, लज्जित ।  
 सङ्कलन तत्त्वं ( पु० ) भीड़, बहुत मनुष्यों का एकत्रित होना ।  
 सङ्केत तत्त्वं ( पु० ) सैन, इशारा, इङ्गित ।  
 सङ्काय तत्त्वं ( पु० ) लाज, लज्जा, शिष्ट, सहम ।  
 सङ्ग तत्त्वं ( पु० ) साथ, संगोग, मेल ।  
 सङ्गत तत्त्वं ( वि० ) संलग्न, मिठा हुआ, यथा योग्य, वचित, साथी, मैत्री, मित्र ।  
 सङ्गति तत्त्वं ( स्त्री० ) मेल, साथ, सङ्ग, मैत्री, शोस्ती ।  
 सङ्गम तत्त्वं ( पु० ) सेंट, प्रेमपूर्वक मिश्रण, नदियों के मिलने का स्थान ।  
 सङ्गमी, या संगमी दे० ( स्त्री० ) सँडासी, सडसी ।  
 सङ्गर तत्त्वं ( पु० ) युद्ध, संग्राम, लड़ाई, समर ।  
 सङ्गीत तत्त्वं ( वि० ) साथी, सङ्ग वाला, दोस्त, मित्र ।  
 सङ्गीत तत्त्वं ( पु० ) गाने की विद्या । [ठकाव, लुकाव ।  
 सङ्गोपन तत्त्वं ( पु० ) मन्त्री प्रकार से छिपाव, गोपन,

सङ्ग तत्त्वं ( पु० ) समूह, कुण्ड ।  
 सङ्कर्ष ( पु० ) रगड़, देखादेखी स्पर्धा, ईर्ष्या ।  
 सङ्कार ( पु० ) संहार, नाश ।  
 सच दे० ( वि० ) सत्य, सच, हाँ, ठीक ।—मुच ( श्र० ) ठीक ठीक, बिल्कुल सत्य, निःसन्देह सत्य ।  
 सचराचर तत्त्वं ( पु० ) समस्त जगत्, जीव, जड़, अन्तु आदि ।  
 सचाई दे० ( स्त्री० ) सत्यता, सजावट ।  
 सचिव तत्त्वं ( पु० ) मन्त्री, प्रमाथ, दीवान, सलाहकार, सलाह देने वाला ।  
 सचेत तत्त्वं ( वि० ) चौकस, चौकन्ना, सावधान ।—न ( वि० ) ज्ञानवान्, बुद्धियुक्त, जीव, प्राणी ।  
 सचेष्ट तत्त्वं ( वि० ) चेष्टा युक्त, बद्योगी, यत्नवान्, यत्नी ।  
 सचौरी दे० ( स्त्री० ) सचाई, सगपता, सजावट ।  
 सथा दे० ( वि० ) सत्य, सत्यवादी, ठीक, यथार्थ, उत्तम । [ श्वर ।  
 सच्चिदानन्द तत्त्वं ( पु० ) परब्रह्म, परमात्मा, परमे-  
 सज दे० ( स्त्री० ) बौद्ध, बव, सिंगर, सोमा ।—धज ( वा० ) सोमा, वेपरचना, यनावट, तैयारी ।  
 सजग दे० ( वि० ) सावधान, सचेत ।  
 सज्जन दे० ( पु० ) प्रिय, प्रियतम, पति ।  
 सज्जना दे० ( कि० ) सोहना, शोभना । ( पु० ) पति, प्रियतम ।  
 सज्जनी ( स्त्री० ) सखी, सहेली, प्यारी घी ।  
 सज्जल तत्त्वं ( वि० ) जल पूर्ण, जल सहित ।  
 सज्जला दे० ( पु० ) चार भाइयों में तीसरा, मकल से छोटा । ( पु० ) जल पूर्ण, जल से मरी हुई ।  
 सजाई दे० ( स्त्री० ) यनावटी, निर्मित, यनाव, निर्माण, रचना ।  
 सजातीय ( वि० ) एक जातिवाला ।  
 सज्जाना दे० ( कि० ) यनाना, शृङ्गा करना ।  
 सजाव या सजावट दे० ( पु० ) अलङ्कार, यनाव ।  
 सजीला दे० ( वि० ) सुन्दर, आकाशवान् ।  
 सजीव तत्त्वं ( वि० ) जीता, जीवसहित, जीवयुक्त, प्राणी । [ मृति ।  
 सजीवनी तत्त्वं ( स्त्री० ) जड़ी विरोप, प्राण देने वाली  
 सज्जन तत्त्वं ( पु० ) कुत्रवन्त, साधु, उत्तम स्वभाववाला ।



सञ्ज्ञा दे० ( स्त्री० ) वेश, कवच, झेलम ।

सञ्जी दे० ( स्त्री० ) खारी मिट्टी, जिससे कपड़े गहने आदि साफ़ किये जाते हैं ।

सञ्जय तत्त्वं ( पु० ) संप्रद, ढेर ।

सञ्चार तत्त्वं ( पु० ) भ्रमण, पर्यटन । [ वाला ।

सञ्चारक तत्त्वं ( पु० ) नायक, संक्रमण, भ्रमण कराने

सञ्चारिका तर० ( स्त्री० ) दूती, सन्देश पहुँचाने वाली । [ करना ।

सञ्चालन ( पु० ) फैलाना, व्यवस्था करना, प्रवन्ध

सञ्चित तत्त्वं ( वि० ) सञ्चय किया हुआ, एकत्रित, बटोरा हुआ, संगृहीत ।

सञ्जय तत्त्वं ( पु० ) ये अन्धराज धृतराष्ट्र के सचिव थे । व्यासदेव के आशीर्वाद से प्राप्त दिव्यचक्षुओं से महाभारत का युद्ध देख कर उसका वर्णन धृतराष्ट्र को ये सुनाया करते थे । महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर युधिष्ठिर के राज्य में धृतराष्ट्र के साथ ये हस्तिनापुर में रहते थे और उन्हीं के साथ वन भी गये थे । कुछ दिन के बाद उस वन में वनडाहा लग गया । धृतराष्ट्र गान्धारी और कुन्ती ने तो जल कर प्राण त्याग दिये; परन्तु सञ्जय ने भाग कर अपने प्राणों की रक्षा की । इसके बाद हिमालय प्रदेश में जा कर इन्होंने अपना समय बिताया था ।

सञ्जीवनी ( स्त्री० ) बूटी विशेष ।

सञ्ज्ञान तत्त्वं ( पु० ) ज्ञान सहित, ज्ञानी, ज्ञानवान् ।

सटक दे० ( स्त्री० ) नरचा, नली, हुस्के की नली ।

सटकना दे० ( क्रि० ) भगना, भाग जाना, छिपना ।

सटकाई दे० ( स्त्री० ) छिपना, लुकाव, बतार चढ़ाव ।

सटकाना दे० ( क्रि० ) छिपाना संकोच करना । [ छिपकना ।

सटना दे० ( क्रि० ) मिजना, मिथित होना, लड़ना, सटपटाना दे० ( क्रि० ) विस्मित होना, घब्रमित होना ।

सटल दे० ( स्त्री० ) प्रलाप, बड़बड़, बकबक ।

सटा ( पु० ) चोटों के कंधे के चाल; केशर, शिखा ।

सटाना दे० ( क्रि० ) चिपकाना, जोड़ना, मिलाना, मेल करना । [ तार, मिठाभिड़ ।

सटासट दे० ( स्त्री० ) तर ऊपर, एक पर एक, लगा-

सटिया दे० ( स्त्री० ) बस की पतली छड़ी, लपची, लकड़ी, लठियाँ, भ्रामूषण विशेष, एक प्रकार की चूड़ी ।

सटीक तत्त्वं ( वि० ) टीका के सहित, व्याख्या के सहित ।

सटुकि दे० ( क्रि० ) पतली छड़ी से मार कर, धोरे से भाग कर, दबक के भाग कर । [ उधर ।

सट्टावट्टा दे० ( पु० ) पराफेरी, बदला बदली, इधर

सठियाना दे० ( क्रि० ) घुड़ा होना, घुड़ाई से दुर्बल और निर्वृद्धि होना ।

सठोड़ा दे० ( पु० ) पुष्टाई, एक प्रकार का लड्डू ।

सड़क दे० ( स्त्री० ) चौड़ा मार्ग ।

सड़न दे० ( स्त्री० ) दुर्गन्ध, दुर्गन्धित ।

सड़ना दे० ( क्रि० ) बवासना, गठना, सड़ जाना ।

सड़ा दे० ( पु० ) सड़ा हुआ, गला हुआ, दुर्गन्धयुक्त ।

सड़ाना, वा सड़ाइन दे० ( क्रि० ) गलाना ।

सड़ियल ( वि० ) निर्बल, सड़ा हुआ, अनुपयोगी ।

सड़ा या संडा दे० ( वि० ) पोढ़ा, मोटा, हटपट ।

सड़ास या संडास दे० ( पु० ) पालाना, जाजर ।

सत दे० ( पु० ) सार, निष्कर्ष, सारभाग, गूदा, सत्य ।

—मासा ( पु० ) गर्म के सातवें मास में किया जाने वाला संस्कार विशेष ।

सतत ( क्रि० वि० ) सदैव, सदा, हमेशा ।

सतराना दे० ( क्रि० ) कोथित होना, अप्रसन्न होना ।

सतर्क तत्त्वं ( वि० ) सावधान, सचेत ।

सतलड़ी दे० ( स्त्री० ) सात लड़ की माला ।

सतघन्त दे० ( वि० ) सत्यवादी, सचा ।

सताना दे० ( क्रि० ) पीड़ा देना, फट देना, छेड़ना ।

सती तत्त्वं ( स्त्री० ) पार्वती, वर प्रजापति की कन्या, इनका विवाह महादेव से किया गया था । पतिव्रता, साध्वी ।

सतीर्थ तद् ( वि० ) साथी, सपाहरी, साथ के पढ़ने वाले ।

सतीला दे० ( क्रि० ) सत्तावान्, समर्थ, सामर्थ्यवान्, पराक्रमी ।

सतीवाड़ दे० ( पु० ) सती का स्थान, पति का अनुगमन करने वाली स्त्रियों का श्मशान ।

सतुआ दे० ( पु० ) सक, सत्तू, भुंजे हुए चना और जौ का आटा । [ जनक काम ।

सत्कर्म तत्त्वं ( पु० ) अच्छा काम, उत्तम काम, पुण्य

सत्कार तत्त्वं ( पु० ) सम्मान, आदर, आगत, स्वागत ।

सत्क्रिया तत्त्वं ( स्त्री० ) सत्कर्म, उत्तम कर्म ।

सत्त ( पु० ) बल, सार, रस, सतगुण ।

सत्तम तत्त्वं ( वि० ) अति उत्तम, यतिशय श्रेष्ठ, यह शब्द जाति या गुणवाचक शब्दों के अन्त में आता है और उसकी प्रधानता बतलाता है, जैसे मुनि-सत्तम ।

सत्तर ( पु० ) संख्या विशेष, ७० । [ अस्तित्व ]

सत्ता तत्त्वं ( स्त्री० ) बल, पराक्रम, विद्यमानता,

सत्ताईस ( वि० ) बीस और सात ।

सत्तानवे ( वि० ) नब्बे और ७ ।

सत्तावन ( वि० ) पचास और ७ ।

सत्तासी ( वि० ) ८० और ७ ।

सत्तू दे० ( पु० ) सतुआ

सत्त्वगुण तत्त्वं ( पु० ) प्रकृति का एक गुण विशेष । त्रिगुणों में का एक गुण । यह लघु, प्रकाशक और शुद्ध है ।

सत्त्व तत्त्वं ( स्त्री० ) पराक्रम, बल पवित्रता, शुद्धता ।

सत्तय तत्त्वं ( वि० ) सत्ता, यथार्थ, ठीक निश्चय, सही

बाजरी, मिथ्या नहीं ।—ता ( स्त्री० ) सत्ताई,

सत्तापन ।—युग ( पु० ) कृतयुग, प्रथम युग ।

—जोक ( पु० ) ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवाँ लोक ।

—वती ( स्त्री० ) महर्षि कृष्णपायन व्यास की

माता और वसुराज की कन्या ।—वादी ( पु० )

सायबक्ता, सत्ता, सच बोलने वाला, यथार्थ बक्ता ।

—वान् ( पु० ) शाहू देश के राजा छुमसेन का

पुत्र इनकी माता का नाम शैव्या था । अमात्यवशः

राजा छुमसेन मरने हो गये, तथा मन्त्रियों के

पड़वन्त्र से राज्यच्युत होकर पत्नी और शिशुपुत्र

को लेकर वन में चले गये । एक समय वसी वन

में मद्रदेश के राजा अपनी कन्या सावित्री के साथ

आये । सातपितृमक सत्यवान् के गुणों पर सावित्री

मेहित हो गयी और उन्हीं को अपना पति बनाया ।

सत्यवान् अश्वारु थे, उनकी आयु पूरी हुई, परन्तु

पतिपरायणा सावित्री ने अपने पालित्व बल से

यमराज को प्रसन्न कर बनसे वर ग्रहण किये ।

उन्हीं वरों के प्रभाव से सत्यवान् भी जीवित हो

गये, और राजा छुमसेन की भी गयी हुई आँखें

लौट आयी तथा राज्य भी मिल गया ।—व्रत

( वि० ) सत्यवादी, प्रधानतः सत्य को उपास्य

मानने वाला ।—सन्ध ( वि० ) सत्यप्रतिज्ञ,

अपनी प्रतिज्ञा सदा सत्य करने वाला, शरयन्त सत्ता, जो कभी झूठ न बोले ।

सत्यानाश तत्त्वं ( पु० ) नाश, विनाश, बरबादी ।

—ती ( वि० ) सर्वनासी, बरबाद करने वाला ।

—करना ( वा० ) नाश करना, विनष्ट करना,

ध्वस्त होना, बरबाद करना ।—जाना ( वा० )

नष्ट होना, विगड़ना, खराब होना । [ व्यापार ]

सत्यानृत तत्त्वं ( पु० ) [ सत्य + अनृत ] वायिज्य,

सत्य ( पु० ) सत्ता, प्राण, सद्गुण, जेरा, उद्यम, हृदय,

प्रकृति, भवाह ।—गुण ( पु० ) तीन गुणों में

से एक । [ सटपट ]

सत्वर तत्त्वं ( वि० ) जल्द, शीघ्र, उतावला, तुरन्त,

सत्सङ्ग तत्त्वं ( पु० ) सज्जन सङ्ग, उत्तम मनुष्यों की

सङ्गति ।

सत्सङ्गति ( स्त्री० ) सत्सङ्ग, अच्छी संगति ।

सथशय दे० ( पु० ) यथ में मरे हुएों की लोप ।

सथिया दे० ( पु० ) आँख के रोमों को चीर फाड़ कर

या दवा लगा कर अच्छा करने वाला, चण्ड वैद्य ।

सद् ( अर्थ० ) तत्काल, उसी समय, श्रेष्ठ, उत्तम ।

सदन तत्त्वं ( पु० ) गृह, घर, मकान, मन्दिर, वास्तु

स्थान ।

सदय तत्त्वं ( पु० ) दयायुक्त, मृदुल, कोमल अन्तः

करण वाला, दयालु, कृपालु, कारुणिक ।

सदस्त तत्त्वं ( वि० ) सत्यासत्य, सच झूठ ।

सदस्य तत्त्वं ( पु० ) समासद्, पद्व ।

सदा या सदाई तत्त्वं ( अ० ) सर्वदा, निरत्य, सतत,

हरहमेश ।—चार ( पु० ) उत्तम अचार ।

—धरत ( पु० ) अन्नदान, वह स्थान जहाँ भूखों

को अन्न दान दिया जाता है ।—शिव ( पु० )

महादेव, शिव ।—सुहागिनो ( स्त्री० ) पुष्प

विशेष, बेरया ।

सदृश तत्त्वं ( वि० ) समान, तुल्य, सम ।

सदेश तत्त्वं ( अ० ) समीप, निकट, पास ।

सदैव ( अर्थ० ) सदा, सर्वदा, हमेशा ।

सदोष तत्त्वं ( वि० ) दोष सहित, दोषी, अपराधी ।

सद्गति तत्त्वं ( स्त्री० ) निस्तार, प्राण, मुक्ति, उत्तम

गति ।

सद्गन्ध तत्त्वं ( स्त्री० ) सुगन्ध, उत्तम, गन्ध ।

सद्भाव ( पु० ) प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, प्रेमभाव ।  
 सद्भावका तत्त्वं ( पु० ) उत्तम धत्ता, शैली के साथ  
 बोलने वाला, उत्तम व्याख्याता । [निर्यायक ।  
 सन्निवेशक तत्त्वं ( वि० ) विचार, नियंत्रकता, उत्तम  
 सद्भाव ( पु० ) समूह, गिरोह, बृन्द ।  
 सद्भाव ( पु० ) मकान, घर, रहने का स्थान ।  
 सद्भाव ( अन्व० ) तुरंत, शीघ्र । [ परिचय होना ।  
 सद्भावना दे० ( कि० ) बनना, होना, बढना, हिलना,  
 सद्भावना तत्त्वं ( स्त्री० ) बुद्धागिन, सुमगा, पति वाणी  
 स्त्री, जिसका पति जीवित हो ।  
 सद्भावना दे० ( कि० ) साधन कराना, अभ्यास कराना,  
 परिचय कराना, सिखाना, बनाना ।  
 सदन दे० ( पु० ) पीठा विशेष, एक प्रकार का पाठ ।  
 सदनक ( पु० ) ब्रह्मा के १ पुत्र का नाम, ( स्त्री० )  
 बन्नाद, पागलपन । [ सनकार दिए ।  
 सनकार दे० ( कि० ) इशारा किये, सैन से बताए,  
 सनकुमार तत्त्वं ( पु० ) ब्रह्मज्ञ, महातपा महर्षि, ये  
 ब्रह्मा के मानस पुत्र थे । [ करना ।  
 सनना दे० ( कि० ) गर्भिणी होना, गर्भ धारण  
 सनन्दन ( पु० ) ब्रह्मा के पुत्र, सप्त ऋषियों में से एक ।  
 सनातन तत्त्वं ( पु० ) ब्रह्मा का मानसपुत्र, ये महा-  
 तपस्वी हैं, कहते हैं कि ये सर्वदा बालक रूप में  
 रहते हैं । [ सदायक हो, कृतार्थ ।  
 सनाथ तत्त्वं ( वि० ) नाथ सहित, जिसके मातृक और  
 सनाह ( पु० ) कवच, बड़तर ।  
 सनिया दे० ( पु० ) वस्त्र विशेष, टसर का बना वस्त्र ।  
 सनीचरा दे० ( वि० ) अमागा, अमागी, अपयशी ।  
 सनेह तत्त्वं ( पु० ) प्यार, प्रीति, प्रेम, मोह, झोह,  
 दुलार, प्रेमी, प्यारा, प्रिय, मुहब्बती । [ धार्मिक ।  
 सन्त तत्त्वं ( पु० ) साधु, सज्जन, उत्तम मनुष्य, धर्मी,  
 सन्तत ( कि० वि० ) सदैव, लगातार ।  
 सन्तति तत्त्वं ( स्त्री० ) सन्तान, अपत्य, लड़के वाले ।  
 सन्तत तत्त्वं ( वि० ) दुःखित, तपा हुआ, धका हुआ,  
 धान्ता, पीड़ित ।  
 सन्तरण तत्त्वं ( पु० ) पैराव, तिराव, हिजाव ।  
 सन्ता दे० ( वि० ) विगड़ा, नष्ट भ्रष्ट ।  
 सन्तान तत्त्वं ( पु० ) वंश, सन्तति, लड़के वाले,  
 [ प्रायः फल यह शब्द स्त्री लिङ्ग माना जाता है ।

हिन्दी के कोशकार तो इस शब्द को पुलिङ्ग ही  
 मानते हैं, शायद उर्दू शब्द औलाद के अर्थवाची  
 होने के कारण इसे लोग स्त्री लिङ्ग में व्यवहृत  
 करते हैं । ]

सन्ताप तत्त्वं ( पु० ) शोक, पीड़ा, मानसिक व्यथा ।  
 सन्ती दे० ( पु० ) बदला, बदले में, परिवर्तन में, प्रति-  
 निधि ।

सन्तुष्ट तत्त्वं ( वि० ) तृप्ति, प्रसन्न । [ आत्मसुख ।  
 सन्तुष्टि तत्त्वं ( स्त्री० ) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता,  
 सन्तोष तत्त्वं ( पु० ) आनन्द, हर्ष, तृप्ति, मनस्वीप ।  
 सन्तोषी तत्त्वं ( वि० ) सन्तोष रखने वाले ।  
 सन्त्या दे० ( पु० ) पाठ, अध्ययन, अभ्यास ।

सन्दर्भ तत्त्वं ( पु० ) रचना, प्रबन्ध ।  
 सन्दर्शन तत्त्वं ( पु० ) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष, देखाव ।  
 सन्दिग्ध तत्त्वं ( पु० ) सन्देहयुक्त, संशयान्वित,  
 अमयुक्त ।—भूत ( पु० ) व्याकरणसम्बन्धी काल  
 विशेष ।

सन्देश तत्त्वं ( पु० ) समाचार, वृत्तान्त, संदेश ।  
 सन्देशी तत्त्वं ( पु० ) दूत, चर, सन्देशहारक, हरकारा ।  
 सन्देशिया दे० ( पु० ) हरकारा, दौड़ाहा, संदेश ले  
 जाने वाला [ अनिश्चित ज्ञान ।

सन्देह तत्त्वं ( पु० ) संशय, शङ्का, अम, दुविधा,  
 सन्दोह ( पु० ) गिरोह कुंड, अधिकता । [ लगाना ।  
 सन्धान तत्त्वं ( पु० ) अन्वेषण, बूझना, खोजना, पता  
 सन्धान दे० ( पु० ) आचार ।

सन्धि तत्त्वं ( स्त्री० ) मेल, चिरोध, हराकर मिश्रता  
 स्थापन, कतिपय नियमों पर मिश्रता स्थापन करना ।  
 दो पदार्थों के मिलने का स्थान, संयोग, द्वार,  
 छेद, छल, अपवाद, स्वार्थसिद्धि के उपाय ।

सन्ध्या तत्त्वं ( स्त्री० ) सायंकाल, दिन और रात्रि  
 की सन्धि का समय, सन्ध्या के समय की जाने  
 वाली उपासना, सन्ध्योपासना ।

सन्नद्ध तत्त्वं ( वि० ) उद्यत, तैयार, प्रस्तुत, तत्पर ।  
 सन्ना ( कि० ) सटना, बुझना, मिलना ।

सन्नादा दे० ( पु० ) शब्द विशेष, जो पानी बरसने या  
 बायु के चलने से होता है । नीरव, शब्दामोघ ।

सन्नाह तत्त्वं ( पु० ) कवच, बड़तर । [ समीप ।  
 सन्निकट तत्त्वं ( पु० ) निकट, पास, सन्निधान,

सन्निकर्ष तत् ( पु० ) सन्निकर्ष, समीप ।  
 सन्निकर्षान ( पु० ) समीप, निकट, पास ।  
 सन्निकर्षि तत् ( स्त्री० ) पास पास, निकट ।  
 सन्निकर्षात् तत् ( पु० ) रोग विशेष से उत्पन्न रोग,  
 एक शीत प्रधान रोग का नाम ।  
 सन्निकर्षित तत् ( वि० ) निकट, समीप, पास ।  
 सन्मान तत् ( पु० ) सम्मान, धावर, सत्कार, मया-  
 दानुसार प्रतिष्ठा । [ साक्षात्, प्रत्यक्ष ।  
 सन्मुख तत् ( वि० ) सामना, पुरःस्थित, आगे,  
 सन्धास तत् ( पु० ) विराग, वासनात्याग,  
 चतुर्थ आश्रम । [ दण्डी ।  
 सन्धासी तत् ( पु० ) चतुर्थाश्रमी, यती, त्रिवर्ग्यी,  
 सपत्न तत् ( वि० ) सहायक, सहायता देने वाला,  
 सहकारी, साथी । ( पु० ) पत्नी, पत्नी ।  
 सपत्नी तत् ( स्त्री० ) गुरुत, शीघ्र, उसी समय, उसी  
 क्षण, सत्काल । [ आई हुई याते ।  
 सपत्नी तत् ( पु० ) स्वप्न, निद्रा के समय विचार में  
 सपत्नी तत् ( पु० ) सान्ध्य, सात पीढ़ी के अन्तर्गत  
 बान्धव, जिनके जन्म और मरण में अशौच  
 लगता है । [ कारी वेदा ।  
 सपुत्र तत् ( पु० ) सुपुत्र, सपुत्र, अष्टका लक्षका, आश-  
 सपत्नी या सपत्नी दे० ( पु० ) साँप का बच्चा ।  
 सप्त तत् ( वि० ) संख्या विशेष, ७ ।—चत्वारिंशत्  
 ( वि० ) संख्या विशेष, सात अधिक चालीस, ४७ ।  
 —दशः ( वि० ) सत्तरह, १७ ।—द्वीप ( पु० )  
 सातद्वीप यथा जम्बू, ब्रह्म, कुश, क्रीच, शक,  
 शाल्मली, और पुष्कर ।—पाताल ( पु० ) सात  
 पाताल, यथा अतल, वितल, सुतल, रसातल,  
 महातल, तलालातल, और पाताल ।—पुरो  
 ( स्त्री० ) पवित्र सात पुरियाँ यथा, श्रयोध्या,  
 मथुरा, हरिद्वार, काशी, फासी, उज्जैन, और  
 द्वारका ।—मी ( स्त्री० ) सातवीं तिथि ।—पिं  
 ( पु० ) । [ सप्त + अपि ] कश्यप, धन्नि, भरद्वाज,  
 विश्वामित्र गौतम, जम्बूद्वि और वशिष्ठ ये सप्तर्षि  
 कहे जाते हैं ।—सागर ( पु० ) सात समुद्र, यथा  
 —जम्बू, इक्षु, क्षीर, घृत, मदिरा, घृत ।—  
 स्वर ( पु० ) सात प्रकार के मर यथा, पञ्च

गान्धार, ऋषभ, नपद्म, मध्यम, धैवत और  
 पञ्चम ।

सप्तति ( वि० ) संख्या विशेष ७० ।  
 सप्तदश ( पु० ) सात घोड़ों के रथ में बैठनेवाले सूर्य ।  
 सप्ताह तत् ( पु० ) सात दिन, श्रद्धावा ।  
 सप्तमि तत् ( स्त्री० ) प्रेम सहित, प्रेम पूर्वक, प्रीति  
 से, प्रेम से ।  
 सप्तम तत् ( स्त्री० ) प्रेम पूर्वक ।  
 सप्तम ( वि० ) प्रवास, यात्रा ।  
 सप्तमी तत् ( स्त्री० ) मत्स्य विशेष, एक प्रकार की  
 मछली, शमरुद, बिही ।  
 सफल तत् ( पु० ) फलवान्, सार्थक, सिद्धि, फल-  
 दायक, फल देने वाला ।  
 सत् तत् ( सर्व० ) सर्व, समस्त सारा, सम्पूर्ण पूरा,  
 समुदा, शिखिल, कुल ।  
 सत् तत् ( वि० ) बलवान्, प्रौढ़, बली, बल-  
 शाली ।—ता ( स्त्री० ) बल, पराक्रम ।—ई  
 ( स्त्री० ) सत्त्वता, बल ।  
 सत्ता दे० ( पु० ) स्वाद, जायका ।  
 सत्तेर दे० ( स्त्री० ) प्रातःकाल, प्रभात, तड़का, भोर ।  
 सत्तेरा या सत्तेरे दे० ( पु० ) विद्वान्, भोर ।  
 सत्तेतर दे० ( स्त्री० ) सर्वत्र, सब स्थान में, सब ओर ।  
 सत्तेतर ( स्त्री० ) देखा " सत्तेतर " । [ भीत ।  
 सत्तम तत् ( वि० ) भययुक्त, भय सहित, डरा हुआ,  
 सत्ता तत् ( स्त्री० ) मण्डली, समाज, पञ्चायत,  
 उत्सव ।—पति ( पु० ) समाजपालक, समा का  
 मुखिया, सरपंच ।—सद ( पु० ) समा में बैठने  
 वाला, समा में उपस्थित रहने वाला ।  
 सत्तम तत् ( पु० ) सुआ खेलाने वाला, नाल वाला,  
 जुआ का प्रधान ।  
 सत्तीत तत् ( वि० ) डरा हुआ, सभय, भयभीत ।  
 सत्तम तत् ( पु० ) समासद, समा के योग्य, नाग-  
 रिक, भद्र ।  
 सत्तम तत् ( स्त्री० ) बुद्ध, बराबर, समान, सदस्य ।  
 —कटि वन्ध ( पु० ) शीत कटिबन्ध और सत्तम  
 रेखा के बीच ४६ ईश्वर वाला भूतपद ।  
 सत्तम तत् ( स्त्री० ) समीप, सम्मुख, प्रथम, सामने ।  
 सत्तम तत् ( वि० ) बराबर, तुल्य ।

समग्र तत् ( वि० ) समस्त, सारा, सम्पूर्ण ।—ता ( स्त्री० ) सम्पूर्णा ।

समज्या तत् ( स्त्री० ) सभा, गोष्ठी, कीर्ति, यश ।  
समम्भ दे० ( स्त्री० ) बुद्धि, धारणा, विचार विश्वास ।

—द्वार ( वि० ) बुद्धिमान्, विचारवान् । [ करना ।

समभक्ता दे० ( कि० ) बृक्ता, जानना, धारण

समभक्ताना दे० ( कि० ) बतलाना, सिखाना । [ वृत् ।

समभक्ताया दे० ( पु० ) सिखावन, समझौती, बुझा-

समञ्जस तत् ( वि० ) योग्य, उचित ।

समता तत् ( स्त्री० ) तुल्यता, समानता, बराबरी ।

समन्निभुज ( पु० ) जिस त्रिभुज की तीनों भुजाएँ  
समान हो । [ पात नहीं करने वाला ।

समदर्शी तत् ( वि० ) समान दृष्टि, अपक्षपाती, पक्ष-

समद्विषाहु ( वि० ) दो समान सुजायों वाला ।

समधिनि दे० ( स्त्री० ) वेष्टा या वेष्टी की सास ।

समधियाना दे० ( पु० ) समधी का स्थान, समधी  
का घराना ।

समधी दे० ( पु० ) पति और पत्नी के पिता आपस में  
समधी होते हैं । लड़का लड़की के ससुर । ( पु० )  
बराबर बुद्धियाला ।

समन्न ( पु० ) सँहुड़ का वृक्ष ।

समन्वात् तत् ( थ० ) चारों ओर, सब तरफ से ।

समन्वय तत् ( पु० ) लक्षण को लक्ष्य में घटाना,  
मेल, परस्पर, अनुगतता ।

समन्विन तत् ( वि० ) समन्वय किया हुआ ।

समबल तत् ( वि० ) तुल्य बल, समान बल वाला ।

समभाव तत् ( पु० ) समता, साम्य, तुल्यता,  
बराबरी ।

समय या समया तत् ( पु० ) काल, अवसर, बेला ।

समर तत् ( पु० ) संग्राम, युद्ध, लड़ाई । [ शाली ।

समर्थ तत् ( वि० ) शक्तिमान्, योग्य, शक्ति-

स्मर्थन तत् ( पु० ) प्रमाण करण, दृढ़ करण ।

समर्थना ( स्त्री० ) सिफारिस, प्रार्थना ( कि० )

पुष्ट करना ।

समर्पण तत् ( पु० ) संपना, त्याग, अर्पण, दान ।

समर्पित ( वि० ) दिया हुआ, प्रदत्त ।

समल तत् ( वि० ) मज्जुक, मज्ज सहित, मलिन,

मैला, मयल सहित ।

समवाय तत् ( पु० ) मीढ़, समूह, समुदाय, नैया-  
विकों के मत से सम्बन्ध विशेष, उपादान कारण  
और कार्य का सम्बन्ध, यथा—सूत और  
कपड़े का । [ समान रूप से साथ देना ।

समवेदना तत् ( स्त्री० ) किसी विपत्ति या दुःख में  
समसूत्रपात्र तत् ( पु० ) डोरी से बापना, जल  
थाहना, जल की गंहराई का पता लगाना ।

समस्त तत् ( पु० ) सब, सारा, सकल, सम्पूर्ण ।

समस्या तत् ( स्त्री० ) सङ्केत, किसी छन्द का एक  
अन्तिम पाद ।—पूर्ति ( स्त्री० ) किसी छन्द के  
अन्तिम पाद को लेकर उसी के अनुसार श्लोक  
बनाना ।

समा दे० ( पु० ) समय, काल, अवसर, ताल और  
लय विशेष ।—ई ( स्त्री० ) फैलाय, चौड़ाई,  
सामर्थ्य, शक्ति ।—कुल ( वि० ) व्याप्त, घिरा  
हुआ, दुःखी, परेशान ।—गम ( पु० ) आगमन,  
आना, थवाई, मिलाप, सम्भाषण ।—चार  
( पु० ) सन्देश, संवाद, कुशल, मन्त्राल ।

—चारपत्र ( पु० ) पथ, ज्ञान, अज्ञान संवादपत्र ।

—ज ( पु० ) सभा, मण्डली, जातीय संस्था,

समूह, समुदाय ।—जी ( पु० ) यजन्त्री, तबलची,

सभासद, दयानन्दी ।—द्वर ( पु० ) सरकार,

सम्मान ।—धान ( पु० ) उत्तर, राह का समा-

धान ।—धि ( पु० ) ध्यान, योग की क्रिया

विशेष, इसके दो भेद होते हैं सातिशय और

निरतिशय । सातिशय समाधि में ध्याता और

ध्येय का बोध रहता है, परन्तु निरतिशय समाधि

में वेदान्तियों का अन्तिम अनुभव हो वर्तमान रह

जाता है ।—समाधि देना ( वा० ) मृत साधु

संन्यासियों का अन्तिम संस्कार, समाधिस्य ( पु० )

ध्यान में, समाधि में ।

समान तत् ( वि० ) बराबर, तुल्य, एक प्रकार ।

—ता ( स्त्री० ) तुल्यता, बराबरी ।

समाना दे० ( कि० ) घुसना, पैठना, प्रविष्ट होना ।

समानान्तर ( पु० ) बीच, बराबर, तुल्यान्तर, सुत-

वाजी, दो रेखाओं के मध्य का समान फासला ।

समापन तत् ( पु० ) समाप्त होना, समाप्ति, सम्-

र्पता, पूर्ति ।

समाप्त तत् ( वि० ) पूरा, हो चुका, सिद्ध ।  
समाप्ति तत् ( स्त्री० ) अन्त, समापन, सम्पूर्णता,  
नाश ।

समारोह तत् ( पु० ) जमाव, जमाववा, भीड़ ।  
समालो दे० ( स्त्री० ) फूलों का गुच्छा, पुष्पस्तवक ।  
समालु ( पु० ) पौधा विशेष ।  
समालोचना ( स्त्री० ) भली भाँति विचारना ।  
समाव दे० ( पु० ) समावेश, ठौर, स्थान ।  
समावेग तत् ( पु० ) पैसार, द्वार, मिलाव, प्रवेश ।  
समास तत् ( पु० ) संक्षेप, व्याकरण की एक  
प्रक्रिया, दो तीन पदों के मेल करने की रीति को  
समास कहते हैं । समास छः हैं । तत्पुरुष, कर्मधा-  
र्य, द्विगु, बहुव्रीह, श्रम्ययीभाव, द्वन्द्व ।  
समाहित तत् ( वि० ) समाधिस्थ, स्थिरीकृत, साव-  
धान, दत्तात्तर, उत्तर दिया हुआ, एक रसालङ्कार  
विशेष ।

समाह्वान ( पु० ) बुलाना, पुकारना ।  
समिति } तद् ( स्त्री० ) सभा, मिताई, मित्रता ।  
सुमती }  
समिधि तद् ( स्त्री० ) इन्धन, लकड़ी, जलाने की  
लकड़ी, होम की लकड़ी ।  
समीकरण तद् ( पु० ) बराबर करना, समतल  
बनाना, बीजगणित का एक गणित, जिसमें दो  
राशियाँ बराबर की जाती हैं ।  
समीकार ( पु० ) तुल्य करने वाला, समान करने  
वाला । [ उत्तम ।  
समीचीन तद् ( वि० ) सम्यक्, सचाई, सचा,  
समीप तद् ( वि० ) पास, निकट, नगीच ।  
समीपी दे० ( पु० ) पड़ोसी, आसीन, स्वजन ।  
समीर तत् ( पु० ) वायु, हवा, पवन, प्रक्रमन ।  
समीरण ( पु० ) पवन, वायु, हवा ।  
समीहा तद् ( स्त्री० ) इच्छा, चाँछा, पूर्ण इच्छा  
अभिलाष । [ युक्त ।  
समुचित तत् ( पु० ) योग्य, यथार्थ, उचित, उप-  
समुच्चय तद् ( पु० ) समुदाय, एकत्रित, ठेठ, राशि,  
समूह, संग्रह ।  
समुदाय तद् ( पु० ) समूह, समान जाति के लोगों  
का जमावड़ा ।

समुद्र तद् ( पु० ) सागर, समुद्र, जलनिधि, उदधि,  
पयोधि ।—फल ( पु० ) औषध विशेष ।  
समूचा दे० ( वि० ) सारा, पूरा, समस्त, आद्यन्त  
सहित ।  
समूह तद् ( वि० ) दल, यूप, जया, समुदाय ।  
समूहानी दे० ( स्त्री० ) सामने मिली हुई ।  
समुद्र ( वि० ) धनवान्, समर्थ, भाग्यवान् । [ वृत्ति ।  
समुद्रि तत् ( स्त्री० ) ऐश्वर्य, विभव, धन, सम्पत्ति  
समे ( पु० ) वक्, समय, अवसर, मौका ।  
समेट दे० ( स्त्री० ) सङ्कोचन, सिमटन । [ करना ।  
समेटना दे० ( स्त्री० ) सिकोड़ना, घटोरना, सङ्कोच  
समेत तद् ( वि० ) सहित, युक्त ।  
समौ ( पु० ) समय, अवसर, मौका ।  
समेना दे० ( पु० ) कुनकुना जल, गरम जल में ठंडा  
जल मिला कर ठण्डा किया हुआ जल ।  
समौ ( पु० ) देखो समौ ।  
सम्पत्ति तद् ( स्त्री० ) समृद्धि, धन, सम्पदा, सुभाग ।  
सम्पदा तद् ( स्त्री० ) ऐश्वर्य, धन, विभव ।  
सम्पन्न तद् ( वि० ) परिपूर्ण, धनाढ्य, पूरा, सिद्ध ।  
सम्पर्क तद् ( पु० ) सम्बन्ध, मिलाव, संयोग,  
संखव । [ रिखा विशेष ।  
सम्पात ( पु० ) गिरना, स्पर्श, रेखा, रेखागणित की  
सम्पाति तद् ( पु० ) ब्रह्म के पुत्र और जटापु के  
उपेष्ट भ्राता, ये दोनों भाई सूर्य के जीतने के लिये  
उनकी ओर दौड़े । सूर्य के प्रखर तेज से जटापु  
का पंख भस्म होने लगा, तब सम्पाति ने उसे  
अपने पंखों द्वारा ढाँप लिया । छोटे भाई की रक्षा  
करने से सम्पाति स्वयं दग्धप्राय हो गये । वे अचेत  
होकर विन्ध्य पर्वत पर गिर पड़े । चेत होने पर  
निराशर सुनि के उपदेश से उन्होंने वही पर्वत  
पर रहना स्थिर किया । सीता की शोच करने  
वालों को सीता का पता पताने से उनके पद  
पुनः जम गये ।  
सम्पादक तद् ( पु० ) कर्ता, संगठन कर्ता, सम्पादन  
करने वाला, पूरा करने वाला, पूर्ण करने वाला ।  
दैनिक समाचारपत्र, पुस्तक माला या मासिक  
पुस्तक को अपने तथा दूसरों के लेखों से पूरा कर  
निकाजने वाला, पत्रिदर ।

सम्पादन तत् ( पु० ) निरूपण, कथन, समाप्ति  
करना, निष्पादन, सङ्गठन, प्राप्ति, लाभ, निर्माण ।  
सम्पुट तत् ( पु० ) ढक्का, ढिबिया ।—क ( पु० )  
पिटारा, पेटी ।  
सम्पूर्ण तत् ( पु० ) समस्त, परिपूर्ण ।  
सम्प्रति तत् ( अ० ) इस समय, अब ।  
सम्प्रदान तत् ( पु० ) दान, कारक विशेष, चतुर्थी  
कारक ।  
सम्प्रदाय ( पु० ) परम्परा का धर्म ।  
सम्बद्ध ( वि० ) संयुक्त, घेरा गया, बाँधा गया ।  
सम्बन्ध तत् ( पु० ) संयुक्त, नाता, लगाव ।  
सम्बन्धी तत् ( पु० ) सम्बन्ध रखने वाला, नातेदार,  
नतैत । [ पहला कारक विशेष ।  
सम्बोधन तत् ( पु० ) संमुखी करण, कारण विशेष,  
सम्बोधित ( वि० ) पुकारा हुआ, सम्बोधन किया  
हुआ । [ होना, सावचेत हो जाना ।  
सम्भलना दे० ( कि० ) धम्भना, सुधारना, सावधान  
सम्भव तत् ( पु० ) योग्यता, होने के योग्य, होन-  
हार, भवितव्य, सम्भावना । [ धामिना ।  
सम्भालना दे० ( कि० ) प्रवृत्त करना, सुधारना,  
सम्भावना तत् ( स्त्री० ) दुविधा, सन्देह, अनि-  
श्चय । [ चाल ।  
सम्भाषण तत् ( पु० ) बातचीत, आलाप, बोल-  
सम्भूत ( वि० ) उत्पन्न, पैदा ।  
सम्भोग तत् ( पु० ) स्त्री प्रसङ्ग, मैथुन ।  
सम्भोजन तत् ( पु० ) भोज, भण्डार ।  
सम्भ्रम तत् ( पु० ) आदर, सम्मान, घबराहट, भय,  
डर, भ्रम । [ अभिमत ।  
सम्मत तत् ( पु० ) अनुमत, स्वीकृत, ईप्सित,  
सम्मति तत् ( स्त्री० ) इच्छा, स्वीकार ।—पत्र ( पु० )  
राजीनामा । [ बुहारी ।  
सम्मार्जनी तत् ( स्त्री० ) बकनी, फाड़, झूँची,  
सम्मान ( पु० ) आदर, सत्कार, प्रतिष्ठा, मर्यादा ।  
सम्मिलित ( वि० ) शामिल, संमिश्र मिला हुआ ।  
सम्मुख ( पु० ) सामने, आगे, प्रत्यक्ष ।  
सम्पत् तत् ( अ० ) अच्छी भाँति के, योग्यता से,  
ठीक ठीक, भलीभाँति ।  
सम्हालना ( कि० ) देखो सम्भालना ।

साम्राट तत् ( पु० ) अधिराजा, चक्रवर्ती राजा ।  
सय दे० ( पु० ) सौ, शत, १०० ।  
सयान दे० ( पु० ) व्यस्क, वयःप्राप्त, अधिकउमर का  
अधिक अवस्था वाला ।  
सयाना दे० ( पु० ) चतुर, प्रवीण, निपुण, बूढ़  
बूढ़, बड़ा ।  
सर तत् ( पु० ) सरोवर, तालाब, तड़ाग, ।—कण्डा  
( पु० ) नृप विशेष, नरकट ।  
सरकना दे० ( कि० ) हटना, दूर जाना, खसकना ।  
सरकाना दे० ( कि० ) हटाना, भगाना, खसकाना ।  
सरगुण तत् ( पु० ) सगुण, गुण सहित, सरव रत्न  
और तम इन गुणों से युक्त परमात्मा ।  
सरधा तत् ( स्त्री० ) मधुमक्षिका, मधुमाली, शहद  
की मक्खी ।  
सरट तत् ( पु० ) गिरगिट । [ खर्बूजा ।  
सखा दे० ( पु० ) खर्बूजा विशेष, एक प्रकार का  
सरन तत् ( पु० ) शरण, रक्षक ।  
सरना दे० ( कि० ) चलना, हटना, जाना ।  
सरपट दे० ( पु० ) बड़े वेग से दौड़ना, खूब जोर से  
दौड़ना ।—फेंकना ( वा० ) धोड़े की जंगम ढीली  
करके दौड़ाना, वेग से दौड़ाना । [ परोवाली घास ।  
सरपट दे० ( पु० ) नृप विशेष, एक प्रकार की चौड़े  
सरपोश ( पु० ) ठकना, चिल्लम ठाँकने की वस्तु ।  
सरज तत् ( वि० ) उदार, सच्चा, ईमानदार, निष्क-  
पट, झलझल, सीधा । ( पु० ) एक प्रकार के पेड़  
का नाम इसे सरो भी कहते हैं ।  
सरवर तत् ( पु० ) तालाब, तड़ाग, झील, पोखरा ।  
सरवरी या सरवरी दे० ( स्त्री० ) बराबरी, समता,  
डिडाई, गुस्ताखी, उत्तर प्रति उत्तर देना ।  
सरय ( पु० ) यानर विशेष ।  
सरयू ( स्त्री० ) नदी विशेष, इसके नाम धवरा,  
घाघरा या देवा भी हैं ।  
सरस तत् ( वि० ) रस वाला, मीठा, स्वादु, रसीला ।  
सरसाना दे० ( कि० ) रँगना, फिरना, चलना ।  
सरसाई दे० ( स्त्री० ) अधिकारी, बहुतायत, वृत्तमता ।  
सरसिज तत् ( पु० ) कमल, पद्म, फँवल ।  
सरसीकह तत् ( पु० ) कमल, पद्म ।  
सरसों दे० ( पु० ) सपं, राई, सेरी ।

सरस्वती तत् ( स्त्री० ) नदी विशेष, वाणी, भाषा, वाग्देवता, वाक् की अधिष्ठात्री देवी, वागीश्वरी, शारदा ।

सरा दे० ( पु० ) ढकना, ढपना, मिट्टी का पात्र ।

सराई दे० ( स्त्री० ) छोटा सरा, ढकनी ।

सराप तद् ( पु० ) शाप, अशुभ चिन्ता, श्राप ।

सरापना दे० ( कि० ) शाप देना, गलियाना, गाली देना, कोसना ।

सराफ दे० ( पु० ) देन लेन करने वाला महाजन, चाँदी सोने के घने घामूपण बेचने वाला ।

सराफी दे० ( स्त्री० ) देन लेन, महाजनी ।

सरायक तद् ( पु० ) जैती जैन धर्मो, जैन धर्मो गृहस्थ ।

सरायगो ( पु० ) जैती । [ मोटी लकड़ी ।

सरायन दे० ( पु० ) हँगा, झमीन बराबर करने की

सराह दे० ( पु० ) यशान, बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा ।

सराहना दे० ( कि० ) बड़ाई करना, प्रशंसा करना, यशान करना । [ के बर्ण, स्वर ।

सरिगम तत् ( पु० ) स्वर के आरोह अवरोह करने

सरित् तद् ( स्त्री० ) नदी, निम्नगा, स्रोत ।—पति

( पु० ) समुद्र, सागर ।—सुत ( पु० ) गङ्गापुत्र, भीष्म ।

सरिता ( स्त्री० ) नदी । [ बर, तुल्य ।

सरिस, सरिखा तद् ( वि० ) सरस, समान बरा-

सरी दे० ( स्त्री० ) बिना फल का तीर ।

सरीखा तद् ( वि० ) समान, तुल्य, बराबर ।

सरीसृप तद् ( वि० ) जलु विशेष, शरद, गिरगटि, साँप, बिच्छू ।

सरूप तद् ( वि० ) बराबर, समान रूपवाला, आकारवान् । ( दे० ) स्वरूप, आकृति आकार, साकार छवि ।

सरैखा तद् ( स्त्री० ) श्लेष नक्षत्र विशेष, नवौ नक्षत्र ।

सरैस दे० ( पु० ) असलसी वस्तु विशेष, जिससे प्रायः लकड़ी जोड़ी जाती है ।

सरो दे० ( पु० ) एक प्रकार का वृक्ष ।

सरोज तत् ( पु० ) कमल, पद्म, पङ्कज ।—भय ( पु० ) मंदा, प्रजापति, विधाता ।

सरोता दे० ( पु० ) सुपारी काटने का औजार ।

सरोरुह तद् ( पु० ) सरसिज, कमल, पद्म ।

सरोवर तत् ( पु० ) तालाब, तड़ाग, सरवर, झील ।

सरोप तत् ( वि० ) क्रुद्ध, क्रोध युक्त ।

सरोही दे० ( स्त्री० ) राजपूताने के एक राज्य की राजधानी । वहाँ की बनी तलवार, एक प्रकार का भाला ।

सरोँ करँ दे० ( वा० ) ध्रम करना, दण्ड पेलना, बैठक करना ।

सर्करा ( स्त्री० ) शर्करा, साखड़ ।

सर्ग तत् ( पु० ) सृष्टि, उत्पत्ति, अभ्यास, प्रथमभाग ।

सर्प तत् ( पु० ) साँप, अहि, भुजङ्ग ।—राज ( पु० ) साँप का राजा, शेष, वासुकी ।

सर्व तत् ( वि० ) सब, समस्त, सम्पूर्ण, सारा, सकल ।—काल ( पु० ) निरप, सदा ।—ग ( पु० ) सब जगह जाने वाला, सर्व व्यापी, सब

स्थानों में फैलने वाला ।—गत ( पु० ) सर्वग, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्र व्यापी ।—ज्ञ ( पु० ) सर्ववेत्ता, परमात्मा, परमेश्वर, एक वेदान्ती पण्डित का नाम,

जिन्होंने "संक्षेप-शारीरक" नामक वेदान्त का ग्रन्थ बनाया है ।—तोमर ( पु० ) यज्ञ की प्रधान वेदी, जिस पर प्रधान देवता की स्थापन

की जाती है ।—त्र ( अ० ) सब जगह, चारों ओर ।—था ( अ० ) सब प्रकार, सब तरह ।—

दमन ( पु० ) राजा दुष्यन्त का पुत्र ।—दा सश, हमेशा ।—नाम ( पु० ) कुछ शब्द भिन्नका प्रयोग अन्य शब्दों के अर्थों में किया जा सके ।

—नाश ( पु० ) सलानाश, बिगाड़ ।—भक्त या भक्ती ( वि० ) धर्मयुत, सब कुछ जाने वाला ।—भूत ( पु० ) बराबर, विषय ।—मङ्गला ( स्त्री० )

धर्मार्थ, पार्वती, दुर्गा ।—मय ( पु० ) सर्वस्वरूप, सर्वत्र व्याप्त ।—व्यापक वा व्यापी ( वि० ) सर्वत्र वर्तमान, सब जगह व्याप्त ।—स्व ( पु० )

जमा, पूँजी, मूल धन ।

सर्वस तद् ( पु० ) सर्वस्व, जमा, धन, समस्त धन ।

सर्वाङ्ग तद् ( पु० ) [ सर्व + अङ्ग ] समस्त शरीर, सम्पूर्ण अङ्ग ।

सर्वोपरि तद् ( अ० ) सब से बड़ा, सर्वोपेक्ष ।

सर्प तद् ( पु० ) सरसों, तोरी ।

सर्पुषाष्ट ( स्त्री० ) सुजड़ी ।

सलकी दे० ( स्त्री० ) कमल की जड़ ।



सजज्ज तव० ( वि० ) जज्जा युक्त, जज्जा सहित,  
जज्जातु ।

सज्जना दे० ( कि० ) विधना, चुमना, गढ़ना ।

सज्जम तद० ( पु० ) सज्जम, पतङ्ग, टिट्टी, दीपक पर  
गिरने वाला कीड़ा ।

सज्जसलाना दे० ( कि० ) सरासराना, छुजलाना,  
पानी से खूब भीगना, दीवाल घादि में खूब पानी  
धुस जाना ।

सज्जई दे० ( स्त्री० ) शलाका, लोहे या सीसा का  
पतला तार, सुमां लगाने की सजाई ।

सज्जिता दे० ( स्त्री० ) नदी, सरित, सिन्धु ।

सज्जित तद० ( पु० ) जल, पानी, अप, नीर ।

सज्जु तद० ( वि० ) स्वप्न, अत्यल्प, थोड़ा, बहुत  
थोड़ा ।

सज्जुना ( वि० ) देखो सज्जोना ।

सज्जुनो ( स्त्री० ) देखो सज्जोने ।

सज्जोत तद० ( वि० ) लोग सहित, सलक्षण, नमकीन ।

सज्जोना दे० ( वि० ) सुन्दर, रूपवान्, मनोहर, मिय,  
जावण्ययुक्त, खारी, नमकीन ।

सज्जोनी दे० ( वि० ) रोचक, रुचिकर, स्वादिष्ट ।

सज्जोनी दे० ( पु० ) धावण की धूम्रमा, राखी पुते ।

सज्जम दे० ( पु० ) एक प्रकार का कपड़ा ।

सज्जु ( पु० ) जूता सीने का चाम ।

सज्जो दे० ( स्त्री० ) थोड़ी स्त्री, मोली औरत ।

सज्जति ( स्त्री० ) सीत, सपली ।

सज्ज ( पु० ) कोल, भीज ।

सज्जरी ( स्त्री० ) भीजनी, फोड़नी ।

सज्जण तद० ( वि० ) समान वर्ण, एक जाति वाला,  
एक समाज ।

सजा दे० ( वि० ) चतुर्थीश अधिकता के साथ, १३ ।

सजाई दे० ( पु० ) राजपूतों की पदवी, जेपुर के राजाओं  
की पदवी, एक और उसकी चौथाई, सवा ।

सजांग दे० ( पु० ) स्वांग, भइती, नक़्क़ ।

सजाचना दे० ( कि० ) जचना, अनुसन्धान करना,  
पता लगाना, हँवना ।

सजाद तद० ( पु० ) स्वाद, मज़ा ।

सजाया ( पु० ) सजाई, सवा ।

सज्जार तद० ( पु० ) थोड़ा चढ़ैया, बुद्धि ।

सज्जारी दे० ( स्त्री० ) बान, बाहन ।

सज्जिता तद० ( पु० ) सूर्य, रवि ।

सज्जैया दे० ( पु० ) सवासेर, नापने या तीजने का वाट,  
भाया का एक छन्द विशेष ।

सज्ज तद० ( वि० ) बायाँ, वाम, विरुद्ध, उल्टा ।

—साची ( पु० ) अजुन, तीसरा पाण्डव ।

सज्जु तद० ( वि० ) शङ्कायुक्त, ब्रास युक्त, सभय,  
भीत ।

सज्ज ( पु० ) खुरगोश । [ ( स्त्री० ) लजारू ।

सजा दे० ( पु० ) शशक, खुरगोश, खरहा ।—पात्री

सज्जु तद० ( पु० ) पति या पत्नी का पिता ।

सज्जुराल ( स्त्री० ) सज्जु का घर, पीहर ।

सज्जता दे० ( वि० ) स्वल्पमूल्य, थोड़े दाम में मिलने  
वाली वस्तु ।

सज्ज ( पु० ) फल, खेत में जगा हुआ अन्न ।

सह तद० ( अ० ) साथ, सहित, सहा, समेत ।—कार

( पु० ) आम, आम्रफल, सहायता ।—गामिनी

( स्त्री० ) स्त्री, भार्या, पतिव्रता स्त्री ।—चर ( पु० )

साथी, सत्री ।—चरी ( स्त्री० ) सखी, सहेली,

वयस्या, आजी ।—ज ( पु० ) भाई, सहोदर भाई ।

( अ० ) सामान्य, सुगम, स्पष्ट, सरल ।—जन

( पु० ) एक पेड़ का नाम, सुनगा ।—देई ( स्त्री० )

एक पौधे का नाम ।—देव ( पु० ) राजा पाण्डु

का चैत्रज पुत्र, माद्री के गर्भ और अश्विनी कुमार

के औरस से ये उत्पन्न हुए थे । द्रौपदी के गर्भ में

श्रुतसेन नामक इनका एक पुत्र उत्पन्न हुआ था ।

युधिष्ठिर के राज्यस्य यज्ञ में दक्षिण देश के राजाओं

से कर लेने के लिये ये गये थे । अज्ञातवास के

समय विराट् राजा के यहाँ सन्तोषाक्ष नाम धारण

करके ये गोरोषा करते थे । महा प्रस्थान के समय

वन्होंने सुमेद शिखर पर से गिर कर प्राण त्यागा ।

( २ ) जरासन्ध का पुत्र, महाभारत के युद्ध में ये

कौरवों की ओर से लड़ते थे और अभिमन्यु के

हाथ से मारे गये ।—पाठी तद० ( पु० ) साथ

वाला, सतीर्थ ।—मरण ( पु० ) साथ मरना

सती होना ।—योगी ( वि० ) एक च्यवसाय

करने वाले, साथी, सही ।—राना ( कि० ) धीरे

धीरे शाय करना ।—रावन ( स्त्री० ) गुवगुदी,

सुरसुरी।—जाना ( कि० ) शुद्धशुद्धाना, सुर-  
सुराना।—घास ( पु० ) एकत्र स्थिति, पड़ोस।  
—वासी ( पु० ) पड़ोसी, साथ रहने वाला।  
—चैया ( वि० ) सहने वाला।  
सहन दे० ( पु० ) कपड़ा विशेष, आँगन, घर के  
भीतर का खुला हुआ चौकोर स्थान तत् ( पु० )  
धमा, सहिष्णुता।—गील ( वि० ) सन्तोषी,  
गमझोर, परहेजी।—हार ( पु० ) सहने वाला,  
सहन करने वाला।  
सहना दे० ( कि० ) सहन करना, भोगना, खेलना,  
बठाना, पाना, भुगतना, सन्तोष करना।  
सहनाई दे० ( स्त्री० ) नफोरी, वाद्य विशेष।  
सहमना ( कि० ) डर जाना, त्रस्त होना, मुर्झा जाना,  
लजा जाना, शर्माना।  
सहस ( वि० ) हज़ार।  
सहसा तत् ( अ० ) अकस्मात्, अटपट, अतर्कित,  
बिना विचार।—नन ( पु० ) शेषनाग।  
सहस्र तत् ( वि० ) संख्या विशेष, दस सौ, १००।  
—नयन ( पु० ) देवराज, इन्द्र।—घाटु ( पु० )  
कात्तबोर्य इसको परशुराम जी ने मारा था।  
सहसाखी तत् ( पु० ) सहचाच, इन्द्र, देवताओं  
के राजा। [हज़ार मुँह हों।  
सहसानन तत् ( पु० ) सहसानन, शेषनाग, जिनके  
सहाई तत् ( स्त्री० ) सहाय, सहायता, सहायता कारक।  
सहाज दे० ( वि० ) सहनीय, सहन करने योग्य, सब।  
सहानुभूति तत् ( स्त्री० ) सुख में भोगी होना।  
सहाय तत् ( पु० ) सहाय, मदद।—ऊ ( पु० )  
सहाय देने वाला, मदद करने वाला।—ता  
( स्त्री० ) सहाय, सहाय।  
सहाय दे० ( पु० ) सहायता, योगदान।  
सहिय तत् ( वि० ) साथ, सङ्ग, समेत, एकत्र।  
सहिराना दे० ( कि० ) सहिराना, झुजलाना।  
सहिष्णु तत् ( वि० ) सहन करने वाला।  
सही दे० ( अ० ) शुद्ध, निश्चय बोधक शब्द।  
सहेजना दे० ( कि० ) सँपना, सँभालना।  
सहेली दे० ( स्त्री० ) सखी, वयस्या, साथ रहने वाली।  
सहोदर तत् ( पु० ) सहज, सगा, एक माता से  
उत्पन्न।—भाता ( पु० ) सगा भाई।

सहौटी दे० ( स्त्री० ) चौखट, दरवाज़ा।  
सहा तत् ( वि० ) सहने योग्य, सहाज।  
सा दे० ( अ० ) सादृश्य बोधक, अल्पार्थक, थोड़ा सा।  
साइत दे० ( स्त्री० ) अच्छी मुहूर्त।  
साई दे० ( स्त्री० ) बयाना, किसी वस्तु के ठहराये हुए  
मूल्य का कुछ अंश अगाऊ देना।  
साऊ दे० ( पु० ) सीखने हारा, शिष्ट।  
साँझी दे० ( स्त्री० ) साँगी, गाढ़ी का भण्डार।  
साई दे० ( पु० ) स्वामी, प्रभु, भगवान्।  
साँक तत् ( स्त्री० ) शङ्का, भय, डबास का रोग।  
साँकर या साँकरी दे० ( स्त्री० ) शलङ्ग शृङ्खला,  
सिकली।  
साँकरी दे० ( वि० ) सङ्कीर्ण, तह, पशुओं की योनि।  
साँकर या साँकल दे० ( स्त्री० ) सिकरी, भूषण  
विशेष, जो गले में पहना जाता है।  
साँख, साखू दे० ( पु० ) पुल, सेतु, वृच विशेष,  
साँक का वृच। [अस्त्र।  
साँग दे० ( स्त्री० ) यर्षी, सेल, भाला, एक प्रकार का  
साँगी दे० ( स्त्री० ) गाढ़ी में का भण्डार, यर्षी।  
साँगूस दे० ( पु० ) एक प्रकार की मछली।  
साँधर दे० ( पु० ) पुनर्विवाहिता का पुत्र, पहले पति  
का लड़का।  
साँच दे० ( वि० ) सत्य, सच्चा, ठीक, उचित, यथार्थ।  
साँचा दे० ( स्त्री० ) बहिया, गहना या वर्तन ढालने  
की वस्तु, दर्जा, ठप्पा।  
साँक दे० ( स्त्री० ) सन्ध्या, सायंकाल ॥  
साँझ, साँझी दे० ( स्त्री० ) पुतली का खेल, एक  
प्रकार का चित्रणकला।  
साँठा दे० ( पु० ) कोड़ा, फटा।  
साँटी ( स्त्री० ) छुरी, लगी।  
साँठ दे० ( वि० ) संयोग, लपेटा।—नाँठ ( पु० )  
संयोग, मेल।  
साँठना दे० ( कि० ) सठाना, खगाना, जोड़ना।  
साँड़ दे० ( पु० ) पशु, झैल चिकनियों, बैल, पिंजारा।  
साँड़नी दे० ( स्त्री० ) जैनी।  
साँडा दे० ( पु० ) एक प्रकार का जन्तु।  
साँढ़ दे० ( पु० ) अणुआ यैल।  
साँति दे० ( अ० ) सन्ती, बदला, प्राप्ति, विषे।

सांघ दे० ( पु० ) सर्प, भुजंग, भुजङ्ग, उरग, अहि ।  
 ( स्त्री० ) सांघन ।  
 सांभर दे० ( पु० ) लवण, एक प्रकार का नून, एक  
 नगर विशेष, जहाँ सांभर नमक उत्पन्न होता है ।  
 सांवर दे० ( वि० ) साँवला, श्यामल । [ रंग ।  
 साँवला तद्० ( पु० ) श्यामल, कृष्ण; वर्ण का, काला  
 साँवा दे० ( पु० ) अन्न विशेष । [ वाला वायु ।  
 साँस तद्० ( पु० ) स्वास, प्राण, नाक से आने जाने  
 साँसति दे० ( स्त्री० ) कठिन दंढ, पीड़ा, अटकाव,  
 व्याकुलता । [ सुधारने के लिये दण्ड देना ।  
 साँसना दे० ( क्रि० ) डौटना, ताड़ना, धमकाना,  
 साँसा दे० ( पु० ) संशय, सन्देह, कष्ट, अटकाव ।  
 साँसारिक तत्० ( वि० ) संसार सम्यन्धी, संसार का,  
 संसार में उत्पन्न होने वाला ।  
 साक ( पु० ) शाक, साग ।  
 साक्य ( अव्य० ) सह, साथ ।  
 साका ( पु० ) शाका, संवत्सर विशेष ।  
 साकार तत्० ( वि० ) आकार सहित, आकृति विशिष्ट ।  
 साक्षात् तत्० ( अव्य० ) प्रत्यक्ष, सामने, आँखों के  
 आगे, प्रकट ।—कार ( पु० ) आमना सामना,  
 प्रत्यक्ष ।  
 साक्षी तत्० ( वि० ) गवाह, साक्षी ।  
 साख तत्० ( स्त्री० ) शाख, प्रामाणिकता, साची ।  
 साखी तद्० ( वि० ) साची, गवाह ।  
 साखोचार ( पु० ) शाखोचार, वंश निरूपण ।  
 साख्या ( पु० ) साक्षात्कार ।  
 साग तद्० ( पु० ) शाक, भाजी, तरकारी ।  
 सागर तत्० ( पु० ) समुद्र, उदधि, पयोधि, अर्थात् ।  
 सागू दे० ( पु० ) काष्ठ विशेष ।  
 साङ्ख्य तत्० ( पु० ) कपिल मुनि प्रणीत शास्त्र  
 विशेष, दर्शन शास्त्र ।  
 साङ्ग तत्० ( वि० ) अङ्ग सहित समाप्त, पूर्ण शरीर ।  
 —गोपाङ्ग ( वि० ) समस्त, ज्यों का त्यों ।  
 साज दे० ( पु० ) सामग्री, सजाने का सामान ।  
 साजन दे० ( पु० ) सज्जन, प्रिय, प्रियतम, पति ।  
 साजना दे० ( क्रि० ) पहिना, बनाना, सजावट  
 करना ।  
 साजिश ( पु० ) दुरमि सन्धि, कपट प्रबन्ध, संयोग ।

साजी ( स्त्री० ) सजीवार ।  
 साभा दे० ( पु० ) भाग, हिस्सा, अंश, किसी काम  
 में अनेक मनुष्यों का भाग ।  
 साभी दे० ( पु० ) साथी, भागी, हिस्सादार, अंशक ।  
 साठी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का चावल, यह चावल  
 साठ दिनों ही में पक कर तैयार हो जाता है । इसी  
 से इसका नाम साठी पड़ा है । [ कपड़ा ।  
 साडी दे० ( स्त्री० ) साटिका, धियों के पढ़ने का  
 सादसाती ( स्त्री० ) शनिश्चर की ७ वर्ष की दशा ।  
 साढू दे० ( पु० ) पत्नी का यहनोई ।  
 साढ़े दे० ( वि० ) सार्द्ध, आधा के साथ, आधा सहित ।  
 सात तत्० ( वि० ) संख्या विशेष, सप्त, ७ ।—  
 पाँच करना ( य० ) कसमस करना, इधर उधर  
 करना, संशयित होना, सन्देहाश्रित होना ।  
 सात्विक तत्० ( वि० ) सत्त्व गुण युक्त, सत्त्व गुण  
 विशिष्ट, साधु, सरल, सज्जन ।  
 सातू दे० ( पु० ) सत्तू, सतुआ ।  
 साथ दे० ( अव्य० ) सह, सहित, समेत ।—देना ( य० )  
 सहायता देना, सहारा पहुँचाना ।—वाला ( पु० )  
 साथी, सङ्गी । [ निर्मित शब्दा ।  
 साथरी दे० ( स्त्री० ) पत्तों का पिछोना, चढाई, तृण  
 सायिन या सायिनी दे० ( स्त्री० ) सहेली, सखी ।  
 साथी दे० ( पु० ) सङ्गी, मेली, मित्र, बन्धु, साथ का  
 पढ़ने वाला, सहू ।  
 साद, सादर तत्० ( वि० ) आदर सहित, सम्मान  
 पूर्वक ।—( स्त्री० ) गति विशेष ।  
 सादृश्य तत्० ( पु० ) समानता, तुल्यता, बराबरी ।  
 साध दे० ( स्त्री० ) इच्छा, चाह, अभिलाष ।  
 साधक तत्० ( पु० ) साधन करने वाला, धार्मिक  
 अनुष्ठान कर्त्ता, अभ्यासकारी, तपस्वी ।  
 साधन तत्० ( पु० ) उपाय, यत्न, उद्योग, चेष्टा,  
 अभ्यास, अनुष्ठान, व्याकरण के करणकारक का  
 दूसरा नाम ।  
 साधना तत्० ( स्त्री० ) साधन, अनुष्ठान, तपस्या;  
 सिद्ध करने का उपाय । ( क्रि० ) सिद्ध करना;  
 अभ्यास करना, ध्यान डालना, साधन करना ।  
 साधनिका ( स्त्री० ) साधना, उपाय, पूरा करने  
 की रीति ।

साधनीय तत् ( वि० ) साधन करने योग्या उत्तम कर्म, जिसका साधन करना उपयोगी हो ।

साधारण तत् ( वि० ) सामान्य, सहज, सरल, आम, जन समाज ।—तः ( अव्य० ) सामान्यतः, आम तौर से ।—धर्म ( पु० ) वह धर्म जिसके पालन का अधिकार सभी को है । ये ये हैं :—  
अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, दम, क्षमा, आर्जव और दान ।

साधित तत् ( वि० ) साधा गया, किया गया, सिद्ध, निष्पादित, पूर्ण किया हुआ ।

साधी ( स्त्री० ) ढहराई हुई, थमी हुई ।

साधु तत् ( पु० ) सज्जन, परोपकारी व्यक्ति, वैष्णव सम्प्रदाय के मनुष्य, एक जाति ।—ता ( स्त्री० ) श्रेष्ठता, साधु का कर्म ।—साधु ( वि० ) धन्य धन्य ।

साध्य तत् ( वि० ) साधनीय, साधन करने योग्य ।

सान तद् ( स्त्री० ) सिली, जिस पर अस्त्र तेज किये जाते हैं ।—शुभाना ( वा० ) इशारे से घात करना, इज्जत करना ।

सानन्द ( वि० ) सहर्ष, आनन्द के साथ ।

सानो दे० ( स्त्री० ) पशु भोजन विशेष, भूसा में पानी खली आदि डाल कर जो बनाई जाती है, बराबर ।

सानुकूल ( वि० ) कृपाळु, दयाळु, प्रसन्न ।

सान्निध्य ( पु० ) नजदीकपन, निकटता ।

सान्त्वन तत् ( पु० ) ढाँस देना, धीरज बँधाना, समझाना, बुझाना ।

सान्ना दे० ( क्रि० ) मिलाना, गूँथना, मँडना ।

सापन ( पु० ) रोग विशेष, जिसके कारण सिर के बाल गिर जाते हैं ।

सापराध तत् ( वि० ) अपराध विशिष्ट, अपराध-युक्त, अपराधी, दोषी, कलहारी, सदोष ।

साफल्य तत् ( पु० ) सफलता, फल सिद्धि ।

सावर दे० ( पु० ) पशु विशेष, बारहसिंहा का चर्म ।

सावृत दे० ( वि० ) अचूत, बिना टूटा फूटा, समूचा, समस्त ।

साम तत् ( पु० ) वेद विशेष, तीसरा वेद, गायी जाने वाली ऋचा । ( दे० ) संख्या, सौक, मूसल या लकड़ी के मुँह पर का लोहा ।

सामग्री तत् ( स्त्री० ) सामान, चीज़, वस्तु, उपकरण, असबाब ।

सामघ ( पु० ) समचौर, समधियों का मेल ।

सामना ( अव्य० ) आगे, आगाही, सम्मुख ।

सामन्त तत् ( पु० ) कावृ में जाये हुए राजा, माण्ड-लिक राजा ।

सामयिक तत् ( वि० ) कालोचित, समय के अनुकूल ।

सामर दे० ( पु० ) लवण विशेष, नोन ।

सामर्थ्य तद् ( स्त्री० ) शक्ति, बल, पराक्रम, योग्यता ।

सामर्थ्य तद् ( वि० ) समर्थ, बलवान्, पराक्रमी, शक्तिमान् ।

सामर्थ्य तत् ( पु० ) शक्ति, योग्यता, पराक्रम, बल ।

सामा दे० ( पु० ) सामान, सामग्री, भोजन सामग्री, बहुविध भोजन, जमाय, मण्डली की शोभा ।

सामाजिक तत् ( वि० ) सभासद, सभ्य, समाज सम्बन्धी, समाज विषयक ।

सामान ( पु० ) असबाब, सामग्री ।

सामान्य तत् ( पु० ) साधारण, मध्यम स्थिति का, चलनसार ।—तः ( क्रि० वि० ) साधारणतः, आम तौर से ।

सामान्या तत् ( स्त्री० ) गणिका, घेरपा, व्यभिचारिणी, नायिका विशेष ।

सामो दे० ( स्त्री० ) साम, सामने, आगे, प्रत्यक्ष ।

सामीप्य तत् ( वि० ) समीपता, निकटता, अदूरी, घनिष्टता ।

सामुद्रिक तत् ( वि० ) विद्या विशेष, जिससे हस्त-रेखा आदि का विचार किया जाता है ।

समुदे ( अव्य० ) सामने, आगे ।

सामुह्य या साम्ना या साम्न दे० ( पु० ) सापाद, सामने का आग, आगे, प्रत्यक्ष ।

सायङ्काल तत् ( पु० ) संध्याकाल, दिन और रात्रि का संधिकाल, साँक ।

सायुज्य ( पु० ) मोक्ष विशेष, जिसमें भक्त ईश्वर में मिल जाता है । एकत्व, अभेदत्व ।

सार तत् ( पु० ) खाद, लोहा, हीरा, वस्तु का उत्तम भाग ।—क ( पु० ) वाँस, मैना ।

सारङ्ग तत् ( पु० ) राग विशेष, मोर, मयूर, सर्प, मेघ, शहज, हरिण, जल, पानी, एक देश का

चातक, पपीहा, हाथी, राजहंस, सिंह, कोहल, कोकिल, कामधेव, रंग विशेष, वण, धनुष, भ्रमर, मधुमक्षिका । ( स्त्री० ) मधु की मधुखी, कपूर, कमल, आभरण, मूषण, पुष्प, छत्र, शोभा, रात्रि, दीपक, खी, शंख, वज्र ।

सारङ्गिया ( पु० ) सारङ्गी बजाने वाला ।

सारङ्गी दे० ( स्त्री० ) वाद्य विशेष ।

सारथि या सारथी तद्० ( पु० ) रथवाह, रथ चढ़ाने वाला, गाड़ी हाँकने वाला ।

सारना दे० ( क्रि० ) सरकाना, हराना, दूर करना ।

सारस तद्० ( पु० ) पक्षि विशेष, एक पक्षी का नाम ।

सारस्वत ( पु० ) देश विशेष, ब्राह्मणों की जाति विशेष ( वि० ) सरस्वती सम्बन्धी ।

सारा दे० ( वि० ) सम्पूर्ण, समस्त, सम्बन्ध—सार सत्यासत्य, भलाबुरा, साथ फूट ।

सारार्थ तद्० ( वि० ) [ सार + अर्थ ] मुख्यार्थ, प्रधान अर्थ ।

सारांश दे० ( पु० ) निबोझ, मुख्य अंश, मुख्यभाग ।

सारिका तद्० ( स्त्री० ) तोता, मैना, पक्षी विशेष ।

सारी दे० ( स्त्री० ) साड़ी, स्त्रियों के पहनने योग्य कपड़ा ।

सारङ्ग्य ( पु० ) मोक्ष विशेष, जिससे मुमुक्षु अपने आराध्य देव के रूप का हो जाता है ।

सार्थक तद्० ( वि० ) अर्थसहित, अर्थ युक्त, सफल ।

सार्वभौम तद्० ( पु० ) राजा, महाराजा, चक्रवर्ती राजा ।

साल तद्० ( पु० ) एक प्रकार की लकड़ी, साल का वृक्ष, वर्ष ।—गिरह दे० ( स्त्री० ) वर्षगांठ, जन्मदिवस । [ छेदन, भेदन, वेधन ।

सालन दे० ( पु० ) बना हुआ मस, मस की तरकारी, सालना दे० ( क्रि० ) भेदना, चुमाना, गड़ाना ।

सालसा दे० ( पु० ) शीघ्र विशेष, खींचा हुआ अर्क ।

साला तद्० ( पु० ) श्यालक, पत्ती का भाई ।

सालिग्राम ( पु० ) विष्णु की मूर्ति विशेष, जो गण्ड की नदी में निकलती है । [ की बहिन ।

साली तद्० ( स्त्री० ) श्यामी, साले की बहिन, स्त्री

सालू, सालूर दे० ( पु० ) एकरंगा, लाल रङ्ग का कपड़ा विशेष ।

सालोफ्य ( पु० ) मोक्ष विशेष, जिससे मुमुक्षु अपने आराध्य देव के लोक में चला जाता है ।

सालोतरी तद्० ( पु० ) घोड़ों का वैद्य, अश्व चिकित्सक । [ घालक ।

सावक तद्० ( पु० ) शावक, शिशु, बच्चा, लड़का,

सावकरन तद्० ( पु० ) स्वाभकर्ण, एक प्रकार का यज्ञीय वस्त्र घोड़ा । [ छुट्टी ।

सावकाश तद्० ( पु० ) अवकाश, अवसर, फुरत,

सावज दे० ( पु० ) बनेला पशु, अदर में मिला पशु ।

सावधान तद्० ( पु० ) सतर्क, चौकस, सावचेत,

कार्यों में जाग्रत ।—ता ( स्त्री० ) सतर्कता ।

सावधानी तद्० ( स्त्री० ) सावधानता, चौकसी, सावचेती ।

सायन तद्० ( पु० ) श्रावण, एक महीने का नाम ।

—हरेन भादों सूले ( वा० ) सदा एक समान ।

सायन्त तद्० ( पु० ) सामान्त, माण्डलीक राजा,

अधिराज, करद राजा, चक्रवर्ती के अधिकारभुक्त

राजा, अधीनस्थ राजा ।—( स्त्री० ) चीरता,

बहादुरी ।

सावयव ( वि० ) अवयव सहित । [ सूर्य ।

सावर्ण्य ( पु० ) चौदह मनुष्यों में से आठवें मनु ( वि० )

सावर्ण्य दे० ( पु० ) धान्य विशेष, श्यामक ।

सास, सासु तद्० ( स्त्री० ) स्वभू, स्वसुर की स्त्री,

स्त्री या पति की माता ।

सांसत ( स्त्री० ) कष्ट, तकलीफ ।

सांसना ( क्रि० ) डाँटना, ताड़ना ।

साह दे० ( पु० ) पनिया, महाजन, रोजगारी, सेठ ।

—चर्य ( पु० ) संपत्ति, साथ ।

साहनी ( स्त्री० ) फौज, सेना ।

साहस तद्० ( पु० ) वयोग, उत्साह, धीरता, कार्य-

त्तरता, कार्यों में अतिग्रह संशयोप, अपराध,

अनुचित कार्य करने का हौसला ।

साहसी तद्० ( वि० ) वयोगी, वसाही, साहसयुक्त,

निर्भीक, निडर । [ मद्दत ।

साहाय्य तद्० ( वि० ) सहायता, उपकार, सहारा,

साहित्य तद्० ( पु० ) उपकारण, सामान, सामग्री,

विषा विशेष, काव्य अथवा आदि ।

साही दे० ( स्त्री० ) जन्तु विशेष, जिसके शरीर में काटे होते हैं ।

साह ( पु० ) महाजन ।

साहकार दे० ( पु० ) महाजन, जेन देन करने वाला, कारवार करने वाला, वयिक् ।

साहकारी दे० ( स्त्री० ) महाजनी, जेनदेन, कारवार ।

सिंगरौल ( पु० ) शृङ्गेरपुर, ग्राम विशेष । [ विशेष ।

सिंघाड़ा ( पु० ) जल में डूबस होने वाला फल

सिंह तत्० ( पु० ) मृगेन्द्र, केसरि, मृगराज ।—मुखी

( पु० ) यास ।—द्वार ( पु० ) काटक, राजा के

महल का बड़ा द्वार ।—नाद ( पु० ) गम्भीर

ध्वनि, सिंह का शब्द ।

सिंहनी दे० ( स्त्री० ) सिंह, सिंह की मादा ।

सिंगलद्वीप तत्० ( पु० ) द्वीप विशेष, लङ्का, सिलोन ।

सिंहासन तत्० ( पु० ) राजासन, राजगद्दी, विचार

का आसन । [ माता ।

सिंहिका तत्० ( स्त्री० ) राक्षसी विशेष, राहु की

सिकता तत्० ( स्त्री० ) बालू, रेत, बालुका ।

सिकड़ी दे० ( स्त्री० ) लोहे की जालीदार झंगूठि ।

सिकरी, सिकली दे० ( स्त्री० ) सांकल, आभूषण,

विशेष ।

सिकहर दे० ( पु० ) सींका, रस्ती के बने धौले जो टांगे

जाते हैं, मिछी आदि से रफा के लिए चीजें रखी

जाती हैं ।

सिक्कुइन दे० ( स्त्री० ) बल, शिकन, सिमटन ।

सिख दे० ( पु० ) जाति विशेष, मानक पन्थ के

अनुयायी ।

सिक्क ( वि० ) सींचा हुआ ।

सिखनाहट दे० ( स्त्री० ) शिषा, सीख ।

सिखर तत्० ( पु० ) शिखर, पर्वतशृङ्ग, पहाड़ की

चोटी, ऊँचे मकानों का ऊपरी भाग ।

सिखरन तत्० ( पु० ) वह पेय पदार्थ जो दही में

दूध, चीनी और मसाले आदि डाल कर बनाया

जाता है । [ देना, बताना ।

सिखलाना दे० ( क्रि० ) पढ़ाना, सिखाना, शिषा

सिखार दे० ( स्त्री० ) शिषा, सिखावट, पढ़ाई ।

सिखाना दे० ( क्रि० ) बतलाना, सिखलाना ।

सिगरी दे० ( वि० ) समग्र, समस्त, सम्पूर्ण, सारा ।

सिङ्गा, सिंगा दे० ( पु० ) रणसिंगा, तुरही, बाघ विशेष ।

सिङ्गार, सिंगार तत्० ( पु० ) शृङ्गार, रोमा, सजावट ।

सिङ्गारना, सिंगारना दे० ( पु० ) सजाना, शोभा

बनाना, सजावट करना ।

सिङ्गारिया, सिंगारिया दे० ( पु० ) शृङ्गार करने

वाला, पुजारी, पूजा करने वाला, पूजक ।

सिङ्गौटी, सिंगौटी दे० ( स्त्री० ) पशुओं का आभूषण

विशेष, जो उनके सींगों पर लगाया जाता है ।

सिजाना ( क्रि० ) उवालना, रींधना । [ दुःख देना ।

सिझाना दे० ( क्रि० ) पकाना, रींधना, उवालना,

सिङ्ग दे० ( स्त्री० ) उन्मत्तता, पागलपन ।

सिङ्गी दे० ( पु० ) बावला, उन्मत्त, पागल ।

सित तत्० ( वि० ) धवल, श्वेत, शुक्ल, धौला ।

सितरी दे० ( स्त्री० ) स्वेद, पसीना, बल्लेद ।

सितजा दे० ( स्त्री० ) चेचक, माता का रोग ।

सिद्ध तत्० ( पु० ) देवयानि विशेष, देवता का एक

भेद । योग की आठ सिद्धियाँ जिन्हें प्राप्त हैं ।

( वि० ) पूरा, समाप्त, पूरा, तैयार, बना हुआ,

सावित किया हुआ । ( पु० ) साधु, योगी तपस्वी ।

—योग ( वि० ) ज्योतिष का योग विशेष ।

सिद्धि ( स्त्री० ) मनोवाञ्छित फल पाना ।—दाता

( पु० ) श्रीगणेशजी ।

सिद्धान्त तत्० ( पु० ) दृढ़ निश्चय, वादि और प्रति-

वादि द्वारा युक्ति तर्क से सिद्ध किया हुआ अर्थ ।

सिद्धान्ती तत्० ( पु० ) मिमांसक, विचारक ।

सिधारना दे० ( क्रि० ) जाना, चला जाना, उठना,

स्थानत्याग करना । [ एक जो नाक से निकलता है ।

सिनक दे० ( स्त्री० ) पोंटा, नेटा, नासिका का मल,

सिनकना दे० ( क्रि० ) नाक साफ करना, धुनकना ।

सिन्दर तत्० ( पु० ) उपधातु विशेष, जिसका भस्म

दवा के काम में आता है । स्त्रियों का सोहाग चिन्ह ।

सिन्धु तत्० ( पु० ) समुद्र, सागर, पयोधि, एक नद

का नाम, जिसका दूसरा नाम श्टक है । प्रान्त

विशेष, सिन्धप्रदेश, एक रागनी का नाम ।

सिन्धुर तत्० ( पु० ) हाथी, हलि, फरी, गज ।

—गमिनी ( स्त्री० ) सुन्दर जाति वाली स्त्री,

जिसकी गति गज के समान हो ।

सिपाह ( स्त्री० ) सेना फौज ।  
 सिपाही ( पु० ) अर्धसैनिक, चपरासी सैनिक ।  
 सिप्र तद् ( पु० ) निद्राघ, जल, पसीना, स्वेद ।  
 सिप्रा तद् ( स्त्री० ) नदी विशेष, जो उज्जैन के पास है ।  
 सिमट दे० ( स्त्री० ) सकुच, शिकन, सिकोड़न ।  
 सिमटन दे० ( स्त्री० ) सिकुड़न, शिकन ।  
 सिमिटना दे० ( क्रि० ) सिकुड़ना, बंदरना ।  
 सिमाना तद् ( पु० ) सीमा, मंड, अवधि, सीमाना ।  
 सिय ( स्त्री० ) सीता ।  
 सियन ( स्त्री० ) सीमन, सिलाई । [ दस ।  
 सियाना दे० ( पु० ) प्रवीण, चतुर, निपुण, अभिज्ञ, सियार तद् ( पु० ) शृंगार, गीत ।  
 सिर तद् ( पु० ) मस्तक, माथा, कपाल ।—उठना ( वा० ) स्वामी का विद्रोह करना, सिर में पीड़ा होना ।—करना ( वा० ) प्रारम्भ करना ।—काटना ( वा० ) शिरच्छेद करना, मूढ़ काटना ।—काढ़ना ( वा० ) प्रसिद्ध होना, नामी होना, उद्यत होना, प्रसृत होना ।  
 सिरका दे० ( पु० ) आसव विशेष ।  
 सिरकी दे० ( स्त्री० ) पतले सेंटे की छावनी ।  
 सिरखप दे० ( वि० ) मनचला, प्रणी, अपनी देक पर अटल । [ करना ।  
 सिर खपाना दे० ( वि० ) दिमाग लड़ाना, सिरपची सिरखपी दे० ( स्त्री० ) ढाँढस, जोखिम ।  
 सिरखड़ा दे० ( वि० ) घमंडी, अहङ्कारी ।  
 सिरजना दे० ( क्रि० ) रचना, उपग्रह करना, बनाना ।  
 सिर फोड़ोवल दे० ( स्त्री० ) झगड़ा, लड़ाई ।  
 सिरसीगा दे० ( वि० ) झगड़ालू, दुंगा करने वाला ।  
 सिरहाना दे० ( पु० ) सिर की ओर ।  
 सिरा दे० ( पु० ) रग, नस ।  
 सिरात दे० ( क्रि० ) ठंडा, शीतल, शीत ।  
 सिराना दे० ( क्रि० ) बन पड़ना, होना, ठंडा करना ।  
 सिरिस ( पु० ) वृक्षविशेष । [ पीसा जाता है ।  
 सिल ( स्त्री० ) पत्थर विशेष जिस पर मसाला आदि सिलपट दे० ( वि० ) चौपट, उजाड़, बराबर, समतल ।  
 सिलवट्टा दे० ( पु० ) सिल जोड़ा ।  
 सिलवाई दे० ( स्त्री० ) सीने की मजदूरी ।

सिलघाना दे० ( क्रि० ) सियाना, सिलाना, सिलाई करना ।  
 सिलाई दे० ( स्त्री० ) सीने का काम, सीने की मजदूरी ।  
 सिलाना दे० ( क्रि० ) पहनने के कपड़े बनवाना ।  
 सिली दे० ( स्त्री० ) पथरी, सिल, शान ।  
 सिल्ली ( स्त्री० ) देखो सिली ।  
 सिवाना दे० ( पु० ) सीमा, छेद, अवधि ।  
 सिवार दे० ( पु० ) देखो " सेवार " ।  
 सिसकना दे० ( क्रि० ) रोना, धीरे धीरे रोना ।  
 सिसकारी दे० ( स्त्री० ) सिस सिस शब्द करना ।  
 सिसकी दे० ( स्त्री० ) सिसकारी ।  
 सिहरन दे० ( स्त्री० ) कंपन, घबराहट । [ घराना ।  
 सिहरना दे० ( क्रि० ) कंपना, कम्पित होना, धर-सिहरा दे० ( पु० ) एक प्रकार का मुख का आवरण जो बूढ़ा की पगड़ी के पास माथे पर बाँधा जाता है ।  
 सिहराना दे० ( क्रि० ) थापना, धन्त होना, थक जाना ।  
 सिद्धाना ( क्रि० ) देख कर समुद्र होना ।  
 सीक दे० ( स्त्री० ) वृष, घास, नरकट ।  
 सीका दे० ( पु० ) लकीर, भारी, सिकहर, छींका ।  
 सीकहर ( पु० ) रस्ती की घनी झोलुमा एक चीज जो छूत में लटकायी जाती है और उसमें चीजें रख दी जाती हैं जिससे उसमें चींटियाँ न चढ़ें और उसे बिखी न खाए, छींका ।  
 सीकिया दे० ( पु० ) धारी वाला कपड़ा ।  
 सींग तद् ( स्त्री० ) शृङ्ग, विषाण, पशुओं की सींग ।  
 सींगड़ा दे० ( पु० ) सींग का बना हुआ पात्र, जिसमें वारूद रखा जाता है ।  
 सींगा दे० ( पु० ) नरसिंगा, तुरही, घाघ विशेष ।  
 सींगी दे० ( स्त्री० ) तुमकी, सींगा, मछली ।  
 सींचना दे० ( क्रि० ) सींचना, पाटना, पानी देना ।  
 सींचाई दे० ( स्त्री० ) पानी देने का काम ।  
 सींची दे० ( स्त्री० ) सींचने का समय ।  
 सीख तद् ( स्त्री० ) शिक्षा, पाठ, उपदेश, सिखावट ।  
 सीखना दे० ( क्रि० ) शिक्षा पाना, अभ्यास करना, पढ़ना ।  
 सीचना दे० ( क्रि० ) सिंचाई करना ।  
 सीमना ( क्रि० ) गलना, उबलना ।

सीजना दे० ( कि० ) पसीजना, रसना, निसरना,  
निकलना ।

सीटना दे० ( कि० ) ढोंगे करना, झूठी प्रशंसा करना ।

सीटी दे० ( स्त्री० ) मुँह से बजाया हुआ शब्द, सीटी,  
यजाने का वाजा ।

सीठना दे० ( कि० ) न्याह का गीत ।

सीठा दे० ( पु० ) रसहीन, फीका, असार, नीरस ।

सीठी दे० ( स्त्री० ) खूद, छानन, निकम्मा भाग,  
फोक ।

सीढ़ी दे० ( स्त्री० ) सोपान, पैड़ी, आरोह, निसेनी ।

सीत ( पु० ) ओस ।—रस ( पु० ) मुख पर का रोग  
विशेष ।

सीतला तद् ( स्त्री० ) शीतला, माता, गोदी, चेचक ।

सीता तद् ( स्त्री० ) जानकी, वैदेही, मिथिला के  
राजा जनक की कन्या, श्रीरामचन्द्र की पत्नी, हल,  
हल का फल ।—पति ( पु० ) रामचन्द्र ।—फल  
( पु० ) फल विशेष, शरीफा ।

सीदना दे० ( कि० ) दुःखी होना ।

सीधा दे० ( पु० ) सोफा, अवक, निरचल, शुद्ध,  
सच्चा, कोरा अल ।

सीना दे० ( कि० ) सिलाई करना, तागना, ढाँकना,  
तुरपना । [ मोती जिसमें से निकाला जाता है ।

सीप, सीपी दे० ( स्त्री० ) घोंघा, शङ्ख, सुतई, सूती  
सीमन्त ( पु० ) माँग काढ़ना, गर्भवती स्त्री का संस्कार  
विशेष ।

सीमन्तिनी ( स्त्री० ) स्त्री, औरत ।

सीमन्ती ( स्त्री० ) औरत, नारी, अबला, स्त्री ।

सीमा तद् ( स्त्री० ) हद्द, सिमाना, अवधि, ढाँच ।

—विषाद ( पु० ) अत्यन्त प्रकार के न्याय के  
अन्तर्गत एक न्याय ।

सीय तद् ( स्त्री० ) सीता, जानकी, वैदेही ।

सीरा दे० ( पु० ) भोजन विशेष, मोहनभोग, हलुवा,  
हलुआ ।

सीला दे० ( वि० ) गीला, भीगा हुआ, शीतल ।

सीवन दे० ( पु० ) सिलाई, जोड़, मेल ।

सीय दे० ( स्त्री० ) सीमा, हद्द, छोर, मर्यादा ।

सीस तद् ( पु० ) शीर्ष, सिर, मस्तक, कपाल ।—

फूल ( पु० ) सिर का आभूषण विशेष ।

सीसक, सीसा तद् ( पु० ) धातु विशेष, स्वनाम  
प्रसिद्ध धातु, काँच ।

सीसों ( पु० ) शीशम का वृक्ष ।

सु तद् ( उप० ) उत्तमता योधक ।

सुअन ( पु० ) वेदा, पुत्र ।

सुअर तद् ( पु० ) सुकर, बराह ।

सुअर ( पु० ) रसोद्भवा, शायची ।

सुँघाना दे० ( कि० ) महकाना, सुवासना ।

सुकचाना दे० ( कि० ) संकुचित होना, सिमटना,  
छरना, भयपाना, सकुचाना ।

सुकटा दे० ( वि० ) दुर्बल, दुपला, पतला ।

सुकटी दे० ( स्त्री० ) भूखी मछली ।

सुकड़ना दे० ( कि० ) सिमटना, संकुचित होना ।

सुकर तद् ( वि० ) अल्प परिश्रम से करने योग्य,  
सीधा । [ समय ।

सुकाल तद् ( पु० ) सुप्रयसर, अच्छी ऋतु, उत्तम

सुकुमार तद् ( वि० ) मनोहर, सुन्दर, कोमल ।

सुदृढ तद् ( पु० ) पुण्य, उत्तम कर्म । [ धर्मनिष्ठ ।

सुकृती तद् ( पु० ) पुण्यात्मा, पुण्यवान, धर्मात्मा,

सुख तद् ( पु० ) आराम, फल, शान्ति, इन्द्रियों की

वृत्ति ।—चैन ( वा० ) विश्राम, अवकाश, अथसर ।

—तला ( पु० ) जूते का तला ।—द ( वि० ) सुख-

दायक, आनन्ददायक ।—दास ( पु० ) एक जाति

का नाम ।—जाना ( कि० ) सुखाना, सूझा करना ।

सुखाला दे० ( वि० ) सहज, सुख से, आनन्द से ।

सुखित तद् ( वि० ) सुखी, सुख प्राप्त, आनन्दिष्ठ ।

सुखिया दे० ( वि० ) सुखी, सुखित, सुखयुक्त आनन्दी,

विलासी ।

सुखी तद् ( वि० ) सुख करने वाला ।

सुख्याति तद् ( स्त्री० ) कीर्ति, यश, प्रसिद्धि, नाम,

नामवरी, प्रतिष्ठा, मर्यादा ।

सुगति तद् ( स्त्री० ) उत्तम गति, अच्छी अवस्था ।

सुगन्ध या सुगन्धि तद् ( स्त्री० ) अच्छी वास,

महक, शोभन गन्ध ।—त ( वि० ) सुगन्धदार,

सुगन्ध वाला । [ वास ।

सुगन्धी तद् ( पु० ) सुगन्ध, महक, वास, अच्छी

सुगम तद् ( वि० ) सहज, सरल, सुकर, अल्प

श्रम से करने योग्य ।—ता ( स्त्री० )



सुगामी दे० ( वि० ) निम्नोल, मोलरहित, जिसमें शिकन न हो, कसा हुआ ।  
 सुग्रीव तत्० ( पु० ) वानरराज बालि का द्यौय भाई ।  
 सुघड़ दे० ( वि० ) सुन्दर, मनोहर, सुडील ।—ई ( स्त्री० ) सुन्दरता । [ दार, सचा ।  
 सुचि दे० ( वि० ) निर्मल, स्वच्छ, मलरहित, ईमान-सुचकना दे० ( कि० ) विस्मृत होना, अचम्भित होना, आश्चर्य में होना ।  
 सुचरित्रा ( स्त्री० ) पतिव्रता ।  
 सुचरित तत्० ( वि० ) उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी, धर्मात्मा ।  
 सुचित तत्० ( वि० ) सुगम, निश्चिन्त, चिन्ता शून्य, सावधान ।  
 सुचिताई दे० ( स्त्री० ) सावधानी, सुचितता ।  
 सुचेत तत्० ( वि० ) सावधान, चौकस, सतर्क ।  
 सुजन तत्० ( वि० ) साधुजन, भलामानस, सदाचारी, परोपकारी ।—ता ( स्त्री० ) साधुता, परोपकारिता, भलमंसी ।  
 सुजस तत्० ( पु० ) सुख्याति, कीर्ति, सुन्दर यश ।  
 सुज्ञान तत्० ( वि० ) ज्ञानवान्, ज्ञाता; अभिज्ञ, प्रवीण, दक्ष ।  
 सुज्ञाना दे० ( कि० ) कुलाना, यज्ञाना । [ समकाना ।  
 सुभाना दे० ( कि० ) दिखाना, बताना, स्मरण कराना, सुटकना दे० ( कि० ) संकुचित होना, निघलना, घूटना, पतली छड़ी से पीटना ।  
 सुट्टुन दे० ( स्त्री० ) लट्ट, छड़ी, लाठी, लठिया ।  
 सुठि दे० ( वि० ) सुन्दर, मनोहर, उत्तम ।  
 सुट्टकना दे० ( कि० ) घूँट घूँट करके पीना ।  
 सुट्टकी दे० ( स्त्री० ) गुठ्ठी की डोरी छोड़ना ।  
 सुट्टप दे० ( स्त्री० ) फल, आस, कैर ।  
 सुट्टपना दे० ( कि० ) निगलना, चाटना, चूसना ।  
 सुडौल दे० ( वि० ) सुन्दर, शोभन, सुन्दर आकार वाला, सुघड़ ।  
 सुत तत्० ( पु० ) पुत्र, बेटा, लड़का, आत्मज, तनय ।  
 सुतरा दे० ( पु० ) बाला, कड़ा, आभूषण विशेष ।  
 सुतरी दे० ( स्त्री० ) सन की धनी पतली रस्सी ।  
 सुता तत्० ( स्त्री० ) कन्या, तनया, दुहिता, पुत्री

सुतार दे० ( पु० ) बर्ही, खाती, जाति विशेष, जिनका लकड़ी का काम करना व्यवसाय है । अच्छा समय, अनुकूल समय ।  
 सुतोड़ी ( स्त्री० ) अति चेखी, धारदार ।  
 सुथन या सुथनी या सूथना दे० ( पु० ) पायजामा, पैरों में पहनने का कपड़ा ।  
 सुथरा दे० ( वि० ) साफ़, स्वच्छ, अच्छा, अनुदा ।  
 —साही ( पु० ) नानकसाही साधु ।  
 सुदर्शन तत्० ( पु० ) विष्णु के चक्र का नाम, पुष्प ।  
 ( वि० ) जो देखने में मनोहर हो ।  
 सुदामा तत्० ( पु० ) एक दरिद्र ब्राह्मण, श्रीकृष्ण का सहायक श्रीकृष्ण ने उसे बहुत धन देकर धनी बनाया था ।  
 सुदि तत्० ( अ० ) शुद्ध पक्ष, उजाला पाल ।  
 सुदिन तत्० ( पु० ) अच्छे दिन, भला अवसर, सौभाग्य ।  
 सुदो तत्० ( अ० ) देखो " सुदि " ।  
 सुदृढ़ तत्० ( पु० ) कठोर, अदृढ़ ।  
 सुदृश्य तत्० ( वि० ) उत्तम, दर्शनीय, देखने योग्य, मनोज्ञ, मनभावन ।  
 सुध दे० ( स्त्री० ) स्मरण, चेत, ज्ञान, चिन्ता ।—सुध समक, चेत, ज्ञान, बुद्धि ।—लेना ( वा० ) समाचार पूछना, याद करना, स्मरण करना । [ जाना ।  
 सुधरना दे० ( कि० ) बनना, सम्हल जाना, बन सुर्धा दे० ( अ० ) सहित, समेत, युक्त ।  
 सुधांशु ( पु० ) चन्द्रमा, चाँद, कपूर ।  
 सुधा तत्० ( स्त्री० ) अमृत, पीयूष, अमी, चूना, फलहं, मकान पोतने का द्रव्य द्रव्य विशेष ।  
 —कर ( पु० ) चन्द्रमा ।  
 सुधार ( स्त्री० ) मरम्मत ।  
 सुधारना दे० ( कि० ) बताना, सवॉरना, सजाना ।  
 सुधि—( देखो ) " सुध " ।  
 सुधी तत्० ( पु० ) बुद्धिमान्, अनुभवी, पण्डित, विज्ञ, तज्ज्ञेकार ।  
 सुन तत्० ( वि० ) शून्य, रिक्त, रीता ।—कातर ( पु० ) सर्पविशेष ।—गुन दे० ( स्त्री० ) मन्द चर्चा, कानाफूसी ।—ग्रहरी ( स्त्री० ) रोग विशेष, कुष्ठरोग का पूर्व रूप ।—सर ( पु० ) एक प्रकार

का गहना ।—सान ( वि० ) एकान्त, उजाड़,  
वीरान ।—हरा या—हला ( वि० ) सोने का ।  
सुनाना दे० ( क्रि० ) श्रवण कराना, निवेदन करना,  
जानाना ।

सुनावट दे० ( स्त्री० ) सुनाहट, मौन, सुप ।  
सुनार दे० ( पुं० ) जाति विशेष, जो गहने बनाता है,  
स्वर्णकार ।

सुनारिन दे० ( स्त्री० ) सुनार की स्त्री ।  
सुनारी दे० ( स्त्री० ) सुनार का काम, सुनार की  
विद्या, सुन्दरी स्त्री ।

सुनावनी ( स्त्री० ) मरने का समाचार ।  
सुनाहट दे० ( स्त्री० ) सुनावट ।  
सुनौति ( स्त्री० ) अच्छी नीति, शिष्टाचार ।  
सुन्दर तत् ( वि० ) सुरूप, रूपवान्, मनोहर ।  
—ता ( स्त्री० ) मनोहरता, सुरूपता ।

सुन्दरी तत् ( स्त्री० ) रूपवती, सुरूपा ।  
सुन्धावट, सुन्धावट दे० ( स्त्री० ) गन्ध विशेष,  
मिट्टी की गन्ध, सुवास ।

सुन्न दे० ( पुं० ) सन्नदा, विदी ।  
सुन्ना ( पुं० ) सिकर, बिंदी । [ सुपन्थ ।  
सुपथ तत् ( पुं० ) उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता, सुमार्ग,  
सुपात्र तत् ( वि० ) योग्य, उत्तम पात्र, सजन,  
उत्तम जन ।

सुपारी दे० ( स्त्री० ) पूरी फल, प्रसिद्ध फल विशेष ।  
सुपास दे० ( पुं० ) सुविधा, सुमीठा ।  
सुपुत्र या सुपूत तत् ( पुं० ) अच्छा लड़का, सपुत्र ।  
सुस्त तत् ( वि० ) निद्रित, सोया हुआ ।  
सुस्ति ( स्त्री० ) नींद, निद्रा ।

सुफल तत् ( वि० ) उत्तम फल, लाभदायक, लाभ-  
कारी, सफल ।— ( स्त्री० ) खजूर ।  
सुबुद्धि तत् ( स्त्री० ) उत्तम बुद्धि, प्रवीणता ।  
सुभग तत् ( पुं० ) सुन्दर पति, प्यारा, प्रिय ।  
—ता ( स्त्री० ) उत्तमता, श्रेष्ठता ।

सुभट तत् ( पुं० ) उत्तम योद्धा, वीर, शूर, लड़ाई  
सिपाही ।

सुभद्रा ( स्त्री० ) श्रीकृष्ण की बहिन ।  
सुभागा तत् ( स्त्री० ) सौभाग्यवती, सधवा ।  
सुभाव तत् ( पुं० ) स्वभाव, अच्छा स्वभाव ।

सुभोता दे० ( स्त्री० ) श्रवसर, श्रवणार, सुविधा ।  
सुमङ्गल तत् ( पुं० ) शुभ, फलाण, कुशल ।  
सुमति तत् ( स्त्री० ) सुबुद्धि, भलमंसी, अच्छी बुद्धि ।  
सुमन तत् ( पुं० ) फूल, पुष्प, कुसुम ।  
सुमन्त तत् ( पुं० ) राजा दशरथ का सचिव, सारथी ।  
सुमरण दे० ( पुं० ) स्मरण, याद, भजन ।  
सुमरना दे० ( क्रि० ) स्मरण करना, जपना, नाम  
लेना, भजन करना ।

सुमिरनी दे० ( स्त्री० ) छोटी माला, स्मरण करने के  
लिये २० दानों की बनी माला ।

सुमित्रा तत् ( स्त्री० ) राजा दशरथ की छोटी पट-  
रानी, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता ।

सुमेरु तत् ( पुं० ) पर्वत विशेष, उत्तर भूप, केन्द्र,  
मध्य स्थान, माला की बड़ी मनिया ।

सुम्बा, सुम्बा दे० ( स्त्री० ) तोप या बन्दूक की टसनी,  
गज, छोड़े आदि को धेदने का औजार ।

सुयश तत् ( पुं० ) सुख्याति, कीर्ति, सुन्दर शरा ।  
सुयोग ( पुं० ) अच्छा अवसर, अच्छा योग ।

सुर तत् ( पुं० ) देवता, देव, अमर, सूर्य, स्वर ।—सुर  
( पुं० ) बृहस्पति ।—पति ( पुं० ) इन्द्र ।—पुर  
( पुं० ) अमर ।—तृक ( पुं० ) देवदूत, कल्पदूत ।  
—मिलाना ( या० ) धातों का सुर मिलाना  
कई एक धातों को एक स्वर करना ।

सुरङ्ग तत् ( स्त्री० ) संध, जमीन के भीतर का मार्ग ।  
सुरत दे० ( स्त्री० ) मुख, याद, चेत, स्मृति, ( तत् )  
( पुं० ) मैथुन, स्त्रीमेलन ।

सुरती दे० ( स्त्री० ) तम्बाकू, तमाकू, तैलो ।

सुरतोला दे० ( वि० ) स्मरणकर्ता, सावधान, सुचेत,  
याददात करने वाला ।

सुरतेन दे० ( स्त्री० ) रती हुई स्त्री ।

सुरभि तत् ( पुं० ) सुगन्ध ।

सुरमा दे० ( पुं० ) अज्ञान विशेष ।

सुरस तत् ( वि० ) रस युक्त, उत्तम रसयुक्त ।

सुरसुराना दे० ( क्रि० ) सरसुराना, रँगना ।

सुरसुरी दे० ( स्त्री० ) गुद सुरी ।

सुरा तत् ( स्त्री० ) मद्य, मदिरा, आनंद, मरान ।

सुरूप तत् ( वि० ) सुन्दर, सुधन, सुवैल ।

सुरेतिन दे० ( स्त्री० ) अविनाशिता भाषा, रक्षनी ।

सुलगांना दे० ( कि० ) लहकना, लहराना, जलना,  
 पुं आ निकलना ।  
 सुलगांना दे० ( कि० ) बालना, लहकाना, जलाना ।  
 सुलभना दे० ( कि० ) सुधरना, सुलना ।  
 सुलभाना दे० ( कि० ) उकेलना, सुधारना, खोलना ।  
 सुलभ दे० ( वि० ) सुभाष्य, कम कीमत, अल्पमूल्य,  
 सहज, सुगम, आसान, सहल ।—ता ( स्त्री० )  
 सुगमता ।  
 सुलक्ष्ण तत् ( पु० ) शुभचिह्न ।  
 सुलाना दे० ( कि० ) शयन कराना, पौदाना ।  
 सुवचन तत् ( पु० ) विशद वचन, प्रिय वाणी ।  
 सुवर्ण तत् ( वि० ) सुजाति, अच्छी जाति, उत्तम,  
 श्रेष्ठ, सुन्दर, ( पु० ) सोना, काबान ।  
 सुवास तत् ( पु० ) सुगन्ध, सुगन्धि ।  
 सुवैया दे० ( वि० ) सोने वाला ।  
 सुशील तत् ( वि० ) उत्तम स्वभाव वाला ।  
 सुश्री तत् ( वि० ) सुन्दर, सजीला ।  
 सुपुति तत् ( स्त्री० ) अवस्था विशेष, योगियों की  
 ध्यानावस्था ।  
 सुसकारना दे० ( कि० ) पुचकारना, फनकारना,  
 कुकियाना, छोटे बच्चों को शौचादिक कराना ।  
 सुसताना दे० ( कि० ) विश्राम करना, थकापट  
 उतारना ।  
 सुसमय तत् ( पु० ) अच्छा समय, सुकाल ।  
 सुस्त दे० ( वि० ) शिथिल, डीला, निर्बल, दुबला ।  
 सुस्थ तत् ( वि० ) नीरोग, अच्छा, भला, चंगा ।  
 सुहराना दे० ( कि० ) वदन पर धीरे धीरे हाथ फेरना ।  
 सुहाई ( वि० ) शोभायमान ( कि० ) शोभित ।  
 सुहाग तद् ( पु० ) सौभाग्य, सधवापन ।  
 सुहागन, या सुहागिन दे० ( स्त्री० ) सधवा स्त्री,  
 जिसका पति वर्तमान हो ।  
 सुहागा दे० ( पु० ) वंजन, चार विशेष । [ भावन ।  
 सुहाता दे० ( वि० ) अभीप्सित, इष्ट, चाहीता, मन-  
 सुहाना दे० ( कि० ) अच्छा मालूम होना ।  
 सुहावना दे० ( कि० ) रूपना, लगना । ( वि० )  
 सुन्दर, मनभावना ।  
 सुहृद् तत् ( पु० ) मित्र, वन्धु, हितचिन्तक, हित् ।  
 सुआ दे० ( पु० ) तोला, सुग्गा, बोरा सोने का सूजा ।

सुई दे० ( स्त्री० ) कपड़े सोने की सलाई, सूची ।  
 सुग्रा ( पु० ) पड़वा, मैस का बछड़ा ।  
 सुघना दे० ( कि० ) नाक से किसी सुगन्धयुक्त पदार्थ  
 की महक लेना । [ तमाकू ।  
 सुघनो दे० ( स्त्री० ) हुंलास, नास, सूँघने की  
 सूँट दे० ( स्त्री० ) चुप्पी, मौन, श्रवाक, नीरव ।  
 सुँड तद् ( स्त्री० ) शुबड, हाथी का कर ।  
 सुँडी दे० ( पु० ) जाति विशेष जो मय घेचने आदि  
 का काम करते हैं, कलाल, कलवार । [ करना ।  
 सूँतना दे० ( कि० ) तोड़ना, बटोरना, एकत्रित  
 सूँस दे० ( पु० ) जल जन्तु विशेष, जलहस्ति ।  
 सुकट दे० ( वि० ) लटा, दुबला, क्षीण्यजन, सूखा  
 कुशा । [ सोदें ।  
 सुकर ( पु० ) सुथर ।—खेत ( पु० ) नगर विशेष,  
 सूकी दे० ( स्त्री० ) रुपये का चौथा हिस्सा, चवव्ही ।  
 सूदम तत् ( वि० ) पतला, छोटा बारीक ।—ता  
 ( स्त्री० ) पतलापन, छोटापन ।—दर्शी ( वि० )  
 चतुर, गुणी, प्रवीण ।  
 सूखझड़ी दे० ( स्त्री० ) रोग विशेष, चप्पी रोग ।  
 सूखना दे० ( कि० ) गिरस होना, विगड़ा, खराब  
 होना, कुम्हलाना, स्वादहीन होना ।  
 सूखा दे० ( पु० ) नीरस, रसहीन, शुष्क, सड़ा गला,  
 ( पु० ) अकाल, महुँगी ।  
 सुगा दे० ( पु० ) सुग्गा, तोता । [ जतलाने वाला ।  
 सूचक तत् ( पु० ) बोधक, ज्ञापक, बताने वाला,  
 सूचना तत् ( स्त्री० ) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन ।  
 —पत्र ( पु० ) नोटिस, विज्ञापन । [ हुआ ।  
 सूचित तत् ( पु० ) बताया गया, विज्ञापन दिशा  
 सूची तत् ( पु० ) सुई । [ बाबा पत्र, बीजक ।  
 सूचोपत्र तत् ( पु० ) बोधपत्रिका, बोधनपत्र, जनाने  
 सूज दे० ( स्त्री० ) शोथ, फुलाव ।  
 सूजन दे० ( स्त्री० ) "सूज" ।  
 सूजना दे० ( कि० ) फूलना ।  
 सूजा ( पु० ) बड़ी सुई, बेघी, सुतारी ।  
 सूजी दे० ( स्त्री० ) मोटा आटा, दादरा आटा ।  
 सूझ दे० ( स्त्री० ) दृष्टि, दर्शन, निराख, पाल, बुद्धि ।  
 सूझना दे० ( कि० ) मालूम होना, दीख पड़ना, दृष्टि  
 गत होना ।

सूत तद् ( पु० ) सूत्र, तागा, धागा, डोरा, ( तत्० )  
सारथी, रथवाह, एक पौराणिक व्यास ये नैमिषा-  
रण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा  
सुनाते थे । इनको बलदेव ने मार डाला था ।

सूतक तत् ( पु० ) अशौच, जवन और मरण की  
अशुद्धि ।

सूतना दे० ( कि० ) सेना, निद्रा आना ।

सूतज या सूतज तत् ( पु० ) पाताल विशेष ।

सूतली दे० ( स्त्री० ) सन की रस्ती, डोरी ।

सूतिका तत् ( स्त्री० ) प्रसूती स्त्री, जिसने हाल में  
बच्चा जन्मा हो ।—गृह ( पु० ) घर जिसमें लड़का  
पैदा हो, जन्मा गृह ।

सूती दे० ( वि० ) सूत का बना, सीप, सुतही ।

सूत्र तत् ( पु० ) सूत, धागा, तागा, डोरा, रीति,  
व्यवस्था, प्रवचन, व्याकरण के सूत्र ।—धार ( पु० )  
नाटकाचार्य, नाटक का प्रवक्ता ।

सूयन या सूयना या सूयनी दे० ( पु० ) पायजामा ।

सूया दे० ( वि० ) भोला, सज्जन, निष्कपट ।

सूत तत् ( पु० ) पुत्र, भ्रातृमज, तनय, बेटा, अनुज,  
छोटा भाई, रवि, सूर्य ।

सूना दे० ( वि० ) शुन्य, उजाड़, रीता, खाली ।

सुनु ( पु० ) पुत्र, बेटा ।

सूप तद् ( पु० ) शूर्प, अनाज पछोरने का एक  
साधन जो सिरकी या घाँस का बनता है । ( तत्० )  
वाल ।—कार ( पु० ) रसोदया, पावक ।

सूबा ( पु० ) प्रान्त, प्रदेश ।

सूम दे० ( पु० ) कृपण, कणूज, मक्खीचूस ।

सूर तत् ( पु० ) सूर्य, रवि, ( दे० ) अन्धा, बिना  
आँख का, वीर, बहादुर ।—दास ( पु० ) एक  
कवि का नाम, ये अन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ  
सूरसागर है । हिन्दी के कवियों में इनका आसन  
ऊँचा है ।—मलार ( पु० ) एक रागिणी  
का नाम ।

सूरज तद् ( पु० ) सूर्य ।—गहन ( पु० ) सूर्यग्रहण ।

—मुखी ( पु० ) एक फूल के पौधे का नाम ।

सूरन तद् ( पु० ) कन्द विशेष, जिमीकन्द ।

सूरमा, दे० ( पु० ) वीर, सूर ।—पन ( पु० ) वीरता,  
बहादुरी ।

सूरा दे० ( पु० ) अंधा, शूर, वीर, मोढ़ा, यथाः—  
सूरा रथ में जाय के छोड़ा करो निशङ्क ।

ना मोहि चढ़े रंदापरी ना तोहि चढ़े कलङ्क ।

सूरी ( स्त्री० ) शूली, खण्डी ।

सूर्यणखा या सूर्यनखा ( स्त्री० ) रावण की बहिन ।

सूर्या तन् ( वि० ) देखो सूरमा । [ एक जाति ।

सूर्य तत् ( पु० ) रवि ।—वंशी ( पु० ) राजपूतों की

सूर्योदय तत् ( पु० ) प्रातःकाल, प्रभात । [ अवस्था ।

सूल तद् ( पु० ) शूल, रोग विशेष, दशा, हाल,

सूली तद् ( स्त्री० ) एक प्रकार का काँटा, प्राचीन-

काल में जिस पर चढ़ा कर अपराधी को प्राण  
दण्ड दिया जाता था ।

सूसी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का कपड़ा ।

सूसुम दे० ( वि० ) थोड़ा गरम, कुनकुना । [ का रंग ।

सुहा दे० ( वि० ) लाल, लाल रक्त, रक्त, एक प्रकार

सुष्ट ( वि० ) रचित, निर्मित ।

सुष्टि तत् ( स्त्री० ) उत्पत्ति, जन्म, बृन्मव, संसार की

रचना, कष्टपुतली बचाने वाला बाजीगर ।—

कर्त्ता ( पु० ) ब्रह्मा, दुनिया का रचनेवाला ।

से दे० ( थ० ) आपदान बोधक, साथ, सह । [ करना ।

सैकना दे० ( कि० ) गरमाना, गरम करना, वष्ण

सैंगरी दे० ( स्त्री० ) कबी, झोमी ।

सैंटा दे० ( पु० ) पतला, सरपत ।

सेत दे० ( थ० ) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का ।

—मैंत ( थ० ) यों ही, बिना दाम ।

सेंध दे० ( पु० ) चोरी करने के लिये दीवार में किया  
हुआ छेद ।

सेंधा दे० ( पु० ) नमक, लाहोरी नीमक ।

सेंधिया दे० ( पु० ) भेड़िहार, गदरिया, गवाजियर  
महाराज की अन्न ।

सेंधी दे० ( पु० ) खजूर का रस ।

सेचन तद् ( पु० ) छिड़काव, सींचना ।

सेज दे० ( पु० ) शय्या, शयन, पलङ्ग, बिछौना,  
विसर । [ वाल ।

सेठ तद् ( पु० ) श्रेष्ठ, साहूकार, महाजन, फोटी-

सेत तद् ( वि० ) धवल सफेद, श्वेत; शुक्ल, यथाः—

—सेत सेत सबही भलो सेतो भलो न केय ।

नरि रमे ना रिपु बदे, होतो छेय जिनो ॥

सेतना दे० ( कि० ) जुगाना, सङ्घ करना ।  
 सेतु तत्० ( पु० ) बौध, पुल, मर्यादा, सीमा, हद्द ।  
 वृच विशेष—ग्रन्थ ( पु० ) तीर्थ विशेष, जिसे  
 राम ने बनाया । [ अक्रसर ।  
 सेनप तत्० ( पु० ) सेनापति, कपटान, फौज का  
 सेना तत्० ( स्त्री० ) कटक, दल, फौज, लश्कर ।  
 —पति ( स्त्री० ) सेनानी, सेना का अध्यक्ष ।  
 एक हिन्दी कवि का नाम । [ कालिका स्वामी ।  
 सेनानी तत्० ( पु० ) सेनापति, स्कन्ध, कालिका,   
 सेम दे० ( पु० ) तरकारी विशेष ।  
 सेमल दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष, सेमर का पेड़ ।  
 सेर दे० ( पु० ) सोलह छदों का परिमाण ।  
 सेराना दे० ( कि० ) ठंडा करना, सिराना ।  
 सेलखड़ी दे० ( स्त्री० ) सफ़ेद मिट्टी, जिससे खदके  
 लिखते हैं ।  
 सेला दे० ( पु० ) साफा, जरी का मुँदवंधा, बर्झा,  
 भाला, एक प्रकार का वाद्य ।  
 सेव दे० ( पु० ) फल विशेष, एक प्रकार का फल ।  
 सेवक तत्० ( पु० ) श्रृङ्खल, भौकर, चाकर ।  
 सेवकाई तत्० ( स्त्री० ) नौकरी, चाकरी, सेवा ।  
 सेवड़ा दे० ( पु० ) जैन भिक्षु, नमकीन पकवान, डग ।  
 सेवती दे० ( स्त्री० ) एक फूल का नाम ।  
 सेवना दे० ( कि० ) सेवा करना, पालना पोसना,  
 अण्डा पोसना ।  
 सेवा तत्० ( स्त्री० ) नौकरी, चाकरी, दहल ।  
 सेवार, सेवाल तत्० ( पु० ) एक प्रकार की बात जो  
 नदियों में लगती है और जो चीनी साफ़ करने  
 के काम में आती है, शौबाल, सिवार ।  
 सेवित ( वि० ) सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ ।  
 सेवी ( पु० ) दास, पुजारी, सेवक ।  
 सेव्य ( वि० ) सेवा के योग्य, पूज्य, उपास्य ।—और  
 ( पु० ) खसलत ।  
 सेहयना दे० ( कि० ) चर हुलाना, चर हाँकना ।  
 सेहरा दे० ( पु० ) एक प्रकार की जूती का मुकूट जो  
 धूपड़ा या घर के भाँचे पर रखा जाता है ।  
 सेहुषा तत्० ( पु० ) दाद, खुद । [ परिमित ।  
 सैकड़ा दे० ( वि० ) शतक, शतकड़ा, सौ संख्या से  
 सैगर ( स्त्री० ) शमीवृक्ष या बगुल की फली ।

सैतना ( कि० ) होशियारी से रख छोड़ना ।  
 सैतालीस ( वि० ) चाबीस और सात ४७ ।  
 सैतीस ( वि० ) ३० और ७, ३७ ।  
 सैन दे० ( स्त्री० ) मट्टी, शीश या पैंगुजी का इंसारा ।  
 सैना, सैनी दे० ( वा० ) दूधारे से बात करना ।  
 सैन्धव तत्० ( पु० ) लवण विशेष, लाहौरी नोन,  
 घोड़ा, अश्व ।  
 सैन्य तत्० ( पु० ) सेना, कटक, फौज ।  
 सैसांभ दे० ( वि० ) संख्या का प्रारम्भ, संख्या के  
 आरम्भ में, सरिसम्भ ।  
 सैहरन दे० ( पु० ) समझ, अटार, स्थान ।  
 सो दे० ( सर्व० ) वह, वेही, पस, निदान ।  
 सोमर दे० ( पु० ) सुतिका गृह, जिस घर में स्त्रियाँ  
 जन्ती हैं ।  
 सोषा दे० ( पु० ) साग विशेष ( कि० ) चपन किये ।  
 सोई दे० ( सर्व० ) वही, ( कि० ) सूती । [ विश्व, शपथ ।  
 सो दे० ( प्र० ) से; साथ, संग्रमाया में अंधाधुन का  
 सोँटा दे० ( पु० ) छोटी मोटी लाठी, डण्डा ।  
 सोँठ तत्० ( पु० ) शृण्डी, सुला नदरक ।  
 सोँहराय दे० ( पु० ) कंगूस, कपण ।  
 सोँधना दे० ( कि० ) मट्टी से कपड़ा संभाना, कूच के  
 वर्तन को गरम करना । [ सुवास ।  
 सोँधा दे० ( वि० ) सुगन्ध विशेष ।—हट ( स्त्री० )  
 सोँपना दे० ( कि० ) देरना, हवाले करना ।  
 सोँह दे० ( स्त्री० ) सौगन्ध, शपथ ।  
 सोँही दे० ( पु० ) सामने, आगे, प्रत्यक्ष । [ करना ।  
 सोखना दे० ( कि० ) शोषण करना, सूसना, सूसन  
 सोख दे० ( पु० ) दुःख, चिन्ता, शोच, शोक ।  
 सोच दे० ( पु० ) शोक, दुःख, चिन्ता ।  
 सोचना ( कि० प्र० ) ख्याल करना, समझना,  
 विचारना, ध्याय करना ।  
 सोज ( पु० ) सूक, समक ।  
 सोम्हा दे० ( पु० ) सीधा, सामने, खड़ा ।  
 सोडा ( पु० ) एक चार वस्तु विशेष ।  
 सोत तत्० ( पु० ) धारा, प्रवाह, स्रोत ।  
 सोवर तत्० ( पु० ) सहोदर, पड़ माँ के लड़के ।  
 सोध तत्० ( पु० ) सुधि, हाथ, खोज, तलाश,  
 खोज, अन्वेषण, पता ।

सोधना दे० ( क्रि० ) शोधन करना ।  
 सोन तद्० ( पु० ) शोण, एक नदी का नाम ।—हरा  
 या हला ( गु० ) सोने का, सोने का बना ।  
 सोना तद्० ( वि० ) सुवर्ण, काञ्चन, हिरण्य ।—माखी  
 ( स्त्री० ) औषध विशेष ।  
 सोनार दे० ( पु० ) सुनार, स्वर्णकार । [ शोधक ।  
 सोनिया दे० ( पु० ) सोनार, सुवर्णकार, सोना  
 सोवान तद्० ( पु० ) सीढ़ी, निहोनी, जीना ।  
 सोमना दे० ( क्रि० ) सजना, सोहना, अच्छा दिखाने  
 देना ।  
 सोम तद्० ( पु० ) चन्द्र, चन्द्रमा, विष्णु, इन्द्र, लता  
 विशेष, जो पहले के मर्दियों की दृष्टि से बड़े  
 आदर की वस्तु थी ।—नाथ ( पु० ) गुजरात  
 के सोमपदम नामक स्थान में शिवजी की मूर्ति  
 विशेष ।—वार ( पु० ) चन्द्रवार, दूसरा दिन ।  
 —वारी ( स्त्री० ) सोमवती अमावास्या ।  
 सोरठ दे० ( पु० ) एक रागिनी का नाम ।  
 सोरठा दे० ( पु० ) छन्द विशेष । इसके पहले और  
 तीसरे पाद में ११ दूसरे और चौथे पाद में १३  
 मात्राएँ होती हैं । बोहा को उलट कर पढ़ने से  
 यह छन्द हो जाता है ।  
 सोरह, सोलह ( वि० ) दस और ६, १६ ।  
 सोसि दे० सो हो, सो पूरे ।  
 सोह दे० ( क्रि० ) सोमा पाता है, सोमायमान होता है ।  
 सोहन दे० ( वि० ) मज्जन, प्यारा, रेती । [ सजना ।  
 सोहना दे० ( क्रि० ) शोभना, अच्छा मालूम होना,  
 सोहनी तद्० ( स्त्री० ) रागिनी विशेष ।—करना  
 ( वि० ) निराना, योगे हुए खेत से घास निकालना ।  
 सोहर दे० ( पु० ) राग विशेष, यह गीत जो पद्या  
 बरपत्र होने पर गाया जाता है ।  
 सोहागा ( पु० ) पदार्थ विशेष जो सोना चाँदी आदि  
 कई एक धातुओं को मलाने के काम में आता है ।  
 सोहिल ( पु० ) एक राग का नाम ।  
 सोहारी दे० ( स्त्री० ) पूरी, लुबई ।  
 सो दे० ( वि० ) शत, १०० ।  
 सोख्य ( पु० ) आराम, सुख ।  
 सोगन्द दे० ( पु० ) सौँह, शपथ ।

सौंपना दे० ( क्रि० ) समर्पण करना, घरना, रखना ।  
 सौँफ दे० ( स्त्री० ) औषध विशेष ।  
 सौरा दे० ( पु० ) काबल, कामल, धूल । [ जनना ।  
 सौरि ( स्त्री० ) घालक बरपत्र होने वाला सूतक, शौच  
 सौरी ( स्त्री० ) प्रसूति, जन्म ।  
 सौँह ( स्त्री० ) सौगन्ध, शपथ ।  
 सौगन्द दे० ( पु० ) शपथ, किरिया, धान ।  
 सौच तद्० ( पु० ) शौच, शुद्धता, शुद्धि ।  
 सौजन्य तद्० ( पु० ) सुजनता, साधुता, माधुर्य ।  
 सौते, सौतिन दे० ( स्त्री० ) सपत्नी ।  
 सौतियाह ( पु० ) सींगों का चापस में ढाढ़, ईप्सा ।  
 सौतेला दे० ( वि० ) सौत से जन्मा ।  
 सौतेली दे० ( वि० ) सौत सम्बन्धी ।—माता दे०  
 ( स्त्री० ) विमाता, दूसरी माँ ।  
 सौदामिनी ( स्त्री० ) विद्युत्, विजली । [ प्रासाद ।  
 सौघ ( पु० ) राजमन्दिर, देवमन्दिर, कोठा, महल,  
 सौनिक ( पु० ) व्याघ्र, पक्षि, कसाई, परेक्षिया ।  
 सौन्दर्य तद्० ( पु० ) सुन्दरता, मनोहरता ।  
 सौभाग्य तद्० ( पु० ) भागवानी, अच्छा भाग ।  
 —वती ( स्त्री० ) सुहागिन, सधवा ।  
 सौमित्र ( पु० ) लक्ष्मण ।  
 सौम्य ( पु० ) धुप ( वि० ) सुशील, मनोहर, सुन्दर ।  
 —ता ( स्त्री० ) सुशीलता, सीधापन ।  
 सौर तद्० ( पु० ) सूर्य सम्बन्धी ।  
 सौरभ तद्० ( पु० ) सुगन्ध, सुवास ।  
 सौरमास ( पु० ) एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति  
 तक का समय । [ जिसमें पचा जना मास ।  
 सौरि, सौरी दे० ( स्त्री० ) प्रसूति, पृथ, यह घर  
 सौवचल ( पु० ) काबा निमक ।  
 सौदाई ( पु० ) दोस्ती, मैत्री ।  
 स्कन्ध तद्० ( पु० ) काँप, कन्धा, पेड़ का पड़, जहाँ  
 से शाखा निकलती है ।  
 स्खलन तद्० ( पु० ) पतन, गिरन, गिरना ।  
 स्खलित तद्० ( वि० ) गिरा, पतित । ( पु० )  
 अशुद्धि ।  
 स्तन तद्० ( पु० ) चूँची, पयोध, घन ।—पायी  
 दूध पीने वाला वृद्ध ।

स्तब्ध तत्त्वं ( पु० ) कुण्ठित, हकावका, रुका हुआ ।  
 स्तम्भ तत्त्वं ( पु० ) खंभा, हकाव, अटकाव, धंभा ।  
 स्तम्भन तत्त्वं ( पु० ) रुकाव, अटकाव, तन्त्र विशेष,  
 काम शास्त्र की क्रिया विशेष ।

स्तव तत्त्वं ( पु० ) स्तुति, प्रशंसा, यत्नान, गुणयान ।  
 स्तवक तत्त्वं ( पु० ) गुच्छा, फूलों का गुच्छा ।  
 स्तावक तत्त्वं ( पु० ) स्तुतिकर्ता, भाट, चारण्य, बन्दी ।  
 स्तमित तत्त्वं ( वि० ) स्तब्ध, स्थिर, अचञ्चल ।  
 स्तुति तत्त्वं ( स्त्री० ) यत्नान, स्तव । [ के योग्य ।  
 स्तुत्य तत्त्वं ( वि० ) स्तुति योग्य, स्तवनीय, यत्नान  
 स्तन्य ( पु० ) दौलकर्म, चोरी ।

स्तोत्र तत्त्वं ( पु० ) स्तव, स्तुति ।  
 स्त्री तत्त्वं ( स्त्री० ) नारी, लुगाई, बनिता ।—धन  
 ( पु० ) दायज, दहेज, दहेज में स्त्री को मिला  
 दान ।—पुष्प ( पु० ) रजोधर्म, मासिक धर्म ।

स्त्रैय तत्त्वं ( पु० ) स्त्री वश, स्त्री का अधीन ।  
 स्थगित तत्त्वं ( वि० ) थका, क्षिपा, रोका ।  
 स्थपति तत्त्वं ( पु० ) शिखरी, बटुई ।  
 स्थल तत्त्वं ( पु० ) भूमि, सूखी भूमि ।  
 स्थाणु तत्त्वं ( पु० ) ठंडा बृष, शिव, महादेव ।  
 स्थान तत्त्वं ( पु० ) ठौर, ठाव, ठिकाना, घर ।  
 स्थानापन्न तत्त्वं ( पु० ) प्रतिनिधि, किसी दूसरे के  
 स्थान पर काम करने वाला ।

स्थापत्य-विद्या तत्त्वं ( स्त्री० ) भवन निर्माणविद्या ।  
 स्थापन तत्त्वं ( पु० ) रखना, धरना, बैठाना ।  
 स्थापना तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रतिष्ठा, स्थिति, देव आदि  
 की स्थापना करना ।

स्थापित तत्त्वं ( वि० ) प्रतिष्ठा किया हुआ, रखा गया ।  
 स्थायी तत्त्वं ( स्त्री० ) पाक्यात्र, हांडी, बटुई, बट-  
 जोही, पतीली ।

स्थावर तत्त्वं ( पु० ) अचल, नहीं चलने वाला ।  
 स्थित ( वि० ) ठहरा हुआ ।  
 स्थिति तत्त्वं ( स्त्री० ) स्थान, ठिकाण, ठहराव ।  
 स्थिर तत्त्वं ( वि० ) अचल, अटल ।—ता ( स्त्री० )  
 धीमापन ।

स्थूणा दे० ( पु० ) खंभा, खूँटी ।  
 स्थूल तत्त्वं ( वि० ) मोटा ।  
 स्थैर्य तत्त्वं ( पु० ) स्थिरता, अचलता ।

स्थैर्य तत्त्वं ( पु० ) स्थूलता, मोटापन ।  
 स्नातक तत्त्वं ( पु० ) ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त करके गृह-  
 स्थाश्रम में प्रवेश करने वाला ।

स्नान तत्त्वं ( पु० ) नहाना, नहान, अवगाहन ।  
 स्नायी ( वि० ) स्नान करने वाला ।  
 स्नायु ( पु० ) रग, नस ।  
 स्निग्ध ( वि० ) चिकना, दयालु ।  
 स्नेह तत्त्वं ( पु० ) सनेह, प्रेम, चिकनाई, चिकनाहट ।  
 स्पन्द तत्त्वं ( पु० ) कम्प, चञ्चलता ।  
 स्पर्श तत्त्वं ( स्त्री० ) हिस, काह, जलन, दूसरे की  
 उन्नति देख कर दुःख पाना ।

स्पर्श तत्त्वं ( पु० ) छूना, छुआवट ।  
 स्पष्ट तत्त्वं ( वि० ) साफ़, प्रकाश, सदाज, व्यक्त ।  
 स्पृश्य ( वि० ) छूने योग्य ।  
 स्पृहा तत्त्वं ( स्त्री० ) इच्छा, अभिलाष, चाह ।  
 स्पृही ( वि० ) अभिलाषी, एवाहिशामंद ।  
 स्फटिक तत्त्वं ( पु० ) बिजौरी परवर, स्वच्छ पाषाण  
 विशेष ।

स्फुट तत्त्वं ( वि० ) खिलता हुआ, प्रकट, प्रकाश ।  
 स्फुटन तत्त्वं ( पु० ) प्रकाशन, खिलन, फूटन ।  
 स्फूर्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) धड़कन, फुरण, फरकन ।  
 स्फोटक तत्त्वं ( पु० ) फोड़ा, फुँली, पाष ।  
 स्मर तत्त्वं ( पु० ) कामदेव, मदन, मन्मथ ।—हर  
 ( पु० ) महादेव, शिव ।

स्मरण तत्त्वं ( पु० ) सुच, चेत, स्मृति, याद ।  
 —शक्ति ( स्त्री० ) याददात, याद रखने की  
 सामर्थ्य ।

स्मरहर ( पु० ) शिव, महादेव ।  
 स्मारक तत्त्वं ( पु० ) स्मरण कराने वाला, बोधक ।  
 स्मार्त ( वि० ) स्मृति-वक्त, धर्माजुयायी ।

स्मित तत्त्वं ( पु० ) थोड़ा हँसना, मुसकाना ।  
 स्मृति तत्त्वं ( स्त्री० ) स्मरण, याददात, धर्मेशास्त्र,  
 मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य आदि ।  
 स्थानपन दे० ( पु० ) नियुक्तता, बुद्धिमत्ता, चतुरता,  
 कुटिलताई, चालाकी ।

स्थाना दे० ( पु० ) स्थाना, चतुर ।  
 स्थार, स्थाल तत्त्वं ( पु० ) श्याल, गीदड़, स्थार ।  
 स्त्रक् ( स्त्री० ) पुष्पमाळा ।

स्वप्ना (क्रि०) पहना, गिरना, छूना ।  
 स्रोत तत्त्वं (पु०) स्रोत, धारा, प्रवाह, स्रोत ।  
 स्व तत्त्वं ( सर्व० ) अपना । ( पु० ) निज धन ।  
 स्वकीय तत्त्वं ( वि० ) अपना, अपने सम्बन्ध का ।  
 स्वकीया तत्त्वं ( स्त्री० ) नायिका विशेष ।  
 स्वच्छ तत्त्वं ( वि० ) निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल ।—ता ( स्त्री० ) निर्मलता, सफाई उज्ज्वलता ।  
 स्वच्छन्द तत्त्वं ( पु० ) स्वेच्छानुसार यत्न यात्रा, यथेच्छाचारी, स्वाधीन, मनमौजी ।—ता ( स्त्री० ) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता ।  
 स्वजन तत्त्वं ( पु० ) बन्धु, मित्र ।  
 स्वजातीय (पु०) अपने गोत्र वाला, अपनी जाति वाला ।  
 स्वतः तत्त्वं (अ०) अपने से, स्वाभाविक, स्वभाव से ।  
 स्वतन्त्र तत्त्वं ( वि० ) स्वाधीन, अपने वश ।—ता ( स्त्री० ) स्वाधीनता ।  
 स्वतः ( पु० ) अधिकार, दखल ।—पहरण ( पु० ) वेदखती, अधिकार हटा देना ।  
 स्वधर्म तत्त्वं ( पु० ) अपना धर्म ।  
 स्वधा तत्त्वं ( अ० ) पितरों को पिण्डदान करने का शब्द । ( स्त्री० ) अग्नि की दो क्षियों में से एक स्त्री का नाम । [वस्था के विचार ।  
 स्वप्न तत्त्वं ( पु० ) शयन, निद्रा, नींद, सपना, विद्रा-  
 स्वभाष तत्त्वं ( पु० ) प्रकृति, देव, यान ।  
 स्वयम् तत्त्वं ( अ० ) आप, निज, खुद ।—भू ( पु० ) स्वयम् शब्द होने वाला, विष्णु, शिव, कामदेव ।  
 —वर ( पु० ) स्वेच्छानुसार वर, एक प्रकार का विवाह, जो पहले समय में प्रचलित था । कन्या विमलिनृत विवाहार्थियों में से अपने इच्छानुसार अपना पति वरप कर लेती थी ।  
 —सिद्ध ( पु० ) जिसको प्रमानित करने के लिये किसी अन्य प्रमान की आवश्यकता न हो ।  
 स्वर तत्त्वं ( पु० ) शब्द, अकार आदि सोलह वर्ण, ध्वनि, नाद, स्वर्ग, आकाश ।  
 स्वरित तत्त्वं ( पु० ) उच्चारण विशेष, अधिक उच्च-  
 स्वर । [ सुन्दरता ।  
 स्वरूप तत्त्वं ( पु० ) अपना रूप, समान रूप, शोभा,  
 स्वर्ग तत्त्वं ( पु० ) देवलोक, इन्द्रलोक, अन्तरिक्ष ।

—पताली ( स्त्री० ) पुँचाताना, जिसकी आँखें नीचे ऊपर तनी होती हैं ।—वास ( पु० ) भरण, मृत्यु, स्वर्ग में रहना ।  
 स्वर्गीय तत्त्वं ( वि० ) स्वर्ग सम्बन्धी ।  
 स्वर्ण तत्त्वं ( पु० ) सोना, कंचन, हेम ।—कार ( पु० ) सुनार ।—मुद्रा ( स्त्री० ) मोहर, अशर्फी, गिरी ।  
 स्वल्प तत्त्वं ( वि० ) थोड़ा, तनिक, ज़रासा ।  
 स्ववश ( वि० ) स्वतंत्र, स्वाधीन ।  
 स्वस्ति तत्त्वं ( अ० ) कल्याण, मङ्गल, भलाई ।—  
 वाचन ( पु० ) कल्याणार्थ वैदिक मन्त्रों का पाठ ।—वाचक ( पु० ) मङ्गलपाठकर्ता ।  
 स्वस्त्ययन ( पु० ) मङ्गलपाठ, शुभस्थान ।  
 स्वस्थ ( वि० ) निरोगी, सुखी रहने वाला ।  
 स्वांग दे० ( पु० ) अनुकरण, नक़ल, भाँडैती, तमाशा ।  
 स्वागत तत्त्वं ( पु० ) अतिथि सरकार, आदर, सम्मान ।  
 स्वाति तत्त्वं ( स्त्री० ) नक्षत्रविशेष, चन्द्रमा की स्त्री ।  
 स्वाद तत्त्वं ( पु० ) सवाद, रस ।—युक्त ( पु० ) स्वादयुक्त, स्वादु, सरस, ज्ञापकेदार, मजेदार ।  
 स्वादु तत्त्वं ( वि० ) सवाद, ज्ञापका ।  
 स्वादिष्ट ( वि० ) मजेदार, ज्ञापकेदार, रसीला, मीठा ।  
 स्वाधीन ( वि० ) स्वतंत्र, खुदमुज्जार ।—ता ( स्त्री० ) स्वतंत्रता ।  
 स्वाभाविक तत्त्वं ( वि० ) स्वभाव सिद्ध, स्वभाष से उत्पन्न ।  
 स्वामी तत्त्वं ( पु० ) मालिक, प्रभु, रक्षक ।  
 स्वार्थ तत्त्वं ( पु० ) अपना अर्थ, अभिलाष ।— ( वि० ) स्वार्थ युक्त ।  
 स्वायत्त तत्त्वं ( पु० ) स्वायत्त, प्राण वायु ।  
 स्वास ( पु० ) मुख से निकलने वाली शरीर के भीतर की हवा ।  
 स्वास्थ्य ( पु० ) तनदुस्ती, आरोग्यता, सुख, सन्तोष । [ भस्म ।  
 स्वाहा ( अ० ) हवन के समय बोला जाने वाला शब्द, स्वीकार तत्त्वं ( पु० ) अस्वीकार, मानना, मंजूर ।  
 स्वीकृति ( पु० ) मंजूर किया हुआ ।  
 स्वीकृति ( स्त्री० ) मंजुरी ।



स्वेच्छा तत् ( स्त्री० ) अभिलाष, स्वाधीनता ।  
स्वेद तत् ( पु० ) पसीना ।—ज ( पु० )—स्वेद से  
उत्पन्न कीट ।

स्वैर तत् ( पु० ) स्वेच्छानुसार वर्तने वाला, लम्पट,  
दुराचारी ।—शी ( स्त्री० ) कुलटा, बदचलन ।  
स्वैरी तत् ( स्त्री० ) स्वेच्छाचारिणी, व्यभिचारिणी ।

## ह

ह हल् वर्ण का तेतीसवाँ अक्षर, कण्ठस्थान से उच्चारण  
होने के कारण इसको कण्ठ्य कहते हैं ।  
हँकाना वे० ( क्रि० ) हँकना, निकालना, बेल आदि  
को चलाना ।  
हँकार तत् ( पु० ) बेल आदि का शब्द, रौंभना ।  
हँकारना वे० ( क्रि० ) हँकना ।  
हँफेल वे० ( वि० ) हँफने वाला ।  
हँस तत् ( पु० ) सरल पक्षी, आत्मा, जीव ।—फ  
( पु० ) स्वर्ण कटक, पिछिया, पिछुआ ।—गामिनी  
( स्त्री० ) हंस की तरह चाल चलने वाली ।—घज  
( पु० ) ब्रह्मा, राजा विशेष ।  
हँसना वे० ( क्रि० ) हँसी करना, मुस्कराना ।  
हँसमुख ( वि० ) प्रसन्न बदन, हँसोड़ा ।  
हँसा वे० ( पु० ) हँसी, हास्य, मुस्कराहट ।  
हँसाई वे० ( स्त्री० ) हँसी, ठोली ।  
हँसिया, हँसुआ वे० ( पु० ) दाँती, दराती, खेत  
काटने या तरफारी बनाने का औजार ।  
हँसोड़ वे० ( वि० ) ठोल, हँसमुख ।  
हँसोड़ा वे० ( वि० ) ठट्टेबाज, हँसमुख, दिल्लगी  
करने, घाला ।  
हँसोधा वे० ( पु० ) ठोली, हँसोड़पन ।  
हंडा ( पु० ) ताँबे या पीतल का बड़ा पात्र ।  
हकबकाना वे० ( क्रि० ) घबघाना, उद्भिन्न होना,  
व्याकुल होना, खदखदाना ।  
हकराघा वे० ( क्रि० ) बुलवाय ।  
हकला वे० ( वि० ) तुतला, जदबड़ा ।  
हकलाना वे० ( क्रि० ) हकारना, तुतलाना, ठहर  
ठहर कर बोलना ।  
हकलाहा ( वि० ) देखो हँकला ।  
हकाना ( क्रि० ) हडाना, भागाना ।  
हकारना वे० ( क्रि० ) खदेड़ना, बौड़ाना, भागाना ।  
हकिया वे० ( वि० ) कटहा, फटखना ।

हकावका वे० ( पु० ) घबघाना, व्याकुल, उद्भिन्न ।  
हगना वे० ( क्रि० ) झाड़ा फिरना, जड़ल जाना,  
दिशा जाना । [ भूमि ।  
हगनौटी वे० ( पु० ) हगने की भूमि, झाड़े फिरने की  
हगास वे० ( स्त्री० ) हगने की इच्छा ।  
हचका, हचकोला वे० ( पु० ) धक्का, आघात, झोंक ।  
हचरमचर वे० ( पु० ) डीलापन, हिलन डोलन,  
विवाद, आगा पीछा, अटकना, सोच विचार ।  
हट ( स्त्री० ) हट, टेक ।  
हटक वे० ( पु० ) रोक, निपेध, डौट, मनाई, रुकावट ।  
हटकना वे० ( क्रि० ) रोकना, अटकाना, निपेध करना ।  
हटना वे० ( क्रि० ) पीछे फिरना, अलग होना, मुड़ना,  
मुकरना । [ हाट का काम ।  
हटवा वे० ( पु० ) तौलने वाला, बया ।—ई ( स्त्री० )  
हटाना वे० ( क्रि० ) टाल देना, बूर कर देना ।  
हटाल ( स्त्री० ) दुकान बढ़ाना या बेर करना ।  
हटिया वे० ( स्त्री० ) हाट, बाज़ार ।  
हट्ट वे० ( पु० ) दुकान, हाट, रास्ता, मुहाना ।  
हट्टकट्टा वे० ( पु० ) बलवान, पुष्ट, बलशाली, स्वस्थ ।  
हठ तत् ( पु० ) मगराई, मचलाई, अद, जिह,  
जयरदस्ती, जोरावरी ।—धर्मी ( वि० ) जिद्दी, हठीला ।  
हठना ( क्रि० ) जिह करना ।  
हठात् तत् ( अ० ) अकस्मात्, सहसा ।  
हठी, हठीला तत् ( वि० ) चिढ़चिढ़ा, मगरा, क्रोधी ।  
हड़ वे० ( स्त्री० ) फल विशेष, काठ की पेड़ी ।—  
गिह्ला ( पु० ) पक्षी विशेष, जो पाँच फुट ऊँचा  
होता है ।—ताल ( स्त्री० ) बाजारबन्दी, सब  
काम की बन्दी ।—फूटन ( पु० ) हड़ी की पीड़ा ।  
बड़ाना ( क्रि० ) घबघाना, व्याकुल होना ।—  
बड़िया ( वि० ) बेगी, जलदबाज ।—बड़ी  
( स्त्री० ) शीघ्रता ।—हड़ाना ( पु० ) थरथराना,  
कंपना ।—हड़हट ( स्त्री० ) हड़बड़ शब्द ।

हड़पना ( कि० ) खयानत करना, खा जाना, बेईमानी करना ।  
 हड़बड़ाना दे० ( कि० ) घबड़ाना, घकड़ाना, अतृप्तगना ।  
 हड़कड़ी दे० ( स्त्री० ) धींगाधींगी, कोलाहल ;  
 हथी दे० ( स्त्री० ) हाथ, अस्थि ।—ला ( पु० ) हाथ वाला, हथ; मजबूत ।  
 हथडा, हंडा दे० ( पु० ) यदा जल रखने का पात्र ।  
 हथडाना, हंडाना दे० ( कि० ) देश निकाला देना, धुमाना । [ यत्न ।  
 हथिडका, हंडेका दे० ( स्त्री० ) हॉकी मिट्टी का हथिडनी ( स्त्री० ) यदचलन स्त्री ।  
 हत् दे० ( अ० ) हुत्कार, तिरस्कार ।  
 हत तत् ( वि० ) मरा हुआ या मारा हुआ ।—मनोरथ ( पु० ) अस्तफल, मनोरथ की हानि ।—भाग्य तत् ( वि० ) अभाग्य ।  
 हतना, हनना दे० ( कि० ) मारना, मार डालना ।  
 हताश तत् ( वि० ) जिसकी आशा हथ हुई हो, निराश ।  
 हति ( स्त्री० ) हनना, मारना ।  
 हती ( कि० ) थी, रही, ( स्त्री० ) मारी गयी ।  
 हत्य ( पु० ) हाथ ।  
 हत्या तत् ( स्त्री० ) वध, घात, मार, हिंसा ।  
 हत्यारा दे० ( पु० ) मारने वाला, वधिक ।  
 हय तत् ( पु० ) हाथ, हस्त, कर ।—कड़ी ( स्त्री० ) हाथ बेड़ी, खोदे की बेड़ी जिससे अपराधियों के हाथ जकड़ दिये जाते हैं ।—कड़ा दे० ( पु० ) खूँठ, दस्ता ।—कयड़ा ( पु० ) टेव, टब, रीति, भाँति ।  
 —चपुआ ( पु० ) भाग, बाँट, हिस्सा ।—छुट ( पु० ) मारने वाला, पीटने वाला ।—झोना ( पु० ) एक प्रकार की डोली ।—नाल ( स्त्री० ) हाथी पर की तोप ।—फेर ( पु० ) उधार, अथ, कर्ज ।—रस ( पु० ) अगड़ा, लड़ाई, चूम्बा-चाटी, विज्ञास, हाथ का मैथुन ।—जेवा ( पु० ) हथजोर, उष्कापन, थोरी की चान ।—घान दे० ( पु० ) महावत ।  
 हयल, हयवास दे० ( पु० ) हथकड़ा । ( कि० ) ठंडे उठाओ, डाँड रोको, डाँड बामो ।

हया दे० ( पु० ) हथकड़ा, पेंड, खोदनी. एक प्रकार की वस्तु, जिससे पानी फेंकते हैं ।  
 हथिनी दे० ( स्त्री० ) हस्तिनी, हाथी की स्त्री, करिणी ।  
 हथिया दे० ( पु० ) नष्ट विशेष, तेरहवाँ नष्ट ।  
 हथियाना दे० ( कि० ) एकड़ना, प्रहय करना, अधिकार में रखना ।  
 हथियार दे० ( पु० ) अस्त्र, कलकाँटा, धौड़ार ।  
 हथो दे० ( स्त्री० ) धोड़ा मलने का मुग, खहरा ।  
 हथेला ( पु० ) चोर, हाथ में का ।  
 हथेली दे० ( स्त्री० ) हस्ततल, हाथ के पीछ का स्थान ।  
 हथौटी दे० ( स्त्री० ) चतुराई, निपुणता, धनाघट, धनाने की निपुणता, युक्ति ।  
 हथौड़ा दे० ( पु० ) धन, बड़ा माँहल ।  
 हथौड़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा हथौड़ा । [ भीत होना ।  
 हथियाना दे० ( कि० ) चबराता, म्याकुल होना, हन तत् ( कि० ) प्रायः हरण का, मार ।  
 हनन तत् ( पु० ) मारण, वध ।  
 हनना दे० ( कि० ) वध करना, मार डालना ।  
 हननीय ( पु० ) मारने योग्य ।  
 हनुमान् तत् ( पु० ) सुग्रीव की सेना का प्रबान पानर ।  
 हन्ता तत् ( पु० ) वधिक, हिंसक, वध करने वाला, मारने वाला ।  
 हप ( पु० ) ऋतुँह में थोड़ी वस्तु डाल कर निगल जाना ।—भूप ( पु० ) ऋतपट ।  
 हपहपाना ( कि० ) हाँपना ।  
 हवड़ा ( वि० ) फूहर ।  
 हविला ( वि० ) जिसके आगे के हाँत पड़े हो ।  
 हम ( सर्व० ) हम लोग ।  
 हमारा या हमारा ( सर्व० ) हम लोगों का ।  
 हय तत् ( पु० ) अथ, धोड़ा ।—गृह ( पु० ) घुड़साह ।  
 हयेव ( अम्प० ) अहंकार ।  
 हर तत् ( पु० ) शिव, महादेव, गणित में भास्कर अङ्क को कहते हैं ।—गिरि ( पु० ) कैलास ।  
 —गुणो ( वि० ) गुणवान्, अनेक गुणों का जाता ।—हमेश दे० ( अ० ) सदा, सतत, सदैव ।  
 हरकारा दे० ( पु० ) संदेशिया, दीड़ाहा, दीड़ने वाला ।  
 हरख ( पु० ) सुखी, आनन्द ।

हरण तत्त्वं ( पु० ) छीनना, बलात्कार से ले लेना,  
लूट, चोरी, डाँका ।—रीय ( पु० ) चुराने योग्य ।  
हरता तद्वत् ( पु० ) हर्ता, हरण करने वाला, लुटवैया,  
चोर, ठग ।

हरय ( पु० ) हर्षदी, पोखरा, तालाब ।  
हरना दे० ( क्रि० ) लूटना, छीनना, परवस लेना ।  
हरनौटा दे० ( पु० ) हरिण का बच्चा, सृग शायक ।  
हरमुष्टा दे० ( पु० ) दृष्टाकष्टा, बलवान्, बन्नी ।  
हरवीर्य ( पु० ) पारा ।

हरसिंगा ( पु० ) वृच पर्व कूल विशेष ।  
हरहार ( पु० ) संध ।  
हरा दे० ( वि० ) हरित, हरित वर्षा, सञ्ज ।  
हराना दे० ( क्रि० ) थकाना, जीतना, पराजय करना ।  
हराम ( वि० ) शास्त्रविषय, निषिद्ध वर्जित ।  
हरारत ( स्त्री० ) थकावट, उबर की गर्मी हफ्ता उबर ।  
हरावल दे० ( स्त्री० ) मुहाना, सेना के आगे का  
भाग । ( पु० ) मुहरा, अगाड़ी ।

हरास ( पु० ) हास, कमी, चति ।  
हरास दे० ( पु० ) दुःख, शोक, नावग्मेदी ।  
हरि तत्त्वं ( पु० ) विष्णु, इन्द्र, चाँप, मेढक, सिंह,  
घोड़ा, सूर्य, चन्द्रमा, सृग, तोता, यानर, यम-  
राज, पवन ।—हररे ( वि० ) हरा हरा ।—चन्द्रन  
( पु० ) देववृक्ष, गोरोचन, सफेद, चन्दन, ज्योत्स्ना ।  
—अन्द्र ( पु० ) सत्ययुग के सूर्यवंशी एक राजा ।  
साय और दान धर्म के पावन में ये प्रसिद्ध हैं ।  
—जन ( पु० ) विष्णु का भक्त, विष्णु का अनन्य  
भक्त ।—ताज ( पु० ) धातु विशेष, जो पीले रंग  
का होता है ।—ताजिका ( स्त्री० ) व्रत विशेष,  
स्त्रियों का एक व्रत, गाँधी सुदी तीज का व्रत ।  
—हार ( पु० ) एक तीर्थ और नगर का नाम ।  
—पैड़ी ( स्त्री० ) विष्णुघाट ।—प्रिया ( स्त्री० )  
तुलसी, विष्णुपत्नी ।—यल ( पु० ) हरा  
कवृत्तर ।—जान, यान ( पु० ) गरुड़ ।—याली  
( स्त्री० ) सज्जी, रयामता ।—चाहन ( पु० ) गरुड़ ।  
—वास ( पु० ) पीपल का पेड़ ।—वासर ( पु० )  
एकादशी, जन्माष्टमी, रामनवमी वामनद्वादशी,  
दुसिंह १४ शी आदि विष्णु के व्रतों के दिन ।

हरिण तत्त्वं ( पु० ) सृग, सृग, कुरङ्ग ।

हरिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) सृगी, सृग की स्त्री ।  
हरित तत्त्वं ( वि० ) हरा, सञ्ज, रयाम, घोड़ा, शय्य ।  
हरिद्रा तत्त्वं ( स्त्री० ) हल्दी ।  
हरीय ( क्रि० ) हर लेना चाहिये, छीन लेना चाहिये ।  
हरीतकी ( स्त्री० ) हर् ।  
हरोरा दे० ( वि० ) अयोधा, हरा ।  
हरीवा दे० ( पु० ) एक प्रकार का तोता ।  
हरीश ( पु० ) सुमीव ।  
हरुघाई ( स्त्री० ) हलकापन ।  
हरुप ( अस्म्य० ) होले होले ।  
हरौटी दे० ( स्त्री० ) कड़ी, बेंट, लडिया ।  
हरौ ( पु० ) हरीतकी, दया विशेष ।  
हर्तव्य ( पु० ) लेने योग्य ।  
हर्त्ता ( पु० ) लेने वाला ।  
हर्म्य ( पु० ) अटारी, छज्जा ।  
हर्ष तत्त्वं ( पु० ) आनन्द, सुख, कान्यकुब्ज के राजा  
का नाम, एक संस्कृत कवि का नाम ।  
हर्षना या हर्षणा तत्त्वं ( क्रि० ) हर्षित होना, फुलना,  
खिलना ।

हर्षित तत्त्वं ( वि० ) आनन्दित, आह्लादित, सुखित ।  
हल तत्त्वं ( पु० ) हर, जिससे खेत जोतते हैं ।  
—काना ( क्रि० ) धक्का देना, पहरा देना, धंस-  
काना ।—फोरना ( क्रि० ) घटोरना, हलोरना,  
समेटना ।—चल ( पु० ) खलबली, हड़बड़ी, धूम  
भीड़भाड़, डर, हुल्लाह ।—चल मचाना ( क्रि० )  
हुल्लाह करना, गुल्ल करना ।—दिया ( पु० ) एक  
प्रकार का विष, पीछिया रोग, जिसमें शरीर पीला  
हो जाता है ।—धर ( पु० ) बबराम, कृष्ण  
आता । [ हलकी रोटी ।

हलका दे० ( वि० ) जो भारी न हो । ( पु० ) फुलका,  
हलचल दे० ( पु० ) गड़बड़ी ।  
हलका दे० ( पु० ) प्रान्त ।  
हलदी दे० ( स्त्री० ) हरिद्रा, हल्दी ।  
हलपना दे० ( क्रि० ) तड़फड़ाना, प्याकुल होना ।  
हलफल दे० ( स्त्री० ) ।  
हलरा, तरङ्ग, बेर ( क्रि० )

हलवा दे० ( पु० ) हलुआ, मोहनभोग सीरा ।

हलवाहा तद् ( पु० ) हल जोतने वाला ।

हलवाही दे० ( स्त्री० ) हलवाह की मजूरी, जोतार  
खेत । [ यथराहत ।

हलहलाहट दे० ( स्त्री० ) ऊपर आदि से कपना,

हलहलिया तद् ( पु० ) विष, हलाहल ।

हलहली दे० ( स्त्री० ) रोग, व्याधि, जुड़ी ।

हलाई दे० ( स्त्री० ) मोताई, खेत की युगाई ।

हलाहल तद् ( पु० ) विष, महाविष ।

हलिया दे० ( पु० ) पैलों का समूह ।

हलियाना दे० ( कि० ) जी मचलाना, सबकाई घाना ।

हली ( पु० ) श्रीमलराम जी ।

हलुआ दे० ( पु० ) सीरा, मोहनभोग । [ योरेना ।

हलोरना दे० ( कि० ) पखोड़ना, साक करना,

हलोरा दे० ( पु० ) ताक, लहर ।

हलोरे ( कि० ) पटोरे, स मटे, लहराय ।

हल्लक ( पु० ) रफ कमल ।

हल्ला दे० ( पु० ) भीड़, बोलहल, रौला, हुल्लड़ ।

हवन तद् ( पु० ) होम, आहुति, अग्नि में मन्त्रपूर्वक  
दत्तिय दान ।

हवस ( स्त्री० ) हौस, डाह, खालसा, इच्छा ।

हवा दे० ( स्त्री० ) वायु, पवन ।

हवाज दे० ( पु० ) अहवाल, हाल, समाचार ।

हवाजात दे० ( पु० ) जेखाना, कड़ी निगरानी ।—

में होना ( कि० ) पुलिस के पदरे में पटना ।

हवि, हविष्य तद् ( पु० ) हवन की खीर । [ पदार्थ ।

हविष्यान्त ( पु० ) तिल, चामक, जी धृतादि पवित्र

हविर्भुज ( पु० ) अग्नि देवता ।

हव्य तद् ( पु० ) नैवेद्य, देवता की भलि या भेंट ।

हस्त तद् ( पु० ) हाथ, का, नखत्र ।—गत् ( पु० )

हाथ में आना ।—ती तद् ( पु० ) हाथी, करि ।

—लिपि ( स्त्री० ) हाथ की लिखावट ।

हस्ताक्षर ( पु० ) दस्तखत, सही ।

हस्तिदन्त ( पु० ) हाथी दाँत ।

हस्तिदन्तक ( पु० ) मूखी, गुरई ।

हस्तिनापुर ( पु० ) औरखों की राजधानी ।

हस्तिनी तद् ( स्त्री० ) हथिनी, नायिका विशेष ।

हस्तिपक तद् ( पु० ) महावत, हाथीवाग ।

हस्तो ( पु० ) हाथी ।

हस्तो दे० ( स्त्री० ) गजों में पढ़ने का एक गहन,  
जिसे औरतें पढ़ती हैं ।

हा तद् ( अ० ) दुःख बोधक ।

हाँ दे० ( अ० ) अह्नीकार, स्वीकार । [ ( वा० ) मुलाना ।

हाँक दे० ( स्त्री० ) पुकार, मुलाहट, धाहान ।—भारना

हाँकना दे० ( कि० ) पुकारना, पैल आदि को से चलना ।

हाँगर तद् ( पु० ) जल जगु विशेष, मगर, नाका ।

हाँड़ी दे० ( स्त्री० ) हण्डी, मिट्टी का बर्तन ।

हाँफना दे० ( कि० ) जोर से साँस लेना ।

हाँसी दे० ( स्त्री० ) हँसी, हास्य, ठठ्ठा ।

हाँहू ( अन्त्य० ) हाँ, ठीक, सब, सही ।

हाँकम ( पु० ) शासन करने वाला ।

हाट तद् ( पु० ) बाजार, पैंठ, हट ।

हाटक तद् ( पु० ) सुबंख, सोना ।—पुर ( पु० )

जह्ना ।—जोवन ( पु० ) हिरण्यवृक्ष, दैत्य,

प्रह्लाद का चचा ।

हाट्ट ( पु० ) बाजार में बेचने या खरीदने वाला ।

हाड़ दे० ( पु० ) हड्डी, अस्थि ।

हाता दे० ( पु० ) प्रान्त, भाग, ( जैसे बंगई हाता ) ।

हाथ दे० ( पु० ) हस्त, कर ।

हाथा दे० ( पु० ) हाथ, अधिकार, पानी नैके का दण्ड ।

हाथी दे० ( पु० ) हस्ति, कर्ी, गज, नाग ।—दाँत

( पु० ) हाथी का दाँत ।

हाथीधान दे० ( पु० ) महावत, पीलयान ।

हाथीदान्त ( पु० ) देखो, इस्तिदन्त ।

हानि तद् ( स्त्री० ) घाटा, टोटा, नुकसान ।

हाथ दे० ( अ० ) दुःख, क्लेश, दुःख का निःश्वास,

ठंडी साँस ।—भारना ( वा० ) दुःख करना ।

हायत तद् ( पु० ) वर्ष, सम्बत्सर ।

हार तद् ( पु० ) माला, मोती या फूलों की माला ।

दे० ( स्त्री० ) पराजय, गलाबट ।

हारजीत ( पु० ) जुया ।

हारना दे० ( कि० ) पराजित होना, घबन दे देना ।

हारा ( पु० ) घाला ; जैसे—लखहारा ।

हारीत ( पु० ) सुनि विशेष ।

हार्दिक ( पु० ) हृदय का ।

हाल ( पु० ) घुतान्त, समाचार । ( अ० ) हुरन्त ।

हाय तत् ( पु० ) नखरा, चोंचला, भाव, हावभाव ।  
 हास ( पु० ) हँसी, प्रसन्नता, दिव्यगी ।  
 हास्य तत् ( पु० ) हँसी, कौतुक, विनोद ।  
 हाहा दे० ( थ० ) हाय हाय, हा । ( पु० ) गन्धर्व  
 विशेष ।

हाहाकार तत् ( पु० ) शोक, आहि आहि, हाय हाय ।  
 हाहाखाना ( कि० ) गिड़गिड़ाना ।  
 हिंडोला या हिंडोरा दे० ( पु० ) पलना, झूला ।  
 हिंसक तत् ( पु० ) अधिक, व्याध, मारने वाला ।  
 हिंसा तत् ( स्त्री० ) मारण, बध, घात ।  
 हिंस्र तत् ( पु० ) वपिक, हिंसक ।  
 हिंगु तत् ( पु० ) हींग, गन्ध द्रव्य ।  
 हि ( थ० ) निरुचय, दृढ़ । [ अटकना ।

हिचकना दे० ( कि० ) आगा पीछा करना, रुकना,  
 हिचकाना दे० ( कि० ) धका देना, हिलाना ।  
 हिचिकचाना दे० ( कि० ) सन्देह में पड़ना, संशयित  
 होना । [ शब्द निकलता है ।

हिचकी दे० ( स्त्री० ) हिका, गले से जो हिचू हिचू  
 हिजड़ा दे० ( पु० ) नपुंसक, स्त्रीय, नामदं ।  
 हित तत् ( पु० ) उपकार, भलाई, ।—कारी ( पु० )  
 उपकारी ।

हितु तद् ( वि० ) हितैषां, नातेदार, सम्बन्धी, मित्र ।  
 हितैषो तत् ( वि० ) हितकारक, हित करने वाला ।  
 हिनहिनाना दे० ( कि० ) घोड़े का शब्द ।  
 हिन्द ( पु० ) भारतवर्ष ।

हिन्दी दे० ( स्त्री० ) हिन्द की भाषा, राष्ट्रभाषा ।  
 हिन्दु दे० ( पु० ) हिन्दुस्तान के वासी, वैदिक मत  
 का मानने वाला ।—स्थान ( पु० ) भारतवर्ष ।  
 हिम तत् ( पु० ) पाला, तुपार, ओस ।—कर ( पु० )  
 चन्द्रमा, कपर ।—कूट ( पु० ) जाड़ा शिशिर  
 ऋतु ।

हिमायत दे० ( स्त्री० ) पर्वपात, समर्थन ।  
 हिमायती दे० ( वि० ) पर्वपाती ।  
 हिमालय या हिमाचल तत् ( पु० ) हिमगिरि, हिमाद्रि ।  
 हिस्मत दे० ( स्त्री० ) साहस ।  
 हिया दे० ( पु० ) हृदय, कलेजा ।  
 हियाव दे० ( पु० ) उत्साह, साहस ।  
 हिरण ( पु० ) सोना, सुवर्ण, मृग, भूखण्ड विशेष ।

हिरण्यकशिपु तत् ( पु० ) दैत्यपति, ब्रह्मा का पिता ।  
 हिरण्यगर्भ ( पु० ) ब्रह्मा, शालिग्राम की मूर्ति ।  
 हिरद तत् ( पु० ) हिया, हृदय ।  
 हिरन तद् ( पु० ) मृग, हिरण ।  
 हिरमिजो ( स्त्री० ) एक प्रकार का रंग ।

हिला ( पु० ) पालन, ( कि० ) कोषा, डोला,  
 वशीभूत हुआ ।

हिलाना ( कि० ) कपान, वशीभूत करना ।  
 हिलाव दे० ( पु० ) पैराव, तैराव ।  
 हिलामिला दे० ( पु० ) मिला हुआ, सम्बन्ध युक्त,  
 परचा हुआ ।

हिलोरा दे० ( पु० ) तरंग, लहर ।  
 हिस्ता दे० ( स्त्री० ) मधुली विशेष ।

हिसक दे० ( पु० ) देखादेखी, स्पर्द्धा, हिंस ।—कुटिया  
 दे० ( वि० ) मत्सर, द्वेष ।

हिर्स दे० ( स्त्री० ) ईर्ष्या, डाह ।  
 हिस्ताव दे० ( पु० ) लेखा, गणितशास्त्र ।—किताब  
 ( पु० ) लेख ।

होंग दे० ( पु० ) गन्ध द्रव्य, स्वनाम प्रसिद्ध गन्ध द्रव्य ।  
 होसना दे० ( कि० ) हिनहिनाना, चाहना ।  
 हीक दे० ( स्त्री० ) बकनाई, मतलाई, मचलाई ।  
 हीके दे० हृदय को ।

हीन तत् ( वि० ) न्यून, अधम, छोटा ।—जाति  
 ( पु० ) अधम जाति । [ पिता का नाम ।

हीर तत् ( पु० ) वज्र, हीरा, मणि विशेष, श्रीहर्ष के  
 हीरा दे० ( पु० ) एक श्वेत रत्न, पर्व, वज्र, मणि विशेष ।

—मन ( पु० ) एक प्रकार का तोता ।—वृत्तो  
 ( स्त्री० ) योगी की स्त्री ।

हीला ( पु० ) बहाना, मिस ।  
 हुकुम दे० ( पु० ) आज्ञा, अनुशासन ।—नामा दे०  
 ( पु० ) आज्ञापत्र, अनुशासनपत्र । [ ध्वनि ।

हुङ्कार तत् ( पु० ) गर्जन, डरावनी शब्द, मयङ्गर  
 हुङ्का दे० ( पु० ) आर्गल, झूना ।

हुडदङ्गा दे० ( पु० ) दकैत, गुयदा, उपद्रवी ।  
 हुड् दे० ( वि० ) फक्कड़ ।

हुगडी दे० ( स्त्री० ) रुपये की चिट्ठी ।  
 हुगडार दे० ( पु० ) भेड़िया, हिंसक जन्तु विशेष ।  
 हुति तद् ( स्त्री० ) आहति ( कि० ) धी ।

हुनर दे० ( पु० ) गुन, कारीगरी, कारुकार्य ।  
 हुनरफि दे० ( कि० ) ठोकर, मारफा ।  
 हुलकारना दे० ( कि० ) दुष्कारना, खदेड़ना, भगाना ।  
 हुलना ( कि० ) भौंकना, चुभाना ।  
 हुलसना दे० ( कि० ) आनन्दित होना, हर्षित होना ।  
 हुलास दे० ( पु० ) आनन्द, हर्ष, सुख, आह्लाद,  
 नास, सूँघने की तमाकू ।

हुलड़ दे० ( पु० ) रोला, झगड़ा, टयटा ।  
 हुड़ तत्० ( पु० ) एक प्रकार की सहायता जो खेति  
 हर आपस में एक दूसरे की करते हैं ।

हुँडाहुड़ी दे० ( पु० ) धौगाधौगी ।  
 हुँण तत्० ( पु० ) हुँण देश का वासी, कठोर मनुष्य ।  
 हुलना दे० ( कि० ) पेलना, धक्का देना, उकेलना ।  
 हुवा दे० ( पु० ) प्रसन्नता का शब्द ।  
 हुदय तत्० ( पु० ) अन्तःकरण, मन, चित्त, छाती ।  
 हृष्ट तत्० ( वि० ) आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित ।—पुष्ट  
 ( पु० ) बलवान्, बली ।

हुँ तत्० ( अ० ) सम्बोधन सूचक ।  
 हुँगा दे० ( पु० ) एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे  
 खेतबराबर किया जाता है । [आलसी, डरपोकना ।  
 हुँठ दे० ( पु० ) नीचे, अधः, तले ।—। ( वि० )  
 हुँति तद् [ हा+इति ] हाय यह, हाय इतना ।  
 हुँतो दे० ( वि० ) प्रेमी, हिन्नु, हितकारी, मित्र ।  
 हुँतु तत्० ( पु० ) कारण, निमित्त, निदान ।  
 हुँम तत्० ( पु० ) सुवर्ण, सोना, हिरण्य ।  
 हुँमन्त तत्० ( पु० ) ऋतु विशेष, जाड़े की ऋतु ।  
 हुँय तत्० ( वि० ) स्वाज्य, छोड़ने योग्य ।  
 हुँरना दे० ( वि० ) हुँवना, खोजना ।  
 हुँरन्ध्र तत्० ( पु० ) गणेश, गजानन, विनायक  
 हुँरफेर दे० ( पु० ) परिवर्तन, उलटफेर ।  
 हुँराफेरी दे० ( स्त्री० ) अश्ल यदल, परिवर्तन ।  
 हुँलना दे० ( कि० ) पार होना, तैरना ।  
 हुँला दे० ( स्त्री० ) अवज्ञ, अनादर, घाघ विशेष ।  
 —भारना ( या० ) पुकारना ।

हुँसा दे० ( पु० ) कालरा, विशूचिका का रोग ।  
 हुँहय तत्० ( पु० ) सत्रिय विशेष ।—पति तद्  
 ( पु० ) कार्तवीर्य ।  
 हुँकना दे० ( कि० ) हौंकना, ऊँची साँस लेना ।  
 हुँठ दे० ( पु० ) थोथ, थोड, अथर ।  
 हुँड़ दे० ( पु० ) बाजी, शर्त, ठहराव, नियम, समय ।  
 —जगाना ( वा० ) बाजी लगाना ।  
 हुँत दे० ( स्त्री ) वश, शक्ति, सामर्थ्य ।  
 हुँता तत्० ( पु० ) हवन फर्त ।  
 हुँनहार दे० ( वि० ) भवितव्यता, भविष्य, भावी  
 होने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि ।  
 हुँना दे० ( कि० ) रहना, विद्यमान, वर्तमान ।  
 हुँम तत्० ( पु० ) हवन, वेद मन्त्र पूर्वक अग्नि में धाहुति  
 देना ।—कुण्ड ( पु० ) हवन करने का कुण्ड ।  
 हुँला दे ( पु० ) एक प्रकार की नाच, भुँजा घना, बूँट ।  
 हुँली तत्० ( स्त्री० ) पर्व विशेष, फागुन के महीने में  
 यह होता है ।

हुँलड़ा दे० ( पु० ) हुलड़ ।  
 हुँ हुँ दे० ( पु० ) कुत्ते की बोली ।  
 हुँस दे० ( स्त्री० ) हृष्टा, चाह, अभिलाषा ।  
 हुँसला दे० ( पु० ) साहस, हृष्टा, बसाह ।  
 हुँका दे० ( पु० ) खोम, लालच, लिप्सा, अभिलाष ।  
 हुँद दे० ( पु० ) कुण्ड, चहबया ।  
 हुँदा दे० ( पु० ) हाथी की पीठ पर फरने वाला हुँदा ।  
 हुँदी दे० ( स्त्री० ) घोटा कुण्ड, घोटा चहबया ।  
 हुँली दे० ( स्त्री० ) कलवरिया, मदिरा की दूधन ।  
 हुँले दे० ( अ० ) धीरे धीरे, शनैः शनैः ।  
 हुँवा दे० ( पु० ) पालकों को डराने के लिये एक  
 कल्पित भूत ।  
 हुद तत्० ( पु० ) बड़ा जलारण्य, कील ।  
 हुस्य तत्० ( पु० ) मात्रा विशेष, एक मात्रिक स्वर,  
 लघु वर्ण ।  
 हास तत्० ( पु० ) घटा, टोटा, नुकसान ।  
 हाद तत्० ( पु० ) आनन्द, हर्ष, मग्न ।

## गोस्वामी तुलसीदास कृत पुस्तकें

१—	तुलसीदासकृत रामायण छोटा गुटका	...	...	॥
२—	" " गुटका	...	...	१)
३—	" " सटीक गुटका	...	...	३)
४—	" " सचित्र बड़े अक्षर में मूल	...	...	३)
५—	" " सचित्र और सटीक बड़े अक्षर में...	...	...	६)
६—	" विनय पत्रिका सटीक और सचित्र	...	...	२)
७—	" गीतावली सटीक	...	...	२)
८—	" कवितावली सटीक	...	...	२)
९—	" दोहावली सटीक	...	...	१)
१०—	" वैराग्य-संदीपिनी	...	...	१)
११—	" रामलला-नहछू	...	...	॥

निम्न लिखित पुस्तकें सटीक छप रही हैं

- |                |                   |
|----------------|-------------------|
| १—वरवै रामायण  | ३—जानकी-मंगल      |
| २—पार्वती-मंगल | ४—रामाज्ञा-मन्त्र |

५—श्रीकृष्ण गीतावली

छप गयीं

- |  |    |
|--|----|
| १—श्रीमद्भगवद्गीता संस्कृत हिन्दी टीका सहित ( सचित्र ) | १) |
| २—श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दी टीका सहित ( गुटका )          | ॥  |

मिलने का पता—

रामनारायण लाल

पब्लिशर और बुकसेलर,

इलाहाबाद

